तुलसी साथी विपत के, विद्या विनय विवेक ।
साहस सुकृत सत्य वृत, राम भरोसौ एक ।।

महात्मा तुलसीदास

अपनी बात

राजस्थानी शब्द कोश का कार्य अब गतिशील बन रहा है। यही कारण है कि हम एक वर्ष के अल्पकाल में ही पाठकों के सम्मुख द्वितीय खंड की द्वितीय जिल्द प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रथम खंड एवं द्वितीय खंड की प्रथम जिल्द के बीच में चार वर्ष का लम्बा समय निकल गया था। हम उम्मीद कर रहे हैं कि इतना समय अब नहीं लग पायेगा। और दो तीन वर्षों में ही पूर्ण कोश को विद्वानों एवं सहृदय पाठकों के सामने प्रस्तुत कर सकेंगें।

इस नवीन विश्वास के क्या कारण है ? यह भी बता देना उचित होगा। यदि कोश के कार्य केवल श्रम साध्य एवं वैयक्ति लगन का ही परिणाम होता तो यह कोश कभी का सम्पूर्ण बन गया होता। कोश की तैयारी के लिए वस्तुतः एक ऐसे तंत्र की व्यवस्था बिठानी पड़ती है, जिससे शब्द, अर्थ और उसकी व्यंजना के साथ साथ उन्हें स्वर–वर्ण के क्रमानुसार व्यवस्थित भी करना होता है। अतः इस तंत्र में बौद्धिक एवं लिपिक की वैविध्यपूर्ण कल्पना एवं विचारगत का एक संतुलन निर्मित करना पड़ता है। इस व्यवस्था को बनाने के लिये धन, अर्थात् द्रव्य की भी आवश्यकता रहती है। इतना ही नहीं इस प्रकार की पांडुलिपि को छपा लेने में भी काफी द्रव्य की आवश्यकता रहती है। अर्थात् कोश के कार्य की गति को तीव्र बनाने के लिये श्रम एवं साधना के अतिरिक्त धन का भी कम योगदान नहीं रहता। वस्तुतः आज हमारे कार्य में सबसे बड़ा व्यवधान द्रव्य का समुचित संग्रह ही रहा है।

कोश के कार्य के लिए केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने सन् १९५९–६० से सहायता देना प्रारंभ किया और गत वर्ष तक (१९६६–६७) के कार्यकाल तक सहायता बराबर मिलती रही। इस वर्ष भी उम्मीद है कि यथा-साधन हमें सहायता मिलेगी। हम इस सहायता को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं। वस्तुतः यही आर्थिक सहायता कोश को छपवाने में सहायक सिद्ध हुई। किन्तु राजकोय नियमों के क्रम में यह सहायता वर्ष के किसी भी अवसर पर मिला करती है, और परिणाम स्वरूप सहायता की आशंका में कार्य की गतिविधि कभी धीमी और कभी तीव्र हो जाया करती थी।

इस गंभीर परिस्थिति में हमें सबसे बड़ा सहारा राजस्थान के शिक्षा विभाग ने प्रदान किया। शिक्षा विभाग ने कार्य की महता को स्वीकृत करते हुए, एक ऐसी व्यवस्था के लिए आर्थिक सहायता देना मन्जूर किया, जिससे कोश कार्यालय का बुनियादी कार्य किसी भी हालत में रुके नहीं। इस सहायता को मिलते हुए आज एक वर्ष से कुछ ही अधिक महीने बीत चुके हैं और इस काल में कोश कार्य सन्तोषजनक गति से विकसित हो सका है। इस कार्य का श्रेय राजस्थान शिक्षा विभाग के अपर शिक्षा निदेशक श्री अनिल बोर्दिया को है, जिन्होंने साहित्यिक सहृदयता और कोश के महत्व को आत्मसात करके आवश्यक सहायता की नियमानुकूल व्यवस्था करवाने में सम्पूर्ण सहायता प्रदान की। श्री बोर्दिया को अपनी सहायता के लिए राजस्थान का वर्तमान साहित्यिक समाज ही नहीं अपितु भारतीय भाषाओं के असंख्य विद्वानों का सम्पूर्ण दल अपने अन्तरतम मन से आशीर्वाद प्रदान करेगा, हमारी उपसमिति का यह अचल विश्वास है कि कोश जैसे कार्य से न केवल आज के समाज, बल्कि भावी समाज और भावी पीढ़ी की एक बहुत बड़ी सांस्कृतिक मांग पूर्ण हुआ करती है, और वही पीढ़ी ऐसे कार्य का सही सही मूल्यांकन करने में समर्थ होगी।

यहां हम पुनः उल्लेख करना चाहते हैं कि राजस्थानी हिन्दी बृहद शब्द कोश में प्रथम खंड में स्वर-प्रकरण एवं क-वर्ग के सभी अक्षरों का क्रमानुसार प्रकाशन आठ सौ तीस पृष्ठों में पूर्ण हो चुका है। इसी प्रकार द्वितीय खंड की प्रथम जिल्द में "च" अक्षर से लेकर "त" अक्षर तक पहुंचा जा सका। यहां तक पृष्ठ संख्या १५९८ पहुंच गई। प्रस्तुत जिल्द अर्थात् द्वितीय

खंड की द्वितीय जिल्द में हम "थ" अक्षर से न" अक्षर तक पहुंचे हैं, और पृष्ठों की दृष्टि से २२४५ तक आ गये हैं हमें विश्वास है कि यथाशीघ्र तृतीय खंड को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकेंगे। कोश की प्रेस कापी काफी सीमा तक आगे बढ़ चुकी है।

इस जिल्द के छपते हुए, हमारे कार्य के सहयोगी रूप में भारत सरकार के राज्य शिक्षा मन्त्री श्री भागवत झा आजाद, संसद सदस्य सेठ श्री गोविन्दास एवं श्री अमृत नाहटा का नवीन सहयोग और समर्थन प्राप्त हुआ। अन्य सभी राजस्थानी एवं भारतीय सज्जनों का सहयोग इसी रूप में मिल रहा है, जो गत खंडों के प्रकाशन के दौरान में मिल रहा था। हम पुनः अपना धन्यवाद सभी महानुभावों के प्रति दोहराते हैं।

इसी कार्यकाल में कोश सम्बन्धी उपसमिति का पुनर्गठन भी हुआ और अब यह कार्य कुशल प्रशासक ब्रिगेडियर श्री आपजी रणधीरसिंहजी जी साहब की देख रेख में चल रहा है। श्री आपजी के सक्रिय सहयोग ने कोश कार्यालय को नवीन प्राण दिये हैं। इन्हीं आशापूर्ण संकेतों के बीच में राजस्थान के अक्षरों एवं शब्दों का इतिहास लिखा जा रहा है। भविष्य की उज्जवल कामना के साथ पाठकों के हाथ में यह जिल्द सौंपते हुए, मन में असीम हर्ष है।

विनीत

(कर्नल) ठा० श्यामसिंह

सचिव

उपसमिति राजस्थानी सबद कोस जोधपुर

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा

सं० २०२४ वि०

॥ श्री ॥

* निवेदन *

—: दूहा सोरठा :—

नारायण भूले नहीं, अपणी मायाईश । रोग पैल आखद रचै, जगवाला जगदीश ॥१॥
साच न वूढो होय, साच अमर संसार में । कैतो धोवो कोय, ओ सेवट प्रकटै 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम । इण सूं पूरै आज, सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह, ईशर कीरपा सू उदय ॥४॥
सत ऊजल संदेश, उदयराज उजल अखे । दीपै वांरा देश, ज्यारा साहित जगमगे ॥५॥

भारत संसद में सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भासावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानो तो कुदरती तौर सूं राजस्थान में अपणी भासा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरू हुवो ।

राजस्थानी रो विरोध में अकसर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नहीं हो । ओ घाटो मिटावण सारु में श्री सीतारामजी लालस ने क्यो क्योकि हूँ जाणता हो के डिंगल रा शब्द संग्रह रो उणां ने कांफी अनुभव है । श्री सीतारामजी इणा काम सारु तैयार हो गया ने म्हें दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग से मैनत सूं कोश रो काम शुरू कियो ने इण में खर्च रोमदत रो जरुरत हुई तो उसा बावत म्हें स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब वार एटला पोकरण ने अरज करी । इणां कृपा करने मंजूर करी ने तारीख १–५–५१ सूं रुपीया री मदद देणो चालू कर दीवी । सीतारामजी मथाणिया में लेखक राख ने काम शब्द संग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दियो और म्हें दोनू तारीख १–५–५१ सूं सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बद हो गई । इण सूं सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम वन्द रेयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं री पूरी लगन ही । म्हें करनल श्री सोमसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ में कोश में सहायता देण सारु कागद लिखियों उण रो जबाव उणां तारीख २९–६–५६ रा कागद में म्हने लिखियों के कोश सारु मावार रु० ५०), ३ या ४ साल तक या काश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला । परन्तु उणांरा पिता करनल श्री अनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू में देरो हुई । उणां रे स्वर्गवास होणे रे बाद में मास नवम्बर रा अन्त में ने दिसम्बर रा सरु में जोधपुर में ही जद कर्नल श्रीं सामसिंहजी कोश री मदत बावत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ।

कोश रो काम उणां री सहायता सूं सन् १९५७ री जनवरी सूं सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दिया क्योंकि जद उणां रो तबादला जोधपुर में हो गयो हो । जो एक लाख तेरह हजार शब्दों री स्लिप कोपिया पेलो बणी हुई ही । उणारी स्लिपां काट काटकर अक्षरवार अलग अलग कर दी गई ने नवा शब्द भी जो मिलिया के शामिल कर दिया गया । इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणां ने अक्षरवार रजिस्टरों में लिख लिया गया । इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयी । म्हें पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोष करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया रीं सहायता सूं पूरी हुवो ।

इणरे बाद प्रेस कापी बणाइण रो काम चालू हुवे । उणरे खरचे रो प्रवन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेडतिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सू श्री नीबांज ठाकुर साहब सू रुपियां री सहायता लेने करायो ने करे छपण री प्रवन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासणी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११–३–१९५६ ने सीतारामजी ने इण सांध संस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूं वे इण संस्थान में काम करण लागा ।

इण कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मदत ही इण वास्ते वैकुंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवां हां । तारीख २२–५–५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो :—

चांद बावड़ी
ता० २२ - ५ - ५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यन्त्र श्री उदयराजजी उज्जवल यन्त्री (मिकेनिक) के बल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जांचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश विविध भाषाओं के बल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा हैं राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से पूर्ण संतुष्ट होगी और श्रम की समझने वाले विद्वान काय प्रशंसा करेंगे। फकत नित्यानंद शास्त्री।

इणी तरे ननण विश्वविद्यालय मूं डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीब चालीस भाषाओ रो जाणकार है ने अन्तरराष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनी विज्ञान संबंधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ में राजस्थान में आया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणांने म्हें ने सीतारामजी दोनूं कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारा मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह वधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है :—

TRINITY COLLEGE, CAMBRIDGE 26 Feb., 1960.

It is excellent news for Indo-Aryan Linguistics that the Rajastani Dictionary of Shri Udayraj Ujjwal and Shri Sitaram Lalas is now to be published Rajasthani has long presented a serious gap in the comparative Study of the vaca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at last it is filled by the devoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors, I know well and difficulties that have beset the under taking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no longer be denied.

Sd. W. S. Allen. M.A.P.H.D.
Protessor of Comprative Philology
In the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों री रुपीया रो मदत सूं शुरु होय ने पूरो वणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफक म्हे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कवित, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वा अठे दिया जावे है इणा ने दोनूं सरदारों री धन्यवाद रे तौर पर वणाने है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी में

कोश मरु वाणरो गुणी दख्यो नह किणी सूं, नाम नवदो तणो वडो नेग्यो गया भूपात कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
पड़ता खजाना नरेनो देखना, गया राजमाल टकरेत गाढा। सेव साहित्य री वणी न किणी सूं, लागता पंथ वन छोड़ लाडा ॥२॥
सेव साहित्य री रहे संसार में, गुजमफल लागये घणी सरसे। मिले सुखलाय हितकर चित समाजां, दिनों दिन कितां सनमान दरसै ॥३॥
पांगल मरु बात रै प्रांत री परंपरा, वेग परताप राजस्थान ऊंचों। रूसी नह पढण में भायणां प्रांतरी, निरखतां जाय है प्रांत नीचों ॥४॥
कराई चारणां व्याकरण विधोविध, वणेगो कोश ही नाम नवदो। सीत रो परिश्रम अवग फलियों सिरे, रेटियो 'उदय' मिल सफल सवदो ॥५॥
पोकरण भवानीसिंह नाथ प्रथम कोश रै हेत धन खर्च कीयो। पछना लांग इण नमेग फेर सू, स्यामसी रोडले कांम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसी नहलो गिरोमण, समयज आज अभियास कीधो। वार विपरीत में हजारां खरचवे, दाद ऊजल 'उदे' देग दीधो ॥७॥
चारणा शेत सिर व्याकरण कोश रचि, देश नह वडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिलकियो नुमकांमजो, महीयो कियो नह बीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूर्यमल्ल मिश्रण ने बनाया वंश भास्कर बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके।
शामल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योंही उदियापुर रान के कोष बल धरके।
सीताराम लालस ने कीन राजस्थानी कोश, उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिंह श्यामसिंह रोड़ला के कोश हित कोष बने दानी धनधर के।
प्रान्त री प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परंपरा विद्वजन दीनमान वीरपद जाना है।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त है से रूसी नहीं तीन कोटि जनता की दाम गति जाना है।
दुखद है मात भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याने दमित विधाता है।
जीवित उभरो अब राजस्थानी भाषाभाष, व्याकरण कोश याके बनेगे निशाना है।

Compared by
Sd. Bhawar Singh

Sd. हु० उदयराज उज्जवल
Sd. Nemi chand Jain
Civil Judge, Jodhpur.

संकेताक्षरों का विवरण

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता का नाम
अं०	अंग्रेजी	
अ०	अरबी	
अक०	अकर्मक	
अक० रू०	अकर्मक रूप	
अनु०	अनुकरण	
अनेक०, अनेका०	अनेकार्थी कोश	श्री उदयरांम बारहट (गूंगा)
अप०	अपभ्रंश	
अमरत	अमरत सागर	श्री महाराजा प्रतापसिंह (जयपुर)
अ०मा०	अवधान माला	श्री उदयरांम बारहट (गूंगा)
अ०रू०	अकर्मक रूप	
अल्प० अल्पा०	अल्पार्थ रूप	
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	सिवदास गाडण
अव्य०	अव्यय	
इब०	इबरानी	
उ०	उदाहरण	
उप०	उपसर्ग	
उभ०लि०	उभयलिंग	
ऊ०र०	उक्ति रत्नाकर	
ऊ०का०	ऊमर काव्य	श्री ऊमरदांन लालस
एका०	एकाक्षरी नांम माला	श्री वीरभांण रतनू, श्री उदयरांम बारहट (गूंगा)
ऐ०जै०का०सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	संपादक-अगरचंद जी नाहटा
क०कु०बो०	कविकुल बोध	श्री उदयरांम बारहट
क०च०	करणी चरित्र	ठा० किशोरसिंह बार्हस्पत्य
कर्म०वा०, कर्म०वा०रू०	कर्म वाच्य रूप	
कहा०	कहावत	
कां०दे०प्र०	कान्हड़ दे प्रबंध	श्री पद्मनाभ
क्रि०	क्रिया	
क्रि०अ०	क्रिया अकर्मक	
क्रि०प्र०	क्रिया प्रयोग	
क्रि०प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	
क्रि०वि०	क्रिया विशेषण	
क्रि०स०	क्रिया सकर्मक	
क्व०क्व०प्र०	क्वचित् प्रयोग	
क्षेत्र	क्षेत्रीय प्रयोग	
ग०मो०	गज मोख	हरसूर बारहठ
गी०रां०	गीत रांमायण	श्री अमृतलाल माथुर (कुचेरा निवासी)
गु०	गुजराती	

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
गु०रू०बं०	गुण रूपक बंध	श्री केसोदास गाडण
गो०रू०	गोरादि	
गो०रू०	गोगादे रूपक	श्री पहाड़ खां आढ़ो
चौ०	चीनी	
चेत मानखा	चेतमानखा	श्री रेवतदांन कल्पित
चौबोली	चौबोली	सम्पादक डॉ० कन्हैयालाल सहल
ज०खि०	जगा खिड़िया री वचनिका	श्री जगो खिड़ियो
जा०	जापानी	
ज्यो०	ज्योतिष	
डिं०	डिंगल	
डिं०को०	डिंगल कोस	कविराजा मुरारिदांन जी (बूंदी)
डिं०नां०मा०	डिंगल नांम माळा	श्री हरराज (कवि)
ढो०मा०	ढोला मारू *	सम्पादक श्री रामसिंह श्री सूर्य करण पारीक श्री नरोत्तमदास स्वामी
तु०	तुर्की	
द०दा०	दयाळदास री ख्यात	श्री दयाळदास सिंढायच
दसदेव	दस देव	नानूरांम संस्कर्ता
द०वि०	दलपत विलास	सम्पादक श्री रावत सारस्वत
दे०	देखो	
देवि, देवी	श्री देवियांण	श्री ईसरदास बारहठ
द्रौ०पु०	द्रोपदी पुकार	श्री रामनाथ कवियो
ध०व०ग्रं०	धर्म वर्धन ग्रंथावली	संपादक अगरचंद नाहटा
ना०मा०	नांम माळा	अज्ञात
ना०डिं०को०	नागराज डिंगल कोस	श्री नागराज पिंगळ
ना०द०	नाग दमण	श्री सांयां झूला
नी०प्र०	नीति प्रकास	श्री सगरांम सिंह मुहणोत
नैणसी	मुहणोत नैणसी री ख्यात	प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
पं०	पंजाबी	
पं०पं०च०	पंच पंडव चरित्र	शालिभद्र सूरि
प०च०चौ०	पदमनी चरित्र चौपाई	लब्धोदय
पर्याय	पर्यायवाची शब्द	
फा०	फारसी	
पा०प्र०	पाबू प्रकास	कवि श्री मोडजी आसियो
पिं०प्र०	पिंगळ प्रकास	श्री हमीरदांन रतनू
पी०ग्रं०	पीरदांन ग्रंथावली	पीरदांन लाळस

* इसके अतिरिक्त हमने "ढोला मारू" की भिन्न २ लेखकों द्वारा लिखित हस्तलिखित वार्ता की प्रतियों में से भी शब्द लिए हैं, उनका भी संकेत चिन्ह ढो.मा. ही रखा गया है।

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
पु०	पुल्लिंग	
पुर्त्त०	पुर्त्तगाली	
पृष०	पृषोदरादि	
पे०रू०	पेमसिंह रूपक	श्री प्रतापदान चारण
प्र०	प्रत्यय	
प्रा०	प्राकृत	
प्रा०प्र०	प्राचीन प्रयोग	
प्रा०रू०	प्राचीन रूप	
प्रे०	प्रेरणार्थक	
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	
फा०	फारसी	
फ्रां०	फ्रांसिसी	
बहु०	बहु वचन	
बां०दा०	बांकीदास ग्रंथावली भाग १,२,३,	श्री बांकीदास
बां०दा०ख्या०	बांकीदास री ख्यात	श्री बांकीदास
बी०दे०	बीसल् दे रासो	बीसल दे
भ०मा०	भक्तमाल्	श्री ब्रह्मदास जी दादूपंथी
भाव०	भाव वाचक	
भाव वा भाव वा०रू	भाव वाच्य रूप	
भिक्खु	भिक्खु दृष्टान्त	
भि०द्र०	,, ,,	
भू०	भूतकाल	
भू०का०क्रि०	भूत कालिक क्रिया	
भू०का०कृ०	भूतकालिक कृदन्त	
भू०का०प्र०	भूत कालिक प्रयोग	
भ्रं०पु०	भ्रंगी पुराण	श्री हरदास
म०	मराठी	
मह०महत्व०	महत्ववाची शब्द	
मा०	मागधी	
मा०का०प्र०	माधवानल काम कंदला प्रबंध	कवि गणपति
मा०म०	मारवाड मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी श्री देवी प्रसाद
मि०	मिलाओ	
मीरां	मीरां बाई	
मु०मुहा०	मुहावरा	
मेघ०	मेघदूत	श्री नारायणसिंह भाटी
मे०म०	मेहाई महिमा	श्री हिंगलाजदान कवियो
यू०	यूनानी	
यौ०	यौगिक	
र०ज०प्र०	रघुवरजस प्रकाश	श्री किसनो आढो

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
र०रू०	रघुनाथ रूपक गीतां रो	श्री मंछाराम, मंछकवि
र० वचनिका	रतनसिंह महेशदासोत री वचनिका	जग्गो खिड़ियो
र० हमीर	रतना हमीर री वारता	महाराजा मानसिंह जोधपुर
रा०	राजस्थानी	
रा०ज०रासो	राव जैतसी रो रासो	अज्ञात
रा०जै०सी०	राव जैतसी रो छंद	श्री बीठू सूजो नगराजोत
रात वासो	राजस्थानी कांणी संग्रह	नृसिंह राजपुरोहित
रा०दू०	राजस्थानी दूहा	सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी
रा०प्र०	राजस्थानी प्रत्यय	
रां०रा० रांम रासो	रांम रासो	श्री माधोदास दधवाड़ियो
रा०रू०	राज रूपक	श्री वीरभांण रतनू
रा०वं०वि०	राठौड़वंस री विगत	अज्ञात
रा०सा०सं०	राजस्थानी साहित्य - संग्रह भाग १	सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी
ल०पि०	लखपति पिंगळ	श्री हमीरदान रतनू
ला०रा०	लावा रासो	श्री गोपालदांन कवियो
लू०	लू	ठा० चन्द्रसिंह बीको
लै०	लैटिन	
लो०गी०	राजस्थानी लोक गीत	
व०भा०	वंश भास्कर	श्री सूर्यमल मीसण
व०	वर्तमान काल	
व०का०कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त	
वचनिका	वचनिका रतनसिंह महेशदासोत री	श्री जग्गो खिड़ियो
वरसगांठ		श्री मुरलीधर व्यास
व०स०	वर्णक समुच्चय	सम्पादक भोगीलाल सांडेसरा आदि
वांणी	संत वांणी	
बादळी	बादळी	ठा० चन्द्रसिंह बीको
वि०	विशेषण	
वि०कु०	विनय कुमार कुसुमांजळी	
विलो०	विलोम	
वि०वि०	विशेष विवरण	
वि०स०	विरद सिणगार	कविराजा करणीदान कवियो
वी०दे०	वीसल दे रासो	
वी०मा०	वीरमायण	बहादुर ढाढी
वी०स०	वीर सतसई	सूर्यमल मीसण
वी०स०टी०	वीर सतसई टीका	श्री किसोरदांन बारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	महाराजा प्रिथीराज राठौड़
वेलि०टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
व्या०	व्याकरण	
शाक०	शाकंदादि	
शा०हो०	शालि होत्र	
शि०वि०	शिखर वंशोत्पत्ति	श्री गोपाल कवियो
शि०सु०रू०	शिवदांन सुजस रूपक	श्री लालदांन वारहट
सं०	संस्कृत	
सं०उ०	संज्ञा उभय लिंग	
सं०पु०	संज्ञा पुल्लिंग	
सं०स्त्री	संज्ञा स्त्री लिंग	
स०	सकर्मक	
स०कु०	समय सुन्दर कृति कुसुमांजली	महाकवि समय सुन्दर
स०रू०	सकर्मक रूप	
सर्व०	सर्वनाम	
सू०प्र०	सूरज प्रकाश	कविराज करणीदान कवियो
स्त्री०	स्त्री लिंग	
स्पे०	स्पेनिश	
श्री हरि पु०	श्री हरि पुरुषजी	
ह०नां० / ह०ना०मा०	हमीर नाम माला	हमीरदान रतनूं
ह०पु०वां०	श्री हरि पुरुषजी की वांणी	
ह०प्र०	हंस प्रबोध	श्री हमीरसिंहजी राठोड़
ह०र०	हरि रस	श्री ईसरदास बारहठ
हा०झा	हाला झालां रा कुण्डलिया	श्री ईसरदास बारहठ

* [यह संकेत इस बात को सूचित करता है कि यह शब्द केवल कविता में ही प्रयोग होता हैं।

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी बृहत् कोश]

[द्वितीय खण्ड]

(द्वितीय जिल्द)

(स्त्री० थंवियोड़ी)

थंवली—१ देखो 'थंवो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'थोवली' (रू.भे.)

थंवियो—देखो 'थंवो' (अल्पा., रू.भे.)

थंवी—१ देखो 'थंवो' (अल्प., रू.भे.) २ देखो 'थोवली' (रू.भे)

थवीड़—देखो 'थंवो' (मह., रू.भे.)

थंवो-सं०पु० [सं० स्तम्भ] स्तम्भ, खंबा, थंवा, थूनी।

रू०भे०—थंभो, थांवो, थांभड़, थांगो।

अल्पा०—थंवली, थंवियो, थंवी, थंभली, थंभियो, थंभी, थांवलियो, थांवली, थांवलो, थांवियो, थांभलियो, थांभली, थांभलो, थांभियो।

मह०—थंव, थंवीड़, थंभ, थंभीड़, थांव, थांवड़, थांभ, थांभड़, थांग।

थंभ-सं०पु० [सं० स्तम्भ] १ अहंकार (जैन) २ मान (जैन)

३ देखो 'थंव' (२, ३) (रू.भे.) उ०— १ करै पांति चोसरी जरी तांणियां सिमांनां। उठै भूप आविया थंभ दुहुं हिंदुसथांनां।—सू.प्र.

उ०—२ मुरधर मांहि मेड़तिया, सेला भड़ आंबेर। चूंडा थंभ चितोड़ रा, बीदा बीकानेर।—अज्ञात

४ देखो 'थंवो' (मह., रू.भे.) उ०—नमो विगनांन गिनांन विखंभ। थंभै जिण आभ प्रथी विण थंभ।—ह.र.

थंभजमी-सं०पु०यौ० [सं० स्तम्भ+फा० जमीन] योद्धा, वीर, बहादुर। (मि० थंवजंग)

थंभण-वि० [सं० स्तम्भन] १ थामने वाला, रोकने वाला, ठहराने वाला। उ०—नमो नांम नीमवण, नमो नर सुर नीपावण। नमो पतंग घर नमो, गयण थंभा विन थंभण।—ह.र.

२ रक्षक, सहायक। उ०—जदिन 'अभै' जांणियो इळा थंभण उमरावां। गज समपण लख गांव, एम जांणै उमरावां।—सू.प्र.

सं०पु०—१ ठहराव, रुकावट. २ शरीर से निकलने वाली वस्तु (जैसे-मल, मूत्र, शुक्र इत्यादि) को रोकने वाली औषधि. ३ तंत्र के छः प्रयोगों में से एक।

[सं० स्तम्भनः] ४ कामदेव के पांच बाणों में से एक।

थंभणो, थंभवो-क्रि०अ० [सं० स्तम्भनम्] १ चलता न रहना, रुकना ठहरना। उ०—१ अपछरा हूर रथ आसमांण। वजि नोक वांण थंभियो विमांण।—सू.प्र.

उ०—२ सीळ सनाह मंत्रीसरइं, आवतां अरिदळ थंभ्या रे। तिहां पणि सांनिध मइं कीधी, वळि धरम कारज आरंभ्या रे।—म.कु.

२ जारी न रहना, बंद होना। उ०— ताहरां जंगळ रा अग हालि आवै, अगां रै गळै मांहे सोनै री माळा घालै। राग जाहरां थंभै ताहरां अग भाजि जावै।—सयणी री वात

३ उतावला न होना, धीरज धरना, ठहरा रहना।

क्रि०स०—१ टिकाना, रोकना, थामना। उ०—नमो विगनांन गिनान विखंभ। थंभै जिण आभ प्रथी विण थंभ।—ह.र.

२ रोकना, ठहराना, थामना। उ०—१ देखी ऊभा देवड़ी राजा थंभी वाग। जे मांणै दुणि नारि सूं, तिण री मोटो भाग।—ढो.मा.

उ०—२ जठै किरमाळ भटी जमरांण। भिड़ै गहलोत थंभै रम भांण।—सू.प्र.

थंभणहार, हारो (हारी), थंभणियो—वि०।

थंभवाड़णो, थंभवाड़वो, थंभवाणो, थंभवावो, थंभवावणो, थंभवाववो, थंभाड़णो, थंभाड़वो, थंभाणो, थंभावो, थंभावणो, थंभाववो—प्रे०रू०।

थंभिओड़ो, थंभियोड़ो, थंभ्योड़ो—भू०का०कृ०।

थंभीजणो, थंभीजवो—भाव वा०, कर्म वा०।

थांभणो, थांभवो, थांमणो, थांमवो—सक०रू०।

ठंभणो, ठंभवो, ठमणो, ठमवो, ठमणो, ठमवो, थंबणो, थंबवो, थमणो, थमवो—रू०भे०।

थंभली—१ देखो 'थंवो' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'थोवली' (रू.भे.)

थंभवाय-सं०पु०—घोड़े का एक रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के मुंह से लार व आंखों से पानी गिरता है (शा.हो.)

थंभाड़णो, थंभाड़वो—देखो 'थंभाणो, थंभावो' (रू.भे.)

थंभाड़णहार, हारो (हारी), थंभाड़णियो—वि०।

थंभाड़िओड़ो, थंभाड़ियोड़ो, थंभाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

थंभाड़ीजणो, थंभाड़ीजवो—कर्म वा०।

थंभणो, थंभवो—अक०रू०।

थंभाड़ियोड़ो—देखो 'थंभायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० थंभाड़ियोड़ी)

थंभाणो, थंभावो-क्रि०स० ['थंभणो' क्रिया का प्रे०रू०] १ ठहराना, रोकाना. २ बन्द कराना।

थंभाणहार, हारो (हारी), थंभाणियो—वि०।

थंभायोड़ो—भू०का०कृ०।

थंभाईजणो, थंभाईजवो—कर्म वा०।

थंभणो, थंभवो—अक०रू०।

ठंभाणो, ठंभावो, ठमाणो, ठमावो, थंभाड़णो, थंभाड़वो, थंभावणो, थंभाववो, थमाड़णो, थमाड़वो, थमाणो, थमावो, थमावणो, थमाववो—रू०भे०।

थंभायोड़ो-भू०का०कृ०—१ ठहराया हुआ, रोका हुआ. २ बन्द किया हुआ।

(स्त्री० थंभायोड़ी)

थंभावणो, थंभाववो—देखो 'थंभाणो, थंभावो' (रू.भे.)

थंभावणहार, हारो (हारी), थंभावणियो—वि०।

थंभाविओड़ो, थंभावियोड़ो, थंभाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

थंभावीजणो, थंभावीजवो—कर्म वा०।

थंभणो, थंभवो—अक०रू०।

थंभावियोड़ो—देखो 'थंभायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० थंभावियोड़ी)

थंभियोड़ो-भू०का०कृ०—१ रुका हुआ, ठहरा हुआ. २ बन्द हुवा

हुआ. ३ धीरज धरा हुआ. ४ टिका हुआ, रुका हुआ, थमा हुआ. ५ रोका हुआ, ठहराया हुआ।
(स्त्री० थंभियोड़ी)

थंभियौ—देखो 'थंभौ' (अल्पा., रू.भे.)

थंभी—देखो 'थंबौ' (अल्पा, रू.भे.)

थंभीड—देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.)

थंभौ—देखो 'थंबौ' (रू.भे.)

थ-सं०स्त्री०—१ सरस्वती. २ छाक।
सं०पु०—३ गणेश. ४ गरुड. ५ ऊपर का होठ (एका.)
सर्व०—देखो 'त' (२) (रू.भे.)

थइं, थइ—देखो 'थई' (रू.भे.)

थइआयत-सं०पु०—वह नौकर जो पान के बीड़े साथ लिये हुए अपने मालिक के संग रहे। उ०—अनेक गणनायक दंडनायक राजेस्वर तलवर माडंबीक कौटंबिक मंत्रि महामंत्रि गणक द्वौवारिक अमात्य चेटक पीठमरद्दक स्रीगरणा वयगरणा स्रेस्ठि सारथवाह दूत सिंधिपाळ प्रतिहार पुरोहित थइआयत सेनांनी।—व.स.
रू०भे०—थईआइतु, थईआयतु, थईयात, थईयायत, थईयार, थेईयात। (मि० थईघर)

थइणौ, थइबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.)
उ०—१ ग्यांनी घ्यांनी सब सुण लीजौ, वांटां चेतन रइया। सत लोक सोहं घरवासा, थिर थांणा थइया।—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—२ दूरि दळ देख जसवंत थइयौ दई। कोड़ लग पाखरया कटक आयौ कई।—हा.झा.

थइली—देखो 'थैली' (रू.भे.)

थई-सं०स्त्री० [सं० स्था] १ ढेर, राशि. २ देखो 'थेई' (रू.भे.)
[सं० स्थगी] ३ एक प्रकार की चमड़े की थैली. ४ पान रखने की डिबिया।

थईआइतु, थईआयतु—देखो 'थइआयत' (रू भे.) उ०—पाछइ थईआइतु, डावइ मंत्रीस्वर, जिमणइं पुरोहित, विहु पासै अंगोळयू तणी हारि इसउ आस्थांनमंडप।—व.स.

थईतथई—देखो 'थेईतथेई' (रू.भे.)

थईघर-सं०पु० [सं० स्थगीधर] राजा का ताम्बूल-वाहक।
उ०—छत्रधर नइ चमरधर वेह, थईघर नइ कुब्जक जेह। छट्ठउ तिहां दधिपरण राय, रथिइं बइठा रूडइ ठाइ।—नळ-दवदंती रास

थईयात, थईयायत, थईयार—देखो 'थइआयत' (रू.भे.)
उ०—राय कहै कोई काज ल्यौ, राखौ माहरौ मांन। थईयायत कांमौ लियौ, राय अपावै पांन।—स्रीपाळ रास

थक—देखो 'थोक (?) (रू.भे.) उ०—अनंत कोट ब्रह्मांड तणा इंद्र तन खोहण अत लोक तणा। सात पायाळ तणा इंद्र साखइ, घणू सुं थक मेलिया घणा।—महादेव पारवती री वेल

थकइ-अव्य०—से। उ०—करहउ कुड़इ मनि थकइ, पग राखीयउ जांण। ऊकरड़ी डोका चुगइ, अपस डंभायउ आंण।—ढो.मा.

थकणौ, थकबौ—देखो 'थाकणौ, थाकबौ' (रू.भे.) उ०—निज घर परा पार निरवांना, थकत वैखरी गांना।—स्री सुखरांमजी महाराज
थकणहार, हारौ (हारी), थकणियौ—वि०।
थकवाड़णौ, थकवाड़बौ, थकवाणौ, थकवाबौ, थकवावणौ, थकवावबौ—प्रे०रू०।
थकाड़णौ, थकाड़बौ, थकाणौ, थकाबौ, थकावणौ, थकावबौ—क्रि०स०।
थकिओड़ौ, थकियोड़ौ, थक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थकीजणौ, थकीजबौ—भाव वा०।

थकां-क्रि०वि० [सं० ष्ठा=स्थित-स्थितेसति अथवा ष्टक् प्रतिघाते=स्थविकत:] १ होते हुए, रहते हुए। उ०—१ राव मालदे बुरी कीवी जु राठौड़ डूंगरसी कन्है जेतारण उरी लीधी, जसवंत सरीखा वेटा थकां। तरै जसवंतजी कह्यौ—उण मां रावजी री. दोस कोई नहीं।—राव मालदे री वात
उ०—२ चुगइ चितारइ भी चुगइ, चुगि चुगि चित्तारेह। कुरझी वच्चा मेल्हिकड, दूरी थकां पाळेह।—ढो.मा.
उ०—३ सांई एहा भीचड़ा, मोलि महूंगे वासि। ज्यां आछन्नां दूरि भो, दूरि थकां भो पासि।—हा.झा.
२ हुए। उ०—१ जिकै घोड़ा सोने री सागत रा, रूपै री साजां में मंडिया छै। आंवळा पेच नांखियां थकां वावळा असवार चढ़िया छै।—पनां वीरमदे री वात
उ०—२ तरै जसवंत जी नूं रावळ सूधौ कह्यौ हाथी रांणेजी मंगाया, हूं रांणा रौ चाकर, हाथी उरा दै। तरै जसवंतजी कह्यौ—हूं कोई तेड़ण गयौ थौ? वैठां थकां आया क्यूंकर देंणी आवै। हिमैं जिकै लेसी तिकै मोनूं मार नै लेसी।—राव मालदे री वात
३ होकर। उ०—निवळा पड़िया तरै धोधां री ठकुराई मांहै मुकाती थकां रैहता।—नैणसी
४ ही। उ०—उठा सूं प्यादल थकां कांधै गंगाजळ री कावड़ लीवी, पगां में खड़ाऊ हाथ में आसौ, सरब परिगह सहित रंगनाथजी रै मंदिर पधारिया।—वां.दा.ख्यात
अव्य०—से, पर। उ०—१ जठै पनां बोली—अै तौ पांन कौ वीडौ छै, रखावस्यौ ही मन का मनोरथ हुवां थकां वधाई पावसौ हीज।—पनां वीरमदे री वात
उ०—२ भाव सत्य राख्यां थकां। भव भव में दुख पायौ रे।
उ०—३ भड़ां वीरां री नै कायरां री परीक्षा तौ जुध में त्रंवाळ नगारा त्रहत्रहीयां वाजियां थकां पड़ै।—वी स.टी.
रू०भे०—थकांई, थका, थिकां, थिका।

थकांई-क्रि०वि० [सं० स्थित+रा०प्र०ई या स्थविकत:+रा०प्र०ई] से ही। उ०—दूर थकांई देखतां, जद मैं लीना जांण। घर मुरधर रा धाडवी, आपड़ि उसरांण।—पा.प्र.

थकांण, थकांन—देखो 'थकावट' (रू.भे.)

थका—देखो 'थकां' (रू.भे.) उ०—१ उठा जोधपुर हुता राव कल्यांण-

मलजी कन्हां विदा करि नै कुंवरपदवी थका महाराजाधिराज महाराज श्री रायसिंघजी मिरजै इब्राहम री वांसी कियौ।—द.वि.

उ०—२ राजि सिमांणे थका हीज सिगळै देस मांहै पातिसाहजी किरोटी मेल्हिया हुता।—द.वि.

थकाड़णौ, थकाड़बौ—देखो 'थकाणौ, थकाबौ' (रू.भे.)

थकाड़णहार, हारौ (हारी), थकाड़णियौ—वि०।

थकाड़िओड़ौ, थकाड़ियोड़ौ, थकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थकाड़ीजणौ, थकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

थकणौ, थकबौ, थाकणौ, थाकबौ—अक०रू०।

थकाड़ियोड़ौ—देखो 'थकायोड़ौ' (भू.का.कृ.)
(स्त्री० थकाड़ियोड़ी)

थकाणौ, थकाबौ—क्रि०स०—१ शिथिल करना, श्रान्त करना, क्लान्त करना. २ मंदा कर देना, धीमा कर देना, ढीला कर देना. ३ हैरान करना, उबा देना. ४ मुग्ध करना, मोहित करना, लुभाना।

थकाणहार, हारौ (हारी), थकाणियौ—वि०।

थकवाड़णौ, थकवाड़बौ, थकवाणौ, थकवाबौ, थकवावणौ, थकवावबौ —प्रे०रू०।

थकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

थकाईजणौ, थकाईजबौ—कर्म वा०।

थकणौ, थकबौ, थाकणौ, थाकबौ—अक०रू०।

थकाड़णौ, थकाड़बौ, थकावणौ, थकावबौ—रू०भे०।

थकायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ शिथिल किया हुआ, श्रान्त किया हुआ, क्लान्त किया हुआ. २ ढीला किया हुआ, मंदा किया हुआ, धीमा कर दिया हुआ. ३ हैरान किया हुआ, उबा दिया हुआ. ४ मुग्ध किया हुआ, मोहित किया हुआ, लुभाया हुआ।
(स्त्री० थकायोड़ी)

थकार—सं०स्त्री०—'थ' अक्षर।

थकाव—सं०पु०—शिथिलता, थकावट।

थकावट—सं०स्त्री०—थकने का भाव, शिथिलता, हैरानी।

थकावणौ, थकावबौ—देखो 'थकाणौ, थकाबौ' (रू.भे.)

थकावणहार, हारौ (हारी), थकावणियौ—वि०।

थकाविओड़ौ, थकावियोड़ौ, थकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थकावीजणौ, थकावीजबौ—कर्म वा०।

थकणौ, थकबौ, थाकणौ, थाकबौ—अक०रू०।

थकावियोड़ौ—देखो 'थकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थकावियोड़ी)

थकित—वि० [सं० स्थकित:] १ थका हुआ, शिथिल। उ०—१ अनूप रूप दुति मन्मथ रूप। हालंत मथुर जिम थकित हंस।—सू.प्र.

२ आश्चर्ययुक्त, चकित, भौंचक्का।

थकियोड़ौ—देखो 'थाकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थकियोड़ी)

थकियौ—देखो 'थकौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मियौ पण दरवाजै पड़ियौ थकियौ रात भर गोर करै।—पदमसिंह री वात

थकी—प्रत्य० [सं० स्थित या स्थिकित:] से। उ०—१ थे सिद्धावउ सिध करउ, पूजउ थांकी आस। मत वीसारउ मन-थकी, उवा छै थांकी दास।—ढो.मा.

उ०—२ तुझ समरण थकी मुझ करम मूंकइ केरउ। सहस किरण सूरज ऊग्या किम रहइ अंधेरउ हो।—म.कु.

उ०—३ माजण सेती प्रीतड़ी, कीजइ धुरि थकी जोइ। कीजियइ तउ नवि छोडियइ, कंठइ प्रांण जां होइ।—स.कु.

उ०—४ इणै प्रस्तावि राजि नागोर थकी सिवांणै नूं कूच कियौ।
—द.वि.

वि०स्त्री० (पु० थकौ) १ लिए, हेतु। उ०—वाहरां हरदांन फेर अरज कीवी—तौ म्हांरी थकी कोठार में राखजो।
—पलक दरियाव री वात

२ वाली, की। उ०—मु वाहर को वांमै चढ़ियौ नहीं, नै आपरो रात पोहर १ पाछली थकी आबू निजीक उठै उतरियौ।—नैणसी

३ कारण। उ०—धरम थकी धन संपजइ रे, धरम थकी सुख होय। धरम थकी आरती टळइ रे, धरम समउ नहिं कोय।—स.कु.

४ हुई। उ०—१ सो रामदासजी आवता रै वरछी वाही सो इको घोड़ौ फूट नै वरछी जाती थकी धरती में रुपी।—रा.सा.सं.

उ०—२ लाहौर री पिसोर री वणी ठावी घणी वनात में लपेटी थकी, घणी कलावूत सूं गूंथी थकी।—रा.सा.सं.

५ होती हुई, रहती हुई। ज्यूं—पदमणी कुंवारी थकी आपरा मन मे पतिव्रत धरम पाळण रो व्रत कीधौ।

क्रि०वि०—पर। उ०—एतली वात कह्यां थकी।—वी.कु.

थकेलौ—देखो 'थाकेलौ' (रू.भे.) उ—थकेलोय ओजक आळस थोक। रह्या पड भील न राखिय रोक।—पा.प्र.

थकै—क्रि०वि० [सं० स्थित या स्थकित:] हुए। उ०—१ या सुणतां ही लोहछक होय पड़िये थकै ही मलप ले'र चाळुक्यराज हमीर कैमास री कांम्ह में चंपियां आपरा स्वांमी नूं भाटकियौ।—वं.भा.

उ०—२ हुवां मेवाड़ विग्रह जंगम हुवां, पलट सह ऊमरां हूंत परताप। कोपिया थकै काकोधरा काढ़िया, अभनमौ 'भीम' ओठांमियां आप।
—उमेदसिंह सीसोदिया री गीत

थकोड़ौ—देखो 'थाकोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थकोड़ी)

थकौ—वि० [सं० स्थित या स्थिकित:] (स्त्री० थकी) १ होता हुआ, रहता हुआ। उ०—१ दीआ मणि मंदिरे कातिग दीपक, सुत्री समाणियां माहि सुख। भीतर थका बाहिर इम भासै, मनि लाजती सुहाग मुख।—वेलि.

उ०—२ पण इतरी फौज ऊपरै निसंक थकौ तोरण माथै वींद जावै ज्यूं माहरौ पति निसंक जाय रह्यौ छै।—वी.स.टी.

उ०—३ इयां ठाकुरै राजा भगवंतदास, राजा गोपाळदास, राव भोज कुंवरपदै थको, राज स्री सिंगार कुंवरपदै थको, राव जगमाल पंवार वीजा ही असवार पनरह भला भला वासै हुया।—द.वि.

२ हुवा हुआ। उ०—१ अर गुजरात री अधीस विकळ थकौ परिवार सूं चंद्रहास लेतौ ही आगै आय पड़ियौ।—वं.भा.

३ हुआ। उ०—सहु भूत प्रेत ग्रह हूं सभा, सुपोत्रे हूं धरमसी सही। देखिज्यौ दांन दीधौ थकौ, नेट कठै निस्फळ नहीं।—ध.व ग्रं.

४ लिए, वास्ते, निमित्त। ज्यूं—औ थारै थकौ है।

५ समान, तुल्य। उ०—दांन थकौ नह दूसरौ, औखद नह अदभूत। हेक थकौ सारा हरै, महारोग मजबूत।—बां.दा.

६ वाला, का। ज्यूं—दिन पौहर अेक पाछलौ थकौ रह्यौ तद उठै आइया।

७ कारण। ज्यूं—अपांनै धरम थकौ धन सूंपणौ चाहिजे, धरम थकौ सुख व्हे है।

क्रि०वि०—१ ही। उ०—१ दांन थकौ नह दूसरौ, औखद नह अदभूत। हेक थकौ सारा हरै, महारोग मजबूत।—बां.दा.

उ०—२ तद अेक आथूणी कांनी अळगौ थकौ अेक भाखर ऊपर अगन बळती री चांनणौ दीठौ।—रीसाळू री वात

२ होकर। उ०—१ उण कह्यौ—'तूं गुजरात रै पातसाह सूं मेळ मत करै। म्हारै कांम अरथ म्हारौ थकौ रहै।—नैणसी

उ०—२ एक दिन रै समाजोग वींझरौ वहिन रै प्रांहुणौ थकौ गयौ हुतौ सू कोटड़ी मांहै डेरौ दियौ।—वींझरै अहीर री वात

३ (गुप्त) रूप से। उ०—तिण नूं कह्यौ तूं पाछै छांनौ थकौ जा देख आव, कठै जाय आवै छै? तरै पाछै पाछै वांदरौ गयौ।

—सोजत रै मंडळ री वात

प्रत्य०—से। उ०—तिण हेते लसकर तुमैं, विदा करावौ साहि। सहस पंच राखौ नखैं, जो डर आंणौ मन मांहि। इम सुणि कहइ अच्छक थकौ, कांम गहेलौ साह। कहौ कुण थैं हम डरइं, हम सूं जगत डराय।—प.च.चौ.

अल्पा०—थकियौ, थक्यौ।

थक्कणौ, थक्कबौ—देखो 'थाकणौ, थाकबौ' (रू.भे.)

उ०—'पता' समझ हिम्मत पखैं, जस कह थक्कै जीह। इधकै सूं सरसै इधक, दरसै दीहोदीह।—जैतदांन बारहठ

थक्कियोड़ौ—देखो 'थाकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थक्कियोड़ी)

थक्यौ—देखो 'थकौ' (अल्पा. रू.भे.)

थग-सं०पु०—१ हद, किनारा, पार। उ०—सुत फतमाल वंस रा सूरज, मांगण भड़ां वधारण मोद। थग आवै महरांण थागियां, सहजां थग ना'वै सीसोद।—मेघराज आढ़ौ

२ थाह. ३ ढेर, समूह।

थगणा-सं०स्त्री० [सं० स्थगणा] भूमि, पृथ्वी।

थगथगणौ, थगथगबौ-क्रि०अ०—लड़खडाना। उ०—मोटै गिर मग तोह, थगथगतौ आवण थटै। पिसळै मो पग तोह, डिगतौ राखै डोकरी।—रांमनाथ कवियौ

थड़—देखो 'थड़ौ' (मह., रू.भे.)

थड़क्क-सं०स्त्री०—थर्राने या कंपायमान होने का भाव।

उ०—कसणक्क झणक्क वड़क्क कड़ा। पिडवक्क थड़क्क दड़क्क पुड़ा।—पा.प्र.

थड़णौ, थड़बौ-क्रि०अ०—१ बहुत से मनुष्यों का इकट्ठा होना, समूह बनाना. २ देखो 'थुड़णौ, थुड़बौ' (रू.भे.) ३ धक्का देना।

उ०—करके तरवारग्रहे हिरणाकुस, मूढ़ निरोस निवार मुड़ै। सुत के बळ एक मुरार तणौ सज, थंभ विडार गिलार थड़ै।—भगतमाळ

थड़बड़-सं०स्त्री०—लड़खड़ाने की क्रिया या भाव।

थड़ियौ— देखो 'थड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

थड़ी-सं०स्त्री०—छोटे बच्चे के खड़े होने की क्रिया।

क्रि०प्र०—करणी।

रू०भे०—थिड़ी, थिरी।

थड़ौ-सं०पु० [सं० स्थल, स्थलकम्] १ मृत पुरुष के दाह-स्थान पर बनाया हुआ स्मृति भवन, छतरी या चबूतरा। उ०—थड़ै मसांण थयांह, आतम पद पूगां अलख। गंगा हाड गयांह, वीसरसां तद 'वाघ' नै।—आसौ बारहठ

मुहा०—थड़ौ सींचणौ—मृतक के दाह स्थान पर जाकर जल अथवा दूध का अभिसिंचन करना।

२ बैठने की जगह, बैठक ३ दूकान की गद्दी. ४ ऊँट के चारजामे के साथ लगी हुई गद्दी।

रू०भे०—थडउ।

मह०—थड़।

अल्पा०—थड़ियौ।

थच्च-सं०स्त्री० अनु०—ध्वनि विशेष। उ०—हाजरियौ काती महीना रा कुत्ता ज्यूं लपक्यौ पण नजीक आवतां ईज रंभा उण रा मूंडा पर थच्च करनै थूक दियौ।—रातवासौ

थट-सं०पु० [सं० स्थात] १ ढेर, राशि। उ०—हणै पसू तिण खिण हुए, (चे) हिय दया री हांण। थाळी मांह मसांण थट, गिलही छोड गिलांन।—बां.दा.

रू०भे०—थट्ट।

२ देखो 'थाट' (रू.भे.) उ०—१ दमगळ रवि थांभै वाग दीठ। रिम थटां दियौ खग झटां रीठ।—सू.प्र.

उ०—२ इम गढ़ निकट विकट थट आया। छपन कोड़ि जांणै घण छाया।—सू.प्र.

उ०—३ थट नाथ फबै बळ पूर थाट। परताप चौगुणै 'अजण' पाट।

—सू.प्र.

यौ०—थट-पति।

थटक, थटक्क—देखो 'थाट' (रू.भे.) उ०—सुणै दीधा दाद रे थटक्कां भड़ां लीधा साथ, पीधा चंडी स्वाद रै गटक्का स्रोण पूत। जगन्नाथ भात सीधा आदरै अटक्का ज्यूं ही, वाधरै घटक्का कीधा वटक्का 'बळूंत'।—दुरगादत्त बारहठ

थटणौ, थटबौ—क्रि०अ०—१ शोभित होना, शोभायमान होना।

उ०—१ नाथ क्रपा सु मांन नृप, जांणी सरब जहांन। भुजदंड थारौ भूपती, थटियौ हींदूथांन।—मोडजी आढ़ौ

उ०—२ बजै त्रंबक धौंसर बजै, नोबति सबद निराट। मदमत खंभू ठांण मय, थटै गयंदां थाट।—बगसीरांम प्रोहित री वात

२ सुसज्जित होना। उ०—वट्टां हले वजीर, विखम पहटां अविघट वट। राज द्वार आवियौ, थटै 'वगतेस' वीर थट।—सू.प्र.

३ तैयार रहना या होना, कटिबद्ध रहना, सन्नद्ध रहना।

उ०—१ थळ कतार लांघण थटै, लै जिहाज जळ अंत। भोळी-ढाळी बांणणी, वेटा धूत जणंत।—बां.दा.

उ०—२ कुळ भ्रात मंत्री सुत कटै, उर, क्रोध रांवण ऊपटै। मन समझ नहचै थटै मरणौ, सजै घण घमसांण।—र.रू.

४ इकट्ठा होना। उ०—थट ओ सरब तूझ कजि थटियौ। राजा ओव वीर इम रटियौ।—सू.प्र.

५ टटना। उ०—१ पग पग थटिया पांहुणा, खागां सहणी खांत। पीव परूसै पांत में, भूलै केम दुभांत।—वी.स.

उ०—२ अर मरणीक हुवा मच्छरीकां रा समूह वाट में आया सिपाहां नै वाढ़ता प्रछन्न प्रकोस्ट रै समीप थटिया।—वं.भा.

६ प्रकट होना, उत्पन्न होना। उ०— ज्वाळ झाळा थटी, छूटी लोयणां जटी, आछटी तेग दहुं ओड आसै। हिंयै बरछी थटी वेग 'गोपाळहर', 'मघाहर' आछटी तेग मार्थं।—पहाड़खां आढ़ौ

७ प्रविष्ट होना, घुसना। उ०—ज्वाळ झाळा थटी, छूटी लोयणां जटी, आछटी तेग दहुं ओट आसै। हियै बरछी थटी वेग 'गोपाळहर', 'मघाहर' आछटी तेग माथै।—पहाड़खां आढ़ौ

८ दाखिल होना। उ०—सावतो आऊग्रो राख खटेगौ भू-लोक सोभा मिटेगो ईढरां मांण देगौ खळां मीच। धूप-धारां वंमी चौहै कटेगौ ऊजळी धारां, बीजो 'पाळ' थटेगौ अमरां लोकां बीच।

—मोडजी आढ़ौ

९ हटना, मिटना। उ०—मिटै मोह छोळां थटै देवमाया। उठै थाट लै भूप सुग्रीव आया।—सू.प्र.

क्रि०स०—१० संग्रह करना, इकट्ठा करना। उ०—छाछ कवांण खुदंग सर, समसेरां ईरांन। आंणै अस ऐराक सूं, थटण घणौ धन थांन।—बां.दा.

११ पीछे हटाना, पराजित करना, खदेड़ना। उ०— थटै आयौ जैत थंटै, मेड़तै मुक्कांम मंडै।—सू.प्र.

थटणहार, हारौ (हारी), थटणियौ—वि०।

थटवाड़णौ, थटवाड़बौ, थटवाणौ, थटवाबौ, थटवावणौ, थटवावबौ, थटाड़णौ, थटाड़बौ, थटाणौ, थटाबौ, थटावणौ, थटावबौ—प्रे०रू०।

थटिग्रोड़ौ, थटियोड़ौ, थटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

थटीजणौ, थटीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

थट्टणौ, थट्टबौ—रू०भे०।

थटा-सं०स्त्री०—सेना। उ०—थटा सूर आया खड़ै, देस हक डक थियौ, हड़हड़ै काळका किलक वीरां हियौ।—नीवाज ठा. अमरसिंह रौ गीत

थटाथट—देखो 'थटोथट' (रू.भे.)

थटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ शोभायमान हुवा हुआ, शोभित।

२ सुसज्जित हुवा हुआ. ३ तैयार हुवा हुआ, कटिबद्ध, सन्नद्ध. ४ इकट्ठा हुवा हुआ. ५ डटा हुआ. ६ प्रकट हुवा हुआ, उत्पन्न हुवा हुआ. ७ प्रविष्ट हुवा हुआ, घुसा हुआ. ८ दाखिल हुवा हुआ. ९ हटा हुआ, मिटा हुआ. १० संग्रह किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ. ११ पीछे हटाया हुआ, पराजित किया हुआ, खदेड़ा हुआ।

(स्त्री० थटियोडी)

थटीलौ-वि० (स्त्री० थटीली) १ ठाट-बाट से रहने वाला.

२ मस्त, प्रसन्न।

थटैत, थटैल, थट्टैत, थट्टैल-सं०पु०—१ योद्धा, वीर।

२ ठाट-बाट से रहने वाला, ऐश्वर्यवान।

थटोथट-वि०—पूर्ण।

रू०भे०—थटाथट।

थट्ट-वि०—१ बहुत, अधिक। उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, सीय पड़ेसी थट्ट। सोहागिण घर आंगणइ, दोहागिण रइ घट्ट।—ढो.मा.

२ देखो 'थाट' (रू.भे.) उ०—गैदंतौ पाडा खुरी, आरण अचळ अथट्ट। भूंडण जाणै सूं भू-भलौ, थोभै अरियां थट्ट।—हा.झा.

थट्टणौ, थट्टबौ—देखो 'थटणौ, थटबौ' (रू.भे.) उ०—लोही खाळ पूर-पट्टां हजारां वैणनै लागा, थटै रंभां हजारां गैण नै लागा थाट। रूकां झट हजारां दैण नै लागा काळ रूपी, लागा टूक हूंण नै हजारां जंगी लाट।—गिरवरदांन कवियौ

थट्टौ—देखो 'थाट' (रू.भे.) उ०—हयवर गयवर हींसता, गौ महिसी थट्टा।—व.व.ग्रं.

(स्त्री० थट्टियोड़ी)

थट्टियोड़ौ—देखो 'थटियोड़ौ' (रू.भे.)

थड—देखो 'थड्डौ' (मह., रू.भे.)

थडउ—देखो 'थड़ौ' (रू.भे.) (उ.र.)

थडियौ—देखो 'थड्डौ' (अल्पा., रू.भे.)

थडौ—देखो 'थड्डौ' (रू.भे.)

थड्ड—देखो 'थड्डौ' (मह., रू.भे.)

थड्डौ-सं०पु०—धक्का, आघात, टक्कर।

रू०भे०—थडौ।

अल्पा०—थडियौ।

मह०—थड, थड्ड।

थड़ंकणौ, थड़कबौ, थड़कणौ, थड़कबौ-क्रि०स०—१ संहार करना, मारना, गिराना। उ०—मेरगर जसा चळ चळ थया, अचळ मह गरड़ भार थरं थड़ंकै गजगाह।

२ धक्का देना।

थड़णौ, थड़बौ—रू०भे०

थड़कियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ, गिराया हुआ. २ धक्का दिया हुआ।
(स्त्री० थड़कियोड़ी)

थड़णौ, थड़बौ—देखो 'थड़कणौ, थड़कबौ' (रू.भे.)

थड़ियोड़ौ—देखो 'थड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थड़कियोड़ी)

थण-सं०पु० [सं० स्तन] १ स्त्रियों व मादा पशुओं का वह स्थान जहां से बच्चे दूध पीते हैं, स्तन, कुच।
उ०—सूघी सींघणियां च्यारू थण सोधै। विमती विणजारण कारण परबोधै।—ऊ.का.
अल्पा०—थणैलो।
२ पुरुषों के वक्षस्थल का स्तन के आकार का चिन्ह।
उ०—सु कनै भळकी पड़ियौ थौ तिको झाल नै लाखै सोळंकी राज नूं चूंक लियौ, सु राज रै थण रै लाग गयौ, सु वात करतां राज सोळंकी रौ हंस राजा उड गयौ।—नैणसी
३ स्तन मे निकलने वाला दूध। उ०—पूत महादुख पाळियौ, वय खोवण थण पाय। अेम न जांण्यौ आवही, जांमण दूध लजाय।
—वी.स.
रू०भे०—थन, थांन।
अल्पा०—थणचौ।

थणअंतर-सं०पु०—हृदय (डि.को.)

थणकढ़-सं०पु० [सं० स्तन+कर्ष] स्तन से निकला हुआ ताजा दूध, धारोष्ण। उ०—ग्यारह हर्स डंड करि अवगाढौ। थणकढ़ पियै दोय मण थाढ़ौ।—सू.प्र.

थणचौ—देखो 'थण' (अल्पा., रू.भे.)

थणिय-वि० [सं० स्तनित] स्तन का (जैन)

थणिय-सद्द-सं०पु० [सं० स्तनित-शब्द] अत्यधिक रति सुख में उत्पन्न होने वाला शब्द (जैन)

थणी-सं०स्त्री०—१ स्तन के आकार की लम्बी मांसल पिण्डी जो बकरी के गले में लटकती है। ये दो होती हैं. २ हाथियों के कान के पास थन के आकार का निकला हुआ मांस का अंकुर (ऐब) ३ घोड़े की लिंगेन्द्रिय में थन के आकार का लटकता हुआ मांस।

थणैलो—देखो 'थण' (१) (अल्पा., रू.भे.) (शेखावाटी)

थणौ, थबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.) उ०—१ माळव-देस विखोड़िया, मारू किया बखांण। मारू सोहागिण थई, सुंदरि सगुण सुजांण।—ढो.मा.
उ०—२ प्रथीराज संभरकुळ दळपत, थयौ जिकण कुळ भीम वड़े थत। वाहरियै गढ़राज निृपांवर, कंवर थयौ जिण रै घर केहर।
—केहर प्रकास

थत-सं०पु० [सं० स्थिति] वैभव, ठाट। उ०—प्रथीराज संभरकुळ दळपत, थयौ जिकण कुळ भीम वड़े थत।—केहर प्रकास

थताथेइ—देखो 'ताताथेई' (रू.भे.) उ०—मुख आगै ऊभी रहै देवी रे, करती नित थताथेई रे।—जयवांणी

थथोपणौ, थथोपबौ-क्रि०स०—१ धैर्य देना, धीरज बंधाना।
उ०—इतरी कह म्होकमसिंघ नूं थथोपियौ।
—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री वात
२ शान्त्वना देना, ढाढ़स बंधाना।

थथोपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धैर्य दिया हुआ, धीरज बंधाया हुआ.
२ शान्त्वना दिया हुआ, ढाढ़स बंधाया हुआ।
(स्त्री० थथोपियोड़ी)

थथोबावाज, थथोबेवाज-वि०यौ०—फुसलाने वाला, चकमा देने वाला, धोका देने वाला।

थथोबौ-सं०पु०—१ झूठा विश्वास, धोखा, झांसा। उ०—सो है बीजा कुळ री एक ही बाळक है नै एक ही जुध सारू ऊससै है सो इण नै थूं कोई तरै भोळौ दे'र, थथोबौ वा पोटाय नै अबार जुध न करै, इण तरै सूं भुलाव सो इण रौ वंस रहै, नहीं तौ औ सूरवीर बाळक जुध सारू रुकै नहीं।—वी.स.टी.
क्रि०प्र०—खाणौ, देणौ।
२ ढाढ़स, धैर्य, आश्वासन, शान्त्वना।
क्रि०प्र०—देणौ।
रू०भे०—तत्तोथबौ।

थद्ध-वि० [सं० स्तब्ध] १ अहंकारयुक्त, अहंकारी (जैन)
२ रोका हुआ।

थन्न—देखो 'थांन' (रू.भे.) उ०—देवी बम्मरे डुंगरे रन्न वन्ने, देवी थंबड़े लोवड़े थन्न थन्ने।—देवि.

थप-उथप—देखो 'थाप-उथाप' (रू.भे.) उ०—वडम सूर ताळा विळंद, पह थप-उथप प्रमांण। वाजी मुरधर देस री, तूझ भुजां सुरतांण।
—नीवाज ठा. सुरतांणसिंह रौ दूहौ

थपकणौ, थपकबौ—१ देखो 'थपकाणौ, थपकावौ' (रू.भे.)
२ देखो 'थापणौ, थापबौ' (रू.भे.)
थपकणहार, हारौ (हारी), थपकणियौ—वि०।
थपकवाड़णौ, थपकवाड़बौ, थपकवाणौ, थपकवाबौ, थपकवावणौ थपकवावबौ—प्रे०रू०।
थपकिओड़ौ, थपकियोड़ौ, थपक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थपकीजणौ, थपकीजबौ—कर्म वा०।

थपकाड़णौ, थपकाड़बौ—देखो 'थपकाणौ, थपकावौ' (रू.भे.)
थपकाड़णहार, हारौ (हारी), थपकाड़णियौ—वि०।
थपकाड़िओड़ौ, थपकाड़ियोड़ौ, थपकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थपकाड़ीजणौ, थपकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

थपकाड़ियोड़ौ—देखो 'थपकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थपकाड़ियोड़ी)

थपकाणौ, थपकावौ-क्रि०स०—१ आराम पहुँचाने के लिये शरीर पर धीरे-धीरे हाथ मारना, धीरे-धीरे ठोंकना. २ सहलाना, पुचकारना. ३ दिलासा देना, ढाढ़स देना।

थपकाणहार, हारौ (हारी), थपकाणियौ—वि०।

थपकवाड़णौ, थपकवाड़वौ, थपकवाणौ, थपकवावौ, थपकवावणौ, थपकवाववौ—प्रे०रू०।

थपकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

थपकाईजणौ, थपकाईजवौ—कर्म वा०।

थपकणौ, थपकवौ, थपकाड़णौ, थपकाड़वौ, थपकारणौ, थपकारवौ, थपकावणौ, थपकाववौ—रू०भे०।

थपकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ आराम पहुँचाने के लिये शरीर पर धीरे-धीरे हाथ मारा हुआ, ठोंका हुआ. २ सहलाया हुआ, पुचकारा हुआ. ३ दिलासा दिया हुआ, ढाढ़स बंधाया हुआ।

(स्त्री० थपकायोड़ी)

थपकारणौ, थपकारवौ—देखो 'थपकाणौ, थपकावौ' (रू.भे.)

उ०—फगत कंठक भणकतो, भींगर उडै चकारै। अळगं वाड़ां टोकरियां, नीदल थपकारै।—शक्तिदांन कवियौ

थपकारियोड़ौ—देखो 'थपकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थपकारियोड़ी)

थपकावणौ, थपकाववौ—देखो 'थपकाणौ, थपकावौ' (रू.भे.)

थपकावणहार, हारौ (हारी), थपकावणियौ—वि०।

थपकाविओड़ौ, थपकावियोड़ौ, थपकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थपकावीजणौ, थपकावीजवौ—कर्म वा०।

थपकावियोड़ौ—देखो 'थपकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थपकावियोड़ी)

थपकियोड़ौ—१ देखो 'थपकायोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थपकियोड़ी)

थपकियौ-सं०पु०— एक प्रकार की रोटी (शेखावाटी)

२ मिट्टी के बर्तन वाला, कुम्हार।

रू०भे०—थपथपियौ।

थपकौ—देखो 'थापौ' (रू.भे.)

थपड़—देखो 'थप्पड़' (रू.भे.)

थपड़ी-सं०स्त्री०—१ दोनों हथेलियों को एक दूसरी से जोर से टकरा कर ध्वनि उत्पन्न करने की क्रिया. २ ताली बजाने का शब्द, ताली।

थपणौ-वि०—स्थापन करने वाला, मुकर्रर करने वाला, प्रतिष्ठित करने वाला। उ०—वहै पागटा लगा भड यिता चहूँ ऐ वळै, रण रत्ता नत्ता ग्रद दट्ट गाजै। मुरधरा उथापण थपण आपह मता, 'छता' दीजै वरद जिता छाजै।—गुलजी आढ़ौ

सं०पु०—पत्थर, लकड़ी आदि का बना किसी वस्तु को पीटने का उपकरण, थपौ।

थपणौ, थपवौ-क्रि०अ०—१ स्थापित होना। ज्यूं—जोधपुर थपियौ जदी स्वामी चिड़ियानाथ राव जोधा नूं स्राप दियौ कै थारै राज में पांणी री दुमार रहसी अर एकांतरै काळ पड़सी।

२ मुकर्रर होना, निश्चित होना। ज्यूं—बाई री विवाह आकातीज मातै थपियौ। ३ देखो 'थापणौ, थापवौ' (रू.भे.)

उ०—१ कांन्ह उथपियौ रिड़मल थपियौ, या साची सहनांणी। बीकांणै राठोड़ां वगस्यौ, जाहर जग में जांणी।—राघवदास भादौ

उ०—२ कहि सिव सनकादं ध्रू प्रहळादं, अड़पत आद जेण जपै। सुक नारद व्यास जळ कहि जासं, थिर कर तासं दास थपै।—र.ज.प्र.

४ देखो 'थापलणौ, थापलवौ' (रू.भे.) उ०—चडै रीस चख चोळ, छिवै भोहो अणी मुछारां। खतम ऊपड़ै खाग, थपै कांधा तोखारां।

—पना वीरमदे री वात

थपणहार, हारौ (हारी), थपणियौ—वि०।

थपवाड़णौ, थपवाड़वौ, थपवाणौ, थपवावौ, थपवावणौ, थपवाववौ, थपाड़णौ, थपाड़वौ, थपाणौ, थपावौ, थपावणौ, थपाववौ—प्रे०रू०।

थपिओड़ौ, थपियोड़ौ, थप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थपीजणौ, थपीजवौ—भाव वा०, कर्म वा०।

थप्पणौ, थप्पवौ—रू०भे०।

थपथपियौ—देखो 'थपकियौ' (रू.भे.)

थपथपी—देखो 'थापी' (रू.भे.)

थपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ स्थापित हुवा हुआ. २ निश्चित हुवा हुआ, मुकर्रर हुवा हुआ. ३ देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)

४ देखो 'थापलियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थपियोड़ी)

थपेड़, थपेट-सं०स्त्री०—१ टक्कर, आघात। उ०—हाली नह भवि हळ खड़चा, फाड़चा प्रिथवी पेट। सूड़ निदांण कियां घणा, दीधी बळद थपेट।—स.कु.

२ देखो 'थप्पड़' (रू.भे.)

थपेटणौ, थपेटवौ-क्रि०स०—१ जोश दिलाने अथवा प्यार करने के लिये थपकी देना, पीठ ठोंकना, थापी देना। उ०—इसं मुणा भरड़ी ऊठ, पाव तणै पड़ियौ पगां। पीर थपेटी पूठ, ज्यूं मारूं जाय जीद नैं।

—पा प्र.

२ पीटना, मारना।

थपेटणहार, हारौ (हारी), थपेटणियौ—वि०।

थपेटिओड़ौ, थपेटियोड़ौ, थपेट्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थपेटीजणौ, थपेटीजवौ—कर्म वा०।

थपेटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (जोश दिलाने अथवा प्यार करने के लिये) थपकी दिया हुआ, पीठ ठोंका हुआ. २ पीटा हुआ, मारा हुआ।

(स्त्री० थपेटियोड़ी)

थप्पड़-सं०पु० (अनु०) १ हथेली से किया हुआ आघात, तमाचा, चोट।

क्रि०प्र०—कसणौ, देणौ, पड़णौ, मारणौ, लगाणौ, लागणौ।

२ एक वस्तु पर दूसरी वस्तु के बार बार वेग से पड़ने का आघात, धक्का।
रू०भे०—थपड़, थपेड़, थपेट।
थप्पणौ, थप्पबौ—देखो 'थपणौ, थपबौ' (रू.भे.)
उ०—१ जिग जांणि जुगतउ सिस्य जिणसिंघ, सूरि पाटइ थप्पिग्रौ। सइं हत्थि आचारिज्ज पद दे, सूरि मंत समप्पिग्रौ।—स.कु.
उ०—२ नहीं थिर देह न गेह न नेह, सही थिर थप्पहु रांम सनेह।
—ऊ.का.
थप्पियोड़ौ—देखो 'थपियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थप्पियोड़ी)
थप्पलणौ, थप्पलबौ—देखो 'थापलणौ, थापलबौ' (रू.भे.)
उ०—रव्वारां थप्पले, घग्घ पाकेट भयंकर। नेसां चखळक नयण, झाळ झागूंडां नीझर।—सू.प्र.
थप्पलियोड़ौ—देखो 'थापलियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थप्पलियोड़ी)
थप्पी—देखो 'थापी' (रू.भे.)
थबोळौ-सं०पु०—हिलोर, लहर, तरंग। उ०—दरियाव किसोयक छै. पाजां सूधौ भरियौ, थबोळा खाय छै।—पनां वीरमदे री वात
थमणौ, थमबौ—देखो 'थंभणौ, थंभबौ' (रू.भे.) उ०—सूनी कांकड री चानणी रात मे तरवारां चमकी, पळाक-पळाक अर घारिया रै टकराय नै कड़ंद-कड़ंद री आवाज हुई, झाड़ां पर बैठचोड़ा पंखेरू डरग्या अर विखणाद पवन ई थोड़ौ थमग्यौ।—रातवासौ
थमणहार, हारौ (हारी), थमणियौ—वि०।
थमवाड़णौ, थमवाड़बौ, थमवाणौ, थमवाबौ, थमवावणौ, थमवावबौ—प्रे०रू०।
थमाड़णौ, थमाड़बौ, थमाणौ, थमाबौ, थमावणौ, थमावबौ—क्रि०स०।
थमिग्रोड़ौ, थमियोड़ौ, थम्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थमीजणौ, थमीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
थमाड़णौ, थमाड़बौ—देखो 'थंभाणौ, थंभाबौ' (रू.भे.)
थमाड़णहार, हारौ (हारी), थमाड़णियौ—वि०।
थमाड़िग्रोड़ौ, थमाड़ियोड़ौ, थमाड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।
थमाड़ीजणौ, थमाड़ीजबौ—कर्म वा०।
थमणौ, थमबौ—अक०रू०।
थमाड़ियोड़ौ—देखो 'थंभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थमाड़ियोड़ी)
थमाणौ, थमाबौ—देखो 'थंभाणौ, थंभाबौ' (रू.भे.)
उ०—सुरसा असी जोजना डाव साहै। थमाऊ निवै जोजनां व्है अथाहै।—सू.प्र.
थमाणहार, हारौ (हारी), थमाणियौ—वि०।
थमायोड़ौ—भू०का०कृ०।
थमाईजणौ, थमाईजबौ—कर्म वा०।
थमणौ, थमबौ—अक०रू०।
थमायोड़ौ—देखो 'थंभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थमायोड़ी)
थमावणौ, थमावबौ—देखो 'थंभाणौ, थंभाबौ' (रू.भे.)
थमावणहार, हारौ (हारी), थमावणियौ—वि०।
थमाविग्रोड़ौ, थमावियोड़ौ, थमाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थमावीजणौ, थमावीजबौ—कर्म वा०।
थमणौ, थमबौ—अक०रू०।
थमावियोड़ौ—देखो 'थंभावियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थमावियोड़ी)
थमियोड़ौ—देखो 'थंभियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थमियोड़ी)
थय—देखो 'थे' (रू.भे.)
थयणौ, थयबौ-क्रि०अ०—होना। उ०—१ इण अवसर मत आळसै, ईसर आखै अेम। प्रांणी हररस प्रांमियां, जनम सफळ थयै जेम।
—ह.र.
उ०—२ सहर अजेंपुर जोधपुर, सोवै राख जवन्न। पूठ अकब्बर वाहरां, थयौ विवखधर मन्न।—रा.रू.
उ०—३ पिंगळ पूगळ आवियउ, देसे थयउ सुगाळ। तेणि न राखी सासरइ, अजे स मारू बाळ।—ढो.मा.
थयणहार, हारौ (हारी), थयणियौ—वि०।
थयोड़ौ—भू०का०कृ०।
थईजणौ, थईजबौ—भाव वा०।
थयोड़ौ-भू०का०कृ०—हुवा हुआ।
(स्त्री० थयोड़ी)
थर-सं०स्त्री० [सं० स्तर] १ खड़ी चुनाई में दो भागों को जोडने के लिये बीच में लगाया जाने वाला पदार्थ जिससे ऊपर का भाग स्थिर हो सके, परत, तह। उ०—सिद्धराव कारीगर नू पूछियौ, अ बीटी कांसूं तरै। कारीगर कह्यौ 'अ बीच थर हुसी' तरै राजा रै जमैखातरी हुई।—नैणसी
२ दूध अथवा पकाये हुए गर्म लेह पदार्थ के ठंडा होने पर उसके ऊपर जमने वाली तह, परत। उ०—प्राव्रट प्राव्रट री आवट मन मारै, थर नै पापां रा थर लेग्या लारै।—ऊ.का.
[सं० स्थल] ३ वाघ अथवा शेर की मांद, गुफा।
सं०पु०—४ स्थान, जगह (जैन) ५ ढेर, समूह, राशि।
उ०—प्राव्रट प्राव्रट री आवट मन मारै। थर नै पापां रा थर लेग्या लारै।—ऊ.का.
६ कंपायमान होने की क्रिया या भाव। उ०—वायू आयू हर दिवरण वहरावै। थर थर थरकत थिर थिरचर थहरावै—ऊ.का.
रू०भे०—थरकण, थरकन।

यौ०—थरत्थर, थरथर।

अल्पा०—थरकी।

७ देखो 'थिर' (रू.भे.) उ०—'माल' दलीस तणी धड़ मोड़े, लोड़े जण बावन गढ लीध। 'ऊदे' 'संग' उर साह अमावे, कमधज वेद पंथ थर कीध।—महाराजा मांनसिंह री गीत

थरक-सं०स्त्री०—१ भय, डर। उ०—अरिराज थरक मांने अमत, तप ग्रहराज तराज री। इण राज जोड़ न राज अनि, राज एम जस-राज री।—सू.प्र.

२ कँपकंपी, थर्राहट. ३ देखो 'थिरक' (रू.भे.)

वि०—कंपायमान, कंपित। उ०—मिळिया सुराघव लिखमणां, अत कपी पोरस ऊफणं। सुग्रीव अड आकास सीरख, थरक गिर थहरं।

—र.रू.

रू०भे०—थरकण, थरकन।

थरकण—१ देखो 'थर' (रू.भे.) २ देखो 'थरक' (रू.भे.)

थरकणौ, थरकबौ-क्रि०अ०—१ डर से कांपना, कंपायमान होना, भयभीत होना। उ०—१ हलकारां दहुंवे दळां, दीनो खबर सिताब। हेत घणी चित हरखियो, उर थरकियो निवाब।—रा.रू.

उ०—२ वायू आयू हर विवरण वहरावे। थर थर थरकत थिर थिरचर थहरावे।—ऊ.का.

उ०—३ उलकापात हुवौ वळी, थरके अहिपति तांम।—वि.कु.

२ शोभायमान होना, शोभित होना। उ०—सेस सारंग सदन, सहत न सके सरक। रींझ राकेस नभ, थरक रहियो।—हुकमीचंद खिड़ियो

३ देखो 'थिरकणौ, थिरकबौ' (रू.भे.)

थरक्कणौ, थरक्कबौ—रू०भे०।

थरकन—१ देखो 'थर' (रू.भे.) २ देखो 'थरक' (रू.भे.)

थरकाड़णौ, थरकाड़बौ—देखो 'थरकाणौ, थरकाबौ' (रू.भे.)

थरकाड़णहार, हारौ (हारी), थरकाड़णियौ—वि०।

थरकाड़िओड़ौ, थरकाड़ियोड़ौ, थरकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थरकाड़ीजणौ, थरकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

थरकणौ, थरकबौ—अक०रू०।

थरक्कणौ, थरक्कबौ—रू०भे०।

थरकाड़ियोड़ौ—देखो 'थरकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थरकाड़ियोड़ी)

थरकाणौ, थरकाबौ-क्रि०स०—१ गिराना, पटकना।

मुहा०—बात थरकाणी—असत्य बात कहना, डींग मारना।

२ स्थापित करना। उ०—मुखमल री सवदु पाथरी माहे। पाथरियउ रेसम री पाट। कळ पदम करि चहु किनारे, थरकाई वेहां कर थाट।—महादेव पारवती री वेल

थरकाणहार, हारौ (हारी), थरकाणियौ—वि०।

थरकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

थरकाईजणौ, थरकाईजबौ—कर्म वा०।

थरकणौ, थरकबौ—अक०रू०।

थरकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ गिराया हुआ, पटका हुआ. २ स्थापित किया हुआ।

(स्त्री० थरकायोड़ी)

थरकावणौ, थरकावबौ—देखो 'थरकाणौ, थरकाबौ' (रू.भे.)

थरकावणहार, हारौ (हारी), थरकावणियौ—वि०।

थरकाविओड़ौ, थरकावियोड़ौ, थरकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थरकावीजणौ, थरकावीजबौ—कर्म वा०।

थरकणौ, थरकबौ—अक०रू०।

थरकावियोड़ौ—देखो 'थरकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थरकावियोड़ी)

थरकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भयभीत हुवा हुआ, कांपा हुआ. २ शोभित हुवा हुआ. ३ देखो 'थिरकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थरकियोड़ी)

थरकी—देखो 'थर' (अल्पा., रू.भे.)

थरक्कणौ, थरक्कबौ—देखो 'थरकणौ, थरकबौ' (रू.भे.)

उ०—विजळां सिलहक्क जरक्क वहे। रथ थांभि अरक्क थरक्क रहे।—सू.प्र.

थरक्कियोड़ौ—देखो 'थरकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थरक्कियोड़ी)

थरणा-सं०पु० (बहु व०) हृदय, दिल। ज्यूं—उण रा सींगां नें देख नें थरणा कांपे है।

थरत्थरणौ, थरत्थरबौ—देखो 'थरथरणौ, थरथरबौ' (रू.भे.)

थरत्थरियोड़ौ—देखो 'थरथरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थरत्थरियोड़ी)

थरत्थराणौ, थरत्थराबौ—१ देखो 'थरथरणौ, थरथरबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'थरथराणौ, थरथराबौ' (रू.भे.)

थरत्थरायोड़ौ—देखो 'थरथरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थरत्थरायोड़ी)

थरथपणौ, थरथपबौ—देखो 'थापणौ, थापबौ' (रू.भे.)

थरथपियोड़ौ—देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थरथपियोड़ी)

थरथरणौ, थरथरबौ-क्रि०अ०—कांपना, थर्राना।

थरत्थरणौ, थरत्थरबौ, थरथराणौ, थरथराबौ—रू०भे०।

थरथरा'ट-सं०स्त्री०—कांपने की क्रिया, कँपकँपी।

रू०भे०—थरथराहट, थरथरी, थररा'ट।

थरथराणौ, थरथराबौ-क्रि०स०—१ कंपायमान करना, कँपाना.

२ देखो 'थरथरणौ, थरथरबौ' (रू.भे.)

थरथरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कंपायमान किया हुआ, कँपाया हुआ.

२ देखो 'थरथरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थरथरायोड़ी)

थरथराहट, थरथरी—देखो 'थरथरा'ट' (रू.भे.)

थरथरियोड़ौ-भू०का०कृ०—कांपा हुआ।
(स्त्री० थरथरियोड़ी)
थरथापणौ, थरथापबौ—देखो 'थापणौ, थापवौ' (रू.भे.)
थरथापियोड़ौ—देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरथापियोड़ी)
थरपड़-सं०स्त्री०—लड़खड़ाने की क्रिया। उ०—ढळती रात में ठाकर री लास थरपड़ थरपड़ करती धरती पर डिगण लागी।—रातवासौ
थरपणौ, थरपवौ-क्रि०स०—१ रचना, बनाना, स्थापित करना।
उ०—गुर गोविंद वताइया जी, जिन थरप्या ब्रह्मंड। तीन लोक चौदह भवन जी, सपत दीप नव खंड।—रुकमणी मंगळ
२ देखो 'थापणौ, थापवौ' (रू.भे.) उ०—१ भैरूंजी पीवरियै रै मांय थरपूं देवळौ। हूं आवती नै जावती थांनै धोक सूं।—लो.गी.
उ०—२ राज वभीखण थरपियौ, पुर आंण फेराया।
—केसोदास गाडण
उ०—३ उठा री प्रजा ई नूं राजा थरपसी।—सिंघासण वत्तीसी
उ०—४ कोई पावूजी नै थरप्यौ थांरी सायवौ।—लो.गी.
थरपणहार, हारौ (हारी), थरपणियौ—वि०।
थरपवाड़णौ, थरपवाड़वौ, थरपवाणौ, थरपवावौ, थरपवावणौ, थरपवाववौ, थरपाड़णौ, थरपाड़वौ, थरपाणौ, थरपावौ, थरपावणौ, थरपाववौ—प्रे०रू०।
थरपिओड़ौ, थरपियोड़ौ, थरप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थरपीजणौ, थरपीजवौ—कर्म वा०।
थरपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ रचा हुआ, बनाया हुआ, स्थापित किया हुआ. २ देखो 'थापियोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरपियोड़ी)
थरप्पणौ, थरप्पवौ—देखो 'थापणौ, थापवौ' (रू.भे.)
उ०—पनरैसै पैंताळवैं, सुद वैसाख सुमेर। थावर बीज थरप्पियौ, बीकै बीकानेर।—द.दा.
थरप्पियोड़ौ—देखो 'थापियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरप्पियोड़ी)
थरमौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र। उ०—थरमौ थिरकयौ अंग परि, डगळी आवी दाय। ठाढ़ौ वाजै हो प्रिया, तो लीजै अंग लगाय।—व.स.
२ कुछ लंबाई लिये हुए लम्बा घेरा जो अंगूठी के ऊपर होता है और जिसमें लम्बा नगीना लगाया जाता है।
थररा'ट—देखो 'थरथरा'ट' (रू.भे.)
थरसळणौ, थरसळवौ-क्रि०अ०—१ कंपायमान होना, थर्राना।
उ०—धमस नाळ रजवोम, झळळ तप झंख कमळ झळ। धर थरसळ धर धरण, उतन दिस हलै 'अभैमल'।—सू.प्र.
२ भयभीत होना, कांपना।
थरसल्लणौ, थरसल्लवौ—रू०भे०।
थरसळियोडौ-भू०का०कृ०—१ कंपायमान हुवा हुआ, थर्राया हुआ।
२ भयभीत हुवा हुआ।
(स्त्री० थरसळियोडी)
थरसल्लणौ, थरसल्लवौ—देखो 'थरसळणौ, थरसळवौ' (रू.भे.)
थरसल्लियोड़ौ—देखो 'थरसळियोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरसल्लियोड़ी)
थरहर-सं०स्त्री०—भय के कारण होने वाली घबराहट, कँपकँपी।
उ०—थरहर खळ सहर अनर नर गजथट, गड़गड़ तबल सदळ गहर। तरण अकळ वळ कमळ भळळ तप, हर नर 'अभमल' 'गजन' हर।
—पहाड खां आढ़ौ
रू०भे०—थरहरी।
थरहरणौ, थरहरबौ-क्रि०अ०—१ भय के कारण घबराना, कांपना।
उ०—१ जिण री प्रथवी ऊपर आंण दांण फिरै। राव राजा सारा ही थरहरै।—पनां वीरमदे री वात
उ०—२ जितइं सुभट गाजइं, तेतइ कायर थरहरइ।—व.स.
२ हिलना, डोलना। उ०—१ कोई घुड़लां री टापां सूं धरती थरहरी।—लो.गी.
थरहराणौ, थरहरावौ—रू०भे०।
थरहराणौ, थरहरावौ-क्रि०स०—१ कंपायमान करना, कपाना।
२ देखो 'थरहरणौ, थरहरवौ' (रू.भे.)
थरहरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कंपायमान किया हुआ, कंपाया हुआ।
२ देखो 'थरहरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरहरायोड़ी)
थरहरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भय के कारण घबराया हुआ, कंपित।
२ हिला हुआ, कांपा हुआ, डोला हुआ।
(स्त्री० थरहरियोड़ी)
थरहरी—देखो 'थरहर' (रू.भे.)
थरावणौ, थराववौ—थरहराणौ, थरहरावौ' (रू.भे.)
थराविओड़ौ—देखो 'थरहरायोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थरावियोडी)
थरु, थरू-वि० [सं० स्थिर] अटल, स्थिर। उ०—१ जिण राघव जापियो, थरु धर नव निध थावत।—र.ज.प्र.
उ०—२ चढ़ै सिंह चंडी मधूकीट खंडी। खळ ओक खप्पी थरू दास थप्पी।—केहर प्रकास
उ०—३ जिण मुख जोवतां दुख प्राचत जावै। थरू आथ धर नव निध थावै।—र.ज.प्र.
उ०—४ सह तरा रूप कळ विरछ अखै सकळ, थरु दुत मेर सिखरां आथाघो।—र.ज.प्र.
थळ-सं०पु० [सं० स्थल] १ स्थान, जगह। उ०—१ कै 'सोनागिर' कै 'दुरंग', कै खीची 'मुकनेस'। अै जांणै छळ सांम रौ, जिण थळ रहै नरेस।—रा.रू.

थळेचो—देखो 'थळियो' (रू.भे.)
थळेरी—देखो 'थळगट' (रू.भे.)
थळेस्वरी-सं०स्त्री० [सं० स्थल+ईश्वरी] देवी, शक्ति।
थवक्क, थवक्को-सं०पु० [सं० स्तवक] समूह। उ०—तुंग पयोहर उल्लसइ सिंगार थवक्का। कुसुमवांणि निय अमियकुंभ किर थापणि मुक्का।—प्राचीन फागु संग्रह
थवणी-[सं० स्तवनिका, स्थापनिका] सुस्मृति, स्मृति-चिन्ह।
उ०—परिणीय आपी पंडुकुमरि आपणीय जि थवणी। सहीयर वळि एकति हुई पुत्तु जायउ रमणी।—पं.पं.च.
थवणौ, थवबौ-क्रि०अ०—होना।
थवियोड़ौ-भू०का०कृ०—हुवा हुआ।
(स्त्री० थवियोड़ी)
थविर-वि० [सं० स्थविर] १ बुड्ढा, वृद्ध।
२ परिपक्व बुद्धि वाला, स्थिर बुद्धि वाला. ३ स्थविर-कल्पी, साधु (जैन)
रू०भे०—थिवर, थीवर, थेर, थेवर।
थह, थहक-सं०स्त्री० [सं० स्था] सिंह, सूअर, रींछ आदि की मांद, कंदरा। उ०—१ घाल घणा घर पातळा, आयो थह में आप। सूतौ नाहर नींद सुख, पौहरौ दियै प्रताप।—बां.दा.
उ०—२ फिरतौ देख दिसूं दिस दोळा, अणडरतौ करतौ ओछाह। डाकरतौ आयो थह डारण, वीफरतौ फिरतौ वाराह।
—महादांन महडू
रू०भे०—थे, थेह, थैह।
थहण-उ०लि० [सं० स्था] स्थान, जगह। उ०—चहूं चक्क चल चलिय सेस चळचळिय सहस सिर। कमठ पीठ कळमळिय थहण दळमळिय सुचर थिर।—र.रू.
थहरणौ, थहरबौ-क्रि०अ०—१ ठहरना, टिकना, रुकना।
उ०—जस थहरै तो जीभ में, क्रिपा हूंत विधि कीध। मंहरै तौ म्रिगसींग में, पंठो बांन पसीध।—बां.दा.
२ दुर्बलता या भय से कांपना।
थहराणौ, थहराबौ-क्रि०स०—१ कांपना, थर्राना. २ ठहराना, टिकाना।
थहरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कांपा हुआ, थर्राया हुआ. २ ठहराया हुआ।
(स्त्री० थहरायोड़ी)
थहरावणौ, थहरावबौ—देखो 'थहराणौ, थहराबौ' (रू.भे.)
उ०—वायू आयू हर विवरण वहरावै। थर थर थरकत थिर थिरचर थहरावै।—ऊ.का.
थहरावियोड़ौ—देखो 'थहरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थहरावियोड़ी)
थहरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ठहरा हुआ, टिका हुआ, रुका हुआ.
२ कांपा हुआ, थर्राया हुआ।
(स्त्री० थहरियोड़ी)
थां-सर्व०—आप, तुम। उ०—१ बारठ केसरिसिंघ सूं, अक्खी 'सोनंग' साह। खत्रि सपूता चार री, थां हूंता निरवाह।—रा.रू.
उ०—२ रे मीत नचिंत हुवौ कप राजिंद, याद हरी नह आवै। तोरौ वीर विछंडै तीरां, थां गथ सो हिव थावै।—र.रू.
थांअळौ—देखो 'थांहरौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थांअळी)
थांण—देखो 'थांन' (रू.भे.) उ०—१ देवी गंद्रपांवास अरवद् गांमै। देवी थांण उडियांण समसांण ठांमै।—देवि.
उ०—२ मांण थांण परसण विय 'मोकळ', घसण फौज पड़ घण घणी। घणी चत्रंग वैसतां धारण, धारण चूको दिली धणी।
—महारांणा जगतसिंह वडा री गीत
उ०—३ थांण करै आखूं थड़थां, नह थण काती न्हाय। समर जिमा नव लख सगत, कंत उदार कहाय।—रेवंतसिंह भाटी
थांणगिद्धी-सं०स्त्री० [सं० स्त्यानगृद्धि] सोते सोते छः मास बीत जाने का भाव (जैन)
थांणथप—देखो 'थांणाथप' (रू.भे.)
थांणबंध—देखो 'थांणाबंध' (रू.भे.)
थांणाथप-वि०—एक ही स्थान पर अमिट रूप से रहने वाला।
सं०पु०—वह वृद्ध जैन साधु जो चलने-फिरने में असमर्थ हो तथा एक ही स्थान पर रहता हो।
रू०भे०—थांणथप।
थांणादार—देखो 'थांणेदार' (रू.भे.) उ०—जणी नाकै गोळकुंडा री थांणादार रहै। जिकण सूं भील पाल्वी अगंजियाई वहै।
—केहर प्रकास
थांणादारी—देखो 'थांणेदारी' (रू.भे.)
थांणाबंध-सं०पु० [सं० स्थानबंध] डिंगल का एक गीत छंद विशेष।
रू०भे०—थांणबंध।
थांणायत-सं०पु० [सं० स्थान+रा०प्र०आयत] १ चौकीदार।
उ०—१ सो वीकांण घेरा चै सांधै, वळ मेटियो जु हूता वांधै। केताई गांव थांणायत कोटां, लूटै देस किया सहलोटां।—रा.रू.
उ०—२ तद पूनियां रै थांणायत अरज कीवी—परगनो नयो दबियो छै।—मारवाड रा अमरावां री वारता
वि०—एक ही स्थान पर अमिट रूप से रहने वाला।
रू०भे०—थांणैत।
थांणु, थांणू-सर्व०—१ आपका, तुम्हारा. २ देखो 'थांणौ' (रू.भे.)
उ०—१ हां हो जीव दया धरम वेलड़ी, रोपी स्री जिनराय। जिन सासण थांणु जिहां, ऊगो अविचळ आय।—स.कु.
उ०—२ कान्ह नै भांग रिड़माल राजा कियो, पियो पय हाकड़ो समंद पांणू। वीक नै दियो वरदांन तै वीसहथ, थिर कियो दुरंग देमांण थांणू।—वालावक्ष वारहठ

[सं० स्थाणु] ३ महादेव, शिव. ४ सूखा वृक्ष।

थाणेत-सं०पु०—१ किसी स्थान का अधिपति. २ किसी चौकी या अड्डे का मालिक. ३ किसी स्थान का देवता.
४ देखो 'थांणायत' (रू.भे.)

थाणेदार, थाणैदार-सं०पु० [सं० स्थान+फा० दार] १ पुलिस स्टेशन का वह अधिकारी या प्रधान जो किसी स्थान पर शान्ति बनाये रखने और अपराध की छानबीन करने के लिये नियुक्त रहता है।
२ जकात का वह अधिकारी या चौकीदार जो आयात और निर्यात के माल पर कर (चुंगी) वसूल करता है।
रू०भे०—थांणादार।
अल्पा०—थांणेदारियो।

थाणेदारी-सं०स्त्री०—१ थानेदार का पद।
क्रि०प्र०—मिळणी।
२ थानेदार का कार्य।
क्रि०प्र०—करणी।
रू०भे०—थांणादारी।

थाणो-सं०पु० [सं० स्थान] १ वह स्थान जहां आसपास की रक्षा के लिये थोड़े से सिपाही आदि रहते हों, चौकी। उ०—१ बरात रा समाधांन पर आपरा सुभट सचिव रात्रि तत्काळ ही बूंदी आए अमल कीधो। जठै आपरो थांणो राखि पाछो ऊमर सूं जाए आसाढ़ सित्तरा नवमी बुधवार रा लग्न पर गोळवाळ री दो ही पुत्रियां री विवाह चाळुकराज रा दो ही कंवरां रै साथ कर दीधो।—वं.भा.
उ०—२ जड़ि ठांम ठांम थांणा जबर, बैठा मुगळ महाबळी। आसुरां सुरां प्रजळि अगनि, छोह श्रोह झळ ऊछळी।—सू.प्र.
२ वह स्थान जहां अपराधों की सूचना दी जाती है और कुछ सरकारी सिपाही रहते हैं, पुलिस स्टेशन, पुलिस की बड़ी चौकी.
३ टिकने या ठहरने का स्थान। उ०—थाटपति मेवाड़ थांणे, रचै निजरां दीघ रांणे।—सू.प्र.
४ स्थान। उ०—ग्यांनी घ्यांनी सब सुण लीजो, वांठां चेतन रहया। सत लोक सोहं घर वासा, थिर थांणा थइया।
—श्री हरिरांमजी महाराज
५ वह घेरा या गड्ढा जिसमें कोई पौधा लगा हो, आलवाल, थाल।
उ०—१ वल्ली तसु बीज भागवत वायो, महि थांणो प्रिथु दास मुख। मूळ ताल जड़ अरथ मंडहे, सुथिर करणी चढ़ि छांह सुख।
—वेलि.
उ०—२ इक थांणै रोपिया रे, इक आंबो एक बूळ। वाको रस नीको लगै रे, वाकी गागै सूळ।—मीरां
रू०भे०—थांवळो।
यौ०—तुळछी-थांणो।
६ समूह। उ०—पड़ियो गुरभाय सेस इळ ऊपर, सकत रांण सुत सांझी। थरकै माल वनचरां थांणा, मुख कुमळांणां मांझी।—र.रू.

७ एक प्रकार का सरकारी लगान।
क्रि०प्र०—देंणी, मांगणी।
सर्व० (स्त्री० थांणी) आपका, तुम्हारा।
रू०भे०—थांणु थांणु, थांनो।

थान-सं०पु० [सं० स्थान] १ किसी देवी-देवता का मंदिर अथवा चबूतरा।
उ०—१ जै काठड़ै थो भैरव काठड़ै थांनो रो थान। काठड़ै थो भैरव काठड़ै थांनी थापना।—लो.गी.
उ०—२ निमळ देह धारियां गगन मंडळ पर निरखै। थान देवांणु री झान पाया।—गिरनी वारठ
२ स्थान, जगह, ठौर, ठिकाना। उ०—सिद्ध सधी आरंभ सह, तुरमो तिण थान।—वि.कु.
३ कपड़े व गोटे आदि का निश्चित लम्बाई का पूरा टुकड़ा।
उ०—अभयसिंहजी नै मरम दियो, सारा टीको घोड़ा नजर रा दीन्हा, राजाधिराज बखतसिंहजी नागोर सूं टीका रा हाथी घोड़ा कपड़ै रा थान लेय सास नूं भेल्ही।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
४ देखो 'थण' (रू.भे.)
रू०भे०—थन, थांण।

थानअनाद-सं०पु०—देवालय।

थानक-सं०पु० [स्थानक] १ किसी देवी-देवता का चबूतरा या मंदिर, देवालय. २ स्थान, जगह। उ०—१ मन माळी गुण फूलड़ा, नित नित लेता थाग। अब उण थानक रैण दिन, दिस बिन रहूं उदास।
—अज्ञात
उ०—२ धाना रापन पूर धनेरां, थानक दासा थापै।—र.ज.प्र.
उ०—३ गंगा जिण थानक गई, सुणियो नीरथ सोय। तीरथ होय न गंग बिन, गुरु बिन बोध न होय।—बां.दा.
यौ०—थानकराव।
३ श्वेताम्बर जैनी साधुओं के ठहरने का स्थान। उ०—जयमलजी रा टोळा मांहि थी संवत् १८५२ रै आसरै गुमांनजी, दुरगदासजी, पेमजी, रतनजी आदि सोळै जणा नीकळ्या। थानक, निल्य, पिंड, फलाळ री पांणी वहिरणो आदि छोड़, नवो साधपणो चलायो, तिण सरधा तो बाहिज पुन री।—भि.द्र.
यौ०—थानकवासी।

थानकवळ-सं०पु० [सं० स्थान+वलि] पाताल।

थानकवासी-स०पु०यौ०—श्वेताम्बर जैन साधु।

थान-चंदावणो—विवाह की एक रस्म या प्रथा विशेष जिसमें बारात रवाना होते समय दूल्हा के घोड़े या पालकी पर चढ़ते हो माता उसे स्तन पान कराती है।

थानिक-सं०स्त्री०—१ राजधानी. २ देखो 'थानक' (रू.भे.)
उ०—१ इळ छळि थाट वडा आफाळै, थानिक मोटै वात थयो। जिम दीजै तिम सेलं दीधी, लीजै जिम तिम राड़ लयो।
—राठौड़ सेखा सूजावत गांगा बाघावत री गीत

उ०—२ चित समंद थांनिक 'चौंडरै' । कमधज्ज राजस इम करै ।
—सू.प्र.

थांपण—देखो 'थापरा' (रू.भे.) उ०—१ कूड़ा कथन रखै करौ, सूंस कूडी साख । थांपण मोसौ मत करै, रिद्धि पारकी राख ।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ चाडी खाधी चउतरइ, कीधउ थांपण मोसउ । कुगुरु कुदेव कुधरम नउ, भलउ ग्रांण्यउ भरोसउ ।—स.कु.

वि०—स्थापित करने वाला । उ०—दूजो सवळां उथांपरा, तीजो निवळां थांपण ।—रा.सा.स.

थांपणि—देखो 'थापरा' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—करि रखवाळू थांपणि तणुं ग्रजीउ फिरेवुं ग्रम्हि वनि घणुं । नमी हिडंवा पाछी जाइ वापराजि घरिणयांणी थाइ ।—पं.पं.च.

थांब, थांबड़—देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.)

थांबणौ, थांबबौ—देखो 'थांभरणौ, थांभबौ' (रू.भे.)

उ०—ढोलाजी करहलो थांब्यो रे, फंवयो रेतूड़ रै मांय । काडचो डावा पग री ताकळी, कोई पूग्यो छिन रै मांय ।—लो.गी.

थांबलियौ—देखो 'थंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थांबली-सं०स्त्री०—देखो 'थंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थांबलौ—देखो 'थंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थांबियोड़ौ—देखो 'थांभियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थांबियोड़ी)

थांबियौ— देखो 'थंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थांबीड़—देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.)

थांबौ—देखो 'थंबौ' (रू.भे.)

थांभ—१ देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.) २ देखो 'तोरणथांभ' (रू.भे.)

थांभउ—देखो 'थंबौ' (रू.भे.) (उ.र.)

थांभणौ, थांभबौ-क्रि०स०—१ रोकना, ठहराना । उ०—१ जुध भागां थांभै जिकौ, गढ़ तजियां नहि गत्त । गढ़ नूं म्है बांध्यो गळै, ग्रावो सो ग्रसपत्त ।—बां.दा.

उ०—२ सोरठ थू सुरनार, सिर सोनै री बेहड़ी । पग थांभो पिरिण-हार, वातां वूझै बींझरो ।—बीझा सोरठ री वात

२ जारी न रखना, बन्द करना. ३ धैर्य रखना, शांत होना ।

उ०—भरमल री डील तौ विरह सूं पसीज गयौ, बहुत उदास हुई, नयरणां सूं प्रवाह छूटियो, नीठ सी जीव थांभियौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

४ किसी गिरती हुई वस्तु को ग्रधर मे ठहरा लेना, पकड़ लेना ।

उ०—सखी ग्रमीरणौ साहिबो, बोह जूझै वळवंड । सो थांभै भुजडंड सूं, खडहडतौ ब्रहमंड ।—बां.दा.

थांभणहार, हारौ (हारी), थांभणियौ—वि० ।

थंभवाड़णौ, थंभवाड़बौ, थंभवाणौ, थंभवावौ, थंभवावणौ, थंभवाववौ, थंभाड़णौ, थंभाड़बौ, थंभाणौ, थंभाबौ, थंभावणौ, थंभावबौ—प्रे०रू० ।

थांभिग्रोड़ौ, थांभियोड़ौ, थांम्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

थांभीजणौ, थांभीजबौ—कर्म वा० ।

थंबणौ, थंबबौ, थंभणौ, थंभबौ, थमणौ थमबौ—ग्रक०रू० ।

ठांबणौ, ठांबबौ, ठांभणौ, ठांभबौ, ठांमणौ, ठांमबौ, थांबणौ, थांबबौ, थांमणौ, थांमबौ—रू०भे० ।

थांभलियौ—देखो 'थंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थांभली-सं०स्त्री०—देखो 'थंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थांभलौ—देखो 'थंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थांभायत-सं०पु०—कुल या वंश की शाखा या उप-शाखा का प्रमुख व्यक्ति ग्रथवा पूर्वज ।

थांभियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ रोका हुग्रा, ठहराया हुग्रा. २ बन्द किया हुग्रा. ३ किसी गिरती हुई वस्तु को ग्रधर में रोका हुग्रा, ग्रधर में पकडा हुग्रा. ४ धैर्य रखा हुग्रा, शान्त ।
(स्त्री० थांभियोडी)

थांभियौ—देखो 'थंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

थांभीड़—देखो 'थंबौ' (मह., रू.भे.)

थांभु, थांभौ-सं०पु०—१ वंश ग्रथवा कुल की शाखा या उपशाखा. २ देखो 'थंबौ' (रू.भे.) उ०—१ तिहां नु रे थांभु तेह नीखीउ तेणइ ठाइ । कुतूहळ कीधू तेणइ बळवंतइ ए ।—नळ-दवदंती रास

उ०—२ कठठे हठी पाकेटूं की कतार । सो कंसे बगलूं के उरळे गिर सिखरूं से थूंभा । जूबलूं के घाट देवळूं के थांभा ।—सू.प्र.

उ०—३ ग्रर जगमाल मालावत घोड़ी दावियो सु थांभौ खिसियो नहीं ।—नैणसी

थांभ—देखो 'थंभौ' (मह. रू.भे.)

थांमणौ, थांमबौ—देखो 'थांभणौ, थांभबौ' (रू.भे.)

उ०—रथ तांम थांम देखंत रवि, उडै रीठ तरवारियां । घरण करै पार जरदां घटां, करदां छुरां कटारियां ।—सू.प्र.

थांमियोड़ौ—देखो 'थांभियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थांमियोड़ी)

थांम्हणौ, थांम्हबौ—देखो 'थांभणौ, थांभबौ' (रू.भे.)

थांम्हियोड़ौ—देखो 'थांभियोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थांम्हियोड़ी)

थां'ळौ, थांरउ, थां'रौ—देखो 'थांहरौ' (रू.भे.) उ०—१ राजि थांरउ रूप सकळ सुखदा ।—वि.कु.

उ०—२ ग्रै साथी हुसी कुंवर इतरी कही तद लोकै कही थां'री ऐसोहीज धीरज दीसै छै ।—चौबोली
(स्त्री० थां'ळी, थां'री)

थांवळौ—देखो 'थांणौ' (५) (रू.भे.)

थांहरौ-सर्व० (स्त्री० थांहरी) ग्रापका, तुम्हारा । उ० -१ थांहरी तौ सूरति जिनवर राजै छइ नीकी ।—वि.कु.

उ०—२ थांहरा छै ज्यूं थां दाई ग्रावै त्यूं करौ । मारी भावै राखौ ।
—द.वि.

उ०—३ ताहरां किरोटी तेड़ नै कह्यो—थांहरा आदमी गांवै मूको ज्यूं पइसा ल्यावै ।—नैणसी

था-सं०स्त्री०—१ गंगा. २ पृथ्वी. ३ द्युति. ४ मृदंग (एका.)

सर्व०—तुम । उ०—सांई ! तूं ज वडो धणी, था सू वडो न कोय। तू जेना सिर हत्थ दे, सो जग में वड होय ।—ह.र.

क्रि०अ० (बहु व०) एक शब्द जिससे भूतकाल मे होना सूचित होता है, राजस्थानी के 'थो' शब्द का बहुवचन, थे । उ०—सखी सु सज्जण आविया, हुंता मुझ्झ हियाह । सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह ।—ढो.मा.

प्रत्य०—करण और अपादान कारक का चिन्ह, तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिन्ह, से । उ०—१ सु सिरोही था नजीक घाटी छै तठै आय देवळ लखै घाटी विघाड़ रै वास्तै रोकी छै ।

—राव लाखै री वात

उ०—२ संवत १६७८ ब्रहांनपुर था छाट नै राव रतन रै वास वसियो ।—नैणसी

थाक-सं०स्त्री०—थकावट ।

थाकउ—देखो 'थाकौ' (रू.भे.) उ०—जइ भागउं तौ वाराहउं, जइ थाकउ तौ पार करउ घोडउ, जइ ठालउ तोइ कपूर तणउ दाबडउ, जइ जूनउं तोइ पाटू ।—व.स.

थाकड़ौ—देखो 'थाकौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—भूखा तिमिया थाकड़ा, राखीजै नेड़ाह । ढळिया हाथ न आवसी, 'गोगादे' घोड़ाह ।—गो.रू.

थाकणौ-वि० (स्त्री० थाकणी) थकने वाला, शिथिल पड़ने वाला ।

रू०भे०—थाकु ।

सं०पु०—रुकने या ठहरने की क्रिया, ठहराव । उ०—थांनिक थांनिक थाकणे, दीजइ जे मागइ । पंच वरण दयां भरी, वळि चालइ आगइ ।

—ऐ जै.का.स.

थाकणौ, थाकबौ-क्रि०अ०—१ शिथिल होना, श्रान्त होना, क्लान्त होना । उ०—ऊनाळा में लूण रा वण चमक'र आंख्यां नै पांणी रो धोखो देवै । तिरस्या हिरण्या पांणी देख'र दौड़ता रै'वै अर थाकर मर जावै ।—रातवासो

२ दुर्बल होना, कृश होना । उ०—दुनिया में सब रोगां री दवा है पण वै'म री ओखद कठैई कोयनी । थनै म्हारै थाकण रो वै'म व्हैग्यो है ।—रातवासो

३ काम करने योग्य न रहना, अशक्त होना, शक्तिहीन होना.

४ कम पड़ना, बाकी रहना । ज्यूं—व्याव मे रुपया दो हजार री जरूरत ही, पनरै सो तो है पण पांच सौ रुपया थाक रह्या है ।

५ निर्धन होना ज्यूं—कै'टो धणोडो घर थो पण अबै थाक ग्यो ।

६ हैरान होना, ऊब जाना । उ०—प्रगट खांप खांप रा एम दोहं वड रावत, ठौड़ ठौड़ राठौड़ घणा मुगळां खग धावत । पचि थाको पतसाह किलम विहडाय कराळा, क्रोध जतन कीजतां, ठहै न कमंध हठाळा ।—सू.प्र.

७ चलता न रहना, मंद पड़ना, धीमा पड़ना, रुक जाना । ज्यूं—कारखांनी सागै चालतो हो पण अबै थाक रह्यो है ।

८ मुग्ध होकर स्थिर हो जाना, मोहित होकर अचल हो जाना । ज्यूं—चांद सो मुखड़ो'र केहर सी कटी देख'र आंख्यां थाकी री थाकी रयगी ।

थाकणहार, हारो (हारी), थाकणियो—वि० ।

थकयाड़णो, थकवाड़बो, थकयाणो, थकवाबो, थकवावणो, थकवावबो, थकाड़णो, थकाड़बो, थकाणो, थकाबो, थकावणो, थकावबो—प्रे०रू० ।

थाकिओड़ो, थाकियोड़ो, थाक्योड़ो—भू०का०कृ० ।

थाकीजणो, थाकीजबो—भाव वा० ।

थकणो, थकबो, थथकणो, थथकबो—रू०भे० ।

थाकल-वि०—१ शिथिल, धीमा. २ अशक्त, कमजोर. ३ कृश, दुर्बल. ४ निर्धन, कंगाल ।

थाकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ शिथिल, श्रान्त, क्लान्त. २ दुर्बल, कृश. ३ शक्तिहीन, अशक्त. ४ कम पड़ा हुआ, बाकी रहा हुआ. ५ निर्धन, कंगाल. ६ ऊबा हुआ, हैरान. ७ मंदा, धीमा. ८ अचल, स्थिर.

(स्त्री० थाकियोड़ी)

थाकी—देखो 'थकी' (रू.भे.) उ०—महारइ थाकी राजकुंआरि परणीय जा परदेसडइ ए ।—विद्याविलास पवाडउ

वि०स्त्री०—अशक्त, दुर्बल ।

थाकु—देखो 'थाकणो' (रू.भे.)

थाकेलो-सं०पु०—१ थकान, शिथिलता । उ०—थांहरो घर छै, दस बीस दिन टिको, थाकेलो उतारो ।—कुंवरसी सांखला री वारता

क्रि०प्र०—णाणो ।

२ दुर्बलता, कृशता ।

क्रि०प्र०—आणो ।

३ हैरानी ।

क्रि०प्र०—आणो ।

रू०भे०—थकेलो ।

थाकोड़ो, थाको—देखो 'थाकियोडो' (रू.भे.) उ०—थुर थुर धूजंता थुड़ता थाकोड़ा । पीळा पड़ियोड़ा पिलिया पाकोड़ा ।—ऊ.का.

रू०भे०—थकोड़ो ।

यौ०—थाको-मांदो ।

(स्त्री० थाकोड़ी)

थाग-सं०पु०—१ गहराई, थाह. २ गहराई का अन्त, धरती का वह तल जिस पर पानी हो । उ०—थाग न पावै थागतां, उदध समावां आप । नेक वगत लोपै नहीं, पाजा धरम 'प्रताप' ।—चिमनदांन रतनू

३ गहराई का पता, गहराई का अंदाज । उ०—गयणाग कवण चीते गहीर । निज थाग लहै कुण महण नीर ।—रांमदांन लाळस

४ पार, अंत, परिमिति। उ०—जळ में भीणा जीव थाग नहीं कोय रे।—जयवांणी

५ सीमा, हद। उ०—बहु खाटै जयचंद विरद, वधि खग दत विण-वार। आवै नहि जे थाग अति, पावै नहि को पार।—सू.प्र.

६ पता, इल्म। उ०—तेरस तेरै वर गई, आज न लागै थाग। हिवडो हळवळियो हमैं, ऊमीजै ऊमाग।—अज्ञात

क्रि०प्र०—लागणौ।

७ एक ही प्रकार के फूलों के हार के बीच में लगाया जाने वाला भिन्न रंग का पुष्प अथवा भिन्न रंग का कागज आदि।

क्रि०प्र०—दैणौ, लगाणौ।

अल्पा०—थेगड़ो।

८ रोक, सहारा।

क्रि०प्र०—दैणौ, लगाणौ।

९ गंभीरता. १० नदी के पानी के कटाव तथा बाढ़ के कारण किनारों के नीचे की ओर स्थान-स्थान पर पड़ने वाले बड़े गड्ढे उ०—नदी रा थागां में, उजाड़ कांकड़ में अर डूंगरां री छायां में चोरां रा अड्डा हा।—रातवासौ

रू०भे०—थाघ।

अल्पा०—थागौ।

थागड़-वि०—निडर, निर्भीक। उ०—भूंडण तौ भूंडा जिणै, हिरणी जिणै सुगट्ट। पांन खड़क्कै उठ चलै, थागड़ चालै थट्ट।—अज्ञात

थागड़ौ-वि०—थाह लेने वाला। उ०—भुळ रथ साथ उरवसी रा भागड़ै, निज हरक डाक डक लगाई नागड़ै। थरर धर अेक डंका धरर अण थागड़ै, पकड़ भालौ कठी दीयै पग पागड़ै।

—महादांन महड़ू

थागणौ, थागबौ-क्रि०स०—गहराई की जांच करना, अंत तक पहुँचना, थाह लेना। उ०—१ थागै कुण अणथाग बात ओहड़ी विचारी। सांम दांम डंड भेद, सरै जिम कारज सारी।—पे.रू.

उ०—२ सुत फतमाल बंस रा सूरज, मांगण भड़ां वधारण मोद। थग आवै महरांण थागियां, सहजां थग ना'वै सीसोद।

—मेघराज आढ़ौ

थागणहार, हारौ (हारी), थागणियौ—वि०।

थागिओड़ौ, थागियोड़ौ, थाग्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थागीजणौ, थागीजबौ—कर्म वा०।

थाघणौ, थाघबौ—रू०भे०।

थागत-सं०स्त्री०—थाह। उ०—अस वाजस पक्खर गुगरियूं। तित थागत लेत सुरंतर यूं।—पा.प्र.

थागिड़दा-सं०पु०—ढोल का बोल।

थागियळ-सं०पु०—समुद्र, जलधि। उ०—थागियळ पूछियौ भणौ भागीरथी, सांवळा नीर किसां समोहां। साह री फौज 'सगता' हरै सीधळी, लाल रंग चाढ़ियौ मार लोहां।—अज्ञात

थागियोड़ौ-भू०का०कृ०—गहराई की जांच किया हुआ, अंत तक पहुँचा हुआ, थाह लिया हुआ।

(स्त्री० थागियोडी)

थागौ-वि०—१ कम गहरा, उथला।

रू०भे०—थाघौ।

२ देखो 'थाग' (अल्पा., रू.भे.)

थाघ—देखो 'थाग' (रू.भे.) उ०—आलम मोरा ओगुणां, साहिब तूझ गुणांह। बूंद-बिरखा रैण-कण, थाघ न लब्भौ त्यांह।—ह.र.

थाघणौ, थाघबौ—देखो 'थागणौ, थागबौ' (रू.भे.) उ०—दड़ी पड़ंतां द्रहा में, चढै भांकियौ कदंब डाळ, नीर थाघै अथाग चडंतां बाद नार। खेल्ह वाळवृंद रै करंतां लगाड़ियौ खेटौ, काळी नाग जगाड़ियौ नंद रै कंवार।—र.ज.प्र.

थाघियोड़ौ—देखो 'थागियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थाघियोड़ी)

थाघौ—१ देखो 'थाग' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'थागौ' (रू.भे.)

थाट-सं०पु० [सं० स्थात] १ समूह, दल। उ०—१ साथै नर नारी नां थाट।—वि.कु.

उ०—२ हुवौ अति सींधवौ राग वागी हकां। थाट आया पिसण घाट लागै थकां।—हा.भा.

२ सेना, फौज, दल (अ.मा.) उ०—१ खत्रवट प्रकट 'अमरेस' रै खेलतै, ठेलतै थाट रहिया नहीं ठांहि। मार तुरकां दिया कमधां मुहै, मार कमधां दिया कुरभां मांहि।—चतरौ मोतीसर

उ०—२ मिटै मोह छोळां थटै देव माया। उठै थाट ले भूप सुग्रीव आया।—सू.प्र.

उ०—३ वदै रांण नूं कोण कै दास वारां। किसै वैर तैं थाट मारै कंवारां।—सू.प्र.

उ०—४ राव चूंडा रौ थाट पण भूंडेल रहतौ।—नैणसी

यौ०—थाट-थंभ।

३ सामान, सामग्री. ४ संपत्ति. ५ वैभव।

यौ०—थाट-पाट।

६ आनन्द। उ०—१ गो वळग्यौ निज गांव थाट घर मंगळ थाया। मुड़दौ देख मसांण चिलमियां चाढ़ण चाह्या।—ऊ.का.

उ०—२ बुहौ जिकण तूं वाट, चित सूं वाट चितारसो। थैं कोना सह थाट, जग में पग-पग 'जसा'।—ऊ.का.

७ प्रसन्नता, हर्ष। उ०—पैंड पैंड ज्यां रा पिसण, त्यां रा कड़वा वैण। जग जांनूं देखै जळै, नहि थाटां न्है नैण।—बा.दा.

८ मनोकामना, मनोरथ। उ०—१ आसण गूढ़ करूं पण आसुर, ज्याग विधूंसै जावै। रिख्या वाट करै जो राघव, थाट संपूरण थावै।

—र.रू.

उ०—२ सखी सहेली सांभळै, म्हे मन वांध्या थाट। नव दिन कीधा नौरता, सो प्रीतम हदवाट।—ढो.मा.

९ बाहुल्यता, प्रचुरता। उ०—विभौ जेह नै अति घणौ, घन घीणा ना थाट।—जयवांणी

१० चद्दर, पतरा। उ०—थाट हेम हिंद थळी तास राजरा किय खांनां। राजां किया रतन्न बड़मद्युति उज्वळ वांनां।—केहरप्रकास

११ सातों स्वरों का वह निश्चित रूप जिसके आधार पर अनेक राग-रागनियों का विधान किया जाता है। उ०—रंग की बरखा अलगोजू के नाद। ग्रैसी भांति ग्रनेक उछब सैं गावते हैं, तारीफ की. तांन असमांन से लावते हैं। ग्रैसा मूरतिवंत राग का थाट रचि जरकस जंवहरू के इनांम पाए।—सू.प्र.

सं०पु०—१२ गज, हाथी ? उ०—१ पुरुख ते जे पुण्यवंत, स्त्री ते जे पुत्रवंत, हाट ते जे वस्तुवंत, थाट ते जे सिंदूरवंत, घाट ते जे सुथवंत, भाट ते जे वचनवंत, खाट ते जे धरणिवंत, मठ ते जे मुनिवंत।
—व.स.

उ०—२ राजा लोह संपूरण सन्नद्ध हूउ युद्ध करइ, सुहड़ चूरइ. रथावळि ऊथलावइ, मुट्ठु उधा मांकड जिम नचावइ, पाखरया थाट हणइ।—व.स.

१३ देखो 'ठाट' (रू.भे.) उ०—राखिउ ए राउ जूठिलु विदुरह वयणु न मांनीउं ए। हारीयां ए हाथियं थाट भाइय हारीय राजि सउं ए।
—पं.पं.च.

रू०भे०—थट, थटक, थटक्क, थटौ, थट्ट, थट्टौ, थाटि।

थाटणौ–वि० (स्त्री० थाटणी) १ शोभा बढ़ाने वाला, वैभव बढ़ाने वाला। उ०—कोटैक ग्रघदळ कांटणौ, असुरेस मूळ उपाटणौ। थिर संत थांनक थाटणौ, ग्रभनिमो सगर ग्ररोड़।—र.ज.प्र.

२ प्राप्त कराने वाला।

उ०—तोपां रण ताळ रै सकज भूपाळ संवारी, खै ग्रकाळ खाटणी काळ थाटणी करारी।—मे.म.

थाटणौ, थाटबौ–क्रि०स०—१ शोभित करना. २ सुसज्जित करना. ३ तैयार करना, तैयार रखना. ४ एकत्रित करना, संग्रह करना. ५ प्रकट करना, उत्पन्न करना. ६ धारण करना. ७ स्थापित करना. ८ मुकर्रर करना, तय करना, निश्चित करना. ९ प्राप्त कराना।

थाटणहार, हारौ (हारी), थाटणियौ—वि०।

थटवाड़णौ, थटवाड़बौ, थटवाणौ, थटवाबौ, थटवावणौ, थटवावबौ, थटाड़णौ, थटाड़बौ, थटाणौ, थटाबौ, थटावणौ, थटावबौ—प्रे०रू०।

थाटिग्रोड़ौ, थाटियोड़ौ, थाटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

थाटीजणौ, थाटीजबौ—कर्म वा०।

थटणौ, थटबौ, थट्टणौ, थट्टबौ—ग्रक०रू०।

थाट-थंभ–सं०पु०यौ०—ग्रकेला ही फौज को रोकने वाला, योद्धा, वीर। उ०—ग्रोद्रकै हेमगढ़ ग्रही दध ग्रोदकै, सांकै खुरसांण छव खळ सारै। सुतन 'जसराज' ग्रवतार खटतीस वंस, थाट-थभ नमं ग्राय पाव थारै।
—बारहठ ईसरदास सूरजमलोत

थाटनाथ–सं०पु०यौ०—सेनापति। उ०—थाटनाथ होसी दहुं थाटां। झळहळ भड़ां परख खग झाटां।—सू.प्र.

थाटपति, थाटपती–सं०पु०यौ०—सेनापति।

वि०—वैभवशाली। उ०—थाटपति मेवाड़ थांणै। रचै निजरां दीध रांणै।—सू.प्र.

थाट-पाट, थाट-बाट–सं०पु०यौ०—१ वैभव, ऐश्वर्य. २ सजावट, शृंगार. ३ तड़क-भड़क, ग्राडम्बर। उ०—पाहटां ग्रोघाटां चलै जळाधार ग्राटपाटां, ऊमदाय देत झाटां ग्रमाटां ग्रमेस। पाप रा कपाटां तोड़ ग्रघां मोड़ थाट-पाटां, थाटां लायौ भागीरथी सुघाटां वसेस।—गगा रौ गीत

४ शान-शौकत।

रू०भे०—थाट-बाट।

थाट-पाटां–वि०यौ०—१ हृष्ट-पुष्ट। उ०—जायोड़ा जोड़ रा, थाट-पाटां थायोड़ा। दिन ग्रायोड़ा दाय, तिका मोतण तायोड़ा।—मे.म.

२ सम्पन्न, वैभवशाली।

थाटव–सं०पु०—कवि।

वि०—ठाट-बाट से रहने वाला।

थाटवौ–सं०पु०—युवराज (राज्य के ग्रधिकारी) का छोटा भाई।

थाटि—देखो 'थाट' (रू.भे.) उ०—१ सुखासण तणी ड्रडवड, घोटा तणै थाटि, पायक तणै पहटि, बहुली लागि तणइ चीतकारि, भाट नगारी तणइ कयवारि, राजा राजवाटिका चटिउ।—व.स.

उ०—२ गुणनिधांनसूरि पाटि, सोहइ मुनिवर थाटि। गुरुतण ग्रागरू ए, सिमा ग्रति सागरू ए।—प्राचीन फागु संग्रह

थाटियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ शोभित किया हुग्रा, शोभायमान किया हुग्रा. २ सुसज्जित किया हुग्रा. ३ तैयार किया हुग्रा, कटिबद्ध किया हुग्रा, तैयार रखा हुग्रा. ४ एकत्रित किया हुग्रा, इकट्ठा किया हुग्रा, संग्रह किया हुग्रा. ५ प्रकट किया हुग्रा, उत्पन्न किया हुग्रा. ६ धारण किया हुग्रा. ७ स्थापित किया हुग्रा. ८ मुकर्रर किया हुग्रा, तय किया हुग्रा, निश्चित किया हुग्रा. ९ प्राप्त किया हुग्रा। (स्त्री० थाटियोड़ी)

थाटियौ–सं०पु० - गाड़ी का ग्रगला हिस्सा जिस पर गाड़ीवान बैठ कर गाड़ी हांकता है, ग्रधारिया, मोढ़ा।

थाटेसरी–सं०पु०—एक प्रकार के संन्यासी। उ०—थाटेसरी ग्रकास मुनी थट। जळ सभि करै वधारै नख जट।—सू.प्र.

थाटौ–सं०पु०—१ गाड़ी की छत. २ खाद या धूलि से भरी हुई गाड़ी. ३ उतनी मात्रा का खाद या धूलि जो एक बार में गाड़ी में समा सके. ४ वक्ष-स्थल।

वि०—स्थिर, ठहरा हुग्रा। उ०—थिर ग्रासोज वेद मग थाटौ। लपट वाळि रांमण कुळळाटौ।—ऊ.का.

थाडौ—देखो 'ठाडौ' (रू.भे.) उ०—१ वरसै सघण नीझरण वाजै, थाडै वादळ गरक थयो। वरसाळै नीला वनवाळै, काळै गिर सर पाव कियो।—स्री ग्राबूजी रौ गीत

उ०—२ थाडौ पांणी पी नै खुदा री सुकरगुजारी न करै जिणनै परलोक मांय खुदा सजा देवै।—वां.दा. ख्यात

(स्त्री० थाडी)

थाढ़-सं०पु०—सहारा, स्तंभ। उ०—आभ तूटी पडइ तउ कुण थाढ़ दिइ, चंद्रमाहइं पित्त उपजइ तउ कउण सीतळोपचार करइ, हिमाचळहइं ठाढ़ि लागइ तउ किहांतउ ओढ़णउं आंणियइं धन्वंतरि मांदउं थाइ तउ कउण वैद्य, काळ्स नी आंखि फूलउं तउ कउण उपचार, इंद्र नी आंखि दूखइ किहां पाटउ वांधिजइ।—व.स.

२ देखो 'ठंड' (रू.भे.)

थाढ़ौ-सं०पु० [सं० स्थातृ] १ सहारा।

वि०—२ खड़ा। उ०—ग्यारहसं डंड करि अवगाढ़ौ। थण कढ़ पियं दोय मण थाढ़ौ।—सू.प्र.

२ ठंडा, शीतल। उ०—१ दिन छोटा मोटी रयण, थाढ़ा नीर वन्न। तिण रित नेह न छांडियइ, हे वालम वडमन्न।—ढो.मा.

उ०—२ वजसी थाढ़ौ वायरौ, गजसी मधुरौ गाज। धण जद तजसी ढोलियौ, सजसी जाग समाज।—मयारांम दरजी री वात

थाणौ, थाबौ—देखो 'थावणौ, थाववौ' (रू.भे.) उ०—१ सींगाळौ अवखललणौ, जिण कुळ हेक न थाय। जास पुरांणी वाड़ जिम, जिणजिण मत्थै पाय।—हा.झा.

उ०—२ अरध उरध अरु उत्तर दक्षिण, पूरव पश्चिम नहिं थासी। आदि रु अंत मध्य नहिं मेरे, है ज्यूं का त्यूं थासी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

थात-सं०पु०—१ पैर के नीचे का हिस्सा, पैर का तलुआ।

वि० [सं० स्थात] जो बैठा या ठहरा हो, स्थित।

थाप-सं०स्त्री०—१ हाथ के पूरे पंजे का आघात, थप्पड़, तमाचा।

उ०—नरहरि थंभ विदारियौ, सेवग हुंदी चाड। हेक थाप चूरण हुआ, हिरणाकुस रा हाड।—वां.दा.

क्रि०प्र०—दैणी, मेलणी, लगाणी।

२ तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे का आघात, थपकी।

रू०भे०—थापटी।

अल्पा०—थापड़ी।

३ विचार, मंत्रणा। उ०—पातिसाह पासें जाइइं जी, हुं करस्युं जे बात। रावळजी छोडायस्यां जी, पाछै करेस्यां घात। भलो भलो सुभटे कह्यौ जी, थाप्यौ एहज थाप। इम आलोच आलोचतां जी, प्रात हुओ गत पाप।—प.च.चौ.

वि०—स्थापित करने वाला। उ०—१ इत जयपुर उत जोधपुर, दोनूं थाप-उथाप। कूरम मारचौ डीकरौ, कमधज मारचौ बाप।

—कविराजा करणीदांन

उ०—२ अनि करै कुण विण आप, इहं दिलो थाप-उथाप। ततवीर कर धरि तौर, असपती कीजै और।—सू.प्र.

थाप-उथाप-सं०स्त्री०यौ०—निर्णय, फैसला। उ०—१ ओ दोनूं छै मांहरै, विढ़ता दीसै बाप। कहौ राज क्यों करि हुवै, इण रौ थाप-उथाप।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ धणी खुसियाळी में राग रंग गोठां करीजै। थाप-उथाप रावजी री ठहरी। सीसोदियां री गिणत काई रही नहीं।

—राव रिणमल री वात

वि०—१ स्थापित करने एवं उखाड़ने वाला. २ स्थापित किए हुए को उखाड़ने वाला।

रू०भे०—थप-उथप, थापण-उथापण।

थापड़ी-सं०स्त्री०—१ देखो 'थाप' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—आई-आई जंवाई नै रीस। गोरै मुखड़ै पर मारी थापड़ी।

—लो.गी.

२ देखो 'थेपड़ी'. (रू.भे.)

थापट—देखो 'थाप' (रू.भे.)

थापण-सं०स्त्री० [सं० स्थापन] १ स्थापित करने की क्रिया या भाव।

२ धरोहर, अमानत। उ०—इम पभणइ 'धरमसी' साह, ए कुमर वडउ गजगाह। पूजजी हिव क्रिपा करीजइ, ए मांहरि थापण लीजइ।

—ऐ.जै.का.सं.

मुहा०—थापण वांधणी—कर्ज करना, किसी की धरोहर हजम करना, ऋण करना।

रू०भे०—थांपण, थांपणि, थापन, थापिणी।

थापण-उथापण—देखो 'थाप-उथाप' (रू.भे.) उ०—महाराज गजसिंहजी वडो प्रतापी राजा हुवौ, वादसाहां रौ थापण-उथापण हुवौ।

—राठौड़ राजसिंह री वारता

थापणा—देखो 'थापना' (रू.भे.)

थापणौ, थापवौ-क्रि०स०—१ स्थापित करना, जमाना, बैठाना.

२ प्रतिष्ठित करना. ३ मुकर्रर करना। उ०—१ जग मांहै सहू नार, माता कर थापणी।—जयवांणी

उ०—२ प्रीति परस्पर जांणि नै, वेस्या थापी नारि।—वि.कु.

उ०—३ राज रौ थापियौ राज-न लहै रवद। धणी म्हे थापसां जकौ जोधांण।—वां.दा.

४ तय करना, निश्चित करना। उ०—१ तरै आपरै नांवै तौ विजैराव नै झालियौ नै देवराव वरसै ५ में बेटौ हुतौ तिण रै नावै नाळेर झालियौ नै साहौ थापियौ।—नैणसी

उ०—२ इतरै भीमी कहियौ जो राज रौ परधांन मेल्हौ जु व्याह थाप नै मेल्हसां।—लाली मेवाड़ी री वारता

५ प्रहार करना। उ०—पूछ्यां विनां पयंपै पापी, थट विच कहै लात सिर थापी। वदन मत दिखाळै वंस द्रोही चलै।—र.रू.

६ सुपुर्द करना, संभलाना। उ०—घर थापौ पुत्रां भणी, जिम सहू सजन जिमाड़ हो।—जयवांणी

थापणहार, हारौ (हारी), थापणियौ—वि०।

थपवाड़णौ, थपवाड़वौ, थपवाणौ, थपवावौ, थपवावणौ, थपवाववौ, थपाड़णौ, थपाड़वौ, थपाणौ, थपावौ, थपावणौ, थपाववौ—प्रे०रू०।

थापिओड़ौ, थापियोड़ौ, थाप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थापीजणौ, थापीजवौ—कर्म वा०।

थपणो, थपवो—अक०क्रि० ।

अपकणो, थपकवो, थपणो, थपवो, थरथपणो, थरथपवो, थरथापवणो, थरथापववो, थरपणो, थरपवो, थरप्पणो, थरप्पवो, थिरपणो, थिरपवो —रू०भे० ।

थापन—देखो 'थापणा' (रू.भे.) उ०—कुळ देवी थापन करे, जात गया री जाय । सरब ठिकांणां विदर से, कळ में मूढ़ कहाय ।—बां.दा.

थापना–सं०स्त्री० [सं० स्थापना] १ वह सांकेतिक या कल्पित वस्तु जिसकी किसी वास्तविक वस्तु की अनुपस्थिति में या अभाव के कारण कल्पना की जाती है (जैन) २ आकार, आकृति, चित्र, मूर्ति (जैन) ३ स्थापन, न्यास (जैन) ४ अनुज्ञा, सम्मति (जैन) ५ जैन साधु को भिक्षा में दी जाने के लिये रखी हुई वस्तु और इस रखी हुई भिक्षा से साधु को लगने वाला दोष (जैन)

रू०भे०—ठवणा ।

६ स्थापन, प्रतिष्ठा. ७ मूर्ति की स्थापना या प्रतिष्ठा ।

उ०—जे कठई श्री भैरव कठई थांरी श्री थांन । कठई श्री भैरव कठई श्री थांरी थापना ।—लो.गी.

८ नवरात्रि का प्रथम दिन. ९ नवरात्रि में दुर्गापूजा के लिए घट-स्थापना. १० अधिकार, कब्जा । उ०—सोजत तौ राव रिड़मल री माटी छै । थापना कदीम छै ।—राव मालदे री बात

रू०भे०—थापणा ।

थापनाकरम–सं०पु० [सं० स्थापनाकर्म] स्थापनाकर्म (जैन)

रू०भे०—ठवणाकम ।

थापनाचारज– सं०स्त्री० [सं० स्थापनाचार्य] स्थापनाचार्य ।

उ०—बाहिर साहि झाड़, साहि विभाड़, बलियां साहि कंपि कुदाळ, सबळ साहिमांन मरदन निबळ साहि थापनाचारज, संग्रांम साहि गिण भाजणा साहि जइतखंभ, सुरितांण दूमरउ अलावदीन । किसइ अेक आरंभि पारंभि आइ टिक्यउ छइ ।—अ. वचनिका

थापनाचारिज–सं०पु० [सं० स्थापनाचार्य] वह वस्तु जिसके लिये आचार्य का संकेत किया जाय (जैन)

रू०भे०—ठवणायरिय, ठवणारी ।

थापनापुरस–सं०पु० [सं० स्थापनापुरुष] पुरुष की स्थापना, आकृति, मूर्ति या चित्र (जैन)

रू०भे०—ठवणापुरिस ।

थापनासच, थापनासच्च, थावनासत्य, थापनासाच–सं०पु० [सं० स्थापनासत्य] किसी वस्तु में वास्तविकता न होने पर भी मनुष्य का अपनी श्रद्धा या भावुकता के कारण उसे सत्य मान लेने का भाव । यथा–बच्चे को लकड़ी के घोड़े में भी सत्यता प्रतीत होती है । श्रद्धालु व्यक्ति मूर्ति को ही ईश्वर कहता है (जैन)

रू०भे०—ठवणासच्च ।

थापल—देखो 'थापी' (रू.भे.)

थापलणो, थापलवो–क्रि०स०—पीठ पर या कंधे पर जोश दिलाने के लिये या प्यार करने के लिये थपकी देना । उ०—१ कांध थापल 'देवल' गीत करै । पग दे पड़ 'पाल' रकेब परै ।—पा.प्र.

उ०—२ हळ गळ वागळ में बळवळ गळ हेरै, टगमग टोकरिया वळदां गळ टेरै । पागां प्रेरगिकां पाणत पुनकारै, थापू-थापू कर थापल बुचकारै ।—ऊ.का.

उ०—३ नरेस सुरजन भी पुत्र री कांधी थापली हृदय हूं लगाई विसर्जियौ ।—वं.भा.

थापलणहार, हारौ (हारी), थापलणियौ—वि० ।

थापलिश्रोड़ो, थापलियोड़ो, थापल्योड़ो—भू०का०कृ० ।

थापलीजणो, थापलीजवो —कर्म वा० ।

थपणो, थपवो, थप्पलणो, थप्पलवो—रू०भे० ।

थापलियोड़ो–भू०का०कृ०—थपकी दिया हुआ, जोश दिलाया हुआ ।

(स्त्री० थापलियोड़ी)

थाविणि—देखो 'थापणा' (रू.भे.) उ०—बाहुबलि कहि; लि आ विद्या जु ईहां छि साहरां; अरथ तणी विद्या तुम्ह पासि छि ए थाविणि माहारी ।—नळाख्यांन

थापोटणो, थापोटवो–क्रि०स०—कंधों या पीठ पर जोश दिलाने अथवा प्यार करने हेतु थपकी देना । उ०—मरणो घट हुंकं भोलखी, जूंझ वधारणो झागड़ो । काळवी कंध थापोट कर, 'पाल' उद्याड़णो पागड़ो ।—पा.प्र.

थापोटियोड़ो–भू०का०कृ०—कंधे या पीठ पर जोश दिलाने अथवा प्यार करने हेतु थपकी दिया हुआ ।

(स्त्री० थापोटियोड़ी)

थापो–सं०पु०—१ वह सांचा जिस पर रंग आदि पोत कर कोई चिन्ह अंकित किया जाता है. २ गीली हल्दी, मेंहदी, रंग आदि हथेली पर पोत कर हाथ के पंजे को कहीं पर दबाने अथवा मारने से बनने वाला चिन्ह. ३ वह सांचा जिसमें किसी गीली वस्तु को डाल कर अथवा दबा कर कोई वस्तु बनाई अथवा ढाली जाती है. ४ खलियान में अनाज को चोरी आदि से बचाने के लिये अनाज के ढेर पर गीली मिट्टी अथवा गोबर से ढाला हुआ चिन्ह. ५ ढेर, राशि. ६ खलिहान में साफ किये हुए अनाज का ढेर. ७ झड़बेरी के पत्तों का ढेर. ८ रहेंट के कंगूरेदार बड़े चक्र में मजबूती के लिये लगाई जाने वाली बड़ी लकड़ी. ९ विवाह के अवसर पर देवी-देवताओं के लिये माना हुआ निश्चित् स्थान ।

वि०वि०—इस स्थान पर स्त्रियां अथवा चित्रकार गणेश व देवी-देवताओं के चित्र बनाते हैं जिनकी वर-वधू कई बार जाकर पूजा करते हैं ।

१० एक बाहुमूल के नीचे से लगा कर संपूर्ण वक्षस्थल तथा दूसरे बाहुमूल केनीचे तक का भाग. ११ विवाह संस्कार सम्पन्न होने के उपरांत दहेज देने के समय सास द्वारा दामाद की पीठ पर मांगलिक रंगों से अपने हाथ का चिन्ह बनाने की प्रथा विशेष या इस

क्रिया से दामाद की पीठ पर बना हुआ सास के हाथ का चिन्ह ।
(राजपूत, चारण मारवाड़)

थाबीजणौ, थाबीजबौ-भाव वा०--आर्थिक संकट से दुखी होना, अर्थाभाव में पडना ।

थाबीजियोड़ौ-भू०का०कृ०--अर्थाभाव में पड़ा हुआ, आर्थिक संकट से दुखी हुवा हुआ, निर्धन ।

थाबौ-सं०पु०--१ तकलीफ, पीड़ा. २ निष्फल आने जाने की क्रिया या भाव ।

मुहा०—थावा खाणा—निष्फल भटकना, व्यर्थ डोलना ।

थायणौ, थायबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.)

थायी—देखो 'स्थायी' (रू.भे.)

थायोड़ौ—देखो 'थावियोडौ' (रू.भे.)

थारउ—देखो 'थारौ' (रू.भे.) उ०--घन धन हो राजा अचळेसर थारउ जियउ जिणि पातिसाह सउं खांडउ लियउ ।
—अ. वचनिका

थारोड़ौ—देखो 'थारौ' (अल्पा. रू.भे.) उ०—१ मरजौ रे राइका थारोड़ी जी नार, सैणां रौ विछोवौ दूममी पाड़ियौ जी म्हारा राज ।
—लो.गी.

उ०—ओ है बाईजी थारोड़ौ भरतार नणदल म्हारी ए, ओ है बाईजी थारोड़ौ भरतार कादौ नै विलोवै, रांणी काछवौ जी म्हारा राज ।—लो.गी.

(स्त्री० थारोडी)

थारौ-सर्व० (बहु व० थारा, स्त्री० थारी) तेरा, तुम्हारा ।

उ०—१ मुणी मै ख्यात अम्हीणी मत्त । गोविंद न लाधी थारी गत्त ।—ह.र

उ०—२ बाबहिया तूं चोर, थारी चांच कटाविसूं । राति ज दीन्ही लोर, मइं जांण्यउ प्री आवियउ ।—ढो.मा.

उ०—३ करहा नीरूं जउ चरइ, कंटाळउ नइ फोक । नागरवेलि किहां लहइ, थारा थोवड़ जोग ।—ढो.मा.

थाळ-सं०पु० [सं० स्थालम्] कांसे या पीतल का बना वडा छिछला वर्तन, बडी थाली (ड.र.) उ०—बजि थाळ सकळ वाजित्र वजै, कुसुम सघण सुरियंद किया । वेखियांहीज आवै वणै, उण दिन तणी अजोधिया ।—सू प्र.

अल्पा०—थाळकियौ, थाळियौ, थाळी ।

(मह० थाळीड़, थाळौ)

थाल-सं०पु०—१ वह घोडा जो अपने गालो को चाटता है (अशुभ) (शा.हो.) २ पार्श्व पलटने की क्रिया या भाव ।

क्रि०प्र०—देणौ ।

वि०—ठीक ।

मुहा०—१ थाल (थालै) पड़णौ—सुधरना, ठीक होना. २ थाल बैठणौ—देखो 'थाल पड़णौ' ।

थाळकड़ी, थाळकली—देखो 'थाळी' (अल्पा. रू भे.)

उ०—अंकै थाळकली रै सागै जीमिया ।—लो.गी.

थाळकियौ—१ देखो 'थाळ' (अल्पा. रू.भे.)

२ देखो 'थाळौ' (अल्पा. रू.भे.)

थाळकी—देखो 'थाळी' (अल्पा. रू.भे.)

थालणौ, थालबौ-क्रि०स०—१ पार्श्व पलटना. २ सीधा करना. ३ स्थापित करना, रखना. ४ देखो 'ठाळणौ, ठाळबौ' (रू.भे.)

थाळि—देखो 'थाळी' (रू.भे.) उ०—थळ भांति गात निरतंत थाळि । श्रम जात अतन तन रूप भाळि ।—रा.रू.

थालियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पार्श्व पलटा हुआ. २ सीधा किया हुआ. ३ स्थापित किया हुआ, रखा हुआ. ४ देखो 'ठाळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थालियोड़ी)

थाळियौ-सं०पु०—१ गाड़ी का वह अग्र भाग जिस पर गाड़ीवान बैठता है. २ देखो 'थाळ' (अल्पा., रू.भे.)

३ देखो 'थाळौ' (अल्पा. रू.भे.)

थाळी-सं०स्त्री० [सं० स्थाली=बटलोई, थालिका] १ कांसे या पीतल का वड़ा छिछला वरतन जिसमें खाने के लिये भोजन रखा जाता है।
मुहा०—थाळी खोसणी (लेणी)—किसी की रोजी छीनना, किसी की आमदनी हड़पना ।

२ बड़ी तश्तरी ३ ढोल के ढमके के साथ तान मिलाने के लिये वजाया जाने वाला कांसी का थालीनुमा वाद्य. ४ नाच की एक गत जिसमें घोड़े को घेरे के बीच नाचना पड़ता है. ५ पाटल वृक्ष ।
(वि०वि०—देखो 'पाडळ')

रू०भे०—थाळि ।

अल्पा०—थाळकड़ी, थाळकली, थाळकी ।

(मह० थाळीड)

६ देखो 'थाळ' (अल्पा. रू.भे.)

थाळीड़—१ देखो 'थाळ' (मह. रू.भे.) २ देखो 'थाळी' (मह. रू.भे.)
३ देखो 'थाळौ' (मह. रू.भे.)

थाळौ-सं०पु० [सं० स्था] १ जमीन का वह टुकड़ा जिसे निवास-स्थान अथवा मकान बनवाने के लिये चुना गया हो, प्लॉट. २ सोने या चांदी की बनी देवमूर्ति. ३ गले में लटकाने का सोने या चांदी का बना आभूषण विशेष जिसमें किसी देव या देवी की आकृति होती है. ४ वह घेरा या गड्ढा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है, पेड़ को पानी पिलाने के लिये भी उसके चारो ओर ऐसा गड्ढा या घेरा खोद कर बनाया जाता है, थांवला. ५ वह स्थान जहां पर कूए से पानी निकाल कर मवेशियों के लिये एकत्रित किया जाता है. ६ गाड़ी की छत ।

अल्पा०—थाळकियौ, थाळियौ ।

(मह० थाळीड़)

७ देखो 'थाळ' (मह. रू.भे.)

थावणी-सं०पु०—पौधे अथवा पेड़ के चारों ओर पानी देने के लिये बनाया हुआ गड्ढा।

थावणौ, थावबौ-क्रि०अ० [सं० स्था] होना। उ०—जिकां लगि बावन वीर जब्बर। देख्या जम गावत थावत दूर।—मे.म.

थावणहार, हारौ (हारी), थावणियौ—वि०।

थाविओड़ौ, थावियोड़ौ, थाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

थावीजणौ, थावीजबौ—भाव वा०।

थइणौ, थइबौ, थणौ, थबौ, थाणौ, थावौ, थायणौ, थायबौ, थिणौ, थिबौ, थिवणौ, थिवबौ, थुवणौ, थुवबौ—रू०भे०।

थावर-वि० [सं० स्थावर] १ जो चलता-फिरता न हो, स्थावर (जीव) उ०—१ नहीं तू बाळ न ब्रद्ध न मूळ। नही तू थावर मुक्कम थूळ।
—ह.र.

उ०—२ राजकंवार नीमरांणा की वांथरवाड़े व्याई। परतख होय पांगळी पांवां, थावर संग्या थाई।—मे.म.

उ०—३ पांच थावर नै त्रिणि विकलेंद्रि।—ध.व.ग्रं.

२ अचल, स्थिर. ३ मूर्ख, नासमझ. ४ पागल।

उ०—सिंधुरवर बावर भूंटण कर सांधै। वांमा वैजळ नैं थावर गळ बांधै।—ऊ.का.

५ ढीठ, निर्लज्ज।

सं०पु०—१ पर्वत. २ धनुष की डोरी, प्रत्यंचा. ३ शनिवार।

अल्पा०—थावरियौ।

४ शनिश्चर ग्रह। उ०—लालच री दौड़ै लहर, भवन वियां धन भाळ। बैठौ थावर बारमौ, कांधै आंण कराळ।—वां.दा.

थावरियौ-सं०पु०—वह ब्राह्मण जो शनिश्चर की पूजा का दान लेता हो, शनि की पूजा करने वाला ब्राह्मण।

थावस-सं०पु०—धैर्य, विश्वास।

वि०—स्थावर, अटल। उ०—नेजां दकूळ उडतां निहंग, हसत भून मिळ हाम्रिया। कुळ अनट गिरंद जांणै सकळ, थावस मुज जंगम थिया।—सू.प्र.

थावियोड़ौ-भू०का०कृ०—हुवा हुआ।

(स्त्री० थावियोड़ी)

थावौ-वि०—स्थिर, दृढ।

थाह-सं०स्त्री० [सं० स्था] १ धरती का वह तल जिस पर पानी हो, नदी, ताल, समुद्र आदि के नीचे की जमीन, गहराई का अंत।

उ०—विस लावो वै मरण लो, मरुवरिया रौ थाह। कै कंठा विच माल लो, बाघरिया रौ थाह।—अज्ञात

क्रि०प्र०—लागणौ, लेणौ।

२ अंत, पार, सीमा, हद। उ०—१ धरती जैसी धीरज कहिये, समुद्र ज्यूं गंभीर। आर पार कोई थाह न आवै, यूं संतां मन धीर।
—श्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारू आसा लुब्ध। परदेसे पांघल घणा, विखउ न जांणइ मुग्ध।—ढो.मा.

३ कोई वस्तु कितनी या कहां तक है इसका अनुमान।

क्रि०प्र०—लागणी, लैणी।

थाहणौ-वि० [सं० स्था] रोकने वाला। उ०—थटै गयंदां 'थाट' क फौजां थाहणा। वणै तुरंगां वाळ अगाटां वाहणा।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

थाहणौ, थाहबौ-क्रि०स० [सं० स्था] १ गहराई का पता चलाना, थाह लेना. २ अंदाज़ लगाना, पता लगाना।

थाहर-सं०पु० [सं० स्था] १ सिंह की मांद, गुफा, कंदरा।

उ०—१ सूतो थाहर नींद सुख, सादूळौ बळवंत। वन कांठै मारग वहै, पग पग होल पड़ंत।—वां.दा.

उ०—२ सूती थाहर सिंघ री, जाय सकै नहि कोय। सिंह खडां थह सिंह री, क्यों न भयंकर होय।—वां दा.

२ स्थान। उ०—थाहर थाहर थूरिया, मारू अर घमसांण। 'पातल' रा नह पांतरै, कर जरमन केवांण।—किसोरदांन बारहठ

३ रिक्त स्थान, खाली जगह। उ०—विसइवा फिरवा थाहर अति मोकळी।—व.स.

४ नगर, शहर. ५ गढ, किला। उ०—१ सिया वाहर समर दसाणण साझा, अवी उछाहर दीन निवाजा। दीठां थाहर कनक दराजा, रीझ खीज जाहर रघुराजा।—र.ज.प्र.

उ०—२ विहद भूपत सीत वाहर, जार दस सिर समर जाहर। थरर लंका जिसा थाहर, विसर त्रंबक वाज।—र.ज.प्र.

६ भवन, मकान।

वि०—१ कम गहरा, छिछला. २ योद्धा (?)

उ०—वांमा नूरमली तिण वाहर, थूरै दौड अगेड़ा थाहर।—रा.रू.

थाहरणौ, थाहरबौ-क्रि०अ० [सं० स्था] कम रुकना, थोड़ा ठहरना, खिसकना, गिरना। उ०—१ पांखे पांणी थाहरइ, जळि काजळ गहिलाइ। सयणां-तणा संदेसड़ा, मुख वचने कहिवाइ।—ढो.मा.

२ ठहरना, स्थिर होना। उ०—परमेस आप पांणी पवन, कळंक मांहि निकळंक किरि। संसार मांहि थाहरि सदा, थाहरियौ थळ मांहि थिरि।—पी.ग्रं.

थाहरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ खिसका हुआ, गिरा हुआ, कम रुका हुआ, थोड़ा ठहरा हुआ. २ ठहरा हुआ, स्थित।

(स्त्री० थाहरियोड़ी)

थाहरै-सर्व०—तेरे, तुम्हारे। उ०—इमां बळै देखि नै वह्यौ, भाभी जे हिवै ईटो थाहरै मूंडा आगै आंणिस्यां।—चौबोली

थाहरौ-सर्व०—(स्त्री० थाहरी) तुम्हारा, तेरा।

उ०—१ घट 'पातल' उबजो घणौ, रण थंभण राठौड़। थैं मरियां सूं थाहरी, ठाली रहसी ठौड़।—ऊ.का.

उ०—२ इण 'परिग्रा' में थाहरौ हो मुनिवर ! संयम थिर नहीं

होय । गंधण कुळ रा सरप ज्यूं हो मुनिवर ! वमिया नै मत जोय ।
—जयवांणी

थाहियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ थाह लिया हुआ, गहराई का पता लगाया हुआ. २ अंदाज लगाया हुआ, पता लगाया हुआ ।
(स्त्री० थाहियोड़ी)

थि-सं०स्त्री०—१ यमुना. २ गोदावरी. ३ नींद. निद्रा ।
सं०पु०—४ बैल (एका.)

थिकत-वि०—चकित, दंग । उ०—तरण रथ थकित घण वहै खागां अतर ।—सू.प्र.

थिकां, थिका—देखो 'थकां' (रू.भे.) उ०—१ जे पंच परमेस्ट महामंत्र समरिगां थिकां हूंतां राजारथी राज पांमइ ।—व.स.
उ०—२ वाडि आडा थिका एकि कांपइ । एक वीर सिर से जई झांपइं ।—विराटपर्व
उ०—३ सांधिइ सांधि जूजूई कीधी, थर पाडेवा लागा । ऊपरि थिका हाथीया घोडा, घण तणें घाए भागा ।—कां दे.प्र.

थिकु, थिकौ—देखो 'थकौ' (रू.भे.) उ०—सांभळिवाइ थिकु धरम लाभइ । ए वात कहइ छइ । विहुं गाहे करी ।—षष्टिशतक प्रकरण

थिग-सं०स्त्री० [सं० स्थगित] १ ढेर, समूह, राशि. २ नृत्य का बोल ।
उ०—थिग मिग थिग थिग थेइ, थेंइ थिग मिग । थेइ थेइ तत नक ताथेई ।—ध.व.ग्रं.
३ लड़खड़ाने की क्रिया । उ०—१ तरुणी वरुणी में नींभर झर ताकी । थिग थिग अगनैणी पिकवैणी थाकी । पिंजर पासळियां भीतर पैठोड़ा । बोलै बोवाता डोबा बैठोड़ा ।—ऊ.का.
उ०—२ मां बारा वाखोटिया, थिगथिग पकड़ै चाल । लूआं नैडी आवतां, खिणैं'क राख्या ख्याल । — लू
क्रि०वि०—१ पास, ढिग ।

थिगणौ, थिगबौ-क्रि०अ० [सं० स्थगितं] १ लड़खड़ाना, डगमगाना ।
उ०—मगर पचीसी मांय, डोकरौ वणगौ डाकी । डांगड़ियां निठ डिगै, थिगै डांगड़ियां थाकी ।—ऊ.का.
२ ठहरना । उ०—गवाक्ष तैं अगाक्ष की कटाक्ष तें निगं नहीं । थिराभ चंद्रसाळ चंद्रसाळ पै थिगै नही ।—ऊ का.
थिगणहार, हारौ (हारी), थिगणियौ—वि० ।
थिगवाड़णौ, थिगवाड़बौ, थिगवाणौ, थिगवाबौ, थिगवावणौ, थिगवावबौ, थिगवाड़बौ, थिगवाड़बौ, थिगाणौ, थिगाबौ, थिगावणौ, थिगावबौ—प्रे०रू० ।
थिगिओड़ौ, थिगियोड़ौ, थिग्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
थिगीजणौ, थिगीजबौ—भाव वा० ।

थिगली-सं०स्त्री०—रुपये रखने की थैली ।

थिगियोड़ौ-भू०का०कृ० [सं० स्थगित] १ लड़खडाया हुआ, डगमगाया हुआ. २ ठहरा हुआ ।
(स्त्री० थिगियोड़ी)

थिड़णौ, थिड़बौ—देखो 'थुड़णौ, थुड़बौ' (रू.भे.)

थिड़ियोड़ौ—देखो 'थुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थिड़ियोड़ी)

थिड़ौ—देखो 'थड़ौ' (रू.भे.)

थिडणौ, थिडबौ—देखो 'थुड़णौ, थुड़बौ' (रू.भे.)
उ०—थिडिवे थिडिवे थिड़िया थट्टं । थीया कटकह कोअण थट्टं ।
— गु.रू.ब.

थिडियोड़ौ—देखो 'थुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थिडियोड़ी)

थिणौ, थिबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.) उ०—१ थूर हथ धवळ री थाट गैंवट थियौ । काळ चाळौ चखां चोळ वोळां कियौ ।
—हा.झा.
उ०—२ हुवै पंख राव जिम वीर हाका लियां । थरहरै कायरां उवर ढीला थियां ।—हा.झा.

थित-वि० [सं० स्थित:] १ स्थित । उ०—महाराजा अजमाल, करै राजस अधकारै । प्रिय चहुवांण पतिव्रता, धरम थित गरभ सधारै ।
—सू प्र.
२ मौजूद, विद्यमान. ३ अटल, दृढ़ ।
वि० [सं० स्थित] १ स्थिर । उ०—साधो भाई आ मत लै कोई नर रे, जाग्रत मांय सुसुप्ती बरते, निज स्वरूप थित कर रे ।
— स्री सुखरांमजी महाराज
२ नित्य, हमेशा ।
सं०स्त्री० [सं० स्थिति] १ स्थिरता । उ०—ब्रह्म विचार परमपद लीना, तहां नित थित रह लागी । इंद्रादिक का तुच्छानंद त्याग्या, लयौ निजानंद सागी ।—स्री सुखरांमजी महाराज
२ धन, दौलत, लक्ष्मी । उ०—जग थित झूठी जांणणी, मूठी भीड़ म रख्ख । माया मेवौ माढुवां, चंगा चाखव चख्ख ।—बां.दा.
यौ०—थितवित ।
३ ठहरने का स्थान, पड़ाव, डेरा, मुकाम । उ०—१ भूपति तणें वचन मन भाया, वेऊं प्रागहरा बोलाया । कुंवर सभ्रण थित दिल्ली केरी, फुरमायौ सुज वात न फेरी ।—रा.रू.
उ०—२ भारी तुज्ज भरोस, रिण में थित बांधे रह्या । खीची लीनो खोस, सारी मो वाळौ सुरै ।—पा.प्र.
[सं० क्षिति, प्रा० छिति] ४ पृथ्वी । उ०—दळ धाय महा सिध पाव दिया, हव सेन थरत्थर कंप हिया । नह धापेय लोह अजै लड़ती, थित धावत वीर लडत्थडतौ ।—पा.प्र.
५ देखो 'थिति' (रू.भे.)

थिति-सं०स्त्री० [सं० स्थिति] १ स्थिति । उ०—१ सिव सक्ती का सब विस्तारा, ब्रह्मा कीट लग कर रे । इणमें ई उत्पति थिति अरु लयता, निज स्वरूप निरपख रे ।—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ सुरग पुव्वसर राज, गयणवर धुरि वारिव थिति । वासव

माँई। दे चसमा घट भीतर देख्या, दीस्या अमर गुसांई।
—स्री हरिरांमजी महाराज

थिरकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (नृत्य में पैरों को) गतिमान किया हुआ, अंग मटकाया हुआ, नाचा हुआ।
२ देखो 'थरकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थिरकियोड़ी)

थिरचर-सं०पु० [सं० स्थिरा+चर] भूमि पर विचरण करने वाले, भूमि पर निवास करने वाले, भूचर। उ०—वायू आयू हर विवरण वहरावै। थर थर थक्कत थिर थिरचर थहरावै।—ऊ.का.

थिरता-सं०स्त्री० [सं० स्थिरता] १ धैर्य, शान्ति। उ०—थिरता मन री नहिं तन री गति थाकी। फुरणां परधन री अन री नहिं फाकी।
—ऊ.का.
२ स्थायित्व। उ०—दिन दिन प्रांणी मात्र जे, जम के आलय जात। थिरता चाहत पीछले, फिर का अचरज तात।
—महात्मा स्वरूपदास दादूपंथी
३ स्थिर होने का भाव, ठहराव, निश्चलता। उ०—मन नी थिरता राख नै, ध्यांन मकुळजी ध्याय।—जयवांणी
४ मजबूती, दृढ़ता। उ०—अवगुण हूं आळसू, अवल थिरता गुण आंणै। चपल होय चळ वित्त, वडौ उद्यमी वखांणै।—ध.व ग्रं.
रू०भे०—थिरताई।
वि०—स्थिर, अटल। उ०—नरक पड़ंता राखियौ हे राजुल! इम बोल्यौ रहनेम। मुज नै थिरता कर दियौ हे राजुल! वचन-अंकुस गज जेम।—जयवांणी

थिरताई—देखो 'थिरता' (रू.भे.) उ०—अथिर आदि मंडांण न को दीसै थिरताई। काळ ग्रास संसार आस जीवणौ न काई।—रा.रू.

थिरथाप-वि०—अटल, दृढ़।

थिरथोभ-वि० [सं० स्थिर-स्तम्भ:] स्थिर, अटल, दृढ़।
उ०—पाट सात पाछइ जिण देस मेवाड मइं रे, थाप्यौ गच्छ थिर-थोभ। कटारिया कुळदीपक जग जस जेहनउ रे, स्री खरतरगच्छ सोभ।—प व चौ.

थिरपणौ, थिरपबौ—देखो 'थापणौ, थापबौ' (रू.भे.)
उ०—आप विराजौ ईस्वरी, थिरपौ मढ सद्धर। दम गांवां सूं देस-णोक, निमि कीधी निज्जर।—ठाकुर जुझारसिंह मेडतियौ
थिरपणहार, हारौ (हारी), थिरपणियौ—वि०।
थिरपवाड़णौ, थिरपवाड़बौ, थिरपवाणौ, थिरपवाबौ, थिरपावणौ, थिरपावबौ, थिरपाड़णौ, थिरपाड़बौ, थिरपाणौ, थिरपाबौ, थिर-पावणौ, थिरपावबौ—प्रे०रू०।
थिरपिओड़ौ, थिरपियोड़ौ, थिरप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
थिरपीजणौ, थिरपीजबौ—कर्म वा०।

थिरमौ-सं०पु० [देश] एक प्रकार का बढिया कपडा विशेष।
उ०—भर मौल नीलक भार। आसावरी स उदार। दुल्लीच गिलम दुस्साल। थिरमौ सफंभ सुथाल।—सू.प्र.
रू०भे०—थुरमौ।

थिरवंत, थिरवंतौ-वि० [सं० स्थिरवंत] स्थिर, अटल।
उ०—जाग्रत स्वप्न सुसुप्ती जांणौ, ब्रह्म रूप थिरवंता। सब वरतावै सब में साखी, तुरिया नभ रहंता।—स्री सुखरांमजी महाराज

थिरा-सं०स्त्री० [सं० स्थिरा] पृथ्वी, वसुधा (अ.मा.)
उ०—१ मिथ्र जाणियौ अमल हुवौ दुरमण हथियारा। किसा किसा मैं कथ थिरा में ओगण थारा।—ऊ.का.
उ०—२ थिरा आवड़ा नांम विख्यात थायौ। छिपा सत्रु सो तेमड़ै छत्र छायौ।—मे.म.
यौ०—थिरा-थंभ।

थिरी—देखो 'थड़ी' (रू.भे.) उ०—आंगणियै न करावी थिरी कन्हैया! आंगुळियां विळगाय रे। हाऊ बैठौ छै तिहां कन्हैया, अळगौ तूं मति जाय रे।—जयवांणी

थिरु, थिरू-वि० [सं० स्थिर] स्थिर, अटल, दृढ़। उ०—१ थिरू मूरती सूर रै नूर थाई। तिका स्वप्न रै मांहि पिंडां वताई।—मे.म.
उ०—२ मही प्रमार री थिरू, हूती धुराद मंड सूं। अरोग भोम भूप आय, हो जको अफंद सूं।—पा.प्र.

थिवर—देखो 'थविर' (रू.भे.) उ०—वखांणियै जगि जासु उत्तम, लब्धि महिमा अति घणी। स्री 'अज्जसंती' थिवर कहियउ, तासु पाट्टिहि गच्छ धणी।—ऐ.जै.का स.

थी-सं०स्त्री०—१ निद्रा. २ रेवा नदी. ३ स्त्री।
सं०पु०—४ समुद्र. ५ घाव (एका.)
प्रत्य०—तृतीया या पंचमी विभक्ति का चिन्ह। उ०—१ गाजै ग्रह मांझल बैठौ गुज्झ, पुजारां पंच चढावै पुज्ज। सब्बां थी तुम्ह तुम्हां थी सब्भ, उपज्जै जेम अकासां अब्भ।—ह.र.
उ०—२ आठ पौर जस इंदु री, जिण घर दुत जागंत। तिण घर सू अपजस तिमर, अळगा थी भागंत।—वां दा.
उ०—३ एक मुगळ सूं 'सातल' कुसांणै कन्है अठै वडी वेढ कीधी। घणी मारवाड़ री बंध छुडाई। तिण थी ओ घडुला रो गीत गवांणौ।—राव जोधा रै वेटां री वात
क्रि०अ०—राजस्थानी में 'है' के भूतकाल 'थौ' का स्त्री०।
उ०—रावळ भीम वरस १० टीको नीसरियौ, तरै सारी मदार खेतसी ऊपर थी। पछै रावळ भी मोटौ हुवौ, तरै खेतसी नूं धरती बारै काढ़ियौ। तरै एक वार तौ भाटी घणा साथै काढ़िया था।
—नैणसी

थीणौ-वि० [सं० स्त्यान] जमा हुआ ठसा हुआ, गाढ़ा (घी)
उ०—१ थेवा पड़तोड़ी रावां घी थीणा। धापरि देखांला दूजै भव बीणा। हुयग्या हत आसा हक बक सुणि हाकौ। निरधन धनवाळा रौ नीकळग्यौ नाकौ।—ऊ.का.
उ०—२ पग नह मांडै पालियौ, रावतियां रौ साथ। केहर सूं कुसती करौ, द्यौ थीणा में हाथ।—वां.दा.

मुहा०—थीरा में हाथ; थीरा में हाथ देणो—आनन्द प्राप्त करना, लाभ उठाना।

थीतंकर—देखो 'तीरथंकर' (रू.भे.) उ०—आबू रै धणी पाल्हण परमार सरब धातू मांहै भरत रो भरियो थीतंकर रो बीम्ब हुतो गू मलाय अचळेसर है।—बां.दा.ख्यात

थीमड़ो-सं०पु०—चूलें लगी हुई चमड़े की वह पट्टी जिसे बछड़े के मुँह पर गाय के स्तन-पान करने से रोकने के लिये बांधी जाती है।

थीवर—देखो 'थविर' (रू.भे.)

यौ०—थीवरकल्पी।

थीवली—देखो 'त्रिवळि' (रू.भे.) उ०—कडलिए लाकु ग्रहीजइ, थटि-यडि लहकइ वीरिए। नाभि मयणरस वापिय, नगिए थीवली तीरिए।
—प्राचीन फागु संग्रह

थुंग-सं०पु० (अनु०) नृत्य का बोल। उ०—उमंग अंग उछरंग, रंग कुरू थुंग थुंग रत। थेइय थेइय त त थेइय, त त त त त थेइय थेइय त त।—सू.प्र.

थुंटी-सं०स्त्री० (देश०) स्त्रियों के सिर का आभूषण विशेष (राज घराने में)।

थुंभ-सं०पु० [सं० स्तूप] स्तूप। उ०—१ हिव तिहां थी मारग विचि आवतां, सुंदर थुंभ निवेस। पद पंकज जिन मांणिक सूरि ना, भेटया तिणे प्रदेस।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—२ साह 'पीथड' 'हाथी' 'रायसिंघइ', 'मांडण' आदइ करि 'भुज' संघइ। उद्यम करि थुंभ तणउ रगइ, थाप्या पूरव दिसि मन सगइ।—ऐ.जै.का.सं.

रू०भे०—थूंभ, थूभ।

थुंभी—देखो 'थूंभी' (रू.भे.)

थु-सं०पु०—१ विष्णु. २ त्याग. ३ झूठ।

सं०स्त्री०—४ कोयल. ५ अविद्या, मूर्खता (एका.)

वि०—१ मैला-कुचैला. २ उच्छृष्ट, जूठा, ऐंठा (एका.)

प्रत्य०—तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिन्ह 'से'।

थुइ, थुई-सं०स्त्री०—१ ऊँट के पीठ की कूबड़, ऊँट के पीठ का उभरा हुआ भाग. २ पुष्टता. ३ आगे निकला हुआ पेट, तोंद।

मुहा०—थुई चढ़णी—चरबी बढ़ना, पेट का फूलना, तोंद निकलना, पुष्ट होना।

[सं० स्तु] ४ स्तुति, प्रशंसा।

उ०—१ जिणि दिन पांचमि तप करइ तिणि दिन आरंभ टाळइ रे। पांचमि तवन थुइ कहइ, ब्रह्म चरिज पणि पाळइ रे।—स.कु.

उ०—२ इय जिण वल्लह-थुइ भणिय, सुणियइ करइ कल्लांणु। देउ बोहि चउवीस जिण, सासइ सयनिहांणु।—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—३ थियो सदय सुण निज थुई, टींटभ हूंत कसांन। उण ग बाळ उबारिया, महामंत्र जस मांन।—बां.दा.

रू०भे०—थूई, थूही।

थुओ—देखो 'थूओ' (रू.भे.)

थुकाई-सं०स्त्री०—थूकने की क्रिया, थूकने का कार्य।

थुकाड़णो, थुकाड़बो—देखो 'थुकाणो, थुकावो' (रू.भे.)

थुकाड़ियोड़ो—देखो 'थुकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० थुकाड़ियोड़ी)

थुकाणो, थुकावो-क्रि०स० [सं० थूत्करणं] ('थूकणो' क्रिया का प्रे०रू०) थूकने के लिये प्रेरित करना, थूकने का कार्य दूसरे से करवाना, उगलवाना।

थुकाणहार, हारो (हारी), थुकाणियो—वि०।

थुकायोड़ो—भू०का०कृ०।

थुकाईजणो, थुकाईजबो—कर्म वा०।

थुकाड़णो, थुकाड़बो, थुकावणो, थुकावबो—रू०भे०।

थूकणो, थूकबो—अक०रू०।

थुकायोड़ो-भू०का०कृ०—थूकने के लिये प्रेरित किया हुआ, थूकने का कार्य दूसरे से करवाया हुआ, उगलाया हुआ।

(स्त्री० थुकायोड़ी)

थुकावणो, थुकावबो—देखो 'थुकाणो, थुकावो' (रू.भे.)

थुकावियोड़ो—देखो 'थुकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० थुकावियोड़ी)

थुड़-सं०पु०—१ वृक्ष का तना। उ०—१ अति प्रगट रस थुड़ डाळी अदभुज, गाथ अति रंग आदरै। जिम पुरस नियतीवंत निप जग प्रजा उर सुख पाव रे।—रा.रू.

उ०—२ चैत्रइ विचित्र थइ रह्या, अंब तणी वनरायो जी। थुड़ मात्रा अंकुरित थइ, सोह वसंतइ पायो जी।—वि.कु.

२ मूर्ख, नासमझ।

रू०भे०—थुड़ि, थुड़, थुड, थुडि।

थुड़णो, थुड़बो-क्रि०अ०—लड़ना, भिड़ना, टक्कर लेना। उ०—जुडै पड़ै लड़ै मुड़ै, थुडै अनेक जग में। अनेक ऊकटै मिटै, कटै तुटै सु अंग में।—रा.रू.

२ डगमगाना, लड़खड़ाना। उ०—थुर थुर घूजंता थुड़ता थाकोड़ा। पीळा पड़ियोड़ा पिलिया पाकोड़ा।—ऊ.का.

थड़णो, थड़बो, थिड़णो, थिड़बो, थुड़णो, थुड़बो—रू०भे०।

थुड़ि—देखो 'थुड' (रू.भे.) उ०—रूंख तणौ थुड़ि वोडो बांधि नै रे, कुमर चढ़यो वांनर रे साथ रे। सास ऊपरि बैठा जाइ नै रे, नेह धरी तिहां जोड़ै बाथ रे।—वि.कु.

थुड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ लड़ा हुआ, भिड़ा हुआ, टक्कर लिया हुआ. २ डगमगाया हुआ, लड़खड़ाया हुआ।

(स्त्री० थुड़ियोड़ी)

थुटि-सं०पु०—एक प्रकार का व्यंजन? उ०—मरिच ना चमत्कार, अत्यंत सुकमार, हस्तिपद प्रमाण, प्रीणतां प्रांण हाथितल वळइं, मुहि घड्यां गळइं, स्वरगि थिका देव देखी टळवळइ, इसां अनेक प्रकारि वडां, थुटि वडां, मोतीयां वडां।—व.स.

थुड—देखो 'थुड़' (रू.भे.)

थुडणौ, थुडबौ–क्रि०अ० [सं० थुड्=संवरण] १ आच्छादित होना, फैलना, छाना। उ०—उद्यांन वन मांहि आंणिउ, विळासीए वखाणिउ, साकर नी पाळि दूधि पायउ, कोइल तणे वृंदि छायउ, रूपि सुचंगु नम्यउ नवरंगु, थुडि थोर पथिक वधूजन चित्तचोरु।—व.स.
२ देखो 'थुड़णौ, थुड़बौ' (रू.भे.)

थुडि—देखो 'थुड़' (रू.भे.)

थुडियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ आच्छादित हुवा हुआ, फैला हुआ, छाया हुआ. २ देखो 'थुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थुडियोडी)

थुणणौ, थुणबौ–क्रि०स० [सं० स्तुत्] १ स्तुति करना, प्रशंसा करना, गुणगान करना। उ०—१ नयन न्तितारथ आज थया मुझ, मूरति देखतां प्राय जी। जीभ पवित्र थई वळी माहरी, थुणतां स्री जिनराय जी।—स.कु.
उ०—२ कमळ लंछन भगवांन 'विनयचंद्रइं' थुण्यो। तुम गुण गण नौ पार, कुंणइ ही नवि गुण्यो रे।—वि.कु.
२ स्मरण करना, याद करना। उ०—प्रह ऊठी नै थुणजै जी।
—वृहद् स्तोत्र

थुणियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ स्तुति किया हुआ, प्रशंसा किया हुआ, गुणगान किया हुआ. २ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ।
(स्त्री० थुणियोड़ी)

थुतकारणौ, थुतकारबौ—देखो 'थुथकारणौ, थुथकारबौ' (रू.भे.)

थुतकारियोड़ौ—देखो 'थुथकारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थुतकारियोड़ी)

थुतकारियौ—देखो 'थुथकारियौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थुतकारियोड़ी, थुतकारी)

थुतकारौ—देखो 'थुथकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

थुतकी–सं०स्त्री०—देखो 'थुथकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

थुतकौ—देखो 'थुथकारौ' (रू.भे.)

थुथकारणौ, थुथकारबौ–क्रि०स० [सं० थूत्करणम्] दृष्टि-दोष (नज़र) से बचाने के लिये मुंह से थू थू करना (टोटका) उ०—भली आकृति भाळ घणी वणिया थुथकारै।—दसदेव
थुतकारणौ, थुतकारबौ—रू०भे०।

थुथकारियोड़ौ–भू०का०कृ०—दृष्टि-दोष (नज़र) से बचने के लिये मुंह मे थू थू किया हुआ।
(स्त्री० थुथकारियोड़ी)

थुथकारियौ–वि० [सं० थूत्कृत:] (स्त्री० थुथकारियोड़ी, थुथकारी) वह व्यक्ति, जानवर अथवा वस्तु जिसको दृष्टि-दोष (नज़र) से बचाने के लिये मुंह से थू थू किया जाय। उ०—घणा मोला घोडाह, घणा मोली केई घोड़ियां। थुथकारिया थोटाह, जग में तौ जोड़ा 'जसा'।—ऊ.का.
रू०भे०—थुतकारियौ।

थुथकारी–सं०स्त्री०—देखो 'थुथकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

थुथकारौ–सं०पु० [सं० थूत्कार:] किसी को दृष्टि-दोष (नज़र) से बचाने के लिये मुंह से थू थू का शब्द, थू थू का कार्य। उ०—१ जै जै जोगेस्वर भोगेसर भूला। धारण पक्की धर चक्की नहिं चूला। अै तौ जिन कल्पी अल्पी अणगारा। थीवरकल्पी जन नांखै थुथकारा।—ऊ.का.
उ०—२ उसके मुंह से थुथकारे ऐसे कढ़े, मनौ तारत की मोखी से मछर से उडे।—दुरगादत्त बारहठ
उ०—३ सासुवां रूप अर तरह देख घणी राजी हुई, राई लूण वारिया, थुथकारा नांखिया।—कुंवरसी सांखला री वारता
क्रि०प्र०—नांकणौ।
रू०भे०—थुतकारौ, थुतकौ, थुथकौ।
अल्पा०—थुतकारी, थुतकी, थुथकारी, थुथकी।

थुथुकी–सं०स्त्री०—देखो 'थुथकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

थुथुकौ—देखो 'थुथकारौ' (रू.भे.)

थुर—देखो 'थर' (१, ५, ६) (रू.भे.) उ०—वासप नैणां सूं निकळै मुख वाफां। रैणूं ऐडी पर फाटोड़ी राफां। थुर थुर धूजंता थुड़ता थाकोड़ा। पीळा पड़ियोड़ा पिलिया पाकोड़ा।—ऊ.का.

थुरन–सं०स्त्री० [सं० स्फुरणम्] हिलने की क्रिया, फड़कन, स्फुरण। उ०—अरू मैं एकाकी थुरन मत थाकी इन अगे। लखूं मैं खांचू तो प्रबळ ठग पांचूं मग लगै।—ऊ.का.

थुरमौ—देखो 'थिरमौ' (रू.भे.) उ०—तद इण आप थुरमा रो दुमाली ढोलियै सूं उठाय ओढ़ायो।—कुंवरसी सांखला री वारता

थुली, थुल्ली–सं०स्त्री० [सं० स्थूल+रा०प्र०ई] गेहूं के दले हुए मोटे कणों का पकाया हुआ व्यञ्जन।
क्रि०प्र०—रांधणी।
मह०—थुल्लौ।

थुल्लौ–सं पु०—देखो 'थुली' (मह., रू.भे.) (अवज्ञा एवं व्यंग्य)

थुवणौ, थुवबौ—देखो 'थावणौ, थावबौ' (रू.भे.) उ०—बाबा सिव मिळै बाथां सूं, थळ जातां सू हरक थुवौ।—बांकीदास बीठू

थुवियोड़ौ—देखो 'थायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० थावियोडी)

थुवौ, थुहौ—देखो 'थूओ' (रू.भे.)

थूं—देखो 'तूं' (रू.भे.) उ०—थूं हिंदुसथांन मे जगळधर देस न जांणै। जठै चवदह जणा हुता राजा हिंदवांणै।—मे.म.

थूंक—देखो 'थूक' (रू.भे.) उ०—उत्तम थूंक विलोव ही, मध्यम मूकी थाप। वणिक अधम चिढता करै, पनसेरी सूं थाप।—बां.दा.

थूंकणौ थूंकबौ—देखो 'थूकणौ, थूकबौ' (रू.भे.) उ०—१ पै'लो मास उलरियो ए जच्चा वे रो आळसियो मन जाय। दूजौ ए मास उलरियो ए जच्चा, वै रो थूंक तडै मन जाय।—ला.गी.
उ०—२ वीर कुळयां मांहि ऊपनो, तो नै खाय मुंडा थी थूंक्यो रे।
—जवांणी

५ थूक मथणो—देखो 'थूक उछाळणो'. ६ थूक लगाणो—हराना, नीचा दिखाना, लौंडेबाजी करना (बाजारू) ७ थूक सूं कांन चेपणा—देखो 'थूक सूं सांधा देणा'. ८ थूक सूं सांधा देणा—ठीक कार्य नहीं करना, कच्चा कार्य करना, कृपणता से धन इकट्ठा करना, कंजूसी से जमा करना. ९ थूक सूकणो (थूक अटकणो)—भयभीत होना, घबराना. १० थूक सुकाणो—धमकाना, भय दिखाना, डराना।

२ बलगम, खखार, ष्ठीवन। उ०—आवै देख उवाक, थूक रा थेचा थाया। ऊतरया सूत अणूंत, मूंत रेला नह माया।—ऊ.का.

थूकणो, थूकबो-क्रि०अ० [सं० थूत्करणम्] मुंह से थूक निकालना या फेंकना, मुंह से थूक उगलना। उ०—म्हारै ऊभां थांनै लूटै तो म्हारै जीविया नै धिक्कार है। दुनिया म्हारा नांम पर थूकैला अर म्हारै बडेरां री कीरत नै काळख लाग जावैला।—रातवासो

मुहा०—१ थूक नै चाटणो—कहे हुए वचन से टल जाना, वचन पर अटल न रहना, वचनहार होना, मुकरना. २ नांम माथै थूकणो—घृणा की दृष्टि से देखना, घृणा करना, तिरस्कार करना।

थूकणहार, हारो (हारी), थूकणियो—वि०।

थुकवाड़णो, थुकवाड़बो, थुकवाणो, थुकवाबो, थुकवावणो, थुकवावबो, थुकाड़णो, थुकाड़बो, थुकाणो, थुकाबो, थुकावणो, थुकावबो—प्रे०रू०।

थूकिओड़ो, थूकियोड़ो, थूक्योड़ो—भू०का०कृ०।

थूकीजणो, थूकीजबो—भाव वा०।

थूंकणो, थूंकबो—रू०भे०।

थूकियोड़ो-भू०का०कृ०—मुंह से थूक निकाला हुआ, थूक उगला हुआ। (स्त्री० थूकियोड़ी)

थूड-सं०पु० [सं० तुंड] सूअर का थूथन। उ०—पाळा मारूं पांचसै, पाखरिया पच्चास। तुरी उलाळूं थूड सूं, तो भूंडण भरतार।
—लो.गी.

(देश०) २ भुजा पर बांधा जाने वाला आभूषण विशेष, भुजबंध।

थूणी—देखो 'थूंणी' (रू.भे.)

थूथउ—देखो 'थूथो' (रू.भे.) (उ.र.)

थूथण-सं०पु० [सं० तुंड] सूअर आदि पशुओं का लंबा निकला हुआ मुंह।

रू०भे०—थूथणी।

थूथणी-सं०स्त्री० (देश०) १ हाथी के मुंह का एक रोग जिसमें उसके तालू में घाव हो जाता है. २ देखो 'थूथण' (रू.भे.)

थूथो-वि० [सं० तुच्छम्] १ तुच्छ. २ मूर्ख, नासमझ. ३ छोटे कान वाला।

सं०पु०—वह बकरा जिसके कानों में कुछ कसर हो।

रू०भे०—थूथउ।

थूभ—देखो 'थूंभ' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—चउरासी प्रतिस्ठा कीद्ध, 'अहमदावाद' थूभ सुप्रसिद्ध। तासु पदइ 'जिनसुंदर सूरि', स्री जिनहरस सूरि सुय पूरि।—ऐ.जै.का.सं.

थूर-वि० [सं० स्थूल] १ मोटा, बड़ा। उ०—थूर हथ धवळ री थाट मैंवट थियो।. काळ चाळो चखां चोळ बोळां कियो।—हा.झा.

२ हृष्ट-पुष्ट।

३ राक्षस, असुर। उ०—खर खेत खंडै थूर थंडै, सूर कुळ सिरताज।
—र.ज.प्र.

४ देखो 'थोर' (रू.भे.)

थूरणो, थूरबो-क्रि०स० [सं० थुर्वणम्] १ नाश करना, संहार करना, मारना। उ०—थाहर थाहर थूरिया, मारू अर घमसांण। 'पातल' रा नह पांतरै, कर जरमन केवांण।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ भिड़ पहलां कासमखां भागो, लड़वा 'मुकन' तणो नभ लागो। भाटी राव वहै मन भांणै, थूरै जिण चेराई थांणै।—रा.रू.

उ०—३ थूरण रिण दैतां थोका, लाज रक्खण संत लोका। रांम रिण दसमाथ रोका, करां झोका करां झोका।—र.ज.प्र.

२ ध्वस्त करना, तहस-नहस करना। उ०—वल देखे बोलियौ, सुणि खांनां सुरतांणां, 'सूरजमल' मो पिता, तेणि थूरे अरिथांणां।
—गु.रु.ब.

थूरणहार, हारो (हारी), थूरणियो—वि०।

थूरिओड़ो, थूरियोड़ो, थूरयोड़ो—भू०का०कृ०।

थूरीजणो, थूरीजबो—कर्म वा०।

थोरणो, थोरबो—रू०भे०।

थूळ-सं०पु० [सं० स्थूल] १ तंबू, डेरा, खेमा। उ०—सो सुनि हुलकर सैन लै, जैपुर ढिग आया। करि मुकांम प्रकार तट, निज थूळ तणाया।
—वं.भा.

२ समूह। उ०—थेइ त्थेइ नच्चि कबंधन थूळ। बनै तंहं कातर पत्त बघूळ।—वं.भा.

उ०—२ तूळ जिम उड़ै खळ थूळ गुरजां तड़छ, झूळ चवसठ लगी लेण झंपा। सूळ चमकावता फिरै बावन सुभट, स्यांम बाघूळ बिच जांण संपा।—बालाबख्स बारहठ

३ असुर, राक्षस। उ०—थूळ ऊथापिया साध नै थापिया। इंदरा राज इंदि सरीखां आपिया।—पी.ग्रं.

४ साधारणतया इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो सके वह पदार्थ, वह जो स्पर्श, घ्राण, दृष्टि आदि की सहायता से जाना जा सके. गोचर पिंड। उ०—१ थावर जंगम थूळ, सूछम जग निखल निवासी।
—ह.र.

५ अन्नमय कोश।

वि०—१ जो यथेष्ट स्पष्ट हो, जिसकी विशेष व्याख्या करने की आवश्यकता न हो, सहज में दिखाई देने या समझ में आने योग्य, सूक्ष्म का उल्टा। उ०—जिण सरधा सूं रचना कीवी, कारण सूक्ष्म थूळा जी। आतम तज अन आतम धारा, निज सरधा भूला जी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

२ नष्ट होने वाला, नाशवान। उ०—दीसत थूळ भोग सब द्रस्टि, हर तरह सूं परहरणा। त्रिपती न थाय करोड़ जुग भोगे, मिथ्या त्रिगत्रिसणा।—स्री सुखरांमजी महाराज

३ मूर्ख, नासमझ, जड़. ४ दृढ़, मजबूत. ५ जिसके अंग फूले हुए या भारी हों, मोटा, पीन। उ०—कोमळ कमळ ऊपरें रे त्रिवळी समर सोपांन रे रंग। कटि तटि अति सूछिम कही रे, थूळ नितंब वखांण रे रंग।—प.च.चौ.

६ विस्तृत, अधिक, बहुत।

थूळनास, थूळीनास-सं०पु० [सं० स्थूलनासिका] सूअर, वराह। (ह.नां., अ.मा., डिं.को.)

थूवौ—देखो 'थूओ' (रू.भे.)

थूहर—देखो 'थो'र' (रू.भे.)

थूही—देखो 'थुई' (रू.भे.)

थूहौ—देखो 'थूओ' (रू.भे.)

थें—देखो 'थे' (रू.भे.) उ०—मिसंजर के मिस मन भयौ, पीउ जो लाय बुलाय। मोल मुहंगौ थें लीयौ, सो माहरै आवी दाय।—व.स.

थे-सं०पु०—१ ताल. २ संबोधन. ३ निवास (एका.)

४ देखो 'थह' (रू.भे.)

सर्व०—१ आप, तुम। उ०—निज कीनौ थे नास, कहौ किण रक्षा करस्यौ। वात खरी हे वपण, मौत बिन नाहक मरस्यौ। —ऊ.का.

२ देखो 'थें' (रू.भे.)

थेइ, थेइय, थेई-सं०पु० (अनु०) १ नृत्य और ताल का बोल।

उ०—१ धिगमिग धिग धिग थेइ थेइ धिग मिग। थेइ थेइ तत नक ता थेइ।—ध.व.ग्र.

उ०—२ उमंग अंग उछरंग, रंग कुक्कु थुंग थुंग रत। थेइय थेइय तत थेइय, त त त त त थेइय थेइय त त।—सू.प्र.

उ०—३ थेई त्थेइ नच्च कवधन थूळ। वनै तंह कातर पत्र वघूळ। —व.भा.

यौ०—थेइय-थेइय, थेईत्थेई।

२ छोटे बच्चे के खड़े होने की क्रिया।

थेईकार-सं०पु० (अनु०) कत्थक नृत्य के बोलों का आधार।

यथा—ता थेई थेई तत्त।

थेईयात—देखो 'थेइआयत' (रू.भे.) उ०—लेख-लिखा नइ पारखी, कोठारी थेईयात। अंगरखा अंघोळोया, पांडव पोढी बात। —मा.कां.प्र.

थेगड़-सं०पु० (देश०) सहारा। उ०—वाल्ही थेगड़ नै थेगट दे वाळै। माळी भोळी नै भोंडी नै भाळै।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—देणौ।

थेगड़ौ-सं०पु०—१ कटि-मेखला या गले के हार आदि में लगाया जाने वाला विशेष गठन का सोने, चांदी आदि की चद्दर का चपटा भाग।

२ देखो 'थाग' (७) (अल्पा., रू.भे.)

थेगल, थेगली-सं०स्त्री०—फटे हुए वस्त्र आदि का छेद बंद करने का छोटा टुकड़ा, पैवंद। उ०—१ सीत निवारण जीरण कंथा, ताकै थेगल लागी। गिर तरु मंडी मसांण चौड़ै, ऐसे रह अनुरागी। —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ सकौ तेड़िया भूपति 'विजै' भाई वेटां वूझ सला, आया सुणी दिखणी लुटीजै लोक आथ। कड़क कायरां कह्यौ आटै लूण जोग कठै, न लागै थेगली आभ फाटै अथीनाथ।—महेसदास कूंपावत री गीत

२ देखो 'थोवली' (रू.भे.)

थेगलौ-सं०पु०—देखो 'थेगली' (अल्पा., रू.भे.)

थेगा-सं०पु०—एक प्राचीन राजवंश।

थेगौ-सं०पु०—सहारा, आश्रय। उ०—रोपै पाव उंडा घड़ा तेहरी रमावै रोळै, सारां थेगौ हजारां लगावै फूटै संध। फुणां फेर ऊभौ तोपां धमावै भमाळै फौजां, कलै आज वाळौ खांपां न मावै कमंध। —गोपालजी दधवाड़ियौ

क्रि०प्र०—देणौ।

थेघ-सं०पु० (देश०) १ एक के ऊपर एक चुनने की क्रिया, तह।

क्रि०प्र०—देणौ, लागणौ

२ सहारा, आश्रय।

क्रि०प्र०—लगाणौ।

थेघल, थेघली—देखो 'थेगल' (रू.भे.)

थेच—देखो 'थेचौ' (मह., रू.भे.)

थेचाकूटौ-वि०यौ० (देश०) १ मार खाने का आदी, पिटने का आदी होने वाला, ढीठ. २ कुम्भकार का औजार विशेष

कहा०—कठै राज री रेवाड़ी नै कठै कुम्हार री थेचाकूटौ।

थेचौ-सं०पु० (अनु०) १ भैंस के एक बार किए हुए मल का समूह।

२ किसी गीले पदार्थ का वह अंश जो डले की तरह बंधा हो, लोंदा।

उ०—आवै देख उवाक थूक रा थेचा थाया। उतरया सूत अणूंत मूंत रेला नह माया।—ऊ.का.

३ ढेर।

मह०—थेच।

थेट-वि० (देश०) १ निरा, निपट. २ बिल्कुल, एकदम. ३ समस्त, सारा. ४ शुद्ध. ५ वास्तविक, सही।

६ देखो 'ठेट' (रू.भे.) उ०—१ थेट गया सुख होय, पीया तेरै देस रे। हरिरांम हर पाय, पूरै हर आस रे।—स्री हरीरांमजी महाराज

उ०—२ ओ भड़ भल है आज रा, बाहर जासी थेट। चंगौ चाव चखावसी, इभ रमणी आखेट।—बां.दा.

उ०—३ महाराज उण ऊपर निराठ क्रिपा फरमावता, जोरावरसिंह थेट सूं रांमसिंह कन्है थौ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

थेटा-लग-क्रि०वि०—१ अन्त तक। उ०—एक सु तत्तं संग्रहै, हूंता सेन वहूत। थेटा-लग काढ़ै परी, किय तुरके तावूत।—नैणसी

२ परम्परा से, सदा से।

थेटू-क्रि०वि० (देश०) १ प्रारम्भ से, शुरू से, परंपरा से।

उ०—सार तथा असार, थेटू गळ वंधियौ थको। वडां 'सरम री भार, राळयां सरै न राजिया।—किरपारांम

२ हमेशा से, नित्य से। उ०—थेटू घर संवर ऊंडा सर थाघै। श्रां रै माळागर मूंढा रै आगै।—ऊ.का.

वि०—हमेशा का, नित्य का। उ०—थेटू छोड ववां थोक, मह अघ दीघ हांसल मोक। सातूं ईतरौ नह सोक, लंगर सुखी सगळा लोक।—र.रू.

थेथड़णौ, थेथड़बौ-क्रि०स० [सं० तेस्तीरणम्] किसी गाढ़ी वस्तु को छितरी हुई अवस्था में थपथपा कर लगाना। उ०—तिका काळी, डीगी, मोटा दांत, दूवळी, घणी डरावणी, माथा रा लटा विखरया, घणा तेल मांहे चवती, धवळा केस, माथै निलाड़ सिंदूर थेथड़ियौ थकौ, लोवडी काळी, काळी धावळी, कांचळी तेल मांहे गरकाव थकी, उघाड़ै माथै कीधां, हाथ मांहे त्रिसूळ झालियां दरवार आई।—जगदेव पवार री वात

थेथड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—किसी गाढ़ी वस्तु को छितरी अवस्था में थपथपा कर लगाया हुआ।

(स्त्री० थेथड़ियोड़ी)

थेया-सं०स्त्री० (देश०) चौहान वंश की एक शाखा।

थेयौ-सं०पु०—चौहान वंश की 'थेया' शाखा का व्यक्ति।

थेपड़—देखो 'थेपडी' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'थेपड़ौ' (१) (मह., रू.भे.)

थेपड़की—देखो 'थेपड़ी' (अल्पा., रू.भे.)

थेपड़ियौ—देखो 'थेपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

थेपड़ी-सं०स्त्री० (अनु०) ईंधन के लिये गोवर को थाप कर वनाई हुई गोल टिकिया, उपला।

रू०भे०—थापड़ी।

अल्पा०—थेपड़की।

मह०—थेपड़, थेपड़ौ।

थेपड़ौ-सं०पु० (अनु०) १ कुम्हार द्वारा छाजन के लिये मिट्टी का वनाया हुआ वह खपडा जो चौड़ा, चौरस और चिपटा होता है, खपरैल।

अल्पा०—थेपड़ियौ।

मह०—थेपड़।

२ देखो 'थेपड़ी' (मह., रू.भे.)

थेवौ-स०पु० (देश०) १ किसी गीले पदार्थ का वह अंश जो डले की तरह वधा हो, लोदा। उ०—थेवा पड़तोड़ी रावां घी थीणा। घा' परि देखा ला दूजै भव धीणा। हुयग्या हत आसा हकवक सुणि हाकौ। निरधन धन वाळां नीकळग्यौ नाकौ।—ऊ.का.

२ सहारा. ३ दीवार वनाते समय किसी लंबे पत्थर को खड़ा करने के लिये उसके सहारे हेतु लगाया जाने वाला छोटा पत्थर.

४ देखो 'थोवौ' (१, २) (रू.भे.)

थेर—देखो 'थविर' (रू.भे.)

थेरू—देखो 'थिर' (रू.भे.) उ०—महाराज नूं राज रीझै समाप्यौ। थेरू राज री राज देसांण थाप्यौ।—मे.म.

थेलकी—देखो 'थैली' (अल्पा., रू.भे.)

थेलियौ—देखो 'थैलौ' (अल्पा., रू.भे.)

थेली—देखो 'थैली' (रू.भे.) उ०—१ धिन धिन धनवंता थेली ले घायां। भायां लातरतां झेली भुज भायां। अवळां उद्धारी सवळां कुळ आया। पुन परचारण रा परमोदय पाया।—ऊ.का.

उ०—२ असी सिरपाव अनेक कड़ा मोती गज कंकण। थाट दरव थेलियां घणा जंवहर भूखण घण।—सू.प्र.

उ०—३ छोडियौ छाप वंध जास हूता जतन। काट थेली थकी वांचै स्रीकसन।—रुखमणी हरण

थेलीड़—१ देखो 'थैली' (मह., रू.भे.) २ देखो 'थैलौ' (मह., रू.भे.)

थेलौ—देखो 'थैलौ' (रू.भे.) उ०—हमालां दरव थेलां भरण, उरड भरण खट वाविया।—सू.प्र.

थेवर—देखो 'थविर' (रू.भे.) उ०—धन्य पांचै 'पांडव', तजी 'द्रोपदी' नार। थेवर नो पासे, लीधो संयम भार।—जयवाणी

थेवौ-सं०पु० (देश०) १ सहारा, मदद. २ देखो थूओ' (रू.भे.)

थेह—दखो 'थह' (रू.भे.) उ०—या सुण कर डाढ़ाळौ भूंडण नूं आप री थेह लेय आयौ।—डाढ़ाळा सूर री वात

थैं—देखो 'थैं' (रू.भे.) उ०—१ दादू गुरु गरवा मिळ्या, ता थैं सव गम होइ। लोहा पारस परसतां, सहज समांणा सोइ।—दादू वांणी

उ०—२ ग्यांन लहर जहां थैं उठै, वांणी का परकास। अनुभव जहं थैं ऊपजै, सब्दैं किया निवास।—दादू वाणी

उ०—३ तदा नाभि कमळ थैं व्रहमा नीपनौ।—द.वि.

थै-सं०पु०—१ ताल. २ देवता. ३ विरुद, कीर्ति।

सं०स्त्री०—४ कील।

वि०—१ पूर्ण. २ उर्ध्व (एका.)

प्रत्य०—१ तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिन्ह, से।

२ देखो 'थे' (रू.भे.)

रू०भे०—थैं।

थैई-सं०स्त्री० [सं० स्थिति] १ चमड़े की वनी विशेष वनावट की थैली जिस में वारूद आदि रखते हैं. २ देखो 'थेई' (रू.भे.)

थैलकी—देखो 'थैली' (अल्पा., रू.भे.)

थैलियौ—देखो 'थैलौ' (अल्पा., रू.भे.)

थैली-सं०स्त्री० [सं० स्थल=कपड़े का घर] १ कपडे, टाट आदि को सी कर वनाया हुआ पात्र जिस मे सामान भरा जाता है।

उ०—ऊजळा दही व्है जिसा कपड़ा मे फूटरी-फूटरी गुजरातणियां अर हाथां में थैलियां लियोड़ा ग्राहक सव एक साथै इज वाडा मायनै

सूं बकरियां निकळी व्है ज्यूं परभात में इज निकळ गया हा।
—रातवासो

२ रुपये डालने का कपड़े आदि का बना पात्र, तोड़ा।

३ कागज या कपड़े की बनी पत्र डालने की थैली, लिफाफा।

उ०—इण भांत पत्र लिख थैली में मेल्ह लाखोटो कर प्रोहित नूं सांपियो, प्रोहित पत्र लेय बाहिर हुम्रो।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—थेली, थैई।

अल्पा०—थेलकी, थैलकी।

मह०—थेलीड़, थैलीड़।

थैलीड़—१ देखो 'थैली' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'थैलो' (मह., रू.भे.)

थैलो-सं०पु० [सं० स्थल=कपड़े का घर] १ कपड़े, टाट आदि को सी कर बनाया हुआ पात्र जिसमें कोई वस्तु भर कर बंद की जा सके.

२ रुपये रखने के लिये मजबूत कपड़े आदि का बना थैलीनुमा पात्र, तोड़ा। उ०—थैला घरै राव सूजै ज दिन, सांसण तीन समापिया।
—सू.प्र.

३ पायजामे का वह भाग जो जंघा से घुटने तक होता है.

४ मकान के दरवाजों के ऊपरी हिस्से पर चारों ओर लगाये जाने वाले चौड़े पत्थर के नीचे का पत्थर।

रू०भे०—थेलो।

अल्पा०—थेलियो, थेली, थैलियो, थैली।

मह०—थेलीड़, थैलीड़।

थैह—देखो 'थह' (रू.भे.)

थो-सं०पु०—१ तरु, वृक्ष. २ मन. ३ पुत्र. ४ नृसिंह.

५ चालाक (एका.)

थोक-सं०पु० [सं० स्तोमं, स्तोम्, स्तोमः, स्तोमक] १ आनन्द।

उ०—१ किया सहि थोक निमो किरतार। परमेसर तूझ तणो कोइ पार।—गुणनारायण

उ०—२ आज ठाकुर री कृपा कर अर रावळै सोह थोक छै।
—नैणसी

२ वैभव। उ०—थारै राज रिद्ध सें थोक छै सो थारो सुम्र आज तूती दाई तूई तूई करबो करै।—नी.प्र.

३ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत। उ०—मित्र सेवक रा घणा थोक कीजै जिको आपको सरीर मरणै मारणै री वेळा थारी ढाल होय।—नी.प्र.

४ पदार्थ। उ०—१ चंपो मरवो केवड़ो, नीरू तीनै थोक। ग्रे हर ढीलो करहलो, फुकियो ना'वै भोक।—ढो.मा.

उ०—२ साहजी भाग छाया री भांत साथ छै, आपारै जे इतरा थोक था सो केथां।—साह रांमदत्त री वारता

५ घटना, बात। उ०—आखै युधिस्टर आळ, अरक सुत उत्तर आलै। ब्रह्म न वांचै वेद, पाप गंग नहिं पालै। डिगै गैण अरणडोल, जोग तज बैसे सकर। हार कंठ सिणगार, भार छोडवै मिणधर। एतला थोक वरतै इळा, जळण घ्रत होम न जळै। सेवगां तणा 'मेहा' सदू, साद न करणी संभळै।—चौथ बीठू

६ प्रकार, तरह, भांति। उ०—१ न दीयै कांइ कृपण नर, सहु इम कहै संसार। सात थोक कहै धरमसी, यैं ओहिज दातार।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ विद्या दस थोक वधै।—ध.व.ग्रं.

७ चुभती बात, व्यंग। ज्यूं—छोरी रै सासरै गयो उठै छोरी री सासू म्हनै घणा थोक सुणाया। ज्यूं—इतरी बात सारू थूं म्हनै घणा थोक कह्या।

८ इकट्ठी वस्तु, कुल। उ०—कास्ठ सपाद थोक।—धर्म पत्र

९ बिक्री का इकट्ठा माल, इकट्ठा बेचने की चीज, खुदरा का उलटा।

१० समूह। उ०—१ ओपत तन तेल सिंदूरां आंगा, आच गदाधर रूप अढंगा। भारथ थोक सबळ सळ भांगा, लागै झोका महाबळ लांगा।—र.ज.प्र.

उ०—२ 'भवणवई' 'व्यंतर' 'ज्योतिखी' रे लाल, पहिलो दूजो देव-लोक हो भविक जन। आगत कही दोनां तणी रे लाल, गत पांचां नो थोक हो भविक जन।—जयवांणी

११ झुण्ड, मण्डली, यूथ। उ०—नगरी मांहे जाय ए, कुटुंब भेळो कियो राय ए। ब्याही न्यातीला लोक ए, ज्यां का मिळिया घणा थोक ए।—जयवांणी

१२ राशि, ढेर, अटाला।

अल्पा०—थोकड़ो।

थोकड़ो—देखो 'थोक' (१२) (अल्पा., रू.भे.) उ०—तड़ां भड़ां थोकड़ां सचोकड़ां चुकाया त्याग, ओकड़ां सोकड़ां छूटै सुपातां अछेह। मोती कड़ां मूंदड़ां गांमड़ां गजां घोड़ां मोजां, मंडै झड़ां दांमड़ां रोकड़ां गड़ां मेह।—महादांन महडू

थोकडेडा-स०स्त्री० (देश०) सोलंकी वंश के राजपूतों की एक शाखा।

थोकडेडो-सं०पु० (देश०) सोलंकी वंश के राजपूतों की 'थोकडेडा' शाखा का व्यक्ति।

थोकायती-सं०पु० [सं० स्तोमक+रा०प्र०आयत] थोक, झुंड अथवा समुदाय का पति या नायक। उ०—थया मदद्दीण अरहरां थोकायती, जग अचळ किया झोकायती जेर।—अमरसिंह सीसोदिया रो गीत

थोगणो-वि० (देश०) (स्त्री० थोगणी) थाह लेने वाला।

थोगणो, थोगबो-क्रि०स० (देश०) थाह लना।

थोगणहार, हारो (हारी), थोगणियो—वि०।

थोगिग्रोड़ो, थोगियोड़ो, थोग्योड़ो—भू०का०कृ०।

थोगीजणो, थोगीजबो—कर्म वा०।

थोगियोड़ो-भू०का०कृ०—थाह लिया हुआ।

(स्त्री० थोगियोड़ी)

थोगो-सं०पु० (देश०) १ सहारा, आश्रय। उ०—आच पकड़ ढाबै अड़वड़ियां, पग पग चाढ़ै वडै प्रमाण। थोगा सरब 'जवांन' थारो, खांमंदपणो धनो खूमांण।—चांवंडदांन दधवाड़ियो

२ अवलंबन, स्तम्भ । उ०—कजाकी संभायौ धणी जोधांण रूठतां झिलौ, आरांण तूटतां थोगौ लगायौ अेवास ।

—आउआ ठाकुर बखतावरसींघ री गीत

क्रि०प्र०—दैणौ, लगाणौ ।

थोड़उ—देखो 'थोडौ' (रू.भे.)

थोड़-थाड़-वि०यौ०—किञ्चित ।

थोड़लौ—देखो 'थोडौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—द्रढ समकिति नर थोड़ला, इम भाख्यौ जिनराय । द्रढ समकित पाळै तिकै, वेगा सिवपुर जाय ।—जयवांणी

(स्त्री० थोड़ली)

थोड़ौ—वि० [सं० स्तोक, प्रा० थोअ+रा०प्र०डौ (स्त्री० थोडी) कम, अल्प, न्यून, तनिक । उ०—१ थोड़ै काळ भण्या घणू रे, धरम ध्यांन रस लीन । केवळग्यांन लही करी रे. पोहता मुगति अदीन ।

—वि.कु.

उ०—२ इम समरै हो निज क्रित पाप, आतम निंदइ आपणौ । हुवइ थोड़ौ हो पिण अपराध, उत्तम मोनै करि घणौ ।—वि.कु.

रू०भे०—थोडउ, थोड़उ, थोडौ, थोलउं ।

अल्पा०—थोडलौ. थोडलउं, थोडलउ, थोडलौ ।

थोटक—सं०पु०—कर विशेष ? उ०—दांण पूंछी हल भोम भाग भेट तलारक्षक वद्धापन मलवरक वळ चंचा चारिका गढ वाटी छत्र आलहण थोटक कुमारादि सुखडी इति क्रमेणास्टादस करा जाता ।

—व.स.

थोड—सं०पु० [सं० तुंड] १ बैलगाडी के सब से आगे के भाग में लगा हुआ लकडी या लोहे का वह डंडा जो कुछ नीचे की ओर झुका हुआ होता है और जिसे बिना जुती हुई गाडी को जमीन पर ठहराने के लिये तथा गाडी के अगले भाग को धरातल से कुछ ऊँचा रखने के लिये लगाया जाता है ।

रू०भे०—थोड ।

२ देखो 'थोडी' (मह., रू.भे.)

थोडउ, थोडउ—देखो 'थोडौ' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—वरसइ थोडउं बहु तपइ, गाजइ गयणि निटोल । अधिकुं दाखी ऊसरइ, जिम नीसत ना बोल ।—मा कां.प्र.

थोडलउं, थोडलउ, थोडलौ—देखो 'थोडौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ जइ वादळउ तउ दीह, जइ लहुडउ तउ सीह, तिम थोडलउ सुपात्र दान ।—व.स.

उ०—२ आपणुं कुळ दूसइ, पिरायुं भूसइ, घणइं न तूसइं, थोडलइं अपमांनि रूसइ, न जाई वेटी ।—व.स.

थोडिउ—देखो 'थोडौ' (रू.भे.) उ०—मोटउं कूडउं मागसिरि, वळी विचारी जोइ । दिन थोडिउ रयणी घणी, वयरणी कांई विगोइ ।

—मा.कां प्र.

थोडी—सं०स्त्री० [सं० तुंड] सर्प का मुंह ।

मह०—थोड ।

थोडेरूं, थोडेरौ—वि० [सं० स्तोक, प्रा० थोअ+स्वार्थिक 'ड'+सं० तर] अपेक्षाकृत कम । उ०—कूबर चिंतइ त्यारइ जेह, संग्रांम करिसइ मझस्यूं एह । घणउं सैन्य छइ स्रीनळह तणउं, माहरूं सैन्य थोडेरूं गणउं ।—नळ-दवदंती रास

थोडौ—देखो 'थोडौ' (रू.भे.) उ०—१ माधव माधव मुखि कहइ, मंदिर मांहि न जाइ । थोडइ पांणी मीन जिम, तिम तिल पापड़ थाइ ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ आव्यां बीडां पांनह तणां । आव्यां लूगड थोडा घणां ।

—विद्याविळास पवाडउ

(स्त्री० थोडी)

थोती—सं०स्त्री० (देश०) (चौपायों के) मुंह का अगला भाग, थूथन ।

थोथ—सं०स्त्री० (देश०) १ खोखलापन, शून्य स्थान. २ निःसारता. ३ निर्जन भूमि ।

थोथरौ, थोथौ—वि० (देश०) (स्त्री० थोथरी, थोथी) १ खोखला, खाली, पोला । उ०—ताहरां खांन ऊदै नूं कहाड़ियौ—'माल ल्यावौ, अर तियै बरछी मांहै वाही ।' देखै घास थोथा तो है नहीं ? ताहरां बरछी एक रजपूत रै साथळ रै लागी ।—नैणसी

मुहा०—थोथा चिणा वाजै घणा—थोथा चना अधिक शब्द करता है । जिनमे गुण नहीं होते वे ही बढ़-बढ कर बातें करते हैं ।

२ निर्धन, कंगाल । उ०—दोनां सूं वातां करै, खरची खावै सो घर सारौ थोथौ कियौ ।—नापै सांखलै री वारता

३ अनुपजाऊ । उ०—१ इत्यादि मोथी आदति रा अळिया । थोथी थळवट रा थळिया वेथळिया । ढीली लांगां रा ढेरा ढळकाता । टोघड़ टुकडां रा खेरा खळकाता ।—ऊ.का.

उ०—२ जायौ तूं जिण देस, जळ ऊंडा थोथा थळां । भंवरपणा रौ भेस, रळचौ कठा सूं राजिया ।—किरपारांम

४ सारहीन, निकम्मा, बेकार । उ०—१ डहक्यौ डंफर देख, वादळ थोथौ नीर विन । हाथ न आई हेक, जळ री बूंद न जेठवा ।

—जैतदांन बारहठ

उ०—२ थोथा गैडंबर संवर विण थाया । छपनै सूमां सा आडंबर छाया । तुरत तिजोरी में जळ नै जड दीनूं । दे दे खांडेला खड नै खड दीनूं ।—ऊ.का.

मुहा०—थोथी वात, सारहीन वात , व्यर्थ की बकवास ।

५ मूर्ख, नासमझ । उ०—फिट रे पापी वभणा मन रंगे रे । मूरिख जट्ट गमार लाल मन रंगे रे । फिट रे थोथा पंडिया मन रंगे रे । मूळ न समझै गमार लाल मन रगे रे ।—प.च.चौ.

थोपणौ, थोपवौ—क्रि०स० [सं० स्थापन] १ जमाना, रखना ।

उ०—जांण्यौ बीडौ चनण रौ, आसी वास सुवास । जे जाणूं क इरंड हौ, पग नी थोपूं पास ।—अज्ञात

२ आरोपित करना, मत्थे मढना, लगाना ।

थोपणहार, हारो, (हारी) थोपणियो—वि० ।
थोपवाड़णो, थोपवाड़बो, थोपवाणो, थोपवाबो, थोपवावणो, थोपवावबो, थोपाड़णो, थोपाड़बो, थोपाणो, थोपाबो, थोपावणो, थोपावबो—प्रे०रू० ।
थोपिम्रोड़ो, थोपियोड़ो, थोप्योड़ो—भू०का०कृ० ।
थोपीजणो, थोपीजबो—कर्म वा० ।

थोपियोड़ो—भू०का०कृ०—१ जमाया हुआ, रखा हुआ. २ आरोपित किया हुआ, मत्थे मढ़ा हुआ, लगाया हुआ ।
(स्त्री० थोपियोड़ी)

थोब—देखो 'थोभ' (रू.भे.)

थोबड़—देखो 'थोबड़ो' (मह., रू.भे.) उ०—करहा नीरू जउ चरइ, कंटाळउ नइ फोग। नागरवेलि किहां लहइ थारा थोबड़ जोग ।
—ढो मा.

थोबड़ियो—देखो 'थोबड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

थोबड़ो—सं०पु० [सं० तुवर=श्मश्रुहीन (मुख) अथवा फा० तोबर] मुँह, मुख (अवज्ञा, व्यंग)
मुहा०—थोबड़ो फुलाणो—मुँह फुलाना, नाराज होना ।
अल्पा०—थोबड़ियो ।
मह०—तोबड़, थोबड़ ।

थोबणो, थोबबो—देखो 'थोभणो, थोभबो' (रू.भे.)

थोबणहार, हारो (हारी), थोबणियो—वि० ।
थोबवाड़णो, थोबवाड़बो, थोबवाणो, थोबवाबो, थोबवावणो, थोबवावबो, थोबाड़णो, थोबाड़बो, थोबाणो, थोबाबो, थोबावणो, थोबावबो—प्रे०रू० ।
थोबिम्रोड़ो, थोबियोड़ो, थोब्योड़ो—भू०का०कृ० ।
थोबीजणो, थोबीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

थोबली—सं०स्त्री० [सं० स्तम्+रा०प्र०ली] वह खंभा जो किसी बोझ को रोकने के लिये नीचे से लगाया जाय । सहारे का खंभा, चांट ।
रू०भे०—थंबली, थंबी, थंभली, थांबली, थूंबली, थूंभली, थेगली ।

थोबियोड़ो—देखो 'थोभियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० थोबियोड़ी)

थोबो—स०पु०—१ बछड़े द्वारा दुग्धपान करते समय थनों पर लगाया जाने वाला मुँह का धक्का, टक्कर ।
क्रि०प्र०—देणो, लगाणो ।
[सं० स्तभ्] २ सहारा, आश्रय ।
रू०भे०—थेबो ।
३ स्तम्भ, खंबा ।

थोभ—सं०पु० [सं०-स्तभ्] १ स्तम्भ, खंबा । उ०—सूकइ वनि सूकी तणउ, लेस न पुहुंचइ लोभ । कोइलि जि कदळी तणी, किम करि थोहरि थोभ ।—मा.कां.प्र.
२ रुकावट, रोक । उ०—१ केतेक दिवस ढीधउ कीए, पिण थिर थोभ न को थयउ । 'समयसुंदर' कहइ सत्यासीया, तिसइं तूं आपो गयउ ।—स.कु.
उ०—२ जठै संगर रो भार धारण माथै श्रोढि गुजर धरा रो कपाट होय आपरा १२ बारह मैं वनिता समेत काठी रुम्मादेस चंद्रहास रा नोटा वाट चलावण रै काज अधीगत रा धीरा रै थोभ लगाट लड़ियो ।—वं.भा.
३ सीमा, हद । उ०—इद दे दे गिगा नगर दे, बलि निज देह विराट । पेस लोभ रो थोभ प्रभु, वामन बण्या बिराट ।
—रेवतसिंह भाटी
मुहा०—लोभ रो कांई थोभ—लालच की कोई सीमा नहीं होती है ।

थोभणो, थोभबो—क्रि०स० [सं० स्तम्] १ रोकना । उ०—१ गंदंती पाड़ा पुगे, धारण अचळ अघट्ट । मूंडण जगी सु मूं भरो, थोभै धरिया थट्ट ।—हा.झा.
२ किसी गिरती हुई वस्तु को अधर में रोक लेना, ठहरा लेना, पकड़ लेना । उ०—१ गाजि कनक अंबरी सीह सिधुरां दराणहि । सुकवि सोम संभरै थोभि नग धरै जिसा महि ।—रा.रू.
उ०—२ आयो जोधांणै 'अजो', थोभंतो असमांन । आये सहिवाड़ी दुरग, संग सुजायत सांन ।—रा.रू.
३ सहारा देना । उ०—अेक प्रजा प्रेम उजळी, अेक उमिर ये थंभ । मुझ मति पांपि, महामति, तुं निति थोभण थंभ ।—मा.का.प्र.
क्रि०अ०—डटना, रुकना, ठहरना । उ०—ईसरहरो थोभियो अण-भंग, धमतो ऊसमतो पुळ धीढ । हार गनाह चाळते दूजै, रिणि रोहै सोहै राठौड़ ।—नरपाळ राठौड़ रो गीत
थोभणहार, हारो (हारी), थोभणियो—वि० ।
थोभवाड़णो, थोभवाड़बो, थोभवाणो, थोभवाबो, थोभवावणो, थोभवावबो, थोभाड़णो, थोभाड़बो, थोभाणो, थोभाबो, थोभावणो, थोभावबो—प्रे०रू० ।
थोभिम्रोड़ो, थोभियोड़ो, थोभ्योड़ो—भू०का०कृ० ।
थोभीजणो, थोभीजबो—कर्म वा०, भाव वा० ।

थोवणो, थोवबो—रू०भे० ।

थोभियोड़ो—भू०का०कृ०—१ रोका हुआ. २ किसी गिरती हुई वस्तु को अधर में रोका हुआ, थामा हुआ. ३ सहारा दिया हुआ. ४ रुका हुआ, डटा हुआ, ठहरा हुआ ।
(स्त्री० थोभियोड़ी)

थो'र—स०पु०लि०—एक प्रकार की एक ही जड़ पर पनपने वाली गुल्म जिसमे लचीली टहनियां नही होती हैं । गांठों से गुल्लो या डंडे के आकार के डंठल निकलते हैं । इसके डंठलों और पत्तों में एक प्रकार का कडुवा दूध भरा रहता है जो औषधियों में काम आता है । यह प्रायः पहाड़ियों की तराई में उगती है ।
पर्या०—महातरु, सेंहुड ।
रू०भे०—थूर, थूहर, थोहर, थोहरि, थोहरी ।

थोरणौ, थोरबौ-क्रि०स०—आग्रह करना, अनुरोध करना, किसी बात मनाने के लिये गरज करना। उ०—जसां मालू नैं जगावै छै, मांगै ज्यूं मंगावै छै। म्यारांमजी कैफ मैं घोरांणा, मालू नैं ग्रहणां थोरांणा। म्यारांमजी नैं जगावै मालू, तौ थांकौ जनम कौ दाळद पालू।—मयारांम दरजी री बात

२ देखो 'थूरणौ, थूरबौ' (रू.भे.)

थोरणहार, हारौ (हारी), थोरणियौ—वि०।

थोरिग्रोडौ, थोरियोड़ौ, थोरचोड़ौ—भू०का०कृ०।

थोरीजणौ, थोरीजबौ—कर्म वा०।

थोरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ आग्रह किया हुआ, अनुरोध किया हुआ, गरज किया हुआ. २ देखो 'थूरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० थोरियोड़ी)

थोरियौ-सं०पु०—थूहर का फल।

थोरी-सं०पु०—भीलों की तरह की एक जाति, अथवा इस जाति का व्यक्ति।

थोरु—देखो 'थो'र' (रू.भे.) उ०—रितुराउ वसंतनउ प्रणधि, उद्यांन वन मांहि आंणिउ, विळासीए वखांणिउ, साकर नी पाळि दूधि पायउ, कोइल तणैं व्रिंद छायाउ, रूपि सुचगु नम्यउ, नवरंगु थुडि थोरु पथिक वधूजन चित्त चोरु।—व.स.

थोरौ-सं०पु०—आग्रह, अनुरोध, निहोरा।

उ०—त्यागी फळ दरसण तणौ, करदै खोटी करसणां। कर जोड़ इतौ थोरौ करूं, दीज्यौ मोरौ दरसणां।—ऊ.का.

थोलउं—देखो 'थोड़ौ' (रू.भे.) उ०—जइ कुरमांणउं तोइ नागरखंडउं पांन, जइ थोलउं तोइ सत्पात्रि दांनु।—व,स.

थोलौ-सं०पु० (देश०) तलवार की मूठ का निचला भाग जिस से मूठ के पकडने के भाग को मजबूती के साथ लगाया जाता है।

थोवौ-वि०—थोडा। उ०—मध्य अनंतानंत छयें में, थोवा सिद्ध अनंता। एक निगोदी जीव अनंता, वळिय वनस्पति वंता।—ध.व.ग्रं.

थोहर, थोहरि, थोहरी—देखो 'थो'र' (रू.भे.) उ०—१ सूकइ वनि सूडी तणउ, लेस न पहुंचइ लोभ। कोइलि जि कदळी तणी, किम करि थोहरि थोभ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ थांणू थोहरि थूंकणी, थगि थगि थापटि थाग। थळि थळि थांणै थिर रहइ, थूयाहूली थाप।—मा.कां.प्र.

थौ-सं०पु०—१ संग. २ गमन. ३ मन. ४ मोह, प्रेम.

५ अष्टसिद्धि (एका.)

क्रि०अ० [सं० स्था] एक शब्द जिस से भूतकाल में होना सूचित होता है। राजस्थानी के 'छै' अथवा 'है' का भूतकाल। उ०—१ पछै राव जिण वड़ हेठै वैठौ थौ, सु वड़ लोही वूठौ।—नैणसी

उ०—२ तिण रै वेटो न थौ, तरै राव रांणंगदे री वैर राव केल्हण नूं कहाड़ियौ।—नैणसी

थौको-सं०पु०—समूह। उ०—रै फोका लीरांमं, तूं सातै ताळ वेधण तीरं। थूरै देतां थौका, दीनां चा नाथ जगदाता।—र.ज.प्र.

थौड—देखो 'थोड' (१) (रू.भे.)

थ्यावस-सं०पु० [सं० स्थेयस] १ ठहराव, स्थिरता. २ धैर्य, धीरता।

थ्यु, थ्यौ-भू०का०कृ० [सं० स्था] १ स्थित. २ हुआ।

उ०—आंह्य[ण] नि तां वरूण करंतां सिंघु न थ्यु मारुग्राडि, तु सूं पुण्य करघूं मि मन सूं, चिंता पांमि हाडि।—नळाख्यांन

द

द—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला का अठारहवां व्यञ्जन तथा तवर्ग का तीसरा अक्षर जिसका उच्चारण स्थान दंतमूल है। यह अल्पप्राण है और इसमें संवार, नाद और घोष नामक बाह्य प्रयत्न होते हैं।

दं-सं०पु०—१ इन्द्र. २ युग. ३ अभिमान. ४ दंड।

सं०स्त्री०—दैत्य की स्त्री (एका.)

दंग-वि० [फा०] १ विस्मित, चकित, आश्चर्यान्वित।

उ०—सिवरी मत भंग भयो जिण सेती, खार हुवौ जळ गंग खरौ। कहियौ रिख दंग कहा अब कीजियै, ढंग न कौ हरि अंग धरौ।
—भगतमाळ

क्रि०प्र०—रैणौ, होणौ।

सं०पु०—१ घबराहट, भय।

सं०स्त्री० [देश] २ चिनगारी, अग्नि-कण। उ०—इक राह चाह लागौ असुर, निर सहाय प्राकार नव। 'अवरंग' अयौ पर उलटियौ, दंग प्रगट्टयौ जांण दव।—रा.रु.

३ देखो 'दंगौ' (मह., रू.भे.)

दंगइ-वि० [फा० दंग+रा०प्र०ई] १ दंगा करने वाला, फिसादी, लड़ाका, उपद्रवी. २ प्रचंड, उग्र।

दंगणौ, दंगवौ—देखो 'दागणौ, दागवौ' (रू.भे.) उ०—आधी रातै 'रोलू' अंगण, डस्यौ सांप काळै जम डंडण। मूवौ जांणि लै चाल्या दंगण, सन्मुख मिळघा 'खरतरगच्छ' मंडण।—ऐ.जै.का.सं.

दंगर-सं०पु०—शत्रु। उ०—उछट अंगरां धार रीझां करण अधपति सत्री दळ दंगरा हियै खटकै 'मांन' राजा तणा दिया मातंगरां। लंगरां घणा अदतार लटकै।—महादान महडू

दंगळ-सं०पु० [फा० दंगल] १ पहलवानों की कुश्ती, मल्ल-युद्ध।

उ०—आणंद मंगळ आह, नित दंगळ होता नया। पण जंगळ पतसाह. जस खाटण लीन्हो 'जसा'।—ऊ.का.

२ युद्ध, लड़ाई। उ०—तठै 'मवळावत' 'सूरतसीघ'। सझै खळ दंगळ मोहणसीघ।—सू.प्र.

३ मल्ल-युद्ध का स्थान, अखाड़ा।

मुहा०—दंगळ में उतरणौ—कुश्ती लड़ने के लिए अखाड़े में आना। घर के जंजाल में आना। किसी लड़ाई या प्रतियोगिता मे किसी की बराबरी में खड़ा होना।

४ खेल, तमाशा. ५ समूह, जमात, मण्डली।

दंगियोड़ौ—देखो 'दागियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दंगियोड़ी)

दंगौ-सं०पु० [फा० दंगल] १ झगड़ा, उपद्रव। उ०—सहर में रोळाटौ! हिंदू मुसळमांनां रौ दंगौ कांनी-कानी।—वरसगाठ

उ०—२ बबोई भर रा मोवाळियां अर दादां रौ अट्टौ। कोरी मुसळमांनां री बरती अर बटी खतरनाक जगै। दंगा-दौड़ा रा दिनां में तौ भीडी बाजार मुसळमांनां रौ खास गढ बण जाया करै हौ।
—रातवासौ

यौ०—दंगा-दौड, दंगा-फिसाद।

२ शोर-गुल, हुल्लड़।

मह०—दंग।

दंठेल-वि०—जबरदस्त, बड़ा। उ०—सांवळा हुवा चहुंआंण संग। राठौड़ तणा चख चोळ रंग। भारात हाथ बावंत भीलं। फाटकां कटै दंठेल फील।—पा.प्र.

दंड-सं०पु० [सं०] १ दो सगण के दूसरे भेद का नाम. २ काव्य छंद का भेद विशेष. ३ ३६ प्रकार के दंडायुद्ध में से एक (व.स.)

४ देखो 'डंड' (रू.भे.) उ०—१ उठै तीन लोकां तणौ दंड आवै। नरां हैमरां गैमरां पार ना'वै।—सू.प्र.

उ०—२ पुरुख कोए करि जु हासूं, तेहनि दंड देवु निरधार। तु हूं रहूं तह्यारि पासि, जिहां आवि माहारु भरथार।—नळाख्यांन

दंडक-सं०पु० [सं०] १ डंडा. २ दंड देने वाला पुरुष, शासक. ३ छंदों का एक वर्ग (जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो।)

उ०—एक सिलोक का बणाव सो बतीस अखिरू से लेकरि चौरासी अखिरू लग लही, इस ऊपर होय सो दंडक कहियै।—सू.प्र.

५ वह छंद जो दो छंदों को मिला कर बनाया जाय (र.ज.प्र.)

६ इक्ष्वाकु राजा का एक पुत्र. ७ दंडकारण्य. ८ एक प्रकार का वात रोग. ९ शुद्ध राग का एक भेद. १० जैन मतानुसार प्राणी अपने कर्मों का दण्ड भोगे उन स्थानों का एक समूह, जाति या वर्ग विशेष जो चौवीस माने गये हैं।

वि०वि०—पुराणानुसार अंडज, स्वेदज, उद्भिज और जरायुज को चौरासी लाख योनियों मे विभक्त किए गयेहैं जिनमें—

मनुष्य	—	चार लाख	पशु	—	तीस लाख
पक्षी	—	दस लाख	कृमि	—	ग्यारह लाख
स्थावर	—	बीस लाख	जलजंतु	—	नौ लाख

कुल चौरासी लाख

किन्तु जैनमतानुसार उक्त चौरासी लाख योनियों को चौवीस दण्डकों में विभक्त किया गया है जो निम्न प्रकार है—

सात लाख	पृथ्वीकाय	एक दण्डक
सात ,,	अपकाय	,, ,,
सात ,,	तेऊकाय	,, ,,
सात ,,	वाऊकाय	,, ,,
चौदह ,,	साधारण वनस्पतिकाय	}
दस लाख	प्रत्येक वनस्पतिकाय	} ,, ,,

दो	,,	बे-इन्द्रिय	एक दण्डक
दो	,,	ते-इन्द्रिय	,, ,,
दो	,,	चौ-इन्द्रिय	,, ,,
चार	,,	तिर्यंच पंचेन्द्रिय	,, ,,
चौदह	,,	मनुष्य योनि	,, ,,
चार	,,	नरक	,, ,,
चार	,,	देवता	तेरह दण्डक
कुल चौरासी लाख योनियों			कुल चौबीस दण्डक

रू०भे०—डंडक ।

दंडकळ—देखो 'दंडकळा' (रू.भे.)

दंडकळस-सं०पु०—ध्वजडंड और कलस ? उ०—वालीग्र गोरि जाळि प्रवाह छूटइ, बंघ फुटइ, देहरि दंडकळसे आंमलसारा सोना तणा जळकइ ।—व.स.

दंडकळा-सं०स्त्री० [सं०] एक छंद जिसमें १०,८ और १४ के विराम से ३२ मात्राएं होती हैं किन्तु इसमें जगण न आना चाहिये ।

दंडकार, दंडकारण, दंडकारण्य, दंडकारौ-सं०पु० [सं० दंडकारण्य] वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला था (रामायण)

वि०वि०—दंडक नामक इक्ष्वाकु राजा के पुत्र ने एक बार अपने गुरु शुक्राचार्य्य की कन्या का कौमार्य्य भंग किया । इस पर शुक्राचार्य्य ने शाप देकर इन्हें इनके पुर सहित भस्म कर दिया । इनका देश जंगल हो गया और दंडकारण्य कहलाने लगा ।

उ०—१ वनां दंडकारा विचै पंचवट्टी । जठै धार गोदावरी आय जट्टी ।—सू.प्र.

उ०—२ जुयां दंडकारां घरै भेख जू जो । दतां भेख हेको म्रिगां भेख दूजो ।—सू प्र.

दंडगौरी-सं०स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम ।

दंडजात्रा-सं०स्त्री० [सं० दंडयात्रा] १ सेना की चढ़ाई. २ दिग्विजय के लिये प्रस्थान. ३ वरयात्रा, बरात ।

दंडण-सं०पु० [सं०] दंड देने की क्रिया, शासन ।

दंडणी-सं०स्त्री०—दंड देने वाली । उ०—देवी दंडणी देव वेरी उदंडा । देवी वज्जया जमा देतां विखंडा ।—देवि.

दंडणी, दंडबौ—देखो 'डंडणी, डडबौ' (रू.भे.)

उ०—भूप रघुवर, सभत धनु सर, जूंभ मडे, दैत दंडे ।—र.ज.प्र.

दंडणहार, हारौ (हारी), दंडणियौ—वि० ।

दडवाड़णौ, दडवाड़बौ, दंडवाणौ, दंडवाबौ, दंडवावणौ, दंडवाववौ, दडाडणौ, दंडाड़बौ, दडाणौ, दंडाबौ, दंडावणौ, दंडाववौ—प्रे०रू० ।

दडिओड़ौ, दंडियोड़ौ, दंड्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दंडीजणौ, दडीजबौ—कर्म वा० ।

दंडतांत्री-सं०स्त्री० [सं०] वह जलतरंग बाजा जिसमें तांबे की कटोरियां काम में लाई जाती हैं ।

दंडधर, दंडधार-सं०पु० [सं०] १ यमराज (डिं.को.) २ सन्यासी. ३ शासन-कर्त्ता ।

वि०—डंडा रखने वाला ।

दंडनायक, दंडनायिक-सं०पु० [सं० दंडनायक] १ दंड विधान करने वाला राजा या हाकिम । उ०—पुरोहित, दंडनायिक सेनापति पुंतार अस्ववाहक प्रतीकारआरिक ।—व.स.

२ सेनापति । उ०—स्रीगरणा वयगरणा रायगरणा घरमाधिगरणा, देवगरणा नायक दंडनायक अंगलेखक ।—व.स.

३ सूर्य के एक अनुचर का नाम ।

दंडनीति-सं०स्त्री० [सं०] दंड देकरे अर्थात् पीड़ित कर के शासन में रखने की राजाओं की नीति ।

दंडापांणि-सं०पु० [सं० दंडापाणि] १ काशी में भैरव की एक मूर्ति. २ यमराज ।

दंडपात-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमें रोगी को नींद नहीं आती है और पागलों की भांति इधर-उधर घूमता है ।

दंडपाळक-सं०पु० [सं० दंडपालक] द्वारपाल, ड्योढीदार ।

दंडपासक-सं०पु० [सं० दंडपाशक] १ दंड देने वाला प्रधान कर्मचारी । २ जल्लाद, घातक ।

दंडवाळधि-सं०पु० [सं० दण्ड वालधि] हाथी ।

दंडमुद्रा-सं०स्त्री० [सं०] १ तंत्र की एक मुद्रा जिसमें मुट्ठी बांध कर बीच की उंगली ऊपर को खड़ी करते है. २ साधुओं के दो चिन्ह—दंड और मुद्रा ।

दंडयांम-सं०पु० [सं० दण्डयाम] १ यमराज. २ दिन, दिवस. ३ अगस्त्य मुनि ।

दंडलक्षण-सं०पु० [सं०] ७२ कलाओं में से एक कला ।—व.म.

दंडवत—देखो 'डंडोत' (रू.भे.) उ०—राजा स्नांन कर दिव्य देह होय, देहरा माही जाय देवी नूं दंडवत करी, दरसण किया ।

—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—दंडव्रत ।

दंडवासी-सं०पु० [सं०] १ गांव का हाकिम, मुखिया. २ द्वारपाल ।

दंडविधि-सं०स्त्री० [सं०] अपराधों के दंड से सम्बन्ध रखने वाला नियम या व्यवस्था, जुर्म और सजा का कानून ।

दंडव्यूह—देखो 'डडव्यूह' (रू.भे.)

दंडव्रत—देखो 'डंडोत' (रू.भ.) उ०—मुख मंद हास आणंदमय, आराधित अहि नर अमर । दंडव्रत तूझ मारण दयत, वारण तारण लच्छिवर ।—सू.प्र.

दंडा-सं०स्त्री०—पुरुषो की ७२ कलाओं में से एक कला । (उ.र.)

दंडाउछणउ [सं० दण्डकपुञ्छनम्] (उ.र.)

दंडाक्ष-सं०पु० [सं०] चंपा नदी के किनारे का एक तीर्थ ।

दंडाधिपति-सं०पु०—मुख्य न्यायाधीश ।

उ०—१ अंगलेखक भाडागारिक संधिविग्रही साहणी मसाहणी पड-

साहणी नाळदगी, दंडाधिपति प्रतिहार आरक्षक। (व.स.)

उ०—२ तीणि नगरि, सामंत मंडळेस्वर मंत्रि महामंत्रि, स्रेस्ठि सारथवाह पुत्र दंडाधिपति ग्रहक प्रमुखलोकनेव्यमान। (व.स.)

दंडापतानक–सं०पु० [सं०] एक प्रकार का वातरोग जिस से मनुष्य का शरीर सूखे काठ की तरह जड़ हो जाता है।

दंडायुध–सं०पु० [सं० दंड+आयुध] दण्ड देने योग्य आयुध अस्त्र-शस्त्र।

उ०—१ छत्रीसइ दंडायुध लीधां, पंटणि पइयां तिणि वार। आस्या-पुरी मकति कर जोटी, गउळि करिउ जुहार।—कां.दे.प्र.

उ०—२ ऊपरि अतुलीवळ चढ़िया, वीरा वंस विसुद्ध। दंडायुध छत्रीस करि करि मदाइ युद्ध।—मा.कां.प्र.

२ दण्ड देने के आयुध को धारण करने वाला।

दंडाहड़ि–सं०पु०—होलिका पर ढोल की ताल के साथ परस्पर डंडों को टकरा कर किया जाने वाला नृत्य विशेष।

उ०—वाजे डसै विनांणि, खग ढालां सिर खाटखड़ि। रमै महा रिण रूक रस, जोध दंडाहड़ि जांणि।—वचनिका

रू०भे०—दंडीहड़, दंडेहड़, दंडेहलि।

दंडिका–सं०स्त्री० [सं०] बीस अक्षरों की एक वर्ण वृत्ति जिनके प्रत्येक चरण में एक रगण के उपरांत एक जगण, इस प्रकार गणों का जोड़ा तीन बार आता है और अंत में गुरु लघु होता है।

दंडित–वि० [सं०] जिसे दंड मिला हो, दंट पाया हुआ।

रू०भे०—दंडची।

दंटियोड़ो—देखो 'डंडियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दंडियोड़ी)

दंडी—देखो 'टंडी' (रू.भे.)

दंडीहड़, दंडेहड़, दंडेहलि—देखो 'दंडाहड़ि' (रू.भे.)

दंडोत—देखो 'दंडोत' (रू.भे.)

दंडचो—देखो 'दंडित' (रू.भे.) (टि.को.)

दंत—देखो 'दांत' (रू.भे.) उ०—वाभी दिन दिन बोल में, कहता बढ़णी कंत। हूँ मैं निहारी हाथियां, देवर पाड़े दंत।—वी.स.

उ०—२ फर्वै वग्ग पंती आगै दंत फौज। गजां वाजि बीजं खिवै सीस गज्जं।—वचनिका

दंतक–सं०पु० [सं०] १ पहाड़ की चोटी. २ पहाड़ से निकलने वाला एक प्रकार का पत्थर. ३ देखो 'दांत' (रू.भे.)

दंतकट्ठ—देखो 'दंतकाष्ट' (रू.भे.) (जैन)

दंतकथा–सं०स्त्री०यौ० [सं०] ऐसी बात जिसका कोई पुष्ट प्रमाण न हो, जिसे बहुत दिनों से लोग एक दूसरे से सुनते चले आए हों, सुनी-सुनाई बात, जनश्रुति।

रू०भे०—दांत-कथ, दांत-कथा।

दंतकम्म–सं०पु० [सं० दंतकर्म] ७२ कलाओं में से एक कला (व.स.)

दंतकाष्ट–सं०पु० [सं० दंतकाष्ठ] दतून, मुखारी।

रू०भे०—दंतकट्ठ।

दंतकुळी–सं०पु० [सं० दंत+कुली] १ दांतों का ढेर, दांतों का समूह। उ०—दंतकुळी अंगुळी, करी कोपरी कपाळां। बीच खेत विस्थरी, फरी विहरी किरमाळां।—रा.रू.

२ हाथी, गज।

दंतच्छद–सं०पु० [सं०] ओष्ठ, ओठ (टि.को.)

दंतड़—देखो 'दांत' (मह., रू.भे.)

दंतड़ो—देखो 'दांत' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ जल्लै हुंदा दंतड़ा, बूबन हुंदा गाल। जांणै कंचन ऊपरां, भलां विराजी लाल।

—जलाल बूबना री वात

उ०—२ दुरै निहारै दंतड़ा, बादळ दांमणियांह। अति ऊजळ त्यां आगळी, की हीरा कणियांह।—बां.दा.

दंतदरसण–सं०पु० [सं० दंतदर्शन] क्रोध या चिड़चिड़ाहट में दांत निकालने की क्रिया।

दंतधावण–सं०पु० [सं० दंतधावन] १ दातुन करने की क्रिया. २ दतौन, दातुन. ३ करंज का पेड़. ४ मौलसिरी. ५ खैर का पेड़, खदिर वृक्ष।

दंतपुप्पुट–सं०पु० [सं०] मसूड़ों का एक रोग जिसमें वे सूज जाते हैं और दर्द करते हैं।

दंतमूळ–सं०स्त्री० [सं० दंतमूल] १ दंतमूल. २ दांत का एक रोग।

दंतल—देखो 'दांतलो' (मह., रू.भे.)

दंतली–सं०स्त्री० [सं० दंत+रा.प्र.ली] १ आभूषणों पर खुदाई करने का एक उपकरण. २ देखो 'दांत' (४) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—सूअर वाही दंतळी, जाय रड़क्की हड्ड। भाई हुवै सो वाहुड़ै, गये विडांणै छड्ड।—डाढाळा सूर री वात

वि०—बड़े-बड़े दांतों वाली।

दंतलू–सं०पु०—देखो 'दात' (४) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जडंते है टोरी लथोवथ होय जावै। एकलगिड वाराहूँ की दंतलूं झड़ ओभड़ ऐसै दरसावै।—सू.प्र.

दंतलो—देखो 'दांतलो' (रू.भे.)

(स्त्री० दंतली)

दंतवा–सं०पु०—डाढ़ों या दांतों पर गालों के बाह्य भाग पर होने वाला फोड़ा।

दंतवाळो–सं०पु० [सं० दंतावल] हाथी, गज (डि.को.)

दंतसंकु–सं०पु० [सं० दंतशंकु] चीर-फाड़ का एक औजार जो जौ के पत्तों के आकार का होता था। (सुश्रुत)

दंतसकट–सं०पु० [सं० दंतशकटः] हाथी दांत का बना रथ विशेष (उ.र.)

दंताजुध–सं०पु० [सं० दंत+आयुध] जंगली सूअर।

दंताळ–सं०पु० [सं० दंत+आलुच्] १ श्रीगणेश, गजानन।

२ देखो 'दंतावळ' (मह. रू.भे.) (डि.नां.मा., डि.को.)

उ०—थापलि कुंभाथळां, बाप बोलां विरदाया। तुरकां-दळ रणताळ, दळण दंताळ दगाया।—मे.म.

वि०—१ बड़े दांतों वाला. २

उ०—भणसाल भीजइं, क्षण एक रेलि लीजइं, मारग निसंचर भेद्या निरंतर, वयार ऊलटइं, दंताळ वाहीइं, वयार गाहीइं ।—व.स.

दंताळद्रप-सं०पु० [सं० दंतावल+दर्पक] गजासुर को मारने वाला, महादेव (डि.को.)

दताळपत्र-सं०पु० [सं० दंत+आलुच्+पत्रम्] कविता रूप में किसी गाँव या भूमि का सनद पत्र।

दंताळय-सं०पु० [सं० दंत+आलय] दाँतों का स्थान, मुख ।

दंताळिका-सं०स्त्री० [सं० दंतालिका] लगाम ।

दंताळियौ—१ देखो 'दंताळी' (अल्पा. रू.भे.)

२ देखो 'दंतावळ' (अल्पा., रू.भे.)

दंताळी-सं०स्त्री० [सं० दंत+आलुच्+रा.प्र.ई] १ घास-फूस एकत्रित करने, क्यारियां बनाने अथवा रेत, खाद आदि के ढेर को छितराने का लकड़ी का कंघे की भांति, बड़े दांतेदार एक उपकरण ।

उ०—जाय देखै तौ आगै ठाकुर रै माथै तौ रुमाल छै, घोड़ां रै ठांण दंताळी देवै छै ।—ठाकुर जैतसिंह री वारता

रू०भे०—दांताळी ।

[सं० दंतालिका] २ लगाम ।

अल्पा०—दंताळियौ।

वि०स्त्री०—बड़े-बड़े दांतों वाली ।

दंताळौ-वि० [सं० दंत+आलुच्] (स्त्री० दंताळी) १ बड़े-बड़े दांतों वाला ।

२ देखो 'दंतावळ' (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

उ०—बैठी दरीखांनै तीख चौख री करेवा वातां, अनेकां ठौड़ री ख्यातां सुणेवा आजांन । दंताळा दुसाला ताजी मदीलां दुपट्टां देवा, रूपगां महोला लेवा पधारौ राजांन ।

—रतलांम नरेस बळवंतसिंह रौ गीत

दंतावळ, दंताहळ-सं०पु० [सं० दंतावल] १ हाथी, गज । (डि.को.)

उ०—अेकल करण अहार, दंतावळ ज्यां दूसरा । पळ भर पाळणहार, प्रगट्यौ सिंघ प्रतापसी ।—फतहकरण ऊजळ

अल्पा०—दंताळियौ, दंताळौ ।

मह०—दंताळ ।

दंतियौ—१ सोने या चादी के आभूषणों पर दानेदार खुदाई करने का एक औजार. २ देखो 'दांतलौ' (रू.भे.)

दंती-सं०पु० [सं० दंतिन्] १ हाथी, गज (डि नां.मा., अ.मा., डि.को.)

उ०—१ दांणव दळि जिम दडवडंतु दंती देखी नइ, धायउ अरजुनु धसमसंतु वयरी मूंकी नइ ।—पं.पं.च.

२ अंडी की जाति का एक पेड़. ३ जमालगोटा.

४ देखो 'दांत' (रू.भे.) उ०—मारू मारइ पहियडा, जउ पहिरइ सोवन्न । दंती, चूडइ, मोतियां, त्रीयां हेक वरन्न ।—ढो.मा.

५ प्रथम लघु से पांच मात्रा का नाम । (डि.को.)

वि०—दांतों वाला, जिसके दांत हों । उ०—१ के दंती स्रंगी किता, किता नखी वन जंत । समझाया दे दे सजा, सादूळै बळवंत ।

—वा.दा.

उ०—२ मारू-मारू कळाइयां, उज्जळ-दंती नारि । हसनइ दे हुंकारड़उ, हिवड़उ फूटणहारि ।—ढो.मा.

उ०—३ निरमळ कमळ सकोमळ नारी । सुत देसळ गाअे स विचारी । वारंगनाह सती विकसंती । दौलतवंती दाड़िम-दंती ।—ल.पिं.

मह०—दंतील ।

[सं० दंत्य] २ (वर्ण) जिसका उच्चारण दांत की सहायता से हो—जैसे तवर्ग. ३ दंत सम्बन्धी. ४ दांतों का हितकारी (औषध)

दंती-उडांण-सं०पु०यौ० [सं० दंती=हस्ती+रा. उडांण] हाथियों का उड़ाने वाला, हाथियों का संहार करने वाला, भीमसेन ।

दंती-घावक-सं०पु०यौ० [सं०] इन्द्र (अ.मा.)

दंतीभख-सं०पु०यौ० [सं० दंती+भक्ष्य] पीपल का वृक्ष (डि.को.)

दंतील—देखो 'दंती' (मह., रू.भे.) उ०—जोड़ै हेक पाया नीर बाकरी बाघ रा जूह, उडाया दंतील गैणाग रा ज्यूं अरेस । हरोळां चलाया कै खाग रा वाह सुत हेकै, हलाया जेब मैं दली आगरा हमेस ।

—चैनजी सांदू

दंतीलौ—१ देखो 'दांतलौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दंतीली)

२ देखो 'दातौ' (अल्पा., रू.भे.)

दंतुर-सं०पु० [सं०] १ ४६ क्षेत्रपालों में से ३४ वां क्षेत्रपाल.

२ हाथी (डि.नां.मा.) ३ सूअर, वराह ।

वि०—जिस के दांत आगे निकले हों, दंतुला ।

दंतुळ-सं०पु० [सं० दंतुल] हाथी, गज (डि.नां.मा.)

दंतुली-वि०स्त्री० [सं० दंतुल] १ जिस के दांत आगे निकले हों, दंतुली ।

२ देखो 'दातौ' (अल्पा., रू.भे.)

दंतुलौ—१ देखो 'दांतलौ' (रू भे.)

(स्त्री० दंतुली)

सं०पु०—२ देखो 'दातौ' (अल्पा., रू.भे.)

दंतुसळ, दंतुसळि, दंतूसळ, दंतूसळय, दंतूसळि-सं०पु० [सं० दंतमुसल: *या दंतस्य सल्लं*] हाथी या सूअर का बाहर निकला हुआ दांत, आगे निकला हुआ लंबा दांत । (उ.र.)

उ०—१ सावळ दंतुसळां, घाट फबियौ दीपक घट । कमळ पंख जिम कमळ, झेल घण हुवौ खगां झट ।—सू.प्र.

उ०—२ काळी घड़ पावस कंवलयं, बक पंगति दीप दंतूसळयं ।

—गु.रू.वं.

उ०—३ दंतूसळूं की औभड़ घोड़ भड़ां सूं लड़ते हैं । जाजुळमांन जोधार सेलूं सें जड़ते हैं । ऐसे वराहूं के ऊपर घण वीजूजळां का घाव ।—सू.प्र.

उ०—४ दंतूसळ मुखि दिनकर झळकै, उर मणि फणि मणिहार ।

पहिलौ वेद पुरांण अगोचर, प्रणंमीजइ प्रतिहार।—रुकमणी मंगळ

नोट:—चूंकि गणेशजी का मुख भी हाथी के मुख के समान होता है अत: उनके आगे निकले हुए दांत के लिए भी 'दंतूसळ' शब्द का प्रयोग होता है जैसा कि उपर्युक्त चतुर्थ उदाहरण में हुआ है।

दंतेरू-सं०पु०—बच्चों के मुंह, गाल, ललाट या शिर पर होने वाला फोड़ा विशेष।

दंद—देखो 'दुंद' (रू.भे.) उ०—भूंडण भूंडौ नह जणै, ना पिह लोपै रेह। तिण सू पहला ठहर तूं, दंद मचावै खेह।

—डाढ़ाळा सूर री वात

दंदभ, दंदब—देखो 'दुंदुभी' (रू.भे.) (अ मा.)

दंदसुक, दंदसूक-सं०पु० [सं० दंदशूक] १ सांप, नाग (अ मा., ह.नां.) २ राक्षस विशेष।

दंदोळी-वि० [सं० द्वंद्व+रा०प्र० ओळी] उत्पात मचाने वाला, उपद्रवी। उ०—मावीतां ही नां मनै, दुख द्ये दंदोळी। गरढ़ै न सरै का गरज, नारी विण नौळी।—ध.व.ग्रं.

दंदो-सं०पु० (देश०) १ ताल देने का एक वाद्य। (प्राचीन) २ देखो 'दुंद' (अल्पा., रू.भे.) उ०—वैठी दीठी वारणै, गोरोजी गात गयंदो रे। हरखित मनि पदमणी हुवै, दूर करेसी दंदो रे।

—प.च.च

दंधभ—देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.)

दंपत, दंपति, दंपती-सं०पु० [सं० दंपती] १ पति-पत्नी का जोड़ा, दंपति। उ०—१ निमां स्यांम आई बंदी रुसनाई, पीछे रघुराजा दंपत सुख साजा।—र.रू.

उ०—२ परस्पर दंपति संपति पाय। हिकोहिक भेट करै हरखाय।

—मे.म.

दंबु-सं०पु०—पाटल वृक्ष। (अ.मा.)

वि०वि०—देखो 'पाडळ'।

दंभ-सं०पु० [सं०] (वि० दंभी) १ गर्व, अभिमान। उ०—तुकमां रूप खतंम फतै रा फव्विया। देखतां उर दंभ अरंदां दव्विया।

—किसोरदांन बारहठ

२ झूठी ठसक, आडंबर. ३ कपट, पाखंड (डि.को.)

उ०—हीण राव विण न्याव, न्याव ध्रिक पक्ष ऊपजै। पक्ष हीण धन सटै, हीण धन धरम न पूजै। धरम हीण स-दंभ, दंभ ध्रिक झूठ दिखावै। झूठ ध्रिक विण काज, काज ध्रिक सांम न भावै, ध्रिक सांमि क्रिया-गुण वीसरै, गुण धिकार विन हरि तरणि। सुजि ध्रिक तरणि पिय अंत सुणि, घर तर्कै मोटा घरणि।—रा.रू.

३ देखो 'टांम' (रू.भे.) उ०—अतीसार ग्रहणी विखै, दंभ वतावै पंच। नाभि चिहूं दिसि च्यार दचौ, कूरम पद कै संच।—ध.व.ग्रं.

४ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक (व.स.) ५

उ०—सांई तेरी सेवा सच्ची, दूजी काया माय कच्ची, साता दाता माता भ्राता, तूं ही दूजा दंभा है।—ध.व.ग्रं.

दंभणौ, दंभबौ-क्रि०अ० [सं० दंभ्] पाखंड करना, आडम्बर करना, ढोंग करना।

दंभियोड़ो-भू०का०कृ०—पाखंड किया हुआ, आडम्बर किया हुआ, ढोंग किया हुआ।

(स्त्री० दंभियोड़ी)

दंभी-वि० [सं० दंभिन्] १ गर्वीला, अभिमानी. २ आडम्बर रचने वाला, पाखण्डी। उ०—देसै भंजण दीह, मुलकौ मन हौ मनां। दभी गढ दिल्लीह, सीस नमंतां सीसवद।—केसरीसिंह बारहठ

सं०पु० [सं० दम्भोलि:] १ सुदर्शन चक्र (नां.मा.)

२ दोनों ओर मुंह वाला सांप जो काटता नहीं है। उ०—सवळी रूप धार सेसा री, छिन में कंद छुटाणी। दभी रूप कूप 'धरणदा' रै, पकड़ी लाव पुरांणी।—इन्द्रबाई (सुइद)

दंभोळ, दंभोळि-सं०पु० [सं० दम्भोलि:] इन्द्रास्त्र, वज्र (अ.मा., नां.मा.)

उ०—सेलां वटभागणि वेधत सेल, वातायण वाह सुहागणि वेल। हणै गळ आवह विव्वड़ होल, दळै दळ खत्रक सक्र दंभोळ।—मे.म.

दंस-सं०पु० [सं० दंश] १ कवच (डि.को.) उ०—सजै ओपरा टोप सोभा सिघाळी। जिकै भीड़ियां दंस नागोद जाळी।—वं.भा.

२ दांत से काटने से होने वाला घाव, दंत-क्षत. ३ दांत से काटने की क्रिया, दंशन. ४ विषैले जन्तुओं का डंक. ५ दांत. ६ एक राक्षस का नाम। (महाभारत)

७ वि०—दुष्ट, पापी। उ०—पंचायण जंबुक यथा, विहिरू वायस हंस। तिम माधव नई अवर नर, दासि न जांणइ दंस।

—मा.कां.प्र.

दंसक-सं०पु० [सं० दंशक] डांस नाम की मक्खी, जो बड़े जोर से काटती है।

वि०—दांत से काटने वाला, वह जो काटता हो।

दंसटरी, दंसटरीर—देखो 'दंस्ट्री' (रू.भे.) (अ.मा.)

दंसण—१ देखो 'दरसण' (रू.भे.) (जैन)

उ०—१ संघु सयलि आणंदु, दंसण नाण चारित्त धरो। सिरि 'जिण उदय' मुणिंदु, जउ दीठउ नयणिहि सुगुरो।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—२ तूं करुणा सागर गुण आगर, महियळ महिमावंत जी। सुर नर नायक पाय नमै नित, दंसण नांण अनंत जी।—स्रीपाळ रास

२ देखो 'दसन' (रू.भे.)

दंसणौ, दंसबौ-क्रि०स०—काटना, डसना। उ०—गिणतां राइ 'दस' कह्यूं तव, दंसु भूपति नाग। करूप अति राजा थयु, विस्मि ते जोई लाग।—नळाख्यांन

दंसन-सं०पु० [सं० दंशन] दांत से काटने की क्रिया, डसना।

क्रि०प्र०—करणौ।

रू०भे०—दंसण।

दंसियोड़ो-भू०का०कृ०—काटा हुआ, डसा हुआ।

(स्त्री० दंसियोड़ी)

दंसी-वि० [सं० दंशिन्] दांतों से काटने वाला, डसने वाला ।
सं०स्त्री०—छोटा डांस ।
दंस्टरी—देखो 'दंस्ट्री' (रू.भे.) (ह.नां.)
दंस्ट्र-सं०पु० [सं० दंष्ट्र] दांत ।
दंस्ट्राजुध-सं०पु० [सं० दंष्ट्रायुध] (वह जिसका अस्त्र दांत हो) शूकर, वराह ।
दंस्ट्राळ-वि० [सं० दंष्ट्राल] बड़े-बड़े दांतों वाला ।
दंस्ट्री-वि० [सं० दष्ट्रिन्] बड़े-बड़े दांतों वाला ।
सं०पु०—१ सूअर, वराह. २ सांप, नाग ।
रू०भे०—दंसटरी, दंसटरीर, दंस्टरी ।
द-सं०पु०—१ देवगण. २ खग. ३ साधु. ४ सार.
दइंत—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—ब्रह्मादिक तणउ हुग्रो दइंतां वर।
—महादेव पारवती री वेल
सं०स्त्री०—दया (एका.)
वि०—अपार, असीम (एका.)
दइ—१ देखो 'दई' (रू.भे.) २ देखो 'दैव' (रू.भे.)
दइगपाळ—देखो 'दिकपाल' (रू.भे.) उ०—उलंघ मेर उलंघे उदध, उलंगे दइग-पाळ । रासा वरत वेल रा, नवड परचा नाळ ।—द.दा.
दइणौ, दइवौ—देखो 'दैणौ, देवौ' (रू.भे.) उ०—चित हरखंत हुया हिमाचळ, दउडिया दइण वधाईदार ।—महादेव पारवती री वेल
दइत—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—१ नांमां देवां मांनवां, दइतां भी आंण ।—केसोदास गाडण
दइतड़ी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का पकवान, मिठाई ।
दइत-निकंद, दइत-निकंदण-सं०पु०यौ० [सं० दैत्य-निकृन्दन] दैत्यों का संहार करने वाला, भगवान, ईश्वर । उ०—नमो मछ स्रग-मंडाण मुकुंद । नमो कळि रास दइत्त-निकंद ।—ह.र.
दइतां-गुर-सं०पु०यौ० [सं० दैत्य+गुरु] १ शुक्राचार्य. २ रावण, दशानन ।
दइत्त—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—जटाधर अंध दइत्त जळाय । विमोहै रूप अनूप बणाय ।—ह.र.
दइत्यंद्र-सं०पु० [सं० दैत्य+इन्द्र] १ बलिराजा ।
रू०भे०—दईतंद्र ।
२ देखो 'दैत्य' (मह., रू.भे.) (नां.मा.)
दइबांण—१ देखो 'दइवांण' (रू.भे.)
उ०—लड एण तरह नागांण लीध । दइबांण वध वन पटै दीध ।
—वि.सं.
२ देखो 'दीवांण' (रू.भे.)
दइवंत—देखो 'दैव' (रू.भे.)
दइवंत-गति—देखो 'देवगत, देवगति' (रू.भे.) उ०—रस वीर मुरधर राव, दइवंत-गति दरसाव । रिम काळ रूप नरेस, दळ अकळ निरजळ देस ।—रा.रू.

दइव—देखो 'दैव' (रू.भे.) उ०—१ सत-संगत प्रेम समरण सदा, इता थोक वंछै अदै । मांगियौ मूझ द्यौ महमहण, दइव सीळ संतोक दै ।
—ज.खि.
उ०—२ अजौ बाळ अवसता लेख दइवै गढ लीधौ । घर छळ भड़ घूहड़ां, कटक तड़ तड़ मिळ कीधौ ।—सू.प्र.
उ०—३ पुर अंब उदैपुर जोधपुर, इम तप निजरां आवियौ । 'जैसाह' ब्रहम 'अभरौ' व्रजट, दइव 'अजौ' दरसावियौ ।—सू.प्र.
उ०—४ अवधि राज करि इधक, महल सुख कीध महाबळ । सभ त्याग असमेध, दइव जीता नौह नृप-दळ ।—सू.प्र.
उ०—५ सासत्र विध सतसंग समाजा । राजनीति जांणै सब राजा । पह तूं सदा भेख पद पूजै । दइव विनां उपदेस न दूजै ।—सू.प्र.
दइवराय, दइअरायौ—१ देखो 'दईवराय, दईवरायौ' (रू.भे.)
२ देखो 'देवराज' (रू.भे.) उ०—नृपत मांन धन तपोबळ, मुरधरणनाथ निज, राइयां आभरण दइवराया । वडेरां जिकां खयकरण होत विदा, ऊबरण जकै तौ सरण आया ।
—जोधपुर नरेस महाराजा मांनसिंह रौ गीत
दइवांण, दइवांन-वि०—१ विशालकाय, भीमकाय । उ०—दइवांण रुद्र एकादसां; प्रांणपूर पति धरमपण । कविराय धीय कवि मंछ कह, जय जय स्रीरघुवीर जण ।—र.रू.
२ महान्, जबरदस्त । उ०—सुज भ्रात जेठी 'सेस' रा, दइवांन वंस दनेस रा । हृद कंज मधुप महेस रा, मन महण रूप समाथ ।
—र.ज.प्र.
३ शक्तिशाली, समर्थ । उ०—दइवांण उद्दम दांमणौ, इम करै जुध अधियांमणौ । मेरौ'र चाचौ मारिया, सह अवर दुसह संघारिया ।
—सू.प्र.
४ वीर, योद्धा । उ०—१ साह री जोध जोतां समंद । कठहडै चढ़ण मलफै कमंद । किलमांण मीर हिक मन्न कीद । दइवांण पांण जम-डाढ़ दीध ।—वि.स.
उ०—२ देखूं हाथ आज दइवांणां । किसड़ा एक तुटौ केवांणां ।
—सू.प्र.
उ०—३ अणी खग भाट हणै दइवांन । जुडै सुत दुज्जणसीघ 'जवांन' ।—सू.प्र.
रू०भे०—दइबांण, दईवांण ।
५ देखो 'दीवांण' (रू.भे.) उ०—१ भड़ हसनखांन बळवांन भुज, गढ अभियान गुमांन रौ । सालियौ तांम सुण साह उर, दळ दुगाम दइवांण रौ ।—रा.रू.
उ०—२ पातिसाह ग्रहण जोधांणपति, पेखै मौसर पावियौ । दइवांण 'अजौ' दळ सझि दिली, आप मुरादौ आवियौ ।—सू.प्र.
उ०—३ दिली तखत दइवांण, हेल मांही करि हिम्मति । ऊथल पथल अनेक, पांन जिम किया असपति ।—सू.प्र.
उ०—४ दई ओ दई गत कुंभक्रन दूसरा, चाह गुर आपरै पंथ चालै ।

आगारं। भल तप भंडारं ए अणगारं, इण गुण दउढ़ा अढ़ारं।
—ध.व.ग्रं.

दउलत— देखो 'दौलत' (रू.भे.)

दउलती—१ देखो 'दौलत' (रू.भे.) उ०—जिसी देवनागरी इसी मनोहर राजकुमारी, लघुलाघवी कळा, मन कीधा मोकळा, चित्त नी उदार, अति घणुं दातार, दउलती हाथ, परमेसर देजे तेह नु साथ।
—व.स.

२ देखो 'दौलतमंद'।

दउलेय-सं०पु० [सं० दौलेय] कछुआ।

दक-सं०पु० [सं०] पानी, नीर, जल। उ०—सीरांवण जीमण दोपैरां सारो। पीसण पोवण में आरो पछलारो। आती ओलण नें अंबक दक आयो। छाती छोलण नै छपनो छित छायो।—ऊ.का.

रू०भे०—दग।

दकसीर-सं०स्त्री० [सं० दकशिरा] नदी (अ.मा.)

दकार, दकारियो-सं०पु० [सं० दकार] तवर्ग का तीसरा अक्षर 'द'। उ०—एक वरग में ऊपना, सूंम कहै इकसार। दौलत हरै दकारियो, दौलत थंभ नकार।—बां.दा.

अल्पा०—दकारियो।

दकाळ-सं०स्त्री०—१ फटकार. २ ललकार।

दकाळणो-वि० (स्त्री० दकाळणी) १ उत्साहित करने वाला, जोश दिलाने वाला। उ०—आघा चारण खावकां, वीड़ी मौज वटंत। दूरा केम दकाळणां, हूंचकतां भड हुंत।—वी.स.

२ ललकारने वाला. ३ फटकारने वाला।

दकाळणौ, दकाळबौ-क्रि०स०—१ उत्साहित करना, प्रोत्साहन देना। उ०—थे कहौ हौ कै म्हे राजपूतां नै पौरस चढ़ाय दकाळण वाळा हां तौ साथै रहौ, भड़ हूचकै लड़ै तठै हुंत आवौ मरो मारो।
—वी.स.टी.

२ ललकारना। उ०—१ तद चारण गोरधन रै भाई सूं घोड़ौ बकसियो थो, वीं रो नांम पतासो कहता, सो आंग हाजर कियो। उण रै ऊपर आप असवार हुवा सो लोहांपुर हुवा। लोगां नूं दकाळे छै सो पाघ पडियां पाछै लोह लागिया।—पदमसिंह री वात

उ०—२ तद असवार दस पन्द्रह साथ सूं बध मगरां आंण लागिया, दकाळियौ त्यूं सुंदरदास साथरां सूं समचौ कर पाछा नांखिया, आय भिळियौ।—सुंदरदास भाटी री वात

उ०—३ आंखियां भय री मारी आफेई मीचीज जावै छै,' किण री उणिहारो इण सींह नै दकाळे।—वी.स.टी.

३ फटकारना। उ०—सारां कांमखांन्यां क्यामखांजी नै दकाळया। तैसौ फतेपुर का क्यांमखांजी राज चाल्या।—शि.वं.

दकाळणहार, हारौ (हारी), दकाळणियौ —वि०।

दकाळिओड़ौ, दकाळियोड़ौ, दकाळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

दकाळीजणौ, दकाळीजबौ—कर्म वा०।

दकाळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उत्साहित किया हुआ, प्रोत्साहन दिया हुआ. २ ललकारा हुआ. ३ फटकारा हुआ।

(स्त्री० दकाळियोडी)

दकिखण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.)

दकूळ—देखो 'दुकूळ' (रू.भे.) उ०—१ अदभुत लसै छब गवर अंग, पदमणि कोमळ चंपक प्रसंग। ढुलड्यां रमै संग सखी ढूल, दमकंत अंग जरकस दकूळ।—वगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ सो माथा पर किलंगी अनै सेवरो, केसर में रंगिया दकूळ कपड़ा, वागो केसर में रंग दो।—वी.स.टी.

दक्काळौ-सं०पु०—ललकारने का शब्द, धिक्कारने का वचन।

उ०—द्रौपद दक्काळाह, दुसट-सभा-विच दाखवै। लायो नंदलालाह, चीर दुसाला चौगणा।—रांमनाथ कवियो

रू०भे०—दुक्काळौ।

दक्ख—१ देखो 'दक्ष' (रू.भे.) २ देखो 'दुख' (रू.भे.)

उ०—हसी हसी पूछउं वातडी, प्रीय सेजडी वइठ। सख सु अंति समौ सम्यउं वीसारिउं दक्ख ऊवीठ।—प्राचीन फागु संग्रह

दक्खण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—हसन अली दक्खण गयो, अवदुल्लो दरगाह। सां हूंतां मन फेरियो, दिन फिरिये पतसाह।
—सू.प्र.

दक्खणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.)

दक्खणी—देखो 'दखणी' (रू.भे.) उ०—दक्खणी सेन आया अवाहं, पक्खरे तुरी पहिरे सनाहं।—गु.रू.बं.

दक्खणौ, दक्खबौ—देखो 'दाखणौ, दाखबौ' (रू.भे.)

उ०—दुज दे आसिवाद विधि दक्खे। आंणौ एह सांमग्री अक्खै।
—सू.प्र.

दक्खि—देखो 'दुखी' (रू.भे.) उ०—हरि हरि करि उद्धरै, दक्खि न्रप बडो सुदांमा। हरि-हरि करि उद्धरै, सेस संकर सिव व्रहमा।
—ज.खि.

दक्खिण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—१ दक्खिण लीध जीपि खग दावै। कपाळिया भड़ तिकै कहावै।—सू.प्र.

उ०—२ वडफर भुज वांमंग, सभै दक्खिण भुज सावळ। जांम विख भरी जमी, वहसि असि चढ़ै अतुळबळ।—सू.प्र.

उ०—३ अपभ्रंस भाखा प्राकृत सो कुळ का विचार जिम सेती प्राकृत भाखा विस्तार करि गाई। जिसमें पूरव पच्छिम उत्तर दक्खिण की ए च्यार भाखा कहि दिखाई।—सू.प्र.

उ०—४ इण मारिया काढ़िया इण नूं। दहल सोच पड़सी दक्खिण नूं।—सू.प्र.

दक्ष-सं०पु० [सं० दक्ष] एक प्रजापति का नाम जिस से देवता उत्पन्न हुए थे।

वि०वि०—इसकी कन्याओं में एक सती भी थी जो रुद्र को व्याही गई थी। दक्ष ने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया जिस में सती और रुद्र को

नहीं बुलाया। सती बिना बुलाए ही अपने पिता के यहां यज्ञ देखने चली गई। वहां पर अपमानित हो कर उसने अपना शरीर त्याग दिया। रुद्र ने क्रोधित हो कर वीरभद्र को पैदा कर के दक्ष का यज्ञ विध्वंस करवा दिया और उसे शाप दे कर मनुष्य योनि में भेज दिया।

उ०—जिम करूं वीरभद्र दक्ष जग्यन, कचर-घांण किलमांण री। इम 'अभा' हूंत मिसलति अरज, रटै 'पतौ' महिरांण' री।
—सू.प्र.

वि० [सं०] १ निपुण, कुशल, चतुर, होशियार.
२ दाहिना, दक्षिण।
रू०भे०—दक्ख, दख, दखि, दख्यण, दच्छ, दछ, दछि, दिख।

दक्षण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—ज्वाळा ना सहस्र भरतउ, दैदीप्यमांन, दक्षण हरित वज्रउ लड, चउरासी सहस्र अति स्वच्छ निरमळ वस्त्र।—व.स.

दक्षणपंथी—देखो 'दक्षिणपथी' (रू.भे.) (शा.हो.)

दक्षण-वरतन—देखो 'दक्षिणावरत' (रू.भे.)

दक्षणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.) उ०—१ परदक्षण दई दक्षणा नई विलंब मंडई वार। कर कनक कापड दांन, आपइ सूपिळ सिणगार।
—रुकमणी-मंगळ

उ०—२ राजा कनकरथ पण सारा सहर रा ब्राह्मण जीमाया। गौ-दांन री दक्षणा दीवी।—पलक दरियाव री वात

दक्षणावरत्त—देखो 'दक्षिणावरत' (रू.भे.) उ०—देवता ग्रिहांगणि निधान संचारइं, रत्न मणि मौक्ति प्रवाळ पद्मराग दक्षणावरत्त संखे करी भंडार भरइं, कण कोठार व्रिद्धवंत हुइ।—व.स.

दक्षता—सं०स्त्री० [सं०] निपुणता, योग्यता।
रू०भे०—दखता।

दक्षन—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—जिन दिलावरखांन नै कलह के रोज दक्षन के दरम्यांन निजांमन मुलक सेती जंग किया, च्यार हजार दुस्मन कूं मार समसेरूं की धार सेती निमक की सरियत पर सिर दिया।—सू.प्र.

दक्षसावरणी—सं०पु० [सं० दक्षसावर्णि] नवें मनु का नाम।
रू०भे०—दखसावरणी।

दक्षा—सं०स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
वि०—निपुण, कुशल।
रू०भे०—दखा।

दक्षिण—वि० [सं०] १ दाहिना. २ उस ओर का जिधर सूर्य की ओर मुँह कर के खड़े होने पर दाहिना हाथ पड़े। उत्तर का उल्टा।
यौ०—दक्षिणायण।
३ चतुर, कुशल।
सं०स्त्री०—१ उत्तर के सामने की दिशा, दक्खिन दिशा।
रू०भे०—दक्खणाद, दखणाद, दखणां, दिखणाण।
२ दक्षिण देश की भाषा।
सं०पु०—३ दक्षिण प्रदेश. ४ साहित्य या काव्य में वह नायक जिसका अनुराग अपनी सभी नायिकाओं पर समान हो.
५ विष्णु. ६ तंत्रोक्त एक मार्ग या आचार।
रू०भे०—दकिखण, दक्खण, दक्खिण, दक्षण, दक्षन, दखण, दखन, दखिण, दिक्खण, दिक्षण, दिखण, दिखिण, दिच्छिण।

दक्षिणगोळ—सं०पु० [सं० दक्षिणगोल] विषुवत रेखा से दक्षिण पड़ने वाली राशियां जो छः हैं—तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।
रू०भे०—दखणगोळ।

दक्षिणचतुरथांसपादासण—सं०पु० [सं० दक्षिणचतुर्थांशपादासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दाहिने पैर के पिंडी दबे इस चाल से बांयें पैर की नली भरा कर बैठना होता है। पांव के हेर-फेर से वामचतुर्थांशपादासन कहलाता है।

दक्षिणजांन्वासण—सं०पु० [सं० दक्षिणजान्वासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दाहिने पैर की एड़ी दाहिने नितंब के मध्य भाग को लगा कर पंजे तक के भाग को आडा रख कर और बांयें पांव के घुटने को दाहिने पैर के घुटने पर रख कर उसी पांव की एडी दाहिने नितंब को लगा कर बैठा जाता है। इसके विपरीत चाल से बैठने पर वामजान्वासन होता है।

दक्षिणतरकासण—सं०पु० [सं० दक्षिणतर्कासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें बांयें हाथ के पंजे को कान के ऊपर मस्तक को लगा कर उसी हाथ की ठेहुनी को उसी पांव के घुटने पर रख कर शरीर को उसी अलंग झुका कर बैठना और दाहिने पांव को आटा रख कर उसी पर दाहिने हाथ को रखा जाता है। यह वामतर्कासन कहलाता है तथा इसका विपरीत दक्षिणतर्काशिन कहलाता है।

दक्षिणपथ, दक्षिणपथौ—सं०पु० [सं० दक्षिण पथः] १ दक्षिणापथ-देशोत्पन्न घोड़ा. २ देखो 'दक्षिणापथ' (रू.भे.)
रू०भे०—दक्षणपंथौ, दखणपंथौ।

दक्षिणपादअपांनगमनासण—सं०पु० [सं० दक्षिणपादअपानगमनासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दाहिने पांव को घुटने से मोड़ कर उसी पांव का पंजा बांयें पांव की जंघा में भिड़ाने और एड़ी को नाभि के बाजू मे लगा कर बैठना होता है। यह वामपादअपानगमनासन का विपरीत है।

दक्षिणपादसिरासण—सं०पु० [सं० दक्षिणपादशिरासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन जिसमें बैठ कर दक्षिण पांव को शिर के पीछे के भाग की तरफ लेजा कर गरदन पर चढ़ाना होता है।

दक्षिणवक्रासण—सं०पु० [सं० दक्षिणवक्रासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन जिसमें बांयें पांव को घुटने से तिरकस मोड़ कर फिर दाहिने पांव के घुटने को बांयें पांव के घुटने से एक बिता

दूर रख के उसी पांव की नली बायें पांव के पंजे पर रख कर बैठना होता है। यह वामवक्रासन का विपरीत है।

दक्षिणसाखासण-सं०पु० [सं० दक्षिणशाखासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दाहिने पैर की एड़ी बायें पैर की जांघ के मूल में रख कर उसी पांव के पंजे को बायें पैर की पिंडी पर रख कर बैठा जाता है। इसके विपरीत रीति से बैठने पर वामशाखासन होता है।

दक्षिणा-सं०स्त्री० [सं०] १ किसी शुभ कार्यादि के समय अथवा यज्ञादि कर्म कराने के बाद ब्राह्मणों या पुरोहितों को दिया जाने वाला दान. २ वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध कर लेने पर भी वैसी ही प्रीति दिखाती है. ३ दक्षिण दिशा।

रू०भे०—दखणा, दखिणा, दख्यणा, दच्छणा, दिखण, दिखणा।

दक्षिणाचळ-सं०पु० [सं० दक्षिणाचल] मलयगिरि, मलयाचल।

रू०भे०—दखणाचळ।

दक्षिणाचार-सं०पु० [सं०] शुद्ध और उत्तम आचरण वाला।

रू०भे०—दखणाचार।

दक्षिणाचारी-सं०पु० [सं०] विशुद्धाचारी, सदाचारी।

रू०भे०—दखणाचारी।

दक्षिणापथ-सं०पु० [सं०] विंध्य पर्वत के दक्षिण ओर का वह प्रदेश जहां से दक्षिण भारत के लिये रास्ते जाते हैं।

रू०भे०—दखणापथ।

दक्षिणायण-सं०पु० [सं० दक्षिणायन] १ वह छः महीने का समय (२१ जून से २२ दिसम्बर तक) जिसमें सूर्य कर्क रेखा से चल कर बराबर दक्षिण की ओर अर्थात् मकर रेखा की ओर बढता रहता है. २ सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति।

वि०—भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर, दक्षिण की ओर का।

रू०भे०—दखणायण, दखणांण, दखणाद, दिखणायण।

दक्षिणावरत-सं०पु० [सं० दक्षिणावर्त्त] एक प्रकार का शंख जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है।

वि०—जो दाहिनी ओर घूमा हुआ हो, जिसका घुमाव दाहिनी ओर को हो। उ०—अत्रुट अक्षय लक्ष्मी चिंतामणि दक्षिणावरत संख। —व.स.

रू०भे०—दक्षणावरतन, दक्षणावरत्त, दखणावरत, दखिणाव्रत, दाहिणावरत।

दख—१ देखो 'दक्ष' (रू.भे.)

२ देखो 'दुख' (रू.भे.)

दखण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.)

दखणपंथी—देखो 'दक्षिणपथी' (शा हो.)

दखण पति, दखण-पती-सं०पु०[सं० दक्षिणपति] १ चन्द्रमा, चांद(अ.मा.) २ यमराज।

दखणांण-सं०स्त्री०—१ दक्षिण दिशा. २ देखो 'दक्षिणायण' (रू.भे.) ३ देखो 'दिखणांण' (रू.भे.)

दखणागोळ—देखो 'दक्षिणगोळ' (रू.भे.)

दखणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.) उ०—अरु दिन वारै उठै विराजिया। मा'राज लारै ब्रह्म-भोज दखणा करवाया अरु ठावा मूवा जिणां लारै ब्रांमण भोजन करवायो।—द दा.

दखणाचळ—देखो 'दक्षिणाचळ' (रू.भे.)

दखणाचार—देखो 'दक्षिणाचार' (रू.भे.)

दखणाचारी—देखो 'दक्षिणाचारी' (रू.भे.)

दखणाद-वि० [सं० दक्षिण+रा०प्र०आद] दक्षिण दिशा का।

सं०स्त्री०—१ देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) २ देखो 'दक्षिणायण' (रू.भे.) ३ दक्षिण दिशा। उ०—पेख उतराद दखणाद पूरब पछिम, धूज मन सरम सारी धरा की। सबळ दोय राह री साह री मांन संक, ताह री करन-सुत ओट ताकी।—भोपत आसियो

४ देखो 'दखणी' (४) (रू.भे.)

रू०भे०—दखणाध, दखिणाद, दखिणाध, दिखणाद, दिखणाध।

दखणादू—देखो 'दखणाधू' (रू.भे.)

दखणाध—देखो 'दखणाद' (रू.भे.) उ०—दळकार हुठे दखणधरा, दिल्ली फौजां निरवही। किरि जांण अपूठा बांहुड़ै, जांन वोळाए मांड ही।—गु.रू.बं.

दखणाधि, दखणाधी, दखणाधू-सं०पु० [सं० दक्षिण+आ+सं० ध्रुव] दक्षिण दिशा की वायु।

क्रि०वि०—दक्षिण की ओर, दक्षिण में। उ०—१ जखड़ै सोचियो, व्याह तो तीन छः, तिकै उगूणाऊ के उतराधा छै नै माजी दखणाधू सासरो कह्यो, तिको किसी भांति।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

उ०—२ ब्राहनपुर घेरियो कटक दखणाधी आए।—गु.रू.बं.

वि०—दक्षिण दिशा का। उ०—'महिकर' घेरी सबळ, कियो दखिणाधि-कटक्कां।—गु.रू.बं.

रू०भे०—दखणादू, दखिणाधी, दिखणाधी, दखिणाधू, दिखणादू, दिखणाधि, दिखणाधी, दिखणाधू, दिखणाधो।

दखणापथ—देखो 'दक्षिणापथ' (रू.भे.)

दखणायण—देखो 'दक्षिणायण' (रू.भे.) उ०—दखणायण हूता दंत देतां, उतरायण आयो अरक।—जोगीदास कंवारियो

दखणावरत—देखो 'दक्षिणावरत' (रू.भे.)

दखणी-सं०पु० [सं० दक्षिणीय] १ दक्षिण देश का निवासी।

उ०—सेर विलंद इण रीत सूं, वसियै अहमदबाद। रूके दखणी राखिया, आप तणी मरजाद।—रा.रू.

सं०स्त्री०—२ दक्षिण देश की भाषा.

३ दक्षिण दिशा (रू.भे.) उ०—इब्राहीम पूरब दिसा न उलटै, पछम मुदाफर न दै पयांण। दखणी महमदसाह न दौड़ै, 'सांगो' दामण त्रहुं सुरतांण।—महारांणा सांगा (वडा) रो गीत

४ दक्षिण दिशा की वायु।

वि०—दक्षिण देश का। उ०—गयगमणी गूजर धरा, आंणां

दखणी चीर। मनह संकोडी माळवी, सांहइ तुज्झ सरीर।—ढो.मा.
रू०भे०—दक्खणी, दिखणी।

दखणी चंवळा-सं०पु०—एक प्रकार का पौधा जिस में लगने वाली फलियों का शाक बनाया जाता है।

दखणीचीर—देखो 'दिखणीचीर' (रू.भे.)

दखणौ, दखबौ—१ देखो 'दाखणौ, दाखबौ' (रू.भे.)
उ०—१ श्राद मत्त श्रगीयार, दुतीय पद तेर मात दख। काव्य छंद तिण कहत, श्रवध ईस्वर कीरत श्रख।—र.ज.प्र.
उ०—२ दखै भाख ज्यांरा जती वंस दीता। सको कंत त्रिलोकनाथ सीता।—सू.प्र.

दखता—देखो 'दक्षता' (रू.भे.)

दखन—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.)

दखमा-सं०पु०—वह स्थान जहां पारसी श्रपने मुरदे रखते हैं। (मा.म.)

दखळ, दखल-सं०स्त्री० [श्र० दखल] १ हस्तक्षेप।
उ०—१ तद जोगै नूं बैसांण रावजी जोधपुर श्राया सो धरती नूं मोहिलां री दखल होणौ लागियौ।—नापै सांखलै री वारता
उ०—२ पांणी पीवै तिण नै तौ खेद करै हीज पिण पग मांहे बोड़ै तिण सूं ही दखल करै छै।—नैणसी
क्रि०प्र०—करणी, दैणी।
मुहा०—दखल दैणी—हस्तक्षेप करना, रोड़े श्रटकाना, कूद पडना।
२ श्रधिकार, कब्जा। उ०—जाका चेरा ताकै सारै, दखल श्रौर का नांही। जो तुम मारौ मारि निवाजौ, भी चित चरणां मांही।
—ह.पु.वा.
क्रि०प्र०—करणी।
मुहा०—दखल करणी—श्रधिकार करना, शासन जमाना।

दखळनांमौ, दखलनांमौ-सं०पु० [श्र० दखल+फा० नामा+रा.प्र.श्रौ] वह पत्र (विशेषत: सरकारी श्राज्ञापत्र) जिस में किसी व्यक्ति के लिये किसी पदार्थ पर श्रधिकार कर लेने की श्राज्ञा हो।

दखसावरणी—देखो 'दक्षसावरणी' (रू.भे.)

दखा—देखो 'दक्षा' (रू.भे.)

दखि—देखो 'दक्ष' (१) (रू.भे.) उ०—१ सुता जनंक बप करि समताई। इम दखि सुता छळण कजि श्राई।—सू.प्र.
उ०—२ श्रायस भरथ लड़ै भड एहां। जगि दखि तणै वीरभद्र जेहां।—सू.प्र.

दखिण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—१ तरतौ नदि नदि ऊतरतौ तरि तरि, वेलि वेलि गळि गळै विलग्ग। दखिण हूंत श्रावतौ उतर दिसि, पवन तणा तिणि वहै न पग्ग।—वेलि.
उ०—२ कांम की जो दखिण दिसा हुति त्रिविध पवन सीतमंदसुगंध प्रगटै छै।—वेलि.टी.
उ०—३ देस सुहावउ जळ सजळ, मीठा-बोला लोइ। मारू कांमण भुइं दखिण, जइ हरि दियइ त होइ।—ढो.मा.

दखिणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.) उ०—तोय भूप पग धोयत तखिणा। दस दस मोहर समापै दखिणा।—सू.प्र.

दखिणाद, दखिणाध—देखो 'दखणाद' (रू.भे.) उ०—उत्तर श्राज न जाइयइ, जिहां स गीत श्रगाध। ता भइ सूरिज डरपतउ, ताकि चलइ दखिणाध।—ढो मा.

दखिणाधी, दखिणाधू—देखो 'दखणाधी, दखणाधू' (रू.भे.)
उ०—डहोळंतौ दखिणाधी घड़ा रायांसिघ दूजो, हिलोळंतौ तुरी खुरी उरै बंध हाल। तोलंतौ सोहै त्रिजड़ खोलंतौ स्रोणी खळां रै, रोळंतौ छडाळौ राजा टंटोळंतौ टाल।—वीठू दूदौ सुरतांणोत

दखिणानिळ-सं०पु० [सं० दक्षिण+श्रनिल] दक्षिण की श्रोर से श्राने वाली वायु, मलयानिल। उ०—लीयै तसु श्रंग वास रस लोभी, रेवा जळि क्रित मोच रति। दखिणानिळ श्रावतौ उतर दिसि, सापराध पति जिम सरति।—वेलि.

दखिणाव्रत—देखो 'दक्षिणावरत' (रू.भे.) उ०—मांणक च्यार श्रस्व सरस मेक। उभळी दखिणाव्रत-संख एक।—सू.प्र.

दखियांणी-सं०स्त्री० [दखि=राजा दक्ष+रा०प्र० श्राणी या सं० दाक्षायनी] राजा दक्ष की पुत्री, सती। उ०—दछि श्रंस श्राप सुता दखियांणी। जटधर श्रंस चंद विध जांणी।—सू.प्र.
रू०भे०—दयांरणी, दिख्यांणी।

दखियोड़ौ—देखो 'दाखियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दखियोड़ी)

दखोड़ी-सं०स्त्री०—पतंगा विशेष।
वि०वि०—वर्षा ऋतु की रात्रि में उड़ने वाला कीड़ा। यह शरीर पर बैठ जाता है तो फफोला हो जाता है (शेखावाटी)

दख्ख—देखो 'दाख' (रू.भे.) उ०—श्रहर पयोहर दुइ नयण, मीठा जेहा मख्ख। ढोला एही मारुई, जांणै मीठी दख्ख।—ढो.मा.

दख्खणी—देखो 'दखणी' (रू.भे.)

दख्यण—देखो 'दक्ष' (रू.भे.) उ०—खट भाख लख्यण देख दख्यण राज रख्यण रीति इळि।—ल.पि.

दख्यणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.) उ०—चांदराइण वरत कीधौ थो तो बांमण कोई श्रायौ नहीं श्रर दख्यणा दीधी नहीं है सो थांनै संकळप रै वास्तै मांहरी बाई श्रापनै बुलावै है।
—राजा रा गुर रा बेटां री वात

दख्यणौ-वि०—कहने वाला, दिखाने वाला, प्रकट करने वाला।
उ०—देसल सुत चिति रीति दुश्रापुर दख्यणौ। राजस लाज श्रजाद खत्री ध्रम रख्यणौ।—ल.पि.
रू०भे०—दाखणौ।

दख्यणौ, दख्यबौ—देखो 'दाखणौ, दाखबौ' (रू.भे.)
उ०—दादू गैब मांहि गुरुदेव मिळया, पाया हम परसाद। मस्तक मेरे कर धरया, दख्या श्रगम श्रगाध।—दादू बांणी

दख्यांणी—देखो 'दखियांणी' (रू.भे.)

दगंत—देखो 'दिगंत' (रू.भे.)

दगंतर—देखो 'दिगंतर' (रू.भे.)

दगंबर—देखो 'दिगंबर' (रू.भे.)

दगंबरता—देखो 'दिगंबरता' (रू.भे.)

दगंबरी—देखो 'दिगंबरी' (रू.भे.)

दगंमर—देखो 'दिगंबर' (रू.भे.)

दग-सं०स्त्री० (अनु०) १ ध्वनि विशेष। उ०—१ दग-दग गाड़ियां चाली गई।—नैणसी

२ बूंद। उ०—झग-झग ऊठै हीया में झाळां, दग-दग द्रग जळ डारै।
—ऊ.का.

रू०भे०—दगग।

३ देखो 'दक' (रू.भे.) ४ देखो 'दाग' (रू.भे.)

दगग—देखो 'दग' (१) (रू.भे.)

दगड़-सं०पु०—१ लड़ाई में बजाया जाने वाला बड़ा ढोल, जंगी ढोल. २ बड़ा पत्थर. ३ बिना गढ़ा हुआ पत्थर, अनगढ़ पत्थर. ४ खुला स्थान।

रू०भे०—दगड।

यौ०—दगड़-बार।

दगड़बार-सं०पु०यौ०—१ बहुत बड़ा खुला दरवाजा. २ खुला मैदान।

दगणौ, दगबौ-क्रि०अ०—१ छूटना, चलना (तोप आदि का)।

उ०—१ दहुंवळां तोप लगी दगण, रूप काळ डाचा रुखी। रवि प्रळै काज जांणै रसम, ज्वाळ भाळ ज्वाळामुखी।—सू.प्र.

उ०—२ कहै एम दीठां प्रळै नेम कोपां। लगी टेक गोळां दगी अद्रि लोपां।—वं.भा.

उ०—३ आतस दगि झड़ मंडे अंगारां। निहस पड़ै रण तूर नगारां।—सू.प्र.

२ जलना, दग्ध होना, झुलस जाना. ३ चिन्हित होना, दागा जाना. ४ धोखा खाना, ठगा जाना। उ०—सांई सच्चा सचियार कुडियार दगै।—केसोदास गाडण

५ देखो 'दागणौ, दागबौ' (रू.भे.) उ०—तिण वार दहूं दळ दगग तोप। अणपार पारगण सार ओप।—वि.सं.

६ धोखा खाना।

दगणहार, हारौ (हारी), दगणियौ—वि०।

दगवाड़णौ, दगवाड़बौ, दगवाणौ, दगवाबौ, दगवावणौ, दगवावबौ, दगाड़णौ, दगाड़बौ, दगाणौ, दगाबौ, दगावणौ, दगावबौ—प्रे०रू०।

दगिओड़ौ, दगियोड़ौ, दग्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दगीजणौ, दगीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दगणौ, दग्गबौ—रू०भे०।

दगदगी-सं०स्त्री० [सं० दग्दगा] १ एक प्रकार की कंडील. २ डर, भय, कंपकंपी. ३ शक, संदेह।

दगदग्गणौ, दगदग्गबौ-क्रि०अ०—भयभीत होना, घबराना, कांपना।

उ०—ठग धोमर भोळा ठगे, दगदग्गे देवीस। ले कंकण जाळण लगे, अर उठ भगे ईस।—भगतमाळ

दगदगियोड़ौ-भू०का०कृ०—भयभीत हुवा हुआ, घबराया हुआ, कांपा हुआ।

(स्त्री० दगदगियोड़ी)

दगध—देखो 'दग्ध' (रू.भे.) उ०—१ तरै मेरै कह्यौ—काका! रजपूत तौ रूड़ौ छूं पिण मां नूं सासतौ दगध घणौ छै तिण सूं हूं हेठौ हेठौ जाऊं छूं।—नैणसी

उ०—२ ह! झ ध र ध न ख भ होय अंक अग दगध अधीरह। आखर दग्ध अठारह वदै कवसळ वर वीरह।—र.रू.

उ०—३ पहली छंद प्रबंध में, लघु गुरु दगध अलेप। गण सुभ असुभ दुगण गण, सो वरणू संक्षेप।—र.रू.

दगधअखर, दगधअखिर—देखो 'दग्धाक्षर' (रू.भे.)

दगधमंत्र—देखो 'दग्धमंत्र' (रू.भे.)

दगधा—देखो 'दग्धा' (रू.भे.)

दगधाखर—देखो 'दग्धाक्षर' (रू.भे.)

दगधाजीरण-सं०पु० [सं० दग्धाजीर्ण] एक प्रकार का अजीर्ण रोग।
(अमरत)

दगपाळ—देखो 'दिकपाळ' (रू.भे.) उ०—करण धक चाळ मेवास ग्रह-वट करण, आडआ धणी दस देस उजवाळ। धणी नव कोट रौ सरै छत्र धारियां, 'पाळ' हर जोड़ रां सरै दगपाळ।—दयाळदास आढ़ौ

दगमग-सं०स्त्री०—दमकने का भाव, दमक, चमक। उ०—जगमग जोत जड़ाव री, दगमग गळै दिपंत। सकै वरण कुण सूर री, छिब लख किरण छिपंत।—महादान महडू

दगली—देखो 'डगली' (रू.भे.)

दगलौ-स०पु०—१ एक प्रकार का धड़ पर धारण करने का कवच। उ०—वाहेली रा खांवंद रौ घोड़ौ उण री हीं सिलै रतनां लगावै है, इण भांति जिलै, मोजा, सूथण, दगलौ दसतांन टोप घटाटोप सजियां मसतांन इण भांत मरद भेस कर हाथ में बरछी झाल घोड़ै चढ़ एकली ही हाली।—र. हमीर

२ देखो 'डगली' (अल्पा., रू.भे.)

दगाड़णौ, दगाड़बौ—देखो 'दगाणौ, दगाबौ' (रू.भे.)

दगाड़णहार, हारौ (हारी), दगाड़णियौ—वि०।

दगाड़िओड़ौ, दगाड़ियोड़ौ, दगाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दगाड़ीजणौ, दगाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दगणौ, दगबौ—अक०रू०।

दगाड़ियोड़ौ—देखो 'दगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दगाड़ियोड़ी)

दगाणौ, दगाबौ-क्रि०स० [सं०] ('दगणौ' व 'दागणौ' क्रियाओं का प्रे०रू०) १ (तोप आदि) चलवाना, छुड़वाना।

उ०—'सूरसाह' तिण समै, अडर सांमुहा चलाया। वजि त्रंबाळ चहुं-

वळां, दुरम ग्रारयां दगाया ।—सू.प्र.
२ झुलसाना, जलवाना. ३ चिन्हित करवाना, दाग दिलवाना. ४ धोखा दिलवाना, दगा दिलवाना, ठगवाना. ५ किसी फोड़े आदि को किसी तेज दवा से जलवाना, मुरझाना।
दगाणहार, हारो (हारी), दगाणियो—वि०।
दगायोड़ो—भू०का०कृ०।
दगाईजणो, दगाईजबो—कर्म वा०।
दगणो, दगबो—अक०रू०।
दगवाड़णो, दगवाड़बो, दगवाणो, दगवाबो, दगवावणो, दगवावबो, दगाड़णो, दगाड़बो, दगावणो, दगावबो—रू०भे०।

दगायोड़ो-भू०का०कृ०—१ (तोप आदि) चलवाया हुआ, छुड़वाया हुआ. २ झुलसाया हुआ, जलवाया हुआ. ३ चिन्हित करवाया हुआ, दाग दिलवाया हुआ. ४ धोखा दिलवाया हुआ, ठगवाया हुआ. ५ किसी फोड़े आदि को किसी तेज दवा से जलवाया हुआ, मुरझाया हुआ।
(स्त्री० दगायोड़ी)

दगादार-वि० [फा० दगा+दार] धोखेबाज, छली।
उ०—तरै साह-बेगम पातिसाह सूं अरज कीधी कि रैवले-जहां, ऐ हिंदू है दगादार, जाणां आवै ना'वै।—वीरमदे सोनिगरा री वात

दगाबाज-वि० [फा० दग़ाबाज] कपटी, छली, धोखेबाज।

दगाबाजी-सं०स्त्री० [फा० दग़ाबाज़ी] १ कपट, छल. २ धोखा देने की क्रिया या भाव।
क्रि०प्र०—करणो।

दगावणो, दगावबो—देखो 'दगाणो, दगाबो' (रू.भे.)
उ०—घाघू रिणछोड़ वाहे खग धार। दगावत तोप चह्वाण उदार।
—सू.प्र.
दगावणहार, हारो (हारी), दगावणियो—वि०।
दगाविओड़ो, दगावियोड़ो, दगाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
दगावीजणो, दगावीजबो—कर्म वा०।
दगणो, दगबो—अक०रू०।

दगावियोड़ो—देखो 'दगायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दगावियोड़ी)

दगियोड़ो-भू०का०कृ०—१ (तोप आदि) छूटा हुआ, चला हुआ. २ जला हुआ, दग्ध हुवा हुआ, झुलसा हुआ. ३ चिन्हित हुवा हुआ. ४ धोखा खाया हुआ, ठगा गया हुआ.
५ देखो 'दागियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दगियोड़ी)

दगैल—देखो 'दागल' (रू.भे.)

दगो-सं०पु० [अ० दग़ा] १ धोखा। उ०—तैं लारै तरवार रै, पायो रजक पलीत। दीधो खावंद नूं दगो, संत नही इण गीत।—बां.दा.
उ०—२ जोधै ग्रांणि चोर धाड़व्या मे जाळ नाख्यो। सूरा लाड-ग्यानी नै दगा सूं मारि नांख्यो।—शि.वं.
क्रि०प्र०—करणो, देणो, होणो।
२ कपट। उ०—तरै पछू कयो, थे देखोत छो। मन मांहे दगो राखो तो मोनै मेनो मती। पछै आपणै रस रहसी नही।
—वीरमदे सोनिगरा री वात
क्रि०प्र०—करणो, राखणो।
रू०भे०—दग्गो।

दग्ग—देखो 'दाग' (रू.भे.) उ०—परहउ मन कुदइ थयउ, रातै यूंही पग्ग। ढोलइ मन चिंता हुई, दीजइ केहउ दग्ग।—ढो.मा.

दग्गड़—देखो 'दगड़' (रू.भे.) उ०—परवत फळ रै नांव, वेद व्यावां में गायो। दग्गड़ मंगळ टोळ, पुराबै पिरोत पायो।—दसदेव

दग्गणो, दग्गबो—देखो 'दगणो, दगबो' (रू.भे.) उ०—एक साथ आरबा, दुगम बिहुवै दळ दग्गै। अगन गोर ऊछळै, साय घर अंबर लग्गै।
—सू.प्र.

दग्गदज—देखो 'दिग्गज' (रू.भे.)

दग्गो-सं०पु०—१ देखो 'दगो' (रू.भे.)
उ०—१ नवाब के सामने आया, हल्ले का जिकर चलाया। किस तौर मे आज का दग्गा, कौन भिड़ा कौन भग्गा।—ल.रा.
उ०—२ वह दग्गै सूं खान बहादर। धायो गढ जोधांणै ऊपर।
—रा.रू.

दग्ध-वि० [सं०] १ जला हुआ. २ जलाया हुआ. ३ दुखित. ४ शुष्क, सूखा। उ०—किहां मातंग ग्रिहांगण किहां एरावत, किहां दुरगत विपणि किहां चिंतामणि, किहां दग्ध मरु किहां कल्पतरु।
—व.स.
सं०पु०—१ दुःख. २ दग्धाक्षर।
रू०भे०—दगध।

दग्धमंत्र-सं०पु० [सं०] तंत्र के अनुसार वह मंत्र जिसके मूर्द्धा प्रदेश मे वह्नि और वायु-युक्त वर्ण हो।
रू०भे०—दगधमंत्र।

दग्धा-सं०स्त्री० [सं०] १ कुछ विशिष्ट राशियों से युक्त कुछ विशिष्ट तिथियां। यथा—मीन और धन की अष्टमी। वृष और कुम्भ की चौथ। मेष और कर्क की छठ। कन्या और मिथुन की नौमी। वृश्चिक और सिंह की दशमी। मकर और तुला की द्वादसी।
वि०वि०—इन दग्धा तिथियों मे वेदारंभ, विवाह, स्त्री-प्रसंग, यात्रा या वाणिज्य आदि करना बहुत हानिकारक माना जाता है (स्मृति)
२ एक प्रकार का वृक्ष जिसे कुरु कहते हैं. ३ सूर्य के अस्त होने की दिशा।
रू०भे०—दगधा।

दग्धाक्षर, दग्धाखर-सं०पु० [सं० दग्धाक्षर] ख घ क ध न भ र तथा ह ये आठ अक्षर जिनको छंद के प्रथम चरण के आरम्भ मे रखना वर्जित है (र.रू.)

रू०भे०—दगधग्रखर, दगधग्रखिर, दगधाखर ।

दड़ंद, दड़ंदौ–सं०पु० (ग्रनु०) किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द.
२ देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दड़–सं०स्त्री०—१ कृषि उपयोगी बिना जोती हुई भूमि जिसे प्रायः उर्वरा शक्ति बढाने के लिये छोड़ दी जाती है। उ०—झाड़ू दे ढांणी झालरिया झाड़े। पांणी पालरिया पीवण पछलाड़े। लोरी दे पोळछ लालरिया लेती। दड़ खिल खोडां नै हालरिया देती।
—ऊ.का.

२ मकान की छत पर संदला करने के लिये डाले जाने वाले कंकर.
३ देखो 'दडी' (मह., रू.भे.)
यौ०—दड़-दौट।
४ पदार्थ विशेष के ऊपर से गिरने के कारण उत्पन्न ध्वनि।
उ०—धुवि खाग झड़झड़ नाग धड़धड़ प्रिसण दड़ दड़ सिर पड़ै।
—सू.प्र.

दड़ग्रड़—देखो 'दड़ी' (मह., रू.भे.)

दड़क–क्रि०वि० (ग्रनु०) ग्रचानक शीघ्र।

दड़कणौ, दड़कबौ–क्रि०ग्र०—भागना; दौड़ना।
दड़कणहार, हारौ (हारी), दड़कणियौ—वि०।
दड़किग्रोड़ौ, दड़ंकियोड़ौ, दड़क्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दड़कीजणौ, दड़कीजबौ—भाव वा०।
दड़क्कणौ, दड़क्कबौ—रू०भे०।

दड़कली—देखो 'दड़ी' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दड़काणौ, दड़काबौ–क्रि०स० (ग्रनु०) १ उंडेलना. २ मारना, काटना।
उ०—दंताळां दड़काय, मोताहळ विथरै मही। स्याळां मती संताय, लंकाळां गज भख 'लछा'।—भगवांनजी रतनू
दड़काणहार, हारौ (हारी), दड़काणियौ—वि०।
दड़कायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दड़काईजणौ, दड़काईजबौ—कर्म वा०।
दड़कणौ, दड़कबौ—ग्रक०रू०।
दड़काड़णौ, दड़काड़बौ, दड़कावणौ, दड़काववौ—रू०भे०।

दड़कायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ उंडेला हुग्रा. २ मारा हुग्रा, काटा हुग्रा।
(स्त्री० दड़कायोड़ी)

दड़कियोड़ौ–भू०का०कृ० भागा हुग्रा, दौड़ा हुग्रा।
(स्त्री० दड़कियोड़ी)

दड़के, दड़कै–क्रि०वि० (ग्रनु०) तेज गति से, निर्विलंबता से, तुरन्त, शीघ्र, जल्दी। उ०—१ चतुर होय कोई चेला चेली, ऊठ संवारै ग्रावै। दरसण कर साधां रै दड़के, पावां में पड़ जावै।—ऊ.का.
उ०—२ गात सुहातां नीर हठीली लार म छोडै। कड़क घमंका मांड डरपती दड़कै दौड़ै।—मेघ.

दड़कौ–सं०पु० (ग्रनु०) १ दौड़. २ द्रुतगति. ३ ध्वनि-विशेष।

दड़क्कणौ, दड़क्कबौ–क्रि०ग्र० (ग्रनु०) १ कट कर दूर पड़ना।
उ०—मुक्कै सैल, धुक्कै धरा, दड़क्कै धड़ां सूं माथा।
—बुधसिंह सिढ़ायच
२ लुढ़कना. ३ देखो 'दड़कणौ, दड़कबौ' (रू.भे.)

दड़क्कियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ कट कर दूर पड़ा हुग्रा. २ लुढ़का हुग्रा. ३ देखो 'दड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दड़क्कियोड़ी)

दड़गल—देखो 'दड़घल' (रू.भे.)

दड़गली—देखो 'दडी' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—सोनै को रे चिटियौ घड़ायौ ग्रो जी राज, राय रूपै री भंवर थांरी दड़गली जी राज।
—लो.गी.

दड़घल–सं०पु०—१ ग्रमृतसागर के ग्रनुसार एक ग्रोषधि विशेष जिसका सिट्टा ऊपर से लाल व नीचे से सफेद होता है। इसके सिट्टे में छोटे बारीक काले बीज होते हैं। इसका शाक भी बनता है। २ वर्षा ऋतु में शेखावाटी में खेतों में होने वाला पौधा विशेष।
वि०वि०—इस पौधे के डंठल पर कदम के पुष्प के ग्राकार का फूल ग्राता है ग्रौर उसमें सफेद पंखुरियां निकलती हैं जिसमें सुगंध ग्राती है। इसे पशु खाते हैं।

दड़ड़–सं०स्त्री० (ग्रनु०) १ दड़ड़ की ध्वनि। उ०—१ भड़ ग्रनड़ वड-वड ग्रमुड़ जुध भड़, दुजड़ पड़ झड़ वड़ड़ खित झड़। दड़ड़ रत पड़ भ्रगुट दड़दड, चड़ड़ ऊवड़ प्रगड चख ग्रड।—र.ज.प्र.
उ०—२ फील घड़ पड़ ग्रझड़ झड़ फड़। हुय दड़ड़ रत मुनंद हड़हड़ पड़ै दळ ग्रणपार।—सू.प्र.
उ०—३ वरसतै दड़ड़ नड़ ग्रनड वाजिया, सघण गाजियौ गुहिर सदि। जळनिधि ही सांमाइ नहीं जळ, जळवाळा न समाइ जळदि।
—वेलि.
उ०—४ घोम घड़हड़ ग्रनड़ दीठ तोपां घुवै, रीठ पड़ि दड़ड़ गोळा विरोधा। 'ग्रजा' रै हेक जोधार थांभै ग्रसुर, जवन रा हेक इकवीस जोधा।—सू.प्र.

दड़ड़णौ, दड़ड़बौ–क्रि०ग्र०—१ गुंजित होना, गूंजना। उ०—खंभा जब वड़ड़े, सुररथ खड़ड़े, ग्रंबर दड़ड़े, धर धड़ड़े।—भगतमाळ
२ ध्वनि विशेष का होना।

दड़ड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ गुंजित हुवा हुग्रा, गूंजा हुग्रा. २ ध्वनित।
(स्त्री० दड़ड़ियोड़ी)

दड़णौ, दड़बौ–क्रि०स० (ग्रनु०) किसी विवर, दरार, छिद्र ग्रादि को गोबर या चूने ग्रादि से बंद करना।
दरड़णौ दरड़बौ—रू०भे०।

दड़ियोड़ौ–भू०का०कृ० —(विवर, दरार, छिद्र ग्रादि) बंद किया हुग्रा।
(स्त्री० दड़ियोड़ी)

दड़दड़, दड़द्दड़–उ.लि. (ग्रनु०) 'दड़दड़' शब्द की ध्वनि।
उ०—१ भड़ ग्रनड़ वड़वड़ ग्रमुड़ जुध भड़। दुजड़ पड़ झड़ वड़ड़

चित झड़। दड़ड़ रत पड़ अगुट दड़दड़। चड़ड़ ऊबड़ प्रगट चग अड।—र.ज.प्र.

उ०—२ कड़वकड़ वाजि धड़ां किरमाळ, वड़व्वड़ भाजि पड़ंत बंगाळ। दड़ड्ड़ मुंड रड़व्वड़ दीस, अड़व्वड़ लेत चड़व्चड़ ईस।
—वचनिका

दड़पणी, दड़पबौ-क्रि०स० (अनु०) १ आच्छादित करना, ढकना. २ लीपना।

दड़पियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ढका हुआ, आच्छादित. २ लीपा हुआ। (स्त्री० दड़पियोड़ी)

दड़वड़—देखो 'दड़वड़' (रू.भे.)

दड़वड़णी, दड़वड़वौ—देखो 'दड़वड़णी, दड़वड़वौ' (रू.भे.)

उ०—दिखणी दळ जाय न दड़वड़िया। चंचळ ज्यां 'अभमल' नह चडिया।—द्वारकादास दधवाड़ियौ

दड़वड़ाट—देखो 'दड़वड़ाट' (रू.भे.)

दड़वड़ाणी, दड़वड़ावौ—देखो 'दड़वड़ाणी, दड़वड़ावौ' (रू.भे.)

उ०—ताहरां कुंवर स्री भोपतजी कमेड़ियां नूं दड़वड़ाया।—द.वि.

दड़वड़ायोड़ौ—देखो 'दड़वड़ायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० दड़वड़ायोड़ी)

दड़वड़ियोड़ौ—देखो 'दड़वड़ियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० दड़वड़ियोड़ी)

दड़वड़ी—देखो 'दड़वड़ी' (रू.भे.)

दड़वौ-सं०पु०—१ भूमि का उभरा हुआ अथवा उठा हुआ स्थान, टीबा. २ ढेर, राशि. ३ धन, द्रव्य. ४ अनगढ़ पत्थर।

उ०—भरिया समंद मांयं भाटौ दड़वौ साऊ ने है।—मीनी कहावत

[फा० दर] ४ वह कटघरा जिसमें मुर्गियां व मुर्गे रखे जाते हैं। (मि० खुड्डौ)

५ छोटा बंद कमरा।

दड़वक-सं०स्त्री० [सं० द्रव] द्रुत गति से भागने की क्रिया या भाव।

दड़वड़-सं०स्त्री० (अनु०) ध्वनि विशेष। उ०—१ उठ दासी कस ढोलियौ, गहरा दीपक जोय। दड़वड़ माची देहरां, सायत साजन होय।—लो.गी.

उ०—२ बैठा होय नै बपटिया, दड़वड़ लागा डागा रे। वांनर जेम विलगिया, लपटी गढ़ नै लागा रे।—प.च.चौ.

रू०भे०—दटबड, दरवर।

दड़वड़णी, दड़वड़बौ-क्रि०अ० [सं० द्रव] दौड़ना, भागना।

उ०—उरि लोह फूटइ तंग तूटइ, वेगि वाहइ चोट। ए भल कुंअर महइ तुंअर, दड़वड़ई दड़ दोट।—रुकमणी मंगळ

दड़वड़णहार, हारौ (हारी), दड़वड़णियौ—वि०।

दड़वड़िओड़ौ, दड़वड़ियोड़ौ, दड़वड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

दड़वड़ीजणी, दड़वड़ीजबौ—भाव वा०।

दड़बड़णी, दड़बड़बौ, दडवडणी, दडवडबौ—रू०भे०।

दड़वड़ाट-सं०स्त्री० (अनु०) वाहन आदि चलने से उत्पन्न ध्वनि।

रू०भे०—दड़बड़ाट, दड़वटाट, दड़वटाटि।

दड़वड़ाणी, दड़वड़ावौ-क्रि०स० [सं० द्रव] दौड़ाना, भगाना।

दड़वड़ाणहार, हारौ (हारी), दड़वड़ाणियौ—वि०।

दड़वड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दड़वड़ाईजणी, दड़वड़ाईजबौ—कर्म वा०।

दड़बड़ाणी, दड़बड़ावौ, दड़वड़ाड़णी, दड़वड़ाड़बौ, दड़वड़ावणी, दड़वड़ावबौ, दड़वडाणी, दड़वटावौ—रू०भे०।

दड़वड़ायोड़ौ-भू०का०कृ०—दौड़ाया हुआ, भगाया हुआ। (स्त्री० दड़वड़ायोड़ी)

दड़वड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—दौड़ा हुआ, भागा हुआ। (स्त्री० दड़वड़ियोड़ी)

दड़ाक-सं०स्त्री० (अनु०) किसी वस्तु के गिरने की ध्वनि। क्रि०वि०—अचानक, शीघ्र।

दड़ाछंट, दड़ाछट-वि०—निर्भय, निशंक, निडर।

उ०—थारै जलम रै दो बरस पैंलां री बात है। आंपणै गांव में धाड़ो पड़ग्यो हो—धन तेरस रै सै दिन चवदै आदमी नव ऊंठां पर चढ़ नै गांव लूटण नै आया हा। धवळै दिन रा दोपार री वेळा दड़ाछट दौड़ता नव ऊंठ गांव में घुम्या।—रातबासौ

दड़िंदक—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—ग्रैसा बंस छत्रीस दरगह उंवरा, सांमंद चंद दड़िंदक आरिख इंद रा।—वचनिका

दड़ियड़—देखो 'दड़ी' (मह., रू.भे.) उ०—गोळी तीर ग्राछटै गोळा, दोळा आलम तगा दळ। पड़ दड़ियड़ चड़ियड़ पहुं पातै, गुमांनै लूंबिया खळ।—खेमराज सांदौ

दड़ींदौ-सं०पु० (अनु०) १ प्रहार, चोट. २ ध्वनि विशेष।

दड़ी-सं०स्त्री० (देश०) गेंद। उ०—१ मोह लगाय मिस्सा तुरी, चित चौगांनां हाथि। जन हरिदास माया दड़ी, पसै न काहू साथि।
—ह.पु.वा.

उ०—२ कांसे का बना एक चौखूंटा टुकड़ा जिसके पहलुवों में गोल-गोल छोटे-बड़े गड्ढे होते हैं। इस पर सुनार घुंघरू आदि बोरों की खोरियां बनाता है, कंसुला।

मह०—दड़, दड़ग्रड़, दड़ियड़, दड़ूलो, दडो, दड़ूल, दड़ूलो, दडो।

दड़ूकणौ-वि० (अनु०) (वह बैल या सांड) जो जोश भरी आवाज करता हो।

रू०भे०—दड़ूकणी।

दड़ूकणी, दड़ूकबौ-क्रि०अ० (अनु०) बैल या सांड का मुंह से जोश भरी आवाज करना। उ०—गोरी गांमड़ै हाळी जी गाया। सांड दड़ूकै सबद सुणाया।—द्वारकादास दधवाड़ियौ

दड़ूकणहार, हारौ (हारी), दड़ूकणियौ—वि०।

दड़ूकिओड़ौ, दड़ूकियोड़ौ, दड़ूक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दड़ूकीजणी, दड़ूकीजबौ—भाव वा०।

दड़ूकणी, दड़ूकबौ—रू०भे०।

दड़ूकियोड़ौ-भू०का०कृ०—जोश भरी आवाज किया हुआ।

(स्त्री० दड़ूकियोड़ी)

दड़ूलौ—देखो 'दड़ी' (मह., रू.भे.)

दड़ौ—सं०पु०—१ रेत का टीला, टीबा।

उ०—धूंधा घोरा नांव, कठै लाका लांमोड़ा। गाळा ग्रोडावळा, गगण चुंबी डीगोड़ा। टोकी भव्य सोपांन, सांतसम सीतळ टोळी। ढिस्सा दड़ा पडाळ, लुभांणी खितिज खोळी।—दसदेव

२ देखो 'दड़ी' (मह., रू.भे.) उ०—कहाड़ विरद वंका भीड़ियां छकड़ा कड़ां, वधै रोळै भड़ां ग्रागा वाधै तंसवांन। बिछोड़ै गयंदां घड़ा दूजड़ां ग्रोफड़ां वाह, मुगळां मूंडड़ां दड़ां मेले दूजो 'मांन'।
—रावत सारंगदेव (दूसरा कांनोड़) री गीत

रू०भे०—दडो।

ग्रल्पा०—दड़ूलु, दड़ूलो।

दचको—देखो 'डचको' (रू.भे.)

दच्छ—देखो 'दक्ष' (रू.भे.) उ०—धरण धनुस वांम पांण, वांण दच्छ हाथ है। भंजण गढ़ लंक भूप, गंजण दस माथ है।—र.ज.प्र.

दच्छणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.)

दंछ—देखो 'दक्ष' (रू.भे.)

दछा—देखो 'दसा' (रू.भे.) उ०—१ ग्रादमी २० राव रा पासवांन हुवा। राव री दछा खडी दीठी।—नैणसी

उ०—२ पछै गैचंद नूं रजपूतं भखायो, कह्यौ—'तिण री इसी दछा दीसै छै, थांनूं मार घरती ग्रै लेसी।'—नैणसी

दछि—देखो 'दक्ष' (रू.भे.) उ०—१ ग्रटा दछि ज्याग घटा गज ग्रेम। जटाघर ग्रोघ छुटा गण जेम।—सू.प्र.

उ०—२ दछि ग्रंस ग्राप सुता दखियांणी। जट-घर ग्रंस चंद विध जांणी।—सू.प्र.

दछिणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.)

दजोण, दज्जोण—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.) उ०—१ भांण करन्न प्रमांण वळ, मांण दजोण क पथ। रण जूंझै पण जीपणौ, कुण पूजै समरत्थ।—रा.रू.

उ०—२ ग्रहंकार नव्वाव दज्जोण ग्रेहो। जठै हिंदवां नाथ पाराथ जेहो।—सू.प्र.

दझणो, दझवौ—देखो 'दाझणो, दाझवो' (रू.भे.) उ०—झगड़े म करै झूठ, कहै छै यूं झफै। चुं नहीं कोइ साखि, दुखै देही दझै।—घ.व.ग्रं.

दझळणो, दझळवो—देखो 'दाझणो, दाझवो' (रू.भे.)

दझळियोड़ौ—देखो 'दाझियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दझळियोड़ी)

दझाड़णो, दझाड़वो—देखो 'दझाणो, दझावो' (रू.भे.)

दझाड़ियोड़ो—देखो 'दझायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दझाड़ियोड़ी)

दझाडणो, दझाडवो—देखो 'दझाणो, दझावो' (रू.भे)

उ०—जळचर खेचर भूमिचर, भोग करइ लयलीन। दैव दझाडइ देहडी, दूनि जणां ग्रम्ह दीन।—मा.कां.प्र.

दझाडियोड़ो—देखो 'दझायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दझाडियोड़ी)

दझाणो, दझावो–क्रि०स० [सं० दग्ध] १ जलाना. २ झुलसाना, दग्ध करना. ३ दुखी करना. ४ कुढ़ाना।

दझाणहार, हारो (हारी), दझाणियो—वि०।

दझायोड़ो—भू०का०कृ०।

दझाईजणो, दझाईजवो—कर्म वा०।

दझणो, दझवो, दझळणो; दझळवो, दाझणो, दाझवो—ग्रक०रू०।

दझाड़णो, दझाड़वो, दझाडणो, दझाडवो, दझाळणो, दझाळवो, दझावणो, दझाववो—रू०भे०।

दझायोड़ो–भू०का०कृ०—१ जला हुग्रा. २ झुलसाया हुग्रा, दग्ध किया हुग्रा. ३ दुखी किया हुग्रा. ४ कुढाया हुग्रा।

(स्त्री० दझायोडी)

दझाळणो, दझाळवो—देखो 'दझाणो, दझावो' (रू.भे.)

उ०—१ पाखर रैणां-पहर कटै किम पलक हुवंती। दिवस दझाळण दाह घटै किण जोग चढ़ंती। नैण नचांणी! ग्राज न मन री ग्रास पुरीजै। झाळ दझाळै ग्रंग विखायत हियो भरीजै।—मेघ.

उ०—२ झंखड़ खसता व्रच्छ दवानळ दपटां झाळै। झूमरकाळी सुराधेण रा पूंछ दझाळै।—मेघ.

दझाळणहार, हारो (हारी), दझाळणियो—वि०।

दझाळिग्रोड़ो, दझाळियोड़ो, दझाळयोड़ो—भू०का०कृ०।

दझाळीजणो, दझाळीजवो—कर्म वा०।

दझळणो, दझळवो—ग्रक०रू०।

दझाळियोड़ो—देखो 'दझायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दझाळियोड़ी)

दझावणो, दझाववो—देखो 'दझाणो, दझावो' (रू.भे.)

उ०—रैणां साथण तूझ निमांणो विरह दझावै। दिनां बिलमतां काज म इतरो जोर जतावै।—मेघ.

दझावियोड़ो—देखो 'दझायोडो' (रू.भे.)

(स्त्री० दझावियोड़ी)

दझियोड़ो—देखो 'दाझियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दझियोड़ी)

दट–सं०पु०—१ किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि।

[सं० दुष्ट] २ दुष्ट। उ०—दट ग्रणघट ग्रघ विकट दळां री राजा सांचो रांम। वळ सौ है दिन जन निबळां री, नित जापो तें नांम।
—र.ज.प्र.

क्रि०वि०—शीघ्र, झट।

दटणो, दटवो–क्रि०ग्र०—१ दबना, मिटना। उ०—१ वरण विद्युत वरण, पीत ग्ररु धरण नील पट। तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट।—र.रू.

क्रि०स०—२ दवाना, मिटाना

उ०—२ रसना 'किसना' जिण क्रीत रटो। दुख प्राचत ग्रोघ ग्रमोघ

दटी।—र.ज.प्र.

३ देखो—डटगो, डटबौ (रू.भे.)

दटपट-स०पु० [सं० द्रुतपद] एक मात्रिक छंद विशेष जिसमें १३ और १० की यति से कुल २३ मात्राएं होती है और अंत में गुरु होता है।

दटाक—देखो 'दट' (रू.भे.)

दटियोड़ौ- देखो 'डटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दटियोड़ी)

दठि—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

दडउ—देखो 'दड़ौ' (रू.भे.) (ऊ.र.)

दडदडी-सं०स्त्री०—(देश) वाद्य विशेष। उ०—नफेरी सरणाइ वरगां ढोल भालर डुंडि दमामां दडदडी त्रिदंग नीनांगा प्रमुख वाजित्र वाजइ, तेणइ आकाश गाजइ अहंमदावाद नगर माहि।—व.स.

रू०भे०—दड़दड़ी, दडवडी।

दडवड—देखो 'दड़वड़' (रू.भे.) उ०—मठ देवकुळ खडहडत पाडतउ चतुष्पद दडवड। द्रडवटतउ, घलहल घ्रित तेल भोजन ढोळतउ।

—व.स.

दडवडणौ, दडवटबौ—देखो 'दड़वड़णौ, दड़वड़बौ' (रू.भे.)

उ०—दांणव दलि जिम दडवडतु दंती देखी नइ, वायउ अरजुन घसमसंतु वयरी मूंकी नइ।—पं.पं.च.

दडवटाट, दडवटाटि—देखो 'दड़वड़ाट' (रू.भे.) उ०—सीकडि तणइ भमाळि, मुसामंण नइ दडवडाटि, घोडा तणइ घांकि, पायक तणइ पहटि, रथ तणै चीत्कारि, भट वंदि तणै जया रवि।—व.स.

दडवडियोड़ौ—देखो 'दडवड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दडवडियोड़ी)

दडवडी—देखो 'दडदड़ी' (रू.भे.) उ०—तिवल दमांमा दडवडी, निर-घोस्यां नीसांण। रेणू असंखित ऊछळी, भूतळि छाहिउ भांण।

—मा.कां.प्र.

दडिदक—देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दडूकणौ, दडूकबौ—देखो 'दडूकणौ, दडूकबौ' (रू.भे.)

दडूलु, दडूलो—१ देखो 'दडौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ 'दडौ' (मह., रू.भे.) उ०—करि धरि सोविन-गेडिका, रत्न दडूलु आंगि। रांमा-मिउं रंगि रमइ, प्रेमि प्रांण-प्रमांणि।—मा.कां.प्र.

दडौ—१ देखो 'दड़ौ' (रू.भे.) २ देखो 'दड़ी' (मह., रू.भे.)

उ०—१ मोटिम्म मेरु मनिकह मुकुट जौ अहिमद उद्दम दमइ। अगि मुंड दडा ऊछाळतउ असि गेडी रांमति रमइ।—व.स.

उ०—२ दडा लगइ गुरु भेटिउ द्रोणु सु वंभणवेसि। तेह पासि विद्या पढइ कृपगुर नइं उपदेसि।—पं.पं.चौ.

दडढणौ दडढबौ-क्रि०अ० [सं० दग्धनम्] जलना, भस्म होना।

उ०—द्रोण विधुर गंगेय गुर न हल्लि कोहग्गि दड्ढीय।—पं.पं.च.

दढणौ, दढबौ—रू०भे०।

दड्ढियोड़ौ-भू०का०कृ०—जला हुआ, भस्म हुवा हुआ।

(स्त्री० दड्ढियोड़ी)

दढ—देखो 'द्रढ' (रू.भे.)

दढणौ, दढबौ—देखो 'दड्ढणौ, दड्ढबौ' (रू.भे.) उ०—बेटा पोखइ इक दांहिलउं धरइं। बेटे छते दुकि वढी दढी मरइं।—चिहुंगति चउपई

दढि—देखो 'दाढ़ी' (रू.भे.). उ०—मियां खांन मिलकसह, ऊंडा मंडै पग। एक कर घते दढियां, एक कर धूणै खग।—गु.रू.बं.

दढियळ—१ देखो 'दढियळ' (रू.भे.)

२ देखो 'डाढाळौ' (रू.भे.)

दढियोड़ौ—देखो 'दड्ढियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दढियोड़ी)

दढ्ढ—देखो 'डाढ' (मह., रू.भे.) उ०—वडौ देव वाराह इळा दढ्ढां ऊधारण। वडौ देव वाराह सवळ दंतां संघारण।—ज.खि.

दढ्ढा—देखो 'डाढ' (रू.भे.)

दणयर—१ देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—मारू सीं देखी नहीं, अण मुख दोय नयणांह। थोड़ो सो भोळै पड़इ, दणयर ऊगंतांह।

—ढो.मा.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दणव—देखो 'दांनव' (रू.भे.)

दणियर—१ देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—१ पुहवि न पारावार गढ अनिर्य गांवां तणा। सुर तेतीसइ सम धरणि, दणियर देखणहार।

—अ. वचनिका

उ०—२ मुहकम लग्गो मेड़तै, ज्यां दणियर पर पेख। आपड़ियो घर लूटतां, वाहर गोहर सेख।—रा.रू.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दणी-सं०स्त्री० [सं० धनुष] धनुष।

दणीयर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) (अ.मा.)

दण्—देखो 'दनु' (रू.भे.)

दत-सं०पु० [सं० दत्त] १ दान। उ०—१ देतौ अड़वपसाव दत, वीर गौड़ बछराज। गढ़ अजमेर सुमेर सूं, ऊंचौ दीसै आज।—बां.दा.

उ०—२ सुग्रीव सकाजा रच कपिराजा, भूपत निवाजा भ्रात भणे। भुरजास भभीखण क्रत दत कंचण, साख पुरांणाण वेद सुणै।

—र.ज.प्र.

रू०भे०—दति, दती।

यौ०—दत-दायजौ।

२ जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक. ३ दत्तात्रेय।

४ सन्यासी। उ०—सुणी वात मारीच थांन सिधाए। उभै देत मांमौ सु भांणेज आए। जुवां दंडकारां धरै भेख जू जो। दतां भेख हेकौ म्रिगां भेख दूजौ।—सू.प्र.

५ पौष्टिक पदार्थ।

क्रि०प्र०—देणौ।

वि०—दिया हुआ।

रू०भे०—दत्त।

दतक—देखो 'दत्तक' (रू.भे.)

दतचाळ-सं०पु० [सं० दत्त या दत्त:=दान+राज० चाळ] दानवीर, राजाकर्ण। (अ.मा.)

दतणौ, दतबौ-क्रि०स० [सं० दत्त] १ पौष्टिक पदार्थ खिलाना।

उ०—अनै घोडा सांकळां तोड़ रया छै। इसा दतियोड़ा सो इण घर माथै तौ प्राहण (सत्रू) आवण री विचारसी तौ आसी चूड़ विछोड़ लुगायां रा चूड़ा फोड़ाय नै आवसी क्यूंकि अठै आयोड़ा पाछा जीवता जावै नहीं।—वी.स.टी.

२ दान देना।

दतणहार, हारौ (हारी), दतणियौ—वि०।

दतिग्रोड़ौ, दतियोड़ौ, दत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दतीजणौ, दतीजबौ—कर्म वा०।

दतदायजौ—देखो 'दत्तदायजौ' (रू.भे.)

दत-देव-सं०पु०—दत्तात्रेय मुनि। उ०—नमौ मधुसूदण देवण मोख, नमौ दत-देव विडारण दोख।—ह.र.

दतव—देखो 'दत्तव' (रू.भे.)

दतवर-सं०पु०—शिव, महादेव (क.कु.बो.)

दता—देखो 'दाता' (रू.भे.) उ०—लैणा दैणा लंक, भुज दंड राघव भांमणै। आपायत अणसंक, सूर दता दसरथ तणा।—र.ज.प्र.

दतार—देखो 'दातार' (रू.भे.) उ०—अनाथ अगम अनेह अगेह। दतार अपार अणंकव देह।—ह.र.

दतात्रय—देखो 'दत्तात्रेय' (रू.भे.) उ०—नमौ त्रय रूप दतात्रय देव। नमौ जप तप्प धियांन अजेव।—ह.र.

दतावरी—देखो 'दातावरी' (रू.भे.)

दति—१ देखो 'दत' (१) (रू.भे.) उ०—आगै लगनां माल गु आंणौ जग आभौ। पूरी मति 'भारै' मति, जाभै दति प्राभौ।—ल.पि.

२ देखो 'दिति' (रू.भे.)

दतियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पौष्टिक पदार्थ खिलाया हुआ.

२ दान दिया हुआ।

(स्त्री० दतियोड़ी)

दतिसुत-स०पु० [सं० दितिसुत] असुर, दैत्य, राक्षस (डि.को.)

रू०भे०—दतीसुत।

दती-वि०—दातार, उदार।

स०पु०—१ दत्तात्रेय ऋषि.

२ देखो 'दत' (१) (रू.भे.) ३ देखो 'दिती' (रू.भे.)

दतीसुत—देखो 'दतिसुत' (रू.भे) (अ.मा., डि.को.)

दतुण—देखो 'दांतण' (रू.भे.) उ०—आकां दतुण न कीजिये, संपां न खाजै मांस। 'जला' जेथ न जायजे, जेठां जंद विनास।

—जलाल बूबना री वात

दत्त—देखो 'दत' (रू.भे.) उ०—१ दादू दत्त दरबार का, को साधू बांटै आइ। तहां रांम रस पाइये, जहं साधू तहं जाइ।

—दादू बांणी

उ०—२ धुर पैंड न हालै माथौ धूणै, हांकुं केण दिसा हैराव। दत्त मोनै 'राघव' तै दोनौ, पाछौ लेतौ लाख पसाव।—ओपो आढ़ौ

उ०—३ दादू कहं था गोरख भरथरी, अनंत सिधां का मंत। परकट गोपीचंद है, दत्त कहै सब संत।—दादू बांणी

उ०—४ रजपूत मुगळ भभरूंप वरणि, दुभ्रडां झाटक दौढ़िया। अवधूत जांणि करि करि अमल, दत्त अखाड़ै पौढ़िया।—सू.प्र.

यौ०—दत्त-दायजौ।

दत्तक-सं०पु० [सं०] शास्त्र विधि से बनाया हुआ पुत्र, गोद लिया हुआ लड़का।

रू०भे०—दतक।

दत्तचित्त-वि० [सं०] जिसने किसी कार्य में खूब जी लगाया हो।

दत्तणौ, दत्तबौ—देखो 'दतणौ, दतबौ' (रू.भे.)

दत्तति—देखो 'दत्तात्रेय' (रू.भे.)

दत्ततीरथक्रत-सं०पु० [सं० दत्ततीर्थकृत्] जैन मतानुसार गत उत्सर्पिणी के आठवें अर्हंत।

दत्तदायजौ-सं०पु०यौ०—दहेज।

उ०—१ कितरा अेक दिन पाछै बादसाह जलाल नूं सीख दीन्ही। दत्तदायजौ दियौ। बूबना नूं छत्तीस पांण दायजै दीन्हा।

—जलाल बूबना री वात

उ०—२ लाग-बाग दीजै छै। तठै परणिया, भात दिया, पिण मन किण ही रौ राजी नहीं। दत्तदायजौ दे नै सीख दीन्ही।

—राव रिणमल री वात

रू०भे०—दात-दायजौ।

दत्तब, दत्तव-सं०पु० [सं० दत्त] दान। उ०—दुनियां दातारां जूझारां देवै। लिपळा लोकां नै लेखै कुण लेवै। दत्तब करतब मैं दौढ़ा दरसाता। सारी प्रथवी सिर सोढ़ा सरसाता।—ऊ.का.

रू०भे०—दातव।

दत्ता—१ देखो 'दत्तात्रेय' (रू.भे.)

२ देखो 'दाता' (रू.भे.)

दत्तावरी—देखो 'दातावरी' (रू.भे.) उ०—देवांण विद्या दत्तावरी, देवी धन दातावरी। चहुवांण वंस रूपक चवां, सारसत्त भुवनेस्वरी।

—नैणसी

दत्तियोड़ौ—देखो 'दतियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दत्तियोड़ी)

दत्ती-सं०स्त्री०—पार्वती, दुर्गा, शक्ति (क.कु.बो.)

दत्तौ-वि० [सं० दाता] दानी, उदार। उ०—दत्तौ भाटी देवराज देरावर पुर का। बगसै छपन हजार बाज घन कोड़स घर का।

—दुरगादत्त बारहठ

दत्तोपनिसद-सं०पु० [सं० दत्तोपनिषद्] एक उपनिषद् का नाम।

दत्तोलि-सं०पु० [सं०] पुलस्त्य मुनि का एक नाम।
दद—देखो 'उदधि' (रू.भे.)
ददायअर्थनिधदान-स०पु० [सं० ददाय निधि दानददक=दायक] कल्पवृक्ष (अ.मा.)
ददराज-स०पु० [सं० उदधि+राज] समुद्र, सागर।
उ०—रणक घंट ददराज, गाज ज्यूं ही गज गाजत। सिर अंकुस सिरताज, बीज उपमा ज विराजत।—सू.प्र.
ददांमो-सं०पु०—वाद्य विशेष।
उ०—तिबल ददामो दडवडी, निरघोस्या नीसांण। रेणूं असंखित ऊछळी, भूनळि छाहित भांण।—मा.कां.प्र.
ददो-सं०पु० [सं० द] १ 'द' अक्षर. २ देने के लिये कहा जाने वाला शब्द, देने का भाव। उ०—१ बावनां बाहिरो त्रिपट पड़ियो तपन्नो। दातारे तजि'ददो, निपट करि भाल्यो नन्नो।—ध.व.ग्रं.
उ०—२ देई आदर दीजं दांन कहै ददो। मांगण रे धरमसी कहै आदर सुं सुदो।—ध.व ग्रं.
३ देखो 'दादो' (रू.भे.) उ०—ददो इण 'केहर' रो दइवांण।
—सू.प्र.
रू०भे०—दद्दो।
दद्धीच—देखो 'दधीचि' (रू भे.) उ०—क्रन्न काय हरचंद क्रन्न कज ग(क) हर कहंता। काय समर दद्धीच काय जीवाहन जंता।
—नैणसी
दद्दो—देखो 'ददो' (रू.भे.) उ०—बावन आखर में वडो, नन्नो आखर मार। दद्दो तो जांणूं नही, लल्ले आखर प्यार।—अज्ञात
दध-सं०स्त्री० [सं० द्वेष] १ डाह, ईर्ष्या.
२ देखो 'उदधि' (रू.भे.) उ०—१ पदम हिलै क छिलै दध पाजा। राजा हूंत मांमूरो राजा।—सू.प्र.
उ०—२ इम चहुवांण प्रबळ दळ ओपै। लहरि अजाद जांणि दध लोपै।—सू.प्र.
३ देखो 'दई' (रू.भे.) उ०—१ जतन सूं सखी दध वेचवा जावतां। अचांनक कांन री धाड ऊठै।—बां दा.
उ०—२ वेखै चक्र करै नृप वंदण। चाढ़ै हळद दोव दध चंदण।
—सू प्र.
दधखीर—देखो 'उदधिखीर' (रू.भे.) उ०—मन थारो मणजै मुरधरिया। सुम रीझां देवण दधखीर।—द दा.
दधजा-सं०स्त्री० [सं० उदधिजा] लक्ष्मी, रमा (डि को.)
दधणो, दधवो-क्रि०अ० [स० दग्ध] भस्म होना, जलना।
दधधांम-सं०पु० [सं० उदधिधाम] वरुण (अ.मा)
दधपुरी-सं०पु० [सं० उदधिपुरी] सात पुरियों में से एक पुरी, [द्वा]रकापुरी। (अ.मा.)
दध-मेदी-सं०पु०स्त्री० [सं० उदधि-मेदिन्] केवट, मल्लाह।
दधमुख-सं०पु० [सं० दधिमुख] सुग्रीव का मामा और मधु वन का रक्षक एक बन्दर जो रामचन्द्र की सेना में था। उ०—धम्म हणू भुजग्रद धारखा, सुग्रीव अंगद गारखा। नळ नील दधमुख पणम नाहर, बिहद जंबूवांन।—र.ज प्र.
रू०भे०—दधिमुख।
दधविधी-सं०पु० [सं० उदधि+विध] केवट (अ.मा.)
दधसार-सं०पु० [सं० दधि+सार] १ मक्खन, नवनीत (ह.नां., अ.मा.)
[सं० उदधि+सार] २ मदिरा (अ.मा.)
रू०भे०—दधिसार।
दधसुत-सं०पु० [सं० उदधि+सुत] १ शंख (अ.मा)
२ अमृत (अ.मा.) ३ चन्द्रमा (डि.को.) ४ प्रवाल, मूंगा (अ.मा.)
५ मोती। उ०—दधसुत कामण कर लिये, करण हंस प्रतिपाळ। बीच चकोरन चुग लिये, कारण कोण जमाल?—जमाल
६ विष. ७ कमल. ८ जालंदर दैत्य।
रू०भे०—दधिसुत।
दधसुतनी, दधसुता-सं०स्त्री० [सं० उदधि+सुता] १ लक्ष्मी, पद्मा (डि.को.)
२ सीप।
रू०भे०—दधिसुता।
दधाणो, दधावो-क्रि०स० [सं० दग्ध] दग्ध करना, जलाना।
उ०—अरां किया पैमाल, दधाई छाती अमीरां अदेवाळां। धाई वीरताई प्रथी जमाई धैधींग।—जवांनजी आढ़ो
दधायोड़ो-भू०का०कृ०—दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ।
(स्त्री० दधायोड़ी)
दधि-स०पु०—१ वस्त्र, कपड़ा. २ देखो 'उदधि' (रू भे.)
उ०—१ दधि वीणि लियौ जाइ वगतो दीठो, साखियात गुण मैं ससत। नासा अग्रि मुताहळ निहसति, भजति कि सुक मुख भागवत।
—वेलि.
उ०—२ प्रसिधि दधि पाज, व्रवण गज वाज। मदति व्रजराज मरद अनमध। ल.पिं.
उ०—३ जिसो दधि खेवट हीण जहाज।—रांमरासो
३ देखो 'दई' (रू भे.) उ०—सहंस समपि कपिळा इक साथै। हळद दोव चंदण दधि हाथै।—सू.प्र.
दधिकर-सं०पु० [सं०] ३६ राजवंशों में से एक।
दधिगामणी, दधिगामिनी-सं०स्त्री० [सं० उदधिगामिनी] सरिता, नदी।
दधिजात-सं०पु० [सं०] १ मक्खन, नवनीत।
[सं० उदधि जात] २ चन्द्रमा।
सं०स्त्री०—३ लक्ष्मी, पद्मा।
दधिभव-सं०पु० [सं० उदधि-भव] विष्णु, ईश्वर। उ०—मुख इम पवित्र करिस कंस-भंजण, मखै प्रसाद तूझ दुख भंजण। रसण निपाप करिस इम राघव, भणै तूझ गुण तारण दधिभव।—ह र.
दधिमंडोद-सं०पु० [सं०] पुराणानुसार दही का समुद्र।

दधिमंडोद-सं०पु० [सं०] १ पुराणानुसार पृथ्वी के सात खंडों में से एक. २ पौराणिक सात महासागरों में से प्रमुख महासागर।

दधिमती—देखो 'दधिमथी' (रू.भे.)

दधिमथणी-सं०स्त्री०यौ० [सं० दधि+मंथन] दही को मथने का लकड़ी डंडा विशेष, मथानी। उ०—फजरां हथणी सी दधिमथणी फुरती, माटां घर घर में घणहर सी घुरती।—ऊ.का.

दधिमथी-सं०स्त्री०—समुद्र मंथन कर अमृत निकालने वाली मोहिनी (विष्णु शक्ति)।

वि०वि०—अथर्वा ने इसी की उपासना कर 'दध्यञ्च्' (जिसे दधीचि और दधीच भी कहते हैं) पुत्र प्राप्त किया। (दधि=दधिमथी(ती) का अञ्च्=पूजक इसी के शज दाधीच वा दाधिमथ (दाहिमा) ब्राह्मण व क्षत्रिय प्रसिद्ध हैं।

रू०भे०—दधिमती।

दधिमुख—देखो 'दधमुख' (रू.भे.)

दधियोड़ो-भू०का०कृ०—भस्म हुवा हुआ, जला हुआ।
(स्त्री० दधियोड़ी)

दधिसार—देखो 'दधसार' (रू.भे.)

दधिसुत—देखो 'दधसुत' (रू.भे.)

दधिसुता—देखो 'दधसुतनी' (रू.भे.)

दधी—१ देखो 'दधि' (रू.भे.) २ देखो 'उदधि' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—दधी लहरी जळ हेक न दोय।—ह.र.

दधीच—देखो 'दधीचि' (रू.भे.) उ०—सांमा तौ सुभराज, ऊगै दन 'ऊनड़'हरा। जेहा धरम जिहाज, कीरत काज दधीच 'अन'।—बां.दा.

दधीचास्थी-सं०पु० [सं० दधीच+अस्थि] वज्र (अ.मा.)

दधीचि, दधीची-सं०पु० [सं०] एक पौराणिक ऋषि जिनकी हड्डियों का वज्र बना कर इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया था।
उ०—१ वातापी पीधु वळी, अंगइ अगि अगस्ति। इंद्र तणा आयुध गळी दीध दधीचिइ अस्थि।—मा.कां.प्र.
उ०—२ देवी दधीची रूप तैं हाड दांघो, देवी हाड रो तख्ख थैं वज्र कीधो। देवी वज्र रैं रूप तैं व्रत्र नास्यौ, देवी व्रत्र रैं रूप तैं सक्र त्रास्यौ।—देवि.
रू०भे०—दद्धीच, दधीच।

दधीलो-वि० [सं० द्वेष+रा०प्र०ईलो] द्वेष रखने वाला, डाह रखने वाला, ईर्ष्यालु।

दधीस-सं०पु० [सं० उदधि+ईश] १ समुद्र, सागर. २ वरुण।

दधूण—वृक्ष विशेष। उ०—दांति दुरालभ दूधीउ, दाडिम द्राख दधूण। देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण।—मा.कां.प्र.

दधेस-सं०पु० [सं० उदधि+ईश] १ समुद्र सागर. २ वरुण

दध्न-सं०पु० [सं०] चौदह यमों में से एक यम।

दन—१ देखो 'दांन' (रू.भे.) उ०—रांमण नह सोनौ दियौ, लहि सोना री लंक। ऊन दन सोनौ कापियौ, विण ही लका 'वंक'।
२ देखो 'दिन' (रू.भे.)—बां.दा.

दनइस—देखो 'दिनेस' (रू.भे.) (डि.को.)

दनकर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) (डि.को.)

दनमण, दनमणि—देखो 'दिनमणि' (रू.भे.) (डि.को.)

दनमांन—देखो 'दिनमांन' (रू.भे.) उ०—अंब पावू उडै रज आव तिकै। जिंदराव तणा दनमांन जकै।—पा.प्र.

दनादन-क्रि०वि० (अनु०) १ दन दन शब्द के साथ. २ लगातार. ३ तीव्र वेग के साथ।

दनि—देखो 'दांन' (रू.भे.) उ०—लाख प्रथम दनि लहै, आदि 'राजसी' अखावत। लख दूजो दनि लहै, पात 'राजसी' पतावत।—सू.प्र.

दनियां—देखो 'दुनियां' (रू.भे.)
कहा०—दनियां ये सारई पूगे, रांमें नी पूगे—संसारी मनुष्यों तक सभी की पहुँच होती है परन्तु राम तक नहीं हो सकती।

दनीस—देखो 'दिनेस' (रू.भे.) उ०—सफै बंदगी सुरीस, देव तौ जवै दनीस। लाख···लछीस, नांमणौ नरीस।—र.ज.प्र.

दनु-सं०स्त्री० [सं०] १ दक्ष की कन्या जो कश्यप ऋषि को व्याही गई थी। यह दानवों की माता थी। इसके चालीस दानव पैदा हुए थे।
सं०पु०—२ एक राक्षस का नाम जो श्रीदानव का पुत्र था. ३ दैत्य, राक्षस (अ.मा.)

दनुज-सं०पु० [सं०] दनु से उत्पन्न दानव, असुर, राक्षस।
उ०—१ दंती वराह नाहर दनुज, सो तिण ठां रह सावता। रे पुत्र घणी विध राखजो, जनक सुता रा जावता।—र.रू.
उ०—२ देवी दैत रैं रूप तैं देव ग्रहिया। देवी देव रैं रूप कै दनुज दहिया।—देवि.
उ०—३ सरब सगुण सह सरसै। दनुज दहण भुज दरसै।—र.ज.प्र.
रू०भे०—दनूज।

दनुजदळणी, दनुजदळनी-सं०स्त्री० [सं० दनुजदलनी] दुर्गा, शक्ति।

दनुजराय-सं०पु० [सं० दनुजराज] १ दानवों का राजा हिरण्यकश्यप. २ दानवपति रावण।

दनुजेंद्र-सं०पु० [सं०] दानवों का राजा—१ रावण, २ हिरण्यकश्यप।

दनुजेस-सं०पु० [सं० दनुजेश] १ हिरण्यकश्यप. २ रावण. ३ राजा बलि।

दनु-पत-सं०पु० [सं० दनु+पति] असुरराज, राजा बलि (अ.मा.)

दनु-संभव-सं०पु० [सं०] दनु से उत्पन्न, दानव।

दनूज—देखो 'दनुज' (रू.भे.) उ०—करि सहाय कमळासण केरी, हरन दनूज दसां दिस हेरी।—मे.म.

दनेस—देखो 'दिनेस' (रू.भे.) उ०—सुज भ्रात जेठी सेस रा, दइवांण वंस दनेस रा।—र.ज.प्र.

दन्न-सं०पु०—ध्वनि विशेष।

दन्नि—देखो 'दांन' (रू.भे.) उ०—दुवौ न जोड़ि स्राग दन्नि तेण सूं

घरा पती । नरां पती जोवांण नाथ ऐहड़ो 'अभैपती' ।—सू.प्र.

दन्यां—देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

कहा०—दन्यां मांये मा बाप नी मळे बीजूं सारू मळे—दुनिया में माता पिता नहीं मिलते अन्य समस्त पदार्थ मिलते हैं (भील)

दप-सं०पु० (अनु०) मृदंग का बोल । उ०—दों दों द्रीं दप मप द्रांगिड़-दिक दमकं म्रिदंग । झण रण रण झें झें झाझरि झमकित झूंग ।
—घ.व ग्रं.

दपट-सं०स्त्री०—१ छलांग, कूदान । उ०—कदमां छेक दपट जम कळका, तलफ-स कर जळ का तास । पलट फिरत दरपण दुत पळका, बीजळ का भळका वरहास ।—देवजी दधवाड़ियो

२ आग के प्रज्वलन से उठी हुई आग की लौ, आग की लपट ।
उ०—झंखड़ खसता ब्रछ दवानळ दपटां झाळं, झूमर काळी सुराधेन रा पूंछ दझाळं ।—मेघ.

३ आक्रमण, धावा । उ०—सो रंजक री रपट । वाज री झपट । लाय री लपट । चीता री दपट । वज्र कर संकर किना विह्य नो चक्र छूटो ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

४ डांट, फटकार ।

रू०भे०—दपट्ट ।

वि०—अधिक, तेज । उ०—धारी अंधाधूंध अंध आदत अळियां री, दपट उठै दुरगंध गंध नासै गळियां री—ऊ.का.

दपटणौ, दपटबौ-क्रि०स०—१ खूब खाना या पीना, आहार करना । उ०—लख अहरणां वप लपटजो, राज अपटजो रोज । दारू आसो दपटजो, तुरां झपटजो तीज ।—मयारांम दरजी री वात

२ कैंची से दाढ़ी को छोटी करना. ३ आक्रमण करना, धावा करना. ४ आवेष्टन करना, लपेटना । उ०—जद या कही और तो कठै ठौड़ नहीं नै या मजूस है जणी में धसै जाओ, पछै परधान हूं मजूस में घाले नै ऊपर चीथरां थी दपटयो नै कमाड़ खोल्या जद अमल पांणी में गोता खाती खाती में तो मांहे आयो ।
—कांणा रजपूत री वात

५ छलांग भरना, कूदना. ६ तेज भागना. ७ संहार करना, मारना. ८ अधिक खर्च करना. ९ किसी को डराने के लिये बिगड़ कर जोर से बोलना, घुड़कना, डांटना ।

क्रि०अ०—१० दौड़ना । उ०—वळ अमट ऊवट गयण वट, ब्रढ़ दनुज दहवट कज दपट भट भिड़े वीर सबीर ।—र.रू.

दपटणहार, हारौ (हारी), दपटणियौ—वि० ।

दपटवाड़णौ, दपटवाड़बौ, दपटवाणौ, दपटवाबौ, दपटवावणौ, दपटवावबौ, दपटाड़णौ, दपटाड़बौ, दपटाणौ, दपटाबौ, दपटावणौ, दपटावबौ—प्रे०रू० ।

दपटिओड़ो, दपटियोड़ो, दपट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दपट्टणौ, दपट्टबौ, दपेटणौ, दपेटबौ, दपटणौ, दपटबौ, दापटणौ, दापटबौ—रू०भे० ।

दपटाड़णौ, दपटाड़बौ—देखो 'दपटाणौ, दपटाबौ' (रू.भे.)

दपटाड़णहार, हारौ (हारी), दपटाड़णियौ—वि० ।

दपटाड़िओड़ो, दपटाड़ियोड़ो, दपटाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दपटाड़ीजणौ, दपटाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

दपटणौ, दपटबौ—अक०रू० ।

दपटाड़ियोड़ो—देखो 'दपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दपटाड़ियोड़ी)

दपटाणौ, दपटाबौ-क्रि०स० (दपटणौ' क्रिया का प्रे०रू०)१ खूब खिलाना या पिलाना, आहार कराना. २ कैंची से दाढ़ी को छोटी कराना. ३ आक्रमण कराना, धावा कराना. ४ आवेष्टन कराना, लिपटाना. ५ छलांग भराना, कुदाना. ६ भगाना, दौड़ाना. ७ संहार कराना, मराना. ८ अधिक खर्च कराना. ९ डांट दिलाना, घुड़काना, डराना ।

दपटाणहार, हारौ (हारी), दपटाणियौ—वि० ।

दपटायोड़ो—भू०का०कृ० ।

दपटाईजणौ, दपटाईजबौ—कर्म वा० ।

दपटणौ, दपटबौ—अक०रू० ।

दपटाड़णौ, दपटाड़बौ, दपटावणौ, दपटावबौ, दपट्टाड़णौ, दपट्टाड़बौ, दपट्टाणौ, दपट्टाबौ, दपट्टावणौ, दपट्टावबौ—रू०भे० ।

दपटायोड़ो-भू०का०कृ०—१ खूब खिलाया या पिलाया हुआ, आहार कराया हुआ. २ कैंची से दाढ़ी को छोटी कराया हुआ. ३ आक्रमण कराया हुआ, धावा कराया हुआ. ४ आवेष्टन कराया हुआ, लिपटाया हुआ. ५ छलांग भराया हुआ, कुदाया हुआ. ६ भगाया हुआ, दौड़ाया हुआ. ७ संहार कराया हुआ, मराया हुआ. ८ अधिक खर्च कराया हुआ. ९ डांट दिलाया हुआ, घुड़काया हुआ, डराया हुआ ।
(स्त्री० दपटायोड़ी)

दपटावणौ, दपटावबौ—देखो 'दपटाणौ, दपटाबौ' (रू.भे.)

दपटावणहार, हारौ (हारी), दपटावणियौ—वि० ।

दपटाविओड़ो, दपटावियोड़ो, दपटाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दपटावीजणौ, दपटावीजबौ—कर्म वा० ।

दपटणौ, दपटबौ—अक०रू० ।

दपटावियोड़ो—देखो 'दपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दपटावियोड़ी)

दपटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ खूब खाया हुआ या पिया हुआ, आहार किया हुआ. २ कैंची से दाढ़ी को छोटी किया हुआ. ३ आक्रमण किया हुआ, धावा किया हुआ. ४ आवेष्टन किया हुआ, लपेटा हुआ. ५ छलांग भरा हुआ, कूदा हुआ. ६ तेज भगाया हुआ. ७ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ८ अधिक खर्च किया हुआ. ९ घुड़का हुआ, डांटा हुआ. १० दौड़ा हुआ, भगा हुआ ।
(स्त्री० दपटियोड़ी)

दपट्ट-वि०—देखो 'दपट' (रू.भे.)। उ०—दारू मांस दपट्ट, अमल अणमाप अरोगै। नमड़पोस रै चींठ, भंवर मादक सुख भोगै।
—ऊ.का.

दपट्टणौ, दपट्टबौ—देखो 'दपटणौ, दपटबौ' (रू.भे.)
उ०—निरधार निवाजण मैं अघ भांजण, सेवग तार सधीर सो जी। दुख देवां दहण दैत दपट्टण, वीर निकौ रघुबीर सो जी।—र.ज.प्र.

दपट्टाडणौ, दपट्टाड़बौ—देखो 'दपटाणौ, दपटावौ' (रू.भे.)

दपट्टाड़ियोड़ौ—देखो 'दपटायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दपट्टाड़ियोडी)

दपट्टाणौ, दपट्टावौ—देखो 'दपटाणौ, दपटावौ' (रू.भे.)

दपट्टायोड़ौ—देखो 'दपटायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दपट्टायोडी)

दपट्टावणौ, दपट्टाववौ—देखो 'दपटाणौ, दपटावौ' (रू.भे.)

दपट्टावियोड़ौ—देखो 'दपटायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दपट्टावियोडी)

दपट्टियोड़ौ—देखो 'दपटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दपट्टियोडी)

दपणौ, दपबौ—देखो 'दीपणौ, दीपबौ' (रू.भे.) उ०—कुरंद कपै हद केलपुर, दपै ऊजळ दांन। छत्री सूंम सारा छिपै, जगपत जिपै जिहांन।—उमेदसिंह सीसोदिया रौ दूहौ

दपेटणौ, दपेटबौ—देखो 'दपटणौ, दपटबौ' (४) (रू.भे.)

दपेटियोड़ौ—देखो 'दपटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दपेटियोडी)

दप्पण—देखो 'दरपण' (रू.भे.) उ०—तळिया तोरण डगमगंत, दप्पण विसथारिउं। मच मिसिहि किरि सुरविमांण, महियळि अवतारिउं।
—प्राचीन फागु संग्रह

दफण-सं०पु० [अ० दफ़्न] १ किसी चीज को जमीन में गाड़ने की क्रिया. २ मृतक को जमीन मे गाड़ने का कार्य।

दफणाणौ, दफणाबौ-क्रि०स० [अ० दफ़्न] १ जमीन में गाड़ना।
उ०—आदर चाहै मूढ़ वे, सूंबां रै घर जाय। सिर लिखमी रै दी सिला, घर आया दफणाय।—बां.दा.
२ मृतक को जमीन में गाड़ना, दफनाना।
दफणाणहार, हारौ (हारी), दफणाणियौ—वि०।
दफणायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दफणाईजणौ, दफणाईजबौ—कर्म वा०।

दफणायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ जमीन में गाड़ा हुआ. २ मृतक को जमीन मे गाड़ा हुआ, दफनाया हुआ।
(स्त्री० दफणायोड़ी)

दफतर—देखो 'दप्तर' (रू.भे.) उ०—१ दफतर दिस देखतां, वरस साठां तक वीता। जम अमली जांण जै, ग्यांन पढिया कै गीता।
—अरजुणजी बारहठ

उ०—२ कर भक्ती पाछा पड़ै रे, इचरज आवै मोय। दफतर नांमा कट गया, भलौ काय सूं होय।—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—३ दिवस रा थाका मांदा, सैं सिझ्या भाज्या आवता। दरोगी दफतर रा दाझ्या, पून निरोगी पावता।—दसदेव
यौ०—दफतर-खांनौ।

दफतरी—देखो 'दप्तरी' (रू.भे.) उ०—दफतरी ओसवाळ, कोठारी कूकड़, चौपड़ौ भीमराज सूजावत।—द.दा.

दफतरीखांनौ—देखो 'दप्तरीखांनौ' (रू.भे.)

दफती-सं०स्त्री० [अ० दफ़्तीन] कागज के कई तख्तों को एक में सटा कर बनाया हुआ गत्ता।

दफदर—देखो 'दप्तर' (रू.भे.)

दफा-सं०स्त्री० [सं० दफ़अ] १ किसी कानूनी पुस्तक का वह एक अंश जिस में किसी अपराध के विषय में व्यवस्था हो, धारा।
क्रि०प्र०—देणा, लगाणा।
२ मर्त्तबा, बार, वेर।
३ नाश। उ०—चाहीजै गरज उण लड़ाई सूं छूट पूरी भलाई री न होय धरम न छूटै और दफा अन्याव उत्पात रौ होय।—नी.प्र.
वि० [अ० दफ़ा:] दूर किया हुआ, हटाया हुआ, तिरस्कृत।
मुहा०—दफा होणौ—हट जाना, दूर हो जाना, टल जाना, भाग जाना।
रू०भे०—दफै।

दफादार-सं०पु० [अ० दफ़अ:+फा० दार] १ फौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों. २ पुलिस का जमादार।
३ तहसीलदार के अधीनस्थ वह कर्मचारी जिस की मातहती में सुतर सवार रहते हैं।
रू०भे०—दफैदार।

दफादारी-सं०स्त्री०—१ दफादार का पद. ४ दफादार का कार्य।
रू०भे०—दफैदारी।

दफै—देखो 'दफा' (रू.भे.) उ०—१ किसी दफै फिदवी पर खीजता इस तरह दीसै। अपणै दसतों से सिर पीट कर दांतूं कूं पीसै।
—दुरगादत्त बारहठ
उ०—२ तोय दुसमण होसी दफै तास। केई जुगां राज थारौ प्रकास।—रांमदांन लाळस

दफैदार—देखो दफादार' (रू.भे.)

दफैदारी—देखो 'दफादारी' (रू.भे.)

दप्तर-सं०पु० [फ़ा०] किसी कारखाने आदि के सम्बन्ध की कुल लिखा-पढी और लेन-देन करने का स्थान, कार्यालय, ऑफिस।
उ०—दप्तर सब दहयूं इसौ, कियौ सतायु सिताव। आयौ पाछौ वणक इक, जमपुर सुं कर जाव।—बां.दा.
रू०भे०—दफतर, दफदर।

दप्तरी-सं०पु० [फ़ा०] १ किसी कार्यालय का वह कर्मचारी जो कागज

आदि ठीक करता है, कागजों पर रूलें खींचता है, कागजों को फाइल करता है अथवा इसी तरह के अन्य कार्य करता है. २ पुस्तकों की जिल्द बांधने वाला, जिल्दसाज।

रू०भे०—दफतरी।

दपतरीखांनो-सं०पु० [फ़ा० दपतरीखाना] १ वह स्थान जहां बैठ कर दपतरी कार्य करता है २ वह स्थान जहा पर पुस्तकों पर जिल्द बांधी जाती है।

रू०भे०—दफतरीखांनो।

दबंग-वि०—जिसका लोगों पर रोब हो, प्रभावशाली।

दब-वि०—गुप्त (अ.मा.)

दबक-सं० स्त्री० [सं० दमन] १ दबने या छिपने की क्रिया या भाव. २ धातु आदि को लम्बा करने के लिये पीटने की क्रिया।

यौ०—दबकगर।

३ सिकुड़न, शिकन।

४ भय, डर।

क्रि०प्र०—देणी, होणी।

रू०भे०—दुबक।

दबकगर-सं०पु०—धातु आदि को पीट कर लंबा तार बनाने वाला।

दबकणो, दबकबौ-क्रि०अ० [सं० दमन] १ भय के कारण किसी संकरे स्थान में छिपना, दबकना। उ०—वंबी अंदर पौढ़ियो, काळो दबकै काय। पूंगी ऊपर पावरो, आवै भोग उठाय।—बी.स.

२ छिपना, लुकना (टोह में) ३ क्षुब्ध होना, डरना।

उ०—राजा पण वातां सुण दबकीज गयो, मुंहडो उतर गयो।

—राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

क्रि०स०—४ किसी धातु को हथौड़ी से चोट लगा कर बढ़ाना या चौड़ा करना, पीटना।

[सं० दर्पः] ५ घुड़कना, डपटना, डांटना।

दबकणहार, हारौ (हारी), दबकणियौ—वि०।

दबकवाड़णो, दबकवाड़बौ, दबकवाणो, दबकवाबौ, दबकवावणो, दबकवावबौ, दबकाड़णो, दबकाड़बौ, दबकाणो, दबकाबौ, दबकावणो, दबकावबौ—प्रे०रू०।

दबकिओड़ो, दबकियोड़ो, दबक्योड़ो—भू०का०कृ०।

दबकीजणो, दबकीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दुबकणो, दुबकबौ—रू०भे०।

दबकाड़णो, दबकाड़बौ—देखो 'दबकाणो, दबकाबौ' (रू.भे.)

दबकाड़ियोड़ो—देखो 'दबकायोड़ो' (रू.भे.)

दबकाणो, दबकाबौ-क्रि०स०—१ छिपाना, लुकाना. २ भय दिखाना, डराना।

('दबकणो' क्रिया का प्रे०रू०) ३ हथौड़ी से चोट लगा कर किसी धातु को चौड़ा कराना या बढ़वाना. २ घुडकाना, डपटाना।

दबकाणहार, हारौ (हारी), दबकाणियौ—वि०।

दबकायोड़ो—भू०का०कृ०।

दबकाईजणो, दबकाईजबौ—कर्म वा०।

दबकणो, दबकबौ—अक०रू०।

दबकाड़णो, दबकाड़बौ, दबकावणो, दबकावबौ—रू०भे०।

दबकायोड़ो-भू०का०कृ०—१ छिपाया हुआ, लुकाया हुआ. २ भय दिखाया हुआ, डराया हुआ. ३ हथौड़ी से चोट लगा कर किसी धातु को बढ़वाया हुआ, धातु को चौड़ा करवाया हुआ. ४ घुड़काया हुआ, डपटाया हुआ।

(स्त्री० दबकायोड़ी)

दबकावणो, दबकावबौ—देखो 'दबकाणो, दबकाबौ' (रू.भे.)

दबकावियोड़ो— देखो 'दबकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दबकावियोड़ी)

दबकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ भय के कारण किसी संकरे स्थान में छिपा हुआ, दुबका हुआ. २ लुका हुआ, छिपा हुआ (टोह में) ३ क्षुब्ध हुवा हुआ, डरा हुआ. ४ किसी धातु को हथौड़ी से चोट लगा कर बढ़ाया हुआ, चौड़ा किया हुआ. ५ घुड़का हुआ, डपटा हुआ, डांटा हुआ।

(स्त्री० दबकियोड़ी)

दबकी-सं०स्त्री० [सं० दमन] १ छिपने या दुबकने की क्रिया या भाव।

मुहा०—दबकी मारणी—गायब हो जाना, अदृश्य हो जाना, छुप जाना।

२ क्षुब्ध होने या डरने का भाव।

मुहा०— १ दबकी देणी—क्षुब्ध करना, भय दिखाना, डराना. २ दबकी मारणी—भयभीत होना, डरना।

३ घुड़कने या डांटने की क्रिया या भाव।

मुहा०—१ दबकी देणी—डांट बताना, घुड़कना, डपटना. २ दबकी मारणी—देखो 'दबकी देणी'।

रू०भे०—दुबकी।

दबकै-क्रि०वि०—झट से, तुरन्त। उ०—पइसो आवै प्रेम सूं तो दबकै लेणो दाव।—ऊ.का.

दबकै री सलमो-सं०पु० (देश०) दबके का बना हुआ सलमा जो बहुत चमकीला होता है।

दबको-सं०पु० [सं० दमन=तार आदि पीटना] कामदानी का सुनहला या रुपहला तार।

दबगर-सं०पु०—१ मांस को सेकने के निमित्त आग में औटने का ढंग या क्रिया। उ०—ओझरा धोय-धोय मांहै मसळां मारियो मांस घात दबगर कीजै छै।—रा.सा.सं.

२ देखो 'डबगर' (रू.भे.)

दबड़काणो, दबड़काबौ-क्रि०स० (अनु०) दौडाना। ज्यूं—घोड़ा नै साचा दबड़काया जिको दिनूंगां पं'ली ठेट पूगा।

दबड़कावणो, दबड़कावबौ—रू०भे०।

दबड़कायोड़ी-भू०का०कृ०—दौड़ाया हुआ।
(स्त्री० दबड़कायोडी)
दबड़कावणो, दबड़कावबो—देखो 'दबड़काणो, दबड़काबो' (रू.भे.)
दबड़कावियोडो—देखो 'दबडकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दबड़कावियोड़ी)
दबणी-सं०स्त्री० [सं० दमन] १ असहाय, हीन या विवश होने की अवस्था। उ०—तद प्रोहित वीकमसी रै बेटै देवीदास बीदावतां भाजतां नूं कयौ, 'रे रावजी दबणी मैं आया पाछा घिरो।'—द दा.
मुहा०—दबणी में, दबणी में आणो, दबणी में होणो—असहाय अथवा हीन दशा में होना, संकट में होना। वश में होना, अधिकार में होना।
दबणो, दबबौ-क्रि०अ० [सं० दमन] १ बोझ के नीचे पड़ना, भार के नीचे आना। ज्यूं—घर री भींत ढही सो पांच मिनख दबिया।
२ किसी के दबाव या आतंक में पड़ कर स्वतंत्रतापूर्वक आचरण न कर सकना. ३ किसी के आतंक या प्रभाव में पड कर किसी के इच्छानुसार कार्य करने के लिये विवश होना. ४ किसी के प्रभाव या आतंक में आ कर कुछ कह नहीं सकना. ५ किसी की तुलना में अपेक्षाकृत काम जँचना, अपने गुणों आदि की कमी के कारण किसी के मुकाबिले में ठीक या अच्छा नहीं जँचना। उ०—फळ वोह रूप में फबिया। देखे प्रभा नाखित्रगण दबिया।—सू.प्र.
६ ऐसी दशा में होना जिस में किसी ओर से बहुत जोर पड़े, दाव में आना। ज्यूं—सेनापती रै कैंणे सूं राजा नै दबणो पड़ियो।
७ किसी प्रबल शक्ति की टक्कर या मुकाबिले के कारण पैर न जमना, पीछे हटना, अपने स्थान पर ठहर न सकना. ८ हारना. ९ शान्त रहना, उभड़ न सकना। ज्यूं—गुस्सो दबणो।
१० किसी बात का जहां का तहां रह जाना, किसी बात का अधिक बढ़ या फैल न सकना. ११ अपनी चीज का अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार में चला जाना। उ०—तौ जोगै री भऊ भटियांणी रावजी नूं लिखी जो धरती दबै नहीं, मोहिलां री दखल हुवै छै।—नापै सांखलै री वारता
१२ मंद पड़ना, धीमा पड़ना।
मुहा०—१ दबियोडी आवाज (जबांन)—धीमी आवाज होना, अस्पष्ट कहना, डरते हुए पूरी बात न कह कर थोड़ी ध्वनि निकालना. २ दबियौ दबायौ रैंणौ—कार्रवाई या उपद्रव न करना, चुपचाप या शान्तिपूर्वक रहना. ३ दबी आवाज—देखो 'दबियोड़ी आवाज'।
१३ संकोच करना, झेंपना. १४ छुपना, गुप्त होना। उ०—सु श्री चढ़ तयार हुइ ऊभा रया था। सु सांम्हां आय तळाव १ मांहि दबिया ऊभा था।—नैणसी
१५ ऐसी अवस्था में आ जाना जिस में कुछ वस न चल सके।
मुहा०—करजा में दबणो—कर्ज हो जाना, दिवालिया हो जाना, कर्ज के कारण विवश हो जाना।
दबणहार, हारौ (हारी), दबणियौ—वि०।
दबवाड़णो, दबवाड़बो, दबवाणो, दबवाबो, दबवावणो, दबवावबो—प्रे०रू०।
दबाड़णो, दबाड़बो, दबाणो, दबाबो, दबावणो, दबावबो दावणो, दावबो—क्रि०स०।
दबिओड़ो, दबियोड़ो, दब्योड़ो—भू०का०कृ०।
दबीजणो, दबीजबो—भाव वा०।
दब्बणो, दब्बबो, दवणो, दवबो—रू०भे०।
दबदबो-सं०पु० [अ० दबदबा] रौब, आतंक, भय, प्रताप।
दबमौं-सं०पु० [सं० दमन] लकड़ी की छत पर रेत, कंकड़ आदि डाल कर पूरी छत बनाया हुआ मकान।
वि०—दबता हुआ।
दबवार-वि० [सं० दमन] दबने वाला, दबैल, कमजोर।
दबाऊ-वि० [सं० दमन] १ दबाने वाला. २ जिसका (गाड़ी आदि का) अगला हिस्सा पिछले हिस्से की अपेक्षा अधिक बोझिल हो.
३ दब्बू, कमजोर।
दबाड़णो, दबाड़बो—देखो 'दबाणो, दबाबो' (रू.भे.)।
उ०—दिल में जांणे पाय दबाड़ू, अवरां रा पग दाबै आप। कळपै कसूं कसूं नर कांपै, प्रांणी भजन तणो परताप।—ओपो आढ़ो
दबाड़णहार, हारौ (हारी), दबाड़णियौ—वि०।
दबाड़िओड़ो, दबाड़ियोड़ो, दबाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
दबाड़ीजणो, दबाड़ीजबो—कर्म वा०।
दबणो, दबबो—अक०रू०।
दबाड़ियोड़ो—देखो 'दबियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दबाड़ियोड़ी)
दबाणो, दबाबो—१ 'दबणो, दबबो' का प्रे.रू.। २ देखो 'दावणो, दावबो' (रू.भे.) उ०—१ दिलीस्वरां घर जिती दबाई। सब जोवतां दिली पतिसाही।—सू.प्र.
उ०—२ मूळी रो परगनो। वीरमगांव वासै गांव ३६ लागै। गांव ४ पातसाही दाखल। बीजा गांव काठियां दबाया। पंवार रायसिंह भूमियो छै।—नैणसी
उ०—३ पछै पड़िहार दिन दिन गळता गया, धरती सारी केल्हणां क्युं दे-ले नै दबाई। खरड़ री धरती सारी रा धणी केल्हण हुवा।
—नैणसी
उ०—४ तरै रावळ घड़सी आप रा मांणस ले नै फळोधी रै किनारै किरड़ा रै किनारै गांव बधाउड़ो छै, तठै मांणसां नूं राख नै आप पातसाही ओळग गयो। उठै वरस १२ चाकरी कीवी। आदमी १० तथा १२ भाटी नै आदमी २ चारण कनै था, सु उठै वोहत परेसांन हुवा। भूख गाढा दबाया।—नैणसी
दबाणहार, हारौ (हारी), दबाणियौ—वि०।

दबायोड़ी—भू०का०कृ० ।
दबाईजणौ, दबाईजबौ—कर्म वा० ।
दबणौ, दबबौ—अक०रू० ।

दबादब–क्रि०वि० (अनु०) १ एक के बाद एक. २ अत्यंत शीघ्रता के साथ ।

दबाव—देखो 'दबाव' (रू.भे.) उ०—चाळीस कोस हैजम चलाय, जाळीस वग्त बाळीस जाय । रच कियो घूहटां महां राव, देवड़ा महां मार्व दबाद ।—वि.सं.

दबावौ–सं०पु० (देश०) सुरंग खोदने अथवा अन्य किसी प्रकार का उपद्रव करने के लिये गुप्त रूप से कुछ आदमियों को शत्रु के किले में उतारने का लकड़ी का बना बहुत बड़ा संदूक ।

दबायोड़ौ—१ देखो 'दाबियोड़ौ' (रू.भे.) २ देखो 'दबबायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दबायोड़ी)

दबाव–सं०पु० [सं० दमन] १ दबाने की क्रिया या भाव. २ रौब, धाक. ३ आतंक, डर, भय. ४ प्रभाव ।
क्रि०प्र०—पड़णौ, आणौ ।
५ लिहाज ।
मुहा०—दबाव डाळणौ—किसी कार्य को करने के लिये किसी पर जोर डालना ।
६ बोझ, भार ।
रू०भे०—दबाव ।

दबावणौ, दबावबौ—देखो 'दावणौ, दावबौ' (रू.भे.)
उ०—रूप अगर वगतेस रै, मांन अगर वगतेस । नांमावण अनमां नरां, दबावण दसदेस ।
—ठाकुर वगतावरसिंह नै रूपजी कछवाह री गीत
दबावणहार, हारौ (हारी), दबावणियौ—वि० ।
दबाविओड़ौ, दबावियोड़ौ, दबाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
दबावीजणौ, दबावीजबौ—कर्म वा० ।
दबणौ, दबबौ—अक०रू० ।

दबावियोड़ौ—देखो 'दाबियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दबावियोड़ी)

दबियारी–सं०स्त्री० [सं० दमन] १ दबाने की क्रिया या भाव. २ आतंक. ३ प्रभाव. ४ बोझा, भार ।

दबियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बोझ के नीचे पड़ा हुआ, भार के नीचे आया हुआ. २ किसी के दबाव या आतंक में पड़ा हुआ. ३ किसी के आतंक या प्रभाव में पड़ कर किसी के इच्छानुसार कार्य करने के लिये विवश हुवा हुआ. ४ किसी के प्रभाव या आतंक मे आकर कुछ कह सकने में असमर्थ हुवा हुआ. ५ अपने गुणों आदि की कमी के कारण किसी की तुलना अथवा मुकाबिले में अपेक्षाकृत कम ऊँचा हुवा अथवा ठीक नहीं जँचा हुआ. ६ दाव में आया हुआ, जोर में पड़ा हुआ. ७ किसी प्रबल शक्ति की टक्कर या मुकाबिले के कारण पीछे हटा हुआ, अपने स्थान पर नहीं ठहरा हुआ. ८ हारा हुआ. ९ शान्त रहा हुआ, नही उभड़ा हुआ. १० जहां का तहां रहा हुआ, नहीं फैला हुआ (समाचार, मामला, घटना आदि). ११ अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार में गया हुआ (संपत्ति, पदार्थ, जमीन आदि) १२ मंद पड़ा हुआ, धीमा पड़ा हुआ. १३ संकोच किया हुआ, झेंपा हुआ. १४ छुपा हुआ, गुप्त हुवा हुआ. १५ ऐसी अवस्था में आया हुआ जिस में कुछ बस न चल सके ।
(स्त्री० दबियोड़ी)

दबीकळ–सं०पु०—सांप, सर्प ।

दबू—देखो 'दब्बू' (रू.भे.)

दबेल, दबैल–वि० [सं० दमन] १ दबने वाला. २ दुर्बल, अशक्त. ३ असमर्थ ।

दबोचणौ, दबोचबौ–क्रि०स० [सं० दमन] १ अचानक पकड़ कर धर दबाना, दाब लेना. २ छिपाना ।
दबोचणहार, हारौ (हारी), दबोचणियौ—वि० ।
दबोचिओड़ौ, दबोचियोड़ौ, दबोच्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
दबोचीजणौ, दबोचीजबौ—कर्म वा० ।

दबोचियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ पकड़ कर दबा लिया हुआ. २ छिपाया हुआ ।
(स्त्री० दबोचियोड़ी)

दबौ–सं०पु० [सं० दमन ?] छुपने की क्रिया या भाव ।
उ०—ताहरां जोईया फिर आय वसिया । गोगादेजी दबौ मार बैठा हुता ।—नैणसी
क्रि०प्र०—मारणौ ।

दब्बणौ, दब्बबौ—देखो 'दबणौ, दबबौ' (रू.भे.) उ०—१ पहै दीठ आसेर ज्यां मेर पब्बै । दुती देखियां सरग री दुरग दब्बै ।—मे.म.
उ०—२ गढ़ फोड़ेवा चणौ गरब्बै, कुंजर कूं कीड़ी पग दब्बै । ए विण सून हमारै आगै, जंगम तैं सुर के भ्रम जागै ।—रा.रू.

दब्बियोड़ौ—देखो 'दबियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दब्बियोड़ी)

दब्बुनी–वि०—दबाने वाली ? उ०—विसाळ भाळ तोप को विसाळ जाळ वित्थुरे, धमंक भू धुजावणी धमंक मेघलां धुरै । महांन रंज दब्बुनी अरीन दब्बुनी मही, कथै कबीर नै कही चिराव की चही चही ।—ऊ.का.

दब्बू–वि० [सं० दमन] १ दबने वाला. २ दुर्बल, अशक्त. ३ असमर्थ, हीन ।
रू०भे०—दबू ।

दभंगजळ–सं०पु०—युद्ध, संग्राम, समर ।

दभिक–सं०पु०—दहिया राजपूत वंश या इस वंश का व्यक्ति ।
उ०—दाधिम मट्टिय दभिक कुंभ संभर जावळ कुळ । डव्भिय सोढ़े गौड़ चढ हि प्रामार स संगुळ ।—वं.भा.

दभ्र-वि० [सं०] थोड़ा, अल्प, कम ।
दमंक—देखो 'दमक' (रू.भे.) उ०—छमंक बिच्छवांन की दमंक ना दरीन की । झमंक जेहरांम की चमंक ना चुरीन की ।—ऊ.का.
दमंकणो, दमंकबो—देखो 'दमकणो, दमकबो' (रू.भे.)
उ०—१ दांत दमंकै अहर द्रुत, जांण चमंकै बीज । ज्यांरी धुनि मधुरी सुणि, रहै तपोधन रीज ।—बां.दा.
उ०—२ चिगा पडदारू पाळ चमंकै । दांमण जांण सिळाउ दमंकै ।
—सू.प्र.
उ०—३ धुरै सहांणी गाज अदगां ताळ धमंकै । कळप तणा रसराज पियंतां कांन दमंकै ।—मेघ.
दमंकियोड़ो—देखो 'दमकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दमंकियोडी)
दमंग-सं०स्त्री० [सं० दव=दावाग्नि] १ अग्निकण, चिनगारी ।
उ०—१ प्रळै झळ एक दमंग प्रचंड । खपावत जांणि घणा वन खंड ।—सू.प्र.
उ०—२ महाबळ कांणण रांण मलंग । दारू मभ जांण कुमांण दमंग ।—मे.म.
रू०भे०—दवंग, दुमंग ।
२ देखो 'दमक' (रू.भे.)
वि०—निडर, निर्भय, निशंक ।
दमंगळ-सं०पु० [फ़ा० दंगल] १ युद्ध, लडाई, रण, समर ।
उ०—१ दमंगळ विण दुमनो रहै, जडै न कंगळ जंत । सखी वधावो त्यां भडां, जेथ जुडीजै कंत ।—वी.स.
उ०—२ हुवै मंगळ धमळ दमंगळ बीरहक, रंग तूठो कमध जंग रूठो । सघण बूठो कुसुम वोह जिण मोड सिर, विखम उण मोड़ सिर लोह बूठो ।—बां दा.
२ उपद्रव, उत्पात, बखेडा । उ०—सत्र भागो जाळोर सूं, सुहड़ सचिता साथ । किण बळ दळ जायै कुसळ, मग दमंगळ भाराथ ।
—रा.रू.
रू०भे०—दमगळ, दुमंगळ ।
दम-सं०पु० [फ़ा०] १ श्वास, साँस । उ०—ऊठ 'फरीदा' जाग रे, जागण की कर चूंप । यह दम हीरा लाल है, गिण-गिण रब को सूंप ।
—फरीद
क्रि०प्र०—आणो, चलणो, जाणो, लेणो ।
मुहा०—१ दम अटकणो—सांस अटकना, विशेषतः मरने के समय सांस रुकना. २ दम उखडणो—देखो 'दम अटकणो'. ३ दम खीचणो—साँस ऊपर चढ़ाना, सांस खींचना, चुप रह जाना, न बोलना. ४ दम घुटणो—सांस न लिया जा सकना । हवा की कमी के कारण सांस रुकना. ५ दम घोटणो—किसी को सांस लेने से रोकना, सांस न लेने देना, बहुत कष्ट देना. ६ दम घोट नै मारणो—१ गला दबा कर मारना. २ देखो 'दम घोटणो'. ७ दम चढणो—दमे के रोग का दौरा होना, अधिक परिश्रम के कारण सांस का जल्दी-जल्दी चलना, हांफना. ८ दम टूटणो—प्राण निकलना, सांस बंद हो जाना, अधिक हांफना. ९ दम फूलणो—देखो 'दम चढणो'. १० दम भरणो—किसी के प्रेम अथवा मित्रता का पक्का भरोसा रखना और समय-समय पर गर्व से उसका वर्णन करना । अधिक परिश्रम के कारण थकना, हाँफना. ११ दम मारणो—विश्राम करना, सुस्ताना. १२ दम लैणो—देखो 'दम मारणो' ।
२ नशे आदि के लिये सांस के साथ धुआं खींचने की क्रिया ।
मुहा०—१ दम खींचणो—'दम लगाणो'. २ दम लगाणो—गांजे, चरस, तम्बाकू आदि को चिलम में रख कर उसका धुआँ खींचना. ३ दम लागणो—गांजा, तम्बाकू आदि का धुआँ खींचा जाना, धूम्र-पान होना ।
३ उतना समय जितना एक बार सांस खींचने में लगता है, पल ।
उ०—नारायण रा नांम सूं, भरियो रह भरपूर । दांमोदर नै दाखवै, दम दम कर नह दूर ।—ह.र.
यौ०—दम-भर, दमेक ।
४ प्राण, जान, जी । उ०—अहि खग म्रिग दम हूंस अळूझै । सुणै न सबद गात न सूझै ।—सू.प्र.
मुहा०—१ दम उळझणो—चित्त में व्याकुलता होना, जी घबराना. २ दम टूटणो—प्राण निकलना, मरना. ३ दम निकळणो—प्राण निकलना, मर जाना, अत्यन्त आसक्ति होना, घबराना, बेचैनी होना ।
५ पदार्थ की वह शक्ति जिस से उसका अस्तित्व बना रहे, जीवनी शक्ति । ज्यूं—इण सायकल में हमै दम कोनी, फजूल रगड़ो हो ।
यौ०—दमदार ।
६ धोखा, छल, फरेब ।
यौ०—दम-झांसो, दम-धांसो, दम-बाज ।
[फ़ा० दम:] ७ एक प्रसिद्ध रोग जिस में श्वास-वाहिनी नाली के अंतिम भाग में, जो फेफडों के पास में होता है, आकुंचन और ऐंठन के कारण साँस लेने में बहुत कष्ट होता है, खांसी आती है और कफ रुक-रुक कर बड़ी कठिनता से धीरे-धीरे निकलता है ।
क्रि०प्र०—ऊठणो, होणो ।
रू०भे०—दमो ।
[सं०] ८ भीम राजा के एक पुत्र और दमयंती के एक भाई का नाम.
९ देखो 'दमन' (रू.भे.)
दमक-सं०स्त्री ('चमक' का अनु०) १ द्युति, आभा, चमक ।
उ०—छकी हीरां मदन छकि, वण बुध सदन विसेख । चंद वदन मुळकण दमक, रदन तडत की रेख ।—बकसीरांम प्रोहित री वात
२ तपन, गर्मी, ताप, उष्णता ।
वि० [सं०] रोकने या शांत करने वाला, दबाने वाला, दमनकर्त्ता ।
रू०भे०—दमंग ।
दमकणो, दमकबो-क्रि०अ० ('चमकणो' का अनु०) १ चमचमाना,

चमकना, दमकना। उ०—१ काळी कांठळ में दांमणियां दमकी। चित में कांमणियां विरहानळ चमकी।—ऊ.का.
उ०—२ चूडौ चमकीलौ कचवीटौ चमकै। दांमण दमकीली दांमणि सी दमकै।—ऊ.का.
उ०—३ हिम हीर गौख जाळी हजार। दमकंत जोति अति जिलहदार।—सू.प्र.
२ वाद्य का बजना, ध्वनि करना। उ०—दौं दौं दौं दप द्रगिद्दक दमकै म्रिदंग। भ्रण रण रण भैं भै भाभरि भमकित भंग।
—ध.व.ग्रं.
दमकणहार, हारौ (हारी), दमकणियौ—वि०।
दमकवाड़णौ, दमकवाड़बौ, दमकवाणौ, दमकवावौ, दमकवावणौ, दमकवाववौ—प्रे०रू०।
दमकाड़णौ, दमकाड़बौ, दमकाणौ, दमकावौ, दमकावणौ, दमकाववौ—क्रि०म०।
दमकिग्रोड़ौ, दमकियोड़ौ, दमक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दमकीजणौ दमकीजबौ—भाव वा०।
दमक्कणौ, दमक्कबौ—रू०भे०।
दमकाड़णौ, दमकाड़बौ—देखो 'दमकाणौ, दमकावौ' (रू.भे.)
दमकाड़णहार, हारौ (हारी), दमकाड़णियौ—वि०।
दमकाड़िग्रोड़ौ, दमकाड़ियोड़ौ, दमकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दमकाड़ीजणौ, दमकाड़ीजबौ—भाव वा०।
दमकणौ, दमकबौ—अक०रू०।
दमकाड़ियोड़ौ—देखो 'दमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दमकाड़ियोड़ी)
दमकाणौ, दमकावौ—क्रि०म० ('चमकाणौ' का अनु०) १ चमकाना. २ वाद्य से ध्वनि उत्पन्न करना, बजाना।
दमकाणहार, हारौ (हारी), दमकाणियौ—वि०।
दमकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दमकाईजणौ, दमकाईजबौ—कर्म वा०।
दमकणौ, दमकबौ—अक०रू०।
दमकाड़णौ, दमकाड़बौ, दमकावणौ, दमकाववौ, दमक्काड़णौ, दमक्काड़बौ, दमक्काणौ, दमक्कावौ, दमक्कावणौ, दमक्काववौ—रू०भे०।
दमकायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चमकाया हुआ. २ ध्वनि उत्पन्न किया हुआ, बजाया हुआ।
(स्त्री० दमकायोड़ी)
दमकावणौ, दमकाववौ—देखो 'दमकाणौ, दमकावौ' (रू.भे.)
दमकावणहार, हारौ (हारी), दमकावणियौ—वि०।
दमकाविग्रोड़ौ, दमकावियोड़ौ, दमकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दमकावीजणौ, दमकावीजबौ—कर्म वा०।
दमकणौ, दमकबौ—अक०रू०।
दमकावियोड़ौ—देखो 'दमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दमकावियोड़ी)
दमकिग्रोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चमका हुआ. २ ध्वनि किया हुआ।
(स्त्री० दमकियोड़ी)
दमकीलौ—वि० [रा० दमक+ईलौ प्रत्य०] (स्त्री० दमकीली) चमकने वाला, आभायुक्त, चमकीला। उ०—चूडौ चमकीलौ कचवीटौ चमकै। दांमण दमकीली दांमणि सी दमकै।—ऊ.का.
दमक्कणौ, दमक्कबौ—देखो 'दमकणौ, दमकबौ' (रू.भे.)
उ०—दमक्कै वहै म्रिग ऊडांण देतौ। लखै बांण हूं बेधियौ डांण लेतौ।—सू.प्र.
दमक्काड़णौ, दमक्काड़बौ—देखो 'दमकाणौ, दमकावौ' (रू.भे.)
दमक्काड़ियोड़ौ—देखो 'दमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दमक्काड़ियोड़ी)
दमक्काणौ, दमक्कावौ—देखो 'दमकाणौ, दमकावौ' (रू.भे.)
दमक्कायोड़ौ—देखो 'दमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दमक्कायोड़ी)
दमक्कावणौ, दमक्काववौ—देखो 'दमकाणौ, दमकावौ' (रू.भे.)
दमक्कावियोड़ौ—देखो 'दमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दमक्कावियोड़ी)
दमक्कियोड़ौ—देखो 'दमकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दमक्कियोड़ी)
दमगळ—देखो 'दमंगळ' (रू.भे.) (डिं.को.) उ०—१ मन विजय दसम वधियौ संग्रांम। विग्रियौ अहमदपुर धांम धांम। सजियौ क्रोधांनळ कियौ 'मीह'। दावानळ दमगळ तीन दीह।—वि.सं.
उ०—२ दिन मांचै दूंद खूंदवै दमगळ, पतसाही मभ रौळ पड़ै। हाटौ चढ़ि फौजां हलकारै, लाडी जमवंत तणी लड़ै।
—रांणी जसमांदे हाडी री गीत
दमघोख—सं०पु० [सं० दमघोष] चेदि देश के प्रसिद्ध राजा जो शिशुपाल के पिता थे (वेलि, रुखमणी हरण)
दमचूल्हौ—सं०पु० [फा० दम+सं० चुल्हि:] लोहे का गोल चूल्हा विशेष जिस के बीच एक जाली होती है। नीचे एक बड़ा छिद्र होता है जिस में से हवा आती रहती है जिस से जाली पर आग सुलगती रहती है और राख जाली में से नीचे गिरती रहती है। चूल्हे की दीवार पर पकाने का बरतन रख दिया जाता है।
दमजोड़ौ—सं०पु०—तलवार।
दमड़ी—सं०स्त्री० [सं० द्रविण=धन] १ पैसे का आठवां भाग। २ पैसा, पाई। उ०—पल पल आतां री चमड़ी नित पीनी। दमड़ी खरची री जातां नह दीनी।—ऊ.का.
मुहा०—१ दमड़ी रा छांणा घुग्रांधार मचाई—कम पैसा और अधिक आडम्बर. २ दमड़ी री डोकरी नै टकौ सिर मुंडाई रौ—कम मूल्य की वस्तु पर अधिक व्यय. ३ दमड़ी री हांडी ही बजा'र

लेवणी—अल्प मूल्य की वस्तु को भी देख-भाल कर लेना चाहिए।
महु०—दमड़ो।

दमड़ी-सं०पु० [सं० द्रविण=धन] १ रुपया, धन, द्रव्य।
उ०—१ चाकरियां गरडा भया, दमड़ा चित्त दियाह। वळै विदेसी वालमा, कहडा कांम कियाह।—अज्ञात
उ०—२ सुण सुण रे जोधांणे रा तेली, घांणी पीलौ केसर नै किसतूरी, ओ तेल नवल वना रै अंग चढ़सी, लेखौ वांरा काकोसा कर लेसी, दमड़ा वांरा भाभोसा भर देसी।—लो.गी.
मुहा०—दमड़ा करणा—बेच बाच कर दाम प्राप्त करना। किसी भी तरह पैसा प्राप्त करना।
२ देखो 'दमड़ी' (मह., रू.भे.)

दमडको—देखो 'दमड़को' (रू.भे.)

दमण-वि० [सं० दमन] १ दमन करने वाला, दबाने वाला।
उ०—जोध तणै घर जैतसी, बंका राइ विभाड़। दुसमण दावट्टण दमण, उत्तर भड़ां किमाड़।—रा.ज. रासो
२ नाश करने वाला। उ०—चतुर साथ पृगी चतुर, सती रमा सुरलोक। सोमेस्वर संभर सुपह, थियौ दमण अरिथोक।—वं.भा.
३ देखो 'दमणौ' (रू.भे.) ४ देखो 'दमन' (रू.भे.)

दमणक-सं०पु० [सं० दमनक] १ प्रत्येक चरण में प्रथम तीन नगण एक लघु एक गुरु सहित ११ वर्ण का वर्णिक छंद विशेष, दमनक (पि.प्र.) २ देखो 'दमणौ' (रू.भे.)
वि०—दमन करने वाला, दमनशील।
रू०भे०—दमनक।

दमणौ-सं०पु० [सं० दमनक] एक पौधा जिसकी पत्तियां गुलदाऊदी की तरह कटावदार होती हैं और जिन में से कुछ तेज, पर कुछ कडुई सुगंध आती है, दौना। उ०—१ दमणा पाडल केतकी रे, जाइ जुही सुविसाळ। फूल तिहां महकइ घणा रे, तिम फूलां री माळ।
-ऐ.जै.का.सं.
उ०—२ तिलक केसर कोरंट वकुल पाडल वरी रे। दमणौ मरुवौ कुसुम कळी वहु विध मिळी रे।—वि.कु.
रू०भे०—दमण, दमणक, दमनिक, दवनौ।

दमणौ, दमबौ-क्रि०स० [सं० दम्] १ रोकना, वश में करना।
उ०—मयमत्ता मेंगळ महा, मणिधरि केहरि मल्ल। सगळा दमणा सोहिला, मन दमणौ मुसकल्ल।—ध.व.ग्रं.
२ दमन करना। उ० —जघा पवित्र करिस हूं जटधर, नूत करतौ आगळ नाटेसर। इंद्रियां पवित्र करिस अप्रंप्रम, दमे गिनांन तूझ दयतां-दम।—ह.र.
३ पीड़ित करना, दबाना। उ०—सरोवर सहू निरमळ सरिया, मलिन थयुं मोरु अंग। काती! जाती नही निसा, मुझ-नइं दमइ अनंग।—मा.कां.प्र.
दमणहार, हारौ (हारी), दमणियौ—वि०।
दमवाड़णौ, दमवाड़बौ, दमवाणौ, दमवावौ, दमवावणौ, दमवावबौ, दमाडणौ, दमाड़बौ, दमाणौ, दमावौ, दमावणौ, दमावबौ—प्रे०रू०।
दमिओड़ौ, दमियोड़ौ, दम्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दमीजणौ, दमीजबौ—कर्म वा०।
दम्मणौ, दम्मबौ—रू०भे०।

दमदमौ-सं०पु० [फ़ा० दमदमः] वह किलेबंदी जो लड़ाई के समय थैलों में बालू भर कर की जाती है, मोरचा। उ०—वेलदार अर कुहाड़ी-बरदार जिकां री जमात दस हजार। जिकौ बनकटी करै अर मोरचा बणावै। सुरंगां खोदै अरु दमदमा चुणावै। रूई री बरकियां रा गाडा, जिके खंदक भरवा नूं आवै आडा।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

दमदार-वि० [फ़ा०] १ दृढ़, मजबूत. २ जिस में जीवनीय शक्ति यथेष्ट हो।

दमन-सं०पु० [सं०] १ किसी को दबाने के लिये दिया जाने वाला दंड।
क्रि०प्र०—करणौ।
२ दबाने या रोकने की क्रिया।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।
३ इंद्रियों की चंचलता को रोकने की क्रिया, निग्रह, दम।
क्रि०प्र०—करणौ।
४ एक ऋषि का नाम जिनके यहां दमयंती उत्पन्न हुई थी।
५ एक पौधा, दमनक, दौना।
[सं० दमन:] ६ ४९ क्षेत्रपालों में से २१ वां क्षेत्रपाल.
७ देखो 'दमण' (रू.भे.)
रू०भे०—दवण।

दमनक-वि० [स०] १ संहार करने वाला, संहारक।
उ०—विरुदावळि बंदनि वित्थरै, अतिवेग सम्मुह उप्परै। वजि कटक दमनक रचक धमचक। अटक दक तक मुलक अकवक।—वं.भा.
२ देखो 'दमणक' (रू.भे.)

दमनकि—देखो 'दमणौ' (रू.भे.) उ०—दव जिम दीठइं करुण ए, करणाइ ए हियुं निकांमु। मरूउ वरूउ दमनकि मन, किंहि नहीं य विस्रांमु।
—नेमिनाथ फागु

दमनी-सं०स्त्री० [सं० दामिनी] विद्युत, बिजली। उ०—हिंदूवांन बिमांन अपच्छर की, गळबांह मनौ दमनी घन की। तुरकांन लिए परलोक परी, गमनी मनु जुट्टि जुराफन की।—ला.रा.

दमवंधौ-वि०—
उ०—मांणिक्य दंडउ हस्ती, खुरसांणिउ घोडउ, मुरस्थळी नउं उंट दंडाहिनउ वळद, भीमासननउ करपूर, जागडउ कुंकुम, काकतुंडउ अगुरु, दमवधौ धूप सिंहलदिवउ हार।—व.स.

दमवाज-वि०यौ० [फ़ा० दमबाज] धोखा देने वाला, फुसलाने वाला।

दमवाजी-सं०स्त्री० [फा० दम+वाज़ी] वहानेवाजी, फुसलाने का कार्य।

दमयंती-सं०स्त्री० [सं०] निषध देश के चंद्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र

राजा नल की पत्नी जो विदर्भ देश के राजा भीमसेन की कन्या थी।
रू०भे०—दवदंति, दवदंती।

दमल-सं०पु० [फ़ा० दंगल] युद्ध, द्वन्द्व।

दमसाज-सं०पु० [फ़ा० दमसाज़] वह मनुष्य या गवैया जो किसी दूसरे गवैये के गाते समय सहायता देने हेतु केवल स्वर भरता है।

दमांम-सं०पु० [फ़ा० दमाम:] एक प्रकार का बड़ा सुपारी की बनावट का नगाड़ा जिसे दो डंडों से बजाया जाता है। इस पर दो डंकों से अनेक बोल निकाले जाते हैं। इसे लकड़ी की चौखट पर टेढ़ा रखा जाता है।
उ०—१ घण माळ ज्यूंही असुरांण घड़ा। खित आवित मेन किसेन खड़ा। रिण तूर नफेरिय भेर रुड़ै। गहरै स्वर तांम दमांम गुड़ै।—रा.रू.
उ०—२ दळ पूठै दिली आगळी यर दळ, साकबंध सांपन संग्रांम। वीठळदास तणै सर वाजै, दोय पतसाहां तणा दमांम।
—वीठळदास गोपाळदासोत री गीत
रू०भे०—दमांमौ, दम्मांम, दम्मांमौ, दुदांम, दुदांमौ, दुमांम, दुमांमौ।

दमांमी-सं०पु० [फ़ा० दमाम:+रा.प्र.ई] (स्त्री० दमांमण) नक्कारा बजाने वाला, नक्कारची, ढोली।
रू०भे०—दुमांमी।

दमांमौ—देखो 'दमांम' (रू.भे.) उ०—१ ढोलउ चाल्यउ हे सखी, वज्या दमांमा-ढोल। माळवणी तीने तज्या, काजळ तिलक तंबोल।
—ढो.मा.
उ०—२ अवरां नइ दीजइ उदियारण, तइ ईसर तणइ नही काइ तोट। वहुनामी दीवाड वहूली, चढ़िया वींद दमांमे चोट।
—महादेव पारवती री वेलि

दमाक, दमाग—देखो 'दिमाग' (रू.भे.)

दमाज-सं०पु०—उष्ट, ऊंट। उ०—सखि हे, रांजिद चालियउ, पल्लांणियां दमाज। किहि पुनवंती सांमुहउ, म्हां उपरांठउ आज।
—ढो.मा.

दमाद—देखो 'दांमाद' (रू.भे.) २ देखो 'दमाज' (रू.भे.)

दमादम-क्रि०वि० (अनु०) १ दम दम शब्द के साथ. २ लगातार, बराबर।

दमि-वि० [सं० दम्] दमनशील। उ०—ग्यांनि विग्यांनी तपि, जपि, समि, दमि, संयनि करीअ तुच्छ।—रा.सा.सं.
रू०भे०—दमी।

दमिण—देखो 'दांमणी' (रू.भे.) उ०—दीपै जिम दमिण जेम दुरांति।
—गंमरासौ

दमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ रोका हुआ, वश में किया हुआ. २ दमन किया हुआ. ३ पीड़ित किया हुआ, दबाया हुआ।
(स्त्री० दमियोड़ी)

दमिल-सं०पु०—देश विशेष का व्यक्ति, अनार्य देश का मनुष्य (व.स.)

दमिस्क-सं०पु०—यवनों का एक तीर्थ स्थान (वां.दा.ख्यात)

दमी-वि० [सं० दम्] दमनशील।
सं०स्त्री० [फ़ा० दम] १ दम लगाने का नैचा. २ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

दमीदौ—देखो 'दमेदौ' (रू.भे.)

दमुना, दमूना-सं०स्त्री० [सं० दमुनस्, दमूनस्] अग्नि, आग (ह.नां.)

दमेंक-क्रि०वि० [फ़ा० दम=सं० एक] क्षण भर, पल भर।

दमेदौ-सं०पु०—१ बड़ा बताशा (शेखावाटी) २ घी में तल कर बनाई जाने वाली बताशे की आकार की रोटी।

दमेती—देखो 'दमयंती' (रू.भे.)

दमोइ-सं०स्त्री०—दोनों ओर मुंह वाला सांप।

दमोदर—देखो 'दांमोदर' (रू.भे.) उ०—१ अखभ कपिल हयग्रीव विसंभर, दत्तात्रय हरि हंम दमोदर। राय-विकुंठ धनंतर रिखभ, गरुड़ारूढ़ प्रथू प्रसनीगभ।—ह.र.
उ०—२ दोय दंत दोय भुज नहीं हर दमोदर, एक दंत च्यार भुज चिहन उण रै।—पीथौ सांदू
उ०—३ भव पाप भव दुख भरम भंजण, भगत वछळ भूधरं। देवकी नंदण मुगति दायक, देवरूप दमोदरं।—पि.प्र.

दमौ—देखो 'दम' (रू.भे.)

दम्म-सं०पु० [अ. या फा. दिरम] १ एक प्रकार का प्राचीन सिक्का जो चांदी या सोने का बना होता था। उ०—१ विरचै प्रबंध तस जस विमाळ, सुनवाय सुणायौ भाट लाल। तिण तुल्य भाव कमधज्ज तोड़ि, करि रजत दम्म बक्सीस कोड़ि।—वं.भा.
उ०—२ ए कग्गर क्रम सुणत इत संत्र उपाया। देणौ दम्म न उचित करि, लड़णौ चित लाया।—वं.भा.
२ देखो 'दम' (रू.भे.) उ०—नहीं तू जीव नहीं तू जम्म, नहीं तो देह नहीं तो दम्म। नहीं तू नार नहीं तू नाह, नहीं तू धांम नहीं तू छांह।—ह.र.

दम्मणौ, दम्मबौ—देखो 'दमणौ, दमबौ' (रू.भे.) उ०—नमौ निरंजणनाथ, पार कुण तोरा पम्मं। निगम कहे गम नांय, देह जोगेसर दम्मं।—ह र.

दम्मांम, दम्मांमौ—देखो 'दमांम' (रू.भे.) उ०—धरणी धडवडीय गहगडिय दम्मांम धुनि, दह दिसे परिवरचा सबळ सूरा। तुरंग भल पाखरचा सस्त्र हाथै धरचा, नाचता माचता रण सनूरा।
—स्रीपाळ रास

दम्मियोड़ौ—देखो 'दमियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दम्मियोड़ी)

दयंत-वि०—१ देने वाला. २ देखो 'दैत्य' (रू.भे.)
उ०—१ ऊभै मिसल अंब खास, पड़ै धड़हड़ अणपारां। राव जांणि नरसिंघ, हलै करि दयंत विहारा।—सू.प्र.
उ०—२ प्रसन्न दास प्रीत रा, विचार प्रत्यबीत रा। जुधां दयंत जीत रा, सरंम नाथ सीत रा।—र.ज.प्र.

उ०—३ डरावणो रूप रा दयंतां भांगा दूछरेल ।—र.ज.प्र.

दय-सं०स्त्री० [सं०] दया, कृपा, करुणा ।

दयण-वि० [सं० दान] दातार, देने वाला ।

दयत—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—१ मुख मंदहास प्रणंदमय, आराधित अहि नर अमर । दंडव्रत तूझ मारण दयत; वारण तारण लच्छिवर ।—सू.प्र.

उ०—२ दोऊ दयत महादुख दीनौ । कमळ योनि तव सुमिरन कीनौ ।—मे.म.

दयतां-दम, दयतां-दव-सं०पु०यौ० [सं० दैत्य+दम्] दैत्यों का दमन करने वाला, भगवान । उ०—१ जंघा पवित्र करिस हु जटधर, नृत करतौ आगळ नाटेसर । इंद्रियां पवित्र करिस अप्रंप्रम, दमै गिनांन तूझ दयतां-दम ।—ह.र.

उ०—२ काय निपाप करिस इम केसव, दंडवत करै तूझ दयतां-दव । रोम रोम तो नांम रहाविस, इम करतौ हरि-चरणां आविस ।—ह.र.

दयांनत-सं०स्त्री० [अ० दियानत] १ सत्यनिष्ठा, ईमान ।

उ०—अमांनत दयांनत पंडितां धरम जांणणहार सांचा प्रवीण इसी कही छै ।—नी.प्र.

२ नियत ।

रू०भे०—दांनत, दियांनत ।

दयांनतदार-वि० [अ० दियानत+फ़ा० दार] ईमानदार, सच्चा ।

रू०भे०—दांनतदार ।

दयांनतदारी-सं०स्त्री० [अ० दियानत+फ़ा० दारी] ईमानदारी, सच्चाई ।

रू०भे०—दांनतदारी ।

दया-सं०स्त्री० [सं०] १ दूसरे के कष्ट को देख कर उत्पन्न होने वाला मन का वह दुःखपूर्ण वेग जो उस कष्ट को दूर करने की प्रेरणा करता है, सहानुभूति का भाव, करुणा, रहम ।

क्रि०प्र०—आणी, करणी ।

यौ०—दया-द्रस्टी ।

२ कृपा (अ.मा.)

पर्या०—अनुकंपा, अनुक्रोस, क्रपा, घ्रिणा, पोस, प्रसन्नता, मया, महर, महरवांनगी, सुद्रस्ट, सुधानजर, सुनजर, हंतोगति ।

क्रि०प्र०—करणी ।

३ धर्म की पत्नी जो राजा दक्ष की कन्या थी ।

सं०पु०—४ राजपूतों के ३६ वंशों में से 'दहिया' राजपूत-वंश जो दधीचि मुनि के वंशज माने जाते हैं ।

दयाकर-वि० [सं० दया+कर] दयालु । उ०—पदमण रिख असमांन पहूंती, पंखां विनां जिहांन पढ़ीजै । केवट कुळ प्रतपाळ दयाकर, चरण पखाळ जिहाज चढ़ीजै ।—र.ज.प्र.

दयाणौ-वि० [सं० दक्षिण] (स्त्री० दयाणी) १ दाहिना ।

उ०—कोई दयाणै तौ हाथ में भालौ भळकणौ ।—पावूजी रा पवाड़ा

२ देखो 'दयावणौ' (रू.भे.)

दया-द्रस्टी-सं०स्त्री०यौ० [सं० दया+दृष्टि] मेहरवानी की नज़र, कृपा-दृष्टि, रहम का भाव ।

दयानंद-सं०पु० [सं०] एक ऋषि जो आर्य समाज के प्रवर्त्तक, सुधारक एवं सत्यार्थप्रकाश के लेखक थे । इनकी मृत्यु दीपावली के दिन (जहर के कारण-कथित) अजमेर में हुई थी ।

दयानिध, दयानिधांन, दयानिधि-वि० [सं० दयानिधान, दयानिधि] जिस में बहुत दया हो, दयालु, कृपालु ।

उ०—१ भरै भरपूर क्रुबेर भंडार । दयानिध दोसत कै दरबार ।
—ऊ.का.

उ०—२ अलख पुरुस आदेस, देस बचाय दयानिधे । वरणन करूं विसेस, सुहृद नरेस 'प्रतापसी' ।—दुरसौ आढ़ौ

दयापात्र-वि० [सं०] जिस पर दया करना उचित हो, जो दया के योग्य हो ।

दयामणउ—देखो 'दयामणौ' (रू.भे.) पहिली होय दयामणउ, रवि आथमणउ जाइ । रवि ऊगइ विहँसइ कंमळ, खिण इक विमणउ थाइ ।—ढो.मा.

(स्त्री० दयामणी)

दयामणौ—देखो 'दयावणौ' (रू.भे.) उ०—दीसै वदन दयामणौ, डूबण जोगौ डौळ । रहै हमेसां राज में, मावड़ियां री मौळ ।—बां.दा.

(स्त्री० दयामणी)

दयामय-वि० [सं०] दया से पूर्ण, दयालु ।

सं०पु०—ईश्वर का एक नाम ।

दयारास-सं०पु०—ईशान और पूर्व के मध्य की दिशा ?

दयाळ-सं०पु०—१ विष्णु, ईश्वर (क.कु.बो.) २ देखो 'दयाळु' (रू.भे.)

उ०—देस अनै परदेस दसै दिस, तिजड़ां वहण रिमां रिणताळ । आसाळवां अखी करि आई, देवी सरणै राख दयाळ ।—अज्ञात

दयाळ-मन-वि०यौ० [सं० दयालु+मनस्] उदार, दयालु (डिं.को.)

दयाळु-वि० [सं० दयालु] जिस में दया का भाव अधिक हो, दयालु ।

रू०भे०—दयाळ, दयाळू, दयाळौ ।

दयाळुता-सं०स्त्री० [सं० दयालुता] दयालु करने की प्रवृत्ति, दयालु होने का भाव ।

दयाळू, दयाळौ—देखो 'दयाळु' (रू.भे.) उ०—१ टेपरिया सुं ई रंभा पर मार ज्यादा पड़ी । उण री चीखां ठेट रावळा में सुणीजी । जद दयाळू ठकरांणी हुकम देय नै उण नै छुडाय दी ।—रातवासौ

उ०—२ दुरै दिखाळै केक काळै अचळ थाळै ऊपरै । दीठा दयाळै तेण ताळै वय वडाळै वीर ।—र.रू.

दयावंत-वि० [सं० दयावान् का बहु व०] दयालु, दयावान ।

उ०—नंद महेसुर जन निर्मंत हित दयावंत हद ।—र.ज.प्र.

दयावणउ, दयावणौ-वि० [सं० दया+रा० आवणौ] (स्त्री० दयावणी) जिस से दया उत्पन्न हो ।

उ०—इतरै एक लुगाई ऊभी रोवै छै तिण नै दयावणी देखी तरै सतवादी नै दया आई ।—सतवादी री वात

२ खिन्न चित्त, दुखी, दीन । उ०—वणियां विण दयावणी, दीसै अैसी देह । चाकर मंगण मात पित, चित्त बिलखै सारौ गेह ।
—पलक दरियाव री वात

रू०भे०—दयाणी, दयामणउ, दियाणी, दियावणी, द्यामणी ।

दयावती-सं०स्त्री० [सं०] ऋषभ स्वर की तीन श्रुतियों में से पहली श्रुति ।

वि०स्त्री०—दया करने वाली ।

दयावान-वि० [सं० दयावान्, स्त्री० दयावती] दयालु ।

दयावीर-सं०पु० [सं०] वह जो दूसरों का दुःख दूर करने में प्राण तक दे सकता हो ।

दयिता-सं०स्त्री० [सं०] १ पत्नी, प्रेयसी । उ०—वळि रमियो अठ दस वरस, तूं बाळक टोळी । परणाव्यो तूं-नइ पछै, दयिता हुई दोळी । मगर-पचीसी मांणतो, करै कांम कल्लोळी । गाहड़ में घूमै घणूं, गिळि मफरा गोळी ।—ध.व.ग्रं.

२ स्त्री, औरत । उ०—तिल पापड़ तरुणी थइ, अधिकी वेदन अंगि । रोइ पीटइ आवटइ, दयिता दमी अनंगि ।—मा.कां.प्र.

दरंग-सं०पु० [सं० दुर्गः ?] १ टीबा, टीला ।

उ०—कूंभड़ियां करळव कियउ, घरि पाछिले दरंगि । सूती साजण संभरया, करवत वूही अंगि ।—ढो.मा.

दर-सं०पु० [सं० दरः] १ शंख (डिं.को., अनेका.)

२ देखो 'डर' (रू.भे.)

[सं० दरं] ३ गुफा, कंदरा । उ०—घोरां घोरां घर वूंघळ धुरधाई । थळ थळ ऊथळती बळती बुरकाई । पड़ती पुळ पुळ पर भुळ भुळ भर भूंजे । सरकर सर सोखत गिरवर दर गूंजे ।—ऊ.का.

४ दरार, गड्ढा. ५ विवर, बिल । उ०—ऊंदर दर खण मरै, पेस भोगवै भुयंगह । हळ वहि मरै वहिल्ल, हरी जव चरै तुरंगह ।
—नैणसी

रू०भे०—दिर ।

६ तीर, बाण (अनेका.) ७ आभूषण विशेष (व.स.)

८ [फ़ा०] द्वार, दरवाजा ।

मुहा०—दर दर भटकणौ—पेट पालने के लिये या कार्यसिद्धि के लिये द्वार द्वार, घर घर, गली गली मारा मारा फिरना, दुर्दशाग्रस्त हो कर घूमना ।

९ जगह, स्थान. १० छड़ीदार, दरवान (अ.मा., अनेका.)

११ देखो 'दरि' (१) (रू.भे.) उ०—जिसौ लाय जाळियौ, फजर मिळ जाय फकीरां । साह दहण सेकियौ, इसौ पेखियौ अमीरां । मुर नवाव दर मज्झि जाव वोलिया अतारा । कळा प्रांण कावळी जांणि सचळा अंगारा । पतिसाह पांन करि अप्पियौ, करि वास हैदरकुळी । खग प्रवळ इरादिति दसां, किया विदा पतिकावली ।—रा.रू

[फ़ा० दर=भीतर, में] हृदय, अन्तरात्मा । उ०—१ प्रेम पियाला नूर का, आसिक भर दिया । दादू दर दीदार में, मतवाळा किया ।
—दादू वांणी

उ०—२ आसिक अमली साधु सब, अलख दरीबे जाइ । साहिब दर दीदार में, सब मिळ बैठे आइ ।—दादू वांणी

सं०स्त्री० [फ़ा०] १३ भाव, निर्ख ।

वि० [सं०] किञ्चित, थोड़ा, अल्प (अ.मा.)

अव्य० [फ़ा०] में, भीतर । उ०—१ तुम थैं तब ही होइ सब, दरस परस दर हाल । हम थैं कबहूं न होइगा, जे बीतहिं युग काळ ।
—दादू वांणी

उ०—२ विरह अग्नि में जळ गये, मन के विसय विकार । ता थैं पंगुळ ह्वै रह्या, दादू दर दीदार ।—दादू वांणी

दरअसल-क्रि०वि० [फ़ा०] वास्तव में ।

दरक-सं०पु०—ऊंट, उष्ट (ना.डिं.को.)

(मि० जमीक, जमीकरवत)

रू०भे०—दरक्क, दारक, दारक्क ।

अल्पा०—दरकौ ।

दरकड़-सं०पु०—राठौड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

दरकणौ, दरकबौ-क्रि०अ० [सं० द्री=वीदार्णे] विदीर्ण होना, फटना ।

दरकाड़णौ, दरकाड़बौ—देखो 'दरकाणौ, दरकाबौ' (रू.भे.)

दरकाड़ियोड़ौ—देखो 'दरकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दरकाड़ियोड़ी)

दरकाणौ, दरकाबौ-क्रि०स०— विदीर्ण करना ।

उ०—की नृप ! दै घी कायरां, दिल दमगळ दरकाय । खरा चून रा खावण्यां, वद वद सीस वढ़ाय ।—रेवतसिंह भाटी

दरकाड़णौ, दरकाड़बौ, दरकावणौ, दरकावबौ—रू०भे० ।

दरकायोड़ौ-भू०का०कृ०—विदीर्ण किया हुआ ।

(स्त्री० दरकायोड़ी)

दरकार-सं०स्त्री० [फा०] १ आवश्यकता, जरूरत । उ०—१ फेर उठै उवारै तो घर बार मंडिया मंडाया छै तीसूं आवण री कोई दरकार नहीं दीसै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ कोई गुनाह आप सूं हुवो विचारै नै जांणै के प्रभू री माफी री दरकार छै तो चाहीजै माफी आपरी उणसूं आघी नहीं दरकार काढ़ै ।—नी.प्र.

२ अभिलाषा ।

वि०—आवश्यक, अपेक्षित ।

दरकावणौ, दरकावबौ—देखो 'दरकाणौ, दरकाबौ' (रू.भे.)

दरकावियोड़ौ—देखो 'दरकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दरकावियोड़ी)

दरकियोड़ौ-भू०का०कृ०—विदीर्ण हुवा हुआ, फटा हुआ ।

(स्त्री० दरकियोड़ी)

दरकूंच, दरकूंचां, दरकूच, दरकूचां–क्रि०वि० [फा०] १ बराबर यात्रा करता हुआ, मंजिल-दर-मंजिल। उ०—१ जद अटेर सूं दरकूंच आया आदमी लाख दोय था सो गगराडां आय राड़ कीवी।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ अखडैत पटैत जवांन इसा, दरकूंच कियौ दिखणाद दिसा।
—मे म.

उ०—३ दरकूंचां अरबुदाचळ जाय मुकांम लागतां ही।—वं.भा.

उ०—४ दरकूचां चाय अब्बूगढ़ रा आधीस प्रामार राज सलख सूं सत्कार पायौ।—वं.भा.

उ०—५ मरै न्याय सांभळ रे मूरख, सह तो वाळा लखरा समूचां। थां म्रित हिमै जेज नह थावै, कठठ खड़ी आवै दरकूचां।—र.रू.

दरकौ—देखो 'दरक' (अल्पा., रू.भे.) उ०—वहै ढैल वीटियां जगं जांमकियां ढोया। दरका सर दीवडा सोर भाथड़ां संजोया।—पा.प्र.

दरक्क—देखो 'दरक' (रू.भे.) उ०—१ अपणी रिद्ध संभाळ सब, करै दरक्कां पीठ। आवध बंधे ऊठिया, आकारीठ गरीठ।—रा.रू.

उ०—२ उत्तर आज स उत्तरउ, पल्लांणियां दरक्क। दहिसी गात कुंवारियां, थळ जाळी बळि अक्क।—ढो.मा.

दरक्कणौ, दरक्कबौ—देखो 'दरकणौ, दरकबौ' (रू.भे.)

दरक्कियोड़ौ—देखो 'दरकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दरक्कियोडी)

दरखत–सं०पु० [फा० दरख्त] वृक्ष, पेड़ (ह.नां., अ मा., डिं.को.)
उ०—खट रित ही सफळ कुसुम वन दरखत। खट ही साख उपावै हरखत।—र.रू.
रू०भे०—दरखद।
अल्पा०—दरखतियौ।

दरखतियौ—देखो 'दरखत' (अल्पा., रू.भे.)

दरखद—देखो 'दरखत' (रू.भे.)

दरखास्त–सं०स्त्री० [फा० दरख्वास्त] १ वह लेख जिस में किसी बात के लिये विनती की गई हो, निवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र।
क्रि०प्र०—दैणी।
२ किसी बात के लिये प्रार्थना, निवेदन।
क्रि०प्र०—करणी।

दरगह, दरगा, दरगाह, दरग्गह–सं०स्त्री० [फा दरगाह] १ दरबार।
उ०—१ ज्यां आगै फेरजै, वडा लाखीक वछेरा। ज्यां दरगह नित दिपै, कोड़ सुख इंद्रह केरां।—ज.खि.

उ०—२ पवन वरुणह अनळ धनपह, नखत नवग्रह दीन हुय वह। रहत दरगह निपह दिग्गह, जीति विग्रह दुसह जह जह।—र.रू.

उ०—३ दरगाह सदर दौलत दराज। ताळा बुलंद इस्लांम ताज।
—ऊ.का.

उ०—४ ता पछै रावजी स्री रायसिंघजी जमीयत ले वळै दरगाह गया अरु पातसाहजी री चाकरी बहुत आछी तरै कीवी अरु अकबर साहजी नूं बहुत खुस किया।—द.दा.

उ०—५ जंगू के जैतवार अजांनवाह। ऐसे भड़ आय विराजै महाराज की दरगाह।—सू.प्र.

उ०—६ अरस सीस ओडतौ, रीस रत्तौ रसवायौ। तजै दरग्गह वार, एम गह छायौ आयौ।—रा.रू.

२ न्यायालय, कचहरी।
उ०—१ केई अळूज्या असुभ में, केइयक सुभ बंदाय। सुभ के असुभ कहै, वह दरगा दाद न पाय।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ मया दया तू अबोला जीव सूं करी तिण सूं प्रभू री दरगाह में कुरब घणौ पायौ।—नी.प्र.

३ सभा। उ०—१ इस्क सलूना आसिकां, दरगह थैं दीया। दरद मुहब्बत प्रेम रस, प्याला भर पीया।—दादू बांणी

उ०—२ बांदरा तणौ वणियौ वदन, घरवीणा दरगह घसै। संपेख रूप सगळी सभा, हुडहुडहुडहुडहुड हंसै।—र.रू.

४ तीर्थस्थान, मंदिर, मठ. ५ किसी सिद्ध पुरुष का समाधि-स्थान, मकबरा, मजार।
रू०भे०—दरग्गह, दरिगह।

दरड़–सं०पु० (अनु०) १ द्रव पदार्थ के ऊपर से गिरने की ध्वनि।
उ०—दूध दही रा दरड़, घिरत रा घर घर घीणा। घणी लकड़ियां घास, मतीरा मीठा खांणा।—दसदेव
अल्पा०—दरड़कौ।

२ देखो 'दरड़ौ' (मह., रू.भे.) उ०—१ भागीजै तज भींतड़ा, ओडै जिम तिम अंत। किण दिन दीठां ठाकुरां, काळा दरड़ करंत।
—वी.स.

उ०—२ 'तौ पड़ौ दरड़ में। घर में दिनूंगै-सिञ्या-रौ सरतन कोयनी पण जांनां तौ पूरी चार-ई देवैला, वाहरै अक्कल।—वरसगांठ

दरड़कणौ, दरड़कबौ–क्रि०अ० (अनु०) द्रव पदार्थ के प्रवाहित होने या गिरने से ध्वनि होनो। उ०—खंजर वाथ खरड़कै, हाड मरड़कै हजारां। दरड़कै स्रोण दहुंअै दळां, वकै छकै अछरां वरां।
—वखतौ खिड़ियौ

दरड़णौ, दरड़बौ—रू०भे०।

दरड़कियोड़ौ–भू०का०कृ०—ध्वनित।
(स्त्री० दरड़कियोड़ी)

दरड़कियौ—देखो 'दरड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

दरड़कौ—१ देखो 'दरड़' (१) (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'दरड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

दरड़णौ, दरड़बौ–क्रि०अ०—१ देखो 'दड़णौ, दड़बौ' (रू.भे.)
२ देखो 'दरड़कणौ, दरड़कबौ' (रू.भे.)

दरड़ियोड़ौ—१ देखो 'दड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'दरड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दरड़ियोड़ी)

दरड़ियौ—देखो 'दरड़ौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—ठौड़ ठौड़ ठांवड़ा वरतै,

वणिया कूंटा कढ़निया । रूप बिगाड़ै लेग माटी, धुणिया ऊंटा दरड़िया ।—दसदेव

दरड़ो-सं०पु० (देश०) १ खड्डा, गड्ढा । उ०—कोल काळज्यो थोथो करै, लगै न कारी कूड़ री । फूल कूटळ दरड़ा भरै, होड हुवै ना धूड़ री ।—दसदेव

२ विवर, बिल । उ०—तद सूरवीर कही कि किण दिन दीठा हा थे ठाकुरां, काळा नाग दरड़ा करतां, ऊंदरा खोदै नै रैवै, इण तरै गढ़ बांधी म्हे रहसां ।—वीं.स.टी.

३ बिना बंधा हुआ कुआ ।

अल्पा०—दरड़कियो, दरड़ियो ।

मह०—दरड़ ।

दरज-वि० [फ़ा० दर्ज] कागज पर चढ़ा हुआ, लिखा हुआ, अंकित ।

सं०स्त्री० [सं० दर] वह खाली जगह जो फटने या दरकने से पड़ जाय, दरार ।

उ०—तोपां घर दरजां पड़ै, भड़ै गिरां सिर भाट । जांणै सागर सीर रै, मंदर रो अरराट ।—वी.स.

दरजण-सं०स्त्री० [अं० डज़न] १ बारह का समूह. २ दर्जी की स्त्री । उ०—हाथ ज लेस्यां वागो ए सड़यां मोरी । दरजण होय होय जास्यां ।—लो.गी.

दरजी-सं०पु० [फ़ा० दर्ज़ी] (स्त्री० दरजण) १ एक जाति जो कपड़े सींने का व्यवसाय करती है या इस जाति का व्यक्ति । उ०—कह्यो बुलाय कांचळी करजी, चित सूं मरजी चाढ़ । गात निहारि त्रिया क्रिम गरजी, दरजी ऊपर दाढ़ ।—ऊ.का.

पर्या०—कपड़विदार, गजधर, तूनवाय, सूयीधार ।

२ वह जो कपड़े सींता हो, कपड़े सींने वाला व्यक्ति ।

दरजोण, दरजोवन—देखो 'दरयोधन' (रू.भे.) उ०—१ पांण री भीम गोमेन 'पेम', जोमेन मांण दरजोण जेम । मोजां सु दयण मन रो सुमेर, कवियांण हरो धन रो कुबेर ।—पे.रू.

उ०—२ जोवै ज्यां घर राज, मुवां गुर राज मिळै मन । किसन थकां हिज कियो, जूंभ जुजथिर दरजोवन ।—सू.प्र.

दरणो, दरबो—देखो 'डरणो, डरबो' (रू.भे.) उ०—पातसाह कंपियो, त्रिविध मनुहार पटाई । बिना तेल दीपक, हुवै इण ताक सवाई । मुगळ मरै निज ग्रेह, न को दरि देह दिखावै । बाज पंख सज्जियां, जेम लाई छिप जावै ।—रा.रू.

दरथ—देखो 'दसरथ' (रू.भे.)

दरद-सं०पु० [फ़ा० दर्द] १ पीड़ा, कष्ट । उ०—निज पितु छोडै नीच, तुरत छोडै महतारी । निज भ्रम छोडै निलज, निलज छोडै निज नारी । भ्रत छोडै निज भ्रात, छैल मुळ घर छिटकावै । प्रभु नै छोडै परो, जिकण दिस फेर न जावै । दांम री भांम केती दुकर, भव मारै नै मांटियो । छिना पर डता गुण छोड दे, रांड न छोडै रांडियो ।

—ऊ.का.

२ बीमारी, रोग । उ०—पिट री गई परतीत, मांण मिट गयो मरदां में, थांन मिळ गयो गरद, दांम रुळग्यो दरदां में ।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—ऊठणो, करणो, होणो ।

३ दुख, तकलीफ, व्यथा । उ०—हे री म्हां दरदे दिवांणी म्हांरा दरद न जांण्यां कोय ।—मीरां

रू०भे०—दरद्द ।

दरदराणो, दरदराबो-क्रि०स० [सं० दरण] किसी वस्तु को इस प्रकार हल्के हाथ से पीसना या कूटना कि उसके मोटे-मोटे रवे या टुकड़े हो जांय ।

दरदरायोड़ो-भू०का०कृ०—मोटे-मोटे टुकड़े किया हुआ ।

(स्त्री० दरदरायोड़ी)

दरदरी-सं०स्त्री० [सं० धरित्री] धरती, पृथ्वी, जमीन (डि.नां.मा.)

वि०—मोटे रवे की ।

दरदरो-वि० [सं० दरण] (स्त्री० दरदरी) जिसके कण टटोलने से मालूम पड़ते हों, जिसके मोटे रवे हों, जिसके कण स्थूल हों, जो बारीक पिसा हुआ न हो ।

दरदवंत-वि० [फ़ा० दर्द+सं० वंत] १ कृपालु, दयालु.

२ पीड़ित, दुखी ।

रू०भे०—दरदवांन ।

दरदवंद-वि० [फ़ा० दर्दमंद] १ दुखी, पीड़ित । उ०—दरद हि बूझै दरदवंद, जाकै दिल होवै । क्या जांणै दादू दरद की, नींद भर सोवै ।

—दादू बांणी

२ दयालु, कृपालु । उ०—इस्क अजब अबदाळ है, दरदवंद दरवेस । दादू सिक्का सत्र है, अक्कल पीर उपदेस ।—दादू बांणी

दरदवांन—देखो 'दरदवंत' (रू.भे.)

दरदी-वि० [फ़ा० दर्द] १ दूसरे का दर्द समझने वाला, दयावान् ।

२ पीड़ित, दुखी ।

दरदु-सं०पु० [सं० दद्रु] दाद नामक रोग ।

दरदुर—देखो 'देडरो' (रू.भे.) (डि.को.)

दरद्द—देखो 'दरद' (रू.भे.) उ०—१ कावल साम्ही जिण करां, दमी चीण दरद्द । 'पतो' धरा यूरोप री, साम्ही मेर मरद्द ।

—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ अबदुल्ला आरत हिये, पीडांणां सइयद्द । महाराजा अजमाल नूं, दाखै वेद दरद्द ।—रा.रू.

दरप-सं०पु० [सं० दर्प] गर्व, अभिमान, घमण्ड, अहंकार (डि.को.)

उ०—१ खींची कहियो प्रजा नूं, पीड़ा देण रो करम तो हूं भी अंत्यजां रो ही जांणू परंतु बूंदी में अंत्यज ठाकुर कहावै सो दरप मेटण रै काज इण तरह आइ उणां रा बळ रो अनुमांन प्रमांणूं ।

—वं.भा.

उ०—२ तिको बळ वीरज सूरज तप । दहसे रांवण अव दरप ।

—रांम रासो

रू०भे०—दाप ।

दरपक–सं०पु० [सं० दर्पक] १ कामदेव, अनंग (ह.नां., डि.को.)

२ श्रीकृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न (वेलि.)

दरपण–सं०पु० [सं० दर्पण] वह कांच जो प्रतिबिंब के द्वारा मुँह देखने के लिये सामने रखा जाता है, मुँह देखने का शीशा, आइना, आरसी (डि.को.) उ०—१ मन ही मंजन कीजिये, दादू दरपण देह । मांही मूरति देखिये, इहिं अवसर कर लेह ।—दादू वांणी

रू०भे०—दप्पण, दरप्पण ।

अल्पा०—दरपणी ।

दरपणी—देखो 'दरपण' (अल्पा., रू.भे.)

दरपणौ, दरपवौ—देखो 'डरपणौ, डरपवौ' (रू.भे.) उ०—दरपइ दीठइ दोरडइ, सांप न आंणइ संक । बीहइ विलाडां-वच्चडइ, वाघिणी वाळइ वंक ।—मा.कां.प्र.

दरपियोड़ौ—देखो 'डरपियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दरपियोड़ी)

दरप्प–सं०पु० [सं० दर्पक] रूपक छंद का भेद विशेष ।

दरप्पण—देखो 'दरपण' (रू.भे.) उ०—वरतुळ सुछम कपोळ, रसीली वांम रा । किया तयारी वेह, दरप्पण कांम रा ।—बां.दा.

दरबदी–सं०स्त्री० [फ़ा०] किसी वस्तु की दर या भाव निश्चित करने की क्रिया, लगान आदि की निश्चित की हुई दर ।

दरब—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) उ०—१ असि सिरपाव अनेक, कड़ा मोती गज कंकण । थाट दरब थैलियां, घणा जंवहर भूखण घण ।—सू.प्र.

उ०—२ गंजे रिम केतां गरव, धार सरब व्रद थेठ । दे कोड़ां दुजवर दरब, जीत-परब जग जेठ ।—र.ज.प्र.

दरबर—देखो 'दड़वड़' (रू.भे.)

दरबांन—देखो 'दरवांन' (रू.भे.)

दरबांनी—देखो 'दरवांनी' (रू.भे.)

दरबार–सं०पु० [फ़ा०] (वि० दरबारी) वह स्थान जहां राजा अथवा सरदार अपने सामन्तों और मुसाहिबों के साथ बैठता है, राज-सभा, कचहरी । उ०—१ दिन प्रति वसंत सोभा दिपै, सुख किरि सरव संसार रौ । आगळी भूप 'अभसाह' रै, दिपै रूप दरबार रौ ।—रा.रू.

उ०—२ तितरै ओठी आय दरबार रै मांहै मुंहड़ै उतारियौ, आय जुहार कियौ ।—नैणसी

मुहा०—१ दरबार करणौ—राज-सभा बुलाना, राज-सभा में बैठना. २ दरबार जुड़णौ— राज-सभा के सभासदों का इकट्ठा होना, राज-सभा में मंत्रियों और राजा का बैठना । बड़े-बड़े लोगों का इकट्ठा होना. ३ दरबार बरखास्त होणौ—राज-सभा का उठना या किसी दिन का कार्य समाप्त होना. ४ दरबार लागणौ—देखो 'दरबार जुड़णौ'. ५ दरबार होणौ—देखो 'दरबार जुड़णौ' ।

यौ०—दरबार-आंम, दरबार-खास ।

२ राजा, महाराजा. ३ वह स्थान जहा पर सिखों का धर्म-ग्रंथ ग्रंथ साहब रखा हुआ हो (सिक्ख) ।

रू०भे०—दुरबार ।

दरबार-आंम–सं०पु०यौ० [फ़ा० दरबार+अ० आम] बादशाहों आदि का वह दरबार जिस में साधारणतः सब सम्मिलित होते हैं ।

दरबार-खास–सं०पु०यौ० [फ़ा०+अ०] बादशाहों आदि का वह दरबार जिस में केवल विशिष्ट लोग ही रहते हैं ।

दरबारदारी–सं०स्त्री० [फ़ा०] १ किसी के यहां जा कर खुशामद करने का कार्य ।

क्रि०प्र०—करणी ।

२ राज सभा में उपस्थिति, राज-सभा में हाजिरी ।

दरबारी–सं०पु० [फ़ा०] १ राज-सभा का सभासद ।

उ०—१ सीळ संतोख दया दरबारी, खिमांह मारै दाई । ग्यांन विचार विवेक सिंहासण, सुख में सुरत समाई ।—ह.पु.वा.

उ०—२ राजा अर दरबारी सैं ही अचरज करणै लागिया ।

—सिंघासण बत्तीसी

२ द्वारपाल, छड़ीदार । उ०—ताहरां दरबारी सेतरांम नै भीतर ले गयौ ।—नैणसी

सं०स्त्री०—३ एक राग विशेष (मीरां)

वि०—दरबार का, दरबार के योग्य ।

दरबारी-कांन्हड़ौ–सं०पु० [फ़ा० दरबारी+रा० कांन्हड़ौ] एक राग विशेष (संगीत)

दरबौ–सं०पु० [फ़ा० दर] १ कबूतरों, मुर्गियों आदि के रखने के लिये काठ का खानेदार संदूक. २ काल कोठरी. ३ भूत-प्रेतों का निवास-स्थान (अंध विश्वास)

दरब्ब—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) उ०—१ दिल्लीस रखत दरब्ब, सुजि लियूं बांटि सरब्ब । ह्वै हुकम जिम हिज होय, करि उजर न सकै कोय ।—सू.प्र.

उ०—२ सहनाय मुरसलां रंग सवाद । नवबती घोर मंगळीक नाद । सुभ सुभड़ मंत्रि कवि लोक सब्ब । दुति करति नजर घण रजत दरब्ब ।—सू.प्र.

दरब्बार—देखो 'दरबार' (रू.भे.)

दरभ–सं०पु० [सं० दर्भ] एक प्रकार का कुश, डाभुस, डाभ ।

उ०—जळ गंगा जमना पुहकर जळ । दळ ग्रह दरभ छिड़क तुळछी दळ । लख बुध वेद मंत्रि जपि लेवै । अगर धूप चंदन उखेवै ।

—रा.रू.

दरमजल–सं०स्त्री०यौ० [फ़ा० दर+अ० मंजिल] यात्रा में पड़ाव लेने की क्रिया, ठहराव । उ०—१ इण तरह कर पूनिया रै थांणायत नूं विदा कियौ, आप मजल दरमजल कूच कियौ सो गोपाळपुर पधारिया ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ अवै रावजी रजपूतां रौ साथ तेड़ायौ । असवार हजार बारै सूं चढ़िया । साथै सांमांन लियौ, सखरी मुहरत साझ चालिया ।

दरमजले गोढ़वाड़ पौहता ।—राव रिड़मल री वात

दरमाहौ-सं०पु० [फ़ा० दरमाहा] मासिक वेतन ।

दरमियांन—देखो 'दरम्यांन' (रू.भे.)

दरमियांनी—देखो 'दरम्यांनी' (रू.भे.)

दरम्यांन-सं०पु० [फा० दरमियान] मध्य, बीच । उ०—कितरायेक दिन दरम्यांन दे नै एक दिन वाघै नूं रावजी कह्यौ—वाघा देखा थारौ तरगस ।—ऊमादे भटियांणी री वात

क्रि०वि०—बीच में, मध्य में । उ०—जिन दिलावर खांन नै कल्ह के रोज दक्षन के दरम्यांन निजांमनमुलक सेती जंग किया —सू प्र.

रू०भे०—दरमियांन ।

दरम्यांनी-वि० [फा० दरमियानी] बीच का, मध्य का ।

सं०पु०—बीच में पड़ने वाला व्यक्ति, निवटारा करने वाला, मध्यस्थ ।

रू०भे०—दरमियांनी ।

दरयाई-सं०स्त्री० [फ़ा० दाराई] एक प्रकार की पतली रेशमी साटन ।

उ०—केसर चीर दरयाई कौ लैंगौ, ऊपर अंगिया भारी । आवत देख किसन मुरारी, छिप गई राधा प्यारी ।—मीरां

वि० [फ़ा० दरियाई] समुद्र का, समुद्र सम्बन्धी ।

रू०भे०—दरियाई ।

दरयाव—देखो 'दरियाव' (रू.भे.) उ०—१ बीच बजारां वांणियां, भांजै सरजै भाव । पावां रा लेखा करै, दावां रा दरयाव—वां.दा.

उ०—२ दरयाव रूप हूं कोस दोय । जग मुकट कीध डेरास जोय ।—सू.प्र.

दररौ-सं०पु० [फ़ा० दर्र:] १ पहाड़ों के बीच में हो कर जाने वाला संकरा मार्ग. २ दरार ।

वि० [सं० दरण] जिस के कण स्थूल हों, जो बारीक पिसा हुआ न हो, जिस के कण टटोलने से मालूम पड़ते हों ।

दरव—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.)

दरवरता-सं०स्त्री० [सं० द्रवता] द्रवत्व, तरलता । उ०—अग्नि उस्ण अरु जळ दरवरता, जैसे पवन सफंदा रे । सूंन्य पोल'रु भूमि कठोर, यूं जग ब्रह्म कहंदा रे ।—स्री सुखरांमजी महाराज

दरवांण, दरवांन-सं०पु० [फ़ा० दरबान] १ द्वारपाल (अ.मा.)

उ०—हुवौ जनांनां जावतौ, दिय फाटक दरवांन । मिळी रात घण तम मई; भैसा मती भयांन ।—पा.प्र.

२ राजदूत. ३ छड़ीदार (अ.मा.)

रू०भे०—दरवांन, दरेवांण, दरेवांण ।

दरवांनी-सं०स्त्री०—द्वारपाल का कार्य, पहरेदार का कार्य ।

रू०भे०—दरवांनी ।

[illegible] सं०पु० [फ़ा० दरवाजा] १ द्वार, मुहाना । उ०—आ सत्रू जांण लैला क म्हांसूं डरतौ दरवाजौ जड़ै है तिण कारण किमाड़ उघाड़ौ राख सोवै छै ।—वी.स.टी.

पर्या०—द्वार, पोळ, वार, बारणूं, मेरणौ ।

२ किवाड़ ।

दरवायौ-सं०पु० (देश०) हल के पीछे नीचे की ओर लगाया जाने वाला लोहे का वह कड़ा जिस में बीज बोने के उपकरण को फँसा कर बांधा जाता है ।

दरवी-सं०स्त्री० [सं० दर्वी] १ करछी, चमचा. २ सांप का फन ।

दरवीकर-स०पु० [सं० दर्वीकर] १ फन वाला सांप (ह.नां.)

२ सांप ।

दरवेस-स०पु० [फ़ा० दरवेश] (वि० दरवेसी) १ फकीर, महात्मा ।

उ०—१ रिजक न पल्लै बांधता, पंछी अो दरवेस । जिण का तकिया रव्व है, तिण के रिजक हमेस ।—अज्ञात

उ०—२ देखैं पग देव करै आदेस, वटा पग जांण वंदै दरवेस । पगां दहुं-राह करै परणांम, सेवै पग सन्यासी स्रवह जांण ।—ह.र.

२ मुसलमान । उ०—१ खबर थई दळ मारवां, दरवेसां चौ दौड़ । ऊभा जोड़ै घूमरां, चढ़ घोड़ै राठौड़ ।—रा.रू.

उ०—२ कुंतां कळह चढ़ै राव कांधल, दरवेसां भांजतौ दळ । अहंकार देसोवर आई, सग लै पौहतौ सहंसवर ।—द.दा.

३ बादशाह । उ०—वारां वेहुं समोभ्रम वीरम, कह केतां जम कितां कहेस । वह दरवेस दुरंग कीधौ वस, दीधौ सौ वही दरवेस ।—दूदौ बारहठ

रू०भे०—दुरवेस, दुरवेस ।

दरवेसी—देखो 'दुरवेसी' (रू.भे.)

दरस-सं०पु० [सं० दर्श] १ दर्शन, दीदार । उ०—भळहळै नूर तप तेज वप भांमणां, वांमणां घड़ी पळ विगत वेवी । जांमणां जोय गोचर गिरह जांणियां, दिया रळियामणां दरस देवी ।—मे.म.

२ छवि, रूप, सुन्दरता । उ०—दीध प्रदछण हाथ जोड़ न हरि, चरणाम्रत दरस निहार । करै तिलक राघव जस किता, जीता 'किसन' जिकै जमवार ।—र.ज.प्र.

रू०भे०—दरस्स, दिरस ।

दरसण-सं०पु० [सं०] १ साक्षात्कार, अवलोकन, चाक्षुक ज्ञान ।

उ०—१ जीव होत गुरु मांनव कीना, मांनव देव दिखाई । देव पलट गुरु दरसण दीना, सब में ब्रह्म बताई ।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ विरछां वेलां पर चढणे बुधि चाही, उर में अलवेलां बेलण सुध आई । आंणा लेवण नै अंधूळा आया, दरसण देवण नै मोभी मुळकाया ।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ, पाणौ, होणौ ।

मुहा०—१ दरसण देणा—प्रत्यक्ष होना, अपने को दिखाना, देखने में आना. २ दरसण पाणा—किसी को देखना, साक्षात्कार करना ।

२ भेंट, मुलाकात. ३ वह विद्या या शास्त्र जिस से तत्वज्ञान हो अर्थात् जिस से पदार्थों के धर्म्म, कार्य्य, कारण, सम्वन्ध आदि का बोध हो । उ०—घोरी धरम धुरीण, निगम आगम अवतारी । दरसण अर उपनिसद, जिणां री टोळी न्यारी ।—दसदेव

४ नेत्र, आंख. ५ दर्पण. ६ नाथ संप्रदाय के सन्यासी के कान के कुण्डल। उ०—१ रतननाथजी रा कांनां रा दरसण जैसळमेर है। रावळजी नित दरसण करै।—बां.दा.ख्यात

उ०—२ तिण सूं घरै किसै मूंढ़ै जावूं, म्हारी परणी लहुड़ा भाई री अंतेवर कहावै, तिणसूं औ सबद मोनै जरै नहीं। मोनै दरसण हीज द्यो। ताहरां जोगेसर छोटै आसण बैठांण थोड़ो सो चीरो दीधौ, कासमीरी मुद्रा घाली, नाद सूंप्यो, माथै टोपी पहिराई, सेली गळा मांहै घाली।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

मुहा०—दरसण पै'रणा (लैणा)—नाथ सम्प्रदाय के अनुसार फकीरी लेना, कानों में कुण्डल धारण करना।

७ राजस्थान की छः जातियों का समूह—देखो 'खट दरसण' (२)

८ ७२ कलाओं में से एक।

रू०भे०—दसण, दरसन, दरस्सण, दरिसण, दस्सण।

दरसणी, दरसणीक, दरसणीय-वि० [सं० दर्शनीय] १ सुन्दर, मनोहर. २ दर्शन करने योग्य, देखने योग्य। उ०—धिन्न हा वे दरसणीक वीर क्षत्री कोई दिन इण भारतवरस में घरोघर अंडा लाधता हा।
—वी.स.टी.

सं०पु०—१ राजस्थान में 'खट दरसण' के अन्तर्गत आने वाला व्यक्ति, देखो 'खट दरसण' (२)। उ०—आया नै उपदेस, प्रथम प्रतिमा मत पूजो। वांदो मत अम्ह विना, दरसणी यती को दूजो।

२ देखो 'दारसणीक' (रू.भे.) —ध.व.ग्रं.

रू०भे०—दरसनी, दरसनीक, दरसनीय।

दरसणी हुंडी-सं०स्त्री०यौ० [सं० दर्शनी+रा० हुंडी] १ वह हुंडी जिसको दिखाने से ही उसका भुगतान हो जाय. २ वह हुंडी जिसकी भुगतान की तिथि को दस दिन या इससे कम दिन बाकी हों।

दरसणौ, दरसबौ-क्रि०अ० [सं० दर्शन] १ दिखाई पड़ना, दृष्टिगोचर होना। उ०—१ वेलां तरवर वीटियां; दुति कुसमां दरसंत। निजर पिया व्रज नाहरै, वनमय सदन वसंत।—बां.दा.

उ०—२ तम गिर गुफा न पायदे, जेथ मणी जोगेस। कीजै आदर कुकवियां, दरसै तम जिण देस।—बां.दा.

२ प्रतीत होना, महसूस होना। उ०—आप ओजगो बताओ सो सारी साथ रात घोड़ां पर खड़ो रह्यो तिण नूं ओजगो नहीं दरसै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

क्रि०स०—३ देखना, लखना। उ०—दरसी जोत दीदार, तिरवेणा री ताक में। छूटा सकळ विकार, आया मन माग में।
—स्री सुखरांमजी महाराज

दरसणहार, हारौ (हारी), दरसणियौ—वि०।

दरसवाड़णौ, दरसवाड़बौ, दरसवाणौ, दरसवाबौ, दरसवावणौ, दरसवावबौ—प्रे०रू०।

दरसाड़णौ, दरसाड़बौ, दरसाणौ, दरसाबौ, दरसावणौ, दरसावबौ—
—क्रि०स०।

दरसिओड़ौ, दरसियोड़ौ, दरस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दरसीजणौ, दरसीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दरसन—देखो 'दरसण' (रू.भे.) उ०—आलि मोहि लागत ब्रिंदावन नीकौ। घर घर तुळसी ठाकुर पूजा, दरसन गोविंदजी कौ।—मीरां

दरसनी, दरसनीक, दरसनीय—देखो 'दरसणी, दरसणीक, दरसणीय' (रू.भे.)

उ०—१ गुणतीत सो दरसनी आप घरै उठाई। दादू निरगुण रांम गह, डोरी लागा जाई।—दादू बांणी

उ०—२ मंत्रहीन राजा, ठाकुरहीन कटक, कळाहीन पुरस, तपोहीन मुनि, प्रतिग्याहीन पुरस, सीळहीन दरसनी, दांनहीन वित्त, वेदहीन विप्र, गंधहीन फूल, सीळहीन नारी, तिम दया हीन धरम न सोभई।
—व.स.

उ०—३ असंतोसी ब्राह्मण, पाखंडिया दरसनी प्रतापहीन पुरस।
—व.स.

उ०—४ रांमलगनजी राज रा, दरसनीक दीदार। करवा री म्हारै घणी, सगरांमदास कहै प्यार।—सगरांमदास

दरसाड़णौ, दरसाड़बौ—देखो 'दरसाणौ, दरसाबौ' (रू.भे.)

दरसाड़णहार, हारौ (हारी), दरसाड़णियौ—वि०।

दरसाड़िओड़ौ, दरसाड़ियोड़ौ, दरसाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दरसाड़ीजणौ, दरसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दरसणौ, दरसबौ—अक०रू०।

दरसाड़ियोड़ौ—देखो 'दरसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दरसाड़ियोड़ी)

दरसाणौ, दरसाबौ-क्रि०अ० [सं० दर्शन] १ दृष्टिगोचर होना, दिखाई देना। उ०—१ ले मुख उडत नाग जिम लुडियो, औ सिघ सिंघल दीप दिस उडियो। दीप सिंघल पदमण दरसाई, आकरखण मंत्र पढ़ै उडाई।—सू.प्र.

उ०—२ चख रा वचन सुणै चड़खायो, अंग असळाक मोड़तौ आयौ। 'दूलावत' इसड़ो दरसायौ, जांणक भूखो बाघ जगायो।—वरजू बाई

२ प्रकट होना। उ०—१ यातै हीरां के सरीर ऊपर सूरज रूपी जोवन आयो छै। हाव-भाव दरसायो छै।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ दुनियां दातारां जूझारां देवै। लिपळा लोकां नै लेखै कुण लेवै। दत्तव करतव मैं दोढ़ा दरसाता। सारी प्रथवी सिर सोढ़ा सरसाता।—ऊ.का.

उ०—३ साहिब साहिब सम देखो दरसायो, हरदम 'हरियंद' सेखो सरसायो।—ऊ.का.

३ प्रतीत होना, मालूम होना, अनुभव होना, महसूस होना।

उ०—१ काठी कुरळातां काती निस काळी। होळी हीयै में दांतां दीवाळी। सांमूं सीयाळो साकी सरसायो। बाकी वंचियां नै डाकी दरसायो।—ऊ.का.

उ०—२ औ ऊपर ऊनाळो आयो। दीन जनां दोरो दरसायो। पांणी

ग्यांन कोई नहिं पायो। कूकै लोक हुवो अति कायो।—ऊ.का.

क्रि०स०—४ दृष्टिगोचर कराना, दिखाना। उ०—एक दिन रै समै-जोग रावत प्रतापसिंघ कनै एक पंडित पुरांणीक आयो जिकरा बडा बडा ग्रंथां रो समुद्र को सो पार दरसायो।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

५ स्पष्ट करना, समझाना, बताना। उ०—अठा सवाय आखर आयां कंठ सिथळ होय। दोय अखिर सूं कंठ घटतो न होय। दोय अखिर सूं कंठ री हद छै सो दरसाई छै।—र.ज.प्र.

दरसाणहार, हारो (हारी), दरसाणियो—वि०।

दरसवाड़णो, दरसवाड़बो, दरसावणो, दरसावबो, दरसवावणो, दरसवावबो—प्रे०रू०।

दरसायोड़ो—भू०का०कृ०।

दरसाईजणो, दरसाईजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

दरसणो दरसबो—अक०रू०।

दरसाड़णो, दरसाड़बो, दरसालणो, दरसालबो, दरसावणो, दरसावबो, देठाळणो देठाळबो—रू०भे०।

दरसायोड़ो-भू०का०कृ०—१ दृष्टिगोचर हुवा हुआ, दिखाई दिया हुआ. २ प्रकट हुवा हुआ. ३ प्रतीत हुवा हुआ, मालूम हुवा हुआ, अनुभव हुवा हुआ, महसूस हुवा हुआ. ४ दृष्टिगोचर कराया हुआ, दिखाया हुआ. ५ स्पष्ट किया हुआ, समझाया हुआ, बताया हुआ।

(स्त्री० दरसायोड़ी)

दरसाळणो, दरसाळबो—देखो 'दरसाणो, दरसाबो' (रू.भे.)

उ०—भाखनो वयण जिहूं इज नर भाळियो, दोयणां प्रळै री रूप देठाळियो। देह काच सीसी टूक दरसाळियो, उजाळै 'किसारी' वंस उजवाळियो।—जोरजी चांपावत री गीत

दरसाळियोड़ो—देखो 'दरसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दरसाळियोड़ी)

दरसाव-सं०पु० [सं० दृश्] १ दृश्य, नजारा। उ०—ऐसा गढ़ जोवांण और सहर का दरसाव, जिसके चौतरफ कौं वागीचूं का डंबर और दरियाऊं का वणाव।—सू.प्र.

२ दिखाई देने की क्रिया या भाव, दर्शन। उ०—कर हाथळ सीसां रा टूक किया। दरसाव दिनंकर जैण दिया।—पा.प्र.

क्रि०प्र०—देणो, होणो।

३ प्रकट होने की क्रिया या भाव, प्रकटन। उ०—ताहरां उठै ठाकुर बाहुलिया स्हा कूच कियो अर कुंवर श्री भोपतजी नूं सांतळा रो दरसाव हुवो।—द.वि.

क्रि०वि०—होणो।

दरसावणो, दरसावबो—देखो 'दरसाणो, दरसाबो' (रू.भे.)

उ०—१ पातै हो जांमावणी, जनो न होसी जगि। कै मांगिगा दरसाविया, कै ऊभळियो खगि।—हा.झा.

उ०—२ पुर अंब उदैपुर जोधपुर, इम तप निजरां आवियो। 'जैसाह' ब्रहम 'अमरो' अजट, दइव 'अजो' दरसावियो।—सू.प्र.

दरसावणहार, हारो (हारी), दरसावणियो—वि०।

दरसाविओड़ो, दरसावियोड़ो, दरसाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

दरसावीजणो, दरसावीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

दरसणो, दरसबो—अक०रू०।

दरसावियोड़ो—देखो 'दरसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दरसावियोड़ी)

दरसियोड़ो—भू०का०कृ०—१ दिखाई दिया हुआ, दृष्टिगोचर हुवा हुआ. २ प्रतीत हुवा हुआ, महसूस हुवा हुआ. ३ देखा हुआ, लखा हुआ।

(स्त्री० दरसियोड़ी)

दरस्स—देखो 'दरस' (रू.भे.) उ०—१ भलो-स आज मुंझ भाग, आप ग्रेह आविया। दरस्स तो रघू दिलीप, पुन्यहूंत पाविया।—सू.प्र.

उ०—२ समवाद रिखिकेस पाधरी संभारियो क, त्रिवा देण गाय री उचारियो सरस्स। बीछड़ेथी साथ री प्रमाद भू विचारियो क, दूजा गोपीनाथ री जुहारियो दरस्स।—साहिबो सुरतांणियो

दरस्सण—देखो 'दरसण' (रू.भे.)

दरहरणो, दरहरबो—क्रि०अ०—हवा का चलना। उ०—जितै पवन दरहरै, जितै नव नाथन, अखतर, परमेस भगत जितरै प्रगट जोगमाया संकर जितै, ऊचब दवा जितरै 'अभा' तूझ राज रहजो तितरै।

—बगतो खिड़ियो

दरहाल-सं०पु० [फा० दर+अ० हाल] प्रतिक्षण। उ०—पूरक पूरा है गोपाळ, सब की चित करै दरहाल। समरथ सोई है जगनाथ, दादू देख रहै संग साथ।—दादू वांणी

दरांती-सं०स्त्री० [सं० दात्र] दांतेदार घास काटने का एक उपकरण (शेखावाटी)

दराड़—देखो 'दरार' (रू.भे.)

दराड़णो, दराड़बो—देखो 'दिराणो, दिराबो' (रू.भे.)

दराड़ियोड़ो—देखो 'दिरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दराड़ियोड़ी)

दराज-वि० [फा०] (स्त्री० दराजी) १ बड़ा, महान्।

उ०—१ रण जिमत जीति राठौड़ राज। दिस च्यारि आंण फेरी दराज।—वं.भा.

उ०—२ श्री गणनायक सारदा, दीजै टकत दराज। वरण अती 'किसनो' वदै, जस राघव महाराज।—र.ज.प्र.

उ०—३ 'रांम' 'वगतेस' री चाट भाला रमां, दीह घण करि गल्लां दराजी। कथन बांई मिसल तणा मांझी कहै, मेल रे जांमणी तणा मांझी।—पहाड़ खां आढ़ो

२ चिर, दीर्घ। उ०—तिण सूं तमांम खुरासांण साह साटै था, सै वैरी धाक सूं गळै था, प्रभु ऊमर दराज करै।—नी.प्र.

क्रि०वि०—बहुत, अधिक। उ०—सोहै दराज सारो सहर, आज राज महाराज री।—बगतो खिड़ियो

सं०स्त्री० [अं० ड्राअर] मेज आदि में लगा हुआ संदूकनुमा खाना।
रू०भे०—दाराज।

दराड—देखो 'दरार' (रू.भे.)। उ०—तरु जड़ सरप दराड दिस्ट मिटी, सुद्ध रज्जू आतमथांणी। जाग्रत स्वप्न सुखुपती तुरिया, च्यारूं ई भरम विलांणी।—स्री सुखरांमजी महाराज

२ देखो 'दरार' (रू.भे.)

दराणौ, दराबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)
उ० दादै संकेत समझ'र कयौ—हां! मनै इयै रै बाप री दरायोड़ी सोगंध याद है।—वरसगांठ

दरायोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दरायोड़ी)

दरार-स०स्त्री० [स० दर] १ वह खाली जगह जो किसी चीज के फटने से लकीरनुमा पड़ जाती है, शिगाफ. २ छिद्र, छेद।
रू०भे०—दराड़, दराड।
मह०—दरारौ।

दरारौ—देखो 'दरार' (मह., रू.भे.)

दरावणो, दरावबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)
उ०—पीछै कंवर स्री वीकैजी प्रोहित वीकमसी नूं राव जोधैजी खनै जोधपुर मेलियौ कै आप मदत करौ तौ भाई वीदै नूं ठिकांणौ दरावां।—द.दा.

दरावियोड़ौ—देखो 'दिरावयोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दरावियोड़ी)

दरि-सं०पु० [फा० दरिखाना] १ दरबार, राज-सभा।
उ०—खिति हूंता आयां खबरि, आया दरि उमराव। संभारै वोखौ सकळ, धारै लेख प्रभाव।—रा.रू.
रू०भे०—दर।
२ दरवाजा। उ०—वसत विडांणी रे जीवड़ा, हरि सगौ हरि सुमरै क्यूं नाहि। नरपति भोपति दरि पड़ा, ढाल धुजा फहराइ।—ह पु वा.
३ देखो 'दरियाव' (रू.भे.) उ०—दिस लंक अंगद आद द्वादस, तहकिया तेखी। इक अरण सो विच त्रिसा आतुर, दरि द्रग देखी।
—र.रू.

दरिआउ, दरिआव—देखो 'दरियाव' (रू.भे.) उ०—१ दळ डोहै दरिआउ, हैवै वहि हदमाल रौ। जोड़ै रिणमालां 'जगौ', रहिओ खिड़ियौ राउ।—वचनिका
उ०—२ राज रौ सिरताज कांइम लाज रौ रढ़ रांण। भाउ री दरिआउ देसल राउ रौ कुळ भांण।—ल.पि.

दरिगह—देखो 'दरगाह' (रू.भे.)

दरिद, दरिद्र-वि० [सं० दरिद्र] धनहीन, निर्धन, कंगाल।
उ०—घट दीन दरिद्र घुमावत क्यूं। पुरुसारथ हीन पुमावत क्यूं।
—ऊ का.

सं०पु०—निर्धन मनुष्य।
रू०भे०—दरिद्री, दरीद्र, दळदरी, दळद्री, दळिद, दळिदर, दळिद्र, दाळदी, दाळिदर, दाळिद्र।

दरिद्रता-सं०स्त्री० [सं०] कंगाली, निर्धनता। उ०—ग्रांमि एक अति दरिद्रता करी दुखित डोकरी एक हूंती।—तरुणप्रभ

दरिद्री—देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

दरिया—देखो 'दरियाव' (रू.भे.) उ०—१ वोछा करै गुमांन वडौ कै' नांहि रे। भादू वरसै मेह नदी घर राहि रे। दरिया उभळै नांहि ता मांहि समाहि रे। हरिहां जन हरिदास यूं साधि देखि जग मांहि रे।
—ह.पु.वा.
उ०—२ दादू दरिया प्रेम का, ता में झूलै दोइ। इक आतम परमात्मा, एकमेक रस होइ।—दादू बांणी

दरियाई—देखो 'दरयाई' (रू.भे.) उ०—घेर घुमारौ घाघरौ, दरियाई रे नेफौ।—लो.गी.

दरियाईघोड़ौ-सं०पु० [फा० दरियाई+सं० घोटक] गैंडे के समान मोटी खाल वाला एक जानवर जो अफ्रिका में नदियों के किनारे पाया जाता है।

दरियाईनारियळ-सं०पु० [फा० दरियाई+सं० नारिकेल] समुद्र के किनारे पैदा होने वाला एक प्रकार का नारियल जो अमेरिका, अफ्रिका आदि देशों में पाया जाता है। सूखने पर इसकी गिरी पत्थर के समान कड़ी हो जाती है। इसके खोपरे का पात्र बनता है जिसे सन्यासी आदि अपने पास रखते हैं।

दरियाखीर-सं०पु० [सं० दरिया+सं० क्षीर] क्षीर-सागर।
उ०—आदम अरु ब्रंमदेव मिळियंदे, आए सब दरियाखीरंदे।
—र.ज.प्र.

दरियादासी-सं०पु०—निर्गुण उपासक साधुओं का एक सम्प्रदाय जिसे दरिया साहब नामक एक व्यक्ति ने चलाया था।

दरियाफत, दरियापत-वि० [फा० दरियाफ्त] मालूम, ज्ञात।
उ०—अरजी सुण कर दरियाफत अल्ला। वरदे महरवांन के बुल्ला।
—र.ज.प्र.
क्रि०प्र०—करणौ।

दरियाव-सं०पु० [फा० दरिया] सागर, समुद्र (अ.मा.)
उ०—१ साजन तुम दरियाव हौ, मैं औगण की जा'ज। अबकी पार लगाय दै, कर पकड़ै की लाज।—अज्ञात
उ०—२ मुरधर प्रकट थयौ महाराजा, वाजै सु सुर पंच सर वाजा। सुंदर वदन निरख सुण पावै, ईखण नाथ साथ दरियावै।
—रा.रू.
रू०भे०—दरयाव, दरिआउ, दरिआव, दरिया, दरीयाव।
अल्पा०—दरियौ।

दरियावजी-सं०पु०—एक महात्मा का नाम। जोधपुर राज्यान्तर्गत मेड़ता के रैण (राहण) नामक ग्राम के मुसलमान पिंजारे (धुनिया)

थे। इनका जन्म वि०सं० १७३३ माना जाता है। संवत् १७६६ से ये हिन्दू हो गये और रामस्नेही साधु पेमदास के चेले बन कर राम की भक्ति करने लगे। इनकी गादी रैंग (राहण) गाँव में है। वि०सं० १८०५ में इनका देहान्त माना जाता है।

दरियोड़ौ—देखो 'डरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दरियोड़ी)

दरियौ—देखो 'दरियाव' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ देरयौ दरियौ भरियौ जळ घणोजी, तव बोले नरनाथ। वारिधि पूरौ हल बीहळ हुइ रे, मूंछां घालै हाथ।—प.च.चौ.
उ०—२ उणनै तौ दीखतौ हो पीळौ-पीळौ अथंग दरियौ।
—रातवासौ
उ०—३ सेठ कहै सप अम्ह नथी, वैठौ भाड़ौ देई रे। भरियैं दरियैं चालिया, मन में हरख धरेई रे।—स्रीपाळ रास

दरिसण—देखो 'दरसण' (रू.भे.) उ०—भय भंजण भगवंत, जैसळमेर जयौ री। उपगारी अरिहंत, दरिसण दुलख गयौ री।—ध.व.ग्रं.

दरी-सं०स्त्री० [सं०] १ गुफा, खोह, कंदरा। उ०—सिला तखत केसर चमर, अनड़ दरी आवास। प्रगट लियां अगराज पण, सादूळा स्यावास।—बां.दा.
२ वह कोठरी या घर जो जमीन के नीचे बना हो, तहखाना, तलगृह. ३ मकान के अन्दर दीवार के समानान्तर लगा हुआ वह लम्बोतरा पत्थर जिस पर सामान आदि रखा जाता है।
[सं० स्तर] ४ मोटे सूत का बना हुआ मोटा बिछौना।
रू०भे०—दरि।

दरीखांनौ-सं०पु० [फ़ा० दर+खाना] १ राजा-महाराजा या सरदारों के दरबार का स्थान जिस के बहुत से दरवाजे होते हैं।
उ०—१ दुनियांन सयल राजांन देखस्यइ, पग पग कुंदण झारि जइ पाज। दरीखांनइ नांखिया दुलीचा, आवण तणी हुई आवाज।
—महादेव पारवती री वेल
उ०—२ बूबना रा महल नीचै एक बडौ दरीखांनौ। मुंहडा आगै छप्पर बांध, तिण नीचै सारा उमराव आय बैसै।
—जलाल बूबना री वात
२ दरबार। उ०—जदी यौ राजा फौज ले अर सिंघमार रा राजा ऊपर आयौ। जदी वौ राजा अर सिंघमार दोई दरीखांनौ करै बैठा छै। अर खबर आई।—पंचमार री वात
३ घर में बनी हुई मरदाना बैठक।

दरीद्दर—देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

दरीपट्टी-सं०स्त्री० (देश०) जुलाहों का एक खड्ग के आकार का औज़ार जिसे बाना बैठाया जाता है। यह अधिकतर बकरी के बालों से बुने जाने वाले वस्त्रों के उपयोग में लिया जाता है, बैयन।

दरीबौ-सं०पु० [फ़ा० दर] १ बाजार। उ०—आसिक अमली साधु सब, अलख दरीबै जाइ। साहिब दर दीदार में, सब मिळ बैठे आइ।
—दादू बांणी
२ कोठार। उ०—श्रीखमंत हुओ सुरांराज री भाळवौ गोम, पणांसी सुणेवौ वेण वाज री इलाप। ऊखेडवौ महा काळ दरीबां अनाज री क, मेडतिया गरीबांनवाज रौ मिळाप।—साहिबौ सुरतांणियौ
३ ढेर। उ०—हेरिय संभरी माल, लुट्टि संभर पुर लिन्हिय। निमक दरियन रुद्धि, दाव दब्बन उर दिन्हिय।—ला.रा.
४ पान का बाजार। उ०—कहा करूं ऐसी भई, मन पड़्या दरीबै जाय। जन हरिदास मतिवाल मैं, मेरा मन हरि लिया चुराय।
—ह पु.वा.

दरीभुत, दरीभ्रत-सं०पु० [सं० दरीभृत] पर्वत, पहाड़ (अ.मा., नां.मा.)

दरीमुल-सं०पु० [सं०] राम की सेना का एक बन्दर।

दरीयाखाना— । उ०—कद दोक्द चुपदा मासपदा तनुत्रंध सरवंध कमरबंध मगवनां कमळवनां दरीयाखाना कत्तीनी झूंना प्रताप सचोप।—व.स.

दरीयाव—देखो 'दरियाव' (रू.भे.) उ०—बंध ग्राह दरीयाव बीच पड़ संघट फील पुकारियां। ईस ऊवाहण पाय आय धर हत्थूं सूंड ऊधारियां।—र.ज.प्र.

दरून-सं०पु० [फ़ा० दारूद] मुहम्मद साहब की स्तुति, दुआ (मा.स.)
यौ०—फातिहा-दुरूद।

दरून-सं०पु० [?] हृदय। उ०—दादू दरूने दरदवंद, यहु दिल दरद न जाइ। हम दुखिया दीदार के, महरवांन दिखलाइ।—दादू बांणी

दरेवांण, दरेवांण—देखो 'दरवांण' (रू.भे.) उ०—पाछिली घडि दो राति हुई तरै दरवाजै जाइ ऊभा। दरेवांण नूं कह्यौ दावड़ौ वरस दोइ री फौत हूवौ छै। उघाडि।—चौबोली

दरोग-सं०पु० [अ०] असत्य, मिथ्या। उ०—दादू दुई दरोग लोग को भावै, सांई साच पियारा। कौन पंथा हम चलै कहो घू, साधो करौ विचारा।—दादू बांणी

दरोगहलफी-सं०स्त्री० [अ०] १ सत्य बोलने की सौगन्ध खा कर भी झूठ बोलना. २ झूठी गवाही।

दरोगी-वि० (?) समीप रहने वाला। (?)
उ०—आलम की आवाज सुण तहवरखां त्रास पाई। मेरे दरोगी गयौ आपकी कमाई।—रा.रू.
सं०स्त्री०—दासी, सेविका।

दरोगौ-सं०पु० (स्त्री० दरोगण, दरोगी) १ दास, सेवक.
२ देखो 'दारोगौ' (रू.भे.)

दरोबस्त-सं०पु० [फ़ा० दर व बस्त] कुल, पूरा, सब।
उ०—राव सुरतांण हरराज री तोडडी छोड नै रांणा रायमल कनै चीतोड आयौ, तरै रांणै बधनोर गढ़ दरोबस्त पटै दियौ।—नैणसी

दरोळ-सं०पु०—१ विघ्न, बाधा।
उ०—तीर और रूकड़ां तरवारियां नै रुख न्यारी न्यारी कर न्हांकदी है, कांनी कांनी बीरा री मौळ पड गई, एक इण पूंचाळा जोधार रै आवण सूं दळ में पूरौ दरोळ पड़गौ।—वी स.टी.

क्रि०प्र०—पड़णी ।

२ उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा, विद्रोह । उ०—१ मिसलात विरोळ अमंगळ में, मंझ रात दरोळ दमंगळ में । अत थाळ विसाळ रसाळ भरै, सह जांनिय डेरेय सैंभर रै ।—पा.प्र.

उ०—२ हुय धुरळ प्रेम हंसी हुंसार, खोस नै कियौ सरसौ खवार । लड़ लई लूट जिहि नारनोळ, दिली मंडळ पड़ इसड़ौ दरोळ ।—पे.रू.

क्रि०प्र०—पड़णौ, होणौ ।

३ खलबली । उ०—दिल्ली रा दळ में दरोळ देखतां ही साहजादा री सेना बडे जोर बंधी थकी आगै आइ उछाह रै उफांण महाप्रळै मचायो ।—वं भा.

रू०भे०—दरौळ ।

दरौळ—देखो 'दरोळ' (रू.भे.) उ०—रुख रुख तीरां-रूकड़ां, मुख-मुख वीरां मोळ । पूंचाळा हेकण पखै, दळ में प्रबळ दरौळ ।—वी.स.

दळ-सं०पु० [सं० दल] १ सेना, फौज । उ०—१ ऊमर ऊतावळि करइ, पल्लांणियां पवंग । खुग्सांणी सूधा खयंग, चढ़िया दळ चतुरंग ।
—ढो.मा.

उ०—२ अकबर दळ अप्रमांण, उदैनयर घेरै अनय । खागां बळ खूमांण, साहां दळण प्रतापसी ।—दुरसौ आढ़ौ

रू०भे०—दळि, दुळ ।

२ मंडली, टोली, गुट, चक्र । उ०—आंधी खूंखाटा करती उठ आवै । फदकै मूंफाटा चेता चुळ जावै । गोळू गायां ले गांमां गळ गाहै । दुखिया सुखिया मिळ दोनूं दळ दाहै ।— ऊ.का.

३ समूह, झुण्ड । उ०—वळतौ विप्र भणै स्त्री सांभळि, देव तणां दळ आव्या । सोवन थाळ भरी मणि मांणिक, वेगइं विप्र वधाव्या ।
—रुकमणी मंगळ

४ ढेर, राशि । उ०—१ राघव रट रट हरख कर, मट मट अघ दळ महत । जनम मरण भय हरण जन, कज भव हर रिख कहत ।
—र.ज.प्र.

उ०—२ दीनदयाळ पाळकर गौ दुज, निज प्रिया सिया मनरंजण । जाप 'किसन' मा बाप रांम जस, भव त्रय ताप पाप दळ भंजण ।
—र.ज.प्र.

५ किसी वस्तु के उन दो सम-खण्डों में से एक जो स्वभावत: जुड़े हुए हों और थोड़ा सा जोर अथवा दवाव पड़ते ही अलग हो जांय ।

६ भोज्य पदार्थ, अनाज । उ०—दादू जळ दळ रांम का, हम लेवें परसाद । संसार का समझै नही, अविगत भाव अगाध ।—दादू बांणी

७ किसी वस्तु की मोटाई, तह या परत की तरह फैली हुई वस्तु की मोटाई । ज्यूं—आंबा री गुठली माथै दळ घणोई है, इण काकड़ी में फोरा वीज ईज है, दळ कोयनी ।

यौ०—दळ-दार ।

८ किसी पौधे, वृक्ष, लतादि की पत्ती (अ.मा.) ज्यूं—तुळसी-दळ । उ०—कळियां कूंळां री कादै में कळगी । विखहर संगत सूं पीपळियां बळगी । करता विस्वंभर कसरां का कांई । नागरवेली दळ निरफळ फळ नाहीं ।—ऊ.का.

९ फूल की पंखड़ी ।

रू०भे०—दळि ।

यौ०—कमळ-दळ-लोचण ।

१० तमालपत्र. ११ पत्र, चिट्ठी । उ०—१ इम खट रित करि उद्धव अति, दिल आणंद दुझाल । दरसण काज दिलेस रां, मेलै दळ 'अभमाल' ।—सू.प्र.

१२ शस्त्र के ऊपर का आच्छादन, म्यान । उ०—१ यूं दळां हूंत जांणै खड़ग ऊकढ़ी, वादळां हूंत जांणै कढ़ी वीज ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—२ खिवै फळ सेल खुलै दळ खग्ग । दिपै दव आग कि झाळ सदग्ग ।—रा.रू.

रू०भे०—दळौ ।

१३ भौंरा (अ.मा.) १४ नशा, मद । उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, बीजा सहु अकयथ्थ । जिए चडचा दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ ।—ढो.मा.

१५ लड्डू (अनेका.) १६ शरीर (कविराजा वांकीदास)

उ०—दळ कहतां सरीर ए जु बाळक जब ऊपजै छै तब कळि रौ जु वाउ लागै छै तब ही उह बाळक नुं भूख त्रिस लागि छै ।—वेलि.टी.

दल—देखो 'दिल' (रू.भे.)

दळ-अभंग-सं०पु०यौ० [सं० दल+अभंग] बलभद्र (अ.मा.)

दळ-आगळ-सं०पु०यौ० [सं०दल+अग्र] अग्रणी, हरावल ।

दलक-सं०पु० [अ०] रोजगीरों का एक औज़ार जिस से निवकासी साफ की जाती है ।

दळकणौ, दळकबौ-क्रि०अ०—१ फटना. २ थर्राना, कांपना. ३ चौंकना ।

दळकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ फटा हुआ. २ थर्राया हुआ, कांपा हुआ. ३ चौंका हुआ ।
(स्त्री० दळकियोड़ी)

दलगीर—देखो 'दिलगीर' (रू.भे.) उ०—तरै रावजी मन मांहै दलगीर हुण लागा । तरै जैतेजी कह्यौ—थे दलगीर मत हुवौ, थे कहस्यौ तिकूं कांम करस्यां ।—राव मालदे री वात

दळण-सं०स्त्री० [सं० दलन] १ दरदरा करने या पीसने की क्रिया या भाव. २ मारने या संहार करने की क्रिया या भाव ।

वि०—संहार करने वाला, नाश करने वाला, पीसने वाला ।

उ०—अकबर दळ अप्रमांण, उदैनयर घेरै अनय । खागां बळ खूमांण, साहां दळण प्रतापसी ।—दुरसौ आढ़ौ

दळणी-सं० स्त्री० [सं० दलन] १ चक्की ।

दळणौ-वि०—दलने वाला. २ काटने वाला. ३ संहार करने वाला ।

दळणो, दळवौ–क्रि०स० [सं० दलन] १ चक्की में डाल कर अनाज आदि के दानों को दरदरा करना. २ संहार करना, मारना।
उ०—१ भेदे तें वार किता भूगोळ, करंती आंणी गंग किलोळ। दळे तें केता वार दईत, इंद्रासण दीधौ सक्र अजीत।—ह.र.
उ०—२ जरे गजारूढ़ प्रमारसिंह उरग असि चलाय आप रा सुरंग हौदा रै बराबर कढ़तो दाहिमा रौ तुरंग दळियौ।—वं.भा.
३ नाश करना, नष्ट करना। उ०—१ जोबन में मर जावणौ, दळ मळ साजै दाप। एह उचित वोह आवखो, सिहां वडो सराप।
—बां.दा.

उ०—२ आपगां दळण गीखम जळण आहोटी, विसै खटचलण कळियां कदमव्रंद। बारवाहां कई आठ मासा बळण, नह कई वळण कूं जसोमत नंद।—बां.दा.
दळणहार, हारौ (हारी), दळणियौ—वि०।
दळवाड़णौ, दळवाड़वौ, दळवाणौ, दळवावौ, दळवावणौ, दळवाववौ, दळाड़णौ, दळाड़वौ, दळाणौ, दळावौ, दळावणौ, दळाववौ—प्रे०रू०।
दळिओड़ौ, दळियोड़ौ, दळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
दळीजणौ, दळीजवौ—कर्म वा०।

दळथंभ, दळथंभण–सं०पु० [सं० दल+स्तम्भ] १ महान् वीर, योद्धा।
उ०—घोड़ां हींस न भल्लिया, पिय नींदडी निवारि। वैरी आया पांवणा, दळथंभ तूझ दुवारि।—हा.झा.
२ मुगल बादशाहों द्वारा राजाओं को दी जाने वाली उपाधि।
उ०—आसेर सतारौ ऊमहै, धोम कोम अहि धूजियौ। दळथंभ नांम असपति दियौ, पटां वधारां पूजियौ।—सू.प्र.
रू०भे०—दळांथंभ।

दळद—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—१ दीधौ धन लीधौ दळद, कीधौ गात कुढ़ंग। गनका सूं राखै गुसट, रसिया तोनूं रंग।—बां.दा.
उ०—२ चाढ़णौ कुळ जळ, दळद चौजां वाढ़णौ बिरदैत।
—र.ज.प्र.

दळदरी—देखो 'दरिद्र' (रू.भे.) उ०—दीयें किसुं दळदरी, सबळ रीझवियौ संतां। सगळौ ही संसार, घरै आस धनवंतां।—ध.व.ग्रं.

दळदळ–सं०पु० [स० दलाढ्य] १ कीचड, पंक. २ वह भूमि जो गहराई तक गीली हो और जिस में पांव आदि धँसता हो. ३ महीन धूलि वाला रेगिस्तानी भू-भाग जिस में प्राणी का पांव पड़ते ही अन्दर धँस जाता है।
मुहा०—दळदळ में फसणौ (पजणौ)—कीचड़ में फंसना, आपत्ति या कष्ट में फँसना, किसी कार्य का अनिर्णीत अवस्था में रहना।
४ बुड्ढी स्त्री (बाजारू)
[illegible]दार–सं०पु०यौ० [सं० दल+फा० दार] जिस की तह या परत मोटी हो, मोटे दल वाला।
[illegible]—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—विधि कीधी वळै बांदनइ तोरण, मूंग नांखिया जोई मुख। सुख संपदा हुई सिगळां ही, दळद्र गयउ नइ गयउ दुख।—महादेव पारवती री वेल

दळद्री—देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

दळनाथ, दळनायक, दळप, दळपत, दळपति, दळप्पति–सं०पु० [सं० दलनाथ, दलनायकः, दलप, दलपति] १ किसी मंडली या समुदाय का अगुआ, प्रधान, सरदार। उ०—कट्टार हीर नग जड़ित कीध। दळनाथ कमंध री नजर दीध।—सू.प्र.
२ सेनापति। उ०—१ दळनायक नमो पराक्रम, 'देवा', थर भांजिया वधारै आध। झटका रतन जड़ाव जेहड़ा, वणिया वदन अभनमा 'वाघ'।—जीवणदास बारहठ
उ०—२ दळ समुदाय भांजइ, दळपति गांजइ।—व.स.
३ वीर. योद्धा। उ०—१ सुर रायां सुप्रसण हुये, दीजै मो वरदांन। सुजस गाऊं 'भारत' सुत, दळनायक सिवदांन।—शि.सि.रू.
उ०—२ पूरण प्रसिध प्रघट प्रज-पाळण, दळपति दियण दोयियां दाव। भवि कोइ घड़िस त भलो भाखिस्यां, रावळ 'जांम' सरीखो राव।—ईसरदास बारहठ
उ०—३ दळप्पति दोमजि दूथ दुरंग। कियौ कमरौ जिणि भांजि कुरंग।—रा.ज. रासौ
रू०भे०—दळवइ, दळांनाथ, दळांपति, दळांपती।

दळवट–सं०पु०—मच्छर, बर्रे आदि के काटने अथवा खुजलाने आदि के कारण शरीर की चमड़ी पर पड़ने वाली सूजनयुक्त गोल लाल चकती, चटखर, ददोरा।

दळवळियौ–वि०—१ खिन्नचित्त, उदासीन। उ०—दळिया रांधे दळवळिया हूल-वांणं। वेचण बींदणियां इंधणियां आंणै।—ऊ.का.
२ दुखी. ३ भूखा।

दळवादळ—देखो 'दळवादळ' (रू.भे.) उ०—१ दळवादळ ल्यायौ सागै फौज मेरी मां की ये जायी! सावत न छोडया ये कोई देवरा।
—लो.गी.
उ०—२ दळबादळ डेरा ऊभा किया रे, ऊतरियौ सुलतांण। सिंहलदेस दुहाई फेरि के रे, पकडो सिंघल रांण।—प.च.चौ.

दळभंजण, दळभंजन–वि० [सं० दल+भंजन] सेना का संहार करने वाला, महावीर, योद्धा।
सं०पु०—वह घोड़ा जिस के शिर (मस्तक) पर के पाटे पर काला या लाल दाग हो (अशुभ)

दलभ—देखो 'दुरलभ' (रू.भे.) उ०—भल करम मन वतन अत दलभ, अखत वयण अह नर अमर। कर हरख पहर अठ कव 'कसन', सघर समन रघुवर समर।—र.ज.प्र.

दलम–सं०पु० [सं० दालिमः=इन्द्र का नाम] इन्द्र (ह.नां., अ.मा.)
रू०भे०—दलमि।

दलमट्ठौ, दलमठौ—देखो 'दिलमठौ' (रू.भे.) उ०—ईहगां कलावां कहै आसीसता, जोड़ रा रीसता दहै जारां। दलमठा रहै आठूं पहर दीसता,

लोह पग घींसता वहै लारां।—महादांन महड़ू

दळमळणौ, दळमळवौ-क्रि०स०—१ कुचलना, रौंदना, मसल डालना। उ०—बाग विधूंस्या, लंका दळमळी, सारघा राजा रांमचंद्र का कांम; बावा बजरंगी रौ वंगळौ हद वण्यौ।—लो.गी.

२ मार डालना, संहार करना।

दळमळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मसला हुआ, रौंदा हुआ, कुचला हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ।
(स्त्री० दळमळियोड़ी)

दलमाठौ—देखो 'दिलमठौ' (रू.भे.) (डि.को.)

दलमि—देखो 'दलम' (रू.भे.) (ना.डि.को.)

दळमोड़-वि० [सं० दल+रा० मोड़] सेना को पीछे हटाने वाला, महावीर।

दळवइ—देखो 'दलपति' (रू.भे.) उ०—दह दिसि इम जां वनु आरोडइं, जीव वीणासइं तरूयर मोडइं। जां इम दळवइ पारधि लागइ, तांम असंभमु पेखइ आगइ।—पं.पं.च.

दळवादळ-सं०पु० [सं० दल+वारिद] १ बड़ा भारी खेमा, बहुत बड़ा शामियाना। उ०—पेसखांना वाळी वात परीछइ, आगा लगई करण आरास। दळवादळ तांणिया दुवाहे, फारक ईसर तणा फरास।
—महादेव पारवती री वेलि

२ बड़ी भारी सेना। उ०—दळवादळ तावीन दे, हिंदू मुसळिमांण। चगथै 'जसौ' चलाविओ, जुध मंडण जमरांण।—वचनिका

३ मुलायम गदेला। उ०—पोढण हिंगळू ढोलियौ, थांरै दळवादळ री सेज।—लो.गी.

रू०भे०—दळवद्दळ, दळवादळ।

दळसणगार— देखो 'दळसिणगार' (रू भे.) उ०—दूजी वार धिराज दियौ दुख, सांसण जवत किया हेक साथ। दळसणगार मांडियौ 'देवै', हितवां काज उदक नै हाथ।
—पोकरण ठाकुर सवाईसिंह रौ गीत

दळसाह-सं०पु० [सं० दल+फा० शाह] १ सूअर, वराह (अ.मा.)
२ सेनापति।

दळसिणगार-सं०पु० [सं० दल+शृंगार] १ सेना की शोभा बढ़ाने वाला, वीर, पराक्रमी (बांकीदास) उ०—दळसिणगार कहै गोदाउत, थिर जस अथिर कळू थावंत। व्रिख-छाया आचारि खत्री वंस, पातां सूं सोभा पावंत।—राठौड़ हरिरांम ऊहड़ रौ गीत

२ सेनापति।

रू०भे०—दळसणगार।

दलांण—देखो 'दालांण' (रू भे.)

दळांथंभ—देखो 'दळथंभ' (रू.भे.) उ०—कियौ प्रथम साको वडौ दली कणियागरै, दळांथंभ कमंद चीतोड़ खत्रदाव। 'अमर' अवगाढ़ जमडाड जम आछटै, रांण रड़माल उजवाळिया राव।
—नरहरदास वारहठ

दलांन—देखो 'दालांन' (रू.भे.)

दळांनाथ—देखो 'दळनाथ' (रू.भे.) उ०—दली हाथियां हैमरां पाय कली तोड़ा लाय दारू, दूठ मलां चहुं दिसां हाकली दुवाह। दळांनाथ वापौ वाप खलीलू दूसरा 'दला', बळी ना दूसरी वार धूकळी वेवाह।
—उम्मेदसिंह सिसोदिया रौ गीत

दळांपति, दळांपती—देखो 'दळपति' (रू.भे.) उ०—खत्रीवट खागति आगि 'खंगार' जिसा व्रिद खाटणौ। दळांपति आरंभ रांम दुगांम खळां दळ दाटणौ।—ल.पिं.

दळांमुकट-सं०पु० [सं० दलं+मुकुट] सर्व-श्रेष्ठ योद्धा, महावीर। उ०—वळ हीणा केता नर वीजा, हव प्रसणां चै तरफ हुवा। भड़ अण डोलक अेक 'भवांना', दळांमुकट 'जगरांम' हुवा।
—लांविया ठाकुर भवांनीसिंह रौ गीत

(मि० दळांसिणगार)

दळाड़णौ, दळाड़वौ—देखो 'दळाणौ, दळावौ' (रू.भे.)
दळाड़णहार, हारौ (हारी), दळाड़णियौ—वि०।
दळाड़िओड़ौ, दळाड़ियोड़ौ, दळाड़योड़ौ—भू०का०कृ०।
दळीजणौ, दळीजवौ—कर्म वा०।

दळाड़ियोड़ौ—देखो 'दळायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दळाड़ियोड़ी)

दळाणौ, दळावौ-क्रि०स० ('दळणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ अनाज आदि के दानों को चक्की आदि से दरदरा कराना. २ संहार कराना, मराना। उ०—घर ऊपर फेरै घरट, दांणू सरव दळाया। सीता वाहर रांमचंद्र नीसांण घुराया।—केसोदास गाडण

३ नष्ट कराना, नाश कराना।
दळाणहार, हारौ (हारी), दळाणियौ—वि०।
दळायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दळाईजणौ, दळाईजवौ —कर्म वा०।
दळाड़णौ, दळाड़वौ, दळावणौ, दळाववौ—रू०भे०।

दळायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ अनाज आदि के दानों को चक्की आदि से दरदरा कराया हुआ. २ संहार कराया हुआ, मराया हुआ।
३ नाश कराया हुआ, नष्ट कराया हुआ।
(स्त्री० दळायोड़ी)

दलाल-सं०पु० [अ० दल्लाल] १ वह व्यक्ति जो किसी वस्तु के विनिमय अर्थात क्रय या विक्रय में सहायता दे, मध्यस्थ। उ०— अे दलाल अे खुड़दिया, हुंडी वाळ वजाज। अे हिज करै पसारटौ, केवल धन रै काज।—बां.दा.

२ वह व्यक्ति जो किसी कार्य की सिद्धि के लिये दो पक्षों के बीच मध्यस्थता करता है या सहायता देता है।

वि०वि०—दलाल अपने लिये आर्थिक लाभ के उद्देश्य से मध्यस्थता करता है।

वि०—विशाल हृदय, उदार।

दलाली-सं०स्त्री० [अ० दल्लाली] १ दलाली का कार्य।
क्रि०प्र०—करणी।
२ दलाल को उस के कार्य के बदले में मिलने वाला द्रव्य या पदार्थ।
क्रि०प्र०—देणी, लेणी।

दलावड़ा-सं०स्त्री०—सोलंकी वंश की एक शाखा।

दळावणो, दळावबो—'दळाणो, दळावो' (रू.भे.)
दळावणहार, हारो (हारी), दळावणियो—वि०।
दळावियोड़ो, दळावियोड़ो, दळाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
दळावीजणो, दळावीजबो—कर्म वा०।

दळावियोड़ो—देखो 'दळायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दळावियोड़ी)

दळि—१ देखो 'दळ' (१) (रू.भे.) उ०—१ पदरी प्रघक के वेधपत्ति, पक्खियां जु प्रासइ दूरि पत्ति। असपत्ति तणइ दळि असमराळ, कावेली केवि धारा कराळ।—रा.ज.सी.
उ०—२ तइ नरसिंघदास का कटकबंध चालतां गांतरि आगळइ दळि पांणी, पाछिलइ दळि कादम। तइ कादम कइ ठांहि गेह उडती जाइ।—अ. वचनिका
२ देखो 'दळ' (६) (रू.भे.) उ०—कमळ मे दळि सापर पाथरिउ। मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ।—विराट पर्व
३ देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—भूपति लछपती नरपती सुभेद, वेउरं अढ़ारही पुरांण वेद। मट मास जांण तलन दूसरो सिंगार, इहणां गमे दळि इंद्र अवतार।—ल.पि.

दळित-वि० [सं० दलित] १ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, खण्डित।
क्रि०प्र०—करणो।
२ कुचला हुआ, रौंदा हुआ. ३ मसला हुआ, मर्दित. ४ विनष्ट किया हुआ।

दळिद—१ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.) २ देखो 'दाळद' (रू.भे.)
उ०—१ मांगणहारां मीप दी, ढोलइ तिण हि ज ताळ। सोवन-जड़ित सिंगार दे, नांख्यउ दळिद उखाळ।—ढो.मा.
उ०—२ धरमसी कहै सात, सात दुख जाय न सहणा। दीसै घरि में दळिद, लोक वळि मांगै लहणा।—ध.व.ग्रं.

दळिदर—१ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)
२ देखो 'दाळद' (रू.भे.)

दळिद्द—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—कवण चतुर गणिका करै, चारु-दत्त घर चित्त। तजि दळिद्द भजि मुज्झ तू, विलसि अप्रमित वित्त।
—वं.भा.

दळिद्र—१ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.) उ०—उण दळिद्र द्विज रै अरथ, व्रणि दासी विणमोल। उलटो निज घर अप्पियो, करि अधीन प्रभु कोल।—वं.भा.
२ देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—भाई डूंगरसी भलो, लघु बंधव गुण ग्रिंदो रे। दुखियां दळिद्र भंजणो, भागचंद कुळचंदो रे।—प.च.चौ.

दळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ अनाज आदि के दानों को चक्की द्वारा दरदरा किया हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ।
(स्त्री० दळियोड़ी)

दळियो-सं०पु०—१ दरदरे किये हुए अनाज का पकाया हुआ व्यञ्जन।
उ०—दळिया रांधै दलवळिया हळ वांणै। वेवण धींदणियां ढूंधणियां धांणै। सादी भारी नै धोळावो देती, दुरमत बारी नै धोळावो देती।—ऊ.का.
२ वह अनाज जो बारीक पिसा हुआ न हो, दरदरा अनाज।
उ०—इण भांवी रै अठै जितरी बार पीसणो दियो बिलकुल दळियो काढ़ नै दियो। इण वास्तै म्हैं उण मांवणकी नै कह्यो—अे वाला, यूं दळियो मत काढ़्या कर, थोड़ो महीन पीस्या कर। मूंधा रै भाव री धांन है सो धांन री धूड़ मत किया कर।—रातवासो

दळी-क्रि०वि०—चौतरफ, चारो ओर।

दली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उ०—१ जोगणपुर जठै चत्रगढ़ जाणो, घणूं तेज तन धूर घणो। मोती दली कहै मेवाड़ा, तैं तोड़ियो स नाक तणो।—महाराणा राजसिंह रो गीत
उ०—२ कियो प्रथम माको वडो दली कणियागरै, दळांथंभ अमंध चीतोड़ गढ़दाव। 'अमर' अवगाढ़ जमदाढ़ जम आहटै, रांण रहमाण उजवाळिया राव।—नरहरदास बारहठ

दलीचो—देखो 'दुलीचो' (रू.भे.) उ०—१ आप ऊमर सूमरा सांम्है गया, आगै दलीचां रा बिछावणा हुइ रह्या छै, जठै टोलोजी जाइ बैठा।—ढो.मा.
उ०—२ पांच पांच पलटि गह लावै। वैसि दलीचै लोक बुलावै।
—द.पु.वा.

दलीप—देखो 'दिलीप' (रू.भे.)

दलीपत, दलीपति देखो 'दिल्लीपति' (रू.भे.)
उ०—पह नवाब दलीपत खपिया, जागा मरहट जुओ जुआ। हूंता धींग ज्यांनै रंक किया हर, हूंता रंग जे धींग हुआ।—ओपो आढ़ो

दलील-सं०स्त्री० [सं०] १ तर्क, बहस, वाद-विवाद।
उ०—पढ़णी वेळा में पग फावै, पढ़्यां पिछै पोमाई नै। करै दलील जिकां सूं कोई, लाधै त्यार लड़ाई नै।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—करणी।
२ युक्ति।
क्रि०प्र०—देणी, लगाणी।

दलीस—देखो 'दिल्लीस' (रू.भे.)

दळूंत-वि० [सं० दलन] नाश करने वाला, संहारक।
उ०—कासूं जोर लागै थेट हरी रै अगाड़ी कूंतो, दूसरो न पूंतो उठै अकमां दळूंत। तजै मोहमाया वासी साजोत रै हुवो तूंतो, वांमी वंद हूं तो तो नै न भूलूं 'वळूंत'।—सरूपदास दादूपंथी

दलेचो-सं०स्त्री० (देश०) मकान के मुख्य द्वार के वाहर का बरामदा।

दलेल–वि०—विशाल हृदय, उदार, दातार। उ०—१ दिल का दलेल लहरूं का दरियाव। रूपके केसरी रीझ 'गजबंध' का सभाव।—सू.प्र.
उ०—२ तरां सेखोजी बोलिया, इतरा दिनां म्हांरी मत संभाळियां पछै म्हे कदेई मांहे अकेला रसोड़ै जीम्यां न छां नै सदा-मद पांतियौ दे घणा रजपूतां रा भूल मांहे जीम्या, तिण सूं डूंगरसी भतीज, थारौ जीव दलेल छै, रजपूतां नै राख जांणौ छै।
—जैतसी ऊदावत री वात

दलेस—देखो 'दिल्लीस' (रू.भे.) उ०—१ भाळ विकराळ वासग तरह भटा री, दोखियां लटा री अलंग दारू। दलेसां घटा री दांमणी दरसियो, मेलतां कटारी करग मारू।—कविराजा करणीदांन
उ०—२ कलक भैरूं सगत पीयण काळ रा, दलेसां साल रा ताप देणा। अंग उग्र भाळ रा नजर आवै इसा, लाल रा सुतन गढ़ खळां लेणा।—रांमलाल आढ़ौ

दलेसुर—देखो 'दिल्लीस्वर' (रू.भे.)

दलै–अव्य० (देश०) हाथीवानों की एक बोली जिस के द्वारा वे हाथियों को पानी पीने के लिये प्रेरित करते हैं।

दळौ—देखो 'दळ' (१२) (रू.भे.) उ०—तिसै वीजळी चमकी नै पिउसंधी तरवार चलाई, तिकौ कड़ियां मांहे बूही। दोइ टूक हुवा नै हेठौ पड़ियौ। लोही रौ चीखलौ हुवौ। तरै पिउसंधी तरवार दळै करि भींवा रै पाखती पौढ़ी रही।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
क्रि०प्र०—करणी।

दलौ—देखो 'दल्लौ' (रू.भे.)

दल्ली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.)

दवंग—देखो 'दमंग' (रू.भे.) उ०—आंखां अंगीठीह, धखै दवंग जिम घाव रा।—पा.प्र.

दव–सं०पु० [सं० दव] १ दावाग्नि, दावानल। उ०—१ ज्यौं दव लगे जंगळे, रहै छंम कोइ घास। यौं मेवाड़ उवेळियौ, मेट कमंधां त्रास।
—रा.रू.
उ०—२ दळ सुरितांण जांण डूंगरि दव, कंपि धरा हुई प्रज लव क्रव। अहि सुरितांण आवियउ अवथरि, करन तणा ऊठिय गज केसरि।—रा.ज.सी.
उ०—३ अर जगमाल मस्तक रा भार नूं महा गरिस्ट मांनि अद्रि रै ऊपर दव लगाइ धारा तीरथ रै उछाह इसड़ी अनेक वातां रौ अवलंब गहियौ।—वं.भा.
२ अग्नि, आग। उ०—१ सोर किधौ सावात में दव दुंग मिळाया।
—वं.भा.
उ०—२ दव दाधी हेक हेक दुख दाधी, किसनावती कहै सुर कोड़ि। गंधारी न जुड़ि थारी गति, जुड़ि न कूंता थारी जोड़ी।
—गोरधन बोगसौ
३ वन, जंगल। उ०—१ भाळ भाभी भटका करइ, जिम जांणौ दव गाह। हूं हरणी हवडां बळूं, सार करिसि न नाह।—मा.कां.प्र.
उ०—२ खिवे फळ सेल खुलै दळ खग्ग। दीपै दव आग कि भाळ सदग्ग।—सू.प्र.
४ देखो 'दावौ' (रू.भे.) उ०—तर तुसार दव जळै सीस माधव रुत आवै, ग्रीखम रेणा गात जळण वरसात मिटावै।—रा रू.

दवखण, दवखणप–सं०पु० [सं० दवक्षणप=ताप का अवसर रखने वाला] यमराज (डिं.को.)

दवटणौ, दवटबौ—देखो 'दपटणौ, दपटबौ' (रू.भे.)
उ०—करि जीण सपक्खर बाज कटै। दहोड़ै खळ एम तुरी दवटै।
—सू.प्र.

दवटियोड़ौ—देखो 'दपटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दवटियोड़ी)

दवण—देखो 'दमन' (रू.भे.)

दवणौ, दवबौ–क्रि०अ०—१ जलना, भस्म होना.
२ विकृत होना. उ०—अपणाई सांभरि 'अभै', 'अजन' वणै अजमेर। उर भंखांणा आसुरां, जांण दवांणा मेर।—रा.रू.
३ देखो 'दवणी, दववी' (रू.भे.)

दवदंति, दवदंती—देखो 'दमयंती' (रू.भे.) (जैन)
उ०—१ दवदंति विरहानळि, हा नळि नडिय अपार। प्रिय मेळउ केते वासरे, आस रे वडिय संसार।—नेमिनाथ फागु
उ०—२ तेणी गुफाइ सात वरस रही दवदंती नारि। धरम आराधइ जिन तणु, सफळ करइ संसार।—नळ-दवदंती रास

दवना–सं०पु० [सं० दमुनस्, दमुनाः] अग्नि (डिं.को.)

दवनौ—देखो 'दमणौ' (रू.भे.)

दवर–सं०पु० [सं० द्वार] द्वार, दरवाजा। उ०—अमर पुर मचि दवर दरवर। उदर पर मिळि मुखर पळचर।—वं.भा.

दवांगीर—देखो 'दवागीर' (रू.भे.)

दवा–सं०स्त्री० [अ०] १ कोई रोग या व्याधि दूर करने की वस्तु, औषध।
यौ०—दवाखांनौ, दवा-दारू।
२ रोग दूर करने का उपाय, चिकित्सा।
क्रि०प्र०—करणी।
रू०भे०—दवाई, दुवाई, दुवायी।
[अ० दुआ] ३ अभिवादन। उ०—उवां जेम ओरि असि रिण अथग, साजूं 'विलंद' समाज सूं। असुरांण रुधिर खग करि अरुण, सभूं दवा महाराज सूं।—सू.प्र.
४ देखो 'दुआ' (रू.भे.) उ०—१ नै जोगी री सिवकौ धारियौ। तरै जोगी खुसी हुय दवा दीनी।—नैणसी
उ०—२ रखी वारतां पूछी—तरै आप सारी ही क्रम कथा कही। तरै रखी दवा कर वर दीनौ।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

दवाइती—देखो 'दवायती' (रू.भे.)

दवाई—१ देखो 'दवा' (१,२) (रू.भे.) उ०—हकीम वैद्य सब पचि हारया, दीनी वहुत दवाई। जांण असाध्य व्याध जगदंवा, अंवा वांसै आई।—मे.म.

२ देखो 'दुहाई' (रू.भे.)

दवाईखांनौ, दवाखांनौ-सं०पु० [अ० दवा+फा० खाना] दवा मिलने का स्थान, औषधालय।

दवाग—१ देखो 'दावाग्नि' (रू.भे.) २ देखो दुवागौ (रू.भे.)

उ०—ऊपर खांन तणौ दळ आया, अर निरदळता कमंध अछाया। ऊठी वाग दवाग अलल्ले, हेवै मार लियौ हरवल्ले।—रा रू.

३ देखो 'दुहाग' (रू.भे.) उ०—१ वड़वड़िया ढोल ऊपड़ी वागां, दैण अपछरां घरां दवाग। वासग तणी डीकरी वरवा, पड़ियौ कोयर मांय प्रयाग।—प्रयाग राठौड़ रौ गीत

उ०—२ चवदै सै चौकड़ी धू कूं वरती, माता कहै समझाई। आंपां तप कियौ नहीं भव आगलै, जब राजा दवाग दिराई।

—स्री हरिरांमजी महाराज

दवागण—देखो 'दुहागण' (रू.भे.) उ०—दवागण लागै सवागण रै पाय। मोरै सरीसी कर मोरी माय।—अज्ञात

दवागि, दवागिन, दवाग्नि—देखो 'दावाग्नि' (रू.भे.)

उ०—सोचंत मोहकम साह, सुख छूट ऊठ सदाह। अति हिंदू भड़ वड़ आगि, दिसि असट जांणि दवागि।—रा.रू.

दवागीर, दवागीरू-वि० [अ० दुआ+फा० गो] १ दुआ देने वाला, आशीर्वाद देने वाला। उ०—१ महाराज के दवागीर अैसे अैसे कवंध।—बुधजी आसियौ

उ०—२ दवागीरूं का सुरतर दावागीरूं का साल। सब राजूं का सिरपोस महाराजा 'अभमाल'।—सू.प्र.

२ शुभचिंतक. ३ कवि. ४ याचक (अ.मा.)

रू०भे०—दवांगीर।

दवाजौ-वि० [अ० दुआ+फा० गो] १ आशीर्वाद देने वाला।

उ०—स्री विजयदेव तपगछराजा, स्री विजयसिंह गुरु वड दवाजा। वाचक उदय विजय प्रणीता, पास जिनवर तणी राज गीता।

—प्राचीन फागु संग्रह

[?] २ डेरा, पड़ाव ? उ०—तरै पंवारै नीमाज लूटी। सोनै सिलौ हुवौ। डूंगरसी कन्है पुकार गई। तरै डूंगरसी वैस रह्यौ। वाहर कांई की नहीं। तरै पंवारै दीठौ—अठै खाली मैदांन। तरै सवारै जैतारण माथै दवाजा कीया नै परधांन दोय मेलिया—म्हांनुं वेटी परणावौ कै म्हे जैतारण भूंवस्यां।—राव मालदे री वात

रू०भे०—दिवाजौ।

दवात-सं०पु० [अ०] १ स्याही रखने का पात्र। उ०—सरै ल्यावौ ल्यावौ कलम दवात, कोई लिख परवांणौ म्हारै गळ वांधौ।—लो.गी.

रू०भे०—दवात।

यौ०—दवात-कलम।

दवात-पूजा-सं०स्त्री० [अ० दवात+सं० पूजा] १ दीपावली और होली के बाद पड़ने वाला तीसरा दिन. २ इस दिन दवात की पूजा की जाती है।

दवादस—देखो 'द्वादस' (रू.भे.) उ०—एक अग्र चित सुध आराधै, सेवा वरस दवादस साधै।—सू.प्र.

दवादसी—देखो 'द्वादसी' (रू.भे.) उ०—जैतारण सिर आवियौ, ऊदा ले जगरांम। काती क्रिसण दवादसी, पुर घेरियौ दुगांम।—रा.रू.

दवादसौ—देखो 'द्वादसौ' (रू.भे.)

दवादस्स—देखो 'द्वादस' (रू.भे.) उ०—लहै अंगद दवखण माग लीधा। दवादस्स सेनापति लार दीधा।—सू.प्र.

दवानल—देखो 'दावानल' (रू.भे.) उ०—ठहै दवानल ठठर, झोकि पिंट सांगी झाळां। खोभ गिरंद खोहरां, लिया मोरचां लंकाळां।

—सू.प्र.

दवापर, दवापुर—देखो 'द्वापर' (रू.भे.)

दवावैत—देखो 'दवावैत' (रू.भे.) उ०—दवावैत मझि दाखियौ, इमड़ौ राज अपाल। जोधांणै जोधांण-पति, मांणै धर 'अभमाल'।

—सू.प्र.

दवायती-सं०स्त्री०—अनुमति, आज्ञा, इजाजत।

उ०—१ जीव उवारणौ चाहौ तौ म्हास जावौ सो भागलां लार आवै नहीं, घर लूटण री दवायती दी सो इण नै वीर री स्त्री है सो धन रौ इचरज नहीं म्हासण रौ कयौ सो आं ऊपरै दया आई।

—वी.सी.टी.

उ०—२ जठै चतरू जाय लिखमीदास नूं वतळावै है म्हांनूं चंद्रावती वाई सूं मिळण री दवायती दीजै।—र. हमीर

रू०भे०—दुआइती, दुआती, दुवाइती, दुवाती, दुवायति, दुवायती।

दवार—देखो 'द्वार' (रू.भे.) उ०—गाजै विच गिर झंगरां, सीहां भ्रिगां सिरदार। कांपै गज चढ़ काळ ज्वर, वाघा राज दवार।—वां.दा.

दवारका—देखो 'द्वारका' (रू.भे.)

दवारट—देखो 'वारहठ' (रू.भे.) उ०—चारणां, वामणां, भटां, अघटां ओहटां चेळा, दवारटां खैरसटां प्रगटां 'अजीत'। केइकां सुभटां वीना कुभटां फुगटां कीनी, आगाहटां वटांपटां न लोपी 'अजीत'।

—अज्ञात

दवारी-सं०स्त्री० [सं० दव=वन+अरि] दावाग्नि।

दवारौ—१ देखो 'द्वार' (अल्पा. रू.भे.) उ०—विध हलै वीर महावलं, गह वाल हूंत दमंगळ। दिल अभय केकंधा दवारै, गजै सुर गहरं।

—रा.रू.

२ देखो 'द्वारौ' (रू.भे.)

दवाळ—देखो 'द्वाळी' (रू.भे.) उ०—वारह मत तुक आठ प्रत, आख वीपसां अंत। छौनूं मत दवाळ प्रत, यूं गोखौ आखंत।—र.ज.प्र.

दवाल—देखो 'दीवार' (रू.भे.) उ०—गजां रत पोट, पड़ि चोट तंवागळां, वचण अरि ओट लै विसा वीसै। धचवड़ां गहै मन-मटो

ज्यां सिर घसै, दवालां कोट सैंलोट दीसै।—अनोपसिंघ सांदू

दवाळी-सं०स्त्री० (देश०) तलवार लटकाने का वह उपकरण जिसे कमर में बांधा जाता है। उ०—यौं मद्दल भुजबंध सो, सम सज्ज सुहाया। हारी दवाळी दोउ घां, उर अंतर आया।—वं.भा.

दवाळौ-सं०पु०—१ देखो 'देवाळौ' (रू.भे.)

उ०—दुसहां दन दन वढ़ै दवाळौ, सैणां वित वाळौ दरसाव। मैं भाळचौ थारै महाराजा, पूरब तप वाळौ प्रभाव।—किसनसिंह बारहठ

२ देखो 'द्वाळौ' (रू.भे.) उ०—अरघ दवाळौ आंकणी, बीजो अरघ बखांण। अरध भाखड़ी कवि अखै, जुगत त्रिहुं विघ जांण।—र.ज.प्र.

दवावैत-सं०स्त्री० [अ० वैंत] राजस्थानी भाषा की गद्य रचना विशेष।

वि०वि०—यह दो प्रकार की होती है—१ शुद्ध-बंध अर्थात् पद-बंध जिस में अनुप्रास मिलाया जाता है. २ गद्य-बंध जिस में अनुप्रास नहीं मिलाया जाता है।

रू०भे०—दवावैत, वेदवावैत।

दवासु, दवासू, दवासौ-सं०पु०—नगाड़ा ?

उ०—१ डिगमगै धरण मग डाक भैरूं डमक, झूळमिळ अच्छर मग वोम ऊपर झमक। दवासु अतर झड़ दुंग तोड़ा दमक, चडै दळ घटा सम वीज सावळ चमक।—रांमलाल बारहठ

उ०—२ वाजै जूंझरा दवासू फौजां आंमी सांमी चडै वादां, उभै ओड़ उडीकै 'अजा' रा वटां आज। साजां वीच थारै भुजा दइ लाजां पातसाह, राजा बोल किसा नैं दिली रौ देसी राज।

—वखतौ खिड़ियो

दवि-सं०स्त्री० [सं० दव] दावाग्नि, दावानल।

उ०—सव्वे भला मांसडा, पण वड्साह न तुल्ल। जे दवि दाधा रूंखडां, तीहं माथइ फुल्ल।—रा.सा.सं.

दविग्रोड़ौ—देखो 'दवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दवियोड़ी)

दवीयण—देखो 'दुरवचन' (रू.भे.) उ०—गजसिंघोत भूप घन गाढम, ततखण माच वनै रणताळ। दवीयण मुंह काढ़ंतै दरसी, मुगळ परै काढ़ी प्रतमाळ।—नरहरदास बारहठ

दवैया-सं०पु०—प्रत्येक चरण में १६ और १२ की यति से कुल २८ मात्राओं का छंद विशेष जिस के अंत में गुरु होता है।

दव्व—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) (जैन) उ०—सो गुरु सुगुरु जु सील धम्म निम्मळ परिपाळइ। सो गुरु कुगुरु जु दव्व संग विसंम सम भणि टाळइ।—ऐ.जै.का.सं.

दस-सं०पु० [सं० दश] १ पांच की दूनी संख्या. २ दस की संख्या का सूचक अंक—१०।

३ देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—आज घरा दस ऊनम्यउ, काळी घड़ सखरांह। उवा धण देसी ओळंबा, कर कर लांबी बांह।—ढो.मा.

वि०—जो गिनती में नौ से एक अधिक हो, पांच का दूना।

रू०भे०—दह, दहि, दिहि।

दसकंठ, दसकंद, दसकंघ, दसकंघर-सं०पु० [सं० दशकंठ, सं० दश+स्कंध] रावण। उ०—१ कळह रचै दसकंघ, नवग्रह बंघ निवारियौ। हुवा धनुक गुण शबद ह्वं, गतमद जग मदगंघ।—बां दा.

उ०—२ जोय घर लंका जेण, सोना री हूंती सरव। दसकंघर रै मुख दैण, मिळियौ रतौ न मोतिया।—रायसिंह सांदू

रू०भे०—दहकंध, दहकंधर।

दसक-सं०पु० [सं० दशक] दस का समूह। उ०—जिकण झकट में जुज्झार होय एक अयुत तीन हजार सेना रै साथ अजमेर रा अनीक में सांमंतां रौ दसक खेत पड़ियौ।—वं.भा.

दसकत, दसकत्त-सं०पु० [फा० दस्तख़त] हस्ताक्षर, दस्तखत।

उ० —१ इम दसकत आविया, देखि वाचिया सयद्दां। करै हुकम विण कही, मुलक नह दियै मरद्दां।—सू.प्र.

उ०—२ क्रोध में ववर नह अरज कीघ। दसकत्त नकल फुरमांण दीघ।—सू.प्र.

दसकरम-सं०पु० [सं० दशकर्म] गर्भाधान से ले कर विवाह तक के दस संस्कार।

दसकोसी-सं०स्त्री० [सं० दशकोषी] रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक। (संगीत)

दसखीर-सं०पु० [सं० दशक्षीर] सुश्रुत के अनुसार इन दश प्राणियों का दूध—गाय, बकरी, ऊँटनी, भेड़, भैंस, घोड़ी, स्त्री, हथनी, हिरनी और गदही।

दसग्रीव-सं०पु० [सं० दशग्रीव] रावण।

दसचरण-सं०पु० [सं० दश+चरण] रथ (डि.नां.मा.)

दसजोगभंग-सं०पु० [सं० दशयोगभंग] फलित ज्योतिष में एक नक्षत्रवेध जिस में कोई शुभ कर्म नहीं किया जाता है।

दसण-सं०पु० [सं० दशन] दांत। उ०—१ दसण निपाप करिस दांमोदर, आणंद तूझ हसै गिरवर-धर। अहर निपाप करिस अघ-वारण, मुळकै तूझ प्रेम मधु मारण।—ह.र.

उ०—२ स्यांमा पातळ दसण दमकणा अधरे बिंबां। झुकती पीण कुचां घण चालै धीर नितंबां।—मेघ.

दसणांण-सं०पु० [सं० दशानन] रावण, दशानन।

दसत-सं०स्त्री० [फा० दस्त, मि०सं० हस्त] १ हाथ। उ०—दसत चाप अरु रास दसत्तां। महा प्रबळ नदि सुजळ मसत्तां।—सू.प्र.

२ पतला विरेचन।

[फा० दहशत] ३ भय, डर। उ०—जरद पोसां कड़ा भीड़ रोसां झड़ै, पोह वगत नकीवां तणा हाका पड़ै। घार थारौ दसत सतारौ घड़घड़ै, राज रौ नगारौ आज खारौ रुड़ै।

महाराजा मांनसिंह (जोधपुर) रौ गीत

रू०भे०—दस्त।

दसतगीर-वि० [फा० दस्तगीर] १ सहारा देने वाला, सहायक, मदद-

गार। उ०—पीर पैगंबर दसतगीर, सब हाजर बंदे।
—केसोदास गाडण

२ हाथ से काम करने वाला।
रू०भे०—दस्तगीर।

दसतांन, दसतांनौ—देखो 'दस्तांनौ' (मह., रू.भे.) उ०—झंडे बाहरि गड्ढि कें, धुज दंट झुकाया। फूल दराया सांन पें, असि बाढ़ चिराया। सिल्लें खांना खुल्लि कें, वर हेति बराया, तोप वक्कतर ओप कें, दसतांन दिपाया।—वं.भा.

दसतावेज—देखो 'दस्तावेज' (रू.भे.)

दसतावेजी—देखो 'दस्तावेजी' (रू.भे.)

दसतूर—देखो 'दस्तूर' (रू०भे०)
उ०—१ वेळा वित्त वगसण वीरपुरा, निज दातार चढ़ंतै नूर। ऊतर मेह न जावै अहळो, दखणी वाव तणो दसतूर।—ओपो आढ़ो
उ०—२ आंमदांनी इक दोय, अन तीसरी अवाई। दिली तणा दसतूर, सरा तोरा पतिसाई।—सू.प्र.
उ०—३ जिका पातसाह री दसतूर जिका ही वसत वा आदमी दोढ़ी में जाय जिणां नूं देख नै जावा देवै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

दसतूरी—देखो 'दस्तूरी' (रू.भे.) उ०—असै तमासै अनेक भांति-भांति पातिसाहूं की दसतूरी की सिकार। हौसनायकां की जीवन स्री महाराजाजी रीझवार।—सू.प्र.

दसतोदर-सं०पु० [सं० दस्तोदर=कृशोदर, दसु-उपक्षये] कुवेर (नां.मा.)

दसतौ—१ देखो 'दस्तांनौ' (रू.भे.) उ०—१ माथै टोप सनाह तन, कर दसता रिण काज। मावड़िया सोमैं नहीं, सूरां हूंदी साज।
—वां.दा.
उ०—२ हजार मैंखी दसतो हाथ में पहरियां जैमलजी रात रा तीनूं पहरां री चोकी में चित्तोड़ आप फिरता। संग्रांम नांमा बंदूक अकबर रा हाथ री छूटी गोळी जैमल रै लागी।—वां.दा.ख्यात
२ देखो 'दस्तौ' (रू.भे.)

दसत्तूर—देखो 'दस्तूर' (रू.भे.) उ०—सिरी गंग रो नीर सन्नांन सारू। दसत्तूर सिंदूर कप्पूर दारू।—मे.म.

दसदिनेस-सं०पु० [सं० दिनेश] सूर्य (अ.मा.)

दसदोस-सं०पु० [सं० दशदोष] १ राजस्थानी में काव्य के ये दस दोष माने हैं—१ अंध, २ छबकाळ, ३ हीण, ४ निनंग, ५ पांगळो, ६ जात विरुध, ७ अपस, ८ नाळछेद, ९ पखतूट, १० वहरो।

दसद्वार-सं०पु० [सं० दशद्वार] शरीर के दस छिद्र—कान २, आंखें २, नाक २, मुंह, गुदा, लिंग और ब्रह्मरंध्र।

[illegible]धा-वि० [सं० दशधा] दश प्रकार का।

[illegible]-सं०पु० [सं० दश+रा. घू=शिर] रावण, दशानन।
उ०—हल हल्लिय लंक गढ़ बंकसो, दस-घू पै हल काहल्लिय। हल्लिय पताग गजराज पै, विजै कटक राघव हल्लिय।—र.ज.प्र.

दसन—देखो 'दशण' (रू०भे०)

दसनच्छद-सं०पु० [सं० दशनच्छद] होंठ।

दसनबीज-सं०पु० [सं० दशनवीज] अनार।

दसनवसनांगराग-सं०स्त्री० [सं० दशनवसनांगराग] ६४ कलाओं में से एक।

दसनरोग-सं०पु० [सं० दशनरोग] दांतों का रोग (व.स.)

दसनांम, दसनांमी-सं०पु० [सं० दशनाम, दशनामी] सन्यासियों का एक वर्ग जो अद्वैतवादी शंकराचार्य के शिष्यों द्वारा चलाया गया।
वि०वि०—शंकराचार्य के पद्मपाद, हस्तामलक, मंडन और तोटक ये चार शिष्य थे, इन चारों के दश शिष्य थे, इन्हीं दश शिष्यों के नाम से सन्यासियों के दश भेद चले जो—तीर्थ, आश्रम, वन, आरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी हैं।

दसप-सं०पु० [सं० दशप] जो राजा की ओर से दस ग्रामों का अधिपति या शासक बनाया गया हो।

दसपधण, दसपधण-सं०पु० [सं० दशापधन, दशेन्धन] दीपक (ह.नां.)

दस-भूत-वर-सं०पु०यौ० [सं० दश-भूत-वर] सत्य, सांच (अ.मा.)

दसम-सं०स्त्री० [सं० दशमी] चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष की दशमी तिथि।
रू०भे०—दसमि, दसमी।

दसमउ—देखो 'दसमौं' (रू.भे.) (उ.र.)

दसमथ, दसमथ्थ—देखो 'दसमाथ' (रू.भे.)
उ०—१ मथ रिण उदध मांण दसमथ का, आपण सरण भभीखण अथका। सोव्रन गढ़ जस ओप समथ का, क्रपा कोप आखै दसरथ का।—र.ज.प्र.
उ०—२ दस अठ अठ छांम चव विस्रांमं, छंद सुनायं तिरभंगी। रवुनाथ समथ्थं हणि दसमथ्थ, रखि दळ गथ्थं रिण संगी।
—र.ज.प्र.

दसमभाव-सं०पु० [सं० दशमभाव] फलित ज्योतिष में एक जन्म लग्नांश कुंडली में लग्न से दसवां घर।

दसमलव-सं०पु० [सं० दशमलव] वह भिन्न जिस के हर में दश या उसका कोई घात हो।

दसमांस-सं०पु० [सं० दशमांस] दसवां हिस्सा, दसवां भाग।

दसमाथ-सं०पु० [सं० दश+मस्तक] रावण।
उ०—दसमाथ भण समाथ भुज रवुनाथ दीन दयाळ। ग्रह ग्राह ग्रीधक बंध तैं गत स्रवण भाल विसाळ।—र.ज.प्र.
रू०भे०—दसमथ, दसमथ्थ, दहमथ, दहमाथ।

दसमि, दसमी—देखो 'दसम' (रू.भे.)

दसमुख, दसमुखि, दसमुखो-सं०पु० [सं० दशमुख] रावण।
उ०—दसमुखो हुकम स्रीमुखि दीयौ, वनचर पूछि विसतरौ।
—रांमरासौ

दसमुदरा-सं०स्त्री० [सं० दशमुद्रा] मुद्रा योग के अन्तर्गत दस प्रकार की मुद्राएं—१ महामुद्रा, २ महावंध, ३ महावेध, ४ खेचरी, ५ उड्डि-

यान, ६ मूलवंध, ७ जालंधरवंध, ८ विपरीतकरणी, ६ वज्रोली, १० शक्ति-चालन (हठयोगप्रदीपिका)।

रू०भे०—दसमुद्रा।

दसमुद्रका—देखो 'दसमुद्रिका' (रू.भे.) (व.स.)

दसमुद्रा—देखो 'दसमुदरा' (रू.भे.)

दसमुद्रिका-सं०स्त्री० [सं० दशमुद्रिका] आभूषण विशेष।

उ०—स्रोणीसूत्र कांचीकलाप रसना किरीट चूडामणि। मुद्रानंतक दसमुद्रिका अंगुळीयक अंगूथळा।—व.स.

रू०भे०—दसमुद्रका।

दसमूळ-सं०पु० [सं० दशमूल] दश पेड़ों की छाल या जड़ जो दवा के काम आती है।

वि०वि०—सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी और गोखरू इन पांचों को लघु पंचमूल कहते हैं तथा बेल, कुम्भेर, पाढल, अरनी और अरलू इन पांचों को बृहत्पंचमूल कहते हैं। लघुपंचमूल और बृहत्पंचमूल को मिलाने से दशमूल बनता है।

दसमौं-वि० [सं० दशम:] (स्त्री० दसमी) जिस का स्थान क्रम से नौ के बाद हो, दसवां। उ०—पुत्र दसमौं चित सुबुधि प्रकासी, भूप मुकट मिण खळां अमासी।—सू.प्र.

सं०पु०—मृत्यु के पश्चात् दसवें दिन होने वाला कर्म-कांड।

रू०भे०—दसवौं।

दसमौं-दुआर, दसमौं-द्वार-सं०पु०यौ० [सं० दशम:+द्वार] शिर के ऊपर तालू के पास का रंध्र छेद जो बंद रहता है, ब्रह्म रंध्र, ब्रह्म द्वार। उ०—१ सोम दिवाकर साखि करि, दाखी दसमइ-दुआरि। —मा.कां.प्र.

उ०—२ नौमी आरती नौ दरवाजा, खिड़की बंद करै सोइ राजा। दसमी आरती दसमैं-द्वारै, अरस परस मिळै रांम प्यारै।

—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—दसवौं-द्वार।

दसमौंसाळगरांम-सं०पु० [सं० दशम:+शालिग्राम] महान् योद्धा को जनता द्वारा दी जाने वाली एक उपाधि। उ०—राव कानड़ दे सांवतसी रौ जाळोरधणी हुवौ, दसमौंसाळगरांम गोकळीनाथ कहांणी। संवत १३६८ जाळोर रै गढ़रोहै अलोप हुवौ।—नैणसी

दसमौळि, दसमौळी-सं०पु० [सं० दशमौलि] रावण।

दसरंग-सं०पु० [सं० दश+रंग] मालखंभ की एक प्रकार की कसरत।

दसरथ-सं०पु० [सं० दशरथ] एक रघुवंशी राजा जो अयोध्या पर राज्य करते थे। मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र इन्ही के ज्येष्ठ पुत्र थे।

दसरथतण, दसरथरावउत, दसरथसुत-सं०पु० [सं० दशरथ+तनय, दशरथराज+पुत्र, दशरथ+सुत] राजा दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र (अ.मा.) उ०—वेणी पवित्र करिस लिखमीवर, मसतग चाढ़ै तुळसी मंजर। तुच इम पवित्र करिस दसरथ-तण, चरच विलेप करे हर चंदण।—ह.र.

दसरथि—देखो 'दसरथ' (रू.भे.)

दसरात्र-सं०पु० [सं० दशरात्र] १ एक यज्ञ जो दश रात्रियों में समाप्त होता था. २ दश रातें।

दसरावौ-सं०पु० [सं० दशहरा] १ आश्विन शुक्ला दशमी को मनाया जाने वाला त्यौंहार, इस दिन रावण मूर्ति के रूप में मारा जाता है, विजयादशमी। उ०—१ 'सांगण' दूसरा अभनमा 'उदैसी' 'अमरा,अंबर अड़ियौ। दै आसीस तनै दसरावौ, नवरोजै नां वड़ियौ।

—महारांणा अमरसिंह रौ गीत

उ०—२ तठा पछै आपही वडी जमीयत कर नै दसरावै चढ़ नै रांणा रै मुजरै गयौ नै मेवाड़ री चाकरी करण लागौ।—नैणसी

२ विजयादशमी के दिन भेंट किया जाने वाला रुपया. ३ चैत्र-शुक्ला दशमी का दिन (त्यौंहार) ४ ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तिथि जिसे गंगा दशहरा भी कहते हैं।

रू०भे०—दसराहौ।

दसराहौ—देखो 'दसरावौ' (रू.भे.) उ०—१ दसराहा लग भी रह्यउ, माळवणी री प्रीत। वरिखा-रुति पाछी वळी, आवी सरद सुचीत।

—ढो.मा.

उ०—२ आसोज रै दसराहै नूं जुहार करणै नूं आवां तद सारां नूं भेळा कर कह्यौ।—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता

दसलियौ—देखो 'दसा रौ दा'ड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

दसळौ, दसलौ-सं०पु० [सं० दश+रा०प्र०लौ] ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की दश बूंटियां हों।

दसवन-सं०पु० [सं० दुश्चयवन:] इन्द्र (अ.मा.)

दसवाजी-सं०पु० [सं० दशवाजिन्] चन्द्रमा।

दसवाहु-सं०पु० [सं० दशवाहु] शिव, महादेव।

दसवीर-सं०पु० [सं० दशवीर] एक सत्र या यज्ञ का नाम।

दसवौं—देखो 'दसमौं' (रू.भे.)

(स्त्री० दसवीं)

दसवौं-द्वार—देखो 'दसमौं-द्वार' (रू.भे.) उ०—१ मेर डंड का मारग लाधा, उलटा पवन चढ़ाया। दसवें-द्वार निरंजन जोगी, हम गुरु गम तें पाया।—ह.पु.वा.

उ०—२ त्रिवेणी तटि ताळी लागी, मन थिर पवन सुखमनां जागी। दसवेंद्वारि वस्या मन जाय, वंक नाळि अम्रत रस खाय।—ह.पु.वा.

दससतकमळ-सं०पु० [सं० दशशतकमल] सहस्रार्जुन। उ०—रज रज हुओ 'जगौ' भरियौ रज, भेळवा मुगत न जांणै भेव। दससतकमळ लयण दस सहँसा, दससत करग वादिया देव।—जगा रावत रौ गीत

दससहंस, दससहसौ, दससहस, दससहसौ, दस-साहंस, दससाहंसौ-सं०पु० यौ०—गहलोत वंश के क्षत्रियों के लिए डिंगल गीतों में प्रयुक्त होने वाला उपाधिस्वरूप शब्द। उ०—१ भलो रांण सगरांम इम अखड़ची मुख भणे, दुजड़हत दससहंस वोल दीधौ। पदमहत मयंक चौ ग्रहण व्है अधपहर, कलम चौ ग्रहण दिन तीस कीधौ।

—महारांणा सांगा रौ गीत

उ०—२ गढ़ गढ़ पत गाजै गहलोतां, कुळ सारां में येम कह्यौ।
समदां पर न गौ दससहंसौ, रांम बांण रै मांह रह्यौ।
—बापा रावळ री गीत

उ०—३ नवसहंसां दससाहंसां, मेछ' गया तज भोम। ग्रहियै री
ग्रदसा गई, ज्यां उग्रहियै सोम।—रा.रू.

दससिर–सं०पु० [सं० दश+शिरस्] रावण। उ०—१ परगट फट तट पड़त पट, सरस सघण तन स्यांम। गह भर समपण कनक गढ़, रहचण दससिर रांम।—र.ज प्र.

उ०—२ सभि ग्रसंख दळवळ सवळ, दससिर ग्रावियौ ग्रवनाड़।
—सू.प्र.

दससिरधर–सं०पु० [सं० दश+शिरस्+धारिन्] रावण।

दससीस–सं०पु० [सं० दशशीर्ष] रावण (ग्र.मा.)

उ०—वध दोट भुज भुज वीस रा, सिर वोट कर दससीस रा।
—र.रू.

रू०भे०—दहसीस।

दसस्यंदन–सं०पु० [सं० दशस्यंदन] राजा दशरथ।

दसांग–सं०पु० [सं० दशांग] पूजन में सुगंध के निमित्त जलाने का एक धूप जो दस सुगंधित पदार्थों के मेल से बनता है।

रू०भे०—दिसांग।

दसांण—देखो 'दसारण' (रू.भे.) उ०—पूगां देस दसांण केवड़ा फूल वनां में। महकीजै मुळकाय धोळकी ग्राभ जिणां में। माळा विरछां मांझ घणेरा पंछी घालै। वन जांमूनां जेथ हुंसला दिन दो मालै।
—मेघ.

दसांधी—देखो 'दसूंद, दसूंदी' (रू.भे.)

दसा–सं०स्त्री० [सं० दशा] १ ग्रवस्था, स्थिति॰ हालत।

उ० मोटी माफी मांग ग्रमलदारां सूं ग्रड़स्यां। देस सुधारण दसा लाख विध थांसूं लड़स्यां।—ऊ.का.

२ मनुष्य के जीवन की ग्रवस्था।

वि०वि०—ये दस मानी गई हैं—गर्भवास, जन्म, बाल्य, कौमार, पौगंड, यौवन, स्थाविर्य, जरा, प्राणरोध ग्रौर नाश। मतान्तर से ये छः भी मानी जाती हैं—शैशव, कौमार, कैशोर, यौवन, वार्धक्य ग्रौर ग्रंतिम। ग्रंतिम को राजस्थानी में छठी भी कहते हैं।

३ विरही की ग्रवस्था जो साहित्य के ग्रन्तर्गत मानी जाती है; ये दस प्रकार की होती हैं—१ ग्रभिलाप, २ चिंता, ३ स्मरण, ४ गुण-कथन, ५ उद्वेग, ६ प्रलाप, ७ उन्माद, ८ व्याधि, ९ जड़ता, १० मरण। ४ दीपक की वत्ती।

(मि० दसा-सुत)

५ वर्णसंकर संतान का वंश. ६ देखो 'दिसा' (रू.भे.)

७ मनुष्य के जीवन में फलित ज्योतिष के ग्रनुसार प्रत्येक ग्रह का नियत भोग काल।

वि०वि०—दशा दो प्रकार से निकालते हैं, पहले के ग्रनुसार मनुष्य की ग्रायु को १२० वर्ष की मान कर जिस से निर्धारित दशा विंशोत्तरी कहलाती है तथा दूसरे के ग्रनुसार मनुष्य की ग्रायु को १०८ वर्ष की मान कर जिस से निर्धारित दशा ग्रष्टोत्तरी कहलाती है। पूरी ग्रायु के समय में प्रत्येक ग्रह के भोग के लिये वर्षो की संख्या ग्रलग-ग्रलग नियत है जैसे ग्रष्टोत्तरी रीति के ग्रनुसार सूर्य की दशा ६ वर्ष, चंद्रमा की १५ वर्ष, मंगल की ८ वर्ष, बुध की १७ वर्ष; शनि की १० वर्ष, वृहस्पति की १९ वर्ष, राहु की १२ वर्ष ग्रौर शुक्र की २१ वर्ष मानी गई है। जन्म लेते ही कौनसी दशा शुरू होती है यह जन्मकाल के नक्षत्र के ग्रनुसार जाना जाता है।

रू०भे०—दछा, दिसा, दीसा।

दसाग्रवतार–सं०पु० [सं० दशावतार] १ प्रकाश, ज्योति, रोशनी (ह.नां.) २ दीपक (ह.नां.)

दसाइग्रां, दसाइयां–सं०स्त्री०वहु व० [सं० दश+ग्रहानि, ग्रप० दसाहाइ] लग्न के बाद वर-वधू को कन्या पक्ष की ग्रोर से दिये जाने वाले दस भोज (श्रीमाली)

रू०भे०—दसैया, दहियां।

दसाकरख, दसाकरस–सं०पु० [सं० दशाकर्ष] दीपक (ह नां.)

दसाणण, दसाणणि–सं०पु० [सं० दशानन] दस मुखों वाला, रावण।

उ०—लंका मार दसाणण लेणौ। दांन वभीखण सेवग देणौ।
—र.ज.प्र.

दसातीर–सं०स्त्री०—पारसी लोगों की एक धार्मिक पुस्तक (मा.म.)

दसादहाड़ौ, दसादा'ड़ौ—देखो 'दसारोदा'ड़ौ (ग्रल्पा., रू.भे.)

दसाधिपति–सं०पु० [सं० दशाधिपति] १ फलित ज्योतिष में दशाग्रों के ग्रधिपति ग्रह. २ दस सैनिकों या सिपाहियों का ग्रफसर।

दसापत–सं०पु० [सं० दिशापति] दिक्पाल, दिग्पाल।

दसापवित्र–सं०पु० [सं० दशापवित्र] श्राद्ध में दान दिये जाने वाले वस्त्रादि।

दसापोत–सं०पु० [सं० दशा+पोत] १ प्रकाश (ग्र.मा.) २ दीपक।

दसाभव–सं०पु० [सं० दशाभव] १ दीपक (नां.मा.) २ ज्योति, रोशनी, प्रकाश (ग्र.मा.)

दसार–सं०पु० [सं० दशार्ह] १ कोष्ट्र वंशीय धृष्ट राजा का पुत्र. २ राजा वृष्णि का पौत्र. ३ वृष्णिवंशीय पुरुष. ४ वृष्णिवंशीय ग्रधिकृत देश।

दसारण–सं०पु० [सं० दशार्ण] १ विंध्य पर्वत के पूर्व दक्षिण की ग्रोर स्थित एक प्रदेश का प्राचीन नाम जिस में से हो कर धसान नदी बहती है। उ०—देस दसारण ते सुदांमा राजांन। पुत्री वि ग्रह्यौ तेह तणी एक भीम दीधी दांन।—नळाख्यांन

२ उक्त देश का निवासी या राजा. ३ तंत्र का एक दशाक्षर मंत्र. ४ जैन पुराण के ग्रनुसार एक राजा जिस ने तीर्थंकर के दर्शन के निमित्त जा कर ग्रभिमान किया था। तीर्थंकर के प्रताप से उसे वहां

१६७७२१६००० इंद्र तथा १३३७०५७२८००००००००० इंद्राणियां दिखाई पडीं और उसका गर्व चूर्ण हो गया। उ०—मोटा ही भ्रम कांम मैं, अधिकौ करै अदेख। दसारण री रिधि देख.नै, सक्र संज्यौ सुविसेख।—ध.व.ग्रं.

दसा-रौ-डोरौ-सं०पु०यौ०—सूत के दस तार का डोरा जो होलिका-दहन के समय होली की ज्वाला में से निकाला जाता है। तत्पश्चात् चैत्र कृष्ण दशमी के दिन जब स्त्रियाँ 'दसादा'ड़ा' का व्रत करती हैं तो इस तागे को सुपारी पर लपेट कर पीपल वृक्ष के पूजन के साथ इसकी भी पूजा करती हैं। तत्पश्चात् इस तागे को सावधानीपूर्वक सुरक्षित स्थान पर रख देती हैं।

दसा-रौ-दा'ड़ौ-सं०पु०यौ०—सधवा स्त्रियों के करने का एक व्रत विशेष जो होलिका-दहन के बाद दशवें दिन होता है। इसे सौभाग्यवती स्त्रियाँ दश वर्ष तक प्रतिवर्ष नियमपूर्वक करती हैं। दश वर्ष के बाद उद्यापन कर के व्रत को छोड़ देती हैं।

रू०भे०—दसादहाड़ौ, दसादा'ड़ौ।

दसावळ-क्रि०वि० [सं० दश+रा० प्र० वल-ओर] दशों दिशाओं में, चारों ओर। उ०—प्रथीमाल परमांण वधे चहुवांण तणौ वळ। तेण वंस वल्लाल दान दीपियौ दसावळ।—नैणसी

दसावहारी-सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

दसावीसौ-सं०स्त्री० [सं० दस+विंशति] लड़कों के खेलने का एक देशी खेल।

वि०वि०—इस में एक डंडा भूमि में गाड़ दिया जाता है। एक लड़का डंडे से दश कदम दूर खड़ा किया जाता है तथा दूसरा उस से विरुद्ध दिशा में डंडे से बीस कदम दूर खड़ा किया जाता है। डंडे के पास ही खड़े निर्णायक के संकेतानुसार दोनों एक साथ दौड़ते हैं। यदि दस कदम दूर वाला लड़का डंडे को ले कर दश कदम लौट जाय तब बीस कदम वाला उसे नहीं पकड़ सके तो दश कदम वाला विजयी होता है। दूसरी बार लड़कों को परस्पर बदल दिये जाते हैं अर्थात् बीस कदम दूर वाले को दश कदम दूरी की ओर तथा दश कदम दूर वाले को बीस कदम दूरी की ओर खड़ा कर दिया जाता है और इसी तरह पुनः दौड़ कराई जाती है। यदि एक लड़का दोनों बार विजयी होता है अर्थात् दश कदम की ओर नहीं पकड़ाने में तथा वही बीस कदम दूर खड़े होने पर दस कदम वाले को पकड़ लेने में सफल हो जाय तो वह विजयी होता है अन्यथा बराबर हो जाते हैं।

रू०भे०—दस्सौ-वीसौ (अल्पा.) दस्यौ-वीस्यौं।

दसासुत-सं०पु० [सं० दशा=बत्ती+सुत] दीपक, दीप, दीया। (ह.नां., नां.मा.)

दसासूळ—देखो 'दिसासूळ' (रू.भे.) उ०—दसासूळ भद्रा वितीपात महूरत दियौ। क्रमीयौ काळ चंद्रकाळ सनमुख कियौ। —रुपमणी हरण

दसास्वमेध-सं०पु० [सं० दशाश्वमेध] १ काशी के अन्तर्गत एक तीर्थ. २ प्रयाग में त्रिवेणी का एक घाट।

दसियौ-वि० [सं०दश+रा०प्र०यौ] १ आवारा, लोफर. २ बदमाश. ३ उपद्रवी. ४ धोखेबाज. ५ जो नौ के बाद पड़ता हो, दसवां।

सं०पु०—१ दसवां भाग. २ देखो 'दसौ' (३) (अल्पा., रू.भे.)

दसी—१ देखो 'दसा' (रू.भे.) (उ.र.) २ देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—जदी इतौ चूरमौ मता ले नीकळ्या, जो पा'ड़ दसी चाल्या। आगै चोर पा'ड़ मांहै था।—पंचमार री वात

दसु—देखो 'दसू' (रू.भे.) (ह.नां.)

दसुटण—देखो 'दसोटण' (रू.भे.) उ०—विरध वधाई नांव, समूरथ साख सगाई। व्याह विनायक वेळ, महोछव मेळ विदाई। पूजा-पाठ निराठ, वरै व्रनमाळा मोखी। जागण रातीजगां, दसुटण दायजां चोखी।—दसदेव

दसूंद, दसूंदी, दसूंध-सं०स्त्री० [सं० दशमांश या दशमान्धस्] १ राजाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली ब्रह्मभटों की उपाधि अथवा इस पदवी के उपलक्ष में राजाओं व सरदारों द्वारा ब्रह्मभटों को दिया जाने वाला द्रव्य या नेग।

सं०पु०—२ 'दसूंद' नेग प्राप्त करने वाला राव या ब्रह्मभट।

३ राज्य सरकार द्वारा कृषिउपज में लिया जाने वाला दसवां भाग। उ०—माळी कही म्हारौ बादसाह रोखड़ां री हांसिल नहीं लेवै, खेती री दसूंध लेवै छै।—नी.प्र.

वि०—'दसूंद' लेने वाला।

रू०भे०—दसूंध, दसांधी, दसौंधी।

दसू-सं०पु० [सं० दस्यु] १ चोर, डाकू (अ.मा.). २ शत्रु (अ.मा.)

रू०भे०—दसु।

दसूठण, दसूठण—देखो 'दसोटण' (रू.भे.) उ०—हिव दिन दसमइ आवियइ ए, करइ दसूठण प्रेम। सगा सही निहतरइ ए, असुचि उतारइ एम।—ऐ.जै.का.सं.

दसेंधण-सं०पु० [सं० दशा=बत्ती+इन्धनम्] दीपक (ह.नां.)

दसे'क-वि० [सं० दश] दश के लगभग।

दसोटण-सं०पु० [सं० दशोत्थान] पुत्र जन्म के दश दिन या दश मास बाद किया जाने वाला बड़ा भोज एवं उत्सव। उ०—१ कुंवर जायौ, वधाई बांटी, गुळ बांटियौ, नारेळ बांटिया, वडा उत्सव हुआ, दसोटण हुऔ।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ महाराज हिसार सूं रिणी पधारिया, जैसलमेरीजी रै कुंवर उपजियौ थौ तिण रै दसोटण ऊपर फौज सारी सूं मुसदी हिसार राख आया था।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

रू०भे०—दसुटण, दसूटण, दसूठण, दसौंठण।

दसोतरी-सं०स्त्री० [सं० दशोत्तरशतम्] सौ के बाद दिये जाने वाले दश, सौ के ऊपर दश।

दसौंठण—देखो 'दसोटण' (रू.भे.) उ०—साहुकार री छोटी वहु रै बेटौ

हुवौ । जद्दे उद्धव कियो पछै वडी वहु रा तौ प्यारी वेटा मांई री खवर नहीं पूछी । पछै दसौंठण कियौ ।—साहूकार री वात

दसौ-सं०पु० [सं० दशम्] १ दसवां वर्ष. २ दस का अंक—१० । ३ वर्णशंकर ।

रू०भे०—दस्सौ ।

अल्पा०—दसियौ ।

दस्ट, दस्टी—देखो 'अस्टि' (रू.भे.) उ०—निस अरध, समर मच निराताळ । किलकार दस्ट जोगण कराळ ।—रांमदांन लाळस

दस्तंदाजी-सं०स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप, दखल ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

दस्त—देखो 'दसत' (रू.भे.) उ०—उजव कि इरांनी गोल आप । पगताह तुरांनी दस्त चाप । वहलिम इलांम मझ कजळ वास । रुमी अरु हवसी दस्तरास ।—वि.सं.

दस्तगीर—देखो 'दसतगीर' (रू.भे.)

दस्तताळ-सं०पु०यौ० [फा० दस्त+सं० ताल] भुजाओं पर ताल लगाने की क्रिया । हाथ से थपथपाने की क्रिया । उ०—हणमंत रूप जगजेठू नै भुजंग दंडूं पर दस्तताळ दिया, मांनूं अनेक रणजीत त्रंबाळूं के सीस इक डंका क्रिया ।—सू.प्र.

दस्तपनाह-सं०पु० [फ़ा०] चूल्हे से आग निकालने का उपकरण, चिमटा ।

दस्तपोसी-सं०स्त्री० [फा० दस्तबोसी] हाथ चूमने की क्रिया ।

उ० —वीच में दूलची वैठौ थो सो ऊठ दस्तपोसी कर मिळियौ, पछै वैठा ।—दूलची जोइयै री वारता

क्रि०प्र०—करणी, लैणी ।

दस्तफोती-सं०पु०यौ० [फा०दस्त=हाथ+अ० फौती=मरने से संबंध रखने वाला] मारने के लिए, प्रहार करने की हाथ की स्थिति ? उ०—सो दोनूं रांम-रांम कीवी, दस्तफोती कर फरवांन री नकलां लीवी ।—गोपाळदास गौड़ री वारता

दस्तवंद, दस्तवंध-सं०पु० [फ़ा० दस्तवंद] १ स्त्रियों के हाथ की कलाई पर धारण करने का सोने का एक आभूषण. २ नृत्य का एक प्रकार ।

वि०—कर-वद्ध । उ०—आदम अरु वंभदेव मिळियंदे, आए सव दरियाखीरंदे । काहल दस्तवंध कुवरंदे, गिरीअरि गुजरांनूंदा ।

—र.ज.प्र.

दस्तवुगचौ-सं०पु० [फ़ा० दस्तवुक्चः] हाथ में रखने का थैला ।

उ०—इतरी पोसाक संध्या तांई तयार करवाय दस्तवुगचै मांही घाल ले आई ।—कुंवरसी सांखला री वारता

दस्तरि, दस्तरी-सं०स्त्री० कागज की बनी तख्ती ।

उ०—लेखउं करी लीजइ, राती जागइ, दस्तरि लिखीइ, वळी वळी एकत्र मेलीइं ।—व.स.

२ मारवाड़ राज्य का वह महकमा जिस में राज्य की खास-खास घटनाओं का विवरण लिखा जाता था ।

दस्तांन—देखो 'दस्तांनौ' (मह., रू.भे.)

दस्तांनी—देखो 'दस्तांनौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—यूं कही वाघं री वांह खोली, झाड़काई और कही जे म्हारी दस्तांनी में घणा ओरंगजेव छै, हजरत कासूं जांणै छै ।

—महाराजा जयसिंह आंमेर रै धणी री वारता

दस्तांनौ-सं०पु० [फ़ा० दस्तान:] १ हाथ का कवच, हस्तत्राण ।

२ हाथ की हिफाजत के लिये पहना जाने वाला एक विशेष वस्त्र ।

रू०भे०—दसतांनौ, दसतौ ।

अल्पा०—दस्तांनी ।

मह०—दसतांन, दस्तांन, दस्तौ ।

दस्ताएवज—देखो 'दस्तावेज' (रू.भे.)

दस्ताएवजी—देखो 'दस्तावेजी' (रू.भे.)

दस्तार-सं०स्त्री० [फ़ा०] पगड़ी, अम्मामा । उ०—अंवजी डामड़ा नूं वाजेराव पेसवै मारियौ । हैदरावाद री नवाव आपरै माथा सूं पाग उतार दीवी, कह्यौ—हमारा दस्तार भाई अंवकराव कूं मारा जिण कूं मार मैं पाग वांधूंगा, पछै वाजेराव नवाव सूं मिळियौ है । नवाब नूं राजी कियौ जद नवाब कह्यौ—मांग, तूठौ । इण कह्यौ—पाग वांध लीजै । नवाव पाग वांध लीवी ।—वां.दा.ख्यात.

दस्तावर-वि० [फ़ा०] जिस से दस्त आवे, विरेचक ।

दस्तावेज-सं०पु० [फ़ा०] वह कागज जिस में दो या कई आदमियों के वीच के व्यवहार की वात लिखी हो और जिस पर व्यवहार करने वालों के दस्तखत हों ।

रू०भे०—दसतावेज, दस्ताएवज ।

दस्तावेजी-वि० [फ़ा० दस्तावेज] दस्तावेज संबंधी ।

रू०भे०—दसतावेजी, दस्ताएवजी ।

दस्ती-वि० [फ़ा०] हाथ सम्बन्धी, हाथ का ।

दस्तूर-सं०पु० [फा०] १ नियम, कायदा, विधि. २ कानून, विधान. ३ परंपरा, रिवाज, रीति, रस्म, चाल, प्रथा. ४ व्यवहार, रविश. ५ कटौती, कमीशन. ६ लेने का अधिकार, हक. ७ पारसियों का पुरोहित जो उन के धर्मग्रंथानुसार कर्मकांड कराता है ।

रू०भे०—दसतूर, दसत्तूर ।

दस्तूरी-सं०स्त्री० [फ़ा०] कमीशन, हक, कटौती ।

वि०—वैधानिक, कानूनी ।

रू०भे०—दसतूरी ।

दस्तौ-सं०पु० [फा० दस्त:] १ वह जो हाथ में रहे या हाथ में आवे । २ किसी ओजार, शस्त्र आदि का वह हिस्सा जो हाथ में पकड़ा जाता है, मूठ, वेंट. ३ जग या डोगे आदि का हैंडिल. ४ (फूलों आदि का) गुच्छा, गुलदस्ता, मुट्ठा । उ०—एक दिन एक आदमी फूलां री दस्तौ नजर लायौ सो लीन्हौ ।—नी.प्र.

५ सिपाहियों का छोटा दल. ६ कागज के चौबीस तावों की गड्डी ७ टंटा, फिसाद, वखेड़ा ?

उ०—कठै ही टक वात सुणै तौ तुरत ग्राप जाय राजी कर दस्तौ मेट ग्रावै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

८ देखो 'दस्तांनौ' (रू.भे.)

रू०भे०—दसतौ, दिस्तौ ।

दस्यावड़-सं०स्त्री०—बुने हुए कपड़े के छोर का ग्राधा बुना हुग्रा भाग ।

दस्सण—देखो 'दरसण' (रू.भे.) उ०—भूप छभा भूपाळ, वदन दस्सण ग्रोमाहै। मिळ भेटै मुख राग, स तौ निज भाग सराहै।—रा.रू.

दस्सा—देखो 'दसा' (रू.भे.)

दस्सौ—देखो 'दसौ' (रू.भे.)

दस्सौ-वीस्सौ—देखो 'दसावीसौ' (रू.भे.) (शेखावाटी)

दह-सं०पु० [सं० ह्रद (ग्राद्यंत विपर्यय)] १ नदी में वह स्थान जहां पानी बहुत गहरा हो, नदी के भीतर का गड्ढा । उ०—गिड़ सूर तौ वन वाड़ियां नै डोहे है, ग्रर ऊंडा ऊंडा पहाड़ी नदियां रा दहां नै गजराज डोह रहिया छै।—वी.स.टी.

२ पोखर, गड्ढा। उ०—रैण में एक दह मेह रा पांणी सूं भरियौ दीठौ ।—नी.प्र.

३ बहुत गहरा ग्रौर बड़ा गड्ढा। उ०—१ मन तारै मन तिरै, मन लै पारि उतारै। मन चौरासी का जीव, फेरि ऊंडै दह मारै ।
—ह.पु.वा.

उ०—२ डाढ़ाळौ उठा सूं हाल दह ग्रायौ। संपाड़ौ कियौ। पछै ऊंची वरड़ी ऊपर ग्राय ऊभौ रहियौ। ऊभौ रहि नै स्री सूरजनारायण नूं ग्ररघ देण लागियौ।—डाढ़ाळा सूर री वात

४ कुंड, हौज ।

सं०स्त्री० [सं० दहन] ५ ज्वाला, लपट ।

वि० [सं० दशः, प्रा० दह] दस । उ०—१ दुख-वीसारण, मन-हरण, जउ ई नाद न हुंति। हियड़उ रतन-तळाव ज्यउं, फूटी दह दिसि जंति।—ढो.मा.

उ०—२ गइवर-गळइ गळत्थियउ, जहं खंचइ तहं जाइ। सीह गळ-त्थण जइ सहइ, तउ दह लक्खि विकाइ।—ग्र. वचनिका

दहकंध, दहकंधर —देखो 'दसकंध, दसकंधर' (रू.भे.) (ग्र.मा., नां.मा.)

उ०—१ जुधां टंकारिया धनख राघव ज तैं। जारिया दुसह दहकंध जेहा ।—र.ज.प्र.

उ०—२ ग्रटुके नह सकिया ग्रंगद, दहकंध दुवारै। दइतां इम दीसै ग्रंगद, ग्रंतक उणहारै ।—सू.प्र.

दहक-सं०स्त्री० [सं० दहन] १ ग्राग दहकने की क्रिया. २ ज्वाला, लपट. ३ लज्जा, शर्म ।

दहकणौ, दहकबौ-क्रि०ग्र० [सं० दहन] १ धधकना, जलना, प्रदीप्त होना. २ भयभीत होना, डरना। उ०—नगारां ठोर माथा धुकै नाग रा, ग्रकवकै रैण दहकै दली ग्रागरा। लोह लाट सुभट थट केण धक लागरा, विडंग काथा हुकै धका वजराग रा ।
—माधोसिंह सीसोदिया रौ गीत

३ शरीर का गरम होना, तपना ।

दहकणहार, हारौ (हारी), दहकणियौ—वि० ।

दहकवाड़णौ, दहकवाड़बौ, दहकवाणौ, दहकवावौ, दहकवावणौ, दहकवाववौ—प्रे०रू० ।

दहकाड़णौ, दहकाड़बौ, दहकाणौ, दहकावौ, दहकावणौ, दहकाववौ
—क्रि०स० ।

दहकिग्रोड़ौ, दहकियोड़ौ, दहक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दहकीजणौ, दहकीजबौ—भाव वा० ।

दहक्कणौ, दहक्कबौ—रू०भे० ।

दह-कमळ-सं०पु०यौ० [सं० दश+रा०कमळ=शिर] रावण, दसकंधर।

उ०—१ वहिया वाळ मुकाळ वुळ, हीया व्रद वंका। डारण सज्भै दहकमळ, वज्जे जस डंका ।—र.ज.प्र.

उ०—२ इकरां रांम तणी तिय रांवण, मंद हरेगौ दह-कमळ। टीकम सोहि ज पथर तारिया, जगनायक ऊपरा जळ ।—जमणजी बारहठ

दहकाड़णौ, दहकाड़बौ—देखो 'दहकाणौ, दहकावौ' (रू.भे.)

दहकाड़णहार, हारौ (हारी), दहकाड़णियौ—वि० ।

दहकाड़िग्रोड़ौ, दहकाड़ियोड़ौ, दहकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दहकाड़ीजणौ, दहकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

दहकणौ, दहकबौ—ग्रक०रू० ।

दहकाड़ियोड़ौ—देखो 'दहकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दहकाड़ियोड़ी)

दहकाणौ, दहकावौ-क्रि०स० [सं० दहन] १ धधकाना, जलाना, प्रदीप्त करना. २ भयभीत करना, डराना. ३ क्रोधित करना, भड़काना।

दहकाणहार, हारौ (हारी), दहकाणियौ—वि० ।

दहकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दहकाईजणौ, दहकाईजबौ—कर्म वा० ।

दहकणौ, दहकबौ—ग्रक०रू० ।

दहकाड़णौ, दहकाड़बौ, दहकावणौ, दहकावबौ—रू०भे० ।

दहकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धधकाया हुग्रा, जलाया हुग्रा, प्रदीप्त किया हुग्रा. २ भयभीत किया हुग्रा, डराया हुग्रा. ३ क्रोधित किया हुग्रा, भड़काया हुग्रा।

(स्त्री० दहकायोड़ी)

दहकावणौ, दहकाववौ—देखो 'दहकाणौ, दहकावौ' (रू.भे.)

दहकावणहार, हारौ (हारी), दहकावणियौ—वि०।

दहकाविग्रोड़ौ, दहकावियोड़ौ, दहकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दहकावीजणौ, दहकावीजबौ—कर्म वा० ।

दहकणौ, दहकबौ—ग्रक०रू० ।

दहकावियोड़ौ—देखो 'दहकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दहकावियोड़ी)

दहकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धधका हुग्रा, जला हुग्रा, प्रदीप्त. २ डरा हुग्रा, भयभीत. ३ (शरीर) गरम हुवा हुग्रा, तप्त ।

(स्त्री० दहकियोड़ी)

दहक्कणो, दहक्कबो, दहक्कवणो, दहक्कववो—देखो 'दहकणो, दहकबो' (रू.भे.) उ०—जगहत्थ जगत सिर जळहळै, दस द्रिगपाळ दहक्कवै। महिमाल छहां जिहां सातमों, चोथे पहोरे चक्कवै।—सू.प्र.

दहक्कवियोड़ो, दहक्कियोड़ो—देखो 'दहकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दहक्कवियोड़ी, दहक्कियोड़ी)

दहण—सं०स्त्री० [सं० दहन] १ जलने की क्रिया या भाव, दाह।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

२ अग्नि, आग (अ.मा.) उ०—जो नह आवै करण जुध, सुण बोलावो सीह। दाह हुवै नह दहण सूं, दिनकर हुवै न दीह।

—बां.दा.

३ एक रुद्र का नाम. ४ तीन की संख्या* ५ ज्योतिष में एक योग जो पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती इन तीन नक्षत्रों में शुक्र के होने पर होता है. ६ ज्योतिष में एक वीथी जो पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ नक्षत्रों में शुक्र के होने पर होती है।

वि०—१ नाश करने वाला। उ०—१ हरण कसट जन हर है, विमळ वदन रघुवर है। सरब सगुण सह सरसै, दनुज दहण भुज दरसै।—र.ज.प्र.

उ०—२ सर धनंख धरण कर दहण दैतां सधर। दुख नरक त्रास हरण जनां जगदीस।—र.ज.प्र.

२ जलाने वाला, भस्म करने वाला। उ०—बावहिया डूंगर दहण, छांडि हमारउ गांम। सारी रात पुकारियउ, लइ लइ प्रिउ कउ नांम।—ढो.मा.

रू०भे०—दहन, दहन्न।

दहणी—देखो 'दाहिणी' (रू.भे.) उ०—दहणइ कर दीध प्रगट राजादिक, ब्रह्मा आगाते कीध विचार।—महादेव पारवती री वेलि.

दहणो, दहबो—क्रि०अ० [सं० दहन] १ भस्म होना, जलना. २ संतप्त होना, कुढ़ना। उ०—सउदागर-संदेसड़ो, सांभळिया स्रवणेहि। मारवणी ते मन दहइ, मूक्यउ जळ नयणेहि।—ढो.मा.

क्रि०स०—भस्म करना, जलाना। उ०—१ एको ही नांम अनंत रा, पैलै पाप प्रचंड। जब तिल जेतो ज्वाळ नळ, खोण दहै नवखंड।

—ह.र.

उ०—२ और हजारां ही खेत सोधण रै समय सचेत अचेत प्रांणधारी पाया तिके सरब ही औरंग रा आदेस रूप अनळ में दहिया।

—वं.भा.

४ नाश करना, संहार करना। उ०—१ राजा किसन दाउ करि रहिओ, दांणव तिको पछै फिरि दहिओ। हार जीप वातां हरि हाथै, विहुं पतिसाहि सरिस हूं बाथै—वचनिका

उ०—२ रजरीत रहे वंस वाट वहै, अरि थाट वहै अविआट इसो।

—ल.पिं.

०—३ देवी दैत रै रूप तें देव ग्रहिया, देवी देव रै रूप कै अनुज दहिया। देवी मच्छ रै रूप तूं संखमारी, देवी संखवा रूप तूं वेद हारी।—देवि.

५ दूर करना, मिटाना, नाश करना। उ०—दळिदि कबीर तणौ तैं दहियौ, वसियौ भगत सरग रै बीच। चोर कांइ भगतां रै चढियौ, खाधो कांइ करमां री खीच।—पी.ग्रं.

६ दाह-संस्कार करना. ७ संतप्त करना, कुढ़ाना।

दहणहार, हारो (हारी), दहणियो—वि०।

दहवाड़णो, दहवाड़बो, दहवाणो, दहवाबो, दहवावणो, दहवावबो।

—प्रे०रू०।

दहाड़णो, दहाड़बो, दहाणो, दहाबो, दहावणो, दहावबो—क्रि०स० एवं प्रे०रू०।

दहिओड़ो, दहियोड़ो, दह्योड़ो—भू०का०कृ०।

दहीजणो, दहीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

दहदहणो, दहदहबो—क्रि०अ०—कांपना, थर्राना, भयभीत होना।

उ०—ढाक बूक बाजी, तेहे बाजति ऐरावणि ऊमटिउं, दिग्गज दहदह्या, वूंबारव पाटा, तारागण त्रूटा।—व.स.

दहदहियोड़ो—भू०का०कृ०—कांपा हुआ, थर्राया हुआ, भयभीत।

(स्त्री० दहदहियोड़ी)

दहन—सं०स्त्री० [सं०] १ जलन, कुढ़न। उ०—दादू बिना रांम कहीं को नाही, फिर हो देस विदेस। दूजी दहन दूर कर बोरै, सुण यह साधु संदेस।—दादू बांणी

२ प्रथम गुरु चार मात्रा का नाम (डिं.को.)

३ देखो 'दहण' (रू.भे.) उ०—वदळ भंडार ढंढ़ार ढवाला, दळ जळ ते दळिया दहन। उदर तुहाळै राव आवुआ, वळै जरंड वाधा तवन।—दुरसो आढ़ो

दहन्न—देखो 'दहण' (रू.भे.) उ०—मुकुंद जिकांह वसो तूं मन, दहै नहिं ताहि संसार दहन्न। रटै तो नांम जिकै घणरूप, कदै न संसार पड़ै भभ कूप।—ह.र.

दहवट्ट, दहवाट—देखो 'दहवट' (रू.भे.) उ०—१ कहिया था आगै कथन, समझ प्रभाकर भट्ट। सांचा कीधा 'सींग' तैं, ग्रंथ्र करै दहवट्ट।

—बां.दा.

उ०—२ द्रविड़ कियो दहवाट तैं, रूठै चाळक रांण। पाया गूजर खंड पत, क्रतमाळा केकांण।—बां.दा.

दहमंग, दहमग—सं०पु० [दह=सं० दश+मग=सं० मार्ग] १ तहसनहस, ध्वंस। उ०—'अभो' प्रगटियो गुणा अभंगां, मंडळ दिली कियो दहमंगां। 'अजै' तखत राजा अपणायो, 'अभो' मुजफर ऊपर आयो।—रा.रू.

२ संहार, नाश।

(मि० दहवट्ट, दहवाट)

दहमथ, दहमाथ—देखो 'दसमाथ' (रू.भे.)

दहमुख, दहमुखो—देखो 'दसमुख, दसमुखो' (रू.भे.)

दहल-सं०स्त्री० [सं० दरः] १ भय से एक बारगी कांप उठने की क्रिया, डर, त्रास, आतंक। उ०—१ पावस आयां जक पड़ै, पैलां दहल अपार। भाजड़ री घर-घर भएौ, हुआं लोह अभिसार।—वी.स.
उ०—२ कीरत 'अजन' कमंध री, पसरी प्रथी प्रमांण। दहल खमे रहिया दिल्ली, हिंदू मूसलमांण।—रा.रू.
क्रि०प्र०—पड़णी, होणी।
२ धाक, रौब। उ०— दहल पुर नयर पूगी महळ दोयणां। भय रहित किया सुर नाग नर-भोयणां।—र.ज.प्र.
रू०भे०—दहल्ल।

दहलणौ, दहलबौ-क्रि०अ० [सं० दरः] भय से एक बारगी कांप उठना, भयभीत होना, डरना, घबराना। उ०—१ दहले दिग्गज दिसा मेर मरजाद मुक्किय। अदल बदल जळ उदध चंडि सिध आसन चुक्किय। —र.रू.
उ०—२ 'जगौ' विजावत आवियौ, 'ऊदौ' 'धीर' सुतन्न। मिळ मारू दळ हल्लिया, उर दहलिया जवन्न।—रा.रू.
उ०—३ हिंदसथांन हरखियौ, तांम दहलै तुरकांणौ। जगत सरब जांणियौ, जोध लेसी जोधांणौ।—सू.प्र.
दहलणहार, हारौ (हारी), दहलणियौ—वि०।
दहलवाड़णौ, दहलवाड़बौ, दहलवाणौ, दहलवावौ, दहलवावणौ, दहलवावबौ—प्रे०रू०।
दहलाड़णौ, दहलाड़बौ, दहलाणौ, दहलावौ, दहलावणौ, दहलावबौ— क्रि०स०।
दहलीजणौ, दहलीजबौ—भाव वा०।
दहल्लणौ, दहल्लबौ—रू०भे०।

दहलाड़णौ, दहलाड़बौ—देखो 'दहलाणौ, दहलावौ' (रू.भे.)
दहलाड़णहार, हारौ (हारी), दहलाड़णियौ—वि०।
दहलाड़िओड़ौ, दहलाड़ियोड़ौ, दहलाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दहलाड़ीजणौ, दहलाड़ीजबौ—कर्म वा०।
दहलणौ, दहलबौ—अक०रू०।

दहलाड़ियोड़ौ—देखो 'दहलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दहलाड़ियोड़ी)

दहलाणौ, दहलावौ-क्रि०स० [ ] भयभीत करना, कँपाना, डराना, दहलाना।
दहलाणहार, हारौ (हारी), दहलाणियौ—वि०।
दहलायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दहलाईजणौ, दहलाईजबौ—कर्म वा०।
दहलणौ, दहलबौ—अक०रू०।
दहलाड़णौ, दहलाड़बौ, दहलावणौ, दहलावबौ—रू०भे०।

दहलायोड़ौ-भू०का०कृ०—भयभीत किया हुआ, कँपाया हुआ, डराया हुआ, दहलाया हुआ।
(स्त्री० दहलायोड़ी)

दहलावणौ, दहलावबौ—देखो 'दहलाणौ, दहलावौ' (रू.भे.)
दहलावणहार, हारौ (हारी), दहलावणियौ—वि०।
दहलाविओड़ौ, दहलावियोड़ौ, दहलाव्योड़ौ— भू०का०कृ०।
दहलावीजणौ, दहलावीजबौ—कर्म वा०।
दहलणौ, दहलबौ—अक०रू०।

दहलावियोड़ौ—देखो 'दहलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दहलावियोड़ी)

दहलियोड़ौ-भू०का०कृ०—भयभीत हुवा हुआ, घबराया हुआ, डरा हुआ।
(स्त्री० दहलियोड़ी)

दहली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उ०—एक दिन दोय सिपाही आय कर दहली में दीवांण सूं मुजरौ कियौ।—दूलची जोइयै री वारता

दहलोत-वि० [सं० दरः+रा०प्र०लोत] भयभीत करने वाला, डराने वाला, दहलाने वाला। उ०—थाहरा खळ दळां विरद थाटक रा दाटक रा कपणां दहलोत। करै उछट क्रीत खाटक रा हाटक रा गहणा गहलोत।—अनाड़सिंघ दधवाड़ियौ

दहल्ल—देखो 'दहल' (रू.भे.) उ०—छाजा पड़ै अछेह, मंडप उड़ि पड़ै महल्लां। मुगळांणियां अमाप पड़ै आधांन दहल्लां।—सू.प्र.

दहल्लणौ, दहल्लबौ—देखो 'दहलणौ, दहलबौ' (रू.भे.)
उ०—१ चलै राजकुमार पिता चौ, सासण पाय सहल्लै। रांवण सहत घणां खळ राखस, दारुण दैत दहल्लै।—र.रू.
उ०—२ उदधि सुजळ ऊफळै, हेम प्रघळै जळ हल्लै। दइत नाग नर देव, दसै द्रगपाळ दहल्लै।—सू.प्र.

दहल्लियोड़ौ—देखो 'दहलियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दहल्लियोड़ी)

दहवट, दहवटि, दहवट्ट, दहवाट, दहवाटौ-सं०पु० [सं० दश+वाट= दश मार्ग] संहार, नाश। उ०—१ बज खंभ आहट हुय विकट, हद्द कियग खळ खट लाग हट। बळ अवट ऊमट गयण वट, द्रढ़ दनुज दहवट कज दपट।—र.रू.
उ०—२ तिण वार कहै तिजड़ा हथौ, 'केहर' खीची जोस करि। खग झटां करै दहवट खळां, वसूं अमरपुर रंभ वरि।—सू.प्र.
उ०—३ औरंग पतिसाही ग्रही, दहवटि करि 'दारा' ह। रज्ज पियारा रज्जियां, भाई दुपियाराह।—ध.व.ग्रं.
उ०—४ एकण पासै एकलो, एकणि साहि कटक्क। वावा तो हूं 'वादळो', मारि करूं दहवट्ट।—प.च.चौ.
उ०—५ काविली थट्ट दहवट्ट किय, 'वीका' हर राइ वघरू। 'जइतसी' प्रवाडउ किय जमा, जांम सूर ससिहर जरू।—रा.ज.सी.
उ०—६ भोज तणै भुज-बळां, असुर दहवट्टां कीया। अचळदास गागुरण, कोट माथै-सूं दीया।—अ. वचनिका
उ०—७ काटि खग झाटि अरि दहवाटि करि, अधिक जस आपरै तखत आयौ। भलभली भेट भूपां तणी भोगवै, 'सवळ' तण आज प्रतपै सवायौ।—ध.व.ग्रं.

उ०—८ वाळ्ठौ केहरी बचो, भांजे गैवर थाटो रे। सो हूं थारो छावड़ो, रिपु न्हांखूं दहवाटो रे।—प.च.चौ.

२ तहस-नहस, ध्वंस। उ०—१ किरण रोस कळकळं, रूपक झळहळं प्रगटां। अरुण रूप आंतियां, दली करवा दहवटां।

—वगसी खिड़ियौ

उ०—२ भुज दूहुवां बळ बीस भुज, फळ दस माथा काट। तैं दीधौ दसरथ तणा, दससिर घर दहवाट।—बां दा.

३ आतंक, डर, भय. ४ दसों दिशाओं के मार्ग।

उ०—दिन ऊगो निज कारिजे, जाय दहवट्टा। रयुं ही कुटंब सबै मिळयौ, मत जांणि उलट्टा।—ध व.ग्रं.

रू०भे०—दहवट्ट, दहवाट, द्रहवाट।

दहवन-सं०स्त्री० [सं० दधिवर्णा] गाय (अ.मा.)

(मि० अरजुणी)

दहसत, दहसति, दहसत्त-सं०स्त्री० [फ़ा० दहशत] आतंक, भय, डर, खौफ। उ०—१ कमधज दळ हालतां कराळां। दहसत पड़ै दसै द्रगपाळां।—सू.प्र.

उ०—२ खांन अवर दहसत्त सब पावै। आप हूंत लड़वा नह आवै।—सू.प्र.

उ०—३ घणी दहसत रै मारे पग उण रो विछावणं ऊपर फिसळियौ।—नी.प्र.

उ०—४ रंक सं राव जोरावर करणे न पावै। पंखी को पर सेती बाज दहसति खावै।—सू.प्र.

उ०—५ दिखणांरा थाट दीधा दबाय। तुरसांण थाट दहसत्त खाय। सुरतांण ग्रह मोखण सकाज। दइवांण 'अभा' ऊमरदराज।—वि.सं.

क्रि०प्र०—खाणी, पड़णी, होणी।

२ धाक, रौब। उ०—घोड़ा जवां विगर रहिया। हाथी दाढ़ विगर रहिया। इसी दहसत्त पहुंची सो कोई भी दरियावां जावै नहीं।

—डाढ़ाळा सूर री वात

दहसीस—देखो 'दससीस' (रू.भे.)

दहसोत—देखो 'देसोत' (रू.भे.)

उ०—पाड़ हयां क्रन दांन आपिया, रिख नै बेटा अवध-नरेस। इण कारण कीरत आदरियौ, दहसोतां मुसकल औ देस।

—क्षत्रिय प्रसंसा री गीत

दहाई-सं०पु० [सं० दह=दश] १ दश का मान या भाव. २ वह लिखित अंक जो अंकों के स्थानों की गिनती में (दांए से बांए) दूसरा पड़ता हो जिस से उतने ही गुने दस का बोध होता है।

[?] ३ मुख्य (?) उ०—उठा बळं आधौ सेखांणं पट्टण नूं पातिसाहजी कूच कियौ। उवै डेरै रो कूच हुवौ ताहरां पातिसाहजी दहाई रो सिरै रो हाथी गजतिलक स्रीजी चढ़िया।—द.वि.

दहाड़-सं०स्त्री० (अनु०) १ किसी भयंकर जंतु का घोर शब्द, गर्जना। उ०—सेर दहाड़ मार बाहर बाघ ऊपर आयौ।

—ठाकुरसी जैंतसियोत री वारता

रू०भे०—दा'ड़।

दहाड़णौ, दहाड़बौ-क्रि०अ० (अनु०) १ घोर शब्द करना, गरजना, गुर्राना, दहाड़ना। उ०—नदी किनारे वराह दोहूं सिंह दहाड़ै पण राजा नदी तीर जाय ठाढौ हुवौ।—सिंघासण बतीसी

२ देखो 'दहाणौ, दहाबौ' (रू.भे.)

दहाड़णहार, हारौ (हारी), दहाड़णियौ—वि०।

दहाड़िग्रोड़ौ, दहाड़ियोड़ौ, दहाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दहाड़ीजणौ, दहाड़ीजबौ—भाव वा०।

दहाड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ घोर शब्द किया हुआ, गरजा हुआ, गुर्राया हुआ, दहाड़ा हुआ. २ देखो 'दहायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दहाड़ियोड़ी)

दहाड़ौ-वि०(अनु०) १ जिसका बहुत आतंक हो, रौब वाला, जबरदस्त। उ०—दूलची बडौ दातार देस रा देस गुणीजन, फकीस्वर आवै सो दांन पावै सो बडौ दांनी दहाड़ौ।—दूलची जोइयै री वारता

२ बहुत बातें जानने वाला, बहुश्रुत, वयोवृद्ध. ३ पुराना, प्राचीन।

दहाड़ौ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

दहाणौ, दहाबौ-क्रि०स० [सं० दहन] १ भस्म करना, जलाना.

२ संतप्त करना, कुढ़ाना।

('दहणौ' क्रिया का प्रे०रू०) ३ नाश कराना, संहार कराना. ४ भस्म कराना, जलवाना. ५ दूर कराना, मिटवाना. ६ संतप्त कराना, कुढ़वाना. ७ दाह-संस्कार कराना।

दहाणहार, हारौ (हारी), दहाणियौ—वि०।

दहायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दहाईजणौ, दहाईजबौ—कर्म वा०।

दहणौ, दहबौ—अक०रू०।

दहायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भस्म किया हुआ, जलाया हुआ. २ संतप्त किया हुआ, कुढ़ाया हुआ. ३ नाश कराया हुआ, संहार कराया हुआ. ४ भस्म कराया हुआ, जलवाया हुआ. ५ दूर कराया हुआ, मिटवाया हुआ. ६ संतप्त कराया हुआ, कुढ़वाया हुआ. ७ दाह-संस्कार कराया हुआ।

(स्त्री० दहायोड़ी)

दहावणौ, दहावबौ—देखो 'दहाणौ, दहाबौ' (रू.भे.)

दहावणहार, हारौ (हारी), दहावणियौ—वि०।

दहाविग्रोड़ौ, दहावियोड़ौ, दहाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दहावीजणौ, दहावीजबौ—कर्म वा०।

दहणौ, दहबौ—अक०रू०।

दहावियोड़ौ—देखो 'दहायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दहावियोड़ी)

दहावन-सं०स्त्री० [सं० दीर्घ+भवन] गाय (ह.नां.)

दहि—१ देखो 'दस' (रू.भे.) उ०—विरह मढ़ी मैं पैसि करि, दहि दिस दीन्ही आगि। जीव लग्या पखि पीव के, रही निरंतर लागि।

—ह.पु.वा.

२ देखो 'दई' (रू.भे.)

दहिया-सं०पु०—एक राजपूत वंश।

दहियावटी, दहियावाटी-सं०स्त्री०—वह स्थान जहां दहिया वंश के राजपूतों का राज्य था।

वि०वि०—परवतसर के आसपास का प्रान्त 'दहियावाटी' पुकारा जाता है क्योंकि वहीं इस वंश के राजपूतों का राज्य था। जालोर के आसपास के क्षेत्र को भी 'दहियावाटी' कहते हैं क्योंकि वर्तमान समय में भी वहां इस वंश के राजपूत अधिक संख्या में आबाद हैं।

दहियोड़ो-भू०का०कृ०—१ भस्म हुवा हुआ, जला हुआ. २ संतप्त हुवा हुआ, कुढ़ा हुआ. ३ संतप्त किया हुआ, कुढ़ाया हुआ. ४ भस्म किया हुआ, जलाया हुआ. ५ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ. ६ दूर किया हुआ, मिटाया हुआ, नाश किया हुआ. ७ दाह-संस्कार किया हुआ।

(स्त्री० दहियोड़ी)

दहियौ-सं०पु०—'दहिया' राजपूत वंश का व्यक्ति।

दही—देखो 'दई' (रू.भे.) उ०—तिण समै विजैराव लांजो आबू रा पंवारां रै परणियौ तरै सासू निलाड़ दही दियौ तरै कह्यौ—'बेटा! उत्तर दिसि भड़-किवाड़ हुए।'—नैणसी

दही-कोरड़ौ-सं०पु०—एक देशी खेल (शेखावाटी)

दहीयौ—देखो 'दई' (अल्पा., रू.भे.) उ०—सांवणियै में साग न खायौ, भर भादुड़ै में दहीयौ हो रांम। आसोजां में खीर न खाई, कातो कियौ कसारौ हो रांम।—लो.गी.

दहुं—देखो 'दहूं' (रू.भे.)

दहुंए, दहुऐ, दहुंधा, दहुंवां, दहुंव-क्रि०वि०—दोनों ओर, दोनों तरफ।

उ०—१ दरड़कै स्रोण दहुंअै दळां, वकै छकै अछरां वरां। जरड़कै भुकै हिंदू जवन, धकै काज वागां धरा।—वखतौ खिड़ियौ

उ०—२ चूरे दुसह सहंस पंच चहुवै, दळपति अमर विहुंडवा दहुवै।—सू.प्र.

वि०—दोनों। उ०—फरि चाळ वीर सांजति करै, घणा जोम हूंता घणा। किण भांति तरफ दहुंवां कहूं, तिकै रूप चहुंवां तणा।—सू.प्र.

दहूं, दहू-वि०—दोनों। उ०—छूटै प्रांण पाव नह छूटै। जाजुळि एम दहू दळ जूटै।—सू.प्र.

दहेज-सं०पु० [अ० जहेज] वह धन और सामान जो विवाह के समय कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया जाता है।

रू०भे०—दे'ज।

दहेलौ-वि०—दुर्लभ, कठिन।

दहोड़णौ, दहोड़बौ-क्रि०स०—संहार करना, मारना।

उ०—करि जीण सपक्खर बाज कटै। वहोड़ै खळ एम तुरी दवटै।—सू.प्र.

दहोड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—संहार किया हुआ, नाश किया हुआ।

(स्त्री० दहोड़ियोड़ी)

दहोतरसौ-वि० [सं० दशोत्तरशत] एक सौ दश।

दां-सं०स्त्री०—दफा, वार।

वि० [फा०] जानने वाला, ज्ञाता।

दांइंदौ-वि०—समवयस्क, हमउम्र। उ०—पांच पांच दस दस इकळासिया दांइंदा भेळा बैठा छै।—रा.सा.सं.

दांइ, दांई-सं०स्त्री०—१ आयु, उम्र।

उ०—१ काज सरणाइयां भूप सिर कावली, दुभल घन रावळी कठै दांई। बाप रवि ठांमियौ घड़ी दोय वाजतां, ताही सुत ठांमियौ पोहर तांई।—महाराजा मांनसिंह, जोधपुर

उ०—२ आपरी दां'ई रा अलवेलिया मोटियार आठ पहर कन्है रहै।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ वार; दफा, मर्त्तबा। उ०—वारां एक दांई पंथ आया छां नवीनां। वाइं ही पठांण राव सेखौ राख लीनां। जां दिनां में चंद्रसेणि राजा आंमेर। मोजावादि वरवाड़ा ऊपरि वहुत सेर।—शि.वं.

३ तरह, प्रकार, भांति। उ०—राजि पिण धणी दूर रा ताकीद में खड़िया उतावळा पधारिया छौ, घोड़ां रै परसेवौ गरमी सूं सांवण भाद्रवा दांई मेह वरसै छै ज्यूं गरमी वरसै छै।—राव रिणमल री वात

दांगड़ौ-सं०स्त्री०—दरवाजे या कपाट के पिछले भाग में लगा काष्ट का छोटा डंडा।

दांगी-सं०स्त्री०—१ भुट्टा, बाल (गेहूं)।

(मि० ऊंवी)

२ वह लकड़ी जो जुलाहों की कंघी में लगी रहती है. ३ एक वाद्य विशेष।

दांगौ-वि०—हृष्ट-पुष्ट, मजबूत।

दांडाजिनिक-सं०पु० [सं०] वह जो दंड और अजिन धारण कर के अपना स्वार्थ साधन करता फिरे, साधु के वेश में धोखेबाज मनुष्य।

दांडी—देखो 'डांडी' (रू.भे.) (उ.र.)

दांडू—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) (अमरत)

दांण-सं०पु० [सं० दान] १ शतरंज, चौपड़ की कौड़ी आदि का पड़ना जिस से जीत या हार का पता चले। उ०—तठै आय ऊभौ रह्यौ, दांण वतावण लागौ। सखरा दांण करै।—नैणसी

२ चौपड़ शतरंज आदि में दाव पड़ने पर गोटी के चलने का ढंग, चाल। उ०—तठै आय ऊभौ रह्यौ, दांण वतावण लागौ।—नैणसी

३ चौपड़, शतरंज आदि का प्रारम्भ से समाप्ति तक एक वार खेला जाने वाला खेल। उ०—तरै आप कमालदी रमण लागा सु मूळराज दांण दांण जीतौ।—नैणसी

४ समय, वक्त। उ०—दांण उठै दांन दिखाया दांमण, चमकत रसण डसण रस चोळ। अहर प्रवाळी हूंता अनोपम, कूं कूं व्रंन सारिखा कपोळ।—महादेव पारवती री वेल

५ वार, दफा (मेवाड़). ६ ऊंट के अगले पैरों का बंधन.

७ देखो 'डांण' (३) (रू.भे.) उ०—१ तद मोटो राजा फळोधी वसै छै। तद दांण घणो वरती मांहै लागतो।—नैणसी

उ०—२ मु तद गयाजी दांण निपट घणो सिनांन रो लागतो सु तिण री रावजी अरज कर नै गया रो दांण छुडायो।

—राव जोधाजी रै बेटां री वात

उ०—३ अटक गोपी मही दांण उघरावजै, पावजै अधर रस गोरधन पास। धर लुकट मुकट वन वीथियां धावजै, वांस री वावजै अहीरां-वास।—बां.दा.

८ देखो 'टांण' (५) (रू.भे.) उ०—गजां दांण सूकै इसा वांण गाजै। प्रळै काळ सद्दै गिसी नाळ वाजै।—रा.रू.

९ देखो 'डांण' (१३) (रू.भे.) १० देखो 'दांन' (रू.भे.)

उ०—दाव्यो बळ दांणव लीधो दांण, उपाविय पिंड जमी असमांण। वांध्यो तैं वार किता बळराव, वगोविय दांणव कीध वणाव।—ह.र.

दांणउ—१ देखो 'दांणो' (रू.भे.) २ देखो 'दांन' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—कंठळी कनक प्रवाळ मांणिक, विविध रूप विस्तार। दाणउ दूआसर मांदळयां, उर मोतियां भरि हार।—रुकमणी मंगळ

दांण-दपांण-सं०पु०—१ सरकारी कर. २ जगात।

दांण-दापो-सं०पु०यौ०—सरकारी कर विशेष।

दांणदार—देखो 'दांणेदार' (रू.भे.) उ०—तरवारियां किसी एक छै थेट री नीपनी सीरोही दांणदार।—जैतसी ऊदावत री वात

दांणपुरधांण-सं०पु० [सं० दण्ड=शासन+प्रधान] मंत्री (डि.नां.मा.)

दांणमंडही-सं०स्त्री० [सं० दानमण्डपिका] दान देने का स्थान (उ.र.)

दांण-लीला—देखो 'दांन-लीला' (रू.भे.)

दांणव-सं०पु० [सं० दानव] १ राक्षस, असुर (अ मा.)

उ०—प्रथम पुवाडई पूतनां सोखी, मर दळीयो मुसाळ। ए हरि नइं आगइं दावानळ, दांणव नइ कुलि काळ।—रुकमणी मंगळ

२ दुष्ट. ३ मुसलमान, यवन। उ०—नहवांणी भागा छाडि नेस, दांणवां घणी साम्हिया देस। विढ़ि काढ़ि प्रिसण हूंता विहार, सीवाळ तवइ किधा समार।—रा.ज.सी.

रू०भे०—दांणव्व, दांणू, दांनव, दांनवू।

अल्पा०—दांनो।

यौ०—दांणव-राज, दांणव-राय, दांणव-राह।

दांणव-गुर, दांणव-गुरु-सं०पु०यौ० [सं० दानवगुरु] शुक्राचार्य।

रू०भे०—दांनवगुर, दांनवगुरु।

दांणवत-सं०पु० [सं० दानव+पुत्र] अफीम (डि.को.)

दांणवराय, दांणवराह, दांणवांराई-सं०पु०यौ० [सं० दानवराज]

१ हिरण्यकश्यप. २ राजा बलि. ३ रावण, ४ बादशाह, यवनपति। उ०—ऊमरसै नैसासियो, विखियो दांणव-राह। हिंदू राध न आवही, नहीं मळे छै मांह।—नैणसी

रू०भे०—दांणवे-राव।

दांणवीय, दांणवी-वि० [सं० दानवीय] दानवों की, दानव सम्बन्धी।

उ०—दळि दांणवि जडत सरूप दीठ। नेठाहि धीरि नांखिय निचीठ।

—रा.ज.सी.

सं०स्त्री०—दानव स्त्री, राक्षसी।

दांणवे-राव—देखो 'दांणव-राय' (रू.भे.)

दांणव्व—देखो 'दांणव' (रू.भे.) उ०—अढ़ंगा कहा बोल जेता अधाये, पलुं तेत रा आज तूंना पसाये। नरां नारि को नागणी ना वियांणी, रही वांझणी देव दांणव्व रांणी।—ना.द.

दांणादार—देखो 'दांणेदार' (रू.भे.)

दांणा-पांणी-सं०पु०—१ अन्न-जल, खान-पान. २ जीविका. ३ रहने का संयोग।

दांणी-सं०पु०—१ कर लेने वाला, नाकेदार। उ०—दांणी मार दांण में दीया, अपणा मूल न हारं। पूंजी रहे विणज ज्यूं विणजूं, पैडा अगम अपारं।—ह.पु.वा.

सं०स्त्री०—२ दाख (अ.मा.)

दांणू—१ देखो 'दानव' (रू.भे.) (डि.को.) २ देखो 'दांणो' (रू.भे.)

दांणेदार-वि०यौ० [फा० दानः+दार] जिस में दाने हों, रवादार।

सं०पु०—१ एक प्रकार के बढ़िया लोह की तलवार।

उ०—सु किण भांत री तरवार थेट सिरोही री, सांतरी दांणेदार, मिश्रांन घातियां विश्रांगुळे वाढ़े भेरिश्रां।—रा.सा.सं.

२ एक प्रकार का बढ़िया फौलाद।

रू०भे०—दांणदार, दांणादार, दांणे-दार।

दांणो-सं०पु० [फा० दानः] १ अनाज, अन्न। उ०—१ अगणित अव-ळावां छावां जुत आई। निरमळ नैणां जळ बळवळ विललाई। भारी नांणा विन दांणां विन भूमं। घर री रदनोरी सदनां विन घूमं।

—ऊ.का.

उ०—२ सरदी रो मौसम नै दांणा रा दिन। करसा रात'र दिन लाटां में लाग्योड़ा हा। आछो दांणो जितरो जल्दी हुं सकै उतरो जल्दी घरै लावण री कोसिस में हा।—रातवासो

मुहा०—१ दांणा-पांणी ऊठणां—स्थायित्व का हटना. २ दांणै-दांणै सारू तरसणो—गरीबी से खाने के लिये दाना भी न मिलना, भोजन न पाना, अन्न का कष्ट सहना. ३ दांणै-दांणै सारू मोह-ताज—जिस के पास खाने को एक दाना भी न हो, अत्यन्त गरीब. ४ दांणै दांणै म्हौर छाप—प्रत्येक दाने पर खाने वाले की छाप होती है अर्थात् प्रत्येक दाना भी भाग्य में लिखे अनुसार ही मिलता है।

यौ०—दांणा-पांणी।

२ अनाज का एक कण, अन्न का एक बीज. ३ घोड़े, सूअर आदि को खिलाया जाने वाला अनाज। उ०—घुड़लां नै देस्यां जंवाईजी दांणो उड़द रो जी, थां रै करलां नै कोरड़ घलाय, एक बर आज्यो जंवाईजी म्हारै घर पांवणा।—लो.गी.

यौ०—दांणो-चारो।

४ सूखा भुना हुआ अन्न, चबेना. ५ कोई छोटा बीज जो गुच्छे, फल, बाल आदि में लगे। :जैसे—पोस्त रौ दांणौ, राई रौ दांणौ. ६ कोई छोटी गोल वस्तु, कण, रवा. ७ किसी सतह पर के छोटे-छोटे उभार जो टटोलने से अलग-अलग मालूम हों।

८ शरीर पर उभरने वाले महीन-महीन उभार जो किसी रोग के कारण अथवा खुजलाने के कारण हो जाते हैं। ज्यूं—मोतीजरै रा दांणा. ६ एक प्रकार की शक्कर. १० देखो 'दांणव' (रू.भे.)

उ०—आद वाराह अलाह तूं, हिरणाकुस दांणां।—केसोदास गाडण

रू०भे०—दांणउ, दांणू।

दांणौ-दापौ—देखो 'दांण-दापौ' (रू.भे.)

दांत-सं०पु० [सं० दन्त] जीवों के मुंह, तालू, गले और पेट में अंकुर के रूप में निकलने वाली कठोर हड्डी जो आहार चबाने, तोड़ने तथा आक्रमण करने, जमीन खोदने इत्यादि के काम आती है, दंत, दशन, रदन।

वि०वि०—मनुष्य तथा दूध पिलाने वाले जीवों में दांत, दाढ़, मुंह में जबड़े के मांस में लगे रहते हैं। मछलियों और सरिसृपों में दांत केवल जबड़ों में ही नहीं बल्कि तालू में भी होते हैं। पक्षियों के दांत मसूडों के गड्ढों में जमे रहते हैं, उन के दांत का काम चोंच से निकलता है। बिना रीढ़ की हड्डी वाले क्षुद्र जीवों के दांतों की बनावट और स्थिति में परस्पर विभिन्नता होती है। कैंकड़ा, झिंगवा आदि के पेट या अंतड़ी में महीन-महीन दांत या दानेदार हड्डियां होती हैं। दूध पिलाने वाले जीवों के दो बार दांत आते हैं। बचपन के दूध के दांत ६ से १२ वर्ष की अवस्था के बीच झड़ जाते हैं और फिर नये दांत आते हैं। मनुष्य के बच्चों में दूध के दांतों की संख्या बीस होती है। सामने के ऊपर और नीचे के चार-चार दांत चौका या राजदंत वर्ग कहलाते हैं। चौका के बाद ऊपर और नीचे के दो-दो नुकीले दांतों को राजस्थानी में कूंठा, कांणेठा या खूंटा कहते हैं जिन्हें हिन्दी में शूल दंत या कुकुर दंत कहते हैं। इस के बाद ऊपर और नीचे दाढ़ें शुरू हो जाती हैं। ये चौड़ी और चौकोर होती हैं, इन्हें हिन्दी में चौभड़ कहते हैं। २१ या २२ वर्ष की अवस्था में जब अंतिम दाढ़ या अकल दाढ़ निकलती है तो ३२ दांत पूरे हो जाते हैं।

पर्या०—खादन, डसण, दंत, दंस, दसण, दुज, मुख-दीपण, रद, रदन, वांणी-मंड।

मुहा०—१ दांत आणा—दांत निकलना, वाक्पटु होना. २ दांत इ नहीं लागणा—दांतों से नहीं चबाना, निगल जाना, किसी का माल हड़प कर लेना. ३ दांत उखेलणा—दांत उखाड़ना, कठिन दंड देना. ४ दांत काढ़णा (निकाळणा)—ओठों को कुछ हटा कर दांत दिखाना, व्यर्थ हँसना, दीनता दिखाना, गिड़गिड़ाना, डर या घबराहट से ठक रह जाना, टें बोल देना, मुंह बा देना, देखो 'दांत उखेलणा'. ५ दांत खाटा करणा—परास्त करना, पस्त करना, खूब हैरान करना. ६ दांत खाटा होणा—परास्त होना, पस्त होना, हैरान होना. ७ दांत खोळा पड़णा—दांत ढीले पड़ना, वृद्ध होना.

८ दांत टूटणा—दांत गिरना, बुढ़ापा आना. ६ दांत तिड़णा (निकळणा)—नशे अथवा मृत्यु की अवस्था में मुंह बा देना.

१० दांत तिड़ाणा—देखो 'दांत काढ़णा'. ११ दांत तोड़णा—देखो 'दांत उखेलणा'. १२ दांत दिखाणा—डराना, घुड़कना, अपना बड़प्पन दिखाना, हँसना. १३ दांत पटकणा—मारना, पीटना. देखो 'दांत उखेलणा. १४ दांत पीसणा—कोप प्रकट करना, क्रोध से दांत पीसना. १५ दांत बोलणा—सरदी के कारण दांतों का किटकिटाना. १६ दांत भींचणा—कृपण होना, कंजूस होना, सहना, बाध्य होना. १७ दांत मूंडा में इज फूटरा दीसै—दांत मुंह में ही शोभा देते हैं। वस्तु अपने स्थान पर ही शोभा देती है. १८ दांता-कसी करणी—(दांताकिटकिट, दांताघिसी) लड़ाई टंटा करना, व्यर्थ का प्रलाप करना, बकझक करना. १६ दांतां चढ़णौ—दुनिया की निगाह में आना, दुनिया के लिये चर्चा का विषय बनना, जायकेदार होना, स्वाद होना. २० दांतां चाढ़णौ—दुनिया की निगाह में लाना, चर्चा का विषय बनाना. २१ दांतां तळै आंगळी दैणी—आश्चर्य-चकित होना. २२ दांतां में तिणकौ लैणौ—दीनता प्रकट करना, हाहाकार करना. २३ दांतां बिचली जीभ—दांतों के बीच में जीभ। चारों ओर विरोधियों या दुश्मनों से घिरे हुए रहना. २४ दांतां (दांतै) मिळणौ—बैल, भैंसे आदि पूर्ण युवा होना. २५ दांतां लागणौ—बहुत थोड़ा (खाद्य पदार्थ). २६ दांतां लोह रा चिणा चबाणा—बहुत कठिन कार्य करना. २७ दांतां लोही लागणौ—चश्का लग जाना, आदी हो जाना. २८ दांतिया करणा—लड़ाई करना, बहस करना. २६ दांतै चढ़णौ—देखो 'दांतां चढ़णौ'.

३० दांतै चाढ़णौ—देखो 'दांतां चाढ़णौ'

रू०भे०—दत, दंतक, दंती।

अल्पा०—दांतड़लौ।

[सं० दांत] २ दमयंती के भाई जो विदर्भ नरेश भीमसेन के दूसरे पुत्र थे।

वि०—१ तप आदि का क्लेश सह सकने वाला, इंद्रियजित (जैन)।

उ०—सांत थई अंतर गुणे, दुसमन सहु दमिया लो अहो। दांत पणइ अविकार थी, विसयादिक वमिया लो अहो।—वि.कु.

२ जिसका दमन किया गया हो, वशीभूत. ३ जो दांत का बना हो, दांत सम्बन्धी।

दांत-कथ, दांत-कथा—देखो 'दंत-कथा' (रू.भे.)

दांतड़लौ—देखो 'दांत' (अल्पा., रू.भे.) उ०—दांतड़ला भूमल रा दाड़मियैं रा बीज रे, कोई होठड़ला मूमल रा जांणै हिंगळू ढोळियौ, हरियाळी ए मूमल हालै तौ ले चालूं मुरधर देस में।—लो.गी.

दांतड़ैल-सं०पु० [सं० दंत+रा०प्र०ड़ैल] सूअर, सूकर।

उ०—झड़ाया ओझाड़ां झाड़कां कड़ैल पवै भूळां, सांकड़ैल भड़ां मूळां अड़ाया सधीर। बीफरैल ग्रुसैल कदैई तोल न आया बीजां, केई दांतड़ैल जई गुड़ाया कंठीर।—महकरण महियारियौ

दांतण-सं०पु० [सं० दंत+रा०प्र०ण] १ दांत साफ करने की क्रिया ।
उ०—१ माता ए, ऊठो दांतणियो जी फाड़, थांरै दांतण की जी वेळा अब हुई ।—लो.गी.
उ०—२ महाराज जनांनै पधारीजै, रसोड़ो तयार हुवो छै नै महाराणी बाघेलीजी दांतण कियां विनां विराजिया छै ।
—जगदेव पंवार री वात
क्रि०प्र०—करणी ।
२ नीम, बबूल आदि वृक्षों की हरी टहनी का टुकड़ा जिससे दांत साफ किये जाते हैं । उ०—१ रांमजी, ऊगतड़ै परभात, मात जसोदाजी दांतण मांगियो ।—लो.गी.
उ०—२ साथीड़ां रा डेरा हरिया बाग, जंवाई रा डेरा मोती महल में । साथीड़ां रै दांतण बोर, जंवाई रै काची केळ रो ।—लो.गी.
मुहा०—दांतण वेच्यां दळदर को जावैनी—दांतुन बेचने से दरिद्रता नहीं जाती । तुच्छ कार्य करने से काम पार नहीं पड़ता ।
३ एक राजस्थानी लोक गीत ।
रू०भे०—दतुण, दांतणि, दातण ।
अल्पा०—दांतणियो ।
दांतणि—देखो 'दांतण' (रू.भे.) उ०—ढोलउ सरवरि दांतणि करइ, मूडो जाए इम ऊचरइ ।—ढो.मा.
दांतणियो—देखो 'दांतण' (अल्पा., रू.भे.) उ०—रांमजी, चाल्या ए नंदजी को लाल, दांतण लाया जी काची केळ रो । माता ए ऊठो ना दांतणियो जी फाड़, थांरै दांतण की जी वेळा अब हुई ।—लो.गी.
दांतवसन-सं०पु० [सं० दंत+वसनम्] ओष्ठ, ओंठ (डि.को.)
दांतळी-वि०—सं०स्त्री०—१ देखो 'दात' (४) (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ सूवर वाही दांतळी, आंण खटक्की हड्ड । भाई ह्वै तो बावड़ै, गया विरांणा छड्ड ।—लो.गी.
उ०—२ हिरणां लांबी सींगड़ी, भाजण तणो सभाव । सूरां छोटी दांतळी, दै घण थट्टां घाव ।—हा.झा.
२ देखो 'दातो' (अल्पा., रू.भे.)
मुहा०—दांतळी सूं नीम नी कटै—फसल काटने के औजार से नीम नहीं काटा जा सकता, बड़े कार्य के लिये बड़े साधन की आवश्यकता होती है ।
दांतळेल—देखो 'दांतड़ेल' (रू.भे.) (डि.को.)
दांतलो-वि० [सं० दंतुर] (स्त्री० दांतली) १ जिसके दांत आगे निकले हों, बड़े-बड़े दांतों वाला, दंतुला.
रू०भे०—दंतलो, दंतियो, दंतोलो, दंतुलो, दांताळो, दांतिलउ ।
मह०—दंतल ।
दांताळी—देखो 'दंताळी' (रू.भे.)
दांताळो-सं०पु० [सं० दंतावल] १ हाथी (डि.को.)
उ०—चकतै तणा चालिया चाळ टावो करै घणा टळिया । दोय दरगाह विचै दांताळा मतवाळा धाये मिळिया ।
—अरजण गोड़ अर अमरसिंह राठौड़ रो गीत
२ देखो 'दांतलो' (रू.भे.)
दांति—देखो 'दांती' (रू.भे.) उ०—दांति दुराळभ दूधीट, दाडिम द्राख दग्रूण । देवदार दीमइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण ।—मा.कां.प्र.
दांतिलउ—देखो 'दांतलो' (रू.भे.) (उ.र.)
दांतियो—सं०पु० [सं० दांतिक] १ खरगोश. २ सियार.
३ ढोली (मेवाड़) ।
रू०भे०—दांत्यो ।
वि०—दांत का । उ०—जोइजै वीरो म्हारो पीरोया री हाट, दांतियो चुड़लो वीरो मोलवै ।—लो.गी.
दांती-सं०पु० [सं० दंत] नारेली या गेंडे की ढाल का अथवा हाथी दांत का चूड़ा बनाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति जो अपने को संघद कहता है ।
सं०स्त्री०—२ कंघी या कंघे से सिर के बाल साफ करने के लिये कंघी के दांतों में विशेष प्रकार से धागा लपेटने की क्रिया या ढंग ।
क्रि०प्र०—देणी ।
३ कंघी. ४ देखो 'दातो' (अल्पा., रू.भे.) ५ देखो 'दंताळी' (रू. भे.)
उ०—काती भळै दांती फेरी, लाम्रू चनरा वाढतां । भ्राड़ जुगत लादां लदावै, ढिगलां टोकी काढतां ।—दसदेव
६ दांतों की पंक्ति, बत्तीसी. ७ वृक्ष विशेष.
८ देखो 'दातो' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—दांति ।
दांतील-सं०पु० [सं० दंतुर] वह ऊंट जिस के चार दांत आ गये हों ।
दांतूसळ-सं०पु० [सं० दंत+मूसल] हाथी के उन गोल और लंबे दांतों में से एक जो बाहर दिखाई देते हैं । उ०—१ पटसी हाथी रा दांतूसळां माथै पग दे नै अंबाड़ी मांहे पग दे नै पातसाह नूं हेठो नांखियो ।—नैणसी
उ०—२ पोगर दांतूसळ धकै, ढाळ वचै नह ढंड । कुंजर चाळक रा करै, खंड खंड स्रोखंड ।—बां.दा.
दांतेड़ो—देखो 'दातो' (अल्पा., रू.भे.)
दांतो-सं०पु० [सं० दंत] १ दांत के आकार का कंगूरा ।
मुहा०—दांता पड़णा—धार वाले किसी औजार अथवा हथियार के बीच में से झड़ कर गुठले या गड्ढे पड़ जाना ।
२ अंकुर की तरह निकली हुई नुकीली वस्तु जो बहुतों के साथ एक पंक्ति में हो ।
३ देखो 'दातो' (रू.भे.)
वि०—दांत का । उ०—बनड़ो न्हाय-धोय बैठो बाजोट, कांई आंगण-दूमणो । म्हें तो नहीं मांगां गळहार, कांई दांतो चूड़लो ।
—लो.गी.
अल्पा० रू०भे०—दांत्यो ।
दांत्यूणी-सं०स्त्री०—जमालघोटा की जड़ (अमरत)

दांत्यौ—१ देखो 'दांतियौ' (रू.भे.)
२ देखो 'दांतौ' (रू.भे.)

दांदड़—देखो 'दांनड़' (रू.भे.)

दांन–सं०पु० [सं० दान] १ वह वस्तु जो उदारतावश या धर्म के भाव से किसी को दे दी जाय. २ उदारतावश या धर्म के भाव से देने की क्रिया जिस में वापस लेने का उद्देश्य न हो ।
उ०—दाता जग माता पिता, दाता सांप्रत देव । दाता सरवस दांन दे, ऊतर एक अदेह ।—बां.दा.
पर्या०—अपवरजन, आचार, आपण, उछरंजण, उतसरजन, करतव, क्रियावर, त्याग, दत, देण, नवाज, प्रतिपायण, प्रवाह, वगसण, व्रवण, मौज, रीझ, वरीस, वितरण, विलसण, विसरजण, विसरारण, विहाइति, समपण, सुमोज ।
क्रि०प्र०—करणौ, देणौ ।
यौ०—कन्या-दांन, गऊ-दांन, गुपत-दांन ।
३ देने की क्रिया या कार्य
रू०भे०—दन, दनि, दन्नि, दांण, दांणउ, दांनि ।
४ देखो 'दांण' (रू.भे.) (डिं.को.)

दांनअयन–सं०पु० [सं० दान+अयन] दान देने वाला, दातार (अ.मा.)

दांनक, दांनख–सं०पु० [सं० दानक] बुरा दान, कुत्सित दान ।
वि०—देने वाला । उ०—दीनानाथ अभै पद दांनख, भांनख अंतक समर भर । मांनख जनम सफळ कर मांगण, घांनख घर पद सीस घर ।—र.ज.प्र.

दांन-गुर, दांन-गुरु–सं०पु० [सं० दान+गुरु] दान देने में सब से बड़ा, महादानी, दानवीर । उ०—कळह-गुर, दांन-गुर हालियौ 'कलाउत', लाख ऊपर कवण वाग लेसी । अम्हां गज मौज मौताद कुण आपसी, दांन सौ लाख कुण रीझ देसी ।—दुरसौ आढ़ौ

दांनड़–सं०पु० (देश०) कूड़ा-करकट (मेवाड़)
रू०भे०—दांदड़ ।

दांनत—देखो 'दयांनत' (रू.भे.) उ०—थांहरी दांनत रा कारण सूं सावधांनी री पल्लौ पकड़ियौ (नी.प्र.)

दांनतदार—देखो 'दयांनतदार' (रू.भे.)

दांनतदारी—देखो 'दयांनतदारी' (रू.भे.)

दांनपति–सं०पु०यौ० [सं० दानपति] १ सदा दान देने वाला, दानवीर. २ अक्रूर का एक नाम क्योंकि वह 'स्यमंतक' मणि के प्रभाव से हमेशा दान देता था ।

दांनपत्र–सं०पु०यौ० [सं० दानपत्र] वह आज्ञा-पत्र या लेख जिस के द्वारा कोई सम्पत्ति किसी को दी जाय ।

दांनपात्र–सं०पु०यौ० [सं० दानपात्र] दान देने के लिए उपयुक्त व्यक्ति ।

दांनलीला–सं०स्त्री० [सं० दानलीला] श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों से गो-रस बेचने का कर वसूल करने की लीला ।
रू०भे०—दांणलीला ।

दांनव—देखो 'दांणव' (रू.भे.) उ०—देवी काळिका मा नमौ भद्र-काळी, देवी दूरगा लाघवं चारिताळी । देवी दांनवां काळ सुरपाळ देवी, देवी साधकं चारणं सिधं सेवी ।—देवि.

दांनव-गुर, दांनव-गुरु—देखो 'दांणव-गुर, दांणव-गुरु' (रू.भे.)

दांनवज्र–सं०पु० [सं० दानवज्र] मन की तरह वेगवान् एक प्रकार के अश्व जो कभी बूढ़े नहीं होते हैं और देवताओं तथा गंधर्वों की सवारी में रहते हैं (महाभारत) ।

दांनवारि–सं०पु० [सं० दानवारि] हाथी का मद ।

दांनवी–सं०स्त्री० [सं० दानव] दानव स्त्री, राक्षसी ।
वि० [सं० दानवीय] राक्षसों सम्बन्धी ।

दांनवीर–सं०पु० [सं० दानवीर] दान देने में साहसी पुरुष, अत्यन्त दान देने वाला, धर्मात्मा ।

दांनवू—देखो 'दांणव' (रू.भे.) उ०—सूरूं के सहायक, दांनवूं के दावागीर, दिलपाकूं के दोसत ।—र.रू.

दांनवेंद्र–सं०पु० [सं० दानवेंद्र] १ राजा बलि. २ हिरण्यकशिपु. ३ रावण, दशानन ।

दांनसागर–सं०पु० [सं० दानसागर] एक प्रकार का महादान ।
वि०वि०—इस में भूमि, आसन आदि सोलह वस्तुओं का दान दिया जाता है । इस का प्रचार वंग देश में है ।

दांन-साळा–सं०स्त्री० [सं० दान-शाला] वह स्थान जहां अपाहिजों या अनाथों को दान, भोजन आदि दिया जाय । उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति देवळां री पाखती धरम-साळा, दांन-साळा मंडीजै छै ।—रा.सा.सं.

दांनसील–सं०पु० [सं० दानशील] दान करने वाला, दानी ।

दांनसीलता–सं०स्त्री० [सं० दानशीलता] दान करने की प्रवृत्ति, उदारता ।

दांनाई–सं०स्त्री० [फा० दानाई] १ बुद्धिमता, अक्लमंदी. २ वृद्धावस्था ।

दांनादकी–सं०स्त्री० [सं० दान ?] दांन लेने का अधिकार ।
उ०—१ पीछे उण होज वरस प्रोहित मांनमहेस रौ पटौ जवत हुवौ । वा वारठ चौथजी खुंडियै रौ पटौ पण जवत हुवौ । पीछै औ धरणा कर बीकानेर आया । आखर अवार डिंगली रहै छै तठै जुहर कर सारा मुवा । तोळियासर रां सूं प्रोहितपणौ गयौ । वारठजी सूं वारठपणौ तथा दांनादकी गई ।—द.दा.
उ०—२ जगात पिण माफ कीवी, ताजीम वगसी, दांनादकी दीवी ।—द.दा.

दांनाध्यक्ष–सं०पु० [सं० दानाध्यक्ष] वह जिस के द्वारा दान किया हुआ द्रव्य बांटा जाय ।

दांनापण–सं०पु० [फा० दाना+रा०प्र० पण] १ अक्लमंदी, बुद्धिमता. २ बुढ़ापा । उ०—दांनां दांनापण हांनै घर दीन्ही ।—ऊ.का.

दांनि—१ देखो 'दांन' (रू.भे.) उ०—सरम धारी करण सुधरम, व्रहम वाचा दांनि विक्रम । जस करण समदि अण जंगम दीपिओ, विरदाळ ताई भूपाळजी भूपाळ ।—ल.पिं.

२ देखो 'दांनी' (रू.भे.) उ०—सरीखौ न को दांनि पूजै सकै । जिकां मींढ़िजै तांह हूंता जकै ।—ल.पि.

दांनिसमंद-वि० [फा० दानिशमंद] बुद्धिमान ।

दांनिसमंदी-संस्त्री० [फा० दानिशमंदी] बुद्धिमानी ।

दांनी-संपु० [सं० दानिन्] १ राजा कर्ण ।

(मि० दांनी-रिप)

२ दान करने वाला व्यक्ति, दाता ।

वि०—जो दान करे, उदार । उ०—दांन जिसौ नह दूसरौ, दांन स्वरग रौ द्वार । जो दांनी जसवंत नै, सब जांणै संसार ।—ऊ.का.

रू०भे०—दांनि ।

दांनीक-वि० [फा० दाना+रा०प्र०ईक] १ बुद्धिमान, अक्लमंद ।

[सं० दान+रा०प्र०ईक] २ दान देने वाला, उदार ।

दांनीरिप-संपु० [सं० दानिन्=राजा कर्ण+रिपु] अर्जुन, पार्थ । (अ.मा.)

दांनेसरा-संपु० [सं० दानेश्वर] राठौड़ों के तेरह प्रमुख वंशों में से एक वंश ।

दांनेसरी, दांनेसवर, दांनेसुर-वि० [सं० दानीश्वर, दानेश्वर] दान देने वाला, दातार (अ.मा.)

उ०—तण जाम पास नथ कुळ तणी, सीचै भोर आचा सही । अभिनमौ 'अम्र' दांनेसवर, रायसिंघ विवनौ म कही ।—नैणसी

दांनौ-संपु० [फा० दाना] (स्त्री० दांनी) १ बुद्धिमान, अक्लमंद ।

उ०—१ घटै आव जस घन घटै, अकल हटै बळ अंग । नींदवियौ दांनां नरां, पातर तणौ प्रसंग ।—बां.दा.

उ०—२ कांपै अनुकंपा लांपौ कर लीनौ । दांनां दांनांपण हांनै घर दीनौ । किण ढिग ढूकां म्हे किण ढिग म्हे कूकां । हरदम हीया में ऊठै हरि हूकां ।—ऊ.का.

२ हितैषी, शुभचिन्तक, सज्जन । उ०—दुसमणां लाभ दांनां दहण; खुली न कांनां खिड़कियां । नर परम धरम बूझै नहीं, हूकौ सूझै हिड़कियां ।—ऊ.का.

३ देखो 'दांणव' (अल्पा., रू.भे.) उ०—भक्त त्रिमां कै कारण, रिख का वायक लाया । दांनां मारया देव उबारया, अनेक पवाड़ा कीया ।—रुकमणी मंगळ

दांपत्य-वि० [सं०] पति-पत्नी सम्बन्धी ।

संपु०—पति-पत्नी के बीच का प्रेम या व्यवहार ।

दांभिक-वि० [सं०] १ आडम्बर करने वाला, पाखण्डी. २ अभिमानी, घमण्डी. ३ धोखेबाज, दगाबाज ।

दांम-संपु० [सं० द्रम्मः अथवा फा. दाम] १ रुपये का ४० वां भाग । —नैणसी

२ पैसे का पच्चीसवां भाग. ३ एक प्राचीन सिक्का जो पैसे के बराबर होता था. ४ वह द्रव्य जो बेचने वाले को किसी वस्तु के बदले में दिया जाय, मूल्य, कीमत ।

मुहा०—दांम करणा—मूल्य निश्चित करना, कीमत ठहराना, मूल्य प्राप्त करना. ५ धन, रुपया, पैसा । उ०—१ निज पितु छोड़ै नीच, तुरत छोडै, महतारी, निज भ्रम छोडै निलज निलज छोडै निज नारी । भळ छोडै निज भ्रात, छैल कुळ घर छिटकावै, प्रभु नै छोडै परौ जिकण दिस फेर न जावै । दांम री भांम झेली दुकर भव.सारै नै भांडियौ । छिता पर इता गुण छोड दै, रांड न छोडै रांडियौ । —ऊ.का.

उ०—२ बांम बांम बकता बहै, दांम दांम चित देत । गांम गांम नांखै गिडक, रांम नांम में रेत ।—ऊ.का.

उ०—३ नरहर समरतां नह वीतै नांणौ, लव सूं तीकौ न लेवै । परनारी निरखै कर प्रीतां, दांम हजारां देवै ।—र.रू.

अल्पा०—दांमड़ियौ, दांमड़ौ ।

[सं० दाम] ६ राजनीति की एक चाल जिस में शत्रु को धन द्वारा वश में करते हैं ।

७ माला, हार, लड़ी. ८ रज्जु, रस्सी ।

वि०—किञ्चित, जरा, कम । उ०—दांम न होय उदास, मतलब गुण ग्राहक मिनख । ओखद रौ कड़वास, रोगी गिणै न राजिया । —किरपारांम

दांमड़ियौ, दांमड़ौ [सं० दामिट्ठी] देखो 'दांम' (अल्पा., रू.भे.)

दांमिट्ठी-संपु०—इन्द्र की रथ सेना का सेनापति ।

उ०—नाटय गंधरब हय गज त्रिखभ रथ पदाति रुपक तणा स्वामी नीलंजणारिद्धंजस हरि एरावण मातलि दांमिट्ठी हरिणेगमेसी सरवांगि सन्नाह पहिरि ।—व.स.

दांमण-संपु० [फा० दामन] १ वस्त्र का छोर ।

२ देखो 'दांमौ' (मह., रू.भे.) उ०—चूड़ौ चमकीलौ कचबीड़ौ चमकै, दांमण दमकीली दांमणि सी दमकै । भंवरचौ फुरणी में भंवराळौ झळकै, पाघर वहती रा पसवाड़ा पळकै ।—ऊ.का.

३ पहाड़ के नीचे की भूमि (अलवर)

[सं० दाम+रा०प्र०ण] ४ बंधन । उ०—१ इब्राहिम पूरब दिसा न उलटै, पछम मुदाफर न दै पयांण । दखणी महमदसाह न दौड़ै, 'सांगो' दांमण ग्रहै सुरतांण ।—महारांणा सांगा रौ गीत

५ देखो 'दांमणी' (रू.भे.) उ०—१ चिग पड़ दारु पाल चमंकै । दांमण जांण सिळार दमकै ।—सू.प्र.

उ०—२ किरमाळ झड़ै तनत्रांण कपै । झळकै किर दांमण मेघ वपै । —रा.रू.

६ देखो 'दांमणौ' (मह., रू.भे.) उ०—हाथी लख च्यार भेळा दांमण फेराया । तब पसवाड़ा फेरिया आळस मोड़ाया । —केसोदास गाडण

७ घन, घटा । उ०—काळी दांमण मैंगळां पाहड़ परमांणी, मैन बरां दांतूसळां मुख सोह मंडांणी ।—गिरधरदांन खिड़ियौ

८ देखो 'दावण' (२) (रू.भे.)

वि०—१ वंधन में डालने वाला, बांधने वाला. उ०—अति.मति ऊजळी रजवट प्रघट आसति, महरण मेर अजाद। ऊदमां दांमण कळहि असुरां, नरां नांमण नाद।—ल.पि.

२ चंचल (डि.को.)

रू०भे०—दांव, दावण।

दांमणणौ, दांमणबौ–क्रि०स०—ऊंट, बैल, घोड़े आदि पशुओं के पैर बांधना। दांवणणौ, दांवणबौ—रू०भे०।

दांमणगीर–सं०पु० [फा० दामन-गीर] दामन पकड़ने वाला।

दांमणि—देखो 'दांमणी' (रू.भे.) उ०—१ उघटंत नचत के कांमणि दमकं, घटा ऊजळ जिम दांमणि।—सू.प्र.

उ०—२ चूड़ौ चमकीलौ कचवीड़ी चमकं, दांमण दमकीली दांमणि सी दमकं। भँवरचौ फुरणी में भंवराळी भळकं, पाधर वहती रा पसवाड़ा पळकं।—ऊ.का.

दांमणियोड़ौ–भू०का०कृ०—पैर बंधा हुआ।
(स्त्री० दांमणियोड़ी)

दांमणियौ–वि० [सं० दमन] १ दमन करने वाला।

रू०भे०—दांवणियौ।

२ देखो 'दांमणौ' (अल्पा., रू.भे.)

दांमणी–सं०स्त्री० [सं० दामिनी] १ बिजली, विद्युत।

उ०—१ काळी कांठळ में दांमणियां दमकी, चित में कांमणियां विरहानळ चमकी। छूटी आसारां कासारां छिलती, पड़ती परनाळां पहुंवी पिलपिलती।—ऊ.का.

उ०—२ फौज घटा खग दांमणी, वूंद लगइ सर जेम। पावस पिउ विण वल्लहा, कहि जीवीजइ केम।—ढो.मा.

[सं० दामनी] २ रस्सी, रज्जु।

[सं० दाम = माला] ३ स्त्रियों के शिर पर धारण करने का एक आभूषण विशेष। उ०—गज मोत्यां री दांमणी, मुखड़ै सोभा देत। जांणै तारा पांत मिळ, राह्यौ चंद लपेट।—अज्ञात

(देश०) ४ विधवा स्त्रियों के ओढ़ने की एक प्रकार के पक्के रंग की रंगी ओढ़नी।

रू०भे०—दमिण, दांमण, दांमणि, दांमिण, दांमिणि, दांमिणी, दांमिन।

मह०—दांमणेस।

दांमणेस—देखो 'दांमणी' (मह., रू.भे.) उ०—रांम रूप घनस्यांम विराजै, सीता दुति दांमणेस साजै।—गी.रां.

दांमणौ–सं०पु० [सं० दाम, दामनी] १ गाय दुहते समय उस के पिछले पैरों को घुटनों के ऊपर से बांधने की रस्सी. २ ऊंट, घोड़ा, बैल आदि पशुओं के अगले पैर बांधने की रस्सी जिस से वे तेज भाग न सकें. ३ देखो 'दांमौ' (अल्पा., रू.भे.)

वि०—बांधने वाला। उ०—दइवांण उद्दम दांमणौ, इम करै जुध अधियांमणौ।—सू.प्र.

रू०भे०—दांवणौ, दावणौ।

अल्पा०—दांमणियौ, दांवणियौ।

मह०—दांमण, दांवण।

दांमणौ, दांमबौ–क्रि०स० [सं० दमन] १ बन्धन में डालना, बांधना।

२ दमन करना।

दांवणौ, दांवबौ—रू०भे०।

दांमाद–सं०पु० [फा० दामाद] पुत्री का पति, जँवाई, जामाता।

रू०भे०—दमाद।

दांमाळौ–वि० [सं० द्रम्मः+आलुच्] १ रुपये-पैसे का लोभी.

२ रुपये-पैसे वाला, धनवान।

दांमिण—देखो 'दांमणी' (रू.भे.) उ०—दुहुँ वाजार झंडा देठाळं। दांमिण गजां धजां देठाळं।—वचनिका

दांमिणी–सं०स्त्री०—एक प्रकार की लता या इसका फल जिस का शाक बनाया जाता है। उ०—दांमिणी दोभी दूधिग्रां, देवदाळि दूधेळि। दारूहळद्र दुरालभा, दह दिसी दीसइ वेलि।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'दांमणी' (रू.भे.)

दांमिणी, दांमिन—देखो 'दांमणी' (रू.भे.) उ०—१ स्रांवण मास में विरहणि जांमनी जांम न जात, सजि आडंबर जंबर दांमिणी मिळ वरसात।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल सबद सुणावै। घुमंट घटा ऊलर होइ आई, दांमिन दमक डरावै।—मीरां

दांमियोड़ौ–भू०कां०कृ०—१ बंधन में डाला हुआ, बांधा हुआ.

२ दमन किया हुआ।
(स्त्री० दांमियोड़ी)

दांमौ–सं०पु० [सं० दाम=बन्धन] परस्पर जुड़ी हुई दो अंगूठियों का जोड़ा विशेष जो हाथ के मध्य की दोनों अंगुलियों में पहना जाता है।

अल्पा०—दांमणौ।

मह०—दांमण।

दांमोदर–सं०पु० [सं० दामोदर] १ श्रीकृष्ण (अ.मा.)

२ विष्णु (डि.को.) ३. ईश्वर। उ०—१ नारायण रा नांम सूं, भरियौ रह भरपूर। दांमोदर नै दाखवै, दम दम कर नेंह दूर।
—ह.र.

उ०—२ दांमोदर दीजै मती, कायर कांठै वास। सरणं राखै सूर रै, तेथ न व्यापै त्रास।—बां.दा.

४ एक जैन तीर्थंकर का नाम. ५ रुपया पैसा रखने की लंबी थैली उ०—खत्था खेसलिया भाखलिया खांधै। वेझड़ दांमोदर चांमोदर वांधै।—ऊ.का.

दांमोदांम–वि० [सं० द्रम्मः] पूर्ण। उ०—वांणी दीनदयाळ री, सुणलौ दांमोदांम। सबद सबद में या कही, रांमचरण भज रांम।
—सगरांमदास

दाउदी—देखो 'दाऊदी' (रू.भे.)

दाउमू-सं०पु०—सोने या चांदी के ग्राभूषणों पर दानेदार खुदाई करने का एक ग्रौजार विशेष ।

दाऊ-सं०पु० [सं० देव] १ श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलदेव, बलराम.
२ बड़ा भाई ।
३ देखो 'दाव' (रू.भे.)

दाऊजी-सं०पु० [सं० देव] १ लड़कियों द्वारा गाया जाने वाला लोक-गीत.
२ श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम।

दाऊदखांनी-सं०पु० [फ़ा० दाऊदखानी] १ उत्तम प्रकार का सफेद गेहूँ.
२ एक प्रकार का चावल ।

दाऊदी-सं०पु० [ग्र०]—१ एक प्रकार का पौधा जिस के श्वेत रंग का पुष्प होता है. २ इस पौधे का पुष्प ।
रू०भे०—दाउदी, दावदी, दावदी ।

दाग्रौ—देखो 'दावौ' (रू.भे.)

दाकळणौ, दाकळबौ-क्रि०स०—ललकारना, धमकाना ।
उ०—१ ग्रर रण रा गळियार रोस में रजोगुण रै रूप हुवा थका सिंहनाद रै साथ दाकळिया ।—वं.भा.
उ०—२ माळां चढ़ ऊभा रखवाळ, दाकळै गोफणियां सूंसाय । उडै जद चिड़ियां-टूल ग्रलेख, ग्रजकता ग्राभै में गम जाय ।—सांझ

दाकळियोड़ौ-भू०का०कृ०—ललकारा हुग्रा, धमकाया हुग्रा ।
(स्त्री० दाकळियोड़ी)

दाक्षिण-सं०पु० [सं०] एक होम का नाम ।
वि०—दक्षिण सम्बन्धी, दक्षिण का ।
रू०भे०—दाखिण ।

दाक्षिणात्य-वि० [सं०] दक्षिण का, दक्खिनी ।
सं०पु०—१ दक्षिण देश. २ भारत का दक्षिणी भाग. ३ दक्षिण का निवासी. ४ नारियल ।
रू०भे०—दाखिणात्य ।

दाक्षिणिक-सं०पु० [सं०] कामना को वश में करने से दक्षिण प्रधान इष्टा पूर्त ग्रादि कर्मो को करने से होने वाला बंधन ।
रू०भे०—दाखिणिक ।

दाक्षी-सं०स्त्री० [सं०] १ राजा दक्ष की कन्या. २ पाणिनी की माता का नाम ।
रू०भे०—दाखी ।

दाख-सं०स्त्री० [सं० द्राक्षा] १ किशमिश. २ मुनक्का. ३ ग्रंगूर।

दाखणौ-वि० [सं० दृश] १ दिखाने वाला. २ प्रकट करने वाला ।
३ कहने वाला. ४ वर्णन करने वाला, कथने वाला ।
रू०भे०—दक्खणौ, दखणौ, दख्यणौ, दाखवणौ ।

दाखणौ, दाखबौ-क्रि०स० [सं० दृश] १ दिखाना ।
उ०—वेटउ रूडु करंतउ जांणी, ताखणि ग्रावी गंगारांणी । वेउ पखि झूझु करंतां राखइ, नियप्रिय ग्रागळि नंदणु दाखइ ।—पं.पं.च.
२ कहना । उ०—१ ग्रखावंत देखै जिकै नीर पाया । इसा जोध दाखौ ग्रठै केमि ग्राया ।—सू.प्र.
३ वर्णन करना, कथना । उ०—१ तेता मारू मांहि गुण, जेता तारा ग्रभ्भ । उच्चळचित्ता साजणां, कहि वयउं दाखउं सभ्भ ।—ढो.मा.
उ०—२ सुकवि सुमुख पग नाय सिर, हिय थिर ग्रांण हुलास । कुकवि वतीसी ग्रंथ कवि, दाखै बांकीदास ।—बां.दा.
४ प्रकट करना ।
दाखणहार, हारौ (हारी), दाखणियौ—वि० ।
दखवाड़णौ, दखवाड़बौ, दखवाणौ, दखवावौ, दखवावणौ, दखयावबौ, दखाड़णौ, दखाड़बौ, दखाणौ, दखावौ, दखावणौ, दखावबौ, दाखाड़णौ, दाखाड़बौ, दाखाणौ, दाखावौ, दाखावणौ, दाखावबौ—प्रे०रू० ।
दाखिग्रोड़ौ, दाखियोड़ौ, दाख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
दाखीजणौ, दाखीजबौ—कर्म वा० ।
दक्खणौ, दक्खबौ, दखणौ, दखबौ, दख्यणौ, दख्यबौ, दाखवणौ, दाखवबौ—रू०भे० ।

दाखल—देखो 'दाखिल' (रू.भे.) उ०—१ ताहरां चांदै कह्यौ—'थे भो मता मांनो, कोई ईस्वर तो न छै । जैमल रो भय थे मतां करौ। ग्राप नूं जोधपुर रै कोट दाखल हूं कर देईस ।—नैणसी
उ०—२ कह्यौ—खेरवौ जोधपुर रो छै । पछै पातसाहजी सैदां नूं लिख मेलियो । तठा थी खेरवौ जोधपुर दाखल हुवौ ।
—राव चंद्रसेण री वात

दाखल-खारिज—देखो 'दाखिल-खारिज' (रू.भे.)

दाखल-दफ्तर—देखो 'दाखिल-दफ्तर' (रू.भे.)

दाखलौ-सं०पु० [ग्र० दाखिल:] १ किसी संस्था ग्रादि में सम्मिलित किये जाने का कार्य. २ प्रवेश, पैठ. ३ वह मसला या बात जो याददास्त हेतु ग्रथवा किसी को उक्त विषय से ग्रवगत कराने हेतु दर्ज किया जाय या टांका जाय ।
मुहा०—दाखलौ दैणौ—दर्ज करना, टांकना, किसी ग्रर्जी, पत्र ग्रादि में किसी ग्रावश्यक बात को लिखना ।
४ किसी वस्तु के जमा होने, पाये जाने या भेजे जाने की मिति ग्रादि का दर्ज किया हुग्रा कागज. ५ किसी वस्तु के दाखिल या जमा होने का ब्यौरा लिखा हुग्रा कागज. ६ ग्रधिकार । उ०—१ नागनय ऊपर वास कियौ, भाद्रसेर वांसै खंगार ली तिका ग्रजे भुज रा धणी रै दाखलै छै ।—नैणसी
उ०—२ गांव ५०० सो उठै ग्रापरै दाखलै किया । ऊंनड़ री वडी साहबी, सु उतरा मांहे ग्रमावी हुई ।—नैणसी
मुहा०—दाखलै करणौ—ग्रधिकार में करना, ग्रपने ग्रधीन करना ।
रू०भे०—दाखिलौ ।

दाखवणौ, दाखवबौ—देखो 'दाखणौ, दाखबौ' (रू.भे.)
उ०—१ दाखवियउ घणूं घणउ कहि दूजइ, संभु ग्रयगा प्रभु वाय वहइ । ग्रापण दिख ग्रहमेव ग्रहगळी, कोडि न मांनइ वात कहइ ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ नारायण रा नांम सूं, भरियो रह भरपूर। दांमोदर नां दाखवं, दम दम कर नंह दूर।—ह.र.

उ०—३ आखर थे पिण समझणहार सनेहा नवि दाखविस्यो छेहा हो।—वि.कु.

दाखवणहार, हारौ (हारी), दाखवणियौ—वि०।

दाखविओड़ो, दाखवियोड़ो, दाखव्योड़ो— भू०का०कृ०।

दाखवीजणो, दाखवीजबो—कर्म वा०।

दाखवियोड़ो—देखो 'दाखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दाखवियोड़ी)

दाखिण—देखो 'दाक्षिण' (रू.भे.)

दाखिणात्य—देखो 'दाक्षिणात्य' (रू.भे.)

दाखिणिक—देखो 'दाक्षिणिक' (रू.भे.)

दाखियोड़ो-भू०का०कृ०—१ दिखाया हुआ. २ कहा हुआ. ३ वर्णन किया हुआ, कथा हुआ. ४ प्रकट किया हुआ।

(स्त्री० दाखियोड़ी)

दाखिल-वि० [अ० दाखिल] १ प्रविष्ठ। उ०—१ इतरै सारो लोग आंण सांमल हुवो, उठा सूं कूच कियो सो मजल-दर-मजल हाल वै नागोर दाखिल हुवा।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ डेरां दाखिल दुरूल, होय दरवार क्रोध हद। जठै आदि जैसाह', जवन सह आय मिळै जद।—सू.प्र.

२ मिला हुआ, सम्मिलित, शरीक।

रू०भे०—दाखल।

दाखिल-खारिज-सं०पु० [अ० दाखिल+फा० खारिज] किसी सरकारी कागज पर से किसी जायदाद के हकदार का नाम काट कर उस पर उस के वारिस या दूसरे हकदार का नाम लिखने का काम, एक व्यक्ति की जगह दूसरे का मालिक नियुक्त होना।

रू०भे०—दाखल-खारिज।

दाखिल-दफ्तर, दाखिले-दफ्तर-वि० [अ० दाखिल+फा० दफ्तर] किसी प्रार्थना-पत्र का अस्वीकृत हो कर मिसिल में किसी सुबूत आदि के लिए सुरक्षित रहना।

रू०भे०—दाखल-दफ्तर।

दाखिलो—देखो 'दाखलो' (रू.भे.)

दाखी—देखो 'दाक्षी' (रू.भे.)

दाखीण-सं०पु० [सं० दाक्षिण्य] किसी के हित की ओर प्रवृत्त होने का भाव, अनुकूलता। उ०—तरै जैतसी जी बोल्या—बाई, म्हांनै पण छै बांमण, चारण, भाट, सवासणी—इनरां री विस्वो खांण री पण छै, सो पण भांज्यो धारा दाखीण सूं।

—जैतसी ऊदावत री वात

दाग-सं०पु० [फा० दाग़, सं० दग्ध] (वि० दागल, दागी) १ पशुओं के शरीर पर पहिचान हेतु अग्नि-दग्ध क्रिया द्वारा बनाया हुआ निशान विशेष।

क्रि०प्र०—देणो, लगाणो।

[फा० दाग़] २ रंग का वह भेद जो किसी वस्तु के तल पर अलग दिखाई पड़े, चित्ती, धब्बा।

क्रि०प्र०—पड़णो, लागणो।

३ चिन्ह, निशान. ४ कलंक, दोष, लांछन।

उ०—१ देरांणी कुळ ऊपजी, दोही पख विण दाग। की मुख ल्होड़ी सौक री, थारो लियण सुहाग।—वी.स.

उ०—२ दूजां ज्यूं भागो नहीं, दाग न लागो देस। बागां खागां बंकड़ो, मह बांको 'माहेस'।—महेसदास कूंपावत रो दूहो

क्रि०प्र०—लागणो।

५ पाप, अघ।

उ०—राखै घेख न राग, भाखै न जीहा बुरो। दरसण करतां दाग, मिटै जनम रा मोतिया।—रायसिंह सांदू

क्रि०प्र०—छूटणो, मिटणो।

[सं० दाघ:] ६ अग्नि। उ०—एक फिरत आतुर भ्रमित, विद्युत सम चित दाग। उचकै पग पुगै अवनि, जांणिक लग्गै दाग।—रा.रु.

७ जलन। उ०—कसंता बिजै मंड कोदंड कंधां, वणावै त्रिया बर रै जेरबंधां। सटा याळ जाळी लटाळी सुहावै, प्रिया नागवाळी लसै दाग पावै।—वं.भा.

८ जलाने का काम, दाह. ९ मुर्दा जलाने की क्रिया, मृतक का दाह-कर्म। उ०—१ सो आदमी आठ तो मर गया त्यांनूं खड़ा रहि दाग दिरायो।—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

उ०—२ सो पांच हजार डोळी ऊठी बाकी खेत रहियां नूं दाग दिरायो, देहली आया।—गौड़ गोपाळदास री वारता

मुहा०—दाग देणो—मुरदे का क्रियाकर्म करना, मृतक का दाह-संस्कार करना।

रू०भे०—दग, दग्ग।

दागड़ियो-सं०पु० (देश०)—१ ठग, धूर्त. २ लूटेरों या डाकुओं के दल का व्यक्ति।

दागड़ो-सं०पु० (देश०)—डाकुओं अथवा लुटेरों का पैदल समूह।

दागणो, दागबो-क्रि०स० [सं० दग्ध अथवा दह] १ दाह-संस्कार करना।

उ०—१ सूड़ा, सगुण ज पंखिया, म्हांकउ कह्यउ करे ज। नव मण चंदण मण अगर, माळवणी दागे ज।—ढो.मा.

उ०—२ हर हर कर परहर अवर, हरि रो नांम रतन्न। पांचू पांडव तारिया, कर दागियो करन्न।—ह.र.

उ०—३ पिंड री हुती प्रतीत, साकदड़ै दीधी सरव। इण घर आ हिज रीत, 'दुरगो' ही सफरा दागियो।—ठा० करणसिंह चांपावत

२ दग्ध करना, जलाना। उ०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जांण्या, दुतिये काष्ठ दागी। जीवन मुक्ति सदा सुखदाई, समदरसी वीतरागी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

३ चिन्ह अंकित करने वाले लोहे के उपकरण को तपा कर पशुओं

के शरीर के किसी अंग को दग्ध करना जिस से अभीष्ट चिन्ह अंकित हो जाय।

४ तोप, बन्दूक आदि छोड़ना। उ०—गंज गाडां जंबूरां जंजाळां दागी गोम गाज, दळां आडा अच्छरां अच्छरां लागी दीठ। जाडा थंडां ऊपरे जोसेल आग जागी जठै, रोसेल गुराड़ां हाडां वागी खागा रीठ।—दुरगादत्त बारहठ

५ किसी रंग आदि से चिन्ह अंकित करना, धब्बा करना।

दागणहार, हारौ (हारी), दागणियौ—वि०।

दगवाड़णौ, दगवाड़बौ, दगवाणौ, दगवाबौ, दगवावणौ, दगवावबौ, दगाड़णौ, दगाड़बौ, दगाणौ, दगाबौ, दगावणौ, दगावबौ, दागाड़णौ, दागाड़बौ, दागाणौ, दागाबौ, दागावणौ, दागावबौ—प्रे०रू०।

दागिग्रोड़ौ, दागियोड़ौ, दाग्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दागीजणौ, दागीजबौ—कर्म वा०।

दंगणौ, दंगबौ, दगणौ, दगबौ—अक०रू० एवं रू०भे०।

दागभाव–सं०पु०—हाथी का एक रोग।

दागल–वि० [फ़ा० दाग+रा०प्र०ल] १ जिस पर दाग लगा हो, जिस पर धब्बा हो। उ०—केम कळंक लागै कुळ निकळंक, जालम तूझ तणा रव जेम। कंद वाळा नह हुग्रै समंद कण, हुग्रै नहीं दागल अंग हेम।—चत्रभुज सौदौ

२ जिस पर सड़ने का चिन्ह हो, दागी. ३ चिन्हित किया हुआ (पशु)। उ०—अकबरियै इक बार, दागल की सारी दुनी। अण-दागल असवार, रहियौ रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

४ कलंकित, दोषयुक्त, लांछित। उ०—१ दागल नह हुग्रै 'सारंगदे' दूजा, रांणा तूझ तणी रजवाट। मैला नहीं हुग्रै मोताहळ, कंचन कदे न लागै काट।—चत्रभुज सौदौ

उ०—२ सांगी सतहीणा है जतहीणा, मतहीणा मांगंदा है। पागल सिस पाया दागल दाया, भागल सिर भागंदा है।—ऊ.का.

५ सजा पाया हुआ, दंडित।

रू०भे०—दगैल, दागी।

दागियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ दाह-संस्कार किया हुआ. २ दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ. ३ चिन्हित किया हुआ (पशु) ४ तोप-बंदूक आदि छोड़ा हुआ. ५ किसी रंग आदि से चिन्ह लगाया हुआ, धब्बा लगाया हुआ।

(स्त्री० दागियोड़ी)

दागी—देखो 'दागल' (रू.भे.)

दागीणौ–सं०पु० [फा० दाग+रा० प्र० ईणौ] १ चीज, पदार्थ, वस्तु, गहना, जेवर. २ आभूषण।

वि०—१ जिस पर दाग लगा हो, जिस पर धब्बा हो.

२ जिस पर सड़ने का चिन्ह हो, दागी. ३ चिन्हित किया हुआ (पशु) ४ कलंकित, दोषयुक्त, लांछित. ५ सजा पाया हुआ।

दाघ–सं०स्त्री० [सं० दाघः] १ गरमी, ताप. २ दाह, संताप।

उ०—बैरी कंटक नाग विस, वीछू कैंवच बाघ। यां सूं दूर रहंतड़ां, दूर रहै दुख दाघ।—बां.दा.

३ पीड़ा, क्लेश, दुःख। उ०—रूप सोभागइ आगळ, सुरकन्या कइ लीधउ रे। लीधउ नइ दीधउ दाघ, हीइ घणु ए।

—नळ-दवदंती रास

४ वैद्यक के अनुसार पित्त से प्रकुपित एक रोग विशेष जिस में शरीर में जलन मालूम होती है, कंठ सूकता है और प्यास लगती है (व.स.)

५ अंतिम संस्कार, दाह-क्रिया।

रू०भे०—दाघ, दाह।

दाघणौ, दाघबौ–क्रि०स० [सं० दग्ध] जलाना।

दाघवणौ, दाघवबौ—रू०भे०।

दाघवणौ, दाघवबौ—देखो 'दाघणौ, दाघबौ' (रू.भे.)

उ०—मुख मंगळ नांम उचार सदा, तन के अघ ओघन दाघव रे। हनमंत बिभीखन भांन तनै, जिन कीन वडे जन लाघव रे।—र.ज.प्र.

दाघवियोड़ौ—देखो 'दाघियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दाघवियोड़ी)

दाघियोड़ौ–भू०का०कृ०—जलाया हुआ।

(स्त्री० दाघियोड़ी)

दाघौ—वि० [सं० दग्ध] जलाने वाला, भस्मीभूत करने वाला।

उ०—१ कीजै वारणै छिब कांम कौटिक दीन दुख दाघौ। साभाव सरण-सधार स्रीवर, राज रौ राघौ।—र.ज.प्र.

दाड़—१ देखो 'डाड' (रू.भे.) २ देखो 'दहाड़' (रू.भे.)

दाड़कली–१ देखो 'दाढ़ी' (अल्पा; रू.भे.) २ दाढ़ी के बाल।

दाड़म–सं०स्त्री० [सं० दाडिम] १ अनार (एक फल) (अ.मा.)

पर्या०—गदपाळ, पिंगपुस्ट, सुकप्रिय, हालम-कर।

२ दाडिम वृक्ष।

रू०भे०—डाडिम, दाड़ू, दाड़िम, दाड़िमी, दाडिम, दाडिमी, दाडूं, दाडया, दाडयूम, दाडेयू, दारिउं।

अल्पा०—दाड़मियौ।

दाड़मियौ—देखो 'दाड़म' (अल्पा., रू.भे.) उ०—दांतड़ला मूमल रा दाड़मियै रा वीज रे, कोई होठड़ला मूमल रा जांणै हिंगळू ढोळियौ। हरियाळी ग्रे मूमल हालै तौ ले चालूं मुरधर देस में।—लो.गी.

दाड़मी—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—छुटी वूंद आंसू आंण अछव, जुटी मांणक दमंक जळा। लालबंद कसां नी तुटी लड़, कर छुटी दाड़मी कुळा।—कविराजा करणीदांन

दाड़व–सं०पु० (देश०) कासी से दो योजन पश्चिम में एक ग्राम जिस में कल्कि भगवान अधर्मी म्लेच्छों का नाश कर के शांतिपूर्वक निवास करेंगे। (भविष्य ब्रह्मखण्ड)

दाड़िम, दाड़िमी—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—१ असहां सुणत छाती एम जायै फाट दाड़िम जेम।—रा.रू.

उ०—२ दाड़िमी बीज विसतरिया, दीसै निउंछावरि नांखिया नग।

चरणे लुंचित खग फळ चुंबित, मधु मुंचंति सीचंति मग ।—वेलि.

दा'ड़ो–सं०पु०—१ सूर्य ।

कहा०—दा'ड़ो वावची ऊगा जे करण हूं अणचाना न है—सूर्य का उदय होना किसी से छिपा नहीं रहता है अर्थात् जो बात सहज ही सब के लिये स्पष्ट हो वह छिपाई नहीं जा सकती (भील)

२ देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.) उ०—दटै गिण न दा'ड़ा दुसह, धाड़ा सके धकेल । रजवाड़ा परदै रटक, पोंव प्रवाड़ा पेल ।

—रेवतसिंह भाटी

दाछंट वि० (देश०) निर्भय, निःशंक ।

दाजणो, दाजबो—देखो 'दाझणो, दाझबो' (रू.भे.)

उ०—दई देतां डांमड़ा दीया का सासू हाथ दाजै, राळै वनी नांमड़ा पीया का माथै रेत ।—उदैभांण बारहठ

दाजियोड़ो—देख 'दाझियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दाजियोड़ी)

दाझ, दाझण–सं०स्त्री० [सं० दह] १ जलन, दाह । उ०—आखे अेम 'ओपलो' आढ़ो, खूनी कासूं लाभ खटै । ताहरी रसण डसण ताखा री, मेळूं जद मो दाझ मिटै ।—ओपो आढ़ो

२ ईर्ष्या, डाह ।

दाझणो, दाझबो–क्रि०अ० [सं० दह] १ तप्त होना, जलना ।

उ०—१ बंदीवाळूं घणा सीदाता, दीठा पाडइ डाढ़ि । दीसि अगासइ तावडि दाझइ, रातइ वाइ ताढ़ि ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ भली थूं सांझ सुखां री दैण, दाझतै दिनड़ै री ठाडोळ । नींद री नणदल सपनां सेज, परणती सरग परी री खोळ ।—सांझ

२ आंच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित व विकृत होना, झुलसना । उ०—प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि । हियड़ा भीतर प्रिय वसइ, दाझणती डरपाहि ।—ढो.मा.

मुहा०—दाझ्या माथै डांम—जले हुए को और जलाना, दुखी को अधिक दुखी करना, जले पर नमक छिड़कना ।

३ किसी पदार्थ का अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में हो जाना, जलना, भस्म होना, दग्ध होना । उ०—ए वि वर इंद्रि आपिया, प्रीति करी निस्चळ स्थापिया । पावक तेड्यू आवि पास, दाझि नहीं तेणि तनु (हु) तास ।—नळाख्यांन

४ किसी पदार्थ का बहुत गर्मी या आंच के कारण रूप बदल देना, विकृत हो जाना । भाप या कोयले आदि के रूप में हो जाना । ज्यूं—पेड़ दाझणो, रोटी दाझणी, घी दाझणो ।

उ०—जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ वन खंड दाह । जिण रित माळवणी कहइ, कुंण परदेसां जाह ।—ढो.मा.

५ दुखी होना, संतप्त होना । उ०—१ दादू इस संसार सौं, निमख न कीजै नेह । जांमण मरण आवटणा, छिन छिन दाझै देह ।

—दादू वांणी

उ०—२ रहच खळां दळ रोळणा, वीर उभै वरियांम । 'किचनर' 'पाताल' रै करां, लंदन तणी लगांम । कावल साझी जिण करां, दाझी चीण दरद्द । 'पतो' धरा यूरोप री, माझी मेर मरद्द ।

—किसोरदांन बारहठ

उ०—३ प्रजळै उर पातिसाह, दाह औरिस अति दाझै । मनै न हुकम अमीर, साह मनसूबा साझै ।—सू.प्र.

उ०—४ यह संसार खार में दीसै, (तांमें) दाझै जीव अपार । पीवत छकै थकै निज मारण, मैं ते मोह विकार ।—ह.पु.वा

६ विरहानल में जलना, संतप्त होना । उ०—विरह-भुअंगमि हूं डसी, खिण खिण दाझइ देह । माहरइ माधव-कैरडी, आस अमी-रस अेह ।—मा.कां.प्र.

७ ईर्ष्या करना, कुढ़ना, जलना । उ०—समजावै सोही वैरी वोही, द्रोही हुय दाझंदा है । पिंड में नहि पांणी निज निरमांणी, सठ हांणी साझंदा है ।—ऊ.का.

दाझणहार, हारो (हारी), दाझणियो—वि० ।

दझळवाड़णो, दझळवाड़बो, दझळवाणो, दझळवाबो, दझळवावणो, दझळवावबो, दझवाड़णो, दझवाड़बो, दझवाणो, दझवाबो, दझवावणो, दझवावबो—प्रे०रू० ।

दझाड़णो, दझाड़बो, दझाणो, दझाबो, दझाळणो, दझाळबो, दझावणो, दझाववो, दोझाळणो, दोझाळबो—क्रि०स० ।

दाझिओड़ो, दाझियोड़ो, दाझ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दाझीजणो, दाझीजबो—भाव वा० ।

दझणो, दझबो—रू०भे० ।

दाझियोड़ो–भू०का०कृ०—१ तप्त हुवा हुआ, जला हुआ. २ आंच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित व विकृत हुवा हुआ, झुलसा हुआ. ३ अग्नि के संयोग में आ कर लपट के रूप में हुवा हुआ, भस्म हुवा हुआ, जला हुआ. ४ आंच या तेज गर्मी के कारण रूप बदला हुआ, भाप या कोयले के रूप में हुवा हुआ. ५ संतप्त हुवा हुआ, दुखी । ६ विरहानल में जला हुआ, संतप्त. ७ ईर्ष्या किया हुआ, कुढ़ा हुआ, जला हुआ ।

(स्त्री० दाझियोड़ी)

दाट–सं०पु० [सं० दान्तिः]—१ बोतल इत्यादि का मुंह बन्द करने की वस्तु, कॉर्क, डाट. २ प्रतिबंध, रोक. ३

उ०—नवरंग कटाच्छ रस रंग नृत, जंग जंग वाजिय जगत । ह्वै रंमिय उरप तुरपंग हद, लाग दाट अेवट लगत ।—सू.प्र.

४ नाश, ध्वंस । उ०—१ पड़ झाट थाट छळराट पाट, दिल्लीस जळै दळ वळै दाट ।—रा.रू.

उ०—२ खग-झाट मुंह वह थाट-खेसण, दाट-दह अवियाट । भिड़ घाट घाय रिम-घड़ा भांजण, दुयण वाळण दाट ।—नैणसी

क्रि०प्र०—वाळणी ।

५ फटकार. ६ देखो 'डाट' (रू.भे.) उ०—उचार काट अन्य बाट वेद बाट में बहे, निराठ दाट घाट की नहीं सम्राट की सहे ।—ऊ.का.

दाटक–वि० (देश०) १ वड़ा, महान्, जवरदस्त ।
उ०—समोभ्रम 'आणंद' 'सूर' 'संग्रांम' । करै खग भाटक दाटक कांम ।—सू.प्र.
२ समर्थ । उ०—दाटक रांम आलाटक दंडण । हाटक कोट अधीस विहंडण ।—र.ज.प्र.
३ शक्तिशाली, जबरदस्त । उ०—१ रघुनाथ संत समाथ तारण, नाथ वोहीनांमी । दसमाथ भंज प्रचंड दाटक, भुजाडंड भांमी ।
—र.ज.प्र.
उ०—२ दाटक अनड दंड नह दीधौ, दोयण घड़ सिर दाव दियौ । मेळ न कियौ जाय विच महलां, केळपुरै खगमेळ कियौ ।—दुरसौ आढ़ौ
४ भयंकर । उ०—करदे वाळ कळाप जद, नांनी यम जांणियौ । सूतौ दाटक साप, परत जगायौ पापणी ।—पा.प्र.
५ दमन करने वाला । उ०—थाहण खळ दळां विरद थाटक रा, दाटक रा क्रपणां दहलोत । करै उछट क्रीत खाटक रा, हाटक रा गहणा गहलोत ।—लिछमणसिंह सीसोदिया री गीत
रू०भे०—दाटी, दाटीक, दाठीक ।

दाटणौ–वि० [सं० दम्] १ दमन करने वाला, दवाने वाला, नाश करने वाला । उ०—खत्री वट खागिति आगि खंगार जिसा व्रिद खाटणौ । दळांपति आरंभ रांम दुगांम खळां दळ दाटणौ ।—ल.पिं.
२ काटने वाला, संहार करने वाला. ३ वश में करने वाला ।
४ अधिकार करने वाला, कब्जा करने वाला. ५ गाड़ने वाला, दवाने वाला ।

दाटणौ, दाटबौ–क्रि०स० [सं० दम्] १ दमन करना, दवाना ।
उ०—तेण संत तराया, गाथ वेदस गाया । लेख हाथ लगाया, दळां आसंख दाट । तार वांम रखीते, सू चंदर सखीते, पाळ दीन पखीते, कळेसां सत्र काट ।—र.ज.प्र.
२ कब्जा करना, अधिकार करना । उ०—१ उतन विलायत किलकता कांनपुर आविया, ममोई लंक मदरास मेळा । यलम धुर वहण अंगरेज दाटण यळा, भरतपुर ऊपरा हुवा भेळा ।
—कविराजा बांकीदास
उ०—२ पढ़ी बीर पाटी पाव आरांण न आगै पाछा, ताखा लाटी वठाई ऊगती मूछां तांण । बाप खाटी मेदनी, उजाळा रूकां पांण वापौ, राज दाटी भुजां रै भरोसै भाला रांण ।
—गोपाळदांन दधवाड़ियौ
३ वश में करना, कावू में रखना, दवाना । उ०—घर-घर ओघट घाट, टाट निस दीह कुटावै । दिल नहिं लेवै दाट, लाट गंज हाट लुटावै ।—ऊ.का.
४ गाड़ना, दवाना, छिपाना । उ०—यळ ऊपर लोभी अपत, नह राखै निज नांम । यळ भीतर खाटै अधम, दाटै राखै दांम ।—बां.दा.
उ०—२ बांटी वीकाणै; 'रासै' माया राठवड़ । जुग सारौ जांणै, महिम्र न दाटी मोतिया ।—रायसिंह सांदू
५ देखो 'डाटणौ' डाटबौ' (रू.भे.)
दाटणहार, हारौ (हारी), दाटणियौ—वि० ।
दटवाड़णौ, दटवाड़बौ, दटवाणौ, दटवाबौ, दटवावणौ, दटवाववौ, दटाड़णौ, दटाड़बौ, दटाणौ, दटावौ, दटावणौ, दटावबौ—प्रे०रू० ।
दाटिओड़ौ, दाटियोड़ौ, दाटचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
दाटीजणौ, दाटीजबौ—कर्म वा० ।

दाटियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ दमन किया हुआ, दवाया हुआ. २ कब्जा किया हुआ, अधिकार किया हुआ. ३ वश में किया हुआ, कावू में रखा हुआ, दवाया हुआ. ४ गाड़ा हुआ, दवाया हुआ, छिपाया हुआ.
५ देखो 'डाटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दाटियोड़ी)

दाटी—देखो 'दाटक' (रू.भे.)

दाटीक—देखो 'दाटक' (रू.भे.) उ०—हाकियां सूं पादरौ नह हालै, वांकम नीर वाहण अवळ । मंत्र जंत्र ओखद नह मूळी, खादा जण दाटीक खळ ।—नींवाज ठाकुर जगरांमसिंह रौ गीत

दाटौ—देखो 'डाटौ' (रू.भे.) उ०—कर दिल काठौ दियौ न दाटौ, मन माठौ मुरझाई नै । उर सूं काठौ आगै पड़ियौ, औ भाटौ जद आई नै ।
—ऊ.का.

दाठीक, दाठीकर–वि० [सं० दृष्टिकर ?] १ धैर्यवान्, बुद्धिमान ।
उ०—राव रायसिंघ री वैर, राव उदैसिंघ री मां चांपांवाई, राव गांगा री वेटी, सु निपट दाठीक आदमी ।—नैणसी
२ गंभीर. ३ देखो 'दाटक' (रू.भे.)

दांड—देखो 'डाड' (रू.भे.)

दाडाळ—१ देखो 'डाढ़ाळ' (मह., रू.भे.) उ०—धमक नाळ घर धसकि, थाट परवत थरसल्ले । कमळ सेस भिड़ कमठ, दाढ़ दाडाळ दहल्ले ।
—सू.प्र.
२ देखो 'दाढ़ाळ' (रू.भे.) ३ देखो 'डाढ़ाळी' (मह., रू.भे.)

दाडिम—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—दांति दुरालभ दूधीउ, दाडिम द्राख दधूण । देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण ।
—मा.कां.प्र.

दाडिम कुसुम–वि० [सं०] लाल* (डिं.को.)

दाडिमसार–सं०पु०—वस्त्र विशेष (व.स.)

दाडिमहूलौ–सं०पु०—एक प्रकार का कीमती वस्त्र । उ०—भइरव सांनवाफ पहिरणइ, दाडिमहूला ते ऊढ़णइ । वंधालग पहिरइं वहूमूलि, अंबोडे चांपा नां फूल ।—प्राचीन फागु संग्रह

दाडिमास्टक–सं०पु० [सं० दाडिमाष्टक] वैद्यक में अनार के छिलके आदि से तैयार किया जाने वाला चूर्ण ।

दाडिमी—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—अधर प्रवळ सा जांणजे, दांत दाडिमी वीज । रसना नागर पांन सी, चूंपां चमकै वीज ।
—कुंवरसी सांखला री वात

दाडूं, दाड्या, दाडयूम, दाड्यूं—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) (अमरत)

दाढ़—१ देखो 'डाड' (रू.भे.) उ०—१ प्रथम्मी जाती रेस पायाळ, दाढ़ां विच राखी दीनदयाळ। राखी धर वार किता तै रांग, राखे हिरणाख विखै संग्रांम।—ह.र.

उ०—२ धमक नाळ धर धसकि, थाट परवत थरसल्ले। कमळ सेस भिड़ कमठ, दाढ़ दाढ़ाळ दहल्ले।—सू.प्र.

२ देखो 'डाढी' (रू.भे.) उ०—दाढ़ गरद्दां मारिया, श्रंग जरद्दां दूण। रूप मरद्दां मीर सब, लंक करद्दां तूंण।—रा.रू.

दाढ़णौ, दाढ़बौ–क्रि०स० [सं० दंशन] १ दांतों से चबाना, कुचलना (पोकरण)

२ देखो 'डाडणौ, डाडबौ' (रू.भे.)

दाढ़ाळ—१ देखो 'डाढ़ाळी' (मह., रू.भे.) २ देखो 'डाढ़ाळौ' (रू.भे.) (ना. डि.को., ह.नां, श्र.मा.)

उ०—१ वेढ़ नश्रीठा वज्जिया, दोय पोहर दाढ़ाळ। 'भांण' भले रिण भांजिया, चोडै चांमरयाळ।—रा.रू.

उ०—२ दंतकुळी श्रंगुळी मत्थ पग हत्थ निराळा। श्रंत तंत्र विस्थरी हूंत दाढ़ाळ हठाळा।—रा.रू.

उ०—३ धमक नाळ धर धसकि, थाट परवत थरसल्ले। कमळ सेस भिड़ कमठ, दाढ दाढ़ाळ दहल्ले।—सू.प्र.

दाढ़ाळी—देखो 'डाढ़ाळी' (रू.भे.) उ०—सेखाराव नूं मुळतांण सपाहां, जड़ियौ साकळ जाळी। पाछौ जको श्रांणियौ पूंगळ, देवी थै दाढ़ाळी। —बां.दा.

दाढ़ाळौ—देखो 'डाढाळौ' (रू.भे.) उ०—१ हेक पराया जव चरौ, हालो ऊगां सूर। दाढ़ाळा भूंडण भणै, भागां भाखर दूर।—हा.झा.

उ०—२ पागाळा सेड़े पमंग, दाढ़ाळा जमदूत। किम न्हासूं वांणै श्रगे, रांणां हूं रजपूत।—पा.प्र.

दाढ़ी—देखो 'डाढी' (रू.भे.) उ०—१ दखै नांम श्रल्लाह दे हाथ दाढ़ी। चवै रांम मूंछां वळे भ्रूंह चाढ़ी।—सू.प्र.

उ०—२ तिण ऊपरि रांमसिंघजी विरागिया। दाढ़ी न सुंवराड़ै। कपड़ा न धोवाड़ै। वागौ न पहिरै।—द.वि.

दाढेची–सं०स्त्री०—जिस के दाढ़ी हो, दाढ़ी वाली, देवी, दुर्गा।

उ०—माढ़ेची सींघं महिप. पाढ़ेची खळ पंथ। काढ़ेची दुख कविजणां, दाढेची रिम दंत।—बालावख्स बारहठ राजूकी

दात–सं०पु० [सं० दत्त] १ दहेज। उ०—१ पग पग बावल चूंरी खुदायी, दीनों दोवड़ दात। श्रो ल्यौ भावज घर श्रापणूं, मैं तो जावूं पियाजी रै देस।—लो.गी.

उ०—२ वाणी सगळी वस्तु संभाळ एकट्ठी कर सारै साथ नूं दिखाय पछै भरमल री मां नूं बुलाय दिखाड़िया। रूपै री दात, वेस पांच सौ, सौ वेस तो भरमल नूं बीजा सासू सौकां वास्तै लोगां नूं गांठ बांधी। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ पुष्य नक्षत्र का एक नाम।

सं०स्त्री० [सं० दात्रं] ३ फसल काटने का श्रौजार, हँसिया।

[सं० दंत या दात्रं] ४ सूश्रर के निचले जबड़े का बाहर निकला हुश्रा दांत। उ०—केहर रै हाथळ फरी, कोधी दात वराह। गुर काज कीधौ गुजर, विध करतापण वाह।—बां.दा.

श्रल्पा०—दतली, दंतनू, दांतली, दातड़ी, दातरड़ी, दातरली, दातरी, दातली, दाती।

मह०—दातर, दातल।

वि०—देने वाला। उ०—कुवजा नारद विदर री, विवरां संजुत बात। हरि रा दासां ज्यूं हुश्रे, दासां नूं सुख दात।—बां.दा.

दातड़ियाळ—देखो 'दात्रटियाळ' (रू.भे.) (ह.नां., श्र.मा.)

दातड़ी–सं०स्त्री०—१ देखो 'दात' (४) (श्रल्पा., रू.भे.)

उ०—इण कवळै (वाराह) तुंड रै जोर हाथी पाड़िया—फेट दे घोड़ा सवार पाड़िया डाढ़ां (दातड़ी) सूं सूरवीरां नै श्रोफाड़िया। —वी.स.टी.

२ देखो 'दातौ' (श्रल्पा. रू.भे.)

दातड़ौ—देखो 'दातौ' (श्रल्पा, रू.भे.)

दातण—देखो 'दांतण' (रू.भे.) उ०—१ परि श्रंगि श्रहि प्रगडी, दातण संध्या कीध। श्रस्व सकळ सिणगार-सिउ, पात्र विधीगति दीध। —मा.कां.प्र.

उ०—२ भूप-तणउ भय लेखवी, मांगण श्राव्यां श्राडि। डसण डसी श्रळगां करयां, जांणी दातण फाडि।—मा.कां.प्र.

दात दायजौ—देखो 'दत-दायजौ' (रू.भे.) उ०—भलौ सिरदार, मांटी पणै री श्रांक पछै घणो दात-दायजौ देय जांन विदा कीन्ही। —ठाकुरसी जैतसियोत री वारता

दातर—१ देखो 'दातौ' (मह., रू.भे.) उ०—थाहूंती गांव भांग रह्या है नै थे बाजरी में लुक रह्या हो। फिट रे नादारां थानै। राजपूतां री श्रांख्यां में लाल डोरा तणग्या श्रर मूंछ्यां रा वाळ ऊभा व्हैग्या। उणी वखत हाथ रा दातर फेंक नै वै गांव कांनी रवांनै व्हैग्या। —रातवासौ

२ देखो 'दात' (४) (मह, रू.भे.)

दातरड़ी—१ देखो 'दात' (४) (श्रल्पा., रू.भे.)

दातरड़ौ—देखो 'दातौ' (श्रल्पा., रू.भे.)

दातरली–सं०स्त्री०—१ देखो 'दातौ' (श्रल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'दात' (४) (श्रल्पा., रू.भे.)

दातरलौ, दातरियौ—देखो 'दातौ' (श्रल्पा., रू.भे.)

दातरी–सं०स्त्री०—१ पक्षी विशेष.

२ देखो 'दातौ' (श्रल्पा., रू.भे.) ३ देखो 'दात' (४) (श्रल्पा., रू.भे.)

दातरौ—देखो 'दातौ' (श्रल्पा., रू.भे.)

दातल—१ देखो 'दातौ' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'दात' (४) (मह., रू.भे.)

दातली–सं०स्त्री०—१ देखो 'दातौ' (श्रल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'दात' (४) (अल्पा., रू.भे.) उ०—फौजां दळ नै फेर नै, जीत'र ऊभी जंग। चपला वरणी दातली, भरी कसूंबल रंग।
—डाढाळा सूर री वात

दातलौ—देखो 'दातौ' (अल्पा., रू.भे.)

दात्तव—देखो 'दत्तव, दत्तव' (रू भे.) उ०—पात सुजस अखियात पयंपै, दातव असमर वात दुवै। जगरांम तुहाळै जोड़ै, हुवौ न कोई और हुवै।—र.रू.

दाता, दातार—सं०पु० [सं०] १ वह जो दान दे, दानशील (अ.मा.)
उ०—१ दाता दै वित दांन, मौज मांणै मुरसंडा। लाखां ले धन लूट, पूतळी पूजक पंडा।—ऊ.का.
उ०—२ अजे वणी ऊजेण, भणजै बातां भोज री। जग में दाता जेण, मरै न कीरत मोतिया।—रायसिंह सांदू
उ०—३ जग दातार जनारदन, गिरधारी गुण गेह। ब्रजपत रोटी वांटणा, मोटी नींद म देह।—बां.दा.
पर्या०—अपल, उछरजण, उदभंट, उदात, उदार, उदीरण, त्यागी, दांनअपन, दांनेसरी, द्रवडझेल, निरवपण, प्रतपायण, बगसण, मनऊच, मनमोट, महातमा, महामन, महेछू, मोटमन, मौजी, विलसण, विहायत, विसरजण, विसरायण, व्रवण, समपण, सुदता, सुदात।
२ देने वाला।
यौ०—रिण-दाता।
३ कुटुम्ब का वृद्ध पुरुष. ४ छप्पय छंद का ३४ वां भेद जिस में ३७ गुरु, ७८ लघु से कुल ११५ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं (र.ज.प्र.)
५ शिव, महादेव।
रू०भे०—दता, दत्ता, दत्तौ, दातारू।

दातारगी, दातारी—सं०स्त्री० [सं० दातृ+रा०प्र०गी] दान देने का भाव, दातार का काम, दानशीलता।
उ०—१ तद पूर्लं नूं कयौ, 'चौधरी, इसी दातारगी कर सू पांडू सूं नांम वधतौ हुवै।—द दा.
उ०—२ औगुणां नूं ढांकै इसौ कांई छै। तरै कही—दातारी सांच जांणौ दातारी कीयां विगर वडाई न होय।—नी प्र.
क्रि०प्र०—करणी, होणी।

दातारू—देखो 'दातार' (रू.भे.) उ०—कातर क्रिपन की आसा तैं लाजै। महासूर दातारू कै दरबार राजै।—रा.रू.

दातावरी—वि० स्त्री० [सं० दात्री] देने वाली। उ०—देवांण विद्या दत्तावरी, देवी धन दातावरी। चहुवांण वंस रूपक चवां, सारसत्त भुवनेस्वरी।—नैणसी
सं०स्त्री०—दानशीलता।
रू०भे०—दतावरी, दत्तावरी।

दाति—सं०पु०—दान। उ०—दुरजन नी प्रीति, चाउडां नी दाति, गोदंडा तणी वाट, स्त्रीजन तणउ स्नेह, जातउ जातउ लाभइ छेह।
—व.स.

दातिव—सं०पु० [सं० दातव्य] दान, पुण्य।

दाती—सं०स्त्री०—१ देखो 'दातौ' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'दात' (४) (अल्पा., रू.भे.)
३ देखो 'दाति' (रू.भे)

दातुण—देखो 'दांतण' (रू भे.) उ०—प्रभात ही ऊठ दिसा जाय दातुण कर स्नांन किया।—साह रांमदत्त री वारता

दातौ—सं०पु० [सं० दात्र] लोहे का बना अर्द्धचन्द्राकार धारदार औज़ार जिस से खेत की फ़सल, तरकारी आदि काटी जाती है, हँसिया।
रू०भे०—दांतौ, दात्र।
अल्पा०—दंतीलौ, दंतुली, दंतुलौ, दांतली, दांतलौ, दांती, दांतेलौ, दातड़ी, दातड़ौ, दातरड़ी, दातरड़ौ, दातरली, दातरलौ, दातरियौ, दातरी, दातरौ, दातली, दातलौ, दाती।
मह०—दात, दातर, दातल।

दात्र—सं०स्त्री० [सं० दात] १ देने वाली.
२ देखो 'दातौ' (रू.भे.)

दात्रड़ियाळ, दात्रिड़िआळ, दात्रीड़ीयाळ, दात्रीयाळ—सं०पु० [सं० दात्र-पाल या दात्रवल] सूअर, वराह। उ०—१ चेवह वांटी चीभड़ा, एकल दात्रड़ियाळ। कांनां सुण 'वूढ़ै' कमंद, चाटकाय चंचाळ।
—पा.प्र.
उ०—२ दात्रिड़िआळ वडौ तूं डारण। तूं एकल मल भूत अथाह।
—पी.ग्रं.
उ०—३ अनमी कंद फोदां आफळतौ, कावळतौ दळतौ कुरम। यळ लड़ियाळ 'भान' अपणाई, जै खळ दात्रीड़ीयाळ जम।
—चांवंडदांन दधवाड़ियौ
रू०भे०—दातड़ियाळ।
२ वराहावतार।

दाद—सं०स्त्री० [सं० दद्रु] १ एक चर्म रोग जिस में शरीर पर उभरे हुए (बारीक फुंसियों के छत्ते के रूप में) चकत्ते पड़ जाते हैं जिस से खुजली हो जाती है।
सं०स्त्री० [फ़ा०] २ धन्यवाद, प्रशंसा, वाहवाह।
उ०—बीजा लोग सो मारवाड़ नै घणी ही ऊजळी कीवी। सारा ही हिंदुआं राजा घणी स्यावास दाद दीवी।—अमरसिंह राठौड़ री वात
उ०—२ तिकौ वारलां नूं तौ कठा तक दीजै दाद, पण मांहिलां री भी रजपूती हद सूं ज्याद।—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री वात
क्रि०प्र०—देणी।
३ न्याय, इन्साफ। उ०—केई अळू ज्या असुभ में, केइयक सुभ वंदाय। सुभ कर के असुभ कहै, वह दरगा दाद न पाय।
—स्री हरिरांमजी महाराज
यौ०—दाद-फरियाद।
रू०भे०—दादि, दाध।

दादद्वारौ—देखो 'दादूद्वारौ' (रू.भे.)

दादनी-अव्य० [फा० दादन=देना] देने योग्य। उ०—अरवाहे सिजदा कुनंद, वजूद रा चे कार। दादू नूर दादनी आसिकां दीदार।
—दादू वांणी

दादर-सं०पु०—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष।
२ देखो 'दादुर' (रू.भे.) उ०—१ सर सरिता जळ सूखिया, मरिया दादर जीव। तर झड़िया लग्गी तपत, अब घर आवौ पीव।
—अज्ञात

उ०—२ तर घर सूका नदी तड़ागा, लाज धरम विद्या मग लागा। आरज हंसा उडगा आगा, कपटी दादर रहगा कागा।—ऊ.का.

दादरियौ—देखो 'दादुर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—डूंगरिया हरिया हुवा भरिया ताळ तळायो। दादरिया करिया रवदीरघ, भीभर रयी भरणायी।—अज्ञात

दादरौ-सं०पु०—१ दो अर्द्ध मात्राओं का ताल जिस में केवल एक आघात होता है. २ एक प्रकार का चलता गाना।
३ देखो 'दादुर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ बीजळियां अंबर चढ़ी, मही ज वूठा मेह। बोलण लागा दादरा, सालण लागो सनेह।
—अज्ञात

दादस—देखो 'दादी सासू' (रू.भे.) (शेखावाटी)

दादसरौ—देखो 'दादीसुसरौ' (रू.भे.) (शेखावाटी)

दादांण, दादांणौ-सं०पु० (देश०) १ दादे का घर अथवा गांव।
उ०—जोगी नांनांणौ दादाणौ जोड़ौ। ताजाकुळ दोनूं रोटी रौ तोड़ौ।
—ऊ.का.

२ पिता का ननिहाल।

दादाई-वि०—१ पितामह के वंश का. २ उद्दंडता।

दादागुर, दादागुरु, दादागुरू-सं०पु०—गुरु का गुरु। उ०—जिनदत्त सूरि रौ पोतौ चेलौ जिनकुसळ सूरि। दादागुरू पोतो चेलौ दोनूं दादाजी कहावै।—वां.दा.ख्यात

दादाभाई-सं०पु०—बड़ा भाई।

दादारंग-वि० (देश०) पागल। उ०—चपेट चंदरदास री, चींटा चट चौरंग। कटकांपत दादौ किया, देखो दादारंग।—रेवतसिंह भाटी

दादि—देखो 'दाद' (रू.भे.) उ०—१ पितामह पाय लगै सप्रवंति। दिवी तदि दादि घणी 'दळपत्ति'।—सू प्र.

उ०—२ जैपुर आंगि सेवै कायदाई वात कीनी। जैपुर भूप 'जैसे' तीन वारी दादि दीनी।—शि.व.

दादी-सं०स्त्री० (देश०) पिता की माता।

दादीसासू-सं०स्त्री० [रा० दादी+सं० श्वश्रू] ददिया श्वसुर की स्त्री, सास की सास, ददिया सास। उ०—सासू दादी सासुआं, राजी सबल रहंत। माजी नूं मीरा कहै, मोटा संत महंत।—वां.दा.

रू०भे०—दादस।

दादीसुसरौ-सं०पु० [रा० दादी+सं० श्वसुर] (स्त्री० दादी-सासू) श्वसुर का पिता, ददिया ससुर।

रू०भे०—दादसरौ।

दादुर-सं०पु० [सं० दर्दुरः] (स्त्री० दादुरी) मेंढक (डि.को.)।
उ०—१ सुर दादुर पिक सोर, सबद म्रिदु मोर सुहावै। घण सांवण घरहरै, सिखर दांमण दरसावै।—रा.रू.

उ०—२ हरै लीली हियौ तनां हरिआळिआं, सोर कर सरै दादुर सुहाया। गाज ऊंडी करै मेघ आया गयण, नागरी कांनजी घरै नाया।
—वां दा.

उ०—३ वापीऊहु बालड हीऊं, मोर चिगाड मोरुं मास। जिम जिम वाहावइ दादुरी, तिम तिम पांमु त्रास।—मा कां.प्र.

रू०भे०—दादर, दुरदुर।

अल्पा०—दादरियौ, दादरौ।

दादुरवाजउ, दादुरवाजौ-सं०पु० [सं० दर्दुर वाद्यम्] एक प्रकार का वाद्य विशेष (उ.र.)।

दादुरियौ, दादुरौ—देखो 'दादुर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ अग साखा असि अग्ग, पवन उडांण टांण झापंदा। पाली हरि विलिपिग, वादुरिया नैंव कुदंति।—रांमरासौ

उ०—२ देख सरप ह्वं दादुरा, सब्द कळा कर सून। पुरख असैंदो पेख ह्वं, मावडियां मुख मून।—वां.दा.

दादू-सं०पु०—१ 'दादूपंथ' का अनुयायी।
२ देखो 'दादूदयाळ' (रू.भे.)

दादूदयाळ-सं०पु०—एक महात्मा का नाम। बचपन में इनका पालन-पोषण अहमदाबाद में लोदीराम नामक धुनिया ने किया था। इन्होंने राम-नाम के रूप में निर्गुण परब्रह्म की उपासना चलाई। इनके नाम पर एक पंथ चला है जो 'दादूपंथ' कहलाता है। बादशाह अकबर के समय में दादू अच्छे पहुँचे हुए साधुओं में गिने जाते थे। अन्त में इन्होंने जयपुर से बीस कोस पर नरेना नामक स्थान पर निवास किया। स्व० मुंशी देवीप्रशाद (जोधपुर निवासी) के मतानुसार वि० सं० १६६० में इसी स्थान पर इनका देहान्त हो गया था।

दादूपंथ-सं०पु०—महात्मा दादूदयाल के द्वारा चलाया हुआ पंथ।

दादूपंथी-सं०पु०—महात्मा दादूदयाल के चलाये हुए पंथ का अनुयायी।

दादूद्वारौ-सं०पु०— दादूपंथी महात्माओं के रहने का स्थान।
रू०भे०—दाद-द्वारौ।

दादेरौ—देखो 'दादांणौ' (रू.भे.)

दादो-सं०पु० (देश०) १ पिता का पिता, पितामह, दादा। उ०—पीढ़ी पर पीढ़ी पोतोजी पाया। अगले काळां रा दादोजी आया।—ऊ.का.
मुहा०—दिनां री दादी—अति वृद्ध, बुड्ढा।
२ बड़े भाई के लिये प्रयोग किया जाने वाला सम्मानसूचक शब्द.
३ बड़े-बूढ़ों के लिये आदरसूचक शब्द. ४ वह मनुष्य जिस का आतंक इर्द-गिर्द फैला हुआ हो। (बाजारू)
वि०वि०—बदमाश और लड़ाईखोर के लिये भी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

५ पंडित, ब्राह्मण (शेखावाटी)
रू०भे०—डडो, ढाडो, ददो, दद्दो।
अल्पा०—डडियो, ददियो।

दाध—१ देखो 'दाद' (रू.भे.)
२ देखो 'दाघ' (रू.भे.)
३ देखो 'दाह' (रू.भे.) उ०—रांण अनै 'अमरेस' रै, वळै प्रगटयो वेध। मन फाटो खाटां चितां, खूटै दाध न खेध।—रा.रू.

दाधजोग-सं०पु०—फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि वार सम्बन्धी बनने वाले पांच योगों में से द्वितीय योग।

दाधणौ, दाधबौ-क्रि०अ० [सं० दग्ध] १ नष्ट होना। उ०—१ जउ तूं ढोला नावियउ, मेहां नीगमतांह। किया करायइ सज्जणा, दाधा मांहि घणांह।—ढो.मा.
२ भस्म होना। उ०—१ वळै पुहप विण वास, भमर मन मांहि न भावै। दव दाधौ वन देखि, जीव सहु छोडि जावै।—ध.व.ग्रं.
उ०—२ दव दाधी हेक हेक दुख दाधी। किसनावती कहै सुर कोडि।
—गोरधन बोगसौ
३ जलना। उ०—भूली सारस-सद्दइ, जांणउ करहउ थाय। धाई धाई थळ चढ़ी, पग्गे दाधी माय।—ढो.मा.
४ विकृत होना, दग्ध होना। उ०—कळहकारिणी, महापाप तणइ, उदयि, पांमीयइ, रोस चडी कुणही न मनावीय, रांधती सीधती खारु मउळुं करइ, दाधुं काचउं करइ, ढीलुं गीलुं करइ, जे खाधुं ते खाधुं।
—व.स.
५ पीडित होना, संतप्त होना। उ०—१ मन दुख दाधा डोल मत, साधा जग तज साव। मानव भव भीता मिटण, गुण सीतावर गाव।
—र.ज.प्र.
उ०—२ दाधी दुखड़ै री फिरतोड़ी दोरी, गोरै मुखड़ै री गिरतोडी गोरी। चांमीकर धामै कांमी कर चोड़ै। जांमी जांमी कर सांमी कर जोड़ै।—ऊ.का.
उ०—३ भूदेव ब्राह्मण चंद्रि देसि गयु जोवा कांम। घणूं जेणि रमाडी छि सिसु थकां निज धांम। चिन्ह सघळां ओळखि ते, गयु राज-भवंग। निरखतां तव नयणे, निरखी दुखि दाधूं तंन।
—नळाख्यांन
क्रि०स०—६ भस्म करना. ७ दग्ध करना, जलाना।
उ०—गाढ्ढ दाध्यउ दग करि, सासू कहइ वचन्न। करहउ ए कूडइ मनइ, खोडउ करइ यतन्न।—ढो.मा.
८ पीडित करना, संतप्त करना। उ०—उत्तर आज स उत्तरइ, वाजइ लहर असाधि। संजोगणी सोहामणइ, विजोगणी अंग दाधि।
—ढो.मा.
९ अधिकार करना, कब्जा करना। उ०—दाधण घर दोखी दहै, दमगळ विण हूं दूं न। खूंन सींचियां खाटसी, खाटी सीचै खूंन।
—रेवतसिंह भाटी
दाधणहार, हारौ (हारी), दाधणियौ—वि०।
दधवाड़णौ, दधवाड़बौ, दधवाणौ, दधवाबौ, दधवावणौ, दधवावबौ दधाड़णौ, दधाड़बौ, दधाणौ, दधाबौ, दधावणौ, दधावबौ, दाधाड़णौ, दाधाड़बौ, दाधाणौ, दाधाबौ, दाधावणौ, दाधावबौ—प्रे०रू०।
दाधिओड़ो, दाधियोड़ो, दाध्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दाधीजणौ, दाधीजबौ—कर्म वा०।
दधणौ, दधबौ—अक०रू०।

दाधलौ—देखो 'दाधियोड़ो' (रू.भे.) उ०—हूं जाणउ परधांन पणि, परघू सहु परिवार। ओह तात घरि मात छइ, दुख-दाधलां अपार।
—मा.कां.प्र.
(स्त्री० दाधली)

दाधावडी-सं०स्त्री० [सं० दग्ध+वटक+रा०प्र०ई] एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। उ०—मुंगवडी पेठावडी रे लाल, खारावडी मन खंति। डवकवडी दाधावडी रे लाल, व्यंजन नांना भंति।—प.च.चौ.

दाधिम-सं०पु० [सं० दाधीच] दाहिमा राजपूत वंश या इस वंश का व्यक्ति (वं.भा.)

दाधियोड़ो-भू०का०कृ०—१ भस्म हुवा हुआ. २ जला हुआ, तप्त हुवा हुआ. ३ नष्ट हुवा हुआ. ४ विकृत हुवा हुआ, दग्ध हुवा हुआ. ५ पीड़ित हुवा हुआ, संतप्त हुवा हुआ. ६ भस्म किया हुआ. ७ दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ. ८ पीड़ित किया हुआ, संतप्त किया हुआ. ९ अधिकार किया हुआ, कब्जा किया हुआ।
(स्त्री० दाधियोड़ी)
रू०भे०—दाधलौ, दाधौ।

दाधीच, दाधीचि-सं०पु० [सं० दधीचि] १ दधीचि के वंश का मनुष्य, दधीचि का गोत्रज।
सं०स्त्री०—२ दधीचि कुल के ब्राह्मणों की शाखा।

दाधौ, दाध्यौ—देखो 'दाधियोडो' (रू.भे.) उ०—हरखीउ कउरवु राउ देखी दाधां मांणुसहं। जोयउ पुन्नपभाउ पंडव जीवी ऊगरऴ।
—पं.पं.च.
(स्त्री० दाधी)

दाध्योड़ो—देखो 'दाधियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दाध्योड़ी)

दाप-सं०पु० [सं० द्राव] १ वेग (अ.मा.) २ देखो 'दरप' (रू.भे.)
उ०—१ जोवन में मर जावणौ, दळ खळ साजै दाप। एह उचित बौह आवखो, सिहा बडो सराप।—बां.दा.
उ०—अवधेस अभंगं, जीपण जगं, कोटि अनंगं धारी कळं। खर दूखर खंडण, बाळ विहंडण, दाप निवारण पाप दळं।—र.ज.प्र.

दापक-सं०पु० [सं० दर्पक] दबाने वाला।

दापड़—देखो 'दाफड' (रू.भे.)

दापटणौ, दापटबौ-क्रि०स० [सं० दाप्] १ संहार करना, मारना।
उ०—दांणव दापटै जी थिर सदगत थटी। कर कर मगकरी जी पहुँता पंचवटी।—र.रू.

२ देखो 'दपटणो, दपटबो' (रू.भे.)

दापटणहार, हारो (हारी), दापटणियो—वि० ।

दापटिग्रोड़ो, दापटियोड़ो, दापट्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दापटीजणो, दापटीजबो—कर्म वा० ।

दपटणो, दपटबो—अक०रू० ।

दापटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ ।

२ देखो 'दपटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दापटियोड़ी)

दापणो, दापबो-क्रि०स० [सं० दाप्] १ संहार करना, नाश करना, मारना. २ दबाना, दाबना ।

दापणहार, हारो (हारी), दापणियो—वि० ।

दापिग्रोड़ो, दापियोड़ो, दाप्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दापीजणो, दापीजबो—कर्म वा० ।

दापिक-सं०पु०—एक राज वंश (व.स.) ।

दापियोड़ो-भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ. २ दाबा हुआ, दबाया हुआ ।

(स्त्री० दापियोड़ी)

दापो-सं०पु० [सं० दाप्य] १ विवाह, यज्ञोपवीत आदि मांगलिक अवसरों पर ब्राह्मणों को दिया जाने वाला द्रव्य विशेष ।

उ०—राव वरजांग बडो ठाकुर हुवो, गढ़ जैसळमेर राव वरजांग परणियो, तद इतरो खरच लाग दापो कियो सु अजेस जैसळमेर उण चंवरी को परणीजै न छै, राव वरजांग री चँवरी ठौड़ प्रगट छै ।
—नैणसी

यौ०—चँवरी-दापो ।

२ वह धन जो पिता द्वारा कन्या की मंगनी के समय वर के पिता से कन्या के मूल्य रूप में लिया जाता है (मेवाड़) ।

उ०—दुहिता धर ढोळी दियो, पहलो ओसर पाया । दापो ले बाजै दुफल, कायर कवण कहाय ।—रेवतसिंह भाटी

दाफड़-सं०पु० (देश०) शरीर पर थोड़े से घेरे में पड़ी हुई सूजन जो खटमल, मच्छर आदि के काटने या खुजलाने के कारण चकती की तरह बन जाती है, चटखर, ददोरा । उ०—उतरादो खटमल आवो दिखणादो, मचायो खटमल सोयबा दै । रांणीजी रा हाकम सोयबा दै । नाथूरांमजी रै खटमल लड़ियो, वांकी लूंठी के दाफड़ पड़ियो रे, खटमल सोयवा दे ।—लो.गी.

रू०भे०—दापड़ ।

दाब-उभ०लिं०—१ दबने या दबाने का भाव. २ किसी वस्तु पर पड़ने वाला भार, बोझा ।

क्रि०प्र०—पड़णी ।

३ घास का चोकोर ढेर. ४ बगल, कांख. ५ शक्कर और घी का मिश्रित योग ।

वि०वि०—आंख दुखने पर यह रोगी को खिलाया जाता है ।

६ कलेजे का मांस, कलेजी. ७ शराब पीने का प्याला अथवा इस प्याले में समाने वाली शराब की मात्रा । उ०—इतरै में भरमल पोसाक आभरण कर दारू सीसी पियालो ले आय गई । आंण मुजरो कर कन्है बैठी व दाब देवण लागी, मारग रो स्रम दूर हुवो ।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—दाव ।

दावड़ियो-सं०पु० (देश०) सिंचाई कार्य की पानी की नाली में निकास-स्थान पर (किसी विशेष दिशा में पानी के प्रवाह को रोकने के लिये) मिट्टी के साथ जमाया हुआ घास-फूस ।

दावड़ो-सं०पु० (देश०) १ कपूर आदि रखने की डिबिया ।

२ देखो 'डाबड़ो' (रू.भे.)

उ०—दरवांण नूं कह्यो—दावड़ो वरस दोई री फोत हुवो छै ।
—चौबोली

रू०भे०—दावडउ ।

दावडउ—देखो 'दावड़ो' (रू.भे.) उ०—जइ भागउं तो बाराहउं, जइ थाकउ तो पार करउं घोडउ, जइ ठालउ तोई कपूर तणउ दाबडउ ।
—व०स०

दावणो, दाबबो-क्रि०स० [सं० दमन] १ बोझ के नीचे डालना, भार रख कर दबाना. २ किसी को अपना आतंक दिखा कर स्वतंत्रता-पूर्वक आचरण न करने देना. ३ किसी को अपने आतंक या प्रभाव में डाल कर अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिये विवश करना. ४ किसी को अपना आतंक या प्रभाव दिखा कर बोलने न देना, अपने विरुद्ध जबान नहीं चलने देना, मुँह बन्द करना. ५ अपने विशेष गुणों आदि के कारण अपनी तुलना में किसी को नीचा दिखाना, अपेक्षाकृत कम जचने देना, मात करना, दूसरे के गुणों का प्रकाश नहीं होने देना. ६ किसी पदार्थ अथवा वस्तु पर किसी ओर से जोर पहुँचाना. ७ किसी प्रबल शक्ति की टक्कर या मुकाबिले में विरोधियों को पीछे खदेड़ देना. ८ शिकस्त देना, हराना. ९ शान्त करना, उभडने नहीं देना. १० किसी अफवाह या बात को फैलने नहीं देना, जहाँ की तहाँ दबा देना. ११ किसी दूसरे की वस्तु को बलपूर्वक अपने अधिकार में करना । उ०—१ लोहि हणि 'जैत' बीकांणगढ़ जै लियो । दहुडि खुरसांण अजमेर गढ़ दाबियो ।
—सू. प्र.

उ०—२ पड़गनो धांणसियै री गांवां ८४ सूं साहुवै अमरै खनै सूं लियो और जमी वाराहां री दावी और पड़गनो करणावाटी रो डाहलियां सूं लियो और हंसार रै पठांणां री जमी दावी वा वाघोड़ां री जमी दावी ।—द.दा.

१२ किसी की वस्तु को अनुचित रूप से या धोखे से ले लेना, हड़पना. १३ वेग या झटके के साथ बढ़ कर किसी चीज को दबा लेना, घर दबाना, दबोचना । उ०—महेस जी इण साथ मांहे था सो महेसजी तो साथ नै घणो ही पालियो पिण साथ उरड़ नै मेंदांन गयो । मुगळां पाछा

वळिया नै बीजो साथ भागो, महेसजी रा घोड़ा नूं हाथी दाबियो ।
—राव चंद्रसेन री वात

१४ मंद करना, धीमा करना. १५ शरमिंदा करना. झेंपाना.
१६ गुप्त करना, छुपाना । १७ ऐसी अवस्था में लाना जिस में कुछ बस न चल सके ।
मुहा०—करजा में दावणो—ऋण दे कर अपने अधीन कर लेना । दीवालिया बना देना ।
१८ जमीन में गाड़ना, दफन करना. १९ ठूंसना, दाबना ।
उ०—नवी हुग्रोड़ा नीच, डवी भर लेवै डाकी । बैठ सभा रै बीच, करै मनवार कजाकी । दै पटपोरा दोय, नाक में दाबै नीकां । मूंढो खांधो मोड़, छड़ाछड़ खावै छींकां ।—ऊ.का.
दावणहार, हारो (हारी), दाबणियो—वि० ।
दबवाड़णो, दबवाड़बो, दबवाणो, दबवावो, दबवावणो, दबवावबो
—प्रे०रू० ।
दाबिग्रोड़ो, दाबियोड़ो, दाब्योड़ो—भू०का०कृ० ।
दाबीजणो, दाबीजबो—कर्म वा० ।
दवणो, दवबो—अक०रू० ।
दबाड़णो, दबाड़बो, दबाणो, दबाबो, दबावणो, दबावबो—रू०भे० ।

दाबदो—देखो 'दाऊदी' (रू.भे.) उ०—गुलालूं के डंबर सूरगुलूं का प्रकास । दावदी अजूवां गुलरोसनूं का उजास ।—सू.प्र.

दाबियोड़ो—भू०का०कृ०—१ बोझ के नीचे डाला हुआ, भार रख कर दबाया हुआ. २ आतंक से स्वतंत्रता छीना हुआ. ३ आतंक या प्रभाव से अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिये विवश किया हुआ. ४ अपने विरुद्ध बोलने से रोका हुआ, मुंह बन्द किया हुआ. ५ अपने विशेष गुणों आदि के कारण अपनी तुलना में किसी को नीचा दिखाया हुआ, मात दिया हुआ. ६ किसी पदार्थ या वस्तु पर किसी ओर से जोर पहुँचाया हुआ. ७ किसी प्रबल शक्ति की टक्कर या मुकाबिले में विरोधियों को पीछे खदेड़ा हुआ. ८ शिकस्त दिया हुआ, हराया हुआ. ९ शान्त किया हुआ, उभड़ने से रोका हुआ. १० किसी अफवाह या बात को फैलने नहीं दिया हुआ, जहाँ का तहाँ दबाया हुआ. ११ किसी दूसरे की वस्तु को बलपूर्वक अपने अधिकार में किया हुआ. १२ किसी की वस्तु को अनुचित रूप से या धोखे से लिया हुआ, हड़पा हुआ. १३ झोंक के साथ बढ़ कर किसी वस्तु को दबाया हुआ, दबोचा हुआ. १४ मंद किया हुआ, धीमा किया हुआ. १५ शरमिंदा किया हुआ, झेंपाया हुआ. १६ गुप्त किया हुआ, छुपाया हुआ. १७ ऐसी अवस्था में लाया हुआ जिसमें कुछ बस न चल सके. १८ जमीन में गाड़ा हुआ, दफन किया हुआ.
१९ ठूंसा हुआ, दबाया हुआ ।
(स्त्री० दाबियोड़ी)

दाबेड़ो-सं०पु० (देश०) वह स्थान जहां कूए से चड़स बाहर निकाल कर खाली किया जाता है ।

दाबोतरो-सं०पु० (देश०) एक प्रकार का सरकारी लगान ।

दाबो-सं०पु० [सं० दमन] १ दाबने की क्रिया या भाव. २ वह पदार्थ जो किसी वस्तु को उड़ने से बचाने के लिये भार स्वरूप रखा जाता है. ३ वे सामन्त या योद्धा जो सरहद पर राज्य की रक्षा के लिये नियुक्त किये जाते थे अथवा बसाये जाते थे ।
मुहा०—धरती रा दावा—धरती को अपने अधिकार में रखने वाला, धरती की रक्षा करने वाला. ५ धोखा देने की क्रिया या भाव ।
ज्यूं—सौ रुपयां रो दाबो दे दियो ।
क्रि०प्र०—देणो, लागणो ।

दाभ—देखो 'डाब' (रू.भे.)

दायंदार-वि०—देखो 'दावादार' (रू.भे.)

दाय-सं०पु० [सं० दायः] १ पैतृक या सम्बन्धी का वह धन जिसका उत्तराधिकारियों में विभाजन हो सके ।
[सं० ध्रै तृप्तौ घञ्=ध्राय=दाय] २ तरह, भाँति, प्रकार ।
उ०—१ छूटिया सो जिणरै लागियो सो ही पंखारो न भीनो कवूतर दाय लोटता नजर आवै ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
उ०—२ जीं रै मस्तक गज कळस, मन सूं गेरै जाय । सो ही नरपति नगर रो, निस्चय है इण दाय ।—सिंघासण बत्तीसी
सं०स्त्री०—३ इच्छा । उ०—१ सिधां सिधावो सिध करो, रहजो अपणी दाय । इण लाखीणी जीभ सूं, जावो कह्यो न जाय ।
—ढो.मा.
उ०—२ तो ही नहीं मांनी । तद कही—म्हांनूं आगै जावण देवो, पछै थांहरी दाय पड़ै ज्यूं करज्यो ।—महाराजा पदमसिंह री वात
४ पसन्द । उ०—१ नापै नूं रांणा कन्है मेल्हियो, कही थारै दाय आवै जिण तरह बात कर नै जायगां या राख ।
— नापै सांखले री वारता
उ०—२ तद बादसाह सलांमत फुरमाई—जे तुम्हारे दाय बात यूं आई ।—महाराजा जयसिंह आंमेर रै धणी री वारता
उ०—३ घट में दौड़ै घोड़ा घोड़ी, ओर दाय नहिं आवै । न्याय धरम नीति निज न्यारी, कांम सुद्ध छिटकावै ।—ऊ.का.
उ०—४ विण जुध कारज बाघ रै, दूजो ना'वै दाय । एक अनेकां ऊपरा, जुलम करेवा जाय ।—बां.दा.
वि०—पसन्द का । उ०—जग अपजस देखै नहीं, देखै स्वारथ दाय । जिम तिम कर वणियो रहै, वणियो तेण कहाय ।—बां.दा.
क्रि०वि०—१ प्रकार से, तरह से । उ०—ऐहळा जाय उपाय, आछोड़ी करणी अहर । दुस्ट किणी ही दाय, राजी हुवै न राजिया ।
—किरपारांम
२ कारण से, लिए, वास्ते । उ०—ना गुलाब ना केतकी, संकर इहां दिखाय । सुगंध सब ठां ह्वै रही, फिरै भंवर की दाय ।
—जलाल बूबना री वात
रू०भे०—दाइ, दाई

दायक-वि० [सं०] देने वाला, दाता। उ०—१ दायक खबर रांम सिय दौड़ा। तायक काळ नेस सिर तोड़ा।—र.ज.प्र.

उ०—२ रस झरत अम्रत सरद राका रेण वण जण कारणं। दिन सुखद राति विलास दायक, हित चकोर निहारणं।—रा.रू.

दायचौ—देखो 'दायजौ' (रू.भे.) उ०—हिव चवरी मंडप तणै, फेरा लिया च्यार वे। दत्त घणा वड दायचा, दीधा राज अपार वे।
—रीसाळू री वात

दायज—देखो 'दायजौ' (मह., रू.भे.) उ०—हरख उछाह वहु विध कियौ, राज नगर रै मांहि। दायज दीन्हौ बहुत सो, वरण सकै कोउ नांहि।—पंचदंडी री वारता

दायजउ—देखो 'दायजौ' (रू.भे.) उ०—रस रहियउ जंग मेरहर जीतउ, जोइ जोइ करि परठ जिण। दीन्हउ गिरवरए इतउ दाइजउ, कीमति जिणरी हुवइ किण।—महादेव पारवती री वेलि

दायज-वाळ, दायजाळ, दायजावाळ-सं०पु० [सं० दाय:+रा०प्र० जाळ अथवा वाळ] वधू के साथ दहेज में आने वाला प्राणी (यथा-स्त्री, पुरुष, गाय आदि)

दायजौ-सं०पु० [सं० दाय:] वह सम्पति जो विवाह के अवसर पर कन्या को उसके पिता की ओर से दी जाती है। यौतुक, दहेज।

उ०—१ तद महाराज परणीजणै नूं जयपुर पधारिया, विवाह वडा हरख सूं हुवौ, माधवसिंहजी दायजौ सखरौ दियौ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ दायजौ घोड़ा-हाथी मांणस साज नै तैयार किया।
—पंचदंडी री वारता

रू०भे०—डाईचउ, डाईचौ, डाईजौ, डायचौ, डायजौ, दाइजउ, दाइजौ, दाईजौ, दायचौ, दायजउ।

मह०—दाइज, दायज।

दायण-सं०स्त्री०—प्रसव कराने में सहायता करने या प्रसूती की सेवा करने वाली स्त्री।

दायनौ-सं०पु० (देश०) एक प्रकार की लगाम।

दायभाग-सं०पु० [सं०] १ वपौती या वरासत की मिल्कियत को वारिसों या हकदारों में बांटने का कायदा कानून. २ पैतृक धन का विभाग।

दायम-क्रि०वि० [अ०] सदा, हमेशा। उ०—हरदम हाजिर होना बाबा, जब लग जीवे बंदा। दायम दिल सांई सौं साबित, पंच वक्त क्या बंधा।—दादू वांणी

दायमा—देखो 'दाहिमा' (रू.भे.)

दायमौ—देखो 'दाहिमौ' (रू.भे.)

दायर-वि० [अ०] १ चलता, जारी।

मुहा०—१ दायर करणौ—किसी व्यवहार, अभियोग आदि को उपस्थित करना, पेश करना. २ दायर होणौ—उपस्थित किया जाना, पेश होना।

२ चलता हुआ, फिरता हुआ।

दायरौ-सं०पु० [अ० दाएर:] १ गोल घेरा, कुंडल, मंडल. २ वृत्त. ३ कक्षा. ४ फकीरों के रहने का स्थान ?

उ०—महदवी दरवेसां रौ थांन दायरौ कहावै, तकियौ कहावै नही।
—बां.दा.ख्यात

दायाद-वि० [सं०] (स्त्री० दायदी) जिस सम्बंध के कारण किसी की जायदाद में हिस्सा मिले, जो दाय का अधिकारी हो, जिसे दाय मिले। उ०—दो ही साहजादा मिळिया तिके दूजा-दूजा अग्रज रै अनुकार सांचै संकळप दिल्ली रा दायाद होइ सांम्हां चलाया।
—वं.भा.

सं०पु०—१ पुत्र, बेटा. २ सपिंड, कुटुंबी. ३ दाय पाने का अधिकारी मनुष्य।

दायादी-सं०स्त्री० [सं०] कन्या, पुत्री।

दायिणी-सं०स्त्री० [सं० दायिनी] देने वाली।

दायां—देखो 'दाई' (रू.भे.) उ०—ज्युं छोरु दीठो मुंहडो सीह रो पिंड मनुस्य रो ताहरां दायां नाठचां।—देवजी बगड़ावत री वात

दायेदार, वायेदार—देखो 'दावादार' (रू.भे.) उ०—के तुम ऊंचे होय के हमसे बतराया। के तुम दायेदार हो कर तेग समाया।—ला.रा.

दायौ-सं०पु० [अ० दावा] अधिकार, हक, कब्जा।

उ०—१ नहिं ज्यां फुरणा नहीं अफुरणा, नहहिं जीव नहिं माया। ईस्वर ब्रह्म कोऊ नहि तांमे, नहिं दायां निरदाया।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ नमांमी तो माया चलत नहिं दाया सुदन रौ। धुरौ पाया साया अटल मठ छायौ घर घरौ।—ऊ.का.

उ०—३ पांती वार लीनी भोमि छोडचा वंट दाया। बाकी देस दाव्या राज 'सेखं' यौं वधाया।—शि.वं.

दार-सं०स्त्री० [सं० दारा:] १ पत्नी, भार्य्या। उ०—१ जठै तौ वडावडा अमीरां रा आपांण प्रहार पहली ही पड़ता देखि राठौड़ राजा जसवंतसिंह रांणावत राजा रायसिंह प्रमुख किता ही आरब जवनां रा ओघ 'दारा' रौ साथ छोडि दारा रौ साथ करण आप आप रै आगार चालिया।—वं.भा.

उ०—२ दिन रात दार कारा करै, वहै कळेजा बीच रे। जो पैं'ला हूं जांणतौ, तौ नैड़ो न जातौ नीच रै।—ऊ.का.

२ स्त्री, औरत। उ०—दार तैं कु दार पैर पोच में दियौ। कार कौ बिगार सोच लार सें कियौ।—ऊ.का.

[सं० दारु] ३ काष्ठ, लकड़ी। उ०—१ पांण जोड़ै हुकुम पावै; अतुर वारैं भरथ आवै। ले चले हित लेख। चिता घर समसांण चाहै, दार चंदण बीच दाहै। विधा हूंत विसेख।—र.रू.

उ०—२ सामंत विछोहे अंग सार, दोय जेम करै करवत्त दार। पड़ सीस विनां लोटै पठांण, किर ज्वार सिटै हूका कसांण।—ला.रा.

४ अग्नि, आग (अ.मा.)

५ दरार।

प्रत्य० [फ़ा०] वाला। उ०—सूळीदार सुभाव, त्रिसूळदार तैयारी। मरजदार होय मांग, श्रांणी कहुं दार उधारी। जमींदार हुय जमीं करजदारी में कळगी। ईजतदार श्रंधार गरजदारी में गळगी। छळदार होय छाती छडै, श्रमलदार मुरदार री। श्रौर तौ दार सव श्रा मिळै, कमी एक कळदार री।—ऊ.का.

दारक, दारक्क—देखो 'दरक' (रू.भे.) उ०—सांसण कोड़ सवाय उभै हसती सौ हैमर। दस्स सहंस दारक्क सहंस दस भेंसा सद्धर।
—नैणसी

दारचींणी, दारचीणी—देखो 'दाळचीणी' (रू.भे.)

दारण—वि० [सं० दारुण] १ जवरदस्त, प्रचंड, शक्तिशाली।
उ०—१ धारियां 'रतन' तणां धुर धारण। 'दांनौ' 'वलू' 'खेतसी' दारण। सोभावतां तणौ पण साचौ। कळहण खरा न कौ रण काचौ।—रा.रू.
उ०—२ ज्यां पर सिलह ससत्र तन जड़िया। कळहण जोस चठठती कड़िया। श्रोपम नयण धिखंतां श्रारण। दोय-दोय चडिया भड़ दारण।—सू.प्र.
२ योद्धा, वीर। उ०—तिकौ श्रचरिज्ज किसौ घर तास। दादौ जिण दारण 'भैरवदास'।—सू.प्र.
३ देखो 'दारुण' (रू.भे.) उ०—१ विरथ पिता जहां दारण वन। तहां रिखी संग तपोधन तन।—रांमरासौ
उ०—२ दारण दसमास दुखित ग्रह श्रवळा, जळ मळ भोजन कीया। वहता मळ-मूत्र नासिका ऊपरि, उदर सांस में लीया।—ह.पु.वा.

दार-मदार—सं०पु०यौ० [फ़ा० दार+श्र० मदार] १ किसी कार्य का किसी पर श्रवलम्बित रहने का भाव, कार्य का भार।
उ०—लिखै है श्रेक श्रित-संजीवणी दवा-रौ नुसखौ, प्रांण भर दै जिसौ सावर-मंतर। ई लिखावट माथै ई तौ सगळौ दार-मदार है।
—वरसगांठ
२ श्राश्रय, ठहराव।
रू०भे०—दारौ-मदार।

दारा—सं०स्त्री० [सं० दाराः] १ स्त्री, पत्नी, भार्य्या (श्र.मा.)
उ०—१ वेरा वैरागर सागर सम सोभा। रीती गागर लै नागर तिय रोभा। धावै द्रगधारा दारा मुख धोवै। जीवन संजीवन जीवन घन जोवै।—ऊ.का.
उ०—२ दादू भूठे तन के कारणे, कीये वहुत विकार। ग्रिह दारा धन संपदा, पूत कुटुंब परिवार।—दादू वांणी
(देश०) २ एक प्रकार की मछली।

दाराज—देखो 'दराज' (रू.भे.)

दारिउँ—देखो 'दाड़म' (रू.भे.)

दारिद, दारिद्र—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—संतापु सुयणह करई, पुण्यहीन जिम राय रोळई। दारिद्र दुक्खु केह भरई, त्रिणा कज्जि गिरि सिहरु ढोळइ।—पं.पं.च.

दारिया—सं०स्त्री०—सोलंकी वंश की एक शाखा।
—वां.दा.ख्यात

दारियौ—सं०पु० [सं० दारका=रंडी, वेश्या श्रथवा सं० दारकः] १ रंडी या वेश्या का पुत्र। उ०—तरै पांडव ताजणौ वाह्यौ; तरै बीजा पांडव नूं गाळ दीवी, कह्यौ 'फिट रे दारिया गोला! लाख री वछेरी री श्रांख फोड़ी।—नैणसी
२ पुत्र. ३ सोलंकी वंश की दारिया शाखा का व्यक्ति।

दारी—सं०स्त्री० [सं० दारका] १ वेश्या, रंडी (श्र.मा.)
उ०—खिति वाग राखै खत्री खंडाधार, सूरमा पयार। राजा कौ यसी विचारी, श्री तौ सरग-की दारी, सुणौ वात हमारी।
—श्र. वचनिका

दारीवाडउ—सं०पु० [सं० दारिकापाटकः] वेश्याश्रों का निवास-स्थान।

दारु—सं०स्त्री० [सं०] १ काठ, लकड़ी। उ०—मणां तेल तिल मांय, वास जिम पुहप विराजत। रंग मजीठ सु रहत, सवद श्ररथादिक साजत। वेळा सायर वसत, दारु मभ्क श्रगन दिखावत। पयस मांभ घ्रत पूर; ऊख मधु रस उपजावत। वळि दाहकता पावक विसै, साधूजण सोहै सहण। 'ईसरौ' भणै त्यूं ही श्रवस, मो मन वसियौ महमहण।—ह.र.
२ देवदारु वृक्ष. ३ पीतल. ४ देखो 'दारू' (रू.भे.)
उ०—१ तद गांम रै धणी यौं जांण्यौ सो श्रणी दारु पीदौ है। जणी सौं चूक वोलै है।—राजा रा गुर रा वेटा री वात
उ०—२ हौकवा राग सिंधू हुवा, दगै तोप भ्कल दारुवां। श्रम्ह सम्हा रीठ गोळां उडै, मारू घर काज मारवां।—सू.प्र.

दारुक—सं०पु० [सं०] १ देवदारु का वृक्ष. २ श्रीकृष्ण का एक सारथी।

दारुकदळी—स०स्त्री० [सं०] जंगली केला।

दारुका—सं०स्त्री० [सं०] कठपुतली।

दारुकावन—सं०स्त्री० [सं०] एक वन का नाम जो पवित्र तीर्थ माना जाता है।

दारुड़ी—सं०स्त्री०—देखो 'दारू' (श्रल्पा., रू भे.) उ०—सीसी तौ धकधक करै, प्यालौ करै पुकार। हाथ प्यालौ धण खड़ी, पीश्रौ राजकुमार। म्हारै दारुड़ी रौ प्यालौ पियौ नी श्रो वादीला म्हारी मनवार रौ।—लो.गी.

दारुड़ौ—देखो 'दारू' (श्रल्पा., रू.भे.) उ०—भर ला ए म्हारी सुघड़ कलाळी दारुड़ौ दाखां रौ, पीवण वाळौ लाखां रौ, भर ला ए म्हारी सुघड़ कलाळी दारुड़ौ दाखां रौ।—लो.गी.

दारुजोखित—सं०स्त्री० [सं० दारुयोषित] कठपुतली।

दारुण—वि० [सं०] १ घोर, भयंकर, भीषण। उ०—लूश्रां फिर फिर रोहियां, रळकाया सै राह। पथ मेटण मिस मारिया, पंथी दारुण दाह।—लू
२ कठिन, दुःसह, विकट. ३ देखो 'दारण' (रू.भे.)
उ०—दारुण 'गोयंद' चौगड़द, फिरिया पह-फट्टी। श्रो भी श्रागि

व्रजागि अंग, नाराज निछट्टी ।—सू.प्र.

दारणारि—सं०पु० [सं०] विष्णु ।

दारणी—सं०स्त्री० [सं०] १ महाविद्या का नाम (व.स.)

२ देखो 'दारण' (रू.भे.) उ०—चउंड राइ चक्र फेरियइ चंगि । दारुणी देस लीधइ दुरंगि ।—रा.ज.सी.

दारतड— । उ०—पवन जिम चालतउ दंताद्रि विघतउ, पाडतउ फोडतउ, दारतउ मोरतउ, त्रूरतउ स्वरतउ ।

—व.स.

दारन—देखो 'दारुण' (रू.भे.) उ०—देखि देखि दांनव अति दारन । राजिव नयन भये रोखारन ।—मे.म.

दारनटी, दारनारी—सं०स्त्री० [सं०] कठपुतली ।

दारपात्र—सं०पु०यौ० [सं०] काठ का पात्र ।

दारयोखित—सं०स्त्री० [सं० दारुयोषित] कठपुतली ।

उ०—रच्चरची रांन सोहीं करची, यों मति कीनत मांनखां । नीरलां दारु-योखित नवो, तार गह्यो असमांनलां ।—ला.रा.

दारुहळदी—सं०स्त्री० [सं० दारुहरिद्रा] आल की जाति का एक सदाबहार वृक्ष । यह हलदी की जाति का नहीं होता है (वैद्यक)

रू०भे०—दारुहळदी, दारुहळद्र ।

दारू—सं०पु० [फ़ा०] १ शराब, मद्य । उ०—जरां मालकी बोली, हीये री बात खोली । आप सारूं दारू की भटी कढ़ाई छै । लाख रुपियां री ठीप चढ़ाई छै ।—मयारांम दरजी री वात

यौ०—दारू-दड़बो ।

२ दवा, औषधि । उ०—१ मेरा करम काळ तूं लागा, तव गुर 'वोखद' लाई । थोड़ा रोग बहुत दारू दे, वेदिन दूर गमाई ।

—ह.पु.वा.

उ०—२ पातसाह महमंद वडो धरमात्मा हुवो । ओ ओखदां री हाट ४ मंडावी, वैद्य राखिया । वेमारां नूं दारू धरम री दीजै ।

—नैणसी

३ बारूद । उ०—१ घोम दुरंग दारू धड़हड़िया । पाहड़ सिखर जांणि दहि पड़िया ।—सू.प्र.

उ०—२ खग घावां नह पूगे खड़तां, ले टक छोह लड़ाई । दीधी डोर गुडी दो-दोखी, दारू आग दजाई ।—देवजी दधवाड़ियो

उ०—३ दारू को गज देख, मरद को अगन मिळवै । कोप्यो केहर कोप, सांत कर नै खिजरावै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

अल्पा०—दारुड़ी, दारुड़ो, दारूडी, दारूडो ।

४ देखो 'दार' (रू.भे.) उ० १ क्रमसं घणं उछाह, चाप बांण धरै चाह । बांम हाथ लीध वाह । जीमणे कसीस जाह । गोह ट्रक करै ताह । धाक दारू जूं प्रवाह । सकोई करै सिराह । महावाह महावाह ।—र.रू.

उ०—२ कर हिक सिंधु हय चड़ करै, दारू-इुधार-वार । हेली जांणी गुंवरा व्है, असि-धणि असि-असवार ।—रेवतसिंह भाटी

दारूकार—सं०पु० [फ़ा० दारू+कार] शराब बनाने वाला ।

दारूखोरियो, दारूखोरो—[फ़ा० दारू+खुर] मदिरा पीने का आदी, शराबी । उ०—१ जिण तरै कोई दारूखोरिया नै पल्लगारो सूं दै नै वो एकलो प्यालो भर-भर आपरा पेट री करै नै आवी प्यालो कै स्वाहा ।—वी.स.टी.

उ०—२ लाखां जन डोलै मचमेड़ा लेता, दारूखोरां री गोदां दद देता । भाजो भाजो कर भोजन कज भोखै, दुख में दरवाजो दोठां री दीखै ।—ऊ.का.

दारूड़ी—देखो 'दारू' (अल्पा., रू.भे.) उ०—पीवै छकवा दारूड़ी, ल्यू तीखा नैण । मन सूं मोह्या मारूड़ै, रस री मान्न रैण ।

—अज्ञात

दारूड़ो—देखो 'दारू' (अल्पा., रू.भे.)

दारू-दड़बो—सं०पु०यौ० [फ़ा० दारू+रा० दड़बो] मद्यपता, नशा ।

दारू-पात्र—सं०पु०यौ० [फ़ा० दारू+सं० पात्र] १ शराब का पात्र.

२ काष्ठ का बना पात्र ।

दारूफूल—सं०पु० [फ़ा० दारू+सं० पुष्प] पुष्पों का निकाला हुआ शराब । उ०—रावळ रतूंरात मेहमांनी री तयारी करी जिण सारी रसोई मांहे बतूरो बचनाग जास्तो घातियो, दारूफूल दलदा री पुलटी कढ़ायो, सारी तयारी कीधी ।—नैणसी

दारू-री-भट्टी—सं०स्त्री० [फ़ा० दारू+सं० भ्राष्ट्र+रा०प्र०ई] १ एक शराब की भट्टी पर लिया जाने वाला सरकारी कर. २ शराब बनाने की भट्टी ।

दारूहळदी, दारूहळद्र—देखो 'दारहळदी' (रू.भे.) (अमरत)

उ०—दांमिणी दोभी दूविम्रां, देवदाळि दूवेधि । दारूहळद्र दुरालभा, दह दिसि दीसइ वेलि ।—मा.कां.प्र.

दारोगाई—सं०स्त्री० [फ़ा० दारोगः+रा०प्र०आई] १ दारोगा का कार्य ।

क्रि०प्र०—करणी ।

२ दारोगा का पद. ३ दारोगा का वेतन ।

दारोगो—सं०पु० [फ़ा० दारोगः] १ निगरानी रखने वाला अफ़सर.

२ पुलिस का अफ़सर, थानेदार ।

रू०भे०—दरोगो ।

दारोमदार—देखो 'दारमदार' (रू.भे.)

दाळ—सं०स्त्री० [सं० दालि] १ दलों में किया हुआ चना, मूंग, अरहर, मसूर, ग्वार आदि ।

क्रि०प्र०—दळणी ।

यौ०—दाळ-मोठ ।

२ वह दला हुआ अन्न जो मसाले और पानी के साथ उबाल कर रोटी, भात आदि के साथ खाया जाता है ।

मुहा०—१ दाळ गळणी—कार्य सिद्धि के लिये किसी युक्ति का चलना, प्रयोजन सिद्ध होना, मतलब निकलना. २ दाळ दळणी—व्यर्थ की बातें करना, अरुचिकर बातें करना. ३ दाळ देणियो

देंणौ (मिळणौ)—भरण-पोषण करना, मारना-पीटना। डाँट-डपट देना। ताने देना. ४ दाळ में काळौ होणौ—किसी बुरी बात का लक्षण दिखाई पड़ना, संदेह या खटके की बात होना। कुछ बुरा रहस्य होना. ५ दाळ रोटी—सामान्य भोजन, सादा खाना।

३ दाल के आकार की कोई वस्तु. ४ फोड़े-फुंसी या खास कर चेचक का ऊपर का चमड़ा जो सूख कर छूट जाता है, पपड़ी।

रू०भे०—दाळि, दाळी।

दाळचिणी, दाळचीणी-सं०स्त्री० [सं० दारु+चीणी=चीन देश का] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल सुगन्धित होती है तथा दवाइयों में काम आती है। यह टेनासिरम, सिंहल और दक्षिण भारत में होता है. २ इस वृक्ष की छाल जिसे सुखा कर काम में ली जाती है। उ०—तिण मांहै गिरी केसर, दाळचीणी, जावंत्री, जायफळ, इळायची, पांन, लूंग, डोडा, धतूरा रा बीज, मोहरौ मिसरी घाल नैं काढ़ीजै।—राव रिणमल री वात

दाळद-सं०पु० [सं० दारिद्रय] १ गरीबी, दरिद्रता, निर्धनता।

उ०—१ दाळद घर दोळौ हुवै, परणी ना'वै पास। रुपिया होवै रोकड़ा, सोरा आवै सांस।—ऊ.का.

उ०—२ लारै बाळद रो डेरौ लीनोड़ो। दोळौ दाळद रौ घेरौ दीनोड़ो।—ऊ.का.

पर्या०—कसालो, कीकट, कुरिंद, घाटौ, टोटौ, दाळींद, दुरगत।

२ कूड़ा-करकट।

रू०भे०—दळद, दळद्र, दळि, दळिद, दळिदर, दळिद्, दळिद्र, दारिद, दारिद्र, दाळद्, दाळद्र, दाळध, दाळिंद, दाळिदर, दाळिद्र।

दाळद्—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—दाळद्-पाप-संताप-दह, पारस संगम लोह पर। निज नांम नमो तो नारियण, हंस नमो सिरताज हर।—ह.र.

दाळदहरण-सं०पु० [सं० दारिद्रय+हरण] १ शिव, महादेव, शंकर. २ ईश्वर।

वि०—दारिद्रय को दूर करने वाला।

दाळदी—देखो 'दरिद' (रू.भे.)

दाळद्र—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—दाळद्र पाप राखस दमन, पारस संगम लोह परि। निज नांम नमो नारायण, हंसराज सिरताज हर।
—ह.र.

दाळध—देखो 'दाळद' (रू.भे.)

दालांण, दालांन-सं०पु० [फ़ा० दालान] मकान के आगे का वह लम्बा घर जो चारों ओर की दीवारों से घिरा हुआ न हो कर एक, दो या तीन ओर से खुला होता है तथा खुली ओर से प्रायः खम्भों पर आधारित रहता है, बरामदा।

रू०भे०—दलांण, दलांन।

दाळि—देखो 'दाळ' (रू.भे.) उ०—खाजां खरहर चूरतां, कूर तां आविउ थाळि। नांमइ घ्रित जिम पांणीय, तांणीय लीजइ दाळि।
—नेमिनाथ फागु

दाळिउट्ट, दाळिउट्-सं०पु०—लघु दल का अधिपति (?)

उ०—दंडनायिक, सेनापति, पउंतार, आरोहक, प्रतीकारआरिक, भांडागारिक, महाभांडागारिक, मांणिक्यभांडागारिक, करप्पटभांडागारिक, तंडभांडागारिक, करपूरपट्टिक, कोस्टाकारिक, पारिग्राहिक, प्रतिहार, चतुद्वरिक, कास्टिक, राजद्वारिक, संधिविग्रहिक, भांडपति, महाजनिक, दूत, दाळिउट्ट, कटुक, भट्टपुत्र, नट, विट।—व.स.

दाळिद—देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—कारण फतै जुघ दाळिद कापण। अचिरज किसौ राज अधिआपण।—सू.प्र.

दाळिदर, दाळिद्र—१ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

२ देखो 'दाळद' (रू.भे.)

दाळिदरी-वि० [सं० दरिद्र, स्त्री० दाळदण] १ मैला-कुचैला.

२ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

दाळिदी, दाळिद्र—१ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

२ देखो 'दाळद' (रू.भे.) उ०—१ दादू टोटा दाळिदी, लाखों का व्यापार। पैसा नाहीं गांठड़ी, सिरै साहूकार।—दादू बांणी

उ०—मेटण दाळिद्र मंगणां, करण गुणां अधिकार। औ वहियौ दांनै 'अभौ', रांणै रीझ अपार।—रा.रू.

दाळियालाडू-सं०पु०यौ०—एक प्रकार के लड्डू विशेष। उ०—पछै प्रीस्या डूला, जांणै नांन्हा गाडू। कुण कुण ते नांम, जीमतां मन रहै ठांम। मोतिया लाडू, दाळिया लाडू, सेविया लाडू, कीटी रा लाडू, नांदउलि रा लाडू, तिल ना लाडू, मगरिया लाडू, भूमरिया लाडू, सिंह केसरिया लाडू।—रा.सा.सं.

दाळियौ-सं०पु० (देश०) पीतल की कड़ी जो मजबूती के लिये लगाई जाती है।

दाळी—देखो 'दाळ' (रू.भे.)

दाळींद—देखो 'दाळद' (रू.भे.)

दाळीदर-वि० [सं० दरिद्र] (स्त्री० दाळदण) १ मैला-कुचैला.

२ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

३ देखो 'दाळद' (रू.भे.)

दाळीदरी-वि० [सं० दरिद्र] (स्त्री० दाळदण) १ मैला-कुचैला।

२ देखो 'दरिद्र' (रू.भे.)

दाल्मि-सं०पु० [सं०] इन्द्र, सुरपति।

दावँ, दाव-सं०पु० [सं० प्रत्य० दा (दाच्)] १ किसी कार्य के लिये अनुकूल संयोग, उपयुक्त समय, अवसर, मौका। उ०—दिन आयां जमराव सुतो निज दाव संभाळै। तिको दोह नह टळै गळै पंडव हेमाळै।—रा.रू.

मुहा०—१ दाव चूकणौ—अनुकूल समय पा कर भी कुछ न कर सकना, अवसर जाने देना, मौका खोना. २ दाव ताकणौ (देखणौ)—मौका देखते रहना, अवसर की ताक में रहना.

३ दाव लागणौ—मौका मिलना, अवसर मिलना, वश चलना, अधिकार चलना।

२ उपाय, युक्ति। उ०—घणौ सीळ सत घणौ भणौ लाग्नां भटियांणी। किसूं दाव वळ कोप ग्राव जम हृत्य विकांणी।—रा.रू.

मुहा०—(१) दाव लगाणौ—युक्ति लगाना, उपाय करना।

(२) दाव लड़ाणौ, उक्ति सोचना, उपाय सोचना।

देखो—'दाव लगाणौ'।

१ दाव लागणौ—कार्य साधन के लिये युक्ति का फलीभूत होना, उपाय लगना।

३ कुटिल युक्ति, पेच। उ०—नींद न ग्रावै रात री, पावै भरम ग्रपार। ग्राखै साह नवाव सूं, राखो दाव विचार।—रा.रू.

क्रि०प्र०—चलणौ।

मुहा०—दाव खेलणौ—कुटिल युक्ति से ग्रपना कार्य सिद्ध करना।

४ कपट, छल, धोखा। उ०—१ दोयण मारै दाव सूं, नीत वात निरधार। पेख हिरण चीतौ प्रगट, मूंसै पेख मंजार।—वां.दा.

उ०—२ तठा पछै वरिहाहा रजपूत, कहै छै, पंवारां भिळी, तिणां री ठाकुराई ऊंच देरावर कनै छै, तठै हुती। नै खाडाळ मांहै विजैराव रहै, सु भाटियां रो साथ वरिहाहां रा सासता विगाड़ करै, सु इणां नूं जोर खारा लागै तरै दीठो, बीजो तो पोहचां नहीं नै दाव करां।—नैणसी

क्रि०प्र०—करणौ, रचणौ।

५ विचार। उ०—साह चढ़ै सहलां सदा, उर घर दाव ग्रनेक। ग्रांगमणी ग्रावै नहीं, 'ग्रजो' ग्रनेकां एक।—रा.रू.

यौ०—दाव-पेच।

क्रि०प्र०—धरणौ।

६ प्रहार, चोट। उ०—तठा पछै ढालां वांधीजै छै। तिके किसी-हेक छै—ग्रसल साखी गेंडा री, घणां री मारी वधै, मोहर-तोळै रंग लागै। तरवार, तीर, वरछी रो दाव लागै नहीं। इसी ढालां ग्रली-वंध नांखीजै छै।—जैतसी ऊदावत री वात

क्रि०प्र०—करणौ, लगाणौ, लागणौ, होणौ।

यौ०—दाव-घाव।

७ प्रभाव। उ०—सवळ सेन तेहनै घणी, मोटी जस सुभाव। दुसमण डर मांनै घणौ, देखो तिण रो दाव।—ढो.मा.

८ वार, मर्तबा, दफा. ९ कई ग्रादमियों में एक दूसरे के पीछे क्रम से ग्राने वाला किसी के लिए किसी वात का समय, पारी।

ज्यूं—थारो दाव ग्रावै जणै थूं थारै मन ग्रावै ज्यूं करजै।

क्रि०प्र०—ग्राणौ, लागणौ।

१० एक दूसरे खिलाड़ी के पीछे क्रम से पड़ने वाला खेलने का समय, वारी, पारी।

क्रि०प्र०—ग्राणौ, देणौ, लागणौ।

११ चौपड़ ग्रादि खेल में कौड़ियों या पासे को गिराने से निकलने वाला परिणाम, पासा।

वि०वि०—चौपड़ के खेल में सात कौड़ियां होती हैं। खिलाड़ी कौड़ियों को हाथ में लेकर धीरे से जमीन पर फेंकता है। कौड़ियों के निश्चित रूप में उल्टी-सीधी गिरने से दाव के ग्रंक माने जाते हैं, जैसे—

छः कौड़ियां उल्टी ग्रौर एक सीधी	=	१० का दाव
पांच ,, ,, ,, दो ,,	=	२ ,, ,,
चार ,, ,, ,, तीन ,,	=	३ ,, ,,
तीन ,, ,, ,, चार ,,	=	४ ,, ,,
दो ,, ,, ,, पांच ,,	=	२५ ,, ,,
एक कौड़ी ,, ,, छः ,,	=	३० ,, ,,
यदि सातों कौड़ियां उल्टी गिरें	=	७ का दाव
,, ,, ,, सीधी ,,	=	१४ ,, ,,

यदि सात या सात से ऊपर का दाव पड़ जाय तो खिलाड़ी को एक वार कौड़ियां फेंकने का ग्रौर मौका दिया जाता है।

कौड़ियों के स्थान पर हाथी दांत या हड्डी के बने तीन पासे फेंक कर भी यह खेल खेला जाता है। प्रत्येक पासे के छः पार्श्व होते हैं ग्रौर हर पार्श्व का कुछ विंदियों के चिन्ह होते हैं जिनकी संख्या कम से कम एक ग्रौर ग्रधिक से ग्रधिक छः होती है। इसमें प्रत्येक पासे के ऊपर पड़ने वाले पार्श्व की विंदियों के चिन्हों के दाव के ग्रंक माने जाते हैं किन्तु अंक तथा ग्रंक मानने का ढंग कौड़ियों से भिन्न होता है।

क्रि०प्र०—ग्राणौ, देणौ, लागणौ।

१२ कुश्ती में काम में लाई जाने वाली युक्ति, पेच।

यौ०—दाव-पेच।

१३ देखो 'दाव' (७) (रू.भे.) उ०—घणी फीनसताई चोज लियां ग्रारोगजै छै। दारू रा दाव वीच-वीच लीजै छै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—दाह, दाहो।

दावड़–सं०स्त्री० (देश०) १ सूत की पतली सूतली जो सूत कातने के (चर्खे के) चक्कर की खपच्चियों पर लपेटी जाती है।

रू०भे०—दांवण।

२ देखो 'द्राविड़' (रू.भे.) उ०—जाळंधर कसमीर सिंध सोरठ खुरसांणी, ग्रोड़ीसा कनवज्ज नगर थट्टा मुळतांणी। कुंकण नै केदार दीप सिंगल माले री, वावड़ सावड़ देस, ग्रांण तिलंगांणाह फेरी।—नैणसी

दावड़ी—देखो 'डावड़ी' (रू.भे.) उ०—दावड़यां ग्रायां इयें नूं कहै।—देवजी वगड़ावत री वात

दावड़ो—देखो 'डावड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दावड़ी)

दावटण–वि०—दवाने वाला, दवोचने वाला। उ०—गिरंद गाहटण नूंमै मणा सभै रिख विसम गत। दोयण घण दावटण 'जैत' दूजो।—द.दा.

दावटणौ, दावटबौ–क्रि०स० [सं० दमन] दमन करना, दवोचना। उ०—'जोध' तणौ घर 'जैतसी', वंका राइ विभाड़। दुसमण दावटण दमण, उत्तर भड़ां किमाड़।—रा.ज. रासो

दावण-सं०पु० [?] स्त्रियों का वस्त्र विशेष (?)।
उ०—१ घूमघुमाळो दावण पहर ओ खींवराजजी, ऊपर ओढो वोरंग चूंदड़ी। चालो ना मदरी जी चाल ओ खींवराजजी, असल कुहावो असतरी।—लो.गी.
उ०—२ दावण सिमाद्यो ओ जी नणदोई, चुनड़ी री साई बालम से लगाई, प्यारा नणदोई।—लो.गी.
[सं० दामन् या दामनी] २ खाट के पायताने की ओर लगी वह रस्सी जिससे खाट की विनन को तंग किया जाता है।
उ०—खातीड़ा तूं मोल चंदण री रूंख, काढ़ घड़ लाजे रंग री ढोलियो। आया पाया रतन जड़ाव, ईसां ढळावो जाजा हींगळू। चमचीर वेभ बणाय, दावण घलावो मखमूळ री। सूआ वरणी सोड़ भराय, गालमसी रा गादी गींडवा।—लो.गी.
रू०भे० –दांवण।
दावणगिरी-सं०पु०—देखो 'दांमणगीर' (रू.भे.)
उ०—दरगा में दावणगिरियां हूं वणूं।—लो.गी.
दावणौ—देखो 'दांमणौ' (रू.भे.) (शेखावाटी)
दावणौ, दाववौ-क्रि०स० [सं० दह्] १ विरह में जलाना, पीड़ित करना, संतप्त करना। उ०—जे थूं म्हांने ओजूं दावेगो, तो थन रांम दुहाई, चंदा, छिप ज्या रे बदळी मांही।—लो.गी.
२ जलाना, दग्ध करना।
दावत-सं०स्त्री० [अ० दअवत] १ भोज, ज्योनार।
क्रि०प्र०—करणी, देणी।
२ निमंत्रण।
क्रि०प्र०—देणी।
दावदार—देखो 'दावादार' (रू.भे.) उ०—तळां ओखणे छडाळा खुरां खूंदे तुरां, धोम घोम रूपी चखां जोभ धारै। दावदारां पड़े धाक चारू दसा, आप सा मांटियां करै आरै।—वखतो खिड़ियो
दावदी-सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की लता जिसके फूलों में हल्के गुलाबी रंग की झांई होती है।
२ देखो 'दाऊदी' (रू.भे.) उ०—डहडहत कुसुम पूरत पराग, पल्लव दळ मिळ जेव जाग। रवमुखी, दावदी पुन पळास, नाफुरम परगस आस पास।—मयारांम दरजी री वात
दावां-सं०स्त्री० (बहु व०) [सं० दामन्] रहट की माल को उल्टी घूमने से रोकने के हेतु घेरे की पटड़ियों पर बंधे हुए रस्सी के टुकड़े।
दावाअगन—देखो 'दावाग्नि' (रू.भे.) उ०—'दुरग' के पुत्र भतीजे और भाई। दावाअगन साह लागे मेघ तैं सवाई।—रा.रू.
दावागर, दावागिर, दावागीर, दावागीरू-सं०पु० [अ०दावा+फागीर] १ शत्रु। उ०—१ दावागरां साल पोह दारुणं, दिल्लेसुरां तणो दावागर। जम कैळास दिसा नह जावै, इम जोधांण न आवै आसुर।
—सू.प्र.
उ०—२ कड़ियाळूं के वीचि कूड़छुरूं खरड़ाते वग्गे। दावागीरू के हियै विच सूळ से लग्गे।—सू.प्र.
उ०—३ सुरूं के सहायक, दांनवूं के दावागीर, दिलपाकूं के दोसत।
—र.रू.
उ०—४ आगे गढ़ तो कितेक वात पण दावागीर नै तो उरस मैं जाय झपट ल्यावै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—५ दवागीरूं का सुरतर दावागीरूं का साल। सव राजूं का सिरपोस महाराजा 'अभमाल'।—सू.प्र.
दावाग्नि-सं०स्त्री० [सं०] वन की अग्नि।
रू०भे०—दवाग, दवागि, दवागिन, दवाग्नि, दावाअगन।
दावात—देखो 'दवात' (रू.भे.)
दावादार-सं०पु० [अ० दावा+फ़ा० दार] १ अपना हक जताने वाला, दावा करने वाला. २ भोगीदार, हिस्सेदार।
रू०भे०—दायंदार, दायेंदार, दायेदार, दावदार, दावेदार।
दावानळ, दावानल-सं०स्त्री० [सं० दावानल] वन में पैदा होने वाली अग्नि, दावाग्नि (अ.मा.) उ०—१ रस में वेरस वस रागां रळ रीसै। दूलहिए दूलह नै दावानळ दीसै।—ऊ.का.
उ०—२ दी आग्या दूसरां मेळ कीजै ग्रह मंगळ। उण समयै दिस आठ काठ जग्गे दावानळ।—रा.रू.
रू०भे०—दवानळ।
दावाबंध-सं०पु० [अ० दावा+सं० बंध] पदार्थ विशेष पर हक (अधिकार) प्रकट करने वाला, दावा करने वाला।
उ०—धरि हिंदवांणां ढाल, दावाबंध दिलेस रा। इम जुग गो 'अजमाल', जस राखे 'जसराज' उत।—सू.प्र.
दावामुदी-वि० [अ० दावा+मुद्दई] विरोध करने वाला, दावा करने वाला, विरोधी। उ०—भागा अनेक सोबा भिड़ै, कमंध खाग ग्रहियां करां। जीवियो जितै रहियो 'जसो', दावामुदी दिलेस रां।
—वखतो खिड़ियो
दावायत, दावायतौ-स०पु० [अ० दावा+रा०प्र०आयत] विरोध करने वाला, शत्रु, दुश्मन। उ०—त्र्यंबक वाग वसराळ गैणाग जग आतसां, खाग दावायतां आव खूटी। लाग बूंदी तगत लयंतां लगाई, आग जैपुर नगर जाग ऊठी।—कोटा नरेस दुरजणसिंघ रो गीत
दावियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ विरह से जलाया हुआ, पीड़ित किया हुआ, संतप्त किया हुआ. २ जलाया हुआ, दग्ध किया हुआ।
(स्त्री० दावियोड़ी)
दावेदार—देखो 'दावादार' (रू.भे.)
दावै-सं०पु०—कारण, हेतु। उ०—अनंत दावै विना वाळि नां आहणो।—पी.ग्रं.
वि०—समान, तुल्य। उ०—पूठ बाथां न मावै, पूछी चवर दावै।
—रा.सा.सं.
क्रि०वि०—(देश०) अवसर पर, मौके पर।
उ०—तिण दावै सांखलो देवराज पण इण फौज मांहै हुतो, राव चूंडो मारियो।—नैणसी

२ उपाय, युक्ति। उ०—घणी सीळ सत घणी भणी लानां भटियांणी। किसूं दाव वळ कोप ग्राव जम हत्य विकांणी।—रा.रू.

मुहा०—(१) दाव लगाणी—युक्ति लगाना, उपाय करना।

(२) दाव लड़ाणी, उक्ति सोचना, उपाय सोचना।

देखो—'दाव लगाणी'।

१ दाव लागणी—कार्य साधन के लिये युक्ति का फलीभूत होना, उपाय लगना।

३ कुटिल युक्ति, पेच। उ०—नींद न ग्रावै रात री, पावै भरम ग्रपार। ग्राखै साह नवाब सूं, राखो दाव विचार।—रा.रू.

क्रि०प्र०—चलणी।

मुहा०—दाव खेलणी—कुटिल युक्ति से अपना कार्य सिद्ध करना।

४ कपट, छल, धोखा। उ०—१ दोयण मारै दाव सूं, नीत वात निरधार। पेख हिरण चीतो प्रगट, मूंसै पेख मंजार।—बां.दा.

उ०—२ तठा पछै वरिहाहा रजपूत, कहै छै, पंवारां भिळो, तिणां री ठाकुराई ऊंच देरावर कनै छै, तठै हुती। नै खाडाळ मांहै विजैराव रहै, सु भाटियां रो साथ वरिहाहां रा सासता विगाड़ करै, सु इणां नूं जोर खारा लागै तरै दीठो, वीजो तो पोहचां नहीं नै दाव करां।—नैणसी

क्रि०प्र०—करणी, रचणी।

५ विचार। उ०—साह चढ़ै सहलां सदा; उर घर दाव ग्रनेक। ग्रांगमणी ग्रावै नहीं, 'ग्रजो' ग्रनेकां एक।—रा.रू.

यौ०—दाव-पेच।

क्रि०प्र०—घरणी।

६ प्रहार, चोट। उ०—तठा पछै ढालां बांधीजै छै। तिके किसीहेक छै—ग्रसल साखी गेंडा री, घणां री मारी वधै, मोहर-तोळै रंग लागै। तरवार, तीर, बरछी रो दाव लागै नहीं। इसी ढालां ग्रलीवंध नांखीजै छै।—जैतसी ऊदावत री वात

क्रि०प्र०—करणी, लगाणी, लागणी, होणी।

यौ०—दाव-घाव।

७ प्रभाव। उ०—सबळ सेन तेहनै घणी, मोटो जस सुभाव। दुसमण डर मांनै घणी, देखो तिण री दाव।—ढो.मा.

८ वार, मर्तबा, दफा. ९ कई ग्रादमियों में एक दूसरे के पीछे क्रम से ग्राने वाला किसी के लिए किसी बात का समय, पारी।

ज्यूं—थारो दाव ग्रावै जणै थूं थारै मन ग्रावै ज्यूं करजै।

क्रि०प्र०—ग्राणी, लागणी।

१० एक दूसरे खिलाड़ी के पीछे क्रम से पड़ने वाला खेलने का समय, बारी, पारी।

क्रि०प्र०—ग्राणी, देणी, लागणी।

११ चौपड़ ग्रादि खेल में कौड़ियों या पासे को गिराने से निकलने वाला परिणाम, पासा।

वि०वि०—चौपड़ के खेल में सात कौड़ियां होती हैं। खिलाड़ी कौड़ियों को हाथ में लेकर धीरे से जमीन पर फेंकता है। कौड़ियों के निश्चित रूप में उल्टी-सीधी गिरने से दाव के ग्रंक माने जाते हैं, जैसे—

छः कौड़ियां उल्टी ग्रौर एक सीधी					=	१० का दाव	
पांच	,,	,,	,,	दो ,,	=	२	,, ,,
चार	,,	,,	,,	तीन ,,	=	३	,, ,,
तीन	,,	,,	,,	चार ,,	=	४	,, ,,
दो	,,	,,	,,	पांच ,,	=	२५	,, ,,
एक कौड़ी	,,		,,	छः ,,	=	३०	,, ,,
यदि सातों कौड़ियां उल्टी गिरें					=	७ का दाव	
,,	,,		,,	सीधी ,,	=	१४	,, ,,

यदि सात या सात से ऊपर का दाव पड़ जाय तो खिलाड़ी को एक बार कौड़ियां फेंकने का ग्रौर मौका दिया जाता है।

कौड़ियों के स्थान पर हाथी दांत या हड्डी के बने तीन पासे फेंक कर भी यह खेल खेला जाता है। प्रत्येक पासे के छः पार्श्व होते हैं ग्रौर हर पार्श्व का कुछ बिंदियों के चिन्ह होते हैं जिनकी संख्या कम से कम एक ग्रौर ग्रधिक से ग्रधिक छः होती है। इसमें प्रत्येक पासे के ऊपर पड़ने वाले पार्श्व की बिंदियों के चिन्हों के दाव के ग्रंक माने जाते हैं किन्तु अंक तथा ग्रंक मानने का ढंग कौड़ियों से भिन्न होता है।

क्रि०प्र०—ग्राणी, देणी, लागणी।

१२ कुश्ती में काम में लाई जाने वाली युक्ति, पेच।

यौ०—दाव-पेच।

१३ देखो 'दाव' (७) (रू.भे.) उ०—घणी फीनसताई चोज लियां ग्रारोगजै छै। दारू रा दाव वीच-वीच लीजै छै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—दाह, दाहो।

दावड़—सं०स्त्री० (देश०) १ सूत की पतली सूतली जो सूत कातने के (चर्खे के) चक्कर की खपच्चियों पर लपेटी जाती है।

रू०भे०—दांवण।

२ देखो 'द्राविड़' (रू.भे.) उ०—जाळंधर कसमीर सिंध सोरठ खुरसांणी, ग्रोडीसा कनवज्ज नगर थट्टा मुळतांणी। कुंकण नै केदार दीप सिंगल माले री, दावड़ सावड़ देस, ग्रांण तिलंगांणाह फेरी।
—नैणसी

दावड़ी—देखो 'डावड़ी' (रू.भे.) उ०—दावड़्यां ग्रायां इयें नूं कहै।
—देवजी बगड़ावत री वात

दावड़ो—देखो 'डावड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दावड़ी)

दावटण—वि०—दबाने वाला, दबोचने वाला। उ०—गिरंद गाहटण नूंभै मणा सभे रिख विसम गत। दोयण धण दावटण 'जैत' दूजो।
—द.दा.

दावट्टणो, दावट्टबो—क्रि०स० [सं० दमन] दमन करना, दबोचना।

उ०—'जोध' तणै घर 'जैतसी', वंका राह विभाड़। दुसमण दावट्टण दमण, उत्तर भड़ां किमाड़।—रा.ज. रासो

दावण–सं०पु० [?] स्त्रियों का वस्त्र विशेष (?)।
उ०—१ घूमघुमाळौ दावण पहर ओ खींवराजजी, ऊपर ओडौ वोरंग चूंदड़ी। चालो ना मदरी जी चाल ओ खींवराजजी, असल कुहावो असतरी।—लो.गी.
उ०—२ दावण सिमाद्यो ओ जी नणदोई, चुनड़ी री साई बालम से लगाई, प्यारा नणदोई।—लो.गी.
[सं० दामन् या दामनी] २ खाट के पायताने की ओर लगी वह रस्सी जिससे खाट की विनन को तंग किया जाता है।
उ०—खातीड़ा तूं मोल चंदण रौ रूंख, काढ़ घड़ लाजे रंग री ढोलियौ। आया पाया रतन जड़ाव, ईसां ढळावौ जाजा हींगळू। चमचीर वेभ बणाय, दावण घलावौ मखमूळ री। सूआ वरणी सोड़ भराय, गालमसी रा गादी गींडवा।—लो.गी.
रू०भे० –दांवण।
दावणगिरी–सं०पु०—देखो 'दांमणगीर' (रू.भे.)
उ०—दरगा में दावणगिरियां हूं वणूं।—लो.गी.
दावणौ—देखो 'दांमणौ' (रू.भे.) (शेखावाटी)
दावणौ. दाववौ–क्रि०स० [सं० दह्] १ विरह में जलाना, पीड़ित करना, संतप्त करना। उ०—जे थूं म्हांनै ओजूं दावेगो, तौ थन रांम दुहाई, चंदा, छिप ज्या रे वदळी मांही।—लो.गी.
२ जलाना, दग्ध करना।
दावत–सं०स्त्री० [अ० दअवत] १ भोज, ज्योनार।
क्रि०प्र०—करणी, दैणी।
२ निमंत्रण।
क्रि०प्र०—दैणी।
दावदार—देखो 'दावादार' (रू.भे.) उ०—तळां ओखणै छडाळा खुरां खूंदै तुरां, धोम धोम रूपी चखां जोभ धारै। दावदारां पड़ै धाक चारूं दसा, आप सा मांटियां करै आरै।—वखतौ खिड़ियौ
दावदी–सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की लता जिसके फूलों में हल्के गुलाबी रंग की भांई होती है।
२ देखो 'दाऊदी' (रू.भे.) उ०—डहडहत कुमुम पूरत पराग, पल्लव दळ मिळ जेव जाग। रवमुखी, दावदी पुन पळास, नाफुरम परगस आस पास।—मयारांम दरजी री वात
दावां–सं०स्त्री० (वहु व०) [सं० दामन्] रहट की माल को उल्टी घूमने से रोकने के हेतु घेरे की पटड़ियों पर बंधे हुए रस्सी के टुकड़े।
दावाअगन—देखो 'दावाग्नि' (रू.भे.) उ०—'दुरग' के पुत्र भतीजे और भाई। दावाअगन साह लागै मेघ तैं सवाई।—रा.रू.
दावागर, दावागिर, दावागीर, दावागीरू–सं०पु० [अ०दावा+फागीर] १ शत्रु। उ०—१ दावागरां साल पोह दारुण, दिल्लेसुरां तणौ दावागर। जम कैळास दिसा नह जावै, इम जोधांण न आवै आसुर।—सू.प्र.
उ०—२ कड़ियाळूं के वीचि कूड़छुंरूं खरड़ाते वग्गे। दावागीरूं के हियै विच सूळ से लग्गे।—सू.प्र.
उ०—३ सुरूं के सहायक, दांनवूं के दावागीर, दिलपाकूं के दोसत।—र.रू.
उ०—४ आगै गढ़ तौ कितेक वात पण दावागीर नै तौ उरस मैं जाय झपट ल्यावै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—५ दवागीरूं का सुरतर दावागीरूं का साल। सव राजूं का सिरपोस महाराजा 'अभमाल'।—सू.प्र.
दावाग्नि–सं०स्त्री० [सं०] वन की अग्नि।
रू०भे०—दवाग, दवागि, दवागिन, दवाग्नि, दावाअगन।
दावात—देखो 'दवात' (रू.भे.)
दावादार–सं०पु० [अ० दावा+फा० दार] १ अपना हक जताने वाला, दावा करने वाला. २ भागीदार, हिस्सेदार।
रू०भे०—दायंदार, दायेंदार, दायेदार, दावदार, दावेदार।
दावानळ, दावानल–सं०स्त्री० [सं० दावानल] वन में पैदा होने वाली अग्नि, दावाग्नि (अ.मा.) उ०—१ रस में वेरस वस रागां रळ रीसै। दूलहिण दूलह नै दावानळ दीसै।—ऊ.का.
उ०—२ दी आग्या दूसरां मेळ कीजै ग्रह मंगळ। उण समयै दिस आठ काठ जग्गे दावानळ।—रा.रू.
रू०भे०—दवानळ।
दावावंध–सं०पु० [अ० दावा+सं० वंध] पदार्थ विशेष पर हक (अधिकार) प्रकट करने वाला, दावा करने वाला।
उ०—धरि हिंदवांणां ढाल, दावावंध दिलेस रा। इम जुग गो 'अजमाल', जस राखे 'जसराज' उत।—सू.प्र.
दावामुदी–वि० [अ० दावा+मुद्दई] विरोध करने वाला, दावा करने वाला, विरोधी। उ०—भागा अनेक सोवा भिड़ै, कमंध खाग ग्रहियां करां। जीवियौ जितै रहियौ 'जसौ', दावामुदी दिलेस रां।—वखतौ खिड़ियौ
दावायत, दावायतौ–स०पु० [अ० दावा+रा०प्र०आयत] विरोध करने वाला, शत्रु, दुश्मन। उ०—त्र्यंवक वाग वसराळ गैणाग जग आतसां, खाग दावायतां आव खूटी। लाग बूंदी तगत लयंतां लगाई, आग जैपुर नगर जाग ऊठी।—कोटा नरेस दुरजणसिंघ रौ गीत
दावियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ विरह से जलाया हुआ, पीड़ित किया हुआ, संतप्त किया हुआ. २ जलाया हुआ, दग्ध किया हुआ।
(स्त्री० दावियोड़ी)
दावेदार—देखो 'दावादार' (रू.भे.)
दावै–सं०पु०—कारण, हेतु। उ०—अनंत दावै विना वाळि नां आहणौ।—पी.ग्रं.
वि०—समान, तुल्य। उ०—पूठ वाथां न मावै, पूछी चंवर दावै।—रा.सा.सं.
क्रि०वि०—(देश०) अवसर पर, मौके पर।
उ०—तिण दावै सांखलौ देवराज पण इण फौज मांहै हुतौ, राव चूंडौ मारियौ।—नैणसी

दावोदार—देखो 'दावादार' (रू.भे.) उ०—वळि विणठी वारं सांभ सवारं, दंडाकारं कांतारं। सांव्रव सिरकारं सिह सिकारं, दावोदारं दरवारं।—घ.व.ग्रं.

दावौ-सं०पु० [अ० दावा] १ किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने की क्रिया, अधिकार, कब्जा। उ०—दुरविध घमड़ी दै सगणकारी साजी। भारी भमड़ी लै घर में भूवाजी। चिलमी अमली के जुलमी चितचावा, दासी वेस्यां रा मदवां रा दावा।—ऊ.का.

२ स्वत्व, हक। उ०—सु थारी तरै देख फुरमावां हां कै जोधपुर में थारा भायां सूं जमी री दावौ मती करजे, जिण रो वचन दै। तद कंवर वीकैजी कयो, 'आपरै फुरमावणै सूं भायां सूं दावौ नहीं करसूं।—द.दा.

३ अपना अधिकार स्थिर करने के लिये न्यायालय में दिया जाने वाला प्रार्थना-पत्र, मुकद्दमा। उ०—१ वीच वजारां वांणियां, भांजै सरजै भाव। पावां रा लेखा करै, दावां रा दरयाव।—वां.दा.

उ०—२ कचैड़ी में दावौ पेस हुयो अर न्याव रा ठेकेदारां उण रै नांम कुड़की री हुकम निकाळ दियो।—रातवासौ

यौ०—दावा-पूळी।

४ शत्रुता, वैर। उ०—१ तद सूराचंद रा चहुआंणां रै माथै राठौड़ां री वैर थी, सु सेखै मरतै कह्यो थो—राठौड़ जैतसी ऊदावत नूं कहज्यो, तेजसी डूंगरसियोत नूं कहज्यो अो दावौ वाळज्यो।
—राव मालदे री वात

उ०—२ क ती हूं मोटो हुईस, नै मांहरी धरती गई छै सु वाळीस। मांह रो दावौ वरिहाहां मांहे छै, सु वळसी।—नैणसी

क्रि०प्र०—वाळणौ।

५ प्रतिकार, वदला। उ०—राव उदैसिंघ वीकूंपुर धणी। वळोच समै राव आसकरण पूगळ रौ धणी मारियो हुतो, सु उदैसिंघ रमा नूं घणा साथ सूं मारियो, वडो दावौ वाळियो।—नैणसी

६ स्पर्धा, होड। उ०—वांनरां सुरां सापां नरां वीरवर, दूसरा प्यार सूं धरी दावौ। दलंघो अरोगो भार सिर उठावो, ऊधपो तखत मरजाद आवो।—द.दा.

७ युद्ध। उ०—(महा) मौड मुरधर तणा खळां दळ मोड़तां, दौड़ पतिसाह सूं करै दावा। रौड़ रमतां थकां चौड़ रिम्म चूरतां, ठौड़ ही ठौड़ राठौड़ ठावा।—घ.व.ग्रं.

८ वैभव, ऐश्वर्य। उ०—तूं जीवज्ये कोड़ाकोड़ि वरसां गाह री आसीस। दिन दिन ताह रो चढ़त दावौ करो स्री जगदीस।
—प.च.चौ.

९ अधिकार, जोर, प्रताप. १० किसी वात पर जोर दे कर कहना, दृढ़तापूर्वक कथन।

[सं० दव] ११ दावाग्नि, दावानल। उ०—घोड़ा री वाग तौ ढीली मेल्ह दीवी, घ्यांन सूं देखतो जावै। देखियो ! वन में दावौ लग रह्यो है। कठी नै ई वच नै मागवा री गैलो नीं ?—मूमल
(मि० दव)

दावौ-सं०पु० [सं० दव] शीतकाल में सप्तर्षियों के अस्त होने के स्थान से अर्थात् उत्तर व वायव्य दिशा के मध्य से चलने वाली वायु जो फसल को हानि पहुँचाती है। उ०—मेघ मरोड़ै डाळ, पवन आंधी झक-झोळै। दावौ देवै दाग, वैर गिरमी मिस घोळै।—दसदेव

रू०भे०—दाओ, दाहौ।

दास-सं०पु० [सं०] (स्त्री० दासी) १ अपने को दूसरे की सेवा में समर्पित करने वाला, सेवक, नौकर।

पर्या०—अनुचर, करमकर, किंकर, चाकर, चेट, परजात, परिचारक, वेली, भ्रत्त।

२ भक्त। उ०—नमो जग-आदि-पुरुख्ख जगीस, नमो अवतार असंखे ईस। नमो नारायण जोग-निवास, नमो दुख-मेट उधारण-दास।
—ह.र.

अल्पा०—दासिक, दासौ।

दासड़ली, दासड़ी, दासडली, दासटी—देखो 'दासी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ दूधडला नै पोधा ओ राव 'माल' घर री डावड़ी, हां रे छाछड़ला रा किस्या रे सवाद। दासड़ली री जायो ओ राव 'माल' घोड़ै चढ़ै।—लो.गी.

उ०—२ तळफत तळफत वहु दिन वीता, पड़ी विरह की पासड़ियां। अव तो वेगि दया करि साहिव, मैं तो तुम्हरी दासड़ियां।—मीरां

उ०—३ दह दिसि दासडी, आगळि आळस छंडि। वइठी वावन पूतळी, सो सार-ठीड़ मंडि।—मा.कां.प्र.

उ०—४ देव ! तुम्हारी दासडी, पनही परठणहारि। साथ न मेहलूं स्वांमि नूं, स्वरग नरगि संसारि।—मा.कां.प्र.

दासतांन—देखो 'दास्तांन' (रू.भे.)

दासता-सं०स्त्री० [सं०] सेवक का कर्म, सेवावृत्ति, दासत्व।

क्रि०प्र०—करणी।

दासदासांन—देखो 'दासानुदास' (रू.भे.) उ०—समंवाद काळी तणो एह सारो। चवै दासदासांन 'सांयो' चितारो।—ना.द.

दासदीकोळा-वि०—दासी आदि के (?)। उ०—अमात्य महामात्य सुहासोला उचितवोला, दासदीकोळा गादीया मसूरिया पुडपुडीया।
—व.स.

दासनंदणी, दासनंदिनी-सं०स्त्री० [सं० दाशनंदिनी] धीवर की पुत्री सत्यवती जो व्यास की माता थी।

दासपण, दासपणौ-सं०पु० [सं० दासत्वन=दासत्व, अप० दासप्पण, प्रा० दासत्तण] १ दासत्व, सेवावृत्ति। उ०—१ एतलइं अति पराभव पूरी। एक दासपण चित्त अणूरी।—विराटपर्व

उ०—२ चरचै तन चंदण चीतोड़ा, चाचर पोहप चडावै। दासपणौ न करै दीवाळी, ईद तणै घर आवै।—महारांणा अमरसिंह री गीत

दासरत्थ, दासरथ, दासरथि, दासरथी, दासरथ्थी-सं०पु० [सं० दाशरथः, दाशरथि] १ राजा दशरथ के पुत्र, श्रीराम (अ.मा., नां.मा.)

उ०—१ सभे आवळा भूल जांनी सुरंगा। चढ़ै दासरत्थं वजै राग जंगा।—सू.प्र.

उ०—२ रटँत वधाई व्रवै दासरत्थं। उधम्मेस ओवेस धन्नेस ग्रत्थं।
—सू.प्र.

उ०— ३ दासरथ सुजस नव खंड जाहर दुभल, करां भुजदंड वाखाण केहा।—र.ज.प्र.

उ०—४ लसै वळ भूप जनक मन दुमन लख, भुजां वळ दासरथ चाप भंजे।—र.ज.प्र.

उ०—५ जम लग कठै भै सीस जियां, तन दासरथी नित वास तिया। तन दासरथी नह वास तियां, जम लगसी माथै जोर जियां।
—र.ज.प्र.

उ०—६ दासरथी चौथै दिवस, ग्राये सिद्ध ग्रास्रम।—रांमरासौ

उ०—७ दासरथी लिखमण सुत दसरथ, दोऊ सुणं सिधारे दसरथ। दीह उचाटी कीधे दसरथ, दीधौ प्रांण पछाड़ी दसरथ।—र.रू.

वि०वि०—यह शब्द राजा दशरथ के चारो पुत्रों के लिये प्रयुक्त हो सकता है किन्तु विशेषत: श्रीराम के लिये ही।

२ राजा दशरथ। उ०—चुरस मारग नीत चालै, घाव भागां निकूं घालै। वीरवर दासरथ-वाळौ, कळह ग्रासुर ग्रंत काळौ। बिरध धारण बीर।—र.ज.प्र.

दासातन-सं०पु० [सं० दासत्वन=दासत्व] दासता, दासत्व।

उ०—१ लघु भ्रत जिम ग्रभिलाख सु लाधै। समै तेणि दासातन साधै।—सू.प्र.

उ०—२ नांम धरावै दास का, दासातन वै दूर। दादू कारज क्यौ सरै, हरि सौ नही हजूर।—दादू बांणी

दासानुदास-सं०पु० [सं०] सेवक का सेवक, ग्रत्यन्त तुच्छ (शिष्टता का द्योतक) उ०—माता करइ कर फास, पिता का थया सुपास, सुकुमाल सुविलास ग्रधिक उल्हास जु। समयसुंदर तास चरण दासानुदास, जपति सुजस वास, साहिब सुपास जु।—स.कु.

रू०भे०—दासदासांन।

दासि—देखो 'दासी' (रू.भे.) उ०—१ पिया समीप रूपरासि दासि ग्रासि पासिय। भरै प्रकास स्री उदोति दीप जोति भासियं। सुगंध गंधसार एण सार मेघसार ए। सवास ग्रंवरे लुबांन डब्बरे निसार ए।
—रा.रू.

उ०—२ काळमुही फिरइ मंदिर मांहि, रति वल्लभ तणइ तडि जाए। जीवतइ तइ पराभवि पूरी, देव दासि जिम दुरजनि मारी।
—विराट पर्व

दासिक—देखो 'दास' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—लोहायळ भ्रत चोलिय सुंदर। नागायरूजण मैं नहु दासिक। मैं न मछंदर मै न जळंधर। मै हुं रे! गोरख तूं 'भरड़ा' लख।—पा.प्र.

दासिका—देखो 'दासी' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—मुणूं ग्रौर कासूं प्रभू देखि मोहै। सखी उरवसी दासिका रूप सोहै।—सू.प्र.

दासी-सं०स्त्री० [सं०] १ सेवा करने वाली स्त्री, सेविका।

पर्या०—कळचाळी, किंकरी, गोली, चेडी, दिलरखी, भ्रत्या, विदरी।

२ वेश्या, गनिका (ग्र.मा.)

[सं० दाशी] ३ धीवर की स्त्री।

रू०भे०—दासि।

ग्रल्पा०—दासडली, दासड़ी, दासडली, दासडी, दासिका।

दासीजादौ-सं०पु०यौ० [सं० दासी+फा० जाद:] दासी का पुत्र।

उ०—दासीजादा दे दगा, पास रहंता पूर। रीझै खीजै राखणा, दासीजादा दूर।—बां.दा.

दासेर, दासेरक-सं०पु० [सं० दासेरा:, दासेरक:] ऊँट (डिं.को.)

दासौ-सं०पु० (देश०) १ दरवाजे के मध्य नीचे लगाया जाने वाला वह पत्थर जिसे लांघ कर भीतर या बाहर ग्राना जाना होता है।

२ वह गढा हुग्रा पत्थर जो नीव से कुछ ऊपर उठी हुई दीवार पर लगाया जाता है। इसकी किनारी दीवार से बाहर रहती है।

३ देखो 'दास' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दास्तांन-सं०स्त्री० [फ़ा० दास्तान] १ वृत्तांत, हाल. २ कथा. ३ वर्णन।

रू०भे०—दासतांन।

दाह-सं०स्त्री० [सं०] १ भस्म करने या जलाने की क्रिया या भाव, भस्मीकरण। उ०—१ जो नह ग्रावै करण जुध, सुण बोलावौ सीह। दाह हुवै नह दहण सूं, दिनकर हुवै न दीह।—बां.दा.

२ मुर्दा जलाने का कर्म, शव फूंकने की क्रिया।

उ०—१ महाराजा ग्रभयसिंहजी सवत् १८०५ ग्रासाढ़ सुदी ५ नूं ग्रजमेर मांही देवलोक हुवा। स्री पोहकरजी ऊपर दाह हुवौ।
—मारवाड़ रा ग्रमरावा री वारता

उ०—२ तिणइ दिवसि वेढि मांडिसइ, वीरमदेव प्रांण छांडिसइ। मस्तक तणउ ग्रम्हारु नाह, जमली रही कराविसु दाह।—कां.दे.प्र.

३ जलन, ताप। उ०—१ मैं कीन्हौ सांचै मतै, नायक तो सूं नेह। वण ग्रावै सो देह वित, दाह विरह मत देह।—बा.दा.

उ०—२ पासर रैणां-पहर कटै किम पलक हुवंती। दिवस दभाळण दाह घटै किण जोग चढ़ंती।—मेघ.

उ०—३ अंबरि बारइ रवि तपइ, दिसा-प्रति दि दाह। सीतळ तुझ संभारवउ, ग्रवर न ग्रेकू ठाह।—मा.कां.प्र.

४ ग्रग्नि (ग्र.मा.) ५ दु:ख। उ०—१ धूजत धर तन धीर, ग्रनि भूप सरब ग्रमीर। दिल सोच महमद दाह, हुय कप उर पतिसाह।
—सू.प्र.

उ०—२ इळ कनक मोर उडाय, वधि जोम तवल वजाय। दे साह रै उर दाह, इम ग्रावियौ 'ग्रभसाह'।—सू.प्र.

६ पीडा। उ०—पूरब पुण्य सजोगइ पाम्यउ, तूं त्रिभुवन नउ नाह जी। एक वार मुझ नयन निहाळउ, टाळउ भव दुह दाह जी।
—स.कु.

७ ईर्ष्या, जलन, डाह. ८ देखो 'दाव' (रू.भे.)

उ०—जिसिउ घाय चूकउ भड़, जिसिउ डाळ चूकउ वांनर, जिसिउ

विद्या चूकउ विद्याधर, जिसिउ ठांम भूलउ भंटारी, दाह चूकउ जुग्रारी, जिसिउ स्थान भ्रस्ट हरिण, इसिउ विच्छाय वदन।—व.स.

दाहक–सं०पु० [सं०] अग्नि, आग।

वि०—जलाने वाला। उ०—सूर जपणौ सतेज, लवण अम्रत हिमकर सम। उर दाहक सम आग, तौर सुर-राज राज तिम।
—र.ज.प्र.

दाहकता–सं०स्त्री [सं०] जलने का भाव या गुण।

दाहकरम–सं०पु०यौ० [सं० दाहकर्म] शव जलाने का कार्य।

रू०भे०—दाहक्रम।

दाहकास्ट–सं०पु०यौ० [सं० दाहकाष्ठ] अगर जिसे सुगंध के लिये जलाते हैं।

दाहक्रम—देखो 'दाहकरम' (रू.भे.)

दाहक्रिया–सं०स्त्री०यौ० [सं०] मृतक को जलाने का संस्कार, शव-दाह-कर्म।

दाहजनक–वि०यौ० [सं०] जलन या ताप उत्पन्न करने वाला।

दाहज्वर–सं०पु० [सं०] वह ज्वर जिसमें शरीर में बहुत अधिक जलन मालूम हो।

दाहण–सं०पु० [सं० दाहन] अग्नि, आग।

दाहणौ–वि० [सं० दाह] (स्त्री० दाहणी) १ नाश करने वाला, संहार करने वाला, मारने वाला। उ०—१ मती क्रोध दावा दूठ दाहणी असंत माडां, संत चाटां आवै सग्र चाहणी सादेस। वूटती जेहाजां संघ थाहणी अथाह वाहां, उग्राहणी साहां सिंधवाहणी आदेस।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—२ सूर धीर तास संत, मांण पांण तेज मत। दाहणौ जुधां दयंत, नंत नंत नंत।—र.ज.प्र.

२ जलने वाला, भस्म करने वाला. ३ देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.)

उ०—१ काळा कीट साथि दळ काजू। बार हजार दाहणी बाजू।
—सू.प्र.

उ०—२ रांणी रा हृदय पर दाहणी बाजू जे तिल छै सो नहीं बणाड्यो।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ आच उबार दाहणौ जाई, ग्रह आंगणै मेलंतां गाय। तैं करनादे साह तारियो, महण बीच डूबंतो माय।—चौथ बीठू

दाहणौ, दाहबौ–क्रि०अ० [सं० दाहः] १ भस्म होना, जलना।

उ०—दव विण सारा दाहिया, अथवा खारच अंग। नर कायर बांछै नहीं, जिण घर मायै जंग।—बां.दा.

२ संतप्त होना, दुखी होना, कुढ़ना। उ०—आंधी खूंखाटा करती उठ आवै। फदकै मूंफाटा चेता चुळ जावै। गोळू गायां ले गांमां गळ गाहै। दुखिया मुखिया मिळ दोनूं दळ दाहै।—ऊ.का.

क्रि०स०—३ भस्म करना, जलाना. ४ संतप्त करना, दुखी करना, कुढ़ाना। उ०—१ मुहिणा हूं तइ दाहवी, तो नइ दहियउ अग्गि। सव जोयण साजण वसइ, सूती थी गळि लग्गि।—ढो.मा.

उ०—२ महराज भूप इण भेद मांहि। दीधा बहु सांसण क्रिपण दाहि।—वं.भा.

उ०—३ विरहो मोहै दाहै सदा, कासूं करूं पुकार। करो आप ही अब क्रिपा, लेवो हाथ पसार।—कुंवरसी सांखला री वारता

५ संहार करना, नाश करना, मारना। उ०—चलै आवतां फिरंगी सीस, ऊससै ओधार 'चैनो', चोळ चखां सार धारां, दाहणां चंचाळ। उवक्कै अरावां आग, हूवकै जोधार अंग। ताता जंगां पमंगां मेलिया निराताळ।—बुधसिंह सिंढ़ायच

दाहणहार, हारौ (हारी), दाहणियौ—वि०।

दहवाड़णौ, दहवाड़बौ, दहवाणौ, दहवाबौ, दहवावणौ, दहवावबौ, दहाड़णौ, दहाड़बौ, दहाणौ, दहावौ, दहावणौ, दहावबौ, दाहाड़णौ, दाहाड़बौ, दाहाणौ, दाहावौ, दाहावणौ, दाहावबौ—प्रे०रू०।

दाहिओड़ौ, दाहियोड़ौ, दाह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दाहीजणौ, दाहीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दाहनौ—देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.) उ०—दिसामूळ दाहनौ पूठ जोगणी पुणीजै। डावौ दिन मांनियौ चंद सनमुखौ सुणीजै।—पा.प्र.
(स्त्री० दाहनी)

दाहा–सं०स्त्री०— शव फूंकने की क्रिया, दाह-संस्कार।

उ०—दाहा सव होतां देसोती, स्वाहा चव समसांणै।—ऊ.का.

दाहिणउं, दाहिणउ—देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—नयणह आगळि गयउ कुरंगू, राय चींति जां हूयउ विरंगू, जोइ वांमुं दाहिणउं।—पं.पं.च.

दाहिणै–क्रि०वि० [सं० दक्षिण] दाहिने हाथ की ओर, उस दिशा की ओर जिधर दाहिना हाथ हो।

रू०भे०—दाहिनै।

दाहिणौ–वि० [सं० दक्षिण] (स्त्री० दाहिणी) १ बांया का उलटा, दांया, दक्षिण। उ०—१ खग रूपी भड़ दाहिणै, घणै पराक्रम जांण। भुज ओढ़ण भूपाळ रै, वांमै तिकै वखांण।—रा.रू.

उ०—२ सो देखतां ही कोपानळ में मत्त कन्ह चहुवांण ऊठि मूंछ रा हाथ सहित दाहिणै खांधै खड्ग रो प्रहार कियो।—वं.भा.

२ दाहिने हाथ की ओर पड़ने वाला।

रू०भे०—दहणौ, दाहणौ, दाहिणउं, दाहिणउ।

दाहिनै—देखो 'दाहिणै' (रू.भे.)

दाहिनौ—देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.)

दाहिमा–सं०पु० [सं० दाधीच] १ एक ब्राह्मण वंश. २ एक प्राचीन राजपूत वंश।

रू०भे०—दायमा।

दाहिमौ–सं०पु०—१ 'दाहिमा' ब्राह्मण वंश का व्यक्ति. २ 'दाहिमा' राजपूत वंश का व्यक्ति।

रू०भे०—दायमौ।

दाहियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ भस्म हुवा हुआ, जला हुआ. २ संतप्त हुवा हुआ, दुखी हुवा हुआ, कुढ़ा हुआ. ३ भस्म किया हुआ, जलाया हुआ. ४ संतप्त किया हुआ, दुखी किया हुआ, कुढ़ाया हुआ.

५ सँहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ।
(स्त्री० दाहियोड़ी)

दाहु—देखो 'दाह' (रू.भे.) उ०—१ मणूं कोडि मिळी दिसी कसमली ललीय धूळि दिनि अंबर नइं मिळी। करइ दाहु विदाहु हियइ घरइ, कहु कीचक हुइ मरत मरइ।—विराट पर्व.

उ०—२ त्रिभुवननायक ग्यांनिय मांनिय वरू संसार, नेमि न यौवनि परिणए अरणए घरइं दसार। कहइं कहावइ ते जिम तेजि मनोहर नाहु, तिम तिम किमइं न मांनइ, ए मानइ मनि अति दाहु।
—नेमिनाथ फागु

दाहो–सं०पु० [सं० दाह] १ उष्णता प्रकट कर आने वाला ज्वर.
२ देखो 'दाव' (रू.भे.) उ०—१ हीर चीर नइ पटकूळ, रायनु सिंगार रे। तिम तिम नांखइ पासा तिहां, दाहा आवइ आसार रे।
—नव-दवदंती रास

उ०—२ नळ कूबर तिहां बइठा वेउ, दाहा नांखइ अति भला तेउ। नळइ कूबर हरावाउ, दस अगुळी मुखि करावीउ। —नळ-दवदंती रास

३ देखो 'दावो' (रू.भे.) उ०—विरहणी कांमणिग्रां रा मुखां कमळ कांम री दाह सूं बळिया छै, तिण भांति दाहै बाळिग्रा छै।
—रा सा.सं.

दिकनखत्र, दिगनक्षत्र–सं०पु० [सं० दिङ्नक्षत्र] विशेष नक्षत्र जो फलित ज्योतिष में विशिष्ट दिशाओं से सम्बद्ध माने जाते हैं।

दिगमूढ़—देखो 'दिगमूढ़' (रू.भे.) उ०—हुओ दिगमूढ़ ब्रहम्माय देत; अजंपाय दाखव रूप अलेख। सनक्क सनातन गात सुरीत, चिंताविय ब्रह्माय हुंस चरीत।—ह.र.

दिंड–सं०पु०—एक प्रकार का नाच।

दिंडी–सं०पु० [सं०] उन्नीस मात्राओं का एक छंद जिसके अन्त में दो गुरु होते हैं और जिसमें ९ और १० पर विश्राम होते हैं। इसमें कभी केवल दो चरणों का और कभी चार चरणों का अनुप्रास होता है।

दि–सं०स्त्री०—१ आंख. २ दशों दिशाएं (एका०)
वि०—१ दाता, दातार. २ पालने वाला, पालक (एका०)

दिअण–वि०—देने वाला, दाता। उ०—१ गुणपति गुणे गहीरं, गुण-ग्राहग दांन गुण दिअणं। सिधि रिधि सुबुधि सधीरं, सुंडाळा देव सुप्रसनं।—वचनिका

उ०—२ दिअण दांन मांन दातारा, अमर नांम दार उदार। सगह सूर धीर सांमत, विमळ जोतिवंत जैवंत।—ल.पि.

दिआळीएल (हेल)—देखो 'दीवाळीएल (हेल)' (रू.भे.)

दिआ-सळाई, दियासलाई—देखो 'दिया-सळाई' (रू.भे.)

दिक–सं०स्त्री० [सं० दिक्, दिग्] १ ओर, तरफ, दिशा (डिं.को.)
सं०पु० [अ० दिक] २ तपेदिक. क्षय रोग।
वि०—१ तंग, हैरान।
क्रि०प्र०—रै'णो, होंणो।
२ अस्वस्थ, बीमार।
क्रि०प्र०—रै'णो, होणो।

दिक-कन्या—[सं० दिक्कन्या] दिशा रूपी में कन्या।
वि०वि०—दिशाओं को पुराणों में ब्रह्मा की कन्याएं मानी हैं। वाराह पुराण के अनुसार जिस समय ब्रह्मा सृष्टि रचना की चिंता में थे ठीक उस समय उनके कान से दश कुमारिकाएं उत्पन्न हुईं। ब्रह्मा ने उन्हें आदेश दिया कि जिधर तुम्हारी इच्छा हो उधर चली जाओ। तत्पश्चात वे कन्याएं एक-एक करके दश ही दिशाओं में चली गईं। इसके बाद ब्रह्मा ने आठ लोकपालों की रचना की और इन्हीं अपनी आठ कन्याओं को बुला कर प्रत्येक लोकपाल को एक एक कन्या दे दी। तत्पश्चात ब्रह्मा स्वयं आकाश की ओर चले गये और नीचे की ओर शेष भगवान को भेजा।

दिककुमार–सं०पु० [सं० दिक्कुमार] भवनपति नामक देवताओं में से एक (जैन)

दिकचक्र–सं०पु० [सं० दिक्चक्र] आठों दिशाओं का समूह।

दिकपति–सं०पु० [सं० दिक्पति] १ ज्योतिष के अनुसार दिशाओं के स्वामी—ग्रह। वि०वि—फलित ज्योतिष में आठ दिशाओं के आठ स्वामी माने गये हैं। यथा—दक्षिण का स्वामी मंगल, पश्चिम का स्वामी शनि, उत्तर का बुध, पूर्व का सूर्य, अग्नि कोण का शुक्र, नैर्ऋत कोण-का राहु, वायु कोण के चन्द्रमा और ईशान कोण के बृहस्पति।
२ देखो 'दिक्पाळ' (रू.भे.)

दिकपाळ–सं०पु० [सं० दिकपाल] पुराणानुसार दशों दिशाओं का पालन करने वाले देवता।
(१) पूर्व में—इन्द्र. (२) अग्नि कोण में—वन्हि. (३) दक्षिण में—यम. (४) नैर्ऋत्य मे—नैर्ऋत. (५) पश्चिम मे—कारण. (६) वायुकोण में—मरुत. (७) उतर में—कुबेर. (८) ईशान में—ईश. (९) ऊर्द्ध में—ब्रह्मा. (१०) अधो में—अनन्त।
रू०भे०—दइगपाळ, दगपाळ, दिगपाळ, दिग्पाळ।

दिकमूढ़—देखो 'दिगमूढ़' (रू.भे.)

दिकरेखा–सं०स्त्री० [सं० दिक्रेखा] क्षितिज।
रू०भे०—दिगरेखा।

दिकसाधन–सं०पु० [सं० दिक्साधन] वह उपाय जिससे दिशाओं का ज्ञान हो।

दिकसूळ—देखो 'दिसासूळ' (रू.भे.)

दिकस्वामी–सं०पु० [सं० दिक्स्वामी] दिक्पाल।

दिक्खा—देखो 'दीक्षा' (रू.भे)

दिक्षण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे)

दिक्कत–सं०स्त्री० [अ० दिक्कत] १ तंगी, परेशानी।
क्रि०प्र०—होणी।
२ कठिनाई, मुश्किल।
क्रि०प्र०—आणी, करणी।

दिक्कुमारिका-सं०स्त्री० [सं०] तीर्थंकर भगवान के जन्मकाल में प्रसूति कार्य में सेवा करने वाली कुमारिका—ये संख्या में ५६ मानी जाती हैं।
वि०वि०—१ अधःलोक में रहने वाली—
१ भोगंकरा, २ भोगवती, ३ सुभोगा, ४ भोगमालिनी, ५ तोयधारा, ६ विचित्रा, ७ पुष्पमाला, ८ आनंदिता।
२—ऊर्ध्व लोक में निवास करने वाली—
१ मेघंकरा, २ मेघवती, ३ सुमेघा, ४ मेघमालिनी, ५ सुवत्सा, ६ वत्समित्रा, ७ वारिषेणा, ८ बलाहका।
३—पूर्व दिशा के रुचक पर्वत पर निवास करने वाली—
१ नंदोत्तरा, २ नंदा, ३ आनंदा, ४ नंदवर्द्धिनी (आनंदवर्द्धिनी), ५ विजया, ६ वैजयंती, ७ जयंती, ८ अपराजिता।
४—दक्षिण रुचक पर्वत पर निवास करने वाली—
१ प्रभाहार, २ सुप्रदत्ता, ३ सुप्रबुधा, ४ यशोधरा, ५ लक्ष्मीवती, ६ शेषवती, ७ चित्रगुप्ता, ८ बसुंधरा।
५—पश्चिम रुचक पर्वत पर निवास करने वाली—
१ इलादेवी, २ सुरादेवी, ३ पृथिवी, ४ पद्मावती, ५ एकनासा, ६ नवमिका, ७ भद्रा, ८ सीता।
६—उत्तर रुचक पर्वत पर निवास करने वाली—
१ अलंबुसा २ मितकेशी, ३ पुण्डरिका, ४ वारुणी, ५ हासा, ६ सर्वप्रभा, ७ श्री, ८ ह्री।
७—विदिशा में निवास करने वाली—
१ विचित्रा, २ चित्र कनका, ३ तारा, ४ सौदामिनी।
८—मध्यदिशा में निवास करने वाली—
१ रूपा, २ रूपांशिका, ३ सरूपा, रूपकावती।
उ०—जन्म समइ छप्पन दिक्कुमारिका स्तुति करइ।—व.स.

दिक्खण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—'दुरगो' दिक्खण देस में, ऊगो जेठ अदीत। पूगो घर यूरोप री, 'पातल' वीर प्रतीत। —किसोरदांन बारहठ

दिक्सा—देखो 'दीक्षा' (रू.भे.) उ०—देमूरी नी नायो साधु स्त्री बेटी मां छोड़ दिक्सा लीधी।—मि.द्र.

दिक्सागुर—देखो 'दीक्षा-गुरु' (रू.भे.)

दिख—देखो 'दक्ष' (रू.भे.) उ०—१ जिनके काका सोनगिर आसमांन का थंभ। रण के आरंभ दिख ज्याग का सा सिंभ।—रा.रू.
उ०—२ दस दिहाड़ा जांन राखी राजा दिख, अंत पसउ दायजउ दियउ। सुसरइ वळै जवाई सरिसउ, क्यूंहेक म्याटउ जीव कियउ। —महादेव पारवती री वेलि

दिखण—१ देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—१ इम सुण पाछा दूत उटाया। वे जिम दिखण गया तिम आया।—रा.रू.
उ०—२ तद दीठो 'अनपति' विकट तौर। दळ दिखण भाग मरहट्ट दौर। दीन हो आसीरवाद दीध। कंकर तब बाजीराव कीध। —वि.सं.
२ देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.) उ०—देख वेद विद्या दिखण, पूज दूजां रा पाव। दीधा दांन अनेक विध, सविनय तैं सिधराव।—बां.दा.

दिखण चीर—देखो 'दिखणी चीर' (रू.भे.) उ०—मारू अधरतं बोलै मांणिया; कडी दिखण चीरेण। थणहर कांचूं मांणिया, नयण न जांणूं केण।—ढो.मा.

दिखणांण-वि० [सं० दक्षिण+रा०प्र०आंण] दक्षिण का।
उ०—१ लाख दळ सहत गळ रह्यौ 'आपौ' लड़े, वळ चहूं सांभळै सुजस वाजा। तीड दिखणांण भड मरै आवै तिता, रैण खग चाखतां पांण राजा।—महाराजा विजयसिंह जोधपुर रौ गीत
उ०—२ दिखणांण थाट दीधा दवाय। खुरसांण थाट दहसत्त खाय। —वि.सं.
सं०पु०—१ दक्षिण का निवासी।
रू०भे०—दखणांण।
सं०स्त्री०—२ दक्षिण दिशा। उ०—विकट लीधां दळां 'जसा' रा वीरवर, केळवै खगां खत्रवाट कांमो। साहि सुरथांण दिखणांण मेलै सही, साहि त्रकुटांण दिखणांण सांमो। —महाराजा अजीतसिंह जोधपुर रौ गीत
३ देखो 'दक्षिणायण' (रू.भे.)

दिखणा—देखो 'दक्षिणा' (रू.भे.)

दिखणाद—देखो 'दखणाद' (रू.भे.) उ०—१ अठी दिखणाद दिसा 'अजमाल', अळै किर सागर मील अपाल। उठी दिस उत्तर पुत्तर इंद, सफै दळ जेळ कि वेळ समंद।—रा.रू.
उ०—२ अखड़ैत पटैत जवांन इसा। दरकूंच कियौ दिखणाद दिसा। —मे.म.

दिखणादू, दिखणादौ—देखो 'दिखणाधू' (रू.भे.)
उ०—१ झाड़ां पर बैठघोड़ा पंखेरू डरग्या अर दिखणादू पवन ई थोड़ो थमग्यो।—रातवासो
उ०—२ इण खुणै जोय, थोड़ो उण खुणै जोय, पूरब पिच्छम धुर दिखणादो जोय। आभै में धरा री वासी वसै नहिं कोय सैयां हे, सैणां री वाड़ी में थारो छैल भंवर व्है तो जोय।—चेत मांनखो

दिखणाध—देखो 'दखणाध' (रू.भे.) उ०—ओरंगजेब पाछै हलियो, दिन दस अंतर पाय। पर दिखणाध उलट्टियो, घर सोबा ठहराय। —रा.रू.

दिखणाधि, दिखणाधी—देखो 'दखणाधी' (रू.भे.) उ०—१ दळ दिखणाधि उतर देठाळै, डेरा दुहूं दिशा देठाळै। दुहुं बाजार झंडा देठाळै, दांमिण गजां धजां देठाळै।—वचनिका
उ०—२ कोट री समचौरस सफीलां री विगत—सफील अगूणी गज ४०१, सफील दिखणाधी गज ४०३, सफील आथमणी गज ४०७, सफील उतराधी गज ४०६।—द.दा.

दिखणाधू, दिखणाधौ—देखो 'दखणाधू' (रू.भे.)

दिखणि, दिखणी-सं०पु० [सं० दक्षिणीय] १ दक्षिण देश का अधिपति।

उ०—दुय चत्रमास बादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस। पूगो नहीं चाकरी पकड़ी, दीधो नहीं मड़ठां देस।—बां.दा.

२ देखो 'दखणी' (रू.भे.) उ०—१ देस निवांणूं सजळ जळ, मीठा बोला लोइ। मारू कांमणि दिखणि घर, हरि दीयइ तउ होइ। —ढो.मा.

उ०—२ उत्तर मेह न जावै अहळो, दिखणि धाव तणो दसतूर। —ओपो आढ़ो

दिखणी-चीर—सं०पु०यौ० [सं० दक्षिणी-चीर] सधवा स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष। उ०—१ झूठा सब आभूखणा री, साची पियाजी की प्रीति। झूटा पाट पटंबरा रे, झूठा दिखणी चीर।—मीरां

उ०—२ जीरा म्हारी बाई ए असी ओ कळयां री सीमाडूं घाघरो अर मंगवाद्यूं दिखणी चीर।—लो.गी.

रू०भे०—दखणी चीर, दिखण चीर।

दिखद—सं०पु० [सं० दृषद्] पत्थर (अ.मा.)

दिखलाई—देखो 'देखाई' (रू.भे.) उ०—रांम रटन छाडे नहीं, हरि लै लागा जाइ। बीचैं हीं अटकै नहीं, कळा कोटि दिखलाइ। —दादू वांणी

दिखलाड़णो, दिखलाड़बो—देखो 'देखाणो, देखावो (रू.भे.)

दिखलाड़णहार, हारो (हारी), दिखलाड़णियो—वि०।

दिखलाड़िओड़ो, दिखलाड़ियोड़ो, दिखलाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

दिखलाड़ीजणो, दिखलाड़ीजबो—कर्म वा०।

दीखणो, दीखबो—अक०रू०।

दिखलाड़ियोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दिखलाड़ियोड़ी)

दिखलाणो, दिखलाबो—देखो 'देखाणो, देखावो' (रू.भे.)

उ०—ग्यांन प्याला पीवत दरस्या, चतुर अवस्था ख्याल। है ज्यूं का त्यूं कहि दिखलाऊं, यो ही वचन विसाळ।—स्री सुखरांमजी महाराज

दिखलाणहार, हारो (हारी), दिखलाणियो—वि०।

दिखलायोड़ो—भू०का०कृ०।

दिखलाईजणो, दिखलाईजबो—कर्म वा०।

दीखणो, दीखबो—अक०रू०।

दिखलायोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दिखलायोड़ी)

दिखलाळणो, दिखलाळबो—देखो 'देखाणो, देखावो' (रू.भे.)

दिखलाळणहार, हारो (हारी) दिखलाळणियो—वि०।

दिखलाळिओड़ो, दिखलाळियोड़ो, दिखलाळ्योड़ो—भू०का०कृ०।

दिखलाळीजणो, दिखलाळीजबो—कर्म वा०।

दिखलाळियोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दिखलाळियोड़ी)

दिखलावणो, दिखलावबो—देखो 'देखाणो, देखावो' (रू.भे.)

उ०—ग्यांन अग्यांन दोऊ दिखळावं, आप न ग्यांन अग्यांन भया। —स्री सुखरांमजी महाराज

दिखलावणहार, हारो (हारी), दिखलावणियो—वि०।

दिखलाविओड़ो, दिखलावियोड़ो, दिखलाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

दिखलावीजणो, दिखलावीजबो—कर्म वा०।

दीखणो, दीखबो—अक०रू०।

दिखलावियोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दिखलावियोड़ी)

दिखाई—देखो 'देखाई' (रू.भे.)

दिखाऊ—वि० [सं० दृश+रा०प्र०आऊ] १ बनावटी।

उ०—लोग दिखाऊ अन-जळ त्याग्यो, अेक भखै बस पून। आयै-गयै सूं मुख ना बोलै, असी धारी मून।—डूंगजी जवारजी री पड़

२ जो केवल देखने योग्य हो किन्तु काम नहीं आ सके. ३ दिखाने योग्य. ४ देखने योग्य।

रू०भे०—देखाऊ।

दिखाओ—देखो 'दिखावो' (रू.भे.)

दिखाड़णो, दिखाड़बो, दिखाडणो, दिखाडबो—देखो 'देखाणो, देखावो' (रू.भे.)

उ०—१ गांव जोगळिया री सांमोर महेसदास जिण महाराज गजसिंघजी नूं जीभ दिखाड़ी।—बां.दा.

उ०—२ दिठो तउ गत्त न बूझव देव। अगम्म अगोचर तोर अवेव। लख्यो तउ पार लहां न अलक्ख। नवै-खंड मंझ दिखाडिय नक्ख। —ह.र.

उ०—३ आकासि वैस्वांनर वाळइ, पाताळ कन्या प्रत्यक्ष दिखाडइ, कडयडारव करतां वनखंड मोडइ, परवत तणां सिखर ढाळइ, इसिउ मांत्रिक योगी।—व.स.

उ०—४ राधावेधु करीउ दिखाडइ, तिसउ न कोई तीण अखाडइ। —पं.पं.च.

दिखाड़णहार, हारो (हारी), दिखाड़णियो—वि०।

दिखाड़िओड़ो, दिखाड़ियोड़ो, दिखाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

दिखाड़ीजणो, दिखाड़ीजबो—कर्म वा०।

दीखणो, दीखबो—अक०रू०।

दिखाड़ियोड़ो, दिखाडियोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दिखाड़ियोड़ी, दिखाडियोडी)

दिखाणो, दिखाबो—देखो 'देखाणो, देखावो' (रू.भे.)

दिखाणहार, हारो (हारी), दिखाणियो—वि०।

दिखायोड़ो—भू०का०कृ०।

दिखाईजणो, दिखाईजबो—कर्म वा०।

दीखणो, दीखबो—अक०रू०।

दिखायोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दिखायोड़ी)

दिखाळणो, दिखाळबो—देखो 'देखाणो, देखावो' (रू.भे.)

उ०—१ बांटै नहीं धन वांणियो, खाटै धन कर खांत। रीझ करै ताळी दिए, हंसै दिखाळै दांत।—बां.दा.

उ०—२ संसार तिका हिज वात सरदही, रायहर जिका दिखाळी रीत। गीत तिके मंगळीक गाइजे, गाया तियइ दिहाडइ गीत।
—महादेव पारवती री वेलि

दिखाळणहार, हारो (हारी), दिखाळणियो—वि०।
दिखाळिग्रोड़ो, दिखाळियोड़ो, दिखाळ्योड़ो—भू०का०कृ०।
दिखाळीजणो, दिखाळीजबो—कर्म वा०।
दीखणो, दीखबो—अक०रू०।

दिखाळियोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दिखाळियोड़ी)

दिखाव-सं०पु० [सं० दृश्+रा०प्र०आव] १ देखने की क्रिया या भाव. २ दर्शन, दीदार। उ०—तरै 'जैसे' चारण कह्यो—'तूं पातसाह कनै जाय नै मोनूं दिखाव दे।'—नैणसी
३ दृष्टि की सीमा, नजर की पहुँच. ४ ऊपरी तड़क-भड़क, आडम्बर. ५ दृश्य।
रू०भे०—देखाव।

दिखावट-सं०स्त्री० [सं० दृश्+रा०प्र०आवट] १ ऊपरी तड़क-भड़क, बनावट, आडम्बर. २ दिखाने का ढंग या भाव।
रू०भे०—देखावट।

दिखावटी-वि० [सं० दृश्+रा०प्र०आवटी] १ जो केवल देखने लायक हो किन्तु काम में नहीं आ सके. २ जो असली न हो, बनावटी।
रू०भे०—देखावटी।

दिखावणो, दिखावबो—देखो 'देखाणो, देखावो' (रू.भे.)
उ०—१ पयंपत ईसर जोड़िय पांण। कपाळ करो हिव मूझ कल्यांण। दिखावउ तूझ अनूप दिदार। संसारह बाहर मांहि संसार।—ह.र.
उ०—२ मुह मेज किये द्रढ़ राख मणां। पिड़ खेत दिखावण सूरपणां। जग मांझ अमां नह मूंह जोए। हथ तुज्ज रहू मुझ मोख होए।—पा.प्र.

दिखावणहार, हारो (हारी), दिखावणियो—वि०।
दिखाविग्रोड़ो, दिखावियोड़ो, दिखाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
दिखावीजणो, दिखावीजबो—कर्म वा०।
दीखणो, दीखबो—अक०रू०।

दिखावियोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दिखावियोड़ी)

दिखावो, दिखाहो-सं०पु० [सं० दृश्+रा०प्र०आवो] १ वाह्याडंबर, तड़क-भड़क। उ०—लोक दिखावो मति करो, हरि देखै त्यूं देख। जन हरिदास हरि अगम है, पूरण ब्रह्म अलेख।—ह.पु.वा.
२ ढोंग, पाखण्ड।
रू०भे०—दिखाओ, देखाओ, देखावो, देखाहो।

दिखिण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.)

दिख्यांणी—देखो 'दखियांणी' (रू.भे.) (क.कु.बो.)

दिगंत-सं०पु० [सं०] १ आकाश का छोर, क्षितिज। उ०—मेघा महंत दीपत दिगंत। आदाय ओप, अक्षय अमोघ।—ऊ.का.
२ दिशा का अंत, दिशा का छोर. ३ दसों दिशाएँ. ४ चारों दिशाएँ। उ०—छिव यंत उदंत दिगंत छिये। भल संत महंत अनंत भये।—ऊ.का.
रू०भे०—दगंत।

दिगंतर-सं०पु० [सं०] दिशाओं के बीच का स्थान, दो दिशाओं का अन्तर। उ०—१ बराबर दीत दिगंतर वाय, अगोचर गोचर गोप्ति अगाय।—ऊ.का.
उ०—२ मांनिनि कर मूकइ नहीं, मांघव मांगइ मांन। दूर दिगंतर किम रहइ; आडा डूंगर रांन।—मा.कां.प्र.
उ०—३ बीज मवइ गज्जइ गयण, पवन-तणा परिचार। डगि आसाढ़ि हु इहं, दहि दिगंतर दार।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—दगंतर।

दिगंबर-सं०पु० [सं०] १ नंगा रहने वाला जैन यती, क्षपणक।
उ०—मांहे जोगेसर पवन रा भाखणहार, त्रिकुटी रा नढावणहार, धूम्रपांन रा करणहार, उरधबाहू, ठाडेसरी, दिगंबर, सेतंबर, निरंजनी, आकाश मुनी।—रा.सा.सं.
२ एक जैन संप्रदाय. ३ शिव, महादेव। उ०—परपति बहु सेवै अंबरधर। बहु सेवै अवधूत दिगंबर।—सू.प्र.
४ दिशाओं का वस्त्र, अंधेरा, अंधकार. ५ सिद्धि प्राप्त परमहंस (महात्मा)। उ०—सूंब सूंब कहै मरत दिन, जाचक पाड़ै बूंब। गिढ दिगंबर बाजही, ज्यूं धनवंतो सूंब।—बां.दा.
वि०—नंगा, नग्न। उ०—ग्रांम दिगंबर के रजकाग्रह, नेह कियो गिन दांम न दीने। गांठ गुजा दिन रात रहै गुम, लात नई पय पात न पीने।—ऊ.का.
रू०भे०—दगंबर, दिगंवर, डिगंगर, दगंबर, दगंमर, दिगंमर।

दिगंबरता-सं०स्त्री० [सं०] नंगापन, नग्नता।
रू०भे०—दगंबरता।

दिगंबरी-सं०पु० [सं०] १ एक जैन संप्रदाय. २ नंगा रहने वाला जैन यती, क्षपणक.
सं०स्त्री०—३ दुर्गा, शक्ति।

दिगंस-सं०पु० [सं०] क्षितिज वृत का ३६० वां अंश, एक डिग्री।

दिग—देखो 'द्रग' (रू.भे.) (ना.डि.को.)

दिगज—देखो 'दिग्गज' (रू.भे.) उ०—जाजुळ गोळा ज्वाळ, गरन जिण काळ उगल्लै। त्रासै सुरग पताळ, दिगज दिगपाळ दहल्लै।—मे.म.

दिगदंत-सं०पु०—दिशा-गज, आशा-गज। उ०—इंद्र नैं चंद्र नागेंद्र चित चमकिया, धड़हड़यो सेस नैं धरा धूजै। लचकि किचकोच करै पीठ कूरंमतणी, हलहलै मेर दिगदंत कूजै।—प.च.चौ.

दिगदरसक-जंत्र, दिगदरसक-यंत्र-सं०पु०यौ० [सं० दिग्दर्शक यंत्र] डिबिया के आकार का एक प्रकार का यंत्र जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है।

दिगदरसण-सं०पु० [सं० दिग्दर्शन] १ वह जो उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत

किया जाय, नमूना. २ नमूना दिखाने का कार्य. ३ जानकारी।
रू०भे०—दिगदरसन, दिग्दरसण, दिग्दरसन।

दिगदरसणी—देखो 'दिगदरसक जंत्र' (रू.भे.)

दिगदरसन—देखो 'दिगदरसण' (रू.भे.)

दिगदरसनी—देखो 'दिगदरसक जंत्र'।

दिगदाह-सं०स्त्री० [सं० दिग्दाह] सूर्यास्त होने पर दिशाओं का लाल और जलता हुआ ज्ञात होना, एक दैविक घटना (अशुभ, अपशकुन)
उ०—दिली लखै दिगदाह, विगत हित साह विचारी। खर भूकै रव खैग, स्वांन कूकै सुखहारी।—रा.रू.
रू०भे०—दिग्दाह।

दिगदेवता—देखो 'दिग्देवता' (रू.भे.)

दिगपति—देखो 'दिग्पति' (रू.भे.)

दिगपाळ [सं० दिग्पाल] १ वीर, समर्थ, शक्तिशाली। उ०—जिकै दिगपाळ रजपूत सामंत आजानबाहु ठाकुर अड़ा। भीड़ दरवारै आई खडा रहिआ छै।—रा.सा.सं.
२ देखो 'दिकपाळ' (रू.भे.) उ०—जाजुळ गोळा ज्वाळ, गरज जिण काळ उगल्लै। ग्रासै सुरग पताळ, दिगज दिगपाळ दहल्लै।—मे.म.

दिगमूढ़-वि० [दिङ्मूढ] आश्चर्य-चकित, दंग। उ०—ठीठइ राय मनि उग्रसिउ, लोयण चढचा ललाटि। डसण डसी दिगमूढ़ थिउ, घणउं न आवइ घाटि।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—दिगमूढ़, दिकमूढ़ा!

दिगर-वि० [फा० दीगर] दूसरा, अन्य।

दिगरेखा—देखो 'दिकरेखा' (रू.भे.)

दिगवास-सं०पु० [सं० दिकवासः] शिव, महादेव (अ.मा.)
रू०भे०—दिग्वास।
(मि० दिगंवर)

दिगविजई—देखो 'दिग्विजयी' (रू.भे.) उ०—इण विध दिगविजई 'अजन', कीधी कमंधां राव। नव नवगढ़ कोटां निजर, नव नव उच्छव चाव।—रा.रू.

दिगविजय—देखो 'दिग्विजय' (रू.भे.) उ०—१ अवींध मोतियूं के अक्षत चढ़वाये। सो कैसौ मांनूं महाराज का जस दिगविजय करि रवि किरण अरोहि जगजीत होय स्त्री कमळि आए।—सू.प्र.
उ०—२ जग जीतन की जीव में, जगी अखडित जोति। दयानंद दिगविजय किय, अपने वळ उद्योति।—ऊ.का.

दिगविजेय—देखो 'दिग्विजय', (रू.भे.)

दिगविजै—देखो 'दिग्विजय' (रू.भे.) उ०—दिगविजै कजि नरनाथ सजि दळ प्रवळ उच्छव पेखियौ। सव धरण नव सुख नवल सोभा विमळ रूप विसेखियौ।—रा.रू.

दिगि-सं०स्त्री० (अनु०) (मृदंग आदि वाद्य की) ध्वनि विशेष।
उ०—भागड दिगि दिगि सिरि वल्लरी भुणण भुण पाउ नेउरी। दों दों छंदिहि तिविल रसाळ घुणणं घुणणं घुगुर घमकार।
—विद्याविलास पवाडउ

दिगी-वि०—आठवीं*। उ०—रचै सातमी रूप तू काळरात्री। दिगी गोरी तू निध्यमी सिद्ध दात्री।—मे.म.

दिगीस-सं०पु० [दिक्+ईश] दिशा का स्वामी, दिक्पाल।
उ०—'जगतेस' फवज्ज प्रवंधु करै, भुव कंपित भार दिगीस डरै। मन आंन महीपन के प्रजरै, किन पै वसुधा-पति कोप करै।—ला.रा.
रू०भे०—दिगेस, दिग्गीस।

दिगीस्वर-सं०पु० [सं० दिगीश्वर] दिशा का स्वामी, दिक्पाल।

दिगेस—देखो 'दिगीस' (रू.भे.)

दिग्गज-सं०पु० [सं०] पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दवाये रखने और दिशाओं की रक्षा करने के लिये स्थापित हैं, उनके नाम—
(१) पूर्व में—ऐरावत. (२) पूर्व-दक्षिण में—पुंडरीक.
(३) दक्षिण में—वामन. (४) दक्षिण-पश्चिम में—कुमुद.
(५) पश्चिम में—अंजन. (६) पश्चिम-उत्तर में—पुष्पदंत.
(७) उत्तर में—सार्वभौम. (८) उत्तर-पूर्व में—सप्ततीक।
उ०—थळ कज्जळ सरजीव कना असताचळ अग्रज। कना सेव कोरणै देव सुत आया दिग्गज।—रा.रू.
वि०—१ दिग्विजयी, वड़ा, महान्। उ०—किता हुआ दिग्गज कवी, समुभणहार असेख। धुर रूपक ज्यांही धरै, विखमावरण विसेख।
—र.रू.
२ जवरदस्त।

दिग्गयंद-सं०पु० [सं० दिग्गेन्द्र] दिग्गज।

दिग्गीस—देखो 'दिगीस' (रू.भे.)

दिग्दरसण, दिग्दरसन—देखो 'दिगदरसण' (रू.भे.)

दिग्दरसनी—देखो 'दिगदरसक जत्र'।

दिग्दाह—देखो 'दिगदाह' (रू.भे.)

दिग्देवता-सं०पु० [सं०] दिशा का स्वामी, दिक्पाल।
रू०भे०—दिगदेवता।

दिग्पति-सं०पु० [सं०] दिशापति, दिक्पाल।
रू०भे०—दिगपति।

दिग्पाळ—देखो 'दिकपाल' (रू.भे.) उ०—वीवाह करण तेथ वैठा व्रांह्मण, समधा अगिनि सीचतइ सारि। नवग्रह दस दिग्पाळ निजीकी, अथवा वरइ करइ आचार।—महादेव पारवती री वेलि

दिग्वळ-सं०पु० [सं० दिग्वल] लग्नादि केन्द्रों पर स्थित ग्रहों का वल—
(फलित ज्योतिष)
वि०वि०—लग्न केन्द्र (पूर्व) में बुध-गुरु, लग्न से चतुर्थ स्थान (उत्तर) में चंद्र-शुक्र, लग्न से सप्तम स्थान (पश्चिम) में शनि और लग्न से दशम स्थान (दक्षिण) में रवि-मंगल दिग्वल पाते हैं। उपरोक्त ग्रहों के इन केन्द्रों (स्थानों) पर होने से सम्वन्धित दिशाएं भी वलवती मानी जाती हैं।

दिग्वळी-सं०पु० [सं० दिग्वलिन्] फलित ज्योतिष में वह ग्रह जो किसी दिशा में वली हो।

दिग्भरम, दिग्भ्रम-सं०पु० [सं० दिग्भ्रम] दिशाओं को भूलने की अवस्था, दिशाओं का भ्रम होना।

दिग्मंडळ-सं०पु० [सं० दिग्मंडल] १ दिशाओं का समूह, सम्पूर्ण दिशाएं. २ क्षितिज वृत।

दिग्राज-सं०पु० [सं०] दिशा का राजा, दिक्पाल।

दिग्वसन, दिग्वस्त्र-सं०पु० [सं०] १ शंकर, शिव. २ नंगा यती, सन्यासी. ३ दिगंबर सन्यासी, क्षपणक (जैन) (मि० दिगंबर)

दिग्वारण-सं०पु० [सं०] दिग्गज।

दिग्वास—देखो 'दिगवास' (रू.भे.)

दिग्विजय-सं०स्त्री० [सं०] १ राजाओं द्वारा अपनी वीरता दिखलाने व महत्व प्रकट करने हेतु देश देशांतरों में जाकर युद्ध करना व विजय प्राप्त करना। उ०—जिण भीम जूनागढ़ रा वढेल, अंगदेस रा वघेल, आसेर रा वारड, मांग भजि आपरै चरण लगाया अर दिग्विजय रै चढ़ाण केही जंग करि देस देस रा नरेसां रै घरै सूता वैर जगाया। —वं.भा.

२ अपने पाण्डित्य का प्रभाव जमाने व सम्प्रदाय-सिद्धान्तों के प्रचार हेतु महात्माओं और पंडितों की दशो दिशाओं की यात्रा।

रू०भे०—दिगविजय, दिगविजै, दिग्विजे, दिग्विजै।

दिग्विजयी-वि० [सं०] दिग्विजय करने वाला, चक्रवर्ती।

रू०भे०—दिगविजई, दिगविजेय।

दिग्विजे, दिग्विजै—देखो 'दिग्विजय' (रू.भे.) उ०—प्रघांन गोळ कप मोर सोर कोस संग्रहे, उदग्ग खग्ग मग्ग मे विदग्ग अग्ग की गहे। चमूप सस्त्र अस्त्र लेय दिव्य दिग्विजे चढ़ै, स्वसुद्ध 'ऊम्मरेस' की विसुद्ध भारती वढ़े।—ऊ.का.

दिग्व्यापी-वि० [सं०] जो सब दिशाओं मे व्याप्त हो।

दिग्व्रत-सं०पु० [सं०] जैनियों का एक व्रत जिसमें वे निश्चित समय में निश्चित दूरी से अधिक न जाने का प्रण कर लेते हैं (जैन)

दिग्सिधुर-सं०पु० [सं०] दिग्गज।

दिग्सिखा-सं०पु० [सं० दिग्शिखा] पूर्व दिशा।

दिग्सूळ—देखो 'दिशासूळ' (रू.भे.)

दिच्छा—१ देखो 'दीक्षा' (रू.भे.) २ देखो 'दिसा' (रू.भे.)

दिच्छिण—देखो 'दक्षिण' (रू.भे.) उ०—सर्फ फौज कीधी विदा 'अंगदेस'। दिसा दिच्छिणं सोधवा काजि देसं।—सू.प्र.

दिज—१ देखो 'दुज' (रू.भे.) २ देखो 'द्विज' (रू.भे.) उ०—दिज जग पूजा करै दसरथ।—रांमरासौ

दिजराज—देखो 'दुजराज' (रू.भे.)

दिट्ठंती—देखो 'द्रस्टांत' (रू.भे.) उ०—इणपरि सांमग्गि वूझवी, बोली बहु दिट्ठंति। नाच मनावी घरि गई, हीयडइ हरख धरंति। —विद्याविलास पवाडउ

दिट्ठ—१ देखो 'द्रस्ट' (रू.भे.) उ०—हंस कहै रे डेडरा, सायर लहर न दिट्ठ। ज्यां नाळेर न चाखिया, काचरिया ही मिट्ठ।—अज्ञात

२ देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—सज्जण अळगा तां लगइ, जां लग नयणे दिट्ठ। जब नयणां हूं वीछुड़ै, तब उर मंझ पइट्ठ।—ढो.मा.

दिट्ठणौ, दिट्ठबौ—देखो 'देखणौ, देखबौ' (रू.भे.) उ०—दूग्रवर्णि दूग्रवर्णि राउ जूठिल्लु गिरि गंघमायण गिया इंदकीलु तिमु सिहरु दिट्ठऊ। मुकलावी अरजुनु चटई नमीउ तित्थु तसु सिहरि बइट्ठउ। —पं.पं.च.

दिट्ठि—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

दिठ—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—कहियौ निम जावा नृप कीघी। दिठ चंद्रकूप तणै मझि दीधी।—सू.प्र.

दिठाळौ—देखो 'देठाळौ' (रू.भे.)। उ०—तिकौ पहिलो महिलांण बीलाड़ै कियौ। बीजै दिन कूच कियौ। जरां वळै मावण हुवा। तिण में फूहो डावी-थकी बोली। दहियापूछि रौ दिठाळौ हुवौ। —जैतसी ऊदावत री वात

क्रि०प्र०—होणौ।

दिठौण, दिठौणौ-सं०पु० [सं०दृष्टि+रा.प्र. औणौ] बालकों को नजर से बचाने के लिए लगाई जाने वाली काजल की बिन्दी।

उ०—चुंनीं सुचंग रूपचै कणंस नील क्रांमती। दिठौण रूप भोम दीध रीझियै रतीपती।—सू.प्र.

दिढ़—देखो 'द्रढ़' (रू.भे.) उ०—ध्रमसासत्र मारग दिढ़ धारै। सदावरत समपै जग सारै।—सू.प्र.

दिढ़क-सं०पु० [सं० दृढ़] स्वामी कार्तिकेय, षडानन (नां.मा.)

दिढ़वंत-सं०पु० [सं० दृढ़वान्] गरुड़ (नां.मा.)

दिढ़ाड़णौ, दिढ़ाड़बौ—देखो 'दिढ़ाणौ, दिढ़ाबौ' (रू.भे.)

दिढ़ाड़णहार, हारौ (हारी), दिढ़ाड़णियौ—वि०।

दिढ़ाड़िग्रोड़ौ, दिढ़ाड़ियोड़ौ, दिढ़ाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दिढ़ाड़ीजणौ, दिढ़ाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दिढ़ाड़ियोड़ौ—देखो 'दिढ़ायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिढ़ाड़ियोड़ी)

दिढ़ाणौ, दिढ़ाबौ-क्रि०स० [सं० दृढ़] दृढ़ करना, मजबूत करना।

उ०—आहवि वाहि वहाड़ि असिम्मर, महाराज ले जाज्यो 'मधुकर'। मतो दिढ़ाइ मिळै राउ मारू, सीख 'रतन' कीघी स्रग सारू। —वचनिका

दिढ़ाणहार, हारौ (हारी), दिढ़ाणियौ—वि०।

दिढ़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दिढ़ाईजणौ, दिढ़ाईजबौ—कर्म वा०।

दिढ़ाड़णौ, दिढ़ाड़बौ, दिढ़ावणौ, दिढ़ाववौ—रू०भे०।

दिढ़ायोड़ौ-भू०का०कृ०—दृढ़ किया हुआ, मजबूत किया हुआ।

(स्त्री० दिढ़ायोड़ी)

दिढ़ावणौ, दिढ़ाववौ—देखो 'दिढ़ाणौ, दिढ़ाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ दादू ऐसा कोण अभागिया, कछू दिढ़ावै और। नांम बिना

पग धग्न कूं, कहो कहां है ठोर ।—दादू वांणी
उ०—२ झूठे अंधे गुरु घणें, भरम दिढ़ावै कांम । बंधे माया मोह से, दादू मुख से रांम ।—दादू वांणी
दिढ़ावणहार, हारौ (हारी), दिढ़ावणियौ—वि० ।
दिढ़ाविग्रोड़ौ, दिढ़ावियोड़ौ, दिढ़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
दिढ़ावीजणौ, दिढ़ावीजबौ—कर्म वा० ।

दिढ़ावियोड़ौ—देखो 'दिढ़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दिढ़ावियोड़ी)

दिणंकर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—सूर विरत सल्लले ज्वाळ भळहळे फुणंधर । कनां प्रळंक्रिति करण किरण परजळै दिणंकर ।
—रा.रू.

दिणंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—१ ते मथिला ना तमे धणी राजा प्रसन्नचंद । थाईसि मोटी पदवीइ, जेहवु हुइ दिणंद ।
—नळ-दवदंती रास
उ०—२ आज सुदिन मेरी आस फळी री । आदि जिणंद दिणंद सो देख्यौ, हरख्यौ ह्रदय ज्युं कमळ कळी री ।—ध.व.ग्रं.
उ०—३ निजर परक्खे राठवड़, अकबर तेज दिणंद । जांणे व्योम विमांन सम, भोम प्रगट्टचौ इंद ।—रा.रू.

दिणंदौ—देखो 'दिनंद' (अल्पा., रू.भे.) उ०—देख मुख नूर मिटै दुख दूर, नसै अंधकार ज्युं देखि दिणंदा । स्त्री धरमसीह कहै निसदीह उदौ, करि संघ कौ आदि जिणंदा ।—ध.व.ग्रं.

दिणयर, दिणयरु—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—१ बीजा दिवसह दिणयर उदइ । ध्यांन प्रभावि आव्या सइ ।—पं.पं.च
उ०—२ रजनी ! सजनी माहरी, तु रहिजे जुग चियारि । दिणयर ! दीसंतु रखे, नीसत नयणां-वारि ।—मा.कां.प्र.
उ०—३ धूळि मिळीय झळमळीय सयळ दिसि दिणयरु छाईउ । गयणे दुंदुहि द्रमद्रमीय सुर वरि जसु गाईउ ।—पं.पं.च.

दिणयरौ—देखो 'दिनकर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ स्रीफळ सारीखा कठन पयोहरा, उरवरि मंडन तरळ हारा । द्वादसी दिणयरा मुकुट मोती तपै, चंपला कुसुम ची भरथ भारा ।—रुकमणी मंगळ
उ०—२ वाजीय त्रंवक गुहिर नीसांण दिणयरौ रेणिहि छाईउ ए । पहुतउ जांणीउ पंडु नरिंदु द्रूपद पहूचए सांमहौ ए ।—पं.पं.च

दिणिंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—१ इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद, नमाए हैं व्रिंद आणंद विधाता । धोरी धरम कौ धीर धरा धर, ध्यांन धरै धरमसी गुण ध्याता ।—ध.व ग्रं.
उ०—२ ऐउ ऐउ रिख भांनन अरिहंत नमौ, भय भजण स्री भगवंत नमौ । धातकी खंड जिणिंद नमौ, केवळ ग्यांन दिणिंद नमौ ।
—स.कु.

दिणि—देखो 'दिन' (रू.भे.) उ०—कुंडळ सरिसउ लाधउ वाळौ, रंकु लहइ जिम रयण झमाळौ । तिणि दिणि दीठउ सुमिणइ सूरौ, अम्ह घरि आविउ पुन्नह पूरौ ।—पं.पं.च.

दिणिअर, दिणियर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.)
उ०—जग इण मारग जाय. ऊगै दिणियर आथमै । हियै खटक्कै हाय, तूझ मरण 'प्रतापसी' ।—जैतदांन बारहठ

दिणूं—देखो 'दिन' (रू.भे.) उ०—हरियळा द्रूपदि देवि इकु दिणूं ए नारद परिभवि ए । वेह रहइं कन्हु जाएवि सुग्रह ए माहि वाटडी ए ।
—पं.पं.च.

दित—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—रिख मख त्राता, दित कुळ घाता । सु भुज निघायौ, किरण उडायौ । गवतम नारी, रज पय तारी । भव जय भाखी, सुर मुनि साखी ।—र.ज.प्र.

दितवार—देखो 'अदीतवार' (रू.भे.)

दिति, दिती-सं०स्त्री० [सं० दिति] १ दक्ष प्रजापति की कन्या जो कश्यप ऋषि की पत्नी और राक्षसों की माता थी ।
उ०—दिती सुत सुंभ निसुंभ विदारि, कई रत वीज गई अडकारि ।
—मे.म.
रू०भे०—दति, दती ।

दिती-पुत्र-सं०पु०यौ० [सं० दिति+पुत्र] राक्षस, असुर, दैत्य ।

दितेस-सं०पु० [सं० दैत्येश] १ राक्षस, असुर । उ०—जे जुध हरणाकुस नूं जरियौ, धड़ नाहर मांनव चौ धरियौ । जिण कारण देव दितेस दुजेसर, न्याय नमै रघुनाथ सूं ।—र.ज.प्र.
२ देखो 'दैत्येस' (रू.भे.)

दिदार—देखो 'दीदार' (रू.भे.) उ०—१ दरसी जोत दिदार, तिरवेणा री ताक में । छूटा सकल विकार, आया मन माग में ।
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ चोरासी लख जोनिमां, भमता बहु अवतार । भाग्य भलेरे भेटीये, प्रभुजी नो दिदार ।—प्राचीन फागु संग्रह

दिधा—देखो 'द्विधा' (रू.भे.) उ०—करो जैसी पाई अकल अब आई जब कहैं । दिधा काई धाई दुक्रित दुखदाई कब दहै ।—ऊ.का.

दिनंकर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—१ अधोखज अक्खर तुज्झ अभेव । दिनंकर चंद न जांणै देव । त्रणै-गुण तूझ न जांणै तंत । अयास सबद्द न जांणै अंत ।—ह.र.
उ०—२ सुपातां पाळ-गर जोग पारथ समर, केवियां गाळ-गर वंस रा दिनंकर । वसू साधार झोख लागै क्रीतवर, अभंग पारथ अत इळा राजौ 'अमर' ।—विसनदास बारहठ

दिनंद-सं०पु० [सं० दिनेन्द्र] १ सूर्य, रवि (ह.नां., अ.मा., नां.मा.)
उ०—१ आखा कर ऊछाळ, कमंध तणी कर परक्रमण । भव भव औ भालाळ, दे खांवद मोनूं दिनंद ।—पा.प्र.
उ०—२ थळा ताजे जद अनंत दिनंद ऊगै पिछम दिस । गोरस गोरस ग्र ग्रै व्यास सिखवै माया वस ।—पा.प्र.
२ दिन (अ.मा.)
रू०भे०—दइंद, दइंदौ, दडिंदक, दडिंदक, दिणंद, दिणिंद, दिनद, दुइद, दुडइंद, दुड़यंद, दुडिंद, दुड़ियंद, दुड़ियंदौ, दुडंद, दुडियंद, दुड-इद, दुणिंद ।

अल्पा०—दिणंदो ।

दिन-सं०पु० [सं०] १ सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, सूर्य की किरणों के प्रकाश का समय।

वि०वि०—पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती हुई स्वयं भी अपने अक्ष पर घूमती है। इस घूमने में उसका आधा भाग सूर्य के सामने रहता है जो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होता है, उसे दिन कहते हैं और इसके विपरीत भाग में जो सूर्य के सामने नहीं होता है और वहां पर अंधेरा होता है, रात्रि कहलाता है।

पर्याय०—अह, दिनंद, दिव, दिवस, दिवा, दिवि, द्युतिवांन, दूं, वासर।

मुहा०—१ आडै दिन—साधारण दिन. २ ढळतो दिन—मध्यान्ह के बाद का समय. ३ दिन काटणौ—दिन काटना, दिन व्यतीत करना. ४ दिन काटणौ (काढ़णौ) —देखो 'दिन काटणौ'. ५ दिन खावणा—मजदूरी हजम करना. ६ दिन खूटणौ—दिन व्यतीत होना, दिन व्यतीत होना. ७ दिन गमाणौ—दिन गँवाना, व्यर्थ दिन व्यतीत करना. ८ दिन गाळणौ—देखो 'दिन घोळणौ'. ९ दिन घोळणौ—दिन व्यतीत करना. १० दिन चुकाणा—मजदूरी करना. ११ दिन चूकणौ—अवसर खोना. १२ दिन जाणौ—दिन व्यतीत होना. १३ दिन तोड़णौ—देखो 'दिन काटणौ'. १४ दिन दा'ड़ै (दहाड़ै, दिहाड़ै) —दिन के समय. १५ दिन दूणौ नै रात चोगणौ—निरन्तर बढ़ता हुआ. १६ दिन दोपारां—देखो 'दिन दा'ड़ै' १७ दिन धोळै—देखो 'दिन दा'ड़ै. १८ दिन निकळणौ—देखो 'दिन खूटणौ'. १९ दिन नै दिन अर रात नै रात नी जांणणी (समझणी)—निरन्तर परिश्रम करना. २० दिन पाछा पड़णा—समय निकलना, वक्त गुजरना। २१ दिन पूरो करणौ—देखो 'दिन काटणौ'. २२ दिन भांगणौ—देखो 'दिन गमाणौ'. २३ दिन माथै लेणौ—पूरे दिन को समाप्त करना. २४ दिन में तारा दिखाणा—देखो 'दिन रा तारा दिखाणा. २५ दिन में तारा दीखणा—देखो 'दिन रा तारा दीखणा'. २६ दिन में तारा देखाणा—देखो 'दिन रा तारा दिखाणा' २७ दिन रा तारा दिखाणा—बहुत कष्ट देना. २८ दिन रा तारा दीखणा—बहुत कष्ट होना, बहुत कष्ट भुगतना. २९ दिन रा तारा देखाणा—देखो 'दिन रा तारा दिखाणा'. ३० दिन सांम्ही लेणौ—किसी कार्य के लिये पूरा दिन खर्च करना. ३१ दिनां नै पूठ देणी—समय निकालना, वृद्धावस्था को प्राप्त होना। ३२ धोळै दिन--देखो 'दिन दा'ड़ै. ३३ धोळो दिन करणौ—महत्वपूर्ण कार्य करना।

यौ०—दिन-रात, रात-दिन।

२ पृथ्वी के एक बार अपने अक्ष पर घूमने का समय, आठ प्रहर या चौबीस घंटे का समय।

वि०वि०—साधारणत: दिन दो प्रकार का माना जाता है। नाक्षत्र तथा सौर या सावन। नाक्षत्र दिन का समय ठीक उतना ही होता है जितने में पृथ्वी एक बार अपने अक्ष पर घूम चुकती है अथवा यह दिन उतने समय का होता है जितने में किसी नक्षत्र को एक बार याम्योत्तर रेखा पर से होकर जाने और फिर दोबारा याम्योत्तर रेखा पर आने में लगता है। अत: इस दिन के मान (समय) में घटती बढ़ती नहीं होती है। ज्योतिषी लोग शुद्धता के लिये इसी को व्यवहार में लाते हैं। सावन दिन सूर्योदय से पुन: सूर्योदय तक माना जाता है, यद्यपि यह समय सदा चौबीस घंटे का नहीं होता है क्योंकि सूर्योदय सदैव एक ही निश्चित समय पर नहीं होता है। आजकल सरकारी दफ्तरों आदि में अर्द्ध रात्रि (१२ बजे) से पुन: अर्द्ध रात्रि तक दिन माना जाता है।

मुहा०—१ दिन करणा—मृतक की मृत्यु के दिन से बारहवें दिन पर्यंत विशेष संस्कारों का करना. २ दिन गिणणा—किसी की प्रतीक्षा में दिन व्यतीत करना. ३ दिन सुधारणा—मृतक की मृत्यु के दिन से बारहवें दिन तक विशेष संस्कारों को ठीक ढंग से सम्पन्न करना. ४ दिन होणा—मृतक की मृत्यु के दिन से बारहवें दिन तक विशेष संस्कारों का सम्पन्न होना. ५ दिन-दिन, दिनो-दिन—प्रति दिन, निरन्तर।

३ समय, काल, वक्त। उ०—१ फिरै उपाय न फेर, घिरै न दिन जितरै घरै। हारै चकवा हेर, रातां मिळै न राजिया।—किरपारांम

उ०—२ आछै दिन पाछै रहे, हरि सौं कियो न हेत। अब पछतावै होत क्या, चिड़िया चुग गई खेत।—अज्ञात

उ०—३ दिन आछै जग जस दियो, दिन फिर दोस दहंत। सदा सुबुद्धि भांणमां, कुबुद्धि लोक कहंत।—अज्ञात

मुहा०—१ काळ रा दिन—दुर्भिक्ष का समय, दुष्काल का समय. २ घणा दिन—बहुत समय, बहुत काल. ३ घणा दिनां रो—बहुत समय का, प्राचीन, पुराना, बुड्ढा. ४ चढ़ता दिन—उन्नति का समय. ५ चोखा दिन—अनुकूल समय. ६ ढळता दिन—अवनति का समय. ७ दिन आगा पाछा करणा—विलम्ब करना. ८ दिन आणा—अनुकूल समय आना, प्रतिकूल समय आना. ९ दिन ओळखणौ—समय पहिचानना, समय को समझना. १० दिन काटणा—समय व्यतीत करना. ११ दिन काडणा (काढ़णा)—समय व्यतीत करना. १२ दिन खाणा—विलम्ब करना. १३ दिन खूटणा—समय समाप्त होना. १४ दिन गमाणा—समय नष्ट करना, समय गँवाना. १५ दिन गाळणा—देखो 'दिन काढणा', देखो 'दिन गमाणा'. १६ दिन गिणणा—समय व्यतीत करना. १७ दिन गुजरणा—समय व्यतीत होना. १८ दिन गुजारणा—समय व्यतीत करना. १९ दिन घरै आणा (होणा)—अनुकूल समय आना (होना). २० दिन घिरणा—अनुकूल समय आना. २१ दिन घिरणौ—समय बदलना. २२ दिन घोळणा—समय व्यतीत करना. २३ दिन चुकाणौ—अवसर में व्याघात डालना. २४ दिन चूकणौ—अवसर टलना. २५ दिन जाणा—समय व्यतीत होना. २६ दिन जुड़णा—समय की अवधि

का बढ़ना. २७ दिन टळणा (टळणौ)—समय का निकल जाना, समय चला जाना. २८ दिन तोड़णा—समय गुजारना, समय व्यतीत करना. २९ दिन दूखणा—देखो 'दिन खटकणा'. ३० दिन देखणा—समय का अनुभव करना, परिस्थितियों को अनुभव करना. ३१ दिन निकळणा—समय व्यतीत होना. ३२ दिन निकाळणा—समय व्यतीत करना. ३३ दिन पतळा पड़णा—समय का अनुकूल न होना, आर्थिक स्थिति ठीक न होना, निर्धनता आना. ३४ दिन पाछा देणा—समय निकालना, समय गुजारना. ३५ दिन पाछा पड़णा—समय निकलना, समय गुजरना. ३६ दिन पाधरा होणा—अनुकूल समय आना. ३७ दिन पूरा करणा—समय व्यतीत करना.
३८ दिन पैंड़णा—बुरा समय आना, संकट का समय आना.
३९ दिन फिरणा (फिरणौ)—समय बदलना. ४० दिन फोरा आणा—प्रतिकूल समय आना. ४१ दिन बांधणा—समय निश्चित करना. ४२ दिन बावड़णा—अनुकूल समय आना. ४३ दिन बिताणा—समय व्यतीत करना. ४४ दिन बीतणा (बीतणौ)—समय व्यतीत होना. ४५ दिन भारी पड़णा—समय का कठिनता से गुजरना. ४६ दिन मांणणा—उपभोग लेना, आनन्द लेना. ४७ दिन रेजलं पड़णा—कार्य सम्पन्न होने में विलम्ब होना. ४८ दिन लगाणा—समय व्यतीत करना, समय नष्ट करना. ४९ दिन लागणा—समय नष्ट होना, समय व्यतीत होना. ५० दिन बदलणा (पलटना)—समय बदलना, समय पलटना. ५१ दिन वळणा (वळणौ)—देखो 'दिन फिरणा'. ५२ दिन वोळाणा—समय गुजारना, समय व्यतीत करना. ५३ दिन सांकड़ा—कम समय, तंग समय. ५४ दिन होणा—अनुकूल समय होना. ५५ दिनां नै धक्का देणा—किसी तरह समय गुजारना, कठिनाई से निर्वाह करना.
५६ दिनां नै पूठ देणी—देखो 'दिन पाछा देणा'. ५७ दिनां में अळूझणौ—कार्य सम्पन्न होने में अधिक समय लगना. ५८ दिनां रौ फेर—समय का चक्र, समय का दौर, समय का फेरा. ५९ दुखां रौ पालण दिन—दुःखों के घाव को समय ही भरता है. ६० सांकड़ा दिन—देखो 'दिन सांकड़ा'।
यौ०—दिन-दसा, दिन-मांन।
४ निश्चित् समय, अवधि।
मुहा०—१ काळ रा दिन—मृत्यु का समय, वृद्धावस्था. २ चढ़ता दिन—बाल्यावस्था के पश्चात् युवावस्था में प्रवेश करने का समय. ३ ढळता दिन—आयु का पिछला भाग, वृद्धावस्था. ४ दिन आणा—आयु की समाप्ति के समीप आना, मृत्यु के निकट पहुंचना. ५ दिन उतरणा—जवानी का समाप्त होना, वृद्धावस्था में प्रविष्ठ होना. ६ दिन ऊबा—आयु का समय. ७ दिन किरणां आणौ—आयु का समाप्ति के समीप पहुंचना. ८ दिन किरणां में—मृत्यु के निकट होना. ९ दिन खड़कणा (खिड़कणा)—आयु के बहुत से वर्ष व्यतीत कर देना, वृद्धावस्था के निकट पहुंचना. १० दिन खूटणा—आयु की अवधि का समाप्ति के समीप पहुंचना, मृत्यु के निकट होना. ११ दिन चढ़णा—गर्भ ठहरने के दिन प्रसव के दिन की ओर उत्तरोत्तर समय का बढ़ना. १२ दिन डूबणा—आयु का समाप्ति के समीप पहुंचना. १३ दिन ढळणा—युवावस्था के पश्चात् वृद्धावस्था में प्रविष्ठ होना. १४ दिन थोकड़ं देणा—देखो 'दिन खड़कणा'. १५ दिन देणा—मृत्यु से बचाना, जीविका सम्बन्धी साधनों का देना. १६ दिन निकळणा—आयु का व्यतीत होना. १७ दिन निकाळणा—आयु व्यतीत करना, जीवन का समय गुजारना. १८ दिन पड़णा—आयु की अवधि का समाप्ति की ओर पहुंचना, समय गुजर जाना. १९ दिन पूरा करणा—आयु की अवधि को समाप्त करना, जीवन का समय गुजारना. २० दिन पूरा होणा—जीवन का समय गुजरना, आयु का समाप्ति की ओर बढ़ना. २१ दिनां रौ जतन करणौ—आयु की रक्षा करना. २२ दिन लैणा—देखो 'दिन खड़कणा. २३ दिनां में धूड़ पड़णी—वृद्धावस्था में अनुचित या अव्यवहारिक कार्य कर के अपयश प्राप्त करना, कलंक का भागी होना. २४ दिनां माथै पांणी फेरणौ—देखो 'दिनां में धूड़ पड़णी'. २५ दिनां रौ दादौ—पुराना, वृद्ध, बुड्ढ़ा. २६ पड़वा दिन—युवावस्था के बाद का समय. देखो 'ढळता दिन'. २७ पूरा दिनां—गर्भस्थ शिशु की पूर्णावस्था का समय, प्रसव काल के समीप का समय।
५ तिथि, तारीख।
मुहा०—१ दिन तै करणौ—देखो 'दिन मुकर करणौ'. २ दिन मुकर करणौ—किसी कार्य के लिए तिथि निश्चित करना, तारीख तय करना, दिन धरना।
६ सूर्य। उ०—दिन जुध प्रत लाग्यौ दुसह, अर भग्गौ निस अद्ध। ऊगै दिन चढ़ियौ 'अजौ', अड़ियौ कोप उरद्ध।—रा.रू.
मुहा०—१ दिन आथमणौ—सूर्यास्त होना, अवनति होना. २ दिन उगाणौ—सूर्योदय के समीप पहुंचना, किसी कार्य को निरन्तर करते रहना. ३ दिन ऊगणौ—सूर्योदय होना. ४ दिन किरणां आणौ—सूर्य का अस्ताचल के निकट पहुंचना. ५ दिन किरणां में—सूर्य का अस्ताचल में होना. ६ दिन चढ़णौ—सूर्य का उदय होने के बाद ऊपर उठना, सूर्य का प्रातःकाल से मध्यान्ह की ओर बढ़ना. ७ दिन छतै—देखो 'दिन थकै'. ८ दिन छिपणौ—देखो 'दिन आथमणौ'. ९ दिन डूबणौ—देखो 'दिन आथमणौ'. १० दिन ढळणौ—सूर्य का मध्यान्ह के पश्चात् अस्ताचल की ओर बढ़ना. ११ दिन ढळियां—सूर्य का मध्यान्ह से अस्ताचल की ओर बढ़ने पर तीसरे प्रहर में. १२ दिन थकै—दिन के होते हुए, सायंकालीन समय जब सूर्य डूबने में कुछ समय हो. १३ दिन निकळणौ—सूर्योदय होना. १४ दिन मथारै आणौ—सूर्य का उस स्थिति में आना जिससे मध्यान्ह हो जाय. १५ दिन माथा माथै आणौ—देखो 'दिन मथारै आणौ'. १६ दिन माथै आणौ—देखो 'दिन मथारै आणौ'।
रू०भे०—दन, दिरण, दिणु, दिनि, दिन्न, दिन्नि।

अल्पा०—दिनड़ो ।

दिनग्रर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.)

दिनग्रवसांण-सं०पु० [सं० दिन+ग्रवसान] सायंकाल, संध्या (डि.को.)

दिनकंत-सं०पु० [सं० दिनकांत] सूर्य्य ।

दिनकर-सं०पु० [सं०] १ सूर्य्य (ग्र.मा., ना.मा.) उ०—जो नह ग्रावै करण जुध, सुण बोलावौ सीह । दाह हुवै नह दहण सूं, दिनकर हुवै न दीह ।—वां.दा.

२ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएं होती हैं ।

रू०भे०—दणयर, दणियर, दनकर, दिणंकर, दिणयर, दिणयरु, दिणिग्रर, दिणिय, दिणिया, दिनंकर, दिनकरण, दिनकार, दिनियर, दिनेर, दुणियर ।

अल्पा०—दिणयरौ ।

दिनकरकन्या-सं०स्त्री० [सं०] यमुना ।

दिनकरण—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) (ह.नां., डि.को.)

दिनकर-सुत-सं०पु० [सं०] १ कर्ण. २ यम. ३ शनि. ४ सुग्रीव. ५ अश्विनीकुमार ।

दिनकार—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) उ०—जिम चकवा दिनकार, मोरां नइ जळधार ।—वि.कु.

दिनड़ो—देखो 'दिन' (अल्पा., रू.भे.) उ०—चढ़ियो राणो ढळती मांझल रात, कोई दिनड़ो ऊगोयो दूदाजी रै मेड़तै हो राज ।—मीरां

दिनक्षय-सं०पु० [सं०] किसी तिथि का गिनती में न ग्राना, तिथि की हानि, तिथिक्षय ।

दिनचरया-सं०स्त्री० [सं०] दिन भर का कार्य ।

दिनद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दिन-दसा-सं०स्त्री० [सं० दिनदशा] देखो 'दिनमांन' ।

दिनदीप-सं०पु० [सं०] सूर्य्य (डि.को.)

दिनदुलह, दिनदुलहो-सं०पु० [सं० दिनदुर्लभ] कामदेव (ह.नां.)

वि०—बांका वीर । उ०—दिनदुलहां मांणीगरां, इण गढ़ रा वणि-यांह । ग्रांणी सींगळ दीप सूं, पेखै पदमणियांह ।—वां.दा.

दिननाथ, दिननाह-सं०पु० [सं० दिननाथ] सूर्य्य ।

दिनप, दिनपति-सं०पु० [सं०] १ सूर्य्य । उ०—१ जग ईख स्वाद पी ऊख रस, जिम ग्रवर चार ग्रनारयं । सुख परम दिनपति नृपति सेवत, विवध भोग विहारयं ।—रा.रू.

उ०—२ मीठी ग्रोर न कोई मिठाई, मीठा ग्रोर न मेवा । ग्रातम रांम कळी ज्यूं उलसे, देखण दिनपति देवा ।—ध.व.ग्रं.

२ टगण की छः मात्राग्रों के तृतीय भेद का नाम ऽ।ऽ। (डि.को.)

दिनपात-सं०पु० [सं०] तिथि का गिनती में न ग्राना, तिथिक्षय, दिनक्षय ।

दिनपाळ-सं०पु० [सं० दिनपाल] सूर्य्य ।

दिनबळ-सं०पु० [सं० दिनबल] फलित ज्योतिष में वह राशि जो दिन के समय बलवान हो ।

दिनमण, दिनमणि, दिनमणी-सं०पु० [सं० दिनमणि] सूर्य्य ।

उ०—१ भव दुख भंजण स्वांमी निरंजण, संकट कोट प्रमाथ । द्रढ़-रथ वंस विभूखण दिनमणि, संजमर मणी सनाथ ।—स.कु.

उ०—२ गुरु गुरु दिनमणि हंस, मेघ मंदर मुगता गण । मति द्युति गति ग्रति सोह, वांणि मणि गुण जाके तण ।—ध.व.ग्रं.

रू०भे०—दनमण, दनमणि, दनमणी, दनमिणि, दनमिणी ।

दिनमांन-सं०पु० [सं० दिनमान] १ दिन ग्रोर रात्रि का मान ।

२ ज्योतिष के ग्रनुसार ग्रहों का दैनिक दशाक्रम । उ०—महाराज गढ़ रिणथंभरि ग्रलावदीन पातसाह ग्रड़ या, राव हमीर बारह बरस विग्रह लड़ या, पातसाह परदळ खूटा, दिनमांन खूटै गढ़ तूटां ।

—ग्र. वचनिका

३ देखो 'ग्रह गोचर' ।

दिनमाळी-सं०पु० [सं० दिनमाली] सूर्य्य ।

दिनरत्न-सं०पु० [सं०] सूर्य्य ।

दिनराई, दिनराउ, दिनराज-सं०पु० [सं० दिनराज] सूर्य्य ।

दिनांई-सं०पु० [सं० दिन स्थायी] सूर्य्य, दिवाकर । उ०—द्वार सुरेस नरेस दिनाई । वाचै साजै दीह वधाई ।—दयाळदास

क्रि०वि०—प्रतिदिन ।

दिनांतक-सं०पु० [सं] ग्रंधकार, ग्रंधियारा ।

दिनांध-सं०पु० [सं०] वह जिसे दिन को न सूझे ।

दिनांस-सं०पु० [सं० दिनांश] दिन के प्रातःकाल, मध्यान्ह ग्रोर सायं-काल ये तीन ग्रंश या विभाग ।

दिनागम-सं०पु० [सं०] प्रभात, तड़का ।

दिनाधीस-सं०पु० [सं० दिनाधीश] सूर्य्य ।

दिनि-सं०पु० [सं० दान] १ दान-पुण्य । उ०—सुत जीवराज काज कजि साथै । मुहतो 'गिरधर' 'गुणेस' माथै । बोलै गुणां 'रुघपति' वारठ । वणै खग्ग दिनि 'वाघ' तणी वट ।—रा.रू.

२ भेंट. ३ देखो 'दिन' (रू.भे., ग्र मा.)

दिनियर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.)

दिनी-वि०—बहुत दिनों का, पुराना ।

दिनेर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.)

दिनेस-सं०पु० [सं० दिन+ईश] सूर्य्य, दिवाकर । उ०—१ वुग्रो ग्रर व्याव वुग्राव विसेस, धायै जहं देव दिनेस धनेस । कुबुद्धि किकेइ कुमंत्र किवेव, सिया वन रांम ग्रनंत सिधेव ।—ह.र.

उ०—२ सट पट्ट भर सेस ग्रति चक्रित ग्ररेस । दिन धूंधळ दिनेस थरराहइ ग्रर साथ ।—र.ज.प्र.

रू०भे०—दनइस, दनीस, दनेस ।

दिनेमर—देखो 'दिनेस्वर' (रू.भे.)

दिनेसात्मज-सं०पु० [सं० दिनेशात्मज] १ शनि. २ यम. ३ सुग्रीव. ४ कर्ण. ५ ग्रश्विनीकुमार ।

दिनेस्वर-सं०पु० [स० दिन+ईश्वर] सूर्य्य, दिवाकर ।

रू०भे०—दिनेसर।

दिन्नं–वि० [सं० दत्तं] दिया हुआ, दत्तं (जैन)

दिन्न, दिन्नि—देखो 'दिन' (रू.भे.) उ०—१ जीता माधवदास रा, जुध 'अखमाल' 'विसन्न'। गुण चाळीसे भाद्रवे, तेरस उज्जळ दिन्न। —रा.रू.

उ०—२ वीतो यों साठो वरस, स्री महाराज प्रसन्न। ऊपर आयो इकसठो, दुयणां फिरिया दिन्न।—रा.रू.

दिपणौ, दिपबौ–क्रि०अ०—देखो 'दीपणौ, दीपबौ' (रू.भे.)

उ०—१ पतित न्हाय ह्वै पीतपट, दिपै निकट रिखदेव। नचै मुगत नटनार ज्यूं, स्री गंगा तट सेव।—वां.दा.

उ०—२ किनियांणी कळजुग में, दिप रह्या दिनंकर।
—ठाकुर जुझारसिंह मेड़तियौ

उ०—३ 'सतो' हालियो आगरै चक्र सज्जै, वजै वंब भेरी मुरै त्रंब वज्जै। छले मेह ज्यों खेह आकास छाई, दिपै चंचळा सेल धारा दिखाई।—वं.भा.

उ०—४ दिपै वप लोह वरन्न सिंदूर। सोभावत जांण उदेगिर सूर।
—सू.प्र.

उ०—५ खिवै फळ सेल खुलै दळ खग्ग। दिपै दव आग कि झाळ सदग्ग।—रा.रू.

दिपणहार, हारौ (हारी), दिपणियौ—वि०।

दिपवाड़णौ, दिपवाड़बौ, दिपवाणौ, दिपवावौ, दिपवावणौ, दिपवावबौ—प्रे०रू०।

दीपाड़णौ, दीपाड़बौ, दीपाणौ, दीपावौ, दीपावणौ, दीपावबौ—क्रि०स०।

दिपिओड़ौ, दिपियोड़ौ, दिप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दिपीजणौ, दिपीजबौ—भाव वा०।

दिपव्वणौ, दिपव्वबौ—देखो 'दीपणौ, दीपबौ' (रू.भे.)

उ०—सहस्र विभूत वियापक स्रव, दुवादस आंगळ गात दिपव्व। जदूकुळ-नायक सांमिय-जग्ग, पदम्म पताक अलंक्रत पग्ग।—ह.र.

दिपव्वयोड़ौ—देखो 'दीपियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिपव्वियोड़ी)

दिपह—देखो 'दीपक' (रू.भे.) उ०—सोच महंमद साह नूं, मोच थयो मन मद्द। प्रात ससोकित ज्यूं दिपह, राति अनंद रवद्द।—रा.रू.

दिपाड़णौ, दिपाड़बौ—देखो 'दीपाणौ, दीपावौ' (रू.भे.)

दिपाड़णहार, हारौ (हारी), दिपाड़णियौ—वि०।

दिपाड़िओड़ौ, दिपाड़ियोड़ौ, दिपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दिपाड़ीजणौ, दिपाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दिपणौ, दिपबौ, दीपणौ, दीपबौ—अक०रू०।

दिपाड़ियोड़ौ—देखो 'दिपायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिपाड़ियोड़ी)

दिपाणौ, दिपाबौ–क्रि०स० [सं० दीपी] १ चमकाना. २ प्रज्वलित करना. ३ प्रकाशित करना, देदीप्यमान करना, रोशन करना. ४ शोभित करना. ५ लावण्ययुक्त करना. ६ प्रसिद्ध करना. ७ प्रकट करना।

दिपाणहार, हारौ (हारी), दिपाणियौ—वि०।

दिपायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दिपाईजणौ, दिपाईजबौ—कर्म वा०।

दिपणौ, दिपबौ, दीपणौ, दीपबौ—अक०रू०।

दिपाड़णौ, दिपाड़बौ, दिपावणौ, दिपावबौ, दीपाड़णौ, दीपाड़बौ, दीपाणौ, दीपाबौ, दीपावणौ, दीपावबौ—रू०भे०।

दिपायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चमकाया हुआ. २ प्रज्वलित किया हुआ. ३ प्रकाशित किया हुआ, देदीप्यमान किया हुआ, रोशन किया हुआ. ४ शोभित किया हुआ. ५ लावण्ययुक्त किया हुआ. ६ प्रकट किया हुआ. ७ प्रसिद्ध किया हुआ।

(स्त्री० दिपायोड़ी)

दिपावणौ, दिपावबौ—देखो 'दिपाणौ, दिपावौ' (रू.भे.)

उ०—दूजा दिपावै दीप ज्यूं, आप घरै अंधार। पहुंचाया सिव पांच रो, खंदक पोतै ख्वार।—घ.व.ग्रं.

दिपावणहार, हारौ (हारी), दिपावणियौ—वि०।

दिपाविओड़ौ, दिपावियोड़ौ, दिपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दिपावीजणौ, दिपावीजबौ—कर्म वा०।

दिपणौ, दिपबौ, दीपणौ, दीपबौ—अक०रू०।

दिपावियोड़ौ—देखो 'दिपायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिपावियोड़ी)

दिपियोड़ौ—देखो 'दीपियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिपियोड़ी)

दिब—देखो 'दिव्य' (रू.भे.) उ०—पूंज तणै तेरह सुत दिब पख। सुजि त्यां हूंत कमंध तेरह सख।—सू.प्र.

उ०—२ दिब नयणां परब्रहम न देखै। पराक्रती नर जिम हरि पेखै।—सू.प्र.

दिबस—देखो 'दिवस' (रू.भे.) उ०—रात दिबस के रेस कोस में, बाजी लाव बणावै। जाकी पार कोई हुय जावै, वेनिग पोस्ट बतावै।
—ऊ.का.

दिम—देखो 'दिव' (रू.भे.) उ०—सावण छठि सुकिल दिम सु, सिरि छत्तु वहंतो। तुंग तुरंगम रहि चडेवि रवि जिम दीपंतो।
—प्राचीन फागु संग्रह

दिमाणियौ–सं०पु० [सं० द्वि+रा० मांणौ] अनाज मापने का एक माप।

दिमाक—देखो 'दिमाग' (रू.भे.) उ०—मावड़िया मुख ढंकियां, वैसे फाड़ै वाक। स्रवण सुणै नह बीर रस, दुरबळ घणो दिमाक।—वां.दा.

दिमाकदार—देखो 'दिमागदार' (रू.भे.)

दिमाग–सं०पु० [अ०] मस्तिष्क, भेजा।

मुहा०—१ दिमाग ऊंचौ होणौ—देखो 'दिमाग चढ़णौ'. २ दिमाग

आसमांन माथै होणौ (चढ़णौ)—देखो 'दिमाग चढ़णौ'. ३ दिमाग खाणौ—देखो 'दिमाग चाटणौ'. ४ दिमाग खाली करणौ—मगजपच्ची करना. ५ दिमाग चढ़णौ—बहुत अधिक घमण्ड होना. ६ दिमाग चाटणौ—व्यर्थ की बातें कहना जिससे सिर में दर्द होने लगे, बकवास करना. ७ दिमाग झड़णौ—घमण्ड उतरना, अभिमान दूर होना. ८ दिमाग परेसांन करणौ—देखो 'दिमाग खाली करणौ'. ९ दिमाग परेसांन होणौ—मगजपच्ची से तंग होना. १० दिमाग में रै'णौ—घमण्ड में रहना।

यौ०—दिमाग-चट।

२ समझ, मानसिक शक्ति, बुद्धि।

मुहा०—१ ऊंचै दिमाग रौ—तीव्र बुद्धि वाला. २ दिमाग ऊंचौ होणौ—बुद्धि का तीव्र होना. ३ दिमाग खाली करणौ—मानसिक शक्ति का व्यय करना. ४ दिमाग में खलल पड़णौ (होणौ)—विवेक शक्ति का न रहना, सनकी होना. ५ दिमाग में रै'णौ—ध्यान में रहना, समझ में रहना, स्मरण रहना. ६ दिमाग लड़ाणौ (दौड़ाणौ)—बहुत सोचना, खूब विचार करना।

यौ०—दिमागदार।

रू०भे०—दमाक, दमाग, दिमाक।

दिमागदार-वि० [अ० दिमाग+फा० दार] १ जिसकी मानसिक शक्ति अच्छी हो, बुद्धिमान. २ घमण्डी, अभिमानी।

रू०भे०—दिमाकदार।

दिमागी-वि० [अ०] दिमाग सम्बन्धी, दीमाग का।

दियण-वि० [सं० दा] देने वाला, दाता। उ०—१ बत्तीस आखड़ी रौ निवाहणहार, वैरियां विभाड़णहार, पर-भोम पंचायण, घणा दियण, जस लियण, कळाय रौ मोर, सूंघै भीनै गात, केसरिया पोसाख कियां, पांच हथियारां बांध्यां आंख घोड़ै असवार हुवै छै।
—रा.सा.सं.

उ०—२ रिध-सिध दीयण कोयलारांणी। बाळा बीजमंत्र ब्रह्मांणी। वयण-जुगति थौ अवचळ वांणी। पुणां कीत जिम सारंगपांणी।
—ह.र.

रू०भे०—दिअण।

दियांनत—देखो 'दयांनत' (रू.भे.) उ०—प्रभू नै वंदै स्मरण भजन री दियांनत छै, सो पाळियां में इहलोक परलोक रौ नफौ छै।—नी.प्र.

दियाळी—देखो 'दीवाळी' (रू.भे.) उ०—दियौ सबद सुंणियां दुसह, लागै तन मन लाय। सूंव दियौ न करै सदन, परब दियाळी पाय।
—वां.दा.

दियाळीएल(हेल)—देखो 'दिवाळीएल(हेल)' (रू.भे.)

दियावणौ—देखो 'दयावणौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दियावणी)

दियासण, दियासणी-सं०स्त्री [सं० दीपक+आसन] दीपक रखने के लिये पत्थर का बना स्थान विशेष।

दियासळाई-सं०स्त्री० [सं० दीपक+शलाका] लगभग डेढ़ इंच लम्बी लकड़ी की वह पतली तीली जिसके सिरे पर गंधक आदि भभकने वाले पदार्थ लगे रहते हैं और मुलायम लकड़ी की डिबिया (जिसमें कि ये तीलियां भरी रहती हैं) के पार्श्व पर (जहां विशेष प्रकार के मसाले लगे रहते हैं) रगड़ने से जल उठती है। यह दीपक जलाने, आग सुलगाने, सिगरेट, बीड़ी आदि जलाने के काम में ली जाती है।

रू०भे०—दियासळाई, दीयासळाई।

दियोड़ौ-भू०का०कृ०—दिया हुआ।

(स्त्री० दियोड़ी)

दियौ—देखो 'दीपक' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ दियौ सबद सुणियां दुसह, लागै तन मन लाय। सूंव दियौ न करै सदन, परब दियाळी पाय।—वां.दा.

उ०—२ परापरी पासै रहै, कोई न जांणै ताहि। सदगुरु दिया दिखाइ कर, दादू रह्या ल्यौ लाइ।—दादू बांणी

मुहा०—दिया जोगी भाग व्है तौ रातींदो ई क्यूं व्है—भाग्य अच्छा होता तो विपत्ति ही क्यों आती।

दिर-सं०पु०—१ सितार का एक बोल (संगीत)

२ हाथी. ३ दुर्योधन का एक भाई. ४ देखो 'दर' (५) (रू.भे.)

दिरक, दिरख-सं०पु० [सं० दक्ष] राजा दक्ष। उ०—१ अकळ अछेद अजोनी अवचळ, सत्रौ ऊजड कांई सहइ। दिरक जांगेसर इमड देखता, चरणे रज तिकाड चढ़इ।—महादेव पारबती री वेलि

उ०—२ ध्रिग धागळि दिरक गयउ भाजै नइ, प्रभु ऊवेळि तुहारी पूठि। जग मांहे तूं सुणी जांणियइ, दिरख रिस वचन कहइ मुख दूठि।—महादेव पारबती री वेलि

दिरब—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) (अ.मा.) उ०—साधां जोड़ै साथड़ा, सांधा तोड़ै संग। दरसण दे लेवै दिरब, आंदा भींत अनंग।—ऊ.का.

दिरस—देखो 'दरस' (रू.भे.) उ०—दिरस अदिरस दोऊं प्रकासी, सोहु अचळ असेरी। दिरस आदिरस नहीं मेरे में, ये निश्चय मम हेरी।
—श्री सुखरामजी महाराज

दिराड़णौ, दिराड़बौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

उ०—घणी दिराड़ै घूमरां, गवराड़ै नह गूढ़। भाड़ै वाळी भांम नूं, माथै चाढ़ै मूढ़।—बां.दा.

दिराड़णहार, हारौ (हारी), दिराड़णियौ—वि०।

दिराड़िओड़ौ, दिराड़ियोड़ौ, दिराड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दिराड़ीजणौ, दिराड़ीजबौ—कर्म वा०।

दिराड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिराड़ियोड़ी)

दिराणौ, दिराबौ-क्रि०स० [सं० दा, 'देणौ' क्रिया का प्रे०रू०] देने का काम कराना, दिलवाना, दिलाना। उ०—१ पछै गोधूळक वेळा हुई, तरै आप मांहे पधारिया, बीजा साथ नै डेरा दिराया।
—लाली मेवाड़ी री वारता

उ०—२ सु राव खेतसी साथै आवतौ दीठौ तरै ढोल दिरायौ।
—नैणसी

उ०—३ तरै रांणी लिखमी राव सूजा सौं अरज कर नै गांव चोपड़ा वसी नूं दिरायौ ।—नैणसी

दिराणहार, हारौ (हारी), दिराणियौ—वि० ।

दिरायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दिराईजणौ, दिराईजबौ, दिरीजणौ, दिरीजबौ—कर्म वा०

दराड़णौ, दराड़बौ, दराणौ, दराबौ, दरावणौ, दरावबौ, दिराड़णौ, दिराड़बौ, दिरावणौ, दिरावबौ, दिवराड़णौ, दिवराड़बौ, दिवराणौ, दिवराबौ, दिवरावणौ, दिवरावबौ, दिवाड़णौ, दिवाड़बौ, दिवाणौ, दिवाबौ, दिवारणौ, दिवारबौ, दिवावणौ, दिवाववौ, देराड़णौ, देराड़बौ, देराणौ, देराबौ, देरावणौ, देरावबौ, देवाड़णौ, देवाड़बौ—रू०भे० ।

दिरायोड़ौ-भू०का०कृ०—देने का काम कराया हुआ, दिलवाया हुआ, दिलाया हुआ ।

(स्त्री० दिरायोड़ी)

दिरावणौ, दिरावबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

उ०—१ रह रह सुंदरि माठ करि, हळफळ लग्गो काइ । डांभ दिरावइ करहलउ, सेकंतां मरि जाइ ।—ढो.मा.

उ०—२ धांन दिरावण नै सुखदेवो धायो, पांणी निरमळ नित सबळां ले पायो । आछा आछा जनवासी व्हैगा वनवासी, उठगा उगलांणा पाछा कद आसी ।—ऊ.का.

दिरावणहार, हारौ (हारी), दिरावणियौ—वि० ।

दिराविश्रोड़ौ, दिरावियोड़ौ, दिराव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दिरावीजणौ, दिरावीजबौ—कर्म वा० ।

दिरावियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिरावियोड़ी)

दिल-सं०पु० [फा०] हृदय, चित्त, मन, जी (डिं.को.)

उ०—१ विपळ सत सघण नवीन रा, अत गाय दुज आधीन रा । भुज दहण खळ जस भीन रा, दिल महण वंधव दीन रा ।
—र.ज.प्र.

उ०—२ आळसवां अज्जांणवां, दिल-खोटंतां दूर । साहिब सोचां साधवां, है हाजरां हजूर ।—ह.र.

उ०—३ दिल साफ रखे निज दोस दहै ।—ऊ.का.

मुहा०—१ दिल उचकणौ—देखो 'जीव उचकणौ'. २ दिल उमड़णौ—देखो 'जीव भरीजणौ'. ३ दिल ऊठणौ—देखो 'जीव ऊठणौ'. ४ दिल काठौ करणौ—धैर्य धारण करना, कृपणता करना, कंजूसी करना. ५ दिल खाटौ करणौ—देखो 'जीव खाटौ करणौ'. ६ दिल खाटौ पड़णौ (होणौ)—देखो 'जीव खाटौ पड़णौ, जीव खाटौ होणौ'. ७ दिल खिलणौ—प्रसन्नता होना. ८ दिल खुलणौ—देखो 'जीव खुलणौ'. ९ दिल खोल नै—देखो 'जीव खोल नै'. १० दिल चालणौ—देखो 'जीव चालणौ'. ११ दिल चुराणौ—देखो 'जीव चुराणौ'. १२ दिल जांन सूं—देखो 'दिलो जांन सूं'. १३ दिल टूटणौ—देखो 'जीव टूटणौ'. १४ दिल ठिकांणै रैणौ (होणौ)—देखो 'जीव ठा' माथै रैणौ'. १५ दिल थांमणौ—धैर्य धारण करना. १६ दिल दुखाणौ—देखो 'जीव दुखाणौ'. १७ दिल दूखणौ—देखो 'जीव दूखणौ'. १८ दिल धड़कणौ—देखो 'जीव धड़कणौ.
१९ दिल पसीजणौ—चित्त में दया का उद्रेक होना. २० दिल फाटणौ—देखो 'जीव फाटणौ'. २१ दिल फिरणौ—देखो 'जीव फिर जाणौ', देखो 'जीव फिरणौ'. २२ दिल फीकौ पड़णौ (होणौ) —देखो 'जीव फीकौ पड़णौ'. २३ दिल वडाणौ (बढ़ाणौ)—उत्साहित करना. २४ दिल वहलणौ—देखो 'मन वहलणौ'. २५ दिल वहलाणौ—देखो 'मन वहलाणौ'. २६ दिल बैठणौ—व्याकुल होना, भयभीत होना. २७ दिल भटकणौ—चित्त में स्थिरता नहीं होना. मन अस्थिर होना. २८ दिल मिळणौ—देखो 'मन मिळणौ'.
२९ दिल में आणौ—देखो 'जीव में आणौ'. ३० दिल में घर करणौ—विश्वास-पात्र होना. ३१ दिल चुभणौ—देखो 'जीव में चुभणौ'. ३२ दिल में जागा करणौ—देखो 'दिल में घर करणौ'. ३३ दिल दरियाव—बहुत उदार. ३४ दिल में राखणौ—देखो 'जीव में राखणौ'. ३५ दिल रा दरवाजा खुलणा—साहसी होना.
३६ दिल रौ दलाल—देखो 'दिल रौ बादसाह'. ३७ दिल रौ बादसाह—बहुत बड़ा उदार, मनमौजी, लहरी. ३८ दिल ललचाणौ—देखो 'जीव ललचाणौ'. ३९ दिल लागणौ—देखो 'मन लागणौ'. ४० दिल वधणौ—देखो 'जीव वधणौ'. ४१ दिल साफ कसूर माफ—चित्त शुद्धि ही सब से महत्वपूर्ण है. ४२ दिल सूं (से)—देखो 'जीव सूं.' ४३ दिलो जांन सूं—पूर्ण रूप से, सच्चे मन से ।

२ कलेजा. ३ प्रवृत्ति, इच्छा । उ०—दिल आवै ज्यूं कीजो दुरस ।
—वी.मा.

मुहा०—दिल आणौ—किसी की ओर प्रवृत्त होना, मोहित होना, इच्छा होना, अभिलाषा होना ।

रू०भे०—दल ।

अल्पा०—दिलड़ौ ।

दिलगीर-वि० [फा०] १ शोकाकुल, दुखी । उ०—तथा करमचंद नूं देख कर महाराज रै नेत्रां में जळ आयौ अरु खातरी फुरमाय डेरां पधारिया, तारां करमचंद रा बेटा दोय लखमीचंद, भागचंद करमचंद नै कयौ के आपनै देख महाराज दिलगीर हुवा सू आपसूं मोह घणौ दीसै छै ।
—द.दा.

२ उदास, चिंतातुर । उ०—१ दूत बीजी वार बाहर आइयौ, देखै तौ पेई नहीं, अठी उठी नूं जोइयौ कठै ही दीसै नहीं, दिलगीर हुवौ ।
—पंचदंडी री वारता

उ०—२ सु औ गाढ़ौ दिलगीर छै नै राहवेधी आदमी छै ।—नैणसी

क्रि०प्र०—होणौ ।

रू०भे०—दलगीर ।

दिलगीराई, दिलगीरी-सं०स्त्री० [फा० दिलगीर+रा०प्र०आई तथा ई]

१ रंज, दुःख। उ०—१ तूं दिलगीराई किण ही बोल री मत करै। दिलासा करि घर पूछियो।—द.वि.

उ०—२ करना फकीरी क्या दिलगीरी, सदा मगन मन रहना रे। कोई दिन बाड़ी तो कोई दिन बंगळा, कोई दिन जंगळ रहणा रे।
—मीरां

२ उदासी। उ०—१ आज अपूठा सो राया जी, राजी के श्रदेसो छाय। कै चित आयो थारै देसड़ो जी, कै चित आया थारै माई ने बाप, भँवर दिलगीरी क्यूं ल्याया जी।—लो.गी.

उ०—२ जिको दिल ईस्वर री इच्छा सूं राजी रहै, राम पुकार नहीं करै, इण खातिर उणनूं दुख दिलगीरी नहीं व्यापै।—नी.प्र.

क्रि०प्र०—करणी, राखणी।

रू०भे०—दलगीरी।

दिलड़ी—देखो 'दिल्ली' (अल्पा., रू.भे.) उ०—धागो धागरै कम हवो जवनपुर, समहर संग सप्रांणै। दिलड़ी तणी धरा अवपूणी, रोम चईनो रांणो—नैणसी

दिलड़ौ—देखो 'दिल' (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

उ०—जिण री जोऊं वाट, तैं मजजण दीसै नहीं। दिलड़ा मांहि उचाट, मु जनम क्यूं जासी 'जसा'।—जसराज

दिलचलौ-वि० [फा० दिल+सं० चलन] १ उदार, दाता, दानी.
२ खुश मिजाज. ३ पागल. ४ हिम्मत वाला, साहसी.
५ शूर, वीर।

दिलचस्प-वि० [फा०] १ चित्ताकर्षक. २ मनोहर, सुंदर।

दिलचस्पी-सं०स्त्री० [फा०] चित्त को किसी ओर प्रवृत्त करने का भाव।
क्रि०प्र०—रागणी, लेणी।

दिलजमई-सं०स्त्री० [फा० दिल+अ० जमग्र:+रा०प्र०ई] संतोष, इतमिनान, तसल्ली।

दिलजळौ-वि० [फा० दिल+सं० ज्वलन] अत्यन्त दुखी।

दिलदराज-वि० [फा० दिल+दराज] बड़े दिल का, उदार दिल।
उ०—दिवस केता दिलदराजे, गुमर धरिया भाय गाजे, रोम ताजै रोपिया।—र.रू.

दिलदार-वि० [फा०] १ रसिक, प्रेमी। उ०—जिग सिन साजन बैठता, वो सिल सदा सुरंग। सिल दीसै साजन नहीं, म्हारै वहै कटारी अंग। ओ दिलदार म्हारो अब क्यूं अंग जळावो।—लो.गी.
२ उदार, दाता।

दिलदारी-सं०स्त्री० [फा० दिल+दार+रा०प्र०ई] १ उदारता.
२ रसिकता।

दिलदूठ-वि० [फा० दिल+सं० दुष्ट] दृढ़, मजबूत। उ०—कै भ्राया लंगर कीसां रा, सो जीते थाट अरिसां रा। देसाळ तिकै दिलदूठ दुवाहै, सांमल कीधो साखियो। मत हेत अहेस सुकंठ अनैं, करुणानिध स्री रघुवीर कनैं। दिल मोद महादिल आयर दोई, भेद सकोई भाखियो।
—र.रू.

दिलपसंद-वि०यौ० [फा०] जो मन को पसन्द आवे, मन को पसन्द आने वाला।
सं०पु०—एक प्रकार का फुलकार या चुनरी की तरह का कपड़ा जिस पर तेल बूंदे रंगे हुए होते हैं।

दिलपाक-वि० [फा०] पवित्र मन वाला, स्पष्ट, निष्कपट।
उ०—१ सोम कांम में रणधीर, मुख में महावीर, दोस्तू के दातगीर, दिलपाक के दोस्त, गरजाओं के गाधार।—र.रू.
उ०—२ गोरांदियां रा दिल मुलहाल, दिलपाक गरेदा।
—केसोदास गाडण

दिलप्याम-सं०पु० [फा० दिल+सं० विराम] एक प्रकार का रेशमी बेल-बूटे दार छपा कपड़ा।

दिलबर-वि० [फा०] जिससे प्रेम किया जाय, प्यारा, प्रिय।
उ०—पीव जोय सरसी मना, जाडो पड़ै पतंग। दिलबर कारण दिल-बरो, बैठा होय मलंग। थो दिलदार म्हारो अबे क्यूं अंग जळावे आंन।—लो.गी.

दिलबहार-सं०पु० [फा०] ललालदी रंग का एक भेद।

दिलमठो, दिलमठौ-वि० [फा० दिल+सं० मष्ट] उदास, खिन्न, सुस्त।
उ०—मोतंवर मायरा छलका देखा मुरब, दिलमठा हाकमां हला दाखै। दल सदा वाजरा वहता दुस्मण, दुर्गाशद् वापरां कुरा दाखै।—आईदान गौडो
रू०भे०—दलमठो, दलमठौ, दलमाठो।

दिलरती-सं०स्त्री० [फा० दिल+सं० रतिरा] दासी (अ.मा.)

दिलरबा-सं०पु० [फा०] वह जिससे प्रेम किया जाय, प्यारा।

दिलाड़णो, दिलाड़बो—देखो 'दिराणो, दिराबो' (रू.भे.)
दिलाड़णहार, हारो (हारी), दिलाड़णियो—वि०।
दिलाड़ियोड़ो, दिलाड़ियोड़ो, दिलाड़योड़ो—भू०का०कृ०।
दिलाड़ीजणो, दिलाड़ीजबो—कर्म वा०।

दिलाड़ियोड़ो—देखो 'दिरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दिलाड़ियोड़ी)

दिलाणो, दिलाबो—देखो 'दिराणो, दिराबो' (रू.भे.)
दिलाणहार, हारो (हारी), दिलाणियो—वि०।
दिलायोड़ो—भू०का०कृ०।
दिलाईजणो, दिलाईजबो, दिलीजणो, दिलीजबो—कर्म वा०।

दिलायोड़ो—देखो 'दिरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दिलायोड़ी)

दिलावणो, दिलावबो—देखो 'दिराणो, दिराबो' (रू.भे.)
दिलावणहार, हारो (हारी), दिलावणियो—वि०।
दिलावियोड़ो, दिलावियोड़ो, दिलाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
दिलावीजणो, दिलावीजबो—कर्म वा०।

दिलावर-वि० [फा०] १ शूर, वीर। उ०—लोग सारो कांम रो बडो दिलावर पण फूहड़ गंवार लोग सो उघाड़ो ही जे रहै, पंछी ज्यूं वास करै।—दूनजी जोदये री वारता

२ उत्साही, साहसी. ३ उदार, दानी।

दिलावरी-संoस्त्रीo [फाo] बहादुरी, साहस।

दिलावियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्रीo दिलावियोड़ी)

दिलासा-संoस्त्रीo [फाo दिल+संo आशा] ढाढस, तसल्ली, धैर्य, आश्वासन। उo—साह दिलासा मोकळी, झूठी आसा धार। तूं मेरै सबकै सिरै, अबकै आवै मार।—रा.रू.

दिलासौ-संoपुo—देखो 'दिलासा' (रू.भे.)

दिली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उo—१ सूरां मुगट सूर पण साचै, वीर सधीर वयण यूं वाचै। अगसत जेम नेम बळ ओडां, छात दिली दळ जळ विण छोडां।—रा रू.
उo—२ सहर उग्राहै सार बळ, मार सहै असुरांण। डरै दिली डर लाग रै, पुर आगरै भगांण।—रा.रू.
विo [फाo दिल+राoप्रoई] दिल सम्बन्धी, हृदय सम्बन्धी, हार्दिक।

दिलीछात, दिलीछातपत—देखो 'दिल्लीछातपत' (रू.भे.)

दिलीनाथ—देखो 'दिल्लीनाथ' (रू.भे.) उo—दिलीनाथ ऊमरा कोट कांमरा करारां। अन नवाब साललै वहू वीटिया वरारां। खांनदोरा सारिखा खांन जाफरां सजोड़ै। दरस काज आविया घमक पाखरां सघोड़ै।—वखतौ खिड़ियौ

दिलीप-संoपुo [संo] इक्ष्वाकु-वंशी एक राजा जो वाल्मीकि के अनुसार राजा सगर के परपोते, भगीरथ के पिता और रघु के परदादा थे।
रूoभेo—दलीप, दुलीप।

दिलीपत, दिलीपति, दिलीपती, दिलीपत्ति—देखो 'दिल्लीपति' (रू.भे.)
उo—१ मारण मतै दिलीपत मोनूं, तिण सूं बाध लिखूं की तोनूं। भूप 'अजीत' रहै मो भेळौ, इण वळ टळै खळा ऊखेळौ।—रा.रू.
उo—२ 'जसा' छळ पोरस झाल जगत्ति। दिलीपत हूंत लड़ै 'दलपत्ति'।—सू.प्र.
उo—३ नेजा खासा तोग नवब्बति। पहु दीधा मो विनां दिलीपति।
—सू.प्र.

दिलीमंडळ-संoपुo [दिल्ली+संo मण्डल] भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।
उo—हुय धुरळ ग्रेम हंसी हसार, खोस नै कियौ सरसौ खवार। लड़ लइ लूट जिहि नारनोळ, दिलीमंडळ पड इसड़ौ दरोळ।—पे.रू.
रूoभेo—दिल्ली मंडळ।

दिलीवर-संoपुo [दिल्ली+संo वर] दिल्ली का स्वामी, वादशाह।
उo—पदमणी दिलीवर होण प्रीत। साजादा जूटे रण सरीत। सूरमा लड़ै चवड़ै संभाळ। वेगमां धसै पड़दा विचाळ।—वि.सं.

दिलीस-संoस्त्रीo—१ एक प्रकार की बन्दूक.
२ देखो 'दिल्लीस' (रू.भे.) उo—'करण' रौ 'जगपत' कियौ, कीरत काज कुरब्ब। मन जिण धोखौ ले मुवा, साह दिलीस सरब्ब।
—करणीदांन वारहठ (मूंदियाड़)

दिलीसर, दिलीस्वर—देखो 'दिल्लीस्वर' (रू.भे.)
उo—१ तुम दिलीसर जगदीसौ रे, नमठेह सुं केही रीसौ रे। इम विनय वचन सुणीइजे रे, सिरपाव सिंघल नै भेजे रे।—प.च.चौ.
उo—२ दिलीस्वरां घर जिती दबाई। सब जोवतां दिली पतिसाही।—सू.प्र.

दिलेदार-संoपुo—एक प्रकार का कपाट जिसमें दिलहा लगा रहता हो।

दिलेर-संoपुo [फाo] १ दिल वाला, साहसी. २ वहादुर, शूर।

दिलेरी-संoस्त्रीo [फाo] १ साहस, हिम्मत. २ बहादुरी, वीरता।
क्रिoप्रo—करणी।

दिलेस—देखो 'दिल्लीस' (रू.भे.) उo—१ मेलियौ तुजवक मीर, दीघ हाथ पांनदांन। आखियौ दिलेस एम, पांति हूंत फेरि पांन।—सू.प्र.
उo—२ आवियौ हुकम जोधांण इब, द्रढ सुरतांण दिलेस रौ। हित मूझ सवायौ होयवा, कर चाह्यौ 'दुरगेस' रौ।—रा.रू.

दिलेसर, दिलेसुर, दिलेस्वर—देखो 'दिल्लीस्वर' (रू.भे.)
उo—१ धरि हिंदवांण ढाल, दावाबंध दिलेसुरां। इम स्रुग गौ 'अजमाल', जस खाटै 'जसराज' उत।—सू.प्र.
उo—२ बीड़ा ले बोलियौ, कमध घातै मूंछां कर। उछव करौ असपती, सोच मति धरौ दिलेसर।—सू प्र.
उo—३ जिण वहु वार मुगळ दळ जीता, प्रजळै तेणि दिलेस्वर पंजर।—सू.प्र.
उo—४ दळथंभ तणा द्रिलेसुर दीधी, जुड़ियौ मुरधर सूर सक। तो ऊगतौ वांदियौ तुरकां, आथमतौ वांदै अरक।
—महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) जोधपुर रौ गीत

दिलौ—देखो 'दिल्लौ' (रू.भे.)

दिल्लगी-संoस्त्रीo [फाo दिल+संo लगे] १ मसखरी, मजाक, मखौल, ठट्टा।
क्रिoप्रo—करणी।
२ दिल लगाने की क्रिया या भाव।

दिल्लगीबाज-संoपुo [दिल्लगी+फाo बाज] हँसाने वाला, मसखरा, ठठोल।

दिल्लगीबाजी-संoस्त्रीo [दिल्लगी+फाo बाजी] १ दिल्लगी करने का काम. २ दिल लगाने की क्रिया या भाव. ३ मसखरी, मखौल, ठठोली।
क्रिoप्रo—करणी।

दिल्ली-संoस्त्रीo—यमुना नदी के किनारे उत्तर-पश्चिम भारत का एक बहुत प्रसिद्ध नगर जो भारत की राजधानी है।
उo—१ दिल्ली सूं उत्तर दिसा, जमणा तणै उपकंठ। ऊनरियौ मिळ आपरां, गुंज प्रकासण गंठ।—रा.रू.
उo—२ खसर करतां तिकै असुर सहु खूंपिया, जीविया तिकै त्रिणौ लेहि जीहैं। सवद आवाज सिवराज री सांभळै, विली जिम दिल्ली रौ धणी वीहै।—ध.व.ग्रं.

वि०वि०—दिल्ली को किसने कब बसाया इसके लिये कई मत हैं। कुछ लोगों का मत है कि इन्द्रप्रस्थ के मयूरवंशीय अंतिम राजा दिलू ने इसे बसाया था, इसी से इसका नाम दिल्ली पड़ा। यह भी कहा जाता है कि पृथ्वीराज के नाना अनंगपाल एक गढ़ बनवा रहे थे। उसकी नींव डालने के शुभ मुहूर्त में उनके पुरोहित ने जमीन में एक कील गाड़ी और कहा कि यह शेषनाग के मस्तक पर जा लगी है। इससे तुम्हारा तोंअर वंशीय राज्य अचल हो गया। राजा को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने कील उखड़वा दी। उस स्थान पर लहू आने लगा तब राजा ने बहुत पश्चात्ताप किया और कील पुनः गड़वा दी किन्तु इस बार कील ठीक नहीं गड़ी और ढीली रह गई। इसी से ढीली नगर कहा जाता था। ढीली शब्द में परिवर्तन होते-होते बाद में इसे दिल्ली कहा जाने लगा, किन्तु उस कील (लोहे के स्तम्भ) पर अनंगपाल से बहुत पहले के किसी चन्द्र राजा की प्रशंसा का लेख है। सन् ११९३ में मुहम्मद गोरी ने इस पर अधिकार किया। तैमूर ने सन् १३९८ में इसे नष्ट किया। सन् १५२६ में इस पर बाबर ने अधिकार किया तब से यह मुगल सम्राटों की राजधानी बना रहा। सन् १८०३ में इस पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया। सन १९१२ में अंग्रेजो ने इसे अपनी राजधानी बनाया। इससे पहले अंग्रेजी भारत की राजधानी कलकत्ता था। पिछले दो हजार वर्षों में यह नगर कई बार बसा और कई बार उजड़ा। अब दिल्ली के पास ही नई दिल्ली बसी हुई है।

पर्याय०—अहिपुर, चंडी, चंडीनगर, चंडीपुर, जोगरण, जोगणपुर नागपुर, सगतीनगर, सगतीपुर, हथरणापुर, हेवैपुर।

मुहा०—१ दिल्ली दूर होणी—किसी कार्य के पूर्ण होने में देर होना। व्यर्थ मन के लड्डू खाना, किसी कार्य शक्ति से बाहर होना. २ दिल्ली फकीरां जोगी होणी—दरिद्रावस्था में होना, निर्धन होना, कंगाल होना. ३ दिल्ली में रैं' नैं भाड़ झोकणी—अच्छा अवसर मिलने पर भी लाभ न उठा सकना. ४ दिल्ली री सिंघासण लेंणी—किसी बहुत बड़ी प्राप्ति की आशा करना।

रू०भे०—ढीली, ढल्ली, ढिली, ढिल्लीय, ढिल्ली, ढीली, दली; दल्ली, दहली, दिली, देहली।

अल्पा०—ढिलड़ी, ढीलड़ी, ढेलड़ी, दिलड़ी।

दिल्लीछात, दिल्लीछातपत-सं०पु० [दिल्ली+सं० छत्रपति] दिल्ली का छत्र धारण करने वाला, दिल्ली का स्वामी, बादशाह।

उ०—पोस मास पख चांदणे, त्रीज तणी दिन प्रात। डेरै जोधांनाथ रै, आयौ दिल्लीछात।—रा.रू.

रू०भे० —दिलीछात, दिलीछातपत।

दिल्लीनाथ-सं०पु० [दिल्ली+सं० नाथ] दिल्ली का स्वामी, बादशाह।

उ०—मारू फागण मास में, आप गयौ दरगाह। दिल्लीनाथ दरस्सिवा, नाथ नवाब सगाह।—रा.रू.

रू०भे०—दिलीनाथ

दिल्लीपत, दिल्लीपति-सं०पु० [दिल्ली+सं० पति] दिल्ली का स्वामी, बादशाह। उ०—१ पाय सलोतो साहरी, दिल्ली पहुंचे आय। दिल्लीपत आदर दियौ। आठौं पहर अमाप।

—ठाकुर जगरांमसिंह रो दूहो

उ०—२ दिल्लीपति दाखै इसौ, गुमटां में समझाय। सहु तुमे हिव सांमठा, जुड़ो सुरंगां जाय।—प.च.चौ.

रू०भे०—दलीपत, दलीपति, दिल्लीपत, दिल्लीपति, दिलीपती, दिलीपत्ति, दिल्लीवई।

दिल्लीबोर-सं०पु० [दिल्ली+सं० बदरं] एक प्रकार के बड़े बेर जिनका रंग हरा और पूर्ण पकने पर कुछ पीला हो जाता है।

दिल्लीमंडळ—देखो 'दिलीमंडळ' (रू.भे.)

दिल्लीवई—देखो 'दिल्ली-पति' (रू.भे.) उ०—तरात तळइ मेरइ तूं हि, तुं हि दिल्लीवइ जांणू। वहै तुहि सब साच, अवर का कह्या न मांनू। —प.च.चौ.

दिल्लीवर-सं०पु० [दिल्ली+सं० वर] दिल्ली का बादशाह, सम्राट।

उ०—असपति 'फरक मेर' तिण अवसर, वींद जवांन हुवौ दील्लीवर। —सू.प्र.

रू०भे०—दिलीवर।

दिल्लीवाळ-वि० [दिल्ली+सं० आलुच्] दिल्ली का, दिल्ली सम्बन्धी। सं०पु०—दिल्ली का निवासी।

दिल्लीस-सं०पु० [दिल्ली+सं०ईश] दिल्ली का स्वामी, बादशाह, सम्राट।

उ०—झड़िया गनाह तन तुरंग जोण, हुय गया मुगळ दुख दहल हीण। पड़ झाट थाट छळ राट पाट, दील्लीस जळै दळ वळै दाट। —रा.रू.

रू०भे०—दलीस, दलेस, दिलीस, दिलेस, दिल्लेस।

दिल्लीसर, दिल्लीसरू, दिल्लीस्वर-सं०पु० [दिल्ली+सं० ईश्वर] दिल्ली का सम्राट, बादशाह। उ०—रीझवियौ जिण साहजहां दील्लीसरू रे, कर दीघउ फुरमांण।—प.च.चौ.

रू०भे०—दिलीसर, दिलीस्वर, दिलेसर, दिलेसुर, दिलेस्वर, दिल्लेसुर।

दिल्लेदार-वि०—एक प्रकार का किवाड़ जिसमें दिलहा लगा हो, दिलहे वाला (किवाड़)

दिल्लेस—देखो 'दिल्लीस' (रू.भे.) उ०—दिल्लेस काज ग्रह पाघरा, वंक न थायै राजपुर।—रा.रू.

दिल्लेसुर—देखो 'दिल्लीस्वर' (रू.भे.) उ०—१ दासै वार वार दिल्लेसुर स्री महाराज राजराजेस्वर।—रा.रू.

उ०—२ जिनके रस स्वाद के मजा देवतूं का मन हरै। दिल्लेसुर परमेसुर जिसकी स्री मुख से तारीफ करै।—सू.प्र.

दिल्लौ-सं०पु० (देश०) शोभा के लिये किवाड़ के पल्लों में बनाया या जड़ा जाने वाला लकड़ी का चौगटा।

रू०भे०—दलो, दिलो।

दिव-सं०पु० [सं० दिवम्] १ आकाश (डिं.नां.मा., डिं.को.)

२ स्वर्ग (नां.मा.) उ०—पूगी दिव अवसांण पर, सील निधि नृप सत्थ। भूप भाव संग्रांम भजि, प्रफित हुआ रण पत्थ।—वं.भा.

३ वन, जंगळ. ४ सूर्य (ना.डि.को.) ५ दिन, दिवस (अ.मा) उ०—तारंग मंत्र आदेस तो, दिढ़चा रंग निस संधि दिव। सारंग नयण उमया सुवर, सीस गंग धारंग सिव।—सू.प्र

६ दीपक। उ०—त्रिण राव त्रिणेही भवनपति सिद्धलल्ल इम उच्चरै। इत्थ चवत्थौ राव हुवै, तो दिव जळतौ कर धरै।—नैणसी

७ देखो 'दिव्य' (रू.भे.) उ०—खट कास्ठें निरदूख खित, आहुत घिरत कपूर। दिव पंडित वेदी सद्रढ़, सोभत अगनि सनूर।—रा.रू.

दिवउखद, दिवओकस, दिवखद-सं०पु० [सं० दिवौकस्, दिविषद्] देवता, सुर (ह.नां.,नां.मा., डि.को.)

रू०भे०—दिवाकेसा, दिवीओक, दिवोकसौ, दिवौका।

दिवदिस्ट, दिवद्रस्टी—देखो 'दिव्यद्रस्टी' (रू.भे.) उ०—१ अलख लखाया दिवदिस्ट सतगुरु समझाई।—केसोदास गाडण

उ०—२ निकाई छाई ले प्रकट प्रभुताई सिख नखा। समस्टी व्यस्टी तें सजन दिवद्रस्टी रिखि सखा।—ऊ.का.

दिवपुर-सं०पु० [सं० देवपुर] १ स्वर्ग। उ०—जग अवलंब खंभ सतजुग रा, दिवपुर वसतां 'सिव' दुआ।—रांमलाल बारहठ

२ बैकुंठ।

दिवराट-सं०पु० [सं०] १ इन्द्र (अ.मा.) २ सूर्य।

दिवराड़णो, दिवराड़बो—देखो 'दिराणो, दिराबो' (रू भे.)

दिवराड़ियोड़ो—देखो 'दिरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दिवराड़ियोड़ी)

दिवराणो, दिवराबो—देखो 'दिराणो, दिराबो' (रू.भे.)

उ०—'जैत' हर आभरण सतर-घड़ जीपणा, वरै कुण घड़ा दिवराय वाजा। दांन मोजां तणा कवण गहणा दियै, रतन रौ मोल कुण दियै राजा।—दुरसो आढ़ो

दिवरायोड़ो—देखो 'दिरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दिवरायोड़ी)

दिवरावणो, दिवरावबो—देखो 'दिराणो, दिराबो' (रू.भे.) (उ.र.)

दिवरावियोड़ो—देखो 'दिरायोड़ो' (रू.भे)

(स्त्री० दिवरावियोड़ी)

दिवली—देखो 'दीवी' (अल्पा., रू.भे.)

दिवलो—देखो 'दीपक' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ पहिलइ पोहरै रैण कै; दिवला अंबर डूल। घण कसतूरी हुइ रही, प्रिय चंपा रौ फूल।—ढो.मा.

उ०—२ म्हारौ कंवर घर रौ चांनणो, कुळवहु ओ दिवलै री जोत, सहेल्यां ए आंब मोरियौ।—लो.गी.

दिवस-सं०पु० [सं०] १ दिन, वासर। उ०—१ कांमी फिर वांमी कृपण, जादूगर नर चार। रात दिवस पड़दै रहै, पड़दा सूं हिज प्यार।—बां.दा.

उ०—२ दिवस एक जैचंद, वीर मिसलित विचारी। जीपि किया सब जेर, धरा हिंदू छत्रधारी।—सू.प्र.

२ सूर्य, रवि।

रू०भे०—दिवसि, दिवस्स, दीस, दीह, दीहि, दीहु, दीहू, देवस, द्योस, द्यौस।

अल्पा०—दहाड़ो, दहाडो, दाड़ू, दा'ड़ो, दा'ड़ू, दा'डो, दिहड़ो, दिहडो, दिहाड़उ, दिहाड़ि, दिहाड़ी, दिहाड़ो, दिहाडउ, दिहाडि, दिहाडी, दिहाडो, दीहड़ौ, दीहडो, दीहो, देहाड़ो, देहाडो।

मह०—दीहड़।

दिवसअंध-वि० [सं० दिवसांध] जिसे दिन में दिखाई न दे।

सं०पु०—उल्लू।

दिवसकर, दिवसनाथ-सं०पु० [सं०] सूर्य, दिनकर।

दिवसप-सं०पु० [सं० दिवस्पति] १ इन्द्र (अ.मा.)

[सं० दिवसपति] २ सूर्य।

दिवसपत, दिवसपति, दिवसपती-सं०पु० [सं० दिवसपति] सूर्य।

रू०भे०—दीहपत, दीहपति, दीहपती।

दिवसमणि-सं०पु० [सं०] सूर्य।

दिवसमुख-सं०पु० [सं०] सवेरा, प्रातःकाल।

दिवसमुद्रा-सं०स्त्री० [सं०] एक दिन का वेतन।

दिवसि—देखो 'दिवस' (रू.भे.) उ०—एक दिवसि सुर पूजतां, पहिरी हीरा हेम। आवी अति ऊतावळी, पटरांणी धरि प्रेम।—मा.कां.प्र.

दिवसेस-सं०पु० [सं० दिवस+ईश] सूर्य, भानु। उ०—इहि अंतर अवसेस अब, दुवनाड़ी दिवसेस। बुंदी भट छिज्जत वढ़चो, विजय कुरमन वेस।—वं.भा.

दिवस्पति-सं०पु० [सं०] १ इन्द्र।

[सं० दिवसपति] २ सूर्य।

रू०भे०—दिवसप।

दिवस्स—देखो 'दिवस' (रू.भे.)

दिवांण—देखो 'दीवांण' (रू.भे) उ०—१ 'अधिराज' रौ दिवांण उचारै। भेळूं असि खग कढ़ि गज भारै।—सू प्र.

उ०—२ राजाधिराज नागोर पधार पहलां पंचोळी लाला नूं दिवांण कियौ। पछै धाय रा कह्या सूं सिंघवी सायरमल नूं दिवांण कियौ। पछै इण मुवां इणरौ बेटौ अमरचंद दिवांण कियौ। अमरचंद नूं मार सिंघवी फतैचंद नूं दिवांण कियौ।—बां.दा.ख्यात

दिवांणग्रांम—देखो 'दीवांनग्रांम' (रू.भे.)

दिवांणखास—देखो 'दीवांनखास' (रू.भे.)

दिवांणगी—देखो 'दीवांणगी' (रू.भे.) उ०—दिवांणगी रौ कांम सांगो जी करता। सू जिणां दिनां मैं सांगोजी वछावत गुजरा।—द.दा.

दिवांणी—१ देखो 'दीवांणी' (रू.भे.) २ देखो 'दीवांनी' (रू.भे.)

उ०—गरज-दिवांणी गूजरी, अव आई घर कूद। सांवण छाछ न घालती, जेठ परोसै दूध।—अज्ञात

दिवांध-वि० [सं०] जिसे दिन में नहीं सूझे।

सं०पु०—१ उल्लू. २ दिनौंधी का रोग।

दिवांन—देखो 'दीवांण' (रू.भे.)

दिवांनगिरी—देखो 'दीवांणगी' (रू.भे.) उ०—अर उणीज वेळा राजा सारा ही सांभळतां कयो जो मैं अणी फलांणा रजपूत नैं माहरा राज री दिवांनगिरी दीधी है।—गांम रा धणी री वात

दिवांनी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का पेड़. २ देखो 'दीवांणी' (रू.भे.) ३ देखो 'दीवांनी' (रू.भे.)

दिवांनो-सं०पु०—१ दरवार। उ०—दहे दिवांनैं सगळैं दीपता, संघ धणो सोभागो जी। मांनैं मोटा रांणा राजिया, वणारीस वडभागो जी।—ऐ.जै.का.सं.

२ देखो 'दीवांनो' (रू.भे.) उ०—गूंगा गहला बावळा, सांई कारण होइ। दादू दिवांना ह्वै रह्या, ताको लखै न कोइ।—दादू वांणी (स्त्री० दिवांनी)

दिवा-सं०पु० [सं०] दिन, दिवस।

अव्य०—दिन से, दिन के समय में।

दिवाकर-सं०पु० [सं०] १ सूर्य, रवि (अ.मा.) उ०—१ सिव सिवसुत हिमगिरसुता, विसनु दिवाकर वंद। अब कायर उपहास री, रचना रचूं अमंद।—वां.दा.

उ०—२ सोम दिवाकर साखि करि, दाखि दसमइ दूआरि। गणिका तु जउ हूं गणउं, आज ज अंक अग्यार।—मा.कां.प्र.

२ आक, मदार।

रू०भे०—देवाकर, देवायर।

दिवाकीरती-सं०पु० [सं० दिवाकीर्ति] १ नाई, हज्जाम. २ चाण्डाल. ३ उल्लू।

दिवाकैसा-सं०पु०—देखो 'दिवोकस' (रू.भे.) (नां.मा.)

दिवाड़णो, दिवाड़बो—देखो 'दिराणो, दिरावो' (रू.भे.)

उ०—तोडरमल जीतो रे, जीतुं जीतुं द्वारिका नुं राई। जीतुं जीतुं हळधरवीर, जीतां केरा ढोलड़ा दिवाड़ि।—रुकमणी मंगळ

दिवाड़णहार, हारौ (हारी), दिवाड़णियो—वि०।

दिवाड़िओड़ो, दिवाड़ियोड़ो, दिवाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

दिवाड़ीजणो, दिवाड़ीजबो—कर्म वा०।

दिवाड़ियोड़ो—देखो 'दिरायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० दिवाड़ियोड़ी)

दिवाचर-सं०पु० [सं०] १ पक्षी, चिड़िया. २ चाण्डाल।

दिवाजउ-सं०पु०—शोभा। उ०—हय गय रह पायक, मेली बहु जन व्रिंद। करि सवळ दिवाजउ, वंदइ स्री जिनचंद।—ऐ.जै.का.सं.

दिवाजो—देखो 'दवाजो' (रू.भे.)

दिवाटन-सं०पु० [सं०] काक, कौआ।

दिवाणो, दिवावो—देखो 'दिराणो, दिरावो' (रू.भे.) उ०—नै रोजा भोज ईसो तरै वी साहूकार री असतरी रो मांचो न्याव कीधो है अर आधो माल दिवायो है।—साहूकार री वात

दिवाणहार, हारो (हारी), दिवाणियो—वि०

दिवायोड़ो—भू०का०कृ०।

दिवाईजणो, दिवाईजबो—कर्म वा०।

दिवानाथ-सं०पु० [सं०] सूर्य, भानु।

दिवाप्रस्ट-सं०पु० [सं० दिवापृष्ठ] सूर्य, रवि।

दिवाभिसारिका-सं०स्त्री० [सं०] दिन के समय शृंगार करके अपने प्रेमी से मिलने के लिये संकेत स्थान पर जाने वाली नायिका।

दिवामण, दिवामणी-सं०पु० [सं० दिवामणि] सूर्य, रवि।

दिवायर, दिवायरु, दिवायरू—देखो 'दिवाकर' (रू.भे.) (ना.डिं.को.)

उ०—१ पेखि किरि रूव लावन्न गुण आयार, जण जण जंपए मनि धरी ए। सिरि माल्हूय कुळ कमळ दिवायर, वादीय गये घड केसरी ए।—ए.जै.का.सं.

उ०—२ सिज्जंभव जसभद्द, अज्ज संभूय दिवायरू। भद्दबाहु सिरि थूळभद्र, गुणमणि रयणायरू।—ऐ.जै.का.सं.

दिवारणो, दिवारबो—देखो 'दिराणो, दिरावो' (रू.भे.) उ०—पडह दिवारइ नयर मझारि, ए लिपि वाचइं जे नर नारि। भला भलेरा छइ प्रधांन, तेह ऊपरि ते करउं प्रधांन।—विद्याविलास पवाउड

दिवारियोड़ो—देखो 'दिरायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० दिवारियोड़ी)

दिवारूप-सं०पु० [सं० दिव्रूप] आकाश, व्योम (डिं.नां.मा.)

दिवायोड़ो—देखो 'दिरायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० दिवायोड़ी)

दिवाळ—देखो 'देवाळ' (रू.भे.)

दिवाल—देखो 'दीवार' (रू.भे.) उ०—१ पांणी पड़ियो पेख पग, दिल मत हरख दिवाल। पैलां पाड़ण पड़त पग, इणरी आ हिज चाल।—वां.दा.

उ०—२ उडि पड़ै पाट दिवाल, लागि लाल पाथर लाल। धड़ड़ंत भळ धोमाळ, कड़ड़ंत वीज कराळ।—सू.प्र.

दिवाळगी-सं०स्त्री०—देने का भाव। उ०—धरमी जे घर में धरै, निसचौ न तजै नेट। चंद्रवतंसक ना चल्यो, थिर दिवाळगी थेट।—ध.व.ग्रं.

दिवाळय—देखो 'देवालय' (रू.भे.)

दिवाळियो—देखो 'देवाळियो' (रू.भे.)

दिवाळी—देखो 'दीवाळी' (रू.भे.) उ०—अंग दया घर घोर अंधारो, पूनम सी छवि पावै। दयाहींण घर दीन दिवाळी, काळी, रात कहावै।—ऊ.का.

दिवाळिएल(हेल)—देखो 'दीवाळीएल(हेल)' (रू.भे.)

दिवाळो—देखो 'देवाळो' (रू.भे.) उ०—भाव दिवाळौ काढियो रे, ऊंदा ताळा देह। लख चौरासी भटकसी, वस्त कोई नहिं लेह। —स्री हरिरांमजी महाराज

दिवावणो, दिवावबो—देखो 'दिराणो, दिरावो' (रू.भे.)

दिवावणहार, हारो (हारी), दिवावणियो—वि०।

दिवाविओड़ौ, दिवावियोड़ौ, दिवाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
दिवावीजणौ, दिवावीजबौ—कर्म वा० ।
दिवावियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दिवावियोड़ी)
दिंवी-सं०पु० [सं०] नीलकंठ पक्षी ।
दिवीग्रोक-सं०पु०—देखो 'दिवग्रोकस' (रू.भे.) (ग्र.मा.)
दिवीरथ-सं०पु० [सं०] पुरुवंशी राजा भूमन्यु के पुत्र का नाम। (महाभारत)
दिवीसत-सं०पु० [सं० दिविषत्] देव, देवता ।
दिवीस्ठी-सं०पु० [सं० दिविष्ठ] १ देव, देवता. २ स्वर्ग में रहने वाला, स्वर्गवासी. ३ ईशानकोण के एक देश का नाम ।
दिवेस-सं०पु० [सं० दिवेश] १ सूर्य. २ दिग्पाल ।
दिवोकसा—देखो 'दिवग्रोकस' (रू.भे.)
दिवोदास-सं०पु० [सं०] चंद्रवंशी राजा भीमरथ के एक पुत्र का नाम ।
दिवोल्का-सं०स्त्री० [सं०] दिन के समय ग्राकाश से गिरने वाला चमकीला पिंड या उल्का ।
दिवौ—देखो 'दीपक' (रू.भे.)
दिवौका—१ देखो 'दिव-ग्रोकस' (रू.भे.)
२ चातक पक्षी ।
दिव्य-वि० [सं०] १ ग्रलौकिक, ग्रद्‌भुत, ग्रनोखा, चमत्कारपूर्ण ।
उ०—नमो स्वांमी दयानंद दिव्य ग्यांन दाता। ग्रारच धरम ग्राप विना हाथ नहीं ग्राता ।—ऊ.का.
२ स्वर्ग से सम्बन्ध रखने वाला, स्वर्गीय. ३ बहुत बढ़िया, ग्रच्छा. ४ प्रकाशमान, चमकीला. ५ पवित्र, उत्तम। उ०—चोरां जुगती कुगती कीन्हीं, भोग भोगणौ घण सुख भीन्ही, कपटी दरसण मूरत कीन्हीं, दिव्य धरम बोळावणी दीन्हीं ।—ऊ.का.
रू०भे०—दिव, दिव ।
दिव्यकवच-सं०पु० [सं०] वह स्तोत्र जिसका पाठ करने से ग्रंगरक्षा हो।
दिव्यगंध-सं०पु० [सं०] १ लौंग. २ गंधक ।
दिव्यगंधा-सं०स्त्री० [सं०] १ बड़ी इलायची. २ बड़ी चेंच का साग ।
दिव्यगायन-सं०पु० [सं०] स्वर्ग में गाने वाले, गंधर्व ।
दिव्यचक्षु-सं०पु० [सं० दिव्यचक्षुस्] १ ज्ञान चक्षु. २ ग्रंधा. ३ चश्मा, ऐनक. ४ बंदर ।
दिव्यद्रस्टी-सं०पु० [सं० दिव्यदृष्टि] गुप्त, परोक्ष ग्रथवा ग्रंतरिक्ष के पदार्थ देखने की ग्रलौकिक दृष्टि, ज्ञान दृष्टि । उ०— भजन करू' सिमरू' भगवांनो, वंस धरम रो तजियो वांनो । छित पर रहूँ जगत सूं छांनो, दिव्य द्रस्टि कोई लखसी दांनो ।—ऊ.का.
रू०भे०—दिवदिस्ट, दिवद्रस्टी ।
दिव्यधरमी-वि० [सं० दिव्यधर्मिन्] जिसका स्वभाव बहुत ग्रच्छा हो, पवित्र स्वभाव का, सुशील ।
दिव्यनगर-सं०पु० [सं०] ऐरावती नगरी ।
दिव्यनदी-सं०स्त्री० [सं०] १ ग्राकाश, गंगा. २ एक नदी का नाम (पौराणिक)
दिव्यनारी-सं०स्त्री० [सं०] ग्रप्सरा ।
दिव्यपंचाम्रत, दिव्यपंचाम्रित-सं०पु० [सं० दिव्यपंचामृत] घी, दूध, दही, मक्खन ग्रौर चीनी इन पांच चीजों को मिला कर बना हुग्रा पंचामृत ।
दिव्ययमुना-सं०स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम (पौराणिक)
दिव्यरत्न-सं०पु० [सं०] चिंतामणि नामक एक कल्पित रत्न ।
दिव्यवाह-सं०स्त्री० [सं०] वृषभानु गोप की छः कन्याग्रों में से एक ।
दिव्यसरिता-सं०स्त्री० [सं० दिव्यसरित्] ग्राकाश गंगा ।
दिव्यसानु-सं०पु० [सं०] एक विश्वदेव ।
दिव्यसार-सं०पु० [सं०] साल वृक्ष ।
दिव्यसूरि-सं०पु० [सं०] रामानुज संप्रदाय के ग्राचार्य ।
दिव्यस्त्री-सं०स्त्री० [सं०] ग्रप्सरा ।
दिव्यस्रोत-सं०पु० [सं०] वह कान जिससे सब कुछ सुना जाय ।
दिव्यांगणा, दिव्यांगना-सं०स्त्री० [सं० दिव्यांगना] १ देव वधू. २ ग्रप्सरा ।
दिव्यांसु-सं०पु० [सं० दिव्यांशु] सूर्य ।
दिव्या-सं०स्त्री० [सं०] १ स्वर्गीय या ग्रलौकिक नायिका जो तीन प्रकार की नायिकाग्रों में से एक होती है. २ वांझ. ३ महामेदा. ४ सफेद दूब. ५ हड़. ६ कपूर कचरी. ७ ब्राह्मी जड़ी. ८ शतावर. ९ बड़ा जीरा. १० ग्राँवला ।
दिव्यादिव्य-सं०पु० [सं०] देवताग्रों के समान गुणों वाला नायक जो तीन प्रकार के नायकों में से एक होता है ।
दिव्यादिव्या-सं०स्त्री० [सं०] स्वर्गीय स्त्रियों के समान गुणों वाली नायिका जो तीन प्रकार की नायिकाग्रों में से एक होती है ।
दिव्यालय-सं०पु० [सं०] महाभारत के ग्रनुसार एक प्राचीन पुण्य क्षेत्र जहाँ पूर्व काल में भगवान विष्णु ने तपस्या की थी ।
दिव्यासन-सं०पु० [सं०] तंत्र के ग्रनुसार एक प्रकार का ग्रासन ।
दिव्यास्त्र-सं०पु० [सं०] देवताग्रों द्वारा दिया हुग्रा हथियार ।
दिसंतर-सं०पु० [सं० देशांतर] १ देशांतर. २ विदेश, परदेश ।
उ०—१ दादू सब्द बांण गुरु साधु के, दूर दिसंतर जाय। जिहिं लागै सो ऊबरै, सूतै लिये जगाय ।—दादू वांणी
उ०—२ दादू स्वांगी सब संसार है, साधू कोई एक। हीरा दूर दिसंतरा, कंकर ग्रौर ग्रनेक ।—दादू वांणी
क्रि०वि०—दिशाग्रों के ग्रंत तक, बहुत दूर तक ।
दिसंतरी-वि० [सं० देशान्तर+रा०प्र०ई] १ दूसरे देश का, विदेशी. [सं० दिशा+ग्रन्तर] २ दिशा का, दिशा सम्बन्धी. ३ देखो 'दिसांतरी' (रू.भे.)
दिसंबर-सं०पु० [ग्रं० डिसंबर] ग्रंग्रेजी वर्ष का बारहवां या ग्रन्तिम महीना ।

दिस—देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—१ चत्र दिस जाइ न सकै चक्रति, निजर फाळ देखै नमण। भ्रिग जीव सरण मारीजतौ, राख राख राधारमण।—ज.खि.

उ०—२ उण ही गांम में पी'र क उठै ही सासरौ। आथवणी दिस खेत न चवै आसरौ। नाटा खेत नजीक जठै हळ खोलणा, एता दे किरतार फेर नहि बोलणा।—अज्ञात

उ०—३ प्यारी कह पीथळ सुणौ, धोळां दिस मत जोय। नरां तुरां अर वन फळां, पाक्यां ही रस होय।—चंपादे

मुहा०—कांणी दिस—वह स्थान जो दूर या एकान्त में हो।

दिसउ-क्रि०वि० [सं० दिशा] ओर, तरफ। उ०—अति सुंदर कवळ मांडिया ऊपर, सोभा अति पांमई सादीत। चंद-वदनी मुख दिसउ चाहतां, ऊगा किरि बारह आदीत।—महादेव पारवती री वेलि

दिसड़ी—देखो 'दिसा' (अल्पा., रू.भे.) उ०—वनी रौ जिण दिसड़ी में देस, उणी दिस हिवड़ौ हुलस्यौ जाय।—सांझ

दिसड़ौ-सं०पु०—देखो 'दिसा' (रू.भे.)

दिसट—१ देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—दिसटां ग्रंतक नमौ उदास।
—गजमोख

२ देखो 'द्रस्टी' (रू.भे.)

दिसटांत—देखो 'द्रस्टांत' (रू.भे.)

दिसटाळ, दिसटाळौ—१ देखो 'देठाळौ' (रू.भे.) २ दर्शन। उ०—दये मत नीच म्हनै दिसटाळ। कियौ किर बांधव पावु अकाळ।—पा.प्र.

दिसटी—देखो 'द्रस्टी' (रू.भे.)

दिसपति-सं०पु० [सं० दिशा+पति] दिक्पाल। उ०—निज निज रूप थया दिसपति, मन मांहां आनंद पांमी सती।—नळाख्यांन
रू०भे०—दिसिप।

दिसली-क्रि०वि०—१ तरफ से। उ०—थांनै खरच न लगावां गोठ तौ म्हांकी दिसली करस्यां।—राव रिणमल री वात

वि०—१ ओर की, तरफ की। उ०—अेक जोड़ी ढूंढ़ाड़, मथराजी, आगरौ पूरब दिसली गंगा पार तांई जोइयौ।—सूरे खींवे री वात

२ देखो 'दिसा' (अल्पा., रू.भे.)

दिसांतरी-सं०पु० [सं० दिशा+अंतर+रा०प्र०ई] डंक ऋषि से उत्पन्न एक जाति विशेष, टाकोत।
रू०भे०—दिसंत्री, देसंतरि, देसंतरी, देसांतरी।

दिसा-सं०स्त्री० [सं० दिशा] १ क्षितिज वृत के किये हुए कल्पित विभागों में से किसी एक ओर के विभाग का विस्तार।

वि०वि०—क्षितिज वृत के मुख्य चार विभाग माने गये हैं—पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण। पूर्व के ठीक सामने पश्चिम तथा उत्तर के ठीक सामने दक्षिण माना गया है। इन चारों में से प्रत्येक के लिए निम्न पर्यायवाची हैं—

पूर्व के लिये इंद्रा (ऐंद्री);
पश्चिम के लिये वारुणी;
उत्तर के लिये सोमा; और
दक्षिण के लिये याम्या।

उपर्युक्त चार मुख्य दिशाओं के अतिरिक्त इनके बीच में चार कोण माने गये हैं जिन्हें उपदिशाएं या मध्यदिशाएं कहते हैं, वे निम्न हैं—

१ पूर्व और दक्षिण के मध्य के कोण को अग्निकोण।
२ दक्षिण और पश्चिम के मध्य के कोण को नैऋ‍र्त्यकोण।
३ पश्चिम और उत्तर के मध्य के कोण को वायव्यकोण।
४ उत्तर और पूर्व के मध्य के कोण को ईशानकोण।

आकाश की ओर व पाताल की ओर दो दिशाएं और मानी गई हैं जिन्हें क्रमशः ऊर्ध्व व अधः कहते हैं तथा इन्हीं को जैन ग्रंथों में क्रमशः विमला व अंध या तमा कहते हैं। इस प्रकार चार मुख्य दिशाएं व उनके मध्य के चार कोण, आठ हुई तथा ऊर्ध्व व अधः दो और जोड़ने से कुल दश दिशाएं हुई जो निम्न दिग्चक्रों के अनुसार स्पष्ट हैं—

आचारांग सूत्र के अनुसार
दश दिशा सूचक स्थान का चित्र
(प्रथम श्रुतस्कन्ध - प्र.अ.प्र.उ. निर्युक्ति गाथा ४३)
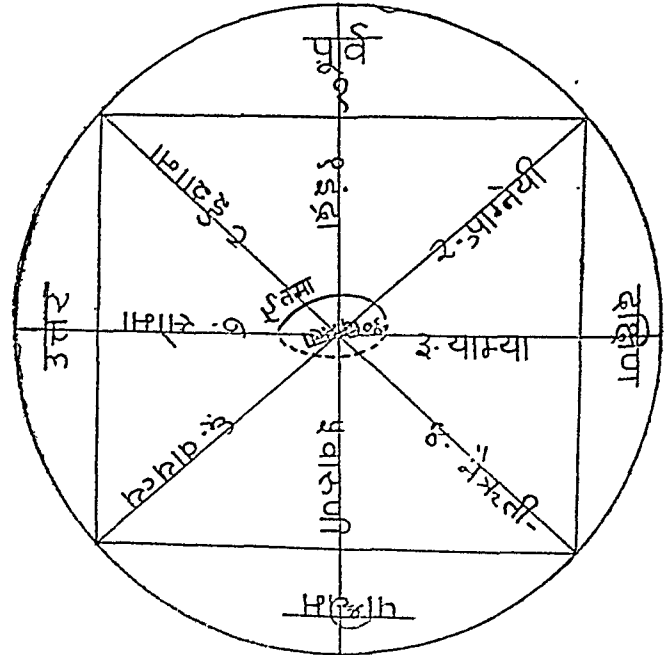
दिग्चक्र — १

दिग्विभाग चक्रम्
शकुन बसंतराज के अनुसार
(बसंतराज शाकुने सप्तमो वर्ग: पृष्ठ संख्या ११७)
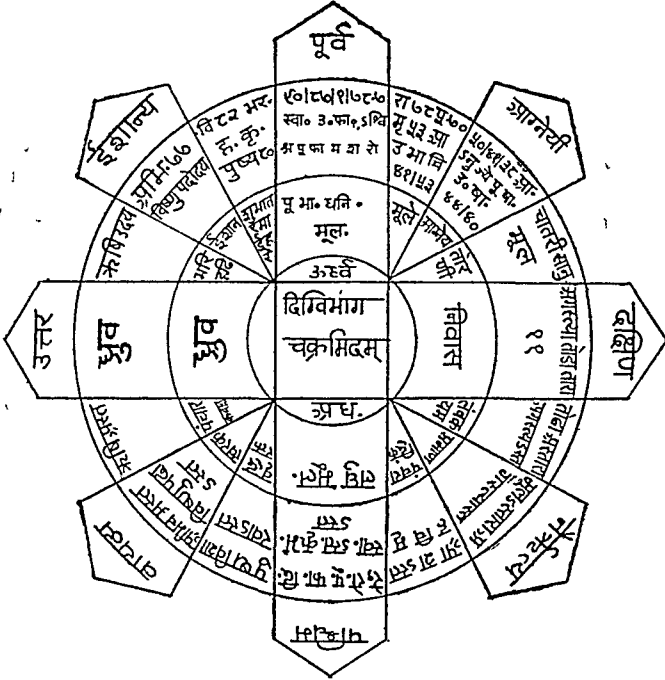
दिग्चक्र—२

उपर्युक्त दिशाओं में और विकास हुआ तथा आठ दिशाओं के मध्य आठ और उपकोण माने गये जिनका उल्लेख जैन ग्रंथ आचाराङ्ग सूत्र का निरुक्ति के अन्तर्गत गाथा संख्या ५२ से ५८ तक में हुआ है। संस्कृत ग्रंथ शकुन वसन्तराज में भी अठारह दिशाओं का उल्लेख हुआ है परन्तु उनके नामों का मेल आचारांग सूत्र से नहीं होता है। शकुन वसन्तराज में ये दिशाएं शुभाशुभ शकुनों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये मानी गई हैं। इसी प्रकार राजस्थानी में भी शुभाशुभ शकुन ज्ञान के निमित्त अठारह दिशाएं मानी गई हैं जिनके कुछ नामों का मेल शकुन वसन्तराज से होता है। राजस्थानी में क्षितिज वृत के किसी निश्चित स्थान को ही दिशा विशेष का संकेत स्थान मानते हैं जो क्षितिज वृत्त में नक्षत्रों के उदय और अस्त स्थानों पर आश्रित है। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि शकुन वसन्तराज के आधार पर ही राजस्थानी में अठारह दिशाओं की कल्पना की गई है न कि जैन ग्रंथों के आधार पर।

आचारांग सूत्र के अनुसार उपरोक्त आठ दिशाओं के मध्य में आठ और उपकोण या विदिशाएं मानी गई हैं जिनका क्रम निम्नानुसार है—

१ पूर्वा (पूर्व दिशा) तथा पूर्व-दक्षिण (अग्निकोण) के मध्य की दिशा सामुत्थानी।

२ पूर्व-दक्षिणा (अग्निकोण) तथा दक्षिणा (दक्षिण दिशा) के मध्य की दिशा कपिला।

३ दक्षिणा (दक्षिण दिशा) दक्षिणापरा (नैर्ऋत्यकोण) के मध्य की दिशा खेलिज्जा।

४ दक्षिणापरा (नैर्ऋत्यकोण) तथा अपरा (पश्चिम दिशा) के मध्य की दिशा असिधर्मा।

५ अपरा (पश्चिम दिशा) तथा अपरोत्तरा (वायव्यकोण) के मध्य की दिशा परिया।

६ अपरोत्तरा (वायव्यकोण) तथा उत्तरा (उत्तर दिशा) के मध्य की दिशा धर्मा।

७ उत्तरा (उत्तर दिशा) तथा पूर्वोत्तरा (ईशानकोण) के मध्य की दिशा सावित्री।

८ पूर्वोत्तरा (ईशानकोण) तथा पूर्वा (पूर्व दिशा) के मध्य की दिशा पण्णावित्ती।

उपरोक्त क्रम निम्नानुसार अधिक स्पष्ट हो जायगा—

पूर्व दिशा (पूर्वा) से दक्षिण दिशा (दक्षिणा) के मध्य की उपदिशाओं का क्रम—

१ सामुत्थानी
२ पूर्व-दक्षिणा (अग्निकोण) तथा
३ कपिला

दक्षिण दिशा (दक्षिणा) से पश्चिम दिशा (अपरा) के मध्य की उपदिशाओं का क्रम—

१ खेलिज्जा
२ दक्षिणापरा (नैर्ऋत्यकोण) तथा
३ असिधर्मा

पश्चिम दिशा (अपरा) से उत्तर दिशा (उत्तरा) के मध्य की उपदिशाओं का क्रम—

१ परिया
२ अपरोत्तरा (वायव्यकोण) तथा
३ धर्मा

उत्तर दिशा (उत्तरा) से पूर्व दिशा (पूर्वा) के मध्य की उपदिशाओं का क्रम—

१ सावित्री
२ पूर्वोत्तरा (ईशानकोण) तथा
३ पण्णावित्ती

उपर्युक्त दोनों क्रमों से सोलह दिशाएं ज्ञात हुई और दो ऊर्ध्व (देवदिशा) व अध: (अधोदिशा) इस प्रकार कुल अठारह दिशाएं हुईं जिनका उल्लेख आचारांग सूत्र मे है।

राजस्थानी में उपरोक्त सोलह दिशाओं के लिये कुछ पर्यायवाची प्रयोग किये जाते हैं जिनका उल्लेख प्रसंगानुसार कई राजस्थानी ग्रंथों में मिलता है। उदाहरण के लिये मुंहता नैणसी की ख्यात मे कई स्थानों पर उक्त दिशाओं में से कुछ के लिये पर्यायवाची प्रयुक्त हुए हैं। राजस्थानी में उक्त दिशाओं के लिये जो पर्यायवाची बोले जाते हैं वे निम्न हैं—

पूर्व से दक्षिण के मध्य की दिशाओं के लिये—

१ पूर्व दिशा (पूर्वा) के लिये—इंद्र ।
२ सामुत्थानी के लिये—उडीक, परियांण, मेवास ।
३ अग्निकोण (पूर्व-दक्षिणा) के लिये—अगन, चींगण ।
४ कपिला के लिये—रूपारास ।

दक्षिण से पश्चिम के मध्य की दिशाओं के लिये—

१ दक्षिण दिशा (दक्षिणा) के लिये—निवास, लंका ।
२ सेलिज्जा के लिये—पंचाद—वाव ।
३ नैऋंत्यकोण (दक्षिणापरा) के लिये—निरांत, नैरत ।
४ असिधर्मा के लिये—खरक ।

पश्चिम से उत्तर के मध्य की दिशाओं के लिये—

१ पश्चिम दिशा (अपरा) के लिये—आथुण ।
२ परिया के लिये—पंचाद ।
३ वायव्यकोण (अपरोतरा) के लिये—वाय ।
४ धर्मा के लिये—ऊंव ।

उत्तर से पूर्व के मध्य की दिशाओं के लिये—

१ उत्तर दिशा (उत्तरा) के लिये—ध्रुव ।
२ सावित्री के लिये—भरणीजळ, भरहरे ।
३ ईशानकोण (पूर्वोत्तरा)—कुबेर ।
४ पण्णवित्ती के लिये—दयारास, लांणी, विश्रभव ।

उपर्युक्त दिशाओं के पूर्ण स्पष्टीकरण के लिये यहां आचारांग सूत्र, शकुनवसन्तराज और राजस्थानी के अनुसार तीन दिग्चक्र दिये जाते हैं ।

आचारांग सूत्र के अनुसार १८ दिशाओं की नामावली और दिशा स्थान
(आचारांग प्रथम श्रुत स्कंध. प्र. अ. प्र. उ. निर्युक्ति गाथा ५२ से ५८)
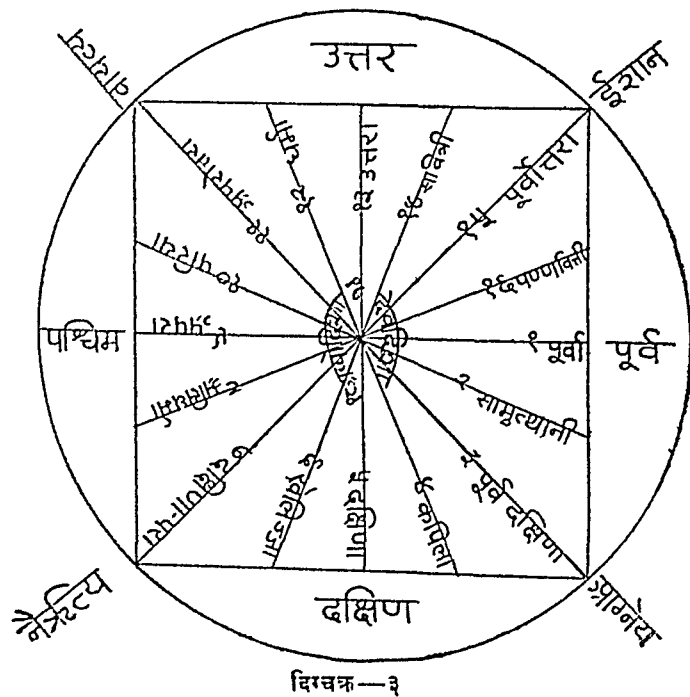
दिग्चक्र—३

दिग्विभाग चक्र—शकुन वसंतराज के अनुसार
(वसंत शाकुने सप्तमोवर्ग पृष्ठ संख्या ११८)
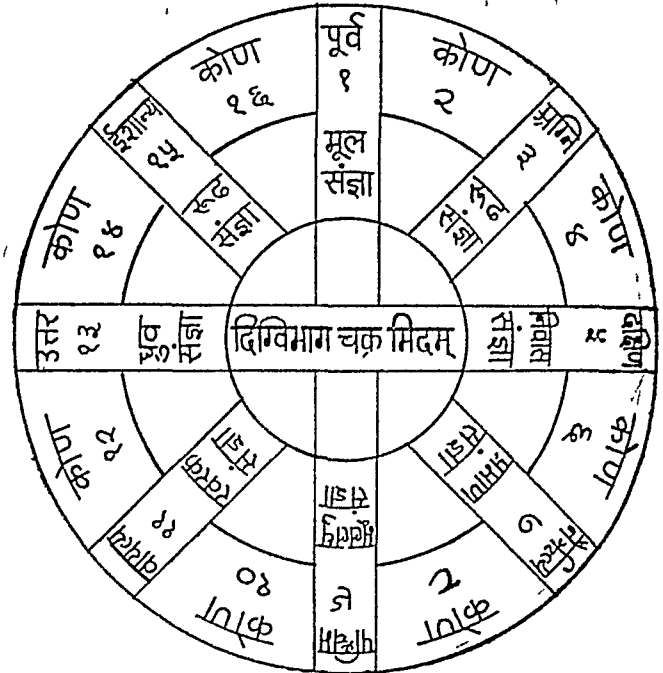
दिग्चक्र—४

राजस्थानी शकुन-शास्त्र के अनुसार सोलह दिशाओं की नामावली व स्थान
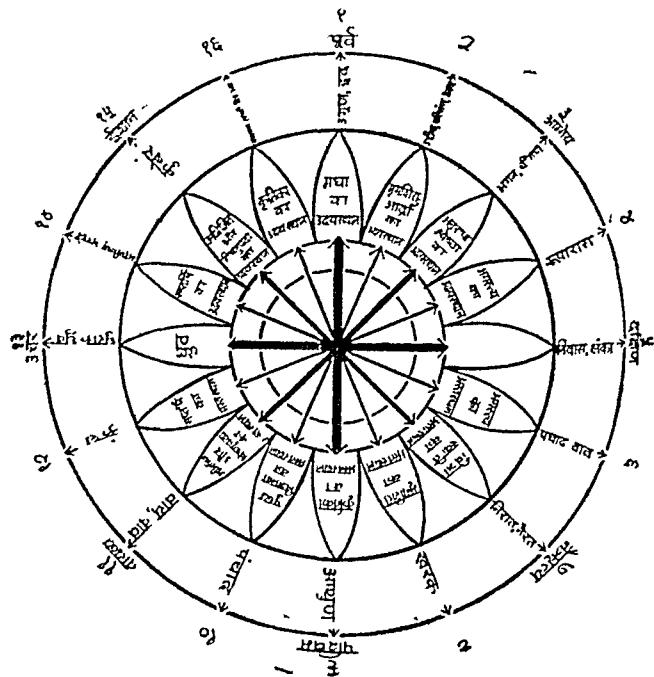
दिग्चक्र—५

पर्याय०—आसा, कुकुभ, कन्या, कास्टा, गो।
मुहा०—१ दिसा जाणौ—शौच जाना. २ दिसोदिसी—चारों ओर।
२ चार की संख्या* ३ दस की संख्या*।
४ देखो 'दसा' (रू.भे.) उ०—वस्त्र हरीनि हंस गयु ते विठी याहारि वाहार। तेह रांकनु वांक किसु, जु दिसा पडी अपार।—नळाख्यान
५ देखो 'दीक्षा' (रू.भे.) उ०—करइ ति मांणिक बालिय वालिय वूना काज। परघरि हुइ दिसा लिय टाळिय दीजतउ राज।
—नेमिनाथ फागु
क्रि०वि०—ओर, तरफ। उ०—१ रूक हथो भाटी 'रैणायर', मांझी तीन साथ दळ मोगर। वांरा भड़ मेळाऊ आया, चंचळ थळवट दिसा चलाया।—रा.रू.
उ०—२ देवड़े मैंगळदे भांणेज नूं पोहचावण नूं घड़सी आवू दिसा गयो थो, सु पाछो वळतो मेहवा मांहै आयो।
—नैणसी
रू०भे०—दिच्छा, दिस, दिसि, दिसिया, दिसी, दिस्सा, दीसा।
अल्पा०—दिसड़ी, दिसड़ौ, दिसली।
दिसाउर—देखो 'दिसावर' (रू.भे.) उ०—माळवणी तूं मन समी, जांणइ सहू विवेक। हिरणाखी हसिनइ कहइ, करउं दिसाउर एक।
—ढो.मा.
दिसागज—सं०पु० [सं० दिशागज] दिग्गज (वं.भा.)।
दिसाचक्षु—सं०पु० [सं० दिशाचक्षु] गरुड़ के एक पुत्र का नाम (पौराणिक)
दिसाजय—सं०पु० [सं० दिशाजय] दिग्विजय।
दिसाटौ—देखो 'देसोटो' (रू.भे.)
दिसादिसी—क्रि०वि०—चारों ओर। उ०—जठै आपरो अकंटक अमल जमा'र नरेश भी बूंदी आ'र विजय रौ सुजस सत्रवां समेत दिसो-दिसी डुलायौ।—वं.भा.
दिसापाळ—सं०पु० [सं० दिशापाल] दिक्पाल।
दिसावर—सं०पु०—१ वैश्यों की जाति. २ देखो 'देसावर' (रू.भे.)
दिसाभूल, दिसाभ्रम—सं०पु० [सं० दिशाभ्रम] दिशाओं के सम्बन्ध में भ्रम होना। उ०—दिसाभूल हुयोड़ा दुसटी, आथण रा आथड़िया रे।
—ऊ.का.
दिसावकासकव्रत—सं०पु० [सं० दिशावकाशव्रत] जैनियों का एक प्रकार का व्रत जिसमें वे प्रातःकाल यह निश्चय कर लेते हैं कि आज हम अमुक दिशा में इतनी दूर जायेंगे।
दिसावड़—सं०पु० [देश०] कपड़ा बुनने का वह अंतिम छोर जहां वाना नहीं डाला जाता है।
दिसावर—सं०पु० [सं० दिशापर] दूसरा देश, परदेश, विदेश।
उ०—साजन चले दिसावरां, पग में उळझी डोर। पीछा फिर नै देखियो, थारै घण लारै गणगौर।—लो.गी.
रू०भे०—दिसाउर, देसाउर, देसाउरि, देसावर।
दिसावरी, दिसावरू—वि० [सं० दिशापर+रा०प्र०ई,उ] परदेशी, विदेशी। उ०—दिसावरू प्रर आडा मारगां पर वांरी खास निजर रैवती। मारग वैवता मिनख नै लूट नै मार नांखणौ वांरै डावा हाथ रौ खेल हो।—रातवासौ
रू०भे०—देसावरी।
दिसावळ, दिसावळौ—वि० [सं० दिशा+आलुच्] दिशा-भ्रमित।
उ०—दिस ऊगूणी चालियौ रे, फिर फिर उलटा थाय। दिल्ली न सूजै दिसावळा, गोता आथूणा खाय।—स्री हरिरांमजी महाराज
दिसासूळ—सं०पु० [सं० दिक्शूल] फलित ज्योतिष के अनुसार यात्रा-मुहूर्त देखने में शूल की वह उपस्थिति जो विशिष्ट वार व नक्षत्र के कारण विशिष्ट दिशाओं में रहती है।
निम्न सारणी के अनुसार विशिष्ट दिशाओं में विशिष्ट वारों को दिशाशूल रहता है। अतः यात्रा करना निषेध है।
उत्तर—मंगल, बुध।
दक्षिण—गुरू।
पूर्व—सोम, शनि।
पश्चिम—रवि, शुक्र।
वि०वि०—कुछ विद्वानों के अनुसार दिशाशूल की परिभाषा इस प्रकार है—'फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास जो कुछ विशेष योगनियों के योग के कारण माना जाता है। जिस दिन जिस दिशा में कुछ विशिष्ट योगनियों के योग के कारण इस प्रकार का वास और दिक्शूल माना जाता है उस दिन उस दिशा की ओर यात्रा करना बहुत ही अशुभ और हानिकारक माना जाता है।'
किन्तु उपर्युक्त मत भ्रमपूर्ण है। दिशाशूल काल एवं योगनियों से पूर्णतः पृथक है। दिशाशूल विशिष्ट वारों और नक्षत्रों के कारण केवल मुख्य दिशाओं में ही लागू होता है जब कि काल विशिष्ट वार के कारण मुख्य दिशाओं एवं उपदिशाओं पर भी लागू होता है। दिशाशूल एवं काल की गति एक दूसरे के विपरीत होती है। दिशाशूल एवं योगनियों से भी कोई संबंध नहीं है क्योंकि योगनियां तिथियों पर आधारित रहती हैं, उनका वारों व नक्षत्रों से कोई संबंध नहीं होता है। काल व योगनियां भी परस्पर पृथक हैं क्यों कि काल विशिष्ट वार के कारण विशिष्ट दिशा अथवा उपदिशा में रहता है जब कि योगनी की उपस्थिति विशिष्ट तिथि के कारण विशिष्ट दिशा में रहती है।
रू०भे०—दसासूळ।
दिसि—देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—१ एक नगर अदभुत दिसि उत्तर। पंचसठि कोस गिरंद तारापुर।—सू.प्र.
उ०—२ जाहरां परमात्मा माया दिसि देख्या तियां थी महतत्व नीपना।—द.वि.
दिसिटि—देखो 'द्रस्टी' (रू.भे.)
दिसिदुरद—सं०पु० [सं० दिशाद्विरद] दिग्गज।

दिसिनायक-सं०पु० [सं० दिशानायक] दिक्पाल।

दिसिनियम-सं०पु० [सं० दिशानियम] जैनी साधुओं के द्वारा बनाया हुआ नियम जिसके अनुसार वे निश्चय कर लेते हैं कि उन्हें अमुक दिशा में प्रति दिन अथवा किसी विशेष दिन कितनी दूरी तक चलना है। (मि० दिसावकासव्रत)

दिसिप—देखो 'दिसपति' (रू.भे.)

दिसिया—देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—१ उण दिसिया अजमेर सूं, आयौ तहवरखांन। इण दिसि वग्गा सिंधुवा, भुज लग्गा असमांन। —रा.रू.

उ०—२ घोड़ा १० री जमै आगै की, सु वरसावरस द्यै। आप मिळियौ। अमीखांन दिसिया कह्यौ—'मारत्यौ थांहरौ गुनैगार छै।' हमैं घोड़ा ६० वरसावरस द्यै छै।—नैणसी

दिसिराज-सं०पु० [सं० दिशाराज] दिक्पाल।

दिसी—देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—ढोलउ किम परचइ नहीं, सहु रहिया समझाइ। के पुळिया पूगळ दिसी, के कांही कजि काइ।—ढो.मा.

दिसोटौ—देखो 'देसोटौ' (रू.भे.)

दिसौ-सं०पु०—देखो 'दिसा' (अल्पा., रू.भे.) उ०—हय तवल बंब दळ सझि हले, दुगम गरद उडि नभ दिसौ। उण वार रूप 'अभमाल' रौ, जोम देह धरियां जिसौ।—सू.प्र.

दिस्ट—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—१ सुब सुदा दिस्ट जोयौ सगत। तांहां उठ्यौ 'लाखण' वेग तंत।—रांमदांन लाळस

उ०—२ अत चित्त उदार सभाव इसा, नह दिस्ट परै परनार दिसा। —गि.सु.रू.

उ०—३ दिस्ट न लागण सारू दीठूणौ दियौ। किना दिस्ट लागण रौ ही उपाव कियौ।—र. हमीर

दिस्टांत—देखो 'द्रस्टांत' (रू.भे.)

दिस्टि, दिस्टी—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

उ०—१ दिस्टि दई सतगुरु मिळया, हीरा लिया सुभाय। हरीदास जन जोहरी, खोटा कदे न खाय।—ह.पु.वा.

उ०—२ तिहारी स्रिस्टी पै अमिय कर ब्रिस्टी तन तजूं। कुद्रस्टी दिस्टी को भसम कर इस्टी हरि भजूं।—ऊ.का.

दिस्तौ—देखो 'दस्तौ' (रू.भे.)

दिस्सा—देखो 'दिसा' (रू.भे.)

दिहदा-वि० [फ़ा०] देने वाला, दाता।

दिह—१ देखो 'दीह' (रू.भे.) २ देखो 'देह' (रू.भे.)

उ०—पासा परवस थया प्रीउनि, पुस्कर ना सवळा पटि। विपरीत छि कांइ वारता, माहा दिह नि अतिसि नडि।—नळाख्यांन

दिहड़ौ, दिहडौ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

दिहरौ—देखो 'देवरौ' (रू.भे.)

दिहांनगी—देखो 'दैनगी' (रू.भे.) उ०—राव मालै नूं वोलायौ, दिहानगी करदी।—नैणसी

दिहाड़उ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

दिहाड़णौ, दिहाड़वौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)

दिहाड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दिहाड़ियोड़ी)

दिहाड़ि, दिहाड़ी-क्रि०वि० [सं० दिवस ?] १ नित्य, हमेशा। उ०—सुहड़ लियां राजा बळ साजै, पीपळोद 'अजमाल' विराजै। नैड़ा कांठै लखै अनाड़ी, दोड़ै काजमवेग दिहाड़ी।—रा.रू.

रू०भे०—'दिहाडि, दिहाडी'।

२ देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

दिहाड़ौ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ ताहरां इसी मिसलत कीधी 'आज हूं पांच मैं दिहाड़ै दोपहरी विरियां सरब कांम करस्यां।' —नैणसी

उ०—२ जुरा झंप जीवन खिसै, घटै ज नवलौ नेह। अेक दिहाड़ै सज्जणा, जम करसी जुध अेह।—अज्ञात

उ०—३ घन दिहाडउ आज कउ, देव उठि दीयौ चउगिणउ मांन। मेल्ही चावर वइसणइ, राव उडीसा को परधांन।—वी.दे.

दिहाडउ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.) उ०—चीतविया पासा पडइ, उं करतां पाधरुं थाइं, लक्ष्मी वारणि लांखइं अनइं ऊपरवाडि पयसइ, इसिउ दिहाडउ भलउ।—व.स.

दिहाडि, दिहाडी—१ देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ए चंदन काठ किहां नीपनु ? मळीआगिरी परवति, माहा मसवाडि सुकळ पखवाडि, बीज तणि दिहाडी।—व.स.

२ देखो 'दीहाड़ी' (रू.भे.) उ०—तह घरि जाइ माधवउ, दिहाडी पूजण देव। चतुरपणइ चूकइ नहीं, सदा निरंतर सेव।—मा.कां.प्र.

दिहाडौ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.) (उ.र.)

उ०—एक दिहाडै इंद्र कूं, पकड़ि पछाड़ै काळ। हरिदास जन यूं कहै, गोपी रहै न ग्वाळ।—ह.पु.वा.

दिहात—देखो 'देहात' (रू.भे.)

दिहाती—देखो 'देहाती' (रू.भे.)

दिहि—देखो 'दस' (रू.भे.) उ०—१ इंद्री कसे घसे मन दिहि दिस, मन कूं कटकि न राखै, तन पाटण तहाँ मन में वासी, नाना विधि रस चाखै।—ह.पु.वा.

उ०—२ हरि विण जांणी खोटा खात, रांमजी सूं प्रीति नांही ऊठि दिहि दस जात।—ह.पु.वा.

दी-सं०पु०—१ अमृत. २ स्वामी (एका.) ३ सूर्य। उ०—पौ फाटी दी ऊगियौ, आया पूछण वत।—ढो.मा.

४ दिन। उ०—नारायण ! हौं तुझ नमां, इअ कारण हरि ! अज्ज। जिअ दी औ जग छंडणौ, तिअ दी तो सूं कज्ज।—ह.र.

५ देखो 'दई' (रू.भे.)

कहा०—दी दूधां रा पांमणा'र छाछ सूं ही अभावणा—ऐसे मेहमान जिनको दही, दूध मिलना चाहिए उनको छाछ भी नहीं देना अनुचित है। योग्य मेहमानों को साधारण वस्तुओं से नहीं टरका कर उनका यथायोग्य स्वागत करना चाहिए।

वि०—दानी (एका.)

प्रत्य०—षष्ठी या सम्बन्ध का चिन्ह, की। उ०—तिण दी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै सब कच्चा है। बोलै स्रुत संम्रत स्थंभ ग्रज वायक, सीतानायक सच्चा है।—र.ज.प्र.

दीग्रट—देखो 'दीवट' (रू.भे.)

दीग्रण—वि० [सं० दा] देने वाला, दाता। उ०—१ सह वातां समरत्थ भांज घड़वा त्रेभुग्रण। सह वातां समरत्थ लिग्रण लंका गढ़ दीग्रण।
—ज.खि.

उ०—२ ग्ररिसाल; विजाइमाल; लख दीग्रण; जस लीग्रण; राजाय के राजा; तपै महाराज रयण।—वचनिका

दीग्राळी—देखो 'दीवाळी' (रू.भे.)

दीग्राळीएल(हेल)—देखो 'दीवाळीएल(हेल)' (रू.भे.)

दीग्रो—देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दीकरी—देखो 'डीकरी' (रू.भे.) उ०—१ राजा रांणी नूं कहइ, वात विचारउ जोइ। ग्राज विखइ द्यां दीकरी, हांसउ हसिसी लोइ।
—ढो.मा.

उ०—२ नैख देसि नळ सि न जांणु? प्रीऊडु माहारु ते सपरांणु। भीमराय नी डीक्यरी।—नळाख्यांन

दीकरौ, दीकिरउ—देखो 'डीकरौ' (रू.भे.) उ०—१ देवळां मूरतां हूंत जो कणी दिन, खुरम रौ डीकरौ कुवद खेलै। दूठ तौ तुरत गजसिंह रौ दीकरौ, मसीतां ग्राभ रा धूंग्रा मेलै।
—महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) जोधपुर रौ गीत

उ०—२ ग्रांमि एक ग्रति दरिद्रता करी दुक्खित डोकरी एक हूंती। हूंसउ इसइ नांमि तेहनउ दीकिरउ एक हूतउ।—तरुणप्रभ
(स्त्री० दीकरी)

दीक्षक—सं०पु० [सं०] दीक्षा देने वाला, शिक्षक, गुरु।

दीक्षांत—सं०पु० [सं०] किसी यज्ञ के समापनांत मे उसकी त्रुटि ग्रादि के दोष की शांति के लिये किया जाने वाला ग्रवभृत यज्ञ।

दीक्षा—सं०स्त्री [स०] १ गुरु या ग्राचार्य का नियमपूर्वक मंत्रोपदेश।
क्रि०प्र०—दैणी, लैणी।
२ वह मंत्र जिसका उपदेश गुरु करे. ३ सोमयागादि का संकल्पपूर्वक ग्रनुष्ठान, यज्ञकर्म. ४ ग्राचार्य द्वारा गायत्री मंत्र का उपदेश, उपनयन-संस्कार. ५ पूजन।
रू०भे०—दिक्षा, दिच्छा, दिसा।

दीक्षागुरु—सं०पु० [सं०] मंत्रोपदेश देने वाला, गुरु।

दीक्षापति—सं०पु० [सं०] दीक्षा या यज्ञ का रक्षक, सोम।

दीक्षित—वि० [सं०] १ जिसने गुरु से मंत्र लिया हो, जिसने ग्राचार्य से दीक्षा ली हो।
२ जिसने सोम योगादि का संकल्पपूर्वक ग्रनुष्ठान किया हो।
सं०पु०—ब्राह्मणों का एक भेद। उ०—जोसी जांनी जेतला, पाठक पंड्या पाढि। वाजपेय दीक्षित दवे, राउल-सरसा राढ़ि।—मा.कां.प्र.

दीख—देखो 'दीक्षा' (रू.भे.) उ०—१ जिसिउ गुरु तिसिउ ग्रभ्यास, जिसी सीख तिसी दीख, जिसिउ ग्राहार तिसिउ नीहार।—व.स.
उ०—२ जोइन तउ संयम नी जइ सीख। परिहरि नारि न नेहिय रे हियडा लइ दीख।—नेमिनाथ फागु

दीखणौ, दीखबौ—क्रि०ग्र० [सं० दृश्] १ दृष्टिगोचर होना, देखने में ग्राना, दिखाई देना। उ०—१ ग्रनमी ग्रांटीला थळिया थळ वाळा। विपदा वांटीला बळिया बळ वाळा। दुरजय दीखण में निरभय दिन दूल्हा। भीखण दुरभिख में भुजबळ नह भला।—ऊ.का.
उ०—२ लाखां जन डोलै भचभेड़ा लेता, दारूखोरां री घोरां दव देता। भाजो भाजो कर भोजन कर भीखै, दुख में दरवाजौ दांतां रो दीखै।—ऊ.का.
क्रि०स० [सं० दिक्ष्] २ दीक्षा देना, दीक्षित करना (उ.र.)
दीखणहार, हारौ (हारी), दीखणियौ—वि०
दिखवाड़णौ, दिखवाड़बौ, दिखवाणौ, दिखवाबौ, दिखवावणौ, दिखवावबौ—प्रे०रू०
दिखाड़णौ, दिखाड़बौ, दिखाणौ, दिखाबौ, दिखावणौ, दिखावबौ, देखाड़णौ, देखाड़बौ, देखाणौ, देखाबौ, देखावणौ, देखावबौ—क्रि०स०
दीखिग्रोड़ौ, दीखियोड़ौ, दीख्योड़ौ—भू०का०कृ०
दीखीजणौ, दीखीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०
द्रस्टणौ, द्रस्टबौ—रू०भे०

दीखियोड़ौ—१ दृष्टिगोचर हुवा हुग्रा, दिखाई दिया हुग्रा. २ दीक्षा दिया हुग्रा, दीक्षित।
(स्त्री० दीखियोड़ी)

दीगेस—सं०पु० [सं० दिक्+ईश] दिक्पाल।

दीठ—सं०स्त्री० [सं० दृष्टि] १ ग्रांख की ज्योति, दृष्टि, नजर।
उ०—१ सर विद्या इम सीखजै, जिम सीखी पीथल्ल। सर गोरी रै साभियो, दीठ हीण दूभल्ल।—बां.दा.
२ ग्रांख, नेत्र।
३ ग्रच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि जिसका प्रभाव बुरा पड़े, नजर।
उ०—पुरुस पछइ परहरि घरइ, डाकिणी-सरसी दीठ। भोगवीए भूंडा थइ, ग्रेहवउं थाय ग्रनीठ।—मा.कां.प्र.
ग्रव्य०—१ प्रति एक, हर एक, फी।
उ०—पाखर हैवर पांच सौ, तुरियां दीठ तवल्ल। सीस फरां कट खजरां, चढिया तुरां मुगल्ल।—रा.रू.
मुहा०—१ घर दीठ—प्रत्येक घर। २ टाबर दीठ—प्रति बालक। ३ पोथी दीठ—प्रति पुस्तक।
२ देखो 'दीठौ' (रू.भे.) उ०—खाधो सोहो मीठ है, ग्रग्र जनम किण दीठ। ऊखांणौ ग्रदता पढै। पूरब पद द पीठ।—बां.दा.
रू०भे०—दीठि।

दीठउ—देखो 'दीठौ' (रू.भे.) (उ.र.)

दीठि—सं०पु० [सं० दृष्टि] १ नेत्र, नयन (ह.नां.)

२ देखो 'दीठ' (रू.भे.)

दीठूणो-सं०पु० [सं० दृश्] दृष्टि दोष से बचने के लिये चेहरे पर लगाया जाने वाला चिन्ह। उ०—दिस्ट न लागण सारू दीठूणो दियो। किना दिस्ट लागण री ही उपाव कियो।—र. हमीर

दीठोड़ो, दीठोडो, दीठो-भू०का०कृ०—देखा हुआ, देखा।
उ०—पढयं जिण जोध पोकार सगळं पड़ी, घरं नहीं अरज पातिसाह धीठो। राह वंधी हुई रखं कोई रोकसी, देवं 'जसवंत' रो साथ दीठो।
—ध.व.ग्रं.
(स्त्री० दीठी, दीठोड़ी, दीठोडी)

दीण—देखो 'दीन' (रू.भे.) उ०—१ लूटे न ग्रेह अलीण, दुजराज न लुटे दीण। अमि लूटि सब असहास, सकि नारनोळह नास।—सू.प्र.
उ०—२ मही दीठ धारं चवं वैण मंदं। निरखे भड़ां बोलियो वाळि नंदं। उलंघू अहं सामंद्र वीस वारा। सर्भ दीण भाखा नमो सीस सारा।—सू.प्र.

दीत-सं०पु० [सं० आदित्य] १ सूर्य, भानु। उ०—उगा मुख बारह दीत उदार। भिड़े तिण वार मुंछार भुंहार।—सू.प्र.
२ रविवार।

दीता*-सं०पु० [सं० आदित्य] १ सूर्य, सूरज। उ०—दखं भाख ज्यारा जती वंस दीता। सको कंत त्रीलोक रो नाथ सीता।—सू.प्र.

दीद-सं०पु० [फ़ा०] १ दर्शन, दीदार। उ०—राघव सिफत वखांणी सच्चे सायरां। आफताव दुनियांणी दीद नगाहए।—र.ज.प्र.
२ देखो 'दीन्हो' (रू.भे.)

दीदनी-अव्य० [फ़ा०] देखने योग्य, दर्शनीय। उ०—यकं नूर खूब खूवां, दीदनी हैरांन। अजब चीज खुरदनी, पियालए मस्तांन।—दादू वांणी

दीदम-सं०स्त्री० [फा० ?] १ दृष्टि। उ०—कुळ आलम यके दीदम, अरवाहे इखलास। वद अमल वदकार दूई, पाक यारां पास।
—दादू बांणी
२ दर्शन, दीदार। उ०—१ हक हासिल नूर दीदम, करारे मकसूद। दीदार दरिया अखाहि, आमद मोजूदे मोजूद।—दादू बांणी
उ०—२ आसिकां रह कब्ज करदा, दिल वजा रफ्तंद। अल्लह आले नूर दीदम, दिल हि दादू बंद।—दादू वांणी

दीदवांन-सं०पु० [फ़ा० दीदवान] बन्दूक के घोड़े के निकट नाल पर लगा हुआ छेददार लोहे का गुटका जिसमें से 'मक्खी' की सीध मिलाई जाती है।

दीदा-सं०स्त्री० [फ़ा०] १ दृष्टि, नजर. २ दर्शन, दीदार।

दीदार-सं०पु० [फा०] १ मुख, छवि। उ०—दिन ऊगं नित देखणो, दाता रो दीदार। भागे भूख कळेस भय, 'बंक' न लागं वार।
—वां.दा.
२ दर्शन, अवलोकन। उ०—पन्नग लोक म्रित लोक तणा प्रभु, वडा रिखीसर जोवं वाट। दहनांमी दीदार देखवा, घडे हुवा हूवा गज थाट।—महादेव पारवती री वेलि

३ भेंट, साक्षात्कार।

दीदारू-वि० [फ़ा० दीदार] दर्शनीय, देखने योग्य।

दीदी-सं०स्त्री० [देश०] बड़ी बहिन के लिये प्रयोग किया जाने वाला शब्द।

दीदो—देखो 'दीन्हो' (रू.भे.) उ०—पछै औ रजपूत वणीज राजा रै चाकर रयो। अणां हैं लाख रुपयां रो पटो दीदो।
—झांणा राजपूत री वात
(स्त्री० दीदी)

दीध—देखो 'दीन्हो' (रू.भे.) उ०—भूपति अति संतोखया भीम, सीख करी चाल्या पुर सीम। विहिवाविधि मांडीनि कीध, मांन घणां नळ रांनि दीध।—नळाख्यांन

दीधति, दीधती-सं०स्त्री० [सं० दीधिति] किरण (नां.मा.)
उ०—ससांक नी दीधति दिव्य वस्त्र, सदा सदाचारि करि पवित्र। सुवरणवेदी अहिनांणि जांणि, सरह्तीसूनु क्रिपांणपांणि।
—विराट पर्व

दीधल-वि० [सं० दा] दिया हुआ, दत्त। उ०—परही पुळ आंणिय ठांण परं, भुरजाळा री खेग हुती बुहरं। भणिये क वखांण किसूं भलरां, वरदाइ नं दीधल देवल री।—पा.प्र.

दीधुं, दीधु, दीधू—देखो 'दीन्हो' (रू.भे.) (उ.र.)
(स्त्री० दीधी)

दीधोडो—देखो 'दीन्हो' (रू.भे.)

दीधो—देखो 'दीन्हो' (रू.भे.) उ०—दुजं दीन व्हे आसरीवाद दीधो। क्रपानाथ वंदे विदा ब्रह्म कीधो।—सू.प्र.
(स्त्री० दीधी, दीधोड़ी)

दीन-वि० [सं०] १ हीन दशा का, गरीब, दरिद्र।
उ०—१ ओ ऊपर ऊनाळो आयो, दीन जनां दोरो दरसायो। पांणी ग्यांन कोई नहि पायो, फूकं लोक हुवो अति कायो।—ऊ.का.
उ०—२ दातार सूर सीळ के निवास। दीन के सहाय द्विज गऊ के दास।—सू.प्र.
२ भय या दुख से अधीनता प्रकट करने वाला, नम्र।
उ०—१ किण सरणे जाऊं रे, दीन भाख सुणाऊं रे। सतहीण न थाऊं रे, दीन भाख सुणाऊं रे।—प.च.चौ.
उ०—२ दीन पुकार स्रवण सुण हसती। तज कमळा पाळा करत सती।—र.ज.प्र.
३ दयनीय। उ०—म्रिग मरकट मन मीन, नाव नागरीनयण नट। देख हुवै अै दीन, अस 'जेहल' वगसै इसा।—वां.दा.
४ उदास, खिन्न. ५ दुखी, कातर, संतप्त. ६ कायर.
७ देखो 'दीन्हो' (रू.भे.)
सं०पु० [अ०] १ धर्म, मजहब, मत, विश्वास।
उ०—१ महदी रै वंस रा पीरजादां कनै महदवियां रा दीन री किताब है।—वां.दा.ख्यात
उ०—२ दादू दुनियां सौं दिल बांध कर, बैठे दीन गमाय। नेकी नांम विसार कर, करव कमाया खाइ।—दादू वांणी

उ०—३ लीन श्रौ श्रलीन भीन चीन्ह तें लयो। लीन व्है श्रलीन दोऊ दीन तैं गयो।—ऊ.का.

२ वह द्रव्य या धन जो कोई पिता अपनी कन्या के विवाह के लिये वर पक्ष से लेता है. ३ तगर का फूल।

दीनता-सं०स्त्री० [सं०] दरिद्रता, गरीबी. २ कातरता, आर्त्तभाव।

उ०—१ सो डोकरी श्राधी रात में बादसाह री गोर ऊपर जाय घणी **दीनता** सूं प्रभू नूं वीणती करी।—नी.प्र.

उ०—२ स्राप सुण थां दोनूं हाथ जोड़ कै श्ररज करी—जे म्हारै साधारण अपराध बदळै दंड मोटो दियो। यूं कहि **दीनता** करी।

—डाढ़ाळा सूर री वात

३ उदासी, खिन्नता. ४ दुख से उत्पन्न अधीनता का भाव, नम्रता, विनीत भाव। उ०—१ नह कायरता **दीनता**, 'पता' तिहारै पिंड। करता तो रचतां किया, अत्ता नेम श्रखंड।—जैतदांन वारहठ

उ०—२ हे वणावटी रावतां सीह मत वाजो, थांरै मांहै सीह वाजो जेड़ी सकती नहीं, **दीनता** सूं श्रापरा दिन गुजारो, श्रापरो पौरस सीह वाजण रो नहीं।—वी.स.टी.

५ दयनीयता. ६ कायरता।

रू०भे०—दीनताई, दीनती।

दीनताई—देखो 'दीनता' (रू.भे.) उ०—लई **दीनताई** रहै खांनजादे। कहै खो गये मेच्छ वेरे विवादे।—ला.रा.

दीनती-सं०स्त्री० [सं० दीनता] १ दीनता के साथ की जाने वाली प्रार्थना। उ०—'गुमांना' सुतन बीनती करै गरज री, **दीनती** श्ररज री भाव दासा। जळंधर नाथ महाराज श्रण जीव री, एक चरणारबंद तणी श्रासा।—महाराजा मांनसिंह

२ देखो दीनता' (रू.भे.)

दीनत्व-सं०पु० [सं०] दीनता।

दीनदयाळ, दीनदयाळु, दीनदयाळौ-वि० [सं० दीनदयालु] दीनों पर दया करने वाला। उ०—**दीनदयाळ** छेह नहिं देता सदा श्रछेह सभावां।

—ऊ.का.

सं०पु०—ईश्वर का नाम। उ०—प्रथम्मी जाती रेस पयाळ। दाढ़ां विच राखी **दीन-दयाळ**।—ह र.

रू०भे०—दीनादयाळ।

दीनदार-वि० [श्र० दीन+फ़ा० दार] जो धर्म पर विश्वास रखता हो, धार्मिक।

दीनदारी-सं०स्त्री० [श्र०+फ़ा०] धर्म की श्राज्ञाश्रों के अनुसार श्राचरण, धर्म्माचरण।

दीनदुनी-सं०स्त्री० [श्र० दीन+दुनिया] लोक-परलोक।

दीनबंधु, दीनबंधू, दीननबंधू-सं०पु० [सं० दीनबंधु] १ ईश्वर का एक नाम। उ०—१ राज के विहीन सत्य सिंधु तें रह्यो। भाज के श्रधीन **दीनबंधु** के भयो।—ऊ.का.

उ०—२ **दीननबंधू** हुय दीनन दुख दीन्हो।—ऊ.का.

२ गरीब श्रौर दुखियों का सहायक. ३ प्याज।

दीनादयाळ—देखो 'दीनदयाळु' (रू.भे.)

दीनानाथ-सं०पु० [सं० दीन+नाथ] १ ईश्वर का एक नाम. २ दीनों का स्वामी या रक्षक।

दीनार-सं०पु० [फा०] १ स्वर्ण-मुद्रा. २ सोने या चांदी का बना एक प्राचीन सिक्का। उ०—बादसाह फरमाई सो हजार **दीनार** उणनूं मिळिया।—नी.प्र.

दीनोड़ौ, दीनोडौ, दीनौ—देखो 'दीन्हौ' (रू.भे.)

उ०—१ ताहरां नाई नूं मिळियो। नाई नूं घणी भोळावण **दीनी**।

—नैणसी

उ०—२ लारै बाळद रो डेरो लीनोड़ो। दोळो दाळद रो घेरो **दीनोड़ो**। जूंवां लीखां रा जमियोड़ा जाळा। नीचा नमियोड़ा कड़-कोड़ा काळा।—ऊ.का.

उ०—३ रावळो पीसणो टेपरिया भांबी रै श्रठै **दीनोड़ो** हो सो श्राटो लावण नै गयो।—रातवासो

उ०—४ जका तो कयो न कीनो हर करड़ो ही उतर **दीनो**।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

(स्त्री० दीनी, दीनोड़ी. दीनोडी)

दीन्ह, दीन्हउ, दीन्होड़ौ, दीन्हौ-भू०का०कृ०(स्त्री० दीन्ही, दीन्होड़ी) दिया हुश्रा, प्रदत्त। उ०—१ दादू माया मांहै काढ़ कर फिर माया मैं **दीन्ह**। दोऊ जन समझै नहीं, एको काज न कीन्ह।—दादू वांणी

उ०—२ अंऊकार **दीन्हउ** न कीयो श्रादरि, पहलइ नेत तिण छाया पाप। दीठी सती श्रावती दुवारइ, बइठउ हुए श्रपूठउ बाप।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ राजा त्यां नूं एक मंसापूरण जड़ी **दीन्ही**।

—सिंघासण बत्तीसी

उ०—४ दादू सुमिरण सहज का, **दीन्हा** श्राप श्रनंत। श्ररस परस उस एक सौं, खेलै सदा बसंत।—दादू वांणी

उ०—५ तहां दमनी वात संभाळ कह्यो तैं भूंडी कीन्हीं, घर रो भेद **दीन्हो**।—पचदंडी री वारता

रू०भे०—दीध, दीधोड़ो, दीधो, दीन, दीनउ, दीनोड़ो, दीनोडो, दीनो।

दीपंतौ-वि० [सं० दीप्त] चमकता हुश्रा, दीप्तिमान्, प्रकाशित।

दीप-सं०पु० [सं० दीप] १ दीपक (ह.नां.) उ०—१ पेखो वर में पवन सूं, बचै **दीप** दुतिवंत। दीप हूंत दरसंत, घर मैं उजवाळो घणो।

—बां.दा.

उ०—२ श्रोप **दीप** श्रारतो रूप देखै राय पुत्रिय। जिसो रांम पुर जनक दरसि श्रभिरांम श्रद्वितिय।—रा.रू.

रू०भे०—दीव, दीवउ।

२ इन्द्र (ना.डि.को.) ३ दस मात्राश्रों का एक छंद जिसके अन्त में तीन लघु फिर एक गुरु श्रौर फिर एक लघु होता है. ४ लखपत

पिंगळ के अनुसार एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तीन गुरु एक लघु फिर तीन गुरु, एक लघु तथा अंत में गुरु लघु से कुल १७ मात्राएं होती हैं. ५ छप्पय छंद का ६८ वां भेद जिसमें तीन गुरु और १४६ लघु से १४९ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। (र.ज.प्र.)

[सं० द्वीप] ६ देश, प्रदेश। उ०—सड़ सड़ वाहि म कंवड़ी, रांगां देह म चूरि। विहुं दीवां विचि मारुइ, मो-थी केती दूरि।—ढो.मा.

७ देखो 'द्वीप' (रू.भे.) उ०—पर मंडळ पर दीप में, हद घर घर कथ होत। कीरतवर जेहो कुंवर, जाड़ेचां घर जोत।—बां.दा.

दीपक-स०पु० [सं० दीपकः] १ चिराग, दीया, दीप।

उ०—१ करै कमाई कोय, दीपक ज्यूं सांमी दियैं। जीमण सीरा जोय, मुलमुल पैरण मोतिया।—रायसिंह सांदू

उ०—२ जड़ियो तिलक जवाहरां, जांणौ दीपक जोत। वालम चोत पतंग विधि, हित सूं आसक होत।—बां दा.

पर्याय०—उजासी, उतमदसा, उदोत, कजळअंक, कळघन, ग्रहमिण, ताईतिमर, ताईपतंग, दीप, दुत, नेहांनेह, प्रदीप, सारंग, सिखजनम, सिखाजोत।

रू०भे०—दिपह, दीपक्क, दीपग, दीवक, दीवक।

अल्पा०—दिग्रो, दियो, दिवलो, दीग्रो, दीपक्को, दीयौ, दीवटिउ, दीवटिग्रो, दीवटियउ, दीवटियो, दीवटीउ, दीवटीग्रो, दीवटीयउ, दीवटीयो, दीवटो, दीवडलो, दीवडु, दीवड़ू, दीवडो, दीवलउ, दीवलियो, दीवलो, दीवी, दीवो।

२ पीला॰ (डि.को.) ३ एक अलंकार विशेष जिसमें उपमेय और उपमान की एक ही धर्मवाची क्रिया हो. ४ संगीत में छः रागों में से एक राग जो हनुमत के मत से दूसरा है और इसके गाने का समय ग्रीष्म ऋतु का मध्यान्ह है। इसका सरगम यह है—स र ग म प ध नी सा. ५ एक ताल का नाम (संगीत) ६ दश मात्राओं का एक मात्रिक छंद विशेष (र.ज.प्र.) ७ वेलिया सांणोर गीत के मिलते-जुलते लक्षणों का पांच चरण का एक गीत (छंद) विशेष जिसके पांचवें चरण में १५ मात्राएं होती हैं (र.ज.प्र.)

८ डिंगल के वेलिया सांणोर गीत का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले मे ६० लघु दो गुरु सहित ६४ मात्रायें होती हैं तथा शेष के द्वालों में ६० लघु एक गुरु कुल ६२ मात्राएं होती हैं (पि.प्र.)

९ केसर (ह.नां.)

वि०—१ पाचन अग्नि को तेज करने वाला. २ उजाला फैलाने वाला, दीप्तिकारक।

दीपकमाळा-सं०स्त्री० [सं० दीपकमाला] १ दीप-पंक्ति. २ दीपक अलंकार का एक भेद. ३ प्रत्येक चरण में भगण, मगण, जगण और गुरु युक्त एक वर्णवृत्त।

दीपकसुत-सं०पु० [सं०] काजल, कज्जल (डि.को.)

दीपकामाळ-सं०स्त्री० [सं० दीपमालिका] १ दीपावली. २ दीपों की पंक्ति।

दीपकाळ-सं०पु० [सं० दीपः+काल] दीपक जलाने का समय, सन्ध्या समय।

दीपक्क—देखो 'दीपक' (रू.भे.) उ०—इसे नासिका सग दीपक्क एरी, कळी चंप जांणे लळी लंप केरी। नवे नेह दीरघ्घ पंकज्ज नेत्रे, सुभा मीन खंजन म्रिग्गी सवेत्रे।—ना.द.

दीपक्को—देखो 'दीपक' (अल्पा.; रू.भे.) उ०—तरुणी पुणोवि गहियं परीयच्चय भितरेण पिउ दिट्ठ। कारण कवण सयांणी दीपक्को धूणए सीसं।—ढो.मा.

दीपग—देखो 'दीपक' (रू भे.) उ०—भूप जड़ावै मुगट मझ, रोहण गिर उतपत्त। निस दीपग प्रतिनिध रतन, प्रभा अपूरव भत्त।—बां.दा.

दीपगर-सं०पु० [सं० दीपगृह ?] १ दीपकों का समूह।

उ०—निगरभर तरुवर सघण छांह निसि, पुहुपित अति दीपगर पळास। मौरित अंब रीझ रोमंचित, हरखि विकास कमळ क्रिन हास।—वेलि.

२ दीपक रखने का स्थान, दीपगृह।

दीपचदी-सं०स्त्री० [सं० दीप+चंद्र] १ १४ मात्राओं की ताल।

दीपण—देखो 'दीपन' (रू.भे.)

दीपणो-वि० [सं० दीपी] (स्त्री० दीपणी) १ चमकने वाला, जगमगाने वाला, प्रकाशित होने वाला. २ रोशन होने वाला, प्रकाशित होने वाला. ३ देदीप्यमान होने वाला. ४ प्रज्वलित होने वाला.

५ शोभित होने वाला। उ०—दातार है मर देग्रणो, जस लेग्रणो घण जांण। देसां सिरोमणि-दीपणो, जुध जीपणो जमरांण।—ल.पिं.

६ लावण्य युक्त होने वाला. ७ प्रसिद्ध होने वाला. ८ प्रकट होने वाला।

दीपणो, दीपबो-क्रि०अ० [सं० दीपी] १ चमकना, जगमगाना, प्रकाशित होना। उ०—१ प्रगट कहे 'जैमाल' 'पतो', अचळ अचळ कर अंग। कायर रेहण कढ़ गयां, दीपै कनक दुरंग।—बां.दा.

उ०—२ दौलति परजि सहू एम आसीस दै, जीपिया जंग तिम वळै जीपो। दूथियां पाळ सु दयाळ 'दायाळ' हर, दीपते सूर जिम सदा दीपो।—ध.व.ग्रं.

२ रोशन होना, प्रकाशित होना। उ०—दहदिसि दीवा दीपया, चिहुं दिसि मंगळ च्यारि। कांमिनी 'जी जी' जंपती, जगदंबा-जयकार।

—मा.कां.प्र.

३ देदीप्यमान होना। उ०—पर छती जगि रिण जीपियो। दससहस रच्छिक दीपियो।—सू.प्र.

४ प्रज्वलित होना। उ०—जे जळसीकर ते उद्वेग करइ, जे सीतळोपचार इंग विकारइ, इणि परि प्रज्वलित स्नेह पटल विरहानळ दीपतेइ।—वं.स.

५ शोभित होना, शोभा देना। उ०—आठ गुरु बारह लघू होय। दीपै जिण अंते गुरु दोय।—र.ज.प्र.

उ०—२ गढ़ नरवर अति दीपता, ऊंचा महल अवास। घरि कांमिण

हरणाखियां, किसउ दिसावर तास ।—ढो.मा.

६ लावण्ययुक्त होना, नूर चढ़ना । उ०—दूध दही खाया दूजां रा, दीपी देहड़ली । मरियां सूं सूनी मिळ जासी, खूनी खेहड़ली ।—ऊ.का.

७ प्रसिद्ध होना, ख्याति प्राप्त करना, चमकना ।

उ०—प्रथीमाल परमांण वधे चहुवांण तणौ बळ । तेण वंस 'बल्लाल' दांन दीपियौ दसावळ ।—नैणसी

८ प्रकट होना, प्रकटना । उ०—दिली लखै दिगदाह, विगत हित साह विचारी । खर भूकै रव खैंग, स्वांन कूकै सुखहारी । चडै स्वास सज्जणां, नास विपरीत उपज्जै । नह राजै दीवांण, सबद बाजै न गरज्जै । वड चौक लोक संकत रहै, खांति रहै नह खट्टणौं । दीपै न नूर दरगाह मैं, आगम साह पलट्टणौं ।—रा.रू.

दीपणहार, हारौ (हारी), दीपणियौ—वि० ।

दिपवाड़णौ, दिपवाड़बौ, दिपवाणौ, दिपवावौ, दिपवावणौ, दिपवावबौ —प्रे०रू० ।

दिपाड़णौ, दिपाड़बौ, दिपाणौ, दिपावौ, दिपावणौ, दिपावबौ, दीपाड़णौ, दीपाड़बौ, दीपाणौ, दीपावौ, दीपावणौ, दीपावबौ—क्रि०स० ।

दीपिओड़ौ, दीपियोड़ौ, दीप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दीपीजणौ, दीपीजबौ—भाव वा० ।

दिपणौ, दिपबौ—रू०भे० ।

दीपत–वि० [सं० दीप्तिकर] १ रमणीय, सुन्दर, अच्छा (ह.नां.) २ देखो 'दीप्ति' (रू.भे.)

दीपति, दीपती—देखो 'दीप्ति' (रू.भे.) (नां.मा.)

उ०—वित ए आसोज मिळै नभि वादळ । प्रथी पंक जळि गुडळपण । जिम सतगुरु कळि कळुख तणा जण । दीपति ग्यांन प्रगटै दहण ।—वेलि.

दीपतौ–वि० [सं० दीप्ति] (स्त्री० दीपती) १ चमकता हुआ. २ कांतिमान्, दीप्तिमान, देदीप्यमान. ३ प्रकाशित, रोशन. ४ प्रज्वलित. ५ शोभित । उ०—देवां मांहे दीपतौ हो, तुं परता सुद्ध पास । सोहै तारां स्रेणि में हो, एकज चंद आकास ।—ध.व.ग्रं.

६ प्रसिद्ध.

दीपदध–सं०स्त्री० [सं० उदधिदीप] जमीन (अ.मा.)

दीपदांन–सं०पु० [सं० दीपः+दान] १ दीप रखने का स्थान, दीपगृह. २ लकड़ी या धातु का बना उपकरण जिस पर दीपक रखा जाय अथवा जिसके ऊपर की कटोरी में दीपक जलाया जाय ।

३ किसी देवता के सामने दीपक जलाने का कार्य. ४ राधा-दामोदर के निमित्त कार्तिक में बहुत से दीप जलाने का कृत्य. ५ कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिवस गृह-द्वार पर भय निमित्त रखा हुआ दीपक. ६ मृत्य व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात आने वाली प्रथम दीपावली को सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व जलाशय (कूप, तालाब आदि) पर की जाने वाली दीपपंक्ति (श्रीमाली ब्राह्मण)

दीपदांनी–सं०स्त्री० [सं० दीपः+दान+रा०प्र०ई या दीपः+धानी] वत्ती, घी आदि दीपक जलाने की तथा पूजा की सामग्री रखने की डिबिया ।

दीपधुज, दीपध्वज–सं०पु० [सं० द्वीपध्वज] कज्जल, काजल (अ.मा.)

दीपन–सं०पु० [सं०] १ प्रकाशित या प्रज्वलित करने का कार्य. २ भूख को उभारने की क्रिया. ३ केसर (नां.मा.)

वि०—जठराग्निवर्द्धक ।

दीपनगण–सं०पु० [सं०] जठराग्नि को तीव्र करने वाले पदार्थ ।

दीपनभ–सं०पु० [सं०] तारा (अ.मा.)

दीपनी–सं०स्त्री० [सं०] १ मेथी. २ अजवाइन ।

दीपमाळ, दीपमाळका, दीपमाळा, दीपमाळिका, दीपमाळी–सं०स्त्री [सं० दीपमाला, दीपमालिका] १ दीपों की पंक्ति । उ०—छटा विसाळ साळ तैं छबी घटा छपै नहीं । दिवाल पै सुवाळ दीपमाळ सी दिपै नहीं ।—ऊ.का.

२ दीपावली, दीवाळी (ह.नां.) उ०—भाला वह भळहळै, जेण वेळा जुध जीपक । जांणै घर घर जगै, दीपमाळा मझि दीपक । —सू.प्र.

दीपवती–सं०स्त्री० [सं० द्वीपवती] १ पृथ्वी. २ नदी (अ.मा.)

दीपवरतिक–सं०पु० [सं० दीपवर्तिक] दीपक धारन करने वाला ।

उ०—अंगरक्षक वीरमहर धनुरद्धर खड्गधर दीपवरतिक भोजिक सूरच काय चक्षक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य विखभ वैद्य मांत्रिक, तांत्रिक । —व.स.

दीपसुत–सं०पु० [सं०] कज्जल, काजल (अ.मा.)

दीपसुरलोक–सं०पु० [सं० सुरलोकदीपः] इन्द्र (ना.डि.को.)

दीपाऊ–वि० [सं० दीपी] १ देदीप्यमान करने वाला, चमकाने वाला. २ सुंदर, मनोहर ।

दीपाड़णौ, दीपाड़बौ—देखो 'दीपाणौ, दीपावौ' (रू.भे.)

दीपाड़णहार, हारौ (हारी), दीपाड़णियौ—वि० ।

दीपाड़िओड़ौ, दीपाड़ियोड़ौ, दीपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दीपाड़ीजणौ, दीपाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

दिपणौ, दिपबौ, दीपणौ, दीपबौ—अक०रू० ।

दीपाड़िओड़ौ—देखो 'दिपायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दीपाड़ियोड़ी)

दीपाणौ, दीपावौ—देखो 'दिपाणौ, दिपावौ' (रू.भे.)

उ०—दुस्ट व्याधि मुझ पति तणी, जो किम हीए जाय । तो अपजस सगळौ टळै, जिन सासन दीपाय ।—स्रीपाळ रास

दीपाणहार, हारौ (हारी), दीपाणियौ—वि० ।

दीपायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दीपाईजणौ, दीपाईजबौ—कर्म वा० ।

दिपणौ, दिपबौ, दीपणौ, दीपबौ—अक०रू० ।

दीपायण, दीपायन—देखो 'द्वैपायन' (रू.भे.) उ०—तीजौ मदिरापांन व्यसन तजि, चित्त धरी वळि चाहि । दीपायन रिखि दूहव्यौ जादवैं, द्वारिका नौ थयौ दाह ।—ध.व.ग्रं.

दीपायोड़ौ—देखो 'दिपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दीपायोड़ी)

दीपारती-सं०स्त्री०—दीपकों द्वारा की जाने वाली परछन, दीपक आरती। उ०—अमें चार दीपारती जोत भासै, प्रभा सूर वारंत सोभा प्रकासै।—रा.रू.

दीपावणौ, दीपाववौ—देखो 'दिपाणौ, दिपावौ' (रू.भे.)
उ०—१ कुण उवह तागै ऊमहै, प्रथम दीपावै पांवडे।—रा.रू.
उ०—२ दीपाविया मुदन पर दीपै, रायजादे वट राजां। भारमलोत तिके नव दै भड़, है चाडै जेहाजां।—नैणसी
दीपावणहार, हारौ (हारी), दीपावणियौ—वि०।
दीपाविग्रोड़ौ, दीपावियोड़ौ, दीपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दीपावीजणौ, दीपावीजवौ—कर्म वा०।
दिपणौ, दिपवौ, दीपणौ, दीपवौ—अक०रू०।

दीपावती-सं०स्त्री० [सं०] १ दीपक और सरस्वती के योग से उत्पन्न एक रागिनी। २ दीपावली [सं० द्वीपवती] ३ वह जिस पर दीप स्थित हों। उ०—एकी रामरौ दास जोरै अपारै। धरा सात दीपावती रेस धारै।
—सू.प्र.

दीपावळि, दीपावळी-सं०स्त्री० [सं० दीप+अवलि] १ दीपों की पंक्ति, दीप-श्रेणी. २ दीवाली त्योहार।

दीपावियोड़ौ—देखो 'दिपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दीपावियोड़ी)

दीपिका-सं०स्त्री० [सं०] १ हिंडोल राग की पत्नी मानी जाने वाली एक रागिनी जो प्रदोषकाल में गाई जाती है. २ छोटा दीपक।
वि०—उजाला करने वाली, प्रकाश फैलाने वाली।

दीपित-वि० [सं०] १ चमकता हुआ, प्रकाशित, दीप्त. २ उत्तेजित।

दीपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, जगमगाया हुआ, प्रकाशित. २ रोशन हुवा हुआ, प्रकाशित. ३ देदीप्यमान हुवा हुआ. ४ प्रज्वलित हुवा हुआ. ५ शोभा दिया हुआ, शोभित. ६ लावण्य-युक्त हुवा हुआ, नूर चढ़ा हुआ. ७ ख्याति प्राप्त किया हुआ, प्रसिद्ध हुवा हुआ, चमका हुआ. ८ प्रकट हुवा हुआ, प्रकट हुआ।
(स्त्री० दीपियोड़ी)

दीपोत्सव-सं०पु० [सं०] दीवाली। उ०—दिन दीपोत्सव केरडा, करि-वरि पासा लेय। माधव सिउं सारे रमइ, मांणिक सत मूकेय।
—मा.कां प्र.

दीप्त-वि० [सं०] १ चमकता हुआ, जगमगाता हुआ, प्रकाशित. २ जलता हुआ, प्रज्वलित।

दीप्ताग्नि-वि० [सं०] १ जिसकी पाचन शक्ति बहुत प्रबल हो. २ तेज भूख वाला, भूखा।

दीप्ति-सं०स्त्री० [सं०] १ आभा, चमक. २ उजाला, प्रकाश, रोशनी. ३ कांति, छवि, शोभा. ४ किरण, रश्मि।
रू०भे०—दीपति, दीपती।

दीप्तिमांन-वि० [सं० दीप्तिवान्] १ कांतियुक्त, दीप्तियुक्त. २ प्रकाशित।

दीप्य-वि० [सं०] जो जलाया जाने को हो।

दीवक—देखो दीपक' (रू.भे.)

दीवड़ी—देखो 'दीवड़ी' (रू.भे.)

दीवेल-सं०पु० [सं० दीप+तैल] दीपक में जलाया जाने वाला तेल।
रू०भे०—दीवेल।

दीम, दीमक-सं०स्त्री० [फा०] चींटी की तरह का एक छोटा सफेद कीड़ा जो लकड़ी, कागज आदि में लग कर उसे खोखला और नष्ट कर देता है, वल्मीक (डि.को.)

दीयट—देखो 'दीवट' (रू.भे.)

दीयाळीएल(हेल)—देखो 'दीवाळीएल (हेल) (रू.भे.)

दीयावळि-सं०स्त्री० [सं० दिशा+आलुच्] दिशाभ्रम।

दीयावळौ-सं०पु० [सं० दिशा+आलुच्] दिशाभ्रम, दिशाओं को भूल जाना।
वि० (स्त्री० दीयावळी) जिसे दिशाभ्रम हो गया हो।

दीयासळाई—देखो 'दियासळाई' (रू.भे.)

दीयासूळौ—देखो 'दीयावळौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दीयासूळी)

दीयौ—देखो 'दीपक' (रू.भे.) उ०—दीयौ सूं निज कंवर देखियौ, हिवै लियौ हुलराई नै। मां वाजण नै बळियौ मूंडो, श्री अळियौ सुन जाई नै।—ऊ.का.

दीयोड़ौ—देखो 'दियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दीयोड़ी)

दीरघ, दीरघ-वि० [सं० दीर्घ] (स्त्री० दीरघा) १ बड़ा, विशाल।
उ०—नमो दुजरांम दमोदर देव। नमो गुरु द्रोण करण गंगेव। नमो वप वांमण दीरघ वीख। मिळंग पुरंदर भांजण भीख।—ह.र.
२ महान्, बड़ा। उ०—निराकार निरलेप निगम निरदोस निरंजन, दीरघ दीनदयाळ, देव दुख-दाळद भंजन।—ऊ.का.
३ लम्बा. ४ चिर. लम्बा। उ०—अति वधै सीत दीरघ आव। सुजि हुवै जोग दारण सभाव। उच्छाह सदा रातै अनंत। कांमणि जिम भुगतै भूमिकंत।—सू.प्र.
५ स्थूल, भारी, मोटा। उ०—नहीं तो नार पुरख सनेह नहीं तो दीरघ सुच्छम देह। नही तो वित्त नही तो वांण, नही तो खित्त नहीं तो खांण।—ह.र.
सं०पु०—१ चिरकाल, लम्बा समय। उ०—अधम ! न जा तीरथ अवर, तु जा सुरसरि तीर। दीरघ लहसी तीन द्रग, सुजळ पखाळ सरीर।—बां.दा.
२ वह वर्ण जिसका उच्चारण खींच कर हो, द्विमात्र या गुरु वर्ण, ह्रस्व का उलटा। उ०—किवळी पिच्छू कहै लहू लघुअंक लहावै। गिरण छंद वस गुरू कवी लघु चार कहावै। बीजा दीरघ वरण जये गुरु आदि संजोगी। विसरग अग सिर बिंदु भरण तारख सौं गोगी।
—र.रू.

रू०भे०—दीरघ्घ, दीह।

दीरघकरण-सं०पु० [सं० दीर्घ+कर्ण] गधा, खर।
(मि० लंबकरण)
वि०—जिसके कान बड़े-बड़े हों।

दीरघकाय-वि० [सं० दीर्घकाय] जिसका डीलडौल बड़ा हो, लम्बे-चौड़े शरीर का।

दीरघग्रीव-सं०पु० [सं० दीर्घग्रीव] ऊँट (डि.को.)

दीरघड़ौ—देखो 'दीरघ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—टप टप टपकं नैण दीरघड़ा, हिवड़ौ भर भर आवै।—लो.गी.
(स्त्री० दीरघड़ी)

दीरघ-छ्ळ-सं०पु० [सं० दीर्घ+रा० छ्ळपंजा] केसरी सिंह, शेर (ना.डि.को.)

दीरघजग्य—देखो 'दीरघयग्य' (रू.भे.)

दीरघजीवी-वि० [सं० दीर्घजीविन्] बहुत काल तक जीवित रहने वाला।

दीरघतपौ-वि० [सं० दीर्घतपस्] जिसने बहुत दिनों तक तपस्या की हो।

दीरघतमा-सं०पु० [सं० दीर्घतमा] महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो उतथ्य के पुत्र थे।

दीरघदरसी-वि० [सं० दीर्घदर्शी] १ दूरदर्शी. २ विचारवान्, बुद्धिमान।
सं०पु०—१ गिद्ध. २ भालू।

दीरघनिस्वास-सं०पु० [सं० दीर्घनिश्वास] दुःख या शोक के आवेग के कारण ली जाने वाली लम्बी सांस।

दीरघपत्र, दीरघपत्रक-सं०पु० [सं० दीर्घपत्रक] प्याज (डि.को.)

दीरघपत्रिका-सं०स्त्री० [सं० दीर्घपत्रिका] १ सफेद वच. २ शालपर्णी।

दीरघपिस्ट, दीरघपीठ-सं०स्त्री [सं० दीर्घपृष्ठ] १ सर्प, सांप, नाग (अ.मा., ह.नां.) २ हाथी, गज।

दीरघफळ-सं०पु० [सं० दीर्घफल] अमलतास।

दीरघबाहु-सं०पु० [सं० दीर्घबाहु] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम (महाभारत)
वि०—जिसकी भुजाएं लम्बी हों, आजुनु बाहु।

दीरघमारुत-सं०पु० [सं० दीर्घमारुत] हाथी।

दीरघमुख-सं०पु० [स० दीर्घमुख] एक यक्ष का नाम।

दीरघमूळ-सं०पु० [सं० दीर्घमूल] १ एक प्रकार की पीली घास।
२ एक प्रकार की बेल।

दीरघयग्य-वि० [सं० दीर्घ यज्ञ] जिसने बहुत काल तक यज्ञ किया हो।
रू०भे०—दीरघजग्य।

दीरघरसन-सं०पु० [सं० दीर्घरसन] सर्प, सांप (डि.को.)

दीरघरोमौ-सं०पु० [सं० दीर्घरोमन] १ शिव का एक अनुचर।
२ भालू।

दीरघवाह-वि०—देखो 'दीरघबाहु' (रू.भे.) उ०—उदर सुमित्र लछण जोपण अरि, धरै सेस अवतार धुरंधर। वियौ सत्रघण सुजस सवायक, दीरघवाह वडौ वरदायक।—र.रू.

दीरघसूत्रता-सं०स्त्री० [सं० दीर्घसूत्रता] हर कार्य में विलंब करने की आदत, देर लगाने का स्वभाव।

दीरघसूत्री-वि० [सं० दीर्घसूत्रिन्] प्रत्येक कार्य में विलम्ब करने वाला।

दीरघस्थणी, दीरघस्थनी-वि० [सं० दीर्घस्तनी] बड़े स्तनों वाली।

दीरघस्वर-सं०पु० [सं० दीर्घस्वर] द्विमात्रिक स्वर।

दीरघा-वि०स्त्री० [सं० दीर्घा] बड़े आकार वाली। उ०—दीरघा लघु वपु द्रढ़ा, सवेही रूप विरूपा, वकळा सकळा व्रजा, उपावण आप आपुपा।—देवि.

दीरघायु-वि० [सं० दीर्घायु] लम्बी आयु वाला, चिरंजीवी।
रू०भे०—दीहाउ, दीहाऊ।

दीरघि-सं०स्त्री० [सं० दीर्घ] लम्बाई। उ०—गंगा तडा तडि अच्छइ ओयणु। वित्थरि दीरघि बारह जोयणु।—प.पं.च.

दीरघिका-सं०स्त्री० [सं० दीर्घिका] १ वापिका। उ०—दमयंती नि सदनि आव्या, दीरघिका दीठी भरी। विकज-वारिज-वन देखी ऊतरचा ते अणिसरी।—नळाख्यांन
२ झील।

दीरध्घ—देखो 'दीरघ' (रू.भे.)

दीव-सं०पु० [सं० दिवम्=आकाश] १ सूर्य। उ०—जे अंतरजांमी वार नमांमी स्वांमी जग साधार। जोड़ी चिरजीवं पतनी पीयं, सुज सस दीवं सार।—र.ज.प्र.
२ देखो 'दीप' (रू.भे.) ३ देखो 'द्वीप' (रू.भे.)

दीवउ—देखो 'दीप' (रू.भे.) उ०—घर नीगुल दीवउ सजळ, छाजइ पुणग न माइ। मारू सूती नींद्र भरि, साल्ह जगाई आइ।—ढो.मा.

दीवक—देखो 'दीपक' (रू.भे.) उ०—रांमदेव राठोड़ सुत, हुवा वीस जय हेतु। वय सव छोटौ गुण वडौ, कुळ दीवक सतकेतु।—वं.भा.

दीवड़की, दीवड़ली—देखो 'दीवड़ी' (अल्पा रू.भे.)

दीवड़लौ—देखो 'दीपक' (अल्पा रू.भे.)

दीवड़ी-सं०स्त्री० [सं० दृतिः] १ मोटे कपड़े (कैनवास) या बकरे की खाल से बनाई हुई पानी रखने की थैली। उ०—छोटी दीवड़ियां काखां तळ छालै। मोटी लोटड़ियां दाखां जळ मालै।—ऊ.का.
रू०भे०—दीवड़ी, दीवडी।
अल्पा०—दीवड़की, दीवड़ली।
मह०—दीवड़, दीवड़ौ, दीवड, दीवड्ड, दीवड्डू, दीवडौ।
२ एक प्रकार का कटाह ? उ०—राव मालदे रै वास। लवेरौ पटै। लवेरै राजथांन कियौ। लवेरै कढ़ाई दीवडी, भूंजाई वडौ पळौ।—नैणसी

दीवड़ौ—देखो 'दीवड़ी' (मह., रू.भे.)

दीवट-सं०स्त्री० [सं० दीपस्थ, प्रा० दीवट्ठ] लकड़ी, धातु आदि का बना डंडे के आकार का आधार जिस पर दीपक रखा जाता है।
रू०भे०—दीअट, दीयट।

दीवटिउ, दीवटिओ, दीवटियउ, दीवटियौ, दीवटीउ, दीवटीओ, दीवटीयउ, दीवटीयौ, दीवटौ-सं०पु० [सं० दीपवर्तिकः=प्रा०दीअवट्टिओ] १ दीपक थामने वाला, मशालची (उ.र.) उ०—१ सिव सांति

करइ वैस्वांनर कापडा पखाळइं, ब्रह्मा पुरोहित, नारायण दीवटिग्रो विस्वामित्र ग्राभरण घडावड ।—व.स.

उ०—२ महा भडारी रसोई तलार, राजवैद्य गजवैद्य ज सार । दीवटीग्रा सुहवोल जेह, उचित वोला बइठा छइ तेह ।

—नळ दवदंती रास

उ०—३ पहुरायत पूठि थया, त्रहीग्रा वळी तलार । दीवटीया दह दिसि रह्या, पालीयात नही पार ।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—दीवलउ, दीवलियौ ।

२ देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दीवड—देखो 'दीवड़ी' (मह., रू.भे.)

दीवडलो—देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—म्हारी काळी माता जोगी दीवडलो घड ल्याय, बीनांणी लाव सारै कलकत्ते में बीरो चांगु जे ।—लो.गी.

दीवडी—देखो 'दीवड़ी' (रू.भे.)

दीवडु, दीवडू—१ देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—तेल विहूणउ दीवडू, मूळ विहूणी वेलि । पाणी विहूणी दहू री, तिम होई ति महेलि ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'दीवडी' (मह., रू.भे.)

दीवडो—१ देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—दाखि न राखुं दीवडा ? कां दहइ मुझ सरीर ? पवनि करी परहो कहूं, ऊपरि नांमूं नीर ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'दीवडी' (मह., रू.भे.)

दीवळ—सं०स्त्री० [देश०] दीमक (शेखावाटी)

दीवलउ—१ देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—सा वाळा ग्रो चितवड, लिण खिण रयणि विहाइ । तिण हर परट्ठ्यउ, ज्यूं बीवलउ वुझाइ ।—ढो.मा.

२ देखो 'दीवटियौ' (रू.भे.)

दीवलियौ—१ देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—थे छो ग्रो बाईसा ! दीवलिया-री लोर, कोई, पाबूजी कहीजै ज्यांरो चांनणो ।—लो.गी.

२ देखो 'दीवटियौ' (रू.भे.)

दीवली—देखो 'दीवी' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दीवलो—देखो 'दीपक' (ग्रल्पा., रू.भे.) १ उ०—सखी संजोवै दीवला, पूजै लक्ष्मी मात । रळमिळ पौढ़ै कांमणी, ले प्रीतम न साथ ।

—लो.गी.

उ०—२ म्हारो कंवर ज कुळ रो दीवलो, कँवरांणी दीवलै री लोय, ग्राज म्हारी ग्रमली फळ रही ।—लो.गी.

दीवांण—सं०पु० [फ़ा० दीवान] १ राजसभा, दरबार ।

उ०—जीवत ग्रित हुइ साहिजहां, दिल्लीवै सुरितांण । राति दीह ग्रंदर रहै, नह मंडै दीवांण ।—वचनिका

क्रि०प्र०—करणौ, जुड़णौ, होणौ ।

२ वह स्थान जहा बादशाह या राजा का दरबार जुड़ता हो ।

यौ०—दीवांण-ग्राम, दीवांण-खास ।

३ राज्य का प्रबन्ध करने वाला, मंत्री, वजीर, प्रधान ।

उ०—एक दिन दोय सिपाही ग्राय कर दहली में दीवांण मुजरो कियो ।—दूलची जोइयै री वारता

४ स्वामी, ग्रधिपति । उ०—१ पटसी जद कांम दोसी पाळी, दाटघाळी ग्रमुरां भुजडांण । वा ग्रावै ऊपर इकवाळी, देसणोक वाळी दीवांण ।—ग्रज्ञात

उ०—२ भाळियौ प्रभाते रथ चक्रवाक रो (क), पाप खंड प्रांण रो(क) पावियौ प्रचार । तंतसार पांण रा प्रयांण रो मेटियौ ताव, दूदां ग दीवांण रो (क) भेटियौ दीदार ।—साहिबो सुरतांणियो

५ शिव, महादेव । उ०—१ दीवांण तणउ चोज देखंतां, किसा मनुख वाखांण करइं । परगह इतउ इतउ दीपै परि, सीह ग्रजा वे साथ चरइं ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वियउ प्रगट प्रभु रूप कहंतां, वदता जे पहिली वाखांण । ग्रायउ वोल तियांरउ ऊपर, दूल्हउ जिम ग्रायउ दीवांण ।

—महादेव पारवती री वेलि

६ उदयपुर के महाराणाग्रों की उपाधि जो ग्रपने ग्राप को श्री इकलिंग भगवान का दीवान (मंत्री) समझ कर राज्य करते थे ।

उ०—१ पटकूं मूछां पांण, कै पटकूं निज तन करां । दीजै लिख दीवांण, इण दो महली वात इक ।—प्रिथीराज राठौड़

उ०—२ ए ग्रागम कथन जेसाहूर ग्राखै, पोह धू जांणै मेर प्रमांण । मोनै ग्रस रीझै मोकळियौ, 'देसू ग्रस वदळो दीवांण ।—बां.दा.

७ जोधपुर राज्यान्तर्गत बिलाड़े में ग्राईमाता का सेवक (प्रधान)

८ मंदिर । उ०—देवी रै दीवांण, हुव सह नर भेळा हुग्रा । इंद्र तणै एहलांण, जाजम बैठो 'जींदरो' ।—पा.प्र.

९ ईस्वर, परमात्मा । उ०—वडा वडेरा वड वडा भी वडा दीवांण ।

—केसोदास गाडण

वि०—१ मस्त । उ०—बादसाह इण कजियै में हैरांन हुवौ । झांखो सूं बैठो देखै छै । सो नीचै एक मस्तांनो ग्रायो । तरै बादसाह फरमाई इण दीवांण नूं लावो तिण सूं सलाह करूं । दीवांणो ग्राइयो तरै बादसाह पूछी ।—नी.प्र.

२ वीर, बहादुर. ३ पागल. ४ देखो 'दइवांण' (रू.भे.)

रू०भे०—दइबांण, दईवांण, दइवांण, दईवांण, दीवांण, दीवांन ।

दीवांण-ग्राम—सं०पु०यौ० [फ़ा० दीवान+ग्र० ग्राम] १ वह स्थान जहां ग्राम दरबार लगता हो. २ ऐसा दरबार जिसमें राजा या बादशाह से सब लोग मिल सकते हों, ग्राम दरबार ।

रू०भे०—दीवांनग्रांम ।

दीवांणखांनो—सं०पु० [फ़ा० दीवान+खान:] बैठक का कमरा या स्थान जो घर के बाहरी भाग में होता है । वैभवशाली ग्रौर प्रतिष्ठित लोग ग्रपने घर के इसी स्थान पर ग्रन्य लोगों से मिलते हैं ।

उ०—गंजण रा केहरी नमो झुंझार गुर, मांण तज जगत सोह हुकम

मांनै। पाड़ियौ तिकौ पतसाह री पाखती, खास सुरतांण दीवांणखांनै।
—अमरसिंह राठौड़ री वात

रू०भे०—दवांनखांनौ।

दीवांणखालसौ–सं०पु० [फ़ा० दीवान+खालिस:] वह अधिकारी जिसके पास राजा या बादशाह की मुहर रहती है।

रू०भे०—दीवांन-खालसौ।

दीवांणखास–सं०पु० [फ़ा० दीवान+अ० खास] १ वह सभा जिसमें राजा या बादशाह अपने खास मंत्रियों और चुने हुए प्रधान लोगों के साथ बैठता है, खास दरबार. २ वह स्थान जहाँ खास दरबार होता हो।

रू०भे०—दीवांनखास।

दीवांणगिरी, दीवांणगी–सं०स्त्री० [फ़ा० दीवान+रा०प्र० गिरी या गी]
१ दीवान का कार्य।

क्रि०प्र०—करणी।

२ दीवान का पद। उ०—१ अरु सूरसिंघजी दीवांणगिरी रौ कांम महेसरी राठी मूंता किल्यांण केसोदासोत नूं हुवौ।—द.दा.

उ०—२ अरु कांम दीवांणगी रौ मुंहता वेंद ठाकुरसी नूं हुवौ। तथा गोठ आरोगण महाराज ठाकुरसी री हवेली पधारिया। सारी त्यारी दस्तूर मुजब हुई।—द.दा.

रू०भे०—दिवांणगी, दिवांणगिरी।

दीवांणियौ—देखो 'दीवांनौ' (अल्पा., रू.भे.)

दीवांणी–सं०स्त्री० [फ़ा० दीवानी] १ दीवान का कार्य।

क्रि०प्र०—करणी।

२ दीवान का पद. ३ वह न्यायालय जो सम्पत्ति सम्बन्धी स्वत्वों का निर्णय करे। व्यवहार सम्बन्धी न्यायालय।

रू०भे०—दिवांणी, दिवांनी।

४ देखो 'दीवांनी' (रू.भे.)

दीवांणौ—देखो 'दीवांनौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दीवांणी)

दीवांन—देखो 'दीवांण' (रू भे.) उ०—दादू बंदीवांन है, तूं बंदी छोड़ दीवांन। अब जन राखौ बंदि में, मीरां महरवांन।—दादू बांणी

दीवांनआंम—देखो 'दीवांणआंम' (रू.भे.)

दीवांनखांनौ—देखो 'दीवांणखांनौ' (रू.भे.)

दीवांनखालसौ—देखो 'दीवांणखालसौ' (रू.भे.)

दीवांनखास—देखो 'दीवांणखास' (रू.भे.)

दीवांनी–वि०स्त्री० [फ़ा० दीवान:] १ पगली, बावली, विक्षिप्ता।

रू०भे०—दिवांणी, दिवांनी।

२ देखो 'दिवांणी' (रू.भे.)

दीवांनौ–वि० [फ़ा० दीवान:] (स्त्री० दीवानी)-१ पागल, विक्षिप्त. २ उन्मत्त. ३ मस्त। उ०—दीवांनौ कही जिण निमित दैणौ कियौ थौ उण ही नूं जे देवौ।—नी.प्र.

रू०भे०—दिवांणौ, दीवांणौ।

अल्पा०—दीवांणियौ।

दीवाड़—देखो 'दीवाड' (रू.भे.)

दीवाझारी–सं०स्त्री० [देश०] जल पात्र। उ०—सोवन चौकी सोवटा, पासावळि नवि रंग। दीवाझारी गाळ मसूरी, उभउ सीसा अति चंग।—ढो.मा.

दीवाटड़ी–सं०स्त्री०—मिट्टी का दीप।

दीवाड–वि० [सं० दा] देने वाला, दातार। उ०—अवरां नइ दीजइ उदियारण, तइ ईसर तणइ नहीं काइ तोट। बहुनांमी दीवाड बहूळी, चढिया वींद दमांमै चोट।—महादेव पारवती री वेलि

रू०भे०—दीवाड।

दीवाधरी–वि० [सं० दीपधारिन् या दीपकधारिणी] दीपक थामने वाली, दीपक रखने वाली, दीपकधारिणी। उ०—मुख जोवइ दीवाधरी, पाछउ करइ पलाह। मारू दीठी सास विण, मोटी मेल्हइ धाह।
—ढो.मा.

दीवार, दीवाल–सं०स्त्री० [फ़ा० दीवार] १ मकान आदि बनाने अथवा किसी स्थान को घेरने के निमित्त पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि को चुन कर उठाया हुआ परदा, भींत. २ किसी वस्तु अथवा स्थान का घेरा (प्रायः किनारे का) जो ऊपर उठा हो।

रू०भे०—दवाल, दिवार, दिवाल।

दीवाळी–सं०स्त्री० [सं० दीप+अवलि] पूर्णिमान्त मास के अनुसार कार्तिक की अमावस्या तथा अमान्त मास के अनुसार आश्विन की अमावस्या को मनाया जाने वाला शारदीय पर्व जिसमें सायंकाल को दीपक जला कर घर में, बाहर तथा छत पर पंक्तिबद्ध रखे जाते हैं और भवनों में लक्ष्मी पूजन किया जाता है।

वि०वि०—यह पर्व प्रदोषकाल व्यापिनी अमावस्या को मनाया जाता है। यदि अमावस्या, चतुर्दशी और दूसरे दिन भी प्रदोष काल में व्याप्त हो तो दूसरे दिन दीपावली मनाई जाती है। परन्तु यदि चतुर्दशी के प्रदोष काल में अमावस्या व्याप्त है और अमावस्या के दिन तिथि साढे तीन पहर से अधिक है तथा प्रतिपदा वृद्धि गामिनी है तो अमावस्या के प्रदोष में प्रतिपदा के रहते हुए भी दीपावली मनाई जाती है और यदि चतुर्दशी के दिन में अमावस्या आ जाय तथा अमावस्या साढे तीन प्रहर से पूर्व ही समाप्त हो जाय तो फिर दीपावली चतुर्दशी का मनाई जायगी।

यदि चतुर्दशी के प्रदोष में अमावस्या हो और अमावस्या के दिन अमावस्या साढे तीन प्रहर की हो तो भी प्रदोष आसन्न होने से दीपावली अमावस्या को ही मनाई जायगी।

यह त्यौहार राजस्थान में तीन दिन मनाया जाता है। प्रथम दिवस दीपावली के एक दिन पूर्व आरंभ होता है। इस दिन को राजस्थान में 'कांणी दीवाळी' नाम से पुकारते हैं। इस दिन मकानों में द्वार के एक पार्श्व पर एक-एक दीपक रखा जाता है। दूसरा दिन 'रांणी दीवाळी' के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन भवनों में दीपकों की पंक्ति यथास्थान चारों ओर लगा दी जाती है जिससे भवन जगमगा

उठता है। तीसरे दिन लोग परस्पर एक-दूसरे के भवन पर मुबारिकबाद देने को जाते हैं। इस दिन को 'रामासांमा' भी कहते हैं। चतुर्थ दिन दवात पूजा करके लोग यथापूर्व अपने अपने कार्य पर लग जाते हैं।

उ०—१ काय अमावस रैण प्रसंसा कीज ही। दीवाळी सुखदाय प्रभा दरसीज ही।—बां.दा.

उ०—२ काठो कुरळातां काती निस काळी। होळी हीयें में दांतां दीवाळी। सांमू सीयाळो साकी सरसायो। बाकी वचियां नें ढाकी दरसायो।—ऊ.का.

मुहा०—दिन धोळै दीवाळी करणी (धोळै दिन दीवाळी करणी)—अनहोनी बात करनी।

रू०भे०—दियाळी, दिवाळी।

अल्पा०—दीवाळो।

दीवाळीएल(हेल)-सं०स्त्री० [देश०] लड़की के विवाहोपरान्त सीख देने के बाद वर पक्ष वालों को पुनः निमंत्रित कर के दिया जाने वाला भोज (श्रीमाली ब्राह्मण)

वि०वि०—यह भोज विवाह के साल दो साल बाद भी दिया जा सकता है।

रू०भे०—दिग्राळीएल(हेल), दियाळीएल(हेल), दिवाळीएल(हेल), दीग्राळीएल(हेल), दीयाळीएल(हेल)।

दीवाळो—१ देखो 'दीवोळी' (अल्पा, रू.भे.) उ०—माछंदर वाळो सिधां सिघाळो, वूढो वाळो जुग वाळो। जीतो जम जाळो जगत निराळो, हुवो उजाळो दीवाळो।—पा.प्र.

२ देखो 'देवाळो' (रू.भे.) उ०—भूपति टोटां में दीवाळा भिळिया, मोटां मोटां रा कुळ मगतां मिळिया। वांधे गांठड़ियां वड़ियां चग बाळै, राली गूदड़ ले कांधे पर राळै।—ऊ.का.

दीविय—देखो 'दीवी' (रू.भे.) उ०—चमरी जिम चळ लखमीय विलसीय विखय नी वात। नारीय नेह विण दीविय जीदिय वहु उपगांत।—नेमिनाथ फागु

दीवी-सं०स्त्री० [सं० दीपिका] लकड़ी या धातु का बना वह उपकरण जिसमें दीपक जलाया जाता है अथवा जिस पर दीपक रखा जाता है। उ०—जे राजा रांम म्हारै कन्है आय बैठे जिण वखतां हूं दीवी वोहड़ाय पीलसोत मंगाऊं तिण वखतां मांही थां जाहिर होय कन्है आय पकड़ लीज्यो।—जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

वि०वि०—यह उपकरण कई प्रकार का होता है। एक तो लम्बा डंडे के समान होता है जिसके ऊपर दीपक रखा जाता है अथवा ऊपर की कटोरी में दीपक जलाया जाता है। यह प्रायः मंदिरों या वैभवशाली घरों में होता है। दूसरा जो साधारण घरों में पाया जाता है वह लोहे की पत्तियों का चौड़ा उपकरण होता है जिसे दीवार पर लटकाया जा सकता है। इसमें नीचे की ओर एक बड़ा दीपक लगा रहता है जिसमें दीपक जलाया जाता है तथा दूसरी पंक्तियों पर भी दीपकों की पंक्तियां लगी रहती हैं। विशेष अवसरों पर इसके सारे दीपक जलाये जा सकते हैं।

२ पलीता, मशाल. ३ देखो 'दीपक' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—दीविय।

अल्पा०—दिवली, दीवली।

भू०का०कृ०—प्रदान की, दी। उ०—१ अबै वा जायगा म्हागी दीवी रहसी थांहरै कनै कोई न लेसी।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ बडारण कन्है ही बैठी थी सो वडी दिलासा दीवी। पवंन करणे नूं लागो।—कुंवरसी सांखला री वारता

दीवीझाड़-सं०पु०—झाड़ के आकार का रोशनी करने का सामान जो छत में लटकाया जाता है। उ०—सगडी सूकडी बाळिइ, अमरतणा ऊंवाह। चंपेली चूग्रा बळइ, दीपति दीवीझाड।—मा.कां.प्र.

दीवेल—देखो 'दीवेल' (रू.भे.)

दीवो—देखो 'दीपक' (डि.को.) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—दह दिसि दीवा दीपया, चिहुं दिसि मंगळ च्यारि। कांमिनि 'जीजी' जंपती, जगदंबा जयकार।—मा.कां.प्र.

मुहा०—१ दांतां रा दीवा करणा—दांत निकालना, व्यर्थ हँसना. २ दीवा तळै अंधारो, दीवा नीचै अंधारो, दीवा हेटै अंधारो—दीपक के नीचे अंधेरा रहता है। बहुत अच्छाइयों के साथ थोड़ी बुराई भी रहती है जिसका पता तक नहीं रहता. ३ दीवै बाट चढ़णी—संध्या समय, संध्या होना. ४ दीवै बाट चढ़ियां—संध्या समय होने पर. ५ दीवो जळणो—सन्ध्या समय होना. ६ दीवो जळाणो—दिवाला निकालना. ७ दीवो ठंडो होणो—किसी के मरने से उसके कुल में अंधकार छा जाना. ८ दीवो वडो करणो—दीपक बुझाना. ९ दीवो वडो होणो—दीपक बुझना। देखो 'दीवो ठंडो होणो'. १० दीवो हँसणो—दीपक की बत्ती से गुल या फूल झड़ना। दीपक की जलती हुई बत्ती में चमकते हुए गोल-गोल रवे दिखाई देना (इससे घर में प्रतिष्ठित मेहमान आने, विवाह होने अथवा लड़का जन्मने आदि के शुभ शकुन समझे जाते हैं।)

दीवो दीवो—देखो 'देणो, देवो' (रू.भे.) उ०—दादू दीवा है भला, दीवा करो सब कोय। घर में धरा न पाइये, जे कर दिया न होय।

—दादू वांणी

दीस-सं०पु० [सं० दिवस] १ दिन, वासर। उ०—१ सिध सकळ पैसारो कीन, गोरेविण सखरी देसना दीन। संवत पनरेसे पचवीस, वदी वैसाख पंचमि सुभ दीस।—ऐ.जै.का सं.

उ०—२ आखु दीस तुमनइ संभारइ, करइ तुम गुणग्रांम रे। सिउं कहूं घणउं फदंब! तुमनइ? न वीसारिउं नांम रे।

—नळ-दवदंती रास

२ सूर्य, रवि। उ०—१ जउ वैस्वांनर ताढउ थाइ, पस्चिम ऊगइ दीस। नारायण टळतउ कान्हडदे, कहि न नांमइ सीस।—कां.दे.प्र.

उ०—२ एतइ अतिरथि सारथि आवइ, करण तणूं कुळ राउ जणावइ। मइं गंगा ऊगमतइ दीस, लाधी रतनभरी मंजूस।—पं.पं.च.

दीसणौ, दीसबौ-क्रि०अ० [सं० दृश्] दिखाई देना, दृष्टिगोचर होना, दीखना। उ०—ऊंधा चूंधा कर फेरा उळझावै, वनड़ी वनड़ी वर मनड़ो मुरझावै। रस में वेरस बस रागांरळ रीसै, दुलहणि दुलहै नै दावानळ दीसै।—ऊ.का.

दीसणहार, हारौ (हारी), दीसणियौ—वि०।

दीसिग्रोड़ौ, दीसियोड़ौ, दीस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दीसीजणौ, दीसीजबौ—भाव वा०।

दीहणौ, दीहबौ—रू०भे०।

दीसा-क्रि०वि—१ लिए। उ०—इतरै में नायक सुजांण कह्यौ—बापजी, महाराज कुंवार हाथी दीसा फुरमावै छै। ताहरां हाथी मंगाय नजर कियो।—पलक दरियाव री वात

२ देखो 'दसा' (रू.भे.) ३ देखो 'दिसा' (रू भे.)

दीसियोड़ौ-भू०का०कृ०—दृष्टिगोचर हुवा हुग्रा, नजर ग्राया हुग्रा। (स्त्री० दीसियोड़ी)

दीसी—देखो 'दिसा' (रू.भे.) उ०—मन-में वडी सूग ग्राई। वो ग्राप-रै भायलै-रै घर दीसी टुरियौ।—वरसगांठ

दीसोटौ, दीसौटौ—देखो 'देसौटौ' (रू.भे.)

दीह-सं०पु० [सं० दिवस, प्रा० दिवह दिग्रस, दिग्रह=दीह] १ सूर्य। उ०—१ दीह गयउ डर डंबरे, नीले नीझरणेहि। काली जाया करहला, बोल्यउ किसे गुणेहि।—ढो.मा.

उ०—२ गुधळियौ तोइ गंगजळ, खांकळियौ तोइ दीह। खरौ विखाती 'खीमरौ', सांकळियौ तोइ सीह।—ग्रज्ञात

२ देखो 'दिवस' (रू.भे.) उ०—१ सयणां, पांखां प्रेम की, तइं ग्रब पहिरी तात। नयण कुरंगउ ज्युं बहइ, लागइ दीह नइं रात।

—ढो.मा.

उ०—२ कहियौ नृप कारिज सिध कीजै। दत वर सूझ पदमणी दीजै। वदै सिद्ध नृप विसवावीसां। पदमण ग्रांणू दीह पचीसां।

—सू.प्र.

उ०—३ जो नह ग्रावै करण जुध, सुण बोलावौ सीह। दाह हुवै नह दहण सूं, दिनकर हुवै न दीह।—बां.दा.

३ देखो 'दीरघ' (रू.भे.) उ०—१ लघु दीरघ दीरघ लघु, पढ़ियां सुघरै छंद। दीह लघु लघू दीह करि, पढ़ि कविराज ग्रनंत।

—र.ज.प्र.

उ०—२ ह्रस्व दीह संणोर चो, नेम नहीं निरनाह। मुर द्वळा सो मंछ कहि, तवं पंखाळो ताह।—र.रू.

उ०—३ दासरथी लिखमण सुत दसरथ, दोऊ सुणौ सिधारै दसरथ। दीह उचाटी कीधे दसरघ, दीधो प्रांण पछाड़ी दसरथ।—र.रू.

४ देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—दोख निज़ दीह न दीसै रे, रसा ग्रवरां पर रीसै रे। वात निज हाथ बिगाड़ी रे, ग्राई सोइ पांत ग्रगाड़ी रे।—ऊ.का.

दीहड़—देखो 'दिवस' (मह., रू.भे.) उ०—मा दीहड़ मद-मती छत्र चमर छत्ती। मा छत्र चमर छत्ती। जोवत जोति जगती भेळी भगवत्ती।—मे म.

दीहड़उ, दीहड़ो, दीहडउ, दीहडो—देखो 'दिवस' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—१ ग्राजूणउ घन दीहड़उ, साहिव-कउ मुख दिट्ठ। माथा भार उळथ्यियउ, ग्रांख्यां ग्रमी पयट्ठ।—ढो.मा.

उ०—२ मरदां खाजो खरचजो, मती लगाजो वार। पांचां सातां दीहड़ां, है जिव जावणहार।—ग्रज्ञात

उ०—३ हिळ मिळ सब सूं हालणौ, ग्रहणौ ग्रातम ग्यांन। दुनियां में दस दीहड़ा, माढू तू मिजमांन।—बां.दा.

उ०—४ ए वाड़ी, ए बावड़ी, ए सर-केरी पाळ। वै साजण, वै दीहड़ा, रही संभाळ संभाळ।—ढो.मा.

दीहणौ, दीहबौ—देखो दीसणौ, दीसबौ' (रू.भे.)

दीहपत, दीहपति, दीहपती—देखो 'दिवसपति' (रू.भे.)

उ०—ग्रपछरा थां हूर तन रो ग्रांणियो, दीहपत ग्रेह कर न्याव दीधो। विहड़ खंड हुतौ जोड़ियौ तन, विधाता कमंध जग जीवतां संभ कीधो।—गोरधन गाडण

दीहर—देखो 'दीरघ' (रू.भे.) उ०—नीर निरक्षिय नीरज नीरज हावऊं केमु। टाळइं ए केलीहर दीहर खळ जिम खेमु।

—नेमिनाथ फागु

दीहाउ, दीहाऊ—देखो 'दीरघायु' (रू.भे.) (जैन)

दीहाड़ी-सं०पु० [सं० दिवस] दिन, वासर। उ०—ग्राहेड़ जमरांण डांण मंडै दीहाड़ी। सरकम वंध संधिया, चाप ग्रावरदा चाडी।—ज.खि.

क्रि०वि०—नित्य, प्रति दिन। उ०—होळी खंडाहळां रहै दोळी दीहाड़ी। ग्ररजण लगो ग्रांण जांण खंडी बन वाड़ी।—रा.रू.

रू०भे०—दिहाड़ि, दिहाड़ी, दिहाडि, दिहाडी, दीहाडी।

दीहाड़ौ, दीहाडौ—देखो 'दिवस' (ग्रल्पा., (रू.भे.)

उ०—१ धिन दीहाड़ौ, धिन घड़ी, धिन वेळा, धिन वास। नयणे सयण निहारिया, पूरी मन री ग्रास।—ग्रज्ञात

उ०—२ ग्रारंभियौ सोइ करै बाथ गिरमेर उपाड़ै। ग्रांणै माल ग्रवंब करै धमचक दीहाड़ै।—राव रिणमल री वात

दीहि, दीहु दीहूं, दीहू—देखो 'दिवस' (रू.भे.)

उ०—१ युद्ध सत्रि जिम राउ जि मंत्रइ। एक दीहि भड कोडि निमंत्रइ।—विराट पर्व

उ०—२ कालि चऊदसि दीहु तुम्हे रूडइं जोइजउ, एउ दुरयोधनु सीहु-ग्राइ उपाइं मारिसिए।—पं.पं.च.

उ०—३ दिहाडु दीहू घणा रहइ, राति न व्याही रांड। जिम जिम तेड़ूं नींद्र-नइं, तिम तिम जाई मांड।—मा.कां.प्र.

दीहौ—देखो 'दिवस' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—१ भौळा प्रांणी रांम भज, तूं तज झौड़ तमांम। दीहा छेल्है देख रे, केसौ हूं ता कांम।—र.ज.प्र.

उ०—२ यरां जैता जंगां ग्रडर, यक-रंगां जग ग्रखै। सको गावौ जीहा ग्रवस, निस-दीहा ग्रज सखै।—र.ज.प्र.

दुंकारव-सं०पु०—दहाड़। उ०—दुंकारव करतो, वाघ महा विकराळ। नहरां अति तीक्षण, जिम करवत दंताळ पुछा, छोट करतो, फदक ल्यै तीजी फाळ, प्रभु नांम प्रसादै, सींह भगै ज्युं स्याळ।—ध.व ग्रं.

दुंग-सं०स्त्री० [देश०] चिनगारी। उ०—१ कै काकोदर चंप तै फण फैल वणाया। सोर किधौं मावात मैं दव दुंग मिळाया।—वं.भा.

उ०—२ सभै 'सवळे'स' 'अजो' रिण संग। उभै किर केहर पाखर अंग। लहै किर दुंग सिळगिय लाय। वडै वळ वेल गये लग वाय।

—रा.रू.

रू०भे०—दूंग।

दुंडदुंडी-सं०स्त्री० (अनु०) ढोल से मिलता जुलता एक प्रकार का वाद्य। उ०—पंचइ पंडव पय पणमंति, अतिथिदांनु ते मुनिवर दिंत। वाजी दुंदुहि अनु दुंडदुंडी, अंबर हूती वाचा पडी।—पं.पं.च.

रू०भे०—दुड़दुड़ी, दुडदडी, दुंडदुडी, दुडवडी।

दुंद-सं०पु० [सं० द्वन्द्व] १ युद्ध (अ.मा.) उ—१ करै रीभ इम कमंध, सूर ऊगतै दळ सव्वळ। अमरचंद उणवार, दुंद कीधौ दखिणी दळ।

—सू.प्र.

उ०—२ मेड़तिया महाराज दळ, किया मुर्दै करतार। दुंद अमंदी सालुळै, त्यां हुंदी तरवार।—रा.रू.

२ उपद्रव, उत्पात, विद्रोह। उ०—१ आगरै गढ़ उणवार, ऊठियो दुंद उदार। घर छत्र वहसै घांम, निज 'नेकसेरह' नांम।—सू.प्र.

उ०—२ दुंद मिटावण कारणै, यां लिखियो 'अवरंग'। जो मांगै सोई दियो, लागै हाथ दुरंग।—रा.रू.

३ कलह. ४ गुप्त वात, भेद की वात, रहस्य. ५ युग्म, जोड़ा.

६ दो आदमियों की लड़ाई. ७ 'और' आदि संयोजक पदों का लोप कर के बनाया जाने वाला एक प्रकार का समास जिसमें मिलने वाले सब पद प्रधान रहते है और वे एक ही क्रिया के लिये प्रयुक्त होते हैं। जैसे रात-दिन कांम करो, हाथ-पांव बांधो, रोटी-दाळ खाओ। इनमें 'और' का लोप हो रहा है—जैसे रात और दिन कांम करो, हाथ और पाँव बांधो, रोटी और दाळ खाओ।

रू०भे०—दंद, दूंद, द्वंद, द्वंद्व, द्वंद्वर, दंघ।

अल्पा०—दंदौ।

८ देखो 'दुंदुभी' (मह., रू.भे.)

दुंदभ, दुंदभि, दुंदभी—देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.) उ०—१ डहंत केलि टाळयं, उपंति वंद्रवाळयं। वहंत दुंदभं वयं, जपंत देव जैजयं।

—सू.प्र.

उ०—२ वेदी द्वारि दुंदभ वजि, विमळ पौहप देवै वरखि।

—रांमरासौ

दुंदलौ—देखो 'धूंधाळौ' (रू.भे.) उ०—तिहां वैठा बत्रीसलक्षणा पुरुस दुंदला फुंदला, जाकजमाळा मुंछाळा केई जमाई केई साळा।—व.स.

दुंदव—देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.)

दुंदाळ-सं०स्त्री०—१ दुनाळी वंदूक। उ०—नर लीध कर दुंदाळ, काळांन के अंतकाळ। गज कमर भैंगमींघ, धर रूप मुरधर धींग।

—पे.रू.

२ देखो 'धूंधाळौ' (मह., रू.भे.) उ०—गणपति गोरू गज वयण, अेक दंत दुंदाळ। आमनि तु उंदरि भला, युगति जनोई व्याळ।

—मा.कां.प्र.

दुंदाळौ—देखो 'धूंधाळौ' (रू.भे.) उ०—तिहां वइठा बत्रीस लक्षण पुरुस फांदाळा, फुंदाळा, दुंदाळा, भाकझमाळा, मुंहाळा।—वं.स.

दुंदुभ, दुंदुभि, दुंदुभी-सं०स्त्री० [सं० दुंदुभि] १ नगाड़ा, धौंसा। उ०—कुमार प्रिथीराज जीत रा दुंदुभि घुराय खेत सुधाय कन्ह-कन्ह गोइंदराज, प्रसंगराज, पहाड़राज, लंगरीराज प्रमुख घायलां नूं निजांन चढाय गिरिनार मुकांम दीधौ।—वं.भा.

२ एक राक्षस का नाम जिसे वालि ने मारा था।

वि०वि०—वालि ने इस राक्षस को मार कर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंका था। इस पर मतंग ऋषि ने शाप दिया था जिसके कारण वालि उस पर्वत के पास नहीं जा सकता था। वालि से वैर हो जाने पर उसके अनुज सुग्रीव ने इसी पर्वत पर निवास किया था।

रू०भे०—दंदभ, दंदव, दंधभ, दुंदभ, दुंदभि, दुंदभी, दुंदव, दुंदुम, दूंदुभि, दुंदुहि, दुंधभी, दुंबुबी, दुधुभि, दुधुभी।

मह०—दुंद।

दुंदुमार-सं०पु० [सं० धुंधुमार] राजा त्रिशंकु का पुत्र।

रू०भे०—दुंधमार।

दुंदुह, दुदुहि-सं०पु० [सं० डुंडुभ] १ पानी का सांप, विना विष का सांप

(डि.को.)

२ देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.) उ०—जनममहोछवु सुर करइं, नाचइं अपछरवाळ। दुंदुहि वाजइ गयणयले, घरणिहि ताल कंसाल।

—पं.पं.च.

रू०भे०—दुदुह।

दुंधभी—देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.) उ०—स्रोण मंडी पयाळां नवालां ग्रीघ भर्क गांस, दुंधभी दुगालां चालां मुसालां जै दीठ। दुभाळां वलाळां भाळां अचाळां दखणी दळां, रूक भालां जंजाळां गैड़ाळां मातो रीठ।

—पहाड़खां आढ़ौ

दुंधमार—देखो 'दुंदुमार' (रू.भे.)

दुंधु-सं०पु०—मधु दैत्य का एक पुत्र।

दुंधुबी—देखो 'दुंदुभि' (रू.भे.) उ०—महीयल मोख तंगितारगंत्रिका गुरै नही। महांग अंध धुंध कंध दुंधुबी दुरै नही।—ऊ.का.

दुंब-सं०पु० [फा० दुंबः] एक प्रकार का मेंढ़ा या मेष जिसकी पूंछ पर चर्बी की बड़ी चकती सी होती है। मेद पुच्छ।

उ०—उभै दुंब आचरै एक करि कंव कवावे। चंपे चंगुल ग्रीव तजै दुरजीव सितावे।—रा.रू.

रू०भे०—दुंबी।

अल्पा०—दुंबलियौ।

दुंबलियौ—देखो 'दुंब' (अल्पा., रू.भे.)
दुंबायत-सं०पु०—वह भूमिपति जो सरकार में भूमि के उपभोग के उपक्रम में कुछ निश्चित रकम देता हो।
दुंबो—देखो 'दुंब' (रू.भे.)
यौ०—दुंबी-घेटी।
दुंबो-सं०पु० [देश०] १ सामन्तों द्वारा अपने बाहुबल से अधिकार में की हुई भूमि का राज्य सरकार को दिया जाने वाला निश्चित कर. २ लूट के माल में से निश्चित रकम जो लुटेरों द्वारा बादशाह को दी जाती थी। ३ टीवा, भीडा।
दुंहु-वि० [सं० द्वि] दोनों।
दु-सं०पु० [सं० द्यु] १ दिन, दिवस. २ पुत्र (अ.मा.) ३ हाथ. ४ हाथी. ५ सूंड. ६ दुख (एका.)
वि०—१ दरिद्र. २ प्रचंड. ३ प्रधान (एका.) ४ दो।
उ०—२ उपाड़ बंधाड़ समंदर ओड। कवी सम नील जकै दु करोड़।
—ह.र.
उ०—३ वडी मठोठ ते वहै, दु होठ दंत तैं दबै।—ऊ.का.
दुअंगम-वि०—कठिन।
दुअट्ठ—देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—वळट्टं दुअट्टं हठाळं बंगाळं, चकत्था डसा चालिआ काळ चाळं।—वचनिका
दुअसपाह, दुअसपौ—देखो 'दोसापौ' (रू.भे.)
उ०—एक हजार दुअसपाह।—नैणसी
दुआ-सं०स्त्री० [अ०] प्रार्थना, विनती, याचना। उ०—दुआ सो विनती दरगाह प्रभू री मांही अपणै कांम अरथ री चाहना नूं जिण राजा वादसाह नूं कूंची विनती री हाथ आवै। विनती प्रभू सही मांनै।
—नी.प्र.
दुआइती—देखो 'दवायती' (रू.भे.) उ०—थांनै माहरी दुआइती है सो थांरा ससतर भलांई वाहयलौ अनै ओ हूँ एकलौ थांरै सांमनै आय नै खड़ौ हूं।—वी.स.टी.
दुआई—१ देखो 'दवा' (१, २) (रू.भे.) २ देखो 'दुहाई' (रू.भे.)
३ देखो 'दूवारो' (१, २) (रू.भे.)
दुआग—देखो 'दुहाग' (रू.भे.)
दुआगण—देखो 'दुहागण' (रू.भे.)
दुआगोई-सं०स्त्री० [अ०+फा०] प्रार्थना करने की क्रिया, कहने का ढंग।
उ०—भांति दुआगोई री दोय तीन वचन इणां रा उत्तम स्वभावां री वयांन कर लिखूं।—नी.प्र.
दुआती—देखो 'दवायती' (रू.भे.)
दुआदस—देखो 'द्वादस' (रू.भे.)
दुआदसी—देखो 'द्वादसी' (रू.भे.)
दुआदसौ—देखो 'द्वादसौ' (रू.भे.)
दुआपुर—देखो 'द्वापर' (रू.भे.) उ०—देसल सुत चिति रीति दुआपुर दाखणौं। राजस लाज मजाद खत्री ध्रम रक्खणौ।—ल.पि.
दुआर—देखो 'द्वार' (रू.भे.) उ०—वधाई बाजा राज दुआर।
—रांमरासौ
दुआरामती—देखो 'द्वारामती' (रू.भे.) उ०—सम्मति रा किना ए सुहिणौ, आयौ कि हूं अमरावती। जाइ पूछियौ तिण इमि जांणियौ, देव सु आ दुआरामती।—वेलि.
दुआरी—१ देखो 'द्वार' (रू.भे.) उ०—इम विमासी मनह मझारि पुहतां आहड नयर दुआरि। देखी नयर तणु मंडांण ते त्रिन्हिइं रंजिआं सुजांण।—विद्याविलास पवाडउ
२ देखो 'दूवारी' (रू.भे.)
दुआळी-सं०स्त्री० [फ़ा० द्वाल] चमड़े का वह तस्मा जिससे कसेरे सिकलीगर सान और बढ़ई खराद घुमाते हैं।
दुआळौ-सं०पु०—१ लकड़ी का एक बेलन जिसे सुनहरी छपी हुई छींटों के छापों को बैठाने के लिये फेरते हैं. २ देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.)
३ देखो 'द्वालौ' (रू.भे.)
दुइंद्रिय—देखो 'द्विइंद्रिय' (रू.भे.) (जैन)
दुइ-वि० [सं० द्वि] दो। उ०—साल्हकुमार विलसइ सदा, कांमिण सुगुण सुगात। माळवणी नूं एक निस, मारवणी दुइ रात।—ढो.मा.
रू०भे०—दुई।
दुइज—देखो 'दूज' (रू.भे.)
दुइण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.) उ०—सुरे सांतरस उदभुत रस किआ। दुइणां करुणा रस किआ।—वचनिका
दुई—१ देखो 'द्वैत' (रू.भे.) उ०—दादू दुई दरोग लोग कौ भावै, सांई साच पियारा। कौन पंथ हम चलैं कहौ धू, साधौ करौ विचारा।
—दादू वांणी
२ देखो 'दुइ' (रू.भे.) उ०—विराट विसाळ निपाविय अक्ख, दुई फळ जेण किया सुख दुक्ख।—ह.र.
दुऐ-वि० [सं० द्वि, द्वै] उभय, दोनों। उ०—केहरी तणा जमरांण मचतै कंदळि, दुऐ कर जोड़ियां खड़ी दोहां। पुकारै जवांनी, नेस दिस पधारौ, लाजि आखै, हमैं वाजि लोहां।—लिखमीदास व्यास
दुओ-सं०पु० [सं० द्वि] १ दो का अंक. २ दो की संख्या।
[सं० द्वितीय] ३ वह व्यक्ति जो अपने किसी पूर्वज की तुलना में समान गुणों वाला हो। उ०—१ घणा थटां वदाकर नागपुर घेर रे, सांम ध्रोहां मथै खेर रे सार। दुआ 'वगतेस' थांबी खंबौ देर रे, धरा समसेर रै जोर छत्रधार।—रतनजी बोगसौ
उ०—२ जग अवलंब खंब सतजुग रा, दिवपुर वसतां 'सिव' दुआ। पांच हजार वरस प्रीछत रा, हमैं सपूरण आज हुआ।
— रांमलाल बारहठ
४ देखो 'दूवौ' (रू.भे.) उ०—१ रांणी दुओ दीधौ।—वेलि टी.
उ०—२ वाजा चौसर वाजिया, जस प्रगटै जैकार। दीन्हौ कूरम्मां दुओ, 'अभौ' हुओ असवार।—रा.रू.
वि०—द्वितीय, दूसरा। उ०—सत द्वीप नवै खंड भूम सरै, कुण 'पाल' तणी नर मींड करै। हिक मीड गोगौ चहुंवांण हुवौ, दखजै कुण पावुअ मींड दुओ।—पा.प्र.

रू०भे०—दुवौ, दूग्रौ, दूवौ।

दुकड़्हा—वि०—तुच्छ, नीच, कमीना।

दुकड़ियौ—देखो 'विकड़ियौ' (रू.भे.) उ०—इतरा में खवास ग्रांण ग्ररज कीवी—भुंजाई तयार छै, पाटोता विछाया छै। तद सरदार सारा ऊठिया। ऊठतां कही—फकीर साहिब पधारो!'तो फकीर कही बाबा हमारे तौ इहां ही भेज देवौ। हम तौ ग्रंदर नहीं ग्रावें। तद कही भली बात, विराजिये। ग्राप भीतर गया, जाय पातिया बैठिया। तद सूरेजी कही—ग्रेक वार तौ दुकड़ियौ जाय फकीर साहिब नूं देय ग्रावो।—सूरे खींवे री वारता

दुकड़ौ—सं०पु० [सं० द्वि+कुण्ड+रा०प्र०इयौ] १ तवलों की जोड़ी में एक तवला। २ तवलों से मिलता जुलता एक प्रकार का बाजा जो प्राय: सहनाई के साथ बजाया जाता है। ३ दो दमड़ी, छदाम।
रू०भे०—दुकडौ।

दुकट, दुकट्ट—वि० [सं० दु = खराब,.बुरा+कट = शव] भयंकर, विकट।
उ०—देखे तद 'वीरम' कोप दुकट्ट। हमैं सुण नार न मांडिय हट्ट।
—गो.रू.

दुकडौ—देखो 'दुकड़ौ' (रू.भे.)

दुकणियौ—देखो 'दूखणौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दुकणी—सं०पु० [सं० द्वि+कण+रा०प्र०ई] एक साथ दो दाने निकालने वाली ज्वार।

दुकर—वि० [सं० दुष्कर] १ कठिन, मुश्किल. २ दुष्ट।
उ०—निज पितु छोडे नीच तुरत छोडे महतारी। निज भ्रम छोडे निलज निळज छोडे निज नारी। भल छोडे निज भ्रात छैल कुळ घर छिटकावै। प्रभु नै छोडे परौ जिकण दिस फेर न जावै। दांम री भांम झेली दुकर भव सारै नै भांडियौ। छिता पर इता गुण छोड दै रांड न छोडे रांडियौ।—ऊ.का.
रू०भे०—दुक्कर।

दुकळ—वि० [सं० द्वि+कलि=युद्ध] १ ग्राततायी, दुष्ट.
२ देखो 'द्विकळ' (रू.भे.)

दुकांतरा—देखो 'दुखांतरा' (रू.भे.)

दुकांन—सं०स्त्री० [फ़ा० दुकान] वह स्थान जहां पर विक्रय के लिये रखी हुई वस्तुग्रों को ग्राहक खरीदने के लिये जाते हों, माल विकने का स्थान।
मुहा०—१ दुकांन उठाणी—कारोबार बन्द करना, दुकान बन्द करना. २ दुकांन खोलणी—देखो 'दुकांन मांडणी'. ३ दुकांन चलणी—दुकान में होने वाले व्यवसाय में वृद्धि होना. ४ दुकांन टोडी करणी—दुकान बन्द करना. ५ दुकांन बंद करणी—देखो 'दुकांन टोडी करणी', देखो 'दुकांन उठाणी'. ६ दुकांन मांडणी—दुकांन लगा कर बिक्री करना, दुकान जारी करना, दुकान खोलना।

दुकांनदार—सं०पु० [फ़ा० दुकानदार] १ दुकान का सौदा वेचने वाला। २ दुकान का मालिक।

दुकांनदारी—सं०पु० [फ़ा० दुकानदारी] दुकान पर माल वेचने का काम. बिक्री बट्टे या दुकान का काम।
क्रि०प्र०—करणी।

दुकाड़णौ, दुकाड़वौ—देखो 'दुखाणौ, दुखावौ' (रू.भे.)

दुकाड़ियोड़ौ—देखो 'दुखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुकाड़ियोड़ी)

दुकाणौ, दुकावौ—क्रि०स० [सं० दुःख] १ जलाना, होमना।
२ देखो 'दुखाणौ, दुखावौ' (रू.भे.)
दुकाणहार, हारौ (हारी), दुकाणियौ—वि०।
दुकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दुकाईजणौ, दुकाईजवौ—कर्म वा०।

दुकायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ जलाया हुग्रा, होमा हुग्रा.
२ देखो 'दुखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुकायोड़ी)

दुकार—देखो दुत्कार' (रू.भे.) उ०—सूरज ऊगै साहवांण में, नित घाह घलावै। माल ज हुंदा जोइयां, घर बैठौ खावै। 'दला' ग्रर 'देपाळ' कूं दुकार सुणावै। वीरम न्याव न हल्लही, ग्रनियाव सुहावै।
—वी.मा.

दुकारणौ, दुकारवौ—देखो 'दुत्कारणौ, दुत्कारवौ' (रू.भे.)
दुकारणहार, हारौ (हारी), दुकारणियौ—वि०।
दुकारिग्रोड़ौ, दुकारियोड़ौ, दुकारचोड़ौ—भू०का०कृ०।
दुकारीजणौ, दुकारीजवौ—कर्म वा०।

दुकारियोड़ौ—देखो 'दुत्कारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुकारियोड़ी)

दुकाळ—सं०पु० [सं० दुष्काल] १ दुर्भिक्ष, ग्रकाल।
उ०—धरती मांहे दुकाळ पड़ियौ तरै राठौड़ तेजसिहजी रै खरचौ री भीड़ घणी।—राव मालदे री वात
उ०—२ पूंगळ देस दुकाळ थियं, किणही काळ विसेसि। पिंगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवर चइ देसि।—ढो.मा.

दुकाळी—वि० [सं० दुष्काली] कठिनता से जीवन व्यतीत करने वाला, दुखी।

दुकावणौ, दुकावबौ—देखो 'दुखाणौ, दुखावौ' (रू.भे.)

दुकावियोड़ौ—देखो 'दुखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुकावियोड़ी)

दुकिस्त— । उ०—लागौ दाव दुकिस्त लगाई, हटचौ खाय हहरांनी। घवरायौ घोरन कौ घेरचौ, पद नटि कै मदपांणी।—ऊ.का.

दुकूळ—सं०पु० [सं० दुकूल] १ रेशमी वस्त्र।
उ०—महा उचूळ मूळ के दुकूळ देह में नहीं। कहां सुगंध कंध बीचि गंध गेह में नहीं।—ऊ.का.

२ वस्त्र। उ०—१ सीस कलंगी सेहरौ, केसर बोळ दुकूळ। कीजै मूंझ चलावणौ, मरियौ नावै मूळ।—वी.स.

उ०—२ दरजी फाड़ दुकूळ नूं, सींवै लिए सुधार। इण विध री रचना अठै, जांणै जांणणहार।—बां.दा.

रू०भे०—दकूळ।

दुकेलौ—देखो 'दुक्कौ' (रू.भे.)

दुक्कड़, दुक्कड—१ देखो 'दुक्रत' (रू.भे.) (जैन)
२ देखो 'दुकड़ौ' (मह. रू.भे.)

दुक्कर, दुक्करु—देखो 'दुकर' (रू.भे.) उ०—१ ते आग्या भंग लगी महापाप हुइ। तेह पाप लगी जिन धरम्म गाढ़उ दुक्कर हुइ।
—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—२ माइ भणइ दुक्करु चरणु, तुहु पुणि अइ सुकुमालु। कुमर भणइ दुक्करह विणु, नहु छळियइ कळि काळु।—ऐ.जै.का.सं.

दुक्कार—देखो 'दुत्कार' (रू.भे.)

दुक्काळौ—देखो 'दक्काळौ' (रू.भे.)

दुक्की-सं०स्त्री० [सं० द्विक्] दो बूटियों वाला ताश का पत्ता।
रू०भे०—दुगी, दुग्गी।

दुक्कौ-वि० [सं० द्विक्] जो अकेला न हो।
रू०भे०—दुकेलौ।

दुक्ख—देखो 'दुख' (रू.भे.) उ०—यौं सज्जण सुख पूरिया, दूर गया सह दुक्ख। दळ नव पल्लव डहडहै, ज्यौं जळ पाया रुक्ख।—रा.रू.

दुक्खित—देखो 'दुखित' (रू.भे.) उ०—ग्रांमि एक अति दरिद्रता करि दुक्खित डोकरी एक हूंती।—तरुणप्रभ

दुक्रत-सं०पु० [सं० दुष्कृत] १ पाप (अ.मा.) उ०—प्राग जाय जळ पैस, चित्त ऊजळ कर चोखा, वळै मेट ग्रभवास काट सब दक्रत दोखा।
ज.खि.

२ कुकर्म, कुकृत्य। उ०—दिधा कोई धाई दुक्रत दुखादाई दव दहै।
—ऊ.का.

रू०भे०—दुक्कड़, दुक्कड, दुक्रति, दुक्रती, दुक्रिती, दुग्क्रत, दुस्क्रति, दुस्क्रित, दुस्क्रिति, दुस्क्रिती।

दुक्रति, दुक्रती, दुक्रिती-वि० [सं० दुष्कृति] १ पापी. २ कुकर्मी।
३ देखो 'दुक्रत' (रू.भे.) (ह.नां.)
रू०भे०—दुसक्रति, दुस्क्रति।

दुखंड, दुखंडौ-वि० [सं० द्विखण्ड] १ जिसमें दो खण्ड या भाग हों, दो खण्ड का. २ दो मंजिल का (भवन)

दुखंत—१ देखो 'दुस्यंत' (रू.भे.) २ देखो 'दुख्यंत' (रू.भे)

दुख-सं०पु० [सं० दुःख] प्राणियों की वह अवस्था जिससे वे छुटकारा पाना चाहते हों, वह अवस्था जो प्राणियों की इच्छा के प्रतिकूल हो, सुख का विलोम, कष्ट, तकलीफ (अ मा.) उ०—सारं दुख सहियो-ह, नव ग्रह बांधे नांखिया। रांवण नह रहियो-ह, माथा दस ही मोतिया।
—रायसिंह सांदू

पर्याय०—असुख, आभील, उतपात, कछर, कदन, कस्ट, गहन, वेदना, विधुर, संकट।

मुहा०—१ दुख उठाणौ—देखो 'दुख सहणौ'. २ दुख झेलणौ—देखो 'दुख सहणौ'. ३ दुख देणौ—कष्ट देना, परेशान करना. ४ दुख पड़णौ—आपत्ति आना. ५ दुख पाणौ—कष्ट प्राप्त करना, दुखी होना. ६ दुख भुगतणौ—देखो 'दुख सहणौ'. ७ दुख भोगणौ—देखो 'दुख सहणौ'. ८ दुख में भाग लेणौ—कष्ट या संकट के समय साथ देना. ९ दुख सहणौ—तकलीफ सहन करना, कष्ट भुगतना।

२ पाप (अ.मा.) ३ काला, श्याम* (डिं.को.)
४ तप्त, गरम* (डिं.को.)
रू०भे०—दक्ख, दख, दुक्ख, दुह।
अल्पा०—दुखड़ौ, दूखड़ूं।

दुखघाती-वि०—दुखों को मिटाने वाला। उ०—नमौ दंतापाती धरम धुर जाती धव नमौ। नमौ ध्वांताराती दळद दुखघाती तव नमौ।
—ऊ.का.

दुखड़ौ-सं०पु० [सं० दुःख+रा०प्र०ड़ौ] १ दुख का वृत्तान्त, दुख का हाल।
क्रि०प्र०—कैणौ, रोवणौ।
२ देखो 'दुख' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ आंख्यां में सुइयां सहूं, सूळी सहूं पचास। ओ दुखड़ौ कैसे सहूं, पिव औरां के पास।—लो.गी.
उ०—२ दाधी दुखड़ै री फिरतोड़ी दोरी। गोरै मुखड़ै री फिरतोड़ी गोरी।—ऊ.का.

दुखग—देखो 'दुसग' (रू.भे.)

दुखणखाई-सं०स्त्री० [सं०दुःख+खाद्] एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा जिसके काटने से बड़ा दर्द होता है।

दुखणियौ—देखो 'दूखणौ' (अल्पा., रू.भे.)

दुखणौ, दुखबौ—देखो 'दूखणौ, दूखबौ' (रू.भे.) उ०—दुखै तौ डांम देवाड़ौ।—भीली कहावत

दुखतर-सं०स्त्री० [सं० दुख्तर अथवा दुहितृ] बेटी, कन्या (डिं.को.)

दुखतौ-वि० [सं०दुःख+रा०प्र०तौ] दर्द देने वाला, दुखदायी।
उ०—डसां गड़ड़ ओगाज, तोपां विखम दोयणां। दळां भक काज मह वेध दुखतो। असंभ गजराज अधपती घड़ ऊपरा, वरूथी मयंद अधराज 'वखतौ'।—महाराज वखतसिंह रौ गीत

दुखत्यौ-वि०—दुख भोगने वाला, दुखी। उ०—दुखत्या ना वार ने तेवार सारा एक।—भीली कहावत

दुखथळ-स०पु० [सं० दुःख+स्थल] १ वह स्थान जहां दुख प्राप्त हो.
२ शरीर का वह भाग जहां पर दर्द होता है, पीड़ित स्थान।

दुखद-वि० [सं० दुःखद] कष्ट पहुंचाने वाला, दुखदायी।

दुखदाई—देखो 'दुखदायी' (रू.भे.) उ०—चित विपदा वारिधि पार करन को चाही। अदविच में आती नाव भंवर में आई। दुर-

भागिन को हा दैव भयो दुखदाई, धन पोल पहूंच्यो धारधूस ले धाई ।—ऊ.का.

उ०—हा हा दुखदाई छपना हतियारा ।—ऊ.का.

दुखदायक-वि० [सं०] १ कष्ट देने वाला. २ शत्रु (अ.मा., ह.नां.)

दुखदायण-वि०स्त्री० [सं० दुःख+दायिन्] दुख देने वाली, दुखदायक ।

उ०—ले खंजर मारग लग्यो, अपड़ बनी आकाय । मो दुखदायण नै मुदै, झरड़ा तन मत जाय ।—पा.प्र.

दुखदायी-वि० [सं०] (स्त्री० दुखदायण) दुख देने वाला ।

उ०—विना विचारियो कियो कांम निस्चयी दुखदायी होय ।
—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—दुखदाई ।

दुखपाळ-सं०पु० [सं० दुःख+पाल] सोना (अ.मा.)

दुखम-सं०पु० [सं० दुःख] जैन मतानुसार अवसर्पिणी काल का वह पांचमा काल विभाग जिसमें केवल दुख हो ।

रू०भे०—दूसमि ।

दुखम-दुख-सं०पु०यो०—जैन मतानुसार अवसर्पिणी काल का छठवां तथा उत्सर्पिणी काल का प्रथम काल विभाग जिसमें केवल दुख ही दुख हो ।

दुखम-सुख-सं०पु०यो०—जैन मतानुसार अवसर्पिणी काल का चतुर्थ तथा उत्सर्पिणी काल का तृतीय काल विभाग जिसमें दुख के ह्रास के बाद सुख हो ।

दुखर—देखो 'दूसण' (५) (रू.भे.) उ०—जुत भारत दसरथ सुत जीपण, खर दुखर असुरां खंगाळ ।—ह.नां.

दुखवारण-वि० [सं० दुःख+वारण] दुखों को मिटाने वाला; दुख दूर करने वाला ।

दुखांत-वि० [सं० दुःखांत] जिसका अंत दुख में हो ।

दुखांतरा-सं०पु० [सं० दुःखांत्र या अंत्र+दुःख] पेशाब का कठिनता से उतरने का एक रोग विशेष, एक प्रकार का मूत्रकृच्छ ।

दुखाड़णो, दुखाड़बो—देखो 'दुखाणो, दुखाबो' (रू.भे.)

दुखाड़णहार, हारो (हारी), दुखाड़णियो—वि० ।

दुखाड़िओड़ो, दुखाड़ियोड़ो, दुखाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।

दुखाड़ीजणो, दुखाड़ीजबो—कर्म वा० ।

दूखणो, दूखबो—अक०रू० ।

दुखाड़ियोड़ो—देखो 'दुखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दुखाड़ियोड़ी)

दुखाणो, दुखाबो-क्रि०स० [सं० दुःख] १ कष्ट पहुंचाना, पीड़ा देना, व्यथित करना. २ किसी के घाव अथवा मर्म स्थान आदि को छू देना, जिससे उसमें पीड़ा हो ।

दुखाणहार, हारो (हारी), दुखाणियो—वि० ।

दुखवाड़णो, दुखवाड़बो, दुखवाणो, दुखवाबो, दुखवावणो, दुखवावबो
—प्रे०रू० ।

दुखायोड़ो—भू०का०कृ० ।

दुखाईजणो, दुखाईजबो—कर्म वा० ।

दूखणो, दूखबो—अक०रू० ।

दुकाड़णो, दुकाड़बो, दुकाणो, दुकाबो, दुकावणो, दुकावबो, दुखाड़णो, दुखाड़बो, दूखावणो, दूखावबो, दूखणावणो, दूखणावबो, दूखाड़णो, दूखाड़बो, दूखाणो, दूखाबो, दूखावणो, दूखावबो—रू०भे० ।

दुखायोड़ो-भू०का०कृ०—१ कष्ट पहुंचाया हुआ, पीड़ा दिया हुआ, व्यथित किया हुआ. २ किसी के मर्म-स्थान अथवा घाव को छुआ हुआ ।

(स्त्री० दुखायोड़ी)

दुखारो-वि० [सं० दुःख] पीड़ित, दुखी ।

दुखावणो, दुखावबो—देखो 'दुखाणो, दुखाबो' (रू.भे.)

उ०—करसां नै साख दीवी पण फगत देखण नै अर मन दुखावण नै ।—रातवासो

दुखावणहार, हारो (हारी), दुखावणियो—वि० ।

दुखाविओड़ो, दुखावियोड़ो, दुखाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दुखावीजणो, दुखावीजबो—कर्म वा० ।

दूखणो, दूखबो—अक०रू० ।

दुखाविओड़ो—देखो 'दुखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दुखावियोडी)

दुखिणी—देखो 'दुखिया' (रू.भे.) उ०—नृप नै मयण सांभरी, कन्या ए वर जोगी रे । अविनय नो फळ जिम लहै, थायै दुखिणी रोगी रे ।
—स्रीपाळ रास

दुखित-वि० [सं० दुःखित] जिसे कष्ट हो, पीड़ित ।

रू०भे०—दुक्खित ।

दुखिया-वि०स्त्री० [सं० दुःखिनी] दुख से पीड़ित (स्त्री०)

उ०—डावया टोडा टोडड़ी, लोप्या नदी बनास । आडावळा उलांघिया, जद घण छोडी आस । ओ उमराव म्हांनै दुखिया कर चाल्या ।
—लो.गी.

दुखियारी—देखो 'दुखी' (रू.भे.) उ०—१ द्रोपत दुखियारी-ह, पूकारी अबळापणै । मदती हर म्हारी-ह, करणाकर करस्यो करां ।
—रांमनाथ कवियो

उ०—२ सुख सूं सूती थी परजा सुखियारी, दुसटी आतां ही करदी दुखियारी । जग में ऊसरियो खापरियो जैरी, वाल्हा बीछोडण वापरियो वैरी ।—ऊ.का.

विलो०—सुखियारी ।

दुखियारो-वि० [सं० दुःख] १ कष्ट देने वाला. २ देखो 'दुखी' (रू.भे.)

उ० —घट में ओघट-घाट, घड़ी घड़ी घड़ता रहां । बैंसी कद ओ-बाठ, जिय दुखियारो हे 'जसा' ।—ऊ.का.

(स्त्री० दुखियारण, दुखियारी)

विलो०—सुखियारो ।

दुखियौ—देखो 'दुखी' (अल्पा०, रू.भे.) उ०—दादू दुखिया तब लगै, जब लग नांम न लेहि। तब ही पावन परम सुख, मेरी जीवनि येहि। —दादू बांणी

मुहा०—दुखिया री आख होणी—दुखी आँख के समान बरसना, खूब वर्षा होना।

(स्त्री० दुखिया)

विलो०—सुखियौ।

दुखी-वि० [सं० दुःखी] १ जो कष्ट या दुख में हो, जिसे दुख हो। उ०—भाई डूंगरसी भलो, लघु बधव गुण व्रिदो रे। दुखियां दळिद्र भंजणो, भागचंद कुळचंदो रे।—प.च.चौ.

२ जिसके मन में खेद उत्पन्न हुआ हो, मानसिक कष्ट से पीड़ित, व्यथित. उ०—आखा तीजां घणी अमांमी, सिद्ध जनमियौ संकर स्वांमी। वेद धरम सद सुकत वतायौ, अमल नयौ वेदांत अचायौ। प्रीत नीत गळवांणी पायौ, खंडन जैन खीचड़ी खायौ। संकर वेगो गयौ सिधाई, परजा दुखी घणी पिछताई।—ऊ.का.

३ बीमार, रोगी. ४ अपाहिज. ५ शत्रु (अ.मा.)

रू०भे०—दक्खि, दुखारो, दुखियारी, दुखियारी, दुखीयारी, दुख्यारी, दुही।

अल्पा०—दुखवियौ, दुखियौ, दुखीलौ।

विलो०—सुखी।

दुखीयारी—देखो 'दुखी' (रू.भे.)

विलो०—सुखीयारी।

दुखीलौ—देखो 'दुखी' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० दुखीली)

विलो०—सुखीलौ।

दुखीवंत-वि० [सं० दुःख+वान्] पीड़ित, दुखी। उ०—दुखीवत भू वंदरां रंध्र देखै। पंखी उड़ता चक्कवा हंस पेखै। सुरंगां घसै हाथ हूँ हाथ साहे। मह्रा हेमरा धांम आरांम माहे। —सू.प्र.

दुग—देखो 'दुरग' (रू.भे.) उ०—वाप वाप हो! थारा आरभ पारंभ लागि गढ़ लेवणहार, किना वाप वाप हो! थारा सत तेज अहंकार, राइ, दुग राखणहार।—रा.सा.स.

दुगड़ियौ-सं०पु० [सं० द्विघटिकम्] १ राजा महाराजाओं की जनानी ड्योढ़ी पर रखा नगारा जो प्रायः संध्याकाल में ड्योढ़ी वंद (मगळ) करने के समय बजाया जाता है तथा प्रातः ड्योढ़ी खुलने पर बजता है. २ किसी मांगलिक कार्य या यात्रादि के आरम्भ करने के लिये वार गणना से निकाला हुआ मुहूर्त्त (फलित ज्योतिष)

उ०—१ इसड़ो विनय करि आग्या पाय पिंडतां नूं बुलाय दुगड़ियौ महूरत थापियौ।—सिंघासण वत्तीसी

उ०—२ भैरव डावी भणै दुगड़ियौ मांन दिरीजै। जो राजा जीमणौ पोहर हेकण ठैहरीजै।—पा.प्र.

वि०वि०—ये संख्या में २४ होते है। इनकी गणना सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त तथा सूर्यास्त से सूर्योदय पर्यन्त की जाती है। ये दिन में बारह और रात्रि में भी बारह होते हैं।

प्रत्येक दुघड़िये का समय दिन मान तथा रात्रि मान का बारहवां भाग ($\frac{1}{12}$) तुल्य होता है। अतः बढ़ता-घटता रहता है। दुघड़िये कुल सात होते हैं, जिनके नाम क्रमशः सूर्यादि सात वारों के नाम से प्रसिद्ध है।

वराहमिहिराचार्य के समय से होरा गणना प्रसिद्ध है। यही होरा गणना कालान्तर में राजस्थानी में दुघड़िया नाम से प्रसिद्ध हुई है। दैनिक कार्य-सम्पादन हेतु इसका बहुत महत्व है।

रवि आदि वारों के दिन प्रथम दुघड़िया उसी वार के नाम का होता है। फिर क्रमशः छट्ठे छट्ठे वार के नाम से दुघड़िया आता रहता है। (इसमें वह जिसका प्रथम दुघड़िया प्रारम्भ हुआ है गणना में शामिल गिना जाता है)। इस प्रकार दिन का अंतिम अर्थात् बारहवां दुघड़िया उस वार के पूर्व वार का होता है या यों कह सकते हैं कि दिन के प्रथम दुघड़िये से सातवें वार का होता है। फिर सूर्यास्त के समय दिन के अंतिम दुघड़िये से छट्ठा अर्थात् उस वार से पांचवें वार का दुघड़िया रात्रि का प्रथम दुघड़िया होता है फिर क्रमशः छट्ठा छट्ठा आता रहता है। इस प्रकार रात्रि का अंतिम दुघड़िया पूर्व दिन के वार से चौथे वार वाला अर्थात् रात्रि के प्रथम दुघडिये के पूर्व वार का होता है। फिर आगामी दिन में सूर्योदय के समय से उसी वार का दुघड़िया प्रारम्भ होता है।

उदाहरणार्थ रविवार के दिन सूर्योदय से प्रथम दुघड़िया रवि का और दूसरा उससे छट्ठा अर्थात् शुक्र का, तीसरा उससे छट्ठा बुद्ध का, चौथा बुद्ध से छट्ठा चंद्र का, पांचवाँ चन्द्र से छट्ठा शनि का, इसी प्रकार छट्ठा गुरु का, सातवाँ मंगल का, आठवां रवि का, नवां शुक्र का, दशवां बुद्ध का, ग्यारहवां चंद्र का और बारहवां दिन का अंतिम शनि का रहता है। रविवार की रात्रि में प्रथम दुघड़िया शनि से छट्ठा अर्थात् गुरु का, दूसरा मंगल का, तीसरा सूर्य का इसी प्रकार छट्ठे-छट्ठे के अनुसार क्रमशः चौथा शुक्र का, पाँचवां बुद्ध का, छट्ठा चद्र का, सातवां शनि का, आठवां गुरु का, नवां मंगल का, दशवां सूर्य का, ग्यारहवां शुक्र का और अंतिम बारहवां शुक्र से छट्ठा अर्थात् बुद्ध का रहता है और आगामी दिन चन्द्रवार को बुद्ध से छट्ठा चन्द्र का ही प्रथम दुघड़िया आ जाता है।

इष्ट वार से तीसरे वार वाला और पाँचवें वार वाला दुघडिया एक-एक बार तथा दूसरे सब दुघड़िये दो-दो बार आते है। आठवां दुघडिया पुनः वही होता है।

दुघड़िये शुभ और अशुभ दो प्रकार के होते हैं—

शुभ—चंद्र, बुद्ध, गुरु और शुक्र।

अशुभ—सूर्य, मंगल और शनि।

सूर्य का दुघड़िया राज्य सेवा में;

बुद्ध का ज्ञान प्राप्त करने में;

शुक्र का प्रवास में;
मंगल का युद्ध अथवा वाद-विवाद में;
गुरु का विवाह में;
शनि का द्रव्य संग्रह करने में; और
चंद्र का दुघड़िया प्रत्येक कार्य करने में शुभ है।
३ प्रति दिन एक समय किया जाने वाला भोजन जो दो घड़ी दिन अवशेष रहने पर किया जाता है. ४ सूर्यास्त के पहले का दो घड़ी दिन।
रू०भे०—दुघड़ियौ।
यौ०—दुगड़ियौ-मौरत।

दुगड़ी, दुगटी—सं०स्त्री [देश०] एक प्रकार का आभूषण जिसे स्त्रियां हाथ में पहनती हैं।

दुगण—वि० [सं० द्विगुण] दुगुना, द्विगुणा। उ०—पहली छंद प्रबंध में, लघु गुरु दगघ अलेप। गण सुभ अण सुभ दुगण गण, सो वरणूं संखेप।—र.रू.

दुगणित, दुगणौ—वि० [सं० द्विगुणित] दुगुना।
रू०भे०—दोगुणौ।

दुगत—देखो 'दुरगति' (रू.भे.)

दुगदुगी—सं०स्त्री० [देश०] एक प्रकार का आभूषण जो गले में पहना जाता है।

दुगध—देखो 'दूध' (रू.भे.) (ह.नां., डिं.को.)

दुगधा—सं०स्त्री० [सं० दुग्धा] १ दूध देने वाली गाय।
उ०—दुगधा कारण फिरै दुखारी, सुरत धमी सुत मांनै हो। चात्रग स्वाति बूंद मन मांही, पीव पीव उकळांणै हो।—मीरां
२ जमीन, भूमि (अ.मा.)

दुगम—सं०पु०—सिंह, शेर (ना.डिं.को.) २ सुअर (ह.नां.)
३ एक प्रकार का घोड़ा जो चलने में रुक-रुक कर चलता हो (शा.हो.)
४ देखो 'दुगांम' (रू.भे.) ५ देखो 'दुरगम' (रू.भे.)
उ०—१ देवपत रूप वैराट थारौ दुगम, अणू मन सेवगां सुगम आवै।—र.ज.प्र.
उ०—२ दरवाजा वणिया दुगम, कीना लोह कपाट। एक एक तें आगळा, थटै सुभट्टां थाट।—वगसीरांम प्रोहित री वात

दुगमी—सं०पु०—१ सूअर (अ.मा.) २ देखो 'दुगांम' (रू.भे.)
३ देखो 'दुरगम' (रू.भे.)

दुगम्म—१ देखो 'दुगम' (रू.भे.) उ०—१ भड़ पूतारे आपरा, धारै सांम धरम्म। भांण तणौ अस मेळियां, दळ सांघणौ दुगम्म।
—रा.रू.
उ०—२ दळां रोळ दंताळ अैसा दुगम्मं। जमं चालिआ सांमुहा जांणि जम्मं।—वचनिका
२ देखो 'दूरगम' (रू.भे.)

दुगह—देखो 'दूर्ग' (रू.भे.)

दुगांणी—सं०स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा सिक्का।
उ०—तरै जसवंतजी कह्यौ—'उण मां रावजी रौ दोस कोई नहीं। औ तेजसी रौ दोस। जैतारण रौ धणी लाख दुगांणी रै वास्तै रावजी रा हुजदार 'अना' सरीखा नै क्यूं रोकै ? थाळी राव गे क्यूं लै ? म्हारी बात कही।—राव मालदे री बात

दुगांम—वि० [सं० दुर्गम] १ वीर, योद्धा। उ०—१ औ वरियांम सिंह सिमिया, दोय घड़ी इक जांम। 'अजवौ' वीठळदास रौ, पड़ियौ खेत दुगांम।—रा.रू.
२ जबरदस्त। उ०—घर पूरब 'सूजो' घणी, दिखणी मरो दुगांम। साहिजहां 'दारा' सुकर, त्यौं सिरि कोपै तांम।—वचनिका
३ असह्य। उ०—खूंदालम मन सांचियौ, उर संचियौ विरांम। हियै न भावै 'गजन' हर, दुमहां 'अजन' दुगांम।—रा.रू.
४ विकट। उ०—जैतारण सिर आवियौ, 'ऊदा' ले जगरांम। काती क्रस्ण दवादसी, पुर घेरियौ दुगांम।—रा.रू.
रू०भे०—दुगम, दुगमी, दुगम्म, दुग्गम, दुग्गमी।
५ देखो 'दुरगम' (रू.भे.) उ०—दोहूं भड़ कंदल मांड दुगांम।
—गो.रू.

दुगाय—सं०स्त्री० [सं० दुर्गा] एक देवी का नाम।

दुगाळ—सं०पु० [सं० द्वि+गंड=गल्ल] शीतकाल में मस्ती के साथ ध्वनि करते हुए दोनों गिलाफों से गलसूआ बाहर निकालने वाला ऊंट।
उ०—मद भरै करै आकास मून, रिम भरै चरै ताते सु चून। गूंगना मस्त बोलै दुगाळ, झुकतां सगुनी नुमता सभाळ।—पे.रू.

दुगाह—वि० [सं० दुर्+गाह] जो जीता न जाय, अजय।
उ०—सुत रांम 'रूप' निज दळ सनाह, 'गोरधन' तणौ नाहर दुगाह। मुख एता ऊदा महाबाह, सांधिया वेध सूं पातसाह।—रा.रू.

दुगी—सं०स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष.
२ देखो 'दुक्की' (रू.भे.)

दुगुंदुग—सं०पु० [सं० दोगुन्दक] समृद्धिशाली देव विशेष। उ०—अति स्वच्छ निरमळ वस्त्र मस्तिक चंद्रमंडळ सम त्रिन्न छत्र, कनक दंड चमर, द्विव्य आभरण डंबर, इंद्र संमांनि देव सपरिवारे ते त्रायस्त्रिंश इसिइं नांमइं दो दुगुदुग देव, ४ लोकपाल, पद्मा सिवा सुलसा अचळ काळिंदी भांणू ए अठ अग्रमहिसि, सोळ सहस्र देवीपरिव्रित, १२ सहस्र अभ्यंतर सभा तणा देव, १४ सहस्र माध्यम सभा तणा देव, १६ सहस्रबाह्य सभा तणा देव, ७ कटक।—व.स.

दुगौ—सं०पु० [देश०] प्रारम्भ के दो दांतों वाला, ढाई वर्ष का बैल या भैंसा।

दुगुच्छा—सं०स्त्री० [सं० जुगुप्सा] १ निंदा, बुराई. २ अश्रद्धा, घृणा।
वि०वि०—साहित्य में यह वीभत्स रस का स्थायी भाव है और शांत रस का व्यभिचारी।

दुगै—वि०—१ दो मंजिल वाला. २ दो भाग वाला।
रू०भे०—दुगह।

दुग्ग—देखो 'दुरग' (रू.भे.)

दुग्गम, दुग्गमी—१ देखो 'दुगांम' (रू.भे.) २ देखो 'दुरगम' (रू.भे.)
उ०—वडो दुग्गमी देस जोधं विलूंधो। सुधं अंगद अंतानेर सूंधो।
—सू.प्र.

दुग्गय—देखो 'दुरगति' (रू.भे.) उ०—वेस न रख कउ पंच पाउ पार-ढहि अणंतउ। चोरी म करि अयांण रखि दुग्गय जिउ जंतउ।
—पहराज

दुग्गाह-वि०—दोहरा। उ०—मोडा दुग्गह मालिया, गाय-र फोगं गाल। भोगं सुंदर भांमणी, मुफत अरोगं माल।—ऊ.का.

दुग्गी—देखो 'दुक्की' (रू.भे.)

दुग्घर-वि०—विकट, भयावह, भयंकर। उ०—दुग्घर वेळा कठण दुहेली, उर धर म्हे अकुळावां। मुरधर वर्णी मसांण मे'ल नें, पुर घर जाग न पावां।—ऊ.का.
यौ०—दुग्घर-वेळा।

दुग्धसमुद्र-स०पु० [सं०] पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक समुद्र, क्षीरसागर।

दुग्धाक्ष-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का नग या पत्थर जिस पर सफेद-सफेद छींटे होते हैं।

दुग्धाब्धि-सं०पु० [सं०] क्षीर समुद्र।

दुघट-सं०पु०—दो धार। उ०—उलट सुलट मिति वट झपट, दुघट तिघट चढ़ पाइ। परख विकट अस गति लगै, नट नटवर उर लाइ।
—रा.रू.

वि०—विकट, जबरदस्त। उ०—परवतां सिरि पंथ लागा, दुघट घट भागा, सूर सूझइ नहीं खेह आगा।—अ. वचनिका

दुघड़ियौ—देखो 'दुगडियौ' (रू.भे.) उ०—सुण वांधव विवनौ समर, राव वियां कर रेठ। दिन हूतौ नभ दुघड़ियौ, जूझ रह्या पिड जेठ।
—पा.प्र.

दुइंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—सुरांपत इंद्र नै कियौ गजराज सज, दुइंद नै जीण सपताम डहियौ। 'कुसळउत' अनै भूरौ दुरंग वस कियौ, व्रखभधुज अनै कर त्रिपुर बहियौ।
—नींबाज ठाकुर अमरसिंह री गीत

दुड़इंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दुड़की-सं०स्त्री० (अनु०) घोड़े के दौड़ने की एक चाल विशेष।
मुहा०—दुड़की देणी—(किसी कार्य के लिये) तुरन्त भागना, तेज दौड़ना।
रू०भे०—दुलकी, धुड़की।

दुड़णौ, दुड़बौ-क्रि०अ० [देश०] १ ओट में होना, दबकना, छिपना। उ०—सोहै अंगिया ओट, हरी रंग साज में। दुड़िया चकवा दोय, सिवाल समाज में।—वां.दा.
२ देखो 'धुड़णौ, धुड़बौ' (रू.भे.)

दुड़णहार, हारौ (हारी), दुड़णियौ—वि०।
दुड़वाड़णौ, दुड़वाड़बौ, दुड़वाणौ, दुड़वावौ, दुड़वावणौ, दुड़वाववौ
—प्रे०रू०।
दुड़िओड़ौ, दुड़ियोड़ौ, दुड़योड़ौ—भू०का०कृ०।
दुड़ीजणौ, दुड़ीजबौ—कर्म वा०।

दुड़दुड़ी—देखो 'दुडदुडी' (रू.भे.)

दुड़बड़णौ, दुड़बड़बौ-क्रि०अ० (अनु०) १ भागना, दौड़ना. २ शरीर की थकान मिटाने या आराम पहुंचाने के लिये मुष्टिका से हल्के प्रहार करना।

दुड़वड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दौड़ा हुआ, भागा हुआ. २ मुष्टिका से हल्के प्रहार किया हुआ।
(स्त्री० दुड़बड़ियोड़ी)

दुड़बड़ी, दुड़वुड़ी-सं०स्त्री० (अनु०) थकान मिटाने के लिये अथवा आराम पहुंचाने हेतु मुष्टिका से किसी के शरीर पर किए जाने वाले हल्के प्रहार। उ०—१ ताहरां 'मेलौ' पोढ़ियौ। सिखरी दुड़वड़ियां देण लागौ ज्यूं 'मेलै' नूं अमल आयौ घोरांणौ।
—ऊदै ऊगमणावत री वात

उ०—२ ग्रीझणि दीयं दुड़बड़ी, समळी चंपै सीस। पंख झपेटां पिउ सुवै. हूं बळिहारी थईस।—हा.झा.
रू०भे०—दुडवडी।

दुड़यंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) (डि.को.)

दुड़वड़ी—१ देखो 'दुंडदुडी' (रू.भे.) २ देखो 'दुडवड़ी' (रू.भे.)

दुड़िंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—विळकुळे राज रमणी वदन, निरखं रूप नरयंद रौ। जांणै विकास प्रांमै जळज, देखि प्रकास दुड़िंद रौ।—रा.रू.

दुड़ियंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—जोत चंद्र ऊजळी मिटै दुड़ियंद प्रगट्टां। ग्रीखम भाजे गात अंब वरसात उलट्टां।—रा.रू.

दुड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ओट में हुवा हुआ, दुवका हुआ।
२ देखो 'धुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुड़ियोड़ी)

दुड़ी-सं०स्त्री०—स्त्रियों के कलाई पर धारण करने का चांदी या सोने का आभूषण।
रू०भे०—दुडी।

दुचत—देखो दुचित' (रू भे.)

दुचताई-सं०स्त्री० [सं० द्विचित्त+रा०प्र०आई] १ खिन्नता, उदासी। उ०—सोकडल्या चख मांहि करै कडवाइयां। ते आंसू टपकंत हिए दुचताइयां।—वां.दा.
२ चिन्ता।
रू०भे०—दुचितई, दुचिताई।
विलो०—सुचताई।

दुचतौ—देखो 'दुचित' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ दुचती गई अपसरा घर दिस, सती थई वामंग 'माहेस'। थिरमन प्रसन्न 'दलांणी' थायौ, रांणी वर पायौ राजेस।—महेसदास कूंपावत रौ गीत

उ०—२ आज दांन उमांणी आज सरसत दुचती।

पहाड़खां आढौ

उ०—३ जिकै सूरवीर दमंगळ झगड़ा कियां दुचता रहै और जुद्ध में बगतर री जंत कड़ियां जड़ै नहीं, उघाड़ी छाती लड़ै। इसा सूरवीरां में जुद्ध करण वाळौ है सखियां म्हारौ पति।—वी.स.टी.

(स्त्री० दुचती)

विलो०—सुचतौ।

दुचवन—सं०पु० [सं० दुश्च्यवन] इन्द्र (ह.नां.)

दुचाव—सं०पु० [देश] एक प्रकार की घास (शेखावाटी)

दुचित—देखो 'दुचित' (रू.भे.)

विलो०—सुचित।

दुचितौ—देखो 'दुचित' (अल्पा., रू.भे.) उ०—तरां लोहार सारा ई दुचिता बैठा। तरै गिरधारी री बेटी बोली—बापजी दुचिता क्यूं बैठा छौ।—वीरमदे सोनिगरा री वारता

विलो०—सुचितौ।

दुचित—वि० [सं० द्विचित्त] १ खिन्न, उदास (डि.को.) उ०—प्राग अजोध्या मधुपुरी, ओखामंडळ आद। देखे सुख रहिया दुचित, विचित्र न पूगा वाद।—रा.रू.

२ चिंतित. ३ संदेह, खटका. ४ नाराज।

रू०भे०—दुचत, दुचित, दुच्चित।

अल्पा०—दुचतौ, दुचितौ, दुचित्तौ, दुचित्तौ, दुचीतौ।

विलो०—सुचित।

दुचितई, दुचिताई—देखो 'दुचताई' (रू.भे.)

विलो०—सुचितई, सुचिताई।

दुचितौ, दुचित्तौ, दुचीतौ—देखो 'दुचित' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ थे जिकां रा वधावा गावौ छौ तिकां रा सुभाव सूं म्हारा पती रौ सुभाव विलक्षण छै—किसौ कि दमंगळ (जुद्ध) विनां दुचितौ रहै।—वी.स.टी.

उ०—२ जेठी घोड़ौ छै सु सिखरै उगमणावत नूं देई। अर रजपूत दुचिता छै सू तूं सुचिता करै। इयै मोहिल सरव दुहविया छै।

—नैणसी

उ०—३ कदे विचारै जे जीवतौ ही मुवै री खबर कराऊं यूं करता हालियौ आवै छै। सौ खरौ दुचीतौ वहै छै।

—साह रामदत्त री वारता

(स्त्री० दुचिती, दुचिती, दुचीती)

विलो०—सुचितौ, सुचित्तौ, सुचीतौ।

दुच्चित—देखो 'दुचित' (रू.भे.) उ०—देख परी बोली हुय दुच्चित, सती इतौ दुख केम सहौ। लाखां विचै कंथ हूं लाई, कठै गया छा जरां कहौ।—महेसदास कूंपावत रौ गीत

दुच्छुरा—सं०स्त्री० [सं० द्वि-क्षुरिका] खड्ग, तलवार।

उ०—छरा दुच्छुरा मेच्छ ले मद्द छक्कं। हजारां मुहां बाधि है वीर हक्कं।—वचनिका

दुछण—सं०पु० [देश] सिंह (डि.को.)

दुछर—सं०पु०—१ सिंह, (डि.को.) २ वीर, योद्धा।

उ०—१ मछर घर मंज सुर सत सुजळ माटकां, कर सघर ध्यांन गिरधर अग्रत फाटकां। दुछर नर अडर हर हर उचर दाटकां, फाटतां फजर बागो गजर फाटकां।—किसनजी आढ़ौ

उ०—२ वरण वर राड़ियां हूर रंभ वड़ वहै, खपर घर चौसटी वीर रख खड़पड़ै। फजर हववां गजां केत खुल फड़फड़ै, जरट सत्तर दुछर केण माथै जड़ै।—रावत संग्रांमसिंह रौ गीत

(मि० दुवाह)

रू०भे०—दूछर।

मह०—दुछरेल, दूछरल, दुछरेल, दूछरैल।

दुछरेल, दुछरैल—देखो 'दुछर' (मह., रू.भे.)

दुज—सं०पु० [सं० द्विज] १ ब्राह्मण। उ०—बांचै चत्र वेद बिरंच बखांण, प्रकासै व्यास अठार पुरांण। खत्री दुज वंस गया सुद्र खोज, हुतौ ज हुतौ ज हुतौ ज हुनौ ज।—ह.र.

२ वह जिसे यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार हो. ३ ज्योतिषी। उ०—कायर घरं आवण करै, पूछै ग्रह दुज पास। स्वरगवास म्हारौ गिणै, सब दिन प्यारौ सास।—बां.दा.

४ परशुराम। उ०—१ किधौ रव घोर महेस कोदंड। ग्रवै तिरलोक डरघा बळवंड। आयौ रिस कोप चवंत अंगार। तज्यौ बळ चाप हुओ दुज त्यार।—ह.र.

उ०—२ दुजं दीन ह्वै आसीरवाद दीधौ। क्रपानाथ वंदै विदा ब्रह्म कीधौ।—सू.प्र.

५ ब्रहस्पति (अ.मा.) ६ चन्द्रमा (अ.मा., ना.डि.को.)

७ अण्डज प्राणी. ८ पक्षी (अ.मा.) ९ गिद्धिनी (डि.को.)

१० दांत (अ.मा.) उ०—वर वर वाजै बंब वहु, वाजै बीजड़-वाढ़। वाजै दुज विह वैरि जा, घर वाजै गळ गाढ़।—रेवतसिंह भाटी

११ भौरा. १२ सर्प, सांप. १३ चार मात्रा का नाम।

उ०—त्रै दुज गुर कळ चवद तठै। जांणौ हाकळ छंद जठै। भव सागर तर रांम भजौ। तै विण आंन उपाय तजौ।—र.ज.प्र.

१४ देखो 'दूज' (रू.भे.) १५ देखो 'द्विज' (रू.भे.)

रू०भे०—दिज, दुजि, दुज्ज, दुज्जय, दूज, द्विज, द्विज्ज।

अल्पा०—दुज्जड़।

दुजड़—सं०स्त्री०—१ तलवार, खड्ग (डि.को.)

उ०—१ यां बंधव आळोचियौ, जगपती 'चतुरेस'। वंस 'मधकर' ऊधरा, दुजड़ उजागर देस।—रा.रू.

उ०—२ दुजड़ बांण जमदाढ़, सेल दे बाढ़ संवारघा। अणियां धार उपेत, नेतबंध जैत निहारघा।—मे.म.

२ कटार।

रू०भे०—दुजड़ी, दुज्जड़, दूजड़, दूफड़।

दुजड़झल, दुजड़हत, दुजड़हथौ, दुजड़ाहथौ–वि० [रा० दुजड़+सं० हस्त] सुभट, वीर, योद्धा। उ०—१ भलौ रांण सगरांम इम अवड़ ची मुख भणैं, दुजड़हत दससहंस बोल दीधौ। पदमहत मयंक चो ग्रहण व्है अधपहर, कलम चौग्रहण दिन तीस कीधौ।—महारांणा सांगा रौ गीत

उ०—२ मुहिअड़ सोनगिरै 'फतमल्लौ'। दुजड़ाहथौ जोड़ तिण 'दल्लौ'। 'कमा' सदा आगळ नव कोटां। चडियां पति आरति चड़ चौटां।
—रा.रू.

दुजड़ी–सं०स्त्री० [देश] १ कटारी (डिं.को.) २ देखो 'दुजड़' (रू.भे)

दुजण—१ देखो 'दुरजण' (रू.भे.) (ह.नां.) उ०—रुद्र कड़ा ज्यूं रूक दे, दुजणां घरम दवार। तो हत्थां 'तखतेस' तण, ब्रिटिन जाय बळिहार।
—किसोरदांन बारहठ

२ देखो 'दुरजण' (रू.भे.)

दुजणसाल–सं०पु० [सं० दुर्जनशल्य] दुष्टों का संहार करने वाला।

दुजणसाही–वि० [देश०]। उ०—इण भांत री तिजारी सूं गोरां भूवरियां पूंहचां सूं दुजण साह्यां कटोरां में भला जुवांन मचकावै छै। बेवड़ी गळणी सूं खींच चाढ़ छांणजै छै।—रा सा.सं.

दुजन्मौ–वि० [सं० द्वि+जन्म+रा०प्र०औ या द्विजन्मन्] जिसका जन्म दो बार हुआ हो, द्विज। उ०—पुगावै गुफा-गरभ पाखै पुजारा। दुजन्मां जमातां हुवै जेण द्वारा।—मे.म.

दुजपंख–सं०पु० [सं०द्विज+पक्ष] १ भौंरा. २ पक्षी. ३ गरुड़।
उ०—नमो दुज-पंख विजै रथ धज्ज। गुणेह अतीत लखन्न-अग्रज्ज।
—ह.र.

दुजपत, दुजपति, दुजपती–सं०पु० [सं० द्विजपति] १ ब्राह्मण।
२ परशुराम। उ०—पय मिथुला पथ्थं साभ समथ्थं, हण धनु हथ्थं पह प्रांणे। सिय परण सिधाये दुजपत आये, गरब गमाये जग जांणे।
—र.ज.प्र.

३ चन्द्रमा (डिं.को.) ४ कपूर. ५ गरुड़ (नां.मा.)
रू०भे०—द्विजपति।

दुजबर—देखो 'दुजवर' (रू.भे.) उ०—१ दोय मगण सेखा तिलक, तिलक सगण दु, रगण दोय। बीजोहा दुजबर करण, सौ चऊरसा होय।—र.ज.प्र.

उ०—२ सत दुजबर ठांणौ त्रय कळ आंणौ, कहि धता यकतीस कळ। रटजै मझ राघौ दुख अघ दाधौ, फिर तन धारण पाय फळ।
—र.ज.प्र.

दुजमंडण–सं०पु० [सं०द्विज+मंडण] तांबूल, पान (अ.मा.)

दुजमुख–सं०पु० [सं०द्विज+मुख] पान, तांबूल (अ.मा.)

दुजरांण, दुजरांम–सं०पु० [स०द्विज+राट्, द्विज+राम] परशुराम (डिं.को.) उ०—१ जेठ रा भांण सम असह बरफांण जम, मांण दुजरांण असहांण मारै।—र.ज.प्र.

उ०—२ नमौ दुजरांम दमोदर देव। नमौ गुरु द्रोण करण्ण गंगेव। नमौ वप वांमण दीरघ वीख। भिखंग पुरंदर भांजण भीख।—ह.र.
रू०भे०—दुज्जरांम।

दुजराज, दुजराजा, दुजांराज–सं०पु० [सं द्विजराज] १ ब्राह्मण (डिं.को.)
उ०—१ रछिक गऊ दुजराज, सील गंगेव कहावै। एक लखां आंगमै, एक लख अंगम न आवै।—सू.प्र.

उ०—२ पोह क्रत कविराजं हरख उछाजं, सुजस समाजं दध पाजं। रिखवर मुनिराजं सिवसिध राजं, स्तुति दुजराजं नित साजं।—र.ज.प्र.
२ परशुराम. ३ ऋषि. ४ चन्द्रमा (अ.मा., नां.मा.)
उ०—१ दूज वंक दुजराज सखि, वांको राहु विहना। वांको खग बर वांकड़ौ, पह न पिसण फटकना।—रेवतसिंह भाटी
५ गरुड़। उ०—दुजराज त्रास काळी डरै, सोभर धांम संभारियौ। कूरमां तेम कमधज रौ, ध्यांन नेम कर धारियौ।—रा.रू.
६ इन्द्र. ७ कपूर.
रू०भे०—दिजराज, दुजांराज, दुजांराय, द्विजराज, द्विजराय।

दुजवर–सं०पु० [सं० द्विजवर] १ ब्राह्मण। उ०—कछवाहा गजसिंघ था राजा नरवर का। एक कवित पै एक लाख दीधौ दुजवर का।
—दुरगादत्त बारहठ

२ छंद शास्त्र में चार लघु मात्रा का नाम। उ०—खट दुजवर कर प्रथम पद, अंत जगण गण आंण। दूजी तुक दुज साथ धर, जगण सिखा सो जांण।—र.ज.प्र.
रू०भे०—दुजबर।

दुजांण–सं०पु० [सं० द्विज+रा०प्र० आंण] १ ब्राह्मण।
उ०—१ सुखवर सुरांणां, गौ दुजांणां माधवांणां सुख मिळै। मह जिग मंडांणां, थांणथांणां दैत धांणां दूठ।—र ज.प्र.
२ ऋषि, मुनि। उ०—नर नाग सुरा सुर जोड़ नथी, कथ वेद पुरांण दुजांण कथी। मुर कीट मधू हण सिंध मथी, रट रे मन राघव दासरथी।—र.ज.प्र.
३ बृहस्पति (अ.मा.) ४ पक्षी (नां.मा.)

दुजांराज, दुजांराय—देखो 'दुजराज' (रू.भे.) उ०—१ दुजांराज ज्यांरा धरै ध्यांन देखै। प्रभू सच्चिदानंद स्रीरांम पेखै। दुज दीन व्है आसरीवाद दीधौ। क्रपानाथ वंदे विदा ब्रह्म कीधौ।—र.ज.प्र.
उ०—२ जकै वार री औधि सोभा जगांणी। ब्रहम सारदा होत जायै वखांणी। जनंकेस वोलै वळै जांन आए। उठै धोम रूपी दुजांराय आए।—र.ज.प्र.

दुजाई–वि० [सं० द्वि] दूसरा।

दुजात–सं०पु० [सं० द्विज+जाति] १ ब्राह्मण, भूदेव (डिं.को.)।
उ०—इक कपि राकस दैत इक, दूणा दोय दुजात। यां जिम नांम उदार री, चिरं-जीव सुखदात।—बां.दा.
२ देखो 'दुजाति' (रू.भे.)

दुजाति–सं०पु० [सं० द्विजाति] १ जिनको शास्त्रानुसार यज्ञोपवीत

धारण करने का अधिकार हो, ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य, द्विज.
२ ब्राह्मण. ३ पक्षी. ४ अंडज प्राणी. ५ दांत ।
रू०भे०—दुजात, द्विजाति ।

दुजायगी-सं०स्त्री०—भिन्नता, भेद, परायापन । उ०—राज बड़ा छौ, ठाकुर छौ, सदा हेत भोकलास राखौ छौ, तिण सूं विसेस रखावणौ, दुजायगी कणी बात री न जांणसो ।—वीरविनोद

दुजिंद-सं०पु० [सं० द्विजेंद्र] १ ब्राह्मण । उ०—कथा सो सुणी ना सुणी भूप कीधी । दुजिंदां कविंदां भड़ां रीझ दीधी ।—वं.भा.
२ चन्द्रमा. ३ गरुड़. ४ कपूर ।
रू०भे०—द्विजेंद्र ।

दुजि—१ देखो 'दुज' (रू.भे.) २ देखो 'द्विज' (रू.भे.)

दुजीभ, दुजीहं, दुजीह-वि० [सं० द्विजिह्व] १ जिसके दो जीभें हों.
२ चुगलखोर. ३ दुष्ट. ४ चोर. ५ झूठ बोलने वाला, झूठा.
६ दुःसाध्य ।
सं०पु०—१ सांप, सर्प (अ.मा., डि.को.) २ तीर. ३ एक रोग. ४ नगाड़ा (डि.को.) उ०—जोधारां तोखारां ह्वै दवा सूं भेंक जरद्दाळां । दवा सूं कराळां नाद वाजिया दुजीह ।—किरपारांम महड़ू
रू०भे०—दोयजीह ।
अल्पा०—दुजीहौ ।

दुजीहौ—देखो 'दुजीह' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मैला वांका चालता, विखमय भीखण देह । खीर पावतां पिण डसै, सही दुजीहा तेह ।
सोपाळ रास

दुजेस-सं०पु० [सं० द्विज+ईश] १ ब्राह्मण. २ चन्द्रमा ।
उ०—नखत्रां दुजेस छाजै, देवतां सुरेस नांमी । रावतां राजै येम 'जसौ' रावतेस ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
३ गरुड़. ४ कपूर. ५ महर्षि । उ०—भुजगेस महेस दुजेस रिखी, नित पै रज चाहत माधव रे । तजि आंन उपाय सबै 'किसना', भज राघव राघव राघव रे ।—र.ज.प्र.
६ परशुराम ।
रू०भे०—द्विजेस ।

दुजेसर-सं०पु० [सं० द्विजेश्वर] १ महर्षि । उ०—१ साझै पय वंदगी सुरेसर । जस प्रभणै ग्रह सिभ दुजेसर ।—र.ज.प्र.
उ०—२ जे जुध हरणाकुस नूं जरियौ, धड़ नाहर मांनव चौ धरियौ । जिण कारण देव दितेस दुजेसर, न्याय नमै रघुनाथ सूं ।—र.ज.प्र.

दुजोड़ियौ-सं०पु० [सं० द्वि+रा० जोड़ी=दो बैल] वह कूआ जिसके पानी को निश्चित समय में, एक के बाद दूसरी इस प्रकार के दो जोड़ियों द्वारा निकाल कर सींच दिया जाय, फिर उसमें अधिक पानी की गुंजाइश नहीं रहती है । उतने पानी का कूआ जिसका पानी सिंचाई के लिये क्रमशः दो जोड़ियों द्वारा निश्चित समय में निकाल लिया जाय ।

दुजोड़ौ—देखो 'दूजो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—जद मयारांम नै मालकी तोरण लावै छै, सात ही वडारणां दुजोड़ी साथै छै ।
—मयारांम दरजी री वात
(स्त्री० दुजोड़ी)

दुजोण, दुजोधण, दुजोधन—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—१ किता वेर पांडव ऊपर कीध, लाखा-ग्रह कुंता काढै लीध । दुसासण कन्न गंगेव दुजोण, सपै कुरखेत अढ़ार अखोण ।—ह.र.
उ०—२ वैठौ मद्ध जिण वार, मांण दुजोधन मेटियौ । सेवै कन उण वार, यां पारथ बैठणां थकां ।—रांमनाथ कवियौ

दुजोयण-वि० [सं० दुर्जन] १ दुष्ट, नीच. २ देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—मांण दुजोयण मालदे, जिण वाधो जगहत्थ । भारथ भिड़िया जास भिड़, साह हूंत समरत्थ ।—वां.दा.

दुजौ—देखो 'दूजौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुजी)

दुज्ज—१ देखो 'दुज' (रू.भे.) उ०—१ नहीं तू गुज्झ नहीं तू ग्यांन । नहीं तू दुज्ज नहीं तू दांन । नहीं तू जीव नहीं तू जंत । नही तू आदि नहीं तू अंत ।—ह.र.
उ०—२ उवै सास्त्र लखि दुज्ज उचारै । ध्यांन धरेस अखंडित धारै ।—सू.प्र.
२ देखो 'द्वि' (रू.भे.)

दुज्जड़—देखो 'दुज' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'दुजड़' (रू.भे.)
उ०—खहर गर्म अत दुजड़ां, महर करै दहवाट । आया थांणा 'अजन' रा, लूट विढांणा राट ।—रा.रू.

दुज्जण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.) उ०—१ सज्जण दुज्जण के कहै, भड़िक न दीजै गाळि । हळिवइ हळिवइ छंडियइ, जिम जळ छंडइ पाळि ।—ढो.मा.
उ०—२ तप तेज परख हिंदू तुरक, सदा हरक मन सज्जणा । कोमळ किसोर तौ ही कमंध, दुति कठोर उर दुज्जणा ।—रा.रू.

दुज्जणौ—देखो 'दुरजण' (अल्पा., रू.भे.)

दुज्जय—१ देखो 'दुज' (रू.भे.) उ०—दुवार है सरव दास जै वसेख दुज्जयं । अतीत ग्रेह तया आय प्रीत हूंत पुज्जयं ।—सू.प्र.
२ देखो 'द्विज' (रू.भे.)

दुज्जरांम-सं०पु०—देखो 'दुजरांम' (रू.भे.) । उ०—मच्छ कच्छ वाराह महम्मण । नारसिंघ वांमन नारायण । दुज्जरांम रघुरांम दिवाकर । किसन वुध कलकी करुणाकर ।—ह.र.

दुज्जोण, दुज्जोध, दुज्जोहण—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—१ देवी सारदा रूप प्रींगळ प्रसन्नी । देवी मांण रे रूप दुज्जोण मन्नी ।—देवि.
उ०—२ आजांनुवाह परसै उरस, गह अथाह सरसै गुमर । कर रहण जोध पांडव किनां, प्रबळ क्रोध दुज्जोध पर ।—मे.म.
उ०—३ दुज्जोहण घर घरणि सांमि सिक्ख रडतीय मग्गइ । धम्मपुत्त वयणेण पुण इंद पुत्तु तिणि मग्गि लग्गइ ।—पं.पं.च.

दुज्यूं-क्रि०वि०—अन्यथा । उ०—चाचो मेरो मारियौ । तिण सूं अरज करां तिका फीकी लागै, दुज्यूं मन मांहै तो घणा ही वेराजी थका दुख

पावां छां।—राव रिणमल री वात

दुझल, दुझल्ल, दुझाल, दुझेल–वि० [सं० द्वि+रा० झल] १ वीर, योद्धा।
उ०—१ 'दुरग' तणै साथै दुझल, 'करन' हरा कुळ थंभ। 'कचरावत' 'विजपाळ' सा, आदरियौ आरंभ।—रा.रू.
उ०—२ जस गल्ह रहवांणजे सहल, मइयल भंजे मेहवर। 'गजमल्ल' 'मल्ल', 'गंगे' कुळी, रिण दुझल्ल रट्ठोड़ हर।—गु.रू.बं.
उ०—३ 'दलावत' सूर 'विसन्न' दुझाल। लोहां अरि ढाहि करै घर लाल।—सू.प्र.
उ०—४ मूठ कर खग मेल, मूंछां वळ घालियां। दारुण रूप दुझेल, हवेली हालियां।—महाराजा पदमसिंह री वात
२ जबरदस्त। उ०—दुझल जिण भुजां-बळ हूंत आठूं दिसा, लंघ सामंद कीधी लड़ाई। जीत लीधी जमी कठै थो जेण री, पराजै हुई नह फतै पाई।—र.रू.
३ पंडित, विद्वान। उ०—दुय दुय पदां दुमेल, मंछ कहै मोहरा मिळै। म्होरां चारां मेल, दाखै पालवणी दुझल।—र.रू.
रू०भे०—दूझल्ल।

दुटपी–वि० [सं० द्वि+रा० टपी] दोनों ओर की, दुतरफी, दुरुखी।
उ०—वरजे पर ही वेट वेगार, आप वसै जिहां व्है अधिकार। दुटपी वात कहै दरवार, सह नौ समझीजै ततसार।—ध.व.ग्रं.

दुट्ठ, दुठ—१ देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—हैय दैवह हैय दैवह दुट्ठ परिणांमु।—पं.पं.च.
२ देखो 'दूठ' (रू.भे.) उ०—तेजसी दुठ ठाकुर थो। मन में आ वात राखी जे म्हारी लाख दुगांणी राव रा हुजदार कन्है लेहणी छै।
—राव मालदे री वात

दुठर—देखो 'दुस्तर' (रू.भे.)

दुठाणौ, दुठावौ–क्रि०अ०—कोप करना (?)। उ०—जोसंगी दुठावौ आंण दलेसां सूं करै जावौ, वुठावौ चूक रौ चखां अखां भीम वाथ। तठीनै रुठावौ जठी भसमा भूक रौ तावौ, हुए कठी रूक रौ मूठावौ हिंदूनाथ।—महादांन महड़ू

दुठायोड़ौ–भू०का०कृ०—कोप किया हुआ, कुपित (?)।
(स्त्री० दुठायोड़ी)

दुठाळौ–वि० [सं० दुष्ट+आलुच्] (स्त्री० दुठाळी) १ जबरदस्त, शक्तिशाली। उ०—काट फरासर ढोल करीजै, सोळै कोसां सबद सुणीजै। पूछै तांम भड़ां पूंछाचाळां, दारण आप जिसा दुठाळा।
—गो.रू.

दुट्ठ, दुट्ठि—१ देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) (जैन)
२ देखो 'दूठ' (रू.भे.) (जैन)

दुडंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—दांना अंबर पावक पवन इंद चंद दुडंदे।—केसोदास गाडण

दुड–वि०—पूर्ण तृप्त, अघाया हुआ।

दुडइंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—सूर्ज पग छांह सीत रिख स्यांम, रंजै पग छांह जिसा वळ रांम। देखै पग सेव करै दुडइंद, चरच्चै पग निरम्मळ चंद।—ह.र.

दुडदडी, दुडदुडी—देखो 'दुडंदुडी' (रू.भे.) उ०—काहल तणी कोलाहळि कांन कम्मकम्यां, डूंडि दमांमा दुडदडी द्रमद्रमाटि।—व.स.

दुडयंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दुडवडी—देखो 'दुंडदुडी' (रू.भे.) उ०—सुत दीठइ दुख वीसरया ए, वाजइ ताळ कंसाळ। दमांमा दुडवडी ए, वाजइ वनरमाळ।
—ऐ.जै.का.सं.

दुडिंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—सपत पयाळ न सात समंद, दसै द्रगपाळ न चंद दुडिंद। सुमेर न सेस पहल्लां सो ज, हुतौ ज हुतौ ज हुतौ ज हुतौ ज।—ह.र.

दुडियंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.)

दुडी—देखो 'दुड़ी' (रू.भे.)

दुणिंद—देखो 'दिनंद' (रू.भे.) उ०—चळ चळिय चक्कवइ च्यारि चंद। दळ रजी पाइ छायउ दुणिंद। मूगळै जिनावर वांणि मारि। आयास हूंत आंणइ उतारि।—रा.ज.सी

दुण—देखो 'दूणौ' (रू.भे.) उ०—औ व्रसपत दसमे ग्रह आयौ, विदुख तिकां दुण लाभ बतायौ।—रा.रू.

दुणियर—देखो 'दिनकर' (रू.भे.) (ह.नां.) उ०—भागौ तौ बारह राह ग्रहियौ तौड़ दुणियर। खोड़ौ तोड़ हणवंत जोर माथियौ तोड़ सायर।
—द.दा.

दुणेटौ—देखो 'दूणौ' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—वणेटौ।

दुणौ—देखो 'दूण' (रू.भे.) उ०—बोल्यौ प्रोहित बेलियां, विध विध रंग बखांण। अमलां करौ दुणा अथग, तुरंगां करौ पलांण।
—वगसीरांम प्रोहित री वात

दुतग, दुतंगर–सं०पु०—घोड़े की जीन या पलान कसने का दोनों ओर का तस्मा। उ०—१ भीड़ियां दुतंग हय रवण सळका भरै, वीर जुध वयण धक ओघ बरसै। नंद 'गुमनेस' छक छलै धारै नयण, दार भवणी तरह गयण दरसै।—जवांनजी आढ़ौ
उ०—२ सब साज सजायर, चोट पटासिर, नेवर पायर वाज नखी। गजगाह दुतंगर भीड़ खतंगर, ओप उजाळर चोव रखी।
—किसनौ दधवाड़ियौ

दुत–सं०पु० [सं० द्युति] १ कान्ति, प्रभा, चमक, दमक, ज्योति।
उ०—१ दांत दमकै अहर दुत, जांण चमकै वीज। ज्यां री धुनि मधुरी सुणै, रहै तपोधन रीज।—बां.दा.
उ०—२ आठ पोर जस इंदुरी, जिण घर दुत जागंत। तिण घर सूं अपजस तिमर, अळगा थी भागंत।—बां.दा.
२ किरण (डिं.को.) ३ प्रकाश, रोशनी। उ०—दुत चंद नखत्रन ढांक दिया। लख तुंगिय जांभर पेर लिया। करसै निसि कांमि कमंधज रौ। यळ आहट साद वजै अजरौ।—पा.प्र.

४ शोभा। उ०—नर नारी शोभत निपट, लाख लोक लेखंत। पीछोला के ऊपरै, दुत गवरां देखंत।—वगसीरांम प्रोहित री वात
५ दीपक (अ.मा.) ६ वेग (अ.मा.)
वि० [सं० द्वैत] ७ दोहरा। उ०—दुत भाव तजो दुनियां पगली, गुर ग्यांन गहो समजो सगळी। सुन स्वार विचार तजो सब ही, अज कांम करो सो करो अब ही।—ऊ.का.
रू०भे०—दुति।
यौ०—दुत-भाव।
अव्य०—१ असीम लज्जा सूचक शब्द. २ बच्चों आदि के प्रति बहुत प्यार जताने के निमित्त बोला जाने वाला शब्द. ३ बहुत घृणा के कारण मुँह से निकलने वाला शब्द. ४ तिरस्कारसूचक शब्द।
रू०भे०—धत, धत्त।

दुतअंगम-सं०पु० [सं० द्युति+अंगम] आभूषण (अ.मा.)

दुतकार—देखो 'दुत्कार' (रू.भे.)

दुतकारणी, दुतकारबो—देखो 'दुत्कारणौ, दुत्कारबौ' (रू.भे.)

दुतकारियोड़ो—देखो 'दुत्कारियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दुतकारियोड़ी)

दुतभाव-सं०पु०यौ० [सं० द्वैतभाव] १ ऐक्यता का अभाव, अनैक्यता, भिन्नता. २ अज्ञान।

दुतमूरति-सं०पु० [सं० द्युति मूर्ति] सूर्य्य, सूरज (अ.मा.)

दुतर—देखो 'दुस्तर' (रू.भे.) उ०—दुतर भव सागर मंझार, तत नाव तिरंदा। ऊंडा दुतर भव समंद, तंत नांम तिरंदा।—केसोदास गाडण

दुतरणि-वि० [सं० दुस्तर] बहुत कठिन, दुखदायी।
उ०—वीणा डफ महुयरि वजाए, रोरी करि मुख पंचम राग। तरुणी तरुण विरहि जण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग।
—वेलि.

दुतरफ, दुतरफो-वि० [रा० दो+अ० तरफ या सं० द्वि+अ० तरफ] (स्त्री० दुतरफी) जो दोनों ओर हो, दोनों ओर का, दुतरफा।
उ०—मूंबड़े जसरूप रै बोहत घाव लागा पण वंचियो ओर आदमी ५० दुतरफा कांम आया।—द.दा.

दुतलाल-सं०पु० [सं० लाल+द्युति] मंगल (अ.मा.)

दुतवीस-वि० [सं० द्युति] द्युतिमान, प्रकाशयुक्त, कांति वाला।
उ०—पै संग्या कीरत मुख प्रीतां वारज अवध मूल दुतवीस। प्रणवै भंजै संग्रहे पेखै उतवंग जवां करण चख ईस।—र.रू.

दुतार, दुतारो-सं०पु० [सं० द्वि+फा० तार] १ एक बाजा जिसमें दो तार लगे होते हैं और अंगुली से सितार की तरह बजाया जाता है।
उ०—डफ खंजरी दुतार, विखम रोहिला वजावै। पसतो अरवी पाड़, गजल कड़खा वह गावै।—सू.प्र.
रू०भे०—दुतार, दुतारो।
२ देखो 'दुस्तर' (रू.भे.)

दुति-सं०स्त्री० [सं० द्युति] १ दीप्ति, कांति, चमक।
उ०—तिण ग्रहतां अहि रो वप तजियो। छत्रपति हाथि खड़ग छव छजियो। रूप खड़ग अदभुत दुति राजै। तडित सिलावत धोम तराजै।—सू.प्र.
२ शोभा, छवि। उ०—१ मकरंद तंबोळ कोकनद मुख मधि, दंत किंजळक दुति दीपंति। करि इक बीड़ो वळै वांम करि, कीर सु तसु जाती क्रीड़ंति।—वेलि.
उ०—२ वेलां तरवर वीटियां, दुति कुसमां दरसंत। निजर पिया नाह रै, वनमय मदन वसंत।—वां.दा.
३ लावण्य। उ०—निज दिन हूंत माम इक नंमै। जा दिन अद्वती चंद जनंमै। सकति रूप अदभुत दुति सज्जे, उद्र अपुरा परमार उपज्जे।
—सू.प्र.
४ रश्मि, किरण (नां.मा.) ५ देखो 'दुत' (रू.भे.)
रू०भे०—दुती, दुत्ती, द्युति, द्योत।

दुतिमांन-वि० [सं० द्युतिमत्] प्रकाशयुक्त, चमकीला, शोभित।

दुतिमाळा-स०स्त्री०[सं० माला=मेघमाला+द्युति] बिजली (नां.मा.)

दुतिय—देखो 'दुतीय' (रू.भे.) उ०—आदि एक अविणासी तत निराकार दुतिय तेजोमय। प्रभु आकार प्रकासी, त्रितीय स्वरूप नमो कमळापति।—सू.प्र.
(स्त्री० दुतिया)

दुतियक—१ देखो 'दुतिय' (रू.भे.) २ देखो 'दुतिया' (रू.भे.)
उ०—एकोतरै अठार सै, सांवण दुतियक स्वेत। वांकै ग्रंथ बणावियो, कायर कुजस निकेत।—वां.दा.

दुतिया-सं०स्त्री० [स० द्वितीया] १ प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि, दूज। उ०—दुतिया चांद, मजीठ रंग, साध वचन प्रतिपाळ। पाहण रेखं'र करम-गत, जं नहिं मिटत 'जमाल'।—जमाल
वि०—दूसरी।
रू०भे०—दूतियक, दुतिया।

दुतियो—देखो 'दुतीय' (अल्पा., रू.भे.) उ०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जांण्या, दुतिये कास्ट दागी। जीवन मुक्ति सदा सुखदायी, समदरसी वीतरागी।—स्री सुखरांमजी महाराज

दुतिवत-वि० [सं० द्युति+वंत] १ आभायुक्त, कांतिवान, प्रकाशयुक्त, चमकीला। उ०—१ पेखो घर में पवन सूं, बचै दीप दुतिवंत। दीप हूंत दरसंत, घर में उजवाळो घणो।—वां.दा.
उ०—२ अधरां डसणां सूं उदै, विमळ हास दुतिवंत। सो संध्या सूं चंद्रिका, फैली जांण कवंत।—वां.दा.
२ रूपवान, सुंदर। उ०—१ रांम महराज, करण जन काज। कोट रवि क्रंत, देह दुतिवंत।—र.ज.प्र.
उ०—२ चत्रवर बजार चित्रकांम चार। दुतिवंत वेलि गुल रंगदार।
—सू.प्र.

दुती—१ देखो 'दुति' (रू.भे.) उ०—अधर दुति आक्रती जंत्र वजवती जुंगत्ती। रूपवती रंजति माळ झूलती मुकत्ती।—सू.प्र.

२ देखो 'दुतीय' (रू.भे.) उ०—तेर प्रथम सोळह दती. मझ तुक वे बिसरांम । गुणती मत अंते वे गुरु, निमंध मछटथळ नांम ।
—र.ज.प्र.

दुतीतेज–सं०पु० [सं० तेज+द्युति] सुदर्शन चक्र (नां.मा.)

दुतीय–वि० [सं० द्वितीय] (स्त्री० दुतीया) दूसरा । उ०—आद मत अगीयार, दुतीय पद तेर मात दख । काव्य छंद तिण कहत, अवध ईस्वर कीरत अख ।—र.ज.प्र.

रू०भे०—दुतीय, दुतीयक, दुत्ती, दुत्तीय, दूतीय ।

अल्पा०—दुतियौ, दुतीयौ, दूतीयौ, द्वितीयौ ।

दुतीया—देखो 'दुतिया' (रू.भे.)

दुतीयौ—देखो 'दुतीय' (अल्पा., रू.भे.) उ०—अद्वितीय ब्रह्म अखंड सूं, दुतीया यूं ठांणी । फुरणा माया फुरत ही, दोख आवरण आंणी ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

दुतीवांन–सं०पु० [सं० द्युतिवान्] दिनकर, सूर्य (ह.नां.)

दुत्कार–सं०स्त्री० [सं० टु दु उपतापे अनु० दुत+रा०प्र० कार] किसी का दुत्-दुत् कह कर किया जाने वाला अपमान तिरस्कार, फटकार, धिक्कार । उ०—चौधरी भींत सूं नीचौ उतर नैं दूजोड़ा बंगळा कांनी चाल्यौ पण उठै भी उण नैं ठंरण नही दियौ अर दुत्कार नैं निकाळ दियौ ।—रातवासौ

रू०भे०—दुकार, दुक्कार, दुतकार, धतकार, धुतकार ।

दुत्कारणौ, दुत्कारबौ–क्रि०स० [सं० टु दु उपतापे] दुत् दुत् शब्द कह कर किसी को अपने पास से हटाना, दूर करना. २ तिरस्कृत करना. धिक्कारना ।

दुत्कारणहार, हारौ (हारी), दुत्कारणियौ—वि० ।

दुत्कारिओड़ौ, दुत्कारियोड़ौ, दुत्कारचोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दुत्कारीजणौ, दुत्कारीजबौ—कर्म वा० ।

दुकारणौ, दुकारबौ, दुतकारणौ, दुतकारबौ, दुरकारणौ, दुरकारबौ धतकारणौ, धतकारबौ, धुतकारणौ, धुतकारबौ—रू०भे० ।

दुत्कारियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ (किसी को) दुत् दुत् कह कर दूर हटाया हुआ. २ तिरस्कृत किया हुआ, अपमानित ।
(स्त्री० दुत्कारियोड़ी)

दुत्तर, दुत्तारि—देखो 'दुस्तर' (रू.भे.) उ०—'जिणदत्तसूरि' जिन नमहि पय, पउम मच्चु (गव्वु) नियमणि वहहि । संसार उयहि दुत्तारि, पडिय, तिनहु तरंडइ चडि तरिहि ।—ऐ.जै.का.सं.

दुत्तार, दुत्तारौ—१ देखो 'दुतार, दुतारौ' (रू.भे.)
२ देखो 'दुस्तर' (रू.भे.) उ०—ता(उ) तूंगौ मेरुगिरी, मयर हरौ (सायरौ) ताव होय दुत्तारौ । ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जंति ।—ऐ.जै का.सं.

दुत्ती—१ देखो 'दुति' (रू.भे.) २ देखो 'दुतीय' (रू.भे.)
उ०—प्रथम्मा तुही पव्वई सैल-पुत्ती । दुरग्गा तुही ब्रह्मचारण्य दुत्ती ।
—मे.म.

दुत्तीय—देखो 'दुतीय' (रू.भे.)

दुत्थ–वि० [सं० दुस्थ] दुखी । उ०—दीन दुत्थ उपगार करइ ए, गुरु-जननइ ए मांन । धरमकांम नित साचवइ ए, धरइ जगगुरु ध्यांन ।
—नळ-दवदती रास

दुत्थभाव–सं०पु० [सं० दुःस्थ+भाव] दारिद्रय, कंगाली, निर्धनता । उ०—विरचे प्रवंध तस जस विसाळ, लुभवाय सुणायौ भाट लाल । तिण दुत्थभाव कमधज्ज तोड़ि, करि रजत दम्म बखसीस कोडि ।
—वं.भा.

दुत्थिय–सं०पु० [सं० दुःस्थ] दारिद्रय, निर्धनता । उ०—समरथ सूर तोगां 'वदि' रसुत, अहिमद आणंदि मिळई । दुत्थिय दुख्ख आरति टळइ, सयळ सिद्धि वंछित फळइ ।—व.स.

दुथडियौ–सं०पु० [सं० द्वि+स्तर] घोड़े का सूत का बना चारजामा विशेष ।

दुथणी, दुथन, दुथनी, दुथ्थणी, दुथ्थनी–वि० [सं० द्वि+स्तन+रा०प्र०ई] जिसके दो स्तन हों, द्विस्तनधारी ।
सं०स्त्री०—दो स्तनों वाली, स्त्री । उ०—१ दुथणी जण न कोई दूजी, 'अखवी' हरा बराबर आज ।—राव कूंपा और जैता री गीत
उ०—२ सेवग 'भीम' धणी धर तो सम, दुथणी जायौ नकू दुओ । जमी चाड अवगाढ़ 'अजीता', हमकै डाढ वराह हुओ ।
—किसनौ आढ़ौ

रू०भे०—दोयथणी ।

दुदंती–सं०पु० [सं० द्वि+दंत+रा०प्र०ई] हाथी, गज ।

दुदळ—देखो 'द्विदळ' (रू.भे.)

दुदांम, दुदांमौ—देखो 'दमाम' (रू.भे.) उ०—साव दळइ चालिउ सुरतांण, वार सहस वाज्यां नीसांण । चाल्यां कटक दुदांमां करी, खेह तणी दीसइ डांमरी ।—कां.दे.प्र.

दुदोथटौ–सं०पु०—सूअर (अ.मा.)
रू०भे०—दूदोथटौ ।

दुदेली—देखो 'दूधी' (अल्पा., रू.भे.)

दुद्द, दुद्धो—१ 'दुंद' (रू.भे.) उ०—हणे दुद्द नूं वालि हेलां अहूणौ । धरै भुडंडा दुद्दरी देह धूणौ ।—सू.प्र
२ देखो 'दूध' (रू.भे.) उ०—दादू माया सौं मन विगड़ा, ज्यों कांजी कर दुद्ध । है कोई संसार में, मन कर देवै सुद्ध ।—दादू वांणी

दुद्धी—देखो 'दूधी' (रू.भे.)

दुध—देखो 'दूध' (रू भे.) उ०—जोगी थां कौन कहै हो वात । दुधइ न्रिहावऊं धणी हो नीवात ।—वी.दे.

दुधड़ियौ—देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)

दुधार–वि० [सं० दोग्ध्री], १ दूध देने वाली.
[सं० द्वि+धार] २ जिसके दोनों ओर धार हो. ३ तलवार ।
उ०—धुर धरम धारणौ नीर धार हो, दुसमण दळ दावानळ दुधार ।
—ऊ.का.

सं०पु०—१ कटार, बरछी. २ दो धार वाला खड्ग।

उ०—छेड़ हुई कांठायतां, आया खेह अपार। झड़ लागो सर गोळियां, हुय होळियां दुधार।—रा.रू.

३ भाला (डि.को.) ४ रथ (डि.नां.मा.)

रू०भे०—दूधार, दोधार।

अल्पा०—दुधारो, दुवधारो, दोधारो।

दुधारी-वि० [सं० द्वि+धार] दो धार वाली।

सं०स्त्री०—कटारी (डि.को.)

रू०भे०—दुवधारी।

सं०स्त्री०—१ कटार, बरछी. २ दूध देने वाली।

रू०भे०—दुवधार, दोधारी।

दुधारू—देखो 'दुधाळू' (रू.भे.)

दुधारो-सं०पु० [सं० द्वि+धार] १ बढ़ई का एक औजार.

२ देखो 'दुधार' (अल्पा., रू.भे.) उ०—केवांणां झमंका करै घरां दीप काळका सा, दमंकै दुधारा दीप माळका सा दीप।—नन्दजी सांदू

दुधाळ—१ देखो 'दुधाळू' (रू.भे.) २ देखो 'दूध' (रू.भे.)

उ०—जनमाळ धुराळ दुधाळ सिरज्जत, काळ में क्यों न गवाळ करै।—करुणासागर

दुधाळू-वि० [सं० दोग्ध्री अथवा दुग्ध+आलुच्] अधिक दूध देने वाली।

रू०भे०—दुधार, दुधारू, दूधार, दूधारू, दूधाळ, दूधाळू।

दुन्नभि, दुधुभी—देखो 'दुंदुभी' (रू.भे.) उ०—अबीर गुलाल उडावत रोरी। डफ दुधुभी वाजत थोरी थोरी।—मीरां

दुधेल—देखो 'दूधाळू' (रू.भे.)

दुनड़-सं०पु० [सं० दुर्नट] शत्रु (अ.मा.)

दुनां-वि० [सं० द्वि] दोनों। उ०—ताजदार बैठो तखत, रज में चोटै रंक। गिणै दुना नूं हेक गत, निरदय काळ निसंक।—बां.दा.

दुनाळ, दुनाळिय, दुनाळी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+नाल] वह बंदूक जिसके पृथक पृथक दो गोलियाँ भरने के लिये दो नालें एक साथ सटी हुई हों।

उ०—१ केइ आय भड़ कोठार, वारूद लावत बार। सब लेत ससत्र संभाळ, दिढ़ जुजरवा दुनाळ।—पे.रू.

उ०—२ वदै जय 'भैरव' खाग समाय, मंडै पग खांन रहै रिणमाय। अयो जद सांमहि वाज उपाड़, झलै कर खांन दुनाळिय झाड।—पे.रू.

वि०वि०—इस बन्दूक की दोनों नालों में गोलियाँ भर कर इसे एक साथ या अलग-अलग समय में दो बार छोड़ी जा सकती हैं।

रू०भे०—दोनाळी।

मह०—दुनाळ।

दुनाळो-वि०—दुनाळी बंदूक रखने वाला।

सं०पु०—१ वह मकान जिसके दो जीने होते हैं.

२ देखो 'दुनाळी' (मह., रू.भे.)

दुनि—देखो 'दुनिया' (रू.भे.) (डि.को.)

दुनियण-सं०पु० [सं० दिनकर अथवा अ० दुनिया+सं० नयन] १ सूर्य. (डि.को.)

(मि० जगचख)

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दुनियां-सं०स्त्री० [अ० दुनिया] संसार, जगत्। उ०—रोम रोम आंमय रहै, पग पग संकट पूर। दुनियां सूं नजदीक दुख, दुनियां सूं सुख दूर।—बां.दा.

मुहा०—१ दुनियां उलटणी—बहुत लोगों का इकट्ठा होना, खूब गर्दी होना, बहुत भीड़ होना. २ दुनियां दुरंगी—दुनियां दो रंग की होती है, दुनियां अवसर देख कर अपने स्वार्थ की ओर झुक जाती है. ३ दुनियां नै जीतणी—सांसारिक प्रपंच से छुटकारा पाना। लोगों को वश में करना। जनता को अपने अनुकूल बनाना. ४ दुनियां पराये सुख दूबळी—दुनियां दूसरों के सुख को देख कर ईर्ष्या करती है. ५ दुनियां पलटणी—पुरानापन दूर होकर नयापन प्रतीत होना, जनता का विरुद्ध होना. ६ दुनियां भर रो—बहुत अधिक. ७ दुनियां री हवा लागणी—सांसारिक अनुभव होना. ८ दुनियां सूं ऊठणी—मर जाना, चल बसना. ९ दुनियांदारी री वात, व्यावहारिक बात, छल भरी बात, बनावटी बात।

२ संसार के लोग, जनता. ३ संसार का प्रपंच, जगत-जंजाल।

रू०भे०—दणयर, दणियर, दन्या, दुनि, दुनियण, दुनियांण, दुनियांणी, दुनियांन, दुनियाई, दुनीं, दुनां, दून्यां।

दुनियांण, दुनियांणी—देखो 'दुनियां' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ उदयवत आज दुनियांण सह ऊपरा, सार रो तार लागो सवां हीं। हंस राखै जिकां नीर अळगो हुवै, नीर राखै जिका हंस नाहीं।—महारांणा प्रताप रो गीत

उ०—२ राघव सिफत वखांणी, सच्चे सायरां। आफताव दुनियांणी दीद नगाहए।—र.ज.प्र.

दुनियांदार—देखो 'दुनियादार' (रू.भे.)

दुनियांदारी—देखो 'दुनियादारी' (रू.भे.)

दुनियांन—देखो 'दुनियां' (रू.भे.) उ०—अमिट मड़ां बळ अंग में, कोठारां सांमांन। सांमध्रमी ठाकुर सको, दिए रंग दुनियांन।—बां.दा.

दुनियाई-वि० [अ० दुनिया+रा०प्र०ई] १ सांसारिक.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दुनियादार-स०पु० [अ० दुनिया+फा० दार] सांसारिक प्रपंच में फंसा हुआ मनुष्य, संसारी, गृहस्थ।

वि०—व्यवहारकुशल।

रू०भे०—दुनियांदार।

दुनियादारी-सं०स्त्री० [अ०+फा०] १ गृहस्थ का जंजाल, दुनिया का कारबार. २ वह व्यवहार जिससे अपना प्रयोजन सिद्ध हो, स्वार्थसाधन. ३ दिखावटी व्यवहार, दुराव।

रू०भे०—दुनियांदारी ।

दुनियासाज–वि० [अ० दुनिया+फ़ा साज़] १ लल्लोचप्पो करने वाला, चापलूस. २ युक्ति से अपना प्रयोजन सिद्ध करने वाला, स्वार्थ-साधक ।

दुनियासाजी–सं०स्त्री० [अ० दुनिया+फ़ा साज़ी] १ स्वार्थ-साधन की वृत्ति, खुद का मतलब निकालने का ढग. २ वात वनाने का ढंग, चापलूसी ।

दुनीं, दुनी–सं०स्त्री० [अ० दुनिया] १ पृथ्वी । उ०—लख हय भड़ दिय सैंस लख, हाथी भखरा हजार । रावत-रण पर रीझियौ, दुनी प्रळै दातार ।—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)(डि.को.) उ०—१ दीह घणा माफळ दुनीं, रुळियौ देखै रूप । माधव हमें प्रकास मो, सिव ताहरौ सरूप ।—ह.र.

उ०—२ करचौ द्रंग देसांण प्रसथांण इंदर सकति, प्रेम अप्रमांण रा अम्रत पीधा । 'करनला' मात रा आप दरसण किया, दुनी नूं आपरा दरस दीधा ।—मे.म.

उ०—३ दिन पलटौ पलटौ दुनी, पलटौ सह परिवार । (इक) महामाया पलटौ मती, बीसहथी उण बार ।—चौथ वीठू

उ०—४ अकबरिये इक बार, दागल की सारी दुनी । अणदागल असवार, रहियौ रांण प्रतापसी ।—दुरसौ आढौ

उ०—५ देख ताप खावै दुनी, आप पराक्रम आस । रोस झाळ पूळा रहै, सादूळा स्याबास ।—बां.दा.

दुनीपत–सं०पु०यौ० [अ० दुनिया+सं० पति] १ बादशाह, सम्राट. २ राजा । उ०—दुनीपत मारका कोट 'विजपत' हुआ, खसोटण पारका मुलक खीसै । जोर कर मारका वचन काढै 'जसौ', दुवारका दली विच नकू दीसै ।—तिलोकजी बारहठ

दुनीय—देखो 'दुनियां' (रू.भे.) उ०—एक छत्र जिण पुहवी, निस्चळ कीधी धर उप्पर । आंणं किंत्ति नव खंड, अदल कीधी दुनीय-प्पर ।
—प.च.चौ.

दुनुप्रोहित–सं०पु० [सं० दनुजप्रोहित] असुरों का गुरु, शुक्र (अ.मा.)

दुनै–वि० [सं० द्वि] दोनों । उ०—वैराट समांन निपावै व्रखख । दुनै फळ जेण किया सुख दुक्ख । निपावै रूप उभै नर नार । च्यारै खांणी वांणी च्यार ।—ह.र.

दुन्नि, दुन्नी–वि० [सं० द्वीनि] १ दो । उ०—तसु घरि रांणी अच्छइ दुन्नि एक नांमि गंगा । पुत्त जाउ गंगेउ नांमि तिणि तिहूणि चंगा ।
—पं.पं.च.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दुप—देखो 'द्विप' (रू.भे.) उ०—मोती धूड़ मिळाविया, तैं सादूळ तमांम । देतौ सदा जणाय दुप, किल औ होणौ कांम ।—बां.दा.

दुपड़ती–वि०स्त्री० [सं० द्विवर्ती, द्विअर्थी] (पु० दुपड़तौ) १ दो परत वाली. २ दो अर्थ का बोध कराने वाली वात ।

ज्यूं—दुपड़ती बात करै है साफ़ को कै'नी ।

दुपटी–सं०स्त्री० [सं० द्वि+पट+रा०प्र०ई] ओढ़ने का वस्त्र ।

उ०—ओछी अंगरखियां दुपटी छिव देती । गोढ़ै बरड़ी जे पूरा गमिती ।—ऊ.का.

रू०भे०—डुपटी, दुपट्टी ।

दुपटौ–सं०पु० [सं० द्वि+पट+रा०प्र०ओ] ओढ़ने का वस्त्र विशेष
(व.स.)

उ०—१ सजण सिधाया हे सखी, हरियौ दुपटौ हाथ । सूनी करगा सेजड़ी, तन मन लेग्या साथ ।—अज्ञात

उ०—२ अरि गज घटा पीठि पछटै इम । जळ सिल तटा रजक दुपटा जिम ।—सू.प्र.

मुहा०—१ दुपटौ ताण नै सोवणौ—निश्चित होना, अच्छी तरह दिन बिताना. २ दुपटौ बदळणौ—सखी बनना ।

रू०भे०—डुपटौ, डुपट्टौ, दुपट्टौ ।

अल्पा०—डुपटी, डुपट्टी, दुपटी, दुपट्टी ।

दुपट्टी—देखो 'दुपटी' (रू.भे.)

दुपट्टौ—देखो 'दुपटौ' (रू.भे.) उ०—उरै जोई परै जोई, जोई ढोलिया रै हेटै । मारवणी री नथ मारूजी रै दुपट्टा रै हेटै ।—लो.गी.

दुपडुं–वि० [सं० द्वि+वर्ती] १ दो पर्त का. २. दो अर्थ का ।

उ०—त्रबोयौ कहै हुं निवळ, नांमकिण ही में न पडुं । छिपौ वरग रै छेह, देखि तोइ कहै मुझ दुवडुं झगड़ा झाटा झांझ झझौ सहु वाते झूठौ । पहिली ते हुं पछै, एह किम न्याय अपूठौ ।—ध.व.ग्रं.

दुपदी–सं०स्त्री० [सं० द्वि+पद+रा० प्र०ई] २८ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष ।

दुपराड़णौ, दुपराडबौ—देखो 'दुपराणौ, दुपरावौ' (रू.भे.)

दुपराड़णहार, हारौ (हारी), दुपराड़णियौ—वि० ।

दुपराड़िओड़ौ, दुपराड़ियोड़ौ, दुपराड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दुपराड़ीजणौ, दुपराड़ीजबौ—भाव वा० ।

दुपराड़ियोड़ौ—देखो 'दुपरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दुपराड़ियोड़ी)

दुपराणौ, दुपराबौ–क्रि०अ० [सं० दुष्प्रराव, प्रा० दुप्पराव] रुदन करना, विलाप करना, रोना ।

दुपराणहार, हारौ (हारी), दुपराणियौ—वि० ।

दुपरायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दुपराईजणौ, दुपराईजबौ—भाव वा० ।

दुपराड़णौ, दुपराड़बौ, दुपरावणौ, दुपराववौ—रू०भे० ।

दुपरायोड़ौ–भू०का०कृ०—रुदन किया हुआ, विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।

(स्त्री० दुपरायोड़ी)

दुपरावणौ, दुपराववौ—देखो 'दुपराणौ, दुपरावौ' (रू.भे.)

दुपरावणहार, हारौ (हारी), दुपरावणियौ—वि० ।

दुपराविओड़ौ, दुपरावियोड़ौ, दुपराव्योड़ौ—भू०का०कृ०

सं०पु०—१ कटार, बरछी. २ दो धार वाला खड्ग।

उ०—छेड़ हुई कांठायतां, श्राया खेड़ श्रपार। भड़ लागो सर गोळियां, हुय होळियां दुधार।—रा.रू.

३ भाला (डि.को.) ४ रथ (डि.नां.मा.)

रू०भे०—दूधार, दोधार।

अल्पा०—दुधारौ, दुवधारौ, दोधारौ।

दुधारी-वि० [सं० द्वि+धार] दो धार वाली।

सं०स्त्री०—कटारी (डि.को.)

रू०भे०—दुवधारी।

सं०स्त्री०—१ कटार, बरछी. २ दूध देने वाली।

रू०भे०—दुवधार, दोधारी।

दुधारू—देखो 'दुधाळू' (रू.भे.)

दुधारौ-सं०पु० [सं० द्वि+धार] १ बढ़ई का एक श्रोजार.

२ देखो 'दुधार' (अल्पा., रू.भे.) उ०—केवांणां झमंका करै धरां दीप काळका सा, दमंकै दुधारा दीप माळका सा दीप।—नन्दजी सांदू

दुधाळ—१ देखो 'दुधाळू' (रू.भे.) २ देखो 'दूध' (रू.भे.)

उ०—जनमाळ धुराळ दुधाळ सिरज्जत, काळ में क्यों न गवाळ करै।—करुणासागर

दुधाळू-वि० [सं० दोग्ध्री श्रथवा दुग्ध+श्रालुच्] अधिक दूध देने वाली।

रू०भे०—दुधार, दुधारू, दूधार, दूधारू, दूधाळ, दूधाळू।

दुन्दुभि, दुधुभी—देखो 'दुंदुभी' (रू.भे.) उ०—अबीर गुलाल उडावत रोरी। डफ दुधुभी बाजत थोरी थोरी।—मीरां

दुधेल—देखो 'दूधाळू' (रू.भे.)

दुनड़-सं०पु० [सं० दुर्नट] शत्रु (श्र.मा.)

दुनां-वि० [सं० द्वि] दोनों। उ०—ताजदार बैठौ तखत, रज में चोटै रंक। गिणै दुना नूं हेक गत, निरदय काळ निसंक।—वां.दा.

दुनाळ, दुनाळिय, दुनाळी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+नाल] वह बंदूक जिसके पृथक पृथक दो गोलियां भरने के लिये दो नालें एक साथ सटी हुई हों।

उ०—१ केइ श्राय भड़ कोठार, बारूद लावत बार। सब लेत सस्त्र संभाळ, दिढ़ जुजरवा दुनाळ।—पे.रू.

उ०—२ बदै जय 'भैरव' खाग समाय, मंडै पग खांन रहै रिणमाय। अयो जद सांमहि बाज उपाड़, झलै कर खांन दुनाळिय झाड़।

—पे.रू.

वि०वि०—इस बन्दूक की दोनों नालों में गोलियां भर कर इसे एक साथ या अलग-अलग समय में दो बार छोड़ी जा सकती हैं।

रू०भे०—दोनाळी।

मह०—दुनाळ।

दुनाळौ-वि०—दुनाळी बंदूक रखने वाला।

सं०पु०—१ वह मकान जिसके दो जीने होते हैं.

२ देखो 'दुनाळी' (मह., रू.भे.)

दुनि—देखो 'दुनिया' (रू.भे.) (डि.को.)

दुनियण-सं०पु० [सं० दिनकर श्रथवा श्र० दुनिया+सं० नयन] १ सूर्य. (डि.को.)

(मि० जगचख)

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दुनियां-सं०स्त्री० [श्र० दुनिया] संसार, जगत्। उ०—रोम रोम श्रांमय रहै, पग पग संकट पूर। दुनियां सूं नजदीक दुख, दुनियां सूं सुख दूर।—बां.दा.

मुहा०—१ दुनियां उलटणी—बहुत लोगों का इकट्ठा होना, खूब गर्दी होना, बहुत भीड़ होना. २ दुनियां दुरंगी—दुनियां दो रंग की होती है, दुनियां श्रवसर देख कर श्रपने स्वार्थ की श्रोर झुक जाती है. ३ दुनियां नै जीतणी—सांसारिक प्रपंच से छुटकारा पाना। लोगों को वश में करना। जनता को अपने अनुकूल बनाना. ४ दुनियां पराये सुख दूबळी—दुनियां दूसरों के सुख को देख कर ईर्ष्या करती है. ५ दुनियां पलटणी—पुरानापन दूर होकर नयापन प्रतीत होना, जनता का विरुद्ध होना. ६ दुनियां भर रौ—बहुत अधिक. ७ दुनियां री हवा लागणी—सांसारिक अनुभव होना ८ दुनियां सूं ऊठणी—मर जाना, चल बसना. ९ दुनियांदारी री बात, व्यावहारिक बात, छल भरी बात, बनावटी बात।

२ संसार के लोग, जनता. ३ संसार का प्रपंच, जगत-जंजाल।

रू०भे०—दणयर, दणियर, दन्या, दुनि, दुनियण, दुनियांण, दुनियांणी, दुनियांन, दुनियाई, दुनीं, दुना, दून्यां।

दुनियांण, दुनियांणी—देखो 'दुनियां' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ उदयवत आज दुनियांण सह ऊपरा, सार रो तार लागो सवां हीं। हंस रासै जिकां नीर श्रळगो हुवै, नीर रासै जिकां हंस नाहीं।—महाराणा प्रताप रो गीत

उ०—२ राघव सिफत बखांणी, सच्चे सायरां। श्राफताब दुनियांणी दीद नगाहए।—र.ज.प्र.

दुनियांदार—देखो 'दुनियादार' (रू.भे.)

दुनियांदारी—देखो 'दुनियादारी' (रू.भे.)

दुनियांन—देखो 'दुनियां' (रू.भे.) उ०—श्रमिट भड़ां बळ श्रंग में, कोठारां सांमांन। सांमध्रमी ठाकुर सको, दिए रंग दुनियांन।

—बां.दा.

दुनियाई-वि० [श्र० दुनिया+रा०प्र०ई] १ सांसारिक.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दुनियादार-स०पु० [श्र० दुनिया+फ़ा० दार] सांसारिक प्रपंच में फंसा हुश्रा मनुष्य, संसारी, गृहस्थ।

वि०—व्यवहारकुशल।

रू०भे०—दुनियांदार।

दुनियादारी-सं०स्त्री० [श्र०+फ़ा०] १ गृहस्थ का जंजाल, दुनिया का कारबार. २ वह व्यवहार जिससे अपना प्रयोजन सिद्ध हो, स्वार्थ-साधन. ३ दिखावटी व्यवहार, दुराव।

रू०भे०—दुनियांदारी।

दुनियासाज-वि० [अ० दुनिया+फ़ा साज़] १ लल्लोचप्पों करने वाला, चापलूस. २ युक्ति से अपना प्रयोजन सिद्ध करने वाला, स्वार्थ-साधक।

दुनियासाजी-सं०स्त्री० [अ० दुनिया+फ़ा साज़ी] १ स्वार्थ-साधन की वृत्ति, खुद का मतलब निकालने का ढग. २ बात बनाने का ढंग, चापलूसी।

दुनीं, दुनी-सं०स्त्री० [अ० दुनिया] १ पृथ्वी। उ०—लख हय भड़ दिय सैंस लख, हाथी भखण हजार। रावत रण पर रीझियौ, दुनी प्रळै दातार।—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)(डि.को.) उ०—१ दीह घणा माझळ दुनीं, रुळियौ देखें रूप। माधव हमें प्रकास मो, सिव ताहरौ सरूप।—ह.र.

उ०—२ करयौ द्रग देसांण प्रसथांण इंदर सकति, प्रेम अप्रमांण रा अम्रत पीधा। 'करनला' मात रा आप दरसण किया, दुनी नूं आपरा दरस दीधा।—मे.म.

उ०—३ दिन पलटौ पलटौ दुनी, पलटौ सह परिवार। (इक) महामाया पलटौ मती, बीसहथी उण वार।—चौथ बीठू

उ०—४ अकबरिये इक बार, दागल की सारी दुनी। अणदागल असवार, रहियौ रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

उ०—५ देख ताप खावै दुनी, आप पराक्रम आस। रोस झाळ पूळा रहै, सादूळा स्याबास।—वां.दा.

दुनीपत-सं०पु०यौ० [अ० दुनिया+सं० पति] १ बादशाह, सम्राट. २ राजा। उ०—दुनीपत मारका कोट 'विजपत' दुआ, खसोटण पारका मुलक खीसैं। जोर कर मारका वचन काडैं 'जसौ', दुवारका दली विच नक्रु दीसैं।—तिलोकजी बारहठ

दुनीय—देखो 'दुनियां' (रू.भे.) उ०—एक छत्र जिण पुहवी, निस्चळ कीधी घर उप्पर। आंणं किंत्ति नव खंड, अदल कीधी दुनीय-प्पर।—प.च.चौ.

दुनुप्रोहित-सं०पु० [सं० दनुजप्रोहित] असुरों का गुरु, शुक्र (अ.मा.)

दुनैं-वि० [सं० द्वि] दोनों। उ०—वैराट समांन निपावै व्रक्ख। दुनैं फळ जेण किया सुख दुक्ख। निपावै रूप उभैं नर नार। च्यारै खांणी वांणी च्यार।—ह.र.

दुन्नि, दुन्नी-वि० [सं० द्वीनि] १ दो। उ०—तसु घरि रांणी अछइ दुन्नि एक नांमि गंगा। पुत्र जाउ गंगेउ नांमि तिणि तिहूंणि चगा।—पं.पं.च.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दुप—देखो 'द्विप' (रू.भे.) उ०—मोती धूड़ मिळाविया, तैं सादूळ तमांम। देतौ सदा जणाय दुप, किल औ होणौ कांम।—वां.दा.

दुपड़ती-वि०स्त्री० [सं० द्विवर्ती, द्विअर्थी] (पु० दुपड़तौ) १ दो परत वाली. २ दो अर्थ का बोध कराने वाली बात।

ज्यूं—दुपड़ती बात करै है साफ़ को कै'नी।

दुपटी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+पट+रा०प्र०ई] ओढ़ने का वस्त्र।

उ०—ओढी अंगरखियां दुपटी छिव देती। गोढ़ैं बरड़ी जे पूरा गांमेती।—ऊ.का.

रू०भे०—डुपटी, दुपट्टी।

दुपटौ-सं०पु० [सं० द्वि+पट+रा०प्र०औ] ओढ़ने का वस्त्र विशेष (व.स.)

उ०—१ सजण सिधाया हे सखी, हरियौ दुपटौ हाथ। सूनी करगा सेजड़ी, तन मन लेग्या साथ।—अज्ञात

उ०—२ अरि गज घटा पीठि पछटै इम। जळ सिल तटा रजक दुपटा जिम।—सू.प्र.

मुहा०—१ दुपटौ ताण नै सोवणौ—निश्चित होना, अच्छी तरह दिन बिताना. २ दुपटौ बदळणौ—सखी बनना।

रू०भे०—डुपटौ, डुपट्टौ, दुपट्टौ।

अल्पा०—डुपटी, डुपट्टी, दुपटी, दुपट्टी।

दुपट्टी—देखो 'दुपटी' (रू.भे.)

दुपट्टौ—देखो 'दुपटौ' (रू.भे.) उ०—उरै जोई परै जोई, जोई ढोलिया रै हेटै। मारवणी री नथ मारूजी रै दुपट्टा रै हेटै।—लो.गी.

दुपडुं-वि० [सं० द्वि+वर्ती] १ दो पर्त का. २. दो अर्थ का।

उ०—जवोयौ कहै हुं निवळ, नांमकिण ही में न पडुं। छिपी वरग रै छेह, देखि तोइ कहै मुझ दुपडुं झगड़ा झाटा झांझ झझौ सहु बाते झूठौ। पहिली ते हुं पछै, एह किम न्याय अपूठौ।—ध.व.ग्रं.

दुपदी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+पद+रा० प्र०ई] २८ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष।

दुपराड़णौ, दुपराडबौ—देखो 'दुपराणौ, दुपराबौ' (रू.भे.)

दुपराड़णहार, हारौ (हारी), दुपराड़णियौ—वि०।

दुपराड़िओड़ौ, दुपराड़ियोड़ौ, दुपराड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दुपराड़ीजणौ, दुपराड़ीजबौ—भाव वा०।

दुपराड़ियोड़ौ—देखो 'दुपरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दुपराड़ियोड़ी)

दुपराणौ, दुपराबौ-क्रि०अ० [सं० दुष्प्रराव, प्रा० दुप्पराव] रुदन करना, विलाप करना, रोना।

दुपराणहार, हारौ (हारी), दुपराणियौ—वि०।

दुपरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दुपराईजणौ, दुपराईजबौ—भाव वा०।

दुपराड़णौ, दुपराड़बौ, दुपरावणौ, दुपराववौ—रू०भे०।

दुपरायोड़ौ-भू०का०कृ०—रुदन किया हुआ, विलाप किया हुआ, रोया हुआ।

(स्त्री० दुपरायोड़ी)

दुपरावणौ, दुपराववौ—देखो 'दुपराणौ, दुपराबौ' (रू.भे.)

दुपरावणहार, हारौ (हारी), दुपरावणियौ—वि०।

दुपराविओड़ौ, दुपरावियोड़ौ, दुपराव्योड़ौ—भू०का०कृ०

दुपरावीजणौ, दुपरावीजबौ—भाव वा० ।
दुपरावियोड़ौ—देखो 'दुपरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुपराविग्रोड़ी)
दुपहर, दुपहरा—देखो 'दोपहर' (रू.भे.) उ०—ग्रासाढ़ का दिनां को तपन कहतां सूरिज । इसौ ग्रधिक ताप्यौ छै । दुपहरा की वरीयां यें सौ नीजण होय गयौ छै जु कोई मनुस्य फिरै डोलै न छै । कैसी भांति जैसी माह की राति होय ।—वेलि टी.
दुपहरियौ—देखो 'दोपारियौ' (रू.भे.)
दुपहरी—१ देखो 'दोपहर' (रू.भे.) उ०—तरै चंद्रसेन दुपहरी नूं सुखपाळ माहे वैसांण ग्रसवार तथा पाळा साथै ले जोगियां रै पगै लागण गयो ।—नैणसी
२ देखो 'दोपारी' (रू.भे.)
दुपार—देखो 'दोपहर' (रू.भे.) उ०—जे कोई धूजी नै दुपारै रो गावै। दुपारै रो गावै मनचाह्यौ फळ पावै । —लो.गी.
दुपारी—देखो 'दोपारी' (रू.भे.)
दुपारौ—देखो 'दोपारौ' (रू.भे.)
उ०—वै'रा टावर-टूवर धमचक मचावता ग्रर वैनें जिकर सुवावती कोयनी । टावरां नै दुपारौ-सिरावण-ई जोयीजती, ग्रठीनै घर में ग्रूंदरा थिड़चां करता हा ।—वरसगांठ
दुपियाज, दुपियाजौ—देखो 'दुप्याज, दुप्याजौ' (रू.भे.)
दुपियारौ—वि० [सं० दुष्प्रिय] (स्त्री० दुपियारी) बुरा लगने वाला, ग्रप्रिय । उ०—१ क्राहि भाय कूकसी सयण सायण सुत नारी। काया हूसी ग्रकज सवै माया दुपियारी ।—ज.खि.
उ०—२ 'ग्रोरंग' पतिसाहि ग्रही, दहवटि करि 'दाराह'। रज्ज पियारा रज्जियां, भाई दुपियाराह ।—ध.व.ग्रं.
दुपी—देखो 'द्विप' (रू.भे.) (डि.को.)
दुपेरी—१ देखो 'दोपहर' (रू.भे.) २ देखो 'दोपारी' (रू.भे.)
दुपेरौ—देखो 'दोपारौ' (रू.भे.)
दुपैर—देखो दोपहर (रू.भे.) उ०—प्रात प्रदोस दुपैरां जगमगै जोतां, मां जगमगै जोतां ! मंगळ धमळ हमेसां व्है पूजन होतां । जय मात करनी ।—मे.म.
दुपैरी—१ देखो 'दोपहर' (रू.भे.) २ देखो 'दोपारी' (रू.भे.)
दुपारै—देखो 'दोपारौ' (रू.भे.)
दुप्याज, दुप्याजौ—सं०पु० [सं० द्वि+फ़ा० प्याज] एक प्रकार का मांस जिसमें प्याज ही डाला जाता है । उ०—कलिया पुलाव विरंज दुप्याजा। जेरी विरियां ग्रखनी चड़ ताळ भांति भांति के मजे ।—सू.प्र.
रू०भे०—दुपियाज, दुपियाजौ, दोप्याजौ ।
दुप्रब्ब—वि० [सं० दुष्प्रभ] तीव्र कांतियुक्त जिसकी ग्रोर देखा न जा सके, दुःप्रभ । उ०—नमो पंच-ग्रग्र-पवित्र सु पीत; सु स्यांम सु नील, सुरत्त सु सीत । सहस्त्रत जगत व्यापत सव्व, हुव दस ग्रंगुळ गात दुप्रब्ब । —ह.र.

दुफसळी—वि०स्त्री० [सं० द्वि+ग्र० फस्ल+रा० प्र० ई] वह (भूमि) जिसमें रवी ग्रोर खरीफ की दोनों फसलें होती हों । उ०—सारी धरती दुफसळी छै ।—नैणसी
दुबक—देखो 'दबक' (रू.भे.)
दुबकणौ, दुबकबौ—देखो 'दबकणौ, दबकबौ' (रू.भे.)
उ०—नीम पेस्टी दांत उजाळै, मोती सा चिलकै जवर । मुखड़ै में खुसबू सुवाणी, दुरगंध डर दुबकी कवर ।—दसदेव
दुबकणहार, हारौ (हारी), दुबकणियौ—वि० ।
दुबकिग्रोड़ौ दुबकियोड़ौ, दुबक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
दुबकीजणौ, दुबकीजबौ—भाव वा० ।
दुबकी—सं०स्त्री० [सं० द्वि-पदी] १ गधे या घोड़े के ग्रगले पैरों में बांधा जाने वाला बंधन । उ०—घोड़े रै दुबकी दीधी ।—नैणसी
वि०वि०—उक्त पशुग्रों को चरने के लिये छोड़ते समय इस बंधन को बांध कर छोड़ा जाता है ।
२ लकड़ी के जोड़ पर लगाई जाने वाली लोहे की पत्ती ।
३ देखो 'दबकी' (रू.भे.)
दुबगळी—सं०स्त्री०—मालखंभ की एक कसरत ।
दुबदा, दुबद्या, दूबधा, दुबध्या—देखो 'दुविधा' (रू.भे.)
उ०—१ करम फूटगा कहो कवण नै जाय कैवां । दुबद्या मांहे दुसह रात दिन वुकता रैवां ।—ऊ.का.
उ०—२ टींगर टोळी लै चटपट घण टोळी । चहुंघां चींधण सी दुबधा घट दोळी । ऊसर वैणां सूं ग्रवती ग्रलग्रारां । वूसर नैणां सूं ग्रवती जळधारा ।—ऊ.का.
उ०—३ संत गुरू है मेरा जी, ज्यारै दुबध्या दरसै नाहीं । संत गुरू है मेरा जी ।—स्री सुखरांमजी महाराज
दुबराळगोळौ—सं०पु०—तोप का लम्बोतरा गोळा ।
दुबळापण—सं०पु०—क्षीणता, कृशता ।
दुबळौ—देखो 'दुरबळ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुबळी)
दुबाक—वि० (ग्रनु०) एकदम, ग्रचानक ।
सं०स्त्री०—दोनों पांवों से कूदने का कार्य ।
दुबाट—देखो 'दुवाट' (रू.भे.) उ०—वहेजु वाट वाट में पिता पिता मह्रा वहैं । सुखी सुबाट ते सदा दुखी दुबाट में दहैं ।—ऊ.का.
दुबारा—क्रि०वि० [सं० द्वि+वार] दूसरी वार ।
रू०भे०—दुवेरा, दुव्वार ।
दुबारौ—सं०पु० [सं० द्वि+वार] एक प्रकार का तेज शराव ।
उ०—१ झलवां झलूस साज सहेल्यां रौ साथ जोवै । वांदी वीजी हुइ रूप देखै हाकवाक । कुरवां ववारै लाडी 'जसा' नै सुनाय कीजै । छैल वना लीजै दोय दुबारै की छाक ।—मयारांम दरजी री वात
उ०—२ हुवै हाक डाक वकी कायरां ऊबकै हियौ, डकडकै भैरवी वजावै रुद्र डाक । धुकै ज्वाळा चसमां झड़ै के खळां फूल धारा । छकै

घावां बर्क के दुबारा वाळी छाक ।
—नींवाज ठाकुर सुरतांणसिंह री गीत

उ०—३ वीर पुरख री स्त्री रा वचन है—हेक लाली म्हारै पति नै सेभ में रंग रमण वासतै म्हें दारू फूल तथा दुबारौ दियौ ।
—वी.स.टी.

रू०भे०—दुव्वार ।

दुबाह-वि० [सं० दुर्वाह या द्विवाह=द्विबाहु] १ दोनों हाथों से प्रहार करने वाला, वीर, योद्धा । उ०—१ वैरियां ऊबेड़ जाडा धंखी माह बांवराड़ा । दुबाह अखाड़ाजीत घाड़ा रांमदूत ।—र.ज.प्र.

उ०—२ हुई हळवळ हैमरां वणी सिंधुरां सवाहां । दसतांना वगतरां अंग आसुरां दुबाहां ।—रा.रू.

२ जबरदस्त, शक्तिशाली (बांकीदास)

सं०पु०—३ तुरंग, घोड़ा । उ०—१ सिलहां खाना ऊघड़ै वह भड़ कछै दुबाह । कटकां विहुं हूं कळ कळळ, हुवै सनाह सनाह ।
—वचनिका

उ०—२ महा समूह मूंह देखि मूंह मोड़ते नहीं । उछाह चाह आहवी दुबाह दौड़ते नहीं ।—ऊ.का.

उ०—३ गढ़ गोळा खायां गजब, दुय रे दुरद दुबाह । रण में रूडी रूक ही, सूरा-ढल्ल सनाह ।—रेवतसिंह भाटी

४ सेना, फौज । उ०—दळी हाथियां हैमरां पाय कळी तोड़ा लाय दारू । दूठमलां चहुं दिसा हाकली दुबाह ।
—उमेदसिंह सीसोदिया री गीत

रू०भे०—दुवाह ।

अल्पा०—दुवाहियौ, दुवाहौ, दुवाहो ।

दुबाहियौ, दुबाहौ—देखो 'दुवाह' (अल्पा., रू.भे.) उ०—पात्रां दळ मोटा निज पांणां, चौरंगी खळां सावळां चोट । दूजो 'जेत' दियंतो दोर्प, कठकां वधै दुबाहौ कोट ।
—राठौड़ दयाळदास सूरजमलोत चांपावत रौ गीत

दुबिध, दुबिधा—देखो 'दुविधा' (रू.भे.)

दुबे-सं०पु० [सं० द्विवेदी] ब्राह्मणों का एक भेद ।

दुबेरा—देखो 'दुवारा' (रू.भे.)

दुबौ-वि० [सं० द्वि] दूसरा, भिन्न । उ०—दुबै असि आप चढ़ै सु दुभाळ । निजां असि चाढ़वियौ नदलाल । बिहूं भलिया भडतां खग वूर । 'पिथा' हर सूर दता ब्रद पूर ।—सू.प्र.

दुब्बळ—देखो 'दुरबळ' (रू.भे.) उ०—कहां जेठ दिनकर कहां, खद्योत खिसाया । कहां सिंह गजरिपु कहां, किखि दुब्बळ काया ।—वं.भा.

दुब्बाधि-सं०पु०—१ एक वानर का नाम । उ०—बिदूरथ पच्चास जोजन्न बांणी । डळा साठ जोजन्न दुब्बाधि आंणी ।—सू.प्र.

२ देखो 'दुविधा' (रू.भे.)

दुब्बार—देखो 'दुवारौ' (रू.भे.) उ०—इक भाटी आवखी, पियै दुब्बार सराबां । भैंसा आधा भखै, बोट नुकळ मैं कबावां ।—वं.भा.

दुभर—देखो 'दूभर' (रू.भे.) उ०—१ दुभर पेट भरण नूं दिन दिन, दस रड़वड़सां देस वदेस । पांखां वगर किया पारेवा, जातां सुरग विया 'जगतेस' ।—जवांनजी आढ़ौ

उ०—२ घणै परकार हीरां अठै, दुभर भरै दिवस । तो लायेक सखिया तबै, आसी पीव अवस ।—वगसीरांम प्रोहित री वात

दुभांत-सं०स्त्री० [सं० द्वि-भांति या दुर्भांति] भिन्नता, भेद, कपट, दुराव । उ०—पग पग थटिया पाहुणा, खागां सहणी खांत । पीव परूसै पांत में, भूलै केम दुभांत ।—वी.स.

रू०भे०—दुरभांत, दुरभांति ।

दुभाखी—देखो 'दुभासी' (रू.भे.)

दुभाखियौ, दुभासियौ—देखो 'दुभासी' (अल्पा., रू.भे.)

दुभासी-वि० [सं० द्विभाषिन्] १ दो भाषाएँ जानने वाला.

२ दो भाषाएँ बोलने वाला ।

सं०पु०—वह मनुष्य जो दो अलग-अलग भाषाएँ जानने वाले मनुष्यों को एक दूसरे की बात समझावे, दो भिन्नभिन्न भाषाएँ बोलने वालों के बीच का मध्यस्थ जो दोनों की भाषाओं को जानता हो और एक दूसरे को उनकी बात का अभिप्राय समझावे ।

रू०भे०—दुभाखी ।

अल्पा०—दुभाखियौ, दुभासियौ ।

दुभितियौ-वि० [सं० द्वि+भीत्ति] दो दीवार वाला मकान ।

दुभ्भर—देखो 'दूभर' (रू.भे.) उ०—सकत सेर मन मेर, वेर दुभ्भर भर भल्लण । भुज आजांन प्रमांण, पांण असहां खग पल्लण ।
—रा.रू.

दुमंग—देखो 'दमंग' (रू.भे.) उ०—'सूर' सुतण तिण समै, 'हठी' बोलियौ भळाहळ । उमंग समर उछाह, दुमंग पौरस दावानळ ।
—सू.प्र.

दुमंगळ—देखो 'दमंगळ' (रू.भे.) उ०—कहितौ इम आद लगे कछ-वाहो, सूरां मरणौ सही संसार । दुमंगळ हुवा अमंगळ देखै, नांम कुसळ मत देखै नार ।—गोरधन गाडण

दुमंजलौ—देखो 'दोमंजलौ' (रू.भे.)

दुमन्नउ—देखो 'दुमनौ' (रू.भे) उ०—हीयौ तेह फूटियौ, जेण मन कियौ दुमन्नउ । स्रवण तेह सधीइ, जेण हरि सुण्यउ विमन्नउ ।
—प.च.चौ.

दुम-सं०स्त्री० [फा०] १ पुच्छ, पूँछ । उ०—अदु रुप सिखर थळ दुम विमोह, सृंगार चमर फिर पूंछ सोह । निज तेज सरति चत्र जुवल नालि ।—रा.रू.

२ पीठ का निम्न भाग, (१) । उ०—हुय हैरांण पलांणै है(य)वर, ताता खड़ै और ही तौर । अपणा चित राखै आगारो, दुम ऊपर बागारो दौर ।—कपूत रौ गीत

दुमकड़ौ—देखो 'दमकड़ौ' (रू.भे.)

दुमगी-सं०पु०—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा ।

दुमची-संoस्त्रीo [फ़ाo] १ घोड़े के पुट्ठे पर पहनाया जाने वाला आभूषण विशेष. २ घोड़े के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है. ३ पुट्ठों के बीच की हड्डी।

रूoभेo—दुमची।

दुमणापण, दुमणापणो-संoपुo [संo दुर्मनस्+त्व] उदासीनता।

उo—किम आप कमांण न जाय कितं। निसचै सिर भोगवणो निपतं। कथ कूड़ उपावय साच करो। हित सूं दुमणावण वेग हरो।
—पा.प्र.

दुमत, दुमत्त-विo [संo द्वि+मत] १ दूसरे मत वाला, विरुद्ध।

उo—रथ कुळ लज्जा धारियो, थयो पतसाह दुमत्त। भुज दूभर धुर ओड़ियो, अड़यो 'आसावत्त'।—रा.रू.

२ भिन्न मति या विचार का।

संoस्त्रीo—दो मात्रा (छंदशास्त्र) उo—गण संजोगी आद गुरु, संजुत व्यंदु गुरेण। गुरु फिर वक्र दुमत गणि, लघु सुध एक कळेण।
—र.ज.प्र.

दुमदार-विo [फ़ाo] १ पूँछ वाला. २ जिसके पीछे कोई पूँछ की सी वस्तु लगी या बंधी हो।

दुमन—देखो 'दुमनो' (रू.भे.) (डि.को.) उo—१ 'दारा' चुप रहियो दुमन, सिर नमाय अति सोच। 'रतौ' बुलावण साह रै, उर थायो आलोच।—वं.भा.

उo—२ ऊठतो अनै पड़तो अवन, तन विपती सूं तावियो। मन दुमन थियो फीकै मुखर, यम सूरजमल आवियो।—पा.प्र.

दुमनू, दुमनो, दुमन्नो-विo [संo दुर्मनस् (स्त्रीo दुमनी, दुमन्नी) उदासीन, खिन्न, दुखी (डि.को.) उo—१ दमंगळ विन दुमनो रहै, जड़ै न कंगल जंत। सखी वधावो त्यां भड़ां, जेथ जुड़ीजै कंत।—वी.स.

उo—२ दुमना थया विखायती मरतां सामंत सीह। थळ आया बळ ओढ़णा सोई धमळ अवीह।—रा.रू.

उo—३ धमळ विभन्नो धुर तजै, देख दुमन्नो साथ। उण वेळा तांडै 'अजो', मूछां घालै हाथ।—रा.रू.

रूoभेo—दुमंनउ, दुमन, दूमणउ, दूमणो, दूमनो।

दुमांम—देखो 'दमांम' (रू.भे.)

दुमांमी-उमoलिo [देशo] १ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उo—१ कंत वहोत कर रीझीआं, सुंदर सुं सुख जांण। कांमणि ऊभी मोहल मइं, सो दे दुमांमी आंण।—व.स.

उo—२ मुलतांणी ताखो मछीपटणी तासतो टुकडी दूमैंणां वासतो मीसंजर भेरू तनसुख चोरसो अटायण दुमांमी सालु जरकसी कचीयो चुंनड़ी।—व.स.

२ देखो—'दमांमी' (रू.भे.)

दुमात, दुमाता-संoस्त्रीo [सo द्वि=दूसरी+मातृ] सौतेली माँ।

उo—१ पछै राव हो समायो तद टीको सुरूपसिंह दुमात भाई थो उण नूं दियो।—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता

उo—२ म्हारो दूजो दुमात भाई राज बैठो, म्हांनूं धरती मांह सूं परा काढ़िया।—नैणसी

उo—३ सू प्रथीराजजी रै पाटवी कंवर 'भींवसी' अरु 'रतनसी' हा, 'सांगैजी' रै दुमात भाई।—द.दा.

यौo—दुमात-जायो, दुमात-भाई।

दुमायो-विo [संo द्वि=दूसरी+मातृ+जात] (स्त्रीo दुमाई, दुमायी) सौतेली माँ से जन्मा हुआ, सौतेला।

दुमार-संoस्त्रीo [संo दुः=कठोर, दुरूह+मारः=हनन, बाधा, अड़चन] १ कष्ट, तकलीफ, तंगी।

उo—१ जठै जम काळ जरा नहि जोर, घुरै घट नाद अनाहद घोर। दुरास दुमार न त्रास दुकाळ। सुधा जळ बारह मास सुकाळ।
—ऊ.का.

उo—२ नहर सुधार रु नीर री, दाटी सै'र दुमार। मैरवांन मुरधर महिप, हैर गया म्हे हार।—ऊ.का.

२ अभाव, कमी। उo—करै सुमार भलाई कितरां, जेठ तुमार जमाड़ी। और खुमार चढ़ी नहि अंतर, एक दुमार अगाड़ी।
—ऊ.का.

दुमिला-संoपुo—आठ सगण का एक वर्णवृत्त विशेष (र.ज.प्र.)

दुमिला-निसांणी-संoस्त्रीo—डिंगल का वह 'निसांणी' छंद जिसमें प्रथम १४ और फिर ६ मात्रायें हों और तुकांत में गुरु लघु हों।

दुमुखि-विo [संo द्विमुखो] कपटी. धूर्त। उo—प्रगटयो वरस पचोतरो, सांवण सघण सराय। साह करंडव पंखि पर, दुमुखि रहै चख लाय।
—रा.रू.

संoस्त्रीo [संo द्विमुखी] दो मुँह वाला सांप जिसमें विष नहीं होता है।

दुमैण, दुमेण, दुमेणियो, दुमेणो-संoपुo [सo द्वि+फाo मोम] बरसात के बचाव के लिये एक प्रकार का मोम मिला हुआ मोटा कपड़ा।

उo—१ जरदोज कसबी मुंगीपटण तपई अतलस मुलमुल जांमावाडि लखारस वासतो मछीपटण ताखो साळू जरकसी दुमेणा कचोयो तनसुख नीलक पटोली सुप चुंनडी अटायण मीसंजर तासतो चोरसो।
—व.स.

उo—२ वरसाल बहु भांति हे, भीजतो घरि आय। मो सुगणी रा साहिवा, दो दुमेण्या ल्याव।—व.स.

दुमेळ-विo—जिसका मेल न मिलता हो, असमान।

संoपुo—१ वैमनस्य, शत्रुता। उo—१ दिल साजनां दुमेळ, नीच संग ओछी नजर। अति सवळां ऊखेल, पैलां घर वांछै पिसण।
—बां.दा.

उo—२ रुखमणी राजि तणी पटरांणी, दईता हुंता सदा दुमेळ। प्रम परधांन वात नां अह्यां, मुंहमद......मेळ।—पी.ग्रं.

२ 'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार डिंगल का एक गीत छंद विशेष जिसके प्रथम और तृतीय चरण में प्रत्येक में दो दो बार तुकबंदी सहित सोलह-सोलह मात्राएं होती हैं तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण की तुकबंदी होती है और प्रत्येक में दस दस मात्राएं होती हैं। इसी

क्रम से अन्य द्वाले भी बनते हैं. ३ 'रघुनाथरूपक' के अनुसार डिंगल का एक गीत छंद विशेष जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम चरण में १८ मात्राएं होती हैं तथा अन्य सभी चरणों में सोलह-सोलह मात्राएं होती हैं। प्रत्येक चरण के अंत में चौकल (चार मात्रा का शब्द) होता है तथा द्वाले के चार चरणों में प्रथम दो की परस्पर तुकबंदी होती है तथा तृतीय और चतुर्थ चरण की भी परस्पर तुकबंदी होती है।

दुमेळसावभड़ौ-सं०पु०—'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार डिंगल का एक गीत छंद विशेष जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम चरण में १९ मात्राएं होती हैं तथा अन्य सभी चरणों में सोलह-सोलह मात्राएं होती हैं। प्रत्येक द्वाले के प्रथम और द्वितीय चरण की तुक मिलती है तथा तृतीय व चतुर्थ चरण की तुक मिलती है। तुकांत में गुरु लघु का नियम नहीं होता है।

वि०वि०—यदि चारों चरणों की तुक मिलती है तो यह गीत 'पालवणी' कहलाता है और यदि द्वितीय व चतुर्थ चरण की तुक मिलती है तो यही 'त्रवंकड़ौ' गीत कहलाता है।

दुयंगम—योद्धा, वीर। उ०—'गिरधर' सुत सिवसाह, दुयगम। 'अमर' सुजाव 'धीर' वळ ओपम।—रा.रू.

देखो 'दुरगम' (रू.भे.) उ०—वनिता-तणउ वियोग ते, महा-दुयंगम होय। उमया! संकर! वीनवउं, मुझ मेळावनु सोय।

—मा.कां.प्र.

दुय-वि० [सं० द्वि] दो। उ०—१ पत आलंबन प्रिया, प्रिया आलंबन पीव वर। हेक प्रांण दुय देह, प्रीत अणरेह परसपर।—र.रू.

उ०—२ सुजि पौंचिया भुजंग दुय संधिया। बाजूबंध भुजंग दुय बांधिया।—सू.प्र.

दुयण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—१ हिंदवा पाट रा ओट जसराज हर, दळां घण थाट रा मौड़ दरसै। आट रा दुयण खत्रवाट रा ईखता, वदन खत्रवाट रा नूर दरसै।—आईदानजी सोदौ

उ०—२ समां सिणगार दिढ़गाढ़ पेखै सयण, दुयण जमदाढ़ जमदाढ़ देखै।—क.कु.बो.

उ०—३ बीतौ यौं साठौ बरस, स्री महाराज प्रसन्न। ऊपर आयौ इकसठौ, दुयणां फिरिया दिन्न।—रा.रू.

दुयेण-वि० [सं० द्वि+रा०प्र०एण] १ दो।

२ दुगना, द्विगुन। उ०—देव राघव दोन पाळ दयाळ वंछित दायकं। नाग मांनव देव नांम रटंत सीय सुनायकं। माथ-पंथ दुयण भंज अगंज भूप महाबळं। वंद तूं 'किसनेस' पात सुपाय जे जन वाछळं।—र.ज.प्र.

दुयोड़ी—देखो 'दूहियोड़ी' (रू.भे.)

दुयोड़ौ—देखो 'दूवियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुयोड़ी)

दुरंग, दुरंगि, दुरंगी-सं०पु० [सं० दुर्ग] १ दुर्ग, गढ़, किला (डि.को.)

उ०—१ नीसरणी लागै नहीं, लागै नहीं सुरंग। लड़ नहि लीधौ जाय औ, दीधौ जाय दुरंग।—बां.दा.

उ०—२ ज्यों कीध बंदगी हाथ जोड़, वां दीध बगस दौलत अरोड़। इद्रसिंघ राव सूं वैर अंग। दळ सजे जेण घेरै दुरंग।—वि.सं.

उ०—३ चउंड राइ चक्र फेरियइ चंगि। दारुणी देस लीधइ दुरंगि।

—र.ज.प्र.

२ वन, कानन (नां.मा.)

३ दो मुँह से या दुतरफा बात करने का भाव, छल, कपट।

वि०—१ दो रंगों का। उ०—१ सित कुसुमां गूँथी सुखद, वेणी सहिया व्रंद। नागणि जांणे नीसरी, सांपड़ि खीरसमंद। सांपड़ि खीर समंद दुरंग संवारिया। धारा फेण कलिंद, तनूंजा धारिया। भासण उपमा और मनोरथ भेळिया। मझ आटी मखतूळ क मोती मेलिया।

—बां.दा.

२ अप्रिय, कटु। उ०—बापइ आगळि बाळपणइ, कहीउ वयण दुरंग। एक दिवस ते संभरिउ, हूउ मनि उछंग।

—विद्याविलास पवाडउ

३ खराब, बुरा।

रू०भे०—दोरंगी।

दुरंगीयज-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)

दुरंगौ-वि० [सं० द्वि+रंग] (स्त्री दुरंगी) १ दो रंगों का. २ दो प्रकार का, दो तरह का. ३ अप्रिय. ४ खराब, बुरा. ५ भिन्न प्रकृति या स्वभाव का. ६ दोनों पक्षों की ओर झुकने वाला, दोगला.
७ वर्णशंकर।

रू०भे०—दोरंगौ।

दुरंड-वि०—कटा हुआ। उ०—कट्या घण सज्जळ छज्जळ कांन। सिर गिर कज्जळ कूट समांन। ससूदित साप समाक्रत सुंड। दतूसळ मूसळ रूप दुरंड।—मे.म.

दुरंत-वि० [सं० दुर्=अंत] १ शत्रु (ह.नां.) २ भयंकर, भीषण।
उ०—दगि नाळ झाळ दुरंत, गढ़ घेरियौ गहतंत। उडि रीठ गोळां आग, लग अगन में झड़ लाग।—सू.प्र.

३ जिसका अंत या पार पाना कठिन हो, अपार. ४ जिसे करना या पाना सहज न हो, दुर्गम, कठिन, दुस्तर. ५ जिसका अंत या परिणाम बुरा हो, अशुभ, कुत्सित, बुरा।

रू०भे०—दुरंद।

दुरंतक-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव।

दुरंतक-सं०पु० [देश०] ऊंट (अ.मा.)

दुरंतर-वि० [सं० दुर्+अंतर] अति दूर, बहुत दूर।
उ०—भाई तौ गत अलख अदेस। दोखो निज दीख दुरंतर देस।

—गो.रू

दुरंद—देखो 'दुरंत' (रू.भे.)

दुर—अव्य०वा०उप० [सं० दुर्] १ इसका प्रयोग दूषण, निषेध,

आदि के लिये होता है जैसे दुरात्मा, दुरबळ, दुरगम आदि, दुरदिन। [सं० दूर] २ एक शब्द जिसका प्रयोग तिरस्कार पूर्वक हटाने के लिये होता है जिसका अर्थ होता है 'दूर हो'।

(मि० दुत)

सं०पु०—छिपने या गुप्त रहने का भाव।

दुरइ–अव्य० [सं० दूर] दूर, अलग, पृथक। उ०—लोक सहू मनि हरखित थया। दूख दोहाग दुरइ टळि गया। पूगळ मांहि वधावा घणा। हिव ऊमर करइ सा परि सुणउ।—ढो.मा.

दुरकरम–सं०पु० [सं० दुष्कर्म] बुरा कार्य, दुष्कर्म।

उ०—मांई! सुरां धरम सरसावौ। मेछ धरम दुरकरम मिटावौ।
—रा.रू.

दुरकारणौ, दुरकारबौ—देखो 'दुतकारणौ, दुतकारबौ' (रू.भे.)

उ०—"फिट रांड! थारौ काळौ मुंहडौ; हूं तौ थारौ मन जोवतौ थौ; तूं रांड इसड़ा कांम करै" तरै रांड नै दुरकारी; तरै पाछी आई।—नैणसी

दुरकारणहार, हारौ (हारी), दुरकारणियौ—वि०।

दुरकारिओड़ौ, दुरकारियोड़ौ, दुरकारचोड़ौ—भू०का०कृ०।

दुरकारीजणौ, दुरकारीजबौ—कर्म वा०।

दुरकारियोड़ौ—देखो 'दुतकारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दुरकारियोड़ी)

दुरखी–सं०स्त्री [फा० दुरुख] दो तह। उ०—वहै साज वींटिया, विहद मुखमलां वनातां। रेसम तंग मुहरियां, तखी दुरखी दरसातां।—सू.प्र.

दुरगंद, दुरगंध, दुरगंधि, दुरगांधी–सं०स्त्री० [सं० दुर्गंध] बुरी गंध, बदबू, बुरी महक। उ०—धारी अंधा-धुंध, अंद आदत अळियां री। दपट उडै दुरगंध, गंध नासै गळियां री।—ऊ.का.

दुरग–सं०पु० [सं० दुर्ग] १ गढ़, किला (डि.को.)

उ०—की वह सेव राज हव कीजै। मनसुध बंधव दुरग मांगीजै।
—सू.प्र.

२ ऊंट (डि.को.)

वि०—जहाँ पहुँचना कठिन हो, दुर्गम।

रू०भे०—दुग, दुग्ग, दुरंग, दुरगस, दुरग्ग, दुरुंग, दुरुंगू, दुरुग, द्रंग, द्रुंग, द्रुग, द्रुग्ग।

दुरगत–सं०स्त्री० [सं० दुर्गति] १ निर्धनता, कंगाली (डि.को.)

२ देखो 'दुरगति' (रू.भे.) उ०—हाका हूवौ सुण नै लोग-बाग भेळा हुंग्या। रावळा रा कणवारिया री आ दुरगत देख'र वै डरग्या।
—रातवासौ

दुरगतरणी–सं०स्त्री० [सं० दुर्गतरणी] एक देवी का नाम।

दुरगति, दुरगती, दुरगत्त–सं०स्त्री० [सं० दुर्गति] १ बुरी गति, दुर्दशा, बुरा हाल. २ परलोक में होने वाली दुर्दशा, नरक।

उ०—१ वाहू नांम तीर्थंकर यउ मुझ, दुरगति पड़तां बांह रे। हुं तपतउ आव्यउ तुम्ह पासै, तुम्हे करउ ठाढ़ी छांह रे।—स.कु.

रू०भे०—दुग्गय, दुरगत।

दुरगदास–सं०पु०—इतिहास प्रसिद्ध वीर राठौड़ दुर्गादास।

वि०वि०—वीर दुर्गादास राठौड़ आसकरण का पुत्र था। इसका जन्म वि०स० १६९५ के दूसरे स्रावण की १४ सोमवार तदनुसार १६-६-१६३८ ई० को हुआ था। यह बड़ा देशप्रेमी, वीर, सदाचारी, स्वार्थ त्यागी और स्वामिभक्त था। मारवाड़ नरेश जसवन्तसिंह के देहावसान पर उसके नवजात पुत्र अजीतसिंह की मुगल सम्राट औरंगजेब से इसी वीर ने रक्षा की थी तथा उसे गुप्त रूप से सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया था। दुर्गादास ने बड़ी स्वामि-भक्ति से राजकुमार का पालन-पोषण करवाया। राजकुमार के युवा होने तक उसने बराबर मुगलों से लोहा लिया। युवा हो जाने पर अजीतसिंह ने इसी वीर तथा अन्य सरदारों की मदद से अपने पैतृक राज्य पर पुनः अधिकार किया था। कुछ समय पश्चात् महाराजा अजीतसिंह कुछ बुरे लोगों के बहकावे में आकर वृद्ध दुर्गादास को देश निकाला दे दिया। इस महान् और स्वामि-भक्त वीर की मत्यु उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे हुई थी जहां पर एक छतरी बनी हुई है।

दुरगपाळ–सं०पु०—गढ़ का रक्षक, किलेदार।

दुरगम–वि० [सं० दुर्गम] १ कठिन, विकट, दुस्तर. २ जहाँ जाना बहुत कठिन हो, औघट. ३ जो आसानी से समझ में नहीं आवे, जिसे जानने के लिए सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता हो, दुर्ज्ञेय.

(नां.मा.) ४ भयावह, डरावना।

सं०पु०—१ संकट, स्थान. २ दुर्ग, किला, गढ़. ३ वन, जंगल. ४ विष्णु।

रू०भे०—दुगम, दुगमी, दुगम्म, दुगांम, दग्गम, दुग्गमी, दुयंगम।

दुरगमता–सं०स्त्री० [सं० दुर्गमता] दुर्गम होने का भाव।

दुरगरक्षक–सं०पु० [सं० दुर्गरक्षक] किलेदार।

दुरगलंघण, दुरगलंघन–सं०पु० [सं० दुर्गलंघन] रेतीले व दुर्गम स्थानों को पार करने वाला, ऊँट।

दुरगांमी–वि०—कुमार्गी, पापी।

दुरगा–सं०स्त्री० [सं० दुर्गा] १ आदि शक्ति, देवी. २ पार्वती, महामाया (अ.मा.) ३ नौ वर्ष की कन्या।

दुरगाधिकारी–सं०पु०यौ० [सं० दुर्गाधिकारी] गढ़ का अधिपति, किलेदार।

दुरगाध्यक्ष–सं०पु० [सं० दुर्गाध्यक्ष] गढ का प्रधान, किलेदार।

दुरगानवमी–सं०स्त्री० [सं० दुर्गानवमी] १ चैत्र शुक्ला नवमी. २ आश्विन शुक्ला नवमी. ३ कार्तिक शुक्ला नवमी।

दुरगास्टमी–सं०स्त्री० [सं० दुर्गाष्टमी] १ चैत्र शुक्ला अष्टमी. २ आश्विन शुक्ला अष्टमी।

दुरगुण–सं०पु० [सं० दुर्गुण] बुरा गुण, दोष, ऐब।

दुरगेस–सं०पु० [सं० दुर्गेश] दुर्गाध्यक्ष, दुर्गरक्षक, किलेदार।

दुरगोत्सव–सं०पु० [सं० दुर्गोत्सव] दुर्गा पूजा का उत्सव जो नवरात्रि में होता है।

दुरग—देखो 'दुरग' (रू.भे.)
दुरग्रह-सं०पु० [सं०] १ ज्योतिष के अनुसार दुष्ट ग्रह।
उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित। दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, नासै दुसुपन दुरनिमित।
—वेलि.
२ देखो 'दुराग्रह' (रू.भे.)
दुरघट-वि० [सं० दुर्घट] १ जो कठिनता से हो, मुश्किल से होने लायक, कष्ट-साध्य. २ बुरा, खराब. ३ भयंकर, डरावना।
दुरघटना-संस्त्री० [सं० दुर्घटना] १ ऐसी बात, संयोग या कार्य जिसके होने से बहुत कष्ट, पीड़ा या शोक हो, अशुभ घटना।
क्रि०प्र०—घटणी, होणी।
२ विपद्, आफत।
दुरघोस-सं०पु० [सं० दुर्घोष] जो कटु या कर्कश ध्वनि करे, जो बुरा स्वर निकाले।
सं०पु०—भालू।
दुरड़ी-सं०स्त्री० [अनु०] मिट्टी का बना वह गोल घेरा जो पानी की नालो में निकास स्थान पर लगाया जाता है (कृपि-कूप)
दुरड़ौ-सं०पु० [देश०] छेद, सुराख, गड्ढ़ा। उ०—संकर सागर हुयगो सुरड़ा। करण मिळै नंहि पांणी कुरड़ा। चोभ मांय ठहरै नंहि चुरडा। जिण रीं पाळ पड़ै दस दुरड़ा।—ऊ.का.
दुरचारि, दुरचारी—देखो 'दुराचारी' (रू.भे.)
उ०—१ केसि धरी नइ तांणीउं दुसासणि दुरचारि। बाळप्पिणि हुं नवि मूई कांइं तुम्ह नारि।—पं.पं.च.
उ०—२ चपल मती दुरचारणी, चित्त भाव विभचार। सीघ्र त्याग कर सूर सभा, फर नर अंगीकार।—पा.प्र.
(स्त्री० दुरचारणी)
दुरजण, दुरजन-सं०पु० [सं० दुर्जन] १ दुष्ट, नीच, खल।
उ०—१ 'बांका' विख फळ नीपजै, ज्यों विख तर री डाळ। यूं दुरजण री जीभड़ी, रैकारो कै गाळ।—बां.दा.
उ०—२ सज्जन बांधै पाळ सिर, सीसा छकियां गाळ। दुरजण फोड़ै गाळ दे, प्रीत सरोवर पाळ।—बां.दा.
उ०—३ चिड़ी बचां री चांच में, चांच दिवै भर चार। दुरजन मुख इण विध दिवै, मूरख स्रवण मझार।—बां दा.
२ शत्रु, दुस्मन। उ०—जाळंधर 'अगजीत' रै, पुत्र 'अभो' अवतार। दुरमत व्यापै दुरजणां, सयणां सुमत अपार।—रा.रू.
रू०भे०—दुइण, दुजण, दुज्जण, दुयण, दुरजिन, दुरिज्जण, दुरिजन्न, दूजण, दोइण, दोयण, दोयरण।
अल्पा०—दुज्जणौ।
विलो०—सज्जण।
दुरजनता-सं०स्त्री० [सं० दुर्जनता] दुष्टता, खोटापन।
दुरजनि—देखो 'दुरजन' (रू.भे.) उ०—कालमुही फिरइं मंदिर मांहै, राति वल्लभ तणइ तडि जाए। जीवतइ तइं पराभवि पूरी, देव दासि जिम दुरजनि मारी।—विराट पर्व
दुरजय-वि० [सं० दुर्जय] जिसे जीतना आसान न हो, जिसे जीतना बहुत कठिन हो। उ०—अनमी आंटीला वळिया थळ वाळा। विपदा बांटीला वळिया वळ वाळा। दुरजय दीखण में निरभय दिन दूल्हा, भीखण दुरभिख में भुजबळ नह भूला।—ऊ.का.
सं०पु०—१ विष्णु. २ एक राक्षस का नाम।
दुरजाति-सं०स्त्री० [सं० दुर्जाति] नीच जाति, बुरी जाति।
वि०—बुरे कुल का।
दुरजीव- सं०पु० [सं० दुर्जीव] क्षुद्र प्राणी, जीव, प्राणी (?)।
उ०—उभै दुंब आचरै एक कवि कंब कवावे। चंपै चंगुल ग्रीव तजै दुरजीव सितावे।—रा.रू.
दुरजोण, दुरजोध, दुरजोधण, दुरजोधन, दुरजोधनौ—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—१ दुरजोण मांण, अरजणह बांण। भुजवळी भीम, सूराति सीम।—वचनिका
उ०—२ गढ़पति मिळै उजेणि गढ़, राजा 'जसौ' 'रतन्न'। रांम लख्खमण राठवड़, किर दुरजोध करन्न।—वचनिका
उ०—३ मेवा तजिया महमहण, दुरजोधन रा देख। केळा छोत विसेख, जाय विदुर घर जीम्हिया।—र.ज.प्र.
उ०—४ अरजण अर दुरजोधन सहाव मांगिवा कै काजि स्री क्रिस्णजी कन्है आया। तव पणि इहै विधि हुई।—वेलि टी.
उ०—५ राजा जुचठळराओ, धारण मन ध्रु खत्र ध्रमांणै, पाळण पैज प्रत्यंग्या दुरजोधनौ 'केहरी' मांणं।—गु.रू.बं.
दुरज्जटा-सं०स्त्री० [सं० दुर्ज्जटा] बिखरे हुए केशों वाली देवी।
उ०—देवी भूतड़ा अम्मरी वीस भूजा, देवी त्रीपुरा भैरवी रूप तूजा। देवी राखसं धोमरे रक्त रूती, देवी दुरज्जटा विकट्टा जम्मदूती।
—देवि.
दुरज्योधण, दुरज्योधन—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—अरजुन का बांण, दुरज्योधन का मांण। रस विलास का यंद, वचन का हरचंद।—बगसीरांम प्रोहित री वात
दुरणौ, दुरबौ-क्रि०अ० [देश०] १ गुप्त होना, ओट में होना, लुकना, छिपना। उ०—१ दुरै निहारै दंतड़ा, बादळ दांमणियांह। अति ऊजळ त्यां आगळी, की हीरा कणियांह।—बां.दा.
उ०—२ भजि जात प्रजा मय वात भंगीलां, पाटण तूंअर कंप पुरै। वड गूजर जाट अहीर तजै वळ, दाट लगै पुर राट दुरै।—रा.रू.
२ दूर होना, समाप्त होना, मिटना। उ०—उगै हुए पूरब पुण्य अंकूर। दुरी दुवधा दुख दाळद दूर।—ऊ.का.
दुरणहार, हारौ (हारी), दुरणियौ—वि०।
दुरवाड़णौ, दुरवाड़बौ, दुरवाणौ, दुरवावौ, दुरवावणौ, दुरवाववौ, दुराड़णौ, दुराड़बौ, दुराणौ, दुराबौ, दुरावणौ, दुराववौ—प्रे०रू०।

दुरिग्रोड़ो, दुरियोड़ो, दुरयोड़ो—भू०का०कृ० ।

दुरीजणौ, दुरीजबौ—भाव वा० ।

दुरत–वि० [सं० दुरित] १ भयंकर, भयावह ।

उ०—भेख तखिक खीजिया भमंगा । दुरत रोस चख भड़ै दमंगा । —सू.प्र.

२ जबरदस्त । उ०—वजरंग घाट काळा विकट, दुरत थाट जमदूत सा । कर जोम गयण.ग्रोधस करै, घोम नयण ग्रवधूत सा ।—सू.प्र.

३ पापी, दुष्ट ।

[सं० दुःसह] ४ जो कठिनता से सहा जा सके.

५ गुप्त (ग्र.मा.)

सं०पु०—१ क्रोध (ग्र.मा.) उ०—दुरत निलै तसळै वळ दीधौ । कमधज धनख टंकारव कीधौ ।—सू.प्र.

२ पाप, पातक. ३ उपपातक, छोटा पाप ।

४ शत्रु (ग्र.मा.)

रू०भे०—दुरत्त, दुरित, दुरिति, दुरिउ, दुरीय ।

मह०—दुरतेस ।

दुरतेस—देखो 'दुरत' (मह., रू.भे.) उ०—दसे खग भाट पड़ै दुरतेस । समोभ्रम 'रुप' लड़ै 'सुरतेस' ।—सू.प्र.

दुरतौ–सं०पु०—वह घोड़ा जिसका रंग सफेद या श्याम हो । (ग्रशुभ, शा.हो.)

दुरत्त—देखो 'दुरत' (रू.भे.) उ०—वळ दुर्ग विजपाळ रौ, जोड़ घमळ जगपत्त । बाभ निभाहण मारवाँ, गाहण मेछ दुरत्त ।—रा.रू.

दुरद, दुरदन—देखो 'द्विरद' (रू.भे.) (ग्र.मा.)

उ०—ग्रस्व दुरद जेव ग्रनेक, ग्रनि छात ग्रिह ग्रनेक । सुभ तांन नौबत सद्द, मनि हरत गंध्रव मद्द !—रा.रू.

दुरदम, दुरदमन–वि० [सं० दुर्दम, दुर्दमन] जिसका दमन करना कठिन हो, प्रचण्ड, प्रबल ।

दुरदर–वि०—दुःख से उत्तीर्ण (?) । उ०—विच्छाय स्यांम दीनवदन हूग्रो, जिसिउ चपेटा ग्राहणिउ मांकड़, जिसिउ डाळ चूकौ वानर, जिसिउ घाय चूकौ सुभट, जिम दाव चूकौ जूग्रारी, विद्या चूक्यौ विद्याधर, फाल चूकौ दुरदर, ठांम चूकौ भंडारी, यूथभ्रस्ट हरिण, चोर जिम ग्रणग्रसंण, राज्य चूकौ राजा, पदवी चूकौ पदस्थ, भीख चूकौ भिखारी ।—व.म.

दुरदरस–वि० [सं० दुर्दर्श] १ जिसे देखना ग्रत्यन्त कठिन हो, जो कठिनता से दिखाई दे. २ जो देखने में भयंकर हो ।

रू०भे०—दुरदरसन ।

दुरदरसन–सं०पु०—१ कौरवों का एक सेनापति ।

२ देखो 'दुरदरस' (रू.भे.)

दुरदसा–सं०स्त्री० [सं० दुर्दशा] बुरी दशा, दुर्गति ।

उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित । दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, दुनासै सुपन दुर निमित । —वेलि.

दुरदांन–सं०पु० [सं० दुर्दान] चांदी ।

दुरदाळ–सं०पु० [सं० दुर्दल्म] हाथी (डि.को.) उ०—वहै रत छौळ ढहै विकराळ, दंतूसळ भूमि थहै दुरदाळ ।—सू.प्र.

दुरदिन, दुरदीह–सं०पु० [सं० दुर्दिन, दुर्दिवस] दुर्दशा का समय, बुरा दिन, बुरा वक्त (डि.को.) । उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित । दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, नासै दुसुपन दुरनिमित ।—वेलि.

दुरदुर—देखो 'दादुर' (रू.भे.) (डि.को.)

दुरदुरूढ़–सं०पु० [सं० दुर्दुरूढ] नास्तिक ।

दुरदेव–सं०पु० [सं० दुर्दैव] १ दुर्भाग्य, ग्रभाग्य. २ बुरा संयोग ।

दुरद्द—देखो 'द्विरद' (रू.भे.) उ०—दुहूं विसाळ चंपडाळ ग्रोपयं भुजा इसी । दुरद्द दुत रंगदार चद्रबाह चौपसी ।—सू.प्र.

दुरद्धर–सं०पु० [सं० दुर्द्धर] १ पारा. २ एक नरक का नाम.

३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम. ४ महिषासुर का एक सेनापति.

५ शंखासुर के एक मंत्री का नाम. ६ ग्रशोक वाटिका में हनुमान के हाथ से मारा जाने वाला एक राक्षस जो रावण का सैनिक था.

७ विष्णु ।

वि०—१ जो सरलता से पकड़ में न ग्रा सके. २ प्रबल, प्रचंड.

३ जो सरलता से समझ में नहीं ग्रावे ।

दुरद्धरख, दुरधरस–सं०पु० [सं० दुर्द्धर्ष] १ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम. २ एक राक्षस जो रावण का सैनिक था ।

वि०—१ जिसको वश में करना कठिन हो । जिसका सरलता से दमन नहीं किया जा सके. २ प्रबल, उग्र ।

दुरद्रस्टी–सं०स्त्री० [सं० दुर्+दृष्टि] बुरी निगाह, बुरी दृष्टि ।

दुरधर, दुरधार–वि० [सं० दुर्द्धर] कठिन, मुश्किल ।

उ०- दुरधर डंका दे बंका द्रढ़ धाया । उठिया उद्योगी उद्दिम उमगाया । कित है बंबोई उड़िया कलकत्तौ । मादू मुरधरिया करियौ मिळ मत्तौ ।—ऊ.का.

दुरनिमित दुरनिमित्त–सं०पु० [सं० दुर्निमित] भावी बुरी घटना की सूचना देने वाला शकुन, बुरा शकुन उ०—मन सुद्धि जपंता रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित । दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, नासै दुसुपन दुरनिमित ।—वेलि.

रू०भे०—दुरमित ।

दुरनीति–सं०स्त्री० [सं० दुर्नीति] कुनीति, ग्रन्याय ।

दुरन्याय–सं०पु० [सं०] ग्रत्याचार, ग्रन्याय ।

दुरपंथ–सं०पु० [सं०] बुरा मार्ग, कुमार्ग ।

दुरपदी—देखो द्रोपदी' (रू.भे.)

दुरपारौ–वि० [सं० दुष्पार] जिसको कठिनता से पार किया जा सके.

दुर्लंघ्य । उ०—दक्खण हसन ग्रली दुरपारौ । ग्रागळ सूरां संद ग्रपारौ ।—रा.रू.

दुरबख—देखो 'दुरभिख' (रू.भे.) उ०—लादी भारी नै ग्रोळावौ लेती । दुरबख वारी नै वोळावौ देती ।—ऊ.का.

दुरबळ-वि० [सं० दुर्बल] १ अशक्त, कमजोर (डि.को.)
उ०—१ मावड़िया मुख ढंकियां, वैसे फाड़े वाक। स्रवण सुणे नह वीर रस, दुरबळ घणो दिमाक।—बां.दा.
उ०—२ भोगी कही दुरबळ किउं क्षत्री।—सिंघासण बत्तीसी
उ०—३ निरबळ चोरां डर बसियोड़ा नैड़ा। दुरबळ मारां पर कसियोड़ा डेरा।—ऊ.का.
२ दुबला-पतला, कृश। उ०—मारग मांहीं एक दुरबळ दीन ब्राह्मण आय सो धेनू मांगी। तद राजा तुरत देय हाथ जोड़िया।
३ निर्धन, कंगाल। —सिंघासण बत्तीसी
रू०भे०—दुब्बळ, दुरवळ।
अल्पा०—दुबळो, दूबळो।

दुरबळता-सं०स्त्री० [सं० दुर्बलता] १ कमजोरी, अशक्तता।
उ०—मिनख-हृदय-री दुरबळता-ई विचित्र हुवै है।—वरसगांठ
२ दुबलापन, कृशता।

दुरबाळ-वि० [सं० दुर्बाल] जिसके बाल झड़ गये हों, गंजा।

दुरबास-सं०स्त्री० [सं० दुर्वास] बुरी बास, दुर्गंध।

दुरबासा—देखो 'दुरवासा' (रू.भे.)

दुरबिध—देखो 'दुरविध' (रू.भे.) उ०—दुरबिध घमड़ी दे सणकारी साजी। भारी भमडीलै घर में भूवाजी। चिलमीं अमली के जुलमी चितचावा। दासी वेस्यां रा मदवां रा दावा।—ऊ.का.

दुरबिधभाव—देखो 'दुरविधभाव' (रू.भे.)

दुरबीन—देखो 'दूरबीन' (रू.भे.)

दुरबुदो, दुरबुद्धि, दुरबुधी-वि० [सं० दुर्बुद्धि] १ दुष्ट बुद्धि वाला, नीच।
उ०—१ दुरबुदो धेन सोह चरत देख। सक्रोद भयो तातै विसेख।
—रांमदांन लाळस
उ०—२ देह दुख दीजो संकट दीजो, सिंघ सरप भल खांई। दुरबुद्धि जन की संग न दीजो, मो सूं सही न जाई।
—स्री सुखरांमजी महाराज
२ मूर्ख।
सं०स्त्री०—बुरी बुद्धि।

दुरबेस-सं०पु०—देखो 'दरवेस' (रू.भे.)
उ०—नह पलटै खरडकै अहोनिस, घड़ दुरबेस घडै घण घाव। 'सांगा' हरो तणे आलम सह, पांतर दै महपत अनपाव।—पीथो आसियो

दुरबोध-वि० [सं० दुर्बोध] १ जो जल्दी समझ में न आवे, गूढ़।
उ०—पतसाह सचिक्कण कुंभ पर, सघण बूंद वांणी सुजण। दुरबोध मांन रहियो सद्रढ, कांन न कीधो वयण कण।—रा.रू.
२ मूर्ख। उ०—तूं ऊपर दोयण तणे, दया करै दुरबोध। हितअत नीत सुणाव हव, किण सिर करणो क्रोध।—बां.दा.
सं०स्त्री० [सं० दुर्+बोध] कुमंत्रणा, बुरी सलाह, कुबुद्धि।
उ०—दोयण मत खोटी दियै, बांका विसवा वीस। डहकायो दुरबोध दे, आदम नै इळबीस।—बां.दा.

दुरब्बा—देखो 'दुरबा' (रू.भे.) उ०—लांबा लांबा घर आंबा अड़ जावै। घड़ घड बड़ घड़ कै पीपळ पड़ि जावै। टणका टणका तरु जरब्बै टुरि जावै। दुरब्बा गुरब्बा गुण गरबै दुर जावै।—ऊ.का.

दुरभक, दुरभख-सं०पु०—१ दुख, कष्ट। उ०—१ जन हरिदास दुरभख तहां, जहां न हरि सूं हेत। जे नर लाग्या न हरि हठि, जम द्वारे डंड देत।—ह.पु.वा.
देखो 'दुरभिख' (रू.भे.)
उ०—१ भेटै दुरभक मुरधरा, सुर भख चारू चाल। रायपाळ पायो विरद, मही रेलण घणमाल।—पा.प्र.
उ०—२ दुरभख सत सटो अड़सटो दोनूं, कण तोटो गुणंतरै कियो। अबकै दियै माळवै उत्तर, 'देवै' उत्तर नकू दियो।—देवनाथ रो गीत

दुरभग—देखो 'दुरभाग्य' (रू.भे.)

दुरभर-वि० [सं० दुर्भर] १ जो लादा न जा सके, जिसे उठाना कठिन हो. २ भारी, वजनी।

दुरभांत, दुरभांति—देखो 'दुभांत' (रू.भे.) उ०—'समझदार तो को कैवै नी, मूरखां-री वात छोडो। मनै तो हैरांनी आवै है ये माइत होय'र खवावणां-पीवावण-में दुरभांत किया राखो। छोरो तो कांई दूध देवै अर छोरी खोस लेवै! छीः, कित्ता ओछा विचार।
—वरसगांठ

दुरभाग—देखो 'दुरभाग्य' (रू.भे.)

दुरभागी-वि० [सं० दुर्भाग्य या दुर्भागिन्] (स्त्री० दुरभागण, दुरभागणि, दुरभागिन, दुरभागिनी) मन्द भाग्य का, अभागा।
उ०—चित विपदा बारधि पार करण को चाही, अदबिच में आती नाव भंवर में आई। दुरभागिन को हा देव भयो दुखदाई, घन पोळ पहूंच्यो घोर धूंस ले धाई।—ऊ का.

दुरभाग्य-सं०पु० [सं० दुर्भाग्य] खोटी किसमत, बुरा अदृष्ट, मंद भाग्य।
रू०भे०—दुरभग, दुरभाग।

दुरभाव-सं०पु० [सं० दुर्भाव] १ बुरा भाव। उ०—रयणायर पुत्री रमा, डाटी कर दुरभाव। रयणायर ते डूबवै, सूंमां केरी नाव।
—बां.दा.
२ मनोमालिन्य, द्वेष।

दुरभावना-सं०स्त्री० [सं० दुर्भावना] १ चिंता, अंदेशा, खटका.
२ बुरी भावना।

दुरभासी, दुरभासू-वि० [सं० दुर्भाषिन्] कर्कश शब्द बोलने वाला, कटु भाषी।

दुरभिक, दुरभिख-सं०पु० [सं० दुर्भिक्ष] अकाल, दुष्काल।
उ०—१ मांनव विकै पाव अन माटै दुरभिक जग में ताव दियो, अन रांधै कोरै नह उत्तर 'लाधै' हद सोभाग लियो।—बां.दा.
उ०—२ दुरभिख निकटासण किण नै नह दीधो। नकटै नकटापण क्रपणासय कीधो। मिळगा धूळी ज्यूं जेस्टास्रम जूनां। साले सूळी ज्यूं सेस्टास्रम सूनां।—ऊ.का.

रू०भे०—दुरवख, दुरभक, दुरभख।

दुरभेद, दुरभेद्य–वि० [सं० दुर्भेद, दुर्भेद्य] १ जो सरलता से भेदा न जा सके. २ जो आसानी से पार नहीं किया जा सके।

दुरमट—देखो 'दुरमुच' (रू.भे.)

दुरमत, दुरमति, दुरमती, दुरमत्ति, दुरमत्ती–सं०स्त्री० [सं० दुर्मति] खोटी बुद्धि, बुरी बुद्धि, नासमझी। उ०—भेद लिया जब दुरा मुरा त्यागिया, राम नाम रंग भीना। घट घट में साहब सत जांण्या, दुरमत दूरी कीना।—स्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ जाळंधर 'अगर्जीत' रै, पुत्र 'अभो' अवतार। दुरमत व्यापै दुरजणां, सयणां सुमत अपार।—रा.रू.

उ०—३ जन हरिदास या जीव कूं, अटकि अटकि समझाय। दूजि दुरमति दूरि करि, हरि चरणां चित लाय।—ह.पु.वा.

वि०—जिसकी बुद्धि ठीक न हो, दुर्बुद्धि, कम अक्ल, दुष्ट, खल।

उ०—१ ज्यूं ज्यूं लालच खार जळ, सेवै दुरमत संग। वाका अत त्यूं त्यूं वधै, अमना तणी तरंग।—बा.दा.

उ०—२ दीधियौ एम मंडळ दिली, देव भ्रमै दुरमत्ति नूं। तन दहै अग्नि ज्वाळा तणा ओझाळा असपत्ति नूं।—रा.रू.

दुरमद–वि० [सं० दुर्मद] नशे या अभिमान में चूर, उन्मत्त।

दुरमन–वि० [सं० दुर्मनस्] १ उदास, खिन्न, अनमना (डिं.को.)

उ०—कुमार प्रिथ्वीराज दुरमन होय कोका री गरहा प्रकट करी अर कन्ह बी मूरछा विहाय आपरी हवेली जाय पाछो सभा आवण री, आंट धरी।—वं.भा.

२ बुरे चित्त का, दुष्ट. ३ दुखी।

दुरमित—देखो 'दुरनिमित' (रू.भे.)

दुरमिळ–सं०पु० [सं० दुर्मिल] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १०,८ और १४ के विराम से ३२ मात्रायें होती हैं। अंत में एक सगण और दो गुरु होते हैं, इसमें जगण का निषेध होता है।

दुरमुख–सं०पु० [सं० दुर्मुख] १ राम की सेना का एक बन्दर. २ महिषासुर के एक सेनापति का नाम. ३ नाग. ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम. ५ साठ संवत्सरों में से एक. ६ गणेशजी का एक गण।

वि० (स्त्री० दुरमुखी) १ बुरे वचन बोलने वाला, कटुभाषी. २ जिसका मुख बुरा हो।

दुरमुखी–सं०स्त्री० [सं० दुर्मुखी] एक राक्षसी जिसे रावण ने जानकी को समझाने के लिए नियत किया था।

वि०—बुरे मुंह वाली।

दुरमुच, दुरमुसो–सं०पु० [सं० दुर्मस] कंकड़ या मिट्टी पीटने का मुगदर।

वि०वि०—एक लम्बे डंडे के नीचे लोहे या पत्थर का गोल टुकड़ा लगा रहता है जो प्रायः सड़कों पर कंकड़ और मिट्टी पीटने के काम में लिया जाता है।

रू०भे०—दुरमट।

दुरयोधन—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.) उ०—ईसे दुरयोधन अनियाई, सकळ पांडवां जीत संभाई।—रा.रू.

दुररांनी–सं०स्त्री० [फ़ा. दुर्रानी] अफगानों की एक जाति।

दुरळ–सं०पु० [देश०] उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा, झगड़ा, विघ्न।

उ०—'देसळ' राज तणा जमदंती, दस देसां करता दुरळ।—क.कु.बो.

दुरलभ–वि० [सं० दुर्लभ] १ जो कठिनता से मिल सके, दुष्प्राप्य।

उ०—सुज दुरलभ रणां वळ सिधां साधकां, जोगीराजां दुलभ जग। खाटण सुजस भेटियौ 'सूर', नरां सुरां वच जको नग।—वां.दा.

२ दुर्लंघ्य, कठिन, मुश्किल। उ०—तजन जतन सैं करत है, ममता तजै न कोय। एक कनक औ कांमिनी, दुरलभ घाटी दोय।—सिंघासण बत्तीसी

३ बुरा, खराब। उ०—लाखां लोकां रौ लाखां भर लीन्हौ। दुरलभ वेळा में चेळां भर दीन्हौ।—ऊ.का.

४ अनोखा. ५ प्रिय, प्यारा।

विलो०—सुलभ।

सं०पु०—दूल्हा। उ०—नीराजन प्रमुख समस्त ही विधान करि अरबुद रै अधीस दुरलभ प्रिथ्वीराज नूं आपरै अंतहपुर आणि वेद मंत्रां रा विधान पूर्वक अगजा इच्छणी परिणाय दीधी।—वं.भा.

रू०भे०—दुलभ, दुल्लभ, दुल्लह।

दुरवंछ, दुरवंछो–वि० [सं० दुर्वाञ्छिन्] बुरा चाहने वाला।

उ०—करसि प्रांण केविया दमा असरखि दुरवंछां। सुरिख बाण सामत्र जाण सुरं तारिख बंछा।—रा.रू.

दुरवंस–सं०पु०—बरे वंश का, नीच। उ०—परम अस रवि वंस, अवर दुरवंस अभायौ। हंस वंस अवतंस, पुंस परताप सवायौ।—रा.रू.

दुरवच, दुरवचन–सं०पु० [सं० दुर्वचन] कटु वचन, दुर्वाक्य, गाली।

रू०भे०—दवोयण, दुवयण, दुवियण, दुवोयण।

वि०—१ अति तीक्ष्ण* (डिं.को.) २ तप्त, गरम* (डिं.को.)

दुरवरण, दुरवरणक–सं०पु० [सं० दुर्वर्ण, दुर्वर्णक] चांदी, रजत (अ.मा.)

दुरवळ—देखो 'दुरवळ' (रू.भे.)

दुरवसनी–वि० [सं० दुर्+व्यसनी] जिसकी आदतें बुरी हों।

दुरवस्था–सं०स्त्री० [सं०] खराब हालत, बुरी हालत।

दुरवा—१ देखो 'दोब' (रू.भे.) उ०—जिम आकासि माहि सरब पदारथ आवइं तिम दधि दुरवा अक्षत चंदन कुसम कुकुम।—व.स.

२ देखो 'दुरवाचाप'।

दुरवाचकजोग, दुरवाचकयोग–सं०पु० [सं० दुर्वाचिक योग] १ कठिन स्थलों का तात्पर्य निकालना, ६४ कलाओं में से एक।

दुरवाचाप–सं०स्त्री० [देश०] दीवार में लगभग कमर तक की ऊंचाई पर लगाया जाने वाला पत्थर जिसका किनारा दीवार से आगे तक बाहर निकला रहता है।

दुरवाद-सं०पु० [सं० दुर्वाद] १ अनुचित विवाद. २ अपवाद, निंदा, बदनामी।

दुरवादी-वि० [सं० दुर्वादिन्] हुज्जत करने वाला, कुतर्की।

दुरवार—देखो 'दरबार' (रू.भे.) उ०—कियां दुवाहां कोट 'पाल' जांगड़ गवरावै। गह मह वै दुरवार वडा भूपत वह आवै।—पा.प्र.

दुरवासना-सं०स्त्री० [सं० दुर्वासना] १ ऐसी कामना जो कभी पूरी नहीं हो सके. २ खोटी आकांक्षा, बुरी इच्छा।

दुरवासा-सं०पु० [सं० दुर्वासस्] एक मुनि जो अत्रि के पुत्र थे। ये बहुत क्रोधी स्वभाव के थे। इनके शाप और वरदान की अनेक कथाएं महाभारत एवं पुराणों में भरी पड़ी हैं। उ०—१ दुरवासा देता घणा, सगरांमदास कहै स्राप। अंबरीख पर कोपिया, उण हलगत सूं आप।
—सगरांमदास

उ०—२ द्वापर में पाडवां रै द्वारै, दुरवासा घर आई। कोप करै कर वहु दुख दीना, तो ई रे सती सत न गमाई।
—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—दुरवासा।

दुरविध-वि० [सं० दुर्विध] दरिद्र, कंगाल, निर्धन।
उ०—गडियो जिण रै चित्त गुण, धन तिण रै मन धूळि। दुरविध सो ही विवुध द्विज, मांनो जीवन मूळि।—वं.भा.
सं०स्त्री०—१ निर्धनता, कंगाली. २ भूख।
रू०भे०—दुरविध।

दुरविधभाव-सं०पु० [सं० दुर्विधभाव] निर्धनता, दारिद्रय, कंगाली।
उ०—सहर अवती जिण समय, चारु दंत द्विज चंद्र। क्रम पढ़ियो विद्या कळा, दुरविधभाव अतंद्र।—वं.भा.
रू०भे०—दुरविधभाव।

दुरविनीत-वि० [सं० दुर्विनीत] अशिष्ट, अविनीत।

दुरविवाह-सं०पु० [सं० दुर्विवाह] निंदित विवाह, बुरा विवाह।

दुरविस-सं०पु० [सं० दुर्विष] महादेव, सिव।
वि०वि०—महादेव पर विष का कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ था, अतः वे दुर्विष कहलाये।

दुरविसन-सं०पु० [सं० दुर्व्यसन] खराव आदत, बुरी लत, ऐब, अवगुण।
रू०भे०—दुरव्यसन।

दुरविसनी-वि० [सं० दुर्व्यसनी] बुरी लत वाला।
रू०भे०—दुरव्यसनी।

दुरवीणी—देखो 'दूरबीन' (रू.भे.)

दुरवेस—देखो 'दरवेस' (रू.भे.) उ०—दुरवेस गयो पतसाह दिसी। चड मूंठिय झूठिय वात इसी। सुणतां कमधां दळ मांन सही। रस वाघ ययो निस आव रही।—रा.रू.

उ०—२ कूंतां कळह चढ़े राव कमधज, दुरवेसां पाडतो दळ। अहंकार दे सूवर ले आई, स्वरग ले पहुंची सहस बळ।
—नापे सांखले री वारता

उ०—३ इम 'दुरगेस' भड़सियै आयो, दळ दुरवेस ऊठै दरसायो। क्यों मुंहमेळ कियो नवकोटां, असुर गया भज घाटी ओटां।—रा.रू.

उ०—४ नह पलटै खरड़कै अहो निस, घड़ दुरवेस घड़ै घण घाव। 'सांगा' हरो तणो आलम साहि, पात रहै महपत अन पाव।
—पीथो आसियो

उ०—५ दुज जंगम दुरवेस, जोगी सन्यासी जती। लोभ न राखै लेस, 'बांका' उण नूं वंदिए।—वां.दा.
वि०—दुरवेसी।

दुरवेसी-वि०—१ मुसलमान का, मुसलिम। उ०—राजा राव मिळै मन राखै, दाखै 'अजन' वचन सुज दाखै। अधपत साथ लियां दळ आया, दुरवेसी वांना दरसाया।—रा.रू.
२ बादशाह का, बादशाही. ३ फकीर का।
रू०भे०—'दरवेसी' (रू.भे.)
४ देखो 'दरवेस' (रू.भे.) उ०—दळ छीजतो लखे दुरवेसी, वळियो छोडै देस विदेसी।—रा.रू.

दुरव्यवस्था-सं०स्त्री० [सं० दुर्व्यवस्था] कुप्रबन्ध, अव्यवस्था।

दुरव्यवहार-सं०पु० [सं० दुर्व्यवहार] दुष्ट आचरण, बुरा वर्ताव।

दुरव्यसन—देखो 'दुरविसन' (रू.भे.)

दुरव्यसनी—देखो 'दुरविसनी' (रू.भे.)

दुरव्रत-सं०पु० [सं० दुर्व्रत] नीच मनोरथ, बुरा आशय।
वि०—बुरे मनोरथों वाला, जिसने बुरा व्रत लिया हो।

दुरस-वि० [फा० दुरुस्त] १ सीधा। उ०—दुरवेस विकट करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरो। मम हुकम लाज राखण मुदै, महाराज मंडोवरो।—रा.रू.
२ उचित। उ०—१ निलजी कैरव नार, के ऊभी मूळक्या करै। आसी कुटुंब उधार, दैणा सो लैणा दुरस।—रांमनाथ कवियो
उ०—२ तांणतो मांण ताकै तिको, ऊंचै मुख सूं आंगणो। लेखवो दुरस सगळै लखण, मरण सरीखो मांगणो।—ध.व.ग्रं.
३ ठीक। उ०—१ महाराज प्रसन हुय फुरमायो—दूदा मांग! तद दूदै कयो वचन पाऊं, अरु महाराज फुरमायो—दुरस है, करो अरज।—द.दा.
उ०—२ तद खाफरै कही—दुरस महाराज! हूं तो महीना पांच सूं आज घरां आयो छूं, विरांणपुर गयो थो।
—राजा भोज अर खाफरै चोर री वात
उ०—३ पड़ियो राय विचारणा, अजुगति वात सुणाई रे। किम हो दुरस पड़ै नहीं, दोतड पडियो भाई रे।—स्रीपाळ रास
उ०—४ महिपत महलां मांय, बीजड़ काच विड़ावियो। जोयो झरड़ै जाय, दुरस भुवा कीनो वगो।—पा.प्र.
४ श्रेष्ठ. ५ सत्य, यथार्थ. ६ जो टूटा फूटा न हो, ठीक. ७ स्वस्थ।
रू०भे०—दुरस्त, दुरुस्त, दुरस।

दुरसि—देखो 'दुरस' (रू.भे.) उ०—स्यांम वरण दोन्यूं दुरसि, एक

अजब अनुराग। जन हरिदास बोल्यौ बिगति, कहां कोयल कहां काग।—ह.पु.वा.

दुरसीस—देखो 'दुरासीस' (रू.भे.) उ०—१ पल पल आंतां री चमडी नित पीनीं, दमटी खरची री जातां नह दीनीं। मोचै वो'रां सिर भरियोड़ा रीसां, सत्यानासी री देता दुरसीसां।—ऊ.का.

उ०—२ फरियादियां री दुरसीस सूं घणौ डरणौ।—नी.प्र.

दुरसौ-सं०पु०—टिंगल के एक प्रसिद्ध कवि जो चारण (आढ़ा गोत्र के) थे

दुरस्त—देखो 'दुरस' (रू.भे.) उ०—१ जिका बात बणै तिण में पहिलां अभरोसो विचारजे तो अरथ दुरस्त दीसै।—नी.प्र.

उ०—२ तद कुंअर अरज करी—साव चरणे रेढ़ा जावै छै, हुकम जै हुवै रेढ़ा मार ल्यावां। गोठ री सवाद तौ रेटा ही छै। तद रावजी फुरमायो—दुरस्त वात छै, पण जावतो घणो कर जायज्यो।

—डाढ़ाळा सूर री बात

उ०—३ बादसाह कन्हे सूं भिस्तिन घर गई और घर जाय भिस्ती सूं कही—आज बादसाह खाणा नही खावै था। पण हूं कौल सोंस घणी तरह सूं कर खिला आई हूं। बार-बार बादसाह तुम से अरज करणे कहता है सो तुम्हारा अरज करणे में क्या बिगड़ता? तो भिस्ती—बात तो दुरस्त कही, पण बादसाह बादसाह की जांणै सो जांणै क्या फुरमावै।—साई री पलक में खलक

दुरहित-सं०पु० [सं० दुहित] शत्रु (ह.नां., अ.मा.)

दुराउ—देखो 'दुराव' (रू.भे.)

दुराक-सं०पु० [सं०] १ एक देश का नाम. २ एक म्लेच्छ जाति का नाम।

दुराग्रह-सं०पु० [सं०] १ व्यर्थ किया जाने वाला जिद, बुरे ढंग से अड़ने का काम, बेकार हठ। उ०—सत वक्ता स्ववासील समीक्षक सूरो, पुरुसारथ पूरण प्रेम प्रतिग्या पूरो। दुरव्यसन दुराग्रह दूखण सों द्रढ़ दूरो, अनभंग उतंग उमंग न अंग अधूरो।—ऊ.का.

२ अपना मत अनुचित या त्रुटिपूर्ण साबित होने पर भी उस पर स्थिर रहने का काम।

रू०भे०—दुरग्रह।

दुराग्रही-वि० [सं०] १ उचित अनुचित का विचार किये बिना ही अपनी बात पर अड़ने वाला, हठी, जिद्दी. २ अपने मत के अनुचित या गलत साबित होने पर भी उस पर स्थिर रहने वाला।

उ०—१ रमा बिधांन ध्यांन के बिग्यांन ग्यांन के रहैं। वपू अधीर पीर मे न नीर नैन ते बहैं। दुकार ब्रह्म द्वार व्हे हकार इक्क हत्य दे। दुराग्रही बिवाद बाद को सवाद सत्य दे।—ऊ.का.

उ०—२ महामुनि समांन में महांन हांनि मुक्ति में। अभोग रोग ना अरै जरै न जोग जुक्ति में। दुराग्रही दटै नहीं यथा ग्रिही अखरव तैं। स्वनग्न मांन सरवदा सवा अनग्न सरव तैं।—ऊ.का.

दुराचरण-सं०पु० [सं०] खोटा व्यवहार, बुरा चाल-चलन।

दुराचार-सं०पु० [सं०] दुष्ट आचरण, बुरा चाल-चलन।

दुराचारी-वि० [सं०] (स्त्री० दुराचारण, दुराचारणी) दुष्ट आचरण करने वाला, बुरे चाल-चलन का।

रू०भे०—दुरचारि, दुरचारी।

दुराज-सं०पु० [सं० दुराज्य] १ बुरा शासन, बुरा राज्य.

२ एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य या शासन।

दुराजी-वि० [सं० दुराज्य+रा०प्र०ई] जहां दो राजा हों, दो राजाओं का।

दुराजी-सं०पु० [सं० द्वि+राजा] वैमनस्य, मनमुटाव।

दुराड़णो, दुराड़बौ—देखो 'दुराणौ, दुराबौ' (रू.भे.)

दुराड़ियोड़ौ—देखो 'दुरायोडो' (रू.भे.)

(स्त्री० दुराड़ियोड़ी)

दुराणौ, दुराबौ-क्रि०अ० [देश०] १ आड़ में होना, छिपना.

२ दूर हटना, टलना।

क्रि०स०—३ छिपाना. ४ दूर करना, हटाना. ५ त्यागना. ६ पराजित करना, हराना।

दुराणहार, हारौ (हारी), दुराणियौ—वि०।

दुरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दुराईजणौ, दुराईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दुरणौ, दुरबौ—अक०रू०।

दुराड़णौ, दुराड़बौ, दुरावणौ, दुरावबौ—रू०भे०।

दुरातसत्य-सं०पु० [सं०] इन्द्र (ना.डि.को.)

दुरात्मा-वि० [सं० दुरात्मन्] दुष्ट, खोटा, बुरा।

दुराधन-सं०पु० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुराधर-सं०पु० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुराधरस-वि० [सं० दुराधर्ष] जिसका दमन करना कठिन हो, प्रचण्ड और उग्र।

सं०पु०—१ पीली सरसों. २ विष्णु।

दुराधार-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव।

दुराप, दुराय-वि० [सं० दुराप] कठिनता से मिलने वाला, दुर्लभ।

उ०—तार तुळा हाटक तुळा, एक एक दै आप। सुरभी आठ समेत सत, दीधी दीन दुराप।—वं.भा.

दुरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ आड़ में हुवा हुआ, छिपा हुआ. २ दूर हटा हुआ, टला हुआ. ३ छिपाया हुआ. ४ दूर किया हुआ, हटाया हुआ. ५ त्यागा हुआ. ६ पराजित किया हुआ, हराया हुआ।

(स्त्री० दुरायोडी)

दुराराध्य-वि० [सं०] कठिनाई से आराधन करने योग्य, जिसको संतुष्ट करना कठिन हो।

सं०पु०—विष्णु।

दुरालंभ, दुरालभ-वि० [सं० दुर्लभ] १ जिसका मिलना कठिन हो, दुष्प्राप्य।

२ देखो 'दुरालभा' (रू.भे.)

उ०—दाति दुरालभ दूधीउ, दाडिम द्राख दधूण। देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण।—मा.कां.प्र.

दुरालभा-सं० स्त्री० [सं०] जवासा, धमासा। उ०—दांमिणि दोभी दूधिग्रां, देवदालि दूधेलि। दारू हलद्र दुरालभा, दह दिसी दीसइ वेलि।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—दुरालभ।

दुरालाप-सं०पु० [सं०] बुरा वचन, कुवचन, गाली।

वि०—दुर्वचन कहने वाला।

दुराव-सं०पु० [देश०] १ अविश्वास या भय के कारण किसी से बात गुप्त रखने का भाव, किसी बात को दूसरे से छिपाने का भाव, छिपाव, भेदभाव। उ०—१ हमें रतना अठा तक दुराव करै है, हालतो थको जीमणो पग पहली धरै।—र. हमीर

उ०—२ तब कह्यो ब्राह्मण जु द्वारिका तैं क्रिस्णजी कुंदणपुर पधारिया छै। लोक इसी बात कहै छै। इतरो दुराव राख्यो।
—वेलि.टी.

२ छल, कपट। उ०—मुख ऊपर मीठा मिळधां, दिल में खोट दुराव। म्हांसूं छांनै सौक घर, राखो आवण जाव।—अज्ञात

रू०भे०—दुराउ।

दुरावणौ, दुराववौ—देखो 'दुराणौ, दुरावौ' (रू.भे.)

उ०—१ जिण में आसणां री सवियां आवण लागी। तठै रतनां निजर दुरावण लागी।—र. हमीर

उ०—२ जु रुखमणीजी कै पट घूंघट छै। ति माहि एक वार कटाछि करि देखै छै अर बहुड़ि द्रस्टि दुरावै छै।—वेलि टी.

दुरावणहार, हारौ (हारी), दुरावणियौ—वि०।

दुराविग्रोड़ो, दुराविग्रोड़ौ, दुराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दुरावीजणौ, दुरावीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

दुरणौ, दुरबौ—ग्रक०रू०।

दुराविग्रोड़ौ—देखो 'दुरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दुराविग्रोड़ी)

दुरास-वि० [सं० दुराशा] १ जिससे अच्छी आशा न हो।

उ०—जठै जम काळ जरा नहिं जोर, घुरै घट नाद अनाहद घोर। दुरास दुमार न आस दुकाळ, सुधा जळ बारह मास सुकाळ।
—ऊ.का.

२ विकराल, भयंकर। उ०—ईरांनी तूरांनी ऐसे, जवन दुरास पळासी जैसे। सू मकरांण हरेवी सिंधी, आरब्बी गखड़ै ग्रनमंधी।
—रा.रू.

दुरासद-वि० [सं० दुर+अस] १ कठिनता से वश में होने वाला।

उ०—निभै नद त्रास न आस निरास, वस्यौ हरिरांम अभै पद वास। दुरासद मारण ग्रास दुकाळ, सुधा झड़ि बारह मास सुकाळ।—ऊ.का.

२ दुःसाध्य, कठिन. ३ दुष्प्राप्य।

सं०पु०—दुष्कर्म, पाप।

दुरासय-सं०पु० [सं० दुराशय] बुरी नीयत।

वि०—बुरी नीयत वाला।

दुरासा-सं०स्त्री० [सं० दुराशा] व्यर्थ की आशा, झूठी उम्मीद।

दुरासीस-सं०स्त्री० [सं० दुराशिष] १ बद दुआ, बुरा आशीर्वाद।

उ०—ऊपाड़ै आवू जितो, पर निंदा री पोट। पिसण न्याय पग डग पड़ै, दुरासीस लग दोट।—बां.दा.

२ शाप।

रू०भे०—दुरसीस।

दुराह, दुराहौ-सं०पु० [सं० द्वि+फा० राह+रा०प्र०ग्रौ] जहाँ पर से दो रास्ते भिन्न दिशाओं को जाते हों अथवा जहाँ पर दो रास्ते मिलते हों। उ०—बाघो अठा-सूं विदा हुवो हुंतो, सु दुराहो ऊपर जावतां चोल्हा नजर पड़िया।—ऊमादे भटियांणी री वात

दुरिउ—देखो 'दुरत' (रू.भे.) उ०—विसु दीवउं दुरयोधनिहिं, भीमह भोजन माहि। अम्रित हुई नइ परिणमिउ, पुन्निहिं दुरिउ पुलाइ।
—पं.पं.च.

दुरिजण, दुरिजन्न, दुरिज्जण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.)

उ०—१ कमळि कमळि सुभ वइण, कमळि दुरिजण निकासै।
—गु.रू.बं.

उ०—२ माधव! तुझ गुणि ते करिउं, जे न करइ दुरिजन्न। काळिज काढीनइं लीउं, सूनुं माहरुं तन्न।—मा.कां.प्र.

उ०—३ घण अस्सि दुरिज्जण घड़िय धाइ, रइणायर बाघउ जोधि राइ। जोधि मेवाड़ काढ़िय जड़ांह, भंगवट्ट दीध मोटां भड़ांह।
—रा.ज.सी.

दुरित—देखो 'दुरत' (रू.भे.) उ०—१ पाड़ै किता खड़ो जुधि न पड़ैं, दुरित खवा असमांण दुहि। भरि-भरि बांम खाग अरि मांजै, 'केहरि' का माथै कळहि।—टीकमदास खिड़ियौ

उ०—२ 'जोधा' 'सूजा' अणि, अणि 'सूजां' ही 'ऊदा'। वडरावत वरसींव, दुरित दुसासण 'दूदा'।—गु.रू.बं.

दुरितारि-सं०पु० [सं०] ५२ वीरों में से एक वीर का नाम।

दुरति—देखो 'दुरत' (रू.भे.) (ह.नां.)

दुरिस्ट-सं०पु० [सं० दुरिष्ट] १ वह यज्ञ जो मारण, मोहन, उच्चाटन आदि अभिचारों के लिये किया जाय।

२ पाप, पातक।

दुरी-वि० [सं० दुर्] १ दुख देने वाला, दुखदायी।

उ०—तथापि रहै न हूं सकूं बकूं तिणि, प्रिया अनै प्रेम आतुरी। राज दूरि द्वारका विराजौ, दिन नेडउ आइयौ दुरी।—वेलि.

२ शत्रु (अ.मा.)

सं०स्त्री०—१ शत्रुता. २ निर्धनता, कंगाली. ३ गुफा, खोह।

दुरीमुख-सं०पु०—राम की सेना का एक वानर।

दुरीय—देखो 'दुरत' (रू.भे.) उ०—आंणीय ए सभां मझारि दुरीय दुरयोधनु इम भणं ए। आवि न ए आवि उत्संगि द्रूपदि वइसिन मुझ तणं ए।—पं.पं.च.

दुरीस-सं०पु० [सं० दुः+ईश] दुष्ट राजा । उ०—प्रज उदभिज सिसिर दुरीस पीडतौ, ऊतर ऊथापिया असंत । प्रसन वायु मिसि न्याय प्रवरत्यौ, वनि वनि नयरे राज वसंत ।—वेलि.

दुरीह-वि० [सं० दुर्=खराब+ईहा] बुरी इच्छा वाला, दुष्ट ।
उ०— आयौ गांगै ऊपरै, दौलत-खांन दुरीह । पावू रै आयै पगां, कमधज अरज करीह ।—पा.प्र.

दुरंग दुरंगू—देखो 'दुरग' (रू.भे.) उ०—प्रळै काळ का पावस आतसूं का एक भुरजाळ । सिखराळ दुरंगूं कै भड़ भिड़ज भूक काळ ।
—सू.प्र.

दुरुख, दुरुखौ-वि० [सं० द्वि+फा० रुख] (स्त्री० दुरुखी) १ जिसके दोनो ओर मुंह हो. २ जिसके दोनों ओर चिन्ह हो. ३ जिसका झुकाव दोनों पक्षों की ओर हो ।

दुरुग—देखो 'दुरग' (रू.भे.) उ०—दुरुग चितोड़ संसोभित ठाई । तत-खीण राय पहुंतौ जाई ।—वी.दे.

दुरुत्तर-वि० [सं०] जिसका पार पाना कठिन हो, दुस्तर ।
सं०पु०—दुष्ट उत्तर ।

दुरुधरा, दुरुधुरा-सं०स्त्री० [यू० दुरोधोरिया] जन्म कुण्डली का एक योग जिसमें अनफा और सुनफा दोनों योगों का मेल होता है ।
(वृहज्जातक)

दुरुपयोग-सं०पु० [सं०] बुरा उपयोग, बुरा इस्तेमाल ।

दुरुफ-सं०पु०—ताजिक शास्त्र में नीलकंठ द्वारा कहा हुआ फलित ज्योतिप का एक योग जो षोडस योगों में से सोलहवां योग है ।

दुरुस्त—देखो 'दुरस' (रू.भे.) उ०—१ प्रोहित अरज कीवी आप फरमाई सो वात दुरुस्त छै ।—कुंवरसी साखला री वारता
उ०—२ वखतसिंहजी कही ठाकुरां वखतै सांहणी वात कीवी छै सो दुरुस्त छै ।—मारवाड रा अमरावां री वारता
उ०—३ सगळी वात दुरुस्त छै, कुंवर जायसी आज । मोनूं डर कुछ भी नही, राखै गोविंद लाज ।—गोपाळदास गौड़ री वारता
मुहा०—दुरुस्त करणौ—ठीक करना, दण्ड देकर उचित आचरण के लिये वाध्य करना ।

दुरुस्ती-सं०स्त्री०—सुधार, संशोधन ।

दुरुह, दुरूह-वि० [सं० दुरूह] १ समझ में न आने योग्य, जिसका जानना कठिन हो, गूढ । उ०—दिल्ली हूंत दुरूह, अकबर चढ़ियौ एक दम । राण रसिक रणरुह, पलटै केम प्रतापसी ।
—दुरसौ आढ़ौ
२ कठिन, मुश्किल । उ०—दुजां दुरूह काजां करण । वाजा जम बोधक वयण ।—वं.भा.
३ भयंकर । उ०—अमें प्रत्यूह व्यूह पै समस्तु भ्रूह लौ भिरी । क्रमै प्रत्यूह ओपमा दुरूह दंतली किरी ।—ऊ.का.
४ जबरदस्त, प्रचण्ड । उ०—आहव उछाह उर अधिक ऊह । दूदावत-मेड़तिया दुरूह ।—ऊ.का.
५ दोनों ओर, दोनो तरफ । उ०—करि मुकांम पुर घेरि, सोर चहू ओर प्रजारिय । गहि दुरूह सिकदार, हाटि पट्टन संभारिय ।—ला.रा.

दुरेफ—देखो 'द्विरेफ' (रू.भे.)

दुरोदर-सं०पु० [देश०] जुआ, द्यूत । उ०—१ नित्य महेल्यूं, धरम छांडच्यु, त्यज्युं पंडित संग । राजकारज वीसरचां नि दुरोदर सूं रंग ।
—नळाख्यांन
उ०—२ अलखांमणु किम धरम थ्यु ये हूतु आदर आप ? वचन ते कां वीसरच्यूं ये दुरोदर मांहि पाप ।—नळाख्यांन

दुरयोधन-सं०पु० [सं० दुर्योधन] कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र । महाभारत के युद्ध में भीम ने इसे मारा था ।
रू०भे०—दजोण, दज्जोण, दरजोण, दरजोधन, दुजोण, दुजोधण, दुजोधन, दुजोयण, दुरजोण, दुरजोध, दुरजोधण, दुरजोधन, दुरज्योधण, दुरज्योधन, दुरयोधन, दूजेण, द्रजोण, द्रजोण, द्रोजोवण ।

दुरयोधन-पुर-सं०पु० [सं० दुर्योधनपुर] दिल्ली । उ०—सन्निध्रि सुभट समरन समीक । इवक तै इवक उधत अनीक । दुरयोधन-पुर देसक दरोळ । हैं दुरग्गदास वेसक हरोळ ।—ऊ.का.

दुलकी—देखो 'दुड़की' (रू.भे.)

दुलड़, दुलड़ौ-वि० [सं० द्वि+रा० लड़] (स्त्री० दुलडी) १ दो लड़ी का ।
उ०—१ सुभ खिल्लत पव वसन सुरंगी, असि खंजर सरपेच क़लंगी । मुकतमाळ दुलड़ी उर मंडित । अती भार सव सत्त अखंडित ।
—रा.रू.
उ०—२ कोकिल कंठ सुहामणी रे, पति भुज वल्ली खंभ रे रंग । मोतिन की दुलड़ी वणी रे, त्रिवळी रेख अचंभ रे रंग ।—प.च.चौ.
२ दोहरा । उ०—मूंछौ खांधौ मेल हाथ खांधड़ौ हिलावै । सीस धरणी दिस सिथळ मुरड़ खांधड़ौ मिळावै । डील खांधड़ौ दुलड़ झपक खांधड़ौ झुकावै । दोस खांधड़ौ दिवै रोध खांधडौ रुकावै ।
—ऊ.का.

दुलडु-सं०पु०—हाथी के पैर का बंधन ? उ०—डग वेडियां दुलडु, लगां चहुवां पग लंगर । आकासी सारसी, करै अग्राज भयंकर ।—सू.प्र.

दुलती-सं०स्त्री० [सं० द्वि+रा० लात] घोड़े, गधे आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरो को एक साथ उठा कर मारने की क्रिया ।
क्रि०प्र०—दैणी, मारणी ।
रू०भे०—दुलात ।

दुलदुल-सं०पु० [अ०] वह खच्चरी जो मिश्र के एक हाकिम ने मुहम्मद साहब को नजर में दी थी । (मुहर्रम के दिनो इसकी नकल निकाली जाती है ।)

दुलभ—देखो 'दुरलभ' (रू.भे.) उ०—१ क्रमियौ नह भारत कंवर, पाछौ प्रसभ प्रकास । कहियौ छोडै साथ किम, दुलभ पिता रौ दास ।
—वं.भा.
उ०—२ सुज दुरलभ रखां वळ सिधां साधकां, जोगीराजां दुलभ जग । खाटण सुजस भेटियौ 'खूमै', नरां सुरा वच जकौ नग ।—बा.दा.
उ०—३ देवां तर नाग सु भाग दुलभ ।—रांमरासौ

उ०—४ रौद्रव दुख सुत विघन सुणै रिख। खंडित सेव कीध हेकरिण पख। इसो वमेक सद्रढ़ मत ऐहो। जोगेसुरां दुलभ अति जेहो।
—सू.प्र.

उ०—५ दातण मिळबो दुलभ, सघन वन वन्ने जिते सह। विलपत जळ विन वाळ, भरै सर नळ उभळत वह।—जैतदांन बारहठ

दुलह—१ देखो 'दूल्हो' (रू.भे.) उ०—१ कहियौ नृप आपण सकळ, बीर वराती वेस। एक दुलह बणियौ अठै, सोहै पूरण सेस।—वं.भा.

उ०—२ त्रिण्हि फेरि फेरीया। चौथे फेरे दुलह आगै हुआ। दुलहणि पाछो हुई।—वेलि टी.

२ देखो 'दुरलभ' (रू.भे.) उ०—कथ इम सासत्र कहै, दुलह लहिजै पूरव दत। आज दोय अधिकार, मध्धि सरस्वति द्वारामति।—सू.प्र.

दुलहण, दुलहणि, दुलहन, दुलहि, दुलही-सं०स्त्री०—[सं० दुर्लभा] वह युवती या बाला जिसका हाल ही में विवाह हुआ हो या होने वाला हो, वधु।

उ०—१ कूरम नृप उच्छव कियौ, वेद सनीत विचार। दुलहणि जुग लीधा दुलहि, चौरी फेरा च्यार।—रा.रू.

उ०—२ कळप व्रिक्ष लता तूटी कना, मिळण मनोगत मुख मुणै। दुलहणि थियोड़ी विण दुलह, ऊभी सूझै आंगणै।—पा.प्र.

उ०—३ दुल्लह 'रयण' दुभाल, सूरा पूरा जांन सहि। हैवै घड़ दुलहणि हुई, धज तोरण गजढ़ाल।—वचनिका

उ०—४ दुलहणी जांण दमघोख री दीकरी। दळ सबळ मांझीयां हुआ दिन दूसरी।—रुखमणी हरण

उ०—५ सुभ रचित पुंज समूळ, फवि वास मंजुल फूल। विध तेण पाट वणाय, रुचि दुलहि दूलह राय।—रा.रू.

उ०—६ पंजाब रौ सूबादार नवाब रहीमअली आपरा बाहुबळ थी पातसाह वणि दिल्ली जिमड़ी दुलही नूं वरण रै काज आयो।
—वं.भा.

रू०भे०—दुल्लहण, दुल्लहणी, दुल्ही, दूलहण, दूलहणी, दूल्हण, दूल्हणी, दूल्ही।

दुल्हो—देखो 'दूल्हो' (रू.भे.) उ०—रस में वेरस बस रागांरळ रीसै। दूलहणि दुल्है नै दावानळ दीसै।—ऊ.का.
(स्त्री० दुलही)

दुलात—देखो 'दुलत्ती' (रू.भे.) उ०—असली री औलाद, खून करचां न करै खता। वाहै वद वद वाद, रोड दुलातां राजिया।—किरपारांम

दुलार-सं०पु० [सं० दुर्लालन] बच्चों या प्रेमपात्रों को प्रसन्न करने के लिये की जाने वाली प्रेम-पूर्ण चेष्टा।

दुलारणौ, दुलारबौ-क्रि०स० [सं० दुर्लालन, प्रा० दुल्लाडन] बच्चों या प्रेमपात्रों को प्रसन्न करने के लिये उनके साथ अनेक प्रकार की प्रेम-पूर्ण चेष्टाएँ करना, प्यार करना, लाड़ करना।

दुलारणहार, हारौ (हारी), दुलारणियौ—वि०।

दुलारिग्रोड़ौ, दुलारियोड़ौ, दुलारचोड़ौ—भू०का०कृ०।

दुलारीजणौ, दुलारीजबौ—कर्म वा०।

दुलारियोड़ौ-भू०का०कृ०—प्यार किया हुआ, लड़ाया हुआ।
(स्त्री० दुलारियोड़ी)

दुलारौ-वि० [सं० दुर्लालन] जिसका बहुत लाड़ प्यार हो, लाड़ला।

दुलावौ-सं०पु० [सं० द्वि+रा० लाव] वह कुआ जिस पर दो मोट (चड़स) से एक साथ सिंचाई के लिये जल निकाला जाता हो।

दुलिचौ, दुलीचौ-सं०पु० [देश०] कालीन, गलीचा।

उ०—१ ताहरां वुकण रै पातसाह रै घर री माल, विध-विध विछा-वणा दुलिचा, कपड़ा वीरमजी दीठा।—नैणसी

उ०—२ जिकै दिगपाळ रजपूत सांमंत अजांनवाह ठाकुर अड़ावीड़ दरवारे आइ खड़ा रहिआ छै। दरवार दुलीचा विछाइजै छै। विछात वणी नै रही छै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—दलीचौ।

मह०—दुल्लीच।

दुलीप—देखो 'दिलीप' (रू.भे.)

दुलोही-सं०स्त्री० [सं० द्वि+लोह] एक प्रकार की तलवार जो लोहे के दो टुकड़ों को जोड कर बनाई जाती है।

दुल्लभ, दुल्लह—१ देखो 'दुरलभ' (रू.भे.) उ०—१ पिंड विहंड होय चुख चुख पडूं, ताय वरूं रंभ हित तिको। सुलभ ही जिको पाऊं सुरग, जगत घणो दुल्लभ जिको।—सू.प्र.

उ०—२ दुल्लह लाधउ मांणस जंम। अनी विसेखइं जिणवर धंमु।
—चिहुंगति चउपई

उ०—३ आसि जिणेसर सूरि पढमु, अणहिलपुर पट्टणि। वसहि मग्ग पयडेण, राउ रंजिउ 'दुल्लह' जिणि।—धरमकळस मुनि

२ देखो 'दुल्हो' (रू.भे.)

दुल्लीच—देखो 'दुलीचौ' (मह., रू.भे.) उ०—भर मोल नीलक भार, आसावरीस उदार। दुल्लीच गिलम दुसाल, थिरमा सफंभ सुथाळ।
—सू.प्र.

दुल्ही—देखो 'दुलहण' (रू.भे.)

दुल्हो—देखो 'दूल्हो' (रू.भे.)
(स्त्री० दुल्ही)

दुव-वि० [सं० द्वि] १ दूसरा। उ०—पहली त्रतीय पद सोळ मत, दुव चव ग्यारह दाख। चरण दूहा च्रुरस कर, भल किव तिण नूं भाख।
—र ज.प्र.

२ दो।

दुवकी—देखो 'दुवकी' (रू.भे.)

उ०—तोड़ी वा लोवां री लगांम, जामण की ये जाई, खेड़ी रा तोड़चा ये दुवकी दांवणां।—लो.गी.

दुवजीह-सं०पु० [सं० द्विजिव्ह] १ कटार (डि.नां.मा.)

२ सांप, नाग।

दुवणौ, दुवबौ—देखो 'दूमणौ, दूमवौ' (रू.भे.)

उ०—१ ताहरां एक लकड़ी रो चाहोलो कर वाकरा रै नाक मांहे

देग्रर भोटिंग रै हाथ दियो कह्यो जू तूं दुवि । ताहरां भोटिंग दुवण लागो ।—नैणसी

उ०—२ मांम छुन छुन पासै जै छै, मोरां पसवाडां पींडा री मांस देगचां में घातै छै, हडोई री मांस पासै चरूवां में घातै छै, सीरी होस-नाक सुधारै छै, दुवजै छै ।—रा.सा.सं.

दुवद्या—देखो 'दुविधा' (रू.भे.)

दुवध-क्रि०वि० [सं० द्विविधि] दोनों प्रकार से ।

दुवधा—देखो 'दुविधा' (रू.भे.)

दुवधार—देखो 'दुधार' (रू.भे.)

दुवधारी—देखो 'दुधारी' (रू.भे.) (डि.को.)

दुवधारो—देखो 'दुधार' (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

दुवयण—देखो 'दुरवचन' (रू.भे.) उ०—सुरतांणोत लियण ग्रद सवळी, सवळां खळां उतारण सीम । मुडवा तूझ तणो 'मेडतिया', दुवयण न काहाई जगदीस ।—वां.दा.

दुवळ-क्रि०वि०—दूसरी ओर । उ०—आगै मालदेजी रै ओकै खवै नगो भारमलोत बैठो है अरु दुवळ प्रथीराजजी जाय बैठा नै यांनूं सन्मुख बैसांणिया ।—द.दा.

दुवा-सं०स्त्री० [अ० दुआ] १ आशीर्वाद । उ०—तरै आप रखी री दुवा ले, नमह मह करे, असवार होय हालिया ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढ़ेल री वात

२ देखो 'दुआ' (रू.भे.) उ०—तीजां बेटो सपूत धरमात्मा उण रा जीव नूं जको दुवा करै दांन देवै ।—नी.प्र.

वि०—दूसरे । उ०—मिथल्लेस रै ज्याग आए समीपं । दुवा भूप आए मिळै सात दीपं ।—सू.प्र.

दुवाइती—देखो 'दवायती' (रू.भे.)

दुवाई—१ देखो 'दवा' (१, २) (रू.भे.) उ०—सैंती सैंती पीड़ ताड़ी, लपेट लकड़ी लीरड़ा । तीजै दिन वन पयांन करै, त्याग दुवाई चीरड़ा ।—दसदेव

२ देखो 'दुहाई' (रू.भे.) उ०—जठै फेर असतरी स्रीरांम दुवाई खाधी, कही अठै हीज है ।—राजा रा गुर रा बेटां री वात

३ देखो 'दूवारी' (१, २) (रू.भे.)

दुवाग—देखो 'दुहाग' (रू.भे.)

दुवागण—देखो 'दुहागण' (रू.भे.) उ०—जा जा रे दुवागण रा जाया, विना रै पिरीत गोदी कैसे आया । जे तनै चाये धूजी राजाजी री गोदी, म्हारै उदर धूजी क्यूं नहिं आया ।—लो.गी.

दुवागो-सं०पु०—घोड़े की लगाम विशेष ।

दुवाघ-वि० [सं० दुः+व्याघ्र] दुष्ट, व्याघ्र । उ०—रिण सूर तिकां मुख नूर रचै, मिळ दीठ दुहूं दळ रीठ मचै । मिळ दाय दुहूं दिस घाय मिळै, निहसै किर नाग दुवाघ निळै ।—रा.रू.

दुवाड़णो, दुवाड़बो—देखो 'दुवाणो, दुवावो' (रू.भे.)

उ०—तेजाजी थां गाय दुवाड़ूं धरमी छाळ री । दूध(ए) पकाऊं गुदळी खीर ।—लो.गी.

दुवाड़ियोड़ी—देखो 'दुवायोड़ी' (रू.भे.)

दुवाड़ियोड़ो—देखो 'दुवायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दुवाड़ियोड़ी)

दुवाट-वि० [सं० दुःवाट] बुरा मार्ग, कुमार्ग ।
रू०भे०—दुवाट ।

दुवाणो, दुवाबो-क्रि०स० (दूहणो क्रिया का प्रे०रू०) १ दूध दुहाना, दूध निकलवाना. २ सार निकलवाना ।

दुवाणहार, हारो (हारी), दुवाणियो—वि० ।

दुवायोड़ो—भू०का०कृ० ।

दुवाईजणो, दुवाईजबो—कर्म वा० ।

दुवाड़णो, दुवाड़बो, दुवावणो, दुवावबो, दुहाड़णो, दुहाड़बो, दुहाणो, दुहावो, दुहावणो, दुहाववो, दोवाड़णो, दोवाड़बो, दोवाणो, दोवाबो, दोवावणो, दोवावबो, दोहाड़णो, दोहाड़बो, दोहाणो, दोहाबो, दोहा-वणो, दोहाववो—रू०भे० ।

दुवाती—देखो 'दवायती' (रू.भे.) उ०—प्रथम हुकम होवतो पछै होवती दुवाती ।—अरजनजी बारहठ

दुवादस—देखो 'द्वादस' (रू.भे.) उ०—सोभंति राग वाजित्र सुर, आचि-रजे ग्रंभ्रव अछर । करि रूप दुवादस सूर किर, नूर परक्खे नार नर ।
—रा.रू.

दुवादसी—देखो 'द्वादसी' (रू.भे.)

दुवादसो—देखो 'द्वादसो' (रू.भे.) उ०—अबै मास आठ नव में हुवां रांणोजी देवलोक हुवा । तरै दुवादसो कर कंवर चूंडोजी टीकै बैसण री तैयारी करै छै ।—राव रिणमल री वात

दुवापुर—देखो 'द्वापर' (रू.भे.) उ०—कळि काळि परि क्रम अे करग्र, देखियइ दुवापुर दिख्या दग्र । कणइट्ठ कन्हा घर लूणकन्नि, मारुग्रइ राइ ली मोटमन्नि ।—रा.ज.सी.

दुवाय—देखो 'दुआ' (रू.भे.) उ०—ताहरां बाहिर आइ नै पातिसाह नूं वे—दुवाय दी जू पठांणां री पातिसाही जाविसी ।
—सयणी री वात

दुवायति, दुवायती—देखो 'दवायती' (रू.भे.)

दुवायी—१ देखो 'दवा' (१, २) (रू.भे.) उ०—गायां भैंस्यां गोर, ठांण नीमां रै नीचै । सीयाळै री ओट, उन्हाळै छायां बीचै । पसु निदांन नीरोग, जिण री दूध दुवायी । रतन तेरवो घिरत, पलावित बिड़द बटाई ।—दसदेव

२ देखो 'दुहाई' (रू.भे.) ३ देखो 'दूवारी' (१, २) (रू.भे.)

दुवायोड़ी—भू०का०कृ०—दूध निकलवाई हुई ।

दुवायोड़ो—भू०का०कृ०—१ दूध निकाला हुआ. २ सार निकाला हुआ ।
(स्त्री० दुवायोड़ी)

दुवार—देखो 'द्वार' (रू.भे.) (डि.को.) उ०—धांम गयां जोधां धणी, नांम करै संसार । वाको सुज सुणियो 'अभै', दिल्ली साह दुवार ।
—रा.रू.

दुवारका, दुवारकाजी देखो 'द्वारका' (रू.भे.) (डिं.को.)
दुवारि—देखो 'द्वार' (रू.भे.) उ०—मइं घोड़ा वेच्या घणा, रहियउमास चियारि। राति दिवस ढोलइ कन्हइ, रहतउ राज दुवारि।—ढो.मा.
दुवारिका—देखो 'द्वारका' (रू.भे.) उ०—उत्तम धांम दुवारिका, महिमा सुहित संभारि। लियौ महासुख एक पख, निृप परसियौ मुरारि।—रा.रू.
दुवारी—देखो 'दूवारी' (रू भे.)
दुवारौ-सं०पु० [सं० द्वि+वार:+रा०प्र०ओ] १ दो बार उलट कर निकाला हुआ शराब. २ देखो 'द्वार' (अल्पा., रू.भे.) (डिं.को.) उ०—अटूके नह सकिय अंगद, दहकंध दुवारै। दइतां इम दीसै अंगद, अंतक उणहारै।—सू.प्र.
३ देखो 'द्वारौ' (रू.भे.)
दुवाळ-सं०पु०—१ प्रपंच, धंधा। उ०—धवराडण ध्रूय म जांणै धरतां, चित्र पुहर करतां चाळ। मन लागौ वाळक माइतां, दूजी छोडी सहु दुवाळ।—महादेव पारवती री वेलि
२ देखो 'द्वाळी' (मह.रू.भे.)
दुवाळौ—देखो 'द्वाळौ' (रू.भे.)
दुवावणौ, दुवावबौ—देखो 'दुवाणौ, दुवावौ' (रू.भे.)
दुवावियोड़ी—देखो 'दुवायोड़ी' (रू.भे.)
दुवावियोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० दुवावियोड़ी)
दुवाह—देखो 'दुवाह' (रू.भे.)
दुवाहौ—देखो 'दुवाह' (अल्पा., रू.भे.) उ०—पेसखांनां वाळी वात परि-छइ, आगा लगइ करण आरास। दळवादळ तांणिया दुवाहै, फारक ईसर तणा फरास।—महादेव पारवती री वेलि
दुविधा, दुविध्या-सं०स्त्री० [सं० द्विविधा] १ दो में से किसी एक वात पर चित्त के न जमने की क्रिया या भाव, अनिश्चय।
उ०—१ माटी मांहीं ठौर कर, माटी माटी मांहि। दादू सम कर राखिये, द्वै पख दुविधा नांहि।—दादू बांणी
उ०—२ तन मन आतम एक है, दूजा सब उनहार। दादू मूळ पाया नहीं, दुविध्या भरम विकार।—दादू बांणी
२ चिंता, दुख। उ०—सेन लागौ संत सेवा, भाव धर उर भूर। रूप धर कर सेन कौ हरि, करी दुविध्या दूर।—भगतमाळ
३ संदेह, संशय। उ०—मन थी दुविधा मेट अडिग आंणीजै हो, अधिकी मन में आसता रे। नांमै एह नं नेट पातक पुळायै हो, थायइ सिव सुख सासता रे।—ध.व.ग्रं.
४ पशोपेश, असमंजस, आगा-पीछा।
मुहा०—१ दुविधा डाळणी—पशोपेश में डालना, संदेह में डालना. २ दुविधा न्हांकणी—देखो 'दुविधा डाळणी'. ३ दुविधा पटकणी—देखो 'दुविधा डाळणी'. ४ दुविधा में न्हांकणौ—देखो 'दुविधा डाळणी'. ५ दुविधा में पड़णौ—असमंजस मे पड़ना, आगा पीछा सोचना।
रू०भे०—दुवदा, दुवद्या, दुवधा, दुवध्या, दुविध, दुविधा, दुव्वाधि, दुवधा।
दुवियण—देखो 'दुरवचन' (रू.भे.)
दुविहार-सं०पु० [सं० द्वि+आहार:] दो प्रकार का आहार। उ०—संध्या वंदन साध, सज्ज सावधांन स कोई। विवेकी स्रावग सज्जै, पडिकमणा सोई। चौवीहार दुविहार गहै, व्रत करि निज गरहा। सारै दिन संचिया, पाप नासै सहु परहा।—ध.व.ग्रं.
दुवीजणौ, दुवीजबौ-कर्म वा०—दुहा जाना।
दुवीजणहार, हारौ (हारी), दुवीजणियौ—वि०।
दुवीजिओड़ौ, दुवीजियोड़ौ, दुवीज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दुवीजियोड़ी-भू०का०कृ०—दुही गयी हुई।
दुवीजियोड़ौ-भू०का०कृ०—दुहा गया हुआ।
दुवीयण—देखो 'दुरवचन' (रू.भे.)
दुवै-वि० [सं० द्वि] १ दोनों। उ०—१ इसा गज्ज घंटाळ घंटा अपारं, त्रिणेह लोक कोतिक्क देखंत त्यारं। दुवै फौज फव्वै गिरं गज्ज डांणै, उभै जांणि आडावळा खेत आंणै।—वचनिका
उ०—२ पात सुजस अखियात पर्यपै, दातव असमर वात दुवै। जग में रांम तुहाळै जोड़ै, हुवौ न कोई फेर हुवै।—र.रू.
२ दूसरा, द्वितीय। उ०—दसै दिस मांहि पोहौ जोड़ न हुवै दुवै। हाक जिण आंण सुणि हिरण खोड़ा हुवै।—सू.प्र.
दुवौ—१ देखो 'दूजौ' (रू.भे.) (डिं.को.) उ०—देखतां छहूं विध 'सगर' 'हरचंद' दुवा, सोगुणौ अधिक अहनिस सुभावै। रांम असरण सरण भूप गुण राजा रा, पार सीतारमण कमण पावै।—र.ज.प्र.
२ देखो 'दूवौ' (रू.भे.) उ०—१ वात करै कीधौ विदा, नरपत नाहरखांन। जोगावतौ पायौ दुवौ, साथ हुवौ भगवांन।—रा.रू.
उ०—२ इसै वखत, समइयै में गंगेव नींवावत वोलै छै, मन री उमंग खोलै छै। सैलां-सिकारां रौ दुवौ हुवौ छै, भाई अमराव साहणियां नै हुकम हुवौ छै।—रा.सा.सं.
दुसंत-वि०—१ असाधु, दुष्ट, दुर्जन. २ देखो 'दुस्यंत' (रू.भे.)
दुसंध-उभ०लिं०—शरीर का संधि-स्थान, जोड़।
उ०—होय दुसारां वगतरां, उर फोकर फट्टे। कंध दुसंधां ऊतरै, वहते खग भट्टे।—द.दा.
दुसंध्या-सं०स्त्री०—सीसोदिया वंश की एक शाखा।
दुसंध्यौ-सं०पु०—सीसोदिया वंश की 'दुसंध्या' शाखा का व्यक्ति।
दुस-सं०पु० [सं० द्विज] १ ब्राह्मण. २ पण्डित, ज्ञानी।
दुसकत, दुसकित—देखो 'दुक्रत' (रू.भे.) उ०—पुण्यवंत ना दुसकित टळइ, पुण्यवंतनइ चामर ढळइ। पुण्यवंत सिरि छत्र धराइ, पुण्यवंत नवि पाळा जाइ।—कां.दे.प्र.
दुसट—१ देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—दिन रैणां पंथ वहतां दुसट, सैण घणां उर सालणा। इण भांत पियण वाळा अकड़, हूकौ देखि न हालणा।—ऊ.का.

दुसटसासना-सं०पु० [सं० दुष्ट+शासन] दुष्टोचित दण्ड ।
दुसटांदळ-वि० [सं० दुष्टदलन्] दुष्टों का नाश करने वाला ।
उ०—नमो प्रम-संत गऊ-प्रतिपाळ, नमो दुसटां-दळ दीनदयाळ । नमो भव-बुद्ध भए भगवांन नमो ग्रह जीव दया उर ग्यांन ।—ह.र.
सं०पु०—ईश्वर, परमात्मा ।
दुसटी—देखो 'दुस्ट' (रू.भे.) उ०—सुख सूं सूती थी पिरजा सुखियारी। दुसटी आतां ही करदी दुखियारी ।—ऊ.का.
(स्त्री० दुसटण, दुसटणी, दुसटा)
दुसण—देखो 'दूसण' (रू.भे.)
दुसतर—देखो 'दुस्तर' (रू.भे.) उ०—तपि अगनि अम्रत वारि अणा-तर पंथ दुसतर पावरे । अहनाथ दिन गो गरम अह अह असह निस हिम उत्तरे ।—रा.रू.
दुसम—देखो १ 'दुखम' (रू.भे.)
उ०—स्री जिनहरख मुनीस्वर गाईये, पाईये वंछित सीद्ध । दुसम काळ मांहि पणि दीपतो, किरिया सुद्धो कीध ।—जिनहरस
२ बुरा. ३ कठिन ।
दुसमण-सं०पु० [फा० दुश्मन अथवा सं० दुः शमन] शत्रु, वैरी (अ.मा.)
उ०—रावळ जेसळ दुसाफ री बेटो, तिण नूं गजनी रै पातसाह रावळ 'भोजदे' नै मार नै लुद्रवो दियो, सु जेसळ मन मांहे जांणै जु 'आ ठौड़ पाधर मांहे नै मांहरै माथै हजार दुसमण छै, सु कठै कै म्हे वांकी ठौड़ देखनै गढ़ वीजो करावां ।'—नैणसी
रू०भे०—दुसमी, दुस्मण, दुस्मी, दूहमण ।
दुसमणायगी, दुसमणी-सं०स्त्री० [फा० दुश्मनी] १ वैर, शत्रुता.
२ विरोध । उ०—हर भांति रै इलाज सूं वणै जितरै उण नूं राजी कर दुसमणायगी मिटाई चाहिजे ।—नी.प्र.
रू०भे०—दुस्मणी ।
दुसमी—देखो 'दुसमण' (रू.भे.) उ०—मरजो रे राइका थारोड़ी जी नार । सैणां रो विछवो दुसमी पाड़ियो जी म्हारा राज ।—लो.गी.
दुसराड़णो, दुसराड़वो—देखो 'दुसराणो, दुसराबो' (रू.भे.)
दुसराड़ियोड़ो—देखो 'दुसरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दुसराड़ियोड़ी)
दुसराणो, दुसराबो-क्रि०स० [सं० दुः+ रा० सराणो] त्रुटि निकालना, कमी निकालना । उ०—सिर कटाय निज समपतां, दाख ढोढ़ दुसराय । ठाकर की वो ठीकरो, कुण भड़ सीस कटाय ।
—रेवतसिंह भाटी
दुसराणहार, हारो (हारी), दुसराणियो—वि० ।
दुसरायोड़ो—भू०का०कृ० ।
दुसराईजणो, दुसराईजवो—कर्म वा० ।
दुसराड़णो, दुसराड़वो, दुसरावणो, दुसरावबो—रू०भे० ।
दुसरायोड़ो-भू०का०कृ०—त्रुटि निकाला हुआ, कमी निकाला हुआ ।
(स्त्री० दुसरायोड़ी)
दुसरावण-सं०पु० [सं० द्वि+रा० सरावणो=भोजन करना] भोज्य सामग्री से सजा हुआ वह थाल जो भोजन करते समय आवश्यकता-नुसार परोसने के लिये पास में रखा जाता है (मेवाड़)
दुसरावणो, दुसरावबो—देखो 'दुसराणो, दुसराबो' (रू.भे.)
दुसरावियोड़ो—देखो 'दुसरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दुसरावियोड़ी)
दुसवार-वि० [फा० दुशवार] १ कठिन, दुरूह. २ दुःसह ।
दुसवारी-सं०स्त्री० [फा० दुशवारी] (वि० दुसवार) कठिनता ।
दुसह-वि० [सं दुः सह] १ भयकर । उ०—आकास रसातळ दिस असट, पारावर समद्र पथ । जमजाळ दुसह जायै जहां, आंणो ग्रह मेरे अरथ ।—रा.रू.
२ जो न सहा जा सके, असह्य । उ० —दियो सवद सुणियां दुसह, लागै तन मन लाय । सूंब दियो न करै सदन, परव दियाळी पाय ।
—बां.दा.
३ कठिन । उ०—भेळो तै कीधो भलो, जळहर औ जळ जाळ । धुन मधुरी पुहमी धवै, दुसह निवार दुकाळ ।—बां.दा.
सं०पु०—१ शत्रु वैरी । उ०—१ वीराधिवीर पित तणै वैर । निज दळ सझि घेरे दुसह नैर ।—सू.प्र.
उ०—२ मेरो'र चाचो मारिया, सह अवर दुसह संघारिया ।—सू.प्र.
२ अग्नि (अ.मा.) ३ क्रोध (अ.मा.)
क्रि०वि०—दूर, पृथक । उ०—'मदू' अखै 'वीरमां' क्या मरजी थारी। 'वीरम' कह्यो वाद में आकर उपगारी । वांण कवांण बंदूक की पल चोट पलारी । जद मैं 'मदू' जांणसां थिर धीरज थारी । 'मदू' अखै कटक में सुणजो भड़ सारी । 'वीरम' सूं जुध वाजतो तोले तरवारी । वांण-कवांण बंदूक कूं दुसह कर डारी । दाखै मुख देपाळदे हरपाळ विचारी ।—वी.मा.
दुसही-वि० [सं० दुः सह] १ जो कठिनता से सह सके.
२ डाही, ईर्ष्यालु ।
दुसहौ-सं०पु० [सं० दुःसह्य] शत्रु, वैरी ।
दुसाकियो—१ देखो 'दुसाको' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'दुसाखो' (१) (अल्पा., रू.भे.)
दुसाको-सं०पु० [सं० द्वि+शाक] १ एक साथ जुड़े हुए पीतल के दो गहरे बर्तन जिनमें अलग अलग शाक रख बीच के जोड़ स्थान पर लगे कड़े को पकड़ कर परोसने ले जाया जाता है । बर्तनों का आकार गोल होता है ।
रू०भे०—दुसाखो ।
अल्पा०—दुसाकियो, दुसाखियो ।
दुसाखियो—१ देखो 'दुसाको' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'दुसाखो' (१) (अल्पा., रू.भे.)
दुसाखो-सं०पु० [सं० द्वि०+सं० शाखा] १ ऐसा स्थान या भूमि जहां रबी और खरीफ दोनों फसलें उत्पन्न होती हों ।
उ०—सु तद रा जाळोर वांसै पड़िया तासु हमैं जाळोर वांसै हीज छै ।

परगनौ संणो जालोर सूं कोस १० सीरोही दिसा उगवरण नूं, सीरोही रा गांवां सूं कांकड़, परगनौ दुसाखौ छै, सहर छोटी सी भाखरी री खांम।—नैणसी

अल्पा०—दुसाकियौ, दुसाखियौ, दुसाख्यौ।

२ देखो 'दुसाकौ' (रू.भे.)

दुसाख्यौ—देखो 'दुसाखौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ठाकुर बाळक होय हुकम ठकुरांणियां। दुसाख्यौ हुवै गांम वसती वांणियां। जोईजै दरवार जिकूं घर तोलणा। एता दै किरतार फेर नहिं बोलणा।—अज्ञात

दुसार-क्रि०वि० [सं० द्वि+रा० सालणौ] १ आरपार।

उ०—१ लडालूंब आभूखणां प्रथी रौ सोभाग लेती, उडावै चरमी ताग सेती ऐणवार। लोहलाठ दोयणां काळजा वाळा भाग लेती, दंती घड़ा राग देती नीसरै दुसार।—जवांनजी आढ़ौ

उ०—२ खंजर कटार छुकुमार मार, नटसाल घाव पंजर दुसार।

—लावारासा

२ सं०स्त्री०—१ तलवार। उ०—द्रढ़ दंत दब्बि देखत दुसार। आवत न पार दुख सिंधु पार।—ऊ.का.

सं०पु०—२ आरपार छेद. ३ शस्त्र के दोनों ओर का पैना भाग.

३ भाला। उ०—गोखां चढवै गोरियां, मंडवै राग मलार। आलीजा विलमै उठै, दिल में वहै दुसार क नारि निहारवै, उभकि अटा सूं ऊठ मूठ मी मारवै।—सिववक्स पाल्हावत

रू०भे०—दुसारक, दुसारण, दूसार।

अल्पा०—दूसारौ।

दुसारक—देखो 'दुसार' (रू.भे.) उ०—छछोहक वाहत झाल छड़ाळ। दुसारक डाळ पड़ै रवदाळ।—सू.प्र.

दुसारण—देखो 'दुसार' (रू.भे.) उ०—धकै मत आव न होवत धीर। वुहौ विवनौ आज पावुग्र वीर। करूं उर धीब दुसारण कूंत। परो खह धूरत सारंग पूत।—पा.प्र.

दुसारां-क्रि०वि०—इस ओर से उस ओर, आरपार।

उ०—तूटै सिर घड़ तड़फड़ै, जळ तुच्छै मछ जांण। सेल दुसारां नीसरै, केतां सह केकाण।—किसोरदांन बारहठ

दुसाल-सं०पु० [सं० द्वि+शल्य] १ आरपार छेद।

२ देखो 'दुसालौ' (मह., रू.भे.) उ०—भर मोल नीलक भार, आसावरीस उदार। दुल्लीच गिलम दुसाल, थिरमा सफंभ सुथाळ।—सू.प्र.

दुसालापोस-वि० [फ़ा० दोशाल:+पोश] जो दुशाला ओढ़े हो, अमीर।

दुसालाफरोस-सं०पु० [फ़ा० दोशाल:+फिरोश] दुशाला वेचने वाला।

दुसालौ-सं०पु० [फ़ा० दोशाल:] १ जिसमें दो शाल एक साथ जुड़े हों, पश्मीने या रेशम की कामदार दोहरी चादर. २ जरी तथा रेशम का एक प्रकार का ओढ़ने का वस्त्र. ३ विशेष रंग का बड़ा सांप जिसे देख कर प्राणी हिलडुल नहीं सकता।

अल्पा०—दुसालियौ।

मह०—दुमाल।

दुसासण, दुसासणु, दुसासन-सं०पु० [सं० दुः शासन] धृतराष्ट्र का एक पुत्र। उ०—कउरव नइ दळि गुरु गंगेउ, क्रिपु दुरयोधनु सल्यु मिळेउ। सकुनि दुसासणु जयद्रथु पुत्रु, गरूउ भूरिस्रवा भगदत्तु।

—पं.पं.च.

वि०वि०—यह अत्यन्त क्रूर स्वभाव का था। पांडवों के जूए में हार जाने पर यही द्रौपदी के बाल पकड़ कर सभा में लाया था तथा उसकी साड़ी खींचते हुए थक गया था। भीम ने उस समय यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं इसे मार कर इसका रक्त-पान करूंगा तथा द्रौपदी तब तक अपने बाल नहीं बांधेगी जब तक वह इसके रक्त से उसके बाल न रंग दे। महाभारत के युद्ध में भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी।

वि०—जो किसी का दवाव न माने, जिस पर शासन करना कठिन हो।

रू०भे०—दुस्यासन, दुस्सासण, दुस्सासेण, दूसासण।

दुसील-वि० [सं० दुः शील] शील-रहित, दुष्ट।

दुसुपन-सं०पु० [सं० दुः स्वप्न] बुरा सपना, अशुभ स्वप्न।

उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित। दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, नासै दुसुपन दुरनिमित।

—वेलि.

दुसूती-सं०स्त्री० [सं० द्वि०+सूत्र+रा०प्र०ई] ऐसा कपड़ा जिसमें दो तागों का ताना और वाना होता है।

दुसेन्या-सं०स्त्री० [सं० द्वि+सेना] दोनों ओर की सेना।

उ०—नगारा निहस्सै, सनूरा तरस्सै। दुसेन्या दरस्सी, कड़ै कंठळी सी।—रा.रू.

दुस्कर-वि० [सं० दुष्कर] जो सरलता से न हो, जिसे करना कठिन हो, दु:साध्य।

रू०भे०—दूकर, दक्कर।

सं०पु०—आकाश।

दुस्करण-सं०पु० [सं० दुष्कर्ण:] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुस्करम-सं०पु० [सं० दुष्कर्म] १ बुरे कर्म, कुकर्म. २ पाप।

दुस्करमी, दुस्करमौ-वि० [सं० दुष्कर्मन्+रा०प्र०ई तथा औ] १ बुरा करने वाला. २ पापी।

दुस्काळ-सं०पु० [सं० दुष्काल] १ बुरा समय. २ अकाल, दुर्भिक्ष। ३ महादेव।

दुस्कीरत्ति-सं०स्त्री० [सं० दुष्कीर्ति] अपयश, कुकीर्ति, बदनामी।

दुस्कुळ-वि० [सं० दुष्कुल] नीच कुल का, तुच्छ घराने का।

सं०पु०—नीच कुल, बुरा खानदान।

दुस्कुलीन-वि० [सं० दुष्कुलीन] नीच कुल का, बुरे घराने का।

दुस्क्रत, दुस्क्रति, दुस्क्रती, दुस्क्रित, दुस्क्रिति, दुस्क्रिती—१ देखो 'दुक्रत' (रू भे.) उ०—पुण्यवंत ना दुसक्रित टळइ, पुण्यवंत नइ चांमर

ढळइ। पुण्यवंत सिरि छत्र घराइ, पुण्यवंत नवि पाळा जाइ।
—कां.दे.प्र.

२ देखो 'दुक्रति' (रू.भे.)

दुस्खदिर–संपु० [सं० दुष्खदिर] एक प्रकार का खैर का पेड़ जो कुछ छोटा होता है।

दुस्चिक्य–संपु० [सं० दुश्चिक्य] फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म लग्न से तीसरा स्थान।

दुस्ट–संपु० [सं० दुष्ट] १ शत्रु (ह.नां., अ.मा.) २ चोर (अ.मा.) ३ कुष्ट रोग।

वि०—दुर्जन, दुराचारी, पापी। उ०—१ हळधर-बंधव गोकुळ-वाळ, खिमावंत साधुव दुस्ट खैंगाळ। तवै जे नांम अहोनिस तुझ, जरांतक काळ न व्यापै जम्म।—ह.र.

उ०—२ राक्षस एक महावळी, महा दुस्ट सो आहि। पर दुख नामी है नृपति, निस्चय नासौ ताहि।—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—दिसठ, दुग्रट्ठ, दुट्ठ, दुठ, दुट्ठ, दुमट, दुसटी, दुस्टी, दूट, दूठ।

दुस्टता–संस्त्री० [सं० दुष्टता] १ बुराई, खराबी. २ बदमाशी, दुर्जनता. ३ ऐब, दोष, नुक्स।

दुस्टात्मा–वि० [सं० दुष्टात्मा] जिसका अंतःकरण बुरा हो, खोटी प्रकृति का।

दुस्टी—देखो 'दुस्ट' (रू.भे.)

दुस्तर–वि०[सं०] १ जिसे पार करना कठिन हो, कठिनता से पार करने योग्य। उ०—१ भीतर घर द्रढ़ भाव, तो मांभल डूवा तिकै। दुस्तर भव दरियाव, नर तरिया निरझर नदी।—बां.दा.

उ०—२ काया माया ह्वै रही, योद्धा बहु वळवंत। दादू दुस्तर क्यों तिरै, काया लोक अनंत।—दादू वांणी

२ कठिन, विकट। उ०—पंचम राग मुख करि सुर नीके करि गावै छै। तरुणी स्त्री अर तरुण पुरुस। जु फागुण विरही जण नै दुस्तर छै।—वेलि टी.

रू०भे०—दुठर, दूतर, दुतार, दुतारो, दुत्तर, दुत्तारि, दुत्तार, दुत्तारो, दुसतर, दूतर।

दुस्फोट–संपु० [सं० दुष्फोट] शस्त्र विशेष। उ०—कुंत कराग्नि कीध, छुरी पासु परसु पट्टिस सक्ति करमुक्त यंत्रमुक्त मुक्ता-मुक्त दुस्फोट तरवारि··· ।—व.स.

दुस्मण—देखो 'दुसमण' (रू.भे.) उ०—भोज्योड़ा कपड़ां री वेढंगी पोसाक में वो चोर ह्वै ज्यूं ईज जचतो हो। सगळी भीड़ उण री दुस्मण ह्वियोड़ी ही। इण वास्तै उण री सुणै कुण?—रातवासो

दुस्मणी—देखो 'दुसमणी' (रू.भे.)

दुस्यंत–संपु० [सं० दुष्यन्त] ऐति नामक पुरुवंशी राजा के एक पुत्र जिनका वृत्तान्त महाभारत में इस प्रकार मिलता है।

वि०वि०—राजा दुष्यंत एक दिवस आखेट खेलते-खेलते कण्व ऋषि के आश्रम के पास पहुंच गये। उस समय कण्व ऋषि द्वारा पालित शकुंतला वहीं पर थी। उसने राजा का यथोचित आतिथ्य सत्कार किया। राजा उसके सौंदर्य पर मोहित हो गया। दर्यापत करने पर राजा को ज्ञात हुआ कि शकुंतला उर्वशी नामक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र ऋषि की कन्या है। राजा ने शकुंतला की सम्मति से उसके साथ गंधर्व विवाह किया और उसे वहीं कण्व ऋषि के आश्रम में छोड़ कर चल दिया। परन्तु गंधर्व विवाह के कारण शकुंतला उस समय गर्भवती हो गई थी अतः कुछ काल के उपरान्त उसके पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम आश्रम वालों ने सर्वदमन रखा। कालान्तर में यही सर्वदमन भरत नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घटना को लेकर महा कवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तल नामक संस्कृत में नाटक लिखा जो संस्कृत भाषा का सर्वश्रेष्ठ नाटक गिना जाता है।

रू०भे०—दुख्यंत, दुसंत।

दुस्यासन, दुस्सासण, दुस्सासेण—देखो 'दुसासन' (रू.भे.)

उ०—१ मैं जांणूं मारूं हूं हवडां दुस्यासन माहा पापी।—नळाख्यांन

उ०—२ दुस्सासण जिकै जिसा दुरजोधन रिख असथांमा द्रोण रिख।—गु.रू.बं.

उ०—३ दुस्सासेण माथ री ऊनांत रोघ धायौ दूठ। जेठी पाराथ री किना 'भाराथ' रौ जोध।—हुकमीचंद खिड़ियौ

दुहंडणौ, दुहंडबौ–क्रि०स०—संहार करना, मारना, नाश करना।

उ०—ऊकामण अनड़ अंजणेस अंग ऊमाहे, माहा सघ समाहे मुनंद्र मुहंडे। असह ली मोड़ पत्र नाथ रग धरण मोड़, दलौ छत्र तोड़ तूं ही ज दुहंडे।—कविराजा करणीदान

दुहंडणहार, हारौ (हारी), दुहंडणियौ—वि०।

दुहंडिओड़ौ, दुहंडियोड़ौ, दुहंडयोड़ौ—भू०का०कृ०।

दुहंडीजणौ, दुहंडीजबौ—कर्म वा०।

दुहंडियोड़ौ–भू०का०कृ०—संहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ।

(स्त्री० दुहंडियोड़ी)

दुह—देखो 'दुख' (रू.भे.) उ०—पूरव पुण्य संजोगइ पांम्यउ, तं त्रिभुवन नउ नाह जी। एक वार मुझ नयण निहाळउ, टाळउ भव दुह दाह जी।—स.कु.

दुहड़उ—देखो 'दूहौ' (अल्पा, रू.भे.) उ०—तितरइ आगला चारण-कउ दुहड़उ छड।—अ. वचनिका

दुहड़ौ—१ देखो 'दूहौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ ईसा मांही राजाजी बोलता हुवा, अगलौ चारण को कहौ दुहड़ौ।—अ. वचनिका

उ०—२ लूणै कहिया दुहड़ा, मारू रूप अपार। उतरि लाख पसाव करि, दिन्हौ साल्ह कुमार।—ढो.मा.

उ०—३ पहसर आसर पाधरा वापार पडांगां। पाघरसला दुहड़ा के दीहरहांगां।—मयारांम दरजी री वात

दुहण—देखो 'दुहिण' (रू.भे.)

दूहणौ, दूहबौ—देखो 'दूवणौ, दूवबौ' (रू.भे.) उ०—कांमधेनु दुहि पीजिये, ताकौ लखे न कोइ । दादू पीवै प्यास सो, (सो) महारस मीठा सोइ ।—दादू वांणी

दूहणहार, हारौ (हारी), दूहणियौ—वि० ।

दूहिग्रोड़ौ, दूहियोड़ौ, दूह्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दूहीजणौ, दूहीजबौ—कर्म वा० ।

दूहत्य—देखो 'दुहत्य' (रू.भे.)

दूहत्यौ—देखो 'दुहत्यौ' (रू.भे.) उ०—केहरि मरू कळाइया रुहिरज रत्तडियांह । हेकरिग हाथळ गै हग्गै, दंत दुहत्त्या ज्यांह ।—हा.भा.

दूहत्य-वि० [सं० द्वि हस्त] १ दो हाथ वाला । उ०—प्रगल्य कंठ पेल देत कंठ कंठिराव को, दुहत्य हत्थ ठेल देत हत्थलैं प्रदाव को ।—ऊ.का.
२ दो मूठ वाला. ३ देखो 'दुहत्यौ' (रू.भे.)
रू०भे०—दुहत्य, दुहथ ।

दूहत्यि, दुहत्यी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+हस्त] १ मालखंभ की एक कसरत.
२ देखो 'दुहत्यि' (रू.भे.)

दूहत्यौ-वि० [सं० द्वि+हस्त+रा०प्र०ग्रौ] दो हाथ लम्बा ।
उ०—केहर कुंभ विदारियो, तोड़ दुहत्था दंत । रुहिर कळाई रत्तड़ी, मद तर तै महकंत ।—बां.दा.
रू०भे०—दुहत्थौ, दुहथौ ।

दूहथि, दुहथी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+हस्त] तलवार । उ०—इसउ कीजइ, ग्रेक धाराळा की धार खिरी छइ ते पुनरपि धरावजइ, धाग्रे पाटा बांधिजइ, दुहथि उठिजइ, मूळ उडइ चालिजइ, गजदळ गाहिजइ ।
—ग्र. वचनिका

रू०भे०—दुहत्थि, दुहत्थी ।

दूहथौ—देखो 'दुहत्यौ' (रू.भे.)

दूहमण—देखो 'दुसमरण' (रू.भे.)

दूहरौ—१ देखो 'दो'रौ' (रू.भे.) उ०—ईहै स्वाद ग्रनेक ग्रालसू, जे वलि ग्रंगे । दुहरी न करै देह, सुखो विसयारस संगे ।—ध.व.ग्रं.
२ देखो 'दोहरौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुहरी)

दूहवणौ, दूहवबौ-क्रि०स० [सं० दुःखापन्] नाराज करना, कष्ट पहुँचाना, ठेस पहुँचाना, पीडित करना । उ०—१ ताहरां रिणमल नूं कह्यौ—'तूं नीसर । जे तूं जीवतौ छै तौ तूं म्हारौ वैर लेईस । ग्रर ग्रै रजपूत नीसरिया छै, तियां सूं दोख मतां राखै । ग्रै थारै वडै कांम ग्रावसी । जेठी घोडौ छै सु सिखरै उगमरणावत नूं देई । ग्रर रजपूत दुचिता छै सु तूं सुचिता करै । इयै मोहिल सरव दूहविया छै ।—नैणसी
उ०—२ सजन रहौ न राखिया, कोट प्रकार कियाह । काय थां मन चिंता वसी, कांई म्है दूहविया ।—ढो.मा.

दूहवणहार, हारौ (हारी), दूहवणियौ—वि० ।

दूहविग्रोड़ौ, दूहवियोड़ौ, दूहव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दूहवीजणौ, दूहवीजबौ—कर्म वा० ।

दूहणौ, दूहबौ, दूहवणौ, दूहवबौ, दोवणौ, दोवबौ—रू०भे० ।

दूहवियोड़ौ-भू०का०कृ०—नाराज किया हुग्रा, दुखी किया हुग्रा, पीड़ित किया हुग्रा ।
(स्त्री० दूहवियोडी)

दूहवै-वि० [सं० द्वि] दोनों ।
क्रि०वि०—दोनों ग्रोर ।

दुहाई-सं०स्त्री० [सं० द्वि०=दो+ग्राह्वाय=पुकार] १ उच्च स्वर से किसी बात की सूचना जो चारों ग्रोर दी जाय, घोषणा, मुनादी ।
उ०—१ जो हुं ऐसी जांणती, प्रीत कियां दुख होय । देस दुहाई फेरती, प्रीत करौ मत कोय ।—ढो.मा.
२ राजाज्ञा । उ०—बीजो लोग सरव नास गयौ । नागोर लियौ । दुहाई फेरी । हिवै नागोर ग्राय वैठौ ।—नैणसी
क्रि०प्र०—फेरणी ।
३ प्रताप, तेज । उ०—१ निमक की सरीती पै सिर दिया, हूर के विमांन वैठि ग्रासमांन को गया । ग्राज के हल्ले में नवाव दुहाई, सीना से सीना मिला कर तरवार चलाई ।—ला.रा.
४ बचाव या रक्षा के लिये, सहायता के लिये ग्रथवा सताए जाने पर किसी का नाम लेकर पुकारने की क्रिया जो बचा सके ।
क्रि०प्र०—देणी ।
५ सौगंध, कसम, शपथ । उ०—१ ताहरां राजा व्रहदभांण कह्यौ—देवीदास, ग्रा तपावस म्हासूं ना होवै । ग्रा तौसूं हीज होसी । तौनै इण बात री माहित छै । ज्यौ तूं जांणै छै, त्यौ सरब कह । तौनै थारै कुळ री ग्रांण छै । स्री लक्ष्मीनारायणजी री ग्रांण छै । ताहरां देवीदास कह्यौ—महाराज ! मनै ठाकुरां री दुहाई मतां देवौ । हूं कांई कहूं नहीं । राजा कह्यौ—तूं क्यौं नहीं कहै । ताहरां देवीदास कह्यौ—महाराज ! ग्रा बात मैं कही तौ इण घड़ी म्हारी देह छूट जासी ।
—पलक दरियाव री वात
उ०—२ हे मेहाई ! तौनै ग्राई री दुहाई वेगी ग्राव ।—मे.म.
उ०—३ विस्व में रहै है व्याप, प्रांणी करै पुण्य पाप, ग्रापकुं न जांणै ग्राप, भूल्यौ फिरै भरम भरम । घ्यावौ प्रभु धरमनाथ, सुद्ध धरम सीळ साथ, धरम की दुहाई भाई, जो न बोलै धरम धरम ।—ध.व.ग्रं.
क्रि०प्र०—देणी ।
रू०भे०—दवाइ, दुग्राई, दुवाई, दुवायो, दूवाग्री, दोहाई, द्वाई ।
६ देखो 'दूवारी' (१, २) (रू.भे.)

दुहाग-सं०पु० [सं० दुर्भाग्य या दौर्भाग्य] १ वैधव्य ।
उ०—कर क्रोध दुहाग दयौ किण नै । धारुग्रां जड़ साज चलौ धण नै ।—पा.प्र.
२ पति द्वारा मान न मिलने का भाव. ३ पति द्वारा मान न मिलने पर होने वाला दुख. ४ वियोग ग्रथवा विछोह के कारण होने वाला दुख, वियोग-जनित दुख । उ०—हेली पीहर देखियौ, एकण रात सुहाग । घर ग्रायां धण जांणियौ, दूणा दूण दुहाग ।—वी.स.
५ दुर्भाग्य, वदनसीवी. ६ दुःख, कष्ट ।

रू०भे०—दवाग, दुआग, दुवाग, दोहाग ।
विलो०—सुहाग ।
दुहागण, दुहागणि, दुहागिण, दुहागिणि, दुहागिन, दुहागिनि—सं०स्त्री० [सं० दुर्भागिन्] १ वह स्त्री जिसका पति उससे विमुख हो ।
उ०—१ माळवौ देस मांहे धार नगरी । तठै पंवार उदयादित राज करै, नै तिण रै रांणियां दो । तिण मांहे पटरांणी वाघेली । तिण रै कंवर रिणधवळ हुवौ । नै दूजी रांणी सोळंखणी, तिका दुहागण । तिण रै कंवर रौ नांम जगदेव दीधौ ।—जगदेव पंवार री वात
उ०—२ जदी सुहागण रौ वचन सुण नै दुहागण पण कह्यौ आछी वात है, कथा वंचावौ ।—गांम रा धणी री वात
उ०—३ राय कहै रुठो थको रे, तूं निरधन वर जोग रे दुहागिणि । ऐ मतिसारू नवि मिळे रे लाल, तुझ ने उत्तम भोग रे दुहागिणि ।
—श्रीपाळ रास
उ०—४ सखी सुहागिनि सब कहै, हूं रु दुहागिनि आहि । पिव का महल न पाइये, कहां पुकारूं जाइ ।—दादू बांणी
२ विधवा ।
रू०भे०—दवागण, दुआगण, दुवागण, दोहागण, दोहागिण ।
विलो०—सुहागण ।
वि०स्त्री०—दुखी, पीड़ित ।
दुहागियौ, दुहागी—वि० [सं० दुर्भागिन्] (स्त्री० दुहागण) १ दुखी, पीड़ित । उ०—दादू सब जग दीसै एकला, सेवक स्वांमी दोइ । जगत दुहागी रांम बिन, साधु सुहागी सोइ ।—दादू बांणी
२ दुर्भागी, अभागा ।
रू०भे०—दोहागी ।
अल्पा०—दुहागियौ, दोहागियौ ।
विलो०—सुहागियौ, सुहागी ।
दुहातीकरोतौ—सं०पु० [सं० द्वि+हस्त+करपत्रक] दोनों हाथों से चलाई जाने वाली आरी, करौती ।
दुहाथळ—सं०पु० [सं० द्वि+हस्त=सिंह-पंजा] सिंह के अगले पैर का पंजा जिससे वह प्रहार करता है । उ०—१ तंबैरम कुंभ दुहाथळ तत्थ । आडागिरी मत्थ क हत्थ अगत्थ ।—मे.म.
उ०—२ दुहाथळ वज्र दढां जज्र दंड, पूरा नव हाथ महाबळ पिंड ।
—मे.म.
दुहायोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुहायोड़ी)
दुहारी—देखो 'दूवारी' (रू.भे.)
दुहारौ—सं०पु०—दुहने वाला । उ०—भैंसां मूळ न पावसै, सूकै पाडी साथ । हारा दुहारा उट्ठिया, ठाली बरतण हाथ ।—लू
दुहावणी—सं०स्त्री० [सं० दुग्ध+रा०प्र० आवणी] १ गाय, भैंस आदि दुहने का काम. २ वह धन जो दुहने के बदले में दिया जाय, दुहने की मजदूरी ।
दुहावणौ, दुहावबौ—देखो 'दुवाणौ, दुवावौ' (रू.भे.)
दुहावियोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुहावियोड़ी)
दुहिण—सं०पु० [सं० द्रुहण:, द्रुहिण:] ब्रह्मा (ह.नां.)
रू०भे०—दुहण, दुहिन, द्रुघण, द्रुहिण ।
दुहिता—सं०स्त्री० [सं० दुहितृ] कन्या, लड़की ।
उ०—दैव रा सम विसम प्रवाह रै कारण एक जमराज नांम गोळवाळ चहुवांण इण मीणां रै प्रधांन हूंतौ तिकण रै दोइ दुहिता सुरूप री सदन जांणि जैता रै पुत्र विग्रहराज इंद्रद्युम्न जसा री पुत्रियां विवाहण विचारी ।—वं.भा.
रू०भे०—दोहिता ।
दुहितापति—सं०पु० [सं० दुहितृ पति] जामाता, दामाद (डिं.को.)
दुहिन—देखो 'दुहिण' (रू.भे.) (नां.मा.)
दुहियोड़ी—देखो 'दूवियोड़ी' (रू.भे.)
दुहियोड़ौ—देखो 'दूवियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुहियोड़ी)
दुहिलउ, दुहिलौ—देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.) उ०—राखिस ह्रिदै तूं म्हारो स्वांमी । मैं दुहिलै पांम्यो अंतरजांमी ।—दादू बांणी
उ०—२ अकबरिया इण वार, मर रे मैंगळ हर घणी । सुहिलौ सह संसार, दुहिलौ कोइ देखां नहीं ।—सूरायच टापरियौ
(स्त्री० दुहिली)
दुही—देखो 'दुखी' (रू.भे.) (जैन)
दुहुं—वि० [सं० द्वि] दोनों । उ०—फरां खग झाल दुहु राह मातौ कळह, दूठ लागौ पलां दोण दावै । जीव री आस तौ प्रसण नह गहै जळ, जळ गहै प्रसण तौ जीव जावै ।—महारांणा प्रताप रौ गीत
उ०—२ दुहुं पाखां ससि दीन्ह अंधार निकंदवा । तेजोमय रय तास निघात पही नवा ।—बां.दा.
दुहुंवां—क्रि०वि०—१ दोनों ओर. २ दोनों से ।
उ०—भुज दुहुंवां बळ बीस भुज, कळ दस माथा काट । तैं दीधौ दसरथ तणा, दस सिर धर दहवाट ।—बां.दा.
वि०—दोनों ।
उ०—१ वावहियउ नइ विरहणी, दुहुंवां एक सहाव । जब ही बरसइ घण घणउ, तब ही कहइ प्रिय आव ।—ढो.मा.
उ०—२ घरै ले जाह ज्यूं थारौ दुहुवां रौ पण रहै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
रू०भे०—दुहुवां ।
दुहुंवै—वि०—दोनों । उ०—१ वाणी सकति एम सुणि वाचा । सुपह घरै दुहुंवै पण साचा ।—सू.प्र.
उ०—२ तन पड़ै दुहुंवै खळ तठै । जळ दीध मोकळ नूं जठै ।—सू.प्र.
दुहुभ्रत—सं०पु० [सं० द्वि+भृत्य] स्वामी कार्तिकेय (नां.मा.)
दुहुलूं—देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.) उ०—दुहुलूं सुहुलूं छि ते केहवुं प्रेम ते केहेवुं अणि ।—नळाख्यांन

दुहूं, दुहू—देखो 'दुहु' (रू.भे.) उ०—१ अग-रिपु तर केई मुणै, मुणै केक अग राज। इण गज गंजण सीह उर, दुहूं प्रकारां लाज।
—वां.दा.

उ०—२ देवी चाखंडे चंड नै मुंड चीन्हा, देवी देव द्रोही दुहू धमी दीन्हा।—देवि.

दुहेल-सं०पु० [सं० दुर्हेल] दुख, विपत्ति, मुसीबत।

दुहेलउ, दुहेलु, दुहेलू—देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.)

उ०—१ तिण मेलउ दे मुझ भणी, जिम मन मां सुख थावइ रे। जउ चिंता चित्त राखियइ, दिवस दुहेलउ जायइ रे।—वि.कु.

उ०—दूते कंठ भेलू, थयौ दुहेलू, अज्जामेळ अंतवेळू। करते पुत्र हेलू, नांम कहेलू, सब क्रम ठेलू छूटेलू।—भगतमाळ

दुहेलौ-वि० [सं० दुर्हेला] (स्त्री० दुहेली) १ संकट युक्त।

उ०—रांम संभाळिये रे, विखम दुहेलौ बार।—दादू बांणी

[सं० दुर्लभ] २ सरलता से नहीं मिलने वाला, दुर्लभ, दुष्प्राप्य।

उ०—१ दादू जे तूं मोटा मीर है, सब जीवों में जीव। आपा देख न भूलिये, खरा दुहेलौ पीव।—दादू बांणी

उ०—२ बरसण लागा वेग विरंगा, तरसण लागा तीठा। परसण लागा पाव दुहेला, दरसण छैला दीठा।—ऊ.का.

३ देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.) उ०—१ साहिब सौं मिळ खेलते, होता प्रेम सनेह। दादू प्रेम सनेह बिन, खरी दुहेली देह।—दादू बांणी

उ०—२ दुरवेसै मोरचो दवायो, इतरै 'अखो' मधावत आयो। बळ धरतो धीरपतो वेली, हुई जवन दळ घड़ी दुहेली।—रा.रू.

उ०—३ स्यांम बिनां जिवड़ो मुरझावै, जैसे जळ बिन वेली। मीरां कूं प्रभु दरसण दीज्यो, जनम जनम की चेली। दरस बिन खड़ी दुहेली।—मीरां

उ०—४ दीह दुहेलौ जाइ निसि नीसासै नीगमूं। दुखिया देखी दाइ, आवै तो आवै 'जसा'।—जसराज

उ०—५ पंथ दुहेला दूर घर, संग न साथी कोइ। उस मारग हम जाहिंगे, दादू क्यों सुख सोइ।—दादू बांणी

उ०—६ दुबध्या तज तो आपा अवखा, तजण दुहेला लोय। आपा तजे तो बहु भिड़ आडा, कांम क्रोध अरु मोह।
—स्री सुखरांमजी महाराज

दुहोतरौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

दुहोतरौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दुहोतरी)

दुहौ—देखो 'दूहौ' (रू.भे.)

दुह्यु-सं०पु० [सं०] शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न राजा ययाति के एक पुत्र का नाम।

दुहिद, दुरहिद-सं०पु० [सं० दुः हृदयिन्, दुर्हृदयिन्] शत्रु, दुश्मन।

उ०—दराज देह दुरहिदांन राज दाहिनी नहीं। चहूं चरित्र चित्र सी, विचित्र बाहनी नहीं।—ऊ.का.

दूंग—देखो 'दुंग' (रू.भे.) उ०—तठै दूंग तूटै धिखै आग तोड़ां। घणूं नाळ ताळां वजै नास घोड़ां।—सू.प्र.

दूंण—देखो 'दूणौ' (रू.भे.) उ०—कीधो चौथ विखायतां, कितां इजारो कीध। केतांइ झाली चाकरी, दूंण इजाफा दीध।—रा.रू.

दूंणू—देखो 'दूणौ' (रू.भे.) उ०—चरणां आठां चालियो, जंगळ री रुख जाय। पुरस हूंत दूंणू पसू, अंतक कीधो आय।—वां.दा.

दूंद—१ देखो 'तुंद' (रू.भे.) उ०—गरद मोटो गात पेट दूंद छिटकी पड़ै।—पा प्र.

२ देखो 'दुंद' (रू.भे.) उ०—'गजन' रा नमो तो पराक्रम खत्री-गुर, समर दुहुं तणा रवि-चंद साखी। खागि दाखै अचळ खूंद वंड खेंगरै, दुंद करि खूंद सूं अचड़ दाखी।
—महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ (प्रथम) रो गीत

दूंदळोत-सं०पु०—चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (वां.दा.ख्यात)

दूंदळौ—देखो 'दूंदाळौ' (रू.भे.) (डि.को.)

दूंदवाळ, दूंदाळु, दूंदाळौ-वि० [सं० तुंद+आलुच्] बड़े उदर वाला, तोंदीला (डि.को.) उ०—वार्टि भेटइ वांणीउ, दूंदाळु करि दोति। कांमिनि-करि कोडे करिउ, दीप धरंतु द्योति।—मा.कां.प्र.

दूंदुह—देखो 'दूदुह' (डि.को., रू.भे.)

दूंब—देखो 'दूंबो' (मह., रू.भे.)

दूंबलियौ—देखो 'दूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

दूंबाइत, दूंबायत-सं०पु०—वह छोटा जागीरदार जो राजस्व या खिराज रूप में राज्य में निश्चित रकम भरता हो।

रू०भे०—धूंबाइत, धूंबायत।

दूंबौ-सं०पु०—१ छोटे गांव की खिराज या राजस्व में दी जाने वाली निश्चित रकम. २ वह भू-भाग जो आसपास के तल से उभरा हुआ हो, ढूह, भीटा. ३ धूलि आदि का बनाया हुआ छोटा शिखर का ढेर।

रू०भे०—धूंबौ।

अल्पा०—दूंबलियौ, धूंबड़ौ, धूंबलियौ, धूबी।

मह०—दूंब, धूंब, धूंबड़।

दू-अंगम-वि० [सं० दुर्गम्] कठिनता से पार करने योग्य, जिसका पार करना महा कठिन हो। उ०—१ विलखी हुई वंछतां, नेटि नाविउ माह। माह ! थाइ मूंह नइं, महा दू-अंगम माह।—मा.कां.प्र.

उ०—२ आई ! अवलंबन किसूं, अम्ह नइं अेता दीह। जंवू कि हूं किम जाळवूं, विरह दू-अंगम सीह।—मा.कां.प्र.

दूअ—देखो 'दूत' (रू.भे.) उ०—दूअ वयणि दूअ-वीणां राउ जूठिल्लु।
—प.प.च.

दूआर, दूआरि—देखो 'द्वार' (रू.भे.) उ०—नीजांमा नइं नायता, माछी मिळया गुआर। मीणा मोची मोकळां, मूकि गयां दूआर।—मा.कां.प्र.

दूआसर-सं०पु० [सं० द्वि+रा० सर=लड़] आभूषण विशेष।

दूइज—देखो 'दूज' (रू.भे.) उ०—हो गये स्यांम दूइज के चांद।—मीरां

उ०—कंठळी कनक प्रवाळ मांणिक, विविध रूप विस्तार। दांणउ दूग्रासर मादल्यां, उर मोतियां भरि हार।—रुकमणी मंगळ

दूदजो—देखो 'दूजो' (रू.भे.) उ०—सवळां खळां नांमीजै समहरि, कवि सवळां दम कीजै, कुळ ग्रजुग्राळ 'गंगेव' कळोधर, दूदजां मीढ न दीजै।—ईसरदास कल्यांणदासोत राठौड़ री गीत

दूउ-सं०पु० [सं० दौत्य] संदेसा, पैगाम। उ०—चोठी काढ़इ नितू कूंयारि, ग्रावइ वारउ जग्ग विवहारि। ग्राजू ग्रम्हारइ ग्राविउ दूउ, ग्राज न छूटउं हूं ग्रणमूउ।—पं.प.च.

दूग्रो—१ देखो 'दुग्रो' (रू.भे.) उ०—१ दळां मिळण ग्रावै दूग्रो, होळी खेल नगारो हूग्रो।—रा.रू.

उ०—२ बोध बीज निरमळ मुक्त हुग्रो, दियो दुरति नइ दूग्रो जी।

—वि.कु.

२ देखो 'दूवो' (रू.भे.) ३ देखो 'दूहो' (रू.भे.)

दूकणियो—देखो 'दूखणो' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दूकणो—देखो 'दूखणो' (रू.भे.)

दूकणो, दूकवो—देखो 'दूखणो, दूखवो' (रू.भे.)

दूकणहार, हारो (हारी), दूकणियो—वि०।

दुकवाड़णो, दुकवाड़वो, दुकवाणो, दुकवावो, दुकवावणो, दुकवावबो—प्रे०रू०।

दुकाड़णो, दुकाड़वो, दुकाणो, दुकावो, दुकावणो, दुकावबो—क्रि०स०।

दूकिग्रोड़ो, दूकियोड़ो, दूक्योड़ो—भू०का०कृ०।

दूकीजणो, दूकीजबो—भाव वा०।

दूकियोड़ो देखो 'दूखिग्रोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दूकियोड़ी)

दूखड़ं—देखो 'दुख' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—दूखियां देखी देवनि ग्रति दूखडूं लागि। पणि भोगव्यां विण वयम छूटीयि ये कीधां ग्रागि?

—नळाख्यांन

दूख-सं०स्त्री० [सं० दुःख] १ पीड़ा, दर्द. २ देखो 'दुख' (रू.भे.)

उ०—१ हियड़इ भीतर पइसि करि, ऊगउ सज्जण रूंख। नित सूकइ नित पल्हवइ, नित नित नवला दूख।—ढो.मा.

उ०—वर्णं केसरां ग्रत्तरां वोह वागां, प्रभा चंद्र मोहै भड़ां व्रिद पागां। हुए संग मारूत्त सोरंभ हालै, परस्सै तिणां पोख सूं दूख पालै।

—रा.रू.

दूखण—देखो 'दूसण' (रू.भे.) उ०—१ मन ही मांही ह्वं मरे, जीवै मन ही मांहि। साहिब साक्षी भूत है, दादू दूखण नांहि।

—दादू वांणी

उ०—२ विढि नख सिख लगि ग्रहणे पहिरिए, महिमूं वांणी वेलि मई। जग गळि लागि रहै ग्रसै जिमि, सहै न दूखण जेम सई।

—वेलि.

दूखणावणी-सं०पु० [सं० दुःख] दर्द, पीड़ा।

दूखणावणो, दूखणावबो—देखो 'दुखाणो, दुखाबो' (रू.भे.)

दूखणावियोड़ो—देखो 'दुखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दूखणावियोड़ी)

दूखणियो—देखो 'दूखणो' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दूखणो-सं०पु० [सं० दुःख+रा० प्र० णो] १ फोड़ा, फुंसी.

२ घाव (मि० चांदी, टांका)

रू०भे०—दूकणो।

ग्रल्पा०—दुकणियो, दुखणियो, दूकणियो, दूखणियो।

दूखणो, दूखवो-क्रि० ग्र० [सं० दुःख] १ (किसी ग्रंग का) पीड़ित होना, पीड़ायुक्त होना, दर्द करना। उ०—मारग ग्रांधी मालणी, जवहर लीधा जांह। माजी री दूखे मती, माथो ऊमर मांह।

—बां.दा.

मुहा०—दूखै जिणरै पीड—जिसके दर्द होता है उसी को पीडा का ग्रनुभव होता है ग्रर्थात् किसी की पीड़ा का ग्रनुभव दूसरा नहीं कर सकता।

क्रि०स०—२ दोष लगाना, कलंकित करना, ऐब लगाना।

दूखणहार, हारो (हारी) दूखणियो—वि०।

दुखवाड़णो, दुखवाड़वो, दुखवाणो, दुखवावो, दुखवावणो, दुखवावबो प्रे०रू०।

दुखाड़णो, दुखाड़वो, दुखाणो, दुखावो, दुखावणो, दुखावबो—क्रि०स०

दूखिग्रोड़ो, दूखियोड़ो, दूख्योड़ो—भू०का०कृ०।

दूखीजणो, दूखीजवो—भाव वा०, कर्म वा०।

दुखणो, दुखवो, दूकणो, दूकवो—रू०भे०।

दूखर, दूखरो—देखो 'दूसरा' (५) (रू.भे.) उ०—१ रांमण इंद्रजीत खर दूखर, गंजे कूंण गिणावै। खांत लगै केता खळ खाधा, वेळै दांत वहजावै।—र.ज.प्र.

उ०—२ खरा दूखरा ग्रस्सरा दंत खीजै। भिड़ेवा कजै ग्राचिया क्रोध भीजै।—सू.प्र.

दूखाड़णो, दूखाड़वो—देखो 'दुखाणो, दुखावो' (रू.भे.)

दूखाड़णहार, हारो (हारी), दूखाड़णियो—वि०।

दूखाड़िग्रोड़ो, दूखाड़ियोड़ो, दूखाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

दूखाड़ीजणो, दूखाड़ीजबो—कर्म वा०।

दूखणो, दूखवो—ग्रक० रू०।

दूखाड़ियोड़ो—देखो 'दुखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दूखाड़ियोड़ी)

दूखाणो, दूखाबो—देखो 'दुखाणो, दुखावो' (रू.भे.)

उ०—मूळ निकळंक कळंकियो, जिनसासन दूखाय। पुत्री मूई दुख नहीं, पिण दुख सह्यो न जाय।—स्रीपाळ रास

दूखाणहार, हारो (हारी), दूखाणियो—वि०।

दूखायोड़ो—भू०का०कृ०।

दूखाईजणो, दूखाईजबो—कर्म वा०।

दूखणो, दूखबो—ग्रक० रू०।

दूखायोड़ो—देखो 'दुखायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दूखायोड़ी)

दूखावणो, दूखावबो—देखो 'दुखाणो, दुखावो' (रू.भे.)
दूखावणहार, हारो (हारी), दूखावणियो—वि०।
दूखाविप्रोड़ो, दूखावियोड़ो, दूखाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
दूखावीजणो, दूखावीजबो—कर्म वा०।
दूखणो, दूखबो—अक० रू०।

दूखावियोड़ो—देखो 'दुखायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दूखायोड़ी)

दूखियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पीड़ित हुवा हुआ, दर्द किया हुआ.
२ दोष लगाया हुआ, कलंकित किया हुआ।
(स्त्री० दुखियोड़ी)

दूछर—देखो 'दुछर' (रू.भे.) उ०—चकरधर मग सधर संचर। सिघळ पर घर जांग ईसर, छांड नगधर धरण दूछर। मकर यर सर चकर मोख'र।—र.ज.प्र.

दूछरल, दूछरेल, दूछरैल—देखो 'दूछर' (मह., रू.भे.)
उ०—१ वरस लघ घेर गढ़ ओहीज घर बजवजे, विरद जस जग जगे भुजां वाजी। दूछरल पाथ जिम हाथ कुण देखतो, राज पण देखसो हुसो राजी।—किसनो आढ़ो
उ०—२ तेंही लंक सांगा सो जोजनां गिणै दूछरेल! मछरेल अढंगां अयारां मेल मीच। डरावणा रूप रा दयंतां भांगा दूछरेल। भामणा रांम रा लांगा पूंछरेल भीच।—र.ज.प्र.
उ०—३ ओहि घाड़ा ऊछरैल वाहरू लार ज्यूं आंणै, जांणै क्रोधार ज्यूं फौजां तूछरैल जंग। रिमां मूछरैल पैलां पार ज्यूं राखियो राजा, दूछरैल बाघां कंठहार ज्यूं दुरंग।—महादान महडू

दूज-सं० स्त्री० [सं० द्वितिया, प्रा० दुइयच, दुइज] १ प्रत्येक मास की दूसरी तिथि, द्वितीया। उ०—दम तन धरिया काय, सुधा घर दूज रै।—बां.दा.
मुहा०—दूज रो चांद—दर्शन दुर्लभ होना, बहुत कम दिखाई देना।
२ देखो 'दुज' (रू.भे.) उ०—आजि चलावै देव हइ। वचन हमारउ मांनो नूं मांन। कर जोड़े दूज वीनमैं। थे घरि चालो, नूं लावो हो वार।—बी.दे.
रू०भे०—दोज, बीज।

दूजउ—देखो 'दूजो' (रू.भे.) उ०—दीजइ नाळे'र हुवइ को दूजउ, इयउ रंग तरंग आप रइ रहइ। दाखवि परि काहिक रिख नारद, कर जोड़े हेमगिरि कहइ।—महादेव पारवती री वेलि.

दूजड़—देखो 'दुजड़' (रू.भे.) उ०—कहाड़ें विरद वंका भीड़ियां धकड़ा कड़ां, वधै रोळे भड़ां आगा वाधे वंसवान। विछोड़े गयदां घड़ा दूजड़ां ओभड़ां वाह, मुगल्ला मूंडड़ां दड़ां मेळे दूजो 'मांन'।
—रावत सारंगदेव रो गीत

दूजण-वि० [सं० द्वि०+जन] १ (दो जन, दुकेला) गृहस्थ, विवाहित, दंपति। उ०—अलग कहहिय छइ एकलां, दूजण सरिस कहइ घर वास। राजा रिधि छइ आपणइं, ईण परिपुरजई मन की आस।
—बी.दे.
२ देखो 'दुरजण' (रू.भे.) उ०—यतो न भेद जांणिये-ह, ज्याग सैण दूजणं। संधांण-वांण जांण ए न, तांण ए सरासणं।—सू.प्र.

दूजणी—देखो 'दूझणी' (रू.भे.)

दूजणो, दूजबो—देखो 'दूझणो, दूझबो' (रू.भे.)

दूजवर-सं०पु० [सं० द्वितीय वर] दूसरा विवाह करने वाला पुरुष, दुहाजू।

दूजांण-सं०पु० [सं० द्विज+रा० प्र० आंण] ब्राह्मण, विप्र।
वि०—दूसरा। उ०—नीठ से दीध दूजांण नेक। आठ में दीह ताजीम एक। वढवा दळ दिखणी तेण वार। आविया लियां लस्कर अपार।—वि.सं.

दूजियांण-सं०स्त्री० [सं० द्वितीय+रा०प्र०आंण] दूसरी वार बच्चा देने वाली गाय या मादा पशु।

दूजेण—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.) उ०—लाखा सु-दिन, करताव करन। अहिकार रांण, दूजेण मांण, अरजन वांण।—अ. वचनिका

दूजोड़ो—देखो 'दूजो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—एक तो नगारो धणियां रातेनाडे वाजै ओ। दूजोड़ो नगारो धणियां ठेट वाजै ओ क झगड़ो रोपियो।—लो.गी.
(स्त्री० दूजोड़ी)

दूजो-वि० [सं० द्वितीयः] (स्त्री० दूजी) १ जो क्रम में दो के स्थान पर हो, पहिले के बाद का। उ०—१ प्रथम लाख समपियो कवी बारठ संकर कर। 'लखपति' बारठ लाख दीध दूजो करि डंबर।—सू.प्र.
उ०—२ धुर सोळह दूजो चवद, ती चोवीस तवंत।—र.ज.प्र.
२ जिसका उपस्थित व्यक्ति या विषय से सम्बन्ध हो।
सं०पु० [सं० द्वितीयः] १ वह व्यक्ति जो अपने किसी पूर्वज की तुलना में समान गुण वाला हो। वह व्यक्ति जिसकी उपमा के लिए उसके पूर्वज का उल्लेख किया जाय। उ०—१ छत्र-धारी दूजा 'जगा' धरा-थंभ उदां छात, 'सिभू' रा मिघळी 'दोला' हरा 'सुरतांण'।
—ठाकुर सुरतांणसिंह नीमाज रो गीत
उ०—२ है खुरां गांह तो हेकां, बोलाड़तो भड़ां बोजां साहंतो वाहंतो सार, गाहंतो सरीक। ढाहंतो काळां ढेचाळां, रोदाळा पोचाळां राजा, वडा व्रद 'वीका' वाळा वहे दूजो 'वीक'।—दूदो सुरतांणोत वाढू
२ पौत्र (डि.को)
वि०वि०—यह शब्द संस्कृत के द्वितीय और द्वितीयः का अपभ्रंश रूप है, जिनका अर्थ संस्कृत साहित्य में दूसरा और कुटुम्ब में दूसरा पुत्र, मित्र, साथी आदि होता है। इसी कारण से राजस्थानी में भी द्वितीय शब्द का अपभ्रंश रूप 'दूजो' है। विशेष कर डिंगल गीतों में यह शब्द समान गुण वाले वंशज के अर्थ में प्रयोग होने लगा।
रू०भे०—दुओ, दुवो, दूइजो, दूओ, दूजउ, दूवो वियो, बीजउ, बीजो।

उ०—२ पाराथ सेवग श्राथ श्रापण, करण सिध मन काथ। दस दूण हाथ समाथ दाटक, मार खळ दसमाथ।—र.ज.प्र.

दूणता-सं०स्त्री० [सं० द्विगुणता] दुगुणापन।

दूणभुजंगी-सं०स्त्री०—श्राठ यगण का छद विशेष। (लखपत पिंगळ)

दूणागिर—देखो 'द्रोणगिरि' (रू.भे.) उ०—रांम नांम परताप, हणू दूणागिर लायौ। रांम नांम परताप, इंद्र इद्रासण पायौ।—ह.र.

दूणू—देखो 'दूणौ' (रू.भे.)

दूणेटौ—देखो 'दूणौ' (श्रल्पा., रू.भे.) उ०—तरै वांसै साथ प्रथीराज भाखर चाढै छै सु प्रथीराज......देवड़ा नैं सूरजमल रो चाकर महियौ भाखरात श्रै दोनूं वाजिया......महिया नूं मार लिया श्रै दोनूं ठोड़ दूणेटौ पावता नैं माहयौ सीसोदिया छै।—नैणसी

दूणौ-वि० [सं० द्विगुण] (स्त्री० दूणी) दुगुना, द्विगुण।

उ०—१ हिरदै ऊणा होत, सिर धूणा श्रकवर सदा। दिन दूणा दंसोत, पूणा ह्वै न प्रतापसी।—दुरसौ श्राढौ

उ०—२ कितरोइ पुर उच्छव कियौ, दूणौ सुख दरबार। कथै महा गुण सूत कवि, चित हित मंत्र उचार।—रा.रू.

सं०पु०—'पिंगळ सिरोमणि' के श्रनुसार राजस्थानी का वह गीत (छंद) जिसमें श्राठ द्वाले हों।

रू०भे०—दुण, दुणौ, दूंण, दूंणूं, दूण, दूणू, बमणौ, विमणौ।

श्रल्पा०—दुणेटौ, दूणेटौ, बमणेटौ, विमणेटौ।

दूंणौ, दूंबौ—देखो 'दूवणौ, दूवबौ' (रू.भे.)

दूंणहार, हारौ (हारी), दूंणियौ—वि०।

दुयोड़ौ, दुयोड़ौ—भू०का०कृ०।

दुईजणौ, दुईजबौ, दुयीजणौ, दुयीजबौ—कर्म वा०।

दूण-श्रट्ठौ-सावझड़ौ-सं०पु०यौ०—एक राजस्थानी डिंगल गीत छंद जिसमें 'वृहद् नाराच छंद' के चार द्वाले होते हैं (र.ज.प्र.)

दूत-सं०पु० [सं०] (स्त्री० दूती) १ वह मनुष्य जो संदेशा ले जाने, संदेशा लाने श्रथवा किसी विशेष कार्य के लिये भेजा जाय, चर (डि.को.)

उ०—श्रंगद मेलियौ सद दूत श्रपंपर, वळ श्रकलां मजबूत वडाळौ। वप सिणगार धूत खळ बैठौ, रचै सभा श्रदभूत रढ़ाळौ।—र.रू.

२ प्रेमी की श्रोर से प्रेमिका के पास श्रथवा प्रेमिका की श्रोर से प्रेमी के पास संदेशा लाने या ले जाने वाला.

पर्याय०—खबरी, चर, चार, धावण, हलकारौ।

३ यमदूत।

उ०—दूत रा उघाड़ा क्रूर दांत। भूत रा मुरांड़ा तणइ भांत। हुव जेठ तावड़ा दुसह होम। धावड़ा श्रंगारां चिनख घोम।—वि.सं.

रू०भे०—दूश्र, दूय।

दूतपाळक-सं०पु० [सं० दूत पालक] एक राज्याधिकारी।

उ०—कथाकथक पीठ मरदक जिहा, संधिरेहा दूतपाळक तिहा। एहवी सभाइ वइठु राय, नरवर लक्ष सेवइ तस पाय।

—नळ-दवदंती रास

दूतर-सं०पु०—१ चन्द्रमा। उ०—उण श्रढ़ार दूण वंस क्या त्यां सेर कर। वरण श्रढ़ारै देखतां त्यां तारांणी दूतर।

—नाहड़ियां रा भूलणा

२ देखो 'दुस्तर' (रू.भे.) उ०—१ जळाबोळ कळ जुग्ग, महा दूतर भवसागर। मोह लोभ जळ मांझि, हुवा गरकाव किता नर।

—ज.खि.

उ०—२ पान झड़ै सब दुख के, वळि गई तन सूखि। दूतर राति वंसत की, गया पियारा मूकि।—श्रज्ञात

दूति, दूतिका—देखो 'दूती' (रू.भे.) उ०—श्राजाति जाति पट घूंघट श्रतिर, मेळण एक करण श्रमिळी। मन दंपती कटाछि दूति मैं, निय मन सूत्र कटाछि नळी।—वेलि.

दूती-सं०स्त्री० [सं०] स्त्री-पुरुषो को मिलाने श्रथवा प्रेमी व प्रेमिका का संदेश एक दूसरे के पास पहुँचाने वाली स्त्री, कुटनी।

उ०—१ कटाछि एक वार उहां जाय छै एक वेर फिरि इहां श्रावै। तौ जाणिजै छै इह दुहुं का मन दंपति छै तौ ये कटाछि नहीं छै। ए दूती छै, विचि फिरै छै।—वेलि.टी.

उ०—२ देखै फिरती दूतियां, सूतौ धूंणै सीस। फंसियौ कांमण फंद मे, रसियौ करै न रीस।—बां.दा.

रू०भे०—दूति, दूतिका।

२ चुगलखोर स्त्री. ३ चुगली। ज्यूं०—थूं म्हारी दूतियां क्यूं करै। [सं० द्वि+हस्त+रा०प्र०ई] ३ जुलाहों के नापने के लिये दो हाथ की लकड़ी जिसे वे लिये रहते हैं, श्रउठा।

दूतीय—देखो 'दुतीय' (रू.भे.)

दूतीयौ-सं०पु० [सं० द्वितीय] १ द्वैधी भाव, द्विधा भाव।

उ०—एक श्रखंडी श्रलख श्रभेखै, द्रस्टि सम कर सब में देखै। दूतीया दूर गमावै। संत सदा सुख सागर वासी, कह सुखरांम मुक्ति ज्यांरी दासी, निजानंद थित थावै।—स्री सुखरांमजी महाराज

२ देखो 'दुतीय' (रू.भे.)

दूथ-वि० [सं० दुष्ट] योद्धा, वीर।

उ०—१ दळपति दोमझि दूथ दुरंग, कियौ 'कमरौ' जिण भांजि कुरंग।—रा.ज. रासौ

उ०—२ रणि हणि चरड थूथ टाळिय सथळ दूथ, कीधेउं सगळै सूथ श्राणंद करौ कवि कहइं।—व.स.

(मि० दूठ)

दूथौ-सं०पु० [सं० द्विथः, द्विस्थः, वा द्विकथी] १ चारण कवि, चारण (डि.को.) उ०—सौ गाडा भरिया सदा, पाव न डिंगळ पास। क्यूं कूड़ा डंबर करै······दूथौ हुसौ उदास।—क कु.बो.

२ कवि (डि.को.)

दूद—१ देखो 'दूध' (रू.भे.)

२ देखो 'दूदौ' (मह., रू.भे.)

उ०—श्रांट नूप 'रांम' सु 'कुसळ' कीधी श्रभंग, कमंद नरवाहियौ तको

कहियो । सार झड़ 'दूद' हर अगर कर सांमठा, राज वगतेस' रै खेत रहियो ।—सतीदांन बारहठ

दूदड़—देखो 'दूध' (मह. रू.भे.)

दूदड़लौ, दूदड़ियौ—देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)

दूदड़ो—१ देखो 'दूद' (अल्पा, रू.भे.)
 २ देखो 'दूदौ' (अल्पा., रू.भे.)
 ३ देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)

दूदांण, दूदा-सं०पु०—राव दूदा के वंशज मेड़तिया राठौड़ों के लिये प्रयोग किया जाने वाला शब्द ।

दूदियादांत—देखो 'दूधियादांत' (रू.भे.)

दूदियौ—१ देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'दूधियौ' (रू.भे.)

दूदी—देखो 'दूधी' (रू.भे.)

दूदीवटौ—देखो 'दुदीवटौ' (रू.भे.)

दूदु-सं०पु० [देश०] पत्तों का बना गहरे कटोरे के आकार का पात्र, दोना ।
 उ०—कमळ पांन रै तणु दूदु करि आंणि आणिउं नळ जीइ वारि रे । नीसासु मूंकीनइ पांणी पीइ, कहइ-कहइ दवदंती नारि रे ।
 —नळ-दवदंती रास

दूदुह-सं०पु० [देश०] निर्विष सर्प (टि.को.)
 रू०भे०—दूडुह ।

दूदौ-सं०पु०—१ मेड़ता अधिपति राव दूदा का वंशज, मेड़तिया राठौड़ ।
 उ०—'चांपा' 'करन' 'जैत' नृप चाया, 'ऊदा' 'दूदा' खळां अभाया । 'जोधा' 'जैत' 'कमा' नै जादव, इळ मछरीक करै धव(र) ओछव ।
 —रा.रू.
 २ देखो 'दूध' (२) (अल्पा., रू.भे.)

दूद्यौ—१ देखो 'दूध' (अल्पा.. रू.भे.) उ०—जाटणती के लगै मत-वाळी काचो दूद्यौ प्यावै । रांगड़ी कै सदा रंगीलो मद का प्याला प्यावै । मतवाळा भैरूं कासी का वासी ।—लो.गी.
 २ देखो 'दूध' (२) (अल्पा., रू.भे.)

दूध-सं०पु० [सं० दुग्ध] १ स्तनपायी जीवों की मादा के स्तनों में रहने वाला सफेद रंग का तरल पदार्थ जिससे उनके बच्चों का बहुत दिनों तक पोषण होता है (डि.को.)
 पर्याय०—अभ्रित, उत्तामरस, ऊधस, खीर, गोरस, जळभित, जीव-नीय, पय, पुंसर, मधु, सतन, सर, सवादक, ससात, सोमिज ।
 मुहा०—१ दूध अमूजणो—स्तन पर किसी आघात के कारण दुग्ध-प्रवाह का रुक जाना जिससे स्तन में दर्द होता है. २ दूध उतरणी—(गाय, भैंस आदि के) दूध कम होना. ३ दूध चढ़णी—गाय, भैंस आदि के दूध में वृद्धि होना । देखो 'दूध पड़णी'. ४ दूध चढ़णी—गाय, भैंस आदि के दूध में वृद्धि हो जाना. ५ दूध चढ़ाणी—गाय, भैंस आदि को उनका अभीष्ट खाद्य पदार्थ नहीं मिलने के कारण अथवा अपने बच्चे के मोह के कारण दूध स्तनों में ऊपर खींच लेना. ६ दूध पड़णी—गाय, भैंस आदि का गर्भवती होना. ७ दूध पा'णी (पावणी)—कन्या के उत्पन्न होने पर उसके विवाहादि के भावी संकट की आशंका के कारण विष देकर मार डालना. ८ दूध भिळणी—देखो 'दूध पड़णी'. ९ दूध री ऊफांण—शीघ्र शांत हो जाने वाला क्रोध या मनोवेग, क्षणिक आवेग. १० दूध री दूध नै पांणी री पांणी करणी—ऐसा न्याय करना जिसमें किसी भी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो । बिल्कुल ठीक न्याय करना ।
 ११ दूध री बळयो छाछ नै फूंक दै—दूध का जला छाछ को फूंक लगाता है, एक बार धोखा खाने पर मनुष्य छोटी सी बात पर भी सतर्क रहता है. १२ दूध सूं धोय नै देणा—उधार का रुपया उपयोग के पश्चात् ठीक समय पर बिना किसी रुकावट के लौटा देना.
 १३ दूधां न्हावो, पूतां फळो—सौभाग्यशाली और सन्तानवाली बनो, आशीर्वाद. १४ दूधां री बेरी—अधिक दूध देने वाली गाय, भैंस आदि. १५ धोळो, धोळो दूध जांणणो—पवित्र या शुद्धात्मा समझना, कपटी या धूर्त नहीं समझना ।
 २ अनाज के बीजों में अपरिपक्व अवस्था में होने वाला रस जो पकने पर कठोर रूप धारण कर लेता है ।
 मुहा०—दूध पड़णी—अनाज के बीजों में रस पड़ना ।
 ३ अनेक प्रकार के पौधों की पत्तियों और डंठलों में होने वाला दूध के रंग का तरल पदार्थ जो उनको तोड़ने से बाहर निकलता है.
 ४ वंश, गोत्र (साधु फकीर). ५ देवी के लिये बलिदान किये जाने वाले बकरे का रक्त. ६ रक्त, खून ।
 मुहा०—दूध पा'णी—युद्ध-स्थल में पराजित घायल व्यक्तियों को तलवार के घाट उतारना ।
 रू०भे०—दुगध, दुद, दूद, दूधि ।
 अल्पा०—दूदड़लौ, दूदड़ियौ, दूदड़ो, दूदियौ, दूदौ, दूद्यौ, दूधड़लौ, दूधड़ियौ, दूधड़ो, दूधियौ, दूधौ, दोदौ, दोधौ ।
 मह०—दूदड़ ।

दूधका-सं०पु०—पाटल वृक्ष (अ.मा.)
 वि०वि०—देखो 'पाडळ' ।

दूधकोसी-सं०स्त्री०—नेपाल राज्य के अंतर्गत सप्तकोशी नदी की सात सहायक नदियों में से एक सहायक नदी ।

दूधगिलारी, दूधगिलासड़ी-सं०स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छिपकली की जाति का जन्तु जिसका रंग सफेद होता है । यह प्रायः जंगल में पाया जाता है और बड़ी तेजी से इधर-उधर भागता है ।

दूधड़लौ, दूधड़ियौ, दूधड़ो—देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)
 उ०—१ माताजी मनावै मीरां थे मांनो, दूधड़ला री पत राख, भक्ति छोडो हरि नांम की ।—मीरां
 उ०—२ पदमइया स्वांमी सुखदाईक, नाईक नयणे दीठा रे । रांम नांम मनोरथ पूरया, दूधड़ै पावस वूठा रे ।—रुकमणी मंगळ

दूधचढ़ी—वि०स्त्री० [सं० दुग्ध+उच्चलन=प्रा० उच्चडन, अप० चड्डन] १ जिसके स्तनो में दूध पूर्व की अपेक्षा बढ़ गया हो. २ वह गाय, भेंस, बकरी आदि जो गर्भवती हो चुकी हो।

दूधड़ियो—वि० [सं० द्वि+घड+रा०प्र०इयो] १ दो बराबर विभाग का। २ दूध (अल्पा., रू.भे.)

दूध-बै'न—सं०स्त्री० [सं० दुग्धभगिनी] १ वह लड़की जो किसी दूसरी स्त्री का दूध पिला कर पाली जाती है तो उस स्त्री की संतान की दूध बहन कहलाती है. २ सहोदरा।

दूध-भाई—सं०पु० [सं० दुग्ध भ्राता] १ वह लडका जो किसी दूसरी स्त्री का दूध पिला कर पाला जाता है तो उस स्त्री की संतान का 'दूध-भाई' कहलाता है।

दूधमुंहो—वि० [सं० दुग्ध मुख] जो अभी तक माता का दूध पीता हो, अबोध बालक, शिशु।

दूधली—देखो दूधी' (अल्पा., रू.भे.)

दूधसेराह—सं०पु० [देश०] दूधिया रंग का घोड़ा (शा.हो.)

दूधा—सं०स्त्री०—पुरोहित ब्राह्मणों का एक भेद जो श्रीमाली ब्राह्मणो में से निकले हैं।

दूधाधारि, दूधाधारी—वि० [सं० दुग्धाहारी] केवल दूध का आहार करने वाला। उ०—मन जोगी जंगम सेस, मन वही भेस बणावै। दूधाधारी होय फिरै, भरमै दुख पावै।—ह.पु.वा.

रू०भे०—दूधाहारी।

दूधापांणी—सं०पु०—एक टोना विशेष जो स्त्रियों द्वारा वर को वधू के वश में रखने के लिये किया जाता है।

वि०वि०—इसमें वर को वधू का झूठा दूध पिलाया जाता है।

दूधार—देखो 'दुधार' (रू.भे.)

दूधारू—देखो 'दुधाळू' (रू.भे.)

दूधाळ, दूधाळू—देखो 'दुधाळू' (रू.भे.)

उ०—दोळै दूधाळू गळियोड़ी गेरी। ढोळै ढळियोड़ी रतनां री ढेरी।
—ऊ.का.

दूधाळो—वि० [सं० दूध+आलुच्] १ दूध का सा गाढ़ा।
उ०—इतरा में खवास आंण अरज कीवी—जे कसूंभो तैयार छै। तद सरदार लोगां कही—ले आवौ। सो कळस च्यार भरिया जाजम रै पाखती धरिया। लोटा भला भर कचोळा हाथां में लीया। तद सूरेजी कह्यौ—पहलां फकीर साहिब नूं देवणौ। तौ खवास पाछो धिर आ कही—जे फकीर साहब लेवो। दूधाळो कसूंभो छै, आरोगो।
—सूरे खींवै री वात

२ दूध वाला।

दूधाहारी—देखो 'दूधाधारी' (रू.भे.) (मा.म.)

दूधि—देखो 'दूध' (रू.भे.) उ०—स्यांम गऊ चै दूधि समोवै। धोवै पछै गंगाजळि धोवै।—सू.प्र.

दूधियापत्थर—सं०पु० [सं० दुग्ध+प्रस्तर] एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिसके प्याले आदि बनते है।

दूधियादांत—सं०पु० (बहु व०) [सं० दुग्ध+दन्त] बच्चों के जन्म के उपरांत आने वाले दांत। उ०—खाली साची सू कांम को चलैनी। आज मा-रै दूध री लाज राखणी है। वहै भारी राखसी नरमेध जिग में होमीजतै दूधियैदांतां वाळा टाबरां, युवकां अर अबळावां री रीस्या करणी है।—वरसगांठ

रू०भे०—दूदियादांत।

दूधियो—सं०पु० [सं० दुग्ध+रा०प्र०इयो] १ एक प्रकार का सफेद बढ़िया चिकना और चमकीला पत्थर जिसकी गिनती रत्नों में होती है. २ एक प्रकार का सफेद घटिया मुलायम पत्थर जिसकी प्यालियां आदि बनाई जाती हैं. ३ हल्की सफेदी करने का कार्य. ४ लकड़ी का कोयला. ५ लौकी. ६ एक जंगली फल.
७ देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)

वि०—१ जिसके बनाने में दूध की मिलावट हो, दूध का, दूध सम्बन्धी. २ दूध के रंग का, श्वेत।

रू०भे०—दूदियो।

दूधी—सं०स्त्री० [स० दुग्धिका] १ एक प्रकार का क्षुप जो छत्ते के समान भूमि पर छितरा हुआ रहता है और जिसके पत्तों या टहनियों को तोड़ने पर दूध निकलता है।

वि०वि०—यह तीन प्रकार का होता है—एक नोंकदार लाल पत्तों का, एक गोल पत्तों का और एक मूंगों के दानों के समान छोटे-छोटे पत्तों का।

२ एक प्रकार की लता विशेष। उ०—दांमिणि दोभी दूधिग्रां, देवदालि दूधेलि। दारूहळद्र दुरालभा, दह दिसि दीसइ वेलि।
—मा.कां.प्र.

रू०भे०—दुद्धी, दूदी।

अल्पा०—दुदेली, दूधेलि, दूधेली।

दूधीउ—सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
उ०—दांति दुरालभ दूधीउ, दाडिम द्राख दधूण। देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण।—मा.कां.प्र.

दूधीगिडोळियो—सं०पु०—१ लौकी (अमरत)
२ छिपकली जैसा शरीर पर धारी वाला मुलायम चमकदार कीड़ा। (शेखावाटी)

दूधेलि, दूधेली—सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की लता विशेप।
उ०—दांमिणि दोभी दूधिग्रां, देवदालि दूधेलि। दारूहळद्र दुरालभा, दह दिसि दीसइ वेलि।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'दूधी' (अल्पा., रू.भे.)

दूधौ—देखो 'दूध' (मह., रू भे.)
उ०—बाळौ गोदी दूधौ चूंगै, दूध चुंगावत बोली यूं। धोळै पय पर कायरता रो, काळौ दाग म लायै तूं।—लो.गी.

दूनौ—सं०पु० [सं० द्रोण] पत्तों का बना कटोरेनुमा पात्र जिसमें भोज्य पदार्थ रख कर खाये जाते हैं।

रू०भे०—दोनौ, दोनौं, दोनौ।

दून्यां–वि० [सं० द्वि] १ दोनों। उ०—महा निसि कहतां अरध राति के विखै सब कोई सोयै छै। वांका मन परमेस्वर सौं लागा छै। यांका मन रति सौं लागा छै। ये दून्यां जागै छै।—वेलि.टी.

२ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

दूपराणौ, दूपरावौ–क्रि०अ० [देश०] रुदन करना, रोना।

दूपराणहार, हारौ (हारी), दूपराणियौ—वि०।

दूपरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दूपराईजणौ, दूपराईजबौ—भाव वा०।

दूपरायोड़ौ–भू०का०कृ०—रुदन किया हुआ, रोया हुआ।

(स्त्री० दूपरायोड़ी)

दूपरी–सं०स्त्री० [देश०] रुदन, रोना, विलाप। उ०—नै एकण गुढ़ा मांहे एकण रै टावर मुवौ थौ, तिणसूं दूपरी करती थी, नै एकण रै जायौ हुवौ छौ, सो गीत गावती थी।—जगदेव पँवार री वात

दूव—देखो 'दोव' (रू.भे., डि.को.)

उ०—हरियौ हरियौ कांई करौ अे, हरी ए वन में तौ दूव। हरियौ सूरज जी रौ घोड़लौ, हरी वहू रैणां दे री कूख।—लो.गी.

दूवक—देखो 'दवक' (रू.भे.)

दूवड़—देखो 'दोव' (मह., रू.भे.)

दूवड़ी—देखो 'दोव' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—मास दोय रा हुता और डूंगर में आग लागी। वनस्पती, कंदमूळ, घास व फळ फूल सह वळिया, नीली पाली न रही। सूरज कुंड रै आसपास दूवड़ी रही जे चीलहरां नूं चरावै। डाढाळो नैं भूंडण वडा दिन कसालो काढै।—डाढाळा सूर री वात

दूवळउ—देखो 'दुरवळ' (रू.भे.) (उ.र.)

दूवळती—देखो 'दोव' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—थारी तौ घाली गोरी रा साहिवा, धोरां दूवळती हो जासूं म्हारा राज।—लो.गी.

दूवळौ–वि० [सं० दुर्वल] १ भूखा, निर्धन, कंगाल। उ०—अमराव मुजरै नूं आवै, त्यांनै कस्तूरी कपूर री चोळी कर निपट मुंहगै मोल रौ बीड़ौ देय इतर में गरकाव रहै। हमेसां गोठां हुवै। दूबळा लोग जिका आवै धाप धाप जावै।—जलाल बूबना री वात

२ देखो 'दुरवळ' (रू.भे.) (डि.को.)

(स्त्री० दूवळी)

दूवारौ–सं०पु० [सं० द्वि+वार] १ दूसरी वार उलट कर निकाली जाने वाली शराव, तेज शराव. २ दूसरी वार।

रू०भे०—दोवारौ।

दूवी–सं०स्त्री०—दो मुंह का सांप।

दूभ—देखो 'दोव' (रू.भे.)

दूभड़ी—देखो 'दोव' (अल्पा., रू.भे.)

दूभर–वि० [सं० दुर्भर] १ दुख-पूर्ण, आपत्तिजनक।

उ०—'वाला' 'अलाई' वोलिया, परगह सहत प्रचंड। दूभर विरियां सांम छळ, भुज थंभां ग्रहमंड।—रा.रू.

२ जो सहन न किया जा सके, दुःसह्य। उ०—जळथळ थळजळ हुइ रह्यउ, वोलइ मोर किंगार। स्रावण दूभर हे सखी! किहां मुझ प्रांण अधार।—ढो.मा.

३ कष्ट से काटा जाय ऐसा समय, कठिन, मुश्किल।

उ०—पंखी झूलै रै पींजरै, वारै अग विहरै। अव तौ बंदियां घरै, दूभर दिवस भरै।—अज्ञात

४ जिसका पार करना कठिन हो, दुस्तर। उ०—पार नहीं पाइये रे, रांम विना को निरवाहणहार। तुम विन तारण को नहीं, दूभर यह संसार। पैरत थाके केसवा, सूझै वार न पार।—दादू वांणी

सं०स्त्री०—वह मादा ऊंट जिसके गर्भ न हो।

रू०भे०—दुभर, दुम्भर।

दूमणउ—देखो 'दुमनौ' (रू.भे.) उ०—१ ढोला आंमण दूमणउ, नख तो खूंदइ भींति। हम घी कुण छइ आगळी, वसी तुहारइ चीति।

—ढो.मा.

दूमणौ—देखो 'दुमनौ' (रू.भे.) उ०—१ माळवणी मनि दूमणौ, आवी वरग विमासि। रइवारी पूछी करी, आई करहा पासि।—ढो.मा.

उ०—२ थां सो सायव खीण, दूमणौ गिळवा खातौ। उमगै अंवक नीर, निसासां कांम घुळातौ।—मेघ.

उ०—३ रावइ कहइ सुणी! राजकुमारि। दुमनी काई हीयडइ वर नारि।—वी.दे.

दूमणौ, दूमबौ–क्रि०स०—वलिदान किये हुए वकरे के सिर व पैरों को आग में झुलसाना जिससे उसके वाल जल कर दूर हो जांय।

रू०भे०—दुवणौ, दुववौ, दूवणौ, दूववौ।

दूमला–सं०पु०—आठ सगण का छंद विशेष।

दूय—देखो 'दूत' (रू.भे.) उ०—विनय किसिउ, सरव जनांनुकूळ, धरम तणउ मूळ, कल्यांणवल्लीकंद, अम्रित नु निस्यंद, सुगति नउ दूय, उपसमनउ कूय।—व.स.

दूयभावि–सं०पु० [सं० दूत+भावेन] दूत भाव। उ०—दूयभावि दूयभावि गयउ गोवाळु।—पं.पं.च.

दूरंतर—देखो 'दुरंतर' (रू.भे.)

दूरंतरी–क्रि०वि० [सं० दूर+अंतर] दूर ही से। उ०—दूरंतरी आवतउ देखि ब्राह्मण का पगां वंदना कीधी।—वेलि. टी.

दूरंदाज–वि० [सं० दूर+फा० अंदाज] १ दूर से निशाना लगाने वाला. २ दूरदर्शी।

रू०भे०—दूरंदाजी।

दूरंदाजी–सं०स्त्री० [सं० दूर+फा० अंदाज+रा०प्र०ई] १ दूर से निशाना लगाने की क्रिया. २ देखो 'दूरंदाज' (रू.भे.)

दूरंदेस–वि०—देखो 'दूरअंदेस' (रू.भे.)

दूरंदेसी–वि० [सं० दूर+देश+रा०प्र०ई] १ दूर देश का, विदेशी।

२ देखो 'दूर-अंदेसी' (रू.भे.)

दूर–क्रि०वि० [सं०, फा०] देश, काल, परिस्थिति या सम्बन्ध आदि के विचार से बहुत अंतर, बहुत फासले पर, समीप या पास का उलटा।

उ०—१ सूंमपणौ पातक छटौ, अपजस तर आंकूर। कारण इण 'बीकम' 'करण' इण सूं रहिया दूर।—वां.दा.

उ०—२ कांम सूंप कीनौ नहीं, दोस बिनां कोइ दूर। कियौ गुनौ तोइ माफ किय, हा जसवंत हजूर।—ऊ.का.

मुहा०—१ अजै दिल्ली दूर है—अभीष्ट स्थान से दूर होना, किसी कार्य के सम्पन्न होने में समय लगना. २ दूर करणौ—पृथक करना, अलग करना, पास से हटाना; मिटा देना. ३ दूर भागणौ—घृणा या तिरस्कार के कारण पास न रहना, बहुत बचना. ४ दूर रा ढोल सुहावणा लागणा—दूर के ढोल सुहावने लगना, कोई वस्तु दूर से तो अच्छी लगती है पास जाने पर उसकी असलियत खुल जाती है. ५ दूर री कैंणी—बहुत बुद्धिमानी और दूरदर्शिता की बात कहना. ६ दूर री बात—दुर्गम बात, कठिन, दुसाध्य, भविष्य की बात. ७ दूर री सूझणी—बहुत बारीक बात सोचना। भविष्य की बात सोचना. ८ दूर रैंणौ—देखो 'दूर भागणौ'।
९ दूर सूं इज सिलांम करणी—भय के कारण दूर रहना। घृणा या तिरस्कार के कारण दूर रहना. १० दूर होणौ—अलग होना, पृथक होना, हट जाना। मोह एवं ममत्व को छोड देना।

वि०—जो दूर हो, जो फासले पर हो। ज्यूं—दूर गांवां में करसां री दसा ठीक नी है।

दूरअंदेस–वि० [फा० दूर-अन्देश] बहुत दूर तक की बात सोचने वाला, अग्रसोची, दूरदर्शी। उ०—मसलत करणी योग्य छै तो चाहीजै के सलाह हिम्मत धारणी अर परख रा धणी नै दूरअंदेस, बूढ़ा, कांमां रै अंत रा देखणं वाळां सूं पूछै।—नी.प्र.

दूरअंदेसी–सं०स्त्री० [फा० दूरअंदेशी] दूर की बात सोचने का गुण, दूरदर्शिता। उ०—सो इण रा उमरावां मुलाहिजौ अंत कांम रौ कर दूरअदेसी कर कागद आपरै वादसाह रै वैरी नूं लिखियौ।—नी.प्र.

दूर-तेरी–सं०पु० [सं० दूर+तारी] केवट (अ.मा.)

दूर-दरसक–वि० [सं० दूर दर्शक] दूर तक देखने वाला।

दूर-दरसिता, दूर-दरसिताई–सं०स्त्री० [सं० दूरदर्शिता] दूर की सोचने का गुण। दूर-अदेशी।

दूर-दरसी–वि० [सं० दूरदर्शी] जो पहिले ही भला बुरा परिणाम समझ ले, दूर की सोचने वाला। अग्र-सोची।

दूर-द्रस्टी–सं०स्त्री० [सं० दूर-दृष्टि] दूरदर्शिता, भविष्य का विचार।

दूर-पलो–सं०पु० [सं० दूर+रा०पलौ] दूरी का छोर, बहुत दूर तक की सीमा।

दूर-नैंण–सं०पु०यौ० [सं० दूर+नयन] गिद्ध (डि.को.)

दूरबा—देखो 'दोब' (रू.भे.) (डि.को.)।

दूर-बीण, दूर-वीण, दूर-वीणी–सं०स्त्री० [फा० दूरबीन] एक प्रकार का यंत्र विशेष जिससे दूर के पदार्थ समीप स्पष्ट और बड़े दिखाई देते हैं। दूरदर्शक यंत्र। उ०—१ चख रहै दूरवीणी चढी दिस दिस निजरां देण नै।—अरजुणजी वारहठ.

उ०—२ कवर रै साथ रतनां री निजर इण भांत जावै है, भागीरथ लार गंगा-धार होय इसी ओपमा पावै है, वळै कितरीक दूर तांई दूरवीणी लगाई सारां सूं वधती सनेह री सगाई।—र. हमीर

दूर-भावी–वि० [सं०] भविष्य में होने वाला। उ०—बारद्धक मैं विसेस जिवावणहार आपरा प्रारब्ध री गरहणा करि वंवावदा रै वारै ही जोगणि नांम देवी नूं मस्तक चढ़ाइ अभीस्ट लोक पूगौ सो उदंत अठै दूर-भावी जांणीजै।—वं.भा.

दूरस—देखो 'दुरस' (रू.भे.)

उ०—तद सांगैजी कयौ कै नरूके करमचंद दसावत नूं मारियां विना देस जमीं नहीं। तद यां आपरौ साच देय कयौ कै दूरस है, कीजै कूच।—द.दा

दूरा–वि० [सं० अर्द्ध+पूरा=अधूरा] १ कम, थोड़ा। उ०—पण सैं थोड़ै में हारियौ। वीसळदे तो म्हारा रुपिया लाख खर्चै तो दूरा।—नैणसी २ अपूर्ण।

दूरा-पाती–वि० [सं० दूर+रा०प्र०आ; सं० पात्+रा०प्र०ई] दूर से प्रहार करने वाला। दूर से मारने वाला। उ०—राज पुत्र तेहे घोड़े किस्या चडचा ? दूरापाती लघु संधांनी द्रढ़-प्रहारी सब्द-वेधी।—व.स.

दूरि—१ देखो 'दूर' (रू.भे.)

उ०—सांई एहा भीचड़ा, मोलि महुंगै वासि। ज्यां आछन्ना दूरि भौ, दूरी थकां भी पासि।—हा.झा.

२ देखो 'दूरी' (रू.भे.)

उ०—कोई दूरि तांई जाटवांनै भी भजायां।—शि.व.

दूरिट्ठ–वि० [सं० दूर+स्थः] दूर रहने वाला, दूरस्थ। उ०—पुगळि पिंगळ राऊ, नळ राजा नरवरे नयरे। अदिठा दूरिट्ठा ये, सगाई दईय संजोगे।—ढो.मा.

दूरितार-वीर–सं०पु० [सं०] बावन वीरों में से एक वीर का नाम।

दूरि-पार-वीर–सं०पु० [सं०] बावन वीरों में से एक वीर का नाम।

दूरी–सं०स्त्री० [सं० दूर+रा०प्र०ई] दो पदार्थों, स्थानों आदि के मध्य की लंबाई या स्थान, अंतर, फासला।

रू०भे०—दूरि।

दूरंतर–क्रि०वि० [सं० दूर+अंतर] दूर से, फासले पर।

उ०—उरस तणं मग आविया, दळ बाहर दौड़ा। दूरंतर से देखिया, चंचळ चरतोड़ा।—वी.मा.

दूरे-अमित्र–सं०पु० [सं०] उनचास मरुतों में एक मरुत का नाम।

दूरौ—देखो 'दूर' (रू.भे.) उ०—पुरसारथ पूरण प्रेम प्रतिग्या पूरौ। दुर व्यसन दुराग्रह दूसण सूद्रढ़ दूरौ।—ऊ.का.

दूलह, दूलौ—देखो 'दूल्हौ' (रू.भे.) उ०—यौं सिर मौड़ रतन मय ओपै, ऊपरि आतपत्र आरोपै। दूलह सिर सिर राज दुलारी, करै चमर कन्या कौमारी।—रा.रू.

दूलहण, दूलहणी दूल्ही—देखो 'दुलहण' (रू.भे.) उ०—दूल्ही हाडी वाळा ही हती पण सयांणी थी सो धीरज धरि विनय करि कुंवरजी नूं कही।—राजसिंह कूंपावत री वारता

दूल्हौ-सं०पु० [सं० दुर्लभ, प्रा० दुल्लह] (स्त्री० दूल्ही) १ वह युवक जिसका हाल ही में विवाह हुआ हो अथवा होने वाला हो।

उ०—कियउ प्रगट प्रभु रूप कहंतां। वदता जे पहिली वाखांण। आयउ बोल तियां रउ ऊपर। दूल्हउ जिम आयउ दीवांण।
—महादेव पारवती री वेलि

रू०भे०—दुलह, दुलहौ, दुल्हौ, दूलह, दूलौ।

दूवणौ, दूवबौ-क्रि०स० [सं० दोहनम्] १ गाय, भैंस, बकरी आदि का दूध निकालना। उ०—रोवता टाबरियां नै छोड, आई दूवण नै घर बार। घणै री हूंगी गोयर भीड़, सुणीजै मीठी दूधां धार।—सांझ

२ सार निकालना. ३ देखो 'दूमणौ, दूमबौ' (रू.भे.)

दूवणहार, हारौ (हारी), दूवणियौ—वि०।

दूवाड़णौ, दूवाड़बौ, दूवाणौ, दूवाबौ, दूवावणौ, दूवावबौ—प्रे०रू०।

दूविप्रोड़ौ, दूवियोड़ौ, दूच्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दूवीजणौ, दूवीजबौ—कर्म वा०।

दुहणौ, दुहबौ, दू'णौ, दू'बौ, दूहणौ, दूहबौ, दो'णौ, दो'बौ, दोवणौ, दोवबौ, दोहणौ, दोहबौ—रू०भे०।

दूवाग्री, दूवायी—१ देखो 'दूवारी' (१, २) (रू.भे.)

२ देखो 'दुहाई' (रू.भे.) उ०—लीनो क्यूं ना रे ग्वाळा बोरां, करणी माता रो नाव। दूवाग्री तो तै कढ़ाधो क्यूं ना रे पाबूजी राठौड़ री।—लो.गी.

३ देखो 'दवा' (१, २) (रू.भे.)

दूवारी-सं०स्त्री० [सं० दुग्ध+रा० प्र० आरी] १ दूध निकालने का काम।

क्रि०प्र०—करणी।

२ दूध निकालने के बदले में दिया जाने वाला धन, दूध निकालने की मजदूरी. ३ दूध निकालने वाली स्त्री।

रू०भे०—दुग्राई, दुग्रारी, दुवाई, दुवायी, दुवारी, दुहाई, दुहारी, दूवाग्री, दूवायी, दोवाई, दोवारी, दोहाई, दोहारी।

दूवियोड़ी—भू०का०कृ०—दूध निकाली हुई।

दूवियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दूध निकाला हुआ. २ सार निकाला हुआ। (स्त्री० दूवियोड़ी)

दूवौ-सं०पु० [अ० दुग्रा] १ आज्ञा, हुक्म।

उ०—१ हित पत धरम कंद वस हूवौ। दियौ साह पूछण कौ दूवौ। रिध निप ग्रह चो भरम रहायौ। पियौ जहर कर प्रांण परायौ।
—रा.रू.

उ०—२ देवाधिदेव चै लावै दूवै, वाचण लागो ब्राह्मण। विधि पूरवक कहै वीनवियौ, सरण तूझ असरण सरण।—वेलि.

२ प्रारब्ध, भाग्य।

३ देखो 'दुग्रौ' (रू.भे.) ४ देखो 'दूजौ' (रू.भे.)

५ देखो 'दूहौ' (रू.भे.)

रू०भे०—दुवौ, दूग्रौ।

दूव्य—१ देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.) उ०—१ कंचण कुंडळ हार दोर, मणि मउड सिंगारी। पंच कुमर पूठहि गयंदि दूव्य बयसारी।
—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ धन्न सु कुंतिय मायडिय, जसु इसा कुमारा। धनु धनु दूव्य तउं जि पर, जसु इसा भतारा।—प्राचीन फागु-संग्रह

दूस-सं०पु० [सं० दूष्य] १ कपड़ा, वस्त्र. २ छत्तीस प्रकार के दण्डा-युद्धों में से एक (व.स.)

दूसण-सं०पु० [सं० दूषण] १ दोष, कलंक। उ०—१ दूसण दीधै दुर-जणै, आंपै कवित असल्ल। लूग्र भळक्कै लागतै, आंवै स्वाद अवल्ल।
—ध.व.ग्रं.

उ०—२ कुरांन में कहै है—मुसळमांन री त्रिया विधवा हुआं पछै मन में आवै तो च्यार महीना दसां दिनां पछै अन्य पुरस सूं निका करै, दूसण नहीं।—वां.दा.ख्यात

२ ऐब, अवगुण। उ०—आप में दूसण हुवै सो दूसण और में काढ़ियां वंदो निरदूसण हुवै नहीं।—वां.दा.ख्यात

३ बुराई। उ०—पहिलै वधावै जिणवर देव जुहारचा, सफळौ हो सफळौ जन्म हुवौ सही। वीजै वधावै समकित रतन सु लाधौ, दिल में हो संकादिक दूसण नहीं जो।—ध.व.ग्रं.

४ दोष लगाने की क्रिया या भाव. ५ एक राक्षस का नाम जो रावण का भाई था और पंचवटी में सूर्पणखां की नाक कटने पर राम से युद्ध करता हुआ मारा गया।

रू०भे०—दुखर, दूखर।

६ जैनियों के सामयिक व्रत में ३२ त्याज्य बातों या अवगुणों का नाम जिनमें से १२ कायिक, १० वाचिक और १० मानसिक हैं।

रू०भे०—दुखण, दुसण, दूखण, दोखण, दोसण।

दूसणारि-सं०पु० [सं० दूषणारि] 'दूषण' को मारने वाले श्री रामचंद्र।

दूसमि-सं०पु०—देखो 'दुखम' (रू.भे.)

उ०—पांचमइ दूसमि वरतो आंण, वरिस सहस ते एकवीस जांणि। सात हाथ देह सुकुमाल सय, वरिस माहि पहचइ काल।
—चिहुंगति चउपई

दूसय-सं०पु० [सं० दूष्यम्] डेरा, खेमा, शामियाना, तंबू (डि.को.)

दूसर, दूसरौ-वि० [सं० द्वितीय] (स्त्री० दूसरी) १ जो क्रम में दो के स्थान पर हो, एक के बाद का, द्वितीय।

उ०—दादू देखु दयाळु को, बाहर भीतर सोइ। सब दिसि देखूं पीय को, दूसर नांहीं कोइ।—दादू बांणी

२ पूर्वजों के समान गुणों वाला। उ०—दिखण वाकौ हुवै सुणै दिल्लीस रो, हुवो हरवळ तिकण दीह 'मुकना' हरो। जवन दळ ठेलिया घिनो दिन आज रो, दुरग पधराविया 'मालदे' दूसरो।

३ गैर, अन्य। —तेजसी खिड़ियौ

दूसार—१ देखो 'दुसार' (रू.भे.) २ ...।

उ०—मदनातुर मेरो मरण, दुसतर ग्रखा दूसार। कर ऊंचो कर कहत है, हर हर सरजणहार।—बगसीरांम प्रोहित री वात

दूसारो—देखो 'दुसार' (ग्रल्पा., रू.भे.)

दूसासण—देखो 'दुसासण' (रू.भे.)

दूसित–वि० [सं० दूषित] १ ग्रभिशप्त (डिं.को.)

२ दोषयुक्त, खराब, बुरा।

दूसीविस–सं०पु० [सं० दूषी-विष] विषैले पदार्थ के खाने या सर्पादि के काटने के कारण शरीर में प्रविष्ट होने वाला वह विष जो कई दिनों के बाद विकार पैदा करे (ग्रमरत)

दूहउ—देखो 'दूहो' (रू.भे.) उ०—भाऊ भाट तणी मनि वात, ढोला-तणी वसी मनि घात। मांगणहारउ दूहउ कहियउ, तिणि ढोलइ दूहइ चिति रह्यउ।—ढो.मा.

दूहड़ो—देखो 'दूहो' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—१ लिख लिख वाचै लोक, कै सीखै चरचै किता। सुणो हरण मन सोक, दातारां जस दूहड़ा।
—बां.दा.

उ०—२ बीस कहिया दूहड़ा, मारू रूप विचार। ऊतर मुहर पसाउ करि, दीनी साल्ह कुमार।—ढो.मा.

दूहणो, दूहबो—१ देखो 'दूमणो दूमबो' (रू.भे.)

उ०—सीरी होसनाक सुधारै छै। दूयजै छै।—रा.सा.सं.

२ देखो 'दूवणो, दूवबो' (रू.भे.) उ०—पीसण खांडण प्रसिध वळै, गो दूहि दिलोवै। जीमण संधि जिमाव लाज सुं जिमै लुकोवै।
—घ.व.ग्रं.

३ देखो 'दुहवणो, दुहवबो' (रू.भे.)

दूहणहार, हारो (हारी) दूहणियो—वि०।

दूहिग्रोड़ो, दूहियोड़ो, दूह्योड़ो—भू०का०कृ०।

दूहीजणो, दूहीजबो—कर्म वा०।

दोवणो, दोवबो—रू०भे०।

दूहवणो, दूहवबो—देखो 'दुहवणो, दुहवबो' (रू.भे.)

उ०—१ नेसालिया ते देखी मूरख मूरख चट्ट कहंति। तिम तिम ते मनि दूहवीइ ग्रंतराय फल हूंति।—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ इंद्र पूछीया तरइ ब्रह्मादिक, मेछ कीयइ रइ हाथ मरइ। देव ग्रनइ महांत दूहवइ, तिण कहर सुरांपति खेद करइ।
—महादेव पारवती री वेलि

दूहवियोड़ो—देखो 'दुहवियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दूहवियोड़ी)

दूहेलो—१ देखो 'दुहेलो' (रू.भे.)

२ देखो 'दोहिलो' (रू.भे.)

३ देखो 'दोहेलो' (रू.भे.)

दूहो–सं०पु० [सं० दोघक ?] १ राजस्थानी का एक विख्यात छंद जिसके चार चरण होते हैं किन्तु प्राय: दो पंक्तियों में लिखा जाता है। प्रथम ग्रौर तृतीय चरण में १३-१३ मात्राएं तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में ११-११ मात्राएं होती हैं। द्वितीय ग्रौर चतुर्थ चरण का तुकान्त मिलाया जाता है जो लघु होता है।

वि०वि०—यह ग्रपभ्रंश काल का प्रमुख छंद माना जाता है तथा इसको उलटने से सोरठा बन जाता है।

२ देखो 'द्वालो' (रू.भे.) उ०—छोटा वडा सांगोर री, नेम नहीं नहचैण। निमंधे त्रिण दूहा निपट, तवै पंखाळो तेण।—र.ज.प्र.

रू०भे०—दुहो, दूग्रो, दूवो, दूहउ, दोहो।

ग्रल्पा०—दुहड़ो, दुहड़उ, दूहड़ो, दोहलो।

दे–सं०पु० [सं० देव] १ हिंदुग्रों के ग्रन्थ विशेष का नाम, पुराण।

सं०स्त्री० [सं० देवी] २ शिवा, भवानी. ३ एक प्रकार की चिड़िया जिसके शकुन लिए जाते हैं ४ स्त्री (एका.)

ग्रव्य०—१ स्त्री वाची नामों के ग्रगाड़ी लगने वाला शब्द जो सम्मान-सूचक माना जाता है। ज्यूं०—मालण दे, रूपा दे, रांणा दे।

२ वाद पूरक ग्रव्यय शब्द। उ०—दवदंती नै कहणो मेल्हिउ जीवत दांन दीघउ दे।—नळ-दवदंती रास

३ से। उ०—इतरै में कुंवरसी ग्रापरै साथ में जाय भड़ोक दे घोड़ै रै ऊपर सवार हुवो।—कुंवरसी सांखला री वारता

[सं० देव] ४ देखो 'देव' (रू.भे.) उ०—तिणि नयरि जैसिंघ दे—राउ नवउ खणावइ तिहां तळाव।—विद्याविलास पवाडउ

देग्रणो–वि० [सं० दा] देने वाला। उ०—देग्रणो मांन पात्रां वडादांन मेर।—ल.पिं.

देग्रणो, देग्रबो—देखो 'दंणो, दंबो' (रू.भे.)

देग्ररांणी—देखो 'देरांणी' (रू.भे.) उ०—जेठ नीचउ देखइ, वर पुण लडइ देवर नडइ, जेठांणी कुसइ, देग्ररांणी हसइ।—व.स.

देई—१ देखो 'दई' (रू.भे.) उ०—सुरभी कासारां लारै सुख लेगी। देई बिलोई दोई दुख देगी।—ऊ.का.

२ देखो 'देवी' (रू.भे.)

देउ—१ देखो 'देव' (रू.भे.) उ०—नकुल ग्रनइ सहदेवु भडो, जुग्रळइं जाया वेउ। प्रभु चंद्रप्रभु थापीयउ, नासिकि कूंतो देउ।—पं.पं.च.

२ देखो 'देवी' (रू.भे.)

देउर—देखो 'देवर' (रू.भे.) उ०—रमिझिमि रणकइं नेउर, देउर सिउं करइं ग्रालि। नेमिकुमर नवि भीजइ ए, कीजइ ए ते सहू ग्रालि।—प्राचीन फागु संग्रह

देउरांणी, देउरानी—देखो 'देरांणी' (रू.भे.)

देउल, देउलि—१ देखो 'देवळ' (रू.भे.)

उ०—१ देउल देव जोया सवि फिरी, नगर लोक दीठां कुंयरी। गढ़ ऊपरि कुंयरि तिणि काळि, करइ सनांन कुंडि जावळि।—कां.दे.प्र.

उ०—२ सोवन वीटी रयणे जडी, मुझ नाचंतां देउलि पडी। प्रीति-वचन प्रांमी मनमांहि, महुतउ पाछउ वळिउ उछाहि।
—विद्याविलास पवाडउ

देख–सं०स्त्री०—देखने की क्रिया या भाव, ग्रवलोकन।

रू०भे०—देखणी ।
यौ०—देख-रेख, देख-भाळ ।

देखण-सं०स्त्री० [सं० दृश्] आंख, नयन (अ.मा, ह.नां.)

देखणी—देखो 'देख' (रू.भे.)
मुहा०—देखणी में—ध्यान में, नजर में ।

देखणौ-सं०पु० [सं० दृश्] दृष्टि डालने की क्रिया या भाव, अवलोकन ।
उ०—वखतसिंहजी नागौर सूं टीका रा हाथी घोड़ा कपड़े रा थांन लेय घाय नूं मेल्ही सो धाय जोधपुर आई, आय भीतर नूं देखणौ करायो ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

देखणौ, देखबौ—क्रि०स० [सं० दृश्] १ नेत्रों द्वारा किसी वस्तु के अस्तित्व वा उसके रूप रंग आदि का ज्ञान प्राप्त करना, अवलोकन करना ।
उ०—वात सुणि पाछउ वळइ, जां नवि देखइ गंग । चउवीसं (वासं) रहइ जीमु रहहीणु (अणंगु) ।—पं.पं.च.
मुहा०—१ देखण में—ध्यान में, नजर में. २ देखणौ जैड़ो वरतणौ—देखना जैसा वर्ताव करना, देशकालानुसार काम करना चाहिए. ३ देखणौ सो भूलणौ नहीं—जो देखा जाय उसे भूलना नहीं चाहिए । संसार के दृश्यों को देखना चाहिए और उन्हें देख कर याद रखना चाहिए. ४ देखतां देखतां—आंखों के सामने, तुरंत, उसी समय. ५ देखतौ रै' जाणौ—आश्चर्यान्वित होना.
६ देखांणी – देखते हैं, प्रतीक्षा करते हैं ।
ज्यूं—देखांणी हमैं कांई हुवै ।
७ देखी जाणी—भविष्य में विचार किया जाना. ८ देखैं न भूसैं—जहां परस्पर देखते ही झगड़ा होता हो वहां से दूर रहना चाहिए ।
९ देखो—सावधान हो जाओ, सचेत हो जाओ ।
२ निरीक्षण करना, मुआयना करना. ३ परीक्षा करना, जांच करना. ४ तलाश करना, ढूंढ़ना. ५ किसी वस्तु पर ध्यान रखना, निगरानी रखना. ६ समझना, विचारना, सोचना. ७ पढ़ना, बांचना. ८ आजमाना, अनुभव करना. ९ प्रतीत करना, भोगना. १० शुद्ध करना, संशोधित करना, शोधना ।
ज्यूं—प्रूफ देखणा ।
देखणहार, हारो (हारी), देखणियो—वि० ।
दिखवाड़णौ, दिखवाड़बौ, दिखवाणौ, दिखवाबौ, दिखवावणौ, दिखवावबौ, देठाड़णौ, देठाड़बौ, देठाणौ, देठावौ, देठाळणौ, देठाळबौ ।
—प्रे०रू०.
देखिओड़ो, देखियोड़ो, देख्योड़ो—भू०का०कृ० ।
देखीजणौ, देखीजबौ—कर्म वा० ।
दीखणौ, दीखबौ—अक०रू० ।
द्रस्टणौ, द्रस्टबौ—रू०भे० ।

देखभाळ-सं०स्त्री०—१ निगरानी, जांच-पड़ताल ।
क्रि०प्र०—राखणी ।
२ साक्षात्कार, दर्शन ।
क्रि०प्र०—करणी ।
रू०भे०—देखाभाळी ।

देखरेख-सं०स्त्री०—निगरानी, निरीक्षण, देखभाल ।
क्रि०प्र०—करणी ।

देखाई-सं०स्त्री०—१ दिखाने की क्रिया या भाव. २ दिखलाने के बदले में दिया जाने वाला धन, दिखलाने की मजदूरी ।
रू०भे०—दिखलाई, दिखाई ।

देखाऊ-सं०पु०—१ घोड़ों की जाति या इस जाति का घोड़ा (शा.दे.प्र.)
देखो 'दिखाऊ' (रू.भे.)

देखाओ—देखो 'दिखावो' (रू.भे.)

देखाड़णौ, देखाड़बौ—देखो 'देखाणौ, देखाबौ' (रू.भे.)
उ०—राजकुमारी मांगा नहि, नहि तुमस्यूं दिल खोटो रे । नाक नमणि हम सुं करी, देखाड़ो चित्रकोटो रे ।—प.च.च.
देखाड़णहार, हारो (हारी), देखाडणियो—वि० ।
देखाड़िओड़ो, देखाड़ियोड़ो, देखाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
देखाड़ीजणौ, देखाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
दीखणौ, दीखबौ—अक०रू० ।

देखाड़ियोड़ो—देखो 'देखायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० देखाड़ियोड़ी)

देखाणौ, देखाबौ—क्रि०स० [सं० दृश्] १ अवलोकन कराना, दिखाना.
२ निरीक्षण कराना, मुआयना कराना, ३ परीक्षा कराना, जांच कराना. ४ तलाश कराना, ढूंढ़ाना. ५ किसी वस्तु पर ध्यान रखाना, निगरानी कराना. ६ समझाना, सोचाना. ७ पढ़ाना. ८ आजमाइश कराना. ९ प्रतीत कराना, भोगाना. १० शुद्ध कराना, संशोधित कराना ।
देखाणहार, हारो (हारी), देखाणियो —वि० ।
देखायोड़ो—भू०का०कृ० ।
देखाईजणौ, देखाईजबौ—कर्म वा० ।
दीखणौ, दीखबौ—अक०रू० ।
दिखलाड़णौ, दिखलाड़बौ, दिखलाणौ, दिखलाबौ, दिखलावणौ, दिखलावबौ, दिखाड़णौ, दिखाड़बौ, दिखाणौ, दिखाबौ, दिखाळणौ, दिखाळबौ, दिखावणौ, दिखावबौ, देखाड़णौ, देखाड़बौ, देखाणौ, देखाबौ, देखावणौ, देखावबौ, द्रस्टाड़णौ, द्रस्टाड़बौ, द्रस्टाणौ, द्रस्टावौ, द्रस्टावणौ, द्रस्टावबौ ।—रू०भे०

देखादेख, देखादेखी-सं०स्त्री० [सं० दृश्] अनुकरण करने की क्रिया या भाव । उ०—देखादेखी सब चलै, पार न पहुंच्या जाइ । दादू आसन पहल के, फिर फिर बैठे आइ ।—दादू बांणी
क्रि०प्र०—करणी ।

देखाभाळी—देखो 'देखभाळ' (रू.भे.)

देखायोड़ो-भू०का०कृ०—१ अवलोकन कराया हुआ, दिखाया हुआ.
२ निरीक्षण कराया हुआ, मुआयना कराया हुआ. ३ परीक्षा कराया हुआ, जांच कराया हुआ. ४ तलाश कराया हुआ, ढूंढ़ाया हुआ.
५ किसी वस्तु पर ध्यान रखाया हुआ, निगरानी कराया हुआ.

६ समझाया हुआ, सोचाया हुआ. ७ पढ़ाया हुआ. ८ आजमाइश कराया हुआ. ९ प्रतीत कराया हुआ, भोगाया हुआ. १० शुद्ध कराया हुआ. संशोधित कराया हुआ।

(स्त्री० देखायोड़ी)

देखाळणौ, देखाळबौ—देखो 'देखाणौ, देखाबौ' (रू.भे.)

उ०—आकासि वैस्वानर प्रज्वाळइ, पाताळकन्या प्रत्यक्ष देखाळइ। —व स.

देखाळणहार, हारौ (हारी), देखाळणियौ—वि०।

देखाळिओड़ौ, देखाळियोड़ौ, देखाळचोड़ौ—भू०का०कृ०।

देखाळीजणौ, देखाळीजबौ—कर्म वा०।

दीखणौ, दीखबौ—अक०रू०।

देखाळियोड़ौ—देखो 'देखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० देखाळियोडी)

देखाव—देखो 'दिखाव' (रू.भे.)

देखावट—देखो 'दिखावट' (रू.भे.)

देखावटी—देखो 'दिखावटी' (रू.भे.)

देखावणौ, देखावव—देखो 'देखाणौ, देखाबौ' (रू.भे.)

उ०—जंवाई प्यारा ! म्हांनै चितारता रहीजो। चितारता रहीजो नै भूल मत जाईजो। मनोहर थांरी मूरत देखावता रहीजो।—गी.रां.

देखावणहार, हारौ (हारी), देखावणियौ—वि०।

देखाविओड़ौ, देखावियोड़ौ, देखाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

देखावीजणौ, देखावीजबौ—कर्म वा०।

दीखणौ, दीखबौ—अक०रू०।

देखावियोड़ौ—देखो 'देखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० देखावियोड़ी)

देखावौ, देखाहौ—देखो 'दिखावौ' (रू.भे.)

देखियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ अवलोकन किया हुआ, देखा हुआ. २ निरीक्षण किया हुआ, मुआयना किया हुआ. ३ परीक्षा किया हुआ, जांच किया हुआ. ४ तलाश किया हुआ, ढूंढ़ा हुआ. ५ किसी वस्तु पर ध्यान रखा हुआ, निगरानी रखा हुआ. ६ समझा हुआ, विचारा हुआ, सोचा हुआ. ७ पढ़ा हुआ, बांचा हुआ. ८ आजमाया हुआ. ९ प्रतीत किया हुआ, भोगा हुआ. १० शुद्ध किया हुआ, संशोधित किया हुआ, शोधा हुआ।

(स्त्री० देखियोड़ी)

देग—सं०स्त्री०—देखो 'देगचौ' (मह., रू.भे.) उ०—चढ़ी देग सुर राय नैं, त्यार हुई सिधताव। पेखण राव पधारियौ, कहै भाद्रवै कड़ाव। —पा.प्र.

मुहा०—देगतेग—दातार, शूरवीर।

देगड़—१ देखो 'देगचौ' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'देगड़ौ' (मह., रू.भे.)

देगड़ियौ—देखो 'देगचौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'देगड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

देगड़ी—सं०स्त्री०—१ देखो 'देगड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'देगचौ' (अल्पा., रू.भे.)

देगड़ौ—सं०पु० [फा० देग+रा०प्र०ड़ौ] १ पानी रखने का पात्र जो प्रायः पीतल का बना हुआ होता है।

२ देखो 'देगचौ' (रू.भे.)

रू०भे०—डेगड़ौ।

अल्पा०—डेगड़ियौ, डेगड़ी, देगड़ियौ, देगड़ी।

मह०—डेगड़, देगड़।

देगच—देखो 'देगचौ' (मह., रू.भे.)

देगचियौ—देखो 'देगचौ' (अल्पा., रू.भे.)

देगची—सं०स्त्री०—देखो 'देगचौ' (अल्पा., रू.भे.)

देगचौ—सं०पु० [फा० देगचः+रा०प्र०औ] चौड़े मुंह और चौड़े पेट का बड़ा बरतन जिसमें खाद्य सामग्री पकाई जाती है।

उ०—१ मांस रंधांणा देगचां बेसवार अपारा। सूळा त्यार किया सही जाजै घ्रित झारा।—पा.प्र.

उ०—२ गोळ में कहाई कै तो पळ रा देगचा उठाइ म्हांरा आदेस रै आधीन हुवौ, मीसण वडै वेग अठै आवै।—वं.भा.

रू०भे०—डेगचौ, देगड़ौ, देवचौ।

अल्पा०—डेगचियौ, डेगची, देगड़ी देगचियौ, देगची।

मह०—डेग, डेगड़, देग, देगड़, धूंग।

देगवट—सं०पु०—आतिथ्य सत्कार। उ०—जिसड़ौ हुतौ देगवट जाहर, तेग वगां भ्रत कियौ तिसौ। भांजे खळां लूण छळ भिड़ियौ, सोधै खेत उजेणी जिसौ।—उम्मेदसिंह सीसोदिया रौ गीत

देगहत—वि०—दातार।

देज—सं०पु०—१ देना क्रिया। २ देखो 'दहेज' (रू.भे.)

यौ०—देज-लेज।

देठाळउ, देठाळौ—सं०पु० [सं० दृश्] दृष्टिगोचर होने का भाव, दिखाई देना। उ०—१ चाहंतां जादम रिण चाळौ। दुयणां तणौ हुयौ देठाळौ। असुर सरोख डाखिया आया। आगैं जादम राड़ अधाया। —रा.रू.

उ०—२ अळगी ही नैड़ी की ऊखूवतै, देठाळौ हुऔ दळां दुंह। वागां ढेरवियां वाहरुए, मारकुए फेरिया मुंह।—वेलि.

रू०भे०—दिठाळौ, दिस्टाळ, दिस्टाळौ।

देतर—देखो 'दैत्य' (मह., रू.भे.)

देतांदुयण—सं०पु० [सं० दैत्य+दुर्जन=शत्रु] ईश्वर (नां.मा.)

देदीप्यमांन—वि० [सं०] अत्यंत प्रकाश युक्त, चमकता हुआ।

देधड़ा—सं०स्त्री०—ढोलियों की एक शाखा।

देधड़ौ—सं०पु०—ढोलियों की 'देधड़ा' शाखा का व्यक्ति।

देवी—देखो 'देवी' (रू.भे.)

उ०—होज्यो देवी जीमणी, वूड मल्हाळौ वा सीय-माल। चाल्यौ राजा जाई भोवाळ।—वी.दे.

देयणहार-वि०—देने वाला ।

देर-सं०स्त्री० [फा०] १ नियमित, उचित या आवश्यक से अधिक समय, विलंब, अतिकाल ।

क्रि०प्र०—करणी, लगाणी, होणी ।

२ समय, वक्त । ज्यूं—उठै थे किती देर लगावौ ?

ज्यूं—थे उठै घणी देर करदी ।

रू०भे०—देरी ।

देरांणी-सं०स्त्री० [सं० देवर:+राज्ञी] पति के छोटे भाई (देवर) की पत्नी । उ०—अजांचक सत्रु चढ़ आया तठै देरांणी जेठांणी री वीरता देरांणी कहै है—हे बाभीसा ! अचांनक सत्रु आज हलो कर आया, आदमी घरै नहीं ।—वी.स.टी.

रू०भे०—देअरांणी, देउरांणी, देउरांनी, देवरांणी, दोरांणी, द्योरांणी ।

देराड़णौ, देराड़बौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

देराड़णहार, हारौ (हारी), देराड़णियौ—वि० ।

देराड़िओड़ौ, देराड़ियोड़ौ, देराड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

देराड़ीजणौ, देराड़ीजबौ—कर्म वा० ।

देराड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० देराड़ियोड़ी)

देराड़ी-सं०स्त्री०—मुंडन संस्कार कर यज्ञोपवीत पहना कर बच्चे को उसके ननिहाल ले जाकर देव-पूजन और नये वस्त्र पहिनाने की एक रस्म विशेष (पुष्करणा ब्राह्मण)

देराणौ, देराबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

उ०—तद इयै रांणी राजा नूं भखाय नै कुंवर नुं देसोटौ देरायौ ।
—चौबोली

देराणहार, हारौ (हारी), देराणियौ—वि० ।

देरायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

देराईजणौ, देराईजबौ, देरीजणौ, देरीजबौ—कर्म वा० ।

देरायोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० देरायोड़ी)

देराळी-सं०स्त्री०—यह समापवर्तन संस्कार का विगड़ा स्वरूप है। पहले यज्ञोपवीत के बाद बालक गुरु-आश्रम पर विद्याध्ययन समाप्त करने पर जब घर लौट आता तथा विवाह से पूर्व यह संस्कार किया जाता था । आजकल बालक को ननिहाल ले जाकर उसे वहां ब्रह्मचारी का वेष त्याग करवा नये वस्त्र आदि पहना कर वापस लाते हैं । ननिहाल जाएं उस अवसर पर 'माहेरा' भी दिया करते हैं । आजकल यह प्रथा कम हो रही है ।

देरावणौ, देरावबौ—देखो 'दिराणौ, दिराबौ' (रू.भे.)

देराणहार, हारौ (हारी), देराणियौ—वि० ।

देराविओड़ौ, देरावियोड़ौ, देराव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

देरावीजणौ, देरावीजबौ—कर्म वा० ।

देरावरिया-सं०स्त्री०—भाटी वंश की एक शाखा (बां.दा.ख्यात)

देरावरियौ-सं०पु०—भाटी वंश की 'देरावरिया' शाखा का व्यक्ति ।

देरावियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० देरावियोड़ी)

देरी—देखो 'देर' (रू.भे.) उ०—१ दीन लोक ठहरया कछु देरी, पर हित घणी आणंद री घेरी । फिरगी रतनागर चहुं फेरी, विखरी वासा मीठी बेरी ।—ऊ.का.

देरूतरी-सं०स्त्री० [सं० देवर:+पुत्री] पति के छोटे भाई (देवर) की पुत्री ।

रू०भे०—देरूती, देरूत्री ।

देरूतरौ-सं०पु० [सं० देवर:+पुत्र] (स्त्री० देरूतरी) पति के छोटे भाई (देवर) का पुत्र ।

रू०भे०—देरूतौ, देरुत्रौ ।

देरूती—देखो 'देरूतरी' (रू.भे.)

देरूतौ—देखो 'देरूतरौ' (रू.भे.)

देरूत्री—देखो 'देरूतरी' (रू.भे.)

देरुत्रौ—देखो 'देरूतरौ' (रू.भे.)

देळ-सं०पु०—राठौड़ों की तेरह शाखाओं में से एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

देळी-सं०स्त्री० [सं० देहली] १ मकान के दरवाजे के दोनों ओर लगी हुई काठ या पत्थर की पट्टी जिनके सहारे किवाड़ खड़े रहते हैं (शेखावाटी) ।

२ देखो 'देहली' (रू.भे.)

देवंगण—देखो 'देवांगना' (रू.भे.)

देवंता—देखो 'देवता' (रू.भे.)

उ०—कमळा ऊपर कड़छिया, कुर पंडव केता । सेघ वधै जुग च्यार लौं, दांणव देवंता ।—द.दा.

देव-सं०पु० [सं०] १ वह अमर प्राणी जो स्वर्ग में रहता या क्रीडा करता है, दिव्य शरीर-धारी, देवता, सुर (अ.मा., नां.मा., डि.को.)

मुहा०—१ देव जिसा पुजारी—एक जैसे गुणों वाले व्यक्तियों का सम्मेलन. २ देवां पै'ली नकटां री पूजा—योग्य से पहले अयोग्य की पूछ ।

२ तेजोमय व्यक्ति. ३ पूज्य व्यक्ति. ४ राजा के लिए आदर सूचक शब्द या सम्बोधन. ५ बड़ों के लिए आदर सूचक शब्द या सम्बोधन. ६ ब्राह्मणों की एक उपाधि. ७ देवर. ८ पारा. ९ देवदार. १० ज्ञानेंद्रिय. ११ वह यज्ञ करने वाला जिसका यज्ञ में वरण किया जाय, ऋत्विज्. १२ सूर्य, भानु (क.कु.बो.)

१३ [सं० महादेव] महेश रुद्र । उ०—रज रज हुवौ 'जगौ' भरियां रज, भळता मुकत जांणियौ भेव । सहंसा दस वाळा घू सारू, दस सत करग वाधिया देव ।—महादांन महड़ू

१४ घोड़ा (डि.को.) १५ तेतीस की संख्या*. १६ कोचरी.

उ०—घरां हूं चालियो जांन मेले घणी, जीमणी देव नै सांमही जोगणी ।—रुखमणी हरण

१७ देखो 'दैव' (रू.भे.) ज्यूं—दुरबळ नै देव भी सतावै ।

१८ देखो 'देवी' (रू.भे.)

उ०—डाकण भूत कुवै पग दिगतां, कड़की बीज आकासां। करतां याद मेहा सुत करणी, देव उबेळो दासां ।—कविराजा बांकीदास

[फा०] १९ असुर, दैत्य, राक्षस. २० पारसियों द्वारा हिन्दुओं के लिए रखा गया नाम जिसका अर्थ उनकी भाषा में असुर होता है ।

रू०भे०—दे, देउ ।

अल्पा०—देवकियो, देवडो ।

देवग्रंसी–वि० [सं० देव+अंशिन्] १ जो किसी देवता का अवतार हो.
२ जो किसी देवता के अंश से उत्पन्न हो ।
३ देखो 'देवासी' (रू.भे.)

देवउकस–सं०पु० [सं० देवौकस] देवता, सुर (ह.नां.)

देवउठणी, देवऊठणी–सं०स्त्री० [सं० देवोत्थानी] कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी ।

वि०वि०—इस दिन विष्णु भगवान सो कर उठते हैं अतः इसका माहात्म्य बहुत माना जाता है ।

रू०भे०—देवठणी ।

देवक–सं०पु० [सं०] १ एक यदुवंशी राजा जो श्रीकृष्ण के नाना थे.
२ देवता, सुर ।

देवकरम–सं०पु० [सं० देवकर्म] देवताओं को प्रसन्न करने के लिये किया हुआ कर्म ।

देवकाळो–सं०पु० [सं० देव+काल:] एक देव, भैरव ।

देवकियो—देखो 'देव' (अल्पा., रू.भे.)

देवकिरी–सं०स्त्री० [सं०] एक रागिनी जो मेघराग की भार्या मानी जाती है ।

देवकी–सं०स्त्री० [सं०] वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता ।

देवकी-नंदण, देवकी-नंदन–सं०पु०यौ० [सं० देवकी नंदन] १ श्रीकृष्ण.
२ ईश्वर (नां.मा.)

देवकी-पुत्र–सं०पु०यौ० [सं०] श्रीकृष्ण ।

देवकुंड–सं०पु० [सं०] १ वह जलाशय जो किसी देवता के निकट या नाम पर होने के कारण पवित्र माना जाता है.
२ प्राकृतिक जलाशय ।

देवकुरु–सं०पु० [सं०] जंबूद्वीप के ६ खंडों में से एक खंड (जैन)

देवकुल्या–सं०स्त्री० [सं०] १ मरीचि और पूर्णिमा की एक कन्या.
२ गंगानदी ।

देवकूट–सं०पु० [सं०] १ कुबेर के आठ पुत्रों में से एक.
२ एक पवित्र आश्रम (महाभारत)

देवकृच्छ्र–सं०पु० [सं० देवकृच्छ्र] एक विशेष प्रकार का व्रत जिसमे तीन तीन दिन तक क्रमशः लपसी, शाक, दूध, दही, घी खाते थे और उसके बाद तीन दिन तक वायु पर ही रहते थे ।

देवगंगा–सं०स्त्री० [सं०] १ एक छोटी नदी का नाम.
२ सुरसरी, गंगा (डि.को.)

देवगण–सं०पु० [सं०] १ नक्षत्रों का एक समूह जिसके अंतर्गत अश्विनी, रेवती, पुष्य, स्वाती, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, और श्रवण हैं. २ किसी देवता का अनुचर. ३ देवताओं का वर्ग ।

देवगण-वंद–सं०पु०यौ० [सं० देवगणवंद्य] विष्णु (डि.नां मा.)

देवगत, देवगति–सं०स्त्री० [सं० देवगति] १ भाग्य की गति, प्रारब्ध.

उ०—विद्या भलपण समंद जळ, ऊंच तणो आकास। उत्तर पंथ'र देवगत, पार नहीं प्रथुदास ।—प्रथ्वीराज राठौड़

२ मरने पर देवयोनि की प्राप्ति, उत्तम गति या स्वर्गलाभ ।

उ०—१ यूं करतां रावजी सीहोजी देवगत हुवा ।—नैणसी

उ०—२ ताहरां पदमसी लोभाये थकै जाइनै त्रिभुवणसी नूं पाटां माहै सोमल नीव माहै भेळियो । पाटै मांहै विस हुवो । त्रिभुवणसी देवगत हुवो ।—नैणसी

रू०भे०—दइवंतगति, दईगत, दईवगत, दैवगत, दैवगति ।

देवगर—देखो 'देवगिरि' (रू.भे.) उ०—पतंग ऊगतो रहै थाकै विहंग राज पंथ, जाय गंग मुह खाय निहंग भोलो । सेस धर तजै पंथ भंजै वांगां समर, देवगर डगं तौ चगं 'दौलो' ।—नाथजी बारहठ

देवगरणो–सं०पु० [सं० देव करण:] राज्याधिकारी विशेष ?

उ०—सेनापति मंत्रि महामंत्रि रांणा स्रीगरणा वयगरणा रायगरणा धरमाधिगरणा देवगरणा नायक दंडनायक ।—व.स.

देवगरभ–सं०पु० [सं० देवगर्भ] वह मनुष्य जो देवता के गर्भ से उत्पन्न हो ।

देवगरौ–सं०पु०—जाति विशेष का घोडा (कां.दे.प्र.)

देवगांधार–सं०पु० [सं०] संपूर्ण जाति का एक राग जो भैरव राग का पुत्र माना जाता है ।

देवगांधारी–सं०स्त्री० [सं०] शिशिर ऋतु में तीसरे पहर से आधी रात गाई जाने वाली एक रागिनी जो श्रीराग की भार्य्या मानी जाती है ।

देवगायक–सं०पु० [सं०] गंधर्व ।

देवगायन–सं०पु० [सं०] गंधर्व ।

देवगिर–सं०पु०—१ एक स्थान विशेष ।
२ देखो 'देवगिरि' (रू.भे.)

उ०—लीधो दळ परमार दळ, आबू भोळै राव । गाजै जादव देवगिर, लीधो करन सुजाव ।—बां.दा.

देवगिरा–सं०स्त्री० [सं०] देववाणी ।

देवगिरि, देवगिरी–सं०पु० [सं०देवगिरि] १ सुमेरु पर्वत.
२ गुजरात का रैवत पर्वत, गिरनार. ३ देवगिरि नामक पर्वत से निकलने वाला एक विशेष प्रकार का पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं. ४ दक्षिण का एक प्राचीन नगर जो बहुत समय तक यादव राजाओं की राजधानी रहा था । बादशाह मुहम्मद तुगलक को जब अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरि ले जाने की सनक जँची तब

उसने इसका नाम दौलताबाद रखा । आज भी यह नगर इसी नाम से पुकारा जाता है ।

सं०स्त्री०—५ सपूर्ण जाति की एक रागिनी विशेष जो हेमंत ऋतु में दिन के चौथे प्रहर से लेकर आधी रात तक गाई जाती है । इसमें सब शुद्ध स्वर लगते है । किसी के मत से यह रागिनी संकर है और शुद्ध पूर्वी और सारंग के मेल से और किसी के मत से सरस्वती, मालश्री और गांधारी के मेल से बनी है । विभिन्न मतान्तरों से यह वसंत, नागध्वनि, नटकल्याण और हनुमत की भार्य्या मानी जाती है.

६ घोड़े की एक जाति विशेष

रू०भे०—देवगर, देवगिर, देवागिर ।

देवगिरौ-सं०पु०—जाति विशेष का घोड़ा (कां.दे.प्र.)

देवगुरु-सं०पु० [सं०] १ देवताओं के गुरु बृहस्पति. २ देवताओं के पिता, कश्यप ।

देवगुही-सं०स्त्री० [सं०] सरस्वती ।

देवग्रह-सं०पु०[सं० देवगृह] देवताओं का घर, देवालय ।

देवड़ा-सं०स्त्री०—चौहान क्षत्रियों की एक शाखा (बां.दा.ख्यात)

देवड़ौ-सं०पु० (स्त्री० देवड़ी) १ चौहान क्षत्रियों की 'देवड़ा' शाखा का व्यक्ति ।

२ देखो 'देव' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—मारवाड़ मालांणी मगरै, खाखो चोखो मेवड़ौ । सूको सस्तौ देवै सदा, मुरधर खेजड देवड़ौ ।—दसदेव

देवचाली-सं०पु० [सं०] इन्द्रजाल के छः भेदों में से एक (संगीत)

देवचिकित्सक-सं०पु० [सं०] १ अश्विनीकुमार.

२ दो की संख्या* (डि.को.)

देवचौ-सं०पु०—१ प्रतिज्ञा । उ०—तरै रावळ कह्यौ—किसो वात दिसा थे देवचौ करावौ छौ ।—नैणसी

२ देखो 'देगचौ' (रू.भे.)

देवज-वि० [सं०] देवताओं से उत्पन्न ।

देवजस-सं०पु० [सं० देवयश] भक्ति रस के भजन, स्तुति ।

देवजसा—देखो 'देवयसा' (रू.भे.)

उ०—देवजसा जगि चिर जयउ तीर्थंकर, देव पुस्कर द्वीप मझार रे । भव्य जीव प्रतिबोधता, क्रमि क्रमि करइ विहार रे ।—स.कु.

देवजी-सं०पु० [देश०] देवजी बाघजी बगड़ावत के पौत्र और रावत भोज के पुत्र थे । रावत भोज भिनाय (अजमेर के समीप) के स्वामी राव बाघसिंह पड़ियार (प्रतिहार) द्वारा मारा गया था । रावत भोज के दो रानियां थीं—पहली के 'भूणा' नामक दो वर्ष का बालक था और दूसरी रानी का नाम 'सेढ़ां' था जो रावत भोज की मृत्यु के समय गर्भवती थी । इसी से देवजी का जन्म गांव आसींद (मेवाड़) में हुआ । मुंशी देवीप्रसाद कृत मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट के अनुसार देवजी का जन्म संवत् १३०० के लगभग माना गया है । बड़े होकर देवजी ने बड़ी बहादुरी से पिता का बदला लिया और कई सिद्धियां दिखाई । गूजर जाति देवजी को अपना इष्टदेव मानती है और उनकी पूजा करती है । गूजर लोग देवजी की शपथ को बड़ी पक्की मानते हैं । देवजी के पुजारी (भोपे) भी गूजर ही होते हैं जो अविवाहित रहते हैं । देवजी की जन्म-तिथि माघ सुदि ६ मानी जाती है जो गूजरों का एक त्यौंहार है । देवजी के साथ उनकी माता 'सेढ़ां' और भाई 'भूणाजी' की भी पूजा होती है ।

मेवाड़ के महाराणा सांगा ने चित्तौड़गढ़ पर देवजी का देवरा (मंदिर) बनवा कर उनके प्रति आदर भाव दर्शाया । गूजरों का कहना है कि महाराणा सांगा देवजी के नाम का 'फूल' पहनते थे ।

देवजीभि-सं०पु०—एक प्रकार के चावल । उ०—तठा उपरायंत सीरो-पुड़ी वर्णा छै । सोहितं सारू देवजीभि जोयजै छै ।—रा.सा.सं.

देवजी-रोटौ-सं०पु०यौ० [देश०] कई प्रकार के मसाले मिला कर भूंज कर बनाया हुआ रोटा । उ०—१ सोनगरां की सु वातां पूछी । तितरै भूंजाई रौ पधारो हुवौ । रिणमलजी ई आया । चारण नूं साथै ले आया । भूंजाई घणा देवजी-रोटा सोहिता । ईयै भांत चारण भूंजाई जीमियौ ।—नैणसी

उ०—२ आगै भूंजाई तयार हुई छै । अर आया । आगै घणौ सीरो पूडी देवजी-रोटौ तयार हुवौ छै । सरब साथ आय भूंजाई बैठो । भूंजाई जीमनै अपूठा घरै आया ।—नैणसी

देवजूण-सं०स्त्री० [सं० देवयोनि] स्वर्ग, अंतरिक्ष आदि में रहने वाले उन जीवों की सृष्टि जो देवताओं के अंतर्गत माने जाते हैं ।

रू०भे०—देवजोण, देवजोणी ।

देवजोग-सं०पु० [सं० दैवयोग] भाग्य का आकस्मिक फल, भवितव्यता, होनहार, भावी, संयोग, इत्तिफाक । उ०—१ किणहीक सहर में पांच जणा स्रीमाळी स्रीमाळियां री पंचायती करता । उवै देवजोग सूं पांचूं ही सरीर पात हुआ ।—बां.दा. ख्यात

उ०—२ सो विधना रै लेख सूं भूडण प्रातकाल घड़ी दोय रै तड़कै ऊठ सूरज कुंड में स्नान करणै नूं गई । वींही समै देवजोग सूं डाढ़ाळो वींही सूरज कुंड मांही स्नांन करणै नूं आयो, सो देखै तो भूंडण स्नांन कर रही छै ।—डाढ़ाळा सूर री वात

रू०भे०—देवाजोग, दैवजोग ।

देवजोणी—देखो 'देवजूण' (रू.भे.)

देवझूलणी-सं०स्त्री० [सं० देव+दोल:] भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी जिस दिन देवताओं को किसी जलाशय में तैराते हैं अथवा नहलाते हैं । इसका बड़ा उत्सव होता है और जलूस के साथ देवताओं को पालकियों में बैठा कर जलाशय पर लाया जाता है तथा नहलाने के बाद पुन: मंदिरों को ले जाया जाता है ।

उ०—ऊनाळो वातां करतां बीतग्यो अर बरसाळो ई बीतण माथै इज हो । भादवै री देवझूलणी एकादसी रै दिन मुकलावा री मुहुरत हो, उण में फगत च्यार दिन आडा रैग्या हा ।—रातवासो

देवठणी—देखो 'देवऊठणी' (रू.भे.) उ०—इतरा जप तुळछां जपिया

जद, साळगरामजी वर पायौ हो रांम। कातिक मास, देवठणी इग्यारस, तुळछांजी रौ ब्याव रचायौ हो रांम।—लो.गी.

देवण—सं०पु० [सं० देवता] १ देवता।

सं०स्त्री० [सं० दा] २ देने की क्रिया या भाव।

वि०—देने वाला।

देवणौ—देखो 'दैणौ' (रू.भे.) उ०—श्रौ रुपयौ तौ काले उतर जासी। आछा सोच में पड़चा। म्हारै बावै आंख मीची जद म्हां पर आठ सौ रौ देवणौ हो।—रातवासो

देवणौ, देववौ—देखो 'दैणौ, दैवौ' (रू.भे.)

देवणहार, हारौ (हारी), देवणियौ—वि०।

दियोड़ौ—भू०का०कृ०।

देवीजणौ, देवीजवौ—कर्म वा०।

देवत—सं०पु० [सं० दैवत] स्वर्ग में रहने वाला अमर प्राणी, सुर।

उ०—१ हुवौ थिर समदर आभौ जांण, कसां में घुळै कसूंबल रंग। निचोयौ सांझ नार जिमि चीर, दई कै देवत नैण सुरंग।—सांझ

उ०—२ च्यारूं खांण चतुर लख जाती, भूख सबन के लागी। देवत दांनव मांनव मोनी, कोइयन छोड्या इण नागी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

देवतड़ौ—देखो 'देवता' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मीठा मीठा काचरा गवारफळी कचनार। मोठ फळी चूंळा फळी मांय मतीरौ मिळाय। यो पंचमेळा रौ साग देवतड़ां नै भी नाय मिळै जी राज।—लो.गी.

देवतपणौ—सं०पु०—देवबल, देवत्व। उ०—जो धारत जत सूंह, प्रगटचौ फिर देवतपणौ। सगत तणौ सत सूंह, हव कमधज बैठो हुवौ।

—पा.प्र.

देवतर—देखो 'देवतरु' (रू.भे.) उ०—भुजवळ की महिमा दांन कौ प्रवाह। देवतर साखा तै सौ गुणी सराह।—रा.रू.

देवतरपण—सं०पु० [सं० देवतर्पण] ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं के नाम ले ले कर पानी देने की क्रिया।

उ०—प्रभात स्नांन, नित्यदांन, वेदपढ़इ, वेदांत जांणइ, सिद्धांत वखांणइ, देवतरपण, गुरुतरपण, रिखीतरपण, पित्रतरपण इसिउ नैस्ठिक ब्राह्मण।—व.स.

देवतरु—सं०पु० [सं०] देवताओं के वृक्ष (मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन आदि)।

रू०भे०—देवतर।

देवतरेसर—सं०पु० [सं० देव+तरु+ईश्वर] कल्प वृक्ष।

उ०—नायक है जगरांम नरेसर, ते कर लायक देवतरेसर। 'सीत' तणौ पत संत सधारण, चाव करै भज तूं धिन चारण।—र.ज.प्र.

देवता—सं०पु० [सं०] १ स्वर्ग में रहने वाला प्राणी, सुर (डि.को.)।

पर्याय०—अगनी-मुखा, अज, अदीतसुत, आदत्या, अनमिख, अनपरा असुरारि, अस्वपन, कांमरूप, ऋतभुख्ण, ऋतभुज, गिरवांण चिरायुस, जरारहित, त्रिदवेस, त्रिदस, दईतयारी, दांणववैरी, दिवओकस, दिवखद, देव, देवत, मलंप, नाकी, निरजर, पुरियंदसेवता, बरहीमुख, बाससुमेर, विमांणग, मरुत, रिभु, लेख, वरद, विबुध, व्रंदारक, सुधाभुज, सुपरवांण, सुमनस सुर, सुरगी, स्रग-विहारी, स्वाहाग्रसण।

मुखाद, अनिद्रा, अपसराविहारी, अमर, अम्रताभख, अम्रतेस, अस-

२ ब्राह्मण। उ०—तिकै चालिया चालिया एकै रोही मांहै आया। उठै एक ब्राह्मण रौ घर। उठै ब्राह्मण सघरौ ही रहै। तद कुंवर ब्राह्मण रै घरै गयौ। उठै जाय नै ब्राह्मण नुं पूछी। कही देवता तूं अठै क्युं रहै छै रोही मांहै। तद ब्राह्मण कही अठै हूं एक विद्या सीखूं छूं।—चौबोली

३ चारण।

वि०—१ गरीब. २ सीधा, सरल। ज्यूं०—वडौ देवता आदमी है कदै ही किणी नै दुख नीं देवै।

अल्पा०—देवतड़ौ, देवतियौ।

देवताधिप—सं०पु० [सं०] इंद्र (डि.को.)

देवता-रौ-कांसौ—सं०पु० [सं० देवता+कांस्य] पुष्करणा ब्राह्मणों के अंतर्गत विवाह की एक रस्म जिसमें विवाह के एक दिन पूर्व कन्या पक्ष वालों की ओर से वर के घर खाद्य सामग्री से परोसे हुए थाल भेजे जाते हैं।

देवतावसर— । उ०—महान्यायपालकु, घरम्ममय मूरत्ति, मकरध्वजावतारु, श्रीसरवग्यभावभावितु, दुस्टापहारु, विक्रमनिवासु, सप्तव्यसननिसेध तत्पर, सरवदा, सदसि उपविस्टु, पुरुसप्रमांणु, सिंहासनु, कटिप्रमाण पादपीठ, आजांनबाहु, उपविस्ट, देवतावसर, मंत्रअसुर, तिलककउ अवसर, आरतीयावसरु।—व.स.

देवतियौ—देखो 'देवता' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ना मूं बांमण वांणये री, ना विणजारै री धीय। हूं तौ सकळ देवतियै पांगळियां पग देय।—लो.गी.

देवतीरथ—सं०पु० [सं० देवतीर्थ] १ अंगूठे और उंगलियों का वह अग्र भाग जहां से संकल्प या तर्पण के लिये जल गिराया जाता है.

२ देव पूजा के लिये उपयुक्त समय।

देवत्रयी—सं०पु० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीनों देवताओं का समूह।

देवथांन—देखो 'देवस्थांन' (रू.भे.)

देवदत्त—सं०पु० [सं०] १ अर्जुन के शंख का नाम. २ अष्ट कुल नागों में से एक. ३ देवता के निमित्त दी हुई वस्तु या सम्पत्ति. ४ शरीरस्थ पांच वायुओं में से एक वायु जिससे जँभाई आती है।

वि०—१ देवता का दिया हुआ.

२ जो देवता के निमित्त दिया गया हो।

देवदसम, देवदसमि [सं० देव+दशमी] । उ०—देवदसमि एकादसी, हरिवासर जे होइ। पुण्य प्रथम ते पारणइ, द्वादस नी दिनी जोइ।—मा.कां.प्र.

देवदांनी—देखो 'देवयांनी' (रू.भे.)

देवदार-सं०पु० [सं० देवदारु] प्रायः पहाड़ी स्थानों पर लगभग ६००० से ८००० फुट की ऊँचाई तक पाया जाने वाला एक पेड़ विशेष जो बहुत ऊँचा होता है। इसकी लकड़ी में घुन, कीड़े आदि नहीं लगते है तथा बहुत मजबूत होती है (अ.मा.)। उ०—दांति दुरालभ दूधीउ, दाडिम द्राख दधूण। देवदार दीसइ भला, दिसि दिसि दीपइ दूण।
—मा.कां.प्र.

देवदारादि-सं०पु० [सं० देवदार्वादि] एक प्रकार का क्वाथ जो ज्वर, दाह आदि में प्रसूता स्त्री को पिलाया जाता है (वैद्यक)।

देवदाळि, देवदाळी-सं०पु० [सं० देवदाली] एक लता जो देखने में तुरइ की बेल से मिलती-जुलती होती है। उ०—दांमिणि दोभी दूधिम्रां, देवदाळि दूवेलि। दारू हळद्र दुरालभा, दह दिसि दीसइ वेलि।
—मा.कां.प्र.

देवदासी-सं०स्त्री० [सं०] १ मंदिरों की दासी या नर्तकी.
२ वेश्या।

देवदिवाळी, देवदीवाळी-सं०स्त्री० [सं० देवदीपमालिका] कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा का दिन (मेवाड़)

देवदुस्य, देवदुस्यवस्त्र, देवदूसितवस्त्र, देवदूस्य, देवदूस्यवस्त्र-सं०पु० [सं० देव+दूष्यम्] वस्त्र विशेष। उ०—१ पछइ भला वस्त्र पहिराया ते कुण कुण, देवदुस्यवस्त्र, रत्नकंवल, पांमडी, खीरोदक।—व.स.
उ०—२ पछि वस्त्र पहिरावइ, देवदूसितवस्त्र, रतनकांवळ, चीर, सोनइरी।—व.स.
उ०—३ तनसुख मनसुख कमखा चलाखा मलाखा देवदूस्य बंधालग कोठालग।—व.स.
उ०—४ अथ वस्त्र; देवदूस्य चीनांसुक गोजी चउडसी नील नेत्र सचोपां।—व.स.

देवदेव-सं०पु० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, इंद्र।

देवदेवाधि-सं०पु० [सं०] १ देवताओं का भी देव, इंद्र.
२ ईश्वर।

देवदेवाला-सं०पु० [सं० देवदेवालय] देव-मंदिर (?)।
उ०—हूं त अह्मारूं अणहीलपुर पाटण वणवूं; पणि कसू एक छि जे अणहलपुर पाटण ? सघट घाटे करी विचित्र चित्रांमे करी अभिरांम, महामहोछवे भलां आरांम, पंचासर प्रमुख देवदेवाला, जे नगरमांह दांनसाळा पोसधसाळा धरमसाळा, गढ़ मढ़ मंदिर प्रकार।—व.स.

देवद्रुम-सं०पु० [सं०] १ स्वर्ग के वृक्ष, कल्पवृक्ष, पारिजात आदि वृक्ष.
२ देवदार।

देवधन-सं०पु० [सं० देवधेनु अथवा देवधन] गाय (अ.मा.)

देवधांम-सं०पु० [सं० देवधाम] १ देवस्थान. २ तीर्थस्थान.
३ स्वर्ग।

देवधुनि, देवधुनी-सं०स्त्री० [सं० देवधुनिः, देवधुनी] गंगा नदी। उ०—हिंदू गुरंद सगां हूचकिया, वहिया वाहण मूफ विचाळ। दळ सुध देवधुनी इम दाखै, रतनाकर वहिया रतखाळ।
—वळवंतसिंह हाडा रो गीत

देवधूप-सं०पु० [सं०] गुग्गुल, गूगुल।

देवधेनु-सं०स्त्री० [सं०] कामधेनु।

देवनंदी-सं०पु० [सं० देवनन्दिन्] इंद्र का द्वारपाल।

देवनगां-सं०स्त्री०—एक देवी विशेष जो चारण भीमा आसिया की पुत्री थी।

देवनदी-सं०स्त्री० [सं०] १ गंगा, सुरसरि (अ.मा.)
उ०—प्रांणी तू डूबौ पुखत, मोहनदी रै मांहि। देवनदी में डूबियौ, नख पग हुंदौ नांहि।—बां दा.
२ सरस्वती नदी।

देवनांमा-सं०पु० [सं० देवनामन्] १ कुश द्वीप के एक वर्ष का नाम.
२ कुश द्वीप के राजा हिरण्यरेता के एक पुत्र का नाम।

देवनागरी-सं०स्त्री० [सं०] १ भारतवर्ष की प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत, हिन्दी, मराठी, राजस्थानी आदि देशभाषाएं लिखी जाती हैं. २ उन अक्षरों का नाम जिन से उक्त भाषाएँ लिखी जाती हैं।

देवनाथ-सं०पु० [सं०] १ शिव, महादेव. २ सुरपति, इंद्र।
उ०—असनिकुमार अगनि वन आखौ देवनाथ महि वांमण दाखौ। समंद प्रजापति आदि सुरेसर कमधां धणी तणी रक्षा कर।—रा.रू.

देवनायक-सं०पु० [सं०] इन्द्र, सुरपति।

देवनिहंग-सं०पु०—सूर्य, रवि, भानु। उ०—हुवै रथ चक्रित देवनिहंग, खहाव्रत मेघ कि वेग खसंग, धड़द्धड़ वेघड़ वज्जहि धार, कड़क्कड़ आठकि काठ कुठार।—रा.रू.

देवनीक-वि० [सं० देव+नीक?] देवताओं के समान, देवतुल्य।

देवपत, देवपति-सं०पु० [सं० दिवपति] १ विष्णु।
उ०—दासतन भजन विन तौ सबी दासरथ, थिरू बस कौड़ बातं न थावै। देवपत रूप वैराट थारौ दुगम, अणु मन सेवगां सुगम आवै।
—र.ज.प्र.
२ इंद्र।
रू०भे०—देवांपत।

देवपदमणी, देवपदमनी-सं०स्त्री० [सं० देवपद्मिनी] आकाश में बहने वाली गंगा का एक नाम।

देवपर-सं०पु० [सं०] संकट पड़ने पर कोई उद्योग नहीं करने वाला मनुष्य।

देवपसु-सं०पु० [सं० देवपशु] १ वह पशु जो देवता के नाम पर उत्सर्ग किया जाय. २ देवता का उपासक।

देवपुत्र-सं०पु० [सं०] (स्त्री० देवपुत्री) देवता का पुत्र।

देवपुत्री-सं०स्त्री० [सं०] १ देवता की पुत्री. २ इलायची.
३ कपूरी साग।

देवपुर, देवपुरी-सं०स्त्री० [सं०] १ इंद्र की राजधानी अमरावती.
२ स्वर्ग, सुरलोक।

देवपुस्का-सं०स्त्री०—सोनजुही।

देवपूजा-सं०स्त्री० [सं०] देवताओं का पूजन।

देवपोढ़णी, देवपोढ़णी-एकादसी-सं०स्त्री०यौ० [सं० देव+प्रलोठनम्+एकादशी] आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

वि०वि०—कहा जाता है कि इस दिन से विष्णु भगवान का शयन प्रारम्भ होता है। देवोत्थानी एकादशी को जो कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में आती है विष्णु भगवान सो कर उठते हैं।

देवप्रयाग-सं०पु० [सं०] हिमालय में टिहरी जिले के अंतर्गत एक तीर्थ।

देवप्रस्न-सं०पु० [सं० देवप्रश्न] १ किसी देवता के प्रति समझा जाने वाला शुभाशुभ संबंधी वह प्रश्न जिसका उत्तर किसी युक्ति से निकाला जाता है. २ ग्रह, नक्षत्र, ग्रहण आदि के सम्बन्ध का प्रश्न।

देवप्रसाद-सं०पु० [सं०] देवता का प्रसाद।

उ०—पूजा देवप्रसाद, वंधै झालरि घंट वाजा। सुभ मारग मिळ सयण, सकळ सुख वधै सकाजा।—सू.प्र.

देववंद-सं०पु० [सं०] घोड़े के छाती पर की भँवरी (अशुभ)

देववांणी—देखो 'देववांणी' (रू.भे.)

देववाळ-सं०स्त्री० [सं० देव+वाला] १ सुरवाला. २ अप्सरा।

देवब्रह्म-सं०पु० [सं० देवब्रह्मन्] नारद।

देवब्राह्मण-सं०पु० [सं० देवब्राह्मण] किसी देवता की पूजा कर के जीविका निर्वाह करने वाला ब्राह्मण, पुजारी।

देवभाग-सं०पु० [सं०] देवताओं को दिया जाने वाला भाग।

देवभासा-सं०पु० [सं० देवभाषा] संस्कृत भाषा।

देवभिसक-सं०पु० [सं० देवभिषग्] अश्विनीकुमार।

देवभूमि-सं०स्त्री० [सं०] स्वर्ग, देवलोक।

देवभूरख-सं०पु० [देश०] स्वामी कार्तिकेय (नां.मा.)।

देवमंदिर-सं०पु० [सं०] वह घर जिसमें किसी देवता की मूर्ति स्थापित हो, देवालय।

देवमणि-सं०स्त्री० [सं०] १ कौस्तुभ मणि. २ महामेदा नामक औषधि. ३ घोड़े की भँवरी (शा.हो.) ४ सूर्य।

देवमांन-सं०पु० [सं० देवमान] काल की गणना में देवताओं का मान. जैसे मनुष्यों के सौ वर्षों का देवताओं का एक दिन माना जाता है।

देवमाया-सं०स्त्री० [सं०] १ परमेश्वर की माया जो जीवों को बंधन में डालती है. २ देवताओं की माया।

उ०—मिटै मोह छोळां थटै देवमाया। उठै थाट ले भूप सुग्रीव आया।—सू.प्र.

देवमास-सं०पु० [सं०] १ देवताओं का महीना. २ गर्भ का आठवां महीना।

देवमीढ़-सं०पु० [सं०] १ एक यदुवंशी राजा. २ मिथिला के एक प्राचीन राजा।

देवमुनि-सं०पु० [सं०] नारद ऋषि।

देवमूरत देवमूरति-सं०स्त्री० [सं० देवमूर्त्ति] देवता की प्रतिमा।

देवयग्य-सं०पु० [सं० देवयज्ञ] होमादि कर्म जो पंच यज्ञों में से एक है।

रू०भे०—देवजग।

देवयजन-सं०पु० [सं०] यज्ञ की वेदी।

देवयजनी-सं०पु० [सं०] पृथ्वी।

देवयसा-सं०पु० [सं० देव यशस्] एक जैन मुनि। उ०—सरव भूत नृप नंदनो रे हां, गंगा मात मल्हार। देवयसा ससि लंछने रे हां, 'विनयचंद्र' सुखकार।—वि कु.

रू०भे०—देवजसा।

देवयांण, देवयांन-सं०पु० [सं० देवयान] शरीर से अलग होने के उपरांत जीवात्मा के जाने के लिये दो मार्गों में से वह मार्ग जिससे होता हुआ वह ब्रह्मलोक को जाता है।

देवयांनी-सं०स्त्री० [सं० देवयानी] १ सांभर शहर का एक बड़ा तीर्थ-स्थान

वि०वि०—शुक्राचार्य की कन्या जो राजा ययाति को व्याही गई थी। इसका स्थान सांभर से २ मील दूरी पर है।

वृहस्पति का पुत्र कच मृत संजीवनी विद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य का शिष्य हुआ। इनकी कन्या देवयानी कच पर मुग्ध हुई। असुरों ने कच को अनेक वार मारा पर शुक्राचार्य ने मृत संजीवनी के वल से उसे जिला दिया। एक वार उसे पीस कर सुरा में मिला दिया। शुक्राचार्य कच को सुरा के साथ पी गये। किन्तु देवयानी के विलाप करने पर कच को मृत संजीवनी विद्या ग्रहण करवा कर पेट से बाहर निकाला। देवयानी ने कच से विवाह करना चाहा पर कच राजी न हुआ। इस पर देवयानी ने शाप दिया कि तुम्हारी विद्या निष्फल होगी। कच ने कहा यह विद्या अमोघ है अतः जिसे मैं सिखाऊँगा उसके हाथ से फलवती होगी। तुमने व्यर्थ शाप दिया। पर तुम्हारा विवाह ब्राह्मण से न होगा।

दैत्यराज वृषपर्व्वा की कन्या शर्मिष्ठा और देवयानी में सखी भाव था। एक वार इन्द्र की चालाकी से जल-विहार के समय जल्दी में वस्त्रों की अदला बदली के कारण झगड़ा हो गया और शर्मिष्ठा ने देवयानी को कुए में ढकेल दिया। नहुष पुत्र ययाति ने इसको कूए से निकाला। शुक्राचार्य इससे क्रुद्ध होकर अन्यत्र जाने को तैयार हुए पर वृषपर्व्वा के विनती करने पर वहीं ठहर गये। देवयानी का विवाह राजा ययाति से हो गया और शर्मिष्ठा अपनी सहस्रों दासियों सहित देवयानी की दासी वन कर रहने लगी। देवयानी के गर्भ से यदु और तुर्वसु नाम के दो पुत्र और इसी के द्वारा शर्मिष्ठा के द्रह्यु, अणु और पुरु तीन पुत्र हुए।

रू०भे०—देवसुयांनी।

देवर-सं०पु० [सं० देवरः] पति का छोटा भाई। उ०—ए लारै देवर जी दौडिया ए रुणझुणियो लै, म्हारी भावज घरे पधार जाओ मरवो लै।—लो.गी.

रू०भे०—देउर।

अल्पा०—देवरियो।

देवरथ, देवरथ्थ–सं०पु० [सं० देवरथ] १ देवताओं का रथ, विमान।
उ०--नहम्मै नगारा सरांग मवारा, काली नाग नैं कांन भूभै करारा। नांग्री नाग री कोप री सांम हुथ्यां, रही देखवा ठाठ री देवरथ्थां।—ना.द.
२ सूर्य का रथ. ३ ५२ वीरों में से एक वीर का नाम।

देवरवट–सं०पु० [देवर:+रा० वट] एक प्रथा जिसमें पति की मृत्यु के पश्चात् स्त्री अपने देवर को पति मान लेती है (विश्नोई)

देवरव्याह–सं०पु० [देवर:+विवाह] पति की मृत्यु के पश्चात् देवर से किया जाने वाला पुर्नविवाह।

देवरांणी— देखो 'देरांणी' (रू.भे.) उ०—बाई ए पहला थारा देवर नैं सिणगार। पछै 'हर' री देवरांणियां।—लो.गी.

देवराज देवराजा–सं०पु० [सं० देवराज] देवताओं का राजा इंद्र.
२ राठौड़ों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
रू०भे०— देराज।

देवराजोत–सं०पु०—राठौड़ राव दीरम के पुत्र देवराज के वंशजों की राठौड़ों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

देवराट–सं०पु० [सं०] देवताओं का सम्राट, इंद्र।
उ०—देवराट श्रीत खाट, नाट बोल न दखं। रे नरेस राघवेस, गायजै भजै रिखं।—र.ज.प्र.

देवरारिवीर–सं०पु० [सं०] ५२ वीरों में एक वीर का नाम।

देवरावर–सं०पु०[देश०] यादवों के एक प्राचीन राज्य देरावर की राजधानी।

देवरिख, देवरिख— देखो 'देवरिसी' (रू.भे.)
उ०—सहलां ऊपर सार मैं, नीसाटां बागे। खेचर भूचर देवरिख, पळचर उछरंगे।—द.दा

देवरिद्धि–सं०पु० [सं० देवर्द्धि] जैनों के एक प्रसिद्ध स्थविर का नाम।

देवरियो---देखो 'देवर' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ भाकर में धमोड़ो ऊठ्यो, गाडो किण रो आयो रे, ठालो भूलो देवरियो लेवण नैं आयो रे, लाखं जाऊं नी। हां रे लाखै जाऊं नी परणियो परदेस मा'लै रे, लाखै जाऊं नी।—लो.गी.
उ०—२ देरांणी जेठांणी भगड़ो लागै, देवरियो मनावण जावै रे म्हांरी गोरबंध लूंबाळो।—लो.गी.
उ०—३ बेटा ईंधण पांणी बहु गयी, बेटा छोटोड़ो देवरियो साथ। पपइयो बोलै हरियाळा बाग में।—लो गी.

देवरियो—देखो 'देवरो' (अल्पा., रू.भे.)

देवरिसि, देवरिसी–सं०पु० [सं० देवर्षि] देवर्षि नारद।

देवरूप–सं०पु० [सं० देवीरूप] ईश्वरीय रूप, दैवी रूप।
उ०—१ तरै नागड़ी वहू नूं सिणगार ल्याई, वहू रा पग धरती लागै नहीं वहू देवरूप हुई।—नैणसी
उ०—२ सेजड़ी सिहिरि सस्त्र नियुंज्या, देवरूप वलि मंत्र प्रयुंज्या। द्रूपदी रहई ते मति आली, त्या विराट निप मंदिरि चालो।
—विराटपर्व

देवरो–सं०पु० [सं० देवगृह] १ देवालय, मंदिर।
उ०—रात पो'र सवा आई। राजा माताजी रै देवरै पूजा रो साज ले नै बैठा छै।—जैतसी ऊदावत री वात
२ जैन मंदिर (जालोर) ३ श्मशान भूमि पर बनाये गये राजा-महाराजाओं के स्मृति भवन।
रू०भे०—दिहरो, देवहर, देव्हर, देहरइरउ, देहरउ, देहरु, देहरू, देहरो।
अल्पा०—देवरियो, देहरियो।

देवळ, देवल–सं०पु० [सं० देवालय] १ मंदिर, देवालय।
उ०—१ पड़्या पग देवळ थंभ प्रमांण, न केवल पिंड अद्रां अहनांण। गुड़्या गज आव गुड़ावत गोड, घणां सहि घाव पड़्या कइ घोड़।
—मे.म.
उ०—२ प्रीतम प्राणिया तूं देवळि बैठो आय, निज देवळ खोज्यो नहीं, तो जासी जन्म ठगाय।—ह.पु.वा.
पर्याय०—चैत, धांनअनाद, द्रुमग्रह, धजधर, धांमहर, प्रासाद, मंडप, विहार, सुरमंडप।
२ किसी मृतक की स्मृति में बनाया गया स्मृति-भवन.
३ परिहार (प्रतिहार) राजपूत वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। उ०— देवल कावा मनि डरै, बोड़ा भड़ बालोत।
—गु.रू.बं.
४ देवल ऋषि की संतान।
सं०स्त्री०—५ सिढ़ायच गोत्र के चारण भल्ला की पुत्री देवलबाई जिसे देवी का अवतार माना जाता है. ६ हरि-भक्त चारण आणंद मीसण की पुत्री जो देवी का अवतार मानी जाती है।
वि०वि—इस देवी की गायों की रक्षा के निमित्त वीर पाबू राठौड़ जिंदराव खीची से युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।
७ देखो 'देवळी' (मह., रू.भे.) उ०—नहिं देवळ सूं वैरता, नहिं देवळ सूं प्रीति। 'किरतम' तजि गोविंद भजै, यह साधां की रीति।
—ह.पु.वा.

देवळथंभो–सं०पु०—हाथी (ना.डिं.को.)

देवळी–सं०स्त्री०—१ प्रतिमा, मूर्त्ति।
उ०--संवत् १५९५ चैत सुद ९ ब्रहस्पतवार श्री करनीजी जोगा अग्नि सूं परम धांम पधारिया। पीछे रावळ जैतसी देसणोक पूजा मेली। तोरण रूपै रो अजै छै। अरु सुथार बूढ़ो देवळी देसणोक ले आयो। तद मूरत गुंभारै में पधराई। सं० १५९५ चैत्र सुद १४ सनीवार उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र प्रतिस्ठा हुई।—द.दा.
२ समाधि।
अल्पा०—देवळो।
मह०—देवळ।

देवलोक–सं०पु० [सं०] स्वर्ग।
मुहा०—देवलोक होणो—स्वर्गवास होना, मृत्यु को प्राप्त होना।
(प्रतिष्ठित)

देवळौ—देखो 'देवळ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—भैरूंजी पीवरिये रै मांय थरपूं देवळौ, हूं आवती नै जावती थां नै धोक सूं, भैरूंजी, अेक अरज म्हारी, हेलौ सांभळौ। लो.गी.

देववंसी—सं०पु०—१ दर्जियों की एक शाखा.
२ देखो—'देवासी' (रू.भे.)

देववधू—सं०स्त्री० [सं०] १ देवताओं की स्त्री, देवी.
२ अप्सरा।

देववरणिनी—सं०स्त्री० [सं० देववर्णिनी] विश्रवा मुनि की पत्नी और कुबेर की माता।

देववरधन—सं०पु० [सं० देववर्द्धन] १ राजा देवक के एक पुत्र का नाम.
२ देवकी का एक भाई और श्रीकृष्ण का मामा (भागवत)

देववलभा, देववल्लभा—सं०स्त्री० [सं० देववल्लभ] केसर।
(ह.नां., अ.मा., नां.मा.)

देववांणी—सं०स्त्री० [सं० देववाणी] १ संस्कृत भाषा. २ किसी अदृश्य देवता का वचन जो आकाश से सुनाई पड़े, आकाश वाणी।
रू०भे०—देववांणी।

देववायु—सं०पु० [सं०] बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

देववाहन—सं०पु० [सं०] अग्नि (देवताओं का हव्य लेकर पहुँचाने वाला)

देवविहाग—सं०पु० [सं० देव विभाग] कल्याण और विहाग अथवा सारंग और पूरवी के योग से बनने वाली एक राग।

देवव्रक्ष—सं०पु० [सं० देववृक्ष] १ मंदार वृक्ष. २ गूगल.
३ सतिवन।

देवव्रत—सं०पु० [सं०] भीष्म का एक नाम (महाभारत)

देवसंजोग—सं०पु० [सं० दैव संयोग] दैव संयोग, इत्तफाक।
उ०—इण समय आधी रात गई छै, देवसंजोग चोर एक घर में आय पैठो।—पंचदंडी री वारता

देवसची—सं०पु० [सं० देवशचि] शचिपति, इंद्र (डिं.को.)

देवसदन—सं०पु० [सं०] १ देवताओं का आगार, देवालय, मंदिर.
२ स्वर्ग।

देवसभा—सं०स्त्री० [सं०] १ देवताओं का समाज.
२ राज-सभा।

देवसरि—सं०स्त्री० [सं०] सुरसरि, गंगा।

देवसाक—सं०पु० [सं० देवशाक] १७ दंड से २० दंड समय तक गाने का एक संकर राग विशेष जो शंकराभरण, कान्हड़ा और मल्लार से मिल कर बना है। इसमें गांधार कोमल लगता है।

देवसार—सं०पु० [सं०] इंद्रताल के छः भेदों में से एक।

देवसावरणि—सं०पु० [सं० देवसावर्णि] तेरहवें मनु का नाम (भागवत)

देवसिंधु—सं०पु० [सं०] १ देवताओं का समुद्र, सागर।
२ मानसरोवर।

देवसुनी—सं०स्त्री० [सं० देवशुनी] देवलोक की कुतिया, सरमा।

देवसुयानी—देखो—'देवयांनी' (रू.भे.)। उ०—दैत्य-गुरु घरि दीकरी, देवसुयानी नांम। गल्यु कच्छं कढ़ाहि-महिं, फटकइ फेटिउ ठांम।
—मा.कां.प्र.

देवसुरह—सं०स्त्री० [सं० देवसुरभि] १ कामधेनु नामक गाय. २ गाय।
उ०—करनादे वडौ प्रवाड़ौ कीधौ, आखे सुर नर नाग अनेक। देवसुरह एकण हथ दूही, हाथ समंद लग पूठौ हेक।—चौथ वीठू

देवसेन—सं०पु० [सं०] १ बावन वीरों में से एक वीर का नाम। २. एक तीर्थङ्कर का नाम। उ०—देवसेन देव तुं सुयंड, परम क्रिपाळ कहीत। तिस तुझ सरणइ हुं आवियउ, हिव तुं देव तुं गुरु मीत।—स.कु

देवसेना—सं०स्त्री० [सं०] १ देवताओं की सेना. २ सावित्री के गर्भ से उत्पन्न प्रजापति की कन्या।

देवसेनापति—सं०पु० [सं०] देवताओं का सेनापति, स्कंद।

देवस्थांन—सं०पु० [सं० देवस्थान] १ देवताओं के रहने का स्थान, देवालय, मन्दिर. २ पांडवों को वनवास के समय उपदेश देने वाले एक ऋषि (महाभारत)

देवस्थांनधरमपरौ, देवस्थांनधरमादौ—सं०पु०यौ० [सं० देव+स्थान+धर्म, पुर] देवालयों के प्रबंध एवं देख-रेख का एक महकमा।
वि०वि०—अपाहिजों और अनाथों को प्रायः राज्य की ओर से उदर-पोषणार्थ आर्थिक सहायता इसी विभाग द्वारा दी जाती है।

देवस्रवा—सं०पु० [सं० देवश्रवस्] १ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम.
२ वसुदेव के भाई।

देवस्रेणी—सं०स्त्री० [सं० देवश्रेणी] १ मरोरफली, मूर्वा. २ देवताओं की पंक्ति।

देवस्व—सं०पु० [सं०] १ देवता की सेवा के लिए अर्पित किया हुआ धन या सम्पत्ति. २ यज्ञशील मनुष्य का धन।

देवहंस—सं०पु० [सं०] एक प्रकार की बतख।

देवहर—देखो 'देवरौ' (रू.भे.) उ०—पूजिय जिनप्रतिमा घरइं, देवहरइ जिनराइ। सेव करी निज भगति स्यूं, प्रणमइ सुह गुरु पाय।
—प्राचीन फागु-संग्रह

देवहाली—सं०स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लता जिसके फलों पर रोयें होते हैं। फल तोरई के आकार के रोएँदार होते हैं।

देवहूति—सं०स्त्री० [सं०] स्वायंभुव मनु की तीन कन्याओं में से एक जो कर्दम मुनी को ब्याही थी (भागवत)।

देवह्लाद—सं०पु० [सं० देवह्रद] श्री पर्वत पर एक सरोवर जिसमें स्नान का बड़ा माहात्म्य है (महाभारत)

देवां—वि० [सं० द्वि] देवता (?) उ०—लोक परमार्थव्रित्तिइं च वली बाह्य व्रित्तिइं पुण अभिमांन अहंकार तेहनइ वसि देवां गुरुईहइं वरणवइं।—षष्टिशतक प्रकरण

देवां-आगीवांण, देवां-आगेवांण—सं०पु०यौ० [सं० देव+अग्र+रा.प्र. वान] गणेश, गजानन (ह.नां.)

देवांग—सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)

उ०—बीजइ बाजवट आइ नइ बइठी, देवांग वस्त्र पहिराया देव। आगळि सखी आभरण आंणइ, भलम संगार लहइ जउ भेव।
—महादेव पारवती री वेलि

देवांगचीर-सं०पु०—एक प्रकार का ओढ़ने का वस्त्र विशेष (व.स.)

देवांगणा, देवांगना-सं०स्त्री० [सं० देवांगना] १ स्वर्ग की स्त्री, देवताओं की स्त्री। उ०—मांनव नको नको ताइ मणधर, भमण तणा अनेरा भेव। इसडउ रूप अनूप आखियइ, देवांगना न कोई देव।
—महादेव पारवती री वेलि

२ अप्सरा। उ०—घर आवतां मारग मांहीं एक देहरी आयो, तेथी जाय दरसण किया। उहां अस्ट देवांगना बैठी, सो पूजन करै।
—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—देवंगण।

देवांण-सं०पु०—१ ब्रह्मा (डिं.नां.मा.) २ देवता, देव।
उ०—तूं भंजण तोटा अनम, अगोटा जुधवर जोटा जै वांण। रिख गोतम नारी उपळ उधारी, देह सुधारी देवांणं।—र.ज.प्र.
३ पूज्य व्यक्ति।

देवांतक-सं०पु० [सं०] एक राक्षस जो रावण का पुत्र था (रामायण)

देवांदेव-सं०पु०—१ श्रीकृष्ण (अ.मा.)
२ देखो 'देवादिदेव' (रू.भे.)

देवांपत—देखो 'देवपति' (रू.भे.) (डिं.को.)

देवांराज—देखो 'देवराज' (रू.भे.) (डिं.को.)

देवांसी—१ देखो 'देवअंसी' (रू.भे.) उ०—तदै कुमरजी कही—ओ आंबो देवांसी छै। साथै चीत सांमरी आंबो कराय देवो। भूत्रखा गहित सो अठै पड़सी।—रीसाळू री वात
२ देखो 'देवासी' (रू भे.)

देवा-सं०पु०—पति का छोटा भाई, देवर (डिं.को.)।

देवाई-सं०स्त्री०—देवत्व। उ०—चत्रमुख ईस पारथै चुत्रभुज, कैतुहळ गोकळ सुभ काज। देव अमां छोडी देवाई, महराई पावां माहाराज।
—सिवदांन बारहठ

देवाकर—देखो 'दिवाकर' (रू.भे.)

देवागिर—देखो 'देवगिरि' (रू.भे.)

देवाजोग—देखो 'देवजोग' (रू.भे.)

देवाट-सं०पु०—हरिहर क्षेत्र नामक तीर्थ (वराहपुराण)

देवातणौ-स०पु०—देवत्व, दैवी बल।

देवातन-सं०पु०—देव शक्ति, देव बल। उ०—तरै सारै चाकरै नाग ही रा देवातन री वात राव कनै कही, पण मंडळीक मांनै नहीं।
—नैणसी

देवातिथि-सं०पु० [सं०] एक पुरुवंशी राजा का नाम (भागवत)

देवातिदेव-सं०पु०—विष्णु।

देवात्मा-सं०पु० [सं०] १ देवस्वरूप. २ अश्वत्थ, पीपल।

देवादिदेव-सं०पु०—१ देखो 'देवाधिदेव' (रू.भे.)। उ०—देवादिदेव सुर असुर सेव। राजाधिराज सविता समाज।—ऊ.का.
२ विष्णु. ३ इंद्र।
रू०भे०—देवांदेव, देवाधिदेव।

देवाधण-सं०स्त्री० [सं० देव या दिव्य+धन] गाय (ह.नां.)

देवाधिदेव-सं०पु० [सं० देव+अधिदेव] १ वह जिसके अधीन समस्त देवता हों, देवताओं का देव। उ०—देवाधिदेव स्री क्रिसणजी की आग्या पाय कागळ वाचण लागो।—वेलि.
२ परमेश्वर, ईश्वर (रू.भे.)
रू०भे०—देवादिदेव।

देवाधिप-सं०पु० [सं०] १ देवताओं के अधिपति, परमेश्वर, ईश्वर. देखो 'देवादिदेव' २ विष्णु. ३ इंद्र।

देवानीक-सं०पु० [सं०] १ एक सूर्यवंशी राजा।
उ०—देवानीक तास पुत्र दीपत, सुर दातार अनीक तास सुत।
२ देवताओं की सेना। —सू.प्र.

देवानुज-सं०पु० [सं०] दैत्य, असुर (नां.मा.)।

देवाभख-सं०पु० [सं० देव+भक्ष्य] अमृत, सुधा (ह.नां.)

देवायर—देखो 'दिवाकर' (रू.भे.) उ०—१ कहि म मेर डोल है कहि म जळ हळ है सायर। कहि म चंद लुकि है कहि म छैहल देवायर।
—नैणसी

उ०—२ अरणोद अउगम जांणियै, गो आधारे अगम गमे, दखणाथ 'गजैसी' दीपियो, किरि देवायर ऊगमे।—गु.रू.बं.

देवायु-सं०स्त्री० [सं० देवायुस्] देवताओं की आयु जो बहुत अधिक होती है।

देवारण्य-सं०पु० [सं० देवार्य्य] एक अर्हत के एक गण का नाम (जैन)

देवारि-सं०पु० [सं०] १ ५२ वीरों में से एक वीर का नाम।
२ असुर, राक्षस।

देवाळ-वि० [सं० दा] देने वाला, दातार, दाता।
उ०— महाराजा साजां गुणां, कविराजां प्रतिपाळ। तेरह साखां सैंधणी, सो लखां देवाळ।—रा.रू.
रू०भे०—दिवाळ।

देवाळय, देवालय-सं०पु० [सं० देवालय] १ वह घर जिसमें किसी देवता की मूर्ति रखी जाती हो, मंदिर. २ स्वर्ग।
रू०भे०—देवाळै।

देवाळि-सं०स्त्री० [सं० देवतालि] ।

देवाळियौ-वि० [सं० दा] जिसके पास ऋण चुकाने के लिये द्रव्य न हो, जो ऋण चुकाने में असमर्थ हो, जिसने दिवाला निकाला हो, ऋणी, कंगाल। उ०—ए वाजै साजै पलै, साजी साहूकार। ए वाजै देवाळिया, ऊंधा ताळा मार।—बां.दा.

देवा-लेई-सं०स्त्री०—लेने देने की क्रिया, लेन-देन।

देवाळै—देखो 'दवाळय' (रू.भे.)

देवाळौ-सं०पु० [सं० दा] १ पूंजी या आय न रहने के कारण ऋण चुकाने में असमर्थता, वह अवस्था जिसमें मनुष्य के पास अपना ऋण चुकाने के लिये कुछ न रह जाय।

उ०—हूंडी सूं भूंडी हुवै, ऊंडी गाडै आथ। देवाळौ दरसाय दे, कर काठौ हिय हाथ।—बां.दा.

मु०—१ देवाळौ काडणौ (निकाळणौ)—ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाना, दिवालिया बन जाना. २ देवाळौ घर में घालणौ—निर्धनता अपनाना, घाटा खाना. ३ देवाळौ निकळणौ—कर्जदार बन जाना, ऋणी हो जाना, ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाना, घाटा होना, नुकसान होना।

२ देखो 'देवालय' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—रुखमणीजी जांण्यौ पहिली ही लड़ाई पड़सी। ठाकुर कौ दरसण विण हीं कीयां तव पहिले ही रुखमणीजी सेन्यां चित लाया। देवाळा थे वाहरि आइ। समस्त सेनां दिसि द्रस्टि करि देख्यौ। पाछै वयां थोड़ौ सौ हस्या।—वेलि.टी.

रू०भे०—दवाळौ, दिवाळौ, दीवाळौ।

देवावास—सं०पु० [सं०] १ देवता का मंदिर. २ स्वर्ग. ३ पीपल का वृक्ष।

देवासी—सं०पु० [सं० देव+अंशिन्] १ राईका (गडरिया) नामक जाति या उस जाति का व्यक्ति।

वि०वि०—ये अपने को महादेव के अंश से उत्पन्न मानते हैं।

२ देव अंशी।

रू०भे०—देवंसी, देवांसी।

देवास्व—सं०पु० [सं० देवाश्व] इंद्र का घोड़ा, उच्चैःश्रवा।

देवि—देखो 'देवी' (रू.भे.) उ०—१ पंच पंडव पंच पंडव देवि परिणेवि।—पं.पं.च.

उ०—२ वयराट रांणी मनि देवि आंणी। गई तेह नइं लेविणू मद्यपांणी।—विराट पर्व

देविका—सं०स्त्री० [सं०] १ एक नदी का नाम (पौराणिक) २ घाघरा नदी।

देवी—सं०स्त्री० [सं०] १ देवपत्नी, देवता की स्त्री. २ पार्वती, उमा, दुर्गा, शक्ति। उ०—देवी उम्मया खम्मया ईस-नारी। देवी धारणी मुंड त्रिभुवन्न धारी।—देवि.

३ सरस्वती, शारदा (अ.मा.) ४ ब्राह्मण स्त्रियों की एक उपाधि. ५ अच्छे गुणों वाली स्त्री, दिव्य गुणों वाली स्त्री. ६ राजा की पटरानी जिसका अभिषेक राजा के साथ हुआ हो।

७ नव प्रसूता गाय, भैंस या बकरी का वह दूध जो किसी नियत समय तक किसी देव विशेष के अर्पण कर खा लिया जाता है।

उ०—एक बाई कह्यौ स्वांमीजी म्हारै भैंस व्यावै जब पधारौ तो लाहौ लौ, ते किम ? भैंस व्यायां एक महिना तांई दूध दही वावर देवै पिण विलोवै नहीं। ते देवी रै टांणै पधारज्यौ।—भि.द्र.

८ मरोड़ फली, मूर्वा. ९ हर्र. हरीतकी. १० श्यामा पक्षी ११ कोचरी पक्षी। उ०—वांमी राजा रूपड़ौ, दांहण रूपारेल। देवी वांमी साद दै, जद हालौ वाढ़ेल।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढ़ेली री वात

१२ आर्या या गाहा छंद का भेद विशेष जिसके चारों चरणों में २१ गुरुवर्ण और १५ लघुवर्णों सहित ५७ मात्रा होती हैं (ल.पिं.)

रू०भे०—दई, देउ, देवी, देवि।

देवक—वि० [सं० देवी+रा०प्र०क] देव करामात या चमत्कार वाला।

उ०—भींत फाड़ी दीसै नहीं ताहरां सारां ही मिळि नै कह्यौ साहजी घोड़ी देवीक हुती। घोड़ी उपन गई। साहजी कह्यौ खरी वात।

—चौबोली

देवीकवच—सं०पु०—एक प्रकार की तलवार।

देवीपुरांण—सं०पु०—एक पुराण जिसमें देवी के अवतारों की महिमा का वर्णन है।

देवी भागवत, देवी भागोत—सं०पु० [सं० देवी भागवत] एक पुराण जिसकी गणना बहुत से लोग उपपुराणों में और कुछ लोग पुराणों में करते हैं।

देवु—देखो 'देव' (रू.भे.) उ०—तेडीउ ए देवु मुरारि राउ दुरयोधनु आवीउ ए। इछीय ए दीजइं दांन बिंबप्रतिस्ठा नीपजं ए।

—पं.पं.च.

देवेन्द्र—वि० [सं०] देवताओं का राजा, इंद्र।

देवेस—सं०पु० [सं० देवेश] १ परमेश्वर। उ०—मिळयौ ब्रह्म सूं ब्रह्म सो ध्यांन मायौ। पमंगेस देवेस रौ तंत पायौ।—पा.प्र.

२ महादेव. ३ विष्णु। उ०—फलं कंदळी स्रीय स्वादे अफारा। छये स्रेय बादाम पिस्ता छुहारा। सुधा साव नारंगियां रंग सोहे। महादेव देवेस मेवे विमोहै।—रा.रू.

४ देवताओं का राजा इन्द्र। उ०—१ मुनिंद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजंगेस देवेस सव्वेस भेळा।—सू प्र.

उ०—२ दूखण देखी देव नूं, दिसि दिसि गयु देवेस। तव इंद्रांणी आंणती, हूंती नघुख नरेश।—मा.कां.प्र.

देवेसय—सं०पु० [सं० देवेशय] १ विष्णु. २ परमेश्वर, ईश्वर।

देवेसी—सं०स्त्री० [सं० देवेशी] १ देवी. २ पार्वती, उमा।

देवेस्ट—सं०पु० [सं० देवेष्ट] गुग्गुल, महामेदा।

वि०—देवताओं का प्रिय।

देवैयौ—वि०—देने वाला।

देवौकस—सं०पु० [सं० देवौकस्] देवताओं का स्थान, सुमेरु पर्वत।

देव्हर—देखो 'देवरौ' (रू.भे.)

देसंतर—देखो 'देसांतर' (रू भे.) उ०—१ जस देसंतर जावही, रूपंतर बळहंत। काळंतर न कळीजणौ, जेहा तूं जाणंत।—बां.दा.

उ०—२ सज्जण देसंतर हुवा, जे दीसंता नित्त। नयणे तौ वीसारिया, तूं मत विसरै चित्त।—ढो.मा.

उ०—३ जो जावै खह समर पंख घर पाछै जाओ। चित्त पयाळ चितवै, खोद वड्ढौ ग्रह आओ। देसंतर ऊतरै, देसपत्ती संग बंधौ। करै संध जो कोय साह तिण प्रीत असंधौ।—रा.रू.

देसंतरि, देसंतरी—१ देखो 'देसांतरी' (रू.भे.) उ०—१ जे पहिरइ

मुद्रा कांथडी, आवइ जती जोगी कापडी। देसंतरि पंथीया भाट, अन्न अवारी पूछइ वाट।—कां.दे.प्र.

२ देखो 'देसांतर' (रू.भे.) उ०—घर मांहे हो जउ प्रगटयउ निधांन तउ देसंतरि कहउ कुण भमइ। सोना कउ हों जउ पुरसउ सीध, तउ धातुवादि नइ कुण धमइ।—स.कु.

देस-सं०पु० [सं० देश] १ पृथ्वी का वह विभाग जिसका कोई अलग नाम हो और जिसमें बहुत से नगर, ग्राम आदि हों तथा प्रायः एक जाति व एक भाषा बोलने वाले लोग रहते हों, जनपद (अ.मा.)

पर्याय०—उपवरतन, खंड, जनपद, जनाद, विसयक, मंडळ, मुलक, रास्ट्र, विखय, हदवंत।

२ वह भूभाग जो एक राजा या शासक के अधीन हो।

उ०—अलख पुरुस आदेस, देस बचाय दयानिधे। वरणन करूं विसेस, सूह्नद नरेस प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

मुहा०—१ देस जिसोई भेस—जैसा देश वैसा भेष, जिस देश में रहा जाय वहां के नियमों का पालन करना चाहिए. २ देसी गधी, पूरबी चाल—देश में विदेशी चाल-ढाल को अपनाने वाले के लिये।

यौ०—देस-देसावर, देस-परदेस।

३ स्थान, जगह. ४ एक राग विशेष. ५ जैन शास्त्रानुसार चौथा पंचक जिसके द्वारा अर्थानुसंधानपूर्वक स्या अर्थात् गुरु, जन, गुहा श्मशान और रुद्र की वृद्ध होती है. ६ किसी पदार्थ का एक भाग, खंड, अंश, हिस्सा (जैन)

अल्पा०—देसड़उ, देसड़लौ, देसड़ी, देसड़ो, देसलड़ो।

देसकंत-सं०पु० [सं० देश+कान्त] राजा (अ.मा.)

देसकळी-सं०स्त्री० [सं० देशकली] एक रागिनी (संगीत)

देसकार-सं०पु० [सं० देशकार] सम्पूर्ण जाति का एक राग (संगीत)

देसकारी-सं०स्त्री० [सं० देशकारी] हनुमत के मत से मेघराग की पत्नी मानी जाने वाली एक रागिनी विशेष (संगीत)

देसगांधार-सं०पु० [सं० देशगांधार] सवेरे एक दंड से पांच दंड तक गाया जाने वाला एक राग (संगीत)

देसड़उ—देखो 'देस' (रू.भे.) उ०—बाबा वाळूं देसड़उ, जिहां डूंगर नहि कोइ। तिणि चढ़ मूकउं धाहड़ी, हीयउ उरळउ होइ।—ढो.मा.

देसड़लौ—देखो 'देस' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—थानो लागे छै म्हारी देसड़लो ए लो क्यूंकर जाऊं परदेस, वाला जी ए लो।—लो गी.

देसड़ी—देखो 'देस' (अल्पा., रू.भे.)

देसड़ो—देखो 'देस' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—आज अणमणा हो रह्या जी, रह्यो के संदेसो आय। कै चित आयो थांरो देसड़ो जी, कै चित आया माई बाप।—लो.गी.

दस-चारित्र-सं०पु० यौ० [सं० देश चारित्र] श्रावक द्वारा किया जाने वाला आंशिक त्या) (जैन) उ०—गूजरमलजी बोल्या चारित्र आतमां स्रावक में नहीं हुवै तो नीलोतरी रा त्याग रो कांई कांम (?) इतलै स्वांमीजी पधारया। उणां रै मांहोमांही अड़वी देखनै एक जणी नैहो आयनै छांनै वात-चीत कर सकै नहीं तिणसूं दोई पासै पासै बाजोट मेल दिया। पछै न्याय बतायनै दोयां नै स्वांमीजी समझाया। स्वांमीजी कह्यौ स्रावक में पांच चारित्र नहीं तो लेखे सात आतमा इज कहणी अनै त्याग नी अपेक्षा देस चारित्र कहियौ। इम कही नै अड़वी मेटी।—भि.द्र.

वि० वि०—जैन शास्त्रों में इस प्रकार के त्याग के निम्न लिखित बारह भेद माने गये हैं यथा। (१) प्राणातियात विरमण व्रत (२) स्थूल मृषावाद विरमण व्रत (३) स्थूल अदत्त दान विरमण व्रत (४) मैथुन विरमण व्रत (५) स्थूल परिग्रह विरमण व्रत (६) दिशा परिमाण व्रत (७) भोगोपभोग विरमण व्रत (८) अनर्थ दण्ड विरमण व्रत (९) सामयिक व्रत (१०) दिशावकाशिक व्रत (११) पौषधोपवास व्रत (१२) अतिथि संविभाग व्रत।

देसज-सं०पु० [सं० देशज] शब्द के तीन विभागों में से एक जो किसी प्रदेश में लोगों के बोल-चाल से यों ही उत्पन्न हो गया हो।

वि०—देश में उत्पन्न।

देसण, देसणा-सं०स्त्री० [सं० देशना] १ उपदेश (जैन)। उ०—धन्न ति पुरवर पट्टणाइं, धन्न ति देस विचित्त। जिहि विहरइ जिणवइ सुगुरु, देसण करइ पवित्त।—षष्टिशतक प्रकरण

२ व्याख्यान (जैन)। उ०—१ नव रस देसण वांणि अहे, घण जिम गाजइ ए गुहिर सरे। मयण दवानळ वारि अहे, नांणिहि जळि वरिसइ सुखरे।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—तिहां विहरता मांणिक सूरी, आविया आणंद पूरि। देसणा दिइ सनूरी, नीसुणइ भवियण भूरि।—ऐ.जै.का.सं.

रू०भे०—देसन, देसना।

देसणोक-सं०पु० [देश+नाक=स्वर्ग] यह बीकानेर से १६ मील दक्षिण में है। यहां इसी नाम का रेल्वे स्टेशन बना हुआ है और पास ही में बस्ती बसी हुई है। यहां श्री करणीजी का प्रसिद्ध मन्दिर है।

वि०वि०—दयाळदास सिढ़ायच के मत से देसणोक का अर्थ है देश का नाक। राठौड़ों से पहले यहां सांखलों का राज्य था। उन्होंने यहां पर विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में दो तालाव खुदवाए जो राजोळाव और अणखोळाव के नाम से प्रसिद्ध हैं। पहले यहां कोई वस्ती बसी हुई नहीं थी। यहां घास प्रचुर मात्रा में होती थी अतः सांखलों ने यहां चारागाह बना दिया और यहां उनके घोड़े रखे जाते थे जो समीप के दो तालावों से पानी पीते थे। फिर यह स्थान राठौड़ों के पूर्वज राव चूंडा के अधिकार में आ गया और उसके पुत्र कान्हा ने भी इसे पूर्ववत् अपने घोडों के लिए चारागाह बनाये रखा। तत्पश्चात् श्री करणीजी ने, जो शक्ति का अवतार मानी जाती थीं, अपने रहने के लिए इसी स्थान को पसंद किया। राव कान्हा श्री करनीजी को वहां से निकालने के लिए उपस्थित हुआ तो दैव के कोप के कारण वहीं उसकी मृत्यु हो गई और रिड़मल जांगलू का स्वामी बना। श्री

करनीजी ने विक्रमी संवत् १४७६ मि० वैशाख शुक्ल द्वितिया, शनिवार को देसणोक नगर का शिलान्यास किया। इनकी मान्यता आसपास के गांवों में बहुत फैल चुकी थी, इसलिए इनके कई भक्त वहीं आ बसे। जब यह बस्ती एक गांव के रूप में आ गई तो एक दिन राव रिड़मल ने जोहड़ में पहुंच कर श्री करनीजी से प्रार्थना की कि यह गांव मेरे देश की ओट (पनाह) है इसलिए इसका नाम 'देश-ओट' रखिए। इस पर श्री करनीजी ने उत्तर दिया कि नहीं, यह देश का नाक है इसलिए इसका नाम 'देश नाक' रखती हूं। यही देशनाक शब्द बिगड़ कर बीकानेर निवासियों के उच्चारण भेद के कारण पीछे से देसनोक—देसणोक बन गया। श्री करणीजी ने महाप्रयाण से एक वर्ष पूर्व लगभग १५० की आयु में वि० सं० १५९४ में अपने रहने के लिए यहां एक छोटा सा कोठा बनवाया जो गुम्भारा कहलाता है। वे इसमें बैठ कर ध्यान करती थीं। आज भी सहस्रों यात्री प्रतिवर्ष दर्शन के लिए आते हैं। बीकानेर नरेशों द्वारा गुम्भारे पर सुंदर मन्दिर बनवा दिया गया है। गुम्भारा में चूहे रहते हैं जो 'कावे' कहलाते हैं। इन्हें मारा या पकड़ा नहीं जाता है बल्कि इनके दाने-पानी की व्यवस्था की जाती है। ऐसा माना जाता है कि श्रीकरणीजी की सहायता से ही राव बीका ने बीकानेर राज्य की स्थापना की थी अतः बीकानेर महा-राजाओं में पीढ़ी दर पीढ़ी यह नियम चला आ रहा है कि वे अपने राज्य से बाहर जाने से पहले देसणोक जा कर श्री करणीजी का दर्शन करें।

रू०भे०—देसांण, देसांणो, देसणोक, देसांण।

देसणोकियो—सं०पु०—देशणोक ग्राम का निवासी।

वि०—देशणोक संबंधी, देशणोक का।

देसथळी—सं०स्त्री० [सं० देश+स्थल] रेगिस्तानी प्रदेश। उ०—हुवो खळां थांणो खळहांणो। लेखा पखे सु धन लूटांणो। देसथळी प्रासरणो दीधो। लोड़ें डंड फळोधी लीधो।—रा.रू.

देसघणी—सं०पु० [सं० देश+धनिक] राजा, नृप।

देसन, देसना—देखो 'देसण, देसणा' (रू.भे.) (जैन)

उ०—१ दांन सीग्रल तप भाव गुरु देसन करइ रे, तेहांना जे द्रस्टांत सहू ते उचरइ रे।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ प्रवचन वचन विस्तार ग्ररथ तरवर घणा रे। कोकिल कांमिनी गीत गायइ स्त्री गुरु तणा रे। गाजइ गाजइ गगन गंभीर स्त्री पूज्यनी देसना रे। भवियण-मोर चकोर थायइ सुभ वासना रे।

—कवि कुसळलाभ

देसनिकाळो—सं०पु० [सं० देश+निष्कासनम्] देश से निकाल दिये जाने का दंड।

देसपत, देसपति, देसपती, देसपत्त, देसपत्ति, देसपह—सं०पु० [सं० देशपति, देश प्रभु] राजा, नृप (डि.को.) उ०—१ मेवह रो तेग खरो राजगती मोट मती। पाटपती देसपती राउ तणो लखपती।—ल.पिं.

उ०—२ मो कथ सखा धारि निज मनया। तूं इण देसपती री तनया।—सू.प्र.

देसभासा—सं०स्त्री० [सं० देश भाषा] १ वह भाषा जो किसी देश या प्रांत विशेष में ही बोली जाती हो. २ ७२ कलाओं में से एक कला।

देसभासाग्यांन—सं०पु० [देश भाषाज्ञान] १ प्राकृतिक बोलियों का जानना. २ ६४ कलाओं में से एक।

देसमंडप—सं०पु० [सं० देशमण्डप] राह पर लोगों के ठहरने का स्थान ? उ०—कोस्टाकार सत्राकार मठ विहार प्रपामंडप देसमंडप त्रिक चतुस्क चत्वर (व.स.)

देसमल्लार—सं०पु० [सं०] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

देसराज—सं०पु० [सं० देशराज] १ राजा, नृप. २ आल्हा व ऊदल के पिता का नाम जो राजा परमाल के सामंतों में थे।

देसलड़ो—देखो देस' (अल्पा., रू.भे.) उ०—नहिं भावै थांरो देसलड़ो रंगरूड़ो। थांरै देसां में रांणा साध नहीं छै, लोग वसै सब कूड़ो। नहिं भावै थांरो देसडलो रंगरूड़ो।—मीरां

देसवट, देसवटो—देखो 'देसूंटो' (रू.भे.)

उ०—माहरै इण कंवर रो कांम नहीं, इण नै देसवटो देस्यां।

—रीसाळू री वात

देसवरति—सं०स्त्री० [सं० देशविरति] हिंसा आदि का आंशिक त्याग, अणुव्रत (जैन) उ०—सरववरति न देवाय, देसवरति लीउ भाय। मुगति जसिउ सही ए, श्रा भवि केवळ लही ए।—प्राचीन फागु-संग्रह

रू०भे०—देसविरति।

देसवाळ—सं०पु० [सं० देश+आलुच्] स्वदेश का।

देसवाळी, देसवाळीपठांण—सं०स्त्री० [देश०] एक मुसलमान जाति जो पहले राजपूत थे।

देसवासी—वि० [सं०] एक ही देश में रहने वाला स्वदेशी।

उ०—आबादांन गांवां में किसांणा नै बसाया। उदकी भी यनांमी देसवासी चैन पाया।—शि.वं.

देसविरति—देखो 'देसवरति' (रू.भे.) उ०—महाध्वज, संघपतिता, चैत्यपरिपाटिका, परिधांमनिका, उद्यापन, सम्यक्त्वारोपण देसविरति प्रतिपत्ति।—व.म.

देसांण, देसांणो—देखो 'देसणोक' (रू.भे.) उ०—१ जोय कटक नृप 'जैत' सहर देसांण सिधायो।—मे.म.

उ०—२ भड़तां खुरसांण जकै दळ भागा, आयो 'करण' तो आडी ओट। बीकांणो देसांणा वासै, कम पलटै करनादे कोट।

—महाराजा करणसिंघ

देसांतर—सं०पु० [सं० देशांतर] १ ध्रुवों से होकर उत्तर दक्षिण गई हुई किसी सर्वमान्य मध्य रेखा से पूर्व व पश्चिम की दूरी, लंबांश।

—भूगोल

२ अन्य देश, विदेश। उ०—पाउल देउल रंग-भरि, देस देसांतर हांम। स्त्रिस्टा सरजाडि न कां, केलि करंतां कांम —मा.कां.प्र.

रू०भे०—देसंतर, देसंतरि, देसंतरी, देसांतरी ।

देसांतरविसेस-सं०स्त्री०—७२ कलाओं में से एक (व.स.)

देसांतरी-वि० [सं० देशांतरिक] १ विदेशी, परदेशी (उ.र)

उ०—देस तणा देसांतरी, वडूआ पाटइ वूंब । साबलिया सघळा मिळ्या, साथ साहिला लूंब ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'दिसांतरी' (रू.भे.)

३ देखो 'देसांतर' (रू.भे.)

देसाउर, देसाउरि—देखो 'दिसावर' (रू.भे.) उ०—मीर मलिक मारग्या रिण मांही, इसी वात देसाउरि जाइ । ढीली नवि वइसइ दीवांण, बाहरि मुहल न दीइ सुरतांण ।—कां दे.प्र.

देसाखी-सं०स्त्री० [सं० देशाखी] बसन्त ऋतु के मध्यान्ह में गाई जाने वाली हनुमत के मत से एक रागिनी (संगीत)

देसाचार-सं०पु० [सं० देशाचार] देश की चाल या व्यवहार ।

देसाटण-सं०पु० [सं० देशाटन] भिन्न भिन्न स्थानों एवं प्रदेशों की यात्रा, देश भ्रमण । उ०—हां मा बाप हमें कित हेरूं, पतो न लागो पूरो, जग में छोड गया कित जांमी, देसाटण कर दूरो ।—ठाकुर फतैसिंघ

देसाधिप-सं०पु० [सं० देशाधिप] देश का स्वामी, राजा, नृप ।

उ०—सयंवर मंडप मंडाउं, सहू देसाधिप तेडाउं । इण नरितो जो वर पाउं, तो बेटी नै परणाउं, हो लाल ।—स्रीपाळ रास

देसाधिपति, देसाधिपत्ति-सं०पु० [सं० देश+अधिपति] देशपति, राजा, नृप । उ०—१ जांण चाल्यां री नगती कोण करि सकै । वडा देसाधिपति साथि होइ नै चाल्या ।—वेलि. टी.

उ०—२ नवसहस जइत नरवइ नरेस, देसाधिपति जांगळू देस । जिणि भोमि पट्ट पहविजइ चीर, सुणियइ घर जंगळ कासमीर ।

—रा.ज.सी.

देसार-सं०स्त्री०—ढोली जाति की एक शाखा (मा.म.) ।

देसालिक-सं०पु० [सं० दिशा+आलिक] दिशा-दर्शक, मार्ग-दर्शक (?)

उ०—कूटिकार चाटुकार उपानहधर भ्रिंगारधर स्थगतिधर चित्रक देसालिक मसूरिक अंककार ।—व.स.

देसाळी-सं०स्त्री०—एक जाति विशेष (?)

उ०—पचोळी डवगर वावर फोफलिया फडहटिया फडिया गेगडिया सिगटिया भोई कंदोई देसाळी कलाळी गोळी गवाळ पसूयाळ राजपात्र विद्यापात्र विनोद पात्र ।—व.स.

देसि, देसी—१ देखो 'देस' (रू.भे.) उ०—पूगळ देस दुकाळ थियु, किणहीं काळ विसेसि । पिंगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवर चढ़ देसि ।

—ढो.मा.

सं०पु०—२ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.) (अश्वचिंतामणि)

सं०स्त्री०—३ एक रागिनी (संगीत)

वि०—१ स्वदेश का, स्वदेश सम्बन्धी. २ स्वदेश में उत्पन्न या बना हुआ ।

देसीगोखरू-सं०पु० [सं० देशीय+गोक्षुरक] जमीन पर फैलने वाली गोल काटेदार बूँटी ।

देसीलुहार-सं०पु० [सं० देशीय+लोहकार] लुहारों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

देसूंटो, देसोट, देसोटो-सं०पु० [सं० देशात्+उत्थानम्] देश से निकाल देने का दंड, देश-निकाला । उ०—१ वळइंन नळराजा पामिइ दीसइ ? लोक तिहां वारता करइ, देसोटुं दीइ आटनइ तिहां राज्य अंत पुर हरइ ।—नळ-दवदंती रास

उ०—२ राजपूतां नूं कह्यो—सारां नूं देसोटो दियो छै ।—नैणसी

उ०—३ तद इणै रांणी राजा नुं भराय नै कुंवर नुं देसोटो देरायो ।

—नीबोली

रू०भे०—दिसाटो, दिसोटो, दीसोटो, देसवट, देसवटो, देसोटो, दैसोटो, दैसोटो ।

देसोत-सं०पु० [सं० देशपति] १ देशपति, राजा ।

उ०—है हसम गज मत्त, सुभट पग रत्त समेळा । देस देस देसोत, साथ कमधज्ज सभेळा ।—रा.रू.

[सं० देश+पुत्र=देश+उत] २ राजपुत्र, राजकुमार ।

उ०—अमरसिंह गजसिंहजी रै वडो कुंवर । सांचोर रा चहुवांणां रो दोहितो । सो गजसिंहजी री रजा नहीं । अमरसिंह निराठ सारी बात में अव्वल, वडो देसोत, मांटी-पणै रो थांभ ।

—अमरसिंह राठौड़ री बात

३ जागीरदार, सामंत, सरदार. ४ 'राइका' जाति का वह व्यक्ति जो ऊंटों के झुंड के साथ रहता है ।

वि०—१ वीर, योद्धा । उ०—आज दौड़ो खेलतां मिजाज गाढी भड़ां आंन, आडू रिड़मलां तणी संभाळी ऐनोन । पांडियां वडाळी रीत त्यांग धणी प्रीत पाळी, दादा बाप वाळी सातां उजाळी देसोत ।

—ठा. महेसदास कूंपावत रो गीत

२ सुन्दर, रूपवान ।

रू०भे०—दहसोत, देसौत, दैसोत, दैसौत ।

अल्पा०—देसोतड़ो, देसोतरो, दैसोतड़ो, दैसोतड़ो ।

देसोतड़ो—देखो 'देसोत' (अल्पा., रू.भे.)

देसौटो—देखो 'देसोटो' (रू.भे.)

देसौत—देखो 'देसोत' (रू.भे.) उ०—देसौत देस देसाधिपति, एम छत्रपति ओळगै । पावै न माग दरबार पह, ऊँदार भूपां अगै ।—रा.रू.

देह-सं०स्त्री० [सं०] शरीर, तन (डिं.को.) । उ०—१ जाळ टळै मन क्रम गळै, निरमळ थावै देह । भाग हुवै तो भागवत, सांभळजै सवनेह ।—ह.र.

उ०—२ नहीं तो नार पुरवल सनेह, नहीं तो दोरथ छुच्छम देह ।

—ह.र.

उ०—३ विमळ देह सिंघवाहणी, ओपै कळा अखंड । वडां-वडी चहुँ विम्मळा, महि पताळ नव खंड ।—खेतसी बारहठ

मुहा०—१ देह छूटणी—मृत्यु होना, जीवन समाप्त होना.

२ देह छोडणी—मर जाना ।

रू०भे०—दिह, देही, देहु ।
अल्पा०—देहड़ली, देहड़ी, देहली, देहुडी ।
देहकरण–सं०पु०—७२ कलाओं में से एक कला ।
देहड़ली, देहड़ी—देखो 'देह' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ दूध दही खाया दूजां रा, दीपी देहड़ली । मरियां सूं सूंनी मिळ जासी, खूनी खेहड़ली ।—ऊ.का.
उ०—२ सोवन वरणइ रे दीपइ देहड़ी, सुमनस सवित पाय सलूणा ।
—वि.कु.
देहचिंता–सं०स्त्री० [सं०] मल त्याग की इच्छा (?)
उ०—देहचिंता मिसि ऊठघउ, सुंदरी न मेल्हइ ते पूठउ । राग धरी नवि बोलइ, सूनइ चिति घरि डोलइ ।—प्राचीन फागु-संग्रह
देहज–वि० [सं०] (स्त्री० देहजा) १ देह से उत्पन्न । उ०—उणमें मेह देहजा आई, किनियांणी जगदंब कहाई ।—मे.म.
२ देह (शरीर) संबंधी ।
देहतती–सं०पु० [सं० देहतत्वी] मनुष्य (अ.मा.)
देहत्याग–सं०पु०यौ० [सं०] मृत्यु, मौत ।
देहधारक–वि० [सं०] शरीर धारण करने वाला ।
देहधारण–सं०पु० [सं०] १ जन्म, उत्पत्ति.
२ जीवन रक्षा ।
देहधारी–वि० [सं० देहधारिन्] शरीर धारण करने वाला ।
देहनायक–सं०पु० [सं०] देह का निर्माता, ब्रह्मा । उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्य चतुर जुगविधायक । सरवजीव विस्व-क्रत ब्रह्म सू, नरवर हंस देहनायक ।—वेलि.
देहयात्रा–सं०स्त्री० [सं०] १ भरण-पोषण, पालन. २ भोजन.
३ मृत्यु, मरण ।
देहरइरउ, देहरउ—देखो 'देवरौ' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—भरत कराव्यउ गलउ देहरउ रे, सउं भाई ना थूंभ रे । आप मूरति सेवा करइ रे, जांणे जोइयइ ऊभ रे ।—स.कु.
देहरांपंथी, देहरापंथी–वि० [सं० देवगृह+पथ] मंदिर-मार्गी, मूर्ति-पूजक ।
देहरासर, देहरासरु–सं०पु० [सं० देवतावसरः] देवता का उत्सव (?)
उ०—रूपि रवि रोही रहइ, कोडि कळा जिम कांम । नीचूं जोतु नितु पुलइ, जिहां देहरासर-ठांम ।—मा.कां.प्र.
देहरियौ—देखो 'देवरौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—बावन देहरियां जी, परि-दखणा परियां । वंदन त्रिण वरियां जी, धरम ध्यांनइ धरियां ।
—ध.व.ग्रं.
देहरी—देखो 'देहळी' (रू.भे.) । उ०—यहि आंगणां यहि देहरी, यही ससुर को गांव । दुलहण दुलहण टेरते, बुढ़िया पड़ग्यो नांव ।
—अज्ञात
देहरु, देहरू, देहरौ—देखो 'देवरौ' (रू.भे.) उ०—१ सहस आभरणां सारि करि, स्वांमी-केरी सेव । ललना लय मनि लेखवइ, अे देहरु अे देव ! ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ लोक सगळां कन्है जीजिया लीजियै, देहरा ठांम महिजीद दीसै । थरहरै गाय इण राव इंद्रसी थकां, हियौ इण राज सुं केम हीसै ।—ध.व.ग्रं.
देहळ—देखो 'देहळी' (मह. रू.भे.) (डि.को.)
देहळी–सं०स्त्री० [सं० देहली] १ द्वार की चौखट की वह लकड़ी जो नीचे होती है और जिसे लांघते हुए लोग भीतर घुसते हैं (डि.को.) ।
उ०—दै घर री तज देहळी. पणघट सांमां पाय । बाजै घूघर पार बिण, सोर सरोवर जाय ।—बां.दा.
रू०भे०—डेळी, डेल्ही, डेहळी, देळी, देहरी ।
मह०—डेळ, डेहळ, देहळ ।
२ देखो 'देह' (अल्पा., रू.भे.)
देहवंत, देहवांन–वि० [सं०] देहधारी ।
सं०पु०—शरीरधारी व्यक्ति, सजीव प्राणी ।
देहांत–सं०पु० [सं०] मृत्यु, मौत ।
देहांतर–सं०पु० [सं०] १ जन्मांतर, दूसरा शरीर. २ मरण, मृत्यु ।
देहा—देखो 'देह' (रू.भे.)
उ०—देवी जखणी भखणी देव जोगी, देवी नम्मळा भोज भोगी निरोगी । देवी मात जांनेसुरी ब्रह्म मेहा, देवी देव चांमुंड संख्याति देहा ।—देवि.
देहाड़ौ—देखो 'दिवस' (अल्पा., रू.भे.)
देहात–सं०स्त्री० [फा०] गांव, ग्राम ।
रू०भे०—दिहात ।
देहाती–वि० [फा० देहात+रा०प्र०ई] १ गांव का, ग्रामीण.
२ गंवार ।
रू०भे०—दिहाती ।
देहातीपण, देहातीपणौ, देहातीपन–सं०पु० [फा देहात+रा०प्र०पण, पणौ] १ ग्रामीण दशा. २ गंवारपन ।
रू०भे०—दिहातीपण ।
देहारी–वि० [सं० देह] देह संबंधी, शरीर का, दैहिक ।
देहिका–सं०स्त्री० [सं०] एक प्रकार के कीड़े का नाम ।
देही–सं०पु० [सं० देह] १ शरीरधारी प्राणी, देह को धारण करने वाला जीवात्मा. २ देवता. ३ दही. ४ देखो 'देह' (रू.भे.)
उ०—१ हाथ धोय बैठा साहि नैं, साराइ खोइ सनेही । होय अनूप राख हुयगी वा, दोय घड़ी में देही ।—ऊ.का.
उ०—२ वसन्न सु पीत देही धनवांन, किरीटी कुंडळ सोभै कांन । उभै कर दूण आवद्ध असंख, सारंग पदम्म गदा चक्र संख ।—ह.र.
वि०—१ शरीर का, शरीर संबंधी.
२ देने वाला, दाता ।
देहीपंच–सं०पु० [सं० पंच देही] शरीर (अ.मा.)
देहु—देखो 'देह' (रू.भे.) उ०—१ पाहणि पाहणि आफळीउ, बाळ न दूमीउ देहु । पाहण सवि चूनउ हूयए, केवडु कउतिगु एहु ।—पं.पं.च.

उ०—अति घणुह जूनुं एहु तूय सांमि सबळूं देहु ।—पं.पं.च.

देहुडी—देखो 'देह' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जीव-विना जिम देहुडी, वारि-विना जिम मच्छि । पुरुस-विना तिम पदमिनी, साचूं संभळि वच्छि ।—मा.कां.प्र.

देहुरौ—देखो 'देवरौ' (रू.भे.) उ०—दादू हिंदू लागे देहुरै, मूसलमांन मसीति । हम लागे अलेख सौं, सदा निरंतर प्रीति ।—दादू बांणी

दैंण—देखो 'दैंग' (रू.भे.)

दैंत, दैत्य—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) (डिं.को.) उ०—१ चलै राजकुमार पिता चौ सासण पाय सहल्लै । रांवण सहत घणां खळ राखस, दारुण दैंत दहल्लै ।—रा.रू.

उ०—२ भूप रघुवर, सभ्रत धनु सर । जूझ मंडै, दैंत दंडै ।—र.ज.प्र.

दैण-सं०स्त्री० [सं० दा] १ देने की क्रिया या भाव ।

उ०—थे विछड्यां म्हां कळपां प्रभुजी, म्हारी गयौ सब चैन । मीरां रे प्रभु कब रे मिळोगे, दुख मेटण सुख दैण ।—मीरां

यौ०—दैण-लैण ।

२ प्रदत्त वस्तु, दी हुई वस्तु (डिं.को.) ३ दान ।

वि०—देने वाला । उ०—१ सोनागिर चांपावत हाथ खग तोलै । विसमै मैं द्रढ़ दैण कोप टैंण बोलै ।—रा.रू.

उ०—२ भली थूं सांझ सुखां री दैण, दाझतै दिनड़ै री ठाडोळ । नींद री नणदल, सपनां सेज, परणतां सरग परी री खोळ ।—सांझ

दैंण-स०स्त्री० [सं० दहन] १ दुख, कष्ट, पीड़ा.

२ जलन, परेशानी ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

रू०भे०—दहण ।

दैणदार-वि० [सं० दा] १ देने वाला. २ ऋण चुकाने वाला, ऋणी, कर्जदार । उ०—खींवसर गांव में तौ कांई पण पड़ोस रा गांवां में ई कोई मातवर करसौ इसौ नहीं हो के जो सेठां री दैणदार नहीं व्है ।

—रातवासौ

दैणदारी-सं०स्त्री०—ऋणी होने की अवस्था ।

दैण लैण-सं०पु०यौ०—महाजनी का वह व्यवसाय या व्यापार जिसमें ब्याज पर रुपया उधार दिया जाता है ।

दैणवर-सं०पु०—स्वामी कार्तिकेय (नां.मा.)

दैणांयत, दैणायत-वि०—१ देने वाला. २ ऋण चुकाने वाला, ऋणी, कर्जदार । उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन मिलांमति जिण भांत लैणायत दीठां दैणायत घटै तिम तिणि भांति दिन दिन निसि दीठै सूरज री तेज घटण लागौ ।—रा.सा.सं.

दैणी-अव्य०—से । ज्यूं—झट दैणी, भड़ाक दैणी बंदूक छूटी ।

मि०—दै' (३) ।

दैणौ-वि० [सं० दा] (स्त्री० दैणी) देने वाला । उ०—१ लंका मार दनागुरा लैणौ । दांन भभीखण सेवग दैणौ ।—र.ज.प्र.

उ०—२ नाहरां नूं करै जेर जाहरां बनोद नैणी, प्रचा दोय राहरां नूं देर लैणी पेस । दली ईस जसा फेर नरां नूं उथाप दैणी, दीनानाथ सैणी बीसकरां नुं आदेस ।—सैणीजी री गीत

सं०पु०—ऋण, कर्ज । उ०—दैणौ भलौ न बाप रौ, बेटी भली न अेक । पैंडौ भलौ न कोस रौ, साहब राखै टेक ।—अज्ञात

ज्यूं—अबै थारै माथै कितरौ दैणौ है ।

रू०भे०—देवणौ ।

दैणौ, दैबौ-क्रि०स० [सं० दा] १ दूसरे के अधिकार में करना, किसी वस्तु पर से अपना स्वत्व हटा कर दूसरे का स्वत्व स्थापित करना ।

ज्यूं—ए सारा ई बरतण बेटी रा दायजा में दे दीना है ।

मुहा०—दियां रा देवळ चढ़ै—देने वाले के देवल बनते हैं अर्थात् देने वाले की कीर्ति बढ़ती है ।

२ किसी वस्तु को अपने पास से अलग कर के दूसरे के पास रखना, हवाले करना, सौंपना । ज्यूं—पा मोटर म्हे थांनै इण सारू नी दी है के थे इण नै खराब कर देवौ ।

३ हाथ पर या पास रखना, थमाना. ४ प्रयुक्त या मिश्रित करना, स्थापित करना, लगाना । उ०—१ बाबहिया निल-पंखिया, बाढ़त दइ दइ लूण । प्रिय मेरा मइं प्रीउ की, तूं प्रिउ कहइ स कूण ।

—ढो.मा.

उ०—२ देव किसी उपमा देऊं, तैं सिरज्या सह कोय । तूं सारिसो तुं हिज तूं, अवर न दूजौ कोय ।—ह.र.

५ डालना, रखना । ज्यूं—कालै जज सा'ब दो मुजरिमां नै पांच-पांच बरस री जेळ देदी ।

ज्यूं—थोड़ी देर कैदियां नै मिळवा दियां पछै जेलर सा'ब पाछा आवतां ईज जेळ में दे दिया ।

६ प्रहार करना, मारना । उ०—पर गढ़ लैणा रोप पग, अरि सिर दैणा तोड़ । धरा हूंत नहिं धापणौ, खूंदाळमां न खोड़ ।—बां.दा.

ज्यूं—लकड़ी री दैणी, थप्पड़ दैणी ।

७ अनुभव कराना, भोगाना ।

ज्यूं—दुख दैणौ ।

८ उत्पन्न करना, निकालना ।

ज्यूं—अबै म्हारी मुर्गियां अंडा दैणा सरू कर देसी ।

९ बन्द करना, भिड़ाना ।

ज्यूं—ताळौ दैणौ, बोतल रौ डाट दैणौ, किंवाड़ दैणौ ।

१० किसी क्रिया विशेष का करना । उ०—१ सो जिण चौकी दैण मनोभव साखियौ । रूप नरेसुर आपका, सीदी राखियौ ।—बां दा.

उ०—२ की बांधव की दीकरा, हुकम दिए जो फेर । पातसाह जांनूं पकड़, चाढ़ै गढ़ ग्वाळेर ।—बां.दा.

उ०—३ ढोलइ सूवउ सीख दैइ, जा पंखी ग्रह वास । उडियर पाछउ आवियउ, माळवणी कइ पास ।—ढो.मा.

दैणहार, हारौ (हारी), दैणियौ—वि० ।

दिराड़णौ, दिराड़बौ, दिराणौ, दिराबौ, दिरावणौ, दिरावबौ, दिलाणौ,

दिलावौ, दैराड़णौ, दैराड़वौ, दैराणौ, दैरावौ, दैरावणौ, दैरावबौ —प्रे०रू०।

दियोड़ौ, दीदौ, दीधउं, दीधउ, दीधु, दीधू, दीधौ, दीनौ—भू०का०कृ०

दिरीजणौ, दिरीजबौ—कर्म वा०।

दीणौ, दीबौ, देवणौ, देवबौ, द्यणौ, द्यवौ—रू०भे०।

दैत—देखो 'दैत्य' (रू.भे.) उ०—लिधा तैं वार किता गढ लंक। संघारिय दैत मनाविय संक।—ह.र.

दैत-अरि—देखो 'दैत्यारि' (रू.भे.) (डि.नां.मा.)

दैतपत, दैतपति, दैतपती—देखो 'दैत्यपति' (रू.भे.)

दैतार-सं०पु० [सं० दैत्य+अरि] १ अर्जुन (अ मा.) २ देखो 'दैत्यारि' (रू.भे.)

दैत्य-सं०पु० [सं०] १ कश्यप के वे पुत्र जो दिति नामक स्त्री से पैदा हुए, असुर।

पर्याय०—अदेव, असुर, उच्चातुर, करबुर, कोणप, जवन, जातधांन, तमचर, दतीसुत, दनुज, दांणव, देवानुज, नइति, नरखयकार, निकसासुत, निसाचर, पूरवदेव, मेछ, राकस, रात्रिवळ, संभावळ, सुक्रसिस, सुरबंधु, सुररिप।

२ असाधारण बल वा लम्बे डील-डौल का मनुष्य.

३ दुराचारी, दुष्ट या नीच व्यक्ति।

रू०भे०—दइत, दइत्त, दईत, दयंत, दयत, दैंत, दैंत्य, दैत।

मह०—दइत्यंद्र, दईतंद्र, दैतर।

दैत्यगुरु-सं०पु० [सं०] शुक्राचार्य।

दैत्यजुग-सं०पु० [सं० दैत्ययुग] दैत्यों का युग जो देवताओं के बारह हजार वरसों या मनुष्यों के चार युगों के बराबर होता है।

दैत्यदेव-सं०पु० [सं०] १ दैत्यों के देवता. २ वायु. ३ वरुण।

दैत्यघूमिणि, दैत्यघूमिनी-सं०स्त्री० [सं० दैत्यघूमिनी] उलटी हथेलियों को मिला कर विशेष-विशेष उंगलियों को एक दूसरी से फँसा कर बनाई हुई तारादेवी की तांत्रिक उपासना की मुद्रा।

दैत्यपति-सं०पु० [सं०] १ रावण, दशानन।

उ०—सीता सती-सिरोमणी, रांम-घरणि रार्चति। देखण-कारणि दैत्यपति, दस सर खोयां खंति।—मा.कां.प्र.

२ राजा बलि. ३ हरिण्यकश्यपु।

रू०भे०—दैतपत, दैतपति, दैतपती।

दैत्यमाता-सं०स्त्री० [सं० दैत्यमातृ] दैत्यों की माता, दिति।

दैत्यसेना-सं०स्त्री० [सं०] केशी राक्षस की प्रेमिका जो प्रजापति की कन्या और देवसेना की बहिन थी। केशी ने इसे हर कर व्याह लिया था।

दैत्यारि-सं०पु० [सं०] १ दैत्यों के शत्रु. २ देवता. ३ इंद्र. ४ विष्णु।

रू०भे०—दैत-अरि।

५ देखो 'दैतार' (रू.भे.)

दैत्येंद्र, दैत्येस-सं०पु० [सं० दैत्य+इंद्र, दैत्य+ईश] १ राजा बलि. २ हरिण्यकश्यपु. ३ लंकापति रावण।

रू०भे०—दितेस।

दैधांण-सं०पु० [सं० उदधि+रा०प्र०आंण] समुद्र, सागर।

उ०—गुटकांण सीदांण विमांण तणी गत, नाव तिरांण दैधांण नूणौं। पुखरांण वैगांण प्रमांण पराछक, वात वसै विडंगांण भणौं।

—किसनजी दधवाड़ियौ

दैनकी—देखो 'दैनगी' (रू.भे.)

रू०भे०—ध्यांनगी।

दैनगण, दैनगणी-सं०स्त्री० [सं० दैनिक+रा०प्र०ण] मजदूरी लेकर दिन भर कार्य करने वाली स्त्री, वह स्त्री जो मजदूरी लेकर दिन भर कार्य करती हो।

दैनगियौ-सं०पु० [सं० दैनिक+रा०प्र०इयौ] (स्त्री० दैनगण, दैनगणी) मजदूरी के वदले में दिन भर कार्य करने वाला मनुष्य।

रू०भे०—ध्यांनगियौ।

दैनगी-सं०स्त्री० [सं० दैनिक+रा.प्र ई] दिन भर के कार्य की मजदूरी।

उ०—जद वेगा-ई जासौ अर दैनगी पूरी गिणासौ ?—वरसगांठ

रू०भे०—दिहांनगी, दैनकी।

दैन्य-सं०पु० [सं०] १ दीनता, दरिद्रता. २ अपने को तुच्छ समझने का भाव. ३ काव्य के संचारी भावों में से एक, कातरता।

दैवाड़णौ, दैवाड़वौ, दैवाडणौ, दैवाडवौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)

उ०—वहन दैवाड़ू देवकी। थारौ व्याह करूं गंगा कई पार।—वी.दे.

दैवाड़णहार, हारौ (हारी), दैवाड़णियौ—वि०।

दवाड़िओड़ौ, दवाड़ियोड़ौ, दैवाड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

दैवाड़ीजणौ, दैवाड़ीजवौ—कर्म वा०।

दैवाड़ियोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० दैवाड़ियोड़ी)

दैवाणौ, दैवावौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)

दैवाणहार, हारौ (हारी), दैवाणियौ—वि०।

दैवायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दैवाईजणौ, दैवाईजवौ—कर्म वा०।

दैवायोड़ौ—देखो 'दिरायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० दैवायोड़ी)

दैवावणौ, दैवाववौ—देखो 'दिराणौ, दिरावौ' (रू.भे.)

दैव-सं०पु० [सं०] १ भाग्य, प्रारब्ध (डि.को.)

उ०—हुई ! हुई ! दैव किसूं करिउं ? रत्न उदाळिउ हथिय। कालि किसूं कारण हतूं, आज अनेरी भत्ति।—मा.कां.प्र.

२ विधाता। उ०—दुरभागिन कौ हा दैव भयौ दुखदाई। घन पौल पहूँच्यौ घोरघूस ले घाई।—ऊ.का.

३ विष्णु. ४ योग में होने वाले पांच प्रकार के विघ्नों में से एक (योगी)

रू०भे०—दईव, देव ।
वि० (स्त्री० देवी) १ देवता सम्बन्धी.
२ देवता के द्वारा होने वाला ।
रू०भे०—दइ, दइवंत, दइव, दइवी, दई, दईव, दईय, दईव ।
दैवगत, दैवगति—देखो 'देवगत, देवगति' (रू.भे.)
उ०—कांणएं नहीं 'दुरगेस' रो 'अमैक्रन' 'पीथलो' चंडावळ नहीं पेखो । वांणियां तणो सारो हुवो वळोवळ, दैवगत राजगत भई देखो ।
—सुरतो वीगसो
दैवग्य-सं०पु० [सं० देवज्ञ] ज्योतिषी ।
दैवजोग—देखो 'देवजोग' (रू.भे.)
उ०—संवत १६१० रा वैसाख वद २ मेड़ता ऊपर रावजी आया । मेड़तै कुंडळ तळाव माथै जैमल रावजी सूं राड़ कीवी । जैमल वीरमदेवोत दैवजोग सूं जीतो ।—बां.दा.ख्यात
दैवतपति-सं०पु० [सं०] इन्द्र (डि.को.)
दैवतीरथ-सं०पु० [सं० दैवतीर्थ] आचमन करने में उंगलियों के अग्र भाग का नाम, उंगलियों की नोंक ।
दैववस-क्रि०वि० [सं० दैववश] संयोग से, कदाचित्, अकस्मात् ।
दैववादी-सं०पु० [सं०] भाग्य के भरोसे रहने वाला, आलसी, निरुद्यमी
दैवविवाह-सं०पु० [सं०] स्मृतियों में लिखे आठ प्रकार के विवाहों में से एक ।
दैव संजोग—देखो 'देव संजोग' (रू.भे.) उ०—इतरै दैवसंजोग सूं सेखरचन्द्र रांणी साथै द्वार मांहीं पैठै सो देवदत्त सूंड सूं उठाय कळस रो जळ उवां दोनां रै सिर पर गेरियो ।—सिंघासण बत्तीसी
दैवांण—देखो 'दीवांण' (रू.भे.) उ०—अचांणक जड़ी अजड़ी कमळ ऊपरा, जठै पकड़ी छटा खड़हड़ी जांण । कोप करड़ी घणी हंस उडतां कंवर, दुसह घट कटारी जड़ी दैवांण ।
—महाराजा बखतसिंह जी रो गीत
दैवाकारी-सं०स्त्री० [सं०] यमुना नदी ।
दैवागति—देखो 'देवगत, देवगति' (रू.भे.)
दैवात्-क्रि०वि० [सं०] दैवयोग से, इत्तिफाक से, अचानक, अकस्मात् ।
दैविच्छा-सं०स्त्री० [सं० दैव+इच्छा] १ भवितव्यता, होनी.
२ ईश्वर-इच्छा । उ०—हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हांणी । जग में दैविच्छा किणहीं नह जांणी । बादळ बीजळियां नभ में नहि नैड़ी । भेजो भणणायो भळकी पुळ भैड़ी ।—ऊ.का.
दैवी-वि०स्त्री० [सं०] १ देवताओं द्वारा दी हुई, देवकृत.
ज्यूं—दैवीलीला. २ देवताओं से सम्बन्ध रखने वाली. ३ आकस्मिक, प्रारब्ध या संयोग से होने वाली ।
ज्यूं—दैवी घटना. ४ सात्विक । ज्यूं—दैवी संपत्ति ।
सं०स्त्री०—दैव विवाह द्वारा व्याही हुई पत्नी ।
दैवु—देखो 'दैव' (रू.भे.) उ०—दैवु न गिणई दैवु न गिणई पुण्यु नइ पापु ।—पं.पं.च.

दैसत्त-सं०स्त्री० [फा० दहशत] भय, डर ।
दैसांण—देखो 'देसांणोक' (रू.भे.)
दैसाळिक—देखो 'देसाळिका' (रू.भे.)
उ०—स्थगिकाधर चित्रक दैसाळिक मसूरिक दीपवरतिक भोजिक सूपकार ।—व.स.
दैसिक-सं०पु० [सं० देशिक] १ गुरु. २ उपदेशक. ३ राहगीर ।
दैसोटो—देखो 'देसोटो' (रू.भे.)
दैसोत—देखो 'देसोत' (रू.भे.) उ०—१ हिरदै ऊणा होत, सिर घूणा अकबर सदा । दिन दूणा दैसोत, पूणा हूं न प्रतापसी ।
—दुरसो आढो
उ०—२ वासी नरकां रा बिदर, ग्यासी रा गैसोत । सत्यानासी रा सुगुन, दासी रा दैसोत ।—ऊ.का.
दैसौत—देखो 'देसोत' (टि.को.) (रू.भे.)
दैसोतड़ो—देखो 'देसोत' (अल्पा., रू.भे.)
दों, दोंकार, दोंकारि-सं०स्त्री० [अनु०] नगारे, तबले, मृदंग या ऐसे ही किसी अन्य वाद्य की ध्वनि । उ०—१ दों दों दों दप मप द्रागिड़दिक दमके भ्रदंग । झण रण रण झैं झैं झाझरि झमकित झंग ।
—घ.व.ग्रं.
उ०—२ घां घां घपमु मद्दुर भ्रिदंग चचपट चचपट तालु सुरंग । कधुंगनि घोंगनि घुंगा नादि गाइं नागड दों दों सादि ।
—विद्याविलास पवाडउ
उ०—३ वाजइ संदर सरणाइ, सुणतां स्त्रवणे सुखदाइ । वाजइ झालरि ना झणकार, पड़इ मादळ ना दोंकार । —कवि ल्लोसार
उ०—४ भेरि तणां भांकारि, झल्लरी तणां झात्कारि, संख तणे ओंकारइ, तिविल तणां दोंकारि, मादळ तणां घोंकारि ।—व.स.
दो-वि० [सं० द्वि] एक से एक अधिक, तीन से एक कम ।
मुहा०—१ दो एक—कुछ, थोड़ा सा. २ दो कोडी रो—तुच्छ, नीच. ३ दो चार—कुछ, थोड़े से ।
४ दो टूक जवाब दैणो—भले-बुरे की परवाह किए बिना ही स्पष्ट कहना. ५ दो दिन रो—थोड़े समय का. ६ दो दांणा ई कोयनी—अक्ल नहीं होना, मूर्ख के लिये. ७ दो दिन रो मेहमांन—जल्दी मरने वाला, जल्दी ही कहीं जाने वाला ।
रू०भे०—दोय, दोह ।
सं०पु० [सं० द्यो] १ स्वर्ग. २ आकाश (अ.मा.)
यौ०—दोमिण ।
३ वृषभ. ४ दैत्य. ५ स्त्रियों की कनपटी के ऊपर गूंथी जाने वाली बालों की गुच्छी, लट. ६ सिंह. ७ दान. ८ लिंग. ९ हाथ. १० पांव.
सं०स्त्री०—११ रात्रि (एका.) १२ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक (व.स.) १३ दो की संख्या ।
दो'-सं०पु० [सं० दोष] मनौती न मनाने से या अन्य कारण से किसी

देवता का कुपित होकर पैदा किया जाने वाला विकार या बाधा। (एका.)

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

रू०भे०—दोम, दोह।

दोग्रांनी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+ग्राणक] एक रुपये के आठवें भाग का सिक्का।

दोइ—देखो 'दोई' (रू.भे.) उ०—तीड री सलख कुळ चाढ तोइ। दन खगां विरद अजवाळ दोइ।—सू.प्र.

दोइण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.) उ०—दळ भंजे डेरा फुरळि, गमी दखणी दहवाट। 'गज' केसरी धांसाड़ियौ, दोइणां वाळै दाट। —गु.रू.बं.

दोइतरी—देखो 'दोहिती' (रू.भे.) उ०—ग्रा मळकी सिद्धमुख रै कस्वै कंवरपाळ री दोइतरी छै।—द दा.

दोइतरौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दोइतरी)

दोइती—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोइतौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दोइती)

दोई-वि० [सं० द्वि] १ दोनों।
उ०—देखे सेद नमथ पथ दोई। सुणि सुणि अचरज थया सकोइ। —रा.रू.

२ तीन से एक कम, द्वि, दो। उ०—दोई पहर रात कैसे कटेगी! —चौबोली

दोईतरी—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोईतरौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दोईतरी)

दोईति—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोईतौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दोईती)

दोईत्री—देखो 'दोहिती' (रू भे.)

दोईत्रौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे)
(स्त्री० दोईत्री)

दोईरद-सं०पु० [सं० द्विरद] हाथी (ह.नां.)

दोऊ, दोऊ-वि० [सं० द्वि] दोनों।

दोकड़ौ-सं०पु०—एक रुपये के सौ वें अंश के मूल्य का एक प्रकार का प्राचीन सिक्का। उ०—विरद पुंज अण बीह 'गोइंद' विया, दिल कहे न धारू देण हिक दोकड़ौ।—अज्ञात

दोकद-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

दोकी-सं०स्त्री० [सं० द्वि] १ विद्यार्थी का गुरु के पास से दो उंगली उठा कर शौच जाने की छुट्टी मांगने की क्रिया या भाव.
२ दो की संख्या।
वि०—दो।

दोखंभा-सं०पु० [सं० द्वि+स्तम्भ] एक प्रकार का नैचा जिसमें कुल्फी नहीं होती, यह नैचा काट कर लोहे की कमानी पर बनाया जाता है।

दोख-सं०पु० [सं० दोष] १ कोप, गुस्सा, क्रोध।
उ०—जे तूं जीवतौ छै तौ तूं म्हारौ वैर लेईस। अर थे रजपूत नीसरिया छै तियां सूं दोख मतां राखै।—नैणसी
२ देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—नमो मधुसूदण देवण मोख। नमो दत देव विडारण दोख। नमो प्रहळाद उतारण पार। नमो हर संकट मेटणहार।—ह.र.

दोखण—१ देखो 'दूसण' (रू.भे.)
उ०—इण दोखण नृप नह आदरसी। भावि साखि मुनिंद तद भरसी। —सू.प्र.
२ देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—नह व्है जात पित नांम हीण दोखण सो कहियै। वरण होय विसुद निनंग दोखण ते नहियै।—र.ज.प्र.

दोखादोगंदक, दोगंधक-सं०पु० [सं० दौगुन्दुक] अतिशय रति क्रीड़ा करने वाली एक देव जाति। उ०—१ दोगंदक नी परइ, सही सगळा संजोग। निज प्रीतम साथइ सदा, विलसइ नव नव भोग। —कवि स्रीसार
उ०—२ राति दिवस भीनौ रहै, पदमणि स्यूं बहु प्रेम रे रंग रसिया, पंथ विसय सुख भोगवै रे, दोगंधक सुर जेम रे रग रसिया। —प.च चौ.

दोखियौ—देखो 'दोखी' (रू.भे.)

दोखी, दोखीलौ-वि० [सं० दोपिन्] १ शत्रु, दुश्मन (डि.को.)
उ०—सिर ऊपर दोखी जम सिरखा। नांम सिमर रणछोड नृप। (ह.नां)
२ देखो 'दोसी' (रू.भे.)
रू०भे—दोहगी।

दोखौ—देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—प्राग जाय जळ पैस, चित्त ऊजळ कर चोखा। वळै मेट ग्रभ-वास, काट सब दुक्रत दोखा।—ज.खि.

दोगड़—१ देखो 'दोघड़' (रू भे.)
२ विचार।

दोगणौ—देखो 'दुगणौ' (रू.भे.)
उ०—व्यांवा घर दोगण दियणा, मुरधर में माटी तणा।—दसदेव

दोगलौ-सं०पु० [फा० दो+गल्ला] (स्त्री० दोगली) १ वह प्राणी जिसके माता पिता भिन्न जाति के हों।
२ वह व्यक्ति जो अपनी माता के यार से उत्पन्न हो, जारज।

दोगी-सं०स्त्री०—[देश०] १ नार कंकरी नामक एक देशी खेल की चाल विशेष. २ पीडा, दर्द, कष्ट. ३ संकट, आपत्ति. ४ दुविधा. ५
उ०—भूमि मांझ घसगौ जस भोगी। साच सु हस्ती ससकै सोगी। दांन ऊंट रै लागी दोगी। जांण अजांण सोई थाकौ जोगी।—ऊ.का.
६ शत्रु, दुश्मन.

रू०भे०—दईव, देव।

वि० (स्त्री० देवी) १ देवता सम्बन्धी.

२ देवता के द्वारा होने वाला।

रू०भे०—दइ, दइवंत, दइव, दइवी, दई, दईव, दईय, दईव।

दैवगत, दैवगति—देखो 'देवगत, देवगति' (रू.भे.)

उ०—कांणरा नहीं 'दुरगेस' रो 'अभैकरन' 'पीथलो' नंदावळ नहीं पेखो। वांणियां तणो सारो हुवो वळोवळ, दैवगत राजगत भई देखो।

—सुरतो वीगसो

दैवग्य-सं०पु० [सं० देवज्ञ] ज्योतिषी।

दैवजोग—देखो 'देवजोग' (रू.भे.)

उ०—संवत १६१० रा वैसाख वद २ मेड़ता ऊपर रावजी आया। मेड़तै कुंडळ तळाव माथै जैमल रावजी सूं राड़ कीवी। जैमल वीरमदेवोत दैवजोग सूं जीतो।—बां.दा.ख्यात

दैवतपति-सं०पु० [सं०] इन्द्र (डि.को.)

दैवतीरथ-सं०पु० [सं० दैवतीर्थ] आचमन करने में उंगलियों के अग्र भाग का नाम, उंगलियों की नोंक।

दैववस-क्रि०वि० [सं० दैववश] संयोग से, कदाचित्, अकस्मात्।

दैववादी-सं०पु० [सं०] भाग्य के भरोसे रहने वाला, आलसी, निरुद्यमी

दैवविवाह-सं०पु० [सं०] स्मृतियों में लिखे आठ प्रकार के विवाहों में से एक।

दैव संजोग—देखो 'देव संजोग' (रू.भे.) उ०—इतरै दैवसंजोग सूं सेखरचन्द्र रांणी साथै द्वार मांहीं पैठै सो देवदत्त सूंट सूं उठाय कळस रो जळ उवां दोनां रै सिर पर गेरियो।—सिंघासण बत्तीसी

दैवांण—देखो 'दीवांण' (रू.भे.) उ०—अचांणक जहां अजड़ी कमळ ऊपरा, जठै पकड़ी छटा खड़हड़ी जांण। कोप करही घणी हंस उडतां कंवर, दुसह घट कटारी जड़ी दैवांण।

—महाराजा बखतसिंह जी रो गीत

दैवाकारी-सं०स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

दैवागति—देखो 'देवगत, देवगति' (रू.भे.)

दैवात्-क्रि०वि० [सं०] दैवयोग से, इत्तिफाक से, अचानक, अकस्मात्।

दैविच्छा-सं०स्त्री० [सं० दैव+इच्छा] १ भवितव्यता, होनी.

२ ईश्वर-इच्छा। उ०—हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हांणी। जग में दैविच्छा किणहीं नह जांणी। बादळ बीजळियां नभ में नहि नैड़ी। भेजी भणणायो भळकी पूळ भेड़ी।—ऊ.का.

दैवी-वि०स्त्री० [सं०] १ देवताओं द्वारा दी हुई, देवकृत.

ज्यूं—दैवीलीला. २ देवताओं से सम्बन्ध रखने वाली. ३ आकस्मिक, प्रारब्ध या संयोग से होने वाली।

ज्यूं—दैवी घटना. ४ सात्विक। ज्यूं—दैवी संपत्ति।

सं०स्त्री०—दैव विवाह द्वारा व्याही हुई पत्नी।

दैवु—देखो 'दैव' (रू.भे.) उ०—दैवु न गिणई दैवु न गिणई पुण्यु नइ पापु।—पं.पं.च.

दैसत्त-सं०स्त्री० [फा० दहशत] भय, डर।

दैसांण—देखो 'देसगोक' (रू.भे.)

दैसाळिक—देखो 'देसाळिका' (रू.भे.)

उ०—स्थगिकाधर नियत दैसाळिक मसूरिक दीपधरतिक मोसिक सूपकार।—व.स.

दैसिक-सं०पु० [सं० दैशिक] १ गुरु. २ उपदेशक. ३ राहगीर।

दैसोटो—देखो 'देसोटो' (रू.भे.)

दैसोत—देखो 'देसोत' (रू.भे.) उ०—१ हिरदै ऊगा हीत, सिर धूणा अकबर सदा। दिन दूणा दैसोत, पूगा तूं न प्रतापसी।

—दुरसो आढ़ो

उ०—२ वागां नरकां रा विदर, ग्रासी रा गैसोत। सत्यानासी रा सुगुन, दासी रा दैसोत।—ऊ.का.

दैसोत—देखो 'देसोत' (डि.को.) (रू.भे.)

दैसोतड़ो—देखो 'देसोत' (अल्पा., रू.भे.)

दौं, दौंकार, दौंकारि-सं०स्त्री० [अनु०] नगारे, तबले, मृदंग या ऐसे ही किसी अन्य वाद्य की ध्वनि। उ०—१ दौं दौं दौं दप मप द्राभिदिक दमके द्रदंग। झण रण रण झैं झैं झाझरि झमकित झंग।

—ध.व.ग्रं.

उ०—२ धां धां धपग मद्दुर म्रिदंग नचपट नचपट तानु मुरंग। कधुंगनि धोंगनि धुंगा नादि गाइं नागट दौं दौं सादि।

—विद्याविलास पवाड़उ

उ०—३ वाजइ सुंदर सरणाइ, सुणतां श्रवणे सुखदाइ। वाजइ झालरि ना झणकार, पड़इ मादळ ना दौंकार। —नंदि सीतार

उ०—४ भेरि तणौ भांकारि, झल्लरी तणौ झारकारि, संख तणौ श्रोंकारउ, तिविल तणौ दौंकारि, मादळ तणौ धोंकारि।—व.स.

दो-वि० [सं० द्वि] एक से एक अधिक, तीन से एक कम।

मुहा०—१ दो एक—कुछ, थोड़ा सा. २ दो कोडी रो—तुच्छ, नीच. ३ दो चार—कुछ, थोड़े से।

४ दो टूक जवाब दैणो—भले-बुरे की परवाह किए बिना ही स्पष्ट कहना. ५ दो दिन रो—थोड़े समय का. ६ दो दांणा ई कोयनी—अक्ल नहीं होना, मूर्ख के लिये. ७ दो दिन रो मेहमांन—जल्दी मरने वाला, जल्दी ही कहीं जाने वाला।

रू०भे०—दोय, दोह।

सं०पु० [सं० द्यो] १ स्वर्ग. २ आकाश (अ.मा.)

यौ०—दोमिण।

३ वृषभ. ४ दैत्य. ५ स्त्रियों की कनपटी के ऊपर गूंथी जाने वाली बालों की गुच्छी, लट. ६ सिंह. ७ दान. ८ लिंग. ९ हाथ. १० पांव.

सं०स्त्री०—११ रात्रि (एका.) १२ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक (व.स.) १३ दो की संख्या।

दो'-सं०पु० [सं० दोष] मनौती न मनाने से या अन्य कारण से किसी

देवता का कुपित होकर पैदा किया जाने वाला विकार या बाधा।
(एका.)

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

रू०भे०—दोस, दोह।

दोग्रांनी–सं०स्त्री० [सं० द्वि+ग्राणक] एक रुपये के ग्राठवें भाग का सिक्का।

दोइ—देखो 'दोई' (रू.भे.) उ०—तीड री सलख कुळ चाढ़ तोइ। दंन लगां विरद ग्रजवाळ दोइ।—सू.प्र.

दोइण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.) उ०—दळ भंजे डेरा फुरळि, गमी दखणी दहवाट। 'गज' केसरी ध्रांसाड़ियो, दोइणां वाळै दाट।
—गु.रू.बं.

दोइतरी—देखो 'दोहितो' (रू.भे.) उ०—ग्रा मळकी सिद्धमुख रै कस्बै कंवरपाळ री दोइतरी छै।—द दा.

दोइतरो—देखो 'दोहितो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोइतरी)

दोइती—देखो 'दोहितो' (रू.भे.)

दोइतो—देखो 'दोहितो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोइती)

दोई–वि० [सं० द्वि] १ दोनों।
उ०—देखै सेद समय पथ दोई। सुणि सुणि ग्रचरज थया सकोइ।
—रा.रू.

२ तीन से एक कम, द्वि, दो। उ०—दोई पहर रात कैसे कटेगी!
—चौवोली

दोईतरी—देखो 'दोहितो' (रू.भे.)

दोईतरो—देखो 'दोहितो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोईतरी)

दोईति—देखो 'दोहितो' (रू.भे.)

दोईतो—देखो 'दोहितो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोईती)

दोईत्री—देखो 'दोहितो' (रू भे.)

दोईत्रो—देखो 'दोहितो' (रू.भे)
(स्त्री० दोईत्री)

दोईरद–सं०पु० [सं० द्विरद] हाथी (ह.नां.)

दोऊ, दोऊ–वि० [सं० द्वि] दोनों।

दोकड़ो–सं०पु०—एक रुपये के सौ वें ग्रंश के मूल्य का एक प्रकार का प्राचीन सिक्का। उ०—विरद पुंज ग्रण बीह 'गोइंद' विया, दिल कहै न धारू देण हिक दोकड़ो।—ग्रज्ञात

दोकद–सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

दोकी–सं०स्त्री० [सं० द्वि] १ विद्यार्थी का गुरु के पास से दो उंगली उठा कर शोच जाने की छुट्टी मांगने की क्रिया या भाव.

२ दो की संख्या।

वि०—दो।

दोखंभा–सं०पु० [सं० द्वि+स्तम्भ] एक प्रकार का नैचा जिसमें कुल्फी नहीं होती, यह नैचा काट कर लोहे की कमानी पर बनाया जाता है।

दोख–सं०पु० [सं० दोष] १ कोप, गुस्सा, क्रोध।
उ०—जे तूं जीवतो छै तो तूं म्हारो वैर लेईस। ग्रर ग्रै रजपूत नीसरिया छै तियां सूं दोख मतां राखै।—नैणसी

२ देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—नमो मधुसूदण देवण मोख। नमो दत देव विडारण दोख। नमो प्रहळाद उतारण पार। नमो हर संकट मेटणहार।—ह.र.

दोखण—१ देखो 'दूसण' (रू.भे.)
उ०—इण दोखण नूप नह ग्रादरसी। भावि साखि मुनिंद तद भरसी।
—सू.प्र.

२ देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—नह व्है जात पित नांम हीण दोखण सो कहियै। वरण होय विसुद निनंग दोखण ते नहियै।—र.ज.प्र.

दोखादोगंदक, दोगंधक–सं०पु० [सं० दौगुन्दुक] ग्रतिशय रति क्रीड़ा करने वाली एक देव जाति। उ०—१ दोगंदक नी परइ, सही सगळा संजोग। निज प्रीतम साथइ सदा, विलसइ नव नव भोग।
—कवि ल्हीसार

उ०—२ राति दिवस भीनो रहै, पदमणि स्यूं बहु प्रेम रे रंग रसिया, पंच विसय सुख भोगवै रे, दोगंधक सुर जेम रे रंग रसिया।
—प.च चौ.

दोखियो—देखो 'दोखी' (रू.भे.)

दोखी, दोखीलो–वि० [सं० दोषिन्] १ शत्रु, दुश्मन (डि.को.)
उ०—सिर ऊपर दोखी जम सिरखा। नांम सिमर रणछोड़ नूप।
(ह.नां)

२ देखो 'दोसी' (रू.भे.)
रू०भे—दोहगी।

दोखो—देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—प्राग जाय जळ पैस, चित्त ऊजळ कर चोखा। वळै मेट गभ-वास, काट सब दुक्रत दोखा।—ज.खि.

दोगड़—१ देखो 'दोघड़' (रू.भे.)
२ विचार।

दोगणो—देखो 'दुगणो' (रू.भे.)
उ०—व्यांवा घर दोगण दियणा, मुरधर में माटी तणा।—दसदेव

दोगलो–सं०पु० [फा० दो+गल्ला] (स्त्री० दोगली) १ वह प्राणी जिसके माता पिता भिन्न जाति के हों।
२ वह व्यक्ति जो ग्रपनी माता के यार से उत्पन्न हो, जारज।

दोगी–सं०स्त्री०—[देश०] १ नार कंकरी नामक एक देशी खेल की चाल विशेष. २ पीड़ा, दर्द, कष्ट. ३ संकट, ग्रापत्ति. ४ दुविधा. ५
उ०—भूमि मांझ घसगो जस भोगी। साच सु हस्ती ससकै सोगी। दांन ऊंट रै लागी दोगी। जांण ग्रजांण सोई थाको जोगी।—ऊ.का.
६ शत्रु, दुश्मन.

दोघड़-सं०पु० [सं० द्वि+घटः] १ शिर पर एक साथ उठाये जाने वाले दो जल-पात्र या कलश। उ०—म्हारा राजीड़ा री छिन छिन ओळूं आवै। ले दोघड़ जद पणघट जाऊं, साजन री सुध आवै।—लो.गी.
[सं० द्वि+घट्ट] २ दुहरी उथल-पुथल, चिन्ता, उचाट।
रू०भे०—दोगड।

दोघड़ो-वि० [सं० द्वि+घट्ट] चिंतित, उदास, खिन्न। उ०—आदू तिवार में सुगन ओ देख अमल विन दोघड़ा। आ रसम फैंसाई अमलियां तार न सोचै टोघड़ा।—ऊ.का.

दोघणो-स०पु०—बुरा, अहित। उ०—सु राजि जीवतां कुंअर स्री भोपति कुंवर स्री दळपतजी री काइ दोघणो कियो हुतो।
—द.वि.

दोट-सं०पु० [सं० द्वि पट] सूत का बना हुआ मजबूत दुहरा वस्त्र।

दोचोखट, दोचौखट-सं०स्त्री० [देश०] आभूषणों की खुदाई में जाली काट नेका एक लोहे का औजार।

दोज—देखो 'दूज' (रू.भे.)
उ०—ललाट दोज चंद मोज की मिलंदनी। नमामि मात 'इंदरा' 'समंद' नंदनी।—मे.म.

दोजक—देखो 'दोजख' (रू.भे.)
उ०—नहिं बोलां तो नीच, जो बोलां निलजा जपै। वसणो दोजक बीच, जग हसणो वाकी 'जसा'।—ऊ.का.

दोजकी—देखो 'दोजखी' (रू.भे.)

दोजख-सं०पु० [फा० दोजख़] १ इस्लाम धर्म के अनुसार पापी, दुरात्मा मनुष्यों को मिलने वाला स्थान, नरक। इसके सात विभाग माने जाते हैं। उ०—लख लख झख मारै सुख लहै किण लेखै। दुसमीं दळियै रा दोजख दुख देखै। कंठी कंठां में चंदण री काळी। गुरुपद वंदण री मूंढै में गाळी।—ऊ.का.
२ दुःख, कष्ट।
रू०भे०—दोजक, दोजग, दोजिक, दोजिग।

दोजखी-वि० [फा० दोज़ख़ी अथवा सं० जक्ष भक्ष-हसनयो=दुर्जक्षी] १ पापी, दुरात्मा. २ दुखी।
रू०भे०—दोजकी, दोजगी।

दोजग—देखो 'दोजख' (रू.भे.)
उ०—१ आगळ सुरग कपाट अघ, दोजग अगुणी देख। संपत लता कुठार सम, विपत लता घण वेख।—वां.दा.
उ०—२ ज्यां हूंदा क्रत जोय, दोजग नह वासो दियो। ते न्हावै तुव तोय, जोत समावै जहांनमी।—वां.दा.
उ०—३ सुत भीम भीम भुजबळ सप्रांण, भाटी दळ हरवळ इंद्रभांण। संग 'हरी' निडर 'मधकर' सुजाव, रिण पण हजार दोजग दुराव।
—रा.रू.

दोजगी—देखो 'दोजखी' (रू.भे.)
उ०—सोडि विचि सूइजै तापिजै सिगडिए, सवळ सी मांहि पिण सद्रव सोरा। एतिण वार में पांणती ओजगी, दोजगी भरै निस दिवस दोरा।—ध.व.ग्रं.

दोजांणो—देखो 'दोजो' (२, ३) रू.भे.)

दोजिक, दोजिग—देखो 'दोजख' (रू.भे.)
उ०—दरवार दोजिग नरक गुरमां, मनी मारै मीर। महर का मकसूद एही, पइद पोसै पीर।—ह.पु.वा.

दोजियायती, दोजीयायती, दोजीवाती, दोजीयायती-सं०स्त्री० [सं० द्विजीवा] वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो, गर्भवती स्त्री।

दोजो-सं०पु० [सं० दोग्ध] १ दूध देने वाले मादा पशु का स्तन. २ दूध व दूध से मिलने वाले पदार्थ. ३ दूध देने वाले पशु।
रू०भे०—दोजांणो, दोझांणो।

दोझांणो—देखो 'दोजो' (१, २) (रू.भे.)

दोझाल-वि० [सं० द्वि+रा० झाल] १ वीर, योद्धा, बहादुर. २ क्रुद्ध, कुपित।

दोझो—देखो 'दोजो' (रू.भे.)

दोट-सं०पु० [सं० धाव] १ आंधी, तूफान. २ हवा का झोंका, बवंडर. ३ टक्कर, प्रहार; चोट, आघात, वार।
उ०—सत्र लोट पोट उडि दोट, धजर चोट खग घोहड़ां। नवकोट छ खड वागा निडर, लालकोट मझि लोहड़ां।—सू.प्र.
४ ठोकर, ठेस. ५ आघात का प्रभाव, मार, घाव. ६ मवेशी. ७ मूर्ख, नासमझ. ८ बाल, केश।
९ आक्रमण, हमला। उ०—कुळ री वार में भड़ां भली अछेहरी कीधी, दीधी झाट जंगां ज्यों केहरी गजां दोट। गाढ़ै मतो त्याग दंडां भुदंडां जेहरी कीधी, चाळागारां खेलियो तेहरी को सी चोट।
—डूंगजी रो गीत
१० मानसिक व्यथा, शोक, संताप. ११ समूह, गुबार।
उ०—हिंदूतल्ला कांनी सूं एक भीड़ आंधी रो दोट व्हे ज्यूं ऊठी अर मुसळमांन संभळया संभळया जितरै तो भींडी बजार में जाय धमकी। आदमी, लुगाई, छोरी-छावरो जिको आगै चढयो उण नै काट'र फेंक दियो।—रातवासो
[सं० धाव] १२ दौड़ने की क्रिया या भाव।
उ०—तव राजा कठिण अति थयु, सूती नारी त्यजिनि गयु। तिहां थकी तां दीधी दोट, वळती (कांइ नवि वाळी) कोट।—नळाख्यांन
अल्पा०—दोटियो, दोटो।
१३ देखो 'दोटो' (मह., रू.भे.) उ०—दही दोट ज्यों मारिये, तिहूं लोक में फेरि। धुर पहुंचे संतोख है, दादू चढ़वा मेरि।—दादू बांणी

दोटणो, दोटबो-क्रि०स० [सं० धाव] १ पैरों के नीचे कुचलना, रौंदना।
उ०—दुरद पगां दोटीह, तैं टोटी इण वखत में। मुरधर री मोटीह, खत्रवट 'पता' खताय दी।—जुगतीदांन देथो
२ संहार करना, मारना. ३ ठोकर लगाना, ठुकराना. ४ गेंद के बल्ले की चोट मारना. ५ दबाना. ६ दौड़ना, भागना. ७ वेग

के साथ उछाल मारते हुए वहना, वेग से ऊपर उठना और गिरना।
उ०—घरा जांमूनां-कुंज दोटती रेवा दोड़ै। गज-मद गंधै नीर मेघ थूं पीनां छोडै।—मेघ.
दोटणहार, हारौ (हारी), दोटणियौ—वि०।
दोटवाड़णौ, दोटवाड़वौ, दोटवाणौ, दोटवावौ, दोटवावणौ, दोटवाववौ, दोटाड़णौ, दोटाड़वौ, दोटाणौ, दोटावौ, दोटावणौ, दोटाववौ—प्रे०रू०।
दोटिग्रोड़ौ, दोटियोड़ौ, दोटयोड़ौ—भू०का०कृ०।
दोटीजणौ, दोटीजवौ—कर्म वा०।
दोटियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ पैरों के नीचे कुचला हुग्रा, रौंदा हुग्रा. २ संहार किया हुग्रा, मारा हुग्रा. ३ ठोकर लगाया हुग्रा, ठुकराया हुग्रा. ४ गेंद के बल्ले की चोट मारा हुग्रा. ५ दवाया हुग्रा. ६ दौड़ा हुग्रा, भागा हुग्रा।
(स्त्री० दोटियोड़ी)
दोटियौ—१ देखो 'दोट' (ग्रल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'दोटी' (ग्रल्पा., रू.भे.)
३ देखो 'दोटौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)
दोटी—सं०स्त्री० [सं० द्विपटी] १ कपडे, रवड़ या चमड़े का गोला जिससे लड़के खेलते हैं. २ एक प्रकार का वस्त्र (व.स.)
ग्रल्पा०—दोटियौ।
मह०—दोट, दोटौ।
दोटौ—सं०पु० [देश०] १ दहलीज के ऊपर की लकड़ी जिसे लाँघ कर मकान के भीतर या वाहर जाया जाता है।
उ०—म्रिगया रमैं ग्रावता मारग, देखत ऊभी दोटै। ग्राज कुलंग ग्रमरा तिरा ऊपर, लाग जिनावर लोटै। रे रंग खोटे रे रंग खोटे, किरा विध कीजिये।—र.रू.
२ वायु का ववंडर, झोंका। उ०—पवन रौ एक दोट ग्रायौ ग्रर उण रौ मूंडौ भींजग्यौ। वो वैठौ व्हैग्यौ ग्रर राली काठी लपेट ली।
—रातवासौ
३ गेंद पर वल्ले का प्रहार।
मुहा०—दोटा देगा—इधर-उधर घूमना। किसी विषय में पूर्ण जानकारी न होने पर भी काल्पनिक उड़ान भरना, गप्प हाँकना।
ग्रल्पा०—दोटियौ।
मह०—दोट।
४ देखो 'दोट' (ग्रल्पा., रू.भे.)
५ देखो 'दोटी' (मह., रू.भे.)
वि०—नाश करने वाला, संहार करने वाला।
उ०—मुगां छकोटा तन सुजस, रिम दोटा सुर रंज। घन राघव मोटा घरगी, भव जन तोटा भंज।—र.ज.प्र.
दोठौ—सं०पु० [देश०] एक प्रकार का खाद्य पदार्थ, व्यञ्जन विशेष।
उ०—१ ग्रथ पक्वांन, सातपड़ां खाजां, छुवडां खाजां, एक वडां खाजां, फीगी खांड गळी खाजली, दोठां घारा, घेवर।—व.स.
उ०—२ निज निज वरगी रे वस्त्रादिक ठवै, नवपद तगौ समेळि। खाजा दोठां रे नुकती लाडुग्रा भाफी साकर भेळि।—स्रीपाळ रास
दोडंगौ—सं०पु०—एक प्रकार का फल विशेष (व.स.)
दोणकियौ, दोणकौ—सं०पु० [देश०] (स्त्री० दोगकी) १ वह मिट्टी का पात्र जो मृतक के द्वादशे पर काम ग्राता है।
वि०वि०—यह संख्या में वारह होते हैं। छः माह के संस्कार पर इनकी संख्या छः होती है।
२ देखो 'दोगियौ' (रू.भे.)
दोणातार—सं०पु० [देश०] ग्राभूपरगों की खुदाई के काम में तार पर नन्हे-नन्हे दाने खोदने का एक ग्रोजार।
दोणियौ—वि०—दुहने का कार्य करने वाला, दुहने वाला.
सं०पु०—दूध दुहने का पात्र।
रू०भे०—दोगकौ।
ग्रल्पा०—दोगकियौ।
दोणौ, दोवौ—देखो 'दूवगौ, दूववौ' (रू.भे.)
दोणहार, हारौ (हारी), दोणियौ—वि०।
दोयोड़ौ—भू०का०कृ०।
दोईजणौ, दोईजवौ—कर्म वा०।
दोत—१ देखो 'दवात' (रू.भे.) उ०—जन हरिदास ग्रवगति ग्रगम, जहां भ्रांति नहिं छोत। हम वात तहां की लिखत है, कर लेखणि विन दोत।—ह.पु वा.
२ देखो 'दूज' (रू.भे.) उ०—दोत घरि ग्राव्यौ वीसळराई। राई भतीजौ सांमहौ जाई।—वी.दे.
दोतड—सं०पु० [सं० द्वि+तट] दुहरा, दुविधा (?) उ०—पडियो राय विचारणा, ग्रजुगति वात सुगाई रे। किम ही दुरस पडे नहीं, दोतड पडियो भाई रे।—स्रीपाळ रास
दोतडि—सं०स्त्री० [सं० दुस्तटी] दुष्ट नदी (?) उ०—जिसा मरुदेसि कूप जळ, जिसी सिला उच्च सरळ तिसी ग्रांगुळी विरळ, जिसा तालव्रिक्ष तरळ तिसिउ जंघा युगळ, जिसी परवत तगी दोतडि, इसी मोटी कडी, इसिउ पिसाच।—व स.
दोति—देखो 'दवात' (रू.भे.) उ०—वळि लिखेवा लेखवउं, रोवउं हृदय न माय। कागळ लेखगि दोति पगि, ग्रहिंण्ये गयां तगाय।
—मा.कां.प्र.
दोदौ—देखो 'दूध' (२) (ग्रल्पा., रू.भे.)
दोधक—सं०पु० [सं०] १ एक वर्णवृत्त जिसमें तीन भगगा ग्रौर ग्रंत में दो गुरु वर्ण होते हैं (र.ज.प्र.)
२ चार भगरा युक्त १६ मात्रा तथा वारह वर्ण का छंद विशेप.
दोधार—देखो 'दुवार' (रू.भे.)
दोधारी—सं०स्त्री०—१ सोने चांदी के ग्राभूपरगों पर जौ की खुदाई का एक लौह का ग्रोजार। २ देखो 'दुधारी' (रू.भे.)

दोवारी—देखो 'दुवार' (अल्पा., रू.भे.)

दोधौ-सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का बरसाती पौधा जिसके पत्ते आदि से दूध निकलता है। इसके फल को 'खीरड़ी' कहते हैं।

२ देखो 'दूध' (अल्पा., रू.भे.)

दोन—देखो 'दोनौं' (रू.भे.)

दोनवू—देखो 'दानव' (रू.भे.)

उ०—सांम कांम में सधीर, सूरू के सहायक, दोनवूं के दावागीर, दिलपाकूं के दोसत।—र.रू.

दोनां—देखो 'दोनौं' (रू.भे.)

दोनाळी—देखो 'दुनाळी' (रू.भे.)

उ०—विढवा हांम गूजरां वाळी, निरखै भूप रूप दोनाळी।—रा.रू.

दोनुं, दोनूं, दोनू, दोनौं-वि० [सं० द्वि] उभय, दोनों।

उ०—१ दोनुं मिळ भेळा हूवा, 'आसौ' नै 'रिडमल्ल'।—रा.रू.

उ०—२ ढोलइ मनह विमासियउ, सांच कहइ छइ एह। करह फेकि दोनूं चढ्या, कूंट न संभाळेह।—ढो.मा

उ०—३ माथै लिया अजीमसा, दक्खण गयौ नवाब:। भळियौ दोनूं देस रौ, खांन इनायत जाव।—रा.रू.

रू०भे०—दोन, दोनां, दोनौ, दोन्यां, दोन्यु, दोन्यूं, दोनौं, दोनो।

दोनौ-सं०पु० [देश०] १ कलंक, दोष। उ०—सवारै फूल चढ़ण लागौ। तरै इण जमला अहीर री बेटी अरज कीधी—"माहरै पेट थांहरौ कारण रह्यौ छै। सोनूं हेक रावळै हाथ री सहनांणी द्यौ, सवारै लोग म्हारै माथै दोनौ देसी।" तरै फूल आपरै हाथ री मूंदड़ी दीनी नै लिखत कर दियौ।—नैणसी

२ देखो 'दूनौ' (रू.भे.). ३ देखो 'दोनौं' (रू.भे.)

उ०—पाय हुकम पागड़ै, पाव दीधौ छत्रपत्ती। भरव दोनौ भेजि; सकति तेडी त्रिसकत्ती।—मे.म.

दोन्यां—१ देखो 'दुनियां' (रू.भे.)

२ देखो 'दोनौं' (रू.भे.)

उ०—फेरघौ दोय वारी भूप दोन्यां की लड़ाई। तीनूं वार ही में राव मेरूौ जैत पाई।—शि.वं.

दोन्युं, दोन्यूं—देखो 'दोनौं' (रू.भे.)

उ०—मन मांहो संके सुभट, पदमणि दीधी राय। जो छूटै नहि तौ रखै, दोन्युं स्वारथ जाय।—प.च.चौ.

दोपइ-सं०स्त्री० [सं०] प्रत्येक चरण में १५ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष।—पि.प्र.

दोपहर-सं०स्त्री० [सं० द्वि+प्रहर] सूर्योदय व सूर्यास्त के मध्य का समय, मध्यान्ह। उ०—म्हे दोपहरां पहले थां कन्है आवस्यां यूं कहि बहिर हुवौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—दुपहर, दुपहरी, दुपार, दुपेरी, दुपैरी, दोपहरी, दोपार, दोपारी, दोपाहर, दोपैर, दोफार, दोफारी, दौफार।

दोपहरियौ—देखो 'दोपारियौ' (रू.भे.)

दोपहरी—१ देखो दोपहर' (रू.भे)

२ देखो 'दोपारी' (रू.भे.)

दोपार—देखो 'दोपहर' (रू.भे.)

उ०—परभातै मेह डंबरां, दोपारांह तपंत। रात्यूं तारा निरमळा, चेला! करौ गछंत।—वर्षा विज्ञान

दोपारियौ-सं०पु० [सं० द्वि+प्रहर+रा०प्र०यौ] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसके फूल दुपहर के समय खिलते हैं।

२ देखो 'दोपारी' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—दुपहरियौ, दोपहरियौ।

दोपारी-सं०स्त्री० [सं० द्वि+प्रहर+रा०प्र०ई] १ मध्यान्ह का जलपान, प्रातः भोजन के पश्चात् मध्यान्ह में किया जाने वाला भोजन।

रू०भे०—दुपहरी, दुपारी, दुपेरी, दुपैरी।

२ देखो 'दोपहर' (रू.भे.)

दोपारौ-सं०पु० [सं० द्वि+प्रहर+रा०प्र०औ] प्रातःकाल भोजन करने के पश्चात् मध्यान्ह में किया जाने वाला हल्का भोजन।

रू०भे०—दुपारौ, दुपेरौ, दुपैरौ, दोपैरौ, दोफारौ।

दोपाहर, दोपैर—देखो 'दोपहर' (रू.भे.)

उ०—१ सु दोपाहरै रौ हमीर पड़वै मांहै सूतौ छै, तठै रावळ आय नै पग चांपण लागौ।—नैणसी

उ०—२ अरावै आगै दाव लागै नहीं सो दोपैरां पाछा डेरां आया पाछै दिन पांच दस अरावै री राड़ जाय कीन्हीं।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

दोपैरौ—देखो 'दोपारौ' (रू.भे.)

दोप्याजौ—देखो 'दुप्याजौ' (रू.भे.)

दोफसळी—देखो 'दुफसळी' (रू.भे.)

दोफारी—देखो 'दोपारी' (रू.भे.)

दोफारौ—देखो 'दोपारौ' (रू.भे.)

दोब-सं०स्त्री० [सं० दूर्वा] बहुत प्रसिद्ध एक प्रकार की घास जो पश्चिमी पंजाब के थोड़े से रेतीले भाग को छोड कर सम्पूर्ण भारत-वर्ष में होती है। हिंदू इसको मांगलिक द्रव्य मानते हैं तथा लक्ष्मी पूजन आदि में इसका उपयोग करते हैं। उ०—सोनौ देसां सोळमौ बाई देसां ए गज मोतियां रौ हार। बधजो कड़वा नीम ज्यूं वीरा बधज्यौ ओ हरियाळी री दोब।—लो.गी.

पर्या०—अनंता, दूरबा, रुह, सतपरबीका, हरिताळी।

रू०भे०—दुरवा, दूब, दोभ, द्रोब, धोब, ध्रोब।

अल्पा०—दूबड़ी, दूबळती, दूभड़ी, दोबड़ी, दोभड़ी, द्रोबड़ी।

मह०—दूबड़, दोबड़, दोभड़, द्रोबड़।

दोबड़—देखो 'दोब' (मह., रू.भे.)

दोबड़ी—देखो 'दोब' (अल्पा., रू.भे.)

दो री—देखो 'दूबारी' (रू.भे.)

दोबै-सं०पु०—शिकार करने या डाका मारने के हेतु छिप कर बैठने का कार्य।

दोबैंत—देखो 'दवावैंत' (रू.भे.)
उ०—देवैंतां दूहा सहित, चीठी एक उपाय ।—प.च.चौ.

दोभ—देखो 'दोव' (रू.भे.) (डि.को.)

दोभड़ी—देखो 'दोव' (अल्पा., रू.भे.)

दोभाग-सं०पु० [सं० दुर्भाग्य] मंद भाग्य, खोटी किस्मत ।
उ०—विद्वांस निरधन हुइ, कमळ कंटकी जोइ रे । दोभाग-पणउ रूपवंत नइ, कळपव्रक्ष काष्ट सोइ रे ।—नळ दवदंती रास

दोभों-वि०—ढीले शरीर वाला, सुस्त । उ०—ओछा कुळ में ऊपना, दोभा डावड़ियांह । हवळै बोलै होट में, मूरख मावड़ियांह ।—बां.दा.

दोमंजलो, दोमंजिलो-वि० [सं० द्वि०+फा० मंजिल] दो खंड का, दो मरातिब का ।
रू०भे०—दुमंजलो, दुमंजिलो ।

दोमज, दोमजि, दोमझि-सं०पु० [सं० द्वि+मध्य] युद्ध, संग्राम (डि.को.)
उ०—१ वीहारी धूहड़ वाजै धजवड तुंग त्रसींगड़ तुड़ तरसै । दोमजि रत दड़िअड़ जांण नदी नड़ जोरा जम जड़ जोध खसै ।—गु.रू.बं.
उ०—२ दरजी 'अमरेस' वणाई दोमझ, तरकी सुजड़ कूंत खग तीर । रोम रोम खीलांणो रावत, सिध कंथा ताहरो सरीर ।
—महारांणा अमरसिंह रौ गीत
उ०—३ दोमझ 'रासा' दूसरा, भंजण सुरतांणा । वीड़ा झल्लै ऊठियो, लग्गा असमांणा ।—द.दा.
उ०—४ दळप्पति दोमझि दूय दुरंग । कियो कमरो जिण भांजि कुरंग ।—रा.ज. रासो
रू०भे०—द्रोमझि ।

दोमल-सं०पु०—प्रत्येक चरण में आठ सगण सहित २४ वर्ण का वर्णिक वृत विशेष (पिंगळ प्रकास)

दोमिण-सं०पु० [सं० द्यो+मणि] सूर्य्य, भानु (अ.मा.)

दोमी—
उ०—वैगरणां सैगरणां मुदता, साद करइ सुआर । दोमी दळ को संख्या आंणइं, मांहइ चक्र तलार ।—रुकमणी मंगळ

दोय—देखो 'दो' ' (रू.भे.) (डि.को.)

दोयक—देखो 'दोयेक' (रू.भे.)

दोयककुत-सं०पु० [सं० द्वि+ककुद्] ऊँट ।

दोयजीह—देखो 'दुजीह' (रू.भे.) (डि.को.)

दोयण-सं०पु० [सं० दुर्जन] १ राक्षस, दानव.
२ देखो 'दुरजण' (रू.भे.) उ०—१ फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण कियां न खळा डळा । खवां खांच चूड़ै खानंद रै, उण हिज चूड़ै गई यळा ।—बां.दा.
उ०—दोयण, रमणीय, कवेसुर, दासां, जज्ञ, समर, सुरतर, निज जोत । अवध भूप दरसै तो आळां, अवनी मोहै रूप उद्योत ।—र.रू.

दोयतरी—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोयतरो—देखो 'दोहितो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोयतरी)

दोयती—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोयतो—देखो 'दोहितो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोयती)

दोयथणी—देखो 'दुथणी' (रू.भे.) उ०—कुळ दीपक जायो य जोग कणी । थित और न थायो य दोयथणी । रांणियां वड सूरत वंधरती । जण-जो सुत मीढुम 'पालजती' ।—पा.प्र.

दोयम-वि० [फ़ा०] दूसरे नंबर का, दूसरा ।

दोयरण—देखो 'दुरजण' (रू.भे.)

दोयलो—देखो 'दोहिलो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोयली)

दोयसपी-सं०पु० [फ़ा० दो अस्प] वह सैनिक जिसके पास दो निजी घोड़े हों, दो घोड़ों की डाक ।

दोयसे'क-वि०—दो सौ के लगभग ।

दोये'क-वि० [सं० द्वि+एक] दो के लगभग ।
उ०—आ मूठी जितरीक कमर इणीज तरै खीण होती जावसी तो दिन दोये'क मैं दीसण ही न पावसी ।—र. हमीर

दोयोड़ी—देखो 'दूवियोड़ी' (रू.भे.)

दोयोड़ो—देखो 'दूवियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोयोडी)

दोरंगी—देखो 'दुरंगी' (रू.भे.)

दोरंगो—देखो 'दुरंगो' (रू.भे.)
(स्त्री० दोरंगी)

दोर-सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का आभूषण विशेष (व.स.)
[सं० दोस्] २ हाथ, कर (ह.नां.) ३ शक्ति, बल ।
उ०—कळिया गाडा काढ़तो, दे कांधो वड दोर । हव धवळो वूढ़ो हुवो, जगपत सूं की जोर ।—बां.दा.
४ देखो 'दौर' (रू.भे.) उ०—१ जोरा रा भड़ जस जोड़ा जेठी, दळ वधता जोरा रा दोर । जोरा रा तोरा जोरावर, जोरा रा रावत भी जोर ।—जोरावरसिंह ऊदावत रौ गीत
उ०—२ पदमसिंहजी रणखेत में बैठा छै । इतरै में जादूराय आय माथै रै मांही तरवार री दीवी, सो माथो फाड़ त्रिकुटी आंण बैठी । इतरै में महाराज बैठा ही लप झड़प मारी सो वागै रा दोर हाथ में आया, तींसूं मुंहडै आगै आंण पड़ियो । जद आप अेक-दोय कटार मारी सो कांम सारो सीझ गयो ।—पदमसिंह री वात
उ०—३ जेळै कई जब्बर वब्बर जोर । दिखावत वायु वरब्बर दोर । रथां पलटाय पछा प्रति राह । अछा झपटाय कहावत वाह ।
—मे.म.

दोरउ—१ देखो 'डोरो' (रू.भे.) उ०—पंख पसारी सुसतउ कीउ, पगि दीठउ दोरउ बांधिउ ।—विद्याविलास पवाडउ
२ देखो 'दो'रो' (रू.भे.)

दोरडी-सं०स्त्री०—डोरी (?) उ०—हाथ छड़ो पग दोरडी, वाघइ कोटि विसाळ। पयोवर पेडु जइ अडइ, भग थाइ भग-नाळ।
—मा.कां.प्र.

दोरडो—देखो 'डोरी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—एक जि बंधिउ दोरडइ, कर आपंतां कांइ। कांमिनि ! ए कौतुक किसिउं, पहिलूं ते पूजाइ।
—मा.कां.प्र.

दोरदंडण, दोरदंडन-सं०पु० [सं० दोस्=हस्त+दण्ड] मजबूत भुजा, दृढ़ हाथ।

दोरप, दोरम-सं०स्त्री० [देश०] १ तकलीफ, कष्ट, पीड़ा. २ वियोग अभाव जन्य दुःख।
उ०—१ अपहड़ अथग अरेह, जिको विनड़ियो वधंतो। कुवचन मुख काढ़ता, जिको सुवचन जांणंतो। एक घड़ी आंतरै, दोरम सोहि दाखंतो। जिको जीव जीवतो, न को अंतर राखंतो।
—पहाड़खां आढ़ो
उ०—२ मैं न दीठी मात उदर जिण जनमण आयौ। हीयै सीस हुलराय पोसकर नह पय पायौ। काकै पित रौ नांम जप्यौ नांनी जद जांणू। हींण मात म्हारी अगे किण दोरम आंणू।—पा.प्र.

दोरांणी—देखो 'देरांणी' (रू.भे.) उ०—सुण देवर थांनै वात कहूं रे कहतां आवै लाज। म्हारी दोरांणी कुछ न जांणै रीत भांत की वात, जी देवरिया प्यारा ए जी वो देवर मतवारा, रीझ रह्या जी पर-नारियां।—लो.गी.

दोराई-सं०स्त्री० [देश०] तकलीफ, कष्ट, पीड़ा।

दो'राणौ, दो'रावौ-क्रि०स० [सं० द्वि+रा०प्र० राणौ या सं० द्वि+आवृत्ति] १ किसी वात को पुनः कहना या किसी काम को पुनः करना, दोहराना. २ किसी कागज या कपड़े को दो तहों में करना; दोहरा डालना।
दो'राणहार, हारौ (हारी), दो'राणियौ—वि०।
दो'रायोड़ो—भू०का०कृ०।
दो'राईजणौ, दो'राईजवौ—कर्म वा०।
दो'रावणौ, दो'राववौ—रू०भे०।

दोरायतौ-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा जो अशुभ माना जाता है (शा.हो.)

दोरायोड़ो-भू०का०कृ०— १ किसी वात को पुनः कहा हुआ अथवा किसी कार्य को पुनः किया हुआ. २ दो तहों में किया हुआ, दोहरा किया हुआ (कागज, कपड़ा आदि)
(स्त्री० दो'रायोड़ी)

दोरावणौ, दोराववौ—देखो 'दोराणौ, दोरावौ' (रू.भे.)
दोरावणहार, हारौ (हारी), दोरावणियौ—वि०।
दोराविओड़ो, दोरावियोड़ो, दोराव्योड़ो—भू०का०कृ०।
दोरावीजणौ, दोरावीजवौ—कर्म वा०।

द रावियोड़ो—देखो 'दोरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० दो'रावियोड़ी'

दोरी—देखो 'डोरी' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—पाछै मुंढै पणि घणा, डगलुं न भरइ डोलि। मोहन-दोरी वांधिया, छांना खीलइ छयल्ल।—मा.कां.प्र.

दोरीओ-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष।—व.स.

दोरुखौ-वि० [फा०] (स्त्री० दोरुखी) १ जिसका विचार या झुकाव दोनों पक्षों की ओर हो. २ दोनों ओर समान रंग और वेल-बूंटे वाला (कपड़ा, कागज आदि). ३ जिसके एक तरफ एक रंग हो तथा दूसरी ओर दूसरा रंग हो।
सं०पु०—स्वर्णकारों का औजार जो हँसुली वनाने के काम आता है।

दोरौ—देखो 'डोरौ' (रू.भे.) (व.स.)

दो'रौ-वि० [सं० दुःखधर=दुहहरः=दोहरौ–दो'रौ] (स्त्री० दो'री)
१ पीड़ित, दुखी। उ०—१ दाधी दुखड़ै री फिरतोड़ी दो'री। गोरै मुखड़ै री गिरतोड़ी गोरी। चांमीकर घांमै कांमी कर चोड़ै। जांमी जांमी कर सांमैं कर जोड़ै।—ऊ.का.
उ०—२ अळगां ही वैठां कांई चीतोड़ री भूंडी दीसै तरै जीव दो'रौ होइ। तिण सुं स्री दीवांण सीसोदियां किण ही रै माथै पाघ न रही छै।—राव रिड़मल री वात
२ व्याकुल, विकल, वेचैन। उ०—महा संख री मित्र सेज नहि सोवा जाऊं। पोरीसो मुख पेख घणी दो'री घवराऊं।—ऊ.का.
ज्यूं—निकाळै रै वुखार में वो आज घणो दो'रो है।
३ असह्य, कष्टप्रद, दुष्कर। उ०—ओ ऊपर ऊनाळो आयौ, दीन जनां दो'रौ दरसायौ। पांणी ग्यांन कोई नहि पायौ, कूकै लोक हूवौ अति कायौ।—ऊ.का.
४ कठिन, मुश्किल। उ०—खागां वाढ़ तूटै राग सिंधवौ लागतो खारौ, तोपां छूटै पड़ै वारूद सफीलां तोड़। लागो कोट दो'रौ सेना-पति ज्यूं जमी रौ गैणाग लायौ, राड़ रौ सांभळै कांनां नगारौ राठोड़।
—नींवाज ठाकुर स्री सांवंतसिंह रौ गीत
५ उदास, खिन्न, दुखी, अप्रसन्न। उ०—उर जीवण नहि आस, वास करम वाकी वसै। सो'रौ है नह सास, जिय दो'रौ थां विन 'जसा'।—ऊ.का.
६ मन में खटकने वाला, अप्रिय। उ०—१ दो'रौ लागै दोयणां, छक तोरौ उर छेक। सैणां मन सोरौ रहै, पदवी डोरौ पेख।
—जुगतीदांन देथौ
उ०—२ कर जोड़ै साजन कहूं, हाय कछू नहि हाथ। दो'रौ लागै देखतां, सोकड़ल्यां रौ साथ।—अज्ञात
७ नाराज। ज्यूं—आजकल वोलो कोयनी, म्हांसूं दो'रा हो कांई ?
८ वह (ऊंट आदि) जिस पर सवारी करना कष्टप्रद हो.
९ मुश्किल, कठिन. १० संकटपूर्ण, आपत्तिजनक।
रू०भे०—दुहरौ, दोरउ, दोहरौ।
विलो०—सो'रौ।

दोलक—देखो 'ढोलक' (रू.भे.)

दोलड़ो, द्रोलडो–वि० [सं० द्वि+रा०-लड़] (स्त्री० दोलड़ी, दोलडी) जिसमें दो लड़ें हों, दो-पंक्ति वाला। उ०—अंग अंग में दरपण री सी-दमक जिणसूं ग्रहणां री दोलडी तेलडी चोलडी चमक।
—र. हमीर

दोळलो–वि० [सं०] (स्त्री० दोळली) पास का, इर्द-गिर्द का।
उ०—इसै में भांगेसुर वणायजै छै। सू किण भांत छै? केसर री क्यारी-दोळली, वासग माथा री, थोहर रा विड़ा री, भाखर रा खुड़ा री, भूरै मोर री, काळै पांन री, आबू रा विहडां री, भमरमार, मिरघमाळ, लरियाळ चिडियाळ चोटड़ियाळ।—रा.सा.सं.

दोळां–क्रि०वि०—इर्द-गिर्द, चारों ओर। उ०—१ पालणै दोळां सरप लपटांणा छै।—देवजी बगड़ावत री वात
उ०—२ मुंह आगै निसंक सूं राड़ करां, नहीं तो दिखणी आय दोळां फिर जासी।—पदमसिह री वात
रू०भे०—दोळूं, दोळयां।

दोळाजंत्र–सं०पु० [सं० दोलायंत्र] अर्क निकालने का एक यंत्र विशेष जिसका प्रयोग प्रायः वैद्य करते हैं।
रू०भे०—डोलका जंत्र, डोला जंत्र।

दोलाजुध–सं०पु० [सं० दोलायुद्ध] वह युद्ध जिसमें बार-बार दोनों पक्षों की हार जीत होती रहे और जल्दी किसी एक पक्ष की जीत न हो।

दोळी–क्रि०वि०—इर्द-गिर्द, चारों ओर। उ०—तठै सांखली नूं ओलै राखी, उठै धारू जायो, तरै पीढ़ी एकी ऊपर राखियो, तठै साप रो बिल एक छै तिण मांहे सूं साप एक नीसर नै पीढी दोळी परदिखणा दे नै मोहर १ सोनो तोला पांच भर री मेल गयो।
—नैणसी

उ०—२ कैरां री भीटां गांव दोळी घणी थी तिकां री मोरचो लियो।
—सूरे खीवे री वात

वि०—समीप, निकट, पास।

दोळीकियो–सं०पु० [देश०] १ आभूषणों की खुदाई में दो तार शामिल खींचने का या कोरने का एक लोहे का औजार. २ पैर की उंगली पर धारण करने का आभूषण विशेष जो दो तारों से बनता है।

दोळूं—देखो 'दोळां' (रू.भे.)

दोळ–स०पु०—१ दांत, दंत (डिं.को.) २ देखो 'दोळै' (रू.भे.)

दोळै–क्रि०वि०—इर्द-गिर्द, चारों ओर। उ०—१ दोळै दूधाळू गळि-योड़ी गेरी। ढोळै ढळियोडी रतनां री ढेरी।—ऊ.का.
उ०—२ चोळै भड़ मेह वर्णै चत्रमास, दोळै पड़ि सास गर्णै जमदास। कटचा चक्र झाटक हेक रकाव, वर्णै चमचाटक वेग जवाब।—मे.म.

दोलोत्सव–सं०पु० [सं०] फाल्गुन की पूर्णिमा को होने वाला वैष्णवों का एक त्यौहार जिसमें ठाकुरजी को फूलों के हिंडोले में झुलाया जाता है।

दोळो–वि० (स्त्री० दोळी) समीप, पास, निकट।
उ०—इण खुडै ऊपर आय चढ़ियो देखै तो गाडर ब्याई ऊभी छै। नाहर दोय दोळा ऊभा छै सो नैड़ा नहीं आवण देवै छै।
—नापै सांखलै री वात

क्रि०वि०—इर्द-गिर्द चारों ओर। उ०—हे कंथ! घर रै दोळो घणी ई सांकड़ो दुसमणां रो घेरो है।—वी.स.टी.

दोवड़–सं०स्त्री० [सं० द्वि-पट] १ एक प्रकार की चादर जो कपड़े की दो परतों को एक दूसरी पर सी कर बनाई जाती है। इसके चारों ओर गोट लगी रहती है।
उ०—चढ़िये ही वड़ री साख सौं डोर बांधी नै घोड़ै सूं नीचै उतरिया। पासै दोवड़ थी तिका नीचै विछाई।—नैणसी
यौ०—दोवड़-चौवड़।
२ देखो 'दोवड़ो' (मह., रू.भे.) उ०—१ पग-पग बावल चूंरी खुदायी, दीनी दोवड़ दात। ओ ल्यो भावज घर आपणूं, मैं तो जावूं पियाजी रै देस।—लो.गी.
उ०—२ नव कोठां मझ एक तुक, लखजै चित्त लगाय। उरध अध-विचलो आखर दोवड़ वंच दिखाय।—र.ज.प्र.

दोवड़-चौवड़–वि०यौ० [सं० द्वि-पट] १ दो या चार तह वाला.
२ दुगुना-चौगुना। उ०—दूजा दोवड़-चौवड़ा, ऊंटकटाळउ-खांण। जिण मुखि नागर चेलियां, सो करहउ केकांण।—ढो.मा.

दोवड़ियो—देखो 'दोवड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

दोवड़ी–वि०स्त्री०—२ दो तह की, दुहरी. ३ जिसमें दो लड़ें हों. ४ दो प्रकार की. ५ दुगुनी। उ०—थारा गुरूजी नै मुरक्यां दोवड़ी, थारी गुरांणी नै नोसर हार। वना सा थे यहां ई भणो जी।
—लो.गी.

सं०स्त्री०—दो तह किया हुआ वस्त्र।

दोवड़ी ताजीम–सं०स्त्री०यौ०—जोधपुर नरेश द्वारा सरदारों व सामन्तों को दिया जाने वाला सम्मान जिसमें महाराजा सामंत या सरदार के आने और लौटने पर दोनों बार खड़े होते थे।

दोवड़ो–वि० [सं० द्वि-पट] (स्त्री० दोवड़ी) १ दो तह का, दोहरा।
उ०—वण पड़दा दोवड़ा, वळै तह पंच विसाळा। सोभ कळंद्री ससी सिखर किर सांवण वाळा।—रा.रू.
२ जिसमें दो लड़ें हों. ३ दो प्रकार का. ४ द्वि, दो।
उ०—दीह इक साझिया प्रवाड़ा दोवड़ा, सिखर घर कीध सुरराय साता। ताय रच रूप औ ताप सवळी तणां, मारियो काळियो आय माता।—चौथ बीठू
५ दोनों ओर का। उ०—रत कहतां लोही वरससी। वेपुड़ी कहतां बादळ की परि वेपुडी वहै छै। सु दोवड़ा बादळा आम्हां-साम्हां हूया। तब कहै जु मेघ वरससी तैसै फौज परि वेपुडी वहै छै। सु जांणीजै जु रगति वरससी।—वेलि.टी.
६ दुगुना।
यौ०—दोवड़ो-कुरव।

सं०पु०—वह वस्त्र जो एक के ऊपर दूसरा सी कर तैयार किया गया हो, दो तह वाला वस्त्र। उ०—अंगिया है विसवास, चूड़ौ चित ऊजळौ। दुलड़ी दिल दरियाव, सांच कौ दोवड़ौ।—मीरां

अल्पा०—दोवड़ियौ।

मह०—दोवड़।

दोवड़ौ-कुरब, दोवड़ौ-कुरव—सं०पु०यौ० [सं० द्वि+अ० कुर्ब] राजा-महाराजाओं द्वारा अपने सरदारों और सामन्तों को दिया जाने वाला सम्मान विशेष जिसमें राजा सामन्त या सरदार के आने व जाने के समय दोनो वार खड़ा होता था। उ०—पीछे भाटी जैसलमेर रा साईदासजी नूं मा'राज रावताई री खिताब दियौ वा **दोवड़ौ-कुरब** दियौ अरु सिलै री पूजा दसरावै नूं ग्रै करावै। मा'राज री वडी मरजी।—द.दा.

दोवटी—सं०स्त्री० [सं० द्वि+पट+रा०प्र०ई] १ दो तह का ओढ़ने का एक वस्त्र जो मजबूत और गाढ़ा होता है. २ एक प्रकार का बिछाने का आसन विशेष (मेवाड़). ३ धोती।

उ०—जतन करै नहिं जीव का, तन मन पवना फेरि। दादू महंगे मोल का, द्वै **दोवटी** इक सेर।—दादू वांणी

४ एक प्रकार की मिठाई विशेष।

दोवणियौ—वि०—दूध दोहने वाला।

सं०पु०—१ दूध दुहने का पात्र. २ एक प्रकार का मिट्टी का पात्र।

दोवणौ, दोवबौ—१ देखो 'दूवणौ, दूवबौ' (रू.भे.)

उ०—लुगायां पौ'र रात लै'र ऊठती, आटौ पीसती, दोवण विलोवण री कांम करती अर दिनुंगां पै'लां-पै'लां तो वे चूला री कांम ई निवेड़ देती।—रातवासौ

२ देखो 'दुहवणौ, दुहवबौ' (रू.भे.)

३ देखो 'दूहणौ, दूहबौ' (रू.भे.)

दोवणहार, हारौ (हारी), दोवणियौ—वि०।

दोविश्रोड़ौ, दोवियोड़ौ, दोव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दोवीजणौ, दोवीजबौ—कर्म वा०।

दोवळौ—क्रि०वि०—इर्द-गिर्द, चारों ओर।

दोवां, दोवांई—वि०—दोनों। उ०—१ पीछै दूजै दिन निवाब साथ सूं रावजी रै डेरां पर चलाय आयौ। अरु रावजी साथ सारै सूं सांमां गया। तठै वेढ़ हुवण लागी, **दोवां** फौजां रा मुहमेळा हुवा नै घोड़ां री वाग ऊठी।—द.दा.

उ०—२ नै ठाकुरजी री दरसण कियौ **दोवांई**।—द.दा.

दोवाई—देखो 'दूवारी' (रू.भे.)

दोवाड़णौ, दोवाड़बौ—देखो 'दुवाणौ, दुवाबौ' (रू.भे.)

दोवाड़णहार, हारौ (हारी), दोवाड़णियौ—वि०।

दोवाड़ियोड़ौ, दोवाड़ियोड़ौ, दोवाड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

दोवाड़ीजणौ, दोवाड़ीजबौ—कर्म वा०।

दोवाड़ियोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोवाड़ियोड़ी)

दोवाणौ, दोवाबौ—देखो 'दुवाणौ, दुवाबौ' (रू.भे.)

दोवाणहार, हारौ (हारी), दोवाणियौ—वि०।

दोवायोड़ौ—भू०का०कृ०।

दोवाईजणौ, दोवाईजबौ—कर्म वा०।

दोवायोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोवायोड़ी)

दोवारी—देखो 'दूवारी' (रू.भे.)

दोवावणौ, दोवावबौ—देखो 'दुवाणौ, दुवाबौ' (रू.भे.)

दोवावणहार, हारौ (हारी), दोवावणियौ—वि०।

दोवाविश्रोड़ौ, दोवावियोड़ौ, दोवाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दोवावीजणौ, दोवावीजबौ—कर्म वा०।

दोवावियोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोवावियोड़ी)

दोवियोड़ौ—देखो 'दूवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोवियोड़ी)

दोवै—वि०—दोनों।

दोस—सं०पु० [सं० दोष] १ अवगुण, ऐब. २ बुराई, खराबी।

उ०—कर प्रगट **दोस** खंडण करूं, धीठ रोस मत धारज्यौ। आज री वखत भूंडौ अमल, वडपण राज विचारज्यौ।—ऊ.का.

३ कलंक, लांछन। उ०—समर तजण सूं सोगुणौ, दुरंग तजण री **दोस**।—बां.दा.

क्रि०प्र०—आणौ, देणौ, लगाणौ।

४ आरोप, अभियोग। उ०—१ आदि तूज थी ऊपना, जग जीवण सह जीव। ऊंच नीच घर अवतरण, दां कइं **दोस** दईव।—ह.र.

उ०—२ ओळंभा दीजइ कुणह रइ रे, कुणिहि दीजइं **दोस**। हीराणंद इम ऊचरइ रे, कीजइ मनि संतोस।—विद्याविलास पवाडउ

५ गलती, अपराध, कसूर। उ०—१ **दोस** नहीं थारा में दोसत, **दोस** तिहारी दाई नै। नाळा सार्थं नाड न काटी, धाई रांड वधाई नै।—ऊ.का.

उ०—२ सखी भणइ—सांमिणि हिव सुणउ। एह **दोस** नवि कुणह तणउ।—विद्याविलास पवाडउ

६ नुक्स, खराबी, कमी. ७ पाप, पातक।

उ०—एक दिन चरचा करतां सवाईरांम नै······कह्यौ—थे म्हांनै दोसीला कहौ, पिण थांरा गुरां नै पिण किंवारिया री **दोस** लागै छै।—भि.द्र.

८ तर्क के अवयवों का प्रयोग करने में होने वाली नव्य न्याय की त्रुटि. ९ साहित्य में वे बातें जिनसे काव्य के गुण में कमी हो जाती है। राजस्थानी में यह दस प्रकार का होता है।

(अ) अंध-दोस; (आ) छत्रकाळ-दोस; (इ) हीण-दोस; (ई) निनंग-दोस; (उ) पांगळी-दोस; (ऊ) जाति विरुद्ध दोस; (ए) अपस-

दोस; (ऐ) नाळछेद-दोस; (ओ) पखतूट-दोस; (औ) बहरी-दोस.
१० शरीर में रहने वाले वात, पित्त और कफ जिनके कुपित होने से शरीर में विकार अथवा व्याधि उत्पन्न होती है (वैद्यक)
११ भागवत के अनुसार आठ वसुओं में से एक का नाम.
१२ तीन की संख्या*। १३ दस की संख्या*। १४ देखो 'दो' (रू.भे.)

रू०भे०—दोख, दोखण, दोसण, दोसौ, दोह।

दोसग्राही-सं०पु० [सं० दोसग्राहिन्] दुष्ट, दुर्जन।

दोसजांण-सं०पु० [सं० दोषज्ञ] १ वैद्य, हकीम, चिकित्सक.
२ दोषों को जानने वाला।

दोसण-वि० [सं० दोषण] १ दोष उत्पन्न करने वाला, दोष-जनक.
२ देखो 'दूसण' (रू.भे.) ३ देखो 'दोस' (रू.भे.)
उ०—काढै दोसण कायवां, वातां दिए विगोय। पूछै अरथरु पहलियां, सूंव मजाकी सोय।—बां.दा.

दोसत-सं०पु० [फा० दोस्त] १ मित्र, स्नेही। उ०—जळ छांणें दिन जीम ही, नीली वस्त न खाय। दोसत हूं देतां दगौ, कसर न राखै काय।—बां.दा.
२ वह जिससे अनुचित सम्बन्ध हो, यार।
रू०भे०—दोस्त।

दोसतदार-सं०पु०यौ० [फा० दोस्त+दार] दोस्त, मित्र, स्नेही।
रू०भे०—दोस्तदार।

दोसतदारी-सं०स्त्री०यौ० [फा० दोस्त+दारी] दोस्ती, मित्रता।
रू०भे०—दोस्तदारी।

दोसतांनौ-वि० [फा० दोस्ताना] मित्रता का, दोस्ती का।
सं०पु०—१ मित्रता, दोस्ती. २ मित्रता का व्यवहार।
रू०भे०—दोस्तांनौ।

दोसती-सं०स्त्री० [फा० दोस्ती] १ मित्रता, दोस्ती।
उ०—दगौ दियौ कर दोसती, ठग जाहर सब ठाह। बांणण जाया 'बांकला', कहै महाजन काह।—बां.दा.
२ अनुचित सम्वन्ध।
रू०भे०—दोस्ती।

दोसपौ-सं०पु० [फा० दो अस्प] १ वह सैनिक जिसके पास दो निजी घोड़े हों। उ०—क्रोड़ इनांम दांम फिर कीधा। दोय अस सहंस दोसपा दीधा।—रा.रू.
२ दो घोड़ों की डाक।
रू०भे०—दुअसपह, दुअसपौ।

दोसहटी-सं०स्त्री० [सं० दौष्यिक+हट्ट] वह स्थान जहां कपड़े के व्यापारियों की दुकानें हों, कपड़ा बाजार। उ०—सितिरि खांन बुहुतिरि ऊबरा अनि मीर; जे नगर मांहइ, सोनहटी, दोसीहटी, वुद्धिहटी, अनेक फडीआ फोफलीआ सोनार।—व.स.

दोसा-सं०स्त्री० [सं० दोषा] १ रात्रि, रात (डिं.को.)
२ संध्या. ३ भुजा, बांह।

दोसाकर-सं०पु० [सं० दोषाकर] चंद्रमा, शशि (डिं.को.)

दोसिकापण—देखो 'दौष्यिकापण' (रू.भे.) उ०—अथ नगर प्रासाद प्रतोळी राजकुळ देवकुळ त्रिक चउक। चच्चर राजमारगि गंधिकापण दोसिकापण सूपकार हट्ट।—व.स.

दोसी-सं०पु० [सं० दौष्यिक] कपड़े का व्यापारी (व.स., उ.र.)
उ०—१ दोसी वुहरइ अति घणा वस्त्र, सुभट भला ते चहइ सस्त्र। एक वइठा कहइ कथकल्लोल, एक वइठा वीकइ मंजीठ चोळ।
—नळ-दवदंती रास
उ०—२ फडीया दोसी नइ जवहरी, नांमि नेस्ती कांमइ करी। विवध वस्तु हाटे पांमीइ, छत्रीसइ किरियांणां लीइ।—कां.दे प्र.
वि० [सं० दोषिन्] १ जिसमें ऐब या बुराई हो, जिसमें दोष हो.
२ कसूरवार, अपराधी. ३ पापी. ४ मुजरिम, अभियुक्त।

दोसूती-सं०स्त्री० [सं० द्वि+सूत्र] दुहरे ताने की बनी एक प्रकार की मोटी चादर।

दोसौ—देखो 'दोस' (रू.भे.) उ०—वचन तुम्हारौ मैं कियौ, अपने केहौ दोसौ रे। स्वाद करी जीमस्यां हियैं, करस्यां केहौ सोसौ रे।
—प.च.चौ.

दोस्त—देखो 'दोसत' (रू.भे.)

दोस्तदार—देखो 'दोसतदार' (रू.भे.)

दोस्तदारी—देखो 'दोसतदारी' (रू.भे.)

दोस्तांनौ—देखो 'दोसतांनौ' (रू.भे.)

दोस्ती—देखा 'दोसती' (रू.भे.)

दोह—१ देखो 'दो' (रू.भे.) २ देखो 'दो'' (रू.भे.)
३ देखो 'दोस' (रू.भे.)
देखो 'दोख' (रू.भे.)

दोहखी—देखो 'दोखी' (रू.भे.)

दोहग-सं०पु० [सं० दौर्भाग्य] १ वियोगजनित दुःख।
उ०—मन मिळिया तन गड्डिया, दोहग दूरि गयाह। सज्जण पांणी खीर ज्यूं, खिल्लोखिल्ल थयाह।—ढो.मा.
२ दुर्भाग्य। उ०—१ प्रणम्यां सहु पीड़ा दुरि पुळै, छळ छिद्र उपद्रव को न छळै। दुख दोहग दाळिद दूर दळै, मन वंछित लीला आइ मिळै।—घ.व.ग्रं.
उ०—२ जोयण जोयण आंतरइ रे, पावड़साळां आठ रे। आठ जोयण ऊँचौ देखतां रे, दुख दोहग जायइं नाठि रे।—स.कु.
३ वैधव्य. ४ संकट, आपत्ति। उ०—वुद्धिवंत वादळ राइ ने, पूछे स्त्री पतिसाहि रे भाई। सलांम करि बैठौ निसैं, आलिम हुओ उच्छाहि रे भाई। 'लालचंद' कहै वुधि थकी, दोहग दूर पुलाई रे भाई।
—प.च.चौ.

रू०भे०—दोहग्ग, दोहग्गु।

दोहग्ग दोहग्गु—देखो 'दोहग' (रू.भे.)
उ०—तह न रोगु दोहग्गु नह, तह मंगळ कल्लांण। जे जिणवल्ह

गुरु नमइ, तिन्नि संभ सुविहांण ।—षष्टिशतक प्रकरण

दोहडउ–वि० [सं० द्रोहाटः] द्रोह रखने वाला, द्रोही, शत्रु (उ.र.)

दोहण–सं०पु० [सं० दोहनम्] १ गाय, भैंस आदि पशुओं को दुहने की क्रिया या भाव. २ । उ०—खत्या खेसलिया भाखलिया खांधै । वेभड़ दांमोदर चांमोदर बांधै । मुखिया मन मोहण दोहण घर मेढ़ी । गोढै ढेरो ह्वै खूंणी में गेढ़ी ।—ऊ.का.

दोहणी–सं०स्त्री० [सं० दोहनी] १ वह बर्तन जिसमें दूध दुहा जाता है, दूध दुहने की हँडिया । उ०—नंद री वेन नै लेहती नूंजणी । दोहती वेसतो वीछले दोहणी ।—रुखमणी हरण

२ हँडिया । उ०—तन टूटो कुटका हुई, रती न मांनी संक । खेत खरै मन थिरि रहै, रै दोहणी निसंक ।—ह.पु.वा.

३ दूध दुहने का कार्य ।

दोहणौ, दोहबौ—देखो 'दूवणौ, दूवबौ' (रू.भे.)

दोहणहार, हारौ (हारी), दोहणियौ—वि० ।

दुहवाड़णौ, दुहवाड़बौ, दुहवाणौ, दुहवाबौ, दुहवावणौ, दुहवावबौ, दुहाड़णौ, दुहाड़बौ, दुहाणौ, दुहाबौ, दुहावणौ, दुहावबौ—प्रे०रू० ।

दोहिम्रोड़ौ, दोहियोड़ौ, दोह्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दोहीजणौ, दोहीजबौ—कर्म वा० ।

दोहतौ—देखो 'दोहथौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहती)

दोहथी करोती–सं०स्त्री० [सं० द्वि+हस्त+कर पत्र] वह आरी जिसमें दोनों ओर से पकड़ कर दो मनुष्य चलाते हैं ।

दोहथौ–वि० [सं० द्वि+हस्त] (स्त्री० दोहथी) १ जिसके दो हाथ हों । २ जिसको पकड़ने के लिए दो हत्थे हों ।

दोहर-कूटौ–सं०पु०यौ० [देश०] व्यभिचार के जुर्म में सांसी जाति में पंचों द्वारा दिया जाने वाला दंड । इसमें पुरुष अगर जाति में रहना चाहता है तो उसे भोज देना पड़ता है और उपस्थित जाति के व्यक्ति की जूतियां सिर पर उठा कर दौड़ना पड़ता है । पीछे से लोग चूरमे के लिए सेके गये आटे के गोल खंड फेंक कर मारते हैं ।

दोहरीपट–सं०स्त्री०—कुश्ती का एक पेंच ।

दोहरीसखी–सं०स्त्री०—कुश्ती का एक पेंच ।

दोहरौ–वि० [सं० द्वि+रा० हरौ] (स्त्री० दोहरी) १ दो परत या तह का. २ दुगुना. ३ दोनों पक्ष का, दोनों ओर का, दोनों ओर झुकने वाला । उ०—होठ वुद्धि जेह ने हुवइ रे लाल, दोहरी केही वात रे सरागी । लालचंद कहि वुद्धि थकी रे लाल, बादळ खेलइ घात रे ।—प.च.चौ.

रू०भे०—दोहरौ ।

४ देखो 'दो'रौ' (रू.भे.)

उ०—१ जीव तळवळाटा लैणा मांडिया । वीरमदे-वाहिरी घणी दोहरी छै ।—वीरमदे सोनिगरा री वात

उ०—२ तावडी तप से वरसायत रा दिन छै । घोड़ा दोहरा होय छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ उठी जाया घोड़ली पिलांण, दोहरौ है बाई रौ सासरौ ।—लो.गी.

दोहलउ–सं०पु० [सं० दोहल:] इच्छा, अभिलाषा, चाहना ।

उ०—द्राक्षा तणी आकांक्षा किम मह फीटइ, सरकरा तणी सद्धा किम गुळि त्रूटइं, अम्रित काजि किम कांजी पीजइ, दुग्धत्रिस्णा किम तक्रि विलीजइ, आंबा तणउ दोहलउ किम आंविलीइं पूजइ ।—व.स.

दोहलौ—देखो 'दूहौ' (अल्पा., रू.भे.)

दोहां–वि० [सं० द्वि] दोनों, उभय । उ०—केहरी तणा जमरांण मचतै कदळि, दुम्रै कर जोड़ियां खड़ी दोहां । पुकारै जवांनी नेस दिस पधारौ, लाजि आखै हमैं वाजि लोहां ।—लिखमीदास व्यास

दोहाई— १ देखो 'दुहाई' (रू.भे.) २ देखो 'दूवारी' (१, २) (रू.भे.)

दोहाग—देखो 'दुहाग' (रू.भे.) उ०—राज वचण न दीधौ । बीजो, तैं कूंभै री मा नै दोहाग दीधौ । जे तैं कूंभै री मा नै रात दीनी हुवंत तौ इसड़ो रतन २-४ पैदा हुवंत, तौ घर भलौ दीसंत ।—नैणसी

विलो०—सोहाग ।

दोहागण, दोहागिण, दोहागिणि—देखो 'दुहागण' (रू.भे.)

उ०—१ उच्चर आज स उत्तरउ, सीय पड़ेसी थट्ट । सोहागिण घर आंगणइ, दोहागिण रइ घट्ट ।—ढो.मा.

उ०—२ ता किम जाइ तनु-थिकी, माधव ! माहरु मोह ? दोहागिणि देखी दुखी, स्वांमि ! चढाविन सोह ।—मा.कां.प्र.

विलो०—सोहागण, सोहागिण, सोहागिणी ।

दोहागियौ—देखो 'दुहागी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—द्राढ़मंडळ कोढै गळया, दीसंता विकराळ । सेवक तास दोहागिया, राध रुधिर परनाळ ।—स्रीपाळ रास

(स्त्री० दोहागिण)

विलो०—सोहागियौ ।

दोहागी—देखो 'दुहागी' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहागिण)

विलो०—सोहागी ।

दोहाड़णौ, दोहाड़बौ—देखो 'दुवाणौ, दुवाबौ' (रू.भे.)

दोहाड़णहार, हारौ (हारी), दोहाड़णियौ—वि० ।

दोहाड़िम्रोड़ौ, दोहाड़ियोड़ौ, दोहाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

दोहाड़ीजणौ, दोहाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

दोहाड़ियोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहाड़ियोड़ी)

दोहाणौ, दोहाबौ—देखो 'दुवाणौ, दुवाबौ' (रू.भे.)

दोहाणहार, हारौ (हारी), दोहाणियौ—वि० ।

दोहायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

दोहाईजणौ, दोहाईजबौ—कर्म वा० ।

दोहायोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहायोड़ी)

दोहारी—देखो 'दूवारी' (रू.भे.)

दोहाळ कुंडळियौ-सं०पु०यौ०—डिंगल के 'कुंडळिया' छंद का एक भेद विशेष।

वि०वि०—'दोहाळ कुंडळिया' में प्रथम एक दोहा तत्पश्चात चौबीस चौबीस मात्राओं के छ चरण रखे जाते हैं तथा दोहे के चौथे चरण का पांचवें चरण में सिंहावलोकन होता है। प्रायः प्रथम चरण और अंतिम चरण एक ही होता है।

दोहाळौ—१ देखो 'दुम्राळौ' (रू.भे.)

२ देखो 'दुहेलौ' (१, २) (रू.भे.)

३ देखो 'दोहिलौ' (रू.भे.) ४ देखो 'द्वाळौ' (रू.भे.)

दोहावणौ, दोहावबौ—देखो 'दुवाणौ, दुवावौ' (रू.भे.)

दोहावणहार, हारौ (हारी), दोहावणियौ—वि०।

दोहाविम्रोड़ो, दोहावियोड़ो, दोहाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

दोहावीजणौ, दोहावीजबौ—कर्म वा०।

दोहावियोड़ौ—देखो 'दुवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहावियोड़ी)

दोहि-वि०—दोनों।

दोहिता—देखो 'दुहिता' (रू.भे.)

दोहिती-सं०स्त्री० [सं० दौहित्री] १ पुत्री की पुत्री, बेटी की बेटी, नातिन।

रू०भे०—दुहीतरी, दुहोतरी, दोइतरी, दोइती, दोईतरी, दोईती, दोईत्री, दोयतरी, दोयती, दोयत्री, दोह्रीतरी, दोहीती, दोहीत्री।

दोहितौ-सं०पु० [सं० दौहित्रः] (स्त्री० दोहिती) १ पुत्री का बेटा, बेटी का लड़का। उ०—रावजी थाळ बैठा तद हरभू रौ बेटौ और दोहितौ दोनूं खड़ा था।—नापे सांखले री वारता

रू०भे०—दुहीतरौ, दुहोतरौ, दोइतरौ, दोइतौ, दोईतरौ, दोईतौ, दोईत्रौ, दोयतरौ, दोयतौ, दोयत्रौ, दोहीत, दोहीतरौ, दोहीतौ, दोहीत्रौ।

दोहियोड़ौ—देखो 'दूवियोड़ौ' (रू.भे.)

दोहियोड़ौ—देखो 'दूवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दोहियोड़ी)

दोहिलउ, दोहिलउ, दोहिलुं, दोहिलु, दोहिलू, दोहिलौ-वि० [सं० दुःख, प्रा० दुक्ख, अप० दुह+रा०प्र०इलौ अथवा सं० दुर्लभ, अप० दुल्लह+रा०प्र०इलौ वर्णव्यत्य] (स्त्री० दोहिली) १ दुखी, पीड़ित।

उ०—१ बेटा रहिं इकु मांनइ जाग, माथइ फाड देई इकि मागइ भाग। बेटा पाखइ इक दोहिलउं धरइं, बेटे छते इकि वढ़ि दढ़ी मरइं।
—चिहुंगति चउपई

उ०—२ आवू परवत रूयड़उ आदीसर, उंचउ गाउ सारत रे आदीसर देव। पाजइ चढ़तां दोहिलउ आदीसर, पणि पुण्य नी घणी वात रे आदीसर देव।—स.कु.

उ०—३ कीरति कहो किम हारिये, दोहिली जे जग मांहे रे। कन्या देतां जस रहै, तो जस गमीयै काहे रे।—स्रीपाळ रास

उ०—४ सीत सहंतां दोहिलु, तन सहू धूजइ तेणि। आलिंगन थी ऊतरइ, सूतां पति-संगेण।—मा.कां.प्र.

२ कठिन, मुश्किल। उ०—मोहन नेमि मिळाय दे रे लाल, नेह नवो न खमाय हे सहेली! दिन पिण जातां दोहिलौ रे लाल, जमवारो किम जाय हे सहेली।—ध.व.ग्रं.

३ खिन्न, उदास। उ०—सुविधि जिणंद तुम्हारी, मोनइ सूरति लागै प्यारी हो, जिनवर अरज सुणो। अरज सुणो इण वेळा, दोहिला छइ फिर फिर मेळा हो।—वि.कु.

४ दुष्कर। उ०—तुं सुकमाळ सोहामणउ, दोहिलउ संजम भार। बोल विचारी वोलियइ, संजम दुक्कर कार।—कविवर स्रीसार

५ विकट। उ०—जन्मेजय ना जाग-मंहि, आंणिउ सिं न अस्तिक? विरह-भुअंगम दोहिलु, विस वधारइ हीक।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—दुहिलउ, दुहिलौ, दुहुलूं, दुहेलउ, दुहेलु; दुहेलू, दुहेलौ, दूहेलौ।

दोही-वि० [सं० द्वि] दोनों।

दोहीत—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

उ०—१ वरदायक सतियां वचन, मांनै नांनी माय। गई सदन दोहीत नै, पालणियै पौढ़ाय।—पा.प्र.

उ०—२ अचळदासजी नूं निवळौ सो घाव हुतौ अर ऊभौ हुतौ, वीदावतां रौ दोहीत हुतौ सु उवां ऊगरै ऊगरै, अचळदास ऊगरै, इम कहि अर अचळदास मोनगिरौ इम उगारियौ।—द.वि.

दोहीतरी—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोहीतरौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.) उ०—तिण वकरी सूं मैं अर निवापा म्हारै दोय दोहीतरा गुजरांन करै था सो मार खाधी।
—नी.प्र.

(स्त्री० दोहीतरी)

दोहीती—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोहीतौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

उ०—रांणो मोकळ लाखावत, राव चूंडा री बेटी हंसबाई रौ, राव चूंडा रौ दोहीतौ, तिण नूं चाचै मेरै रांणा खेतै रै बेटां खातण रै पेट रां मारियौ। पछै चाचौ मेरौ पई रै डूंगरै चढ़िया। तिकै घेर नै राव रिणमल मारिया।—नैणसी

(स्त्री० दोहीती)

दोहीत्रउ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.) (उ.र.)

दोहीत्री—देखो 'दोहिती' (रू.भे.)

दोहीत्रौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

उ०—राव सुदरसण जगदेव रौ। मांन खींवावत रौ दोहीत्रौ।
—नैणसी

(स्त्री० दोहीत्री)

दोहुवै-वि०—दोनों।

दोहूँ—वि०—दोनों ।

दोहो—देखो 'दूहो' (रू.भे.)

दौं-सं०स्त्री० [सं० दावाग्नि] दावाग्नि । उ०—तीज त्रिगुण रस घेरिके, ब्रह्म अगनि में जारि । दौं लागी दरिया जले, तुरिया भेद विचारि ।—ह.पु.वा.

दौंनो-सं०पु०—कूआ खोदने का कार्य आरम्भ करने की क्रिया ।

मि० 'चोव' (३,५)

दौ-सं०पु०—१ योद्धा, सुभट. २ युद्ध. ३ प्राण. ४ काम, कार्य, (एका.)

वि०—दरिद्र (एका.)

दौड़-सं०स्त्री० [सं० धोरण, धोर्] १ दौड़ने की क्रिया या भाव । वह गति जिसमें साधारण से अधिक वेग हो ।

यौ०—दौड़-धूप, दौड़ा-दौड़ी ।

२ द्रुतगति, वेग । ३ गति की सीमा, पहुँच । उ०—१ मियां री दौड़ मसजिद तांई ।

उ०—२ पड़दै घालो पातरां, ठावी ठावी ठौड़ । परणीं नूं नह पेटियो, देखो बुध री दौड़ ।—बां.दा.

मुहा०—अकल री दौड़, बुध री दौड़, मन री दौड़—बुद्धि की पहुँच ।

४ प्रयत्न, कोशिश ।

मुहा०—दौड़ करणी, दौड़ दौड़णी—प्रयत्न करना, कोशिश करना ।

५ परिश्रम, मेहनत. ६ आक्रमण, धावा । उ०—१ सिर मांडव गुजरात सिर, दळ सभ कीधी दौड़ । उण 'सांगा' रौ बैसणो, चंगो गढ़ चीतौड़ ।—बां.दा.

क्रि०प्र०—करणी ।

७ देखो 'दौर' (रू.भे.)

दौड़को-वि० [सं० धोर्+रा०प्र०को] (स्त्री० दौड़की) तेज दौड़ने वाला ।

दौड़णो, दौड़बो-क्रि०अ० [सं० धोरणम्] १ चलने की साधारण चाल से द्रुत गमन करना, अधिक वेग से चलना, द्रुत गति से चलना ।

उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, दिस पूगळ दौड़ेह । सायधण लाल कवांण ज्यउं, ऊभी कड़ मोड़ेह ।—ढो.मा.

२ कोशिश करना, प्रयत्न करना, परिश्रम करना ।

मुहा०—दौड़ता घोड़ा दाळ पावै, दौड़ता घोड़ा रातब पावै—दौड़ने वाले घोड़ों को ही दाल मिलती है । परिश्रम या प्रयत्न करने पर फल अवश्य मिलता है । प्रयत्नशील ही पुरस्कृत होता है ।

३ व्याप्त होना, छा जाना, फैलना । उ०—१ लालच री दौड़ै लहर, भवन वियां घन भाळ । बैठी थावर बारमों, कांधै आंण कराळ ।—बां.दा.

४ चढ़ाई करना, आक्रमण करना । उ०—१ संमत १६९२ प्रथीराज, अखैराज दळपतोत राव उदैसिंघ वाघोत रै दावै हमीरां-भाटियां ऊपर दौड़िया हुता ।—नैणसी

उ०—२ रांणै री फौजां पण मारवाड़ ऊपर दौड़ै, फजिया हुवै, थांणा मारजै ।—नापै सांखलै री वारता

५ लूट खसोट करना, बरबाद करना । उ०—१ उण दिनां में कछवाहा अर लाडखांनी नागोर नूं उजाड़ करै । तद केसरीसिंह कागद लाडखांनियां नूं रावजी कन्हे मेलिया—जे थे मोटा सगा छौ, ठाकर छौ, उजाड़ माफ करौ । जे कोई भूखो छै तो अठै आवो । अठै पांच सेर जुवार छै सो बांट खास्यां, पण उजाड़ मत करो । तिण पर मास एक तो कोई दौड़िया नहीं ।

—अमरसिंह राठौड़ री वात

उ०—२ जिणां दिनां में खंडेलै निरवांण रिड़मल मालक है । सू करणावाटी वा बीकानेर री धरती रो घणो बिगाड़ कियो । अरु सदा दौड़ै । तद मालम रावजी स्रीबीकैजी सूं हुई कै रिड़मल निरवांण देस रो बिगाड़ करै है ।—द.दा.

६ सहसा प्रवृत्त होना, झुक पड़ना ।

ज्यूं—थे आगली-पाछली विचारो कोयनी, थोड़ी'क बात हूं तांई लारै दौड़ पड़ो ।

दौड़णहार, हारो (हारी), दौड़णियो—वि० ।

दौड़ाड़णो, दौड़ाड़बो, दौड़ाणो, दौड़ाबो, दौड़ावणो, दौड़ावबो

—प्रे०रू०

दौड़िओड़ो, दौड़ियोड़ो, दौड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दौड़ीजणो, दौड़ीजबो—भाव वा० ।

द्रउड़णो, द्रउडबो, द्रवड़णो, द्रवड़बो—रू०भे० ।

दौड़-धपाड़, दौड़-धूप, दौड़-भाग-सं०स्त्री०यौ०—१ किसी कार्य के लिए इधर-उधर फिरने की क्रिया या भाव. २ प्रयत्न, कोशिश उद्योग ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

दौड़ादौड़, दौड़ादौड़ी-सं०स्त्री०यौ०—१ बहुत से लोगों की एक साथ इधर-उधर दौड़ने की क्रिया ।

क्रि०प्र०—होणी ।

२ दौड़-धूप. ३ हड़बड़ी, आतुरता ।

क्रि०प्र०—लागणी, होणी ।

दौड़ाड़णो, दौड़ाड़बो—देखो 'दौड़ाणो, दौड़ाबो' (रू.भे.)

दौड़ाड़णहार, हारो (हारी), दौड़ाड़णियो—वि० ।

दौड़ाड़िओड़ो, दौड़ाड़ियोड़ो, दौड़ाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

दौड़ाड़ीजणो, दौड़ाड़ीजबो—कर्म वा० ।

दौड़णो, दौड़बो—अक०रू० ।

दौड़ाड़ियोड़ो—देखो 'दौड़ायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दौड़ाड़ियोड़ी)

दौड़ाणो, दौड़ाबो-क्रि०स० [सं० धोरणम्] १ मामूली चाल से तेज चलाना, अधिक वेग से गमन कराना, द्रुतगति से चलाना.

२ कोशिश कराना, प्रयत्न कराना, परिश्रम कराना. ३ व्याप्त कराना, फैलाना. ४ चढ़ाई कराना, आक्रमण कराना. ५ लूट-खसोट

करःना, बरवाद कराना. ६ सहसा प्रवृत्त कराना, भुकाना।
दौड़ाणहार, हारौ (हारी), दौड़ाणियौ—वि०।
दौड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।
दौड़ाईजणौ, दौड़ाईजवौ—कर्म वा०।
दौड़णौ, दौड़वौ—अक०रू०।
दौड़ाड़णौ, दौड़ाड़वौ, दौड़ावणौ, दौड़ाववौ, द्रवड़ाड़णौ, द्रवड़ाड़वौ, द्रबड़ाणौ, द्रवड़ावौ, द्रवड़ावणौ, द्रवड़ाववौ—रू०भे०।

दौड़ायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ अधिक वेग से गमन कराया हुआ, द्रुतगति से चलाया हुआ, साधारण चाल से तेज चलाया हुआ. २ प्रयत्न कराया हुआ, कोशिश कराया हुआ. ३ प्राप्त किया हुआ, फैलाया हुआ. ४ चढ़ाई कराया हुआ, आक्रमण कराया हुआ. ५ लूट-खसोट कराया हुआ, बरबाद कराया हुआ. ६ सहसा प्रवृत्त किया हुआ, भुकाया हुआ।
(स्त्री० दौड़ायोड़ी)

दौड़ावणौ, दौड़ाववौ—देखो 'दौड़ाणौ, दौड़ाबौ' (रू.भे.)
दौड़ावणहार, हारौ (हारी), दौड़ावणियौ—वि०।
दौड़ाविग्रोड़ौ; दौड़ावियोड़ौ, दौड़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
दौड़ावीजणौ, दौड़ावीजवौ—कर्म वा०।
दौड़णौ, दौड़वौ—अक०रू०।

दौड़ाविग्रोड़ौ—देखो 'दौड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० दौड़ावियोडी)

दौड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चलने का साधारण चाल से द्रुतगमन किया हुआ. २ कोशिश किया हुआ, प्रयत्न किया हुआ, परिश्रम किया हुआ. ३ व्याप्त हुवा हुआ, छाया हुआ, फैला हुआ. ४ चढ़ाई किया हुआ, आक्रमण किया हुआ. ५ लूट-खसोट किया हुआ, बरबाद किया हुआ. ६ सहसा प्रवृत्त हुवा हुआ, भुका हुआ।
(स्त्री० दौड़ियोड़ी)

दौड़ौ–सं०स्त्री०—घोड़े के पैरों की आवाज, टाप।

दौड़ौ–सं०पु० [अ० दौर अथवा सं० धोरणम्] १ आक्रमण, धावा।
उ०—१ ऊपर वरस छयाळौ आयौ, वाधै असुरां जोर सवायौ। जवनां काजम वेग सजोड़ा, देस मुरद्धर मांडै दौड़ा।—रा.रू.
उ०—२ कर दौड़ां दिस कमधजां, गौ मेड़तै सिताव। मोहकम रौ मन मेळवा, मिळ पूछियौ जवाव।—रा.रू.
उ०—३ अै पण पहियड़ रै डूंगरां चढ़िया। दौड़ा करै, पण जोर कोई लागै नहीं।—नैणसी
क्रि०प्र०—करणौ।
२ समय-समय पर होने वाला आगमन, सामयिक आना जाना।
ज्यूं०—अठै वारोटियां रा दौड़ा पाछा पड़ण लागा है।
मुहा०—दौड़ौ पड़णौ—आक्रमण होना, धावा होना।
३ अफसर का अपने क्षेत्र में जांच-पड़ताल के हेतु किया जाने वाला भ्रमण, निरीक्षण के लिए घूमना।
क्रि०प्र०—करणौ।
मुहा०—दौड़ौ आणौ—निरीक्षण के हेतु भ्रमण का समय या तकाजा आना. २ दौड़ौ पड़णौ—निरीक्षण के लिए भ्रमण का समय आना. ३ दौड़ा मातै रैणौ, दौड़ा में रैणौ—जांच-पड़ताल या देख-भाल के लिए अपने मुख्य स्थान से बाहर रहना या होना. ४ चारों ओर घूमने की क्रिया, चक्कर, भ्रमण।
क्रि०प्र०—करणौ।
५ चौकसी के उद्देश्य से इधर-उधर जाने या घूमने की क्रिया, गश्त, फेरा।
क्रि०प्र०—करणौ।
६ किसी ऐसे रोग का लक्षण प्रकट होना जो समय-समय पर होता हो, आवर्त्तन।
ज्यूं०—दिल रौ दौड़ौ पड़णौ, मिरगी रौ दौड़ौ पड़णौ।
मुहा०—दौड़ौ पड़णौ—रोग के लक्षण प्रकट होना।
रू०भे०—दौर, दौरौ।

दौढ़—देखो 'डौढ' (रू.भे.)

दौढ़ी—देखो 'डौढी' (रू.भे.) उ०—ताहरां दस दौढ़ी छै। नव दौढ़ियै तौ मरद वैसै छै। दसमी दौढ़ां स्त्रियां वैसै।—सयणी री वात

दौढ़ीदार—देखो 'डौढीदार' (रू.भे.) उ०—जोगावत जीवण जुध जांमळ। बदरीदास पिराग महावळ। सोभावत कुळ गुणां सवायां। दौढ़ीदार सार दरसायां।—रा.रू.

दौढौ–सं०पु० [सं० द्वि अर्द्ध (क), अप० डि-अड्ढ] १ 'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार राजस्थानी का एक गीत (छंद) जिसके प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण में प्रत्येक में चौदह-चौदह मात्राएं होती हैं, अंत में रगण होता है व तुकान्त मिलता है। चतुर्थ व अष्टम चरण में प्रत्येक में बारह मात्राएं होती हैं जिनके अंत में गुरु लघु होता है और तुकान्त मिलता है। पंचम, षष्ठम् तथा सप्तम चरण मे भी चौदह-चौदह मात्राएँ होती हैं जिनके अन्त में रगण होता है और तुकान्त मिलता है।

मतान्तर में 'रघुनाथरूपक' के अनुसार इसी गीत (छंद) के प्रथम और द्वितीय चरण में चौदह-चौदह मात्राएँ होती हैं तथा अंत में रगण युक्त तुकान्त मिलता है। इसी प्रकार पंचम और षष्ठम चरण भी होते हैं। तृतीय व सप्तम चरण में प्रत्येक में सोलह सोलह मात्राएँ होती है। चतुर्थ एवं अष्टम चरण में अंत में गुरु लघु युक्त दस-दस मात्राएं होती हैं तथा तुकान्त मिलता है।
२ 'पिंगळसिरोमणि' के अनुसार राजस्थानी का वह गीत (छंद) जिसमें छः द्वाले हों. ३
४ देखो 'डौढौ' (रू.भे.)

दौढौ-कुंडळियौ–सं०पु०—राजस्थानी का एक छंद विशेष जिस में प्रथम छ चरण, १३,११. १३,११. १३,११. १३,११. १३,११. १३,११. मात्राओं के क्रमशः होते हैं। अन्तिम दो चरण उल्लाला के होते हैं

जिनमें क्रमशः १५,१३. १५,१३ मात्राएं होती है।

दौनौं, दौनो—१ देखो 'दूनौ' (रू.भे.)

२ देखो 'दोनौं' (रू.भे.)

दौफार—देखो 'दोपहर' (रू.भे.)

दौफारी—देखो 'दोपारी' (रू.भे.)

दौयरद—देखो 'द्विरद' (रू.भे.) (ह.नां.)

दौर–स०पु० [अ०] १ फेरा, चक्कर, भ्रमण. २ दिनों का फेर, कालचक्र। उ०—आगै खत्री अपत नर्सा कस हुयगा नांमी। कहां अगूंणौ दौर जाय आथूणी जांमी। समझावां सौ वार जिके समझण नह जांणै। दिन ऊंवै रै दौर तिकै नित ऊंधी तांणै।—ऊ.का.

३ प्रताप, प्रभाव, हकूमत। उ०—विहसंतौ निज वदन वीरारस वेस रौ। दीपायौ हद दौर मुरधर देस रौ।—किसोरदांन बारहठ

४ शान-शौकत।

५ बढ़ती का समय, अभ्युदय काल।

यौ०—दौर-दौरौ।

६ आकार, ढंग। उ०—दीसै बायर दौर, जळियोड़ा छांणा ज्यूंही। तन रौ सारौ तौर, जो लेग्यौ थारौ 'जसा'।—ऊ.का.

७ पहुँच। उ०—तुरक कहै मक्का भला, जहां साहिब की ठौर। हिंदू जाय मथुरा वस्या, यही हिंदु की दौर।—ह.पु.वा.

८ पुरुषों के पहनने का एक वस्त्र विशेष (वागा) का छोर।

उ०—१ अर आप मगरां सूं ढाल खोल माथा ऊपर लीवी। वागे रा दौर ऊपर टांक लिया छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ हुय हैरांन पलांणं हयवर, ताता खड़ै ओर ही तौर। अपणा चित राखै आगारौ, दुम ऊपर वागा री दौर।—अज्ञात

९ वारी, पारी।

मुहा०—दौर चलणा, दौर पड़णा—शराब के प्याले का वारी वारी से सब के सामने लाया जाना. १० वार, दफा।

ज्यूं—तीजै दौर में सारौ कांम पूरौ ह्वै जासी।

११ देखो 'दौर' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—उरध लिलाड़ नीर भव आंखैं, नाक कीर छिब न्यारी। दंत भुजा वक्ष दौर धीर धर, उर तसवीर उतारी।—ऊ.का.

१२ देखो 'दौड़' (रू.भे.) १३ देखो 'दौड़ौ' (रू.भे.)

दौर-दौरौ–सं०पु०यौ० [अ० दौर] अत्यधिक प्रभाव।

दौरांण—देखो 'दौरांन' (रू.भे.)

दौरांणी—देखो 'देरांणी' (रू.भे.)

उ०—भाभी को देवर लाडलो दौरांणी ये आयो ढळती सी रात। भाभी के आगगो जाणो छोड द्यो मारुजी मर जाऊं जहर विख खाय। मरस्यो तो जास्यो जीवसूं मारुणी ये भाभी म्हारै जिवड़ा को हार। नखराळी ये भाभी म्हारी सेजां को सिणगार।—लो.गी.

दौरांन–सं०पु० [फ़ा० दौरान] १ सिलसिला, झोंक. २ फेरा, वारी, पारी. ३ कालचक्र, दिनों का फेर. ४ दौरा, चक्र।

रू०भे०—दौरांण।

दौरौ—देखो 'दौड़ौ' (रू.भे.)

दौळ–क्रि०वि—चारों ओर, चहुँ ओर। उ०—कंत घणी ही सांकड़ो, घेरौ घर रै दौळ। वाभी देखण हुळसै, सेलां री घमरोळ।—वी.स.

दौलत–सं०स्त्री० [अ०] १ धन, संपत्ति। उ०—१ दौलत आंणै दूर सूं, अंग बणै अदनाह। वड़ा प्रपंची वांणिया, वाघ गऊ बदनाह।
—बां.दा.

उ०—२ पह 'अजमाल' परताप, प्रसिद्ध दौलत इण पाई। वार वार कीरत करै, जांणै सब लोक बडाई।—सू.प्र.

२ राज्य, सत्ता, हकूमत। उ०—थे मोटा आदमी कारणीक म्हारी दौलत में छौ तिण सूं हिमै सवाया छौ।—नी.प्र.

३ परिभ्रमण। उ०—दिल ऊजळ नर ऊजळ, लखिन ऊजळ सिर लेखीय। दौलत दौलत मिळि न, लगी दो लत द्रिढ लेखीय।—र.ज.प्र.

४ भाग्य, नसीब।

रू०भे०—दउलत, दउलती, दौलति, दौलती।

यौ०—दौलतखांनौ, दौलतवंत।

दौलतखांनौ–सं०पु०यौ० [अ० दौलत+फ़ा० खानः] निवास-स्थान, घर।

वि०वि०—इस शब्द का प्रयोग दूसरे के घर के लिए सम्मानार्थ होता है। अपने घर के लिए गरीबखांनौ शब्द का प्रयोग होता है।

दौलतमंद–वि०यौ० [अ० दौलत+फ़ा० मंद] धनवान, सम्पन्न।

उ०—सैणां नूं मसलत नूं पेसकार दौलतमंदां रौ कहियौ छै।
—नी.प्र.

दौलतमंदी–सं०स्त्री०यौ० [अ०+फ़ा] धनाढ्यता, सम्पन्नता।

दौलतवंत, दौलतवंती, दौलतवांन–वि०यौ० [अ० दौलत+सं० वंत] १ धनी, सम्पन्न. २ भाग्यशाली। उ०—निरमळ कमळ सकोमळ नारी। सुत देसळ गाअैं स विचारी। वारंगनाह सती विकसंती। दौलतवंती दाड़िमदंती।—ल.पिं.

रू०भे०—दौलतिवंत।

दौलति—देखो 'दौलत' (रू.भे.)

उ०—सरिख रित पति दिपती सूरति। द्वारि संपति वधति दौलति।
—ल.पिं.

दौलतिवंत—देखो 'दौलतवंत' (रू.भे.)

उ०—अनेक सत्रूकार, सत धरम रा राखणहार, खैराइतां रा करणहार, धजबंधी कोड़ीधज लाखेसरी दौलतिवंत चौरंग लिखमी रा लाडिला, लोक वडा वापारी, वहवारिया. सोदागर, वहरांम संद, साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै।—रा.सा.सं.

दौलती–वि० [अ० दौलत+रा०प्र०ई] १ धनी, सम्पन्न।

२ भाग्यशाली। उ०—दळ सकल पासि निरमळ कमळ दौलती। पह सगह विरिद वह खाटणौ लखपत्ती।—ल.पिं.

३ देखो 'दौलत' (रू.भे.) उ०—१ सोळ सिणगार सज्या, बीजा सघळा कांम तज्या, हाथ नी रूड़ी, विहु वाहि खळकि चूड़ी, लघुलाघवी

कळा, मन कीधा मोकळा, चित्त नी उदार, अति घणुं दातार, दौलती हाथ, परमेसर देजे तेह नो साथ।—व.स.

उ०—२ किया रवांना दौलती, वीसळनंद विगोय। क्रपण हिया मँह कांगसी, नहि फेरे नर-लोय।—वां.दा.

दौलेय—सं०पु० [सं०] १ दस दिग्गजों में से कुमुद नामक दिग्गज (वं.भा.) २ कछुआ, कच्छप।

दौवारिक—सं०पु० [सं०] द्वारपाल। उ०—अनेक गणनायक दंडनायक राजेस्वर तलवर माडंवीक कोटंविक मंत्रि महामंत्रि गणक दौवारिक अमात्य चेटक।—व.स.

दौस्यिकापण—सं०पु० [सं० दौष्यिकापण] कपड़े के व्यापारी की दुकान, कपडा बाजार। उ०—भाडागारिक कोस्टाकार सत्राकार मठ विहार प्रपामंडप देसमंडप त्रिक चतुस्क चत्वर चतुस्पथ राजमारग गांधिकापण दौस्यिकापण सोवरण्णकार।—व.स.

रू०भे०—दोसिकापण।

दौहित्र—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

दौहित्रो—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

दौहित्रौ—देखो 'दोहितौ' (रू.भे.)

(स्त्री० दौहित्री)

द्यउ—वि० [सं० द्वि] एक और एक दो।

द्यणो, द्यवौ—देखो 'देणो, देवौ' (रू.भे.) उ०—कुंभां, द्यउ नइ पंखड़ी, थांकउ विनउ वहेसि। सायर लंघी प्री मिळउं, प्री मिळि पाछी देसि।—ढो.मा.

द्यांणूं, द्यांणौ—देखो 'दाहिणौ' (रू.भे.) उ०—१ सासूड़ी, मनै वांवीं तीतर वोल्यौ, अेक द्यांणी बोली कोचरी।—लो.गी.

उ०—२ जंवाईड़ा, तनै द्यांणूं तीतर बोल्यौ रे क, मेरी लाडो ना चलै।—लो.गी.

उ०—३ पहलो तौ पग जोरै पागड़ै में दीनौ रे काळै मूं की कोय-लड़ी कसूणी बोली रे। मोड़ौ वतळायौ, हंसता-खेलता वैरी जोरे ने ले चाल्या रे। बांई बोली कोचरी, खर द्यांणौ बोल्यौ रे, मोड़ौ वतळायौ।—लो.गी.

(स्त्री० द्यांणी)

द्यानतदार—देखो 'दयांनतदार' (रू.भे.)

द्यामणौ—देखो 'दयावणौ' (रू.भे.) उ०—१ एहवां वचन द्यामणां वोलइ, विहुं करि पीटइ आप। केहां जनम तणां इणि वेळां, आवी लागां पाप।—कां.दे.प्र.

उ०—२ जाग्यु खग ते झाल्यु जांणी, मांडूं अति आक्रंद। सर सघळी पंखी बहु वोली, दीन द्यांमणी मंद।—नळाख्यांन

(स्त्री० द्यामणी)

द्याड़ो, द्याढ़ि—देखो 'दिवस' (रू.भे.)

उ०—वाडवि वात कही विस्तरी, दमयंती वर वरसि खरी। मांनी वारता साची सही, एकि द्याडि आव्या वही।—नळाख्यांन

द्याळ, द्याळु—देखो 'दयाळु' (रू.भे.)

द्यावड़—सं०स्त्री०—चर्खे में माल के टिकाव के लिए घेरे (रहँट) की पंखड़ियों के मध्य बांधी जाने वाली डोरी, जतनी।

द्यु—सं०पु० [सं०] १ दिन. २ आकाश. ३ स्वर्गलोक. ४ सूर्यलोक. ५ अग्नि।

द्युग—सं०पु० [सं०] आकाश में गमन करने वाला पक्षी।

द्युगण—सं०पु० [सं०] ग्रहों की मध्यगति के साधक अंग, दिन।

द्युचर—सं०पु० [सं०] १ ग्रह. २ पक्षी।

द्युज्या—सं०स्त्री० [सं०] अहोरात्र वृत्त की व्यास रूप ज्या।

द्युत—सं०पु० [सं द्युत्] किरण (नां.मा.)

द्युति—देखो 'दुति' (रू.भे.)

द्युतिकर—वि० [सं०] प्रकाश उत्पन्न करने वाला, चमकने वाला।

द्युतिधर—वि० [सं०] प्रकाश या कांति को धारण करने वाला।

द्युतिमंत, द्युतिमांन—वि० [सं० द्युतिमत्] प्रकाशवान्, चमकीला।

द्युतिमा—सं०स्त्री० [सं० द्युति+रा०प्र०मा] प्रकाश, तेज, प्रभा।

द्युन—सं०पु० [सं०] लग्न से सातवां/स्थान।

द्युनिस—सं०पु० [सं० द्युनिश] अहर्निश, रातदिन।

द्युपति—सं०पु० [सं०] १ सूर्य, भानु. २ इंद्र।

द्युपथ—सं०पु० [सं०] आकाशमार्ग।

द्युमण—सं०पु० [सं० द्युम्न] धन, द्रव्य (ह.नां.)

द्युमणि—सं०पु० [सं०] १ सूर्य, भानु. २ मंदार. ३ शोधा हुआ तांबा।

द्युलोक—सं०पु० [सं०] स्वर्गलोक।

द्यूत—सं०पु० [सं०] जुआ।

द्यूतभेद—सं०पु० [सं०] ७२ कलाओं में से एक (व.स.)

द्यूतविसेस—सं०पु० [सं० द्यूतविशेष] ६४ कलाओं में से एक।

द्यून—सं०पु० [सं०] लग्न स्थान से सातवीं राशि।

द्यो—सं०पु० [सं०] १ स्वर्ग. २ आकाश, व्योम. ३ शतपथ ब्राह्मण।

द्योत—देखो 'दुति' (रू.भे.) (अ.मा.)

द्योरांणी—देखो 'देरांणी' (रू.भे.)

द्योस—देखो 'दिवस' (रू.भे.)

द्यौ—वि० [सं० द्वि] एक और एक, दो।

द्यौस—देखो 'दिवस' (रू.भे.) उ०—द्यौस न राति जाति नहि कोई, अब या जाति छोत ले ओई।—ह.पु.वा.

द्रंग—सं०पु० [सं०] १ नगर, शहर। उ०—१ माह महारस मयण सव, अति ऊलहइ अनंग। मो मन लागौ मारवण, देखण पूगळ द्रंग।—ढो.मा.

उ०—२ सूरातन जांही घणइ सूरातन, ईसर तणा वाधिया अंग। प्रळय काळ हुसी ताइ प्रिथमी, द्रोही तणा थरकिया द्रंग।—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'दुरग' (रू.भे.) ३ देखो 'द्रग' (रू.भे.)

उ०—सोधी राजकुंवारी री द्रंग आंखियां प्रफुलित होय जचा रै तापणै (सिघड़ी) माथै पड़ै।—वी.स.टी.

रू०भे०—ध्रंग।

अल्पा०—द्रंगड़ौ, धींगड़ौ, धोगड़ौ, ध्रंगड़ौ।

मह०—धींगड़।

द्रंगड़ौ—देखो 'द्रंग' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मतिवाळा घूमै नहीं, नहं घायल कणणाय। वाळूं सखी ऊ द्रंगड़ौ, भड़ बापड़ा कहाय। —हा.झा.

द्रंगी—सं०पु०—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा जिसके मुख का रंग श्वेत तथा उस पर धब्बे होते हैं। ऐसा घोड़ा अशुभ माना जाता है (शा.हो.)

द्रउडणौ, द्रउडबौ—देखो 'दौड़णौ, दौड़बौ' (रू.भे.)

उ०—भीमु भोडंतउ जमराणतडे, कूटइ कुरववीर। पाडइ द्रउडउ भेटवइ, बांधीय बोलइ नीरि।—प.पं.च.

द्रकक्षेप, द्रकखेप—सं०पु० [सं० दृक्क्षेप] १ दृष्टिपात, अवलोकन.

२ दशम लग्न के नतांश की भुज ज्या जिसका कार्य सूर्य ग्रहण के स्पष्टीकरण में होता है।

द्रकनति—सं०स्त्री० [सं० दृङ्नति] ग्रहण स्पष्ट करने में पर्वान्तकालीन सूर्य, चंद्र स्पष्ट करते हैं तथा वे भूगर्भाभिप्राय से एक सूत्र में आ जाते हैं पर भू-पृष्ठाभिप्राय (दृश्य) से नहीं आते तब भूपृष्ठाभिप्राय से उन्हें एक सूत्र में लाने के लिये किया जाने वाला याम्योत्तर संस्कार।

द्रकपथ—सं०पु० [सं० दृकपथ] दृष्टि का मार्ग दृष्टि की पहुँच।

द्रकपात—सं०पु० [सं० दृकपात] दृष्टिपात, अवलोकन।

द्रकस्रुति—सं०पु० [सं० दृक्श्रुति] सांप।

द्रखद—सं०पु० [सं० दृषद] पत्थर, पाषाण (ह.नां.)

रू०भे०—द्रसद।

द्रग—सं०पु० [सं० दृग] १ आंख, नयन, लोचन।

उ०—१ देखै अमीर अणधीर द्रग, नरपत रूप अनंग रै। सब कहै न को 'अजमाल' सम, अवर साल 'अवरंग' रै।—रा.रू.

उ०—२ वेरा वैरागर सागर सम सोभा। रीती गागर लै नागर तिय रोभा। धावै द्रग धारा दारा मुख धोवै। जीवन संजीवन जीवन धन जोवै।—ऊ.का.

२ देखने की शक्ति।

३ दो की संख्या*।

रू०भे०—द्रंग, द्रिग, द्रगन।

द्रगपाळ—देखो 'दिग्पाळ' (रू.भे.)

उ०—१ दामोदर तूझ दसै द्रगपाळ, किता इक पार न जांणै काळ। उमा तो पार अगम्म अलेख, लखम्मी तूझ न जांणे लेख।—ह.र.

उ०—२ द्रगपाळ कंद करसी दुफलि, इसौ तेज दरसावियौ। रवि सिंह'र प्रगट हुय जेण, 'अभमल' बाहर आवियौ।—सू.प्र.

द्रगगोचर—वि० [सं० दृग्गोचर] जो आंख से दिखाई दे।

द्रगगोळ—सं०पु० [सं० दृग्गोल] वह वृत्त जिसे ऊर्ध्व और अध स्वस्तिक में होता हुआ कल्पित कर के जिस ओर ग्रहों का उदय होता है उस ओर घुमा कर उनकी स्थिति का पता लगाया जाये।

द्रग्ज्या—सं०स्त्री० [सं० दृग्ज्या] दृक् मंडल या दृग्गोल के ख-स्वस्तिक से जो ग्रह जितना लटका रहता है उसे नतांश कहते हैं और इसी नतांश की ज्या (दृग्ज्या कहलाती है)।

द्रग्लंवण, द्रग्लंवन—सं०पु० [सं० दृग्लंवन] ग्रहण स्पष्ट करने में जब सूर्य, चंद्र गर्भाभिप्राय से एक सूत्र में आ जाते हैं परन्तु पृष्ठाभिप्राय से एक सूत्र में नहीं आते, तब उन्हें पृष्ठाभिप्राय से एक सूत्र में लाने के लिए किया जाने वाला पूर्वापर संस्कार।

द्रजीत—देखो 'इंद्रजीत' (रू.भे.)

उ०—उगार बभीखण कीध अभीत, दिधी तैं लंक अलोध दईत। दसानन कुंभ अजीत द्रजीत, संघारिय लंक बहोड़िय सीत।—ह.र.

द्रजोण—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)

उ०—अफारा पारंभ वाळा डिगै सीस सेस वाळा! महावीर डिगै जो द्रजोण वाळो मांण।—प्रभूदान मोतीसर

द्रठा—सं०स्त्री० [सं० दृश्य] आंख, नयन (अ.मा.)

द्रठि—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

उ०—नाहो नयण समारिया, उरि आरी सु लेइ। द्रठि लगेसी मारुई, क्युं क्युं जितन करेइ।—ढो.मा.

द्रडवडणौ, द्रडवडबौ—

उ०—मठ देवकुळ खडहडत पाडतउ, चतुस्पद दडवड द्रडवडतउ, घलहल घ्रित तैल भोजन ढोळतउ।—व.स.

द्रडवडियोड़ौ—भू०का०कृ०—

(स्त्री० द्रडवडियोड़ी)

द्रढ़—वि० [सं० दृढ़] १ जो ढीला या शिथिल न हो, जो कस कर बंधा हो, प्रगाढ़. २ जो जल्दी न टूटे-फूटे, ठोस, कड़ा, कठोर।

उ०—द्रढ़ दंत दब्बि देखत दुसार। आवत न पार दुख सिंधु पार। आपकी इजाजति चहत अग्ग। मुरधरा जाण को देहु मग्ग।—ऊ.का.

३ बलवान, बलिष्ठ, पुष्ट. ४ जो जल्दी दूर, नष्ट या विचलित न हो सके, स्थायी। उ०—गावै नित सूर सकत्त गणेस। सदा द्रढ़ ध्यांन धरै सिध सेस। वदै मुनि चारण देव विसेस। आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह.र.

५ निश्चित, ध्रुव, पक्का।

ज्यूं—वात द्रढ़ करणी।

६ कड़े दिल का, निडर. ७ ढीठ।

सं०पु०—१ लोहा. २ विष्णु. ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र.

४ तेरहवां मनु।

रू०भे०—डिड, दढ़, दिढ़, द्रिढ़।

द्रढ़करमी—वि० [सं० दृढ़कर्म्मन्] (स्त्री० द्रढ़करमी) स्थिरता और धैर्य के साथ काम करने वाला।

द्रढ़मूठी—वि० [सं० दृढ़+मुष्टिका] कंजूस, कृपण (डि.को.)

द्रढ़क्षत्र, द्रढ़खत्र—सं०पु० [सं० दृढ़क्षत्र] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

द्रढ़णौ, द्रढ़बौ—क्रि०स० [सं० दृढ़] १ प्रगाढ़ करना, मजबूत करना.

२ पक्का करना।

क्रि०अ०—३ पुष्ट या मजबूत होना, कड़ा होना।
द्रढ़णहार, हारौ, (हारी), द्रढ़णियौ—वि०।
द्रढ़िग्रोड़ौ, द्रढ़ियोड़ौ, द्रढ़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
द्रढ़ीजणौ, द्रढ़ीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

द्रढ़तरु-सं०पु० [सं० दृढ़तरु] धव का पेड़।

द्रढ़ता-सं०स्त्री० [सं दृढ़ता] १ दृढ़ होने का भाव, दृढ़त्व. २ पक्कापन. ३ मजबूती. ४ डांवाडोल न होने का भाव, विचलित न होने का भाव, स्थिरता।
उ०—पर-दुख मेटण काज, द्रढ़ता मेरी नित रहै। तींसू आयौ आज, क्षुधा दुख तूं ना लहै।—सिंघासण बत्तीसी
रू०भे०—द्रिढ़ता।

द्रढ़न्वौ-सं०पु० [सं० दृढ़धन्वन्] धनुष चलाने में दृढ़।

द्रढ़नाम-सं०पु० [सं० दृढ़नाम] वाल्मीकि के अनुसार अस्त्रों की एक रोक।

द्रढ़नेत्र-सं०पु० [सं० दृढ़नेत्र] विश्वामित्र के चार पुत्रों में से एक।

द्रढ़नेमि-वि० [सं० दृढ़नेमि] जिसकी धुरी मजबूत हो।

द्रढ़व्रत्ती-सं०पु० [सं० दृढ़व्रती] भीष्मपितामह।

द्रढ़भूमि-सं०स्त्री० [सं० दृढ़भूमि] एक अभ्यास जिससे मन एकाग्र और स्थिर हो जाता है (योगशास्त्र)

द्रढ़मन्न-वि०यौ० [सं० दृढ़+मन] स्थिर चित का, दृढ़।

द्रढ़लोम-वि० [सं० दृढ़लोमन्] (स्त्री० द्रढ़लोमी) जिसके रोंयें या बाल कड़े हों।
सं०पु०—सूअर।

द्रढ़वंत-वि० [सं० दृढ़वंत] १ दृढ़, स्थिर। उ०—विजपाळ रांम केहर विकट्ट, भीमेण रांम फतमल सुभट्ट। हरिभांण नाथ भाराथ हांम, द्रढ़वंत सांम पेखे दुगांम।—रा.रू.
२ वीर, सुभट।

द्रढ़वरमा-सं०पु० [सं० दृढ़वर्म्मन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम (महाभारत)

द्रढ़व्य-सं०पु० [सं० दृढ़व्य] एक ऋषि।

द्रढ़व्रत-सं०पु० [सं० दृढ़व्रत] स्थिर संकल्प।

द्रढ़स्यु-सं०पु० [सं० दृढस्यु] अगस्त्य ऋषि का लोपामुद्रा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

द्रढ़ांग-वि० [सं० दृढ़ांग] (स्त्री० दृढ़ांगी) दृढ़ अंग वाला, हृष्ट-पुष्ट।

द्रढ़ा-वि०स्त्री० [सं० दृढ़ा] १ शक्तिशालिनी, बलवान।
उ०—दीरघा लघु वपु द्रढ़ा, सवेही रूप, विरूपा। वकळा सकळा व्रजा, उपावण आप आपुपा।—देवि.
२ दृढ़, मजबूत. ३ कठोर।

द्रढ़ाड़णौ, द्रढ़ाड़बौ—देखो 'द्रढ़ाणौ, द्रढ़ाबौ' (रू.भे.)
द्रढ़ाड़णहार, हारौ (हारी), द्रढ़ाड़णियौ—वि०।
द्रढ़ाड़िग्रोड़ौ, द्रढ़ाड़ियोड़ौ, द्रढ़ाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
द्रढ़ाड़ीजणौ, द्रढ़ाड़ीजबौ—कर्म वा०।
द्रढ़णौ, द्रढ़बौ—अक० रू०।

द्रढ़ाड़ियोड़ौ—देखो 'द्रढ़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० द्रढ़ाड़ियोड़ी)

द्रढ़ाणौ, द्रढ़ाबौ-क्रि०स० [सं० दृढ़] १ दृढ़ करना, मजबूत करना. २ पक्का करना, निश्चित करना।
द्रढ़ाणहार, हारौ (हारी), द्रढ़ाणियौ—वि०।
द्रढ़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।
द्रढ़ाईजणौ, द्रढ़ाईजबौ—कर्म वा०।
द्रढ़णौ, द्रढ़बौ—अक० रू०।
द्रढ़ाड़णौ, द्रढ़ाड़बौ, द्रढ़ावणौ, द्रढ़ावबौ—रू०भे०।

द्रढ़ायु-सं०पु० [सं० दृढ़ायु] १ तृतीय मनु सावर्णि का एक पुत्र. २ उर्वशी के गर्भ से उत्पन्न ऐल राजा का पुत्र (महाभारत)

द्रढ़ायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दृढ़ किया हुआ, मजबूत किया हुआ. २ पक्का किया हुआ, निश्चित किया हुआ।
(स्त्री० द्रढ़ायोड़ी)

द्रढ़ाव-सं०पु० [सं० दृढ़] १ दृढ़ता, स्थिरता, मजबूती। उ०—जोर दिखायौ साह री, फोर घरै प्रसताव। घर घर हूंदा मांझियां, कर कर वात द्रढ़ाव।—रा.रू.

द्रढ़ावणौ, द्रढ़ावबौ—देखो 'द्रढ़ाणौ, द्रढ़ावौ' (रू.भे.)
द्रढ़ावणहार, हारौ (हारी), द्रढ़ावणियौ—वि०।
द्रढ़ाविग्रोड़ौ, द्रढ़ावियोड़ौ, द्रढ़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
द्रढ़ावीजणौ, द्रढ़ावीजबौ—कर्म वा०।
द्रढ़णौ, द्रढ़बौ—अक० रू०।

द्रढ़ावियोड़ौ—देखो 'द्रढ़ायोड़ौ' (रू.भे.)

द्रढ़ासण, द्रढ़ासन-सं०पु० [सं० दृढ़ासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन जिसमें बांयें हाथ की ठेउनी से मोड़ कर सिर के नीचे रखना और अंडकोस न दबे इस ढंग से दोनों पांवों को लंबा कर के बांयी करवट सोना होता है। इससे स्वप्न बहुत कम आते है। हाथ और पार्श्व के हेर-फेर से इसका दूसरा प्रकार दक्षिणासन भी कहलाता है।

द्रढ़ासु-सं०पु० [सं०] एक सूर्य वंशी राजा का नाम (सू.प्र.)
उ०—धुंधमार तणै उपजै द्रढ़ासु।—सू.प्र.

द्रढ़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ प्रगाढ़ किया हुआ, मजबूत किया हुआ. २ पक्का किया हुआ. ३ पुष्ट या मजबूत हुवा हुआ, कड़ा हुवा हुआ।
(स्त्री० द्रढ़ियोड़ी)

द्रढ़ै-क्रि०वि० [सं० दृढ़] दृढ़ता से। उ०—वदै तव नांम लखम्मण-वीर। नरां त्यां घात लगै नहिं नीर। द्रढ़ै तव नांम सु अक्खर दोय। नैड़ो रह प्रांण नियारौ न होय।—ह.र.

द्रढ़वाळी-सं०स्त्री० [सं० दृढ+आलुच् प्रत्य] दृढ़ता, स्थिरता।
उ०—जेता बोल बोलै तेता दे संभाळी। वच्चने वच्चने दिए द्रढ़वाळी।—ना.द.

द्रतहर-सं०पु० [सं० दृतिहरि] १ बैल (ह.नां.). २ वह पशु जिस पर पानी का पखाल लाद कर लाया जाता हो ।

द्रप-वि० [सं० दर्प] घमंडी । उ०—सियाळू ऊनाळू विमळ वरसाळू सब सुखी । दयाळू हो देवा भजन बिन भेवा द्रप दुखी ।—ऊ.का.

द्रपक-सं०पु० [सं० दर्पक] कामदेव (अ.मा.)

द्रपण—देखो दप्पण' (रू.भे.)

द्रपतयो-सं०पु०—काव्य छंद का भेद विशेष ।

द्रब-सं०पु० [सं० द्रव्य] १ चांदी, रजत (अ.मा.)

२ देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) (नां.मा., डि.को)

उ०—१ पग पगां संपड़ै आंख संपड़ै क अर्थ, भूखे अख संपड़ै जेम लोभी द्रब लद्धै ।—ज.खि.

उ०—२ जो 'दुरगे' द्रब मांगियौ, प्रथम न दीनौ साह । च्यार किसत कीधी चलू, दिखण हुंदै राह ।—रा.रू.

द्रबउभेळ-वि० [सं० द्रव्य+रा० उभेळ] दातार (अ.मा.)

द्रबक्कणौ, द्रबक्कबौ-क्रि०अ०—कंपना ।

उ०—टरं माट मेवाड़, वळे पाहाड़ द्रबक्कं । आंकरै अरवद्द, सीस देवड़ां चमक्कं ।—गु.रू.ब.

द्रबड़णौ, द्रबड़बौ—देखो 'दौड़णौ, दौड़बौ' (रू.भे.)

द्रबड़णहार, हारौ (हारी), द्रबड़णियौ—वि० ।

द्रबड़िग्रोड़ौ, द्रबड़ियोड़ौ, द्रबड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

द्रबड़ीजणौ, द्रबड़ीजबौ—भाव वा० ।

द्रबड़ाड़णौ, द्रबड़ाड़बौ—देखो 'दौड़ाणौ, दौड़ावौ' (रू.भे.)

द्रबड़ाड़णहार, हारौ (हारी), द्रबड़ाड़णियौ—वि० ।

द्रबड़ाड़िग्रोड़ौ, द्रबड़ाड़ियोड़ौ, द्रबड़ाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

द्रबड़ाड़ीजणौ, द्रबड़ाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

द्रबड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'दौड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० द्रबड़ाड़ियोड़ी)

द्रबड़ाणौ, द्रबड़ाबौ—देखो 'दौड़ाणौ, दौड़ावौ' (रू.भे.)

द्रबड़ाणहार, हारौ (हारी), द्रबड़ाणियौ—वि० ।

द्रबड़ायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

द्रबड़ाईजणौ, द्रबड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

द्रबड़ायोड़ौ—देखो 'दौड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० द्रबड़ायोड़ी)

द्रबड़ावणौ, द्रबड़ावबौ—देखो 'दौड़ाणौ, दौड़ावौ' (रू.भे.)

द्रबड़ावणहार, हारौ (हारी), द्रबड़ावणियौ—वि० ।

द्रबड़ाविग्रोड़ौ, द्रबड़ावियोड़ौ, द्रबड़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

द्रबड़ावीजणौ, द्रबड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

द्रबड़ावियोड़ौ—देखो 'दौड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० द्रबड़ावियोड़ी)

द्रबत्रिया-सं०स्त्री० [सं० द्रव्य+स्त्री] गनिका, वेश्या (अ.मा.)

द्रब्ब—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.) उ०—दळ बळ तुरंग गज ससत्र द्रब्ब । समपिया साह तोरा सरब्ब ।—सू.प्र.

द्रब्बघर-सं०पु०यौ० [सं० द्रव्य+गृह] खजाना, भण्डार ।

द्रमंकणौ, द्रमंकबौ-क्रि०अ० [देश०] गर्जन होना, ध्वनि होना, आवाज होना । उ०—१ नाचे हर-सुत मोर द्रमंके खोह गुंजातां । कोयां जिण रा जांण चांनणी धोळ सुहातां ।—मेघ.

उ०—२ आभ झरंती बूंद बिचाळै चातक झंपै । डार बुगलियां वांम निदेसण साजन जंपै । मांनै तौ एहसांण द्रमंके भांमण डरती । हळफळती धव अंग मिळै गळवत्थां भरती ।—मेघ.

द्रमकणौ, द्रमकबौ—रू०भे० ।

द्रमंकौ-सं०पु० [देश०] धमका, गर्जन । उ०—नाग द्रमंकां की पड़ै, नागण धर मचकाय । इण रा भोगणहार जे, आज भिड़ांणा आय ।
—वी.स.

द्रम-सं०पु० [देश०] १ प्रचण्ड वायु. २ वेग या आंधियों के कारण निरन्तर बदलते रहने वाले टीबों का मरु-प्रदेश. २ मरुस्थल की वह भूमि जिसमें मनुष्य, जानवर आदि धँस जाता है ।

उ०—तिकै जैसळमेर था कोस २५ आथवण नूं मंगळीका-थळ छै, तठै रहै छै । वा ठौड़ मंगळीका थळ कहावै छै । तठै द्रम छै । सु भोमियो होय सु डांडी आवै । असैंधो डांडी टळै सु घोड़ो असवार गरक हु जाय ।—नैणसी

[सं० द्रम्म] ३ तोल का नाप विशेष ।

४ देखो 'द्रुम' (रू भे.)

द्रमकणौ, द्रमकबौ-क्रि०अ० [देश०] १ भयभीत होना, थर्राना, कांपना । उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या अरी । हुटुहुडाट हुउ हुडकी करी ।
—विराट पर्व

२ देखो 'द्रमद्रमणौ, द्रमद्रमबौ' (रू.भे.) उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या अरी । हुटहुडाट हुउ हुडकी करी ।—विराट पर्व

३ देखो 'द्रमंकणौ, द्रमंकबौ' (रू.भे.)

द्रमणारजुन-सं०पु० [सं० द्रुम+अर्जुन] अर्जुन नामक वृक्ष ।

द्रमद्रमणौ, द्रमद्रमबौ-क्रि०अ० [अनु०] (दुंदुभि, नगारे आदि की) ध्वनि होना (उ.र.) उ०—धूळि मिळीय झळमळीय सयळ दिसि दिणयरु छाईउ । गयणे दुंदुहि द्रमद्रमीय सुरवरि जसु गाईउ ।—पं.पं.च.

द्रमकणौ, द्रमकबौ—रू०भे० ।

द्रमद्रमाटि-सं०स्त्री० [अनु०] दुंदुभि, नगारे आदि वाद्यों की ध्वनि, आवाज । उ०—वीरम्रिदंग वाजिया, जयढक्क वाजी, समहर सांमह्या, ग्रहग्रहते त्रंबक तणी ग्रहग्रहाटि त्रिभुवन टळटळिउं, भेरि भुंगळ तणे भुभुवाटि भूकिइं भिळकी फाटी, काहल तणे कोलाहलि कांन कमकम्या, डूंडि डमांमा दुडदडी द्रमद्रमाटि भयंकर होइवा लागउ ।—व.स.

द्ररोळ—देखो 'दरोळ' (रू.भे.)

द्रव-सं०पु० [सं० द्रवः] १ पानी की तरह पतला, तरल ।

उ०—हंस मीन कूरम हुवौ, स्रीभरतार समत्थ । सरित हुवौ द्रब होय सो, किसू अछेरा कत्थ ।—बां.दा.

२ भागना, पलायन (डि.को.) ३ आंच पाकर पानी की तरह फैला हुआ, पिघला हुआ।

सं०पु०—१ द्रवत्व. २ देखो 'द्रव्य' (रू.भे.)

रू०भे०—द्रिव।

द्रवड़—देखो 'द्रविड़' (रू.भे.)

द्रवण-वि० [सं० दा] देने वाला। उ०—सरव लघु नगण आयुस द्रवण सुर सुरक, तात विध सावित्री कनक रंग तैण। भ्रिगुमुनि चढ़ण गज नऊं रस में अभंग, न्रिप मगध देस कुळ विप्र मुर नैण।—र.रू.

सं०पु० [सं० द्रुम] १ कल्पवृक्ष (नां.मा.)

२ देखो 'द्रविण' (रू.भे.) (अ.मा.)

द्रविड़-सं०पु० [सं० द्रविड] दक्षिण भारत का देश या इस देश का निवासी (व.स.)

रू०भे०—द्रवड़।

द्रविण-सं०पु० [सं० द्रविणः] १ धन, संपत्ति. २ सोना, हेम. ३ पराक्रम, बल. ४ कामदेव के पांच बाणों में से एक।

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक परठि द्रविण सोखण सर पंच। चितवणि हसणि लसणि गति संकुचणि सुंदरि द्रारि देहरा संच।—वेलि.

रू०भे०—द्रवण, द्रवेण।

द्रविणौ, द्रविवौ-क्रि०अ०—द्रवीभूत होना, विनम्र होना।

उ०—१ सु राठौड़ देईदास वगड़ी भांज नै भाकर पैठा नै दिन ५ तथा ७ साथ करनै आय द्रविया था।—राव चंद्रसेण री वात

उ०—२ गांम वडुवज आवियौ, स्री नवकोट नरंद। हीण थयौ द्रवि देवडौ, ज्यों रवि ऊगां चंद।—रा.रू.

द्रवेण—देखो 'द्रविण' (रू.भे.)

द्रव्य-सं०पु० [सं०] १ वह पदार्थ जिसमें केवल गुण और क्रिया अथवा केवल गुण हो. २ पदार्थ, चीज, वस्तु. ३ धन, दौलत।

उ०—राकस त्रिपत हुओ। ताहरां राकस कही—'जु, सेतरांम! तूं कहै तौ तोनै द्रव्य वताऊं?' ताहरां सेतरांम कही—'द्रव्य तो म्हारै घणौ ही छै, पण कोई इसौ वर दै तैसूं नांम रहै।'—नैणसी

४ वह जिससे कोई वस्तु बनाई जाय, सामग्री, सामान. ५ औषधि, दवा. ६ पीतल. ७ गुणों का समूह (जैन). ८ मदिरा, शराब. ९ गोंद. १० नौ की संख्या*।

रू०भे०—दरव, दरव्व, दरब, द्रव, द्रव्व, द्रब, द्रिव।

द्रव्यउनोदरी-सं०स्त्री० [सं०] भंड उपकरण (बर्तन, बासन पात्रादि) और आहार पानी का शास्त्र में जो परिमाण बतलाया है उसमें कम करने की क्रिया (जैन)

द्रव्यनिक्षेप-सं०पु०यौ० [सं०] पदार्थ विशेष की भूत और भविष्यत् कालीन पर्याय के नाम का वर्तमान काल में व्यवहार करने की क्रिया या भाव। उ०—साधपणौ न पाळै अनै साधू रो नांम धरावै तौ ते द्रव्यनिक्षेप रै लेखै साध बाजै।—भि.द्र.

द्रव्यपति-सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार भिन्न-भिन्न द्रव्यों या पदार्थों के अधिपति, भिन्न-भिन्न राशियां।

द्रव्यवंत, द्रव्यवांन-वि० [सं० द्रव्यवत्] धनाढ्य, धनी। उ०—ताहरां कह्यौ—थे मोनूं द्रव्यवंत वावड़ो।—सयणी री वात

द्रव्याधीस-सं०पु० [सं० द्रव्याधीश] कुबेर (डि.को.)

द्रव्व—देखो 'द्रव्य' (रू.भे.)

उ०—दिआ वधारा देस दे, ईंवर द्रव्व हसत्ति। पतिसाही थां ऊपरां, यूं कहिओ असपत्ति।—वचनिका

द्रसट-सं०पु० [सं० दृष्ट] नेत्र, नयन, आंख। उ०—चंद्र हूंत चंद्रका द्रस्ट वीछड़ी न देखी। घण निवास बीजळी पासि तजि टळी न पेखी।—रा.रू.

वि०—१ देखा हुआ. २ जाना हुआ, प्रकट, ज्ञात।

रू०भे०—दिट्ठ।

द्रसद—देखो 'द्रखद' (रू.भे.) (अ.मा.)

द्रस्टकूट-सं०पु० [सं० दृष्टकूट] पहेली।

द्रस्टांत, द्रस्टाति-सं०पु० [सं० दृष्टांत] १ समान धर्म वाली किसी प्रचलित वस्तु या व्यापार का कथन जो अज्ञात वस्तुओं या व्यापारों का धर्म्म आदि बतलाते हुए समझाने के लिए हो।

उ०—१ रुखमणीजी कंचुकी पहिरी छै सु मानु इभ कहतां हस्ती तै के कुंभस्थळ ऊपरि अंधारी राखी छै। दूसरौ द्रस्टांत जांणै महादेवजी कवच पहिरचौ छै, कांम सों जुद्ध करिवा के तांई। तीसरौ द्रस्टांत स्रीक्रिस्णजी का मन के तांई मंडप छायौ छै, जु मन आय वइसिसी। चौथौ भाव यौ जु मन वांध्यौ चाहिजै, त्यै के कारणै या वारिगह दीधी छै।—वेलि टी.

उ०—२ समस्त मनुष्य छै त्यां सिघळा हरी आंखि स्रीक्रिस्णजी रा मुख सों द्रस्टि लागि रही छै। ताकौ द्रस्टांत जैसे समुद्र कै विसै चंद्रमा का प्रतिबिंब नै मछळी सब लागि रहे छै, आंखि पासि घेरि रहै छै, इह भांति सब ही का नेत्र क्रिस्णजी का मुखारविंद नै आरोपित किया छै।—वेलि टी.

२ उदाहरण, मिसाल। उ०—रीता हुवै हजार हां, कळस भरीज भरीज। रीता हुवै निवांण नह, इण द्रस्टांत पतीज।—वां.दा.

३ स्वप्न, सपना। उ०—मैं द्रस्टांत दीठौ छै।—पंचदंडी री वात

४ ऋतुस्नाता स्त्री का पुरुष दर्शन जिसका प्रभाव गर्भ पर होता है.

५ शास्त्र. ६ मरण. ७ एक अर्थालंकार जिसमें एक ओर तो उपमेय और उसके साधारण धर्म्म का वर्णन और दूसरी ओर बिंब-प्रतिबिंब भाव से उपमान और उसके साधारण धर्म का वर्णन होता है।

वि०वि०—उपर्युक्त अर्थ संख्या दो का उदाहरण है—

उ०—रीता हुवै हजार हां, कळस भरीज भरीज। रीता हुवै निवांण नह, इण द्रस्टांत पतीज।—वां.दा.

इसके अनुसार एक ओर तो उपमेय के धर्म का वर्णन है कि हम हजारों कलश भरते हैं फिर भी खाली हो जाते हैं (रीता हुवै हजार

हां=क्योंकि वे हमारे स्वार्थ के कारण खाली हो जाते हैं) दूसरी ओर बिंब-प्रतिबिंब भाव से उपमान का वर्णन है कि कूप खाली नही होता है (रीतौ हुवै निवांण नह=अर्थात् परोपकारी या दातार होने के कारण वह खाली नही होता है।) इसी प्रकार उपर्युक्त अर्थ संख्या एक के दोनो उदाहरणों में भी यही अलंकार है।

रू०भे०—दसटांत, दिट्ठंति, दस्टांत, दिस्टांत।

द्रस्टा-वि० [सं० द्रष्टा] १ देखने वाला. २ साक्षात्कार करने वाला।

उ०—१ ग्यांनी आतम स्वरूप सदाई, महा विमळ ज्यूं सर रे। यौ सुखरांम सनातन अनुभव, निज तिथि द्रस्टा चेतन रे।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ जीयारांम गुरु सद चिद आणंद, केवळ ब्रह्म सुधो री। स्वयं प्रकासी निरमळ द्रस्टा, सोई सुखरांम कह्यो री।

—स्री सुखरांमजी महाराज

३ दर्शक. ४ प्रकाश।

रू०भे०—द्रिस्टा।

द्रस्टि-सं०स्त्री० [सं० दृष्टि] १ आंख की ज्योति, देखने की शक्ति या वृत्ति. २ देखने के लिये आंख की पुतली का किसी वस्तु की सीध में होने की स्थिति, टक, अवलोकन, निगाह, नजर. ३ देखने के लिये प्रवृत्त नेत्र, देखने के लिए खुली हुई आंखें. ४ आंख की ज्योति का प्रसार, दृक्पथ. ५ पहचान, परख, अंदाज. ६ मिहरबानी की नजर, कृपा-दृष्टि, हित का ध्यान. ७ आसरे की लगी हुई टकटकी, आशा की दृष्टि, उम्मीद, आशा. ८ ध्यान, विचार. ९ नीयत, उद्देश्य, अभिप्राय. १० दृष्टि-दोष, नजर।

रू०भे०—दठि, दस्ट, दस्टी, दिट्ठ, दिट्ठि, दिठ, दिसट, दिसिटी, दिस्ट, दिस्टि, दिस्टी, दीठ, दीठि, दीठी, दीस्ट, दीस्टी, दीह, द्रिठ, द्रिठि, द्रस्टी, द्रीठ, द्रेट, द्रेठि।

द्रस्टिगोचर-वि० [सं० दृष्टिगोचर] जो देखने में आ सके।

द्रस्टिफळ-सं०पु० [सं० दृष्टिफल] एक राशि में स्थित ग्रह की दृष्टि, दूसरी राशि में स्थित ग्रह पर पड़ने से होने वाला फल या प्रभाव (फलित ज्योतिष)

द्रस्टिमांन-वि०पु० [सं० दृष्टिमान्] आंख वाला, दीठ वाला, जिसके दृष्टि हो।

द्रस्टिवंत-वि० [सं० दृष्टिवंत] १ ज्ञानी, जानकार, सूझ वाला. २ दृष्टि वाला, नजर वाला।

द्रस्टिवाद-सं०पु० [सं० दृष्टिवाद] १ वह सिद्धान्त जिसमें दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण ही की प्रधानता हो. २ जैनियों के बारह अंगों में से एक।

द्रस्टिस्थांन-सं०पु० [सं० दृष्टिस्थान] कुंडली में वह स्थान जिस पर किसी दूसरे स्थान में स्थित ग्रह की दृष्टि पड़ती हो।

द्रह-सं०पु० [सं० ह्रद] १ वह स्थान जहां गहरा जल हो, दह (डिं.को.)

उ०—इसा-अेक तई पातसाह रा कटकबंध अचळेसर ऊपरि छूटा। वाटका खड़ ईंधण खूटा, द्रह का पांणी तूटा। परवतां सिरि पंथ लागा, दुघट घट भागा, सूर सूझइ नहीं खेह आगा।—अ. वचनिका

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति गढ़ कोट चौफेर कांगुरा लागा थका विराजै छै। जांणै आकास लोक गिळण नूं दांत दिया छै। ऊंची निजरि करि जोइजै तौ माथा रो मुगट खड़हड़ै। तिण कोट री खाही ऊंडी द्रह नागद्रही सारीखी। जळ छैल पाताळ री जड़ां सूं लागि नै रही छै।—रा.सा.सं.

२ नदी के मध्य स्थित गहरा गड्ढा। उ०—सु ओ बडौ अवसांण आयौ। ऊंडै द्रह भिलकिला ज्यूं फूलधारां विचि उडि पड़ां। पातिसाह री फौजां सूं लड़ां। महाभारत करि मरां। वगड़ी जोधांण ऊजळा करां—र. वचनिका

४ ताल, भील, ह्रद। उ०—कूंभड़ियां कळरव कियउ, घरि पाछिले वणेहि। सूती साजण संभरया, द्रह भरिया नयणेहि।—ढो.मा.

रू०भे०—दह, द्रहा, देहड़, धें, धंड़, ह्रद।

द्रहद्रहवार-सं०स्त्री० [सं० जयद्रथ वेला] संध्या का समय (उ.र.)

रू०भे०—धरधरवेळा।

द्रहा-सं०स्त्री०—देखो 'द्रह' (रू.भे.)

उ०—दड़ी पड़तां द्रहा में चढै भांकियौ कदंब डाळ, नीर थाघै अथाघ चहतां वाद नार। खेल्ह बाळ ब्रंद रै करतां लगाड़ियौ खेटौ, काळी नाग जगाड़ियौ नंद रै कंवार।—र.ज.प्र.

द्रहद्रहणौ, द्रहद्रहवौ-क्रि०अ० [अनु०] दुंदुभि, नगारे आदि वाद्यों की ध्वनि होना। उ०—मिळिया सुरवए कोडि तेत्रीस गयणे दुंदुहि द्रहद्रहीय।—प.पं.च.

द्रहद्रहाटि-सं०स्त्री० [अनु०] नगारे आदि वाद्यों की ध्वनि होना।

उ०—रथचक्र चित्कार करी जांणीइं, चिंध पताका किंकणीक्वांण करी जांणीइं, तूरय सब्द करी जांणीइं, नीसांण द्रहद्रहाटि करी जांणीइं।—व.स.

द्रहवट्ट, द्रहवट्टां-वि०—पराजित, तितर-बितर। उ०—१ जिकां माथै हाडै नरेस मऊ थी राजकुमार भाऊ भेजियौ जिकण जातां ही राठौड़ द्रहवट्टां करि काढ़िया।—वं.भा.

२ देखो 'दहवाट' (रू.भे.)

रू०भे०—द्रहवाट।

द्रहवाट, द्रहवट, द्रहबाट-सं०पु० [सं० दश+वाट ?]

१ देखो 'दहवाट' (रू.भे.)

उ०—१ बांणां थट कैरव रांण विराट। ब्रहन्नट जांण करै द्रहवाट।

—मे म.

उ०—२ मांभी मोह मराट, 'पातल' रांण प्रवाड मल। दुजड़ां किय द्रहबाट, दळ मैंगळ दांणव तणा।—दुरसौ आढ़ौ

उ०—३ पड़ मार तरवर पाथ रां, रिण विकट कपी रघुनाथ रां। दससीस दळ भुजवळां, द्रहवट कीध अडर सकोप।—र.ज.प्र.

उ०—४ करण धकचाळ मेवास द्रहवट करण, आउवा धणी दसदेस उजवाळ। धणी नव कोट री सरै छत्रधारियां, 'पाळ' हर जोड़ रा सरै दगपाळ।—दयाळदास आढ़ौ

उ०—५ वजै रव डैरव वीस वतीस, उचै रव फेरव देत असीस। चंडी द्रहवाट करै चतुरंग। उडै खग भ्राट चुखच्चुख अंग —मे.म.

२ देखो 'द्रहवट्ट' (रू.भे.) उ०—सीरोई कीधी डंड सारै, खेड़ सुपह मोटा ग्रद खाट। मेडतो ले दीधो 'माल' नै, 'वीरम' नै कीधो द्रहवाट।—मेहो वीठू

द्राक–अव्य० [सं० द्राक] १ शीघ्र, जल्दी (ह.नां.)
२ देखो 'दाख' (रू.भे.)

द्राक्ष, द्राक्षा, द्राख—देखो 'दाख' (रू.भे.) उ०—१ जीणइं कीधउं अम्रि पांन, तसु किम हुइ आछणि समाधांन, जिणि द्राक्ष फळ भरिउ हुइ कवल, तसु किसिउ रुचइ मधूकफळ।—व.स.
उ०—२ द्राक्षा तणी आकांक्षा किम महू फीटइ, सरकरा तणी स्रद्धा किम गुळि त्रूटइ, अम्रित काजि किम कांजी पीजइ।—व.स.
उ०—३ कग्हा नीरूं सोइ चर, वाट चलंतउ पूर। द्राख विजउरा नीरती सो घण रही स दूर।—ढो.मा.

द्राखणी, द्राखवो—देखो 'दाखणी, दाखवो' (रू.भे.)

द्रागड़ो–सं०पु० [देश०] मीणा जाति के व्यक्तियों की वह टोली जो चोरी या डाके के इरादे से कहीं जाती हो। रू.भे. 'धागड़ो'।

द्राव–सं०पु० [सं० द्रावः] १ पलायन, भागना (डि.को.)
२ देखो 'ध्राव' (रू.भे.)

द्रावक–वि० [सं०] द्रवरूप करने वाला।

द्रावकि–वि०स्त्री०—द्रवीभूत करने वाली। उ०—समऊरयुग्म कूरमोन्नत-चरण अल्पमांम निरलोम दाक्षिण्यपर दयापर मयापर क्षमापर साचावोली हितवोली मितवोली ऊपजावकि लावकि द्रावकि समयती मांनयती सतीमिती।—व.स.

द्रावड़, द्रावड—देखो 'द्राविड़' (रू.भे.)

द्रावण–सं०पु० [सं०] १ भगाने का कार्य. २ द्रवीभूत करने का काम. ३ कांमदेव के पांच वाणों में से एक। उ०—जरै स्रोतानुराग रै ही प्रभाव आकरसण १ मोहण २ द्रावण ३ उन्मादण ४ वसीकरण पांचूं ही मनोज रा मायकां रो वेभ्रो होय।—वं.भा.

द्राविड़–वि० [सं०] द्रविड़ देश वासी।
सं०पु० [सं० द्रविड] द्रविड़ देश।
रू०भे०—द्रावड, द्रावड।

द्राविड़गोड़–सं०पु० [सं० द्राविड गोड] रात के समय गाया जाने वाला एक राग (संगीत)

द्राविड़ी–सं०स्त्री० [सं० द्राविडी] १ छोटी इलायची. २ द्रविड़ जाति की स्त्री।
वि०—द्रविड़ संवंधी।

द्रासक—देखो 'दहसत' (रू.भे.) उ०—देवगुरु नमइं, ठाकुर तणइ हीअइ गमइं, संग्रांमदुरद्धर, परनारीसहोदर, वाढि वडइं, जेहे दीठे दुरजन नै हीए द्रासक पडइं, छांडइ घाट, घोडा तणा कांन सोरा माहि साट।—व.स.

द्रिग–सं०स्त्री०—१ पुरुष की ७२ कलाओं में से एक।—व.स.
२ देखो 'द्रग' (रू.भे.) (ह.नां.)
उ०—उभई द्रिग जुडिया उचक, काट भीण पटकोर। हलवो कटक हरोळ ह्वां, ज्यूं घूमर पर जोर।—र. हमीर

द्रिगन—देखो 'द्रग' (रू.भे.)

द्रिगपाळ—देखो 'दिग्पाळ' (रू.भे.)
उ०—आंक पंचमी एण उपाइ, पंगति छठी कहो परचाइ। अनस्वार ससि भुज सर आपि, थिर द्रिगपाळ त्रिसुआ थापि।—ल.पिं.

द्रिठ, द्रिठी—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

द्रिढ़—देखो 'द्रढ़' (रू.भे)
उ०—सावधांन गुर ग्यांन, पाव द्रिढ़ सत्त परट्ठं। जुग कौतग जोड़वा पंच तत पंच पइट्ठं।—ज.खि.

द्रिढता—देखो 'द्रढ़ता' (रू.भे.)

द्रियाव—देखो 'दरियाव' (रू.भे.)
उ०—सुण एम 'पेम' आरंभ कीन, द्रढ़ भड़ां वांकड़ां हुकम दीन। धुर पड़े नगारां अढ़य घाव, दिढ़ चढ़े वेळ गाजै द्रियाव।—पे.रु.

द्रिव—१ देखो 'द्रव्य' (रू.भे.)
२ देखो 'द्रव' (रू.भे.)

द्रिस्टद्यु मन, द्रिस्टद्यु मनि—देखो 'धस्टद्युम्न' (रू.भे.)
उ०—कूडउं वोलइ घरमपूतु हथीयार छंडावइ। छेदिउं मस्तकु द्रिस्टद्यु मनि क्रमु सिउं न करावइ।—पं.पं.च.

द्रिस्टांत—देखो 'द्रस्टांत' (रू.भे.) उ०—कोई वीर स्त्री आपरा पती री वडाई कर कह रही छै सिघ रो द्रिस्टांत दे नै।—वी.स.टी.

द्रिस्टा—देखो 'द्रस्टा' (रू.भे.) उ०—अचळ अखंड अनंत अजनमा, एकातीत अनूप। प्रेरक, साक्षी, द्रिस्टा वोई, सोई सुखरांम स्वरूप।
—सुखरांमजी महाराज

द्रिस्टि—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—१ जरा धाग्रइं हस्ति घूंमइं, अस्व नइं असवार। न्यांन रूपइं क्रस्ण जोयूं, द्रिस्टि दीठी नारि।
—रुकमणी मंगळ
उ०—२ सूयारडउ हूग्र दाध देवा, गिउ वेगि वेडिइं पुण कास्ट लेवा। द्रिस्टिइं न दीसइं दिसि घलि रोळी, तु ग्रांविली भीममिइं भडिग्र मूळी।—विराट पर्व

द्रिस्टिवंधविद्या–सं०स्त्री० [सं० दृष्टिवंध-विद्या] नजरवंदी की विद्या।
उ०—हवडां मुझ नै स्परस ज थयु, भ्रालूं एटलि अलगु गयु। द्रस्टि-वंध-विद्या तुं जांण, आव्यु छि को पुरुस प्रमाण।—नळाख्यान

द्रिस्टियुद्ध–सं०पु० [सं० दृष्टियुद्ध] ७२ कलाओं में से एक (व.स)

द्रिस्टिसूळ–सं०पु० [सं० दृष्टिशूल] नेत्र का रोग विशेष।
उ०—कंडूकमल कास स्वास ज्वर भगंदर जळोदर गुदकीलक कुक्षि-सूळ द्रिस्टिसूळ सिरहसूळ करणसूळ दंतवेदना अजीरण्ण अरोचक कुस्टरोग प्रमुख रोगा।—व.स

द्रिस्य–वि० [सं० दृश्य] १ जो देखने में आ सके, जो देख सके, दृग्गोचर।
उ०—हरख सोक दुख सुख तहां नांहि, सुसुप्ती समवंता। द्रिस्य

अद्रिस्य लीन हिरदा में, प्राग्य जीव सायंता।
—स्री सुखरांमजी महाराज

२ जो देखने योग्य हो, दर्शनीय. ३ जानने योग्य, ज्ञेय. ४ सुंदर, मनोरम।

सं०पु०—१ वह पदार्थ जो आँखों के सामने हो, देखने की वस्तु, नेत्रों का विषय। उ०—द्रस्टा मिटचा द्रिस्य नहिं पावै, द्रिस्य मिटचा द्रस्टाजी। जो कोई मनकूं खंडचा चावौ, पांच विसै कूं ढाजी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

२ आंखों के सामने होने वाला मनोरंजक व्यापार, तमाशा.

३ अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया जाने वाला काव्य, नाटक.

४ ज्ञात या दी हुई संख्या—गणित।

द्रिहंग, द्रिहंगसि—सं०स्त्री०—ढोल की आवाज।
उ०—निमंत्रीहार अयार निसासहिं, द्रिहंगसी ढोल रवद दुवाड़। विसकन्या देखे वजवाया, मुणियउ मांड अनड़ मेवाड़।—दूदौ

द्रीठ—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.) उ०—तरै रावळ दूदै घणौ वखांणियौ, तरै तिलोकसी कह्यौ—"भली हुई, आज ही वखांणियौ।" तरै रावळ कह्यौ—"म्हारी द्रीठ लागै छै।" सु तिलोकसी रौ तिण ही वेळा जीव नीसर गयौ।—नैणसी

द्रीयौ—सं०पु० [देश०] ऊँट को पुकारने या पुचकारने का शब्द।

द्रीवखड़—सं०स्त्री० [अनु०] नक्कारे, ढ़ोल या दुंदुभि आदि की ध्वनि विशेष।

द्रीह—सं०स्त्री० [अनु०] वाद्यों की भयंकर आवाज।
उ०—तदि वर्णै साज गयंदां तुरां, वीर वंबाळां द्रीह वजि। सुरतांण साह मुदफर दिसी, 'सूर' चढ़ै दळ पूरि सजि।—सू.प्र.

द्रुंग—देखो 'दुरग' (रू.भे.) उ०—सुणै वात ऐ मात नै भ्रात साथै। हसै तेम लंकेस दे ताळ हाथै। भुजा वीस सीसं दसं मूझ भाई। खितां द्रुंग लंका जळाधार खाई।—सू.प्र.

द्रु—सं०पु० [सं०] १ वृक्ष, पेड़. २ शाखा।

द्रुग, द्रुगग—देखो 'दुरग' (रू.भे.) (डिं.को)
उ०—१ अडर पातिसाह हुवा आला आगिले रा अर भला भले रा। त्यां चउ चउरासी द्रुग लिया था विहाड़इ पाडइ।—अ. वचनिका
उ०—२ मंडी आस मळेछ, खट्टण खंड द्रुग्ग चित्तंगौ। कित्ती खंड विहुंड, जित्ती हार धार सुरतांणौ।—रा.रू.
उ०—३ चलैं चंदोळ चैन में हरोळ दगती चलैं। दरारहेत द्रुग्ग को चिरार चुगती चलैं।—ऊ.का.

द्रुघण—सं०पु० [सं०] १ लोहे का मुगदर.
२ परशु या फरशे के आकार का एक अस्त्र. ३ कुठार, कुल्हाड़ी.
४ देखो 'दुहिण' (रू.भे.) (डिं.को.)

द्रुजोण—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)
उ०—अकबर हर जुजिठळ 'अजन', कमंध द्रुजोण करन्न। औरंगसाहि मुराद वे, राजा 'जसौ' 'रतन्न'।—र. वचनिका

द्रुण—सं०पु० [सं० द्रुणं] १ धनुष, कमान.
२ खड्ग. ३ विच्छू (डिं.को.)

द्रुणा—सं०स्त्री० [सं० द्रुणा] धनुष की डोरी, प्रत्यञ्चा (डिं.को.)

द्रुत—वि० [सं०] १ शीघ्रगामी, तेज.
२ भागा हुआ. ३ द्रवीभूत।
क्रि०वि०—जल्दी, शीघ्र, तुरन्त (ह.नां.)
उ०—पन प्रबळ पिसन पिक्खें न पिट्ठ। रजवट वट दै रट्ठोर रिट्ठ। द्रुत मरुधन्वा लीजैं दवाय। जब राजबीज निरबीज जाय।—ऊ.का.
सं०पु०—१ मध्यम से कुछ तेज लय, दून.
२ ताल की एक मात्रा का आधा. ३ हलका शराब. ४ बिच्छू.
५ वृक्ष, पेड़. ६ बिल्ली।

द्रुतगति—सं०स्त्री० [सं०] तेज चाल।
वि०—शीघ्रगामी।

द्रुतगामी—वि० [सं० द्रुतगामिन्] शीघ्रगामी।

द्रुतरासी—सं०स्त्री० [देश०] शराब की सब से हलकी किस्म।

द्रुतविलंबित—सं०पु० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है।

द्रुति—सं०स्त्री० [सं०] १ द्रव, तरल. २ गति।
क्रि०वि० [सं० द्रुत] शीघ्र, जल्दी (ह.नां.)

द्रुपद—सं०पु० [सं०] १ महाभारत के अनुसार उत्तर पांचाल का एक राजा। उ०—लगतां फागण लूरां लागी, अड़ै द्रोण अरु द्रुपद अभागी। वीरां खाग परस्पर वागी, जिण सूं ज्वाळ लड़ण री लागी।—ऊ.का.
२ एक राग (संगीत)
रू०भे०—द्रुपद, द्रोपत, द्रोपद, द्रौपत, द्रौपद।

द्रुपदी—सं०स्त्री०—२८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद विशेष (र.ज.प्र.)

द्रुमंग—देखो 'द्रुम' (रू.भे.) (डिं.को.)

द्रुम—सं०पु० [सं०] वृक्ष, पेड़ (अ.मा., नां.मा.) (डिं.को.)
उ०—द्रुम सात विभेदण क्रमगत छेदण, तै जस कह भव सिंधु तर। सुत स्री कौसल्या तार अहल्या, करुणानिध सो याद कर।—र.ज.प्र.
रू०भे०—द्रुम, द्रुमंग, द्रुम्म।

द्रुमग्रह—सं०पु०—देवल (अ.मा.)

द्रुमपत, द्रुमपति—सं०पु० [सं० द्रुमपति] कल्पवृक्ष (अ.मा., नां.मा.)

द्रुमपाळ—सं०पु० [सं० द्रुम+पाल] पर्वत, पहाड़ (अ.मा.)

द्रुमभूप—सं०पु० [सं०] वसंत (अ.मा.)

द्रुमसार—सं०पु० [सं०] फूल (अ.मा.)

द्रुमसेन—सं०पु० [सं०] कौरवों के पक्ष का एक योद्धा (महाभारत)

द्रुमामय—सं०स्त्री०—लाख, लाक्षा (डिं.को.)

द्रुमारि—सं०पु० [सं०] हाथी, गज (डिं.को.)

द्रुमालय—सं०पु० [सं०] जंगल, वन।

द्रुमिल—सं०पु० [सं०(?)] १ नौ योगेश्वरों में से एक योगेश्वर.

२ एक छंद।

द्रुम्म—देखो 'द्रुम' (रू.भे.)

उ०—द्रुम्म चरम मधु भरे, पत्र अंकुरे विपुल वन। फाग राग माधुरे, सुर नर नारि हरे मन।—रा.रू.

द्रुमिला-सं०पु० [सं०] १० और १८ की यति से प्रत्येक चरण में ३२ मात्राओं का एक मात्रिक छंद विशेष जिसके चरणांत में गुरु होता है।

द्रुपद-सं०स्त्री० [सं० ध्रुवपद] १ गीत की प्रत्येक कड़ी के पश्चात् दोहराई जाने वाली पंक्ति, टेक (नळ-दवदंती रास)

२ देखो 'द्रुपद' (रू.भे.)

द्रूमंडळ, द्रूमंडळि-सं०पु० [सं० ध्रुवमंडल] ध्रुवमण्डल।

उ०—१ असवार तणी आंहसी आवेगि असरणि ऊडी, दळयुगळ धूळिपटळि द्रूमंडळ छाइउं, पाखरयां तणे, पायक तणे पगपदताळे पाताळ पांणी प्रगट हूआं।—व.स.

उ० २ धाता दळ तणउ धूळीरव द्रूमंडळि लागउ, रज रमी रूप हारतउं गगन आछादिउं।—व.स.

द्रूमची—देखो 'दुमची' (रू.भे.)

उ०—विड़ंगां वणे द्रूमची केसवाळी, भड़ां भूप राजी हुग्रे रूप भाळी। जगम्मं पसम्मं मुखमल्ल जेही, दिपे जांणि आरीस सारीस देही।
—वचनिका

द्रूयमणि-सं०स्त्री० [सं० रुक्मिणी ?] रुक्मिणी। उ०—गढ़ त लंक विसहर त सेमु गह गुरुय त दिवायरु, अवल त द्रूयमणि नइ त गंगाजळ बहुल त सायरु।—अभयतिक यती

द्रूहिण-सं०पु०—देखो 'दुहिण' (रू.भे.) (डिं.को.)

द्रेठ, द्रेठि—देखो 'द्रस्टि' (रू.भे.)

उ०—१ मुखमली पसम रा, कळीसी कांन रा, भूठमी द्रेठ रा, कूकड़ा कंध रा, लोहमें बंध रा, तोछड़ी पूठ रा, चोवड़ी धूव रा।—रा.सा.सं.

उ०—२ कांनें कुंडळ मोतिय जोतिय खूंपइ द्रेठि। हार निगोदर सुंदर दीसइ न सुरिज हेठि।—नेमिनाथ फागु

द्रेहड़—देखो 'द्रह' (रू.भे.) उ०—देवड़ै 'विजै' 'सूजा' नै मार नै सूजा री वसी ऊपर साथ मेलियो, उठै मालो सूजा रो मरायो, वसी सारी लूटी, प्रथीराज नै स्यांमदास री मा इणां नुं द्रेहड़ मांहै ऊपर पला नांख नै रही, वे परा गया तरै द्रेहड़ मांह थी रात रा नीसर नै आवू री गोढै वार गया।—नैणसी

द्रोंगी-वि०स्त्री० [देश०] हतभागिनी, अभागिन।

उ०—जनम तणा जोगीह, वर्ग्रो मो दुख द्रोंगी करे। सब दिन मन सोगीह, रोगी जेम पड़ी रहूं।—पा.प्र.

(मि० दोगी)

द्रोंण—

उ०—वीरारस घण घोख वाजई, अभिनवा सिरि द्रोंण। सेल सावळ कुंत मुंदगर, उछळई अति स्रोण।—रुकमणी मंगळ

द्रोजोवण—देखो 'दुरयोधण' (रू.भे.) उ०—जिसो वाच जुजठिल्ल, जिसो मांण हि द्रोजोवण।—गु.रू.वं.

द्रोण-सं०पु० [सं०] १ पत्तों का दोना. २ लकड़ी का एक पात्र जिसमें सोम रखा जाता था. ३ डोम कौआ, काला कौआ.

४ मेघों के एक नायक का नाम जो अच्छी वर्षा का सूचक होता है.

५ एक प्रकार का रथ. ६ द्रोणाचल नामक पर्वत।

उ०—सुरां भंत्र रूपी तरां अंब सोभै, लखै पारिजाती तजै मार लोभै। प्रभा संप चंपै कळी जाळ पेखे, लजै भोण संजीवनी द्रोण लेखै।—रा रू.

७ देखो 'द्रोणाचारज' (रू.भे.)

उ०—लगतां फागण लूरां लागी, अड़ै द्रोण अरु द्रुपद अभागी। वीरां खाग परस्पर वागी, जिण सूं ज्वाळ लड़ण री जागी।—ऊ.का.

वि०—भयंकर, भयावह। उ०—वाजि घमस ऊडंड, वाजि भ्रंबाळ चहूंवळ। द्रोण वाजि है खुरां, वाजि दळ सौक वळोवळ।—सू.प्र.

द्रोणकळ-सं०पु० [सं० द्रोण-कल] वैकंक की लकड़ी का बना एक पात्र जिसमें यज्ञों में सोम छाना जाता था।

द्रोणकाक-सं०पु० [सं०] डोम कौआ, बड़ा कौआ।

द्रोणगिर, द्रोणगिरि-सं०पु० [सं० द्रोणगिरि] एक पर्वत का नाम (पौराणिक)

रू०भे०—दूणागिर, द्रोणागरंद, द्रोणागिर, द्रोणागिरि।

द्रोणगुरु—देखो 'द्रोणाचारज'।

द्रोणधार-सं०पु० [सं० द्रोण=द्रोणाचल+रा० धार] हनुमान।

द्रोणपुर-सं०पु० [सं०] द्रोणाचार्य द्वारा छापुर के निकट बसाया हुआ शहर। उ०—पांडवां कैरवां री वार मांहै, तद छापर रै परगने द्रोणाचारज आयो। आपरै नांमै सहर छापर ता कोसे २ वसायो। काळो डूंगर कहीजै छै तिण री जड़ां सहर वसाय नै द्रोणपुर नांम दिरायो।
—नैणसी

द्रोणमी-सं०स्त्री० [सं० द्रुण+रा०मी] धनुष की प्रत्यंचा, धनुष की डोरी। उ०—तू ही करतो पठाण पुत्री ज्यूं तिकै द्रोणमी कसीस यूं ही गरजै वांनंक। अकाळ की भाळ अगया पळकै अंग पाराजात माळ न पीजै स्रोवण पनंक।—क.कु.बो.

द्रोण-मुख-सं०पु०यो० [सं०] ४०० ग्रामों की राजधानी। उ०—केवडउ राज्य चक्रवरति तणउं चउद रत्न नव महानिधांन सोळ सहस्र यक्ष वत्रीस सहस्र मुकुट वरद्धन राय चवरासी लक्ष जात्य तुरगम चवरासी लक्ष रथ छन्नू कोडि पायक बहुत्तरि सहस्र पुरिवर वत्तीस सहस्र जनपद छन्नू कोडि ग्रांम नवांणु सहस्र द्रोण-मुख।—व.स.

द्रोणागरंद, द्रोणागिर, द्रोणागिरि, द्रोणागिरी—देखो 'द्रोणगिरि' (रू.भे.)

उ०—१ गजव्र अघोकै गयण लहणु द्रोणागरंद, समंद्र जळ अघोकै मुनंद सोखै। नागयंद सरोखै खगंद्र माधव नरंद्र, जवाहर व्रजंद जुध तुहीज जोखै।—कविराजा करणीदांन

उ०—२ विय सांमंद वंधसी, काय लेसी लंक जुध कर। काय हणमंत जिम कमंध, ग्रहै लेसी द्रोणागिर।—सू.प्र.

उ०—३ द्रोणागिर लायौ दुझल, वळ बुध कर वळवंत। मालांणी लायौ मरद, है पातन' हणवंत।—चिमनदांन रतनू

द्रोणरिख–सं०पु० [सं० द्रोण ऋषि] देखो 'द्रोणाचारज'

उ०—दुस्सासण जिकै जिमा दुरजोधन रिख असवांम द्रोणरिख।
—गु.रू.वं.

द्रोणाचारज, द्रोणाचारय–सं०पु० [सं० द्रोणाचार्य] भरद्वाज ऋषि के पुत्र एक प्रसिद्ध ब्राह्मण जिन्होंने कौरवों और पांडवों को शिक्षा दी थी।

उ०—१ मुजि लहूं प्रीति भारी सर्भ, मो इकतारी चित मही। किलमांण विहंड खग व्रत करूं, जुध द्रोणाचारज ज्यूंही।—सू.प्र.

उ०—२ पांडवां कैरवां री वार मांहे, तद द्वापर रै परगने द्रोणाचारज आयौ। आपरै नांवै सहर द्वापर ता कोसै २ वसायौ।—नैणसी

द्रोणि–सं०पु० [सं० द्रौणि:] द्रोणाचार्य का पुत्र, अश्वत्थामा।

उ०—छत्री नूं पोरस चढ़े, वेध तणी मुण वात। तद गोरख द्रोणी तणी, सरव सुणाई वात। रुद्र रिझावै रात री, निज कर सूं खग धार। अस्वत्थांमां एकलौ, हण्या अठार हजार।—पा.प्र.

द्रोणी–सं०स्त्री० [सं०] १ द्रोणाचार्य की स्त्री, कृपी।

२ नाव, नौका (डिं.को.)

द्रोणु—देखो 'द्रोणाचारय'।

उ०—दटा लगइ गुरु भेटीउ द्रोणु सु वंभणवेसि। तेह पासि विद्या पढइ कृपगुर नइं उपदेसि।—पं.पं.च.

द्रोपत—१ देखो 'द्रुपद' (रू.भे.) उ०—दोख्यां लाग्यौ दाव, द्रोपत सुत विनवै खड़ी। अब तौ वेगौ आव, साय करण नैं सांवरा।
—रांमनाथ कवियौ

२ देखो 'द्रौपद' (रू.भे.)

३ देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.) उ०—द्रोपत दुखियारीह, पूकारी अबळापणै। मदती हर म्हारीह, करणाकर करस्यौ करां।
—रांमनाथ कवियौ

द्रोपता—देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.)

उ०—हरी थे हरौ जन की पीड़, द्रोपता की लाज राखी, थे वढ़ायौ चीर।—मीरां

द्रोपद—१ देखो 'द्रुपद' (रू.भे.) २ देखो 'द्रौपद' (रू.भे.)

३ देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.)

द्रोपदजा, द्रोपदा—देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—निज मरोड़ मोडणां, धरणि पुड़ पोड़ धुजावै। दौड़ भमण द्रोपदा, श्रोट जिगरी नैं घावै।—मे.म.

द्रोपदि, द्रोपदी–वि० [सं० द्रौपदी] १ काला, श्याम, कृष्ण॰।

२ देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.) (अ.मा.)

द्रोपां—देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.)

उ०—दुरजोधन वीर करै ग्रह द्रोपां, त्यांन सभा विच चीर तटी। धणियो पण भीर हुवौ परमेसर, चीर न त्रूटोय सोभ चढ़ी।
—भगतमाळ

द्रोब—देखो 'दोब' (रू.भे.) उ०—कनक कळस जुति कुसम पढ़ै दुज पांणि पविन्निय। हरी द्रोब दधि अखत श्रोप दीपक आरत्तिय।
—रा.रू.

द्रोबड़—देखो 'दोब' (मह.; रू.भे.)

द्रोबड़ी—देखो 'दोब' (अल्पा., रू.भे.)

द्रोमज, द्रोमझि—देखो 'दोमज' (रू.भे.)

द्रोह–सं०पु० [सं०] १ प्रतिहिंसा का भाव, वैर।

उ०—१ घणौ द्रोह कीधौ प्रहळाद घाती। रयौ त्रास देतौ जिकौ दीह-राती।—भगतमाळ

उ०—२ गोत्र द्रोह थी जस नहीं, नृप द्रोह नीति विणास। बाळ द्रोह थी गति नहीं, त्रिण्हे करचां अभ्यास।—स्रीपाळ रास

२ ईर्ष्या, जलन, द्वेष। उ०—ढोला सांभळि माहरी वात, ऊमर खेलेस्यइ घणी घात। मारवणी सूं लागौ मोह, तुझ सूं घणी मांडिस्यइ द्रोह।—ढो.मा.

३ अहितचिंतन। उ०—वांदर कही—मित्र-द्रोह विस्वासघात की सूं होय, अर हूं कितरै काळ जीऊं।—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—द्रौह, धोह, ध्रोह।

द्रोही–वि० [सं० द्रोहिन्] ईर्ष्या करने वाला, बुरा चाहने वाला, द्रोह करने वाला। उ०—समझावै सोही वैरी वोही, द्रोही हुय दाझंदा है। पिंड में नहिं पांणी निज निरमांणी, सठहांणी साझंदा है।—ऊ.का.

सं०पु०—वैरी, दुश्मन, शत्रु।

उ०—१ सूरातन जांही घणइ सूरातन, ईसर तणा वाधिया अंग। प्रळयकाळ हुसी ताइ प्रिथमी, द्रोही तणा थरकिया ढ्रंग।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ उठै वांण दैतेस लंकेस आया। मिळै देव द्रोही उभै धूत-माया।—सू.प्र.

रू०भे०—धोही, ध्रोही।

द्रौणि—देखो 'द्रोणि' (रू.भे.)

द्रौपत, द्रौपद–सं०पु० [सं० द्रौपद] १ राजा द्रुपद का पुत्र।

रू०भे०—द्रोपत, द्रोपद।

२ देखो 'दुपद' (रू.भे.)

३ देखो 'द्रौपदी' (रू.भे.)

उ०—१ दुराटां रचियौ दाव, द्रौपद नागी देखवा। अब तौ वेगौ आव, साय करण नैं सांवरा।—रांमनाथ कवियौ

उ०—२ द्रौपद दक्काळाह, दुसट-सभा बिच दाखवै। लायौ नंदलालाह, चीर दुमाला चौगणा।—रांमनाथ कवियौ

द्रौपदी–सं०स्त्री० [सं०] राजा द्रुपद की कन्या जो पांचों पांडवों को व्याही गई थी, कृष्णा।

पर्याय०—क्रसणा, जग्यासेनी, पांचाळी, पंडवप्रिया, वेदजा, वेदवती, सती, सरअंगना, सिखवांन।

रू०भे०—दुरपदी, द्रूव्रय, द्रोपत, द्रोपता, द्रोपद, द्रोपदजा, द्रोपदा,

द्रोपदि, द्रोपदी, द्रोपां, द्रोपत, द्रोपद ।

द्रौपदेय-सं०पु० [सं०] द्रौपदी का पुत्र।

द्रौह—देखो 'द्रोह' (रू.भे.)

उ०—तिस वखत राव नै छळ द्रौह किया । जोधांण अपणै मुनसफ में लिया ।—सू.प्र.

द्वंद द्वंद्व—देखो 'दुंद' (रू.भे.) (ह.नां.)

द्वंदचारी-सं०पु० [सं० द्वंद्वचारिन्] चकवा पक्षी ।

द्वंद्वज-वि० [सं०] १ सुख, दुख, राग, द्वेष आदि द्वंद्वों से उत्पन्न होने वाली मनोवृत्ति. २ वात, पित्त और कफ नामक त्रिदोष में से दो दोषों से उत्पन्न रोग ।

द्वंद्वर, द्वंध—देखो 'दुंद' (रू.भे.)

उ०—१ भीतर द्वंद्वर भर रहै, तिनकौ मारै नांहि । साहिब की अरवाह हैं, ता को मारन जांहि ।—दादू वांणी

उ०—२ साधू संगति पाइये, तब द्वंद्वर दूर नसाइ । दादू बोहिथ बैस कर, डूंडे निकट न जाइ ।—दादू वांणी

उ०—३ दूजा ग्यांनी और सवेई, तारा चंद ज्यूं मांन । आतम ग्यांनी अधिक सब सूं, रवी बराबर जांण । तिरगुण माया रे, मिट गइ द्वंध निमा ।—स्री सुखरांमजी महाराज

द्वद्वजुध-सं०पु० [सं० द्वंद्वयुद्ध] दो पुरुषों के बीच की लड़ाई, कुश्ती ।

द्वजराज—देखो 'दुजराज' (रू.भे.)

उ०—सुणै वयण इम सकाजा, रीझ बगसै महाराजा । आरती द्वजराज आंणे, प्रीत उच्छव कीध पांणे ।—सू.प्र.

द्वाई—देखो 'दुहाई' (रू.भे.)

द्वाज-सं०पु० [सं०] वह पुत्र जो पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष से उत्पन्न हुआ हो, जारज पुत्र ।

द्वात—देखो 'दवात' (रू.भे.)

उ०—पातसाह जी तिसां मरतां री ज्यांन कवज होणै लगी । तद साजिहांनजी कयौ 'लावौ भाई रजूनांमा लिख दें ।' जब द्वात-कलम हाजर किया ।—द.दा.

द्वादस-वि० [सं० द्वादश] १ बारह । उ०—१ ईखवा अचळ साहस उवरि, सुर दळ विमळ तरस्सिया । विसतार नूर सतियां वदन, द्वादस सूर दरस्सिया ।—रा.रू.

उ०—२ ग्रहणी रोग बताये पंच, तिण विध सूं दैणा तिण संच । पंच उदर हिरदै प्रकार, इहि विधि द्वादस डंभ विचार ।—ध.व.ग्रं.

२ जो ग्यारह के बाद पड़ता हो, बारहवां ।

रू०भे०—दवादस, दवादस्स, दुआदस, दुवादस ।

द्वादसआतम, द्वादसआतमा-सं०पु० [सं० द्वादशात्मा) सूर्य, आदित्य (नां.मा., अ.मा.)

द्वादसक-वि० [सं० द्वादशक] बारह का ।

द्वादसकर-सं०पु० [सं० द्वादशकर] १ स्वामी कार्तिकेय.

२ वृहस्पति, सुर-गुरु ।

द्वादसचख-सं०पु० [सं० द्वादशचक्षुस्] स्वामी कार्तिकेय (नां.मा.)

द्वादसतूरचनिनाद-सं०पु० [सं० द्वादशतूर्यनिनाद] बारह वाद्यों की ध्वनि ।

उ०—तिम दधि दुरवा अक्षत चंदन कुसम कुंकम । पूज्य त्रिद्धासीरवाद, द्वादसतूरचनिनाद, विवाहादि हरखणाकळ ।—व.स.

द्वादसभाव-सं०पु० [सं० द्वादशभाव] जन्मकुंडली के वे बारह घर जिनके क्रम से तनु आदि नाम फलानुसार रखे गये हैं (फलित ज्योतिष)

द्वादसलोचण, द्वादसलोचन-सं०पु० [सं० द्वादसलोचन] स्वामी कार्तिकेय ।

द्वादसवरगी-सं०स्त्री० [सं० द्वादशवर्गी] फलित ज्योतिष में नीलकंठ ताजक के अनुसार वर्ष काल में ग्रहों के फलाफल निकालने के लिये बारह वर्गों की समष्टि ।

द्वादसवारसिक-सं०पु० [सं० द्वादशवार्षिक] ब्रह्म हत्या का पाप लगने पर बारह वर्ष तक किया जाने वाला एक व्रत ।

द्वादससुद्धि-सं०स्त्री० [सं० द्वादशशुद्धि] वैष्णव सम्प्रदाय में तंत्रोक्त बारह प्रकार की शुद्धियां ।

द्वादसांग-सं०पु० [सं० द्वादशांग] १ जैनों का वह ग्रंथ-समूह जिसे वे गणधरों का बनाया हुआ मानते हैं । इसके बारह भेद होते हैं ।

रू०भे०—द्वादसांगी ।

२ पूजा में जलाने की वह धूप जो बारह गंधद्रव्यों के योग से बनी हुई होती है ।

वि०—जिसके बारह अंग या अवयव हों ।

द्वादसांगी—देखो 'द्वादसांग' (१) (रू.भे.)

द्वादसि, द्वादसी-सं०स्त्री० [सं० द्वादशी] मास के प्रत्येक पक्ष की बारहवीं तिथि । उ०—१ चढियौ पाछै चक्रवति, मारू कातिक मास । महि पख द्वादसि मेड़तै, नरपति कियौ निवास ।—रा.रू.

उ०—२ मास मिगस्सर द्वादसी, इळ पुड़ पख अंधियार । जुड़ियौ गुणाचाळै 'जगौ', 'अजमल' छळै उदार ।—रा.रू.

उ०—३ मधुमास क्रसन पख द्वादसी, जुध प्रकास जग जांणियौ । अत जीप गया हरियांन मझ, व्रत जिहांन वखांणियौ । —रा.रू.

रू०भे०—दवादसी, दुआदसी, दुवादसी ।

द्वादसौ-सं०पु० [सं० द्वादश+रा०प्र०औ] १ मृत्यु के पश्चात् बारहवां दिन. २ मृत्यु के पश्चात् बारहवें दिन पर किया जाने वाला क्रिया-कर्म का संस्कार ।

उ०—अरु रावजी स्री लूणकरणजी रौ द्वादसौ कर धरम-पुन कियौ। पीछै गादी रावजी स्री जैतसीजी विराजिया ।—द.दा.

३ मृत्यु के पश्चात् बारहवें दिन किया जाने वाला भोज ।

रू०भे०—दवादसौ, दुआदसौ, दुवादसौ ।

द्वापर, द्वापुर, द्वापुरि-सं०पु० [सं० द्वापरम् अथवा द्वापरः] चार मुख्य युगों में से तीसरा युग । यह ८,६४,००० वर्ष का माना गया है (पौराणिक)

उ०—द्वापर में पांडवां रै द्वारै, दुरवासा घर आई । कोप करै कर बहु दुख दीना, तो ई रे सती सत नहीं गमाई ।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ अगत्न मान क्रितू ज्यो यागी, पां' त्रेताजुग बीतो पाछो। द्वापर माय मांनो दानी, रमा मिथायो मां चित राखो।—ऊ.का.

उ०—३ तेवड़ां रीत द्वापुर तणां, इळ राग्वां कीरत अमर। कहि नगर दान तिलगां करां, सराजांम हूंता समर।—सू.प्र.

उ०—४ पाति जोग परागम उगहो। जुग द्वापुरि जोगां मभि जितो।—सू.प्र.

रू०भे०—दवापर, दवापुर, दुआपुर, दुवापुर।

द्वार-सं०पु० [सं०] १ दरवाजा।

उ०—१ करी तुरी चित्रांम केळि द्वार द्वार डंवर। गुनाल के लगत गात अंतरंग अंबर।—सू.प्र.

उ०—२ कूकर रखवाळी करै, दूजां लोकां द्वार। देमोतां री डोढ़ियां, गीता करै गवार।—वां.दा.

उ०—३ प्रति द्वार रगे निज आसन में, मद बींद लसे रवि भासन में। पग मंत धरै प्रिह पावन कां, नित आवत नार बधावन कां।
—ऊ.का.

२ मुख, मुहाना, छिद्र. ३ इंद्रियों के मार्ग या छेद।
४ उपाय, साधन, जरिया।

मुहा०—द्वार सूझणो—उपाय निकलना।

रू०भे०—दवार, दुवारी, दुवार, दुवारी, दूआर।

अल्पा०—दवारो, दुवारो, द्वारो।

द्वारका-सं०स्त्री० [सं०] पुराणानुसार काठियावाड़ गुजरात की एक प्राचीन नगरी जो सात पुरियों में से एक मानी जाती है। यह हिंदुओं के चार धामों में से एक है (प्र.मा.)

उ०—मांडिलो स्याम समरण परै मांडहो, निगत बर सुवर ईसवर लिखायो। बगत सुण द्वारका हूंत आयो किसन, उदैपुर हूंत इम राग आयो।—रामो नाई

रू०भे०—दवारका, दुवारका दुवारिका।

द्वारकाधीस-सं०पु० [सं० द्वारकाधीश] श्रीकृष्णचन्द्र।

द्वारेस-सं०पु० [सं० द्वारकेश] द्वारकानाथ, श्रीकृष्णचन्द्र
(प्र.मा., नां.मा.)

द्वारपाळ-सं०पु० [सं० द्वारपाल] १ दरवाजे पर रक्षा के निमित्त नियुक्त पुरुष, ड्योढ़ीदार, दरवान.

२ वह देवता जो किसी बड़े देवता के द्वार का रक्षक हो (तंत्र)

३ समुद्रों के किनारे स्थित एक तीर्थ (महाभारत)

द्वारपाळक-सं०पु० [सं० द्वारपालक] द्वारपाल।

द्वारमति, द्वारमती—देखो 'द्वारावती' (रू.भे.)

उ०—१ जब इम सागर कहै, तुरत मतिकै पुरव दत। आज दीव [illegible], मदिर मारतंड द्वारमति।—सू.प्र.

उ०—२ [illegible] द्वारमती [illegible] सूर। [illegible] 'रेणु' वहै [illegible] दूर।—सू.प्र.

द्वाररोकाई-सं०स्त्री० [सं० द्वार+रा० रोकाई] १ विवाह की एक रीति। इसके अनुसार जब वर-वधू विवाहोपरांत घर आते हैं तब घर की बहनें उसकी राह रोकती हैं, इस पर वर द्वारा कुछ नेग दिया जाता है तब राह छोड़ दी जाती है. २ 'द्वाररोकाई' पर दिया जाने वाला नेग।

द्वारवती, द्वारामत, द्वारामती, द्वारामत्त, द्वारामत्ति, द्वारावति, द्वारावती-सं०स्त्री० [सं० द्वारवती, द्वारावती] द्वारका (डि.को.)

उ०—१ अमल हुवो सारी इळा, सत्र निरकळा सकत्त। कियो मतो दरसण करण, परसण द्वारामत्त।—रा.रू.

उ०—२ केवी घर सैंलोट कर, कर नवकोट पवित्ति। आयो जोधाणैं 'अजो', परसै द्वारामत्ति।—रा.रू.

उ०—३ इळ पूरब हूंता पछिम आय। जात्रा द्वारावति कीध जाय।
—सू.प्र.

उ०—४ प्रभु लेउ विदुर गयउ वन माहि, कन्ह वळी द्वारावती जाइ।
—पं.पं.च.

रू०भे०—दुआरामती, द्वारमति, द्वारमती।

द्वारि—देखो 'द्वार' (रू.भे.)

द्वारिक-सं०पु० [सं०] द्वारपाल।

द्वारिका—देखो 'द्वारका' (रू.भे.)

उ०—१ दादू केई दौड़ द्वारिका, केई कासी जांहि। केई मथुरा को चले, साहिब घट ही मांहि।—दादू वांणी

उ०—२ इण कीधा अनरत्थ, द्वारिका नगरी दहवै। सुणै नहिं धरम सीख, नजर में सुद्धि बुद्धि न हवै।—ध.व.ग्रं.

द्वारी-सं०स्त्री० [सं० द्वार+रा०प्र०ई] छोटा दरवाजा।

द्वारो-सं०पु० [सं० द्वार+रा०प्र०ओ] १ साधु-सन्यासियों के रहने का स्थान, रामद्वारा।

रू०भे०—दवारो, दुवारो।

२ देखो 'द्वार' (अल्पा., रू.भे.)

द्वाळो-सं०पु० [देश०] गीत छंद में निश्चित चरणों का समूह।

उ०—पत्र अखर दळ द्वाळा जस परिमळ, नव रस तंतु त्रिविधि अहो-निसि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि।—वेलि.

वि०वि०—प्राय: राजस्थानी गीत (छंद) में द्वाळा चार चरण का होता है किन्तु कई ऐसे गीत छंद भी हैं जिनमें तीन, पांच, छः, सात या आठ चरणों का द्वाळा भी होता है, जैसे—त्रिपंखो, सवैयो, झमाळ, हिरणझंप, दोढ़ो, मकुटबंध, अाटको आदि।

रू०भे०—दवांळो, दवाळ, दवाळो, दुआळो, दुवाळो, दुहाळो।

द्वि-वि० [सं० द्वौ] दो।

सं०पु०—२ दो की संख्या।

द्विइंद्रिय-सं०पु० [सं० द्वीन्द्रिय] वह जंतु जिसके शरीर और जीभ दो इन्द्रिय ही हों (जैन)

रू०भे०—दुइंद्रिय, बेंद्रिय, बेइंद्रिय।

द्विक-सं०पु० [सं० द्विकः] कौआ (डि.को.)

द्विकरमक-वि० [सं० द्विकर्मक] जिसके दो कर्म हों।

द्विकळ-सं०स्त्री० [सं० द्वि+कला] छंदशास्त्र या पिंगळ में दो मात्राओं का समूह।
रू०भे०—दुकळ।

द्विगु-सं०पु० [सं०] कर्मधारय समास का एक भेद जिसका पूर्वपद संज्ञा-वाचक हो।

द्विगुण-वि० [सं०] दुगुना, दूना।

द्विज-सं०पु० [सं०] १ दो की संख्या॰। २ नारद. ३ वशिष्ठ. ४ डगण के पांचवें भेद का नाम।
रू०भे०—दिज, दुजि, दुज्ज, दुज्जय।
५ देखो 'दुज' (रू.भे.)
उ०—१ जदि द्विज पंति निरंत्र करि जोजन। भूप समापं मनसा भोजन।—सू.प्र.
उ०—२ परब्रह्म न पाया सद सरमाया, माया मद माणंदा है। द्विज वरण दवाया कळपित काया, छाया जळ छांणंदा है।—ऊ.का.

द्विजन्म-सं०पु० [सं०] १ दूसरा जन्म, पुनर्जन्म. २ ब्राह्मण.
उ०—द्विजन्म पाय हव्य कव्य हव्य वाट में दहे—ऊ.का.
३ यज्ञोपवीत धारण करने वाला।
वि०वि०—यज्ञोपवीत को दूसरा जन्म माना है।
वि०—जिसका जन्म दो वार हुवा हो।

द्विजपति—देखो 'दुजपति' (रू.भे.)

द्विजराज, द्विजराय—देखो 'दुजराज' (रू.भे.)

द्विजवादन-सं०पु० [सं०] विष्णु।

द्विजा-सं०स्त्री० [सं०] द्विज की स्त्री, ब्राह्मणी।

द्विजाग्रज-सं०पु० [सं०] ब्राह्मण।

द्विजाति—देखो 'दुजाति' (रू.भे.)

द्विजेंद्र—देखो 'दुजिंद' (रू.भे.)

द्विजेस—देखो 'दुजेस' (रू.भे.)

द्विज्ज—देखो 'दुज' (रू.भे.) उ०—जस जोतख द्विज्ज लिखंत जंत्र। मुख पढ़त महाद्विज वेद मंत्र।—सू.प्र.

द्वितीय—देखो 'दुतीय' (रू.भे.)

द्वितीयौ—देखो 'दुतीय' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—तद मनसा देवी माया तै ऊपनी। माया थकी थोक दुइ ऊपना। आत्मा एक। द्वितीयौ परमात्मा।—द.वि.

द्विदळ-वि० [सं० द्विदल] १ जो दो खण्डों से जुड़ा हो किन्तु दाव पड़ने अथवा कूटने से दोनों खण्ड अलग हो जाते हों, जिसमें दो दल या पिंड हों. २ दो पत्ते वाला।
सं०पु०—वह अन्न जिसमें दो दल हों, दाल।
रू०भे०—दुदळ।

द्विदेह-सं०पु० [सं०] गणेश।

द्विद्वादस-सं०पु० [सं० द्विद्वादश] फलित ज्योतिष के अनुसार विवाह संबंध, मैत्री, साझा, नौकरी आदि निश्चित करने में देखा जाने वाला राशियों का मेल।

द्विधा-क्रि०वि० [सं०] दो प्रकार से, दो तरह से।
रू०भे०—दिधा।

द्विधातु-वि० [सं०] जो दो धातुओं के संयोग से बना हो।
सं०पु०—गणेश।

द्विप-सं०पु० [सं०] हाथी (अ.मा.)
रू०भे०—दुप, दुपी, द्दिप।

द्विपदी-सं०स्त्री० [सं०] १ दो पद वाला छंद या वृत्ति. २ वह गीत जिसमें दो पद हों. ३ एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसमें किसी दोहे आदि को कोष्ठों की तीन पंक्तियों में लिखा जाता है।
उ०—पंचावयवि दसावयवि वादीसिउं वाद लिइ, छए भासा वोलइ, पठित काव्य अठोतरउ अरथ दीसइ, एक पदी, द्विपदी त्रिपदी चिंतित समस्या पूरइ, तुरगपद, क्रोस्टपद पूरइ।—व.स.

द्विपादपारस्वासन-सं०पु० [सं० द्विपादपार्श्वासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दोनों पाँवों को घुटने से मोड़ कर दोनों पंजों को पीछे से लौटा कर कटि के ऊपर के भाग में अटकाना पड़ता है।

द्विपायी-सं०पु० [सं० द्विपायिन्] हाथी।

द्विपास्य-सं०पु० [सं०] गणेश।

द्विपुस्कर-सं०पु० [सं० द्विपुष्कर] फलित ज्योतिष में एक योग जो रवि, मंगल और शनिवारों, द्वितिया, सप्तमी और द्वादशी तिथियों तथा मृगशीर्ष, चित्रा और धनिष्ठा (द्विपादर्क्ष) नक्षत्रों में से किसी एक वार, एक तिथि तथा एक नक्षत्र के एक साथ होने पर होता है। इसमें शुभाशुभ का द्विगुणित फल होता है।

द्विप्प—देखो 'द्विप' (रू.भे.) (डि.नां.मा.)

द्विभासी-वि० [सं० द्विभाषी] जो दो भाषाएँ जानता हो, दुभाषिया।

द्विभुज-वि० [सं०] जिसके दो भुजाएँ या हाथ हों।

द्विभूमिक-सं०पु० [सं०] दो तल्ला, दो मंजिला (भवन)
उ०—सुवरणहट्टी, रूपहट्टी, कांसहट्टी, लोहहट्टी, दंतहट्टी, चित्रकार, मणिकार, गांधी, दोसी. फोफळ, सस्त्र, सूत्र, घ्रित, तैल कण इत्यादि विचित्र हट्टिकासोभाविसाळ रमणीय चतुसाळ, द्विभूमिक, त्रिभूमिक, चतुरभूमिकादि नंदावरत्त।—व.स.

द्विमात्र-सं०पु० [सं०] दो मात्राओं का वर्ण, दीर्घ वर्ण।

द्विमात्रज, द्विमात्रिज-सं०पु० [सं० द्विमातृज=जिसकी दो माताएँ हों] १ गणेश. २ जरासंध।
रू०भे०—द्वैमातर।

द्विमीढ़-सं०पु० [सं०] हस्तिनापुर बसाने वाले महाराज हस्ति का एक पुत्र।

द्विरद-सं०पु० [सं०] १ हाथी (डि.नां.मा.)

२ दुर्योधन का एक भाई.
३ पुरुष की ७२ कलाओं में से एक (व.स.)
वि०—जिसके दो दांत हों, दो दाँतों वाला।
रू०भे०—दुरद, दुरद्द, दोयरद, द्वैरद।

द्विरदासन-सं०पु० [सं० द्विरदाशन] सिंह।

द्विरसन-सं०पु० [सं०] सांप।

द्विरागमन-सं०पु० [सं०] १ पुनः आना, दूसरी बार आना, पुनरागमन.
२ वधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना।

द्विरेफ-सं०पु० [सं०] १ भौरा, भ्रमर।
२ बर्र।
रू०भे०—दुरेफ।

द्विविद-सं०पु० [सं०] रामचंद्र की सेना का एक सेनापति वन्दर। (रामायण)

द्विसरीर-सं०पु० [सं० द्विशरीर] ज्योतिष के अनुसार कन्या, मिथुन, धनु, और मीन राशि।

द्वीप-सं०पु० [सं०] १ स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो. २ पृथ्वी के सात बड़े विभाग (पौराणिक)
उ०—वस्त्रमाहि चीर, चीरमाहि सूत्रका चीर, गढ़माहि कालिजर, खांणिमाहि वइरागर, द्वीपमाहि जंबू द्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप। —व.स.
३ सात की संख्या॰।
४ देखो 'दीप' (रू.भे.)
रू०भे०—दीव।

द्वेख-सं०पु० [सं० द्वेष] १ क्रोध, गुस्सा।
उ०—यों असपत्ती आखियौ, रत्ती तत्ती रार। दीठी सच्चै द्वेख मैं, दिल्ली चै दरबार।—रा.रू.
२ देखो 'द्वेस, धेख' (रू.भे.)

द्वेखक-सं०पु० [सं० द्वेषक] शत्रु (ह.नां.)

द्वेखी—देखो 'द्वेसी' (रू.भे.)

द्वेमातर—देखो 'द्विमात्रिज' (रू.भे.) (अ.मा., क.कु.बो.)

द्वेस-सं०पु० [सं० द्वेष] १ चित्त को अप्रिय लगने की वृत्ति, चिढ़, शत्रुता, वैर. २ ईर्ष्या, डाह।
रू०भे०—द्वेख, द्वेस।

द्वेसी-वि० [सं० द्वेषिन्] १ विरोधी. २ शत्रु, दुश्मन।
३ ईर्ष्यालु। उ०—सुकवि कुकवि द्वेसी सुणै, हरखै कहिया जाव। करसी नह म्हारा कवित, खाल उतार खराव।—वां.दा.
रू०भे०—द्वेखी, धेखी।

द्वै-वि० [सं० द्वे] दो, दोनों। उ०—१ अथ ओमकार, अक्षर उचार। निस दिवस नांम, रट रांम रांम। द्वै सुलभदीप, स्रद्धा समीप। रुचि ह्वै सु राख, दुहुं दिव्य दाख।—ऊ.का.
उ०—२ आपा मेटै म्रितिका, आपा धरै अकास। दादू जहँ जहँ द्वै नहीं, मध्य निरंतर वास।—दादू वांणी

द्वैअखरी, द्वैअखरी—देखो 'वेअखरी' (रू.भे.)

द्वैत-सं०पु० [सं०] १ अपने और पराये का भाव, भेद, अंतर.
२ दो का भाव, जोड़ा, युग्म. ३ दुविधा, भ्रम.
उ०—तिरगुण अनातम माया त्यागी, चेतन संत मुराळ। तुरीये आतम सत सदाई, निज स्वरूप अकाळ। द्वैत नहीं लेसा रे, आपोई आप अजरे।—स्री सुखरांमजी महाराज
४ अज्ञान, जड़ता. ५ द्वैतवाद।
उ०—१ द्वैत अद्वैत कहो कहां पाता, गूंगे गुड़ का गूंगा ग्याता। —स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ गुणातीत विगत परै आतम, सरव विगत का भूप। अद्वै अचळ अजनमा आतम, द्वैत भरम नहिं रूप। —स्री सुखरांमजी महाराज

द्वैतभाव-सं०पु० [सं०] जीव और परमात्मा को दो समझने का भाव।
उ०—दादू पूरण ब्रह्म विचार लै, द्वैतभाव कर दूर। सब घट साहिब देखिये, रांम रह्या भरपूर।—दादू वांणी

द्वैतवण, द्वैतवणि, द्वैतवन-सं०पु० [सं० द्वैतवन] एक तपोवन जिसमें वनवास के समय पांडवों ने निवास किया था।
उ०—१ तउ जाइं द्वैतवणि वसइ वासि उडवा करी नइ। पुरुस प्रियवंदु पाठविउ विदुरि वात वक नी सुणी नइ।—पं.पं.च.
उ०—२ वरसि छडइ वरसि छडइ द्वैतवणि जाइं।—पं.पं.च.

द्वैतवाद-सं०पु० [सं०] १ आत्मा और परमात्मा अर्थात् जीव और ईश्वर को दो भिन्न पदार्थ मान कर विचार किया जाने वाला दार्शनिक सिद्धांत.
२ भूत और चित् शक्ति अथवा शरीर और आत्मा दोनों को भिन्न माना जाने वाला दार्शनिक सिद्धान्त।

द्वैतवादी, द्वैती-वि० [सं० द्वैतवादिन्, द्वैतिन्] द्वैतवाद को मानने वाला, द्वैतवादी।

द्वैपायण, द्वैपायन-सं०पु० [सं० द्वैपायन] व्यास का एक नाम, वेदव्यास।
रू०भे०—दीपायण, दीपायन।

द्वैमातुर-सं०पु० [सं०] १ गणेश।
२ जरासंध।
वि०—जिसकी दो माताएँ हों।

द्वैरद—देखो 'द्विरद' (रू.भे.) उ०—कमंध रांम कलियांण रै, जब तेग चलाया। पोगर द्वैरद काटिया, गज गरद मिळाया।—द.दा.

ध

घ—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला का उन्नीसवां व्यञ्जन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दंतमूल है। यह महाप्राण है और इसमें संवार, नाद और घोष नामक वाह्य प्रयत्न होते हैं। इसके उच्चारण में आभ्यंतर प्रयत्न भी आवश्यक होता है।

घं-सं०पु०—१ दान. २ मान. ३ द्रव्य. ४ सुखासन।
सं०स्त्री०—धाय (एका.)

धंक, धंका-सं०स्त्री० [सं० धाक्+अङ्क=निश्चय धंक (धाक) अथवा ध्वाङ्क्ष=ध्वांक्ष=ध्वाङ्क्षा] १ इच्छा, अभिलाषा, लालसा।
उ०—१ अनंक न संक न धंक न धीस, अवास न वास न आस न ईस। निराळ न काळ त्रिकाळ नरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस। —ह.र.
उ०—२ वडा वडा पद व्रिटिस रा, धरै लियण नृप धंक। पाया वे सारा 'पतै', असपत हूंत असंक।—किसोरदांन वारहठ
२ दृढ़ संकल्प, पक्का विचार, निश्चय।
उ०—असभड़ फूल असंक, सूरा भड़ मेलै सकज। धारी 'गोगादे' धंक, 'वीरमदे' रा वैर री।—गो.रू.
३ धक्का, आघात, टक्कर।
उ०—नाप अंग-मग तुर निठुर, दोयण गळै न दाळ। अंत विरथ अपणा न अज, वज्र धंक वींवाळ।—रेवतसिंह भाटी
४ भय, डर, शंका।
उ०—१ सुण रांणी सीत असंका नै, वन मेलै लिखमण वंका नै। धारै खळ पाछै धंका नै, लैगो गह सीता लंका नै।—रा.रू.
उ०—२ सुचित धंका जनां निवारण सांकड़ा। वाह रघुनाथ लंका लियण वांकड़ा।—र.ज.प्र.
रू०भे०—धंख, धंखा, धक, धख, धांक, धांख, ध्रंक, ध्रंका, ध्रंख, ध्रंखा।

धंकी-वि० [राज० धंक+रा०प्र०ई] प्रवल इच्छा रखने वाला, इच्छुक।
उ०—हैजमां हिलोळ हयां तेगां उछांटीलौ हलै, साथ वीरां चलै चंडी चांटीलौ सवंध। वेध धंकी जंगां मेलै वारंगां वांटीलौ वींद, केकांण कोमंखी वागौ आंटीलौ कमंध।—हुकमीचंद खिड़ियौ
रू०भे०—धखी।

धंख-सं०पु० [देश०] १ क्रोध, रोष।
उ०—धर जहर देखिया गुरड़ धंख। पेखिया पटाभर अनड़ पंख। तांमस अधियांमण भूप तांम। रांमण जुध दीठा जांण रांम। —वि.सं.
२ जोश. ३ देखो 'धंक' (रू.भे.)
उ०—धंख भुरजाळ अधरात तोपां धमत, कंक ग्रीधण भमत लाल रंग कीच। रास नागेंद्र कुरंग रोक रिझवार हुय, वार मुर मयंक थंभियौ निहंग वीच।—हुकमीचंद खिड़ियौ

धंखा—देखो 'धंका' (रू.भे.)

धंखी-वि० [सं० द्वेषिन्, द्वेषी] १ वैरी, शत्रु, दुश्मन (अ.मा.)
२ देखो 'धंकी' (रू.भे.)

धंगौ—देखो 'दंगौ' (रू.भे.)
उ०—तौ पण भाटियां वडौ धंगौ राखियौ।—द.दा.

धंण—१ देखो 'धण' (रू.भे.)
उ०—पंथी एक संदेसड़इ, लग ढोलइ पैहचाइ। धंण कमलांणी कमदणी, सिसहर ऊगइ आइ।—ढो.मा.
२ देखो 'धन' (रू.भे.)
३ देखो 'धनु' (रू.भे.)

धंणी—१ देखो 'धणी' (रू.भे.)
२ देखो 'धनी' (रू.भे.)
सं०स्त्री०—३ देखो 'धनु' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—बांह चढाय धंणी चठठाय रावत साम्हौ तीर चलायौ। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

धंतर-सं०पु०—१ धनेर पक्षी (मेवाड़)
वि०वि०—देखो 'धनेर'
२ देखो 'धंतरजी' (रू.भे.)

धंतरजी-वि० [सं० धन्वंतरि] १ जबरदस्त, वलवान, शक्तिशाली।
रू०भे०—धनंतरजी।
२ देखो 'धनंतर (रू.भे.)

धंतूर, धंतूरौ—देखो 'धतूरौ' (रू.भे.)
उ०—१ इतर सिउं आवी रहिउ, भांड भवाईया संगि। धूरि धंतूर सेवतु, खातु भूकि भ्रिंगि।—मा.कां.प्र.
उ०—२ धंतूरा नइं धाऊडा, धांमणि धूंगरि धूनि। धींग धमासा धूळिया, धडहड धाता धूंनि।—मा.कां.प्र.

धंत्रणी—देखो 'धनंतर' (रू.भे.)
उ०—तुही जंत्रणी मंत्रणी अंत्र जांमा। तुही धंत्रणी तंत्रणी बुद्धि धांमा।—मे.म.

धंद—१ देखो 'धंध' (रू.भे.)

२ देखो 'धंधौ' (मह., रू.भे.)

धंदउ, धंदव, धंदौ—देखो 'धंधौ' (रू.भे.)

उ०—नहीं ज्यां लघु दीरघ कोई, सदा सुद्ध स्वरूप निरभोई। सोई सुखरांम रहित धंदा, नहीं ज्यां बंध मुक्त फंदा।

—स्री सुखरांमजी महाराज

धंध-सं०पु० [सं० द्वन्द्व] १ उपद्रव, उत्पात।

उ०—१ पाधारै न्रिप जोधपुर, गढ़ चाढ़िया कमंध। आप विरस हुए चीतियौ, धरा चहूं दिस धंध।—रा.रू.

उ०—२ ठौड़-ठौड़ कागद लिखिया ज्यां में लिखियौ—जमी में भोमियां, ग्रासियां धंध मचायौ, रावजी देस री निगै राखै नहीं, जिणसूं पांचां ठाकुरां मोनूं चांटी भोळायी है सो हूं करूं छूं।

—बां.दा.ख्यात

२ कष्ट, दुख. ३ अंधकार. ४ धुंधलापन. ५ पँवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा.ख्यात)

६ देखो 'धंधौ' (मह., रू.भे.)

उ०—१ क्रोधी कांमी क्रिपण नर, मांनी अनै मदंध। चोर जुआरी नै चुगल, आठौं देखत अंध। आठै देखत अंध, धंध रस लागा धावै। तन, धन धन री हांणि, नेटि तोइ नजरै न आवै।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ परहर अवर धंध अपार, भज नित जांनुकी भरतार। कर-मत कलपना मन कोय, हरि विण विये मुकत न होय।—र.ज.प्र.

उ०—३ छ मत 'बांम' समरि स्यांम। भूठ धंध, मन म बंध।

—र.ज.प्र.

उ०—४ उज्वळ करणी रांम है, दादू दूजा धंध। का कहियै समभै नहीं, चारौं लोचन अंध।—दादू बांणी

७ देखो 'धंध' (रू.भे.)

वि०—१ व्यर्थ, फालतू।

उ०—सुमित्र विना एक पुत्र समंध। धरा पर धंन विभौ विभौ सोह धंध।—रांमरासौ

२ आकाशगामी, नभचर।

धंधउ—देखो 'धंधौ' (रू.भे.)

धंधक-सं०पु० [अनु०] १ एक प्रकार का ढोल।

२ काम-धंधे का आडम्बर, बखेड़ा.

धंधव—देखो 'धंधौ' (रू.भे.)

उ०—वेखी मात पिता त्रिय बंधव, कुळ धन धंधव काचौ। चौरंग मभ जमहूंत बचायव, साहिब राघव साचौ।—र.ज.प्र.

धंधागर, धंधागिर-वि० [सं० द्वन्द+फा० प्रत्य० गर] काम धंधा करने वाला, कार्यशील, परिश्रमी, उद्योगी।

रू०भे०—धंधागीर, धंधीयर।

धंधारथौ, धंधारथू-वि० [रा० धंधौ, सं० द्वंद+अर्थिन्] कार्य में रत, कार्य में संलग्न, कार्य करने वाला, कार्यशील, परिश्रमी।

धंधाळी, धंधाळू-वि० [सं० द्वंद्व+आलुच्] जिसके बहुत कार्य हो, कार्य-शील, परिश्रमी, उद्योगी। उ०—१ सोना थाळी मांहै कै आरोगै सांळी दाळी; सुखी बीया के हथाळी, जिमैं पीयै बूक। एकां लील लाली लाली, पाली धंधाळी जंजाळी एकां, सढ़ाळी अढाळीवार कमाई सलूक।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ बहु धंधाळू आव घरि, कासूं करइ वदेस। संपत सगळी संपजै, आ दिन कदी लहेस।—ढो.मा.

धंधीगर—१ देखो 'धंधींगर' (रू.भे.)

उ०—नाळ अरावां गाडियां, बौहळा आडंबर। भाड़ दियंदा राड़ कज, सभ किया धंधीगर।—द.दा.

२ देखो 'धंधागर' (रू.भे.)

धंधीयर—देखो 'धंधागर' (रू.भे.)

उ०—बोह धंधीयर आव पिव, कासूं घणौ कहेस। संपत दीनी पामस्यां, पिण जोवन कद लहेस।—ढो.मा.

रू०भे०—धंधीगर।

धंधूणणौ, धंधूणबौ—देखो 'धंधोळणौ, धंधोळबौ' (रू.भे.)

उ०—भावकि पइठी भालि, सुंदर कांई सळसळइ। बोलइ नहीं ज वाल, घण धंधूणी जोइयउ।—ढो.मा.

धंधूणणहार, हारौ (हारी), धंधूणियौ—वि०।

धंधूणाड़णौ, धंधूणाड़बौ, धंधूणाणौ, धंधूणाबौ, धंधूणावणौ, धंधूणावबौ

—प्रे०रू०।

धंधूणिओड़ौ, धंधूणियोड़ौ, धंधूण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धंधूणीजणौ, धंधूणीजबौ—कर्म वा०।

धंधूणियोड़ौ—देखो 'धंधोळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धंधूणियोड़ी)

धंधूणी—देखो 'धंधोळी' (रू.भे.)

धंधोळणी-सं०स्त्री० [देश०] वृक्ष विशेष।

उ०—धूंगरि धूंणी धांणकी, धातरि धणाक धमासि। धडफूली धंधोळणी, धूती धाडा धासि।—मा.कां.प्र.

धंधोळणौ, धंधोळबौ-क्रि०स० [सं० द्रुतम् धूनियति] १ पराजित करना, परास्त करना। उ०—पाडइ चिंध कबंध वंध धरमंडळि रोळइ। वांणि विनांणि किवांणि केवि अरीयण धंधोळइ।—पं.पं.च.

२ पकड़ कर जोर से हिलाना, झकझोरना।

उ०—वरंडा पाडतउ, मांणस मारतउ, राउत रसाडतउ, अटाळ टळ-वळाइ, हाटु हळहळावइ, आरांम उन्मूळइ, ऊभा मनुस्य ऊलाळइ, क्षत्रिय खळभळावइ, खंडग्रिह खडहडावइ, धवळग्रिह धंधोळइ, तरळ तुरंगम नासइं, नाइका नासइं।—व.स.

धंधोळणहार, हारौ (हारी), धंधोळणियौ—वि०।

धंधोळाड़णौ, धंधोळाड़बौ, धंधोळाणौ, धंधोळाबौ, धंधोळावणौ, धंधोळावबौ—प्रे०रू०।

धंधोळिओड़ौ, धंधोळियोड़ौ, धंधोळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धंधोळीजणी, धंधोळीजवौ—कर्म वा० ।
धंधूणणौ, धंधूणवौ, धंधूणणौ, धंधूणबौ—रू०भे० ।
धंधोळियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ पराजित किया हुआ, परास्त किया हुआ. २ पकड़ कर जोर से हिलाया हुआ, झकझोरा हुआ ।
(स्त्री० धंधोळियोडी)
धंधोळी–सं०स्त्री० [सं० द्रुतं धूनियत] १ पराजित या परास्त करने की क्रिया या भाव. २ पकड़ कर जोर से हिलाने या झकझोरने की क्रिया या भाव ।
क्रि०प्र०—देणी ।
रू०भे०—धंधूणी, धूंधूणी, धूंधूनी ।
धंधौ–सं०पु० [सं० द्वन्द्वम्] १ जीवन निर्वाह अथवा धन कमाने हेतु किया जाने वाला काम-काज, उद्योग ।
उ०—सेवक सिरजणहार का, साहिब का बंदा । दादू सेवा बंदगी, दूजा क्या धंधा ।—दादू वांणी
२ व्यवसाय, उद्यम, पेशा, कारवार, रोजगार ।
उ०—रे थोड़ी ऊमर रही, काय न छोडै कूड़ । हिय अंधा तूं नांख हव, धंधा ऊपर धूड़ ।—वां.दा.
क्रि०प्र०—करणौ ।
३ सांसारिक प्रपंच ।
उ०—अंत दिनां आडो खम आसी, साचौ जनां संबंधौ । डिग चित अवरां दिसी म डोलै, वोलै लिछमण वंधौ । रे जग धंधौ, रे जग धंधौ; लाहो लीजिये ।—र.ज.प्र.
रू०भे०—धंदउ, धंदव, धंदौ, धंधउ, धंधव ।
मह०—धंद, धंध ।
धंन—१ देखो 'धन' (रू.भे.)
२ देखो 'धन्य' (रू.भे.)
धंनख—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—धंनख तणइ धनकार करइ धन, विढवा भुव नीमिजइ जिवार । इकवीसे ब्रहमंड अउइवइ, सहइ न वासंग भार-सहार ।
—महादेव पारवती री वेलि
धंनु—१ देखो 'धन' (रू.भे.)
२ देखो 'धनु' (१) (रू.भे.)
३ देखो 'धन्य' (रू.भे.)
उ०—घरमइं मंगळ हइं संसारि, घरम्मिइं कल्पद्रम घरवारि । दैव-प्रसंसा लहइं ति धंनु, जीहंचित्ति एक वसइ सरवग्य ।
—चिहुंगति चउपइ
धंमजगर—देखो 'धमजगर' (रू.भे.)
उ०—आफळै खेद लागा धक खीजै, कटै कडां वूकडा । अंगा टुकडा उडी जै, धंमजगर छोह चडियौ । करै लोहां वोही अति लूटिया, जिण वार सूर नाहर जिही, जादव कमधज जूटिया ।
—पनां वीरमदे री वात
धंमण—देखो 'धमण' (रू.भे.)
धंमणौ—१ देखो 'धमण' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'धमणौ' (रू.भे.)
धंमल—देखो 'धवळ' (रू.भे.)
धंव–सं०स्त्री० [अनु०] तेज हवा से होने वाली ध्वनि ।
धंवण—देखो 'धमण' (रू.भे.)
धंवणी—देखो 'धमण' (अल्पा., रू.भे.) (अमरत)
धंवणौ, धंववौ—देखो 'धमणौ, धमवौ' (रू.भे.)
धंवळ—देखो 'धवळ' (रू.भे.)
उ०—सांध प्रभात ठोरडू ठरै, कंवळ धंवळ कंवळासड़ा । गटामाटी गुड़ै वाळका, हरख वरफ हिवळासड़ा ।—दसदेव
धंवियोड़ौ—देखो 'धमियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धंवियोड़ी)
ध–सं०पु०—१ गणेश, गजानन. २ विष्णु. ३ नाथ, स्वामी. ४ वचन. ५ कुवेर. ६ षटमुख, स्वामी कार्तिकेय. ७ व्याख्यान. ८ कुम्हार. ९ शिर कटी हुई धड़ (एका.)
[सं० धैवत] १० मध्यम के आगे खींचा जाने वाला वह स्वर जो संगीत के सात स्वरों में से छठा है, धैवत ।
वि०—धनवान, धनाढ्य (एका.)
धईड़णौ, धईड़वौ—देखो 'धैंईड़णौ, धैंईड़वौ' (रू.भे.)
धईवंत, धईवत—देखो 'धैवत' (रू.भे.)
उ०—१ स्वर वाजंत्रूं का भेद कहि दिखाय सो कैसे खडज रिखब मधम पंचम धईवंत निखाख सप्त सुर के अलाप करि कोकिलूं की बांणी सैं बोलते हैं—जिसके आनंद तैं इत्यादिक नरूं के मन मोह वसि हुवा तिसका अचिरज कैसा ।—सू.प्र.
उ०—२ जिण वेळा री देखण काज जुओ । हय कंठ धईवत नाद हुओ ।—पा.प्र.
धउळ, धउळउं, धउळऊं—देखो 'धवळ' (रू.भे.)
उ०—माथउं धउळउं देह जांजरी, वांकउ वासउ झूबइ लालरी ।
—चिहुंगति चउपई
धउळणौ, धउळवौ—देखो 'धोळणौ, धोळवौ' (रू.भे.)
उ०—१ चंद्र धउळइ कुण, दूध धउळइ कुण, मयूरपिच्छ चित्रइ कुण, साकर मधुर करइ कुण, गंगा पवित्र करइ कुण ।—व.स.
उ०—२ मोती किसिउं ओपीइं, संख किसिउं धउळीइं, प्रवाळा किसिउं रंगीइं ।—व.स.
धउळणहार, हारौ (हारी), धउळणियौ—वि० ।
धउळिओड़ौ, धउळियोड़ौ, धउळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
धउळीजणौ, धउळीजवौ—कर्म वा० ।
धउळहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.)
उ०—पंचवरण पटउलडा ए, रचीइ परीयछि चंग । धवळ धउळहर पेखीइ ए, विचि विचि चित्र सुरंग ।—कां.दे.प्र.

घउळियोड़ौ—देखो 'धंळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घउळियोड़ी)

घउळौ—देखो 'धवळ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—काळां पीळां नीलां धउळां इस्या पटोळां, सूकडि ना समूह, कपूर ना पूर।—व.स.
(स्त्री० घउळी)

घउसणौ, घउसबौ–क्रि०स० [सं० ध्वंस] १ संहार करना. २ ध्वंस करना।
उ०—खुरिसांण सीसि वाजइ खड्ग, ऊभरइ वूर आकासि लग्ग। वेढ़तां विलंबइ वात वार, घउसिया मीर मुहि खग्ग धार।
—रा ज.सी.

घउसियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ. २ नष्ट किया हुआ।
(स्त्री० घउसियोड़ी)

घऊकार—देखो 'धाऊकार' (रू.भे.)

घऊस–वि० [सं० ध्वंस] १ मूर्ख, जड़. २ असभ्य, जंगली।

घऊसकार—देखो 'धाऊकार' (रू.भे.)

धक–सं०स्त्री०—१ अग्नि, आग।
उ०—करि धक क्रोध हणै करि चाळा। इक लख जोध जगत छत्र-वाळा। जग छत्र सुणै कुंवर जोखमियां। धैंधींगर हूलै चख धमियां।
—सू.प्र.
क्रि०प्र०—ऊठणी, लागणी।
२ ताप, जलन।
उ०—१ सुत भ्रात कटै सक धीट बधै धक, वीस भुजांण विचारियौ जी। निरबीजां वांनर नेम गमुन्नर, वेख इसौ मन धारियौ जी।
—र.रू.
उ०—२ घावां री धक सूं तिरस लागी जद कयौ जळ लाव, सो औ बोलतां ही जळ आंणियौ।—वी.स.टी.
३ क्रोध, गुस्सा।
उ०—जवन अनेक वैर धक जुड़सी। मरसी तिकौ काय जुध मुड़सी। असुर अनेक लागि धक आसी। जुधि जुधि तिकै प्रळै हुइ जासी।
—सू.प्र.
४ शौर्यपूर्ण उमंग, साहस, चोप।
उ०—गीध फळै जो चीह्ह उर, कंकां अंत विलाय। तौ भी सो धक कंत री, मूंछां भ्रूंह मिळाय।—वी.स.
५ जोश। उ०—लै कदळीपत्र अंगि लगाए। जिम ऊठै तिम नींद जगाए। वहता रगत देखि खळ वाढ़ै। चंद्रप्रहास ग्रहै धक चाढ़ै।
—सू.प्र.
६ हिम्मत, साहस।
उ०—धण में धरणि हुंत धक धरी, दुगणी दोनानाथ। औ ढळ हूथ लै वचण-अथ, वा भाळां लै वाथ।—रेवतसिंह भाटी
७ वेग (अ.मा.) ८ भाला।
उ०—'जगा' हर हूंत धक जांण वीजांण री, धाट रै समी कुण वाथ घालै। राखणौ धरा रछपाळ दीवांण रै, सेल अरियांण रै हियै सालै।—रावत अजीतसिंह सारंगदेवोत (कांनोड़) रौ गीत
९ हृदय के धड़कने या जल्दी-जल्दी कूदने का भाव या शब्द.
१० तंग मुंह के पात्र से द्रव पदार्थ को वेग से उंडेलते समय अथवा ऐसे पात्र को द्रव पदार्थ में डुबो कर भरते समय होने वाली ध्वनि।
उ०—सीसी तौ धक धक करै, प्यालौ करै पुकार। हाथ प्यालौ धण खड़ी, पीऔ राजकुमार।—लो.गी.
रू०भे०—ढक।
११ देखो 'धंक' (रू.भे.)
उ०—१ तरण सरस छब तरण, सरण असरण हरखण सक। मरण जनम भय मटण, धरण वड वरद रहत धक।—र.ज.प्र.
उ०—२ अति धरै धक अणभंग, जोधार मंडण जंग। जोजनां तीन जयार, वणि हलै दळ विसतार।—सू.प्र.
उ०—३ भभकै घाव ऊछटै भेजा, तूटै धड़ नेजा तड़क। वेराहर पाडै दळ वारौ, धारा तीरथ तणी धक।
—महाराजा वळवंतसिंह (गोठड़े) रौ गीत
उ०—४ जरै जसराज वंबावद आइ हाडां ६१ रा पोळि पात्र सांमोर वारहठ हरसूर नूं समुझाइ या अनरथ री बात कुमार देवसिंह रै कांन पटकी तिको सुणतां ही 'जसा' नूं एकांत में बुलाइ पूरवा पद जांणि पहली वूंदी ही लैण री धक धारी।—वं.भा.
रू०भे०—धख, धुक।

धकड़ी–सं०स्त्री०—लड़खड़ाने की क्रिया या भाव।
ज्यूं—दारू पियोड़ा रै दाई धकड़ियां खावै है।
ज्यूं—निकाळै में कमजोरी इतरी आई कै हालतौ-हालतौ धकड़ियां खाऊं हूं।

धकचाळ, धकचाळण, धकचाळौ–सं०पु० [सं० धक्क+चल] १ युद्ध, लड़ाई, समर (डि.को.)
उ०—१ जाइ करां जोधांण, जूथ केजम जरदाळां। दीध गुजर घर दुगम, चढां मंडण धकचाळां।—सू.प्र.
उ०—२ वेढ़क वेढ़कां 'सहसौ' इम वाचै, धीरज लेख प्रमांण धरै। धकचाळां धारां पग धरता, मरता फिरै स नाह मरै!
—सहसमल राठौड़ रौ गीत
उ०—३ रंग वाहर रूप बंधै रज रौ, मारका भड़ आय करै मुजरौ। कड़ भीडिय साज वंदूक कड़ा, धकचाळण हाथ बजै 'धुहड़ा'।—पा.प्र.
२ उपद्रव।
रू०भे०—ढकचाळ, ढकचाळौ।

धकण—देखो 'धुकण' (रू.भे.)

धकणौ, धकबौ–क्रि०अ०—१ जैसे तैसे काम चलना, निभना। [सं० धक्क = नाशने] २ क्रोधित होना, कुपित होना।
उ०—१ समर रूप सीसोद पारथ धकतै चसम, असम चित गाढ़ चढ़

रसम ऊगां। उरस छवतां भुजां 'ग्रमर' ग्रनाड़वी, धाड़वी चळ विचळ घणी पूगां।—ग्रमरसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—२ मारि सकळ इम पाइ मधु, राखि सनातन राह। धकि लीधी बूंदी धरा, 'देवै' कंवर दुवाह।—वं.भा.

३ देखो 'धुकणो, धुकवो' (रू.भे.) उ०—जठै गजारूढ़ चालुक्यराज सांमुहौ धकाय ग्रलाव धकतां लोयणां मिळाय ग्रापरा पखरैतां नूं प्रेरणा रै काज ग्रनेक प्रसंसा रा प्रपंच भणियौ।—वं.भा.

धकणहार, हारौ (हारी), धकणियौ—वि०।

धकाड़णौ, धकाड़वौ, धकाणौ, धकाबौ, धकावणौ, धकाववौ—क्रि०स०।

धकिग्रोड़ौ, धकियोड़ौ, धकचोड़ौ—भू०का०कृ०।

धकीजणौ, धकीजवौ—भाव वा०।

धखणौ, धखवौ—रू०भे०।

धकधकणौ, धकधकवौ–क्रि०ग्र० [ग्रनु०] १ उवक कर (द्रव पदार्थ का) निकलना। उ०—धकधकै स्रोण मिळ करद धूर, हकवकै कात्र वकवकै हूर। कर कोप ग्रठी कमधज करूर, पिसादीय लोक भर रोस पूर।—पे.रू.

२ वेग से वहना, उमड़ना। ३ हृदय का धड़कना, कांपना, डरना। उ०—ग्रिवरगा नां स्वरगा नहिन ग्रपवरगा दिक तकै। न नरका धरकाती दुगत नहि छाती धकधकै।—ऊ.का.

४ प्रज्वलित होना, धधकना। उ०—१ धूपिया धकै चिटकां घिरत धकधकै, बारुणी डकडकै तरफ वांमी। वकवकै वीर जोगण छकै दो वखत, भकभकै हुतासण हेत भांमी।—मे.म.

उ०—२ ग्रगूण चांदौ ग्रगियौ, मुरधर भरम धरचौ। धरती लूग्रां धकधकै, पाछौ भाण फिरचौ।—लू

५ दुखी होना, पीड़ित होना, जलना। उ०—दो ग्रातुर मन मिळण नै, ग्रांमां सांमां ग्राय। भेटचा पहलां धकधकै, लूग्रां जीव जळाय।—लू

धकधकणहार, हारौ (हारी), धकधकणियौ—वि०।

धकधकाड़णौ, धकधकाड़वौ, धकधकाणौ, धकधकावौ, धकधकावणौ, धकधकाववौ—प्रे०रू०।

धकधकिग्रोड़ौ, धकधकियोड़ौ, धकधक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धकधकीजणौ, धकधकीजवौ—भाव वा०।

धकधकाणौ, धकधकावौ—रू०भे०।

धकधका'ट—देखो 'धकधकाहट' (रू.भे.)

धकधकाणौ, धकधकावौ–क्रि०स० [ग्रनु०] १ कंपित करना, डराना.

२ प्रज्वलित करना, धधकाना, जलाना.

३ देखो 'धखधकाणौ, धखधकावौ' (रू.भे.)

धकधकाणहार, हारौ (हारी), धकधकाणियौ—वि०।

धकधकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

धकधकाईजणौ, धकधकाईजवौ—कर्म वा०।

धकधकणौ, धकधकवौ—ग्रक०रू०।

धकधकायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ कंपित किया हुग्रा, डराया हुग्रा.

२ प्रज्वलित किया हुग्रा, धधकाया हुग्रा, जलाया हुग्रा.

३ देखो 'धकधकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धकधकायोड़ी)

धकधकाहट–सं०स्त्री० [ग्रनु०] १ दिल धकधक करने की क्रिया या भाव, धड़कन. २ ग्राशंका, खटका। ३ जलन।

रू०भे०—धकधका'ट, धकधकी।

धकधकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ उमड़ कर निकला हुग्रा (द्रव पदार्थ)

२ वेग से वहा हुग्रा, उमड़ा हुग्रा.

३ (हृदय का) धड़का हुग्रा, कांपा हुग्रा, डरा हुग्रा.

४ धधका हुग्रा, प्रज्वलित. ५ दुखी, पीड़ित, जला हुग्रा.

(स्त्री० धकधकियोड़ी)

धकधकी—देखो 'धकधकाहट' (रू.भे.)

धकधार–सं०स्त्री० [ग्रनु०] [राज० धक+सं० धारा] १ ग्रावेग, वेग। उ०—चाकर कनै वंदूक थी। ग्रर जांमगी कळ रै लागी थी। सो रोस री धकधार ग्रर कही।—प्रतापसिंह म्हौकमसिंघ री वात

२ धारा, प्रवाह।

धकधूंण—देखो 'धकधूण' (रू.भे.)

धकधूंणणौ, धकधूंणवौ—देखो 'धकधूणणौ, धकधूणवौ' (रू.भे.)

धकधूंणणहार, हारौ (हारी), धकधूंणणियौ—वि०।

धकधूंणिग्रोड़ौ, धकधूंणियोड़ौ, धकधूंण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धकधूंणीजणौ, धकधूंणीजवौ—कर्म वा०।

धकधूंणियोड़ौ—देखो 'धकधूणियोड़ौ'

(स्त्री० धकधूंणियोड़ी)

धकधूण–सं०स्त्री० [स० धवक=विनाशने] १ जोर से हिलाने या झकझोरने की क्रिया या भाव. २ नाम जपने की ध्वनि।

उ०—मनी मन मांह रकार मकार। लगी धकधूण-न की ललकार।—ऊ.का.

३ धुनकी की ग्रावाज।

रू०भे०—धकधूंण।

धकधूणणौ, धकधूणवौ–क्रि०स० [सं० धवक=विनाशने] १ कम्पायमान करना। उ०—धरा धकधूण गढ कोट चाढ़ै धकै, देस रांवण तणै दियै खग दाह। पैलकै गयौ सिसपाळ माथौ पटकि, पटकि सिर हमरकै गयौ पतसाह।—कमौ नाई

२ हिलाना, झकझोरना। उ०—फेरि ग्रफरि फिरणी सी फेरि, वींद 'रतनसी' वांध वड। धकधूणी फुरळी, धौ फुरळी घेर मिळी सुरतांण धड़।—दूदौ

३ गिराना. ४ ध्वंस करना।

धकधूणणहार, हारौ (हारी), धकधूणणियौ—वि०।

धकधूणिग्रोड़ौ, धकधूणियोड़ौ, धकधूण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धकधूणीजणौ, धकधूणीजवौ—कर्म वा०।

धकधूंणणो, धकधूंणबो—रू०भे०।

धकधूणियोड़ो–भू०का०कृ०—१ कम्पायमान किया हुआ.
२ हिलाया हुआ, झकझोरा हुआ. ३ गिराया हुआ.
४ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ।
(स्त्री० धकधूणियोड़ी)

धकपंख—देखो 'धखपंख' (रू.भे.)
उ०—आगळा कंध पड़छी अलप, मलप गुलाली मूंठियां। धकपंख घाव खागां धके, उपड़ै बागां ऊठियां।—मे.म.

धकपंखधज, धकपंखधज्ज, धकपंखध्वज--देखो 'धखपंखधज' (रू.भे.)

धकपंखी—देखो 'धखपंख' (रू.भे.)

धकपेल–सं०स्त्री० [देश०] धक्कमधक्का, रेलापेल।

धकमधका, धकमधया—देखो 'धक्कमधक्का' (रू.भे.)

धकरूळ, धकरोळ–सं०स्त्री० [देश०] १ वायुमण्डल का धूलि से आच्छादित होने का भाव या क्रिया, तेज गति से उड़ती हुई धूलि।
उ०—१ धरा धूळ धकरूळ, करै फूंकार कराळां। ग्रहि ऊखळै गैतुळ, तूळ जिम मूळ तराळां।—सू.प्र.
उ०—२ दुजड़ उतोळ हीलोळ थाटां दुझल, दुयण घड़ रोळ फिर गोळ दोळां। रजी धकरोळ खँगोळ छायो अरक, वोळ चळवळ भुयंग चोळवोळां।—कविराजा करणीदांन
२ धारा, प्रवाह।
उ०—स्रोण छौळां रा कीच माचि रह्या छै। नारद रिख हँसै छै। वीर नाच रह्या छै। मोत्यां सूधा माथा सिव-हार में पोवै छै। जिकी कौतुग खड़ी खड़ी पारवती जोवै छै। लोई री धकरोळ, चादरचां चालै छै।—पनां वीरमदे री वात
उ०—२ तिण रजपूतां रै माथै सीरोहियां रा वाड वरणाटक करता तूटै छै नै लोहियां री धकरोळ चादरां चलै छै, जको जांणीजै क पहाड़ां उपरा थी गैरू रा खाळ उतरै छै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

धकांपंख, धकांपंखी—देखो 'धखपंख' (रू.भे.)
उ०—ईस धुर तीरां धांम नीरां तात रमा ओप, सूर तेजगीरां संत भीरां दैतसाळ। धकांपंखी खगां सुधां सीरां ज्यूं मुनंद्र धीरां, मही आसतीक वीरां दूजो रायांमाल।—हुकमीचंद खिड़ियो

धकाड़णो, धकाड़बो—देखो 'धकाणो, धकाबो' (रू.भे.)
धकाड़णहार, हारो (हारी), धकाड़णियो—वि०।
धकाड़िओड़ो, धकाड़ियोड़ो, धकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
धकाड़ीजणो, धकाड़ीजबो—कर्म वा०।
धकणो, धकबो—अक०रू०।

धकाड़ियोड़ो—देखो 'धकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धकाड़ियोड़ी)

धकाणो, धकाबो–क्रि०स० [सं० धक्क] १ जैसे-तैसे कार्य चलाना, जीवनयापन करना, निर्वाह करना. २ निभाना.
३ धक्का लगाना, ढकेलना, पेलना।
उ०—सीख वयण गयो वीसरी, सेवक नै कहै राय। नगर विटाळ्यो डूंबड़ै, काढ़ो परो धकाय।—स्रीपाळ रास
४ पीछे हटाना, खदेड़ना, भगाना।
उ०—१ पैलां रा सरदार तीनै ही जेठवो, भीम, काठी, हाजी, वाढेल, भांण मांणस ७०० सूं कांम आया, पैला भागा, रावळयां नूं धकाय नै धरती आप हेठै लीवी।—नैणसी
उ०—२ राव मालदेव गांगावत घणूं तपियो तरै सारां गढां पाड़ोसियां नूं धकाया।—नैणसी
५ पराजित कराना, हराना।
उ०—खरा हेम रा भड़ां पीथल चढ़ै खेड़िया, दुरत-गत घेरिया फरै दोळै। रूकड़ां पांण उफड़ांखिया रोळिया, धोळिया धकाया दीह धोळै।—दल्लो मोतीसर
६ चलाना, हांकना।
उ०—वाज कुमैत विसासतो, धीमै वेग धकाय। वामी तोरण बींद तिम, जोवो देवर जाय।—वी.स.
७ देखो 'धुकाणो, धुकाबो' (रू.भे.) (नं.भा.)
धकाणहार, हारो (हारी), धकाणियो—वि०।
धकायोड़ो—भू०का०कृ०।
धकाईजणो, धकाईजबो—कर्म वा०।
धकणो, धकबो—अक०रू०।
धकाड़णो, धकाड़बो, धकावणो, धकावबो, धखाड़णो, धखाड़बो, धखाणो, धखाबो, धखावणो, धखावबो—रू०भे०।

धकाधकी–क्रि०वि० [अनु०] किसी प्रकार, किसी तरह।
उ०—वारणै जाय वैठै सो इसी तरह धकाधकी कर दिन काढै।
—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता
सं०स्त्री०—१ देखो 'धक्कमधक्का' (रू.भे.)
२ देखो 'धाकाधीको' (रू.भे.)

धकाधूम–सं०स्त्री० [देश०] १ धक्कापेल, लड़ाई।
उ०—चौथो गाळ देनै पाछो लड़ै ए, उलटी धकाधूमां करै ए। वळै इसड़ी चलावै रग ए, खांचै दरबारां लग ए।—जयवांणी
२ देखो 'धक्कमधक्का' (रू.भे.)

धकायोड़ो–भू०का०कृ०—१ जैसे-तैसे कार्य चलाया हुआ, जीवनयापन किया हुआ, निर्वाह किया हुआ. २ निभाया हुआ.
३ धक्का लगाया हुआ, ढकेला हुआ, पेला हुआ.
४ पीछे हटाया हुआ, खदेड़ा हुआ, भगाया हुआ.
५ पराजित किया हुआ, हराया हुआ.
६ चलाया हुआ, हांका हुआ.
७ देखो 'धुकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धकायोड़ी)

धकार–सं०पु—'ध' अक्षर।

धकावणो, धकावबो—देखो 'धकाणी, धकावो' (रू.भे.)

उ०—१ घर छाती पर सेन धकावै, ताई घरा खावै तड़फ। सांम्हो कुण आवै सांफळवां, हाडो जम वाळी हड़फ। —चंडीदांन मीसरा

उ०—२ सोळंकी गज फौज सज, चोड़ै आयो चाल। धारा मुंहै धकावतो, धन नेजां गज ढाल।—कल्यांणसिंघ नगराजोत री वात

उ०—३ सलख प्रामार भी जैत कुमर संमत सोभिति सारूड़ा रै सांम्है धकावण रै काज प्रिथवीराज रा वीरां में इण तरह मिळियो।—वं.भा.

धकावणहार, हारो (हारी), धकावणियो—वि०।

धकाविप्रोड़ो, धकावियोड़ो, धकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

धकावीजणो, धकावीजबो—कर्म वा०।

धकणो, धकबो—अक०रू०।

धकावियोड़ो—देखो 'धकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धकावियोड़ी)

धकियोड़ो–भू०का०कृ०—१ जैसे-तैसे काम चला हुआ, निभा हुआ.

२ क्रोधित हुवा हुआ, कुपित.

३ देखो 'धुकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धुकियोडी)

धके–देखो 'धकै' (रू.भे.)

धकेलणो, धकेलवो–क्रि०स० [सं० धक्क] धक्का देना, ठेलना, ढकेलना।

उ०—इतरी सुण कुमार चट वांदर नूं डाळ सूं धकेलियो सो पड़तां वार सचेत होय डाळ ऊपर चढ़ गयो।—सिंघासण वत्तीसी

धकेलणहार, हारो (हारी), धकेलणियो—वि०।

धकेलवाड़णो, धकेलवाड़वो, धकेलवाणो, धकेलवावो, धकेलवावणो, धकेलवावबो, धकेलाड़णो, धकेलाड़वो, धकेलाणो, धकेलाबो, धकेलावणो, धकेलावबो—प्रे०रू०।

धकेलिप्रोड़ो, धकेलियोड़ो, धकेल्योड़ो—भू०का०कृ०।

धकेलीजणो, धकेल जवो—कर्म वा०।

ढकेलणो, ढकेलवो, धखेलणो, धखेलबो—रू०भे०।

धकेलियोड़ो–भू०का०कृ०—धक्का लगाया हुआ, ढकेला हुआ, ठेला हुआ, पेला हुआ।

(स्त्री० धकेलियोड़ी)

धकै–क्रि०वि०—१ पूर्व, पहिले, अगाड़ी।

उ०—की वाभीजी साहव म्हारो पति लोड़ी सौक वसावैला अरथात् जुद्ध में मारीज अपछरा वरसी। हूं सत कर नै जासूं जितरै लोड़ी सौक धकै मिळसी।—वी.स.टी.

२ मुकावले में, विरुद्ध।

उ०—१ लीधो इण गढ नूं लड़ै, 'संग' बहादर साह। धकै हमाऊं साह रै, रण तज लागो राह।—वां.दा.

उ०—२ आगळा कंध पड़छी अलप, मलप गुलाली मूठियां। धकपंख घाव खागां धकै, उपड़ै वागां ऊठियां।—मे.म.

उ०—३ सो सत्रु ऊपर आवणो मतो करै पण पग पाछा पड़ै है—छाती धड़कै है, धकै आवणो काळो पीळो दीसै छै, सांम्हां आवतो केई सुणै है तो आंखियां भय री मारी आफेई मीचीज जावै छै।—वी.स.टी.

मुहा०—१ धकै आणो—सम्मुख होना, सामना करना, भिड़ना.

२ धकै होणो—देखो 'धकै आणो'।

३ समक्ष, सम्मुख, सामने, अगाड़ी।

उ०—धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज। सो सूरां सिर सेहरो, नर पुंगव सुर-नैज।—वां.दा.

४ ओर, तरफ।

उ०—१ एक धकै भागा असुर, पत जवनां पड़ियो-ह। रत झरती झोळी रवद, डोळी ऊपड़ियो-ह।—रा.रू.

उ०—२ धरण गयो 'माल' गह छाड़ पैलै धकै, फेर संसार प्रथमाद फेडो।—नगराज हीमत सूजावत

५ सीधे, आगे। ज्यूं०—धकै जावण पर एक वड़ री रूंख मिळसी।

६ और दूर पर, और बढ़ कर।

ज्यूं०—उणां री मकांन और धकै है।

मुहा०—धकै निकळणो—बढ़ जाना, तरक्की करना।

७ अनंतर, वाद में। ज्यूं०—सांवण धकै भादवो है।

८ भविष्य में। ज्यूं०—हमार सूं ही पढ़ाई री ध्यांन राखोला तो ठीक होसी नहीं तो धकै मुसकल होसी।

रू०भे०—धके, धक्कै, धखै, धिकै।

धको–सं०पु० [सं० धक्क=विनाशने] १ किसी पदार्थ का अन्य पदार्थ के साथ ऐसा वेगपूर्वक स्पर्श जिससे एक या दोनों पदार्थों पर एक दफा दवाव पड़ जाय अथवा गति के वेग का वह गहरा दवाव जो एक पदार्थ के साथ दूसरे पदार्थ के एकवारगी लगने से एक या दोनों पर पड़ता है। आघात, प्रतिघात, झोंका, टक्कर।

क्रि०प्र०—देणो, मारणो, लगणो, लगाणो, लागणो, सैणो।

यौ०—धकापेल।

२ किसी व्यक्ति या पदार्थ को उसके स्थान से दूर करने, खिसकाने, गिराने, हटाने आदि के लिए वेगपूर्वक पहुंचाया हुआ दवाव अथवा इस प्रकार के पहुंचाने की क्रिया या काम, ढकेलने की क्रिया।

मुहा०—धका खाणा—धक्का सहना। धका देनै निकाळणो=अपमान व तिरस्कार पूर्वक सामने से हटाना।

३ टक्कर, मुठभेड़, भिड़ंत, लड़ाई, युद्ध।

उ०—१ डावी इणी मैं कंवर वीकैजी मोयलां ऊपर घोड़ा उठाय नांखिया, सू अठै वडो झगड़ो हुओ। नै मोयलां सूं धको झलियो नहीं सू भाज नीसरिया।—द.दा.

उ०—२ वाइयां मत कावळ वैण वको। धुर आज हुसी मोय हूंत धको।—पा.प्र.

४ हमला, आक्रमण।

उ०—हाथी तहवर खांन रो, गो सो घांनख भज्ज। घको न साहै मीरजां, वाहै सार गरज्ज।—रा.रू.

५ शोक या दुःख की चोट, दुख का आघात, संताप।

उ०—फूल जिसो कंवळो टाबर भूख सूं तड़फ तड़फ'र मरग्यो। मेथकी इण धक्का नै सहन नी कर सकी। वा महीना भर तक गरीब चोधरी नै पूरी तरै सूं संताप नै छेवट चालती रही।—रातवासो

६ घाटा, हानि, टोटा, नुकसान।

उ०—१ रांणो कुंभो पाट छै। मांहो-मांही भाइयां ग्रास वध लागो। खीमें गांव जाय पातसाही फौज आंण मेवाड़ नूं वडो धको दियो।

—नैणसी

७ प्रतियोगिता, मुकाबिला।

उ०—पमंग ओरोह मूंघा अतर पहरवो, तांति रस सरस सुणवो सरस तान। विजाई 'भीम' कुण सहै दाता विनां, देण रो बहोत करड़ो धको दांन।—अज्ञात

रू०भे०—धक्को, धखो।

धवक—देखो 'धक' (रू.भे.) उ०—खळक्कत घाट वहै रत खाळ, पियै धक धक्क छक्क पयाळ।—सू.प्र.

धवकम-सं०पु० (बहु व०) [सं० धक्क=नाशने] १ ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों, रेलापेल.

२ बहुत से आदमियों का परस्पर बार-बार धक्का देने का काम।

क्रि०प्र०—करणा, होणा।

रू०भे०—धकमधक्का, धकमधया, धकाधकी, धकाधूम।

धवकामुक्की-सं०स्त्री० [देश०] ऐसी लड़ाई जिसमें धक्कमधक्का के साथ घूंसों से परस्पर मारपीट हो।

धवके—देखो 'धकै' (रू.भे.)

धवको—देखो 'धको' (रू भे.)

उ०—१ धक्का मुक्की धूप दीप लातां री देवै। नाक भांग नैवेद साथ पद इण विध सेवै।—ऊ.का.

उ०—२ मेळ में भाई-प्रसंगी सारा आया तिकै कहण लागिया—आपां सारा भेळा छां, परभात साथ संघात मंगावां, कजियो खोखरां सूं करस्यां। खोखर आपां रो धक्को झालै सो कुण।

—सूरे खीवे कांधळोत री वात

धख—१ देखो 'धंक' (रू.भे.)

उ०—१ चढ़ि गयंद तुरां होतां चमर, धख दिल्ली सुख कजि धरै। मिसलां अमीर वंट जुध मंडै, साह खुरम पतिसाह रै।—सू प्र.

उ०—२ जिण वांचै उच्छत्र नृप जांणै। आरंभ समर करण धख आंणै।—सू.प्र.

उ०—३ हिय लोभ हरी, धख पुन्य धरी। क्रत ऊंच करी, सुरराज सरी।—र ज.प्र.

२ देखो 'धक' (रू.भे.)

उ०—१ धख कथ एण हीज विध धारूं। 'मोहम' रांम 'अमर' सुत मारूं।—सू.प्र.

उ०—२ लड़ै हरिनाथ तणो धख लागि। वडो भड़ 'गोवरधन्न' अजागि।—सू.प्र.

उ०—३ स्रोण के फुंहारै आसमांनूं को छुट्टे। लगो धख जमीं पर लोटण ज्यूं लुट्टे।—सू.प्र.

उ०—४ लोही धख धक्क वभक्कत लाल। पड़ै धर जांणि पतंग पखाल।—सू.प्र.

धखड़ो-सं०पु०—एक प्रकार की घास विशेष।

धखचाळ, धखचाळो—देखो 'धकचाळ, धकचाळो' (रू.भे.)

उ०—१ कढै खग वाह करंत कराळ, चका दळ टूक हुवै धखचाळ।

—सू.प्र.

उ०—२ जमै अमल जोधांण, करै दळ सबळ कराळा। 'अजो' करण आवियो, चंड नयरां धखचाळा।—सू.प्र.

धखणी-सं०स्त्री० [सं० धिषणा] बुद्धि (नां.मा.)

धखणो, धखबो—देखो 'धकणो, धकबो' (रू.भे.)

उ०—१ धखि दहकध सीस रघुपति धरि। इम चंद खड़ै जगत छत्र ऊपरि।—सू.प्र.

उ०—२ सांभळिया 'अवरंग' सा, कर धांम धखाणा। के सीतापत आय सिर, जनु रांवण रांणा।—द.दा.

धखणहार, हारो (हारी), धखणियो—वि०।

धखिओड़ो, धखियोड़ो, धख्योड़ो—भू०का०कृ०।

धखीजणो, धखीजबो—कर्म वा०।

धखपंख-सं०पु० [सं० धकपक्ष] गरुड़ (अ.मा.)

उ०—१ दूसरो मयंक दूहवै दळां देखतां, जोट वट छड़ाळै प्रिसण जडियो। हसत दीठा समा सीह वाथां हुवो, पनंग सिर कनां धखपंख पड़ियो।—राठौड़ वलू गोपाळदासोत चांपावत रो गीत

उ०—२ निज सरीक पवन रो, धाव धखपंख जिम धावै। कमठ पूठि अहि कमळ, धमक चवबंधा धुजावै।—सू.प्र.

रू०भे०—धकपंख, धकपंखी, धकांपंखी, धखपंखी, धख्यपंख, धटपंख।

धखपंखधज, धखपंखधज्ज, धखपंखध्वज-सं०पु० [सं० धकपक्ष+ध्वज्ज]

१ विष्णु। उ०—अइ अवरण वरण निमो निरदोस अज। धिणी सिगळां तणो प्रभु धखपंख-धज।—सू.प्र.

२ श्रीकृष्ण।

रू०भे०—धकपंखधज, धकपंखध्वज।

धखाड़णो, धखाड़बो—देखो 'धकाणो, धकाबो' (रू.भे.)

धखाड़णहार, हारो (हारी), धखाड़णियो—वि०।

धखाड़िओड़ो, धखाड़ियोड़ो, धखाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

धखाड़ीजणो, धखाड़ीजबो—कर्म वा०।

धखणो, धखबो—अक०रू०।

धखाड़ियोड़ो—देखो 'धकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घखाडियोड़ी)

घखाणो, घखाबो—देखो 'घकाणो, घकाबो' (रू.भे.)

घखाणहार, हारो (हारी), घखाणियो—वि० ।

घखायोड़ो—भू०का०कृ० ।

घखाईजणो, घखाईजबो—कर्म वा० ।

घखणो, घखबो—अक०रू० ।

घखायोड़ो—देखो 'घकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घखायोड़ी)

घखावणो, घखाववो—देखो 'घकाणो, घकाबो' (रू.भे.)

उ०—विखयी नर रांमाए राचे, ते दुख पांमे नरके । लोह पुतळी घखावे अंग नें, आलिगावें घरके ।—कवियण

घखावणहार, हारो (हारी), घखावणियो—वि० ।

घखाविओड़ो, घखावियोड़ो, घखाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

घखावीजणो, घखावीजबो—कर्म वा० ।

घखणो, घखवो—अक०रू० ।

घखावियोड़ो—देखो 'घकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घखावियोड़ी)

घखियोड़ो—देखो 'घकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घखियोड़ी)

घखूण–वि० [सं० धिपण:] १ पण्डित. २ कवि (ह.नां.) ३ बृहस्पति ।

घखे—देखो 'घके' (रू.भे.)

घखो—देखो 'घको' (रू.भे.)

घख्यपंख—देखो 'घखपंख' (रू.भे.)

उ०—पदमं गदा संख चक्रं करं, वाहणं घख्यपंखं । सुरं कोडि त्रेतीस स्रेवे भजे, तास सोभा असंख ।—पि.प्र.

घग—१ देखो 'धागो' (मह., रू.भे.)

उ०—सुत 'परताप' घगां भर सारां, इळा उजीण दुकांन इम । काया 'अमर' गूदड़ी कीधी, जगपत गोरखनाथ जिम ।

—महारांणा अमरसिंह रो गीत

२ देखो 'दग' (रू.भे.)

उ०—घग घग घगती आगिनी, कांई घडी ? किरतार । नर-तरणा नवि अंगमइ, श्रे मुझ दुख अपार ।—मा.कां.प्र.

घगग—देखो 'दृग' (रू.भे.)

उ०—करे नग अडिग जंग बरंग कीना किलम, स्रोण वहि घगग मग लहै न सूर । पवंग पग सूं निहंग रेण ढकियो पतंग, मलट्ट सितरंग पनंग पतंग रंग पूर ।—कविराजा करणीदांन

घगड़—१ देखो 'दगड़' (रू.भे.)

२ देखो 'घगड' (रू.भे.)

घगड़वार—देखो 'दगड़वार' (रू.भे.)

घगड–सं०पु०—१ खड्ग, तलवार ?

उ०—भागड़ कंध पडइ रिण माथा, घगड तणा घड थाई । माहोमांहि मारेवा लागा, विगति किसी न लहाइ ।—कां दे.प्र.

रू०भे०—घगड़ ।

२ देखो 'दगड़' (रू.भे.)

घगडवार—देखो 'दगड़वार' (रू.भे.)

घगणो, घगवो–क्रि०अ० [देश०] प्रज्वलित होना, जलना ।

उ०—घग घग घगती आगिनी, कांइ घड़ी ? किरतार । नर-तरणा नवि अंगमइ, श्रे मुझ दुख अपार ।—मा.कां.प्र.

घगघगणो, घगघगवो–क्रि०अ० [अनु०] कंपायमान होना ।

२ प्रज्वलित होना, जलना ।

उ०—धमसी कहे वधतें धनें, त्रिसना वधे अथाग । धुर थी अधिकी धग-धगइ, इंधन मिळियां आगि ।—ध.व ग्रं.

३ उष्ण होना, तपना, गर्म होना ।

उ०—जिसी भाड़ू तणी वेळू तिसि भूमिका घगघगई ।—रा.सा.सं.

४ देदीप्यमान होना, दमकना, चमकना ।

उ०—मरकत मांणिक्य मुक्ताफळ मेघाडंबरि मयूर तणउं मंडांण छत्रदंड, अलंब चिंघ चमर सन्नाह तणी सुवरणस्रिंग घगघग्यां, रत्नावळी झळकी ।—व.स.

घगघगणहार, हारो (हारी), घगघगणियो—वि० ।

घगघगिओड़ो, घगघगियोड़ो, घगघग्योड़ो—भू०का०कृ० ।

घगघगीजणो, घगघगीजबो—कर्म वा० ।

घगघग्गणो, घगघग्गवो—रू०भे० ।

घगघगियोड़ो–भू०का०कृ०—१ कंपायमान हुवा हुआ, कंपित. २ जला हुआ, प्रज्वलित. ३ देदीप्यमान हुवा हुआ, दमका हुआ, चमका हुआ ।

(स्त्री० घगघगियोड़ी)

घगघगी–सं०स्त्री० [अनु०] १ कंपायमान होने की क्रिया, कँपकँपी, थर्राहट । उ०—१ मिखि मदझर गुमर भयंकर पहर हर, घर रज लगण असमांण घर रें । ठग ठगी लगि डरि घगघगी ठीठरां, ठहक ठठ ठोकरां नगां ठररें ।—कुंभो सांदू

उ०—२ घणा बंध देख सूमां चढ़ी घगघगी । ठगठगी टगटगी लगी ठावां ।—बखतो खिड़ियो

२ हृदय की धड़कन ।

रू०भे०—घगघगी ।

घगघग्गणो, घगघग्गबो—देखो 'घगघगणो, घगघगबो' (रू.भे.)

उ०—पांणिप्र तासे भेरि नद्द वीरारस वग्गो । केते सिद्धू राग सुणि कातर गण भग्गो । तोपन दिघ्घ अवाज ते धरणी घगघग्गो । कोल कमट्ठ जोर परि सिर धुनि पनग्गो ।—ला.रा.

घगघग्गियोड़ो—देखो 'घगघगियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घगघग्गियोड़ी)

घगारो–सं०पु०—१ आसमान, आकाश ।

उ०—१ पूर स्रोण धारां चंडी आमंखां अहार पंखां, तई जेजेकार

जंपे सादड़ी तखत्त । लागूवां हजारां भांज आवियो धगारां लागो, बाजता नगारां 'रासो' 'रांण' रै वखत्त ।

—राजा रायसिंह झाला रौ गीत

उ०—२ खागां वाढ़ तूटै राग सींधवी बाजतां खारो, तोपां छूटै पड़ै वारो सुफीलां ता ठोड़ । लागां कोट सेना पोतो 'जगा' रो धगारां लागो, राड़ रो सांभळै कांनां नगारो राठौड़ ।

—गोपाळजी दधवाड़ियो

२ जोश । उ०—जंग नगारां जांण रव, आंण धगारां अंग । तंग लियंतां तंडियो, तोनै रंग तुरंग ।—वी.स.

घगियोड़ौ—भू०का०कृ०—प्रज्वलित हुवा हुआ, जला हुआ ।

(स्त्री० घगियोड़ी)

धगौ—देखो 'दगौ' (रू.भे.)

उ०—१ गीत पोकरण ठाकरां सवाईसींघजी रौ मीरखांन धगो कीनो जिण मुदा रो । उ०—२ खोयो आसुरी धरम आपो विगोयो तैं मीरखांन, जोयो नहीं सार की न आगलो जवाब । सवाईसींग मारघो धगा सूं धगाखोर सिंधी, नीत छोडै किता दीह जीवसो निवाब ।

—नवलजी लाळस

यौ०—धगाखोर ।

धड़ंग—वि०—वस्त्रहीन, नंगा ।

धड़ंदौ—सं०पु० [अनु०] किसी पदार्थ के गिरने से उत्पन्न ध्वनि ।

धड़—सं०पु० [सं० धर=धारण करने वाला] १ कमर से ऊपर और गले के नीचे का वह भाग जिसमें हाथ सम्मिलित नहीं होते हैं । सिर और हाथ पैर (तथा पशु-पक्षियों में पूंछ व पंख) को छोड़ कर शरीर का शेष भाग, शरीर का स्थूल मध्य भाग जिसके अन्तर्गत छाती, पीठ और पेट होते हैं ।

उ०—१ धड़ ऊपर सिर धारियो, जोध भलो जगदेव । काट कंकाळी अप्पियो, कीधो देव अदेव ।—वां दा.

उ०—२ भड़ां जिकां हूं भांमणै, केहा करूं बखांण । पड़ियै सिर धड़ नह पड़ै, कर वाहै केवांण ।—वां.दा.

मुहा०—धड़ै पागड़ै नी लागणौ—घोड़ा अपनी चंचलता के कारण शरीर के रकाब स्पर्श नहीं करने देता है । चतुर मनुष्य अपने पास ही नहीं फटकने देता ।

२ खंड, टुकड़ा, हिस्सा, विभाग ।

उ०—समचै बीकैजी कयो, "नरसिंघ तरवार यूं वै है ।" इसो कह नै तरवार वाही सू नरसिंघ रा दोय धड़ हुवा ।—द.दा.

३ दल, पार्टी ।

रू०भे०—धुडो ।

४ गेहूं के भूसे का ढेर. ५ पेड़ का तना.

६ वह शब्द जो किसी वस्तु के एक बारगी गिरने, वेग से गमन करने, हिलाने आदि से होता है. ७ बंदूक, तोप आदि छूटने का शब्द.

८ हृदय के धड़कने का शब्द ।

उ०—पड़ पड़ बूंद पलंग पर कड़ कड़ बीज कड़क्क । सायधण सेजां एकली, धड़ धड़ हियो धड़क्क ।—लो.गी.

रू०भे०—धड़ि ।

६ देखो 'धड़ो' (मह., रू.भे.)

रू०भे०—धड ।

धड़क—सं०स्त्री० [अनु०] १ भय, डर, आशंका ।

उ०—रण झणण नाद सुरसांण रागां रड़क, वाज खण खणण कड़ियाळ बंदी बड़क । धरपती जठी रै तठी मांनै धड़क, कठी रै मारवा-राव वाळी कड़क ।—महादांन महडू

२ दिल के कूदने या उछलने की क्रिया, हृदय का स्पंदन.

३ अंदेशा, दहशत, भय या आशंका के कारण दिल का जल्दी-जल्दी और जोर से कूदना, हृदय का अधिक स्पंदन, जो धक धक करने की क्रिया ।

उ०—१ पग पाछा छाती धड़क, काळो पीळो दोह । नैण मिचै सांम्हो सुणै, फवण हकाळै सीह ।—वी.स.

उ०—२ फाड़ नै खाय जाऊं साळा नै समझ्या कै नी ? जवाब में ऊंठां पर बैठघोड़ां रा फगत काळजा धड़कता—धड़क ! धड़क ! धड़क !—रातवासो

४ दिल के कूदने की आवाज, हृदय के स्पंदन का शब्द ।

रू०भे०—धड़क्क, धडक ।

धड़कण—सं०स्त्री० [अनु०] दिल के धक-धक करने की क्रिया, हृदय का स्पंदन ।

रू०भे०—धड़कन, धड़कन्न ।

धड़कणौ, धड़कबौ—क्रि०अ०—१ हृदय का उछलना या कूदना, छाती का धक-धक करना, दिल का स्पंदन करना ।

उ०—फाड़ नै खाय जाऊं साळा नै समझ्या कै नी ? जवाब मे ऊंठां पर बैठघोड़ा रा फगत काळजा धड़कता—धड़क ! धड़क ! धड़क !

—रातवासो

२ भयभीत होना, कंपित होना, डरना, थर्राना ।

उ०—वाजिद वाज दळ जळा-बोळ । नीछट्ट खाग लुटी नारनोळ । धड़कियो आगरो दिली धाक । सहजां-पुर कीधो खाक-साक ।—वि.सं.

३ हिलना-डुलना, कांपना ।

उ०—लांवा लांवा थर आंवा अड़ जावै । धड़ धड़ बड़ धड़कै पीपळ पड़ि जावै । टणका टणका तरु जरवै टुरि जावै । दुरब्बा दुरब्बा गुण गरबै दुर जावै ।—ऊ.का.

४ धड़ धड़ की ध्वनि होना.

५ बंदूक, तोप आदि छूटना, अथवा छूट कर ध्वनि करना ।

धड़कणहार, हारौ (हारी), धड़कणियौ—वि० ।

धड़कवाड़णौ, धड़कवाड़बौ, धड़कवाणौ, धड़कवाबौ, धड़कवावणौ, धड़कवावबौ—प्रे०रू० ।

धड़काड़णौ, धड़काड़बौ, धड़काणौ, धड़काबौ, धड़कावणौ, धड़कावबौ

—क्रि०स० ।

घड़किग्रोड़ो, घड़कियोड़ो, घड़क्योड़ो—भू०का०कृ० ।
घड़कीजणो, घड़कीजबो—भाव वा० ।
घड़क्कणो, घड़क्कबो, घुड़ुकणो, घुड़ुकबो—रू०भे० ।
घड़कन, घड़कन्न—देखो 'घड़कण' (रू.भे.)
घड़काड़णो, घड़काड़बो—देखो 'घड़काणो, घड़कावो' (रू.भे.)
घड़काड़णहार, हारो (हारी), घड़काड़णियो—वि० ।
घड़काड़िग्रोड़ो, घड़काड़ियोड़ो, घड़काड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
घड़काड़ीजणो, घड़काड़ीजबो—कर्म वा० ।
घड़कणो, घड़कबो—अक०रू० ।
घड़काड़ियोड़ो—देखो 'घड़कायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़काड़ियोड़ी)
घड़काणो, घड़कावो–क्रि०स० [देश०] १ दिल में धड़कन पैदा करना, जी धकधक कराना. २ खटका या आशंका उत्पन्न करना, डराना, दहलाना, भयभीत करना. ३ हिलाना, डुलाना.
४ घड़ घड़ की ध्वनि करना, किसी वस्तु को फेंक कर या छोड़ कर शब्द उत्पन्न करना.
५ बंदूक, तोप आदि छोड़ना या छोड़ कर ध्वनि करना.
घड़काणहार, हारो (हारी), घड़काणियो—वि० ।
घड़कवाड़णो, घड़कवाड़बो, घड़कवाणो, घड़कवावो, घड़कवावणो, घड़कवावबो—प्रे०रू० ।
घड़कायोड़ो—भू०का०कृ० ।
घड़काईजणो, घड़काईजबो—कर्म वा० ।
घड़कणो, घड़कबो—अक०रू० ।
घड़काड़णो, घड़काड़बो, घड़कावणो, घड़कावबो, घड़क्काड़णो, घड़क्काड़बो, घड़क्काणो, घड़क्कावो, घड़क्कावणो, घड़क्कावबो—रू०भे०।
घड़कायोड़ो–भू०का०कृ०—१ दिल में धड़कन पैदा किया हुआ, जी धकधक कराया हुआ. २ खटका या आशंका उत्पन्न किया हुआ, भयभीत किया हुआ, डराया हुआ, दहलाया हुआ. ३ हिलाया-डुलाया हुआ.
४ घड़ घड़ की ध्वनि किया हुआ, किसी वस्तु को फेंक कर या छोड़ कर शब्द उत्पन्न किया हुआ, आवाज किया हुआ ।
(स्त्री० घड़कायोड़ी)
५ बंदूक, तोप आदि छोड़ा हुआ; बंदूक, तोप आदि छोड़ कर ध्वनि किया हुआ ।
घड़कावणो, घड़कावबो—देखो 'घड़काणो, घड़कावो (रू.भे.)
घड़कावणहार, हारो (हारी), घड़कावणियो—वि० ।
घड़काविग्रोड़ो, घड़कावियोड़ो, घड़काव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
घड़कावीजणो, घड़कावीजबो—कर्म वा० ।
घड़कणो, घड़कबो—अक०रू० ।
घड़काविथोड़ो—देखो 'घड़कायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़काविथोड़ी)
घड़कियोड़ो–भू०का०कृ०—१ (हृदय का) उछला हुआ, कूदा हुआ, (छाती का) धक-धक किया हुआ.
२ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ, कंपित.
३ हिला-डुला हुआ. ४ ध्वनित हुवा हुआ.
५ छूटा हुआ (बंदूक, तोप आदि) ।
(स्त्री० घड़कियोड़ी)
घड़कै–क्रि०वि० [देश०] जल्दी से, यकायक।
घड़कौ–सं०पु० [देश०] १ गाड़ी के चलते समय मार्ग के समतल न होने के कारण लगने वाला झटका ।
उ०—हो राज ढोला घड़का ही आवै हो, म्हारा गढ़पतियां उमराव; भँवरजी धड़का आवै ओ ।—लो.गी.
२ भय, डर, अंदेशा, खटका । ३ हृदय की धड़कन.
४ हृदय धड़कने का शब्द.
५ किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द ।
क्रि०प्र०—करणो, होणो।
रू०भे०—घड़क्को।
घड़क्क—देखो 'घड़क' (रू.भे.)
घड़क्कणो, घड़क्कबो—देखो 'घड़कणो, घड़कबो' (रू.भे.)
उ०—१ पड़ पड़ बूंद पलंग पर, कड़ कड़ बीज कड़क्क । आज पिया बिन अेकली, धड़हड़ जीव धड़क्क ।—अज्ञात
उ०—२ धरण धड़क्के गिर धुक्के, तोप कड़क्के तेण । पण धड़क्के न 'प्रताप' रो, जुध उर वजर जंभेण ।—किसोरदांन बारहठ
उ०—३ खिवै फळ सेल खुले दळ खग्ग । दिपै दव आग कि झाळ सदग्ग । हुवै रव हक्क किलक्कि हजार, घड़क्किय नाळ भळक्किय धार ।—रा.रू.
उ०—४ मुक्कै सैल, धुक्कै धरा, घड़क्कै धड़ां सूं माथा, मुड़क्कै कांगरां सूर, बकै मार मार । फड़क्कै फींफरां रैणां, धड़क्कै केवियां फौज, धकै चाढ़ भाजै, उरां घणा सारधार ।—बुधसिंह सिढ़ायच
घड़क्कणहार, हारो (हारी), घड़क्कणियो—वि० ।
घड़क्किग्रोड़ो, घड़क्कियोड़ो, घड़क्योड़ो—भू०का०कृ० ।
घड़क्कीजणो, घड़क्कीजबो—भाव वा० ।
घड़क्काड़णो, घड़क्काड़बो—देखो 'घड़काणो, घड़कावो' (रू.भे.)
घड़क्काड़ियोड़ो—देखो 'घड़कायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़क्कायोड़ी)
घड़क्काणो, घड़क्कावो—देखो 'घड़काणो, घड़कावो' (रू.भे.)
घड़क्कायोड़ो—देखो 'घड़कायोड़ो' (रू भे.)
(स्त्री० घड़क्कायोडी)
घड़क्कावणो, घड़क्कावबो—देखो 'घड़काणो, घड़कावो' (रू.भे.)
घड़क्काविथोड़ो—देखो 'घड़कायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़क्काविथोड़ी)
घड़क्कियोड़ो—देखो 'घड़कियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़क्कियोड़ी)

घड़पको—देखो 'घड़को' (रू.भे.)

घड़ड़-सं०स्त्री० [अनु०] १ तोप, बन्दूक आदि छूटने की ध्वनि, जोर की ध्वनि विशेष। उ०—हड़ड़ नारद वीर हड़हड़। घड़ड़ आतस सिखर घड़हड़।—र.ज.प्र.

२ मकान आदि गिरने से उत्पन्न ध्वनि।

घड़ड़णो, घड़ड़बो-क्रि०स० [अनु०] ध्वनि विशेष का होना।

उ०—निपट बिन्हे दळ आया नेड़ा। नरां सुरां अति आया नेड़ा। नोबति सोर घड़ड़ि धुवि नेड़ा। नळि निहाउ गाजिआ नेड़ा।

—वचनिका

२ कम्पायमान होना, धड़कना।

उ०—खंभा जब बड़ड़े, सुररथ खड़ड़े, अंबर दड़ड़े, धर घड़ड़े।

—भगतमाळ

३ बंदूक, तोप आदि का छूटना।

घड़ड़ाड़णो, घड़ड़ाड़बो, घड़ड़ाणो, घड़ड़ाबो, घड़ड़ावणो, घड़ड़ावबो, घड़घड़णो, घड़घड़बो, घड़घड़ाड़णो, घड़घड़ाड़बो, घड़घड़ाणो, घड़घड़ाबो, घड़घड़ावणो, घड़घड़ावबो, घड़घडाणो, घड़घडाबो—रू०भे०।

घड़ड़ाड़णो, घड़ड़ाड़बो—देखो 'घड़ड़ाणो, घड़ड़ाबो' (रू.भे.)

घड़ड़ाड़ियोड़ो—देखो 'घड़ड़ायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़ड़ाड़ियोड़ी)

घड़ड़ा'ट—देखो 'घड़हड़ाहट' (रू.भे.)

घड़ड़ाणो, घड़ड़ाबो-क्रि०स० [अनु०] १ ध्वनि करना.

२ तोप, बंदूक आदि चलाना.

३ देखो 'घड़ड़णो, घड़ड़बो' (रू.भे.)

उ०—नीवाह लगाया, झळ निकळाया, धोम सवाया घड़ड़ाया। सिरियादे धाया, करो सहाया, मिनड़ी जाया, मझ आया।

—भगतमाळ

घड़ड़ाड़णो, घड़ड़ाड़बो, घड़ड़ावणो, घड़ड़ावबो, घड़घड़ाड़णो, घड़घड़ाड़बो, घड़घड़ाणो, घड़घड़ाबो, घड़घड़ावणो, घड़घड़ावबो

—रू०भे०।

घड़ड़ायोड़ो-भू०का०कृ०—१ ध्वनि किया हुआ.

२ तोप, बंदूक आदि चलाया हुआ.

३ देखो 'घड़ड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़ड़ायोड़ी)

घड़ड़ावणो, घड़ड़ावबो—देखो 'घड़ड़ाणो, घड़ड़ाबो' (रू.भे.)

घड़ड़ावियोड़ो—देखो 'घड़ड़ायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घड़ड़ावियोड़ी)

घड़ड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ ध्वनि किया हुआ, ध्वनित.

२ कंपायमान हुवा हुआ, कंपित, धड़का हुआ.

३ (पटाखा, बंदूक, तोप आदि) छूटा हुआ.

(स्त्री० घड़ड़ियोड़ी)

घड़च-सं०स्त्री० [सं० दृ विदारणे] १ तलवार (ना.डि.को.)

२ चीरने या फाड़ने की क्रिया या भाव।

३ देखो 'घड़चो' (मह., रू.भे.)

रू०भे०—घड़छ।

घड़चणो, घड़चबो-क्रि०स० [सं० दृ विदारणे] १ संहार करना, मारना, काटना। उ०—१ धारे उदर अगस्त पयोधर, जाळे काळकूट जोगेस। जोरावरां बीस भुज जेहा, घड़चे सो तू हिज अवधेस।

—रा.रू.

उ०—२ विढ़तो 'भीम' साथियां बधतो, साखी सूर उडंते सास। घड़ पड़ियो घड़चे अरि धारां, सिर पड़ियो आखे साबास।

—कल्याणदास महड़ू

२ फाड़ना, चीरना। उ०—घड़च कनातां धार सूं, गो रहवास मझार।—रा.रू.

३ टुकड़े टुकड़े करना। उ०—घड़चे खळ धारूजळां, पडिआ दाखे यांण। मुह आगे माहेस रे, 'जैत' तणो किलियांण।—रा.रू.

घड़चणहार, हारो (हारी), घड़चणियो—वि०।

घड़चवाड़णो, घड़चवाड़बो, घड़चवाणो, घड़चवाबो, घड़चवावणो, घड़चवावबो, घड़चाड़णो, घड़चाड़बो, घड़चाणो, घड़चाबो, घड़चावणो, घड़चावबो—प्रे०रू०।

घड़चिओड़ो, घड़चियोड़ो, घड़च्योड़ो—भू०का०कृ०।

घड़चीजणो, घड़चीजबो—कर्म वा०।

घड़च्छणो, घड़च्छबो, घड़छणो, घड़छबो—रू०भे०।

घड़चाळी-वि०—फटी हुई। उ०—चीचड़ ईतां बुग दोळां चेंठोड़ा, आंणे झोळी में टुकड़ा अंठोड़ा। धोती घड़चाळी संधियोड़ा बागा। तुवियां तुणियोड़ा बंधियोड़ा बागा।—ऊ.का.

घड़चियोड़ो-भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ, काटा हुआ. २ फाड़ा हुआ, चीरा हुआ.

३ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

(स्त्री० घड़चियोड़ी)

घड़चियो, घड़चो-सं०पु० [देश०] १ फटा हुआ वस्त्र.

२ टुकड़ा, खंड (वस्त्र या शरीर का)।

यौ०—घड़चाघड़च।

३ धोती (मेवाड़)

रू०भे०—घड़च्छो, घड़छो।

अल्पा०—घड़चियो, घड़छियो।

मह०—घड़च, घड़छ।

घड़च्छणो, घड़च्छबो—देखो 'घड़चणो, घड़चबो' (रू.भे.)

उ०—१ घड़च्छत सीस तड़च्छड़ धूप, रुपे घड़कन्न महाभड़ रूप। मिळम्मिळ मुंड पुवे सिव माळ, तिलत्तिल रुंड हुवे रणताळ।

—मे.म.

उ०—२ सुत आणंद महेस, खगे पंडवेस घड़च्छे। पिड़ बाजे पड़िहार, व्यूह चक्राकत अच्छे।—रा.रू.

घड़च्छणहार, हारौ (हारी), घड़च्छणियौ—वि० ।
घड़च्छिप्रोड़ौ, घड़च्छियोड़ौ, घड़च्छयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
घड़च्छीजणौ, घड़च्छीजबौ—कर्म वा० ।

घड़च्छियोड़ौ—देखो 'घड़चियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़च्छियोड़ी)

घड़च्छौ—देखो 'घड़चौ' (रू.भे.)

घड़छ—१ देखो 'घड़च' (रू.भे.)
२ देखो 'घड़चौ' (मह., रू.भे.)

घड़छणौ, घड़छबौ—देखो 'घड़चणौ, घड़चबौ' (रू.भे.)
उ०—१ करि जांगिक आयुध इंद्र करै। घड़छै खळ जोम सदेह धरै। 'अभमाल' कर्णांठिय तांम इसौ। जुध लंक कर्णांठिय रांम जिसौ।—सू.प्र.
उ०—२ घड़छै ऊमरखांन खग धारै। साठ हजार पठांण संघारै।
—सू.प्र.

घड़छणहार, हारौ (हारी), घड़छणियौ—वि० ।
घड़छिप्रोड़ौ, घड़छियोड़ौ, घड़छयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
घड़छीजणौ, घड़छीजबौ—कर्म वा० ।

घड़छियोड़ौ—देखो 'घड़चियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़छियोड़ी)

घड़छियौ—देखो 'घड़चौ' (अल्पा., रू.भे.)

घड़छौ—देखो 'घड़चौ' (रू.भे.)
उ०—घमजगर मातौ घूघड़, असमरां घड़छा ऊघड़ै। घण घाव कळह कवंध घूमत, गुड़ै भिड़ज मतंग।—र.रू.

घड़घड़णौ, घड़घड़बौ—देखो 'घड़ड़णौ, घड़ड़बौ' (रू.भे.)
उ०—घड़घड़ै घोम सूर वड़वड़ै चड़ै धारि, हड़हड़ै रंभ वाहै वर-माळ हाथि। भड़ां गजां भांजै भूरियौ वीरियौ वीराधवीर, भलौ-भलौ भाखै भांण भिड़ंतै भाराथि।
—ईसरदास कल्यांणदासोत राठौड़ रौ गीत

घड़घड़ाड़णौ, घड़घड़ाड़बौ—घड़ड़ाणौ, घड़ड़ावौ' (रू.भे.)

घड़घड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'घड़ड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़घड़ाड़ियोड़ी)

घड़घड़ा'ट—सं०स्त्री० [अनु०] १ घड़ घड़ की ध्वनि, ध्वनि विशेष.
२ भय के कारण दिल के तेजी से धड़कने की क्रिया या भाव, कंप-कंपी, थर्राहट। उ०—उठै कायर छै त्यांह का उर कांपण लागा। घड़घड़ा'ट करण लागा।—वेलि.टी.
३ डोलने का भाव, डगमगाहट, थर्राहट।
उ०—हुय घड़घड़ा'ट घर व्योम हाक। दस ही दिस वागी प्रेत डाक।—पा प्र.
रू०भे०—घड़ड़ा'ट, घड़ड़ाहट, घड़घड़ाहट, घड़हड़ा'ट।

घड़घड़ाणौ, घड़घड़ाबौ—देखो 'घड़ड़ाणौ, घड़ड़ावौ' (रू.भे.)

घड़घड़ायोड़ौ—देखो 'घड़ड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़घड़ायोड़ी)

घड़घड़ावणौ, घड़घड़ाववौ—देखो 'घड़ड़ाणौ, घड़ड़ावौ' (रू.भे.)

घड़घड़ावियोड़ौ—देखो 'घड़ड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धड़घड़ावियोड़ी)

घड़घड़ियोड़ौ—देखो 'घड़ड़ियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री० घड़घड़ियोड़ी)

घड़घड़ी—सं०स्त्री० [अनु०] १ भय के कारण होने वाली कंपकंपी, थरथराहट। उ०—खळकतां वकतरां मछ तोपां खड़ी, घोम सुण हियै काचां चढ़ी घड़घड़ी। घणा नर ओछटै विखम वागी घड़ी, तिकण पुळ 'अमर' चढ़वा दुरंग तेवड़ी।
—नीमाज ठाकुर अमरसिंह रौ गीत
२ शरीर में गड़े हुए तीर, भाले आदि को शरीर से बाहर फेंकने के निमित्त पशु-पक्षियों द्वारा शरीर जोर से हिलाने की क्रिया या ढंग जिससे शरीरस्थ तीर या भाला बाहर निकल जाय।
उ०—परली तरफ भूंडण चील्हरा लेय जाय खड़ी हुई और शरीर नूं धड़घड़ी दीवी सो तीर, भाला, वरछी वुहारी रा तिणकां ज्यूं विखर गया।—डाढाळा सूर री वात
३ जी मतलाने की क्रिया या भाव, किचकिचाहट।
ज्यूं०—घी पीवण सूं म्हनै घड़घड़ी आवै।

घड़ल्लौ—सं०पु०—१ वेग पूर्वक गिरने, पड़ने आदि का शब्द, घड़घड़ का शब्द, घड़का. २ समूह।

घड़वाई—देखो 'घाड़वी' (रू.भे.)
उ०—दांणी राहगीर घड़वाई रे।—जयवांणी

घड़हड़—सं०पु० [अनु०] १ (भवनादि) गिरने व तोप, बंदूक आदि छूटने की ध्वनि, जोर की ध्वनि विशेष।
उ०—१ घोम घड़हड़ अनड़ दीठ तोपां धुवै, रीठ पड़ि दड़ड़ गोळां विरोधा।—सू.प्र.
उ०—२ हड़ड़ नारद वीर हड़हड़, घड़ड़ आतस सिखर घड़हड़।
—र.ज.प्र.
उ०—३ बोदा कपड़ा वहुत रंग, सीवणहार कुरंग। घड़हड़ टांकां ऊघडै, घण मोड़ंती अंग।—जलाल वूबना री वात
२ हृदय धड़कने का शब्द।
उ०—हिवै नांण विन्नांण न सूझै, छाती घड़हड़ इम धूजै।
—स्रीपाळ रास
रू०भे०—घड़हड़।

घड़हड़णौ, घड़हड़वौ—क्रि०अ०—१ कंपायमान होना, थरहरना, थर-हराना। उ०—१ इंद्र नै चंद्र नागेंद्र चित चमकिया, घड़हड़चौ सेस नै धरा धूजै।—प.च.चौ.
उ०—२ उळज आखड़ रूड़ रड़वड़ पंख झड़पड़ वीर वड़वड़। अच्छर वड़वड़ धरा घड़हड़ इसौ मचि आरांण।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ जोश पूर्ण शब्द करना, कड़ाके का शब्द करना, गर्जना।
उ०—१ वाळै 'मघौ' वंगाळ, खेळा दळ खांडा खहणि, 'धीर' हरो रण घड़हड़ै, जिम होळी खग भाळ।—र. वचनिका
उ०—२ समेळ थाट सूरा सतोळ, घड़हड़िय कोपि वावाड़ि ढोल।
—रा.ज.सी.
३ ध्वनि विशेष का होना, ध्वनि होना, धड़का होना।
उ०—१ घड़हड़इ ढोल घूजइ धरत्ति, पड़ियाळगि वरसइ खेड़-पत्ति।—रा.ज.सी.
उ०—२ दगै तोप वळ दंहू उडै गोळाभळ आतस। धोम वांण घड़-हड़ै पड़ै सायक भड़ पावस।—सू.प्र.
४ ध्वनि करते हुए गिरना, ढहना, गिरना।
उ०—रावद्री वाजा वाजि रोड़ि, गइणाग जांणि घड़हड़िय गोड़ि।
—रा.ज.सी.
५ मेघ का गर्जना, घनघटा का गर्जना।
उ०—जेठ वीती पैंल पड़वा, जे अंवर घड़हड़ै। असाढ़ सांवण काढ़ कोरो, भादरवै वरखा करै।—वर्षा विज्ञान
क्रि०स०—६ भस्म करना, भस्मीभूत करना, जलाना।
उ०—पह प्रांणनाथ कारण प्रिया, धोम भाळ वप घड़हड़ै।
—भगवांनजी रतनू
घड़हड़णो, घड़हड़वो—रू०भे०।
घड़हड़ाट—देखो 'घड़घड़ा'ट' (रू.भे.)
घड़हड़ियोड़ो—भू०का०कृ०—१ कम्पायमान हुवा हुआ, थरहराया हुआ.
२ जोश पूर्ण शब्द किया हुआ, कड़ाके का शब्द किया हुआ, गरजा हुआ. ३ ध्वनित.
४ ध्वनि करते हुए गिरा हुआ, ढहा हुआ.
५ गर्जना किया हुआ. ६ भस्म किया हुआ, भस्मीभूत किया हुआ, जलाया हुआ।
(स्त्री० घड़हड़ियोडी)
घड़ांम—सं०पु० [अनु०] ऊपर से एक वारगी कूदने या गिरने से जोर से जमीन, पानी आदि पर पड़ने का शब्द।
उ०—ऊपर सूं एक जमाई लात पेट पर सो हाजरसिंह घड़ांम करता धरती पर, टांगड़ा ऊपर।—रातवासौ
घड़ाको—सं०पु० [अनु०] धमाके या गड़गड़ाहट का शब्द, घड़ घड़ शब्द।
घड़ाघड़—क्रि०वि० [अनु०] १ लगातार घड़घड़ शब्द के साथ.
२ एक दूसरे के पीछे, लगातार, बिना रुके हुए.
३ जल्दी-जल्दी, शीघ्रता से।
उ०—गढ़ा पड़ वीगड़ै नहीं हरगिज गहूं, चड़ापड़ न आवै रोग चाळो। न फलै घड़ाघड़ लाय महमदनगर, भड़ाभड़ भवांनी वोल भाळो।—खेतसी वारहठ
(मि० घनाघन)
घड़ावंदी—सं०स्त्री० [देश०] १ युद्ध से पूर्व दो पक्षों का अपनी-अपनी सेना के वल का सन्तुलन करने का काम.
२ घड़ा बांधने का काम।
घड़ायत, घड़ायती—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.)
घड़ाळ—सं०पु०—शरीर ?
उ०—धीवै सेल सनाह घड़ाळां। वरघळ कर पाडू वंगाळां।—सू.प्र.
घड़ि—देखो 'घड़' (रू.भे.)
उ०—मैं परणंती परखियौ, सूरति पाक सनाह। घड़ि लड़िसी गुड़िसी गयंद, नीठि पड़ेसी नाह।—हा.भा.
घड़ी—सं०स्त्री० [देश०] १ स्त्रियों के कान का एक आभूषण विशेष।
उ०—कांनां नैं घड़ियां लाय भँवर म्हारै कांनां नैं घड़ियां लाय। हो जी म्हारा भूटणां हीरां जड़ाय भंवर म्हांनैं खेलण दो गिणगोर।
—लो.गी.
२ चार या पांच सेर की एक तौल, मतांतर से ढाई सेर की एक तौल।
उ०—मूंघौ मांखण सूं मिसरी सूं मीठौ। द्रग सूं दो घड़ियां अन विकती दीठौ।—ऊ.का.
यौ०—धोखा-घड़ी'।
३ रेखा, लकीर।
घड़ूकणो, घड़ूकवो—क्रि०अ० [अनु०] १ मेघ घटा का गरजना।
उ०—१ धुरि असाढ़ घड़ुक्या मेह। खळहळचा खाळ्यां बहि गई खेह।—वी.दे.
उ०—२ काळी घटा अटोप कर, धुर असाढ़ घड़ूकियां। कळ अवत दगी इकवार कन, उडै नडैउ अड़ूकियां।—पा.प्र.
२ वाद्यों की ध्वनि होना।
उ०—पंच सहस्र नीसांण घड़ूकइ, मेघनाद ते नांम। भंडारी कोठारी सारी, वहइ अवारी आंन।—रुकमणी मंगळ
३ वैल या सांड का जोश पूर्ण ध्वनि करना, डांडना।
४ सिंह का दहाड़ना।
उ०—वोलै छै तौ वोल, डूंगजी! देवां वेड़ी काट, वांई वुरज में वोल्यौ डूंगजी, जांणै घड़ूक्यौ न्हार।—डूंगजी जवारजी री पड़
घड़ूकणहार, हारौ (हारी), घड़ूकणियौ—वि०।
घड़ूकिओड़ो, घड़ूकियोड़ो, घड़ूक्योड़ो—भू०का०कृ०।
घड़ूकीजणो, घड़ूकीजवो—भाव वा०।
दड़ूकणो, दड़ूकवो, घड़ूकणो, घड़ूकवो—रू०भे०।
घड़ूको—सं०पु० [अनु०] जोर का शब्द।
उ०—जावतां ईज धाकल रा घड़ूका सार्थं ढोल रो डाको रुकग्यो, निछरावळां करता हाथ ऊंचा रा ऊंचा ईज रैग्या अर ऊंट चीड़ता-चीड़ता वंद हुग्या।—रातवासौ
घड़ूड़—वि० [देश०] अधिक, वहुत, ज्यादा।
घड़ै—क्रि०वि० [देश०] तरफ, ओर।
उ०—अड़वड़ै कै घड़हड़े आतस, जुड़ै के कज जैत। विच समर एकण घड़ै राघव, वडै रंग विरदैत।—र.ज.प्र.

घड़ौ-सं०पु० [सं० घटः] १ तराजू या तराजू का पलड़ा।
उ०—सीतावर सुंदर मह गुण मंदर पाय पुरंदर दास पड़ै। चव जै जस चारण 'किसन' सकारण धारण सो यक एक घड़ै।
—र.ज.प्र.
२ तराजू का संतुलन करने हेतु तराजू के एक पलड़े में रखे हुए खाली बरतन के भार के बराबर दूसरे पलड़े में रखा जाने वाला पदार्थ।
वि०वि०—प्राय: तरल पदार्थों को तोलने के लिये ही ऐसा किया जाता है।
मुहा०—घड़ौ करणौ—संतुलन करना।
३ समूह।
उ०—घेयनां सुसती कर हेक घड़ै। कर पैदल पीठ रखौ कनलै।
—पा.प्र.
४ एक ही गोत्र या जाति का समूह या पक्ष।
उ०—१ सगा भाई दोय आपसूं छोटा अर नजीक रा। कबीले रा आदमी चाळीस कांम आया। बीजा भला-भला रजपूत घड़ां रा धणी।—सूरे खींवे कांधळोत री वात
उ०—२ सीरोही रै देस डूंगरोतां उतरता चीवा भला रजपूत छै, इणां री ही वडौ घड़ौ छै, सदा सांमघरमी, वडा इतवारी छै।
—नैणसी
मुहा०—घड़ौ भारी होणौ—एक ही पक्ष या गोत्र के व्यक्तियों का अधिक संख्या में होना।
५ कुटुम्ब, वंश। उ०—हमीर देवराज रौ। जिण रा वांसला उरजनोत भाटी सत्ता रा पोतरा। जोधपुर चाकर छै। हमीर देवराजोत रै मरोठ हुती। हमीर रौ घड़ौ जैसळमेर चाकर।—नैणसी
६ पक्ष, समूह; दल।
उ०—वीकमपुर वसै न बारही धूजै घर पाटण पड़ै। गींदौ रोद्र भदांणियौं घाए सांमेई घड़ै।—नैणसी
मुहा०—घड़ौ बांधणौ—अपने दल को प्रबल बनाना, शक्तिशाली बनाना।
७ विचार।
उ०—कूंतौ पर धन रौ करै, हाजर कळा हजार। धूत दिए आगम घड़ा, बैठा हाट बजार।—बां.दा.
मुहा०—१ घड़ौ देणौ—विचार करना. २ घड़ौ बांधणौ—देखो 'घड़ौ देणौ'।
८ टीबा, भीडा. ९ ढेर, राशि १० हिस्सा, भाग.
११ योग, जोड़।
उ०—तौ विट्ठळदास कही—जे हजरत आगै तौ थेट सूं अजमेर छै हमै हजरत जे बकसै सो सही। तौ वादसाह फुरमाई—जे अजमेर तन की तौ बुजरगां तलाक करी तींसूं तन सहर की तौ अरज न करणी। बाकी सब जायगां देऊंगा। सो पांच हजार री तौ विट्ठळदास नूं, पांच हजार री बळरांम रै बेटै नूं, अढ़ाई अढ़ाई हजार री अरजुनसिंह, अनरथसिंह नूं। पछै कोई नूं दोय हजार री कोई नूं ड्योढ़ हजार री। विट्ठळदास सूं दोय छोटा भाई था तिणनूं तीन-तीन हजार री। सो सारै लोग गोड़ां सूं वादसाह वाकिफ थौ सो पूछतौ गयौ, मांडतौ गयौ। दोय हजार री विट्ठलदास रा दीवांण नूं बाकी राजपूत चाकर था त्यांनूं। सदी सूं लेय दोय हजार री तांई विट्ठळदास रा चाकर किया। सो सारौ घड़ौ दियौ—बावन हजारी गौड़ किया। जागीर वतन नूं जायगां सारी कर दीवी।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

घच-सं०पु० [अनु०] किसी वस्तु के गिरने पर उत्पन्न शब्द।
रू०भे०—घच्च।
अल्पा०—घचीड़ौ।
मह०—घचीड़।

घचकचाणौ, घचकचाबौ-क्रि०स० [देश०] डराना, दहलाना।

घचकचायोड़ौ-भू०का०कृ०—डराया हुआ, दहलाया हुआ।
(स्त्री० घचकचायोड़ी)

घचकणौ, घचकबौ-क्रि०अ० [देश०] १ झटका खाना.
२ दलदल में धँसना. ३ चोट खाना।
घचकणहार, हारौ (हारी), घचकणियौ—वि०।
घचकवाड़णौ, घचकवाड़बौ, घचकवाणौ, घचकवाबौ, घचकवावणौ, घचकवावबौ—प्रे०रू०।
घचकाड़णौ, घचकाड़बौ, घचकाणौ, घचकाबौ, घचकावणौ, घचकावबौ—क्रि०स०।
घचकिओड़ौ, घचकियोड़ौ, घचक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घचकीजणौ, घचकीजबौ—भाव वा०।

घचकाड़णौ, घचकाड़बौ—देखो 'घचकाणौ, घचकाबौ' (रू.भे.)
घचकाड़णहार, हारौ (हारी), घचकाड़णियौ—वि०।
घचकाड़िओड़ौ, घचकाड़ियोड़ौ, घचकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घचकाड़ीजणौ, घचकाड़ीजबौ—कर्म वा०।
घचकणौ, घचकबौ—अक०रू०।

घचकाड़ियोड़ौ—देखो 'घचकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घचकाड़ियोड़ी)

घचकाणौ, घचकाबौ-क्रि०स०—१ झटका लगाना.
२ दलदल में धँसाना. ३ चोट लगाना।
घचकाणहार, हारौ (हारी), घचकाणियौ—वि०।
घचकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
घचकाईजणौ, घचकाईजबौ—कर्म वा०।
घचकणौ, घचकबौ—अक०रू०।
घचकाड़णौ, घचकाड़बौ, घचकावणौ, घचकावबौ—रू०भे०।

घचकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ झटका लगाया हुआ.
२ दलदल में धँसाया हुआ.

३ चोट लगाया हुआ।
(स्त्री० घचकायोड़ी)
घचकावणो, घचकाववो—देखो 'घचकाणो, घचकावो' (रू.भे.)
घचकावणहार, हारो (हारी), घचकावणियो—वि०।
घचकाविओड़ो, घचकावियोड़ो, घचकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
घचकावीजणो, घचकावीजवो—कर्म वा०।
घचकणो, घचकवो—अक०रू०।
घचकावियोड़ो—देखो 'घचकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घचकावियोड़ी)
घचकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ झटका खाया हुआ.
२ दलदल में वँसा हुआ.
३ चोट खाया हुआ।
(स्त्री० घचकियोड़ी)
घचको-सं०पु० [अनु०] १ धक्का. २ झटका.
३ आघात, टक्कर।
रू०भे०—ढचको।
घचाक-क्रिवि० [अनु०] घच की ध्वनि के साथ।
घचीड़-सं०पु० [अनु०] १ प्रहार या प्रहार की ध्वनि।
२ देखो 'घच' (मह., रू.भे.)
अल्पा०—घचीड़ो।
घचीड़ो—१ देखो 'घच' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'घचीड़' (अल्पा., रू.भे.)
घच्च—देखो 'घच' (रू.भे.)
धज-सं०पु० [सं०ध्वजः] १ घोड़ा, तुरंग। उ०—दुरद धज दिख गढ़राज कितरा दिया, की गिगां बडम सो अचळ कीधी। तुव नमो नाथ पुर स्वांन सूकर तिकां, देव दुरलभ जिकां मुगत दीधी।—र.रू.
उ०—२ धज ठाकुर बेहूं सारिसा, अंग छलिता आपांण। सज उतरया उरस सूं, ज्यांरा किस्या वखांण।—पनां वीरमदे री वात
२ योद्धा. ३ भाला।
उ०—विढ़ै करिमाळ करै धज वाह। समोभ्रम 'केहरि' 'गाजीयसाह'।—सू.प्र.
४ अग्रणी, आगे रहने वाला। उ०—रांमसिंघ सबळेस रो, कूंपो ग्रह केवांण। फोजां धज 'फतमाल' रो, साथ 'जगड' चहुवांण।
—रा.रू.
५ देखो 'ध्वज' (रू.भे.) (अ.मा.)
उ०—जेण रथ धज अयन जाळै, नीसरयां अणद्रस्ट न्हाळै। पहल पांणी बंध पाळै, विमळ ठाळै बोध।—र.रू.
वि०—१ सत्य।
यौ०—धज-बंवार।
२ श्रेष्ठ।
रू०भे०—धुज।
धजकजळ-सं०पु० [सं० कजळध्वजः] दीपक, चिराग (ह.नां.)
धजकूंत-सं०पु० [सं० ध्वजः+रा०कूंत] भाले की नोंक या अग्र भाग।
उ०—कुंभाथळ वेधि कढै धजकूंत। हौदां मझि मीर हुणै खग हूंत।
—सू.प्र.
धजडंड, धजदंड-सं०पु० [सं० ध्वजदण्ड] ध्वजदण्ड।
उ०—एकीकइ रोम ऊपरइ ईसर, मांडिया कोट अनंत ब्रहमंड। सायर सात दीपइ परिदक्षिणा, डंवर चा अंवर धजडंड।
—महादेव पारवती री वेलि
धजघर-सं०पु० [सं० ध्वज घर] देवालय, मंदिर (अ.मा.)
धजनी-सं०स्त्री० [सं० ध्वजिनी] सेना (अ.मा.)
धजवंद, धजवंदी, धजवंध, धजवंधी-वि० [सं० ध्वज+वंध] १ वीर, योद्धा। उ०—सिरी घटियाळ अरोहित सेर, संख्या मवताहळ माळ सुमेर। किया सरजीवत तेडि कवंध, वूझे पितु मोत कुसी धजबंध।
—मे.म.
२ पूर्ण विश्वसनीय। उ०—वहियो गजवारीह, तूं रुकमण प्यारी तजै। मदती हर म्हारीह, धजवंधी धारी नहीं।—रांमनाथ कवियो
३ सीधा।
सं०पु०—१ राजा, नृप। उ०—१ सासत पर-वत सिंघ सवाई, पांणा आसत जोधपुरा। सुसवद रो परकर दीठो सुज, धजबंधी सांकड़ी धरा।—महाराजा वळवंतसिंह (रतलांम) रो गीत
२ अश्व, घोड़ा. ३ मंदिर, देवल. ४ ध्वज रखने वाला व्यक्ति।
सं०स्त्री०—देवी, दुर्गा। उ०—२ तांमस कियउ सती तन त्यागण, आप रागण चाढ़ियउ कंद(ध)। हठ कर पड़ी हुतासण मांहे, बीजउ जगन कियउ धजवंद(ध)।—महादेव पारवती री वेलि
वि०वि०—प्राचीन काल में राजा, शूरवीर और बहुत धनाढ्य व्यक्ति अपना निजी ध्वज रखते थे।
५ वह देवी या देवता जिनके देवालय पर उनके नाम का झंडा लगा रहता है।
रू०भे०—धजावंद, धजावंदी, धजावंध, धजावंधी।
धजवड़, धजव्वड़-सं०स्त्री०—देखो 'धजवड़' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—किरणावळि सूरिज जेम कळवकळ, धूण धजव्वड़ खेड़ धणी।
—गु.रू.बं.
धजभंग—देखो 'ध्वज-भंग' (रू.भे.)
धजमोर—देखो 'मोरधज' (रू.भे.) उ०—आछै दियो मांस सिवी तन, धू करवत धजमोर धरी। अत रजपूतां सुजस पियारो, जिण कारण औ अजर जरी।—अज्ञात
धजरंग-वि० [सं० ध्वज+रा० रंग] ध्वज के समान नोंकदार।
उ०—सुजि तांम्रतुंड कंधा समाथ। वाजोट उवर अडयाळ बाथ। केहास विहूं धजरंग कन्न। प्रतहास गोसरिप चहर पन्न।—सू.प्र.
धजर-सं०स्त्री० [सं०ध्वज+राज० र] १ शक्ति, बल. २ शेखी, शान।
उ०—सेजां में घर घर सखी, आंणै धजर अजांण। धारां में राखै धजर, सो कुण कंत समांण।—वी.स.

३ कीर्ति, यश। उ०—धजर रखण कारण रांण घर, दळ अदतारां घणा दहंस। 'पदम' सुतन वगसै तुंही पांणां, सकव्यां नांणा पांच सहंस।—बगतरांम आसियौ

४ मान, प्रतिष्ठा। उ०—भिड़ण हुआ लाखां दळ भेळा, गढ़ साखी वागी गजर। आखी अणी भूप अेकल री, धणी नाथ राखी धजर।
—महादांन महड़ू

५ ध्वजा, पताका. ६ कटारी, बरछी। उ०—गाज धर जबर हर हर उचर घमाघम, छर दुछर तड़ सतर अधर छूटी। अजर कर नजर भर जजर कर उल्हारी, फोड़ डाडर धजर पार फूटी।
—भाखसी लाळस

सं०पु०—७ भाला। उ०—१ सत्र लोट पोट उडि दोट सिर, धजर चोट खग थोहड़ां। नवकोट छ खंड वागा निडर, लाल कोट मझि लोहड़ां।—सू.प्र.

उ०—२ घटा सिंधुर डमर पटा ओसर घरर, वाज साकुर पखर दरर वारौ। छतर धर असुर ऊपर खिवै पर छटा, थिर अतर अडर नर धजर धारौ।—महाराजा अभयसिंह रौ गीत

८ देवालय, मंदिर. ९ आसमान, आकाश।

उ०—समत अढार साल सैंताळौ, कटकां कहर गनीमां कोप। धमचक धजर धरा सह धूजी, आलोचै कूंपौ आसोप।
—ठा० महेसदास कूंपावत रौ गीत

वि०—सुन्दर, मनोहर। उ०—कीधा असि चाकरां, तुरत साकुरां तयारी। खुररां मांजी खेह, धजर तुररां सिर धारी।—मे.म.

धजराज, धजराळ–सं०पु० [सं० ध्वज+राज] १ घोड़ा, अश्व (अ.मा.)

उ०—१ थया हरख सौ गुणां भड़ां चौगुणा वधारा। साज हूंत गजराज किताइ धजराज सिरारा।—रा.रू.

उ०—२ धजराळ नगां धरती धमम्मै। भालां सिर ग्रीधण झूल भ्रमै।—गो.रू.

धजरूप–सं०स्त्री० [सं० ध्वज+रूप] बरछी (डिं.नां.मा.)

धजरेळ, धजरैळ–सं०पु० [सं० ध्वज+रा० रेळ, रैळ] १ घोड़ा, अश्व।

उ०—धनंख कंध गैण सिर अड़ै धजरेळ।—चांवंडदांन दधवाड़ियौ

वि०—ध्वजा धारण करने वाला, ध्वजाधारी।

धजवड़–सं०स्त्री० [देश०] १ खड्ग, तलवार।

उ०—गयौ अहल गहलोतवै, कुंभकरण री क्रोध। धजवड़ वळ मेवाड़ घर, जीतौ तू यह जोध।—वां.दा.

२ मान, प्रतिष्ठा। उ०—वाधनवाड़ा वीच में, जबर करी जैसींग। वडंग मार रणवाजखां, धजवड़ राखी धींग।
—वदनोर ठा. जयसिंह मेड़तिया रौ दूहौ

रू०भे०—धजवड़, धजवड़ा, धजवड़ि, धजवड़ी, धजवड, धजवढ़।

धजवड़हत, धजवड़हतौ, धजवड़हत्थ, धजवड़हत्थौ, धजवड़हथ, धजवड़हथौ–वि० [सं० ध्वज+रा० वड+सं० हस्त] तलवार धारण करने वाला, खड्गधारी, योद्धा। उ०—१ धजवड़हथां मारकां धूतां, कव रजपूतां अमर करै।—महाराजा मांनसिंह

उ०—२ धजवड़हथ जोध कळोधर घर छळ, खेम कळह खेलंता खत। गै धड़ उर आगळी गड़ोगड़, गहमह वांसै रंभ गत।
—खींवकरण ऊदावत रौ गीत

धजवड़ा, धजवड़ि, धजवड़ी, धजवड, धजवढ़, धजव्वट—देखो 'धजवड़' (रू.भे.) (अ.मा.) उ०—१ कड़ाजूड़ कर कोडंडा, धजवड़ा ले करग।—ठा. जोगीदास रौ गीत

उ०—२ राइ चूकै वात राजसी राउत, सुज अखियात वदै संसार। धड़ ऊठियौ ज सझियै धजवड़ि, पड़ियां कंध पछौ पड़ियार।
—हरिसूर बारहठ

उ०—३ तैं वाही इकतार, मुगळां रै सिर 'माहवा'। धजवढ़ हंदी धार, सात कोस लग सीस वद।

—कांनोड़ रावत माहवसिंह रौ सोरठौ

उ०—४ अंग अंग अवल फट मिळ धाए मैमट। धार धजव्वट धोम धिखै।—गु.रू.बं.

धजसंड–सं०पु०यौ० [सं० ध्वज+षण्ड] महादेव, शिव।

उ०—सिहंड ध्वज मुख वयंड धजसंड, प्रचंड रुंड मुंड-माळ परचंड।
—सू.प्र.

धजा-गज—देखो 'धजगज' (रू.भे.) (डिं.को.)

धजा–सं०स्त्री०—देखो 'ध्वज' (अल्पा., रू.भे.) (ह.नां.मा., अ.मा.)

धजाखगेस–सं०पु०यौ० [सं० ध्वज+खगेश=गरुड़] १ श्रीकृष्ण (अ.मा.) २ विष्णु।

धजाबंध–सं०स्त्री० [सं० ध्वजाबंध] १ देवी, दुर्गा।

उ०—कुसी रिखराज करै झणकार, धजाबंध पत्र भरै रत धार।
—मे.म.

सं०पु०—२ देवता. ३ देखो 'धजबंध' (रू.भे.)

उ०—१ धजाबंध देख सूमां चढ़ी धगधगी, ठगठगी टगटगी लगी ठावां।—वखतौ खिड़ियौ

उ०—२ धजाबंध वेहू लाग प्रियाग, रूड़ै दळ वेहु सिधव राग।
—गो.रू.

उ०—३ धजाबंध कवंध अणभंग जंगळधणी, प्रथीपत 'गंग' आ खबर पाई। आय वण ठोड़ कर जोड़ि कीधी अरज, बीकपुर पधारौ इंद्र-बाई।—मे.म.

धजारां–सं०पु०—१ आकाश, आसमान।

उ०—वातां श्री अढगी थारी अनंमी हरींद वीजा, चंगी रीजां देण 'चांदा' गुणां लै पिछांण। वापी चीत सदा जंगी जीवां नंद वह वांमी, पंगी तौ धजारां लागी रविनंद रै प्रमांण।—जसकरण

धजाळी–सं०स्त्री० [सं० ध्वज+आलुच्+रा०प्र०ई] ध्वज धारण करने वाली, देवी, शक्ति। उ०—प्रवाड़ा किसूं हेक जीहा पुणीजै। करां जोड़ियां कोड़ि आदेस कीजै। धजाळी हमै फेर ओतार धारचौ। वडौ कांम स्री जोगमाया विचारचौ।—मे.म.

धजाळौ–वि० [सं० ध्वज+आलुच्], (स्त्री० धजाळी) ध्वज धारण करने वाला, ध्वजधारी।

घजीलौ-वि० [सं० ध्वज+रा०प्र०ईलौ] १ ध्वजधारी. २ सुंदर ढंग का, तड़क-भड़क वाला, सजीला ।

घज्ज-वि० [सं० ध्वज] १ ध्वज के समान तीक्ष्ण, अत्यन्त तीक्ष्ण ।
२ देखो 'ध्वज' (रू.भे.)
उ०—'अजन' विराजै जोधपुर, दिन साजै कमधज्ज । अन राजा लाजै अकस, धू सम राजै धज्ज ।—रा.रू.

धज्जी-सं०स्त्री० [सं० ध्वज+रा०प्र० जी] १ कपड़े, कागज, चमड़े आदि की कटी हुई लंबी पतली पट्टी. २ लोहे की चद्दर या लकड़ी के पतले तख्ते की अलग की हुई लंबी पट्टी ।
मुहा०—१ धज्जियां उडणी—फट या कट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाना, विदीर्ण हो जाना । खूब दुर्दशा होना, दुर्गति होना ।
२ धज्जियां उडाणी—खण्ड खण्ड करना, विदीर्ण करना । निंदा करना, बेइज्जती करना, दुर्दशा करना, दुर्गति करना ।

घट-सं०पु० [देश०] १ बक पक्षी, बगुला ।
यौ०—धौळौ-घट ।
२ देखो 'घाट' (रू.भे.)
रू०भे०—घट्ट ।

घटपंख—देखो 'घखपंख' (रू.भे.)

घटी-सं०स्त्री० [सं०] १ वस्त्र विशेष, चीर (व.स.)
२ दुल्हा व दुल्हन के गठ-बन्धन का वस्त्र. ३ वह वस्त्र जो स्त्रियों को गर्भाधान के बाद पहनने को दिया जाता था ।
(राजा-महाराजा, सम्पन्न)
४ देखो 'घाटी' (रू.भे.)
उ०—ऐराकी आरबी, घटी काछी खंधारी ।—सू.प्र.

घट्ट—देखो 'घट' (रू.भे.)
उ०—फागण री महीनौ अर चांदणी घट्ट रात । नीलकंठ गांव माथै डोढ़ बोतल री नसौ चडचोड़ी ।—रातवासो

घड—देखो 'धड़' (रू.भे.)
उ०—तवल ने घवकै घर धूजवइं, अरि तणां मन नु मद खूटवइं । किलकिलाट करी हवकी करइं, घड पडइ भड रांक रडी मरइ ।
—विराटपर्व

घडघडणौ, घडघडवौ—देखो 'धड़हड़णौ, धड़हड़वौ' (रू.भे.)
उ०—धरणि घडघडीय गडगडिय दम्मांम धुनि ।—स्रीपाळ रास

घडघडियोड़ौ—देखो 'धड़ड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घडघडियोड़ी)

घडहड—देखो 'धड़हड़' (रू.भे.)
उ०—१ 'कांमकंदळा' कही कही, घडहड मूकइ घाह । पूरि चढ़ियां पांणि वहइ, लोअण ना परवाह ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ एक तणां घड घडहड धूजइं एक हींडइं सुललितइं । सिर पाखइ एक ऊठी भूझइं सुहडां आसि फळंति ।—विद्याविलासपवाडउ

घडहडणौ, घडहडवौ—देखो 'धड़हड़णौ, धड़हड़वौ' (रू.भे.)
उ०—१ आकस्मिक घडहडइ धरामंडळ ।—व.स.
उ०—२ आकास घडहडइं, गोजइ गडहडइं ।—व.स.
उ०—३ वज्रमूळ प्रासाद केतउ गडहडइ, ठालउ केतउ घडहडइ, कपट पर केतउं सोचइ ।—व.स.
घडहडणहार, हारौ (हारी), घडहडणियौ—वि० ।
घडहडिओड़ौ, घडहडियोड़ौ, घडहड्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घडहडीजणौ, घडहडीजवौ—भाव वा० ।

घडहडियोड़ौ—देखो 'धड़हड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घडहडियोड़ी)

घड़ूकणौ, घड़ूकवौ—देखो 'धड़ूकणौ, धड़ूकवौ' (रू.भे.)

घड़ूकियोड़ौ—देखो 'धड़ूकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घड़ूकियोड़ी)

घण-सं०स्त्री० [सं० धनिका, धनी=हृष्ट पुष्ट जवान स्त्री] १ पत्नी, स्त्री (डि.को.) उ०—१ रांमत चौपड़ राज री, है विक वार हजार । धण सूंपी लूठां धकै, धरमराज धिक्कार ।
—रांमनाथ कवियौ
उ०—२ तारां छाई रात मिजाजीड़ा फूलां छाई म्हांरी धण री सेज ढ़ळी ओ ।—लो.गी.
रू०भे०—धंण, धणक, धणि, धन ।
२ चमड़े की धौंकनी के आगे लगी लोहे की नाली.
३ देखो 'धन' (रू.भे.) उ०—१ मालव देस तिहां सलहीजइ धण-कण कंचण सार । ऊजेणी नयरी तिहां जांणे अमरापुरि अवतार ।
—विद्याविलास पवाडउ
उ०—२ खींची जींदराव धण परतौ हतौ, तठै सूं सरव लियां जावै छै ।—नैणसी

घणक—१ देखो 'घण' (रू.भे.) उ०—धणक बोल बस्यौ मन मांहि । चित चमकियउ बीसळराय ।—बी.दे.
२ देखो 'धनक' (रू.भे.) ३ देखो 'धनुस' (रू.भे.)

घणख-सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का पौधा विशेष ।
उ०—धूंगरि धूंगि धांणकी, धातरि धणख धमासि । धडफूडी धंधोळणी, धूती धाडा धासि ।—मा.कां.प्र.
२ देखो 'धनक' (रू.भे.) ३ देखो 'धनुस' (रू.भे.)

घणदांण-वि० [सं० धन+दान] धन देने वाला, दाता ।
उ०—महि मंडण पयडउ धण रिद्धि, नयर महेवउ नर बहु बुद्धि । ओसवंस अति धण तिणि ठांण, वसइ सुरद्रुम जिम धणदांण ।
—स्री कल्यांणचंद्र गणि
रू०भे०—धनदांण ।

घणा-पंचक—देखो 'धांणा-पंचक' (रू.भे.) (अमरत)

घणि—१ देखो 'धण' (रू.भे.) उ०—संदेसा हो लख लहइ, जउ कहि जांणइ कोइ । ज्यूं धणि आखइ नयण भरि, ज्यंउ जइ आखइ सोइ ।
—ढो.मा.

२ देखो 'घणी' (रू.भे.) उ०—जसु डरि करि घरि निय प्रिय, त्रिय नितु जंपइ ईम। कुडइ मनि पासह तणी, घणिय म लांघसि सीम।
—प्राचीन फागु-संग्रह

घणिग्राप—देखो 'घणियाप' (रू.भे.)

घणिउ—१ देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—घणिउ सेत्रुंजि सीरिसहेस रो। घणिउ रेवति नेमि जिरोस रो।—जयसेखर सूरि

२ देखो 'घनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

घणिय-वि० [सं० घनित] १ अस्थिर (जैन)

२ देख 'घणी' (रू.भे.) उ०—१ आसमुद्द घरहि घणिय इक्कक्कइ कड्डिचीरि। हाकीउ रळ जिम काढीइंउ आयमतई सूरि।
—पं पं.च.

उ०—२ महा विदेह में घणिय विराजिया जी, तिके निरघणिया किम थाय।—जयवांणी

घणियप—देखो 'घणियाप' (रू.भे.) उ०—जोगण रखे समय सुभावै, लोवडियाळ जेज किम लावै। घणियप विरद विचारै धावै, आई खेतल सादे आवै।—अज्ञात

घणियांणी-सं०स्त्री० [सं० घनिका+रा०प्र०आणी] १ स्वामिनी, मालकिन। उ०—१ अर सीसोदणी तीडोजी रै राज री घणियांणी हुई।—नैणसी

उ०—२ हिवै बीजै पहर रै अमल मांहै राजा भोज बोलियौ—तीन पहर रात, महल री घणियांणी बोलै नही, राति किसी भांति वितीत हुमी।—चौबोली

२ देवी, माता। उ०—'वांको' कहै टळै दिन निखमा, घणियांणी नै धायां। लोवड़ियाळ ताप नंह लागै, स्रोलै थारै आयां।—वां.दा.

रू०भे०—घणीयांणी, धिणियांणी, धिनयांणी, धिनियांणी, धिरांणी।

घणिया—देखो 'धांणा' (रू.भे.) (उ.र.)

घणियाप, घणियापण-सं० ० [सं० घनिक+रा०प्र० आप, आपण] १ स्वामित्व, मालिकपन। उ०—१ पातल, सिला, वेस्या, प्रिथ्वी, इण न्यारां री रीति इसी। ममता करै मरै सो मूरख, कहै घरमसी घणियाप किसी।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ घणियापण दाखव आज घणी। विखमी घणी आ पुळ आय वणी।—पा.प्र.

क्रि०प्र०—करणी, जताणी, होणी।

२ अधिकार, वश। उ०—पण होणी ऊपर किण री घणियाप, मरियां पछै रोवणौ पोतै।—वांणी

३ कृपा, दया, महरवानी। उ०—१ वराछक वागत आयुध वोह। 'लूणा' सुत अंग न लागत लोह। तिकौ तिण मात तणौ परताप, धरा इण जेण घणौ घणियाप।—मे.म.

उ०—२ चित खून खिण न विचारचौ, घणियाप निज विद धारियौ।
—र.रू.

रू०भे०—घणिग्राप, घणियप, घणीप, घणीयप, धिणाप।

घणियाळी-वि० [स० घनिक+आलुच्] सौभाग्यवती।

सं०स्त्री०—वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।

घणी-सं०पु० [सं० घनिकः] (स्त्री० घणियांणी) १ ईश्वर, परमेश्वर (ह.नां.)

उ०—मन में फेर घणी री माळा, पकड़ै नंह जमदूत पलो। मिळै नही वकणा सूं माया, भाया कम बोलवौ भलो।—वां.दा.

२ स्वामी, मालिक। उ०—१ तद 'मुकनै' 'कल्यांण' रै, और न दक्खी वांण। तेड घरा आवू तणी, घणी दिखायौ आंण।—रा.रू.

उ०—२ आउवा रा ठाकर थांरी घोडी घूमर घालै ओ। गोरिया फरमावै घणियां कांई मरजी ओ छूटी देवो तौ। हां ओ छूट्टी देवो तौ होळी री गैर लडनै देखां ओ।—लो.गी.

यौ०—घणी-धोरी।

३ पति, खाविंद (डिं.को.) उ०—१ गठजोडा सहत वसत्र केसर गरक, पहर अत्र अगरजो रवि परायै। दुछर छत्रकुळ छळां घसी सीसोदणी, सुरामुख भळां मझ घणी साथै।—ऊमेदजी सांदू

उ०—२ गिरवर मोर गहक्किया, तरवर मूंक्या पात। घणियां घण सालण लगा, वूठै तौ वरसात।—ढो.मा.

४ राजा, नृप। उ०—१ ओ 'अगजीत' आगियाकारी, पाई रेख पटा री। सुत 'कुसळेस' तूझ नै सारी, घणियां सूंपी लाज घरा री।
—नींवाज ठा. अमरसिंह ऊदावत रौ गीत

उ०—२ अर थे बाई मांगी छो; अर जो म्हे द्या, अर वाई रै छोरू हुवै मो ? ताहरां चवंडोजी वोलिया—'छोरू हुवै सो चीत्रोड़ री घणी।—नैणसी

सं०स्त्री०—५ देखो 'घनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—मौजूद हाथियां ऊपर सव आदमी भला भला तीरमदाज घणी जळंघरी धांमण रा कांमठा, सुही रा तीर, तिण रै सवा-सवा पाव रा भाला, तीन-तीन आंगळ चौडा, विलांत विलांत भर लांवा लियां इसा इसा जवांन हाथियां चढ सांम्हा हुवा।—डाढ़ाळा सूर री वात

६ देखो 'धनी' (रू.भे.) (डिं.को.)

रू०भे०—घणि, घणिय, घणीय, धिणी।

घणी-चोधार-सं०पु० [सं० धनिकः+राज० चौधार] राजा (डिं.नां.मा.)

घणी-धोरी-सं०पु०यौ० [सं० घनिक+धौरेय] १ मालिक और मुखिया, स्वामी और प्रधान। उ०—तूं मरण तेवड नै खंगार नूं मारै तो पोहचां, नै थारा बेटा घणी-धोरी छै ईज, नै वळै घणा वधारीस।
—नैणसी

उ०—२ नीघणि आया मारिये, घणी न घोरी कोइ। दादू सो क्यों मारिये, साहिव सिर पर होइ।—दादू वाणी

२ कर्त्ता-धर्त्ता। उ०—राव मांनसिंघ मूवौ तरै राव सुरतांण नै सारै रजपूते मिळ टीकै वैसांणियौ, देवड़ा विजा रौ घणौ कारण छै, विजो राव सुरताण कनै घणी-धोरी छै।—नैणसी

घणीप—देखो 'धणियाप' (रू.भे.)

उ०—तह तिम अम्ह सांमित्त' अम्हारी घणीप करिज्ज करिजो।

—षष्टिशतक प्रकरण

घणीमाळ-सं०पु० [सं० घनिकः+मालं] राजा, नृप (डिं.नां.मा.)

घणीमो-वि० [सं० धन्य वयाः] बढ़िया, उत्तम।

घणीय—देखो 'घणी' (रू.भे.) उ०—आक दयंता वन दह्यो, चोळी मांहि थी दावउ छइ गात। घणीय नतकां घण ताकजे, तुरीय पलांणि वेगो घरि आव।—वी.दे.

घणीयप—देखो 'धणियाप' (रू.भे.)

घणीयांणी—देखो 'धणियांणी' (रू.भे.) उ०—१ तद नायण जूती उठाय लीवी अर पाछी आय जूती तो चाकरां नुं दीवी। कही जूती की घणीयांणी पण अठै हुसी। तद नायण गुफा मांहकर भीतर गई।

—चौबोली

उ०—२ कहै दास सगरांम सुणो घन री घणीयांणी। कर सुक्रित भज रांम घोय कर वहते पांणी।—सगरांमदास

घणीयाप—देखो 'धणियाप' (रू.भे.) उ०—गुण परगट करै छपावै अवगुण, घणवित वगसै घणुंवणो। की कहणो थारो केलपुरा, तो वाळी घणीयाप तणो।—चांवंडदांन दघवाड़ियो

घणीवउ-[सं० धन्यवयाः] १ दीर्घजीवी (उ.र.) २ वह जिनका वय अर्थात् जीवन धन्य (सफल) हुआ हो (उ.र.)

घणीव्रत-सं०पु० [सं० घनिकः+व्रतं] स्वामित्व, मालिकपन।

उ०—निवारण विघन सुप्रसन घणी रहै नित, सोगणी सुवद सब दिन सुहातो। ताकवां वधावै प्रभत महीया तणी, निभावै घणीव्रत तणो नातो।—नंदजी मोतीसर

घणु, घणु, घणुह—१ देखो 'धनु' (१) (रू.भे.)

उ०—१ सिर वरि वेणीय लहकइ, वहकइ चंपक माळा। रतिपति घणु समांणउ, जांणउ भाल विसाळा।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ यादव कुळ जगचक्ष दीपै दस घणु देह। आयु थिति पाळी एक सहस वरखेह।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ गुरु ऊठाडइ अरजुनु कुमगो करणिहि सरिसउं माडइ वयरो। वे भाया विहुं खवे वहेई, करयलि विसमु घणुहु धरेई।—पं पं.च.

२ देखो 'धांणा' (रू.भे.)

घणुहर-सं०पु० [सं० धनुर्वर] धनुर्धर। उ०—जइ पडिहसि 'पास' जिणिद वसि नांणवंत निम्मळ रयण। न सु घणुहर बांण न रूव नहि न रूय पिमु हुइ हइमयण।—कवि पल्ह

घणुहि, घणुही-सं०स्त्री०—देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—आंखि राती, हाथि काती, हाथि सुणही, बीजइ घणुही इसी भिल्ली।—व स.

घणुहीय-सं०स्त्री०—देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—भमहि कि मनमथ घणुहीय गुण हीय वरतणु हार। वांण कि नयण रे मोहइं सोहइं सयळ संसार।—वसंतविलास

घणू-सं०पु० [सं० धान्यक] १ देखो 'धांणा' (रू.भे., डिं.को.)

२ देखो 'धनु' (१) (रू.भे.) (डिं.को.)

घणो—देखो 'धांणा' (रू.भे.) (अमरत)

घत-अव्य० [अनु०] १ दुत्कारने का शब्द. २ हाथी को पीछे हटाने का शब्द।

यौ०—घताघता, घत्तावत्ता।

३ देखो 'दुत' (रू.भे.)

वि०—मस्त, उन्मत्त।

यौ०—घतां-घत, घता-घत, घत्तां-घत्त, घत्ता-घत्त।

सं०स्त्री०—१ बुरी बान, कुटेव, लत। उ०—मिंदर, तीरथ, मंत्र, व्रत माळा, मोटी भूल मिटाई। पिंड नख दरसण घत जिलजापण, फिर क्यों सिरड़ फंसाई।—ऊ.का.

२ जिद्द, दुराग्रह।

रू०भे०—घत्त।

घतकार—देखो 'दुतकार' (रू.भे.)

घतकारणो, घतकारबो—देखो 'दुतकारणो, दुतकारबो' (रू.भे.)

घतकारणहार, हारो (हारी), घतकारणियो—वि०।

घतकारिओड़ो, घतकारियोड़ो, घतकारचोड़ो—भू०का०कृ०।

घतकारीजणो, घतकारीजबो—कर्म वा०।

घतकारियोड़ो—देखो 'दुतकारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घतकारियोड़ी)

घतराठ, घतरासट, घतरास्ट-सं०पु० [सं० धृतराष्ट्र] विचित्रवीर्य के क्षेत्रज पुत्र तथा दुर्योधन के पिता एक प्रसिद्ध राजा जो जन्मान्ध थे।

रू०भे०—घयरठ्ठ, घयराठ, धायरट्ठ, धायराठु, धित्रासट, ध्रतरास्ट्र।

घता-सं०स्त्री०—१ ३१ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष।

२ हाथी को जोश दिलाने का शब्द। उ०—पीलवांण कूंभाथळां माथै पगारा आंगूठा चलावै छै। गज-वाग खैंचै छै। घता घता करै छै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—घत्ता।

यौ०—घताघता, घत्ता-घत्ता।

घतानंद-सं०पु०—प्रत्येक चरण में दश और सात पर विश्राम से १७ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष।

रू०भे०—घत्तानंद।

घतो-वि०—दुराग्रही, जिद्दी।

घतूंरो—देखो 'धतूरो' (रू.भे.)

उ०—माहरइ मनि एह जि मति गमइ।, आदरीउ नवि तिजीइ किमइ। ईसर कुसुम घतूंरा तणइ। नवि ऊतजिइ उत्तमपणइ।

—विद्याविलास पवाडउ

घतूर-सं०पु०—१ एक प्रकार का लोक गीत जो कायस्थों में प्रसव के बाद छठी के दिन गाया जाता है।

२ देखो 'धतूरो' (मह., रू.भे.)

घतूरउ—देखो 'घतूरौ' (रू.भे.)

उ०—धोवा वि तिनि खाय घतूरउ, चाढइ भसम ऊखधी चाढ़ि। वासउ गिरे कंदरे वासइ, तां गहिलां सरिस न कीजइ वाद।
—महादेव पारवती री वेलि

घतूरौ-सं०पु० [सं० धुस्तुर] दो तीन हाथ ऊंचा एक पौधा जिसके पत्ते सात-आठ अंगुल तक लंबे और पांच छः अंगुल चौड़े तथा नोंकदार होते हैं। इसके फूल सफेद रंग के होते हैं और फलों के बीज बड़े जहरीले होते हैं जो औषध और नशे के लिए काम आते हैं।

रू०भे०—घतूंरौ, घतूरउ, घत्तूरउ, धत्तूरौ।

अल्पा०—घतूरियौ, घतूरियउ।

मह०—घतूर, घत्तूर।

घतौ-सं०पु० [अनु० घत] १ किसी को भ्रम में डालने की क्रिया या भाव. २ धोखा, छल।

क्रि०प्र०—दैणौ, वताणौ।

रू०भे०—घत्तौ।

घत्त—देखो 'घत' (रू.भे.) उ०—हुवै घत्त लोहित्त मैमत्त हाला। नसा रा किसा पार सूळां निवाळा। मधू-मास आसोज में रास मंडै। तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडै।—मे.म.

उ०—२ रजी ऊमटै वोम नूं रोसरत्ता। घुआंधार चारक्खिआं घत्त-घत्ता।—वचनिका

घत्ता—देखो 'घता' (रू.भे.) उ०—मदमत्ता घूमता वाळ घत्ता घत्ता चहुंवळ। दुपत्ता चेळा दत्ता वयंड फवता व्रिंदाचळ।
—महादांन महड़ू

घत्तानंद—देखो 'घतानंद' (रू.भे.)

घत्तूर—देखो 'घतूरौ' (मह., रू.भे.)

घत्तूरउ—देखो 'घतूरौ' (रू.भे.) (उ.र.)

घत्तूरियउ—देखो 'घतूरौ' (अल्पा., रू.भे.) (उ.र.)

घत्तूरौ—देखो 'घतूरौ' (रू.भे.)

घत्तौ—देखो 'घतौ' (रू.भे.)

घघक-सं०स्त्री० [अनु०] १ आग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया या भाव, आग की भड़क। उ० घमक वाज धर धूज उड सौर वाळी घघक, यळा धक अताळी वोहत लीधौ। कमाळी चंद री तरह 'वखतै' कमंध, कराळी सेन विच दुरंग कीधौ।—पीरदांन आढ़ौ

२ लपट, लौ. ३ क्रोध, आवेग. ४ दुर्गन्ध, बदबू।

घघकणौ, घघकवौ-क्रि०अ० [अनु०] १ आग का इस प्रकार जलना कि लपट ऊपर उठे. २ क्रोधित होना। उ०—छोडै दुलहण छेंट, 'धीर' घघकै ऊठियौ।—गो.रू.

३ बदबू देना।

घघकणहार, हारौ (हारी), घघकणियौ—वि०।

घघकिओड़ौ, घघकियोड़ौ, घघक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घघकीजणौ, घघकीजवौ—भाव वा०।

घघक्कणौ, घघक्कवौ—रू०भे०।

घघकाड़णौ, घघकाड़वौ—देखो 'घघकाणौ, घघकावौ' (रू.भे.)

घघकाड़णहार, हारौ (हारी), घघकाड़णियौ—वि०।

घघकाड़िओड़ौ, घघकाड़ियोड़ौ, घघकाड़योड़ौ—भू०का०कृ०।

घघकाड़ीजणौ, घघकाड़ीजवौ—कर्म वा०।

घघकणौ, घघकवौ—अक०रू०।

घघकाड़ियोड़ौ—देखो 'घघकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घघकाड़ियोड़ी)

घघकाणौ, घघकाबौ-क्रि०स० [अनु०] १ आग को इस प्रकार जलाना कि उस में से लपट उठे. २ क्रोधित करना.

३ बदबू उत्पन्न करना।

घघकाणहार, हारौ (हारी), घघकाणियौ—वि०।

घघकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

घघकाईजणौ, घघकाईजवौ—कर्म वा०।

घघकणौ, घघकवौ—अक०रू०।

घघकाड़णौ, घघकाड़वौ, घघकावणौ, घघकाववौ—रू०भे०।

घघकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ लपट उठाया हुआ. २ क्रोधित किया हुआ. ३ बदबू उत्पन्न किया हुआ।

(स्त्री० घघकायोड़ी)

घघकारणौ, घघकारवौ-क्रि०स० [अनु०] १ उत्तेजित करना.

२ बैलों का हाँकना। उ०—धोळा घघकारेह, हळ लारै हलियौ नहीं। दुरभख दरवारेह, भमियौ पेटज भरण नै।—अज्ञात

३ देखो 'दुत्कारणौ, दुत्कारवौ' (रू.भे.)

घघकारणहार, हारौ (हारी), घघकारणियौ—वि०।

घघकारिओड़ौ, घघकारियोड़ौ, घघकारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

घघकारीजणौ, घघकारीजवौ—कर्म वा०।

घघकारिओड़ौ-भू०का०कृ०—१ उत्तेजित किया हुआ. २ बैलों को हाँका हुआ. ३ देखो 'दुत्कारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घघकारियोड़ी)

घघकावणौ, घघकाववौ—देखो 'घघकाणौ, घघकावौ' (रू.भे.)

घघकावणहार, हारौ (हारी), घघकावणियौ—वि०।

घघकाविओड़ौ, घघकावियोड़ौ, घघकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घघकावीजणौ, घघकावीजवौ—कर्म वा०।

घघकणौ, घघकवौ—अक०रू०।

घघकावियोड़ौ—देखो 'घघकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घघकावियोड़ी)

घघकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ प्रज्वलित, घघका हुआ.

२ क्रोधित हुवा हुआ. ३ बदबू दिया हुआ।

(स्त्री० घघकियोड़ी)

घघक्कणौ, घघक्कवौ—देखो 'घघकणौ, घघकवौ' (रू.भे.)

उ०—ईख भांण आरांण तमासौ तुरी तांण ऊभौ, वारंगां विवांण

हुवकै, काया मंगां बोम । फीलां झंडा फरक्कै, धमक्कै घावां तनां फावै, घघक्कै लोयणां क्रोध, जुडै रूपी धोम ।—बुधसिंह सिंढ़ायच

घघक्रियोड़ो—देखो 'घघकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घघक्रियोड़ी)

घघमा–वि०स्त्री०—बेडौल शरीर की ? उ०—छोरी-री मासी हँस'र कयो—'पण कंवरजी-री खांमणी ओछी है अर छोरी दोलई हाड है। कठेई······ ।' बीच-में-ई बात काट'र हीरकी बोली—'ओ-हो-हो ! किसी बात करै है। वां रै घर वाळा सगळा-रा सगळा ओछै खांमणै-रा ईज है। कंवरजी-री दादी तो घघमा-री घघमा है पण दादोजी है गैण-गट्ट दाई।'—वरसगांठ

घघियो—देखो 'घ वर्ण' (रू.भे.)

घघूकणो, घघूकबो–क्रि०अ० [अनु०] कम्पायमान होना, थर्राना।
उ०—वहै थाट दहुं वळां, सरां नदियां जळ सूकै। चाकै दहुं दळ चढ़ै, धरा गुजरात घघूकै।—सू.प्र.
घघूकणहार, हारौ (हारी), घघूकणियौ—वि०।
घघूकिओड़ो, घघूकियोड़ो, घघूक्योड़ो—भू०का०कृ०।
घघूकीजणो, घघूकीजबो—भाव वा०।

घघूकाड़णो, घघूकाड़बो—देखो 'घघूकाणो, घघूकाबो' (रू.भे.)
घघूकाड़णहार, हारौ (हारी), घघूकाड़णियौ—वि०।
घघूकाड़िओड़ो, घघूकाड़ियोड़ो, घघूकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
घघूकाड़ीजणो, घघूकाड़ीजबो—कर्म वा०।
घघूकणो, घघूकबो—अक० रू०।

घघूकाड़ियोड़ो—देखो 'घघूकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घघूकाड़ियोड़ी)

घघूकाणो, घघूकाबो–क्रि०स० [अनु०] कम्पायमान करना।
घघूकाणहार, हारौ (हारी), घघूकाणियौ—वि०।
घघूकायोड़ो—भू०का०कृ०।
घघूकाईजणो, घघूकाईजबो—कर्म वा०।
घघूकणो, घघूकबो—अक० रू०।
घघूकाड़णो, घघूकाड़बो, घघूकावणो, घघूकावबो—रू०भे०।

घघूकायोड़ो–भू०का०कृ०—कम्पायमान किया हुआ।
(स्त्री० घघूकायोड़ी)

घघूकावणो, घघूकावबो—देखो 'घघूकाणो, घघूकाबो' (रू.भे.)
घघूकावणहार, हारौ (हारी), घघूकावणियौ—वि०।
घघूकाविओड़ो, घघूकावियोड़ो, घघूकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
घघूकावीजणो, घघूकावीजबो—कर्म वा०।
घघूकणो, घघूकबो—अक० रू०।

घघूकावियोड़ो—देखो 'घघूकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घघूकावियोड़ी)

घघूणणो, घघूणबो—देखो 'धंधोळणो, धंधोळबो' (रू.भे.)
उ०—नाहर नव गजो हुवै, गढ़ां करै सिर गाज। कचेड़ी 'अगजीत' री घघूणै धनराज।—धनजी भीमजी री गीत
घघूणणहार, हारौ (हारी), घघूणणियौ—वि०।
घघूणिओड़ो, घघूणियोड़ो, घघूण्योड़ो—भू०का०कृ०।
घघूणीजणो, घघूणीजबो—कर्म वा०।

घघूणियोड़ो—देखो 'धंधोळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घघूणियोड़ी)

घघौ–सं०पु० [सं० घ] वर्णमाला का घ अक्षर।
उ०—घरौ सीख मोटां नी एम कह्यो घघै। बाळक जीव्या हुंस पड़्या घाजै वधै।—ध.व.ग्रं.

घनंक—देखो 'धनुस' (रू.भे.)

घनंककंध–सं०पु० [सं० धनुष+स्कंध] धनुपाकार कंधे वाला घोड़ा।

घनंकी—देखो 'धांनंकी' (रू.भे.)
उ०—रहचण दससिर जिसा असह मभ राड़ रे। वेढ़क अंकी वार घनंकी धाड़ रे।—र.ज.प्र.

घनंख—देखो 'धनुस' (रू.भे.) उ०—१ कर मूठ घनंख छूट विसक्खं, लेखा पक्खं सर लक्खं। वध सूर हरक्खं और विलक्खं, चाव परक्खं रवि चक्खं।—रा.रू.
उ०—२ राज वभीखण लाज राखण, सरणागत साधारण। घनंख सायक भुजां धारण, मह असुर खळ मारण।—र.ज.प्र.

घनंखी—देखो 'धांनंकी' (रू.भे.)

घनंजय–सं०पु० [सं०] १ अर्जुन का एक नाम (ह.नां., अ.मा.)
उ०—एहिज परि थई भीरि कजि आयां, घनंजय अनै सुयोधन। मासै मगसिर भलद्र जु मिळियो, जागिया मींट जनारजन।—वेलि.
२ अर्जुन नामक वृक्ष. ३ अग्नि, आग (अ.मा.). ४ भगवान विष्णु. ५ एक नाग जो जलाशयों का अधीश्वर माना जाता है. ६ शरीरस्थ दश वायुओं में से एक. ७ पवन (अनेक.)
वि०—धन को जीतने अर्थात् प्राप्त करने वाला।
रू०भे०—घनंजै, घेनंजय।

घनंजै—देखो 'घनंजय' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—घनंजै बांण रो दंती उडांण रो गदा-धीस, दूठ चक्रवती सो आंण रो जंबूदीप। हणू ज्यूं पांण रो बोध जांण रो आरूढ़-हंस, मांण रो द्रजोण वंस रांण रो महीप।—हुकमीचंद खिड़ियौ

घनंतर–सं०पु० [सं०धन्वंतरि] १ समुद्र मंथन के समय और चौदह रत्नों के साथ समुद्र से निकलने वाले देवताओं के वैद्य।—पौराणिक
उ०—१ पांगळा खड़ै जमदूत फीटा पड़ै, जोखमी ऊघड़ै नयण जूटी। दिया वरदांन मंतर महादेव रा, वभूती घनंतर तणी बूंटी।
—मे.म.
उ०—२ नमो हरि आप घनंतर होय। नमो सब रोग-निवारक कोय।—ह.र.
यौ०—घनंतर-वैद।
२ चौबीस अवतारों में से एक (अ.मा.)

रू०भे०—धंतरजी, धंत्रणी, घनंतरजी, धनवंतरी, धानंतर, धांनतर, घनत्तर, धन्नंतरि।

३ देखो 'धनेर' (रू.भे.) (मेवाड़)

घनंतरजी—१ देखो 'धंतरजी' (१) (रू.भे.)

२ देखो 'धनंतर' (रू.भे.)

घनंद-सं०पु० [सं० धनदः] इन्द्र का कोषाध्यक्ष, कुबेर (हनां., अ.मा.)

घनंवर—देखो 'धनुधारी' (रू.भे.)

धन-सं०पु० [सं०] १ धन-दौलत, द्रव्य। उ०—१ क्रिपण जतन धन रौ करै, कायर जीव जतन्न। सूर जतन उण रौ करै, जिण रौ खाधौ अन्न।—वां.दा.

उ०—२ सदा करै सनमांन, मीठा बोलै हँस मिळै। दिए धरा धन दांन, जस खाटै ठाकुर जिकै।—वां.दा.

पर्याय०—अरथ, कसवर, गरथ, ग्रहमंडण, घरमंड, जळ, दिरव, द्युमण, द्रवण, धण, निध, निधांन, नूतनसुख, वित्त, मनरंजण, माया, माल, सद्रव, रिकथ, रिध, रै, लखमी, वसू, विभव, वुसत, संपति, सव, सार, स्व, स्वापतेय, हरिन, हेम।

मुहा०—धन उडाणौ—धन को तुरंत खर्च कर डालना।

यौ०—धन-धान्य।

२ लक्ष्मी।

यौ०—धन-तेरस।

३ सम्पत्ति, जमीन, जायदाद आदि. ४ चौपायों का झुण्ड जो किसी के पास हो, गो-धन, पशु-धन। उ०—१ न्हावण पांणी ओर है, मिनखां.पीवण ओर। धांमण धन नै दूसरौ, लूआं मुरधर जोर।—लू

उ०—२ नीपणां वित वाहर कोण नड़ै, चारणां धन खोस लियौ चवड़ै।—पा.प्र.

मुहा०—१ धन पड़णौ—देखो 'धन भिळणौ'. २ धन भिळणौ—गाय, भैंस, बकरी आदि का गर्भवती होना।

यौ०—धन-वाळ।

५ गणित में जोड़ी जाने वाली संख्या या जोड का चिन्ह.

६ मूलधन, पूंजी. ७ जन्म कुंडली में जन्म लग्न से दूसरा स्थान.

रू०भे०—धनउ, धनु।

८ देखो 'धनु' (२) (रू.भे.) (नां.मा.) ९ देखो 'धन्य' (रू.भे.)

उ०—१ आजूणउ धन दीहड़उ, साहिब-कउ मुख दिट्ठ। माथा भार उळत्थियउ, आंख्यां अमी पयट्ठ।—ढो.मा.

उ०—२ निज मुख रुख सेव करावी नांही, दाखै धन धन जांबूदीप। चूंडाहरा उवारण चौजां, मौजां अै हिज 'मांन' महीप।—वां.दा.

उ०—३ धन दीहाड़ौ, धन घड़ी, धन वार, धन मोहरत, धन वेळा, जकौ राज पधारिया।—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

उ०—४ 'भारा' तौ धन भाग, जाड़ेचा दाखै जगत। तीखौ खाग तियाग, 'जेहल' बेटौ जनमियौ।—वां.दा.

उ०—५ पूरव भव्र तणइ करमसंयोगि, पांणिग्रहण इण परि हूउं ए। बोलइ मुनिवर हीराणंद धन नर, जीह वंछित फळ ए।

—विद्याविलास पवाडउ

१० देखो 'धण' (रू.भे.) उ०—१ त्रीजै पहरै रैण कै, मिळिया तेहा-तेह। धन नहिं धरती हुइ रही, कंत सुहावौ मेह।—ढो.मा.

उ०—२ प्रिय बोलावै धन रोवती जाई। सूनउ मंदिर मेल्हइ छै धाह। सा धन कुरळइ मोर ज्युं। पांच पडोसण वैठी छइ आय।

—बी.दे.

११ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.) उ०—धनंख तणइ धनकार करइ धन, विढ़वा भुव नीमिजइ जिवार। इकवीसै ब्रहमंड अउइबइ, सहइ न वासंग भार-सहार।—महादेव पारवती री वेलि

रू०भे०—धन्न।

धनईस-सं०पु० [सं० धनेश] कुबेर, धनपति (डि.को.)

उ०—अंग वांम वांणि धनईस, सव कीध प्रसण सुरीस। जिण वार निप 'जैसाह', छति(वि) निरखि वरि अवछाह।—रा.रू.

धनउ—१ देखो 'धन' (रू.भे.) २ देखो 'धन्य' (रू.भे.)

उ०—लागउ तेथ करण मांजणउ लाडउ, इंद्र सुर कहइ धनउ दिन आज। जांणै कमळ सरोवर जाडा, कर मांडिया चरणोदक काज।

—महादेव पारवती री वेलि

धनक-सं०पु० [देश०] १ स्त्रियों के ओढने का एक रंगीन वस्त्र.

२ एक प्रकार का पतला गोटा.

[सं० धनुप] ३ हथेली में होने वाला धनुषाकार सामुद्रिक चिन्ह विशेष। उ०—परचंड दंड हर गदा पांणि। विहुवै अकार वणि धनक बांणि —सू.प्र.

रू०भे०—धणक, धणख, धनख।

४ देखो 'धनुस' (रू.भे.) उ०—धू दिस रळिया राज अमीणौ घर जां सोवै। तोरण धनक समांण रूपाळी रंगत होवै। वाल्हौ रुंख मंदार सबखै फूलां भरियौ। ऊभौ जेथ अमोल मो धण-वाछळ हरियौ।—मेघ.

धनकणौ-वि० [सं० धनुष+रा० णौ] इन्द्र धनुप के समान।

उ०—कांमण दांमण कोर धनकणा चित्र सुहावै। जळहर गाजण घोक म्रदंगां साज लुभावै। नीर निरमळा, रतन भोम, घर उरसां ढूकै। अलका थारी होड करण में इती न चूकै।—मेघ.

धनकधर—देखो 'धनुरधर' (रू.भे.) उ०—पगि पगि पउळि-पउळि हस्ती की गज-घटा। ती ऊपरि सात-सात सइ धनक-धर सांवठा।

—अ. वचनिका

धनकर-वि० [सं० धनम्+कर] धन पैदा करने वाला।

धनकार-सं०स्त्री० [सं० धनुष्टङ्कार] धनुष की प्रत्यञ्चा को खींच कर छोडने से उत्पन्न ध्वनि, धनुष्टङ्कार। उ०—धनक तणइ धनकार करइ धन, विढवा भुव नीमिजइ जिवार। इकवीसै ब्रहमंड अउइबइ, सहइ न वासंग भार-सहार।—महादेव पारवती री वेलि

धनकुबेर-सं०पु०यौ० [सं० धनकेलि] वह जो धन में कुबेर के समान हो।

घनकेळि-सं०पु० [सं० घनकेलि] कुबेर।
घनख—१ देखो 'धनक' (रू.भे.)
२ देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—१ साह द्वार अभसाह, जांम नरनाह सपत्ती, जुड़ै लोक बाजार, न को पहुहै निरखंतो। रांम धनख भंजवा, जनकपुर जांणे आयौ, कना कांन्ह मधुपुरी, सोभ सुंदर दरसायौ।—रा.रू.
उ०—२ घनख बंदूक बीस लख धारा। अभि नीसांण हजार अठारा।
—सू.प्र.
घनख-धारण—१ देखो 'धनुरधर' (रू.भे.)
२ देखो 'धनुस-धरण' (रू.भे.)
उ०—भभीखण सरण आय भूधर, महर कर मन मोट। धुरधमळ ब्रवियौ घनख-धारण, कनक वाळो कोट।—र.ज.प्र.
घनखु—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—अति धणुहु जूनुं एहु तूय सांमि सवळ्ं देहु। इम भणी रहिउ भीमु सो धनुखु नांमइ कीमु।—पं.पं.च.
घनगैलो-वि०यौ० [सं० धनम्+राज० गैलो] (स्त्री० घनगैली) १ अधिक धन के कारण पागल. २ अपने धन का घमण्ड करने वाला, अभिमानी।
घनतेरस-सं०स्त्री० [सं० धन त्रयोदशी] दीपावली के दो दिन पहले पड़ने वाली कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी।
वि०वि०—यह दिन धन्वंतरि का जन्म-दिवस माना जाता है। विशेषत: धन प्राप्ति के लिए यह बड़ा शुभ दिन माना जाता है। इस दिन रात को लक्ष्मी-पूजन होता है।
घनत्तर—देखो 'धनंतर' (रू.भे.)
घनद-सं०पु० [सं० धनद:] १ कुबेर, धनेंद्र (डिं.को.). २ अग्नि, आग. ३ चित्रक वृक्ष. ४ ४६ क्षेत्रपालों में से ३५ वां क्षेत्रपाल।
वि०—धन देने वाला, दाता।
रू०भे०—घनदि।
घनदतीरथ-सं०पु० [सं० धनदतीर्थ] व्रज के अन्तर्गत कुबेर तीर्थ।
घनदांण—देखो 'धणदांण' (रू.भे.)
घनदा-सं०स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण एकादशी का नाम।
वि०स्त्री०—धन देने वाली।
घनदि—देखो 'धनद' (रू.भे.)
उ०—घनदि-हि सइं हथि थापिय वापी अ वर आरांमि।
—नेमिनाथ फागु
घनदेव-सं०पु० [सं०] धनपति, कुबेर।
घनधारी-वि० [सं० धनधारिन्] सम्पन्न, धनाढ्य। उ०—अनहद नहिं धारी विखम विकारी धनधारी धोकंदा है। अगली घर ऊंची चेडत चूंची, कड़ कूंची कोकंदा है।—ऊ.का.
सं०पु०—कुबेर, धनेंद्र।
घननाथ-सं०पु० [सं०] कुबेर, धनेश।
घनपत, घनपति, घनपती, घनपत्त, घनपत्ति, घनपत्ती-सं०पु० [सं० धन-पति] कुबेर, धनेश। उ०—१ धनपत सैणां सिमु तपै वठ मनमथ जांणै। भंवर-प्रत्यंचा-बांण डरपतौ हाथ न आंणै।—मेघ.
उ०—२ वरुण इंद सिव ब्रह्म धरम नारद धनपत्ती। 'अजन' विप्र उच्चारि करै इण पर कीरत्ती।—रा.रू.
घन-पाळ-वि० [सं० धनपाल] धन का रक्षक।
घन-वाद—देखो 'धन्यवाद' (रू.भे.)
घनरसभाव-सं०पु० [देश०] हाथी की एक बीमारी जिसमें हाथी का शरीर सब सूज जाता है, वात का दौरा हो जाता है, हड्डियें अकड़ जाती हैं।
घनराज-सं०पु० [सं०] कुबेर, धनेश। उ०—देवी मन्नछा माइया जग माता, देवी ब्रह्म गोवींद संभु विधाता। देवी सिध्धि रै रूप नव नाथ साथं, देवी रिध्धि रै रूप धनराज हाथं।—देवि.
घनवंत-वि० [सं०] धनवान, धनाढ्य, धनी। उ०—१ पह चाळक धनवंत पुर, लांठै लूट लियाह। कांठै नदी कवेरजा, खेमा खड़ा कियाह।
—बां.दा.
उ०—२ लख लोक वसै धनवंत सुपह, सोहै रूप सुघाट रो। गहतंत विकट जोधांण गढ़, वणै मुकट वैराट रो।—सू.प्र.
रू०भे०—धनवंती, धनवंतो।
घनवंतरी—देखो 'धनंतर' (रू.भे.)
घनवंती, घनवंतो— देखो 'धनवंत' (रू.भे.)
उ०—१ सूंब सूंब कहै सरब दिन, जाचक पाड़ै बूंब। सिद्ध दिगंबर बाजही, ज्यूं धनवंतो सूंब।—बां.दा.
उ०—२ हाय 'धनवंते-रै कांटो लागै सार करै सै-कोई, निरधनियो डूंगर-सूं गुड़ग्यो सार न लेवै कोई।'—वरसगांठ
घनव—देखो 'धनु' (रू.भे.)
घनवती-सं०स्त्री० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र।
वि०स्त्री०—धन रखने वाली, धनवान। उ०—प्रजा पाळियां राज री, आंमद बढै अनंत। देख प्रजा नूं धनवती, खुसी होय जसवंत।
—राजसिंह कूंपावत री वात
घनवांन—देखो 'धनवंत' (रू.भे.) उ०—पोसप्प पांन क्पूर प्रिथवी, वणत जग धनवांन ए। इधकार तीरथ जात उद्दम, आदि सुरनदि आंन ए।—रा.रू.
घनवाद—देखो 'धन्यवाद' (रू.भे.)
घनवाळ-सं०पु० [सं० धन+आलुच्] मवेशियों का पालन-पोषण कर के जीवन निर्वाह करने वाला। उ०—१ विचि आयल लूंटत चार वळा। रन मांझल म्हे धनवाळ रुळा।—पा.प्र.
उ०—२ थित थंभ थळवट राय नै, कैहै तेडियो इण काज। धनवाळ ले जायल धणी, आवियो 'सारंग' आज।—पा.प्र.
घनस—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
घनसपुरी-सं०स्त्री० [देश०] स्त्रियों के ओढ़ने का एक वस्त्र विशेष।

उ०—बनी भांत बतावौ हे किसीक ल्यावां घनसपुरी। बना हरया हरया पल्ला जी क लहरचा भांत घनसपुरी। बनी ओढ़ बतावौ हे किसीक सोहवें नसपुरी।—लो.गी.

धनसारथवाह–सं०पु० [सं० धन+सार्थवाह] १ २३ वाँ तीर्थंकर को प्रथम बार भिक्षा देने वाला एक राज गृह निवासी धन नामक सेठ।

उ०—ग्यांनातिसय केवळग्यांन तणउ, तत्व तउ पंचपरमेस्टिनमस्कार तणउ, दांन तउ घनसारथवाह तणउ।—व.स.

धनसूरा–सं०स्त्री०—राठोड़ों के प्रसिद्ध १३ वंशों में से एक ंश (बां.दा. ख्यात)

धनस्वांमी– ०पु० [सं०] कुबेर।

धना—देखो 'धनासी' (रू.भे.)

धनागरउ–सं०पु० [सं० धान्य+आगर] अन्न का भण्डार (उ.र.)

धनाडच, धनाढ़्य–वि० [सं० धनाढ़्य] धनवान, धनी, मालदार।

उ०—१ गुमुडे गरिमादिक ग्यांन गुनाडच, रुड़ रुड़ श्रंवक ध्यांन धनाडच। अिवै वसुधा विन व्याज विचित्र, महाजन पुन्य जनेस्वर मित्र।—ऊ.का.

धनाधन–क्रि०वि० [अनु०] बिना रुके हुए, जल्दी-जल्दी, लगातार.

धनाधिप, धनाधेप–सं०पु० [सं० धनाधिप] १ कुबेर, धनेश. २ यक्ष।

धनाध्यक्ष–सं०पु० [सं०] १ कुबेर. २ कोषाध्यक्ष।

धना-वंसी—देखो 'धनावंसी' (रू.भे.)

धनारथी–वि० [सं० धनार्थिन्] धन चाहने वाला, रुपया पैसा मांगने वाला।

धनावंसी–सं०पु०यौ० [रा० धनौ+सं० वंशिन्] रामानन्दजी के शिष्यों में धन्ना जाट भी था। इसी के द्वारा दीक्षित साधु धन्नावंशी कहलाये। इनका आचार व्यवहार रामानन्दी साधुओं का सा है। ये जोधपुर और बीकानेर में बहुत हैं। इनका भेष रामानन्दी साधुओं का सा है। रामानुज संप्रदाय का तलक लगाते हैं। खेती, मजदूरी, मंदिरों की पूजा करते हैं और भीख भी मांगते हैं। पर रोटी किसी के हाथ की नहीं खाते। अपनी ही जाति में विवाह करते हैं। विष्णु के सिवाय किसी देवता को नहीं मानते।

धनास–सं०स्त्री० [सं० धन+आशा] धन की आशा।

उ०—धनास मात्र के सुपात्र छात्र धावते नहीं। अनाथ साथ हाथ आथ अन्न पावते नहीं।—ऊ.का.

धनासरी, धनासी, धनाली–सं०स्त्री [सं० धनाश्री] एक रागिनी जो हनुमत् के मत से श्रीर की तीसरी पत्नी मानी जाती है (संगीत) (ह.पु.वा.) उ०—दोय घड़ी दिन चढ़ियां धनासरी में वाघौ कोट-ड़ियो, तीसरे पौ'र समेरी में रिड़मल, रात रो सोढ़ो महंद रो गीत गवीजे।—बां.दा. ख्यात

रू०भे०—धना, धन्यासिरी, धन्यासी।

धनि—१ देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—१ मारवणी इम वीनवइ, धनि आजूणी राति। गाहा गूढ़ा-गीत-गुण, कहि का नवली वाति।—ढो.मा.

उ०—२ सु धन्य माता कौसल्या, तात दसरथ धनि भूपति। अवधि पूरि धनि जवनि, प्रिया धनि सीत तास पति।—सू.प्र.

२ देखो 'धनी' (रू.भे.)

धनिक–वि० [सं०] जिसके पास धन हो, धनाढ्य।

सं०पु०—१ धनी मनुष्य. २ महाजन. ३ पति. ४ स्वामी।

धनिसा, धनिस्ठा–सं०स्त्री० [सं० धनिष्ठा] सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवां नक्षत्र।—गजमोख

उ०—चैत मास पख चांदणे, सातम तिथि सकाज। अर धनिसा वसपत अवर, सुक(भ) नक्षत्र पुखराज।—बगसीरांम प्रोहित री वात

रू०भे—धनीसा, धनेस्ठा।

धनौं, धनी–वि० [सं० धनिन्] १ धनवान, मालदार।

उ०—फिरियौ पछिवाउ उत्तार फरहरियौ, सहुए सूहव उर सरग। भुयंग धनी प्रथमी पुड़ भेदे, विवर पैठा वे वरग।—वेलि.

२ जिसके पास कोई गुण आदि हो।

सं०पु०—धनवान पुरुष।

रू०भे०—धणी, धनि।

धनीसा—देखो 'धनिस्ठा' (रू.भे.)

धनु–सं०पु० [सं०] १ धनुष, कमान, चाप।

उ०—१ स्री रघुनाथ समत्थ, हत्थ धारण धनु सायक। सेवक सरण सधार, लेख सेवै पद लायक।—र.ज.प्र.

उ०—२ प्राक्रो राख जनक तणो पण, मोड़ खळां दळ मांनको। धींग भुजां सत खंड करी धनु, जेण वरी प्रिय जांनकी।—र.ज.प्र.

रू०भे०—धंण, धनु, धणुं, धणु, धणुह, धणू, धनव, धुण, धेनु, धेन्न।

अल्पा०—धंणी, धणिउ, धणी, धणुहि, धणुही, धणुहीय, धनुहडी, धनुहर, धूंणी, धूंणौ, धूणौ।

२ ज्योतिष की बारह राशियों में से नवीं राशि।

रू०भे०—धन, धन्न।

३ फलित ज्योतिष में एक लग्न. ४ हठयोग के एक आसन का नाम.

५ देखो 'धन' (रू.भे.) (उ.र.)

६ देखो 'धेनु' (रू.भे.)

धनुओ—देखो 'धनुस' (अल्पा., रू.भे.)

धनुक—देखो 'धनस' (रू.भे.)

धनुकबाई–सं०स्त्री० [सं० धनुर्वात] लकवे की तरह का एक वायु रोग।

धनुख, धनुखि—देखो 'धनुस' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—१ अत परमळ पसर पसरिया आंवा, सुक पिक बोलै सुखद सराग। रतिपति तांणे धनुख जठै रुच, बरसांणे देखण ज्यूं बाग।—बां.दा.

उ०—२ मंगल क्षेत्र खेडावई, कांम कटारउं वांधइं, धनुखि बांण सांधइ, अनंत वासिगु अन्त्रित भरइ।—व.स.

घनुजय–सं०पु० [सं० धनंजय] अर्जुन (अ.मा.)
घनुद–सं०पु० [सं० धनदः] कुबेर, धनेश (अ.मा.)
धनुधर—देखो 'धनुरधर' (रू.भे.) (डिं.को.)
धनुधारी—देखो 'धनुरधारी' (रू.भे.)
धनुभ्रत–सं०पु० [सं० धनुभृंत] धनुष धारण करने वाला, योद्धा, वीर (हिं.को.)

धनुरजग–सं०पु० [सं० धनुर्यज्ञ] एक यज्ञ जिसमें धनुष का पूजन तथा उसके चलाने आदि की परीक्षा होती है।
धनुरद्धर, धनुरधर–सं०पु० [सं० धनुर्धरः] धनुष धारण करने वाला व्यक्ति, तीरंदाज। उ०—१ वालवंध अंगरक्ष वीरमहर धनुरद्धर।
—व.स.

उ०—२ देवांगना वीर वरइं, विद्याधरी पुसपव्रिस्टि करइं, धनुरधर वांण तणी स्रोणि वावरइं।—व.स.
रू०भे०—धनकधर, धनखधारण धनुधर, धनुरधर, धनुसधरण।
धनुरधारी–सं०पु० [सं० धनुर्द्धारिन्] धनुर्द्धर, तीरंदाज, कमनैत, योद्धा, वीर।
वि० (स्त्री० धनुरधारणी, धनुरधारिणी) धनुष धारण करने वाला।
रू०भे०—धनुधारी।
धनुरवात–सं०पु० [सं० धनुर्वात] १ एक वायु रोग जिसमें शरीर धनुष की तरह झुक कर टेढ़ा हो जाता है। रू०भे०—धनुकवाई।
धनुरविद्या–सं०स्त्री० [सं० धनुर्विद्या] धनुष चलाने की विद्या।
धनुरवेद–सं०पु० [सं० धनुर्वेद] १ वह शास्त्र जिसमें धनुष चलाने की विद्या का निरूपण हो। उ०—कमळभू ब्रह्मा तणी वेटी, कमळ-मुखी, राजहंसवाहिनी, अनेक वेदवेदांकसास्त्र धरती, आयुरवेद धनुर-वेद, सांमवेद, अथरविणवेद।—व.स.
२ धनुर्विद्या। उ०—राजा प्रतापि लंकेंद्र, सत्यवाचा हरिस्चंद्र, साहसिक विक्रमादित्य त्यागलीला करण्ण, प्रतिस्ठा युधिस्टर, धनुरवेद अरजुन, आग्या अजयपाळ, परनारी सहोदर गांगेय।
—व.स.

धनुवासर–सं०पु० [देश ?] पुष्प, फूल, सुमन (नां.मा.)
धनुस–सं०पु० [सं० धनुष] १ फनदार तीर फेंकने का वह अस्त्र जो काष्ट विशेष या लोहे के लचीले डंडे को झुका कर और उनके दोनों छोरों के बीच डोरी या तांत बांध कर बनाया जाता है, कमान।
पर्याय०—अड़ारटंकी, असत्र आयदा, आसयखु, इखुवास, कवांण, करणअस्त्र, कारमुख, कोदंड, चाप, तुजीह, धनु, पिनाक, विसकस, बांणासणी, सरासण, सारंग, सारंगी।
२ इंद्रधनुष। उ०—धनुस चढ़ावै सो धरा, इंद्र कढ़ावै आंण। करै न सांवण मास में, पंथी पंथ पयांण।—अज्ञात
३ ज्योतिष में एक राशि. ४ हठयोग का एक आसन.
वि०वि०—देखो 'धनुसासण'।
५ चार हाथ की एक माप। उ०—चाळीस धनुस सरीर।
—स.कु.को.

६ एक प्रकार का वात रोग विशेष। उ०—और उन्मादवात कटी-वात सीत अंग, ग्रिगीवात कंपवात सोफोदर अैन है। जळोधर अंड-व्रिद्धि धनुस चोवीस, रोग, ताकि कहै दंभ क्रिया वैद्य ग्रंथ वैन है।
—ध.व.ग्रं.

वि०—कुटिल, वक्र* (डिं.को.)
रू०भे०—धंनख, धणक, धणख, धनंक, गनंख, धनक, घनख, धनखि, धनस, धनूंख, धांनक, धांनक्ख, धांनख।
अल्पा०—धनुओ, धांनुक, धांनुख।
धनुसधर, धनुसधरण–सं०पु० [सं० धनुर्धरः] १ श्रीरामचन्द्र.
२ अर्जुन।
वि०—धनुष धारण करने वाला, तीरंदाज।
रू०भे०—धनख-धारण। ३ देखो 'धनुरधर' (रू.भे.)
रू०भे०—धांनख-धर, धांनुंखधार, धांनुखधर, धांनुखधार।
धनुसाकार–वि० [सं० धनुषाकार] धनुष के आकार का, टेढ़ा।
धनुसासन–सं०पु० [सं० धनुषासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन। इसमें दोनों पांवों को लंबा कर के बैठना होता है। इसके पीछे दाहिने हाथ से बांये पांव के अंगूठे को पकड़ कर एक पांव को लंबा रहने देकर और दूसरे पांव को खींच कर कान के पास लाया जाता है। इससे आलस्य दूर होकर कुंडलिनी चलायमान होती है।
धनुस्तंभ–सं०पु० [सं०] एक प्रकार का वात रोग विशेष (अमरत)

धनुहडी–सं०स्त्री०—देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)
उ०—इक जिसी सोवन कंब, लहिकइ वेणी लंब। मयणह धनुहडी ए, पणचइं फिर सही ए।—प्राचीन फागु-संग्रह
धनुहर—देखो 'धनु' (रू.भे.)
उ०—मोती मूल लहइ नहीं, धनुहर केम अकज्ज? नारि परठडी नाहुलइ, उत्तर अेक ज अज्ज।—मा.कां.प्र.
धनूंख—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—उपर जियां धनूंख उणिहारै, भंमर वंक पंकति भंवहारे।
—सू.प्र.

धनेर–सं०उ०लिं०—कौए से कुछ बड़े आकार का बड़ी चंचु वाला पक्षी विशेष जिसका मांस खाया जाता है।
वि०वि०—इसके मांस की गोलियां बना कर रख दी जाती हैं जो प्रसूता को प्रसव काल में प्रसूती रोग होने पर खिलाई जाती हैं जिससे रोग से मुक्ति मिल जाती है।
रू०भे०—धंतर, धनेरू।
अल्पा०—धनेरियो।
धनेरिया–सं०स्त्री०—परिहार वंश की एक शाखा।
धनेरियो–सं०पु०—१ परिहार वंश की धनेरिया शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'घनेर' (अल्पा., रू भे.)

उ०—घनेरियो पंछी कबूतर जिसो हुवै, लाल पग हुवै, पांखां लांबी हुवै, दिन रा दिखाई न देवै, रात रौ बोलै, सबदबे…बंधी ।
—वां.दा. ख्यात

घनेरू—देखो 'घनेर' (रू.भे.)

घनेस-संoपुo [संo घनेश] १ धन का स्वामी, धनपति, कुबेर (अ.मा.)

उ०—छत्रप्पती उछाह में, घनेस माल उद्धमैं।—सू प्र.

२ लग्न से दूसरा स्थान ।

रूoभेo—घन्नेस ।

घनेसरी—देखो 'घनेस्वरी' (रू.भे.)

घनेस्ठा—देखो 'घनिस्ठा' (रू.भे.)

घनेस्वर-संoपुo [संo घनेश्वर] धन का स्वामी, कुबेर ।

२ देखो 'घनेस्वरी' (रू.भे.)

घनेस्वरी-विo [संo घनेश्वर+राoप्रoई] धनाढ्य, धनवान ।

उ०—पाटण-सहर तठै अजैपाळ साह व्यापारी रहै । वडो घनेस्वरी ।
—पलक दरियाव री वात

रूoभेo—घनेस्वर।

घनौ-विo [संo धन+राoप्रoग्रो] १ धनाढ्य, धनवान ।

उ०—अमरौ मरतौ देखियौ, घनौ मांगै भीक । लिछमी छांणा वीणती, ठंठणपाळ ही ठीक ।—अज्ञात

यौo—घनौ-सेठ ।

३ देखो 'धन्य' (रू.भे.)

उ०—घनौ धन्य सो लोक जो नौक घोकै, वळै गौर हूं और वातां विलोकै ।—मे.म.

घनौ-सेठ-संoपुoयौo [संo धन+श्रेष्ठिन्] १ धनाढ्य व्यक्ति, धनवान पुरुष. २ इस नाम का एक धनाढ्य सेठ ।

घन्नंतरि—देखो 'घनंतर' (रू.भे.) उ०—घन्नंतरि मांदउं थाइ तणउ वैध ।—व.स.

घन्न—१ देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—पिंगळ पुत्री पदमिणी, मारवणी तिणि नांम । जोड़ी जोइ विचारियउ, घन्न विघाता कांम ।—ढो.मा.

२ देखो 'घन' (रू.भे.) उ०—आवियां सेव पावौ उतन्न, घर सहत वधारा विगुण घन्न ।—सू.प्र.

३ देखो 'धनु' (रू.भे.) उ०—अग जातै भायौ मनै, आयौ पोस अवन्न। पसरंतां उत्तर पवन, घर सीतळ रवि घन्न ।—रा.रू.

४ देखो 'धांन' (रू.भे.)

घन्नाट-क्रिoविo—शीघ्र, तेज ।

संoस्त्रीo—घन घन की ध्वनि, ध्वनि विशेष ।

घन्ना-वंसी—देखो 'घना-वंसी' (रू.भे.)

घन्नासिका-संoस्त्रीo [संo] एक रागिनी विशेष जिसका गायन वीररस या श्रृंगार रस में ही किया जाता है (संगीत)

घन्नेस—देखो 'घनेस' (रू.भे.) उ०—रटंत वधाई ग्रवै दासरत्थं, उधम्मेस ग्रोवेस घन्नेस ग्रत्थं ।—सू.प्र.

धन्य-विo [संo] पुण्यवान, श्लाघ्य, प्रशंसा के योग्य, वड़ाई के योग्य ।

उ०—१ धन्य कह्यौ सब ऊमरां, साहंस देख प्रचंड । हुवा सुरंगा वांण सुण, भुज लागा ब्रहमंड ।—रा.रू.

उ०—२ धन्य मात पितु धन्य घर, नांम धन्य निरघार । सरणायां साधार सुत, आतम रौ आधार ।—ऊ.का.

रूoभेo—धंण, घण, धन, धणिउ, धनि, घनौ, धन्न, धिन, धिनि, धिनौ, धिन्न ।

धन्य-वाद, धन्य-वाद-संoपुoयौo [संo धन्यवाद] १ वाह-वाह, साधुवाद, प्रशंसा, शाबाशी. २ किसी के उपकार के वदले में प्रशंसा ।

रूoभेo—धनवाद, धनवाद, धिन्नवाद ।

धन्यवादता-संoस्त्रीo [संo] शाबासी ।

रूoभेo—धिनवादता ।

धन्या-संoस्त्रीo [संo धन्या=उपमाता] माता, माँ ।

उ०—भूवा भगनी रा थळचट भिखियारी, धन्या कन्या रा गळकट हठ-धारी ।—ऊ.का.

धन्यासिरी, धन्यासी—देखो 'धनास्री' (रू.भे.) (स.कु., कां.दे.प्र.)

धन्वंतरि—देखो 'घनंतर' (रू.भे.) उ०—अढार भार वनस्पति फूल-पगर भरइं धन्वंतरि वइदउं करइं ।—व.स.

धन्व-संoपुo [संo] मरुदेश (डि.को.)

धन्वज-विo [संo] मरुदेश में उत्पन्न ।

धन्वजदुरग-संoपुo [संo धन्वदुर्ग] ऐसा किला जिसके चारों ओर पाँच पाँच योजन तक जल का अभाव हो और मरुभूमि हो ।

धन्वदेस-संoपुo [संo धन्वदेश] १ राजस्थान में जोधपुर डिविजन का नाम, मारवाड़ । २ रेगिस्तान, निर्जल देश ।

धन्वय-संoपुo [संo धन्वस्] १ इंद्र, देवेन्द्र. २ धनुष. ३ मारवाड़ ।

उ०—नांम परतापसिंह प्यार कौ पितु तें पायौ, व्यूढ़ वरदांन वडा धन्वय धनी कौ तें ।—ऊ का.

धन्वी-विo [संo धन्विन्] धनुर्धारी, कमनैत (डि.को.)

धन्वौ-संoपुo [संo धन्वन्] १ धनुष, चाप. २ सूखी जमीन, स्थल. ३ मरुभूमि, रेगिस्तान. ४ अंतरिक्ष, आकाश.

धप-संoपुo [अनुo] १ सोने-चांदी के आभूषणों पर मोटी खुदाई करने का लोहे का वना एक ओजार विशेष (स्वर्णकार)

२ वालक (अ.मा.) ३ धौल, थप्पड़, तमाचा ।

क्रिoप्रo—देणौ, मारणौ ।

संoस्त्रीo—४ किसी भारी और मुलायम वस्तु के गिरने से उत्पन्न होने वाला शब्द, ध्वनि. ५ आग की लपट की ध्वनि. ६ आग की लपट, ज्वाला ।

धपड़-संoस्त्रीo [अनुo] १ आटा पीसने की चक्की को (घट्टी को) तीव्रता से घुमाने से उत्पन्न शब्द । चक्की को तेज घुमाने की क्रिया या भाव ।

मुहा०—घपड़ घपड़ पीसै जाती रा पग दीसै—किसी फूहड़ वहू के लिये कही जाने वाली उक्ति अर्थात् जब वह चक्की तेज चला कर आटा उड़ा देती है अथवा कोई भी कार्य ठीक नहीं करती है तो उसका उस घर में बहुत समय तक टिकना सम्भव नहीं।

रू०भे०—धपड, धमड़, धमड, धम्मड़।

२ देखो 'धापड़' (रू.भे.)

घपड़णो, घपड़बो–क्रि०स० [अनु०] संतुष्ट करना, तृप्त करना।

घपड़णहार, हारो (हारी), घपड़णियो—वि०।

घपड़िओड़ो, घपड़ियोड़ो, घपड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

घपड़ीजणो, घपड़ीजबो—कर्म वा०।

घपणो, घपबो, धापणो, धापबो—अक०रू०।

घपटणो, घपटबो—रू०भे०।

घपड़ियोड़ो–भू०का०कृ०—तृप्त किया हुआ, संतुष्ट किया हुआ।

(स्त्री० घपड़ियोड़ी)

घपटणो, घपटबो–क्रि०अ० [देश०] १ उत्साह पूर्वक दौड़ना।

उ०—बैठा होय नै घपटिया, दड़वड़ लागा डागा रे। वांनर जेम विलगिया, लपटी गढ़ नै लागा रे।—प.च.चौ.

२ किसी वस्तु को लेकर चम्पत हो जाना, भाग जाना।

उ०—सांभळी बात बउलोंच सीमा हुता, घपटिया वेणुआं करै धाड़ो। खळकती लूअ में खंड करिवा खळां, आवियो अमरसिंह तेथि आडो।

—घ.व.ग्रं.

३ लूटना। उ०—घण खाटण घपटै घरा, धंधै धमरोळी। लेतां देतां लालचै, लुब्बां लपचोळी।—घ.व.ग्रं.

४ देखो 'दपटणो, दपटबो' (रू.भे.)

घपटणहार, हारो (हारी), घपटणियो—वि०।

घपटवाड़णो, घपटवाड़बो, घपटवाणो, घपटवाबो, घपटवावणो, घपटवावबो—प्रे०रू०।

घपटाड़णो, घपटाड़बो, घपटाणो, घपटाबो, घपटावणो, घपटावबो —क्रि०स०

घपटिओड़ो, घपटियोड़ो, घपट्योड़ो—भू०का०कृ०।

घपटीजणो, घपटीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

घपटमों, घपटवों–वि०—पूर्ण अघा जाय उतना (भोजन)

रू०भे०—दपटमों, दपटवों।

घपटाड़णो, घपटाड़बो—१ देखो 'घपटाणो, घपटाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'दपटाणो, दपटाबो' (रू.भे.)

घपटाड़णहार, हारो (हारी), घपटाड़णियो—वि०।

घपटाड़िओड़ो, घपटाड़ियोड़ो, घपटाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

घपटाड़ीजणो, घपटाड़ीजबो—कर्म वा०।

घपटणो, घपटबो—अक० रू०।

घपटाड़ियोड़ो—१ देखो 'घपटायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'दपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घपटाड़ियोड़ी)

घपटाणो, घपटाबो–क्रि०स०—१ दौड़ाना, भगाना।

ज्यूं—घोड़ा नै सांतरो घपटायो जु सांझ पैं'ली पैं'ली ठेट पूग गिया।

२ देखो 'दपटाणो, दपटाबो' (रू.भे.)

घपटाणहार, हारो (हारी), घपटाणियो—वि०।

घपटायोड़ो—भू०का०कृ०।

घपटाईजणो, घपटाईजबो—कर्म वा०।

घपटणो, घपटबो—अक० रू०।

घपटायोड़ो–भू०का०कृ०—१ दौड़ाया हुआ, भगाया हुआ।

२ देखो 'दपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घपटायोड़ी)

घपटावणो, घपटावबो—१ देखो 'घपटाणो, घपटाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'दपटाणो, दपटाबो' (रू.भे.)

घपटावणहार, हारो (हारी), घपटावणियो—वि०।

घपटाविओड़ो, घपटावियोड़ो, घपटाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

घपटावीजणो, घपटावीजबो—कर्म वा०।

घपटणो, घपटबो—अक०रू०।

घपटाविओड़ो—१ देखो 'घपटायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'दपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घपटावियोड़ी)

घपटियोड़ो–भू०का०कृ०—१ उत्साह पूर्वक भागा हुआ.

२ किसी की वस्तु को लेकर चम्पत हुवा हुआ.

३ देखो 'दपटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घपटियोड़ी)

घपड—देखो 'घपड़' (रू.भे.)

घपडणो, घपडबो—देखो 'घपड़णो, घपड़बो' (रू.भे.)

घपडियोड़ो—देखो 'घपड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घपडियोड़ी)

घपणो, घपबो–क्रि०अ० [देश०] १ चलना, गतिमान होना।

उ०—तुही मेघ में सूर में नूर भासै। तुही मेह कादंबणी चत्रमासै। दिपै तू घटा में छटा द्योत द्वारा। घपै तू जटा में तटा गंग-धारा।

—मे.म.

२ देखो 'धापणो, धापबो' (रू.भे.)

घपणहार, हारो (हारी), घपणियो—वि०।

घपिओड़ो, घपियोड़ो, घप्योड़ो—भू०का०कृ०।

घपीजणो, घपीजबो—भाव वा०।

घपघपणो, घपघपबो–क्रि०अ० [अनु०] ध्वनि करना।

उ०—ध्वनाती वागधारा धरम धुनि धारा घपघपै। सुनाती स्वी सारा सगुन गुनि सारा सपसपै।—ऊ.का.

घपघपियोड़ो–भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री० घपघपियोड़ी)

घपळ-सं०स्त्री० [अनु०] १ आग जलने की क्रिया अथवा जलती हुई आग द्वारा होने वाली ध्वनि ।
यौ०—घपळ-घपळ ।
२ आग की लपट, ज्वाला ।
घपाऊ-वि० [सं० घ्रै=तृप्तौ] पूर्ण तृप्त हो जाय उतना (भोजन) भरपेट ।
उ०—त्यांनै रातब देंणी मांडी । दोनां ही टंकां सेर दोय घीरत, रातब देंणी मांडी । घपाऊ धांन दीजै ।—जगमाल मालावत री वात
रू०भे०—धापमों, धापवों ।
घपाड़णौ, घपाड़बौ—देखो 'घपाणौ, घपावौ' (रू.भे.)
घपाड़णहार, हारौ (हारी), घपाड़णियौ—वि० ।
घपाड़िओड़ौ, घपाड़ियोड़ौ, घपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घपाड़ीजणौ, घपाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
घपणौ, घपबौ, धापणौ, धापबौ—अक०रू० ।
घपाड़ियोड़ौ—देखो 'घपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घपाड़ियोड़ी)
घपाड़ौ-वि० [देश०] तृप्त करने वाला ।
घपाड़णौ, घपाड़बौ—देखो 'घपाणौ, घपावौ' (रू.भे.)
उ०—मांसांचरा घपाड़ै मांसां, बांसां करै अमावड बाड । मावै नहीं पहाडां मांहे, हाथ्यां रा दांतूसळ हाड ।
—महाराणा अमरसिंह रौ गीत

घपाडियोड़ौ—देखो 'घपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घपाडियोड़ी)
घपाणौ, घपाबौ-क्रि०स० [सं० घ्रै, तृप्तौ] १ तृप्त करना, अघाना ।
उ०—१ विहंड खळां वह खोणा वहाऊं । पत्र भरि भरि काळिका घपाऊं ।—सू.प्र.
उ०—२ श्रो लै म्हारी धणी जूंभण हूको जद एक साथै सह सकतियां नै घपाय देसी ।—वी.स.टी.
२ संतुष्ट करना. ३ तंग करना. ४ अप्रसन्न करना, नाराज करना (व्यंग्य) ५ प्रसन्न करना, खुश करना ।
घपाणहार, हारौ (हारी), घपाणियौ—वि० ।
घपायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
घपाईजणौ, घपाईजबौ—कर्म वा० ।
घपणौ, धपबौ, धापणौ, धापबौ—अक०रू० ।
घपाड़णौ, धपाड़बौ, धपाडणौ, घपाडवौ, घपावणौ, घपावबौ
—रू०भे० ।

घपायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तृप्त किया हुआ, अघाया हुआ. २ संतुष्ट किया हुआ. ३ तंग किया हुआ. ४ अप्रसन्न किया हुआ. नाराज किया हुआ. ५ प्रसन्न किया हुआ, खुश किया हुआ ।
(स्त्री० घपायोड़ी)
घपावणौ, घपावबौ—देखो 'धपाणौ, घपावौ' (रू.भे.)
उ०—मयंद घपावै मोतियां, हंसा लांघणियांह । रहै नहीं जुध रोकियौ, श्रो धारां अणियांह ।—वां.दा.
घपावणहार, हारौ (हारी), घपावणियौ—वि० ।
घपाविओड़ौ, घपावियोड़ौ, घपाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घपावीजणौ, घपावीजबौ—कर्म वा० ।
घपणौ, घपबौ, धापणौ धापबौ—अक०रू० ।
घपावियोड़ौ—देखो 'घपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घपावियोड़ी)
घपियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चला हुआ, गतिमान हुवा हुआ ।
२ देखो 'धापियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घपियोड़ी)
घफणौ, धफबौ-क्रि०अ० [देश०] गिरना, पड़ना ।
उ०—पग हाथ पड़ै नस माथ पखै, लग चाव सुरां रव दाव लखै । अंग एक घफै तड़फै असुरां, सिर चीर नरां व्रण सेल सरां ।—रा.रू.
घफणहार, हारौ (हारी), घफणियौ—वि० ।
घफिओड़ौ, घफियोड़ौ, घफ्योड़ौ—भू०का०कृ ।
घफीजणौ, घफीजबौ—भाव वा० ।
घफियोड़ौ-भू०का०कृ०—गिरा हुआ ।
(स्त्री० घफियोड़ी)
घवळौ—देखो 'धावळौ' (रू.भे.)
घवसौ-सं०पु० [देश०] १ अंजली. २ उतना पदार्थ जितना एक अंजली में समा जाय । उ०—श्रोरां नै तो मा घवसै-घवसै श्रे खांड, मनै चिमठी, मा, लूण की जे । श्रोरां नै तौ, मा, मिरियौ-मिरियौ श्रे घीव, मनै मिरियौ, मा, तेल को जे ।—लो.गी.
घवाक—देखो 'घमाक' (रू.भे.)
घवूड़णौ, धवूड़बौ, घवोड़णौ, घवोड़बौ-क्रि०स० [देश०] १ प्रहार करना । उ०—मुखै चखचोळ सरूप मजीठ । घवोड़त सावळ मूगळ धीठ ।—सू.प्र.
२ फेंकना, उछालना । उ०—दूर सूं कमंध थारी दिसा, घोवां धूड़ घवोड़तौ । मिळण री घड़ी कीजो मतौ, विछड़तां श्रोछौ दिन खूबतौ ।
—श्ररजुनजी बारहठ

घवोड़णहार, हारौ (हारी), घवोड़णियौ—वि० ।
घवोड़िओड़ौ, घवोड़ियोड़ौ, घवोड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घवोड़ीजणौ, घवोड़ीजबौ—कर्म वा० ।
घवोड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—प्रहार किया हुआ ।
(स्त्री० घवोड़ियोड़ी)
घवौ, घव्वौ-सं०पु० [देश०] १ किसी सतह पर थोड़ी दूर तक फैला हुआ ऐसा स्थान जो सतह के रंग के मेल में न हो और भद्दा लगता हो, दाग, निशान. २ कलंक, दोष । उ०—क्यूं घव्वौ निज नांम कहि, लगहि रिसालै लार । जे न भगहिं योरोप जुध, रहि श्रागया अनुसार ।—जैतदांन बारहठ
मुहा०—१ घव्वौ लगाणौ—कलंक लगाना, दोष लगाना.

२ धब्बौ लागणौ—कलंक लगना, दोष लगना ।

घभार-सं०स्त्री०—चौदह मात्राओं की ताल ?

घमंक-सं०पु० [अनु०] देखो 'धमक' (रू.भे.)

उ०—विसाल भाल तोप को विसाल जाळ विस्थुरै, घमंक भू घुजावणी घमंक मेघ लौ घुरै । महांन रंज दव्वुनी अरीन दव्वुनी मही, कथै कवीर नै कही चिराव की चही चही ।—ऊ.का.

घमंकणौ, घमंकबौ—देखो 'घमकणौ, घमकवौ' (रू.भे.)

उ०—डफां मादळां नाद डेरू डमंकै, धरा व्योम पाताळ धूजै घमंकै ।—मे.म.

घमंकणहार, हारौ (हारी), घमंकणियौ—वि० ।

घमंकिओड़ौ, घमंकियोड़ौ, घमंक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घमंकीजणौ, घमंकीजबौ—भाव वा० ।

घमंकियोड़ौ—देखो 'घमकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घमंकियोड़ी)

घमंद—देखो 'घमक' (रू.भे.) उ०—सघ नर नडर कर घजर असमर समंद, बजर डर गुमर यर थरर कायर वमंद । घज फरर अतर पर खरर समहर घमंद, कसर भर नजर सर केण छत्र घर कमंद ।

—महादांन महडू

घमंळ-मंगळ—देखो 'धवळ-मंगळ' (रू.भे.)

घम-सं०स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने या रखने का शब्द, धमाका ।

उ०—खोळा टंकियोड़ा गळ में खूंगाळी । जळ जुत ठोडी पर टिमकी जंवाळी । झीनै कांचळियै घम घम डग भरती । वसळां देतोड़ी घम-घम पग धरती ।—ऊ.का.

क्रि०वि०—घम शब्द के साथ, यकायक, अचानक ।

रू०भे०—धम्म, ध्रम ।

घमक-सं०स्त्री० [अनु० घम] १ ध्वनि विशेष । उ०—रोकिया 'खुरम' 'भीमांण' रा, दळ दहुवै फाटां दळां । घण जरद घाट सेलां घमक, वाजि झाट घण वीजळां ।—सू.प्र.

२ थर्राहट, कंपन. ३ आघात, चोट । उ०—घमक खोद धरणी सहै, काट सहै वनराय । कुटक वचन असली सहै, ओरां सह्या न जाय ।—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—घमंक, ध्रमक ।

घमकणौ, घमकवौ-क्रि०अ० [अनु०] ध्वनि करना, आवाज करना ।

मुहा०—१ आय घमकणौ—यकायक आना, अचानक पहुँचना.

२ जाय घमकणौ—अचानक जाना, यकायक पहुँचना ।

घमकणहार, हारौ (हारी), घमकणियौ—वि० ।

घमकिओड़ौ, घमकियोड़ौ, घमक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घमकीजणौ, घमकीजवौ—भाव वा० ।

घमंकणौ, घमंकबौ, घमक्कणो, घमक्कवौ, ध्रमंकणौ, ध्रमंकबौ, ध्रमकणौ, ध्रमकवौ—रू०भे० ।

घमकाड़णौ, घमकाड़बौ—देखो 'घमकाणौ, घमकावौ' (रू.भे.)

घमकाड़णहार, हारौ (हारी), घमकाड़णियौ—वि० ।

घमकाड़िओड़ौ, घमकाड़ियोड़ौ, घमकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घमकाड़ीजणौ, घमकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

घमकणौ, घमकवौ—अक०रू० ।

घमकाड़ियोड़ौ—देखो 'घमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घमकाड़ियोड़ी)

घमकाणौ, घमकावौ-क्रि०स० [अनु०] १ ध्वनि करना, आवाज करना, बजाना । उ०—मेड़ी चढ़ अर थाळ बजाओ, थाळ बजावत बोली यूं । च्यार कूंट चोफेरे बाजा, नौबतड़ी घमकाए तूं ।—लो.गी.

२ डांटना, घुड़कना. ३ दण्ड या बुरा करने का विचार प्रकट करना, भय दिखाना, डराना. ४ पीटना ।

घमकाणहार, हारौ (हारी), घमकाणियौ—वि० ।

घमकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

घमकाईजणौ, घमकाईजबौ—कर्म वा० ।

घमकणौ, घमकवौ—अक०रू० ।

घमंकणौ, घमंकबौ—रू०भे० ।

घमकायोड़ौ-भू०का०कृ० [अनु०] १ आवाज कियो हुआ, ध्वनि किया हुआ, बजाया हुआ. २ डराया हुआ, घमकाया हुआ.

३ डांटा हुआ, घुड़का हुआ. ४ पीटा हुआ ।

(स्त्री० घमकायोड़ी)

घमकावणौ, घमकावबौ—देखो 'घमकाणौ, घमकावौ' (रू.भे.)

घमकावणहार, हारौ (हारी), घमकावणियौ—वि० ।

घमकाविओड़ौ, घमकावियोड़ौ, घमकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घमकावीजणौ, घमकावीजबौ—कर्म वा० ।

घमकणौ, घमकवौ—अक०रू० ।

घमकावियोड़ौ—देखो 'घमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घमकावियोड़ी)

घमकियोड़ौ-भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ, आवाज किया हुआ ।

(स्त्री० घमकियोड़ी)

घमकी-सं०स्त्री० [देश०] १ भय दिखाने के लिये अनिष्ट करने या दण्ड देने की भावना प्रकट करने की क्रिया । भय दिखाने की क्रिया ।

क्रि०प्र०—देणी ।

२ घुड़की या डांट-डपट ।

क्रि०प्र०—देणी ।

मुहा०—घमकी में आणौ—भय दिखाने से भयभीत होकर किसी कार्य में प्रवृत्त हो जाना ।

घमकौ—देखो 'धमाकौ' (रू.भे.)

घमक्कणौ, घमक्कबौ—देखो 'घमकणौ, घमकवौ' (रू.भे.)

उ०—वीर वकरार पार कै दै तीर तमक्कै । दंत दमक्कै हीर लौं चिनगी कि चमक्कै । सत्तलोक उप्पर सिक्कै घर सत्त घमक्कै । परि अट्ठों दिक्पाळ के कप्पाळ कसक्कै ।—व.भा.

घमक्कणहार, हारौ (हारी), घमक्कणियौ—वि० ।
घमविकग्रोड़ो, घमविकयोड़ौ, घमक्कचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
घमक्कीजणौ, घमक्कीजबौ—भाव वा० ।
घमक्कियोड़ौ—देखो 'घमकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घमविकयोड़ी)
घमक्कौ—देखो 'धमाकौ' (रू.भे.)
घमगजर, घमगज्ज, घमगज्ज्र-सं०पु० [सं० घर्म+झकट=घम्म=घम +झगड=घम झगर=धमगजर वर्णविपर्य] १ युद्ध, लड़ाई ।
(डि.को.)
उ०—नैड़ौ घमसांग चढ़यौ निप नज्ज्र । गुणां चढ़ि बांण मंडचौ घमगज्ज्र । किया चठठारव ज्यां फटकारि । दिया घट गोळमदाज विदारि ।—मे.म.
२ उत्पात्, उपद्रव, ऊधम ।
रू०भे०—घंमजगर, घमजगर, घमजग्गर, घमजग्र, घमजागर, घांमजग्र, घांमाजागर, घ्रमजगर, घ्रमजघड, घांमजग्र ।
घमड़—देखो 'घपड़' (रू.भे.)
घमचक, घमचक्क, घमचल-सं०पु० [देश०] १ युद्ध, लड़ाई ।
उ०—१ आरंभियौ सोई करै, बाथ गिरमेर ऊपाड़ै । आंगै माल अवंब, करै घमचक दीहाड़ै ।—राव रिणमल री वात
उ०—२ वध वीर किलक्कं हक्कोहक्कं, धूप सवक्कं घमचक्कं । वण वार असंकं बाधा रंकं, रूक झटक्कं रह चक्कं ।—रा.रू.
२ हल्ला, शोरगुल । उ०—वैरा-टावर-टूवर घमचक मचावता अर वैनै जिकर सुवावतौ कोयनी ।—वरसगांठ
क्रि०प्र०—करणौ, मचाणौ, होणौ ।
३ उछळकूद, ऊधम ।
रू०भे०—घमचाक, धौंचक ।
घमचाक-सं०स्त्री० [देश०] १ छलांग, फलांग. २ देखो 'घमचक' (रू.भे.)
उ०—तसां वरसण द्रव अट्टळ । घमचाकां ढींचाळ डोळ खग झाट लखां दळ ।—र.ज.प्र.
घमचाळ-सं०पु० [देश०] युद्ध, संग्राम ।
उ०—खगां की खैराते खावै र खिलावै । भीम का घमचाळ, केवियां का काळ ।—वगसीरांम प्रोहित री वात
घमजगर, घमजग्गर, घमजग्र, घमजागर-वि०—१ धूममय ।
उ०—अनी चख भालनि भेरिय अग्र, धुवां चरखीनि मची घमजग्र ।
—ला.रा.
२ देखो 'घमगजर' (रू.भे.) उ०—१ धणी जकांरा धांधळीत धावू रखवाळा । दस दस लूटण देस नै जावै कमठाळा । आवै पूगै बाहरु सीमाळ विचाळा । जवर वजै जद धमजगर नम सेस फणाळा ।
—पा.प्र.
उ०—२ ऊदां वूझै 'अभो', हदो बोलियौ बहादर । हद जूनो खिलहार, जोध वढ़ियौ घमजग्गर ।—सू.प्र.
घमण-सं०स्त्री० [सं० धमन] चमड़े का बना थैले से मिलता-जुलता एक प्रकार का लोहारों का भट्टी में आग प्रज्वलित करने का उपकरण विशेष ।
वि०वि०—यह चमड़े की बनी होती है जो हवा भरने से फूलती है तथा हवा बाहर निकालने पर सिकुड़ती है ।
उ०—हद, कमंठ पीठ हतौड़ा वजर अहरण, तेज ज्वाळा घमण फूंक ताखै, अगन वडवा जहर कोयलां वध अच्छी, रूक अंतक रची जिका राखै ।—जवांनजी आढ़ौ
रू०भे०—घंमण, घंवण, घवण ।
अल्पा०—घंमणी, घंवणी, घमणि, घमनि, घमनी, घवणि, घवणी ।
घमणि, घमणी-सं०स्त्री० [सं० धमनिः, धमनी] १ शरीरस्थ वह छोटी अथवा बड़ी नली जिसमें रक्तादि का संचार होता है ।
२ देखो 'घमण' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—घमनि, घमनी ।
घमणौ, घमबौ-क्रि०स० [सं० ध्मा+फूंकना] १ भाथी आदि में हवा भर कर छोड़ना, धौंकना. २ भट्टी में लोहे आदि को गरम करना.
उ०—आंखि उंडि, निलाडि भूंडि, घमिया लोहगोळा तिसिया वेउ डोळा ।—व.स.
३ पीटना, मारना. ४ शीघ्रता से प्रस्थान करना ।
घमणहार, हारौ (हारी), घमणियौ—वि० ।
घमवाड़णौ, घमवाड़बौ, घमवाणौ, घमवाबौ, घमवावणौ, घमवाववौ, घमाड़णौ, घमाड़बौ, घमाणौ, घमाबौ, घमावणौ, घमाववौ—प्रे०रू० ।
घमिग्रोड़ौ, घमियोड़ौ, घम्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
घमीजणौ, घमीजबौ—कर्म वा० ।
घंवणौ, घंवबौ, घवणौ, घवबौ—रू०भे० ।
घमघमणौ, घमघमबौ-क्रि०अ० [अनु०] १ घम घम शब्द होना, घमघम शब्द करना । उ०—उठि अचूंका बोलणा, नारि पयंपै नाह । घोड़ां पाखर घमघमी, सींधू राग हुवाह ।—हा.झा.
२ प्रतिध्वनित होना. ३ कुढ़ना, जलना ।
उ०—अणख बोल बीबी तणा, सुणि के आलिम साहि । घमघमियौ कोप्यौ घणौ, अति अमरस मन मांहि ।—प.च.चौ.
४ रौंदना । उ०—तइ संचळ तइं सूरु घूंघळिउ, धर घमघमी । खउंदाळिय खोची दिसइ कियउ पयांणउ पूरु ।—अ. वचनिका
घमघमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ घमघम शब्द किया हुआ, ध्वनित.
२ प्रतिध्वनित. ३ कुढ़ा हुआ, जला हुआ. ४ रौंदा हुआ ।
(स्त्री० घमघमियोड़ी)
घमघमौ—देखो 'दमदमौ' (रू.भे.) उ०—रावजी खत्री-धरम-री क्रितारथ कीजै, लंका प्रमांण गढ़ि गांगुरण लीजै । मीर मुगळ साके आंण घम-घमौ उठायौ, गढ़ि प्रमांण मोरचौ बणायौ ।—अ. वचनिका
घमघम्मणौ, घमघम्मबौ—देखो 'घमघमणौ, घमघमबौ' (रू.भे.)

उ०—धुबै श्रारबां धोम, गाज रौद्रव गमगम्मै । प्रथमी गयण पताळ, घमक श्रौद्रव घमधम्मै ।—सू.प्र.

घमधम्मियोड़ौ—देखो 'घमधमियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घमधम्मियोड़ी)

घमनि, घमनी—देखो 'घमणी' (रू.भे.) (डि.को.)

घमरूळ, घमरोळ-सं०स्त्री० [देश०] १ किसी वस्तु का बहुत श्रधिक संख्या मे कहीं श्राकर पड़ना, बौछार, झड़ी ।
उ०—१ पड़ तोपां इक साथ पलीता धुंवाधोर गोळां घमरूळ । वावर हाथ कहै घड़ वूठी, सात पहर जूटो सादूळ ।
—बळवंतसिंह हाडा री गीत
उ०—२ रावत छोळां रगत, चोळ बोळां चखचोळां । वाहै झेलै वीर, धजर सेलां घमरोळां ।—पनां वीरमदे री वात
उ०—३ सोक पड़ै सायका, सेल घमरोळ सतावां । मिळै लोह मारकां, नरिंद हरवळां नवावां ।—सू.प्र.
उ०—४ कठै कठेई माहोमाह वरछियां री घमरोळ पड़ै छै । इण भांत माहोमाह सरावै छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—५ तिको कुही कुलंगरी सी चोट दिखावै छै । इण भांत कटारियां री घमरोळ पड़ै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
२ वायुमण्डल में किसी हल्की वस्तु का प्रचुर मात्रा में प्रसार, वायु में किसी हल्की वस्तु का फैलाव, श्राधिक्य ।
उ०—१ वीणा रे तदूरा हर रे वाजे रे नगारा । धूपां री घमरोळ पड़ै ।—लो.गी.
उ०—२ कुंमकुमां गुलाव केसर री पिचकार छूटै छै । श्रोरू ज्यां रै ऊपरै गुलाल दड़ांघां फूटै छै । उण समै जाड़ेची वी श्राय जुटी । गुलाल श्रवीरां री घमरोळ उठी ।—पनां वीरमदे री वात
३ प्रवाह ।
वि०—श्रानन्दपूर्वक, समोद । उ०—रोळ खोळ, रमढोळ श्राखां, जीवां हरख हिलोळ है । बोळ करै, छोळ घमरोळां, फोगां पोल किलोळ है ।—दसदेव
रू०भे०—घमारळ ।

घमरोळणौ, घमरोळबौ-क्रि०स० [देश०] १ संहार करना, मारना ।
उ०—साकुर पहल श्रोरलूं सारां । घमरोळूं हरवळ चौधारां ।
—सू.प्र.
२ तहस-नहस करना, ध्वस्त करना । उ०—दिल्ली सूं झंडा हुश्रा दिठाळै, शाह श्रमांमा कमण थंभै । सहर बसायो हुतौ साहजां, श्रणभंग घमरोळियौ 'श्रभै' ।—महाराजा श्रभयसिंह री गीत
३ हिलाना, घुमाना, विलोड़ित करना, मथाना ।
उ०—धारू-जळै गिरंद घमरोळै, जळ डोहै दळ श्रवर जण । मिण पुड़ समंद रूप राव मारू, कढ़िया भूप 'श्रनूप' कण ।—द.दा.
घमरोळणहार, हारौ (हारी), घमरोळणियौ—वि० ।
घमरोळिश्रोड़ौ, घमरोळियोड़ौ, घमरोळचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
घमरोळीजणौ, घमरोळीजबौ—कर्म वा० ।

घमरोळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ संहार किया हुश्रा, मारा हुश्रा. २ तहस-नहस किया हुश्रा, ध्वस्त किया हुश्रा. ३ हिलाया हुश्रा, घुमाया हुश्रा, विलोड़ित किया हुश्रा, मथा हुश्रा ।
(स्त्री० घमरोळियोड़ी)

घमरोळी-वि०—व्यस्त, लीन ?
उ०—मगर पचीसी मांणतौ, करै कांम कल्लोळी । गाहड़ में घूमै घणुं, गिलि मफरा गोळी । धन खाटन घपटै धरा, धंधै घमरोळी । लेतां देतां लालचै, लुब्धौ लपचोळी ।—ध.व.ग्रं.

घमळ-सं०पु० [सं० धवल] १ डिंगल का एक गीत छंद विशेष जिसकी रचना के लिए भिन्न-भिन्न मत हैं—
'रघुवरजसप्रकास' के श्रनुसार प्रथम एवं द्वितीय चरण में प्रत्येक में छब्बीस मात्राएं । तृतीय चरण में तीस मात्राएँ हों एवं चतुर्थ में चौबीस मात्राएं हों ।
गीत 'रणधमळ' में छः तुकें होती हैं । प्रथम व द्वितीय तुकों में प्रत्येक में चौदह मात्राएं । तृतीय तुक में श्रठाईस मात्राएं, चतुर्थ एवं पंचम चरण मे प्रत्येक में चौदह मात्राएँ तथा षष्टम तुक में चौबीस मात्राएं तथा श्रंत में लघु हो ।
'रघुवरजसप्रकास' के श्रनुसार 'घमळ' गीत के श्रौर सुगम लक्षण—
'त्रकुटबंध' गीत की प्रथम पांच तुकें तथा दो तुकें इसी गीत के 'द्वाले' के श्रंत की, जिनमें एक श्रनुप्रासयुक्त तथा एक श्रन्य । इन दोनों की एक तुक बनानी चाहिए । इस प्रकार इन छः तुकों को इकट्ठी कर के पढ़ने से 'घमळ' गीत बनता है ।
'कविकुळबोध' के श्रनुसार विषम चरण चौदह मात्राश्रों के, तथा सम चरण नौ मात्राश्रों के होते हैं ।
२ देखो 'धवल' (रू.भे.) (श्र.मा.) उ०—श्रटकै खार घर वेध डगिया श्रसत, सार फाटै गयण मेळ सांधौ । धणी दाखै घमळ टांड कज द्ळा धुर, 'केहरी' तणा हव मांड कांधौ ।
—रावत श्ररजुनसिंघ चूंडावत रौ गीत
उ०—२ श्रडग राखियौ नेम गंगेव चौ ईसवर, जठै पण दाखियौ श्राप जावा । घमळ खग धार पिड काज धू-धारणा, विरद रा वारणा लेऊं वावा ।—भगतमाळ
उ०—३ धुनि कर श्रमर मंगळ-घमळ, गै तुंबरु गावंत गुण । कर जोड़ एम ईसर कहै, कर पूजा जांणे कवण ।—ह.र.
उ०—४ लेतां भारी लाल चोळरंग लागा चोखा । कोडी फेर किया श्रजब द्रग घमळ श्रनोखा ।—ऊ.का.

घमळश्रारोहण—देखो 'धवळ-श्रारोहण' (रू.भे.) (ह.नां.)

घमळगर, घमळगिर—देखो 'धवळगिरी' (रू.भे.)

घमळगिर-वाहणी—देखो 'धवळा-गिर-वासणी' (रू.भे.) (ह.नां.)

घमळधुज—देखो 'घवळ-धुज' (रू.भे.)

घमळ-मंगळ—देखो 'घवळ-मंगळ' (रू.भे.)

घमळहर—देखो 'घवळहर' (रू.भे.) उ०—कोट भुरजां रा कोसीस नैं घमळहर घवळा-गिर ज्यों बादळां रा किरण सारिखा उजळा सी-कोट सौं निजरि आवै छै।—रा.सा.सं.

घमळागर, घमळागिर, घमळागिरी—देखो 'घवळगिरि' (रू.भे.)

उ०—१ गरदां घर अंबर गूंघळियौ, घमळागर डूंगर घूंघळियौ।
—गु रू.बं.

उ०—२ घड़हड़ियो सुणे वाजतै ढोलै, हुब वागी कळपंत हुवा। धूहड़ उलटतां घमळागिरि, खूंद पखै कुण घरै खवा।—नाथौ सांदू

घवळागिरआरोहणी—सं०स्त्री० [सं० घवलगिरि+आरोहिणी] सरस्वती, शारदा (ह.नां.)

घवळागिरीदेवी—सं०स्त्री० [सं० धवलगिरिदेवी] शारदा, सरस्वती (अ.मा.)

घमस—सं०स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष।

उ०—१ पमगां घमस नफेरी पांना, वाग तणी पर वेरक वांना। ऊडी गरद गैंण अव छायौ, ऊगमतौ रवि निजर न आयौ।—रा.रू.

उ०—२ घमस नाळ रज घोम, झळळ तप झंख कमळ झळ। घर घरसळ घरघरण, उतन दिस हलै 'अभैगल'।—सू.प्र.

उ०—३ रतन जडित की टोपी सिर पर, हार कंठ को भारी। चरण घूघरा घमस पड़त है, करी स्यांम सूं यारी।—मीरां

रू०भे०—घमस्स, घम्मस।

विशेष—यह शब्द प्रायः पदाघात से उत्पन्न वेगपूर्ण ध्वनि के लिए ही प्रयुक्त होता है।

घमसणौ, घमसवौ—क्रि०अ० [अनु०] ध्वनि विशेष का होना।

उ०—विखम तबल वाजतां, गयंद गाजतां गरूरां। असि घमसतां अनेक, सगह वहसंतां सूरां।—सू.प्र.

घमसियोड़ौ—भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ, ध्वनित।
(स्त्री० घमसियोड़ी)

घमसी—सं०स्त्री० [अनु०] आटा पीसने की चक्की को तीव्रता से घुमाने से उत्पन्न शब्द। उ०—ओ तौ घटुलियौ चोखो म्हारो, घमसी दे मैं पीस सूं। आ तौ घमसी चोखी म्हारी, गंऊड़ा पीसासूं। ऐ तौ गंऊडा चोखा म्हारा, लाडूड़ा सांधाऊं।—लो.गी.

घमस्स—देखो 'घमस' (रू.भे.) उ०—हैघाट हींस हींजार हमस्स। धारां पहार माती घमस्स।—गु रू.बं.

घमहमणौ, घमहमवौ—क्रि०अ० [अनु०] ध्वनित होना, बजना, आवाज करना। उ०—हाक डाक त्रंवक घमहमिया। भाखर विकट असटकुळ भमिया। कमघज दळ हालतां कराळां। दहसत पड़ै दसै द्रगपाळां।
—सू.प्र.

घमहमियोड़ौ—भू०का०कृ०—बजा हुआ, ध्वनित।
(स्त्री० घमहमियोड़ी)

घमाक—सं०स्त्री० [अनु०] १ बंदूक आदि के छूटने या किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि. २ ऊपर से कूदने की क्रिया, छलांग.
३ देखो 'घमाकौ' (मह., रू.भे.) उ०—आघा पाव तीर रौ घमाक छाती चाड आयौ।—महकरण महियारियौ

रू०भे०—धवाक, धुवाक, धुवाख।

घमाकौ—सं०पु० [अनु०] १ बंदूक, तोप आदि के छूटने अथवा किसी भारी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द। उ०—आगै दरियाव आयौ सो जलाल वीं में कूद पड़चौ सो घमाकौ सुण बूबना नेत्रां खवास नूं कही।—जलाल बूबना री वात

२ आघात, टक्कर।

रू०भे०—घमको, घमक्को, घम्मको।

३ एक प्रकार की वजनी बंदूक। उ०—१ दोऊ तरफ दगी तोपूं अताळ। झालूं का झळहळ गोळूं का वरसाळ। घोमूं का अंधार, घमाकूं का धीठ। ओळूं की असण ज्यूं गोळूं की रीठ।—सू.प्र.

उ०—२ सोवोजी खोळो उथांमण नैं फौज ले आया। जंग में मूघाजी रै हाथ रो घमाको छूटो।—बां.दा.ख्यात

उ०—३ बहादुरसिंघजी रै नागोरी घमाको खवां में रहतो।
—बां.दा. ख्यात

रू०भे०—घमूकौ।

मह०—घमाक।

घमाचौकड़ी—सं०स्त्री० [देश०] उछल-कूद, कूद-फांद, उपद्रव, ऊधम।

घमाड़णौ, घमाड़वौ—देखो 'घमाणौ, घमावौ' (रू.भे.)

घमाड़ियोड़ौ—देखो 'घमायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घमाड़ियोड़ी)

घमाणौ, घमावौ—क्रि०स० [देश०] १ पीटना, मारना.
२ द्रुत गति से चलना. ३ धोंकनी से हवा भरना या फेंकना.

घमाड़णौ, घमाड़बौ, घमावणौ, घमावबौ—रू०भे०।

विशेष—यह शब्द 'घमणौ' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप भी है।

घमायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ पीटा हुआ, मारा हुआ. २ द्रुत गति से चलाया हुआ. ३ धोंकनी से हवा भरा हुआ या झोंका हुआ.
(स्त्री० घमायोड़ी)

घमाधम—क्रि०वि० [अनु० घम] १ लगातार कई बार 'घम-घम' शब्द के साथ। उ०—हूकौ लेतां हाथ में, चेतौ गयौ छुड़ाय। पड़ै घमाधम पदमणी, अधमाधम अकुळाय।—ऊ.का.

२ कई आघातों के शब्द के साथ, लगातार कई प्रहार शब्दों के साथ।
उ०—समासम पेल घमाधम सेल। अनातम आतम ठेल उठेल।
—रा.रू.

सं०स्त्री०—१ आघात, प्रतिघात, प्रहार, मार-पीट।
उ०—अर वरछियां री घमाधम लैणी होवै सो म्हारै सांम्हौ आवौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ उपद्रव, उत्पात।

घमार-सं०स्त्री० [देश०] १ होली के समय गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत (मीरां)
२ चौदह मात्राओं का एक ताल।
घमारळ—देखो 'घमारोळ' (रू.भे.)
घमारी-वि०—उपद्रवी, उत्पाती।
घमाळ-सं०पु० [देश०] १ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रत्येक चरण में २३ मात्राएं हों तथा अंत में लघु गुरु हो.
२ होली के गीत गाने का एक ताल. ३ होली के दिनों में गाने का एक प्रकार का गीत। उ०—म्हारी वीरोजी बजावै चंग वाजणू, वांरा साथीड़ा गावै घमाळ, ए रंगीलो चंग वाजणू।—लो.गी.
४ एक राग विशेष (मीरां)
५ वर्षा ऋतु का एक पौधा जिसके गुलाबी फूल और छोटे-छोटे पत्ते होते हैं। इसके कांटे नहीं होते हैं।
घमावणौ, घमावबौ—देखो 'घमाणौ, घमाबौ' (रू.भे.)
घमावियोड़ौ—देखो 'घमायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घमावियोड़ी)
घमासौ-सं०पु० [सं० धन्वयास] रेतीली भूमि में छत्ता के आकार का भूमि पर छितराने वाला महीन कांटेदार एक पौधा, दुलाह।
उ०—धूड़ घमासा पत्थर खावै, कहूं कहां लग आगी। जो तन धारी सबही अहारी, ग्यांनी रहत अलागी।—स्री सुखरांमजी महाराज.
घमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धौंकनी से हवा फेंका हुआ, धौंका हुआ.
२ पीटा हुआ, मारा हुआ. ३ भट्टी में गरम किया हुआ (लोहा आदि) ४ शीघ्रता से प्रस्थान किया हुआ।
(स्त्री० घमियोड़ी)
घमीड़—देखो 'घमीड़ौ' (मह., रू.भे.) उ०—भड़ां मुंह थाट विखै रहै भीड़। गुड़ा वीह एकल सांग घमीड़।—पा.प्र.
घमीड़ौ-सं०पु० [अनु०] किसी भारी वस्तु के गिरने अथवा जोर से टकराने के कारण उत्पन्न शब्द, घमाका।
रू०भे०—ढमीड़ौ, धमोड़ौ, धम्मीड़ौ।
मह०—ढभीड़, धमीड़, धमोड़, धम्मीड़।
घमूकौ-सं०पु० [अनु०] १ प्रहार, घूंसा, मुक्का।
२ देखो 'घमाकौ' (रू.भे.)
घमोड़—देखो 'घमीड़ौ' (मह., रू.भे.)
घमोड़णौ, घमोड़बौ-क्रि०स० [अनु०] १ प्रहार करना, लगाना, मारना, चलाना। उ०—१ उर सेल घमोड़ै वेळ एम, जरदैत ढहै तर सरत जेम। ऊछळै खळै तज तुरंग एम, वांसूळै पूळां सूं विसेख।
—रा.रू.
उ०—२ घमोड़त सावळ मुगळ घींग। सुता हरिनाथ धकै हरसींघ।
—सू.प्र.
२ कूटना, पीसना। उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति तजारै री वाड़ी री नीपनी नीली घणी-पाकी, पुरांणी, आगै बखांणी तिण भांति री भांगि घणी एळची, मिरचां, पांन, जावंत्री रै मेळ सूं पाखांण री कूंडिआं सरवंग रा घोटा सूं ऊजळा प्राचां री घमोड़ी घणै ऊजळै मिसरी रै भेळ सूं।—रा.सा.सं.
घमोड़णहार, हारौ (हारी), घमोड़णियौ—वि०।
घमोड़िओड़ौ, घमोड़ियोड़ौ, घमोड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घमोड़ीजणौ, घमोड़ीजबौ—कर्म वा०।
घमोड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ प्रहार किया हुआ, लगाया हुआ, मारा हुआ. चलाया हुआ. २ पीटा हुआ. ३ पीसा हुआ।
(स्त्री० घमोड़ियोड़ी)
घमोड़ौ—देखो 'घमीड़ौ' (रू.भे.) उ०—१ ओपमा तेण आवै न ओर। गणपति रमावै जांण गौर। वज सेल घमोड़ा उरस वाट। धोड़ा भड़ फूटै तुरस घाट।—वि.सं.
उ०—२ रिण हुवियो विकराळ, दोहुं धाड़वियां दौड़ां। वहै गजर वांणांस, घजर उर कूंत घमोड़ां।—पनां वीरमदे री वात
घमोळी, घमौळी-सं०स्त्री० [देश०] १ भाद्रपद कृष्णा तृतीया के पहले दिन की रात्रि के पिछले प्रहर में तृतीया का व्रत करने वाली स्त्रियों द्वारा किया गया आहार. २ ससुराल द्वारा कन्या के लिये तृतीया के अवसर पर आने वाला खाद्य पदार्थ।
रू०भे०—धम्मोळी।
घम्म—१ देखो 'धम' (रू.भे.) २ देखो 'धरम' (रू.भे.)
घम्मकौ—देखो 'घमाकौ' (१, २) (रू.भे.)
उ०—पैर घम्मकौ सोहियै, माथै गर बोफाळ। धीरी धीरी मालणी, तो सिर साह जलाल।—जलाल बूबना री वात
घम्मड़—देखो 'धपड़' (रू.भे.)
घम्मचक्क—देखो 'धमचक' (रू.भे.) २ देखो 'धरमचक्र' (रू.भे.)
घम्मज्झांण—देखो 'धरमध्यांन' (रू.भे.)(जैन)
घम्मत्थिकाय—देखो 'धरमास्तिकाय' (रू.भे.)
घम्मपुत्र—देखो 'धरमपुत्र' (रू.भे.) उ०—दुज्जोहण घर घरणि सांमि सिक्ख रडतोय मग्गइ। धम्मपुत्र वयणेण पुण इंदपुत्तु तिणि मग्गि लग्गइ।—पं.पं.च.
घम्मरोळ—देखो 'धमरोळ' (रू.भे.) उ०—१ मेलियां उतोळ रोळ ढीली लूण तास मीर, जंगां धम्मरोळ तेगां चहुं हरे जास। गोम रूपी 'रतन्नेस' अनम्मी समांणी गोम, जमी तेह वांमी जूप राखै जसव्वास।
—सीसोदिया रावत रत्नसिंघ चूंडावत रो गीत
उ०—२ अवाजै ओगाढं तेगां जम्मदाढं। हैथाटै हिलोळै धारा धम्मरोळ।—गु.रू.वं.
घम्मळ—देखो 'धवळ' (रू.भे.)
उ०—किरणां कळ कळ कमळ, सकळ फाळाहळ निम्मळ। तेज पूंज राजांन, धीर कांधोधर धम्मळ।—गु रू.वं.
घम्मळा—देखो 'धवळा' (रू.भे.)
घम्मळागिर—देखो 'धवळगिर' (रू.भे.)

उ०—देवी सिंधु गोदावरी मही संगा देवी गोमती धम्मळा वांग गंगा।
—देवि.

देखो 'धवळगिर' (रू.भे.)

उ०—उतंग चंग भीत चीत, मंड चंड मंदरं। कळी सपेत जांणि सेत, धार धम्मळागिरं।—ग्रु.रू.वं.

धम्मळी—देखो 'धवळी' (रू.भे.)

धम्मलेसा—देखो 'धरमलेस्या' (रू.भे.)

धम्मस—देखो 'धमस' (रू.भे.)

उ०—रांमापीर ऊबी रुणेचा रै मांहि, मांगू गायां-भैंसियां री जोड़। कुळ में जाजो धम्मस विलोवणो।—लो.गी.

धम्मिल्ल-सं०पु० [सं०] लपेट कर बांधे हुए बाल, बंधी चोटी, जूड़ा।

उ०—स्रवणि तारस्फार झळकतां कुंडळ, ढीलउ धम्मिल्ल, मस्तकि समारित केसकळाप, कंठकंदळि हारि करी सोभायमांन।—व.स.

धम्मीड़—देखो 'धमीड़ो' (रू.भे.)

उ०—इतरा में तो न मालम कीकर ई सांकळ निकळगी अर हड़ड़ड़ धम्मीड़ करती पट्टी आंगणा पर।—रातवासो

धम्मीड़ो—देखो 'धमीड़ो' (रू.भे.)

उ०—गहणा में लड़ा-झूंब हुयोड़ी लुगायां री लैं'ण लूहर री ललकार में जिण टेम सांमनैं वाळी लैं'ण नैं जवाब देवण नैं आगै वढ़ती तो उणां रै पगां रै धम्मीड़ां सूं धरती धूजण लागती।—रातवासो

धम्मु—देखो 'धरम' (रू.भे.)

उ०—समय धम्मु जो लंघिसिइ. तीण पुरखि वनवासि। बार वरिस वसिवुं अवसि. अहनिसि तीरथवासि।—पं.पं.च.

धम्मोळी—देखो 'धमोळी' (रू.भे.)

धम्मो—देखो 'धरम' (रू.भे.)

उ०—धम्मो मंगळ महिमो नीलो, धरमे नवनिध होय। धरमे दुख दोहग टळै, रोग सोग नहिं कोय।—जयवांणी

धय-सं०स्त्री० [सं० ध्वज] ध्वजा, पताका। उ०—आदि जिणेसर वर भुवणि, ठविय नंदी सुविसाळ। धय पडाग तोरण कळिय, चउ-दिसि वंदुरवाळ।—धरमकुसळ मुनि

धयर—देखो 'धीरज' (रू.भे.)

उ०—कस आयुध पावू कमंर, धयर घणो मन धार। करण समर 'धांधल' हुओ, भिडज भमर असवार।—पा.प्र.

धयरठू, धयराठ—देखो 'धतराठ' (रू.भे.)

उ०—१ थापीउ पंडव राजि कन्हइु ए, उत्सवु अति कर ए। कुण विहि देवि गंधारि धयरठू ए, राउ मनावीउ ए।—पं.पं.च.

उ०—२ सउ बेटां धयराठ घरे पंडु तणइ घरि पंच।—पं.पं.च.

धयवड-सं०पु०यौ० [सं० ध्वज+पट] ध्वज पट। उ०—भव सुख धयवड चंचल चंचळ यौवन जाय।—नेमिनाथ फागु

धयाग—देखो 'धियाग' (रू.भे.)

धयो-सं०पु० [देश०] १ कलह, टंटा। २ कष्टदायक कार्य। ३ अनिच्छा का कार्य।

धरंमी—देखो 'धरमी' (रू.भे.)

धर-वि० [सं०] १ ग्रहण करने वाला, थामने वाला।

ज्यूं—गदाधर, धनुखधर, मुरळीधर।

२ ऊपर लेने वाला, धारण करने वाला, संभाले रखने वाला।

ज्यूं—गिरधर, धरणीधर।

सं०पु० [सं०] १ पर्वत, पहाड़ (अ.मा., डि.नां.मा.)

२ विष्णु. ३ श्रीकृष्ण. ४ देखो 'धड़' (१) (रू.भे.)

उ०—कुंडळी धारे कंचवो, आखिर उठाय भार। धर रो धर पर धर कवच, भार हरे भरतार।—रेवतसिंह भाटी

५ देखो 'धुर' (२) (रू.भे.)

६ देखो 'धरा' (रू.भे.)

उ०—१ कंध वसण रण हाथ खग, घोड़ा ऊपर गेह। धर रुखआळी विण धरण, गिणै न त्रण सम. देह।—जैतदांन बारहठ

उ०—२ दळ मिळिया कळ गळीय सुहड गयवर गळगळीया। धर धमकीय सळवळीय सेस गिरिवर टळटळिया।—पं.प.च.

उ०—३ केवी तू गढ कूंचियां, सूंपै छोड सरम्म। मुख ज्यांरा दीठां मिटै, धर रजपूत धरम्म।—बां.दा.

धर-कोट-सं०पु० [सं० धरा+कोटः] लकड़ियों की बनी चहारदीवारी, लकड़ियों का बना अहाता। उ०—सूका केळा काट टाप धर गांयां भैंसां, खेत झूंपड़ी लेत स्त्रमित आणंद संदेसां। फळसा टाटा ठाट लाठ धर-कोट वणावै, ढूंढा पड़वा छांन कोड़वा ठांढ़ चढ़ावै।—दसदेव

धर-छाया-सं०स्त्री० [सं० धरा-छाया] अंधेरा, अंधकार (डि.को.)

धरज-सं०पु०—ताम्र, तामा (अ.मा.)

धरड़-सं०स्त्री०—वस्त्र के फटने की ध्वनि।

धरड़णो, धरड़बो-क्रि०अ० [अनु०] १ विदीर्ण होना, फटना।

उ०—छाती वजर कपाट भूप दुख दीठा भारी। धरड़ियो आकास धर धूजण सारी।—सगरांमदास

क्रि०स०—२ विदीर्ण करना, फाड़ना।

धरड़णहार, हारो (हारी), धरड़णियो—वि०।

धरड़िओड़ो, धरड़ियोड़ो, धरड़चोड़ो—भू०का०कृ०।

धरड़ीजणो, धरड़ीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

धरड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ विदीर्ण हुवा हुआ, फटा हुआ. २ विदीर्ण किया हुआ, फाटा हुआ।

(स्त्री० धरड़ियोड़ी)

धरजहर-सं०पु०यौ० [सं० धर+फा० जह्र] सर्प, सांप।

उ०—धरजहर देखिया गुरड़ धंख। पेखिया पटाझर अनड़ पंख।
—वि.सं.

धरण-वि० [सं०] ग्रहण करने, रखने, थामने या संभालने की क्रिया, धारण।

सं०पु०—१ एक नाग का नाम।

सं०स्त्री० [सं० धरणी] २ नाभि के ठीक नीचे की वह नस जो अंगुली के दबाने से रह रह कर उछलती हुई सी मालूम पड़ती है।

३ एक तोल विशेष. ४ देखो 'धारण' (रू.भे.)

५ देखो 'धारणा' (रू.भे.) उ०—गोपाळो सिवरांम रो, साथै जोध सकज्ज। श्रै खीची ऊंची धरण, करण जतन कमधज्ज।—रा.रू.

६ देखो 'धरणी' (रू.भे.)

उ०—तणो वधावण नेत वंध धरण सोढां तणी, तरण चंद-वदण कज वरण तावू। श्रमर कथ करण प्रथमाद सिर ऊमदा, परणवा पधारै राव पावू।—गिरवरदांन सांदू

धरणधर—देखो 'धरणीधर' (रू.भे.) उ०—सरण असरण अभैकरण सेवागरां, धरणधर सरीखा चरण धावै। जोन संगट हरण वरण वेहुवै 'जसा', गिरा तारण तरण किऊं न गावै।—जसजी आढ़ो

धरणनाग-सं०पु० [सं०] नाग को धारण करने वाले शिव, महादेव।

धरणपीतंबर-सं०पु० [सं० धरण+पीतांबर] ईश्वर (नां.मा.)

धरणिंद-सं०पु० [सं० धरण+इंद्र] नागराज, शेष नाग।

उ०—पास कुमार जिणंद के आगइ, भगति करति धरणिंदा। माई आज हमारइ आणंदा।—स.कु.

धरणि—देखो 'धरणी' (रू.भे.) (डिं.नां.मा.)

उ०—धुरवा धरणि लग लोढ़ा ले धावै। जीमण जीमण नै मोटा जिम आवै।—ऊ.का.

धरणिधर—देखो 'धरणीधर' (रू.भे.) उ०—पीठ धरणीधर पट्टही, हरि तिय चित्रण हार। तोड़ तोरा चरितां तणो, परम न लाभै पार।—ह.र.

धरणी-सं०स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, धरती (अ.मा.)

उ०—नभ सूं पवन पवन सूं अग्नि, अग्नी जळ प्रगटासी। जळ सूं धरणी धरणी पर स्रिस्टी, नाना रूप होय भासी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

२ नाभि (अमरत)

रू०भे०—धरण, धरणि, धरन।

धरणीतळ-सं०पु० [सं० धरणीतल] धरातल, पृथ्वी।

उ०—धरणीतळ व्याकुळ छैलो सिर धुणियो। सरणागत वच्छळ हेलो नह सुणियो।—ऊ.का.

धरणीधर, धरणीधरि-सं०पु० [सं० धरणी-धरः] १ ईश्वर, परमात्मा (नां.मा.)

उ०—आ काठां चढ़सी अवस, धरणीधर दे धोक। सठ मन मांनै सुधरसी, पातर सूं परलोक।—बां.दा.

२ विष्णु (ह.नां.) उ०—धरणीधर संकर देव धियावउ, जोति-प्रकास अलोप जग। मस्तक मुगट प्रकास मांडियउ, अनंत कोट ब्रह्मंड लग।—महादेव पारवती री वेलि

३ शिव, महादेव, शंकर. ४ कच्छप. ५ शेषनाग।

उ०—आभ विमूहां मांणसां, है धर झेलणहार। धरणीधर धर छंडियां, अच्छै तूं आधार।—ह.र.

६ पर्वत, पहाड़। उ०—सावज सीह मरण संमाही, मूकै आग फत्रज्जां मांही। लग्गा वहण असंख्या लसकर, तै धूजिया तिणै धरणीधर।

—गु.रू.बं.

७ राजस्थान, गुजरात का प्राचीन एक प्रसिद्ध तीर्थ।

वि०वि०—अति प्राचीन काल से यह वाराहपुरी के नाम से प्रसिद्ध था। उत्तर गुजरात के वाव और थराद नगरों के पास ढेमा नामक ग्राम में भगवान् चतुर्भुज विष्णु का एक मनोहर और विशाल मंदिर बना हुआ है। इस मंदिर के पास एक तालाब है जिसका नाम 'मान सरोवर' है। यहां पर भगवान, महादेव, लक्ष्मीजी, गणेशजी और हनुमानजी के मंदिर भी हैं। प्राचीनकाल में पंजाब, सिंध, व्रज, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि देशों के बहुत से यात्री द्वारकानाथ की यात्रा करने जाते थे, उनको प्रथम धरणीधर के दर्शन करने पड़ते थे और यहां की तप्त मुद्राओं को अपनी भुजाओं पर लगवाना आवश्यक समझा जाता था। कहते हैं आजकल तप्त मुद्राओं के स्थान पर केसर चंदन की मुद्राएँ लगाई जाती हैं। ऐसा माना जाता है कि भगवान श्री कृष्ण द्वारका जाते समय यहां ठहरे थे, अतः लोग इसे तीर्थों में गिनने लगे।

वि०—पृथ्वी का धारण करने वाला।

रू०भे०—धरणधर, धरणिधर।

धरणीसुत-सं०पु० [सं०] १ मंगल. २ नरकासुर।

धरणीसुता-सं०स्त्री० [सं०] सीता, जानकी।

धरणूं-सं०पु० [सं० धरणम्] १ गिरवी, धरोहर, रेहन (डिं.को.)

२ देखो 'धरणौ' (रू.भे.) (डिं.को.)

धरणौ-सं०पु० [सं० धरण] १ किसी शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा सताने पर अथवा ऋण दाता का ऋण निश्चित समय तक अदा न करने के कारण व्यक्ति विशेष अथवा समाज के समूह विशेष का इस निश्चय से अनशन करना कि उसकी प्रार्थना पूर्ण न होने पर आत्म-हत्या द्वारा प्राणों का त्यागना। उ०—पीछे उण हीज वरस प्रोहित मांन महेस री पटौ जवत हुवौ। वा बारठ चौथजी खूंडियै रो पटौ पण जवत हुवौ। पीछै श्रै धरणा कर बीकानेर आया। आखर अवार डिगळी रहै छै तठै जुहर कर सारा मुवा।—द.दा.

२ देव विशेष के स्थान पर अभीष्ट फल प्राप्ति हेतु अनशन कर बैठना। उ०—सोलंखी आपरै थांनक आय नै कुळ देवी रै धरणै बैठौ।—रा.वं.वि.

क्रि०प्र०—करणौ, दैणौ, धरणौ।

धरणौ, धरबौ-क्रि०स० [सं० धरणम्] १ रूप ग्रहण करना, धारण करना, आरोपित करना। उ०—जिण दाहे वण हर धरइ, नदी खळक्कइ नीर। तिण दिन ठाकुर किम चलइ, धण किम बांधइ धीर।—ढो.मा.

२ व्यवहार के लिये हाथ में लेना, ग्रहण करना।

उ०—१ पहिलउं सरसति अरचिसु रचिसु वसंत विलासु। वीणि धरइ करि दाहिणि वाहणि हंसलउ जासु।—व.वि.

उ०—२ अवरु संखु धरइ रळियांमणउ। ध्वनि करी सिवपंथी सुहांमणउ!—जयसेखर सूरि

३ निश्चय करना, विचार ग्रहण करना। उ०—करइ दाहु विदाहु हियइ धरइ। कहु कीचक हुइ मरत मरइ।—विराट पर्व

४ प्रतीत करना, महसूस करना। उ०—१ इंद्र आउखउ आसनउं थाइ' कंठ तणी माळा कर माइ। धरइ कंप तें हिया मज्झारि 'पडिसिउं दुक्ख तणइ भंडारि'।—चिहुंगति चउपई

उ०—२ चितइ चतुर स चिततउ, धरतउ अरति अपार।
—नेमिनाथ फागु

५ वैठाना, ग्रहण करना। उ०—आखई तो पिता नहीं ईसर, पुणइ अनेरी तूझ परि। रमाडिउ न रंग भरि रांमा, धवराडियउ न गोद धरि।—महादेव पारवती री वेलि

६ स्मरण करना। उ०—१ करुणानिध जन हितकारी रे, वांमे अंग सीत विहारी। सारी ज्यां वात सुधारी रे, धरियौ उर धानंखधारी।
—र.ज.प्र.

उ०—२ नारदू पहुतउ सिख्या देवि पंडव वइठा घ्यांनु धरेवि। एकं पाइं दिणवर द्रेठि, हीयडइ मंत्रु पंच परमेठि।—पं.पं.च.

७ पास में रखना, रक्षा में रखना। उ०—सिर नासा कांन दसन आंखें, नख गाल वपुस ना मल नाखें। मिळणो लेखो करइ मंतरणो, विहचण अपणो करि धन धरणो।—ध.व ग्रं.

८ स्वीकार करना। उ०—१ सखी भणइ 'सांमिणि हिव सुणउ एह दोस नवि कुणह तणउ, देविहिं कीधां छइ जे, कांम तेह मांजिवा धरइ कुण हांम।—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ चउसट्ठि गाह तणो चोसणो, धरमी जन नें मन में धरणो। बीजो आउर पच्चक्खांण, चउरासी गाथा परिमांण।—ध.व.ग्रं.

९ चौकन्ना होना, ध्यान धरना। उ०—न दें साद काय नारियण, साद दियें जो संत। आपण नांम उलावतां, धेनु (ही) कांन धरंत।
—ह.र.

१० संकल्प करना, दृढ़ निश्चय करना। उ०—१ ऊपनुं केवळ नांण सांमीय ए, नेमि जिणेसरहं ए। सांभळी सांमि वखांणु विरता ए सावयव्रतु धरइं ए।—पं.पं.च.

उ०—२ चारित्र भणीइ खडगह धारु, पुण्यवंत पालइं सविचारु। महाव्रत नउ न धरइं भार, बारव्रत नउ करउ अंगीकार।
—चिहुंगति चउपई

११ शोभार्थ अथवा रक्षार्थ धारण करना, देह पर रखना, पहनना।
ज्यूं—माथा माथे पोतियो धरणो।

उ०—गुरु ऊठाडई अरजुनु कुमरी करणिहिं सरिसउं माडइ वयरो। वे भाथा त्रिहुं खवें वहेई करियळि विसमु धणुहु धरेई।—पं.पं.च.

१२ स्थापित करना, स्थित करना, ठहराना। उ०—धेधींगर कदम आवळा धरतो, झड़ वरसात जेम मद झरतो।—र.ज.प्र.

१३ प्रकट करना, रखना। उ०—वेटा रहिं इकु मांनइ जाग, माथइ फाड देई इकि मागइं भाग। वेटा पाखइ इक दोहिलउं धरइं, बेटे छते इकि वढ़ी दढ़ी मरइं।—चिहुगति चउपई

१४ संलग्न होना, तत्पर होना, क्रियाशील होना। उ०—अनेकि परि जे पूजा करइं, मुगति जावा नी सजाई धरइं। रास भास सांमि गुण गायंति, पंचमगति निस्चइं पांमंति।—चिहुंगति चउपई

१५ रखेली रखना. १६ वहन करना, उत्तरदायित्व लेना।

उ०—एक दिवस ते च्यारि नंदन, रमलि करंता रंगि। वापि वोलाव्या 'कहउ किम, मझ घरि भार धरेसिउ अंगि।'
—विद्याविलास पवाडउ

१७ धारण करना, ग्रहण करना (गर्भ, हर्ष, शोक, उत्साह आदि)

उ०—१ वीजी मद्रकि मद्र धूय पंडु तणइ घर नारि। गभु धरीऊ गभु धरीऊ देवि गंधारि।—पं.पं.च.

उ०—२ कांमालय अट्ठमी तणी सांझइं संहट भणेवि। राजकुंअरि नीय घरि गई ऊलट अंगि धरेवि।—विद्याविलास पवाडउ

उ०—३ इसिउ जि मूरख जांणी तेउ। नयणि न जोइ नेह धरेउ।
—विद्याविलास पवाडउ

उ०—४ राय आएसइं साहण समहर, सयल सुहड मेल्हेवि। भणी उजेणी दीधउं पीयांणउं, महितउ मांनि धरेवि।
—विद्याविलास पवाडउ

उ०—५ उजेणी नयरी तणी वर नारी, ए रंग धरेवि ऊलट आवइं आपणि भणि मोति ए थाळ भरेवि।—विद्याविलास पवाडउ

१८ गिरवी रखना, बंधक रखना. १९ किसी वस्तु को मजबूती से पकड़ना या जोर से स्पर्श करना जिससे वह इधर-उधर नहीं जा सके या हिल सके, थामना, पकड़ना।

उ०—१ केसि धरी नइ तांणीउं, दुसासणि दुरचारि। वाळप्पणि हुं नवि मूई, कांइं हुई तुम्ह नारि।—पं.पं.च.

उ०—२ हारीय ए द्रुपदह धीयं ऊदाळिय सवि आभरण ए। तांणीय ए केसि धरेवि देवि दुसासणि दूजणिहिं ए।—पं.पं.च.

मुहा०—धर दवाणो या धर दबोचणो—किसी पर इस प्रकार आ पड़ना कि वह विरोध या बचाव न कर सके, वलपूर्वक अधिकार में करना। वाद-विवाद में परास्त करना।

२० कहना, डींग मारना।
ज्यूं—ओ तो गप्पां धरे है।

२१ प्रहार करना, मारना।
ज्यूं—एक इज मुक्के री धरी, के नीचो पड़ियो।

उ०—भ्रूंटि धरी धूंवड धाइ ताडइ। आक्रंदती द्रूपदि वूंब पाडइ;
—विराट पर्व

२२ वश में करना, अधिकार में करना, कावू करना, रोकना।
उ०—मन देवता कुणहइं धरी न सकीइं, क्षणि जाइ सागरि, क्षणि जाइ आगरि।—व.स.

धरणहार, हारो (हारी), धरणियो—वि० ।
धरवाड़णो, धरवाड़वो, धरवाणो, धरवावो, धरवावणो, धरवाववो, धराड़णो, धराड़वो, धराणो, धरावो, धरावणो, धराववो—प्रे०रू० ।
धरिओड़ो, धरियोड़ो, धरयोड़ो—भू०का०कृ० ।
धरीजणो, धरीजवो—कर्म वा० ।
धुरणो, धुरवो—रू०भे० ।

धरती-सं०स्त्री० [सं० धरित्री] १ पृथ्वी, भूमि, जमीन (डिं.को., ह.नां.)
उ०—१ धरती म्हांरी म्हे धणी, ढाहण नेजां ढल्ल । किम कर पड़सी ठाकरां, ऊभा सीहां खल्ल ।—अज्ञात
उ०—२ आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधा खैंचि उरा । धणियां मरे न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा ।—बां.दा.
रू०भे०—धरत्ती ।
मह०—धरतो, धरत्तो ।
मुहा०—१ धरतियां लेणो—मरणासन्न व्यक्ति को पलंग से उठा कर भूमि पर शयन कराना. २ धरती कुचरणी—तुच्छ या हल्का कार्य करने के कारण लज्जित होना, शर्मिन्दा होना. ३ धरती लेणी—देखो 'धरतियां लेणो'. ४ धरती हाथ टिकणा—पराजित होना, हार मानना, किसी महान कार्य में अत्यधिक वय होने के कारण निर्धन होना ।
२ राज्य । उ०—१ राव मंडळीक गैहलो हुवो । तरै 'जैसो' मंडळीक रो लोहड़ो भाई तिण सारो धरतो रो भार संभायो । धरती रा सारा राजपूत लेनै भाखरै पैठो । धरतो रो विगाड़ घणो करै छै । गढ़ गिरनार मांहे पातसाह रो बडो थांणो छै । धरती मांहे थांणा ठोड़-ठोड़ राखिया छै पण धरती भोग पड़ सकै नहीं ।—नैणसी
उ०—२ तिण ऊपरि कहाव मांडियो रांमसिंघजी गाडा ऊंट कँवरजी कन्हां मंगाड़ी अर धरती मांह डोरो १ छोडियो नहीं ।—द.दा.
रू०भे०—धरत्री, धरिती, धरित्री, धरेती, धरैती,ध्रति, ध्रती, ध्रिति, ध्रिती ।

धरती-रो-फरोत-सं०पु०यौ०—ऊंठ ।

धरतो-सं०पु०—देखो 'धरती' (मह., रू.भे.)
रू०भे०—धरत्तो ।

धरत्ती—देखो 'धरती' (रू.भे.) उ०—अजे सूर झळहळै, अजे प्राजळै हुतासण । अजे गंग खळहळै, अजे सावत इंद्रासण । अजे धरणि ब्रह-मंड, अजे फळफूल धरत्ती ।—महारांणा राजसिंह रो छप्पय

धरत्तो—देखो 'धरती' (मह., रू.भे.)

धरत्री—देखो 'धरती' (रू.भे.) (डिं.नां.मा.)

धर-थंभ, धर-थंभण, धरती-थंभ-सं०पु०यौ० [सं० धरा, धरित्री+स्तम्भ] १ वीर, योद्धा. २ राजा, नृप । उ०—१ धर-थंभ रखे खग पांण धरा ।—सू.प्र.
उ०—२ सुत रायपाल 'कांनड़' सधीर, धर-थंभण 'जालण' सूर धीर ।—सू.प्र.

धरधर—१ देखो 'धराधर' (रू.भे.) (अ.मा.)
२ देखो 'द्रहद्रहवार' (रू.भे.)

धर-धरण-सं०पु०यौ० [सं० धरा+धारण] शेषनाग ।
उ०—धमस नाळ रज धोम, झळळ तप झंख कमळ झळ । धर धरसळ धर-धरण उतन दिस हले 'अभैमल' ।—सू.प्र.

धर-धर-वेळा-सं०पु०यौ० [सं० जयद्रथ वेला] गोधूलिक समय के बाद का समय जब एक दूसरे को स्पष्ट देख सकते हैं, संध्या का समय ।
रू०भे०—धरे-धरे-वेळा ।

धर-धारक सं०पु०यौ० [सं० धरा+धारक] शेष नाग ।
उ०—१ धर-धारक सीस धमधमिया, अतळी बळ बाजिद उप्रमिया ।
—सू.प्र.
उ०—२ धर-धारक अंबर धड़क, चारज बैंड सूवज्ज, पंचम जारज पारखै, जिह चारज कमधज्ज ।—किसोरदांन बारहठ

धरधीस-सं०पु० [सं० धराधीस] राजा, नृप । उ०—तखत भूप मुरधर तखत, धरा नखत धरधीस, पायो सुतन 'प्रतापसी', स्यांम समप्पण सीस ।—किसोरदांन बारहठ

धरधुख-सं०पु० [सं० धराधुक्ष] पृथ्वी की गर्मी, पृथ्वी की उष्णता ।
उ०—हलै पखराळन पंच हजार, मिळियो नभ मंडळ वेग समीर, निठयो धरधुख सुतालन नीर ।—वं.भा.

धरधूंस-वि०—जमीदोज ?
उ०—नहीं माळा नीकी रे जाळा, नहीं काटै जी की रे । धाड़ा पाड़ कर रटके धूरत, धन पटके धरधूंस । नट के साधू वणै निराळा, सटके माळा सूंस ।—ऊ.का.

धरन—१ देखो 'धरणी' (रू.भे.) २ देखो 'धरण' (रू.भे.)

धर-पत, धर-पति, धर-पतो, धर-पत्त, धर-पत्ती-सं०पु०यौ०—
देखो 'धरा-पति' (रू.भे.) (अ.मा., डिं.को.)
उ०—१ कीजै कुण मींड न पूगै कोई, धरपत भूटी टसक धरै । तो जिम भीम दीयै तांबापत्र, कवी अजाची भलां करै ।—किसनो आढ़ो
उ०—२ धरपति रूप इसो प्रभु धरियो, अनंग जांण दूजो अवतरियो ।—सू.प्र.
उ०—३ महाजांण उतमि मती, धजाबंध लाखो धरपती । कविंदां तणो रोर कापै, सिरै सार मोजां समापै ।—ल.पि.
उ०—४ देखे हसम दिये दरवाजा, धरपत्त अवर न धीर धरै । 'चूंडा' हरा तणा जे चारण, करै सूंम सुभ राज करै ।
—किसनो आढ़ो दुरसावत
उ०—५ धारै अस्त्र सस्त्र धरपत्ती, चढ़ियो तुरंग 'अभो' चक्रवत्ती ।
—रा.रू.

धर-पाड़ो-सं०पु०यौ० [सं० धरा+रा० पाड़णो] भूमि छीनने वाला, आततायी । उ०—वट पाड़ां धर-पाड़ो वाळी, आभ जड़ां नांखै ऊवाड़ । कोय न गांज सकै किनियांणी, झींझणियाळ तुहारा झाड़ ।
—बां.दा.

घर-पुड़–सं०पु०यौ० [सं० घरा+रा० पुड़] धरणी-तल ।
उ०—घर घर में धीणा घणा, घर घर घूमे माट । राग रंग रळिया-वणी, घरपुड़ मांझल घाट ।—बां.दा.

घर-बार—देखो 'दरवार' (रू.भे.) उ०—घड़क घर-वार सिरदार सोह घूजिया, रूक हरथ वाह करता थका राड़ । नयड़ गड गाजती छूटी निहंग, घड़हड़ै हुतासण कना अर घाड़ ।
—धनजी भीमजी रौ गीत

घर-भार-उतारण–सं०पु०यौ० [सं० घरा-भार-उतारण] ईश्वर, परमेश्वर (नां.मा.)

घर-मंडण–सं०पु०यौ० [सं० घरा+मंडन] इन्द्र ।
उ०—गह घूमी लूंबी घटा, वादळ कियौ वणाव । घर-मंडण घर आवियौ, घर-मंडण घर आव ।—अज्ञात

घरमंडळ, घरमंडळि–सं०पु० [सं० घरा+मंडल] भूमण्डल, पृथ्वीमंडल ।
उ०—पाडइ चिंघ कवंध वंघ घरमंडळि रोळइ । वांणि विनांणि किवांणि केवि अरीयण धंधोळइ ।—पं.पं.च.

घरम–सं०पु० [सं० धर्म, धम्मं] १ आराधना और विश्वास की विशिष्ट प्रणाली जो किसी महात्मा या आचार्य द्वारा चलाई जाती है, उपासनाभेद, पंथ, मत, सम्प्रदाय, मजहब ।
उ०—१ भिड़ तुरकांण अरिदळ भंजै, हिंदू घरम काज रै हेत । अमर नांम रावै अखवीहर, खत्री विढ़ पड़ियौ रणखेत ।
—उदयसिंह कूंपावत रौ गीत

उ०—२ 'सांगो' घरम सहाय, वावर सूं भिड़ियौ विहस । अकवर कदमां आय, पड़ै न रांण 'प्रतापसी' ।—दुरसौ आढ़ौ
उ०—३ लछी रूप हरि भगति, घरम हिंदू घांनंतर । वेद चंद्र मिण किया, भूम रंभा वळ कुंजर धेन पूज सुर धेन वि मधु चरणाम्रत वंदां, धनुख मांण नृप कळप संख जस मद्द विरद्दां । विख वेध तुरी उघम तुमुल, महण मेछ उर मंडिया । 'दुरगेस' मथै चित साह रौ, रतन चवद्दै कड्ढ़िया ।—रा.रू.
क्रि०प्र०—छोडणौ, वदळणौ ।
मुहा०—धरम में आणौ—किसी विशिष्ट मजहब को स्वीकार करना, किसी विशेष मत को मानना, सम्प्रदाय में प्रवेश करना ।
२ समाज या लोक की स्थिति के लिये आवश्यक ऐसी वृत्ति, आचरण या आचार जिससे समाज की रक्षा एवं सुख शान्ति की वृद्धि हो तथा परलोक में भी उत्तम गति मिले, कल्याणकारी कर्म, सत्कर्म, श्रेय, सदाचार, सुकृत, पुण्य । उ०—वीरत कीरत वंस वित, मत मौजां गुण मांण । संप सुलच्छण घरम सुख, व्है यां अघ सूं हांण ।
—बां.दा

मुहा०—१ धरम ओडणौ—देखो 'धरम खाणौ'. २ धरम कमाणौ—धर्म अर्थात् सत्कर्म कर के उसका फल संचित करना. ३ धरम खाणौ—धर्म की दुहाई देना, धर्म की शपथ खाना. ४ धरम बिगाड़णौ, धरम भिस्ट करणौ—धर्म भ्रष्ट करना, धर्म के विरुद्ध आचरण करना । स्त्री का सतीत्व नष्ट करना. ५ धरम राखणौ—धर्म सुरक्षित रखना, धर्म के विरुद्ध आचरण करने से वचना या वचाना. ६ धरम लैणौ—देखो 'धरम खाणौ'. ७ धरम सुहाती कै'णी—उचित वात कहना, ठीक-ठीक कहना, धरम का ध्यान रख कर कहना, सत्य का कहना. ८ धरम सूं (से)—धर्म के अनुसार.
९ धरम सूं (से) कै'णी—देखो 'धरम सुहाती कै'णी' ।
३ आपसी व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाले वे सिद्धान्त या नियम जो किसी राजा, आचार्य अथवा किसी मध्यस्थ अधिकारी द्वारा पालन कराये जांय, कानून-कायदा, नीति, न्याय व्यवस्था ।
४ पारलौकिक सुख की प्राप्ति के अर्थ से किया गया वह कर्म या कृत्य जो किसी मान्य ग्रंथ, आचार्य या ऋषि द्वारा बताया गया हो । शुभ फल की कामना (मोक्ष प्राप्ति आदि) के कारण किया गया कृत्य या विधान जैसे अग्निहोत्र, यज्ञ, व्रत, होम आदि ।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।
यौ०—धरम-करम ।
५ वह चित्तवृत्ति जो उचित-अनुचित का विचार करती है, न्याय-बुद्धि, विवेक, ईमान ।
यौ०—रांमधरम ।
६ कभी अलग नहीं होने वाली किसी व्यक्ति या वस्तु की वह प्रकृति या वृत्ति जो उसमें सदा रहती है, स्वभाव । जैसे—गुड़ का धर्म है मीठा, शराव का धर्म मादकता, क्षत्री का धर्म है रक्षा, आंख का धर्म है देखना, दुष्ट का धर्म है कष्ट देना । उ०—करण वाखांण दुनियांण धिन धिन कहै, धरम छत्रियांण भुज अमर धारू । अटक सूं लियां हिंदवांण आगौ उरड़, मुरड़ पतिसाह वीकांण मारू ।—देदौ
७ वह व्यवहार या कर्म जो दुर्गति में गिरते हुए प्राणी को सुगति की ओर प्रेरित करे (जैन)
८ समाज के कार्य्य-विभाग के निर्वाह के लिए उचित और आवश्यक समझा जाने वाला कर्म या व्यापार । मनुष्य का किसी विशेष कोटि या अवस्था में होने के कारण अपने निर्वाह तथा दूसरों की सुगमता के लिए किया जाने वाला कर्म । किसी सम्बन्ध स्थिति या गुण विशेष के विचार से किया जाने वाला वह कर्म जिसका करना आवश्यक हो । वह व्यवसाय या व्यवहार जो किसी जाति, कुल, वर्ग, पद इत्यादि के लिए उचित ठहराया गया हो, फर्ज, कर्त्तव्य । जैसे—पुत्र का धर्म, माता-पिता का धर्म, क्षत्रिय का धर्म, ब्राह्मण का धर्म ।
मुहा०—१ धरम डाड दैणौ—मृतक के पीछे कर्त्तव्य समझ कर रोना. २ धरम हार वात करणी—धर्म या कर्त्तव्य के विरुद्ध विचार या वात करना ।
यौ०—साम्-धरम, सांमी-धरम, स्वांमी-धरम ।
९ दान, पुण्य । उ०—असी मौ'र दी नांनगसाही, साखो दियौ जुड़ाय । धरम-पुन्न यूं वांट डूंगजी, झड़वासै नै जाय । झड़वासै में सासरौ, साळां सूं मिळवा जाय ।—डूंगजी जवारजी री पड़

मुहा०—१ धरम री गाय रा दांत कांई देखणा—दान में अथवा मुफ्त मिली हुई वस्तु के गुण अवगुण नही देखना चाहिए।
मि०—रावळी तेल पल्ला में लीजै।
२ धरम री जड़ हरी होणी—दान-पुण्य से शुभ फल मिलता है।
यौ०—धरम-पुन्न।
१० उपमेय और उपमान में समान रूप से होने वाली वृत्ति या गुण। वह समान गुण जिसके कारण एक वस्तु की उपमा दूसरी से दी जाती है (अलंकार शास्त्र)
जैसे—इंद्र सो उदार है नरिंद्र मारवार को।
११ युधिष्ठिर, कंक. १२ यमराज. १३ वर्तमान अवसर्पिणी के १५ वें अर्हंत का नाम (जैन)
उ०—पनरम धरम तयाळिस गणि चौसठ हजार। साहु साहुणी बासठ सहस अनै सयचार।—ध.व.ग्रं.
१५ छंद शास्त्र के अनुसार टगण को छ, मात्राओं के बारहवें भेद का नाम (ऽ।।।) (डि.को.)
१५ जन्म लग्न से नवें स्थान का नाम जिसके द्वारा यह विचार किया जाता है कि बालक कहां तक भाग्यवान् और धर्मपरायण होगा।
१६ अटल, निश्चल, दृढ़॰।
रू०भे०—धम्म, धम्मु, धम्मो, धरम्म, ध्रम, ध्रम्म।

धरमग्रातमज—सं०पु० [सं० धर्मात्मज] युधिष्ठिर (ह.नां.)

धरमकरम—सं०पु० [सं० धर्मकर्म] १ किसी धर्म ग्रंथ के अनुसार आवश्यक ठहराया हुआ कर्म या विधान. २ ७२ कलाओं में से एक।

धरमक्षेत्र, धरमखेत, धरमखेत्र—सं०पु० [सं० धर्मक्षेत्र] १ कुरुक्षेत्र. २ भारतवर्ष।

धरमग्य—वि० [सं० धर्मज्ञ] धर्म को जानने वाला।

धरमग्रंथ—सं०पु० [सं० धर्मग्रंथ] किसी जन-समाज के आचार व्यवहार और उपासना आदि से सम्बन्धित शिक्षा का ग्रंथ या पुस्तक।

धरमघट—सं०पु० [सं० धर्मघट] काशी खंड, हेमाद्रि दान खंड आदि के अनुसार सुगंधित जल से भरा घड़ा जिसका वैशाख में दान दिया जाता है।

धरमचक्र—सं०पु० [सं० धर्मचक्र] १ धर्म का प्रकाश करने वाला जिनदेव का चक्र (जैन)

धरम-जिहांन—सं०पु०यौ० [सं० धर्म+जहान] सूर्य, भानु (अ.मा.)

धरम-जीवन—सं०पु०यौ० [सं० धर्म जीवन] धार्मिक कार्यों को संपन्न करा कर जीवन यापन करने वाला ब्राह्मण।

धरम-जुद्ध—सं०पु०यौ० [सं० धर्म-युद्ध] कपट रहित वीरतापूर्वक युद्ध।

धरमचरचा—सं०स्त्री० [सं० धर्मचर्या] धर्म का आचरण।

धरमणदेवी—सं०स्त्री०—चारण कुलोत्पन्न एक देवी।

धरमचारी—वि० [सं० धर्मचारिन्] धर्म का आचरण करने वाला।

धरमचिंतन—सं०पु०यौ० [सं० धर्मचिंतन] धर्म संबंधी बातों का विचार, धर्म की भावना।

धरमज—सं०पु० [सं० धर्मज] १ धर्म-पुत्र युधिष्ठिर. २ नरनारायण।

धरमदान—सं०पु०यौ० [सं० धर्मदान] ग्रहों आदि की शान्ति तथा कोई विशेष फल प्राप्ति हेतु दिया जाने वाला दान।

धरमधक्को, धरमधक्को—सं०पु०यौ० [सं० धर्म+रा० धक्को] १ धर्म की आड लेकर दिया जाने वाला धक्का, धर्म की आड में दिया जाने वाला धोका।

धरम-धरा—सं०स्त्री०यौ० [सं० धर्मधरा] १ पुण्य भूमि, भारतवर्ष। (डि.को.)

धरम-ध्यांन—सं०पु०यौ० [सं० धर्म+ध्यान] १ धर्म-चिंतन, धर्म-विचार में तल्लीनता. २ चार प्रकार के ध्यान में एक प्रकार का ध्यान। (जैन)
रू०भे०—धम्मज्झांण।

धरम-धारी—वि० [सं० धर्मधारिन्] धर्म का आचरण करने वाला, धर्म को निभाने वाला। उ०—पहि प्रमांणै जुगति जांणै, अति बखांणै जगत्र आखो। धर्मधारी प्रसिद्धि प्यारी, लखण भारी कुंअर लाखो।
—ल.पि.

धरम-धुज—१ राजा, नृप. २ देखो 'धरमध्वज' (रू.भे.)

धरम-धूरीण—वि० [सं० धर्मधूरीण] धर्म में अगुआ।
उ०—१ त्यां माही एक साह महा चतुर, सकळ कळा-प्रवीण, धरम-धूरीण, अनेक जात्रा, अनेक तीरथ को करणहार माल लेय वांणिज नूं देसांतर गयो।—सिंघासण बत्तीसी
उ०—२ धोरी धरमधूरीण, निगम आगम अवतारी। दरसण अर उपनिसद, जिणां री टोळी न्यारी।—दसदेव

धरम-ध्वज—सं०पु० [सं० धर्मध्वज] धर्म का आडंबर करने वाला व्यक्ति, ढोंगी, पाखंडी।

धरम-नाथ—सं०पु० [सं० धर्मनाथ] जैनों के १५ वें तीर्थंकर का नाम।

धरम-नांभ—सं०पु०यौ० [सं० धर्मनाभ] विष्णु।

धरमनिस्ठ—वि० [सं० धर्मनिष्ठ] धर्म के प्रति जिसका विश्वास हो, धार्मिक।

धरमनिस्ठा—सं०स्त्री० [सं० धर्मनिष्ठा] धर्म के प्रति विश्वास।

धरमनीति—सं०स्त्री० [सं० धर्मनीति] १ ७२ कलाओं में से एक (व.स.) २ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक (व.स.)

धरमपण—सं०पु० [सं० धर्मत्व] धर्माचरण करने वाला, धर्मपरायण।
उ०—दइवांण रुद्र एकादसां, प्रांणपूर पति धरमपण। कपिराय धीर कवि मंछ कहै, जय जय स्री रघुवीरजण।—र.रू.

धरमपतनी—सं०स्त्री० [सं० धर्मपत्नी] धर्मशास्त्र की रीति से विवाहित स्त्री।

धरम-पथ—सं०पु०यौ० [सं० धर्म-पथ] धर्मशास्त्र के अनुसार आचरण करने का ढंग। उ०—तहां सकळ धरम-पथ हालै।
—सिंघासण बत्तीसी

धरमपाळ—सं०पु०यौ० [सं० धर्मपाल] १ धर्म का पालन या रक्षा करने

वाला. २ सजा या दंड जिसके भय से लोग धर्म का पालन करते हैं. ३ राजा दसरथ के एक मंत्री का नाम।

धरमपुत्त-सं०पु० [सं० धर्मपुत्र] १ वह जो औरस पुत्र न हो परन्तु जिसे पुत्र मान लिया जाय. २ युधिष्ठिर, कंक. ३ नर नारायण।

रू०भे०—धम्मपुत्त, धरमपूत, धरमपूतु।

धरमपुरी-सं०स्त्री० [सं० धर्मपुरी] १ वह स्थान जहां मृत्यु के उपरांत मनुष्य के कर्मो के सम्बन्ध में विचार होता है, यमपुर.

२ न्यायालय, कचहरी।

धरमपुरो-सं०पु० [सं० धर्म+पुर] १ एक राजकीय विभाग विशेष।

वि०वि०—इस विभाग के अन्तर्गत अपाहिजों की सहायतार्थ खर्च की व्यवस्था होती है तथा देव-मन्दिरों का प्रवन्ध और उनके विभिन्न खर्चो की व्यवस्था भी इसी के द्वारा होती है।

२ दान, पुण्य।

धरमपूत, धरमपूतु—देखो 'धरमपुत्र' (रू.भे.) उ०—गयणंगणि वांणी पडीय, 'खमि दमि संजमि एकु। धरमपूतु जगि ऊपनउ, सत्यसीलि सुविवेकु।—पं.पं.च.

धरमफूल-सं०पु० [सं० धर्म+फुल्ल] स्वर्ग (अ.मा.)

धरमबुद्धि-सं०स्त्री० [सं० धर्मबुद्धि] भले और बुरे का ज्ञान।

धरमभाई-सं०पु० [सं० धर्म+भ्रातृ] १ वह व्यक्ति जिसे भाई मान लिया गया हो।

(स्त्री० धरम वैं'न)

वि०वि०—स्त्री जब पुरुष को भाई मानती है तो उसके राखी बांधती है। इस प्रकार वह पुरुष उस स्त्री के लिए 'धरम भाई' बन जाता है तथा वह स्त्री 'धरम वैं'न' बन जाती है। पुरुष जब किसी अन्य पुरुष को भाई मान लेता है तब वह उसके राखी बांधता है अथवा परस्पर पगड़ी वदल ली जाती है जिसे 'पोतिया बदळ भाई' भी कहते हैं। इसी प्रकार स्त्री जब किसी अन्य स्त्री को बहन मान लेती है तो वह उसके राखी बांधती है अथवा परस्पर ओढ़ने के वस्त्र बदल लिए जाते हैं। इस प्रकार वे 'ओडणा बदळ वैं'नां' कहलाती हैं।

धरमभिक्षुक-सं०पु० [सं० धर्मभिक्षुक] वह जिसने धर्मार्थ भिक्षावृत्ति ग्रहण की हो।

धरमभीरु-वि० [सं० धर्मभीरु] जो धर्म के भय के कारण अधर्म करने से डरता हो।

धरममंढ-सं०पु० [सं० धर्म+मण्डप] विवाह मण्डप (चौंरी) में अग्नि की परिक्रमा (भांवरी) के पश्चात् पिता की ओर से पुत्री को पहनाया जाने वाला पहनावा।

वि०वि०—'धरममंढ' पहनावा उसी दशा में दिया जाता है जब पिता ने पुत्री का विवाह विना रुपयं या धन लिये किया हो।

रू०भे०—धरममढ़।

धरममढ़—देखो 'धरममंढ़' (रू.भे.)

धरमराज-सं०पु० [सं० धर्मराज] १ धर्म का पालन करने वाला. २ राजा, नरेश. ३ यमराज (डि.को.). ४ युधिष्ठिर, कंक।

उ०—रांमत चौपड़ राज री, है धिक बार हजार। धण सूंपी लूंठां धकै, धरमराज धिक्कार।—रांमनाथ कवियो

रू०भे०—ध्रमराज।

धरमलाभ-सं०पु० [सं० धर्मलाभ] जैन साधुओं द्वारा दिया जाने वाला आशीर्वाद।

रू०भे०—ध्रमलाभ।

धरमलेस्या-सं०स्त्री० [सं० धर्मलेश्या] तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या के समूह का नाम।

वि०वि०—देखो 'लेस्या'।

रू०भे०—धम्मलेसा।

धरमवंत-सं०पु० [सं० धर्मवंत] धर्मात्मा। उ०—सोहवत पंडितां, धरमवतां री नैं भला सांचा महापुरुसां रै दरसणां री साथ जिका आपनूं आच्छा स्वभावां संसार नूं दिखावै।—नी.प्र.

धरमवप-सं०पु० [सं० धर्मवपु] एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

उ०—वज्रनाभ सुत सुगण धरमवप। ते सुत विध्रित नरेस उग्र तप।

—सू.प्र.

धरमवाहन-सं०पु०यौ० [सं० धर्मवाहन] यमराज का वाहन महिष, भैंसा (डि.को.)

धरमविचार-सं०पु० [सं० धर्मविचार] स्त्री की चौंसठ कलाओं में से एक।

धरमविवाह-सं०पु० [सं० धर्म=पुण्य, दान+विवाह] वह विवाह जिसमें वर या उसके सम्बन्धियों से कन्या के बदले में धन नहीं लिया जाता है।

वि०वि०—प्राय: ऐसा विवाह स्त्रियों का पुनर्विवाह होने वाली जातियों में किसी वृद्ध की मृत्यु के बारहवें दिन के भोज के अवसर पर किया जाता है अथवा गंगा-स्नान कर के लौटने के पश्चात् गंगाजल वरताने के उपरान्त किया जाता है।

वि०वि०—देखो 'गंगाजळ'।

रू०भे०—धरमव्याह।

धरमवीर-सं०पु० [सं० धर्मवीर] १ वह व्यक्ति जो धर्म करने में साहसी हो।

धरमव्याध-सं०पु० [सं० धर्मव्याध] कौशिक नामक एक तपस्वी वेदाध्यायी ब्राह्मण को धर्म का तत्व समझाने वाला मिथिलापुर-निवासी एक व्याध।

धरमव्याह—देखो 'धरमविवाह' (रू.भे.)

धरमव्रता-सं०स्त्री० [सं० धर्मव्रता] धर्म नामक राजा की कन्या जो विश्वरूपा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। उसने पातिव्रत्य की प्राप्ति के लिए घोर तप किया था। मरीचि ऋषि ने उसे सबसे बड़ी पतिव्रता जान कर उसके साथ विवाह किया था।

धरमसभा-सं०स्त्री० [सं० धर्म सभा] १ न्यायालय, अदालत.

२ जहाँ धार्मिक विषयों की चर्चा या उपदेश हो ।

रू०भे०—धरम्म सभा, ध्रम-सभा ।

धरमसाळा–सं०स्त्री० [सं० धर्मशाला] १ वह स्थान जहां यात्रियों के टिकने की व्यवस्था हो. २ पुण्य के लिए नियमपूर्वक दान आदि दिया जाने वाला स्थान, सत्र । उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति देवळां री पाखती धरमसाळा, दांनसाळा मंडीजै छै। मांहे जोगेसर पवन रा साझणहार त्रिकुटी रा चडावणहार, धूम्रपांन रा करणहार उरधबाहु ठाढ़ेसरी दिगंबर सेतंबर निरंजनी आकास-मुनी ।—रा.सा.सं.

उ०—२ जे नगर मांहइ दांनसाळा, पोखधसाळा, धरमसाळा, गढ़ मढ़ मंदिर प्रकार, चुरासो चुहुटांनी हटसेणि, मांहइ वस्त संपूरण वरतइ ।—व.स.

धरमसावरणी–सं०पु० [सं० धर्मसावर्णि] ग्यारहवां मनु (पौराणिक)

धरमसासतर, धरमसास्त्र–सं०पु० [सं० धर्मशास्त्र] समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार सम्बन्धी नियमों का ग्रंथ । उचित आचार व्यवहार की वह व्यवस्था जो किसी जन-समूह के लिए किसी महात्मा या आचार्य की ओर से होने के कारण मान्य समझी जाती हो ।

रू०भे०—धम्मसासतर, ध्रमसास्त्र ।

धरमसास्त्री–सं०पु० [सं० धर्मशास्त्री] धर्मशास्त्र को जानने वाला, विद्वान्, पण्डित ।

धरमसीळ–वि० [सं० धर्मशील] धर्मानुसार आचरण करने वाला, धर्मात्मा ।

धरमसुभाव–स०पु० [सं० धर्म स्वभाव] तालाव, सरोवर (अ.मा.)

धरमांग–स०पु० [सं० धर्माङ्ग] बगुला ।

धरमातमा, धरमात्मा–वि० [सं० धर्मात्मन्] जो धर्मानुसार आचरण करता हो, धार्मिक । उ०—जणीं मांहे एक रजपूत रहै, सो वडो उमराव अर वडो ग्यांनी धरमात्मा । उणी आगै एक बांमण कथा बांचै ।—गांम रा धणी री वात

रू०भे०—ध्रमआतमा ।

धरमादे, धरमादै–क्रि०वि० [सं० धर्मार्थ] धर्म या परोपकार के लिये ।

धरमादौ–सं०पु० [सं० धर्म] दान, पुण्य, धर्म ।

उ०—१ सेठां ! भगवांन रा दरबार में मूंडो कीकर बतावोला ? सेठ हंस्या नै बोल्या—'धरमादौ कोय वंटै हे नी, पै'ली घर में सूं मूळा री कापी व्है जिसा काड नै दिया हा, न्यात में नाक ऊंचो राखण नै ।—रातवासो

उ०—२ थारै आंखियां-रो भाव कुण समझतो हुसी ? ओझाजी-रै घरै धरमादै-रा डांगर मोकळा ऊभा हुसी ।—वरसगांठ

क्रि०प्र०—आणौ, करणौ, खाणौ, देणौ, न्हांकणौ, पाणौ, राखणौ ।

धरमादौ-खातौ–सं०पु०यौ० [सं० धर्म+अ० खत] १ व्यापारियों की वहियों में पुण्यार्थ दिया जाने वाला धन का खाता. २ व्यापारियों की पुण्यार्थ निकाली हुई रकम. ३ पुण्यार्थ ।

धरमाधिक, धरमाधिकरणिक–सं०पु० [सं० धर्माधिकरणिक] १ न्यायाधीश, धर्माधिकारी । उ०—१ राजा जुवराज कुमार राजेस्वर महामंडळेस्वर सांमंत लघू सांमंत तलवर तंत्रपाळ चतुरसीतिक ताडकपति मंत्री महामंत्री ग्रहवाहक स्त्रीकरणिक व्ययकरणि राजकार धरमाधिक ...... ।—व.स.

उ०—२ जुवराज कुमार राजेस्वर महामंडळेस्वर सांमंत लघु सांमंत तलवर तंत्रपाळ चतुरसीतिक ताडकपति मंत्रि, महामंत्रि ग्रहवाहक स्त्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक धरमाधिकरणिक ।—व.स.

२ वह स्थान जहां पर न्यायाधीश या राजा मुकदमों पर विचार करता हो, विचारालय ।

रू०भे०—धरमाधिगरण, धरम्माधिगरण ।

धरमाधिकार–सं०पु० [सं० धर्माधिकार] १ धार्मिक कृत्यों का प्रबंध या व्यवस्था. २ न्यायाधीश का पद ।

धरमाधिकारी–सं०पु० [सं० धर्माधिकारिन्] १ धर्म अधर्म की व्यवस्था देने वाला, न्यायाधीश. २ पुण्य खाते का प्रबंधकर्ता, दानाध्यक्ष । ३ धर्मराज ।

धरमाधिगरण—देखो 'धरमाधिकरणिक' (रू.भे.)

उ०—सेनापति मंत्रि महामंत्रि रांणा स्त्रीगरण वयगरण रायगरण धरमाधिगरण देवगरण नायक दंडनायक अंगलेखक भांडागारिक संधिविग्रही साहणी मसाहणि ।—व.स.

धरमारण–सं०पु० [सं० धर्मारण्य] १ गया के अन्तर्गत एक तीर्थ स्थान. २ तपोवन. ३ वह पुण्य भूमि जहां पर गुरुपत्नी तारा के हरण के कुकृत्य से धर्म-व्याकुल होकर चंद्रमा जा घुसा था ।

धरमारथ–क्रि०वि० [स० धर्मार्थ] धर्म के निमित्त, परोपकार के लिये ।

धरमावतार–सं०पु० [सं० धर्मावतार] १ अत्यन्त धर्मात्मा, साक्षात् धर्म-स्वरूप. २ युधिष्ठिर. ३ वह पुरुष जो धर्माधर्म का निर्णय करे, न्यायाधीश ।

धरमासन–सं०पु० [सं०धर्मासन] न्यायाधीश का वह स्थान, कुर्सी, आसन या चौकी जिस पर बैठ कर वह न्याय करता है ।

धरमास्तिकाय–सं०पु० [सं० धर्मास्तिकाय] गति परिणाम वाले जीव और पुद्गलों की गति में जो सहायक हो (जैन)

रू०भे०—धम्मत्थिकाय ।

धरमियौवीर—देखो 'धरम-भाई' (अल्पा.)

उ०—सूवटा रै तूं धरमियौ सै वीर, देख कठैई जांमण जाया नै आवतौ । बाई ए मन में धीरज राख, वीरौ दीसै मनै आवतौ ।

—लो.गी.

धरमी–वि० [सं० धर्मिन्] (स्त्री० धरमण, धरमणी) धर्मात्मा, पुण्यात्मा, धार्मिक । उ०—१ आज धरावू, धरमी, धूंधळो, काळी कांठळ मेह ओ । आज नै वरसै, धरमी, मेहूड़ा, भीजै तंवू री डोर ओ ।—लो.गी.

उ०—२ घरमी नर ऊपर कोमळ कर धारै। पापी पुरुसां नै सदव्रत संहारै।—ऊ.का.

२ गुण विशिष्ठ या धर्म, जिसमें धर्म हो.

३ धर्म या मत को मानने वाला।

सं०पु०—१ धर्मात्मा मनुष्य, पुण्यात्मा व्यक्ति।

उ०—अविणासी को हलकारौ जग में आयौ, लोकन में सक्ति अलौकिक लारै लायौ। स्रुति समाचार को सार पुकार सुणायौ, धरमी सुख धार अधरमी सीस धुणायौ।—ऊ.का.

२ विष्णु. ३ यम (अ.मा.) ४ युधिष्ठिर. ५ धर्म का आश्रय या गुण, धर्म का आधार।

रू०भे०—धरंमी, धरम्मी, ध्रमी, ध्रम्मी।

घरमुरळी—देखो 'मुरळीधर' (रू.भे., नां.मा.)

घरमेलौ—सं०पु० [सं० धर्म्म+रा०प्र०एलौ] भाईचारा, बन्धुत्व

उ०—थारै बाप अर रांमलै-रै बाप में घरमेलौ हौ। तूं तौ टावर हौ।—वरसगांठ

घरमोपदेस—सं०पु० [सं० धर्मोपदेश] १ धर्म का तत्व समझाने या धर्म की ओर प्रवृत्त करने के लिये दिया गया व्याख्यान या कथन, धर्म की शिक्षा. २ धर्म की व्यवस्था, धर्मशास्त्र।

घरमोपदेसक—सं०पु० [सं० धर्मोपदेशक] धर्म का उपदेश देने वाला।

घरम्म—देखो 'धरम' (रू.भे.) उ०—१ भिड़ै ब्रह्म खत्रिय धरम्म अभ्यास। वधै जुध स्यांम-ध्रमी पति व्यास।—सू.प्र.

उ०—२ केवी नू गढ़ कूंचिआं, सूंपै छोड सरम्म। मुख ज्यांरा दीठां मिटै, धर रजपूत धरम्म।—बां.दा.

उ०—३ खंध न फेरै धुर वहै, धवळा एह धरम्म। राघव ज्यां री राखही, सीगां तणी सरम्म।—बां.दा.

धरम्मसभा—देखो 'धरम सभा' (रू.भे.)

धरम्माधिकरणसभा—सं०स्त्री०यौ० [सं० धर्म्माधिकरणसभा] धर्माधिकारियों, न्यायाधीशों अथवा निर्णायकों की सभा। उ०—स्त्रीकरणसभा, व्ययकरणसभा, धरमाधिकरणसभा, देवकरणसभा, पंडितसभा, लेखकसभा, भाडागारिक, कोस्टाकार, सत्राकार।—व.स.

धरम्माधिगरणा—देखो 'धरमाधिकरणिक' (रू.भे.)

उ०—सभावरणनं; रायरांण मंडळिक आखडळीक सांमंत महासामंत लघुसांमंत स्त्रीगरणा वयगरणा धरम्माधिगरणा अमात्य महामात्य सुहासोळा।—व.स.

धरम्मी—देखो 'धरमी' (रू.भे.)

धरर—सं०स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष। उ०—बोलियौ मुख चख किया चांपौ वयण, भड़ां पग मांडजौ सधर रिण री भुयण। लाभ छत्री धरम वहौ ससत्रां लयण, गाज नाळां धरर धूंवा ढकियौ गयण।—रिवदांन बारहठ

२ देखो 'धररा'ट' (रू.भे.)

धररा'ट—सं०स्त्री० [अनु०] १ कंपन, थर्राहट. २ ध्वनि विशेष।

रू०भे०—धरर।

धरवजर—सं०पु० [सं० वज्र+धर] इन्द्र, देवराज, सुरपति (ह.नां.)

धरवणौ, धरववौ—क्रि०स० [सं० ध्रं=तृप्तौ] १ तृप्त करना, अघाना।

उ०—मोटौ उफण्यौ मेह, आयौ धरती धरवतौ। मुझ पांती रौ अेह, छांट न वरस्यौ जेठवा।—जेठवा

२ पीटना, मारना. ३ रखना.

४ देखो 'धरणौ, धरवौ' (रू.भे.)

धरवणहार, हारौ (हारी), धरवणियौ—वि०।

धरविग्रोड़ौ, धरवियोड़ौ, धरव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धरवीजणौ, धरवीजवौ—कर्म वा०।

धरवर—सं०पु० [सं० धरा+धर] राजा, नृप। उ०—नरइंद 'अभौ' नवकोट नाथ, सरि करण सतरि धरवर समाथ। अहमंद नयर खाटण अनूप, रस वीर प्रगट घट विकट रूप।—रा.रू.

धरवाणौ, धरवावौ—क्रि०स० ('धरणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ देखो 'धरणौ, धरवौ'।

('धारणौ' क्रिया का प्रे०रू०) २ देखो 'धारणौ, धारवौ'।

धरवायोड़ौ—भू०का०कृ० ('धरियोड़ौ' का प्रे०रू०) देखो 'धरियोड़ौ'।

(स्त्री० धरवायोडी)

धरवियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ तृप्त किया हुआ, अघाया हुआ.

२ पीटा हुआ, मारा हुआ. ३ रखा हुआ.

४ देखो 'धरियोड़' (रू.भे.)

(स्त्री० धरवियोडी)

धरसंडौ—देखो 'धरसूंडौ' (रू.भे.)

धरसण, धरसणी—सं०स्त्री० [सं० धर्षिणी] १ दुश्चरित्रा, कुलटा, व्यभिचारिणी (डिं.को.) २ वेश्या, रण्डी।

धरसधर—सं०पु० [सं० धराधर] पर्वत, पहाड़।

उ०—मंत्री तहां मयण वसंत महीपति, सिला सिंघासण धरसधर। माथै अंब छत्र मंडांणा, चलि वाइ मंजरि ढळि चमर।—वेलि.

धरसुता—सं०स्त्री० [सं० धरा-सुता] पृथ्वी की पुत्री, सीता।

धरसूंडौ—सं०पु० [देश०] लकड़ी या लोहे का नीचे की ओर झुका हुआ वह टंडा जो बैलगाड़ी के अग्रभाग में लगा हुआ होता है। इसे बिना जुती हुई गाड़ी को जमीन पर ठहराने के लिये तथा गाड़ी के अग्र भाग को धरातल से कुछ ऊंचा रखने के लिये लगाया जाता है। (डिं.को.)

रू०भे०—धरसंडौ, धरहूंडौ।

धरहड़णौ, धरहड़वौ, धरहडणौ, धरहडवौ—क्रि०अ० [अनु०] १ कंपित होना, थर्राना। उ०—धरहड़ै क्रोध परचंड भूप। भुजडंड अड़ै ग्रहमंड भूप।—वि.सं.

२ ध्वनि करते हुए हिलना। उ०—झळहळीय सायर सत्त सुरगिरि खिगु खिगु खडखडी। खणु एकु असरणु हूउं तिहूयणु राय सयल वि धरहडी।—पं.पं.च.

३ देखो 'घरहरणौ, घरहरबौ' (रू.भे.)

घरहर-संoस्त्रीo [अनुo] ध्वनि विशेष। उo—फौआरूं की पंकति जळ चादरूं का उफांण। जळ-चादरूं की घरहर मांनूं छिल्लै महिरांण। —सू.प्र.

घरहरणौ, घरहरबौ-क्रिoसo [अनुo] १ वर्षना, जल प्लावित करना। उo—काळी करि कांठळि ऊजळ कोरण, धारे स्रांवण घरहरिया। गळि चालिया दिसोदिसि जळग्रभ, थंभि न विरहिण नयण थिया। क्रिoअo—२ गर्जना, गर्जन करना। —वेलि.

उo—घुर घुर आसाढ़ां अंबर घरहरियौ। घोरा डंबर में संवर घरहरियौ। साई सर सरिता आई इकरारा। बोळा जळवर सूं धाई जळधारा।—ऊ.का.

३ तोप, बंदूक आदि की ध्वनि होना, धड़धड़ शब्द होना।

उo—हमगीर करण जुध हैमरां, घोम अरावां घरहरे। चिलतह छतीस आवध धुरस, कुळ छतीस राजस करे।—सू.प्र.

४ नक्कारे का बजना.

५ देखो 'धड़हड़णौ, धड़हड़बौ' (रू.भे.) उo—जमी पुड़ घरहरै उडै रूकां जरक, देग झरणां थरक पीठ दीधी। हचण रण मुकर जम दाढ़ ग्रहियां हरक, करी वाळै असुंड गरक कीधी।

—रावत गुलाबसिंह चूंडावत री गीत

घरहरियोड़ौ-भूoकाoकृo—१ गरजा हुआ. २ दहाड़ा हुआ. ३ धड़ धड़ शब्द किया हुआ. ४ थर्राया हुआ, कांपा हुआ. (स्त्रीo घरहरियोड़ी)

घरहूंडौ—देखो 'घरसूंडौ' (रू.भे.)

घरां-पती—देखो 'धरापति' (रू.भे.) उo—सभापती लखप्पती सुरिंद नरांपती, घरांपती निरंद गढ़ांपती करांमती।—ल.पि.

घरा-संoस्त्रीo [संo] १ पृथ्वी, भूमि, जमीन (डि.को.)

उo—१ आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधा खेंचि उरा। धणियां मरे न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा।—बां.दा.

उo—२ इंद्र नै चंद्र नागेंद्र चित चमकिया, धड़हड़ची सेस नै धरा धूजे।—प न.चौ.

२ संसार, दुनिया। उo—सखा जग में सतसंगत सार; विना सतसंग न ग्रहा विचार। धरा सतसंग विनां नहि ध्यांन, विनां सतसंग न ग्यांन विग्यांन।—ऊ.का.

३ राज्य। उo—रच्यौ फेर प्रासाद वाहादरा रौ। घनौ भाग भू भाग भाठौ धरा रौ।—मे.म.

४ गर्भाशय. ५ एक वर्ण वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और गुरु होता है।

घराउ, घराऊ—देखो 'घुराळ' (रू.भे.)

उo—धाज घराऊ आभौ घूंधळौ ए पणिहारी ए लो।—लो.गी.

घराज-संoपुo—१ टेढ़ी तिरछी लकड़ी को सीधी करने का बढ़ई का एक औजार।

२ देखो 'घिराज' (रू.भे.) उo—दूजी वार घराज दियौ दुख, सांसण जबत किया हिक-साथ। दळ सिणगार मांडियौ 'देवै', हितवां काज उदक नै हाथ।—लभजी बारहठ

घराड़णौ, घराड़बौ—देखो 'घराणौ, घराबौ' (रू.भे.)

घराड़णहार, हारौ (हारी), घराड़णियौ—विo।

घराड़िओड़ौ, घराड़ियोड़ौ, घराड़्योड़ौ—भूoकाoकृoं।

घराड़ीजणौ, घराड़ीजबौ—कर्म वाo।

घराड़ियोड़ौ—देखो 'घरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्रीo घराड़ियोड़ी)

घराणौ, घराबौ-क्रिoसo—१ रखाना, ठहराना।

उo—औ उठाय एकंत घरायौ, जा पछै नृप सिद्ध जगायौ।—सू.प्र.

२ निश्चित कराना, मुकर्रर कराना। उo—फेर मुहूरत घराय राजा भोज सिंघासण पास आयौ।—सिंघासण बत्तीसी

३ स्थित कराना। उo—अनइ तरुआरि स रमता भाला उछाळता हाक हीक करता एहवे पायके परिवारिउ, छत्र घरातइ चमर वीजातइ।—व.स.

घराणहार, हारौ (हारी), घराणियौ—विo।

घरायोड़ौ—भूoकाoकृo।

घराईजणौ, घराईजबौ—कर्म वाo।

घराड़णौ, घराड़बौ, घरावणौ, घरावबौ—रूoभेo।

घरातळ-संoपुo [संo घरातल] १ भूमि, पृथ्वी. २ लंबाई चौड़ाई का गुणनफल ३ सतह।

घरातमज-संoपुo [संo] मंगल ग्रह।

घराथंब, घराथंभ-संoपुo [संo धरा+स्तम्भ] १ राजा, नृप (डि.को.)

उo—अवतार उदार लाखी इसौ, जगां जेठ दातार 'जेहै' जिसौ। घराथंभ जाड़ेज धूंनै घड़ै, अवै वाज जेहाज गीतां-वडै।—ल.पि.

२ योद्धा, वीर। उo—छत्र धारी दूजा 'जगा' घराथंभ उदां छात। 'सिभू' रा सिघळी 'दौला' हरा सुरतांण।—वनजी खिड़ियौ

रूoभेo—घरा रौ थंभ।

घराधर-संoपुo [संo] १ शेषनाग। उo—रैवतां वाजीय पौड़ रड़क। धराधर धूजीय कोम धड़क।—सू.प्र.

२ पर्वत, पहाड़ (ह.नां., अ.मा.) ३ विष्णु।

रूoभेo—धारीधर, धारीधरा।

घरा-धव-संoपुoयौo [संo] राजा, नृप।

उo—अर म्हारै तो घरा पै घरा-धवां रै धांम धांम धारा धारा री धमचक देखि औरठै भी पण री पूरणता भरावीजै।—वं.भा.

घराधार-संoपुoयौo [संo] शेष नाग (डि.को.)

यौo—घरा-धार-धारी।

घराधारधारी-संoपुoयौo [संo] महादेव, शिव।

घराधिपति-संoपुoयौo [संo] राजा, नृप।

घरा-धीस-संoपुo [संo घराधीश] १ राजा, नृप (डि.को.)

२ विष्णु, ईश्वर। उ०—नरहर नाग नाथ नारायण गोव्यंद गोप-वर। घराधीस घांनख गिरधारी, कमळाकंत सकमळकर।—र.ज.प्र.

धरानायक-सं०पु० [सं०] राजा, नृप।

उ०—भूंठी धरी धूंवड घाइ ताडइ, अक्रदंती द्रूपदी वूंब पाडइ। घाए धरानायक राखि राखि, ए पापीया नइं फळ दाखि दाखि।
—विराट पर्व

धरापति, धरापती-सं०पु० [सं० धरापति] राजा, नृप।

उ०—धरम विनां देखो धरणी में, भये किते हक भंगी। धरम प्रताप धरापति धारत, रजधांनी बहुरंगी।—ऊ.का.

रू०भे०—धरपत, धरपति, धरपती, धरपत्त, धरांपती।

धरापुत्र-सं०पु० [सं०] मंगल ग्रह।

धरापूर-वि०—पूर्ण, पूरी। उ—कहि धरापूर धुर कथा। विसवा-मित्र विवध।—रांमरासौ

धरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ निश्चित कराया हुआ, मुकर्रर कराया हुआ. २ रखाया हुआ, ठहराया हुआ. ३ स्थित कराया हुआ।
(स्त्री० धरायोड़ी)

धरारण-सं०स्त्री० [सं० धरा] भूमि, धरा। उ०—परिवारण वारण सार संभारण तारण कारण आप लियौ। आरोह खगारण धाय धरारण चक्र चलारण काज कियौ। धिन आप अपारण सोइ विचा-रण टेर उचारण एक ररौ।—करुणा सागर

धरारूप—पर्वत तुल्य। उ०—धरारूप लंबी करां धूप धारैं। नरां एक एकौ हजारां निवारैं।—वं.भा.

धरा-रौ थंभ—देखो 'धराथंभ' (रू.भे., डि.को.)

धराळ-सं०पु०—१ भूमि पर विचरने वाला, स्थलचर।

उ०—जग जाळ असराळ संभाळ छळैं, इन भवख सदा भव सिंधु मही। नभ नाळ तंताळ धराळ मिळैं, त्रयलोक सुरप्पति विद्ध सही।
—करुणा सागर

२ देखो 'धाराळी' (मह., रू.भे.) उ०—धसम्मसि धूहड़ धूणि धराळ, कमध्धज कोपि भयंकर काळ।—राज रासौ

३ देखो 'धूराळ' (रू.भे.)

धराव-सं०पु०—१ पशु. २ पशुधन।

वि०—मूर्ख।

धरावणौ-सं०पु०—'रखवाना' या 'धरवाना' क्रिया का भाव।

धरावणौ, धरावबौ—१ दिलवाना, देराना।

उ०—इतरइ आसउदे नउ गागोरणउ कहि छइ—सो नांहि हो ठाकुरे। इसउ कीजइ अेक धराळां की धार खिरी छइ ते पुनरपि धरावजइ, घाओ पाटा बांधिजइ।—अ. वचनिका

२ देखो 'धरणौ, धरबौ' (रू.भे.) उ०—सांम्रत मिळया सुख सार्गे, धुनि में ध्यांन धरावैं।—ऊ.का.

धरावणहार, हारौ (हारी), धरावणियौ—वि०।

धराविओड़ौ, धरावियोड़ौ, धराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धरावीजणौ, धरावीजबौ—कर्म वा०।

धराविधूंसण-सं०स्त्री० [सं० धरा+विध्वंसिनी] तलवार (अ.मा.)

धरावियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दिलवाया हुआ।

२ देखो 'धरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धराविय़ोड़ी)

धरावू—देखो 'धुराऊ' (रू.भे.)

धराहौ-सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

धरिती, धरित्री—देखो 'धरती' (रू.भे.) उ०—माभी नर नाइक फौज रौ मौज रौ महिरांण। दातार कवि हित दाखणौ जस राखणौ घण जांण। भारथि खळां दळ भांजणौ गढ़ गांजणौ गहगीर। धरिती सिरि नांम धारणौ कुळ तारणौ लख धीर।—ल.पि.

धरि-धारण-सं०पु० [सं० धुर-धारण] बैल, वृषभ (डि.नां.मा.)

धरिया-सं०स्त्री०—पँवार वंश की एक शाखा (बां.दा.ख्यात)

धरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ रूप ग्रहण किया हुआ, आरोपित किया हुआ, धारण किया हुआ. २ व्यवहार के लिये हाथ में लिया हुआ, ग्रहण किया हुआ. ३ निश्चय किया हुआ, विचार ग्रहण किया हुआ. ४ प्रतीत किया हुआ, महसूस किया हुआ. ५ बैठाया हुआ, ग्रहण किया हुआ. ६ स्मरण किया हुआ. ७ पास में रखा हुआ, रक्षा में रखा हुआ. ८ स्वीकार किया हुआ. ९ चौकन्ना किया हुआ, ध्यान धरा हुआ. १० संकल्प किया हुआ, दृढ़ निश्चय किया हुआ.
११ शोभार्थ अथवा रक्षार्थ धारण किया हुआ, देह पर रखा हुआ, पहना हुआ. १२ स्थापित किया हुआ, स्थित किया हुआ, ठहराया हुआ. १३ प्रकट किया हुआ, रखा हुआ. १४ (किसी कार्य में) संलग्न हुवा हुआ, क्रियाशील हुवा हुआ. १५ रखेली रखा हुआ.
१६ वहन किया हुआ, उत्तरदायित्व लिया हुआ. १७ (गर्भ, हर्ष, शोक, उत्साह आदि) धारण किया हुआ, ग्रहण किया हुआ.
१८ गिरवी रखा हुआ, बंधक रखा हुआ. १९ किसी वस्तु को मज-बूती से पकड़ा हुआ या जोर से स्पर्श किया हुआ जिससे वह इधर-उधर नहीं जा सके अथवा हिल नहीं सके. २० डींग मारा हुआ. कहा हुआ. २१ प्रहार किया हुआ, मारा हुआ.
२२ वश में किया हुआ।
(स्त्री० धरियोड़ी)

धरू-सं०पु० [सं० ध्रुपद] ध्रुपद, (संगीत)

उ०—आंगणि जळ तिरप उरप अलि विम्रति, मरुत चक्र फिरि लियत मरू। रांमसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा चंद धरू।—वेलि.

धरेट-सं०स्त्री० [सं० दृष्टि] दृष्टिदोष, नजर।

धरेती—देखो 'धरती' (रू.भे.)

धरे-धरे-वेळा—देखो 'ग्रह-ग्रह-वार' (रू.भे.)

धरेस-सं०पु० [सं० धरा+ईश] १ राजा, नृप, नरेश।

उ०—१ संग्रांमसिह पट्टप नरेस। धरि छत्र हुवौ संभर धरेस।
—वं.भा.

२ शेषनाग। उ०—अरेस असेस दहेस अभंग, धरेस सुरेस नरेस सधीर।—र.ज.प्र.

३ ईश्वर।

धरंती—देखो 'धरती' (रू.भे.) (ना.डि.को.)

२ हैरान होने का भाव, तंगी।

धरोड़, धरोहर—सं०स्त्री० [सं धरण] १ अमानत, थाती।

२ गिरवी रखा हुआ द्रव्य या वस्तु।

धरौ—सं०पु० [सं० धर्म] १ संतोष. २ अघाने का भाव, तृप्ति.

धळ-धूंधळ—सं०स्त्री० [देश०] रेतीली भूमि। उ०—१ षेढ मभारै वीसरघो ऊनाळ लुवांणं। धीज करै धळ-धूंधळां तप धोम तपांणं। —पा.प्र.

धव—सं०पु० [सं० धवः] १ पति, स्वामी (डि.को.) उ०—१ धव म्हारा रणवीर, हरण चीर हाथां हुआ। नाकां छळियो नीर, द्रोण सभासद देख रे।—रांमनाथ कवियो

उ०—२ सो धवां रा धड़ पड़ता देखि खड्ग नेटक रा पाटव मैं प्रवीण सूर भाव रै साथ स्रद्धा रै समान माणवां री संहार करती सारी ही मध्यपुर रा प्रकोस्ट रै माथै आवती छिपांणां रै चाढ़ लागी। —वं.भा.

२ मनुष्य (ह.नां., अ.मा.)

३ सूर्य (नां.मा.) ४ देखो 'धाव' (११) (रू.भे.)

उ०—धोर छोड़ धावळां, खैर करमद वकायण। बीजा धव वट वेंत, ईख सुरतर नारायण।—र.ज.प्र.

मुहा०—कीं तो धव ई चीकणा अर कीं कवाड़ा वो भोंटा—कुछ तो धव वृक्ष चिकने हैं तथा कुछ कुल्हाड़ा भी पैना नहीं है अर्थात् परस्पर प्रयुक्त या व्यवहृत होने वाले दो पदार्थों या प्राणियों में कार्यानुसार श्रेष्ठ गुणों की कमी है।

धवई—देखो 'धाय' (रू.भे.)

धवड़ावणो, धवड़ावबो—देखो 'धवाणो, धवाबो' (रू.भे)

धवड़ावियोड़ो—देखो 'धवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धवड़ावियोड़ी)

धवड़ी—सं०स्त्री० [डि० धव=सूर्य=सूर=वीर+रा०प्र०ड़ी] वीरप्रसविनी, वीरांगना। उ०—हिवै भींवाजी नै रिणखेत पड़ियां नै दिन दोय हूवा, तिसै तिसां मरै। तिण समीयै कैइक जोगेसर अकळपंथ हींगुळा जंफरस आवै था। तिकै रिणोद देखि वातां करै छै, भाई-भाई रजपूतांणियां धवड़ी रै खरणै रा लोहां धाप पोढ़िया छै। श्री सुर भींवा रै कांनै आयो।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

धवणि, धवणी—देखो 'धमण' (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

उ०—दहूं अंगां यह रीति कहा पुरख कहा नारी। क्रोध अगनि प्रजळै धवणी दोय दुख सुख भागी।—ह.पु.वा.

धवणो, धवबो—देखो 'धमणो, धमबो' (रू.भे.)

धवभंग—सं०पु० [सं०] पति का अवसान, पति की मृत्यु।

धवर—सं०पु०—एक पक्षी जिसका कण्ठ लाल और सारा शरीर सफेद होता है।

वि०—उजला, सफेद।

धवरहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.)

धवराड़णो, धवराड़बो—देखो 'धवाणो, धवाबो' (रू.भे.)

उ०—१ धावइ तो पिता नहीं ईसर, गुणइ धनेरी तूझ धरि। गन रमाड़िवउ न रंग भरि रांमा, धवराड़िवउ न गोद धरि।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ धवरावण धूय न जाणुं धरतां, पिंड पुहर करतां पाळ। लागो बाळक माईसां, दूजी छोडी गहर दुवाळ।

—महादेव पारवती री वेलि

धवराड़णहार, हारो (हारी), धवराड़णियो—वि०।

धवराड़िओड़ो, धवराड़ियोड़ो, धवराड़योड़ो—भू०का०कृ०।

धवराड़ीजणो, धवराड़ीजबो—कर्म वा०।

धवराड़िओड़ो—देखो 'धवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धवराड़ियोड़ी)

धवराणो, धवराबो—देखो 'धवाणो, धवाबो' (रू.भे.)

धवराणहार, हारो (हारी), धवराणियो—वि०।

धवरायोड़ो—भू०का०कृ०।

धवराईजणो, धवराईजबो—कर्म वा०।

धवरानळ—सं०पु० [सं० धव:+रा० रानळ] सूर्य, भानु (क.कु.बो.)

धवरायोड़ो—देखो 'धवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धवरायोड़ी)

धवरावणो, धवरावबो—देखो 'धवाणो, धवाबो' (रू.भे.)

उ०—मात सुत नह ले धवरावइ, बेटा बेटा कहिय बुलावइ।

—कवि लोसार

धवरावणहार, हारो (हारी), धवरावणियो—वि०।

धवराविओड़ो, धवरावियोड़ो, धवराव्योड़ो—भू०का०कृ०।

धवरावीजणो, धवरावीजबो—कर्म वा०।

धवराविओड़ो—देखो 'धवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धवरावियोड़ी)

धवळंग—वि० [सं० धवल+अंग] सफेद, उज्वल।

सं०पु०—१ हंस (डि.को.)

उ०—उड गयो सांवळ कर मैंपि। मोत विनां धवळंग मुवो।

—नवलदांनजी लाळस

२ प्रासाद, महल। उ०—धव उतार असोभता, धरै सोभता अंग। कारण तिण मंजण करण, गई सती धवळंग।—पा.प्र.

रू०भे०—धवळांग।

धवळंगा—सं०स्त्री०—एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १८ लघु अंत एक गुरु सहित १९ वर्ण होते हैं (पिं०प्र०)

धवळ—सं०पु० [सं० धवल] १ बैल, वृषभ (डि.को.)

उ०—१ वापो धवळा! दाख वळ, तूं जीवावणहार। मो घर रा गाडा तणो, तो खांधै भर भार।—बां.दा.

उ०—२ जूसरा धवळ अप्रमांण जव, की विमांण पवमांण कथ।
—मे.म.

२ हंस (डि.को.). ३ विवाहादि मांगलिक अवसरों पर गाया जाने वाला गीत, गायन। उ०—१ सहु मिळियां आवै सखी सहेली, धवळ दिइं बाजोट धरइ। पहिरण वसत आभरण पहिरण, रायकुंवारि मांजणउ करइ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सर आखा गोळा वरसै सिर, अपछर धवळ दियै ऊभांम। पूत पिता धारां पांखीजै, रण 'गोपाळ' अनै बळरांम।
—गोपाळदास गौड़ री वारता

यौ०—मंगळ-धवळ।

४ सूर-वीर, भट्ट, योद्धा। उ०—पति गंध्रप है पांच, धरतां पग धूजै धरा। आवै लाज न आंच, घर नख सूं कुचरै धवळ।
—रांमनाथ कवियौ

५ छप्पय छंद का ४७वां भेद जिसमें २४ अक्षर गुरु, १०४ अक्षर लघु कुल १२८ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं।

६ देखो 'धमळ' (१) (रू.भे.)

वि०—सफेद, उज्ज्वल, श्वेत (अ.मा., डि.को.)

अल्पा०—धवळौ, धवळयौ, धौळकियौ, धोळकौ, धौळियौ, धौळौ, धौळचो।

मह०—धोळ।

धवळ-आरोहण-सं०पु० [सं० धवल+आरोहण] महादेव, शिव (ह.नां.)

रू०भे०—धमळ-आरोहण।

धवळकी—देखो 'धवळी' (रू.भे.)

धवळगर, धवळगिर, धवळगिरी, धवळगिरि-सं०पु० [सं० धवलगिरि]

१ हिमालय की सर्वोच्च एवं प्रख्यात चोटी.

२ कैलाश पर्वत. ३ हिमालय पर्वत।

यौ०—धवळागिर-राय, धवळागिर-वासणी।

सं०स्त्री०—४ एक प्रकार की तलवार. ५ देवी, दुर्गा (देवि.)

रू०भे०—धमळगिर, धमळगिरी, धमळागर, धमळागिर, धमळागिरी-धम्मळागिर, धवळागर, धवळागिरि, धवळागिरी, धौळगिर, धौळागिर, धौळागिरि।

धवळग्रिह, धवळग्रेह—देखो 'धवळहर' (रू.भे.) उ०—१ आरांम उनमूळइ, ऊभां मनुस्य ऊलाळइ, क्षत्रिय खळभळावइ, खंडग्रिह खडहडावइ, धवळग्रिह धंधोळइ।—व.स.

उ०—२ चित्रसाळां चित्रजै, महल मंडप मांडीजै। धवळग्रेह धवळिजै, देव चंदण अरचीजै।—व.स.

धवळचित-वि० [सं० धवलचित] निष्कपट, उज्वलचित।

धवळणौ, धवळवौ-क्रि०स० [सं० धवलम्] १ उज्वल करना, सफेद करना (चूने आदि से मकान की सफेदी करना)।

उ०—१ चित्रसाळां चित्रजै, महल मंडप मांडीजै। धवळग्रेह धवळिजै, देव चंदण अरचीजै।—व.स.

उ०—२ घर धवळया, भित्तिभाग धवळया, तळिया तोरण बांधां।
—व.स.

२ चमकाना, उज्वल करना. ३ प्रकाशित करना।

धवळणहार, हारौ (हारी), धवळणियौ—वि०।

धवळवाड़णौ, धवळवाड़बौ, धवळवाणौ, धवळवावौ, धवळवावणौ, धवळवावबौ, धवळाड़णौ, धवळाड़बौ, धवळाणौ, धवळावौ, धवळावणौ, धवळावबौ—प्रे०रू०।

धवळिओड़ौ, धवळियोड़ौ, धवळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

धवळीजणौ, धवळीजबौ—कर्म वा०।

धौळणौ, धौळबौ—रू०भे०।

धवळता-सं०स्त्री० [सं० धवलता] उज्वलता, सफेदी।

धवळधन्यासी-सं०स्त्री० [सं० धवल+धन्याश्री] एक राग विशेष
(कां.दे.प्र.)

धवळ-धुज-सं०पु० [सं० धवल+ध्वज] शिव, महादेव (क.कु.बो.)

धवळपक्ष, धवळपख-सं०पु० [सं० धवलपक्ष] १ शुक्ल पक्ष.

२ हंस, मराल।

धवळ-मंगळ-सं०पु०यौ० [सं० धवल+मंगल] १ विवाहादि मांगलिक अवसरों पर गाये जाने वाले मांगलिक गीत।

उ०—१ अंत दिन लगन महूरति ऊपरि। धवळमंगळ दळ हूंकळ धौड़। मीरां घड़ परणण कौमारी। मारू 'रयण' बांधियौ मौड़।
—दूदौ

उ०—२ धवळ-मंगळ दिइ कुळ वहू, वाजइ ढोल नीसांण। 'विजयदेव' गुरु पाटवी, प्रगटिउ तप गछ भांण।—गुणविजय कवि

२ मांगलिक कार्य, उत्सव। उ०—फजर के पहर गजर ठकोरा बगे। ठौड़ ठौड़ धवळ-मंगळ होणै को लगे।—र.रू.

३ आनन्द, हर्ष ? उ०—एक वरद्धापनक तूर, एक उद्वेग पूर, एक दीजइ, धवळ मंगळ, एक आवइं प्रांण धंघळ, एक आनंदगुंदळ, एक कळहकंदळी।—व.स.

वि०—मांगलिक अवसर सम्बन्धी (विवाहादि के)।

उ०—माय ताय विहुं बंधी गंठी, परण्या पुस्कर तीरथि कंठी। धवळमगळ गीत ध्वनि कीया, साल्ह कुमर मारू परणीया।—ढो.मा.

रू०भे०—धमंळ मंगळ, धमळ-मंगळ, मंगळ-धमळ, मंगळ-धवळ।

धवळ-मंदिर-सं०पु०यौ० [सं० धवल+मंदिर] राजप्रासाद, बड़ा भवन।

उ०—इसउं नगर, जिनमंदिर धवळमंदिर राजकुळ देवकुळ अट्टालप्रासादमाळ।—व.स.

धवळमिण-सं०पु०यौ० [सं० धवल+मणि) दीपक (नां.मा.)

धवळस्री-सं०स्त्री० [सं० धवलश्री] एक रागिनी विशेष (संगीत)

धवळहर, धवळहरि-सं०पु० [स० धवल+गृह] १ राजप्रासाद, वड़ा भवन। उ०—१ कवि कड़िया रोपै काळा थिरि, रिध मांडै ताइ स्थिर रहै। ढहै नहीं जस तणा धवळहर, घर मंडप सांणवर ढहै।
—लाखा फूलांणी जादव री गीत

उ०—२ इसा-अेक पातिसाह-का कटक-बंध आइ छुहइ कोस नाहिं संप्राप्त हुवा। मुकांम-मुकांम का ढोल वागा, तब जाइ अे गूडरवइ धवळहर दीसिवा लागा।—अ. वचनिका

२ वह गोल इमारत जो ऊपर तक खंभे की तरह बनी हुई हो तथा जिसमें चढ़ने के लिये भीतर की ओर जीना बना हुआ हो, मीनार।

रू०भे०—धउळहर, धमळहर, धवरहर, धवळग्रिह, धवळग्रेह, धौळहर, धौळाहर, धौळेंहर, धौळेंहर, ध्रोळहर।

धवळांग—देखो 'धवळंग' (रू.भे.)

धवळा-सं०स्त्री० [सं० धवला] १ श्वेत गाय. २ पार्वती, महामाया.

उ०—धवा धवळगर धव धू धवळा (देवि.)

३ एक नदी का नाम।

रू०भे०—धम्मळा।

धवळागर—देखो 'धवळगिर' (रू.भे.)

धवळागिर-वासणी-सं०स्त्री०यौ० [सं० धवल+गिरि+वासिनी] सरस्वती, देवी (ह.नां.)

धवळागिरि, धवळागिरी—देखो 'धवळगर' (रू.भे.)

उ०—१ पारंभ 'माल' पसरियौ परखंड, अत साहस ऊमटियौ। ढिलड़ी जोय धवळगिर जंपै, हिंद्रवौ रांणौ हठियौ।—नैणसी

उ०—२ ससिपाळ के संगि जु राजा हुंता, सु कुंदणपुर के निकट आया, तब नीलाडि हाथ दे देखण लागा, कहै छै—दूरि तें देखिजै छै, सु ऐ नगर छै, कि बादळ छै, कि धवळागिरि परवत छै, कि धउळहर छै।—वेलि.टी.

धवळित-वि० [सं० धवलित] सफेद किया हुआ, साफ किया हुआ, धवल, उज्वल, शुभ्र। उ०—धवळहरे धवळ दियै जस धवळित, घण नागर देखे सघण। सकुसळ सबळ सदळ सिरि सांभळ, प्रहप वूंद लागी पड़ण।—वेलि.

धवळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उज्वल किया हुआ, सफेद किया हुआ.

२ चमकाया हुआ, उज्वल किया हुआ.

३ प्रकाशित किया हुआ।

(स्त्री० धवळियोड़ी)

धवळी-सं०स्त्री० [सं० धवली] सफेद गाय।

वि०स्त्री०—श्वेत, सफेद।

रू०भे०—धम्मळी, धौळी।

अल्पा०—धवळकी, धौळकी।

(मह० धौळ)

धवळेरण-सं०स्त्री० [सं० धवल+रा० ऐरण] मांगलिक गीत गाने वाली स्त्री।

रू०भे० धौळागर, धौळेरण।

धवळौ—देखो 'धवळ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ मोताहळ म्रिगमद तणा, धवळा काळा ढेर। कुण वन में जावण करै, सोह तणौ पगफेर।—बां.दा.

उ०—२ धेनां दन खोस लिवी धवळै। हव कासूं-अ वीर वकूं हवळै।—पा.प्र.

उ०—३ तूं वयूं गणपत नांम लै, जोतै धवळौ ज्यार। गणपत हूंदा बाप रो, धवळ उठावै भार।—बां.दा.

उ०—४ आडो अंवळो वयूं फिरै, धवळौ बापूकार। श्रो हिज पार उतारही, थळ सांम्है श्रो भार।—बां.दा.

(स्त्री० धवळी)

धवांन—देखो 'ध्वांन' (रू.भे.) (ह.नां.)

धवा-सं०स्त्री० [सं० धवला] महामाया, शक्ति।

उ०—धवा, धवळगर धव धू धवळा। ऋतना कुवचा कचश्री कमळा।—देवि.

धवाड़णी—देखो 'धवावणी' (रू.भे.)

धवाड़णौ, धवाड़बौ—देखो 'धवाणौ, धवाबौ' (रू.भे.)

धवाड़णहार, हारौ (हारी), धवाड़णियौ—वि०।

धवाड़िओड़ौ, धवाड़ियोड़ौ, धवाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धवाड़ीजणौ, धवाड़ीजबौ—कर्म वा०।

धवाड़िओड़ौ—देखो 'धवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धवाड़ियोड़ी)

धवाणौ, धवाबौ-क्रि०स० [देश०] १ स्तन पान कराना.

२ 'धवणौ' क्रिया का प्रे.रू.।

३ 'धावणौ' क्रिया का प्रे.रू.।

धवाणहार, हारौ (हारी), धवाणियौ—वि०।

धवायोड़ौ—भू०का०कृ०।

धवाईजणौ, धवाईजबौ—कर्म वा०।

धवड़ाड़णौ, धवड़ाड़बौ, धवड़ाणौ, धवड़ाबौ, धवड़ावणौ, धवड़ावबौ, धवराड़णौ, धवराड़बौ, धवराणौ, धवराबौ, धवरावणौ, धवरावबौ—रू०भे०।

धवायोड़ौ-भू०का०कृ०—स्तन पान कराया हुआ।

(स्त्री० धवायोड़ी)

धवावणी-वि०स्त्री०—बच्चे को स्तन-पान कराने वाली।

रू०भे०—धवाड़णी।

धवावणौ, धवावबौ—देखो 'धवाणौ, धवाबौ' (रू.भे.) (अमरत)

धवावणहार, हारौ (हारी), धवावणियौ—वि०।

धवाविओड़ौ, धवावियोड़ौ, धवाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धवावीजणौ, धवावीजबौ—कर्म वा०।

धवावियोड़ौ—देखो 'धवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धवावियोड़ी)

धवियोड़ौ—देखो 'धमियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धवियोड़ी)

धवी-सं०स्त्री०—स्त्रियों के कान का आभूषण विशेष।

धवेचा-सं०स्त्री०—राव सलखा के पुत्र जैतमाल के वंशज राठौड़ों की एक उपशाखा।

धवेचौ-सं०पु०—राठौड़ों की धवेचा उप शाखा का व्यक्ति।

घस-सं०पु० [अनु०] १ पानी, कीचड़ आदि में किसी भारी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द।
(मि० धच)
२ पानी में प्रवेश, डुबकी, गोता।
३ देखो 'घसळ' (रू.भे.)
उ०—डकर करै अग्रजियौ, चांमर सीस चढाय। धैधींगर करतौ घसां, घसियौ जळ में जाय।—गजउद्धार

घसक-सं०स्त्री० [देश०] धाक, ललकार।

घसकणौ, घसकबौ-क्रि०अ० [सं० दंशनं] १ नीचे को खिसक जाना, नीचे दब जाना, धँस जाना, बैठ जाना। उ०—१ मिळिया अणी अणी रसणे मिळ, सइंधे मूहे घूमिया सार। झालरियां नांखै भड भिळिया, घसकइ घरा वाजियइ घार।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ धमकनाळ घर घसकि, थाट परवस थरसल्लै। कमळसेस भिड़ कमठ, दाढ़ दाढ़ाळ दहल्लै।—सू.प्र.
२ फिसलना. ३ देखो 'धसणौ, धसबौ'।
घसकणहार, हारौ (हारी), घसकणियौ—वि०।
घसकिग्रोड़ौ, घसकियोड़ौ, घसक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घसकीजणौ, घसकीजबौ—भाव वा०।
घसक्कणौ, घसक्कबौ, ध्रसकणौ, ध्रसकबौ, ध्रसक्कणौ, ध्रसक्कबौ—रू०भे०।

घसकाड़णौ, घसकाड़बौ—देखो 'घसकाणौ, घसकाबौ' (रू.भे.)
घसकाड़णहार, हारौ (हारी), घसकाड़णियौ—वि०।
घसकाड़िग्रोड़ौ, घसकाड़ियोड़ौ, घसकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घसकाड़ीजणौ, घसकाड़ीजबौ—कर्म वा०।
घसकणौ, घसकबौ—अक०रू०।

घसकाड़ियोड़ौ—देखो 'घसकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घसकाड़ियोड़ी)

घसकाणौ, घसकाबौ-क्रि०स० [दंशनम्] १ धँसाना, गड़ाना.
२ फिसलाना, नीचे को लुढ़काना।
३ 'घसणौ' क्रिया का प्रे.रू.।
घसकाणहार, हारौ (हारी), घसकाणियौ—वि०।
घसकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
घसकाईजणौ, घसकाईजबौ—कर्म वा०।
घसकणौ, घसकबौ—अक०रू०।
घसकाड़णौ, घसकाड़बौ, घसकावणौ, घसकावबौ, ध्रसकाड़णौ, ध्रसकाड़बौ, ध्रसकाणौ, ध्रसकाबौ, ध्रसकावणौ, ध्रसकावबौ—रू०भे०।

घसकावणौ, घसकावबौ—देखो 'घसकाणौ, घसकाबौ' (रू.भे.)
घसकावणहार, हारौ (हारी), घसकावणियौ—वि०।
घसकाविग्रोड़ौ, घसकावियोड़ौ, घसकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घसकावीजणौ, घसकावीजबौ—कर्म वा०।
घसकणौ, घसकबौ—अक०रू०।

घसकावियोड़ौ—देखो 'घसकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घसकावियोड़ी)

घसकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ नीचे को खिसका हुवा, नीचे को दबा हुआ, धँसा हुआ, नीचे को बैठा हुआ. २ फिसला हुआ।
३ देखो 'धसियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घसकियोड़ी)

घसकौ-सं०पु० [अनु०] १ टक्कर, धक्का. २ दुत्कार, फटकार।
उ०—सोणित चसकौ संड औ, घसकौ लग धूजंत। खिसकौ सगत! न खतंग ह्वै, काढै पसकौ कंत।—रेवतसिंह भाटी
३ भय, आतंक, डर। उ०—केलवा में एक बाई कहै स्वांमीजी पधारै तौ साधपणौ लेवूं। इम बात कर वौ करै। पछै स्वांमीजी पधारचा। घसका सूं बाई नै ताव चढ गयौ।—भि द्र.

घसक्कणौ, घसक्कबौ—देखो 'घसकणौ, घसकबौ' (रू.भे.)
उ०—वेउ हूंफइं वेउ वाकरवाइं राय तणा मनि रीझ ऊपाइं। धरणि घसक्कइ गाजइ गयणु हारिइ जीतइ जय जय वयणु।—पं.पं.च.

घसक्कियोड़ौ—देखो 'घसकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घसक्कियोड़ी)

घसड़-सं०स्त्री० [अनु०] १ शस्त्र का प्रहार अथवा प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।
उ०—वजधार अंग असुरां वीहार। सेलड़ां घसड़ भालां दुसार।
—रांमदांन लाळस
२ देखो 'धसळ' (रू.भे.)

घसटी—१ देखो 'धिस्टी' (रू.भे.) (अ.मा.)
२ देखो 'ध्रस्ट' (रू.भे.)

घसणौ, घसबौ-क्रि०अ०—१ इधर-उधर दबा कर जगह खाली करते हुए बढना, ऐसे स्थान अथवा वस्तु में प्रविष्ठ होना जिसमें पहले से ही अवकाश न हो, पैठना, अपने लिए जगह करते हुए घुसना, बलात् प्रविष्ठ होना।
जैसे—भीड़ में धँसना, पानी में धंसना।
उ०—१ इण तजवीज चढ़ी असवारी। घर बुगलांण घसै छत्रधारी।
—सू.प्र.
उ०—२ केई वेळां घसियौ, कळ रसियौ खग रंग। अरिहां उर वसियौ रहै, वो जसियौ अणभंग।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—३ धिन वे रावत धीरपै, भागा रावतियांह। धारा अणियां मैं घसै, चख मुख चोळ कियांह।—बां.दा.
उ०—४ कावेरी जळ स्रोकळस, घसियौ सनमुख धार। ऐरावत किर आवियौ, मंदायिणी मंझार।—बां.दा.
२ प्रवेश करना। उ०—देहली घसति हरि जेहड़ि दीठी, आणंद कौ ऊपनौ अमाप। तिण आपही कियायौ आदर, ऊभा करि रांमां सूं आप।—वेलि.
३ मिल जाना। उ०—१ सरळ सचि केश स्यांम कच, मुकता मांग मझार। तरुण तनुजा मधि तसी, घसी सुरसरी धार।
—सिवबक्स पालावत
उ०—२ मूरख माहि मूं पहिली लीह, जिण घरम माहि घसउं सवि दीह। कालउ गहिलउ बोलिउ ठाउ, ते सहू सुह गुरु तणउ पसाउ।
—चिहुंगति चउपइ

४ ध्वस्त होना, नष्ट होना. ५ नीचे की ओर धीरे धीरे जाना, नीचे खिसकना, उतरना. ६ दाव पा कर किसी कड़ी वस्तु का किसी नरम वस्तु के भीतर घुसना, गड़ना। जैसे—दल-दल में पांव फँसना, दीवार में कील धँसना, पैर में कांटा धँसना. ७ नींव पर खड़ी या गड़ी वस्तु का जमीन में और नीचे तक चला जाना, बैठ जाना।

ज्यूं०—सांवण री झड़ी इसी लागी के केई ढूंढ़ा धसग्या।

८ देखो 'घसकणी, घसकवौ' (रू.भे.)

घसणहार, हारौ (हारी), घसणियौ—वि०।

घसवाड़णौ, घसवाड़वौ, घसवाणौ, घसवाबौ, घसवावणौ, घसवावबौ—प्र०रू०।

घसाड़णौ, घसाड़वौ, घसाणौ, घसावौ, घसावणौ, घसावबौ—क्रि०स०।

घसिओड़ौ, घसियोड़ौ, घस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घसीजणौ, घसीजबौ—भाव वा०।

घुसणौ, घुसबौ—रू०भे०।

घसमस-सं०स्त्री० [अनु०] १ धँसने की क्रिया या भाव।

२ चलते समय पृथ्वी पर पाँवों का बल देते हुए अथवा अस्त-व्यस्त कदम रखने की क्रिया या भाव।

उ०—गणिका सगळी देस नी, गणतां गणित न थाइ। धक पुहचइ धाडीत परि, घसमस करती धाइ।—मा.कां.प्र.

३ धीरोद्धत परन्तु आकर्षक चाल, गुरु-गंभीर चाल।

उ०—हे पीळी तो ओडचो ए म्हारी जच्चा रांणी, घसमस चालै छै मधुरी सी चाल।—लो.गी.

घसमसणौ, घसमसबौ-क्रि०स० [अनु०] १ धीरोद्धत परंतु आकर्षक चाल से चलना, गुरु-गंभीर चाल से चलना. २ लक्ष्य की ओर त्वरित गति से अग्रसर होना, व्युत्क्रम गति से चलना, नपे-तुले कदम रख कर न चलना, डांवाडोल चाल से चलना, क्रमहीन गति से चलना।

उ०—१ सगळी पांति बिठी तेतलि प्रीसणहारी पैंठी, ते कहवी? सोळ सिणगार सज्या, बीजा सगळा कांम तज्या, हाथ नी रूडी, विहु वाहि खळकि चूडी, लघुलाघवी कळा, मन कीधा मोकळा, चित्त नी उदार, अति घणु दातार, दोलती हाथ, परमेसर देजे तेह नौ साथ, घसमसती आवी, सघळां नि मन भावी, पहिलुं फळहळ प्रीसइ, सघळा ना हीया हीसइ।—व.स.

उ०—२ धोबी धाइ घसमसइ, कापडीया केदार। जोगी जेहनइं योगिनी, दिहाडी नी दस वार।—मा.कां.प्र.

उ०—३ दांणव दळि जिम दहवडंतु दंती देखि नइ। धायउ अरजुनु घसमसंतु वयरी मूंकी नइ।—पं.पं.च.

उ०—४ समरि तूर दसइ दिसि भींमली। घसमस्या सुभट ते रिण सांभळी।—विराट पर्व

२ नीचे की ओर दबना, धँसना। उ०—घसमसै धरण फण सहस धार। कमममै कमठ रज अंधकार।—वि.सं.

घसमसणहार, हारौ (हारी), घसमसणियौ—वि०।

घसमसिओड़ौ, घसमसियोड़ौ, घसमस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घसमसीजणौ, घसमसीजबौ—भाव वा०।

घसळ, घसळक-सं०स्त्री० [सं० घर्षण=घर्षणा] १ धाक, धमकी, डांट, ललकार।

क्रि०प्र०—देणी।

२ आक्रमण, हमला। उ०—हैजम अर जम री हुणै, खग पटाइ वर सूर। धार इंद्र निज पर घसळ, कढ़ पुर हूंत काफूर।

—रेवतसिंह भाटी

३ रोब, जोश. ४ जोशपूर्ण आवाज, आतंकपूर्ण आवाज।

उ०—घण सबद सुणै असुरांण दळ, धावियो, आखतो थसळ अर तूरतो आवियो। ओळखै लखण नै वभीखण अगाड़ी, लंघ दळ प्रवळ बरछी असुर लगाड़ी।—र.रू.

क्रि०प्र०—करणी।

५ जोश में आकर बैल, सिंह, घोड़ा आदि का पैरों से धूलि पीछे की ओर फेंकते हुए तांडने, दहाड़ने या हिनहिनाने की क्रिया।

क्रि०प्र०—करणी।

६ जोश या मस्ती में होने का भाव। उ०—वूग छडाळां खिवै, होय नक्कीवां हाकां। हुय दळवळ हाथियां, घसळ ऊडंड घसाकां।

—सू.प्र.

७ पृथ्वी पर बल देते हुए लम्बी डगें भरने की क्रिया।

उ०—खोळा टंकियोड़ा गळ में सूंगाळी, जळ जुत ठोडी पर टिमकी जंवाळी। भीनै कांचळियं घम घम डग भरती, घसळां देतोड़ी धमधम पग धरती।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—देणी।

रू०भे०—घस, घसड़।

घसळणौ, घसळबौ-क्रि०म० [देश०] डांट देना, ललकारना, फटकारना।

उ०—चोजां चटकाळा, गुरु गटकाळा, मटकाळा मुळकंदा है। माया हद मसळै, अकेद असळै, घसळै जद धूजंदा है।—ऊ.का.

घसळियोड़ौ-भू०का०कृ०—डांट दिया हुआ, फटकारा हुआ, ललकारा हुआ।

(स्त्री० घसळियोडी)

घसांन-सं०स्त्री० [देश०] १ धँसने की क्रिया या भाव.

२ वह स्थान जहाँ जमीन नीचे की ओर बैठ गई हो.

३ किसी वस्तु पर दाव आदि के कारण पड़ा हुआ चिन्ह या गड्ढा.

[सं० दशार्ण] ४ पूर्वी मालवा और बुन्देलखण्ड की एक नदी।

घसाक-सं०स्त्री० [देश०] ध्वनि, आवाज, कोलाहल?

उ०—वूग छडाळां खिवै, होय नक्कीवां हाकां। हुय दळवळ हाथियां, घसळ ऊडंड घसाकां।—सू.प्र.

घसाड़णौ, घसाड़बौ—देखो 'घसाणी, घसावौ' (रू.भे.)

घसाड़णहार, हारौ (हारी), घसाड़णियौ—वि०।

घसाड़िओड़ौ, घसाड़ियोड़ौ, घसाड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

घसाड़ीजणौ, घसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

घसाड़ियोड़ौ—देखो 'घसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घसाड़ियोड़ी)

घसाणो, घसावो–क्रि०स० [देश०] १ तल या सतह को दवा कर नीचे की ग्रोर करना, नीचे की ग्रोर वैठाना।

उ०—नमो स्वांमी दयानंद दिव्य ग्यांन दाता, व्याहिती गायत्री व्रती धारत नहीं धरम ध्रती। स्रुती ग्रो स्म्रती सरब धूड़ में घसाता।
—ऊ.का.

२ नर्म वस्तु में घुसाना, गडाना, चुभाना.

३ प्रविष्ठ कराना, पैठाना. ४ मिलाना।

घसाणहार, हारो (हारी), घसाणियो—वि०।

घसायोड़ो—भू०का०कृ०।

घसाईजणो, घसाईजवो—कर्म वा०।

घसाणो, ढसावो, घसाड़णो, घसाड़बो, घसावणो, घसाववो—रू०भे०।

घसायोड़ो–भू०का०कृ०—१ तल ग्रोर सतह को दवा कर नीचे की ग्रोर किया हुग्रा, नीचे की ग्रोर वैठाया हुग्रा. २ नर्म वस्तु में घुसाया हुग्रा, गड़ाया हुग्रा, चुभाया हुग्रा. ३ प्रविष्ठ किया हुग्रा, पैठाया हुग्रा. ४ मिलाया हुग्रा।

(स्त्री० घसायोड़ी)

घसाव–सं०पु०—घँसना क्रिया का भाव।

घसावणो, घसाववो—देखो 'घसाणो, घसावो' (रू.भे.)

घसावणहार, हारो (हारी), घसावणियो—वि०।

घसाविग्रोड़ो, घसावियोड़ो, घसाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

घसावीजणो, घसावीजवो—कर्म वा०।

घसणो, घसवो—ग्रक०रू०।

घसावियोड़ो—देखो 'घसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घसावियोड़ी)

घसियोड़ो–भू०का०कृ०—१ बलात् प्रविष्ठ हुवा हुग्रा, घुसा हुग्रा, पैठा हुग्रा. २ प्रवेश किया हुग्रा. ३ मिला हुग्रा. ४ ध्वस्त हुवा हुग्रा, नष्ट हुवा हुग्रा. ५ नीचे की ग्रोर धीरे धीरे गया हुग्रा, नीचे खिसका हुग्रा, उतरा हुग्रा. ६ गाड़ा हुग्रा, घुसा हुग्रा. ७ (नींव पर खड़ी या गड़ी वस्तु का) जमीन में ग्रोर नीचे तक गया हुग्रा, नीचे धँसा या वैठा हुग्रा. ८ देखो 'धसकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घसियोड़ी)

घसुण–सं०पु० [सं० धिषणः] १ पंडित, कवि, विद्वान (ग्र.मा.)

२ वृहस्पति, सुर-गुरु।

घसुरसरी–सं०स्त्री० [देश०] दक्षिण की एक नदी, कावेरी।

घह—देखो 'दह' (रू.भे.)

घहचाळ—देखो 'धेचाळ' (रू.भे.) उ०—काया कूग्रा में घणी नांम नीर घहचाळ। निस दिन वै रसना ग्ररट भागं दोनां काळ। भागे दोनूं काळ कमाई ग्राडी ग्रावै। करसा कैवै धांन मुगती भजनीक सिधावै। सगरांम इण सवद री लीजो ग्ररथ संभाळ। काया कूग्रा में घणी नांम नीर घहचाळ।—सगरांमदास

घहल—देखो 'दहल' (रू.भे.)

घहलणो, घहलवो—देखो 'दहलणो, दहलवो' (रू.भे.)

उ०—धागड़दि घमक ग्रोयण घहले घर, दागड़दि दिसां दहले दिगपाळ। हागड़दि हुवै ग्रालम हैकंपै, कागड़दि कयामत जांण कराळ।
—र.रू.

घहलणहार, हारो (हारी), घहलणियो—वि०।

घहलवाड़णो, घहलवाड़वो, घहलवाणो, घहलवावो, घहलवावणो, घहलवाववो—प्रे०रू०।

घहलाड़णो, घहलाड़वो, घहलाणो, घहलावो, घहलावणो, घहलाववो
—क्रि०स०।

घहलिग्रोड़ो, घहलियोड़ो, घहल्योड़ो—भू०का०कृ०।

घहलीजणो, घहलीजवो—भाव वा०।

घहलियोड़ो—देखो 'दहलियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० दहलियोड़ी)

घां–ग्रव्य०—१ एक ग्रव्यय शब्द जो ऐसे प्रश्नों के पूर्व प्रयोग किया जाता है जिनमें जिज्ञासा का भाव न्यून ग्रोर संशय के भाव का ग्राधिक्य हो। उ०—नेह निवांणै नांखियां, चुगली नहीं चिकणाय। लाखां गुण कर देखलो, कह घां नह वंधाय।—वां.दा.

२ देखो 'धांय' (रू.भे.)

घांग्रंत—देखो 'ध्वांत' (रू.भे., ह.नां.)

घांक–सं०स्त्री०—१ चिन्ह। २ देखो 'धंक' (रू.भे.)

घांकणो, घांकवो–क्रि०स० [सं० द्राक्षि या ध्वाक्ष] इच्छा करना, चाहना। उ०—धांकै मन वैठूं धौळेहर, तापै सूंना ढूंढ तठै। मोटा ग्राखर कवण मेटवै, कुटी लिखी सो महल कठै।—ग्रोपो ग्राढ़ो

घांकणहार, हारो (हारी), घांकणियो—वि०।

घांकिग्रोड़ो, घांकियोड़ो, घांक्योड़ो—भू०का०कृ०।

घांकीजणो, घांकीजवो—कर्म वा०।

घांखणो, घांखवो—रू०भे०।

घांकळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)

घांकियोड़ो–भू०का०कृ०—इच्छा किया हुग्रा।

(स्त्री० घांकियोड़ी)

घांख—देखो 'ढांक' (रू.भे.)

उ०—पंखी दीठां कनक नी पांख रे। ग्रहिवा रांनि मनि थई घांख रे।
—नळाख्यांन

घांखणो, घांखवो—देखो 'घांकणो, घांकवो' (रू.भे.)

उ०—१ घड़ मीरजां वांधि इम घांखां। नट किलकिला चोड जिम नांखां।—सू.प्र.

उ०—२ सझि ग्रलीवंध सिलहट सपरि, घिख चख गिड़कंध घांखियां। पाघड़ा वंध ग्रोळा प्रचंड, ग्रंध जेम उपड़ांखिया।—सू.प्र.

घांखणहार, हारो (हारी), घांखणियो—वि०।

घांखिग्रोड़ो, घांखियोड़ो, घांख्योड़ो—भू०का०कृ०।

घां[illegible] घांखीजवो—कर्म वा०।

धांखियोड़ौ—देखो 'धांकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धांखियोडी)

धांगड़ियौ—देखो 'दांगड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

धांगड़ौ—देखो 'दागड़ौ' (रू.भे.)

धांगौ-सं०पु०—एक प्रकार की देशी सवारी, तांगा, रथ ।
उ०—ढोला थे घोड़ले असवार, म्हांरै (नै) गुजराती धांगौ जोत सां।
—लो.गी.

धांण-सं०पु०—नाश, ध्वंश । उ०—धन लूटि कीधी धांण, वधि नार-नोळ विनाश ।—सू.प्र.

धांणका-सं०स्त्री० [सं० धनुष] १ राजस्थान में निवास करने वाली एक पिछड़ी जाति जिसके पूर्वज धनुष रखते थे ।
२ श्वपच, चंडाल (डि.को.)

धांणकौ-सं०पु० (स्त्री० धांणकी) १ 'धांणका' जाति का व्यक्ति.
२ श्वपच, महत्तर (डि को.)

धांणा-सं०पु० [स० धान्यक] भारतवर्ष में प्रायः सर्वत्र पाया जाने वाला एक पौधा विशेष जिसके खुशबूदार फल मसालों के काम लिये जाते है ।
वि०वि०—हमारे देश में इसकी खेती भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न ऋतुओं में होती है । बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब और राजस्थान में जाड़े मे, बंबई प्रदेश में बरसात के दिनों मे तथा मद्रास में पतझड़ ऋतु मे इसकी खेती होती है !
रू०भे०—धणा, धणिया, धणुं, धणु, धणूं, धणौ ।

धांणा-पंचक-सं०पु० [सं० धान्यक पंचक] औषधि रूप से प्रयोग किया जाने वाला धनिया, सूंठ, बिल्वगिर, नागरमोथा और नेत्रवाले का सम्मिश्रण (अमरत)
रू०भे०—धणापंचक ।

धांणा-पुणछी-सं०स्त्री०यौ० [देश०] हाथ की कलई पर धारण करने का स्त्रियों का एक प्रकार का स्वर्ण आभूषण जिसमें बहुत से धनियों के आकार के गोल दाने कई पंक्तियों में लगे हुए होते हैं ।

धांणी-सं०स्त्री० [देश०] आग से तप्त की हुई बालू से सेंका हुआ अनाज ।

धांणुक-सं०पु० [सं० धानुष्कः] धनुष चलाने वाला ।
उ०—अहह धांणुक धांणुक सिउं जडइ । खडग धार की कोडि खड-खडइ ।—विराट पर्व
रू०भे०—धांनुकी ।

धांणौ—देखो 'धांणा' (रू.भे.)

धांत—देखो 'ध्वांत' (रू.भे.) (नां.मा.)

धांधक-सं०पु०—राठोड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति
(बां.दा.ख्यात)

धांधळ, धांधल-सं०पु०—राव आसथान के पुत्र धांधल के वंशज, राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
रू०भे०—धांधल्ल, धांधिल ।

धांधळी, धांधली-सं०स्त्री० [सं० द्वंद्व ?] १ निरर्थक वाद-विवाद, बिना मतलब बहस, बकझक. २ बखेड़ा, फसाद. ३ उपद्रव, उत्पात. ४ मनमानी, मनचाही ।
(मि० राठौड़ी)
क्रि०प्र०—करणी, चलणी, चलाणी, होणी ।
वि०—बकझक करने वाला, बखेड़ा करने वाला, उपद्रव करने वाला ।

धांधळबाजी—देखो 'धांधळी' ।

धांधल्ल—देखो 'धांधल' ।

धांधिया-सं०स्त्री०—परिहार वंश की एक शाखा ।

धांधिल—देखो 'धांधल' (रू.भे.)

धांधी-सं०स्त्री० [अनु०] नगाड़े की ध्वनि । उ०—नकारां री धांधी बाज रही छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

धांधू-सं०पु०—१ पँवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति.
(रा.रू.)
२ शीघ्रता, तकरार (किसनगढ़)
क्रि०प्र०—करणी ।

धांनंक—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—'पाल' भुजां सावळ पकड़, साल लखां अण संक । कळह झाळ आगै कियौ, ढाल जेम धांनंक ।—पा.प्र.
यौ०—धांनंक-धर ।

धांनंकी-वि० [सं० धनुष] देखो 'धांनंखी' (रू.भे.) (डि.को.)
यौ०—धांनकी-फूल ।

धांनंख, धांनख—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—करि खंचै धांनंख चिलै बंधि टंक अढारै ।—रा.रू.
यौ०—धांनंख-धर ।

धांनंख-धर, धांनंख-धारी—देखो 'धनुस-धर' (रू.भे.)
उ०—'किमन' भज सिय रांम, धांनंख-धर सुख धांम ।—र.ज.प्र.

धांनखर-सं०पु०—धनुषधारी योद्धा । उ०—भाथा कटि करगां झलि भालै । हेक लाख धांनंखर हालै ।—सू.प्र.

धांनंखी-सं०पु० [सं० धानुष्क] धनुर्विद्या में प्रवीण ।

धांन-सं०पु० [सं० धान्य] अन्न, अनाज, नाज ।
उ०—आंना अध आंना अरथ, तुरत बिगाड़ै तांन । बदळै तुस रै बांणियौ, धुर गोढा लै धांन ।—बां.दा.
रू०भे०—धन्न ।
अल्पा०—धांनड़लौ, धांनड़ियौ, धांनड़ौ ।
मह०—धांनड ।
यौ०—धांन-चून ।

धांनक—देखो 'धनुस' (रू.भे.)
उ०—धांनक टंकार भळकार ओह । ललकार मार अणपार लोह ।
—वि.सं.

धांनकी-फूल-सं०पु० [सं० पुष्प धन्वा] कामदेव, मदन (डि.को.)

धानंतर—देखो 'घनंतर' (रू.भे.)

उ०—जो तूं आज नहीं जीवाड़स, सरवहियो दोनां चा सांम। तूझ तणो ओखद धानंतर, कीये पछे आवसी कांम।—ईसरदास बारहठ

धांनख—देखो 'धनुस' (रू.भे.)

उ०—हाथी तहवर खांन रो, गो सो धांनख भज्ज।—रा.रू.

धांनड़—देखो 'धांन' (मह., रू.भे.)

धांनड़लो, धांनड़ियो, धांनड़ो—देखो 'धांन' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ डीगी पाळ तळाव री, समदरियो हिलोळा लेवे सा। आप विन घड़ियन, आळगे सा, आप विन धांनड़लो नी भावे सा। —लो.गी.

उ०—२ संकर री किरपा सूं धांनड़ो तो अबकै बीसें'क कळसी हुं जावेला, जिणमें तिलां रो पांचेक कळसी रो अंदाज है।—रातवासो

उ०—३ मोज चेत वैसाख व्यावां, भरग्यो घर भगवांनड़ो। आठ पो'र चौसठ घड़ी में, धोरी पूरे धांनड़ो।—दसदेव

धांनमंडी—सं०स्त्री० [सं० धान्यम्+मण्डप] वह स्थान या बाजार जहां अनाज का क्रय-विक्रय होता है।

वि०वि०—अनाज का क्रय प्रायः थोक रूप में होता है जिसे किसान, आढ़तिये आदि लाते हैं तथा विक्रय थोक एवं फुटकर दोनों रूपों में होता है।

धांनमाळी—सं०पु० [सं० धान्य+माली] एक असुर का नाम।

उ०—धांनमाळी पछाड़ा हुकमां चाडा सीस घणी।—र.ज.प्र.

धांनी—सं०स्त्री० [सं० धानी] १ स्थान, जगह।

ज्यूं—राजधांनी।

२ बांसुरी (अ.मा.). ३ एक राग विशेष. ४ एक वर्णवृत जिसमें एक रगण तथा अंत में लघु वर्ण होता है।—र.ज.प्र.

धांनुक—देखो 'धनुस' (रू.भे.)

धांनुंखधर, धांनुंखधार—देखो 'धनुसधर' (रू.भे.)

उ०—१ धानुंखधर कर पंकज धारत, सेवग अगणत काज सुधारत। —र.ज.प्र.

उ०—२ एक घड़ी मझ दास उधारै। धांनुंखधार वडा व्रद धारै। —र.ज.प्र.

धांनुंख—सं०पु०—१ एक जाति विशेष।

२ देखो 'धनुस' (रू.भे.)

उ०—निरसंक असुर निहारियो, धनु धरण धांनुंख धारियो। भूयांण वांधे करण भारथ, रोख धर रघुवीर।—र.रू.

धांन्य—सं०पु० [स० धान्य] केवल अन्न मात्र।

उ०— घन धेनु धांन्य वंटक वदांन्य। जाहर जहांन मोदी महांन। —ऊ.का.

यो०—धन-धांन्य।

धांन्य-धेनु—सं०स्त्री०यो० [सं० धान्य+धेनु] पुराणानुसार दान स्वरूप में दी जाने वाली वह गाय जिसकी कल्पना धान के ढेर से की जाती है। दान विशेष, संक्रांति या कार्तिक मास में सब प्रकार के सुख, सौभाग्यादि के संचय के निमित्त किया जाता है।

धांन्यपंचक—सं०पु० [सं० धान्य-पंचक] १ शालि, व्रीहि, शूक शिंबी और क्षुद्र नामक पांच धानों का समूह. २ एक ओषधि विशेष।

धांन्यपाळ—सं०पु० [सं० धान्य+पाल] एक प्राचीन राजवंश।

उ०—गोहिल, गुहलिक पुत्रक धांन्यपाळ राजपाळ अनंग निकुंभ दधिकार काळामुह दापिक हूण हरियर डोसमार।—व.स.

धांम—सं०पु० [सं० धामन्] १ गृह, मकान, घर (अनेका.)

उ०—रे 'किसन' भजि सियारांम। धांनंखधर सुख धांम।—र.ज.प्र.

२ स्थान, जगह। उ०—सदा सुभ सीथळ धांम सुथांन। स्वरालय संकर धांम समांन।—ऊ.का.

३ देवस्थान, देवालय। उ०—जरै उठा ही सूं पीठवह भूवा रो भवन छांडि कोईक ओघड़ अतीतां री जमाति रै साथ वेही रै बळ खाडी लांघी, हिंगळाज देवी रै धांम पुगो।—वं.भा.

४ परलोक, वैकुण्ठ, स्वर्ग, देवलोक। उ०—पीछै संवत् १५४७ रावजी स्री जोधोजी धांम पधारिया नै गादी सातळजी वैठा।—द.दा.

५ तीर्थ-स्थान। उ०—१ देवी चार धांमं स्थळं अस्ट साठे। देवी पाविये एक सो पीठ आठे।—देवि.

६ देह, शरीर। उ०—परगह पोरस पूरियां, उर कह अडुांणा। आरत साह जिहांन की, रचवां आरांणा। सांभळिया 'अवरंगसा', कर धांम धखांणा। के सीतापत आय सिर, जनु रांवण रांणा।—द.दा.

७ ज्योति (ह.नां, अनेका.) ८ किरण, रश्मि (अ.मा., अनेका.)

९ तेज (अनेका.)

११ चार की संख्या*।

धांम-उजासी—सं०पु०यो० [सं० धाम+रा० उजासी] दीपक (अ.मा.)

धांमजग्र—देखो 'धमगजर' (रू.भे.) उ०—अनट्ट जे अखा अवाच्य, सूरमंस री नरा। परं सती अभेट पिंड, दास गाय दीन रा। धणी स अग्र होत ढाल, जूटि धांमजग्र में। इसा वसंत के अपार, गाढ़ पूर नग्र में।—सू.प्र.

धांमण—सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का घास विशेष जो वर्षा ऋतु में होता है. २ एक प्रकार का वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी का धनुष बनता है। उ०—भव धांमण खइर खीरणी, पास पाडल लींव। अंब जंबू आंविली, करंगची कंइवट्ट कांव।—एकमणी मंगळ

३ एक प्रकार का विषैला सर्प। उ०—विसधर कोट गोयरो वीछू, फफवा धांमण वेहड़ा फोड़। अमल कराळो जहर ऊतरै, आप नांम रो मंत्र अरोड़।—बगतरांम आसियो

रू०भे०—धांमणि।

धांमणि—सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

उ०—धंतूरा नई धाऊडा, धांमणि धूंगरि धूनि। धींग धमासा धूलीया, धडहड धाता धूंनि।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'धांमण' (रू.भे.) उ०—किहि किहि अगिर ऊंमटइ, चाकलुंडि चिम्रावि। परड पुरांणी सीघळी, धांमणि धूंसटि धावि। —मा.कां.प्र.

धांमणी-सं०स्त्री०—१ मांस पकाने का मिट्टी का बरतन, हँडिया.
२ 'धांमणो' क्रिया का भाव।
वि०वि०—देखो 'धांमणो, धांमबो' (रू.भे.)

धांमणो, धांमबो-क्रि०स० [सं० धाम+प्रभावं आचष्टे इति धामयति (ना.धा.)] किसी वस्तु को लेने के लिए आग्रह करना, कहना।
उ०—१ तरै चारण वीर धवळ री कबीलो पातसाह सरब पकड़ायो, तरै चारण वांसै हुवो आयो, माल उण घणो ही धांमियो।—नैणसी
उ०—२ तरै रजपूत कह्यौ हूँ कहस्यूं। तरै मेर कह्यो—हूं दस टका देस्युं। यूं करतां मेर पच्चीस टका धांमिया। तरै रजपूत लिया।
—राव मालदे री वात

धांमणहार, हारौ (हारी), धांमणियौ—वि०।
धांमवाड़णो, धांमवाड़बो, धांमवाणो, धांमवाबो, धांमवावणो, धांमवावबो, धांमाड़णो, धांमाड़बो, धांमाणो, धांमावो, धांमावणो, धांमावबो—प्रे०रू०।
धांमिओड़ो, धांमियोड़ो, धांम्योड़ो—भू०का०कृ०।
धांमीजणो, धांमीजबो—कर्म वा०।

धांमधूम-वि० [अनु०] वायु जनित, विकार युक्त (पेट)
सं०पु०—१ मार-काट, युद्ध। उ०—मच धांमधूम सर सेल मार। पड़ त्रास आस आठूं प्रकार।—रा.रू.
२ वायु जनित विकार. ३ देखो 'धूम-धांम' (रू.भे.)

धांमनीर-सं०पु० [सं० नीरधाम] समुद्र, सागर।
उ०—ईस धुर तीरां धामनीरां तात रमा ओप, सुरतेज गीरां संत भीरां दैत साळ। चकांपंखी खगां सुधां सीरां ज्युं मुनंद्र धीरां। मही आसती क बीरां दूजो रायां माल।—हुकमीचंद खिड़ियो

धांमस्री-सं०स्त्री० [सं० धामश्री] एक प्रकार की रागिनी (संगीत)

धांमहर-सं०पु० [सं० धाम+गृह] देवल (अ.मा.)

धांमहरि-सं०पु० [सं० धाम+हरि] परलोक, वैकुण्ठ, स्वर्ग।
उ०—अठतीसै आसोज में, सित सातम सनवार। गो सोनागिर धांमहरि, नांम करै संसार।—रा.रू.

धांमाजागर—देखो 'धमगजर' (रू.भे.) उ०—पाड़ै प्रिसुण अपार ऊभो आखाड़ै अनड़। गोवरधन माथै गहणि धांमाजागर धार।
—वचनिका

धांमिय-वि० [सं० धार्मिक, प्रा० धम्मिय] धर्मानुसार आचरण करने वाला, धार्मिक। उ०—निज यस दिसि व्यापए थापए चउविह संघ। सूरउ तेह ज सांमिय धांमिय कांमि य रंग।—नेमिनाथ फागु

धांमियोड़ो-भू०का०कृ०—किसी वस्तु को लेने के लिए आग्रह किया हुआ, कहा हुआ।
(स्त्री० धांमियोड़ी)

धांमीणी-सं०स्त्री० [देश०] पिता या भाई द्वारा पुत्री या बहन को दी जाने वाली गाय अथवा भैंस।
क्रि०प्र०—देणी, हांकणी।

धांमीणो-सं०पु० [देश०] वधू के पास प्रायः निरन्तर रहने वाले उसके छोटे भाई अथवा भतीज आदि की हँसी अथवा अवज्ञा के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।
वि०वि०—देखो 'धांमीणी'।

धांमो-सं०पु०—एक प्रकार का बरतन विशेष।

धांय-सं०पु०—आग की वह लपट जिसमें कुछ अव्यक्त शब्द के साथ धूआं और चिनगारियां हों, अग्नि के जलने का शब्द।

धांस-सं०स्त्री०—१ आभूषणों को धारण करने अथवा पहनने के लिए उनके बीच में लगाई जाने वाली कील. २ दांतों का आभूषण.
३ देखो 'धांसी' (मह., रू.भे.)
४ देखो 'धांसो' (मह., रू.भे.)
उ०—भरळ तेज उडगांण अणी विकटां भळक, पांण घणवांण अत जेहर पायो। वहै दइवांण रौ धांस जवनां बीच, अरयां सर जांण बीजांण आयो।—रावत अजीतसिंह सारंगदेवोत (कांनोड़) री गीत
५ देखो 'धूंसो' (मह., रू.भे.)
६ देखो 'धूंस' (रू.भे.)

धांसणो, धांसबो—क्रि०अ० [देश०] १ खांसना.
क्रि०स०—२ रगड़ना, घिसना।
धांसणहार, हारौ (हारी), धांसणियौ—वि०।
धांसिओड़ो, धांसियोड़ो, धांस्योड़ो—भू०का०कृ०।
धांसीजणो, धांसीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

धांसारो-सं०पु० [देश०] झड़बेरी के पत्तेहीन सूखे कांटों का उतना समूह जिसे एक बैलगाड़ी में लादा जा सकता हो।

धांसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ खांसा हुआ.
२ रगड़ा हुआ, घिसा हुआ।
(स्त्री० धांसियोडी)

धांसी-सं०स्त्री० [देश०] कास रोग, खाँसी।
मह०—धांस।

धांसो-सं०पु०—१ भाला। उ०—१ बांण पाराध तणो जांण विरोध री, विकट थट रोद रोकियां वांसो। जबर भुजधारियां हणूं वळ जोध री, धमक भुज धारियां अरुण धांसो।
—रावत अजीतसिंह सारंगदेवोत री गीत
उ०—२ लाख लसकर डमर अडर वांसै लियां, दिलीसां सदर्क चाड दहिया। 'अजावत' ताहरा बीज धांसा अगै, रोद कांसा कमळ ढांक रहिया।—महाराजा अभैसिंघजी री गीत
मह०—धांस।
२ देखो 'धूंसो' (रू.भे.)

धांहणो, धांहबो—देखो 'धांसणो, धांसबो' (रू.भे.)
धांहणहार, हारौ (हारी), धांहणियौ—वि०।
धांहिओड़ो, धांहियोड़ो, धांह्योड़ो—भू०का०कृ०।
धांहीजणो, धांहीजबो—भाव वा०।

धा-सं०स्त्री० [डिं०] १ पृथ्वी, धरती, इला. २ लक्ष्मी. ३ सरस्वती, शारदा. ४ उमा, पार्वती (अनेका.)
देखो 'धाय' (रू.भे.)
सं०पु० [अनु०] ५ तबले का एक बोल।
[सं० धैवत] ६ 'धैवत' शब्द या स्वर का संकेत (संगीत)
वि०—धारण करने वाला, धारक (अनेका.)
क्रि०वि०—ओर, तरफ।
रू०भे०—धाई, धाय।
प्रत्य०—प्रकार, तरह।
ज्यूं०—नवधा भक्ति।

धाई—१ देखो 'धाय' (रू.भे.) (उ.र.)
२ देखो 'धा' (रू.भे.)

धाईउ-वि० [सं० धावित:] दौड़ा हुआ (उ.र.)

धाईधूपी-वि०स्त्री०यौ० [सं० ध्रै रा०+धूपी] १ अघाई हुई, सन्तुष्ट, तृप्त. २ स्वच्छ, मल रहित. ३ स्नान की हुई।

धाउ-सं०पु०—१ धातु।
[सं० धाव] २ नाच का एक भेद।
क्रि०वि०—ओर, तरफ।

धाउ-धप-वि०यौ० [सं० ध्रै+रा० धप] १ उतना जितने में एक मनुष्य पूर्ण तृप्त:हो जाय. २ अधिक, काफी।
रू०भे०—धाऊ-धप।

धाऊ-सं०पु० [सं० धावन] वह आदमी जो आवश्यक कामों के लिए दौड़ाया जाय।
मुहा०—धाऊ व्हैणौ—चलता बनना।
क्रि०वि०—ओर, तरफ।

धाऊकार-सं०पु० [सं० ध्वंस+कार] नाश, ध्वंस।
क्रि०प्र०—ऊठणौ, जाणौ, पड़णौ।
रू०भे०—धऊकार, धऊसकार, धहूकार।

धाउड़ौ—देखो 'धाव' (११) (अल्पा., रू.भे.)
उ०—धंतूरा नइं धाउडा, धांमणि धूंगरि धूनि। धींग धमासा धूळिया, धडहड धाता धूंनि।—मा.कां.प्र.

धाऊधप—देखो 'धाउधप' (रू.भे.)

धाक-सं०स्त्री० [सं० धक्क+नाशने] १ आतंक, भय, रौब, दबदबा।
उ०—१ आयौ बीजपुर 'अजौ', भांजे लसकर खांन। लग्गी धाक मळेछ दळ, वग्गी डाक जिहांन।—रा.रू.
उ०—२ सारी हाडोती मांही गोपाळदास री तौ धाक पड़ रही है।
—गौड़ गोपाळदास री वारता
२ प्रसिद्धि, ख्याति। उ०—मरद भूठ बोलै तौ धाक जाती रहै।
—नी.प्र.
३ शौर्य, पराक्रम। उ०—आ ही सांची वात हैं, निस्चय यो ही काज। करहु तयारी सकळ मिळ, धाक जमावौ राज।
—ठाकुर जैतसी री वारता
क्रि०प्र०—जमाणी, पड़णी, होणी।
रू०भे०—धाख, धूख।

धाकल-सं०स्त्री० [सं० धक्क=नाशने] जोश या रौब भरी आवाज, भयपूर्ण आवाज, ललकार, डांट, हाक। उ०—जावतां ईज धाकळ रा धडूका सार्थ ढोल री डाकौ रुकग्यौ। निछरावळां करता हाथ ऊँचा रा ऊँचा ईज रैग्या अर ऊंठ चीडता चीडता वंध व्हैग्या।
—रातवासौ
क्रि०प्र०—करणी, देणी।

धाकलणौ, धाकलबौ-क्रि०स० [सं० धक्क+नाशने] १ फटकारना, डराना, डांटना। उ०—हरोळ गोळ व्है चंदोळ लोळ फौज हाकळी। करी न जै निक्रिस्ट भ्रिस्ट काळ-प्रिस्ठ धाकली।—ऊ.का.
२ चलाना, हांकना।
धाकलणहार, हारौ (हारी), धाकलणियौ—वि०।
धाकलिओड़ौ, धाकलियोड़ौ, धाकलयोड़ौ—भू०का०कृ०।
धाकलीजणौ, धाकलीजबौ—कर्म वा०।

धाकलियोड़ौ-भू०का०कृ०—फटकारा हुआ, डराया हुआ, डांटा हुआ। (स्त्री० धाकळियोड़ी)

धाकाधीकौ, धाकाधेकौ-क्रि०वि० [अनु०] किसी भी प्रकार, ज्यों-त्यों कर के।
सं०पु०—१ कार्य चलाने की क्रिया या भाव।
२ शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला। उ०—कळह कराडंबर करा, असमधिकरा विसेकौ रे। ऊंधाकड़ा निरबुद्धिया, करसी धाकाधेकौ रे।
—जयवांणी
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
रू०भे—धाखा-धीखौ, धाखा-धेखौ।

धा'काळ-सं०पु० [देश०] भयंकर दुर्भिक्ष, अकाल।

धाकौ-सं०पु० [सं० ध्राखृ=अल्पार्थे] १ निर्वाह, गुजारा।
उ०—सुसरौ अेक पांणी-री पो में ७) रुपीया मईनें-रा लावै जकै-में कट्टौ-मट्ठौ धाकौ धकै।—वरसगांठ
मुहा०—१ धाकौ धकणौ—ज्यों-त्यों निर्वाह चलना, किसी प्रकार जीवनयापन होना. २ धाकौ धकाणौ—ज्यों-त्यों निर्वाह करना, किसी प्रकार जीवनयापन करना।

धाकौ-सं०पु० [सं० धक्क+नाशने] १ भय, डर, आतंक।
उ०—तर मुख खड़भड़ै सहर तरसींगरा, ऊजड़ै भाक आथूण अरडींगरा। धरहरै धमंक धाका पड़ै धींगरा, सीस कण आज री रीस गजसींग रा।—महादांन महडू
मुहा०—धाका पड़णा—किसी का भय होना, किसी के रौब की धाक जमना, आतंक का प्रभाव पड़ना, किसी पराक्रमी के प्रभाव से वहां पर रहने वालों का आतंकित होना।
२ शंका, संशय। उ०—मळती दूसरी इम कहै, इण रा मन में धाकौ रे। तोरण आयां करै आरतौ, टीकौ काढ नै सासू खांचै नाकौ रे।—जयवांणी

क्रि०प्र०—होणी ।

घाख—देखो 'धाक' (रू.भे.)

घाखा-धीखो, घाखा-धेखो—देखो 'धाका-धेको' (रू.भे.)

उ०—आलोई उज्वळ हुओ, छोडो माया घाखा-धेखो रे । तिण सुं रिख 'जयमलजी' कहै, तुमे सिद्ध तणा सुख देखो रे ।—जयवांणी

घाग-संस्त्री० [सं० दाह] १ तेज अग्नि, अनल. २ अति क्रोध.
३ देखो 'दाग' (रू.भे.)

घागो-सं०पु० [सं० तार्कव, प्रा० तागो] १ बँटा हुआ सूत, डोरा, तागा।
मुहा०—घागो-घागो करणो—किसी कपड़े को फाड़ कर चिथड़े-चिथड़े करना ।

२ यज्ञोपवीत । उ०—तन भी लागा मन भी लागा, ज्यों बांमण गळ घागा रे । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भाग हमारा जागा रे ।
—मीरां

३ श्वेत पाग पर बांधने का वह काला सूत्र जिसके बीच में जरी का 'मोगरा' होता है (मेवाड़) ४ ध्यान, लगन ।

उ०—आदि अंत मधि एक रस, टूटे नहिं धागा । दादू एकै रह गया, तब जांणी जागा ।—दादू वांणी (मि० डोरी ८)

मह०—धग ।

घाड़-संस्त्री० [सं० धाटी = आक्रमण, हमला अथवा डाकू दल] १ लुटेरों का समूह, आक्रमणकारियों का दल, शत्रुओं का समूह ।

उ०—१ अडर मूळ डर न धारै कंस री आंण री, पिता माता तणी टंर न पूठै । जतन सूं सखी दध वेचवा जावतां, अचांनक कांन री घाड़ ऊठै ।—वां.दा.

उ०—२ भागो कंत लुकाय धण, ले खग आतां घाड़ । पहर धणी चा पूंगरण, जीती खोल किवाड़ ।—वी.स.

क्रि०प्र०—ऊठणी, पड़णी ।

यौ०—घाड़-फाड़ ।

२ आतंक, डर।

उ०—झळके मंगळ झाळ इळा फिर गई उथल्ले । पड़ि गोळी अजगैब काळ टोली कर चल्ले । घाड़ जम घड़हड़े मेर खड़भड़े अचूके । वीरभद्र वड़वड़े हगूं हड़हड़े हॅसके ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ आपत्ति, विपत्ति, संकट । उ०—१ धवळा सूं राजै धणी, चंगी दीसै ग्वाड़ । नारायण मत नांखजै, धवळा ऊपर घाड़ ।—वां.दा.

उ०—२ भरियो गाडो भार सूं, परगट जांण पहाड़ । थळ सांमै चढ़तां थकां, धोळै पूगी घाड़ ।—वां.दा.

४ जत्था, समूह । उ०—१ हे हेली ! म्हारै पती घरोघर सूं तो वैर वसाया है, दिनो दिन रोजीना दुसमण आय घाड़ री घाड़ माथै लूंबै है ।—वी.स.टी.

उ०—२ धायी आयी राठोड़ां-री घाड़, कोई. सोढीजी-रै मैं'ल तळै कर नीसरी ।—लो.गी.

५ डाका (टि.को.) उ०—झीण गंठजोड़ पट बांध कर झालियो, जठै वर बींदणी हेत जोड़ी । चारणां तणो वित घाड़ में चालियो, घालियो जगन में विघन घोड़ी ।—गिरवरदांन सांदू

क्रि०प्र०—करणी ।

६ तीव्र रुदन ।

क्रि०प्र०—पाड़णी ।

७ अशुभ समाचार । उ०—कूकै पाड़ोसण हळफळी खोल किमाड़ । ताहरा पति ना कागळ मांहे मोटी घाड़ ।—घ.व.ग्रं.

[वि० अथवा अव्य०] धन्य, वाह । उ०—१ वाट आदू वहण रहण उप्रवट वसू, सात्रवां दहण खगझाट सूदा । पाट रा मुदायत धाड़ *मांटीपणै, ऊफणै खवां रजवाट 'ऊदा' ।—भींमसिंघ ऊदावत री गीत*

उ०—२ दायक खबर रांम सिय दोड़ा, तोयक काळ नेस सिर तोड़ा। राड़ फतै पायक आरोड़ा, खायक असुर घाड़ भड़ खोड़ा ।—र.ज.प्र.

उ०—३ घिन घिन रवि उचरै घाड़ घाड़ । राठोड़ मुगळ इम करत राड़ ।—वि.सं.

रू०भे०—धाड ।

घाड़णो, घाड़बो-क्रि०स० [सं० धाटी, प्रा० धाडी] १ डाका डालना, लूटना ।

२ रुदन करना, क्रंदन करना ।

घाड़णहार, हारो (हारी), धाड़णियो—वि० ।

धाड़िओड़ो, घाड़ियोड़ो, घाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।

घाड़ीजणो, घाड़ीजबो—कर्म वा० ।

घाडणो, घाडबो—रू०भे० ।

घाड़ती—देखो 'धाडायती' (रू.भे.)

घाड़-फाड़-वि० [सं० धाटी+रा० फाड़] निडर, होशियार, निशंक ।

घाड़यत—देखो 'घाड़ायत' (रू.भे.) (गो.रू.)

घाड़व, घाड़वी—देखो 'घाड़ायती' (रू.भे.)

उ०—१ धन ले वीरा घाड़वी, अब कोजै न अबेर । एथ धणी जे आवसी, सो री विकसी सेर ।—वी.स.

उ०—२ एक कोई घाड़वी आयो छै, कूंभा रै उतरियो छै ।
—नैणसी

घाड़ा-सं०पु०—किसी उपकार या अनुग्रह के बदले में प्रशंसा, कृतज्ञता सूचक शब्द, शुक्रिया, धन्यवाद । उ०—१ मन महरांण धिनो मेवाड़ा, दाखै घाड़ा दसूं दिसा । राजा अन वांदै रजवाड़ा, तूं गडवाड़ां अबै तिसा ।—किसनो आढो

उ०—२ घड़च दससीस खळ रहण हिक धारणा । धारणा धनख सर भुजा घाड़ा ।—र.ज.प्र.

घाड़ात—देखो 'घाड़ायत' (रू.भे.)

घाड़ा-मरद-सं०पु०यौ०—१ डाकू, लुटेरा. २ शक्तिशाली व्यक्ति, जबरदस्त । उ०—मचायो समर अप्रमांण घाड़ा-मरद, प्रांण मद

सूक काचां अपारां। कितांई रांणवत टूक चौहै किया, धड़च धाड़ायतां रूक धारां।—रांमकरण महडू

धाडायत, धाड़ायती, धाड़ायत्त, धाड़ावी-सं०पु० [सं० धाटी, प्रा० धाडी= लुटेरों का दल, या आक्रमण] डाकू, लुटेरा (डि.को.)

उ०—१ धाड़ा धाड़ायत लूटण नै धावै। अपती कुळहीणा कूटण नै आवै।—ऊ.का.

उ०—२ ऊपड़ी वाग धाडायतां, काळ रूप दावै कळां। ताखड़ा होय दोऊ तरफ, छूट छूटि उग्राछळां।—पनां वीरमदे री वात

उ०—३ कोई धाड़ायती सूरवीर आपरै दुसमणां नै कहै है, हे वाहर कर आय नै पूगोड़ा जोधारां! पाछा कठै पधारौ।—वी.स.टी.

उ०—४ खींवो वीजो धाड़ावी वडा दौड़ा वडा चोर।—चौबोली

पर्याय०—अवकंद, भोकायत, डाकू, धाटि, परपात।

रू०भे०—धाड़ती, धाड़यत, धाड़व, धाड़वी, धाड़ात, धाड़ी, धाड़ीत, धाड़ीतौ, धाड़ेत, धाड़ैत, धाड़ैती, धाडव, धाडवी, धाडायत, धाडायती, धाडायत्त, धाडावी, धाडी, धाडीत, धाडीतौ, धाडेत, धाडैत, धाडैती, धायडेती।

धाड़ि—देखो 'धाड़ी' (रू.भे.) (ऐ.जै.का.सं.)

धाड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—डाका डाला हुआ, लूटा हुआ। (स्त्री० धाड़ियोड़ी)

धाड़ी, धाड़ीत, धाड़ीतौ, धाड़ेत, धाड़ैत, धाड़ैती—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ सो दूलची धाड़ी इसी दातार हुवौ जे लाहोर सूं दिल्ली तक का मारग मारै, फळसा मारै।—दूलची जोइये री वारता

उ०—२ आंगै अनै अनै धाड़ीतै, लयै लूटि अंज पसरि लयौ। ऊभै गई ज गोपी घरिजण, गायां पड़ियै मिहर गयौ।—रतनूं भरमौ

उ०—३ अठी वंदूकां ऊपड़ी, घनंक उठी घूंकार। धाड़ैतां वाहर धकै, हुवौ हकौ जिण वार।—पा.प्र.

उ०—४ खाडाळ सूं आथमणा वरू रा मंदिर है। कुत्ता घणा राखै। गायां, भैंसां, सांढियां री वार चढै जद डोर मांह सूं कुत्ता काढ़ देवै। कुत्ता दौड़ आपड़ नै धाड़ैतां रा घोड़ा ज्यांरा अंडकोस पकड़ लै।—बां.दा. ख्यात

उ०—५ धाड़ैती आ वात आछी तरै सूं जांणै हा के गांव में लारै रह्योड़ा मिनख बोदा है अर इणां में सूं कोई उणां री सांमनौ करण नै नहीं आवैला।—रातवासो

धाड़ौ-सं०पु० [सं० धाटी] धन हरण करने के लिए सहसा किया जाने वाला आक्रमण, डाका, बटमारी। उ०—१ सांभळी बात वउलोच सीमा हुता, धपटिया धेणुआं करै धाड़ौ। खळकती लूअ मैं खंड करिवा खळां, आवियौ अमरसिंह तेथि आडौ।—ध.व ग्रं.

उ०—२ धाड़ा धाड़ायत लूटण नै धावै। अपती कुळ हीणा कूटण नै आवै।—ऊ.का.

उ०—३ जिकै मेवासी हुवा थका दौड़ धाड़ा करै। जिण किण ही सूं न डरै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ; पड़णौ, पाड़णौ।

रू०भे०—धाड़ि, धाडि।

धाट-सं०पु०—ऊमरकोट राज्य का नाम। उ०—१ धाट सुरंगी गोरियां, आदू कहवत एह। पदमणियां हमरोट ह्वै, राख म संसौ रेह।—बां.दा.

उ०—२ धण धाव धटै नह पांण धाट। धुर खेत ऊपना जिके धाट।

रू०भे०—धट।

धाटि, धाटी-वि०—ऊमरकोट सम्बन्धी, ऊमरकोट का, 'धाट' देश का।

उ०—१ जवहर जेहलियाह, तैं न किया घोड़ां तणा। दळ सुध दांन दियाह, काठी धाटी कवियणां।—बां.दा.

उ०—२ धाटी गध धाटी धवळ, धाटी सिरै धुरज्ज। पाबू धाट पधारियौ, धण धाटेची कज्ज।—पा.प्र.

सं०पु० [सं० धाटी] १ डाकू (डि.को.). २ डाकू दल, डाकुओं का जत्था।

उ०—परंतु प्रिथ्वीराज रौ मंत्री उणरा उक्त रूप इंद्रजाळ रा उदबंधण मैं न आयौ र, स्रावक रा प्रेरिया समस्त ही फंद जांण लिया। निसीथ रै समय धाटि रै संपात दिवाय आपरा गहणहार गुजरात अधीस रा सांमंत मंत्री अमरसिंह समेत जठी तठी पलायमांन किया।—वं.भा.

३ धाट' देश का घोड़ा. ४ सिंधी जाति (मुसलमान) का एक भेद।

सं०स्त्री०—५ घोड़े की एक चाल विशेष।

६ देखो 'धटी' (रू.भे.)

धाटेचा-सं०स्त्री०—पँवार वंश के राजपूतों की एक शाखा (बां.दा. ख्यात)

धाटेचौ-सं०पु० (स्त्री० धाटेची) पँवार वंश के राजपूतों की 'धाटेचा' शाखा का व्यक्ति।

वि०—धाट देश का, धाट देश संबंधी।

धाड—देखो 'धाड़' (रू.भे.)

धाडणौ, धाडबौ—देखो 'धाड़णौ, धाड़बौ' (रू.भे.)

धाडव, धाडवी—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.)

धाडा-सं०स्त्री०—एक प्रकार का शाक विशेष।

उ०—धूंगरि धूंणी धांणकी, धातरि धणख धमासि। धडफूडो धंधोळणी, धूती धाडा धासि।—मा.कां.प्र.

धाडायत, धाडायती, धाडायत्त, धाडावी, धाडि—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.)

धाडि—देखो 'धाड़ौ' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—कांम धाडि निसि माझम धाइ, चंदलइं सुरत दुंदभि वाइ। स्यउं भणी घरधणी धरि ढीली, वीनवइ सजन लाडगहेली।—प्राचीन फागु संग्रह

धाडियोडौ—देखो 'धाड़ियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० धाडियोडी)

धाडी, धाडीत, धाडीतौ, धाडेत, धाडैत, धाडैती—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.)

उ०—गणिका सगळी देस नी, गणतां गणित न थाइ। धक पुहँचइ धाडीत परि, धसमस करती धाइ।—मा.कां.प्र.

घाणौ, घावौ–क्रि०अ० [सं० घ्रै] १ पूर्ण अघाना, तृप्त होना।
उ०—१ सेजां री लोभण उडीकै गोरड़ी जी, कोई, थांरो गोरी उडावै काग, अब घर आवो जी, धाई थांरी नौकरी।—लो.गी.
उ०—२ अचळ नवलाख रे जुध देखि धायौ अरक, ईस धायौ लहै सीस अणचूक। धड़चतौ घड़ां वैरी हरां न धायौ, राज 'राघव' तणौ अधायौ रूक।—झाला राजा राघवदेव (द्वितीय), देलवाड़ा रौ गीत
उ०—३ आदमी सौ-दौढ़ मारिया। तरां चोर कना सूं मड़ां रा माथा मंगाय माताजी आगै बावर-कोट करायो नै जैतसीजी कह्यौ, माता, धाई कै न धाई, जो धाई न होय तौ वळै चढ़ाऊं।
—जैतसी ऊदावत री वात

[सं० धृजि] २ गिरना, पड़ना। उ०—घुरधर आसाढ़ां अंबर घर-हरियो। घोरा डंबर में संवर घरहरियो। साई सर सरिता आई इकरारा। धोळा जळधर सूं धाई जळधारा।—ऊ.का.
[सं० ध्यै] ३ देखो 'धावणौ, धाववौ' (रू.भे.) उ०—१ रटियो हरि गजराज, तज खगेस धायौ तठै। आ कंइ देरी आज, करी इती तैं कान्हुड़ा।—रांमनाथ कवियौ
उ०—२ धांन दिरावण सुखदेवौ धायौ। पांणी निरमळ नित सवळां नै पायौ।—ऊ.का.
उ०—३ वांकौ कहै टळै दिन विखमा, धणियांणी नै धायां। लोव-डियाळ ताप नंह लागै, ओलै थारै आयां।—वां.दा.
घाणहार, हारौ (हारी), घाणियौ—वि०।
घायोड़ौ—भू०का०कृ०।
धाईजणौ, धाईजबौ—भाव वा०।

धात–सं०पु० [सं० धातृ] १ कामदेव (अ.मा.) २ सूर्य (अ.मा.)
[सं० धातु] ३ पत्थर, पाषाण (अ.मा.)
सं०स्त्री०—४ तलवार (अ.मा., ह.नां.)
५ स्वभाव, प्रकृति। उ०—हसी कहइ कुवजक तेणी वार, 'तूं फर-सावीसि किम सुविचारि? सतीपणा नी जांणी वात, प्रीछी मइ हवइ ताहरी धात'।—नळ-दवदंती रास
६ देखो 'धाता' (रू.भे.) ७ देखो 'धातु' (रू.भे.) (अमरत)
उ०—१ वीजु भंडार छइ प्रिथ्वी तणु, पार न पांमइ कोइ तेह तणु। वनसपती नइ सगळी धात, करसण संपजइ अनोपम वात।
—नळ-दवदंती रास
उ०—२ हीर मुदै जुहारां सपतां धातां मुदै हेम, राजै देवां मुदी अग्र-वुधी गणांराव। भोज मुदै दातारां तीरथां प्रागराज भखां, साखां तेरां मुदै 'सुरतांण' रौ सुजाव।—नींवाज ठा. सांवतसिंघ रौ गीत

धातधर–सं०पु० [सं० धातु+धृक्] पर्वत, पहाड़ (अ.मा.)
धातवीज–सं०पु० [सं० धातृ+रा० वीज] कामदेव, अनंग (अ.मा.)
धातरि–सं०स्त्री० [देश०] एक प्रकार की सब्जी विशेष।
उ०—धूंगरि धूंणी धांणकी, धातरि धणख धमासि। घडफूली धंघोळणी, धूती धाडा धासि।—मा.कां.प्र.

धात-स्वाद्–वि० [सं० धातु स्वादक] धातु का स्वाद लेने वाला (ड.र.)
धातांसार–सं०पु० [सं० धातु+सार] सोना (अ.मा.)
धाता–सं०पु० [सं० धातृ] १ ब्रह्मा, विधाता, विधि (डिं.नां.मा.)
उ०—राघौ राजा सीता रांणी, वेदां में धाता वाखांणी।—र.ज.प्र.
२ विष्णु. ३ शिव, महादेव, महेश. ४ शेषनाग।
५ वारह आदित्यों में एक. ६ रक्षा।
उ०—मुझ मांनौ वातां रे, जिम होवै धाता रे। वळै एहवी रे धातां धातां दोहरी रे।—प.च.चौ.
७ टगण के आठवें भेद का नाम (।।।ऽ।) (डिं.को.)
वि०—१ रक्षा करने वाला, रक्षक।
उ०—लाडी लाखीणी धारा वूंधाती। पीवर ऊगां री पारां पय पाती। भाखा-खीणां भड़ एवड़ ले आता। धायो धीणा रा गोधन रा धाता।
—ऊ.का.
२ धारण करने वाला, धारक. ३ पालन करने वाला, पालक।
रू०भे०—धात।

धातु–सं०स्त्री० [सं०] १ वह खनिज पदार्थ अथवा मूल द्रव्य जो अपार-दर्शक हो, जिसमें से होकर ताप और विजली का संचार हो सके, जो पीटने से खण्डित न हो. २ शरीर को बनाए रखने वाले पदार्थ, शरीर को धारण करने वाला द्रव्य।
जैसे—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र।
३ शुक्र, वीर्य. ४ शब्द का वह मूल जिससे क्रियाएँ बनती हैं।
रू०भे०—धात।

धातुकरम–सं०पु० [सं० धातुकर्म] ७२ कलाओं में से एक।
धातुक्षय–सं०पु० [सं०] १ शरीर से वीर्य निकलने का रोग, प्रमेह आदि. २ खांसी का रोग।
धातुथंभक—देखो 'धातुस्तंभक' (रू.भे.)
धातुपुस्ट–वि० [सं० धातुपुष्ट] वीर्य को गाढ़ा करने वाला।
धातुप्रधान–सं०पु० [सं० धातुप्रधान] प्रधान धातु, वीर्य।
धातुभ्रत–सं०पु० [सं० धातुभृत्] पर्वत, पहाड़ (डिं.को.)
धातुमाक्षिक–सं०पु० [सं०] एक उपधातु, सोनामक्खी।
धातुरेचक–वि० [सं०] जो वीर्य को बहा कर निकाल दे, वीर्य को बाहर निकालने वाला।
धातुवरद्धक [सं० धातुवर्द्धक] वीर्य को बढ़ाने वाला।
धातुवाद–सं०पु० [सं०] कच्ची धातुओं को साफ करने अथवा मिली हुई धातुओं को साफ करने अथवा मिली हुई धातुओं को पृथक करने का काम, ६४ कलाओं में से एक कला।
धातुवादी–सं०पु० [सं०] रसायन की सहायता से सोना या चांदी बनाने वाला अथवा धातुओं को साफ करने वाला।
उ०—सुजांण चित्रजांण धातुनिस्पत्तिजांण ज्योतिसजांण। मंत्रवादी यंत्रवादी तंत्रवादी धातुवादी अंजनवादी।—व.स.
धातुवैरी–सं०पु० [सं० धातुवैरिन्] गंधक।

धातुस्तंभक- वि० [सं०] जिससे वीर्य देरी से स्खलित हो, वीर्य का स्तंभन करने वाला।
रू०भे०—धातुथंभक।

धातोपम-सं०पु० [सं० धातु+उपमा] सोना (अ.मा.)

धात्रवादी—देखो 'धातुवाद' (रू.भे.)

धात्री-सं०स्त्री० [सं०] १ आर्या या गाहा छंद का भेद विशेष जिसके चारों चरणों में मिला कर १६ दीर्घ और १६ ह्रस्व वर्ण सहित ५७ मात्राएं होती हैं (ल पिं.)
२ भूमि, पृथ्वी (अ.मा.). ३ माता, मां. ४ गंगा.
५ आंवला का वृक्ष या फल (डिं.को.). ६ सेना, फौज.
७ देखो 'धाय' (रू.भे.)

धात्रीफळ-सं०पु० [सं० धात्रीफल] आंवला।

धाद्रिग-सं०पु० [सं० धादृग्] पुरुष की ७२ कलाओं में से एक (व.स.)

धाधूं-सं०स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष. २ शीघ्रता से कार्य करने की क्रिया या भाव. ३ लाठी प्रहार।

धाप-सं०स्त्री० [सं० धॆ=तृप्तौ] जी भरने का भाव, तृप्ति, संतोष।
उ०—ओ इसो दरिद्र रो भाटो छै सो परो काडो, इण थकां रोटी धाप नहीं खाय सकां।—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

धापड़-सं०पु० [सं० ध्रपक] १ सिंचाई के लिए कुए से मोट निकाल कर पानी को गिराने का स्थान, लिलारी, छिउलारा।
उ०—खाली खेळी में बाजै खणणाटा। भाजै धापड़ लै कोठा भरणाटा। वारै वारै रै धन दै वणणाटा। गांजर खांचै लै पांजर गणणाटा।—ऊ.का.
रू०भे०—धपड़, धपड।
सं०स्त्री०—२ थप्पड़, तमाचा, चपत।
क्रि०प्र०—दैणी, धरणी, पड़णी, मारणी, रखणी।
रू०भे०—धाफड़।

धापणौ, धापबौ-क्रि०अ० [सं० धॆ=तृप्तौ] १ तृप्त होना, अघाना।
उ०—१ उर जांणै पकवांन अरोगूं, धाप'र मिळै न लूखौ धांन। आदम की विध करै 'ओपला', भोळा जे रचिया भगवांन।
—ओपो आढौ

उ०—२ घर हरिया चर धापिया, मातै सांवण मास। पिण बौहलिया बापड़ा, अै धुर हूंत उदास।—बां.दा.
उ०—३ जीमण नै पुरसी लापसी, नाना मोटा धापसी।—व.स.
२ जी भरना, संतुष्ठ होना। उ०—१ प्रभु दरसण दीठां थकां, भूख त्रिखा सहू जावैजी। निरखंतां नयण धापै नहीं, अवर चिंता नहीं आवैजी।—जयवांणी
उ०—२ पर गढ़ लेणा रोप पग, अरि सिर देणा तोड़। घरा हूंत नहि धापणौ, खूंदाळमां न खोड़।—बां.दा.
उ०—३ जळ पीधो जाडेह, पावासर रै पावटै। नैनकियै नाडेह, जीव न धापै जेठवा।—जेठवा

उ०—४ करम करत कबहूं नहि धापै। कबहूं असुभ कबूं सुभ थापै।—स्री सुखरांमजी महाराज
३ लथपथ होना, तराबोर होना।
उ०—जितरै आ तरवार वैरियां रै लोही सूं नहीं धापै, उतरै हूं पांणी नहीं पी सकूं, ढील नहीं कर सकूं।—नी.प्र.
४ पूर्ण होना, परिपूर्ण होना ?
उ०—१ ऊला केक अपार, पड़ै पल्ला अणपारां। धारा लड़िया धाप, करद खंजरां कटारां। मंडळावति लड़ि भ्रमर, 'चौथ' 'वाघरौ' खगां चडि। सुत 'मोकळ' हरदास, अधिक लड़ पड़ियौ ऊहड़ि।—सू.प्र.
उ०—२ लोहड़ां धाप इण विध लड़ै, सूर पड़ै हंस नीसरै। रंभ वरै सुरग वसियौ 'रयण', अचड़ प्रिथी सिर ऊबरै।—सू.प्र.
५ अटल विचार करना, दृढ़ निश्चय करना।
उ०—गढ़ भुरज सझिया चहुंगमे, असमांण पड़तो आंगमें। घण दाखि पोरस मेळि दळ घणा, प्रगट नियतणि मरण धावण।—रा.रू.
६ सम्पन्न होना। उ०—पछै वळतै जैतारण री नीमाज करमचंद डेरो कियौ। तिण दिन नीमाज रो लोग धापतो थो।
—राव मालदे री वात

धापणहार, हारो (हारी), धापणियौ—वि०।
धपवाड़णौ, धपवाड़बौ, धपवाणौ, धपवावौ, धपवावणौ, धपवावबौ—प्रे०रू०।
धपाड़णौ, धपाड़बौ, धपाणौ, धपावौ, धपावणौ, धपावबौ—क्रि०स०।
धापिओड़ौ, धापियोड़ौ, धाप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धापीजणौ, धापीजबौ—भाव वा०।
ध्रापणौ, ध्रापबौ—रू०भे०।

धापमौं, धापवौं—देखो 'धपाऊ' (रू.भे.) उ०—कांई रे भांवटा, थारी आ पटरांणी कांई कंवै कै किसा पेटिया पूरबो हो सो महीं पीसणौ पीसां। दिराय दूं आज थांनै धापमां पेटिया।—रातवासो

धापियोड़ौ, धापोड़ौ-वि० [सं० ध्रापित] धनाढ्य, सम्पन्न।
भू०का०कृ०—१ तृप्त हुवा हुआ, अघाया हुआ.
२ सन्तुष्ठ हुवा हुआ, जी भरा हुआ. ३ लथपथ हुवा हुआ, तराबोर हुवा हुआ, तृप्त हुवा हुआ।
४ पूर्ण हुवा हुआ, परिपूर्ण हुवा हुआ. ५ अटल विचार किया हुआ, दृढ़ निश्चय किया हुआ. ६ सम्पन्न हुवा हुआ.
७ अरुचिकर हुवा हुआ, तंग हुवा हुआ, अप्रसन्न हुवा हुआ, हैरान हुवा हुआ।
(स्त्री० धापियोड़ी, धापोड़ी)

धाफड़—देखो 'धापड़' (रू.भे.)

धाब-सं०पु० [देश०] कटी हुई घास का ढेर।

धावड़िया-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का गेहूं बोने का ढंग या इस ढंग से बोये हुए गेहूं।
वि०वि०—पहले भूमि को पानी से तर कर दी जाती है, तत्पश्चात्

हाथों से गेहूं छिटक कर हल चला दिया जाता है। फिर क्यारियां बना दी जाती हैं।

धावळ-सं०पु० [देश०] १ ऊनी वस्त्र विशेष। उ०—दाढ़ी रंग उज्जळ भाल सिंदूर। प्यालां मतवाळ नसौ भरपूर। लोई सिर फावत धावळ लंक। चमू पर सावळ सूळ चमंक।—मे.म.

२ कपड़ा, वस्त्र। उ०—मनजांणै पहरूं महमूदी, फाटा धावळ पहर फरै। कासूं हुअै मनख री कीधौ, करै जको करतार करै।
—ओपौ आढ़ौ

३ देखो 'धावळौ' (मह., रू.भे.)

धावळयाळ, धावळयाळी, धावळवाळ, धावळवाळी, धावळांणी, धावळियांणी, धावळियाळ, धावळियाळी-वि० [राज० धावळ+सं० आलुच्] 'धावळा' वस्त्र धारण करने वाली।

उ०—१ धावळवाळ घंटाळ घिराणी, लोवड़वाळ लवेस। मेहाई करनल कनियांणी, केई केई रूप करेस।—अज्ञात

उ०—२ म्हारी रच्छा कीज्यौ हे मा देसांणां री राय। जग जननी करनी जगदंबा, धावळवाळी ध्याय।—राघवदास भादौ

उ०—३ धजाळी तुही करनला धावळांणी। वड़ाळी तनै च्यार वेदां बखांणी।—मे.म.

उ०—४ बाई इंद्र रावळी बाळक, तेडै दरसण तांणीं। रांमत खुड़द पधारौ रमवा, अंबा धावळियांणी।—मे.म.

उ०—५ सवर्ण साहल सुणौ सचाळी, ताय मिलौ मुझ हेकण ताळी। 'पीथल' वाहर काछ पंचाळी। धावजै चारण धावळियाळो।
—प्रिथीराज राठौड़

सं०स्त्री०—१ श्रीकरणी देवी (डि.को.). २ देवी, दुर्गा, शक्ति।

रू०भे०—धावळी, धावळीयार, धावळयाळी, धावळियाळ।

धावळियौ—देखो 'धावळौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ करमां कांई थारै काकी लागी उण घर खीचड़ खायौ रे। धावळिया रौ पड़दौ कीनौ रुच रुच भोग लगायौ रे।—अज्ञात

उ०—२ फाटा धावळिया घाघरिया फाटा। फरकै चोटलिया देता फरराटा। तागत तूटोड़ी तापड़ तूटोड़ा। खातां पोतां सूं पै'लां खूटोड़ा।—ऊ.का.

धावळी, धावळीयार—देखो 'धावळयाळ' (रू.भे.)

उ०—रज रूप कियौ व्रन सीस रणां। व्रन तेण करी कद सील वणां। धावळी प्रतपाळण जूंझ घरै। कुण पाळ जती व्रन 'पाळ' करै।
—पा.प्र.

धावळौ-सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो स्त्रियां कटि के नीचे पहनती हैं, अधोवस्त्र। उ०—१ कहा सेवा करी करमां भलो आयो भाय। धावळै रौ धार पड़दो, खीचड़ो ग्या खाय।—भगतमाळ

उ०—२ तिका काळी, डींगी, मोटा दांत, दूबळी, घणी डरावणी, माथा रा लटा विखरिया, घणा तेल मांहे चवती, धवळा केस, माथै निलाड़ सिंदूर थेपड़ियौ थको, लोवड़ी काळी, काळो धावळौ, कांचळी तेल मांहे गरकाव थकी, उघाड़ै माथै कीधां, हाथ मांहे त्रिसूळ झालियां दरबार आई।—जगदेव पंवार री वात

२ लहंगा, घाघरा (व्यंग में)।

रू०भे०—धावळौ।

अल्पा०—धावळियौ, धावळियौ।

(मह० धावळ, धावळ)

धावौ—देखो 'दावौ' (रू.भे.)

धाभाई-सं०पु० [सं० धात्रेय भ्राता] बच्चे को स्तनपान कराने वाली स्त्री का पुत्र।

रू०भे०—धाय भाई।

धाय-सं०स्त्री० [सं० धात्री] १ वह स्त्री जो किसी दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करने के लिये नियुक्त हो।

उ०—१ वखतसिंहजी नागोर सूं टीका रा हाथी घोड़ा कपड़े रा थांन लेय धाय नूं मेल्ही।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ चूंडैजी नूं धाय ले अर आल्हे चारण रै घरै काळाऊ गांव जाय नै रही।—नैणसी

रू०भे०—धा, धाई, धात्री, धाया।

२ कुछ पीलापन लिये हुए अनार की पत्तियों से मिलता-जुलता खुरदरी पत्तियों का एक वृक्ष विशेष जो हिमालय से लेकर सारे उत्तरीय भारत में अधिकता से होता है। यह वृक्ष 'धव' वृक्ष से भिन्न होता है।

३ दफा, वार। उ०—भ्रिग किया प्रगट जिग महा हूंती भड, वेढीमणा कुदरथी वीर। आठे गण पाछा अउहटिया, एकण धाय मनाई हीर।—महादेव पारवती री वेलि

४ देखो 'धा' (रू.भे.)

धायक-वि० [सं० धावक] दौड़ने वाला।

उ०—कीन्हां लायक कांम, खळ खांमद खायक खगां। स्रग धायक मिळ सांम, सुण वायक 'पेमां' सुता।—पा.प्र.

धायडेती—देखो 'धाड़ायत' (रू.भे.)

उ०—उत मंगिय नाळ उपाडियतां। धन वार अनै धायडेतियतां, रजवाडिय जोध खगां रसियां। नह ठाल वडा भड नी धसियां।
—पा.प्र.

धायन-क्रि०वि० [देश०] लगातार, निरन्तर।

धायभाई—देखो 'धाभाई' (रू.भे.)

उ०—कांन्हो नाथा धायभाई रौ जमाई।—नैणसी

धायरट्ठ, धायराठु—देखो 'धतराठ' (रू.भे.)

उ०—१ पहिलउं आवइ गुरु गंगेउ। धायरट्ठ वुरि वइसइं राउ। विदुर क्रिपा गुर अवर नरिंद। मंचि चडचा सोहइं जिम चंद।
—पं.पं.च.

उ०—२ अवकि वेटउ धायराठु सो नयणे आंधउ। अंबाला नउ पुत्तु पंडु त्रिहु भुयणि प्रसिद्धउ।—पं.पं.च.

धाया—देखो 'धाय' (रू.भे.)

धायोड़ौ–वि० [सं० ध्रै=तृप्तौ] धनी, धनवान ।

मू०का०कृ०—१ पूर्ण अघाया हुआ, तृप्त. २ गिरा हुआ, पड़ा हुआ. ३ देखो 'धावियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धायोड़ी)

धायौ—देखो 'धायोड़ौ' (रू.भे.)

उ०—१ एक बीज ताका विरछ, अनत रूप वहौ भाय। ता तरवर का फूल में, सबको रह्या समाय। सबको रह्या समाय वहोत भूखा वहौ धाया। ताही में उपजै खपै, आपही आप बंधाया।—ह.पु.वा.

धार–सं०स्त्री० [सं०] १ किसी काटने वाले शस्त्र या हथियार का वह तेज सिरा या किनारा जिससे किसी वस्तु को काटा जा सकता है।

उ०—१ मरणौ लाजम मांमलै, धार अणी चड धाप। पड़णौ सांकळ पींजरै, सिंहां वडौ सराप।—वां.दा.

उ०—२ पिंड फूटै छूटै रुधर पूर। सिर तूटै जूटै केक सूर। धड़ डोलै खाथा तेग धार। माथा मुख बोलै मार मार।—वि.सं.

मुहा०—१ धार चढाणी (दैणी)—शस्त्र को पैना करना.

२ धार बंधणी—मंत्र आदि के बल से किसी हथियार की धार का निकम्मा हो जाना. ३ धार बांधणी—मंत्र आदि के बल से किसी काटने वाले हथियार की धार को निकम्मा कर देना।

२ तलवार। उ०—१ धड़ढ़ड़ वेधड़ वज्जहि धार, कड़क्कड़ आठकि काठ कुठार।—रा.रू.

उ०—२ कियौ विच मोगर खैंग गरक्क। जरद्दां वाजिय धार जरक्क।
—रा.रू.

मुहा०—धार लागणौ (उतरणौ)—तलवार के घाट उतरना, मारा जाना।

३ पृथ्वी, इला (डि.नां.मा.). ४ किनारा, सिरा, छोर.

५ मूसलाधार वृष्टि. ६ द्रव पदार्थ की वह गति-परंपरा जो किसी आधार से लगी हुई हो अथवा निराधार हो, द्रव पदार्थ के गिरने अथवा बहने का तार, अखण्ड प्रवाह। उ०—१ धर गंगाजळ धार, आंणी तप कर ऊजळी। औ मोटौ उपगार, भागीरथ कीधौ भुयण।
—वां.दा.

उ०—२ छट्टै प्रहरै दिवस कै, हुई ज जीमणवार। मन चावळ तन लापसी, नैण ज घी की धार।—ढो.मा.

मुहा०—१ धार टूटणी—किसी द्रव पदार्थ के अखण्ड प्रवाह का रुकना, कार्य में विक्षेप पड़ना. २ धार दैणी—किसी देवी, देवता या नदी आदि को द्रव पदार्थ चढ़ाना।

जैसे—दूध, पवित्र जल, शराब आदि।

३ धार बंधणी—किसी द्रव पदार्थ का तार के रूप में गिरना। ४ धार मातै मारणौ (पेशाब)—किसी कार्य का लगातार होना. किसी वस्तु को तुच्छ समझना अथवा अपने योग्य न समझ कर ग्रहण न करना।

७ प्रवाह, वेग। उ०—कावेरी जळ लीकळस, घसियौ सनमुख धार। ऐरावत फिर आवियौ, मंदायिणी मझार।—वां.दा.

८ देखो 'धारा' (रू.भे.) (नळ-दवदंती रास)

धारक–वि० [सं०] १ धारण करने वाला। उ०—१ जोधौ जैत जुवार विभाकर वंस री। धारक स्यांम धरंम अछेह आहंस री।
—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ ऋतू करुणामय धू करतार। भणी भव भाजन भू भरतार। उधारक धारक लोक असेस, सुधारक तारक सेस विसेस।—ऊ.का.

२ निभाने वाला।

रू०भे०—धारक्क।

धारकधरा–सं०पु० [सं० धरा+धारक] शेषनाग।

उ०—सुणि गाज निवांणां जळ सुकै, धुकै सीस धारकधरा। कळि-चाळ एम दमगळ करै, सबळ थाट गजसाह रा।—सू.प्र.

धारकसुरत–वि० [सं० श्रुत+धारक] विद्यावत, पंडित, ज्ञानी।

उ०—वैद पतूसतूसू लंका वस, सो आवै धारकसुरत। जिको बतावै जड़ी संजीवन, तौ लिखमण ऊठै तुरत।—र.रू.

धारकोर–सं०स्त्री० [देश०] खिड़की या दरवाजे के सामने पड़ने वाली अधूरी दीवार का वह किनारा जिसकी सीध कटती हो। इसको मकान के लिए अशुभ माना जाता है।

धारक्क—देखो 'धारक' (रू.भे.) उ०—रौद्रांण भचक भालां गरोठ। धारक्क वहै गज वाज धीठ।—सू.प्र.

धारजळ—देखो 'धाराजळ' (रू.भे.)

धारण–सं०स्त्री० [देश०] १ पांच सेर की एक तोल।

२ तराजू का पलडा। उ०—मांण थांण परसण विय 'मोकळ', घसण फौज पड घण घणी। घणी चत्रंग बैसतां धारण, धारण चूकौ दिली धणी।—महारांणा जगतसिंह रौ गीत

३ ग्रहण करने की क्रिया या भाव. ४ देखो 'धारणा' (रू.भे.)

उ०—१ बात इसी तूं हीज विचारै। धारण इसी अवर कुण धारै।
—सू.प्र.

उ०—२ घणी चत्रंग बैसतां धारण, धारण चूकौ दिली धणी।
—महारांणा जगतसिंघ रौ गीत

उ०—३ मिसण पड़िया मांमलै, 'सांमौ' अनै 'रतन्न'। दिल्ली खेत न छंडियौ, धारण चारण धिन्न।—रा.रू.

धारणपितंवर, धारणपितांवर–सं०पु० [सं० पीताम्बर धारण] परमेश्वर (ह.नां.)

धारणमात्रिका–सं०स्त्री० [सं०] स्मरण शक्ति बढ़ाने की कला, ६४ कलाओं में से एक।

धारणवज्र–सं०पु० [सं० वज्र धारण] इन्द्र (ना.डि.को.)

धारणा–सं०स्त्री० [सं०] १ मन में धारण करने या समझने की वृत्ति, किसी बात को मन में धारण करने की शक्ति, अक्ल, बुद्धि, समझ.

२ पक्का विचार, दृढ़ निश्चय। उ०—सो म्होकमसिंघ इसी मोटी वातां नूं बाथ मारै। नित धारणा आहीज धारै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ ध्यान में या मन में रखने की वृत्ति, स्मृति, याद।
उ०—चौसट अवधांन तणी चतुराई, बोलण महाराजां विरद। सूबी मिळी धारणा ख्यातां, जगदंबा तो कृपा जद।—वां.दा.
४ धारण करने की क्रिया या भाव.
५ मन की वह स्थिति जिसमें कोई और भाव या विचार नहीं रह जाता, केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है। यह योग के आठ अंगों में से छठा अंग माना जाता है। उ०—भेद विवेक विचार धारणा, सुध बुध सरधा सागी। स्रवण मनन निध्यासन करके, ब्रह्म लख्यौ वड-भागी।—स्री सुखरांमजी महाराज
६ मुख की वह स्थिति विशेष जिससे हर्ष, शोक आदि का पता चले, भाव प्रकट करने की मुखाकृति।
उ०—ज्यौं ज्यौं ब्राहमण नजीक आवै छै त्यौं त्यौं रुखमणीजी ब्राह-मण की मुख की धारणा ताकै छै। यौं ले आयौ होसी तौ मुख की धारणा रूड़ी होसी।—वेलि.
७ कभी विस्मृत न होने वाला निश्चयात्मक ज्ञान (जैन)

धारणौ–वि० [सं० धारण] (स्त्री० धारणी) धारण करने वाला।
उ०—१ मांण दइतां घणा राकसां मारणी, भखै पळ धारणी रगत भेळी। तै कियौ स-बोभल मात जग तारणी, चारणी चारणां वरण चेळी।—खेतसी बारहठ
उ०—२ वैणा पुस्तक धारिणी कासमीर कंदरि वसंति। गीत नाद गुण दियण देखि कवियण दिपति।—अ. वचनिका
उ०—३ देसोत वाडिम दाखणी, धर राखणौ लखधीर। वर वीर वांनय धारणौ, गढ मारणौ गहगीर।—ल.पिं.
उ०—४ धरवडां विरदां धारणौ मूगळां जुडि जुधि मारणौ। मन-मोट अणकळ निरमळ जस प्रघळ क्रंन भोज जांमळ।—ल.पिं.

धारणौ, धारबौ–क्रि०स० [सं० धारणम्] १ ग्रहण करना, धारण करना।
उ०—१ सत्य पुरुस की सीख स्रवण सुण, लपलप लपत लवारी। कांम क्रोध के कंद छेक कर, ध्रिती क्षमा नहि धारी।—ऊ.का.
उ०—२ कहूँ सनकादिक चारूं क्रीत। पढै नित नारद धारै प्रीत।—ह.र.
२ अंगीकार करना, स्वीकार करना।
ज्यूं—पदवी धारणी।
३ मानना, समझना, गिनना।
ज्यूं—औ छोरौ म्हनै धारै कोयनी।
उ०—आइयौ अनियायीय, वर-पुड़ किणी न धारतौ। यसी घड़ी आयीह, नवल हुओ निरखै निजर।—पा.प्र.
४ विचार करना, निश्चय करना। उ०—१ धारै तौ साहब धणी, करै विलंब न कांय। मार उपादै मेदनी, मोहरत हेकण मांय।—ह.र.
उ०—२ वात इसी तूं हीज विचारै। धारण इसी अवर कुण धारै।—सू.प्र.
५ शोभार्थ अथवा रक्षार्थ धारण करना, पहनना।
उ०—१ हे कंथा! औ तौ थारौ घड़ायोड़ौ गहणौ, आ थारी करा-योड़ी पोसाख, अबै थे धारण करौ। म्हारौ तौ सुहाग गयौ, हूं भागल रौ सुहाग राखूं नहीं नै हूं हमै विधवा जोगण किसै कांम री।—वी.स.टी.
उ०—२ भ्रकुटि पवित्र करिस विसंभर। धारै गो-चंदण धरणीश्वर।—ह.र.
६ किसी पदार्थ को अपने ऊपर रखना, अपने किसी अंग में लेना अथवा वहन करना।
ज्यूं—सिवजी गंगा नै आपरी जटा में धारी, सेसजी धरती नै धारी।
७ थामना, झेलना, पकड़ना. ८ सेवन करना, खाना या पीना।
ज्यूं—अमल धारणौ।
९ सहानुभूति प्रदर्शित करना, दया दिखाना।
उ०—धरमी नर ऊपर कोमळ कर धारै। पापी पुरुसां नै सदव्रत संहारै। तदऽनुग्रह विन हा ग्रिह ग्रिह तूती। जिण तिण बिग्रह में निग्रह दी जूती।—ऊ.का.
धारणहार, हारौ (हारी), धारणियौ—वि०।
धारिओड़ौ, धारियोड़ौ, धारयोड़ौ—भू०का०कृ०।
धारीजणौ, धारीजबौ—कर्म वा०।

धारधर–सं०पु० [सं० धाराधर] १ इन्द्र (डि.को.)
उ०—हींदवां छात अखियात वातां हुई, सुज हुवै जेण साखी अरक सोम। धारधर नयण अकुळावियौ धुवां सूं, धराधर कमळ अकुळा-वियौ धोम।—महाराणा राजसिंह रौ गीत
२ बादल, घन।

धारधूस–सं०पु० [सं० धाटी, प्रा० धाडी=धार+धूस=ध्वंस] डाकुओं की मंडली। उ०—चित विपदा वारधि पार करन को चाही। अद-बिच में आती नाव भंवर में आई। दुरभागिन की हा दैव भयौ दुखदाई। धन पोल पहूंच्यौ धारधूंस ले धाई।—ऊ.का.

धारमिक–वि० [सं० धार्मिक] १ धर्मशील, धर्मात्मा.
२ धर्म सम्बन्धी।

धारमिकता–सं०स्त्री० [सं० धार्मिकता] धार्मिक होने का भाव।

धारवियौ–सं०पु०—राठौड़ वंश की 'धारविया' उपशाखा का व्यक्ति।

धारविया–सं०स्त्री०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा (वां.दा.ख्यात)

धारवौ–सं०पु० [सं० धारा] धारा, प्रवाह।
उ०—नैणां चाल्या धारवा जी म्हारै, काजळ मचियौ कीच। बादळी वरसै क्यूंनी ए, बीजळी चमकै क्यूं नी ए।—लो.गी.

धारसु–सं०पु० [सं० सुधार] मंत्री (डि.नां.मा.)

धारांग–सं०पु० [सं०] १ एक प्राचीन तीर्थ.
२ तलवार, खड्ग।

धारा–सं०स्त्री० [सं०] १ द्रव पदार्थ की गति परम्परा, अखण्ड प्रवाह, बहाव, धार। उ०—कर लहसकर कीधा कतल, पार पखै परमार। डूबा रूठै देवरज, धारा काळी धार।—वां.दा.

२ निरन्तर बहता हुआ द्रव पदार्थ. ३ सोता, झरना, चश्मा.
४ घोड़े की पंच विध गतियों के समूह का नाम.
५ तलवार। उ०—१ लड़ै मुड़ो पतिसाह विमुहा खड़ो लसकरां, रिण पड़ै धणी धारा तणी रीठ। किम फिरै पीठ जयसिंघ कूरम तणी, प्रिथी चो भार कूरम तणी पीठ।
—महाराजा जयसिंह ग्रांमेर रै धणी री वारता
उ०—२ सोळंकी गज फौज सज, चौड़ै आयो चाल। धारा मुंहै धकावतो, धज नेनां गज ढाल।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात
यौ०—धारा-तीरथ।
६ रथ का पहिया. ७ पहिये की परिधि में प्रयुक्त होने वाला काष्ठ का धनुषाकार खण्ड (डि.को.) ८ फौज अथवा फौज का अग्र भाग। उ०—पड़वै पोढ़तां करड़ावण हर कोई करै। धारा में धसतां, आंसू ग्रावै ईलिया।—लाखणजी बारहठ
९ वृष्टि, वर्षा। उ०—संमा संमा रा जळ कुंडळ जोया। धारा संमा रा महिमंडळ धोया। लूवां मग लागी धरणीतळ धायां। मुसलो मिटगा ज्यूं अंगरेजां आयां।—ऊ.का.
१० मालवा की राजधानी जो राजा भोज के समय प्रसिद्ध थी।
११ देखो 'धार' (रू.भे.) उ०—वहै जातरी रात री दीह वारा। धकै चाढवो माग रो खाग धारा।—मे.म.
धाराक-वि० [सं० धारक] १ तीक्ष्ण या पैनी धार वाला। उ०—खीवरां हाथ वांणस खास। बहतीक जांण रोकी वनास। सांतरा अती धाराक सेल। तारका झव झवै अणीह तेल।—वि.सं.
२ धारण करने वाला।
धारागळ-वि० [देश०] बहुत बड़ा, लम्बा-चौड़ा (भवन)
धाराट-सं०पु० [सं०] १ बादल, मेघ. २ चातक.
३ मस्त हाथी. ४ घोड़ा।
धाराधर-सं०पु० [सं०] १ बादल, मेघ (ना.डि.को., अ.मा., नां.मा.)
उ०—१ मिळियै तट ऊपटि बिथुरी मिळिया, धण घर धाराधर धणी। केस जमण गंग कुसुम करंबित, वेणी किरि त्रिवेणी वणी।
—वेलि.
उ०—२ धाराधर खंची जळधारा। सोवा रिजक विना हुय सारा। असुरां मुलक मेघ ओछांणा। थया सचींत सहर पुर थांणा।—रा.रू.
२ इन्द्र, देवराज. ३ राजा, नृप. ४ पर्वत.
५ तलवार, खड्ग। उ०—१ गंगा री सहस्र धारा रै समांन के ही धाराधरां री ऊजळी धार कंकटां रा कदंब में कढ़ण लगी।—वं.भा.
उ०—२ कुळ लज्जा रै अनुसार धाराधर री धारां सूं तिल तिल होय पीहर सासरै पांणी चढ़ावण रो अपूरब सहगमण कीधो।
—वं.भा.
रू०भे०—धाराहर।
धारा-धांम-सं०पु० [सं० धारा+धाम] वीर गति को प्राप्त होने का भाव। (मि० धारातीरथ)
धाराधार-वि० [सं० धारा+धारिन्] खड्ग धारण करने वाला, वीर, योद्धा। उ०—अर म्हारै तो धरा में धराधवां रै धांम धांम धाराधारां री धमचक देखि ओरठे भी पण री पूरणता भरावीजै।—वं.भा.
धारायणी-वि० [सं० धारणी] धारण करने वाली।
उ०—उभै रूप धारायणी साचेली जेहांन आखै, तारायणी सिला-धू नाचेली नरत्याद। पारायणी प्रवाड़ां ग्राछेली दछा देण पातां, नारायणी रूप नमो काछेली अनाद।—नवलजी लाळस
धारायसचियाय-सं०स्त्री०—एक देवी का नाम (वां.दा. ख्यात)
धारारव-सं०स्त्री० [सं०] शस्त्रों की ध्वनि।
उ०—धमचक धोम होम धारारव। पुरि सिंदूर रुहिर परनाळ। विपरति गति 'रतनै' अतवासै। विहंड घड़ा परणी विकराळ।—दूदो
धाराळ-वि० [सं० धारा+आलुच्] १ वीर, योद्धा।
२ देखो 'धाराळी' (मह., रू.भे.) उ०—ढालां सिर धाराळ, वागा वरिआंमां तणा। गळती निसि गाजै गजर, घण घाओ घड़िआळ।
—वचनिका
धाराळा—देखो 'धाराळी' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—चोरंगवाळ गिळण चुगलाळां। धोळै दिन वागा धाराळां।
—रा.रू.
धाराळी-सं०स्त्री० [सं० धारा+आलुच्] १ कटार।
उ०—१ धड विच धाराळी राव धांधळ, गाळी सत्र सांकड़ी ग्रहै। वळै कहीं रा पिता वीसरै, काका ही वीसरै कहै।
—झरड़ा बूड़ावत धांधल री गीत
उ०—२ हूं कळ पोळि उरड़ियो हाथी, निछटी भीडि निराळी। 'रतन' पहाड़ तेण सिर रोपी, धूहड़िया धाराळी।—दुरसो आढ़ो
२ बरछी (डि.को.). ३ तलवार, खड्ग (ना डि.को.).
४ नदी, प्रवाहिनी।
रू०भे०—धाराळा।
मह०—धराळ, धाराळ।
धारावर-सं०पु० [सं०] बादल (डि.को.)
धारावाही-वि० [सं०] धारा के समान आगे बढ़ने वाला, जो विना रोक-टोक आगे बढ़ता हो।
धाराविस-सं०पु० [सं०] खड्ग, तलवार।
धाराहर—देखो 'धाराधर' (रू.भे.)
उ०—१ विण रवि बोम कसण ज्योति विण, धाराहर विण जसी धर। 'जैसी' हरा जिसो जांणेवो, तो विण प्रथमी कळपतर।
—महारांणा सांगा दूसरा री गीत
उ०—२ दूनां तटां जु नदी ऊपरि वही छै सु जांणं चोटी विथुरी छै। विथुरी काहे तै। प्रिथी जु स्त्री त्यैंने धाराहर मेघ जब भरतार मिळियो छै।—वेलि टी.
धारि—देखो 'धारी' (रू.भे.)
धारिणी-सं०स्त्री० [सं०] पृथ्वी, धरती।
वि०स्त्री०—धारण करने वाली।

धारियोड़ौ–वि०—१ ग्रहण किया हुआ, धारण किया हुआ. २ अंगीकार किया हुआ, स्वीकार किया हुआ. ३ माना हुआ, समझा हुआ, गिना हुआ. ४ विचार किया हुआ, निश्चय किया हुआ. ५ शोभार्थ अथवा रक्षार्थ धारण किया हुआ, पहना हुआ. ६ किसी पदार्थ को अपने ऊपर रखा हुआ, अपने किसी अंग में लिया हुआ अथवा वहन किया हुआ. ७ थामा हुआ, झेला हुआ, पकड़ा हुआ. ८ सेवन किया हुआ, खाया हुआ या पीया हुआ. ९ सहानुभूति प्रदर्शित किया हुआ, दया दिखाया हुआ ।
(स्त्री० धारियोड़ी)

धारियौ–सं०पु० [सं० धार+रा०प्र० इय] एक प्रकार का शस्त्र ।
उ०—१ पण थोड़ीसीक दूर जावतां ईज उणनै रुकणौ पड़चौ । कारण कै मारग रै सैं बीच च्यार जमदूत आडा ऊभा हा । ऊंठां रै रुकतां ईंज ठाकर धारियौ खांधै कर नै आगै आयग्यौ ।—रातवासौ
उ०—२ पथ जातां मो पीव नूं, घण चोरां लिय घेर । घर हाथां वे धारियौ, खंड खळ कीधौ खेर ।—रेवतसिंह भाटी
रू०भे०—धारचौ ।

धारी–वि० [सं० धारिन्] (स्त्री० धारणी, धारिणी) धारण करने वाला (एक प्रत्यय रूप शब्द जो शब्दों के पीछे लगता है ।)
उ०—१ देवी उम्मया खम्मया ईस नारी । देवी धारणी मुंड त्रिभुवन्न धारी ।—देवि.
उ०—२ जग री गत अदभुत जिका, सत धारियां सुहाय । नर जीवै नरलोक में, जस अमरापुर जाय ।—बां.दा.
उ०—३ पहि प्रमांणै जुगति जांणै, अति वखांणै जगत्र आखौ । घडम धारी त्रिसिधि प्यारी, लखण भारी कुंवर लाखौ ।—ल.पि.
सं०पु० [देश०] १ एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसका तना श्वेत एवं फूल ललाई लिये हुए होते हैं । इसकी छाल वस्त्रादि की रंगाई के लिये काम आती है ।
सं०स्त्री०—२ रेखा, लकीर ।

धारीगंग–सं०पु० [सं० गंगा+धारिन्] महादेव, शिव ।

धारीगदा–सं०पु० [सं० गदा+धारिन्] १ श्रीकृष्ण, मोहन (अ.मा.) २ विष्णु. ३ हनुमान. ४ भीम ।

धारीचोपण–सं०स्त्री० [देश०] सोने, चांदी के आभूषणों पर खुदाई करने का एक औजार ।

धारीजणी–सं०स्त्री० [देश०] मवेशी की खरीद के रुपये देने के समय निश्चित किये हुए मूल्य में की जाने वाली कमी ।
वि०—जानने वाली ।

धारीजनोई–सं०पु० [सं० यज्ञोपवीत+धारिन्]] ब्राह्मण, द्विज ।
उ०—जटाधारी धारीजनोई, कविताधारी कंथावार । मारग दस मेवाड़ नरेसुर, वहै तुहाळै वड दातार ।
—महारांणा हमीरसिंघ रौ गीत

धारीदार–वि० [सं० धारा+फा० दार] जिस पर रेखाएं हों, लकीरदार ।

धारीधर, धारीधरा—देखो 'धराधर' (रू.भे.) (डिं.नां.मा.)

धारूंजळ—देखो 'धारूजळ' (रू.भे.)
उ०—धारूंजळ जोध समोभ्रम धींग । सूरा खळ चूर करै रायसींघ ।
—स.प्र.

धारू–वि० [सं० धारिन्] धारण करने वाला ।
उ०—कविंदां दियण सिर-पाव मोतीकड़ा । धरा-बंध अनेक विरद धारू ।—गिरवरदांन सांदू

धारूजळ–सं०पु० [सं० धारोज्ज्वल] तलवार, खड्ग (ह.नां., डिं.को.)
उ०—१ धारूजळ वाहत ग्रीसम धूप । मंडै जुध 'देव' अनोत 'मनूप' ।—सू.प्र.
उ०—२ धूत नाळां उछाजतौ भांजतौ हाथियां धक्के, धारूजळां गांजतै अनेक घड़ा धींग । काळक्रोट ऊपांजतौ ऊठियौ लोयणां कोप, नरवेधा दोयणां खंभ गांजतौ नूसींग ।—वद्रीदास खिड़ियौ
उ०—३ कळकळिया कुंत किरण कळि ऊकळि, वरजित विसिख विवरजित वाउ । धड़ि धड़ि धवकि धार धारूजळ, सिहरि सिहरि समखै सीळाउ ।—वेलि.
रू०भे०—धारजळ, धारूंजळ, धीरूजळ ।

धारूवारू–वि० [देश०] अत्यधिक प्रिय, सर्वस्व के समान ।
उ०—तरै रावळजी कह्यौ—'इणां नूं किणहेक वात कर सीख देणी' तरै क्यूं हेक कह्यौ—'इणां रै धारूवारू पात्रियां छै सु मांगौ, सु अै देसी नहीं; तरै अै आपै परा जासी ।—नैणसी

धारेचणौ, धारेचवौ–क्रि०स० [सं० धारण] प्रायः विधवा होने पर स्त्री का किसी पुरुष से नाता जोड़ना, अन्य पुरुष को पति रूप में स्वीकार करना ।

धारेचौ–सं०पु० [सं० धारण] विधवा स्त्री का किसी पुरुष से नाता जोड़ने की क्रिया या भाव ।
क्रि०प्र०—करणौ, धारणौ, होणौ ।

धारोइया–सं०स्त्री०—राठौड़ राव मल्लिनाथजी के पुत्र जगमाल के वंशजों की शाखा ।

धारोइयौ–सं०पु०—राठौड़ों की 'धारोइया' शाखा का व्यक्ति ।

धारोळौ–सं०पु० [सं० धारा+आलुच्] (बहु व० धारोळा) १ क्वार मास में कभी-कभी होने वाली वर्षा का नाम ।
उ०—१ कंवासर थी आघा अर देवराजसर विचाळै तेथ एक धारोळौ मेह रौ आयौ ।—द.वि.
२ बादलों में दूर से दिखाई देने वाली वर्षा की धाराएं, वह जलधारा जो वर्षा ऋतु में कहीं दूर वृष्टि होने का आभास दिलाती है ।
उ०—हरिया गिरवर तर हरिया, धारोळां वादळ धर हरिया । गैधूंबै अंबर धरहरिया, सुकवि विदा कर घर संभरिया ।
—द्वारकादास दधवाड़ियौ
३ अश्रु, आंसू । उ०—हांडी खांडी नै डोई संग हालै । चख झख खंजन में धारोळा चालै ।—ऊ.का.

धारोस्ण–सं०पु० [सं० धारोष्ण] थन से निकला हुआ ताजा दूध जो कुछ गर्म होता है ।

धारौ–सं०पु० [देश०] प्रथा, रीति, परिपाटी ।

उ०—१ हाकौ हर जण रौ सुणियां सूं बाहर चढ़ां, बाई वरजण रौ ओ कद धारौ आंपणौ ।—बांकीदांन बोगसौ

उ०—२ थारी वेन्यां है, तूं मार्थ उखण लें, बेटा ! जगत-रौ धारौ तौ इसौ कोयनी । अबै थे अंगरेजी भणियोड़ा छोरा नवी वातां-ई करसो ।—वरसगांठ

धारचौ—देखो 'धारियौ' (रू.भे.)

धाव–सं०स्त्री० [देश०] १ मानसिक कल्पना. २ हमला, आक्रमण ।

उ०—हरी वहादर चंद रौ, धरी खळां सिर धाव । पूगौ पुर मंडळ गयां, दुयण न लग्गौ दाव !—रा.रू.

३ दूरी, फासला. [सं० धाव] ४ चलने की गति, चाल ।

उ०—१ आगळा कंध पड़छी अलप, मलप गुलाली मूंठियां । धकपंख धाव खागां धकै, उपड़ै वागां ऊठियां ।—मे.म.

उ०—२ आरसी से मंजुळ, मूखमलूं से मुलायम, व ागूं के सांचे पंखराउ सी धाध खुरताळ, के झमके सत सिपा के सिळाव ।—र.रू.

उ०—३ लसै आळ जंगाळ सिंदूर सूंडा । इळा में घसै धाव रा पाव ऊंडा ।—वं.भा.

५ भागने की क्रिया का भाव या दौड़ । उ०—१ खगां जीतणा धाव में दाव खेल्है । मलंगै तड़ा मांकड़ां पीठ मेल्है ।—वं.भा.

उ०—२ चलंत धाव वेग वाव धाव पाव चंचळे । अही कपाळ नीठ धीर पीठ कोम आकुळे ।—रा.रु.

६ घास विशेष. ७ वेग, प्रवाह । उ०—पाव धाव सिर पनंग रै, धाव नाव धजराज । समपै भाराराव सुत, करन चाव जस काज ।

—बां.दा.

८ वालक को स्तन.पान कराने वाली स्त्री ।

सं०पु०—९ विचार । उ०—और भाव देतां करै, लेतां और ही भाव । धाव परायौ हरण धन, साहां जात सुभाव ।—बां.दा.

१० निश्चय ।

मुहा०—धाव धरणौ—निश्चय करना ।

[सं० धव] ११ प्रायः पहाड़ी स्थानों में पाया जाने वाला एक पेड़ जिसकी पत्तियां अमरूद या शरीफे की सी होती हैं । इसकी लकड़ी वहुत मजवूत होती है । इसका कोयला भी वहुत अच्छा होता है । इसकी कई जातियां होती हैं । इसकी पत्तियों से चमड़ा सिझाया और कमाया जाता है । अल्पा०—धाउड़ौ, धावड़ौ, धावड़चौ, धावडचौ ।

धाव–देखो—'धाव' (रू.भे)

उ०—आगै देखै तौ कोहर तेवि नै धाव पाय नै मरद तौ सोह गांम गया छै ।—नैणसी

धावक–वि० [सं०] दौड़ने वाला ।

सं०पु०—१ हरकारा, दूत. २ धोबी (डि.को.)

धावड़–सं०पु०—१ स्तन-पान कराने वाली स्त्री का पति ।

उ०—पथ्य गोवळजी आपरै हाथि आरोगाड़ता, अर गोयलजी कुंवर स्री दळपतजी रा धावड़ सूं पथ्य भोपतजी नूं तेजौ वाघोड़ करतौ ।

—द.वि.

२ पल्लीवाल ब्राह्मणों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति.

३ देखो 'धाव' (११) (मह., रू.भे.)

धावड़ौ, धावड़चौ, धावडौ, धावडचौ—देखो 'धाव' (११) (अल्पा. रू.भे.)

उ०—वांमी-वंध वांधळा, सूर सगरांम सधीरा । तेज जेठ तावड़ा, आंखि धावड़ा अंगीरा ।—मे.म.

धावणा—देखो 'धावना' (रू.भे.) (डि.को.)

धावणौ, धाववौ–क्रि०स० [सं० धावु] १ दौड़ना, भागना ।

उ०—१ एक वधै मन वेग सूं, अति धावत केकांण । चक्र सुदरसण गुरुड तिण, करत वखांण प्रमांण ।—रा.रू.

उ०—२ अटक गोपी मही दांण उघरावजै, पावजै अघर रस गोरधन पास । धर लुकट मुकट वन वीथियां धावजै, वांसरी वावजै अहीरां-वास ।—बां.दा.

२ स्नान करना, नहाना. ३ प्रवाहित होना, वहना ।

उ०—१ धावै द्रग धारा दारा मुख धोवै । जीवन संजीवन जीवन धन जोवै ।—ऊ.का.

उ०—२ नीचौ नैणां सूं धोवां जळ धावै । ऊंचौ ईखण रौ अभलेखौ आवै ।—ऊ.का.

क्रि०स०[सं० ध्यै] ४ स्मरण करना, ध्यान करना, पूजा करना.

[सं० धेट्] ५ स्तन पान करना । उ०—अजा ग्रवक हुत आयड़ै, लाग पेट री लाय । धावै थण जिण त्याग ध्रुव, जांमण जळवा जाय ।

—रेवतसिंह भाटी

६ देखो 'धाणौ, धावौ' (रू.भे.)

धावणहार, हारौ (हारी), धावणियौ—वि० ।

धवाड़णौ, धवाड़वौ, धवाणौ, धवावौ, धवावणौ, धवाववौ—प्रे०रू० ।

धाविओड़ौ, धावियोड़ौ, धाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

धावीजणौ, धावीजवौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

धियावणौ, धियाववौ, ध्याणौ, ध्यावौ, ध्यावणौ, ध्याववौ—रू०भे० ।

धावन–सं०पु० [सं० धावन] संदेशवाहक, दूत ।

उ०—१ लिखि कगगळ कछवाह दिय, लय धावन निज हत्य । आतुर धावन आंणि के, दिय नवाव के हत्य ।—ला.रा.

उ०—२ लावा-पति वंधु प्रवळ, अलवर रहत असंक । तिनकौ धावन पठ्ठये, लिखे वुलावन अंक ।—ला.रा.

रू०भे०—धावण ।

धावना–सं०स्त्री० [सं०] १ प्रार्थना, स्तुति, ध्यान.

२ पूजा ।

क्रि०प्र०—करणौ, राखणौ ।

६ देखो 'धी' (६) (रू.भे.)

धिक--अव्य० [सं० धिक्] तिरस्कार या अनादर सूचक शब्द, लानत ।
उ०—१ रांमत चौपड़ राज री, है धिक वार हजार। धण सूंपी लूंठां धकै, धरमराज धिक्कार ।—रांमनाथ कवियौ
उ०—२ जा कारण जग जीजिये, सो पद हिरदै नांहि। दादू हरि की भक्ति विन, धिक जीवन कळि मांहि ।—दादू वांणी
रू०भे०—धिग, ध्रक, ध्रग, ध्रिक, ध्रिक्क, ध्रिग ।

धिक्क–सं०स्त्री० [सं० धिक्षकः-धिक्ष संदीपने] आग, अग्नि (ह.नां., ना.पिं.)

धिकणौ, धिकवौ—देखो 'धुकणौ, धुकवौ' (रू.भे.)
उ०—१ रैवत वधि ओरू' धिकते रिण। तवै एम 'भगवत' 'भाऊ' तण ।—सू.प्र.
उ०—२ महिपत धिक मोटेह, असमर वूठै आछटी। नरपत धर लोटेह, सारंग सर पड़ियो समर ।—पा.प्र.
धिकणहार, हारौ (हारी), धिकणियौ—वि० ।
धिकिओड़ौ, धिकियोड़ौ, धिक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धिकीजणौ, धिकीजवौ—भाव वा० ।

धिकत—देखो 'दिकत' (रू.भे.)

धिकता–सं०स्त्री० [सं० धिक्] धिक्कार, फटकार ।

धिकार—देखो 'धिक्कार' (रू.भे.)
उ०—१ धिकार है हजार वार सार तार में धरचौ। अनूप रूप अच्छतैं प्रतच्छ कूप में परचौ ।—ऊ.का.
उ०—२ धन उमरांणो धाटधर, पदमणियां विण पार। सह नारी सीकोतरी, धरती सिध धिकार ।—वां.दा.

धिकै—देखो 'धकै' (रू.भे.)
उ०—सो हुतो गंद्रप स्राप वासव, धिकै प्राक्रम धारिया। विण सीस दूर प्रसार बाहां घणा जीव संहारिया ।—र.रू.

धिक्कार–सं०स्त्री० [सं०] अनादर या घृणाव्यञ्जक शब्द, तिरस्कार, लानत, फटकार ।
उ०—रांमत चौपड़ राज री, है धिक वार हजार। धण सूंपी लूंठां धकै, धरमराज धिक्कार ।—रांमनाथ कवियौ
रू०भे०--धिक, धिकार, धिरकार, धिरगार ।

धिक्कारणौ, धिक्कारवौ–क्रि०स० [सं० धिक्] तिरस्कार करना, बुरा भला कहना, फटकारना। उ०—मारग में मिळ जाय धूड़ नांखौ धिक्कारौ। धर मांही धुस जाय लार कुत्ता ललकारौ ।—ऊ.का.
धिक्कारणहार, हारौ (हारी), धिक्कारणियौ—वि० ।
धिक्कारिओड़ौ, धिक्कारियोड़ौ, धिक्कारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
धिक्कारीजणौ, धिक्कारीजवौ—कर्म वा० ।
धिरकारणौ, धिरकारवौ—रू०भे० ।

धिक्कारियोड़ौ–भू०का०कृ०—तिरस्कार किया हुआ, बुरा भला कहा हुआ, फटकारा हुआ ।
(स्त्री० धिक्कारियोड़ी)

धिखण—देखो 'धिसण' (रू.भे.)

धिखणा—देखो 'धिसणा' (रू.भे.) (ह.नां., अ.मा., नां.मा.)

धिखणौ, धिखवौ—देखो 'धुकणौ, धुकवौ' (रू.भे.)
उ०—१ अथमियौ भांण 'मधुकर' हरा ऊपरा, धोम दहुवां इसौ वाद धिखियौ। वरै तूं केम रंभ उचारै विधाता, लेख मैं जीवतौ संभ लिखियौ ।—द.दा.
उ०—२ धिखै भभकै रण क्रोध धियाग। खड़ख्खड़ ढाल झड़ज्झड़ खाग ।—सू.प्र.
उ०—३ जठै 'करनाजळ' क्रोध वज्राग। ओरै असि जांणि धिखतिय आग ।—सू.प्र.
धिखणहार, हारौ (हारी), धिखणियौ—वि० ।
धिखिओड़ौ, धिखियोड़ौ, धिख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धिखीजणौ, धिखीजवौ—भाव वा० ।

धिखियोड़ौ—देखो 'धुकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धिखियोड़ी)

धिग—देखो 'धिक' (रू.भे.) उ०—१ तिण सयणां रा धिग जनम, जिण में ठीक न ठोर। चित ओरां हित ओर सूं, मुख भाखै कछु ओर ।—ढो.मा.
उ०—२ धिग ! धिग ! अंग वेदन करइ, धिग ! धिग ! योवन-वेस। मोकळावउं छउं म म रहु, आज पछी अम्ह-रेसि ।—मा.कां.प्र.

धिगांणी—देखो 'धिगांणी' (रू.भे.)
उ०—कब निसरै ली आ वैरण रात, कवजा मां सूं गयौ अब होमी। किसी ये धिगांणी के साथ ।—लो.गी.

धिठाई—देखो 'धीठाई' (रू.भे.)

धिणाप—देखो 'धणियाप' (रू.भे.) उ०—भली आकृति भाळ, धणी वणियौ थुथकारै। राखै धणी धिणाप, पेट भर सांझ संवारै ।—दसदेव

धिणियांणी—१ देखो 'धणियांणी' (रू.भे.)
उ०—जंगळ जंगळ में जूनी जिणियांणी। धोळा धोरां री धूनी धिणियांणी ।—ऊ.का.
२ एक प्रकार की लोक देवी। वि.वि.—देखो 'उररल्यां'

धिणी—देखो 'धणी' (रू.भे.) उ०—तद रावजी कयौ कै इण राज रा रुखवाळा धिणी करनीजी है, ऊ वेळ करसी। पीछे रावजी गढ़ रो जावतौ कर देसणोक आया ।—द.दा.

धित्रासट—देखो 'धतराठ' (रू.भे.) (गजमोख)

धिधक–सं०स्त्री० [देश०] आग, अनल (ना.डि.को.)

धिधिकट–सं०स्त्री० [अनु०] तबले की ध्वनि या वोल ।

धिन–सं०स्त्री [अनु०] १ तबले पर आघात करने से उत्पन्न ध्वनि.
२ देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—१ धिन दीहाड़ौ धिन घड़ी, धिन वेळा धिन वास। नयणे सयण निहारिया, पूरी मन री आस ।
—अज्ञात
उ०—२ धिन धिन नृप नभ वांणी हुइ धुर। स्रव जग सिरै ज तूं दांनेसुर ।—सू.प्र.

उ०—३ जस छळ जागणहार, धर पुड़ त्यागणहार धिन। अरुणा-नुज असवार, कर छाया ज्यां सिर करै।—बां.दा.

धिनयांणी—देखो 'धणियांणी' (रू.भे.) उ०—करनळ किनियांणी धनि धनि धिनयांणी जंगळ देस री।—मे.म.

धिनवाद—देखो 'धन्यवाद' (रू.भे.)

धिनवादता—देखो 'धन्यवादता' (रू.भे.)

धिनि—देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—कूरंमी धिनि जांणिया, दिन रजनी तिथ वार। एकूंकौ छित्र ऊपरा, वारै रतन अपार।—रा.रू.

धनियांणी—देखो 'धणियांणी' (रू.भे.) उ०—प्रारथना भूप री, करी कांनां किनियांणी। दिया इसा वरदांन, परा जंगळ धिनियांणी।
—मे.म.

धिन्न, धिन्नौ—देखो 'धन्य' (रू.भे.) उ०—१ वंस रतनू धनौ छात बीसोतरां, धनोधन मात री मात धापू। बाप 'सागर' धनौ सकति मा बाप री, बाप-मह धिनौ सिवदांन बापू।—मे.म.

उ०—२ धिनौ धिनौ आखै धरा, धिनौ सुधारची धांम। हुव इळ में धिन धिन हुवौ, कीना धिन धिन कांम।—ऊ.का.

उ०—३ वरण इंद सिव ब्रह्म धरम नारद धनपत्ती। 'अजन' धिन्न उच्चारि करै इण पर कीरत्ती।—रा.रू.

उ०—४ क्या थारी रूप है अर क्या थारी रंग है—धिन रै विधाता धिन्न ! जरा अठी नै तौ देख भली मिनख।—रातवासौ

धिन्नवाद—देखो 'धन्यवाद' (रू.भे.)

धिप—सं०स्त्री०—दीवार, भीति।

धिमिद्धमिद्ध—सं०स्त्री० [अनु०] मृदंग या तबले की आवाज।
उ०—धिमिद्धमिद्ध ऊध्वनी न सिंजनी सुनी नहीं। न अध्वनी न दीन दीन आसई कुनी नहीं।—ऊ.का.

धिय—देखो धी (६) (रू.भे.) उ०—पूतां जायां कवण गुण, अवगुण कवण धियांह। जावा न दियौ प्रगट जग, सिंघल सिंघ जियांह।
—बां.दा.

धियगि—देखो 'धियाग' (रू.भे.) उ०—ऊठियउ जमहरे देय अगि। धूधहर राउ लागउ धियगि।—रा.ज.सी.

धियांन—देखो 'ध्यांन' (रू.भे.)
उ०—धरै हर केता वार धियांन। अहावण लोक अनोअन ग्यांन।
—ह.र.

धिया—देखो 'धी' (६) (रू.भे.)
उ०—'सोमल' ब्राह्मण नी धिया, 'सोमा' नांमे एक। प्रत्यक्ष जांणे अपछरा, चतुराई रूप विसेख।—जयवांणी

धियाग, धियागि, धियागिग—सं०पु० [देश०] १ क्रोधाग्नि, कोप, क्रोध।
उ०—रउदळ कियउ तिणवार रूप रुद्र, धणइ स तीजइ नेत्र धियाग। कोट अनइ ब्रहमंड कांपियां, जडा हुंती काढीयउ ज्याग।
—महादेव पारवती री वेलि

२ आकाश, आसमान। उ०—१ वकरै दहुंवै दळ विढ़ण, तायक करताळा। धोह जगे लग्गौ धियाग, ब्रहम लेख वडाळा।—सू.प्र.

उ०—२ आग्या पाय 'अजीत' री, लग्या सूर धियागि। सिरि डेरां दळ सल्लले, जळै प्रळै किरि आगि।—रा.रू.

३ असीम, अपार, अधिक। उ०—'धनावत' 'अम्मर' कोप धियाग। खळां घट भूक करै झट खाग।—सू.प्र.

रू०भे०—धयाग, धियगि, ध्याग, ध्यागि, ध्रियाग, ध्रीयाग।

धियारी—देखो 'धी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

धियावणौ, धियावबौ—देखो 'धावणौ, धावबौ' (रू.भे.)
उ०—१ जदूकुळ-नायक सांमिय-जग्ग, पदम्म-पताक-अलंकित पग्ग। पगां री रेणु धरै सिर प्रम्म, धियावै पग्ग अहोनिस ध्रम्म।—ह.र.

उ०—२ धरणीधर संकर देव धियावउ, जोतिप्रकास अलोप जग। मस्तक मुगट प्रकास नांडियउ, अनंत कोट ब्रहमंड लग।
—महादेव पारवती री वेलि

धियावणहार, हारौ (हारी), धियावणियौ—वि०।
धियाविओड़ौ, धियावियोड़ौ, धियाव्योड़ौ, ध्याव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धियावीजणौ, धियावीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

धियावियोड़ौ—देखो 'धावियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धियावियोड़ी)

धियौ—सं०पु० [सं० घृतः] १ प्रपौत्र, पोता (उ.र.). २ पुत्र, वेटा।

धिरकार—देखो 'धिक्कार' (रू.भे.)
उ०—१ रांणी बायर नीसरी, जद कांन पड़ी भणकार। ऊभी मसलौ मारियो, थांरी दारू में धिरकार।—डूंगजी जवारजी री पड़

उ०—२ पराधीन भारत हुयौ, प्यालां री मनुवार। मात्र भूम परतंत्र हो, वार-वार धिरकार।—अज्ञात

धिरकारणौ, धिरकारबौ—देखो 'धिक्कारणौ, धिक्कारबौ' (रू.भे.)
धिरकारणहार, हारौ (हारी), धिरकारणियौ—वि०।
धिरकारिओड़ौ, धिरकारियोड़ौ—भू०का०कृ०।
धिरकारीजणौ, धिरकारीजबौ—कर्म वा०।

धिरकारियोड़ौ—देखो 'धिक्कारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धिरकारियोड़ी)

धिरगार—देखो 'धिक्कार' (रू.भे.) उ०—ताखा-ताखां रौ सवाल नहीं है बाया, सवाल म्हारी इज्जत रौ है। म्हारै ऊभां थांनै लूटै तौ म्हारै जीवियां नै धिरगार है। दुनियां म्हारा नांम पर थूकैला अर म्हारै बडेरां री कीरत नै काळख लाग जावैला।—रातवासौ

धिरट—देखो 'धीरट' (रू.भे.)

धिरांणी—देखो 'धणियांणी' (रू.भे.) उ०—धावळवाळ घंटाळ धिरांणी, लोवड़वाळ लवेस। मेहाई करनल किनियांणी, केइ केइ रूप करेस।
—अज्ञात

धिराज—सं०पु० [सं० अधिराज] राजाओं को दी जाने वाली पदवी।
उ०—१ सात रा साज बाजां सकौ, दौड़ै प्रगट दराज रौ। अरबड़ा मोड़ै धाय इसा, जोड़ै कटक धिराज रौ।—साहिबौ सुरतांणियौ

उ०—२ कीधो सेख नै हरोळ जंग घिराज उचंडे कोल, वूजिया कायरां वागो खाडै रीठ धींग। महाराज कंवार रो जोवतो न छांडै मारू, सार रो किलो ज्यूं मंडै ग्राडो जगसींग।
—ठा० जगरांमसिंघ रो गीत

रू०भे०—वराज।

घिव—देखो 'घी' (६) (रू.भे.)

घिवड़ी—देखो 'घी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—नभ सरणी रै वात फुहारां गात सुहावै, ठाडी छांह मंदार विसांणी लैण लुभावै। चळ करती चकचोळ सुरां-वर हांम जगाती, रमै घिवड़ियां कोड हेम-रज रतन लुकाती।—मेघ.

घिसट—देखो 'घिस्टि' (रू.भे.) (ह.नां)

घिसण-सं०पु० [सं० घिष्णयं] १ तारा, नक्षत्र (ह नां.)

[सं० धिषणं] २ गृह, घर (डि.को.)

[सं० धिषण:] ३ वृहस्पति, गुरु. ४ ब्रह्मा. ५ अग्नि।

रू०भे०—घिखण, घिसन, घिसनु, घिस्ण।

घिसणा-सं०स्त्री० [सं० धिषणा] १ वुद्धि, अक्ल, विवेक शक्ति (डि.को.)

२ पृथ्वी।

रू०भे०—घिखणा।

घिसन, घिसनु—देखो 'घिसण' (रू.भे.) (ह.नां., अ.मा.)

घिस्टडंड-सं०पु० [सं० वृष्ट दण्ट] यम (अ.मा.)

घिस्टि-सं०पु० [सं० द्वयष्ट ?] ताम्र, तांबा (ह.नां.)

रू०भे०—घिसट।

घिस्ण—देखो 'घिसण' (रू.भे.) (ह.नां.)

धींक-सं०स्त्री० [देश०] १ प्रहार हेतु वनाई हुई मुष्टिका, घूंसा.

२ मुष्टिका प्रहार. ३ पैरों, पीठ आदि को सहलाने अथवा दर्द दूर करने हेतु धीरे-धीरे मुष्टिका प्रहार करने की क्रिया।

सं०पु०-४ वृक्ष विशेष ?

उ०—धंतूरा नइं वाउडा, धामणि घूंगरि धूनि। धींग वमासा घूळिया, वडहड घाता घूंनि।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—ढींक, ढीक, धिग, धींग, धीक।

अल्पा०—धीकड़ी।

मह०—धींकड़।

धींग—१ देखो 'धींक' (रू.भे.)

उ०—करार अैड़ो कै भरपूर वळद रै धींग मेलै तो धरत्यां टिकाय दै।—वांणी

२ देखो 'धींगो' (मह., रू.भे.) उ०—१ वारै आव रै रिण रोपण धींग क्रोध वंका, वंधु सुग्रीव वकारै। ऊठ सुण ध्रिम जघड़ अघायो, धींग क्रोध उर धारै। हूं हिव आवियो पग मांड हकारै।—र.रू.

उ०—२ गोपियां दास पर जास कीधा सरद। धींग रविवंस भुज विरद धारै। रटै कवि 'किसन' महराज तन लाज रख। तेण रघुराज के संत तारै।—र.ज.प्र.

उ०—३ सलहां सम भड़ां पाखरां साकुर। धड़चण खळां वीजळां धींग। 'ऊदा' हरो ग्रंद्र छजै अत। माजै दन राजै वुवसींग।
—रावत वुवसिंह चौहांन कोठारिया रो गीत

उ०—४ चंडी छाक ले ग्रांमखां गूद कोण चीलां रंजां चले, धू काल दाकळै गणां भूत राट धींग। पैराक चमूरां केक ऐराक छाक ले पूरी, साकुरां हाकलै उसी वेळां उदैसींग।—हुकमीचंद खिड़ियो

उ०—५ नगर नांम उपनांम निज, तैं चाळक जैसींग। रुद्र महालय सूं किया, वर पुड़ साचा धींग।—वां.दा.

धींगउ—देखो 'धींगो' (रू.भे.)

धींगगणगौर—देखो 'धींगागणगौर' (रू.भे.) (मेवाड़)

धींगड़—१ देखो 'द्रंग' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'धींगो' (मह., रू.भे.) उ०—१ ओ धींगड़ रो धींगड़ तिमणियो, अै चवड़्यां-चवड़्यां तखत्यां अर जड़ाऊ सुरलिया-पत्तां वाळी मोरमींढ्यां।—वरसगांठ

उ०—२ सींगड़ सींग वधारिया, अति ऊंचा असमांन हो। धींगड़ भाइ पांचमइं, घोड़ा दीवा दांन हो।—ऐ.जै.का.सं.

धींगड़मल, धींगड़मल्ल—देखो 'धींगो' (मह., रू.भे.)

उ०—व्है हेको जिण धींगड़ै, हींगड़ धींगड़मल्ल। मोड़ो आयां ही मिळै, आटो घिरत अमल्ल।—वां.दा.

धींगड़ो—१ देखो 'द्रंग' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—व्है हेको जिण धींगड़ै, हींगड़ धींगड़मल्ल। मोड़ो आयां ही मिळै, आटो घिरत अमल्ल।—वां.दा.

२ देखो 'धींगलो' (रू.भे.)

३ देखो 'धींगो' (अल्पा., रू.भे.)

धींगण—देखो 'धींगो' (मह., रू.भे.)

धींगणियो—देखो 'धींगो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—"पण थे वोलो-ईज कोयनी ना, नहीं जणै माजनो है ईयां-रो ? घास को पलाय दां नी ? वेटा वरम-री टांग-पूंछ तो जांणां-ई कोयनी, वण वैठा सुवारक—धींगणिया पंच।"—वरसगांठ

धींगल—१ देखो 'धींगलो' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'धींगो' (मह., रू.भे.)

धींगलो-सं०पु० [देश०] १ गोवर में पैदा होने वाला पर-दार वड़ा कीड़ा जो उड़ते समय भूं-भूं की ध्वनि करता है।

२ मेवाड़ में प्रचलित एक प्रकार का प्राचीन सिक्का जो तांवे का वनता था।

रू०भे०—धींगड़ो।

मह०—धींगल।

३ देखो 'धींगो' (अल्पा., रू.भे.)

धींगांण, धींगांणी-क्रि०वि०—१ जवरदस्ती से, वलपूर्वक.

२ देखो 'धींगाई' (रू.भे.)

३ देखो 'धींगो' (मह., रू.भे.) उ०—मिटै खंफांण धींगांण जेर हिंदवांण किया माऊ, मोखांणा पुरांणा कै दिरांणा नवा मौज।
—महाराजा अजीतसिंह रो गीत

घींगांणं–क्रि०वि०—बलपूर्वक, जबरदस्ती से ।
उ०—हरि ग्रागै बध'र बोलियौ—"ग्रगलै-नै पोसासी ज्यौं करसी, थांरा गाया-गाया थोड़ै-श्री गासी ? घर-टापर नै वेचा'र टांबरां-नै रुळाय'र दादीजी सरग-में थोडा-ई सुखी होसी । सगती-सूं ऊपर कर कियां करसी ? धींगांणं धरम थोड़ै-ई हुवै है ।"—वरसगांठ

धींगांणो–सं०पु० (स्त्री० धींगांरा, घींगांरणी) १ ग्रत्याचार, ग्रन्याय, ज्यादती, जबरदस्ती । उ०—धन सूं धींगांणा हुवै, धन सूं बंधे सहु पाप रे ।—जयवांणी
रू०भे०—धींगाणी ।
२ देखो 'धींगो' (रू.भे.)

धींगाई–सं०स्त्री० [देश०] जबरदस्ती, ज्यादती ।
क्रि०प्र०—करणी ।
रू०भे०—धिगाई, धींगांरण, धींगांणी ।

धींगागणगोर–सं०स्त्री० [रा०धींगा+सं०गौरी] वैशाख कृष्णा तृतीया को उदयपुर राज्य में मनाया जाने वाला गणगोर का त्यौंहार विशेष ।
वि०वि०—महाराणा राजसिंह प्रथम ने अपनी छोटी महारानी को प्रसन्न करने के लिए इस त्यौंहार को प्रचलित किया था ।
रू०भे०—धींगगणगोर ।

धींगाधींगी, धींगामस्ती, धींगामुस्ती–सं०स्त्री० [देश०] १ शरारत, बदमाशी. २ हाथापाई. ३ जबरदस्ती, ज्यादती ।
रू०भे०—धिगाधींगी ।

धींगो–वि० [देश०] १ जबरदस्त ।
उ०—धींगां जाड़ा मरोड़ ग्रडर कर उभै, वांरा धानख धारै । तो नूं जीहा रटतां जनम ग्रघ हरै, दास ध्रू जेम तारै ।—र.ज.प्र.
२ वीर, साहसी. ३ शक्तिशाली, बलवान. ४ समर्थ ।
उ०—'जिनचंद्र' सूरि नां, सिस्य मांनै सहुजी, वड़ा वड़ा स्रावक तेम । धनवंत धींगा पूज्य तणइ पखइजी, वडभागी गुरु एम ।
—सुमति वल्लभ
५ धनाढ्य, धनी । उ०—धींगां देवै ध्यांन, रांकां सूं रूठो रहै । पासै नहीं परधांन, समझावै कुण सांवरा ।—रांमनाथ कवियो
६ हट्टाकट्टा, पुष्ट. ७ ग्राकार में वड़ा, वृहत् ।
रू०भे०—धिंगो, धींगउ, धींगांणो, धींगांणो ।
ग्रल्पा०—धींगड़ियो, धींगड़ो, धींगणियो, धींगलियो, धींगलो, धीगड़ो ।
मह०—धिंग, धींग, धींगड़, धींगड़मल, धींगड़मल्ल, धींगरा, धींगल, धींगांरा ।

धींणोड़ी—देखो 'धीरणोड़ी' (रू.भे.)
धींणो—देखो 'धीरणो' (रू.भे.)
धींवर—देखो 'धीवर' (रू.भे.)
धींस—देखो 'धीस' (रू.भे.) उ०—धरती रवि ससि धींस, सांच तरणी साखां भरै । जग मांही जगदीस, जितै गिणीजै जेठवा ।—जेठवा

धी–सं०स्त्री० [?] १ दीपक, दीया. २ चित्त. मन. ३ मेधा. ४ चिन्तक (एका.)
[सं० धी:] ५ बुद्धि, ग्रक्ल (ह.नां., ग्र.मा., डि.को.)
[सं० धीता या स्तनधयी] ६ पुत्री, बेटी (हि.को.)
उ०—गीदोली गुजरात सूं, ग्रसपत री धी ग्रांण । राखी रंग निवास में, तैं जगमाल जुग्रांण ।—बां.दा.
रू०भे०—धि, धिय, धिया, धिव, धीय, धीया, धीव, ध्रीया ।
ग्रल्पा०—धियारी, धिवड़ी, धीग्रड़ी, धीयड़ी, धीयवी, धीयारी, धीवड़ली, धीवड़ी, धीहड़ली, धीहड़ी, धीहड़ी ।
मह०—धीयड़, धीवड़, धीहड़ ।

धीग्रड़ी—देखो 'धी' (६) (ग्रल्पा., रू.भे.)
धीक—देखो 'धींक' (रू.भे.) उ०—तत वेग वहै जूटा सतांम, धीकां हथ वाथां धूमधांम ।—रांमदांन लाळस
धीकड़ी—देखो 'धींक' (ग्रल्पा., रू.भे.)
धीकणो, धीकबो—देखो 'धुकणो, धुकवो' (रू.भे.)
उ०—कांमकंदळा ! तूं रही, हाड हिया नां मांही । दारापरिण ! दाभड़ रखै, होळी धीकड़ त्यांही ।—मा.कां.प्र.
धीकियोड़ो—देखो 'धुकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धीकियोड़ी)
धीगड़ो—१ देखो 'द्रंग' (ग्रल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'धींगो' (ग्रल्पा., रू.भे.)
धीगांणो—१ देखो 'धींगांणो' (रू.भे.)
२ देखो 'धींगो' (रू.भे.)

धीज–सं०स्त्री० [सं० धीङ्] १ दृढ़ता, विश्वास ।
उ०—ऐळा चीतोड सहे घर ग्रासी, हूं थारा दोखियां हरूं । जरणरणी इसो कहूं नह जायो, कहवै देवी धीज करूं ।—बारूजी सोदो
[सं० धैर्यम्] २ धैर्य, धीरज. ३ प्रतिज्ञा, प्ररण. ४ प्रतिस्पर्द्धा, होड़. ५ न्याय करने की एक कठोर तथा पुरानी परिपाटी.
६ शर्त. ७ संशय, शंका ।
उ०—रांवण पकड़ ले गयो लंका, जब लोकां में पड़ गई संका । धीज उतारी 'सीता' सतवंती, समरूं मन हरखै मोटी सती ।—जयवांणी

धीजणो–वि० [सं० धीङ्] (स्त्री० धीजणी) १ विश्वास करने वाला.
उ०—जरै खीची रो भय टळियां, विस्वास पाय धीजियां नूं रजपूत कारण रै फोज मीरणां री चाल छोडण री पत्र कपट कर लिखावणो।
—वं.भा.
२ धैर्य धारण करने वाला. ३ प्रतिस्पर्द्धा करने वाला.
४ प्रसन्न होने वाला, संतुष्ठ होने वाला. ५ प्रण करने वाला.

धीजणो, धीजबो–क्रि०ग्र० [सं० धीङ्] १ विश्वास करना ।
उ०—१ विना पूंजी वापार, विना ग्रोळख धीजै । क्रीत सुणै विन कांन, विन कंद्रप परणीजै ।—ग्रोपो ग्राढ़ो
उ०—२ इणसूं थे धीजजो मती, ग्ररु दरबार कांनली तो थे जमा खातरी राखजो ।—द.दा.

२ धैर्य रखना. ३ अति प्रसन्न होना, संतुष्ठ होना. ४ प्रण करना, प्रतिज्ञा करना.
क्रि०स०—५ प्रतिस्पर्द्धा करना ।
धीजणहार, हारौ (हारी), धीजणियौ—वि० ।
धीजाड़णौ, धीजाड़वौ, धीजाणौ, धीजावौ, धीजावणौ, धीजाववौ —क्रि०स० ।
धीजिग्रोड़ौ, धीजियोड़ौ, धीज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धीजीजणौ, धीजीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
धीजाड़णौ, धीजाड़वौ—देखो 'धीजाणौ, धीजावौ' (रू.भे.)
धीजाड़णहार, हारौ (हारी), धीजाड़णियौ—वि० ।
धीजाड़िग्रोड़ौ, धीजाड़ियोड़ौ, धीजाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धीजाड़ीजणौ, धीजाड़ीजवौ—कर्म वा० ।
धीजाड़ियोड़ौ—देखो 'धीजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धीजाड़ियोड़ी)
धीजाणौ, धीजावौ-क्रि०स० [सं० धीङ्] १ धैर्य देना, धीरज बंधाना. २ विश्वास दिलाना । उ०—दाव घरोहड़ मांड खत, लटपट करके लाय । वड़ी वड़ाई वांणिया, धन लैणौ धीजाय ।—बां दा.
३ फुसलाना । उ०—भजन करै बुगला भगती सूं, पास बैठावै प्यारियां । धोका दे दिन रा धीजावै, श्रायण रा असवारियां । —ऊ.का.
४ प्रतिस्पर्द्धा कराना, होड़ कराना ।
धीजाणहार, हारौ (हारी), धीजाणियौ—वि० ।
धीजायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
धीजाईजणौ, धीजाईजबौ—कर्म वा० ।
धीजणौ, धीजवौ—अक०रू० ।
धीजाड़णौ, धीजाड़वौ, धीजावणौ, धीजाववौ—रू०भे० ।
धीजायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धैर्य दिया हुआ, धीरज बंधाया हुआ. २ विश्वास दिलाया हुआ. ३ फुसलाया हुआ.
४ प्रतिस्पर्द्धा कराया हुआ, होड़ कराया हुआ ।
(स्त्री० धीजायोड़ी)
धीजावणौ, धीजाववौ—देखो 'धीजाणौ, धीजावौ' (रू.भे.)
धीजावणहार, हारौ (हारी), धीजावणियौ—वि० ।
धीजाविग्रोड़ौ, धीजावियोड़ौ, धीजाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धीजावीजणौ, धीजावीजवौ—कर्म वा० ।
धीजावियोड़ौ—देखो 'धीजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धीजावियोड़ी)
धीजियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ विश्वास किया हुआ. २ धैर्य धारण किया हुआ. ३ प्रतिस्पर्द्धा किया हुआ. ४ प्रसन्न हुवा हुआ, सन्तुष्ठ. ५ प्रण किया हुआ, प्रतिज्ञा किया हुआ.
(स्त्री० धीजियोड़ी)
धीजौ-सं०पु० [सं० धीङ्] १ विश्वास, भरोसा.
२ देखो 'धीरज' (रू.भे.)

धीट—देखो 'धीठ' (रू.भे.)
धीठ-वि० [सं० धृष्ट] १ निर्लज्ज, बेशर्म ।
उ०—हूं कुळ में पापी हुवौ, पत नूं दीन्हीं पीठ । तिया पतिव्रत पाळ तूं, धिक धिक मत कह धीठ ।—बां.दा.
२ मूर्ख, जड़ । उ०—कर प्रगट दोस खंडण करूं, धीठ रोस मत धारज्यौ । आज री वखत भूंडी अमल, वडपण राज विचारज्यौ । —ऊ.का.
३ नीच । उ०—एक उमराव कही जिण समय उण बेसरम धीठ नूं घणौ मारणौ योग्य थौ ।—नी.प्र.
४ वीर, जबरदस्त, शक्तिशाली । उ०—मुखं चखचोळ सरूप मजीठ, घवोड़त सावळ मूगळ धीठ ।—सू.प्र.
५ अटल, दृढ़. ६ जिद्दी, हठी. ७ निर्दयी, वेपरवाह.
८ क्रोधपूर्ण, क्रोधी. १० ।
उ०—जणणी बाप स्रवणे दूहौ सुणी रे, कुमरी नाचंती नयण दीठ रे । नाटकणी थइ ए सुरसुंदरी रे, स्यूं कीधौ ए दैवे धीठ रे । —स्रीपाळ रास
११ कार्य से जी चुराने वाला, धीमा, सुस्त ।
रू०भे०—धीट, ध्रस्ट, ध्रेठउ ।
अल्पा०—धीठियौ, धीठौ, धेटौ, धेठौ, ध्रेठौ ।
मह०—धेट, धेठ ।
१२ तोप, बन्दूक आदि की ध्वनि । उ०—तोपूं का जंजीरा चौतरफ फेरे । दोऊ तरफ वगी तोपूं अताळ । भाळूं का भळहळ गोळूं का वरसाळ । घोमूं का अंधार । धमाकूं का धीठ । ग्रोळूं की असण ज्यूं गोळूं की रीठ ।—सू.प्र.
धीठम-सं०पु० [सं० दंशनम्=दट्टम] १ सर्प, सांप ।
२ देखो 'धीठ' (रू.भे.)
धीठाई-सं०स्त्री० [सं० धृष्ठ+रा०प्र० आई] १ मस्ती, शरारत । उ०—रतना में धीठाई प्रगट हुई, लाज थी सू भाजी, पायल, विछिया, कड़ मेखळा बाजी ।—र. हमीर
२ मूर्खता, जड़ता । उ०—राजा अरु रांणां करहा कांणां, दांणां तीन दिखंदा है । इक निजर न आई धुन धीठाई, सुन आई न सिखंदा है ।—ऊ.का.
३ निर्लज्जता, वेशर्मी. ४ नीचता. ५ कार्य न करने का भाव. ६ धृष्टता. ७ जिद्द, हठ. ८ वीरता, वहादुरी ।
उ०—अमीरेल अमीराई पाई सो दिखाई आछी, अड़ीराई धीठाई वाळियौ आडै आंक ।—कविराजा करणीदांन
रू०भे०—ढिठाई, ढीठाई, धिठाई, धेटाई, धेठाई ।
धीठियौ, धीठौ—देखो 'धीठ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ जग धुतारी नारी, बारी नरक नी एह । मुह मीठी मन धीठी, मांडे नेह अनेक ।—प्राचीन फागु संग्रह
उ०—२ जुड़ण भूप जुध काज, चख चोळ धीठी नजर । समर सिरताज

भड़ विमुख सरकै, कटारी जठै महाराज धारै करग, धरहरै अरी भ्रिगराज थरकै ।—क.कु.बो.

उ०—३ घरां गूजरां देववा क्रोध घीठा । दुवै धूंमरां फील नीसांण दीठा ।—सू.प्र.

उ०—४ सांच बोलियां टुकड़ा सूका, गिळ जावै सोई मीठा । कूड़ बोल पकवांन करावै, धूड़ बराबर धीठा ।—ऊ.का.

उ०—५ पडचै जिण जोध पोकार सगळै पड़ी, घरै नहीं अरज पतिसाह घीठौ । राह बंधी हुई वखै कोई रोकसी, देवै जसवंत रो साथ दीठो ।—घ.व.ग्रं.

उ०—६ रण घीठा वण राव, राव दीठा उमरावां । चसम अंगीठां चसै, करण पीठांण कलावां ।—मे.म.

(स्त्री० धेठी)

घीण-सं०पु०—ऊन के धागे का आकार या बनावट ।

घीणकियौ, धीणकौ—देखो 'घीणौ' (अल्पा., रू.भे.)

घीणु, घीणू-वि०—१ दूध देने वाली । उ०—रांन नह सिरजी हरिणली । सूरह न सिरजी घीणु गाई ।—वी.दे.

२ देखो 'घीणौ' (रू.भे.)

घीणूड़ी, घीणोड़ी-सं०स्त्री०—दूध देने वाली गाय या भैंस ।

रू०भे०—घींणोड़ी ।

घीणौ-सं०पु० [देश०] दूध देने वाले पशुओं का होना ।

उ०—१ थेवा पड़तोड़ी रावां घी घीणां । धाप' रि देखांला दूजै भव घीणा । हुयग्या हत आसा हक वक सुणि हाको । निरघन धन वाळां री नीकळग्यौ नाको ।—ऊ.का.

उ०—२ लाडी लाखीणी धारां धूंवाती । पीवर ऊथांरी पारां पय पाती । भाखा खीणां भड़ एवड़ ले आता । धाया घीणा रा गोधन रा वाता ।—ऊ.का.

उ०—३ धन घीणा ना थाट ।—जयवांणी

क्रि०प्र०—राखणौ, होणौ ।

मुहा०—घीणै चढ़णौ, घीणै पड़णौ, घीणै भिळणौ—गाय, भैंस, बकरी आदि का गर्भवती होना ।

यौ०—घीणौ-धापौ ।

रू०भे०—घींणौ, घीणु, घीणू ।

अल्पा०—घीणकियौ, घीणकौ ।

घीन-सं०पु० [?] लोहा (डि.को.)

घीप, घीपत, घीपति-सं०पु० [रा० घी=पुत्री+सं० प(पति)]

१ दामाद (डि.को.)

[सं० घी=बुद्धि+प(पति)] २ बृहस्पति ।

[सं० अधीप] ३ राजा, नृप ।

घीव-सं०स्त्री० [देश०] १ प्रहार, चोट । उ०—१ बगतर सहित ऊछळइ वरंगा, घीव पड़ई नेजाळ धड़ । भाजइ भ्रिगट अरी चा भिड़तां, घाय रमाडइ ति ब्रिध वड़ ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ गाजै अनड़ घीव पड़ गोळां, अजड़ां झड़ वाजै रण-ताळ । भड़ 'अभमल' 'चिमनौ' किम भाजै ? गिर भाजै लाजै 'गोपाळ' ।

—जादूरांम आढ़ौ

२ प्रहार की ध्वनि । उ०—सर छूटइ करत सणणाटा, बक्तर फोड़ि करै वे फाट । ध्रुव बाजै बरछी घीव, भाजै कायर लेई जीव ।

—प.च.चौ.

३ ध्वनि, आवाज । उ०—वढ़वा कज पाबुअ माग वहै । ढळ धूपर ढेवेय व्योम ढहै । खित ताताय पायक पाल खहै । पुरवंध बंदूकांय घीव पड़ै ।—पा.प्र.

रू०भे०—घीवी ।

घीवणौ, घीववौ-क्रि०स० [देश०] १ प्रहार करना ।

उ०—१ घीवे सेल सनाह घड़ाळां । वरघळ कर पाड़ूं बंगाळां ।

—सू.प्र.

उ०—२ चख मुख अरुण सचोळ, बिलकुल तो वाकारतो । घीवि छड़ां घमरोळ, अरिदळ ढाहै हरिद उत ।

—रावत म्होकमसिंघ हरिसिंघोत री वात

उ०—३ किलमां उर घीवै कमंध, भालाळो भालाह ।—पा.प्र.

२ संहार करना, मारना । उ०—समर घीवि अड़सलां, रवद जरदंतां राळूं । आज लूंण आपरौ, 'अभा' जुध करि अजवाळूं ।—सू.प्र.

३ भोजन करना, खाना (व्यंग, अवज्ञा)

घीवणहार, हारौ (हारी), घीवणियौ—वि० ।

घीववाड़णौ, घीववाड़बौ, घीववाणौ, घीववाबौ, घीववावणौ, घीववावबौ, घीवाड़णौ, घीवाड़बौ, घीवाणौ, घीवाबौ, घीवावणौ, घीवावबौ—प्रे०रू० ।

घीविओड़ौ, घीवियोड़ौ, घीव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घीवीजणौ, घीवीजबौ—कर्म वा० ।

घ्रिवणौ, घ्रिववौ, ध्रीवणौ, ध्रीवौ—रू०भे० ।

घीवि—देखो 'घीव' (रू.भे.)

घीवियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ प्रहार किया हुआ. २ मारा हुआ. ३ भोजन किया हुआ, खाया हुआ (व्यंग)

(स्त्री० घीवियोड़ी)

घीमर—देखो 'धीवर' (रू.भे.)

घीमांन-सं०पु० [सं० धीमत्] १ कवि (ह.नां., अ.मा.)

२ बृहस्पति ।

वि०—बुद्धिमान् ।

घीमै-क्रि०वि० [सं० मध्यम] १ धीरे, शनैः । उ०—भूखी की जीमैं सिसकारा भरती । नांखै निसकारा धीमै पग धरती । मुखड़ी मुरझायौ भोजन विन भारी । पय पय करतोड़ी पोढ़ी पिय प्यारी ।

—ऊ.का.

२ चुपके से, आहट किए विना ।

घीमौ-वि० [सं० मध्यम] (स्त्री० धीमी) १ जिसकी चाल में तेजी न हो, जो धीरे-धीरे चले, जिसकी गति या वेग मंद हो ।

उ०—धड़कती छाती धीमी चाल। मुळकता नैणां सुरमो सार।
—सांझ

२ जो अधिक तीव्र न हो, साधारण से कम, नीचा (स्वर)।

ज्यूं—धीमैं-धीमैं बोलणो, धीमो सुर।

यौ०—धीमो-मुधरो।

३ जिसकी तेजी कम हो गई हो, जिसका जोर घट गया हो।

ज्यूं—क्रोध धीमो पडणो।

मुहा०—धीमो पड़णो—वढ़ती पर न होना, मंद होना, सुस्त होना।

४ जो अधिक उग्र, तीव्र या प्रचण्ड न हो, हल्का।

ज्यूं—धीमो चांनणो, धीमी आंच।

क्रि०प्र०—करणो, पड़णो, होणो।

धीमो-तितालो—सं०पु० [देश०] एक ताल विशेष (संगीत)

धीय—देखो 'धी' (६) (रू.भे.) (डि.को.) उ०—१ हरिया वांसां री छाबड़ी रे, मांय चंपेली रो फूल। तूं बांमण वांण्यै री कै विणजारै री धीय। ना मूं बांमण वांण्यै री, ना विणजारै री धीय।—लो.गी.

उ०—२ हैय दैवह हैय दैवह दुट्ठ परिणांमु। पियं पंचह देखतां द्रपद धीय कढि चीरु कड्ढीय।—पं.पं.च.

धीयड़—देखो 'धी' (६) (मह., रू.भे.) उ०—१ म्हारी धीयड़ चोली पांन की, जंवाम्रो चंपलै रो फूल, आज म्हारी अमली फळ रही।
—लो.गी.

उ०—२ मांनो मांनो मोटा घर री धीयड़, छोटे घर आवियाजी म्हांरा राज।—लो.गी.

धीयड़ी, धीयवी—देखो 'धी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—बहुवां नै दीजो डीकरा ए धीयड़ियां रो अमर अहृवात। जीवा-रांमजी नै तूठै घणा हेत सूं ए, किसोरजी रै खेड़ै जीत राख। साळगजी रै तूठै घणा हेत सूं ए, महावीरजी तूं रखवाळ।—लो.गी.

धीया—देखो 'धी' (६) (रू.भे.) उ०—दोहुं पखां चाडै नीर आग झाळां. होम देही, पला नेह वंदाड़ै हटाड़ै अंगपोख। कंथ साथै धीया 'दुरगेस' खमा खमा कैती, लेता प्याला अमी रा पधारो सती लोक।
—वनजी खिड़ियो

धीयारी—देखो 'धी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

धीयो—सं०पु० [सं० धीत] पुत्र, लड़का।

यौ०—धीयो-पोतो।

धीर—वि० [सं०] १ ध्यान लगाये हुए, ध्यानस्थ (जैन)

२ अटल, निश्चल, दृढ़ (डि.को.)

३ जो जल्दी घबरा न जाय, जिसमें धैर्य हो, धैर्यवान्।

उ०—सखी अमीणो साहिबो, सूर धीर समरत्थ। जुध में बांभण डंड जिम, हेली बाधे हत्थ।—बां.दा.

४ विनीत, नम्र. ५ गंभीर. ६ बलवान, योद्धा. ७ सुन्दर, मनोहर. ८ मंद, धीमा. ६ देखो 'धीरे' (रू.भे.)

उ०—मग नीठ चलै पर्ग मंडन पै, डग धीर हलै जग डंडन पै।
—ऊ.का.

सं०स्त्री० [सं० धैर्यम्] १ मन की स्थिरता, धैर्य, धीरज।

उ०—रहिया हरि सही जांणियो रुखमणी, कीध न इवड़ी ढील कई। चिंतातुर चित इम चिंतवती, थई छीक इम धीर थई।—वेलि.

यौ०—धीर-धोवना।

२ संतोष, सब्र।

[सं० धीरं] ३ केशर (ह.नां., अ.मा., डि.को.)

सं०पु० [सं० धीर] ४ बलि. ५ कवि (अ.मा.)

६ सूर्य, रवि (अ.मा., ना.डि.को., डि.को.)

उ०—भचकै फुणाटां चील लचकै कमठी मोर, वोम ढंकै उडै खेहा रुकै धीर वाट। अजादा दधेस मुकै, भैंचकै भवेस, मीट, तणो धू नरेस हकै हैजमां तुराट।—हुकमीचंद खिड़ियो

७ चार प्रकार के नायकों में एक नायक।

रू०भे०—धीरु, धीरू।

धीरच्छ—१ देखो 'धीरट' (रू.भे.)

उ०—जो तू चाहे मुकत फळ, धूनां मन धीरच्छ। तोस मांन सरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ।—बां.दा.

२ देखो 'धीरज' (रू.भे.)

धीरज—उभ०लि० [सं० धैर्यम्] १ संकट, बाधा, कठिनाई, विपत्ति आदि उपस्थित होने पर घबराहट के न होने का भाव, अव्यग्रता, अव्याकुलता धीरता।

उ०—१ तरै राजा अणी री वडी धीरज चंचळाई देख, मोटो आदर करै, सांई रै लेख थी देस रो फौजदार कीधो।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ आतम घात न करि सिध आखै। राजा सुणि धीरज चित राखै।—सू.प्र.

उ०—३ असाढ़ रै ज्यूं सांवण भी आधो'क बीतग्यो अर मिनख-मिनख नै खावै जीसी टैम आयगी। मांनखा रो धीरज जातो रह्यो।
—रातवासो

२ आतुर या उतावला न होने का भाव, संतोष, सब्र (डि.को.)

उ०—१ बांका धीरज धरण सूं, ह्वै नहिं कुंजर हांण। की घर घर भटका करै, कूकर अधिक कमांण।—बां.दा.

उ०—२ जीहा जप जगदीसवर, धर धीरज मन ध्यांन। करमबंध-निकरम-करण, भव-भंजण भगवांन।—ह.र.

क्रि०प्र०—देणो, बंधाणो, राखणो।

रू०भे०—धय्यर, धीजो, धीरच्छ, धीरज्ज, धीरठ, धीरिम, धीरोज, धीरय।

धीरजदार, धीरजमांन, धीरजवंत, धीरजवांन—वि० [सं० धैर्य+फा०दार, सं० धैर्यवान्] धैर्यवान्। उ०—१ मोट मन गह कोट मिण मथ, सकज धीरजदार समरथ। सुयण वड हथ तमण सारिख। करण पारख क्रीत।—लपि.

उ०—२ अर जिकै मनुख धीरजवंत है तिकां रा कारज परमेस्वरजी करसी।—चौबोली

धीरज्ज—देखो 'धीरज' (रू.भे.)
उ०—वाळिराउ चाउ धीरज्ज घू, कळप व्रिछ छाया करण।
—ग्रु.रू.बं.

धीरट—सं०पु० [सं० धीः+रट्=राट्=राजा] हंस पक्षी (ह.नां., डिं.को.)

उ०—१ वाजु सोई बाज डसण विध विजड़ी, छेदे तुंड कुतां प्रछत। माधव हरै 'मांन' हर मोती, गळिया धीरट तणी गत।
—प्रिथीराज हाड़ा रो गीत

रू०भे०—धीरच्छ, धिरट, धीरठ, धीरत।

धीरठ—१ देखो 'धीरज' (रू.भे.)
उ०—१ वीहवा लागी ते नारी, धीरठ करीनइ चित्त। राक्षसनइ प्रमदा कहइ, वचन सुणि तूं एक मित्त।—नळ-दवदंती रास
उ०—२ दवदंती तव कहइ पति नइ, धीरठ थाउ कंत ए। साहसपणउं धरु स्वांमी। चिंता म करु चिंति ए।—नळ-दवदंती रास
२ देखो धीरट' (रू.भे., अ.मा.)
उ०—धीरट न आडो दे घेरवो, कुअवै कुवधी बींट करी।
—नवलजी लाळस

३ मांसाहारी पक्षी, पलचर।
उ०—घू जड-धार न आंमख-धीरठ, पड़ै न पळ स्रोणी प्रघळ। दळ थांभतै दूसरा दूदा, दुजड़े ऊपड़ गयौ दळ।
—ईसरदास वीरमदेयोत मेड़तिया रो गीत

धीरठ-वख—सं०पु०यौ०[रा० धीरठ+सं० भक्ष्य] मुक्ता, मोती (नां.मा.)

धीरणो, धीरबो—क्रि०स० [सं० धीरं] १ धैर्य धारण करना।
उ०—जवन डरै सोवायत जोळा, दौड़ हुवै अजमेरे दोळा। सुजावेग ऊठै सोवायत, सुण धीरियौ नही इक सायत।—रा.रू.
२ ढाढस बंधाना, धीरज देना।
धीरणहार, हारौ (हारी), धीरणियौ—वि०।
धीरवाड़णौ, धीरवाड़बौ, धीरवाणौ, धीरवाबौ, धीरवावणौ, धीरवावबौ—प्रे०रू०।
धीराड़णौ, धीराड़बौ, धीराणौ, धीराबौ, धीरावणौ, धीरावबौ
—क्रि०स०।

धीरिओड़ौ, धीरियोड़ौ, धीरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
धीरीजणौ, धीरीजबौ—कर्म वा०।

धीरत—१ देखो 'धीरज' (रू.भे.)
उ०—करुना-कर आकर कीरत के, धरम चाकर ठाकर धीरत के। जक नाद रु विद धरै जब वै, बकवाद रु निंद करै कब वै।—ऊ.का.
२ देखो 'धीरट' (रू.भे.)
उ०—क्रमण धीरत लंक केहर, गात उर छिब कुंभ गैमर। दीप घ्रांण वखांण अगमद, भंमर भ्रूंह सभाव।—फ.कु.बो.

धीरता—सं०स्त्री० [सं०] चित्त की स्थिरता, संतोष, सब्र।

धीरधर—वि० [स० धैर्यम्+धर] धैर्य रखने वाला।
उ०—एकहि वेद अनादि है, आधुनीक है अन्य। धरम धुरंधर धीरधर, धन्य धन्य तूं धन्य।—ऊ.का.

धीरप—क्रि०वि० [सं० धैर्यम्] १ धीरे, शनैः। उ०—तुम्हें तो पळ एक संग न छोडूं, छोड कहो किहां जाऊं। अब टुक धीरप रथ-हांको, चालो मैं भी थारै लारै आऊं।—जयवांणी
२ देखो 'धीरज' (रू.भे.)
उ०—१ मन नै हटक भटक मती मूरख, घट में धीरप राख घणी। खांची कलम न जावै खाली, तीन लोक रा नाथ तणी।
—भीखजी रतनू

उ०—१ धीरप राख मती कर धोको, सोच कियां की गरज सरै। जात चौरासी लाख जीवां री, करणहार प्रतपाळ करै।
—भीखजी रतनू

उ०—३ इण नै बापड़ी नै काई ठा? यूं धीरप राख, म्हूं थनै सब बताय दूंला।—रातवासो
उ०—४ स्त्री कहै धणी नै धणी धीरप दी तद सूतो छै।
—वी.स.टी.

धीरपण—सं०पु० [सं० धीरत्व] धीरता, धीरज, धैर्य।
उ०—सुपातां पाळ सागै समंद सीरपण, कळह हमगीरपण फतै कीजा। चित सहज धीरपण नीर थारै चखां, बीरपण ऊफणै, 'जगड़' वीजा।—जसजी आढ़ो

धीरपणो, धीरपबो—क्रि०स० [सं० धैर्य] धैर्य देना, धीरज देना, ढाढ़स बंधाना, सान्त्वना देना। उ०—१ धिन वे रावत धीरपै, भागा रावतियांह। धारा अणियां मे धसै, चख मुख चोळ कियांह।
—बां.दा.

उ०—२ कळळ हूंकळ अवमि खेति सूरा करै। धीरपै सुहड़ रिण चलण धीरा धरै।—हा.झा.
उ०—३ रमझम प्रोखर रोळती, घम घम पोढ़ां घम्म। धम धम पाबू धीरपै, खम खम घोड़ी खम्म।—पा.प्र.
धीरपणहार, हारौ (हारी), धीरपणियौ—वि०।
धीरपाड़णौ, धीरपाड़बौ, धीरपाणौ, धीरपाबौ, धीरपावणौ, धीरपावबौ
—प्रे०रू०।

धीरपिओड़ौ, धीरपियोड़ौ, धीरप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धीरपीजणौ, धीरपीजबौ—कर्म वा०।
धीरवणौ, धीरवबौ—रू०भे०।

धीरपियोड़ौ—भू०का०कृ०—धीरज दिया हुआ, धैर्य बंधाया हुआ, सान्त्वना दिया हुआ।
(स्त्री० धीरपियोड़ी)

धीरललित—सं०पु० [सं०] साहित्य में वह नायक जो सदा खूब बना-ठना और प्रसन्नचित्त रहता हो।

धीरवणो, धीरवबो—देखो 'धीरपणो, धीरपबो' (रू.भे.)
उ०—१ चिंता डाइणि ज्यां नरां, त्यां दृढ़ अंग न थाइ। जइ धीरा मन धीरवइ, तउ तन भीतर खाइ।—ढो.मा.
उ०—२ धड़क मत चीत्रगढ़, जोधहर धीरवै। गंज सत्रां दळां कहै

गजगाह। भुजां सूं मूझ जद कमळ कमळां भिळै, पछै तो कमळ पग देइ पतिसाह।—राठौड़ जैमल वीरमदेवोत री गीत

धीरवणहार, हारौ (हारी), धीरवणियौ—वि०।

धीरविश्रोड़ो, धीरवियोड़ो, धीरव्योड़ो—भू०का०कृ०।

धीरवीजणौ, धीरवीजवौ—कर्म वा०।

धीरवियोड़ो—देखो 'धीरपियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धीरवियोड़ी)

धीरसांत—सं०पु० [सं० धीरशांत] साहित्य में वह नायक जो सुशील, दयावान, गुणवान व पुण्यवान हो।

धीरा—क्रि०वि० [सं०] १ ठहर कर, धीरे, मन्द गति से, शनैः

२ चुपके।

यौ०—धीरा-धीरा।

३ दृढ, अटल।

सं०स्त्री०—नायक पर पर-स्त्री रमण के चिन्ह देख कर व्यंग से क्रोध करने वाली नायिका।

धीराड़णौ, धीराड़वौ—देखो 'धीरावणौ, धीराववौ' (रू.भे.)

धीराड़णहार, हारौ (हारी), धीराड़णियौ—वि०।

धीराड़िश्रोड़ो, धीराड़ियोड़ो, धीराड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

धीराड़ीजणौ, धीराड़ीजवौ—कर्म वा०।

धीराड़ियोड़ो—देखो 'धीरावियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धीराड़ियोड़ी)

धीराणौ, धीरावौ—देखो 'धीरावणौ, धारावबौ' (रू.भे.)

धीराणहार, हारौ (हारी), धीराणियौ—वि०।

धीरायोड़ो—भू०का०कृ०।

धीराईजणौ, धीराईजवौ—कर्म वा०।

धीरायोड़ो—देखो 'धीरावियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धीरायोड़ी)

धीरावणौ, धीराववौ—क्रि०स० [सं० धैर्यमापनम्] धैर्य बंधाना, विश्वास दिलाना। उ०—१ सीरो सीरावै भ्रम धीरावै, निरदावै नीरदा है। लपसी लपकावै तपसी तावै, आपा सींच उठंदा है।—ऊ.का.

उ०—२ धुर धुर कर नर लागा धीरावण। वे सोनै चांदी री करिग्या सीरावण।—ऊ.का.

धीरावणहार, हारौ (हारी), धीरावणियौ—वि०।

धीराविश्रोड़ो, धीरावियोड़ो, धीराव्योड़ो—भू०का०कृ०।

धीरावीजणौ, धीरावीजवौ—कर्म वा०।

धीराड़णौ, धीराड़वौ, धीराणौ, धीरावौ—रू०भे०।

धीरावियोड़ो—भू०का०कृ०—धैर्य बंधाया हुआ, विश्वास दिलाया हुआ.

(स्त्री० धीरावियोड़ी)

धीरियोड़ो—भू०का०कृ०—१ धैर्य धारण किया हुआ.

२ ढाढ़स बंधाया हुआ, धीरज दिया हुआ।

(स्त्री० धीरियोड़ी)

धीरासन—सं०पु० [सं०] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन। इसमें दोनों पावों को घुटने से लौटा कर पंजों को गुदा के नीचे आड़े रख कर बैठने से धीरासन होता है। दाहिने पांव को नीचे रख कर बांये पैर को घुटने से मोड़ कर इनकी एड़ी जंघा के निम्न भाग को लगा कर बैठने से दक्षिणपाद धीरासन होता है तथा इससे विपरीत बैठने पर वामपाद धीरासन कहलाता है।

धीरिम—देखो 'धीरज' (रू.भे.) उ०—रहियउ सीह किसोर जिम, धीरिम हिवइ धरेवी।—प्राचीन फागु संग्रह

धीरी—सं०स्त्री०—आंख की पुतली।

वि०स्त्री०—मंद गति से चलने वाली।

धीरु, धीरू—देखो 'धीर' (रू.भे.) उ०—सउ कूंयर पंचगळउ, किवहरि पढिवा जाइं। धीरु वीरु मति आगळउ, करणु पढ़इ तिणि ठाइ।
—पं.पं.च.

धीरूजळ—देखो 'धारूजळ' (रू भे.)

धीरे, धीरैं—क्रि०वि०—१ मंद गति से, आहिस्ता से।

उ०—कांटो भागो रे देवरिया, म्हांसूं संग चल्यो नी जाय, धीरे हाल रे देवरिया धीरे हाल।—लो.गी.

२ आहट किए बिना, चुपके से।

उ०—हाजरियो एक टूटचोड़ा मांचा पर आंगणै बैठ्यो। वो अठी-उठी देख'र धीरै सी'क बोल्यो।—रातवासो

रू०भे०—धीर।

धीरोज—देखो 'धीरज' (रू.भे.)

धीरोदात्त—सं०पु० [सं०] साहित्य के अनुसार निराभिमानी, दयालु, क्षमाशील, धीर, दृढ व योद्धा नायक।

धीरोद्धत—सं०पु० [सं०] साहित्य में वह नायक जो सदा अपने ही गुणों का बखान करे व दूसरों का गर्व न सह सके।

धीरो—वि०—१ धैर्यवान्। उ०—१ चिंता डाइणि ज्यां नरां, त्यां दृढ़ अग न थाइ। जइ धीरा मन धीरवइ, तउ तन भीतर खाइ।—ढो.मा.

उ०—२ ताहरां मेर कह्यो—'जो, मास १ लग धीरा रहो।' कह्यो—'क्यूं जी ?' 'मारग में नाहरी व्याई छै।' ताहरां रिणमल कह्यो—'नाहरी म्हे जांणां, तूं हालि।'—नैणसी

उ०—३ सो गांम रै धणी तो कयो थो धीरा रहो, हूं पण चालसां, पण बांमण कह्यो—राज तो ठाकुर साहिब हो। कांई जांणजै कदी ही चालो।—गांम रा धणी री वात

२ मन्द, धीमा। उ०—तरै सवानंद कहिश्रो ज धीरा रहो।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

धीरच—देखो 'धीरज' (रू.भे.) उ०—सांभळता धरम सीख, धीरच विण माथो धूणै। को न गिणै कायदो, खाटलो पड़ियो खूणै।
—ध.व.ग्रं.

धीव—देखो 'धी' (६) (रू.भे.) उ०—१ ऐ तो देरांण्यां जेठांण्यां जाया हालरा, मारवण थे कांई जाई है धीव। लायदो जी भंवर म्हांनै चीणोटियो।—लो.गी.

उ०—२ माय जळ थळ सब म्हैं ढूंढ़िया, माय नहीं रै सैंणां री घीव, पपइयौ बोलै खाबड़ रै खेत में ।—लो.गी.

घीवड़—देखो 'घी' (६) (मह., रू.भे.)

उ०—उड उड रे सूवा, नरवळ जाय, कहीज्यौ म्हारी माय नैं जी राज । वीरै सा' नैं भेज'र ल्यो नी मंगाय, थारी घीवड़ झूरै सासरै । —लो.गी.

घीवड़ली, घीवड़ी—देखो 'घी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ रांमापीर ऊभी रूणेचा रे मांय, मांगू घीवड़ल्यां री जोड़, कुळ में जंवाइयां री जाभी झूलरी ।—लो.गी.

उ०—२ तूं तौ कांमी, म्हांरी मायड़, गरभरी, तूं तौ देख घीवड़ल्यां री चाळो रे, ढाळया ढळक'र चालै ढेलड़ी, मोळया मळक'र चालै मोरड़ी ।—लो.गी.

उ०—३ हे म्हे थांनै पूछां म्हारी घीवड़ी, हे इतरी भावोसा री लाड, छोड नै बाई सिध चाल्या ।—लो.गी.

घीवर-सं०पु० [सं०] १ मछली पकड़ने का कार्य करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति मल्लाह, केवट (डि.को.)

उ०—१ सर कूंत आर-पार हुआं छै। बगतरां रा तवा फोड़-फोड़ पूठी परा अणीआळा अणी नीसरै छै। सु जांणां घीवर पूठै जाळ मांहे मछां मूंह काढ़िआ छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ जळचर जीव वसइं जळ माहि, ते नवि छूटइ घीवर पाइ। थळचर नी कुण करिसइ सार, दवि दाझइं पुण ते सवि वार।

—चिहुंगति चउपई

२ काला मनुष्य।

रू०भे०—धीवर, घीमर।

घीस-सं०पु० [सं० अधीश] १ राजा, नृप ।

२ स्वामी, मालिक, अधीश ।

उ०—अनंक न संक न धंक न घीस, अवास न वास न आस न ईस। निराळ न काळ त्रिकाळ-नरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस ।—ह.र.

रू०भे०—घींस ।

घीसव्याळ-सं०पु० [सं० व्याल+अधीश] शेषनाग ।

घीहड़—देखो 'घी' (६) (मह., रू.भे.)

उ०—१ मरूं अक जीवूं, मोरी माय, दूहागण को मांन वधायो, जी राज। म्हारी घीहड़ थारी मरैगी बलाय, दूहागण को गीगो मांन वधायो, जी राज ।—लो.गी.

उ०—२ सात ए भाभी, पूत जणाज्यो, एक जणज्यौ डीकरी। थां री घीहड़ नैं परदेस दीज्यो, ज्यूं चित्त आवै रूड़ी नणदली।—लो.गी.

घीहड़ली, घीहड़ी, घीहडी—देखो 'घी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—असपत इंद्र अवनि आहुड़ियां, घारा झड़ियां सहै धका। घण पड़ियां सांकड़ियां घड़ियां, ना घीहड़ियां पढ़ी नका।—दुरसौ आढ़ो

घुं—देखो 'घू' (रू.भे.)

उ०—घुं घुं घुं नीसांण घुरै।—प.च.चा.

घुंअर—देखो 'धूंर' (रू.भे.)

घुंआंधार, घुंआंधोर, घुंआघोर-सं०पु० [सं० धूमः] १ खूब घुटा हुआ धुआं, धूंए का गहरा समूह। उ०—१ दळां रोळ दंताळ ऐसा दुगम्मं, जमं चालिआ सांमुहा जांणि जम्मं। रजी ऊमटै वोम नूं रोस रत्ता, घुआंधार चारविखआं घत्तघत्ता।—वचनिका

उ०—२ घुंआघोर वंधे छुटै नाळ घोरै। कड़क्कं मनां वीजळी च्यार कोरै।—पा.प्र.

२ धूलि मिश्रित अंधकारयुक्त हवा ।

वि०—१ बहुत अधिक, बड़े वेग का, बड़े जोर का, प्रचण्ड, अति तेज।

उ०—सू दारू किण भांत रो छै ? अराक री वैराक, संदळी री कदळी, फूल री अतर, बातो वर्फ घुंआघोर, तिवारा रो काढ़ियो, बोदी वाड़ में नांखिहां जग ऊठै।—रा.सा.सं.

२ धुंए का सा, काला, स्याह. ३ धुंए से भरा, धूममय।

रू०भे०—धुंवांधार, धुंवांघोर, घुवांधार, धूंआधार, धूंआघोर, धूवाधार, धूवाघोर ।

घुंआळ-वि० [सं० धूमः+आलुच्] धूंए के समान, धूंए जैसा ।

उ०—रळियां चढ़ितां मेघ उचक्कै पवन डिडोळै, सपट करै चित्रांम फुहारां रंग उजोळै। लोरां-लोर घुंआळ विखरता वार म लावै, माग झरोखां पाय चोर ज्यूं नाठा जावै।—मेघ.

घुंई-सं०स्त्री० [सं० धोमी] रोग विशेष अथवा भूत प्रेतादि का प्रकोप मिटाने के लिए औषधि विशेष या लोबान, धूप आदि का किया जाने वाला धुंआ, मच्छर आदि उड़ाने के निमित्त किया जाने वाला धुंआ।

क्रि०प्र०—करणी, दैणी, होणी ।

मुहा०—धुंई दैणी—भूत आदि छुड़ाने, रोग मिटाने के लिए किसी वस्तु का धुंआ देना ।

रू०भे०—धूंई, धूंणी, धूई, धूणी ।

घुंओ—देखो 'धुंवो' (रू.भे.)

उ०—उठै सोर झाळां अनळ, आभ घुंआं अंधियार। ओळां जिम गोळा पड़ै, मेछां कटक मझार।—वां.दा.

घुंकार-सं०स्त्री० [अनु०] १ जोर का शब्द. २ गर्जन, गरज.

३ देखो 'धोंकार' (रू.भे.)

४ देखो 'धुंगार' (रू.भे.)

रू०भे०—धुकार; धूंकार, धूंकारव, धूकार, धूकारव ।

घुंकारणी, घुंकारबौ—देखो 'धूकारणौ, धूकारबौ' (रू.भे.)

घुंगार-सं०स्त्री० [सं० धूमः+अंगार] १ अंगारे पर घी डाल कर रायते, शाक आदि को दिया जाने वाला धूम ।

वि०वि०—अंगारे पर घृत डाल कर उस पर खाली बटलोई आदि बरतन औंधा रख दिया जाता है। फिर उस बरतन में रायता, छाछ आदि डाल कर ढक्कन लगा दिया जाता है। घृत के धुंए की सुगंधि से वह पदार्थ स्वादिष्ट बन जाता है। कटे हुए प्याज आदि में यह सुगंधि देने के लिए जिस बरतन में प्याज आदि है उसमें किसी बड़े

छिलके आदि पर अंगारा रख कर उस पर घृत डाल कर ढक्कन लगा दिया जाता है। फिर छिलके सहित अंगारा बाहर निकाल लिया जाता है।

क्रि०प्र०—देणी।

२ मच्छर उड़ाने अथवा किसी रोग के उपचार के लिए औषधि विशेष का दिया जाने वाला धुंआ।

रू०भे०—धुकार, धूंगार।

धुंगारणो, धुंगारबो—क्रि०स० [सं० धूमः+कार] १ रायते, छाछ, शाक आदि में घृत का धू देना।

वि०वि—देखो 'धुंगार'।

उ०—खाटा स्याक, खारा स्याक, मीठा स्याक, गळया स्याक, तळया स्याक, वघारया स्याक, धुंगारिया स्याक, छमकारिया स्याक। —व.स.

२ मच्छर उड़ाने या रोग के उपचार के लिए किसी औषधि का धुंआ देना. ३ सुलगाना, जलाना।

धुंगारियोड़ो—भू०का०कृ०—१ घृत का धूम दिया हुआ (शाक, रायता, छाछ आदि). २ धुंआ दिया हुआ (मच्छर उड़ाने या रोग के उपचार हेतु). ३ सुलगाया हुआ, जलाया हुआ।

(स्त्री० धुंगारियोड़ी)

धुंद, धुंध—सं०स्त्री० [सं० धूमः+अंध] १ हवा में उड़ती हुई धूलि अथवा उससे होने वाला अंधेरा।

उ०—१ इतरै लाभ वधूळी आवै, कहर क्रोध डंडूळ कहावै। छित पर कांम धुंध नभ छावै, पात्र विवेक निजर नहि पावै।—ऊ.का.

उ०—२ धमस विडंगां ऊधरां, रज छायो ब्रहमंड। सेलह चमंका धुंध में, दीठा रांवण खंड।—रा.रू.

२ कुहरा। उ०—कुण माता कुण पिता, कमण त्रिय कुण कुण भाई। कमण पुत्र परवार, कमण सनमंध सगाई। धुंद वाव जग सकळ धुंध जग काची काया। धुंध मोह धुंध लोभ, धुंध ठगवाजी माया। क्रम अक्रम भ्रम अधरम कपट, अै नेड़ा मत आंण अंग। पढ़ नांम रिदै करता पुरस, जग एक अवगत्त जग।—ज खि.

३ अज्ञान। उ०—धुंध मिटया जब निरधुंध पाया, आतम रांम अरागी। कह सुखरांम मिटी सब त्रिसणा, अनुभव उगती जागी। —स्री सुखरांमजी महाराज

४ आंख का एक रोग. ५ देखो 'दुंद' (रू.भे.)

उ०—धुंध हुअै सारी धरा, सहर दिली पड़ि सोर। मुहिम हुंता त्यां मंडिओ, ज्यां सहिजादां जोर।—वचनिका

रू०भे०—धूंद, धूंध।

धुंधक—वि० [देश०] नशे में चूर, मदमस्त।

उ०—विलमपोस चालतां बाजै टोकर वादोड़ा। खिणै हालतां खाज धुंधक आफू ऊगोड़ा।—ऊ.का.

धुंमकार—सं०पु० [सं० धूमः+कार] १ आकाश में छाये हुए धूलि-कण अथवा उनसे होने वाला अन्धकार या धुंधलापन. २ अंधकार, अंधेरा।

क्रि०प्र०—छाणो।

रू०भे०—धुंधुकार, धुंधूकार, धूंधळिकार, धूंधूकार।

धुंघट—सं०स्त्री० [अनु०] रूई धुनने की धुनकी से उत्पन्न होने वाली ध्वनि। उ०—वैठा विजण विण हिंजरता वारै। धुंघट पिंजर में पिंजण धुणकारै। सुख में सांतां रा सुणता संजीरा। मुख में दांतां रा धुणता मंजीरा।—ऊ.का.

धुंधमार—सं०पु० [सं० धुंधुमार] १ राजा वृहदश्व के पुत्र कुवलयाश्व का एक नाम जिसने 'धुंधु' राक्षस को मारा था।

उ०—ब्रहदस्व तणै सुत तेण वार। महाराजा उपजै धुंधमार। —सू.प्र.

२ धुंधु राक्षस का नाम जिसको राजा कुवलयाश्व ने मारा था।

उ०—बळ धुंधमार वैण वांणासुर। आयै दिन न कीध अवार। वडा वडा गा तोरण वांदे। नवल वना अहंकार निवार। —ओपो आढ़ो

धुंधळ—सं०स्त्री० [देश०] १ धूलिकणों अथवा गर्द के अधिक उड़ने से छाने वाला धुंधलापन अथवा अंधेरा।

उ०—देव दांणू भूंझिया रिव धुंधळ छाया।—केसोदास गाडण

रू०भे०—धूंधळ, धूंधळि, धूधळ, धूधळि।

२ देखो 'धुंधळो' (मह., रू.भे.)

धुंधळणो, धुंधळबो—देखो 'धूंधळणो, धूंधळबो' (रू.भे.)

उ०—खोहड़ खांन खड़ै खरहंडह। महण धुंधळियौ ब्रहमंडह। —गु.रू.बं.

धुंधळाई—सं०स्त्री० [देश०] धुंधला या अस्पष्ट होने का भाव, धुंधलापन।

धुंधळो—देखो 'धूंधळो' (रू.भे.)

धुंधाणो, धुंधाबो—देखो 'धूंधाणो, धूंधाबो' (रू.भे.)

धुंधु—सं०पु० [सं०] एक राक्षस जो मधु राक्षस का पुत्र था और इसका वध राजा कुवलयाश्व ने किया था।

धुंधकार, धुंधूकार—सं०पु० [अनु०] १ नगाड़े का शब्द, धुंकार. २ देखो 'धुंधकार' (रू.भे.) उ०—सुंन महा सुंन नहीं धंधूकारां, नहीं होता नूर विलासा। ज्या दिन का जोगी करो नी विचारा, किस विध रच्या संसारा।—स्री हरिरांमजी महाराज

धुंन—सं०स्त्री० [सं० ध्वनि] १ निरन्तर होने वाली ध्वनि।

उ०—रणुंकार की धुंन सूं, यूं कर जीव जगीजे ए। स्रवण सुची रुचि धार के, सार अनहद को लाजे ए।—स्री सुखरांमजी महाराज

२ चित्त की एकाग्रता, तल्लीनता।

क्रि०प्र०—लागणी।

धुंवांकस, धुंवांदांन—सं०पु० [सं० धूमः+आकाश] धुआं निकलने की चिमनी।

रू०भे०—धुवाकस।

धुंवांधार—देखो 'धुंआंधोर' (रू.भे.)

उ०—२ माय जळ थळ सब म्हैं ढूंढ़िया, माय नहीं रै संगां री घीव, पपइयो बोलै खावड़ रै खेत में ।—लो.गी.

घीवड़—देखो 'घी' (६) (मह., रू.भे.)

उ०—उड उड रे सूवा, नरवळ जाय, कहीज्यो म्हारी माय नै जी राज । वीरै सा' नै भेज'र ल्यो नी मंगाय, थारी घीवड़ झूरै सासरै ।—लो.गी.

घीवड़ली, घीवड़ी—देखो 'घी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ रांमापीर ऊभी रूणेचा रै मांय, मांगू घीवड़ल्यां री जोड़, कुळ में जंवाइयां री जाभो झूलरो ।—लो.गी.

उ०—२ तूं तो कांमी, म्हांरी मायड़, गरभरी, तूं तो देख घीवड़ल्यां री चाळो रे, ढाळ्या ढळक'र चालै ढेलड़ी, मोळ्या मळक'र चालै मोरड़ी ।—लो.गी.

उ०—३ हे म्हे थांनै पूछां म्हारी घीवड़ी, हे इतरी भावोसा री लाड, छोड नै बाई सिध चाल्या ।—लो.गी.

घीवर—सं०पु० [सं०] १ मछली पकड़ने का कार्य करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति मल्लाह, केवट (डि.को.)

उ०—१ सर कुंत आर-पार हूआ छै । वगतरां रा तवा फोड़-फोड़ पूठी परा अणीआळा अणी नीसरै छै । सु जांणां घीवर पूठै जाळ मांहै मछां मूंह काढ़िआ छै ।—रा.सा.सं.

उ०—२ जळचर जीव वसइं जळ माहि, ते नवि छूटइ घीवर पाइ । थळचर नी कुण करिसइ सार, दवि दाझइं पुण ते सवि वार ।—चिहुंगति चउपई

२ काला मनुष्य ।

रू०भे०—धीवर, घीमर ।

घीस—सं०पु० [सं० अधीश] १ राजा, नृप ।

२ स्वामी, मालिक, अधीश ।

उ०—अनंक न संक न धंक न धीस, अवास न वास न आस न ईस । निराळ न काळ त्रिकाळ-नरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस ।—ह.र.

रू०भे०—धींस ।

घीसव्याळ—सं०पु० [सं० व्याल+अधीश] शेषनाग ।

घीहड़—देखो 'घी' (६) (मह., रू.भे.)

उ०—१ मरू' अक जीवूं, मोरी माय, दूहागण को मांन वधायो, जी राज । म्हारी घीहड़ थारी मरैगी बलाय, दूहागण को गीगो मांन वधायो, जी राज ।—लो.गी.

उ०—२ सात ए भानी, पूत जणज्यो, एक जणज्यो डीकरी । थां री घीहड़ नै परदेस दीज्यो, ज्यूं चित्त आवै रूड़ी नणदली ।—लो.गी.

घीहड़ली, घीहड़ी, घीहडी—देखो 'घी' (६) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—असपत इंद्र अवनि आहुड़ियां, धारा झड़ियां सहै धका । घण पड़ियां सांकड़ियां घड़ियां, ना घीहड़ियां पड़ी नका ।—दुरसो आढ़ो

घुं—देखो 'घूं' (रू.भे.)

उ०—घुं घुं घुं नीसांण घुरै ।—प.च.चा.

घुंअर—देखो 'घूंर' (रू.भे.)

घुंआंधार, घुंआंधोर, घुंआधोर—सं०पु० [सं० धूमः] १ खूब घुटा हुआ धुआं, धूंए का गहरा समूह । उ०—१ दळां रोळ दंताळ ऐसा दुगम्मं, जमं चालिआ सांमुहा जांणि जम्मं । रजी ऊमटै वोम नूं रोस रत्ता, घुआंधार चारक्खिआं वत्तधत्ता ।—वचनिका

उ०—२ घुंआधोर वंधे छूटै नाळ धोरै । कड़क्कै मनां वीजळी च्यार कोरै ।—पा.प्र.

२ धूलि मिश्रित अंधकारयुक्त हवा ।

वि०—१ बहुत अधिक, बड़े वेग का, बडे जोर का, प्रचण्ड, अति तेज ।

उ०—सू दारू किण भांत रो छै ? अैराक रो वैराक, संदळी री कदळी, फूल री अतर, वातो बकै घुंआधोर, तिवारा रो काढ़ियो, बोर्दा बाड़ में नांखिहां जग ऊठै ।—रा.सा.सं.

२ धुंए का सा, काला, स्याह. ३ धुंए से भरा, धूममय ।

रू०भे०—घुंवांधार, घुंवांधोर, घुवांधार, धूंआधार, धूंआधोर, धूवाधार, धूवाधोर ।

घुंआळ—वि० [सं० धूमः+आलुच्] धूंए के समान, धूंए जैसा ।

उ०—रळियां चढ़ितां मेघ उचक्कै पवन डिडोळै, सपट करै चित्रांम फुहारां रंग उजोळै । लोरां-लोर घुंआळ विखरता वार म लावै, माग भरोखां पाय चोर ज्यूं नाठा जावै ।—मेघ.

घुंई—सं०स्त्री० [सं० धोमी] रोग विशेष अथवा भूत प्रेतादि का प्रकोप मिटाने के लिए औषधि विशेष या लोवान, धूप आदि का किया जाने वाला धुंआ, मच्छर आदि उड़ाने के निमित्त किया जाने वाला धुंआ ।

क्रि०प्र०—करणी, दैणी, होणी ।

मुहा०—घुंई दैणी—भूत आदि छुड़ाने, रोग मिटाने के लिए किसी वस्तु का धुंआ देना ।

रू०भे०—धूंई, धूंणी, धूई, धूणी ।

घुंओ—देखो 'धुंवो' (रू.भे.)

उ०—उठै सोर भाळां अनळ, आभ घुंओ अंधियार । ओळां जिम गोळा पड़ै, मेछां कटक मभार ।—बां.दा.

घुंकार—सं०स्त्री० [अनु०] १ जोर का शब्द. २ गर्जन, गरज.

३ देखो 'धोंकार' (रू.भे.)

४ देखो 'धुंगार' (रू.भे.)

रू०भे०—धुकार; धूंकार, धूंकारव, धूकार, धूकारव ।

घुंकारणो, घुंकारवो—देखो 'धूकारणो, धूकारवो' (रू.भे.)

घुंगार—सं०स्त्री० [सं० धूमः+अंगार] १ अंगारे पर घी डाल कर रायते, शाक आदि को दिया जाने वाला धूम ।

वि०वि०—अंगारे पर घृत डाल कर उस पर खाली बटलोई आदि बरतन औंधा रख दिया जाता है । फिर उस बरतन में रायता, छाछ आदि डाल कर ढक्कन लगा दिया जाता है । घृत के धुंए की सुगंधि से वह पदार्थ स्वादिष्ट बन जाता है । फटे हुए प्याज आदि में यह सुगंधि देने के लिए जिस बरतन में प्याज आदि है उसमें किसी बड़े

छिलके आदि पर अंगारा रख कर उस पर घृत डाल कर ढक्कन लगा दिया जाता है। फिर छिलके सहित अंगारा बाहर निकाल लिया जाता है।
क्रि०प्र०—देणी।
२ मच्छर उड़ाने अथवा किसी रोग के उपचार के लिए ओषधि विशेष का दिया जाने वाला धुंआ।
रू०भे०—धुकार, धूंगार।
धुंगारणो, धुंगारबो—क्रि०स० [सं० धूमः+कार] १ रायते, छाछ, शाक आदि में घृत का धू देना।
वि०वि—देखो 'धुंगार'।
उ०—खाटा स्याक, खारो स्याक, मीठा स्याक, गळया स्याक, तळया स्याक, वधारया स्याक, धुंगारिया स्याक, छमकारिया स्याक।
—व.स.
२ मच्छर उडाने या रोग के उपचार के लिए किसी ओषधि का धुंआ देना. ३ सुलगाना, जलाना।
धुंगारियोड़ो—भू०का०कृ०—१ घृत का धूम दिया हुआ (शाक, रायता, छाछ आदि). २ धुंआ दिया हुआ (मच्छर उड़ाने या रोग के उपचार हेतु). ३ सुलगाया हुआ, जलाया हुआ।
(स्त्री० धुंगारियोड़ी)
धुंद, धुंध—सं०स्त्री० [सं० धूमः+अंध] १ हवा में उडती हुई धूलि अथवा उससे होने वाला अंधेरा।
उ०—१ इतरै लाभ वधूळो आवै, कहर क्रोध डडूळ कहावै। छित पर काम धुंध नभ छावै, पात्र विवेक निजर नहिं पावै।—ऊ.का.
उ०—२ घमस विडंगा ऊधरां, रज छायो ब्रहमंड। सेलह चमंका धुंध में, दीठा रावण खंड।—रा रू.
२ कुहरा। उ०—कुण माता कुण पिता, कमण त्रिय कुण कुण भाई। कमण पुत्र परवार, कमण सनमंध सगाई। धुंद वाव जग सकळ धुंध जग काची काया। धुंध मोह धुंध लोभ, धुंध ठगवाजी माया। क्रम अक्रम भ्रम अधरम कपट, अै नेड़ा मत आंण अंग। पढ़ नांम रिदै करता पुरस, जग एक अवगत्त जग।—ज खि.
३ अज्ञान। उ०—धुंध मिटचा जब निरधुंध पाया, आतम रांम अरागी। कह सुखरांम मिटी सब भ्रिसणा, अनुभव उगती जागी।
—स्री सुखरांमजी महाराज
४ आंख का एक रोग. ५ देखो 'दूंद' (रू.भे.)
उ०—धुंध हुअै सारी धरा, सहर दिली पड़ि सोर। मुहिम हुंता त्यां मंडिओ, ज्यां सहिजादां जोर।—वचनिका
रू०भे०—धूंद, धूंध।
धुंधक—वि० [देश०] नशे में चूर, मदमस्त।
उ०—चिलमपोस चालतां वाजै टोकर वादोड़ा। खिणै हालतां खाज धुंधक आफू ऊगोड़ा।—ऊ.का.
धुंधकार—सं०पु० [सं० धूमः+कार] १ आकाश में छाये हुए धूलि-कण अथवा उनसे होने वाला अन्धकार या धुंधलापन. २ अंधकार, अंधेरा।
क्रि०प्र०—छाणी।
रू०भे०—धुंधुकार, धुंधूकार, धूंधळिकार, धूंधूकार।
धुंधट—सं०स्त्री० [अनु०] रूई धुनने की धुनकी से उत्पन्न होने वाली ध्वनि। उ०—बैठा विंजण विण हिंजरता वारै। धुंधट पिंजर में पिंजण धुणकारै। सुख में सांतां रा सुणता संजीरा। मुख में दांतां रा धुणता मंजीरा।—ऊ.का.
धुंधमार—सं०पु० [सं० धुंधुमार] १ राजा बृहदश्व के पुत्र कुवलयाश्व का एक नाम जिसने 'धुंधु' राक्षस को मारा था।
उ०—ब्रहदस्व तणै सुत तेण वार। महाराजा उपजै धुंधमार।
—सू.प्र.
२ धुंधु राक्षस का नाम जिसको राजा कुवलयाश्व ने मारा था।
उ०—बळ धुंधमार वैण वांणासुर। आयै दिन न कीध अवार। वडा वडा गा तोरण वांदे। नवल वना अहंकार निवार।
—ओपो आढ़ो
धुंधळ—सं०स्त्री० [देश०] १ धूलिकणों अथवा गर्द के अधिक उड़ने से छाने वाला धुंधलापन अथवा अंधेरा।
उ०—देव दांणू झूंझिया रिव धुंधळ छाया।—केसोदास गाडण
रू०भे०—धूंधळ, धूंधळि, धूधळ, धूधळि।
२ देखो 'धुंधळो' (मह., रू.भे.)
धुंधळणो, धुंधळबो—देखो 'धूंधळणो, धूंधळबो' (रू.भे.)
उ०—खोहड़ खांन खड़ै खरहंडह। महण धुंधळियौ ब्रहमंडह।
—गु.रू.बं.
धुंधळाई—सं०स्त्री० [देश०] धुंधला या अस्पष्ट होने का भाव, धुंधलापन।
धुंधळो—देखो 'धूंधळो' (रू.भे.)
धुंधाणो, धुंधाबो—देखो 'धूंधाणो, धूंधाबो' (रू.भे.)
धुंधु—सं०पु० [सं०] एक राक्षस जो मधु राक्षस का पुत्र था और इसका वध राजा कुवलयाश्व ने किया था।
धुंधकार, धुंधूकार—सं०पु० [अनु०] १ नगाड़े का शब्द, धुंकार.
२ देखो 'धुंधकार' (रू.भे.) उ०—सुंन महा सुंन नहीं धंधूकारां, नही होता नूर विलासा। ज्या दिन का जोगी करो नी विचारा, किस विध रच्या संसारा।—स्री हरिरांमजी महाराज
धुंन—सं०स्त्री० [सं० ध्वनि] १ निरन्तर होने वाली ध्वनि।
उ०—रणुंकार की धुंन सूं, यूं कर जीव जगीजे ए। स्रवण सुची रुचि धार के, सार अनहद को लाजे ए।—स्री सुखरांमजी महाराज
२ चित्त की एकाग्रता, तल्लीनता।
क्रि०प्र०—लागणी।
धुंवांकस, धुंवांदान—सं०पु० [सं० धूमः+आकाश] धुआं निकलने की चिमनी।
रू०भे०—धुवाकस।
धुंवांधार—देखो 'धुंआंधोर' (रू.भे.)

घुंवांवज, धुंवांवुज—देखो 'घूमवज' (रू.भे.)
धुंवांघोर—देखो 'धुंग्रांघोर' (रू.भे.) उ०—फैल झाळ ग्रातसां ग्ररावां चौफेर फिरै, धुंवांघोर ग्रकळ वेर रौ नंदा ग्रोह।
—ठा. जगरांमसिंघ रो गीत
धुंवांवराड़–सं०पु० [सं० धूमः+वाट] डूंगरपुर राज्य में जलाने की लकड़ी पर लिया जाने वाला कर।
रू०भे०—धुंग्रांवराड़।
धुंवो–सं०पु० [सं० धूमः] सुलगती या जलती हुई वस्तुग्रों से निकलने वाली वह भाप जो कोयले के सूक्ष्म ग्रणुग्रों से लदी रहने के कारण कुछ नीलापन या कालापन लिये होती है, धूम।
उ०—ससि-वदनी तो सिर सरळ, मेचक केस म जांण। हिए कांम पावक हुवै, जास धुंवां मन जांण।—बां.दा.
मुहा०—१ धुंवां काडणा—ग्रत्यधिक परिश्रम करना, कार्य समाप्त करना, कुछ भी बाकी नहीं छोड़ना, नाश करना, ध्वंस करना. २ धुंवो उठाणो—नाश करना, ध्वंस करना. ३ धूंवों ऊठणो—नाश होना, समाप्त होना. ४ धूंवो करणो—ग्रत्यधिक खर्च करना, नाश करना. ५ धूंवो धुखणो—चूल्हा जलना, भोजन बनना।
रू०भे०—धुंग्रो, धुवो, धुं, धूंग्रो, धूंवो, धूग्रउ, धूग्रो, धूवो।
ग्रल्पा०—धूंवाड़ो।
धुंग्रर—देखो 'धूंर' (रू.भे.)
धु–स०पु०—१ शरीर, तन. २ धोबी. ३ पवन, हवा.
४ दौड़ (एका.)
५ देखो 'धुंवो' (रू.भे.)
६ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)
उ०—चवदै से चोकड़ी धु कूं वरती, माता कहै समझाई। ग्रापा तप कियो नहीं भव ग्रागलै, जब राजा दवाग दिराई।
—स्री हरिरांमजी महाराज
वि०—१ ग्रधिक, ज्यादा. २ कांपा हुग्रा, कंपित (एका.)
धुक—देखो 'धक' (रू.भे.)
धुकट–सं०स्त्री० [ग्रनु०] मृदंग की ध्वनि। उ०—धुनि ग्रदंग धुधकटस, धुकट धुधुकटस, धुकट धुर। झणणणणण जंत्र झणकि, प्रकट झिम-झिम धुनि नूपर।—सू.प्र.
धुकण–सं०स्त्री० [सं० धुक्ष] १ ग्रग्नि, ग्राग. २ जलन।
रू०भे०—धकरण।
धुकणो, धुकबो–क्रि०ग्र० [सं० धुक्ष] १ प्रज्वलित होना, सुलगना, भभकना, जलना। उ०—१ कमंध जोगेस ग्रादेस सह जग करै, दीध ग्रासीस कर रीम दूणी। धाल ग्रायो तूं हीज वैरियां तणै घर, धुकै धमसाण जीरांण धूणी।—महेसदास कूंपावत रो गीत
उ०—२ नोज किणी सूं लागजो, वैरी छांनो नेह। धुकै न धूंवो नीसरै, जळै सुरंगी देह।—ग्रज्ञात
२ धुग्रां निकलना, धूम्र उठना। उ०—हूं कुमलांणी कंत विण, जळह विहूणी वेल। विणजारा री भाइ जिउं, गया धुकंती मेल्ह।
—ढो.मा.
३ क्रोधित होना, क्रुद्ध होना, कुपित होना।
उ०—१ धुख ऊठिया विन्है भड धुकिया, धारां मांहै धूमिया धड। रुध वाजा नीसांण वीर रस, नाचइ ततथेइ भड निवड।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ तिण सूं उवां री वकवाद घणी वढ़ गयी, लोग सुणै सो दोनूं जायगां ग्रौ ही कहै तिण सूं दोनूं धुक रहिया।
—मारवाड़ रै ग्रमरावां री वारता
४ दुखी होना, कुढ़ना, जलना। उ०—करम फूटगा कहौ कवण नैं जाय'र कैवां। दुवद्या मांहै दुसह रात दिन धुकता रैवा।—ऊ.का.
५ पीड़ित होना, संतप्त होना। उ०—मेखां निहाव पड़ि मेखचां, ताळी तजै तपेसरां। धर धूजि धमक विसहर धुकै, सहस धुकै फण सेस रा।—सू.प्र.
६ नीचे की ग्रोर ढलना, झुकना, नवना। उ०—इळ धुकि लचक सीस ग्रहिवाळा। चंद कटक खड़िया कळ चाळा।—सू.प्र.
७ गेंद की तरह नीचे ऊपर चक्कर खाते गिरना, लुढ़कना।
उ०—विढण सु प्रवि चीग्रोड़ि 'वीर' उत, वह दळ पींजरिया वांणासि। धुक धुक हेक गया धड़ धरती, ग्रध धड़ हेक गया ग्राकासि।
—ईसरदास मेड़तिया रो गीत
धुकणहार, हारो (हारी), धुकणियो—वि०।
धुकवाड़णो, धुकवाड़वो, धुकवाणो, धुकवावो, धुकवावणो, धुकवाववो
—प्रे०रू०।
धुकाड़णो, धुकाड़वो, धुकाणो, धुकावो, धुकावणो, धुकाववो
—क्रि०स०।
धुकिग्रोड़ो, धुकियोड़ो, धुक्योड़ो—भू०का०कृ०।
धुकीजणो, धुकीजवो—भाव वा०।
धकणो, धकवो, धिकणो, धिकवो, धिखणो, धिखवो, धीकणो, धीकवो, धुखणो, धुखवो—रू०भे०।
धुकधुकी–सं०स्त्री० [ग्रनु०] १ कलेजा, हृदय. २ कलेजे की धड़कन. ३ डर, भय, खौफ. ४ देखो 'धुगधुगी' (रू.भे.)
धुकळणो, धुकळवो–क्रि०स—१ नाश करना, संहार करना, युद्ध करना।
धुकळियोड़ो–भू०का०कृ०—नाश किया हुग्रा, संहार किया हुग्रा।
(स्त्री० धुकळियोड़ी)
धुकाड़णो, धुकाड़वो—देखो 'धुकाणो, धुकावो' (रू.भे.)
धुकाड़णहार, हारो (हारी), धुकाड़णियो—वि०।
धुकाड़िग्रोड़ो, धुकाड़ियोड़ो, धुकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
धुकाड़ीजणो, धुकाड़ीजवो—कर्म वा०।
धुकणो, धुकवो—ग्रक० रू०।
धुकाड़ियोड़ो—देखो 'धुकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० धुकाड़ियोड़ी)

घुकाणौ, घुकाबौ–क्रि०स० [सं० धुक्ष्] १ प्रज्वलित करना, सुलगाना, भभकाना; जलाना. २ धुआं निकालना, धूम उठाना.
३ क्रोधित करना, कुपित करना. ४ दुखी करना, कुढ़ाना, जलाना.
५ पीड़ित करना, संतप्त करना।
६ नीचे की ओर पैंठाना, दबाना, धँसाना।
७ लुढ़काना।
घुकाणहार, हारौ (हारी), घुकाणियौ—वि०।
घुकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
घुकाईजणौ, घुकाईजबौ—कर्म वा०।
घुकणौ, घुकबौ—अक०रू०।
घुकाड़णौ, घुकाड़बौ, घुकावणौ, घुकावबौ, घुखाड़णौ, घुखाड़बौ, घुखाणौ, घुखाबौ, घुखावणौ, घुखावबौ—रू०भे०।

घुकायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ प्रज्वलित किया हुआ, सुलगाया हुआ, भभकाया हुआ, जलाया हुआ. २ धुआं निकाला हुआ, धूम उठाया हुआ।
३ क्रोधित किया हुआ, कुपित किया हुआ.
४ दुखी किया हुआ, कुढ़ाया हुआ, जलाया हुआ.
५ पीड़ित किया हुआ, संतप्त किया हुआ।
६ नीचे की ओर पैंठाया हुआ, दबाया हुआ, धसाया हुआ.
७ लुढ़काया हुआ।
(स्त्री० घुकायोड़ी)

घुकार—१ देखो 'घुंकार' (रू.भे.) (अ.मा.)
२ देखो 'धोंकार' (रू.भे.)

घुकारणौ, घुकारबौ—देखो 'धूकारणौ, धूकारबौ' (रू.भे.)

घुकावणौ, घुकावबौ—देखो 'घुकाणौ, घुकावौ' (रू.भे.)
उ०—धोम पात्र कळिधूत धरावै। घूणी चंदण अगर घुकावै।
—सू.प्र.
घुकावणहार, हारौ (हारी), घुकावणियौ—वि०।
घुकाविओड़ौ, घुकावियोड़ौ, घुकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुकावीजणौ, घुकावीजबौ—कर्म वा०।
घुकणौ, घुकबौ—अक० रू०।

घुकावियोड़ौ—देखो 'घुकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुकावियोड़ी)

घुकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ प्रज्वलित हुवा हुआ, सुलगा हुआ, भभका हुआ, जला हुआ. २ धुआं निकला हुआ, धूम उठा हुआ.
३ क्रोधित हुवा हुआ, क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ.
४ दुखी हुवा हुआ, कुढ़ा हुआ, जला हुआ. ५ पीड़ित हुवा हुआ, संतप्त हुवा हुआ. ६ नीचे की ओर पैंठा हुआ, दबा हुआ, धंसा हुआ.
७ (नगारे का) लुढ़का हुआ।
(स्त्री० घुकियोड़ी)

घुकुस–सं०पु० [सं० धुक्ष] आग, अग्नि।

घुक्कणौ, घुक्कबौ—देखो 'घुकणौ, घुकवौ' (रू.भे.)
उ०—घड़हड़ै धरण पुड़ गयण धुखिक।—रा.रू.

घुखणौ, घुखबौ [सं० धुक्ष संदीपने] १ उग्र रूप से रहना, चलना।
उ०—तिण दावै सीसोदियां हाडां रै वैर पड़ियौ, घणा दिन अदावद वुही। घणौ वैर घुखियौ। पछै सीसोदिया सूं हाडा पोंहच सकै नहीं।
—नैणसी
२ देखो 'घुकणौ, घुकवौ' (रू.भे.)
उ०—१ घुख ऊठिया विन्हे भड घुकिया, धारां मांहे घूमिया घड।
रुघ वाजा नीसांण वीर रस, नाचइ ततथेइ भड निवड।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ गढ़वाड़ांय वाद घुखै गढ़ियां। सरदारांय मुज्ज सजै चढ़ियां।
उण ढांणिय कोहर ओटड़ियां। केई दोरि.है तापर कोटड़ियां।
—पा.प्र.
घुखाणहार, हारौ (हारी), घुखाणियौ—वि०।
घुखवाड़णौ, घुखवाड़बौ, घुखवाणौ, घुखवावौ, घुखवावणौ, घुखवावबौ—प्रे०रू०।
घुखाड़णौ, घुखाड़बौ, घुखाणौ, घुखावौ, घुखावणौ, घुखावबौ—क्रि०स०।
घुखाडिओड़ौ, घुखाड़ियोड़ौ, घुखाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुखाड़ीजणौ, घुखाड़ीजबौ—कर्म वा०।

घुखाड़णौ, घुखाड़बौ—देखो 'घुकाणौ, घुकावौ' (रू.भे.)

घुखाड़ियोड़ौ—देखो 'घुकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुखाड़ियोड़ी)

घुखाणौ, घुखाबौ—क्रि०स०—१ जारी रखना, चलाना।
२ देखो 'घुकाणौ, घुकावौ' (रू.भे.) उ०—१ धुअै करि नै तेह घुखाइयं।—ध.व.ग्रं.
उ०—२ छांगौ घुखाइ नै कह्यौ–म्हारा साथी निकळिया।—चौबोली
घुखाणहार, हारौ (हारी), घुखाणियौ—वि०।
घुखायोड़ौ—भू०का०कृ०।
घुखाईजणौ, घुखाईजबौ—कर्म वा०।

घुखायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ जारी रखा हुआ, चलाया हुआ.
२ देखो 'घुकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुखायोड़ी)

घुखावणौ, घुखावबौ—देखो 'घुकाणौ, घुकावौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुखावियोड़ी)

घुखावियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ जारी रहा हुआ, चला हुआ.
२ देखो 'घुकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुकियोड़ी)

घुग–सं०पु० [देश०] मजबूत लट्ठ, सोंटा।

घुगघुगी–सं०स्त्री० [अनु०] १ शरीर को जोर से हिलाने या कँपाने की क्रिया। उ०—केही तीर वाह्या सो डाढ़ाळै रा डील में लागिया पण परलै पासै जाय सागी वरड़ी ऊपर आय खड़ौ रहियौ। घुगघुगी देय भाला तीर उछाळ दिया।—डाढ़ाळा सूर री वात

(मि० घड़घड़ी २)

२ एक प्रकार का ग्राभूषण जो गले में पहना जाता है ग्रौर छाती पर लटकता रहता है।

उ०—१ खरळ मुजरो कर चढ़ण लागो जणां घुगघुगी गळै री एक सिर पेच एक ग्रर घोड़ो एक ग्रवल्ल तरै रो दीन्हो।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ चंद्रहार ऊपर चमक, कंचु(क) जरकस कीन। दमकत कुंदण घुगघुगी, नग प्रतिबिंब नवीन।—बगसीरांम प्रोहित री वात

३ देखो 'घुकघुकी' (रू.भे.)

घुगळी-सं०स्त्री०—समूह, झुण्ड (जयसलमेर)

घुड़की—देखो 'दुड़की' (रू.भे.)

घुड़को-सं०पु० [ग्रनु०] १ किसी वस्तु ग्रादि के गिरने का शब्द.

२ श्वांस लेने से उत्पन्न शब्द, धड़कन।

घुड़ड़णो, घुड़ड़बो-क्रि०ग्र० [देश०] गर्जना, ध्वनि करना।

उ०—हमगमै थाट गहमहै हूर। डहडहै ढुंडं ग्रहग्रहै तूर। रिण तूर रुड़ै तुहड़ै तुरंग। नीसांण घुवै घुड़ड़ै निहंग।—गु.रू.बं.

घुड़ड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—गर्जा हुवा, ध्वनि किया हुग्रा।

(स्त्री० घुड़ड़ियोड़ी)

घुड़णो, घुड़बो-क्रि०ग्र० [देश०] गिरना, ढहना।

ज्यूं—इण गांम रा सारा ही ढूंढ़ा बरसात रै भयंकर तूफांन सूं घुड़ग्या।

घुड़णहार, हारो (हारी), घुड़णियो—वि०।

घुड़वाड़णो, घुड़वाड़बो, घुड़वाणो, घुड़वाबो, घुड़वावणो, घुड़वावबो, घुड़ाड़णो, घुड़ाड़बो, घुड़ाणो, घुड़ाबो, घुड़ावणो, घुड़ावबो—प्रे०रू०।

घुड़िग्रोड़ो, घुड़ियोड़ो, घुड़योड़ो—भू०का०कृ०।

घुड़ीजणो, घुड़ीजबो—भाव वा०।

ढुड़णो ढुड़बो—रू०भे०।

घुड़हड़णो, घुड़हड़बो-क्रि०ग्र० [ग्रनु०] नगाड़े, ढोल ग्रादि का बजना, ध्वनि करना। उ०—वांणासि बेवि वळि वंधि वोल। घुड़हड़िय दमांमा घुबिय ढोल। संग्रांम सजिय सूरा सधीर। मेवाड़ रांण मुहि चडइ मीर।—रा.ज.सी.

घुड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—गिरा हुग्रा, ढहा हुग्रा।

(स्त्री० घुड़ियोड़ी)

घुड़ी—देखो 'धूड़' (रू.भे.)

उ०—ऊपड़ी घुड़ी रवि लागी ग्रंबरि, खेतिए ऊजम भरिया खाद्र। म्रिगसिर वाजि किया किंकर म्रिग, ग्राद्रा वरसि कीघ घर ग्राद्र।

—वेलि.

घुड़कणो, घुड़कबो—देखो 'घड़कणो, घड़कबो' (रू.भे.)

उ०—पतिसाह फउज फूटंति पाळि। ब्रहमंड जइत गाजइ विचाळि। ग्रंब हर जइत वरसइ ग्रवार। घुड़ किया मीर मुहि खग्ग धार।

—रा.ज.सी.

घुड-वि० [देश०] इतना भरा हुग्रा कि दबाने से दब न सके, ग्रन्दर से भरने के कारण कठोर हो जाना।

ज्यूं—घाप'र घुड हुग्या। रोट इतरा पघराया कै घाप'र घुड हुग्या हां।

घुडौ—देखो 'घड़' (रू.भे.)

घुज-सं०पु० [देश०] कलाल जाति या इस जाति का व्यक्ति

(डि.को.)

वि० १ श्रेष्ठ। उ०—साहिब सुतन जादवै सूजो। दळ रखपाळ रघुपति दूजो। सुत इंद्रभांण 'पतो' घुज सूरो। सरद करण खळ विरुद सनूरो।—रा.रू.

२ देखो 'धज' (रू.भे.)

उ०—केजिम सिलह सस्त्र ग्रंग कसिया। ग्रसी सहस ग्रावध ऊससिया। वपि केसरिया साज वणाया। उभै सहंस सिंधुर घुज ग्राया।

३ देखो 'ध्वज' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—पुर ग्रवध सूं हुय निज पगां, मुनि वहै ग्रासम मारगां। संग रांम लक्षमण कुमर दसरथ, धरम घुज रिणधीर।—र.रू.

घुजग्रसमांण-सं०पु० [सं० ध्वज+फा० ग्रास्मांन] सूर्य, भानु (डि.को.)

घुजट्टिय, घुजट्टी—देखो 'धूरजटी' (रू.भे.)

उ०—वहै खग 'धूहड़' सीस विहार। घुजट्टिय सीस जिसी गंगधार। कटै खग झाट ग्रनेक किलम्म। झड़ै सिर तांम सहेत झिलम्म।

—सू.प्र.

घुजडंड-सं०पु० [सं० ध्वजदण्ड] १ ध्वज का दंड. २ घोड़ा।

घुज-घोम-सं०पु०यौ० [सं० ध्वज+घूम:] ग्रग्नि, ग्राग।

उ०—मूंछ रोम उल्लसै, जोम भुज व्योम परस्सै। करण होम केवियां, ति फिर घुज-घोम तरस्सै।—रा रू.

घुजा-सं०स्त्री०—१ प्रथम लघु के ढगण गण के एक भेद का नाम (IS)

२ देखो 'ध्वज' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—धन्य धन्य वह जंगळ धरनी। किल्ला जहां वणायो करनी। सधिर नींव पाताळ सपरसत। धन भुरजाळ घुजा नभ धरसत।

—मे.म.

घुजागड़ो-सं०पु०—कंपायमान होने की क्रिया ?

उ०—छूटै मुठी हात री ग्रागड़ै सूमां पड़ै छाती, खळां ग्रथागड़ै घुजागड़ै खांणेराव। दैणा वीरताई रै मागड़ै राजसींग दूजा, राई तनै पागड़ै लगाया रांणेराव।—जवांनजी ग्राढ़ो

घुजाड़णो, घुजाड़बो—देखो 'धुजाणो, धुजाबो' (रू.भे.)

उ०—हड़ हड़ हसत मसत मदिरा मद, घड़हड़ सेर घुवाड़ै। चड़चड़ चाव जोगण्यां चौसट, गड़धड़ भूमि घुजाड़ै।—मे.म.

घुजाड़णहार, हारो (हारी), घुजाड़णियो—वि०।

घुजाड़िग्रोड़ो, घुजाड़ियोड़ो, घुजाड़योड़ो—भू०का०कृ०।

घुजाड़ीजणो, घुजाड़ीजबो—कर्म वा०।

धूजणो, धूजबो—ग्रक०रू०।

घुजाड़ियोड़ौ—देखो 'घुजायोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुजाड़ियोड़ी)

घुजाणौ, घुजाबौ—क्रि०स० [सं० घू] डांवाडोल करना, डोलाना, हिलाना. २ भयभीत करना, डराना, कंपाना।
घुजावणहार, हारौ (हारी), घुजावणियौ—वि०।
घुजायोडो—भू०का०कृ०।
घुजाईजणौ, घुजाईजबौ—कर्म वा०।
धूजणौ, धूजबौ—अक०रू०।
धुजाड़णौ, धुजाड़बौ, घुजावणौ, घुजाववौ, धुज्जाडणौ, धुज्जाड़बौ, धुज्जाणौ, धुज्जाबौ, धुज्जावणौ, धुज्जाववौ, धूजाड़णौ, धूजाड़बौ, धूजाणौ, धूजाबौ, धूजावणौ, धूजाववौ—रू०भे०।

घुजायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ कंपाया हुआ. २ भयभीत किया हुआ, डराया हुआ।
(स्त्री० घुजायोडी)

घुजावणौ, घुजाववौ—देखो 'घुजाणौ, घुजाबौ' (रू.भे.)
उ०—१ अिग मरोड मोड़णां, धरणि पुड पोड़ घुजावै। दौड़ बसण द्रोपदा, ओड़ जिण रो नह आवै। आखत पग ऊठतां पूठ साखत पखराळी। काच हुळम कोमाच नाच पातर नखराळी।—मे.म.
उ०—२ खरां कहै खरा खरा धरा घुजावते वहै। विकार हैं कुजा कुजा भुजा खुजावते वहै।—ऊ.का.
घुजावणहार, हारौ (हारी), घुजावणियौ—वि०।
घुजाविओड़ौ, घुजावियोड़ौ, घुजाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुजावीजणौ, घुजावीजबौ—कर्म वा०।
धूजणौ, धूजबौ—अक०रू०।

घुजावियोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुजावियोडी)

घुजो—देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)

घुज्जणौ, घुज्जबौ—देखो 'धूजणौ, धूजबौ' (रू.भे.)
उ०—घम घमंकि वज्जत पद घुग्घर। धम धमंकि धुज्जत जंगळधर। रचत रास नच्चत नवरत्ती। स्त्री करणी जय जयति सकत्ती।—मे.म.
धुज्जणहार, हारौ (हारी), धुज्जणियौ—वि०।
धुज्जवाड़णौ, धुज्जवाड़बौ, धुज्जवाणौ, धुज्जवाबौ, धुज्जवावणौ, धुज्जवाववौ—प्रे०रू०।
धुज्जाड़णौ, धुज्जाड़बौ, धुज्जाणौ, धुज्जाबौ, धुज्जावणौ, धुज्जाववौ—क्रि०स०।
धुज्जिओडो, धुज्जियोड़ौ, धुज्ज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धुज्जीजणौ, धुज्जीजबौ—भाव वा०।

घुज्जाड़णौ, घुज्जाडबौ—देखो 'घुजाणौ, घुजाबौ' (रू.भे.)

घुज्जाड़ियोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुज्जाड़ियोडी)

घुज्जाणौ, घुज्जाबौ—देखो 'घुजाणौ, घुजाबौ' (रू.भे.)

घुज्जायोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुज्जायोड़ी)

घुज्जावणौ, घुज्जाववौ—देखो 'घुजाणौ, घुजाबौ' (रू.भे.)

घुज्जावियोड़ौ—देखो 'घुजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुज्जावियोड़ी)

घुज्जियोड़ौ—देखो 'धूजियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुज्जियोड़ी)

घुण—देखो 'धनु' (रू भे.) उ०—झूझंता गयवर गुडि गाजइ घुणह तणा धोंकार। सुंडादंडि ऊपाडी नइ ऊलाळइ असवार।
—विद्याविलास पवाडउ

घुणकणौ, घुणकबौ—देखो 'धुणणौ, धुणबौ' (रू.भे.)
घुणकणहार, हारौ (हारी), घुणकणियौ—वि०।
घुणकिओड़ौ, घुणकियोड़ौ, घुणक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घुणकीजणौ, घुणकीजबौ—कर्म वा०।

घुणकिओडौ—देखो 'धुणियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० घुणकियोड़ी)

घुणकी—देखो 'धुनकी' (रू.भे.)

घुणणौ, घुणबौ—क्रि०स० [सं० धुज्, धूज्] १ धुनकी से रूई साफ करना, धुनना. २ हिलाना, झकझोरना. ३ खूब मारना, पीटना. ४ ध्वनि करना। उ०—बैठा बिजण बिण हिंजरता बारै। धुंघट पिंजर में पिंजण धुणकारै। मुख में बातां रा सुणता संजीरा। मुख में दांतां रा धुणता मंजीरा।—ऊ का.
५ देखो 'धूणणौ, धूणबौ' (रू भे.)
उ०—१ रातां जागण रो जंगळ में रोळो। ढांणी ढांणी में फिरतो ढंढोळो। धुणता नर माथा चुणता घर घाड़ा। पावू हरवू रा सुणता परवाड़ा।—ऊ.का.
उ०—२ धरणीतळ व्याकुळ छेलो सिर धुणियौ। सरणागत वच्छळ हेलो नह सुणियो। लिछमी-वर छांनूं कांनूं ले लीनूं। दीनन बंधू हुय दीनन दुख दीनूं।—ऊ.का.
धुणणहार, हारौ (हारी), धुणणियौ—वि०।
धुणवाडणौ, धुणवाड़बौ, धुणवाणौ, धुणवाबौ, धुणवावणौ, धुणवाववौ, धुणाड़णौ, धुणाड़बौ, धुणाणौ, धुणाबौ, धुणावणौ, धुणाववौ—प्रे०रू०।
धुणिओड़ौ, धुणियोड़ौ, धुण्योड़ौ—भू०का०कृ०।
धुणीजणौ, धुणीजबौ—कर्म वा०।

घुणियाळ—सं०पु० [सं० धनु+आलुच्] १ धनुष को धारण करने वाला, योद्धा।
उ०—१ काळवी कळ मोर तणी करियां। नख चाळ बजै पग नेवरियां। धुणियाळ दुगाळ ढेवाळ धकै। अणियाळ ढालाळ 'पेमाल' अखै।
—पा.प्र.
उ०—२ धुणियाळ धकै चड खैंग घणी। असमांन लगा छड़ियाळ अणी।—पा.प्र.

२ भील जाति का व्यक्ति, भील.
३ वीर पावू राठोड़ का एक नाम।
रू०भे०—घूणियाळ।

घुणियोड़ो–भू०का०कृ०—१ धुनकी से साफ किया हुआ, धुना हुआ. २ झकझोरा हुआ, हिलाया हुआ. ३ खूब मारा हुआ, पीटा हुआ. ४ ध्वनि किया हुआ. ५ देखो 'घूणियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुणियोड़ी)

घुणी—१ देखो 'धुनी' (रू.भे.) उ०—घुणी उण लोहित पाय घपाय। मोड़घा गज-गाहण वाहण माय। चखां जिण जांण मुसाल चसंत। मदा जमरांण नखांनि वसंत।—मे.म.
२ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.) उ०—सलोकां घुणी पाठ दुरगा सुणावै। गुणी माढ़ रै राग सोभाग गावै। वंवी वीण सैतार सैलाय वाजै। अमाळां घुरै मेघ माळा तराजै।—मे.म.
३ देखो 'घूंणी' (रू.भे.)

घुतकार—देखो 'दुत्कार' (रू.भे.)

घुतकारणो, घुतकारवो—देखो 'दुत्कारणो, दुत्कारवो' (रू.भे.)
घुतकारणहार, हारो (हारी), घुतकारणियो—वि०।
घुतकारिग्रोड़ो, घुतकारियोड़ो, घुतकारयोड़ो—भू०का०कृ०।
घुतकारीजणो, घुतकारीजवो—कर्म वा०।

घुतकारियोड़ो—देखो 'दुत्कारियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुतकारियोड़ी)

घुताइय, घुताई—देखो 'धूरतता' (रू.भे.)
उ०—विवोविध दीठो माझ विभूत, घुताइय मूक परी हिव धूत।—ह.र.

घुतारण–सं०पु० [सं० ध्रुव+तारणः] ध्रुव का उद्धार करने वाला, विष्णु, हरि।

घुतारी–वि०स्त्री० [सं० धूर्तता धारिन्] १ माया रचने वाली।
उ०—देवी नारि रै रूप पुरुसां घुतारी। देवी पुरुसां रूप नारी पियारी। देवी रोहणी रूप तूं सोम भावै। देवी सोम रै रूप तूं सुधा स्रावै।—देवि.
२ छल-छिद्र करने वाली, धूर्त। उ०—हाथ जोड़ी नै विनती करती, वयण विनय सूं माखै रे। म्हारै ऊपर किरपा कीजै, हूं कहूं छुं सहू नो सारै रे। रांणी एक घुतारी रे, वोलै मीठा वोल करसी नवारी रे।—जयवांणी
३ कुटनी का कार्य करने वाली, दूती।
४ देखो 'घूतारी' (रू.भे.)

घुतारो–वि०पु० [सं० धूर्तः] १ धूर्त, कपटी.
२ ठगने वाला, ठग।

घुत्त—देखो 'धूरत' (रू.भे.) (जैन)

घुघकट—देखो 'घुघुकट' (रू भे.)
उ०—धुनि म्रदंग घुघकट स धुकट घुघुकटस धुकट घुर।—सू.प्र.

घुघकार—देखो 'दुत्कार' (रू.भे.)

घुघकारणो, घुघकारवो—देखो 'दुत्कारणो, दुत्कारवो' (रू.भे.)
उ०—हरांमीखोर हूंतां जनम हारियो, वूहड़ां मड़ां दसदेस घुघकारियो। धूप हर तीन सूरज तपै धारियो, ठाकरां हमरकै घड़ी नह ठारियो।—महादांन महड़ू

घुघकारियोड़ो—देखो 'दुत्कारियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुघकारियोड़ी)

घुघड–वि० [अनु०] सीधा।

घुघुकट–सं०पु० [अनु०] तबले का बोल। उ०—धुनि म्रदंग घुघकट स धुकट घुघुकट स धुकट घुर। झणणणणणण जंत्र झणकि प्रगट झिम झिम धुनि नूपर।—सू.प्र.
रू०भे०—घुघकट, घूघूकट।

घुघुकार–सं०स्त्री० [अनु०] १ घू घू शब्द का शोर. २ आग की लपटों से उत्पन्न ध्वनि. ३ घोर शब्द, कड़ा शब्द. ४ झंझावात युक्त भयंकर दुष्काल, वह दुष्काल जिसमें भयंकर झंझावात का प्रकोप हो.
रू०भे०—घुवकार, घूवुकार, घूघूकार।

घुनंकणो, घुनंकवो–क्रि०अ० [अनु०] ध्वनि करना।
उ०—हनंकिय वाजि मिळे दुहु ओर, घुनंकिय तोप धुनी उडि सोर। गनंकिय तोप तुपक्कनि-भक्ख, मनंकिय आंमिख-हारन लक्ख।—लावारासा

घुनंकियोड़ो–भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ।
(स्त्री० घुनंकियोड़ी)

घुन–सं०स्त्री० [देश०] १ किसी कार्य को निरंतर करते रहने की इच्छा, लगन। उ०—अजीत लगी जिय जोग अगाध। सुजीत लगी घुन ध्यांन समाध।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—लागणी।
२ मन की तरंग।
क्रि०प्र०—ऊठणी।
३ वुद्धि (अ.मा.) ४ सम्पूर्ण जाति का एक राग (संगीत)
[सं० ध्वनि] ५ स्वरों के उतार चढ़ाव के हिसाब से किसी गीत को गाने का ढंग। ज्यूं—इण गीत नै केई घुनां में गाय सकां।
६ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.) उ०—१ इंद्रधनुस तणियो अजब, चातुक घुन मन चाव। वीज न मावै वादळां, रसिया तीज रमाव।—बां.दा.
उ०—२ हीरां सूती महल में, सखियां तणै समाज। विरखा रिति आई विसम, गगन घटा घुन गाज।—वगसीरांम प्रोहित री वात
उ०—३ उपमा रस व्यंग घुन उकत, जुगत अलंकृत जास। भूअत जस खट भाख……, पिंगळ छंद प्रकास।—क.कु.वो.
रू०भे०—घुनि, घुनो, घून, घूनी।

घुनवेत्ता–सं०पु० [सं० ध्वनि-वेत्ता] साहित्य में ध्वनि को जानने वाला।

घुनि—१ देखो 'घुन' (रू.भे.)
उ०—१ पकवांन जलेबिय पावन कौं, गहरी घुनि रागनि गावन कौं।

नव नार सुयार निजारन कौं, धर नूतन वस्त्र सु धारन कौं ।—ऊ.का.

उ०—२ अपछरांन मारू पह इधक, सरस गीत संगीत धुनि । ऐहड़ अखाड़ै सूं गयौ, सूरसिंघ सुरगह भवनि ।—गु.रू.बं.

२ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.)

उ०—१ वेद चव भेद खट तरक नव व्याकरण वळै, खट भाख जीहा वखांणै । भांत पौरांण दस आठ पिंगळ भरथ, उगत जुगतां तणां भेद आंणै । राग खटत्तीस धुनि व्यंग भूखण सुरस प्रात पद । जिकै विण समझ चंडूळ पंखी जिही जे न रघुनाथ चौ नांम जांणै ।
—र.ज.प्र.

उ०—२ दांत दमकै अहर दुत, जांण चमकै वीज । ज्यांरी धुनि मधुरी सुणै, रहै तपोघन रीज ।—वां.दा.

उ०—३ घुवे रणताळ सझाळ नृघोम । हकां धुनि वेद करै इम होम ।—सू.प्र.

उ०—४ मुरळी नळी संख धुनि मार्थां । हाथी कांन ताल वजि हाथां ।—सू.प्र.

३ देखो 'धुनी' (रू.भे.)

घुनिग्रह—देखो 'ध्वनिग्रह' (रू.भे.) (ह.नां.)

घुनिया-सं०स्त्री० [सं० धुन्, धून्] रूई धुनने का कार्य करने वाली एक जाति । उ०—वस रौहाण वास सुबास विभू, प्रगट्टे दरिया निज दास प्रभू । भवतारन कारन नेह भरी, घुनिया कुळ में धिन देह धरी ।
—ऊ.का.

घुनियौ-सं०पु० [सं० धुन्] 'घुनिया' जा त का व्यक्ति ।

घुनी-सं०स्त्री० [सं०] १ नदी, सरिता (डिं.को.)

उ०—भीमा धुनी पयस्वनी, गोदावरी गहीर । ऊंनत भद्रा पूरणा, किसना निरमळ नीर ।—वां.दा.

२ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.)

रू०भे०—घुणी, घूणी ।

३ देखो 'धुन' (रू.भे.) ४ देखो 'धूंणी' (रू.भे.)

घुनीग्रह—देखो 'ध्वनिग्रह' (रू.भे.) (ह.नां., अ.मा.)

घुनौ-वि० [देश०] श्रेष्ठ, वढ़िया ।

उ०—धं की वेस माता ताता सुभावां सलोचा घुना, पड़ै टलां कोट चुना स चेजा पाखांण । धूप धार असी चौड़ै जुना हूंत मोह धारै, करगां दीवांण छुना उबारै केकांण ।—महादांन महडू

घुपटणौ, घुपटबौ—देखो 'धूपटणौ, धूपटबौ' (रू.भे.)

घुपटणहार, हारौ (हारी), घुपटणियौ—वि० ।

घुपटिओड़ौ, घुपटियोड़ौ, घुपटयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

घुपटीजणौ, घुपटीजबौ—कर्म वा० ।

घुपटियोड़ौ—देखो 'धूपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घुपटियोड़ी)

घुपणौ, घुपबौ-क्रि०अ० [सं० धूप्ःसंतापे] १ क्रोधित होना, क्रुद्ध होना. २ दूर होना, हटना. ३ मिटना.

४ धोया जाना, धुलना । उ०—१ सरीर सूं अनेक प्राचत वण आवै तिकै और कोई तरै सूं उतरै नहीं नै जुध रै धारा तीरथ में सह पाप धुप जावै अनै सरीर निकळंक होय जावै छै ।—वी.स.टी.

उ०—२ बंध बंदूकां वंध, धुपै छौळां जळधारां । दिपै फूल दारुवां रजिक पाड़िजै अपारां ।—सू.प्र.

घुपणहार, हारौ (हारी), घुपणियौ—वि० ।

घुपवाड़णौ, घुपवाड़बौ, घुपवाणौ, घुपवावौ, घुपवावणौ, घुपवावबौ, घपाड़णौ, घुपाड़बौ, घपाणौ, घुपावौ, घुपावणौ, घुपावबौ—प्रे०रू० ।

घोवणौ, घोवबौ—सक रू० ।

घुपिओड़ौ, घुपियोड़ौ, घुप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घुपीजणौ, घुपीजबौ—भाव वा० ।

घुपाड़णौ, घुपाड़बौ—देखो 'घुपाणौ, घुपावौ' (रू.भे.)

घुपाड़णहार, हारौ (हारी), घुपाड़णियौ—वि० ।

घुपाड़िओड़ौ, घुपाड़ियोड़ौ, घुपाड़योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घुपाड़ीजणौ, घुपाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

घुपाड़ियोड़ौ—देखो 'घुपायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घुपाड़ियोड़ी)

घुपाणौ, घुपावौ-क्रि०स० ('घुपणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ धुलाना, स्वच्छ कराना. २ दूर कराना, हटाना. ३ मिटाना.

४ क्रोधित करवाना ।

घुपाणहार, हारौ (हारी), घुपाणियौ—वि० ।

घुपायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

घुपाईजणौ, घुपाईजबौ—कर्म वा० ।

घुपणौ, घुपबौ—अक०रू० ।

घुपाड़णौ, घुपाडबौ, घुपावणौ, घुपावबौ, घुवाड़णौ, घुवाड़बौ, घुवाणौ, घुवावौ, घुवावणौ, घुवावबौ—रू०भे० ।

घुपायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धुलाया हुआ, स्वच्छ कराया हुआ. २ दूर कराया हुआ, हटाया हुआ. ३ मिटवाया हुआ.

४ क्रुद्ध करवाया हुआ ।

(स्त्री० घुपायोड़ी)

घुपारणौ—देखो 'धूपियौ' (रू.भे.)

घुपावणौ, घुपावबौ—देखो 'घुपाणौ, घुपावौ' (रू.भे.)

घुपावणहार, हारौ (हारी), घुपावणियौ—वि० ।

घुपाविओड़ौ, घुपावियोड़ौ, घुपाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

घुपावीजणौ, घुपावीजबौ—कर्म वा० ।

घुपणौ, घुपबौ—अक०रू० ।

घुपाविओड़ौ—देखो 'घुपायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घुपावियोड़ी)

घुपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धुला हुआ. २ दूर हुवा हुआ.

३ मिटा हुआ ।

(स्त्री० घुपियोड़ी)

घुपेड़ौ, घुपेरणौ—देखो 'धूपियौ' (रू.भे.)

घुघ-सं०पु०—क्रोधाग्नि, क्रोध, कोप।
घुघचाळ-सं०पु० [सं० घूप-संतापे] कंपन, थरथराहट ।
उ०—गिरमाळ गर्जे घुघचाळ घरां। पड़ताळ पगां तम जाळ तुरां। हृद सागर ज्यूं दळ गोड हरा।—फ.कु.बो.
घुबणौ, घुबबौ-क्रि०अ० [सं० घूप संतापे] १ नगारा, ढोल आदि का बजना, ध्वनि करना। उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति राजांन राजावत अैराव रै रिणखेत हाथी आयो छै। रिण जीत नगारा घुबै छै। फतै रा सैदांनां वागा छै।—रा.सा.सं.
उ०—२ समर घुबै आंबाट होय नाद सिवू सबद, खहण लागै गयण भुगत खार्थै। खेंग ओतोळियो सबळ रै बड़ खत्री, 'माहवै' मूगलां घड़ा मार्थै।—भाटी महासिंघ मोही री गीत
उ०—३ बांणासि वेवि बळि वंधि बोल। घुड़हड़िय दमांमा घुबिय ढोल!—रा.ज.सी.
२ तोपां, बन्दूकों आदि का छूटना, ध्वनि करना।
उ०—१ निछट बांण घड़ड़ घुब नाळां, घर रांण होए तो घकचाळ। माझी अवर मुड़ंतां मंडियो, तूं तेगां पावर रणताळ।
—रावत प्रिथ्वीसिंघ चूंडावत आंमेट री गीत
उ०—२ धोम धड़हड़ अनड़ दीठ तोपां घुबै, रीठ पड़ि दड़ड़ गोळां विरोधा। 'अजा' रै हेक जोधार थाभै असुर, जवन रा हेक इकवीस जोधा।—सू.प्र.
३ वाद्यों का बजना, ध्वनि होना। उ०—रजा ब्रह्म री रूप अनेक रम्मं। घणा वाजणा घूवरा घम्मघम्मं। घटा भद्द ज्यों नद्द आंनद्ध घोरै। घुबै तास कंसाळ सांगीत थोरै।—मे.म.
४ क्रोध मे जलना, क्रोधित होना।
५ प्रज्वलित होना, जलना। उ०—घुबि चराकां हा दिन धौळै, मादिन सोर मचायो। नाद सुवाद्यन पत्ति निसादिन, सादिन नहीं सुहायो।—ऊ.का.
६ युद्ध होना, संग्राम होना।
उ०—घांनक कर धूंकार, पाराघी आया पुळै। वुहो हको जिण वार, पिड़ घुबिया दोहु नरपत्ती।—पा.प्र.
७ नष्ट होना, कटना।
उ०—घुबै खळ 'नाहर' बीजळ धार। जुरावरसींघ तणो जुधवार।
—सू.प्र.
८ प्रचण्ड होना, तीव्र होना, तेज होना।
उ०—१ हाक निहाव अंबर घर हुबियो। घुबतो समर चोगुणो घुबियो। 'पदम' हिलै क छिलै दघ पाजा। राजा हूंत सांमुहो राजा।
—सू.प्र.
उ०—२ हर अत हार मुनंद क्रत हासै, पड़िया जुध कमधज पनरासै। 'सेर' उवर दारण घण सारां, घुबिया खिजै विगुण खग धारां।
—सू.प्र.
उ०—३ 'द्वारावत' सूर 'अनोप' दुम्फाळ। खगां झट भांण दिखावत ख्याल। तठै घुबियो जुघ लोह अताघ। वाहै खग 'भांण' समोभ्रम 'वाघ'।—सू.प्र.
९ जोश पूर्ण होना। उ०—घुबै राग सिंघवां, गर्जे नाळियां त्रंबागळ। मेळा भड़ गहमहै, वहै गोळा वींझाफळ।—सू.प्र.
क्रि०स०—१० प्रहार करना, वार करना।
घुबणहार, हारो (हारी), घुबणियो—वि०।
घुबवाड़णो, घुबवाड़बो, घुबावणो, घुबाववो, घुबवावणो, घुबवाववो,
—प्रे०रू०।
घुबाड़णो, घुबाड़बो, घुबाणो, घुबावो, घुबावणो, घुबाववो
—क्रि०स०।
घुबिओड़ो, घुबियोड़ो, घुब्योड़ो—भू०का०कृ०।
घुबीजणो, घुबीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।
घुब्बणो, घुब्बबो, घुवणो, घुववो, घूबणो, घूबबो, घ्रुबणो, घ्रुबबो
—रू०भे०।
घुबाक, घुबाख-सं०स्त्री० [देश०] १ नीची जगह।
उ०—घुरी घुबाखां पुरी, कुरी कुत्रै ज्यूं भावै। लाख संखियां लियां घूळिया पाळ बंधावै।—दसदेव
२ देखो 'धमाक' (रू.भे.)
घुबाड़णौ, घुबाड़बौ—देखो 'घुबाणौ, घुबावौ' (रू.भे.)]
घुबाड़णहार, हारो (हारी), घुबाड़णियो—वि०।
घुबाड़िओड़ो, घुबाड़ियोड़ो, घुबाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
घुबाड़ीजणो, घुबाड़ीजबो—कर्म वा०।
घुबणो, घुबबो—अक०रू०।
घुबाड़िओड़ो—देखो 'घुबायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुबाड़ियोड़ी)
घुबाणौ, घुबावौ-क्रि०स० [सं० घूप संतापे] १ जलाना, प्रज्वलित करना।
उ०—दयतां का एवास सब जद आग जळाया। महलां ऊपर फुदकफुदक सब सहर घुबाया।—केसोदास गाडण
२ नगारा, ढोल आदि बजाना. ३ तोपों, बन्दूकों आदि को छोड़ना.
४ वाद्य बजाना, ध्वनि करना. ५ क्रोधित करना, कुपित करना.
६ युद्ध करना, संग्राम करना. ७ नष्ट करना, काटना.
८ प्रहार करना. ९ प्रचण्ड करना, तीव्र करना, तेज करना.
१० जोशपूर्ण करना।
घुबाणहार, हारो (हारी), घुबाणियो—वि०।
घुबायोड़ो—भू०का०कृ०।
घुबाईजणो, घुबाईजबो—कर्म वा०।
घुबणो, घुबबो—अक०रू०।
घुबाड़णो, घुबाड़बो, घुबावणो, घुबाववो—रू०भे०।
घुबायोड़ो-भू०का०कृ०—१ नगारा, ढोल आदि बजाया हुआ.
२ वाद्य बजाया हुआ, ध्वनि किया हुआ. ३ तोपों, बन्दूकों आदि को छोड़ा हुआ. ४ प्रज्वलित किया हुआ, जलाया हुआ.
५ क्रोधित किया हुआ, कुपित किया हुआ.

६ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. ७ नष्ट किया हुआ, काटा हुआ. ८ प्रहार किया हुआ. ६ प्रचण्ड किया हुआ, तीव्र किया हुआ. १० जोशपूर्ण किया हुआ।
(स्त्री० घुवायोड़ी)

घुवावणो, घुवावबो—देखो 'घुवाणो, घुवावो' (रू.भे.)
घुवावणहार, हारो (हारी), घुवावणियो—वि०।
घुवाविश्रोड़ो, घुवावियोड़ो, घुवाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
घुवावीजणो, घुवावीजबो—कर्म वा०।
घुबणो, घुबबो—अक०रू०।

घुवाविश्रोड़ो—देखो 'घुवायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुवावियोड़ी)

घुबियोड़ो-भू०का०कृ०—१ ध्वनि किया हुआ, बजा हुआ (नगाड़ा, ढोल, वाद्य आदि) २ छूटा हुआ, चला हुआ, (तोप, बंदूक आदि) ३ क्रोध में जला हुआ, क्रोधित हुवा हुआ।
४ प्रज्वलित हुवा हुआ, जला हुआ. ५ युद्ध हुवा हुआ, संग्राम हुवा हुआ. ६ नष्ट हुवा हुआ, कटा हुआ.
७ प्रहार किया हुआ, चोट लगाया हुआ, वार किया हुआ.
८ प्रचण्ड हुवा हुआ, तेज हुवा हुआ, तीव्र हुवा हुआ.
६ जोशपूर्ण हुवा हुआ।
(स्त्री० घुबियोड़ी)

घुब्बणो, धुब्बबो—देखो 'घुवणो, घुववो' (रू.भे.)
उ०—राठौड़ रिणवट वद्धि ! जमदूत निहटा जुद्धि। हकळळ हूकळ हुब्बि, दम्मांम दोमझि घुब्बि।—गु रू.वं.

घुब्बियोड़ो—देखो 'घुबियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुब्बियोड़ी)

घुमची-सं०स्त्री०—देखो 'दुमची' (रू.भे.)

घुमाळ-सं०स्त्री० [रा० घू=मस्तक+सं० माला] मुण्ड-माला।
उ०—कळकै चामंडा चलै संभु घुमाळ रै काज, तठै वाज रुकै भाळ रै तमास। हुआं प्रात समै प्रळै काळ रै होवतां हलो, 'चांपा' लंकाळ रै घकै वागां चंद्रहास।—मोडजी आढ़ी

घुम्मदोस-सं०पु० [सं० धर्म्म+दोष] जैनियों के अनुसार भोजन की निन्दा करने पर माना जाने वाला एक दोष।

घुरंडी—देखो 'घूळेरी' (रू.भे.)

घुरंधर-वि० [सं०] १ उठाने वाला, धारण करने वाला।
उ०—साभाव की सक्ति समुद्र तैं गंभीर, जुद्ध की वेर सुमेर तैं सघीर। सूरज वंस के सूरज सूरज के रूप। कुळ भार-धुरंधर धमल तैं अनूप।—रा.रू.
२ जो सब से भारी, बड़ा और बली हो, जबरदस्त, महान्।
उ०—१ घांघू कुळ हरदास धुरंधर, वळै रांम जोड़ै वीरवर। 'उर-जावत' दोनूं भड़ आगळ, अधपत सुछळ लियां व्रत उज्जळ।
—रा.रू.
उ०—२ धरमवंत सुत वडो घुरंधर। दादा सूरराज छक उंबर।
—सू.प्र.
३ प्रधान, मुखिया, नेता। उ०—जिण समय वळभद्र नांम मेड़तियो राठोड़ धाड़ायतां में धुरंधर कहावै। जिण रा आतंक करि दूर दूर रै मारग भी सौदागर न हालै।—वं.भा.
सं०पु०—रामायण के अनुसार एक राक्षस जो प्रहस्त का मंत्री था।
रू०भे०—घोरींधर।

घुर-सं०पु० [सं० धुर्] १ बोझ, भार। उ०—१ रसिक जिकण जग रटत। मुण रघुवर अघ मटत। धनख धरण धुर धमळ। 'किसन' समर मुख कमळ।—र.ज.प्र.
उ०—२ धरहरिया चर थापिया, मातै सांवण मास। विण वोहलिया वापड़ा, अै धुर हूंत उदास।—वां.दा.
२ कर्जा लेने वाला, कर्जदार, ऋणी, आसामी।
उ०—१ आंना अध आंना अरथ, तुरत विगाड़ै तांन। वदळै तुस रै वांणियो, धुर गोढा लै धांन।—वां.दा.
उ०—२ करतां वहु कागद मुकता कर, कब वोहरो यह अरज करै। खूबी करां ऊग्रावां खावां, सदा सबळ धुर गरज सरै।—गोगादांन
उ०—३ धुर धुर कर कर नर लागा धीरावण। सोने चांदी रो करग्या सीरावण।—ऊ.का.
रू०भे०—धर।
अल्पा०—घुरियो।
३ देखो 'घुरी' (मह., रू भे.)
४ निश्चय। उ०—एकोतरै अठारसो, सांवण दसमी स्यांम। बुध धुर रची वतीसका, पोखण सुकव तमांम।—वां.दा.
५ प्रारम्भ, शुरू।
उ०—१ धुर तैं भ्रम भंजन नांम धरै, भ्रमहीं भ्रम तैं मन वुधि भरै। कुळ लाज अजाद सुत्याग करो, सुभ साध समाज सदा सुमरो।
—ऊ.का.
६ यान-मुख (डिं.को.) ७ बैलों आदि के कंधों पर रखा जाने वाला जुआ। उ०—महीथळ गढां मचोळ, नर केई होवै निवळ। धुर आयां विन धोळ, भार न खांचै भैरिया।—रतलांम नरेस बळवंतसिंघ
८ देखो 'घुराऊ' (रू.भे.) उ०—फागणियो ओढूं तो रे, धुर में चमकै बीजळियां।—लो.गी.
६ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)
वि०—१ प्रारम्भ का, प्रथम का। उ०—कहि धरा पूर धुर कथा विसवामित्र विवध।—रांमरासो
२ प्रथम, पहला। उ०—१ साच दिखावण झूठ दा, धुर झूठ धरंदा।—केसोदास गाडण
उ०—२ सझ तेरह धुर फेर दस, जांणै निस्रेणी। रिख नारी तरगी हरी, परसत पग रैणी।—र.ज.प्र.
उ०—३ अमसी कहै वधतै धनें, त्रिसना वधै अथाग। धुर थी अधिकी धग-धगइ, इंधन मिळियां आग।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ आज धुराऊ अरण धूंधळौ ए, पिरिणहारी ए लो। कोई मोटोड़ी छांटां रौ बरसै मेह वाला जी ओ।—लो.गी.

वि०—उत्तर दिशा का।

रू०भे०—धराउ, धराऊ, धरावू, धुर, धुराद, धोराऊ।

धुराद-क्रि०वि० [सं० धुर्+रा०प्र० आद] १ आदि काल से, आरम्भ से। उ०—मही प्रमार री थिरू, हूती धुराद मंड सू। अरोग भोम भूप आय, हो जको अफंद सू।—पा.प्र.

२ देखो 'धुराऊ' (रू.भे.)

धुराळ-वि० [सं० धुर्+आलुच्] प्रथम, पूर्व।

उ०—जनमाळ धुराळ दुधाळ सिरज्जत, काळ ते क्यों न गवाळ करें।
—करुणासागर

सं०पु०—रथ, बैलगाड़ी या अन्य किसी यान के अगले हिस्से में पिछले हिस्से की अपेक्षा अधिक बोझ हो जाने से संतुलन बिगड़ने की क्रिया।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

रू०भे०—धराळ।

धुरि-वि० [सं० धुर्] १ प्रथम, पहला। उ०—स्रीसरसति धुरि वीनवउ, मागुं बुद्धि प्रकास। अहमद गुण वक्खांणतां, मझ मनि पूजउ आस।—व.स.

२ प्रधान, मुख्य। उ०—जोतां नविरस एणि जुगि, सवि हूं धुरि सिणगार। रागइं सुर-नर रंजियइं, अबळा तसु आधार।—ढो.मा.

३ श्रेष्ठ, सर्वोत्तम। उ०—तसु घरि नंदन च्यारि निरोपम पहिलउ धुरि धनसार। बीजउ बंधव बहुगुण भवित बुद्धिवंत गुणसार।
—विद्याविलास पवाडउ

[प्रा० धुरिअ, अप० धुरिय=दीर्घ] ४ लम्बा, दीर्घ।

उ०—धमधमिउ धुरि नाद नीसांण नउ। गहगहिउ सुरव्रग सम्मांण नउ।—विराट पर्व

क्रि०वि० [स० धुर्] प्रारम्भ में। उ०—रसहि राज्यकळा धुरि आदरी। अवरि मूळ लगइ स निरकारी।—जयसेखर सूरि

सं०पु०—सिरहाना। उ०—पहिलउं आवइ गुरु गगेउ, धायरट्ठ धुरी बइसइं राउ। विदुर क्रिपा गुरु अवर नरिंद, मचि चडया सोहइ जिम चंद।—पं.पं.च.

रू०भे०—धुरी।

धुरिया-सं०स्त्री०—पँवार वंश की एक शाखा।

धुरियामलार, धूरीयामलार-सं०पु० [देश० धुरिया+मल्लार] सम्पूर्ण जाति का एक प्रकार का मल्लार जिसमें सभी शुद्ध स्वर लगते हैं।

धुरियौ-सं०पु०—१ पँवार वंश की 'धुरिया' शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'धुर' (२) (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.) (शेखावाटी)

३ देखो 'धुरौ' (अल्पा., रू.भे.)

धुरी-सं०स्त्री०—१ देखो 'धुरौ' (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

२ देखो 'धुरि' (रू.भे.)

धुरीण-वि० [सं०] १ बोझा सम्भालने वाला, वहन करने वाला.

२ प्रधान, मुख्य। उ०—वाल्हा तूं तउ हो धरम धुरीण, पर उपगारी परगडउ। वाल्हा मुझ नइ हो देखी दीण, सेवक करिनइ तेवड़उ।—वि.कु.

३ पंडित।

धुरू—देखो 'ध्रुव' (रू.भे.) उ०—रांम नांम परताप, धुरू अवचळ हुइ रहियौ।—ह.र.

धुरेंडी—देखो 'धूळेंरी' (रू.भे.)

धुरौ-सं०पु० [सं० धुर्] १ बैलों के कंधों पर रखा जाने वाला जुआ।

२ पहिये की गड़ारी, अथवा कूप से जल निकालने वाली चरखी या घिरनी के बीचोंबीच रहने वाला लकड़ी या लोहे का वह डंडा जिसमें पहिया या चरखी पहनाई रहती है और जिस पर वह घूमती है, धुरा, अक्ष, ध्रुरी (रू.भे.)

अल्पा०—धुराई, धुरियौ, ध्रुरी।

मह०—धुर।

धुलंडी—देखो 'धूळेरी' (रू.भे.)

धुलणौ, धुलबौ-क्रि०अ० [राज० धोणौ का अक० रू०, सं० धावनम्] धोया जाना, धुलना।

ज्यूं—मेह रा पांणी सूं म्हारी गाडी सांतरी धुल गई है।

धुलणहार, हारौ (हारी), धुलणियौ—वि०।

धुलवाड़णौ, धुलवाड़बौ, धुलवाणौ, धुलवाबौ, धुलवावणौ, धुलवावबौ, धुलाड़णौ, धुलाड़बौ, धुलाणौ, धुलाबौ, धुलावणौ, धुलावबौ
—प्रे०रू०।

धुलिओड़ौ, धुलियोड़ौ, धुल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धुलीजणौ, धुलीजबौ—भाव वा०।

धोणौ, धोबौ, धोवणौ, धोवबौ—सक०रू०।

धुलहड़ी, धुलहडी-सं०स्त्री० [सं० धूलिपटिका] हिंदुओं का एक त्योहार जो होलिकोत्सव के बाद मनाया जाता है। रजोत्सव।

वि०वि०—देखो 'धूळेंरी'।

धुलाई-सं०स्त्री० [सं० धावनम्] १ धोने का कार्य या भार.

२ धोने की मजदूरी।

धुलाड़णौ, धुलाड़बौ—देखो 'धुलाणौ, धुलाबौ' (रू.भे.)

धुलाड़णहार, हारौ (हारी), धुलाड़णियौ—वि०।

धुलाड़िओड़ौ, धुलाड़ियोड़ौ, धुलाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धुलाड़ीजणौ, धुलाड़ीजबौ—कर्म वा०।

धुलणौ, धुलबौ।—अक०रू०।

धुलाड़ियोड़ौ—देखो 'धुलायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धुलाड़ियोड़ी)

धुलाणौ, धुलाबौ-क्रि०स० ('धोणौ' क्रिया का प्रे०रू०, 'धुलणौ' क्रिया का प्रे०रू०) स्वच्छ करवाना, धुलवाना, धुलना।

धुलाणहार, हारौ (हारी), धुलाणियौ—वि०।

धुलायोड़ौ—भू०का०कृ०।

घुलाईजणो, घुलाईजवो—कर्म वा० ।
लणो, घुलवो—अक०रू० ।
घुलाड़णो, घुलाडवो, घुलावणो, घुलाववो—रू०भे० ।
घुलायोड़ो—भू०का०कृ०—स्वच्छ करवाया हुआ, घुलवाया हुआ ।
(स्त्री० घुलायोड़ी)
घुलावट—स०स्त्री० [स० धावनम्] धोना क्रिया या भाव ।
ज्यूं०—इण धोबी री घुलावट स्करी है । थारै कपड़ां री घुलावट ठीक नी छै ।
घुलावणो, घुलाववो—देखो 'घुलाणो, घुलावो' (रू.भे.)
घुलावणहार, हारो (हारी), घुलावणियो—वि० ।
घुलाविओड़ो, घुलावियोड़ो, घुलाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
घुलावीजणो, घुलावीजवो—कर्म वा० ।
घुलणो, घुलवो—अक०रू० ।
घुलावियोड़ो—देखो 'घुलायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुलावियोड़ी)
घुलियोड़ो—भू०का०कृ०—स्वच्छ हुवा हुआ, घुला हुआ ।
(स्त्री० घुलियोड़ी)
घुलियो—सं०पु०—देखो 'धूल' ? (अल्पा., रू.भे.)
उ०—साथण्यां तो आ चरचा करी, घोक छै थारा जोयणां । वर्चे कठा सूं आदमी, लागो घुलियो लोयणां । तनै तो अणां री दया ई नै आवै छै, अवै तो वगसि । आछा आछा आदमी तड़ाछ खावै छै ।
—पनां विरमदे री वात
घुळी—देखो 'धूड़' (रू.भे.)
उ०—महिमेर मेहागिर मेखळा, थियो घुळी रवं धूंधळा ।—गु.रू.बं.
घुलेंडी, घुलेडी, घुलेरी—देखो 'धूळेरी' (रू.भे.)
घुव—सं०पु०—१ कोप, क्रोध (डिं.को.)
२ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—१ पवै कुळ आठ (सात) ह सात समंद, उचारै नांम करै आणंद । रवी घुव चंदह ध्यांन धरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस ।
—ह.र.
घुवड़—सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा. ख्यात)
घुवणो, घुववो—१ देखो 'धुवणो, धुववो' (रू.भे.)
उ०—गुंजार व गैमरां घुवे हव सांभळ ढोलां, जादम सूं कर जंग फवै थिर भारी बोलां ।—द.दा.
२ देखो 'धुळणो, धुळवो' (रू.भे.)
घुवमंडळ—देखो 'ध्रुवमंडळ' (रू.भे.)
घुवराज—देखो 'ध्रुव' ।
उ०—आए पूरव हूं पछिम एम । जग कीध रांज घुवराज जेम ।
—सू.प्र.
घुवसंधि—देखो 'ध्रुवसंधि' (रू.भे.)
उ०—१ 'पुखं' संभ्रम घुवसंधि प्रथिपति । सुत सुदरसण उदारह दति सति ।—सू.प्र.
घुवांकस—देखो 'धुंवांकस' (रू.भे.)
घुवांधज—देखो 'धूमधज' (रू.भे.)
घुवांधार—देखो 'धुंआंधोर' (रू.भे.)
घुवांधुज—देखो 'धूमधज' (रू.भे.)
घुवांधोर—देखो 'धुंआंधोर' (रू.भे.)
घुवांन—देखो 'ध्वनि' (रू.भे.)
घुवाड़णो, घुवाड़वो—क्रि०स०—१ दौड़ाना ।
उ०—हड़ हड हसत, असत मदिरा मद, धड़ हड़ सेर घुवाड़ै । चड़ चड माव जोगण्यां चोसट, धड़धड़ भूमि धुजाड़ै ।—मे.म.
२ देखो 'धुपाणो, धुपावो' (रू.भे.)
घुवाड़णहार, हारो (हारी), घुवाड़णियो—वि० ।
घुवाड़िओड़ो, घुवाडियोड़ो, घुवाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
घुवाड़ीजणो, घुवाड़ीजवो—कर्म वा० ।
घुवणो, घुवबो—अक०रू० ।
घुवाड़ियोड़ो—भू०का०कृ०—१ दौड़ाया हुआ.
२ देखो 'धुपायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुवाडियोड़ी)
घुवाणो, घुवावो—देखो 'धुपाणो, धुपावो' (रू.भे.)
ज्यूं०—आज धोबी कै जा'र सै कापड़ा धुवा देस्यूं, काल गांव जाणो छै ।
घुवाणहार, हारो (हारी), घुवाणियो—वि० ।
घुवायोड़ो—भू०का०कृ० ।
घुवाईजणो, घुवाईजवो—कर्म वा० ।
घुपणो, घुपवो—अक०रू० ।
घुवाड़णो, घुवाड़वो, घुवावणो, घुवाववो—रू०भे० ।
घुवायोड़ो—देखो 'धुपायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुवायोड़ी)
घुवावणो, घुवाववो—देखो 'धुपाणो, धुपावो' (रू.भे.)
घुवावणहार, हारो (हारी), घुवावणियो—वि० ।
घुवाविओड़ो, घुवावियोड़ो, घुवाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
घुवावीजणो, घुवावीजवो—कर्म वा० ।
धुपणो, धुपवो—अक०रू० ।
घुवावियोड़ो—देखो 'धुपायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुवावियोड़ी)
घुवियोड़ो—भू०का०कृ०—१ देखो 'धुवियोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'घुलियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घुवियोड़ी)
घुवो—देखो 'धुंवो' (रू.भे., डिं.को.)
घुसणो, घुसवो—क्रि०अ० [सं० ध्वंस] १ ध्वंस होना, संहार होना, नाश

होना। उ०—१ भिडइ सहड रडवडइं सीस घड नड जिम नच्चइं। हसइं घुसइं ऊससइं वीर मेगळ जिम मच्चइं।—पं.पं.च.

उ०—२ दह जिसि वाजइं हाक वहु जीव विणासइं। एकि घुसइं एकि घायइं एकि आगळि नासइं।—पं.पं.च.

२ देखो 'धसणी, धसवी' (रू.भे.)

घुसणहार, हारी (हारी), घुसणियौ—वि०।

घुसवाड़णौ, घुसवाड़वौ, घुसवाणौ, घुसवावौ, घुसवावणौ, घुसवाववौ, घुसाड़णौ, घुसाड़वौ, घुसाणौ, घुसावौ, घुसावणौ, घुसाववौ—प्रे०रू०।

घुसिओड़ौ, घुसियोड़ौ, घुस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घुसीजणौ, घुसीजवौ—भाव वा०।

घुसरी, घुसली-सं०स्त्री० [देश०] रज, धूलि, रेणु।

घुस्सौ—देखो 'घूंसौ' (रू.भे.)

घूं—१ देखो 'घुंवौ' (रू.भे.) (डि.को.)

२ देखो 'घू' (रू.भे.) उ०—करै घाव छछोहा छटाका टूक झड़ै केई पडे, केई उथल्लै अळूझ अंत्र पाय। परी रवां चडै केई खवां घूं हींडळै पेचां, खांगी वंधे लड़ै केई ऊठै झोक खाय।—सू.प्र.

घूंअर—देखो 'घू'र' (रू.भे.) उ०—कांम कुतूहल केळविसि, आंणिसि मागिसि तेह। परहरि माधव मुख-थिकी, ते घूंअरि हुं मेह।
—मा.कां.प्र.

घूंआघार, घूंआघोर—देखो 'धुंआंधोर' (रू.भे.)

घूंआरव-सं०पु० [सं० धूमः-रव] धूम, धूंआ। उ०—घूंआरव दव घोम, खेहा- रव डंवर खरा।—वचनिका

घूंई—१ देखो 'धूंणी' (रू.भे.) उ०—मंज देस तहं मढी हमारी, तन वाघंवर कीया। घूंई ध्यांन सहज की मुद्रा, अगम पियाला पीया।
—ह.पु.वा.

२ देखो 'धुंई' (रू.भे.)

घूंओ—देखो 'धुंवौ' (रू.भे.)

उ०—यह तन जारी मसि करूं, घूंआ जाहि सरग्गि। मुझ प्रिय वद्दळ होइ करि, वरसि बुझावइ अग्गि।—ढो मा.

घूंकणी—देखो 'धौंकणी' (रू.भे.) (डि.को.)

घूंकर-सं०स्त्री० [देश०] १ जोश दिलाने की आवाज. २ प्रताड़ने की आवाज।

घूंकळ-स०पु० [देश०] १ युद्ध, लड़ाई।

उ०—१ अर सांमोर वारहठ लोहठ री पाधरै आंटै मंडोउर रा नरेस पड़िहार हमीर १ नूं गांजि रांणा लाखा २ रो आपरै अगार ही अवसांण आयौ। इण रीति अनेक घूंफळ करि भुजां री कंडूया भागि न जांणि जगमाल कुमार अहमदावाद रा अवीस नूं पांहुणी नूंतियो।
—वं.भा.

उ०—२ खळां घूंफळां आदरै वीर खेळा, मिळै वाघरै जोगण्यां जुत्थ मेळा। भरै पत्र भैंसां अजां रत्र भोगै, अछक्कां छकां छाक दारू अरोगै।—मे.म.

२ उत्पात, उपद्रव। उ०—तुरक घड़ा नव तेरही, तेरह साख कमंघ। इळ घूंकळ कळि ऊपजे, ज्यां कपि दळ दसकंध।—रा.रू.

३ टंटा, फिसाद, वखेड़ा।

रू०भे०—धांकळ, धूंखळ, घूकळ, घूखण, घूखळ, घौंकळ, घौखळ, धौकळ, घोखळ, घ्रंखळ।

घूंकळणौ, घूंकळवौ—देखो 'धौंकळणौ, धौकळवौ' (रू भे.)

घूंकळसी, घूंफळी-वि० [देश०] योद्धा, साहसी।

घूंकळियोड़ौ—देखो 'धौकळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घूंकळियोड़ी)

घूंकार, घूंकारव—१ देखो 'घोकार' (रू.भे.)

उ० —१ धांनक कर घूंकार, पाराधो आया पुळै। वुहो हकी जिण वार, पिड घुबिया दोहु नरपति।—पा.प्र.

उ०—२ दोड़ भमर वज दड़ौ, हुवौ मढ हूंकारव। वीर हाक सवळां धनुस टंकी घूंकारव।—पा.प्र.

२ देखो 'धूंकार' (रू.भे.)

घूंखळ—देखो 'घूंकळ' (रू.भे.) उ०—धरती मांहि मचांणी घूंखळ, किधर रखेगी माल कह। वाप करै वेटा वोहतेरा, वेटी खेटा करै वह।—महाराज कुमार अभयसिंह री गीत

घूंखळणौ, घूंखळवौ— देखो 'धौकळणौ, धौकळवौ' (रू.भे.)

घूंखळणहार, हारौ (हारी), घूंखळणियौ—वि०।

घूंखळिओड़ौ, घूंखळियोड़ौ, घूंखळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

घूंखळीजणौ, घूंखळीजवौ—कर्म वा०।

घूंखळियोड़ौ—देखो 'धौकळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घूंखळियोड़ी)

घूंगरि-सं०पु० [?] १ वृक्ष विशेष।

उ०—धंतूरा नइं धाऊडा, धांमणि घूंगरि घूंनि। धींग धमासा घूलिया, धडहड धाता धूंनि।—मा.कां.प्र.

२ शाक विशेष ?

उ०—घूंगरि घूंणी घांणकी, धातरि धणख धमासि। घडफूडी धंधोळणी, धूती धाडा धासि।—मा.कां.प्र.

घूंगार—देखो 'घुंगार' (रू.भे.)

घूंगारणौ, घूंगारवौ—देखो 'घुंगारणौ, घुंगारवौ' (रू.भे.)

घूंगारणहार, हारौ (हारी), घूंगारणियौ—वि०।

घूंगारिओड़ौ, घूंगारियोड़ौ, घूंगारचोड़ौ—भू०का०कृ०।

घूंगारीजणौ, घूंगारीजवौ—कर्म वा०।

घूंगारियोड़ौ—देखो 'घुंगारिओड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घूंगारियोड़ी)

घूंण-सं०स्त्री० [सं० अर्द्ध + राज० मण] १ आधे मन की माप का एक पात्र विशेष। उ०—छलती हिक मूंणी सराव छकै। भर घूंण पुलाव कवाव भखै। गहली घट पिंड प्रतीत गणै। घरसै नभ मुंड घमंड घणै।—मे.म.

२ आधा मन [सं० ध्यै] ३ प्रवृत्ति, ध्यान, लगन।

मुहा०—नीची घूंण करणी (घालणी)—किसी बात से असहमत होना, टालना, अप्रसन्न होना अथवा शर्म के मारे नीचा देखना।

यौ०—नीच-घूंणियौ।

[सं० ध्मा=फूंकना] ३ धौंकनी (डि.को.) ४ देखो 'धूंन' (रू.भे.) रू०भे०—धूण।

घूंणणौ, घूंणबौ–क्रि०स० [सं० घुण्, घूर्ण्] १ हिलाना, झकझोरना।

उ०—१ सकति काइ साधना, किना निज भुज सकति, वडा गढ़ घूंणिया वीर वांकै। अवर उमराउ कुण आइ सांम्हौ अड़ै, सिवा री धाक पातिसाह सांकै।—व.व.ग्रं.

उ०—२ परतख वच्चा पाळ इसूं कहि ऊठियो। धूंणि सटा रिस धार तड़ित जिम तूटियौ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ देखे फिरती दूतियां, सूतौ धूंणे सीस। फंसियौ कांमण फंद में, रसियौ करै न रीस।—बां.दा.

उ०—४ धूंणे सिर पकड़ै धरा, असह सहै जे आर। बोहळिया बिरदावियां, गरज सरै नह तार।—बां.दा.

मुहा०—१ गढ़ धूणणौ—कंपायमान करना, भयभीत करना.

२ माथौ धूणणौ—इनकार करना, टालना या शर्म के मारे शिर हिलाना। जोश या क्रोध के आवेग में आकर शिर हिलाना।

२ प्रहार हेतु शस्त्र को ऊपर उठा कर जोर से घुमाना।

उ०—घूंणे सीस न घूंणे धजवड़, मारै रीस सहै मन मांय। 'जगा' तणै असमाध जगावौ, जवन तणा घट हूंत न जाय।

—महारांणा राजसिंघ रौ गीत

३ विलोड़ित करना, मथना। उ०—लाख लाख सुर असुर समेळा, अवधगिर साहै अडर। रिण ततखरा लिया रासावत, घूणे सायर अमर घर।—द.दा.

४ देखो 'धुणणौ, धुणबौ' (रू.भे.)

घूणणहार, हारौ (हारी), घूणणियौ—वि०।

घूणिओड़ौ, घूणियोड़ौ, घूण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घूणीजणौ, घूणीजबौ—कर्म वा०।

घूणणौ, घूणबौ—रू०भे०।

घूंणव–संस्त्री०—[संघू] एकाएक जोर से शरीर हिलाने की क्रिया या भाव। उ०—जभवयौ धड़ घूंणव खाय झकी। तद गोडिय भूम प्रभंक टकी। तस कीध वढाव तणो...यौ। किरणाळ नुं 'पाल' प्रणांम कियौ।—पा.प्र.

घूंणियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ निकाला हुआ, झकझोरा हुआ.

२ घुमाया हुआ. ३ देखो 'धुणियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घूंणियोड़ी)

घूंणी–संस्त्री० [सं० धूमः] १ साधुओं के तापने की आग जिसे वे ठंड से बचने अथवा शरीर को कष्ट पहुँचाने के लिए अपने सामने जलाते हैं।

मुहा०—१ घूंणी तापणी—तपस्या करना, कष्ट सहन करना, शरीर को कष्ट पहुँचाना, अत्यधिक परिश्रम करना, घूंणी धुकणी—(साधुओं के पास) अग्नि प्रज्वलित होना. ३ घूंणी जगाणी, घूणी धुकाणी—साधुओं का अपने सामने अग्नि जलाना। तपस्या के हेतु शरीर को तपाना। विरक्त होना। सन्यास लेना, साधु हो जाना।

२ वह अग्निकुण्ड अथवा स्थान जहां साधु आग जला कर तप करते हैं. ३ खाकी, दसनामी व नाथ संप्रदाय के फकीरों का निवास-स्थान. ४ देखो 'धुंई' (रू.भे.) ५ शाक विशेष। उ०—घूंगरि घूंणी घांणकी, घातरि घणख धमासि। घड-फूली धंधोळणी, धूती धाडा घासि।—मा.कां.प्र.

६ देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जद स्वामीजी बोलिया—दांमां साह बोदी घूंणी नै दोय तीर ले'र संग्रांम मांटयां किम जीतै।—भि.द्र.

रू०भे०—धुणी, धुनी, धूई, धूणी, धूनी।

घूंणौ—देखो 'धनु' (१) (अल्पा., रू.भे.)

घूंद, घूंध—१ देखो 'तुंद' (रू.भे.) उ०—सूंड सूंडाळो गणपत घूंघ घूंघाळो, ओछी पींडचां रौ कांमणगारौ ए, म्हारौ बिड़द विनायक।

—लो.गी.

२ देखो 'धुंध' (रू.भे.) उ०—१ सो घोड़ां रा पौड़ां सूं नै गउआं रा खुरां सूं रंजी उडी है। असमांन घूंद घूंघाळो होय गयो है।

—वी.स.टी.

उ०—२ धिप सूतोय नींद मुरद्धर रा, गउ घाट उलंग हली गिर रा। भड़कै खुरही हय अग्र भगै, असमांन न सूजत घूंध अगै।—पा.प्र.

उ०—३ घूंघ न चूकै डूंगरां, कड़वापण नींबांह। प्रीत न चूकै सज्जणां, देस विदेस गयांह।—अज्ञात

घूंघड़े, घूंघड़ै, घूंघडे, घूंघडै—देखो 'धूघडै' (रू.भे.)

उ०—घूंघड़ै आज ग्रम कीच पिणि धापसै, अधिकि सुख वांभणा साधुआं आपसै।—पी.ग्रं.

घूंघळ—१ देखो 'घूंघळौ' (मह., रू.भे.)

उ०—सट पटत भर सेस अति चक्कित अरेस, दिन घूंघळ दिनेस थर-राहइ अर साथ।—र.ज.प्र.

२ देखो 'धुंधळ' (रू.भे.)

घूंघळणौ, घूंघळबौ–क्रि०स० [सं० धूमः+आलुच्] धुआं, धूलि, कोहरा आदि से आच्छादित होना, धुंधला होना, अस्पष्ट होना।

उ०—१ इण भांति रा पांच पांच मण, दस दस मण गेहूँ, चावळ आदिआं जाजमां घातिआं रोळीजै छै। काकरा काढ़ीजै छै। धूंए अंबर घूंघळियौ छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ गरदां घर अंबर गूंघळियौ। धमळागिर डूंगर घूंघळियौ।

—गु.रू.बं.

उ०—३ वडा वडा भड़ विकराळ, कमधज्ज चढि कळचाळ। घर धूजि अस नग धोम, वणि गरद घूंघळि वोम।—सू.प्र.

घुंघळणौ, घुंघळबौ, घूघळणा, घूघळबौ—रू०भे०।

घूंघळि—देखो 'धुंघळ' (रू.भे.)

उ०—मल्हप्यौ जांण कि मेघ मंडांण। भिळि रज घूंघळि रूंध्यो भांण।—रा.ज. रासौ
घूंघळिकार—देखो 'घुंधकार' (रू.भे.)
घूंघळियोड़ौ-भू०का०कृ०—धुग्रां, धूलि ग्रादि से ग्राच्छादित हुवा हुग्रा। (स्त्री० घुंघळियोड़ी)
घूंघळीमल्ल, घूंघळीमाल-सं०पु०—एक प्रसिद्ध सिद्ध का नाम जिसने क्रोध ग्रावेग में ग्राकर पट्टन नगर का विध्वंस कर दिया था (पा.प्र.)
घूंघळौ-वि० [सं० धूमः+ग्रालुच] (स्त्री० घूंघळी) १ धूम, धूलि ग्रादि ग्राच्छादित। उ०—१ घूंघळी ग्रंबर खांखळ मांभ, नित नर नवी हूक भर जाय। भेळतां सपनां वीतै रात, प्रात नै सांभ ग्रेक व्है जाय। —सांभ

उ०—२ सो घोडां रा पौड़ां सूं नै गऊवां रा खुरां सूं रंजी उडी है। ग्रसमांन घूंद घूंघळौ होय गयौ है।—वी.स.टी.
२ कुहरे युक्त, कुहरे से ग्राच्छादित। उ०—ग्राज धुराऊ घण घूंघळौ ए, पिणिहारी ए लो, मोटोड़ी छांटां रौ वरसै मेह, वाला जी ग्रो।—लो.गी.
३ जो साफ दिखाई न दे, ग्रस्पष्ट।
४ मटमैले या भूरे रंग का। उ०—जळ ऊंडा थळ घूंघळा, पातां मैंगळ पेस। वलिहारी उण देस री, रायसिंघ नरेस।—रंगरेलो वीठू
५ जो साफ दिखाई न दे, ग्रस्पष्ट।
रू०भे०—घूंघळौ।
ग्रल्पा०—घूंघळियौ।
मह०—घुंघळ, घूंघळ।
घूंघडौ-सं०पु०—धुंए या महीन धूलि कणों का ऊपर उठा हुग्रा समूह। उ०—डेरां में लोग सारौ रोटी टुकडौ करै छै, घूंघाडौ छा रह्यो छै। —गौड़ गोपाळदास री वारता
घूंघाड़णौ, घूंघाड़बौ—देखो 'घुंधाणौ, घुंधावौ' (रू.भे.)
घुंघाड़णहार, हारौ (हारी), घुंघाड़णियौ—वि०।
घुंघाड़िग्रोड़ौ, घुंघाड़ियोड़ौ, घुंघाड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।
घुंघाड़ीजणौ, घुंघाड़ीजबौ—कर्म वा०।
घूंघाड़ियोड़ौ—देखो 'घुंधायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० घुंघाडियोड़ी)
घूंघाणौ, घूंघाबौ-क्रि०स० [देश०] १ तेज गति देना, चलाना। उ०—लाडी लाखीणी धारां घूंघाती। पीवर ऊधांरी पारां पय पाती। भाखा खीणां भड़ एवड़ ले ग्राता। धाया धीणा रा गोधन रा घाता। —ऊ.का.

२ तेजी से श्वास लेना व छोड़ना।
उ०—सूतळ नाया सर नासां सणकारी। फुरणी घूंघातां रासां फणकारी। भूसर धायां गळ ग्रावढ कढ भांखै। नम नम सावढ़ नै नायां कण नांखै।—ऊ.का.
घूंघाणहार, हारौ (हारी), घूंघाणियौ—वि०।
घूंघायोड़ौ—भू०का०कृ०।
घूंघाईजणौ, घूंघाईजबौ—कर्म वा०।
घुंघाड़णौ, घुंघाड़बौ, घुंघाणौ, घुंघाबौ, घुंघावणौ, घुंघावबौ, घूंघाड़णौ, घूंघाड़बौ, घूंघावणौ, घूंघावबौ—रू०भे०।
घूंघायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तेज गति से कार्य किया हुग्रा। २ तेजी से श्वास लिया हुग्रा या छोड़ा हुग्रा। (स्त्री० घूंघायोडी)
घूंघाळ, घूंघाळौ-वि० [सं० तुंद+ग्रालुच्], (स्त्री० घूंघाळी) १ तोंद वाला। उ०—सूंड सूंडाळौ गणपत, घूंध घूंघाळौ, ग्रोछी पींडयां रो कांमणगारौ ए, म्हारी विड़द विनायक।—लो.गी.
२ धूम या धूलि युक्त। उ०—सो घोड़ां रा पौड़ां सूं नै गउवां रा खुरां सूं रंजी उडी है, ग्रसमांन घूंद घूंघाळौ होय गयौ है। —वी.स.टी.

रू०भे०—दंदलौ, दुंदाळौ, दूंदलौ दूंदाळौ।
मह०—दुंदाळ, दूंदाळ, घूंघाळ।
घूंघावणौ, घूंघावबौ—देखो 'घूंघाणौ, घूंघावौ' (रू.भे.)
घूंघावणहार, हारौ (हारी), घूंघावणियौ—वि०।
घूंघाविग्रोड़ौ, घूंघावियोड़ौ, घूंघाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
घूंघावीजणौ, घूंघावीजबौ—कर्म वा०।
घूंघावियोड़ौ—देखो 'घूंघायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० घूंघावियोड़ी)
घूंघि-सं०स्त्री० [देश०] १ ग्रांख के दृष्टि पटल का एक रोग जिससे स्पष्ट दिखाई नहीं देता है (ग्रमरत)
२ धुंधलापन, ग्रस्पष्टता।
रू०भे०—घूंघ।
ग्रल्पा०—घूंधियौ।
मह०—घूंधड़।
घूंघियौ-सं०पु०—१ देखो 'घूंधि' (ग्रल्पा., रू.भे.) (ग्रमरत)
२ वह जिसे नेत्रों से स्पष्ट दिखाई न देता हो।
घूंवौ-सं०स्त्री० [देश०] १ ग्रत्यधिक क्रोध के कारण शरीर में पैदा होने वाली भनभनाहट, कंपन, कंपकंपी।
उ०—घणा ग्रघीरा ग्राखता, रीस थी ऊठै घूंधी रे। ग्राप वळै ग्रोरां नै वाळै, ग्रकल तिणां री ऊंधी रे।—जयवांणी
२ देखो 'घुंधि' (रू.भे.)
घूंघूकार—१ देखो 'धुंधकार' (रू.भे.) उ०—ऊगतै उण तारै परभात, पड़ै ग्रो मोळो घूंघूकार। पवनियो सांसां में भर सांस, सांवटै जग री काळी कार।—सांभ
२ देखो 'घुघुकार' (रू.भे.)
घूंघूणी, घूंघूनी—देखो 'घंघोळी' (रू.भे.)
घूंघेड़-सं०पु०—चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (वं.भा.)

धूंन-वि० [देश०] १ बढ़िया, श्रेष्ठ, उत्तम ।
उ०—धज बंध खग्रवट धूंन धारण जूनवट जोणै ऊढ़ंग दांन । पवंग आपै कवि दळिद्र कापै संसार सिरि दातार 'सांमो' सिरि सुजस थापै ।
—ल.पि.
रू०भे०—धूंण, धून ।
अल्पा०—धुनी, धूनौ ।
धूंनि-सं०पु०—वृक्ष विशेष ?
उ०—धतूरा नइं धाऊडा, धांमणि धूंगरि धूनि । धींग धमासा धूळिया, धडहड धाता धूंनि ।—मा.कां.प्र.
धूंप—देखो 'धूप' (रू.भे.) उ०—१ मझि तिण कनक सकति धरि मूरति । आसापुरी धूंप खेवै अति ।—सू.प्र.
उ०—२ किण दिस नैं सेवा करूं, किण दिस खेऊं धूंप । हरिया ब्रह्म पिछांण लै, घट घट आतम रूप ।—स्री हररिांमजी महाराज
उ०—२ धूंप पड़ै छै ओ, म्हारा जोड़ी रा भरतार, भंवरजी, धूंप पड़ै छै ओ ।—लो.गी.
धूंपियौ—देखो 'धूपियौ' (रू.भे.)
धूंपेड़ौ—देखो 'धूपियौ' (रू.भे.)
धूंब-सं०पु० [फा० दुम] १ बैल के पिछले पैरों का ऊपरी भाग.
२ नर भेड़ की पूंछ पर एकत्रित हुवा हुआ मांस-पिण्ड ।
अल्पा०—धूंबी ।
३ देखो 'दूंबौ' (मह., रू.भे.)
धूंबड़ौ—१ देखो 'धूंमड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'दूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)
धूंबट-वि० [सं० धूमट] १ तीव्र, प्रचण्ड । उ०—भ्रूंटि धरी धूंबट छाइ ताडइ । आक्रंदती द्रूपदी बूंब पाडइ ।—विराट पर्व
२ देखो 'दूंबौ' (मह., रू.भे.)
धूंबा रौ गांम, धूंबा रौ गांव—देखो 'धूंबे रौ गांव' (रू.भे.)
धूंबी—१ देखो 'धूंब' (१) (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'दूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)
धूंबी-घेटौ-सं०पु०यौ०—वह नर भेड़ जिसकी पूंछ पर मांस पिण्ड एकत्रित हो गया हो ।
धूंबे रौ गांम, धूंबे रौ गांव-सं०पु० [सं० दांभिक ग्राम] वह ग्राम जिसका शासक एक निश्चित की हुई रकम सरकार को देता हो ।
रू०भे०—धूंबा रौ गांम, धूंबा रौ गांव ।
धूंबौ—देखो 'दूंबौ' (रू.भे.)
धूंमर-सं०पु० [सं० धुर] शिर, मस्तक ।
उ०—धरां गूजरां देखा क्रोध धीठा । दुवै धूंमरां फील नीसांण दीठा ।—सू.प्र.
धूंर-सं०स्त्री० [सं० धूमरी] १ आकाश में छाई हुई बहुत महीनतम धूलि जिससे स्पष्ट दिखाई नहीं देता है ।
२ आकाश में छाया हुआ धूम या कुहरा ।
क्रि०प्र०—आणी ।
रू०भे०—धुंअर, धुंहर, धूंअर, धूंहर, धूंहरि, धूंहरी, धूमर, धूमरि, धूहर ।
धूंवाड़ौ—देखो 'धुंवौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—धुवि झाळ वराळ पुरा धूंवाड़ै, ज्वाळ कराळ विसाळ जळै । इक सूर लड़ै रिण चूर हुवै, अरि पूर धकै इक दूर पुळै ।—रा.रू.
धूंवारवण-सं०पु० [सं० धूमः+रा.रवण] धूम, धुआं ।
उ०—रव अगनि व्याळ धूंवारवण, सोर ज्वाळ झळ संमिळै । सुज स सहोम करतां सुवणि, मिळै धोम नभ मंडळै ।—रा.रू.
धूंवावाछ, धूंवावास-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का कर ।
धूंवौ—देखो 'धुंवौ' (रू.भे.)
उ०—जाग्रत झाळ सुपन ज्यूं धूंवा, जब लग कास्ठ तब लग हूवा ।
—स्री सागर जी महाराज
धूंस-सं०स्त्री० [सं० ध्वंस] १ वाद्यों के बजने से होने वाली ध्वनि, घोष । उ०—सोळ ा र करइ सुंदरी, सिर ऊपर पूरण कुंभ । पिहिउं पिहिउं पहकइ नफेरी, त्रि धुंधु दमांमा की धूंस परइ ।
—स.कु.
२ राजा के किसी जागीरदार पर नाराज हो जाने के कारण उसके घर भेजे जाने वाले राज कर्मचारी जिनके खर्च का प्रबन्ध उसे करना पड़ता था (मेवाड़ राज्य की एक प्राचीन प्रथा)
क्रि०प्र०—आंणी, मेलणी ।
३ धाक, रौब ।
क्रि०प्र०—आणी, पड़णी ।
४ धमकी, घुड़की ।
क्रि०प्र०—जमाणी, देणी, बताणी ।
[सं० ध्वंसिनी] ५ फौज, सेना (ह.नां.). ६ समूह ।
उ०—गाज नगारां चहुंगमां घर माग रूकांणी । चढिया धूंस बहादुरां वंधे किरवांणी—ची.मा.
७ नगाड़े पर किया जाने वाला डंके का प्रहार.
८ देखो 'धूंसौ' (मह., रू.भे.)
रू०भे०—धांस, धुस, धौंस ।
धूंसणौ, धूंसबौ-क्रि०स० [सं० ध्वंसनम्] विध्वंस करना, ध्वंस करना (उ.र.)
उ०—१ गुडै मयमंत सेना मुहर गैमरां, प्रकटिया मारका थाट जोधापुरा । धूंसियै हैयपुरा पाय अरवद, पसरियै 'सिंघ' परवत थया पाधरा ।—द.दा.
उ०—२ धूंसतै नारनोळां धरा जवन गया अण जूटिया । ऊकळै पेखि पतिसाह उर, साहिजहांपुर लूटिया ।—रा.रू.
धूंसणहार, हारौ (हारी), धूंसणियौ—वि० ।
धूंसिओड़ौ, धूंसियोड़ौ, धूंस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
धूंसीजणौ, धूंसीजबौ—कर्म वा० ।
धूंसरौ-वि० [सं० धूसत्ति] (स्त्री० धूंसरी) वह रंग जो स्पष्ट मालूम न हो, वह रंग जो मैला सा हो, धुंधला (अमरत)

घूंसाळो-सं०पु० [देश०] १ गप्प, डींग ।
उ०—जे हुं पूछूं उवा तो वात बोली नहीं अर बीजा ही पण घूंसाळा मारै ।—कुंवरसी सांखलै री वारता
२ देखो 'घूंसो' (अल्पा., रू.भे.)

घूंसो-सं०पु० [सं० घूस्=कांति करणो] १ धातु का बना हुआ एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा जिसे केवल एक डंडे से बजाया जाता है ।
उ०—घूंसो वाजै ओ महाराजा थांरी मारवाड़ में घूंसो वाजै ओ ।
वि०वि०—यह नक्कारखाने में अन्य वाद्यों के साथ ताल को नियमित करने का काम करता है। इसको लकडी की चौखटी पर रखा जाता है और खड़े खड़े बजाया जाता है। इसका घोष बहुत गहरा व दूर तक जाने वाला होता है।
२ नगाड़ा (डिं.को.) ३ नगाड़े पर होने वाला प्रहार.
४ नगाड़े को बजाने का लकड़ी का बना उपकरण.
५ एक राजस्थानी लोक गीत. ६ सामर्थ्य.
७ एक प्रकार का ओढने का ऊनी वस्त्र.
वि०वि०—यह प्रायः काली ऊन का बना हुआ होता है और किनारियें लाल होती है। यह रेशम का भी बनाया जाता है।
रू०भे०—घांसो, घुसो, घौंसर, घौंसो ।
मह०—घांस, घूंस, घूस ।

घूंहर, घूंहरि, घूंहरी—देखो 'घूंर' (रू.भे.) उ०—१ आतत्त घोर अंधार में, सोर घोर माचै सघण। घोम रिख जांणि घूंहर रचै, जोजन गंधा रित रमण ।—गु.रू.बं.
उ०—२ घूंहरि पडय अथाह ते, विरहानळ नो धूम। वेगा जावो कोइ, पिवळावो प्रिय मन मूंम ।—ध.व.ग्रं.

घूंहो—देखो 'घुंवो' (रू.भे.)

घू-सं०पु० [सं० धूः] १ शिव, महादेव. २ हाथी, गज, कुंजर.
३ भार, बोझ. ४ विचार. ५ चित्त, मन, हृदय.
६ हाथ, कर (एका.)
[सं० धुर्=चोटी, शिर] ७ शिर, मस्तक (ह.नां.)
उ०—१ आछै दियो मास सिवी तन, घू करवत धजमोर धरी। अत रजपूतां सु-जस पियारो, जिण कारण अै अजर जरी ।
—क्षत्रिय प्रसंसा रो गीत
उ०—२ पैंडा नीत रा चलाक घू छ-च्यार भंज पलीत रा, सूर धीर चीत रा अछेह ओप संस। धोत रा कीतरा रिखी सुकंठ मीत रा धनो, वाहरू सीत रा रांम अदीत रा वंस ।—र.ज.प्र.
उ०—३ ओयण नांम चरित्रां आंगण विमळ निरंतर भेद सुवेस। घोकै कह लै लखै जिकै धन, घू रसणा स्रव चख अवधेस ।—र.रू.
उ०—४ विनां घू विहंड, सचै जंग संडै। कढ़ो खाग कोपै, जिसा राह जोपै ।—सू.प्र.
उ०—५ मिळ सुत सुभड़ जूथ जुत महपति। सिध आसण आए तिण सायति। असिहूं क्रम चत्र दस ऊतरिया। घू नमाय पावां सिघ धरिया ।—सू.प्र.
अल्पा०—घूओ ।
[सं० ध्रुव]८ निश्चय। उ०—दादू दुई दरोग लोग को भावै, सांई सांच पियारा। कौन पंथ हम चलें कहो घू, साधो करो विचारा।
—दादू बांणी
९ दिन, दिवस. १० तबले का बोल ।
उ०—घू घू कटां ध्रुकटां ध्रुकटां धूधू कटां धार। ता धिना ता धिना धिन्ना ता धिन्ना सुताळ ।—र.ज.प्र.
११ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.) उ०—१ दादू भावै तहां छिपाइये। साच न छांना होइ। सेस रसातळ गगन घू, प्रकट कहिये सोइ।
—दादू बांणी
उ०—२ सचा अचळ पेखिए घू अंबर तारा ।—केसोदास गाडण
उ०—३ घू पहळाद भभीखण सिधुर, अपणाया मुख आपै। पीतंबर काटे दुख पासां, थिरकै दासां थापै। रे हरि जापै रे हरि जापै लाहो लीजियै ।—र.ज.प्र.
उ०—४ घू अंबर जां लग धरा, रिघू रांम ज्यां राज। तां पिंगळ अखी तवां, सकळ सिरोमणि साज ।—डिं.नां.मा.
सं०स्त्री०—१२ ध्वनि विशेष, आवाज (आग, धुनकी, नगाड़े आदि की)। उ०—भभकी आग भरज, घू घू गरज कड़ कड़ घखै। कर कर ईस अरज, फरज धरम चुकव्यो सती।
—रिड़मलसिंघ सोनगिरो
१३ तरफ, ओर ।
१४ उत्तर दिशा, ध्रुव का स्थान ।
[सं० दुहितृ] १५ कन्या, पुत्री। उ०—पूगळ हुंता आवियां, पूगळ म्हांकउ वास। पिंगळ राजा तास घू, मेल्ह्या थांकइ पास।
—ढो.मा.
रू०भे०—घूग्र, घूग्रा, घूय ।
१६ चिंता, फिक्र १७ आग, अग्नि (एका.)
वि०—१ वीर, वहादुर। उ०—१ कळपतरू ऊखळि पड़ै, 'जसो' महा घू जांम। माळां गाळां ठांम महि, तिको न सूझै तांम।
—हा.झा.
उ०—२ अबै काय रंभ रथ जूथ जांणै सुवर। पड़ै कवि-पंखियां 'जसो' घू कळपतर ।—हा.झा.
२ निश्चल, अटल, ध्रुव, स्थिर (डिं.को.)
उ०—क्रतु, करुणामय घू करतार, भणै भव भाजन भू भरतार। उधारक धारक लोक असेस, सुधारक तारक सेस विसेस ।—ऊ.का.
३ प्रथम, पहले। उ०—हथणापुर घू आवियो, परम तणो वर पाय। आयो तिण छाजै 'अभो', सव धर करै सहाय ।—रा.रू.
[सं० धूः] ४ कांपने वाला, डरने वाला, कायर.
५ धूर्त, कपटी (एका.)
क्रि०वि०—तरफ से, ओर से ।
उ०—उठी घू 'विलंदेस' आयो अछायो। अठी हूंत राजा अभैसिंघ

आयो । किलम्मेस वाळा उठी भूल काळा । अठी आवळा-भूल भूपाळ आळा ।—सू.प्र.

अव्य० [सं० धुर] १ शीघ्रता से जाने का शब्द.

२ कुत्ते को जोश दिलाने का शब्द.

३ कुत्ते को दुत्कारने का शब्द ।

रू०भे०—धुं, धु, धूं, धूग्र, ध्रू, ध्रूग्र ।

धूग्र-सं०पु० [सं० ध्रुवः] १ वट वृक्ष, निग्रोध (ह.नां.)

रू०भे०—ध्रूग्र ।

२ देखो 'धू' (१५) (रू.भे.)

उ०—१ माळव देस महीपती, भीमसेन भूपाळ । माळवणी धूग्र तसु-तणी, सुंदरि अति सुकमाळ ।—ढो.मा.

उ०—२ तिणि नयरि सुरसुंदर राजा तसु घरि कमळा रांणी । सोहगसुंदरी तास तणी धूग्र रूपइं रंभ समांणी ।

—विद्याविलास पवाडउ

३ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)

धूग्रउ—देखो 'धुंवौ' (रू.भे.) (उ.र.)

धूग्रर, धूग्ररि—देखो 'धूं'र' (रू.भे.) (उ.र.)

धूग्रा- [सं० ध्रुवः] देखो 'धू' (१५) (रू.भे.) (उ.र.)

धूई—१ देखो 'धूंणी' (रू.भे.)

उ०—तीयै मारिग चालियौ जावै देखै तौ तपसी च्यार बैठा छै। ६ धूयां छै । दोइ धूई खाली छै। च्यार धूई आगै च्यार तपसी बैठा छै ।

—चौबोली

२ देखो 'धुंई' (रू.भे.)

उ०—त्यां नै पकड़ नै कह्यौ, माल बतावौ। मरचां री धूई दीधी ।

—भि.द्र.

धूग्रौ—१ देखो 'धू' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—रहचि रूक परणियौ 'रतनौ', धड़ भड़ ऊरि तूट धूग्रौ । हाट करग भोगवि हजूरे, हाथ मेळावै सुजस हुवौ ।—दूदो

२ देखो 'धुंवौ' (रू.भे.)

धूक—देखो 'धाक' (रू.भे.)

उ०—'चांपा' ऊपर चूक, 'ऊदा' कदै न आदरै । 'धन्ना' वाळी धूक, जिण जिण ऊपर जूभवै ।—धनजी भीमजी रा दूहा

धूकणौ, धूकबौ-क्रि०अ०—१ ध्वनि करना, बजना ।

उ०—रण सिंघा रूड़ा आगे ऊड़ा, धूड़ धूड़ धूकंदा है । जाखेड़ा जोड़ी घोड़ा घोड़ी, पधरावै पुळकंदा है ।—ऊ.का.

२ देखो 'धोकणौ, धोकबौ' (रू.भे.)

३ देखो 'धुकणौ, धुकबौ' (रू.भे.)

धूकणहार, हारौ (हारी), धूकणियौ—वि० ।

धूकाड़णौ, धूकाड़बौ, धूकाणौ, धूकाबौ, धूकावणौ, धूकावबौ—प्रे०रू० ।

धूकिग्रोड़ौ, धूकियोड़ौ, धूक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

धूकीजणौ, धूकीजबौ—कर्म वा० ।

धूकळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)

धूकळणौ, धूकळबौ—देखो 'धोकळणौ, धोकळबौ' (रू.भे.)

धूकळियोड़ौ—देखो 'धोकळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धूकळियोड़ी)

धूकार—देखो 'धुंकार' (रू.भे.) उ०—असमांन विलूटै सर असंख । धूकार अजागै गुण धनंख । सूरज्ज वोम वायौ सरेय । फिरि जांण काळ छाया करेय ।—गु.रू.बं.

धूकारणौ, धूकारबौ-क्रि०स०—(धनुष, धुनकी आदि से) ध्वनि करना ।

उ०—बैठा बिजण विण हींजरता वारै । घूंघट पिंजर में पिंजण धूकारै ।—ऊ.का.

धूकारव—१ देखो 'धोंकार' (रू.भे.)

उ०—धूकारव धांनकां रीठ वजियौ पिड़ टंकां । घोर सोर उड गजर वगौ धमगजर बंदूकां ।—पा.प्र.

२ देखो 'धुंकार' (रू.भे.)

धूकारियोड़ौ-भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ ।

(स्त्री० धूकारियोड़ी)

धूखण, धूखळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)

उ०—वचै नहीं कोय वाहरु देसाड विचाळा । धूखण मचियौ धरण में कुण मेटण वाळा ।—पा.प्र.

धूखळणौ, धूखळबौ—देखो 'धोकळणौ, धोकळबौ' (रू.भे.)

धूखळियोड़ौ—देखो 'धोकळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धूखळियोड़ी)

धूड़-सं०स्त्री० [सं० धूलि] धूलि, रेणु, मिट्टी, रज ।

उ०—१ जिण दिन ओ मन जांणसी, सोनौ धूड़ समांन । उण दिन सूरज ऊगसी, सोना री सुखदांन ।—बां.दा.

उ०—२ रे घोडी ऊमर रही, काय न छोडै कूड़ । हिय अंधा तूं नांख अब, धंधा ऊपर धूड़ ।—बां.दा.

उ०—३ सांच बोलियां टुकड़ा सूका, मिळ जावै सोइ मीठा । कूड़ बोल पकवांन करावै, धूड़ बराबर धीठा ।—ऊ.का.

उ०—४ स्रीमति उत्तर आप्यौ सही, तमने एहवौ करवौ नहीं । मोटा ते इम न करै मूळ, सा(य)र थिकी किम उडै धूड़ ।—ध.व.ग्रं.

पर्याय०—खग, खेह, गरद, चर, पतरुहसुता, पांसु, बाळू, रज, रेणू, रेत, वेळू, सरकरा, सिकता ।

मुहा०—१ धूड़ उडणी—धूल उड़ना । नष्ट होना, समाप्त होना, बरबादी होना । रौनक न रहना, सन्नाटा छाना, चहल-पहल न रहना । धनादि का अभाव होना, अपकीर्ति होना. २ धूड़ उडाणी—धूल उड़ाना । बदनामी करना, बुराइयों व दोषों को प्रकट करना । हंसी करना, उपहास करना. ३ धूड़ उडाता फिरणा—धूल उड़ाते फिरना । मारा-मारा फिरना, भटकना.

४ धूड़ करणी—नाश करना। खराब करना, विकृत करना। व्यर्थ श्रम करना. ५ धूड़ खायां काळ नीकळणौ (नीसरणौ)—धूल खाकर अकाल में जीना। बेईमानी से निर्वाह करना, धोखा-धड़ी से पेट भरना. ६ धूड़ खायां पेट भरीजणी—देखो 'धूड़ खायां काळ निकळणौ' ७ धूड़ चटाणी—धूल चटाना। परास्त करना, हराना.
८ धूड़ चाटणी—धूल चाटना। परास्त होना, हारना। गिड़गिड़ाना, आजीजी करना. ९ धूड़ छांणणी—धूल छानना। मारा मारा फिरना, भटकना. १० धूड़ जांणणी—धूल जानना। तुच्छ समझना. ११ धूड़ झड़णी—धूल झडना। पिटना, मार खाना.
१२ धूड़ झाड़णी—धूल झाड़ना। पीटना, मारना। खुशामद करना.
१३ धूड़ डाळणी—देखो 'धूड़ नांकणी' (न्हांकणी) (रू.भे.)
१४ धूड़ धक्कड (धवकळ) उडणा—व्यर्थ खरचा होना, अत्यधिक व्यय होना. १५ धूड़-धांणी—बरबाद होना, नष्ट होना.
१६ धूड़-धांणी नै राख छांणी—देखो 'धूड़-धांणी' (रू.भे.)
१७ धूड़-धाड—नष्ट-भ्रष्ट, बरबादी १८ धूड नांकणी (न्हांकणी) धूल डालना। फटकारना, दुत्कारना.
१९ धूड़ पडणी—देखो 'धूड़ वाळणी'—धूल पडना। तौहीन होना, बेइज्जती होना. २० धूड़ पटकणी—धूल डालना। तौहीन करना, बेइज्जती करना। फटकारना. २१ धूड़ फांकणी—धूल फांकना। इधर-उधर भटकना, दुर्दशाग्रस्त होना, मारा मारा फिरना। बिल्कुल झूठ बोलना. २२ धूड़ बरसणी—धूल बरसना। रौनक हटना, बरबादी होना. २३ धूड़ बराबर—धूल के समान। तुच्छ.
२४ धूड़ भेळी करणी—देखो 'धूड़ में मिळाणी'।
२५ धूड़ भेळी होणी—देखो 'धूड़ में मिळणी'।
२६ धूड़ में माथौ देणौ—धूल में सिर देना। खराब वस्तु को ग्रहण करना। निकृष्ट वस्तु लेना। खूब परिश्रम करना.
२७ धूड में मिळणी—धूल में मिलना। बरबाद होना, नष्ट होना
२८ धूड़ में मिळाणी—धूल में मिलाना। बरबाद करना, नष्ट करना.
२९ धूड़ में लट्ठ लागणी—धूल में लठ लगना। सरलता से अधिक लाभ होना. ३० धूड रा दो दाणा—धूल के दो दाने। तुच्छ.
३१ धूड़ वगाणी, धूड वघाणी—देखो 'धूड़ वाळणी'।
३२ धूड़ वाळणी—ध्यान न देना, जाने देना, छोड़ देना.
३३ धूड़ वावणी—देखो 'धूड़ वाळणी'।
३४ धूड़ समझणी—देखो 'धूड़ जांणणी'।
३५ धूड़ समांन—देखो 'धूड़ बराबर'।
३६ माथा में धूड़ घालणी (राळणी)—सिर में धूल डालना। बहुत पछताना। विलाप करना।
रू०भे०—धुली, धूड़ि, धूड, धूडि, धूर, धूरि, धूरी, धूल, धूलि, धूळि, धूलो, धूहड़।
अल्पा०—धूड़िया।
मह०—धूड़ीड़, धूड़ोड़, धूड़ोड़ौ, धूड़ौ।

धूड़कोट-सं०पु०यौ० [सं० धूलि:+कोट:] मिट्टी का बना कच्चा गढ़ या किला। उ०—अरु चूंडेर में खार बारै रायमल वाळी तथा रांणीर रा ठाकर जगरूपसिंघ वा विहारीदास गढ़ सझियौ. अरु धूड़कोट पण कियौ हजार दोय आदमियां सूं।—द.दा.
रू०भे०—धूलकोट।
धूड़गढ़-सं०पु० [सं० धूलि:+गड:] समतल भूमि पर बना हुआ वह गढ़ जिसकी दीवार के सहारे बहुत ऊंचाई तक धूल की तह इसलिए जमाई गई हो कि तोपों, बन्दूकों आदि से दीवार की रक्षा हो सके।
उ०—बारली तोपां रा गोळा धूड़गढ़ में लागै ओ, मांयली तोपां रा गोळा तंबू तोड़ै ओ, झल्लै आउवो। हां ओ झल्लै आउवो, आउवौ धरती रौ दावौ ओ, झल्लै आउवो।—लो.गी.
धूड़ि—देखो 'धूड़' (रू.भे.) उ०—ढोलइ चढ़ि पड़ताळिया, डूंगर दीन्हा पूठि। खोजे बावू हथ्थडा, धूड़ि भरेसी मूठि।—ढो.मा.
धूड़िया—देखो 'धूड़' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—जद-ई तो कैवूं हूं पिंडतजी कनै गुर मिंतर ले लेवौ अर इयां झंझटां-नै धूड़िया वघावौ।—वरसगांठ
धूड़ीड़, धूड़ोड़, धूड़ोडौ, धूड़ौ—देखो 'धूड़' (मह., रू.भे.)
धूज-सं०स्त्री० [सं० धू] 'धूजणौ' क्रिया का भाव, कांपने की क्रिया।
धूजट, धूजटी-सं०पु० [सं० धूर्जटि:] १ वटवृक्ष (अ.मा.)
२ देखो 'धूरजटी' (रू.भे.) (डि.को.)
धूजण, धूजणी-सं०स्त्री० [सं० धू] थर्राने की क्रिया या भाव, कांपना।
उ०—जुध रा वाजा सुण सूरवीरां नै तौ सूरापणौ छूटसी नै कायरां नै जुद्ध रा नगारा सुण धूजणी चढ़सी।—वी.स.टी.
धूजणौ, धूजवौ-क्रि०अ० [सं० धू] धक्का, अशक्ति, भय अथवा किसी आवेग के कारण डोलना, हिलना, थर्राना, कांपना।
उ०—१ धूज पुड़ धर अगम अंबर, गरज सुर नीसांण गरहर। फवै लसकर चींध फरहर, पथ भंगर नयर पाधर।—रा.रू.
उ०—२ तणै तार सैतार वीणादि तंत्री। वणै बीस बत्तीस भैरूं बजंत्री। डफां मादळां नाद डैरूं डमंकै। धरा व्योम पाताळ धूजै धमंकै।—मे.म.
उ०—३ किड़की कारायण कनफड़ियां कूटी। तिड़गी तारायण सो पुरसां तूटी। प्रतिदिन मोळा पड़ भिन भिन पद पूजै। धोळा नीरण विन जीरण जिम धूजै।—ऊ.का.
उ०—४ दिल्ली भगांण पड़ै मन आगरौ करै डर, पांनड़ै जेण पतसाह पायौ। 'जगा' भै जोधपुर साह धूजै जवन, अजैगढ़ ओदरकै 'जगौ' आयौ।—तेजसी खिड़ियौ
उ०—५ चोजां चटकाळा गुरु मटकाळा मटकाळा मुळकंदा है। माथा हद ममळै अकेद असलै घसळै जद धूजंदा है।—ऊ.का.
उ०—६ पड़ै सिंघ गैंल जड़ै रह पट्ट। थरथ्थर धूजि गुड़ै गज थट्ट। आछी भड़ चाढ़ि धकै अखड़ैत। जड़ै जम दाढ लड़ै छळ 'जैत'।
—मे.म.

उ०—७ मावइ वरसइ माहवठ्ठ, सीत सलिल एक ठाह। हूं घूजी घरणीइं ढळूं, दिह हिरणांखी! वाह।—मा.कां.प्र.

उ०—८ सांवण सूतो साळवइ, जगावतां जग-मांही। हूं घूजी घरणि ढळूं, वाळ विलाइ वांहि।—मा.कां.प्र.

उ०—९ इण परि कोइलि कूजइ पूजइ युवति मणोर। विधुर वियोगिनी घूजइं कूजइ मयण किसोर।—व.वि.

घूजणहार, हारौ (हारी), घूजणियौ—वि०।

घुजवाड़णौ, घुजवाड़वौ, घुजवाणौ, घुजवावौ, घुजवावणौ, घुजवाववौ—प्रे०रू०।

घुजाड़णौ, घुजाड़बौ, घुजाणौ, घुजावौ, घुजावणौ, घुजाववौ, घूजाड़णौ, घूजाड़वौ, घूजाणौ, घूजावौ, घूजावणौ, घूजाववौ—क्रि०स०।

घूजिग्रोड़ो, घूजियोड़ो, घूज्योड़ो—भू०का०कृ०।

घूजीजणौ, घूजीजवौ—भाव वा०।

घुज्जणौ, घुज्जवौ—रू०भे०।

घूजाड़णौ, घूजाड़वौ—देखो 'घुजाणौ, घुजावौ' (रू.भे.)

उ०—धाक हाक टाक ग्रीह घूसां ग्राभ घूजाड़ियौ, गिरां गूंजाड़ियौ डांण सूक गो गयंद। ग्रोफाड़ियौ ढाल हूंता नाराज फाड़ियौ ग्राचां, मारू 'पतै' फतै पाय पाड़ियौ मयंद।—फतैसिंघ महडू

घूजाड़णहार, हारौ (हारी), घूजाड़णियौ—वि०।

घूजाड़िग्रोड़ो, घूजाड़ियोड़ो, घूजाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

घूजाड़ीजणौ, घूजाड़ीजवौ—कर्म वा०।

घूजणौ, घूजवौ—अक०रू०।

घूजाड़ियोड़ो—देखो 'घुजायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घूजाड़ियोड़ी)

घूजाणौ, घूजावौ—देखो 'घुजाणौ, घुजावौ' (रू.भे.)

घूजाणहार, हारौ (हारी), घूजाणियौ—वि०।

घूजायोड़ो—भू०का०कृ०।

घूजाईजणौ, घूजाईजवौ—कर्म वा०।

घूजणौ, घूजवौ—अक०रू०

घूजायोड़ो—देखो 'घुजायोड़ो (रू.भे.)

(स्त्री० घूजायोड़ी)

घूजावणौ, घूजाववौ—देखो 'घुजाणौ, घुजावौ' (रू.भे.)

घूजावणहार, हारौ (हारी), घूजावणियौ—वि०।

घूजाविग्रोड़ो, घूजावियोड़ो, घूजाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

घजावीजणौ, घूजावीजवौ—कर्म वा०।

घूजणौ, घूजवौ—अक० रू०।

घूजावियोड़ो—देखो 'घुजायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घूजावियोड़ी)

घूजियोड़ो—भू०का०कृ०—धक्का, अशक्ति, भय अथवा किसी आवेग के कारण डोला हुआ, हिला हुआ, थर्राया हुआ, कांपा हुआ।

(स्त्री० घूजियोड़ी)

घूजौ—देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)

घूट—देखो 'घूट' (रू.भे.)

घूण—देखो 'घूंण' (रू.भे.)

घूणणौ, घूणवौ—देखो 'घूंणणौ, घूंणवौ' (रू.भे.)

उ०—१ सिर घूणै वोलै सदा, हास चूक विण होय। कुकवि सभा जिण संचरे, सभा प्रभा हत होय।—वां.दा.

उ०—२ रीसाविउ ते मेल्हइ झाळ। सिर घूणइ मुखि पडइं लाळ।—चिहुंगति चउपई

उ०—३ वालंभ, दीपक पवन भय, ग्रंचळ सरण पयट्ठ। कर हीणइ घूणइ कमळ, जांण पयोहर दिट्ठ।—ढो.मा.

उ०—४ भिड़ भिड़ज जिसा गज घटा भयंकर, घूणण ग्ररथ गढ़ जिसौ घड़ो। अतुळीवळ 'जैतै' ऊदावत, 'जैतै' वाघवतां जेहड़ो।—दुरसौ ग्राढ़ो

उ०—५ वरळाई सोळंकियां, घूणै वळी पहाड़। थर वाळीसा सींवलां, गमिया जड़ां उपाड़।—गु.रू.वं.

उ०—६ गजवंधी इम ग्राखियो, करि घूणै करमाळ। 'गोइंद' माथै ग्रावसी, त्यौं सिर ग्रायौ काळ।—गु.रू.वं.

घूणणहार, हारौ (हारी), घूणणियौ—वि०।

घूणिग्रोड़ो, घूणियोड़ो, घूण्योड़ो—भू०का०कृ०।

घूणीजणौ, घूणीजवौ—भाव वा०।

घूणियल—सं०पु० [?] सुमेरु पर्वत।

उ०—ग्राहंस कमंध तूझ पग ऊंडा, हाथां गयण छिवै हयवाह। मथियळ नै घूणियळ न मीढां समवड़ तूझ तणीं 'गजसाह'।—किसनौ ग्राढो दुरसावत

घूणियाळ—देखो 'घुणियाळ' (रू.भे.)

घूणियोड़ो—देखो 'घूंणियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घूणियोड़ी)

घूणी—१ देखो 'घूंणी' (रू.भे.)

उ०—१ कमंध जोगेस ग्रादेस सह जग करै, दीध ग्रासीस कर रीस दूणी। घाल ग्रायौ तूं हीज वैरियां तणै घर, धुकै घमसांण जोरांण घूणी।—महेसदास कूंपावत रौ गीत

उ०—२ घोमपात्र कळिधूत धरावै। घूणी चंदण ग्रगर धुकावै।—सू.प्र.

२ देखो 'धुंई' (रू.भे.)

३ देखो 'धुनी' (रू.भे.)

घूणौ—देखो 'धनु' (ग्रल्पा., (रू.भे.)

घूणौ, घूबौ—देखो 'धांणौ, धोवौ' (रू.भे.)

उ०—ग्रंगथीग्रां चंदण घूग्रो, देह माहारांनि कसि। प्रत्यक्ष जूग्रो पारखूं, विसघर जेणि वहु वसि।—नळाख्यांन

घूत—वि० [सं० धूर्त=उत्पाती, उपद्रवी] १ उन्मत्त; मस्त।

उ०—१ वहि वांण वजर हूंका वहै, मतवाळा ग्रोघा मजां। ज्वाळ में हुवे भभरूत जंग, घूत पठांणां कमधजां।—सू.प्र.

उ०—२ वडा खळ ढाहत साबळ वाह । 'गजावत' 'खीम' करै गज-गाह । घसै जुध मांगळिया भड़ धूत, हुसै दळ मारण नेजम हूंत ।
—सू.प्र.

२ योद्धा, वीर । उ०—१ धांनुख हत्था धूत भयांनक भूत सा । मन का अति मजबूत दिपै जम दूत सा ।—सिववक्स पालावत

उ०—२ वरसां दस तणौ वापरै वदळै, राजा कनै रहै रजपूत । देस विदेस चाकरी दौड़ै, धजवड़ हाथां पकड़ै धूत ।—अज्ञात

उ०—३ राजी सरव सभा नै राखै, सहज सुभावां घणा सरै । धजवड़ हता मारका धूतां, कव रजपूतां अमर करै ।
—जोधपुर नरेस महाराजा मांनसिंघ

अल्पा०—धूतारौ, धूतौ, धूत्यौ ।

३ देखो 'धूरत' (रू.भे.)

उ०—१ थळ कतार लांघण थटै, लै जिहाज जळ अंत । भोळी-डाळी आंगणी, वेटा धूत जणंत ।—वां.दा.

उ०—२ विधो-विध दीठौ मांय विभूत, धूताई छोड परी सव धूत । मांहिलो ठाकुर लाधौ मांय, पुजावै आपो आप ही पांय ।—ह.र.

धूतड़ेल, धूतड़ैल—देखो 'धूत' (मह., रू.भे.)

उ०—खैंग बादळां ज्यूं बहै जरद्दां जड़ेल खेल । मरद्दां अड़ेल आंमा सांमुहा मांडीस । छडाळां साहु रां नीरां धार बापड़ेल छूटा । प्रळै धूतड़ेल तूटा माखा पांडीस ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

धूतणौ, धूतबौ—क्रि०स० [सं० धूर्त] धूर्तता करना, ठगना ।

उ०—१ ठगिया देवतां नर नाग ठगारी, है लछमी सुण वात हमारी । विलसणहारौ 'कमौ' विहारी, धूतै तौ जांणूता धूरी ।
—कमा विहारी री गीत

उ०—२ जदपि मछिंदर मन डिग्यां देखि नाटकी घट नारी । राजा जत जतन करत धूत्यौ धूतारी ।—ह पु.वा.

धूतपाप—सं०स्त्री० [सं०] काशी की एक पुरानी छोटी नदी या नाला जो आजकल पट गया है ।

धूताई—देखो 'धूरतता' (रू.भे.)

धूतारण—सं०पु० [सं० ध्रुवः+तारण] १ विष्णु ।

उ०—क्रसन राखि हिव हूं तूं करतौ । धरणीधर ममता मन धरतौ । तूझ विखै मत दे धू-तारण । कूप संसार काढ़ स्रव-कारण ।—ह.र.

२ परमेस्वर, ईस्वर (ह.नां., अ.मा.)

धूतारणौ, धूतारबौ—क्रि०स० [सं० धूर्तम्] भड़काना, सिखाना ।

उ०—सखी मइ अपराध न को कियउ, यदुराय रीसणे केम रे । हां हां मरम पिछाण्यउ, सिव नारि धूतारै नेमि रे ।—स.कु.

धूतारणहार, हारौ (हारी), धूतारणियौ—वि० ।

धूतारिम्रोड़ौ, धूतारियोड़ौ, धूतारचोड़ौ—भू०का०कृ० ।

धूतारीजणौ, धूतारीजबौ—कर्म वा० ।

धूतारियोड़ौ—भू०का०कृ०—भड़काया हुआ, सिखाया हुआ ।
(स्त्री० धूतारियोड़ी)

धूतारी—सं०स्त्री० [सं० धूर्तम्] पृथ्वी, धरती ।
(डि.नां.मा., ना.डि.को., डि.को.)

वि०स्त्री० [सं० धूर्त+रा०प्र०आरी] ठगने वाली, ढोंग करने वाली, चालाक, धूर्त । उ०—तिण वचनि राजा कहइ, तूं सुधी धूतारी । तइं मसवासिणि मिस करिउं, घणा पुरुस नइं मारी ।—मा.कां.प्र.

धूतारौ—१ देखो 'धूत' (१, २) (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'धूरत' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ ठगिया देवता नर नाग ठगारी, है लछमी सुण वात हमारी । विळसणहारौ कमौ विहारी, धूतै तौ जांणू धूतारी ।
—कमा विहारी री गीत

उ०—२ ए जरा धूतारी, धोइ देस विदेस । विण साबू पांणी, उज्जळ करस्यइ केस । तिणि विण आव्यइ जे, मइ कीधा बहु पाप । ते मुझ मनि जांणइ, जिण मा जांणइ बाप ।—कवि-गुणविजय

उ०—३ खोटारा नइं खुसकीया, धूतारा धाडीत । जाट जूआरी जाउडी, तरवरीआ जिम ईति ।—मा.कां.प्र.

उ०—४ धूतारा जोगी एकर सूं हंसि बोल । जगत वदीत करी मन-मोहन, कहा बजावत ढोल ।—मीरां

(स्त्री० धूतारी)

धूतियोड़ौ—भू०का०कृ०—धूर्तता किया हुआ, ठगा हुआ ।
(स्त्री० धूतियोड़ी)

धूती—सं०स्त्री०—शाक विशेष ?

उ०—धूगरि धूणि धांणकी, धातरि धणख धमासि । धडफूली धंधो-ळणी, धूती धाडा धासि ।—मा.कां.प्र.

वि०स्त्री०—ढोंग करने वाली, ठगने वाली, चालाक, धूर्त ।

उ०—नट विट नाडी ओडणा, ति आवइ तु म वारि । धूती जाइ धूत्त कौ, उत्तिम नी उगारी ।—मा.कां.प्र.

धूतौ, धूत्यौ—१ देखो 'धूत' (१, २) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—रजपूतां री आथ जकां रै, कूंतां री भरळाट करां । सकळ कहै जावै सूतां री, धूतां री किम जाय धरा ।
—उम्मेदसिंघ सीसोदिया री गीत

२ देखो 'धूरत' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—हे तुरकां पूरवियां हेतु दखां दिली रौ दूतौ, दावां धाव छळां में देखौ धूत पणा में धूतौ ।—अज्ञात

(स्त्री० धूती)

धूधड़ाक—वि०—निशंक, निडर ।

धूधड़े, धूधड़ै, धूधडे, धूधडै—वि० [सं० ध्रुव+घटः] अटल, दृढ ।

उ०—१ कंत वळिहार लै मनाविय कांमणी । घरै मन धूधड़ै साथि सकळा धणी ।—हा.झा.

उ०—२ राठौड़ राव असमांन रुक्ख, सीचियौ ध्रित्त करि सुरां-मुक्ख । चड़ि कोप ओप धूधड़ै चीत, ऊगा वदन्न वारै अदीत ।
—गु.रू.वं.

२ निशंक, निडर, निर्भय। उ०—१ धके असुरां पड़ै भाल कप घूघड़े। खुल सिखर तूल जिम पवन आगळ खड़ै।—र.रू.

उ०—२ गाज गुण बांण नीसांण सर गड़गड़ै, चाल वेहुवै कटक आविया चापड़ै। घूणियो सेल भोक कियो घूघड़ै, देवड़ां ऊपरै नांखिया देवड़ै।—दुरसौ आढौ

३ खुले आम। उ०—घणा नर अंजस घर जोम करता घणा, खुसी हुय तिकांहिज रैत खोसी। भाव सवळ सह घूघड़ै भुजाळा। हुवो जस जुगां लग भळै होसी।—कुसळसिंघ कूंपावत री गीत

रू०भे०—घूघडे, घूघड़ै, घूघडे, वूघडै।

घूघर-सं०पु० [राज० घू=शिर+सं० घर] शरीर, देह (डिं.को.)

घूघळ—देखो 'धुंघळ' (रू.भे.)

उ०—घोरां घोरां घर धूघळ धुरधाई। थळ थळ ऊथळती वळकी धुरकाई। पड़ती पुळ पुळ पर भुळ भुळ भर भूंजै। सरकर सर सोखत गिरवर दर गूंजै।—ऊ का.

घूघळणौ, घूघळवौ—देखो 'धूंघळणौ, धूंघळवौ' (रू.भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति चौमासा री छावणी हुई छै। आगम रित आवी छै। आसाढ़ घूघळिओ छै।—रा.सा.सं.

घूघळियोड़ौ—देखो 'धूंघळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० घूघळियोड़ी)

घूधारण-वि० [सं० ध्रुव+धारण] अटल, दृढ़, स्थिर।

उ०—१ पहला चिता प्रवेस कियौ दोनूं अंतेवर, सनमुख भुजां सूं धार पछै पधराय नरेसुर। उभय सती भर अंक धरै चिता घूधारण, हाजर खड़ी हजूर चमर ढाळै सोनारण।—साहिबौ सुरतांणियौ

उ०—२ रात दिवस भज रांम नरेसर, पात राख नहचौ मन पूरौ। घूधारण कारण लख घूरौ, उधारण री किसौ अणूंरौ।—र.ज.प्र.

उ०—३ सेवक रिख मुनि भगत संन्यासी, अरज करै हुय दीन उदासी। त्रिभवणनाथ जगत निसतारण, धरम वेद कीजै घूधारण।

—रा.रू.

घूघूकट—देखो 'धुधुकट' (रू.भे.)

उ०—घूघूकट थ्रिकट थ्रिकट धममप धपमप, वाजा विविध वजाड़ै। थेई थेई थ्रंग थ्रंग नित थावत, गीत संगीत गवाड़ै।—मे.म.

घूघूकार-अव्य० [दिश०] १ अत्यधिक अधिकता बोध कराने का शब्द।

२ देखो 'धुधुकार' (रू.भे.)

घून-सं०स्त्री० [सं० धून्] १ धुनने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'धून' (रू.भे.)

३ देखो 'धुन' (रू.भे.)

उ०—वटा जीतसी जुद्ध वाहू वडाई, अगाचार नारद्द संखेप गाई। रही मोरळी घून बाजी रसाळी, वळी चेतना अज्ज रा साथ वाळी।

—ना.द.

घूनौ—१ देखो 'धुन' (रू.भे.)

उ०—कोइलड़ी आंबइ चडी, 'कुहु कुहु' सब्द निवारि। माधव नइं मोरइ मनि थिकी, घूनी फेरणहारि।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'धूंणो' (रू.भे)

३ देखो 'धूंन' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जंगळ जंगळ में जूंनी जणियांणी। धोळा धोरां री घूनीं धिणियांणी। खोटै टोटै नग करियां वीखरगी। साहव मोटै दुख जोटणियां मरगी।—ऊ.का.

४ देखो 'ध्वनि' (रू.भे.)

घूनौ-सं०पु० [देश०] १ जाति विशेष का घोड़ा।

उ०—घूना चित्रांगिया धंग। खेड़ रा नीपना खंग।—गु.रू.बं.

२ देखो 'धूंन' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—१ करै सरवस नजर रसत चाढै किलै, धार सिर पर धणी मांण घूनौ। लूण री सरीगत वहै कुळवट लियां, जुदौ नह होवसी कमध जूनौ।—महेसदास कूंपावत री गीत

उ०—२ सिख सोच न सूंना ऊठ अभूंना, घूना मार वड़ंदा है। साहव मन मोहा दुख सूं दोहा, लोहां लोह लड़ंदा है।—ऊ.का.

धूप-सं०पु० [सं०] १ कपूर, चंदन, अगर, गुग्गल आदि गंध द्रव्यों को मिला कर बनाया जाने वाला पदार्थ विशेष जिसको अंगारे पर रखने से महकयुक्त धूम निकलता है।

उ०—१ गिलका-सिला सिला-गोमत्ती, मंडावै संजम मूरत्ती। साळगरांम सिला सुध सेविस, अग्गर चंदण धूप उखेविस।—ह.र.

उ०—२ हुवै होम आसावरी धूप हूंमै। घणां सांघणां दीप सांमीप घूंमै।—मे.म.

क्रि०प्र०—होणौ।

मुहा०—१ धूप करणौ—देखो 'धूप खेवणौ'।

२ धूप खेवणौ—देव पूजन के लिए अंगारे पर सुगंधित पदार्थ रख कर धूम उठाना।

२ वह सुगंधित धूम जिसे देव पूजन के लिए अंगारे पर सुगंधित पदार्थ डाल कर उठाया जाता है।

रू०भे०—धूव।

३ सूर्य का प्रकाश, आतप, ताप।

उ०—तूं भरयु रे भाद्रवा, पूरण पंचइ रूप। क्षणु वरसइ क्षणु वाउलउ, क्षणु सीतळ क्षणु धूप।—मा.कां.प्र.

पर्याय०—आतप, तावड़ो, परकास।

मुहा०—१ धूप खाणी—धूप में गरम होना, तपना.

२ धूप खवाणी—धूप लगने देना, धूप में रखना.

३ धूप चढ़णी—(सूर्योदय के काफी समय बाद) धूप तेज हो जाना.

४ धूप दिखाणी—देखो 'धूप खवाणी'।

५ धूप देणी—देखो 'धूप खवाणी'।

६ धूप निकळणी—धूप फैलना, प्रकाश फैलना.

७ धूप पड़णी—आतप बढ़ना, तेज धूप होना.

८ धूप में बाळ पकाणा—धूप में बाल सफेद करना, बुड्ढा हो जाना,

कुछ अनुभव न होना. ६ धूप लेंणी—देखो 'धूप खाणी' ।

सं०स्त्री० [सं० धूप=संतापे] ४ तलवार, खड्ग । उ०—१ धडच्छुत सीसं तड़त्ताड धूप । रुपं धड़कंध महा भड़ रूप ।—मे.म.

उ०—२ धुवं 'अजवेस' खळां फळ धूप । रिमां धड़ मांहि समोभ्रम 'रूप' ।—सू.प्र.

उ०—३ ठांम ठांम तोपां तणी जाळ रै मोरचं ठहै, धूवं जेठ आदित्य मालदे वाळी धूप । हल्लं वांध चाल रै हवेली माथं हुवो हाको, 'सुरतांण' रुपं महा काळ रै सरूप ।—नींवाज ठा. सुरताणसिंघ री गीत

धूपघड़ी-सं०स्त्री० [सं० धूप+घटिका] धूप में समय का ज्ञान कराने वाला एक यंत्र ।

धूपघटी-सं०स्त्री० [सं०] १ धूप रखने का छोटा बरतन, धूपदानी. २ धूप जलाने का पात्र । उ०—१ चिहू पखं परिअचि अतिभली, धूपघटी चिहु पासे वळी । मंच महामंच कीधा घणा, पार न पामइ कोइ तेह तणा ।—नळ-दवदंती रास

उ०—२ रत्नमय दंड चांमर ढाळइं, हरस लगइं आप न संभाळइं, नव सुवरण्णकमळ पाय हेठि संचारइं, अस्ट मंगळीक नवा अवतारइ, इंद्रध्वजादि ध्वजा लहलहइं, धूपघटी परिमळ महमहइं ।—व.स.

रू०भे०—धूपहट ।

धूपछाया-सं०पु० [राज० धूप+सं० छाया] एक ही स्थान पर कभी एक ओर कभी दूसरा रंग दिखाई देने वाला एक प्रकार का रंगीन कपड़ा ।

धूपट-सं०स्त्री० [सं० धूप=संतापे] ऐसा सम्बन्ध जहां से खूब माल मिले अथवा खूब आनन्द और आराम मिले ।

मुहा०—धूपट लागणी—मौज मिलना, आनन्द मिलना ।

रू०भे०—धुरपट

धूपटणौ, धूपटबौ-क्रि०स० [देश०] १ खूब खर्च करना, वितरण करना ।

उ०—१ भाळं वीठ सुधा जठी आसगीरां भूक मागं, आचां खाटी सोभा जोस अथाग अरोड़ । 'वीसळसं' वीस कोड़ दटी सो गमाई वागं, राजा रीझ छंदा लागा धूपटी राठौड ।

—महाराजा वळवंतसिं (रतलांम) री गीत

उ०—२ सार आचार समराथ वळवंत सुपह, धूपटण आथ दातार धूना । ते गयंद फूंक रज अवं अणतोलहा, सूवड़ां खोलडा हुवं सूना ।

—तिलोकजी वारहठ

२ अधिकार करना । उ०—१ घर पतसाही धूपटं, बळपांण बहादुर । आयौ कमरौ पातसाह, सज सैन्या आसुर ।

—ठा. जुझारसिंघ मेड़तियौ

उ०—२ बिरद धारियां भुजां भड लियां ऊवांबरां । हचै खळ ढाल पाखर जड़ै हेमरा । धणी छळ स्यांमध्रम रखण चत्रगढ़ धरा, धूपटी नाहरै खगां ईडर धरा ।—रावत सारंगदेव (द्वितीय) कांनोड़ री गीत

३ लूटना । उ०—रूपां मुलाय रूक नूं उर अंजस मत आंण । घाड़ आय जद धूपटण, देखीजं उण दांण ।—ठा. रेवतसिंह भाटी

४ आनन्द मनाना, खुशी मनाना, मौज करना ।

धूपटणहार, हारौ (हारी), धूपटणियौ—वि० ।

धूपटिओड़ौ, धूपटियोड़ौ, धूपटयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

धूपटीजणौ, धूपटीजबौ—कर्म वा० ।

धुपटणौ, धुपटबौ—रू०भे० ।

धूपटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ अधिकार किया हुआ. २ लूटा हुआ. ३ खूब खर्चा किया हुआ, वितरण किया हुआ. ४ आनन्द मनाया हुआ, खुशी मनाई हुई, मौज किया हुआ । (स्त्री० धूपटियोडी)

धूपणौ—देखो 'धूपियौ' (रू.भे.) उ०—१ गंधवती त्रिगमद अगर, सेल्हारस घनसारु । वरि प्रभु आगळि धूपणौ, चवदम अरचा चारु ।

—ध.व.ग्रं.

उ०—२ धीरज मन करी धूपणौ, तप अगरज खेव । सद्धा पुस्प चढाय नै, इम पूजो जिन देव ।—जयवाणी

धूपणौ, धूपबौ-क्रि०स० [सं० धूप] १ अगारे पर सुगंधित पदार्थ डाल कर देव पूजन करना । धूप देना, गंध द्रव्य जलाना (उ.र.) २ सूर्य के आतप में रखना, धूप देना ।

उ०—१ लागी चिहु करे धूपणं लोधं, केम पास मुगता करण । मन त्रिग चै कारणै मदन ची, वागुरि जांणै विसतरण ।—वेलि.

उ०—२ इस्या अस्व गंगोदिक स्नांन कराव्या, तीहं कंठकंदळि कठूं-वरि तणी माळ घाली, धूपहट धूप्या ।—व.स.

धूपणहार, हारौ (हारी), धूपणियौ—वि० ।

धूपिओड़ौ, धूपियोड़ौ, धूप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

धूपीजणौ, धूपीजबौ—कर्म वा० ।

धूपत-सं०पु० [सं० ध्रुवः+पति] ध्रुव के स्वामी, विष्णु ।

उ०—भगत-जुगत भगवंत भज, धूपत रसणा धार । चित हर हर निस दिन उचर, सह तज नांम संभार ।—ह र.

धूपदांन-सं०पु० [सं० धूप+आधान] १ धूप आदि गंध द्रव्य जलाने का पात्र. २ धूप रखने का वर्तन या डिब्बा ।

रू०भे०—धूपधांणउ ।

अल्पा०—धूपदांनी ।

धूपदांनी-सं०स्त्री०—देखो 'धूपदांन' (अल्पा., रू.भे.)

धूपधांणउ—देखो 'धूपदांन' (रू.भे.) (उ.र.)

धूपधारकौ-वि० [देश०] तलवारधारी, योद्धा, वीर ।

उ०—चंगी उवारकां चंगी चोढाड़ं जोधांण पांणी, मारकां पोढाडं भड़ां पोढियौ सु-मीच । येळा नांम भ्रमौ धूपधारकां समांन ऊगौ, बीजो कांन पूगौ वंदारकां लोक बीच ।—महादांन महडू

सं०पु०—सूर्य्य, भानु ।

धूपवत्ती-सं०स्त्री० [सं० धूपवर्ती] मसाला लगी हुई सींक या वत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धूम उठ कर फैलता है ।

मुहा०—१ धूपवत्ती करणी—देव पूजन के लिए धूपवत्ती जलाना । २ धूपवत्ती खेणी—देखो 'धूपवत्ती करणी' ।

धूपहट—देखो 'धूपघटी' (रू.भे.)

उ०—इस्या अस्व गंगोदकि स्नांन करव्या, तीहं कंठकदळि कळूंबरि तणी माळ घाली, धूपहट नृप्या।—व.स.

धूपा—देखो 'धूप' (४) (रू.भे.)

उ०—लोह लपेटा बंध धूपा कडी टूपा कसरा। आठी आलोजा मूठतोजा धल्लमोजा तसरा।—पा.प्र.

धूपारणौ—देखो 'धूपियौ' (रू.भे.)

धूपियोड़ौ-भू०का०कृ०—अंगारे पर पदार्थ डाल कर देव पूजन किया हुआ, धूप दिया हुआ, गंध द्रव्य जलाया हुआ।

(स्त्री० धूपियोडी)

धूपियौ, धूपेडौ, धूपेणौ-सं०पु० [सं० धूप+रा०प्र०इयौ, इडौ] मिट्टी, पत्थर अथवा धातु का बना हुआ वह पात्र जिसमें देवी-देवताओं के निमित्त अंगारे रख कर धूपादि जलाया जाता है, धूपदान।

उ०—१ धूपिया धकै चिटकां घिरत धकधकै, वारुणी डकडकै तरफ वांमी। बकबकै वीर जोगण छकै दो बखत, भकभकै हुतासण हेत भामी।—मे.म.

उ०—२ गुरु कहै सांभळ राय, कोई देव पूजण नै जाय। स्नांन तिलक करी ए, धूपेणौ कर धर धरी ए।—जयवांणी

रू०भे०—धुपारणौ, धुपेड़ौ, धुपेरणौ, धूंपियौ, धूंपेड़ौ, धूपणौ, धूपेरणौ।

धूपेरण-स०स्त्री०—सलई या गुग्गुल का पेड़ जिसका गोंद धूप की सामग्री मे काम आता है।

धूपेरणौ -देखो 'धूपियौ' (रू.भे.)

धूपेल-सं०पु०—गुग्गुल का तेल।

उ०—धूपेल चांपेल मोगरेल करणेल जइतेल एवं विधि तेलिइं चोळा भीजाइ।—व.स.

धूब-सं०स्त्री०—१ दोनों पैरों को मिला कर पानी मे कूदने की क्रिया या भाव. २ गिरने अथवा कूदने मे उत्पन्न ध्वनि.

३ घोड़े की पीठ का पीछे का भाग जहा दुमची बंधती है ?

उ०—कूकटा कंध रा, लोह में बंध रा, तोछड़ी पूंठ रा, चौवड़ी धूब रा, चांमरी पूंछ रा, निमसी नळी रा।—रा.मा.सं.

धूबक-सं०स्त्री०—१ शोक सूचक समाचार से पहुंचने वाला मानसिक धक्का. २ बंदूक छूटने से उत्पन्न शब्द।

धूबकौ-सं०पु० [अनु०] १ किसी भारी वस्तु के पृथ्वी पर गिरने से उत्पन्न शब्द, आवाज, ध्वनि।

उ०—१ चत्रभुज तणा वहिसै चक्र, पडसादां पड़िसै पका। मलेछां तणां मुंडि मैं मरट, धटां तणा अति धूबका।—पी.ग्रं.

उ०—२ धगिणि रै ऊपरा घडा रा धूबका। धिणि कुण झालिसै हमैं धाग धरा।—पी ग्रं.

२ देखो 'धूबक'।

धूबड़-नाथ-सं०पु०—नाथ संप्रदाय का एक सिद्ध, संन्यासी (पा.प्र.)

धूबणौ, धूबबौ-क्रि०अ०—देखो 'धुबणौ, धुबबौ'।

उ०—१ वधे वीर हाकां धोम गैणाग धूबै, पवंग जुधि मेलियौ दळ पहिले। आप छळ बाप छळ सांमि छळ आचरां, 'गदाधर' खड़गधर झूझि गहिलै।—गदाधर राठौड़ रौ गीत

उ०—२ ठांम ठांम तोपां तणौ जाळ रै मोरचै ठहै। धूबै जेठ आदित्य 'मालदे' वाळी धूप।—ठा. सुरतांणसिंघ ऊदावत रौ गीत

उ०—३ 'बादरसी' तणा अणबीर बा'दर बिया, विहंड खंड खंड किया बीजळां वाढ। छड़ाळां धूबतां अड़ा जुध छोडिया, गढां 'सिंघ' तणा छत्र धारियां-गूढ़।—महाराज प्रतापसिंघ (किसनगढ़) रौ गीत

धूबणहार, हारौ (हारी), धूबणियौ—वि०।

धूबिओड़ौ, धूबियोड़ौ, धूब्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धूबीजणौ, धूबीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

धूबाक-सं०स्त्री०—ऊपर से नीचे कूदने की क्रिया, कूदन, छलांग।

धूबियोड़ौ—देखो 'धूबियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० धूबियोडी)

धूबौ-वि०—१ संहारक, मारने वाला।

उ०—प्रथी-पत हुकम आंटा घडै प्रथी सूं। धजर आंटा घड़ै सत्रां धूबौ। बाप-नांमी तणा विरद नित बुलाड़ै। आप-नांमी खबौ ठौर ऊभौ।—ठाकुर सुरतांणसिंघ ऊदावत रौ गीत

२ देखो 'धोबौ' (रू.भे.)

धूमंगर-सं०पु० [सं० धूम+अंग] आग, अग्नि।

उ० -तुरां चढै तिण वार, वडी फौज रा वहादर। हाजर पैदल हुआ, धिकत तोड़ा धूमंगर।—सू.प्र.

रू०भे०—धोमंग।

धूमंडळ—देखो 'ध्रुवमंडळ' (रू.भे.)

धू-मंडळ-सं०पु०यो० [सं० ध्रुव मण्डल] १ पुराणानुसार एक लोक जो सत्यलोक के अन्तर्गत माना जाता है।

उ०—त्रिया जात अकल री ओछी, उनकी करत बड़ाई। धू-मंडळ से पकड़ मंगाऊं, रांम लखण दोनूं भाई।—संतवांणी

२ वह भू भाग जहां तक ध्रुव तारा दिखाई देता है, संसार।

उ०—जांबवती नै कह्यौ, कदेई कंवरजी सूं मुजरौ करौ। इकेली बैठी घोड़ा दोय लियां बैठी छै। धूरै मंडळ बैर जात न दीठी। कहता जिसी छै।—जगदेव पंवार री वात

३ जिस ओर ध्रुव हो, उत्तर। उ०—दुरजणे धणे रण भोम वाहै दुजड़, वडा जोगेस बोह दीह वहिया। पराक्रम कुरंभां राव धूमंडळ पंथ, रीझ सहको जगत उरै रहिया रहिया।—मालौ सांदू

धूम-सं०पु० [सं० धूमः] १ धूम्रां, धूम (डिं.को.)

उ०—१ अवधि एतलइ पहुतउ काळ, थयउ आकासि धूम विकराळ। सातळ भणइ गुरज मोकळउ, पातिसाह कहसि हुं भलउ।—कां.दे.प्र

उ०—२ धूंहरि पडय अथाह ते, विरहानळ नौ धूम। वैगा जावौ कोइ पिघळावौ प्रिय मन मूंम।—ध.व ग्रं.

उ०—३ हण ताडका निज ठाहरां, जिग मांड ग्रारंभ जाहरां। उत होम धूम विलोक ग्राया, निडर राकस नीच।—र.रू.
उ०—४ नहि काहू के संगी, ग्यांनी जग में यूं निरलेपा, जैसे गगन ग्रसंगी, धूम नहीं मेघ लिपंता।—स्री सुखरांमजी महाराज
रू०भे०—धोम।
२ युद्ध। उ०—मातो धूम मुरद्धरा, तातो जोस कटक्क। 'सोनग' रातो वेध लख, जातो साह ग्रटक्क।—रा.रू.
सं०स्त्री०—३ उत्पात, उपद्रव। उ०—बादसाह कस्मीर में रहै, ऐ हिंदुस्थांन में रहै, बड़ी धूम मांडी।—गौड़ गोपाळदास री वारता
क्रि०प्र०—मांडणी।
४ उछल-कूद; हल्ला-गुल्ला, शरारत।
ज्यूं—छोरां ग्रठै धूम मती करौ, ग्रागा जावौ परा।
क्रि०प्र०—करणी, मचाणी।
५ वह हलचल, रेलपेल ग्रथवा ग्रान्दोलन जो बहुत से लोगों के ग्राने-जाने, इकट्ठे होने, हिलने-डोलने ग्रथवा शोर-गुल करने से होती है।
ज्यूं—राजातिलक री धूम, मेळा री धूम।
क्रि०प्र०—होणी।
६ भारी ग्रायोजन, भीड़-भाड़ ग्रौर तैयारी, समारोह, ठाट-बाट।
ज्यूं—राजाजी री सवारी बड़ी धूम सूं नीकळी, बरात बड़ी धूम सूं गई।
यौ०—धूमक-धैया, धूम-धड़क्को, धूम-धांम, धूम-मारग।
७ चारों ग्रोर होने वाली चरचा, जनरव।
८ ग्राहार करते समय ग्राहार ग्रथवा ग्राहारदाता की निंदा करने का एक दोष (जैन)
९ देखो 'धोम' (रू.भे.) (डि.को.)
वि०—धुएं के समान, श्याम, काला (ग्र.मा.)
क्रि०वि०—१ जोर-शोर से, धूम-धाम से।
उ०—सझिया-स कोट गढ़ साह रा, धूम लूटि धन ऊधमै। ऊगतौ भांण वाळक 'ग्रभौ', राय ग्रांगण इण विध रमै।—सू.प्र.

घूमग्रालम-सं०पु० [सं० धूम+ग्रलि] भौंरा, भ्रमर (ग्र.मा.)
घूमकधैया-सं०स्त्री०यौ० [देश०] १ हल्ला-गुल्ला, शोर-गुल.
२ उछल-कूद, उत्पात, उपद्रव।
क्रि०प्र०—करणी, मचाणी, होणी।
घूमकेतन, धूमकेतु-सं०पु० [सं०] १ वह जिसकी ध्वजा धूम्र हो, ग्रग्नि, ग्राग. २ भाप या धुएं के ग्राकार की पूंछ वाला, केतु ग्रह.
३ पुच्छल तारा. ४ वह घोड़ा जिसकी पूंछ में भंवरी हो (ग्रशुभ)
५ शिव, महादेव. ६ रावण की सेना का एक राक्षस।
रू०भे०—धूम्रकेतु।
घूमड़ौ—देखो 'धूमडो' (रू.भे.)
घूमज-सं०पु० [सं०] १ बादल, मेघ (डि.को.)
२ नागरमोथा (डि.को.)

घूमडो-सं०पु० [देश०] मारवाड़ राज्यान्तर्गत एक पर्वत श्रेणी जिसका प्राचीन नाम सुभद्रार्जुन था। (कहा जाता है कि वीर ग्रर्जुन सुभद्रा को लेकर कुछ समय तक इसी पहाड़ में रहा था। ग्रब यहां पर सुभद्रा का एक मंदिर भी है जिसे चौवरा माता का मंदिर कहते हैं।)
रू०भे०—धूमड़ो।
घूमधड़क्को, धूमधड़ाको-सं०पु०यौ० [ग्रनु०] वह ग्रायोजन जिसमें गाजे-बाजे हों, भीड़-भाड़ ग्रौर तैयारी।
घूमधज-सं०स्त्री० [सं० धूमध्वज] ग्रग्नि, ग्राग (ह.नां., ग्र.मा., नां.मा.)
रू०भे०—धुंवांधज, धुंवांधुज, धुवांधज, धुवांधुज, धोमधूज।
घूमधर-सं०पु० [सं०] ग्रग्नि, ग्राग।
घूम-धांम-सं०पु०यौ० [ग्रनु०] भारी ग्रायोजन, ठाटबाट, भीड़भाड़ ग्रौर तैयारी, समारोह।
रू०भे०—धाम-धूम।
घूमपांन—देखो 'धूम्रपांन' (रू.भे.) (ग्रमरत)
घूममारग-सं०पु०यौ० [देश०] वह ग्राम रास्ता जिस पर खूब चहल-पहल रहती हो।
रू०भे०—धोम-मारग।
घूमर-सं०पु० [सं० धुर्+चोटी] १ शिर, मस्तक।
उ०—बादळा कनक रा गंगवार, धूमरां मंजरां तुळछ धार। निजमन पढ़ गीता सहस नांम, पढ़ हर पुरांण कर हर प्रणांम।—वि.स.
२ एक ग्रसुर का नाम (रा.रा.)
३ देखो 'धूम्र' (रू.भे.)
सं०स्त्री०—४ रंग विशेष की गाय।
उ०—मोडी गोडी दै पसवाड़ा मोड़ै। तड़छां वातोड़ी धड़छां तन तोड़ै। पीळी पाडळ पर फिर फिर कर फेरै। धोळी धूमर नै धिर धिर धर घेरै।—ऊ.का.
वि०—काला, श्याम (ग्र.मा.)
घूमरक-सं०पु० [सं० धूम्र] ग्रंधेरा (ह.नां.)
घूमरतन-सं०पु० [सं० धूम्र+तन] धुग्रां उत्पादक, ग्रग्नि, ग्राग।
घूमरपांन—देखो 'धूम्रपांन' (रू.भे.)
घूमराई-सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)
घूमलोचन, धूमलोचन्न-सं०पु० [सं० धूम्रलोचन] १ शुंभ नामक दैत्य का एक सेनापति। उ०—देवी धूमलोचन्न हूंकार धोस्यौ. देवी जाडवा में रगतबीज सोस्यौ। देवी मोड़ियौ माथ नीसुंभ मोड़ै, देवी फोड़ियौ सुंभ जी कुंभ फोड़ै।—देवि. २ कबूतर, कपोत।
घूमविराळ-सं०स्त्री०यौ०—धूम-वायव (?)
उ०—ग्रांबुलइ मांजरि लागीय जागीय मधुकर माल। मूंकइ मार वि विरहीय हीग्रइ स धूमविराळ।—व.वि.
घूमसौ-सं०पु०—धुग्रां, धूम (ग्रमरत)
घूमाळो-सं०पु० [सं० धुर, चोटी+ग्रालुच] सर्दी से बचने के लिए ग्रोढ़ने

का एक वस्त्र विशेष ।

घूमावती-सं०स्त्री० [सं०] तंत्रानुसार दश महाविद्याओं में से एक देवी ।

घूमोरण, घूमोरणप-सं०पु० [देश०] यमराज (डिं.को.)

घूमो-सं०पु०—गोल ककड़ी विशेष (शेखावाटी)

घूम्र-सं०पु० [सं०] १ धुग्रां, धूम ।

यौ०—धूम्र-पांन ।

२ फलित ज्योतिष में एक योग का नाम ।

३ राम की सेना का एक भालू ।

४ मानिक या लाल का धुंधलापन जो एक दोष समझा जाता है ।

वि०—धुएँ के रंग का ।

रू०भे०—घूमर ।

घूम्रकेतु—देखो 'घूमकेतु' (रू.भे.)

घूम्रपांन-सं०पु०यौ [सं० धूमपान] १ रोग विशेष की निवृत्ति के लिए ओषधि विशेष का धूम सांस द्वारा खींचने की क्रिया या भाव ।

२ तम्बाकू जला कर सांस द्वारा खींचने की क्रिया या भाव ।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति देवलां री पाखती धरम-साळा दांन-माळा मांडीजै छै । मांहे जोगेसर पवन रा साझण-हार त्रिकुटी रा चडावणहार घूम्रपांन रा करणहार उरधबाहू ठाढे-सरी दिगंबर सेतंबर निरंजनी आकास मुनी ।—रा.सा.सं.

क्रि०प्र०—करणौ ।

रू०भे०—घूमपांन, घूमरपांन ।

घूम्राक्ष-सं०पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष में वार और नक्षत्रों संबंधी बनने वाले २८ योगों में से तीसरा योग. २ रावण की सेना का एक सेनापति जो हनुमान के हाथ से मारा गया था ।

घूय, घूयर—देखो 'घू' (१५) (रू.भे.) (जैन)

उ०—जन्हुनरिंदह केरी धूय, गंगा नांमि रइ समरूय ।—पं.पं.च.

घूयोड़ो-भू०का०कृ०—देखो 'धुयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घूयोडी)

घूर—देखो 'घूड़' (रू.भे.)

घूरज-सं०पु० [सं० धूर्यः] १ यज्ञ (अ.मा.)

२ घोड़ा, वाजि ।

रू०भे०—धुरज, धुरज्ज ।

घूरजट, घूरजटि, घूरजटी, घूरजट्टी-सं०पु० [सं० धूर्जटिः] १ शिव, महादेव (अ.मा., डिं.को.)

उ०—१ देव धूरजट घरां अवतारी, रांम देव बहु मांनि जि भारी । सो कळा धनुस नी अति जांणइ, एस द्रोणसुत इंद्र वखांणइ ।

—विराटपर्व

उ०—२ झुकै पीव खग झींकतां, अर-घड़ झुकै उमंड । झुकै घूरजटि मुंड जद, झुकै पर दळां झंड ।—रेवतसिंह भाटी

उ०—३ पंथ आसमांण हूंत झप है अपट्टी परां, वरां कंठ लपट्टी अपट्टी जेण वार । सांमठी झड़पफे गांध जठी तठी गणा सूधी, घूरजट्टी धुणे घू हजारां हाथ धार ।—बद्रीदास खिड़ियौ

२ देखो 'घूजटी' (रू.भे.)

रू०भे०—धुजट्टिय, धुजट्टी, धुरजटी, धूजटी ।

घूरणौ, घूरबौ-क्रि०अ० [सं० क्षयति, ध्वरति] उदास होना, मलिन होना । उ०—स्वजन वेवाहिय घूरइं झूरइ निगहिय नेह । लेई अचेत उपाडिय माडिय आंगिय गेहि ।—नेमिनाथ फागु

घूरत-वि० [सं० धूर्त] १ धोखा देने वाला, दगाबाज, प्रतारक, वंचक (डिं.को.)

उ०—१ मणि बंधन बंधा बंधन बंधा, अंधाधुंध अणंदा है । घूरत दे धोका बोड़ा बोखा, चोखा रस चाखंदा है ।—ऊ.का.

उ०—२ तजै मती तिरिया पितु माता, छोडिन घोरो छोटा । धोति छोडि बनै मति घूरत, लेकर घोट लंगोटा ।—ऊ.का.

२ छली, मायावी, चालबाज, ढोंगी, पाखण्डी ।

३ दुष्ट, खल । उ०—१ नह मांनत घूरत बाज लयूं । काळवी अस देवण केम कहूं । जिय धीर रहै हय वेग जहूं । प्रसणां बिच एकल 'पाल' पहूं ।—पा.प्र.

उ०—२ घाड़ा पाड कर रटके घूरत, धन पटकै घरधूंस । नटके साधू वणै निराळा, सटकै माळा सूंस ।—ऊ.का.

४ ठगने वाला, ठग ।

उ०—बावन चंदण अंगई परिमळ, घूरत तपइ निसंभ । उर जेहवउ दीसइ उरवंसी, रूप विसेखइ रंभ ।—रुकमणी मंगळ

पर्याय०—कुहक, जाळिक, वंचक, सठ ।

सं०पु०—सठ नायक का एक भेद (साहित्य)

रू०भे०—धुत्त, धूत ।

अल्पा०—घूतारो, घूतो, घूत्यो ।

घूरतक-सं०पु० [सं० धूर्तक] १ दांव-पेच करने वाला आदमी, जुआरी.

२ गीदड़, शृगाल ।

घूरतचरित-सं०पु० [सं० धूर्तच रत] धूर्तों का चरित्र ।

घरतता, घूरतताई-सं०स्त्री० [सं० धूर्तता] वंचकता, चालबाजी, माया, चालाकी । उ०—सठता घूरतता सहित, छंद रचै मद छाय । निपट लियां निरलज्जता, कुकवी जिको कहाय ।—बां.दा.

रू०भे०—धुताइय, धुताई, घूताई, घूरती ।

घूरतसंवळ-सं०पु० [सं० धूर्त+संबल] ७२ कलाओं में से एक ।

घूरतियौ—देखो 'घूरत' (अल्पा., रू.भे.)

घूरती-वि०—१ धूर्तता करने वाला. २ देखो 'घूरतता' (रू.भे.)

घूरधर-सं०पु० [सं० धूर्धरः] बोझा ढोने वाला, भारवाही ।

घूरां-क्रि०वि० [सं० धुर्=चोटी] ऊँचा ।

उ०—अरक दुत सोम सम, नमै लोयणां असम, धूम्रां तम तोम लग घूरां घूरां । तठै सूर लड़ंता थटै घण तंदूरां, हरख सूरां निरख रंभ हूरां ।—कविराजा बांकीदास

घरा—देखो 'धुरा' (रू.भे.)

उ०—गुण सतावीस जेहनइ पूरा रे, सुद्ध किरिया मांहि धूरा रे। तप बारै भेदै सूरा रे, सियल व्रत सनूरा रे।—स.कु.

धूरि—देखो 'धूड़' (रू.भे.)

धूरी—१ देखो 'धूड़' (रू.भे.)

२ देखो 'धूरौ' (अल्पा., रू.भे.)

धूळ, धूल—देखो 'धूड' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ गैल को असूल सूल धूळ में गह्यौ। मूळ को गमाय मूळ फूल क्यों रह्यौ।—ऊ.का.

उ०—२ बंधी गठड़िया धूल की, रही पवन में फूल। गांठ जतन की खुल गई, अंत धूळ की धूळ।—अज्ञात

धूलकोट—देखो 'धूड़कोट' (रू.भे.)

उ०—ढोळै धूलकोट मजबूत करायौ, भली तरह सूं रहणै लागिया, लोग सारां नूं सवळायौ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

धूलधोया-सं०स्त्री० [सं० धूलि+धौत] स्वर्णकारों की एक शाखा।

धूलपांचम-सं०स्त्री० [सं० धूलि+पंचमी] होलिकोत्सव के बाद आने वाली चैत्रकृष्णा पंचमी, रजोत्सव।

धूलरोट-सं०पु० [राज० रोट+सं० धूलि] नाथ संप्रदाय में मसांणिया जोगियों द्वारा मृत्यु के तीसरे दिन किया जाने वाला भोज विशेष।

धूलहडी, धूलहरी—देखो 'धूळेरी' (रू.भे.)

उ०—धूलहडी ना राय नइ, न घटइ स्वेत छत्र रे। आटीहर भीति जिहां नवि घटइ, वार चित्रांम रे।—नळ-दवदंती रास

धूलि—देखो 'धूड़' (रू.भे.)

उ०—१ धूलि मिलीग झळमळीय सयल दिसि दिणयरु छाईउ। गयणे दुंदुहि द्रमद्रमीय, सुरवरि जसु गाईउ।—पं पं.च.

उ०—२ गडियौ जिण रै चित्त गुण, धन तिण रै मन धूलि। दुरविध सो ही विबुध दुज, मांनै जीवन मूळि।—वं.भा.

धूलिधूम्रा-सं०स्त्री०—१ एक प्राचीन जाति विशेष ?

उ०—धूलिधूम्रा ज़डीया जिके, राजि रसणिआ जाइ। गोला गांछा गारडी, साथरिया सज थाइ।—मा.कां.प्र.

२ एक प्रकार का गेहूं बोने का ढंग या इस ढंग से बोये हुए गेहूं।

वि०वि०—देखो 'धावड़िया'।

धूळियाभात-सं०पु० [सं० धवल भक्त] वर-वधू के पाणि ग्रहण के पूर्व बारात को दिया जाने वाला भोज।

वि०वि०—इस भोज में चावल बनाये जाते हैं किन्तु कायस्थ जाति में मांस रोटी भी खिलाई जाती है।

धूलियालुहार-सं०स्त्री० [सं० धूलि+लोहकार] लुहारों की एक जाति विशेष।

वि०वि०—देखो 'गाडोलिया'।

धूली—देखो 'धूड़' (रू.भे.) उ०—तौ पं धूली सिल तरगी, वारी सारै हि······। ऊं ही राघो तरणि उडे, छै य्यो साको स कुळ छुडे। धोवौ पं तौ कदम धरौ, कै कीरौ कै करौ।—र.ज.प्र.

धूळीयौ-सं०पु० [?] वृक्ष विशेष।

उ०—धंतूरा नइं धाऊडा, धांमणि धूंगरि धूंनि। धींग धमासा धूळीया, धडहड धाता धूंनि।—मां.का.प्र.

धूळेड़ी, धूळेटी, धूळेरी-सं०स्त्री० [सं० धूलि, प्रा० धूलही] होली के दूसरे दिन पड़ने वाला त्यौंहार जिस दिन एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि फेंकते हैं।

वि०वि०—इस दिन अत्यधिक खुशी के आवेग में आकर सगे-सम्बन्धियों और इष्ट मित्रों पर धूलि और राख भी फेंक दी जाती है!

रू०भे०—धुरेंडी, धुलंडी, धुलहड़ी, धुलहडी, धुलेंडी, धुलेडी, धुळेरी, धूलहडी; धूळहरी।

धूव—देखो 'धूप' (रू.भे.) (जैन)

धूवणौ, धूवबौ-क्रि०अ० [?] आलोकित होना, प्रकाशित होना।

उ०—आइ नै कळस वूरि नै छिप रह्यौ। भाख धूवी। दीवै री जोति मंद पड़ी। ज्युं दिन चढण लागौ त्युं त्युं दीवा री जोति मिटती गई।—चौबोली

धूवाधार, धूवाधोर—देखो 'धुंआधोर' (रू.भे.)

धूवेल-सं०स्त्री० [देश०] एक लता विशेष।

उ०—खांडामांनि पडीआरि, धनुखमांनि पिणच, सरीरमांनि छाया, पगमांनि वांणही, आंखिमांनि भरण, व्रिखमांनि फळ, जाखमांनि बळ, भिराडीमांनि धूवेल, क्रयाणामांनि हाथसन, प्रीतिमांनि समाचार।—व.स.

धूवौ—देखो 'धुंवौ' (रू.भे.) (अमरत)

धूस-सं०स्त्री० [सं० ध्वंसिनी] १ सेना, फौज।

उ०—गजदळ धूस गड़ूस, मेल चतुरंग महादळ। पाइल वांणावळी खड़ै खंधार चहुंवळ।—गु.रू.वं.

सं०पु०—२ समूह, झुण्ड।

उ०—धरती धमस तुरिया धाउ, आकंप हैकंप अहिराउ। धसमस धरणि फौजां धूस, गजदळ गरट थाट गड़ूस।—गु.रू.वं.

३ देखो 'धूसौ' (मह., रू.भे.)

४ देखो 'धूंस' (रू.भे.) उ०—घोडा पिलांण हुवा। नगारा री धूस पड़ी। सूरा-पूरा असवार हुवा।—रीसाळू री वात

धूसकौ-सं०पु०—ध्वनि, आवाज।

उ०—त्रंबक तणै धूसकै सूरचव्रित्ति प्रकटितउ, दुरजन जन क्षोभ उपजावतउ।—व.स.

रू०भे०—ध्रूस।

धूसमधूस—देखो 'धूंसमध्रूंस' (रू.भे.)

धूसर-वि० [सं०] १ मटमैले रंग का, धूल के रंग का।

उ०—मेटिया केइक पीळा पमंग। सोनरे कइक धूसर सुरंग।—पे.रू.

२ जिसमें धूल लिपटी हो, धूल से भरा, धूल लगा हुआ।

उ०—तोय झरणि छुटि ऊवसत मळय तरि ग्रति पराग रज घूसर ग्रंग। मधु मद स्रवति मंद गति मल्हपति मदनोमत्त मारुत मातंग।
—वेलि.

३ जो धुंधला हो। उ०—ऊसर वैणां सूं ग्रवती ग्रळ ग्रारां। घूसर नैणां सूं ग्रवती जळ धारां।—ऊ.का.

सं०पु० [सं० धूसर:] १ मटमैला रंग, भूरा रंग.

[सं० धूसर:] २ घूसर रंग का घोड़ा. ३ तेली (डि.को.)

(मह० घूसरड़)

घूसरड़—देखो 'घूसर' (मह., रू.भे.)

उ०—धुवि नास फड़ड़ रज घूसरड़, रथ ग्रच्छरां मग रोकिया। नाळां निहाव गोळां निहसि, झाळां दिसि ग्रसि झोकिया।—सू.प्र.

घूसरी-सं०स्त्री० [सं० धूसर] धूलि, रज (ह.नां.)

उ०—घसी ग्रकास घूसरी, कि वात सेन विस्तुरी। निसांण पांण नद्दयं, सुघोर जोर सद्दयं।—रा.रू.

वि०—घूसर रंग की। उ०—धरा घूसरी धूरि ग्राकास लग्गी, हयं खूर तें सीस धूनें पनग्गी। सबै सूरवीरं वरची सिंघ भेसं, करची पद्धरि सेन 'लावै' प्रवेसं।—ला.रा.

घूसळ-सं०पु० [देश०] लड़ाई, टंटा।

उ०—सेखोजी गांगोजी एक दिन झरणा में भीर वांट जळछांटा री खेल कियौ। भाजण री दोनां नूं परत। बोलै बोलै भारी हुवौ। जद सेखोजी घूसळ करणी विचारियौ।—बां.दा. ख्यात

घूसली-सं०स्त्री० [सं० धूसरी] धूलि, रज (ग्र.मा.)

घूहकार—देखो 'घाळकार' (रू.भे.) उ०—हुव करै विनां घड़ घूहकार। घू विनां करै वड़ पव्वट धार।—सू.प्र.

घूहड़-सं०पु०—१ खेड़ नरेश राठौड़ राव घूहड़ के वंशजों की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

रू०भे०—धोहड़।

ग्रल्पा०—घूहड़ियौ।

[?] २ गर्जन, गाज, कड़क (डि.को.)

३ देखो 'घूड़' (रू.भे.) उ०—जीवौ हाल्यौ जदी, दीह झंको दरसांणो। 'जीवौ' हाल्यौ जदी, विरंग घूहड़ वरसांणो।
—ग्ररजुनसिंघ बारहठ

घूहड़ियौ—देखो 'घूहड़' (१) (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—१ घूहड़िया खग धाक, तो वाळी 'वखतेस' तण। वैरी हुवै ग्रवाक, पिड़ गजवोह 'प्रतापसी'।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ हूंकळ पोळि उरड़ियौ हाथी, निछटी भीड़ि निराळी। रतन पहाड़ तणै सिर रोपी, घूहड़िया वाराळी।
—राठौड़ रतनसिंघ (जोधा) री गीत

घूहर—देखो 'घूं'र' (रू.भे.)

घेंकट-सं०पु० [ग्रनु०] तबले का बोल।

उ०—मपधुनि मपधुनि झझणण वीण, निनिखुणि ग्रेंखणि ग्राउज लीण। बाजी ग्रों ग्रों मंगळ संख, धिक्किट घेंकट पाड ग्रसंख।
—विद्याविलास पवाड़उ

घेंग—देखो 'घेंग' (रू.भे.)

घे-सं०पु० [?] १ पारसनाथ. २ वृक्ष, पेड़.

३ धर्म. ४ पति. ५ कार्य, काम।

सं०स्त्री०—६ धरती, भूमि (एका.)

घेग्रभाग-सं०पु० [सं० घेय भाग] धर्म (ग्र.मा.)

घेऊ-वि० [देश०] १ सहायक, मददगार. २ उत्तरदायित्व लेने वाला।

घेक—देखो 'घेख' (रू.भे.) उ०—देवळ चखजळ देख, पाबू मिरजो पकड़ियो। वरियौ म्हांसूं घेक, विजलग हल्ला वाढ़िया।—पा.प्र.

घेकियौ—देखो 'घेखी' (ग्रल्पा., रू.भे.)

घेकी—देखो 'घेखी' (रू.भे.)

घेख-सं०स्त्री० [सं० द्वेष] १ शत्रुता, वैर।

उ०—राखै घेख न राग, भाखै न जिहा भुरी। दरसण करतां दाग, मिटै जनम री मोतिया।—रायसिंह सांदू

२ द्वेष, डाह, ईर्ष्या।

उ०—१ सुत भ्रात कटे सक वीट वधे धक, वीस भुजांण विचारियौ जी। निरवीजां वांनर नेम गमुत्तर, घेख इसौ मन धारियौ जी।
—रा.रू.

उ०—२ साधु न जाता देख, राजा नै जाग्यो घेख, सुकोमळ साध। एह करम मोडै किया ए।—जयवांणी

३ प्रतिस्पर्धा, होड। उ०—तन ग्रयक नरां गण तुरंग तुंड, मट जेम फुटै गज कितां मुंड। रह धरकि रह्यौ थकि ग्ररक रत्थ, संपेख घेख कंदळ समत्थ।—रा.रू.

रू०भे०—घेक, घेस।

घेखियौ—देखो 'घेखी' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—घेखियां रा मन वंछत पाव धरै। किम नाथ ग्रमां ग्रण नाथ करै। ग्रसवार हुए पुळ राज इयां। वैरियां रा करो मत चींतवियां।
—पा.प्र.

घेखी-वि० [सं० द्वेषिन्] १ द्वेष रखने वाला, ईर्ष्यालु।

उ० ग्रतरै उठै कोइक नृप ग्रायौ, हवा निहाळै छांह हरी। वीरठ नै ग्राडो दे घेखी, कउवै कुवधी वींट करी।—नवलजी लाळस

२ विरोध करने वाला, विरोधी। उ०—धरम रा घेखी वेटा इम कहे रे।—जयवांणी

सं०पु०—शत्रु, वैरी।

रू०भे०—घेकी।

ग्रल्पा०—घेकियौ, घेखियौ।

घेग—देखो 'देगचौ' (मह., रू.भे.) उ०—भूंजाई री घेगां वगैरै चीजां लीवी। पीछै माजी सूं सीख कर रावजी फौज री कूच कियौ सू देसणोक स्रीकरनीजी री दरसण कर बीकानेर गढ़ दाखल हुवा।
—द.दा.

घेट—देखो 'घीठ' (रू.भे.)
घेटाई—देखो 'धीठाई' (रू.भे.)
घेटौ—देखो 'घीठ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ काज खोटा करै आज सोचौ किसूं, धार भुज लाज कर गजां घेटौ। खिरै बांमी मिसल वकारै 'सेरसा', जीमणी मिसल रा भ्राव जेठी।
—सेरसिंघजी कोळसिंघजी रौ गीत

उ०—२ जुध चढ़ियौ जगमाल दे, कर टोप लपेटौ। बगतर कूंटा बीड़िया, धिक पोरस घेटौ।—वी.मा.

उ०—३ हमलां आठ मिसल हीलोहए, भुज बळ ठळां दियण गज भार। आपमला खेटायत आजो, 'दला' हरा घेटा सिरदार।
—रतनसिंघ कूंपावत रौ गीत

उ०—४ जाजुली 'बहादुरेस' भूप देव असी जोध, वीर नारसिंघ रूप घेटौ क्रोध वार।—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—५ लंगर फौजां तणा लार अत लगाया, धकाया कमधजां कमध घेटं। भाग बळ भलौ जी भलौ कहियौ भडां, खाग बळ प्रवाड़ो लयौ खेटं।—राठौड़ राव करमसी रौ गीत

उ०—६ धरम रा घेखी घेटा इम कहै रे, बोलै मूंडै सूं खोटी वांण रे। रिध संपदा रमणी पांमी अति घणी रे, पिण परमेसर नहीं देवै खांण रे।—जयवांणी
(स्त्री० घेटी)

घेठ—देखो 'घीठ' (मह., रू.भे.) उ०—गंजे रिम केतां गरब, धार सरब अद घेठ। दै कोड़ां दुजवर दरब, जीत परब जग जेठ।—र.ज.प्र.
घेठाई—देखो 'धीठाई' (रू.भे.)
घेठौ—देखो 'घीठ' (अल्पा.,-रू.भे.)

उ०—१ मिरजो रीस वधै मन मारै। उर अप्रीत मुख प्रीत उचारै। घेठां भड़ां इसारत धारै। वात करै उर घात विचारै।—रा.रू.

उ०—२ जीहो नरक निगोद मां उपनो, जीहो छेदन भेदन मार। जीहो तो पिण घेठा जीव नै, जीहो नहीं आवै लाज लिगार।
—जयवांणी

उ०—३ सखी री जळ सीतब पीजै जेठो, पीउ नायौ अजहु घेठौ। जांण्यौ कुण करि है वेठो, नांणी मुझ नजरां हेठो हो लाल।
—ध.व.ग्रं.

उ०—४ घेटा होय नै घपटिया, दड़वड़ लागा डागा रे। वांनर जेम विलगिया, लपटी गढ नै लागा रे।—प च.चौ.
(स्त्री० घेठी)

घेणु—देखो 'धेनु' (रू.भे.) उ र.)
घेघंगर, घेंघिगर, घेघींग, घेघींगड़, घेघींगर, घेघीग, घेघीगर—देखो घींगर (रू.भे.) उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति हाथी सज कीआं वहै छै। सु किसड़ा वखांणीजै छै। थेट सिंघल दीप मनोप वेस रा नीपना, घेघंगर तांह, भद्र जातीआं, हाथियां रा कूंभा-थळ भांजिआं, सवामण मोती आंमल प्रमांण नीसरै, अढार भार वनसपती सूं ओघसतां थकां हमला खाई नै रहिआ छै।
—रा.सा.सं.

उ०—२ मचोळा पूर देता मसत, तेम रोड़ जवरा तरां। ज्यां करी आखै जक्र, धरै साज घेघंगरां।—वखतौ खिड़ियौ

उ०—३ करि कोप दळां प्रारंभ कहर, घेंघिगर आगै घरै। मांडिओ मुगल्लै मारुए, रिण 'ओरंग' 'जसराज' रे।—वचनिका

उ०—४ जमातां भांजणी गजां धधकी नागणी जेही, धरा सीस रखो वातां कीरती घेघींग। दखी चहु ओर हातां वीक भोज ज़ोध दूजै, सोर भखी समापी सुपातां गैनसींघ।—मेघराज आढ़ौ

घेनंजय—देखो 'धनंजय' (रू.भे.) (ह.नां.)
घेन—देखो 'धेनु' (रू.भे.) उ०—१ फजरै अर फरियौ-ह, धेनां घट धरियौ धकै। कहै यम केसरियौ-ह, म्है तौ आदरियौ मरण।—पा.प्र.

उ०—२ धेन पूज सुर धेन, विवुध चरणाम्रत वंदां। धनुख मांण निप कळप, संख जस मद्द विरद्दां।—रा.रू.

घेनक—देखो 'धेनुक' (रू.भे.)
घेनड़ियौ-सं०पु० [सं०धेनुः+रा.प्र.ड़ियौ] १ गोवत्स, बछड़ा. २ पुत्र, वेटा। उ०—थेइ ओ मांनेतण रांणी, थेइ ओ वालेसर रांणी, हालरियौ जिणजो, घेनड़ियौ जिणजो, ओ अजमो म्हारा माताजी सोवसी।
—लो.गी.

घेनु-सं०स्त्री० [सं० धेनुः] १ गो, गाय। उ०—न दै साथ काय नारियण, साद दियै जो संत। आपण नांम उलावतां, धेनु (ही) कांन धरंत।—ह.र.

रू०भे०—धनु, धेणु, धेन, धेनूं, धेयन।

२ देखो 'धनु' (१) (रू.भे.) (डिं.को.)

घेनुक-सं०पु० [सं०] १ एक तीर्थ स्थान का नाम (महाभारत)

२ एक असुर का नाम.

३ सोलह प्रकार के रति बंधों में से एक।

रू०भे०—धेनक।

घेनूं—देखो 'धेनु' (रू.भे.) उ०—धेनूं चरतोड़ी धोरां खड़ धाती। ऊखां भरतोड़ी लोरां भड़ आती। राती वासै री माती रंभाती। जाया गोपासै जाती जंभाती।—ऊ.का.

घेम-सं०पु० [देश०] ढेर।

उ०—जरी, रेसम नै जोरजट रौ घेम सौ लग्योड़ौ। जरी रौ एक एक दुपटौ पांच पांच सौ री कीमत रौ।—रातवासौ

घेय-वि० [सं०] १ धारण करने योग्य, धार्य्य।

उ०—१ घेय को विधांन साधि ध्यांन नां धरयौ। गेय को अग्यांन तैं प्रमांन नां परयौ।—ऊ.का.

२ सं०स्त्री० [सं० धीता] पुत्री, लड़की।

उ०—'स्वांमी! कुण ते कांमनी? कुण पंडित नी धेय! किणि कारणि ते वेगली? भलइं सुणावउ भेय।—मा.कां.प्र.

३ उद्देश्य। उ०—'सुण माधव! मोह वछ तुं, कांमकंदळा घेय।

आई इरिण परि ऊचरइ, मइं करि घरियां वेय ।—मा.कां.प्र.

धेयन—देखो 'धेनु' (रू.भे.)

उ०—धेयनां कज वाद उभै घरसी । मारका रण जूंभ उभै मरसी ।
—पा.प्र.

धेर–सं०पु० [देश०] एक जाति विशेष ।

अव्य०—हाथी को घास आदि खिलाने के लिए महावतों द्वारा बोला जाने वाला शब्द ।

धेली—देखो 'अधेली' (रू.भे.)

उ०—अबकै तौ वै लूंटो कतारां, अब लूंटैगी हेली । आसांमी ठस पड़गी, होगी रुपिया की धेली ।—डूंगजी जवारजी री पड़

धेलौ—देखो 'अधेलौ' (रू.भे.)

उ०—एक घर का घोड़ा मुफत में गमाया । रीभ का एक धेला भी न आया ।—दुरगादत्त बारहठ

धेस—देखो 'धेख' (रू.भे.) उ०—नीपणां वित बाहर कोण नहै । चारणां धन खोस लिया चवहै । घट जींद कुखत्रिय धेस घणौ । तिल तागत मांनत मुज्ज तणौ ।—पा.प्र.

धैंग–सं०स्त्री० [देश०] १ ऊंचे स्थान से नीचे कूदने की क्रिया या भाव ।

मुहा०—१ धैंग देणी—ऊंचे स्थान से नीचे कूदना, छलांग मारना । किसी जोखिम के कार्य को हाथ में ले लेना ।

२ धैंग मारणी—देखो 'धैंग देणी' ।

सं०पु०—२ जाति विशेष का घोड़ा ।

उ०—तुरक्की ताजी तुरंग, विलाती देसी विहंग । घूना चित्रांगिया धैंग । खेड़ रा नीपना खैंग ।—गु.रू.वं.

धैंड–सं०पु० [देश०] वह रोटी जो आकार में साधारण रोटी से बड़ी व भारी हो ।

अल्पा०—धैंडियौ ।

धैंडियौ—१ देखो 'धैंड' (अल्पा. रू.भे.)

ज्यूं—काचा पाका धैंडिया न्हांक'र, जीम'र झट हालौ जिकी बात करौ ।

मुहा०—धैंडिया करणा—देखो 'धैंडिया न्हांकणा' ।

२ धैंडिया न्हांकणा—बड़ी बड़ी रोटियां बनाना (जो शीघ्र बन जांय) ।

धैंधींगर—देखो 'धंधींगर' (रू.भे.)

उ०—गिर डांणां लागौ धैंधींगर, पवै मेर सूं ऊंचपणौ । वण रितमें दीठां वण आवै, तद जेठी कयळास तणौ ।—नवलजी लाळस

धै–सं०पु० १ रावण, दशानन. २ गरदन, ग्रीवा. ३ सुग्रीव. ४ आश्रय (एका.)

धै'—देखो 'द्रह' (रू.भे.)

धैईड़णौ, धैईड़बौ–क्रि०स०—पीटना, मारना ।

धईड़णौ, धईड़बौ—रू०भे० ।

धैकाळ–सं०पु० [सं० द्रह+काल] भयंकर दुर्भिक्ष ।

धैड़–सं०स्त्री० [सं० द्रह] १ नदी का वह स्थान जहां पानी बहुत गहरा हो. २ गहरे पानी का प्राकृतिक गड्ढा. ३ बड़ा व गहरा वह गड्ढा जिसका पानी सूख गया हो. ४ सिंचाई के लिए खेत के आस-पास खोदा जाने वाला कच्चा कूआ. ५ किसी कूए के बैठ जाने से बनने वाला गड्ढा ।

रू०भे०—धैंड़ ।

अल्पा०—धैड़ियौ, धैड़ो, धैडियौ, धैडौ ।

धैड़ियौ, धैड़ौ—देखो 'धैड़' (अल्पा., रू.भे.)

धैंचाळ–वि० [सं० द्रह+राज. चाळ] १ बहुत गहरा. २ असीम, अथक ।

रू०भे०—धहचाळ ।

धैंड—देखो 'धैड़' (रू.भे.)

धैंडियौ, धैंडौ—देखो 'धैंड' (अल्पा., रू.भे.)

धैंधंगर, धैंधिगर, धैधींग, धैधींगड़, धैंधींगर, धैधीग, धैधीगर–सं०पु० [देश०] १ हाथी, गज (अ.मा.)

उ०—धैधींगर कदम आवळा धरतौ । झड़ वरसात जेम मद झरतौ । सुज आयौ जळ पीवण सरतौ । करणी जूथ बीच सुख करतौ ।
—र.ज.प्र.

२ सांप, नाग (अ.मा.)

वि०—१ बड़े डील-डौल वाला, भीमकाय, प्रचण्डकाय ।

उ०—पक्खरिया है पड़ै, ढहै ढैंचाळ धैधंगर । जीण साळ ऊजड़ै, पड़ै सुहड़ा पंचाहर ।—गु.रू.वं.

२ जबरदस्त, महान शक्तिशाली । उ०—जाड़ा तोड़ केवियां जलाला चाठ आड़ा जीत, धूंकळां विभाड़ा धीट अरंदां धैधींग, चोगणां प्रवाड़ा हूं राजंद कुळां आव चाड, सांमध्रमी अहाड़ा सवाई भीमसिंघ ।—अमरसिंघ सीसोदिया रौ गीत

रू०भे०—धंधींगर, धंधीगर, धेधंर, धेधिगर, धेधींगड़, धेधींग, धेधींगर, धेधीग, धेधीगर, धैंधींगर, धोंधीगर, धोधीगर ।

धैनव–वि० [सं०] गाय से उत्पन्न ।

सं०स्त्री०—गाय ।

धैळ—देखो 'धैळियौ' (मह., रू.भे.)

धैल—देखो 'दहल' (रू.भे.)

धैळियौ–सं०पु० [देश०] प्रायः पशुओं के लिए सानी पकाने का मिट्टी का बना बड़ा पात्र, मोटी हांडी ।

मह०—धैळ ।

धैलीजणौ, धैलीजबौ—देखो 'दहलणौ, दहलबौ' (रू.भे.)

धैलीजणहार, हारौ (हारी), धैलीजणियौ—वि० ।

धैलीजिओड़ौ, धैलीजियोड़ौ, धैलीज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

धैवत–सं०पु० [सं० धैवत:] संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर

रू०भे०—धईवंत, धईवत । (डि.को.)

घंस—देखो 'घेख' (रू.भे.)

उ०—खावै आतंक आगरो, खापां न मावै अमावै खळां, घावै थावै अजांण लगावै चौड़ै घंस। ऊगां भांण नागवंसां माथै खगां राज आवै, दावै लागो पजावै फिरंगी वाळा देस।—गिरवरदांन कवियौ

घंह—देखो 'ग्रह' (रू.भे.)

घोंकार, घोंकारि-सं०स्त्री० [अनु०] १ मादल, ढोलक आदि ताल वाद्यों की ध्वनि। उ०—१ राग छत्तीसे होवती जी, मादल ना घोंकार। नाटक विध बत्तीस ना जी, रंग विनोद अपार।—जयवांणी

उ०—२ संख तणै ओंकारइ, तिविल तणैं दोंकारि, मादळ तणैं घोंकारि।—व.स.

२ धनुष की प्रत्यञ्चा, धुनकी आदि से होने वाली ध्वनि।

उ०—भूभंता गयवर गडि गाजइं, धुणह तणा घोंकार। सूंडादंडि ऊपाडी नइ उलाळइ असवार।—विद्याविलास पवाडउ

रू०भे०—घुंकार, धुकार, धूंकार, धूंकारव, धूकार, धूकारव, घोऊंकार, घोकार, घौंकार, घोकार।

घोंघीगर—देखो 'धोधींगर' (रू.भे.)

उ०—गंग पाप नहिं गमै, धसै धर भार मिणंधर। घोंघीगर धुर धमळ, भार नहिं खींचै भूसर।—चौथ विठू

घो-सं०पु० [?] १ धर्म. २ सागर, समुद्र. ३ शकट। ४ अर्थ. ५ वृषभ, बैल (एका.)

वि०—सुखद (एका.)

घोअणौ, घोअबौ—देखो 'घोणौ, घोवौ' (उ.र.)

घोऊंकार—देखो 'घोंकार' (रू.भे.)

उ०—सू इसी भांति नर नांमै कोई पंखी ही जावण पावै नहीं, इसौ तालर्व खांनो मंडै छै, घोऊंकार पड़ि रहै छै।—सयणी री वात

घोक-सं०पु० [देश०] नमस्कार, प्रणाम।

उ०—१ उठै गयां मिळै अन आदर, धौळहरा अळगां सूं घोक। क्यावर रा भूंपा कांटाळा, ले विसरांम वटाऊ लोक।

—कविराजा बांकीदास

उ०—२ आ काठां चढ़सी अवस, धरणीधर दे धोक। सठ मन मांनै सुधरसी, पातर सूं परलोक।—बां.दा.

२ धव वृक्ष (शेखावाटी)

रू०भे०—घोख।

अल्पा०—ढोक, घोकड़ी, घोकड़ो।

घोकड़-सं०स्त्री०—तराजू की वह स्थिति जो तोली जाने वाली वस्तु की ओर झुके, नमन। उ०—देतां अधपाव घड़ी, लेतां घोकड़ पाव री। साहुकार पुत्र कहीजै, बाजारां बैठा बावरी।—अज्ञात

घोकड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'घोक' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—कड़ी आसरां जड़ी आछी, रिपिया लगै न रोकड़ी। मुरधर दांनी देव थांनै, करसा देवै घोकड़ी।—दसदेव

घोकड़ो—देखो 'घोक' (अल्पा., रू.भे.)

घोकणौ, घोकबौ-क्रि०स० [सं० ढौकृ गतौ] नमस्कार करना, प्रणाम करना। उ०—भैरूंजी, पीवरियै रै मांय थरपूं देवळो। हूं आवती नैं जावती थांनैं घोकसूं। भैरूंजी, अेक अरज म्हारी हेलो सांभळो।

—लो.गी.

घोकणहार, हारौ (हारी), घोकणियौ—वि०।

घोकवाड़णौ, घोकवाड़बौ, घोकवाणौ, घोकवाबौ, घोकवावणौ, घोकवावबौ, घोकाड़णौ, घोकाड़बौ, घोकाणौ, घोकाबौ, घोकावणौ, घोकावबौ—प्रे०रू०।

घोकिओड़ौ, घोकियोड़ौ, घोक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

घोकीजणौ, घोकीजबौ—कर्म वा०।

ढोकणौ, ढोकबौ, धूकणौ, धूकबौ, घोखणौ, घोखबौ—रू०भे०।

घोकरणौ, घोकरबौ-क्रि०अ० [देश०] १ गरजना।

क्रि०स० [देश०] २ दहलाना।

घोकरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ गरजा हुआ।

२ दहलाया हुआ।

(स्त्री० घोकरियोड़ी)

घोकार—देखो 'घोंकार' (रू.भे.)

घोकियोड़ौ-भू०का०कृ०—नमस्कार किया हुआ, प्रणाम किया हुआ।

(स्त्री० घोकियोड़ी)

घोकेबाज-वि० [राज० घोकौ+फा० बाज] धोखा देने वाला, कपटी, धूर्त।

रू०भे०—घोखेबाज।

घोकेबाजी-सं०स्त्री० [राज० घोकौ+फा० बाज+रा०प्र०ई] छल, कपट, धूर्तता।

रू०भे०—घोखेबाजी।

घोकौ-सं०पु० [सं० धूकता=धूर्तता] १ किसी को कर्त्तव्यच्युत करने के लिये की जाने वाली युक्ति या चालाकी, दूसरे को भ्रमित करने के लिये किया जाने वाला छल या धूर्तता, दूसरे के मन में झूठी प्रतीति पैदा करने के लिये किया जाने वाला झूठा व्यवहार, भुलावा।

उ०—१ मणि बंधन तंधा बंधन बंधा अंधाधुंध अणंदा है। धूरत दे घोका बोड़ा बोखा, चोखा रस चाखंदा है।—ऊ.का.

उ०—२ मोडां मांनो रे रांम का मारयां। बूडो मत विनां विचारयां। भजन करै बुगला भगती सूं, पास बैठावै प्यारयां। घोकौ दे दिन रा धीजावै, आथण रा असवारयां।—ऊ.का.

मुहा०—घोकौ देणौ—धोखा देना। भुलावा देना। भ्रम में डालना। चुत्ता देना, छलना।

यौ०—घोका-धड़ी, घोकेबाज।

२ वह भ्रांति जो किसी दूसरे के कपट या छल द्वारा हुई हो, डाला हुआ भ्रम, वह झूठा विश्वास जो किसी की चालाकी से उत्पन्न हुआ

हो। उ०—१ जे धोका राखै ना ज्यां, धोका सब ही होय। जे धोका राखै जिका, धोका सुण्या न कोय।—केहर प्रकास
उ०—२ धोका पर रीभिया खोस जिण री धर खीजै। धोकै श्रण-धीजणां पावणां किय र पतीजै।—केहर प्रकास
मुहा०—धोको खाणो—किसी की धूर्तता को न समझ सकने के कारण प्रतारित होना, किसी के छल या कपट के कारण भ्रम में पड़ना, ठगा जाना।
३ मौके को गँवाने अथवा अनुकूल परिस्थिति का फायदा न उठा सकने के कारण होने वाला पश्चात्ताप।
उ०—१ पूठै कछवाहा मसकरी करण लागिया—जे इणरै भरोसै इतरा दिन निकमा रह्या। तौ एक बडेरौ थौ उण कही—मोटौ सरदार छै, जे इतरी नरमी देवै छै तौ ना'रा पग देवौ। गोठ करौ। तद केई कहण लागिया—जे बांसला दिन बैठा रहिया तिण रा धोका आवै छै।—अमरसिंघ राठौड़ री वात
उ०—२ 'करना' रौ 'जगपत' कियौ, कीरत काज कुरब्ब। मन जिण धोकौ ले मुआ, साह दिलेस सरब्ब।—ठा. करनीदांन बारहठ
उ०—३ तीन दिनां सूं साक मिळै तोई धोकौ हियै न धारौ। सूंक लेर पधरावै सीरौ नहिं नीकौ निरधारौ।—ऊ.का.
मुहा०—१ धोका आणा—सुअवसर को खो देने से मन में पश्चात्ताप उठना. २ धोका करणा—सुअवसर को खो देने से होने वाली हानि का विचार करना, पछताना।
४ अचानक समाप्त होने, नष्ट होने अथवा मरने से अथवा किसी वस्तु के अभाव से होने वाला असन्तोष, मन को पहुँचने वाला धक्का, दुःख, क्षोभ। उ०—साजी वाजी सुरग सिधायौ, मिळै दांन खग दुवां मद। भेट हुवौ नंह जको भाजसी, कूरम धोकौ मूझ कद।—बां.दा.
५ वह भावना जो किसी प्राप्त दुख व भावी दुख की आशंका से हो, चिंता, सोच, फिक्र। उ०—धीरज राख मती कर धोकौ, सोच कियां की गरज सरै। जात चोरासी लाख जीवां री, करणहार प्रतपाळ करै।—भीखजी रतनू
६ भुलावा देने की भावना, कपट करने की वृत्ति, छल, कपट।
उ०—जे धोका राखै न ज्यां, धोका सब ही कोय। जे धोका राखै जिका, धोका सुण्या न कोय।—केहर प्रकास
७ वह असत् धारणा जो किसी वस्तु के बाहरी रूप-रंग आदि से उत्पन्न हुई हो, ठीक ध्यान न देने के कारण होने वाली मिथ्या प्रतीति, भ्रांति, भ्रम।
ज्यूं—लकड़ी री सुपारी सूं असली रौ धोकौ ह्वै ग्यौ।
मुहा०—धोखौ खाणौ—ओर का ओर समझना, भ्रांत होना, भ्रम में पड़ना।
८ ऐसा आयोजन, विषय या वस्तु जिससे भ्रांति उत्पन्न हो, भ्रम में डालने वाली वस्तु, माया।
उ०—जगत नहीं यह ब्रह्म विलासा, सतगुरु मोय लखाया रे। कह सुखरांम मिटया सब धोका, जीवन मुक्ति पाया रे।
—स्री सुखरांमजी महाराज
९ जानकारी का अभाव, अज्ञान।
ज्यूं—धोकै सूं थांरै खुणी री थड्डी लागी है, माफ करौ।
१० अनिष्ट की सम्भावना, खतरे की आशंका।
उ०—अणी कढ जुधां असवार अड़पायता, सलह कस वार कमरां सचोका। हुग्रै असवार जिण वार 'भारथ' हर, धाड़वां पड़ै दस वार धोका।—अमरसिंघ सीसोदिया री गीत
ज्यूं—इण कांम में जांन जावण रौ धोकौ है।
मुहा०—धोकौ उठाणौ—सावधान न रहने के कारण नुकसान सहना।
११ जैसा कहा जाय उसके विरुद्ध होने की आशंका, शक, संशय।
ज्यूं—सिवजी समेत कैळास परबत नै रांवण आपरी भुजावां री ताकत सूं उठाय लियौ। पंडितां री आ वात धोकै री ह्वै सकै।
१२ भय, डर, भीति। उ०—जंगी हवदां गजां भडां सहलां जड़ै, साकुरां तियारी ध्रोह थूंसा रुड़ै। चौगणा अमल कर हमल सहलां चढै, 'पता' हर रूप लख अरंद धोका पड़ै।
—म्होकमसिंघ (किसनगढ) री गीत
१३ त्रुटि, चूक, भूल।
ज्यूं—जितरौ कांम मैं करूंला उण में धोकौ नहीं ह्वैला। इतरौ देख'र कांम कियौ तोई धोकौ ह्वै गयौ।
रू०भे०—धोखौ।

धोका-घड़ी—सं०स्त्री०यौ०—धूर्तता, चालाकी।
रू०भे०—धोखाधड़ी।

धोकायती—वि० [राज० धोकौ + रा०प्र० आयती] १ धोखेबाज, छली, कपटी. २ जबरदस्त। उ०—रांण रढ बंबौ आथांण रोकायती, लखे मोकायती समत्र सत्र लेळ। धार महाराज धख पंख धोकायती, चंळ विचळ हुआ भोकायती चेळ।—महादांन महडू
रू०भे०—धोखायती।

धोख—देखो 'धोक' (रू.भे.)
उ०—जठै मार मार कर तरवार री भाट दीधी। कतळ री रात राजा कतळ री ज कीधो। धोख चरण देवी रा चढ़ावौ जो धरियौ। कास टेरां रौ बड़गांव मंदिर जिल्ले जो करियौ।—केहर प्रकास

धोखणौ, धोखबौ—देखो 'धोकणौ, धोकबौ' (रू.भे.)
उ०—वांकम तन धर वखत विजाई, महि मारण मांडण ब्रहमंड। खांडा चंद जहीं तो खांडौ, खांडोला धोखै नवखंड।
—महाराजा भीमसिंघ जोधपुर री गीत

धोखियोड़ौ—देखो 'धोकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० धोखियोड़ी)

धोखेबाज—देखो 'धोकेबाज' (रू.भे.)

धोखेबाजी—देखो 'धोकेबाजी' (रू.भे.)

घोखो—देखो 'घोको' (रू.भे.)

उ०—१ पसरे तीनों लोक में, लिपत नहीं घोखे। सो फळ लागै सहज में, सुंदर सब लोके।—दादू बांणी

उ०—२ सकजो न कोइ मो सारिखौ, बहु मूरख गरवै वकै। धरम सीख धारि घोखौ म धार, जोती कुण जाइ सकै।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ असतखांन मन घोखौ आयौ। लोभ विना दुख वाग लगायौ। असुरां तरां उकत उपजाई, वाता लालच तणी बताई।—रा.रू.

उ०—४ कुहाड़ां मार जिहाज वटका करै, घरि सारां घरै मेट घोखौ करां खग तोल मुख बोल कहियौ करण, जितै ऊभौ इतै नहीं जोखौ। —द.दा.

घोड़—१ देखो 'घोड़' (रू.भे.)

उ०—१ गाजै त्रंबाळा निहाव घाव पिनाकां भणंके गांण, धारियां उनाग खाग खत्री ध्रंम घोड़। दूठ जसौ हुओ हेक आविया दक्खणी दळां, रांण दळां आडो कोट सारंभै राठौड़।—दांनौ बोगसौ

उ०—२ घूंणै भुज खग घोड़, पांण दियै मूंछां परै। रण जूंझौ राठौड़, विजड हथौ फिर बोलियौ।—पा प्र.

उ०—३ कहै पातसाह पता दौ कूंची, घर पलटयां न कीजै घोड़। गढ़पत कहै हमै गढ़ माहरौ, चूंडा हरौ न दियै चीतौड़।
—रावत पत्ता चूंडावत (आमेट) री गीत

२ देखो 'घोड़ौ' (मह., रू.भे.)

घोड़ौ—वि० [सं० घाटी] १ वीर, बहादुर।

उ०—नीभड थट लास जरदार कारज नकौ, जमी छत्रधर सकौ गरथ जोडौ। वसावण सुरग घड मोड विसरांमियौ, धसावण लोड रजपूत घोड़ौ।—आउवै ठाकुर कुसळसिंघ री गीत

२ डाकू, लुटेरा।

३ देखो 'घोडौ' (रू.भे.)

(मह० घोड)

घेटी—देखो 'ढोटी' (रू.भे.)

घोटी—देखो 'ढोटी' (रू.भे.) (डिं.को.)

घोडौ—सं०पु०—१ प्रवाह, धारा।

उ०—घटा लूंब आई। पांणी री घमचोळां पड़ै छै। तिण में घोड़ा खडै छै। पाघां रा रंग रा घोडा उतरिया छै। जांणै सांवठा वीदां केसरिया किया छै। सायजादा वना, छोगाळा पना इण तरै सैहर में छौळां करता आया है।—पना वीरमदे री वात

२ वडा काला कौवा।

रू०भे०—घोड़ौ।

धोणौ, धोबौ—क्रि०स० [सं० धावनम्] १ पानी आदि तरल पदार्थ डाल कर किसी वस्तु को साफ करना, प्रक्षालित करना, स्वच्छ करना।

ज्यूं—कपडा धोणा, हाथ धोणा, बाजोट धोणौ।

उ०—१ छीपा! तुं छांनु रहै, घडी म घातिसि पोत। कोइलिनी परि कुहु कुई, धोबी! म धोइसि धोति।—मा.कां.प्र.

उ०—२ जे कठड़ै औ भैरव कठड़ै औ किया सिणगार। कठड़ै औ भैरव कठडै धोया धोतिया।—लो.गी.

यौ०—धोयौ-धायौ।

मुहा०—१ हाथ धोणा—किसी वस्तु से हाथ धोना, खो देना, गँवा देना, वंचित रह जाना. २ हाथ धोय नै लारै पडणौ—हाथ धोकर पीछे पड़ना। सब छोड कर लग जाना, प्रवृत्त होना।

२ दूर करना, हटाना, मिटाना। उ०—वीर होइ धरणी बळवंड, तेह सैन्य धरणी भुजदंड। राजचिन्ह जणमेलु जोईइ, एकलै समरि पाप धोइयइ।—विराटपर्व

धोणहार, हारौ (हारी), धोणियौ—वि०।

धोयोड़ौ—भू०का०कृ०।

धोईजणौ, धोईजबौ—कर्म वा०।

धूणौ, धूबौ, धोपणौ, धोपबौ, धोवणौ, धोवबौ—रू०भे०।

धोत, धोतड़—देखो 'धोती' (मह., रू.भे.)

धोतपड़णौ—सं०पु० [देश०] तालाब या नदी के पानी का ऊपर से गिरने की क्रिया या भाव।

धोतपट्ट—सं०स्त्री० [सं० अधोपट] पुरुष के पहनने का अधोवस्त्र, धोती।

उ०—पुस्पागर जादर मेघाडंबर नेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट गजवडि हंसवडि वोरिआवडी ऊमावडि।—व.स.

धोति—देखो 'धोती' (रू.भे.)

उ०—सीलू थांन घण मुगटा, अनेक जाति नी पाघडी, पोति धोति प्रमुख पांच वरण्ण वागा पहिराव्या।—व.स.

धोतियौ—देखो 'धोती' (१) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ आदमी धोतियौ पकड़ै तौ पोतियौ बिखर जावै अर पोतियौ संभाळै तौ धोतियौ खुल जावै।—रातवासौ

उ०—२ हां रे वाला, इण सरवरिया री पाळ। जंवाई धोवै धोतिया जी म्हारा राज।—लो.गी.

धोती—सं०स्त्री० [सं० अधोवस्त्र] १ पुरुष के कटि से घुटनों के नीचे तक तथा स्त्रियों का प्राय: सर्वांग ढकने का नौ-दस हाथ लम्बा और दो-ढाई हाथ चौड़ा वस्त्र जिसे कमर में लपेट कर खोंसा या ओढा जाता है। उ०—सिखा फरहरती, उत्तरासंगी धोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीऊं जनोइ, सिर भद्रिउं तिलक वधारिउं गायत्री साधनु।—व.स.

यौ०—धोती-जोड़ौ।

मुहा०—धोती खोळी होणी—धोती ढीली होना। डर जाना, भयभीत होना।

अल्पा०—धोतियौ।

मह०—धोत, धोतड, धोतीड, धोतौ।

[सं० धौति] २ शरीर को भीतर और बाहर से शुद्ध करने के लिए की जाने वाली हठयोग की एक क्रिया।

वि०वि०—घेरंडसंहिता के अनुसार यह चार प्रकार की होती है। अंतर्धौति; दंतधौति; हृद्धौति और मूलशोधन। अंतर्धौति के भी

चार भेद हैं—वातसार, वारिसार, वह्नीसार और वहिष्कृत। वातसार में मुंह को कौवे की चोंच की तरह निकाल कर हवा खींच कर पेट में भरते हैं और उसे फिर मुंह से निकालते हैं। वारिसार में गले तक पानी पी कर अधोमार्ग से निकालते हैं। अग्निसार में सांस को रोक कर और पेट को पचका कर नाभि को सौ बार मेरुदंड (रीढ़) से लगाना पड़ता है। वहिष्कृत में कौवे की चोंच की तरह मुंह करके पेट में हवा भरते हैं और उसे चार दंड वहां रख कर अधोमार्ग से निकालते हैं। इसके पीछे नाभि तक जल में खड़े होकर आंतों को बाहर निकाल कर मल धोते हैं और फिर उन्हें उदर में स्थापित करते हैं। दंतधौति भी पांच प्रकार की होती है—दंतमूल, जिह्वामूल, रंध्र, कर्णद्वार और कपाल रंध्र। रंध्र धौति में नाक से पानी पीकर मुंह से और मुंह सुड़क कर नाक से निकालना पड़ता है। इसी प्रकार और भी शुद्धियों को समझिए। ३ आंतें शुद्ध करने की योग की एक क्रिया जिसमें दो अंगुल चौड़ी और आठ-दस हाथ लम्बी कपड़े की धज्जी मुंह से पेट के नीचे उतारते हैं, फिर पानी पीकर उसे धीरे-धीरे बाहर निकालते हैं। इस क्रिया से आंतें शुद्ध हो जाती हैं. ४ कपड़े की वह लंबी धज्जी जो योग की क्रिया में काम आती है।

रू०भे०—घोति, घोवती, घोत, धोति, धोती।

घोतीड़—देखो 'घोती' (१) (मह., रू.भे.)

घोती-जोड़ी—सं०पु०यौ०—दो घोतियों का लम्बा वस्त्र जो बीच में से जुड़ा हुआ रहता है।

घोतो—सं०पु०—देखो 'घोती' (मह., रू.भे.-अवज्ञार्थक)

उ०—१ लघु भत जिम अभिलाख सु लाधै। समै तेणि दासातन साधै। उतिम सिनांन करावै आंणै। पीतांबर घोता वर पांणै।

—सू.प्र.

उ०—२ वैणव बीजणियां वंधण विगताळ। लट्टू घोतां रा खूंजा लटकाळ। राती कांनी री पोतड़ियां रूडी। ऊंनी लोवड़ियां बगलां में ऊड़ी।—ऊ.का.

घोघर—सं०पु० [देश०] ठोडी।

घोघा—सं०स्त्री० [देश०] क्षत्रियों का एक वंश।

उ०—आगै काछ री धरती रा धणी घोघा हुता, सु लाखड़ी नगरी घोघो करनराज करै छै।—नैणसी

घोघींगर—देखो 'घंघींगर' (रू.भे.)

घोघो—सं०पु० [देश०] 'घोघा' वंश का क्षत्री।

घोप—देखो 'घोप' (रू.भे.)

घोपटो—सं०पु० [देश०] जहां खूब भोजन मिले, दावत।

घोपणो, घोपबो—क्रि०स० [देश०] डराना, धमकाना.

२ देखो 'घोणो, घोवो' (रू.भे.)

घोपणहार, हारो (हारी), घोपणियो—वि०।

घोपिग्रोड़ो, घोपियोड़ो, घोप्योड़ो—भू०का०कृ०।

घोपीजणो, घोपीजबो—कर्म वा०।

घोपाड़णो, घोपाड़बो—१ देखो 'घोपाणो, घोपावो' (रू.भे.)

२ देखो 'घुपाणो, घुपावो' (रू.भे.)

घोपाड़णहार, हारो (हारी), घोपाड़णियो—वि०।

घोपाड़िग्रोड़ो, घोपाड़ियोड़ो, घोपाड़योड़ो—भू०का०कृ०।

घोपाड़ीजणो, घोपाड़ीजबो—कर्म वा०।

घोपाड़ियोड़ो—१ देखो 'घोपायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'घुपायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घोपाड़ियोड़ी)

घोपाणो, घोपाबो—क्रि०स० ['घोपणो' क्रिया का प्रे०रू०] १ डांट दिलवाना, डरवाना।

२ देखो 'घुपाणो, घुपावो' (रू.भे.)

घोपाणहार, हारो (हारी), घोपाणियो—वि०।

घोपायोड़ो—भू०का०कृ०।

घोपाईजणो, घोपाईजबो—कर्म वा०।

घोपाड़णो, घोपाड़बो, घोपावणो, घोपावबो—रू०भे०।

घोपायोड़ो—भू०का०कृ०—१ डांट दिलवाया हुआ, डरवाया हुआ.

२ देखो 'घुपायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घोपायोड़ी)

घोपावणो, घोपावबो—१ देखो 'घोपाणो, घोपावो' (रू.भे.)

२ देखो 'घुपाणो, घुपावो' (रू.भे.)

घोपावणहार, हारो (हारी), घोपावणियो—वि०।

घोपाविग्रोड़ो, घोपावियोड़ो, घोपाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

घोपावीजणो, घोपावीजबो—कर्म वा०।

घोपावियोड़ो—१ देखो 'घोपायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'घुपायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घोपावियोड़ी)

घोपियोड़ो—भू०का०कृ०—१ डराया हुआ, धमकाया हुआ.

२ देखो 'धोयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घोपियोड़ी)

घोब—सं०स्त्री०—१ धोये जाने की क्रिया, धुलाई.

२ देखो 'दोब' (रू.भे.)

घोबण—सं०स्त्री०—१ कपड़े धोने वाली स्त्री.

२ धोबी जाति की स्त्री.

३ एक पक्षी विशेष।

घोबणो, घोबबो—देखो 'धोणो, धोवो' (रू.भे.)

उ०—केस जरा घोवण करै, धोळा अतही भोय। अंतक राऐ ऐंचता, हाथ न मैला होय। वां.दा.

घोबियोड़ो—देखो 'धोयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घोबियोड़ी)

घोबी—सं०पु० [सं० धावक] (स्त्री० धावण) १ कपड़े धोकर अपनी

जीविका चलाने वाला, कपड़े धोने का कार्य करने वाला।

२ एक जाति या इस जाति का व्यक्ति। इस जाति के व्यक्ति प्रायः धुलाई का कार्य करते है (डि.को.)

पर्याय०—गजी, धावक, रजक।

मुहा०—धोबी रौ कुत्तौ घर रौ न घाट रौ—जो एक स्थान पर जम कर कार्य नही करे, इधर-उधर भटकने वाला।

धोबीघटी, धोबीघाट, धोबीघाटौ—सं०पु० [सं० धावक घट्ट] वह स्थान जहां धोबी कपड़े धोते हैं। उ०—चमकती छटा लख अटा सु-घटा चतुर, याद कज घटा मोह अटकै। जिकै धोबीघटा तणा दुपटा जुही, पेख काळी घटा जटा पटकै।—सुभरांम बारहठ

धोबीपछाड़—सं०स्त्री०—कुश्ती का एक पेच जिसमें जोड़ का हाथ पकड़ कर अपने कंधे की ओर खीचते है और कमर पर लाद कर चित गिरा देते हैं। उ०—सूर-सस्त्र खूटघा सकळ, धुंसै, धुंसै धाड। पिसणां फेर पछाड़िया, पर दे धोबीपछाड़।—रेवतसिंह भाटी

धोबो—सं०पु० [सं० द्विबाहु ?] १ दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ खाली स्थान या गड्ढा जिसमें किसी वस्तु को रखी या भरी जा सके, दोनो हथेलियों को मिला कर बनाया हुआ संपुट, अंजली।

२ अंजली में समा सके उतना पदार्थ।

उ०—१ धोबौ मूठी धांन, मांगै ज्यांनै ना मिळै। पर काढै पकवांन, ना ना करता नाथिया।—अज्ञात

उ०—२ बीजोडां नै, ओ मा, धोबां-धोबां खाड, बाई नै दीनी सासू चिमठी लूण री। बीजोड़ां नै, ओ मा, चरी-चरी घीव, बाई नै दीनौ ओ सासू डोरो तेल रौ।—लो.गी.

उ०—३ धोबां धोबां धूड़ वगावौ अंमलां वांसै। मती लगावौ मैल सैल मन धरो न सांसै।—ऊ.का.

मुहा०—धोबां धोबां—बहुत अधिक।

रू०भे०—धूबौ।

धोमगर—देखो 'धूमगर' (रू.भे.)

धोम—सं०पु० [सं० धूमः या धौम] १ अग्नि, आग (ना.डि.को.)

उ०—सौन चख विनाय एक मिरजा सकळ, धोम चख सहत एराक धीठौ। दिली रा समंद बिच देख मुकनौ दुरद, दंताळा दुरद जिम कमध दीठौ।—नीवाज ठा. अमरसिंघ ऊदावत रौ गीत

यौ०—धोमझळ, धोमझाळ।

२ वायु, हवा। उ०—गाजतै चलै राकसूं का दरसाव। धमण से धोम फौफरू का फुलाव।—सू.प्र.

३ तोप। उ०—धड़हड़ै धोमां रव चरख धोम। वणि धोम अधारव गोम वोम।—सू.प्र.

४ तोपो, बन्दूकों आदि की ध्वनि। उ०—सळकता वंकतरां मच्छ तोपां खड़ी, धोम सुण हियै काचा चढी धडवडी। घेणा नर ओछटै विखम वागी घडी, तिकण पुळ 'अमर' चढवा दुरंग तेवडी।

—नीवाज ठा. अमरसिंघ ऊदावत रौ गीत

५ कोप, क्रोध (डि.को.)

६ देखो 'धूम' (रू.भे.)

उ०—धड़हड़ै धोमा रव चरख धोम। वणि धोम अधारव गोम वोम।—सू.प्र.

वि०—१ जबरदस्त, बडा, महान्। उ०—१ गोहिलां रौ वडौ धोम राज।—नैणसी

उ०—२ कातिग सुर नांम दियउ ब्रह्मादिक, राजै अचळ अचळ जग रिद्ध। दइत तणउ सिंहासण डिगियउ, कोई धोम प्रगटिओ वडसिद्ध।—महादेव पारवती री वेलि

२ प्रचण्ड, तेज।

धोमझळ, धोमझाळ—सं०स्त्री०यौ० [सं० धूमः+ज्वाला या धूमज्वाला] अग्नि, तेज आग। उ०—१ होम तन करण नृप 'अमर' साथै हली, मेड़तण धोमझाळ पट तणै माह।—रांमकरण महडू

उ०—२ मेछा धडा अभनमौ 'माडण', साफळणौ पुळणौ सवळ। बटका होय कटका वांणासां, झटकां भटकै धोमझळ।

—केसोदास गाडण

धोमपात्र—सं०पु० [सं० धूम+पात्र] धूपदानी।

उ०—धोमपात्र कळिधूत धरावै। धूणी चंदण अगर धुकावै।—सू.प्र.

धोमबाण—सं०स्त्री० [सं० धूमः+बाण] एक प्रकार की तोप।

उ०—दगै तोप वळ दहूं, उडै गोळा झळ आतस। धोमबांण धडहड़ै, पडै सायक झड पावस।—सू.प्र.

धोममारग—देखो 'धूममारग' (रू.भे.)

धोमर—सं पु०—१ एक राक्षस, भस्मासुर।

उ०—देवी भूतड़ा भ्रम्मरी वीस भूजा, देवी त्रीपुरा भैरवी रूप तूजा। देवी राखसं धोमरे रक्त रूती, देवी दुरज्जटा विक्कटा जम्म-दूती।—देवि.

२ धूम, धुआं।

उ०—वह्णा वह्णा गोळा वज्जर। धू आंधार उतंदा 'धोमर'। आरब्बौ असमान अवादर। गडड नाळि अण नाळिक अंबर।—गु.रू.वं.

धोमरिख—सं०पु० [सं० धूम+ऋषि] पराशर ऋषि का एक नाम।

उ०—आतम घोर अंधार में, सोर घोर माचौ सघण। धोमरिख जांण धूंहर रचै, जोजन गंधा रित रमण।—गु.रू.वं.

वि०वि०—ऐसी किंवदंती प्रचलित है कि पराशर ऋषि को एक बार धीवर कन्या मत्स्यगंधा अकेली नदी पार लेजा रही थी। उसकी सुन्दरता पर मोहित होकर ऋषि ने उसके साथ रमण करने की इच्छा व्यक्त की। कन्या शाप के डर से राजी हो गई किन्तु उसने कहा इस समय दिन है। इस पर ऋषि ने अपने योग बल से वहां कोहरा पैदा कर के अंधेरा सा कर दिया और उसके साथ रमण किया जिससे वेदव्यास पैदा हुए। कोहरा पैदा करने के कारण ही पराशर ऋषि को राजस्थान में धोमरिख कहा जाता है।

रू०भे०—धोमारिकव।

धोमानळ—स०स्त्री० [सं० धूमानल] आग, अग्नि।

उ०—धरपुड़ हुवै धुवै धोमानळ, कळ देवड़ां लागै नह काय। खरै मरै ऊचरै नहीं खळ; जळ आधां नवधां ना जाय।—दुरसो आढ़ौ

धोमारिकब—देखो 'धोमरिख' (रू.भे.)

उ०—रवि अंगीरी रास सिंध जाय कोरी सुत्तौ। पड़िया धोमारिकब मास आसाढ़ निरत्तौ।—नैणसी

धोयण-सं०पु० [सं० धावनम्] १ धोना, साफ करने की क्रिया (उ.र.)

२ देखो 'धोवण' (रू.भे.)

धोयोड़ो-भू०का०कृ०—१ पानी आदि तरल पदार्थ डाल कर साफ किया हुआ, प्रक्षालित किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ।

२ दूर किया हुआ, हटाया हुआ, मिटाया हुआ।

(स्त्री० धोयोड़ी)

धोयौ-धायौ-वि०यौ०—१ साफ-सुथरा, स्वच्छ. २ निष्कलंक।

धोरंमनाथ-सं०पु०—१ विष्णु का एक नाम.

२ इस नाम का एक तीर्थ-स्थान।

धोर—देखो 'धोरौ' (मह., रू.भे.)

उ०—खींपा पींपा फोग, मुरट बूई बरणावै। भुरट लांपड़ी लुळै, गजब वेलां गरणावै। हरियौ भरियौ धांन, ऊतरै सदा सतोलौ। लगै ललांम, धोर ढिगला धन देवण पोलौ।—दसदेव

मुहा०—धोर फूटणा—महक फैलना, सुगन्ध फैलना।

धोरड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'धोरौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—कीरड़ियां कंटाळियां, धोरड़ियां चित धार। तोरड़ियां मेहा-तणी, बोरड़ियां बलिहार।—चौथ बीठू

धोरड़ो—देखो 'धोरौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—घास अंकुर ऊपर उगावै, भूल उडण रा खेलड़ा। धोरड़ां छिब करै चौगणी, हरिया लामा केलड़ा।—दसदेव

धोरडी-सं०स्त्री०—देखो 'धोरौ' (अल्पा., रू.भे.)

धोरडौ—देखो 'धोरौ' (अल्पा., रू.भे.)

धोरण-सं०स्त्री० [सं० धोरणम्] १ घोड़े की सरपट चाल.

२ सवारी, यान (डि.को.)

धोरणि, धोरणी-सं०स्त्री० [सं० धोरणिः धोरणी] १ पंक्ति, कतार।

उ०—वांण धोरणि विहुं पथि छूटइं, नाद सींगिणि तणी गुणि सूंकइं। वीरइं वीरिहिं सिउं भडी भाजइं, गूढ़ गयमर तणी गुढि गाजइं।
—विराटपर्व

२ परम्परा. ३ श्रेणी।

धोरणौ—देखो 'धोरण्यौ' (रू.भे.)

धोरणौ, धोरव –क्रि०स०—पीटना, मारना।

धोरण्या-सं०स्त्री०—सीसोदिया वंश की एक शाखा।

धोरण्यौ-सं०पु०—सीसोदियों की 'धोरण्या' शाखा का व्यक्ति।

रू०भे०—धोरणौ।

धोराऊं—देखो 'धुराऊ' (रू.भे.) उ०—आज धोराऊं धरमी धूंधळी, काळी कांठळ मेह श्रो। आज नै वरसै धरती मेऊड़ा भीजे, तंटू री ढोर श्रो।—लो.गी.

धोराळौ-सं०पु० [सं० धोरणिः=रा० धोरौ, आलुच्] १ वह कपड़ा जिस पर सुन्दरता के लिये कोर, गोटे आदि की पट्टियां लगाई गई हों.

२ कोर गोटे की बनी पट्टी। उ०—साळूड़ो साळूड़ो गोरी कांई विलखै, मेह विनां धरती तरसै, मेहड़ो हूवण दै, साळू रे दिरावूं धोराळा, मेहड़ो हूवण दै।—लो.गी.

धोरिउ—देखो 'धोरी' (रू.भे.)

उ०—रिसह लंछणि धोरिउ उल्लसइ, सु भव पंकि पड़्या जन तारि-सिइ। अवरु संबु धरइ रळियांमणउ, ध्वनि करी सिवपंथि सुहांम-णउ।—जयसेखर सूरि

धोरियोड़ो-भू०का०कृ०—मारा हुआ, पीटा हुआ।

(स्त्री० धोरियोड़ी)

धोरियौ-सं०पु० [सं० धुर्] १ करघे में लकड़ी का बना हुआ वह उप-करण जिसमें तुर का छोर लगा रहता है। ये संख्या में दो होते हैं.

२ देखो 'धोरौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ बलूखड़ो रीझी विरलै रूप, वेहोनी ऊभी कर वणाव। धरा चो हरियो मखमल ढाळ, धोरिया प्रगटै इमि अपणाव।—सांझ

उ०—२ सांझ सांढ़ टोरड़ा टुळकै, घर आवै तज धोरिया। छालै बुगाळ ठांण छोड़्या, घुगै बोरिया छोरिया।—दसदेव

धोरींधर—देखो 'धुरंधर' (रू.भे.) उ०—चाहूवांण कुळि जे धोरींधर, जांणइ राज विवेक। तेडावी वीरमदे कुंअर, सिरि कीधउ अभिसेक।
—कां.दे.प्र.

धोरी-सं०पु० [सं० धौरेय] १ बैल, वृषभ (डि.को.)

उ०—१ वचन सुणै तिण वार, तैं धोरी मांगण तणी। नर कोषी नाकार, धूणै कांधौ धीरड़ै।—गो.रू.

उ०—२ ज्यां रै धोरी वेगड़ो, ज्यां रा सींग बधंत। भ्रो जूपै जिण रथ अकळ, सोही रण सोहंत।—बां.दा.

सं०स्त्री०—२ देखो 'धोरौ' (अल्पा., रू.भे.)

वि०—१ अगुआ, मुखिया, प्रधान।

उ०—१ इंद नरिंद दिणिंद फणिंद, नमाए हैं ब्रिंद आणंद विधाता। धोरी धरम को धीर धरा धर, ध्यांन धरै 'धरमसी' गुण ध्याता।
—ध.व.ग्रं.

उ०—२ सच्चा वे साहिब तूं ध्रम धोरी, सिवपुर सुख दे मैं कुं भोरी। समयसुंदर मन रंग रिखभ जी, आउ असाड़ा कोल।—स.कु.

यौ०—धणी-धोरी।

२ भार उठाने वाला।

रू०भे०—धोरिउ।

धोरीथाप, धोरीथापौ-सं०पु० [सं० धुर्+स्थाप] खलिहान में प्रथम बार साफ किये हुए अनाज का ढेर।

वि०—श्रेष्ठ, बढ़िया।

धोरीधर-सं०पु० [सं० धूर्धर] बैल, वृषभ (ह.नां.)

धोरीभाव-सं०पु०यौ० [सं० ध्रुव+राज० भाव] सामान्य तौर पर स्थिर दर ।

धोरै-क्रि०वि० [देश०] १ पास, निकट, समीप ।
उ०—छाजे री बैठक वुरी, पर-छावण री छांय । धोरै री रसियो वुरो, नित उठ पकड़ै बांय ।—अज्ञात

धोरो-सं०पु० [सं० धोरणिः धोरणी] १ कोर, गोटे आदि की वह लंबी पट्टी या फीता जिसे शोभा के लिये स्त्रियों के पहनने के वस्त्रों पर लगाया जाता है । उ०—१ ग्वाळा, वगसिया, रेसमी कांचळियां, मलमल रा घोतिया, धोरां वाळा फेटिया, चौथै फेरै री चूनड़ियां, हींगळू री कूंपियां, सुरमे री डिबियां अर न मालम कांई कांई चीजां ठेट तक मारग में बिखरयोड़ी पड़ी ही ।—रातवासो
उ०—२ करहा रै गोडा गूगरा, गळ नै गूगरमाळ । बावेली ए जंवायां रै ढाल वंदूक । धोरा तो लागा रज री जांमकी ।—लो.गी.
२ मार्ग, रास्ता, पंथ ।
उ०—तजै मती तिरिया पितु, माता, छोडिन धोरो छोटा । धोती छोडि बनै मति धूरत, लेकर घोट लंगोटा ।—ऊ.का.
३ प्रवाह, लपट, लहर ।
उ०—१ सुगंध रै धोरै जोवन मद चुवंतो प्रेमातुर हुवंतो सुखां नूं साथै ले चवड़ा रो मारग टाळियो ।—र. हमीर
उ०—२ अतरां धोरां उड केसर सूंघां कुमकुमां ।—बुधजी आसियो (मि० झोलो (३))
४ जीवन को प्रभावित करने वाली परिस्थिति, वातावरण ।
उ०—१ हमैं मयारांम नैं जसा रंग राग मांणै छै, जका नै इंद्र भी वखांणै छै । रंग-राग रो धोरो लागो छै । विरह रो झोलो भागो छै ।
—मयारांम दरजी री वात
उ०—२ राज विनां दिन रात, दुरंग जोधाणो दोरो । आप थकां ऊडतो, धुवै रंग-रागां धोरो ।—बुधजी आसियो
उ०—३ तुहकै तूर त्रमाळ, धोरां खंभायच धुवै । पोहचावण पूंछाळ, जांन 'दलो' चढ़ियो जयो ।—गो.रू.
क्रि०प्र०—लागणो ।
५ पहाड़ी के आकार का (प्रायः पहाड़ियों से छोटा) वालू का ढेर, टीबा, भीटा, ढूह । उ०—जंगळ जंगळ में जूंनी जरणियांणी । घोळा धोरां री धूनीं धिरणियांणी । खोटै टोटै नग करणियां बीखरगी । माहव मोटै दुख जाटणियां मरगी ।—ऊ.का.
मुहा०—धोरा किण रा अहसांन राखै—टीबे किसके अहसान रखते हैं, चूंकि टीबे पर चढ़ते समय कठिनाई होती है किन्तु उतरा आसानी से जाता है अतः योग्य अथवा बड़े आदमी किसी का अहसान नहीं रखते हैं ।
६ खेत की रक्षार्थ खेत के किनारों पर ऊँची उठाई हुई भूमि, रेत से बनाई हुई दीवार, मेढ़. ७ जल-प्रवाह रोकने का बांध.
८ खेत में क्यारियों तक पानी पहुँचाने की नाली ।
उ०—नै एक मया आ छै जितरी हो सके मिनखां नूं खेती इमारत नूं खपावै, कारज चलावै, नेहर काटण में तळाव बांध मोरी राखणै, कुवा करणै में इतरी मदत धोरा वंधावण में करै ।—नी.प्र.
९ तट; किनारा ।

धोवण-सं०पु० [सं० धावनम] १ वह तरल पदार्थ (प्रायः जल) जिसमें या जिससे कोई वस्तु धोई गई हो ।
उ०—काफरला में साध गोचरी गया । एक जाटणी रै धोवण पिण वहिरावै नहीं । कहै—देवै जिसो पावै सो धोवण म्हांसूं पीवणी आवै नहीं ।—भि.द्र.
यौ०—धोवण-धावण ।
२ धोने की क्रिया या भाव । उ०—म्हैं तो जाऊं जळ जमना रै पांणी, थे आईजो उठै न्हावण नै । न्हावण करजो, धोवण करजो, बंसी री टेर सुणावण नै, थे म्हारै घर आवो सांवरा, माखण मिसरी खावण नै ।—संत वाणी
३ कुछ जातियों में मृतक की भस्मी को कोई तीर्थ स्थान या नदी में डाल कर वहीं पर सम्बन्धियों को दिया जाने वाला भोज ।
रू०भे०—धोवन, धोवनू ।

धोवणी-सं०स्त्री० [सं० धावनिका] धोने का उपकरण (उ.र.)

धोवणो, धोवबो—देखो 'धोणो, धोबो' (रू.भे.)
उ०—१ कांन्ह कंवर सो वीरो मांगां, राई सी भोजाई । सांवळियो वहनोई मांगां, सोदरा वहन मांगां, हांडा धोवण फूंफो मांगां, झाडू देवण भूवा ।—लो.गी.
उ०—२ वेरा वैरागर सागर सम सोभा, रीती गागर ले नागर तिय रोभा । धावै द्रगधारा दारा मुख धोवै, जोवन संजीवन जीवन धन जोवै ।—ऊ.का.
उ०—३ अर अंगज रै आगै डोढ़ी पर आइ एक कपाट रै अंतर हालू नरेस नूं बुलाई वैर धोवण रै काज, इण रीति वरजियो—वं.भा.
धोवणहार, हारो (हारी), धोवणियो—वि० ।
धोवाड़णो, धोवाड़बो, धोवाणो, धोवावो, धोवावणो, धोवावबो
—प्रे०रू० ।
धोवियोड़ो, धोवियोड़ो, धोव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
धोवीजणो, धोवीजबो—कर्म वा० ।
धुपणो, धुपबो—अक० रू० ।

धोवती—देखो 'धोती' (रू.भे.)
उ०—१ म्हारो वनो विलायत जासी, वनड़ी नै ओळूं आसी । वना जातां री पकड़ूं धोवती, म्हांनै ल्यादो साचा मोती ।—लो.गी.
उ०—२ कर विन कूंची घर विन ताळा, सो खोलै जोगी मतवाळा । धरम धोवती ब्रह्म अचारा, औघट घाट न्हावै संत प्यारा ।
—स्री हरिरांमजी महाराज

धोवन, धोवनू—देखो 'धोवण' (रू.भे.)
उ०—स्वांत को सुभांति सांति सोवनूं करधो । धोवनूं न कीन ताहि रोब नूं परधो ।—ऊ.का.

घोवियोड़ो—देखो 'धोयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घोवियोड़ी)

घोह–सं०पु० [सं० द्रोह] १ धोखा, दगा ।

उ०—अबै सूराचंद मांहे रोळ पड़ी, कूकवो हुवो, चौकीवाळां नै खबर दोड़ी, वेगा आय भेळा हुवो, जैतसी आयो—छांनो नायो, राजा सूं घोह हुवो । इसो सांभळ नै सगळै साथ दौड़ मची ।

—जैतसी ऊदावत री बात

२ देखो 'द्रोह' (रू.भे.)

घोहड़—देखो 'घूहड़' (रू.भे.)

उ०—सत्र लोट पोट उडि दोट सिर, घजर चोट खंग घोहड़ां । नव कोट छ खंड वागा निडर, लाल कोट मझि लोहड़ां ।—सू.प्र.

घौंकणी–सं०स्त्री० [सं० ध्मा] १ बांस या धातु की एक नली जिससे लोहार, सोनार आदि आग फूंकते हैं, भाथी ।

२ देखो 'धमण' ।

रू०भे०—धूंकणी ।

घौंकणो, घौंकवो–क्रि०स० [सं० ध्मा=शब्दाग्नि संयोगयोः] अग्नि को प्रज्वलित करने के लिए भाथी द्वारा वायु का झोंका पहुंचाना, अग्नि को दहकाने के लिए वायु का आघात पहुंचाना ।

घौंकणहार, हारो (हारी), घौंकणियो—वि० ।

घौंकिओड़ो, घौंकियोड़ो, घौंक्योड़ो—भू०का०कृ० ।

घौंकीजणो, घौंकीजवो—कर्म वा० ।

घौंकळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)

उ०—अजब साह असपत्तियां, प्रगट दिखायो पांण । ऊगै दिन घौंकळ इळा, ऊगै दिन आरांण ।—रा.रू.

घौंकळणो, घौंकळवो—देखो 'घोकळणो, घोकळवो' (रू.भे.)

घौंकळियोड़ो—देखो 'घोकळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घौंकळियोड़ी)

घौंकार—देखो 'धोंकार' (रू.भे.)

उ०—पंचसब्द वाजित्र वाजइ छइ । गल्यां पीतळ रजत तणा पखावज घौंकार करइ छइ ।—कां.दे.प्र.

घौंकियोड़ो–भू०का०कृ०—अग्नि को प्रज्वलित करने के लिये भाथी द्वारा वायु का झोंका पहुंचाया हुआ, भाथी से आग दहकाया हुआ ।

(स्त्री० घौंकियोड़ी)

घौंखळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)

उ०—घजबंधी खग घीर करै निति घौंखळा । काइम लाज अजाद सदा चडती कळा ।—ल.पि.

घौंखळणो, घौंखळवो—देखो 'घोकळणो, घोकळवो' (रू.भे.)

उ०—घौंखळै रिमां खग झेट बजर, घुर मोहर चोसर धरू । करै सूर सराहे इम कळह, कहै 'सूरजादो' फरू ।—सू.प्र.

घौंखळियोड़ो—देखो 'घोकळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घौंखळियोड़ी)

घौंचक, घौंचक्क—देखो 'धमचक' (रू.भे.)

उ०—अणभै वांणी वांण यहां, उहां मनोरथ तीर । मोह विमेक घौंचक करै, कायर धरै न धीर ।—ह.पु.वा.

घौंस—देखो 'धूंस' (रू.भे.)

घौंसर, घौंसो—देखो 'धूंसो' (रू.भे.) उ०—वजै त्रंमक घौंसर वजै, नोबति सबदं निराट । मैंदमत खंभू ठांण मथ, थटै गयंदां थाट ।

—वगसीरांम प्रोहित री बात

घौ–सं०पु०—१ देवल. २ धर्म.

३ तट, किनारा ।

सं०स्त्री०—४ वाणी. ५ धरती (एका.)

घौक—ज्वर (सिरोही)

घौकळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)

उ०—करै राज इम कमध, 'जसो' छत्रपति जोधांणै । इतै दिल्ली ऊठियो, खेव घोकळ खुरसांणै ।—सू.प्र.

घोकळणो, घोकळवो–क्रि०स० [देश०] १ युद्ध करना, लड़ाई करना ।

उ०—घोकळै रांण मेवाड़ धर, करण साह चाकर कियो । 'गजसिंघ' सिव सूरां गरू, इम तारा गढ़ आवियो ।—सू.प्र.

२ ध्वंस करना, नष्ट करना ।

उ०—खड़की गढ़ घोकळै, गोळकूंडो गाहट्टै । खत्रि लियो खेलणो, झाड़ि खळ दळ खंग झट्टै ।—सू.प्र.

३ प्रहार करना, मारना.

४ उत्पात करना, उपद्रव करना ।

घोकळणहार, हारो (हारी), घोकळणियो—वि० ।

घोकळिओड़ो, घोकळियोड़ो, घोकळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

घोकळीजणो, घोकळीजवो—कर्म वा० ।

धूंकळणो, धूंकळवो, धूंखळणो, धूंखळवो, धूकळणो, धूकळवो, धूखळणो, धूखळवो, घौंकळणो, घौंकळवो, घौंखळणो, घौंखळवो, घोकळणो, घोकळवो, घोखळणो, घोखळवो—रू०भे० ।

घोकळियोड़ो–भू०का०कृ०—१ युद्ध किया हुआ, लड़ाई किया हुआ.

२ ध्वंस किया हुआ, नष्ट किया हुआ.

३ संहार किया हुआ, मारा हुआ.

४ उत्पात किया हुआ, उपद्रव किया हुआ ।

(स्त्री० घोकळियोड़ी)

घोकार—देखो 'घोंकार' (रू.भे.) उ०—नाराजे कोमंडै, झर तीर उड्डै । घनखां घोकार, गाजै अंभार ।—गु.रू.बं.

घोखळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.) उ०—घरा करै घोखळां, करै दमगळा कराळां । वैर पिता चीजवां, हणै खळ हणै हठाळां ।—सू.प्र.

घोखळणो, घोखळवो—देखो 'घोकळणो, घोकळवो' (रू.भे.)

घोखळियोड़ो—देखो 'घोकळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० घोखळियोड़ी)

घोड़–वि० [देश०] रक्षा करने वाला, रक्षक ।

उ०—निहसिया जोध नीसांण घण नीध्रसै, धार श्रावाहि मिर-बाहि कुळ धोड़। पाट छळि जोवतो तिसो जुड़ियो परव; रूक हथ पागड़ो छांडि राठौड़।—राठौड़ सेखा दुरजनसालोत पातावत रो गीत

सं०पु०—१ जिद्द, हठ।

उ०—मेवाड़ो श्रोळखियो, धारि यहो मन धोड़। जोधपुरो जीपै सदा, जुध हारै चीतौड़।—गु.रू.बं.

२ ध्वनि विशेष। उ०—श्रंत दिन लगन महूरति ऊपरि। धवळ मंगळ दळ हूंकळ धोड़। मीरां-धड़ परणण कौमारी। मारू 'रयण' बांधियो मोड़।—दूदो.

रू०भे०—घोड़।

धोड़ंप-सं०पु०—वेग (श्र.मा.)

धोत-वि० [सं०] १ धुला हुश्रा (डि.को.) उ०—कुमकुमै मंजण करि धोत वसत धरि, चिहुरे जळ लागो चुवण। छीणे जांणि छछोहा छूटा, गुण मोती मखतूळ गुण।—वेलि.

२ देखो 'धोती' (२, ३, ४) (मह. रू.भे.)

उ०—निज श्राठ जोग श्रभ्यास श्रहनिस, सधै सुर धर जुगम रवि सस। करै रेचक पूरक कुंभक, वहै दम सिर ठांम। श्रसो च्यार सुधार श्रासण, धोत वसती नीत धारण; करो श्रेता कठण-विधक्रम, सम राघव नांम।—र.ज.प्र.

धोति, धोती—देखो 'धोती' (रू.भे.)

धोप-सं०स्त्री० [देश०] १ जोश भरी वह श्रावाज जिससे भय लगे।

क्रि०प्र०—देणी।

२ श्रातंक, भय, रौब।

क्रि०प्र०—राकणी।

३ तलवार, खड्ग।

रू०भे०—धोप, धौफ, ध्रोप, ध्रोफ।

धोपटणो, धोपटबो-क्रि०स० [देश०] १ उपद्रव करना, लूटना।

उ०—इतै सुरम श्राविश्रो, साह परि सझि दळ सव्वळ। धर साहां धोपटै, खलक मंड पड़ै खळभळ।—सू.प्र.

२ अधिकार करना, कब्जा करना।

धोपट्टणो, धोपट्टबो—रू०भे०।

धोपटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ उपद्रव किया हुश्रा, लूट-मार किया हुश्रा. २ अधिकार किया हुश्रा, कब्जा किया हुश्रा।

(स्त्री० धोपटियोड़ी)

धोपट्टणो, धोपट्टबो—देखो 'धोपटणो, धोपटबो' (रू.भे.)

उ०—धोपट्ट लीध धरत्ती। 'जिहंगीरे' श्रांण वरत्ती। वीरातन वागां जोड़ै। चांपा भुइ चढियो चोड़ै।—गु.रू.बं.

धोपट्टियोड़ो—देखो 'धोपटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० धोपट्टियोड़ी)

धोफ—देखो 'धोप' (रू.भे.)

धोम—देखो 'धूम' (रू.भे.) उ०—वधै वीर हाकां धाकां धोम गैणाग धूवै, पवंग जुधि मेळियो दळां पहिलै। श्राप छळ बाप छळ सामि छळ श्रावरां, 'गदाधर' खड़गधर भूझि गहिलै।

—राठौड़ गदाधर जैमालोत, गिरधरदासोत रो गीत

धोमधूज—देखो 'धूमधज' (रू.भे.) (ह.नां.)

धोमाळ-सं०स्त्री० [सं० धूम+श्रालुच्] श्रग्नि, श्राग।

उ०—उडि पड़ै पाट दिवाल, लगि लार पाथर लाल। धड़डंत झळ धोमाळ, कड़ड़ंत वीज कराळ।—सू.प्र.

धौम्य-सं०पु० [सं०] एक ऋषि (महाभारत)

धोरंग-वि० [देश०] लहू-लुहान, क्षत-विक्षत।

उ०—वणि होळिका थंभ जुध वेरां। सिर पर वह झेलूं समसेरां। धार विहार श्रणी घट धोरंग। चुख चुख होय पड़ूं रिण चोरंग।

—सू.प्र.

धोरितक-सं०पु० [सं० धौरितकम्] घोड़े की पांच चालों में से एक।

धोळ-सं०पु० [देश०] १ शिर, मस्तक।

उ०—धारा पुड़ वेधि रंग श्रहि धोळ। छिलै रुहिराळ तणी श्रति छोळ।—सू.प्र.

२ देखो 'धवळ' (मह., रू.भे.)

उ०—महीथळां, गढ़ां मचोळ, नर कोई होवै निवळ। धुर श्रायां विन धोळ, भार न खांचै भेरिया।—महाराजा बळवंतसिंघ रतलांम

३ देखो 'धोळो' (मह., रू.भे.)

४ देखो 'धवळो' (मह., रू.भे.)

५ देखो 'धोळख' (मह., रू.भे.)

धोल-उभ०लिं० [श्रनु०] हाथ के पंजे का भारी श्राघात जो पीठ या सिर पर पड़े, थप्पड़, धप्पा।

धोळक—देखो 'धोळख' (रू.भे.)

धोलक—देखो 'ढोलक' (रू.भे.)

धोळकियो—देखो 'धवळ' (श्रल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० धोळकी)

धोळकी—देखो 'धवळो' (रू.भे.)

धोलकी—देखो 'ढोलक' (श्रल्पा., रू.भे.)

धोळको—देखो 'धवळ' (श्रल्पा., रू.भे)

उ०—पूगां देस दसांण केवड़ा फूल वनां में, महकीजै मुळकाय धोळकी श्राभ जिणां में। माळा विरछां मांय घणेरा पंछी घालै, वन जांमूनां जेथ हंसला दिन दो मालै।—मेघ.

(स्त्री० धोळकी)

धोळख-सं०स्त्री० [सं० धवल] वह सफेद मिट्टी जिससे मकानों की पुताई होती है। उ०—धोळख रूप सरूप, धवळ माटी गारळो। कैकळ काळै रंग, डागळां न्हांखण हाळी।—दमदेव

रू०भे०—धोळक।

श्रल्पा०—धोळी।

(मह० धोळ)

धोळगिर—देखो 'धवळ-गिर' (रू.भे.)

धोळगिररांणी–सं०स्त्री० [सं० धवलगिरि+राज्ञी] देवी, शक्ति।

धोळजीभो–सं०पु०यौ० [सं० धवल+जिह्वा] वह बैल जिसकी जिह्वा का रंग सफेद हो।

धोळण–सं०स्त्री० [सं० धवल] १ मकान आदि पोतने का पदार्थ, चूना. २ मकान पोतने की क्रिया, पुताई।

क्रि०प्र०—करणी।

धोळणौ, धोळबौ—देखो 'धवळणौ, धवळबौ' (रू.भे.)

उ०—नीपण धोळण मांडणां, जीवां रा करौ रे जतन्न। भव भमतां दुलहौ लह्यौ, मांनव भव रतन्न।—जयवांणी

धोळणहार, हारौ (हारी), धोळणियौ—वि०।

धोळवाड़णौ, धोळवाड़बौ, धोळवाणौ, धोळवाबौ, धोळवावणौ, धळोवावबौ, धोळाड़णौ, धोळाड़बौ, धोळाणौ, धोळाबौ, धोळावणौ, धोळावबौ—प्रे०रू०।

धोळिओड़ौ, धोळियोड़ौ, धोळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

धोळीजणौ, धोळीजबौ—कर्म वा०।

धोळती–सं०स्त्री० [सं० धवल] गाय।

उ०—भैंस्यां चरावै, बो तौ भूरटी, बो तौ ल्यावै-ल्यावै घरां ए चराय, भैंसा आरणा। धोळती चरावै, बो तौ दूभणी, कोई ल्यावै-ल्यावै घरां ए चराय, सांड दड़ूकणा।—लो.गी.

धोळपूंछियौ–सं०पु० [सं० धवल+पुच्छ] १ एक प्रकार का घास. २ वह बैल जिसके पूंछ का छोर श्वेत हो।

धोळहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.) उ०—सांत तणंका जसह का, मद प्याला मतवाळ। धोळहरां चमरां ढुळै, ऊ 'भारांणी' भाळ।

—बां दा.

धोळा–सं०स्त्री० [सं० धवळ] ढोलियों की एक शाखा जो चारण जाति को अपना यजमान मानते हैं—चारणों के याचक ढोली।

धोळागर, धोळागिर, धोळागिरि—देखो 'धवळगिरि' (रू.भे.)

उ०—१ रूपाळो रळियांमणो, धोळागर रौ थांन। तर नीझर झंकर तठै, सिखर मेर समांन।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—२ कटकां काहू संख्या नहीं, कोई साहणी न पार। डेरा दिक्खणियां तणा, फिर धोळागिर धार।—गु रू.बं.

धोळाहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.)

धोळियोड़ौ–भू०का०कृ०—देखो 'धवळियोड़ौ' (रू.भे.)

धोळियौ–वि०—१ वीर तेजा जाट का एक विशेषण सूचक नाम।

उ०—तेजाजी ओ थे म्हारै आयजी धरमी पांवणा, भलै नै भादरवा री रात धोळिया जी ओ।—लो.गी.

२ देखो 'धोळौ' (अल्पा., रू.भे.)

३ देखो 'धोळ्यौ' (रू.भे.)

धोळौ—देखो 'धवळौ' (रू.भे.)

धोळेरण—देखो 'धवळेरण' (रू.भे.)

धोळैहर, धोळंहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.)

उ०—धारै मन बैठूं धोळंहर, तापै सूना ढूंढ़ तठै। मोटा आखर कवण मेटवै, कुटी लिखी सो महल कठै।—ओपौ आढौ

धोळौ–सं०पु० [सं० धवल] १ एक प्रकार का सफेद पत्थर विशेष। २ श्वेत बाल।

मुहा०—१ धोळां नै धोक देणी—वृद्ध को नमस्कार करना. २ धोळां में धूड़ पड़णी—वृद्धावस्था में कलंकित होना, अपमानित होना. ३ धोळां री ईजत राखणी—वृद्धावस्था का ख्याल रखना, मान देना, संचित ख्याति का ह्रास न होने देना. ४ धोळां री धणी—श्वेत बाल वाला, वृद्ध. ५ धोळा आणा—सफेद बाल उगना, वृद्ध होना।

३ श्वेत प्रदर, सोम रोग।

४ देखो 'धोळख' (अल्पा., रू.भे.)

५ देखो 'धवळ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ जंगळ जंगळ में जूनी जणियांणी। धोळा धोरां री धूनीं धिणियांणी। खोटै टोटै नग कणियां बीखरगी। माहव मोटै दुख जाटणियां मरगी।—ऊ.का.

उ०—२ धोळा बुगला ध्यांन लगावै, खावै मछियां खूब। पापी पल पल पाप कमावै, डबकै जावै डूब।—ऊ.का.

उ०—३ केस जरा धोबण करै, धोळा अत ही धोय। अंतक राऐ ऐंचतां, हाथ न मैला होय।—बां.दा.

उ०—४ प्रतिदिन मोळा पड़ भिन्न भिन्न पद पूजै। धोळा नीरण विन जीरण जिम धूजै।—ऊ.का.

उ०—५ धोळा धधकारेह, हळ लारै हलियौ नहीं। दुरभख दरबारेह, भमियौ पेटज भरण नै।—अज्ञात

उ०—६ कळू कीच जाडी जिकण बीच गाडी कळै, क्रीत थाकी करै जीव कायौ। होड करता जिकै भीच मोळा हुवा, ऊठ धोळा भुजां भार आयौ।—हरनाथसिंघ चांपावत री गीत

मुहा०—१ धोळां माथै काळो मांडणौ—कागज या वही में लिखना, ऋणी करना. २ धोळां री धणी—बैलों का मालिक, बैलों वाला. ३ धोळो धोळो दूध जांणणौ—रंग के अनुसार गुणों को मान लेना, भला समझना।

यौ०—धोळो-धट, धोळो-फट, धोळो-बूड़।

रू०भे०—धोळयौ।

धोळ्यौ–सं०पु० [सं० धवल] १ सफेद धव के समान किन्तु उससे छोटा एक वृक्ष विशेष जिसको बकरी, ऊँट आदि बहुत खाते हैं। इसके फल चिरमी के आकार के गोल व सफेद होते हैं।

२ देखो 'धोळौ' (रू.भे.)

३ देखो 'धवळ' (अल्पा., रू.भे.)

ध्यांन–सं०पु० [सं० ध्यान] १ अंतःकरण में उपस्थित करने की क्रिया या भाव, बाह्य इंद्रियों के प्रयोग के विना केवल मन में लाने की

क्रिया या भाव, मानसिक प्रत्यक्ष ।
उ०—जीहा जप जगदीसवर, धर धीरज मन ध्यांन । करमबंध-निकरम-करण, भव-भंजरण भगवांन ।—ह.र.
क्रि०प्र०—करणौ, लगाणौ, लागणौ ।
मुहा०—१ ध्यांन धरणौ—स्वरूप आदि को मन में लाना, मन में स्थापित करना. २ ध्यांन में डूबणौ—मन की वह स्थिति जिसमें मन एक बात में इतना तल्लीन हो जाता है कि अन्य बातों का ख्याल ही नहीं रहता है। किसी एक बात की ओर ही चित्त का प्रवृत्त होना. ३ ध्यांन में लागणौ—किसी को मन में लाकर मग्न होना।
२ ख्याल, विचार, भावना । उ०—अवर ग्यांन न ध्यांन उचारै । आप जेम प्रिय प्रिया उचारै ।—सू.प्र.
ज्यूं—मारग वैतां थकां थांनै कांटै री ई ध्यांन को रै' नी ?
क्रि०प्र०—होणौ ।
मुहा०—१ ध्यांन आणौ—विचार उत्पन्न होना ख्याल आना, भावना होना. २ ध्यांन जमणौ—ख्याल बैठना, भावना स्थिर होना, विचार जमना. ३ ध्यांन बंधणौ—लगातार विचार बना रहना, विचार का बराबर या बहुत देर तक बना रहना. ४ ध्यांन राखणौ—ख्याल रखना, न भूलना, विचार बनाये रखना. ५ ध्यांन लागणौ—बराबर विचार बना रहना, मन का प्रवृत्त हो जाना । मन में विचार बराबर बना रहना ।
३ चिंतन, मनन, विचार, सोच ।
ज्यूं—इतरा दिन थां किण ध्यांन में रह्या हा ।
४ किसी सम्बन्ध में अन्तःकरण की जागृत स्थिति, मन की किसी विषय की ओर ऐसी प्रवृत्ति जिससे उस विषय का अन्तःकरण में सबसे ऊँचा स्थान हो जाय, चेतना का लक्ष्य, ख्याल, चेत ।
उ०—यह अपराध गांठियौ चित में, थारै सिखां छांटियौ ध्यांन। चारु प्रसाद वांटियौ चेलां, गुरां इसौ ई छांटियौ ग्यांन ।
—बांकीदास बीठू
मुहा०—१ ध्यांन जमणौ—एक ही विषय को ग्रहण करने में मन का बराबर तत्पर रहना। एकाग्रचित्त होना । विचार या ख्याल का इधर-उधर न जाना २ ध्यांन जाणौ—किसी बात का बोध होने अथवा किसी ओर दृष्टिपात करने से मन का उस ओर प्रवृत्त होना। ३ ध्यांन दिराणौ—किसी का चित्त प्रवृत्त करना, चेत कराना, ख्याल कराना, सुझाना, दिखाना. ४ ध्यांन देणौ—मन प्रवृत्त करना, एकाग्रचित्त होना, गौर करना, ख्याल करना. ५ ध्यांन में चढ़णौ—किसी विशेषता के कारण चित्त से न हटना, मन में स्थान कर लेना. ६ ध्यांन में बैठणौ—देखो 'ध्यांन में चढ़णौ'. ७ ध्यांन बंटणौ—मन का स्थिर न रहना, चित्त एकाग्र न रहना. ८ ध्यांन बंटाणौ—ख्याल इधर-उधर ले जाना, चित्त को एकाग्र न रहने देना. ९ ध्यांन बंधणौ—एकाग्रचित्त होना, मन का एक ही ओर लीन होना, प्रवृत्त होना. १० ध्यांन लगाणौ—देखो 'ध्यांन देणौ'.
११ ध्यांन लागणौ—चित्त का एक ओर प्रवृत्त होना, एकाग्रचित्त होना । मन का किसी विषय को ग्रहण करने के लिये तत्पर होना.
५ चित्त की वह ग्रहण-वृत्ति जिसमें रूपों या भावों को भीतर ग्रहण किया जाता है, अन्तःकरण विधान, मन, चित्त ।
उ०—वरजइ ताइ सती ध्यांन बइठी वळि, परम दयाळ किसी पर-वाह । मिस इण मिळवा मावीतां, चींत सती चइ लागउ चाह ।
—महादेव पारवती री वेलि.
क्रि०प्र०—में आणौ, में लाणौ ।
मुहा०—ध्यांन में लाणौ—विचारना, समझना, सोचना, चिंता करना. परवाह करना ।
६ वह वृत्ति जिससे बोध हो, बुद्धि, समझ ।
मुहा०—१ ध्यांन में आणौ—देखो 'ध्यांन में चढ़णौ'. २ ध्यांन में चढ़णौ—समझ में आना, अनुमान या बोध होना. ३ ध्यांन में जमणौ—विश्वास के रूप में स्थिर होना, चित्त में स्थिर होना, मन में बैठना ।
७ ७२ कलाओं में से एक.
८ स्मृति, धारणा, याद ।
ज्यूं०—म्हारै कैयोड़ी तौ पूरी है पण थूं थोड़ौ'क ध्यांन दिरा दीजै ।
क्रि०प्र०—होणौ ।
मुहा०—१ ध्यांन आणौ—स्मृति में आना, याद होना. २ ध्यांन दिराणौ—याद दिलाना, स्मरण कराना. ३ ध्यांन में चढ़णौ—स्मरण होना, स्मृति में आना, याद होना. ४ ध्यांन राखणौ—न भूलना, स्मृति बनाये रखना, याद रखना. ५ ध्यांन रै'णौ—स्मरण रहना, याद रहना. ६ ध्यांन सूं उतरणौ—विस्मृत होना, भूलना, याद न रहना, स्मृति में न रहना ।
९ चित्त को एकाग्र कर के किसी ओर लगाने की क्रिया, चित्त को सब ओर से हटा कर किसी एक विषय (जैसे परमात्मा) पर स्थिर करने की क्रिया ।
वि०वि०—धारणा और समाधि के बीच की अवस्था 'ध्यान' है जो योग के आठ अंगों में सातवां अंग है ।
उ०—१ बुद्धि बोध सकै नहिं ताकूं, अपना आप जताया । ध्याता ध्यांन ध्येय सूं न्यारा, अध्येय चेतन राया ।
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ रहै रत ध्यांन अठ्यासी रिखख। लहै नंहं पार ब्रहम्मा लक्ख । सदा जस नव्व कहै मुख सेस । आदेस आदेस आदेस आदेस ।
—ह.र.
क्रि०प्र०—करणौ, लगाणौ, लागणौ ।
मुहा०—१ ध्यांन छूटणौ—चित्त का इधर-उधर हो जाना, मन एकाग्र न रहना. २ ध्यांन धरणौ—परब्रह्म चिंतन आदि के लिए एकाग्र-मन होकर बैठना ।
रू०भे०—धियांन ।

घ्यांनगियो—देखो 'दैनगियो' (रू.भे.) (शेखावाटी)
घ्यांनगी—देखो 'दैनगी' (रू.भे.) (शेखावाटी)
घ्यांन-जोग-सं०पु०यौ० [सं० ध्यानयोग] १ वह योग जिसमें ध्यान मुख्य हो. २ तंत्र या इंद्रजाल की एक क्रिया।
घ्यांन-धारण-सं०पु० [सं० ध्यान+धारण] महादेव, शिव (क.कु.बो.)
घ्यांनवंत-वि०—ध्यान में लीन।
घ्यांनी-वि० [सं० ध्यानिन्] १ ध्यान करने वाला, जो ध्यान में रहता हो। उ०—घ्यांनी पग धीरा धरै, सीरा कांनी साद।—ऊ.का.
२ ध्यान युक्त, समाधिस्थ।
उ०—वेद कतेब ग्यांनी नहिं घ्यांनी, तूई अटळ रह जायगा है।
—वांणी प्रकास
घ्यांनु—देखो 'घ्यांन' (रू.भे.) उ०—नारदु पहूतउ सिख्या देवि, पंडव वइठा घ्यांनु धरेवि।—पं.पं.च.
घ्याग, घ्यागि—देखो 'धियाग' (रू.भे.)
उ०—१ गुण सागर कूदइ अरब गत्ति, राह फिरि अवसरि रमइ रत्ति। खडरण घड़ा मूगळी खागि, लखधीर चईवउ घ्यागि लागि।
—रा.ज.सी.
उ०—२ वाजिया आम्हो साम्हो बांगड़, घाट जडंती त्रिवध घड़। खटकइ वडी छडकी खागे, घ्यागि लागा वहइ घड़।
—महादेव पारवती री वेलि.
उ०—३ साह खबर सांभळी, रीस ऊछळी बारते। सादूळो सुख ढांण जांण वतळायो सूतै। सोर आग सपरस, किना वडवाग अकारी। माग हूंत सामंद्र घ्याग वरतण उरधारी। इम कोप लोप 'अवरंग' री विण सोनंग दुरंग विग, इळ करै कवण मांडै अडी, जग घड़ धड़ी पयांण जिण।—रा.रू.
घ्याणौ, घ्यावौ-क्रि०स० [सं०] १ देखो 'धावणौ, धाववौ' (रू.भे.)
उ०—थांनक घ्या सांमी नित घ्याइं, सहस पल्योपम करम खपी जाइं।—चिहुंगति चउपइ
२ देखो 'धाणौ, धावौ' (रू.भे.)
घ्याता-वि०—ध्यान करने वाला।
उ०—१ बुद्धि बोध सकै नहिं ताकूं अपना आप जताया, घ्याता घ्यांन घ्येय सूं न्यारा अघ्येय चेत न राया।
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ तुं ही घ्याता घ्येय प्रति मति विख्याता प्रत तुं ही।—ऊ.का.
घ्यायोड़ो-भू०का०कृ०—देखो 'धावियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घ्यायोड़ी)
घ्यावणौ, घ्याववौ—देखो 'धावणौ, धाववौ' (रू.भे.)
उ०—रूप रेख बहु रंग घ्यांन जोगेसर घ्यावै।—ह.र.
घ्यावना—देखो 'धावना' (रू.भे.)
घ्यावियोड़ो-भू०का०कृ०—देखो 'धावियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० घ्यावियोड़ी)

घ्येय-वि० [सं०] १ ध्यान करने योग्य।
उ०—तुंही घ्याता घ्येय प्रति मति विख्याता प्रत तुंही।—ऊ.का.
२ जो ध्यान का विषय हो, जिसका ध्यान किया जाय।
उ०—बुद्धि बोध सकै नहिं ताकूं अपना आप जताया। घ्याता घ्यांन घ्येय सूं न्यारा, अघ्येय चेतन राया।—स्री सुखरांमजी महाराज
ध्रंखळ—देखो 'धूंकळ' (रू.भे.)
उ०—अड़ियाल लये केई तुरस ओट। छड़ियाळ करै केई ध्रंखळ चोट।—पा.प्र.
ध्रंग—देखो 'द्रंग' (रू.भे.)
ध्रंगड़ो—देखो 'द्रंग' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ आथ अटूट अखूट अन, प्रजा घणी सुख पोस। धन 'बांका' ऊध्रंगड़ो, साहिब जे संतोस।—बां.दा.
उ०—२ धन देखो जिण ध्रंगड़ै, हेको पुरख न होय। सुपने ही नहिं संचरै, लोभी मंगण लोभ।—बां.दा.
ध्रंम—देखो 'धरम' (रू.भे.)
उ०—अवध्धेस राजा प्रभू ध्रंम अंसी। वडी रीत चालै सदा भांण वंसी।—सू.प्र.
ध्र—देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)
उ०—नीर परवति गोरी ? कइ चलइ पाय ? गंग अपूठी क्युं वहई ? ध्र तारौ कम छंडइ ठांमि ? सूरज पछिम किम ऊगमइ ? उलीग चालतां क्युं रह्यौ आज।—बी.दे.
ध्रक—देखो 'धिक' (रू.भे.)
उ०—अपणी छांड परायी ताकै, ध्रक जीवन ध्रकजी।—लो.गी.
ध्रग-वि०—१ बड़ा. २ देखो 'धिक' (रू.भे.)
उ०—ध्रग रण गयो माल दे गेह छाड खेहले, धकै फेर प्रथमाद संसार फेडी। तात रै वैर में सुर जाय तांणियो, गाज बाज सो जोधपुर चाट गेडी।—ठाकुर जैतसी री वारता
ध्रगध्रगी—देखो 'धगधगी' (रू.भे.)
उ०—श्री वदन पीतता चित व्याकुळता, हियै ध्रगध्रगी खेद हुह। धरि चख लाज पगं नेउर धुनि; करै निवारण कंठ कुह।—वेलि.
ध्रग्ग—देखो 'धिक' (रू.भे.)
उ०—दसैकंध कै कायरा ध्रग्ग दीधो। कणेठी उरां पाव प्राहार कीधो।—सू.प्र.
ध्रतकेतु-सं०पु० [सं०] वसुदेव के बहनोई।
ध्रतदेवा-सं०स्त्री० [सं० धृतदेवा] देवक की एक कन्या का नाम।
ध्रतरास्ट्र—देखो 'धतराट' (रू.भे.)
ध्रतरास्ट्री-सं०स्त्री० [सं० धृतराष्ट्री] १ धृतराष्ट्र की रानी, पत्नी. २ कश्यप ऋषि की पत्नी ताम्रा से उत्पन्न ५ कन्याओं में से एक।
ध्रति, ध्रती-सं०स्त्री० [सं० धृति] १ धरने या पकड़ने की क्रिया, धारणा.
२ स्थिर रहने की क्रिया या भाव, ठहराव.
३ धीरता, धैर्य.

४ संतोष (डिं.को.)

५ फलित ज्योतिष के अनुसार २७ योगों में से एक.

६ चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक।

सं०पु०—७ राजा जयद्रथ का पौत्र।

८ देखो 'धरती' (रू.भे.)

रू०भे०—ध्रिति, ध्रिती।

ध्रतू-वि० [सं० धृत] १ ग्रहण किया हुआ, धारण किया हुआ।

२ पकड़ा हुआ, धरा हुआ.

३ गिरा हुआ, पतित.

४ स्थिर किया हुआ, निश्चित।

ध्रपण-सं०पु० [राज० धापणौ] तृप्त करने की क्रिया या भाव।

ध्रब-सं०पु० [अनु०] नक्कारे का शब्द, नक्कारे की आवाज।

उ०—नकार ध्रब ध्रब पै नकीब बोलते नहीं। खनंक खग्ग बग्ग तें सु अंग खोलते नहीं। पटादि खेल पेल कै सटा संभाळते नहीं। घुसैं गयंद की घटा मयंद मालते नहीं।—ऊ.का.

ध्रमंकणौ, ध्रमंकबौ—देखो 'धमकणौ, धमकबौ' (रू.भे.)

उ०—चमकंत सेल पाखर प्रचंड, दमकंत ढाल नीसांण दंड। ध्रमकंत घोड खुर धरण धज, रमकंत गगन मग चढीये रज।

—बगसीरांम प्रोहित री वात

ध्रमंकियोड़ौ—देखो 'धमकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रमंकियोड़ी)

ध्रम—१ देखो 'धम' (रू.भे.)

उ०—ध्रमं ध्रम हैखुर सेस धुजाव। जुटै खग 'नाहर' क्रन्न सुजाव।

—सू.प्र.

२ देखो 'धरम' (रू.भे.)

उ०—१ कंवरी सूरजकंवर, 'अजन' ध्रम रचै अपंपर। ज्रै नांनो 'अमरेस', धरा 'जैसांण' छतर-धर।—रो.रू.

उ०—२ धरो ध्रम सील लहो निज लील, जहां गुण ग्यांन अनंत अथागै। संभव संभव भाव भलै भज, संभव सौं भव के भय भागै।

—ध.व.ग्रं.

ध्रमआतमा—देखो 'धरमात्मा' (रू.भे.)

ध्रमक—देखो 'धमक' (रू.भे.)

उ०—रैत थळी री रात-दिन, मन में धड़कंदे। कोटड़िया ध्रमका करै, चोवीस भड़ंदे।—पा.प्र.

ध्रमकणौ, ध्रमकबौ—देखो 'धमकणौ, धमकबौ' (रू.भे.)

उ०—वेपख सूध जिकै सालहोतर मां वखांणियां तिहड़ा इण भांति रा तेजी, धरा रा खूंदणहार, खुरताळां रा अधखुरां सूं धरती ध्रमकि नै रही छै।—रा.सा.सं.

ध्रमकियोड़ौ—देखो 'धमकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रमकियोड़ी)

ध्रमजगर, ध्रमजघड़—देखो 'धमगजर' (रू.भे.)

उ०—१ अंब-खास विचै वांणास आछटै, करग 'पदम' ध्रमजगर कर। 'मोहण' वैर लियौ छिन मांहै, एकण घाव छ-टूक कर।

—द.दा.

उ०—२ वारै आव रे रिण रोपण वंका, बंधव सुग्रीव बकारै। उठै सुणे ध्रमजघड़ अधायौ, ध्रींग क्रोध उर धारै।—र रू.

ध्रमपाळ—देखो 'धरमपाळ' (रू.भे.) (अ.मा.)

ध्रमराज, ध्रमराय—देखो 'धरमराज' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—क्रम वहोत मैं तौ किआ, जीव जंत की जोर। किम छूटै ध्रमराय पै, अब मनुआ सब छोर।—वाढेल कल्यांणसिंघ नगराजोत री वात

ध्रम-लाभ—देखो 'धरम-लाभ' (रू.भे.)

उ०—स्राविका मिळी आवी सहु बांदर वेकर जोड़ि, वंदावी ध्रमलाभ द्यउ जिम पहुंचै मन कोडि।—स.कु.

ध्रमसीळ—देखो 'धरमसीळ' (रू.भे.)

ध्रमी—देखो 'धरमी' (रू.भे.)

उ०—धजाबंधी धरा ध्रमी पराक्रमी प्रजा पाळै।—ल.पिं.

ध्रमसास्त्र—देखो 'धरमसास्त्र' (रू.भे.)

ध्रम्म—देखो 'धरम' (रू.भे.)

उ०—१ मिरजो पेठौ कोट में, ओट थया कूरम्म। रिध ऊंठां बीवी रथां, कर पर हथां ध्रम्म।—रा.रू.

उ०—२ उभै वात रो पात दाखै अहांचो, खत्री ध्रम्म छाडीक धांनंख खांचो।—सू.प्र.

ध्रवण-सं०पु० [सं० द्रव=टपकने वाला] मेघ, बादल।

(ना.डिं.को., डिं.को.)

ध्रवणौ, ध्रवबौ-क्रि०स० [सं० द्रव, द्रवण] १ तृप्त करना, संतुष्ट करना।

उ०—१ भेळौ तैं कीधौ भलौ, जळहर औ जळ जाळ। धुन मुधरी पुहमी ध्रवै, दुसह निवार दुकाळ।—बां.दा.

उ०—२ गिर री ऊपर वसै गढ, खींवौ साल खळांह। कमधज केवा काढिया, डाकण ध्रवी डळांह।—राव मालदे री वात

उ०—३ रातल सावज ध्रविया 'रतनै', पूजवियौ प्रघळ प्रवाह।

—दूदौ

उ०—४ वायस रांण चहुंवांण तणै वंस, गज सीसोद सरीखौ गांज। धरती ध्रवै पळचरां ध्रविया, भोगी काढ कूंभायळ भांज।

—अजीतसिंघ हाडा (बूंदी) री गीत

२ बूंदों की तरह ऊपर से गिराना, जल की तरह अविरल रूप से गिराना, बरसाना। उ०—ऊसर वैणां सूं ध्रवती अलधारां, धूसर नैणां सूं ध्रवती जळधारां।—ऊ.का.

३ बहुत अधिक मात्रा या संख्या में प्राप्त कराना, दान रूप में देना।

उ०—१ रीज सदांमा सूं गिरधारी, ध्रवी आथ वाथां गिरधारी।

—र.ज.प्र.

उ०—२ करि करि न्यौछावर द्रब केक ऊछळंत हीर मोती अनेक, पन्ना स लाल मांणिक अपार ध्रवि जांणि जवाहर सघण धार।

—सू.प्र.

४ मारना, संहार करना ।

उ०—ध्रिवि ध्रविया रवते धारे रे, विविया कहि गोरव वारे रे । हलकार अरि गढ हाकारे रे, ध्रविया करि कूंत धसाकां रे ।

—रावत अचळदास सत्तावत रो गीत

ध्रवणहार, हारौ (हारी), ध्रवणियौ—वि० ।

ध्रववाड़णौ, ध्रववाड़बौ, ध्रववाणौ, ध्रववाबौ, ध्रववावणौ, ध्रववावबौ, ध्रवाणौ, ध्रवाबौ—प्रे०रू० ।

ध्रविओड़ौ, ध्रवियोड़ौ, ध्रव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

ध्रवीजणौ, ध्रवीजबौ—कर्म वा० ।

ध्रुवणौ, ध्रुवबौ—रू०भे० ।

ध्रवांन—देखो 'ध्वांन' (रू.भे.) (ह.नां.)

ध्रवियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तृप्त किया हुआ, संतुष्ट किया हुआ.

२ जल की बूंदों की तरह निरंतर गिराया हुआ, बरसाया हुआ.

३ बहुत अधिक मात्रा में दिया हुआ, दान रूप में दिया हुआ.

४ मारा हुआ, संहार किया हुआ ।

(स्त्री० ध्रवियोड़ी)

ध्रसंडी-वि०—जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली ।

ध्रसकणौ, ध्रसकबौ—देखो 'धसकणौ, धसकबौ' (रू.भे.)

उ०—दळ मिळियां कळ गळीय सुहड गयवर गळगळिया । धर ध्रसकीय सळवळीय सेस गिरवर टळटळिया ।—पं.पं.च.

ध्रसकणहार, हारौ (हारी), ध्रसकणियौ—वि० ।

ध्रसकिओड़ौ, ध्रसकियोड़ौ, ध्रसक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

ध्रसकीजणौ, ध्रसकीजबौ—भाव वा० ।

ध्रसकाड़णौ, ध्रसकाड़बौ—देखो 'धसकाणौ, धसकाबौ' (रू.भे.)

ध्रसकाड़णहार, हारौ (हारी), ध्रसकाड़णियौ—वि० ।

ध्रसकाडिओड़ौ, ध्रसकाड़ियोड़ौ, ध्रसकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

ध्रसकाड़ीजणौ, ध्रसकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

ध्रसकाड़ियोड़ौ—देखो 'धसकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रसकाड़ियोड़ी)

ध्रसकाणौ, ध्रसकाबौ—देखो 'धसकाणौ, धसकाबौ' (रू.भे.)

उ०—ऊंची अधिक चढ़ाय नै रे लाल, नांखी धरि ध्रसकाय हे सहेली ।—ध व.ग्रं.

ध्रसकाणहार, हारौ (हारी), ध्रसकाणियौ—वि० ।

ध्रसकायोड़ौ—भू०का०कृ ।

ध्रसकाईजणौ, ध्रसकाईजबौ—कर्म वा० ।

ध्रसकणौ, ध्रसकबौ—अक०रू० ।

ध्रसकायोड़ौ-भू०का०कृ—देखो 'धसकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रसकायोड़ी)

ध्रसकावणौ, ध्रसकावबौ—देखो 'ध्रसकाणौ, ध्रसकाबौ' (रू.भे.)

ध्रसकावणहार, हारौ (हारी), ध्रसकावणियौ—वि० ।

ध्रसकाविओड़ौ, ध्रसकावियोड़ौ, ध्रसकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

ध्रसकावीजणौ, ध्रसकावीजबौ—कर्म वा० ।

ध्रसकावियोड़ौ—देखो 'धसकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रसकावियोड़ी)

ध्रसकियोड़ौ—देखो 'धसकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रसकियोड़ी)

ध्रसक्कणौ, ध्रसक्कबौ-क्रि०अ०—१ भयभीत होना, कंपायमान होना, थर्राना । उ०—हीयां ध्रसक्कइं कायर लोग, संत तणौ मन करइं ससोक ।—पं.पं.च.

२ देखो 'धसकणौ, धसकबौ' (रू.भे.)

उ०—तणै घरि अेठि पईठा तुंग, विहूं घड़ै धोमर ऊडै धूंग । ध्रसक्कै कूंत वहै हुल धार, खरौ हुइ पूरौ ऊगटि खार ।—रा.जै. रासौ

ध्रसूकणौ, ध्रसूकबौ, ध्रासकणौ, ध्रासकबौ रू०भे० ।

ध्रसटी—१ देखो 'ध्रिस्टी' (रू.भे.)

२ देखो 'ध्रिस्ट' (रू.भे.)

ध्रसहसणौ, ध्रसहसबौ-क्रि०अ०—धसकना, धँसना ।

उ०—वूंबारव पाटा, तागगण त्रूटा, तुरंगम त्राठा विहुं दळि । मिळि हुंते घाट ध्रसहस्या, मोजडां कसकस्यां ।—व.स.

ध्रसहसणहार, हारौ (हारी), ध्रसहसणियौ—वि० ।

ध्रसहसिओड़ौ, ध्रसहसियोड़ौ, ध्रसहस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

ध्रसहसियोड़ौ-भू०का०कृ०—धसका हुआ, धंसा हुआ ।

(स्त्री० ध्रसहसियोड़ी)

ध्रसूकणौ, ध्रसूकबौ-क्रि०अ०—१ ढोलादि वाद्यों का बजना ।

उ०—ढोल ध्रसूकई डूंगर कंपइ । चडीउ राउळ कांन्ह ।—कां.दे.प्र.

२ भयभीत होना, कंपायमान होना ।

उ०—एतलइ सुसरमा दळि ढोल वाजइ, जांणै असाढू किरि मेह गाजइ । हीया ध्रसूकइ सर सेस सूकइं, भय बीहता कायर जीव मूकइं ।—विराटपर्व

३ देखो 'ध्रसक्कणौ, ध्रसक्कबौ' (रू.भे.)

ध्रसूकणहार, हारौ (हारी), ध्रसूकणियौ—वि० ।

ध्रसूकवाड़णौ, ध्रसूकवाड़बौ, ध्रसूकवाणौ, ध्रसूकवाबौ, ध्रसूकवावणौ, ध्रसूकवावबौ—प्रे०रू० ।

ध्रसूकाड़णौ, ध्रसूकाड़बौ, ध्रसूकाणौ, ध्रसूकाबौ, ध्रसूकावणौ, ध्रसूकावबौ—क्रि०स० ।

ध्रसूकिओड़ौ, ध्रसूकियोड़ौ, ध्रसूक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

ध्रसूकीजणौ, ध्रसूकीजबौ—भाव वा० ।

ध्रसूकाड़णौ, ध्रसूकाड़बौ—देखो 'ध्रसूकाणौ, ध्रसूकाबौ' (रू.भे.)

ध्रसूकाड़ियोड़ौ—देखो 'ध्रसूकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रसूकाड़ियोड़ी)

ध्रसूकाणौ, ध्रसूकाबौ-क्रि०स०—१ ढोल बजाना.

२ भयभीत करना, कंपित करना ।

ध्रसूकाणहार, हारौ (हारी), ध्रसूकाणियौ—वि० ।

ध्रसूकायोड़ो—भू०का०कृ० ।

ध्रसूकाईजणो, ध्रसूकाईजवो—कर्म वा० ।

ध्रसूकणो, ध्रसूकवो—अक०रू० ।

ध्रसूकाड़णो, ध्रसूकाड़वो, ध्रसूकावणो, ध्रसूकाववो—रू०भे० ।

ध्रसूकावणो, ध्रसूकाववो—देखो 'ध्रसूकाणो, ध्रसूकावो' (रू.भे.)

ध्रसूकावियोड़ो—देखो 'ध्रसूकोयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रसूकावियोडी)

ध्रस्ट-सं०पु० [सं० द्वयष्ट] ताम्र, तांवा (अ.मा.)

वि० [सं० धृष्ट] १ लज्जा या संकोच न रखने वाला, निर्लज्ज, वेहया, वेशर्म, प्रगल्भ ।

२ बार बार अपराध करते हुए व अपमान सहते हुए भी नायिका के साथ लगा रहने वाला नायक (साहित्य)

३ अनुचित साहस करने वाला, ढीठ ।

ध्रस्टकेतु-सं०पु० [सं० धृष्टकेतु] शिशुपाल का पुत्र जो पांडवों की सेना के मुख्य सात सेनापतियों मे से एक था ।

ध्रस्टदुमन-सं०पु० [सं० धृष्टद्युम्न] पांचाल देश के राजा द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई जो पांडव सेना के सात सेनापतियों में से एक था ।

वि०वि०—राजा द्रुपद के पिता का नाम पृषत था । भरद्वाज ऋषि और राजा पृषत के घनिष्ट मित्रता थी । इससे वे नित्य द्रुपद को लेकर मुनि के आश्रम में जाया करते थे । इस कारण से भरद्वाज ऋषि के पुत्र द्रोणाचार्य में और द्रुपद में भी घनिष्ट मित्रता हो गई । जब द्रुपद राजा हुआ तब द्रोणाचार्य उसके पास गये परन्तु उसने ऋषि कुमार समझ कर सम्मान नहीं किया । द्रोणाचार्य दीन भाव से इधर-उधर भटकने लगे और अंत में उन्होंने कौरवों और पाण्डुवों की अस्त्र-शिक्षा का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया । अर्जुन गुरु का बदला चुकाने के लिये राजा द्रुपद को पकड कर ले आया । द्रुपद द्रोण को अपने राज्य का अर्द्ध भाग देकर मुक्त हुआ ।

द्रुपद ने ऋषि कुमारों याज और अनुयाज की सहायता से एक बड़ा यज्ञ किया । इस यज्ञ में से एक तेजस्वी पुरुष खड्ग, कवच, धनुपादि से मुसज्जित उत्पन्न हुआ । इस पर आकाशवाणी हुई कि यह राजपुत्र द्रुपद के शोक के नाश का कारण बनेगा और द्रोणाचार्य का वध करेगा । महाभारत के युद्ध के समय जब द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु की असत्य खबर सुन कर योग में मग्न हुए थे उस समय इसी धृष्टद्युम्न ने उनका शिर काटा था । महाभारत के युद्ध के पश्चात् अश्वत्थामा ने अपने पिता का बदला लिया और सोते हुए धृष्टद्युम्न का शिर काट डाला ।

रू०भे०—ध्रस्टद्युमनु ।

ध्रांसाड़णो, ध्रांसाड़वो-क्रि०अ० [देश०] गरजना, दहाड़ना ।

उ०—दळ भंजे डेरा फुरळि, गमि दखीण दहवाट । 'गज' केसरि ध्रांसाड़ियो, दोइणां वाळै दाट ।—गु रू.वं.

ध्रावणो, ध्रावबो—देखो 'धापणो, धापवो' (रू.भे.)

ध्रावणहार, हारो (हारी), ध्रापणियो—वि० ।

ध्रापिओड़ो, ध्रापियोड़ो, ध्राप्योड़ो—भू०का०कृ० ।

ध्रापीजणो, ध्रापीजवो—भाव वा० ।

ध्रापिओड़ो—देखो 'धापियोडो' (रू.भे.)

(स्त्री० ध्रापियोडी)

ध्राव-सं०पु० [देश०] पशु, मवेशी ।

उ०—खरगो, लुद्रवा कनै । घोड़ां, ध्राव वढी वांकी ठौड़, मुंहारां दिसी जैसळमेर था कोस १६, खडाला में ।—नैणसी

रू०भे०—द्राव, धाव ।

ध्रासकणो, ध्रासकवो—देखो 'ध्रसवकणो, ध्रसवकवो' (रू.भे.)

उ०—सो धनुसु नांमइ कीमु काटकि धरणि ध्रासकि धडहडी । वंभंड खंड विखंड थाइ कि सगि सयल वि रडवडी ।—पं.पं.च.

ध्रासकणहार, हारो (हारी), ध्रासकणियो—वि० ।

ध्रासकिओड़ो, ध्रासकियोड़ो, ध्रासक्योड़ो—भू०का०कृ० ।

ध्रासकीजणो, ध्रासकीजवो—भाव वा० ।

ध्राह—देखो 'धाह' (रू.भे.)

उ०—'वीरम' खाग वजाड़, कळचाळ कीधो किलो । दौड़ी भाडंगनेर दिस, ध्राह देती धायड़ी ।—गो.रू.

ध्राहुरणो, ध्राहुरवो-क्रि०अ०—भयंकर आवाज करना, गरजना ।

उ०—अनेक मेक-तोर की दुरूह तोप ध्राहुरै, उडै दुरंग की सफील फील फौज के गुरै ।—ला रा.

ध्राहुरणहार, हारो (हारी), ध्राहुरणियो—वि० ।

ध्राहुरिओड़ो, ध्राहुरियोड़ो, ध्राहुरयोड़ो—भू०का०कृ० ।

ध्राहुरीजणो, ध्राहुरीजवो—भाव वा० ।

ध्राहुरियोड़ो-भू०का०कृ०—भयंकर आवाज किया हुआ, गरजा हुआ ।

(स्त्री० ध्राहुरियोडी)

ध्रिक, ध्रिक्क, ध्रिग—देखो 'धिक' (रू.भे.)

उ०—१ हीण राव विण न्याव, न्याव ध्रिक पक्ष उपज्जै ।
पक्ष हीण धन सटै, हीण धन धरम न पुज्जै ।
धरम हीण सादंभ, दंभ ध्रिक भूठ दिखावै ।
भूठ ध्रिक्क विणकाज, काज ध्रिक सांम न भावै ।
ध्रिक सांमि किया गुण वीसरै, गुण विकार विण हरि तरणि ।
सुजि ध्रिक तरणि पिय अंत सुणि, वर तक्कै मोटा धरणि ।
—रा.रू.

उ०—२ तेड़ी भाखै वैद्य ने, नांम म्हारो मत लीजो रे । ध्रिग ध्रिग लोभ ने, आवै उदाई ओसध भणी । तिण नै थे विस दीजो रे ।
—जयवांणी

ध्रित, ध्रिति—१ देखो 'धरती' (रू.भे.)

२ देखो 'ध्रति' (रू.भे.)

उ०—१ सत्य पुरुस की सीख स्रवण सुन, लपलप लपत लवारी । कांम क्रोध के कंद छेक कर, ध्रिती क्षमा नहि धारी ।—ऊ.का.

उ०—२ व्याहिती गायत्री ध्रिती, धारत नहीं धरम ध्रिती। स्रुती श्रो स्म्रिती सरव, धूर में धसाता।—ऊ.का.

उ०—३ पंडव दळां अनेक प्रहारैं, महाभारत कुरखेत मंझारैं। धारैं अणी सरीर करैं ध्रित, महिपति अभिमुनि हाथळ हे म्रित।—सू.प्र.

ध्रिवणौ, ध्रिववौ—देखो 'धीवणौ, धीववौ' (रू.भे.)

ध्रिवियोड़ौ—देखो 'धीवियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ध्रिवियोड़ी)

ध्रियाग—देखो 'धियाग' (रू.भे.)
उ०—धमरोळ पड़ै सेलां ध्रियाग। खागां कर नीछट वहै खाग।
—सू.प्र.

ध्रिसट—देखो 'ध्रिस्टी' (रू.भे.)

ध्रिस्टद्युमनु—देखो 'धृस्टद्युमन' (रू.भे.)
उ०—आविउ उत्तरु अनु वइराहु मिळिउं वाग पंडव नउं धाहु। ध्रिस्टद्युमनु सेनांनी कीउ बीजउ कन्हड दळ सांमह्यउ।—पं पं.च.

ध्रिस्टी—स०पु० [सं० घृष्टि] सूअर, वराह (ह.नां.)
वि० [सं० धृष्ट] १ नीच, दुष्ट। उ०—बीरट नैं आडो दे ध्रिस्टी कुश्री कुवधी वींट करी।—नवळदांनजी लाळस
२ ढीठ, धृष्ट।
रू०भे०—ध्रसटी, ध्रस्ट, ध्रिसट।

ध्रींगां—अव्य० [अनु०] ढोल, नगाड़े अथवा ढोलकी के बजने से उत्पन्न शब्द। उ०—ध्रींगां ध्रींगां ढोलकी 'सहवांण' बजांणी।—वी.मा.

ध्री—देखो 'ध्रीह' (रू भे.)

ध्रीव, ध्रीवछड़—अव्य० [अनु०] १ नृत्य के समय नगाड़े या ढोल की होने वाली ध्वनि विशेष। उ०—ध्रीवछड़ ध्रीवछड़ अक्र पग धरंती, कुलट नट-वटा ज्यूं मक्र करंती। काळका-चक्र ज्यूं नावड़ी केवियां, भड़ां सिर काळमी डक्र भरती।—गिरवरदांन सांदू
२ देखो 'धीव' (रू.भे.)
उ०—ध्रीव पड़ै तरवारियां, के भाजै कायर।—वी.मा.

ध्रीवणौ, ध्रीववौ—देखो 'धीवणौ, धीववौ' (रू.भे.)

ध्रीवियोड़ौ—देखो 'धीवियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ध्रीवियोड़ी)

ध्रीया—देखो 'धी' (६) (रू.भे.)
उ०—समर असंक जूटतां सूरां, कांमण सुर आई वस कांम। उरग ध्रीया हथळेवा आंटै, वेरा में धसियौ वरियांम।
—प्रयागदास राठौड़ रो गीत

ध्रीयाग—देखो 'धियाग' (रू.भे.)
उ०—१ धारै सीस ध्रीयाग, जंगम चढिया जोइया।—गो.रू.
उ०—२ धुणै खग वूहड़ लाग ध्रीयाग। उडै पड जांण खंडीवन आग।—गो.रू.

ध्रीवणौ, ध्रीववौ—देखो 'धीवणौ, धीववौ' (रू.भे.)
उ०—धमंकै असहां सीस जस रा नीसांण ध्रीवै, विरदां वधारै तणा जग हथां वंध। 'केहरी' सुजाव करां ऊधरा वटाळा क्रित, कमंधां भवाड़ै भला वडाळी कमध।
—हरिसिंह (या हरराज) राठौड़ रो गीत

ध्रीवणहार, हारौ (हारी), ध्रीवणियौ—वि०।

ध्रीविग्रोड़ौ, ध्रीवियोड़ौ, ध्रीव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ध्रीवीजणौ, ध्रीवीजवौ—कर्म वा०।

ध्रीवियोड़ौ—देखो 'धीवियोड़ौ' (रू.भे.)

ध्रीह—सं०स्त्री० [अनु०] नक्कारे की आवाज, ध्वनि (डि.को.)
उ०—१ वजि ध्रीह नगारां जेण वार। धर अंबर थरहर जहरधार।
—सू.प्र.
उ०—२ सखी अमीणौ साहिवौ, सुणै नगारां ध्रीह। जावै पर दळ सांमुहौ, ज्यूं सादूळौ सींह।—बां.दा.
रू०भे०—ध्री।

ध्रुपद—सं०पु० [सं० ध्रुव-पद] उत्तरी भारत की एक विशिष्ट गायन शैली। इसके चार भाग होते हैं—अस्थायी, अंतरा, संचारी और आभोग। इसमें रागात्मक पदों का काफी महत्व होता है। इन पदों के विषय अधिकतर शौर्य्य, धर्म, भक्ति एवं प्रेम से संबंधित होते हैं।
रू०भे०—धुरपद।

ध्रुव—सं०पु० [सं०] १ उत्तर दिशा की ओर स्थित एक प्रसिद्ध तारा जो अपने स्थान पर अटल रहता है और सप्तर्षि तारे इसकी परिक्रमा करते हैं। उ०—निरभय किय वीकांण नरेसुर। पुनि देसांण वसायौ निजपुर। ध्रुव जो लौं आकास धरत्ती। स्री करनी जय जयति सकत्ती।—मे.म.
२ पुराणानुसार राजा उत्तानपाद का पुत्र।
उ०—अवळा बाळक एक, अरज करूं ऊभी अठै। टाबर ध्रुव री टेक, तैं राखी वसुदेव तण।—रांमनाथ कवियौ
३ वरगद वट
४ आठ वसुओं में से एक. ५ पर्वत, पहाड़.
६ ध्रुवक, ध्रुपद. ७ ब्रह्मा (डि.को.)
८ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से एक योग.
९ फलित ज्योतिष में एक नक्षत्रगण जिसमें उत्तराफल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तर भाद्रपद और रोहिणी हैं.
१० नाक का अगला भाग.
११ टगण की छः मात्राओं के ग्यारहवें भेद का नाम (ISIII)
१२ भूगोल के अनुसार पृथ्वी का अक्ष स्थान। पृथ्वी के वे दोनों सिरे जिनसे होकर अक्ष रेखा गई हुई मानी जाती है।
वि०वि०—उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव को राजस्थानी में 'उतरादू' व 'दिखणादू' कहते हैं।
१३ उत्तर दिशा. १४ छप्पय छंद का ५३ वां भेद जिसमें १८ गुरु और ११६ लघु से १३४ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं।
वि०—१ प्रथम, पहले-पहल। उ०—मुख हुती तिय मंदोदरी, ध्रुव सुजण अंतेवर धरी।—र.रू.

२ स्थिर, अचल. ३ जो सदा एक ही अवस्था में रहे, नित्य.
४ निश्चित, दृढ़, पक्का. ५ एक॰।
रू०भे०—द्रू, ध्रु, ध्रुजी, धुर, धुरजी, धुव, धूअ, ध्रु, ध्रू, ध्रूअ।
ध्रुवक-सं०पु० [सं०] नक्षत्र की दूरी।
ध्रुवकेतु-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का केतु तारा।
ध्रुवचरण-सं०पु० [सं०] रुद्रताल के बारह भेदों में से एक भेद।
ध्रुवणौ, ध्रुवबौ—१ देखो 'ध्रवणौ, ध्रववौ' (रू.भे.)
उ०—जांणै हर घट घट री जो पिण, सोजै आसम सारा। पूछै पाहण रूंख पंखेरू, ध्रुवे चखां जळधारा।—र.रू.
२ देखो 'धुवणौ, धुवबौ' (रू.भे.)
उ०—१ ध्रूंसमध्रूंस जांगिये ध्रुवते। चित अपवर घड़ वेल चढ़ै। मद उदमाद विरह गहमाती। खांन वरेवा खयंग खड़ै।—दूदौ
उ०—२ भाख सत्रां खटतीस भाखीजै। धरपुड़ घाय निहाइ ध्रुवै। कीरोहर कर भाट जुंवरिक। हुल हाथळ जिहि भगति हुवै।—दूदौ
ध्रुवणहार, हारौ (हारी), ध्रुवणियौ—वि०।
ध्रुविओड़, ध्रुवियोड़ौ, ध्रुव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
ध्रुवीजणौ, ध्रुवीजबौ—भाव वा०।
ध्रुवतारौ-सं०पु० [सं० ध्रुव+तारक] मेरु के ऊपर रहने वाला उत्तर का एक तारा, सदा ध्रुव।
ध्रुवदरसक-सं०पु० [सं० ध्रुवदर्शक] १ सप्तर्षि मण्डल.
२ कुतुबनुमा।
ध्रुवदरसन-सं०पु० [सं० ध्रुवदर्शन] विवाह-संस्कारों के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें वर-वधू को मंत्र पढ़ कर ध्रुव तारा दिखाया जाता है।
ध्रुवपद-सं०पु० [सं०] ध्रुपद, ध्रुवक।
ध्रुवमंडळ-सं०पु० [सं० ध्रुव-मण्डल] सप्तर्षि तारों का समूह।
रू०भे०—द्रुमंडळ, द्रुमंडळि, धुवमंडळ, ध्रूमंडळ।
ध्रुवसंधि-सं०पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा।
रू०भे०—धुवसंधि।
ध्रुवियोड़ौ—१ देखो 'ध्रवियोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'धुवियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ध्रुवियोड़ी)
ध्रूंसमध्रूंस-क्रि०वि० [अनु०] जोर-शोर से, तेजी से।
उ०—ध्रूंसमध्रूंस जांगियै ध्रुवतै। चित अकवर घड़ वेल चढ़ै। मद उदमाद विरह गहमाती। खांन वरेवा खयंग खड़ै।—दूदौ
रू०भे०—धूंसमधूंस, धूसमधूस, ध्रूसमध्रूस।
ध्रू—१ देखो 'धू' (७) (रू.भे.)
उ०—इखे पित ऊपर लोह अपार। करै खग भाट 'गुमांन' कुंवार। धारूजळ मुग्गळ तूटत ध्रूह। विढै 'अभमुन्य' ज्युंही चक्रव्रूह।—सू.प्र.
२ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—१ भणि तेरह सौ छासठि भेद। विगति मात्र सोळह ध्रू वेद। आखर लुघू गुरु इगियार। वदां सुभंकर छंद विचार।—ल.पिं.
उ०—२ तप उल्हास तरसि मुणि सातन, चढ़ि वर सोह चढै ध्रू चीत। वीरत 'रयण' तणौ तिण वेळा, ऊगौ मुहि बारह आदीत।
—दूदौ
ध्रूअ—१ देखो 'धू' (रू.भे.) २ देखो 'धूअ' (रू.भे.)
३ देखो 'ध्रुव' (रू.भे.)
ध्रूजटी—देखो 'धूरजटी' (रू.भे.)
उ०—नरां सीस घायौ भीक उडायौ ध्रूजटी नचै, लोहगां उठायौ वूर लोहां सूर साथ। राहजादै वचायौ 'भीमेण' नै सुरंग रोळै, नरां ज्यूं दुरंगां थयौ कूंपांनाथ।—गजसिंहपुरा रा ठाकुर जगरांमसिंह री गीत
ध्रूबकणौ, ध्रूबकबौ-क्रि०अ०—टूटना, खंडित होना।
उ०—उडुै कपाळ खग ओफड़ांह, दीफंति जांणै दोटा दड़ांह। हम्मलां ढहै ढालां हसत्ति, ध्रूबकै दांत वाजै धरत्ति।—गु.रू.बं.
ध्रूबकणहार, हारौ (हारी)), ध्रूबकणियौ—वि०।
ध्रूबकिओड़ौ, ध्रूबकियोड़ौ, ध्रूबक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
ध्रूबकीजणौ, ध्रूबकीजबौ—भाव वा०।
ध्रूबकियोड़ौ-भू०का०कृ०—टूटा हुआ, खंडित।
(स्त्री० ध्रूबकियोड़ी)
ध्रूमाळा-सं०स्त्री०यौ० [रा० धू+सं० माला] मुण्ड-माला।
उ०—पारस प्रासाद रोग संपेखै, जांणि मयंक कि जळहरी। मेरु पाखती नखित्र माळा, ध्रूमाळा संकर धीर।—वेलि.
ध्रूय-देखो 'धू' (१५) (रू.भे.)
उ०—धवराडव ध्रूय म जांणै धरतां, चित्र पुहर करतां चाळ। मन लागो वाळक माईतां, दूजी छोडी सहु दुवाळ।
—महादेव पारवती री वेलि.
ध्रूस-सं०स्त्री० [देश०] १ काली घटा।
उ०—चडिया भड़ तुरे चड चोट। काळी ध्रूस उपड़ै कोट। वागा जोड़ फौज वणाव। दम्मै दगियौ दरियाव।—गु.रू.बं.
२ देखो 'धूस' (रू.भे.)
ध्रूसकणौ, ध्रूसकबौ—क्रि०अ० [अनु०] ढोल, नगारे आदि वाद्यों का वजना, ध्वनि करना। उ०—माह महीना मांय, ढोल त्रंबाळु ध्रूसकै। लगन चोखा ले आव, वधावुं वेगु ना घणी।—अज्ञात
ध्रूसकणहार, हारौ (हारी), ध्रूसकणियौ—वि०।
ध्रूसकिओड़ौ, ध्रूसकियोड़ौ, ध्रूसक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
ध्रूसकीजणौ, ध्रूसकीजबौ—भाव वा०।
ध्रूसकियोड़ौ-भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ, वजा हुआ।
(स्त्री० ध्रूसकियोड़ी)
ध्रूसटणौ, ध्रूसटबौ—क्रि०स० [देश०] ध्वंस करना।
उ०—धार सनाह प्रसिद्ध ध्रूसटिया। नांमी सिंदूरी मुख नारि। भिड़ मदन गह विरह भांजियौ। 'रतनै' वांकुड़ै भरतारि।—दूदौ
ध्रूसटणहार, हारौ (हारी), ध्रूसटणियौ—वि०।
ध्रूसटिओड़ौ, ध्रूसटियोड़ौ, ध्रूसट्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ध्रूसटीजणौ, ध्रूसटीजबौ—कर्म वा० ।
घूसणौ, घूसबौ—रू०भे० ।
ध्रूसटियोड़ौ–भू०का०कृ०—ध्वंस किया हुआ ।
(स्त्री० ध्रूसटियोडी)
ध्रूसमध्रूस—देखो 'ध्रूंसमध्रूंस' (रू.भे.)
ध्रेठउ—देखो 'धीठ' (रू.भे.)(उ.र.)
ध्रेठौ—देखो 'धीठ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० ध्रेठी)
ध्रोण–सं०पु० [रा० ध्रू] मस्तक, शिर ।
उ०—क्रम केत स्वरग कज नह भारत कज, दूठ 'दूदड़' दळघा दुजोग। पह तिण भवर्ण-त्रिर्ण पेखियो, धड़ पासै नाचंतो ध्रोण ।
—हूंफो सांदू
ध्रोप, ध्रोफ—देखो 'धोप' (रू.भे.)
उ०—फरकी असलां सांय झांप फरै। कळ पांग अठोरिय ध्रोफ करै। जिण वार वळांराय तोर जडै। अस जांण कळांराय मोर उडै।
—पा.प्र.
ध्रोब—देखो 'दोब' (रू.भे.) (उ.र.)
ध्रोबआठम–सं०स्त्री०[सं० दूर्वा+अष्टमी] भाद्रपद शुक्ला अष्टमी जिस दिन रणछोड़राय का मेला लगता है और बड़ा पवित्र दिन माना जाता है ।
ध्रोळहर—देखो 'धवळहर' (रू.भे.)
उ०—१ हूं जासूं खग ध्रोळहर, उर तज मोटी आस। अब देखूं जाय आंगणै, अण घर रा ऐवास।—पा.प्र.
उ०—२ सूतौ जायलपत सदा, अंबर तणै घरांह। तेम भुवा परताप सूं, हणियौ ध्रोलहरांह।—पा.प्र.
ध्रोह—देखो 'द्रोह' (रू.भे.)
उ०—१ वेसासै दाखै क ल वचन्न। मारू राव ध्रोह धरै वड मन्न।
—गो.रू.
उ०—२ 'सूर' 'गजण' कथ सांभळै, लगि ध्रोह सिलग्गी। करि तुरांण सज केजमां, भड़ सिलह भमग्गी।—सू.प्र.
उ०—३ जैसिंघ ध्रोह जणाय, रचि दीध चित मझि राय। सो मांनि फररकसाह, चित हमैं मारण चाह।—सू.प्र.
ध्रोही—देखो 'द्रोही' (रू.भे.)
उ०—फौजां लड़ंग दोड़ै फजर, घड़छै खग खळ ध्रोहियां। सिर छाव भरै आंणै सुभड़, सरदां जिम सीरोहियां।—सू.प्र.
ध्रोहौ–वि०—द्रोह रखने वाला, शत्रु ।
उ०—वराछक मुख ध्रोढ़ौ घणौ वोलतौ, तोलतौ गयण हाथां अथागौ। खड़ै अस छध्रोहा 'सेर' दाखै खत्री, उदर ध्रोहा हमैं आव आगौ।
—पहाड़खां आढ़ौ
ध्वंस–सं०पु० [सं०] नाश, विनाश, हानि, क्षय ।
उ०—भय ध्वंस संयमी वक्र प्रसंसा भारी। मुख आगै छिपतै फिरतै मांसाहारी।—ऊ.का.
ध्वंसक–वि० [सं०] नाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।
ध्वंसन–सं०स्त्री० [सं०] १ विनाश, तबाही, क्षय.
२ नाश करने की क्रिया ।
ध्वंसी–वि० [सं० ध्वंसिन्] नाश करने वाला, विध्वंस करने वाला ।
ध्वंस्त—देखो 'ध्वस्त' (रू.भे.)
ध्वज–सं०पु० [सं०] १ वह छड़ या दण्ड जिस पर पताका बांधी जाती हो, निशान. २ वह वस्त्र जिसे चिन्ह स्वरूप किसी देवालय अथवा राष्ट्रीय इमारतों आदि पर दण्ड के ऊपर बांध कर फहराया जाता है, झंडा, पताका ।
पर्याय०—केत, झंडी, नेजो ।
३ ढगण के प्रथम भेद का नाम (IS)
४ फलित ज्योतिष के अनुसार वार व नक्षत्र के सम्बन्ध से बनने वाले २८ योगों में से एक.
५ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार हाथ में होने वाला ध्वजा के आकार का चिन्ह जो शुभ माना जाता है ।
उ०—भुज प्रलंब आजांन, कमळ आक्रिति पद कोमळ। जव अंबुज ध्वज कळस, मीन अंकुस जंबूफळ।—रा.रू.
६ वह घर जिसकी स्थिति पूर्व की ओर हो.
७ पुरुषेन्द्रिय, लिंग ।
यौ०—ध्वज भंग ।
रू०भे०—धज, धज्ज, धुज ।
अल्पा०—धजा, धुजा, ध्वजा ।
ध्वजचिंध–सं०पु०यौ० [सं० ध्वज चिन्ह] पताका, निशान ।
उ०—सुभट तणी कड कड वाजिवा लागि, भटकबंध नाचिवा लागां, ध्वजचिंध फाटिवा लागां।—व.स.
ध्वजभंग–सं०पु०यौ० [सं०] क्लीवता, नपुंसकता ।
रू०भे०—धजभंग ।
ध्वजवांन–वि० [सं० ध्वजवान्] १ जो ध्वज या पताका लिये हो, ध्वज वाला. २ चिन्ह वाला, चिन्हयुक्त ।
ध्वजा–सं०स्त्री० [सं० ध्वज] १ ढगण के पांचवें भेद का नाम (पिंगळ)
२ देखो 'ध्वज' (अल्पा., रू.भे.)
ध्वजादिगणना–सं०स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार की गणना जिससे प्रश्न के फल कहे जाते हैं ।
ध्वनि–सं०स्त्री० [सं०] १ शब्द, नाद, आवाज ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
२ आवाज की गूंज, शब्द का नाद, शब्द का स्फोट.
३ काव्य की वह विशेषता या चमत्कार जो शब्दों के नियत अर्थों के योग से सूचित होने वाले अर्थ की अपेक्षा प्रसंग से निकलने वाले अर्थ में होती है । वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अधिक विशेषता वाला होता है.
४ गूढ़ अर्थ, मतलब, आशय ।

रू०भे०—धन, धुणी, धुन, धुनि, ध्नी, धुवांन, ध्वनी।
ध्वनिग्रह-सं०पु० [सं०] कान।
रू०भे०—धुनिग्रह।
ध्वनी—देखो 'ध्वनि' (रू.भे.)
ध्वस्त-वि० [सं०] १ टूटा-फूटा, खंडित, भग्न.
२ नष्ट-भ्रष्ट.
३ गिरा हुआ, गलित, च्युत।
रू०भे०—ध्वंस्त।
ध्वांक्ष-सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार वार व नक्षत्रों से बनने वाले २८ योगों में से एक।
ध्वांत-सं०पु० [सं०] १ एक नरक का नाम, तामिस्र.
२ अंधेरा, अंधकार।
रू०भे०—धांग्रत, धांत, ध्वांतस।
ध्वांतचर-सं०पु० [सं०] राक्षस, निशाचर।
ध्वांतस—देखो 'ध्वांत' (रू.भे.) (ह.नां.)
ध्वांतसत्रु-सं०पु० [सं० ध्वांतशत्रु] १ अग्नि, आग.
२ सूर्य, भास्कर. ३ चन्द्रमा।
ध्वांन-सं०पु० [सं० ध्वान] शब्द, आवाज, ध्वनि।
उ०—तांन गांन ततकार वजंत्रन। ध्वांन सिसर तत घन आनद्धन।
—मे.म.
ध्विज—देखो 'ध्वज' (रू.भे.) उ०—ध्विज पताका नि नहीं मंडप, राज पुत्र नवि दीसि। चिंता मनि करि ते राजा, विप्रि वाह्या रीसि।
—नळाख्यांन
ध्वेस—देखो 'द्वेस' (रू.भे.)
उ०—निज रोस रु ध्वेस से कांम नहीं। उर हांम आरांम हरांम नहीं।—ऊ.का.

न

न—जीभ की नोंक से ऊपर के मसूढ़ों को छू कर उच्चरित होने वाला संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला का बीसवां तथा त वर्ग का अंतिम अल्प प्राण, सघोष, वर्त्स्य व अनुनासिक व्यंजन।

नं-सं०पु०—१ सुख. २ आंख. ३ संसार. ४ शृंगार. ५ कान. ६ हर्ष. ७ हाथी. ८ पवि. ६ स्वामी (एका.)

नंखो—देखो 'नखो' (रू.भे.)

नंग-सं०पु० [सं० अनंग] १ कामदेव, अनंग.
२ देखो 'नग' (रू.भे.)
उ०—गळे दुजेस गावरा, सघीर जे सभावरा। अभंग हेम अद्रसा, अडोळ नंग आप।—र.ज.प्र.

नंगर-सं०स्त्री० [देश०] कुलीच ? उ०—जांणि उलट्टी दोवड़ी, लिय नंगर नट्टी। पड़ै 'गोयंद' ऊपरि गजर, खागां खळ वट्टी।—सू.प्र.

नंगळियौ-स०पु०—मिट्टी का बना विशेष बनावट का जल-पात्र जो शव-यात्रा के समय विश्राम स्थान तक जल भर कर साथ लिया जाता है। उ०—जो'ई खनै जिरांण, जठै नर मितक जळावै। सीढी घोरै मे'ल विसूणी बीच लरावै। जळ रौ कर छिड़काव, नंगळियौ फटकै फोड़ै। हांडी पावक हेत, दागवै पाळां जो'ड़ै।—दसदेव

नंगाती-वि०—खुले वक्षस्थल वाली।
उ०—वावर वीखरिया ओढणियै आडै। डावर नयणां री टावर वय डाडै। नवला नंगाती संगाती सैणी। निरणी नव अंगा गंगाजळ नैणी।—ऊ.का.

नंगारची—देखो 'नगारची' (रू.भे.)

नंगारी—देखो 'नगारी' (रू.भे.)

नंगोड़ौ—देखो 'नगोड़ौ' (रू.भे.)

नंगौ—देखो 'नागौ' (रू.भे.)

नंचणी—देखो 'नाचण' (रू.भे.) उ०—नंचणी जात पर पंचणी हुई नहं। कंचणी वात अखियात कीघी।
—महाराजा अभयसिंह की उपपत्नी लालां री गीत

नंद-सं०पु० [सं०] १ गोकुल के गोपों के मुखिया, जिनके यहां श्रीकृष्ण का जन्म काल बीता था।
यौ०—नंद-नंद, नंद-नंदन।
२ मगध देश के राजाओं की उपाधि, जो विक्रम से २५० वर्ष पूर्व राज्य करते थे. ३ पुत्र, लड़का (डि.को.)
उ०—१ वसिस्ठ आय जेण वार, न्यांन कीध धू-मती। दईव सेस तूझ नंद, भै न कोइ भूपती।—सू.प्र.
उ०—२ नंद 'गुमांन' सदा निकळंकत, वाघे छत्रघरां इण वार। कर आचार ऊजळौ कीधौ, इळ 'गजवंध' तणौ आचार।—बां.दा.
४ आनन्द, हर्ष. ५ सच्चिदानंद, परमेश्वर.
६ विष्णु. ७ एक नाग का नाम.
८ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम.
९ आदि गुरु त्रिकल (ढगण के एक भेद का नाम ऽ।) (पिंगळ)
१० एक प्रकार का मृदंग.
११ एक राग का नाम, जिसे मालकौंस का पुत्र मानते हैं.
१२ ग्यारह अंगुल लंबी बांसुरियों का एक भेद विशेष.
१३ नौ निधियों में से एक निधि का नाम.
१४ देखो 'नंदन'।
अल्पा०—नंदौ।

नंदकंवर—देखो 'नंदकुमार' (रू.भे.)
उ०—फूल कळि सूं गडवा संवार कै, रसीला राज अलवेली छित्र सूं द्वारै नंदकंवर के।—रसीलौराज

नंदक-वि० [सं०] १ आनन्ददायक. २ कुलपालक.
३ देखो 'निंदक' (रू.भे.) उ०—तूं नंदक कुळहीण तूं, तूं कायर करतार।—गजउद्धार

नंदकिसोर-सं०पु०यौ० [सं० नन्दकिशोर] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण (ह.नां.)

नंदकुंअर, नंदकुंवार, नंदकुआर, नंदकुमार-सं०पु०यौ० [सं० नंद-कुमार] श्रीकृष्ण (ह.नां.) उ०—सावुआं सुधार सांमी आविस्यै निजारसाह, काइमौ नंदकुंआर, कंस मार कंस।—पी.ग्रं.
रू०भे०—नंद कंवर।

नंदगर—देखो 'नंदगिरि' (रू.भे.) उ०—परा हुकम बीड़ौ लियौ सगह पतसाह रै। आवियौ 'विजौ' खड़ नंदगर ऊपरै।—दुरसौ आढौ

नंदगांव—देखो 'नंद-ग्रांम' (रू.भे.)

नंदगिर, नंदगिरि-सं०पु०यौ० [सं० नंदगिरि] १ आबू पर्वत की एक चोटी का नाम. २ आबू पर्वत।

नंदग्रांम-सं०पु०यौ० [सं० नंद-ग्राम] १ वृन्दावन का एक ग्राम जहां नंद गोप के यहां श्रीकृष्ण रहते थे.
२ देखो 'नंदिग्राम' (रू.भे.)
रू०भे०—नंदगांव।

नंदण—१ देखो 'नंदन' (रू.भे.) उ०—दसरथ नृप नंदण हर दुख दाळद मिटण फंद जांमण मरण। (र.ज.प्र.)
२ देखो 'लंदन' (रू.भे.) उ०—मचै वेढ विकराळ, जरमन इंगळ मारकां। पड़ै खग धारकां रीठ आफी। पजावण फारकां पीठ नंदण 'पतौ'। सारकां गढां लज घीठ साफी।—किसोरदांन बारहठ

नंदणी—देखो 'नंदनी' (रू.भे.)

नंदणु—देखो 'नंदन' (रू.भे.)
उ०—आदि जिणेसर केरउ नंदणु। कुरुनरिंदु हूउ कुळमंडणु।
—पं.पं.च.

नंदणो—देखो 'नंदन' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—सिरिवंत साहि सुतन्न । माता सिरिया देवी नंदणो ।—स.कु.
नंदणौ, नंदबौ—देखो 'निंदणौ, निंदबौ' (रू.भे.)
नंदनंद-सं०पु०यौ० [सं०] १ नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण ।
उ०—उर नंदनंद प्रदुमन आराधै ।—सू.प्र.
२ विष्णु (अ.मा.). ३ ईश्वर (नां.मा.)
नंद-नंदन-सं०पु०यौ० [सं०] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण ।
नंद-नंदिनी-सं०स्त्री०यौ० [सं०] (जिसे कंस ने मारने का प्रयत्न किया था पर वह आकाश में चली गई) नंद की कन्या, दुर्गा, योगमाया ।
नंदन-सं०पु० [सं०] १ इंद्र की पुष्पवाटिका, देवोपवन (नां.मा.)
२ महादेव ।
यौ०—नंदन वन ।
३ विष्णु. ४ लडका, पुत्र. ५ देखो 'लंदन' (रू.भे.)
उ०—जोधौ रूप जरद् जरमनां जाळसी । भारत वरस भुवाळ नंदन पत नाळसी ।—किसोरदांन बारहठ
वि० [राज०] मूर्ख, पागल ।
रू०भे०—नंदण, नंदणु ।
अल्पा०—नंदणो ।
नंदनबन, नंदनवन-सं०पु० [सं० नंदनवन] इंद्र का वन, इंद्र की वाटिका (अ.मा.)
उ०—१ रांणी इंद्रांणी मनहु, राजा इंद्र समांन । सखी सहेली देख सव, परत अप्सरा जांन । दिस परत उद्यांन सो, नंदनवन सम तात । देखत चित्त प्रसन्न हो, सोभा वरणी न जात ।—सिंघासण वत्तीसी
उ०—२ मन नंदनवन माहरू, माधव तुं म्रिगराज । नर कुंजरवन सारिखा, नावइ माहरी काजि ।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—नंदीवन ।
नंदनी-सं०पु० [सं० नंदिनी] १ पुत्री. २ कामधेनु ।
३ मुनि वसिष्ठ के आश्रम में रहने वाली कामधेनु की पुत्री विशेष, जिसकी सेवा कर के दिलीप ने रघु (पुत्र) को प्राप्त किया था ।
रू०भे०—नंदणी ।
नंदप्रयाग-सं०पु० [सं०] बदरिकाश्रम के पास में सप्त प्रयागों में गिना जाने वाला एक तीर्थ ।
नंदरबारी-सं०स्त्री० [देश० ?] एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—नीलवटां चकवटां धौंतवटां मुहिवटां नाटी दोटी धटी कठपीठ पाघड़ी वींडी रेट चूंनडी पातलसाडी नंदरबारी पाघड़ी पांमडी लोमडी वाहण वही लोवडी पछेडी चूंनडी... ।—व.स.
नंद-रांणी-सं०स्त्री०यौ० [सं० नंदराज्ञी] नंद की स्त्री, यशोदा ।
नंद-लाल-सं०पु०यौ० [सं० नंद+लालक] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण ।
नंदलोक-सं०पु०यौ० [सं०] वृन्दावन ।
उ०—लछवर लार गोपियां लूटां, मारग मांह दही रा माट । इंद्रलोक वैकूंठ ईखतां । नंदलोक फूटरो नराट ।—अज्ञात

नंद-वंस-सं०पु०यौ० [सं० नंद-वंश] मगध का विख्यात राजवंश ।
नंदसेण—देखो 'नंदिसेण' (रू.भे.) उ०—पतित थका ही परत्रणो, गुणी करै उपगार । नर दस दस नंदसेण, नित, बोधै वेस्या वार ।—ध.व.ग्रं.
नंदादूहो-सं०पु० [रा०] प्रथम व तृतीय चरण में बारह बारह मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में सात-सात मात्राओं का मात्रिक छंद विशेष ।
नंदा-सं०स्त्री० [सं०] प्रत्येक पक्ष की प्रतिपदा, षष्ठी व एकादशी तिथि का नाम. २ वर्तमान अवसर्पिणी के दसवें अर्हत की माता का नाम (जैन)
३ संगीत की एक मूर्च्छना.
४ देखो 'निंदा' (रू.भे.) (डिं.को.)
नंदातीरथ-सं०पु०यौ० [सं० नंदातीर्थ] हेमकूट पर्वत का एक तीर्थ और वहाँ बहने वाली एक नदी ।
नंदादेवी [सं०] दक्षिण-हिमालय की एक चोटी ।
नंदावरत-सं०पु०—देखो 'नंद्यावरत' (रू.भे.)
नंदिकर-सं०पु० [सं०] शिव (डिं.को.)
नंदिकुंड-सं०पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ ।
नंदिकेस-सं०पु० [सं० नंदिकेश] शिव के द्वारपाल, नंदिकेश्वर ।
नंदिकेस्वर-सं०पु० [सं० नंदिकेश्वर] शिव के द्वारपाल, बैल का नाम ।
नंदिग्राम-सं०पु० [सं० नंदिग्राम] अयोध्या के पास एक गाँव जहाँ भरत ने राम के वनवास काल में चौदह वर्ष तप किया था ।
नंदिघोस-सं०पु० [सं० नंदिघोष] अर्जुन का वह रथ जिसे अग्निदेव ने प्रसन्न होकर दिया था. २ शुभ व मंगल घोषणा ।
नंदिमुख-सं०पु० [सं०] १ पक्षी विशेष.
२ शिव ।
नंदिरुद्र-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव ।
नंदिवरधन-सं०पु० [सं० नंदिवर्द्धन] शिव, महादेव ।
वि०—आनन्द बढ़ाने वाला ।
नंदिसेण-सं०पु० [सं० नन्दिसेन] जंबूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र में उत्पन्न वर्तमान अवसर्पिणी के चतुर्थ तीर्थंकर (व.म.)
रू०भे०—नंदसेण ।
नंदी-सं०पु० [सं० नंदिन] १ शिव का द्वारपाल व परमप्रिय बैल ।
२ एक सूत्र ग्रंथ (जैन)
उ०—नंदी सूत्र में कह्या, न्यारा न्यारा अरथ लगाया ।—जयवांणी
३ उड़द (डिं.को.)
४ वह बैल जिसके शरीर पर मांस-विकार के कारण अलग-अलग आकार बन कर शरीर पर लटकने लगते हैं ।
रू०भे०—नांदी ।
अल्पा०—नांदियौ ।
५ देखो 'नदी' (रू.भे.)
नंदीगण-सं०पु०—१ शिव के द्वारपाल व परमप्रिय बैल ।
उ०—नंदीगण चढ़ो आठ गण आगळ, लोपी अगड तणी ताइ लाज ।

उण वेळा दिस रह मुंह आगळि, आई सती हुई आवाज।
—महादेव पारवती री वेलि.
२ शिव के नाम पर दाग कर छोड़ा जाने वाला बैल, सांढ।
नंदीगिर—देखो 'नंदगिरि' (रू.भे.)
उ०—तिण थांन करी ठोड़, नंदीगिर हेमाचळ री बेटौ दूसरौ मेरगिर अढार गिर रौ राजा आबू गिरंद कहीजै।—रा.सा.सं.
नंदी-धमळ—सं०पु०यौ० [सं० नंदी-धवल] महादेव का द्वारपाल व परम-प्रिय श्वेत बैल। उ०—तारां वार वार माहोमाहै बोलि बोलि नै बेरह गमावता छै, अण चांदणी री सपेती करि नै महादेव नंदीधमळ ढूंढ़ता फिरै छै सो लाभता नहीं छै।—रा.सा.सं.
नंदीपति—सं०पु० [सं०] १ शिव, महादेव.
२ देखो 'नदीपति' (रू.भे.)
नंदीवन—देखो 'नंदनवन' (रू.भे.)
उ०—म्रिदु कंठ गांन तरुणि मुखै, निरखै रूप निरधंद री। नवरंग पत्र वाड़ी विपुन, किरि नंदीवन इंद री।—रा रू.
नंदीस—सं०पु० [सं० नंदीश] १ शिव. २ संगीत के तालों के साठ भेदों में से एक.
[सं० नदीश] ३ समुद्र।
नंदीस्वर—सं०पु० [सं० नंदीश्वर] १ शिव. २ नंदीश ताल.
३ शिव का एक गण।
नंदौ—देखो 'नंद' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—धन धन समुद्र विजय जी रा नंदा रे।—जयवांणी
नंद्यावरत्त(क)—सं०पु० [सं० नंद्यावरत्तक] एक प्रकार का भवन विशेष जिसके चारों ओर बरामदा हो और जिसके पश्चिम में द्वार न हो।
रू०भे०—नंदावरतक।
नंद्रा—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)
उ०—दूजी रात आप अरध नंद्रा सूता छै।
—कल्यांणसिंघ वाढ़ेल री वात
नंन—देखो 'नन' (रू.भे.) उ०—कई थोक निही नंन पार कोइ सरव वात साची सही।—पी.ग्रं.
नंबर—सं०पु० [अं०] (वि० नंबरी) गिनती, संख्या, अंक।
क्रि०प्र०—दैणौ, लगाणौ, लागणौ।
मुहा०—१ नंबर आवणौ—बारी आना, मौका मिलना.
२ नंबर धकै लैणौ—बुरी तरह से फटकारना.
३ नंबर लागणौ—बिगड़ जाना।
रू०भे०—लंबर।
नंबरदार—सं०पु० [अं० नंबर+फा० दार] मालगुजारी आदि वसूल करने में सहायता देने वाला व्यक्ति।
रू०भे०—लंबर-दार।
नंबरी—वि० [अं०] १ श्रेष्ठ, प्रसिद्ध, मशहूर.
२ वह जिस पर नंबर लगा हुआ हो. ३ कुख्यात।

नंहं, नंह—देखो 'नहीं' (रू.भे.) उ०—१ एकै जप जीह लहै कुण अंत, पारौ नंहं प्रांमै सेस पुणंत।—ह.र.
उ०—२ दे नंह सैंधा नूं दगौ, ग्रहे कुतोही ग्यांन। देवै सैंधा नूं दगौ, साह करै सनमांन।—बां.दा.
नंहकार—देखो 'नकार' (रू.भे.) उ०—मुख हाजर बोलत पुन्न मही, नंहकार करै जस पाप नहीं।—ऊ.का.
न—सं०पु०—१ वृक्ष. २ पंडित. ३ प्रभु. ४ बंधन. ५ अहमेव.
६ नौका (एका.)
वि०—१ प्रसन्न, खुश.
२ दूसरा, अन्य (एका.)
अव्यय—१ निषेधसूचक शब्द, नहीं।
उ०—घणइ न तूसइ, थोडलइ अपमांनि रूसइ।—व.स.
२ देखो 'नी' (रू.भे.) उ०—तेह नी विरति नथी आवती तउ कहउ न अजांणा नइं किम विरति आवइ?—षष्ठिशतक प्रकरण
३ देखो 'नै' (रू.भे.)
नअण—देखो 'नयन' (रू.भे.) उ०—पाट ताय भीमस वसूं कुंदणपुर। को कीयो राज दस नअण भरती कुंअर।—रुखमणी हरण
नइं, नइ—१ देखो 'नदी' (रू.भे.) उ०—१ नइं नाळा पूरइं वहइं, पटूलडी भीजइ रे। भीजइ नइ खीजइ चींकण लपमणइ ए।
—नळ-दवदंती रास
उ०—२ नइ मइ माछा हींडइं।—उ.र.
उ०—३ सात मसवाडा नइ वहइ।—उ.र.
२ देखो 'नाई' (रू.भे.) उ०—सोनी, नइ, सुतार, पणि, आगइ, वागड़ वंस। तोली, तंबोळी, वळी, दोसी ऊपरि डंस।—मा.कां.प्र.
३ देखो 'नै' (रू.भे.) उ०—१ बाबीहयउ नइ विरहणी, दुहुंवां एक सहाव। जब ही बरसइ घण घणूं, तबही कहइ प्रियाव।
—ढो.मा.
उ०—२ परवत नइ अहिनांणि गांमु वसइ।—उ.र.
उ०—३ तात! जो आवु नळ धणी, मूं जीवी छइ काज रे। काज-नइ आज ज दूत ज मोकळु ए।—नळ-दवदंती रास
नइड़ौ, नइडउ, नइडौ—सं०पु०—हाथ की किसी उंगली के नाखून के मध्य में होने वाला फोड़ा विशेष. २ ऊंट या पशुओं के पैर का रोग विशेष।
रू०भे०—नईड़ौ।
३ देखो 'निकट' (अल्पा., रू.भे) उ०—हिमाचळ नइडा हुई धार।
—महादेव पारवती री वेलि.
नइण—देखो 'नयन' (रू.भे.) उ०—ऊनमि आई बद्ळी, ढोलउ आयउ चित्त। यो बरसइ रितु आपणी, नइण हमारे नित्त।—ढो.मा.
नइति—देखो 'नैरत' (रू.भे.)
नइर—देखो 'नगर' (रू.भे.)
उ०—बिच्ची बिहार बम्भणह वाह, समसमा देस ग्रहिया सिराह। ओड्ला नइर कु गिणइ अंग, पंडवइ लगउं फेरिय पवंग।
—रा.ज.सी.

नई—१ देखो 'नदी' (रू.भे.) उ०—मुकरमैं प्रोळि प्रोळिमैं मारग, मारग सुरंग अबीरमई। पुरी हीर सेन एम पैसार्यौ, नीरोवरि प्रवसन्ति नई।—वेलि.
वि०स्त्री०—२ देखो 'नवौ' (पु०) (रू.भे.)
३ देखो 'नहीं' (रू.भे.)
नईड़-सं०पु०यौ० [सं० नदी-तट] १ नदी के इधर-उधर स्थित भू-क्षेत्र.
२ देखो 'निकट' (अल्पा., रू.भे.)
नईड़ौ—देखो 'निकट' (रू.भे.)
नईयौ-सं०पु०—लकड़ी में छेद करने का बढ़ई का छोटा ओजार विशेष।
नईस—देखो 'नदीस' (रू.भे.)
नउं—देखो 'नै' (रू.भे.) उ०—रामसिंघजी कहियौ तूं कुंभळमेर जाहि तौ नउं भांणजी नूं भळावौ।—द.वि.
नउ-प्रत्यय—१ सम्बन्ध सूचक विभक्ति, का।
उ०—१ कुमति घणी मुझ मन वसइ, सुमति थकी नहिं नेह। माठी करणी मां मडचउ, हूं अवगुण नउ गेह।—वि.कु.
उ०—२ पांम्यउ मुगति नउ राज रे।—स.कु.
२ देखो 'नवौ' (रू.भे.) उ०—नितकउ हुवइ जोग नउ नवलउ, घणा जुग वउळिया अनत।—महादेव पारवती री वेलि.
३ देखो 'नै' (रू.भे.)
४ देखो 'नव' (रू.भे.)
नउकार—देखो 'नवकार' (रू.भे.) उ०—नउकार तणउ तप पहिलउ वीसइ जांणि।—स.कु.
नउकारवळि—देखो 'नवकार-वाळी' (रू.भे.)
नउतणौ, नउतवौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रवौ' (रू.भे.)
उ०—राजमती कउ रचउ वीवाह। च्यारि खंड जीव नउतीया।
—वी.दे.
नउद-सं०स्त्री० [सं० नवत] १ चित्रकारी की हुई हाथी की झूल (उ.र.)
२ ऊनी वस्त्र, झूल।
नउय- [सं० नयुत] नयुत (नयुतांग को ८४ लाख से गुणा करने पर एक नयुत होता है) एक काल विभाग (जैन)।
नउरता—देखो 'नोरता' (रू.भे.)
उ०—नव दिन पूंगा नउरता। वळि वाकुळ पूजा रचौ ढाई।—वी.दे.
नउल—देखो 'नकुळ' (रू.भे.) (उ.र.)
नऊं-सं०स्त्री०—१ नवमी तिथि.
२ देखो 'नव' (रू.भे.) उ०—समाधी साधू मैं अवर न अराधूं उर अरू। नऊं नारें लांघूं दसम निज द्वारे धुन धरूं।—ऊ.का.
नक—देखो 'नाक' (मह., रू.भे.) (अ.मा.)
नकछींकणी-सं०स्त्री० [सं० नासिका+छिक्कनी] कँटेदार महीन-महीन पत्तियों वाली एक प्रकार की घास विशेष जो औषधि प्रयोग में ली जाती है, जिसके सूंघने से छींकें आती हैं (अमरत)
नकटाई-सं०स्त्री० [सं० नक्र+कर्त्तनं+रा०प्र०आई] १ नाक काटने की क्रिया. २ निर्लज्जता, धृष्टता. ३ वेहयापन।
रू०भे०—नगटाई।
नकटौ-वि०पु० [सं० नक्र+कर्त्तनम्] (स्त्री० नकटी) १ कटी हुई नाक वाला। उ०—नकटौ वूचौ निरख अंग अंग में उफणायौ। वोलै गूंगौ वोल सवद गुण इधक सुणायौ।—ऊ.का.
२ निर्लज्ज, ढीठ। उ०—दुरभिख निकटासण किण नैं नह दीधौ। नकटै नकटापण कृपणासय कीधौ।—ऊ.का.
३ वेहया।
मुहा०—नकटा देव सूंमड़ा पुजारी—जैसे को तैसा।
रू०भे०—नगटौ।
अल्पा०—नकटियौ, नगटियौ।
नकटियौ—देखो 'नकटौ' (अल्पा., रू.भे.)
नकटियौ-कोट-सं०पु०यौ०—ताश के चौकड़ी के खेल में रंग वोलने वाले पक्ष की वह हार जिसमें विपक्षी लगातार नौ हाथ बनाने में सफल हो जाते हैं।
रू०भे०—नगटियौ-कोट।
क्रि०प्र०—दैणौ, लैणौ।
नकतोड़—ऊँट के नाक में डाली जाने वाली वाली विशेष।
उ०—राईकां रावतां, जकडि लीधा जाकोड़ां। वदन कढ़ां वीटिया, तरां घाती नकतोड़ा।—मे.म.
नकद—देखो 'नगद' (रू.भे.)
नकदी—देखो 'नगदी' (रू.भे.)
उ०—थां अठै टिकौ जोख आवै तौ जायगां लेवौ, जै भावै तौ नकदी लेवौ।—गोपाळदास गौड़ री वारता
नकफूल-सं०पु० [सं० नक्र+राज० फूल] नाक का आभूषण विशेष।
अल्पा०—नकफूली।
नकफूली-सं०स्त्री०—देखो 'नकफूल' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—सुंदरि चोरे संग्रही, सव लीया सिणगार। नकफूली लीधी नहीं, कहि सखि कवण विचार।—ढो मा.
नकवेसर-सं०पु० [सं० नक्र+वेसर=लम्बोतरा या सुराहीदार मोती] स्त्रियों के नाक में धारण करने का आभूषण विशेष।
उ०—१ नाक नवल्ली नारि रै, नकवेसर घण नूर। मोती ग्रहियां चांच मझ, जांणक कीर जरूर।—बां.दा.
उ०—२ बनी ए थानै ल्यायां सांचा मोती, यै वयां मैं वैठ पुवाती। वनाजी मैं फीणी में रे पुवाती, नकवेसर वैठ जड़ाती। ए थारौ वीर जड़ाऊं टीको, थैं काढ़ घूंघटौ तीखौ।—लो.गी.
उ०—३ मगमद कुंकमचंद मिळ, द्रग अंजन छवि दीन। नकवेसर झमकत किनक, नाग पांन मुख लीन।
—वगसीरांम प्रोहित री वात
रू०भे०—नकवेसर।
नकर—देखो 'नक्र' (रू.भे.) उ०—जा रे नकर कर देखियौ थनै।
नकराकृत-वि० [सं० नक्र+आकृति] मगरमच्छ की आकृति वाला।

नकळंक—देखो 'निकळंक' (रू.भे.) उ०—कोप करै कीधा यर कंण कंण, 'नीवा' हर नकळंक नरेस। कळियंक सबद न पूगौ कोई, असुरै सुरै किधौ आदेस।—दुरगादास राठौड़ रौ गीत

नकल-सं०स्त्री० [अ०] १ मूल वस्तु को देख कर उसके अनुसार बनाई हुई। उ०—असल्न सूं नकल मींठौ असल, गुरगम हींणां गम नहीं। अमलियां हूंत देखौ अपत, हूका वाळा कम नहीं।—ऊ.का.

२ अनुकरण लेख आदि की अक्षरशः प्रतिलिपि. ३ स्वांग.

४ अद्भुत और हास्यजनक आकृति.

५ मजाक। जैसे—क्यूं नकलां करौ हौ, बुढापौ तौ थांरौ भी आवैला।

क्रि०प्र०—उतरणी, उतारणी, करणी, करावणी, बणणी, बणावणी, मारणी, होवणी।

६ नकल वही।

नकलची-वि० [अ० नकल+रा०प्र०ची] नकल करने वाला, नक्काल।

नकलनवीस-सं०पु० [अ० नकल+फा० नवीस] दूसरे के लेखों की नकल करने वाला (अदालती)।

नकलनवीसी-सं०स्त्री०—दूसरे के लेखों की नकल करने का कार्य (अदालती)।

नकलवही-स०स्त्री०—वह वही जिसमें दुकानदार उधार संबंधी लेन-देन का हिसाब रखता है।

नकलियौ—देखो 'नखलियौ' (रू.भे.)

नकली-वि० [अ०] १ नकल कर के बनाई जाने वाली, कृत्रिम, बनावटी.

२ जो असली न हो, खोटा, जाली, झूठा।

नकल्यौ—देखो 'नखलियौ' (रू.भे.)

नकवाल-सं०पु० [सं० नक्र+वालः] नाक के भीतर के वाल।

नकवेसर—देखो 'नकबेसर' (रू.भे.)

उ०—१ श्रवण-श्रवण कुंडळ सारीखा। आंख-आंख प्रत अंजण एम। संभ्रम 'सूर' तुआळी समवड़। जुड़ै नहीं नकवेसर जेम।
—सांईयां झूलौ

उ०—२ उदमाद हुई छित्र देख अनोपम, वळ छळ तणउ विचारत वंध। वांना जड़ित पहिरी नकवेसर, मद आविया ज्यांही मदगंध।
—महादेव पारवती री वेलि.

नकस-सं०पु० [अ० नक्श] वेल-बूटे, उभरा हुआ चित्र या फूलपत्ती का वह काम जो किसी वस्तु पर खोद कर बनाया जाय।

उ०—सू बरछी कुंण भांत री छै। ताड़ रा वड़, पीतळ रा भरता, बूड़ा गजवेल दांणै रा फळ, रांमपुरै रा घड़ियोड़ा, रूपै रा सोने रा नकस छै।—रा.सा.सं.

नकसदार-वि० [अ० नक्श+फा० दार] खोद कर या कलम से सोने, चांदी के वेल-बूंटों वाला, नक्काशीदार।

उ०—सोनै रूपै में गरकाव कीवी थकी, नकसदार जांणै गोडियै नागण लांबी कीवी छै।—रा.सा.सं.

नकसबंदिया-सं०पु० [अ० नक्श+बंध] मुसलमानों के सूफी मत के फकीरों का एक सम्प्रदाय जो पहलवानी भी करते हैं (मा.म.)

नकसानवीस-सं०पु० [अ० नक्शा+फा० नवीस] किसी प्रकार का नक्शा बनाने वाला।

रू०भे०—नक्सानवीस।

नकसानवीसी-सं०स्त्री० [अ० नक्शा+फा० नवीसी] नक्शा बनाने का कार्य।

रू०भे०—नक्सानवीसी।

नकसीर-सं०पु० [सं० नक्+शिरा] नाक से बहने वाला रक्त।

रू०भे०—नकीर, नकेर, नखीर, नसेर।

नकसौ—देखो 'नक्सौ' (रू.भे.)

नकांम—देखो 'निकांम' (रू.भे.)

उ०—घणौं सकोप रहै कर फेरा, फौजां साह तणी चौफेरा। आगम निस दिस विदिस अंधेरा, हालण सोध नकांम गहेरा।—रा.रू.

नका—देखो 'निका' (रू.भे.)

उ०—असपत इंद्र अवनि आहुड़ियां, धारा झड़ियां सहै धका। घण पड़ियां सांकड़ियां घड़ियां, ना धीहड़ियां पढ़ी नका।—दुरसौ आढ़ौ

नकाब-सं०स्त्री० [अ०] मुंह छिपाने के लिए सिर पर से गले तक डाला जाने वाला महीन-महीन रंगीन कपड़े या जाली का बना हुआ टुकड़ा। उ०—म्हैं सूतां सूतां, विना हिल्यां ई थोड़ी-थोड़ी आंख्यां खोल'र देख्यौ तौ दरवाजै रै मांयला कांनी मूंडा पर काळौ नकाब नांख्यां अर हाथ में छुरौ लियां एक मूरत ऊभी ही।—रातवासौ

नकार-सं०पु० [सं०] १ निषेध सूचक शब्द, 'न' या 'नहीं' का बोधक शब्द, अस्वीकृत।

उ०—मन माया लालच लियां, त्रिसळौ लियां लिलाट। रसण नकार लियां रहै, औ सूंमां रौ घाट।—वां.दा.

२ 'न' वर्ण। उ०—एक वरग में ऊपना, सूंम कहै इकसार। दौलत हरै दकारियौ, दौलत थंभ नकार।—वां.दा.

३ कृपण, कंजूस. ४ देखो 'नगारौ' (मह., रू.भे.)

उ०—नकार घुबघुबपै नकीब बोलते नहीं। खणंक खग्ग वग्ग तैं सु आंख खोलते नहीं।—ऊ.का.

५ देखो 'निकार' (रू.भे.)

६ छंद शास्त्र में नगण का एक नाम।

रू०भे०—नंहकार।

अल्पा०—नकारौ, नाकारउ, नाकारौ, नागारौ।

नकारखांनौ—देखो 'नगारखांनौ' (रू.भे.)

नकारची—देखो 'नगारची' (रू.भे.)

नकारणौ, नकारबौ—देखो 'नाकारणौ, नाकारबौ' (रू.भे.)

नकारौ—१ देखो 'नकार' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पदम हर सीह सादूळ उप्रवटपणै, समवड़ां हियै नत सूळ सांकै। जस तणै मूळ जस तिलक दीधौ जको, नकारां ऊपरै धूळ नांकै(खै)।
—तिलोकजी वारहठ

२ देखो 'निकारौ' (रू.भे.)

नकाळ—देखो 'निकाळ' (रू.भे.)
नकाळो—१ देखो 'निकाळ' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'निकाळो' (रू.भे.)
नकास—देखो 'निकाळ' (रू.भे.)
नकासणो, नकासबो–क्रि०अ० [सं० निष्कासन्] निकलना।
उ०—ग्रोपं लपेटो अपार सीस वागो धोरादार अंगां। कुळै ताज पैठां जोत नगारीं करूर। आवळां दळां में 'म्यारा' प्रकासियो रीत एही। सांवळां वादळां मांहे नकासियो सूर।
—मयाराम दरजी री वात
नकासी–सं०स्त्री० [अ० नक्काशी] १ किसी वस्तु आदि पर खोद कर बनाये गये बेल-बूंटों आदि का कार्य।
२ उपर्युक्त विधि से बनाए गए बेल-बूटे आदि।
रू०भे०—नक्कासी, नखसी।
३ देखो 'निकासी' (रू.भे.)
नकासीदार–वि० [अ० नक्काशी+फा० दार] जिस पर नक्काशी की गई हो, बेल-बूटे दार।
रू०भे०—नक्कासीदार।
नकासो—देखो 'निकाळो' (रू.भे.)
नकी–वि० —१ निश्चित, दृढ़, खरी.
२ देखो 'नकूं' (रू.भे.) उ०—नकी खेह लागी रही देह नीको, तसूं नागणी गाय री चंद्रटीको।—ना.द.
क्रि०वि०—१ निश्चय कर के, निःसंदेह, जरूर, अवश्य।
नकीतळाव, नकीताळाव–सं०पु०—एक तालाव जो आबू पर्वत पर स्थित है, जिसे हिन्दू लोग तीर्थ स्थान मानते हैं।
रू०भे०—नक्कीतळाव।
नकीब–सं०पु० [अ०] १ राजा-महाराजा की सवारी के समय आगे आवाज लगाते हुए चलने वाला चोबदार. २ दरबार के समय बादशाह से भेंट करने के लिए जाने वाले का नाम जोर से पुकारने वाला व्यक्ति। उ०—१ फिर नकीब चहुंतरफ, एम वक कहै आवाजां। वेग चढो वेढकां सजै जुध काज सकाजां।—सू.प्र.
उ०—२ धम धम वागै त्रमागळां, हुवै नकीबां हल्ल। सादां आजै सम्मळी, किनियांणी करनल्ल।—अलवर नरेस वख्तावरसिंह
रू०भे०—नक्कीब।
नकीर—देखो 'नकसीर' (रू.भे.)
नकुळ–सं०पु० [सं० नकुलः] १ राजा पांडु के चौथे पुत्र का नाम (डि.को.)
२ गिलहरी के आकार का किन्तु उससे कुछ बड़ा और भूरे रंग का एक मांसाहारी जंतु विशेष जो चूहों आदि को खा कर पेट भरता है। सांप को मारने के लिए यह विशेष रूप से प्रसिद्ध है (डि.को.)
रू०भे०—नउळ, नकुली, नकुलु।
अल्पा०—नवळियो, नोळियो।
नकुलांध–सं०पु० [सं०] नेत्र का एक रोग, जिसमें वस्तुएँ रंग-विरंगी दिखने लग जाती हैं और आँखें नेवले की तरह चमकने लगती हैं।
नकुळीस–सं०पु० [सं० नकुलीश] तांत्रिकों के एक भैरव का नाम।
नकुलु—देखो 'नकुळ' (रू.भे.)
उ०—चउपउ नकुलु असंघउ थाइ, सहदे वारह नरवइ गाइ।
—पं.पं.च.
नकूं–अव्यय [सं० नखलु, प्रा० णक्खु] १ कुछ भी नहीं, नहीं।
उ०—करै जको करतार, नर कीधो होवै नकूं। सह खावै संसार, मन रा लाडू मोतिया।—रायसिंह सांदू
२ कुछ भी। उ०—देस सिंध 'ऊनड़' दियो, दीधो सिर जगदेव। 'वांका' जस रै वासतै, दाता नकूं अदेव।—वां.दा.
रू०भे०—नकी, नको।
नकेर—देखो 'नकसीर' (रू.भे.)
नकेल–सं०स्त्री० [सं० नक्रम्+रा०प्र०एल] १ ऊँट की नाक में बंधी लकड़ी या धातु का टुकड़ा जो रस्सी बांधने को डाला जाता है।
उ०—१ नकेलां नके घात गोळां नुखत्तां। रसै बांधियै खोलिया कोप रत्तां।—रा.रू.
उ०—२ मोहरी डोरी रेसमी, नौखी चंदण नकेल। रूपाळक फण नाग रंग, बाळक जुंग वकेल।—सू.प्र.
रू०भे०—नाकेल।
अल्पा०—नाकेलियो, नाकोलियो।
नकेवळ, नकेवळो—देखो 'निकेवळो' (रू.भे.)
उ०—१ पडघां पग देवळ थंभ प्रमांण। नकेवळ पिंढ अद्रां अहनांण।
—मे.म.
उ०—२ इण भाव में अर पाई एक कोई री देवणो नहीं, साफ नकेवळो।—रातवासो
नकै–अव्यय [सं० कर्णे, प्रा० कण्ण, रा० कन्नै वर्णविपर्यय नकै] निकट, समीप, पास। उ०—पांच कोस पांचेटियो, इग्यारै आलास। नानांणो म्हारो नकै, समपो सोडावास।—महादांन महडू
रू०भे०—नखैं, नखै।
नको—देखो 'नकूं' (रू.भे.) उ०—दासरथी सुखदाई सुंदर, नमैं पगां सुर नर आनूप। नरकां मिट जन तारै नको, भाख पयोध प्रभाकर भूप।—र.ज.प्र.
नक्क—देखो 'नाक'(मह., रू.भे.)
नक्कारची—देखो 'नगारची' (रू.भे.)
नक्काल–वि० [अ०] १ नकल करने वाला.
२ बहुरूपिये. ३ भांड।
नक्काली–सं०स्त्री०—१ नकल करने का काम.
२ बहुरूपियों का कार्य।
३ भांड-विद्या।
नक्कासी—देखो 'नकासी' (रू.भे.)
नक्कासीदार—देखो 'नकासीदार' (रू.भे.)

नवकीतळांव—देखो 'नकीतळाव' (रू.भे.)

नवकीव—देखो 'नकीब' (रू.भे.)

उ०—घण हलै गयंद वजि घरर घोर। सहनाय तूर नवकीब सोर।
—सू.प्र.

नवको–सं०पु० [देश०] आभूषणों पर खुदाई के काम में सफाई लाने का एक ओजार विशेष। (स्वर्णकार)

नक्खत्त—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

नक्र–सं०पु० [सं० नक्रः] १ मगरमच्छ, घड़ियाल (डि.को.)

उ०—कजाका भड़ां दीहियो रूप कैसो। 'अभो' नक्र वीदोहग्या चक्र अैसो।—रा.रू.

२ काला, श्याम० (डि.को.)

[सं० नक्रम्] ३ नाक, नासिका।

रू०भे०—नकर, नग्ग।

नक्र-केतन–सं०पु०यौ० [सं० नक्रः+केतनम्] मगर की ध्वजा वाला, कामदेव (डि.को.)

नक्रण—देखो 'नक्र' (रू.भे.)

उ०—हरण नक्रण वहे गुदरग्ग हरोळी। घाव संता गरग्ग दिढ अपाळै।—र.ज.प्र.

नक्सो–सं०पु० [अ० नक्शः] १ रेखाओं द्वारा आकार व सीमादि का निर्देश, नवशा. २ किसी पदार्थ का स्वरूप, आकृति, चाल-ढाल।

रू०भे०—नकसौ।

नक्षत्र–सं०पु० [सं०] १ आकाश (खगोल) में स्थित वे तारक-पुंज या तारक-गुच्छ विशेष जिनके मध्य क्रांतिवृत्त है।

वि०वि०—ये तारक-पुंज सूर्य की परिक्रमा नहीं करते और सूर्य की परिक्रमा करने वाले ग्रहों से भिन्न हैं। आकाश में इनकी स्थिति, परस्पर दूरी आदि स्थिर जान पड़ती है। हमारे सूर्य और ग्रहों की अपेक्षा ये बहुत ऊँचे या दूर तथा बड़े माने जाते हैं। ऐसे दो-चार पास-पास रहने वाले तारों की स्थिति का ध्यान कर के उनको सदा पहचाना जा सकता है। अतः सुविधा के लिए इन पास-पास रहने वाले तारों से बनने वाली विशिष्ट आकृति को देख कर उसके अनुसार नाम रख लिया गया है।

चन्द्रमा इन तारक-पुंजों के मध्य से गमन करता हुआ लगभग २७-२८ दिन में पृथ्वी की परिक्रमा कर लेता है। चूंकि एक-एक तारक-पुंज या तारक-गुच्छ एक-एक नक्षत्र हैं अतः पूरे वृत्त को नक्षत्र-चक्र कहते हैं। इस चक्र में पड़ने वाले नक्षत्र २७ माने गये हैं किन्तु एक अभिजित नक्षत्र और है जो उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण और श्रवण नक्षत्र के १/१५ भाग के अन्तर्गत आ जाता है। अतः विशिष्ट गणना में ही इसे अलग मान कर कुल २८ नक्षत्र गिने जाते हैं किन्तु साधारणतया नक्षत्र २७ ही माने गये हैं। [पृ० सं० १९७९ एवं पृ० सं० १९८० पर विवरण देखें]

चान्द्रमासों का नामकरण भी नक्षत्रों के आधार पर हुआ है। चन्द्रमा का पूर्ण होना पूर्णिमा कहलाता। जिस नक्षत्र के समीप चन्द्रमा पूर्ण होता है उसी के नाम के अनुसार उस मास का नामकरण किया गया है। जैसे—चित्रा से चैत्र, विशाखा से वैशाख आदि।

पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा एक वर्ष में पूर्ण करती है। इस कारण ऐसा प्रतीत होता है कि सूर्य एक-एक नक्षत्र पर कुछ काल तक रहता है। अतः वे ही नक्षत्र सौर नक्षत्र भी कहलाते हैं।

चूंकि नक्षत्र भी स्थिर हैं और सूर्य भी स्थिर है किन्तु पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है। अतः पृथ्वी वालों को सूर्य के प्रकाश के कारण जो नक्षत्र दिखाई नहीं देता है उसी नक्षत्र पर उस काल के लिए सूर्य माना जाता है। कुछ काल के पश्चात् पृथ्वी अण्डाकार वृत्त पर आगे बढ़ जाती है अतः वह नक्षत्र पुनः दिखाई देना शुरू हो जाता है और उसके आगे वाला नक्षत्र दिखाई नहीं देता है। अतः तब यह माना जाता है कि सूर्य अमुक नक्षत्र पर से हट कर उसके आगे वाले पर आ गया है। वास्तव में सूर्य हटता नहीं है; पृथ्वी के ही अपने वृत्त पर आगे बढ़ती रहने के कारण ऐसा होता है। तात्पर्य यह है कि पृथ्वी की दैनिक (अपने अक्ष पर घूमने की) तथा वार्षिक (अण्डाकार वृत्त पर सूर्य की परिक्रमा करने की) गतियों के कारण क्रमशः एक-एक नक्षत्र सूर्य की आड़ में आता रहता है और दिखाई नहीं देता है। अतः तदनुसार सूर्य उन नक्षत्रों पर माना जाता है। वर्ष पूरा होने तक क्रमशः सभी नक्षत्र, प्रत्येक लगभग १३ या १४ दिन के समय के लिए, सूर्य की आड़ में आ जाते हैं और इस प्रकार सौर-नक्षत्र कहलाते हैं।

राजस्थान में वर्षा ज्ञान में इन सौर नक्षत्रों का विशेष महत्व है। निम्न दोहा प्रसिद्ध है—

'मिगसर वाय न वज्जियो, रोहण तपी न जेठ।
कथा म बांधे झूंपड़ो, रहसां वडला हेठ॥'

ज्येष्ठ मास में जब रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य होता है तब यदि तेज गर्मी न पड़े, तत्पश्चात् मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य होने पर यदि तेज वायु न चले तो वर्षा न होगी। अतः उक्त दोहे में एक नारी अपने पति को कहती है कि हे पति! झोंपड़ी मत बांधना, वटवृक्ष के नीचे ही रहेंगे अर्थात् वर्षा के अभाव में निर्वाह के लिए दूसरे स्थानों (जैसे मालवा आदि) पर जाना पड़ेगा जहां वृक्षों के नीचे ही रहना पड़ेगा। यों भी कहते हैं कि 'रोवण तपणी अर मिगसरा वाजणा' अर्थात् सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर होने पर तेज गर्मी पड़नी चाहिए और सूर्य के मृगशिरा नक्षत्र पर होने पर तेज हवा चलनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है तो अकाल का लक्षण माना जाता है।

मृगशिरा के बाद आर्द्रा नक्षत्र लगता है। उसके लिए यह प्रसिद्ध है कि—'आदरा भरै खादरा' अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र के समय में कुछ वर्षा हो जाती है जिससे साधारण गड्ढे आदि भर जाते हैं।

निम्न तालिका में उक्त प्रत्येक नक्षत्र (तारक-गुच्छ) का नाम, उस समूह में होने वाले तारों की संख्या, प्रत्येक गुच्छ से बनने वाली विशिष्ट आकृति का नाम व उस नक्षत्र के देवता का नाम दिया गया है ।

नक्षत्र - तालिका

क्र० सं०	नक्षत्र का नाम (राजस्थानी में)	संस्कृत नाम	नक्षत्र में होने वाले तारों की संख्या	आकृति नाम	आकृति	नक्षत्र-देव का नाम
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
१	असनी, अश्विनी	अश्विनी	३	घोड़ का मुख	नोट – आकृति के लिए आगे दिये हुए चिन्हों को क्रमशः देखें ।	अश्विनी कुमार
२	भरणी	भरणी	३	योनि		यम
३	किरती	कृत्तिका	६	नापित क्षुरा, उस्तरा		अग्नि
४	रोयण	रोहिणी	५	गाडी		ब्रह्मा
५	म्रिग, हिरणी	मृगशिरा, मृगशीर्ष	३	हरिण-मुख		चन्द्र
६	आदरा	आर्द्रा	१	मणि		रुद्र
७	पुनरस	पुनर्वसु	४	घर		अदिति:
८	पुख	पुष्य	३	धनुष पर चढ़ा हुआ तीर		बृहस्पति
९	असलेखा	अश्लेषा	६	चक्र		सर्प
१०	दोत, मघा	मघा	५	दात्र, हंसिया		पितर
११	पूरवा फागुणी	पूर्वफल्गुनी	२	खाट, चारपाई		भग (सूर्य)
१२	उतरा फागुणी	उत्तरफल्गुनी	२			अर्यमा (सूर्य)
१३	हस्ता	हस्त	५	हाथ का पंजा		रवि
१४	चिड़कली, चिड़ी, सूंली	चित्रा	१	मोती		त्वष्टा (विश्वकर्मा)
१५	स्वात, स्वाति	स्वाति:	१	प्रवाल		वायु
१६	तोरणियों	विशाखा	४	तोरण		इद्राग्नी (इंद्र एवं अग्नि)
१७	अनुराधा	अनुराधा	४	मणि		मित्र (सूर्य)
१८	जेठा	ज्येष्ठा	३	कुण्डल		शक्र (इंद्र)
१९	मूळा	मूल	११	सिंह की पूंछ		निर्ऋति (राक्षस)
२०	पूरवा खाढ़ा	पूर्वाषाढ़ा	२	खाट, चारपाई		क्षीर (जल, उदक)
२१	उत्तराखाढ़ा, आउगाल्	उत्तराषाढ़ा	२			विश्वे देवा
२२	अभिजित	अभिजित	३	सिंघाड़ा		विधि (विधाता)
२३	कावड़, सरवण	श्रवण	३	वहंगी		विष्णु
२४	घनिस्ठा	धनिष्ठा	४	मर्दल		वसव: (आठ देवता विशेष)
२५	सतभिखा	शतभिषा	१००	मण्डलाकार		वरुण
२६	पूरवा भाद्रपदा	पूर्व भाद्रपदा	२	खाट, चारपाई		अज चरण: (रुद्र)
२७	उतरा भाद्रपदा	उत्तर भाद्रपदा	२			अहिर्बुन्य (रुद्र)
२८	रेवती	रेवती	३२	माला		पूषा (सूर्य)

इसका संबंध पूर्व के रोहिणी और मृगशिरा से भी जोड़ा गया है, यथा—

'रोयणी तपै, मिगसरा वाजै
तौ आदरा अणचींतिया गाजै'

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में गर्मी पड़ने और मृगशिरा में तेज हवा चल जाने के उपरांत तो आर्द्रा नक्षत्र में बादल अवश्य गरजते हैं और वर्षा करते हैं। इसके विपरीत यदि मृगशिरा नक्षत्र के समय में तेज हवा न चल कर उससे आगे वाले आर्द्रा नक्षत्र के समय में चल जाती है तो यह भी अकाल का लक्षण माना जाता है। यथा—

'आद पड़िया वाव,
झूंपड़ झोला खाव'

आर्द्रा में हवा चल जाने से झोंपड़े झोला ही खाते हैं अर्थात् वर्षा नहीं होती है।

आर्द्रा के पश्चात् पुनर्वसु नक्षत्र सूर्य की आड़ में आता है या यों कहा जाता है कि सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र पर आता है। इसके लिए प्रचलित है कि—'पुनरस भरै तळाव' अर्थात् पुनर्वसु के समय खूब वर्षा हो जाती है जिससे तालाब आदि भर जाते हैं।

पुनर्वसु के पश्चात् पुष्य नक्षत्र पर सूर्य आता है। अतः प्रचलित है कि 'पुख भांगै गायां रो दुख' अर्थात् इस समय तक इतनी वर्षा हो जाती है कि गायों को घास के अभाव का दुख प्रतीत नहीं होता क्योंकि पर्याप्त वर्षा के कारण घास बहुत पैदा हो जाता है।

तत्पश्चात् अश्लेषा नक्षत्र लगता है। इसके लिये कहा जाता है कि 'असलेसा सावदेसा' अर्थात् इस समय सब स्थानों पर वर्षा हो जाती है।

अश्लेषा के बाद मघा नक्षत्र लगता है। इस समय कहा जाता है कि—'मघा माचत मेहा कै उडत खेहा' अर्थात् मघा के लगते ही यदि मेह बरसना प्रारम्भ हो जाता है तो इसके १३-१४ दिन के समय तक वर्षा होती रहती है और यदि मघा के प्रारम्भ में तेज वायु चल जाती है तो फिर वर्षा नहीं होती और धूल उड़ती रहती है।

अन्त में यह कहा जाता है कि—'अगस्त ऊगा अर मेह धरै पूगा' उन दिनों अगस्त्य तारा उदय होता है। उसके बाद प्रायः वर्षा नहीं होती है। अतः अगस्त्य वर्षा की समाप्ति का सूचक माना जाता है। ऐसा उल्लेख गोस्वामी तुलसीदासजी ने 'रामचरितमानस' में भी किया है, यथा—

'उदित अगस्ति पंथ जल सोषा'

२ क्रांतिवृत्त के प्रत्येक १३ अंश २० कला के विभाग का नाम।
वि०वि०—इस प्रकार क्रांतिवृत्त के २७ विभाग होते हैं।
३ पंचांग का तृतीय अंग.
४ तारा।
रू०भे०—नक्खत्र, नख, नखत, नखतर, नखत्र, नखित, नखितर, नखित्र, नख्यत, नछत्र, नाखत, नाखित, नाखितर, नाखित्र, नाख्यत्र, निखत, निखतर, निखत्र।

नक्षत्रगण—सं०पु०यौ० [सं०] फलित ज्योतिषानुसार कुछ विशिष्ठ नक्षत्रों का पृथक-पृथक समूह या गण।
वि०वि०—बृहत्संहिता के अनुसार ये गण भिन्न भिन्न नक्षत्रों के समूह से सात माने गये हैं जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं--
१ ध्रुवगण—इसमें निम्नलिखित चार नक्षत्र सम्मिलित माने गये हैं १ रोहिणी, २ उत्तराषाढ़ा, ३ उत्तर भाद्रपदा और उत्तर फल्गुनी। ध्रुवगण के नक्षत्रों में अभिचक्र, शान्ति, वृक्ष, नगर, धर्म, बीज और ध्रुव कार्य का आरंभ करना उचित माना गया है।
२ तीक्ष्ण गण—इसमें निम्नलिखित पांच नक्षत्र सम्मिलित माने गये हैं। मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और अश्लेषा। इन नक्षत्रगण के नक्षत्रों के स्वामी तीक्ष्ण माने गये हैं। इन नक्षत्रों में अभिघात, मंत्र साधन, वेताल, बंध, वध और भेद संबंध कार्य सिद्ध होते हैं।
३ उग्र-गण—इसमें निम्नलिखित पांच नक्षत्र सम्मिलित माने गये हैं। पूर्वाषाढा, पूर्व-फल्गुनी, पूर्व-भाद्रपदा, भरणी और मघा। इन नक्षत्रों में, उजाड़ने, नष्ट करने, शठता करने, बंधन, विष, दहन और शाखा घात आदि कार्यो की सिद्धि के नक्षत्र उपयुक्त माने गये हैं।
४ लघु गण—हस्त अश्विनी और पुष्य के समूह को कहते हैं। इन नक्षत्रो मे पुण्य, रति, ज्ञान, भूषण, कला, शिल्प आदि के कार्य करने में सफलता मिलती है।
५ मृदु गण—अनुराधा, चित्रा, मृगशिरा और रेवती के समूह का नाम माना गया है। इन नक्षत्रों में वस्त्र, भूषण, मंगल, गीत और मित्र आदि के संबंध हितकारी और उपयुक्त माने गये हैं।
६ मृदु तीक्ष्ण-गण—विशाखा और कृत्तिका के समूह को माना गया है। इनका फल मृदु और तीक्ष्ण गणों के फल का मिश्रण माना गया है।
७ चर-गण—श्रवण, धनिष्टा, शतभिषा, पुनर्वसु और स्वाति के समूह का नाम माना गया है। इन नक्षत्रों में चर कर्म करना उपयुक्त माना गया है।
रू०भे०—नखतगण, नखत्रगण।

नक्षत्रचक—सं०पु० [सं०] क्रांतिवृत्त के आस-पास स्थित नक्षत्रों का समूह, राशिचक्र।
रू०भे०—नखत-चकर, नखत्रचक्र।

नक्षत्रदरस—सं०पु० [सं० नक्षत्रदर्श] १ नक्षत्र देखने वाला.
२ ज्योतिषी।

नक्षत्रदान—सं०पु० [सं० नक्षत्रदान] भिन्न-भिन्न नक्षत्रों में भिन्न-भिन्न पदार्थों के दान का विधान। जैसे—रोहिणी नक्षत्र में घी, दूध और रत्न, मृगशिरा नक्षत्र में बछड़े सहित गौ आदि।
रू०भे०—नखत-दान।

नक्षत्र-धारी—वि० [सं० नक्षत्र-धारिन्] श्रेष्ठ नक्षत्र में जन्म लेने वाला, भाग्यशाली। रू०भे०—नखत-धारी, नखतर-धारी।

रू०भे०—नखतधारी, नखतरधारी ।

नक्षत्रनाथ–सं०पु० [सं०] चंद्रमा, राकेश ।
रू०भे०—नखत-नाथ ।

नक्षत्रप–सं०पु० [सं०] चंद्रमा, रजनीपति ।

नक्षत्रपति–सं०पु० [सं०] चन्द्रमा ।
रू०भे०—नखत-पति ।

नक्षत्रपथ–सं०पु०यौ० [सं०] वह पथ जिस पर नक्षत्र स्थित है ।

नक्षत्रपुरुस–सं०पु०यौ० [सं० नक्षत्रपुरुष] फलित ज्योतिष में भिन्न-भिन्न नक्षत्रों को शरीर के भिन्न-भिन्न अंग मान कर कल्पना किया हुआ पुरुष जिसका व्रत सौंदर्य प्राप्ति के उद्देश्य से किया जाता है ।

इसका व्रत चैत्र कृष्णा अष्ठमी को जब कि चन्द्रमा मूल-नक्षत्र-युक्त हो, किया जाता है । दिन भर उपवास किया जाता है तथा विष्णु और नक्षत्रों की पूजा की जाती है । इस व्रत को नक्षत्र पुरुष के पैरों वाले स्थान से जिसका नक्षत्र मूल है, प्रारम्भ कर के प्रति मास हर एक अंग के नक्षत्र के नाम से भी व्रत करने का विधान है ।

वृहत्संहिता के अनुसार मूल नक्षत्र को नक्षत्र पुरुष के पाँव, अश्विनी और रोहिणी को जांघ, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा को उरु, उत्तरफल्गुनी और पूर्व फल्गुनी को गुह्य, कृतिका को कमर, पूर्व-भाद्रपदा और उत्तर-भाद्रपदा पार्श्व, रेवती को कोख, अनुराधा को छाती, धनिष्ठा को पीठ, विशाखा को बांह, हस्त को हाथ, पुनर्वसु को उंगलियां, अश्लेषा को नाखून, ज्येष्ठा को गरदन, श्रवण को कान, पुष्य को मुख, स्वाति को दांत, शतभिषा को हास्य, मघा को नाक, मृगशिरा को आंख, चित्रा को ललाट, भरणी को सिर और आर्द्रा को बाल मान कर कल्पना की गई है ।

रू०भे०—नखतर-पुरस ।

नक्षत्रभोग–सं०पु० [सं०] आकाश में परिभ्रमण करते हुए चंद्रादि ग्रहों को २७ नक्षत्रों में से प्रत्येक नक्षत्र-विभाग में परिभ्रमण करते हुए लगने वाला समय जो प्रत्येक ग्रह के लिए पृथक-पृथक होता है ।
रू०भे०—नखत-भोग ।

नक्षत्रमाळा–सं०स्त्री० [सं० नक्षत्र माला] १ सताईस मोतियों का हार. २ नक्षत्रों की पंक्ति या श्रेणी ।
रू०भे०—नखतमाळ, नखतमाळा, नखत्रमाळ, नखत्रमाळा, नखित्रमाळ, नखित्रमाळा, नाखतमाळ, नाखतमाळा, नाखत्रमाळ, नाखत्रमाळा ।

नक्षत्रयाजक–सं०पु० [सं०] ग्रहों और नक्षत्रों आदि के दोषों की शान्ति कराने वाला, ब्राह्मण ।

नक्षत्रयोग–सं०पु० [सं०] नक्षत्रों के साथ ग्रह का योग ।

नक्षत्रयोनि–सं०पु०यौ० [सं०] फलित ज्योतिष में विशिष्ट नक्षत्रों के अनुसार विशिष्ट प्राणियों की कल्पित योनि विशेष ।

वि०वि०—विवाह सम्बन्ध स्थिर करते समय ज्योतिष संबंधी जिन आठ बातों पर विचार किया जाता है उनमें चौथी बात योनि की होती है । यथा—वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट और नाड़ी ।

२८ नक्षत्रों की १४ योनियों में कल्पना की गई है । तात्पर्य यह है कि दो नक्षत्र एक योनि के माने जाते हैं तथा उस योनि का दूसरे दो नक्षत्रों की किसी अन्य योनि विशेष से जो उसके विरुद्ध हो, वैर माना जाता है ।

निम्न तालिका में सात योनियों और उनके नक्षत्रों के नाम के सामने परस्पर वैर होने वाली क्रमशः दूसरी सात योनियां और उनके नक्षत्रों के नाम दिये गये हैं—

नक्षत्र योनियों की परस्पर वैर योनि तालिका

क्र०सं०	योनि नाम व उसके नक्षत्र नाम		क्र०सं०	योनि नाम व उसके नक्षत्र नाम	
	योनि	नक्षत्र		योनि	नक्षत्र
१	अश्व	अश्विनी, शतभिषा	८	महिष	हस्त, स्वाति
२	गज	भरणी, रेवती	९	सिंह	पूर्वभाद्रपदा, धनिष्ठा
३	मेष	कृतिका, पुष्य	१०	वानर	पूर्वाषाढ़ा, श्रवण
४	सर्प	रोहिणी, मृग	११	नकुल	उत्तराषाढ़ा, अभिजित
५	श्वान	आर्द्रा, मूल	१२	मृग	अनुराधा, ज्येष्ठा
६	बिलाव	पुनर्वसु, अश्लेषा	१३	मूषक	मघा, पूर्वफाल्गुनी
७	गौ	उत्तरफल्गुनी, उत्तरभाद्रपदा	१४	व्याघ्र	चित्रा, विशाखा

यदि वर-कन्या समान नक्षत्रयोनि के हों जैसे अश्व नक्षत्रयोनि का वर और अश्व नक्षत्रयोनि की ही कन्या तो विवाह संबंध करना श्रेष्ठ होता है; यदि वर-कन्या विरुद्ध या वैर नक्षत्रयोनि के हों जैसे अश्व नक्षत्रयोनि का वर और महिष नक्षत्रयोनि की कन्या तो ज्योतिष संबंधी उक्त आठ बातों में से योनि के अनुसार तो संबंध स्थिर करना निषिद्ध समझा जाता है और यदि वर-कन्या न समान नक्षत्र-योनि के और न वैर नक्षत्रयोनि के हों तो संबंध स्थिर करना सामान्य या उदासीन समझा जाता है ।

रू०भे०—नखतजोगी।

नक्षत्रराज–सं०पु० [सं०] चंद्रमा, नक्षत्रपति।

रू०भे०—नखतराज, नखतराय।

नक्षत्रलोक–सं०पु० [सं०] नक्षत्रमण्डल।

नक्षत्रवीथि–सं०पु०यौ० [सं०] शुक्रग्रह द्वारा क्रमशः तीन-तीन नक्षत्रों को पार किए जाने वाले विभाग या मार्ग का नाम।

वि०वि०—वीथियां नौ मानी गई हैं। देवल व कश्यप के मतानुसार अश्विन्यादि तीन-तीन नक्षत्रों की एक-एक वीथि क्रमशः इस प्रकार है—

(१) अश्विनी, भरणी और कृतिका नक्षत्रों से नागवीथि।
(२) रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा नक्षत्रों से गजवीथि।
(३) पुनर्वसु, पुष्य और अश्लेषा नक्षत्रों से ऐरावतवीथि।
(४) मघा, पूर्वफल्गुनी और उत्तरफल्गुनी नक्षत्रों से वृषभवीथि।
(५) हस्त, चित्रा और स्वाति नक्षत्रों मे गोवीथि।
(६) विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्रों से जारदग्वीवीथि।
(७) मूल, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों से मृगवीथि।
(८) श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों से अजावीथि।
(९) पूर्वभाद्रपदा, उत्तरभाद्रपदा और रेवती नक्षत्रों से दहनावीथि।

किन्तु वृहत्संहिता के अनुसार नौ वीथियां इस प्रकार हैं—

(१) नागवीथि—भरणी, कृत्तिका और स्वाति।
(२) गजवीथि—रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा।
(३) ऐरावतवीथि—पुनर्वसु, पुष्य और अश्लेषा।
(४) वृषभवीथि—मघा, पूर्वफल्गुनी और उत्तरफल्गुनी।
(५) गोवीथि—अश्विनी, रेवती, पूर्वभाद्रपदा व उत्तरभाद्रपदा।
इस मत में इसमें चार नक्षत्र माने गये हैं—
(६) जारदग्वीवीथि—श्रवण, धनिष्ठा व शतभिषा।
(७) मृगवीथि—अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल।
(८) अजावीथि—हस्त, चित्रा और विशाखा।
(९) दहनावीथि—पूर्वाषाढा और उत्तराषाढ़ा।

इसमें केवल दो ही नक्षत्र माने गये हैं।

इन नौ वीथियों में क्रमशः प्रथम तीन वीथियों का समूह क्रांतिवृत्त के उत्तर का, यथा नाग, गज और ऐरावत। बाद की तीन वीथियों, यथा—वृषभ, गो और जारदग्वी का समूह क्रांतिवृत्त के मध्य का तथा अंतिम तीन वीथियों, यथा—मृग, अजा और दहना का समूह क्रांतिवृत्त के दक्षिण का माना जाता है।

उक्त तीनों भागों में भी प्रत्येक में फिर तीन-तीन विभाग हैं जैसे उत्तर की तीन वीथियों में नाग उत्तर की, गज मध्य की तथा ऐरावत दक्षिण की है। इसी प्रकार मध्य की तीन वीथियों के समूह में वृषभ उत्तर की, गो मध्य की और जारदग्वी दक्षिण की हैं। तृतीय तीन वीथियों के समूह में मृग उत्तर की, अज मध्य की और दहना दक्षिण की हैं।

उक्त तीनों भागों में उत्तर की तीन वीथियां यथा—नाग, गज और ऐरावत शुभ फलदायिनी, मध्य की तीन यथा वृषभ गो और जारदग्वी मध्यफलदायिनी तथा दक्षिण की तीन यथा—मृग, अज और दहना मंद या बुरा फलदायिनी मानी जाती हैं।

इतना ही नहीं इन तीनों भागों में उत्तर के समूह की प्रथम नागवीथि सर्वश्रेष्ठ, मध्य की गजवीथि श्रेष्ठ और दक्षिण की ऐरावतवीथि अच्छा फल देने वाली है। फिर मध्य की तीन वीथियों के समूह में उत्तर की वृषभ ठीक, मध्य की गो कुछ ठीक तथा दक्षिण की जारदग्वी न ठीक और न बुरा फल देती है। तत्पश्चात् दक्षिण की तीन वीथियों के समूह में उत्तर की मृग वीथि में बुरा फल, मध्य अज वीथि में उससे भी बुरा फल और दक्षिण की अंतिम दहना वीथि में शुक्र का चार होने पर अत्यधिक बुरा फल होना माना गया है।

रू०भे०—नखतवीथि।

नक्षत्रव्यूह–सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष में विशिष्ट प्राणियों और पदार्थों के समूह का अधिपति-नक्षत्र विशेष।

वि०वि०—वृहत्संहिता के अनुसार कवि, लेखक, वैयाकरण, ज्योतिषी, अग्निहोत्री, मंत्र जानने वाले, सूत्र की भाषा जानने वाले, खान में काम करने वाले, हज्जाम, द्विज, कुम्हार, पुरोहित और वर्षफल जानने वाले, सफेद फूल आदि कृतिका नक्षत्र के अधीन हैं। सुव्रत, पुण्य, राजा, धनी, योगी, शाकटिक, गौ, बैल, जलचर, किसान और पर्वत रोहिणी के अधिकार में। इसी प्रकार और भी भिन्न भिन्न पदार्थों आदि के सम्बन्ध में यह बतलाया गया है कि वे किस नक्षत्र के अधिकार में हैं।

रू०भे०—नखत-व्यूह।

नक्षत्रव्रत–सं०पु० [सं०] किसी विशिष्ट नक्षत्र के उद्देश्य से किया जाने वाला व्रत। इस दिन उस नक्षत्र के देवता का पूजन भी किया जाता है।

नक्षत्रसंधि–सं०स्त्री० [सं०] पूर्व नक्षत्र मास में से उत्तर नक्षत्र मास में चंद्रादि ग्रहों का संक्रमण।

नक्षत्रसाधन–सं०पु० [सं०] नक्षत्र विशेष पर ग्रह विशेष के रहने का समय ज्ञात करने के लिए की जाने वाली गणना।

रू०भे०—नखत्र-साधन।

नक्षत्रसूचक, नक्षत्रसूची–सं०पु० [सं०] दूसरों के मतानुसार ज्योतिष संबंधी साधारण कार्य करने वाला ज्योतिषी, साधारण ज्ञान वाला ज्योतिषी।

रू०भे०—नखत्र-सूचक।

नक्षत्रसूळ–सं०पु० [सं० नक्षत्रशूल] फलित ज्योतिष में शूल का वह निवास जो विशिष्ट दिशा में विशिष्ट नक्षत्र के कारण होता है।

वि०वि०—यदि पूर्व में जेष्ठा, दक्षिण में पूर्व भाद्रपदा, पश्चिम में रोहिणी और उत्तर में उत्तर फल्गुनी हो तो उस दिशा में यात्रा करना निषिद्ध माना जाता है।

रू०भे०—नखत-सूळ।

नक्षत्रावळी-सं०स्त्री० [सं० नक्षत्रावली] १ सताईस मोतियों का बना हार। उ०—कटक, कंकण, केयूर, नूपर, करण-कुंडळ, एकावळी, कनकावळी, रत्नावळी, वज्रावळी, पद्मावळी, चंद्रावळी, सूरयावळी, नक्षत्रावळी······इति ग्रारण······।—व.स.

२ नक्षत्रों की पंक्ति।

रू०भे०—नखत्रावळी।

नक्षत्री-सं०पु० [सं०] चंद्रमा, विष्णु।

वि० [सं० नक्षत्र+रा०प्र०ई] शुभ नक्षत्र में जन्म लेने वाला, भाग्यशाली।

रू०भे०—नखत्री, नखत्री।

नक्षत्रेस-सं०पु० [सं० नक्षत्रेश] १ चंद्रमा, चांद. २ कपूर।

रू०भे०—नखतेस।

नक्षत्रेस्वर-सं०पु० [सं०] चंद्रमा, रजनीपति।

रू०भे०—नखतेसर।

नक्सानवीस—देखो 'नकसानवीस' (रू.भे)

नक्सानवीसी—देखो 'नकसानवीसी' (रू.भे.)

नख-सं०पु० [सं०] उंगलियों के छोर पर चिपटे किनारे या नोंक की तरह निकली हुई कड़ी वस्तु, नाखून।

उ०—नख हरणंख उधेड़ि नांखियौ, ग्रसुरां रिपि जुग-जुग ग्रलख। —ह.ना.

पर्याय०—करज, करसूक, नखर, पलवसुव, पुनरनव, पुनरभव, भुजा-कंठ, मारांकुस ग्रौर विखदाती।

यौ०—नख-क्षत, नख-घात, नख-शिख, नखा-घात, नखा-युद्ध।

मुहा०—१ नख ग्राणा—ग्रयोग्य को पद या ग्रधिकार मिलना।

२ नख देणा—गरीब को हानि पहुँचाना।

२ किसी न्याति के ग्रन्तर्गत पूर्व न्याति के वंश का सूचक शब्द। जैसे—दर्जी, माली ग्रादि न्यातियों में भाटी, राठौड़, सांखला प्रभृति नख पुकारे जाते हैं।

वि०वि०—राजपूतों ग्रौर ब्राह्मणों में नख नहीं होते हैं।

३ सीप या घोंघे ग्रादि के मुखावरण का गन्धद्रव्य। यह नखाकार होता है। छोटा-बड़ा ग्रौर कई रंगों का होता है, जलने पर दुर्गन्धि किन्तु तैलादि में सुगन्धि देता है। यह ग्रौषधियों में भी काम ग्राता है। (ग्रमरत)

४ बीस की संख्या* (डि.को.)

५ लाल वर्ण (डि.को.)

६ नखक्षत। उ०—नख इण भांत उगड़िया छै जांणे कनक मांहे मांणक जड़िया छै।—पनां वीरमदे री वात

७ देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.) उ०—सुज भाई काका समेत छजिया छत्रपति। पुन्नम चंद्र प्रकासिया नख जांण नखत्री।—विन्हैरासौ

रू०भे०—नह।

ग्रल्पा०—नखलियौ, नखल्यौ।

नख-ग्रायध—देखो 'नखायुध' (रू.भे.) (डि.को)

नख-क्षत-सं०पु०यौ० [सं०] नख से बना या बनाया हुग्रा चिन्ह।

नखघात—१ हज्जामों का नाखून काटने का ग्रौजार (डि.को.)

२ देखो 'नखाघात' (रू.भे.)

नख-चख—देखो 'नख-सिख' (रू.भे.)

उ०—यूं कही नै पचास ग्रसवार जीन साळिया नख-चख सूधा था त्यां री गोळ कर नै उपाड़ नांखिया।—नैणसी

नखच्छेद्य-सं०स्त्री० [सं०] ७२ कलाग्रों में से एक कला विशेष जिसमें नख से छेद कर कलाकार ग्रपनी कला प्रदर्शित करता था।

नखछीकणी-सं०स्त्री० [सं० छिक्किका] छिक्किनी, नख-छिकनी।

नखत—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ ऊडता भिड़ै छूटै उडै, ग्रसण जेम गोळा ग्रखत। ग्रग्नेक जांण छूटै ग्ररक, नवै लाख तूटै नखत।—सू.प्र.

उ०—२ केहरि छोटौ बहुत गुण, मोड़ै गयंदां मांण। लोहड़ बडाई की करै, नरां नखत परमांण।—हा.झा.

यौ०—नखत-माळ, नखत-धारी, नखत-नांमी।

नखतचकर—देखो 'नक्षत्रचक्र' (रू.भे.)

नखतजोग—देखो 'नक्षत्रयोग' (रू.भे.)

नखत-जोणी—देखो 'नक्षत्रयोनि' (रू.भे.)

नखतधारी—देखो 'नक्षत्रधारी' (रू.भे.)

उ०—धूमड़ ग्राज नह 'वाघ' ग्रोपम धारा, 'धीर' नह मनांणै नखत-धारी। 'सेर' 'दूदौ' नहिं ग्रभंग रियां सरस, माड़ री टेमियां खेड़ मारी।—सुरतौ बोगसौ

नखत-दांन—देखो 'नक्षत्रदांन' (रू.भे.)

नखत-नांमी-वि० [सं० नक्षत्र+नामिन्] १ विशिष्ट-विशिष्ट नक्षत्र में जन्म लेने वाला जिसके नामकरण में उक्त नक्षत्र का संबंध हो।

वि०वि०—ग्रश्विनी, रोहिणी, पुष्य, ग्रश्लेषा, मघा, जेष्ठा, मूल, श्रवण ग्रौर रेवती। इन नक्षत्रों में जन्म लेने वाले व्यक्ति के नाम-करण में प्राय: नक्षत्रों के प्रथम वर्ण का ग्राना ग्रावश्यकीय समझा जाता है यथा—ग्रश्विनी से ग्रासकरण, पुष्य से पुखराज, मूल से मूलसिंह।

२ भाग्यशाली, खुशकिस्मत।

नखत-नाथ—देखो 'नक्षत्रनाथ' (रू.भे.)

नखत-बीथी—देखो 'नक्षत्रवीथि' (रू.भे.)

नखत-भोग—देखो 'नक्षत्र-भोग' (रू.भे.)

नखत-माळ—देखो 'नक्षत्रमाळा' (रू.भे.)

नखतमाळा-सं०स्त्री०—देखो 'नक्षत्रमाळा' (रू.भे.)

उ०—ग्राभूखण ऐसा विराजमांन हुवा छै जांणै मेर-गिर दोळी नखत-माळ विराज रही छै।—रा.सा.सं.

नखतर—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.) (डिं.को.)

मुहा०—१ नखत्र नावणौ—अशुभ नक्षत्र में संतान के उत्पन्न होने पर २७ दिन के बाद प्रसूता (माता) को कर्मकांड की विधि से स्नान कराना।

वि०वि०—मूल, मघा, ज्येष्ठा—नक्षत्रों में बच्चे का जन्म अशुभ माना जाता है अतः इन नक्षत्रों में बच्चे का जन्म होने पर उसकी शांति हेतु जन्म से २७ दिनों बाद यज्ञादि करवाया जाता है, ब्रह्म-भोज होता है और २७ वृक्षों के पत्तों तथा २७ जलाशयों का जल आदि एकत्र करवाए जाते हैं।

२ नखतरां होवणौ—बच्चे का उपर्युक्त चार अशुभ नक्षत्रों में जन्म लेना।

नखतर-गण—देखो 'नक्षत्रगण' (रू.भे.)

नखतरधारी—देखो 'नक्षत्रधारी'

नखतरपुरख—देखो 'नक्षत्रपुरुस' (रू.भे.)

नखतराज, नखतराय—सं०पु० [सं० नक्षत्रराज] देखो 'नक्षत्रराज' (रू.भे.)

नखतवंत—सं०पु० [सं० नक्षत्रवंत] जिसके नक्षत्र शुभ हों, भाग्यशाली।

उ०—हेमकरमणि हुंस कमळ ऊहासिया, सत्रावंस त्रासिया तमर-सीमा। नखतवंत रांण घर असा नग नीपजै, भरतखंड तो जसा कंवर भीम।—कंवर भीमसिंघ रौ गीत

नखत-व्यूह—देखो 'नक्षत्रव्यूह' (रू.भे.)

नखत-समाज, नखत-समाजा—सं०पु० [सं० नक्षत्र-समाज] चन्द्रमा (डिं.को.)

नखत-सूळ—देखो 'नक्षत्र-सूळ' (रू.भे.)

नखतावळी—सं०स्त्री० [सं० नक्षत्रावलि] नक्षत्रों की पंक्ति।

उ०—हा हा दुखदाई छपना हतियारा, सज्जन सुखदाई सावळ सधियारा। निसनह निसनायक, नभ नहिं नखताळी, करदी पूनम नैं अम्मावस काळी।—ऊ.का.

वि०स्त्री० [सं० नक्षत्र+आलुच्] सुनक्षत्र वाली स्त्री, भाग्यशालिनी। ज्यूं—आ बड़ी नखताळी है, इणरै आणै रै बाद घणौ आणंद ही आणंद हुवौ।

नखतेस—देखो 'नखत्रेस' (रू भे.) उ०—फरस पांणि फावेस उमै डस-ऐस अधक्कर। निलै अरध नखतेस मसत भणऐस मधुक्कर। —सू प्र.

नखतेसर—देखो 'नक्षत्रेस्वर' (रू.भे.)

नखतैत—सं०पु० [सं० नक्षत्र+एत] सुनक्षत्र में जन्मा हुआ, भाग्यशाली।

उ०—साथ दिया सिरदार सोह नखतैत वडा नर। वाज अंबाळा वीर घंट असवारी इंदर।—दुरगादत्त बारहठ

रू०भे०—नखितैत, नखतौ।

नखतौ—देखो 'नखतैत' (रू.भे.)

उ०—हट कारेय खीज अमां हकतौ। निज बांधव आज मिळची नखतौ।—पा.प्र.

नखत्तौ—देखो 'नक्षत्री' (रू.भे.) उ०—सुज भाई काका समेति, छजिया छत्रपत्ती। पुन्यम चंद प्रकासिया, नख जांण नखत्ती।—बिन्हैरासौ

नखत्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.) उ०—१ पारवती कांन पहिराया कुंडळ, सूरिज तिण ऊगा संसार। जवहर नखत्र पाखती जड़िया, अरक तणा रथ रइ आकार।—महादेव पारवती री वेलि.

उ०—२ प्रळै साथवा फूटियौ सिंध वारध के लोप पाजां, करी धू पटैत हकै छूटियौ क्रोधार। काळै पाख महा वेग तूटियौ नखत्र किना, 'जालमौ' उताळै रोस जूटियौ जोधार।—हुकमीचंद खिड़ियौ

नखत्रगण—देखो 'नक्षत्रगण' (रू.भे.)

नखत्रचक्र—देखो 'नक्षत्रचक्र' (रू.भे.)

नखत्रप—देखो 'नक्षत्रप' (रू.भे.)

नखत्रमण—सं०पु० [सं० नक्षत्रमणि] सूर्य।

उ०—भड़ परवत खोसिया न भागै, जावौ सरपट कै जवण। ऊतर डिगै तौ डिगै 'अमरसी', मेर ऊपलौ नखत्रमण।

—महारांणा अमरसिंह प्रथम रौ गीत

नखत्रमाळ, नखत्रमाळा—देखो 'नक्षत्रमाळा' (रू.भे.)

उ०—तैं घर अंबर सह किया, जमी असमांण। नखत्रमाळा पयाळ नद, नदियां ससि भांण।—गजउद्धार

नखत्रसाधन—देखो 'नक्षत्रसाधन' (रू.भे.)

नखत्र-सूचक—देखो 'नक्षत्र-सूचक' (रू.भे.)

नखत्रावळी—देखो 'नक्षत्रावळी' (रू.भे.)

नखत्री—देखो 'नक्षत्री' (रू.भे.)

नखत्रेस—देखो 'नक्षत्रेस' (रू.भे.)

नखत्रैत—देखो 'नखतैत' (रू.भे.) उ०—वड हथ वड चीत लखपती वीरवरं, निज भल नखत्रैत विरिद घण सूरनरं।—ल.पिं.

नखनिवायौ, नखन्यायौ—वि०पु० [सं० नख-निर्वातः] नखों को सामान्य उष्ण लगने वाला, मामूली गर्म।

नखबिन्दु—सं०पु० [सं०] स्त्रियों द्वारा नखों के ऊपर महावर या मेंहदी से बनाया जाने वाला गोल या चन्द्राकार चिन्ह।

नखर—सं०पु० [सं० नखरं, नखरः] १ नख, नाखून (ह.नां., डिं.को., अ.मा.)

उ०—कर होप डाच फाड़ै कराळ। भड़पियौ डकर उर नखर भाळ।—रांमदांन लाळस

२ पंजा।

रू०भे०—नहर, नहराद।

नखरादार—वि० [फा० नखरः+दार] जिसमें बहुत नखरा हो।

उ०—छळबळिया घोड़ा भला, अलबलिया असवार। मदछकिया मारू भला, मरवण नखरादार, दारुडौ दाखां रौ।—लो.गी.

नखराबाज—देखो 'नखरेबाज' (रू.भे.)

नखराळ, नखराळौ—वि०पु० [फा० नखरः सं० आलुच्=नखराळौ] (स्त्री० नखराळी) १ नखरा करने वाला, शौकीन, छैल, छबीला।

उ०—१ पेचौ तौ सवा लाख रौ ल्यादूं, किलंगी पर भाभी अरज

करै। सुण सुण रे नखराळा म्हारा देवर, वो जळसो दिखाय ल्यावो दिल्ली को।—लो.गी.

उ०—२ चांदा तेरी चकमक रात जो कोई नणद-भोजाई पांणी नीसरी। कोई आगै आगै नणदल बाई जी जाय, लारां नखराळी भावज नीसरी।—लो.गी.

२ बदचलन। उ०—१ नाथूरांम सा वाळी, है नखराळी, पै'र घाघरो बूंटी रो; पांणी चाली टूंटी रो।—लो.गी.

उ०—२ चेली चिरताळी निज नखराळी, चितवाळी चीतंदा है।
—ऊ.का.

[सं० नखरं, या नखर:+आलुच्] ३ जिसके नाखून हों, नाखूनधारी।

सं०पु०—सिंह, चीता।

रू०भे०—नहराळ, नहराळो।

नखरेखा–सं०स्त्री० [सं०] नख का लगा या लगाया गया चिन्ह, नखक्षत।

नखरेबाज–वि० [फा० नखर:+बाज़] नखरे करने वाला, जो खूब नखरे करे।

नखरेबाजी–सं०स्त्री० [फा० नखर:+बाज+रा०प्र०ई] नखरा करने की क्रिया।

नखरो–सं०पु० [फा० नखर:] १ बनावटी चेष्टा, चंचलता, चुलबुलापन, हावभाव आदि। उ०—सजि सोळह सिणगार, केळघज कांमणी। नाजक नवली नारि भली नखरां भरी।—सिववख्स पाल्हावत

२ बनावटी चेष्टा, चंचलता, चुलबुलापन, हाव-भाव आदि की क्रिया। उ०—गर्व वांण मीठी गजब, वहै आर की पार। उळझै नखरा ऊपरै, सखरा कैई सिरदार।—महादांन महडू

वि०—१ बुरा, खराब, अशुभ। उ०—विष 'पाळ' हगीगत केम वहै, फरमाणंद पात विदात कहै। निज लागत दीह घणूं नखरो, सुकनां दिन काल किसो सखरो।—पा.प्र.

२ जो खरा न हो, खोटा।

नखलियो, नखल्यो–सं०पु०—१ पैर की अंगुली पर धारण करने का लंबा और चपटा आभूषण विशेष.

२ बढई का एक औजार. ३ सितार व वीणा आदि बजाने के लिए तर्जनी पर धारण किया जाने वाला उपकरण।

४ देखो 'नख' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—नकलियो, नकल्यो।

नखविस–सं०पु० [सं० नखविष] १ वह जिसके नाखूनों में विष हो.

२ नख के लगने से घाव में उत्पन्न होने वाला विष।

नखसिख–सं०पु० [सं० नख-शिख] १ पैर के नख से लेकर सिखा तक के सब अंग. २ पाद-नख से लेकर शिखा तक के अंगों के शृंगार और आभूषण।

वि०—सब अंगों का।

रू०भे०—नख-चख।

नखसी–सं०स्त्री०—देखो 'नकासी' (रू.भे.)

उ०—तरां पछै तरगस कड़ियां लगावै। तिकण में काळदूत री नीसरी सांठी कांकरै गजवेल रा भळका, सोनै री नखसी, तिकै बांधीजै।
—जैतसी ऊदावत री वात

नखहरणी–सं०स्त्री० [सं०] हज्जामों का नाखून काटने का औजार
(डिं.को.)

रू०भे०—नहरणी, नहहरणी, नीरणी, नैंणी, नैणी, नैरणी।

नखाघात–सं०पु० [सं० नख+आघात] नखों के द्वारा बना या बनाया गया चिन्ह, नखक्षत।

रू०भे०—नख-घात।

नखाजुध—देखो 'नखायुध' (रू.भे.)

नखानुराग–सं०स्त्री० [सं०] मेंहदी, महावर।

उ०—निदाघ में निदाघदेह बाग आग में नहीं। नखानुराग त्याग है तड़ाग भाग में नहीं।—ऊ.का.

नखायुध–सं०पु० [सं०] नख के शस्त्र वाला, सिंह, शेर।

उ०—वढ़ावत 'केहरि' केहरि बाग। नखायुध गाजत भाजत नाग।

रू०भे०—नख-आवध, नखावध, नखीयुध।

नखि—देखो 'नखी' (रू.भे.) (ह.नां., डिं.को.)

नखित—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.) उ०—अगमद वींदी भाल मभ, जाय कही छवि जोन। निस अस्टम सनि री नखित, भयो उदै ससि भौन।—अज्ञात

नखितैत—देखो 'नखतैत' (रू.भे.)

नखित्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—१ गजरा नवग्रही प्रोचिया प्रोंचे, वळै वळै विधि विधि वळित। हसत नखित्र वेधियो हिमकरि, अरध कमळ अलि आवरित।—वेलि

उ०—२ माही त्रेताजुग चैत्रमास संक्रान्ति मेखि सरि। करक लगन पख सुकल धरा पुन्नवसु नखित्र धुरि।—सू.प्र.

नखित्र-माळ, नखित्र-माळा—देखो 'नक्षत्रमाळा' (रू.भे.)

उ०—पारस प्रासाद सेन संपेखै, जांणि मयंक की जळहरी। मेरु-पाखती नखित्रमाळा, ध्रू संकर धरी।—वेलि.

नखिद–सं०पु० [सं० निषिद्ध] निषिद्ध कार्य या पदार्थ।

वि०—बुरा, निषिद्ध।

नखी–वि० [सं० नखिन्] जिसके नख हों।

उ०—कै दंती स्रंगी किता, किता नखी वन जंत। समझाया दे दे सजा, सादूळै वळवंत।—बां.दा.

सं०पु०—१ सिंह, चीता. २ नख नामक गंध द्रव्य।

उ०—नेतु निगुडि निरंजनी, नाळकेर नारिंग। नागबला निरविखि नखी, निकुली निरमळ संग।—मा.कां.प्र.

रू०भे—नंखी, नखि।

नखीयुध—देखो 'नखायुध' (रू.भे.) (अ.मा.)

नखीर—देखो 'नकसीर' (रू.भे.)

नखेद, नखेध-वि० [सं० न+खेदः] १ वह जिसे खेद न हो, उदासी-रहित, दुःख रहित.
२ वह जिसे शर्म न हो, शरारती.
३ कुलटा.
४ मूर्ख (अ.मा.)
सं०स्त्री०—मृत व्यक्ति के यहां संवेदना प्रकट करने के लिए जाने की प्रथा (शेखावाटी)।
रू०भे०—निखेद।

नखेर—देखो 'नकसीर' (रू.भे.)

नखै, नखै—देखो 'नर्क' (रू.भे.)
उ०—१ बादसाह साहजहां नखै आगरै गयो, पांव जा लागियो।
—राठौड़ राजसिंह री वारता
उ०—२ अणी चढि खेत्रि जसवंत सूं आहुड़ी। पिय नखै पोढ़सी नहीं पणिहारड़ी।—हा.झा.

नख्ख—देखो 'नख' (रू.भे.)
उ०—हिरणाकुस नै हणै, निडर फाड़े उर नख्ख।—र.रू.

नख्यत—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

नग-सं०पु० [सं० न गच्छतीति नगः] १ पर्वत (डिं.को.)
उ०—नग अळगो रजनी हद नेड़ी, आसो कद भडलै उचत। सुणता वेंद उचार सियापत, दिल विचार रहिया दुचित।—र.रू.
२ चरण, पैर (डिं.को.)
उ०—१ नग रज गौतम नार, जेण ऊधरी जग जांणै। धनुख भंज सीय वरी, प्रथीभुज जोर प्रमांणै।—र.ज.प्र.
उ०—२ वड-वडा भड़ विकराळ, कमधज्ज चढ़ि कळचाळ। धर धूजि अस नग धोम, वणि गरद धूंधळि वोम।—सू.प्र.
३ वृक्ष, पेड़ (डिं.को.) उ०—जठै झाड़ियां खंड खोखंड जेड़ी। नगां पुंजरी मंजरी रूप नेड़ी।—मे.म.
४ कुपुत्र के लिए रत्न-रूप में व्यंग्य।
उ०—मात पिता में दोसण मोटो, प्रथम मिळया सुख पाई नै। नग दोनां मिळ ओ निपजायो, हिया फूट हरखाई नै।—ऊ.का.
५ संतान, पुत्र। उ०—१ छोकड़ा मांहे जोवै, तठै देखै तो अस्त्री छै। देख नै माथो धूंणै छै। नै जांण्यो परमेसर रा घर मांहे घणो रिध छै नै आ जो म्हारै वैर होय नै इण रै पेट रो कोई नग नीपजै तो हूं प्रथ्वी मांहे अमर होवूं।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
उ०—२ भूप अपछर भेळाह, रंग मांणण दोहूं रहै। वढ की सुभ वेळाह, नग पावू सिध नीपनो।—पा.प्र.
६ मोती। उ०—केहर हाथळ घाव कर, कुंजर ढिगलो कीध। हंसां नग हर नूं तुचा, दांत किरातां दीध।—वां.दा.
७ रत्न, जवाहर। उ०—१ के जहुरी कविराज, नग मांणस परखै नहीं। काज क्रपण वेकाज, रळिया सेवै राजिया।—किरपारांम
उ०—२ निधि गजराज तुरंग नग, मेद्ध करी मनुहार। हित दीधो राखी निजर, कीधो विदा सवार।—रा.रू.
८ बहुमूल्य पत्थर आदि का वह रंगीन चमकीला टुकड़ा जो शोभा के लिये आभूषणों, वस्त्रों आदि में जड़ा जाता है।
उ०—अंतर नीळंबर अवळ आभरण, अंगि अंगि नग नग अदित। जांणै सदनि सदनि संजोई, मदन दीपमाळा मुदित।—वेलि.
९ संख्या, चीज, इकाई।
ज्यूं—इण में कुल कितरा नग है? इण में लिफाफो, पोटळी, तसवीर नैं घड़ी कुल चार नग है।
१० सात की संख्या*. ११ नागोर शहर का एक नाम।
उ०—सवळ अचड़ नग-कोट सराहै, साराहै अखियात सुर। प्रिथम-कळोवर पड़ियां पाछै, प्रिसणे लीधो बीकपुर।
—महेसदास सांखला रो गीत
(मि० नगीनो २)
वि०—गमन नहीं करने वाला, अचल, स्थिर।
रू०भे०—नंग।

नगज-सं०पु० [सं० नग+ज] हाथी।

नगजा-सं०स्त्री० [सं० नग+जा] १ पार्वती. २ नदी।

नगटाई—देखो 'नकटाई' (रू.भे.)

नगटो—देखो 'नकटो' (रू.भे.)
(स्त्री० नगटी)

नगण-सं०पु० [सं०] एक गण विशेष, जिसमें तीनों वर्ण लघु होते हैं।

नगणी, नगाणी-सं०स्त्री०—प्रथम एक जगण फिर एक दीर्घ वर्ण का छंद विशेष (पिंगळ)

नगदंती-सं०स्त्री० [सं०] विभीषण की स्त्री का नाम (रामकथा)

नगद-सं०पु० [अ० नक़द] १ तैयार रुपया, रुपया पैसा, सिक्कों के रूप में धन।
वि०—१ जो तैयार हो (रुपया), (धन) जो तुरंत काम में लाया जा सके।
मुहा०—नगद नांणा नैं बींद परणीजै कांणा—पैसों से सभी कार्य संभव हैं।
२ खास।
मुहा०—नगद जंवाई होवणो—१ खास होना. २ उसके ऊपर का होना।
रू०भे०—नकद।

नगदी [अ० नक़द+रा०प्र०ई] रोकड़, धन, रुपया-पैसा, सिक्का।
उ०—चूकै नगदी नेग, गाण ग्रह देव्यां मांडै।—दसदेव
रू०भे०—नकदी।

नगधर-सं०पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण. २ हनुमान. ३ गरुड़।
उ०—सिंधळ पर धर जांण ईसर, छांड नगधर धरण दूधर। मकर यर सर चकर मोखर, फंद हर पग सधर कर फिर।—र.ज.प्र.

नग-नंदनी-सं०स्त्री० [सं०] १ हिमालय की पुत्री, पार्वती. २ गंगा. ३ नदी।

नगन–सं०पु० [सं० लग्न] लगन, विवाह, मुहूर्त ।
उ०—नगन वेळा लगि जोई वार, नाया तुम्हें थयउ उचार । नेह लगन जउ किमहि टळइ, वळतउ वरस पंच नवि मिळइ ।—ढो.मा.
नगनायक—१ पर्वतों का नेता (राजा) हिमालय.
२ कैलाश पर्वत । उ०—नगनायक चा नाह, विच जरजूट वसावियो । पावन गंग प्रवाह, प्रांणी तू कद परसही ।—वां.दा.
नगपति–सं०पु० [सं०] १ पर्वताधिराज, हिमालय.
२ चंद्रमा.
३ कैलाश पर्वत के स्वामी, शिव.
४ समेरु ।
रू०भे०—नगांपत ।
नगभिद–सं०पु० [सं० नगभिद्] पर्वत को भेदने वाला, इन्द्र ।
नगमिणप्रभा–सं०पु० [सं० नगमणिप्रभा] सुमेरु, पर्वत (अ.मा.)
नगरंध्रकर–सं०पु० [सं०] कार्तिकेय ।
नगर–सं०पु० [सं० नगरम्] शहर (उ.र) (डि.को.)
पर्याय०—अविस्थांन, निगम, निवेसन, नृपस्थान, पट्टण, पुरभेदण, पुरपतन, निवेसण, पुर, पुरी, यळप्रभा, सुखधाम, सहर ।
रू०भे०—नइर, नगरू, नग्गर, नग्र, नयर, नयरि ।
अल्पा०—नगरी, नग्री, नयरी, नैर, नियरि ।
मह०—नगरो ।
नगर-कीरतन–सं०पु० [सं० नगरकीर्तनम्] ईश्वर के नाम व गुणों का संगीतात्मक गायन, जो नगर की सड़कों और गलियों में घूम-घूम कर कुछ लोगों से किया जाय ।
नगरतीरथ–सं०पु० [सं० नगर+तीर्थ] गुजरात का एक तीर्थ विशेष जहाँ शिव का निवास माना जाता था ।
नगरनाइका, नगरनायका, नगरनायिका–सं०स्त्री० [सं० नगर+नायिका] वेश्या, रंडी, नगरवधू (डि.को.)
उ०—१ ताहरां राजा नगरनाइका तेड़ी । तूं कुंवरी रै महल में... निगाह कर ।—चौवोली
उ०—२ नगरनायका रूप अपार, नितु नितु करइ नवा सिणगार ।
—कां.दे.प्र.
उ०—३ चोहटै मांहे नगरनायिका वेश्या लाख लाख री लहणहार सोळै सिणगार ठवियां थकां फूलां रा चौस पैहरियां थकां टोय अणियाळा काजळ ठांसियां थकां वांकां नैणां री झोक नांखती पायल रै ठमकै सूं घूघरै रै घमकै सूं बिछियां रै छमकै सूं रमझोळ करती अंगूठा मोड़ती नखरा करती बाजारि चाली जाय छै ।—रा.सा.सं.
नगरनारी–सं०स्त्री० [सं०] वेश्या, रंडी ।
नगर-पाळ–सं०पु०यौ० [सं० नगरपाल] नगर रक्षक ।
नगर-मारग–सं०पु०यौ० [सं० नगर+मार्ग] शहर का बड़ा और चौड़ा रास्ता, राजपथ ।
नगर-सेठ–सं०पु०यौ० [सं० नगर+श्रेष्ठिन्] १ नगर का सब से धनाढ्य व्यक्ति. २ एक पदवी जो राजाओं द्वारा अपने नगर या राज्य के किसी सेठ (वणिक) को दी जाती थी ।
उ०—नगर-सेठ घर चौधरी, कोड़ीधज के कन्न । मोटा पुंगळ देस में, नेमीसाह रतन्न ।—पना वीरमदे री वात
रू०भे०—नग्र-सेठ ।
नगराध्यक्ष–सं०पु० [सं०] नगर का स्वामी ।
नगरी–सं०स्त्री० [सं०] देखो 'नगर' (अल्पा., रू.भे.)
नगरू—देखो 'नगर' (रू.भे.) (उ.र.)
नगरो—१ देखो 'नगर' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'कीड़ी नगरी' ।
नगवार–सं०पु० [देश० नग+वार] १ मकान बनाने में विशेष अवसर (स्थान) पर प्रयुक्त किया जाने वाला महत्वपूर्ण आधार-पत्थर ।
वि०वि०—यह पत्थर द्वार के चौखटे के ऊपर तथा ऊपर की छत के नीचे आधार-रूप में प्रयुक्त किया जाता है, इस पत्थर को भली-भांति गढ़ कर लगाया जाता है ।
नगांपत—देखो 'नगपति' (रू.भे.)
नगाड़-बंद(ध), नगाड़ाबंद(ध)—देखो 'नगार-बंध' (रू.भे.)
नगारखांनो–सं०पु० [फा० नक्कार+खाना] १ राजकीय नगाड़े रखने का स्थान. २ राजा या बादशाह की ड्योढ़ी पर नगाड़े रखने का स्थान जहां यथा समय नगाड़े बजा करते थे ।
वि०वि०—ये ड्योढ़ी के नगाड़े राजा के गमनागमन के तथा प्रातः, मध्यान्ह या सायं समय सूचक के रूप में बजा करते थे ।
रू०भे०—नकारखांनो ।
नगारची–सं०पु० [फा० नक्कार+रा०प्र०ची] १ राजा, सामन्त आदि धनाढ्यों के यहां नगाड़ा बजाने वाला ।
उ०—१ 'निजर' अनै 'करीम' विन्है पड़दार बहादर । नगारची 'नाहरो' हाक करी औरै हैमर ।—सू.प्र.
उ०—२ विचित्र कुंवर री नगारचीं, बाजदार वैठा ठावका उवां रा गुण सुण लजाय वैठा । भली-भांति भुंजाई जीमिया ।
—पलक दरियाव री वात
२ एक जाति विशेष, जिसके व्यक्ति नगाड़ा या नौबत बजाने का कार्य करते हैं । उ०—डूंगसीह रण धावां अरोड़ महावीर पड़ रांण असुर मोड़ । सिंधिया थाट हतखेत साज, पाड़ियो खेत नगारची वाज ।—शि.सु.रू.
रू०भे०—नंगारची, नकारची, नक्कारची, नगारी ।
नगारबंद(ध), नगाराबंद(ध) नगारिय–सं०पु० [फा०नक्कार+रा० बंध]
१ वह सामन्त या ठाकुर जिसे यथावसर बजाने के लिए राजा या बादशाह द्वारा अपना नगाड़ा बांधने व बजाने का अधिकार प्राप्त हो.
२ नगाड़ा धारण करने व बजाने का अधिकार-प्राप्त वीर ।

उ०—१ समक्कै नगारबंध लटक्कै नाग रा सीस। आगरा अंगार तोपां भटक्कै आवाज।—रावत भीमसिंह चूंडावत रौ गीत

उ०—२ भुरजां भुरजां बापू कारिया एड़ियां भड़ां, ठलै हलौ जनेवां भेड़िया ठांम ठांम। नवा कोटां नाथ रा छेड़िया काळा नाग नांई, तैं सीस नगाराबंध तेड़िया तमांम।—गोपाळजी दधवाड़ियौ

नगारी—१ देखो 'नगारची' (रू.भे.)

उ०—१ लोभइ धरमलोप आदरइ, लोभइ सगा सहोदर मरइ। लोभइ एक नर पाड़इ बार, मारइ विपु नगारी भाट।—का.दे.प्र.

उ०—२ पायक तणुं पहटि, बहुली लागि तणइ चीरकारि, भाट नगारी तणइ कणवारि, राजा राजवाटिकां चडिउ।—व.स.

२ देखो 'नगारौ' (अल्पा., रू.भे.)

नगारौ-सं०पु० [फा० नक्कार] बाएं तबले के आकार का एक वृहद् वाद्य, नगाड़ा।

वि०वि०—यह मंदिर, राजद्वार आदि स्थानों पर प्रायः युग्म रूप में रहता है। पूजाकाल में मंदिर में यथा प्रातः, मध्यान्ह व सायंकाल में राजा रानी के गमनागमन पर राजद्वार पर इसे बजाया जाता है। नगारचियों के यहाँ भी यह युग्म रूप में रहता है किंतु वहाँ इसका बायां बहुत छोटा होता है और इनका मिश्रित रूप 'नौबत' के नाम से पुकारा जाता है। विवाह, उत्सव व युद्धकाल में यह युग्म रूप में सेनादि के आगे ऊँट या घोड़े पर स्थित रहता है और इसे जोरों से बजाया जाता है। उस समय यह 'नगारा-निशान' का नाम धारण करता है।

उ०—बापू तणा नगारौ बागौ, जागौ सा कमधजिया जागौ।
—लालसिंघ जोधा रौ गीत

पर्याय०—ईडक, जांगी, त्रंबक, त्रंबाळ, दमांम, दुंदुभि, दुजीह, धूंसौ, नीसाण, बंब, भेरी।

मुहा०—१ नगारा री चोट—खुले आम, डंके की चोट.
२ नगारा रौ ऊँट—निर्लज्ज, ढीठ. ३ नगारौ घुरणौ—यश फैलना, आतंक या प्रभाव बढ़ना. ४ नगारौ बजाणौ—सावधान होना.
५ नगारौ देरावणौ—ललकारना।
६ नगारौ वाजणौ—युद्ध की सूचना होना।

यौ०—नगारखांनौ, नगारबंध।

रू०भे०—नंगारौ, नकारौ, नगारौ, नागारौ।

अल्पा०—नगारी।

नगीन-सं०पु०—१ प्रवाल, मूंगा (अ.मा)
२ देखो 'नग' (रू.भे.)

वि०—श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—इण रै जगत्र महूं, नागोर नगीनह दादौ जागतउ। भाव भगति सुं भेटतां, भव दुख भागतउ।—स.कु.

नगीनासाज-सं०पु० [फा० नगीना साज़] नगीना बनाने या जड़ने का काम करने वाला।

नगीनौ-सं०पु० [फा० नगीन:] १ शीशे या पाषाण का चमकने वाला कीमती पदार्थ, रत्न। उ०—महिमा तिनकी महि में महि में, जिन दीनौ मह इक ग्यांन नगीनौ। दूर भग्यौ भ्रम सो तम देखत, पूर जग्यौ परकास नवीनौ।—ध.व.ग्रं.

२ राजस्थान का इतिहास-प्रसिद्ध शहर, नागौर।

उ०—१ चालो चालो नगीनो रै देस मा'री सुंदर गोरी रे। थां रौ पीहरियौ म्हांरौ सासरौ हो राज।—लो.गी.

उ०—२ मांभी जिकै हुता गढ़ मांहे, खिसि गा आयै मरण खरै। इम लीजतो नगीनो आखै, 'मधकर' हुवै त तूटि मरै।
—महेस कल्यांणमलोत सांखला रौ गीत

उ०—३ सुण पतसाह कोपसर सेरी, 'अजन' मिळण चढ़ियौ आंबेरी। हूंत नगीनै 'अजमल' हालै, चतुरंगी सेन्या संग चालै।—रा.रू.

नगेंद्र-सं०पु० [सं० नग+इन्द्र] पर्वतराज, हिमालय।

नगेम-वि० [सं० निस्+गमः=बुरा=पाप] निष्पाप, निष्कलंक।

उ०—नकळंक, नपाप, नगेम, नेरहण, अवतरिया जा कुळ अमर। हिंदू सो को उरै हमीरा, हिंदवै वडा हमीर हर।—दुरसौ आढौ

रू०भे०—निगेम।

नगेस-सं०पु० [सं० नग+ईश] पर्वतों का स्वामी, हिमालय।

नगोड़ो, नगोडौ-वि० [सं० नक्र रा०प्र० ढ़ियौ नगउढियौ, नगोढियौ, नगोडौ] (स्त्री० नगोड़ी, नगोडी) १ नकटा, निकम्मा, निर्लज्ज.

२ कम्बख्त, हतभाग्य। उ०—अब मोहबत कौन कांम को, गिरधर बिनाह नगोडी। लोग कहै काळी कांमळी वाळी, म्हारै तौ लाख किरोड़ी।—मीरां

रू०भे०—नंगोडौ, निगोड़ौ, निगोडौ।

नगोदर, नगोदरु, नगोदरू—देखो 'निगोदर' (रू.भे.) (व.स.)

उ०—१ यह निरतीय कज्जळरेह नयणि मुहकमळि तंबोळी, नगोदर कंठळउ कंठि अनुहार विरोळी।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ कंठु नगोदरु फुल्लमाळ उरि नवसर हारो। करै ठिय कंकण रयणवळय, मुंद्रडिय अपारो।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—३ ससि रविमंडळ मांनि, दीपइं कुंडळ कांनि, तिलक मनोहरू ए, कठि नगोदरू ए।—प्राचीन फागु-संग्रह

नगोरौ—देखो 'नगारौ' (रू.भे.)

उ०—इतरै उण वखत रा ढोल नगोरा वाजिया जिका सुण'र पूछी।—पदमसिंह री वात

नग्गर—देखो 'नगर' (रू.भे.)

उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, पाछै पीळी पज्ज। नव पाढा नग्गर वसइ, मो मन सूंनउ अज्ज।—ढो.मा.

नग्गौ—देखो 'नागौ' (रू.भे.)

नग्र—देखो 'नगर' (रू.भे.)

नग्र-सेठ—देखो 'नगर-सेठ' (रू.भे.)

नग्री—देखो 'नगर')

उ०—नग्री सोनमेनी पछै गांम नाहीं। महा कासटा घोर ऊजाड़ मांही।—मे.म.

नग्रोध—देखो 'न्यग्रोध' (रू.भे.) (ह.नां.)

नघर—सं०पु० [देश०] बैल की नाक में डाली जाने वाली रस्सी, नाथ।

उ०—बळदां रै भूल ज सोभती, नाकै नघर साल रे लाल।
—जयवांणी

नघात—देखो 'निघात' (रू.भे.)

नड़—सं०पु० [सं० नल=प्रा० णड] १ नदी, नाला।

उ०—वरसतै दड़ड़ नड़ अनड़ वाजिया, सघण गाजियौ गुहिर सदि। जळनिधि ही सामाइ नहीं जळ, जळवाळा न समाइ जळदि।
—वेलि.

२ मुँह पर टेढ़ा रख कर बजाया जाने वाला एक वाद्य।

३ बंदूक की नली में पड़ी हुई तिरछी व सीधी धारें, जिन पर छोटी-छोटी बिंदिएँ होती हैं।

४ देखो 'नौड़िया' (मह., रू.भे.)

५ देखो 'नड' (रू.भे.)

६ देखो 'नाड़ी' (मह., रू.भे.)

७ देखो 'नळ' (रू.भे.)

वि०—बंधन में आने वाला, कायर।

नड़ण—सं०पु०—योद्धा, वीर।

वि०—बंधन में डालने वाला।

नड़णौ, नड़बौ—क्रि०स० [सं० अदि बंधने के विपर्यय से नड] १ बांधना. २ बंदी बनाना। उ०—१ नवढ़ कमधज जंतु अनड़ नड़िया। ऊद ऊत तुझ भय भांण ऊत अहोनिस।— देवराज रतनू

उ०—२ नड़ै सहि नाग अनै नरइंद।—रा.रू.

३ रुकावट डालना, रोकना। उ०—नोपणां वित वाहर कोण नड़ै, चारणां धन खोस लियौ चवड़ै।—पा.प्र.

नड़णहार, हारौ (हारी), नड़णियौ—वि०।

नड़वाड़णौ, नड़वाड़बौ, नड़वाणौ, नड़वाबौ, नड़वावणौ, नड़वावबौ, नड़ाड़णौ, नड़ाड़बौ, नड़ाणौ, नड़ाबौ, नड़ावणौ, नड़ावबौ—प्रे०रू०।

नड़िओड़ो, नड़ियोड़ो, नड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

नड़ीजणौ, नड़ीजबौ—कर्म वा०।

नडणौ, नडबौ, नाड़णौ, नाड़बौ—रू०भे०।

नड़—देखो 'नैड़ो' (रू.भे.) उ०—वइरियां मोरि देखाळि वड्ड, गोरियां राइ गाहिया गड्ड। हिंदुआं तुरक्कां दाखि हाथ, नड़ि लगउं उडीसइ जग्गनाथ।—रा.ज.सी.

नड़ियोड़ो—भू०का०कृ०—१ बंदी बनाया हुआ. २ रोकाया हुआ, रुकावट डाला हुआ. ३ बांधा हुआ।

(स्त्री० नड़ियोड़ी)

नड़ी—देखो 'नाड़ी' (रू.भे.) उ०—सखी अमीणां कंथ री, अंग ढीली आचंत। कड़ी ठहक्कै बगतरां, नड़ी नड़ी नाचंत।—हा.झा.

नचंत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.) उ०—पोस जोस सरद तनां, जाडो पड़ै अनंत। दिलवर वसत दिसावरां, बैठ्या आप नचंत।—लो.गी.

नचणौ, नचबौ—देखो 'नाचणौ, नाचबौ' (रू.भे.)

उ०—१ पतित न्हाय ह्वै पीत पट, दिपै निकट रिखदेव। नचै मुगत नटनार ज्यूं, स्रीगंगा तट सेव।—बां.दा.

उ०—२ वस प्रांणी सब करम रै, करम सु प्रेरणहार। नाच नचावै त्यां नचै, ज्यों पुतळी खेलार।—रा.रू.

नचणहार, हारौ (हारी), नचणियौ—वि०।

नचिओड़ो, नचियोड़ो, नच्योड़ो—भू०का०कृ०।

नचीजणौ, नचीजबौ—भाव वा०।

नचनची—सं०स्त्री० [सं० नृत्] नाचने की प्रबल इच्छा, गुदगुदी (?)

उ०—हर नाचवा लागी वडी वडी। जिण भांत ढोलड़ी बागां नट नूं नचनची लागै, इण भांत इण वेळां रजपूतां री रजपूतवट जागै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

क्रि०प्र०—आणी, ऊठणी।

नचाड़णौ, नचाड़बौ—देखो 'नचाणौ, नचाबौ' (रू.भे.)

नचाड़णहार, हारौ (हारी), नचाड़णियौ—वि०।

नचाड़िओड़ो, नचाड़ियोड़ो, नचाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

नचाड़ीजणौ, नचाड़ीजबौ—कर्म वा०।

नाचणौ, नाचबौ—अक०रू०।

नचाड़ियोड़ो—देखो 'नचायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नचाड़ियोड़ी)

नचाणौ, नचाबौ—क्रि०स० [सं० नृत्, प्रा० णच्च] १ नाचने का काम कराना; नाचने में प्रवृत्त कराना, नृत्य कराना.

२ इधर-उधर हिलाना, घुमाना, फेरना (किसी वस्तु आदि को) ज्यूं—लट्टू नचाणौ।

मुहा०—आंखियां नचाणी—आंखों की पुतलियों को इधर-उधर घुमाना, आंखें चंचल करना, चंचलता पूर्वक इधर-उधर देखना।

३ किसी को बार-बार इधर-उधर घुमाना, अनेक कार्य करने के लिए विवश कर के तंग करना, हैरान करना।

मुहा०—नाच नचाणौ—बार-बार इधर-उधर घूमने अथवा उठने-बैठने के लिए बाध्य कर के हैरान करना, अनेक कार्य करने के लिए विवश कर के तंग करना।

नचाणहार, हारौ (हारी), नचाणियौ—वि०।

नचायोड़ो—भू०का०कृ०।

नचाईजणौ, नचाईजबौ—कर्म वा०।

नचाड़णौ, नचाड़बौ, नचावणौ, नचावबौ—रू०भे०।

नाचणौ, नाचबौ—अक०रू०।

नचायोड़ो—भू०का०कृ०—१ नाचने का कार्य कराया हुआ, नाचने में प्रवृत्त किया हुआ, नृत्य कराया हुआ. २ इधर-उधर हिलाया हुआ, घुमाया हुआ, फेरा हुआ (किसी वस्तु आदि को).

३ किसी को बार-बार इधर-उधर घुमाया हुआ, अनेक कार्य करने के लिए विवश कर के तंग किया हुआ, हैरान किया हुआ ।

(स्त्री० नचायोड़ी)

नचावणो, नचावबो—देखो 'नचाणो, नचावो' (रू.भे.)

उ०—अखंडा ब्रह्मंडा अखिल इक दोसी तव अगे । जराहा आहा तूं सुलभ सब देसी सब जगे । रचे तूं ढाहे तूं नियम जुत चाहे फिर रचे । नचावै जीवां को निडर निज बाह्यांतर नचे ।—ऊ.का.

नचावणहार, हारो (हारी), नचावणियो—वि० ।

नचाविश्रोड़ो, नचावियोड़ो, नचाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नचावीजणो, नचावीजबो—कर्म वा० ।

नचावियोड़ो—देखो 'नचायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नचावियोड़ी)

नचित—देखो 'निश्चित' (रू.भे.)

उ०—१ साधु जन सोई रे, वरतै ग्यांन इसा । तन मन जीता रे, निरभै नचित दिसा ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ लड़ै नचित लोह नह लागै । जिको सूर तपसी सम जागै ।
—सू.प्र.

नचितो—देखो 'निश्चित' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—'भीमाजळ' वळ आगलो, भीम अरज्जण जेम । करण नचिता राठवड़, ओडी चिता एम ।—रा.रू.

नचिकेता—सं०पु० [सं० नचिकेतस्] १ वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था. २ आग ।

नचींत—देखो 'निश्चित' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ ऊंची सी मैड़ी रावटी, वें में माळी को सोवै ए नचींत, म्हांरै रंग वनड़े रा सेवरा ।—लो.गी.

उ०—२ जंबक सबद नचींत कर, डर कर तूं मत भाज । सादूळो खीजै सुणे, जळहर हंदो गाज ।—बां.दा.

नचींतड़ो—देखो 'निश्चित' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—आवो प्यारी घण, मते ए बैठां । करां ए नचींतड़ी बात ।
—लो.गी.

(स्त्री० नचींतड़ी)

नचीत—देखो 'निश्चित' (रू.भे.)

नचीताई—देखो 'नश्चितता' (रू.भे.) उ०—भारमलजी स्वांमी नै स्वांमीजी कह्यो—अबै थांरै नचीताई थई । आगै तौ म्हें हां अनै अबै पाखंडियां सूं चरचादिक रौ कांम पड़ै तौ हेमजी हैईज ।—भि.द्र.

नचीतो—देखो 'निश्चित' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—१ आभ पड़ी वरसै अबै, मेहां भड़ी अमंत । ऐसी रुत में एकला, कियां नचीता कंत ।—अज्ञात

उ०—२ गाल बजावै गोलणां, गोल संवारै गात । सदा नचीता संचरै, सदा सुहागण मात ।—बां.दा.

(स्त्री० नचीती)

नचीयण—वि०[सं० नृत्] नाचने वाला । उ०—लयण मालंण चयण लोभण, नयण अहफुंण चढण नचीयण ।—मुरारदास बारहठ

नच्चणो, नच्चबो—देखो 'नाचणो, नाचबो' (रू.भे.)

उ०—१ मिळै नमीठ वेग रीठ खाग रीठ मच्चए । निरखि धीर खेत वीर प्रेत वीर नच्चए ।—रा.रू.

उ०—२ अनेक पद्मणी अवास, रूप भोमि रच्चए । अनेक राग रंग ओप, नृतकार नच्चए ।—सू.प्र.

नच्चन—सं०पु० [सं० नर्तनम्] नाच, नृत्य ।

नच्चियोड़ो—देखो 'नाचियोड़ो' (रू.भे.)

नच्यंत—देखो 'निश्चित' (रू.भे.)

उ०—जोगी कहै प्रतीव्रता ! सुणेस हुइ नच्यंत । प्रीव धारौ आव्यौ है छह मास वसंत ।—वी.दे.

नछत्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—पुख नछत्र नई कातिक मास ।—वी.दे.

नछत्री—१ देखो 'निक्षत्री' (रू.भे.)

उ०—कथां नांमी साजियौ, हरांमी भड़ां तणै कहै, कीधी की अमांमी कीधी नमांमी कुलाट । सुछत्री मारियौ दगा सूं राज हिंदवां सूर, पाट पती तीं सूं हुयौ नछत्री मेवाट ।—राजा राघोदेव रौ गीत

२ देखो 'नक्षत्री' (रू.भे.)

नजदीक—वि० [फा०] पास, निकट ।

उ०—१ अनुज नमै तदि अग्रजै, ठह ताजीमां ठीक । करौ कुरव्वां पलक करि, दिय आसण नजदीक ।—सू.प्र.

उ०—२ *रोम रोम आंमय रहै, पग पग संकट पूर । दुनियां सूं* नजदीक दुख, दुनियां सूं सुख दूर ।—बां.दा.

रू०भे०—नजिक, नजीक, नजीग, निजिक, निजीक, निजिकी, निजीख ।

नजदीकी—सं०स्त्री० [फा०] सामीप्य, निकटता ।

वि०—निकटता ।

रू०भे०—नजीकी ।

नजर—सं०स्त्री० [अ० नज़र] १ चितवन, दृष्टि, निगाह ।

उ०—दिल साजनां *दुमेळ, नीच संग ओछी* नजर । *अति सबळो* ऊखेल, पैलां घर वांछै पिसण ।—बां.दा.

मुहा०—१ नजर आणी (आणो)—नजर आना, दृष्टिगोचर होना, दिखाई देना. २ नजर चढ़णी (चढ़णो)—नजर पर चढ़ना, भला मालूम होना, पसन्द आ जाना, भा जाना । यकायक दिखलाई देना, दीख पड़ना. ३ नजर पड़णी—देखने में आना, दिखाई देना. ४ नजर फेंकणी—नजर फेंकना, सरसरी दृष्टि से देखना । दृष्टि डालना, दूर तक देखना. ५ नजर बांधणी—किसी की दृष्टि में जादू या मंत्र आदि के जोर से भ्रम पैदा कर देना, कुछ का कुछ कर दिखाना ।

२ आंख, नेत्र (ना.डि.को.)

३ किसी अच्छे पदार्थ, सुन्दर मनुष्य आदि पर पड़ कर उसे विकृत अथवा खराब कर देने वाला दृष्टि का कल्पित प्रभाव जिसे प्राचीन काल से अब तक बहुत से लोग मानते हैं, दृष्टि-दोष।

ज्यूं—छो'रा नै वा'रै मती लिजा, नजर लाग जाई।

मुहा०—१ नजर उतारणी—नजर उतारना। किसी मंत्र या युक्ति से दृष्टि-दोष को हटाना. २ नजर लगाणी—बुरी दृष्टि का प्रभाव डालना, दृष्टि-दोष लगाना. ३ नजर लागणी—बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना, दृष्टि-दोष होना. ४ नजर होणी—देखो 'नजर लागणी'।

४ मेहरबानी से देखने का भाव, कृपा-दृष्टि, शुभ-दृष्टि।

ज्यूं—म्हारै माथै बस आपरी नजर बणी रहै पछै म्हांनै कीं सोच कोयनी।

क्रि०प्र०—रै'णी।

मुहा०—नजर राखणी—मेहरवानी रखना, कृपादृष्टि रखना।

५ ख्याल, ध्यान।

ज्यूं—थांरी नजर में वाई रै सगपण सारू कोई टावर है कई ?

मुहा०—नजर में होणी—जानकारी में होना।

६ देखरेख, निगरानी।

ज्यूं—म्हे तीरथां जावां हां, आप म्हांरै घर माथै नजर राखजो।

क्रि०प्र०—राखणी।

७ पहचान, परख, शिनाख्त।

ज्यूं—विस्नोई घी लायो है, सैंग कैवै चोखो है अवै देखां आपरी नजर कैड़ी'क है।

ज्यूं—थे कहो हो कै रिपियो खोटो कोयनी, पण थांरै कैयां सूं कांई हुवै, म्हारी नजर में तो ओ रिपियो साव खोटो हो, वळै चार भायां नै देखाय लो।

ज्यूं—म्हारी नजर में ओ आदमी ठीक नी है।

[अ० नज्र] ८ उपहार, भेंट। उ०—हासंग पेख महराज रंग। उड गयण वाज तुररा अळंग। भेजे सताव नजरां भुआळ। रवदाळ अतर जवहर रसाळ।—वि.सं.

६ राजा-महाराजाओं के समय में प्रचलित अधीनता सूचित करने की एक रस्म विशेष जिसमें छोटे लोग और अधीनस्थ या प्रजा वर्ग राजा, महाराजाओं और जमीदारों आदि के सामने किसी विशिष्ट उत्सव, दरबार अथवा त्यौंहार के अवसर पर हथेली में नकद रुपया अथवा अशरफी रख कर लाते थे। इस धन को कभी तो छू कर छोड़ दिया जाता था और कभी ग्रहण कर लिया जाता था।

उ०—वरखै रंग विसेस, झमरां ऊपरै। करै नजर कर जोड़, भड़ सूं फिर भूप रै। मिळ कोई माहोमाह दिवै रंग डोलियां। गोट सूं उडै गुलाब, तठै अणतोलियां।—सिववक्स वारहठ

क्रि०प्र०—करणी, झेलणी, देणी, लेणी।

रू०भे०—नजरि, नज्र, निजर।

नजर-कैद-सं०स्त्री०यौ० [फा०] एक प्रकार की सजा जिसमें कैदी को किसी स्थान की निश्चित सीमा से बाहर नहीं जाने दिया जाता है तथा हथकड़ी नहीं पहनाई जाती है।

रू०भे०—निजर-कैद।

नजर-दौलत-सं०स्त्री०यौ० [अ० नज्र+दौलत] राजा महाराजाओं तथा बादशाहों की सवारी के समय सवारी के अगाड़ी चलते नकीब द्वारा उच्चारण किया जाने वाला शब्द युग्म।

उ०—मसालचियां आंण मुजरो कियो छै। नजर दौलत छड़ीदार कर रह्या छै।—रा.सा.सं. रू०भे०—निजर दौलत।

नजर-बंद-वि० [अ० नज्र+फा० बन्द] कड़ी निगरानी में रखा हुआ, जो कहीं आ जा नहीं सके, जिसे नजरबंदी की सजा दी गई हो।

सं०पु०—जादू या इंद्रजाल का खेल, जिसमें प्रसिद्धि है कि लोगों की नजर बांध दी जाती है अतः मदारी जो कहता है वैसा ही उन्हें दिखता है।

रू०भे०—निजरबंद।

नजर-बंदी-सं०स्त्री०—१ सजा विशेष, जिसमें व्यक्ति को राजाज्ञा द्वारा किसी निश्चित स्थान पर खुले तौर पर रक्खा जाता है किन्तु उसे आने-जाने व मिलने-भेंटने की स्वतंत्रता नहीं रहती.

२ लोगों की दृष्टि में भ्रम उत्पन्न करने की क्रिया, जादूगरी, बाजीगरी।

रू०भे०—निजर-बंदी।

नजर-बाग-सं०पु० [अ०] महल या मकान के अहाते के भीतर बना हुआ बगीचा।

रू०भे०—निजर-बाग।

नजरसांनी-सं०स्त्री०यौ० [अ० नजर+सानी] पुनर्विचार, पुनरावृत्ति।

रू०भे०—निजरसांनी।

नजरांण, नजरांणो-सं०पु० [अ० नज्र+फा० आनः] १ भेंट, उपहार, नजर। उ०—नरियंद सह नजरांण, झुक करसी सरसी जिकां। पसरैलो किम पांण, पांण थकां थारो 'फता'।—केसरीसिंह बारहठ

२ भेंट की हुई वस्तु।

रू०भे०—निजरांण, निजरांणो।

नजरि, नजरियो—देखो 'नजर' (रू.भे.) उ०—पारवती कांम विराजइ पहिली, लाजी किउं हिक संबाहि लियउ। करडी नजरि जोवतां कहिरी, कहर भसम ताइ मदन कियउ।—महादेव पारवती री वेल

नजरीजणो, नजरीजबो-क्रि०अ० भाव वा० [अ० नजर] दृष्टि-दोष से प्रभावित होना।

वि०वि०—देखो 'नजर' (३)।

नजरीजणहार, हारो (हारी), नजरीजणियो—वि०।

नजरीजिओड़ो, नजरीजियोड़ो, नजरीज्योड़ो—भू०का०कृ०।

निजरीजणो, निजरीजबो—रू०भे०।

नजरीजियोड़ो–भू०का०कृ०—दृष्टिदोष से प्रभावित हुवा हुआ ।
(स्त्री० नजरीजियोड़ी)

नजळो–सं०पु० [अ० नजल:] १ शिर में उष्णता के कारण होने वाला एक रोग, जिसमें मस्तिष्क का विकारयुक्त पानी भिन्न-भिन्न अंगों में ढल कर विकार उत्पन्न कर देता है ।
२ जुकाम।
रू०भे०—निजळो; नरजळो ।

नजाकत–सं०स्त्री० [फा०] सुकुमारता, कोमलता, नाजुकमिजाजी ।

नजामत–सं०स्त्री० [अ०] नाजिम का पद।

नजारत–सं०स्त्री० [अ०] नाजिर का पद, नाजिर का कार्यालय ।

नजारेबाजी–सं०स्त्री०यौ० [अ० नज्जार:, फा० बाजी] स्त्री या पुरुष का दूसरे पुरुष या स्त्री को लालसाभरी नजर से देखना, ताका-झांकी । (बाजारू)

नजारो–सं०पु० [अ० नज्जार:] १ स्त्री या पुरुष का दूसरे स्त्री या पुरुष को लालसा भरी नजर से देखना, ताका-झांकी ।
उ०—हे गवरल, रूड़ो है नजारो तीखो है नैणां री गाढ़-गढां नैं कोटां सूं गवरल ऊतरी हां जी, वैरै हाथ कँवळ के री फूल ।—लो.गी.
मुहा०—नजारा मारणा—ताक-झांक करना।
२ दृश्य । उ०—रावळी प्रोळ, पुरोहितां रा घर, अर संतां स्रीमाळियां रा आंगण मिनखां सूं भरीजग्या । कोई धूजै, कोई रोवै तो कोई कळपै । एक अजब नजारो ।—रातवासो
रू०भे०—निजारो ।

नजिक, नजीक—देखो 'नजदीक' (रू.भे.)
उ०—१ कितक भरथ हुण लियत कळह कर, उचर धनुस गह उठिय प्रभंग । तिकण वखत भ्रित सह लसकर तज, चपळ सिखर गय नजिक सुचंग ।—र.रू.
उ०—२ नांन्हा मिनख नजीक, उमरावां आदर नहीं । ठाकर जिण नैं ठीक, रण में पड़सी राजिया ।—किरपारांम

नजीक—देखो 'नजदीक' (रू.भे.)

नजीकी—देखो 'नजदीकी' (रू.भे.)

नजीग—देखो 'नजदीक' (रू.भे.)

नजीर–सं०स्त्री० [अ० नज़ीर] १ दृष्टान्त, उदाहरण, मिसाल.
२ मुकदमे का वह फैसला जो इसी प्रकार के किसी अन्य मुकदमे के लिए उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया जाय ।

नज्र—देखो 'नजर' (रू.भे.) उ०—नैड़ो घमसांण चढ़्यो नृप नज्र । गुणां चढ़ि बांण मंड्यो घमगज्र ।—मे.म.

नट–सं०पु० [सं०] (स्त्री० नटणी, नटी) १ एक जाति विशेष जिसके स्त्री-पुरुष प्राचीन काल में नाटक किया करते थे और आजकल खेल-तमाशे, कसरत करने, रस्सी व बांस आदि पर नाचने के कौतुक दिखा कर अपना भरण-पोषण करते हैं ।
रू०भे०—नट्ट ।
अल्पा०—नटड़ो, नटवो, नटियो ।
२ सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब स्वर शुद्ध लगते हैं । भिन्न-भिन्न रागों के साथ मिलाने से दूसरी रागें भी बनती हैं यथा—कामोदनट, केदारनट, छायानट आदि. ३ महादेव.
४ श्रीकृष्ण. ५ नाच-नृत्य ।

नटखट–वि०यौ० [सं० नट, अनु० खट] १ नट की तरह खटपट करते रहने वाला, चंचल, ऊधमी, उपद्रवी. २ चालाक, चालबाज।

नटखटी–सं०स्त्री०—बदमाशी, शरारत, ऊधम ।
वि०—देखो 'नटखट' ।
ज्यूं—औ बडो नटखटी छोरो है।

नटणो, नटबो–क्रि०अ० [सं० नष्ट रा०प्र०णो] १ मना करना, इन्कार करना । उ०—कोई बात पूछै तो नटो मतां । अर नटो तो कहो मतां । अर बात नटि नैं कहियो तो थारो मरण हुसी ।—चौबोली
२ मुकरना।
नटणहार, हारो (हारी), नटणियो—वि० ।
नटवाड़णो, नटवाड़बो, नटवाणो, नटवाबो, नटवावणो, नटवावबो, नटाड़णो, नटाड़बो, नटाणो, नटाबो, नटावणो, नटावबो—प्रे०रू० ।
नटिओड़ो, नटियोड़ो, नटयोड़ो—भू०का०कृ० ।
नटीजणो, नटीजबो—भाव वा० ।
नाटणो, नाटबो—रू०भे० ।

नटन–सं०पु० [सं० नर्त्तन] नृत्य, नाच ।

नटनागर–सं०पु० [सं०] श्रीकृष्ण । उ०—प्रक्रति सुख उपभोग करण ईंमी रो आगर । सो सालां सिग करै, अमर ओसध नटनागर ।
—दसदेव

नटनारायण–सं०पु० [सं०] १ सब शुद्ध स्वरों का संपूर्ण जाति का एक राग (संगीत) २ श्री कृष्ण ।

नट-पट्टी, नटवट, नटवट्ट, नटवट्टा—देखो 'नटवट' (रू.भे.)
उ०—१ एक फिरत उचकै उरध, मति जग विरध विमोह । नट-पट्टी दीखै निपट, घटी पलट्टी सोह ।—रा.रू.
उ०—२ आगळ फौज अधीस कूंत भळकावतो, तुररो सिर जरतार निहंग नचावतो । नटवट्टा ज्यूं निपट फिलै वळ झंपतो, वण जोधो असवार चील फण चंपतो ।—किसोरदांन बारहठ

नटबाजी–सं०स्त्री० [सं० नट, फा० बाजी] नट द्वारा किये जाने वाले खेल, कौतुक, जादू, इन्द्रजाल । उ०—एक चलै एक आवहो संसार सराई। उतपत परळै काळ नटबाजी नांई ।—केसोदास गाडण

नटभूखण–सं०पु० [सं० नट+भूषण] हरताल ।

नटमंडण, नटमंडन–सं०पु० [सं० नट+मण्डनम्] हरताल (डि.को.)

नटमल्लार–सं०पु० [सं०] संपूर्ण जाति का एक संकर राग जिसमें सभी स्वर शुद्ध हों (संगीत)

नटराज–सं०पु० [सं०] नटनारायण, श्रीकृष्ण ।
उ०—कुमलिया पीठ सिर विकट आप्राज कर । कड़ढ़ियो कांन नटराज काळो ।—वां.दा.

नटवट, नटवट्ट-सं०स्त्री० [सं० नट+वर्तनम्] १ नट-क्रिया ।
उ०—द्रीवछह द्रीवछह अक्र पग धरंती, कुलट नटवटा ज्यूं मक्र करंती ।—गिरधरदांन सांदू
[सं० नट+वटक] २ नट का गोला या गेंद ।
उ०—श्रांणै सबर फिरै श्रोहट्टा, वाटां दूत थया नट-पट्टा । श्रति सोगै पतसाह श्रद्यांनै, तिण सज्या तिण तारत तांनै ।—रा.रू.
वि० [सं० नट+वत्] नट की तरह । उ०—फुलट नटवट उद्वट कटकट । गरट गजधर श्रघट गाहट ।—सू.प्र.
रू०भे०—नट-पट्ट, नट-पट्टो, नटवट, नटवट्ट, नटवट्टा ।
नटवर-सं०पु० [सं०] १ नटों में श्रेष्ठ, प्रधान नट, नाटयकला में प्रवीण व्यक्ति । उ०—कोकिल सोर मोर तंडवि क्रत । नटवर गांन संगीत करै नृत ।—सू.प्र.
२ श्रीकृष्ण, विष्णु । उ०—उलट सुलट मिलि घट झपट, दुघट निघट चढ़ि धाइ । परग विकट श्रसगति लगै, नट नटवर उर लाइ ।
—रा.रू.
नटवर-नागर-सं०पु० [सं०] श्रीकृष्ण ।
उ०—एजी म्हांरा नटवर नागरिया, भगतां रै क्यूं नहि श्रायो रै । थंनै थोड़ो सो कांम भोळायो रै । ए जी म्हांरा··· ।—लो.गी.
नटवो—देखो 'नट' (श्रल्पा., रू.भे.) उ०—१ यो हूती मेरी रांम झूंपड़ी, यां कोई नृपति श्रा उतरै । मृदंग ताळ पखावज वाजै, नटवा नृत्य करै । मंदिर देख डरै रै सुदांमा, मंदिर देख डरै रै डरै ।—लो.गी.
उ०—२ तेहवें ते मदहर त्रिया रे, देखण श्रावि दौड़ि नटवी रूप निहाल नैं रे, ठिक न रह्यौ दिल छोड़ि ।—घ.व.ग्रं.
(स्त्री० नटव)
नटसाळ-सं०स्त्री०—१ देखो 'नाटसाळा' (रू.भे.)
उ०—बाजा बजावै रे, देखण बहु श्रावै रे । नटसाळा सुहावै हो राजिंद श्रति घणी ।—जयवांणी
२ देखो 'नाटसाळ' (रू.भे.) उ०—चौकी 'नांगा' रांग री, मेड़-तियो 'श्रभमाल' । सेव करै 'श्रगजीत' री, 'सैंद' हियै नटसाळ ।
—रा.रू.
नटसाळा-सं०स्त्री० [सं० नाटयशाला] नाटयशाला ।
रू०भे०—नटसाळा ।
नटारंभ—देखो 'नाटारंभ' (रू.भे.)
नटियो—देखो 'नट' (श्रल्पा., रू.भे.)
नटेस्वर-सं०पु० [सं० नटेश्वर] महादेव, शिव ।
रू०भे०—नाटेसर ।
नट्ट—देखो 'नट' (रू.भे.)
उ०—श्रा घात वात रमतो इसी, पड़िस भ्रम्म भूलिस पगा । हरिनांम वरत ऊपर हलव, जीव नट्ट जेही जगा ।—ज.खि.
(स्त्री० नट्टी)
नट्टारंभ—देखो 'नाटारंभ' (रू.भे.) उ०—नयर लोक नइ तुह्यि श्रह्म श्राज सांभिळं जासउं गेलही काज । तुम्ह घरणी गिउं नट्टारंभ करियट छंटी मवि श्रारंभ ।—विद्याविलास पवाडउ
नट्ठ—देखो 'नस्ट' (रू.भे.)
नट्ठणो, नट्ठबो, नठणो, नठबो, नट्ठणो, नट्ठबो-क्रि०श्र० [सं० नष्ट् रा० प्र०णो] १ नष्ट होना ।
उ०—१ कृपाह तणउं धन उपारजिउं जळि उपतिस्टइ, कृपाह तणउं धन ऊपारजिउं मसाणालइं यूटइ । कृपाह तणउं धन ऊपारजिउं ऊग नट्ठ जाइ, कृपाह तणउं धन ऊपारजिउं वांणवर खाइ ।—व.स.
२ देखो 'न्हाठणो, न्हाठबो' (रू.भे.) उ०—हूवो जिण ठोर वडो घमसांण । नठो तज दूसल थान निसांण ।—पा.प्र.
उ०—२ श्रगी सहस सेना श्रठी, सहंस नठी बाराह्टि । मड़ा श्रोपियां मीरखां, नीर गया गुन नट्ठि ।—पं.ना.
१ देखो 'नट्ठणो, नट्ठबो' (रू.भे.)
नड-सं०पु० [देश०] १ पड़, परंब । उ०—पाल्याळ हुवइ उछरंग पटइ पड़, नड नाचइ श्रपछर निर(संग) पळ । मारय तणउ पहाड महा-भड, जुड़ता श्रणी करइ चड जंग ।—महादेव पारवती री वेलि
२ देखो 'नाटो' (मह., रू.भे.) उ०—कुसुमस छोळ भरै नड साहु । करद्दम श्रांगिण हुइ कादू ।—मे.म.
३ कुवेर का पुत्र नळ । उ०—दाड वृक्ष श्रमूल्या कान्हड, निकटा-सुर संघारया । नड कूवड नइं मंमण कराव्या, खट-खाट संदक मारया ।—पदमणी मंगळ
रू०भे०—नड़ ।
नडणो, नडबो—देखो 'नड़णो, नड़बो' (रू.भे.)
नडर—देखो 'निडर' (रू.भे.) (डि.को.)
नडि—देखो 'नैडो' (रू.भे.) उ०—पाना परवस थया प्रीतनि, पुस्कर ना सयळा पड़ि । विपरीत दि कांइ दाग्ता, माहा दिहनि श्रातोसि नडि ।
—नळाख्यांन
नडो—देखो 'नाटो' (रू.भे.)
नड्डणो, नड्डबो-क्रि०श्र० [सं० नद्ध] जड़ाई का काम करना, जड़ देना ।
उ०—घर कावल खग धार किलम्मां कड्डिया । नांमा इंद दहंद नयत यू नड्डिया ।—प्र.प्र.
नड्डियोड़ो-भू०का०कृ०—जड़ा हुआ, पच्चीकारी किया हुआ ।
(स्त्री० नड्डियोड़ी)
नणंद-सं०स्त्री० [सं० ननान्द्र] पति की बहिन ।
उ०—१ भादव धण मल गाजियो, नदियां सळक्या नीर । पपीहो पिव-पिव करै, श्राव नणंद रा वीर ।—लो.गी.
उ०—२ जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर मालै रे । वीरो भोळी नणंद रो म्हारो हुकम उठावै रे ।—लो.गी.
रू०भे०—नणंदर, नणद, नणदळ, नणदल, नणदी ।
श्रल्पा०—नणदलड़ी, नणदली, नणदिया, नणंदेली, नाणदूली ।
नणंदर, नणद, नणदळ, नणदल—देखो 'नणंद' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ सासू नणंदर जेह पूजयवा गए, कहिउं करेयो तेह तणूं ए। तेहवी चालि चाल्यो जेणि वातिइ ए, लाज न आवइ इम भूणूं ए।
—नळ दवदंती रास

उ०—२ नणदल बाई तोहिया नीवूड़े रा पांन, ओ थां पर वारी रे सैंयां। देवरजी छंदगाळा तोड़ै कांमड़ी ओ राज। नणदल बाइसा नै सासरियै पहुंचाय, ओ थां पर वारी रे सैंयां।—लो.गी.

उ०—३ भली थूं सांभ सुखां री देंण, दाभतै दिनड़ै री ठाडोळ। नींद री नणदल, सपनां सेज, परणती सरग परी री खोळ।—सांभ

नणदलड़ी, नणदली—देखो 'नणंद' (अल्पा., रू.भे.)

नणदिया—देखो 'नणंद' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—झूलण म्हें तो जांणूं री विलहिया। तूं हठ लागी म्हारी नणदिया।—लो.गी.

नणदी—देखो 'नणंद' (रू.भे.) उ०—म्हे सराहियां नणदी थारै वालम वीर नूं।—लो.गी.

नणदूतरी–सं०स्त्री० [सं० ननान्द्+पुत्री] पति की बहिन की पुत्री।

नणदूतरो, नणदूतो, नणदूत्रो–सं०पु० [सं० ननान्द्+पुत्र] (स्त्री० नणदूतरी, नणदूत्री) पति की बहिन का पुत्र।

रू०भे०—नणदोतो, नणदोत्रो।

नणदूली—देखो 'नणंद' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जेठूते के सिर पर हाथ फेरीज्यो छोटी सी नणदूली नै म्हारो याद कहीज्यो, ए उडती कूंजरियां। सनेसो म्हारो लेती जाज्यो, ए उडती कूंजरियां।—लो.गी.

नणदोइ, नणदोई–सं०पु० [सं० ननान्द्+पति] पति की बहिन, ननद का पति। उ०—१ ओ म्हारा चांद सूरज नणदोई सा, म्हे तो फाग खेलवा आईस्यां।—लो.गी.

उ०—२ साळाहेली वगड़ वुहारती। नणदोई नै लटक जुहार।

रू०भे०—नणंदोई। —लो.गी.

नणदोतरी, नणदोती, नणदोत्री—देखो 'नणदूतरी' (रू.भे.)

नणदोतो, नणदोत्रो—देखो 'नणदूतरो' (रू.भे.)

नत–वि० [सं०] १ नमित, झुका हुआ, विनम्र.

२ देखो 'नित' (रू.भे.) (डि.को.) उ०—१ ऊगां सूर समो ऊदावत, बढै वसू छळ बोल विरोळ। चळूअळ अरी तणां चीतोडा, चंद्रप्रहास रहै नत चोळ।—प्रिथीराज राठौड़

उ०—२ प्रगट धूपटै दरब अठ पहर अपापार रे, वड़म कुळ भार रे भुजां वाघा। बिलाला खड़े नत तुरंग इण वार रे, माग आचार दूवा 'माधा'।—मेगो महड़ू

नत-प्रत—देखो 'नित्यप्रति' (रू.भे.) (डि.को.)

नतांस–सं०पु० [सं० नतांश] वह वृत्त जिसका केंद्र भूकेंद्र पर हो और विषवत् रेखा पर लम्ब हो। इस वृत्त का उपयोग ग्रहों की स्थिति निश्चित करते समय होता है।

नता–सं०पु० [सं० अनृतं] असत्य, झूठ। उ०—लछी रा चहन घण वीज वाळी लपट। क्रोध ममता नता मूढ तज रे कपट।—र.ज.प्र.

नति–सं०पु० [सं० नतिः] १ नमस्कार, प्रणाम।

उ०—महम्मा जांणै ब्रह्म महेस। पगां रिख लाग करै नति पेस।

२ विनय, नम्रता, झुकाव। —र.र.

नतीजो–सं०पु० [फा० नतीजः] फल, परिणाम।

नतीठ, नतीठो—देखो 'नत्रीठ' (रू.भे.) उ०—१ तुरी जुध मेळि लहै 'सगतेस'। नतीठ घसै जिम पंड नरेस।—सू.प्र.

उ०—२ नहंगां राजांन वाळो हाकलै नतीठ।—हुकमीचंद खिड़ियो

नत्त—देखो 'नित' (रू.भे.)

नत्ताळ—देखो 'निराताल' (रू.भे.)

नत्तिकांत–सं०पु० [सं० नत्तिक्रान्त] ४९ क्षेत्रपालों में से ३६वां क्षेत्रपाल।

नत्थ—१ देखो 'नथ' (रू.भे.) उ०—गह्यौ कर बांन उदग्गनि हत्थ, महिख्य समांन उनत्थहि नत्थ।—ला.रा.

२ देखो 'नाथ' (रू.भे.)

नत्थणो—देखो 'नथणो' (रू.भे.)

नत्थणो, नत्थबो—देखो 'नाथणो, नाथबो' (रू.भे.)

नत्थि—देखो 'नथी' (रू.भे.) उ०—'रहि रे तूं चालो म कहि, इम अवनी-तटि नत्थि'। कहितां कोड़ि सवा तणउं, मांणिक आपिउं हत्थि।—मा.कां.प्र.

नत्थी, नत्थीय–सं०स्त्री० [सं० नाथ] १ कागज-पत्रादि में छेद करके या पिन आदि के सहारे एक साथ लगने की क्रिया. २ उपर्युक्त विधि से एक ही में नत्थी किये हुए पत्रादि जो प्रायः एक ही विषय से संबद्ध रखते हों, मिस्ल।

वि०—१ एक साथ लगा हुआ, संलग्न.

२ देखो 'नथी' (रू.भे.) उ०—१ चिहुं गति मांहि कांइ नत्थी सार दीसइ, दुक्ख तणउ भंडार।—चिहुंगति चउपइ

उ०—२ तसु रूपह जामलिहिं त्रिहुउं भूयणि कइ नारि नत्थीय। पाधारउ कुमरि सहीय आठ चक्र छइं थंभि थंभीय।—पं.पं.च.

नत्रीठ, नत्रीठि, नत्रीठो–सं०पु० [सं० न+तृष्टि] १ योद्धा, वीर।

उ०—१ न लाभत सावत सीस नत्रीठ, देतो चक्र दंड फिरै अणदीठ।—मे.म.

उ०—२ सादूळो वाकारियै, त्यां वाजिया नत्रीठ। लग्गो सूर परक्खणैं, वग्गो धारा रीठ।—रा.रू.

उ०—३ प्रिसणां साथ कासळी पड़ियो, आंगम लखां हुओ आखड़ियो। निस गळती झूंबियो नत्रीठो, रुक तणो मच आका रीठो।
—रा.रू.

२ अत्यंत प्रहार, बौछार. ३ घोड़ा।

उ०—१ सांम्हा दूत अभूत सिधाया, उण दिस मेछ पेच घर आया। निस आया खेड़िया नत्रीठां, दीठा पुर नैड़ा रवि दीठां।—रा.रू.

उ०—२ ओडै वीर घटा घोख मातंगां ताजांनआळो, रोड़ै विजय विखम्मी वाजांनआळो रीठ। ओक जंगां एराक ले भूटंडां आजांनआळो, निहंगां राजांनआळो हाकलै नत्रीठ।—हुकमीचंद खिड़ियो

वि०—१ निःशंक, निर्भय।

उ०—निहसंति जोध नत्रीठि, रिण रूक वापरि रीठि ।—ग्रु.रू.वं.

२ वेगपूर्वक । उ०—१ निसीथ रैं समय कुमार दूदै तिकां माथै जाय नत्रीठा वाजी पटकिया ।—वं.भा.

उ०—२ सो पड़िया दूजा सुहड़, ग्रन ऊपड़िया खेत । ग्रंग नत्रीठा वाजिया, ग्राद 'दुरग' सचेत ।—रा.रू.

उ०—३ मोकळ हरा महाजुध मचतै, वचतां सर नत्रीठ वहै । 'पातल' तूझ तणा पड़ियालग, रुधर चरचियो सदा रहै ।—प्रथ्वीराज राठौड़

३ भयंकर, तेज । उ०—नत्रीठा त्र्यंबक गड़गड़ै 'कुसियाळ' नंद, सत्रां मद भड़ै उर बिच रहै संक । किलम दळ भिड़ै 'सवळेस' तोसूं कमण ग्रलल विमुहां खड़ै पड़ै ग्रातंक ।—गुलजी ग्राढ़ो

रू०भे०—नतीठ, नतीठो ।

नथ-सं०स्त्री० [सं० नाथ] १ नाक में छेद कर पहना जाने वाला स्त्रियों का ग्राभूषण ।

वि०वि०—सौभाग्यवती स्त्रिएं इस ग्राभूषण को धारण कर के नाथ (पति) का ग्रस्तित्व सूचित करती हैं ग्रत: नाथ से नथ शब्द बना ।

उ०—१ गाढा बीसां री घड़ाई नथ लुळ लुळ जाय । तीसां री पोवाई नथ ड्योढ़ा झोला खाय ।—लो.गी.

उ०—२ उत्तर जाइज्यो दिक्खण जाइज्यो जाइज्यो समदां पार । मारवणी रे नथ लाइजो मोती लाइजो चार ।—लो.गी.

२ तलवार की मूठ पर लगा हुग्रा छल्ला.

३ बेधने की क्रिया ।

मुहा०—नथ उतारणी—किसी वेश्या का प्रथम समागम कराना, कौमार्य-भंग करना ।

रू०भे०—नत्थ, नाथ ।

ग्रल्पा०—नथकी, नथड़की, नथड़ली, नथड़ी, नथणी, नथली, नथुली ।

मह०—नत्थड़, नथड़ ।

नथड़ी, नथणी—देखो 'नथ' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—मुखड़ै नै बेसर लाव भंवर म्हारे मुखड़ै नै बेसर लाव । हांजी म्हारी नथड़ी रतन जड़ाव भंवर म्हांनै खेलण दो गणगौर ।—लो.गी.

नथणो-सं०पु० [सं० नस्त:] नाक का ग्रगला भाग ।

रू०भे०—नत्थणो ।

नथणो, नथबो-क्रि०ग्र०—१ किसी के साथ नत्थी होना, छेदा जाना.

२ देखो 'नाथणो, नाथबो' (रू.भे.)

नथ-बीजळी-सं०स्त्री० [सं० नस्त: ग्रथवा नाथ+विद्युत] नाक का ग्राभूषण विशेष ।

नथली—देखो 'नथ' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—तीजी सखी मेरी पहर ढ़ेवटो नथली सूं रूप संवारयो, चौथी सखी मेरी चूनड़ ग्रोढी, गळै में मोतीड़ां री हारो ।—लो.गी.

नथि—देखो 'नथी' (रू.भे.) उ०—स्रीहरि जे सागरि सूइ छि, सही ए सर नवि जांणूं । नारायण ग्रागळि नारदजी सूं ए सर नथि विखाणूं ।—नळाख्यांन

नथियळ-सं०पु० [सं० नस्ता=पशुग्रों के नाक का छेद+रा०प्र० यळ] १ काली नाग. २ शेषनाग । उ०—रे मथियळ रे नथियळ थिर रही, थरक म कनक कोट थिर थाव । 'गांगावत' गांजियो न गाजै, गांजै राव ग्रगंजियां गाव ।—राव मालदेव री गीत

नथी-क्रि०वि० [सं० नास्ति] १ नहीं ।

उ०—कंत लखीजै दोहि कुळ, नथी फिरंती छांह । मुड़ियां मिळसी गींदवो, वळै न धण री बांह ।—वी.स.

२ देखो 'नत्थी' (रू.भे.)

रू०भे०—नत्थी, नत्थीय ।

नथुणी—देखो 'नथ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

नद-सं०पु० [सं० नद्ध] १ पहुंचे पर पहिनने का ग्राभूषण विशेष (?)

उ०—पग पहरी सकत वाजणी पायल, नै प्रांचड़ ग्रागळी नद ।

—महादेव पारवती री वेल.

रू०भे०—नद्द ।

२ देखो 'नदी' (मह., रू.भे.) (ग्र.मा.)

३ देखो 'नाद' (रू.भे.) उ०—धुनि वेद सुणित, कहूं सुणति संख धुनि, नद झल्लरि नीसांण नद । हेका कह हेका हीलोहळ, सायर नयर सरीख सद ।—वेलि.

नदर— देखो 'नजर' (रू.भे.)

नदारत, नदारद-वि० [फा०] गायब, लुप्त ।

रू०भे०—नदारत ।

नदि—देखो 'नदी' (रू.भे.) उ०—ऊंचां लूंबां हूंत ग्रनैसी, तर भड़ वळी वहीरां तैसी । ग्रोपै पंथ कतारां ऐसी, जळ धारां नदि सांवण जैसी ।

—रा.रू.

नदियांण-सं०पु० [सं० नदी+रा०प्र० यांण] सागर, समुद्र ।

उ०—सिसट्ट उपाइ ब्रम्म सब, थावर जंगमांणा । जळ थळ महियळ गिर किया, नद्द नदियांणा ।—गज उद्धार

नदी-सं०स्त्री० [सं०] १ जल का प्राकृतिक ग्रोर भारी प्रवाह जो किसी पर्वत ग्रथवा जलाशय ग्रादि से निकल कर किसी निश्चित मार्ग से होता हुग्रा बारहों महीने ग्रथवा वर्षाकाल में बहता रहता हो, सरिता ।

पर्याय०—ग्रापगा, कुलय, कुल्यंकका, जंभाळणी, जळधार, जळधिया, जळमाळा, तटणी, तरंगणी, तरंगाळी, तरपोख, दकसीर, दीपवती, धुनी, निमनगा, निरझरणी, परवतजा, प्रवाहा, भवसुखा, भूमविहार, वरनीर, वाहणी, संभलाय, सरत, साव, सिंधु, सेवळनी, स्रवंती, स्रोत ।

क्रि०प्र०—ग्रांणी, वैवणी ।

मुहा०—नदी ग्रांणी—खूब ग्रधिक होना । नदी बंवाणी—खूब ग्रधिक कर देना ।

२ तेरह की संख्या* ।

रू०भे०—नंदी, नइं, नइ, नईं, नई, नदी, नद्दी ।

(मह० नद, नद्द)

नदी-ईसवर—सं०पु० [सं० नदीश्वर] समुद्र, सागर (डि.को.)
नदी-कूल—सं०पु०यौ० [सं०] १ नदी का तट।
२ दो की संख्या*। (डि.को.)
नदी-नाथ—सं०पु०यौ० [सं०] नदी-पति, सागर, समुद्र।
नदी-निवास—सं०पु०यौ० [सं० नदी+राज० निवास] समुद्र, सागर।
उ०—सउ सहसे एकोतरै, सिरि मोतीहरि सुध्ध। नदीनिवासउ उत्तरी, आंणू एक अविध।—ढो.मा.
नदीपति—सं०पु०यौ० [सं०] सागर, समुद्र।
रू०भे०—नंदीपति।
नदीमुख—सं०पु० [सं०] नदी का मुहाना।
नदीराज—सं०पु० [सं०] सागर, समुद्र।
नदीस—सं०पु० [सं० नदीश] सागर, समुद्र।
रू०भे०—नईस।
नद्द—१ देखो 'नदी' (मह., रू.भे.) उ०—१ जळ थळ महियळ गिर किया, नद्द नदियांणं। सुर, नर, नागा, राखसां, रचना रच्चाणं।
—गजउद्धार
उ०—२ नववती राग घड़ियाल नद्द। सागर जिम नगर उछाह सद्द।—सू.प्र.
२ देखो 'नद' (१) (रू.भे.)
३ देखो 'नाद' (रू.भे.) उ०—१ नद्द करंती नेउरी, कटि मेखळि उर हार। कंठि निगोदर पदिकडी, चंपकळी अति सार।—मा.कां.प्र.
उ०—२ वीरांण सब्द सुणिया विहद्द। नीसांण तूर अनहद्द नद्द।
—वि.सं.
नद्दा—देखो 'नाद' (रू.भे.)
नद्दी—१ देखो 'नादी' (रू.भे.) उ०—यम सद्द नदीन के सुनै, जरिगै खद्दन के हियै। चहूं ओर चल्लिय वत्त यौं लरि कोट भारथसी लियै।
—ला.रा.
२ देखो 'नदी' (रू.भे.)
नद्ध—वि० [सं०] १ बद्ध, बंधा हुआ (डि.को.)
२ नधा हुआ।
नध—सं०पु० [जल निधि ?] समुद्र, सागर। उ०—हुओ बंधांण नध, ग्रहां उग्रहण हुओ, समर ओसर हुओ सुरां साथै। हुवो सीता वळण लंक पालट हुओ, हुओ रांमण मरण रांम हाथै।—अज्ञात
२ देखो 'निधि' (रू.भे.) (डि.को.)
नधपुर—सं०पु० [अं० लण्डन+सं० पुर] इंगलेंड की राजधानी, लन्दन नगर। उ०—थिर रण अरियां थोगणो, नधपुर पूगो नांम। आउवो खुसियाळ इळ, गावै गांमोगांम।—आउवा रा क्रांति संबंधी दूहा
नधांन—देखो 'निधांन' (रू.भे.)
नधि—देखो 'निधि' (रू.भे.)
नधी—देखो 'निधि' (रू.भे.) (डि.को.)
नधुस—देखो 'नहुस' (रू.भे.) उ०—दूसण देखी देव नूं, दिसि गय देवेस। तव इंद्रांणी आंणती, हूंती नधुस नरेस।—मा.कां.प्र.
ननंग—सं०पु० [सं० नग] १ वृक्ष, पेड़. २ देखो 'निनंग' (रू.भे.)
नन—क्रि०वि० [सं०] कठिनता से, मुश्किल से।
उ०—लाख हमालै मंख लगि, नन आंणियो पिनाक।—रांमरासो
अव्य०—नहीं।
रू०भे०—नंन।
ननसार, ननसाळ—सं०स्त्री० [राज० नन=नाना+सं० शाला] नाना का घर, ननिहाल।
उ०—ढोली का, चढ़ ढोल दै, रांणी, गढ सरवरियै री पाळां जी। ज्यों सुणै मेरे बाप के, रांणी, लाडलड़ी ननसाळांजी।—लो.गी.
रू०भे०—ननिहाळ, ननीहाळ।
ननियो—१ देखो 'नन्नो' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'नैनो' (अल्पा., रू.भे.)
ननिहाळ, ननीहाळ—देखो 'ननसाळ' (रू.भे.)
उ०—पूठो भारी रावजी स्री बीकोजी रो। ननिहाळ मोहिलां रै सो भारी, तिण सूं आसंग पण किंहीं री नहीं पड़ै।
—सूरे खींवे कांधळोत री वात
ननु—देखो 'नन्नो' (रू.भे.) उ०—सत्यवंत दातार छै नि ननु ति भणियु नथी। अथवा सूं ते वीसरघु? संदेह सूं कहोइ कथी।—नळाख्यांन
नन्नो, नन्नो [सं० न] १ 'न' अक्षर।
उ०—१ हहो करै हित हांण। भभो तन व्याघ जगावै। घघो राज भय घरै, ररो धन नास करावै। घघो घरण घट घाट, नूंफळ कर ननो निमाड़ै। खय जस करै खकार, भभो परदेस भ्रमाड़ै।—र.रू.
उ०—२ बावन आखर में वडो, नन्नो आखर सार। दद्दो तो जांणूं नहीं, लल्लै आखर प्यार।—अज्ञात
अव्य०—२ न या नहीं का वोधक शब्द, नहीं।
मुहा०—एक ननो सो रोग टाळै—एक नही कहना अनेक विपत्तियों से छुटकारा दिलाता है।
३ अस्विकार, असहमति, इन्कार।
उ०—रत ज्यूं दत जाचक रसक, जाचै वे कर जोड़। ननो भणै नव-नार ज्यूं, मूढ़ क्रपण मुख मोड। वां.दा.
रू०भे०—नन, ननु।
अल्पा०—ननियो।
नपट—देखो निपट' (रू.भे.) उ०—विकट रजवट ऊछट अघट वेवा-ह सा। नपट असळो अगुट कठी नव साहसा।—महादांन महडू
नपणो, नपबो—क्रि०अ० [सं० मापन] १ किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई, गहराई आदि का निश्चय होना, कोई वस्तु कितनी लम्बी, चौड़ी, गहरी, मोटी है इसकी परीक्षा होना।
२ कोई वस्तु कितने परिमाण या मात्रा में है इसका निश्चय होना।
नपाई—सं०स्त्री० [सं० मापनम्] नापने का भाव, नापने का काम।
क्रि०प्र०—करणी, कराणी, होणी।

नपाप-वि० [सं० निष्पाप] निष्कलंक, पाप रहित।
उ०—नकळंक नपाप नगेम नरेहण, अवतरिया जण कुळ 'अमर'। हींदू सो को उरै हमीरां, हिंदवै वडा हमीर हर।—दुरसौ आढ़ौ

नपित—देखो 'नापित' (रू.भे.)

नपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ लम्बाई, चौडाई आदि का निश्चय हुवा हुआ. २ किसी वस्तु के परिमाण या मात्रा का निश्चय हुवा हुआ।
(स्त्री० नपियोड़ी)

नपूंतौ—देखो 'निपूतौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नपूंती)

नपुंसक-सं०पु० [सं०] १ वह पुरुष जिसमें कामेच्छा जागृत नहीं होती हो अथवा बहुत ही कम होती हो.
२ जो न पुरुष हो न स्त्री, नामर्द, हिजड़ा।
उ०—हंसक हंस गत हस हस अंसक अया उदंत, वांम्म नारी कुळ लोक निवुंस, कहत नपुंसक कंत।—ऊ.का.
३ डरपोक, कायर।

नपुंसकता-सं०स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का रोग जिसमें मनुष्य का वीर्य्य नष्ट हो जाता है और वह स्त्री-संभोग के योग्य नही रहता है.
२ नपुंसक होने का भाव।

नपूतौ—देखो 'निपूतौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नपूती)

नफर-सं०पु० [फ़ा०] १ व्यक्ति (अ.मा.) उ०—१ इहां अरज कीवी जे दोय सवार नै दोय नफर पियादा छां।—दूलची जोइये री वारता
२ दास, सेवक, नौकर (अ.मा.) उ०—हाजर रहै हुकंम में हाडा, दांम न खरचै वगर दुवा। माटी जांणै आद मवांनी, हाला-भाला नफर हुआ।—ओपौ आढ़ौ
३ सईस।

नफरत-सं०स्त्री० [अ०] घृणा, घिन।

नफरी-सं०स्त्री० [फ़ा० नफर+रा०प्र०ई] १ मजदूर का एक दिन का कार्य. २ मजदूरी का एक दिन।
ज्यूं—पांच नफरी मे पूरौ पलस्तर व्है जाई।
३ मजदूर की एक दिन की मजदूरी. ४ सूची।

नफस-सं०पु० [अ० नफ़स] विषय-वासना, काम-वासना।
उ०—दादू नफस नांम सौं मारियै, गोसमालि दे पंद। दूई है सो दूर कर, तब घर में आनंद।—दादू वांणी

नफेर, नफेरि, नफेरिय, नफेरी-सं०स्त्री० [फ़ा०, अ० नफ़ीरी] शहनाई।
उ०—१ नीसांण वाजि नरगा नफेरि। रउद्रगति डउंडि भरहरी भेरि।—रा.ज.सी.
उ०—२ जवन्निय सेन प्रळै फिर ज्वाळ, घमंघम पक्खर गुग्घर माळ। टमंकि तवल्ल नफेरिय टीप, जूंभाउ त्रंबक वाज सजीप।—रा.रू.
उ०—३ नफेरी न भेरी निसांणा न नद्दा। रणं तूर वाजै न घोरे रवद्दा। नके वाजनांपाय पेयाळ वाई। छणे ऊफणे रैण रैणां न छाई।—ना.द.
रू०भे०—निफेरी।

नफौ, नफ्फौ, नफ्फौ-सं०पु० [अ० नफ़ा] फायदा, लाभ।
उ०—१ वेर मही तोटौ वसै, वसै नफौ न 'वंक'। सिया विरह राघव सह्यौ, रांवण पलटी लंक।—बां.दा.
उ०—२ काया कोट काच सो काचो, जतन करंतां जावै। भण गुर ग्यांन नफौ इक भाया, अरथ और के आवै।—ऊ.का.
उ०—३ राफ्फा होवै सलक पर, हफ्फा डावांडोल। नफ्फा थारै है नहीं, गफ्फा रावै गोल।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—उठाणौ, करणौ, होणौ।

नबंध—देखो 'निबंध' (रू.भे.)

नबंधणौ, नबंधबौ—देखो 'निमंधणौ, निमंधबौ' (रू.भे.)

नबधियोड़ौ—देखो 'निमंधियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नबंधियोड़ी)

नबळ—देखो 'निरबळ' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—आइयौ अनियाई, घर पुड किणी न धारतौ। यमी घडी आयीह, नबळ हुवौ निरखै निजर।—पा.प्र.

नबरंगौ—देखो 'नवरंगौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—ईसा गूपती वचन तो वंचिया। नव जोबन नबरंगौ नेह। अहि निसि समरई गोरड़ी। सांभळा-राजा तणौ सनेह।—बी दे.

नबाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.) उ०—मरहठां करै सिर 'बिलंद' मेळ। अहमदावाद मंडियौ उखेल। सुण पातसाह फेरे मिताब। नरियंद सकळ हाजिर नबाब।—वि.सं.

नबाबजादौ—देखो 'नव्वाबजादौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नबाबजादी)

नबाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)

नबाळकि—देखो 'नाबाळिगी' (रू.भे.)

नबी-सं०पु० [अ०] १ ईश्वर का दूत, पैगंबर।
उ०—नबियां में सुतर सवार महमद हुवौ।—बां.दा. ख्यात
२ ईश्वर, भगवान। उ०—चित में साह विचारियौ, राजा थयौ जवांन। दरवस मेरी पोतरी, भै सिरजोर निदांन। जो पकड़ाऊं 'दुरग' कूं, तौ आवै सुख साथ। हुरम कबीले के सबै, सरम नबी के हाथ।
—रा.रू.
३ मुखिया, पंच, अगुआ। उ०—नबी हुवोड़ा नीच डबी भर लेवै डाकी। बैठ सभा रै बीच करै मनवार कजाकी।—ऊ.का.
४ मुसलमान। उ०—ओडण पुड़ एक एक पुड़ असमर, हाथै मूंठ ज हात लियां। कोप खुधारे थकै तन्न काठां, दांणव भांत नबी दळियां।
—महारांणा खेता रौ गीत
रू०भे०—नब्बिय, नव्वी।

नबे—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

नबेड़णौ, नबेड़बौ—देखो 'निपटाणौ, निपटाबौ' (रू.भे.)

नबेड़णहार, हारौ (हारी), नबेड़णियौ—वि० ।
नबेड़िग्रोड़ौ, नबेड़ियोड़ौ, नबेड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
नबेड़ीजणौ, नबेड़ीजबौ—कर्म वा० ।
नबेड़ियोडौ—देखो 'निवेड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नवेड़ियोडी)
नबेड़ौ—देखो 'निवेडौ' (रू.भे.)
नब्ज-सं०स्त्री० [ग्र०] हाथ की वह धमनी अथवा नाड़ी जिसकी गति से रोग की पहचान की जाती है ।
नब्ब—देखो 'नव' (रू.भे.)
नब्बाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.) उ०—ग्रासुर दिल्ली राह गया, पग-वाहि सिपाई । ग्राव जनम उतराय लियौ नब्बाब सवाई ।—रारू.
नब्बाबजादौ—देखो 'नव्वाबजादौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नब्बाबजादी)
नब्बाबी—देखो 'नव्वावी' (रू.भे.)
नब्बिय, नब्बी—देखो 'नबी' (रू.भे.) उ०—१ गुड़ै हुय विंभळ गात गनीम । रटै मुख नब्बिय रब्ब रहीम । छेकी कर छूटक वार छडाळ । भलो थरकत पटाभर भाळ ।—ढो.मा.
उ०—२ कोपियां किया फण फैतकार । दावियां पूंछ जिम काळि-दार । नब्बी कुरांण पढ़ पीर नांम । महम्मद ग्रली हजरत इमांम ।
—वि.सं.
नब्बे—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)
नब्यासी—देखो 'निवियासी' (रू.भे.) उ०—बासठ सहस मुनिराज थया, वळी सहस नब्यासी हुई ग्रज्जिया । प्रभु तारौ नै वळी ग्राप तरौ, स्रो सांति जिनेस्वर सांति करौ ।—जयवांणी
नभ-सं०पु० [सं० नभम्] १ ग्राकाश, ग्रासमान ।
उ०—वैरी वैर न वीसरै, बिनां हियै ही 'वंक' । राह ग्रहै राकेस नूं, नभ सिर मात्र निसंक ।—बां.दा.
[सं० नभस्य] २ भादो मास, भाद्रपद ।
उ०—ग्रादि पक्ख ग्रस्टमी मास नभ सुभ गुण मंडित । सपतिपुरी मणि मुकट खेत्र मधुपुरी ग्रखंडित ।—रा.रू.
[सं० नभः] ३ सूर्य वंशी राजा निषध के पुत्र का नाम. ४ श्रावण मास (डि को.). ५ जन्म कुण्डली में लग्न से दसवां स्थान.
६ मेघ, बादल ।
रू०भे०—नह ।
नभग-सं०पु० [सं०] पक्षी, खग ।
नभगनाथ-सं०पु० [सं०] गरुड़ ।
नभगामी-सं०पु० [सं० नभोगामिन्] १ सूर्य, रवि.
२ चन्द्रमा (डि.को.) ३ पक्षी, खग. ४ देवता, सुर. ५ तारा ।
वि०—जो ग्राकाश में विचरण करे, ग्राकाश में विचरण करने वाला ।
नभगेस-सं०पु० [सं० नभगेश] गरुड़ ।

नभचक्र-सं०पु० [सं०] ग्राकाश, गगन ।
उ०—विवध घणमाळ नभचक्र मांझळ वसी । रवि ससि न दीसै दिवस रजनी । मनोभव लगाड़ै बांण मोहण मरण । सहंस बातां सजन ग्रांण सदनी ।—बां.दा.
नभचर, नभचार-सं०पु० [सं० नभश्चर] १ पक्षी, खग ।
उ०—१ नभचर विहंग निरास, विन हिम्मत लाखां वहै । बाज छत्र कर वास, रजपूती सूं राजिया ।—किरपारांम
उ०—२ सेलां ग्रंबर ढंकिया नभचार रुकाया ।—वं भा.
२ पवन, वायु, हवा. ३ बादल, मेघ.
४ देवता, गंधर्व, ग्रहादि ।
उ०—धरता स्यांमळ भेख, नीर-नद लेण लुभावै । पासर सरिता ग्राप, पातळी जदै लखावै । पेखै नभचर गैण, ग्रोपमा इण विध ग्रांणै । पहुमी गळ ज्यूं हार, विचाळै नीलम जांणै ।—मेघ.
रू०भे०—निभचर ।
वि०—ग्राकाश में चलने ग्रथवा विचरण करने वाला ।
नभधज, नभधुज—देखो 'नभोध्वज' (रू.भे.) (डि.को.)
नभनीरप-सं०पु० [सं० नभोनीरप्] पपीहा, चातक (डि.को.)
नभपंत, नभपंथ-सं०पु० [सं० नभपंथ] ग्राकाश मार्ग ।
नभमंडळ-सं०पु० [सं० नभमंडल] ग्राकाश-मण्डल ।
उ०—चहुंघां चकचूरण खूरणौ खे चढ़ती । मसळत महिमंडळ नभ-मंडळ मढ़ती । रैणूं रवि मंडळ रसमी रय रोकी । तन मन प्रज कांपत ढांपत त्रयलोकी ।—ऊ.का.
नभमण, नभमणि, नभमणी, नभमिण—देखो 'नभोमणि' (रू.भे.)
उ०—धूजसर सेस उड रजी नभमण ढकै, घणा दळ मिळै कण सीस ग्रणघाट । वळोवळ प्रसण तज मांण सूधा वहै, जुड़ै रण ग्राय कुण वगां खग झाट ।—गुलजी ग्राढ़ौ
नभराट-सं०पु० [सं० नभोराट्] मेघ, बादल (ह.नां., ग्र.मा.)
नभवटी-सं०पु० [सं० नभवर्तिन्] पक्षी, खग (ग्र.मा.)
नभवांणी-सं०स्त्री० [सं० नभोवाणी] १ वह शब्द वा वाक्य जो ग्राकाश से देवता लोग बोलें, देववाणी. २ ग्राकाशवाणी, वितन्तुक ।
रू०भे०—नभवैण ।
नभवैण—देखो 'नभवांणी' (रू.भे.)
नभसरणी-सं०स्त्री० [सं०] ग्राकाश गंगा ।
उ०—नभसरणी रै वात फुहारां गात सुहावै, ठाडी छांह मंदार कोड विसांणी लेण लुभावै । चळ करती चकचोळ सुरां-उर हांम जगाती, रमै विवडियां हेम-रज रतन लुकाती ।—मेघ.
नभसांस-सं०पु० [सं० नभस्वास्] पवन, हवा (ग्र.मा.)
नभस्य-सं०पु० [सं०] भादों का महिना, भाद्रपद ।
नभोग-सं०पु [सं०] १ जन्मकुण्डली में लग्न स्थान से दसवां स्थान.
२ ग्राकाश में चलने वाले ग्रह, देवता, पक्षी ग्रादि ।

नभोगति-सं०स्त्री० [सं०] वह जो आकाश में चलता हो (ग्रह, देवता, पक्षी आदि)।
नभोवुह-सं०पु० [सं०] मेघ, बादल।
नभोद्वीप-सं०पु० [सं०] बादल, जलद।
नभोध्वज-सं०पु० [सं०] बादल, जलद।
रू०भे०--नभधज, नभधुज।
नभोनदी-सं०स्त्री० [सं०] आकाश गंगा।
नभोमणि, नभोमणी-सं०पु० [सं० नभोमणि] सूर्य्य, रवि।
रू०भे०—नभमण, नभमणि, नभमणी, नभमिण।
नमंत—देखो 'निमित्त' (रू.भे.) उ०—थूं भी रांमवगस अवतार छै, सो थां सूं तो कोई बात छांनी नहीं छै। आ लाख रुपियां की मालीत छै, सो यण पुत्री के नमंत छै।—मयारांम दरजी री वात
नमंध—देखो 'निबंध' (रू.भे.)
नमंधणो, नमंधवो—देखो 'निमंधणो, निमंधवो' (रू.भे.)
उ०—नमंधियो अखंडळ नाथ पंचम नको, वीर खळ खंडळ वसुधा मंडळ वीच।—कविराजा करणीदांन
नमंधणहार, हारो (हारी), नमंधणियो—वि०।
नमंधिग्रोड़ो, नमंधियोड़ो, नमंध्योड़ो—भू०का०कृ०।
नमंधीजणो, नमंधीजबो—कर्म वा०।
नमंधियोड़ो—देखो 'निमंधियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नमंधियोड़ी)
नम-वि० [फ़ा०] १ भीगा हुआ, आर्द्र, गीला, तर।
[सं० नमस्] २ नमस्कार।
३ देखो 'नवमी' (रू.भे.) उ०—१ आसाढ़ां री सूद नम, घण वादळ घण वीज। नाळा कोठा खोल दो, राखो हळ नैं बीज।
—वर्षा विज्ञान
उ०—२ अट्टारै तैयासियै, चैत मास नम स्यांम। रूपक 'बंक' वणावियो, धवळ-पचीसी नांम।—वां.दा.
नमक-सं०पु० [फ़ा०] भोज्य पदार्थों में एक प्रकार का स्वाद पैदा करने के लिये थोड़े मान में प्रयोग किया जाने वाला एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ, लवण, नोन।
यौ०—नमकहरांम, नमकहरांमी, नमकहलाल, नमकहलाली।
रू०भे०—नमख, निमक, निमख।
नमकसार-सं०पु०—एक प्रकार का सरकारी कर।
रू०भे०—निमकसार।
नमकहरांम-सं०पु०यौ० [फ़ा० नमक+अ० हराम] किसी का अन्न खाकर उसी को हानि पहुँचाने वाला, कृतघ्न।
रू०भे०—नमकहरांमी, निमकहरांम।
नमकहरांमी-सं०स्त्री० [फ़ा० नमक+अ० हराम+रा०प्र०ई]
१ कृतघ्नता, नमकहरामपन. २ देखो 'नमकहरांम' (रू.भे.)
रू०भे.—निमकहरांमी, नीमखहरांमी।
नमकहलाल-सं०पु० [सं० नमक+अ० हलाल] अपने स्वामी या अन्नदाता की सदैव भलाई चाहने वाला, स्वामिनिष्ठ, स्वामिभक्त।
रू०भे०—नमकहलाली, निमकहलाल, निमखहलाली।
अल्पा०—नमकहलालियो, निमकहलालियो।
नमकहलालियो—देखो 'नमकहलाल' (अल्पा., रू.भे.)
नमकहलाली-सं०पु० [फ़ा० नमक+अ० हलाल+रा०प्र०ई] १ नमकहलाल होने का भाव, स्वामिभक्ति।
२ देखो 'नमकहलाल' (रू.भे.)
रू०भे०—निमकहलाली।
नमकीन-वि० [फ़ा०] नमक के स्वाद वाला।
रू०भे०—निमकीन।
नमख—देखो 'नमक' (रू.भे.) उ०—जुड़े अर तंडळ रांण दूजा 'जगड़', ढाहण दळां बीजूजळां ढांण। अभंग रांण तणे नमख अजुआळियो, पमंग आतां लियो बीच पीठांण।—भाटी माहसिंह मोहो रो गीत
नमठणो, नमठवो—देखो 'निपटणो, निपटवो' (रू.भे.)
नमठणहार, हारो (हारी), नमठणियो—वि०।
नमठिओड़ो, नमठियोड़ो, नमठयोड़ो—भू०का०कृ०।
नमठीजणो, नमठीजवो—भाव वा०।
नमठाड़णो, नमठाड़वो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)
नमठाड़णहार, हारो (हारी), नमठाड़णियो—वि०।
नमठाड़िओड़ो, नमठाड़ियोड़ो, नमठाड़योड़ो—भू०का०कृ०।
नमठाड़ीजणो, नमठाड़ीजबो—कर्म वा०।
नमठाड़ियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नमठाड़ियोड़ी)
नमठाणो, नमठावो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)
नमठाणहार, हारो (हारी), नमठाणियो—वि०।
नमठायोड़ो—भू०का० ०।
नमठाईजणो, नमठाईजबो—कर्म वा०।
नमठायोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नमठायोड़ी)
नमठावणो, नमठावबो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)
नमठाणहार, हारो (हारी), नमठावणियो—वि०।
नमठाविओड़ो, नमठावियोड़ो, नमठाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
नमठावीजणो, नमठावीजवो—कर्म वा०।
नमठावियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नमठावियोड़ी)
नमठियोड़ो—देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नमठियोड़ी)
नमण-सं०स्त्री० [सं० नमन] १ नमस्कार, प्रणाम।
उ०—१ हरि कुंजर वंदन करै, नमण करै कर भाय। महाप्रभू कुण राज विण, मेरी करै सहाय।—गजउद्धार

२ विनीतता, विनम्रता । उ०—बीदग-बिरचो वीनड़ो, हठ गाढो ले हल्ल। नमण खमण छोडै नहीं, जोड़ कर जेहल्ल।—बां.दा.
क्रि०प्र०—करणी, राखणी ।
२ नमना क्रिया का भाव, नम्रता ।
उ०—नर सबळां-आगै निवळ, नीर धकै वांनीर । वाय धकै त्रिण जाय वच, भलो नमण गुण भीर ।—बां.दा.
३ नीचा स्थान, झुकाव (अ.मा.)

नमणि, नमणी—देखो 'नमण' (रू.भे.)
उ०—१ ऐरावणकुंभ समांन कुच युगळ, सावण-ती जाती समांन भुज, रताळ नेत्र, कुंवा समांन नमणि, वइरागर हीरा समांन दंतपंक्ति घटा रणितस्वर, त्रस्तहरिणी सद्रिस नयन ।—व.स.
उ०—२ नारिंगपुर मंडण मणि, नमणि करइ नर नारि। समय-सुंदर एहवि नति, विनति करइ वार वार ।—स.कु.

नमणी-वि० [सं०-नमन] (स्त्री० नमणी) १ विनयशील, विनीत, नम्र।
उ०—नमणी खमणी बहुगुणी, सुकोमळी जु सुकच्छ। गोरी गंगा-नीर ज्यूं, मन गरवी तन अच्छ।—ढो.मा.
२ जिसमें झुकने का गुण हो, नमनीय ।
उ०—धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि। मज्जीठां जिम रंगचणा, दई सु सज्जण मेळि ।—ढो.मा.

नमणौ, नमबौ-क्रि०अ० [सं० नमनम्] १ नीचे की ओर प्रवृत्त होना, झुकना । उ०—रंभ बिचै वणराय, जिल्है दळ जाहरां । नमि नमि द्रुम फळ-फूल, करै नवछाहरां ।—बां.दा.
क्रि०स०—२ नमस्कार करना, प्रणाम करना।
उ०—१ दुरयोधन चित्रंगदह मेल्हावि र्डाहि पत्थि । विज्जाहर रायहं नमइं दुरयोधनु लेउ सत्थि ।—पं पं च.
उ०—२ दानव सहि तुं सां डरै, अमर करै आदेस । नाग सेस तुं ना नमै, मोटा देव महेस ।—पी.ग्रं.
नमणहार, हारो (हारी), नमणियौ—वि० ।
नमवाड़णौ, नमवाड़बौ, नमवाणौ, नमवाबौ, नमवाड़णौ, नमवाड़बौ, —प्रे०रू० ।
नमाड़णौ, नमाड़बौ, नमाणौ, नमायौ, नमावणौ, नमावबौ —क्रि०स० ।
नमिग्रोड़ो, निमियोड़ो, नम्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नमीजणौ, नमीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
नम्मणौ, नम्मबौ, नवणौ, नवबौ, निमणौ, निमबौ, निवणौ, निवबौ —रू०भे० ।

नमत-सं०पु० [सं० नमत] नीचा स्थान, झुकाव (अ.मा.)
वि०—नम्र, विनीत. २ झुकने वाला ।
३ टेढ़ा, तिरछा ४ देखो 'निमित्त' (रू.भे.) (डि.को.)

नमदौ-सं०पु० [फा० नमदा] जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा ।

नमन—देखो 'नमण' (रू.भे.)

नमसकार—देखो 'नमस्कार' (रू.भे.) (अ.मा.)
उ०—१ स्री सरसत गणपत नमसकार । दीजियै मुज्ज वर बुध उदार । अवसांण सिध रहमांण अंस। बाखांण करूं नृप भांण वंस।—वि.सं.
उ०—२ च्यारि धूंई आगै च्यार तपसी बैठा छै। राजा जाइ अर तपसियां नूं नमसकार कियौ । तपेसरियां कह्यौ—आव भांणेज तो नं राजा अजैपाळ मेल्हियो छै ।—चौबोली

नमसक्रत-सं०पु० [सं० नमस्कृति] नमस्कार ।

नमसते—देखो 'नमस्ते' (रू.भे.)

नमस्कार-सं०पु० [सं०] प्रणाम, अभिवादन (डि.को.)
उ०—नमस्कार सूरां नरां, पूरा सापुरसांह । भारथ गज थाटां भिड़ै, अड़ै भुजां उरसांह ।—बां.दा.
रू०भे०—नमसकार, नमिस्कार, नमुकार, नमोकार, निमसकार, निमस्कार, निमिसकार, निमिस्कार ।

नमस्ते [सं०] एक वाक्य जिसका अर्थ है—आपको नमस्कार है ।
रू०भे०—नमसते ।

नमाम-सं०पु० [सं० नम्] १ नमस्कार ।
उ०—कळू मांय हेम पंथ डोहता सभद्रा काळी, मेहाळी सोहता नेत्र जाळी खळां मांम । आसुरांण रोहता दोहता देवी वेदवाळी, मोहता अभेद वाळी डाढ़ाळी नमांम।—नवळजी लाळस
रू०भे०—निमांम ।
२ देखो 'नमांमी' (रू.भे.)

नमांमी-वि० [देश०] १ बुरा, खराब (डि.को.)
उ०—१ जे अंतरजांमी वार नमांमी, स्वांमी जग साधार । जोड़ी चिरजीवं पतनी पीयं, सुज सस दीवं सार ।—र.ज.प्र.
उ०—२ कथां नांमी साजियौ हरांमी भडां तणौ कहै, कीधी की अमांमी कीधी नमांमी कुलाट । सुछत्री मारियौ दगा सू राजा हिंदवां सूर, पाट पती ति सूं हुवौ नछत्री मेवाट ।
—राजा राघोदेव झाला रो गीत
[सं० नमनम्] २ नमस्कार ।
रू०भे०—नमांम, निमामी ।

नमाड़णौ, नमाड़बौ—देखो 'नमाणौ, नमाबौ' (रू.भे.)
नमाड़णहार, हारो (हारी), नमाड़णियौ—वि० ।
नमाड़िअोड़ो, नमाड़ियोड़ो, नमाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नमाड़ीजणौ, नमाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
नमणौ, नमबौ—अक०रू० ।

नमाड़ियोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नमाड़ियोड़ी)

नमाज-सं०स्त्री० [फा० नमाज़] मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना (जो दिन में पांच वार होती है) ।
क्रि०प्र०—पढ़णी ।

रू०भे०—नम्माज, नवाज, निमाज, निम्माज, निवाज।

नमाजगाह-सं०स्त्री० [फ़ा० नमाज़गाह] मसजिद का वह स्थान जहां नमाज़ पढ़ी जाती है।
रू०भे०—निमाजगाह।

नमाजी-सं०पु० [फ़ा० नमाज़ी] १ नमाज पढ़ने वाला.
२ वह कपड़ा जिस पर खड़े हो कर नमाज पढ़ी जाती है।
रू०भे०—निमाजी।

नमाणो, नमावौ-क्रि०स० [सं० नमनम्] १ झुकाना, मोड़ना।
उ०—चाप नमायौ रामचंद, दुनि अनि भूप नमै दुरि।—रांमरासौ
२ नमस्कार कराना, प्रणाम कराना. ३ बाध्य करना, मजबूर करना. ४ झुकाना ५ 'नमणो' क्रिया का प्रे.रू.।
नमाणहार, हारौ (हारी), नमाणियौ—वि०।
नमायोड़ो—भू०का०कृ०।
नमाईजणो, नमाईजबौ—कर्म वा०।।
नमणो, नमबौ—अक०रू०।
नमाड़णो, नमाड़बौ, नमावणो, नमावबौ, नवाड़णो, नवाड़बौ, नवाणो, नवावौ, नवावणो, नवावबौ, नांमाड़णो, नांमाड़बौ, नांमाणो, नांमाबौ, नांमावणो, नांमावबौ, निमाड़णो, निमाड़बौ, निमाणो, निमाबौ, निमावणो, निमावबौ, निवाड़णो, निवाड़बौ, निवाणो, निवाबौ, निवावणो, निवावबौ, नीमाड़णो, नीमाड़बौ, नीमाणो, नीमाबौ, नीमावणो, नीमावबौ—रू०भे०।

नमायोड़ो-भू०का०कृ०—१ झुकाया हुआ, मोड़ा हुआ.
२ नमस्कार कराया हुआ, प्रणाम कराया हुआ.
३ बाध्य किया हुआ, मजबूर किया हुआ।

नमावणो, नमावबौ—देखो 'नमाणो, नमावौ' (रू.भे.)
उ०—१ माथ पगां सुरनाथ नमावै। गौरव सारद नारद गावै।
—र.ज.प्र.
उ०—२ नाहूल दुरंग नमावियौ। इम फतै कर घर आवियौ।—सू.प्र.
उ०—३ वन वाहर नाहर वसै, वाहर थाट विहार। तरवर गुलम समीर विण, न को नमावणहार।—बां.दा.
नमावणहार, हारौ (हारी), नमावणियौ—वि०।
नमाविग्रोड़ो, नमावियोड़ो, नमाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
नमावीजणो, नमावीजबौ—कर्म वा०।
नमणो, नमबौ—अक०रू०।

नमावियोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नमावियोड़ी)

नमि-सं०पु० [सं०] चालू अवसर्पिणी के २१वें तीर्थंकर का नाम (स.कु.)
२ देखो 'नवमी' (रू.भे.)

नमियोड़ो-भू०का०कृ०—१ नीचे की ओर प्रवृत्त हुवा हुआ, झुका हुआ. मुड़ा हुआ. २ नमस्कार किया हुआ, प्रणाम किया हुआ।
(स्त्री० नमियोड़ी)

नमियो-सं०पु० [सं० नवम्] १ मृत्योपरांत नौवां दिन.
२ मृत्योपरांत नौवें दिन किया जाने वाला संस्कार विशेष।
रू०भे०—नमीयौ, नवियौ, नौंवां।

नमिस्कार—देखो 'नमस्कार' (रू.भे.) उ०—नमो, नमो अजंपा नमिस्कार, ओउं ओउं मंत्र अणपार पार। आदेस अजंपा हो अलेख, तू भव सवंध ससार भेख।—पी.ग्रं.

नमी-सं०स्त्री० [फ़ा०] १ गीलापन, आर्द्रता.
२ देखो 'नवमी' (रू.भे.)
३ देखो 'नमियौ' (अल्पा., रू.भे.)

नमीयौ—देखो 'नमियौ' (रू.भे.)

नमुकार—१ देखो 'नवकार' (रू.भे.)
२ देखो 'नमस्कार' (रू.भे)

नमुचि-सं०पु० [सं०] १ समुद्री झाग जैसे वज्रास्त्र की सहायता से इन्द्र द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य. २ एक दैत्य का नाम जो शुंभ-निशुंभ का छोटा भाई था. ३ कामदेव, अनंग. ४ एक ऋषि का नाम.

नमुचिसूदन-सं०पु० [सं०] नमुचि दैत्य का नाश करने वाला, इंद्र।

नमूनो-सं०पु० [फ़ा० नमूना] १ मूल पदार्थ के गुण और स्वरूप आदि का ज्ञान करने के लिये उस पदार्थ में से निकाला हुआ छोटा या थोड़ा अंश. २ वह वस्तु जिसके द्वारा उसके सदृश दूसरी वस्तुओं के गुण या स्वरूप का ज्ञान हो जाय. ३ वह वस्तु जिसे देख कर वैसी ही दूसरी वस्तुओं की रचना की जाय।

नमेड़णो, नमेड़बौ—देखो 'निपटाणो, निपटावौ' (रू.भे.)
नमेड़णहार, हारौ (हारी), नमेड़णियौ—वि०।
नमेड़िओड़ो, नमेड़ियोड़ो, नमेड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
नमेड़ीजणो, नमेड़ीजबौ—कर्म वा०।

नमेड़ियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे)
(स्त्री० नमेड़ियोड़ी)

नमोकार—१ देखो 'नवकार' (रू.भे.)
२ देखो 'नमस्कार' (रू.भे.)

नमो-अव्य० [सं० नमः] अभिवादन प्रकट करने का शब्द, नमस्कार।
(अ.मा.) (डिं.को.)
वि०—जो आठ के बाद पड़े, नवमा।
उ०—अस्टम लख उण वार, लहै 'खेतल' कवि लाळस। सुकवि हेम सांमोर, जेण लख नमो काज जस।—सू.प्र.
सं०पु०—नौ का अंक।
रू०भे०—निमो, नीमो।

नम्म—देखो 'नवमी' (रू.भे.) उ०—लागे वागा खारला, मांझी मेर मरन्न। चांपा चाळीसै वरस, पोह उजाळी नम्म।—रा.रू.

नम्मणो, नम्मबौ—देखो 'नमणो, नमवौ' (रू.भे.)
उ०—तवै अरज सुग्रीव तांम वर वुद्धि विचारे। भारी ह्वै सो भूपति भर नम्मै भारे।—सू.प्र.

नम्मणहार, हारौ (हारी), नम्मणियौ—वि० ।
नम्मिम्रोड़ौ, नम्मियोडो, नम्मचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
नम्मीजणौ, नम्मीजबौ—भाव वा० ।

नम्माज—देखो 'नमाज' (रू.भे.)

नम्मियोड़ौ—देखो 'नमियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नम्मियोड़ी)

नम्र-वि० [सं०] १ जिसमें नम्रता हो, विनीत. २ झुका हुम्रा ।

नम्रता-सं०स्त्री० [सं०] नम्र होने का भाव ।

नय-सं०पु० [सं०] १ नीति । उ०—करुणा निधांन कोदंड कर, नित चालण यळ रीत नय । रघुकुळ दिनेस जन लाज रख, जग ग्रधार ग्रौवेस जय ।—र.ज.प्र.
२ पदार्थ के किसी एक ग्रंश जानने वाले ग्रौर ग्रन्य ग्रंशों का खंडन न करने वाले ज्ञाता के ग्रभिप्राय: का नाम । यह सात प्रकार की होती है यथा नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द समभिरूढ ग्रौर एवंभूत । ३ न्याय (डिं.को.) ४ देखो 'नदी' (रू.भे.)
उ०—१ सेस हिमाळय स्रंग, सुरगय हय नय पय दरस । रुद्र सिलोचय रंग, जय जय लंक वरीस जस ।—वां.दा.
उ०—२ खेलत खेलत रायकुमर, ग्रंतेउरि जुत्ता । गंग जवणि नय ग्रंतराळि, कुळगिरि संपत्ता ।—प्राचीन फागु संग्रह
५ देखो 'नै' (रू.भे.)

नयड़ौ—देखो 'निकट' (ग्रल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० नयड़ी)
रू०भे०—नइड़ौ, नइडौ ।

नयडउ—देखो 'निकट' (रू.भे.) (उ.र.)

नयडौ—देखो 'निकट' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—नयडौ मुझ मांत हुमैं नेहडी । सुपियार रखै किम तेल चढ़ी ।—पा.प्र.
(स्त्री० नयडी)

नयड्डु—देखो 'नाडौ' (मह., रू.भे.) उ०—नेह्ली नीर भरिया नयड्डु, वांकउ दुरंग पाखी विहड्डु । सारीख जइत सुरितांण साज, रामावतार राठउड़ राज ।—रा.ज.सी.

नयण—देखो 'नयन' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—राज कंवर रळियावणा, नयणां रा हे धन जीवण जेह के । हरसावण हिवडां तणा, बरसावण हे ग्रानंद-रस मेह के ।—गी.रां.

नयणगोचर-वि० [सं० नयनगोचर] जो ग्रांखों के सामने हो, समक्ष ।

नयणड़ौ—देखो 'नयन' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—१ पाई नी ग्रांगुळी पोल रा परठव्या, नेवरा संठवी नाद सारा । पहिर पटोलड़ी हीन नी चोलड़ी, नारी नै नयणड़े हरण हारा ।—रुकमणी मंगळ
उ०—२ बळिहारी गुरु वयणड़े, बळिहारी गुरु मुख चंद रे । बळिहारी गुरु नयणड़े, पेखहतां परमाणंद रे ।—स.कु.

नयणपट-सं०पु० [सं० नयनपट] ग्रांख की पलक ।

नयणी-सं०स्त्री० [सं० नयन+रा०प्र०ई] ग्रांख की पुतली ।

नयणौ—देखो 'नयन' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—सरध्या निरग्रंथ वयणौ, उघड़िया नयणौ रे । मोने परतीत ग्राई रे, धरम नी रुचि पाई रे ।
—जयवांणी

नयन-सं०पु० [सं०] ग्रांख, चक्षु, नेत्र । उ०—करि सहाय कमळासन केरी । हरन दनूज दसों दिस हेरी । देखि देखि दांनव ग्रति दारुन । राजिव नयन भये रोखारुन ।—मे.म.
रू०भे०—नग्रण, नइण, नयण, नैण ।
ग्रल्पा०—नयणड़ौ, नयणौ, नयनडौ ।

नयनडौ—देखो 'नयन' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—गंग-यमुन-परि नयनडां, वहइ निरंतर पूरि । तरइ नहीं तन नावडी, करता झूरि म झूरि ।
—मा.कां.प्र.

नयर-वि० [सं० निकट] (स्त्री० नयरी) नजदीक, समीप, पास ।
सं०पु०—१ ग्रार्या गीति या स्कंध का एक भेद विशेष ।
२ देखो 'नगर' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—१ तांम साह तजवीज, एक चित मझि ग्रोधारै । नयर जोध ग्रंब नयर, वडा दो भूप विचारै ।—सू प्र.
उ०—२ दहल पुर नयर पूगी महळ दोयणां । भय रहित किया सुर नाग नर-भोयणां । उमंग जुध करग-चंचळ ग्रचळ ग्रोयणां । लेख लंकेस ग्रवधेस दळ लोयणां ।—र ज.प्र.

नयरि—देखो 'नगर' (ग्रल्पा., रू भे.)
वि०स्त्री०—निकट, पास, समीप ।

नयरी—देखो 'नगर' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—वळिभद्र बंधव तेड़ियौ जी बीजउ प्रसंकुमार । वईद्रभी नयरी वीवाह छइजी, रहीय म लावौ वार ।—रुकमणी मंगळ

नयसील-वि० [सं० नयशील] १ विनीत, नम्र. २ नीतिज्ञ ।

नयसेन-सं०पु०—वीर, ग्रर्जुन (ग्र.मा.)

नयौ—देखो 'नवौ' (रू.भे.) उ०—१ तद कांधळजी ऊठ मुजरौ कियौ··· नयी धरती खाटियाईज रैसी ।—द.दा.
उ०—२ कीच सो गलीच काम, भूलि तैं भयौ । नीच कांम बीच ग्रजौं, नीच तूं नयौ ।—ध.व ग्रं.
(स्त्री० नयी)

नरंग-सं०स्त्री० [सं० नरांग] नारी, स्त्री ।
उ०—सोभत रंग सुगंध री, कैफ नरंग सुरंग । महल सुरंगां मोहियौ, राजेस्वर नवरंग ।—रा.रू.

नरंजण—देखो 'निरंजन' (रू.भे.) उ०—सुरह दुज देव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तिलक तुळसी नरंजण जाप । राह हिंदू धरम तणी सावत रहै, प्रगट मुरधर धणी तणौ परताप ।
—महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

नरंजणी—देखो 'निरंजनी' (रू.भे.)

नरंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—१ ग्रतुळीबळ घट्ट मेल्हिया ग्रांहचइ, महूरत गिर साझिवा मसंद । प्रभु तिण घमंड किया पइसारइ, दळ मेले ग्राविया नरंद ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वाजंत्र वजत वमेक, क्रत राग रंग ग्रनेक। नवछावरेस नरंद, उछळंत द्रव झड़ इंद।—सू.प्र.

नरंम—देखो 'नरम' (रू.भे.) उ०—सहि क्रम 'जैसाह' सूं, मिळिया ग्राय प्रथंम। ऊपर देख 'ग्रजीत' री, ग्रालम लेख नरंम।—रा.रू.

नर-सं०पु० [सं०] (स्त्री० नारी) १ पुरुष, मर्द, ग्रादमी.

२ नारायण के भाई ग्रौर ईश्वर के ग्रंशावतार माने जाने वाले एक पौराणिक ऋषि जो धर्मराज ग्रौर दक्ष प्रजापति की कन्या से उत्पन्न हुए थे. ३ शिव, महादेव. ४ विष्णु. ५ ग्रर्जुन, पार्थ (ग्र.मा., डिं.को.)

उ०—नमो नर संदरण हांकणहार, सवे दळ कौरव करण संहार।—ह.र.

६ सेवक. ७ राजा सुधृति के पुत्र का नाम.

८ गय राक्षस के पुत्र का नाम.

९ जल, पानी (ना.डिं.को.) १० एक राजपूत वंश (कां.दे.प्र.)

११ १८ लघु ग्रौर १५ गुरु कुल ३३ वर्ण या ४८ मात्रा का दोहा नामक छंद विशेष (र.ज.प्र.)

१२ छप्पय छंद का ६३ वां भेद जसमें ८ गु ग्रौर १३६ लघु से १४४ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं (र.ज.प्र.)

१३ ग्रार्या गीति या खंधाण (स्कंधक) का एक भेद विशेष (पिंगळ प्रकास)

वि०—१ जो (प्राणी) पुरुष जाति का हो, मादा का उल्टा.

२ वीर, योद्धा। ०—ऊकळता वूकौ मती, है नह कौतक हास। नाहर सूं लड़णौ नरां, पड़णौ सो जम पास।—बां.दा.

नरग्रासण-सं०पु०—वह यान जिसे मनुष्य कंधे पर रख कर खींचते हैं, पालकी। उ०—नर-ग्रासण नेहर तणौ, पुणग न नभ चढ़ पाय। सत हुंत सगळी संपजै, झट उड स्नग जाय।—रेवतसिंह भाटी

नरइंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—१ न को तो मीढ़ वियौ नरइंद।—रांमरासौ

उ०—२ नरइंद 'ग्रभौ' नवकोट नाथ। सरि करण सतरि घरवर समाथ।—रा.रू.

नरक-सं०पु० [सं०] १ धर्म्म शास्त्रों ग्रौर पुराणों के ग्रनुसार वह स्थान जहां पापी ग्रात्माग्रों को फल भोगने के लिये भेजा जाता है, जहन्नुम, दोजख (डिं.को.) उ०—नरक समौ दुख-थळ नहीं, वाडव समौ न ताप। लोभ समौ ग्रोगण नहीं, चुगली समौ न पाप।—बां.दा.

क्रि०प्र०—में जाणौ, में पड़णौ, भोगणौ

२ वह स्थान जहां बहुत ग्रधिक पीड़ा या कष्ट हो।

मुहा०—१ नरक भोगणौ—बहुत कष्ट सहना.

२ नरक में पड़णौ—दुख ग्राना, विपत्ति से ग्रसित होना, कष्ट झेलना.

३ नरक रा दिन बीताणा—कष्ट के दिन व्यतीत करना, दुख सहना।

३ बहुत ही गंदा स्थान।

रू०भे०—नरकांण, नरग, नरय, नरिग, नारकी, नारगी।

नरकगति-सं०स्त्री० [सं०] वह कर्म जिसको करने से मनुष्य को नरक में जाना पड़ता है (जैन)

नरकगामी-वि० [सं० नरकगामी] जो नरक में जाने योग्य हो।

नरकचतुरदसी, नरकचवदस-सं०स्त्री० [सं० नरकचतुर्दशी] कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी का दिन।

वि०वि०—इस दिन यम की पूजा होती है। घर को ग्रच्छी तरह साफ कर के सारा कूड़ा-करकट बाहर फेंका जाता है।

नरकचूर—देखो 'कचूर' (रू.भे.) (ग्रमरत)

नरकांण—देखो 'नरक' (रू.भे.)

उ०—पित गुरां वयण प्रमांण रे, जो करै नांहि घजांण रे। नर भोगवै नरकांण रे, भू जितै ग्रवर भांण रे।—र.रू.

नरकांतकत-सं०पु० [सं० नरकांतकृत] श्रीकृष्ण (ग्र.मा.)

नरकार—देखो 'निराकार' (रू.भे.)

नरकारिसख-सं०पु० [सं० नरकारिसखा] वीर ग्रर्जुन (ग्र.मा.)

नरकासुर-सं०पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध ग्रसुर जो पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न हुग्रा था। उ०—महाराजा तस्यौं कही नै कंस मामौ नरकासुर बेटां निज नेह।—पी.ग्रं.

रू०भे०—नृकासुर।

नरकुटक-सं०पु० [सं० नर्कुटकम्] नाक, नासिका (डिं.को.)

नरकेसरी-सं०पु० [सं०] १ नृसिंह भगवान.

२ नरक में गिरने वाला, दुरात्मा, पापी।

रू०भे०—नरकेहरी।

नरख—देखो 'निरख' (रू.भे.) (डिं.को.)

नरखणौ, नरखबौ—देखो 'निरखणौ, निरखबौ' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ सांवण पहिरण यादर चीर, परणालिइ वहइ ग्ररघळ नीर। सइरि सोंदूरी कांचळी कसइ, नरखइ नारि ते मरकलइ हसइ।—प्राचीन फागु संग्रह

उ०—२ सकर घनख सरस रस सदन सख, नरख वदन जग भय नसत। तन मन वय मम स जन सहज तय, लछण भरथ ग्ररिघण लसत।—र.ज.प्र.

नरखणहार, हारौ (हारी), नरखणियौ—वि०।

नरखिग्रोड़ौ, नरखियोड़ौ, नरख्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नरखीजणौ, नरखीजबौ—कर्म वा०।

नरखयकार-सं०पु०—[सं० नर+क्षय कर] ग्रसुर, दैत्य, राक्षस (डिं.को.)

नरखियोड़ौ—देखो 'निरख्योड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नरखियोड़ी)

नरग—देखो 'नरक' (रू.भे.) उ०—निंदक निच्चय नरग इ जाई, निंदक चउथउ चंडाळ कहाई।—स.कु.

नरगण-सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष में नक्षत्रों का एक गण।

नरगत-सं०पु० [सं० नरगति] मनुष्य का रंग-ढंग।

ज्यूं०—राजगत, देवगत, नरगत।

नरगस—देखो 'नरगिस' (रू.भे.) (रा.सा.सं.)

नरगियो कोट–सं०पु० [देश०] १ ताश के खेल में रंग बोलने वाले पक्ष की हार विशेष।

(मि० नकट्टियोकोट)

नरगिस–सं०पु० [फा०] १ प्याज के पौधे से मिलता-जुलता एक प्रकार का पौधा जिस पर कटोरीनुमा सफेद फूल लगते हैं जो बहुत सुगंधित होते हैं।

२ इस पौधे का फूल।

रू०भे०—नरगस।

नरगो–सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वाद्य।

उ०—नीसांण वाजि नरगा नफेरि, रउद्र गति डउंडि भरहरी भेरि। मरुग्राहि सेन झूलिया मसत्त, साइयर जांणि फाटा सपत्त। —रा.ज.सी.

नरड़ियो—देखो 'नरड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

नरड़ो–सं०पु० [देश०] चमड़े या सूत आदि की बनी हुई बांधने की डोरी, बंधन। उ०—गोवै चरतोड़ी पेड़ां थिग मेडी। भैं भैं करतोड़ी भेडां ढिग मेडी। ऊखा ऊरणियां खरसणियां ओलै। डरड़ा नरड़ा विण अरड़ा दे टोळै। —ऊ.का.

(मि० नाड़ो)

अल्पा०—नरड़ियो।

नरजंत्र–सं०पु० [सं० नरयंत्र] सूर्य सिद्धान्त के अनुसार एक प्रकार का शंकु यंत्र।

नरजू–सं०पु० [देश०] १ बड़ा तराजू।

उ०—काळी भोत, कुरूप, कस्तूरी कांटै तुलै। सक्कर वडी सुरूप, नरजां तुलै नाथिया।—अज्ञात

२ चंद्र, चन्द्रमा (ना.डिं.को.).

नर-जांन–सं०पु० [सं० नर+यान] मनुष्यों द्वारा उठा कर ले जाया जाने वाला यान, पालकी। उ०—नरजांन वळै तखत रेवांन, छांहगीर जांणी रचै समांन।—बिन्हैरासो

नरजू–सं०पु० [देश०] खपरैल के मकान की दीवार के बाहर के हिस्से में लगाई जाने वाली वह लकड़ी जो ऊपर की छाजन को थामे रहती है।

नरझर—देखो 'निरझर' (रू.भे.) उ०—गुण में जण जण कंठ गवीजे, नरमळ ज्युं नरझर में नीर। जग माझल वसतार घणै जस, हुओ अमावड हुआ हमीर।—जोधपुर नरेस महाराजा मानसिंह

नरणेजक–सं०पु० [सं० निर्णेजक] रंगरेज (डि.को.)

रू०भे०—निरणेजक।

नरणो—देखो 'निरणो' (रू.भे.)

नरत—देखो 'निरत' (रू.भे.) उ०—भैंचको फरत जांणे चरत भूतरो, वेग मारूत री हरत वाचै। कवियणां दियो काछी नरत करंतो, सुतन 'रामेण' सतवरत साचै।—जसजी आढ़ो

नरतक–सं०पु० [सं० नर्त्तक] १ नाचने वाला. २ नट. ३ शिव, महादेव।

रू०भे०—नरत्तक, निरतक।

नरतकी–सं०स्त्री० [सं० नर्त्तकी] नाचने वाली, वेश्या, रंडी।

उ०—करघणियां री झणक सांझ नित नाच करंतां। थाकी कंवळी बांह रतन-जुत चंवर ढुळंता। नरतकियां नख पाय मेह री पहली बूंदां। लांबा भंवर कटाछ नांखती प्रीत विलूंवां।—मेघ.

रू०भे०—नरत्तकी, निरतकी।

नरतन–सं०पु० [सं० नर्त्तन] नृत्य, नाच (डि.को.)

रू०भे०—नरत्तन, निरतन।

नरतनसाळ, नरतनसाळा–सं०स्त्री०यौ० [सं० नर्त्तनशाला] नृत्यशाला, नाचघर।

रू०भे०—नरत्तनसाळ, नरत्तनसाळा।

नरतात–सं०पु० [सं०] राजा, नृपति।

नरति–सं०स्त्री० [सं० निरुक्तिः] सुधि, खबर।

उ०—निसि ए हुइ सही, बोलावूं वाला आज। नरति लाधि नारी नीं, तु सरि माहारूं काज।—नळाख्यांन

नरतूं–वि०—हलका, छोटा (?)

उ०—एक नरनइं नरतूं कहइ, जिमतां मूंकी जाई। वनिता मिसि वधांमणां, धवळ देयंती धाई।—मा.कां.प्र.

नरतो–वि० [सं० न-रतः] १ हीन, नीच. २ कम, थोड़ा।

नरत्तक—देखो 'नरतक' (रू.भे.)

नरत्तकी—देखो 'नरतकी' (रू.भे.)

नरत्तन—देखो 'नरतन' (रू.भे.)

नरत्तनसाळ, नरत्तनसाळा—देखो 'नरतनसाळा' (रू.भे.)

नरत्रांण–सं०पु० [सं० नरत्राण] १ श्रीकृष्ण. २ नरपाल राजा।

नरदणो, नरदबो–क्रि०अ० [सं० नर्द] भीषण शब्द करना, भयंकर आवाज करना, जोर से शब्द करना।

उ०—मठ देवकुळ खडहडत पाडतउ, चतुस्पद दडवड द्रहवडतउ, घलहल घ्रित तैल भोजन ढोळतउ, खळहळ ढळत परट्कुरासि राळतउ, मसमसत क्यांण करद्मतउ, टसटसत वनभंगि नरदतउ सुंडादंड आच्छोडतउ, परचक्रजिम भाड भाडइ फोडतउ, लागउ नगर भाजेवा, जन गांजेवा।—व स.

नरदेव–सं०पु० [सं०] १ ब्राह्मण, विप्र. २ राजा, नृप।

नरदो–सं०पु० [फा० नावदान] मैला पानी बहने की नदी।

नरधरम, नरधरमो–सं०पु० [सं० नरधर्मन] कुबेर (ह.नां., अ.मा., डिं.को.)

नरनराड़णो, नरनराड़बो—देखो 'नरनरावणो, नरनरावबो' (रू.भे.)

नरनराड़ियोड़ो—देखो 'नरनरावियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नरनराड़ियोड़ी)

नरनराणो, नरनराबो—देखो 'नरनरावणो, नरनरावबो' (रू.भे.)

नरनरायोडो—देखो 'नरनरावियोडो' (रू.भे.)

(स्त्री० नरनरायोडी)

नरनरावणो, नरनरावबो-क्रि०अ०—बड़बड़ाना ।
उ०—वच्छे ! सासूरा तणी इसी स्थिति जांणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ नीचउं देखइ, वर पुण लडइ, देवर नडइ, जेठांणी कुसइ, देग्रांणी हसइ, नणंद नरनरावइ, सासू कांम करावइ ।—व.स.
नरनराड़णो, नरनराड़बो, नरनराणो, नरनराबो—रू०भे० ।
नरनरावियोड़ो-भू०का०कृ०—बड़बड़ाया हुआ ।
(स्त्री० नरनरायोड़ी)
नरनाथ, नरनाथो-सं०पु० [सं० नरनाथ] राजा, नृप (डिं.को.)
उ०—राजा जाय ऊभो रह्यो, ऊंचो न करयो न हाथो रे। आप पधारो मुनि ना कह्यो, पिछतायो नरनाथो रे।—जयवांणी
रू०भे०—नरनाह, नरांनाथ, नरांनाह ।
अल्पा०—नरनाथो।
नरनायक-सं०पु० [सं०] राजा, नृप ।
रू०भे०—नरांनायक ।
नरनारण, नरनारायण-सं०पु०यो० [सं० नरनारायण] नर और नारायण नामक दो ऋषि जो विष्णु के अवतार कहे जाते हैं ।
उ०—नमो नरनारण जोग निवास, नमो दुख हूंत उवारणदास ।
—ह.र.
नरनारि-सं०स्त्री० [सं० नर=अर्जुन+नारी=स्त्री] अर्जुन की पत्नी, पांचाली, द्रौपदी।
नरनाह—देखो 'नरनाथ' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—सिध तांम्रपरणी प्रमुख, नदियां ते नरनाह। हैवर ढोया 'भीम' हर, गिरां उतंगां गाह ।—बां.दा.
नरनाहर-सं०पु० [सं० नर+नाहरि] नृसिंहावतार ।
उ०—१ नाहर करण तणो नरनाहर, जवनां गजां सिकारी जाहर ।
—रा.रू.
उ०—२ कै बाहर प्रहळाद की नरनाहर आया ।—वं.भा.
नरप—देखो 'नृप' (रू.भे.) (डिं.को.)
नरपत, नरपति, नरपती, नरपत्त, नरपत्ति, नरपत्ती-सं०पु० [सं० नरपति] १ राजा, नृपति, नृप । उ०—१ नरपत आसथांन अनड़ां नड़, धुर तिण पाट प्रकासै धूहड़ ।—रा.रू.
उ०—२ पोस महासुख पेखतां, स्री नरपति 'अभसाह'। आयो रस लाइक अवनि, मंगळदायक माह ।—रा.रू.
उ०—३ ज्यों मछी जळ माहि, तरछी तरकावै। नरपति छटा निहारि, हियै अति हरखावै ।—सिववगस बारहठ
उ०—४ स्रम थोड़ै बोह नफो सापजै, बीसर मती अनोखी वात । रहै प्रसन्न ऐ आयस रोधै, छात सिधा नरपतियां छात ।—बां.दा.
उ०—५ रैणा आया राठवड़, थापै राण तखत्त। दोळा त्रीस हजार दळ, अंकळ 'अजो' नरपत्त ।—रा.रू.
उ०—६ साह दिलासा मोकळै, अब क्यूं राखो दूर । नरपत्ती 'जसराज' रो, लावो पुत्र हजूर ।—रा.रू.

रू०भे०—नृपत, नरवइ, नरवय, नरांपत, नरांपति, नरांपती, नरांपत्त।
नरपसु-सं०पु० [सं० नरपशु] नृसिंह ।
नरपाळ-सं०पु० [सं० नृपाल] मनुष्यों का पालक, राजा, नृप
(अ.मा., डिं.को.)
उ०—कहियो नरपाळ आवियां कटकां, घूणि छडाळ घरा मैं धोळि। पोळि घड़ा गजवाजि प्रांमतो, पड़तै भार न छांडूं पोळि।
—बारहठ मोदा नरू अमरावत रो गीत
नरपीठ-सं०पु० [सं०] बनावट विशेष का भवन (व.स.)
नरपुर-सं०पु० [सं०] मर्त्यलोक, भूलोक ।
नरबदा-सं०स्त्री० [सं० नर्मदा] अमरकंटक से निकल कर भड़ौंच के पास खंभात की खाड़ी में गिरने वाली मध्यप्रदेश की एक नदी।
उ०—सुणतां आठ मिसल भड़ साथै। हित पत खड़ग तोलियां हाथै। यों मग नदी नरबदा आयां। वळियो 'अजन' भड़ां रसवायां।—रा.रू.
रू०भे०—नरमदा, नरबदा, निरमदा ।
नरबांण—देखो 'निरवांण' (रू.भे.) उ०—जाग छकां हिंदवांण जटैत वीरांण जकै, जोम छकै जोरांण कटैत मोह जाळ। येटु करबांण झाटां देवाळ वटैत थकै, नरबांण पटैत हुचकै नराताळ।
—दयाळदासजी रै साथां रो गीत
नरवाह—देखो 'निरवाह' (रू.भे.)
नरवाहण—देखो 'नरवाहण' (रू.भे.) (डिं.को.)
नरवाहणो, नरबाहबो—देखो 'निरवाहणो, निरवाहबो' (रू.भे.)
उ०—हाक रणढाक मल वीर मरदां हला, राम गळा बिरुधा लुंब सूरा। अगै पग तोल कर तोपयळ ऊथला, भलो नरबाहियो बोल भूरा।—रावत संग्रांमसिंह सक्तावत रो गीत
नरवाहियोड़ो—देखो 'निरवाहियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नरवाहियोड़ी)
नरभक्षी-सं०पु० [सं० नरभक्षिन्] मनुष्यों को खाने वाला, दैत्य, राक्षस।
नरभव-सं०पु०यो० [सं०] मनुष्य योनि, मनुष्य जन्म ।
उ०—१ केसर चंदन पूज करेव रे, लाहो नरभव इह विध लेव रे। कहै ध्रमसी जोडि कर बेव रे, तुझ सेवा मुझ या हीज टेव रे।
—ध.व.ग्रं.
उ०—२ सो धम्म रम्म जं गुण सहिय, दांनसीळ तव भव मउ। भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नरभव आलि म नीगमउ।—ध.व.ग्रं.
उ०—३ रतन चिंतामण नरभव पाय नैं, चित्त राखीजो रे ठांम। निद्रा विकथा रे आळस छोड नैं, लो भगवंत रो रे नांम ।—जयवांणी
नरभुवण-सं०पु०यो० [सं० नर+भवन] मर्त्यलोक।
नरभै—देखो 'निरभय' (रू.भे.) उ०—केसव नांम विना अणभै कर। कौसळनंद जनं नरभै कर।—र.ज.प्र.
नरम-वि० [फ़ा० नर्म] १ सख्त का विपरीत, जो कड़ा न हो, जो खुरदरा न हो, मुलायम ।

२ कोमल, मृदुल, नाजुक, सुकुमार। ज्यूं—नरम गात री सुंदरी।
उ०—नरम मनहु नवनीत अरुण रंग एडियां।—सिववक्स पाल्हावत
३ लचकदार, लचीला। ज्यूं—नरम बैंत, नरम कांवड़ी।
४ तेज का उलटा, मंदा। ज्यूं—नरम आंच।
५ धीमा, मद्धिम. ५ सुस्त, आलसी. ६ सरल, सीधा, विनीत, विनम्र। उ०—गुण सूं तजै न गांस, नीच हुग्रै डर सूं नरम। मेळ लहै खर मांस, राख पड़ै जद राजिया।—किरपारांम
७ शीघ्र पचने वाला, हलका। ज्यूं—नरम भोजन, नरम थूली।
८ आलसी, सुस्त. ९ जिसकी सतह दबाने से सरलता से दब जाय, जो दबाने से सुगमता से दब जाय, मुलायम. १० जिसकी प्रकृति कोमल हो, जो रूखा न हो। ज्यूं—इण री दिल घणो नरम है, इणनै झट दया आजावैला।
११ जो तोल में अपेक्षाकृत कम वजनी हो, हलका.
१२ कमजोर, निर्बल. १३ जिसमें पौरुष का अभाव हो।
सं०पु० [सं० नर्मन्] १ परिहास, हंसी, ठट्ठा।
उ०—रांणै समांन वय रा विवाह रो नरम कीधो, सुणि कुमार चूंडै वडा प्रसन्न रै प्रमांण पिता रो संबंध करवाइ आप चीतौड़ री गादी छोडण रो लेख करि मारवाड़ रै अधीन कीधो।—वं.भा.
२ देखो 'नरमो' (मह., रू.भे.) (व.स.)
रू०भे०—नरंम, नरमउं, नरम्म।

नरमउं—१ देखो 'नरम' (रू.भे.) २ देखो 'नरमो' (रू.भे.)

नरमखरव—सं०पु० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

नरमदा—देखो 'नरबदा' (रू.भे.) (डि.को.)

नरमदेस्वर—सं०पु० [सं० नर्मदेश्वर] नर्मदा नदी से निकलने वाले एक प्रकार के शिवलिंग।

नरमयंद—सं०पु० [सं० नर+रा० मय+सं० इंद्र] नृसिंह भगवान।

नरमळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.) उ०—जग जनक धनक हर हरण करण जय। चत नरमळ नहचळ चरण। अकरण करण समरण अघ अणघट। सक रघुबर असरण सरण।—र.ज.प्र.

नरमांनी—देखो 'नरमो' (रू.भे.) (व.स.)

नरमाई, नरमी—सं०स्त्री० [फ़ा नर्म+रा०प्र० आई, फा० नर्म+रा०प्र०ई] १ नम्रता, विनम्रता। उ०—१ बडां री विनय विवेक, राखै नरमाई विसेस।—जयवांणी
उ०—२ तो एक बडेरो थो उण कही—मोटो सरदार छै जे इतरी नरमी देवै छै सो नारा परा देवो।—अमरसिंह राठौड़ री वात
२ विनय। उ०—१ इण इसड़ी नरमाई कीधी रे। इंद्र जब दिलासा दीधी रे।—जयवांणी
उ०—२ ताछ ताछ बंटि अतर, मंडि डंबर मनुहारां। नरमी करै अनेक, 'अभा' आगळि उण वारां।—सू.प्र.
३ कोमलता, मृदुता, लचक।
उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमत चंदावदन री देह री नरमाई गुलाब फूल, तिलफूल सारीखी। हंस गमणी री गज गति लाड गति छै। इण भांत नख-सिख सूधा सोळै सिणगार कियां बारै आभूखण विराजिया छै।—रा.सा.सं.
रू०भे०—नरम्मी।

नरमु—देखो 'नरमो' (मह., रू.भे.) (व.स.)

नरमेध—सं०पु० [सं०] चैत्र शुक्ला दशमी से शुरू होकर चालीस दिन तक चलने वाला एक प्रकार का यज्ञ जिसमें प्राचीन समय में मनुष्यों के मांस की आहुति दी जाती थी।

नरमो—सं०पु० [?] एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)
रू०भे०—नरमउं, नरमांनी, नरमु।
अल्पा०—नरमियो।
मह०—नरम, नरम्म।

नरम्म—१ देखो 'नरम' (रू.भे.) उ०—इळ चढे पह उण वार, पह चढे दुरग पगार। पगमंडां हीर पसम्म, नवरंग वांणि नरम्म।—व.स.
२ देखो 'नरमो' (मह., रू.भे.) (व.स.)

नरम्मी—देखो 'नरमी' (रू.भे.) उ०—मिळियो 'अजमाल' सूं, आइ उज्जळ सपतम्मी। खां 'इतकाद' निबाव, जाव विण ताव नरम्मी।
—रा.रू.

नरयंद—सं०पु० [सं० नर+इंद्र] १ विष्णु (डि.नां.मा.)
२ शिव, महादेव (डि.नां.मा.)
३ देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—गुडि स्रीकळस गयंद, चाळक तूं जिण दिस चढै। उण दिस रा दरयंद, सकळस आवै सांमहा।
—बां.दा.

नरय—देखो 'नरक' (रू.भे.)
उ०—लाख जीभ जेहइ मुख माहि, नरग तणां दुक्ख तिणि न कहाइं। नरय वेयण जो कहइ विचार, केवळ नांणि न जाइं पारि।
—चिहुंगति चउपई

नरलंग—देखो 'निरलंग' (रू.भे.) उ०—रोदा आंज ऊजळा रूकां, वैर-वाळ उजवाळ वट। पग नरलंग नरलंग अंग पाड़ै, भुज नरलंग नर-लंग भ्रगुट।—संकरजी बारहठ

नरलोक, नरलोग—सं०पु० [सं० नरलोक] मनुष्यलोक, मृत्युलोक, संसार। उ०—नागलोक नरलोक की, नह सुरलोक समाय। जेथ तेथ प्रांणी जळै, लालच हंदी लाय।—बां.दा.
रू०भे०—नरलोय।

नरलोभ—देखो 'निरलोभ' (रू.भे.) उ०—नडर सधर नरलोभ वैर जूना उधरावै। पारथियां सिध 'पाळ' छतै नाकार न लावै।—पा.प्र.

नरलोय—देखो 'नरलोक' (रू.भे.) उ०—हरि रस सुं सुधबुध हुवै, कस्ट म व्यापै कोय। हरि रस सूं सद गति सदा, लहै सकळ नरलोय।—ह.र.

नरवंस—देखो 'निरवंस' (रू.भे.)

नरवइ—देखो 'नरपति' (रू.भे.) (जैन)

उ०—कुंती मद्रीय माधइ मडड धनु धनु पंडव द्रूपदि जोह। पंचइ पंडव वइठा चउरी नरवइ ग्रासातरयइ भउरी।—पं.पं.च.

नरवदा—देखो 'नरबदा' (रू.भे)

नरवय—देखो 'नरपति' (रू.भे.) उ०—जिणि पडिवोहउ कुमरपाळ, नरवय तिहूयण गिरि। पंच सत्त मुणि नेमि जेणि वारिउ देसण करि।—ऐ.जै.का.सं.

नरवर, नरवरु-सं०पु० [सं० नर+वर=दूल्हा, पति] राजा, नरेश (डि.नां.मा.)

वि०—नरों में श्रेष्ठ। उ०—१ चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्य चतुर जुग विधायक। सरब जीव विसवकित ब्रह्म सूं, नरवर हंस देहनायक।—वेलि.

उ०—२ नयरु ग्रच्छइ नयरु ग्रच्छइ रयणउरु नामि। रयणसिहृव नरवरु वसइ तासु गेहि एह बाळ जाईय।—पं.पं.च.

नरवाघ-सं०पु० [सं० नरव्याघ्र] एक प्रकार का जल-जन्तु जो नीचे से मनुष्य के ग्राकार का तथा ऊपर से बाघ के ग्राकार का होता है।

वि०—मनुष्यों में श्रेष्ठ।

नरवाहण-सं०पु० [सं० नर वाहन] कुवेर, घनेश (ह.नां., ग्र.मा., नां.मा.)

रू०भे०—नरवाहरण।

नरवाहणो, नरवाहवो—देखो 'निरवाहणो, निरवाहवो' (रू.भे.)

उ०—तुरंग रथ थांभ जोग्रे ग्ररक तमासा, रीझ वाळांगियी दहूं राहे। धड़च खळ दळां नरवाह कर धांन रो, 'मांन' री मळे प्रम जोत मांहे।—रघुनाथसिंह रांणावत रो गीत

नरवाहणहार, हारो (हारी), नरवाहणियो—वि०।

नरवाहिग्रोड़ो, नरवाहियोड़ो, नरवाह्याड़ो—भू०का०कृ०।

नरवाहीजणो, नरवाहीजवो—कर्म वा०।

नरवाहियोड़ो—देखो 'निरवाहियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नरवाहियोड़ी)

नरविंदो—देखो 'नरेंद्र' (ग्रल्पा., रू.भे.).

उ०—वंदवि नाभि नरिंद सुय, रिसहेसर जिणचंदो। गाइस मास वसंत हुउं, भरहेसर नरविंदो।—प्राचीन फागु-संग्रह

नरवैद्य-सं०पु०यौ० [सं०] मनुष्यों की चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक। उ०—सूयकार चक्षक नरवैद्य, गजवैद्य तुरगवैद्य विशमवैद्य मांत्रिक तंत्रिक गाहरिक, मेखलिक।—व.स.

नरसंग, नरसघ—देखो 'नरसिह' (रू.भे.)

उ०—१ रूप नरसग प्रैह्लाद काज धारियौ, गयंद हद तारियौ वेद गावै। भगत के काज नृप द्वार नाई भयो, पार कुण भलाई तणो पावै।—ब्रह्मदास दादूपंथी

उ०—२ नजर नमो नरसंघ कोप दांणव सर कीधौ।—पी.प्रं.

नरसळ-सं०पु० [देश०] ईख से मिलता-जुलता एक प्रकार का पौधा जो प्रायः जलाशयों के निकट पैदा होता है। इसका टठल भीतर से पोला होता है, नरकट।

रू०भे०—नळ।

नरसाह-सं०पु० [सं० नर+फा० शाह] राजा, नृप (डि.नां.मा.)।

उ०—सुबर नरसाह ग्रवगाह सारां सरै, घातती घांण घमसांण घेरै। रोद दळ भाड़ती पाड़ती ग्राग रिम, टांण भर गयो सुरतांण टेरै।—पातो वारहठ

नरसिका-सं०पु०—एक प्रकार का कटार।

नरसिंग, नरसिघ—देखो 'नरसिह' (रू.भे.)

उ०—१ इम गणणियो नाद ग्रवियाटो। फवि नरसिंघ जांण खंभ फाटो।—सू.प्र.

उ०—२ नमो वपु दीरघ वांमन वेस, मिराग पुरंदर भांजण मेस। नमो नरसिंघ लिछम्मी-नाह, विसंभर विट्ठळ ग्रादि वराह।—ह.र.

नरसिंघी-सं०पु० [देश०] १ तांबे का वना तुरही के ग्राकार का एक प्रकार का वड़ा वाजा जो फूंक कर वजाया जाता है।

२ देखो 'नरसिह' (ग्रल्पा., रू.भे.)

नरसिंह-सं०पु० [सं० नृसिंह] १ विष्णु का चौथा ग्रवतार जिसमें ग्राधा शरीर मनुष्य का तथा ग्राधा सिंह का था।

२ राजा, नृप (डि.नां.मा.) ३ एक रति बंध।

वि०—मनुष्यों में श्रेष्ठ।

रू०भे०—नरसंग, नरसंघ, नरसिंग, नरसिंघ, नरसींग, नरसींघ, नरसीह, नरस्यंघ, ना'रसिंघ, ना'रसिंह, ना'रसींग, ना'रसींघ, नारसिंह, नारसी, निरसिंह।

ग्रल्पा०—नरसिंगो, नरसींघो,

नरसिंहपुरांण-सं०पु० [सं० नृसिंहपुराण] एक उपपुराण।

नरसींग—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.)

उ०—फरू भांमणा जेण नरसींग थारी कळा, ग्राद लग पाजोवण सत ग्राड़ा। गाजतं गाज ग्रसमांन गुंजाड़ियो, फाड़ियो खंभ चौफाड़ फाड़ा।—ब्रह्मदास दादूपंथी

नरसींगचवदस-सं०स्त्री० [सं० नृसिंह चतुर्दशी) वैशाख शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी जिस दिन भगवान ने नृसिंह रूप धारण कर हरिण्यकश्यपु को मारा था।

नरसींघ—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.) उ०—मछ कोम नरसींघ वाहः वांमण कहि वांमण।—पी.ग्रं.

नरसी-सं०पु०—एक कृष्ण भक्त, नरसी मेहता।

नरसीह—देखो 'नरसिंघ' (रू.भे.) उ०—तट गंगा तपियो नहीं, नह जपियो नरसीह। जड़ तें ग्रारण धमण जिम, दम गमिया वहु दीह।—वां.दा

नरस्यंघ—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.)

उ०—टेर प्रहळाद की सुणत नरस्यंघ रूप, प्रगटे ग्रसंभ ज्यों ही खंभ ते गराज के।—र.ज.प्र.

नरहर, नरहरि, नरहरी-सं०पु० [सं० नरहरि] नृसिंह भगवान, नृसिंह ग्रवतार। उ०—१ रांम किसन हर नारियण, सचिदानंद गोविंद। वासुदेव वीठळ विसन, नरहर गोकळचंद।—ह.र.

उ०—२ नरहरि थंभ विदारियौ, सेवग हुंदी चाड । हेक थाप चूरण हुवा, हिरणाकुस रा हाड ।—बां.दा.

नरही-सं०पु० [देश०] तलवार की मूठ का सबसे निचला छोर जिसमें तलवार का ऊपरी भाग (दुमाला) मजबूती के साथ लगा कर तलवार को मूठ से जोड़ा जाता है ।

नरहीरौ-सं०पु० [सं० नर+हीरक] खूब तेज किनारे वाला आठ या छः पहल का बड़ा हीरा (उत्तम) ।

नरांग्रंतक—देखो 'नरांतक' (रू.भे.)

नरांइंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) (डिं.को.)

नरांण—देखो 'नारायण' (रू.भे.)

नरांतक-सं०पु० [सं०] रावण के एक पुत्र का नाम

रू०भे०—नरांग्रंतक ।

नरांनाथ—देखो 'नरनाथ' ((रू.भे.) (डिं.को.)

नरांनायक-सं०पु० [सं० नरनायक] १ श्रीकृष्ण, नंदनंदन ।

उ०—पेसारा ग्रोसारा खरा पायकां रा । लहै नाग लारां नरांनायकां रा । मचे मूठ मारा झरे स्रोण झारा, फणां रा घणां रा करै फूत-कारा ।—ना.द.

२ देखो 'नरनायक' (रू.भे.) (डिं.को.)

नरांनाह—देखो 'नरनाथ' (रू.भे.) (डिं.को.) उ०—१ नरांनाह पतसाह छोडाड़ सकियौ नहीं, समांमी कमंध जोय निमांमी सिंध । ग्रापरा वडेरां खाटिया ग्रखाड़ा । 'करण' ग्यौ प्रवाड़ा बांधियां कंध ।

—महाराजा करणसिंघ रौ गीत

उ०—२ 'मधकर' हर हिम्मत महण मत्थ, मेड़तै 'रूप' हिम्मत समत्थ । एतला ग्राद दूहा ग्रथाह, नवकोटां ग्रागळ नरांनाह ।—रा.रू.

नरांपत, नरांपति, नरांपती, नरांपत्ता—देखो 'नरपति' (रू.भे.)

उ०—१ सुणे जद वच्चन 'भैरव' सूर, नरांपत धोय चखां चढ़ नूर । भ्रगुटिय रेख चढ़ै मुर भाळ, भिड़ै भ्रूह मूछ ग्रड़ै भुव पाळ ।—पे.रू.

उ०—२ समांपत्ती लखप्पती सुरिंद नरांपती, घरांपती नरिंद गढ़ांपती करांमती दळांपती कछपती दुबाह ।—ल.पिं.

नरांयंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—१ लाट मुरधरा जोधांण के वरस लग, सुदतपण प्रगट कर चीत सांमंद । पंच सत उदक दे कवां नृप बीकपुर, निडर वाघ नरे संघ नरांयंद ।—देवराज रतनू

उ०—२ ग्रई 'ग्रजा' महाराज धांणेरगढ़ नरांयंद, समवड़ां भड़ां सरताज साजा । विक्रम घर बचाळा ग्राज ग्रांणे वणे, राज नै जाचवा काज राजा ।—दुरगादत्त बारहठ

नरांयण—देखो 'नारायण' (रू.भे.) उ०—जुग जुग में जगदीस, धरै ग्रवतार नरांयण ।—गजउद्धार

नराकार-ग्रव्य०—१ निषेध सूचक शब्द । उ०—मगरां बिच फिरतौ, सहर सलूंबर ग्रायौ । स्रवणां रावत सुणै, कथन नराकार केवायौ ।

—कोठारिया रावत जोधसिंह रौ छप्पय

२ देखो 'निराकार' (रू.भे.)

नराच—देखो 'नाराच' (रू.भे.)

नराज—१ देखो 'नाराच' (रू.भे.)

उ०—१ नग-जड़ित सुजड़ नराज, वडवडा मदफर वाज । पोसाक ऊंच ग्रपार, भलि लुटै द्रव्य भंडार ।—सू.प्र.

उ०—२ चमराळ दळां ग्रति रीस चढ़ी । करि क्रोध धिराज नराज कढी । सत्र थाट घड़ां चवगांन सिरै । कवियांण रैवत-पसाव करै ।

—सू.प्र.

२ देखो 'नाराज' (रू.भे.)

नराजगी, नराजी—देखो 'नाराजगी' (रू.भे.)

नराट, नराठ-सं०पु० [सं० नरराट्] १ राजा, नृप, नरेंद्र ।

२ देखो 'निराट' (रू.भे.)

नराताळ, नराताळां, नराताळी, नराताळौ—देखो 'निराताळ' (रू.भे.)

उ०—१ लोही धारां ग्रापगा ग्रपारां ग्राट-पाटां लागी । चंडी पीवै पत्रां कंठां लागी बंधेचाळ । भखै धाया ग्रीध का ग्रंकाया फौज थाटां भागी, नाराजां ग्रभागां झाटां वागी नराताळ ।—चांवंडदांन महड़ू

उ०—२ कोम पीठ भोम भार घूमैं घड़ा नाग काळां, वरं माळ लूंबै रथां रंभ चाळा वेस । बाजतां ग्रंबाळा के करमाळां झाळां बीच, नेज बाजां नराताळां संभरी नरेस ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—३ जुड़ै सेन थंडां जाडावाळी धोम जाळा री सांवंति लागी, खंडां ग्राडावाळा री लागी हाला री खुलास । जोम गाडावाळी प्रळै-काळा री उनागी जठै, वागी हाडावाळी नराताळा री बांणास ।

—दुरगादत्त बारहठ

उ०—४ बाजतां ग्रंबाळां ग्रोह नराताळौ खड़ै वाज, तोलियां छड़ाळौ पांण पंखाळै सुतांण । वाकारियौ पाट री हटाळौ खळां भूरौ बाघ, ग्रावियौ 'उमेद' वाळौ सींधाळौ ग्रारांण ।—पहाड़खां ग्राढ़ौ

नराधिप-सं०पु० [सं०] राजा, नृप ।

रू०भे०—नराहिव, नराहिवु ।

नराळ—१ देखो 'निराताळ' (रू.भे.) उ०—नृत थाळ नचत नराळ ततछन, ताळ ग्रछी प्रत दुरतोयै निस दीह दता तुरंगांण तता, निज दांन सु जीवण सीह दियै ।—किसनजी दधवाड़ियौ

२ देखो 'निराळ' (रू.भे.)

नराळौ—देखो 'निराळौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नराळी)

नरावत-सं०पु०—राठौड़ों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—नरावत 'रूप' लड़ै नरनाह । 'रासौ' भड़ 'खेतल' रौ रिमराह ।

—सू.प्र.

नराहिव, नराहिवु—देखो 'नराधिप' (रू.भे.)

उ०—साहु कही नइ गयणि पहूंतउ । पंडु नराहिवु हूयउ सयंतउ ।

—पं.पं च.

नरिंद, नरिंदर, नरिंवि, नरिंदु-सं०पु०—१ प्रथम लघु की पांच मात्रा का नाम (।SS) (डिं.को.) २ देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.)

उ०—१ विढ़ता कुंभ निकुंभ वाकारइ, नव नाडिया जोयइ रे नरिंद। ऊंचउ ग्रहे आछटइ अंबर, ग्रहई वळे आवतउ गिरिंद।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद, नमाए हैं ब्रिंद आणंद विधाता। धोरी धरम को धीर धराधर, ध्यांन धरै धरमसी गुण ध्याता।
—ध.व.ग्रं.

उ०—३ रमैं हसैं नरिंदर, मझार राज मिंदर। करै उछाह सुक्रिया, पचास सात सै प्रिया।—सू.प्र.

उ०—४ नरिंदि चोथौ प्रभू ना'रसिंघ नाहरू।—पी.ग्रं.

उ०—५ कुंतादिवि नउं लिखिउं रूप देखीउ चित्रांमि। मोहिउ पंडु नरिंदु चींति अति लोधउ कांमि।—पं.पं.च.

उ०—६ सपत दीप रिख सात सातइ समंदु नवइ नीवइ नीय ही हाथ जोड़े नरिंदु।—पी.ग्रं.

नरिंदि—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—अनाथ नाथ आवरण, कई थोक न करण करण। गुण रूप ग्यांन निरगुण नरिंदि, अमर जीव असरण सरण।—पी.ग्रं.

नरिंदौ—देखो 'नरेंद्र' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ मुझ पासि तुम्हि किसुं कहावउ, तुम्हि अम्हारी धीय न पांमउ। इम निसुणीउ धरि पहुतु नरिंदौ, जिम विध्याचळि हरीउ करिंदौ।—पं.पं.च.

उ०—२ इस्यूं सुणी पूरव भव देखइ, जाती समर न रवौ। लीलाविलास सुत राजि थापी, पांमी परमाणंदौ।—विद्याविळास पवाडउ

नरिंद्र, नरिइंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—१ सुर किन्नर नारिंद्र निरखतां, नव खंड रा आछइ नरिंद्र।—महादेव पारवती री वेलि

नरिग—देखो 'नरक' (रू.भे.)

नरिवाहणौ, नरिवाहवौ—देखो 'निरवाहणौ, निरवाहवौ' (रू.भे.)

उ०—ज्यूं बोलइ ते नरिवाहज्यौ। वचन तुमारइ लागी छइ नार।
—वी.दे.

नरियंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—१ नरियंद सह नजरांण, झुक करसी सरसी जिकां। पसरेलो किम पांण, पांण थको थारो 'फता'।
—केसरीसिंह बारहठ

उ०—२ ऐसे नरलोक के बीच नरियंद 'अभैमल' राजै। जिसकी तारीफ सुणि सुरलोक के बीच सुरियंद लाजै।—सू.प्र.

नरियण—सं०पु०—१ राजा, नृप. २ देखो 'नारायण' (रू.भे.)

नरियौ—सं०पु०—परिपक्वावस्था की ककड़ी।

नरींद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—नव लाख सियायक तो नरींद। चडसी कुळचावळ सूरज चंद।—रांमदांन लाळस

नरी—देखो 'नारी' (रू.भे.) उ०—सची रूप उदार सोभा सिंगारी। नरी नागणी आसुरी देवरांणी।—सू.प्र.

नरींयंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—'चंद' वीयौ खाटण जस चोजां, वळ वळ सकव वखांणै। नवा दीयण आगाहट नरीयंद, जूना लियण न जांणै।—जीवणसिंह चांदावत री गीत

नरीस—देखो 'नरेस' (रू.भे.) उ०—१ सझै बंदगी सुरीस, देव तौ जपै दनीस। लाख...लछीस, नांमणी नरीस।—र.ज.प्र.

उ०—२ सोभित उपमा सरव ही, लंका रन कै सीस। सब छत्रिन पै छत्र सो, माधवसिंघ नरीस।—शि.वं.

नरु, नरूं, नरू—देखो 'नर' (रू.भे.) उ०—१ विद्या जोवा तीणं पलासि, पहिलुं सिला रची आकासि। राजा भीडी अवग्रहु लीउ, पइदिणि नरु एकेकउ दीउ।—पं.पं.च.

उ०—२ रूउ रूधउ रणांगणि मूंकइ, तेह नांमु निसुणी जण थूकइ। गायत्री य छांडि जे नरु नासइ, वीर मांहि सु पडइ पुणि हासइ।
—विराटपर्व

नरूका—सं०स्त्री०—कछवाहों की एक शाखा।

नरूकौ—सं०पु० (स्त्री० नरूकी) कछवाहों की 'नरुका' शाखा का व्यक्ति।

नरेंद्र—सं०पु० [सं०] १ राजा, नृप, नरेश। उ०—नरेंद्र के सुरेंद्र के धरा धरेंद्र के भ्रितू। अकारणीक आप नांहि कारणीक हो भ्रितू।
—ऊ.का.

२ सांप बिच्छू आदि काटने पर चिकित्सा करने वाला, विष वैद्य. ३ प्रत्येक चरण में सोलह मात्राओं पर विराम से कुल अठाइस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं।

रू०भे०—नरंद, नरां-इंद, नरांयंद, नरिंद, नरिंदर, नरिंदि, नरिंदु, निरंद, नरिंद्र, नरिइंद, नरिंदंद, नरींद, नरीयंद, नरयंद।

अल्पा०—नरविंदौ, नरिंदौ।

नरेण—देखो 'नरेहण' (रू.भे.)

नरेस—सं०पु० [सं० नरेश] राजा, नृप (ह.नां., अ.मा.)

उ०—१ जपै नर-नार उभै कर जोड़, करै सुर सेव तेतीसूं कोड़। नागेस नरेस सुरेस मुनेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह.र.

उ०—२ वूठा दूधां वादळा, तूठा देव मुरार। जेहल आज जुहारिया, काछ नरेस कुंवार।—वां दा.

रू०भे०—नरीस, नरेह।

नरेसर, नरेसउ, नरेसरू, नरेसरी, नरेसुर, नरेस्वर—सं०पु० [सं० नरेश्वर] १ राजा, नृप (डि.को.) उ०—१ रात दिवस भज रांम नरेसर, पात राख नहचौ मन पूरो। धूधारण कारण लख धूरो, ऊधारण रौ किसो अणूंरो।—र.ज.प्र.

उ०—२ तूं उपगार करै जु अपार अनाथ अधार सबै सुखकंदा। जितै जगदेव करै तुझ सेव जिनेसर नाभि नरेसर नंदा।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ पूछे क्रिस्ण नरेसरूजी, छांडयौ जिम संसार। रमणीय सुहावणी हो, रूप मदन अवतार।—जयवांणी

उ०—४ नगर कपिल नरेसरू, राजा स्री क्रितवरमो जी। अद्भुत तासु अंतेउरी, स्यांमा नांम सुधरमो जी।—स.कु.

उ०—५ निरभय किय वीकांण नरेसुर। पुनि देसांण वसायौ निजपुर। ध्रुव जोलौं आकास धरत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती।—मे.म.

उ०—६ हर हर तणा हमीर नरेसुर, लाभ थका मूका रह लोय। एकण ग्रास तुहाळी ऊपर, सीसोदा ग्रावै सह कोय।
—महाराणा हमीर रो गीत

उ०—७ नामै सीस ग्रनेक नरेसुर, रैत सुखी ग्रणरेह। चारुहि चक्क ग्रदल्लां चालै, तेज धरै सिर तेह।—र.रू.

उ०—८ पंडु नरेसरो सइंवरि, जाइ हथिणाउरपुर संचरए। राइं दळ सरिसा कूंयर, लेउ तारे सु जिम चांदुलउ ए।—पं.पं.च.

२ जिसकी नर ग्राराधना करते हैं, ईश्वर, परमात्मा।

उ०—ग्रादि ग्रंत ग्रादेस, मेक ग्रादेस नरेसर। ग्रलख तूझ ग्रादेस, ग्रगह ग्रादेस ग्रनंतर। एक तूझ ग्रादेस, जगत-पति तूझ जोगेस्वर। निरबिकार ग्रादेस, नेति ग्रादेस नरेस्वर।—ह.र.

३ श्रीकृष्ण, वासुदेव। उ०—सो जिण चौकी दैण मनोभव साखियो। रूप नरेसुर ग्राप क सीदी राखियो।—बां.दा.

ग्रल्पा०—नरेसरो।

नरेह—१ देखो 'नरेश' (रू.भे.)

२ देखो 'नरेहण' (रू.भे.) उ०—१ कोडा द्रव खरचे करो वीर, वहू तिण वार। उतरे फोल ग्रंबाडिया, दौढ़ी सिरै दवार। दौढ़ी सिरै दवार, नरेह निहारती। मिळ कवसल्या मात उतारी ग्रारती।
—र.रू

उ०—२ हू तो हुल्यां भांमणां, वडा समत्थां वेह। ज्यां जेहा जादव जिसो, नर निरमियो नरेह।—बां.दा.

नरेहण—वि० [सं० निर+ग्रा+इहन] १ निष्कलंक, पवित्र, उज्ज्वल।
उ०—१ नृप होसी तो जोड़ नरेहण। इता नृपति तो वंस ग्ररेहण। वधसी कुळ वह कीत वडाई। ग्रस मरदन खत्रवट ग्रधिकाई।
—सू.प्र.

उ०—२ पवित्र प्रयाग 'रतनसि' पोहकर। मन निरमळ गंगाजळ जेम। नर नादेत नरिंद नरेहण। निकळंक निघुट निपाप निगेम।
—दूदो

२ पाप रहित, निष्पाप। उ०—जाळ देह पावक्क पाळ पतिवरत महापण। कुळ लज्या उजयाळ रीत रखवाळ नरेहण। नांम राख नव खंड प्रसिध चाडे दहु पक्खे। साथि सांमि समरत्थ रथे बैठी कथ रक्खे।—रा.रू.

३ छलछिद्र रहित, निष्कपट। उ०—जोध सहरि गढ़ जतनि सद्रढ़ जादव पण सच्चे। सूर पणै समरत्थ रीत ग्रनि पंथ न रच्चे। सामि धरम चित सरम, ग्रादि रज करम ग्ररेहण। परम भगत पुन्यवंत रीत खग सकति नरेहण।—रा.रू.

४ देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.)

रू०भे०—नरेण, नरेह, नरेहर, निरेण, निरेह, निरेहण।

नरेहर—देखो 'नरेहण' (रू.भे.) उ०—घर खेहां छाई धूहड़िये, खेड़ेचे ग्रस खेड़िया। नर हैवर नागंद्र नरेहर, गैवर गाडा देख गया।
—राव जोधा रो गीत

नरोतम, नरोत्तम—सं०पु० [सं० नरोत्तम] ईश्वर, भगवान।

उ०—ग्रजोणिय जोगिय जांणिय ईस, सुरासुर स्वांमिय कौ धर सीस। नरोतम उत्तम तार नितार, चराचर चितनहार चितार।
—ऊ.का.

नरोवर—सं०पु० [सं० नराम्बर] समुद्र, सागर। उ०—प्रमेसर सांभळ देव-पुकार, विहँवा सज्ज हुवौ तिण वार। विहां सूं हेकां लीधी वाथ, नरोवर मांझ कियौ जुध नाथ।—ह.र.

नरयंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) उ०—म्रदु कंठ गांन तरुणी मुखे, निरखै रूप नरयंद रो। नव रंग पत्रवाड़ी निपुण, किरि नंदी वन नंद रो।—रा.रू.

नलंप—सं०पु० [सं० निलिम्प] देवता, सुर (डि.को.)

रू०भे०—निलंपका।

नलंपिका—सं०स्त्री० [सं० निलिम्पिका] गाय, गौ (ग्र.मा., डि.को.)

नळ—सं०पु० [सं० नल] १ निषध देश के चन्द्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र ग्रौर दमयंती के पति। उ०—नळ राघव जुजठळ नहीं, भू बीकम नह भोज। है जेहो ऊनइहरो, हैं नहं कळ हनोज।—बां.दा.

२ राम की सेना का एक बन्दर जो विश्वकर्मा का पुत्र माना जाता है। उ०—सुखेणां नळं नील सुग्रीव साथां। हणू ग्रादि ग्राए मिळे जोड़ि हाथां।—सू.प्र.

३ यदु के एक पुत्र का नाम. ४ सिंहिक के गर्भ से उत्पन्न होने वाले एक दानव का नाम जो विप्रचित्ती का चौथा पुत्र था।

[सं० नाल] ५ एक नद का नाम. ६ युद्ध के समय बजाया जाने वाला एक प्राचीन वाद्य विशेष। उ०—नळ वाजिय तुरियां वाजि नास, वाजिय पयाळ पाग्रे व्रहास। 'जइतसी' राउ जंगमां जोळ, कांपियउ सेस कूरम्म कोळ।—रा.ज.सी.

७ सिंह का ग्रागे का पैर। उ०—उस तरफ केसरसिंघ पटैत नळं झाड़ भभकार सांमुहे ग्राए। नळूं हाथळूं का दाव ग्रोझड़ि झड़ सगूं का घाव दारुणूं के हाथळ लगणै न पावै।—सू.प्र.

८ एक प्रकार का ग्रायुध (व.स.) ९ तलवार के मध्य भाग के पार्श्व में पड़ने वाले वे लम्बोतरे भाग जो 'धार' ग्रौर 'पेटे' के पास होते हैं। १० वह गहरी लकीर जो तलवार के मध्य भाग पार्श्व में पूरी लम्बाई तक गई होती है। ये मध्य भाग के दोनों ग्रोर होती हैं किन्तु तलवार के दोनों किनारों से कुछ ऊपर की ग्रोर होती हैं।

११ नरकट, नरसल. १२ कमल, पद्म. १३ ग्रमृत सागर के ग्रनुसार वह हड्डी जिसके ग्रन्दर नरसळ के समान सीधा छेद हो.

१४ (घोड़े ग्रादि जानवरों के नाक का) नथुना। उ०—नळं फहक्क हेमरां, सरे क बोल दद्दरां। रजी सुभट्ट पीजरं, तुरंग जेम हींजरै।—गु.रू.बं.

१५ पानी, हवा, धुग्रां, गैस ग्रादि ले जाने के लिए धातु, काठ या मिट्टी ग्रादि का बना हुग्रा लंबा गोल खंड. १६ पेडू के ग्रन्दर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है।

मुहा०—नळ छिटकणा—अण्ड कोष का शिथिल होकर नीचे की ओर लटक जाना (एक रोग विशेष)

अल्पा०—नळियो, नळी, नळो।

नळकी, नळकीनी—देखो 'नळी' (अल्पा., रू.भे.)

नळकूबर–सं०पु० [सं० नलकूबर] १ कुबेर के एक पुत्र का नाम, जो नारद के शाप से वृक्ष योनि में आ गया था और उसका उद्धार ऊखल से बंधे हुए बालकृष्ण ने किया था। (महाभारत)

२ ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक जिसमे चार गुरु और चार लघु मात्राएं होती हैं।

नळणी—देखो 'नलिनी' (रू.भे., अ.मा.) उ०—निय नाम सीत जाळै वण नीला, जाळै नळणी थकी जळि। पातिग तिणि द्वारिका न पैसे, मंजियै विणु मन तणैं मळि।—वेलि.

नळणौ, नळवौ–क्रि०अ०—पंजेदार जानवर का पिछले पांवों पर खड़ा होकर अगले पांव मिला कर हमला करना।

नळपुर–सं०पु०यौ० [सं० नल-पुर] निषध देश की राजधानी का नाम जहा राजा नल राज्य करते थे (डि.को.)

नळवट, नळवटि—देखो 'निलै' (रू.भे.) उ०—नळैवटि करइ सरि सीदूर, ऊगटि केसर नइ कपूर। करणी वेलि अंबोटा भरइ, भमर गूंजारव सरवर करइ।—प्राचीन फागु-संग्रह

नळवार–सं०पु०—बछड़ा (अ मा.)

नळवन–सं०पु०—तलवार।

नळसेतु–सं०पु० [सं० नलसेतु] रामेश्वर के निकट समुद्र पर बंधा हुआ एक पुल (रामायण)

नळांध–सं०पु०—रात्रि में दिखाई न देने का नेत्र का एक रोग विशेष

नलाड़—देखो 'निलाट' (रू.भे.)

नळिका–सं०स्त्री० [सं० नलिका] १ वैद्यक मे एक प्रकार का प्राचीन यंत्र जिससे जलोदर रोग से पीड़ित व्यक्ति के पेट का पानी निकाला जाता था. २ आजकल की बंदूक से मिलता-जुलता प्राचीन काल का एक अस्त्र विशेष. ३ बाण रखने का तरकश. ४ पुदीना. ५ देखो 'नळी' (अल्पा., रू.भे.)

नलिन–सं०पु० [सं०] १ कमल, पद्म. २ सारस पक्षी।

रू०भे०—निलन।

नलिनि, नलिनी–सं०स्त्री० [सं० नलिनी] १ कमल, कमलनी (डि.को.)

२ एक प्रकार का शाक (सब्जी) विशेष। उ०—नेत्र निहाळी नीलुद, नलिनी नागर वेलि। नही नवीनी नीछारडी, नागफणी गुण गेलि।—मा.का प्र.

३ नारियल की शराब. ४ नाक का बांया नथुना. ५ नदी, सरिता. ६ गंगा की एक धारा का नाम (पौराणिक)

७ नील का रंग, आसमानी* (डि.को.)

रू०भे०—नळणी।

नळिनीनंदन, नलिनीनंदन–सं०पु० [सं० नलिनीनंदन] कुबेर के एक उपवन का नाम।

नळियो—देखो 'नळ' (६ से १५) (अल्पा., रू.भे.)

नळी–सं०स्त्री० [सं० नली] १ पैर के घुटने से नीचे से पंजे तक गई हुई सामने की सीधी हड्डी। उ०—१ नग अहिरण घज नळी, नळी बाजू पीठा घण। बजै नाग बांगळी, ताव बीजळी झळी तण।

—सू.प्र.

उ०—२ भमता भवसागर ममता मढ़ियोड़ी। कियळ नळियां री नळिया कढ़ियोड़ी।—ऊ.का.

रू०भे०—नाळ, नाळी।

२ नलिका नाम का गंध द्रव्य जो औषधि के काम आता है.

३ एक प्रकार का वाद्य विशेष। उ०—मुरली नळी संग धुनि सारां। हाथी कांन तान घरि हारां।—सू.प्र.

४ सुरणाई नामक संगीत वाद्य में छेदों वाला वह स्थान जो बबूल की लकड़ी के मध्य के कठोर भाग से बना हुआ होता है.

५ बुनकरों की ढरकी में फांटे के बल सूत लपेटी हुई रखी जाने वाली काष्ठ की छोटी नलिका। उ०—मा जाति जाति पट पुंघट अंतरि। मेळण एक करण अमिळी। मन दंपति पटादि दुति मैं, निय मन सूत पटादि नळी।—वेलि.

६ देखो 'नळ' (६ से १५) (अल्पा., रू.भे.) उ०—अंग ओज भेंची अगत, नैण नळी भर नेह। आमिस नर नांगे उदर, मांस हरण अछेह।—बा.दा.

७ देखो 'नाळ' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—नाळी।

नळीआरद–सं०स्त्री०—पेट पर पड़ने वाली त्रिवलि ?

उ०—नाभि-विवर रू अनु, घणु नळीआरद पेटि। उन्नत उर विसाळ, पण भल तइ सकइ न भेटि।—मा.कां.प्र.

नलै—देखो 'निलै' (रू.भे.) उ०—अटा टोप बनां री चनणां कोघां मळै अद्र, संभु नलै ऊजळै बचाळै गणां सैण। दोवे गांन ताळ हुंमां मंडळी नवास दीधा, कवंदां मंडळी लीधां दूसरा कुंभैण।

—कविराजा बांकीदास

नळो–सं०पु० [सं० नाल] १ प्रायः अग्निमंथ या आक की लकड़ी की वह बड़ी नलिका जिस पर बुनकर सूत लपेट कर ताना तानते है।

२ ठीक करनी के आकार का किन्तु उसमे छोटा एक औजार जिससे पलस्तर, टीपें आदि की घिसाई की जाती है. ३ सिंह, घोड़ा आदि जानवरों के अगले पैर के घुटने के नीचे की सामने की सीधी हड्डी.

उ०—१ किसा हेक घोडा छै ? बे पग भला, ऊचा घलळा, कटोरा-नरा, आरसी सारीसा। तिग्रंगळ गाळा मुठिया बील पळा। निमंस नळा गोडा नाळेर फळा।—रा सा.सं.

उ०—२ मारग में जावतां च्यार नाहर नळा राय नैं बैठा छै।

४ देखो 'नळ' (६ से १५) (रू.भे.) —नैणसी

५ देखो 'नाळो' (अल्पा, रू.भे.) उ०—१ आई देखि फौजां

उदैपुर सूं तो उपडिगा। सारो भोज गढ़ का जो नळा में जारि बहिगा।—शि.वं.

उ०—२ भूंडण चीलहरां नूं लियां नळां, खाडरां, रूंखां, झाड़ां री भंगी रै ओल्है चालै। डाढ़ाळी चौड़ै पाधरी धरती चालै।

—डाढ़ाळा सूर री बात

नल्लो-वि०—बुरा, खराब। उ०—बांदर ढाढ़ी वोलियो नीसांणी गल्ला, नल्ला सल्ला नर नीवड़ै यूं जांणै अल्ला।—वी.मा.

नवंबर-सं०पु० [अं०] अंग्रेजी वर्ष का ग्यारहवां महीना।

नव-वि० [सं०] नया, नूतन, नवीन (डिं.को.) उ०—१ फागण मास बसंत रितु, नव तरुणी नव नेह। कहो सखी कैसे सहूं, च्यार अगन इक देह।—अज्ञात

उ०—२ मिळतां रांण घरै महाराजा, ऊछव प्रगटै मिटै अकाजा। जिती वस्त नित अम्रत जोड़ां, राजे नव नव भांत रसोड़ां।—रा.रू.

उ०—३ फागण मास सुहामणउ, फाग रमइ नव वेस। मो मन खरउ उमाहियउ, देखण पूगळ देस।—ढो.मा.

[सं० नवन्] २ दस से एक कम, आठ और एक नौ (डिं.को.) उ०—अह माथै रांग आभ लग ऊंचो, नव खंडे जस झालर नाद। रोप्या भला रायपुर रांणा, पड़ै न सासण तणा प्रसाद।

—दुरसो आढ़ो

सं०पु०—नौ की संख्या, नौ का अंक। उ०—१ नीचो जावै नीर ज्यूं, जग नव नहचै जांण। सकळ पदारथ सार रो, ह्वै खिण खिण में हांण।—बां.दा.

उ०—२ कर पारो काचै कळस, जळ राखियो न जात। नव नहचै ठहरै नहीं, विदर उदर में बात।—बां.दा.

मुहा०—नव नहचै—अटल, दृढ़, पक्का।

रू०भे०—नउ, नऊं, नव्व, नवउ, नव्व, नौंऊं, नोऊं।

अल्पा०—नवियो, नवो।

नवका—देखो 'नौका' (रू.भे.) उ०—वड़वा कोप खाग झड़ बाजे, गाजे नद 'गुमांन' गहीर। वीया जैसींग तणो खंभ वरड़ै, नवका खड्ड डूबिया नीर।—महाराजा मांनसिंह री गीत

नवकार, नवकारु-सं०पु० [सं० नमस्कार=प्रा० णमुकार, णमोक्कार, णवकार=रा० नवकार] जैन समाज में प्रचलित वह नमस्कार मंत्र जिसमें अरिहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधुओं को नमस्कार किया जाता है।

वि०वि०—इस मंत्र की रचना निम्न प्रकार है।

णमो अरिहंताण णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं॥

श्री अरिहंत भगवान को मेरा नमस्कार है। श्रीसिद्ध भगवान को मेरा नमस्कार है। श्री आचार्य महाराज को मेरा नमस्कार है। श्री उपाध्याय महाराज को मेरा नमस्कार है। संसार के सब साधुओं को मेरा नमस्कार है।

इस मंत्र का जैन समाज में बड़ा महत्व है। यथा—

एसो पंच णमुकारो, सव्वो पावप्पणासणो।
मंगला च सव्वेसिं, पढम हवई मंगलं।

इस महामंत्र के पांच पद हैं और पैंतीस अक्षर हैं। प्रथम पद में सात द्वितीय पद में पांच, तृतीय पद में सात, चतुर्थ पद में सात और पांचवें पद में नव अक्षर हैं। इस महामंत्र में किसी व्यक्ति विशेष या महात्मा विशेष का नाम न होकर मात्र गुण युक्त अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं संसार के सब साधुओं को नमस्कार किया जाता है। पांचों पदों के सब मिला कर एक सौ आठ गुण माने गये हैं। इसी कारण माला के मनके भी एक सौ आठ रखे गये हैं।

रू०भे०—नउकार, नमुकार, नमोकार, नमोक्कार, नवयार।

नवकारवाळी-सं०स्त्री० [सं० नमस्कार+अवलि] नवकार मंत्र जपने की माला (जैन)

रू०भे०—नउकारवळि, नौकारवाळी।

नवकारसी—दस "प्रत्याख्यानों" में से प्रथम प्रत्याख्यान जिसमें सूर्योदय से ४८ मिनट तक अशनादि चारों प्रकार के आहार का त्याग कराया जाता है।

रू०भे०—नौकारसी।

नवकुमारी-सं०स्त्री० [सं०] नवरात्र में पूजी जाने वाली नौ कुमारियां जिनमें निम्न लिखित की कल्पना की जाती है—कुमारिका, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चंडिका, शांभवी, दुर्गा और सुभद्रा।

नवकुळी—नाग वंश के नवकुल। उ०—नवकुळी नाग अठकुळ अनड़, सरव जीव ना सन्ति नहीं।—पी.ग्रं.

नवकोट, नवकोटी-सं०पु०—नौ गढ़ वाला, मारवाड़ राज्य का एक नाम। उ०—१ महाराजा दळ मेलिया, चरंस वधै चड चोट। अधपति पय आया इता, कमंध जिता नवकोट।—रा.रू.

उ०—२ जोधा जोध लंकपत जेहा। ए नवकोट तणा छळ एहा।

—रा.रू.

उ०—३ मगरै थई लड़ाई मोटी, किलवां हरख सुणी नवकोटी।

—रा.रू.

उ०—४ फूंकण नवकोटी झंडा फरहरिया, घर घर जाती रा-टांमक घरहरिया। खाली जळ धरती जळधर जळ खूटो, ततखिण जीवण विण जगजीवण तूटो।—ऊ.का.

रू०भे०—नवांकोट, नवांकोटी।

नवकोटी-सं०पु०—१ नव कोट वाले मारवाड़ राज्य का अधिपति। २ राठौड़। उ०—कसियं जरिद मरद नवकोटी, चौरंगि चढ़ियं प्रभत चड़ै। ऊभो जां वासै आसावत, परिहंस सु नहं पुरांणि पड़ै।

—राठौड़ अमरसिंह आसकरणोत कूंपावत री गीत

रू०भे०—नवांकोटी।

नवखंड-सं०पु० [सं०] जंबू द्वीप के नौ खण्ड यथा—भारत, इलावृत्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुरु।

रू०भे०—नवेखंड।

नवगडढ़—देखो 'नवगढ़' (रू.भे.)

नवगड्ढ़ौ-सं०पु० [सं० नवगढ़] राठौड़ों के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द। उ०—गांव महेव निकट नवगड्ढ़ा। दुजड़ सखां छळ वर्ण सद्रड्ढ़ा।—रा.रू.

मि०—नवकोटौ।

रू०भे०—नवगढ़ौ।

नवगढ़-सं०पु० [सं०] मारवाड़ राज्य।

मि०—नवकोटी।

रू०भे०—नवगड्ढ़।

नवगढ़ौ—देखो 'नवगड्ढ़ौ' (रू.भे.)

नवगरो—१ देखो 'नवग्रही' (रू.भे.) २ देखो 'नौगरी' (रू.भे.)

नवगिरै—देखो 'नवग्रह' (रू.भे.)

नवगीय—देखो 'नवग्रह' (रू.भे.) उ०—वासिग उप्परि धरणि-धरणि उप्परि जिम गिरिवर। गिरिवर उप्परि मेह मेहु उप्परि रवि ससिहर। ससिहर उप्परि तियस तियस उप्परि जिम सुरवर। इंदुप्परि नवगीय गीय उप्परि पंचुत्तर।—अभयपतिक पति

नवगुण-सं०पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई।

रू०भे०—नौगुण।

नवग्रह-सं०पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष के अनुसार नौ प्रकार के ग्रह—सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु (मतांतर से अंतिम तीन को अरुण, वरुण और यम भी कहते हैं।)

उ०—१ गाहै गजराजां गुड़ां, रुहिर मचावै कीच। ज्यांरै नवग्रह पाधरा, जे वंका रण वीच।—बां.दा.

उ०—२ लंका राजधानि, चित्रकूट दुग्ग, जीणइं म्रित्यु बांधी पाताळि घालिउ, नवग्रह खाट तणइ पाइ बांधा, वायु देवता अंगणइ बुहारइ।—व.स.

रू०भे०—नवगिरै, नवैग्रह।

२ देखो 'नवग्रही' (रू.भे.) उ०—पद्यइ वळी मुकट तिलक कुंडळ हार दोर वीरविळय अंगद वहिरखा नवग्रहां मुंदडी कंदोरु हथसांकळी पगनो सांकळी प्रमुख पहिराया।—व.स.

नवग्रहबंध-सं०पु० [सं०] नौ ग्रहों को बांध कर कैद करने वाला, रावण, दशकंधर।

नवग्रही-सं०स्त्री० [सं० नवग्रह+रा०प्र०ई] कलाई पर धारण किया जाने वाला एक आभूषण विशेष जिसमें नौ ग्रहों के सूचक नौ प्रकार के नग जड़े हुए होते हैं। उ०—१ गजरा नवग्रही पौंचिया पौंचे, वळै वळै विधि विधि वळित। हसत नखित्र वेधियौ हिमकरि, अरप कमळ अलि आवरित।—वेलि.

उ०—२ लाल कमळ सा हसत कमळ जावक मेंहदी रै रंग लागा थकां। चोळा फळी-सी आंगुळी। गोरै प्रांचै प्रांचीआं वणि रही छै। छाप मूंदड़ी नवग्रही जड़ाव वणियो छै।—रा.सा.सं.

उ०—३ जोति के जहूंर दिनकर का दरसाव। जरकवर धुगधुगी नवग्रही विराजै। जहांगीर हथ सांकळै सोभा का रूप छाजै।—सू.प्र.

वि०—नवग्रहों का सूचक।

रू०भे०—नवगरो, नागरी, नौगरी, नौग्रही।

नवड़—देखो 'निवट' (रू.भे.)

नवड़ियौ—देखो 'नौड़ियौ' (रू.भे.)

नवचंदौ-वि०—१ सावधान, होशियार।

२ देखो 'नवसंदौ' (रू.भे.)

नवद्रावर—देखो 'निद्रावळ' (रू.भे.)

नवद्रावरेस—देखो 'निद्रावळ' (मह., रू.भे.)

उ०—१ नवद्रावरेस सनेह, मोतियां मंडियो मेह। दहूं मिसल दाट दुबाह, गहतंत भड़ दरगाह।—सू.प्र.

उ०—२ बाजत्र बजत अनेक, फल राग रंग अनेक। नवद्रावरेस नरंद, उच्छ्रंत इब भड़ इंद।—सू.प्र.

नवद्राहर—देखो 'निद्रावळ' (रू.भे.) उ०—महलहूंतौ नाथै सता, पवन संगीतो पाय। पंगा सरदारां करै, रंभ बिचै बणराय। रंभ बिचै बणराय जिहहै दळ जाहरां। नमि नमि द्रुम फळफूल करै नवद्राहरां।—बां.दा.

नवजण—देखो 'नूंजणौ' (मह., रू.भे.)

नवजणियौ—१ देखो 'नूंजणियौ' (रू.भे.)

२ देखो 'नूंजणौ' (अल्पा., रू.भे.)

नवजणी-सं०स्त्री०—देखो 'नूंजणौ' (अल्पा., रू.भे.)

नवजणौ—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे.)

नवजणो, नवजवौ—देखो 'नूंजणो, नूंजवौ' (रू.भे.)

नवजणहार, हारो (हारी), नवजणियौ—वि०।

नवजिओड़ो, नवजियोड़ो, नवज्योड़ो—भू०का०कृ०।

नवजीजणो, नवजीजबौ—कर्म वा०।

नवजरी-सं०स्त्री०—एक आभूषण विशेष जो हाथ में पहना जाता है। उ०—सज्जत सोळ सिंगार, आभरण दूण अढ़ार। नवजरी बेलि अनूंप, चिग नौत गोत सचूंप।—सू.प्र.

नवजवान-वि० [सं० नवयुवक] नवयुवक।

रू०भे०—नौजवान।

नवजोगेसर-स०पु० [सं० नवयोगेश्वर] नौ योगेश्वर—शुक्राचार्य, नारायण (श्रीकृष्ण), अंतरिक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन, आविर्होत्र, द्रुमिल, चसग और करभाजन।

नवजोबन—देखो 'नवयौवन' (रू.भे.)

नवजोबना—देखो 'नवयौवना' (रू.भे.)

नवड—देखो 'निवट' (रू.भे.) उ०—भांगरे डूंगरे लोहळै झलतो नवड कमधज ज तु अनड़ नड़िया। 'ऊद' उत तूफ भय 'भांण' उत गहोनस, जोगियं पोढ़णै जंद जुड़िया।—दूरसो आढ़ौ

नवणीय—देखो 'नवनीत' (रू.भे.) (जैन)

नवणी, नवबौ—देखो 'नमणो, नमबौ' (रू.भे.) उ०—किसन तणो साम्हो क्रमैं, चढ़तौ वांकिम वींद। नींदवतै नवते नरां, अणभंग रहै अनींद।—हा.भा.

उ०—१ जे संतोस सुमेर, चढ़ बैठा मांनव चतुर। देख नवै ज्यां देर, कुवचन सर लागै कठै।—बा.दा.

उ०—३ रांम भणंतां रे ह्विदा, कह केता गुण होय। ठाकुर मां नै जग नवै, पिसण न गंजै कोय।—ह.र.

उ०—४ कर कफनी कोपीन कर, कर करवा भर श्राव। श्रब मक्का जैबो उचित, नवणी नही नवाब।—ला.रा.

नवणहार, हारौ (हारी), नवणियौ—वि०।

नविप्रोड़ौ, नवियोड़ौ, नव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नवीजणौ, नवीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

नवतन—देखो 'नूतन' (रू.भे.)

उ०—घरिया सु उतारै नवतन धारै, कवि तै वाखोरण किमश्र। भूखरण पुहप पयोहर फळ भति, वेलि गात्र तो पत्र वसत्र।—वेलि.

नवतर-सं०पु० [देशज] उर्वरा शक्ति बढाने हेतु जोतने से छोड़ी हुई भूमि।

नवदुरगा-सं०स्त्री० [सं० नव दुर्गा] नौ दुर्गाएं जिनकी नवरात्र में नौ दिनों तक क्रमशः पूजा होती है। यथा—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंद माता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा (पौराणिक)।

नवद्वार-सं०पु० [सं०] शारीरिक नौ द्वार यथा—दो नाक के, दो आँखें, दो कान, एक मुख, एक गुदा और एक लिंग या भग।

नवधा-वि० [सं०] नौ प्रकार। उ०—मनि नवधा पूजै परमेसुर। खट रुत धरम करै खत्रियां गुर।—सू.प्र.

नवधाभक्ति-सं०स्त्री० [सं०] नौ प्रकार की भक्ति यथा—श्रवण, कीर्तन स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।

रू०भे०—नोधा भगति।

नवनध—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

नवनाड़ी-सं०स्त्री० [सं०] योग विद्या की शरीरस्थ नौ नाड़ियां—इडा, पिंगला, सुषुम्ना, गंधारी, पूषा, गज-जिव्हा, प्रसाद, शनि, शाखिनी।

नवनाथ-सं०पु० [सं०] नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सिद्धि प्राप्त नौ महायोगी। उ०—सांईं तूं सिरदारड़ौ, सखरौ थारौ साथ। तूं देवां रौ देवलौ, नवनाथां र नाथ।—पी.ग्रं.

वि०वि०—देखो 'नाथ' (रू.भे.)

रू०भे०—नवेनाथ, नव्वनाथ।

नवनिद्धि, नवनिद्धी, नवनिध, नवनिधि—देखो 'निधि' (१)

उ०—१ श्रस्ट सिद्धि नवनिधि श्रखंडित। परम सती जुवील सुत पंडित।—व.स.

उ०—२ श्ररज सुण नवलख श्राजो जी, सिह थांरौ वेग सभाज्यौ जी। देणी नवनिद्धी दरस हरसिद्धी हिंगळाज श्राखां कीरत ऊजळी लाखां राखण लाज।—बालावस्श बारहठ

उ०—३ श्राय खोलियौ श्रांगणै, माजी जिण दिन मोड़। हेक साथ नवनिद्धि हुई, उण दिन सूं इण ठोड़।—बां.दा.

उ०—४ जांणे धनद यक्ष त्रूठउ, जांणे वेताळ सेवाहि पइठउ, जांणे किरि कल्पद्रुम फळिउ, किरि कांमघट श्रावि मिळिउ, किरि कांमधेनु ग्रिहांगणि बांधि, किरि नवनिधि तीणि लाधी, किरि चिंतामणी रत्न हाथि चडिउं।—व.स.

रू०भे०—नवनध, नवेनिध, नवेंनिद्धि, नवेनिधि, नवैनिध, नवैनिधि, नव्वनीद्धि, निद्धनव, नोऊं निध, नोऊंनिधि, नौनिध, नौनीधि।

नवनीत-सं०पु० [सं० नवनीत] १ मक्खन (श्र.मा., डि.को.)

उ०—पन्नग रदन प्रमांण प्रमांण परम छ पेंडियां। नरम मनहुम नवनीत श्ररुण रंग एडियां।—सिवबक्स पाल्हावत

२ श्रीकृष्ण (डि.को.)

रू०भे०—नवणीय, नांनीत।

नवनीतधेनु-सं०स्त्री० [सं०] दान के लिए एक प्रकार की कल्पित गौ। (वाराह पुराण)

नवपंचम-सं०पु०यौ० [स०] जेष्ठ कृष्ण पक्ष के धनिष्ठा नक्षत्र से जेष्ठ शुक्ल पक्ष के रोहिणी नक्षत्र तक नौ दिन का समय।

नवपण-स०स्त्री० [सं० नव+त्व] यौवन, जवानी। उ०—श्ररजण भीम जिसा श्रालीजा रोसे वेदल थाया रंग, जारै तौ विण कवण जोजरी नवपण जिसा श्रमोलक नग।—श्रोपौ श्राढ़ौ

नवपद— [सं०] जैनमतानुसार निम्नांकित नव पद—श्ररिहंत, सिद्ध श्राचार्य, उपाध्याय, साधु, ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप।

उ०—धवळ सहित वाहण चढी, नवपद जपि धई चाक। सीहतणि परि गाजतौ, सीपे मेल्ही हाक।—श्रीपाळ रास

नवपत्रिका-सं०स्त्री० [सं०] केले, श्रनार, धान, हळदी, मानकच्चू, कच्चू बेल, श्रशोक और जयन्ती इन नौ वृक्षो के पत्ते जिनका व्यवहार 'नवदुर्गा' के पूजन में होता है।

नवबत, नवबती, नवबत्ती, नवब्बती—देखो 'नौबत' (रू.भे.)

उ०—१ सहनाय मुरसळां रंग सुवाद। नवबतो घोर मंगळीक नाद।—सू.प्र.

उ०—२ श्रसुर प्रळय श्ररि जय करि श्राई। व्रंदारकन व्रंद विरदाई। वरखिय सुमन घुरिय नवबत्ती। स्री करणी जय जयति सकत्ती।—मे.म.

उ०—३ नेजा खासा तोग नवब्बती। पह दीधा मो विनां दिलीपति।—सू.प्र.

नववहारी नगरी-सं०स्त्री० [सं० नव+द्वार+नगरी] नव दरवाजे वाला शहर।

उ०—१ पणि लक्ष्मीकृत स्रिस्टि मांनीइ, जेह कारणतउ योजन सहस्र परइं सजीव निरजीव वस्तु करतलगत दिखाडइ, एक रायतन थापइ, एकि ऊथपई, जं चीतवइ तउ करइ, संध्या श्रोहरी नववहारी नगरी करइ, प्रिथ्वीपीठि श्रमारि प्रवरत्तावइ।—व.स.

उ०—२ १४ मंत्रीस्वर, ३२ सहस्र नववहारी नगरी।—व.स.

नवम-वि० [सं० नवम्] जो नौ के स्थान पर हो, नवां।

रू०भे० —नमौ, नवमौ, नुमु, नोमौ, नोमौ, नोवौ।

नवमई, नवमइ-सं०स्त्री० [सं० नवमति] एकदम सोचने की शक्ति,

नवमहानिधान-सं०पु०—नौ प्रकार के महान् कोष ?

उ०—केवडउ राज्य चक्रवरति तणउं, चउद रत्न, नवमहानिधान सोळ सहस्र यक्ष ।—व.स.

नवमासियो-वि० [सं० नव+मास+रा.प्र.इयो] नौ मास गर्भ में रह कर उत्पन्न हुवा हुआ, जो नव मास गर्भ में रह कर उत्पन्न हुआ हो ।

नवमि, नवमी-सं०स्त्री० [सं० नवमी] चंद्रमास के प्रत्येक पक्ष की नौवीं तिथि । (उ.र.)

उ०—१ आसाढ़ाळ सुद नवमि, गुण आगै रिख लेख । जिके समत्सर जोधपुर, समहर थयौ विसेख ।—रा.रू.

उ० –२ पख वैसाखह तिथि नवमि, पनरोतरै वरस्सि । वारि सुकर लड़िया विहद, हिंदू तुरक वहस्सि ।—वचनिका

वि०स्त्री०—क्रमशः नौ के स्थान पर पड़ने वाली ।

रू०भे०—नम, नमि, नमी, नम्म, नवी, नूवी ।

नवमोहरो-सं०पु०—बादशाह द्वारा दिया हुआ वह आदेश पत्र जिस पर शाही नव मुद्राएँ अंकित होती थीं ।

उ०—इहां दफतर देख नकल उतार बादसाह सलामत री हुजूर हाजिर हुवा, बादसाह नवमोहरो कराइयो ।—राठौड़ राजसिंह री वारता

नवमो-वि० [सं० नवम्] (स्त्री० नवमी) क्रमशः नौ के स्थान पर, नौवां । उ०—जिण नृप पूंज तणै रवि जोपै । उग्रप्रभा नवमो सुत ओपै ।—सू.प्र.

नवयराजलखमण, नवयराजलक्ष्मा-सं०पु० [सं० नव्यराजलक्ष्मण, नव्यराजलक्ष्मा] । युधिष्ठिर । (ह.नां.)

नवयोवन-सं०पु०—[सं०] १ नई जवानी, तरुणाई. २ तरुण नवयुवक ।

उ०—पूजारु पूछइ, कहइ, अरे अयांण ? अबूझ । नवयोवन निकळंक नर ? तनि सी उछिम तुझ ?—मा.कां.प्र.

रू०भे०—नवजोवन ।

नवयोवना- सं०स्त्री० [सं०] जवान स्त्री, तरुणी ।

रू०भे०—नवजोवना ।

नवरंग-सं०पु० [सं०] १ छप्पय छंद का ५६ वां भेद जिसमें १२ गुरु और १२८ लघु से १४० वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं । (र.ज.प्र.) २ चार जगण और अंत में गुरु लघु वर्ण का कुल १४ वर्ण का छंद विशेष । (ल.पि.) ३ कामदेव, अनंग. ४ सुंदरता, लावण्य ।

उ०—लखि प्रिया जांणि मनाय लीधा, अंग नवरंग ओपए ।—रा.रू.

वि०—१ नये ढंग का, नये प्रकार का । उ०—नवरंग सनेह आणंद नव, उमळ प्रफूल उमाळ सूं । रतिराज जोड़ नर रज्जिए, महाराज 'अभमाल' सूं ।—सू.प्र.

२ सुन्दर, रूपवान ।

अल्पा०—नवरंगो, नवरंगौ ।

नवरंगी-वि० [सं० नवरंग+रा०प्र०ई] १. अनोखा, अद्भुत, विचित्र ।

उ०—१ दुत केसर आड भभूत दीध, कंथा नवरंगी सिलह कीध । जट भाड़ बंध सेली जड़ाव, आवधां वीर संजत अड़ाव ।—वि.सं.

उ०—२ कसमेरी कांनिह कंथा नवरंगी कियां । एकल उथ्योनेह 'पाव' विराजै पीपळी ।—प्रा.प्र.

२ नित्य नये आनन्द करने वाला ।

नवरंगो—देखो 'नवरंग' (अल्पा०, रू०भे०)

नवरतन-सं०पु० [सं० नवरत्न] १ नौ प्रकार के रत्न या जवाहिर, यथा—मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूंगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम ।

वि०वि०—फलित ज्योतिष के अनुसार ये नौ रत्न पृथक-पृथक नौ ही ग्रहों के दोषों की शान्ति के लिए उपकारी माने जाते हैं, यथा—सूर्य के लिए माणिक्य, चंद्रमा के लिए मोती, मंगल के लिए प्रवाल, बुध के लिए पन्ना, बृहस्पति के लिए पुखराज, शुक्र के लिए हीरा, शनि के लिए नीलम, राहु के लिए गोमेद और केतु के लिए लहसणिया । उ०—कंवळ करां मैं नवरतन की पोचां सोहै छै, मन रंग लोभ पराग विमोहै छै ।— पतां वीरमदे री वात

२ वह आभूषण जिसमें नौ ग्रहों के सूचक नौ रत्न जड़े हों, नौ रत्नों से जटित आभूषण ।

नवरता, नवरती, नवरत्ती—देखो 'नवरात्र' (रू.भे.)

उ०—मधु आसोज मास रै मांही, निरत करत नवरत्ती । रास विलास पधारत रमवा, जगदंबा जगजत्ती ।—मे.म.

नवरस-सं०पु० [सं०] काव्य के नौ रस, यथा शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त । उ०—तउ दवतरिउ रितुपति तपति सु मन्मथ पूरि, जिम नारीय निरीक्षिण दक्षिण मेल्हइ सूरि । कीजइं अवसरि अवसरि नवरसि रागु वसंत ।

—नेमिनाथ फागु

नवरा—देखो 'नौरा' (रू.भे.)

नवरात, नवरात्र, नवरात्रि-सं०पु० [सं० नवरात्र] १ नवदुर्गा का व्रत, घट-स्थापन तथा पूजन करने के नौ दिन जो चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक तथा आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक के नौ नौ दिन ।

उ०—१ इकताळा रै चैत सुद, आद उदै नवरात । असुरां सिर आयो 'अखो', पिछवारै परभात ।—रा.रू.

उ०—२ तठा उपरांति करि नै नवरात होम ज्याग हुई नै रहिया छै ।—रा.सा.सं.

रू०भे०—नवरता, नवरती, नवरत्ती ।

अल्पा०—नउरतो, नांरतो, नूंरतो, नौरतो ।

नवरोज, नवरोजो-सं०पु० [सं० नव+फा० रोजः]

नवरोजो-सं०पु०—ईरानियों द्वारा मनाया जाने वाला एक बहुत बड़ा जश्न जो वर्ष के पहिले दिन मनाया जाता है ।

वि०वि०—भारत में गर्मी की ऋतु में सम्राट अकबर द्वारा यह उत्सव मनाया जाता था जिसमें मुगल साम्राज्य के अधीनस्थ राजा, नवाब, स्त्रियां, पुरुष आदि भाग लेते थे किन्तु उनके स्थान अलग-

अलग होते थे। सम्राट ने इस उत्सव को नौ दिन से उन्नीस दिन तक बढ़ा दिया था। इस अवसर पर मुगल-काल की कलायुक्त वस्तुओं की प्रदर्शनी लगती थी और सम्राट का शानदार दरबार लगता था।

उ०—१ रोजायतां तणैं नवरोजै, जेथ मुसांणा जणोजण। हिंदूनाथ दिल्ली चै हाटे, 'पतौ' न खरचै खत्रीपण।

—प्रिथीराज राठौड़, बीकानेर

उ०—२ नौख न जोख करै नवरोजै, जोख न भूखण धरै जवाहर। दसकत करै न मिळै दिवांणां, अरजी फरज मतालब ऊपर।

—सू.प्र.

रू०भे०—नव रोज, नौ रोज, नौ रोजौ।

नवरौ—वि०पु० सं० केवलम्-प्राणवरम् = रा० नवरौ] (स्त्री० नवरी) १ वह जिसके पास कोई काम करने को न हो. २ वह जिसने सब प्रकार के कार्यों से मुक्ति पा ली हो. ३ वेकार. ४ निष्क्रिय।

उ०—रह रत दिन घर-कज्ज रत, सुपण न बिगड़ सकाय। नवरी रहे न नार जो, जग किम नातै जाय।—रेवतसिंह भाटी

५ 'नौ'रौ' (रू.भे.)

नवल—वि० [सं० नव+रा. प्र. ल] १ नवीन, नया।

उ०—१ नव नव उच्छव नवल सुख, सब जण नवल सिंगार। नवल चित्रा में धवळहर, पायौ नवल कुमार।—रा.रू.

२ नवयुवा, नवयौवना।

उ०—२ बिहुं वै तरफ बाजार री, गोख झरोख सुघाट। गावै चढ़ि छंद-गारियां, नाजुक नवल निराट।—सिवबक्ष पाल्हावत

रू०भे०—नवलउ, नवल्ल, नवल्लिय।

नवलअनंगा—सं०स्त्री० [सं०] मुग्धा नायका के चार भेदों में से एक।

नवलउ—देखो 'नवल' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—१ जग पुढि (ताइ) जइ रउ नांम जपंतां, आंवण जांण नहीं भव अंत। नितकउ हुवइ जोग नउ नवलउ, घणा जुग वउळिया अनंत।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कीजइ अवसरि अवसरि नवरसि रागु वसंत, तरुणी दळ दोला रस सारस भमइ हसंत। लिपइ ताव निकंदनि चंदनि चंदनि देहु, निज निज नाथ संभारिय नारिय नवलउ नेहु।—नेमिनाथ फागु

नवलकिसोर—सं०पु० [सं० नवलकिशोर] (स्त्री० नवलकिसोरी) १ श्रीकृष्ण, घनश्याम। २ युवा पुरुष।

नवलकिसोरी—सं०स्त्री० [सं० नवलकिशोरी] युवा स्त्री।

उ०—बहार में आयी है मा आज नवलकिसोरी रौ नाह।

—रसीलैराज

नवलक्ख—सं०स्त्री० [सं० नवलक्ष] नौ लाख देवियों का समूह।

उ०—हव मुक्ख ललक्क कलक्क हली, नवलक्ख थई चख लक्ख लली। भड़ खल्ल झगल्ल बगल्ल भड़ं, धड़ नल्ल पगल्ल महल्ल घड़ं।

—पा.प्र.

वि०पु०—नौ लाख का।

नवलखी—सं०स्त्री० [सं० नवलक्ष+रा०प्र०ई] ताने को दबाने के लिए एक लकड़ी जिसमें इधर-उधर वजनी पत्थर बंधे रहते हैं।—जुलाहा

अल्पा०—नवलखौ।

वि०स्त्री०—नौ लाख की।

रू०भे०—नौलखी।

नवलखौ—वि० [सं० नवलक्ष] (स्त्री० नवलखी) नौ लाख का।

उ०—१ ऊजेणी जई ऊतरया, आपापणै आवासि। घूनां धवळहर नवलखां, तिहां लेई माधववासि।—मा.कां.प्र.

उ०—२ घोड़ौ तौ भीजै पीया नवलखौ रे, कोई भीजै रे बनाती, भीजै रे वानाती रे साज। हो जी ढोला साज, अब घर आय जा गोरी रा वालमा हो जी।—लो.गी.

यौ०—नवलखौ-हार।

२ बहुमूल्य, मूल्यवान. ३ देखो 'नवलखी' (अल्पा. रू.भे)

४ देखो 'नवलखौ हार'।

रू०भे०—नौलखौ।

नवलखौ-वरंग—सं०पु०यौ० [सं० नवलक्ष=मारवाड़, मि० नवकोट+द्रंग] मारवाड़ राज्यान्तर्गत कोटड़ा नगर जो बाघा कोटड़िये की राजधानी था।—ऐति०

नवलखौ-हार—सं०पु०यौ [सं० नव+लक्ष+हार] नौ लाख का हार, मूल्यवान हार।

उ०—उड गयौ नवलखौ-हार-देख, मिणियां री माळा पड़ी अठै। उड गई चूड़ियां सोने री, लाखां रौ चुड़लौ उडै कठै।—चेतमांनखा

नवलवनी—देखो 'नवलव्नी' (रू.भे.)

नवलवनौ—देखो 'नवलव्नौ' (रू.भे.)

उ०—मांय घालो मरवौ नै मखतूळी, ओ, माय घालो (राळो) जायफळ नै जांवतरी, ओ तेल नवलबना रै अंग चढ़सी।—लो.गी.

(स्त्री० नवलवनी)

नवलव्नी—सं०स्त्री०यौ० [सं० नव+रा० वनी] १ नवोढ़ा, नववधू।

२ नवयुवती।

नवलव्नौ—सं०पु०यौ० [सं० नव+रा० ल+बनौ] १ नवयुवक, नौजवान। (स्त्री० नवलव्नी)

२ दूल्हा बना हुवा युवक।

उ०—नगरी कुंवारा परणसी, म्हारै नवलव्नै को व्याव, चोखा सेवरड़ा गूंथ ल्याय।—लो.गी.

नवलासी—वि० [सं० नव+रा० लासी] नवीन, नूतन।

उ०—१ हाथां खास वंदूकां नवलासी ज्यौं लीधां फिरै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ मणि कंकण अंगद अमूल्य पद हाटक नूपर। नवलासी नवरंग संग भुजवंसी सुंदर।—रा.रू.

रू०भे०—नौलासी ।

नवळियो—देखो 'नकुल' (अल्पा., रू.भे.)

नवळी—देखो 'नौळी' (रू.भे.)

नवली-वि०स्त्री० [सं० नव+राज. ल+रा०प्र०ई] नयी, नवीन ।

उ०—मनह सकांणी माळवणि, प्रिथु कांईं चलचित्त । कइ मारुवणी सुधि सुणी, कइ का नवली वत्त ।—ढो.मा.

सं०स्त्री०—नवयुवती ।

उ०—सोरठियो दूहो भलो, घोड़ो भलो कुमेत । नारी तो नवली भली, कपड़ो भलो सपेत ।—अज्ञात

रू०भे०—नवल्ली ।

नवळो-सं०पु० [देशज] खलिहान में भूसे से पृथक किया हुआ अनाज का लम्बा ढेर ।

नवलो-वि० [सं० नव+राज. ल+रा०प्र०ओ] नवीन, नया ।

(स्त्री० नवली) उ०—१ धूप पड़ै धरती तपै, सरवर सूख्या जावै । जिण घर नवली गोरडी, वे क्यूं बाहर जावै ।—लो.गी.

उ०—२ नितु नितु नवला सांढ़िया, नितु नितु नवला साजि । पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेड़ न काजि ।—ढो.मा.

सं०पु०—नवयुवक, तरुण ।

रू०भे०—नवल्लो ।

नवल्ल—देखो 'नवल' (रू.भे.)

उ०—१ हुआ धमळमंगळ हरिख, वधिया नेह नवल्ल । सूर रतन सतिग्रां सरस, मिळिया जाइ महल्ल ।—वचनिका

उ०—२ मोहणवल्लि नवल्लिय, सोहइ सा जगि बाळ । रूपि कळागुणि पूरिय, दूरिय दूखण जाळ ।—प्राचीन फागु-संग्रह

नवल्ली—देखो 'नवली' (रू.भे.)

उ०—नाक नवल्ली नारि रै, नकवेसर घण नूर । मोती ग्रहियां चांच मझ, जांणक कीर जरूर ।—बां.दा.

नवल्लो—देखो 'नवलो' (रू.भे.)

(स्त्री० नवल्ली)

नववती—देखो 'नौबत' (रू.भे.)

उ०—नववती राग घडियाळ नद्द । सागर जिम नगर उछाह सद्द ।
—सू.प्र.

नववासुदेव-सं०पु० [सं०] जैन धर्म में माने जाने वाले निम्न नौ वासुदेव—त्रिपृष्ट, द्विपष्ट, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, सिंहपुरुष, पुंडरीक, दत्त, लक्ष्मण और श्रीकृष्ण ।

नवविस-सं०पु० [सं० नवविष] नव प्रकार के विष—वत्सनाभ, हारिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगक, कालकूट, हलाहल और ब्रह्मपुत्र ।

नवसंगम-सं०पु० [सं०] पति से पत्नी की पहली भेंट, नया मिलाप, प्रथम समागम ।

नवसंदो-सं०पु० [फ़ा० नवीसिन्दः] लेखक, अहलकार, कर्मचारी ।

उ०—विधसु उजीर, महेसुर बगसी, दीवैं धीर धरम सिकदार । चित्रगुप्त धुरंधर चावां, दफतर नवसंदा दरबार ।—र.रू.

रू०भे०—नवचंदो, नवीसंदो ।

नवसक्ति-सं०स्त्री० [सं० नवशक्ति] नव शक्तियां, यथा—प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नंदिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा ।
—पौराणिक

नवसदी-सं०स्त्री० [सं० नव+फा. सदी] बादशाही अहलकारों का एक विभाग । उ०—आगरै बादसाह कन्है गयो । उठै नवसदी रो मुनसब हुवो ।—अमरसिंह राठौड़ री वात

नवसर-वि० [सं० नवसृ] नौ लड़ी का, नौ लड़ी वाला ।

यौ०—नवसर-हार ।

सं०पु०—१ नौ लड़ी का हार. २ मारवाड़ का किला, गढ़ ।

उ०—'मांन' सु छळ रहियो राव मालू, खग हुत मांडै पाव खरा । नवसर गढ छाती नांगळियो, हाती रिप ज्यूं 'जगड़' हरा ।
—राजूराम बारहठ

रू०भे०—नौसर, नौसर ।

नवसरहार-सं०पु०यौ० [सं० नवसृ+हार] नौ लड़ी का हार ।

उ०—चालै तो घड़ाय दूं तनै बाड़लो ए पिणिआरी ए लो । चालै तो घड़ावां नवसरहार वाला जी ओ ।—लो.गी.

रू०भे०—नउसरहार, नौसरहार ।

नवसहंस, नवसहंसउ, नवसहंसो, नवसहस, नवसहसो-सं०पु०यौ० [सं० नवसहस्र] राठौड़ वंश के क्षत्रियों के लिए डिंगल साहित्य में प्रयुक्त होने वाला उपाधिस्वरूप शब्द, राठौड़ वंश का व्यक्ति ।

उ०—१ अत इम करि 'रिणमाल', मिळै सग लोक मझारां । सुणै चूक नवसहंस, 'जोध' आवियो जिवारां ।—सू.प्र.

उ०—२ डोहळै मीर घड़ा गजडंबर, वजित्रि नर हैमर कर वेस । आऊगति हिंदूआं ऊपरि, दससहंसि नवसहंसउ देस ।—दूदो

उ०—३ नवसहंसा दससाहसां, मेछ गया तज भोम । ग्रहियै री अदसा गई, ज्यां उग्रहियै सोम ।—रा.रू.

उ०—४ हिंदुवइ राइ देसाळि हत्थ, सांकडउ कियउ सुरितांण सत्थ । आपणइ पांणि आपणइ अंगि, नवसहस धणी लागउ निहंगि ।
—रा.ज.सी.

उ०—५ कळि वाधी जैतमल कळोधर, गज फौजां डोहण गहण । समहर भर ऊपरि नवसहसो, ताइ ओडविजै भांण तण ।
—राठौड़ नरपाळ चांपावत री गीत

रू०भे०—नवसाहसो ।

नवसादर—देखो 'नौसादर' (रू.भे.)

नवसाहसो—देखो 'नवसहंस' (रू.भे.)

उ०—१ मतंग पछटण खगां निहंग छिवतै मछरि, प्रथिपति अभंग भुज तेण पूजो । सुरंग भालां लियां जोध नवसाहसो, दुरंग वांका लियै 'कमो' दूजो ।—अनोपसिंघ सांदू

उ०—२ आयो अभंग नवसाहसो । खेड़ि तुरंग दससहस ।—गु.रू.बं.

नवसूज-सं०पु० [सं० नवसृज] कामदेव, अनंग ।

नवहत्थ—देखो 'नवहत्थो' (मह० रू.भे.)

नवहत्थो-वि० [सं० नव हस्त] (स्त्री० नवहत्थी) नौ हाथ का (लंबा)

उ०—१ नवहत्थी झोक रा, मसत फीफरा भरारा । बगला उरळी बिहूं, बगलि नीकळै छिकारा ।—सू.प्र.

उ०—२ खीरोदक ततखेव मांहां, आप्यां लूंछणा अंग । पछइ पटुलां पहिरणइ, नवहत्थां नवरंग ।—मा.कां.प्र.

सं०पु०—१ सिंह, शेर ।

उ०—१ नवहत्थो मत्थो बडो, रीस भटक्कै रार । श्री कूंभाथळ ऊपरा, हाथळ वाहणहार ।—बां.दा.

उ०—२ कळह घणा ही कटक नूं, सूछम गर्ण समाथ । नवहत्था वाळी नरा, है छाती सौ हाथ ।—बां.दा.

२ वीर, बहादुर ।

रू०भे०—नवहथो, नौहतो, नौहत्थो, नौहथो, नोहथ्थो ।

मह०—नवहत्थ, नवहथ, नवहथेस, नवहथ्थ, नौहतेस, नौहत्थेस, नोहथेस ।

नवहथ—देखो 'नवहत्थो' (मह., रू.भे.)

उ०—जड़ी तुपक उत मंगज के, पडी भ्रकुट परमांण । नवहथ वेहरी नीसरी, पापणि ले संग प्रांण ।—सिवबक्स पाल्हावत

नवहथो—देखो 'नवहत्थो' (रू.भे.)

उ०—सहै न किणरी सीख, हाक सिर नवहथा । गाहै घड़ा गयंद, मयंद डाला मथा ।—सिवबक्स पाल्हावत

नवहथ्थ—देखो 'नवहत्थो' (मह., रू.भे.)

उ०—दवै रद खोट न ओट दकूळ, फवै हंसि होठ चंडचां मुख फूल । हकाळत बीसहथ्थां नवहथ्थ, रूड़ा सुखपाळक हालत रथ्थ ।—मे.म.

नवांकोट, नवांकोटि—देखो 'नवकोट, नवकोटी' (रू.भे.)

उ०—जगम पाखरां सजै नच वीर खेळा जठै, उखेला समैं येळा रखै ओट । जोवजी 'सांवती' भोम भेळा जठी, कनोजां नमैं चेळा नवांकोट ।

—जसजी आढ़ौ

नवांणियो-वि० [सं० नव+उष्ण] थन से निकला हुवा ताजा दूध जो कुछ गरम होता है, धारोष्ण ।

नवांणु, नवांणू—देखो 'निनांणू' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—नवांणु थया जब पूरा राज ।—ध. पत्र

नवांणो- वि० [सं० नवीन] (स्त्री० नवांणी) नवीन, नया, नूतन ।

उ०—माणी माया न ओढ़ा सुवांणी वापरांणी मही, ऊधमांणी जलाल गहांणी जेम हाथ । दवागीरां पातां घरा दुदाणी नवाणी देवै, न लेवै पुरांणी उदकांणी प्रथीनाथ ।—दुरगादत्त वारहठ

नवांस-सं०पु० [सं० नवांश] फलित ज्योतिष के अनुसार किसी राशि का नवां भाग जिसका व्यवहार किसी नवजात शिशु के चरित्र, आकार और चिन्ह आदि का विचार करने में होता है ।

नवाई—देखो 'निवाई' (रू.भे.)

नवाड़णो, नवाड़बो—१ देखो 'नमाणो, नमाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'नवाणो, नवाबो' (रू.भे.)

नवाड़णहार, हारो (हारी), नवाड़णियो—वि० ।

नवाड़िओड़ो, नवाड़ियोड़ो, नवाड़चोड़ो—भू०का०कृ० ।

नवाड़ीजणो, नवाड़ीजबो—कर्म वा० ।

नवाड़ियोड़ो—१ स्नान कराया हुआ. २ देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० नवाड़ियोड़ी)

नवाज—१ देखो 'नमाज' (रू.भे.)

२ देखो 'निवाज' (रू.भे.) (डि.को.)

नवाजणो, नवाजबो—देखो 'निवाजणो, निवाजबो' (रू.भे.)

उ०—दे दे रीझ कविंदा नूं नवाज दीधा, सोभाग हजारां लीधा ताळै सोभवांन । हजारां भाराथ कीधा भूरै उभै राहां हूंत, उभै राहां हूंत कीधा हजारां आसांन ।—चांवंडदान महडू

नवाजणहार, हारो (हारी), नवाजणियो—वि० ।

नवाजिओड़ो, नवाजियोड़ो, नवाज्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नवाईजणो, नवाईजबो—कर्म वा० ।

नवाजियोड़ो—देखो 'निवाजियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नवाजियोड़ी)

नवाणो, नवाबो—१- स्नान कराना ।

२ देखो 'नमाणो, नमाबो' (रू.भे.)

उ०—जंगळ ईस कहाये जेतै, तव पद सीस नवाये तेते । वरतमांन नृप 'वंग' महाबळ, पाव पराग धरत चरनोत्पळ ।—मे.म.

नवाणहार, हारो (हारी), नवाणियो—वि० ।

नवायोड़ो—भू०का०कृ० ।

नवाईजणो, नवाईजबो—कर्म वा० ।

नवायोड़ो—१ स्नान करवाया हुआ. २ देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० नवायोड़ी)

नवात-सं०स्त्री० [देशज] मिश्री ।

नवादी-सं०स्त्री [सं०नव+आदि] १ नववधू २. तरुणी ।

वि०स्त्री०—नयी, नूतन ।

नवादो—वि० [सं० नव+आदि] (स्त्री० नवादी) नवीन, नया, नूतन ।

उ०—घोड़ा आसवारां राख बाकी सोख जादा । तोपां की तयारी सोर सीसो ले नवादा ।—शि.वं.

(स्त्री० नवादी)

सं०पु०—नवयुवक, तरुण ।

नवाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.)

नवाबजादो—देखो 'नव्वाबजादो' (रू.भे.)

(स्त्री० नवाबजादी)

नवाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)

नवायो—देखो 'निवायो' (रू.भे.)

नवार—देखो 'निवार' (रू.भे.)

नवारण—देखो 'निवारण' (रू.भे.)

नवारण-मंत्र-सं०पु० [सं० नवार्ण-मंत्र] नौ अक्षर का मंत्र।

नवारणौ, नवारबौ—देखो 'निवारणौ, निवारबौ' (रू.भे.)

उ०—वैरी विखधर सरब नवारै, वळती लाय बुझावै। लोवड़ियाळ तणा भुज लांवा, आंच न दासां आवै।—कविराजा बांकीदास

नवारणहार, हारौ (हारी), नवारणियौ—वि०।

नवारिप्रोड़ो, नवारियोड़ो, नवारचोड़ौ—भू०का०कृ०।

नवारीजणौ, नवारीजबौ—कर्म वा०।

नवारियोड़ौ—देखो 'निवारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नवारियोड़ी)

नवारी-सं०स्त्री [देशज] देशी सूत की बनी हुई वह खद्दर की टुकड़ी जो लम्बाई में नौ गज होती है।

नवाळ—देखो 'निवाळौ' (मह., रू.भे.)

नवाळौ—देखो 'निवाळौ' (रू.भे.)

उ०—स्रोण चंडी पयाळां नवाळां ग्रीध भखै मांस, दूध मीनै साळा ताळा मुसाला जे दीठ। दुजाळा विलाला झाला अचाळा खखणी दळां, रूप माला जंगां गंजां ढालां माला रीठ।

—राजा रायसिंघ झाला (सादड़ी १) रो गीत

नवावणौ, नवाववौ—देखो 'नमाणौ, नमावौ' (रू.भे.)

नवावियोड़ौ—देखो 'नमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नवावियोड़ी)

नवास—देखो 'निवास' (रू.भे.)

नवासौ-सं०पु० [फा० नवासः] (स्त्री० नवासी) बेटी का बेटा, दौहित्र (मेवात)

नवाह-वि० [सं०] नौ दिन का, नौ दिन सम्बन्धी।

यौ०—नवाह पाठ।

नवि—अव्य० [सं० न+अपि] १ न, नहीं। उ०—१ तुलसीपांन कान्ह नवि पूज्या, जीवदया नवि पाळी। अंगी करीयां वचन कइ लोप्यां, कइ अम्हे कान्हूंरि।—कां.दे.प्र.

२ नहीं तो। उ०—पावस आयउ साहिवा, बोलण लागा मोर। कंता तूं घरि आव नवि, जोबन कीधउ जोर।—ढो.मा.

३ देखो 'नवी' (रू.भे.)

नवियोड़ौ—देखो 'नमियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नवियोड़ी)

नवियौ-१ देखो 'नमियौ' (रू.भे.)

देखो 'नव' (अल्पा०, रू.भे.)

नवी—वि०स्त्री० [सं० नव] १ नवीन, नूतन। उ०—१ आवै धन ज्यां आवियां, जिके नवी नित जोड़। अदभुत गुर लालच अठै, कळा सिखावै कोड़।—वां.दा.

उ०—२ कसतूरी कड़ि केवड़ो, मसकत जाय महक्क। मारू दाड़म फूल जिम, नितनित नवी डहक्क।—ढो.मा.

रू०भे०—नुई, नूंई, नूवी।

नवीन-वि० [सं०] १ नया, नूतन (डिं.को.) २ हाल का, ताजा। ३ विचित्र, अद्भुत, अपूर्व।

रू०भे०—नवीनूं।

अल्पा०—नवीनौ, नवेलौ, नुहालौ, नुहेलौ।

नवीनता-सं०स्त्री० [सं० नवीनत्व] नूतन या नया होने का भाव, नवीनता, नूतनता।

नवीना, नवीनी-स०स्त्री० [सं० नवीना] १ नव वधू, दुल्हन २ नवयौवना।

वि०स्त्री०—नयी, नवीन।

अल्पा०—नवेली।

नवीनूं—देखो 'नवीन' (रू.भे.)

उ०—बेटो एक तेलणीं, कूंखि जायो छो नवीनूं। पैलां गोदि लीनूं छो जकैं नैं दूरि कीनूं।—शि.वं.

नवीनौ-सं०पु० [सं० नवीन] (स्त्री० नवीनी) १. नवयुवक, नौजवान। २ देखो 'नवीन' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—दूर भग्यो भ्रम सो तम देखत, पूर जग्यो परकास नवीनो।

—ध.व.ग्रं.

नवीसंदौ—देखो 'नवसंदौ' (रू.भे.)

उ०—बीजो कलम री साथ वजीर नवीसंदा नै पवन ज्यूं जांणजै।

—नी.प्र.

नवीस-सं.पु० [फा०] लिखने वाला, लेखक।

नवीसी-सं०स्त्री० [फा] लिखने की क्रिया या भाव, लिखाई।

नवे—देखो 'नेठ' (रू.भे.)

नवे'क-वि० [सं० नव+एक] नौ के लगभग।

नवेक्षेत्र- [?]

उ०—गुरुउपदेस झालइं, धरमतत्व न हालइं। नवेक्षेत्रे वेचइ धन, जिसिउ वावनुं चंदन इस्या सीतळ मन।—व.स.

नवेखंड—देखो 'नवखंड' (रू.भे.)

नवेद—देखो 'निवेद' (रू.भे.)

उ०—राजा पूजै सिय सकति, चाढ़ै धूप नवेद।—ग.रू.वं.

नवेड़ौ—देखो 'निवेड़ौ' (रू.भे.)

उ०—राज मोनूं कूड़ो कळंक दे चोरी रो काढ़ियो थो सु हमैं साच कूड़ रो आसकरण नै पूछै नै नवेड़ो लीजै।—नैणसी

नवेनाथ-सं०पु०—श्री कृष्ण ?

उ०—विहांणे नवेनाथ जागौ वहेला, हुवा दोहिवा धेन गोवाळ हेला। जगाड़ै जसोदा जदूनाथ जागौ, महिमाट धूमै नवेनिद्धि मागौ।

—ना.द.

नवेनिद्धि, नवेनिधि—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—१ विहांणे नवेनाथ जागौ वहेला, हुवा दौडिवा वेन गोगाळ हेला। जगाड़ै जसोदा जदूनाथ जागौ, महीमाट घूमै नवेनिधि मागौ।
—ना.द.

उ०—२ सांम्हउ जिरण कळस श्रांणियउ सुंदर, वंदायउ कर भली विधि। जनम जनम वैकुंठ पांमिस्यइ, वळै वंदावइतां नवेनिधि।
—महादेव पारवती री वेलि

नवेरु, नवेरौ—वि० [सं० नवतर, प्रा० नवग्रर, अप० नवयर] नवीन, नया, नूतन। उ०—१ आखडीए रस कजळ करइं नवेरु मार, कांनि मोतीलग खींटली, कंठि नगोदर हार।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ गोरी अवे रमइं, करइ नवेरा भोग। अणहिलवाडी पुर पाटणि, वसइं ति वेधिया लोक।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—३ जरासंध विरताव वसावी, वसावी द्वारका नगरी नवेरी।
—स.कु.

नवेली—सं०स्त्री० [सं० नवीन] १ नवयौवना, तरुणी।

उ०—मोरा मिल विहार व्रजपत संदेसौ। गावै नवेली नवेली व्रज त्रिया।—रसीलैराज

२ नव वधू, दुल्हन।

वि०स्त्री०—नवीन, नूतन।

उ०—फूली वसंत रसराज नवेली।—रसीलैराज

रू०भे०—नुहेली।

नवेलौ—स०पु० [सं० नवीन] (स्त्री० नवेली) १ नौजवान, तरुण।

उ०—नव द्वारां रा रसिक नवेला, अलबत भग इधकाई। देख विचार द्वार दसवें दिस, बिलकुल राख बगाई।—ऊ.का.

रू०भे०—नुहालौ, नुहेलौ।

२ देखो 'नवीन' (अल्पा., रू भे.)

उ०—बालम मिळण नैं परदेस चलण री, करो नैं तयारी म्हांरी म्राल, घड़ीयक मुखड़ो दिखाय नवेलो, बिछर गयो जांणे देकर ताळी।
—रसीलैराज

नवै—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

नवैग्रह—देखो 'नवग्रह' (रू.भे.)

उ०—१ तळै पग छांह नवैग्रह तांम, पगां दिगपाळ करंत प्रणांम। बडा जोगींद्र वंछे पग वास, तुहाळा पग्ग न मेल्हूं तास।—ह.र.

उ०—२ प्रसन नवैग्रह सिव प्रसन, हरि आग्या सुर राय। आगम जनम कुमार रै, उच्छव प्रगट्या आय।—रा.रू.

नवैनिध, नवैनिधि—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—१ तळोसै पग नवैनिध तुम्ह, मोटा सिध साधक जांणै मम्म। महम्मा जाणै ब्रह्म महेस, पगां रिख लाग करै नित पेस।—ह.र.

उ०—२ वधै दुजां सुत वांणि, वधै कवि वांणि सुजस विध। वधै अस्ट सिध विमळ, नरिंद घरि वधै नवैनिध।—सू.प्र.

नवोड़ौ—देखो 'नवौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—जिकण मैं वी तैली श्रा सांझ, बितांणी काळी राता लाख। नवोड़ौ आयौ नीं परभात, भुलांणी रात रात में झांख।—सांझ

(स्त्री० नवोड़ी)

नवोढ़, नवोढ़ा—सं०स्त्री० [सं० नव+उढ़ा] १ भय और लज्जा के कारण नायक के पास नहीं जाना चाहने वाली वह नायिका जो साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत ज्ञात यौवना नायिका का एक भेद है।

उ०—लोमांणी नवोढ़ नेह नसा रा कचोळा लेती, मासै अंग अचोळा सचोळा लेती भाव। करां केतमक रैल चोळा लेती तूंजी कना, नक्र रै मचोळा सूं हचोळा लेती नाव।—र. हमीर

२ नव विवाहिता स्त्री, वधू। उ०—जाय नवोढ़ा सासरै, आंसू नांख उसास। मावड़िया जावै मुहम, इण विध हुवै उदास।—वां.दा.

३ नवयौवना, नवयुवती, जवान स्त्री। उ०—१ आधी रात न जक पड़ै, लूआं थारै कैर। उठ भागे तड़कै वडै, बडी नवोढ़ा वैर।—लू

उ०—२ कहो लुवां कित जावसी, पावस घर पड़ियांह। हियै नवोढ़ा नार रै, वालम वीछड़ियांह।—अज्ञात

नवोतरौ—सं०पु० [?] नौवां वर्ष।

नवौ—वि० [सं० नव+रा०प्र०औ] (स्त्री० नवी) १ जो थोड़े समय से बना, चला या निकला हो, पुराने का उलटा, हाल ही का, नूतन, नवीन, ताजा।—डि.को.

उ०—हेकौ काज न हुवै सकै, आवौ संत असंत। मावड़िया खिण खिण मता, नवा नवा निरमंत।—वां.दा.

मुहा०—नवौ करणौ—पुराने (खाते आदि) लिखे हुए को हटा कर नया लिखना, पुनः लेख-बद्ध करना।—महाजनी

कपड़ा आदि फाड़ देना, जला देना अथवा किसी वस्तु को तोड़ डालना। (प्रायः अशुभ बात मुंह से निकालने से बचने के लिये इसका मुहावरे का प्रयोग किया जाता है।)

२ पहले किसी के द्वारा काम में नहीं लिया हुआ, पहले किसी के द्वारा व्यवहार में नहीं लाया हुआ।

ज्यूं—आगली गिलास तौ फोड़ दी, आ नवी लाया हां।

३ जो हाल ही में सामने आया हो, जो पहले तो विद्यमान था किन्तु जिसका ज्ञान अभी हुआ हो।

ज्यूं—मांनसिंहजी रै समै री एक नवी किताब मिळी।

उ०—सांम्हां आया राठवड़, कोप अछाया वीर। संग मिळियौ 'जोधौ' 'सिवौ', कळहण नवौ कंठीर।—रा.रू.

४ जिसकी शुरुआत पुनः हुई हो, जो फिर से चला हो, जिसका आरम्भ पुनः किन्तु हाल ही में हुआ हो।

ज्यूं—रींछड़ै सूं बच'र नवौ जीवण पायौ। काले बीज री नवौ चांद ऊगसी। गरमी री छुट्टियां पछै नवै सिरै सूं पढ़ाई शुरु हुवै जावैला।

५ वह जो पहले वाले के स्थान पर सामने आया हो, पहले वाले से भिन्न। ज्यूं—हर साल जूना छोरा पढ़ाई पास कर'र जाय परा'र नवा आय जावै।

६ जो पुराने नाम के बदले में प्रयोग में आने लगा हो।

ज्यूं—नवी वाजार, नवी वस्ती ।
७ नौ का वर्ष या साल ।
८ देखो 'नव' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे—नउ, नयो, नूंवो, नूवो ।
अल्पा०—नवोड़ो ।
मह०—नव्व ।

नव्य—देखो 'नवो' (रू.भे.)
उ०—चिराय नव्य नव्य नम्सु भव्य भव्य में चहै, द्विजनम पाय हव्य कव्य हव्य वाट में दहै ।—ऊ.का.

नव्यांणु—देखो 'निनांणु' (रू.भे.)
उ०—चार मास झाभेरड़ा ए, रह्या 'विमल गिर' पास । नव्यांणु यात्रा करी ए, पोहोती मन तणी आस ।—ए.जै.का.सं.

नव्यासी—देखो 'निवियासी' (रू.भे.) (उ.र.)

नव्व—१ देखो 'नव' (रू.भे.)
२ देखो 'नवो' (मह., रू.भे.)
उ०—मुख रंग सुरंग चूनी समांन, जूनी वै दुल्लह नव्व जांन । मूनी अकास छिब आसमांन, खूनो गज चिरतो बिलंद खांन ।—वि.सं.

नव्वनाथ—देखो 'नवनाथ' (रू.भे.)
उ०—उरध अवर उद्धरण, वेद ब्रहमा गावाळण । दळ दांणव निरदळण, अव्व रांमण चो गाळण । वम्मीखण जणकरण, सवळ देतां संघारण, नव्वनाथ निमधियण त्रिविध लोकां ऊपावण ।—ज.खि.

नव्वनीद्धि—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)
उ०—देवी गोर रूपा अखां नवनिद्धि, देवी सक्कळा अक्कळा सव्व सिद्धि । देवी व्रज्ज विमोहणी वोम वांणी, देवी तोतला गूंगला कत्तियांणी ।—देवि.

नव्वाव-संपु० [अ०] १ किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिए बादशाह की ओर से नियुक्त प्रतिनिधि ।
उ०—हरनाथ मोखमो माहवीर, धुर धमळ जोगड़ो रण सधीर । अणथाह वुद्ध तप बळ असंक, नव्वाव हूंत मिळिया निसंक ।
—शि.सु.रू.
वि०वि०—मुगल सम्राटों ने अपने यवन प्रतिनिधियों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया था ।
२ छोटे मुसलमानी राजाओं द्वारा अपने नाम के आगे लगाई जाने वाली एक उपाधि ।
३ अंग्रेजों के समय में अंग्रेजों द्वारा भारतीय मुसलमान अमीरों को दी जाने वाली एक उपाधि ।
वि०—खूब खर्च करने वाला, अमीरी ढंग व शान-शौकत से रहने वाला । ज्यूं—आपरी कांई वात, आप तो नव्वाव साहब है सो छोटा-मोटा खरच री विचार करै नहीं ।
रू०भे०—नवाव, नव्वाव, नवाव, निबाब, निव्वाव, निवाब, निव्वाब, नीवाब ।

नव्वावजादो-संपु०यौ० [अ० नव्वाब+फा० जादः]
(स्त्री० नव्वावजादी) नवाव का वेटा, नवाव का पुत्र ।
वि०—जो बहुत शौकीन हो (व्यंग्य) ।
रू०भे०—नवावजादो, नव्वावजादो, नवाबजादो, निवाबजादो, निव्वावजादो, निवावजादो, निव्वावजादो ।

नव्वावी-संस्त्री० [अ० नव्वाव+रा०प्र०ई] १ नवाव का कार्य ।
क्रि०प्र०—करणी ।
२ नवाव का पद ।
क्रि०प्र०—मिळणी ।
३ अमीरों की सी फिजूल-खर्ची का नाम, अमीरों का सा अपव्यय ।
४ बहुत अधिक अमीरी ।
रू०भे०—नवावी, नव्वावी, निवावी, निव्वावी, निवाबी, निव्वाबी ।

नसंक—देखो 'निसंक' (रू.भे.)
उ०—भद्र जाती चुगै सीस मोती स्रोण पंका भळै, खात मोती मुराळी नसका चुगै खूद । अंका कोध लका रांम मळै वंका खेत एम, ग्रीध कंका असंका नसंका लिये गूद ।—बद्रीदास खिड़ियो

नस-संस्त्री० [सं० स्नस्] १ शरीर में पेशियों के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियों या अस्थि आदि कड़े स्थानों से जोड़ने वाला तंतुओं का लच्छा या बंध. २ शरीर के भीतर रक्तवाहिनी नली ।
उ०—नसां काड लीवी नसां. नसां कियो सब नास । नसां न्हांकिया नरक में, अड़ी नसां में आस ।—ऊ.का.
मुहा०—नस नस में-सारे शरीर में, सर्वांग में ।
३ पत्तों के बीच में दिखाई देने वाले पतले रेशे या तंतु ।
४ गरदन, ग्रीवा ।—डिं.को.
उ०—१ ढळती उमर वाळै एक सांकड़ी अंधारी गळी में बड़'र धीमै-धीमै अेक घर-रै किवाड़-री कड़ी खड़खड़ायो । डागळै ऊपर-सूं किणी नस का'ढ़ कैयो—ठेरो, आयो ।—वरसगांठ
उ०—२ हतरां नै हुकम हुवै छै । कुतां रा डोर छूटै छै । लाहोरी ताजी लूच वांण गिलजा पहाड़ी । जिकां री मूडहथ मोह-नाळ, हाथ भर नस, वड़ पांन जिसा कांन ।—रा.सा.सं.
५ देखो 'नासा' (रू.भे.)
६ देखो 'निस' (रू.भे.)
उ०—नस महल न पौढ़ं प्रसण नचीता, विमरे गिरे वसाव किया । वस तणो·········वीडरै, सीसोदा राव संकिया ।—मैपो बारहठ
रू०भे०—नह ।

नसचर—देखो 'निसचर' (रू.भे.)

नसचार, नसचारी—देखो 'निसचारी' (रू.भे.)—डिं.को.

नसणो, नसबो-क्रि०अ० [सं० नश्] नष्ट होना, नाश होना ।
उ०—१ मचियो झड़ मकरंद माधवी, नंद सुतन दुख सरब नसंत । वणियो रहै वाड़ियां वागां, वरसांणै सासतो वसंत ।—बां.दा.
उ०—२ सकर धनख सरस रस सदन सख, नरख बदन जग भय

नसत। तन मन बय सम सजन सहज श्रय, लछण भरथ अरिघण लसत।—र.ज.प्र.

नसणहार, हारौ (हारी), नसणियौ—वि०।

नसवाड़णौ, नसवाड़बौ, नसवाणौ, नसवाबौ, नसवावणौ, नसवाववौ, नसाड़णौ, नसाड़बौ, नसाणौ, नसावौ, नसावणौ, नसाववौ—प्रे.रू.।

नसिओड़ौ, नसियोड़ौ, नस्योड़ौ—भू०का०कृ०

नसीजणौ, नसीजबौ—भाव वा०

नसतरंग-सं०पु० [सं० स्नस्+तरग] पीतल का बना एक प्रकार का बाजा विशेष जिसका आकार शहनाई का सा होता है।

नसतर-सं०पु० [फ़ा० नश्तर] शल्य-चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का छोटा और तेज चाकू जिसके दोनों ओर धार होती है और आगे से नुकीला होता है।

उ०—गंज सीसा घण गळै, भरै सच्चळ भरारां। गंज पड़ै गोळियां, विखम गोळां विसतारां। नसतर धर नायकां, मिळै पायकां समेळा। मेवा जेसळ मिळै, ऊर रूपा सम चेळा।—सू.प्र.

रू०भे०—नस्तर, निसतर, निस्तर।

यौ०—नसतर-विद्या।

नसतार—देखो 'निस्तार' (रू.भे.)

नस-दरवी-सं०पु० [राज० नस=गर्दन+सं० दर्वी=सांप का फन] सांप, सर्प (अ.मा.)

नसर्यबिब—देखो 'निसाविब' (रू.भे.)

नसलंब, नसलंबड़-सं०पु० [रा. नस+सं० लंब] ऊंट, उष्ट्र (डि.को.)

अल्पा० नसलांबड़।

नसल-सं०स्त्री० [अ० नस्ल] १ वंश, कुल।

उ०—ब्रह्मा जो न करत विदर, जग मांहे जगजीत। असल नसल री ऊघड़त, रूड़ापो किण रीत।—वां.दा.

२ संतान, औलाद। उ० —मोटा घरां अजादा मिटगी, बंगळां रै सो बारी रे। गोला जुगळी मांय गई जद, नसल बिगड़गी म्हारी रे। —ऊ.का.

वि०—निर्लज्ज, बेशर्म, नीच।

उ०—नगारा रोड़ चढ़ जाय ऊभो नसल, फतै री वार सरदार पड़िया फसळ। आद हूं न आया पूठ देतां असल, माजनो गमायो भलो आठी मसल।—महादांन महड़ू

रू०भे०—निसल।

नसलांबड़—देखो 'नसलंब' (अल्पा., रू.भे.)

नसवार-सं०स्त्री० [?] सूंघने की तवाकू के पीसे हुए पत्ते, सूंघनी।

नसाखोर-सं०पु०यौ० [अ०+फ़ा] नशे का सेवन करने वाला, नशेवाज।

नसाड़णौ, नसाड़बौ—देखो 'नसाणौ, नसावौ' (रू.भे.)

उ०—इसइं कहियै ऊपरि ताहरा नाई सहि नसाड़िया।—द.वि.

नसाड़णहार, हारौ (हारी), नसाड़णियौ—वि०।

नसाड़िओड़ौ, नसाड़ियोड़ौ नसाड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

नसाड़ीजणौ, नसाड़ीजवौ—कर्म वा०।

नसणौ, नसवौ—अक०रू०।

नसाड़ियोड़ौ—देखो 'नसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नसाड़ियोड़ी)

नसाचर—१ देखो 'निसाचर' (रू.भे.) (डि.को.)

२ देखो 'नासाचर' (रू.भे.)

उ०—चाचर मांगणहार नसाचर, चतुर प्रेत ग्रवै निरवांण। सकति समाळि सिध्दि ग्रीधाणि, 'रतनै' मोकळिया आरांण।—दूदौ

नसाणौ, नसावौ-क्रि०अ० [सं० नश्] १ नाश को प्राप्त होना, नष्ट होना। उ०—दादू चंदन बावना, बसै बटाऊ आइ। सुखदाई सीतळ कियै, तीन्यौं ताप नसाइ।—दादूवांणी

२ विगड़ जाना, खराव हो जाना।

क्रि०स० ['नसणौ' व 'नासणौ' क्रियाओं का प्रे०रू०] ३ नष्ट कराना, नाश कराना. ४ भगाना।

नसाणहार, हारौ (हारी), नसाणियौ—वि०।

नसायोड़ौ—भू०का०कृ०।

नसाईजणौ, नसाईजवौ—कर्म वा०।

नसणौ, नसवौ—अक०रू०।

नसाड़णौ, नसाड़वौ, नसावणौ, नसाववौ—रू०भे०।

नसाप(फ)—देखो 'इंसाफ' (रू.भे.)

उ०—सवळा पकड़ै जकड़ै सांकळां, निवळा कोजै अदल नसाप। —जवांनजी आढ़ौ

नसापत—देखो 'निसापत' (रू.भे.)

उ०—साखी रै भांण नसापत सारै, कीध महाजुध क्रीत सकांम। साच तको कज साधां सारत, राच महीप सु रांमण रांम।—रा.ज.प्र.

नसावाज—देखो 'नसेवाज' (रू.भे.)

नसायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ नाश को प्राप्त हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ विगड़ा हुआ, खराब हुवा हुआ. ३ नाश कराया हुआ, नष्ट कराया हुआ. ४ भगाया हुआ।

(स्त्री० नसायोड़ी)

नसावणौ, नसाववौ—देखो 'नसाणौ, नसावौ' (रू.भे.)

नसावणहार, हारौ (हारी), नसावणियौ—वि०।

नसाविओड़ौ, नसावियोड़ौ, नसाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नसावीजणौ, नसावीजवौ—कर्म वा०।

नसणौ, नसवौ—अक०रू०।

नसावियोड़ौ—देखो 'नसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नसावियोड़ी)

नसि—देखो 'निसा' (रू.भे.)

उ०—भरतारिइ सूं भद्रवइ मासि, हींडोळाटइ करइ विलास। नसि अंधारी विजळी खवइं, गमे गमे दादर डांलवइं। —प्राचीन फागु-संग्रह

नसियां—सं०स्त्री० [सं० निषद्या, प्रा० णिसिही] १ जनाकीर्ण स्थानों से दूर एकान्त में बना देवस्थान (जैन)।
२ समाधि-स्थान (जैन)।
३ तीर्थ-स्थान।
रू०भे०—नस्यां।

नसियोड़ो—भू०का०कृ०—नष्ट हुवा हुआ, नाश हुवा हुआ।
(स्त्री० नसियोड़ी)

नसीजणो, नसीजबो—क्रि०अ०भाव वा०—कठोर अथवा कंकरीली भूमि पर गाड़ी या हल चलाने के कारण जुए का हिल हिल कर निरंतर आघात करने से बैल की गरदन का सूज जाना।

नसीत—देखो 'नसीहत' (रू.भे.)
उ०—यण भांत नसीत दे'र कही, के पावागढ़ चोड़ै छै, चोड़ै हुवै तिकण नै जबरदस्त तोड़ै छै।—केहर-प्रकाश

नसीन—वि० [फा० नशीन] १ बैठा हुआ. २ बैठने वाला।
वि०वि०—इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दों के अंत में ही होता है।
ज्यूं०—गादी नसीन, तखत नसीन।

नसीनी—सं०पु० [फा० नशीनी] बैठने की क्रिया या भाव।
वि०वि०—इस शब्द का प्रयोग भी यौगिक शब्दों के अंत में ही होता है। ज्यूं—गादी नसीनी, तखत नसीनी।

नसीब—सं०पु० [अ०] भाग्य, प्रारब्ध (डि.को.)
उ०—तद वांणियै री जीव देख दया आई सो पताका सूं वांक खोल पांणी पायो, चोरी सावचेत हुवो।—साह रामदास री वारता
मुहा०—नसीब-जळियो, हत-भाग्य।

नसीयत—देखो 'नसीहत' (रू.भे.)

नसीलो—वि०पु० [अ० नश्श:+ईला प्र०] (स्त्री० नसीली) १ नशा उत्पन्न करने वाला, मादक. २ जिस पर नशे का प्रभाव हो।
उ०—मोट्यार अर लुगायां सगळाई मस्त व्हियोड़ा जांणै हवा ईज नसीली व्हैगी।—रातवासो

नसीहत—सं०स्त्री० [अ०] उपदेश, शिक्षा, सीख, सुसम्मति।
रू०भे०—नसीत, नसीयत।

नसे-सालार—सं०पु० [फा०] पारसी मजहब को मानने वाले वे व्यक्ति जो मुर्दा उठाने आदि का कर्म करते हैं। (मा.म.)

नसै-बाज—वि० [अ० नश्श:+फा० बाज़] वह जो निरंतर किसी मादक पदार्थ का सेवन करता हो।
रू०भे०—नसा-बाज।

नसैणी—देखो 'नीसरणी' (रू.भे.)
उ०—दगै तोफां वहै गोळा रोहळा मोरछा दोळा, जो लार सकै सूता सेर नै जगाय। भुरजाळा वांकड़ो वीटियो दूजां गढां भोळै, लोहां जाळ घसै कहो नसैणी लगाय।—वां.दा.

नसैल—वि० [अ० नश्श:+रा०प्र०एल] नशाखोर, नशेबाज।

नसो—सं०पु० [अ० नश्श:] १ मादक पदार्थ के सेवन से उत्पन्न होने वाली अवस्था।
उ०—गई चढ़ि चीलहणि गीधणि गैण, नसो करि बैल चढयो अण नैण।—मे.म.
मुहा०—१ नसै गोसै होणो—गुप्त मंत्रणा करना, गुप्त वार्तालाप करना. २ नसो उतरणो—नशे का प्रभाव हटना, मादक पदार्थ के प्रभाव का नष्ट होना. ३ नसो किरकिरो होणो—किसी विघ्न-कारक बात के होने से नशे का आनंद बीच में ही मिट जाना, नशा करते समय विघ्न पड़ना. ४ नसो चढ़णो—नशे का होना, मादक पदार्थ के सेवन करने का प्रभाव होना. ५ नसो छाणो—भली प्रकार मादक पदार्थ का प्रभाव होना, मस्ती चढ़ना, उन्मादकता आना. ६ नसो जमणो—अच्छी तरह से नशा होना. ७ नसो टूटणो—नशे का प्रभाव हट जाना, नशा उतरना।
२ वह पदार्थ जिसका सेवन करने से मादकता आती हो, मादक द्रव्य।
उ०—नसां काढ़ लीवी नसां, नसां कियो सब नास। नसां न्हांकिया नरक में, अही नसां में आस।—ऊ.का.

नस्चित—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)
उ०—नस्चित पतिव्रत लोक नेम। प्रत्येक करहि परलोक प्रेम।
—ऊ.का.

नस्ट—सं०पु० [सं० नष्ट] पिंगल शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा वर्ण मात्रा प्रस्तार के भेद का रूप जाना जाता है।
वि०—१ जो बरबाद हो गया हो, जिसका नाश हो गया हो. २ अधम, नीच, दुष्ट. ३ जो दिखाई न दे, जो गायब हो गया हो, जो अदृश्य हो।
रू०भे०—नट्ट, निस्ट।

नस्टचंद्र—वह चंद्र जो भादों मास के दोनों पक्षों की चतुर्थी को दिखाई देता हो। (अशुभ)
वि०वि०—कुछ लोग भादों मास के धवल पक्ष की चतुर्थी के चंद्रमा को ही नष्ट चन्द्र मानते हैं।

नस्टजातक—स०पु० [सं० नष्टजातक] फलित ज्योतिष की एक प्रकार की क्रिया जिसके द्वारा ऐसे मनुष्य की जन्म-कुण्डली बनाई जाती है जिसके जन्म, समय, तिथि और नक्षत्रादि का कोई पता न हो।

नस्टदेव—सं०पु० [सं० नष्टदेव] दुष्ट देव।

नस्ट-बुद्धि—वि० [सं० नष्ट-बुद्धि] मूर्ख।

नस्ट-भ्रस्ट—वि० [सं० नष्ट-भ्रष्ट] जो बिलकुल नष्ट हो गया हो।
सं०पु०—नाश, ध्वंश ?

नस्टात्मा—वि० [सं० नष्टात्मा] दुष्ट, नीच, खल।

नस्तर—देखो 'नसतर' (रू.भे.)

नस्तरणो, नस्तरबो—क्रि०अ० [सं० निस्तरणम्] १ समाप्त होना।
उ०—उन्हाळु आविउ सोहामणउ, सखी भांनव नइ कोडामणउ। पाडल परिमल भलु विस्तरइ, रात्रि पाखइ पंथ न नस्तरई।
—नळदवदंती
२ देखो 'निस्तरणो, निस्तरबो' (रू.भे.)

निसतरणौ, निसतरबौ—रू०भे० ।
नस्तरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ समाप्त हुवा हुआ ।
२ देखो 'निस्तरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नस्तरियोड़ी)
नस्तार—देखो 'निस्तार' (रू.भे.)
नस्यां—देखो 'नसियां' (रू.भे.)
नस्वर-वि० [सं० नश्वर] नाश होने वाला, मिटने वाला ।
नस्वरता-सं०स्त्री० [सं० नश्वरता] नाश होने का भाव ।
नहं—देखो 'नहीं' (रू.भे.)
उ०—तीन महिनां रहिया ताकै, लड़ण बीड़ौ किणी नहं लियौ ।
—आणंदसिंघ सोळंकी रौ गीत
नहंकार-अव्य०—देखो 'नंहकार' (रू.भे.)
नहंग—१ देखो 'निहंग' (रू.भे.)
उ०—१ पड़ंते भार पाहड़ ज वडा प्रचंड, ओडवै भुजा डंड नहंग आडा ।—गोपाळदास राठौड़ रौ गीत
उ०—२ ओडै बीर घंटा मातंगां ता जांन आळी, रोड़ै बाज विखमी बाजांन वाळौ रीठ.। ओक जंगां ओराक लै भुडंडां आजांन आळी, नहंगां राजांन वाळौ हाकलै नत्रीठ ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
यौ०—नहंगराज ।
२ देखो 'नेंग' (रू.भे.)
नहंगराज, नहंगराजा—देखो 'निहंगराज' (रू.भे.)
उ०—राहां सकाजां अलंगां संग दौड़ में वहंगराजा । छाव तेज झौड़ में नहंगराजा तास ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
नहंचै—देखो 'निश्चय' (रू.भे.)
उ०—१ देखे नहीं कदास, नहचै कर कुनको नको । रोळायां इकळास, रोळ मचावै राजिया ।—किरपाराम खिड़ियौ
नहंचौ—देखो 'नहचौ' (रू.भे.)
नह—१ देखो 'नख' (रू.भे.) (जैसलमेर)
उ०—१ तसु कडि कंचण घघरिय, झणणणणणण वाजंते चरणि हि नेउर रणझुणइं नहि आलत्तइ उजंति ।—प्राचीन फागु-संग्रह
उ०—२ करै विकारां कांठला, कंठ नूपत कुंवराह । वध नहियौ ज्यां सिर वणी, कीरत जेण कराह ।—बां.दा.
२ देखो 'नभ' (रू.भे.) (जैन)
३ देखो 'नहीं' (रू.भे.)
उ०—पड़दे घालो पातरां, ठावी ठावी ठोड । परणीं नूं नह दी पेटियौ, देखो वुध री दौड़ ।—बां.दा.
४ देखो 'नस' (रू.भे.) (जैसलमेर)
नह-कुण—देखो 'निहकुण' (रू.भे., ह.नां.)
नह-कोड-सं०पु०—योद्धा, वीर (डिं.को.)
नहच, नहच्च—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)
उ०—नहच वभीख कह्यौ नारायण । विन रवि ऊगां जाय वह ।
—र.रू.

नहचळ-वि०—देखो 'निस्चळ' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—१ नहचळ नांम खुदाय का, कुछ और न बाकी ।
—केसोदास गाडण
उ०—२ नहचळ अत रहण कना ना रे ना, आदम काळ नदी आ रे आ । खाट म दाट क्यूं खा रे खा, गिर जळ जिम दीहाड़ा गा रे गा ।
—ओपौ आढ़ौ
नहचे, नहचेण, नहचै—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)
उ०—१ नीचौ जावै नीर ज्यूं जग नव नहचे जांण, सकळ पदारथ सार री हूं खिण खिण में हांण ।—बां.दा.
उ०—२ छोटा वड़ा सांणोर रौ नेम नहीं नहचेण । निमंधै त्रिण दूहा निपट, तवै पंखाळौ तेण ।—र.ज.प्र.
उ०—३ प्रेत हुवै जद प्रसन, मोहर रुपिया दे जावै । तारां घटतां तेज जोत जद खंची जावै । रुपिया कंचन जात, हुवै हुडी रा गरथां, नहचै नांणौ नहीं हुवै आरण रा अरथां । परभात भाण ऊगां पछै, किणी न आवै कांम रै । मोकमा कमंध मोटा मिनख, वचन भूत रा दांमरै ।—अरजुणजी बारहठ
उ०—४ जिण तिण रौ मुख जोय, नहचै दुख कहणौ नहीं । काढ़ न दे वित कोय, रोरायां सूं राजिया ।—किरपारांम
नहचौ-सं०पु० [सं० निश्चय] १ धीरता, धैर्य ।
उ०—१ रात दिवस भज रांम नरेसुर, पात राख नहचौ मन पूरौ । ध्रू-धारण कारण लख धूरौ, उधारण रौ किसो अणू रौ ।—र.ज.प्र.
२ विश्वास, यकीन ।
उ०—२ वाराधिय सेतां वंधण रौ, कुळ राखस जूथ निकंदण रौ । दिल तूं 'किसना' जग-वंदण रौ, नहचौ रख कोसळ-नंदण रौ ।
—र.ज.प्र.
रू०भे०—नहच्चौ, नहच्यौ, नैंचौ, नैंहचौ ।
नहच्चौ—देखो 'नहचौ' (रू.भे.)
उ०—धर रहसी रहसी धरम, खप जासी खुरसांण । 'अमर' विसंभर ऊपरा, राख नहच्चौ रांण ।—अब्दुल रहीम खानखाना
नहच्यंत-वि० [सं० निश्चित] जिसको किसी प्रकार की चिंता या फिकर न हो, जो चिंता से मुक्त हो गया हो, वेफिक्र ।
उ०—जीवण सुख नहीं जिकां, नहीं ज्यां मुवां मुकत निज । नहीं जिकै नहच्यंत, कदे ज्यां नहीं सरै कज ।—र.ज.प्र.
सं०स्त्री०—निश्चित होने का भाव, वेफिक्री ।
नहच्यौ—देखो 'नहचौ' (रू.भे.)
उ०—निज संतां तारै घणनांमी, नहच्यौ ज्यां नैड़ौ घणनांमी ।
—र.ज.प्र.
नहणौ, नहबौ—क्रि०स०—१ धारण करना, उठाना, उठाये रखना, थामना । उ०—१ कपीलां हणूं देवां दळां सिव सगत, नाग दळ सेस सिर भार नहियौ । गरब गाळण तणी ठौड़ ग्रब गाळियौ, कुळी छट-तीस धिन पदम कहियौ ।—पदमसिंह राठौड़ रौ गीत

२ बनाना, स्थापना करना।

उ०—ग्रांणि सुर असुर, नाग नेत्रे नहि। राखियौ जई मंदर रई। महण मथे मूं लीध महमहण। तुम्हां किणि सीखव्या तई।—वेलि

नहफूलण-सं०स्त्री०—पुष्प की कलि (हि.को.)

नहर—१ देखो 'नै'र' (रू.भे.)

उ०—बागायत प्रथमी बिचै, निज अलवर सर नांम। नीर हवद छळिया नहर, तर सर सबज तमांम।—सिवबक्स पाल्हावत

२ देखो 'नखर' (रू.भे.)

उ०—ककट कट दंत छट छट प्रछट केसरां, चखां भळपट कट रोम चरणाट। आवियो कहर लपटां रसण आंणतो। धाय नहरां करण हिरणाकुस घाट।—प्रह्लादास दादूपंथी

नहरणी—देखो 'नखहरणी' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—वइरागर पुणंग पइरवां ऊपर, लहइ जिके ताइ सवा लख। कूंदण रइ दळ महा काढ़िया, नहरणियां कोरण नइ नख।
—महादेव पारबती री वेलि

नहराद—देखो 'नखर' (रू.भे.)

उ०—पावक सिव चख प्रबळ, सेस फूंकां घिखि सब्बळ। मछिघरियौ घ्रत समंद नीर काढ़े बड़वानळ। नार सिंघ नीछटै अरण नहराद इतां उग्र, काळ भाळ कळकळे रोस विकराळ जड़ा रुद्र।—सू.प्र.

नहराळ, नहराळो—सं०पु०—१ वह घोड़ा जिसकी पीठ का रंग सफेद हो और अवशिष्ट शरीर का रंग भिन्न हो। (शा.हो.)

२ देखो 'नखराळ, नखराळो' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—१ खांगी बंध खळ गयंद खुराकी, नाकी नह मेली नहराळ। सीह लड़ाकी लड़ण सलूंभो, डाकी ठह ऊभो डाढ़ाळ।
—महादांन महड़ू

उ०—२ हाकां वीर कळह पुन हड़हड़, रिण चांमंड घण घेर रची। पळचर नहराळां पंजाळां, माचि भड़ाफड़ि भाट मची।—दूदो

नहरी—देखो 'नै'री' (रू.भे.)

नहलाड़णो, नहलाड़बो—देखो 'न्हाड़णो, न्हाड़बो' (रू.भे.)

नहलाड़ियोड़ो—देखो 'न्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नहलाड़ियोड़ी)

नहलाणो, नहलाबो—देखो 'न्हाड़णो, न्हाड़बो' (रू.भे.)

नहलायोड़ो—देखो 'न्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नहलायोड़ी)

नहलावणो, नहलावबो—देखो 'न्हाड़णो, न्हाड़बो' (रू.भे.)

नहलावियोड़ो—देखो 'न्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नहलावियोड़ी)

नहसणो, नहसबो—देखो 'निहसणो, निहसबो' (रू.भे.)

उ०—१ नहसै राग सिंधू निसांण, वळोवळ छायौ रंभ विमांण।
—गो.रू.

उ०—२ 'पेम' 'मोहकम' 'भजन' 'लाल' मोटै परब, 'नवल' 'ऊदो' 'जगो' 'जैत' हरनाथ। 'जैतसी' बहादर 'केसोरो' 'खीम' भड़, सांम छळ रहसिया नहसिया साथ।—सतीदांन बारहठ

नहसणहार, हारो (हारी), नहसणियो—वि०।

नहसिओड़ो, नहसियोड़ो, नहस्योड़ो—भू०का०कृ०।

नहसीजणो, नहसीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

नहसियोड़ो—देखो 'निहसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नहसियोड़ी)

नहाणो, नहाबो—देखो 'न्हाणो, न्हाबो' (रू.भे.)

उ०—ब्रह्म-हत्यादिक पाप गंगा नहायां छूट जाय पर मित्र सूं कियो विस्वासघात नहीं छूटै।—सिंघासण-बत्तीसी

नहाणहार, हारो (हारी), नहाणियो—वि०।

नहायोड़ो—भू०का०कृ०।

नहाईजणो, नहाईजबो—भाव वा०।

नहायोड़ो—देखो 'न्हायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नहायोड़ी)

नहाळ-सं०पु० [सं० नख+आलुच्] सिंह, शेर (ना.डि.को.)

नहाळणो, नहाळबो-क्रि०स० [देशज] निहारना, देखना, लखना।

उ०—सुभ नजर नहाळै लखां पाळै सुकव, जस हूकां ऊबारै भाग जाडै। दसकतां वचावै सरी दीवांण रा, चढ़ावै मसत कांपै स चाडै।
—जवांनजी आढ़ो

नहाळणहार, हारो (हारी), नहाळणियो—वि०।

नहाळिओड़ो, नहाळियोड़ो, नहाळ्योड़ो—भू०का०कृ०।

नहाळीजणो, नहाळीजबो—कर्म वा०।

नहाळियोड़ो-भू०का०कृ०—निहारा हुआ, देखा हुआ।
(स्त्री० नहाळियोड़ी)

नहावण—देखो 'न्हावण' (रू.भे.)

उ०—म्हैं जाऊं जळ जमना रै पांणी, थे आइजो उठै नहावण नै। नहावण करजो धोवण करजो, वंसी री टेर सुणावण नै। थे म्हारै घर आवो सांवरा, माखण मिसरी खावण नै।—मीरां

नहावणो, नहांवबो—देखो 'न्हाणो, न्हाबो' (रू.भे.)

उ०—एकली छांह नहावै नीर, लहरां घुपै लहरियो रंग। सांझ री लूटण रूप अथाग, पवनियो तिरसो वण तरंग।—सांझ

नहिं, नहि, नहीं, नही-अव्य० [सं० नहि] निषेध या अस्वीकृति-सूचक शब्द। उ०—१ नेह निवांणै नांखिया, चुगली नहिं चिकणाय। लाखां गुण कर देखलो, वह घां नंह बंधाय।—बां.दा.

उ०—२ मिळियो सोनो मंगणां, अवियो ऋन सो वंक। निसचर कुळ पायो नहीं, तै नहि दूजी लंक।—बां.दा.

उ०—३ सहूइ भोगववूं सही, आपापणूं कीधूं, पर-ऊत को पांमि नहि ये लीधूं दीधूं।—नळाख्यांन

उ०—४ नैसध नांमि देस मनोहर, वीरसेन वसुधेस। प्रांणीमात्र नहीं को दुखियू, यिहां धरमिस्ट नरेस।—नळाख्यांन

उ०—५ जस अपजस जाचक पढ़े, मांगे चाळ विलूंब । नही चिढ़े उत्तर न दै, धांम धूंम वो सूंब ।—बां.दा.

उ०—६ चिहुं गति तणउ तीहं नहीं कोई गंमु, जिहि चित्ति एक वसइ जिण धंमु ।—चिहुंगति चउपई

रू०भे०—नहं, नंह, नह, नांय, नांह, नांहि, नांही, नाय, नि, निहिं, निही, नुं, नु, नूं, नू, नौ, न्ही ।

नहुं, नहु—अव्य० [सं० खलु, प्रा० खलु-क्खु,-खु-हु] निषेध या अस्वीकृति-सूचक शब्द ।

उ०—१ तां फुणिंदु फणमंडप मांडइ, जां पडइ गुरुड नइं नहुं फाडइ । तां फिरिउ दळ सहिउ कुरुवीर, जां न हूं चडउं संगरि धीर ।
—विराटपर्व

उ०—२ अस्ववार फिरतां नहु सूझइं, ए रणांगणि किसी परि झूझइं ।—विराट पर्व

उ०—३ गह छंडइ गहिलउ हुअउ, पूछइ वळि पूछंत । मारू-तणइ संदेसड़इ, ढोलउ नहु धापंत ।—ढो.मा.

सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

नहुतरिउ—वि० [सं० निमंत्रित] निमंत्रित (उ.र.)

नहुस—सं०पु० [सं० नहुष] १ इक्ष्वाकुवंशी अंबरीष का पुत्र और ययाति का पिता एक राजा जो एक बार इन्द्र का सिंहासन पाकर भी अगस्त मुनि के शाप से सर्प बना. २. एक नाग का नाम.

३. मनुष्य, आदमी ।

वि०—१ मूर्ख, जड़. २. नीच ।

रू०भे०—नघुस ।

नां—अव्य० [सं० न] नहीं । उ०—१ नां मूं बांमण वांणिये री, नां बिणजारे री धीय ।—लो.गी.

उ०—२ कै तो मांमला का दांम वेगा लेर आणा । नां तो खंडपुर नैं छोडि दूरा भागि जाणा ।—शि.वं.

उ०—३ नां नारी नां नाह, अदविचला दीसै अपत । कारज सरै न काह, रांडोलां सूं राजिया ।—किरपारांम

प्रत्यय—षष्ठि अथवा सम्बन्धकारक का चिन्ह, का ।

उ०—१ बीका टीका जोधहर घर जंगळ नां ।—मालो सांदू

२. कर्म और संप्रदान का विभक्ति प्रत्यय, को ।

उ०—१ सुभराज करै त नां सुर सांमिणी, ताहरै नांम सांम्हेई तरां । जयो निमो तूं नां जग-जांमिणि, कतियांणी आदेस करां ।—पी.ग्रं.

उ०—२ तूं एकल मल आतमा, तूं सवळो ससमाथ । तीन भुवन सेवै त नां, नाग नरां सुर नाथ ।—पी ग्रं.

नांई—वि० [देशज] समान, तुल्य, जैसा । उ०—एक चलै एक आवही, संसार सराई । उतपत परळै काळ, नट-बाजी नांई ।
—केसोदास गाडण

रू०भे०—नांय, नाय, न्यांई, न्याय ।

२. देखो 'नाई' (रू.भे.)

उ०—कूमठ रो हळ चऊ सुरंगी, नांई बीजणी सोवै । काढ़ ऊमरा धरती धारी, आभै नै कांइ जोवै ।—चेतमांनखा

नांउ, नांऊ—देखो 'नांम' (रू.भे.)

उ०—दादू द्वै पख दूर कर, निरपख निरमळ नांउ । आपा मेटै हरि भजै, ताकी मैं बळि जांउ ।—दादूबांणी

नांक—देखो 'नांख' (रू.भे.)

नांकणौ, नांकबौ—देखो 'नांखणौ, नांखबौ' (रू.भे.)

उ०—गाज गुण वांण नीसांण सर गड़गड़ै, चाल वेहुवै कटक आविवा चापड़ै । धूणियां सेल झोकै कियौ घूघड़ै, देवड़ां ऊपरै नांकिया देवड़ै ।—अज्ञात

नांकर—देखो 'नौकर' (रू.भे.)

(स्त्री० नांकरांणी)

नांकरांणी—देखो 'नौकरांणी' (रू.भे.)

नांकियोड़ौ—देखो 'नांखियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नांकियोड़ी)

नांख—सं०पु० [देशज] वह भूमि जिसमें उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए फसल नहीं बोई गई हो ।

रू०भे०—नांक ।

नांखणौ, नांखबौ—क्रि० स० [सं० निक्षिपणम्, निक्षेपणं] १ एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ पर ऊपर से गिराना, गेरना, फेंकना, डालना ।

उ०—१ बांम बांम वकता वहै, दांम दांम चित देत । गांम गांम नाखै गिडक, रांम नांम में रेत ।—ऊ.का.

उ०—२ दे थोड़ी ऊमर रही, काय न छांडै कूड़ । हिय आंधा तूं नांख हव, धंधा ऊपर धूड़ ।—बां.दा.

२ जोशपूर्वक आगे की ओर बढ़ाना, बलपूर्वक आगे की ओर बढ़ाना, झोकना । उ०—१ अस नांखै गाहण-असह, रिण माथै रजपूत । आवध नांखै आचसूं, दासी केरा पूत ।—बां.दा.

उ०—२ आंसूं नांखै आंख सूं, कर हूंतां करमाळ । भागल नंह नांखै भिड़ज, असहां सिर आताळ ।—बां.दा.

३ किसी पकड़ी हुई वस्तु को इस प्रकार छोड़ना कि वह गिर पड़े, गिराना, गेरना, छोड़ना, डालना । उ०—परदेसां प्री आवियहु, मोती आंण्या जेण । घण कर कंवळां झालिया, हसि करि नांख्या केण ।—ढो.मा.

४ परित्याग करना, छोड़ना, डालना ।

उ०—१ अस नांखै गाहण असह, रिण माथै रजपूत । आवत नांखै आचसूं, दासी केरा-पूत ।—बां.दा.

उ०—२ आवध कसता उमंग सूं, विदर लगावै वार । नहीं लगावै नांखता, जेज वडा जूंझार ।—बां.दा.

मुहा०—नीसासा नांखणा—खिन्न चित्त होना, उदास होना, दुख प्रकट करना ।

५ जल या अन्य द्रव पदार्थ को आधार से नीचे गिराना, टपकाना, गिरा कर बहाना ।

उ०—१ जाय नवोढ़ा सासरै, आंसू नांख उसास । मावड़िया जावै मूहम, इण विध हुवै उदास ।—बां.दा.

उ०—२ आंसू नांखे आंख सूं, कर हूता किरमाळ । मागळ नह नाखै मिड़ज । असहां सिर आताळ ।—बां.दा.

६ ऊपर की ओर अथवा सम्मुख फेंकना, उछालना ।

उ०—१ विधि कीधो वळे वांदतइ तोरण, मूंग नांखिया जोई मुख । सुख संपदा हुई सिगळां ही, दळद गयउ नइ गयउ दुख ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ चकवन किय चोळ बाजियै चौरंगि, राउ राठौड़ विसम गति रूप । ईसर ! नमो तुहाळी आसति, गैण दिसा नांखै गज-रूप ।

—ईसरदास मेड़तिया री गीत

७ किसी पदार्थ को दूसरे पदार्थ में रखने, ठहराने, मिलाने के लिए उसमें गिराना, किसी वस्तु को दूसरी वस्तु में इस प्रकार छोड़ना जिससे वह उसमें ठहर या मिल जाय । उ०—नेह निवांणं नांखियां, चुगली नहीं चिकणाय । लाखां गुण कर देखलो, वह घा नह वंधाय ।—बां.दा.

८. किसी वस्तु को आधार या अवरोध आदि हटा कर उसे अपने स्थान से नीचे डालना, पतन करना, गिराना । उ०—१ सैयद हाथी ऊपर चढ़ियो ललकारा करै छै, इतरै में व्यासजी कह्यो—हवेली नूं तोपखांना सूं खिडाय देयसै, पछै लोग जखमी होयसै तो वेतरह कांम आस्यां, तिणसूं किवाड़ नांख नीसरो ।

—अमरसिंह री वात

उ०—२ गढ़ घातण री रांग रोपाई । भीत हूंण लागी, सु उठै खेड़ा देवत सु भींत दीहां री करै, तिसड़ी ही रात री पाड़ नांखै ।

—नैणसी

९. झोंके के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना, इस प्रकार गति देना कि वह दूर जा गिरे, फेंकना । उ०—राठौड़ वीरमदे वैरसलोत वैरसल गांगावत री ए दोय कांम आया । बीजा नीसरिया । राव नूं दाग महाकाळ दीयो । उग्रसेन नूं घींस नै नांख्यो ।

—राव चंद्रसेण री वात

१० लटकाना । उ०—ऊफणी आडै छाज कठै'क ? उरसां सुगन-चिड़ी री पांख । गेरुआं तीरां पांण पयांण, हुंसला पोढ़ांणा नस नांख ।—सांझ

मुहा०—नस नांखणी—निद्रावस्था में होना, झपकी आना, अचेतन होना, वेहोश होना ।

११ पहुँचाना, भेजना । उ०—घणी ताहरै नांम नां जिकै घांखे, नरां ताह नां झालि सग-लोक नांखै ।—पी.ग्रं.

१२ मारना, संहार करना । उ०—निसाचरा प्रसासुरा अचा सुरां नांखि, बग्रासुरा बांणासुरा दीया बाहि ।—पी.ग्रं.

१३. पटकना, गिराना । उ०—हणमंत किया हमल, सहल दांणव संघारे । ऊंधो नांखि असोक, पछै हरि चलणि पधारे ।—पी.ग्रं.

नांखणहार, हारौ (हारी), नांखणियौ—वि० ।

नखवाड़णौ, नखवाड़बौ, नखवाणौ, नखवाबौ, नखवावणौ, नखवावबौ, नखाड़णौ, नखाड़बौ, नखाणौ, नखाबौ, नखावणौ, नखावबौ ।—प्रे.रू.

नांखिओड़ो, नांखियोड़ो, नांख्योड़ो—भू०का०कृ०

नांखीजणौ, नांखीजबौ—कर्म वा० ।

नांकणौ, नांकबौ, नींखणौ, नींखबौ, न्हंखणौ, न्हंखबौ, न्हांकणौ, न्हांकबौ, न्हांखणौ, न्हांखबौ—रू०भे० ।

नांखियोड़ो-भू०का०कृ०—१ ऊपर से गिराया हुआ, फेंका हुआ, डाला हुआ. २ जोशपूर्वक आगे की ओर बढ़ाया हुआ, बलपूर्वक आगे की ओर बढ़ाया हुआ, झोंका हुआ. ३ किसी पकड़ी हुई वस्तु को छोड़ा हुआ. ४ परित्याग किया हुआ, त्यक्त. ५ (जल या अन्य द्रव्य पदार्थ को) आधार से नीचे गिराया हुआ, गिरा कर बहाया हुआ. ६ ऊपर की ओर अथवा सम्मुख फेंका हुआ, उछाला हुआ. ७ एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ को मिलाने के लिये गिराया हुआ । ८. अवरोध से हटाया हुआ, आधार से गिराया हुआ. ९. झटके के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डाला हुआ, गति देकर दूर किया हुआ. १०. लटकाया हुआ. ११. भेजा हुआ, पहुँचाया हुआ. १२. मारा हुआ, संहार किया हुआ ।

(स्त्री० नांखियोड़ी)

नांगर-सं०पु० [सं० नागरम्] १ सोंठ (उ.र.)

२ लंगर । उ०—कूड कापिउ, सिढ़ संकेलिउ, नांगर वाहन होमाउला वहइं नहीं ।—व.स.

नांगरी—१ देखो 'नवग्रही' (रू.भे.)

२ देखो 'नोगरी' (रू.भे.)

नांगळ-सं०स्त्री० [सं० नाग+बलि] १ गृह-निर्माण पूर्ण होने पर की जाने वाली स्थापना, प्रतिष्ठा ।

२ देखो 'नांगळो' (मह०, रू०भे०)

नांगळणौ, नांगळबौ-क्रि०स० [देशज] १ बांधना । उ०—१ इसा तीरां सूं ठाठा भरिया थका । सू उणहीज बड़ां-पीपळां रा दरखतां सूं नांगळजे छै ।—रा.सा.सं.

उ०—२ इण भांत री ढालां सूं उणहीज दरखतां री साखां सूं नांगळीजे छै ।—रा.सा.सं.

उ०—३ कूंची नांगळियां नरता करड़ाता । ऊंची आंगळियां करता अरड़ाता । नाड़ां नीसरणी जाड़ातळ झळकै । न्यारी न्यारी निज पांसळियां पळकै ।—ऊ.का.

२ (नये मकान में) स्थापना करना, प्रतिष्ठा करना ।

नांगळणहार, हारौ (हारी), नांगळणियौ—वि० ।

नांगळवाड़णौ, नांगळवाड़बौ, नांगळवाणौ, नांगळवाबौ, नांगळवावणौ, नांगळवावबौ, नांगळाड़णौ, नांगळाड़बौ, नांगळाणौ, नांगळाबौ, नांगळावणौ, नांगळावबौ—प्रे०रू० ।

नांगळिओड़ो, नांगळियोड़ो, नागळयोड़ो—भू०का०कृ० ।

नांगळीजणो, नांगळीजबो—कर्म वा० ।

नांगळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ बांधा हुआ.

२ (नये मकान में) स्थापना किया हुआ, प्रतिष्ठा किया हुआ ।

(स्त्री० नांगळियोड़ी)

नांगळी-सं०स्त्री०—देखो 'नांगळो' (अल्पा.रू.भे.)

उ०—तन मन जुगती री जागी ततकाळी, त्यारी सुकती री लागी अब ताळी । ठिरता दांतां में नांगळियां ठेली । भरता दांतां में भांगळियां मेली ।—ऊ.का.

नांगळियो, नांगळो-सं०पु० [देशज] १ (कूए की) मोट की ऊपरी किनारों पर बंधा हुआ मजबूत रस्सा जिससे लाव बांधी जाती है. २ मोटी डोरी, बांधने का मजबूत रस्सा. ३ मिट्टी की छोटी बटलोई अथवा ऐसे ही अन्य पात्र को लटकाने के लिये उसके मुंह पर बांधा जाने वाला रस्सी का फंदा ।

क्रि०प्र०—घालणो ।

अल्पा०—नांगळियो, नांगळी ।

मह०—नांगळ ।

नांड़ियो—देखो 'नोड़ियो' (रू.भे.)

नांज—देखो 'नोज' (रू.भे.)

उ०—मरसी माया तणा मेळगर, कदै न पर-उपकार करै, 'माधो' अमर हुवो यळ मांहै, 'माधो' कमधज नांज मरै ।

—ओपो आढ़ो

नांजण—देखो 'नूंजणो' (रू.भे.)

नांजणियो—१ देखो 'नूंजणियो' ।

२ देखो 'नूंजणो' (अल्पा०, रू०भे०)

नांजणी—देखो 'नूंजणो' (अल्पा०, रू०भे०)

नांड, नांढ-वि० [देशज] १ मूर्ख, गँवार । उ०—वात मांनली लंपैबांढां नीत विगड़गी निलजां नांढां मिळगी जोड़ी जांनां मांढ़ां । ढेढ़ कह्यो ज्यूं सुणियो ढ़ांढ़ां ।—ऊ.का.

२. अपठित. ३. जो व्यवहारकुशल न हो ।

रू०भे०—नेड ।

नांण-सं०पु० [सं० ज्ञान] ज्ञान । उ०—१ जोसी जग कहइ ए जुडता जोडइ, वदइ तिके ही ज नांण वखांण । अवरां दीहां तणी उतारी, जोडी आ करतइ घणजांण ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ नांण प्रभावइ गणहर बोलइ पूरव भव विरतांत । नंद ग्रांमि तूं स्रावकनंदन हूतउ विद्यावंत ।—विद्याविलास पवाडउ

नांणउ—देखो 'नांणो' (रू.भे.) (उ०र०)

नांणदउ—देखो 'नांणदो' (रू.भे.)

नांणदी-सं०स्त्री० [सं० ननंदृ या ननांदृ] पति की बहिन की पुत्री ।

नांणदो-सं०पु० [सं० नानान्द्रः] (स्त्री० नांणदी) पति की बहिन का पुत्र ।

रू०भे०—नांणदउ, नांणिद्रउ ।

नांणवंत-वि० [सं० ज्ञानवंत] ज्ञानवान् । उ०—जइ पढ़िहसि 'पास' जिणिंद वसि नांणवंत निम्मळ रयण । न सु धणुहरु बांण न रूव नहि न रूय पिमु हुइ हद्दमयण ।—ऐ.जं.का.सं.

नांणि—देखो 'नांणी' (रू.भे.)

उ०—अवहि नांणि जांणि जिण जम्म, ततखिण करिवा निय निय कम्म । आवइं सुरपति मनि गह गही, सुर नर लोकां अंतर नहीं ।

—स.कु.

नांणिद्रउ—देखो 'नांणदो' (रू.भे.) (उ.र.)

नांणी-वि० [सं० ज्ञानी] १ ज्ञानवान, ज्ञानी । उ०—१ एक सहस हुवा केवळ नांणी । स्री पास भजो पुरुखादांनी ।—जयवांणी

उ०—२ जळ करै सीतळ हीय-तळ जेठ मैं ए ठहराय । जोयिक जोतसी ते कहो कदि मिळै जेठ को मांय । यादव कुळ ना सेठ नैं जेठ कहो समझाय । नांणी द्रेंठ नैं हेठते मो मैं कवण अन्याय ।—ध.व.ग्रं.

रू०भे०—नांणि ।

नांणुं—देखो 'नांणो' (रू.भे.)

उ०—गौतम नांमइ नांणुं मूकीयइ समग्य ग्यान उदय होइ ।

—वि.कु.

नांणुटी-सं०स्त्री० [सं० नाणकं+हट्ट] रुपए-पैसे का आदान-प्रदान करने वाले वे व्यापारी जो अपनी दुकान में केवल रेजगारी व रुपए रखते हैं। उ०—१ सितिरि खांन बुहुतिरि ऊवरा अनी मीर, जे नगर मांहइ सोनहटी नांणुटी दोसीहटी वृद्धिहटी, अनेक फडीआ फोफळीआ सोनार, अवरि वीजा व्यापारी तणु न जांणूं पार ।

—व.स.

उ०—२ कंसारा नट नांणुटीआ, घडिया घाट वेचइ लोहटीआ । कागल कापड नइ हथीयार, साथि सुदागर तेजी सार ।—कां.दे.प्र.

नांणुं, नणूं, नांणो-सं०पु० [सं० नाणकं] १ रुपया-पैसा ।

उ०—१ खैर उण वखत तौ थारो हाथ काठो हो पण अबै तो रांमजी राजी है । देख रणछोड़ा ! नांणो हाथ में आय जावै पण टांणो नीं आवै ।—रातवासो

उ०—२ नांणो गुर नांणो इसट, नांणो-रांणो राव । नांणा विन प्यारो न को, साहां जात सुभाव ।—बां.दा.

२ धन-दौलत, द्रव्य । उ०—१ नरहर समरतां नह वीतै नांणो, लव सूं तिको न लेवै । परनारी निरखै कर प्रीतां, दांम हजारां देवै

—र.रू.

उ०—२ जस प्यारो पुरसां जिकां, नांणो प्यारो नांह । नांणो थिर टहरै नहीं, जस जुग जुग रह जांह ।—बां.दा.

३ कर, टैक्स । उ०—अनमी कंध नमाविया, नांणो भरै नरेस । जीतो तूं जैसिंघ दे, दिखण तणा सौ देस । बां.दा.

क्रि०प्र०—देणो, भरणो, लागणो ।

रू०भे०—नांणुं, न्यांणुं, न्याणो ।

नांद-सं०स्त्री० [सं० नंदक] प्रायः पशुओं के लिए चारा, पानी आदि रखने का मिट्टी या धातु का बना बड़ा और चौड़ा पात्र।

नांदियौ—देखो 'नंदी' (अल्पा०, रू०भे०)

उ०—सिल-किस्तूरी-गंध समांणो घण मिरगाळं। गंगावहावणहार हेमाळ-सीस हेमाळं। लेत विसांणी मेघ सांवळौ इसौ लुभावै। मोळ नांदिये कीच गुदळतां सींग सुहावै।—मेघ.

नांदी—देखो 'नंदी' (रू.भे.)

नांदीमुख-सं०पु० [सं०] पुत्र जन्म, विवाह आदि मंगल अवसरों पर किया जाने वाला एक आभ्युदयिक श्राद्ध विशेष, वृद्धि श्राद्ध।

नांन—देखो 'नंनप' (रू.भे.)

नांनक-सं०पु०—सिक्ख सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक, गुरु नानक।

रू०भे०—नांनग।

नांनकड़ौ—देखो 'नंनौ' (अल्पा०, रू०भे०)

उ०—छोटोड़ै वीरै री गवरादे नांनकड़ी सी नार। राय ऊमोड़ी कुमळाइजै कंवळ फूल ज्यों।—लो.गी.

(स्त्री०—नांनकड़ी)

नांनकसाही-वि० [हिं० नानकशाही] गुरु नानक से सम्बन्ध रखने वाला।

सं०पु०—नानकशाह का शिष्य या अनुयायी।

रू०भे०—नांनगसाही।

नांनकियौ—१ देखो 'नंनौ' (अल्पा०, रू०भे०)

उ०—पण नांनकिया टाबरियां रै तौ जावक ई खटावण को होती नी।—वरसगांठ

२ देखो 'नांनौ' (अल्पा०, रू०भे०)

(स्त्री० —नांनकी)

नांनग—देखो 'नानक' (रू.भे.)

नांनगसाही—देखो 'नांनकसाही' (रू.भे.)

उ०—असी मो'र दो नांनगसाही साखो दियौ जुड़ाव।

—डूंगजी जवारजी री पड़

नांनड़ियौ, नांनड़ौ—१ देखो 'नंनौ' (अल्पा०, रू०भे०)

उ०—१ भरियै कूंडा रै धोकसी जी, नांनड़ियै री माय। बला ल्यूं सेढळ माता ए।—लो.गी.

उ०—२ एवडो रीस नै कीजियै, बनै वासै बहु दुख बै। बाळक वयम नांनड़ो देखो मती हिव मुख बै।—रीसाळू री वात

२ देखो 'नांनौ' (अल्पा०, रू०भे०)

(स्त्री० नांनड़ी)

नांनत, नांनतौ—देखो 'लांणत' (रू.भे.)

उ०—कहै कंथ नूं दुहूं कुळ ऊजळी कांमणी, वळां फौजां भिळै खाग वागै। नांनती तिकां नूं जिके भड़ नीसरै, लारला वंस नूं गाळ लागै।—वीर-प्रसंसा रौ गीत

नांनपारचा-सं०पु० [देशज] रोटी कपड़ा (मेवाड़)

नांनस—देखो 'नांनीसासू' (रू.भे.) (शेखावाटी)

नांनसराद-सं०पु० [राज० नांन+सं० श्राद्ध] आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, मतान्तर से आश्विन की अमावस्या के दिन अपने नाना के लिए किया जाने वाला श्राद्ध।

वि०वि०—केवल वही व्यक्ति इस दिन अपने नाना का श्राद्ध कर सकता है जिसका पिता जीवित हो।

नांनसरौ—देखो 'नांनी-सुसरौ' (रू.भे.) (शेखावाटी)

नांनांणो-सं०पु० [देशज] नाना का घर, ननिहाल। उ०—यूं करतां बरस च्यार व्यतीत हुवा। कुंवररै कुंवर हुवा। बडो हरख हुवो। नांनाणै सहर वधाई गई। तद राजा हरखवंत होय घोड़ो एक, सिरपाव, कड़ा-मोती, रिपिया हजार दोय दे नै विदा किया।

—पलक दरियाव री वात

रू०भे०—नांनेरौ।

नांनांणियौ-वि० [देशज] ननिहाल का, ननिहाल सम्बन्धी।

नांना-वि० [सं० नाना] १ अनेक, बहुत। उ०—बतक मुरगावी तहां, कुरभां करती केळि। पंछी नांना भांत रा, मिळी भली है मेळि।

—गजउद्धार

२ अनेक प्रकार के, विविध। उ०—नाना भूसण नांन्हडी, रामति राय-विसेस। बोलण चालण बूझवण, देखाडइ सवि देस।

—मा.कां.प्र.

नांनियौ—१ देखो 'नंनौ' (अल्पा०, रू०भे०)

२ देखो 'नांनौ' (अल्पा०, रू०भे०)

(स्त्री० नांनी)

नांनी-सं०स्त्री० [देशज] मा की माता, माता की मां।

मु०—१ नांनी मर जाणी—होश ठिकाने हो जाना, प्राण सूख जाना, संकट में फँस जाना, दुख पड़ना।

२ नांनी याद आवणी—देखो 'नानी मर जाणी'।

वि०स्त्री०—छोटी, लघु। उ०—१ कटारी जगत में प्रगट थांपै करी, नरिंद वा कटारी नाय नांनी। 'सवाई' वात री भरोती दीद सह, महपती 'विजै' जद साच मानी।

—पोकरण ठा. सवाईसिंह रौ गीत

उ०—२ तरै नागड़ी सारा सोरठ रा लसकर नूं नांनी सी कोठी मांहि सूं सीधो दियौ।—नैणसी

रू०भे०—नांन्ही।

नांनीबाई-सं०स्त्री०—गुजरात के प्रसिद्ध भक्त नरसी मेहता की बहिन का नाम।

रू०भे०—नैनी-बाई।

नांनीसासरौ, नानीसासरौ-सं०पु० [राज०नांनी+सं० श्वसुर+रा.प्र.औ] पति या पत्नी का ननिहाल।

नांनीसासू, नांनीसासू-सं०स्त्री० [राज० नांनी+सं० श्वश्रू] पति या पत्नी की नानी।

रू०भे०—नांनस।

नांनीसुसरौ, नांनोसुसरौ [राज० नानी+सं० श्वशुरः] पति या पत्नी का नाना।

रू०भे०—नांनसरौ।

नांनूं, नांनूं—१ देखो 'नैंनौ' (रू.भे.)

उ०—म्हे नांनूं कूटचो बाजरो म्हे मीठी छांटी दाळ। मीठी खीचड़ो। खदबद सीजै बाजरौ कोई, लथपथ सीजै दाळ। मीठी खीचड़ो।—लो.गी.

२ देखो 'नांनौ' (रू.भे.)

नांनेरौ—१ देखो 'नांनांणौ' (रू.भे.)

उ०—नांनै नांनी समझायो तिणरी कारण पिता जुद्ध में कांम आयो नै माता सत कियो तरै नांनेरै मोटो हुवो।—वी.स.टी.

२ देखो 'नैंनेरौ' (रू.भे.)

(स्त्री०—नांनेरी)

नांनौ-सं०पु० [देशज] (स्त्री० नांनी) १ माता का पिता।

उ०—कंवरी सूरजकंवर, भजन ध्रम रचे अपंपर। जै नांनौ 'अमरेस', घरा 'जेसांण' छतर घर। परणावण 'जैसाह' व्याह रचियो 'जोधांणै'। पूछ आदि पंडितां, वेद मरजाद प्रमांणै।—रा.रू.

२ देखो 'नैंनौ' (रू.भे.)

उ०—१ उदियापुर से सायबा पीळो मंगा, ओ जी। तो नांनी सी बंधण बधावो गाढ़ा मारूजी।—लो.गी.

उ०—२ ताहरां राजा कह्यौ-थे क्यां न जांणो, थांहरो सहर छै पण म्हारै सहर हालौ, छतीसां ओळखै कै नहीं। म्हारै पण हाथां में नांनै सूं मोटो हुवो छै।—पलक दरियाव

उ०—३ लाखै री तो अकल गई ओर हमीर थांहरै घरै आयो परो कूट मारो। डावडो नांनो छै उड जासी।—नैणसी

(स्त्री० नांनी)

रू०भे०—नांन्हूं, नांन्हौ, न्हांनौ।

अल्पा० रू०भे०—नांनकियौ, नांनड़ियौ, नांनड़ौ, नांनियौ, न्हांनड़कौ, न्हांनड़ियौ, न्हांनड़ौ।

नांन्यौ—देखो 'नैंनौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० नांनी)

नांन्हउ—१ देखो 'नैंनौ' (रू.भे.) (उ.र.)

२ देखो 'नांनौ' (रू.भे.)

नांन्हकड़ौ, नांन्हड़ियउ, नांन्हड़ौ, नांन्हडियउ, नांन्हरियौ—देखो 'नैंनौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ नांन्हकडी कुंडी चरू, कळसा कुंभ कचोळ। थाळी भारी हेम नी, रांमतिडा नु रोळ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ भरत नइ यइ ओळंभड़ा रे। मरुदेवी अनेक प्रकार रे, म्हारउ बाळूयड़उ। वाळूयड़उ नयणि दिखाड़ि रे, म्हारउ नांन्हड़ियउ।—स.कु.

उ०—३ नांना भूसण नांन्हड़ौ, रांमति राय-विसेस। बोलण चालण बूझवण, देखाडइ सवि देस।—मा.कां.प्र.

उ०—४ राजकुवर एक नांन्हड़ो, आवी मिळियो मांय। ते पिण कोढ़ी फरस थी, उंबर रोग लहाय।—स्रीपाळ

उ०—५ तुं नांन्हडियउ माहरइ, तुं मुझ जीवन-प्रांण। एक घड़ी पिण दिन समी, तोरइ विरह सुजांण।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—६ सुहा ताइ विसन ब्रह्म ताइ सुहा, इंद्र सुहा आसीस दीयइ। न कहइ सुहा घणूं नांन्हडियउ, कवळ मजीठउ राव कीयइ।
—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'नांनौ' (रू.भे.)

स्त्री०—नांन्हकड़ी, नांन्हड़ी, नांन्हरी।

नांन्हियौ—१ देखो 'नैंनौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—निमो निमो नान्हियो, किसन कनहहिया काळा। प्रांण जसोदा प्रभु, विसन नंद आंगण वाळा।—पी.ग्रं.

२ देखो 'नांनौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० नांन्ही)

नांन्ही—देखो 'नैंनौ' (रू.भे.)

उ०—नांन्ही बूंदन मेहा बरसै, ऊपर सुरपति गरजै हे मा। कैसी रितु आई मेरौ हियो लरजै हे मा।—मीरां

नांन्हीओ, नांन्हीयौ—१ देखो 'नैंनौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—अलख नांन्हीयो निपट मोटो अपारू, अलख रूप अणरूप भगतां उधारू।—पी.ग्रं.

२ देखो 'नांनौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० नांन्ही)

नांन्हूं—१ देखो 'नैंनौ' (रू.भे.)

उ०—जउ जूनु तुहइ भलु अगर, जउ सूनूं वसमूं तुहइ नगर। जउ नांन्हूं तुहइ प्रवहण, जउ खंड हुइ तुहइ सूरचग्रहण।—नळदवदंती रास

२ देखो 'नांनौ' (रू.भे.)

नांन्हौ—१ देखो 'नैंनौ' (रू.भे.)

उ०—१ नांन्ही-नांन्ही बूंदी मेवड़ो वरसै। तो लागी वादळी गरज्या नै। मेरो मन मारूजी मिळवा नै।—लो.गी.

उ०—२ लाखो जिको अवतारीक मरद नांन्हौ ही सारी साहबी रो मदार हुवो।—नैणसी

उ०—३ नांन्हां नि द्वारि जातां नवि नमि, थाइ मोकल्यूं यम ते गमि। एहवी वात माहारि मनि वसी, जोई किहिवा आवी धसी।
—नळाख्यांन

२ देखो 'नांनौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नांन्ही)

नांबरी—देखो 'नांमवरी' (रू.भे.)

उ०—जसवंत जमी काबुल जवून, खत्री कुळ गारित करत खून। नांवरी नियत हम जियत नांहि, आकासन आवहि मुट्टि मांहि।
—ऊ.का.

नांमंजूर-वि० [फा०+अ०] १ जो कबूल न किया गया हो, अस्वीकृत २ जो माना न गया हो।

नांमरद-वि० [फा० ना-मर्द] १ पुंसत्वहीन, नपुंसक, क्लीव.
२ कायर, डरपोक, भीरु।

नांमरदी-सं०स्त्री० [फा० नामर्दी] नपुंसकता, क्लीवता।
उ०—घुड़दौड़ां सूं ढूंगा घसगा, नांमरदी फिर म्यारी रे। लाखां रुपया लेखें लागा, कोई न लागै कारी रे।—ऊ.का.

नांम-सं०पु० [सं० नामन्] (वि० नांमी) किसी वस्तु या व्यक्ति या समूह का निर्देश करने वाला शब्द, अभिख्या, संज्ञा।
मुहा०—१ तौ म्हारो नांम नी—तो मुझे कुछ भी मत समझना, तो मुझे तुच्छ समझना, तो मैं कुछ भी नहीं।
(२) नांम—किसी के सम्बन्ध में, किसी को लक्ष्य कर के। किसी के लिए, किसी के पक्ष में।
(३) नांम ई नीं लैणौ—अरुचि, घृणा, भय आदि के कारण चर्चा तक न करना। संकल्प या विचार तक न करना। दूर रहना। बचना।
(४) नांम ई नीं होणौ—कहने सुनने को भी नहीं, जरा सा भी नहीं। देखो 'नांम मातर'।
(५) नांम ऊं—यह प्रकट करके कि कोई बात किसी की ओर से है। सम्बन्ध बता कर, जिम्मेदारी बता कर, नाम लेकर।
(६) नांम ऊं डरणौ—बहुत भय मानना, नाम सुनते ही डर जाना।
(७) नांम ऊठणौ—स्मरण मात्र भी न रहना, चर्चा बन्द हो जाना, चिन्ह मिट जाना, नाम न रहना।
(८) नांम ऊपर मरणौ—प्रेम के आवेश में अपने हानि-लाभ या कष्ट की ओर कुछ भी ध्यान न देना, किसी के प्रेम में लीन होना, कसी के प्रेम में खपना।
(९) नाम करणौ—यश का कार्य करना, ऐसा कार्य करना जिससे प्रसिद्धि मिले। बदनामी का कार्य करना, दूसरे पर दोष लगाना। कहने भर के लिए थोड़ा सा करना, दिखाने या उलाहना छुड़ाने भर के लिए थोड़ा सा करना। वसीयत करना, किसी के लिए या किसी के पक्ष में करना।
(१०) नांम काढणौ—बदनाम होना, कलंक लगा लेना। प्रसिद्धि का कार्य करना। बुरा या भला ऐसा कार्य करना जिससे नाम मशहूर हो।
(११) नांम चमकणौ—यश फैलना, कीर्ति फैलना, प्रसिद्ध होना।
(१२) नांम चलणौ—यादगार बनी रहना, लोगों को नाम याद रहना, लोगों में नाम का स्मरण बना रहना।
(१३) नांम चढ़णौ—नाम लिखा जाना, नाम दर्ज होना।
(१४) नांम चाढ़णौ—नाम दर्ज करना, नाम लिखाना, नामावली में नाम लिखाना।
(१५) नांम जपणौ—प्रेम या भक्ति के कारण ईश्वर या देवता का बार-बार नाम लेना। ईश्वर या देवता का स्मरण करना। किसी के नाम का बार बार उच्चारण करना।
(१६) नांम डुबोणौ—कलंकित होना, कलंकित करना, बुरा कार्य करना जिससे प्रसिद्धि न रहे।
(१७) नांम डूबणौ—नाऔलाद मरना, कीर्ति न रहना, अपकीर्ति होना।
(१८) नांम दिराणौ—नामकरण कराना।
(१९) नांम दैणौ—नामकरण करना, नाम रखना।
(२०) नांम धरणौ—देखो 'नांम दैणौ'।
(२१) नांम धराणौ—देखो 'नांम दिराणौ'।
(२२) नांम निकळणौ—ऐसा कार्य करना जिससे प्रसिद्धि या बदनामी हो। नाम का कहीं प्रकट या प्रकाशित होना। किसी स्थान से लिखा हुआ नाम कट जाना, नामावली में से नाम हट जाना।
(२३) नांम निकाळणौ—कोई कार्य विशेष करके या तो प्रसिद्ध हो जाना या बदनाम हो जाना। किसी नामावली में से नाम हटा देना। नाम को कहीं प्रकाशित या प्रकट करना।
(२४) नांम निसांण—किसी वस्तु के होने को प्रमाणित करने वाला चिन्ह या निशान, खोज, पता।
(२५) नांम नीसांण नीं रैणौ—एक भी या लेश मात्र भी न बचना, एकदम अभाव होना। एकदम नाश होना। पता न रहना।
(२६) नांम निसांण मिटणौ—देखो 'नांम निसांण नीं रैणौ।'
(२७) नांम नी लैणौ—देखो 'नांम ई नीं लैणौ।
(२८) नांम पाड़णौ—व्यक्ति विशेष की आदतों के अनुसार प्रायः लोगों द्वारा उसको चिढ़ाने या कुढ़ाने के लिए नया नाम का रखा जाना।
(२९) नांम पाड़णौ—चिढ़ाने या कुढ़ाने के लिए व्यक्ति विशेष का नया नाम रखना।
(३०) नांम बदनांम करणौ—अपकीर्ति करना।
(३१) नांम बिगाड़णौ—बदनामी करना, कलंकित करना।
(३२) नांम-भर—किंचित मात्र, जरासा।
(३३) नांम मातर—जरा सा, थोड़ा, तुच्छ।
(३४) नांम मातै (माथै) जूतो—अपकीर्ति, कलंक।
(३५) नांम मातै गोबर फेरणौ—दिवालिया घोषित करना, कलंकित करना।
(३६) नांम मातै धब्बौ लागणौ—कलंक का टीका लगना, कलंकित होना।
(३७) नांम मातै (माथै) गोबर फिरणौ—दिवालिया होना, कलंकित होना।
(३८) नांम मातै पांणी फिरणौ—देखो 'नांम डूबणौ'।
(३९) नांम मातै पांणी फेरणौ—देखो 'नांम डुबोणौ'।
(४०) नांम मातै बट्टो लागणौ—देखो 'नांम मातै धब्बौ लागणौ'।
(४१) नांम मातै वैठणौ—किसी आवश्यक या स्वाभाविक कार्य

को किसी के ख्याल या किसी की उम्मीद के कारण न करना। किसी के ऊपर यह विश्वास करके धैर्य धारण करना या उद्योग छोड़ देना कि जो कुछ उसे करना होगा करेगा। किसी के विश्वास या भरोसे पर संतोष करके स्थिर रहना।

(४२) नांम मातै मरणौ—किसी के प्रति प्रेम या भक्ति के आवेश में अपने प्राणों तक की परवाह न करना। किसी के प्रेम में इस प्रकार लीन होना कि अपने हानि-लाभ या कष्ट का कुछ भी ध्यान न रहे।

(४३) नांम मिटणौ—लोगों की स्मृति से निकल जाना। देखो 'नांम डूबणौ'।

(४४) नांम रटणौ—देखो 'नांम जपणौ'।

(४५) नांम राखणौ—बच्चे का नामकरण करना। वंश-क्रम को चलाते रहना। ऐसा कार्य करना जिससे यश या कीर्ति बनी रहे।

(४६) नांम रौ—कहने सुनने भर को, उपयोग के लिए नहीं, काम के लिए नहीं, नामधारी।

(४७) नांम रौ—किसी के निमित्त, किसी को अर्पित करके, किसी का नाम चलाने या किसी के प्रति आदर-भक्ति प्रकट करने के लिए, किसी के स्मारक या तुष्टि के लिए। किसी के सम्बन्ध में, किसी को लक्ष्य करके।

(४८) नांम लिखणौ—किसी नामावली में नाम अंकित करना। किसी संस्था, समूह या मण्डल में सम्मिलित करना। किसी के जिम्मे लिखना या टांकना, किसी के नाम के आगे लिखना।

(४९) नांम लिखाणौ—किसी मण्डली, संस्था या कार्यालय में सम्मिलित होना। किसी कार्य या विषय आदि में सम्मिलित होने के लिए रजिस्टर, बही आदि में नाम दर्ज कराना।

(५०) नांम लेनै—किसी देवता, ईश्वर या पूज्य पुरुष का स्मरण कर के। किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम के प्रभाव से, किसी बड़े आदमी या प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम से लोगों का ध्यान आकर्षित करके।

(५१) नांम लैणौ—किसी का नाम पुकारना। किसी को दोष देना, किसी को अपराधी ठहराना। ईश्वर का स्मरण करना। ईश्वर का भजन करना।

(५२) नांम वाजणौ—यशस्वी होना, कीर्ति फैलना।

(५३) नांम सूं—देखो 'नांम ऊं'।

(५४) नांम सूं डरणौ—देखो 'नांम ऊं डरणौ'।

(५५) नांम होणौ—कीर्तिवान होना, यशस्वी होना। किसी नामावली में आ जाना, लोगों को किसी की स्थिति का भान होना।

(५६) नांमो-निसांण —देखो 'नांम-निसांण'।

२ प्रसिद्धि, ख्याति, यश। उ०—१ अठतीसै आसोज मैं, सित सातम सनवार। गो 'सोनागिर' धांम हरि, नांम करै संसार।—रा.रू.

उ०—२ 'जगड़' रांण दीधा जिता, गैंवर हैंवर गांम। अब पातां देसी इता, नृप कुण राखण नांम।—बां.दा.

मुहा०—(१) नांम कमाणौ—प्रसिद्धि प्राप्त करना, यश प्राप्त करना, यशस्वी होना।

(२) नांम करणौ—विख्यात होना, यशस्वी होना।

(३) नांम चलणौ—देखो 'नांम चालणौ'।

(४) नांम चालणौ—यश का बहुत दिनों तक बना रहना, कीर्ति बनी रहना।

(५) नांम डुबोणौ—मान-प्रतिष्ठा खोना, यश और कीर्ति गँवाना।

(६) नांम डूबणौ—यश या कीर्ति का लुप्त होना। यश और कीर्ति का नाश होना।

(७) नांम मातै धब्बौ लागणौ—कीर्ति पर लांछन लगाना, बदनामी करना।

(८) नांम मातै मरणौ—कीर्ति के लिए उद्योग करना, यश के लिए प्रयत्न करना।

(९) नांम रैं'णौ—कीर्ति का बना रहना।

रू०भे०—नांउ, नांऊ, नांमउ, नांमू, नाउं, नाउ, नाऊं।

अल्पा०—नांमको, नांमगो, नांमड़ियो, नांमड़ो, नांमो, नांवड़ो।

नांमउ—देखो 'नांम' (रू.भे.)

उ०—दीधी दीक्षा वड़इ विरुद्द, नांमउ दीयउ 'राजसमुद्र'। हिव सास्त्र भण्यां असमांन, ते गिणतां नावइ गांन।—ऐ.जै.का.सं.

नांमक-वि० [सं० नामक] १ नाम वाला. २ नाम से प्रसिद्ध।

नांमकम्म—देखो 'नांमकरम' (रू.भे.)

नांमकरण-सं०पु० [सं०नामकरण] १ नाम निश्चित करने की क्रिया, नाम रखने का काम. २ जन्म के पश्चात् बच्चे का नाम रखने के लिए शुभ मुहूर्त्त में किया जाने वाला सोलह संस्कारों के अन्तर्गत एक संस्कार विशेष।

नांमकरम-सं०पु० [सं० नामकर्म] १ नामकरण संस्कार। २ जैन शास्त्रानुसार कर्म का एक भेद।

रू०भे०—नांमकम्म।

नांमकीरत्तन-सं०पु० [सं० नामकीर्त्तन] ईश्वर के नाम का जप या उच्चारण।

नांमको, नांमगो, नांमड़ियो, नांमड़ो—देखो 'नांम' (अल्पा., रू.भे.)

नांमजद, नांमजदीक, नांमजद्दी, नांमजाद, नांमाजादी, गांमजादीक—

वि० [फा० नामज़द] प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात। उ०—प्रिथी रा लिग्रै भोग ऐसा प्रचंडं। खगां मारि डंडै जिकै नव्व खंडं। हजारी सदी पंचसद्दी विसद्दी। जगज्जेठ जोधा मिळै नांमजद्दी।

—वचनिका

उ०—२ वाघं रै भरमल सूं ही प्यार हुवौ। भरमल नांमजाद सिद्ध हुई।—ऊमांदे भटियांणी री वात

उ०—३ सु स्रीक्रिस्णजी री वेटौ स्यांम नै प्रदुमन बड़ा नांमजाद हुवा।—नैणसी

उ०—४ करै ऊजळा कोधरां नांमजादी नरां। राज राजेसरां रूप।

—ल.पिं.

उ०—५ हाथी, सूजो, गूजो, तोगो, रणभू—ऐ चालीसां में ठाया हुवा। सीमरो चालीसो नामजादीक हुवो।—बां.दा.ख्यात

उ०—६ हुकै पुरंदाळ जोहां फाळ दरीखानै हुवै, चलै रगताळ खाळ भूगोळ चढ़ाय। साथी हूंता भारीके अमीरां नामजादि सूधो। गादी माथै दीधो पंच-हजारी धुड़ाय।

—हरनाथसींग भाडणोत रो गीत

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

रू०भे—नांमजादीक, नांवजाद, नांवजादी, नांवजादीक।

नांमणो—वि० [स्त्री० नांमणी] नमाने वाला, भुकाने वाला।

उ० १ नांमणो अनमां नाथ नवां-कोटां चाढै नीर, आथ··· आज जिसो 'ऊदा' हरो नंद।—जगमाल राठौड़ रो गीत

उ०—२ सर्फ बंदगी सुरीस, देवता जपै दनीस राम सदीस नांमणो नरीस।—र.ज.प्र.

नांमणो, नांमबो—क्रि०स० [सं० नम्] १ नमाना, नमस्कार कराना, भुकाना। उ०—१ जग नायक जगजीत, जगत उपावण जगतगुर। सुर नर नांमै सीस, समरि प्रभु असरण सरण।—पि.प्र.

उ०—२ परियां अपको कहां किम 'पातल' रावां तिलक हिंदवा रांण। सिर नांमियो नहीं सुरतांणां, 'सांगै' बंध किया सुरतांण।

—दुरसो आढ़ो

२ अधीन करना, मातहत करना, पस्त करना। उ०—१ मुगळ महीनै माह रै, मिळ पूगो गुजरात। भूपत नांमण भोमियां, छिळियो जोधां छात।—रा.रू.

३ किसी तरल पदार्थ को एक पात्र से दूसरे पात्र में डालना, ढालना, उंडेलना। उ०—सर नांमियो गंगाजळ सोणी, सत सीधो 'कल्यांण'। सकाज। असती पोहां तणी आभड़ियो, अनड़ प्रवीत हुओ तिण आज।

—दूदो आसियो

नांमणहार, हारो (हारी), नांमणियो—वि०।

नांमवाड़णो, नांमवाड़बो, नांमवाणो, नांमवाबो, नांमवावणो, नांमवावबो, नांमाड़णो, नांमाड़बो, नांमाणो, नांमाबो, नांमावणो, नांमावबो

—प्रे०रू०।

नांमिओड़ो, नांमियोड़ो, नांम्योड़ो—भू०का०कृ०।

नांमीजणो, नांमीजबो—कर्म वा०।

नांमणो, नांमबो, न्हांमणो, न्हांमबो—रू०भे०।

नांमवार—वि० [फा०] प्रसिद्ध, विख्यात, नामवर।

उ०—दिग्रंण दांन मांन दातार, अमर नांमवार उदार।—ल.पि.

नांमदेव—सं०पु० [सं०नामदेव] ये दमशेती नामक दर्जी के पुत्र थे। इनका जन्म सन् १२७० ई० में सतारा के पास नरसी बमनी नामक स्थान में हुआ था। ये मरहाठी साहित्य में प्रसिद्ध संत माने जाते हैं। इनके अभंग सामान्य जनता में बड़े प्रेम से गाये जाते हैं। इन्होंने हिंदी और मरहाठी दोनों भाषाओं में रचनाएँ की हैं। इस प्रकार से ये हिन्दी और मराठी दोनों के इतिहास में कवि और संत के रूप में मान्य हैं। इनकी रचना के विषय में माधव राव अप्पाजी मुळे ने लिखा है "उसमें सत्य, विराग और भक्ति का तथा प्रेम में आत्म-समर्पण, प्रकाश तथा लोकोत्तर आनंद का आलोक है—वह हृदय के प्रति हृदय का गीत है।" नामदेव के काव्य में सरसता और सुबोधता दोनों का अद्भुत सम्मिश्रण है। उन्होंने ऐसे गीतों व अभंगों की रचना की है कि उनके जीवन काल में ही उनका यश समस्त भारतवर्ष में फैल गया था।

इनकी धर्मपत्नी का नाम राजबाई था। इनके चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः नारायण, महादेव गोविंद और विट्ठल हैं।

इनकी मृत्यु ८० वर्ष की आयु में सन् १३५० ई० में पण्ढरपुर में हुई थी। इनकी समाधि पण्डरपुर में बनी हुई है।

नाभादास ने भी अपनी भक्तमाल में इनके अलौकिक चमत्कारों का वर्णन किया है।

रू०भे०—नामदेव।

नांमद्वादसी—सं०स्त्री० [सं० नामद्वादशी] अगहन शुक्ला तृतीया को बारह देवियों की पूजा का एक व्रत।

नांमधन—सं०पु० [सं० नामधन] एक संकर राग (संगीत)।

नांमधारक—वि० [सं० नामधारक] जिसमें नाम के अनुसार गुण न हो, नाम के अनुसार कार्य न करने वाला, केवल किसी नाम को धारण करने वाला, नाम मात्र का।

नांमधारी—वि० [सं० नामधारिन्] १ जिसका कोई नाम, नाम धारण करने वाला, नाम वाला, नामक. २ नामी, प्रसिद्ध।

नांमधेई, नांमधेय—सं०पु० [सं० नामधेय] नाम निर्देशक शब्द, नामकरण, नाम। (नां.मा.प्र.मा.)

उ०—धुरा तू सुराराव नो नांमधेय। कहूं पुन रावळा रूप केई। तुही भीलणी भेस संभू भुलावै। रजो भूरती सेस तू ही रुळावै।

—मे.म.

नांमनिक्खेव, नांमनिक्षेप, नांमनिक्षेपो, नांमनिखेव—सं०पु० [सं० नाम निक्षेप] लोक-व्यवहार चलाने के लिए किसी गुण विशेष के न होने पर भी उस गुण के अनुसार किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का नाम रख देने की क्रिया या भाव। उ०—स्वांमीजी बोल्या—एक भाव निक्षेपो तो म्हे पिण वांदां पूजां छां। बाकी तीन निक्षेपां नीं चरचा रही तिण में प्रथम नाम निक्षेपो। किण ही कुंभार नो नांम भगवान दियो। तिण नै थे वांदो के नहीं ? जद ते बोल्यो—तिण नैं सूं वांदियै ? प्रभू ना गुण नथी।—भि.द्र.

नांममाळका—सं०स्त्री० [सं० नाममालिका] नामों की सूची, कोश।

उ०—कीनी पूरी नांममाळका दीपमाळका तेण दिन।—ह.नां.

रू०भे०—नाममाळिका।

नांममाळा—सं०स्त्री० [सं० नाममाळा] १ ७२ कलाओं में से एक (व.स.) २ नामों की सूची, कोश। उ०—नाममाळा नइ व्याकरण कीधा कंठ आभरण।—गुण विजय कवि

नांममाळिका—देखो 'नांममाळका' (रू.भे.)

नांमरद-वि० [फा० नामर्द] १ पुरुषत्वहीन, क्लीव, नपुंसक।
उ०—मनवारां करी उण दिन मरद, मिळै घड़ी मनवार री। मनवार बणासी नांमरद, मौज इसी मनवार री।—ऊ.का.
२ कायर, डरपोक।

नांमरदी-सं०स्त्री० [फा० नामर्दी] १ नपुंसकता, क्लीवता।
उ०—घुड़दोड़ां सूं ढूंगा घसगा, नांमरदी फिर प्यारी रे। लाखां रुपया लेखै लागा, कोई न लागी कारी रे।—ऊ.का.
२ कायरता, भीरुता।

नांमरूप-सं०पु० [सं० नामरूप] इन्द्रियों को जान पड़ने वाले सब के आधार-स्वरूप अगोचर वस्तु तत्व के परिवर्तनशील नाना रूप या आकार तथा उनके भिन्न-भिन्न नाम जो भेद-ज्ञान के अनुसार रखे जाते हैं।
उ०—जो सुख नित्य प्रकास विभो, नांमरूप आधार। मति न लिखै जाहि मती लिखै, सो मैं सुद्ध अपार।—निसचळदास

नांमवर-वि० [फ़ा० नामवर] प्रसिद्ध, मशहूर, नामी।

नांमवरी-सं०स्त्री० [फा० नामवरी] प्रसिद्धि, शोहरत, कीर्ति।
रू०भे०—नांवरी।

नांमवाळो-वि० [सं० नामन्+आलुच्] १ नामवाला, नामक।
२ प्रसिद्ध, नामी।

नांमसाद-वि० [सं० नाम+साद:] ख्याति-प्राप्त, विख्यात।
उ०—देवराज नांमसाद इसड़ो जु सको जांणै मुंहडा वारै काढ़ी छै तौ करसी।—नैणसी

नांमसेस-वि० [सं० नामशेष] १ जो नाम मात्र के लिए शेष हो, जिसका केवल नाम रह गया हो, नष्ट, ध्वस्त।
२ मरा हुआ, मृत।

नांमा-वि० [सं० नामा] १ नामधारी, नाम वाला. २ नामी, प्रसिद्ध।
सं०पु०—यश, कीर्ति, प्रशंसा।

नांमाकूळ-वि० [फ़ा० ना+अ० माकूल] १ अनुचित. २ जो योग्य न हो, अयोग्य, नालायक।

नांमाड़णौ, नांमाड़बौ—देखो 'नमाणौ, नमावौ' (रू.भे.)

नांमाड़ियोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नांमाड़ियोड़ी)

नांमाजादीक—देखो 'नांमजद' (रू.भे.)

नांमाजोड़, नांमाजोड़ो-सं०पु० [सं० नाम+राज० जोड़] ज्योतिष के अनुसार विवाह अथवा सगाई से पूर्व वर-वधू के नामों के अनुसार अथवा जन्म-कुण्डलियों के अनुसार किए गए मिलान की क्रिया का नाम जिससे यह मालूम पड़े कि विवाह कर देना ठीक है अथवा नहीं।
उ०—जुड़ाण जोड़ण नांमा जोड़ो। नारि नवी निवतै री नाह। धावै खांन हजन खाफर घड़। वीररति सिरजीयो वीमाह।—दूदो
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, लाणौ।
रू०भे०—नांवाजोड़, नांवाजोड़ो।

नांमाणौ, नांमाबौ—देखो 'नमाणौ, नमावौ' (रू.भे.)

नांमायोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नांमायोड़ी)

नांमारूम-वि० [देशज ?] बेचैन, व्याकुल, विकल ?
उ०—सो आ खबर अमरसिंहजी नूं गई, सो सुणत सु वो काळो मरट हुय गयो। हाथ पटकै, दांतां सूं हथेळी नूं बटका भरै, कटारी सूं तकियो फाड़ नांखियो। जे म्हांरी घणा दिनां री संची जाजम बीकानेर रा खाली कर दीवी। मैं तौ इहां नूं जोधपुर रै पगां संचिया था सो हमैं जोधपुर री आस तौ चूकी दीसै छै। मुत्सदी अमराव हजूर री धीरज बंधावै, परचावै पण अमरसिंह तौ बावळै रै सी बात करै। आठ पहर तौ नामारूम थाळी न बैठो। सारा हठ कर नीठ थाळी पर बैठायो। अन्न छूट गयो।
—अमरसिंह राठौड़ री वात

नांमालय-सं०पु० [सं० नामालय] पुरुष की ७२ कलाओं में से एक। (व.स.)

नांमालूम-वि० [फा० ना+अ० मालूम] जिसका ज्ञान न हो, जिसकी खबर न हो, जो मालूम न हो, अज्ञात।

नांमावणौ, नांमावबौ—देखो 'नमाणौ, नमावौ (रू.भे.)
उ०—रूप अगर 'वगतेस' रै, मांन अगर 'वगतेस'। नांमावण अनमां नरां, दवावण दस देस।
—ठाकुर वगतावरसिंघजी नै रूपजी कछवाह री दूहौ

नांमावळी-सं०स्त्री० [सं० नामावली] १ नामों की सूची।
उ०—भक्ति रै प्रभाव जैतमाल और भी इसड़ा अनेक दुष्कर कांम करि आपरो नांम ख्यात कीधो, सो अजै भी भक्तलोकां री नांमावळी में प्रधांनता जणावै।—वं.भा
२ श्रद्धालु भक्तों के ओढ़ने का एक प्रकार का कपड़ा जिस पर चारों ओर भगवान का नाम छपा होता है, रामनामी।

नांमावियोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नांमावियोड़ी)

नांमि—देखो 'नांमी' (रू.भे.)
उ०—नवकोटी नांमि भणूं मारूआढि घण देस। घण कण धरि सविकहि तणइ कप्पड़ कणय सुवेस।—कां.दे.प्र.

नांमित—देखो 'निमित्त' (रू.भे.)

नांमियोड़ो-भू०का०कृ०—१ नमाया हुआ, झुकाया हुआ।
२ अधीन किया हुआ, मातहत किया हुआ। ३ एक पात्र से दूसरे पात्र में डाला हुआ, उंडेला हुआ।
(स्त्री० नांमियोड़ी)

नांमी-वि० [सं० नामिन्] १ नामवाला, नामधारी।
उ०—१ नयण निपाप करिस नारायण, पेख रूप हो भगत-परायण। सुक्रियय स्रवण करिस हूं सांमी, नित-प्रत कथा सुणे बोह नांमी।
—ह.र.

उ—२ पांडव नांमी नींठ पाड़ियो, लग ऊगमण नै आथमण लग।
—खेमराज सोदो

२—प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर।
उ०—अज भेक उजागर नर खर नागर, गुणसागर गूंजंदा है। नामा क्रत नांमी कथा निकांमी, भ्रम गांमी भूंजंदा है।—ऊ.का.
३ उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया। ४ सुंदर।
उ०—धार सनाह प्रसिद्ध ध्रूसटिया, नांमी सिंदूरी मुख नारि। भिड़ मदन गह विरह भांजियो, 'रतनै' वांकूड़ै भरतारि।—दूदो
५ जबरदस्त, महान्, बड़ा।
उ०—इतरै में नागोर ग्रोर बीकानेर ग्रापस में कजियो हुवो—गांव जाखणिया बाबत, सो नागोर री फौज भागी। बीकानेर री फतह हुई। केसरीसिंघ जोधो कांम ग्रायो। करण भोपतो चांपावत कांम ग्रायो। गोयंददास, जगरूपसिंह, मेड़तियो बिहारीदास, गोकुळदास, उदावत हरीसिंह साहिबसिंह, मोपतसिंह, करणोत खेतसी, रायसिंह, ग्रखैराज करमस्योत, सेखो पातावत, जसो बारहठ, इतरा तो नांमी; बीजो ही घणो लोग कांम ग्रायो—ग्रमरसिंह राठोड़ री वात
६ जो ठीक न हो, बुरी।
ज्यूं—थै उण में नांमी कीदी, भाइड़ा ग्राछो डुबोयो।
ज्यूं—नौकरी सूं तौ काढ दियो हमैं उण में नांमी व्ही है।
यौ०—नांमी-गांमी।
सं०पु० [सं० नमिः] विष्णु, नारायण।—डि.नां.मा
रू०भे०—नांमि, नांमीक, नांमु, नांमूं नामेता, नीमी।

नांमीक देखो 'नांमी' (रू.भे.)

नांमीगिरांमी, नांमीगांमी, नांमीग्रांमी–वि०यौ० [सं० नाम—ग्राम] जिसकी ख्याति फैली हुई हो, जिसका बड़ा नाम हो, मशहूर।

नांमु—१ देखो 'नांम' (रू.भे.)
उ०—निसुणउ मई जि प्रतिग्या कीजइ, चाहुलइइ चिय नांमु लिहीजइ।—पं.पं.च.
२ देखो 'नांमी' (रू.भे.)

नांमुनासिब–वि० [फा० ना+ग्र० मुनासिब] जो उचित न हो, ग्रनुचित।

नांमुमकिन–वि० [फा० ना+ग्र० मुमकिन] जो संभव न हो, ग्रसंभव।

नांमूं, नांमू—१ देखो 'नांम' (रू.भे.) २ देखो 'नामो' (रू.भे.)
उ०—जिम नांमूं जूठूं जांणि ते वांणिक लेइनि वाळि। तिम ध्याताए जूठा जांणी रविसिसि नि कृढालि।—नळाख्यांन
२ देखो 'नांमी' (रू.भे.)

नांमूब, नांमून–वि० [सं० नामन्+रा० प्र० ऊद, ऊन] जिसका बडा नाम हो, विख्यात, प्रसिद्ध।
सं०पु०—प्रसिद्धि, ख्याति, यश।
ज्यूं—कांई बापरो नांमून काढियो।

नांमेक–वि० [सं० नामन्+एक] नाम मात्र, किञ्चित, जरा सा।

नांमेता—देखो 'नांमी' (रू.भे.)
उ०—सात ग्रठी पड़िया साखेता। मारू जुध जीता नांमेता। लूटे गांम वित्त धन लीधा। दिस च्यारूं पासरणा दीधा।—रा.रू.

नांमेदार–वि०—हिसाब रखने वाला।

नमिहरबांन–वि० [फा० ना+मेह्रबान] जो नाराज हो, जिसकी कृपा न हो।

नांमोसी–सं०स्त्री० [फा० नामूसी] १ बदनामी, अपकीर्ति, बेइज्जती।
उ०—१ फेर लोगां में नांमोसी दिखाई। ग्राज पहलां मेरी कठै ही नांमोसी न हुई। इब भाई पड़ौसी हंससी कहसी—जे सवारी री घोड़ी ही न रह सकी।—सूरै खींवे कांधळोत री वात
उ०—२ जे मैं हुकम देऊं ग्रोर मा करै तो लोक में नांमोसी हो ग्रोर चाकर रै जीव में खतरो पड़ै।
—महाराज जयसिंह ग्रांमेर रै धणी री वारता
उ०—३ तीसूं ग्राप तौ तयारी कर राखो, ग्रासे तो परणाय देयस्यां। नहीं तो हमे घणां री नांमोसी हुई बिना नारेळ झालियां उत्तर देवता तौ बीजी बात थी।—कुंवरसी सांखला री वारता
२ नासमझी, मूर्खता। उ०—बादसाह सलांमत बीडो मंगाय दे दियो, मुजरो कर ग्रै उठा सूं बहता बहिर हुवा सो सांझमज री सराय जाय रहिया। उठै कई लोगां पूछी कुण छो व कठै जायस्यो। तौ इहां कही सिपाही छां ग्रोर बादसाह रा नौकर छां। दूलची जोइया ऊपर विदा किया छां। पकड़णे नूं सो सांम्हैं पकड़ कर ल्यायस्यां। तद लोगां कही ऊ तो जबरो छै। वांहरी जमीयत कठै छै। पूठै ग्रावै छै कना ग्रागै गई। तद इहां कही—दोनां हम ग्रसवार हैं, दोनां घोड़े साथ। चाकर दोनां हैं यह बस यो पूरो साथ। इतरी सुण सगळा चुप रहिया। केई तौ बादसाह री नांमोसी बताई केई उण सिपाहियां री कहणै लागिया।
—दूलची जोइया री वारता

नांमो–सं०पु० [सं० नामन] १ ग्रभिलेख, लिखावट, लेख। उ०—ताहरां मूरखो बोलियो—जो देवी सारदा मोनूं वर दियो हिवै हूं मूरिख नहीं। सचींत मता हुवो। इम करतां एकै सहर जाइ ठिकांणो लेनै जाइ उतरिया। मास २-३ तिहां रह्या। तितरै सहर विखै एक तळाव खणीजतो थो। तिण मैं कीरतथंभ नीसरियो। तिण ऊपर एक नांमो सु किण ही बचै नहीं। एकै दिन मूरिखो जाइ नीसरियो सु मूरिखै नांमो वांचियो। तै नीचे सवा करोड़ वित बतायो। ताहरां राजा खुणाय वित कढ़ायो।—चौबोली
२ लेन-देन सम्बन्धी हिसाब। उ०—घरां रोटी जीम बाजार ग्रायो। देवीदास नै भीतर बैसांणियो। साह हाट रै बारणै बैठो नांमो मांडै छै।—पलक दरियाव री वात
वि०वि०—महाजनी बहीखाता प्रणाली के ग्रनुसार वस्तुगत खातों में प्राप्त करने वाले ग्रथवा पाने वाले खाते के उतनी राशि नाम (नामे) तथा देने वाले खाते के उतनी राशि जमा लिखी जाती है,

व्यक्तिगत व नाम मात्र (nominal) के खातों में उनके सम्बन्ध में दी जाने वाली राशि उनके नाम (नामे) लिखी जाती है और प्राप्त होने वाली राशि को जमा में लिखी जाती है। कच्ची रोकड़ बही, पक्की रोकड़ बही, खाता बही, कच्चा आंकड़ा, पक्का आंकड़ा आदि में बायां भाग जमा का तथा दायां भाग नाम (नामे) का होता है किन्तु नकल बहियों में इस प्रकार के दो भाग नहीं होते हैं।

यौ०—नांमो-ठांमो, नांमोले-खो।

३ देखो 'नांम' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ रिण 'जोधो' 'रिणछोड़' पड़ै खग दाख पराक्रम। पीथळ बीठळदास, धार चंद्रभांण सांम भ्रम। 'दीपो' कुंभकरन्न, पड़ै माहव जगपत्ती। 'रांमो' नांमो राख, पांत वसियो सुरपत्ती।—रा.रू.

उ०—२ वजाई खाग कुंभाथळां वारणा, राड़ रा थंभ खत्रवाट रसिया। अमर नांमो करै देस दस ऊपरै, वर अछर 'रघा' हर सुरग वसिया।—पहाड़खां आढ़ौ

उ०—३ कल्यांण तणो 'रांमो' कहै, सभू समांमां खग समर। करि जीत विहद कांमो करूं, इळा सुजस नांमो अमर।—सू.प्र.

नांय—१ देखो 'नांई' (रू.भे.)

उ०—पोह दूजा देसां परदेसां, जोया बोह गढ़ कोटां जाय। मैं राखियो थूंभ्रै मेड़तिया, निरधन रा आभूखण नांय।—ओपो आढ़ौ

२ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—१ भलां ब्राह्मणी वात तूं, काहे करत वणाय। या कूं मैं भक्षण करूं, छोडूं किहि विध नांय।—सांई री पलक में खलक

उ०—२ कब को टेरत कांन जू, करुणा आवत नांय। दीनानाथ दयाळ जू, अजू न आवो काय।—गजउद्धार

नांरतो—देखो 'नवरात्र' (अल्पा., रू.भे.)

नांरा—देखो 'नौरा' (रू.भे.)

नांरो—देखो 'नोहरो' (रू.भे.)

नांळ—देखो 'नौळ' (रू.भे.)

नांलायक—देखो 'नालायक' (रू.भे.)

नांळी—देखो 'नौळी' (रू.भे.)

नांव—देखो 'नांम' (रू.भे.)

उ०—१ चारण कवि थाट वड चोकी। वड दातार पढंती वेस। रांम अधो ऊगतां अधो रवि। नांव जपै नव सहस-नरेस।
—महाराजा करणसिंघ री गीत

उ०—२ खुधा न भाजै पांणियां, त्रखा न भाजै अन्न। मुकत नहीं हर नांव बिन, मांनव साचै मन्न।—ह.र.

उ०—३ हर हर करै न पातरै, हर रो नांव रतन्न। पांचूं पांडव तारिया, कर दागियो करन्न।—ह.र.

उ०—४ अरजन भींव रा वेटा कांम आया, वडो नांव कियो।
—नैणसी

उ०—५ गढ़ खडि पडंती गागुरण, दिढ़ राखै सुरतांण दळ। संसारि नांव आतम सरगि, अचळ वेवि कीधा अचळ।—अ० वचनिका

नांवड़ो—देखो 'नांम' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ लीलोती चोवीस मांगै, गिणै न छोटो गांवड़ो। जद नींम सगळां सूं पहली, थारो ही सुभ नांवड़ो।—दसदेव

उ०—२ अबै धावण ज्याका वधावणा नांवड़ा उवारणा। हर गीतड़ा गवावणां।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

नांवजाद, नांवजादो, नांवजादीक— देखो 'नांमजद' (रू.भे.)

उ०—१ पवारां रै एक मुहतो वडो आदमी छै। परधांन वडो आदमी नांवजाद छै।—नैणसी

उ०—२ तिण समै चारण भांणो, मीसण जात रो, गोड़ां रो बारहट, चीतोड़ रै गांव राठ कैकोदमियै रहै छै; सु नांवजादो चारण छै। वडा आखरां रो कहणहार छै।—नैणसी

उ०—३ तरै देवराज री धाय डाही थी, तिण देवराज नूं प्रो॥ लूंणा नूं सूंपियो, कह्यो—"थारै साढ़ १ हाथवाथ छै तिका नांवजादीक छै। थे इतरो आपणा धणी रो बीज उबारो, ले नीसरो।
—नैणसी

नांवणो, नांवबो—क्रि०स०—१ चलाना, खेना। उ०—सांच झूठ झूठ सांच राचतो रह्यो। रूप कूं कुनाव नाव नांवतो रह्यो।—ऊ.का.

२ देखो 'नांमणो, नांमबो' (रू.भे.)

नांवणहार, हारो (हारी), नांवणियो—वि०।

नांवाड़णो, नांवाड़बो, नांवाणो, नांवाबो, नांवावणो, नांवावबो—प्रे०रू०।

नांविग्रोड़ो, नांवियोड़ो, नांव्योड़ो—भू०का०कृ०।

नांवीजणो, नांवीजबो—कर्म वा०।

नांवदेव—देखो 'नांमदेव' (रू.भे.)

नांवियोड़ो-भू०का०कृ०—१ चलाया हुआ, खेया हुआ।

२ देखो 'नांमियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नांवियोड़ी)

नांह, नांहि, नांही—देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—१ जस प्यारो पुरसां जिकां, नांणो प्यारो नांह। नांणो थिर ठहरै नहीं, जस जुग जुग रह जांह।—बां.दा.

उ०—२ जीभ कंठ हिय अक्रत जुग, कहियो नांहि करंत। कहै दुग्रां कहियो करो, कुकवि कुलच्छणवंत।—बां.दा.

उ०—३ निज सुखरुख सेव करावी नांही, दाखै धन धन जांबूदीप। चूंडा हरा उवारण चोजां, मोजां अहिज 'मांन' महीप।—बां.दा.

ना-सं०पु० [सं० नृ] १ मनुष्य, नर (डिं.को.)

२ मुख (एका०)

सं०स्त्री०—३ वनिता (एका०)

वि०—निपुण (एका०)

अव्य० [सं०] निषेध या अस्वीकृति सूचित करने के लिए बोला जाने वाला शब्द। नहीं, न। उ०—१ चींतै घण सैलांण कूंतड़ी इण विध आंणै। संख पदमणा वार पेखतां मो घर जांणै। ना

उच्छब ना हलक दूमणो घणो लखावै । भांण डूबतां पांण म पोयण पंख खिलावै ।—मेघ.

उ०—२ नीमोळी रसदार, भार ईंमी सी चोखी । पोखै बाळक काय, भाय मन खाय श्रणोखी । ना संतोळा सेव, मेव मीठा ना पिसता । ना अंगूर विदांम, श्रांम किसमिस री रसतां ।—दसदेव

उ०—३ घोवौ मूठी धांन, मांगै वांनै ना मिळै । पट काढै पकवांन, ना ना करतां नाथिया ।

प्रत्य०—१ षष्ठी वा सम्बन्धकारक का चिन्ह के। उ०—१ दुरगति ना भय दुख दळया ।—स.कु.

उ०—२ सुख चाहै इण लोग ना, तेह नै वोरो चरित्त ।—जयवांणी

२ द्वितीया विभक्ति या कर्मकारक का चिन्ह, को। उ०—श्रलख वडा छो सव वाप थे श्रेकला । श्रधिकी गरढ़ा घणो त ना तोवाह श्रला ।
—पी.ग्रं.

ना'—१ देखो 'नाथ' (रू.भे.)

२ देखो 'नाभि' (रू.भे.)

३ देखो 'नाह' (रू.भे.)

नाश्रर—देखो 'नाहर' (रू.भे.)

नाइ—देखो 'नाई' (रू.भे.)

नाइक—देखो 'नायक' (रू.भे.)

उ०—१ देसपति सुत लाख दाइक, नांम राखण नरां नाइक । दळिद्र भंजण देव दरसण, प्रिथी लागै पाय ।—ल.पिं.

उ०—२ रमै नाना विधि नाइक रघु ।—रां.रा.

नाइका—देखो 'नायका' (रू.भे.)

उ०—१ नाइका श्राइस दीध नरिंद । श्रांणी रिख संग सर्व जिम इंद ।—रा.रा.

उ०—२ धवळग्रिह घंघोळई तरळ तुरंग श्रासइं नाइका नासइं ।
—व.स.

नाइतफाकी—सं०स्त्री० [फा० नाइत्तिफाकी] जहां वैमनस्य हो, जहां मेल न हो, विरोध, फूट ।

नाइन—देखो 'नायण' (रू.भे.)

उ०—इतरी कहि नाइन पास जाइ वैठी । कही तू म्हारी भांणीजी छै हूं थारी मासी छूं ।—चौबोली

नाइब—देखो 'नायब' (रू.भे.)

उ०—स्यांम धरम के सच्चे खुसवखती साहिब । सिंधु के सभाव सरस्वती के नाइब ।—सू.प्र.

नाइबी—देखो 'नायबी' (रू.भे.)

नाई—सं०स्त्री० (बहु० नायां) १ हल के साथ वांध कर बीज वोने का उपकरण जो खोखले वांस श्रादि के डण्डे का बना होता है ।

रू०भे०—नाइ, नायी ।

यौ०—नाई-वंधणी

श्रल्पा०—नायली, नायलो ।

२ बैल गाड़ी के पहिए में मध्य चक्र के ऊपर लगाए जाने वाले लकड़ी के डण्डे ।

श्रल्पा०—नायलो ।

सं०पु० [सं० नापित] (स्त्री० नायण) ३ नापित, हज्जाम (डि.को.)

उ०—वणक खतारा कांम में, श्रौ दरसावै खैर । नाई नूं दीधी मुहर, वाळन टाकर वैर ।—वां.दा.

रू०भे०—नाइ, नाउं, नाउ, नाऊ, नाळ ।

४ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—रांम प्रसादा सांई हो, राखौ श्रोट चोट क्यूं लागै । समझि पड़ै कछु नाई हो ।—ह.पु.वा.

५ देखो 'नाई' (रू.भे.)

उ०—सागै श्रादमी भी जाट नाई सा बताया । भैलो में कबीला ईं तळाई तीर श्राया ।—शि.वं.

नाई वंधणी—सं०स्त्री०—सूत या चमड़े की बनी वह रस्सी जिससे हल के साथ खोखले वांस का बना वीज वोने का उपकरण (नाई) वांधते हैं ।

नाउं, नाउ, नाऊं, नाऊ—१ देखो 'नांम' (रू.भे.)

उ०—नाउ छोटी मोटी कछोटी मोक्ष नहीं, विकट जटा मुकुटि मोक्ष नही ।—व स.

२ देखो 'नाई' (रू.भे.)

नाउमेदी, नाउम्मीदी—सं०स्त्री० [फा० ना-उम्मेदी] (वि० नाउमेद, नाउम्मेद) निराशा ।

नाऊं, नाऊ—१ देखो 'नांम' (रू भे.)

२ देखो 'नाई' (रू.भे.)

३ देखो 'नाउं' (रू.भे.)

नाएट—देखो 'नासेट' (रू.भे.)

नाएटू—देखो 'नासेटू' (रू.भे.)

नाश्रोलाद, नाश्रोलाद—वि० [फा० ना+श्र० श्रौलाद] जिसके सन्तान न हो, निसन्तान । उ०—रायासाल राजा कै समूंचा पूत बारा । नाश्रोलाद रैगा पांच सातां का पसारा ।—शि.वं.

नाकंद—वि० [फा०ना+कंद:] विना सिखाया हुश्रा श्रशिक्षित, श्रल्हड़ ।

वि०वि०—इस शब्द का प्रयोग प्राय: दो साल से कम उम्र वाले घोड़े के बच्चे के लिए होता है ।

नाक—सं०पु० [सं० नक्रम्] १ सूंघने व सांस लेने की इन्द्रिय, नासा, नासिका (डि.को.) ।

उ०—१ हाजरियो रंभा नै विनां वारी ई टोळ'र ले जावतो श्रर श्रवखै सूं श्रवखो कांम भळावतो पण रंभा कोई दिन नाक में सळ नहीं घाल्यो ।—रातवासो

पर्या०—गंधजांण, गंधवह, गंधहर, ग्रहणगंध, घ्राण, तिलकमग, नासका, सूरतग्रहि ।

मुहा०—(१) नाक ऊंची राखणी—इज्जत बनी रखना, प्रतिष्ठा बनी रखना ।

(२) नाक कटणी—प्रतिष्ठा जाना, इज्जत नष्ट होना ।

(३) नाक कटाणौ— तिष्ठा बिगड़वाना, इज्जत नष्ट करवाना।
(४) नाक कान काटणा—कठोर सजा देना।
(५) नाक काटणौ—प्रतिष्ठा बिगाड़ना, इज्जत नष्ट करना।
(६) नाक घसणौ—बहुत विनती करना, मिन्नत करना, गिड़-गिड़ाना।
(७) नाक घुड़णौ—देखो 'नाक काटणौ'।
(८) नाक चढ़णौ—त्योरी चढ़ना, क्रोध आना।
(९) नाक चढ़ाणौ—क्रोध की आकृति पैदा करना, क्रोध से नथुने फुलाना, क्रोध करना, अरुचि दिखाना, पसन्द न करना, घृणा प्रकट करना, घिन खाना।
(१०) नाक डुबाणौ—अप्रतिष्ठा का कार्य करना, बुरा कार्य करना।
(११) नाक डुबो नै मरणौ—ऐसा बुरा कार्य करना जिससे किसी को मुँह दिखाने योग्य न रहे। ऐसा कार्य करना जिसके कारण आत्महत्या करना बेहतर समझा जाय।
(१२) नाक फाटणौ—बहुत बदबू मालूम होना, असह्य दुर्गन्ध आना।
(१३) नाक बहणौ—देखो 'नाक वैणौ'।
(१४) नाक बींधणौ—देखो 'नाक वींदणौ'
(१५) नाक मातै(माथै)टींचियौ देणौ—बेइज्जती करना, ताना देना।
(१६) नाक मातै ठोकणौ—देखो 'नाक मातै टींचियौ देणौ'।
(१७) नाक मातै देणौ—देखो 'नाक मातै टींचियौ देणौ'।
(१८) नाक मातै माखी बैठणौ—कलंकित होना, एहसानमंद होना, दोषयुक्त होना, त्रुटिपूर्ण होना, खरा न होना।
(१९) नाक में दम करणौ(लाणौ)—बहुत तंग करना, सताना, हैरान करना।
(२०) नाक से बोलणौ—नाक से बोलना, अनुनासिक ध्वनि में बोलना, स्पष्ट न बोलना, बहुत बारीक आवाज में बोलना।
(२१) नाक रगड़णौ—देखो 'नाक घसणौ'।
(२२) नाक राखणौ—प्रतिष्ठा रखना, इज्जत वाला होना, इज्जत बचा लेना।
(२३) नाक री डांडी वळणौ—नाक का बांसा टेढ़ा हो जाना जो मरने का लक्षण समझा जाता है।
(२४) नाक री सीध में—बिना इधर-उधर मुड़े, ठीक सामने।
(२५) नाक रैणौ—प्रतिष्ठा बनी रहना, इज्जत बच जाना।
(२६) नाक वाढ़णौ—देखो 'नाक काटणौ'।
(२७) नाक वींदणौ—नथनी आदि पहनाने के लिए नाक में छेद करना।
(२८) नाक वैणौ—नाक में से कपाल-कोशों का मल निकलना।
(२९) नाक सळ घालणौ—अरुचि प्रकट करना, घृणा प्रकट करना, अनिच्छा प्रकट करना।
(३०) नाक सिकोड़णौ—देखो 'नाक में सळ घालणौ'।
(३१) नाकां छेक—पांवों से लगा कर नाक तक।
अल्पा०—नाकड़लौ, नाकूंडियौ, नाकूंडौ, नाकौ।
मह०—नक, नक्क, नाकीड़।
[सं०] २ स्वर्ग, देवलोक (अ.मा., नां.मा.)
उ०—तौ भी तत्काळ ही ऊठि वाहण बिहूणौ भी नाक री नारियां रा झुंड झुकावतौ निसंक जूटियौ। (वं.भा.)
यौ०—नाकनटी, नाकपति।

नाकड़लौ—देखो 'नाक' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—नाकड़लौ मूमल रौ खांडइयै री धार ज्यौं, हां जी रे, आंखड़ल्यां मूमल री प्याला मद भरया, म्हारी इमरत-भरी मूमल, हालै नी रसीलै रै देस में।—लो.गी.

नाकदर–वि० [फ़ा०ना+अ० क़द्र] १ जिसकी कोई इज्जत या प्रतिष्ठा न हो। ज्यूं—औ तौ बडो नाकदर आदमी है।
२ जो किसी के गुणों का आदर न करे, कद्र न करने वाला।

नाकदरी–सं०स्त्री० [फ़ा०ना+अ० क़द्र+रा०प्र०ई] बेइज्जती, अप्रतिष्ठा।

नाकनटी–सं०स्त्री०यौ० [सं०] स्वर्ग में नाचने वाली अप्सरा (डिं.को.)

नाकपत, नाकपति–सं०पु०यौ० [सं० नाकपति] इन्द्र, देवराज।

नाकफूली–सं०स्त्री० [सं० नक्र+फुल्ल+रा.प्र.ई] स्त्रियों के नाक में धारण करने का एक आभूषण। (व.स.)

नाकबूल–वि० [फ़ा०ना+अ० कबूल] जो स्वीकार न हो, जो मंजूर न हो, अस्वीकृत, नामंजूर।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

नाकबूली–सं०स्त्री० [फ़ा०ना+अ० क़ुबूल+रा०प्र०ई] नामंजूरी, अस्वीकृति।

नाकवा'–सं०पु० [सं० नौकावाह] केवट, खेवैया (अ.मा.)

नाकांम–वि० [फ़ा०ना+काम] जो अपने लक्ष्य पर नहीं पहुँचा हो, जिसका उद्देश्य सिद्ध न हुआ हो, जिसका मनोरथ पूर्ण न हुआ हो।

ना'का—देखो 'नासका' (रू.भे.)

नाकादार—देखो 'नाकेदार' (रू.भे.)

नाकाबंदी–सं०स्त्री० [राज० नाकौ+फा० बंदी] १ किसी रास्ते या प्रवेश-द्वार में जाने की रुकावट।
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
सं०पु०—२ वह सिपाही जो किसी द्वार या रास्ते पर पहरे के लिए खड़ा किया गया हो. ३ चौकीदार, पहरेदार।

नाकाबिल–वि० [फ़ा०ना+अ० क़ाबिल] १ जिसमें काबलीयत न हो, अयोग्य. २ जो शिक्षित न हो, अशिक्षित।

नाकार–वि०—१ कृपण, कजूस (डिं.को.)
२ बुरा, खराब, निकम्मा। उ०—कुटल निपट नाकार, नीच कपट छोडै नहीं। उत्तम करै उपकार, रूठां तूठां राजिया।—किरपारांम

३ देखो 'नकार' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ आवै कोई मांगिवा रे हां, न करै तास नाकार। पर कर ऊपरि कर करै रे हां, भरजै सुजस भंडार।—स्रीपाळ

उ०—२ नडर सधर नरलोभ वैर जूना उघरावै, पारथियां सिधपाळ छतै नाकार न लावै।—पा.प्र.

उ०—३ राख्यो पारेवौ हो लाल, तिण परि सारेवौ हो। सेवक तारेवौ हो लाल, नाकार वारेवौ हो।—वि.कु.

नाकारउ—देखो 'नाकार' (रू.भे.)

उ०—लाजइ नाकारउ नवि करघउ दीक्षा लीधी भाई बहूमांनि रे।
—स.कु.

नाकारणौ, नाकारबौ—क्रि०स० [सं० ना+कार+रा.प्र.णौ] नामंजूर करना, अस्वीकृत करना, मना करना, इन्कार करना।

उ०—१ सो घाय जोधपुर आई, आय भीतर नूं देखणौ करायौ, टीकौ दियौ सो रांमसिंहजी नाकारियौ। घाय नूं कह्यो—काकेजी नूं कहावो, जाळोर छोडौ, पाछै टीकौ लेस्यां।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ ताहरां रिणधीर पागड़ो छाड आयनै सतै रै टीकौ कियौ। रिणमलजी नूं कह्यौ—जो पटौ लेवौ तौ आवौ ताहरां रिणमलजी पटौ नाकार नीसरिया।—नैणसी

उ०—३ जोधां नाकारी जरां, सिर आया खुरसांण। गिर चहुंवळ कळ सालळी, फिर मातौ आरांण।—रा.रू.

नाकारणहार, हारौ (हारी), नाकारणियौ—वि०।

नाकारिओड़ौ, नाकारियोड़ौ, नाकारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

नाकारीजणौ, नाकारीजबौ—कर्म वा०।

नकारणौ, नकारबौ—रू०भे०।

नाकारियोड़ौ—भू०का०कृ०—नामंजूर किया हुआ, अस्वीकृत किया हुआ, मना किया हुआ, इन्कार किया हुआ।

(स्त्री० नाकारियोड़ी)

नाकारौ—देखो 'नकार' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ तद सेखै हरदास ऊहड़ नूं पूछियौ। तद हरदास नाकारौ कियौ।—द.दा.

उ०—२ अव जांणै 'विजौ' विढ़ण विधि जांणै, जांणै नाद वेद गुण जांण। जिकूं हेक भगवांट न जांणै, हेकै नाकारै अणजांण।
—ईसरदास बारहठ

उ०—३ ऊमर कह्यौ—'ढोलाजी! दारू पीवीजै।' ढोलैजी रै नाकारौ करण री आखड़ी है। पछै ढोलांजी दारू अमल पीवण लागा।—ढो.मा.

उ०—४ पछै रांणौ वुलाई तौ उण नाकारौ कियौ। मांणस प्रधांन गया।—नांपै सांखलै री वारता

नाकासण—सं०पु० [सं० नाक+आसन] १ इन्द्र का आसन, इन्द्र का पाट (नां मा.)।

[सं० नाक+असन] २ नाक का मल जो कपाल-कोशों से आता है।

नाकी—सं०पु० [सं० नाकिन्] १ इंद्र, देवराज (अ.मा.)

२ देवता, सुर (अ.मा., डि.को.)

३ देवताओं की एक जाति (अ.मा.)

सं०स्त्री०—४ इज्जत, प्रतिष्ठा, मान।

उ०—१ दंताळां उवेड जाडा भूरा डाढेराव डाकी, पैला मार पांतियां खुराकी खळां पाथ। आप राखी कजाकी आवगी राजा अणी आखी, प्रथीनाथां तणी नाकी भुजां प्रथीनाथ।
—महाराजा मांनसिंह रौ गीत

उ०—२ राखणहारा रहमांण है, निरधारां नाकी।
—केसोदास गाडण

५ मर्यादा. ६ रस्सी, डोरी आदि का वह छोटा फंदा जिसमें किसी वस्तु को फँसाई या अटकाई जा सके. ७ बटन डालने का छेद।

यौ०—नाकी-वोरियौ।

वि०—मान रखने वाला, प्रतिष्ठा रखने वाला।

उ०—ऐराकी मागां किया, सुभट कजाकी सत्य। ऐवाकी साहां 'अमौ', नाकी हिंदु समत्थ।—रा.रू.

नाकीड़—देखो 'नाक' (मह., रू.भे.)

नाकूंडियौ—सं०पु० [सं० नाक कुंडिक] १ गोवत्स के नाक के साथ पहिनाया जाने वाला चन्द्राकार काष्ठ का बना उपकरण विशेष जिससे वह अपनी माता के साथ रहने पर भी दुग्धपान नहीं कर सकता।

[सं० नाक कुंठिक] २ गोवत्स के नाक में होने वाला रोग विशेष।

३ पशु की नाक पर चोट लगने से होने वाला रोग विशेष जिससे उसे सांस लेने में कठिनाई होती है.

४ देखो 'नाक' (अल्पा०, रू०भे०)

नाकूंडौ—देखो 'नाक' (अल्पा०, रू०भे०)

नाकू—सं०पु०—दीमक का बनाया हुआ शिखरनुमा मिट्टी का वमीट, वल्मीक (डि.को.)

नाकेदार—स०पु० [रा० नाकौ+फा० दार] १ नाका-या मुख्य द्वार पर रहने वाला, चौकीदार. २ वह कर्मचारी या अफसर जो प्रायः सीमा के आने-जाने के स्थानों पर किसी प्रकार का कर वसूल करने के निमित्त रहता हो।

वि०—जिसमें नाका या छेद हो।

रू०भे०—नाकादार।

नाके-बंदी—देखो 'नाका-बंदी' (रू.भे.)

नाकेल—देखो 'नकेल' (रू.भे.)

नाकेलियौ, नाकोलियौ—१ देखो 'नकेल' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'नाकौ' (अल्पा., रू.भे.)

नाकौ—सं०पु० [देशज] १ किसी नगर, बस्ती आदि में गमना-गमन

करने के रास्ते का आरंभ-स्थान। उ०—सहर रै नार्क ऊपर फौज रै मांहि जाय डेरो कियो।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ नगर, दुर्ग आदि में गमनागमन करने का स्थान, फाटक, दरवाजा मुहा०—नाको बांधणो, नाको रोकणो—आने-जाने का रास्ता बन्द करना।

३ किसी मार्ग का वह अन्तिम स्थान जहां होकर लोग मुड़ते, घुसते या निकलते हैं।

४ किसी देश, राज्य, प्रान्त आदि का वह सीमावर्ती स्थान जहां पर कर वसूल करने के लिए सिपाही या अफसर रहता हो।

५ वह स्थान या चौकी जहां पर चौकीदार कर वसूल करने कि निमित्त रहता है।

६ साहस, हिम्मत, शक्ति। उ०—हुयग्या हत आसा हकबक सुणि हाको, निरधन धनवाळां नीकळग्यो नाको।—ऊ.का.

७ सूई या सूए का छेद जिसमें डोरा डाला जाता है।

८ रस्सी आदि के छोर पर बना हुआ छेददार स्थान।

९ देखो 'नाक' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—बळती दूसरी इम कहै, इणरा मन में धाको रे। तोरण धायां करै आरती, टीको काढ़ नैं सासू खांचै नाको रे।

—जयवांणी

नाखत—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

नाखत-माळा—देखो 'नक्षत्र-माळा' (रू.भे.)

नाखत्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—थया वृंद नाखत्र कै चंद्र साथै। कना 'सोभियो-सिंभु जिखेस माथै।—रा.रू.

नाखत्र-माळ, नाखत्र-माळा—देखो 'नक्षत्र-माळा' (रू.भे.)

उ०—जूटै इम 'पावू' 'जींद' जंग। नाखत्र-माळ तूटै निहंग।

—पा.प्र.

नाखित्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—उडै घण बांण खतंग अंगार, पड़ै झड़ि नाखित्र जांणि अपार।—वचनिका

नाखित्रमाळ—देखो 'नक्षत्रमाळा' (रू.भे.)

उ०—गड़ां सवावा गणणिया, नाखित्रमाळ निहंग।—वचनिका

नाखून—सं०पु० [फा० नाखुन] नख, नाखून (डि.को.)

नाख्यत्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—हिक नाख्यत्र 'पाल' जनम्म हुम्रो। दखजै कुण नाख्यत्र मींढ़ दुम्रो।—पा.प्र.

नागंद, नागंद्र—सं०पु०यौ० [सं० नाक+इन्द्र] १ इन्द्र, सुरपति।

उ०—ग्रहै खग नागंद कोप गिरंद, मथै सुर असुर जांणि समंद।

—वचनिका

२ देखो 'नागद्रह' (रू.भे.)

उ०—घर खेहां छाई धूहड़िये, खेड़ै चे अस खेड़िया। नर हैवर नागंद्र नरेहर, गैंवर गाडा देख गया।—राव जोधा री गीत

३ देखो 'नागेंद्र' (रू.भे.)

नाग—सं०पु० [सं० नाग] (स्त्री० नागण) १ सर्प, सांप (अ.मा.)

उ०—सखी अमीणो साहिबो, निरभै काळो नाग। सिर राखै मिण सांमध्रम, रीझै सिंधू राग।—वां.दा.

२ कश्यप और कद्रू से उत्पन्न सन्तान।

वि०वि०—पुराणानुसार सृष्टि के आरम्भ में कश्यप और उनकी पत्नी कद्रू से निम्न आठ पुत्र हुए जो अष्टकुली नाग कहलाए—अनंत, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शङ्ख, कुलिक और अपराजित। मतांतर से—अनंत, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शङ्ख तथा कुलिक।

इनके कारण जब त्रैलोक्य में बहुत उपद्रव होने लगे तो ब्रह्मा ने इन्हें शाप दिया कि जनमेजय के नाग यज्ञ में तुम सपरिवार नष्ट हो जाग्रो। मतांतर से ब्रह्मा ने इन्हें कहा कि तुम अपनी माता के शाप से नष्ट हो जाओगे तदनुसार कद्रू ने कुछ नागों को जिन्होंने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया जनमेजय कि यज्ञ में नष्ट होने का शाप दिया। ब्रह्मा के आगे अनुनय करने पर उन्होंने द्रवित होकर इनको पाताल, सुतल और वितल नामक स्थानों या लोकों में भेज दिया।

३ शेष नाग। उ०—१ आग झड़हड़ै डूंडै रमै रण आंगणै, नाग फण नमै करै ससत्र नागा। कठा लग कवादी व्यूह रचना करै, लठा-बन तणा भड़ लड़ण लागा।—कविराजा बांकीदास

उ०—२ छोनि मचक्की भारकै, फन नाग डगाया। चौकै दिग्गज चिक्क रै, उर कल्प भ्रमाया।—वं.भा.

४ सर्प जाति विशेष जिनका ऊपरी शरीर मनुष्याकृति का और नीचे का धड़ सर्प शरीराकृति का होता है।

उ०—नाग देव नर तोहि मनावत, पढ़ि पढ़ि सुयस पार नहिं पावत।

—मे.म.

५ हाथी, गज (डि.को., अ.मा.)

उ०—१ बढ़ावत 'केहरी' केहरि बाग, नखायुध गाजत भाजत नाग।

—मे.म.

उ०—२ आलम सूं मालम थई, विदिसां दिसां विगत्त। असवारी कज आखियो, आंणो नाग उचित्त।—रा.रू.

६ ऐरावत. ७ काजल (अ.मा.)

८ ज्योतिष के चार स्थिर करणों में तीसरे करण का नाम.

९ शरीरस्थ दश प्रकार के वायु में से छठवां वायु जिसके द्वारा डकार आती है. १० सीसा धातु (डि.को.)

११ कालीदह का नाग।—दहै काज जळ डोहि नाग नाथियो निर्भै नर।—पी.ग्रं

१२ एक प्राचीन राज वंश जिसका विवरण महाभारत, पुराणादि ग्रंथो में मिलता है।

वि०वि०—एक प्राचीन राज-वंश जिसका भारत में अस्तित्व महाभारत युद्ध से पूर्व पाया जाता है। महाभारत काल में अनेक नागवंशी राजा विद्यमान थे। नागों की अद्‌भुत लीला व अलौकिक शक्ति संबंधी अवतरण बौद्ध ग्रंथों में तथा राजतरंगिणी में मिलते हैं। इस वंश में कई राजा हुए हैं जिनमें तक्षक, कर्कोटक, धनंजय, मणिनाग आदि प्रसिद्ध गिने जाते हैं। तक्षक के ही वंशज तक्ख, ताक, टक्क, टाक, टांक आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। टाक वंश के राजपूत अभी राजस्थान में मिलते हैं और वे अपने वंश का सीधा सम्बन्ध तक्षक से मिलाते हैं। विष्णु पुराण में नव नागवंशी राजाओं का पद्मावति (पेहोआ ग्वालियर राज्य) कांतिपुरी और मथुरा में राज्य करना लिखा है, *यथा*—'नव नागाः पद्मावत्यां कान्तीपुर्यां मथुराम्' (विष्णु पुराण, अंश ४, अध्याय २४)। इसी प्रकार वायु और ब्रह्माण्ड पुराण में भी नागवंशी नव राजाओं का चंपापुरी और सात का मथुरा में होना बतलाते है, *यथा*—नव नागास्तु मोक्ष्यान्ति पुरी चम्पावती नृपाः मथुरां च पुरीं रम्यां नागा मोक्ष्यंति सप्तवैः ।

(वायु पुराण ९९/३२२ और ब्रह्माण्ड पुराण ३/७४/१९४)

जब सिकंदर भारत आया तो उससे पहले पहल तक्षशिला का नागवंशी राजा ही मिला। उसने सिकन्दर का कई दिनों तक तक्षशिला में आतिथ्य किया और अपने शत्रु पौरव राजा के विरुद्ध चढ़ाई करने में सहायता पहुँचाई ।

इतिहास से पता चलता है कि महाप्रतापी गुप्तवंशी राजाओं ने नागवंशियों को परास्त किया था। प्रयाग के किले के भीतर जो स्तंभ है उस पर स्पष्ट लिखा है कि महाराज समुद्रगुप्त ने गणपति नाग को पराजित किया था।

बाण भट्ट द्वारा रचित हर्ष चरित्र में भी नागवंश के राजा नागसेन का उल्लेख मिलता है। उसने लिखा है कि—'नागकुल जन्मनः सारिका श्रावित मन्त्रस्यासीन्नाशो नागसेनस्य पद्मावत्याम्।'

(हर्ष चरित्र उच्छ्‌वास ६, पृ. १९८)

नागवंशी राजा नागसेन सारिका द्वारा गुप्त भेद प्रकट हो जाने के कारण मारा जाना माना जाता है।

मालवे के परमार राजा भोज के पिता सिंधुराज का विवाह भी नागवंश की राजकन्या शशिप्रभा के साथ होने का उल्लेख मिलता है। नागवंश की कई शाखाएँ थीं। उनमें से टाक या टाक शाखा का छोटा सा राज्य यमुना के तट पर काष्ठा या काठा नगर में विक्रम की १४ वीं और १५ वीं शताब्दी तक था ।

नागवंश का अधिकार प्राचीन काल में राजस्थान के भूभाग पर भी अवश्य रहा होगा, इसके चिन्ह मिलते है। मारवाड़ की प्राचीन राजधानी मंडोवर (जो जोधपुर शहर से लगभग ६ मील दूर है) के आस-पास कुछ ऐसे स्थान मिलते हैं जिनसे सिध्द होता है कि मारवाड़ पर प्राचीन काल में नागवंश का राज्य था, *यथा*—नागकुण्ड और इसी कुण्ड के पास बहने वाली नदी नागादरी नाम से कहलाती है और यहां भाद्रपद वदि ५ को अब भी एक बड़ा मेला लगता है जो 'नागपंचमी का मेला' के नाम से विख्यात है। ऐसा अनुमान है कि यह दिन नागवंश के राजाओं के स्मारक का कोई त्यौहार-दिन होना चाहिए। मतांतर से इसका उल्लेख श्रावण शुक्ला पंचमी माना जाता है और इसका संबंध उस घटना से जोड़ा जाता है जब कश्यप के पुत्रों ने ब्रह्मा से प्रार्थना की थी और यह 'नागपचमी' के नाम से प्रख्यात हो गई। इतना ही नहीं जिस पर्वत पर मंडोवर का किला बना हुआ है उसका नाम भोगी शैल है। 'भोगी' नाग का पर्याय है। भोगी शैल अर्थात् नागों का पहाड़ ।

मारवाड़ का प्रसिध्द नगर नागौर भी नागवंश के राजाओं का बसाया हुआ है। नागौर नगर के भी पर्यायवाची शब्दों में—नागपत्तन, नागपुर, नाग दुरंग, अहिच्छत्रपुर आदि शब्द मिलते हैं। इसी प्रकार कोटा राज्य के शेरगढ़ कस्बे के दरवाजे के पास वि० सं० ८४७ माघ सुदि ६ का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें निम्न चार नागवंशी राजाओं के नाम मिलते हैं, *यथा*—बिंदुनाग, पद्मनाग, सर्वनाग और देवदत्त ।

अब तो राजस्थान में नागवंशियों का कोई खास स्थान नहीं है परन्तु राजस्थान में टाक वंश के राजपूत अब भी हैं।

१३ नागौर नगर का नाम। उ०—१ नाग दुरंग की तरफ फरासूं ने पेसखाना खड़ा किया।—सू.प्र.

उ०—२ नाग दुरंग पति जवन साह दौलत दळ सब्बळ।—सू.प्र.

१४ नाग केसर।

१५ एक प्रकार का स्त्रियों का आभूषण विशेष (व.स.)

१६ आठ की संख्या सूचक शब्द*.

१७ नौ की संख्या सूचक शब्द (डिं.को.)

१८ अश्लेषा नक्षत्र ।

१९ देखो 'नाक' (रू.भे.) (अ मा.)

अल्पा०—नागड़ियो, नागड़ो।

मह०—नागड़, नागेस।

नागउर—देखो 'नागौर' (रू.भे.)

उ०—गंगेवि राइ नागउर गड्ढ़ सांकड़इ घाति भीड़िय सनद्ढ़।
—रा.ज.सी.

नागकंद-सं०पु०यौ० [सं०] हस्तिकंद ।

नागकन्या, नागकिन्या-सं०स्त्री०यौ० [सं० नागकन्या] नाग जाति या वंश की कन्या।

वि०वि०—नागकन्याएं अत्यधिक सुन्दर मानी जाती थीं। (पुराण)

उ०—राजा कहै मोर तो मांहि किसो गुण छै। ताहरा मोर कहै। सुणि राजा हूं थोनूं नागलोक दिखाऊं पिण उर्थ नागकन्या देखिनै ऊभी मतां रहै।—चौबोली

नाग-कुळ-संकेत-सं०पु० [सं० नागकुल-संकेत] नागवंश की विरुदावली।

उ०—एकि गारुड मंत्र जपइ छइं, एकि नागकुळ-संकेत पढ़इं छइं, एकि तोतला कुरकुल्ला।ना मंत्र जांणइं।—व.स.

नाग-केसर, नाग-केसरी–सं० पु० [सं० नागकेसर] एक सीधा सदाबहार सुंदर वृक्ष जो हिमालय के पूर्वी भाग, पूर्वी बंगाल, आसाम, बर्मा, दक्षिण भारत मे बहुतायत से उत्पन्न होता है। इसके सूखे पुष्पों की पंखुड़ियां औषध-प्रयोग में काम आती हैं।

नाग-खंड–सं०पु० [सं०] जंबु द्वीप के अन्तर्गत भारत खण्ड का एक विभाग जहां पर प्राचीनकाल में नागों का राज्य था।

नागड़—१ देखो 'नाग' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'नागो' (मह., रू.भ.)

नागड़ियो, नागड़ो—१ देखो 'नाग' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'नागो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—टांगड़ो भ्रूर लांगां टळै, पड़ै खिसकनै पागड़ो। नागड़ो तोई देखो मिलज, अमल न छोडै आगड़ो।—ऊ का.

नागचंपो–स०पु० [सं० नागचपक] नागचंपा।

नागचूड़–सं०पु० [सं० नागचूड] महादेव, शिव।

नाग-छतरी–सं०स्त्री०यौ० [सं० नाग+छत्र+रा.प्र.ई] बुरी गन्ध वाली एक प्रकार की खुमी, कुकुरमुत्ता।

नागछोर–सं०पु०यौ० [सं० नाग+राज. छोर] एक मादक द्रव्य, अफीम।

नागज–सं०पु० [सं०] सिंदूर (डिं.को.)

उ०—प्रति दिन होत वेद विधि पूजन। घुरियत तत आनघ सिसर घन। धूप दीप नैवेद पुस्प फळ। कस्मीरज मलयज नागज कळ।
—मे.म.

नागजादी–सं०स्त्री० [सं० नाग+फा० जाद+रा०प्र०ई] नागकन्या।

उ०—जोइ गात्र टोळी मळी नागजादी, बढ़े सांप ने सांमळी सूरवादी। अभे जग्गजेटी फरी नीर ऊंडे, काळी नाग सूं आवियो कांन कूंडे।
—ना.द.

नागझाग–सं०पु० [देशज] एक मादक द्रव्य, अफीम (डिं.को.)

नागड–सं०पु० [देशज] एक प्रकार का वाद्य विशेष। उ०—धां धां धपमु मुहर म्रिदंग। चचपट चचपट तालु सुरंग। कधुंगनि धोगनि धुंधा नादि, गाइं नागड दों दों सादि।—विद्याविलास पवाडउ

नागण, नागणि, नागणी–सं०स्त्री० [सं० नागिनी] १ मादा सांप, नागिन (डिं.को.)

उ०—१ अहिल्या रेस दियौ तैं अंग। सरीर कुबज्जा कीध सुचंग। दीधी नळकूबर उत्तम देह। न भांग्यौ नागण नाग सनेह।—ह.र.

उ०—२ सू बंदूकां किण भांत री छै। गंगापार री, सीहनंद समियांणै री, लाहोर री, करनाटक री, फिरंग री घटा री। घणै सोनै रूपै में गरकाब कीवी थकी। नकसदार जांणै गोढियै नागण लांबी कीवी छै।—रा.सा.सं.

उ०—३ सित कुसमां गूंथी सुखद, वेणी सहियां अंद। नागणि जांणै नींसरी, सांपड़ि खीर समंद।—बां.दा.

उ०—४ वरत तणी तूटता गुणी कोहर विचाळै, घणी सूधार निरधार धाई। लागणी संध तद सागणी लाव रै, उठै कर नागणी रूप आई।—बालाबख्स बारहठ (गजूकी)

उ०—५ लागां नागणी जागणी नींद लोपै, अंगां दागणी लागणी भाग ओपै।—वं.भा.

२ कुलटा एवं दुष्ट स्त्री. ३ नाग जाति की स्त्री।

४ पीठ या गरदन पर होने वाली रोयों की लंबी भौंरी (स्त्रियों के लिए अशुभ)।

५ बैल, घोड़ आदि चौपायों की पीठ पर होने वाली एक भौंरी विशेष (अशुभ)।

६ एक प्रकार की तलवार।

रू०भे०—नागिणी।

नागणेच, नागणेचियां, नागणेची–सं०स्त्री० [देशज] राठौड़ों की कुल-देवी, चक्रेश्वरी। उ०—१ परठि नागांणै सझि परेच। निज नाम हुवो जिण नागणेच।—सू.प्र.

उ०—२ वजै माल्हणा मात तूही विराई। वळू तू प्रिथीराज रै राजवाई। पुनः माय गीगाय तुही पुणीजै। भुजाळी तुही नागणेची भणीजै।—मे.म.

नागदमणि, नागदमनी–सं०स्त्री [सं० नागदमनी] १ नागदौने का पौधा जो औषधि में काम आता है। उ०—डंक भरि सके न कोय जुगति जाणै जब जागै। नागदमणि हरि नांव रहै मन के मुख आगै।
—ह.पु.वा.

२ एक प्रकार का आभूषण ?

उ०—रुद्राखमाळा पहिरिणि एक नैं हाथै नागदमनी वांधी छइ।
—व.स.

नागदह, नागदहो, नागदो, नागद्रह–सं०पु० [सं० नागह्रद] १ मेवाड़ में एकलिंगजी के स्थान के समीप का एक जलाशय व जलाशय के समीप का गांव। उ०—एकलिंगजी थी नजीक उदैपुर दिसा कोस १ नागदहो गांव छै, नागदहा गांव रा उगवण नूं वडो तळाव छै, पड़िया साजा घणा देहुरा छै। तिण गांव इणां रा बडेरा रह्या छै।
—नैणसी

२ इस जलाशय के समीप बना हुआ वापा रावल का समाधि-स्थान।

वि०वि०—इस समाधि-स्थान के नाम के अनुसार वापा रावल के वंशजों (गहलोतों) के लिए बोला जाने वाला उपाधिसूचक शब्द।

उ०—नमते निय सेन तणी नागद्रह, भारथ भू भड़ विरती भीर। पग किम रावत परठै पाछा, जड़िया परियां तणा जंजीर।
—रावत रतनसिंह चूंडावत सीसोदिया री गीत

३ इस नाम से प्रसिध्द ब्राह्मण जाति का व्यक्ति जो इस स्थान से निकले हुए माने जाते हैं।

४ भारत के एक प्राचीन प्रदेश का नाम (व.स.)

५ वृंदावन के पास यमुना नदी का वह स्थान जहां कालो नाग रहता था।

रू०भे०—नागद्, नागंद्र, नागद्रहो, नागद्रैह, नागध्रह, नागध्रहो, नागंद्र, नाग्रद्रह, नागद्रहो, नाग्रंद्र।

नागद्रही-सं०स्त्री० [सं० नाग+हृद+रा.प्र.ई] वृंदावन के पास यमुना नदी का वह स्थान जहां काली नाग रहता था ।

उ०—तिण कोट री खाही ऊंडी द्रह नागद्रही सारीखी । पळ छैल पताळ री जड़ां सूं लागिनै रही छै ।—रा.सा.सं.

नागद्रहौ, नागद्रेह—देखो 'नागद्रह' (रू.भे.)

उ०—नेतबंध तो सूं नागद्रहा, जोधे नह झालियौ जुध । हाथां तूझ समर 'हांमूं' हर, कटारी भीत करियौ कमुध ।

नागद्वीप-सं०पु० [सं०] (जंबूद्वीप के) भारतखण्ड के नौ भागों में से एक । (पौराणिक)

नागधर-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव ।

नागध्रह, नागध्रहौ—देखो 'नागद्रह' (रू.भे.)

उ०—जांगड़ा झड़ा सत्र वीर सर गवीजै, ताप पड़ कांगड़ा लंक ताई । यर गढ़ां सांगड़ा वयण आयौ उग्रज, नागध्रह सांगड़ा वीर नाई ।

—बद्रीदास खिड़ियौ

नागनाथ-सं०पु० [सं०] १ जोगियों के रावल जाति के आदि पुरुष. २ नाग को नाथने वाले, श्रीकृष्ण । उ०—नरहर नागनाथ नारायण, गोव्यंद गोप्रिय गोपवर । धराधीस धांनंख गिरधारी, कमळाकंत सकमळकर ।—र.ज.प्र.

नागपंचमी-सं०स्त्री० [सं०] श्रावण शुक्ला पंचमी (कहीं-कहीं भाद्रपद कृष्णा पंचमी) का पर्व । इस तिथि को भारत में प्रायः सर्वत्र नागों की पूजा की जाती है ।

रू० भे०—नागपांचम ।

नागपति-सं०पु० [सं०] १ सर्पराज वासुकी. २ ऐरावत हाथी ।

नागपतिफेण-सं०पु० [सं० नागपति फेन] एक मादक द्रव्य, अफीम । (डि.को.)

नागपांचम—देखो 'नागपंचमी' (रू.भे.)

नागपा'ड़-सं०पु० [सं० नाग+पाषाण] अजमेर के पास अरावली पहाड़ का हिस्सा जहां से लूनी नदी निकलती है ।

रू०भे०—नागवाड़ ।

नागपास-सं०स्त्री० [सं० नागपाश] वरुण का शत्रुओं को बांधने का एक अस्त्र या फन्दा ।

नागपुत्री-सं०स्त्री० [सं०] नागकन्या । उ०—जपै नागपुत्री खत्रि रूप जोती । महाभद्र जाती तणी कांन मोती । पणां सांमळी गात्र पीरा पिछोरा । कणा ऊपरां नंग ओपै कंदोरा ।—ना.द.

नागपुर-सं०पु० [सं०] राजस्थान के नागौर नामक कस्बे का नाम ।

उ०—१ पह खानजादा पाछटै । इळ नागपुर गढ़ आछटै ।

—सू.प्र.

उ०—२ सतरै संमत त्रिहोतरै, उज्ज्वळ ओज प्रकास । तजियै 'इंदै' नागपुर, सांवण हदै मास ।—रा.रू.

२ मध्य भारत का एक नगर. ३ नागलोक ।

उ०—इंद्रपुर ब्रह्मपुर नागपुर शिवपुर परमपुर, तांई ऊपरि पार । राजा सरग सातमैं 'रतनौ', मिळियौ जोत सरूप मझार ।—दूदौ

नागपुरी-सं०स्त्री० [सं०] १ एक नागों की पुरी जो पाताल में है, भोगवती (डि.को.)

२ देखो 'नागपुर' (अल्पा., रू.भे.)

नागपोलरी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

उ०—ऊपरि एकाउळिहार, सरिसु मोती तणुहार, झूमणा तणा झमकार, कंठी कनकमय पदकड़ी महाविगन्यानि जड़ि नाग-पोलरी अनि निगोदरी प्रमुख पीटली, साहित घूघरी इसु सासु तणु सणगार ।

—व.स.

नागफणी-सं०स्त्री [सं० नाग+फन+रा.प्र.ई] १ थूहर की जाति का बिना टहनियों वाला एक पौधा विशेष जिसके कांटे विषैले होते हैं ।

२ एक प्रकार का शाक विशेष । उ०—नेत्र निहाळी नीलूह, नलिनी नागरवेलि । नही नवीनीं नींछारडी, नागफणी गुण-गेलि ।

—मा.कां.प्र.

नागफांस—देखो 'नागपास' (रू.भे.)

नागफूली-सं०स्त्री० [सं० नाग+फुल्ल] स्त्रियों का एक आभूषण विशेष (व.स.)

उ०—हांस नागहथ सांकळां, नागफूली भमरी जेह । गांठीमा नइ घळी गोमती, दीपइ सारी तेह ।—नळ-दवदंती रास

नागफेण-सं०पु० [सं० नाग+फेन] एक मादक द्रव्य, अफीम (डि.को.)

नागबला [सं०] एक प्रकार का वृक्ष विशेष । उ०—नेतु निगुंडि निरंजनी, नाळफेर नारिंग । नागबला निरविसि नखो, निकुली निरमळ संग ।

—मा.कां.प्र.

नागबाई-सं०स्त्री०—चारण-कुलोत्पन्न एक देवी का नाम ।

रू०भे०—नागवी, नागाई ।

नागबेच-सं०पु० [देशज] बढ़ई द्वारा काष्ठ में बनाया जाने वाला एक प्रकार का छेद विशेष ।

नागबेणी-सं०स्त्री०—एक देवी का नाम ।

नाकभगिनी-सं०स्त्री० [सं०] सर्पराज वासुकि की बहिन ।

नागभाखा-सं०स्त्री० [सं० नाग+भाषा] एक भाषा । उ०—जिसकी साख प्रथम भाखा संसक्रत सो तौ अनुभूति प्रत्य सारस्वत सो पाई । दूसरी नागभाखा सो नागपिंगळ सो आई ।—सू.प्र.

नागभुवण-सं०पु० [सं० नागभवन] नागलोक, पाताल ।

नागम-सं०पु० [फा० ना+अ० गम] १ अज्ञानावस्था.

२ छुट्टी, अवकाश । उ०—चंचळ चपळा सी चितवन चिरताळी । निरणै निगमागम नागम निरताळी । मादा मरजादा जादा मदमस्ती । बेली अलवेली छैली छदमस्ती ।—ऊ.का.

नागमरोड़-सं०पु० [देशज] 'धोबी पछाड़' से मिलता-जुलता कुश्ती का एक पेच जिसमें जोड़ को अपनी गर्दन के ऊपर से या कमर पर से एक हाथ से घसीटते हुए गिराते हैं ।

नागमाता-सं०स्त्री० [सं०] १ नागों की मां कद्रू ।

२ सुरसा ।

नागमुख-सं०स्त्री० [सं०] गजानन, गणेश ।

नागरंग-सं०पु०—नारंगी (डि.को.)

नागर-सं०पु० [सं०] १ सभ्य, शिष्ट और चतुर व्यक्ति ।

उ०—१ महाबळ सागर मेह मुदार, उजागर नागर नेह उदार ।
—ऊ.का.

उ०—२ अज भेक उजागर नर खर नागर । गुण सागर गूजंदा है ।
—ऊ.का.

२ स्वामी, मालिक । उ०—गौतम सुता तास सुत नागर, धीरज सुचितां ध्यावै । प्रभु वैमुख जिण री रिपु प्राणी, ताह न कदै सतावै
—र.रू.

३ ईश्वर, प्रभु । उ०—चिंता हर नागर चिंता नह चीन्ही, करुणा-सागर भी करुणा नह कीन्ही ।—ऊ.का.

४ नगर में रहने वाला मनुष्य ।

५ नागरमोथा ।

६ सोंठ (अ.मा., डि.को.)

७ गुजरात में रहने वाले ब्राह्मणों की एक जाति (रा.रू.)

सं०स्त्री०—८ पनिहारी । उ०—वेरा वैरागर सागर सम सोभा । रीती गागर ले नागर तिय रोभा । धावै द्रग धारा दारा मुख धोवै । जीवन संजीवन जीवन घन जोवै ।—ऊ.का.

९ देखो 'नागरी' (रू.भे.)

वि०—१ चतुर, निपुण, पटु (डि.को.)

उ०—१ धवळ हरे धवळ दियै जस धवळित, घण नागर देखै सघण । सकुसळ सबळ सदळ सिरि सांमळ, पुहप वूंद लागी पड़ण ।
—वेलि

उ०—२ ऊंडै जळ में ले चल्यौ, गजकूं विकटौ ग्राह । तब ततकार संभारियौ, राधा नागर नाह ।—गजउद्धार

२ नगर में रहने वाला. ३ नगर सम्बन्धी ।

नागरता-सं०स्त्री० [सं०] १ चतुराई, निपुणता ।

२ शिष्टता, व्यवहारकुशलता. ३ नागरिकता, शहरीपन ।

नागरबल-सं०स्त्री० [सं० नागवल्ली] पान की वेल, तांबूल (डि.को.)

उ०—दूजा दोवड़-चौवड़ा, ऊंट कटाळउ-खांण । जिण मुखि नागर-बेलियां, सो करहउ केकांण ।—ढो.मा.

रू०भे०—नागरवेलि, नागरवेली, नागरवेल, नागरवेलि, नागरवेली ।

अल्पा०—नागरवेलड़ी, नागरवेलड़ी ।

नागरबेलड़ी—देखो 'नागरवेल' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ जिण मुखि नागरबेलड़ी, करहउ एह सुरंग । मांगळोर बाड़ी चरइ, पांणी पीवइ गंग ।—ढो.मा.

उ०—२ नागजी नागरवेलड़ी रे वैरी पसरै पण फूलै नहीं ओ नागजी ।—लो.गी.

नागरबेलि, नागरवेली—देखो 'नागरवेल' (रू.भे.)

उ०—करता विस्वंभर कसरांका कांई । नागरवेली दळ निरफळ फळ नाहीं । दाता घर दाळद भुगतै हठ भाया । मूंजी मिनखां नै सूंपै सठ माया ।—ऊ.का.

नागरमुस्ता, नागरमोथा-सं०पु० [सं० नागरमुस्ता] एक प्रकार की घास या तृण जिसकी जड़ें सूत में फँसी हुई गांठों के समान होती हैं और सुगंधित होती हैं । वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कसैला, ठंडा और ज्वर, पित्त, अतिसार, अरुचि, तृषा और दाह को दूर करने वाला माना जाता है ।

नागरवेल—देखो 'नागरवेल' (रू.भे.) (उ.र.)

नागरवेलड़ी—देखो 'नागरवेल' (अल्पा., रू.भे.)

नागरवेलि, नागरवेली—देखो 'नागरवेल' (रू.भे.)

उ०—१ करहा नीरूं जड़ चरइ, कंटाळउ नइ फोग । नागरवेलि किहां लहइ, थारा थोवड़ जोग ।—ढो.मा.

उ०—२ ढोलउ मारू एकठा, करइ कतूहळ-केळि । जांणै चंदन-रूंखड़इ, विळगी नागर-वेलि ।—ढो.मा.

उ०—३ नेत्र निहाळी निलूइ, नलिनी नागरवेलि । नहीं नवीनी नींछारडी, नागफणि गुण गेलि ।—मा.कां.प्र.

नागराइ, नागराज, नागराव-सं०पु० [सं० नागराज] १ शेषनाग
(डि.को.)

उ०—नागपासह नागपासह बंध छोडिवि । इंद्राइसि पंडवह नागराइ निजराजु दिद्धऊ । हारु समोपीउ नरवरह सतीय रेसि अनुकमळु लिद्धऊ ।—पं.पं.च.

२ सर्पराज वासुकि जिसका रंग श्वेत माना जाता है. ३ सर्पों में बड़ा सांप. ४ हाथियों में बड़ा हाथी. ५ ऐरावत ।

वि०—१ श्वेत, सफेद* (डि.को.)

२ काला, श्याम* (डि.को.)

नागरिक-सं०पु० [सं०] शहर का रहने वाला व्यक्ति, नगर-निवासी ।

वि०—१ चतुर, सभ्य. २ नगर का. ३ नगर-सम्बन्धी.

४ नगर में रहने वाला, शहराती ।

नागरी-सं०स्त्री० [सं०] १ भारत की प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी आदि लिखी जाती हैं. २ नगर में रहने वाली स्त्री, शहर-निवासिनी. ३ चतुर स्त्री.

रू०भे०—नागर ।

४ कपट से भरी चालाक स्त्री, धूर्त्त स्त्री ।

उ०—अग मरकट मनमीन, नाव नागरी नयण नट । देख हुवै अै दीन, अस 'जेहल' वगसे इसा ।—वां.दा.

५ देखो 'नगरी' (रू.भे.)

उ०—सज्जन प्रीत लगाइकै, दूर देस मत जाव । वसो हमारी नागरी, हम मांगै तुम खाव ।—अज्ञात

नाग री मासी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का जंतु ।

नागलता-सं०स्त्री० [सं०] १ पान की वेल (अ.मा.)

उ०—संजुत वसत वांण रस सोवां। नागलता मघई पत्र नोवां।
—सू.प्र.

नागला—एक प्रकार का आभूषण विशेष (व.स.)

नागलोक-सं०पु० [सं०] पाताल (डि.नां.मा., डि.को.)

उ०—१ नागलोक नरलोक की, नंह सुरलोक समाय। जेथ तेथ प्रांणी जळै, लालच हूंदी लाय।—बां.दा.

उ०—२ अराहै सराहै घणूं अव्वलोके, रुघो नागलोकां तणो राज-लोके। इसी भागणी कोण जे कूख जायो, हिंडोरो घलायो घरै हुल्लरायो।—ना.द.

नागवंस-सं०पु० [सं० नागवंश] १ नागों की कुल-परम्परा, एक प्राचीन राजवंश।

नागवसी-वि० [सं० नागवंशिन्] नागों के वंश या कुल का।

नागवट-सं०पु० [दर्शाप] एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—सिलहटी कपूरीयां चउकपडीयां पोतिमां वक्रकोटां, नागवटां सारनाळां खासटां अगिहिल।—व.स.

नागवल्लरी-सं०पु०स्त्री० [सं०] पान, ताम्बूल।

नागवल्ली-सं०स्त्री० [सं०] पान की वेल (डि.को.)

रू०भे०—नागवेल।

नागवाड़—देखो 'नागपा'ड़' (रू.भे.)

उ०—१ इम चली फौज मघ मारघाड़। ऊजळी नदी मिळ नागवाड़।
—पे.रू.

उ०—२ वयण साचा करण गजां घड़ विभाड़ण, सरण जण अभं राखण सदाई। पधारो नागवाड़ां तणा पहाड़ां, दिली रा पहाड़ां तणा दाई।—महाराजा अजीतसिंह री गीत

ना-गवार-वि० [फा०] जो अच्छा न लगे, असह्य, अप्रिय।

नागवी—देखो 'नाग-वाई' (रू.भे.)

उ०—आगं फुखग्री हूंक, तो जिसो हूतो अिपट। सांप्रत कीन्हो सेख, नाच नचायो नागवी।—पा.प्र.

नागवीथी-सं०स्त्री० [सं०] शुक्र-ग्रह की चाल में वह मार्ग जो स्वाती, भरणी और कृतिका नक्षत्रों में हो।

नागवेल—देखो 'नागवल्ली' (रू.भे.)

नाग-सुद्धि-स०स्त्री०यौ० [सं० नागशुद्धि] नवीन भवन बनाने में नींव लगाते समय नाग की स्थिति का विचार।

वि०वि०—फलित ज्योतिष के अनुसार मीन, मेष और वृषभ की सूर्य संक्रांति में नागों का मुख पश्चिम दिशा में तथा मस्तक उत्तर दिशा में; मिथुन, कर्क और सिंह की सूर्य-संक्रांति में नागों का मुख उत्तर में तथा मस्तक पूर्व में; कन्या, तुला और वृश्चिक की सूर्य संक्रांति में नागों का मुख पूर्व में तथा मस्तक दक्षिण में; धन, मकर और कुंभ की सूर्य संक्रांति में नागों का मुख दक्षिण में तथा मस्तक पश्चिम में रहता है।

सर्व प्रथम नींव खोदते समय यदि नाग के मस्तक पर खात-मुहूर्त्त हुआ तो घर के मालिक तथा उसके माता-पिता का नाश होगा और यदि पीठ पर खात-मुहूर्त्त हुआ तो धन की हानि तथा भय रहेगा और यदि नाग की कुक्षि पर खात-मुहूर्त हुआ तो सर्व प्रकार से मंगलकारक होगा।

नाग के मुख की ओर भवन का द्वार रखना निषेध समझा जाता है।

नागहारी-वि० [सं०] सर्पों का हार धारण करने वाला।

सं०पु०—रुद्र, महादेव।

उ०—नागहारी मोहा संच्चै, वैताळ समोह नच्चे। महाकाळ होहा तच्चै कोहा मच्चै, मींच।—हुकमीचंद खिड़ियो

नागांण-सं०पु० [सं० नाग+रा०प्र० आंण] १ हाथी, गज (डि.नां.मा.)
२ राजस्थान का एक प्रसिद्ध कस्बा, नागोर।

उ०—घण सघण घांम चहुं तरफ घेर, दुरग थी काढ़ियो आस देर। लड़ एण तरह नागांण लीध, दड़बांण बंध वन पटै दीध।—वि.सं.

नागांणण-सं०पु० [सं० नागानन] हाथी जैसे मुंह वाला, गणेश।

रू०भे०—नागाणण।

नागांणराइ, नागांणराय-सं०स्त्री० [राज० नागांण+सं० राज] राठौड़ों की कुलदेवी, नागणेची। उ०—सिहांण चढ़ै करनी सहाय, राखजै पीठ नागांणराय। सुपियार तणां सायब सधीर, प्रन पाळ करण नव लाख वीर।—पा.प्र.

नागांणो—देखो 'नागांण' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—सीयाळै खाटू भली, ऊनाळै अजमेर। नागांणो नित-नित भलो, सांवण बीकानेर।—अज्ञात

नागांतक-सं०पु० [सं०] १ रावण का एक पुत्र (रा.रा.)
२ गरुड़, खगेश (डि.नां.मा.) ३ सिंह।

नागांपति-सं०पु० [सं० नागपति] १ शिव, महादेव (डि.नां.मा.)
२ शेषनाग. ३ ऐरावत।

नागा-सं०स्त्री० [अ० नागः अथवा सं० लंघा] १ हमेशा या नियत समय पर होने वाले कार्य का किसी दिन अथवा नियत समय पर होने वाली कार्य-परम्परा का भंग, अंतर, बीच।

उ०—देवीदास रै ठाकुरां रै दरसण री प्रतिग्या सो सहर सूं बाहिर अधकोस देहरो तठै स्री लिखमीनाथजी विराजै सो देवीदास नित दरसण करवा नै जावै। पइसो एक भेंट रो चढ़ावै। यूं करतां घणा बरस वितीत हुवा। सांची प्रीत सूं दरसण करै। कदेई नागा न घालै। पहल दरसण करि, भेंट करि, पछै भोजन करै।
—पलक दरियाव री बात

२ अनुपस्थिति, गैरहाजिरी।

ज्यूं—छोरा! थानै स्कूल री नागा नी करणी चाईजै। आज मैं नोकरी माथै ग्यो कोयनी, नागा करली।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

रू०भे०—नाघा।

३ एक जंगली जाति जो आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसती है।

४ दादूपंथी सम्प्रदाय में साधुओं की वेष संबंधी चार संज्ञाओं में से एक जो महात्मा दादू के शिष्य सुन्दरदासजी की छठी पीढ़ी में होने वाले महात्मा केवलरामजी के शिष्यों द्वारा चलाई गई थी ।

वि०वि०—इस संज्ञा के साधु शरीर पर कम से कम वस्त्र धारण करते हैं। केवल एक कोपीन ही धारण करते हैं और शरीर पर भस्मी लगाते हैं इसी से इनका नाम नागा पड़ा । इन साधुओं की यह विशेषता है कि ये समूह के रूप में रहते हैं जिसे जमात कहते हैं। ये जमातें पहले घुम्मकड़ होती थीं। जमातें बड़ी लड़ाकू होती हैं । इनके पास शस्त्र भी होते हैं । इन जमातों ने कई बार जयपुर राज्य की रक्षार्थ लड़ाइयां भी लड़ी थीं। बाद में जयपुर राज्य के शासकों की इच्छा पर ये जमातें राज्य के विभिन्न भागों में रक्षा के लिए स्थायी रूप से रख ली गई थीं। वहां पर इनके अखाड़े बन गए जो आज भी स्थाई रूप से हैं ।

नागों की जमातें संवत् १८०० से संवत् १९३० तक राज्य की सहायक रूप में रहीं और बाद में अंग्रेजी शासन काल में इन जमातों के नागे दादू पंथियों को राज्य के रेवेन्यू कर को वसूल करने के लिए एक जिम्मेदार कार्यकर्त्ता के रूप में लगाया गया। संवत् १९३२ से १९९४ तक ये जमातें इस कार्य को करती रहीं। बाद में अंग्रेज अफसरों के नियुक्त हो जाने के कारण नाजिम शिवप्रसाद के षड़यंत्र से संवत् १९९५ में इन जमातों का २०० वर्षों से चला आने वाला राज्य का चिर सम्बन्ध विच्छिन्न कर दिया गया ।

राज्याश्रय के हटने पर भी ये जमातें अभी तक उसी रूप में स्थापित हैं और परम्परा के अनुसार चल रही हैं। इन जमातों में कई शूरवीर, मल्ल, त्यागी, महात्मा, भजनीक, परोपकारी, विद्वान्, कवि एवं संगीतज्ञ भी हुए हैं ।

नागाई-सं०स्त्री० [देशज] १ शरारत, ऊधम, नटखटी, उद्दण्डता २ बुरी वृत्ति, खोटाई ।

उ०—वैन ! थारी नागाई हद है । मार'र रोवण-ई को देवैनी ।
—वरसगांठ

३ देखो 'नागबाई' (रू.भे.)

उ०—नयण तूं नागाई कव्वा नूर । जयत मंगळा तूं जरूर ।
—रामदान लाळस

नागाणंद-सं०पु० [सं० नग्न:+आनंद] शिव, महादेव (डिं.नां.मा.)

नागाणण—देखो 'नागाणण' (रू.भे.)

उ०—सिभू गवरि सुतनं वीरण डसण मेक लंबोदर । सिद्धि वुद्धि सुप्रसन सुग्यांन नागाणण तुम्यो नमो ।—रा.रा.

नागारजण, नागारजुण, नागारजुंन-सं०पु० [सं० नागार्जुन] एक प्रसिद्ध बौद्ध महात्मा जो चिकित्सक भी थे ।

नागारो—१ देखो 'नगारो' (रू.भे.)

२ देखो 'नक्कारो' (रू.भे.)

उ०—परवांणो पाछा बुलावण रो बादसाह रो आयो तद नागारो करायो । सवारी बाहिर चलती कीवी ।—जलाल वूबना री वात

नागासन-सं०पु० [सं० नागाशन] १ गरुड़, खगेश. २ मयूर, मोर. ३ सिंह, शेर ।

नागास्त्र-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र विशेष ।

उ०—नागास्त्र, गुरुडास्त्र, संवर्त्तकास्त्र, मेघास्त्र, प्रळयकाळास्त्र, रिक्षास्त्र, आग्नेयास्त्र, वारुणास्त्र, दांनवास्त्र, माहेंद्रास्त्र, तिमिरास्त्र, डिंभककगास्त्र, नारायणास्त्र, अस्वग्रीवास्त्र, ब्रह्मास्त्र, मेघास्त्र इति अस्त्रांणि ।—व.स.

नागिंद, नागिंद्र—देखो 'नागेंद्र' (रू.भे.)

उ०—१ कटि सिंघ नितंब जंघा कदळी, चित नित्त प्रवित्त मराळ चली । तन रंभह खंभ कनंक तिसी, ओपै सिरि नागिंद वेणि इसी ।
—वचनिका

उ०—२ साख साख मिळि भाख लाख लाखीक लसक्कर । ज्यारि ज्यारि चक्क नव-खंड हिले फोजां गज डंबर । कसमस्सै कोरंम सेस नागिंद्र सळस्सळि, सात समंद्र गिर आठ तांम घर मेर टळट्टळि ।
—वचनिका

उ०—३ घर सारी पड़ि धाक, पुर तर कीजे पहट । हैकंप उर नागिंद्र हुअ, चक्र च्यारू चढ़ि चाक ।—वचनिका

उ०—४ जांनी एक अनेक जोवतां, नर सुर वडा वडा नागिंद्र । वहइ सुपहि बोलता वडावडि, आया जुडे अठारह इंद्र ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—५ जगदीस अछइ माहे वड जांनी, आछइ ब्रह्म तइ आछइ इंद्र । सुर किन्नर नागिंद्र निरखतां, नव-खंड रा आछइ नरिंद्र ।
—महादेव पारवती री वेलि

नागिणी—देखो 'नागण' (रू.भे.)

उ०—वदन चुंबि म वानर वाघिणी, करु म घालिसि नीलज नागिणी । ववनि सिंइ विसन्नेलि न घुंटिइ, गुरुड पाख नखे नवि खुंटियइ ।
—विराट पर्व

नागींद, नागींद्र—देखो 'नागेंद्र' (रू.भे.)

उ०—पुड सातइ धूजिय पवंग पाइ । नागींद नाचि नौबित निहाइ ।
—रा.ज.सी.

नागी-वि० [सं० नग्न] १ जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, वस्त्र-हीना, नग्ना । उ०—इसी म्हारी लंबी सीरख कोयनी, थे जांणो ई हो । आगै जाय'र मनै मिळै तो खाली पंदरै रुपट्टी ही है । नागी क्या धोवै क्या निचोवै ?—वरसगांठ

२ कुलटा, व्यभिचारिणी । उ०—हुसियो जग आसक हुए, वसियो खोवण वीत । रसियो नागी रांड सूं, फसियो होण फजीत ।
—बां.दा.

३ विना शर्म वाली, निर्लज्जा । उ०—च्यारू खांण चतुर लख जाती, भूख सबन के लागी । देवत दांनव मांनव मोनी, कोइयन छोडया इण नागी ।—स्रो सुखरांमजी महाराज

४ जिस पर किसी प्रकार का आवरण न हो, निरावरणा ।

ज्यूं—नागी तरवार।

नागीगायत्री-सं०स्त्री० [सं०] एक वैदिक छंद जिसके प्रथम दो चरणों में नो नो वर्ण होते हैं और तीसरे चरण में केवल छः वर्ण होते हैं। इस प्रकार कुल २४ वर्ण होते हैं।

नागीणो-सं०पु०—राजस्थान का एक कस्बा, नागोर।

उ०—सुण सुण रे नागोण रा तेली, घांणी काढ़ो केसर नै किस्तूरी। मांयै घालो जायफळ नै जांवतरी, औ तेल नवल वना रै अंग चढ़सी —लो.गी.

नागु—देखो 'नागो' (रू.भे.)

उ०—जे पासा थई नि हरावु ते अह्मो छूं, माहाराज। नागु देखी तूंहनि अह्मो मोद पाम्यां आज।—नळाख्यांन

नागुड़-सं०पु० [देशज] नक्कारची के साथ रहने वाला व्यक्ति।

उ०—दूत दाळिद्द काटुक भट्ट पुत्र नट विट भट्ट नगारिय नागुड मुखमांगळिक।—व.स.

नागेंद्र, नागेंदु, नागेंद्र-सं०पु० [सं० नागेन्द्र] १ सर्पराज वासुकि जिनका रंग श्वेत माना जाता है।

२ शेषनाग। उ०—नीसासइ नगेंद्रवर, पड फाटइ पाताळ। मेरु टळइ अवनी जळइ, सूर सकइ नहि झाळ।—मा.कां.प्र.

३ बड़ा सर्प। उ०—१ हिंदू मुस्सळमांण खड़ा दीवांण विचाळै। किया दीप सम क्रांत कंवर नागेंद्र काळै।—रा.रू.

उ०—२ जांम 'अजन' जांणियो, महामन सोच विचारै। दुसह जवन देखवा, सुतन करवा पर सारै। आ व्रती किम आदरूं, कुंवर कोमळ आकती। विण हूर अरि पाळणी, कुसळ राखणी धरत्ती। मन दुसह दुहुं विध माहरै, असह वार लगो इसो। मुख लियां कठण नागेंद्र मनु, जग सदोख मूसक जिसो।—सू.प्र.

४ ऐरावत. ५ बड़ा हाथी. ६ महादेव, शिव।

रू०भे०—नागंद, नागंद्र, नागिंद, नागिंद्र, नागींद, नागींद्र, नाग्रंद।

नागेस-सं०पु० [सं० नागेश] १ शेषनाग। उ०—१ गोपाळ गोव्यंद खगेस-गांमी। नागेस सज्या क्रत सैननांमी।—र.ज.प्र.

उ०—२ जपै नर नार उभै कर जोड़। करै सुर सेव तेतीसूं कोड़। नागेस नरेस सुरेस मुनेस। आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह.र.

२ सर्पराज वासुकि।

३ लक्ष्मण। उ०—अजूं लायणा वैण सीता लगाए। धरै बांण कोमंड नागेस धाए।—सू.प्र.

४ ऐरावत।

५ देखो 'नाग' (मह., रू.भे.)

नागेसर, नागेस्वर-सं०पु० [सं० नागेश्वर] १ शेषनाग.

२ सर्पराज वासुकि. ३ ऐरावत. ४ नागकेसर।

५ देखो 'नाग' (मह., रू.भे.)

६ देखो 'नागो' (मह., रू.भे.)

नागोद-सं०पु० [सं०] १ उदर पर धारण करने का कवच, उदरत्राण (डिं.को.)

२ अस्त्रों के आघात से बचने के लिए सीने पर धारण करने का कवच विशेष, सीनबंद।

उ०—महावीर पाड़ै पछाड़ै मईंदां, गहै दंत रोकै मदाळा गइंदां। सजै ओपरा टोप सोभा सिघाळी, जिकै भीड़ियां दस नागोद जाळी।

—वं.भा.

नागोर-सं०पु०—राजस्थान का एक प्रसिद्ध कस्बा।

रू०भे०—नागउर।

नागोरण-सं०स्त्री० [देशज] दक्षिण और पश्चिम के मध्य से चलने वाली वायु (शेखावाटी)।

वि०वि०—यह वायु वर्षा को रोकती है अतः श्रावण और भाद्रपद में इसे 'नाड़ा टांकण' (देखो 'नाड़ा टांकण') कहते हैं और अशुभ मानी जाती है किन्तु आश्विन मास में यह फसल के पकने में सहायक होती है इसलिए लाभप्रद होती है। चूंकि नागोर शेखावाटी के दक्षिण पश्चिम में स्थित है और वह वायु भी उधर ही से चलती है इसलिए इसे शेखावाटी वाले नागोरण कहते हैं।

वि०स्त्री०—नागोर की, नागोर-संबंधी।

रू०भे०—नागोरण।

नागोरपटी, नागोरपट्टी-सं०स्त्री०—१ नागोर प्रान्त।

२ नागोर कस्बे के आस-पास का भू-भाग।

उ०—आंण वसी नागोर री, पटी सरब पासीह। आय थई जायल तणी, सारी चोरासीह।—पा.प्र.

रू०भे०—नागोरपटी, नागोरपट्टी।

नागोरियो, नागोरचो—देखो 'नागोरी' (अल्पा., रू.भे.)

नागोरियो, नागोरघो—देखो 'नागोरी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—दूध दही म्हारै कूकर खावै, अन्न रा भरया भखारा। बीकांणै रा मदवा गाजै, बैल बड़ा नागोरघा।—लो.गी.

नागोरी-वि०—नागोर का, नागोर-संबंधी।

सं०पु०—१ नागोर का बैल जो उत्तम माना जाता है।

२ देसवाळी मुसलमानों के एक भेद का नागोर में प्रचलित नाम।

रू०भे०—नागोरी।

अल्पा०—नागोरियो, नागोरघो।

नागोरीगहणो, नागोरीगैं'णो-सं०पु० [राज. नागोरी+सं० ग्रहण धारन करना] हथकड़ी। उ०—जे हाथ उठायो हाकै नं, नगोरीगहणो जड़ दांला। जे पग धर दीनां सेठां घर, तो पगां पांगळी कर दांला।

—चेतमांनखा

रू०भे०—नागोरी गहणो, नागोरी गैं'णो।

नागो-वि० [सं० नग्न] (स्त्री० नागी) १ जिसके शरीर पर कोई कपड़ा न हो, वस्त्रहीन, विवस्त्र, नंगा। उ०—नागो गयो निरधार, लागो रह्यो न तेण रै। लेगो वीसळ लार, माया सांग्री मोतिया।

—रायसिंह सांदू

२ चालाक, धूर्त, लुच्चा।

३ जबरदस्त, लड़ाकू। उ०—अथवा देव पितर कहै रे लाल, कोई बळवंत थाय सुविचारी रे। कोई गुरु-जन्म मोटको रे लाल, नागो अड़ै कोई आय सुविचारी रे।—जयवांणी

४ निर्लज्ज, बेशर्म। उ०—नागो ह्वै नाचै वणक, मांग्यौ सूंपै माल। अदभुत ठागो जात इण, लागो लोभ कमाल।—बां.दा.

५ जो किसी प्रकार ढका हुआ न हो, जिस पर किसी प्रकार का आवरण न हो, निरावरण।

ज्यं—नागी तरवार, नागी पीठ, नागा पग, नागो भाखर।

उ०—१ जांणै बल्लभ जीवणौ, कायर नांणै कोह। लोपै सांकळ लोह री, लख रण नागो लोह।—बां.दा.

उ०—२ भूका पोसणहार ग्रूं, ज्यूं जग कमळाकंत। नागां ढांकणहार इम, जिम तरवरां वसंत।—बां.दा.

उ०—३ सो राजा सुणतां ही आप नागै पगां क्षिप्रा-तट गयो।

—सिंघासण-बत्तीसी

सं०पु०—१ शैव साधुओं के सम्प्रदाय का वह व्यक्ति जो नंगा रहता है।

२ आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसने वाली 'नागा' जाति का व्यक्ति।

३ गुरु नानक साहिब के पुत्र श्रीचंदजी को अपना गुरु मानने वाले उदासी साधुओं के सम्प्रदाय का साधु जिसे इल्म कम होता है. नंगा रहता है, शिर पर जटा रखता है और बदन पर राख मलता है।

४ नाथ सम्प्रदाय का वह व्यक्ति जो विवाह नहीं करता है।

५ 'दसनांमी' सम्प्रदाय के अंतर्गत विवाह नहीं करने वाला व्यक्ति।

६ दादू पंथियों की नागा शाखा का व्यक्ति।

रू०भे०—नगो, नागु।

अल्पा०—नागड़ियो, नागड़ो।

मह०—नागड़।

नागो-तड़ंग—वि०यौ०—जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, बिल्कुल नग्न, नंग-धड़ंग।

नागोद्रहो—देखो 'नागद्रहो' (रू.भे.)

उ०—नेत बंधो नागोद्रहो, मेवाड़ो मसंदजी। (गु. रु. बं.)

नागो-बूचो—वि०यौ० [सं० नग्न+व्युच्छः] १ कुटुम्बहीन, अकेला.

२ नंग-धड़ंग।

नागो-भूंगो, नागो-भूगो—वि०यौ० [सं० नग्न+बुभुक्षित] १ दरिद्र, कंगाल, निर्धन।

२ नंग-धड़ंग।

नागोर—देखो 'नागोर' (रू.भे.)

नागोरण—देखो 'नागोरण' (रू.भे.)

नागोरपटी, नागोरपट्टी—देखो 'नागोरपटी' (रू.भे.)

नागोरी—देखो 'नागोरी' (रू.भे.)

नागोरीगहणो, नागोरीगंणो—देखो 'नागोरीगहणो' (रू.भे.)

नागोरौ—वि०—नागोर का, नागोर-सम्बन्धी।

नाग्रंद—१ देखो 'नागद्रह' (रू.भे.)

२ देखो 'नागेंद्र' (रू.भे.)

नाग्रह, नाग्रहो—देखो 'नागद्रह' (रू.भे.)

नाघा—देखो 'नागा' (रू.भे.)

उ०—दूध मण एक रोजीनां री प्रोहित नूं मेल देवै, खाड़ूकरां नूं कहि देयजे नाघा कदै नहीं करै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

नाड़—सं०स्त्री० [सं० नाडिः, नाडी] १ ग्रीवा, गरदन (डि.को.)

उ०—१ दोस नहीं थारा में दोसत, दोस तिहारी दाई नै। नाळा साथै नाड़ न काटी, धाई रांड वधाई नै।—ऊ.का.

(मि० 'नस' (४)

मुहा०—१ नाड़ नीची करणी—शर्मिंदा होना। २ नीची नाड़ करणी—नीचे की ओर देखना, शर्मिन्दा होना।

रू०भे०—नार

अल्पा०—नाड़को।

२ देखो 'नाड़ी' (रू.भे.)

उ०—नाड़ां निसर गई, आंतड़ा चैंठा ऊंडा।—ऊ.का.

मुहा०—१ नाड़ चढ़णी—दौड़ने या तनाव खिंचाव आदि के कारण शरीर के किसी अंग की नस का अपना स्थान छोड़ देना या बल खा जाना जिससे दर्द होता है।

२ नाड़ां खोळी करणी—खूब पीटना।

नाड़ां खोळी (ढीली) पड़णी—वृद्धावस्था आना, कमजोर होना, अशक्त होना।

नाड़कियो—देखो 'नाड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

नाड़को—१ देखो 'नाड़ी' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'नाड़' (१) (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

नाड़ा-टांकण—सं०स्त्री० [देशज] आषाढ़ और श्रावण मास में दक्षिण और पश्चिम के मध्य से चलने वाली वायु का नाम जो वर्षा का अवरोध करती है अतः अशुभ मानी जाती है।

वि०वि०—चूंकि आषाढ़ और श्रावण मास में इस वायु के चलने के कारण वर्षा नहीं होती है इसलिए हल का सामान (नाड़े आदि) जो किसान द्वारा जोतने के लिए तैयार किया हुआ होता है पुनः टांग दिया जाता है इसीलिए इस वायु को 'नाड़ा टांकण' की संज्ञा दी गई है।

(मि० नागोरण)

नाड़ाळी—सं०स्त्री०—१ बैलगाड़ी के अग्र भाग में डाली हुई वह कीली जिसके सहारे रस्सा अटका कर जुआ बांधा जाता है।

२ चमड़े का मजबूत रस्सा जिससे हरीसा की हाल भूंसर बांधते हैं।

नाड़ि—देखो 'नाड़ी' (रू.भे.)

उ०—घिरी घर ग्रीधरण चीलह अघाय। अंत्रावळि नाड़ि नखां उळभाय। माळा उड़ जोत लसी सुरगाग। चसी रण आगण जोत चराग।—मे.म.

नाड़िव्रण—देखो 'नाड़ीव्रण' (रू.भे.)

नाड़ी-सं०स्त्री० [सं० नाडिः, नाडी] १ धमनी, रग, नस (डिं.को.)

उ०—बिगड़ी किसमत री पारायण वाचै। नाड़ी नाड़ी में नारायण नाचै।—ऊ.का.

२ हठयोग के अनुसार ज्ञानवाहिनी (इडा, पिंगला और सुषुम्ना) शक्तिवाहिनी और श्वास-प्रश्वासवाहिनी नलियां।

३ नौ की संख्या (डिं.को.)

४ चमड़े की वह रस्सी जिससे हल की ह रिस्सा पर जुआ कसा जाता है।

५ हाथी की अम्मारी कसने का मोटा रस्सा विशेष।

उ०—आराम वाड़ियां छक उपाट। घण भीड़ नाड़िया चंद घाट।

—सू.प्र.

६ वर-वधू की गणना बैठाने में कल्पित चक्रों में स्थित नक्षत्र-समूह।

७ देखो 'नाड़' (रू.भे.)

रू०भे०—नड़, नाड़ी, नाड़ि, नारी।

अल्पा०—नाड़की।

नाड़ीचक्र-सं०पु० [सं० नाडीचक्र] १ नक्षत्रों के उन भेदों को सूचित करने वाला कोष्ठ या चक्र जिन्हें नाड़ी कहते हैं। (फलित ज्योतिष)

२ एक कल्पित अंडाकार गांठ जो सभी नाड़ियों का केन्द्र है और इसका स्थान नाभि देश में माना गया है। (हठयोग)

नाड़ीजत, नाड़ीजोत-वि० [देशज] मजबूत, दृढ़।

नाड़ीतोड़-वि० [देशज] शक्तिशाली, बलवान। उ०—बाज हजारी बाळ में, नाड़ीतोड़ निहंग। धठ कच्छी खंधार रा, रजै कबूतर रंग।

—महादांन महडू

रू०भे०—नाडीओड।

नाड़ीधमण-सं०पु० [सं० नाडि-धमः नाडी-धमः] स्वर्णकार, सुनार।

(डिं.को.)

नाड़ीव्रण-सं०पु० [सं०] घाव, फोड़े आदि में दूर तक गया हुआ नली का सा छेद जिससे मवाद निकलता रहता है और यह जल्दी ठीक नहीं होता है, नासूर (अमरत)।

रू०भे०—नाड़िव्रण

नाड़ीनक्षत्र-सं०पु० [सं०] वर वधू की गणना बैठाने के लिए कल्पित चक्रों में स्थित नक्षत्र।

नाड़ो-सं०पु० [सं० नाडिः, नाडी] १ वह डोरी जिससे अधोवस्त्र बांधा जाता है, इजारबंद, नीवी। उ०—१ जांमो विराजै धरमी रै केसर्यो, पांच मोहर गज-पाग ओ। सूथण विराजै धरमी रै केसरी, नाड़ो लाल-गुलाल ओ।—लो.गी.

उ०—२ लोई ओढ़ण नै साड़ो लूमाळो। फूटर लटकंतो नाड़ो फूंदाळो। पावां पचडोरी पगरखियां पैरे। सूरत सिंघण सी वन जगळ बैरे।—ऊ.का.

मुहा०—१ नाड़ा छूट करणो—पेशाब करना।

२ नाड़ा छोड—पेशाव, मूत्र।

३ नाड़ा छोड करणो—देखो 'नाड़ा छूट करणो'।

२ चमड़े का छोटा रस्सा जिससे हल की हरिस्सा पर भूंसर बांधा जाता है।

३ देखो 'नाळो' (१) (रू.भे.)

उ०—दोस नहीं थारा में दोसत, दोस तिहारी दाई नै। नाड़ा साथै नाड़ न काटी, घाई रांड बधाई नैं।—ऊ.का.

रू०भे०—नारो।

अल्पा०—नाड़कियो।

नाच-सं०पु० [सं० नृत्य] संगीत के ताल और गति अनुसार अथवा उमंग व उल्लास के कारण हाथ-पांव हिलाने, उछलने-कूदने आदि का व्यापार, नृत्य। उ०—१ इण परि सांमिणि बूझवी, बोली बहु विद्रु ति। नाच मनावी घरि गई, हीयडइ हरख धरंति।

—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ वस प्रांणी सब करम रै, करम सु प्रेरणहार। नाच नचावै त्यां नचै, ज्यां पुतळी खेलार।—रा.रू.

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

यौ०—नाच-कूद।

नाचक-वि० [सं०] नाचने वाला। उ०—वारै आपो आपरै, नाचक-नाचंता।—द.दा.

नाच कूद-सं०पु०यौ०—नृत्य, तमाशा।

मुहा०—नाच-कूद करणो—अपने गुणों का बखान करना, डींग हांकना, क्रोध करना।

नाचघर-सं०पु० [सं० नृत्य+गृह] नृत्यशाला।

नाचण-वि०स्त्री० [सं० नर्तकी] १ नृत्य करने वाली, नर्तकी।

२ कुलटा, वेशर्म।

ज्यूं—जा ए रांड नाचण, देखी थनै।

उ०—नाचण खायगी रे घी को मालपुओ।—लो.गी.

३ वेश्या। उ०—तरै बूंदी रै मैंणै दूडी नाचण री घर थो तठै नूं जायगा दिखाई।—नैणसी

रू०भे०—नंचणी, नाचणि, नाचणी, नाचिण, नाचेली।

नाचणि, नाचणी—देखो 'नाचण' (रू.भे.)

उ०—जिम जिम नाचणि तरळ रंगि, लोयणु लहकावइ। तिम तिम मांणस कवण मात्र, सुर सग्गह आवइ।—प्राचीन फागु-संग्रह

नाचणो-वि० [सं० नृत्य] (स्त्री० नाचणी) नाचने वाला।
उ०—आछो रे नाच्यो नाचणा, थारै नाचण में पड़ग्यो फेर।
—लो गी.
सं०पु०—नृत्य, नाच। उ०—कळाबातु सागतां जरी रा लुंबझुंबां किया, संगीत नाचणा भाव परी रा सारीख। आक रा झालियां पाव तुरी रा साबता ऊठै, अढ़ाई खुरी रा घाव छुरी रा आरीख।
—जवानजी आढ़ौ

नाचणौ, नाचबौ-क्रि०अ० [सं० नृत] १ ताल-स्वर के अनुसार और संगीत के मेल से अंग-प्रत्यग को हिलाना, हाव-भावपूर्ण उछलना, कूदना, नृत्य करना, थिरकना।
उ०—सुजळ गिनांन मजन तन सारिस, धम-क्रम जप-तप नेम बधारिस। चरण पवित्र करिस इम चत्रभुज, त्रिगुणनाथ नाचै आगळ तुझ।—ह.र.
२ हृदयोल्लास, हर्ष, जोश अथवा मन की उमंग के कारण स्थिर न रह सकना, अगो को गति देना, उछलना, कूदना।
उ०—हुलंब काच तो देह को नाचतो हदोहद, साचतो राग बागां सजीलो। आज री वार 'संभमाल' घन आचतो, नाचतो दियौ गुल-दार नीलो।—महादांन महड़ू
३ कांपना, थर्राना।
४ किसी वस्तु का फिरना, घूमना, भ्रमण करना, चक्कर मारना।
ज्यूं—लट्टू रो नाचणो।
मुहा०—माथा माथै नाचणौ—समीप होना, पास होना, निकट होना।
५ क्रोध के कारण चंचल होना, उद्विग्न होना, बिगड़ना।
६ किसी कार्य के लिए इधर-उधर घूमना, प्रयत्न या उद्योग में फिरना, स्थिर न रहना, दौड़-धूप करना, कार्यसिद्धि के लिए चंचल होना। उ०—नाचै लाज निवार नित, बांका जाण बनोक। जग में भटकै स्वांन जिम, लोभ तणौ बस लोक।—बां.दा.
नाचणहार, हारो (हारी), नाचणियो—वि०।
नचवाड़णो, नचवाड़बो, नचवाणो, नचवाबो, नचवावणो, नचवावबो—प्रे०रू०।
नचाड़णो, नचाड़बो, नचाणो. नचाबो, नचावणो, नचावबो—क्रि०स०
नाचिओड़ो, नाचियोड़ो, नाच्योड़ो—भू०का०कृ०।
नाचीजणो, नाचीजबो—भाव वा०।
नचणो, नचबो, नच्चणो, नच्चबो—रू०भे०।

नाचमहल-सं०पु०यौ० [सं० नृत्य+अ० महल] नाचघर, नृत्यशाला।

नाचरंग-सं०पु० [सं० नृत्य+फा० या सं० रंग] हँसी-खुशी, आमोद-प्रमोद, उत्सव।
क्रि०स०—करणौ, होणौ।

नाचवणौ, नाचवबो-क्रि०स० [सं० नृत] नचाना।
उ०—पावहियो करै गिरनारपत, नाचवियो घर घर तिको। खरा र वेंचि मेहर किय, माग 'पाळ' हेकणमुखो।—पा.प्र.

नाचवियोड़ो-भू०का०कृ०—नचाया हुआ।
(स्त्री० नाचवियोडी)

नाचिकेता-सं०पु० [सं०] १ एक ऋषि का न म.
२ पावक, अग्नि।

नाचिण—देखो 'नाचण' (रू.भे.)
उ०—तितरै विजै पिण कटारी वाही। चोर मारि नांखियो। तितरै नाचिण बोली हाइ हाइ कह्यो हूं ऊबरूं! कह्यो तुनुं वळै राखि नै कांई करिस्यां। ताहरां नाचिण नुं ही मारी।—चोबोली

नाचियोड़ो-भू०का०कृ०—१ ताल-स्वर के अनुसार और संगीत के मेल से अंग-प्रत्यंग को हिलाया हुआ, हावभावपूर्ण उछला हुआ, कूदा हुआ. २ हृदयोल्लास, हर्ष, जोश अथवा मन की उमंग के कारण उछला हुआ, कूदा हुआ, अंगों को गति दिया हुआ, नाचा हुआ. ३ कांपा हुआ, थर्राया हुआ. ४ किसी वस्तु का फिरा हुआ, घूमा हुआ, भ्रमण किया हुआ, चक्कर मारा हुआ।
५ क्रोध के कारण चंचल हुवा हुआ, उद्विग्न हुवा हुआ, बिगड़ा हुआ।
६ किसी कार्य के लिए इधर-उधर घूमा हुआ, प्रयत्न या उद्योग में फिरा हुआ, स्थिर न रहा हुआ, दौड़-धूप किया हुआ, कार्यसिद्धि के लिए चंचल हुवा हुआ।
(स्त्री० नाचियोड़ी)

नाचीज-वि० [फा० नाचीज] निकृष्ट, तुच्छ।

नाचेली-वि०स्त्री० [सं नृत्य+रा.प्र. एली १ नृत्य करने वाली, नाचने वाली।
उ०—उभै रूप धारायणी साचेली जेहांन आखै, तारायणी सिला-धू नाचेली नरत्याद। पारायणी प्रवाडां आचेली दछा दैण पातां, नारायणी रूप नमो काचेली अनाद।—नवलजी लाळस
२ देखो 'नाचण' (रू.भे.)

नाछत्री-वि०—क्षत्रियत्वहीन।

नाज-स०पु० [फा० नाज] १ गर्व, घमण्ड. २ स्वाभिमान.
३ नखरा, ठसक, चोचला.
४ देखो 'अनाज' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—१ चारण एम बोल्यो आप सारी वात जोगा। पांणी नाज छोड्यां नै अठारा जांम होगा।—शि.वं.
उ०—२ विण ग्रहणै दीजै मत व्याज। निस्चै वरस नै राखै नाज।
—घ.व.ग्रं.

नाजक—देखो 'नाजुक' (रू.भे.)
उ०—१ लागां कुसुम सरीस वप, ज्यां रै पड़ै खरोट। हद नाजक हिरणाखियां, है मांझल हमरोट।—बां.दा.
उ०—२ घरा नै पधारो विदेसीड़ा, छोटी सी नाजक धण रा पीव। यो सांवणियो उमड़ रह्यो छै, हरि नै सोहै छै दिस दिस सीव।
—रसीलैराज

उ०—३ नाजक नवली नारि, भली नखरां भरी। लहलहाय लफ जाय, लता मनु लवंग री।—सिववक्स पाल्हावत

नाजकड़ो—देखो 'नाजुक' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—लोड़ियै वीरै नाजकड़ी सी नार, मिरगानयणी, महल चढ़ती सुंदर वा डरै जी म्हारा राज।—लो.गी.

(स्त्री० नाजकड़ी)

नाजकता—देखो 'नाजुकता' (रू.भे.)

उ०—जिण अंग जावक सूंघा रो ही भार है। इण नाजकता रो किसो पार है।—र. हमीर

नाजम-सं०पु० [अ० नाज़िम] वह प्रधान कर्मचारी या शासक जिसकी नियुक्ति बादशाह द्वारा देश के किसी भाग की व्यवस्था करने के लिए की जाती थी।

वि०—प्रबन्ध करने वाला, इन्तजाम करने वाला, व्यवस्थापक।

नाजर-सं०पु० [अ० नाज़िर] एक प्रकार का सरकारी कर।

वि०—१ हींजड़ा, खोजा, नपुंसक।

उ०—हुरमां राखै अंतरै, उड़दावेगण दुंद। हाजर खिजमत कारणै, मुख नाजर हुसमंद।—रा.रू.

२ जो रण्डियों के यहां दलाल का काम करे।

रू०भे०—नाजिर, नादर, नादार, नादिर।

अल्पा०—नाजरियो।

नाजरियो—देखो 'नाजर' (अल्पा.रू.भे.)

नाजिर-सं०पु० [अ० नाज़िर] १ किसी कार्यालय या अदालत में लेखकों का अफसर, प्रधान लेखक. २ देखभाल करने वाला, निरीक्षक।

३ देखो 'नाजर' (रू.भे.)

वि०—देखने वाला, दर्शक।

नाजुक-वि० [फा० नाज़ुक] १ सुकुमार, कोमल।

उ०—मावड़िया अग मोलिया, नाजुक अंग निराट। गुपत रहै ऊमर गर्म, खाय न निजबळ खाट।—बां.दा.

२ अनिष्ट या हानि की सम्भावना वाला, जिसमें अनिष्ट या हानि की आशंका हो।

ज्यूं—मांमलो बडो नाजुक है।

ज्यूं—टैम बडो नाजुक है।

ज्यूं—भगवांन रो भरोसो है, दसा बडी नाजुक है।

३ महीन, बारीक, पतला. ४ सूक्ष्म, गूढ़. ५ अपरिपक्व, कोमल।

उ०—पांणी री पिणियारियां ए सुणज्यो म्हारी वात, सुंदरी म्हारी मारवण कोई म्हांनै द्यो ओळखाय। म्हैं तो आयो उण रै काज म्हारो नाजुक जीव घबराय।—लो.गी.

५ थोड़ी सी असावधानी, आघात या धक्के से जिसके टूटने-फूटने का डर हो, जो जरा सी असावधानी से नष्ट हो जाय।

ज्यूं—माटी रै ठीकरां जैड़ी नाजुक चीजां रो तो रेलगाडी में टूटण रो डर वण्यो रहै।

रू०भे०—नाजक।

अल्पा०—नाजकड़ो, नाजुकड़ो।

नाजुकड़ो—देखो 'नाजुक' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ महंदी चूंटी-चूंटी नाजुकड़ी सी नार, पेम-रस महदी राचणी।—लो.गी.

उ०—२ रिमझिम करती पांणीड़े नै चाली, कूंजां विच में कूंजड़ली। पणघट ऊपर ऊमा मारूजी, देख लिजायी नाजुकड़ी। जेठांणी नै भर दियो, दोरांणी नै भर दियो वा ऊभी देखै नाजुकड़ी।—लो.गी.

उ०—३ पेटहली मूमल रो पीपळियै रो पांन ज्यूं, हां जी रे, हिवड़ो नै मूमल रो सच्चै ढाळियो, म्हारी नाजुकड़ी ए मूमल, हालै नो ले चालू रसीलै रै देस में।—लो.गी.

उ०—४ हिय रो तजियो हार, तन तजियो तोरै लियै। नाजुकड़ी सो नार, जोगण करगो जेठवा।—जेठवा

(स्त्री० नाजुकड़ी)

नाजुकता-सं०स्त्री० [फा० नाजुक+रा०प्र०ता] सुकुमारता, कोमलता।

रू०भे०—नाजकता।

नाजुक-दिमाग-वि०यौ० [फा० नाजुक+अ० दिमाग] १ घमण्डी, अभिमानी. २ जो थोड़ी-सी बात में क्रोधित हो जाय, जरा सी बात से जो उत्तेजित हो उठे, चिड़चिड़ा।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

नाजुक-दिमागी-सं०स्त्री०यौ० [फा० नाजुक+अ० दिमाग+रा०प्र०ई]

१ चिड़चिड़ापन. २ घमण्ड, अभिमान।

क्रि०प्र०—उतारणी, राखणी, होणी।

नाजुक-बदन-वि०यौ० [फा० नाजुक बदन] १ जिसका शरीर कोमल और सुकुमारता. २. दुबला-पतला।

नाजुक-बदनी-सं०स्त्री०यौ०[फा० नाजुक बदन+रा०प्र०ई] १ कोमलता, सुकुमारता. २ दुबलापन, कृशता।

नाजुक-मिजाज-वि०यौ० [फा० नाजुक+अ० मिज़ाज] १ जो जल्दी चिढ़ता हो, जल्दी बिगड़ने वाला, चिड़चिड़ा।

२ जो जरा-सा भी कष्ट नहीं सह सके, सुकुमार, कोमल।

३ घमण्डी, अभिमानी।

क्रि०प्र०—होणी।

नाजुक-मिजाजी-सं०स्त्री०यौ० [फा० नाजुक+अ० मिज़ाज+रा.प्र.ई]

१ चिड़चिड़ापन. २ सुकुमारता, कोमलता।

३ घमण्ड, अभिमान।

क्रि०प्र०—होणी।

मुहा०—नाजुक-मिजाजी उतारणी—किसी को दण्ड देकर अभिमान दूर करना।

नाजोग, नाजोगो-वि० [फा० ना+सं० योग्य] अयोग्य।

नाजोर-वि०यौ० [फा० ना+ज़ोर] निर्बल, शक्तिहीन।

नाजोरी-सं०स्त्री०यौ० [फा० ना+ज़ोर+रा.प्र.ई] अशक्तता, कमजोरी, निर्बलता।

नाजोरौ—देखो 'नाजोर' (अल्पा., रू.भे.)

नाट-सं०पु०—[देशज] १ निषेधसूचक शब्द, नहीं, इन्कार।
उ०—फैलै फिरंगांण करारी फौजां, आफळती मारी अवियाट। धारी 'मान' भुजां छत्रधारी, राजां री सारी रजवाट। जिण री जग साखी जोधपुरौ, नह दाखी करवा जुध नाट। खत्रियां री आखी खेडेचा, खवां भली राखी खत्रवाट।—नाथूराम लाळस
मुहा०—नाट मारणी, नाट वाळणी—इन्कार करना, मना करना। किसी बात पर अड़ कर बैठ जाना।
[सं०] २ नृत्य, नाच। उ०—नाट चिरत फिरता रिख नारिद, गिरिद तणइ प्राहुणा गया। चलणे ऊठि लागा हेमाचळ, मंन सूघे जांणी घणी मया।—महादेव पारवती री वेलि
३ दीपक राग मतान्तर से मेघ राग का पुत्र, एक राग जिसमें वीर रस गाया जाता है।
४ देखो 'नट' (रू.भे.)
१ उ०—विकल थयु इम विलखतु, बहितु ऊवट घाट। कइ राउलि ? कइ रन्नि छउं ? निरति न जांणइ नाट।—मा.कां.प्र.
उ०—२ चोर चरड नइ चाडीया, गांठी छोडा गाहाट। वाटपाडा नइ फांसिया, नाडीत्रोडा नाट।—मा.कां.प्र.

नाटईउं-सं०पु० [देशज] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
उ०—अंतर दीसइ एवडू, पटउलउं कछोटी रे ? अंतर दीसइ एवडू, जेवडउ पासा नइत्रोटी रे। किहां नाटईउं नइ किहां फाली ! किहां रूपवत नइ हाली रे ? किहां राजकुमर किहां माळी ! किहां कोडोआ मोती जाळी रे।—नळ-दवदंती रास

नाटक-सं०पु० [सं०] १ वह दृश्य जिसमें स्वांग के द्वारा चरित्र घटनाएँ आदि दिखाई जांय, रंगमंच पर हावभावयुक्त प्रदर्शन, अभिनय।
उ०—१ घाठ पुहर नित पूजा करइ, ईडे ध्वजा वस्त्र फरहरइ। वळतइ वारि हुइ नितु जात्र, नाटक नित्य नचावइ पात्र।
—कां.दे.प्र.
उ०—२ च्यारि गति मांहि प्रांणी भमिउ। नव नव वेसे नाटक रमिउ।—नळ दवदती रास
उ०—३ बलि बाकुल क्रिया दिकपाळ पूजिया, नाटक पेखणां करावीयां।—व.स.
२ ७२ कलाओं में से एक।
३ अभिनय या नाट्य करने वाला नट।
उ०—१ चउद रत्न, नव-निधांन, सोळ सहस्र यक्षेस्वर, ३२ सहस्र नरवर, ३६ सहस्र कुळांगना, ३२ सहस्र वारांगना, ३२ भेद भिन्न बत्रीस सहस्र नाटक छन्नव्वय पाला पायक।—व.स.
उ०—२ स्री स्रीपाळ नरेसर तिणि समै रे, दीघौ नाटक नौ आदेस रे। नाटक व्रिंद बुलावौ माहरौ रे, जोवै सहु नरनारि नरेस रे।
—स्रीपाळ
४ नाच, नृत्य (डिं.को.)
उ०—१ चौळ रुधर मद पियै सचाळी, विकट करै नाटक विकराळी।
—सू.प्र.
उ०—२ मधुर गीत नाटक करइ, भलां छइ वाजित्र। अपूरव ठांम रहिवा तणा, चित्रांम सुंदर विचित्र।—नळ-दवदंती रास
५ अद्भुत लीला, आश्चर्यजनक क्रीड़ा।
उ०—क्रपण वराटक पावियां, नाटक करै निलज्ज। सूण जाचक खाटक करै, सव दिन फाटक सज्ज।—बां.दा.
६ स्वांग के द्वारा दिखाए जाने वाले चरित्र का ग्रन्थ या काव्य अभिनय-ग्रन्थ।
रू०भे०—नाटिक, नाठक, नाडय।

नाटकणी, नाटकिणी-सं०स्त्री० [सं० नाटक+रा०प्र०णी] नाट्य या अभिनय करने वाली स्त्री। उ०—१ जणणी वाप स्रवणे दूहो सुणो रे, कुमरी नाचंती नयणे दीठ रे। नाटकणी थइ ए सुरसुंदरी रे, स्युं कीधौ ए दैवे धीठ रे।—स्रीपाळ
उ०—२ नाटकिणी पेठी ते नाचिवा रे, जोवा मिळिया रांणो-रांण रे। दूहो एक कहाय तिण अवसरे रे, मनमोहन मुखे मधुरी वांण रे।
—स्रीपाळ

नाटकसाळा-सं०स्त्री० [सं० नाटकशाला] वह स्थान जहां नाटक किया जाता हो, नाट्यशाला।

नाटकी-सं०पु० [सं० नाटक+रा०प्र०ई] १ नाटक करने वाला। नाटक करके जीवनयापन करने वाला।

नाटणौ, नाटबौ—देखो 'नटणौ, नटबौ' (रू.भे.)
उ०—सिवू यूं सुणी जणा पीठ फेर कही मियां तूं क्या कहो ? हां उण कही फकीर साहिब कुछ नहीं कही तुम तो जावो। सिवौ कहो ना क्यूं तूनै कुछ तो कही ? तद फेर उवै नाटिया। तौ सिवौ फिर कर कन्है बैठ गयो।—महाराजा जयसिंह आमेर रै घणी री वारता
२ देखो 'न्हाठणौ, न्हाठबौ' (रू.भे.)

नाटरंभ—देखो 'नाटारंभ' (रू.भे.)

नाट वसत-सं०पु० [सं०] एक राग।

नाटवाळ-वि० [देशज] कृपण, सूम, कंजूस (डिं.को.)

नाटसळ नाटसल्ल, नाटसाळ-वि० [सं० नष्ट्रि-शल्य] १ खटकने वाला, शल्य रूप से रहने वाला। उ०—१ लाखां सरस पूजवण लोहै, सरसां सूं सरसौ सहल। हू भांमी 'रांमा' भारी हथ, सम्रां न रहियो नाटसळ।—पदमा सांदू
उ०—२ सारीख रिप्पमणिमत्थ सिग्घ। बगगड़ी बक्क मनि सोख-स्निग्घ। सूत 'अम्मर' सतां उरि नाटसल्ल। मच्छराइतइ चडियउ सहसमल्ल।—रा.ज.सी.
उ०—३ निवौ सेवाळोत साख राठोड। घिणला रौ धणी। लाखां रौ लोडाऊ। रूळियारां रौ जोड......सयणां रौ सेहरौ, दुसमणां रौ नाटसाळ वडो भोकाइत।
—वीरमदे सोनिगरा री वात

२ वीर, योद्धा।

उ०—पातसाहां सूं आडो, कंवारी घडा री लाडो अड़ संग्रांम री नाटसाळ। चक्रवतां जिसड़ी चाल।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ बलवान, शक्तिशाली (डिं.को.)

सं०पु०—भय, आतंक। उ०—सीह घणां रै नाटसळ, हियै रहै थिर होय। सीह हिया में नाटसळ, कळ सुणियो नह कोय।—बां.दा.

रू०भे०—नटसल, नटसल्ल, नटसाल।

नाटारंभ, नाटारंभि-सं०पु० [सं० नाटच+आरंभ] नृत्य, नाच।

उ०—१ ऊपनो अमूल खांण, खेंगडूयै खुरासांण। ऐराको पखै असंभ, रमै मांडै नाटारंभ।

—गु.रू.बं.

उ० २—चागिड़ि गिड़िदा वागड़ि गिड़िदा थागिड़िदा अचंभ। नृत-कार, ततकार, थेईकार नाचै नभै रमै लखपती आगै नट नाटारंभ।

—ल.पि.

उ०—३ मह्रा भुजंगेसनाथ समाथ खंडियो मांण, खंभ ठौर भराय तंडियो जैत-खंभ। दंडियो अदंड नीर उचाटां मिटाय डहै, रंजे मित्र फुणाटां मंडियो नाटारंभ।—र.ज.प्र.

उ०—४ चांपळउ तुरी दीपवक चवख, नाटारभि नाचइ खूत नवख। खाफरां खड्ग वाहण सखुद्द, रिणि किसन चडिय भांजण रउद्द।

—रा.ज.सी.

रू०भे०—नटारंभ, नाटरंभ।

नाटिक—देखो 'नाटक' (रू.भे.)

उ०—मंगित जणां री घणी आसीस लेकरि, करह, केकांण, सोना सावटू रुपइया, महुरां घणी दे, चीत्रोड़ि री मेघ कहाइ अर घणा महोच्छव सेती गीत, वादित्र, नाटिक, मंगळाचार करि, दुलह-दुल-हणि रा सोहळा गाईजता बीकानेर पधारिया छै।

—दळपत विलास

नाटिकाख्यायिकावरसण-सं०पु० [सं० नाटिकाख्यायिकदर्शन] १ नाटक देखने दिखाने का कार्य। २ ६४ कलाओं में से एक।

नाटी-वि०[देशज] १ जबरदस्त, बलवान। उ०—'करन'हरो पड़ 'केहरी', नाटी गोकळदास। भंडारी आयां परब, रायांचंद सहास।—रा.रू.

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष। उ०—गढ़ गजी, सवागजी, चुगजी, पंटणी, पटपाटू, पंचवरण छींट. नीलवटां, चकवटां धौंतवटां, मुहिवटां, नाटी, दोटी, धठी, कठ-पीट, पाघड़ी, बींडो, रेट चूनड़ी, पातळ-साड़ी।

—व.स.

नाटेसर-सं०पु० [सं० नटेश्वर] १ विष्णु। उ०—जंघा पवित्र करिस हूं जटधर, नृत करतो आगळ नाटेसर। इंद्रियां पवित्र करिस अप्रंप्रम, दमे गिनांन तूझ दयतां-दम।—ह.र.

२ श्रीकृष्ण, नटवर।

३ ईश्वर. ४ नृत्य करने वाला।

४ देखो 'नटेस्वर' (रू.भे.)

नाटौ-वि० [सं० नत=नीचा] (स्त्री० नाटी) छोटे डील का, छोटे कद का, ठिगना।

नाटच-सं०पु० [सं०] १ वेष-भूषा, हाव-भाव या स्वांग के द्वारा चरित्र व घटनाओं का प्रदर्शन, अभिनय।

२ नटों का कार्य, नृत्य, नाच, संगीत आदि।

३ ६४ कलाओं में से एक।

नाटचालंकार-सं०पु० [सं०] वह अलंकार विशेष जिससे नाटक का सौंदर्य बढ़ जाता है।

नाठक—देखो 'नाटक' (रू.भे.)

नाठणौ, नाठबौ—देखो 'न्हाठणौ, न्हाठबौ' (रू.भे.)

उ०—१ सुणियो 'अजन' महाबळी, खळ नाठौ पुर छोड। मेळाळ साथै हुवा, खाटो हाथै खोड़।—रा.रू.

उ०—२ जहं विरहा तहं और क्या, सुधि बुधि नाठै ग्यांन। लोक वेद मारग तजे, दादू एकै ध्यांन।—दादूवांणी

उ०—३ आसोज वद १४ बाहदर पातसाह नाठौ, दीव गयो।

—नैणसी

नाठणहार, हारौ (हारी), नाठणियौ—वि०।

नाठिओड़ौ, नाठियोड़ौ, नाठयोड़ौ—भू०का०कृ०।

नाठीजणौ, नाठीजबौ—भाव वा०।

नाठियोड़ौ—देखो 'न्हाठियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नाठियोड़ी)

नाड—देखो 'नाडौ' (मह., रू.भे.)

उ०—क्रमगत पूछूं तो कनै, गोविंद हूं ज गिवार। नाड बसंती डेडरी, पुणै समंदां पार।—ह.र.

नाडकियौ—देखो 'नाडौ' (अल्पा, रू भे.)

नाडकी-सं०स्त्री०—देखो 'नाडौ' (अल्पा., रू.भे.)

नाडकौ—देखो 'नाडौ' (अल्पा., रू.भे.)

नाडणौ, नाडबौ—देखो 'नड़णौ, नड़बौ' (रू.भे.)

उ०—लोह ना पुहुली पाटी खांडां, चउरासी फूलडी करकेरत चउखुरप्र, अरद्धचद्र बांण, बावन्न तीरी, तोमर भिडवाळ भाला नाडया, कोदंड धनुस चढाव्या, कुंत कराग्रि कीध।—व.स.

नाडय—देखो 'नाटक' (रू.भे.)

उ०—गुरु तवक कव्व नाडय पमुह, विज्जा वास पसिद्ध घर। परि-हरवि आवि विहि पयड़ कइ, पुहवि पसंसिजइ सुपरपरि।

—ऐ.जै.का.सं.

नाडिका-सं०स्त्री० [सं०] २४ मिनट का काल, एक घड़ी।—डिं.को.

रू०भे०—नाडी।

नाडियो—देखो 'नाडो' (अल्पा., रू भे.)

उ०—१ माय काळी रे काळायण ऊमड़ी, माय गूडळ सा बरसै मेह। पपइयो बोल्यो हरियाळै खेत में। माय भर रे नाडा भर. नाडिया,

माय भरियो रे भीम तळाव। पपइयो बोल्यो खावड़ रै खेत में।
—लो.गी.

उ०—२ कुण जी खुदाया नाडा नाडिया ए पिणयारी जी ए लो, कुण जी खुदाया रे तळाव, बाला श्रो।—लो.गी.

नाडी-सं०स्त्री०—१ देखो 'नाडो' (रू.भे.) (श्र.मा.)

२ देखो 'नाडिका' (रू.भे.)

उ०—इहि श्रवसर श्रवसेस श्रब, दुव नाडी दिवसेस। बूंदी भट छिज्जत कढ़चो, विजय कूरमन वेस।—वं.भा.

नाडीत्रोड—देखो 'नाड़ीतोड़' (रू.भे.)

उ०—चोर चरड नइ चाडीया, गांठी छोडा गाहाट। वाटपाडा नइ फांसीया, नाडोत्रोडा नाट।—मा.कां.प्र.

नाडूळा—देखो 'नाडोळा' (रू.भे.)

नाडूली-सं०स्त्री० देखो 'नाडो' (श्रल्पा., रू.भे.)

नाडूळो—देखो 'नाडोळो' (रू.भे.)

(स्त्री० नाडूळी)

नाडूलो—देखो 'नाडो' (श्रल्पा., रू.भे.)

नाडोळा-सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा जो नाडोल पर राज्य करती थी।

रू०भे०—नाडूळा।

नाडोली-सं०स्त्री०—देखो 'नाडो' (श्रल्पा., रू.भे.)

नाडोळो-सं०पु० (स्त्री० नाडोळी) चौहान वंश की 'नाडोळा' शाखा का क्षत्रिय।

रू०भे०—नाडूळो।

नाडोलो— देखो 'नाडो' (श्रल्पा., रू.भे.)

नाडो-सं०पु० [देशज] छोटा तालाब, पोखर (श्र.मा.)

उ०—१ भरिया है नाडा नाडिया ए, पिणयारी ए लो। भरिया है समंद तळाव बालाजी श्रो।—लो.गी.

उ०—२ जळ पीधो जाडेह, पाबासर रै पावटै। नैनकियै नाडेह, जीव न धापै जेठवा।—श्रज्ञात

श्रल्पा०—नाडकियो, नाडकी, नाडको, नाडियो, नाडी, नाडूली, नाडूलो, नाडोली, नाडोलो।

मह०—नड, नयडु।

ना'णो, ना'बो—देखो 'न्हाणो, न्हावो' (रू.भे.)

ना'णहार, हारो (हारी), ना'णियो वि०।

ना'योड़ो—भू०का०कृ०।

ना'ईजणो, ना'ईजबो—कर्म वा० भाव वा०।

नात—देखो 'न्याति' (रू.भे.)

नातणो-सं०पु० [देशज] रूमाल, गमछा। उ०—गवां त्रिणां री घूघरड़ी रघाय। त्रिणा का ऊपर टोटळा जो म्हारा राज। हरियै वांस को छावड़लो मंगाय। दरियायी ऊपर नातणो जी म्हारा राज।
—लो.गी.

नातर-सं०पु०—[देशज] रक्त प्रदर।

नातरउ—देखो 'नातो' (रू.भे.)

उ०—ज्यू थे जांणउ त्यूं करउ, राजा श्राइस दीध। रांणी राजा नूं कहइ, श्रो म्हां नातरउ कीध।—ढो.मा.

नातरायत-सं०स्त्री०—१ वह जाति जिसमें स्त्री के पुनर्विवाह की प्रथा हो।

रू०भे०—नातरिया।

२ वह स्त्री जिसने पुनर्विवाह किया हो।

नातरिया-सं०पु०—१ देखो 'चोरासिया, चोराया'।

२ देखो 'नातरायत' (१) (रू.भे.)

नातरो—देखो 'नातो' (श्रल्पा., रू.भे.)

नाताकत-वि० [फा० ना+श्र० ताकत] श्रशक्त, निर्बल, शक्तिहीन, कमजोर।

नाताकती-सं०स्त्री० [फा० ना+श्र० ताकत+रा.प्र. ई] निर्बलता, कमजोरी, श्रशक्तता।

नाती-वि० [सं० ज्ञाती] १ सम्बन्धी, रिश्तेदार।

२ जाति का, जाति सम्बन्धी।

रू०भे०—न्याती।

श्रल्पा०—नातेलो, न्यातीलो।

नातेदार—वि० [सं० ज्ञाती+फा० दार] १ रिश्तेदार, सम्बन्धी.

२ पुनर्विवाह करने वाली जाति का।

नातेलो—देखो 'नाती' (श्रल्पा., रू.भे.)

उ०—मुरधर श्रोखद मूळ, सनेपी सांचो सारो। ऊपर खारो खूब, मांय सूं मीठो न्यारो। नातेलां री नीत, वात वै खारी कैवै। पण सीखां रो सार, उमर भर चेतै रैवै।—दसदेव

(स्त्री० नातेली)

नातो-सं०पु० [सं० ज्ञाति] १ हिन्दुश्रों की कुछ जातियों में प्रचलित एक प्रथा जिसके श्रनुसार पति की मृत्यु श्रथवा श्रन्य किसी कारण से स्त्री का किसी दूसरे पुरुष के साथ पत्नी रूप में सम्बन्ध किया जा सकता है।

२ उक्त प्रथा पर लिया जाने वाला एक सरकारी कर।

३ एक ही कुल में उत्पन्न होने या विवाह श्रादि के कारण होने वाला लगाव, कोटुम्बिक घनिष्टता। उ०—निमारण विघन सुप्रसन घणो रहै नित, सो गुणो सुसबद सब दिन सदा तो। ताकवां वधावै प्रभत 'मेहा' तणी, निभावै धणी व्रत तणो नातो।—नंदजी मोतीसर

४ सम्बन्ध, रिश्ता। उ०—१ जोड़ ज्यूं ही श्रोड़, विणजारा रा व्याज ज्यूं। तनक जोड़ मत तोड़, नातो तांतो नागजी।—श्रज्ञात

उ०—२ स्वांग सगाई कुछ नहीं, रांम सगाई सांच। दादू नाता नांम का, दूजे श्रंग न राच।—दादूवांणी

उ०—३ कळिया दुख सागर जन काढै, विपत रोग श्रघ श्रागर वाढै। नातो दीनदयाळ निहाळै, पाळै रे संतां हरि पाळै।
—र.ज.प्र.

रू०भे०— नातरउ, नात्र।

अल्पा०—नातरो, नात्रो, न्यातरो।

नात्र—देखो 'नातौ' (रू.भे.)

उ०—गरुउ गराइ न नात्र कुपात्र ज पात्र न जांरा। स धरइ ए भवित न लीजइ ए भीजइ ए भवित विनांरिग।—नेमिनाथ फागु

नात्रौ—देखो 'नातौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ ए लोक सगानइ मोहिइ अथवा लक्ष्मीनइं लोभिइ लीजइं। तेन्हा देव-गुरु मानइं तेह सिउ नात्रा संबध करइं।

—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—२ परन्तु जंतो अब ही सूं मीणां री चाल छोड रजपूतां री राह में रहण रौ लेख करि सूंपै तौ यौ सबंध करण में आवै। फेर भी कोई काळ में म्हांरा संभा छोडि अखज खाहि मीणां नूं जळ जीमरा छुवाइ, नात्रौ कराइ नारियां नूं पड़दा बिहूंरा राखसी तौ म्हारा कुळ री पुत्रियां समेत हरिणया जावसी।—वं.भा.

नाथ-सं०पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण, गोपाल (अ.मा.)।

यौ०—नाथपूत।

उ०—डरे नाग काळी भरे स्रोरा डाचं। नमौ नाथ तौ नाच नारद्द नाचं। पनंगे सिरे नाचियौ नाथ पार्ख। भलौ नंदकीसोर नारद्द भाखं।—ना.द.

२ विष्णु (डि.को.)

३ ईश्वर। उ०—१ हरि अकळ सकळ विसपाळ, नाथ निरभै निरधारं। निराकार निरलेप, वार नहिं लाभै पार।—ह.पु.वा.

उ०—२ होय सनाथ जनम मत हारै, नाथ समर अयलोक नरेस।

—ओपौ आढ़ौ

४ स्वामी, प्रभु, मालिक (डिं.को.)।

उ०—तोरा हू पूरा तवें, सकूं केम ससि-माथ। चत्रभुज सह थारा चरित, निगम न जांणूं नाथ।—ह.र.

५ पति (डि.को.)

६ राजा। उ०—१ करि हौफर तूटे कवल, तारा तिम तिण वार। आवै जो उण वार में, उडि जावै असवार। उडि जावै असवार, टकर लगि तुंड री। मचक पड़ै दळ मांहि, भचक लखि भूंड री। वहे हाथ तिण वार, नरू खंड नाथ रा। जैद्रथ रथ पर जांण, पांण पाराथ रा।—मिवबक्स पाल्हावत

उ०—२ अटै सोध अवरोध अचांणक, बोध मोद विसरायै। प्रांण नाथ हा नाथ! जोधपुर गोख सोध गणणायै।—ऊ.का.

७ मत्स्येंद्रनाथ द्वारा प्रवर्तित एक सम्प्रदाय।

वि०वि०—नाथ सम्प्रदाय को सिद्धमत, सिद्धमार्ग, योगमार्ग, योग-सम्प्रदाय, अवधूतमत, अवधूतसम्प्रदाय आदि भी कहा जाता है। भारत के प्रायः हर भाग में इसके अनुयायी मिलते हैं। इस मत का सब से प्रामाणिक ग्रंथ 'सिद्ध-सिद्धान्त-पद्धति' है। इसका संक्षिप्त रूप अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में काशी के बलभद्र पंडित द्वारा लिखा गया था जिसका नाम 'सिद्ध-सिद्धान्त-संग्रह' है। 'नाथ' शब्द में 'ना' का अर्थ किया जाता है, अनादि-रूप और 'थ' का अर्थ किया जाता है। स्थापित होना या तीन लोकों का स्थापित होना अर्थात् अनादि रूप का तीन लोकों के रूप में स्थापित होना। इसके अतिरिक्त 'ना' का अर्थ नाथब्रह्म और 'थ' का अर्थ हटाने वाला (अज्ञान के प्राबल्य को) अर्थात् वह ब्रह्म जो अज्ञान को हटा कर ब्रह्मानद या सच्चिदानद में विलीन करे।

नाथ सम्प्रदाय का विस्तार आदि में होने वाले नव मूल नाथों से माना जाता है तथा उन्हीं को नव नारायण का अवतार भी माना जाता है। राजस्थान में शरीर के लिए 'नव नारायण री देह' कहा जाता है, इसका तात्पर्य यही हो सकता है कि शरीर में नव नारायण हैं। 'योगिसंप्रदायविष्कृति' के अनुसार निम्न नव नारायण नव नाथों के रूप में अवतरित हुए किन्तु इनमें आदिनाथ (शिव) और गोरक्ष-नाथ का नाम नहीं है—

१. कविनारायण	—	मत्स्येंद्रनाथ
२. करभाजननारायण	—	गाहनिनाथ
३. अंतरिक्षनारायण	—	ज्वालेंद्रनाथ (जालंधरनाथ)
४. प्रबुद्धनारायण	—	करणिपानाथ (कानिपा)
५. आविर्होत्रनारायण	—	(?) नागनाथ
६. पिप्पलायननारायण	—	चर्पटनाथ (चर्पटी)
७. चमसनारायण	—	रेवानाथ
८. हरिनारायण	—	भर्तृनाथ (भरथरी)
९. द्रुमिलनारायण	—	गोपीचन्द्र

नव नाथों के सम्बन्ध में अलग अलग नाम मिलते हैं। आदिनाथ शिव, नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक मत्स्येंद्रनाथ, जालंधरनाथ, गोरक्षनाथ, कृष्णपाद आदि को नव नाथों में से ही माना जाता है किन्तु कहीं इनसे भिन्न नाम मिलते हैं। गोरक्षनाथ नव नाथों में से हैं या अलग इस सम्बन्ध में भी प्रामाणिक रूप से नहीं कहा जा सकता है। अतः मूल नव नाथ कौनसे थे इसका ठीक निर्णय तब तक कठिन है जब तक कोई ठोस प्रमाण न मिले।

इस सम्प्रदाय के आदिनाथ शिव माने जाते हैं जो इस सम्प्रदाय के उपास्यदेव हैं। वह शिव जो सब से परे ब्रह्म या ज्योतिस्वरूप एक मात्र सच्चिदानंद रूप है; जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इंद्र, वेद, यज्ञ, सूर्य, चंद्र, निधि, जल, स्थल, अग्नि, वायु, दिक् और काल सब से परे हैं, यथा—न ब्रह्मा विष्णु रुद्रौ न सुरपति सुरा नैव पृथ्वी न चापो, नैवाग्निर्वापिवायुर्न च गगनतलं नो दिशो नैवकालः। नो वेदा नैव यज्ञा न च रविशशिनो नो विधि र्नैविकल्पः, स्वज्योतिः सत्यमेकं जयति तव पदं सच्चिदानन्द मूर्ते।

—सिद्ध-सिद्धान्त-पद्धति

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार ईसवी की नवीं शताब्दी में पूर्वी भारत के कामरूप प्रदेश के निकट किसी चंद्रगिरि नामक स्थान में

नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक मत्स्येंद्रनाथ का जन्म हुआ था। नाथ-परम्परा में आदिनाथ के बाद सब से महत्वपूर्ण आचार्य मत्स्येंद्रनाथ ही हैं। चूंकि आदिनाथ शिव का ही नामान्तर है अतः मानव गुरुओं में मत्स्येंद्रनाथ ही इस परम्परा के सर्व-प्रथम आचार्य माने जाते है। इनके सम्बन्ध में अनेक दन्तकथाएँ प्रसिद्ध हैं। यह बात सत्य ही प्रतीत होती है कि मत्स्येंद्रनाथ आरम्भ में एक साधना में रत हुए थे। फिर वे *एक ऐसे स्थान या आचार* में जा फँसे जहां स्त्रियों का साहचर्य प्रधान था। वे अपनी साधना को भूल रहे थे। वहां से उनका उद्धार उन्हीं के प्रधान शिष्य गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) ने किया था।

मत्स्येंद्रनाथ द्वारा प्रवतारित कौलज्ञान प्रसिद्ध है। उन्होंने 'कौलज्ञान-निर्णय' नामक ग्रंथ भी लिखा है। शाक्त आचारों में भी वाम, दक्षिण और कौल उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं और कौल-मार्ग ही अवधूत-मार्ग है। इस प्रकार तंत्र-ग्रंथों के अनुसार कौल या अवधूत-मार्ग श्रेष्ठ है इसलिए शाक्त तंत्र भी नाथानुयायी ही हैं। 'कौलज्ञान निर्णय' के अतिरिक्त भी इन्होंने कई अन्य ग्रन्थों की रचना की थी।

मत्स्येंद्रनाथ के मुख्य शिष्यों में गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) का नाम अधिक प्रसिद्ध है। विक्रम संवत् की दशवीं शताब्दी में भारतवर्ष के इस महान गुरु का आविर्भाव हुआ था। शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित महापुरुष भारतवर्ष में दूसरा नही हुआ। भारतवर्ष के कोने कोने में उनके अनुयायी आज भी पाए जाते हैं। गोरक्षनाथियों की मुख्य बारह शाखायें प्रसिद्ध हैं जो निम्न हैं—*सत्यनाथी*, *धर्मनाथी*, *रामपंथ*, *नटेश्वरी*, *कन्हड़*, *कपिलानि*, *बैराग*, *माननाथी*, *आईपंथ*, *पागलपंथ*, *धजपंथ* और *गंगानाथी*। भक्ति आंदोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आंदोलन गोरखनाथ का योगमार्ग ही था। भारतवर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं है जिसमें गोरखनाथ सम्बन्धी कहानियां नही पाई जाती हों। इन कहानियों में परस्पर ऐतिहासिक विरोध बहुत है किन्तु यह बात स्पष्ट है कि वे अपने युग के सब से बड़े नेता थे। इन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की जिनमें से कई प्रकाशित हैं।

जालंधरनाथ मत्स्येंद्रनाथ के गुरुभाई और समकालीन माने जाते हैं। तिब्बती परम्परा में ये मत्स्येंद्रनाथ के गुरु भी माने जाते हैं। उक्त परंपरा के अनुसार नगर भोग देश में (?) ब्राह्मण कुल में इनका जन्म हुआ था। पीछे ये एक अच्छे पंडित भिक्षुक बने किन्तु घंटापाद के शिष्य कूर्मपाद की सगति में आकर ये उनके शिष्य हो गए। मत्स्येंद्रनाथ, कण्हपा (कृष्णपाद) और ततिपा इनके शिष्यों में से थे। भोटिया ग्रंथों में इन्हें आदिनाथ भी माना जाता है। 'तनजूर' में इनके लिखे हुए सात ग्रंथों का उल्लेख है।

नाथ सम्प्रदाय के आदिनाथ और उपास्य देव शिव-मुद्रा, नाद और त्रिशूल धारण करने वाले हैं अतः नाथ सम्प्रदाय वाले कानों में कुण्डल या मुद्रा धारण करते हैं जिन्हें दर्शन भी कहते हैं। इस सम्प्रदाय में कान छिदवा कर कुण्डल धारण कर लेने के बाद योगी कनफटा कहलाते हैं और इससे पूर्व औघड़ कहलाते हैं। ऐसा माना जाता है कि जालंधरनाथ मुद्रा धारण नहीं करते थे, वे औघड़ थे। किन्तु *'सिद्धांत वाक्य'* में जालंधरपाद के एक श्लोक के अनुसार पता चलता है कि मुद्रा, नाद और त्रिशूल धारण करने वाले नाथ ही इनके उपास्य हैं, *यथा*—

वन्दे तन्नाथतेजो भुवनतिमिरहं भानुतेजस्करं वा ,
सत्कर्तृ व्यापकं त्वा पवनगतिकरं व्योमवन्निर्भरं वा।
मुद्रानादत्रिशूलैर्विमलरुचिधर खर्पर भस्ममिश्रं ,
द्वैत वाऽद्वैतरूपं द्वयत उत परं योगिनं शङ्करं वा।

—स०. म०, सू०, पृ० २८

यह अनुमान लगाया जाता है कि नाथ-साधना बौद्ध दर्शन का ही एक रूप है अथवा उससे सम्बद्ध है। ऐसा माना जाता है कि बौद्ध कापालिक मार्ग और शैव कापालिक मार्ग का स्वतंत्र अस्तित्व था जो बाद में गोरखपंथी साधुओं में अन्तर्भुक्त हो गया। पं० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा प्रकाशित 'बौद्धगानओदोहा' नामक संग्रह के भाग 'चर्याचर्यविनिश्चय' के अनुसार कान्हूपाद या कृष्णपाद एक बौद्ध सिद्ध था जो अपने आप को बौद्ध कापालिक कहता था, *यथा*—

(१) आलो डोम्बि तोए संग करिब मो सांग।
निर्घन कान्ह कापालि जोइ लांग॥

—चर्या०, पद १०

(२) कइसन होलो डोम्बि तोहरि भाभरि आली।
अन्ते कुलीन जन माझे कावाली॥

(३) तुलो डोम्बी हाउँ कपाली—

—वही, पद १०

यही कृष्णपाद अपने आप को जालंधरनाथ का शिष्य कहता है, *यथा*—

शाखि करिब जालंधरि पाए।
पाखि ण राहअ मोरि पांडिआ चादे॥

—वही, पद ३६

यह बात तो सर्वमान्य है कि जालंधरनाथ के शिष्य कृष्णपाद थे जिन्हें कण्हपा, कान्हूपा, कानपा, कानफा, कनिपाव आदि नामों से लोग याद करते हैं। श्री राहुलजी ने तिब्बती परम्परा के आधार पर इन्हे कर्णाटदेशीय ब्राह्मण माना है पर डॉ० भट्टाचार्य ने इन्हें जुलाहा जाति में उत्पन्न और उड़ियाभाषी लिखा है। शरीर का रंग काला होने से इन्हें 'कृष्णपाद' कहा गया है। महाराज देवपाल (८०९-८४९ ई०) के *समय में यह एक पंडित भिक्षु थे और कितने ही दिनों* तक सोमपुरी बिहार (पहाड़पुर, जिला राजशाही, बंगाल) में रहा करते थे। आगे चलकर सिद्ध जालंधर पाद के शिष्य हो गये। चौरासी सिद्धों में कवित्व और विद्या दोनों दृष्टियों से ये सब से श्रेष्ठ थे। इन्होने अनेक ग्रंथों की रचना की थी।

नाथ सम्प्रदाय में कानिपा-सम्प्रदाय कृष्णपाद से ही चला है। सपेरे

इसी सम्प्रदाय के होते हैं जिन्हें राजस्थान में 'काळबेलिया' कहा जाता है। ये अपने आदि गुरु कनिपाव (कृष्णपाद) को बताते हैं। ऐसा जान पड़ता है कि कानिपा-सम्प्रदाय बाद में गोरखपंथी साधुओं में अन्तर्भुक्त हो गया। यहां यह बात उल्लेख योग्य है कि कानिपा-सम्प्रदाय को अब भी पूर्ण रूप से गोरखनाथी सम्प्रदाय में नहीं माना जाता है। कृष्णपाद द्वारा प्रवर्तित कहा जाने वाला एक उपसम्प्रदाय वाममारग (वाम मार्ग) आज भी जीवित है। ये अपने को कृष्णपाद का शिष्य गोपीचन्द के अनुवर्ती मानते हैं। गोरखपंथियों से कुछ बातों में ये लोग अब भी भिन्न हैं। मुद्रा गोरखपंथी योगियों का चिन्ह है। गोरखपंथी लोग कान के मध्य भाग में ही कुण्डल धारण करते है पर कानिपा लोग कान की लोरों में भी पहनते हैं। गोरक्ष पंथ में मुद्रा के अनेक आध्यात्मिक अर्थ भी बताए जाते हैं।

१. 'योगिसंप्रदायाविष्कृति' के अनुसार मत्स्येंद्रनाथ और जालन्धरनाथ (ज्वालेंद्रनाथ) की शिष्य-परम्परा इस प्रकार है—
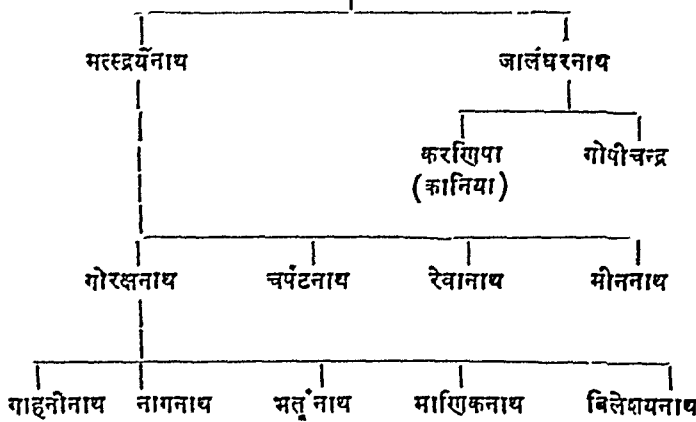
२. 'श्री ज्ञानेश्वर चरित्र' में पं० लक्ष्मण रामचंद्र पांगारकर ने ज्ञाननाथ तक की गुरु-परम्परा इस प्रकार बताई है—
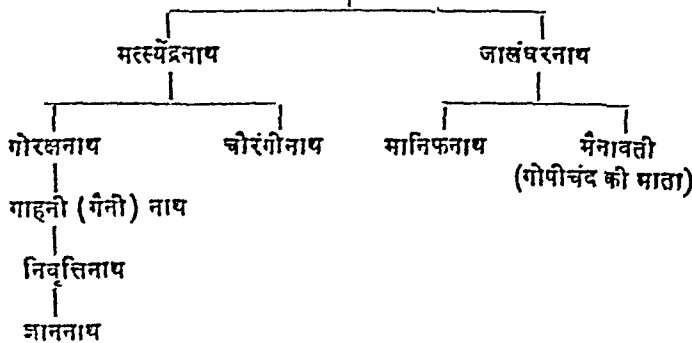
८ उक्त सम्प्रदाय के अनुयायियों के नाम के साथ लगाई जाने वाली पदवी या उपाधि।

९ संन्यासी, योगी।

१० नौ की सख्या*।

रू०भे०—नत्थ, नथ।

११ वह रस्सी जिसे बैल, भैंसे आदि का नाक छेद कर नथुने में डाली जाती है जिससे वे वश में रहें।

उ०—सह गावडियां साथ, एकरण बाड़ै बाड़िया। रांण न मांनी नाथ, तांढ सांड 'प्रतापसी'।—दुरसो आढ़ो

मुहा०—नाथ घालणी—वश में करना।

१२ वह कील जिसे गाड़ी का पहिया लगा देने के बाद धुरी के छेद में फंसा दी जाती है जिससे पहिया बाहर न निकल सके।

१३ देखो 'नथ' (रू.भे.)

रू०भे०—ना', नाह।

अल्पा०—नाथो, नाहलउ, नाहलियो, नाहलु, नाहलो।

नाथअनाथ—सं०पु० [स० अनाथ-नाथ] अशरणशरण, ईश्वर।

उ०—अनांमय अव्यय अक्षय आथ। निरामय निरभय नाथअनाथ।
—ऊ.का.

नायक—सं०पु० [सं०] स्वामी राजा।

नाथकड़ो—सं०पु०—वह बैल या भैंसा जिसके नाक में नाथ हो।

नाथचिड़िया—देखो 'चिड़ियानाथ' (रू.भे.)

उ०—तापियो नाथचिड़िया पर्बं ठौड़ तद, समूरथ मापियो नकूं सोधै। अचळ 'मेहा' सधु हुकम तद आपियो, जदी गढ़ थापियो राव 'जोधै'।—खेतसी बारहठ

नाथण—वि०—१ नाथ डालने वाला। उ०—नाथण नाग नागर व्रज नाइक, आवण महर आंगणे।—पि प्र.

२ वश में करने वाला।

नाथणकाळी—सं०पु० [सं० नाथ्+कालियः] काली नाग को नाथने वाले, श्री कृष्ण।

नायणो, नाथबो—क्रि०स० [सं० नाथ्] १ बैल, भैंसा आदि की नाक छेद कर रस्सी डालना ताकि उन पर नियंत्रण किया जा सके या उनको वश में किया जा सके। उ०—१ काळी नाग नाथू न जो एक मायो। जसोदा प्रसू नंद बावै न जायो। नहीं नागणी लाग थारो नवारे। हवै हेकणी गांठ हेरूं हजारे।—ना.द.

उ०—२ उवारे घणा आप आपै अरच्चे, चुवै चंदणं कासमीरी चरच्चे, अही नाथियो पोयणीनाळ आंणै। अस्सवार आपै हुवै अप्पलांणै।—ना.द.

२ काबू में करना, वश में करना, अधीन करना, बाध्य करना।

उ०—१ प्रथी कुमया मया तणी पूगी परख, नरांपत ऊनथां घणा नाथै। आलमां साह सिर छातर ऊथोलिया, मेलियां गरीबां तणें माथै।—महाराजा अजीतसिंह जोधपुर री गीत

उ०—२ अनमां नांम उनत्यां नाथै, बळवंत भरै गयण सूं बाथ।

अमर त्याग कमधजां आगै, हिंदू यमन न काढ़ै हाथ ।
—कूपा महराजोत रो गीत

३ वस्तु को छेद कर उसमें तागा डालना ।
४ वस्तुओं में छेद करके तागे आदि में पिरोना ।
नाथणहार, हारो (हारी), नाथणियौ—वि० ।
नथवाड़णो, नथवाड़बो, नथवाणो, नथवाबो, नथवावणो, नथवावबो,
नथाड़णो, नथाड़बो, नथाणो, नथाबो, नथावणो, नथाववो—प्रे०रू०
नाथिग्रोड़ो, नाथियोड़ो, नाथ्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नाथीजणो, नाथीजबो—कर्म वा० ।
नत्थणो, नत्थबो, नथणो, नथबो—रू०भे० ।

नाथता-सं०स्त्री० [सं०] प्रभुता, स्वामित्व ।

नाथत्व-सं०पु० [सं०] स्वामित्व, प्रभुता ।

नाथदवारो, नाथदूवारो, नाथद्वारो-सं०पु० [सं० नाथद्वार] महाराणा राजसिंह द्वारा निर्मित उदयपुर राज्यान्तर्गत बना हुआ श्रीनाथजी का प्रसिद्ध मन्दिर जो वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णवों का एक स्थान है।
वि०वि०—श्रीनाथजी का मन्दिर पहले मथुरा के निकट गिरिराज पर्वत पर था। सन् १६६६ के १० अक्टूबर को बादशाह औरंगजेब के भय से गोस्वामी विट्ठलदास के पौत्र दामोदरजी श्रीनाथजी की मूर्ति को रथ में बैठा कर छिपते छिपते राजस्थान में आए। यहां पर किसी रजवाड़े की हिम्मत उन्हें खुले आम पनाह देने की नहीं हुई क्योंकि बादशाही नाराजगी को झेलने की शक्ति किसी में नहीं थी। तब तक वे लोग उदयपुर नहीं गए थे। अन्त में टीकैत गोस्वामी दामोदरजी के काका गोविन्दजी उदयपुर महाराणा राजसिंह के पास गए और उन्हें परिस्थिति से अवगत किया। महाराणा ने बड़े सम्मानपूर्वक सभी गोसांइयों के साथ श्रीनाथजी को अपने राज्य में बुला लिया और श्रीनाथजी के उदयपुर राज्य में पहुँचने पर स्वयं अगवानी के लिए आए। उन्होने उदयपुर से २४ मील उत्तर की ओर बनास नदी के किनारे सीहाड़ ग्राम के पास मन्दिर बनवा कर बड़ी धूमधाम से श्रीनाथजी को सन् १६७२ की २० फरवरी शनिवार को पाट बिठाया। राणा ने पूजा आदि की व्यवस्था के लिए बहुत बड़ी जागीर दी और कहा कि राजपूतों के शिर काटे बिना औरंगजेब श्रीनाथजी को छू नहीं सकेगा।

नाथपूत-सं०पु०यौ० [सं० नाथपुत्र] कामदेव, मदन (डिं.को.)

नाथवाळ-वि० [सं० नाथ+आलुच्] १ जिसके नाक में नाथ डाली हुई हो (चौपाया पशु आदि) २ अधीन, वशवर्त्ती (डिं.को.)

नाथहर-सं०पु० [सं० नाथहरि] बैल, वृषभ (ह.नां.) ।

नाथावत-सं०पु० [सं० नाथ+पुत्र] १ सोलंकी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा.ख्यात) ।
२ कछवाह वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
(बां.दा.ख्यात)

रू०भे०—नाथोत ।

नाथियउ, नाथियोड़ो-भू०का०कृ०—१ नाक छेद कर नाथ डाला हुआ ।
(ज्ञ.र.)
२ काबू में किया हुआ, वश में किया हुआ, अधीन किया हुआ.
३ नत्थी किया हुआ, छेदा हुआ ।
(स्त्री० नाथियोड़ी)

नाथी-रो-वाड़ो-सं०पु० [रा० नाथी रो+सं० पाटक:] व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा, कसबीखाना, चकला ।

नाथौ-वि० [सं० नाथ+रा०प्र० औ] १ नाक में नाथ डाला हुआ ।
(चौपाया आदि)
२ देखो 'नाथ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—बत्तीस लाख विमांन नाथौ रे, एक पल्य सागर रो साथो ।
—जयवांणी

नाथोत-सं०पु०—१ राठौड़ राव रिडमलजी के पुत्र नाथोजी के वंशज राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
२ देखो 'नाथावत' (रू.भे.)

नादंग—देखो 'नाद' (रू.भे.)
उ०—वजि अदंग चंग रंग उपंग वारंग। अनंग छबि चंग उमंग अग अंग। नृतंग रित अंग करंग नादंग। रस तरंग बह तरंग रंगरंग।
—सू.प्र.

नाद-सं०पु० [सं०] १ ध्वनि, आवाज, शब्द (डिं.को.) ।
उ०—१ सहनाय मुरसलां रंग सवाद। नवबती घोर मंगळीक नाद।
—सू.प्र.
उ०—२ अड़ड़ाट नाद वैराट भ्रज, घट्ट जांणि दूजो घड़ै। वरसाळ झाळ गोळां वहनि, प्रळै काळ छोळां पड़ै।—सू.प्र.
उ०—३ भणणाट नाद नूपर झंझर, सुर वाजंत्र सैंतीसमौं। रंभ हूर रथां ढकियो अरक, मंडि ब्रहमंड बावीसमो।—सू.प्र.
२ वह वर्ण जिसका उच्चारण अनुस्वार के समान हो, सानुनासिक स्वर।
३ वर्णों का उच्चारण करते समय कंठ स्वर निकालने का एक प्रयत्न।
४ संगीत। उ०—१ तळिया-तोरण वांधा, हाट सिंगारी, पोळि सिंगारी, घरि घरि गूडी ऊछळी। थांनिक थांनिक गीत, नाद, नाटक नगरि वधाई वाजी।—द.वि.
उ०—२ भँवर लूबधी वास का, मोह्या नाद कुरंग। यों दादू का मन रांम सौं, ज्यो दीपक-ज्योति पतंग।—दादूवांणी
५ योनि, भग। उ०—१ धरम्म करम्म परम्म सुधांम, रहित-सबद् निकेवळ रांम। अमाप-कळा बिंदु नाद उदास, निरंजण भूत सरव्व-निवास।—ह.र.
उ०—२ देवी नाद तूं बिंदु तूं नव्व निध्धि, देवी सीव तू सक्ति तूं सव्व सिध्धि। देवी बापडां मांनवी कांइ बूझे, देवी ताहरा पार तूहीज सूझे।—देवि.

उ०—३ ब्रह्मंड इकीस ऊपरे आसन, ज्यां पर अविगत योगी। नाव बिंद का नहीं विकारा, ब्रह्म आनद का भोगी।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—४ पांच पचीस तीन गुण तज, मन का तजो विकारा। नाव बिंद के ऊपर आसण, सो सब का किरतारा।
—स्री हरिरांमजी महाराज

६ हरिण की सींग का बना बाजा विशेष जिसे प्रायः नाथ-योगी करधनी में बांधे रहते हैं।

उ०—१ तरै जोगी देवराज नूं कह्यो-'थारा बळ री विरद वधो।' नै मेखळी नाद दियो, पात्र दियो नै कह्यो-'ओ थं पाट वैसो तद दीवाळी दसरावै धारिया करो।' तरै जोगी वार्व कह्यो सु यां कबूल कियो। अै जोगी आपरी मेखळी, नाद, पात्र देवराज नूं दिया। तिका मेखळी देवराज गळै में घाती, नाव गळा मांहे घालियो, पात्र आगे मेलियो।—नैणसी

उ०—२ सदन सरोज बदन की सोभा, ऊभी जोऊं कपोळ। सेली नाद वभूत न वटवो, अजूं मुनी मुख खोल।—मीरां

उ०—३ तणै तार सैतार वीणादि तन्त्री। बणै बीस बत्तीस भेरू बजंत्री। डफां मादळां नाव हेरू डमंके। धरा व्योम पाताळ धूजै धमंकै।—मे.म.

७ वह विद्या, मंत्र अथवा शब्द जिसे गुरु दीक्षा देते समय अपने शिष्य को सुनाता है।

८ अनाहत (नाद)। उ०—पोढ़ाड़ै नाव वेद परबोधै, निसिदिनि वाग विहार नितु। मांणग मयण एण विध मांणै, रुखमिणि कंत वसंत रितु।—वेलि.

९ अहंकार, गर्व, अभिमान।

उ०—१ किलंगरो नास करिसै किसन, असुरां नाद उतारिसै।—पी.ग्रं.

उ०--२ वाद करो जङ्क, विप्र ना उतारो नाद।—धर्मपत्र

१० देखो 'न्याद' (रू.भे.)—अ.मा.

रू०भे०—नादंग, नादि, नादु।

नादणवण, नादवण-सं०पु० [देशज] कपास (अमरत)

नादमुद्रा-सं०पु० [सं०] तंत्र की एक मुद्रा जिसमें दाहिने हाथ की मुट्ठी बांध कर अंगूठे को ऊपर की ओर उठाये रहना पड़ता है।

नादर—१ देखो 'नाजर' (रू.भे.)

उ०—१ आकास सूं एक जांनवर आयो सो उण विलायत रै बादसाह नूं लेय उड़ गयो। हुरम यह बात देख रही थी। उसने विचारी—परभात बादसाह रै बिनां बादसाही में खलल पड़सी। ताहरां नादर कूं बुलाय कर कही—सताब जाय दीवांण अर बकसी कूं लावो।
—सांई री पलक में खलक

२ देखो 'नादिरसाह' (रू.भे.)

नादरसा, नादरसाह—देखो 'नादिरसाह' (रू.भे.)

नादली-सं०स्त्री० [अ० नाद-ए-अली] १ चांदी के पत्र, जहरमोहरे या संग-यशब नामक पत्थर की चौकोर टिकिया जिस पर कुरान की एक विशेष आयत खोदी जाती है और बच्चों के गले में रोग, भय आदि को दूर करने के लिए पहनाई जाती है। २ संगय-शब या जहर-मोहरे का पतला टुकड़ा जिसे बच्चों के गले में रोग, भय आदि दूर करने के लिए पहनाया जाता है।

नादांण—देखो 'नादान' (रू.भे.)

नादांणियो, नादांणो—देखो 'नादान' (अल्पा., रू.भे)

उ०—१ रमक वताय गया सांवरै नादांणिया। कदै मिळै रसराज सांवळड़ा, सुपनै की नांई मांनूं हो रया।—रसीलैराज

उ०—२ मोनूं ले चल नालवे नादांणिया, मुलक विगानां वारी लोक विगाना रब दे हाथ समाळ।—रसीलैराज

उ०—३ मिळ के नादांणा मैंनूं विसर गया वे। क्या जांणां किस विध मन ल्याया अब तो उवों हो गया विगांणा ओ नया। —रसीलैराज

नादांणी—देखो 'नादानी' (रू.भे.)

नादान-वि० [फा० नादान] नासमझ, अनजान, मूर्ख।

उ०—१ पना मारू घणां नै घरां रा मिजमांन, अजी कांई सांवळड़ा नादान। रात अनत प्रात म्हारै आया, तन पर केई सैनांण।
—रसीलैराज

उ०—२ अब के ओळंगाणै पनामारू नणदोईजी नै भेज, अब को चौमासो फूलां-सेज पै, जी म्हारा राज। नणदोईजी के नारी नादान' बा डरपै महलां में बैठी अेकली, जी म्हारा राज।—लो.गी.

रू०भे०—नादांण।

अल्पा०—नादांणियो, नादांणो।

नादानी-सं०स्त्री० [फा० नादानी] नासमझी, मूर्खता।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

नादार-वि० [फा०] १ जिसके पास कुछ न हो, दरिद्र, गरीब, निर्धन। [अ० नाजिर] २ डरपोक, कायर।

उ०—घाडैती गांव भांग रह्या हैं नै थे बाजरी में लुक रह्या हो! फिट रे नादारां थांनै।—रातवासो

३ देखो 'नाजर' (रू.भे.)

नादारगी, नादारी-सं०स्त्री० [फा० नादारी+रा. प्र. गी.] दरिद्रता, निर्धनता, गरीबी।

नादि—देखो 'नाद' (रू.भे.)

उ०—द्रं द्रं गटि गटि द्रह द्रह नादि वाजीय गुहिर नीसांण। रण-काहली सुणी समरंगणि कायर पडइ परांण।—विद्याविलास पवाडउ

नादिर-वि० [अ०] १ अनोखा, अद्भुत।

उ०—ऊंट राता केसां, काळी आंख्यां, मोटे यूवे रा मंगाया सो ऊंट इसी तरह रा अरब देस में नादिर छै। महंगा मिळै छै।—नी.प्र.

२ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया। ३ देखो 'नाजर' (रू.भे.)

उ०—नादिर हाथ खबर कराय अंदर नूं आई। सलांमी कीवी, तद बादसाह फुरमाई 'कीं तरै आज आवणो हुओ।'
—जलाल बूबना री बात

४ देखो 'नादिरसाह' (रू.भे.)

नादिरसा, नादिरसाह-सं०पु० [फा० नादिरशाह] फारस का एक शक्तिशाली और क्रूर बादशाह जिसने सन् १७३८ में भारत में प्रवेश किया और सन् १७३९ में मुगल बादशाह मुहम्मदशाह को बुरी तरह हराया। उसने दिल्ली में कत्लेआम करवा दिया और लगभग बीस हजार आदमियों, स्त्रियों और बच्चों को तलवार के घाट उतार दिया। बादशाह शाहजहां द्वारा बनवाया हुआ प्रसिद्ध तख्त ताऊस और कोहनूर हीरे के साथ अपार सम्पत्ति लूट कर वह अपने देश लौटा।

रू०भे०—नादर, नादरसा, नादरसाह, नादिर।

नादिरसाही-वि० [फा० नादिरशाही] १ बादशाह नादिरशाह से सम्बन्धित. २ बहुत उग्र या कठोर।

सं०स्त्री०—अत्याचार।

नादी-वि० [सं० नादिन्] ध्वनि करने वाला।

रू०भे०—नद्दी।

नादु-देखो 'नाद' (रू.भे.)।

उ०—अरजुन वनचर लागउ वादु, करउं झूझ ऊतारउ नादु। एक सर कारणि झूझइं बेउ, करइ परीक्षा ईसर देउ।—पं.पं.च.

नादेसुर-सं०पु० [सं० नंदीश्वर] १ शिव, महादेव. २ नंदी।

उ०—गोरी को पति बीनवां जी, नादेसुर असवार। भाळ अरध सिर राजई जी, गळ सेसफण हार।—रुकमणी मंगळ

नादैत-वि० [फा० ना+सं०दैत्य] जिसमें आसुरी प्रवृत्ति न हो।

उ०—पवित्र प्रयाग 'रतनसी' पोहकर, मन निरमळ गंगाजळ जेम। नर नादैत नरिंद नरेहण, निकळं निघुट निपाप निगेम।—दूदो

नादोत-सं०पु०—सीसोदिया वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

नाप-सं०स्त्री० [सं० मापनम्] १ किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई या गहराई जिसकी छोटाई, बड़ाई (वा न्यूनता, अधिकता) का निश्चय जो किसी निर्दिष्ट लम्बाई के साथ मीलान करने से किया जाय, माप। २ किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई आदि कितनी है इसको ठीक-ठीक स्थिर करने के लिए की जाने वाली क्रिया, विस्तार का निर्धारण, नापने का काम।

यौ०—नाप-जोख, नाप-तोल।

३ निर्दिष्ट लम्बाई-चौड़ाई की वह वस्तु जिसका व्यवहार करके यह स्थिर किया जाय कि कोई वस्तु कितनी लम्बी या चौड़ी है या कितने परिमाण में है, मापने की वस्तु, नपना, मानदंड।

नाप का सर-सं०पु० [देशज] एक ही माप के टुकड़े काटने का लोहे का औजार।

नाप-जोख—देखो 'नाप-तोल'।

नापणौ, नापबौ-क्रि०स० [सं० मापनं] १ लंबाई, चौड़ाई, मोटाई या गहराई की परीक्षा करना, किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई आदि कितनी है यह निश्चित करना।

मुहा०—कनपड़ौ नापणौ—तमाचा मारना, चपत लगाना।

२ कोई वस्तु कितने परिमाण में या मात्रा में है इसका निश्चय करना, कोई वस्तु कितनी है इसका पता लगाना, अंदाज करना।

नापणहार, हारौ (हारी), नापणियौ।—वि०।

नपवाड़णौ, नपवाड़बौ, नपवाणौ, नपवाबौ, नपवावणौ, नपवावबौ, नपाड़णौ, नपाड़बौ, नपाणौ, नपाबौ, नपावणौ, नपावबौ।—प्रे०रू०।

नापिओड़ो, नापियोड़ौ, नाप्योड़ौ।—भू०का०कृ०।

नापीजणौ, नापीजबौ—कर्म वा०।

नपणौ, नपबौ—अक० रू०।

नाप-तोल-सं०स्त्री०यौ० [सं० मापनं+तौल] १ नापने या तोलने का काम, नापने या तोलने की क्रिया. २ नाप कर वा तोल कर स्थिर किया हुआ किसी वस्तु का परिमाण या मात्रा।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

नापसंद-वि० [फा०] १ जो अच्छा न लगे, जो पसंद न हो. २ अरुचिकर, अप्रिय।

नापाक-वि० [फा०] १ अपवित्र, अशुद्ध. २ मैला-कुचैला।

नापाकी-सं०स्त्री० [फा०] अपवित्रता, अशुद्धता।

नापित-सं०पु० [सं०] नाई, हज्जाम (डिं.को.)।

रू०भे०—नपित।

नापियोड़ौ-भू०का०कृ०—जिसका नाप कर लिया हो, नपा हुआ।
(स्त्री० नापियोड़ी)

नापौ—देखो 'नाप' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—वागो कुंवरसी रै पहरण रौ यो सो दोपहरां पौढ़िया जणा लिय आई सो उण रै नापै सूं कराया।—कुंवरसी सांखला री वारता

नाफ-सं०स्त्री० [फा० नाफ मि० सं० नाभि] नाभि, तोंदी।

नाफरम, नाफुरम-सं०पु० [फा० ना-'फरमान] एक प्रकार का पौधा जिसके फूल ऊदे या बैंगनी होते हैं।

उ०—१ नाफरमां हजारा औरे गुलहूवास। गुल लाल के डंबर सूरगुलूं का प्रकास।—सू.प्र.

उ०—२ खमखो दावदी पुन पळास, नाफुरमा परगस आस पास।
—मयारांम दरजी री वात

नाफेरी—देखो 'नफेरी' (रू.भे.)

उ०—नाफेरी भेरी सद्द नद्द, हुव्वै धुव्वै नीसांण।—ग.रू.वं

नाफौ-सं०पु० [फा० नाफः] कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी मृग की नाभि में होती है।

नाबाळक—देखो 'नाबालिग' (रू.भे.)

उ०—कोई एक वीर पुरस मारीज गयौ नै लारै नाबाळक जाण सत्रुआं हलो ... विचारियौ।—वी.स.टी.

नाबाळकी ... (रू.भे.)

नावाळग—देखो 'नावालिग' (रू.भे.)

नावाळगी—देखो 'नावालिगी' (रू.भ.)

नावालिग-वि० [फा० ना+अ० बालिग] १ जो वयस्क न हुआ हो, जो पूरा जवान न हुवा हो। २ कानून द्वारा वयस्क के लिये निश्चित् उम्र से कम उम्र वाला।

रू०भे०—नावाळक, नावाळग।

नावालिगी-सं०स्त्री० [फा० ना+अ० बालिग+रा० प्र० ई] १ वयस्क न होने की अवस्था, नावालिग अवस्था। २ वह अवस्था जिसमें कानून द्वारा वयस्क न गिना जाय।

रू०भे०—नावाळकी, नावाळगी।

नावी-सं०स्त्री० [देशज] प्रायः मानव-चित्र चित्रित करने का लोहे का एक उपकरण विशेष।

नाबूद-वि० [फा०] १ जो बरबाद हो गया हो, जिसका अस्तित्व न रह गया हो. २ जो नाश होने वाला हो, नष्ट होने वाला, नश्वर।

नावेड़ो-सं०पु० [देशज] हाथ की उंगली के नाखून के बीच में होने वाला फोड़ा विशेष जिससे नाखून हमेशा के लिए विकृत हो जाता है।

नाभंग—देखो 'नाभाग' (रू.भे.)

उ०—भागीरथ संभ्रम सुत भुवाळ। नाभंग हुवो स्रुत सुत नृपाळ।
—सू.प्र.

नाभ—देखो 'नाभि' (मह., रू.भे.)

उ०—१ निराकार निरवांण, जोगेस्वरां दुलभ जाग तेजोमयं। रूप विस्नु रहमांण, पंकज नाभ ब्रहंम उतपन्नो।—सू.प्र.

उ०—२ जिसड़ी रसकूपका जिसड़ी ही नाभ। आ ओपमा संरीखी इण में टोटो न लाभ।—र. हमीर

उ०—३ पंचमी आरती नाभ गुंभांसा, अस्ट कळी पर भंवर विलासा। छटी आरती विछ्म दिसा सूं, दे परकमा सीस निवासूं।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—४ परा नाभ में वसत है, पस्यंती हिरदे मंझार। मध्यमा कंठ में खुलत है, वैखरी सब्द उचार।—स्री हरिरांमजी महाराज

नाभकंज-सं०पु०यौ० [सं० नाभिःकंज] जिसकी नाभि में कमल है, विष्णु। उ०—देव देव दीन-नाथ राज राज स्री दयाळ, वासुदेव विस्वदेव वंदनीक नैं विसाळ। नारसिंघ नार अंण नरांनाह नाभकंज, रांमचंद्र राघवेस रूपरास रमा-रंज।—र.ज.प्र.

नाभकंवळ, नाभकमळ, नाभकवळ-सं०पु० [सं० नाभिः+कमल] तंत्र के अनुसार छः चक्रों में से तीसरा चक्र जो नाभि के पास माना जाता है, मणिपुर। उ०—नाभकंवळ में नाच नचावै, सब रंग रग सणणावै। अनहद नाद वजे इकतारा, गगन मडळ गणणावै।
—ऊ.का.

रू०भे०—नाभिकंवळ, नाभिकमळ, नाभिकवळ।

नाभनंद-सं०पु० [सं० नाभिनंद] जैनियों के प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभदेव जो नाभिराजा के पुत्र थे।

उ०—नाभनंद आणंदनिध, भरत जन्म करतार। सिद्धाचळ दरसण सुखद, आदीस्वर नोकार।—बा.दा.

नाभाग-सं०पु० [सं०] १ प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा भगीरथ का पौत्र और श्रुत का पुत्र (भागवत)।

२ वाल्मीकि रामायण के अनुसार इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो ययाति के पुत्र थे. ३ मार्कंडेय पुराण के कारुप वंश के एक राजा जो दिष्ट के पुत्र थे।

रू०भे०—नाभंग, नाभ।

नाभावास-सं०पु० [देशज: नाभा+सं० दास] दक्षिण देश में उत्पन्न डोम जाति के एक प्रसिद्ध ईश्वर-भक्त जो जन्मांध किन्तु बाद में उनकी आंखें अच्छी होगई थीं। इन्होंने 'भक्तमाल' नामक ग्रंथ की रचना की थी।

अल्पा०—नाभो।

नाभारत-सं०स्त्री० [सं० नाभ्यावर्त्त] घोड़े की नाभि के नीचे होने वाली भौंरी।—(अशुभ)

नाभि-सं०स्त्री० [सं० नाभि] १ जरायुज प्राणियों के पेट के बीच का वह गड्ढ़ा वा चिह्न जहां गर्भावस्था में जरायुज नाल जुड़ा रहता है, तुंदी। उ०—१ कसतूरी नाभि निसधि निकेवळ, उडियण जाइ लागा आकासूं। भ्रिग तेथि थकत हुया मन मांहि, वाजइ पवन तणा सुर वास।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वेल कियो बिसतार मनोभव बणवा। ईखे नाभि-निवांण उपाई अनुमवां।—बां.दा.

२ पहिये का मध्य भाग, चक्रमध्य।

वि०वि०—बैलगाड़ी के पहिये के मध्य यह बड़ा सा उभरा हुआ होता है। इसके बीच में एक धातु का गोल घेरा और फंसाया जाता है जिसे 'नायो' कहते हैं। इसी के बीच में धुरी रहती है।—डि.को.

३ कस्तूरी।

सं०पु०—४ जैनियों के आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव के पिता का नाम। भागवत के अनुसार ये आग्नीध्र राजा के पुत्र थे।

रू०भे०—ना', नाभी, नाह, नाहि, नाही, नाहू।

मह०—नाभ।

नाभिकंवळ, नाभिकमळ, नाभिकवळ—देखो 'नाभकवळ' (रू.भे.)

नाभिनरिंद-सं०पु०यौ० [सं० नाभिनरेन्द्र] ऋषभदेव स्वामी के पिता का नाम। उ०—थे तो नाभि-नरिंद कुल चन्दा।—वि.कु.

नाभिपाक-सं०पु० [सं०] बालकों का एक रोग जिसमें नाभि में घाव हो जाता है और उसमें मवाद पड़ जाता है।

नाभिराय-सं०पु० [सं० नाभिराज] जैनियों के आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव के पिता।

नाभिवरस-सं०पु० [सं० नाभिवर्ष] राजा नाभि के नाम पर पड़ा हुआ भारतवर्ष का एक नाम।

नाभिसुत-सं०पु० [सं०] राजा नाभि के पुत्र, ऋषभदेव।

उ०—नाभिसुत नमो रिखभ नरेस।—पी.ग्र.

नाभी—देखो 'नाभि' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ नाभी निरत लगाय सुखमण जोइये, पांचू उलट समाय लेहर जम खोइये ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ ऊंडी नाभी री भाभी अकुळाती ।—ऊ.का.

नाभीसंभव-सं०पु० [सं० नाभिसंभव] ब्रह्मा (डिं.को.)

नाभौ—देखो 'नाभादास' (अल्पा., रू.भे.)

नाय-सं०स्त्री०—१ वह गड्ढा जहाँ कुम्हार कच्चे मिट्टी के बरतनों को अग्नि में पकाता है ।

२ देखो 'नांई' (रू.भे.)

उ०—पोह दूजा देसां परदेसां, जोया बोह गढ़ कोटे जाय । मैं राखियो थुरै मेड़तिया, नर धन रा आभूखण नाय ।—ओपौ आढ़ौ

३ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

४ देखो 'न्याय' (रू.भे.)

नायए-सं०पु० [सं० ज्ञातक] ज्ञातपुत्र श्री महावीर (जैन) ।

नायक-सं०पु० [सं०] (स्त्री० नायका) १ स्वामी, प्रभु, नाथ (डिं.को.)

उ०—१ लिछमीवर भगतां धू-लायक । नायक जगत दासरथ नंद ।
—र.ज.प्र.

उ०—२ कियो हरख कमधज निरख, नायक ब्रहमंडां । भेज ग्रांम गज भिड़ज, पूज प्रम-धाम घमडां ।—रा.रू.

२ मालिक, अधिपति ।

उ०—१ नायक मांनै चुगल नूं, परगह करै पुकार । मांहरा सिर रा मोड़ नूं, कर बोळौ किरतार ।—बां.दा.

उ०— २ सुणे भयकर सबद, धांन कोळाहळ थायो । वखत असुभ रौ वडो, सवण हहकार सुणायो । जिण तिण पूछै जिको, हुवौ किण विध की होसी । जुड़ै न पाछो जाब, रैत गुण कहकह रोसी । गढ़पती 'मांन' सुरलोक गौ, नायक जोधां नेर रौ । कव लोक यसौ कुण कर सकै, चरण जिसो जिण वेर रौ ।—चैनदांन वणसूर

३ पति (डिं.को.)

उ०—१ नदियां सुत तासु सुता रौ नायक, जिण नूं काठो झालै । जळ सुत मीत तासु सुत जिण नूं, घात कदै न घालै ।—र.रू.

उ०—२ सुखदातासरणायां, निज संतां जांनकी । नायक दस सिर भंज दुबाह, राह जग श्रीत राजेस्वर ।—र.ज.प्र.

४ श्रेष्ठ पुरुष ।

उ०—१ जदूकुळ-नायक सांमिय-जग्ग, पदम्म-पताक-अलंक्रित पग्ग । पगां री रेणु धरै सिर ध्रम्म, धियावै पग्ग अहोनिस ध्रम्म ।—ह.र.

५ लोगों को किसी ओर प्रवृत्त करने वाला या इस प्रकार का अधिकार रखने वाला, जनता को अपने कहे पर चलाने वाला पुरुष, नेता ।

६ सरदार, अगुआ ।

उ०—नायक पुगा नेह तोड़, कूबा वढ़ ताटा । गाडा दिया गुड़ाय, मही भ्रित भरिया माटा ।—पा.प्र.

७ मुखिया, प्रधान । उ०—मेड़तिया 'मधकर' हर मेड़तै सहायक, 'सांहँस के सादूळ बंस के नायक ।—रा.रू.

८ वह पुरुष जो संगीत कला में प्रवीण हो, कलावंत ।

९ दीपक राग का पुत्र माना जाने वाला एक राग (संगीत) ।

१० साहित्य में वह पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य या नाटक आदि का मुख्य विषय हो अथवा शृंगार का आलम्बन या साधक रूप-यौवन-सम्पन्न पुरुष ।

११ मध्य गुरु की चार मात्राओं का नाम (।ऽ।) ।—डिं.को.

१२ मरहम-पट्टी करने वाला । उ०—नसतर घर नायकां, मिळै पायकां समेळा । मेवा जेसळ मिळै, अर रूपा सम चेळा ।—सू.प्र.

१३ मारवाड़ में निवास करने वाली एक मुसलमान जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

१४ थोरी जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

१५ भील जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

१६ शिकारी, आखेटक, आहेड़ी (डिं.को.) ।

१७ बनजारा जाति के व्यक्ति के लिए आदर-सूचक शब्द ।

रू०भे०—नाइक ।

नायका-सं०स्त्री० [सं० नायिका] १ वह स्त्री जिसके चरित्र का वर्णन नाटक, काव्य आदि में हो अथवा जो शृंगार रस का आलंबन हो, रूप-गुण-सम्पन्न स्त्री ।

उ०—वेलां तरवर बींटियां, दुति कुसुमां दरसंत । निजर पिया व्रज-नाह रै, बनमय सदन बसंत । बनमय सदन बसत अलोक बणाविया । गुण सुक पिक कळहंस क मोरां गाविया । नेह घणै जिण ठोड़, पधारै नायका । गहि बीणां सुर गांन, हुवै जस गायका ।—बां.दा.

२ देखो 'नासका' (रू.भे.)

रू०भे०—नाइका ।

नायका-मल्लार-सं०पु० [सं० नायक-मल्लार] संपूर्ण जाति का एक राग । इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं (संगीत) ।

नायण, नायणी-सं०स्त्री० [सं० नापित] नाई जाति की स्त्री, नाइन ।

उ०- १ नायण दूती हूंती । नाई जाय राजा नूं कही । म्हाराज म्हारी नायण कहै छै । म्हाराज कहै तौ मोजडी री कासूं चली जे री आ जोडी री मोजड़ी छै तै नुं पैदास करूं ।—चौबोली

उ०—२ सहज ललाई सांपरत, प्रीतम प्यारी पाय । निरखै भरमै नायणी, जावक दे मिळि जाय ।—बां.दा.

रू०भे०—नाइन ।

अल्पा०—नायली ।

नायत-सं०पु० [देशज] १ वैद्य, हकीम (डिं.को.)

२ देखो 'नायतौ' (रू.भे.)

नायता, नायता नाई-सं०स्त्री० [देशज] नाई जाति की एक शाखा जो घायलों की चिकित्सा करते थे ।

उ०—नीजांमां नइ नायता, माछी मिळ्या गुआर । मीणा मोची मोकळां, मूकी गया दुआर ।—मा.कां.प्र.

नायतो-सं०पु० [देशज] नाई जाति की 'नायता' शाखा का व्यक्ति।

उ०—गड़गड़ै नगारां नाद गहरायतां, चौगणा जोस मुख चढै चकरायतां। नत भड़ा भीच हेला पड़ै नायतां, पळा दाटी रहै अ्रसा अ्रड़पायतां।—महादांन महड़ू

रू०भे०—नायत।

नायपुत्त-सं०पु० [सं० ज्ञातपुत्र] जिनेन्द्र श्री वर्द्धमान स्वामी (जैन)।

नायब-सं०पु० [अ०] १ किसी के काम की देख-रेख करने वाला, किसी की ओर से काम करने वाला, मुख्तार।

उ०—१ आयो फेर इकावनो, काजम लह्यो निदांन। नायब हुवौ नवाब रै, खित पुड़ लश्करखांन।—रा.रू.

उ०—२ नायब आयो जोधपुर, ईसपअली मुगल्ल। 'सोनागिर' साजै दिवस, नृप राजै 'अजमल्ल'।—रा.रू.

२ सहायता देने वाला, सहायक, सहकारी।

ज्यूं—नायब तहसीलदार।

उ०—ऊंचां नहिं आदिर आटै, सुण लीजो 'सिछियाह'। कांनां लागा कंवर रै, वण नायब विछियाह।—र. हमीर

३ प्रतिनिधि। उ०—सुण फतह रीझ इम दी दिलेस। पटझर जुहार मणि सरब पेस। साह रै नायबां माह सूर। कर थाट आवियो जुध करूर।—वि.सं.

रू०भे०—नाइब।

नायबी-सं०स्त्री० [अ० नायब+रा.प्र.ई] १ नायब का पद।

उ०—जोधांणी री नायबी, जो आपै पतसाह। खिजमत खांनाजाद री, तौ देखै दोइ राह।—रा.रू.

२ नायब का कार्य, नायब का काम।

रू०भे०—नाइबी।

नायला-सं०पु० [देशज] एक प्रकार का गेहूँ बोने का ढंग व इस ढंग से बोया हुआ गेहूँ।

वि०वि०—इस ढंग में 'नाई' (जो बांस आदि के खोखले डंडे पर चोंगा लगा कर बनाई जाती है) को हल के साथ बांध दी जाती है, हल चलाते समय साथ-साथ गेहूँ भी पास की झोली में से मुट्ठी भर-भर कर धीरे-धीरे खेत में डाले जाते हैं।

नायली—१ देखो 'नाई' (१) (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'नायण' (अल्पा., रू.भे.)

नायलौ—देखो 'नाई' (१, २) (अल्पा., रू.भे.)

नायो—देखो 'नाई' (रू.भे.)

उ०—झूसर घायां गळ आवढ़ कढ़ झांखै। नम-नम सावढ़ नै नायां कण नांखै।—ऊ.का.

ना'योड़ो—१ देखो 'न्हाठियोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'न्हायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री०—ना'योड़ी)

नायो-सं०पु० [सं० नाभि] बैलगाड़ी के पहिए की नाभि के मध्य फँसाया हुआ धातु का गोलाकार उपकरण जिसके मध्य धुरी डाली जाती है।

वि०वि०—देखो 'नाभि' (२)

नारंग-सं०पु०—१ रक्त, खून, शोणित (डि.को.)

उ०—१ खग झट 'विलंद' घटां परि खेलूं। असुरां नारंग ताळ उभेलूं। कह 'जैसिंघ' 'सिभु' सुत इम कथ। भुज-लग झट विहंडूं खळ भारथ।—सू.प्र.

उ०—२ जरदाळ घण पखराळ जुड़ि, विहंड खाळ नारंग वहै। हव करां इसौ जुध विहद हूँ, करां झोकि सूरिज कहै।—सू.प्र.

२ तीर, बाण, शर।

३ तलवार। उ०—उडि बांण तीर अपार, असि आफाळिया। मिलियां अरि धड़ मांहि, लोहि उलाळिया। घण धमक सावळि घाट, नीछटि नारंगां। हद वरै वर बहु हूर, बधि बधि वारंगां।—सू.प्र.

४ देखो 'नारंगिया' (मह., रू.भे.)

५ देखो 'नारंगी' (मह., रू.भे.) (डि.को.)

उ०—जगडइ ए जासक जूहिय मूं हियडउ निरधार। देखउं केवडी-केवडी जेवडी करवत धारि। प्रिय विण चंगि नारंग रंग ना आवइ आजु। हिव मइं हरया साधवी माधवी वेलि न काजु।

—नेमिनाथ-फागु

नारंगफळ-सं०पु० [सं० नारंग+फल] स्तन, कुच।

उ०—सेल घमोड़ा किम सह्या, किम सहिया गजदंत। कठिण पयोहर लागतां, कसमसतो तूं कंत। कंत सूं ओळंबो दियो इम कांमणी। अंग घट आज रा केम सहिया अणी। ईखतां आप नारंग-फळ आकरा। सह्या किम कंत अे घाव घट सेल रा।—हा.झा.

नारंगिया-सं०पु० [सं० नारंग+रा.प्र. इया] पीला रंग जिसमें हल्की लाल झांई प्रतीत होती हो, पकी हुई नारंगी जैसा रंग।

वि०—पीलापन लिए हुए, लाल रंग का। उ०—जरद कसूंबल नारंगियां, सपताळू सोहंत। पोसाकां इण सूं लियो, बाजी फूली वसंत।—पनां वीरमदे री वात

रू०भे०—नारंगी।

मह०—नारंग।

नारंगी-सं०स्त्री० [सं० नागरङ्ग, नारङ्ग] १ मीठे, रसीले और सुगंधित फलों वाला नींबू की जाति का एक पेड़ या इस पेड़ का फल। पकने पर इसके फल का छिलका नरम और पीला होता है जिसमें हल्की लाल झांई प्रतीत होती है। यह सरलता से हट जाता है और अंदर रसीली फांकें निकलती हैं। उ०—१ फळां कंदळी सोय स्वादे अफारा, छये सोय बादाम पिस्ता छुहारा। सुधा साव नारंगियां रंग सोहै, महादेव देवेस मेवे विमोहै।—रा.रू.

उ०—२ बागां जाज्यो बावड़ी, नींबू ल्याज्यो चार। छोटी नारंगी ल्याज्यो थे म्हांरा भरतार।—लो.गी.

उ०—३ बोलसरी नारंगियां, अखरोटां अंजीर। सेव सेवती अति सरस, गहरा बिरख गहीर।—गजउद्धार

२ देववृक्षों में से एक, सुरवृक्ष (अ.मा.)

३ देखो 'नारंगियो' (रू.भे.)

उ०—घावां अंगां वड़ंगां वेछुंगां तंगां वीर घाट, भोम रंगां स्रोण हूंत नारंगां भेवांन। जोध चंगां बारंगां सुरंगां बींद वरै जठै, अभगां सीसोद भुजां अड़ै आसमांन ।—फतहराम

नारंज-सं०स्त्री० [फा० नारंगी] [रा०] अप्सरा ।—(डि.को.)

नार—१ देखो 'नाड़' (रू.भे.)

२ देखो 'नारी' (रू.भे.)

उ०—१ जपै नर नार उभै कर जोड़ । करै सुर सेव तेतीसूं कोड़ । नागेस नरेस सुरेस मुनेस । आदेस आदेस आदेस आदेस ।— ह.र.

उ०—२ जावा द्यो म्हारी प्यारी नार जावा द्यो ना ए। थांनै आय पुजावां गणगोर म्हारी मिरगानैणी जावा द्यो ना ए ।—लो.गी.

ना'र-सं०पु० [सं० नारकः] देखो 'नाहर' (रू.भे.) (डि.को.)

ना'रकंकरी—देखो 'ना'र ककरी' (रू.भे.)

नारक—१ नरक (डि.को.)

२ नरक में गिरा हुआ, नरकनिवासी, नरकवासी ।

उ०—कुळ रूप नारक पांमियो ।—वि.कु.

वि० [सं० नारक] नरक संबंधी, नरक का ।

ना'रककरी-सं०स्त्री० [सं० नरहरि+कर्करः+रा.प्र ई] दो व्यक्तियों द्वारा खेला जाने वाला एक देशी खेल विशेष जिसमें एक ही प्रकार के सात कंकर होते हैं जिन्हें बकरी माना जाता है और उनसे कुछ बड़े आकार के दो कंकर होते हैं जिन्हें नाहर माना जाता है। एक त्रिभुजाकार रेखा-चित्र पर इस खेल को खेला जाता है जिसमें दस विन्दु (Cross Points) होते हैं ।
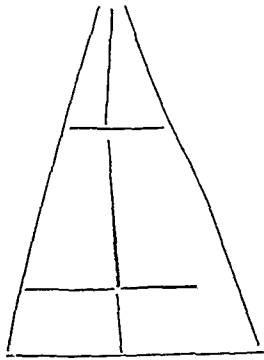
रू०भे०—ना'र कंकरी ।

ना'रकांटो-सं०पु० [देशज] एक प्रकार की वेल जिसकी जड़ और बीज औषध में काम आते हैं ।

वि०वि०—देखो 'सतावर' ।

रू०भे०—नाहर-कांटो ।

ना'रकियो—१ देखो 'ना'रो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'नाहर' (अल्पा., रू.भे.)

नारकी, नारयी-वि० [सं० नारकिन्] १ नरक में जाने योग्य, पापी, पातकी । उ०—१ भूख त्रिसा सीत तापनी जीवा, रोग, सोक, भय जांण । दुख भोगवै जे नारकी जीवा, करम तणै अहिनांण ।

—जयवांणी

उ०—२ देवता नै नारकी रै हुवौ सुखियौ दुखियौ जीव वहु मुवौ । भारत गया देव देवाधो, इम जांणी दया धरम आराधौ ।—जयवांणी

उ०—३ पारा नी परि देह वळी मिळइ, पडिउ भूमि गाढ़उ टळवळइ । आरडइ नारगो पाडइ वूंब, आवइं पंखिया सिरि दिइं चूब ।

—चिहुंगतिचउपई

२ देखो 'नरक' (रू.भे.)

उ०—विकरंद बास हूंता विविध, हाय हमैं हूं हारगी । भरतार मती भुगताय रे, निलज जोवतौ ही नारगी ।—ऊ.का.

ना'रड़ो-सं०स्त्री०—१ तरुण गाय ।

२ देखो 'नाहरी' (अल्पा., रू.भे.)

ना'रड़ौ—१ देखो 'नाहर' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'ना'रौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० ना'रड़ी)

ना'रचाळी, ना'रछाळी—देखो 'ना'रककरी' ।

नारणोट, नारणोत, नारणौट, नारणौत-सं०पु०—वीकावत राठौड़ वंश की उपशाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति (द.दा.)।

नारद-सं०पु० [सं०] १ ब्रह्मा के पुत्र एक ऋषि जो देवर्षि भी कहे जाते हैं (डि.को.)।

उ०—विढ़तां नारद संकर वखांणे। पह तो रिजक लियौ परमांणे ।

—सू.प्र.

वि०—१ इधर की बात उधर और उधर की बात इधर करने वाला, कलहप्रिय, चुगलखोर ।

रू०भे०—नारद्द, नारिद ।

अल्पा०—नारदियो ।

२ श्वेत * (डि.को.)

नारदपणौ-सं०पु० [सं० नारदत्व] चुगलखोरी, लड़ाने का काम ।

ज्यूं—क्यूं वैठा वैठा सूने कांम रौ नारदपणौ करौ हो ।

क्रि०प्र०—करणौ, चलाणौ हलाणौ ।

नारदपुरांण-सं०पु० [सं० नारद-पुराण] एक पुराण जो अठारह महा-पुराणों में से एक है ।

नारदरख, नारदरिख, नारदरिखी-सं०पु० [सं० नारद ऋषि] नारद ऋषि, देवर्षि । (अ.मा.)

उ०—उडै खाग ऊपरा, हसै नारदरिख हासौ । विढ़ण एम वेखवै, तरण रथ थांभि तमासौ ।—सू.प्र.

नारदा-सं०स्त्री० [?] एक देवी का नाम ।

उ०—तुही सारदा नारदा कासमेरी । तुही काळिका भास मद्रास केरी ।—मे.म.

नारदियो—देखो 'नारद' (अल्पा., रू.भे.)

नारदी-सं०पु० [सं० नारदिन्] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

नारदो-सं०पु० [सं० नालि+द्वार] १ मकान के गंदे पानी का निकास-स्थान, नाला, मोरी। उ०—ऊतरै अमल उण बखत में, मिनख चिडाय'र मारदो। वस बाक फाड बैठा रहै, नाक झरै जिम नारदो। —ऊ.का.

२ पेशाबघर। उ०—तारत रो निज तनय, नारदो और सनाती। मार अमोलक मित्र, सदा उलटी संगाती।—ऊ.का.

नारद्द—देखो 'नारद' (रू.भे.)

नारमद-वि० [सं० नार्मद:] नर्मदा संबंधी, नर्मदा का।

ना'रसिंघ—देखो 'नरसिंघ' (रू.भ.)

उ०—१ तेत्रीस कोडि लिखमी तवै, हुम्रो कोड़ि जमराव हरि। म्राज री घणु अघियांमणी, नार्रसिंघ थारी निजरि।—पी.ग्रं.

उ०—२ नार्रसिंघ नीछटै, नीछटै अरण नहराद इंता उद्र। काळ-झाळ कळकळै, रोस विकराळ जहारुद्र।—सू.प्र.

ना'रसिंघी—देखो 'ना'रसिही' (रू.भे.)

ना'रसिंह—देखो 'नरसिंघ' (रू.भे.)।

उ०—१ मछ कछ वाराह धरणीधर, ना'रसिंह बांमन करुणाकर। परसरांम रुघवीर कलपतर, क्रिस्ण क्रिपाळ बंधु जुत हळधर। —गजउद्धार

उ०—२ मच्छ कच्छ वाराह महमहण, नार्रसिंह बांमन नारायण। दुज्ज-रांम रघु-रांम दमोदर, क्रसन बुद्ध कलकी करुणाकर। —ह.र.

नार्रसिही-वि०—नृसिंह सम्बन्धी।

सं०स्त्री०—१ एक देवी. २ देवी का एक रूप।

रू०भे०—ना'रसिंघी।

नारसींग, नारसींघ, नार'सी—देखो 'नरसिंघ' (रू.भे.)

उ०—१ देव देव दीननाथ राज राज स्रो दयाळ। वासुदेव विस्व-देव वंदनीक नै विसाळ। नारसींघ नार श्रेण नरांनाह नाभकंज। रांमचंद्र राघवेस रूपरास रमारंज।—र.ज.प्र.

उ०—२ प्रभु कुण जांणिसै साच री पारसी। निमो थंभि नीसरे गाजियो नार'सी।—पी.ग्रं.

नारांतक-सं०पु० [सं०] रावण का पुत्र, एक राक्षस।

नारांयण—देखो 'नारायण' (रू.भे.)

नारांयणी—देखो 'नारायणी' (रू.भे.)

नारां री ग्रौलाद-सं०स्त्री० [स० नरहरि+अ० औलाद] घोड़ों की एक जाति विशेष।

वि०वि०—इस जाति की घोड़ी बच्चा देते ही खा जाती है। यदि उसी समय उसको मांस डाल दिया जाय तो वह अपने बच्चे को नहीं खाती है और उसका वह बच्चा 'नारां री ग्रौलाद' जाति का कहलाता है।

ना'रां-री-दरीखांनो-सं०पु० [रा० ना'र+फा० दरीखाना] वह स्थान जहां दशहरे या होली को राजा-महाराजाओं का दरबार लगता था (उदयपुर)।

नाराइण—देखो 'नारायण' (रू.भे.)

उ०—उभै मगण पय आंणिजै, सेसा ऐसा छंद। नाराइण निरकार नर, वंदे स्रीगोविंद।—पि.प्र.

नाराइणि, नाराइणी, नाराईणी—देखो 'नारायणी' (रू.भे.)

नाराच-सं०पु० [सं०] १ पूरा लोहे से बना बाण विशेष।

उ०—विहु पखै सिल्ल भल्ल वावल्ल कुंतल करवाळ नाराच पडिवा लागा।—व.स.

२ बाण, तीर (डि.नां.मा.)।

३ छत्तीस प्रकार के आयुधों में से एक (व.स.)।

४ तलवार. ५ एक ह्रस्व एक लघु इस क्रम से १६ वर्ण और २४ मात्रा का वर्ण मात्रिक छंद विशेष. ६ प्रत्येक चरण में दो नगण और रगण वाला एक वर्णवृत्त विशेष. ७ २४ मात्राओं का एक छंद. ८ देखो 'नाराज' (रू.भे.)।

रू०भे०—नराच, नराज, नाराज, नाराय।

नाराज-वि० [फा० ना+अ० राज़] अप्रसन्न, नाखुश, खफा।

सं०स्त्री० [सं० नाराच] १ तलवार (हि.को.)।

उ०—१ किसन घड़ा खग झाड़ि करि, धारां धोपट्टी। नाराजां वग्गो निहाव, उस्सीस अघट्टी।—सू.प्र.

उ०—२ ग्रहि छळ 'अरजण' गोड़, परठि मनवार अपारां। नजर टाळि न'राज, वहे घट हुवो विहारां।—सू.प्र.

उ०—३ फुंकार अहेस, हरी चंदण पयोध फैण, माहेस त्रिनैण इंद्र जुन्हाई समाथ। गिरवांणां सहाई मनोज धेनु ग्यांन गोमा, नाराज, वरीस, सोमा इसी प्रथीनाथ।—र.रू.

२ भाला।

३ देखो 'नाराच' (रू.भे.)

रू०भे०—नराज, नाराजक, नाराजी।

नाराजक—देखो 'नाराज' (रू.भे.)

उ०—वाहै खग चूहड़खांन विक्राळ। नाराजक वाज तणी मुहिनाळ। —सू.प्र.

नाराजगी—सं०स्त्री० [फा० ना+अ० राज़+रा०प्र०गी] रुष्टता, अप्रसन्नता।

रू०भे०—नराजगी, नाराजी।

नाराजी—देखो 'नाराज' (रू.भे.)

उ०—१ पातिसाह रा गूडर गाहीजे छै। गज टल्ला गाहीजै छै। वीरा रस ऊपनो छै। वीरा रस मातो छै। वीर हाक वाजिनै रहो छै। नाराजिग्रां री झाट पड़िनै रही छै। वगतरां ऊपरां तरवारिग्रां रा वांड त्रूटिनै रहिग्रा छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ घणि वाजित्र घण घाव, घमघमि अपछर घूघरा। वागा

वीरारस तणा, नाराजिग्रां निहाउ ।—वचनिका
२ देखो 'नाराजगो' (रू.भे.)
नाराट–सं०पु० [सं० नाराच] तीर, बाण (डिं.नां.मा.)
नाराय—देखो 'नाराच' (रू.भे.) (जैन)
नारायण–सं०पु० [सं०] १ विष्णु (डिं.को.)
उ०—१ सिव सांति करइं, वैसवानर कापडा पखाळइं, ब्रह्मा पुरोहित, नारायण दीवटिग्रो, विस्वामित्र ग्राभरण घडावइ ।—व.स.
उ०—२ परनारी सहोदर गांगेय, निरभय भीम, ग्रापन्नसत्व, जीमूतवाहन, विवेकि नारायण, विद्या व्रहस्पति ।—व.स.
२ श्रीकृष्ण (ग्र.मा.)
३ ईस्वर, परमेस्वर । उ०—१ धवळा सूं राजै घणी, चंगो दीसै ग्वाड़ । नारायण मत नाखजै, धवळा ऊपर धाड़ ।—बां.दा.
उ०—२ ग्रखिलेस ग्रनूपम एक ग्रज, ग्रजरांमर महिमा ग्रजय । नित निरविकार निरभय निपुण, नारायण करुणानिलय ।
—ऊ.का.
उ०—३ नारायण न बिसारजै, लीजै नितप्रत नांम । लाभीजै मिनखा-जनम, (तो) कीजै उत्तम कांम ।—ह.र.
४ पोष का महीना (डिं.को.)
५. 'ग्र' ग्रक्षर का नाम. ६. देखो 'नारायणास्त्र' ।
रू०भे०—नाराण, नरांयण, नरियण, नारांयण, नाराइण, नारिग्रण, नारियण, नारीयण ।
नारायणक्षेत्र, नारायणखेत–सं०पु० [सं० नारायण क्षेत्र] गंगा के प्रवाह से ४ हाथ तक की भूमि ।
नारायणतैल–सं०पु० [सं०] ग्रायुर्वेद का प्रसिद्ध तेल ।
नारायणप्रिय–सं०पु० [सं०] १ महादेव, शिव ।
२ सहदेव ।
नारायणबळि–सं०पु० [सं० नारायणबलि] ग्रात्महत्या ग्रादि द्वारा मरने वाले पापी के लिए किया जाने वाला प्रायश्चित विशेष ।
नारायणास्त्र–सं०पु० [सं०] एक प्रकार का ग्रस्त्र । उ०—नागास्त्र, गुरुडास्त्र, संवरत्त कास्त्र, मेघास्त्र, प्रळयकास्त्र, रिक्षास्त्र, ग्राग्नेयास्त्र, वारुणास्त्र, माहेंद्रास्त्र, तिमिरास्त्र, डिंभककरास्त्र, नारायणास्त्र, ग्रस्वग्रीवास्त्र, व्रह्मास्त्र, मेघास्त्र इति ग्रस्त्रांणि ।—व.स.
नारायणी–सं०स्त्री० [सं०] १ ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्राठ देवियों में से एक ।
२ गोड़ वंश की ग्राराध्य देवी का नाम (बां.दा.ख्यात) ।
३ दुर्गा, शक्ति ।
४ लक्ष्मी, श्री (डिं.को.)
५ गंगा. ६ सतावर ।
७ महाभारत युद्ध में दुर्योधन की सहायतार्थ दी जाने वाली श्रीकृष्ण की सेना का एक नाम ।
रू०भे०—नारांयणी, नाराइणि, नाराइणी, नाराईणी ।

नारिंग—देखो 'नारंगी' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—१ गोरा गल्लस्थळ विमळ, जांणइ जुग नारिंग । नयण नरेसर पारधी, सोभि चडियां सारिंग ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ दाडिम नी कुळी, तरुणां, करुणां, जंबीर, बीजपुरक नी घणी चडउडी, सरंग नारिगि नो फाडि, ग्रति गुल्यइ ग्रांगि, पूरी रंगि ।—व.स.
नारि—देखो 'नारी' (रू.भे.) (ह.नां.)
उ०—नाक नवल्ली नारि रै, नकबेसर घणनूर । मोती ग्रहियां चांच मझ, जांणक कीर जरूर ।—बां.दा.
नारिग्रण—देखो 'नारायण' (रू.भे.) (ह.नां.)
उ०—फळै री मूळ कड़वो घणो कुटंब सूं, नारिग्रण नांम मन मांहि ना'णै । उठा रा दूत खोटी हुवै ग्रांगणै, जीव तो ग्रठारी ग्रास जांणै ।—ग्रोपो ग्राढ़ो
नारिकेर, नारिकेल–सं०पु० [सं० नालिकेर] नारियल (डिं.को.)
रू०भे०—नारियळ, नारिकेर, नारीकेल, नारेळ, नाळकेर, नाळिकेर, नाळियर, नाळीग्रर, नाळीयर, नाळेकेर, नाळेर ।
ग्रल्पा०—नारेळियो, नारेळो, नाळेरियो, नाळेरी, नाळेरो ।
नारिंद—देखो 'नारद' (रू.भे.)
उ०—नाट विरत फिरता रिख नारिंद, गिरिंद तणइ प्राहुणा गया । चलणै ऊठि लागा हेमाचळ, मन सूधे जांणि घणी मया ।
—महादेव पारवती री वेलि
नारियण—देखो 'नारायण' (रू.भे.) (डिं.को.)
उ०—ग्रजामेळ पर ग्राविया, साठ सहंस जम साज । नांम लियां हिक नारियण, भड़ सो छूटा भाज ।—र.ज.प्र.
नारियळ—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.)
ना'रियो–सं०पु० [देशज] १ कुए से पानी निकालने की लाव के छोर पर नाहर के मुंह की ग्राकृति का बना उपकरण जो मोट या चरस को पकड़ता है ।
२ चमड़े का रस्सा जो हल पर जुग्रा बांधने के काम ग्राता है ।
३ देखो 'ना'रो' (ग्रल्पा., रू.भे.)
४ देखो 'नाहर' (ग्रल्पा., रू.भे.)
नारिंसिंघ—देखो 'नरसिंघ' (रू.भे.)
उ०—नारिंसिंघ नरनाहो रेवंत सिरि चढ़िसै रहमांण ।—पी.ग्रं.
नारी–सं०स्त्री० [सं०] १ ग्रौरत, स्त्री (ग्र.मा.)
उ०—तेल हींग री त्याग, व्रिद्ध नारी बिलगावै । निज इंद्री कर नास, ग्यांन बिन जनम गमावै ।—ऊ.का.
२ पत्नी, ग्रर्द्धांगिनी ।
३ छः मात्राग्रों का एक मात्रिक छंद जिसको 'वांम' भी कहते हैं ।
४ पुरुष की ७२ कलाग्रों में से एक (व स.)
५ तीन लघु ढगण के तृतीय भेद का नाम (।।।) (डिं.को.)
६ तबले में वायां, ठेका, डुग्गी ।

'पाल' बीजा ।—आउवै ठा. हरनाथसिंह री गीत
अल्पा०—ना'रकियौ, ना'रड़ियौ, ना'रड़ौ, ना'रियौ ।
२ देखो 'नाहर' (अल्पा., रू.भे.)
नाळग-सं०स्त्री० [देशज] किंवदंती. जनश्रुति, अफवाह।
नालंदा-सं०पु० [सं०] १ बौद्धों का एक प्राचीन मठ और विद्यापीठ जो हर्ष के समय में एक बहुत बड़े विश्वविद्यालय के रूप में स्थित था।
नाळ-सं०स्त्री० [सं० नाल: या नालि:] १ बंदूक।
उ०—गोळा नाळ चत्रंग गढ़ गाजै, गाहै मीर साधीर घणौ। 'जगा' सुत नह दीयै जीवंतां, तीजौ लोचण प्रिथी तणौ।
—रावत पत्ता चूंडावत (आमेट) रौ गीत
२ तोप (डिं.को.)
उ०—१ नूरमली तिण नाळ रौ, कीधौ एक कहाव। नाळचां नौरंगजेब री, लीधां लभ्भै साव।—रा.रू.
उ०—२ अवै पातिसाहजी घोड़ो लाख दोय लीयौ नै गढ़ रौ घणौ गाढ़ सुणियौ। जरै बडी वडी नाळ सौ जूंट जुटै तिसी सईकड़ावध लीनी। जिके दोय मण तीन मण री गोळी खाय। हाथी पूठै टल्ला दै तरै खिचै।—वीरमदे सोनिगरा री वात
३ बन्दूक, तोप आदि की वह नली जिसमें बारूद, गोला आदि भरे जाते हैं, बन्दूक के आगे निकला हुआ पोला डंडा, बन्दूक की नली।
उ०—दगै नाळ रवदाळ, जड़ै विकराळ जजीरां। कमंध दळां कळिचाळ, उडै झळ नाळ अंगीरां।—सू.प्र.
४ जल में होने वाला एक प्रकार का पौधा।
५ कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली और लबी डंडी, डांडी।
उ०—१ भामणि रा सुकमार भुज, साहब गळै सुहाय। जांण नाळ जळजात रा, कांम पताका काय।—बां.दा.
उ०—२ ललवकै गजां पोगरां नाळ लोभा। भळवकै मुखां सूरमां भांण सोभा।—सू.प्र.
६ जल बहने का स्थान।
उ०—नदी बह नाळ, त्रुटै जळ ताळ। भिळै रज भांण, मंडै तिमरांण।—सू.प्र.
७ योनि।—उ०—दूजै पहरै रैणि वै, वणिजारिया, तू रत्ता तरुणी नाळ वे। माया मोह फिरै मतवाळा, रांम न सक्या सभाळ वे।
—दादूवांणी
८. लिंग, शिश्न।
९. स्त्रियों के शिर के 'बोर' नामक आभूषण के पीछे का भाग जिसमें रंगीन धागे बांधते हैं।
१० पहाड़ी रास्ता, पहाड़ी तंग मार्ग।
उ०—१ नाळ नृपत 'कुरमाळ' री, आयौ माळ जवन्न। साझ तुरंगां भीड़ियां, स्री महाराज 'अजन्न'।—रा.रू.
उ०—२ दहबा री घाटी सहर था कोस ३ छै, केवड़ा री नाळ सहर सूं कोस १ कूण रूपारास मांहै छै।—नैणसी
११ सीढ़ी, जीना।
१२ मकान का वह भाग या तंग गली जिसके दोनों ओर दीवारें हों और वह ईंधन आदि डालने के काम आता हो (शेखावाटी)।
१३ गेहूं, जौ आदि अनाज के पौधे की पतली लंबी डंडी जिसमें बाल लगती हैं. १४ कूए की उस बंधाई का नाम जिसे ऊपर से देखने पर गोल नल के समान सीधी दिखाई दे. १५. कुए बांधते समय अन्दर जाने का तिरछा रास्ता. १६ आग को प्रज्वलित करने के लिए धातु, लकड़ी, बांस आदि की वह नली जिसमें मुंह से फूंक मारी जाती है. १७ सुनारों की फूंकनी. १८ सूत लपेटने के लिए काम आने वाली जुलाहों की एक नली. १९ जुलाहों का एक उपकरण जिसके द्वारा वे बाने का सूत फेंकते हैं। इसकी आकृति कुछ नाव की सी होती है और भीतर से पोली होती है। खाली स्थान पर एक किनारे पर सूत लपेटा रहता है जो कांटे के बल पर रहती है। जब इसे ताने के बीच में से होकर एक ओर से दूसरी ओर तथा दूसरी ओर से पुन: उसी ओर फेंका जाता है तो उसमें से सूत खुल कर बाना भर जाता है. २० लता का अग्र तंतु जिसके बढ़ने से लता बढ़ती रहती है (शेखावाटी)।
(मि० तांतौ (२))
२१ पशुओं को औषधि देने के लिए बांस या धातु का बना उपकरण जो नली नुमा होता है तथा एक ओर बन्द होता है व दूसरी ओर से कलम की नोंक के समान तिरछा कटा हुआ होता है। इसकी लंबाई लगभग एक फुट होती है।
उ०—१ ताळ वाळ दीजै नहर, मनखां फूलां माळ। बळदां दीजै नाळ घी, पण नह दीजै गाळ।—बां.दा.
उ०—२ लीली बांधी ठांण में, घी का दै भर-भर नाळ वारी, म्हारा गूगा, भल रही वो।—लो.गी.
२२ वंश-परम्परा। उ०—खींच रा डळा खावै खिसक, नींच तळा कुळ नाळ रा। नित मींच आंख वैठै निलज, भीछ अमल भूपाळ रा।
—ऊ.का.
मुहा०—नाळ भ्रस्ट करणी—वंश बिगाड़ना।
२३ बैल आदि पशुओं के नाक का ऊपरी भाग. २४ जंगलों में गायों आदि के आने जाने से उनके खुरों के चिन्हों से बना हुआ रास्ता, खुरहर. २५ चीटियों की पंक्ति. २६ चीटियों के चलने से बनने वाला तंग रास्ता. २७ दसनामी संन्यासियों को दफनाने का खड्डा।
[अ० नाल] २८ लोहे का वह अर्द्ध चन्द्राकार खण्ड जिसे घोड़े की टाप के नीचे, बैलों के खुरों के नीचे (सड़क पर चलने वाले) या जूतों की एडी के नीचे रगड़ से बचाने के लिए जड़ते हैं।
उ०—१ जड़े बज्र नाळां झड़ै फूल ज्वाळा। मनो मेघ खद्योत खद्योत माळा।—वं.भा.
उ०—२ खणंक नाळि हैखुरां, पडति आगि पत्थरां।—गु.रू.बं.

यो—नाळ-बंध ।

२६ दो खपरैलों की जोड़ पर लगाया जाने वाला अर्द्धचन्द्राकार गोलाईदार लम्बा खपड़ो, नरिया. ३० तलवार आदि के म्यान की नोंक पर मढ़ी जाने वाली साम. ३१ कुए की जोड़ाई करने के लिए नीचे डाला जाने वाला लकड़ी का चक्कर. ३२ संगीत की मूर्च्छना (रा.रू.). ३३ मृदंग से मिलता-जुलता किन्तु एक ओर से बड़े तबले के समान दूसरी ओर से छोटे तबले के समान खाल का मढ़ा वाद्य विशेष ।

३४ देखो 'नळी' (रू.भे.)

३५ देखो 'नाळिय' (रू.भे.)

३६ देखो 'नाळो' (मह., रू.भे.)

अल्पा०—नळी, नाळकी, नाळियो ।

क्रि०वि० [पं.] १ एक दूसरे के साथ, आपस में, परस्पर ।

उ०—अउछाहे लीध रिदइ रइ आगइ, आंणियउ ताइ आप रे आवास । मिळीयइ नाळ उछाह मांडिया, पळ एक तियां न छोडइ पास ।—महादेव पारवती री वेलि

अव्य०—१ एक सम्बन्धसूचक अव्यय जिससे प्राय: सहचार का बोध होता है, साथ, सहित, से । उ०—रती न्व ना बीसरे, मरे संभाळ संभाळ । दादू सौदाई रहै, आसिक अल्लह नाळ ।—दादूवांणी

रू०भे०—नाळि ।

नाळक-सं०पु० [देशज] उड़द ।

वि०—परम्परा प्राप्त, प्राचीन । उ०—चलतो दळ दीठौय राव चखै, मन व्यापक गोरख बोल मुखै । कुळरूयत्र तणी बुध ओट कही, सत दीठाय नाळंक वैण सही ।—पा.प्र.

रू०भे०—नाळंग, नाळग ।

नाळकटाई-सं०स्त्री० [सं० नालि:+कत्र] १ नवजात शिशु की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम. २ नाल काटने के कार्य का पारिश्रमिक, नाल काटने की मजदूरी ।

नाळकाजंत्र-सं०पु० [सं० नलिका यत्र] १ बंदूक. २ तोप ।

नाळकी—देखो 'नाळ' (अल्पा., रू.भे.)

नाळकेर—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.)

उ०—नेतु निगुडि निरंजनी, नाळकेर नारिंग । नागवला निरविखी नखी, निकुली निरमळ संग ।—मा.कां.प्र.

नाळखोसी-सं०स्त्री० [देशज] तलवार को डालने की चमड़े की छोटी नाकी ।

नाळग—देखो 'नाळक' (रू.भे.)

नाळगूगरी-सं०स्त्री० [देशज] कूए की एक लाग विशेष जिसे जागीरदार किसान से लेता था ।

नाळछेद, नाळछेदक-सं०पु० [रा० नाळ+सं० छद्] डिंगल साहित्य में, विशेषतया गीतों में जहां जथाओं का पूर्णतया निर्वाह नहीं होता है वहां लगने वाला एक दोष । उ०—१ अपस अमूझ्यो अरथ, सबद पिण विण हित साजै । नाळछेद जिण नांम, जथा हीणो गुण जाझै ।

—र.रू.

उ०—२ अरथ होय आमूंझ अपस, सो देख उचारत । जथा निभै नह जेण, नाळछेदक निरधारत ।—र.ज.प्र.

नाळणो, नाळबो-क्रि०स० [देशज] १ अवलोकन करना, निहारना, देखना ।

उ०—१ वाळ कुण उखेड़ै वदन रा वाघ रै, नाग रै मणी दिस कवण नाळै । ओळिया जिकण विध गयोड़ा आगरै, वढ़ै कुण खाग रै पांण वाळै ।—बुधजी आसियो

उ०—२ इण भांत पनां वाट नाळै छै । अै वी ताता खड़ै छै ।

—पनां वीरमदे री वात

२ तलाश करना. ३ डालना, गिराना. ४ समझना ।

नाळणहार, हारो (हारी), नाळणियो—वि० ।

नाळिओड़ो, नाळियोड़ो, नाळयोड़ो—भू०का०कृ० ।

नाळीजणो, नाळीजबो—कर्म वा० ।

नाल्हणो, नाल्हबो, न्हाळणो, न्हाळबो —रू०भे० ।

नाळबंद-सं०पु०यौ० [अ० नाल+फा० बद] १ घोड़े की टाप या बैलों के खुरों के नीचे नाल जड़ने वाला ।

२ एक प्रकार का कर जो मवेशी रखने वालों पर लगाया जाता था । उ०—बूंदी सूं नाळबंद, राव रणमल जाया । कछवाहां नै भाटियां नारियळ पठाया ।—नापै सांखलै री वारता

रू०भे०—नाळबदी, नाळबंधो ।

नाळबंदी-सं०स्त्री०यौ० [अ० नाल+फा० बदी] १ घोड़े की टाप या बैलों के खुरों के नीचे नाल लगाने का काम ।

२ नाल जड़ने की मजदूरी ।

३ देखो 'नाळबंद' (रू.भे.)

रू०भे०—नाळबधी ।

नाळबंध—देखो 'नाळबंद' (रू.भे.)

नाळबधी—देखो 'नाळबंदी' (रू.भे.)

नाळव-सं०पु० [सं. नाल:] पानी निकलने का स्थान ।

नाळस—देखो 'नालिस' (रू.भे.)

नाळा-सं०स्त्री०—तोप । उ०—नाळा पड़ धमक अवलां नीध्रस । रांण 'जगो' कमधज सिरहठ । भार पड़ंत 'पदम' नंह भागो । दयारांम खग वागो दूठ ।—दयारांम आसिया री गीत

नालायक-वि० [फा० ना+अ० लायक] जो लायक न हो, अयोग्य, निकम्मा, मूर्ख । उ०—जसवंत दीनां जीव नैं, राजी होवै राम । नालायक सूं की नहीं, की लायक सूं कांम ।—ऊ.का.

रू०भे०—नालायक ।

नाळि—देखो 'नाळ' (रू.भे.)

उ०—१ तठै नाळि गोळा चलावतां एक नाळि फाटि पाछी पड़ी । ति वारै पातिसाह नाळि हुता निजोक हुंता । तिणि दारू पातिसाह बाळि मारियो ।—द.वि.

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजान सिलांमति क्लिकिला नाळि छूटी सु गोळां री आगाज सूं धरती धमकिनै रही छै। जबरजग नाळियां रा निहा उपड़ि नै रहिया छै। गजनाळयां, सुतरनाळयां, जंमूरानाळयां, रांमचंगी हथनाळयां रा घणणाट वाजै छै। आकास छायो छै।—रा.सा.सं.

उ०—३ हाथ वधिया······सु कमल करि वरणया। अर ए बाह सु कमळ री नाळि वरणाई। कांम रा बांण कह्या छै। सु कमल।
—वेलि.

उ०—४ करपूरवासी बि आंगुळी सालि, मडोर तणा मग तणी दाळि, सोना तणइं स्थाळि, सालणा तणी पाळि, सुरहा घी तणी नाळि, बि पहर तणइं काळि, परीसइ आंखडियाळि, इसउं पुण्य विणु न पांमीयइं।—व.स.

नाळिकेर—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.)

उ०—फुट वांनरेण कच नाळिकेर फळ, मज्जा तिकरि दधि मंगळिक। कुंकुम अखित पराग किंजळक, प्रमुदित अति गायंति पिक।—वेलि.

नालिनी-सं०स्त्री०—जल में चलने वाला एक प्रकार का यान।

उ०—जळचर जीव आवि प्रवहणि वाजइ. सुकांणना वंध सळसळया, पवननउं पूर, कूआथंभउ डोलइ, तिवारइं मालिम छांडइ, अकस्मात् धूअरि पडिवा लागी, एतलनइं नालिनो वेगलि भागी।
—व.स.

नाळिय-सं०स्त्री०—देखो 'नाळ' (रू भे.)

उ०—कलग परज कन्हडां, सुरां सवाद सुघडा। निवास सात नाळियं, त्रिग्रांम मूळ ताळियं।—रा.रू.

नाळियर—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.) (अ.मा.)

नाळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ अवलोकन किया हुआ, निहारा हुआ, देखा हुआ. २ तलाश किया हुआ. ३ डाला हुआ, गिराया हुआ. ४ समझा हुआ।
(स्त्री० नाळियोड़ी)

नाळियो-सं०पु० [सं० नालः] १ गंदे पानी का निकास-स्थान, मोरी।
२ देखो 'नाळ' (अल्पा., रू.भे.)
३ देखो 'नाळो' (अल्पा., रू.भे.)

नालिस-सं०स्त्री० [फा० नालिश] किसी के विरुद्ध फरियाद, अभियोग।
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
रू०भे०—नालस, न्यालस।

नाळी-सं०स्त्री० [सं० नालिः] १ गंदे पानी के बाहर निकलने का मार्ग, मोरी. २ नाडी, धमनी. ३ नली, नलिका।

उ०—१ नाळी ताइ नाभ निरखंतां, घणूं स ऊजळ ऊपर घणउ। चकवा रइ बचइ ज्युं चुगती, तंत छाडियउ कुमोद तणउ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ नाळी ताइ कंठ तणी निरखंतां, रची अचंभ परजापति राव। विगताहीण रेखता वणाई, घण अहिरण अणलागइ घाव।
—महादेव पारवती री वेलि

४ जल बहने का पतला मार्ग. ५ नदी।

उ०—वाधै फौज अकव्वर वाळी, नीरध जांण पलट्टै नाळी।—रा.रू.

६ सारंगी के बीच का मुख्य अंग जिस पर तार रहते हैं।
७ देखो 'नळी' (रू.भे.)

उ०—पींडियां तणी ओपमा पुणतां, अति नाळी जोबत अनूप। मछि ताइ महे महोदधि माहे, रहिया थरक थायंकवा रूप।
—महादेव पारवती री वेलि

८ देखो 'नाळ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ नाळी निहाव गोळा वुहाव। गढ़ सिखर उडी, कायरां का जीव तुडो।—अ. वचनिका

उ०—२ खुलै सिद्धां ताळियां रूप रा नचै वीर खेळा, रचै गांन चाळियां धूप रा रखां राज। चमंकै झाळियां बीच भूप रा हाथियां चली, नाळियां ऊपरा प्रळयकाळियां नाराज।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ पोइण रा पांन तिसा कर पुणइ, नाळी जिम आंगळी निरेह। रूप अनूप विचाळइ रेखा, दिणियर जांहि ऊजळी देह।
—महादेव पारवती री वेलि

नाळीअर—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.)

उ०—हरमजी दाडिम, तेहनी कुळी, खळहइलां, मलवारी नाळीअर, कोलंबो नाळीअर, मुठीआं नाळीअर, दीवाइ नाळीअर, तेहनी खडहिडी।—व.स.

नाळीक-सं०पु० [सं० नालिकं] कमल (ह.नां., अ.मा.)

नाळीयर—देखो 'नारिकेल' (रू.भे.)

उ०—१ खारिक द्राख नाळीयर नीला, फोफळ अनइ खिजूरां। वारू वाड सेलडो केरा, वाडी नां केलिहरां।—कां.दे.प्र.

नाळुं, नाळु, नाळूं, नाळू-सं०पु०—१ राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा. ख्यात)
२ देखो 'नाळो' (रू.भे.)

नाळेकेर, नाळेर-सं०पु० [सं० नालिकेर] १ देववृक्षों में से एक, सुरवृक्ष (अ.मा.)
२ देखो 'नारिकेल (रू.भे.)।

उ०—तन वरतै काळो कळस तेम। जुध गिणै सती नाळेर जेम।
(वि.सं.)

नाळेरगरो-वि० [सं० नालिकेर] नारियल की आकृति का, नारियल जैसा।

उ०—काठा गोहुवा री आटो मगायजै छै। सू नाळेरगरा गोळवां रोटा वणायजै छै। मूंगां री पातळी दाळ घणा मसालां सुं कीजै छै।
—रा.सा.सं.

नाळेरियो—१ देखो 'नारिकेल' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'नाळेरो' (अल्पा., रू.भे.)

नाळेरी—देखो 'नारेळी' (रू.भे.)

नाळरी-पूनम—देखो 'नारेळी-पूनम' (रू.भे.)

नाळेरो-सं०पु०—१ एक प्रकार का हुक्का जो नारियल की गिरी के

ऊपर के कड़े आवरण को साफ करके बनाया जाता है।

२ कलेजी (मांस)

रू०भे०—नारेळो।

अल्पा०—नारेळियो, नाळेरियो।

३ देखो 'नारिकेल' (अल्पा., रू.भे.)

नाळो–सं०पु० [सं० नाळिः या नालः] १ रक्त की नलियों तथा एक प्रकार के मज्जा तंतु से बनी हुई रस्सी के आकार की वस्तु जो एक ओर तो गर्भस्थ बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गोल थाली के आकार में फैल कर गर्भाशय की दीवार से मिली होती है। उदरस्थ बच्चे के शरीर में रक्त का आदान-प्रदान इसी द्वारा होता है। बच्चे का जन्म होने पर इस नली को काट दी जाती है।

उ०—वां रांणियां री बळिहारी, भ्रूण (गरभ में) हीज वां बाळकां नै कांई तरै सिखावण देवै है सो दाई रा हाथ री नाळो काटण री छुरी नै साव जनमतो हीज बाळक झपटै।—वी.स टी.

रू०भे०—नाड़ो।

२ आसपास की भूमि से नीची वह भूमि जो प्राय: वर्षा के पानी के बहने से दूर तक लकीर के रूप में कट गई हो, भूमि पर लकीर के रूप में दूर तक गया हुआ वह गड्ढ़ा जिससे प्राय: बरसाती पानी किसी नदी आदि में जाकर गिरता हो, जल मार्ग (डिं.को.)।

उ०—भाखरां रा नाळा बोल रह्या छै।—रा.सा.सं.

३ उक्त मार्ग से बहता हुआ जल, जल-प्रवाह। उ०—१ भूरा भुरजाळा अंबुद भळहळिया खाळा नद नाळा वाळ्हा खळहळिया। अवनी आंदोलन ओळा ओसरिया। पिड़ि भिड़ि प्लासी पै गोळा जिम गिरिया।—ऊ.का.

उ०—२ ताहरां पातसाहजी हेमू वां डेरां ऊपरै आवता हुता सु बीचि नाळा ऊंडा वहता हुता। पांणी का पूर बहुत था।—द.वि.

उ०—३ नदियां, नाळा नीझरण, पावस चढ़िया पूर। करहउ कादिम तिलकस्यइ, पंथी पूगळ दूर।—ढो.मा.

४ देखो 'नाळ' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—नळो।

अल्पा०—नळियो, नाळियो।

मह०—नाळ।

रू०भे०—नाहळउ, नाहळो।

अल्पा०—नाळी, नाहळी।

[फा० नाला] ५ रोना-धोना, वावेला।

उ०—जिलाय रा राजावतजी रांमसरण हुवा। माधोसिंघजी कांण करावण आया। राघवसिंघ सभा में नाळा मारिया।

—वां.दा. ख्यात

नाळहणो नाळहबो—देखो 'नाळणो, नाळबो' (रू.भे.)

उ०—रांम बनूं छै रूपाळो। बनाजी नै नैण निजर भर नाळ्हो।

—समांनबाई

नाळणहार, हारो (हारी), नाळहणियो—वि०।

नाळओड़ो, नाळिहयोड़ो, नाळह्योड़ो—भू०का०कृ०।

नाळहीजणो, नाळहीजबो—कर्म वा०।

नाळिहयोड़ो—देखो 'नाळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नाळहयोड़ी)

नाव–सं०स्त्री० [सं० नौः बहु०, फा०] १ जल के ऊपर तैरने या चलने वाली वह सवारी जो लकड़ी व लोहे आदि की बनी हुई होती है, किश्ती, जलयान, नौका (अ.मा.) (उ.र.)

उ०—१ नाव तो नावड़ियां चाल, नदियां चालै फिरती रे। चांद-सुरज सरोदै चालै, नखतर चालै फिरती रे। धिन माता धिन धरती रे।—महाराजा मांनसिंह (जोधपुर)

उ०—२ नाव तिरै नहं नीर में, निबळां नावड़ियांह। राजस नंह साबत रहै, मिनखां मावड़ियांह।—बां.दा.

२ शव को दाह-क्रियार्थ रख कर ले जाने के लिए बनाया गया ठट्ठर, रथी।

अल्पा०—नावड़ी, नावडी।

३ देखो 'न्याव' (रू.भे.)

नावक–सं०पु० [फा०] १ एक प्रकार का छोटा बाण।

२ देखो 'नाविक' (रू.भे.)

नाव-घाट–सं०पु०यौ० [फा० नाव, सं० घाट] समुद्र, झील, नदी आदि के तट का वह स्थान जहां नावें ठहरती हों, नावों के ठहरने का घाट।

नावड़–सं०स्त्री०—पहुंच।

नावड़णो, नावड़बो–क्रि०स० [सं० नौ+अटन नावटन या अन्वापन या अन्वापदन] १ (पीछे से भाग कर या तेज चल कर) निकट पहुंचना, आगे जाने वालों के साथ हो जाना, आगे जाने वालों को पकड़ लेना, पहुंचना।

उ०—१ इसड़ा तो झूरणा ए जीण सगती झूरती, गई गई कोस दोय च्यार। देव्यां री ए देवी कांकड़ियै ढळतां ए हरसो नावड़्यो।

—लो.गी.

उ०—२ द्रीवछड़ द्रीवछड़ अक पग धरंती, कुलट नटवटां ज्यूं मक्र करती। काळका-चक्र ज्यूं नावड़ी केवियां, भड़ां-सिर काळमी डक्र भरती।—गिरवरदान सांदू

२ पदार्पण करना, आना, पहुंचना।

उ०—बावड़ प्यायां बीदगां, आवड़ कर आपांण। कावड़ नै सावड़ करण, नावड़ विरुद निभांण।—बालावक्स बारहठ गजूकी

३ मुकाबला करना।

उ०—वीको वाहर नावड़ियो, भुंवर नकोदर हाय। हम तुम झगड़ो नीवड़्यो, नरसिंघ जाटू साथ।—नैणसी

४ अधिकार में करना, कब्जा करना।

५ कार्य को पूरा करना ।

नावड़णहार, हारो (हारी), नावड़णियो—वि० ।

नावड़िप्रोड़ो, नावड़ियोड़ो, नावड़चोड़ो—भू०का०कृ० ।

नावड़ीजणो, नावड़ीजबो—कर्म वा० ।

नावड़णो, नावड़बो—रू०भे० ।

नावड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ निकट पहुंचा हुआ, पास गया हुआ, भाग कर सम्मिलित हुवा हुआ. २ पदार्पण किया हुआ, आया हुआ । ३ मुकाबिला किया हुआ । ४ अधिकार में किया हुआ, कब्जे में किया हुआ । ५ कार्य को पूरा किया हुआ, कार्य को पूरा करने की स्थिति तक पहुचा हुआ ।
(स्त्री० नावड़ियोड़ी)

नावड़ियो-सं०पु०—केवट, मल्लाह । उ०—१ नाव तिरै नहं नीर में, निवळो नावड़ियांह । राजस नहं सावत रहै, मिनखां मावड़ियांह ।
—बां.दा.

उ०—२ नाव तो नावड़ियां चालै, नदियां चालै फिरती रे । चांद-सूरज सरोदै चालै, नखतर चालै किरती रे । धिन माता धिन धरती रे ।—महाराजा मांनसिंह जोधपुर

नावड़ी, नावडी—देखो 'नाव' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ गग-यमुन-परि नयनडां, वहइ निरंतर पूरि । तरइ नहीं तन नावडी, करती झूरि मझूरि ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ नीजांमा विण नावडी, किणी-परि पांमइ पार ? डगमगती नहू डग तरइ, मांहि माधव-भार ।—मा कां.प्र.

नावण-सं०स्त्री०—१ दौड़ने या भागने की क्रिया या भाव । २ —देखो 'न्हावण' (रू.भे.)

नावणो, नावबो-क्रि०स० [सं० ज्ञापयति] १ विदित करना, वतलाना । उ०—पंडु पुच्छीउ पडु पुच्छीउ विदुर घरि कन्हु । रोसारुणु चल्लीयउ मगिग मिळीउ सहूइ नावइ ।—पं पं.च.
२ देखो 'न्हाणो, न्हावो' (रू.भे.)

नावणहार, हारो (हारी), नावणियो—वि० ।

नाविप्रोड़ो, नावियोड़ो, नाव्योडो—भू०का०कृ० ।

नावीजणो, नावीजबो—कर्म वा० ।

ना'वणो, ना'वबो—१ देखो 'न्हाठणो, न्हाठवो' (रू.भे.)
२ देखो 'न्हाणो, न्हावो' (रू भे.)
उ०—दिन में वेळा दोय, ना'वै धोवै नीर सूं । हिय ज कपटी होय, मैल न जावै मोतिया ।—रायसिंह सांदू

ना'वणहार, हारो (हारी), ना'वणियो—वि० ।

ना'विप्रोड़ो, ना'वियोड़ो, ना'व्योड़ो—भू०का०कृ० ।

ना'वीजणो, ना'वीजवो—कर्म वा० ।

नावांहाकण-सं०पु० [सं० नौ+हुकार] केवट (अ.मा.)

नावाकिफ-वि० [फा० ना+अ० वाकिफ] अनभिज्ञ, अनजान, अपरिचित ।

नावाजिब-वि० [फा० ना+अ० वाजिब] जो वाजिब न हो, अनुचित, गैरवाजिब, ना-मुनासिब ।

नावादौड़-सं०स्त्री०यौ०—दौड़-भाग, दौड़-धूप ।
रू०भे०—नाहा-दौड़ ।

नाविग्र, नाविक-सं०पु० [सं० नाविक] केवट, मल्लाह । (उ.र.)
उ०—देखै भव दरियाव, रची पगां सूं स्त्री-रमण । नरां अपूरब नाव, नाविक विण निरझर नदी ।—बां.दा.
रू०भे०—नावक ।

नावियोड़ो-भू०का०कृ०—१ विदित किया हुआ, बतलाया हुआ । २ दौड़ा हुआ । ३ स्नान किया हुआ ।
(स्त्री० नावियोड़ी) .

ना'वियोड़ो—१ देखो 'न्हाठियोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'न्हायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ना'वियोड़ी)

नावी-सं०पु० [सं० नापित] हज्जाम, नापित (उ.र.)

नास-सं०पु० [सं० नासा] १ नाक, नासिका (डि.को.)
उ०—१ मुख निकट प्रकासित नास मंज, क्रित उलट प्रगट किरि सुघट कंज । सुंदर सरूप चखि परखि स्यांम, रस मंजण करि जुग सरति रांम ।—रा.रू.
उ०—२ नहीं तुझ नैण नहीं तुझ नास । नहीं तुव सुन्न नहीं तुव सास ।—ह.र.
२ किसी पदार्थ को नाक से सुंघाए जाने की क्रिया या भाव । (अमरत)
३ नाक से सुंघाया जाने वाला पदार्थ ।
[सं० नाश] ४ न रह जाने का भाव, लोप, समाप्ति ।
उ०—पारस नह नह पोरसो, पातर राखै पास । जिणरे आयो जांणजे, नैड़ो धन रो नास ।—बां.दा.
५ ध्वंस, बरबादी ।
उ०—म्हांनै गिणज्यो मूढ, अमलियां ओगणगारां । करणा परउपकार, लार थांनै ललकारां । निज कीनो थे नास, कहो किण रक्षा करस्यो । बात खरी है बपण, मौत विन नाहक मरस्यो ।—ऊ.का.
६ संहार ।
उ०—सादूळो वन संचरै, करण गयंदां नास । प्रबळ सोच भंवरां पड़ै, हंसां होय हुलास ।—बां.दा.
७ मृत्यु. मौत (डि.को.)
रू०भे०—नासण ।

नासक-वि० [सं० नाशक] १ नाश करने वाला, मारने वाला ।
उ०—अग्न-पूरणा ज्वाळा जपू, अस्ट प्रहर जग जोति जगांणी । नवलखा देव्यां सिर नाऊं, सब सत्रुन की नासक जांणी ।
—राघवदास भादो

[देश०] २ गढ़े हुए पत्थर का वह खण्ड जो दीवार के कोने में चुना जाता है ।

३ देखो 'नासिका' (रू.भे.)

उ०—गजगमनी केहर-कटी, हेम-वरणी होय । म्रिग-अंखी नासक-सुकी, लख घाटेची लोय ।—पा.प्र.

नासका-सं०स्त्री० [सं० नासिका] १ सूंघने की तम्बाकू. २ नाक से सूंघने की दवा विशेष (अमरत) ।

रू०भे०—ना'का, नायका, नासिका ।

२ देखो 'नासिका' (रू.भे.) (डिं.को.)

नासकारी-वि० [सं० नाशकारिन्] नाश करने वाला ।

नासण—देखो 'नास' (रू.भे.)

नासणउ, नासणौ-वि० [सं० नश्] (स्त्री० नासणी) १ दौड़ने वाला, भागने वाला ।

उ०—समुद्र खारउ, वाउळ, कंटाळउ, सरप काळउ, वाउ वायणउ, जन बोलणउ, सुणह भसणउ, ससउ नासणउ, रांणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ, सांड ग्राडणउ, कुमित्र फाडणउ, दुरजन दुस्ट, स्वजन सिस्ट, आगि ताती, घाहु राती ।—व.स.

२ नष्ट होने वाला, समाप्त होने वाला. ३ नाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।

रू०भे०—नासिणउ, नासिणौ ।

नासणौ, बासवौ-क्रि०अ० [सं० नश्, नश्यति] १ दौड़ना, भागना (उ.र.)

उ०—१ नांम लियां जम-किंकर नासै ।—र.ज.प्र.

उ०—२ मुहकम छोडै मेड़तो, नास गयो नागोर । पूछै जाफर जोधपुर, तूटै छूटै तोर ।—रा.रू.

उ०—३ पछै राव मालदेव जोधपुर आया । फइक तुरक छा सो नास गया ।—नैणसी

२ नष्ट होना, समाप्त होना, मिटना ।

उ०—उदित ब्रहम मधि ईस पछै वप विसन प्रकासै । तम नासै जोवतां नांम कहतां अध नासै ।—सू.प्र.

क्रि०स०—१ नष्ट करना, समाप्त करना, मिटाना ।

नासणहार, हारौ (हारी), नासणियौ—वि० ।

नासिओड़ो, नासियोड़ो, नास्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नासीजणौ, नासीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

नासिणौ, नासिबौ, न्हासणौ, न्हासबौ—रू०भे० ।

नासत—देखो 'नास्ति' (रू.भे.)

उ०—अलप आव जिण हुंत न होई, कळजुग मध असमेध न कोई । वदियो सिख जोड़ै कर वायक, नासत किम आसत रिखनायक ।

—सू.प्र.

नासति—१ देखो 'नासती' (रू.भे.)

२ देखो 'नास्ति' (रू.भे.)

उ०—बुरौ भलौ नह विसन नांम नासति वहनांमि ।—पी.ग्रं.

नासतिक—देखो 'नास्तिक' (रू.भे.)

उ०—अमरस वेहतवार, निरदयता मन नासतिक । नर सम सार असार, पैलां घर वांछै पिसण ।—बां.दा.

नासती-सं०स्त्री० [सं० नास्ति] असत्यता ।

वि०—१ बुरा (समय) (डिं.को.)

उ०—नासती समै चौफेर आतां नजर, मया कर आसती फेर मंडी । पलां धरता चरण फेर पाधारिया, चारणां बरण आधार चंडी ।

—मे.म.

२ देखो 'नास्ति' (रू.भे.)

३ देखो 'नास्तिकता' (रू.भे.)

रू०भे०—नासति ।

नासतीक—देखो 'नास्तिक' (रू.भे.)

नासपती, नासपाती-सं०स्त्री० [तु० नाशपाती] १ मझोले डील-डौल का एक पेड़ जो समसीतोष्ण स्थानों में प्रायः अधिक उगता है या उगाया जाता है । इसका फल मेवों में गिना जाता है । यह सेव की जाति का पेड़ होता है किन्तु फल का गूदा सेव से कड़ा होता है और सफेद होता है । यूरोप के उन सभी स्थानों में यह पेड़ होता है जहां सरदी कम पड़ती है । भारत में यह हिमालय की तराई और कश्मीर में अधिक होता है । कश्मीर में होने वाले पेड़ों के फल उत्तम होते हैं जिन्हें नास, नाख या नाग कहते हैं ।

२ इस पेड़ का फल ।

नासफरिम-वि० [सं० नाशः फा० फर्मा] वह जिसकी आज्ञा भंग हो ।

उ०—गत प्रभा थियो ससि रयणि गळंती, वर मंदा सइ वदन वरि । दीपक परजळतौ इ न दीपै, नासफरिम सू रतनि नरि ।—वेलि

नासमझ-वि० [फा०ना+सं० सज्ञान] जो समझदार न हो, बेवकूफ ।

नासमझी-सं०स्त्री० [फा० ना+सं० सज्ञान+रा. प्र. ई] मूर्खता, बेवकूफी।

नासवंती-सं०स्त्री० [सं० नाश] घोड़े के नाक के नथुनों पर होने वाली भौंरी (अशुभ)—शा.हो.

नासवांन-वि० [सं० नाशवान्] जिसका अस्तित्व बना न रहे, नाश को प्राप्त होने वाला, अनित्य, नश्वर ।

नासा-सं०स्त्री० [सं०] १ नाक, नासिका (डिं.को.)

उ०—वांणी पवित्र करिस सीतावर, नित-प्रत क्रीत प्रकासे नरहर । नासा बिसन करिस इम निरमळ, प्रभु घूंटे तो चरणां परमळ ।

—ह.र.

२ नाक का छेद, नासारंध्र, नथना । उ०—ऊपड़ी रजि मझि अरक एहवौ, वात चक्र सिरि पत्र वसंति । सद नीहस नीसांण न सुणिजै, वरहासां नासां वाजंति ।—वेलि.

३ देखो 'नस' (रू.भे.)

उ०—मस्तक पाळ वंधी माटी की मुनिवर समता रस भरिया । झगझगता खयर ना खीरा, मुनिवर नै सिर धरिया । खदबद खीच तणी परै सीजै, तड़ तड़ नासां तूटे, मुनिवर समता भाव करि नै, लाभ अनंतो लूटे ।—जयवांणी

नासाचर-सं०पु० [सं० नासा=तुण्ड+चर=भक्षणे] १ मांसाहारी पक्षी
उ०—पीतकां जगत छळ-भोम न पड़ियौ, अवधारां आवटियौ अंग।
'चांपौ' चंच ग्रीधां रिण चाढ़ियौ, नासाचर लेगी निहंग।
—राव चांपा रौ गीत

रू०भे०—नसाचर।

नासानुगी-सं०पु० [सं०] नाक के बल चलने वाला जानवर।
उ०—कुक्के क्रोड कराहि के, कमटेस मचक्के। नीसासा नासानुगी, आसा गज तक्के।—व.भा.

नासापुट-सं०पु० [सं०] नाक के छेदों के किनारे का चमड़ा जो परदे का काम देता है, नथवा।

नासारोग-सं०पु० [सं०] नाक में होने वाला रोग।

नासिक-सं०पु० [सं० नासिक्य] महाराष्ट्र प्रान्त का एक तीर्थ।

नासिका-सं०स्त्री० [सं०] १ नाक, नासा (डि.को.)
उ०—१ वनि नयरि घरांघरि तरि तरि सरवरि, पुरुख नारि नासिका पथि। वसंत जनमियौ देण वधाई, रमै वास चढ़ि पवन रथि।—वेलि.
उ०—२ चंदवदण म्रिगलोयणी, भौंसुर ससदळ भाल। नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ-गरभ सुकमाळ।—ढो.मा.
उ०—३ सुकीर नासिका सरूप, वेस रीत राजियै। सूरू गुरू र भोम सुक्र, राजद्वार राजियै।—सू.प्र.
२ देखो 'नासका' (रू.भे.)
उ०—जेरंदौ पीवण न जोग नासिका नरक निसांणी।—ऊ.का.
वि०—श्रेष्ठ, प्रधान।

नासिणउ, नासिणौ—देखो 'नासणउ, नासणौ' (रू.भे.)
उ०—जिण पय मंदाकिण जनम, अघ नासिणौ अपार। जिण भजतां अघ जांण रौ, विसमय किसुं विचार।—र.ज.प्र.
(स्त्री० नासिणी)

नासिणौ, नासिबौ—देखो 'नासणौ, नासबौ' (रू.भे.)
नासिणहार, हारौ (हारी), नासिणियौ—वि०।
नासिओड़ौ, नासियोड़ौ, नास्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नासीजणौ, नासीजबौ—कर्म वा०।

नासियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दौड़ा हुआ, भागा हुआ. २ नष्ट हुवा हुआ, समाप्त हुवा हुआ, मिटा हुआ. ३ नष्ट किया हुआ, समाप्त किया हुआ, मिटाया हुआ।
(स्त्री० नासियोड़ी)

नासूर-सं०पु० [अ०] वह घाव जिसमें भीतर ही भीतर नली की तरह छेद हो जाय और उसमें से बराबर मवाद निकला करे, नाड़ीव्रण।

नासेट-सं०स्त्री० [सं० नष्ट+ऐस = नष्टैष] खोये हुए पशुओं के ढूंढ़ने की क्रिया या भाव।
रू०भे०—नाएट, नाहेट।

नासेटू-वि० [सं० नष्टैषिन्] खोये हुए मवेशी की तलाश करने वाला।
रू०भे०—नाएटू, नाहेटू।

नास्ति-अव्य० [सं०] नहीं।
सं०स्त्री०—१ नहीं होने का भाव, अभाव।
२ देखो 'नासती' (रू.भे.)
रू०भे०—नास्ति, नास्ती।

नास्तिक-सं०पु० [सं०] ईश्वर, परलोक आदि का अस्तित्व नहीं मानने वाला, ईश्वर को जगत का उपादान कारण न मानने वाला।
उ०—१ कुपि नास्तिक कौं किये, आस्तिक कर किलकारी।—ऊ.का.
उ०—२ अर टोळा रा वचन रौ तिरस्कार करि इण रीति उच्चारण रौ आरंभ कीधौ, नीच नास्तिकां रौ वंस प्रमार राज विक्रम १ भोज २ रा वंस रौ संतांन किण रीति पावै।—वं.भा.
रू०भे०—नासतिक, नासतीक।

नास्तिकता-सं०स्त्री० [सं०] ईश्वर, परलोक आदि को नहीं मानने का विचार, ईश्वरीय सत्ता को नहीं मानने की वुद्धि, नास्तिक होने का भाव।
रू०भे०—नासति, नासती।

नास्तिकदरसण, नास्तिकदरसन-सं०पु० [सं० नास्तिकदर्शन] नास्तिकों का दर्शनशास्त्र।

नास्तिकवाद, नास्तिवाद-सं०पु० [सं०] नास्तिकों के विचार, नास्तिकों द्वारा दिया जाने वाला तर्क, वह सिद्धान्त जिसमें ईश्वर का होना नहीं माना जाता है।

नास्ती—देखो 'नास्ति' (रू.भे.)
उ०—१ आस्ती नास्ती मन कर होई, स्वारथ अरु परमारथ दोई। विधि निसेध का करता योई, चेतन निसप्रिय निरमोई।
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ० २—कहां आसति कहां नास्ती, कहां अंदर कहां बाहर। निजानंद सुखरांम है, स्वते प्रकासणहार।—श्री सुखरांमजी महाराज

नास्तौ-सं०पु० [फा० नाश्ता] प्रातःकाल का अल्पाहार, कलेवा, जलपान।

नाह-अव्य०—१ निषेधसूचक शब्द, नहीं (रू.भे.)।
उ०—ईखे पित मात ऐरिसा अवयव, विमळ विचार करे वीवाह। सुंदर सूर सील कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूझै नाह।—वेलि
२ देखो 'नाथ' (रू.भे.) (अ.मा., डि.को.)
उ०—१ दिसि दिसि सीकिरि डांमर चांमर ढळइं सभावि। वाजइ तूर अनाहत नाह तणइ अनुभावि।—नेमिनाथ फागु
उ०—२ मैं परणंती परखियौ, सुरति पाक सनाह। घड़ि लड़िसी गुड़िसी गयंद, नीठि पड़ंसी नाह।—हा.झा.
उ०—३ नहीं तू जीव नहीं तू जम्म, नहीं तो देह नहीं तो दम्म। नहीं तू नार नहीं तू नाह, नहीं तू घांम नहीं तू छांह।
उ०—४ अहर फरक्कै तन फुरै, तन फुर नैण फुरंत। नाभी-मंडळ सह फुरै, सांझै नाह मिळंत।—अज्ञात

३ देखो 'नाभि' (रू.भे.) (डि.को.)

नाहकंध, नाहकंधौ-वि० [नाभिः+स्कन्धः] १ पहिये की धुरी के ऊपर के अवयव, नाभि के समान कंधों वाला।

२ मजबूत कंधों वाला, बलवान, योद्धा।

उ०—खुळिया तन धारांय खार खधां, कमठाकर घूमत नाहकंधां। घर पांण कवांण आपांण घरै, कयकांण में बांण टुसार करै।

—पा.प्र.

नाहक-क्रि०वि० [फा०ना+अ० हक़] व्यर्थ, निष्प्रयोजन, वृथा।

उ०—लोयण आगै ही लागणा, कोयण अणियां काढ़। सो नंह रण समसेर रै, वैरण दीधौ वाढ़। वैरण दीधौ वाढ़, सिरोही सार रै। मन नाहक महबूब, मिनखां मार रै।—सिवबक्स पाल्हावत

नाहण-स०पु० [सं० स्नान] स्नान।

उ०—१ अरु अठै महादेव जी री मंदर है, तठै गोमती समुंदर रौ संग हुवै, सू सारा जात्री नाहण करै।—द.दा.

उ०—२ स्री दरबार सूं मुजरौ कियौ पीछै अरज करी जो मरजी हुवै तौ माजी रौ मनोरथ सोरंभजी नाहण रौ छै सू पधरावां।

—द.दा.

क्रि०प्र०—करणौ।

नाह-दुनियांण-सं०पु० [सं० नाथ+अ० दुनिया] १ राजा, नृप (डि.को.)

२ सम्राट, बादशाह।

नाहर-सं०पु० [सं० नखरः या नाखरः] १ सिंह, शेर।

(अ.मा., डि.को., ह.र.)

(स्त्री० नाहरी)

उ०—१ वन थाहर नाहर वसै, वाहर थाट विडार। तरवर गुलम समीर विण, न को नमावणहार।—बां.दा.

उ०—२ रावळ साथ कटक राजा रौ, ढूका ले रजढांणी। पाखरियां नाहर गढ़ पैठौ, मार हस्यौ 'मुकनांणी'।—आवड़दांन लाळस

२ चीता. ३ भेड़िया. ४ योद्धा, वीर।

उ०—तारां रावळजी कह्यौ-हां म्हारी नाहर, भलौ वेगौ कह्यौ।

—वीरमदे सोनगरा री वात

५ शरद् ऋतु में होने वाला मक्खी से कुछ बड़ा उड़ने वाला कीड़ा जो मक्खियों को मारता है।

वि०—दुष्ट, आततायी। उ०—नाहरां नूं करै जेर, जाहरा विनोद दैणौ। परचा दोय राहरां नूं, देर लैणी पेस। दिल्ली-ईस जिसा फेर नरां नूं उथाप दैणौ। दीनानाथ सैणौ, वीस करां नूं आदेस।

—नवलजी लाळस

रू०भे०—नाग्रर, ना'र, नाहरु, न्हार।

अल्पा०—ना'रडौ, ना'रियौ, नाहरौ, न्यारियौ, न्हारियौ।

नाहरकांटौ—देखो 'ना'रकांटौ' (रू.भे.)

नाहर-मस्तक-सं०पु० [रा० नाहर+सं० मस्तक] वह घोड़ा जिसके शरीर का समस्त रंग मयूर सदृश नील वर्ण वाला हो (अशुभ)।

—शा.हो.

नाहरसांस-सं०पु० [रा० नाहर+सं० श्वास] घोड़ों की एक बीमारी जिसमें उनका दम फूलता है।—शा.हो.

नाहरी-सं०स्त्री० [रा० नाहर+ई] मादा सिंह, शेरनी।

उ०—१ तिण मैं सांमली भुरज दीसै तिका नाहरी भुरज कहीजै छै। तठै नाहरी बांधी रहै छै।—राव रिणमल री वात

उ०—२ आप जाय बाराह मारियौ। जितरै अपूठौ वळियौ तितरै देखै तौ भूंजाई तयार छै। आय पांतियै बैठा। आरोगता हुता। आधोदक जीमिया हुता नै वाहरू आया। आय नै कह्यौ-कोलर रै तळाव एक नाहर नाहरी आया छै। ताहरां अध-जीमिया ऊठिया।

—नैणसी

रू०भे०—ना'री, न्हारी।

अल्पा०—ना'रड़ी।

नाहरू-सं०पु०—१ मोट खींचने का रस्सा. २ चमड़े का टुकड़ा.

३ देखो 'नारू' (रू.भे.) ४ देखो 'नाहर' (रू.भे.)

उ०—१ न पाछै ये ही नाहरूं का नाहर दरसावै, 'भीमाजळ' हाथूं रुघनाथ सा कहावै। जादम 'किसोर' महेसदास का जाया, महेस के कंकण सा विरद जिण पाया।—रा.रू.

उ०—२ केतेक वाघूं पर आप असि धरै। सेल तरवारू का घाव स्रीहथूं सै करै। नाहरू रजपूतां की राहि पौरस अलेखे। सूरज भी रथ खांचि तिसका कवतग देखै।—सू.प्र.

नाहरौ—१ देखो 'नाहर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—घड़चिया मुगलां इलांह धार। पैदलां हैदलां नकोय पार। भड़ विलंद इम्म मदझर भजाय। पह अभौ नाहरौ फतह पाय।

—वि सं.

नाहलउ—देखो 'नाथ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ निरखेवु तु नाहलउ, मुखि लेरु तु मींत। सुणवु तु यस स्वांमिनु, भक्ति सूभरता चींत।—मा.कां.प्र.

उ०—२ आहे नव भव केरउ नेहलउ, छेहलउ दीधउ केम। आहे नयण सलूणउ, नाहलउ नयण न देखूं नेम।—स.कु.

नाहला-सं०पु०—म्लेच्छ जाति का एक भेद (डि.को.)

नाहलियौ, नाहलू—देखो 'नाथ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ चांदलिया संदेसड रे, कहै म्हारा कंतइ रे, थारी अबळा करइ रे अंदेस। नाहळिया विहूंणी रे नारि हूं क्यूं रहूं रे।

—स.कु.

उ०—२ एक वार मोरी वीनतडी सुणि सुंदर लाडण रे लाडण नइ मांडण नारि नइ नाहलू ए।—नळ-दवदंती रास

नाहळी-सं०स्त्री०—देखो 'नाळी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—वांण्या नाळा माग वहै दुत वाहळी। मेह औसर में वहै नाळा अर नाहळी।—लो.गी.

नाहळौ—देखो 'नाळौ' (रू.भे.)

नाहलौ-सं०पु०—१ म्लेच्छ जाति 'नाहला' का व्यक्ति।

(स्त्री० नाहली)
२ देखो 'नाथ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ मन वसियो वइराग हो राजेस्वरजी, मूकी हो माया ममता मोहनी जी। ति कीधउ खट खंड त्याग हो, राजेस्वरजी, इम किम निठुर हुआ नाहला जी।—स.कु.
उ०—२ सगुण सनेही नाहला, वाला वेग पधार। अलवेला अलजो घणो, देखण पीय दीदार।—ढो.मा.
उ०—३ नारी मंडण नाहलो, धरती मंडण मेह। पुरखां मंडण धन सही, या में नहि संदेह।—अज्ञात

नाहा-दौड़—देखो 'ना'वा-दौड़' (रू.भे.)

नाहानो—देखो 'नेनो' (रू.भे.)
उ०—जन्म थी वि भ्रू भ्र मध्यि तिल छि सूविसाळ, मि ते रमतां दीठु हुतु याहि नाहानो बाळ।—नळाख्यांन
(स्त्री० नाहानी)

नाहि, नाही—१ देखो 'नाभि' (रू०भे०)
उ०—लवणिमरसभरकुवडिय जसु नाहि य रेहइ, मयणराय किर विजयखंभ जसु ऊरू सोहइ। जसु नह पल्लव कांमदेव अंकुस जिम राजइ, रिमिझिमि रिमिझिमि ए पायकमलि घाघरिय सुवाजइ।
—प्राचीन फागु-संग्रह
२ देखो 'नहीं' (रू.भे.)
उ०—इतरो सुण देवीदास दोपहरां रा घरे आईयो। आगे देवीदास री मां जीमण लियां बैठी थी कह्यो जीमण ठंडो होय गयो। ताहरां देवीदास कह्यो—ताळ तो कांहीं लागी नाही।
—पलक दरियाव री वात

नाहु, नाहू—१ देखो 'नाभि' (रू.भे.) (डिं.को.)
२ देखो 'नाथ' (रू.भे.)

नाहेट—देखो 'नासेट' (रू.भे.)

नाहेटू—देखो 'नासेटू' (रू.भे.)
मुहा०—नाहेटू नै कूड़ प्यारो—अति दर्दवान व्यक्ति को आत्मानुकूल बात ही प्यारी लगती है चाहे वह असत्य हो।

निगळणो, निगळबो—क्रि०अ० [सं० निर्गलनम्] १ किसी मिट्टी के बरतन का अधिक दिन पानी भरा रहने से अथवा पानी आदि के सम्पर्क में आते रहने से मजबूती प्राप्त करना, पूर्ण परिपक्व होना।
[सं० निर्गद] रोगादि से मुक्ति प्राप्त कर लेना।
निगळणहार, हारो (हारी), निगळणियो—वि०।
निगळवाड़णो, निगळवाड़बो, निगळवाणो, निगळवाबो, निगळवावणो, निगळवावबो, निगळाड़णो, निगळाड़बो, निगळाणो, निगळाबो, निगळावणो, निगळावबो—प्रे०रू०।
निगाळणो, निगाळबो—क्रि०स०।
निगळिओड़ो, निगळियोड़ो, निगळ्योड़ो—भू०का०कृ०।
निगळीजणो, निगळीजबो—भाव वा०।
नींगळणो, नींगळबो—रू०भे०।

निगळियोड़ो—भू०का०कृ०—१ मजबूत हुवा हुआ, परिपक्व हुवा हुआ।
२ रोगादि से मुक्ति पाया हुआ।
(स्त्री० निगळियोड़ी)

निगाळणो, निगाळबो—क्रि०स०—१ मिट्टी, काष्ठ, पत्थर आदि के बरतन को बहुत समय तक पानी में रख कर अथवा पानी के सम्पर्क में लाकर मजबूत करना, दृढ़ करना. २ मजबूत या दृढ़ करने के लिए पात्र को पानी में रखना।
निगाळणहार, हारो (हारी), निगाळणियो—वि०।
निगाळिओड़ो, निगाळियोड़ो, निगाळ्योड़ो—भू०का०कृ०।
निगाळीजणो, निगाळीजबो—कर्म वा०।
निगळणो, निगळबो—अक. रू०।

निगाळियोड़ो—भू०का०कृ०—मिट्टी आदि के पात्र को पानी में रख कर मजबूत किया हुआ, दृढ़ किया हुआ।
(स्त्री० निगाळियोड़ी)

निगे—देखो 'निगाह' (रू.भे.)

निंद—१ देखो 'निंदा' (रू.भे.)
उ०—करुनाकर आकर कीरत के, धरम धाकर ठाकर धीरत के। जक नाद र बिंद धरै जब वे, बकवाद र निंद करै कब वे।—ऊ.का.
२ देखो 'निद्रा' (रू.भे.)
उ०—नीकळि जा रे अंखडी, निंद मनावी ल्यावि। जु हूं सुख-दुख वीसरूं, तु इणि थांनकि आवि।—मा.कां.प्र.

निंदक—सं०पु० [सं०] दूसरों की बुराई करने वाला, निंदा करने वाला।
उ०—१ दादू निंदक बपुड़ा, जनि, मरे पर उपकारी सोइ। हमको करता ऊजळा, आपण मैला होइ।—दादूबांणी
उ०—२ उन री धन फलांणी जागां गड्यो ते पिण बता देवतो। इम कुबध कर नै बाकी रह्या ते पिण बताय दीधा। तिम निंदक कुबद हुवै ते निंदा करतो कूड़ बोल नै अळगो रहै।—(भि.द्र.)
रू०भे०—नींदक, निंदुक।

निंदड़ली—देखो 'निद्रा' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—पिया बिन मो निंदड़ली नहि आवै रे।—लो.गी.

निंदणा—सं०स्त्री० [?] १ निरीक्षण (जैन)
२ देखो 'निंदा' (रू.भे.)
उ०—दादू जिहि विधि आतम उद्धरे, परसे प्रीतम प्रांण। साधु सब्द को निंदणा, समझै चतुर सुजांण।—दादूबांणी

निंदणो, निंदबो—क्रि०स० [सं० निंदनं] १ बुरा कहना, बदनाम करना।
—(उ.र.)
उ०—१ कोउयेक निंदो कोउयेक बिंदो, नांम सुधारस पागा। जन मीरां गिरधर वर पायो, भाग हमारा जागा।—मीरां
उ०—२ सतगुरु धारै ब्रह्म विचारै, अवधूता जरणा जारै। किसकूं निंदूं किसकूं वंदूं, एक सूत पोया सारै।—श्री हरिरांमजी महाराज

क्रि०अ० [सं० नंदि] २ दीपक का बुझना ।
३ निद्रा के वशीभूत होना, निद्रित होना, सोना ।
निंदणहार, हारो (हारी), निंदणियो—वि० ।
निंदवाड़णो, निंदवाड़बो, निंदवाणो, निंदवाबो, निंदवावणो, निंदवावबो—प्रे०रू० ।
निंदाड़णो, निंदाडबो, निंदाणो, निंदाबो, निंदावणो, निंदावबो —क्रि०स०
निंदिग्रोड़ो, निंदियोड़ो, निंदयोड़ो—भू०का०कृ० ।
निंदीजणो, निंदीजबो—कर्म वा० ।
नंदणो, नंदबो, निंदवणो, निंदवबो, नींदणो, नींदबो, नींदवणो, नींदवबो—रू०भे० ।

निंदरा—१ देखो 'निंदा' (रू.भे.)
उ०—आपरी निंदरा करे और माछली री बडाई करे । —ठा० स्यामसींघ सींधल
२ देखो 'निंद्रा' (रू.भे.)

निंदवणो, निंदवबो—१ देखो 'निंदणो, निंदबो' (रू.भे.)
उ०—१ सो आंपे घोड़ा चढ़णो पछे किसा दिन सारू सीखिया घोड़ां चढ़, सांहमां हाल, जुद्ध करण सारू घोड़ां री वागां उठावो, जुद्ध करसां, वैरी निंदवनें न जाय सके ।—वी.स.टी.
उ०—२ चंदणां लपटे मिण-धरण, रीझे सांमळ राग । पिण मुख माझल जहरतै, निंदवियो जग नाग ।—बां.दा.
उ०—३ तद दहियें कह्यो, बडा सिरदार, नर निंदवीजे नहीं । नरां री अणमापी रासि छै चाहै ज्यूं करै नें म्हे तो बाहरी भली चितवां छां । पिण मोटा बोल तो सो नारायणजी नें छाजे । —वीरमदे सोनगरा री बात
२ देखो 'नींदाणो, नींदाबो' (रू.भे.)
निंदवणहार, हारो (हारी), निंदवणियो—वि० ।
निंदवाड़णो, निंदवाड़बो, निंदवाणो, निंदवाबो, निंदवावणो, निंदवावबो—प्रे०रू० ।
निंदविग्रोड़ो, निंदवियोड़ो, निंदव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निंदवीजणो, निंदवीजबो—कर्म वा० ।

निंदवियोड़ो—१ देखो 'निंदियोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निंदवियोड़ी)

निंदांण—देखो 'निंदाण' (रू.भे.) ।

निंदा-सं०स्त्री० [सं०] १ ऐसी बात कहना जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के दुर्गुण, तुच्छता, दोष आदि प्रकट हों, दोष-कथन, बुराई का वर्णन, अपवाद, जुगुप्सा, बदगोई, कुत्सा (डिं.को.)
उ०—१ ऊपाड़ै आवू जिती, पर निंदा री पोट । पिसण न्याय पग डग पड़ै, दुरासीस लग दोट ।—बां.दा.
उ—२ भाव बतायो वस्त रो रे, और सुणाई बात । वंदन कर निंदा करै, ज्यांरै पड़ी अंधारी रात ।—श्री हरिरांमजी महाराज
उ०—३ दादू जिहि घर निंदा साधु की, सो घर गये समूळ । तिनकी नीव न पाइयें, नांव न ठांव न मूळ ।—दादूबांणी
२ अपकीर्ति, कुख्याति, बदनामी ।
उ०—हरख सोच नहिं हियें, सुजस निंदा नहिं सारै । जीवण मरण जिहांन, लग्यो है प्रांणी लारै ।—ऊ.का.
३ देखो 'निंद्रा' (रू.भे.)
रू०भे०—नंदा, निंद, निंदरा, निंदिया, निंद्या, निंद्रा ।

निंदाड़णो, निंदाड़बो—१ दीपक बुझाना ।
२ देखो 'नींदाणो, नींदाबो' (रू.भे.)

निंदाड़ियोड़ो—देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निंदाड़ियोड़ी)

निंदाणो, निंदाबो—देखो 'नींदाणो, नींदाबो' (रू.भे.)

निंदायोड़ो—देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)

निंदाळ—१ देखो 'नींदाळ' (रू.भे.)
२ देखो 'निंद्राळु' (मह., रू.भे.)
३ देखो 'निंदाळु' (रू.भे.)

निंदाळवो—१ देखो 'निंदाळु' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'निंद्राळु' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० निंदाळवी)

निंदाळु-वि० [सं० निंदा+आलुच्] १ निंदा करने वाला, बुराई करने वाला ।
२ देखो 'निंद्राळु' (रू.भे.)
रू०भे०—निंद्राळुअ, नींदाळु, नींदाळुव, नीदाळू, नींदाळू, नींदाळुन ।
अल्पा०—निंदाळवो, निंदाळुवो, नीदाळो ।
मह०—निंदाळ, नीदाळ ।

निंदाळुवो—१ देखो 'निंदाळु' (रू.भे.)
२ देखो 'निंद्राळु' (अल्प., रू.भे.)
उ०—तेरा रे वीरा भुख्याळवा, धणदेवां नैं भात पसाव । तेरा रे वीरा तिसाळुवा, धणदेवा नैं सरबत घोळ पिलाय, तेरा रे वीरा, निंदाळुवा, धणदेवां नें पिलंग बिछाय ।—लो.गी.
(स्त्री० निंदाळुवी)

निंदावणो, निंदावबो—देखो 'नींदाणो, नींदाबो' (रू.भे.)

निंदावियोड़ो—देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निंदावियोड़ी)

निंदास्तुति-सं०स्त्री० [सं०] वह स्तुति जो निंदा के बहाने से की जाय, व्याजस्तुति ।

निंदित-वि० [सं०] जिसे लोग बुरा कहते हों, बुरा, दूषित ।
उ०—लो या बिरियां लाख, घर थांरो थे ही धणी । निंदित क्रित हक नाक, कुरु कुळ-भूखण मत करो ।—रामनाथ कवियो

निंदिया—१ देखो 'निंदा' (रू.भे.)
२ देखो 'निद्रा' (रू.भे.)
निंदियोड़ो-भू०का०कृ०—१ बुरा कहा हुआ, बदनाम किया हुआ, निंदा किया हुआ. २ बुझा हुआ (दीपक). ३ निद्रा के वशीभूत हुवा हुआ, निद्रित हुवा हुआ, सोया हुआ ।
(स्त्री० निंदियोड़ी)
निंदीजणो, निंदीजबो—देखो 'नींदीजणो, नींदीजबो' (रू.भे.)
निंदुक—देखो 'निंदक' (रू.भे.)
उ०—आस्तिक बिन इंदुक नास्तिक निंदुक, सास्तिक मत सोखंदा है। तज धरम त्रिदंडी अधिक अफंडी, पाखडो पोखंदा है ।—ऊ.का.
निंदोड़णो, निंदोड़बो—देखो 'निंदोवणो, निंदोवबो' (रू.भे.)
निंदोहियोड़ो—देखो 'निंदोवियोड़ो' (रू.भे.)
निंदोणो, निंदोबो—देखो 'निंदोवणो, निंदोवबो' (रू.भे.)
निंदोयोड़ो—देखो 'निंदोवियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निंदोयोडी)
निंदोवणो, निंदोवबो-क्रि०स० [सं० नि+उंदन=न्युंदन] १ साफ करना. २ पानी में डालना. ३ चरखे पर कते हुए सूत की कोकड़ी को भिगोना ।
निंदोवणहार, हारो (हारी), निंदोवणियो—वि० ।
निंदोविओड़ो, निंदोवियोड़ो, निंदोव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निंदोवीजणो, निंदोवीजबो—कर्म वा० ।
निंदोड़णो, निंदोड़बो, निंदोणो, निंदोवो—रू०भे० ।
निंदोवियोड़ो-भू०का०कृ०—१ साफ किया हुआ. २ पानी में डाला हुआ ।
(स्त्री० निंदोवियोड़ी)
निंद्य-वि० [सं० निंद्य] जो निंदा के योग्य हो, बुरा।
निंद्या—१ देखो 'निंदा' (रू.भे.)
उ०—वेटा नै सीख दै, म्हारी छाती बाळै है। ज्यूं साधु साधु रो आचार बतावै जद भेखधारी सुण नै कूड़ै। कहै म्हारी निंद्या करै ।—भि.द्र.
निंद्यावरत-सं०पु० [सं० निन्द्यावर्त] एक प्रकार का वृक्ष (अ.मा., डिं.को.)
निंद्रा—१ देखो 'निंदा' (रू.भे.)
२ देखो 'निद्रा' (रू.भे.)
उ०—भमर गुफा मझि रमै तजै भ्रम । जीतै निंद्रा त्रिकुटी संजम ।
—सू.प्र.
निंद्राळु—देखो 'निद्राळु' (रू.भे.)
निंनांण—देखो 'निंदांण' (रू.भे.)
उ०—१ जद गुलजी बोल्यो—स्वांमीनाथ ! रुपिया दस लागा, कांयक हळ रै भाड़ा रा, कांयक निंनांण रा, कांयक बीज रा, सरब दस रुपिया लागा ।—भि.द्र.
उ०—२ जेठ बूजियां फोग, असाढां हळां हिंडावै । भादू सांवण घास, निंनांणां घणो कटावै ।—दसदेव

निंब-सं०पु० [सं०] नीम का पेड (डिं.को.)
निंबादित्य-सं०पु० [सं०] श्री राधिकाजी के कङ्कण के अवतार माने जाने वाले निंबार्क सम्प्रदाय के आदि आचार्य जिनका दूसरा नाम 'अरुणि' भी था।
निंबारक-सं०पु० [सं० निंबार्क] १ वैष्णव सम्प्रदाय जो निंबादित्य द्वारा प्रवर्तित माना जाता है ।
२ निंबादित्य।
निंबु—देखो 'नींबू' (रू.भे.)
निंबोळी, निंबोळी-सं०स्त्री० [सं० निंब+फल रा.प्र ई] १ नीम का फल।
उ०—निमझर जीरै भांत, निंबोळी दाखां जेड़ी। आंम उण्यांरै रूंख, एकसा डाळा पेडी ।—दसदेव
२ स्त्रियों के कण्ठ का आभूषण विशेष ।
रू०भे०—निबोळी, निंवोळी, निमोळी, निमोळी, नींबोळी, नीबोळी, नीमोळी।
निंवायो—देखो 'निवायो' (रू.भे.)
उ०—नीर निंवायो बारो आयो, घोरा पाळी बांधजै। घणी भोळावण कांई देऊं. हेलो म्हारी सांमजै ।—चेतमांनखा
निंवार—देखो 'निवार' (रू.भे.)
उ०—साथीड़ां नै घलास्यां, जंवाईजी, पिलंग निंवार का कोई, जंवाईजी नै हिंगळू ढोलियो लाड-जंवाइजी एक बर आवो म्हारै घर पांवणा ।—लो.गी.
निंहंग, निंहग—देखो 'निहंग' (रू.भे.)
निंहसणो, निंहसबो—देखो 'निहसणो, निहसबो' (रू.भे.)
उ०—नर निंहसियो विकोदर नांमी ।—चतरो मोतीसर
निंहसणहार, हारो (हारी), निंहसणियो—वि० ।
निंहसिओड़ो, निंहसियोड़ो, निंहस्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निंहसीजणो, निंहसीजबो—कर्म वा० ।
निंहसियोड़ो—देखो 'निहसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निंहसियोड़ी)
नि-अव्य० [सं०] १ उपसर्ग।
२ एक संयोजक शब्द, और।
उ०—तेहि दयूत रमीनि हारयु राज रिधि भंडार। एकेके वस्त्रि वनि चाल्या तें बेहू नर नि नारि ।—नळाख्यांन
[सं० नु] ३ सम्भावना, सन्देह और अनिश्चितता सूचक अव्यय ।
उ०—तें जोतां तह्मो सा दूखिया ? जु नि, धीरय आंणु। करम तणि वसि सघळा प्रांणी, एहवूं अंतरि जांणु ।—नळाख्यांन
४ देखो 'नहीं' (रू.भे.)
उ०—ढोला रहिसि नि वारियउ, मिळिसि दई कइ लेखि। पूंगळ हुइस ज प्राहुणउ, दसराहा लग देखि ।—ढो.मा.
सं०पु०—१ नृत्य, नाच।
२ निश्चय (एका.)

सं०स्त्री०—३ दुर्गति (एका.)
वि०—१ दरिद्र (एका०)
२ देखो 'नी' (रू.भे.)
निग्र—देखो 'निज' (रू भे.)
उ०—१ मइं तरुणी परणी नइ सांमी साचउं करि निग्र नांम। लच्छिनिवास कहावइ मझ विणु ते तुज्झ कूडउं कांम।
—विद्याविलास पवाडउ
उ०—२ निग्र वंस चाढै नूर, करै महाजुध कूंभउत। वगड़ी धणी विराजिश्रो, सूर सभा विचि सूर।—वचनिका
निग्रद्राळुअ—१ देखो 'निद्राळु' (रू.भे.)
उ०—विढंगां खड सावव श्राय वगो। निद्राळुअ नाहर नींद लगो। दसमी दिन जौदय दाव दियो। श्रध रैणि रो चांदो ई श्राथमियो।
—पा.प्र.
२ देखो 'निंदाळु' (रू.भे.)
निग्राई—देखो 'न्यायी' (रू.भे.)
निग्रादर—देखो 'निरादर' (रू.भे.)
निग्रामत—देखो 'नियामत' (रू.भे.)
निउंछावर, निउंछावरि—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)
उ०—दाड़िमी दीज विसतरिया दीसै, निउंछावरि नांखिया नग। चरणे लुंचित खग फळ चुंबित, मधु मुंचंति सीचंति मग।—वेलि.
निउंजणो, निउंजवो—देखो 'नियोजणो, नियोजवो' (रू.भे.) (उ र.)
निउंजणहार, हारो (हारी), निउंजणियो—वि०।
निउंजिश्रोड़ो, निउंजियोड़ो, निउंज्योड़ो—भू०का०कृ०।
निउंजीजणो, निउंजीजवो—कर्म वा०।
निउंजियोड़ो—देखो 'नियोजियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निउंजियोड़ी)
निउंत्रणो, निउंत्रवो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रवो' (रू.भे.)
उ०—निउंत्रीउ कूंत रहिउ सोई। श्ररजुनि श्रांणी मंत्र रसोई।
—पं.पं.च.
निउंत्रणहार, हारो (हारी), निउंत्रणियो—वि०।
निउंत्रिश्रोड़ो, निउंत्रियोड़ो, निउंत्र्योड़ो—भू०का०कृ०।
निउंत्रीजणो, निउंत्रीजवो—कर्म वा०।
निउंत्रियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निउंत्रियोडी)
निउण—देखो 'निपुण' (रू.भे.) (जैन)
निउत्त—देखो 'नियुक्त' (रू.भे.) (जैन)
निऊ—देखो 'नेऊ' (रू.भे.) (उ.र.)
निकंटक-सं०पु० [सं० निष्कंटक] १ इन्द्रासन (नां.मा.)
२ देखो—'निस्कंटक' (रू.भे.)
उ०—वैरी श्रागे 'वांकला', वचियां तणा वखांण। देस निकंटक कर दियै, श्रसमझ मर श्रारांण।—वां.दा.

निकंद, निकंदण-सं०पु० [सं० नि+कंद] नाश, विनाश।
उ०—लंकाळ सेवग तूझ लागो, भ्रात लिछमण खळां-भांगो। पत्री-कुळ स्वारथो पांगो, करण श्रसह निकंद।—र.ज.प्र.
वि०—नाश करने वाला। उ०—१ दसरथ नृप भवण हुश्रा रघु-नंदण, कवसल्या उर दुस्ट निकंदण। रूप चतुरभुज प्रकटत रीधो, दरसण निज माता नै दीधो।—र.रू.
उ०—२ वाराधिप सेतां वंधण रो, कुळ राखस जूथ निकंदण रो। दिल तूं 'किसना' जग-वंदण रो, नहचो रख कोसळनंदण रो।
—र.ज.प्र.
रू०भे०—निकंदन, निखंदनि, निकंध।
निकंदणी—देखो 'निकंदनी' (रू.भे.)
निकंदणो-वि० [सं० निकंद्] (स्त्री० निकंदणी) नाश करने वाला, संहार करने वाला, मारने वाला।
निकंदणो, निकंदवो-क्रि०स० [सं० नि+कंद्] १ संहार करना, मारना
उ०—१ सित्तर सहंस निकंदिया, कोट भयंकर काळ। वंधव सेन विछोड़िया, कूटंत कपाळ।—नैणसी
उ०—२ वसिस्ठ रिखीस्वर श्राबू ऊपर राकस निकंदण नुं खत्री चार उपाया। १ पंवार, २ चहुवांण, ३ सोलंखी, ४ डाभी।
—नैणसी
२ नाश करना, मिटाना। उ०—कांन जड़ाऊ कांमड़ा, कुंडळ धारण कीन्ह। झळहळ तारा झूमका, दुहुं पाखां ससि दीन्ह। दुहुं पाखां ससि दीन्ह, श्रंधार निकंदवा। तेजोमय रथ तास, निघात पही नवा।
—बां.दा.
निकंदणहार, हारो (हारी), निकंदणियो—वि०।
निकंदिश्रोड़ो, निकंदियोड़ो, निकंदयोड़ो—भू०का०कृ०।
निकदीजणो, निकंदीजबो—कर्म वा०।
निकंदन, निकंदनि—देखो 'निकंदण' (रू.भे.)
उ०—१ नमो कन्ह रूप निकदन कंस।—ह.र.
उ०—२ लिपइ ताव निकंदनो, चंदनि, चंदनि देहु। निज निज नाथ संभारिय, नारिय नवलउ नेहु।—नेमिनाथ फागु
निकंदनी-वि० स्त्री० [सं० नि+कंदनम्] नाश करने वाली, संहार करने वाली, मारने वाली। उ०—बलिस्ट धूम्र श्रक्ष की तुही विपक्षनी, भई तुही महिख्ख रक्तबीज भक्षनी। निसुंभ सुंभ चंड मुंड तू निकंदनी, नमांमि मात इंदरा 'समंद' नंदनी।—मे.म.
सं०स्त्री०—देवी, शक्ति, दुर्गा।
रू०भे०—निकंदणी।
निकंदियोड़ो-भू०का०कृ०—संहार किया हुश्रा, नाश किया हुश्रा, मारा हुश्रा, मिटाया हुश्रा।
(स्त्री० निकंदियोड़ी)
निकंध—देखो 'निकंद' (रू.भे.)
उ०—'गजन' दिखण दळ गाहटै, काबल 'जसे' कमंध। रूस फ्रांस मझ

जरमनी, कीधा 'पतै' निकंध ।—किसोरदांन बारहठ

निकख-सं०पु० [सं० निष्कख] हीरा (अ.मा.)

निकट-क्रि०वि० [सं०] नजदीक, पास, समीप (अ.मा.)

उ०—१ जोग-नींद वस भये निरंजन । गज्जे असुर पितामह गंजन । आकृति विकट निकट चलि आये । काढ़ि दसन विधि ग्रसन धिकाये । —मे.म.

उ०—२ पतित न्याय व्है पीतपट, दिपै निकट रिखदेव । नचे मुगत नटनार ज्यूं, स्री गंगा तट सेव ।—बां.दा.

उ०—३ इम गढ़ निकट विकट थट आया । छपन कोड़ि जांणै घण छाया ।—सू.प्र.

वि०—१ जो दूर न हो, समीप का, पास का ।

२ रिश्ते में जिससे खास अन्तर न हो ।

रू०भे०—नइडउ, नियड़उ, निकटी, निक्‍ट्ट, नीड़, नीड़ै, नीड, नीडै, नेरउ ।

अल्पा०—नइड़ौ, नइडौ, नईडौ, नयड़ौ, नयडौ, नीड़ौ, नीडौ ।

निकटता-सं०स्त्री० [सं०] समीपता, सामीप्य ।

निकटवरती-वि० [सं० निकटवर्त्तिन्] नजदीक का, पास वाला, समीपस्थ ।

निकटासण-सं०स्त्री०—निर्लज्जता, नालायकी, शैतानी, बदमाशी ।

उ०—दुरभिख निकटासण किण नै न दीधो । नकटै नकटायण रूपणासय कीधो । मिळगा धूळि ज्यूं जेस्टास्रम जूना । साले सूळी ज्यूं स्रेस्टास्रम सूना ।—ऊ.का.

निकटि, निकट्ट—देखो 'निकट' (रू.भे.)

उ०—१ अनंत सूर निकटि नूर, जोति जोति मिळावै । जन हरिदास निकटि बास, दास व्है सो पावै ।—ह.पु.वा.

उ०—२ ज्यां निकट्ट भौ नहीं, निपट संग्रांम निहट्ट ।—ग.रू.बं.

निकपट—देखो 'निस्कपट' (रू.भे.)

निकमाई-सं०स्त्री० [सं० निष्कर्म्म+रा.प्र.आई] वह समय जब कोई कार्य करने को न हो, निकम्मा होने का भाव।

निकमाळौ-सं०पु० [सं० निष्कर्म्म+आलुच् प्रत्य०] कार्य न होने का भाव, वह समय जब कोई कार्य करने को न हो ।

उ०—निकमाळै री रुतां, कमनीय किरवा काढ़ां । साळ तिवारां सफां मथ सांतीरा चाढ़ां । आळां ओबरडांह जुगत री घरिया जोड़ां । आंकड़ हाळा गेड़, अवड़ गुवाळां अकोड़ां ।—दसदेव

निकमू, निकमौ, निकम्मौ-वि० [सं० निष्कर्म्म] (स्त्री० निकमी, निकम्मी)

१ जो किसी काम में न आ सके, जो किसी काम का न हो, बुरा ।

उ०—१ ओखदि पिछांण खावो अमल, ओखदि है नह अकल रो । असल रो मजो क्यूं ओर है, निकमूं आनद नकल रो ।—ऊ.का.

२ व्यर्थ, फिजूल । उ०—१ नून चाहजै सो पद सो नहिं । पद निकमो है अधिक पद । पद इक द्वै वरियां सु कथित पद । हव सुण पतत प्रकरख हद ।—बां.दा.

उ०—२ जद ते ग्रहस्थ बोल्या, थे पूंजो जायने । निकमा खूंचणा काढ़ो । इसा मूरख ग्रहस्थ ।—भि.द्र.

३ जिससे कुछ करते-धरते न बने, जो कोई काम-धंधा न करे ।

उ०—बिलळा ग्रंथ बांचै रसिक न राचै, छब छाती छोलंदा है । निकमा नर नारी बारंबारी, वळिहारी बोलंदा है ।—ऊ.का.

४ जिसके पास कुछ कार्य करने को न हो, बेकार, बिना कार्य का ।

उ०—१ पूठै कछवाहा मसकरी करण लागिया—जे इण रै भरोसै इतरा दिन निकमा रह्या ।—अमरसिंह राठौड़ री वात

उ०—२ नांव तुम्हारो रांमजी, लेतां लगे न दांम । मन निकमो बैठो रहै, करै ओर ही कांम ।—ह.पु.वा.

५ नीच, पतित । उ०—अजामेळ सा घोर अधम्मी । नारी गणिका भील निकम्मी ।—र.ज.प्र.

६ आवारागर्द, निकम्मा ।

रू०भे०—नकांम, निकांम, निकांमौ ।

अल्पा०—नकांमौ, निकांमू ।

निकर-सं०पु० [सं०] १ समूह, झुण्ड (ह.नां.)

उ०—१ की लोक निकर सुर नर किसूं, पत उर धोम पवीत रौ । बाधियो ताप दूजां बिचै, आज प्रताप 'अजीत' रौ ।—रा.रू.

उ०—२ एही भुजे अरीत, तसलीम ज हींदू तुरक । माथै निकर मजीत, परसाद कै 'प्रतापसी' ।—दुरसो आढ़ो

२ ढेर, राशि. ४ निधि ।

वि०—१ सम्पूर्ण, तमाम, समस्त । उ०—निरबीज करूं राकस निकर, मेटूं फिकर त्रिलोक मिण । धारूं बभीख लंका धणी, तो हूं दसरथ राव-तण ।—र.रू.

रू०भे०—निगर, नियरू ।

२ देखो 'नेकर' (रू.भे.)

निकरकट-वि० [सं० निकर+रा० कट] (स्त्री० निकरकटी) स्वार्थी, नीच, क्षुद्र ।

रू०भे०—निगरगंठ ।

निकरम—देखो 'निस्करम' (रू.भे.)

उ०—जीहा जप जगदीसवर, धर धीरज मन ध्यांन । करमबंध-निकरम-करण, भव-भंजण भगवांन ।—ह.र.

निकरमी—देखो 'निस्करम' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निकरमी)

निकरि—देखो 'निकर' (रू.भे.)

उ०—सोभि जांन सिरदार रूप अणपार विराजै । रतन निकरि किरि रुचिर भोमि वैरागर भ्राजै ।—रा.रू.

निकरोसी—देखो 'निकासी' (रू.भे.)

निकरौ-वि० [देशज] १ निखालिस, साफ (गेहूं, घी आदि)

२ निकम्मा ।

निकळंक, निकळंकत, निकळंकि, निकळंकिय, निकळंकी, निकळंकीय-वि०

[सं० निष्कलंक] १ पवित्र, पावन, पाक ।

उ०—१ पावन हुवो न 'पीठवो', न्हाय त्रिवेणी नीर। हेक 'जैत' मिळियां हुवो, सो निकळंक सरीर ।—बां.दा.

उ०—२ मिळण धरै पण जैतमाल सवियांण सहर का। पात फळंकी पीठवो निकळंकी करका ।—दुरगादत्त बारहठ

२ जिस पर किसी प्रकार के गुनाह का धब्बा न लगा हो । कलंक-रहित, निष्कलंक, वेदाग ।

उ०—१ हे देरांणी तूं उण कुळ में उपजी है जठै थारै माता पिता रा दोनूं ही पख विनां दाग रा अरथात निकळंक है ।—वी.स.टी.

उ०—२ नरपति ! तूं निकळंक नर, पापम प्रीछिसि श्रेह । श्रांणिसि श्रमी-कचोलडुं, जीवाडिसि जण वेह ।—मा.कां.प्र.

उ०—३ अपना आप निजानंद चेतन, निकळक ब्रह्म रहोरी । सुद्ध स्वरूप अलाग अनादी, नही जहां फोर अफोरी ।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—४ नंद 'गुमांन' सदा निकळंकत, बाधै छत्रधरां इण वार । कर आचार ऊजळो कीधो, इळ 'गजवंध' तणो आचार ।—बां दा.

उ०—५ सुरतांण तप तेज हू, दिल साह दुरांण। नृप निकळंकी करन, साह जिम अंवर भांण ।—द.वा.

३ जिसको किसी प्रकार का पाप न लगा हो, पापरहित, निष्पाप ।

उ०—मह लागो पाप अभनमा 'मोकळ', पंड सुदतार भेटतां पाप । आज हुवा निकळक अहाडा, पेखै मुख ताहरो 'परताप' ।

—महाराणा प्रताप री गीत

४ जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो, दोषरहित, निर्दोष ।

सं०पु०—भगवान विष्णु के मुख्य दश अवतारों में से एक । (अ.मा.)

उ०—१ घरेउ रूप निकळंक को, भोम उतारण भार । सार इहै संसार में, अै दस ही अवतार ।—गजउद्धार

उ०—२ नमो निकळंकिय नाथ नरेह, नमो कळि काळग नास करेह । नमो अवतार अनत अपार, नमो पढ़ सेस लहै नहिं पार ।

—ह.र.

उ०—३ वेद कहै हरि सांमळि आवै, सूरज संकट निवारण । निकळंकी ओतार कहावै, कळि कालिग कूं मारण ।—ह.पु.वा.

रू०भे०—नकळंक, निस्कळंक ।

निकळ, निकल-स०स्त्री० [अ० निकल] साफ की जाने पर चांदी की तरह चमकने वाली एक धातु विशेष जो खानों में गधक, कोयले, सुरमे, संखिया आदि के साथ मिलती है ।

निकळणो, निकळबो-क्रि०अ० [सं० निष्कासनम्] १ भीतर से बाहर आना, निर्गत होना, बाहर होना । उ०—१ सरघा घटगी सैंग, वेग विरधापण वळियो । निकळण रो रथ नहीं, कळण ऊंडी में कळियो । मगर-पचीसी मांय, डोकरो वणगो डाकी । डांगड़ियां निठ डिगै, थिगै टांगड़ियां थाकी ।—ऊ.का.

उ०—२ पाखती च्यारूं तरफ भाखर छै । कोस ३ वीच पांणी सूं भरीजै तद दस-पनरै वांस पांणी चढै । पांणी निकळण री ठौड़ को नहीं ।—नैणसी

उ०—३ पिण जोर चालै नहीं मन मांहै रीसांणो । तरै पवार रात पड़ियां आपरो साथ खजांनो लै नै रिसाय नै निकळियो ।

—राव रिणमल री वात

मुहा०—१ निकळ जाणो—चला जाना, मन के किसी उद्वेग के कारण घर से चला जाना, आगे बढ़ जाना, नष्ट हो जाना, न रह जाना, ले लिया जाना, खो जाना, भाग जाना, न पकड़ा जाना । कम हो जाना, घट जाना ।

२ गुजरना, मरना, प्राणान्त होना. ३ गमन करना, गुजरना, जाना । ज्यूं—राजाजी री सवारी वडी धूमधाम सूं निकळी ।

ज्यूं— बिलाड़ै जावण वाळी मोटर रोज ईं सड़क सूं निकळै ।

४ ठहराया जाना, निश्चित होना ।

ज्यूं—नतीजो निकळणो, रास्तो निकळणो, दोस निकळणो ।

५ किसी समस्या या प्रश्न का हल प्राप्त होना, उत्तर मिलना ।

ज्यूं—श्रो सवाल टेढो है थांसूं नहीं निकळैला ।

६ आविष्कृत होना, ईजाद होना, नई बात का प्रकट होना ।

ज्यूं—कळ निकळणी ।

७ लगी हुई, मिली हुई या पैवस्त वस्तु का अलग होना, ओतप्रोत या व्याप्त वस्तु का अलग होना ।

ज्यूं—पत्ती सूं रस निकळणो, तिलां सूं तेल निकळणो ।

८ किसी श्रेणी आदि के आगे वढ़ना, उत्तीर्ण होना ।

ज्यूं—इण साल छठी सूं मोतीसिंह निकळ ग्यो । अब वो सातमी में वैठै छै ।

९ एक ओर से दूसरी ओर चला जाना, पार होना, अतिक्रमण करना ।

ज्यूं—रेल रै डब्बै री बारी में सूं इतरो मोटी गांठ कीकर निकळै ।

१० उत्पन्न होना, पैदा होना, प्रादुर्भूत होना ।

ज्यूं—इण जागा इतरा कीड़ा कीकर निकळ ग्या ।

११ उदय होना । ज्यूं—सूरज निकळणो, चांद निकळणो ।

१२ स्पष्ट होना, प्रकट होना, खुलना ।

ज्यूं—श्रो गाबो धोयां सूं कैड़ो ऊजळो निकळियो है ।

१३ दिखाई पड़ना, उपस्थित होना ।

ज्यूं—अरे ! अठै थे अचांनक कठा सूं निकळ ग्या हो भाई ।

१४ किसी वस्तु का ढेर या राशि से पृथक होना, मेल से अलग होना ।

ज्यूं—बाजरी में सूं इतरा रावळिया निकळिया है ।

१५ किसी तरफ बढ़ा हुआ होना ।

ज्यूं—घर रो एक खूणो उत्तर कांनी निकळियोड़ो है ।

ज्यूं—खीलै रो सिरो उण बाजू घणो निकळ ग्यो है, पाछो ठोरो ।

१६ सर्व साधारण के सामने आना, प्रस्तुत होना, प्रकाशित होना ।

ज्यूं—गीता प्रेस सूं केई किताबां निकळगी है ।

१७ बिकना, खपना ।
ज्यू—म्हारै बैठां बैठां मालण रा ओडा मांसूं पांच सेर काकड़ियां निकळगी ।
१८ पाया जाना, प्राप्त होना, मिलना ।
ज्यू—कीकर ही कर नै चोरी रो माल निकळ जावतो तो इतरो नुकसांण नहीं होवतो ।
ज्यू—राज कनूं रुपया निकळवायां बिना आ किताब नीं छप सकै ।
१९ हिसाब होने पर किसी निश्चित रकम का उत्तरदायित्व पड़ना ।
ज्यू—थांरै में म्हारा इतरा रुपया निकळै है सो परा दो ।
ज्यू—म्हां में थांरो जो भी हिसाब निकळतो व्है वो लो ।
२० बीतना, व्यतीत होना, गुजरना ।
ज्यू—यूं करतां करतां सैंग दिन निकळ ग्यो अर कांम वळै सरयो नीं ।
२१ न रह जाना, जाता रहना, हट जाना, दूर होना, मिट जाना ।
ज्यू—दारू री एक छाक लेतां ई सरदी निकळगी ।
ज्यू—आंबा हळदी नै मैदा लकड़ी रो लेप करतां ई पीड़ निकळगी ।
२२ शुरू होना, आरम्भ होना छिड़ना ।
ज्यू—चरचा निकळणी, वात निकळणी ।
२३ दूर तक लकीर के रूप में जाने वाली वस्तु का विधान होना, जारी होना । ज्यू—हत्थो निकळ ग्यो है ।
ज्यू—अठै सड़क निकळैला ।
ज्यू—इण खेतां नै पांणी देवण सारू आ नहर निकळ रही है । राजस्थांन नहर निकळण सूं रेगिस्तांन हरो व्है जावसी ।
२४ सिद्ध होना, प्राप्त होना, सरना ।
ज्यू—मतळब निकळणो, कांम निकळणो ।
२५ जारी होना, प्रचलित होना ।
ज्यू—रीत नीकळणी, चाल निकळणी, कांनून निकळणो ।
२६ (शरीर) पर उत्पन्न होना ।
ज्यू—माता निकळणी, खील निकळणी ।
२७ मुक्त होना, बंधा न रहना, जुड़ा या फँसा न रहना, छूटना, बंधनमुक्त होना ।
ज्यू—चोरियो निकळणो, वेगार सूं निकळणो, जेळ सूं निकळणो ।
२८ साबित होना, सिद्ध होना, प्रमाणित होना ।
ज्यू—वो नोकर तो चोर निकळियो ।
ज्यू—थांरी वात कदैई साची निकळी ई ही ?
२९ किनारे हो जाना, अलग हो जाना, लगाव न रहना ।
ज्यू—थै ठीक करी ! म्हनै मुकदमै में फसाय नै खुद निकळ ग्या ।
३० चलता बनना, बच जाना ।
ज्यू—फलांणो आधी वात कै नै इज निकळ ग्यो ।
३१ चोरी होना ।
ज्यू—माल रा डब्बा मूं खांड री दो बोरियां रात रा निकळगी ।
३२ अपनी कही हुई बात से टलना, मुकरना, नटना ।
ज्यू—थे उण टैम तो हूंकारो भर दियो अर हमें निकळो क्यूं हो ।
३३ मर्यादा का उलंघन होना । ज्यू—रांड पति नै छोड निकळगी ।
ज्यू—छोरो मां-बाप नै छोड नै निकळ ग्यो ।
३४ कम होना, घटना ।
ज्यू—आज पचास छोरा इण स्कूल सूं निकळ ग्या ।
३५ नोकरी से बरखास्त होना, काम से हटना ।
ज्यू—रिस्वत ली जणै निकळिया हो ।
३६ निर्वाह होना, गुजर होना ।
ज्यू—आं रो कांम तो नीठ निकळै है नै थे खरचो करावता जावो हो ।
३७ उद्धार होना, निस्तार होना, बचाव होना, संकट से छूटना ।
ज्यू—म्हैं तो हेमाळा री ठंड सूं नीठ निकळ'र जोधपुर आया हां ।
निकळणहार, हारो (हारी), निकळणियो —वि० ।
निकळवाड़णो, निकळवाड़बो, निकळवाणो, निकळवाबो, निकळवावणो, निकळवावबो, निकळाड़णो, निकळाड़बो, निकळाणो, निकळाबो, निकळावणो, निकळावबो—प्रे०रू० ।
निकळिओड़ो, निकळियोड़ो, निकळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निकळीजणो, निकळीजबो—भाव वा० ।
निकळणो, निकळबो, नीकळणो, नीकळबो ।—रू०भे० ।

निकळवाणो, निकळवाबो— देखो 'निकळाणो, निकळाबो' (रू.भे.)

निकळाड़णो, निकळाड़बो—देखो 'निकळाणो, निकळाबो' (रू.भे.)
निकळाड़णहार, हारो (हारी), निकळाड़णियो—वि० ।
निकळाड़िओड़ो, निकळाड़ियोड़ो, निकळाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निकळाड़ीजणो, निकळाड़ीजबो—कर्म वा० ।
निकळणो, निकळबो—अक० रू० ।

निकळवायोड़ो—देखो 'निकळायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निकळवायोड़ी)

निकळाड़ियोड़ो—देखो 'निकळायोड़ो'—भू०का०कृ० ।
(स्त्री० निकळाड़ियोड़ी)

निकळाणो, निकळाबो–क्रि०स० ['निकळणो' क्रिया का प्रे०रू०]
निकालने का काम दूसरे से करवाना, किसी दूसरे को निकालने की प्रेरणा देना, निकालने के लिए प्रेरित करना ।
निकळाणहार, हारो (हारी), निकळाणियो—वि० ।
निकळायोड़ो—भू०का०कृ० ।
निकळाईजणो, निकळाईजबो—कर्म वा० ।
निकळणो, निकळबो—अक० रू० ।
निकळवाड़णो, निकळवाड़बो, निकळवाणो, निकळवाबो, निकळवावणो निकळवावबो, निकळाड़णो, निकळाड़बो, निकळावणो, निकळावबो —रू०भे०

निकळायोड़ो—भू०का०कृ०—निकालने के लिए प्रेरित किया हुआ, निकालने का काम दूसरे से कराया हुआ ।
(स्त्री० निकळायोड़ी)

निकळावणो, निकळावबो—देखो 'निकळाणो, निकळावो' (रू.भे.)

निकळावणहार, हारो (हारी), निकळावणियो—वि० ।

निकळाविग्रोड़ो, निकळावियोड़ो, निकळाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निकळावीजणो, निकळावीजबो—कर्म वा० ।

निकळणो, निकळबो—अक रू० ।

निकळावियोड़ो—देखो 'निकळायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निकळावियोड़ी)

निकळिंक—देखो 'निकळंक' (रू.भे.)

उ०—निकळिंक वांग ज्यां री नहीं, दसा नहीं सुभ ज्यां दर्प । ज्यां नहीं सफळ मनखा जनम, जिकै नहीं रघुबर जपै ।—र.ज.प्र.

निकळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ भीतर से बाहर आया हुआ, निर्गत हुवा हुआ, बाहर हुवा हुआ ।

२ गुजरा हुआ, मरा हुआ ।

३ गमन किया हुआ, गुजरा हुआ, गया हुआ ।

४ ठहराया गया हुआ, निश्चित हुवा हुआ ।

५ किसी समस्या या प्रश्न का हल प्राप्त हुवा हुआ, उत्तर मिला हुआ ।

६ आविष्कृत हुवा हुआ, ईजाद हुवा हुआ, (नई बात का) प्रकट हुवा हुआ ।

७ (लगी हुई, मिली हुई, पैवस्त, ओत-प्रोत या व्याप्त वस्तु का) अलग हुवा हुआ ।

८ किसी श्रेणी आदि के आगे बढ़ा हुआ, उत्तीर्ण हुवा हुआ ।

९ एक ओर से दूसरी ओर चला गया हुवा, पार हुवा हुआ, अति-क्रमण किया हुआ ।

१०—उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ, प्रादुर्भूत हुवा हुआ ।

११ उदय हुवा हुआ ।

१२ स्पष्ट हुवा हुआ, प्रकट हुवा हुआ, खुला हुआ ।

१३ दिखाई पड़ा हुआ, उपस्थित हुवा हुआ ।

१४ किसी वस्तु का ढेर या राशि से पृथक हुवा हुआ, मेल से अलग हुवा हुआ ।

१५ किसी एक ओर बढ़ा हुआ, किसी एक तरफ निकला हुआ ।

१६ सर्व साधारण के सामने आया हुआ, प्रस्तुत हुवा हुआ, प्रकाशित हुवा हुआ ।

१७ बिका हुआ, खपा हुआ ।

१८ पाया गया हुआ, प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ ।

१९ हिसाब होने पर किसी निश्चित धन की राशि का उत्तरदायित्व पड़ा हुवा ।

२० व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ, गुजरा हुवा ।

२१ न रहा हुआ, गया हुआ, हटा हुआ, दूर हुवा हुआ, मिटा हुवा ।

२२ शुरू हुवा हुआ, आरम्भ हुवा हुआ, छिड़ा हुआ ।

२३ दूर तक लकीर के रूप में गई वस्तु का विधान हुवा हुआ, जारी हुवा हुआ ।

२४ सिद्ध हुवा हुआ, प्राप्त हुवा हुआ, सरा हुवा हुआ ।

२५ जारी हुवा हुआ, प्रचलित हुवा हुआ ।

२६ (शरीर पर) उत्पन्न हुवा हुआ ।

२७ जुड़ा, फंसा या बंधा न रहा हुआ, मुक्त हुवा हुआ ।

२८ साबित हुवा हुआ, सिद्ध हुवा हुआ, प्रमाणित हुवा हुआ ।

२९ किनारे हुवा हुआ, अलग हुवा हुआ, लगाव न रखा हुआ ।

३० चलता बना हुआ, बच गया हुआ ।

३१ चोरी हुवा हुआ ।

३२ कही हुई बात से टला हुआ, मुकरा हुआ ।

३३ मर्यादा का उलंघन किया हुआ ।

३४ कम हुवा हुआ, घटा हुआ ।

३५ नोकरी से बरखास्त हुवा हुआ, काम से हटा हुआ ।

३६ निर्वाह हुवा हुआ, गुजर हुवा हुआ ।

३७ उद्धार हुवा हुआ, निस्तार हुवा हुआ, बचाव हुवा हुआ, संकट से छूटा हुआ ।

(स्त्री० निकळियोड़ी)

निकळ्ळणो, निकळ्ळबो—देखो 'निकळणो, निकळबो' (रू.भे.)

उ०—बेटो गोकळदास रो, यां बोल्यो हटमल्ल । जो अवसांणै नां मरै, सो जमरांण निकळ्ळ ।—रा.रू.

निकळ्ळियोड़ो—देखो 'निकळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निकळ्ळियोड़ी)

निकस-सं०पु० [सं० निकषः] १ हथियारों पर सान चढ़ाने का पत्थर । (डिं.को.)

२ कसौटी पर चढ़ाने का काम ।

३ कसौटी ।

रू०भे०—निक्ख ।

निकसण-सं०पु० [सं० निकषण] १ रगड़ने या घिसने का काम ।

२ सान पर चढ़ाने का काम ।

३ कसौटी पर चढ़ाने का काम ।

निकसणो, निकसबो—देखो 'निकळणो, निकळबो' (रू.भे.)

उ०—१ दादू हम कायर खड़वा कर रहै, सूर निराळा होइ । निकस खड़ा मैदांन में, ता सम और न कोइ ।—दादूबांणी

उ०—२ पंथी, एक सदेसड़उ, लग ढोलइ पैहचाइ । निकसी वेणी सापणी, स्वातन वरसउ आइ ।—ढो.मा.

उ०—३ हइ रे जीव, निळज्ज तूं, निकस्यू जात न तोहि । प्रिय विछुड़त निकस्यउ नही, रह्यउ लजावण मोहि ।—ढो.मा.

उ०—४ फंस गये हम मोहन फंदन में, बहु काळ रहे तिन बंधन में । हित हांनि हुई हद हीरन की, निकसी वह खांन कथीरन की ।—ऊ.का.

उ०—५ संयम लेवा घर सूं नीसर्‌यो रे । जिम रण मांहे निकसे

सूरवीर रे । वाजित्र वाजे सबद सुवावणा रे । कायर इण वेळा होवै दलगीर रे ।—जयवांणी

उ०—६ तीर भंवारां बीच भ्रकुटी मांहां कर पार नीसरियो सो सांस री साथ ही प्रांण निकस गया ।

—सूरे खींवे कांधळोत री वात

निकसणहार, हारौ (हारी), निकसणियौ—वि० ।

निकसवाड़णौ, निकसवाड़बौ, निकसवाणौ, निकसवाबौ, निकसवावणौ, निकसवावबौ, निकसाड़णौ, निकसाड़बौ, निकसाणौ, निकसाबौ, निकसावणौ, निकसावबौ—प्रे०रू० ।

निकसिग्रोड़ौ, निकसियोड़ौ, निकस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निकसीजणौ, निकसीजबौ—भाव वा० ।

निकसा-सं०स्त्री० [सं० निकषा] रावण, कुम्भकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण की माता एक राक्षसी जो सुमालि की कन्या और विश्रवा की पत्नी थी ।

निकसासुत-सं०पु० [सं० निकषा+सुत] राक्षस, निसाचर (डि.को.)

निकसियोड़ौ—देखो 'निकळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निकसियोड़ी)

निकां-क्रि०वि० [फा. नेक ?] भली प्रकार से, अच्छी तरह से, उचित रूप से ।

निकांम-वि० [स० निष्काम] १ जिसमें किसी प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा न हो ।

२ जो विना किसी प्रकार की कामना या इच्छा के किया जाय ।

३ निकृष्ट, बुरा ।

उ०—बिनिंदिनीय बांम आम नांम तैं नटचौ नहीं, करचौ निकांम कांम हा हरांम तैं हटचौ नहीं । धिकार है हजार बार सार तार में धरचौ, अनूप रूप अच्छ तैं प्रतच्छ कूप में परचौ ।—ऊ.का.

४ नीच, दुष्ट ।

उ०—कै तूं माया-वस हुवो, कै तू हुवो निंकांम । दीनवंधु को विरद तुम, कहां गमायो रांम ।—गजउद्धार

५ व्यर्थ, वेकार, फिजूल ।

उ०—१ साठ सहस सुत सगर रा, नहचै मुवा निकांम । तैं धन ग्रीध जटाय तूं, रिण रह्यो छळ रांम ।—र.ज प्र.

उ०—२ कहणी जाय निकांम, आछोड़ी आंणी उगत । दांमां-लोभी दांम, रंजै न वातां राजिया ।—किरपारांम

उ०—३ जे नयणां नंहि रांम निहारे, हां जो, स्वांमी वे हिज नयण निकाम हो ।—मी रां.

उ०—४ राम विनां जीणो जग मांहे हां हे ! म्हांनै लागै तो घणो हो निकांम ।—मी.रां.

६ देखो 'निकम्मौ' (रू.भे.)

रू०भे०—नकांम, निकामी, निरकांम, निसकांम, निस्कांम, निहकांम।

अल्पा०—निकांमौ ।

निकांमी-वि० [सं० निष्कामिन्] १ जिसके हृदय में किसी प्रकार की कामना या आसक्ति न हो (मनुष्य विशेष)

२ देखो 'निकम्मौ' (रू.भे.)

३ देखो 'निकांम' (रू.भे.)

उ०—अज भेक उजागर नर खर नागर, गुण सागर गूंजंदा है । नाभा क्रित नांमी कथ निकांमी, भ्रमगांमी भूंजंदा है ।—ऊ.का.

रू०भे०—निरकांमी, निसकांमी, निस्कांमी, निहकांमी ।

निकांमु-१ देखो 'निकम्मौ' (रू.भे.)

उ०—दव जिम दीठइं करुण ए करणइ ए हियुं निकांमु । मरुउ वरुउ दमनकि मन किंहि नहीं या विस्रांमु ।—नेमिनाथ फागु

२ देखो 'निकांम' (रू.भे.)

निकांमौ—१ देखो 'निकम्मौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'निकांम' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निकांमी)

निकांरी-ओरी-सं०स्त्री० [देश०] राजा-महाराजाओं का वस्त्रागार ।

उ०—उदैपुर आवदारखांनौ पांणेडो कहावै । कपडां रो कोठार निकांरी ओरी कहावै । दवाखांना ओखद री ओरी कहावै । तंबोळखांना री ओरी बीड़ा बणै । सिलहखांना री ओरी ससतर रहै ।

—वां.दा. ख्यात

निका-सं०स्त्री० [अ० निकाह] १ मुसलमानी ढंग से किया हुआ विवाह, निकाह ।

२ इस्लाम धर्म में विवाह करने की रीति का नाम ।

उ०—अकवर री मा मक्का वगैरै मकां-सरीफ ज्यांरी ज्यारत करण गयी । पातसाह मिरजा सरफुद्दीन नुं साथै मेलियो । एक पीर विलायत में जिणरी ज्यारत सुहागवती करै, विधवा न करै । ज्यारत करण वासतै विधवा अन्य पुरख सूं अवस करि निका पढ़ लै । उण पीर री ज्यारत करण नूं अकवर री मां मिरजा सरफुद्दीन साथ निका पढ़ी । दिली अकवर री मां पाछी आई । जद आ वात सुणी अकवर फुरमायो—आगै तो सरफुद्दीन हमारा चाकर रहा, अव हमारा वावा है । आ वात सरफुद्दीन किणी कै पास सुण लीवी । जठै हुतो जठां सूं वीठळदास जैमलोत नूं साथ ले भागो सो मेड़तै आयो ।—वां.दा. ख्यात

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, पढ़णी, पढ़ाणी ।

रू०भे०—नका, निकाह, नीकाह ।

निकाइय—देखो 'निकाचित' (रू.भे.) (जैन)

निकाई-सं०स्त्री० [फा० नेक+रा०प्र०आई] १ भलाई, अच्छापन ।

उ०—निकाई छाई तें प्रकट प्रभुताई सिख नखा । समस्टी व्यस्टी ते सजन दिव द्रस्टी रिखि सखा ।—ऊ का.

२ सुंदरता, सौंदर्य, खूबसूरती ।

निकाचित, निकाचित करम, निकाचिय-सं०पु० [सं० निकाचित, निकाचित कर्म] जैन शास्त्रानुसार वे कर्म जिनका फल भोगना ही पड़ता है

उ०—१ ति निकाचित करमनउं प्रमांण । जीवनां चतुरविघ करम छइं । एक स्पष्ट करम । बीजउं बद्ध करम । ग्रीजउं निघत्त करम । चउथउं निकाचित ।—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—२ ग्रनइ जिम नीली छोहि सउं भीति चिणी हुइ ग्रनइ भींति नी छोहि सूकी पूठिइं वज्र एकपणउं हुई तिम निकाचित करम । जीव नइं करम एक हूयां । जूजूयां न थाइं । जां जीवइ जीव तां ते करम भोगवइ । गाढ़ ग्रनंते उपक्रमे कीधे न जाइं । संपुरण करम भोगवीइ ते निकाचित करम ।—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—३ 'गुण विजय' कहइ सेमुंज तणी, ग्राखडी मोटी मरम । लाख पल्योपम संचिया, टळइ निकाचित करम ।—गुणविजय

रू०भे०—निकाइय, निकायण ।

निकाज-वि० [सं० नि+कार्य] निकम्मा, बेकाम, बेकार ।

उ०—निरमोहो निरलज्ज सुण, काहे हुग्रो निकाज । माघव विरियां माहरी, कहां गमाई लाज ।—गजउद्धार

निकाय-सं०पु० [सं०] १ समूह, झुण्ड. २ घर, ग्रावास. ३ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—सुकाय सीत भीत में निसीथ घूजती सही, निकाय हाय घाय में उपाय सूझती नहीं । निदाघ में निदाघ देह बाग ग्राग में नहीं, नखानुराग त्याग ह्वै तड़ाग भाग में नहीं ।—ऊ.का.

निकायण—देखो 'निकाचित' (रू.भे.)

निकार-सं०पु० [सं०] १ हार, पराभव (डि.को.) २ तिरस्कार, ग्रनादर. ३ ग्रपकार. ४ ग्रपमान, मानहानि ।

रू०भे०—नकार ।

निकारो-सं०पु० [सं० नि+कार्य] (स्त्री० निकारी) १ वह जो किसी काम या उपयोग का न हो, व्यर्थ का (मनुष्य). २ स्वार्थी, मतलबी. ३ निकम्मा, बेकार ।

रू०भे०—नकारो ।

निकाळ-सं०पु० [सं० निष्कासन] १ निकलने की क्रिया या भाव । २ निकलने का ग्रवसर, मौका या समय ।

ज्यूं—मिळण नै कीकर जाऊ ? घर माऊं तो निकाळ ही नी होवै । ३ निकालने के लिए खुला स्थान या छेद, वह स्थान जहां से कुछ निकल ।

ज्यूं—इण खेत रै पांणी रो निकाळ कठै है । म्हे गांव रै निकाळ माथै ऊभा हां । इण सीसी रै दो निकाळ है ।

४ लकीर के रूप मे दूर तक जाने वाली या फैलने वाली वस्तु का ग्रारम्भ स्थान, मूल स्थान, उद्गम ।

ज्यूं—इण नदी रो निकाळ कठा सूं है ।

५ वंश का मूल. ६ ग्रामदनी का सूत्र, लाभ या ग्राय का रास्ता, प्राप्ति का ढंग. ७ निकालने का काम, निकालने की क्रिया या भाव. ८ रक्षा का उपाय, बचाव का रास्ता, छुटकारे की तदबीर, संकट से बचने की युक्ति, कठिनाई से निकलने की तरकीब ।

ज्यूं—फंस तो ग्या हां, ग्रबै निकाळ सोचो ।

९ मार्ग, रास्ता. १० कुश्ती में प्रतिपक्षी की घात से बचने की युक्ति, प्रतिपक्षी द्वारा प्रयुक्त पेंच की काट, तोड़. ११ कुश्ती का एक पेंच ।

रू०भे०—नकाळ, नकास, निकास, नीकाळ, नैकाळ ।

ग्रल्पा०—नकाळो, नकासो, निकाळो, निकासो, नेकाळो ।

निकाळणो, निकाळबो-क्रि०स० [सं० निष्कासनम्] १ भीतर से बाहर करना, निर्गत करना ।

ज्यूं—ठोरियोड़ी मेक निकाळणी, वगस मूं गाबो निकाळणो, कोठी मू पांनो निकाळणो. २ गमन कराना, गुजराना, ले जाना ।

ज्यूं—राजाजी री सवारी निकाळण रो इन्तजांम इण सड़क माथै जोरां सूं ह्वै रह्यो है. ३ निश्चित करना, ठहराना ।

ज्यूं—ग्रठै एक सड़क निकाळणी है । दूजां रा दोस निकाळणा साव सोरा है पण घर रा दोस लोगां नै निगै नीं ग्रावै ।

४ किसी समस्या या प्रश्न का हल प्राप्त करना, उत्तर प्राप्त करना ।

ज्यूं—बीजगणित रा सवाल तो म्हूं मिनटां में निकाळ सकूं हूं ।

५ नई चीज को प्रकट करना, ग्राविष्कृत करना, ईजाद करना ।

ज्यूं—ग्राजकल लोग चांद माथै पूगण रा साधन निकाळ रह्या है ।

६ लगी हुई, मिली हुई या पैवस्त वस्तु को ग्रलग करना, ग्रोत-प्रोत या व्याप्त चीज को पृथक करना ।

ज्यूं—नारंगी सूं रस निकाळणो, तिलां सूं तेल निकाळणो ।

७ किसी श्रेणी ग्रादि के ग्रागे बढ़ाना, उत्तीर्ण करना ।

ज्यूं—इण साल म्हनै तो भगवांन ईज नमां मूं निकाळ'र दसमीं में वैठांणियो ।

८ एक ग्रोर से दूसरी ग्रोर ले जाना, ग्रतिक्रमण कराना, पार करना ।

ज्यूं—दरवाजो नीं खुल सकै तो बारी मूं निकाळ दो ।

९ उत्पन्न करना, पैदा करना, प्रादुर्भूत करना, उपस्थित करना ।

ज्यूं—ग्रठै बाजरी बिखेर नै कितरी कीड़ियां निकाळ दी है ।

१० स्पष्ट करना, प्रकट करना, खोलना ।

ज्यूं—ग्रो जवांन तो हमार धोती री पांण काढ नै ऊजळी-घट्ट निकाळ दे ला ।

११ उपस्थित करना, दिखाना ।

ज्यूं०—इण ग्रपराधी नै थे इतरा ग्ररसा रै बाद कठा सूं निकाळियो ।

१२ किसी वस्तु को ढेर या राशि से पृथक करना, मेल से ग्रलग करना ।

ज्यूं—घांन सूं ग्रोवण निकाळ नै कबूतरा चुगै उठै उछाळ देणा चाहीजै ।

१३ किसी तरफ को बढ़ा हुग्रा करना ।

ज्यूं—घर रो उत्तर कांनलो खुणो थोड़ो ग्रागै निकाळो तो फूटरो दीखै ।

१४ सर्व साधारण के सामने लाना, प्रस्तुत करना, प्रकाशित करना।
ज्यूं—आजकल लोग अनोखी-अनोखी किताबां निकाळ रह्या है।
१५ बेचना, खपाना।
ज्यूं—पांच मोटरां कबाड़खांना मूं लेय नै ठीक की अर चोखा दामां में पाछी निकाळ दी।
१६ प्राप्त करना, पाना, बरामद करना।
ज्यूं—नवो थांणेदार बो'त हुसियार है! चोरी रो माल तुरत निकाळ दै।
१७ रकम जिम्मे ठहराना, देना, निश्चित करना।
ज्यूं—सेठां हिसाब सावळ करो। इतरा रुपिया कीकर निकाळिया?
१८ व्यतीत करना, गुजारना, बिताना।
ज्यूं—अरे भाई! थै तो सारो दिन निकाळ दियो अर कांम की करियो कोयनी।
१९ न रहने देना, दूर करना, हटाना, मिटाना।
ज्यूं—बिस्की रो प्यालो पाय नै थै म्हारे डील री सरदी निकाळ दी।
ज्यूं—छोरो घणो अकड़तो हो सो एक ही झापट में सारी अकड़ निकाळ दी।
ज्यूं—मैंदा लकड़ी नै आंबा हळदी रो लेप कर नै म्हे तो म्हारै गोडै री पीड़ निकाळ दी।
२० शुरू करना, आरम्भ करना, छेड़ना।
ज्यूं—चरचा निकाळणी, बात निकाळणी।
२१ दूर तक लकीर के रूप में जाने वाली वस्तु का विधान करना, जारी करना।
ज्यूं—कॉलेज बणाय नै राज हत्थो निकाळ दियो है।
ज्यूं—आ नहर सरकार खेतां नै पांणी देवण सारूं निकाळी है।
ज्यूं—सरकार सड़कां निकाळ नै गांवां नै नगरां सूं जोड़ दिया है।
२२ फलीभूत करना, सिद्ध करना, प्राप्त करना।
ज्यूं—वो आदमी आपरो कांम निकाळण में वडो हुसियार है।
२३ जारी करना, प्रचलित करना।
ज्यूं—रीत निकाळणी, चाल निकाळणी, कांनून निकाळणो।
२४ शरीर पर उत्पन्न करना।
ज्यूं—जणै तो ना देतां-देतां आंबा खाया, हमै ए आंबा थारै डील माथै इतरी खीलां निकाळ दी है जिको सोरै-सास सावळ नी हुवै।
ज्यूं—इण ऊनाळै तो सैंग डील माथै दळायां निकाळ दी है।
२५ मुक्त करना, छोड़ना। ज्यूं—बंधन सूं निकाळणो।
ज्यूं—अरे भाई! ओ कांई कांम दियो है। अबै तो म्हारै गळै सूं फंदो निकाळ।
२६ साबित करना, सिद्ध करना, प्रमाणित करना।
ज्यूं—म्हे इण बात रो सूवो-दूवो निकाळ नै छोडूं ला।
२७ लगाव न रखना, किनारे करना, अलग करना।
ज्यूं—थूं वडो नारद आदमी है। दोनां नै भेळा करचा, पछै एक फंसाय दियो नै एक नै निकाळ दियो।
२८ चलता करना, भगाना, दूर करना।
ज्यूं—मुनीमजी रुपिया मांगण आया पण बुरा देय नै निकाळ दिया। छोरो चाय रा पइसा मांगण आयो पर आंखियां काढ़ नै निकाळ दियो।
२९ चोरी करना।
ज्यूं—गुंडां रात रा पांच बोरी गुळ निकाळ लियो।
३० मर्यादा का उलंघन करना।
ज्यूं—लुगाई नै निकाळ नै ठीक नहीं कियो।
३१ प्रकट करना, सबके सामने लाना, देख में करना।
ज्यूं—अबार क्यूं निकाळो हो, छोरा देखसी तो रोवण लाग जासी।
३२ कम करना, घटाना।
ज्यूं—पचास मूं पैंताळीस तो निकाळ दिया हो अबै लारै रह्यो ई काई है।
३३ (किसी व्यक्ति को) काम से हटाना, बरखास्त करना, नौकरी से हटाना।
ज्यूं—मुंसी नै रिस्वत खावण रै कारण सरकार निकाळ दियो।
३४ दूर करना, पास न रखना, हटाना।
ज्यूं—टाला वूढ़ा हुवै ग्या। अबै आंनै नीं राखां, निकाळ दां ला।
ज्यूं—ओ साड किण कांम रो? आगो निकाळो।
३५ गुजर करना, निर्वाह करना, चलाना।
ज्यूं—ऐ तो किणई तरह सूं आपरो कांम निकाळै है नै थे आंनै काया क्यूं करो हो।
३६ उद्धार करना, निस्तार करना, बचाव करना, संकट से बचाना, कठिनाई से छुटकारा करना।
ज्यूं—रोगियां नै इण ठंड सूं पैंली निकाळो, पछै बच्चां नै अर औरतां नै निकाळो तिण पछै आंपांरी बारी आवैला।
३७ वस्तु लेना, प्राप्त करना।
ज्यूं—कालै बैंक सूं पांच सो रिपिया निकाळिया पण आज कनै एक पयो भी नी है।
निकाळणहार, हारो (हारी), निकाळणियो—वि०।
निकळवाड़णो, निकळवाड़बो, निकळवाणो, निकळवावो, निकळवावणो, निकळवावबो, निकळाड़णो, निकळाड़बो, निकळाणो, निकळावो, निकळावणो, निकळावबो—प्रे०रू०।
निकाळिओड़ो, निकाळियोड़ो, निकाळयोड़ो—भू०का०कृ०।
निकाळीजणो, निकाळीजबो—कर्म वा०।
निकळणो, निकळबो—अक० रू०।
निकासणो, निकासबो—रू०भे०।

निकाळियोड़ो—भू०का०कृ०—१ भीतर से बाहर किया हुआ, निर्गत किया हुआ।

२ गमन किया हुआ, गुजरा हुआ, गया हुआ।
३ ठहराया हुआ, निश्चित किया हुआ।
४ किसी समस्या या प्रश्न का हल प्राप्त किया हुआ, उत्तर किया हुआ।
५ नई चीज को प्रकट किया हुआ, आविष्कृत किया हुआ, ईजाद किया हुआ।
६ लगी हुई, मिली हुई या पैवस्त वस्तु को अलग किया हुआ, ओत-प्रोत या व्याप्त वस्तु को पृथक किया हुआ।
७ किसी श्रेणी आदि के आगे बढ़ाया हुआ, उत्तीर्ण किया हुआ।
८ एक ओर से दूसरी ओर ले जाया हुआ, अतिक्रमण कराया हुआ, पार किया हुआ।
९ उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ, प्रादुर्भूत किया हुआ, उपस्थित किया हुआ।
१० स्पष्ट किया हुआ, प्रकट किया हुआ, खोला हुआ।
११ उपस्थित किया हुआ, दिखाया हुआ।
१२ किसी वस्तु को ढेर या राशि से पृथक किया हुआ, मेल से अलग किया हुआ।
१३ किसी ओर से बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ।
१४ सर्व साधारण के सामने लाया हुआ, प्रस्तुत किया हुआ, प्रकाशित किया हुआ।
१५ बेचा हुआ, खपाया हुआ।
१६ प्राप्त किया हुआ, बरामद किया हुआ, पाया हुआ।
१७ रकम जिम्मे ठहराया हुआ, देना निश्चित किया हुआ।
१८ व्यतीत किया हुआ, गुजारा हुआ, बिताया हुआ।
१९ न रहने दिया हुआ, दूर किया हुआ, हटाया हुआ, मिटाया हुआ।
२० शुरू किया हुआ, आरम्भ किया हुआ, छोड़ा हुआ।
२१ दूर तक लकीर के रूप में जाने वाली वस्तु का विधान हुवा हुआ, जारी किया हुआ।
२२ फलीभूत किया हुआ, सिद्ध किया हुआ, प्राप्त किया हुआ।
२३ जारी किया हुआ, प्रचलित किया हुआ।
२४ (शरीर) पर उत्पन्न किया हुआ।
२५ मुक्त किया हुआ, छोड़ा हुआ।
२६ साबित किया हुआ, सिद्ध किया हुआ, प्रमाणित किया हुआ।
२७ लगाव न रखा हुआ, किनारे किया हुआ, अलग किया हुआ।
२८ चलता किया हुआ, दूर किया हुआ, भगाया हुआ।
२९ चोरी किया हुआ।
३० मर्यादा का उलंघन किया हुआ।
३१ प्रकट किया हुआ, सबके सामने लाया हुआ, दृष्टिगत किया हुआ।
३२ कम किया हुआ, घटाया हुआ।
३३ (किसी व्यक्ति को) काम से हटाया हुआ, बरखास्त किया हुआ, नौकरी से हटाया हुआ।
३४ दूर किया हुआ, पास न रखा हुआ, हटाया हुआ।
३५ गुजर किया हुआ, निर्वाह किया हुआ, चलाया हुआ।
३६ उद्धार किया हुआ, निस्तार किया हुआ, बचाव किया हुआ, संकट मे बचाया हुआ, कठिनाई से छुटकारा किया हुआ।
३७ वस्तु लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ।
(स्त्री० निकाळियोड़ी)

निकाळो-सं०पु० [सं० निष्कासनम्] १ आयुर्वेद के अनुसार एक प्रकार का मयादी बुखार, आंत्रिक ज्वर।
२ दूर करने का भाव, निकाले जाने का दण्ड, निष्कासन, बहिष्कार।
क्रि०प्र०—दैणौ, मिळणौ, होणौ।
यौ०—देस-निकाळो।
रू०भे०—नकाळो, नेकाळो।
३ देखो 'निकाळ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—सो गांव रै निकाळै एक वडो खेजडी छै, जठै हींड बांधी छै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

निकावळो-वि० [देशज] (स्त्री० निकावळी) १ निर्दोष.
२ निकालने वाला।

निकास-वि० [सं० निकाश: या निकास] समान, तुल्य (डि.को.)
स०पु०—१ सामीप्य, पड़ौस, सादृश्य (डि.को.)
२ देखो 'निकाळ' (रू.भे.)
उ०—हलणौ करौ तो भलां करो, म्हे सहर रै निकास खड़ा रहां, नातर थे पांहरी जांणो।—कुंवरसी सांखला री वारता

निकासणौ, निकासबौ—देखो 'निकाळणौ, निकाळबौ' (रू.भे.)
उ०—पंडित हुय सत्यासत्य प्रमांण प्रकासे। निज बळ से नित्या नित्य निदांन निकासे।—ऊ.का.
निकासणहार, हारौ (हारी), निकासणियौ—वि०।
निकसवाड़णौ, निकसवाड़बौ, निकसवाणौ, निकसवाबौ, निकसवावणौ, निकसवावबौ, निकसाड़णौ, निकसाड़बौ, निकसाणौ, निकसाबौ, निकसावणौ, निकसावबौ—प्रे०रू०।
निकासिओड़ौ, निकासियोड़ौ, निकास्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निकासीजणौ निकासीजबौ—कर्म वा०।
निकसणौ, निकसबौ—अक०रू०।

निकासियोड़ौ—देखो 'निकाळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निकासियोड़ी)

निकासी-सं०स्त्री० [सं० निष्कासनम्] १ किसी स्थान से बाहर जाने का काम, निकलने की क्रिया या भाव, रवानगी, प्रस्थान।
ज्यूं—जळूस री निकासी।
२ वर का अपने घर से विवाह हेतु प्रस्थान करने की क्रिया का नाम।
ज्यूं—जांन री निकासी।

रू०भे०—निकरोसी ।

निकाह—देखो 'निका' (रू.भे.)

निकियावरो-सं०पु० [सं० निः+क्रिया+वर+रा.प्र.ओ] वह कुल या पुरुष जिसके घर में यश का कोई बड़ा कार्य नहीं हुआ हो ।

उ०—सगा घरणा सांमठा, कोई मनोजै केई रीसै । पइसा रौ वौपार, दोहु कांनी नह दीसै । त्याग री फिकर किरण नूं तठै, पेटचा तुलै न पाव रा। मोहकमा कमंध मोटा मिनख, दोनूं ही घर निकियावरा।—अरजुणजी बारहठ

विलो०—किरियावरो ।

निकुंचणौ, निकुंचबौ-क्रि०अ० [सं० निकुंचनम्] सकुचित होना ।

उ०—एकि अरजनि करचा तिनि कुंची । आधि ऊडी हूया ति निकुंची ।—विराटपर्व

निकुंचणहार, हारौ (हारी), निकुंचणियौ—वि० ।

निकुंचिओड़ौ, निकुंचियोडौ, निकुंच्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निकुंचीजणौ, निकुंचीजबौ—भाव वा० ।

निकुंचियोड़ौ-भू०का०कृ०—सकुचित हुवा हुआ ।

(स्त्री० निकुंचियोड़ी)

निकुंज-सं०पु० [सं०] १ वह मण्डप जो लताओं से ढका हुआ वा आच्छादित हो।

२ वह स्थान जो घने वृक्षों और घनी लताओं से घिरा हुआ हो, लता-गृह ।

३ उपवन, वाटिका ।

निकुंप-सं०पु०—एक प्राचीन राजवंश या इस राजवंश का व्यक्ति ।

रू०भे०—निकूंप ।

निकुंभ-सं०पु० [सं०] १ राजा हर्यश्व का पुत्र ।

उ०—धुंधमार तणौ उपजै द्रढ़ासू । सुत जयद्रढ़ासु हरिजस प्रकास । जे सुत निकुंभ कीरति उजास । सुत निकुंभ तणौ नृप संहितासु ।
—सू.प्र.

२ हनुमान द्वारा मारा जाने वाला रावण का एक मंत्री जो कुंभकर्ण का पुत्र था ।

३ कृष्ण के मित्र ब्रह्मदत्त की कन्याओं का हरण करने वाला शतपुर का एक असुर राजा जो कृष्ण द्वारा मारा गया था ।

४ कौरवों के सेनापतियों में एक (महाभारत)

५ प्रह्लाद के एक पुत्र का नाम ।

६ एक क्षत्रिय वंश (व.स.)

उ०—चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायंगणि गया । जयवंता यादव वीहल्ल, नर निकुभ गिरूया गोहिल्ल ।—कां.दे.प्र.

७ चौहान राजवंश की एक शाखा. ८ दती वृक्ष. ९ भगवान शकर का एक गण ।

उ०—विळता कुंभ निकुंभ वाकारइ, नव नाडिया जोयइ रे नरिंद । ऊंचउ ग्रहे आछटइ अंबर, ग्रहइ वळे आवतउ गिरिंद ।
—महादेव पारवती री वेलि

१० स्वामी कार्तिकेय के एक गण का नाम ।

रू०भे०—निकूंभ ।

निकुंभी-सं०स्त्री० [सं०] कुम्भकर्ण की कन्या ।

निकुटणौ, निकुटबौ-क्रि०स० [सं० नि+कृतम्] खोद कर बनाना, (पत्थर को) गढ़ना ।

उ०—मन पंगु थियौ सहु सेन मूरछित, तह नह रह्यौ संपेखतै । किरि नीपायौ तदि निकुटी ए, मठ पूतळी पाखांण में ।—वेलि.

निकुटणहार, हारौ (हारी), निकुटणियौ—वि० ।

निकुटिओड़ौ, निकुटियोड़ौ, निकुट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निकुटीजणौ, निकुटीजबौ—कर्म वा० ।

निकुटियोड़ौ-भू०का०कृ०—खोद कर बनाया हुआ, गढ़ा हुआ ।

(स्त्री० निकुटियोड़ी)

निकुटी-सं०पु० [सं० निष्कुट्टी] पत्थर तोड़ने वाला, पत्थर पर खुदाई का काम करने वाला ।

निकुळ-सं०पु०—शराव के साथ चर्वण के रूप में खाया जाने वाला पदार्थ, गजक ।

उ०—चिगती भटी री तेज पूंज आसव अरोगीजै छै । घणा जड़ाव नै चोणी रा प्याला फिर नै रह्या छै। इण भांति री दारू पांणिगो मंडियो छै । इणि भांति री मांस इणि भांति री सुगहेतो इणी भांति भरतां सुळां री निकुळ कीजे छै ।—रा सा. सं.

वि० (स्त्री० निकुळी) बिना कुल, वंशहीन, कुल या वंशरहित।

उ०—अद्रिस्टि अखिर अरूप, अथाह निरमोहसन्यारम् । निरामूळ निरधार, निकुळ निरपख निजसारम् ।—ह.पु.वा.

अल्पा०—निकुळौ ।

निकुळी-सं०पु०—१ एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

उ०—नेतु निगुंडि निरंजनी, नाळकेर नारिंग । नागबला निरविखि नखी, निकुळी निरमळ संग ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'नकुळ' (रू.भे.)

उ०—ऐसा घोड़े राव चाकरां रै हाथां में काढ़णा । सू मोर ज्यूं तंडव करै छै। निकुळी ज्यूं अग भांजै छै, म्रग ज्यूं उलहसै छै ।
—रा.सा.सं.

निकुळौ—देखो निकुळ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जात न न्यात न माय बाप, निकुळा निराकारा ।
—केसोदास गाडण

(स्त्री० निकुळी)

निकूंप-वि० [सं०] १ बिना किसी कमी के, ठोस ।

उ०—मयाळ मंडपाळ मेघमाळ मोहनी नहीं । हिलंब से प्रलंब थंभ बिंब सोहनी नहीं। सरोख सात गोख तैं झरोख झांकनी नहीं । निकूंप चोक चांदनी निमोक नांखनी नहीं ।—ऊ.का.

२ परिपूर्ण, पूर्ण ।

उ०—मिळिया जांणे सिहर वीजळी, मांहे कळा चढंती रूप । निकूंप

जिण ही विध जोवइ (तिण ही विध) दीसइ, रूप तणउ आगर बहु रूप ।—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'निकुंप' (रू.भे.)

निकूळ—देखो 'नकुळ' (रू.भे.)

उ०—जुजट्ठळ भीम करै पग जाप, बंदे पग रैण अरज्जुण आप। देखे पग छांह रहै सहदेव, सदा ही नकूळ करै पग सेव।—ह.र.

निकेत—सं०पु० [सं०] १ मकान, घर (डि.को.)

२ जगह, स्थान. ३ खजाना, भण्डार ।

उ०—एकोतरै अठारसै सांवण दूतियक स्वेत। 'वांकै' ग्रंथ बणावियो, कायर कुजस निकेत।—वां.दा.

रू०भे०—निकेय ।

निकेतन—सं०पु० [सं०] वास-स्थान, घर, मकान (डि.को.)

निकेद—सं०पु०—युद्ध। उ०—विढंतै 'जैत' वढै घर वेद, निकंदै मुग्गळ तेणि निकेद। खळक्कै स्रोणि पल्लर खाळ, वधै घण लीण हुग्रौ वरसाळ।—रा.ज.रासौ

निकेय—देखो 'निकेत' (रू.भे.) (जैन)

निकेवळ, निकेवळौ—वि० [सं० निष्कैवल्य] (स्त्री० निकेवळी)

१ नितान्त, बिल्कुल ।

उ०—१ धरम्म करम्म परम्म सुधांम, रहित सवद् निकेवळ रांम। अमाप-कळा विंदु-नाद उदास, निरंजण भूत-सरव्व निवास।—ह.र.

उ०—२ समापत भोग न रोग न सोग, जपंत निकेवळ केवळ जोग। प्रत्यागम भो लिव भक्ति प्रदीप, समागम सो सिव सक्ति समीप।

—ऊ.का.

२ ऋण-मुक्त ।

३ बन्धन से छुटकारा पाया हुआ, स्वतंत्र ।

४ रोग-मुक्त ।

सं०पु०—सात वर्ण का छंद विशेष। उ०—पूरा छयासी रूप पणि, सहि अखर गणि सात। नांम निकेवळ कहिनवा, वरण छंद विख्यात।

—ल.पिं.

रू०भे०—नकेवळ, नकेवळौ ।

निकौ—वि० [देशज] श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया। उ०—एक अखिल तूं एक, किसन तु अखिलि कहीजै नीर खीर जद निहीं दांन दीजै नह लीजै। जडा-धार सुर-जेठ निकौ कोई दोहू निका निसी निका भोमि न निहंग देस विदेस निका दिसि।—पी.ग्रं.

निक्ख—देखो 'निकस' (रू.भे.)

उ०—राजै मुखं सवाधि रूप, जोति चंद्र हूं जहीं। रहे सदा अखंड रूप, निक्ख सांमता मही। सिंदूर बिंदु माळ सोभ, ओपियौ आणंद रै। जिकौ उरम्म-माळ जांणि, चाढि दीध चंद रै।—सू.प्र.

निक्खेव—देखो 'निक्षेप' (रू.भे.)

निक्र—सं०पु० [सं० निकर] समूह। उ०—अनंग वांण लाजि जाइ, ईख नैण अंजणं। मनी तजै कुरंग मीन, जोय रूप खंजणं। जड़ाव में तिलक्क जोति, एम माळ अंक रै। निजं वरंस 'जोति' निक्र, ओपियौ मयंक रै।—सू.प्र.

निक्रत—वि० [सं० निकृत] १ कपट करने वाला, कपटी (डि.को.)

२ धूर्त, छली. ३ नीच. ४ अधम, पतित. ५ तुच्छ।

निक्रस्ट—वि० [सं० निकृष्ट] बुरा, अधम, नीच, तुच्छ।

उ०—आगं तो क्यूं ही करम किया तीं कर निक्रस्ट जूंण पाई। इवकी होणहार छै ?—ढाढाळा सूर री वात

निक्रस्टता—सं०स्त्री० [सं० निकृष्टता] बुराई, अधमता, नीचता, मंदता।

निक्षत्री—वि० [सं० नि+क्षत्रिय] १ क्षत्रियहीन. २ क्षत्रियत्वहीन।

उ०—धुर तें सील फरसधर धारचो, विमय विकार विहाई रे। क्षत्रिय मार अवनि निक्षत्री, वार ईकीस बणाई।—ऊ.का.

रू०भे०—नछत्री, निछत्री ।

निक्षेप—सं०पु० [सं०] १ छोड़ने की क्रिया का भाव, त्याग ।

२ फेंकने या डालने की क्रिया या भाव ।

३ प्रतिपाद्य वस्तु का स्वरूप समझाने के लिए नाम, स्थापना आदि भेदों से स्थापना करने की क्रिया या भाव (जैन)

उ०—जद खंति विजय बोल्या, तुमारै सूं निक्षेपां नीं चरचा करवी छै। स्वांमी जी बोल्या—निक्षेपा किता ? ते बोल्यो—निक्षेप चार—नाम १, स्थापना २, द्रव्य ३, भाव ४।—भि.द्र.

रू०भे०—निक्खेव, निखेव ।

निखंग—सं०पु० [सं० निषंग] तरकश, तूणीर, तूण, भाथा।

(अ.मा., डि.को.)

उ०—१ धन धन हरि चाप निखंग धरी, धर सोल सधर क्रत ऊंच करी। करतार करां जग झोक जपै, जय क्रती जिकै खळ पाप खपै।

—र.ज.प्र.

उ०—२ पीत दुकूळ कटि लपटांणौ, बीर अंग निखंग बंधांणौ। अंस अजेव धनू उरमाणौ, रूप यसै नृप रांम।—र.ज.प्र.

२ तलवार, खड्ग. ३ मुंह से फूंक कर बजाया जाने वाला एक प्राचीन बाजा ।

रू०भे०—निसंग ।

निखंगी—सं०पु० [सं० निषंगी] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

(महाभारत)

वि० [सं० निषंगिन्] १ बाण चलाने वाला, धनुर्धारी.

२ खड्ग धारण करने वाला ।

रू०भे०—निसंगी ।

निखंगौ—वि० [सं० निषंगिन्] १ निषंग धारण करने वाला।

२ शक्तिशाली, महान् ।

उ०—तुरगां कव्वंदा बावराड़ भड़ां रांम ताखा। निखंगां रीझणा धाड़ा जांनकी नरेस।—र.ज.प्र.

निखंड—वि० [सं० नि:+खंड] अखण्ड, पूर्ण ।

निखकुटी-सं०स्त्री० [सं० निष्कुटि, निष्कुटी] इलायची (अ.मा.)

निखटू-वि० [देशज] १ इधर-उधर मारा मारा फिरने वाला, कहीं न टिकने वाला. २ जिससे कोई काम-काज न हो सके, जो जम कर कोई काम-धंधा न कर सके, निकम्मा, आळसी ।

निखणो, निखबो—देखो 'निरखणो, निरखबो' (रू.भे.)

निखणहार, हारो (हारी), निखणियो—वि० ।

निखिम्रोड़ो, निखियोड़ो, निख्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निखोजणो, निखोजबो—कर्म वा० ।

निखत-वि० [?] १ जबरदस्त । उ०—इम अरज मारुत करी सियवर, पडत भांखर सिखर ऊपर । मिळीजै चढ़ आप लिखमण कृपा सिर कीजै । विध चढ़े सुण रिखमुकर परवत, पग ग्रहे सुग्रीव कपिपत । नील नळ फिर निखत वांनर, भाल द्रुति भीजै ।—र.रू.

२ देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

निखतंत—देखो 'नखतंत' (रू.भे.)

उ०—इम राज करै अजनंद अयोध्या नेत-बंधी निखतंत । जंगांजीत तपोबळ जालम ओप बड़ै अखड़ंत ।—र.रू.

निखत्र—देखो 'नक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—१ सभा भूप दसरथ सुत, रूप इसो रघुराज । सहु निखत्रां मधि ससी, ससि मधि सूरिज रांम ।—रांमरासो

उ०—२ आभूसण अंग इसा, जिगमगं नग्ग निखत्र जिसा । सिख-नख लगै सिणगार सभो, लज लोक तजे विधि सत्ति लजी ।

—वचनिका

निखद-वि० [सं० निषध] १ बुरा, नीच, अधम, निकृष्ट ।

उ०—भली बुरी री भीत, न आंणे मन में निखद । निलजी सदा नचीत, रहै सयाणा राजिया ।—किरपारांम

२ देखो 'निसाद' (रू.भे.)

रू०भे०—निखध ।

निखदणो, निखदबो—देखो 'निसेधणो, निसेधबो' (रू.भे.)

उ०—चोर हिंसक नै कुसीलिया, यारै तांई ही साधां दियो उपदेस । यांने सावद्य रा निखध किया, एहवो छै हो जिन दया धरम रेस ।

—भि.द्र.

निखद-सं०पु० [देशज] तीर, बाण (डि.नां.मा.)

निखध, निखधि-सं०पु० [सं० निषध] १ सूर्यवंशी राजा निषध जो भगवान राम के पुत्र कुस का पौत्र था ।

उ०—रांम पाट कुस भूप विराजे। सुज कुस पाटि अतिथ दिन साजे। संभ्रम अतिथ निखधि नृप सोहत । राजा निखध पाटि नभ राजत ।

—सू.प्र.

२ देखो 'निखद' (रू.भे.)

निखरणो, निखरबो-क्रि०अ० [सं० निक्षरणम्] १ स्वच्छ होना, निर्मल होना । उ०—माखरिया हरिया हुआ, पोखर भरिया पास । तरवरिया प्रफुलत थया, नीर निखरिया खास ।—अज्ञात

२ कांतियुक्त होना, आभायुक्त होना ।

३ अच्छी स्थिति में आना, रंगत पर आना ।

निखरणहार, हारो (हारी), निखरणियो—वि० ।

निखरिओड़ो, निखरियोड़ो, निखरयोड़ो—भू०का०कृ० ।

निखरीजणो, निखरीजबो—भाव वा० ।

निखरणो, निखरबो—रू०भे० ।

निखरब, निखरव-वि० [सं० निखर्व] दस हजार करोड़, दस खरब ।

सं०पु०—दस हजार करोड़ की संख्या, दस खरब की संख्या ।

निखरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ निर्मल हुवा हुआ, स्वच्छ ।

२ आभायुक्त हुवा हुआ, कांतियुक्त ।

(स्त्री० निखरियोड़ी)

निखरो-वि० [देशज] (स्त्री० निखरी) खराब, बुरा । उ०—१ अमल ने कीजै होडै अधिका, दरा करीजै घर में विधिका । गरथ परायो तु मत गरहे, निखरै पाडोसै पिण न रहै ।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ जग निखरो छै रूठो जावै । न सखरो पख तूज तणा ।

—मालो सांदू

विलो०—सखरो ।

निखल-सं०पु०—१ गरुड़ (ना.डि.को.)

२ देखो 'निखिल' (रू.भे.)

उ०—करड़ा वरमा कावुली, उर वरड़ा अहंकार । वार न लागी नमावतां, त्यां हंदी तरवार । त्यां हंदो तरवार पगां पतसाह रै, लंदन धराई लाय, निखल नर नाह रै । स्री महरांणी साह निपट सनमांनियो, उरस लगो उतमंग वीर अहवांनियो ।

—किसोरदांन वारहठ

निखाख—देखो 'निसाद' (रू.भे.)

उ०—वाजंत्रूं का भेद कहि दिखाय सो कैसे, खडज रखव गंधार मधम पंचम धईवंत निखाख सप्त सुरां के अलाप ।—सू.प्र.

निखात-सं०पु० [सं० खन् व. का.] खजाना, निधि । उ०—नमो ऽनंत नित्य अन्नत निखात ।—ह.र.

निखाद—१ देखो 'निसाद' (रू.भे.)

उ०—खडग रिखभ गंधार मद्धि पंचहम निखाद ।—ग.रू.वं.

२ लूट खसोट करने वाला । उ०—केमरां भड़ा तन दवा सूं काढ़िया, भड़ा रण गाडिया क्रोध भालै । चचळां धकै खागां भपट चाढ़िया, वोढ़िया निखादां 'मैर' वाळै ।—रावत हमीरसिंह चूंडावत रो गीत

निखार-सं०पु०—१ निर्मलपन, स्वच्छता. २ कांति, दीप्ति, आभा ।

निखारणो, निखारबो-क्रि०स०—१ निर्मल करना, साफ करना

उ०—दूध चरू में था सू घात खांड निखारी, गळणी में घाती नीचै चरू राख दियो । राजा भोज अर खापरै चोर री वात

२ कांतियुक्त करना, आभायुक्त करना ।

निखारणहार, हारो (हारी), निखारणियो—वि० ।

निखारिओड़ो, निखारियोड़ो, निखारयोड़ो—भू०का०कृ०

निखारीजणौ, निखारीजबौ—कर्म वा०

निखारियोड़ौ-भू०का०कृ०—निर्मल किया हुआ, साफ किया हुआ, कांतियुक्त किया हुआ, आभायुक्त किया हुआ।

(स्त्री० निखारियोड़ी)

निखालस, निखालिस-वि० [रा.नि+अ.खालिस] १ जिसमें कोई दूसरी चीज न मिली हो, विशुद्ध, शुद्ध, स्वच्छ।

२ जिस पर किसी प्रकार का दुहरा शासन न हो, जो पूर्ण स्वतंत्र हो, जिस पर किसी एक ही व्यक्ति का शासन हो।

उ०—पछै कल्यांणदास थोड़ा हिज साथ सूं आयो, तरै 'रतन' आप हाथ सूं बरछी री दे कल्यांणदास नूं मारियो, नै सैणो लीयो, बाकी रा नास नै सीरोही रा देस में गया, सैणो निखालिस हुवो, नै आगै नवघण, विजो वडा आखाड़सिघ रजपूत हुवा छै।

—नैणसी

निखिल-वि० [सं०] सम्पूर्ण, पूर्ण। उ०—१ निरालंब निरलेप, अनंत ईसर अविनासी, थावर जंगम थूळ, सुछम जग निखिल निवासी।

—ह.र.

निखूंती-वि० [सं.नि+क्षुत.प्रा०नि+खुंती] निमग्न।

—नळदवदंती रास

निखेत, निखेद-वि० [सं० निषेध] दुष्ट, नीच, पाजी, पतित।

उ०—१ काई बताऊं भाई! रांड बडी निखेत है। इयं नै लाख वार पालदी कै तूं पाड़ोसण्यां रै घर मत जाया कर। (वरस गांठ)

उ०—२ विन मतळब विन भेद, कोई पटवया रांम का। खोटी करै निखेद, रामत करता राजिया।—किरपारांम

रू०भे०—निसेध।

निखेध-वि [देशज] १ मूर्ख (अ.मा.)

२ देखो—'निखेद' (रू.भे.)

३ देखो—'निसेध' (रू.भे.)

उ०—आस्तो नास्ती मन कर होई, स्वारथ अरु परमारथ दोई। विधि निखेध का करता दोई, चेतन निसप्रिय निरमोई।

—श्री सुखरांमजी महाराज

निखेधणौ, निखेधबौ—देखो 'निसेधणौ, निसेधबौ' (रू.भे.)

उ०—१ रीयां में वखांण वाचता आचार री गाथा सुण नै मोतीरांम बोहरो बोल्यो; भीखणजी वांदरो बूढो हुवो है तो हि गुलांच खेलणी छोडै नहीं। ज्यूं थ बूढ़ा थया तो ही बीजा नै निखेधणा छोडा नहीं।—भि.द्र.

निखोटी-वि० [सं० नि+खोट] (स्त्री० निखोटी) १ जिसमें किसी प्रकार का ऐब या खोट न हो.

उ०—खैंग अवध वळ फेर निखोटा, सोळ भर पद सच्चरा सिरै। वणज कार गोण वसुधारा, फूलता ज्यूं घण थाट फिरै।—क.कु.बो.

२ खालिस, साफ।

निगड़, निगड-सं०पु० [सं० निगड] १ हाथी के पैर बांधने की लोहे की जंजीर, बेड़ी (डि.को.)।

२ एक प्रकार का देव वृक्ष (अ.मा.)

३ कैद, कारागार, बन्धन। उ०—तण समै असुर दळ अथग आय, घण मचै वीर जुध रुक घाय। 'सेरा' नै पकड़ै महासूर, पुंगळ सूं घरियावरपूर। ज्यां दीध निगड मुलतान जाय, जंजीर तोख सांकळ जड़ाय।—रांमदान लाळस

निगड़ित-वि० [सं०] बन्धन में डाला हुआ, बद्ध, कैद किया हुआ (डि.को)

निगद-सं०पु० [सं० निगंद] चन्द्र, चन्द्रमा (अ.मा.)

वि०—स्वास्थ्यप्रद। उ०—तताऊ घेवर, पायल घेवर, तळया गुंद, कुंडळाकृत जळेबी, मीठक मगद, आलुमाल निगद प्रीस्युं सीरं जिमतां मन हुइ घा धीर।—व.स.

निगम-सं०पु० [सं०] १ ईश्वर, परमात्मा (ना.मा.)

उ०—निराकार निरलेप निगम निरदोस निरंजन, धीरप दीनदयाळ देव दुख दाळद भंजन।—ऊ.का.

२ वेद (डि.को.)। उ०—१ सो भज 'किसन' रांम सीतावर, संत सार अद निगम सखै।—र.ज.प्र.

उ०—२ दुस्टी असम्रू वेद छिन्न बहु दसम्रू सज्ज ए। हा हा! विसम्रू हुय प्रसम्रू धारि तम्रू कज्ज ए। मच्छा हयग्रीवूं भक्ति सीवूं निगम कीयूं ठांम ए, ऐसा गोविंदु क्रपासिंधु दीनवंधु रांम ए जी दीनबंधु रांम ए।—करुणा सागर

३ शहर, नगर (अ.मा.) ४ मार्ग, रास्ता (ह.नां.)

उ०—परणीजे मधुपुरी, 'अभो' ब्रंदावन आयो। पेखि धांम सुख परम, मह तीरथ मन भायो। परखि निगम द्रुम पुंज, हेक सुख कुंज निहारै। हेक पुलिण हित करै, हेक जळ जमण विहारै।—रा.रू.

५ समूह, झुण्ड। उ०—फूलत कंवळ कमोदणी, रवि ससि को डर माहि। आस पास मधुकर निगम, रहै तहां मंडराइ।—गज उद्धार

६ शास्त्र। उ०—दादू निरंतर पिव पाइया, जहं निगम न पहुंचे वेद। तेज स्वरुपी पिव बसे, कोई विरळा जांणे भेद।

—दादूवांणी

वि० [सं०] जहां न पहुंच सके, अगम्य।

उ०—निगम भोम गुरुदेव की, ज्यां हंस पठाया हो। हरिरांम उण देस कूं, अनुभव ले गाया हो।—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—निगम्म, निगेम, निगम, नीगम।

निगमणौ, निगमबौ—देखो 'नीगमणौ, नीगमबौ' (रू.भे.)

उ०—१ केहीज राव राखिया, भोम निगमी आंमतां। केहीज राव राखिया, भये खुरसांण पुळतां। केहीज लोभ राखिया, तणा पातसाह उहकाळै। केहीज रंक राखिया, महारोरवे दुकाळै।—नैणसी

उ०—२ येह नि मरण जरा नि व्याधि, एके सुख नहीं तां साधि। करम तणै वसिथि जे भमि, ते मानव मरख निगमि।—नळाख्यांन

निगमणहार, हारौ (हारी), निगमणियौ ।—वि०
निगमिग्रोड़ौ, निगमियोड़ौ, निगम्योड़ौ ।—भू०का०कृ०
निगमीजणौ, निगमीजबौ—भाव वा०

निगमनिवासी-सं०पु० [सं०] वेदों में रहने वाला, विष्णु, नारायण।

निगमागम-सं०पु०यौ० [सं०] वेद शास्त्र, निगम ।
उ०—१ महातम ध्येय रती नहि गम्य । गनी निगमागम गेय अगम्य ।
—ऊ.का.
उ०—२ आदि पख अस्टमी, मास नभ सुभ गुण मंडित । सपतिपुरी मणि मुकट, खेत्र मधुपुरी अखंडित । जगत प्रसिध जैसाह, रचे बीमाह सुरंगम । स्रुति संम्रति व्रत सार, ग्रंथ पूछे निगमागम ।—रा०रू०

निगमियोड़ौ—देखो 'नीगमियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निगमियोड़ी)

निगमी-वि० [सं०नि+गम्य] जो पहुँच के बाहर हो, अगम्य ।
उ०—कागा काय न काय, सूण सु कहै सुहावणा । निगमी मिळसी नाथ, जो-जो हारी जेठवा ।—जेठवा
रू०भे०—निगम्मी ।

निगम्म—देखो 'निगम' (रू.भे.)
उ०—१ ब्रहम्मा रुद्र विचार ब्रहम्म । न जांणै तोरा पार निगम्म । प्रमेसर तोरा पांय प्रळोय । कुरांण पुरांण न जांणै कोय ।—ह०र०
उ०—२ नमो बचि व्यास निगम्म बखांण । नमो पह कीध अठार पुरांण । नमो पह मेटण पाप अपार । नमो वरताइय सतजुग वार ।
—ह०र०

निगम्मी—देखो 'निगमी' (रू भे.)

निगर—सं०पु० [देशज] पौधा विशेष (रू.भे.)
उ०—ताळ साळ मालिक बकुल कुवजक खरजूरी । बोलसरी माधुरी निगर भर हरी सनूरी । कुमुद ढाक कल्हार वेण कचनार विराजै । सोन जाय पल्लव असोक सुर धोक सु साजै ।—रा०रू०

निगरगंठ-वि० (स्त्री० निगरगंठी) १ जो किसी के काम न आवे ।
२ देखो 'निकरकट' (रू.भे.)

निगरब, निगरभ-वि० [सं० नि+गर्व] अभिमानरहित, घमण्ड-रहित।
सं०पु० [सं० नि+गर्भ] वह जो गर्भावास में न आया हो, परब्रह्म, परमात्मा ।

निगरभर-वि० [सं० निकर+भरित अथवा नि+गह्वर] खूब भरे हुए, भरपूर, सघन । उ०—१ लिखमीवर हरख निगरभर लागी, आयु रयण अूटंति इम । क्रीड़ाप्रिय पोकार किरीटी, जीवितप्रिय घड़ियाळ जिम ।—वेलि.
उ०—२ निगरभर तरुवर सघण छांह निसि, पुहपित अति दीपगर पळास । मौरित अंब रीझ रोमंचित, हरखि विकास कमळ क्रत हास ।
—वेलि.

निगरांणी-सं०स्त्री०—देख-रेख, निरीक्षण ।
क्रि०प्र०—करणी, राखणी ।

निगरियौ-सं०पु०—देखो 'निगर' (अल्पा. रू.भे.)

निगरू-वि०—जबरदस्त, बड़ा ।

निगरौ—देखो 'नुगरौ' (रू.भे.)
उ०—न करै मूळ किण हि री निंदा, छावीजै वळि गुर रा छंदा । नांम लोपी नै न हुजै निगरौ, नवि थांपीजै कोड़ीनगरौ ।
—ध.व.ग्रं.

निगळणौ, निगळबौ-क्रि०स० [सं० निर्गलनम् अथवा निगरणं] १ मुंह में रख कर गले के नीचे उतारना, गटक जाना, घोंट जाना ।
उ०—मांडा पोवत दाझियौ, रांणी ज्यूं र वासदेहाजी । ज्यूं जळ निगळै माछळी, रांणी ज्यूं रे वास देहाजी ।—लो.गी.
२ खा जाना ।
३ दूसरे की वस्तु या धन हड़प लेना, रुपया या धन आदि हजम कर लेना ।
निगळणहार, हारौ (हारी), निगळणियौ—वि० ।
निगळवाड़णौ, निगळवाड़बौ, निगळवाणौ, निगळवाबौ, निगळवावणौ, निगळवावबौ, निगळाड़णौ, निगळाड़बौ, निगळाणौ, निगळाबौ, निगळावणौ, निगळावबौ—प्रे०रू० ।
निगळिग्रोड़ौ, निगळियोड़ौ, निगळ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निगळीजणौ, निगळीजबौ—कर्म वा० ।
नीगळणौ, नीगळबौ—रू०भे० ।

निगळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मुंह में रख कर गले के नीचे उतारा हुआ, गटका हुआ, घोंटा गया हुआ ।
२ खा गया हुआ, खाया हुआ ।
३ दूसरे की वस्तु या धन हड़पा हुआ ।
(स्त्री० निगळियोड़ी)

निगल्लिका-सं०स्त्री०—'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार एक प्रकार का चार वर्ण का वृत विशेष ।

निगस—देखो 'निघस' (रू.भे.) (अ.मा.)

निगहणौ, निगहबौ-क्रि०स० [सं० निगृहीत] नियंत्रण करना ।
उ०—स्वजन वेवाहिय घूरइं भूरइं निगहिय नेह, लेई अचेत ऊपाडिय माडिय आंणीय गेहि । भूतळि भंमर भोलिय डोलिय जिम न चडंत, विलवइ कुमरि विलखिय देखिय ते व्रितांत ।
—नेमिनाथ फागु
निगहणहार, हारौ (हारी), निगहणियौ—वि० ।
निगहिग्रोड़ौ, निगहियोड़ौ, निगह्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निगहीजणौ, निगहीजबौ—कर्म वा० ।

निगहियोड़ौ-भू०का०कृ०—नियंत्रण किया हुआ ।
(स्त्री० निगहियोड़ी)

निगांमसिज्जाए-सं०पु० [सं० निगम सैय्या] वह बिछौना जो मर्यादा से अधिक लम्बा, चौड़ा और मोटा हो ।—(जैन)

निगा, निगाह–सं०स्त्री० [फा०] १ नजर, दृष्टि। उ०—ओर बखतसिंहजी ऊपरलो जापतो कर सहर में तळहटी पधार सहर सारो निगाह में काढियो। पछै सहर पनाह कोट सारो निगाह में काढ़।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

क्रि०प्र०—१ राखणी. २ तकाई, चितवन, देखने का ढंग।

क्रि०प्र०—देणी।

३ ध्यान, विचार।

उ०—आदमी बैठा था सो ई बात री विसेस निगाह नहीं राखी।
—गोपाळदास गौड़ री वारता

मुहा०—१ निगा देणी—ध्यान देना, किसी ओर रुख करना, किसी ओर प्रवृत्त होना, विचार करना।

२ निगा राखणी—ध्यान रखना, सचेत रहना।

४ पहचान, समझ, परख।

क्रि० प्र०—होणी।

५ तलाश, खोज।

क्रि०प्र०—करणी।

६ खबर, सुधि।

उ०—निरधनियां आथ समापण नहचै। दियण अन्यायां न्याह दुवाह। जोधां पति सकळ जीवां री, न्यारी न्यारी लिये निगाह।
—महादान महडू

रू०भे०—निगै, निगै, निघै।

निगुडि–सं०पु०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष। उ०—नेतु निगुडि निरंजनी, नाळकेर नारिंग। नागवळा निरविसि नखी, नकुळी निरमळ सग।—मा.कां.प्र.

निगुण–वि०—१ कृतघ्न।

(मि० गुणचोर)

अल्पा०—निगुणो।

२ कायर, डरपोक, भीरु। उ०—कांकण समै कुवेळियां, सरकण तणो सुभाव। निगुणा थिर होवै नहीं, पाव घड़ी ही पाव।—बां.दा.

३ देखो 'निरगुण' (रू.भे.) (डिं.नां.मा.)

उ०—आरंभ मे कियो जेणि उपायो, गावण गुणनिधि हूं निगुण। किरि कठचीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारै लागी चित्रण।—वेलि.

रू०भे०—नुगुण।

अल्पा०—नुगणो, नुगुणो।

निगुणी—१ देखो 'निरगुणी' (रू.भे.)

उ०—मैं निगुणी गुण एको नाहीं, तुम हो बगसणहारा। मीरां कहै प्रभु कबहि मिळोगे, थां बिण नैण दुख्यारा।—मीरा

२ देखो 'निगुण' १।

निगुणो—१ देखो 'निगुण' (अल्पा, रू०भे०)

उ०—१ सगुणा गुण केते करै, निगुणा नांखै ढाहि। दादू साधू सब कहै, निगुणा निस्फळ जाइ।—दादूवांणी

उ०—२ सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मानै कोइ। दादू साधू सब कहैं, भला कहां यें होइ।—दादूवांणी

(स्त्री० निगुणी)

२ देखो 'निरगुण' (अल्पा० रू०भे०)

उ०—माल मत्री गहणो गढ-किला, यह सब निगुणा नैं निपगा छै। इणां री भरोसो नहीं करणो।—नी. प्र.

(स्त्री० निगुणी)

रू०भे०—निग्गुणो।

निगुर, निगुरु, निगुरो—१ देखो 'नुगरो' (रू.भे.)

उ०—१ आसिद्धि या पूछाहिसैं, पिढतां निहिं पिछांण। साहिब चढ़सैं सेतलैं, हुइसैं निगरां हांणि।—पी.ग्रं.

उ०—२ सुगरा रे सहु सिद्धि ग्यान, गुण निगुरै गमियै। सीख कहै धरमसीह, नामि मस्तक गुरु नमियै।—ध.व ग्रं.

उ०—३ भौंहि मांहि अंतरि विषा, बोलै मीठै भाय। जन हरिदास निगुरा तिके, निहचै नरकां जाय।—ह.पु.वा.

२ देखो 'निरगुण' (रू.भे.)

उ०—वेद न भेद न परब्रह्म, महजन सील संतोस। मेष नैं माप नैं महमहण, तुं निगुरो निरदोस।—पी.ग्रं.

निगूढ़–वि० [स०] १ अत्यन्त, गुप्त. २ मजबूत, दृढ़।

निगूढ़ारथक–वि० [सं० निगूढ़ार्थक] जिसके अर्थ में अस्पष्ट ध्वनि निकलती हो, जिसका अर्थ गुप्त हो।

निगे—देखो 'निगाह' (रू.भे.)

उ०—१ म्हांरी दांनाई तो डूबगी सिरदार। जद-ई इसां सूं पांनो पड़ियो। अबै-ई निगे राखिया। बायां-बेटघां नैं उपासरै चढ़ाय दिया।—वरसगांठ

उ०—२ कोई कहै पात्रां नैं दुरंगा क्यूं रंगो। जद स्वामीजी बोल्या, कुधुंवारी निगे चोखो तरह पड़ै, एक रंग दूसरा रंग रै ऊपर आ जावै जद दीसणो सोरो।—भि.द्र.

निगेम–वि०—१ पवित्र, निष्पाप। उ०—१ नरवर सूर निगेम, भारथ मथि-रीतो भरी। आवै जावै अपछरा, जगि अरहट घड़ि जेम।
—वचनिका

उ०—२ पवित्र प्रयाग 'रतनसि' पोहकर, मननिरमळ गंगाजळ जेम। नर नादैत नरिंद नरेहण, निकळंक निघुट निपाप निगेम।
—दूदौ

(मि० अणगेम)

२ कल्याण करने वाला, कल्याणकारक। उ०—पहलो गुर गणि लघु पछै, अगियारा लग एम। सेस कहै गुण सेणिमा, गोविंद समरि निगेम।—पि.प्र.

३ उज्ज्वल, निष्कलंक। उ०—ब्रहम छंद वाखांणण, गुण लखपती निगेम।—ल.पि.

४ जबरदस्त, शक्तिशाली। उ०—'मधकर' का जूझारमल, 'राजड़'

जिसा निगेम । ऐ पांचूं दळ साह रा, पांचूं पांडव जेम ।—वां.दा.ख्यात
७ देखो 'निगम' (रू.भे.)

निगै—देखो 'निगाह' (रू.भे.)
उ०—१ मानुस देह नूर नरहर को, निगै करै निरखैलो । रोम रोम में साहब सांमल, गुरु से गुहगम लहेलो ।
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ श्रो संसार मोहनी माया, देख रीझ मति भाया रे । म्रिग-जळ नीर निगै करना ई, परतक मिथ्या थाया रे ।
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—३ सो सिवो नजर करतां बादसाही निगै नीची दीठी जो दुरस्त नही कहीजै हूं तो ठगाइयो ।
—महाराजा जयसिंह आमेर रा घणी री वारता

निगैदारी-सं०स्त्री० [फा० निगाह+दार+रा०प्र०ई] निगरानी, देख-रेख । उ०—रोटी जीम बजार गयौ । बजार कांम-काज करण लागौ । बाप पण निगैदारी राखण लागौ । देखां कोई हमार ही आवै ।—पलक दरियाव री वात

निगैदासत-सं०स्त्री० [फा० निगहदाश्त] देख रेख, निगरानी, संरक्षा, हिफाजत । उ०—हजारूं की आसीस, हजारूं की सलांम, हजारूं की निगैदासत, हजारूं पर इतमांम ।—सू.प्र.

निगोड़ौ—देखो 'नगोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निगोड़ी)

निगोट-वि० [सं० निघोट] जो खोखला न हो, ठोस ।
उ०—उर ढाल अंबागळ बाहुवं बावळ, गोडीय स्रीफळ ज्यूं गिणजै । नळ जत्र निगोट मुठागळ नीमण, वाटक वज्र नखा वळजै ।
—किसनजी दधवाड़ियौ

निगोडौ-वि०—देखो 'नगोडौ' (रू.भे.)
उ०—मुरधर में मोडा नीच निगोडा, नाहक कांन कपंदा है । निरभय नीसाणां सद सेनाणां, जन 'उमरेस' जपंदा है ।—ऊ.का.
(स्त्री० निगोडी)

निगोद-सं०पु० [सं०] अनन्त जीवों के पिण्ड-भूत का एक शरीर, अनंत जीवों का एक साधारण शरीर विशेष ।—(जैन)
उ०—१ पांच स्थावर तीन विकलेंद्रिय गयौ, संख्यात असंख्यात काळ रयौ । हिवै निगोद रो सुणौ संवादौ, इम जांणी दया धरम आराधौ ।
—जयवाणी
उ०—२ मरण वाळौ बूडे के मारण वाळौ बूडे । नरक निगोद में गोता कुण खासी ।—भि द्र.
यौ०—नरग-निगोद ।
रू०भे०—निगोदि, निगोदी ।

निगोदर-सं०पु० [देशज ?] कंठ पर धारण करने का आभूषण विशेष । उ०—१ नह करंती नेउरी, कटि मेखळी उरि हार । कंठि निगोदर पदिकडी, चपकळी अति-सार ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ हार निगोदर वहिरखा, सखी नेउर रणझणकार कि ।
—कां.दे.प्र.
रू०भे०—नगोदर, नगोदरु, नगोदरू ।
अल्पा०—निगोदरी ।

निगोदरी—देखो 'निगोदर' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—करि ककण सोवरण मि चूडी, रूपइ रंभा अनि रूअडी, चित्र विच्यत्रि करी उपइ, ऊपरि एकाउळि हार, सरिसु मोती तणु हार, झूमणां तणु झमकार, कठि कनकमय पदकडी, महाविगन्यांनि जडी, नाग पोलरी अनि निगोदरी ।—व.स.

निगोदि-वि०—१ निगोद में निवास करने वाला, निगोदाश्रित रहने वाला ।
२ देखो 'निगोद' ।
उ०—अणंत काळ जीव रहइ निगोदि । सूक्ष्म वादर छइ विहु भेदि । वस्तिग ।—चिहुगति चउपई
रू०भे०—निगोदी ।
अल्पा०—निगोदियौ ।

निगोदियौ—देखो 'निगोदी' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—सिद्ध अलोक काळ ग्यांन ते, जीव पुंगळ वणसई काय । निगोदिया जीव अनंत कह्या, ठांणे आठमें मांय ।—जयवांणी

निगोदी—१ देखो 'निगोद' (रू.भे.)
उ०—मध्य अनंतानत छयें में, थोवा सिद्ध अनंता । एक निगोदी जीव अनंता, वलिय वनस्पति वंता ।—ध.व.ग्र.
२ देखो 'निगोदि' (रू.भे.)

निग्गंथो-सं०पु० [सं० नैर्ग्रन्थ] १ निर्ग्रन्थ सम्बन्धी (जैन)
२ देखो 'निरग्रंथ' (रू.भे.)
रू०भे०—निग्रंथ, नियंठ ।

निग्गंथी-सं०स्त्री० [सं० निर्ग्रन्थी] साध्वी (जैन)

निग्गत, निग्गय-वि० [सं० निर्गत] १ निकलने वाला, दूर होने वाला (जैन)
[सं० निर्गतः] २ निकला हुआ, दूरस्थ (जैन)
रू०भे०—निग्गह ।

निग्गह—१ देखो 'निग्गत' (रू.भे.)
२ देखो 'निग्रह' (रू.भे.)

निग्गही-वि० [सं० निग्राही] निग्रह करने वाला (जैन) ।

निग्गुणो—देखो 'निगुणौ' (रू.भे.)

निग्न-वि० [सं० निघ्न] आज्ञाकारी, अधीन ।
उ०—खतगा कराड़े झाट वागे राठ रीठ खगं । जगे पाहु प्रेत काळी अनाढ जवांण । सतारा हजार आठ लोह-लाट आयौ सजे । 'रासा' रा निग्न से साठ नीमजे आरांण ।—रायसिंह झाला रौ गीत

निग्रंथ—१ देखो 'निरग्रंथ' (रू.भे.)
२ देखो 'निग्गंथ' (रू.भे.)

उ०—सुपना व्यायना ग्रंथ, काढ़या गुरुए ततखिऐ । सत्य बोले निग्रंथ, लाभानुलाभ ते जोइने ।—कवियण

निग्रह-सं०पु० [सं०] १ मन की एकाग्रता, संयम ।
उ०—सन्यासिए जोगिए तपसि तापसिए, कांइ इवडा हठ निग्रह किया । प्रांणी भवसागर वेलि पढंतां, थिया पार तरि पारि थिया ।
—वेलि.

२ दमन ।
३ रोक, अवरोध ।
४ रोकने का उपाय ।
५ बन्धन ।
६ दण्ड । उ०—धरमी नर ऊपर कोमळ कर धारै, पापी पुरसां नै सद व्रत संहारै । तदऽनुग्रह विन हा ! ग्रिह ग्रिह तूती, जिण तिण विग्रह में निग्रह दी जूतां ।—ऊ.का.
रू०भे०—निग्गह ।

निग्रहण-सं०पु० [सं०] १ रोकने या थामने का काम ।
२ दमन करने का काम ।
३ दण्ड देने का कार्य ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

निग्रहणौ, निग्रहबौ-क्रि०स० [सं० निग्रहणम्] १ दमन करना ।
उ०—१ पंच इद्री निग्रहै ग्रहै छत्तीसे ई आवध ।—गु.रू.वं.
२ रोकना, थामना । उ०—पैसतां लार लाख दळ पैठा, ढाल वाळियां लोथां ढेर । निग्रह फौज फाड़ नीसरतै, 'सतै' घातिया पाखर सेर ।—नैणसी
३ दण्ड देना । उ०—पोस मास मुरधरपती, दोस लखे दुरवेस । जोस जवन्नां भंजियौ, निग्रहो रोस नरेस ।—रा रू.
निग्रहणहार, हारौ (हारी), निग्रहणियौ—वि० ।
निग्रहिप्रोड़ौ, निग्रहियोड़ौ, निग्रह्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निग्रहीजणौ, निग्रहीजबौ—कर्म वा० ।

निग्रहि-सं०पु०—युद्ध ।

निग्रहियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दमन किया हुआ ।
२ रोका हुआ, थामा हुआ ।
३ दण्ड दिया हुआ ।
(स्त्री० निग्रहियोड़ी)

निग्रही-वि० [सं० निग्रहिन्] १ दमन करने वाला ।
२ रोकने वाला, अवरोध करने वाला ।
३ दण्ड देने वाला ।

निग्रोध—देखो 'न्यग्रोध' (रू.भे.) (अ.मा., नां.मा.)
उ०—धरहरचौ भरचौ निग्रोध गिरचौ जसधारी ।—ऊ.का.

निघंट, निघंटु-सं०पु० [स० निघंटु] १ वैदिक कोश ।
२ शब्द संग्रह मात्र (अमरत)

निघटणौ, निघटबौ-क्रि०अ० [सं० निघटनं, घटना] १ कम होना, थोड़ा होना, घटना । उ०—चिड़ी चंचु भर ले गई, नीर निघट नहि जाइ । ऐसा बासण ना किया, सब दरिया मांहि समाइ ।—दादूबांणी
२ देखो 'निघट्टणौ, निघट्टबौ' (रू.भे.)
निघटणहार, हारौ (हारी), निघटणियौ—वि० ।
निघटिप्रोड़ौ, निघटियोड़ौ, निघट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निघटीजणौ, निघटीजबौ—कर्म वा० ।

निघटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कम हुवा हुआ, थोड़ा हुवा हुआ, घटा हुआ ।
२ देखो 'निघट्टियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निघट्टियोड़ी)

निघट्टणौ, निघट्टबौ-क्रि०अ०—१ उत्पन्न होना, लगना ।
उ०—फूला फळां निघट्टियां, मेहां घर पड़ियांह । परदेसां का सज्जणा, पत्तीजूं मिळियांह ।—ढो.मा.
२ देखो 'निघटणौ, निघटबौ' (रू.भे.)
निघट्टणहार, हारौ (हारी), निघट्टणियौ—वि० ।
निघट्टिप्रोड़ौ, निघट्टियोड़ौ, निघट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निघट्टीजणौ, निघट्टीजबौ—कर्म वा० ।

निघट्टियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उत्पन्न हुवा हुआ, लगा हुआ ।
२ देखो 'निघटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निघट्टियोड़ी)

निघनक-वि० [सं० निघ्नक] पराधीन, अधीन (डि.को.)

निघस-सं०पु० [सं० निघस] भोजन (ह.नां.)
रू०भे०—निगस, निघास ।

निघात-सं०पु० [सं०] चोट, प्रहार । उ०—१ ...., पोरस महण कना भीम जेही पाथ । हरनाथ वाळा तणे निघात री सांम्हे हियै, 'सदा' वाळै सेल बह्यो बोल तणे साथ ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
२ मर्म, भेद, रहस्य । उ०—पायउ जिम बांमण परमारथ, कहतउ वात निघात कहइ । जांणीयउ पारवती जांणपणउ, कोई गहिलां सूं आखडी ग्रहइ ।— महादेव पारवती री वेलि
वि०—१ विशेष । उ०—जघ अलोम अनूप जुग, नाजुक पणै निघात । केळि करीकर कळभ के, सकनकूर साखात ।—बां.दा.
२ भयंकर । उ०—घनघोर बवीळ वज्ज निघातं, उडै गैन पंखो मनो तूल पातं । 'रणो' सूर बीरं चढ़चो बाजि तत्तो, भये रोस की ज्वाळ तै नैन रत्तं ।—ला.रा.
३ अधिक । उ०—पहल अठारह बी चवद, सोळ चवद लघु अंत । आद अंत गिणती अखर, गुण सुपंखरौ गिणत । कंठ सुपंखरा बीच कह, आठ प्रथम बी सात । आठ सात क्रम यण अधिक, नावं कठ निघात ।—र ज प्र.
४ जबरदस्त । उ०—खटमास लगइ तप कियउ अखंडित, त्री असडी खेलतां निघात । सिव सिव सिव हिज कहत सबत, वदइ न काई बीजी वात ।—महादेव पारवती री वेलि

क्रि०वि०—१ विशेषकर, विशेषतया। उ०—दुहुं पाखां ससि दोन्ह अंधार निकंदवा। तेजोमय रथ तास निघात पहीनवा।—बां.दा.
२ बहुत तेजी से। उ०—हूं अब जाऊं हाथळां, बाहण फौज विचाळ। भजि बाघणि चढ़ि भाखरां, परतछ बच्चा पाळ। परतछ बच्चा पाळ, इसूं कहि ऊठियौ। घूणि सटा रिस धार, तड़ित जिम तूटियौ। सजि घण गरज सबद्द, क नट निघात रौ। तूटौ जांण नखत, उलक्का पात रौ।—सिवबक्स पाल्हावत
रू०भे०—नघात, निघात।

निघास—देखो 'निघस' (रू.भे.)

निघिणु-वि० [सं० निर्घृण] दयारहित, कठोर। उ०—निलजु निघणु मइ अजांणु, कांइ मारइ मारौ। ईणि जनमि मुझ पंडुकुमर विणु, नहीं य भतारौ।—पं.पं.च.

निघुट-वि०—दृढ़, अटल। उ०—पवित्र प्रयाग 'रतनसि' पोहकर। मन निरमळ गंगाजळ जेम। नर नादेत नरिंद नरेहण। निकळ निघुट निपाप निगेम।—राठौड़ रतनसिंह री वेलि

निघे—देखो 'निगाह' (रू.भे.)
उ०—तठै 'नगे' भारमलोत कयो, जी निघे कर बोलो, थांनू तो रावजी रा पांडे ही मारसी।—द.दा.

निघोट-वि० [देशज] १ जिसने कुछ भी खाया या पिया न हो, निराहार।
२ पूर्ण, पूरा. ३ दृढ़, मजबूत।

निघोस-सं०स्त्री० [सं० निघोष] आवाज, ध्वनि। उ०—हुय हाक वीरां हडहडे, घर धूज कायर धड़धड़े। वज तबल तूर निघोस वंबी, मरां सोक असंक।—र.रू.

निचंत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)
उ०—ढाढ़ी रात्यूं ओळग्या, गाया बहु बहु भंत। मांगण-पंथी जाणि कइ, तव छंडिया निचंत।—ढो.मा.

निचंतौ—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० निचती)

निचंद्र-सं०पु० [सं०] एक दानव का नाम।

निचत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

निचतौ—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० निचती)

निचलौ-वि० [सं० नीच+रा.प्र.लौ] (स्त्री० निचली) १ नीचे का, नीचे वाला।
२ देखो 'निस्चळ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—फूल वेल रंगवेल रै, पेट तणी वस पोल। निचला रहिया मास नव, गरवा अदभुत गोल।—बां.दा.
रू०भे०—नीचरलौ, नीचलौ।

निचाई-सं०स्त्री०—१ नीचे की ओर विस्तार या दूरी।
२ नीचे होने का भाव, नीचापन।
ज्यूं०—आ भींत ऊंचाई में नीं है, निचाई में है।
३ नीच होने का भाव, ओछापन, कमीनापन।
रू०भे०—नीचाई।

निचारौ-सं०पु० [देशज] रसोई के बरतन साफ करने का स्थान।

निचिंत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)
उ०—१ चर अचर चित, निस्चळ निचिंत। नहिं आदि अंत, अगहर अनंत।—ऊ.का.
उ०—२ जब लग 'पातल' खग्ग भ्रम, सिर कंधर उससंत। तो लौं पत दिल्ली तखत, चित नित रहौ निचिंत।—जैतदांन बारहठ

निचिंता, निचिंताई, निचिंती—देखो 'निस्चितता' (रू.भे.)
उ०—वजीर उमरावां पूछी निचिंती रौ मारग फुरमावौ।—नी.प्र.

निचिंतौ—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—चोज न चूकै रीत की, 'भोज' तणां हरनाथ। जुध चिंता भुज ओडवण, करण निचिंता साथ।—रा.रू.
(स्त्री० निचिंती)

निचिताई—देखो 'निस्चितता' (रू.भे.)

निचींत—देखो 'निस्चित' (रू.भे.)

निचीताई—देखो 'निस्चितता' (रू.भे.)

निचीतौ—देखो 'निस्चित' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—ज्वाळ झळ जेम अस गांव अरि जाळवा, खागजुत जहर हूं कहर खारौ। करण भय सचीतौ न्याय औरंग कहै, सिंघ बळ निचीतौ देस सारौ।—द.दा.
(स्त्री० निचीती)

निचुड़णौ, निचुड़बौ-क्रि०अ० [सं० नि+च्यवनं] १ दाब पाकर भरे या समाए हुए जल का टपकना या अलग होना, चूना।
ज्यूं०—आली अंगरखी रौ पांणी निचुड़णौ।
२ किसी गीली वस्तु या रस से भरी वस्तु का इस प्रकार संकुचित होना या दबना कि पानी या रस टपक जाय, दाब पाकर पानी या रस छोड़ना। नारंगी रौ रस निचुड़णौ।
३ किसी वस्तु का सार या रसहीन होना।
४ शरीर का सार या रस निकल जाने से थक जाना, दुबला हो जाना, शक्ति और तेजहीन होना।
निचुड़णहार, हारौ (हारी), निचुड़णियौ—वि०।
निचुड़िओड़ौ, निचुड़ियोड़ौ, निचुड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निचुड़ीजणौ, निचुड़ीजबौ—भाव वा०।

निचुड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दाब पाकर भरे या समाए हुए जल का टपका हुआ, अलग हुवा हुआ, चूया हुआ।
२ रस से भरे या गीले पदार्थ का संकुचित हुवा हुआ, दबा हुआ।
३ किसी पदार्थ का सारहीन हुवा हुआ, रसहीन हुवा हुआ।
४ शरीर का सार या रस निकला हुआ, दुबला हुवा हुआ, शक्ति या तेजहीन हुवा हुआ।

(स्त्री० निचुड़ियोड़ी)

निचोड़-सं०पु० [सं० नि+च्यवन] १ वह रस या जल आदि जो निचोड़ने से निकला हो, निचोड़ने से निकली हुई वस्तु।
२ सार वस्तु, सार।
३ मुख्य तात्पर्य, कथन का सारांश, खुलासा।
रू०भे०—नीचोड़।

निचोड़णौ, निचोड़बौ—देखो 'निचोणौ, निचोवौ' (रू.भे.)
उ०—ऐसी जांण नै दया-धरम पाळजो। संका कंखा नै कुरांगत टाळजो। सूत्र 'समवायंग' मांहे निचोड़ए। तिण अनुसारे रिख जयमलजी कीनी जोड़ ए।—जयवांणी
निचोड़णहार, हारौ (हारी), निचोड़णियौ—वि०।
निचोड़िओड़ौ, निचोड़ियोड़ौ, निचोड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निचोड़ीजणौ, निचोड़ीजबौ—कर्म वा०।
निचुड़णौ, निचुड़बौ—अक० रू०।

निचोड़ियोड़ौ—देखो 'निचोयोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निचोड़ियोड़ी)

निचोणौ, निचोवौ-क्रि०स० [सं० नि+च्यवन] १ किसी रसयुक्त या गीली चीज को दबा कर या ऐंठ कर उसका रस या पानी निकालना, दबा कर या ऐंठ कर रस या पानी टपकाना।
उ०—राति ज रूंनी निसह भरि, सुणी महाजनि लोइ। हाथाळी छाळा पड़्या, चीर निचोइ निचोइ।—ढो.मा.
२ किसी वस्तु का सार निकालना।
३ कंगाल करना, सर्वस्व हरण कर लेना, सब कुछ ले लेना।
निचोणहार, हारौ (हारी), निचोणियौ—वि०।
निचोड़ाड़णौ, निचोड़ाड़बौ, निचोड़ाणौ, निचोड़ाबौ, निचोड़ावणौ, निचोड़ाववौ, निचोवाड़णौ, निचोवाड़बौ, निचोवाणौ, निचोवाबौ, निचोवावणौ, निचोवाववौ—प्रे०रू०।
निचोयोड़ौ—भू०का०कृ०।
निचोईजणौ, निचोईजबौ—कर्म वा०।
निचुड़णौ, निचुड़बौ—अक० रू०।
निचोड़णौ, निचोड़बौ, निचोवणौ, निचोववौ, नीचोड़णौ, नीचोड़बौ, नीचोणौ, नीचोवौ, नीचोवणौ, नीचोववौ—रू०भे०।

निचोयोड़ौ—भू०का०कृ०—१ किसी रसयुक्त या गीली चीज को दबा कर या ऐंठ कर उसका रस या पानी निकाला हुआ, दबा कर या ऐंठ कर रस या पानी टपकाया हुआ।
२ (किसी वस्तु का) सार निकाला हुआ।
३ सर्वस्व हरण कर लिया हुआ, सब कुछ ले लिया हुआ, कंगाल किया हुआ, निर्धन किया हुआ।
(स्त्री० निचोयोड़ी)

निचोवणौ, निचोववौ—देखो 'निचोणौ, निचोवौ' (रू.भे.)
उ०—१ अैसो तो कुळ में कोई नीसरै जी, कोई लहरयो तो आय निचोवै जी, क लहरयो ले दो जी। अैसो तो कुळ में घण रो सायबो जी, कोई लहरयो आय निचोवै जी, क लहरयो ले दो जी।
—लो.गी.
उ०—२ सज्जण चाल्या हे सखी, नयणे कियो सोग। सिर साड़ी गळि कंचुवउ, हूवउ निचोवण जोग।—ढो.मा.
निचोवणहार, हारौ (हारी), निचोवणियौ—वि०।
निचोविओड़ौ, निचोवियोड़ौ, निचोव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निचोवीजणौ, निचोवीजबौ——कर्म वा०।
निचुड़णौ, निचुड़बौ—अक०रू०।

निचोवियोड़ौ—देखो 'निचोयोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निचोवियोड़ी)

निच्च—देखो 'नित' (रू.भे.) (जैन)

निच्चय—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)
उ०—निंदक निच्चय नरगइ जाई, निंदक चउथउ चंडाळ कहाई।
—ऊ.का.

निच्चळ—देखो 'निस्चळ' (रू.भे.)

निच्चु—देखो 'नित' (रू.भे.) (जैन)

निछंटणौ, निछंटबौ—देखो 'नीछटणौ, नीछटबौ' (रू.भे.)
निछंटणहार, हारौ (हारी), निछंटणियौ—वि०।
निछंटिओड़ौ, निछंटियोड़ौ, निछंट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निछंटीजणौ, निछंटीजबौ—कर्म वा०।

निछंटियोड़ौ—देखो 'निछटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निछंटियोड़ी)

निछटणौ, निछटबौ—देखो 'नीछटणौ, नीछटबौ' (रू.भे.)
निछटणहार, हारौ (हारी), निछटणियौ—वि०।
निछटिओड़ौ, निछटियोड़ौ, निछट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निछटीजणौ, निछटीजबौ—कर्म वा०।

निछटिओड़ौ—देखो 'नीछटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निछटियोड़ी)

निछट्टणौ, निछट्टबौ—देखो 'नीछटणौ, नीछटबौ' (रू.भे)
उ०—माला झलि हल्ले भिड़ण, करि फ़ौज विकट्टी। खारखंधां असि खेड़िया, धायै बह घट्टी। दारुण 'गोयंद' चोगद्द, फिरिया पह फट्टी। ओभी आगि अजागि अंग, नाराज निछट्टी।—सू.प्र.
निछट्टणहार, हारौ (हारी), निछट्टणियौ—वि०।
निछट्टाड़णौ, निछट्टाड़बौ, निछट्टाणौ, निछट्टाबौ, निछट्टावणौ, निछट्टावबौ—प्रे०रू०।
निछट्टिओड़ौ, निछट्टियोड़ौ, निछट्ट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निछट्टीजणौ, निछट्टीजबौ—कर्म वा०।

निछट्टियोड़ौ—देखो 'नीछटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निछट्टियोड़ी)

निछत्र-वि० [सं० निःछत्र] १ जिसके शिर पर छत्र न हो, बिना राज-चिन्ह का, छत्रहीन।

२ देखो 'निक्षत्री' (रू.भे.)

निछत्री—देखो 'निक्षत्री' (रू.भे.)

निछमाळी-वि०स्त्री० [सं० निमिष+आलुच् प्रत्य०] हिलती हुई पलकों वाली। उ०—कउण तूं कवण तूं घरि नारी, स्वरगिक लोकि कइ तूं अवतारी। नारि कोइ न थी तुझ सिरखी, मिरतलोकि कइ तूं अनिमेखी। नागलोकि असणाहार काळी, मांनवी घटिसि तूं निछमाळी। तिरयलोकि कोइ देव न दीसइ, ताहरउ जनम जेणि कहीसइ।—विराटपर्व

निछरावळ-सं०स्त्री० [सं० न्यास+आवर्त्तः] १ मंगल-कामना और कल्याण हेतु द्रव्यादि को किसी ऊपर से घुमा कर या फेर कर दान देने या लुटाने के लिए डाल देने की क्रिया या भाव।

उ०—१ नैण सलोने सांइया, देख्यां सूं जीजें हो। तन मन जोवन वार के निछरावळ कीजें हो।—मीरां

उ०—२ हीरां बार बार मुजरौ कर हरख घरै छै। मोती, मोहोर, मूंगियां सूं निछरावळ करै छै।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—३ रांणी सगळी वातां सुणी जद पांच सौ रोकड़ी रुपिया गोपाळदास ऊपर निछरावळ किया।

—गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—४ नाव महल पास पहुंचो जद जलाल उतर महल मांही गयौ। बूबना मुजरौ करती सांम्ही आई। हाथ पकड भीतर लेय गई। पोसाक बदळाय, पलग पर बैठाय, निछरावळ कर नेत्रां खवास नूं दीन्ही। मांहोमांहे मिळिया। घणा दिन रा वियोग री तपत मिटाई।—जलाल बूबना री वात

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

२ किसी देवता आदि को सन्तुष्ट करने हेतु तथा किसी व्यक्ति को उसकी कुदृष्टि से बचाने, पीडा से छुड़ाने व रक्षा करने के लिए कोई वस्तु या कुछ द्रव्य उस व्यक्ति के सिर या सारे शरीर के ऊपर से फेर कर दान करने या डाल देने का एक प्रकार का टोटका या उपचार विशेष, उतारा, वारफेर।

३ किसी के ऊपर से घुमा कर दान कर दी जाने वाली या छोड़ दी जाने वाली वस्तु या द्रव्य।

उ०—१ पिंड री गई प्रतीत, मांण मिटग्यौ मरदां में। ग्यांन मिळ गयौ गरद, दांम रुळग्यौ दरदां में। लात घूंब लाठियां, बणी आछी वरखा बळ। जूत भेंट व्हा जठै, नाक हुइग्यौ निछरावळ। विभचार मांय पायौ विभौ, जातां जुगां न जावसी। नित स्वाद लियौ परनार मे, याद घणा दिन आवसी।—ऊ.का.

उ०—२ सुरग महूरत सुभ घड़ी, इळ प्रगट्यौ 'अजमाल'। आगम दरसण आवियौ, हाडौ दुरजणसाळ। नर आया नवकोट रा, लख धर वार सुरंग। निजर हुवै निछरावळां, मोती रतन तुरंग।

—रा.रू.

उ०—३ तैसे बूबना अम्मा नूं कही—जलाल साहिब नूं देखणे जावूं। कछु निछरावळ जे करूं? तद मां हुकम दियौ।

—जलाल बूबना री वात

रू०भे०—नवछावर, नवछावरि, नवछाहर, नवछाहळ, निउंछावर, निउंछावरि, निछरावळ, निछरावळि, निछावर, निछावरि, निछावळ, निछावळि, निवछावर, निवछावळि, नूछावर, नेवछावर, नोछावर, नोछार, नोछावर, नोछावरि, नोछावळ, नोछाहळ, न्यूंछावर, न्योछावर, न्योछावळ।

मह०—नवछावरेस।

निछरावळखांनो-सं०पु० [रा० निछरावळ+फा० खान] १ निछरावल करने की सामग्री रखने की जगह. २ निछरावल करने की प्रथा या परिपाटी।

उ०—सो जांगळू में आ खबर आई ताहरां निछरावळखांनो सुरु जे हुवो, बधाई वटणे लागी।—कुंवरसी सांखला री वारता

निछरावळि—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)

उ०—१ तिण दिन आय तमांम, अनड़ भड़ ऊमरा। व्है निछरावळि नजर, घोड़ भड़ घुमरां।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—२ निछरावळि कीध नांखि नजीख, मोताहळ उच्छाळए। राठोड़ां गंजण देवमै राजा, चिहु दिसि चम्मर ढाळए।

—ग.रू.बं.

निछळ-वि० [सं० निश्छल] १ कपटहीन, छलरहित।

२ देखो 'निस्चळ' (रू.भे.)

निछावर, निछावळ—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)

उ०—प्रतिस्ठा करि, निछावर करि दांन मुंहमांगिया दिया छै।

—सिंघासण बत्तीसी

निछोह-वि० [सं० निःक्षोभ] १ जिसे प्रीति या प्रेम न हो।

२ कठोर, निर्दय, निष्ठुर।

निजंत्रणौ, निजंत्रबौ-सं०पु० [सं० नियंत्रणम्] नियंत्रण करना (उ.र.)

निजंत्रियोड़ौ-भू०का०कृ०—नियंत्रण किया हुआ।

(स्त्री० निजंत्रियोड़ी)

निज-सर्व० [सं०] स्वयं, खुद।

वि०—स्वकीय, अपना। उ०—म्हांनै गिणज्यौ मूढ़, अमलियां ओगणगारां। करणा पर-उपकार, लार थांनै ललकारां। निज कीनो थे नाम, कहो किण रक्षा करस्यौ। वात खरी है बपण, मौत विन नाहक मरस्यौ।—ऊ.का.

रू०भे० -नज, निग्र, निय, नीग्र, नीय।

निजघास-सं०पु० [सं० निजघासः] एक गण जो पार्वती के क्रोध से उत्पन्न हुआ था।

निजड़णौ, निजड़बौ-क्रि०अ० [रा०] टूटना, कटना।

निजड़णहार, हारौ (हारी), निजड़णियौ—वि०।

निजड़िओड़ौ, निजड़ियोड़ौ, निजड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निजड़ीजणौ, निजड़ीजबौ—भाव वा०।

निजड़ियोड़ो–भू०का०कृ०—टूटा हुआ, कटा हुआ।
(स्त्री० निजड़ियोड़ी)

निजमंदिर–सं०पु० [सं०] देवालय का वह भाग जिसमें देव-मूर्ति स्थापित रहती है।

निजर—देखो 'नजर' (रू.भे.)

उ०—१ ताहरां खवास री निजर टाळ पसवाड़ै भळको पड़ियो हुंतो, तै सूं उकास नै डोळो रुमाल में घाल दीन्हो।—नैणसी

उ०—२ भीड़ खुरसांण रांण दळ भागा, समहर असर भांनिया सार। उभै दळां निजर जद आयो, अस नीलो कमंध असवार।
—वां.दा.

उ०—३ वन्ना म्हे थांनै फूटरमल्ल ओ यूं कैयो। वन्नजी झटकै नै सरवरियै मत जाय, पिणियारयां री निजर लागणी।—लो.गी.

उ०—४ गाहट हरवळ गोळ, चोळ चंदवळ करि चुखचुख। निजर चोळ घज नहर, मसत चख-चोळ चोळ-मुख।—सू.प्र.

उ०—५ कीधी निछरावळ निजर, मिझमांनी मनुहार। दरसण कीधो सांम रो, 'दुरग' मोती वार।—रा.रू.

उ०—६ कर जोड़े अरजां सुज करसी। घणी जेम निजरां द्रव धरसी।—सू.प्र.

उ०—७ लहि फतै भड़ां निजरां लियै, सझि नौवति नंद तिण समै। ऊगतो भांण बाळक 'अभो', राय-आंगण इण विध रमै।
—सू.प्र.

निजरकेद, निजरकैद देखो 'नजर-कैद' (रू.भे)

उ०—अर साहिजादै खुरम सूं पातसाहजी वेराजी था सू निजरकैद में साहजादो—द.दा.

निजरदौलत—देखो 'नजर-दौलत' (रू.भे.)

निजर-बंद—देखो 'नजर-बंद' (रू.भे.)

निजर-बंदी—देखो 'नजर-बंदी' ((रू.भे.)

निजर-बाग—देखो 'नजर-बाग' (रू.भे.)

निजर-बाज–वि० [अ० नज़र+फा० बाज] तिरछी नजर से देखने वाला। उ०—तठा उपरांति करि नै भोगिया भंमर लंजा छयल हुसनाक जुवांन निजर-बाज बाजार मांहै ऊभा जोहां खाए छै।
—रा.सा.सं.

निजर-सांनी—देखो 'नजर-सांनी' (रू.भे.)

निजरांण, निजरांणो—देखो 'नजरांण, नजरांणो' (रू.भे.)

उ०—१ केसां धूप-सुगंध लईजै जाय झरोखां। मोर करै निजरांण मित नै नाच अनोखा। महंदो चरण मंडांण फूलड़ा रळिया राजै। थाकेलो घण तूझ निरखतां पल में भाजै।—मेघ.

उ०—२ खटतीसूं वंस तणा खितधारी, विग्रह रूप बरारा है। धू नांमें आय करै निजरांणां, ले धन जिके घरा रा है।—र.रू.

उ०—३ कुंवर देपाळदे नै राजा गोद में बैठाय राजा री पाघ बंधाई। तिलक कर सगळा लोकां री जुहार करायो। सारा भाई, मुहता, अमराव मुतसद्दियां कन्है निजरांणो करायो।
—पलक दरियाव री बात

निजराणो, निजराबो–क्रि० स० [अ० नजर+रा० आणो] दिखाई देना, नजर आना, दृष्टिगोचर होना, दृश्य दिखना।

उ०—नाडा भरियोड़ा नैड़ा निजराता। गाडा गुड़काता पैड़ा रुड़ पाता। लार्खं फूलांणी भीणां सुर लेता। डीधा गाडीणा डब-डब धुनि देता।—ऊ.का.

निजराणहार, हारो (हारी), निजराणियो—वि०।

निजरायोड़ो—भू०का०कृ०।

निजराईजणो, निजराईजबो—कर्म वा०।

निजरावणो, निजरावबो—रू०भे०।

निजरायोड़ो–भू०का०कृ०—दिखाई दिया हुआ, नजर आया हुआ, दृष्टिगोचर हुवा हुआ।
(स्त्री० निजरायोड़ी)

निजरावणो, निजरावबो–क्रि०स०—१ देखना, लखना।
२ देखो 'निजराणो निजराबो' (रू.भे.)

निजरावणहार, हारो (हारी), निजरावणियो—वि०।

निजराविओड़ो, निजरावियोड़ो, निजराव्योड़ो—भू०का०कृ०।

निजरावीजणो, निजरावीजबो—कर्म वा०।

निजरावियोड़ो–भू०का०कृ०—१ देखा हुआ।
२ देखो 'निजरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निजरावियोड़ी)

निजरि—देखो 'नजर' (रू.भे)

उ०—१ दीठां हीज वणि आवै। न जाइ कही। हो भाई भाई एकणि रित रा कासूं। एकणि दीहाड़ै छ-रित नव-रस निजरि आवै। कहि दिखावै किणि भांति।—वचनिका

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति गढ कोट चौफेर कांगुरा लागा थका विराजै छै जांणै आकास लोक गिळण नूं दांत दिया। ऊंचो निजरि करि करि जोइजै तौ माथा रो मुगट खड़हड़ै।
—रा.सा.सं.

उ०—३ महिपुडि मडळो सांम साख री जी। भालिम भुजि भलो सोव्रन समपणो जी। कर नवलो कळी निजरि निरमळो जी।
—ल.पिं.

उ०—४ जन हरिदास परनारियां, रोपै निजरि गंवार। गगन चड्या घर में घसै, बूडा काळीधार।—ह.पु वा.

उ०—५ देव दया कर ठाकर चाकर निजरि निहाळि। दुखटाळक जगपाळक निजबाळक प्रतिपाळ।—प्राचीन फागु सग्रह

निजरीजणो, निजरीजबो—देखो 'नजरीजणो, नजरीजबो' (रू.भे.)

निजरीजणहार, हारो (हारी), निजरीजणियो—वि०।

निजरीजिओड़ो, निजरीजियोड़ो, निजरीज्योड़ो—भू०का०कृ०।

निजरीजियोड़ो—देखो 'नजरीजियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निजरीजियोड़ी)

निजळ-वि० [सं० निः+जल] १ जल से रहित, शुष्क।
उ०—देस सुरंगउ भुइं निजळ, न दियो दोस थळांह। घरि घरि चंद वदन्नियां, नीर चढइ कमळांह।—ढो.मा.
२ निर्बल, अशक्त।
३ निर्लज्ज, बेशर्म। उ०—लुळि लुळि लपाक झोटा लिवै, ऊंचा नीचा आवता। नमि नमि नाक अमली निजळ, जमीं लगायै जावता।
—ऊ.का.

निजवा-वि० (बहु व०) [सं० निः+यव] बिल्कुल स्वच्छ, निखालिश (गेहूं)

निजाम-सं०पु० [अ० निज़ाम] १ प्रबन्ध, इन्तजाम।
२ हैदराबाद के नव्वाबों का पदवीसूचक नाम।

निजामत-सं०स्त्री० [अ० निज़ामत] १ नाजिम का कार्यालय।
२ नाजिम का कार्य।
३ नाजिम का पद।
४ प्रबन्ध, व्यवस्था।

निजायक-वि० [अ० निज़ाअ+रा.प्र. क] शत्रु, वैरी, दुश्मन।
उ०—खड़ै असि 'सेर' दिसी चढ़ि खाग। निजायक जांणि खिजायक नाग।—सू.प्र.

निजार-वि० [फा० निजार] १ गरीब, दरिद्र।
२ दुबला, दुर्बल।
३ निर्बल, कमजोर, असमर्थ।

निजारणौ, निजारबौ-क्रि०स० [फा० नजर] निरखना, देखना, लखना।
उ०—१ पकवांन जळै बिय पावन कौ, गहरी धुनि रागनि गावन कौं। नव नार सुयार निजारण कौ। घर धूतन वस्त्र सुधारण कौ।
—ऊ.का.
उ०—२ मुकती समजी भख मारन में, जुगती सब नार निजारण में। बुगला कर वैन पोटाथ पती, कर चेलिय कंथ बणे कुमती।
—ऊ.का.

निजारणहार, हारौ (हारी) निजारणियौ—वि०।
निजारिओड़ो, निजारियोड़ो, निजारयोड़ो—भू०का०कृ०।
निजारीजणौ, निजारीजबौ—कर्म वा०।

निजारियोड़ो-भू०का०कृ०—निरखा हुआ, देखा हुआ, लखा हुआ।
(स्त्री० निजारियोड़ी)

निजारौ—देखो 'नजारौ' (रू.भे.)
उ०—वना गंगा तट न्हाबा नै मती जावो, क सरदी लग जायगी वना नयनां रौ निजारौ मत मारो, क नजरियां लग जायगी।
—लो.गी.

निजिक, निजीक, निजीकी, निजीख—देखो 'नजदीक' (रू.भे.)
उ०—१ यहां वड़ोदा वा रांमबाग इस तरफ सै फौज हजार बत्तीस अपणैं सांमल लई। फेर मारवाड़ आय कर दिलीनूं निजिक जावतां फौज लाख दोढ़ हुई। अरु जाय दिली कै घेरौ दियो नै मोरचा बैठाया।—द.दा.
उ०—२ पछै हुंसार री फोजदार सारंगखांन लारै वार चढ़ियौ, सू साहवै आयौ। तद कांधलजी सारै साथ सूं चढ सांमा आया, नै सारंग खांन रौ साथ निजीक आयौ।—द.दा.
उ०—३ यां करतां फौजां आय निजीक लागी। बीच खेत बुहारांणो खंभो रोपियो।—नैणसी
उ०—४ बीवाह करण तेथ बैठा ब्राह्मण, समधा अगिनि सींचतइ सारि। नवग्रह दस दिग्पाळ निजीकी, अथवा वरइ करइ आचार।
—महादेव पारवती री वेलि

निजुगति—देखो 'निरयुक्ति' (रू.भे.)

निजूम-सं०पु० [अ०] ज्योतिषी। उ०—पुणै निजूम अरज मत प्राजो। सनि रवि राहु केत दन साजो।—सू.प्र.

निजोख-वि०—निशंक, बेफिक्र।

निजोग—देखो 'नियोग' (रू.भे.)

निजोड़णौ-वि०—१ काटने, मारने, संहार करने वाला. २ नाश करने वाला।
रू०भे०—निज्झोड़णौ, निझोड़णौ।

निजोड़णौ, निजोड़बौ-क्रि०स० [सं० नि+जुड़] १ काटना, मारना, संहार करना। उ०—१ रहचै पिसण जुतै भड 'रासा' धारा मूहै निजोड़ धड़। गिळती मांस रंगी रिण ग्रीजण, उडंती रंगिया अनड़।
—रंगरेलो वीठू
उ०—२ तरै भ्रात वेवै हुसै दीघ ताळी। भखेवा कजै राखसी सीत भाळी। ग्रहे बाघसी राकसी सीत ग्रासा। निजोड़ै जती जेण रा कांन नासा।—सू.प्र.
उ०—३ समोभ्रम 'पेम' 'हिंदाळ' सकाज। निजोड़त मुगळ थाट नराज।—सू.प्र.
२ नाश करना। उ०—दमगळ रवि थांभै वाग दीठ। रिम घटां दियो खग झटां रीठ। जाजुळि पड़िहारां कुळ निजोड़ि। द्रम लायौ मंडोवर गढ़ अरोड़ि।—सू.प्र.
३ पृथक करना, अलग करना।
रू०भे०—निजुणौ निजुवौ।
निजोड़णहार, हारौ (हारी), निजोड़णियौ—वि०।
निजोड़वाड़णौ, निजोड़वाड़बौ, निजोड़वाणौ, निजोड़वाबौ, निजोड़वावणौ, निजोड़वावबौ, निजोड़ाड़णौ, निजोड़ाड़बौ, निजोड़ाणौ, निजोड़ाबौ, निजोड़ावणौ, निजोड़ावबौ—प्रे०रू०।
निजोड़िओड़ो निजोड़ियोड़ो, निजोड़योड़ो—भू०का०कृ०।
निजोड़ीजणौ, निजोड़ीजबौ—कर्म० वा०।
निज्झोड़णौ, निज्झोड़बौ, निझोड़बौ, निझोड़णौ, निझोरणौ, निझोरबौ।—रू०भे०

निजोड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ काटा हुआ, मारा हुआ, संहार किया

हुआ. २ नाश किया हुआ।
३ पृथक किया हुआ, अलग किया हुआ।
(स्त्री० निजोड़ियोड़ी)

निजोरौ-वि० [सं० नि+फा० जोर+रा०प्र० औ] (स्त्री० निजोरी) कमजोर, अशक्त, शक्तिहीन।

निज्जणौ, निज्जबौ-क्रि०स०—विजय करना, जीतना।
उ०—१ नवलख कुळि घणसीहनंदणु सुप्रसिद्धउ, खेताहि तिय कुखि जाउ बहु गुणह समिद्धउ। बाळकाळि निज्जणवि मोह संजम सिरि रत्तउ, गोयम चरिय पयास करणु इणि काळि निरुत्तउ।
—अभयतिक यती
उ०—२ बालत्तणि वय गहण सुपुणि मुणिवर संभाळियउ। अट्ठकम्म निज्जणवि गमण दुग्ग गइ टाळियउ।—पहराज
निज्जणहार, हारौ (हारी), निज्जणियौ—वि०।
निज्जिअोड़ौ, निज्जियोड़ौ, निज्ज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निज्जीजणौ, निज्जीजबौ—कर्म वा०।
निज्जिणौ, निज्जिबौ—रू०भे०।

निज्जर—देखो 'निरजर' (रू.भे.)

निज्जिणौ, निज्जिबौ—देखो 'निज्जणौ, निज्जबौ' (रू.भे.)
उ०—ता उन्हउ सीयळु जयह जळु, फासूय थप्पिय विवहप्परि। निज्जिणिउ विजयणंद तिहि, अभय तिलकि चउपट्टि धरि।
—अभयतिक यती

निज्जियोड़ौ—भू०का०कृ०—जीता हुआ, विजय किया हुआ।
(स्त्री० निज्जियोड़ी)

निज्जुत्ति—देखो 'निरयुक्ति' (रू.भे.) (जैन)

निज्भोड़णौ—देखो 'निजोड़णौ' (रू.भे.)
उ०—स्यांम घरम्मी स्यांम रा, वार्जं सुहड़ वरंम। वे छत्री भल ऊपना, आरज-वंस अनंम। आरज वंस अनंम गयंदां गोड़णा। पह मातै पीठांण भिलम निज्भोड़णा। एक अनेकां सीस निवीठा नवखणा। भिड़ियां भीम भुजाट रजव्वट रक्खणा।
—किसोरदांन बारहठ

निज्भोड़णौ, निज्भोड़बौ—देखो 'निजोड़णौ, निजोड़बौ' (रू.भे.)
निज्भोड़णहार, हारौ (हारी), निज्भोड़णियौ—वि०।
निज्भोड़िअोड़ौ, निज्भोड़ियोड़ौ, निज्भोड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निज्भोड़ीजणौ, निज्भोड़ीजबौ—कर्म वा०।

निज्भोड़ियोड़ौ—देखो 'निजोड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निज्भोड़ियोड़ी)

निभख-सं०पु०—बांसुरी, वंशी (अ.मा.)

निभर, निभरण—देखो 'निरभर, निरभरण' (रू.भे.)
उ०—१ भड़ पावस में म्हारी आंखां निभर हो रही हो, लता विरहा के असुवन तै, कुण चुगे उस वेदरदो बिन टप टप मोती हंस वे।—रसीलै राज
उ०—२ अवै अठै रतनां विसूरणा करै है, नैण जांणै निभरण भरै है।—र. हमीर

निभरणी—देखो 'निरभरणी' (रू.भे.)

निभरणौ—देखो 'निरभर, निरभरण' (अल्पा., रू.भे.)

निभरणौ, निभरबौ—देखो 'नीभरणौ, नीभरबौ' (रू.भे.)

निभोड़णौ, निभोड़बौ—देखो 'निजोड़णौ, निजोड़बौ' (रू.भे.)
उ०—सवाइय 'मांन' तणौ सिरताज। निभोड़त मुगळ भाट नराज।
—सू.प्र.
निभोड़णहार, हारौ (हारी), निभोड़णियौ—वि०।
निभोड़वाड़णौ, निभोड़वाड़बौ, निभोड़वाणौ, निभोड़वाबौ, निभोड़वावणौ, निभोड़वावबौ, निभोड़ाड़णौ, निभोड़ाड़बौ, निभोड़ाणौ, निभोड़ाबौ, निभोड़ावणौ, निभोड़ावबौ—प्रे०रू०।
निभोरिअोड़ौ, निभोरियोड़ौ, निभोरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
निभोड़ीजणौ, निभोड़ीजबौ—कर्म वा०।

निभोरियोड़ौ—देखो 'निजोड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निभोरियोडी)

निटोळ, निटोल, निटोलि-वि०—१ कटु, तीक्ष्ण (शब्द)
उ०—परिपरि-थिकां प्रीछवी, बाली दीइ न बोल। सहस-गणी सूनी थई, सुणया सब्द निटोळ।—मा.कां.प्र.
२ जो भला न हो, जो भला न लगे, असुहावना, बुरा।
उ०—कां रे रहिउ कुद्रस्टीआ, निसिहर! थई निटोळ। गुरांणी नइं गुरवी वली, बहिन-तणउ सरि बोल।—मां.कां.प्र.
३ व्यर्थ, फिजूल। उ०—वरसइ थोड़उ, बहु तपइ, गाजइ गयणि निटोल। अभिकुं दाखी ऊसरइ, जिम नीस तना बोल।
—मा.कां.प्र.
४ गंवार, नासमझ, मूर्ख। उ०—इम निज निज मुख बोलै बोल, समझ विहूणा निगुण निटोळ। कहै 'जिनहरख' ए चउदमी ढाल, पांणी पांणी नै जास्यै ढाल।—स्रीपाळ रास
५ उद्धत, उद्दण्ड। उ०—चातक! तु तक चूकिउ, इंहां म आवी बोलि। मरडी नांखिसि मुंडडी, हुं छउं नेटि निटोलि।
—मा.कां.प्र.
६ मान रखने वाला, गर्वीला, घमण्डी।
उ०—चित्रसाळि चउमास रहै, लहै गुरु आदेसा। कोसि कांमिनी नृत्य करइ, सुर-सुंदरी जैसा। हाव-भाव विभ्रम करइ, कुं भये निठुर निटोल। पूरब-प्रेम संभाळ प्रियु, तूं मांन हमारो बोल।—स.कु.
रू०भे०—निठोळ, निठोल।

निट्ठ, निठ—देखो 'नीठ' (रू.भे.)
उ०—१ पति अति आतुर त्रिया मुख पेखण, निसा तणौ मुख दीठ निठ। चंद्र-किरणि कुलटा सु निसाचर, द्रवडित अभिसारिका द्रिठ।
—वेलि.
उ०—२ ऊंडा पांणी कोहरइ, थळे चढोजइ निट्ठ। मारवणी कइ कारणइ, देस अदीठा दिट्ठ।—ढो.मा.

उ०—३ इण दिस 'ग्रजन' लियां दळ ग्रायो, सांभर वाळे कोट संभायो। क्यों मुंह-मेळ प्रथम दिन कीधो, लुड़ मुड़ गयो कोटि निठ लीधो।—रा.रू.

उ०—४ सारा कूपा सारखा(का), पारा ग्रक पौलाद। ऊंटां छकड़ां ऊपरे, लावे निठ निठ लाद।—सिववक्स पाल्हावत

निठणो, निठबो–क्रि०ग्र० [सं० नस्] १ समाप्त होना।

उ०—१ बाल्यो डाकू डूंगसिंघ, थूं सुण रे लोटचा जाट। मिनखां निठगी मोठ-बाजरी, घोड़ां निठग्यो घास।

—डूंगजी जवारजी री पड़

उ०—२ मुहारा रै खड़ीण रो उनाव जैसळमेर सूं कोस ६ तथा ७ दिखण नूं वडो ठोड़ कोस ५ मांहे उनाव भरीजै। पाखती ग माखरां रो पांणी ग्रावै। मांहे गोहूं मण ५००० बीज वहै तितरो भोग ग्रखै। पांणी निठै जदी बेरा मांहे २० तथा २५ वधायोड़ा, पांणी घणो मीठो।—नैणसी

२ कम होना।

ज्यूं—रुपया है जिका तो दिन दिन निठ रह्या है, सैंग खतम व्है जासी जदी कांई करस्यां।

निठणहार, हारो (हारी), निठणियो—वि०।

निठवाड़णो, निठवाड़बो, निठवाणो, निठवाबो, निठवावणो, निठवावबो—प्रे०रू०।

निठाड़णो, निठाड़बो, निठाणो, निठावो, निठावणो, निठावबो—

—क्रि. स.।

निठिग्रोड़ो, निठियोड़ो, निठ्योड़ो—भू०का०कृ०।

निठीजणो, निठीजबो—भाव वा०।

नींठणो, नींठबो, नीठणो, नीठबो—रू०भे०।

निठल्लू, निठल्लो–वि० [सं० निः स्थल] (स्त्री० निठल्ली) १ जो कोई काम-धन्धा न करे, निकम्मा।

२ जिसके पास कोई काम-धन्धा न हो, खाली।

३ रोजगाररहित, बेरोजगार, बेकार।

निठाड़णो, निठाड़बो—देखो 'निठाणो, निठावो' (रू.भे.)

निठाड़णहार, हारो (हारी), निठाड़णियो—वि०।

निठाड़िग्रोड़ो, निठाड़ियोड़ो, निठाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

निठाड़ीजणो, निठाड़ीजबो—कर्म वा०।

निठणो, निठबो—ग्रक रू०।

निठाड़ियोड़ो—देखो 'निठायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निठाड़ियोड़ी)

निठाणो, निठाबो–क्रि०स०—१ समाप्त करना, खतम करना।

२ कम करना।

निठाणहार, हारो (हारी), निठाणियो—वि०।

निठवाड़णो, निठवाड़बो, निठवाणो, निठवावो, निठवावणो, निठवावबो—प्रे०रू०।

निठायोड़ो—भू०का०कृ०।

निठाईजणो, निठाईजबो—कर्म वा०।

निठणो, निठबो—ग्रक० रू०।

निठाड़णो, निठाड़बो, निठावणो, निठावबो—

नीठाड़णो, नीठाड़बो, नीठाणो, नीठावो, नीठावणो, नीठावबो—

—रू०भे०।

निठायोड़ो–भू०का०कृ०—१ समाप्त किया हुग्रा, खतम किया हुग्रा।

२ कम किया हुग्रा।

(स्त्री० निठायोड़ी)

निठावणो, निठावबो—देखो 'निठाणो, निठावो' (रू.भे.)

निठावणहार, हारो (हारी), निठावणियो—वि०।

निठाविग्रोड़ो, निठावियोड़ो, निठाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

निठावीजणो, निठावीजबो—कर्म वा०।

निठणो, निठबो—ग्रक० रू०।

निठावियोड़ो—देखो 'निठायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निठावियोड़ी)

निठि—देखो 'नीठ' (रू.भे.)

उ०—राईकां रावतां जकड़ि, लीधा जाकोड़ां। वदन कढ़ा बीटिया, तरां घाती नकतोड़ां। मुसकिल कूंच्यां मांडि, तिका निठि कीधा तावै। ग्रड़ता सिर ग्राकास, फेण झड़ता मुख फावै।—मे.म.

उ०—२ दिन तो यैसें संकुचिवा लागो जैसे रिणाई को देखैं दांम को दैणहार सकुचै। क्रमि क्रमि यां दिन संकुचै छै ग्रर पोस कै विखै रात्रि छै सु ग्राकास कौं निठि छोड़ै छै। जैसे प्रऊढ़ा नाइका नाइक कौं।—वेलि टी.

निठियोड़ो–भू०का०कृ०—१ समाप्त हुवा हुग्रा, खतम हुवा हुग्रा।

२ कम हुवा हुग्रा।

(स्त्री० निठियोड़ी)

निठुर—देखो 'निस्ठुर' (रू.भे.)

उ०—१ चित्रसाळि चउमास रहे, लहै गुरु ग्रादेसा। कोसि कांमिनी नृत्य करइ, सुरसुंदरी जैसा। हाव-भाव विभ्रम करइ, कुं भये निठुर निटोल। पूरव-प्रेम संभाळ प्रियु तूं, मांन हमारो बोल के।

—स.कु.

निठुरई, निठुरता, निठुराई—देखो 'निस्ठुरता' (रू.भे.)

निठुराव–सं०पु० [सं० निष्ठुर+रा० प्र० ग्राव] निर्दयता, कठोरता, निष्ठुरता।

निठोळ, निठोल—देखो 'निटोळ' (रू.भे.)

निठोड़–सं०स्त्री० [सं० निः+स्थल] बुरी जगह, कुठोर।

निठोड़ो–वि० [सं० निः+स्थल+रा.प्र.ड़ो] (स्त्री० निठोड़ी) जिसके टिकने का कोई स्थान न हो, जिसके पास कोई जगह न हो, ठोररहित।

निडर–वि० [सं० निः+डर] जो न डरे, जिसे डर न हो, निर्भय, निःशंक। उ०—१ ऐसे वन में रत थको, फरतो केळि किलोळ। निडर थको विचरत सदा, संग लिए सब टोळ।—गजउद्धार

उ०—२ तहक नीसांण गिरवांण हरखांण तन, चितां सरसांण रंग-भांण चाळै । निडर निजरांण गणपांण वीणा नचै, भांण रथ तांण घमसांण भाळै ।—र.रू.

२ हिम्मत वाला, साहसी ।

रू०भे०—निडार, निडुर, निड्डर, निरडर ।

निडरता, निडराई-स०स्त्री० [सं० नि+दर+ता, आई प्रत्य०] निर्भय होने का भाव, निर्भीकता, निर्भयता ।

निडार—देखो 'निडर' (रू.भे.)

उ०—नरपाळ काळ मांझी निडार । भांणौ भुज्ज नवकोट भार ।
—ग.रू.वं.

निडुर, निड्डर—देखो 'निडर' (रू.भे.)

उ०—१ निड्डुर हियइ नाहुर नेठढइ, वूंकिय हरि जिम रिणवट वढ्ढइ ।—रा.ज.सी.

उ०—२ नवकुळ नाखत्र मालक निड्डुर, बारह मेघ की सातइ सायर ।
—ग.रू.वं.

नितंव-सं०पु० [सं० नितम्बः] १ स्त्रियों के शरीर के पीछे की ओर कटि से कुछ नीचे का उभरा हुआ भाग, कटिपश्चाद्भाग, चूतड़ ।

उ०—१ हुवइ घटि नदी हेम हेमाळै, विमळ त्रिग लागा वधण । जोवनागमि कटि क्रिस थायै जिम, थायै थूळ नितंब थण ।
—वेलि.

उ०—२ वांमा भार नितंव तिलंगी बारियां । नहीं इसी अंग वासक सिंहलनारियां ।—बां.दा.

उ०—३ माता पिता के आगे खेलतां कांम रा जु विरांम छै, सु छिपाया चाहिजे । सु कांम रा विरांम कुण । जु एक तउ कुच प्रकट हुया । नेत्रां चंचळता हुई । नितंब भारी दीसै लागा । ए कांम का विरांम ।
—वेलि टी.

२ पहाड़ के बीच का भाग (डि.को.)

३ कन्या ।

वि०—१ बड़ा* (डि.को.)

२ अति तीक्ष्ण* (डि.को.)

नितंबणी, नितंविणी-सं०स्त्री० [सं० नितंविनी] सुघड़ व सुन्दर नितंब वाली स्त्री, कामिनी. २ सुन्दरी (अ.मा)

उ०—स्वतंत्र नृत्यसाळ में नितंबनी नचै नहीं । सुहागिनी स्वराग राग रागनी रचै नहीं । तथुंग थुंग तत्थ थेई ताल साजती नहीं । वधू उमंग संग में, म्रिदंग बाजती नहीं ।—ऊ.का.

वि०स्त्री०—सुन्दर नितंब वाली । उ०—नितंबणी जंघ सु करभ निरूपम, रंभ खंभ विपरीत रुख । जुअळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणे वाखांणै विदुख ।—वेलि.

नित-अव्य० [सं० नित्य] १ सदा, सर्वदा, हमेशा ।

उ०—१ सोक री दसा नित मिटावण सेवगां, गुण घणा थोक री श्रवण गाढां । चाढ म्हुं ओक री निसुंभ सुंभ बाघ चढ, डोकरी गहै सळ विकट डाढां ।—सेतसी बारहठ ।

उ०—२ जब लग 'पातल' खग्ग भल, थिर कंधर उससंत । तो लौ पत दिल्ली तखत, चित नित रहौ निचिंत ।—जैतदांन बारहठ

२ प्रतिदिन, रोज ।

ज्यूं—थे नित ओ कांई धंधौ छेड़ दो ?

सं०पु०—१ श्रीकृष्ण (अ.मा.)

२ देखो 'नित्य' (रू.भे.)

रू०भे०—नत, नत्त, निच्च, निच्चु, नित, निति, नितु, नित्त, नीत ।

नितक्रत-सं०पु० [सं० नित्यकृत] १ देवल, देवालय (अ.मा.)

२ नियमपूर्वक नित्य किए जाने वाले कार्य ।

नितनेम—देखो 'नित्यनियम' (रू.भे.)

उ०—मात पिता री मोह, कुटव छोड़ै जिण कारण । धरै पतीव्रत धरम, तेण समजै भवतारण । जीमै नित जीमाय, ताप देवै तोई तूठै । आग्या जुत अरधंग, रांड कवणा सूं रूठै । नितनेम हियै भूलै नहीं, चालै सदा सचेत नैं । भोगना-फूट पर त्रिय भजै, हाय तजै इण हेत नैं ।—ऊ.का.

नितप्रत, नितप्रति, नितप्रति—देखो 'नित्यप्रति' (रू.भे.)

उ०—१ नारांयण न विसारजै, लीजै नितप्रत नांम । लाभीजै मिनखा-जनम, (तो) कीजै उत्तम कांम ।—ह.र.

उ०—२ वांणी पवित्र करिस सीतावर, नित-प्रत कीत प्रकासै नर-हर । नासा विसन करिस इम निरमळ, प्रभु घूटे तो चरणां-परमळ ।
—ह.र.

उ०—३ ब्रह्म सिव सनकादि मुनिवर, ध्यांन नित-प्रत चित धरै । अगुण पर उर वसै निज तत, राज मझि 'जसराज' रै ।—सू प्र.

उ०—४ खान-पांन उत्तम जुगत, रस विलास रति रंग । नव-जोवन नित-प्रति रहै, परै न कबहूं भंग ।—गजउद्धार

उ०—५ नरां सह प्राझौ तुज्झ नियाउ । राठौड़ां रूपक घूहड़' राउ । सु मांहि कमध्वज जांणै सूर । नितप्रति 'जैत' चढंतै नूर ।
—रा.जै.रासो

नितमना-सं०स्त्री० [सं० नितम्ब=पर्वत का मध्य भाग+जा]

१ गिरिजा, पार्वती (अ.मा.)

२ नदी ।

नितरणौ, नितरबौ—देखो 'नीतरणौ, नीतरबौ' (रू.भे.)

नितरणहार, हारौ (हारी), नितरणियौ—वि० ।

नितरवाड़णौ, नितरवाड़बौ, नितरवाणौ, नितरवाबौ, नितरवावणौ, नितरवावबौ, नितराड़णौ, नितराड़बौ, नितराणौ, नितराबौ, नितरावणौ, नितरावबौ ।
—प्रे०रू० ।

नितरिओड़ौ, नितरियोड़ौ, नितर्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

नितरीजणौ, नितरीजबौ—भाव वा० ।

नितरियोड़ौ—देखो 'नीतरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नितरियोड़ी)

नितल-सं०पु० [सं०] सात पातालों में से एक ।

नितांत-वि० [सं०] १ सर्वथा, बिल्कुल, निरा, एकदम, निपट ।
२ बहुत अधिक, अतिशय ।

निता-सं०पु० [सं० नेतृ] १ प्रजापति, राजा, भूप (ह.नां.)
२ मुखिया (ह.नां.)

नितार—देखो 'नीतार' (रू.भे.)

नितारणौ, नितारबौ—देखो 'नीतारणौ, नीतारबौ (रू.भे.) (अमरत)
उ०—नरोत्तम उत्तम तार नितार, चराचर चितनहार चितार ।
—ऊ.का.

नितारणहार, हारौ (हारी), नितारणियौ—वि० ।
नितारियोड़ौ, नितारियोड़ौ, नितार्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
नितारीजणौ, नितारीजबौ—कर्म वा० ।
नितरणौ, नितरबौ—अक० रू० ।

नितारियोड़ौ—देखो 'नीतारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नितारियोड़ी)

निताळौ-सं०पु० [देशज] योद्धा, वीर । उ०—निहसि खेत वाजिया निताळा, विढै पूत जिम साहांवाळा । वडै घराक्रम 'आजम' वीतौ, जुध गरीठ हठ 'आलम' जीतौ ।—रा.रू.
२ देखो 'निराताळौ' (रू.भे.)

निति-सं०स्त्री० [सं० न्यात] १ जाति, समुदाय ।
२ देखो 'नित' (रू.भे.)
उ०—१ धरापति आज लखधीर रजधणी । धणी भुइ जास जसवास रिधि घणी । कवी निति देखि मन मांहि विळकुळै । भली विधि तेज रवि जेम भळहळै ।—ल पि.
उ०—२ कह्यउ हमारउ जइ सुणउ । थारइ छइ साठि अंतेवरी नारि । कर जोड़ै धन वीनवइ । राजकुंवरी निति भोगवि राय ।
—वी.दे.

नितीठ नितीठौ—देखो 'नत्रीठ, नत्रीठौ' (रू.भे.)
उ०—वडौ रीठ वाजियौ सीधा मुंहडां आय कर मिळिया, फेर मोटा बोल बोलियोड़ा था सो निराठ नतीठा वाजिया ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

नितु—देखो 'नित' (रू.भे.)
उ०—१ नितु नितु नवला सांडिया, नितु नितु नवला साजि । पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेड़ण काजि ।—ढो.मा.
उ०—२ जे नितु रोजु करइ, नितह निम्माज गूंजारइं । पंच वखत सम धरइं, धणी जे एक संभारइ ।—व.स.
उ०—३ नियरि पुरि हुइ वधामणां ए, वर नितु नितु आवइ भेटणां ए । आछण पांणी छांडती ए, दवदंती मंदिर प्रापती ए ।
—नळ-दवदंती रास

नितुर-वि० [सं० निः स्तुल] नीच । उ०—न्याय न जांण्यौ नितुर, मिलज जांणि नहि नीती । निज नारी-व्रत नेम, रुगड आंणी नहि रीती । पर-दार प्यार हुयगौ प्रमत, बिन सींगां री वैलियौ । भोग रै मांय भंवतौ भंवर, गयौ जनम सब गैलियौ ।—ऊ.का.

नितेई-सं०स्त्री० [सं० नि+तत्व] वह गाय या भैंस जिसके दूध में घी की मात्रा बहुत कम हो ।

नित्त—देखो 'नित' (रू.भे.)
उ०—१ नैण भलाई लागजो, तूं मत लागै चित्त । नैण छूटसी रोय नै, (थूं) बंध्यौ रहसी नित्त ।—अज्ञात
उ०—२ ऊनमि आई वद्दळी, ढोलउ आयउ चित्त । यो बरसइ रितु आपणी, नइण हमारे नित्त ।—ढो.मा.

नित्ततायौ, नित्तोतायौ—वि० [सं०नित्यतूर] (स्त्री० नित्तताई, नित्तोताई, नित्तोतायी] अधिक लाड़-प्यार के कारण उद्दण्ड, प्यार में उन्मत्त, प्यार में पागल ।
ज्यूं—आ छोरी तौ तित्तोतायी है ।
रू०भे०—नीतोतायौ, नीत्ततायौ, नीत्तोतायौ ।

नित्य-वि० [सं० नित्य] १ जिसका कभी भी नाश न हो, शाश्वत, अविनाशी ।
ज्यूं—वेदांत तौ केवळ ब्रह्म नै हीज नित्य मांनै है ।
२ हमेशा का, रोज का प्रतिदिन का ।
सं०पु०—१ नित्य कर्म, नित्य नियम ।
उ०—नित्य मेहेल्यूं, धरम छांडयु, त्यज्यु पंडित संग । राजकारज वीसरयां, नि दुरोदर सूं रंग ।—नळाख्यांन
२ देखो 'नित' (रू.भे.)

नित्यकरम-सं०पु० [सं० नित्यकर्म] प्रतिदिन का काम, नित्य की क्रिया ।

नित्यक्रिया-सं०स्त्री० [सं०] नित्यकर्म ।

नित्यचरचा-सं०स्त्री० [सं० नित्यचर्या] नित्यनैमित कर्म, आचरण ।
उ०—अर मीणां नै जोर कीधौ क नहीं इसड़ौ हेलौ पाड़ि कुळवंत खेत रा वाजी रै वळ उण ही दिन पाछौ गागरोणि जाइ देह री नित्यचरया साधै जिकण नै सुणतां ही मीणां ओद्राव धारै ।
—वं.भा.

नित्यनियम, नित्यनेम-सं०पु० [सं० नित्यनियम] हमेशा नियमपूर्वक किया जाने वाला कार्य, प्रतिदिन का निश्चित व्यापार ।
उ०—नित्यनेम पूजन कुंवरजी करी छायादांन नित्य करता सो कियौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता
रू०भे०—नितनेम ।

नित्यपिंड-सं०स्त्री० [सं०] एक ही घर से नित्य ली जाने वाली खान-पान की सामग्री, प्रतिदिन एक ही घर से ग्रहण किया जाने वाला आहार । (जैन)
उ०—१ किवाड़ जड़ै सो साध हीज नहीं जद स्वांमीजी कह्यौ, केई किवाड़ जड़ै है । एक घर नो नित्यपिंड लेवै है । जद ते बोल्यौ, हां महाराज किवाड़ जड़ै है नित्यपिंड लेवै है ।—भि.द्र.

उ०—२ जयमलजी रा टोळा मांहि थी संवत १८५२ रै आसरै गुमांनजी, दुरगादासजी, पेमजी, रतनजी आदि सोळै जणा नीकळ्या। थांनक नित्यपिंड कलाल रो पांणी वहिरणो पचखो।—भि.द्र.

नित्य-प्रति-अव्य० [सं०] हमेशा, हर रोज, प्रतिदिन।
रू०भे०—नत-प्रत, नित-प्रत, नित-प्रति, नित-प्प्रति।

नित्यप्रळय, नित्यप्रळै-सं०पु० [सं० नित्यप्रलय] वेदान्त के अनुसार चार प्रकार के प्रलयों में से एक जो सुषुप्ति अवस्था है, वह प्रलय जो नित्य हो।

नित्यांन-अव्य० [सं० नित्य] हमेशा, नित्य।
उ०—थापै सोजत थांन, 'पाबू' रै पड़ियो पगां। नृप कर धूप नित्यांन, मूरत राखै गळ मई।—पा प्र.
सं०पु०—प्रातःकाल किया जाने वाला दान।

नित्या-स०स्त्री० [सं०] १ उमा, पार्वती।
२ एक शक्ति का नाम।
३ मनसा देवी।

नित्याभियुक्त-सं०पु० [सं०] वह योगी जो इतना ही भोजन करे जिससे देह की रक्षा होती रहे, बाकी सब त्याग कर योग साधन में ही रत रहे।

नित्यासी-सं०पु० [सं० नित्याशी] भोजन (अ.मा.)

नित्रीठ, नित्रीठौ—देखो 'नत्रीठ, नत्रीठौ' (रू.भे.)
उ०—१ एक अनेकां सीस, नित्रीठा नवखणा। भिड़ियां भीम भुजाट, रजव्वट रक्खणा।—किसोरदांन बारहठ
उ०—२ मिळै नित्रीठ वेग रीठ खाग रीठ मच्च ए। निरख्खि धीर खेत वीर-प्रेत वीर नच्च ए।—रा.रू.
उ०—३ गोळै नाळियै वाजंती, घड़ा गाजंती करंती घोरि। खिवंती ऊनागे खागे, रचावंती रीठ। टीलां वागां रागां चाढ़ि, घूमरंतो बीच घोड़ो। नांखियो सूजांणी, लोहै पांखियै नित्रीठ।
—दूदो सुरतांणोत वीठू

निदड़ली—देखो 'निद्रा' (अल्पा., रू.भे.)

निदरसना-सं०स्त्री० [सं० निदर्शना] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय-उपमान वाक्यों के अर्थों में भिन्नता होते हुए भी एक में दूसरे का इस प्रकार से आरोप किया जाय, जिससे उनमें समानता जान पड़े।

निदरसी-वि० [सं० निदर्शिन्] प्रकट करने वाला, बताने वाला।
उ०—निरखे ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणै लागा कहण। सगळै दोख विवरजित साहो, हूंतो जई हुओ हरण।—वेलि.

निदांण-सं०पु० [स० नि+दाप=लवने अथवा नि+दान=खण्डने]
१ फसल के पौधों के आस-पास उगने वाले घास, तृण आदि को दूर करने का काम, निराई। उ०—साटो घास सिनावड़ो जी, वेकरियो नै कांटो। सळियो खेत करै नीं जद तक, खेती वधै न लांठो। लागै तीखी धार कसी रै, बाढै जड़ां समेत। करसा चेत सकै तो चेत, पैली करलै रे निदाण।—चेतमांनखा

क्रि०प्र०—आणो, करणो, होणो।
रू०भे०—निदांण, निनांण, निनांण, नेदांण, नेदांणो।
यौ०—निदांण-पाळी।

निदांणणौ, निदांणबौ-क्रि०स० [सं० नि+दाप=लवने] १ फसल के पौधों के आस-पास उगने वाले घास, तृण आदि को दूर करना, निराई करना।
[सं० निर्दलनम्] २ नाश करना, संहार करना, मारना।
उ०—हिरणाकुस राकस तू ही नरसिंघ निदांणा।—केसोदास गाडण
निनांणणौ, निनाणबौ।—रू भे.

निदांणियोड़ौ-भू०का०कृ—१ फसल के पौधों के आसपास से तृण, घास आदि दूर किया हुआ, निराई किया हुआ।
२ नाश किया हुआ, संहार किया हुआ, मारा हुआ।
(स्त्री० निदांणियोडी)

निदांणौ—देखो 'निदाण' (रू.भे.)

निदांन-सं०पु० [सं० निदान] १ रोग की पहचान, रोग निर्णय।
उ०—भ्रमै न भिच्छु भिच्छु की मया न दांन मांन की। न ओसधी चिकत्सर्थांव दोसर्घा निदांन की।—ऊ.का.
२ आदि कारण। (डि.को.)
३ कारण (डि.को.) उ०—ओरंग सा पातसाह आलम कूं चितारै, अकबर के आस की चिंता नां विचारे। साह अवरंग के पास या समै आवै, सो तौ मनसब रीझ इनांम मन वंछा पावै। अकबर साह गाफल गुमांन सूं भारघो, तहवर खांन हाथ सब राज बोझ धारचो। निवाव निदांन पाए सुघबुध विसराई, ओर सूं ओर विचार बावळै की नांई।—रा.रू.
४ परिणाम, फल, नतीजा।
उ०—एक दिन राजा रै अरथ कोई तपस्वीन महारसायण रो निदांन एक अपूरब स्वादु फळ दीधो। सो राजा नै आपरा प्रांण रो ओसध अनंग सेना जांणि अवरोध जाय रांणी रै अरथ निवेदन कीधो।—व.भा.
५ प्रधानता। स०—आयो फेर इकावनो, 'काजम' लह्यो निदांन। नायब हुओ नवाब रै, रिवत-पुड लसकर खांन।—रा.रू.
६ अंत, नाश।
७ पवित्र, शुद्धि।
८ देखो 'निधांन' (रू.भे.) उ०—ओरगसा पातसा आसुर अवतार, तपस्या के तेज-पुंज एकसे विसतार। माप का विहाई सा प्रताप का निदांन, मारतंड आगे जिसी जोतसी जिहांन।—रा.रू.
९ देखो 'नियांण' (रू.भे.)
वि०—बहुत, अधिक।
उ०—२ चित मैं साह विचारियो, राजा थयो जवांन। परवस मेरी पोतरी ऐ सिरजोर निदांन।—रा.रू.
अव्य०—१ आखिरकार, आखिर में, अंत में।

उ०—१ नारी नागिन जे डसे, ते नर मुये निदांन। दादू को जीवै नहीं, पूछो सबै सयांन।—दादूबांणी

उ०—२ अरु ब्रह्महत्या को प्राछत करावौ। नहीं तो पछै ही पिछतावस्यो। निदांन मारचा जावस्यो।—नैणसी

२ अच्छी तरह से, पक्का, तय, नक्की।

उ०—नळ सिरि बि अबोडा बांध्या, करतां तां मल स्नांन। सांम कळंक रह्या सिरि बि, ए जांणु राय, निदांन।—नळाख्यांन

रू०भे०—निदांनि, निदांनिइ।

निदांनि, निदांनिइ—देखो 'निदांन' (रू.भे.)

उ०—१ सासरा नूं दोहिलूं, उत्तम बैठी रहेइ। निदांनि हुइ सुख मलू, कुळवंती सखी नइ कहेइ।—नळ-दवदंती रास

उ०—२ आवडूं कूड नुहतूं जांणिउं, नरनी निरगुण जाति रे। पुरुस निदांनिइ छेह आपइ, ते तु कहीइ कुजात रे।—नळ-दवदंती रास

निदांनी-वि०—अंतिम आखिरी। उ०—निदांनी निरवांनी निगम गम छांनी नित नई। दिवांनी दिव्यांनी न प्रभु गत जांनी गत दई। त्रया नेता राखै असत नहि भाखै अत अपा। कवी को बखांणै कछुक हम जांणै तव क्रिपा।—ऊ.का.

सं०स्त्री०—रोग-परीक्षा करने की विद्या।

स०पु०—रोग-परीक्षक, वैद्य।

निदाळु—देखो 'निद्राळु' (रू.भे.)

निदांळुवौ—देखो 'निद्राळु' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—सूअर सूतौ नींद भर, भूंडण पोहरा देह। ऊठौ नाहिं निदांळुवां, घर रूंधी घोड़ेह।—डाढाळा सूर री वात

(स्त्री० निदांळुवी)

निदाघ-सं०पु० [सं०] १ गरमी, आतप, ताप (डिं.को.)

उ०—माघ निदाघ परइं दहै, ए अदभुत रस देखूं जो। सीतळ पणि जड़ता घणुं; प्रीतम परतिख पेखूं जी।—वि.कु.

२ धूप, घाम।

३ ग्रीष्म काल, गरमी। उ०—निदाघ में निदाघ बाग आग में नहीं। नखानुराग त्याग व्है, तडाग भाग में नहीं।—ऊ.का.

४ पुराणानुसार पुलस्त्य ऋषि का एक पुत्र।

निदाघकर-सं०पु० [सं०] सूर्य, रवि।

निदाघकाळ-सं०पु० [सं० निदाघकाल] गर्मी की ऋतु, ग्रीष्मकाल।

निदाढियौ, निदाढियो-वि० [सं० नि+दंष्ट्रा] १ विना दाढ़ी मूछ का।

उ०—प्रगटे वांम प्रवीण रो, नर निदाडियौ नांम। नर मावडिया नांम त्यूं, विनां पयोधर वांम।—बां.दा.

२ पुरुषत्वहीन।

उ०—प्रथम अचळदास खीची गढ़ गागुरन को धणी। गढ़ गागुरन राज्य करै छै। तिण रै रांणी लालां मेवाडी। दस सहस मेवाड़ रो धणी रांणो मोकळसी तिणरी बेटी। निदाढिया पुरखराज सगळो ही लालां रै हाथ।—लाली मेवाड़ी री वात

निदिध्यास, निदिध्यासन-सं०पु० [सं० निदिध्यासः, निदिध्यासनम्] बारम्बार ध्यान में लाना, बारम्बार स्मरण करना।

उ०—इण आगै हठ जोग कहीजै, सम दम साजन तांई। सुरत सबद की करो एकता, निदिध्यास कहाई।

—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—निधिध्यासन, निध्यासन।

निदेस, निदेसण-सं०पु० [सं० निदेशः] १ निर्देश, आदेश, आज्ञा, हुक्म (डिं.को.)

उ०—१ नरेस देस देस के निदेस मांनते नहीं। थिरांन थांनथांन के जबांन जांणते नहीं। धरा अमात्य आत्य माक माक मा धरै नहीं। करोर हा भ्रितादि आ खमां खमां करै नहीं।—ऊ.का.

उ०—२ पतसाही सेनापती, चहै उन्नती चीत। तो निदेस तखतेस तण, रहचे उर धर रीत।—किसोरदांन बारहठ

२ शासन। ३ कथन।

निद्दळणौ, निद्दळबौ-क्रि०स० [सं० निर्दलनम्] संहार करना, नाश करना, मारना, काटना। उ०—दस दसारह बहिनडीय, बीनउं घरइ आधांनु। 'दांणव दळ सवि निद्दळउं', मनि एवडु अभिमांनु।

—पं.पं च.

निद्दा—देखो 'निद्रा' (रू.भे.) (जैन)

निद्देस—देखो 'निदेस' (रू.भे.) (जैन)

निद्ध-वि०—१ स्निग्ध, चिकना (जैन)

२ देखो 'निधि' (रू.भे.)

निद्धंधस-सं०पु० [सं० निद्धन्धसः] निद्धन्धस। (उ.र.)

निद्धड़णौ, निद्धड़बौ-क्रि०स०—१ परास्त करना। उ०—सयल गरुय गुण गण गणिंद गण सीस मउड़ मणि। निय वयणिहिं पर बादि निद्धड़इ सुतक्खणि।—अभयतिक यती

निद्धड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—परास्त किया हुआ।

(स्त्री० निद्धड़ियोड़ी)

निद्धनव—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—देह साथ छाया जैसे, करम साथ काया देखो। माया साथ उद्यम के, संभू महामाई के। ध्यांन साथ सिद्धी जैसे, ग्यांन साथ रिद्धी गेह। नीती साथ निद्धनव सेस रघूराई के।—ऊ.का.

निद्धि—देखो 'निधि' (रू.भे.)

निद्र—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)

निद्रा-सं०स्त्री० [सं०] प्राणियों की वह निश्चेष्ट अवस्था जो उनकी सचेष्ट अवस्था के बीच बीच होती रहती है जिसमें उनकी चेतन वृत्तियां व कुछ अचेतन वृत्तियां भी रुकी रहती हैं, सुप्ति, नींद।

(डिं.को.)

उ०—१ नहिं पहुंच नीच, मारज्जारि मींच। सावजन संक, निद्रा निसंक।—ऊ.का.

उ०—२ अतुळीबळ आणंद में, सूतो सहज सुभाय। मन चिंता

व्यापै नहीं, सुख तै निद्रा श्राय ।—गजउद्धार

उ०—३ क्षुधा त्रिखा निद्रा नहीं, नहि लोही नहि मास । पंजर छंदह प्रांणीउ, पणि माधव नो श्रास ।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—नंद्रा, निंद, निंदा, निंदिया, निद्या, निंद्रा, निद्दा, निद्र, नींद, नींद्र, नींद्रा, नीद, नीद्र, नीद्रड़ ।

श्रल्पा०—निंदड़ली, निदड़ली, नींदड़ली, नींदड़ी, नीद्रडो, नीदड़ली, नीदड़ी, नीद्रलड़ी ।

मह०—नींदल ।

निद्रालखउ-वि० [सं० निद्रालक्षः] निद्रासक्त ।

निद्राळु, निद्रालु-वि० [सं० निद्रा+श्रालुच् प्रत्य.] निद्रा के वशीभूत, निद्रा लेने वाला, जिसको नींद श्रा रही हो ।

रू०भे०—निदाळु, निंद्राळू, निश्रद्राळूम, निदांळु, नींदाळू, नींदाळूव, नींदाळू, नीदाळू, नीदाळू ।

श्रल्पा०—निदाळवो, निदाळूवो, निदांळूवो, निद्राळो, नींदाळको, नींदाळवो ।

मह०—निंदाळ, नींदाळ, नीदाळ ।

निद्रालुद्ध, निद्रालुध-वि० [सं० निद्रा+श्रालुद्ध] निद्रा के वशीभूत ।

निद्रालुधी-वि०स्त्री० [सं० निद्रालुद्धि] नींद लेने वाली, वह जिसे नींद श्रा रही हो, निद्रा के वशीभूत ।

उ०—चौबारा तळ नीसरया, ढोलौ श्रायौ बार । करहा किया टहूकड़ा, निद्रालुधी नार ।—ढो.मा.

निद्राळो—देखो 'निद्राळू' (श्रल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निद्राळी)

निधंक-वि० [देशज] दृढ़, मजबूत, श्रटल । उ०—तळा नीम मजबूत दे सूत गजधर तसां, मेखळा जड़ा निधंक'र सुतन मेर । वणायौ बहादरसींघ चहुंएवळां, ईसवर ऊजाळा जसौ श्रासेर ।—उमेदजी सांदू

निध-वि० [?] श्रटल ।

उ०—बाळ धू बन जाय बैठो, करण सेव-स कांम । देख श्रपणी श्रोट लीनौ, धणी श्रवचळ धांम । तौ निध नांम जी निध नांम, जग में व्यापियौ निध नांम ।—भगतमाळ

सं०पु०—१ सन्तान । उ०—जिण कुळ री खोटी दिन व्है जद, निध जनमै निरताई नै । वाळापणौ जवांनी वोई, धोवण चहत बुढाई नै ।—ऊ.का.

(मि० 'नग' संख्या ४)

२ गाय, धेनु (श्र.मा.)

३ देखो 'निधि' (रू.भे.)

उ०—१ हुवै वसीरौ वांणियौ, पातर हुवै खवास । हुवै किमियांगर ठग, निध हर जावै नास ।—बां.दा.

उ०—२ ररौ ममु जुगम ऐ श्रंक बाकी रह्या, प्रसिध तिणसूं करै लिया प्यारा । जेण परभाव निध सिधादिक मो जुमै, सुर श्रसुर नाग नर नमै सारा ।—र.रू.

निधईसवर—देखो 'निधीश्वर' (रू.भे.)

निधगुण-सं०पु० [सं० गुणनिधि] गणेश, गजानन (श्र.मा.)

निधड़क-क्रि०वि० [देशज] १ विना किसी भय या चिंता के, निःशङ्क, बेखटके । उ०—१ म्हारा पती री टेक प्रतंग्या श्रोर निधड़क श्रभिमान । देख रात में सोवै जद नींद वस श्रसावधांन होवै तद सत्र श्रां री वार लागै पण श्रा ही वात तनक समझ गेह घर री किमाड़ ही न जड़ै ।—वी.स.टी.

उ०—२ सिंघ निधड़क सूतो छै तो हो श्रांरा पाछा पग पड़ै है श्रनै भागै छै ।—वी.स.टी.

२ विना श्रागा-पीछा सोचे, बिना संकोच के, बिना हिचक के ।

३ विना किसी रुकावट के, वेरोक ।

वि०—चितारहित, निर्भय । उ०—किसूं सफीलां भुरज की, काहू वजर कपाट । कोटां नूं निधड़क करै, रजपूता रा थाट ।—बां.दा.

निधणीको-वि० (स्त्री० निधणीकी) १ स्वतन्त्र, श्राजाद ।

२ महान, बड़ा ।

३ जबरदस्त, शक्तिशाली ।

४ श्रसहाय, दीन, गरीब ।

५ विना स्वामी का, श्रनाथ ।

निधत्तकरम-स०पु० [सं० निधत्तकर्म] उद्वर्त्तना श्रोर श्रपवर्त्तना करण के श्रतिरिक्त विशेष करणों के श्रयोग्य कर्मों को रखने की क्रिया । (जैन)

उ०—तिम निधत्तकरम । जीवहइं करम लागइ । जीव भोगवइ । काळांतरि गाढइ उपक्रमि जे करम फीटइ ते करम निधत्त नांम जांणिवउं ।—पष्ठिशतक प्रकरण

निधनंद-सं०पु०—नवनिधि ।

उ०—कुळवांन पुरुख त्रिभचार कित, भख बतीस भूतां भरण । निधनंद कांम श्रावै नहीं, कूप छांह माया क्रपण ।—श्रज्ञात

निधन-सं०पु० [सं०] १ मृत्यु, मरण, श्रवसान (हि.को.)

उ०—कविवर तुझ विजोग हा, सालत है दिन-रात । हा 'केहर' ! तव निधन थी, थई निधन सह जात ।—रूपसिंह बारहठ

२ नाश ।

३ जन्म नक्षत्र से सातवां, सोलहवां श्रोर तेईसवां नक्षत्र ।

४ फलित ज्योतिष में लग्न से श्राठवां स्थान ।

वि०—निर्धन, धनहीन ।

निधनपति-सं०पु० [सं०] शिव ।

वि०—धनरहित, कंगाल ।

निधनव—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—पतपच्छी जुग पांण सरोरुह पल्लवां । नग जुत वलय श्रमोल दिया जे निधनवां ।—बां.दा.

निधपत—देखो 'निधिपति' (रू.भे.) (श्र.मा.)

निधवन—देखो 'निधुवन' (रू.भे.)

उ०—जैसे निधवन कहतां सुरत सु भोग के विसै, अस्त्री की लाज सरव सरीर छोड़ि के नेत्रां मांहि जाय रहै छै, तैसे प्रिथी छांडि तळावां पांणी जाय रह्यौ छै।—वेलि. टी.

निधवांणी-सं०स्त्री० [सं० वाणीनिधि] शारदा (अ.मा.)

निधस—देखो 'नीधस' (रू.भे.)

निधसणौ, निधसबौ—देखो 'नीधसणौ, नीधसबौ' (रू.भे.)

उ०—सुरतांण विन्हें परियां सधां, निधसै गजां कसिया नीसांण।
—विनयरासो

निधसणहार, हारौ (हारी), निधसणियौ—वि०।

निधसिग्रोड़ौ निधसियोड़ौ, निधस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निधसीजणौ निधसीजबौ—भाव वा०।

निधसियोड़ौ—देखो 'नीधसियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री० निधसियोड़ी)

निधसुजळ-सं०पु० [सं० निधिसुजल] समुद्र। उ०—तिण दिन वहीर डेरां तरफ, हाल कळोहळ करहली। निधसुजळ जांणि नवसै नदी, एकण साथै ऊभळी।—सू.प्र.

निधांन, निधांनु-सं०पु० [सं० निधान] १ खान, आकर।

उ०—१ हरिरस सूं सब सुख हुवै, हरिरस सूं सब ध्यांन। हरिरस सूं नव-निधि हुवै, हरिरस रूप-निधांन।—ह.र.

उ०—२ जिण राजा भीम आबू गढ़ रा अधीस प्रामार राज सलख रै इच्छणी नांम री पुत्री अलौकि गुण रूप री निधांन सुणी।
—वं.भा.

उ०—३ एकली करवक नी कळी नीकळी गिउ अभिमांनु। मांनि असोक अनोहक सोकह तणउ निधांनु।—नेमिनाथ फागु

२ खजाना (डि.को.)

उ०—सहस अठ्यासी आगइ सर्‌या, जांणे वली तेहजि अवतर्‌या। लिखमी तणउ इसूं वरदांन, एह घरि खूटइ नही निदांन।
—कां.दे.प्र.

३ धन, निधि (अ.मा.)

उ०—१ ताबीत हीम रा मांण अदातां जावते वाळै, नेत्रां ठाळै वारूंवार संभाळै निधांन। खांगीबंध मोजां ठाळै अखूट खजांनां खोलै, चाळै लागो आळै माट ऊधमै चौगांन।
—महाराजा बळवतसिंह (रतलांम) रो गीत

उ०—२ स्रीतीरथंकर तणइ गरभावतारि माता अद्‌भुत स्वप्न लहइं। चलितासन देवेंद्र तेऊ फळ कहइं, देवता ग्रिहांगणि निधांन संचारइं, रत्न मणि मौक्तिक प्रवाळ पद्मराग दक्षणावरत्त संखे करी भडार भरइं।—व.स.

४ आश्रय, आधार। उ०—ऊरध अकास, पाताळ पास, सब ठौर सिद्ध परिकर प्रसिद्ध। वैराग व्रिद्धि; सुख बळ सम्रिद्धि, निरभय निसांन, निरधन निधांन।—ऊ.का.

५ वह स्थान जहां जाकर कोई वस्तु लीन हो जाय, लय-स्थान।

उ०—परम्मळ कम्मळ सद्रस पग्ग, निधांन परम्म निवारण नग्ग। इसा पग तूझ तणा ऊदार, सेवंता पाप टळै संसार।—ह.र.

६ मुक्ति, मोक्ष।

रू०भे०—नधांन, निदांन, निहांण।

निधाडणौ, निधाड़बौ—देखो 'निधाडणौ, निधाडबौ' (रू.भे.)

निधाड़ियोड़ौ—देखो 'निधाडियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निधाड़ियोड़ी)

निधाडणौ, निधाडबौ-क्रि०स० [सं० निर्घटित, निर्घटनम्] परास्त करना।

उ०—अइ बळवंतु सु मोहराउ जिणि नाणि निधारिउ, झांण खडगिण मयणसुभड समरंगणि पाडिउ। कुसुमवुट्टि सुर करइ तुट्टि हुउ जय जय कारो, धनु धनु एहु जु थूलिभद्द जिणि जीतउ मारो।
—प्राचीन फागु संग्रह

निधाडणहार, हारौ (हारी), निधाडणियौ—वि०।

निधाडिग्रोड़ौ, निधाडियोड़ौ, निधाड्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निधाडीजणौ, निधाडीजबौ—कर्म वा०।

निधाड़णौ, निधाड़बौ—रू०भे०।

निधाडियोड़ौ-भू०का०कृ०—परास्त किया हुआ।

(स्त्री० निधाडियोड़ी)

निधि-सं०स्त्री० [सं०] १ कुबेर के नौ प्रकार के रत्न, यथा—पद्म, महापद्म, शङ्ख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और वर्च्चं।

२ गड़ा हुआ द्रव्य।

३ खजाना।

४ धन, द्रव्य, सम्पत्ति।

उ०—१ जे निधि कहीं न पाइये, सो निधि घर-घर आहि। दादू महंगे मोल बिन, कोई न लेवै ताहि।—दादूवांणी

उ०—२ मन सुध एकाग्रचित करि, रुखमणी जी को जु मंगळ वेलि, तेनै पढ़ै तौ इतरा थोक होइ—निधि संपति होइ, सदा कुसळ होइ। इती वातां हुए।—वेलि. टी.

उ०—निधि गजराज तुरग नग, मेछ करी मनुहार। हित दीधौ राखी निजर, कीधौ विदा सवार।—रा.रू.

५ लक्ष्मी।

६ नौ की संख्या* (डि.को.)

७ समुद्र।

८ आधार, घर।

ज्यूं-गुणनिधि, जळनिधि।

९ आर्यागीति या खधांण (स्कंधक) का भेद विशेष (पिं.प्र.)

रू०भे०—नध, नधि, नधी, निद्ध, निद्धि, निध, निधी।

निधिध्यासन—देखो 'निदिध्यासन' (रू.भे.)

उ०—स्रवण मनन निधिध्यासन स्रद्धा, संत रमे या होरी। इन होरी में सुद्ध स्वरूपा, चेतन ब्रह्म मिळो री।—स्री सुखरांमजी महाराज

निधिनाथ-सं०पु० [सं०] निधियों के स्वामी, कुवेर।

निधिप–सं०पु० [सं०] कुबेर, निधिपति ।
निधिपति–सं०पु० [सं०] कुबेर, निधिप ।
रू.भे.—निधपत ।
निधिजळ—देखो 'जळनिधि' (रू.भे.)
उ०—के लख वजि निसांण जांण गड़डंत निधिजळ ।—ग.रू.वं.
निधिपाळ–सं०पु० [सं० निधिपाल] कुबेर, धनेश ।
निधी—देखो 'निधि' (रू.भे.)
उ०—विलूंब्यो निधी नीर स्री हाथ वांमै। पुरी में सको सोर हुन्नोज पांमै ।—मे.म.
निधीस्सर–सं०पु० [सं० निधीश्वर] निधियों का स्वामी, कुबेर ।
रू०भे०—निधईसवर ।
निधुवन–सं०पु० [सं० निधुनम्] मैथुन, रति, सम्भोग ।
उ०—१ बीसळ दौरि गहि तस बांही, निपट कुप्पि जुगिगनि किय नाहीं । तदपि ताहि ले सठ भुज-अंतर। निधुवन किय अनुचित कांमुक नर ।—वं.भा.
उ०—२ वरिखा रितु गई सरद रितु वळती, वाखांणि सु वयण वयणि । नीखर धर जळ रहित निवांणै, निधुवनि लज्जा श्री नयणि ।
—वेलि.
रू०भे०—निधवन ।
निधू–सं०पु०—१ इन्द्र, देवराज, सुरेन्द्र (अ.मा.)
२ निश्चय ।
वि०—१ अटल. २ अमर ।
रू०भे०—निध्रू ।
निधूम–वि० [सं० निर्धूम] १ धूमरहित, धूएं से रहित ।
उ०—निधूम अगनि विप्रां मुख नाद ।—रा.रा.
२ बिना धूमधाम, सादा ।
निधूवर–सं०पु० [सं० निधिवारि]—समुद्र, जलधि (ना.डिं.को.)
निध्यमी–वि०स्त्री० [सं० निधि+मी] नवमी* ।
उ०—रचै सातमो रूप तू काळ रात्री। दिगी गोरि तू निध्यमी सिद्धिदात्री ।—मे.म.
निध्यांन—देखो 'निधांन' (रू.भे.)
उ०—इसी इसी खोडस वरसां री मुगधा मध्या प्रोढ़ा रूप री निध्यांन ।—रा.सा.सं.
निध्यासन—देखो 'निदिध्यासन' (रू.भे.)
उ०—भेद विवेक विचार धारणा सुध बुध सरवा सागी। स्रवण मनन निध्यासन करके, ब्रह्म लह्यो वडभागो ।
—स्री सुखरांमजी महाराज
निध्रस—देखो 'नीध्रस' (रू.भे.)
निध्रसणो, निध्रसबो—देखो 'नीधसणो, नीधसबो' (रू.भे.)
उ०—'माल' तणी धड़ ऊपरा, निध्रसिया नीसांण। खळभळिया खुरसांणिया, ऊकळिया आरांण।—वी.मा.
निध्रसणहार, हारो (हारी), निध्रसणियो—वि० ।
निध्रसवाड़णो, निध्रसवाड़बो, निध्रसवाणो, निध्रसवाबो, निध्रसवावणो, निध्रसवावबो, [निध्रसाड़णो, निध्रसाड़बो, निध्रसाणो, निध्रसाबो, निध्रसावणो, निध्रसावबो—प्रे०रू० ।
निध्रसिओड़ो, निध्रसियोड़ो, निध्रस्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निध्रसीजणो, निध्रसीजबो—भाव वा० ।
निध्रसियोड़ो—देखो 'नीधसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निध्रसियोड़ी)
निध्रू—देखो 'निधू' (रू.भे.)
उ०—साख री सिणगार सांमो निध्रू राखण अमर नांमो। करै खत्र-वट तणो कांमो, राजहंस राजांन।—ल पिं.
निनंग–सं०पु० [सं० निम्नांग] १ वृक्ष, पेड़ (अ.मा., नां मा.)
२ डिंगल साहित्य में एक साहित्यिक दोष जो प्राय: डिंगल गीतों में क्रम-भग वर्णन पर माना जाता है। उ०—रुळै उकत री रूप, अथ सो नांम उचारै। कहै वळै छवकाळ, विरुध भासा विसतारै। हीण दोस सो हुवै, जात पित मुदो न जाहर। निनंग जेण नै निरख, विकळ वरणण बिन ठाहर।—र.रू.
निनद, निनद्द–सं०पु० [सं० निनद:] १ शब्द, आवाज ध्वनि
(ह नां., अ.मा.)
उ०—निसांण निनद्दं पंच-सबद्दं। रोड़ि रवद्द घण सद्दं।
—गु रू.वं.
२ कोलाहल ।
निनांण—देखो 'निदांण' (रू.भे.)
उ०—१ चोधरण बोली—अबै तौ दो चार दिन जमीन आली है, जितरै निनांण तो व्है कोयनी सो थे सहर जाय नै चीज-वस्त ले आओ नी।—रातवासो
उ०—२ सांवण खेती, भंवरजी थे करी जे, हां जी ढोला, भादूड़ै करयो जी निनांण। सिट्टां री रुत छाया, भंवरजी परदेस में जी, ओ जी म्हारा घणा-कमाऊ उमराव, थांरी प्यारी नै पलक न आवड़ैजी ।
—लो.गी.
निनांणओ—देखो 'निनांणवौ' (रू.भे.)
उ०—बारो संवत पेख, निरखै वरस निनांणओ। पावू जनम संपेख, मासोतम फागुण सुकर।—पा.प्र.
निनांणणो, निनांणबो—देखो 'निदांणणो, निदांणबो' (रू.भे.)
उ०—क्यां से निनांणूं डोडा इळायची रे म्हारै, लोटण करवा क्यां सै निनांणूं नागरवेल, ए जी ओ बादीला भंवरजी मारूड़ी उडीकै घर आव।—लो.गी.
निनांणणहार, हारो (हारी), निनांणणियो—वि० ।
निनांणाड़णो, निनांड़ाड़बो, निनांणाणो, निनांणाबो, निनांणावणो, निनांणावबो—प्रे०रू० ।

निनांणिग्रोड़ो, निनांणियोडो, निनांणमोडो—भू०का०कृ० ।

निनांणीजणो, निनांणीजबो—कर्म वा० ।

निनांणियोड़ो—देखो 'निदांणियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निनांणियोडी)

निनांणवे, निनांणवै—देखो 'निनांणू' (रू.भे.)

उ०—सहर रै दरवाजै चिठी वांधी । नव चोर मारया, तिणरा इग्यारा गुणां निनांणवै मनुस्य मारयां पछै विस्टाळो करसूं । साहूकार नै न मारूं ।—भि.द्र.

निनांणवौ-सं०पु०—९९वां वर्ष ।

वि० (स्त्री० निनांणवी) गिनती के क्रम से जिसका स्थान निन्यानवे पर हो, निनानवां ।

रू०भे०—निनांणग्रो, निनांणूमौं ।

निनांणु, निनांणू-वि० [सं० नवनवतिः] जो कि संख्या में एक कम सौ हो, नब्बे और नौ ।

उ०—१ वरस निनांणु विचै, सुकृत एको नह कीधो । रांणो 'अड़सी' छोड, पटो रतना रो लीधो ।—अरजणजी बारहठ

उ०—२ भवनपति व्यंतर नै जोतसी, भद विमांणिक पावै । सुर वर ते मिळ नै सगळा, नांम निनांणू आवै ।—जयवांणी

सं०पु०—निनानवे की संख्या ।

रू०भे०—नवांणूं, नव्वांणु, निन्नांणवै, निन्यांणवै, निन्यांनवै ।

निनांणूक-वि०—निनानवे के लगभग ।

निनांणूमौ—देखो 'निनांणवौ' (रू.भे.)

निनांम, निनांमो-वि० (स्त्री० निनांमी) नामरहित ।

निनाग्र, निनाद, निनादि-स०पु० [सं० निनादः] १ नाद, आवाज, शब्द ।

उ०—१ वेगि वाळि रथ हो बिहन्नडा, कउण सैन्य फिरइ कौरव बापुडा । तांम हस्ति मदिमातउ गाजइ, जांम केसरि निनाद न वाजइ ।—विराट पर्व

उ०—२ वाद ग्रो विवाद को सवाद ते सह्यो । रावरो निनाद ऊंट पाद ज्यूं गयो ।—ऊ.का.

उ०—३ इंद चंद पमुख देव बीहना, हाथिया जिम निनादि सीह ना पुच्छदड गउरी सवि वाळी, भूरइ नगर उपरि चालि ।

—विराट पर्व

उ०—४ इसी ग्रेक त्या पटउडि चत्र दिसि पडि तिण वाजितकर निनादि घर-आकास चडहडी ।—अ. वचनिका

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—प्रासाद मांही निनाद वाजै, करइ पूजन मात । ताहरइ सरणै आविया, दई अंबिके अहिवात ।—रुकमणी मंगळ

निनिखुणि, निनिखुणी-सं०स्त्री० [अनु०] वाद्य की ध्वनि विशेष ।

उ०—मपधुनि मपधुनि झझणण वीण, निनिखुणि त्रेंखणि आउज लीण । वाजी ग्रो ग्रो मंगळ संख, धिधिकट धेंकट पाड असंख ।

—विद्याविलास पवाडउ

निन्नांणवै—देखो 'निनांणू' (रू.भे.)

उ०—नृप माया तजि सिद्ध थिउ, निन्नांणवे करोड़ि ।—ग.रू.वं.

निन्नेह-वि० [सं० निः स्नेह] स्नेह से रहित (जैन)

निन्याणवै, निन्यांनवै—देखो 'निनांणू' (रू.भे.)

उ०—स्री अचळेसरजी रै दरसण करण रै पगां फेर अठयासी रिसी नवनाथ चौरासी सिद्ध निन्यांणवै किरोड़ राजा, सिद्ध, तैतीस किरोड़ देवता मेळै भरै । इसो अरबद छै । म्रित्युलोक मांही सरग छै ।

—डाढाळा सूर री वात

निन्हव-सं०पु० [सं० निन्हव, प्रा० णिण्हव १ सत्य को छिपाने वाला, सत्य का अपलाप करने वाला, मिथ्यावादी (जैन) ।

उ०—१ रुघनाथजी सिज्यांतर नै घणोई कह्यो थे जागा क्यूं दीधी । ए अवनीत निन्हव छै ।—भि.द्र.

उ०—२ भीखन जी चोखा साध हैं पिण म्हांनै भेखधारी कहै तिण सूं म्हेई निन्हव कहां छां ।—भि द्र.

२ अपलाप (जैन)

निपंग-वि० [सं० नि+पंगु] जिसके हाथ-पैर कार्य करने योग्य न हों, जिसके हाथ-पांव टूटे हुए हों, निकम्मा, अपाहिज ।

निप-सं०पु० [सं० निपः या निपम्] १ घड़ा, गगरी, कलश (डि.को.)

२ कदम का वृक्ष (डि.को.)

रू०भे०—नींप ।

निपगाई-सं०स्त्री० [सं० नि+पद] अविश्वास ।

उ०—१ ग्रोर इब हूं भाठो हठावणै नूं हुकम करूं तो मिनख म्हारी निपगाई रो भरम धरै तिण सूं उवो भाठो तो उठै ही रहसी ।

उ०—२ सपगाई सरदारगण, राखै हिये विचार । अमर रहै राजस अटळ, निपगाई नित टार ।—नी. प्र.

निपगो-वि० [सं० नि+पद] (स्त्री० निपगी) जिसका कोई विश्वास न करे, अयोग्य, निकम्मा । उ०—ए सब निगुणा नै निपगा छै, इणां रो भरोसो नहीं करणो ।—नी. प्र.

निपज—देखो 'नीपज' (रू.भे.)

निपजणो, निपजबो—देखो 'नीपजणो, नीपजबो' (रू.भे.)

उ०—१ 'म्हारी हळदी रो रग सुरंग निपजै माळवै । हळदी मोल पसारी री हाट बनड़ा रै सिर चढ़ै ।—लो.गी.

उ०—२ ये दाड़म हूं दाख हुंगांमी ढोला, हेके नै बागां में दोय निपज्या हो राज ।—लो.गी.

उ०—३ सवळो भरीजै तद हासल इजाफा हुवै । काठा गोहूं मण १५००० बीज वावै तिकै सांठा निपजै ।—नैणसी

उ०—४ दादू बहु गुणवंति वेलि है, ऊगी कालर मांहि । सींचै खारै नीर सौं, तायैं निपजै नांहि ।—दादूवांणी

निपजणहार, हारो (हारी), निपजणियो—वि० ।

निपजवाड़णो, निपजवाड़बो, निपजवाणो, निपजवावो, निपजवावणो, निपजवावबो—प्रे०रू० ।

निपजाड़णो, निपजाड़बो, निपजाणो, निपजावो, निपजावणो, निपजावबो—क्रि०स० ।
निपजिओड़ो, निपजियोड़ो, निपज्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निपजीजणो, निपजीजबो—भाव वा० ।

निपजाड़णो, निपजाड़बो—देखो 'निपजाणो, निपजावो' (रू.भे.)
ज्यूं—हिम्मत व्है तो इण जाव में गहूं निपजाड़ो ।
निपजाड़णहार, हारो (हारी), निपजाड़णियो—वि० ।
निपजाड़िओड़ो, निपजाड़ियोड़ो, निपजाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
निपजाड़ीजणो, निपजाड़ीजबो—कर्म वा० ।
निपजणो, निपजबो, नीपजणो, नीपजबो—अक० रू० ।

निपजाड़ियोड़ो—देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपजाड़ियोड़ी)

निपजाणो, निपजावो-क्रि०स० [सं० निष्पादनं] १ उत्पन्न करना, पैदा करना । उ०—मात पिता नें दोसण मोटो, प्रथम मिळ्या सुख पाई नें । नग दोनां मिळ श्रो निपजायो, हिया फूट हरखाई नें ।
—ऊ.का.

२ उपजाना, उगाना ।
३ बढ़ाना, बड़ा करना ।
४ घटित करना, सम्पन्न करना ।
५ परिपक्व करना, पकाना ।
६ तैयार करना, बनाना ।
निपजाणहार, हारो (हारी), निपजाणियो—वि० ।
निपजवाड़णो, निपजवाड़बो, निपजवाणो, निपजवावो, निपजवावणो, निपजवावबो—प्रे०रू० ।
निपजायोड़ो—भू०का०कृ० ।
निपजाईजणो, निपजाईजबो—कर्म वा० ।
निपजणो, निपजबो, नीपजणो, नीपजबो—अक० रू० ।
निपजाड़णो, निपजाड़बो, निपजावणो, निपजावबो, निपाड़णो, निपाड़बो, निपाणो, निपावो, निपावणो, निपावबो, नींमजाड़णो, नींमजाड़बो, नींमजाणो, नींमजावो, नींमजावणो, नींमजावबो, नीपजाड़णो, नीपजाड़बो, नीपजाणो, नीपजावो, नीपजावणो, नीपजावबो, नीपाड़णो, नीपाड़बो, नीपाणो, नीपावो, नीपावणो, नीपावबो
—रू०भे०

निपजायोड़ो-भू०का०कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ ।
२ उपजाया हुआ, उगाया हुआ ।
३ बढ़ाया हुआ, बड़ा किया हुआ ।
४ घटित किया हुआ, सम्पन्न किया हुआ ।
५ परिपक्व किया हुआ, पकाया हुआ ।
६ तैयार किया हुआ, बनाया हुआ ।
(स्त्री० निपजायोड़ी)

निपजावणो, निपजावबो—देखो 'निपजाणो, निपजावो' (रू.भे.)
ज्यूं—धान निपजावणो आपां रै हाथ कोयनी । आ बात कंवरांणियां निपजा नै कायर है ।
निपजावणहार, हारो (हारी), निपजावणियो—वि० ।
निपजाविओड़ो, निपजावियोड़ो, निपजाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निपजावीजणो, निपजावीजबो—कर्म वा० ।

निपजावियोड़ो—देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपजावियोड़ी)

निपजियोड़ो—देखो 'नीपजियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपजियोड़ी)

निपट-वि० [सं० निर्विट] १ बहुत, अधिक ।
उ०—१ ताहरां फेर दीवांण रा परधानां अरज कीवी नै रावजी रा उमरावां परधानां नै कह्यो—'प्रु. धरती दीवो । अर सरत री वेह करो । आ वात दीवांण रा परधानां कबूल कीवी ।' पाछा दीवाण पासै आया । दीवांण निपट राजी हुआ ।—नैणसी
उ०—२ रावळ जैतसी वडेरा भाई सारा हाथ किया । भाटियां सारां आगै कह्यो—म्हांरो जीव निपट दोहरो हुवो छै ।—नैणसी
उ०—३ दासै सो दम दोस रो, निरखै निपट अनूप । बयण सगाई बरणवूं, रीति किती कवि रूप ।—र.रू.
२ केवल, एक मात्र, और कुछ नहीं, निरा ।
३ खाली, विशुद्ध. ४ अद्वितीय, श्रेष्ठ ।
क्रि०वि०—बिलकुल, सरासर, नितान्त, एकदम ।
उ०—१ सठता पूरतता सहित, छद रचै मद छाय । निपट लियां निरलज्जता, कुकवी जिको कहाय ।—बां.दा.
उ०—२ समज तमाकू सूगलो, कुत्तो न खावै काग । ऊंट टाट खावै न आ, अपणो जांण अभाग । अपणो जांण अभाग, गजब नहि खाय गधेड़ो । सूकर भूंडी समझ, निपट निकळै नहि नैड़ो ।—ऊ.का.
उ०—३ बैठी गहन गुफा बिच बांमा । राजा वह निरखी अभिरांमा । बोसळ दोरि गहो तस बांही । निपट कुप्पि जुगिननि किय नांही ।
—वं.भा.

रू०भे०—नपट, नवड़, नवड, निवड़, निवड ।

निपटणो, निपटबो-क्रि०अ० [सं० निवर्त्तनं] १ रह जाना, खतम होना, चुकना । उ०—धींझा काचा करसला, म्हे छां कड़वी वेल । म्हे नीरां (वे) घर जावसो, निपट जासी रोल ।—अज्ञात
२ किए जाने को बाकी न रहना, समाप्त होना, पूरा होना ।
ज्यूं—सांम तक औ कांम निपट जावसी ।
३ निवृत्त होना, फुरसत पाना, छुट्टी पाना, फारिग होना, खाली होना ।
ज्यूं—इण मसला पर विचार कांम निपटयां पछै करांला ।
४ शौचादि से निवृत्त होना ।
५ अनिश्चित दशा में न रह जाना, निर्णीत होना, तय होना।
ज्यूं—बराबर पांच वरसां तांई घर विचै नै कचैड़ी विचै पगरखियां

काढी जद ओ झगड़ो निपट्यो है।
६ देखो 'निवड़णो, निवड़बो' (रू.भे.)
७ देखो 'नीमड़णो, नीमड़बो' (रू.भे.)।
निपटणहार, हारो (हारी), निपटणियो—वि०।
निपटवाड़णो, निपटवाड़बो, निपटवाणो, निपटवाबो, निपटवावणो, निपटवावबो—प्रे०रू०।
निपटाड़णो, निपटाड़बो, निपटाणो, निपटाबो, निपटावणो, निपटावबो —क्रि०स०
निपटिओड़ो, निपटियोड़ो, निपट्योड़ो—भू०का०कृ०।
निपटीजणो, निपटीजबो—भाव वा०।
नमठणो, नमठबो, निबड़णो, निबड़बो, निबटणो, निबटबो, निमड़णो, निमड़बो, निमटणो, निमटबो, निवड़णो, निवड़बो, नींमड़णो, नींमड़बो, नींवड़णो, नींवड़बो, नीमड़णो, नीमड़बो, नीमटणो, नीमटबो, नीमडणो, नीमडबो, नीवड़णो, नीवड़बो—रू०भे०।

निपटाड़णो, निपटाड़बो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)
निपटाड़णहार, हारो (हारी), निपटाड़णियो—वि०।
निपटाड़िओड़ो, निपटाड़ियोड़ो, निपटाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
निपटाड़ीजणो, निपटाड़ीजबो—कर्म वा०।
निपटणो, निपटबो—अक० रू०।

निपटाणो, निपटाबो-क्रि०स० [सं० निवर्त्तनं] १ चुकाना, भुगताना, बाकी न रखना।
ज्यूं—लैंणो निपटाणो।
२ करने को बाकी न छोड़ना, समाप्त करना, खतम करना, पूरा करना।
ज्यूं—थे तो हद कीवी भाई जु कांम इतरो वेगो निपटाय दियो।
३ निवृत करना।
४ अनिश्चित दशा में न रखना, निर्णीत करना, तय करना।
निपटाणहार, हारो (हारी), निपटाणियो—वि०।
निपटवाड़णो, निपटवाड़बो, निपटवाणो, निपटवाबो, निपटवावणो, निपटवावबो—प्रे०रू०।
निपटायोड़ो—भू०का०कृ०।
निपटाईजणो, निपटाईजबो—कर्म वा०।
निपटणो, निपटबो—अक० रू०।
नमठाड़णो, नमठाड़बो, नमठाणो, नमठाबो, नमठावणो, नमठावबो, नबेड़णो, नबेड़बो, नमेड़णो, नमेड़बो, निपटाड़णो, निपटाड़बो, निपटावणो, निपटावबो, निबड़ाड़णो, निबड़ाड़बो, निबड़ाणो, निबड़ाबो, निबड़ावणो, निबड़ावबो, निबटाड़णो, निबटाड़बो, निबटाणो, निबटाबो, निबटावणो, निबटावबो, निबेड़णो, निबेड़बो, निमटाणो, निमटाबो, निमटावणो, निमटावबो, निमेड़णो, निमेड़बो, निवेड़णो, निवेड़बो, नींमेड़णो, नींमेड़बो—रू०भे०।

निपटायोड़ो-भू०का०कृ०—१ बाकी न रखा हुआ, चुकाया हुआ, भुगताया हुआ।
२ समाप्त किया हुआ, खतम किया हुआ, पूरा किया हुआ।
३ निवृत्त किया हुआ।
४ अनिश्चित दशा में न रखा हुआ, निर्णीत किया हुआ, तय किया हुआ।
(स्त्री० निपटायोड़ी)

निपटारो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)

निपटावणो, निपटावबो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)
ज्यूं—थूं तो कीं को करै नी पण ओ आदमी एकलो इतरो धंधो रोज निपटावै है।
निपटावणहार, हारो (हारी), निपटावणियो—वि०।
निपटाविओड़ो, निपटावियोड़ो, निपटाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
निपटावीजणो, निपटावीजबो—कर्म वा०।
निपटणो, निपटबो—अक० रू०।

निपटावियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपटावियोड़ी)

निपटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ न रहा हुआ, खतम हुवा हुआ, चुकाया हुआ।
२ किए जाने के लिए बाकी नही रहा हुआ, समाप्त हुवा हुआ, पूरा हुवा हुआ।
३ निवृत हुवा हुआ, फुरसत पाया हुआ, छुट्टी पाया हुआ, फारिग हुवा हुआ, खाली हुवा हुआ।
४ शौचादि से निवृत्त हुवा हुआ।
५ अनिश्चित दशा में नहीं रहा हुआ, निर्णीत हुवा हुआ, तय हुवा हुआ।
(स्त्री० निपटियोड़ी)

निपटेरो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)

निपण—देखो 'निपुण' (रू.भे.)

निपतन-सं०पु० [सं०] अधःपतन, गहरा पतन।

निपत्त, निपत्तो, निपत्र, निपत्रो-वि० [सं० निष्पत्र] (स्त्री० निपत्ती, निपत्री] पत्रहीन।

निपन, निपन्न—देखो 'निस्पन्न' (रू.भे.)
उ०—१ दादू जब लग मन के दोइ गुण, तब लग निपना नांहि।
द्वै गुण मन के मिट गये, तब निपना मिळ मांहि।—दादूवांणी
उ०—२ गुण को निपन्न नांम, धांम को सहस्र धांम, ऐसो है अजित स्वांमी, विस्व में विख्यात है। दूसरे जिनंद जैसो, दूसरो न देव कोऊ, ध्यावो एक यो ही धरम, सीख जो धरातु है।—ध.व.ग्रं.

निपराट-वि० [देशज] निकृष्ट, नीच। उ०—जतरी दी ठाकर जमी, खग हूंत दूणी खाट। जे न समापै लड़ जदो, नर कुळ तो निपराट।
—रेवतसिंह भाटी

निपाड़णो, निपाड़बो—१ देखो 'निपाणो, निपावो' (रू.भे.)
२ देखो 'निपजाणो, निपजावो' (रू.भे.)

निपाड़णहार, हारो (हारी), निपाड़णियो—वि०।
निपाड़िश्रोड़ो, निपाड़ियोड़ो, निपाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
निपाड़ीजणो, निपाड़ीजबो—कर्म वा०।
निपजणो, निपजबो, नीपजणो, नीपजबो—अक० रू०।

निपाड़ियोड़ो—१ देखो 'निपायोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपाड़ियोड़ी)

निपाणो, निपाबो-क्रि०स० ('नीपणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ लीपने का काम कराना, लीपाना।
२ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)
उ०—१ खड़ आयो रेत विखैं हळ खाली, खेत निपाया हेत खरैं।
—भगतमाळ
उ०—२ मारुवणी भगताविया, मारू राग निपाइ। दूहा संदेसां तणा, दीया तियां सिखाइ।—ढो.मा.
उ०—३ मेटे सुरलोक पैठो जळ मांह। तठै इक अंड निपायो तांह।—ह.र.
निपाणहार, हारो (हारी), निपाणियो—वि०।
निपायोड़ो—भू०का०कृ०।
निपाईजणो, निपाईजबो—कर्म वा०।
निपजणो, निपजबो, नीपजणो, नीपजबो—अक० रू०।

निपात-सं०पु० [सं०] १ पतन, गिराव। उ०—केहर रा नख रंध्र सूं, गज मोतियां निपात। सूरत कीरत वेल रा, बीज ववैं अवदात।
—बां.दा.
२ मृत्यु, मौत। उ०—खेस जंद द्वंद रांम दंघ रा सिघार खरा। दहै बाळ रा खोनंद रा भांण दात। दासरथी सिघ रा अवंघ रा वंघ रा दैण। पंच दूण कंध रा कबंध रा निपात।—र.ज.प्र.
३ संहार, विनाश, नाश। उ०—नृप रिख साथ निवाह नंद रख नाहरां। पंथ ताड़का निपात जिका कथ जाहरां।—र.ज.प्र.
४ प्रहार, आघात। उ०—कठण घोर जिण सूं कटी, पंख पहाड़ां गात। कृपाण कपटां ऊपरैं, होज्यो जाय निपात।—बां.दा.
५ अधःपतन।
६ वह शब्द जो व्याकरण में दिए नियमों के अनुसार न बना हो अर्थात् जिसके बनने के नियम का पता न चले।
वि०—संहार करने वाला, विनाश करने वाला। उ०—निवाह सीतनाथ वाह संत चा नेहड़ा। अमोघ बांण चाप पांण बांण जे अछेहड़ा। जुवां निपात सांमराय लंकनाथ जेहड़ा। कहां नरिंद दासरथ्थनंद जोट केहड़ा।—र.ज.प्र.
रू०भे०—निवाग्र, निवाय।

निपातण-सं०पु० [सं० निपातन] १ गिराने का काम।
२ मारने का काम।
३ संहार करने का कार्य, नाश या ध्वंस करने का कार्य।

निपातणो, निपातबो-क्रि०स० [सं० निपातन] १ पतन करना, गिराना।
२ वध करना, मारना।
३ संहार करना, विनाश करना, नाश करना, ध्वंस करना।
४ प्रहार करना, आघात करना।
निपातणहार, हारो (हारी), निपातणियो—वि०।
निपातिश्रोड़ो, निपातियोड़ो, निपात्योड़ो—भू०का०कृ०।
निपातीजणो, निपातीजबो—कर्म वा०।

निपातियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पतन किया हुआ, गिराया हुआ।
२ मारा हुआ, वध किया हुआ।
३ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ, ध्वंस किया हुआ।
४ प्रहार किया हुआ, आघात किया हुआ।
(स्त्री० निपातियोड़ी)

निपाप-वि० [सं० निष्पाप] १ पापरहित, निष्पाप।
उ०—पवित्र प्रयाग 'रतनसि' पोहकर। मन निरमळ गंगाजळ जेम। नर नादैत नरिंद नरेहण। निकळंक निघुट निपाप निगेम।—दूदो
२ पवित्र।
उ०—सुत इम पवित्र करिस कंस भंजण, नखे प्रसाद तूझ दुख-भंजण। रसण निपात करिस इम राघव, भणें तूझ गुण तारण दधि-भव।—ह.र.
३ बिना किसी कमी का, श्रेष्ठ : उ०—मिळियो माहव महर मूं, नर तन तुनैं निपाप। पेख हुवो सो पंक रैं, त्रिगमद हूंत मिळाप।
—बां.दा.
४ निष्कलंक, कलंकरहित।
अल्पा०—निपापो।

निपापो—देखो 'निपाप' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० निपापी)

निपायोड़ो-भू०का०कृ०—१ लीपने का काम कराया हुआ, लीपाया हुआ।
२ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निपायोड़ी)

निपावट-वि० [सं० निष्प्रवर्तः, प्रा० निप्पवट्ट] १ भद्दा, खराब, बुरा।
२ कमजोर, अशक्त।

निपावणो, निपावबो—१ देखो 'निपाणो, निपाबो' (रू.भे.)
२ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)
उ०—१ वैराट समांन निपावै अक्ख, दुनैं फळ जेण किया सुख-दुख। निपावै रूप उभै नर नार, विचारै खांणी बांणी च्यार।
—ह.र.
उ०—२ एकै खिण मांय भांजै घर आम, निपावै एकण पद्मनाभ। उपापै थापै ब्रह्म इंद, चतुरभुज भांज घड़ै रवि चंद।—ह.र.
उ०—३ देवी मांणसर रूप मुगता निपावै, देवी मराळं रूप मुगता तुं पावै। देवी वांमणं रूप बळराव भाडै, देवी रूप बळराव मेरु उपाडै।—देवि.

उ०—४ विख हळाहळ वाय कर कोई अमी निपावै ।
—केसोदास गाडण

निपावणहार, हारौ (हारी), निपावणियौ—वि० ।
निपाविप्रोड़ौ, निपावियोड़ौ, निपाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निपावीजणौ, निपावीजबौ—कर्म वा० ।
निपजणौ, निपजबौ, नीपजणौ, नीपजबौ—अक० रू० ।

निपावियोड़ौ—१ देखो 'निपायोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'निपजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निपावियोड़ी)

निपीड़क-वि० [सं० निपीडक] १ कष्ट देने वाला, पीड़ा देने वाला, दुःखदायक।
२ निचोड़ने वाला।
३ पेरने वाला।
४ दलने या मलने वाला।

निपीड़ण-सं०पु० [सं० निपीडनं] १ पीड़ा पहुंचाने या कष्ट देने का कार्य।
२ पसेव निकालने का काम।
३ पेरने का काम, पेराई।
४ मलने या दलने की क्रिया।

निपीड़णौ, निपीड़बौ-क्रि०स० [सं० निपीडनं] १ कष्ट पहुंचाना, दुःखी करना।
२ मलना, दलना, दबाना।

निपीड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कष्ट पहुंचाया हुआ, दुखी किया हुआ।
२ मला हुआ, दला हुआ, दबाया हुआ।
(स्त्री० निपीड़ियोड़ी)

निपुण-वि० [सं०] १ कार्य करने में पटु, प्रवीण, चतुर, दक्ष, होशियार (डि.को.)
उ०—१ महाराजा बखतसिंहजी बडौ बुद्धिमांन राजा थौ, राहवेधी थौ, सांम दांम दंड भेद चारूं बात में निपुण थौ।
—मारवाड़ रा उमरावां री वारता
उ०—२ भूप तणा अक्षर भणी, अति आनंदिउ चिति। 'भलुभलुं' भाखी कहइ, निपुण न चूकु नीति।—मा.कां.प्र.
२ कवि (अ.मा.) ३ पण्डित (डि.को.)
४ चारण (डि.को., अ.मा.)
रू०भे०—निउण, निपण, निपुन, नीपण।

निपुणता, निपुणाई-सं०स्त्री० [हि० निपुणता] कुशलता, दक्षता।

निपुन—देखो 'निपुण' (रू.भे)
उ०—न्याव नीत सब विध निपुन, वड मुलक बसाया। मन अनुसार विचार मत, गुण सांदू गाया।—महेसदास सांदू

निपूत, निपूतौ-वि० [सं० निष्पुत्र] (स्त्री० निपूती) जिसके संतान न हो, निसंतान। उ०—ठाकर गढ़ सिवांणा में कांम करतां एक एलकार री चाकरी में रह्यौ हौ। एलकार जात रौ बिरांमण पण घर में निपूतौ हौ।—रातवासौ
रू०भे०—नपूंती, नपूतौ।

निपौंचियौ, निपौंचौ-वि० [सं० निष्+प्रभूत+रा०प्र०यौ] (स्त्री० निपौंचण, निपौंची) अशक्त, निर्बल, कमजोर; पुरुषार्थहीन

निप्पट—देखो 'निपट' (रू.भे.)
उ०—कैल-पुरौ कुंभल-मेरौ निप्पट निराटजी।—ग.रू.बं.

निफळ—देखो 'निस्फळ' (रू.भे.)

निफेरी—देखो 'नफेरी' (रू.भे.)
उ०—निफेरी भेरी निनंद नीसांण धुवै।—गु.रू.बं.

निबंध-सं०पु० [सं०] १ बंधन। उ०—बाधैपउ अधिक तेज तनु बाधइ, बाळक तणा जोवतां बंध। दिन दिन लई अंतरा देवी, वरस मास रा किसा निबंध।—महादेव पारवती री वेलि
२ लिखित प्रबंध, लेख।
३ रचना करने की क्रिया या भाव (साहित्य व काव्य)
४ मूल कारण. ५ कारण, हेतु. ६ रोक-थाम।
७ वीणा की खूंटी. ८ प्रबंध, इंतजाम।
रू०भे०—नबंध, नमंध, निमंद, निमंध, निमंधण।

निबंधणौ, निबंधबौ—देखो 'निमंधणौ, निमंधबौ' (रू.भे.)
निबंधणहार, हारौ (हारी), निबंधणियौ—वि०।
निबंधिप्रोड़ौ, निबंधियोड़ौ, निबंध्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निबंधीजणौ, निबंधीजबौ—कर्म वा०।

निबंधियोड़ौ—देखो 'निमंधियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निबंधियोड़ी)

निबंधु-वि० [सं० नि+बंधु] भाईहीन, भाईरहित।
उ०—बलु बोलीउ बलबंधु सुभद्रा लेई सांचरए। हिव पुणु हूउ निबंधु कुंती थुं सरसा सात जए।—पं.पं.च.

निब-(उभ० लिं०) [अं०] पीतल, लोहे आदि के चद्दर की बनी हुई चोंच जिसे पीछे से कलम में खोंस कर लिखने के काम में ली जाती है।
रू०भे०—निप।

निबड़-सं०पु०—१ सेना, फौज।
२ शत्रु, दुश्मन, वैरी।
वि०—१ निःशंक. २ बहुत, अधिक, गहरा।
२ देखो 'निविड' (रू.भे.)

निबड़णौ, निबड़बौ—देखो 'निपटणौ, निपटबौ' (रू.भे.)
उ०—ओर कसालौ देखजै ता बात निबड़ गई।
—नापै सांखलै री वारता
निबड़णहार, हारौ (हारी), निबड़णियौ—वि०।
निबड़ाड़णौ, निबड़ाड़बौ, निबड़ाणौ, निबड़ाबौ, निबड़ावणौ, निबड़ावबौ—क्रि०स०।
निबड़िप्रोड़ौ, निबड़ियोड़ौ, निबड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निवड़ीजणो, निवड़ीजवो—भाव वा० ।
निवड़ाड़णो, निवड़ाड़वो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)
निवड़ाड़णहार, हारो (हारी), निवड़ाड़णियो—वि० ।
निवड़ाड़िओड़ो, निवड़ाड़ियोड़ो, निवड़ाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निवड़ाड़ीजणो, निवड़ाड़ीजवो—कर्म वा० ।
निवड़णो, निवड़वो—अक० रू० ।
निवड़ायोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवड़ायोड़ी)
निवड़ाणो, निवड़ावो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)
निवड़ावणहार, हारो (हारी), निवड़ाणियो—वि० ।
निवड़ावियोड़ो—भू०का०कृ० ।
निवड़ाईजणो, निवड़ाईजवो—कर्म वा० ।
निवड़णो, निवड़वो—अक० रू० ।
निवड़ायोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवड़ावियोड़ी)
निवड़ावणो, निवड़ाववो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)
निवड़ावणहार, हारो (हारी), निवड़ावणियो—वि० ।
निवड़ाविओड़ो, निवड़ावियोड़ो, निवड़ाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निवड़ावीजणो, निवड़ावीजवो—कर्म वा० ।
निवड़णो, निवड़वो—अक० रू० ।
निवड़ावियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवड़ावियोड़ी)
निवड़ियोड़ो—देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवड़ियोड़ी)
निवटणो, निवटवो—देखो 'निपटणो, निपटवो' (रू.भे.)
निवटणहार, हारो (हारी) निवटणियो—वि० ।
निवटवाड़णो, निवटवाड़वो, निवटवाणो, निवटवावो, निवटवावणो, निवटवाववो—प्रे०रू० ।
निवटाड़णो, निवटाड़वो, निवटाणो, निवटावो, निवटावणो, निवटाववो—क्रि०स० ।
निवटिओड़ो, निवटियोड़ो, निवट्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निवटीजणो, निवटीजवो—भाव वा० ।
निवटाड़णो, निवटाड़वो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)
निवटाड़णहार, हारो (हारी), निवटाड़णियो—वि० ।
निवटाड़िओड़ो, निवटाड़ियोड़ो, निवटाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निवटाड़ीजणो, निवटाड़ीजवो—कर्म वा० ।
निवटणो, निवटवो—अक० रू० ।
निवटाड़ियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवटाड़ियोड़ी)
निवटाणो, निवटावो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)
निवटाणहार, हारो (हारी), निवटाणियो—वि० ।
निवटायोड़ो—भू०का०कृ० ।
निवटाईजणो, निवटाईजवो—कर्म वा० ।
निवटणो, निवटवो—सक० रू० ।
निवटायोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवटायोड़ी)
निवटारो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)
निवटावणो, निवटाववो—देखो 'निपटाणो, निपटावो' (रू.भे.)
निवटावणहार, हारो (हारी), निवटावणियो—वि० ।
निवटाविओड़ो, निवटावियोड़ो, निवटाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निवटावीजणो, निवटावीजवो—कर्म वा० ।
निवटणो, निवटवो—अक० रू० ।
निवटावियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवटावियोड़ी)
निवटेरो—देखो 'निवेड़ो' (रू.भे.)
निवणो, निववो—देखो 'निभणो, निभवो' (रू.भे.)
निवणहार, हारो (हारी), निवणियो—वि० ।
निविओड़ो, निवियोड़ो, निव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निवीजणो, निवीजवो—भाव वा० ।
निबद्ध—सं०पु० [सं०] ताल, मान, अक्षर, गमक, रस आदि नियमों का ध्यान रख कर गाया जाने वाला गीत ।
वि०—बंधा हुआ, ग्रथित ।
निबळ—देखो 'निरबळ' (रू.भे.)
उ०—सबळां नै देवै सजा, निबळां करै निसाफ। तुरंग अनै रजपूत री, पाळग कमंध 'प्रताप' ।—चिमनदांन रतनू
निबळाई—देखो 'निरबळता' (रू.भे.)
उ०—१ एक जूझार अरब रो बूढ़ो हुवो सो बुढ़ापै री निबळाई सूं घोड़ै नहीं चढ़ सकै ।—नी.प्र.
उ०—२ अर निबळाई डर सुस्ती मन भंगाई वैरी नूं आपरै ऊपर मनगरो करै छै ।—नी.प्र.
निबळियो, निबळोड़ो, निबळो—देखो 'निरबळ' (अल्पा, रू.भे.)
उ०—१ साथ घणो कांम आयो, ठाकुराई निबळी पड़ी ।
—नैणसी
उ०—२ आहियो आसाढाह, गाजै नै गुड़को कियो । वूठो भेदाळाह निबळी मुंय पर नागजी ।—अज्ञात
उ०—३ इंउं कै'तो जसवंत अधिप, विमळ विचार विचार । इळ सबळां रै आसरै, निबळोड़ा नर नार ।—ऊ.का.
उ०—४ त्यां रा छोरू हाला नै रायधण कहांणा । निबळा पड़िया तरै घांवां री ठाकुराई माहै मुकाती थका रैहता ।—नैणसी
उ०—५ वेरसल टीकै बैठो । रांणो वेरसल हुवो, सु निबळोसो ठाकुर हुवो ।—नैणसी
(स्त्री० निबळी, निबळोड़ी)

निबहणौ, निबहबौ—देखो 'निभणौ, निभवौ' (रू.भे.)
उ०—१ कोयक सकट कुसागड़ी, भार विसेस भरंत । धवळ पड़प्पण आपरै, खांधे ले निबहंत ।—बां.दा.
उ०—२ जाहर आखड़ियां जिते, निबहै साजै नाद । जीवण तणौ कहत जग, सोहां इतै सवाद ।—बां.दा.
निबहणहार, हारौ (हारी), निबहणियौ—वि० ।
निबह्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निबहीजणौ, निबहीजबौ—भाव वा० ।

निबांण—१ देखो 'निरवांण' (रू.भे.)
उ०—निजांण निबांण मारग ए सही ।—जयवांणी
२ देखो 'निवांण' (रू.भे.)

निबाड़णौ, निबाड़बौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)
निबाड़णहार, हारौ (हारी), निबाड़णियौ—वि० ।
निबाडिओड़ौ, निबाड़ियोड़ौ, निबाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निबाड़ीजणौ, निबाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
निबणौ, निबबौ—अक० रू० ।

निबाड़ियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निबाड़ियोड़ी)

निबाणौ, निबाबौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)
निबाणहार, हारौ (हारी), निबाणियौ—वि० ।
निबायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
निबाईजणौ, निबाईजबौ—कर्म वा० ।
निबणौ, निबबौ—अक० रू० ।

निबांयोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निबायोड़ी)

निबापो-वि० [सं० निः+पितृ] (स्त्री० निबापी) जिसके पिता न हो ।
उ०—तिण बकरी सूं मैं अर निबापा म्हारै दोय दोहितरा गुजरांन करै था सो मार खाधी ।—नी.प्र.

निबाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.)
उ०—१ साह अमीरां सोचतां, जग विसतरै जवाब । रहै एकठा रुकहथ, नरपत अनै निबाब ।—रा.रू.
उ०—२ लसियो निबाब कटिया किलम, गह नृप घरि गजगाहरौ । लसकरि खांन लूटे लियो, सोबो औरंगसाह रौ ।—सू.प्र.

निबाबजादो—देखो 'नव्वाबजादो' (रू.भे.)
(स्त्री० निबाबजादी)

निबाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)

निबाव—देखो 'निभाव' (रू.भे.)

निबावणौ, निबावबौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)
निबावणहार, हारौ (हारी), निबावणियौ—वि० ।
निबाविओड़ौ, निबावियोड़ौ, निबाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निबावीजणौ, निबावीजबौ—कर्म वा० ।
निबणौ, निबबौ—अक० रू० ।

निबावियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निबावियोड़ी)

निबास—देखो 'निवास' (रू.भे.)
उ०—नरपति आयो जैनगर, निज उर हरख निबास । सुपह सुरंगौ सासरै, लग्गो सांवण मास ।—रा.रू.

निबाह—देखो 'निभाव' (रू.भे.)
उ०—१ बादसाह कही—दस हजार री जागीर पावो छौ, सागै तीन हजार रोकड़ हाथ खरच रा ही पावो छौ, तो ही निबाह क्यूं ना हुवै ।—जलाल बूबना री वात
उ०—२ अरेस असेस दहेस अभंग, धरेस सुरेस नरेस सधीर । अरोड़ अमोड़ अबीह अलार, निबाह अथाह चढै कुळ नीर ।—र.ज.प्र.
उ०—३ बहु राजस सुखदांन बहु, बहु जुध फतै निबाह । सो जग ऊपरि कीत सझि, सू गि गो पह 'गजसाह' ।—सू.प्र.

निबाहक-वि० [सं० निर्वाहक] निबाहने वाला, निर्वाह करने वाला ।
उ०—'अजन' कुरब मुख उच्चरै तव यौं कह्यो नबाव । अै सब फरजंद आपरा, आप निबाहक आव ।—रा.रू.

निबाहणो-वि०—निबाहने वाला । उ०—सुज ग्रद साहणो रे, निबळ निबाहणो, चित जिस चाहणौ रे, गज थट गाहणौ ।—र.ज.प्र.

निबाहणौ, निबाहबौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)
उ०—रांणी स्री जसराज री, कमंध निबाहण कज्ज । अत सोचे आलोजतां, वारै मात वरज्ज ।—रा.रू.
निबाहणहार, हारौ (हारी), निबाहणियौ—वि० ।
निबाहिओड़ौ, निबाहियोड़ौ, निबाह्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निबाहीजणौ, निबाहीजबौ—कर्म वा० ।

निबाहियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निबाहियोड़ी)

निबीजो—देखो 'निरबीज' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—बीडा फेरि पाछै बादसाहा यों कहाई । सारी बादिस्याही में निबीजी भोमि पाई ।—शि.वं.
(स्त्री० निबीजी)

निबियोड़ौ—देखो 'निभियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निबियोड़ी)

निबीह-वि० [सं. नि+राज. बीह] निडर, निर्भय । उ०—लाखीक सुरंगसप मूलि नक्ख,
पूरउ प्रचंड जइ सूध पक्ख । नगराज चडिय मुहतउ निबीह, सांमि छळि कळहिवा जेम सीह ।—रा.ज.सी.

निबूल-वि० [सं० निर्मूल] १ निर्वंश ।
२ व्यर्थ, फिजूल, खाली ।
सं०पु०—रक्त ।

निबे—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

निवेड़णौ, निवेड़बौ—देखो 'निपटाणौ, निपटाबौ' (रू.भे.)
निवेड़णहार, हारौ (हारी), निवेड़णियौ—वि० ।
निवेड़िग्रोड़ौ, निवेड़ियोड़ौ, निवेड़चोड़ौ—भू०का०कृ० ।
निवेड़ीजणौ, निवेड़ीजबौ—कर्म वा० ।
निवेड़णौ, निवेड़बौ—ग्रक० रू० ।

निवेड़ियोड़ौ—देखो 'निपटायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निवेड़ियोड़ी)

निवेड़ौ—देखो 'निवेड़ौ' (रू.भे.)

निवोळहार-सं०पु० [देशज] १ स्त्री का कंठाभरण, कंठ का ग्राभूषण ?
उ०—माथा का केस मुगता हुग्रा। छूटी छै मुगता निवोळहार थी सु छूटौ छै। कंचुकी की कस छूटी छै ग्रर कटि मेखळा वंधण थे छूटी छै।—वेलि. टी.

निवोळी, निवौळी—देखो निंबोळी' (रू.भे.)

निव्वाव—देखो 'निव्वाव' (रू.भे.)

निव्वावजादौ—देखो 'नव्वावजादौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निव्वावजादी)

निव्वावी—देखो 'नव्वावी' (रू.भे.)

निव्वे—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

निव्भंत—देखो 'निरभ्रांत' (रू.भे.)
उ०—भणय इंदु तय जतु मुणिहु, उहारिय निव्भंत मइ। जं करउं विनांण ग्राणाण धुणि, मइ नि होइ संजम किमइ।
—ग्रभयतिक यती

निव्भय—देखो 'निरभय' (रू.भे.)

निभ-सं०पु० [सं०] कपट (ह.नां.)

निभचर—देखो 'नभचर' (रू.भे.)

निभणौ, निभबौ-क्रि०स० [सं० निर्वहनम्] १ किसी सम्बन्ध स्थिति ग्रादि का निरन्तर बना रहना, बरावर चला चलना, निर्वाह होना।
उ०—साधुपणौ लेइ चोखो पाळै ते मोटा पुरुख। कइ कहै—पांच में ग्रारा में साधुपणौ पूरौ पळै नहीं, इसी हिज ग्रवारू निभै।
—भि द्र.

२ पार पाना, वचना, निकलना, छुट्टी पाना।
३ किसी निश्चित बात के ग्रनुसार लगातार व्यवहार होना। चरितार्थ होना, पालन होना, पूरा होना।
ज्यूं—रांणाजी ग्रापरी ग्रांन वरावर निभाई।
४ व्यवस्थित रूप से होता चलना, पूरा होना।
उ०—घनांजी री प्रकृति करड़ी जांण नै स्वांमीजी विचारचो ग्रा भारमलजी सूं निभणी कठिन है।—भि.द्र.
निभणहार, हारौ (हारी), निभणियौ—वि० ।
निभवाड़णौ, निभवाड़बौ, निभवाणौ, निभवावौ, निभवावणौ, निभवाववौ—प्रे०रू० ।
निभाड़णौ, निभाड़बौ, निभाणौ, निभावौ, निभावणौ, निभावबौ
—क्रि०स०
निभिग्रोड़ौ, निभियोड़ौ, निभ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निभीजणौ, निभीजबौ—भाव वा० ।
निवणौ, निवबौ, निबहणौ, निबहबौ, निम्हणौ, निम्हबौ, निवहणौ, निवहबौ—रू०भे० ।

निभरम—देखो 'निरभ्रम' (रू.भे.)

निभरमौ—देखो 'निरभ्रम' (ग्रल्पा., रू.भे.)
उ०—तरै मचकूर कियौ, बळ रातब करणी छै, सो सांम्हो गांव कोस ऊपर छै तठै चालो, निभरमा पिण रहां। तरै गांव गया। बळ रातब कीधी।—जखड़ा मुखड़ा भाटो री वात
(स्त्री० निभरमी)

निभरांताई—देखो 'निरभ्रांतता' (रू.भे.)

निभा—वि० [सं० निभ] सदृश्य, समान, तुल्य (जैन)

निभाग-सं०पु० [सं० निर्भाग्य] ग्रभाग्य, वदकिस्मती।

निभागौ-वि० [सं० निर्भाग्य] (स्त्री० निभागण, निभागी) ग्रभागा, वदकिस्मत।
रू०भे०—निरभागौ।

निभाड़णौ, निभाड़बौ—देखो 'निभाणौ, निभाबौ' (रू.भे.)
ज्यूं—गरीब ग्रादमी है, थनै निभाड़णौ चाहीजै।
निभाड़णहार, हारौ (हारी), निभाड़णियौ—वि० ।
निभाड़िग्रोड़ौ, निभाड़ियोड़ौ, निभाड़चोड़ौ—भू०का०कृ० ।
निभाड़ीजणौ, निभाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
निभणौ, निभबौ—ग्रक० रू० ।

निभाड़ियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निभाड़ियोड़ी)

निभाणौ, निभाबौ-क्रि०स० [सं० निर्वाहनं] १ परम्परा या सम्बन्ध की रक्षा करना, (किसी बात को) बरावर चलाए चलना, बनाए रखना, जारी रखना, निर्वाह करना।
ज्यूं—प्रीत निभाणी, नातौ निभाणौ, धरम निभाणौ।
उ०—१ घुड़ला थे लाइजो खुरसांणी देस रा, घुडलां री घूमर पधारजो रे तो रे ग्रावजो, जिसड़ी बाळपण री प्रीत बुढ़ापै निभायजो।—लो.गी.
उ०—२ नागजी भलो निभाई प्रीत रे, वैरी रैण विछाग्रो कर चाल्यो ग्रो नागजी।—लो.गी.
उ०—३ 'रघुवर प्यारा रे, हां रे रांम प्यारा रे, हां रे गोविंद प्यारा रे, नेह लग्यौ सो निभाय लै रे।'—गी.रां.
उ०—४ ऊधो भली निभाई रे, त्यागे गोपी गोकळ म्हांनै क्यूं तरसाई रे।—मीरां
उ०—५ रितुगांमी व्है सीळ राखियौ, पुत्रोत्पत्ति फळ पाई। पतिपतनी दंपति पिए प्यारी, नवला नेह निभाई।—ऊ.का.

२ बराबर करते जाना, लगातार साधन करना, निरन्तर पूरा करते जाना।
ज्यूं—इतरी वेगी नौकरी छोड दी, थोड़ा दिन तौ ग्रौर निभाणी ही।
३ किसी बात के अनुसार निरन्तर व्यवहार करना, पालन करना, पूरा करना, चरितार्थ करना।
ज्यूं—वचन निभाणौ, प्रतिग्या निभाणी।
उ०—बावड़ ध्याया बीदणां, ग्रावड़ कर ग्रापांण। कावड़ नैं सावड़ करण, नावड़ विरुद निभांण।—बालावरूस बारहठ
निभाणहार, हारौ (हारी), निभावणियौ—वि०।
निभवाड़णौ, निभवाड़बौ, निभवाणौ, निभवावौ, निभवावणौ, निभवाववौ—प्रे०रू०।
निभायोड़ौ—भू०का०कृ०।
निभाईजणौ, निभाईजबौ—कर्म वा०।
निभणौ, निभबौ—अक० रू०।
निबाड़णौ, निबाड़बौ, निबाणौ, निबावौ, निबावणौ, निबाववौ, निबाहणौ, निवाहबौ, निभाड़णौ, निभाड़वौ, निभावणौ, निभाववौ, निभाहणौ, निभाहबौ, निम्हाड़णौ, निम्हाड़वौ, निम्हाणौ, निम्हावौ, निम्हावणौ, निम्हाववौ, निरभाड़णौ, निरभाड़बौ, निरभाणौ, निरभावौ, निरभावणौ, निरभाववा, निवहाड़णौ, निवहाड़वौ, निवहाणौ, निवहावौ, निवहावणौ, निवहाववौ, निवहाणौ, निवहावौ —रू०भे०

निभायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ परम्परा या सम्बन्ध की रक्षा किया हुआ, (किसी बात को) बराबर चलाए चला हुआ, बनाए रखा हुआ, जारी रखा हुआ, निर्वाह किया हुआ।
२ बराबर करते गया हुआ, लगातार साधन किया हुआ, निरन्तर पूरा करते गया हुआ, चलाये गया हुआ।
३ किसी बात के अनुसार निरन्तर व्यवहार किया हुआ, पालन किया हुआ, पूरा किया हुआ, चरितार्थ किया हुआ।
(स्त्री० निभायोड़ी)

निभाव-सं०पु० [सं० निर्वाह] १ बचाव का ढंग, मुक्ति पाने का रास्ता।
ज्यूं—इण ग्रापत में तौ निभाव दोरौ ईज दीखै।
क्रि०प्र०—करणौ, दीखणौ, सजणौ, होणौ।
२ किसी दशा में जीवन बिताने का काम, निबाहने की क्रिया या भाव, गुजारा।
ज्यूं—थे म्हौ नैं निभाव करौ, ऐड़ी जागा म्हांसूं तौ निभाव नी व्है
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।
३ पूरा करने का काम, चरितार्थ करने का कार्य, पालन।
ज्यूं—हे भगवांन ! म्हारी प्रतंग्या रौ निभाव अब थारै हाथ में है।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।
४ (किसी बात को) चलाए या जारी रखने का काम, किसी बात के अनुसार निरन्तर व्यवहार, लगातार साधन, सम्बन्ध या परम्परा की रक्षा।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।
५ देखो 'निरवाह' (रू.भे.)
रू०भे०—निवाव, निबाह, निवाह, निव्वाह।

निभावणौ, निभाववौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)
उ०—प्रेम रौ पारावार अली हे औ तौ सारां रौ ततसार। हां हे हरि नेह निभावण हार, हां हे प्रभु पार लगावण हार।—गी.रां.
निभावणहार, हारौ (हारी), निभावणियौ—वि०।
निभाविग्रोड़ौ, निभावियोड़ौ, निभाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निभावीजणौ, निभावीजवौ—कर्म वा०।
निभणौ, निभवौ—अक० रू०।

निभावियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निभावियोड़ी)

निभाहणौ—देखो 'निबाहणौ' (रू.भे.)
उ०—पवा समरथां ग्रागळा, हत्थां चंद सुजाव। भालां जैत निभाहणा, 'बालांहदा राव।—रा.रू.

निभाहणौ, निभाहबौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)
उ०—१ थिन ग्राजूणौ दीहड़ौ, यां कहियौ रघुनाथ। धरम निभाहां साम छळ, साहां सूं भाराथ।—रा.रू.
उ०—२ बळ दूणौ 'विजपाळ' रौ, जोड़ धमळ 'जगपत्त'। बोझ निभाहण मारवां, गाहण मेछ दुरत्त।—रा.रू.
निभाहणहार, हारौ (हारी), निभाहणियौ—वि०।
निभाहिग्रोड़ौ, निभाहियोड़ौ, निभाह्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निभाहीजणौ, निभाहीजवौ—कर्म वा०।
निभणौ, निभवौ—अक० रू०।

निभाहियोड़ौ—देखो 'निभायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निभाहियोड़ी)

निभियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (किसी सम्बन्ध, स्थिति ग्रादि का) निरन्तर बना रहा हुआ, बराबर चलता रहा हुआ, निर्वाह हुवा हुआ
२ पार पाया हुआ, बचा हुआ, निकला हुआ, छुट्टी पाया हुआ।
३ (किसी निश्चित बात के अनुसार) लगातार व्यवहृत हुवा हुआ, पालन हुवा हुआ, पूरा हुवा हुआ।
४ व्यवस्थित ढंग से होता चला हुआ, पूरा हुवा हुआ।
(स्त्री० निभियोड़ी)

निर्भै, निभ्भै—देखो 'निरभय' (रू.भे.)
उ०—१ नारण 'केसव' तणौ निभै नर। बभ्रर नील जिसौ वळ वांनर।
उ०—२ धांधळ 'उदैकरण' हित धारै, 'किरतौ' 'गोयंद' मतै करारै। 'सांमळ' 'विजौ' सांमपण सद्धर, 'नरहर' 'ग्राणंद' तणौ निभै नर।
—रा.रू.

उ०—२ सीसोदो कल्यांण रहै रावत निभै-मण हरीदास रट्टवड़ रहै 'कचरो' रिण ढोहण ।—ग.रू.वं.

उ०—३ सुणं जवाब नवाब निभै-मण, दिया दळां आदो दळ थंभण ।—गु.रू.वं.

निभ्रंचणो, निभ्रंचवो-क्रि०स० [देशज] निंदा करना, फटकारना ।

उ०—१ तिणै पुरुसे तिमहीज करघो, स्रीमति रांणी दीठ । कोप करी राजा प्रते, निभ्रंछै धिग धीठ ।—स्रीपाळ रास

उ०—२ गाथा पति नो अपराधो थाय ए । तिणने बाळै तिणा लगाय ए । निभ्रंछै वारबार ए, कहीजे न्यात रै बार ए ।—जयवांणी

निभ्रंत—देखो 'निरभ्रांत' (रू.भे.)

उ०—नगण यगण पायै निरिखि, भणि चोरसा निभ्रंत । आवै खट आखर अविल, करि जस कमळा कंत ।—पि.प्र.

निभ्रमो—देखो 'निरभ्रम' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निभ्रमी)

निभ्रम्म—देखो 'निरभ्रम' (रू.भे.)

उ०—चित्त :साह चितवे, भीम इक राह निभ्रम्मां । सुरसांण घमसांण, रांण घेरियो मुहम्मां ।—रा.रू.

निमंत—देखो 'निमित्त' (रू.भे.)

निमंतण, निमंतरो, निमंत्रण-सं०पु० [सं० निमंत्रणम्] १ किसी को किसी स्थान पर बुलाने का अनुरोध ।

ज्यूं—म्हे आपनै निमंत्रण दूं हूं कै कदेई म्हारै घरै पधारजो ।

२ वह अनुरोध जो किसी कार्य हेतु नियत स्थान पर आने के लिए किया जाय, आव्हान, बुलावा ।

ज्यूं—म्हांरा गुरुजी एक महात्मा नै स्कूल में भासण देवण सारू निमंत्रण दियो ।

३ नियत समय पर भोजन आदि के लिए आने का अनुरोध, न्योता

ज्यूं—आज सांम सारू तो भोजन रो निमंत्रण आयोड़ो पड़ियो है

रू०भे०—निमतरो, निमतो, निवतरो, निवतो, नूंतो, नूतो, नूंतणो, नैंतो, नैंहतो, नोतो, नौतो, नोहतो, न्यूंतो, न्योतो ।

निमंत्रण-पत्र-सं०पु०यौ० [सं०] वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को निमन्त्रण दिया गया हो ।

निमंत्रणो, निमंत्रबो-क्रि०स० [सं० निमंत्रणम्] निमंत्रित करना, न्योता देना, निमन्त्रण देना । उ०—द्रोण सोण तुरगे रथ दीसइ, जेउ युद्धि कुंण हीण कलीसइ । युद्धसत्रि जिम राउ जि मंत्रइ, एक दीहि भड कोडि निमंत्रइ ।—विराट पर्व

निमंत्रणहार, हारो (हारी), निमंत्रणियो—वि० ।

निमंत्राड़णो, निमंत्राड़बो, निमंत्राणो, निमंत्रावो, निमंत्रावणो, निमंत्रावबो—प्रे०रू० ।

निमंत्रिप्रोड़ो, निमंत्रियोड़ो, निमंत्रयोड़ो—भू०का०कृ० ।

निमंत्रीजणो, निमंत्रीजबो—कर्म वा० ।

नउतणो, नउतबो, निउंत्रणो, निउंत्रबो, निमतणो, निमतबो, निवतणो निवतबो, निवतरणो, निवतरबो, निहुतरणो, निहुतरबो, निहुतणो, निहुतबो, नीमतणो, नीमतबो, नीवतणो, नीवतबो, नूंतणो नूंतबो, नूंहतणो, नूंहतबो, नूतणो, नूतबो, नूतरणो, नूतरबो, नेवतणो, नेवतबो, नैंतणो, नैंतबो, नैंहतणो, नैंहतबो, न्यूंतणो, न्यूंतबो, न्योतणो, न्योतबो—रू०भे० ।

निमंत्रियोड़ो-भू०का०कृ०—निमंत्रित किया हुआ, न्योता दिया हुआ, निमन्त्रण दिया हुआ ।

(स्त्री० निमंत्रियोड़ी)

निमंत्रीहार-सं०पु० [सं. निमंत्रणं+रा. प्र. हार] वह व्यक्ति जिसे निमन्त्रण दिया गया हो, निमन्त्रित किया जाने वाला व्यक्ति ।

वि०—निमंत्रित किया हुआ, जिसे निमन्त्रण दिया गया हो ।

उ०—निमंत्रीहार अयार निसासहि । द्रिहुंगसि ढोलां रवद दुवाह । विसकन्या देरो वजवाया । मुणियउ मांड अनड़ मेवाड़ ।—दूदो

रू०भे०—निमंतियार, नूंतियार, नूतियार, नैंतियार, नैंहतियार, न्यूंतियार, न्यूंतिहार, न्योतिहार ।

निमंद—देखो 'निबंध' (रू.भे.)

निमंदणो, निमंदबो—देखो 'निमंधणो, निमंधबो' (रू.भे.)

उ०—महमद जैसा मसहपी निवाज निमंदे ।—केसोदास गाडण

निमंदणहार, हारो (हारी), निमंदणियो—वि० ।

निमंदिप्रोड़ो, निमंदियोड़ो, निमंदयोड़ो—भू०का०कृ० ।

निमंदीजणो, निमंदीजबो—कर्म वा० ।

निमंदियोड़ो—देखो 'निमंधियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० निमंदियोड़ी)

निमंध, निमंधण—देखो 'निबंध' (रू.भे.)

उ०—१ नव अढ़ार आवै निमंध, मात्र एक पय माहि । रूड़ी विधि कहिया रुचिर, सुथिर छंद साराहि ।—ल.पि.

उ०—२ अरि दूनाड़ आवियो, वणियो जुद्ध निमंध । दळ सझ भाद्राजण दिसा, आयो 'अजण' कमंध ।—रा.रू.

उ०—३ निमो गोदावरी नदी धारा निमध, सांम नै तुहारै कहो कद रो संबंध ।—पी.ग्रं.

उ०—४ परमेसर त्रैलोकपति, पतत उतारण पारि । जगत निमंधण गुर जगत, बळबंधण बळिहारि ।—पि.प्र.

निमंधणो, निमंधबो-क्रि०स० [सं० निबंधनम्] १ करना, बनाना, रचना ।

उ०—१ तैं परठै पचीस तत पंचभूतक प्रांणी । भेद पचास निमंधिया, घट मंझ मंडांणी ।—केसोदास गाडण

उ०—२ जांमण मरण विमंधिया दोजग डंडा ।—केसोदास गाडण

उ०—३ भेद पचासां निमंधिया घट मंड घडांणी ।—केसोदास गाडण

उ०—४ बोल नवाब सरस द्रढ बधे, सुत पितु हूंत महा छळ संधे । यूं रिम सूरत सुत प्रबधे, नेम लियो विधि जेम निबंधे ।—रा.रू.

उ०—५ उगणत्रीस लख आवगा, सहस पचांणु सोइ। नवसौ रूप निमंध करि, दाखि त्रीस वळि दोइ।—ल.पिं.

उ०—६ छोटा वडा सांगोर री, नेम नहीं नहचेण। निमंधे त्रिण दूहा निपट, तवै पंखाळौ तेण।—र.ज.प्र.

२ रखना। उ०—१ मात्र आठ पाये निमंध, धारीजै निरधार। जगण अंत आवै जरू, माखि छंद मधुभार।—पिं.प्र.

उ०—२ रूपमाळ रूपक रै, नव गुर पाइ तिमंध। मनमत्त भूलै महमहण, कळह दहण दहकंध।—पिं.प्र.

३ बंध तैयार करना।

[सं० नियमनं] ४ संकल्प करना, निमित्त करना।

ज्यूं—म्हारै पांच रुपिया कबूतरां सारूं निमंधियोड़ा है।

उ०—सुतण 'दीप' तन सूर। नूर खत्रवाट निमंधे।—विनय रासौ

निमंधणहार, हारौ (हारी), निमंधणियौ—वि०।

निमंधवाड़णौ, निमंधवाड़वौ, निमंधवाणौ, निमंधवावौ, निमंधवाधवौ, निमंधवावणौ, निमंधाड़णौ, निमंधाड़वौ, निमंधाणौ, निमंधावौ, निमंधावणौ, निमंधाववौ—प्रे०रू०।

निमंधिश्रोड़ौ, निमंधियोड़ौ, निमंध्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निमंधीजणौ, निमंधीजवौ—कर्म वा०।

नवंधणौ, नवंधवौ, नमंधणौ, न्मंधवौ, निबंधणौ, निवंधवौ, निमंदणौ, निमंदवौ, निमधणौ, निमधवौ, निमिधणौ, निमिधवौ—रू०भे०

निमंधियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किया हुआ, बनाया हुआ, रचा हुआ।

२ रखा हुआ।

३ बंध तैयार किया हुआ।

४ संकल्प किया हुआ, निमित्त किया हुआ।

(स्त्री० निमंधियोड़ी)

निमंसी-वि० [देशज] ठोस, कठोर। उ०—मुखमली पसम रा, कळी सी कांन रा, झूठमी द्रेठ रा, कूकड़ा कंध रा, लोह में बंध रा, तोछड़ी पूंठ रा, चोवड़ी घूव रा, चांमरी पूंछ रा, निमंसी नळी रा, वाटके नख रा, धावणी प्रोड रा।—रा.सा.सं.

निमक—देखो 'नमक' (रू.भे.)

निमकसार—देखो 'नमकसार' (रू.भे.)

निमकहरांम—देखो 'नमकहरांम' (रू.भे.)

निमकहरांमी—देखो 'नमकहरांमी' (रू.भे.)

निमकहलाल—देखो 'नमकहलाल' (रू.भे.)

निमकहलालियौ—देखो 'नमकहलाल' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पीछे माराज कांम आया तिण री पातसाही सूं ओरंगाबाद में मालम हुई। तठै वडो अपसोस कियो अरु फुरमायो कै वडा सचा निमकहलालिया था, अब मेरी पातसाही में ऐसा जमा-मरद बाकी रया नी कोई।—द.दा.

निमकहलाली—१ देखो 'नमकहलाल' (रू.भे.)

उ०—बादसाह सुण धोखौ कर कही-हिंदू ऐसा सिपाही होणा नहीं। भला सांचा निमकहलाली था।—महाराजा स्री पदमसिंह री वात

२ देखो 'नमकहलाली' (रू.भे.)

निमकीन—देखो 'नमकीन' (रू.भे.)

निमख—१ देखो 'नमक' (रू.भे.)

उ०—खावंद के हुकम पर जम सेती जंग करै। निमख की सरीयत पर ज्यांन कुरबांन करै।—सू.प्र.

२ देखो 'निमिस' (रू.भे.)

उ०—१ ऐकीकइ निमख तेज तनु अधिकउ, भांण जांहि ऊगतउ प्रभात। कंमळ ताय अत राजकुमारी, गोरी कमळ सरीखइ गात।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कांकळ समे कुवेलियां, म दे संग महमाय। निजरां धागै निमख में, हार-मोर व्है जाय।—वां.दा.

उ०—३ हरिरांम नांम व्रत हिरदै धारूं, परम उदार निमख न विसारूं।—ह.पु.वा.

उ०—४ भौसागर वार पार मधि नांहीं, (घट) घाट तखि अघट बिचारौ। परम ध्यांन पर ध्यांन हरि, निजनाथ नहि निमख विसारौ।
—ह.पु.वा.

निमखहरांमी—देखो 'नमकहरांमी' (रू.भे.)

निमग—देखो 'निगम' (रू.भे.) (डि.को.)

निमड़णौ, निमड़वौ—देखो 'निपटणौ, निपटवौ' (रू.भे.)

उ०—रांणोजी तौ घणाही म्होरा करै छै, हुई जिकी तौ हुई, निमड़ी पण इव थां कहो सो करस्यां।—नापै सांखलै री वारता

मुहा०—कांम निमड़णौ—देखो 'कांम निवड़णौ'।

निमड़णहार, हारौ (हारी), निमड़णियौ—वि०।

निमड़ाड़णौ, निमड़ाड़वौ, निमड़ाणौ, निमड़ावौ, निमड़ावणौ, निमड़ाववौ—प्रे०रू०।

निमेड़णौ, निमेड़वौ—क्रि०स०।

निमड़िश्रोड़ौ, निमड़ियोड़ौ, निमड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निमड़ीजणौ, निमड़ीजवौ—भाव वा०।

निमड़ियोड़ौ—देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निमड़ियोडी)

निमचालखसाई-सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

निमजणौ, निमजवौ—देखो 'निमज्जणौ, निमज्जवौ' (रू.भे.)

निमजणहार, हारौ (हारी), निमजणियौ—वि०।

निमजिश्रोड़ौ, निमजियोड़ौ, निमज्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निमजीजणौ, निमजीजवौ—भाव वा०।

निमजर—देखो 'नीमजर' (रू.भे.)

निमजा, नीमजा-सं०पु० [देशज] नौजा।

उ०—१ छोहारी खारिकि, जालिकी खारिकि, पिस्तांनी खारिकि, भुंगडी खारिकि, सिलेमांनी खारिकि, नीलो खारिकि, अखोड बदांम, कागदी बादांम, कठ बदांम, सकरी बदांम, पस्तां, निमजां, चाइम चारुळी, जरगोजां अंजीर।—व.स.

उ०—२ नीलां नारिंगां रंगि दीसता सुरंगा, नीकोळी रायण, ते प्रीसी मन भाइण, दाडिम नी कुळी, खातां पूजै रुळी, निमजा नि अखोड, खातां उपजि कोड ।—व.स.

उ०—३ खारिक खुरमा रे द्राख सोपारियां. निमजा ने नाळेर । इत्यादिक नव नव आगळि धरे, पांमे मोटिम मेर ।—स्रीपाळ रास

निमजियोड़ो—देखो 'निमज्जियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमजियोड़ी)

निमज्जण-सं०पु० [सं०] डूब कर किया जाने वाला स्नान ।

निमज्जणो, निमज्जबो-क्रि०अ० [सं० निमज्जनम्] १ अवगाहन करना गोता लगाना, डूबना ।

क्रि०स०—२ युद्ध करना ।

उ०—हथ नाळ गोळा, पड़ै जांणि ओळा । करग्गे केवांणं, निमज्जे जवांणं ।—ग.रू.बं.

निमज्जणहार, हारौ (हारी), निमज्जणियौ—वि० ।

निमज्जिओड़ो, निमज्जियोड़ो, निमज्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निमज्जीजणो, निमज्जीजबो—भाव वा० ।

निमज्जियोड़ो-भू०का०कृ०—१ अवगाहन किया हुआ, गोता लगाया हुआ, डूबा हुआ । २ युद्ध किया हुआ ।

(स्त्री० निमज्जियोड़ी)

निमझर—देखो 'नीमजर' (रू.भे.)

उ०—जेठ मास सास रै सार्थ, सौरभ देवै सांतरी । साढ़ मांय सांचरै निमझर, धांणं जीरै जातरी ।—दसदेव

निमटणो, निमटबो—देखो 'निपटणो, निपटबो' (रू.भे.)

उ०—१ फेर पती री कवणेंती वणा री कहै छै, हे सखी ! इण कवणेंती पती री ओज रीस नै दूजो कोई पूगै नहीं । तीर छूटतां चिवटी खाली होवतां ही निमटी नीवड़ती चाली चाली जावै है फोज ।—वी.स.टी.

उ०—२ दवा प्रभात अमोघ, गोरवो किणनै आवै । आंख्यां वड़ अवेर, विनां निमटै ना जावै । कोठो राखै साफ, उदर रा रोग मिटावै । जठै नहीं है नीम, कोढणी कबजी जावै ।—दसदेव

उ०—३ सोच सदा निमट नर आवै, हाथ साफ मारा करै । ऊजळां धोरां धूड़ आगै सावण भी पांणी भरै ।—दसदेव

निमटणहार, हारौ (हारी), निमटणियौ—वि० ।

निमटवाड़णो, निमटवाड़बो, निमटवाणो, निमटवाबो, निमटवावणो, निमटवावबो—प्रे०रू० ।

निमटाड़णो, निमटाड़बो, निमटाणो, निमटाबो, निमटावणो, निमटावबो —क्रि०स०

निमटिओड़ो, निमटियोड़ो, निमट्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निमटीजणो, निमटीजबो—भाव वा० ।

निमटाड़णो, निमटाड़बो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)

निमटाड़णहार, हारौ (हारी), निमटाड़णियौ—वि० ।

निमटाड़िओड़ो, निमटाड़ियोड़ो, निमटाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निमटाड़ीजणो, निमटाड़ीजबो—कर्म वा० ।

निमटणो, निमटबो—अक० रू० ।

निमटाड़ियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमटाड़ियोड़ी)

निमटाणो, निमटाबो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)

निमटाणहार, हारौ (हारी), निमटाणियौ—वि० ।

निमटायोड़ो—भू०का०कृ० ।

निमटाईजणो, निमटाईजबो—कर्म वा० ।

निमटणो, निमटबो—अक० रू० ।

निमटायोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमटायोड़ी)

निमटावणो, निमटावबो—देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)

निमटावणहार, हारौ (हारी), निमटावणियौ—वि० ।

निमटाविओड़ो, निमटावियोड़ो, निमटाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निमटावीजणो, निमटावीजबो—कर्म वा० ।

निमटणो, निमटबो—अक० रू० ।

निमटावियोड़ो—देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमटावियोड़ी)

निमटियोड़ो—देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निमटियोड़ी)

निमण—१ देखो 'निमन' (रू.भे.)

२ देखो 'नीमण' (रू.भे.)

निमणो-वि०—१ उदास, खिन्न चित्त । उ०—अर करै न ऊभी अंगुळी, निमणो तो पिण नाथ । सिरज लजाळू इण सिरज, हरि धुए जिण हाथ ।—रेवतसिंह भाटी

२ हलका, तुच्छ, नमने वाला । उ०—निमणो पड़ मत रह निडर, राच्यो नृप किम रंज । सह भड़ किंवाड़ सार रा, भिड़ करि संकै न भज ।—रेवतसिंह भाटी

निमणो, निमबो—देखो 'नमणो, नमबो' (रू.भे.)

उ०—१ मेको हाथी मोकळयो, जोपै जोरावर । उठै न कोड़ उपाव सूं. निम रह्या सको नर ।—ठा. जुझारसिंह मेड़तियो

उ०—२ रीझ दिया रिड़माल नै, नव कोट नृभै-नर । राव मुखां इम रट्टियो, कमधज जोड़ कर । आप विराजो ईस्वरी, थिरपो मढ़ सढर । दस गांवां सूं देसणोक, निमि कीधी निज्जर ।

—ठा. जुझारसिंह मेड़तियो

निमणहार, हारौ (हारी), निमणियौ—वि० ।

निमिओड़ो, निमियोड़ो, निम्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निमीजणो, निमीजबो—भाव वा० ।

निमत—देखो 'निमित्त' (रू.भे.)

निमतणो, निमतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमत्रबो' (रू.भे.)

निमतणहार, हारो (हारी), निमतणियो—वि० ।
निमतवाड़णो, निमतवाड़बो, निमतवाणो, निमतवाबो, निमतवावणो, निमतवाववो, निमताड़णो, निमताड़बो, निमताणो, निमताबो, निमतावणो, निमताववो—प्रे०रू० ।
निमतिग्रोड़ो, निमतियोड़ो, निमत्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निमतीजणो, निमतीजबो—कर्म वा० ।

निमतरो—१ देखो 'नेत' (रू.भे.)
२ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

निमति—देखो 'निमित्त' (रू.भे.)
उ०—रुत प्रति चंदण कपूर सझै समसांण सझाई । विविध अमित सुचि वसत चेहग्नि निर्मति चलाई ।—रा.रू.

निमतियार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)

निमतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमतियोड़ी)

निमतो—१ देखो 'नेत' (अल्पा., रू.भे.)
ज्यूं०—फलांणै री वियाव है जिको पांच रिपिया निमता रा घालण जाणो है ।
२ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)
३ देखो 'निवतो' (रू.भे.)

निमत्त—देखो 'निमित्त' (रू.भे.)
उ०—१ राठौड़ा पण झलियो, नृप 'अगजीत' निमत्त । सुण तहवर उर छोजियो, अत खीजियो दुरत्त ।—रा.रू.
उ०— मन मूझ तणौ वीमाह जिसो अत, मारूं गोइंद आप मरै । आश्रो भड़ साथि जिको मो आवै, काळ निमत्त सरीर करै ।
—गु.रू.वं.

निमधणो निमधबो—देखो 'निमंधणो, निमंधबो' (रू.भे.)
निमधणहार, हारो (हारी), निमधणियो—वि० ।
निमधिग्रोड़ो, निमधियोड़ो, निमध्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निमधीजणो, निमधीजबो—कर्म वा० ।

निमधियण-वि०[?]रचने वाला, रचयिता । उ०—उरध अंबर उद्धरण, वेद ब्रह्मा गावाळण । दळ दाणव निरदळण, ग्रव्व रांमण घो गाळण । बम्भीखण जण करण, सबळ दैतां संघारण । नव्वनाथ निमधियण, त्रिविध लोकां ऊपावण । ससि सूर पवन पांणी सती, मुगति कोय जांमण मरण । त्रैलोकनाथ 'जगियो' तवै, सरण राख असरण सरण ।—ज.खि.

निमधियोड़ो—देखो 'निमंधियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमधियोड़ी)

निमन-सं०पु० [सं० निम्नतः] १ वह नीचा स्थान जहां वर्षाकाल में पानी भर जाता हो ।
२ गहरा पानी (डिं.को.)
३ पूज्य स्थान ।
रू०भे०—निमण ।
४ देखो 'नीमण' (रू.भे.)

निमनगा-सं०स्त्री० [सं० निम्नगा] नदी, सरिता (ह.नां., अ.मा., डिं.को.)

निमळो—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)
उ०—मोत्यां रै सरीसी थांरी घण निमळी ओ राज, राखों नी कांनां रै मांय ।—लो.गी.
(स्त्री० निमळी)

निमसकार, निमस्कार—देखो 'नमस्कार' (रू.भे.)
उ०—गुरड़ ऊपरा चढै वैकूंठ ग्रांमी, निमस्कार तो नां निमो सहस-नांमी ।—पी.ग्र.

निमांण—१ देखो 'निमांणो' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'निवांण' (रू.भे.)

निमांणी-वि०स्त्री०—ढीठ, मानहीना ।
उ०—१ रममां दे नाळ मोही वे, जंग सयाळै दी हो परी हीर निमांणी ।—रसीलैराज
उ०—२ जांणी जांणी रे गलां दोस्त दो, रसराज एक में हीर निमांणी ।—रसीलेराज
उ०—३ *सइयां कुण छै, ए लागै छै अमीर किण उळगांणी* रा भंवरजी । लटपटिया सिरपेच पाग रा, भूह कवांण सी तांणी रा निमांणी रा ।—रसोलैराज

निमांणो-वि० [सं० नि+मान] (स्त्री० निमांणी) १ मानरहित, निर्लज्ज, धृष्ठ, ढीठ ।
उ०—१ रैणां सायण तूझ, निमांणो विरह दझावै । दिनां विलमतां काज, म इतरो जोर जतावै । रसिया ईखो वांम, गोखड़ै जाय विराजो । घर पोढ़ी मझ रात, अमीणा बोल सुणाजो ।—मेघ.
उ०—२ निमांण विसर गयां मित्र के ।—रसीलैराज
उ०—३ नर तेथ निमांणा निलजी नारी, अकबर गाहक वट अवट । चोहटे तिण जाय'र चीतोडो, वेचै किम रजपूत वट ।
—महाराणा प्रताप रो गीत
२ निम्न, खराब, बुरा, मर्यादाहीन ।
मह०—निमांण ।

निमांम, वि० [देशज] १ मर्यादा-हीन ।
उ०—१ निलज निमोहो नाथ, निपट निमांम हूं ।—र.ज.प्र.
उ०—२ निमांमी थाइ न थाइ नेह । मिटै घर बीज घटै तर मेह ।
—रांमरासो
२ बुरा, खराब ।
उ०—१ नरनाह पतसाह छोडाड़ सकियो नहीं, समांमो कमंध जोय निमांमी सिध । आपरा वडेरां खाटिया अखाड़ा करण ग्यो प्रवाड़ा बांधियां कंध ।—महाराज करणसिंह रो गीत

निमाई-सं०स्त्री०—१ कुम्हार की मिट्टी ।
२ कुम्हार का वर्तन पकाने का स्थान ।

निमाड़णो, निमाड़वो—देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)
निमाड़णहार, हारो (हारी), निमाड़णियो—वि०।
निमाड़िश्रोड़ो, निमाड़ियोड़ो, निमाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
निमाड़ीजणो, निमाड़ीजवो—कर्म वा०।
निमणो, निमवो—अक०रू०।
निमाड़ियोड़ौ—देखो 'नमाड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमाड़ियोड़ी)
निमाज—देखो 'नमाज' (रू.भे.)
निमाजगाह—देखो 'नमाजगाह' (रू.भे.)
उ०—उठै इण रै मांगळियांणी मैं पुत्र चूंडा रो जन्म हुवो जिकण री ही वधाई मं जांणं ढोलां रै आंटे जवनां री निमाजगाह रा फरास वढ़ाई कवरां रै माथै बाराह विणासि।—वं.भा.
निमाजी—देखो 'नमाजी' (रू.भे.)
निमाणो, निमावो—देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)
निमाणहार, हारो (हारी), निमाणियो—वि०।
निमायोड़ो—भू०का०कृ०।
निमाईजणो, निमाईजवो—कर्म वा०।
निमणो, निमवो—अक० रू०।
निमायोड़ौ—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमायोड़ी)
निमावणो, निमाववो—देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)
ज्यूं—इण लोह रै खोलै नै ऊंचो टेरण सारू थोड़ो निमावणो पड़ैला।
निमावणहार, हारो (हारी), निमावणियो—वि०।
निमाविश्रोड़ो, निमावियोड़ो, निमाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
निमावीजणो, निमावीजवो—कर्म वा०।
निमणो, निमवो—अक० रू०।
निमावियोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमावियोड़ी)
निमि-सं०पु० [सं०] १ दत्तात्रेय के पुत्र एक ऋषि।
२ राजा ईक्ष्वाकु के एक पुत्र।
३ आंखों के मिचने की क्रिया या भाव, पलक का ऊपर नीचे होना, पलक झपकना।
४ देखो 'नेमी' (रू.भे.)
निमिख—देखो 'निमिस' (रू.भे.)
उ०—१ जे उवै बाहर आया तो एक निमिख लागसी।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
उ०—२ पलक निमिख मत पांतरे, दाखै कव दीनदयाळ।—ह.र.
निमिणि—देखो 'नमण' (रू.भे.)
उ०—रांमचद अजोध्या मांहि राघव रमै। निमिणि ब्रह्मा करै आदि नारद नमै।—पी.ग्रं.
निमित, निमित्त—सं०पु० [सं० निमित्त] १ कारण, हेतु (डिं.को.)
उ०—१ डोढ महीनै रै राह-हूं चाळीस, मरूं तो सयणी निमित्त।
—सयणी री वात
उ०—२ दादू नांम निमित्त रांमहि भजै, भक्ति निमित भज सोय। सेवा निमित सांई भजै, सदा सजीवन होइ।—दादूवांणी
२ फल की ओर लक्ष्य, उद्देश्य।
ज्यूं—वरसात रै निमित्त हवन करणो।
उ०—१ दीवांनो कही जिण निमित्त देणो कियो थो उण ही नूं जे देवो।—नी.प्र.
उ०—२ इण तरह पत्र लिखाय पातसाह री भेंट निमित्त एक सत १०० तुरंग।—व.भा.
३ शकुन। उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित। दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा, नासै दुसुपन दुर निमित्त।—वेलि.
४ चिन्ह, लक्षण।
क्रि०वि०—लिए। उ०—१ ऐ तो पांच सो आदमी थां निमित्त तैयार हुवा छै। संकळप भरता यूं कहै छै आ देही ठाकुरजी निमित्त छै।
—पलक दरियाव री वात
उ०—२ सब कोई मनुस्य भार लिया फिरै छै सीत की रिख्या निमित्त।—वेलि.
रू०भे०—नमंत, नमत, नांमित, निमंत, निमित, निमति, निमत्त, नीमंत, नेम।
निमित्तकारण-सं०पु० [सं०] वह जिसके कार्य व मदद से कोई वस्तु बने।
निमित्तियो—देखो 'निमित्ती' (रू.भे.)
उ०—तेह नैं कह्यो निमित्तियै जी, बाळ पणैं निर्मंत जिणसी पुत्र मुवा थकाजी, करम तणैं विरतंत।—जयवांणी
निमित्ती [सं० नैमित्तिक] जो किसी कारण विशेष वश किया जाय, जो निमित्त या कारण उपस्थित होने पर हो। (उ.र.)
[सं० नैमित्तिकः] ज्योतिषी (उ.र.)।
रू०भे० निमित्तियो।
निमिधणो, निमिधवो—देखो 'निमंधणो, निमंधवो' (रू.भे.)
निमिधणहार, हारो (हारी), निमिधणियो—वि०।
निमधिश्रोड़ो, निमिधियोड़ो, निमिध्योड़ो—भू०का०कृ०।
निमिधीजणो, निमिधीजवो—कर्म वा०।
मिमिधियोड़ो—देखो 'निर्मधियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमिधियोड़ी)
निमियोड़ो—देखो 'नमियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमियोड़ी)
निमिराज-सं०पु० [सं०] निमिवंशी राजा जनक।
निमिस-सं०स्त्री० [सं० निमिष] १ आंखों के मीचने वा पलकों के

गिरने की क्रिया या भाव, निमेष।
२ आंख के एक बार झपकने में लगने वाला समय, उतना समय जितना पलक गिरने में लगता है, पलक मारने भर का समय।
उ०—१ नामस पळ वसंति सारिखो अहोनिसि, एकण एक न दाखै अंत। कंत गुणे वसि थायै कांता, कांता गुणि वसि थायै कंत। —वेलि.
उ०—२ निमिस पळ वसंत रै विसै रात्रि अर दिन सरीसा निरवहै छै, एकै थे एक कहुं वात जणावै नहीं छै।—वेलि. टी.
३ पलक पर होने वाला एक रोग—(सुश्रुत)।
क्रि०वि०—पलक भर में, क्षण में ही।
रू०भे०—निमख, निमिख।

निमिसकार, निमिस्कार—देखो 'नमस्कार' (रू.भे.)
उ०—गरुड ऊपरा चढ़े वैकूंठ-ग्रांमी, निमिस्कार तोने निमो सहस-नांमी। पी.ग्रं.

निमूळ-वि० [सं० निमूल] विना मूल का, मूल रहित।

निमेख—देखो 'निमेस' (रू.भे.)
उ०—पलक निमेख न पांतरां, दाखां दीनदयाळ। धरणीधर हिरदै धरां, गुण गावां गोपाळ।—ह.र.

निमेड़णो, निमेड़बो-क्रि०स०—१ दूर करना, मिटाना।
उ०—विमुह करण रण साह दळ, मुहकम का हरियंद। सोच निमेड़ण निय दळां, खळां उखेलण कंद।—रा.रू.
२ देखो 'निपटाणो, निपटाबो' (रू.भे.)
निमेड़णहार, हारो (हारी), निमेड़णियो—वि०।
निमेड़िग्रोड़ो, निमेड़ियोड़ो, निमेड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
निमेड़ीजणो, निमेड़ीजबो—कर्म वा०।
निमड़णो, निमड़बो—अक०रू०।

निमेड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ दूर किया हुआ, मिटाया हुआ।
२ देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निमेड़ियोड़ी)

निमेस-सं०स्त्री० [सं० निमेषः] १ आंख के झपकने या पलक के गिरने की क्रिया या भाव (डिं.को)।
२ उतना काल जितना स्वभावतः पलक गिर कर उठने में लगता है, पलक मारने भर का समय (डिं.को.)
३ क्षण, पल। उ०—विरहइ-पीडित वरसनां, दैव-दह्यां जे देह। निसा एक निमेस-महि, नव-पल्लव थ्यां तेह।—मा.कां.प्र.
४ आंख फड़कने का एक रोग।
५ महाभारत के अनुसार एक यक्ष का नाम।
रू०भे० निमेख।

निमोळी—देखो 'निंबोळी' (रू.भे.)

निमोही-वि० [सं० निर्मोही] प्रेम न करने वाला, निर्मोही।
उ०—कपटी काळंकी क्रूर कातर कुचाल कोर, 'किसन' कहत कैसो काळ ही अकांम हूं। वैंडो हूं बकोरी हूं बुरो हूं बेसहूर बादी, निलज निमोही नाथ निपट निमांम हूं।—र.ज.प्र.

निमो—देखो 'नमो' (रू भे.)
उ०—१ इंमिया खिमिया मांस अहारिणि, चारिणि निमो सैणल। चारिणि।—पी.ग्रं.
उ०—२ सोव्है सिल पर जेथ पगलिया सिंभु-केरा। करो परकमा मेघ निमो दे मांन घणेरा। भगतां-दरसण-भाग मिटै सह पाप जिणांरा। अमरापुर ही जाय, छूटतो प्रांण तिणांरा।—मेघ.

निम्मळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.) (जैन)
उ०—१ दिपै गुण निम्मळ मुत्तियदांम, सेवूं मन सुद्ध तिको हिज स्वांम।—ध व.ग्रं.
उ०—२ भोग तणउं अंतराई इण, परि वांधी संजम लेवि। निम्मळ विपुळ कीया तप गाढ़ा, हिअडइ भाव धरेवि।
—विद्याविलास पवाडउ

निम्मांण, निम्मांन—देखो 'निरमांण' (रू.भे.)

निम्माज—देखो 'नमाज' (रू.भे.)
उ०—१ जे नितु रोजु करइ नितहू निम्माज गूंजारइं। पंच वखत सम धरइं धणी, जे एक संभारइं।—व.स.
उ०—२ पंच वखत निम्माज ताज कुलहराह सोहइ, खोजा खांन वजीर मलिक उंबरे मन मोहइ।—व.स.

निम्हणो, निम्हबो—देखो 'निभाणो, निभावो' (रू.भे.)
निम्हणहार, हारो (हारी), निम्हणियो—वि०।
निम्हवाड़णो, निम्हवाड़बो, निम्हवाणो, निम्हवावो, निम्हवावणो. निम्हवावबो—प्रे० रू०।
निम्हाड़णो, निम्हाडवो, निम्हाणो, निम्हावो, निम्हावणो, निम्हावबो —क्रि०स०।
निम्हिग्रोड़ो, निम्हियोड़ो, निम्ह्योड़ो—भू०का०कृ०।
निम्हीजणो, निम्हीजबो—भाव वा०।

निम्हाड़णो निम्हाड़बो—देखो 'निभाणो, निभावो' (रू.भे.)
निम्हाड़णहार, हारो (हारी), निम्हाड़णियो—वि०।
निम्हाड़िग्रोड़ो, निम्हाड़ियोड़ो, निम्हाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
निम्हाड़ीजणो, निम्हाड़ीजबो—कर्म वा०।
निम्हणो, निम्हबो—अक० रू०।

निम्हाडियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निम्हाड़ियोड़ी)

निम्हाणो, निम्हावो—देखो 'निभाणो, निभावो' (रू.भे.)
उ०—मन भांमण सांमण महीं, कीधो आवण कोल। तरसाजो मत तीज नै, वलम निम्हाजो बोल। वलम निम्हाजो बोल वचाजो विरह सौ। पिव बिन रहसी प्रांण, तीज किण तरह सौ। दिल मती धारो देर, पधारो पांमणा। समझू जरै सनेह, अचांणक आंमणा।
—सिवबक्स पाल्हावत

निम्हाणहार, हारो (हारी), निम्हाणियो—वि० ।
निम्हवाड़णो, निम्हवाड़वो, निम्हवाणो, निम्हवावो, निम्हवावणो, निम्हवाववो—प्रे०रू० ।
निम्हायोड़ो—भू०का०कृ० ।
निम्हाईजणो, निम्हाईजवो—कर्म वा० ।
निम्हणो, निम्हवो —अक०रू० ।

निम्हायोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निम्हायोड़ी)

निम्हावणो निम्हाववो—देखो 'निभाणो' निभावो' (रू.भे.)
निम्हावणहार, हारो (हारी), निम्हावणियो—वि० ।
निम्हाविग्रोड़ो, निम्हावियोड़ो, निम्हाव्योड़ो —भू०का०कृ० ।
निम्हावीजणो, निम्हावीजवो—कर्म वा० ।
निम्हणो, निम्हवो—अक० रू० ।

निम्हावियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निम्हावियोड़ी)

निम्हियोड़ो—देखो 'निभियोड़ो (रू.भे.)
(स्त्री० निम्हियोड़ी)

नियंठ—१ देखो 'निग्गंथ' (रू.भे., जैन)
२ देखो 'निरग्रंथ' (रू.भे.)

नियंता-सं०पु० [सं० नियंतृ] १ व्यवस्था करने वाला, नियम बांधने वाला। उ०—हितू सेवा पूजा अवर नहिं दूजा ब्रह्म में। नहीं नेमा प्रेमा यम नहि न तेमा दगन में। नियंता यंता ना चपल चित चिंता मन चुके। अचेता चेता ना जियत हम प्रेता बन चुके।
—ऊ.का.
२ हुकूमत करने वाला शासक. ३ विष्णु ।
रू०भे—नीयंता ।

निय—देखो 'निज' (रू.भे.)
उ०—१ विमुह करण रण साह दळ, मुहकम का हरियंद। सोच निमेड़ण निय दळां, खळां उखेलण कद।—रा.रू.
उ०—२ रुकमइयो पेखि तपत आरणि रणि, पेखि रुखमणी जळ प्रसन। तणु लोहार वांम कर निय तणु, माहव किउ सांडसी मन।
—वेलि.

नियक, नियक, नियगं, नियग-वि० [सं० निजक] खुद का, अपना।
रू०भे०—नियय ।

नियड़-सं०स्त्री० [सं० निकट] नदी के तट के आसपास का भू-भाग ।

नियट्ट-वि० [सं० निवृत्त] निपटा हुआ, निवृत्त ।

नियत-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव ।
वि०—१ मुकर्रर किया हुआ, ठहराया हुआ, ठीक किया हुआ, निश्चित, स्थिर ।
ज्यूं—चौकीदारी रो पगार सौ रिपिया नियत हुवो है थांरै नौकरी करणी व्है तो करो।
ज्यूं—गोठ करण सारू पैं'ली दिन नियत करलो।
२ कायदे के अनुसार निश्चित, नियम से बंधा हुआ, पाबंद, बद्ध, परिमित ।
३ प्रतिष्ठित, तैनात, मुकर्रर, स्थापित, नियोजित ।
ज्यूं—मेहमांनां री खातरी करण सारू पांच आदमी नियत है।
४ देखो 'नियति' (रू.भे.)
५ देखो 'नीयत' (रू भे.)
उ०—नांबरी नियत हम जियत नांहि। आकास म आवहि मुट्ठि मांहि।—ऊ.का.
रू०भे०—नियय, नीत ।

नियतव्यावहारिककाल-सं०पु० [सं०] ज्योतिष के अनुसार नियत समय जिसमें विवाह, यात्रा, दान, श्राद्ध, व्रत आदि हों।

नियति-सं०स्त्री० [सं०] १ भवितव्यता, होनहार ।
२ अवश्य होने वाली बात, बधी हुई बात ।
३ दैव, भाग्य, अदृष्ट ।
४ बद्ध होने का भाव, नियत होने का भाव, बंधेज ।
५ स्थिरता, ठहराव, मुकर्ररी ।
६ वह परिणाम जिसका होना पूर्वकृत कर्मों के कारण निश्चित होता है। (जैन)
७ जड़-प्रकृति ।
८ नीति। उ०—लोपै नियति चो अजा, कोपे 'अयरंग' साह। पड़ी तुरगां पाखरां, अंगे जडी सनाह।—रा.रू.
रू०भे०—नियत नियत्ति, नीयति, नेत ।

नियती-सं०स्त्री० [सं०] भगवती, दुर्गा ।

नियतीवंत-वि० [अ० नीयत+सं० वंत] जिसकी नीयत ठीक हो, ईमानदार ।
उ०—अति प्रगट रस युड डाळ अदभुत, गोपि अतिरंग आदरे। जिम पुरख नियतीवंत नृप जग, प्रजा उर सुख पाव रे।—रा.रू.

नियत्तण-क्रि०वि० [सं० निवर्त्तन] निवृत्ति के लिए (जैन)

नियत्ति-सं०स्त्री० [सं० निवृत्ति] १ निवृत्त होने का भाव, निवृत्ति ।
२ देखो 'नियति' (रू.भे)

नियम-सं०पु० [सं०] १ निश्चित की हुई विधि, रीति, ठहराई हुई पद्धति, जाब्ता, कानून, कायदा। उ०—अखंडा ब्रह्मंडा अखिल इकदेसी तव अगे। जराहा आहा तूं सुलभ सब देसी सब जगे। रचै तूं ढाहै तूं नियम जुत चाहै फिर रचै। नचावै जीवां को निडर निज बाह्यांतर नचै।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—करणो, बांधणो, होणो ।
२ चला आता हुआ विधान, बंधा हुआ क्रम, दस्तूर, परम्परा ।
ज्यूं—दसरावै रै दिन देवी रै आगै बकरो कटण रो नियम है।
ज्यूं—म्हारो तो रोज सुबह स्वांमीजी नैं याद करण रो नियम है।
क्रि०प्र०—करणो, होणो ।
३ ऐसी बात को निश्चित करना या ठहराना जिस पर किसी

दूसरी बात का होना निर्भर हो ।

ज्यूं—गरीब मास्टरां रै सारूं राज रा नियम बौ'त कठोर है ।

क्रि०प्र०—करणी, राखणी, होणी ।

४ शासन, दबाव ।

५ सुचारु रूप से किसी बात को करते रहने की प्रतिज्ञा, व्रत, संकल्प ।

६ वह रोक जो निश्चय या विधि के अनुसार लगाई गई हो, प्रतिबन्ध, पाबंदी, नियन्त्रण, परिमिति ।

ज्यूं—छोरां ! थे थांरी पढाई यूं रमता-रमता ईज कीकर करो हो, थांनै नियम सूं करणी चाहिजै ।

क्रि०प्र०—करणी, बांधणी ।

७ शिव, महादेव. ८ विष्णु ।

रू०भे०—नीम, नेम, नेमा ।

नियमबद्ध-वि० [सं०] कायदे का पाबन्द, नियमों के अनुकूल, नियमों से बंधा हुआ ।

नियमी-वि० [सं०] जो नियम पालन करे, नियम पालन करने वाला ।

नियय—१ देखो 'नियक' (रू.भे.)

उ०—तं जि वयणु राइं मांनीजइ, जन्हराय वेटी परिणीजइ, परिणी पहुतउ नियय घरे ।—पं.पं.च.

२ देखो 'नियत' (रू.भे.) (जैन)

नियरी—देखो 'नगर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—नियरि पुरि हुइ वधांमणा ए, वर नितु नितु अवइ भेटणा ए। आछण पांणी छांडती ए, दवदंती मंदिर प्रापती ए ।

—नळ-दवदंती रास

नियरु—देखो 'निकर' (रू.भे.)

उ०—अज्जवि जसु जस पसरु महि छहखंड धरत्तिहि । अज्जवि जसु गुण नियरु धुणहि पंडिय बहु भत्तिहि ।—ऐ.जै.का.सं.

नियांण, नियांणु, नियाणु-सं०पु० [सं० निदान] अपने सब सद्कर्मों या तपस्या के प्रतिफल स्वरूप भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए की जाने वाली याचना । उ०—१ पांच भरतारी नारी द्रूपदी रे, तउ पणि सतीय कहाय रे । नारी नियांणुं कीधुं भोगवइ रे, करमतणी गति काइ रे ।—स.कु.

उ०—२ राय युधिष्ठिर मनि लाजीजइ, तिणि खणि चारणि मुनि बोलीजइ । निसुणउ लाडीय तपह प्रमांणुं, पूरविलइ भवि कियउं नियांणुं । भवि पहिलेरइ बंभणि हूंती, कडुउ तुंबु मुणिवर दिंती । नरग सहि वलि साहुणि हुई, पांचह पुरिस नियाणु धरेई ।

—पं.पं.च.

नियाई—देखो 'न्यायी' (रू.भे.)

उ०—घणा अमीरां धारका तीरथ करवाई । सूरां आगळ सांम रै भूंभार हुवाई । नंद 'गुमांन' 'बिजेस' के कुंवरेस कहाई । घण दातार 'गुमांन' घर नृप 'मांन' नियाई ।—मोडजी आसियो

नियाग-सं०पु० [सं०] मोक्ष (जैन)

नियागट्ठी-वि० [सं० नियागार्थी] मोक्ष को चाहने वाला, मोक्षार्थी ।

रू०भे०—नियाग ।

नियाज-सं०स्त्री० [फा० नियाज़] १ प्रेम प्रदर्शन ।

२ आजीजी, दीनता ।

३ बड़ों का प्रसाद ।

४ इच्छा, कामना ।

५ मृतक के उद्देश्य से गरीबों को भोजन आदि देने की क्रिया, दुरूद, फातिहा ।

६ बड़ों से होने वाला परिचय ।

मुहा०—नियाज हासिल करणी, किसी बड़े की सेवा करना ।

७ उपहार, भेंट ।

नियात—देखो 'न्याति' (रू.भे.)

नियाब-सं०पु० [अ० नियाबत] प्रतिनिधित्व ।

उ०—अला बुध अवतार तूं बाप बावा, निमो धरम ना कीध निरवळ नियाबा ।—पी.ग्रं.

नियामकगण-सं०पु० [सं०] औषधियों का वह समूह जो रसायन में पारे को मारता है ।

नियामत-सं०स्त्री० [अ० नेअमत] १ उत्तम भोजन, स्वादिष्ट व्यञ्जन ।

उ०—१ ऐ दिन दोजै, ऐ खाणा नियामतां थाळ खलक रै जीमण नूं तयार रहै छै ।—नी.प्र.

नियायो—देखो १ 'न्यायो' (रू.भे.)

२ धन-दौलत ।

३ दुर्लभ वस्तु, अलभ्य पदार्थ ।

रू०भे०—निआमत ।

नियार-सं०पु० [राज० न्यारो] सोनारों की दुकान तथा आभूषण बनाने की भट्टी की राख व कूड़ा-करकट ।

नियारिया-सं०स्त्री० [रा०] सोनारों की दुकान की राख व कूड़ा-करकट छानने का कार्य करने वाली एक जाति विशेष ।

नियारियो-सं०पु० (स्त्री० नियारी) १ 'नियारिया' जाति का व्यक्ति ।

२ मिली हुई वस्तुओं को अलग करने वाला ।

३ सोनारों और जोहरियों की राख व कूड़ा-करकट आदि में से माल निकालने वाला ।

वि०—चतुर, चालाक ।

नियारो—देखो 'न्यारो' (रू.भे.)

उ०—वदै तव नांम लखम्मण वीर, नरां त्यां घात लगै नह नीर । अढै तव नांम सूं अक्खर दोय, नेड़ो रह प्रांण नियारो न होय ।

—ह.र.

नियाव—१ देखो 'न्याय' (रू.भे.)

२ देखो 'न्याव' (रू.भे.)

नियुंजणो, नियुंजबो-क्रि०स० [सं० नियुनक्ति] प्रबन्ध करना, नियोजन करना ।

उ०—खेजडी सिहिरि सस्त्र नियुंज्या। देवरूप बलि मंत्र प्रयुंज्या।
—विराटपर्व

नियुंजणहार, हारो (हारी), नियुंजणियो—वि०।
नियुंजिश्रोड़ो, नियुंजियोड़ो, नियुंज्योड़ो—भू०का०कृ०।
नियुंजणो, नियुंजवो—कर्म वा०।

नियुंजियोड़ो-भू०का०कृ०—प्रबन्ध किया हुआ, नियोजन किया हुआ। (स्त्री० नियुंजियोड़ी)

नियुत, नियुक्त-वि० [सं० नियुक्त] १ ठहराया हुआ, स्थिर किया हुआ।
२ लगाया हुआ, नियोजित।
३ (किसी काम में) जोता हुआ, लगाया हुआ, तैनात।
४ प्रेरित किया हुआ, तत्पर।
रू०भे०—निऊत्त।

नियोग-सं०पु० [सं०] १ अपने पति से सन्तान न होने पर किसी अन्य गोत्रज व्यक्ति से सन्तान उत्पन्न करा लेने की शास्त्रानुसार एक प्रथा (प्राचीन)।
२ किसी काम में लगाने की क्रिया, नियोजित करने का काम, तैनाती।
उ०—फळसांत प्रासाद, नरकांत राज्य, गोरसांत भोजन, बंधनांत नियोग, विपदांत खळमैत्री, गजांत लक्ष्मी, नायकांत समर, हट्टांत व्यवहार, कसवटांत सुवरण, राजसभांत वाद, प्रवासांत स्नेह, नामांत जोस, हारांत स्रंगार, वज्रांत गणित।—व.स.
३ प्रेरणा। उ०—करी बुरी सु पायली, अबै बुरी करूं नहीं। कृपाळ की कृपाळता, काळ ते डरूं नहीं। दयाळ दीनबंधु, दांन में निदांन दीजिये। प्रयोग हूं कुयोग में, यथा नियोग कीजिये।
—ऊ.का.
४ आज्ञा, हुक्म।
५ निश्चय।
६ अवधारणा।

नियोड़ी-सं०स्त्री० [देशज] १ नाई का नाक के अन्दर के बाल उखाड़ने का उपकरण।

निरंकार—देखो 'निराकार' (रू.भे.)

निरंकारी-सं०पु०—नानक (सिख) मत की एक शाखा।

निरंकुस-वि० [सं० निरंकुश] १ जिसके लिए कोई बन्धन या रोक न हो, जिस पर कोई दबाव न हो, स्वेच्छाचारी (डिं.को.)।
२ निर्भय, निडर। उ०—अर जिण रा आतंक करि दूर दूर रै मारग भी सोदागर न हालै अर केही देस निरंकुस बसण न पावै।
—वं.भा.

निरंग-वि० [सं० नि+रंग] १ बदरंग, बेरंग।
ज्यूं०—ओ रंगरेज काम ठीक नी करै, म्हारो साफो कड़प दिरावण सारूं दियो जु निरंग कर दियो।
२ बेरौनक, फीका।
३ जिसे राग-रंग पसंद न हो, विरक्त, उदासीन।
४ जिसमें कुछ न हो, केवल, खाली।
ज्यूं—आ कांई भैंस री छाछ है, ओ तो निरंग पांणी है।
५ अंग-रहित।
सं०पु०—रूपक अलंकार का एक भेद।
रू०भे०—नीरंग, नीरंगु।

निरंजण—देखो 'निरंजन' (रू.भे.) (ह.नां., नां.मा.)
उ०—१ इळ रचण उभै किय सिव सगत, अलख निरंजण आप हुव। नर-नाग-असुर-सुर नीमवण, अलख पुरस आदेस तुव।
—ह.र.
उ०—२ अरज कीधी जु राजांन राजेसर रौ तपतेज परमेसर परब्रह्म, अजनम, निरंजण, निराकार, संसार-सिरोमणि, संसार-साधार, ईस्वर-अवतार।—रा.सा.सं.

निरंजणा-सं०स्त्री० [सं० निरंजना] १ दुर्गा का एक नाम।
२ पूर्णिमा।

निरंजणी—देखो 'निरंजनी' (रू.भे.)

निरंजन-वि० [सं०] १ दुनिया से अलग, माया से निर्लिप्त (ईश्वर का एक विशेषण)
उ०—१ नमो सच्चिदानंद भक्तवत्सळ भयहरता, सास्वत असरण-सरण करणकारण जगकरता। निराकार निरलेप निगम निरदोस निरंजन, दीरघ दीनदयाळु देव दुख-दाळद भंजन।—ऊ.का.
उ०—२ परमारथ को राखियै, कीजै पर-उपकार। दादू सेवक सो भला, निरंजन निराकार।—दादूवांणी
२ दोष-रहित, निष्कलंक, पवित्र। उ०—सेवै तुझ पांव सदा मद सक्क, इळा पग छांह मयंक अरक्क। सेवै तो पांव समुंदर सात, निरंजन पांव नमो निरगात।—ह.र.
सं०पु०—१ ईश्वर, परमात्मा। उ०—१ खूबी रही न काय, खतंगां खंजनां। नेही व्है मुनिराज, विसारि निरजनां।—बां.दा.
उ०—२ दादू पखापखी संसार सब, निरपख विरला कोय। सोई निरपख होइगा, जाकै नांम निरंजन होय।—दादूवांणी
उ०—३ प्रथम जळजळाकार हुतो। तिहां निरंजन निराकार वडपात मांहि पौढ़िया हुता।—द.वि.
२ शिव, महादेव, शंकर। उ०—जोग नींद बस भये निरंजन। गज्जे असुर पितामह गंजन।—मे.म.
३ विष्णु (डिं.को.)
रू०भे०—नरंजण, निरंजण।

निरंजनी-सं०पु० [सं० निरंजन+रा०प्र० ई] १ साधुओं का एक सम्प्रदाय। उ०—मांहे जोगेसर पवन रा साझणहार, त्रिकुटी रा चडावणहार, धूम्रपान रा करणहार, उरधबाहु, ठाढ़ेसरी, दिगंबर, सेतंबर, निरंजनी, आकास-मुनी।—रा.सा.स.

२ वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद ।
रू०भे०—नरंजणी, निरंजणी ।

निरंजनराय-सं०पु०[सं० निरंजन+राज] परब्रह्म, ईश्वर । उ०—रमता रांम निरंजनराय अब तो मन तहां रह्या समाय ।—ह.पु.वा.

निरंत, निरंतर, निरंतरि, निरंत्र-क्रि०वि० [सं० निरंतर] लगातार, बराबर, हमेशा, सदा । उ०—१ अगनिहोत्र दिढ वरस इकीसां । रहै निरंत तिण ग्रेह रिखीसां ।—सू.प्र.
उ०—२ मारग बाग तणी मति मेटं, भगत निरंतर उर धर भाव । तूठै सुतन 'महेस' तूठिया, सिख मयनक 'गुमनेस' सुजाव ।
—बां.दा.
उ०—३ जग संतोस तुखार नर, बसै निरंतर 'बंक' । तियां लोभ ग्रीखम तणी, सुपनै ही नंह संक ।—बां.दा.
उ०—४ जमीया जोगी जोग कमावै, लगी निरंतर डोरी । हिंदू मुसलमांन सूं न्यारा, ऐसी उलटी फोरी ।
—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—५ प्रगटि ऊंच-ग्रह पंच, राग उच्छाह निरंत्रा । जनमे भरथ केकई, सत्रघण लखण सुमित्रा ।—सू.प्र.
वि०—१ लगातार बने रहने वाला, सदा रहने वाला, हमेशा बना रहने वाला, स्थायी, अविचल । उ०—१ मुदै एह खट महल सहल व्रत गिणै सुपावन, पडदायत हित प्रिया अघट सति मिळी अठावन । तिण समयै तिण वेर उभै नाजर व्रत आदर, पावक करण प्रवेस तरण-पति चरण निरंतर ।—रा.रू.
उ०—२ आंण अनेरा रायनी, तिहां रहिवुं तइं देव । मनि सिधि माहरी मानजे, सदा निरतर सेव ।—मा.का.प्र.
२ (कल के सम्बन्ध में) बराबर होने वाला. अखण्डित परम्परा वाला, अविछिन्न ।
३ (देश के सम्बन्ध में) जिसके बीच या जिसमें फासला या अन्तर न हो, जो बराबर चला गया हो, अंतररहित ।
४ जो एक या समान ही हो, जिसमें अंतर या भेद न हो ।
उ०—नवा नवा पंथ चल्या इस जग में, आप आपरी गाया । जोवै नूर निरंतर देख्या, कटो वडो क्यूं भाया ।
स्री हरिरामजी महाराज
५ जिसके बीच में अन्तर या फासला कम हो, निविड, घना
(डिं.को.)

निरंद—देखो 'नरेंद्र' (रू.भे.) (ह.नां.)

निर-अव्य० [सं० निर्] संस्कृत के निस का पर्यायवाची जिसका अर्थ है बाहिर, दूर, बिना, रहित । उ०—इक राह चाह लागो असुर, निर सहाय प्राकार नव । 'अवरंग' अथी पर उलटियो, दंग प्रगटियो जांण दव ।—रा.रू.

निरइयार—देखो 'निरतिचार' (रू.भे.) (जैन)

निरकांम—देखो 'निकांम' (रू.भे.)
उ०—नमो निरकत्य नमो निरकांम, नमो निरजीत नमो निरयांम । नमो निरभूप नमो निरभेख, नमो निर-रूप नमो निररेख ।
—ह.र.

निरकांमी—देखो 'निकामी' (रू.भे.)

निरकार, निरकारि—देखो 'निराकार' (रू.भे.)
उ०—वैकुंठ विलासि अपुन्न प्रकासि, अपार अपार अप्रंमपरं । निरकारि नरं मधु-कंटक मारण, विघन विडारण केवळ रूप वराह करं ।—पि.प्र.
उ०—१ केम हुवो ? ईसर कहै, कै जायो करतार । ब्रह्मा रुद्र विचार भ्रम, नहं जाणै निरकार ।—ह.र.
उ०—२ करत्तारलछिमतार कांन्हउ केसवं । जगदीस जैत जुरार ओपम जादवं । महरांण बांधण रांण मारण रांमणं । निरकारि कारि च्याइ अनाथ नाथ निरंजणं ।—पि.प्र.

निरकार-रूपी-सं०पु० [सं० निरन्तर प्रशस्त=लगातार अच्छे काम करने वाला] अर्जुन (ह.नां.)

निरकुरणो, निरकुरबो-क्रि०अ० [देशज] खिन्न होना, उदासीन होना । उ०—सो ओ तो सदाई रोखातो नै निरकुरतो दीठो ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

निरकुरो-वि० [देशज] उदासीन, खिन्न । उ०—केई केईक सासभोक विधांन अपसांण समैया रै ऊपरै निरकुरा हुवा थका विह्न सिव इस्ट अरचा करै छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

निरक्कणो, निरक्कबो-क्रि०स० [सं० निराकृतस्] पराजित करना, जीतना (जैन)
निरक्कणहार, हारो (हारी), निरक्कणियो—वि० ।
निरक्किओड़ो, निरक्कियोड़ो, निरक्कयोड़ो—भू०का०कृ० ।
निरक्कीजणो, निरक्कीजबो—कर्म वा० ।

निरक्कियोड़ो-भू०का०कृ०—पराजित किया हुआ, जीता हुआ ।
(स्त्री० निरक्कियोड़ी)

निरक्खणो, निरक्खबो—देखो 'निरखणो, निरखबो' (रू.भे.)
उ०—वंकां गिरां वधाय क थागै थाहरा । विलद मचांणां वैठि निरक्ख नाहरां ।—सिवबक्स पाल्हावत
निरक्खणहार, हारो (हारी), निरक्खणियो—वि० ।
निरक्खिओड़ो, निरक्खियोड़ो, निरक्खयोड़ो, निरख्योड़ो
—भू०का०कृ० ।
निरक्खीजणो, निरक्खीजबो—कर्म वा० ।

निरक्खियोड़ो—देखो 'निरखियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निरक्खियोड़ी)

निरक्षणो, निरक्षबो—देखो 'निरखणो, निरखबो' (रू.भे.)
उ०—नीरि निरक्षिय नीरज नीरज हाववं केमु । टाळइं ए केळीहर दीहर खळ जिम खेमु ।—नेमिनाथ फागु

निरक्षियोड़ो—देखो 'निरखियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निरक्षियोड़ी)

निरख-सं०स्त्री० [सं० निर+ईक्ष्, फा० निर्ख़] १ देखना क्रिया का भाव।
२ नेत्र, नयन (अ.मा.)
३ राज्य द्वारा वस्तु का तय किया गया भाव। उ०—गांव रै काज दीवांण राखी गुसट, लगोवग आय निज कांन लागा। चाटगा हजारां साल चौतीस री, निरख ले धांन री वळै नागा।
—ऊमरदांन लाळस
क्रि०प्र०—बांधणौ।
रू०भे०—नरख।

निरखणौ, निरखबौ-क्रि०स० [सं० निर+ईक्षणम्] १ अवलोकन करना, ताकना, देखना। उ०—१ फिर फिर निरख्यौ है बाग सैंया म्हारी ए। कोई दांतण तौ तोड़्यौ है काची केळ रौ जी राज।
—लो.गी.
उ०—२ नाळी ताई नाम निरखंतां, घणूं स ऊजळ ऊपर घणउ। चकवा रइ वचइ ज्यूं चुगती, तंत छाडियउ कुमोद तणउ।
—महादेव पारवती री वेलि
२ परीक्षा करना, जांच करना, देखना। उ०—दादू निरखि-निरखि निज नांम लै, निरखि निरखि रस पीव। निरखि निरखि पिव को मिळै, निरखि निरखि सुख जीव।—दादू वांणी
निरखणहार, हारौ (हारी), निरखणियौ—वि०।
निरखवाड़णौ, निरखवाड़बौ, निरखवाणौ, निरखवाबौ, निरखवावणौ, निरखवावबौ, निरखाड़णौ, निरखाड़बौ, निरखाणौ, निरखाबौ, निरखावणौ, निरखावबौ—प्रे०रू०।
निरखिप्रोड़ो, निरखियोड़ो, निरख्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निरखीजणौ, निरखीजबौ—कर्म वा०।
नरखणौ, नरखबौ, निखणौ, निखबौ, निरक्खणौ, निरक्खबौ, नीरखणौ, नीरखबौ—रू०भे०।

निरखदरोगो-स०पु०यौ० [फा० निर्ख+दारोग:] मुसलमानों के राजत्वकाल में बाजार का वह दारोगा जो चीजों के भाव या किस्म आदि की निगरानी करता था।

निरखनांमो-सं०पु०यौ० [फा० निर्ख+नाम+रा.प्र.ओ] मुसलमानों के राजत्वकाल की वह सूची जिसमें बाजार की प्रत्येक वस्तु का भाव लिखा रहता था।

निरखबंद, निरखबंदी-सं०स्त्री० [फा०निर्ख़-बंदी] किसी चीज का भाव या दर निश्चित करने की क्रिया।

निरखर-वि० [सं० निरक्षर] निरक्षर।
सं०पु०—ब्रह्मा।
उ०—अवधू मन कूं पकड़िवा, सेख कूं चूरिवा, मोह का मेटिवा पसारा, निरखर सबद ले निरमै खेलिवा, मन पवना गहि बांधिया पारा।—ह पु वा.

निरखियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ अवलोकन किया हुआ, ताका हुआ, देखा हुआ।
२ परीक्षा किया हुआ, जांच किया हुआ।
(स्त्री० निरखियोड़ी)

निरगंध-वि० [सं० निर्गंध] जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो, गंधहीन।

निरगंधता-सं०स्त्री० [सं० निर्गंधता] गंधहीन होने का भाव, गंधहीनता।

निरगम-सं०पु० [सं० निर्गम] निकास।

निरगमण-सं०पु० [सं० निर्गमन्] १ वह द्वार जिसमें से होकर निकलते हैं. २ निकलने की क्रिया या भाव।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

निरगात-वि० [सं० निर्गात] निराकार। उ०—सेवै तुझ पांव सदा मदसक्ख(?), इळा पग छांह मयक अरक्क। सेवै तो पांव समुंदर सात, निरजन पाव नमौ निरगात।—ह.र.
सं०पु०—विष्णु।

निरगुंडी-सं०स्त्री० [सं० निगुंडी] एक प्रकार का क्षुप जिसकी जड़ ओषधियों में व्यवहृत होती है।

निरगुंडीकल्प-सं०पु०यौ० [सं० निगुंडीकल्प] वैद्यक के अनुसार विशेष ढग से निगुंडी और शहद को मिला कर तैयार की हुई एक औषध।

निरगुंडीतेल, निरगुंडीतैल-सं०पु० [सं० निगुंडीतैल] वैद्यक में एक विशेष ढग से तैयार किया हुआ निगुंडी का तेल।

निरगुण-वि० [सं० निर्गुण] १ जो सत्व, रज और तम इन तीन गुणों से परे हो। उ—१ किं कहिसु तासु जसु अहि थाकौ कहि, नारायण निरगुण निरलेप। कहि रुखमिणि प्रदुमन अनिरुध का, सह सहचरिए नांम सखेप।—वेलि.
उ०—२ उंकार अरूप रूप निरगुण निरवांण।—केसोदास गाडण
२ स्वरूपरहित।
३ जिसमें कोई अच्छा गुण न हो, गुणरहित, बुरा, खराब।
उ०—१ एता दीह न जांणिया रे, निरगुण जांणी कत। हिव खिण जातउ वरससउ रे, जाइ मुझ विळवंत।—विद्याविलास पवाडउ
उ०—२ निरगुण अणविद्या छाई जग जिस्णू, विद्या बीसरिगौ सदगुण वस विस्णू। हा हा जगदीस्वर कैंड़ी पुळ हेरी, गाफल दुनियां पर अंड़ी पुळ गेरी।—ऊ.का.
उ०—३ अरुच अलंकृत अरथ सूं, निरगुण मन निरवाह। कुकवि ब्रह्मग्यांनी तणौ, रात दिवस इकराह।—वां दा.
४ मूर्ख, नासमझ।
सं०पु०—१ सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों से परे, ईश्वर, परमेश्वर। उ०—१ परमारथ रै कारणै, प्रभु संत बणाया ए। निरगुण से सरगुण होय स्वांमी, धरी जन काया ए।
—स्रो सुखरांमजी महाराज
उ०—२ किण रौ गुरुजी मैं तिलक बणाऊं, किणरी माळा फेरूं रे लोय। पंचमुदरा रो चेला तिलक बणावौ, निरगुण माळा फेर रे लोय।—स्री हरिरांमजी महाराज

१ विष्णु।
रू०भे०—निगुण, निगुरो, निग्गुण, निरग्गुण, नूगुण।
अल्पा०—निगुणो, निग्गुणो, निरगुणो।
निरगुणगार, निरगुणगारो—वि० [सं० निर्गुण+कारक] (स्त्री० निरगुणगारी) १ गुणों को निगुण करने वाला, गुणों को न मानने वाला, कृतघ्न।
२ जो गुणों से रहित हो, नासमझ।
उ०—ऐ ऐ ताहरा गुण किस्या ? निरगुणगारा कंत ! दाखवि रंग पतंग नुं, पछइ ऊतारिउ चित।—नळ-दवदंती रास
निरगुणता—सं०स्त्री० [सं० निर्गुण+रा. ता] गुणरहित होने का भाव।
निरगुणियो—वि० [सं० निर्गुण+रा०प्र० इयो] जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना करता हो।
निरगुणी—वि० [सं० निर्गुण] १ गुणों से रहित, मूर्ख।
२ अवगुणी।
वि०स्त्री०—बिना गुणों वाली।
रू०भे०—निगुणी।
निरगुणो—देखो 'निरगुण' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० निरगुणी)
निरगेह—वि० [सं० निर्गृहिन्] १ सर्वत्र निवास करने वाला, ईश्वर।
उ०—नमो निरध्रम्म नमो निराधार। नमो निरक्रम्म नमो निराकार। नमो निरनांम नमो निरनेह। नमो निरगांम नमो निरगेह।
—ह.र.
२ जिसके घर न हो, बिना घर का, निवासस्थान रहित।
निरग्गुण—देखो 'निरगुण' (रू.भे.)
उ०—निरग्गुण नाथ नमो जियनाथ, सबंगत देव नमो ससिमाथ।
निरग्रंथ—वि० [सं० निर्ग्रंथ] १ जिसकी कोई मदद करने वाला न हो, निःसहाय।
२ गरीब, निर्धन।
३ नासमझ, बेवकूफ, मूर्ख।
सं०पु०—१ एक प्राचीन मुनि का नाम।
२ बौद्ध क्षपणक।
३ दिगबर।
४ राग द्वेष अथवा परिग्रह रहित साधु, जो बाह्य एवं आभ्यान्तर ग्रंथि से मुक्त हो ऐसा साधु (जैन)
उ०—१ एहवो जांण निरग्रथ गुरु धारियै। कुगुरु, कुदेव, कुधरम निवारियै।—जयवांणी
उ०—२ अनै जो गुरु मिळै निरग्रंथ तो देव वतावै असल अरिहत।
—भि.द्र.
रू०भे०—निग्रंथ।
निरघात—सं०पु० [सं० निर्घात] १ वायु के तीव्र गति से चलने के कारण उत्पन्न शब्द जिस दिन के विभिन्न भागों में उत्पन्न होने के अनुसार फलित ज्योतिष द्वारा उसके आधार पर शुभ व अशुभ परिणाम निकाले जाते हैं। ऐसा शब्द होने के समय मंगल कार्य करना वर्जित है।
२ एक प्रकार का अस्त्र जिसका प्रचलन प्राचीनकाल में था।
निरघोख, निरघोस—सं०पु० [सं० निर्घोष] १ ध्वनि, शब्द, आवाज।
उ०—१ तेणि कतनु जांणी मोख, नळ ना सरखु रथ-निरघोख।
—नळाख्यांन
उ०—२ बजे निरघोस निसांण निहाव। गजे घर बोम सु मेघ हनाव।—शि.सु.रू.
उ०—३ पंच सब्द सम सम सरइ. निज निरघोस निपात। हल्ल करीनइ हलमलिउं, वीरसेन विख्यात।—मा.कां.प्र.
२ ध्वनिरहित, शब्दरहित।
निरछेह—वि० [सं० निर्+रा. छेह] जिसका छेह या अन्त न हो।
सं०पु०—ईश्वर।
उ०—निरालब निरलेप अचळ चरणां चित धारं। हरि निरगुण निरछेह, वार नहि लाभै पारं।—ह.पु वा.
निरजणो, निरजबो—क्रि०स० [सं० निर+जयति] अजय पद प्राप्त करना, विजय करना, जीतना। उ०—रथगजास्ट सहस्र जउ निरजणइ, दस सहस्र महाभट जो हणइ। फुरसरांम महाहवि निरजणिउ, इसिउं भीस्म पितामह मइं थुणिउ।—विराटपर्व
निरजणहार, हारो (हारी), निरजणियो—वि०।
निरजणिओड़ो, निरजणियोड़ो, निरजण्योड़ो—भू०का०कृ०।
निरजणीजणो, निरजणीजबो—कर्म वा०।
निरजणियोड़ो—भू०का०कृ०—अजय पद प्राप्त किया हुआ।
विजय किया हुआ, जीता हुआ।
(स्त्री० निरजणियोड़ी)
निरजर—सं०पु० [सं० निर्जर] १ वह जो जरा से बचा हुआ हो, देवता, सुर (डि.को.)
उ०—१ अंबर अहनर अवर निरजर। घरण हर हर रखो तिण घर।
—र.रू.
उ०—२ जहर घर सु नर निरजर नगर जोवतां, वहर तप हेक दिल गहर बीजो। बंबहर सूर गुर 'अमर' तण वेखतां तुलै नह वराबर भूप तीजो।—कविराजा करणीदान
२ अमृत, सुधा।
३ देखो 'निरझर' (रू.भे.)
वि०—कभी बुड्ढा न होने वाला, जिसे कभी बुढ़ापा न आवे।
रू०भे०—निज्जर, निरजुर।
निरजरानायक—सं०पु० [सं० निर्जर+नायक] इन्द्र, देवराज (डि.को.)
निरजरा—सं०पु० (ब० व०) [सं० निर्झरा] १ देव, देवता।
उ०—सरब सरब तू सांइआं, रांम किसन मां रांम। नाग नरां मां निरजरा, नांम मांहि न नांम।—पी.ग्रं.

[सं० निर्जरा] २ तपस्या के द्वारा कर्म फल का विच्छेद होने की क्रिया (जिससे आत्मा उज्ज्वलता को प्राप्त करता है।)

निरजळ-सं०पु० [सं० निर्जल] वह स्थान जहां जल का अभाव हो वा जल न हो (डि.को.)

वि०—१ जल के संसर्ग से रहित, विना जल का।

उ०—१ रसवीर मुरधर राव, दइवंत-गति दरसाव। रिम काळ रूप नरेस, दळ अकळ निरजळ देस।—रा.रू.

उ०—२ वन माफल वघवाव सूं, दुरद विसूकै डांण। जेठ लुवां सूकंत जिम, निरजळ देख निवांण।—बां.दा.

उ०—३ तप जिण सहु निरजळ तप्या, वार वरस घुरि मुंन म्हारा लाल। तिण में पारण दिन तिकै, ऊंडसै मैं इक ऊंन म्हारा लाल।
—ध.व.ग्रं.

२ जिसमें जल पीने का विधान न हो।

ज्यूं—निरजळ वरत।

रू०भे०—निरजळि।

अल्पा०—निरजळौ।

निरजळव्रत-सं०पु० [सं० निर्जलव्रत] १ वह उपवास या व्रत जिसमें जल पीने का विधान न हो।

२ वह व्रत या उपवास जिसमें उपवास या व्रत करने वाला जल भी न पिए।

निरजळा, निरजळा इग्यारस, निरजळा एकादसी-सं०स्त्री० [सं० निर्जला, निर्जला एकादशी] ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, इसका उपवास रखने वालों के लिए किसी भी प्रकार का आहार, पेय पदार्थ अथवा जल ग्रहण न करने का विधान।

उ०—जइ तुं पूछइ हो धरह नरेस! वनखंड रहती हरिणि कइ वेस। निरजळा करती एकादसी। एक अहेड़ी वनह मंझारी।
—बी.दे.

निरजळि—देखो 'निरजळ' (रू.भे.)

उ०—टळवळइ जिम निरजळि माछिळी। वळवळइ अति अगि वळी वळी।—विराट पर्व

निरजळौ—१ देखो 'नजळौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निरजळ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निरजळी)

निरजित, निरजीत-वि० [सं० निर्जित] १ जो वश में कर लिया गया हो।

२ जिसे जीत लिया गया हो, जीता हुआ। ३ वह जो जीता न जा सके। उ०—नमो निरअत्य नमो निरकाम, नमो निरजीत नमो निरयाम। नमो निरभूप नमो निरभेख, नमो निर-रूप नमो निर-रेख।
—ह.र.

निरजीव-वि० [सं० निर्जीव] १ प्राणरहित, जीवहीन, वेजान।

२ मृतक।

३ अशक्त, कमजोर।

निरजीवण-वि०—१ साहसहीन, पुरुषार्थहीन।

२ नपुंसक।

३ निर्बल, कमजोर।

४ वेजान, जीवरहित।

५ मृतक।

निरजुकति, निरजुगति—देखो 'निरयुक्ति' (रू.भे.)

निरजुर—देखो 'निरजर' (रू.भे.)

उ०—महामत महण जसगाथ मुनि बालमिक, कोट सत चिरत रघुनाथ कीधौ। इधक अनुराग कर पुरस निरजुर अही, लोह त्रिय भाग कर वांट लीधौ।—र.रू.

निरजोर-वि० सं० तिर+फा. जोर] १ निर्बल, बलहीन।

उ०—जुलफकार खां मारियो, मुगल थया निरजोर। माह महीनै जेठ ज्यौं, सद वहै सिरजोर।—रा.रू.

२ दुर्बल।

निरज्जरा—देखो 'निरजरा' (रू.भे.)

निरझर, निरझरण-सं०पु० [सं० निर्झर, निर्झरण] १ बादल, घन
(अ.मा.)

२ झरना, चश्मा, स्रोत (डि को.)

उ०—निरझरा निहार, अपुटी नितार। निरतेय नीर सुध कर सरीर।
—ऊ.का.

३ देखो 'निरजर' (रू.भे.)

वि०—श्वेत, सफेद* (डि.को.)

रू०भे०- नरझर, निझर, निझरण, नीझर, नीझरण।

अल्पा०—निझरणौ, नीझरणौ।

निरझरणी-सं०स्त्री० [सं० निर्झरिणी] सरिता, नदी (ह.नां., डि.को.)

रू०भे०—निझरणी, नीझरणी।

निरझरनदी-सं०स्त्री० [सं० निर्जरनदी] गंगा नदी। उ०—धोळी तो जळधार, नह न्हाया निरझरनदी। ग्या वै डूब गिवार, मांनव काळी-धार मझ।—बां.दा.

निरडर—देखो 'निडर' (रू.भे.)

उ०—लाट मुरधरा जोधांण के वरस लग, सुदतपण प्रकट कर चीत सांमंद। पंच सत उदक दे कवां नृप वीकपुर, निरडर वाध नरे संघ नरायंद।—द.दा.

निरणय-सं०पु० [सं०] १ किसी विवाद को सुन कर सत्य और असत्य के सम्बन्ध में कोई विचार स्थिर करने की क्रिया, निबटारा, फैसला।

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।

२ किसी विषय के दो पक्षों पर औचित्य और अनौचित्य आदि का विचार करके किसी एक पक्ष को ठीक ठहराना, किसी विषय में कोई सिद्धान्त स्थिर करना।

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।

३ किसी स्थिर सिद्धान्त के द्वारा किसी विषय की मीमांसा करते समय कोई परिणाम निकालना।

क्रि०प्र०—निकाळणौ।

रू०भे०—निरणं, निरणौ, निरनउ।

निरणयोपमा-सं०पु० [सं० निर्णयोपमा] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है।

निरणीत-वि० [सं० निर्णीत] जिसका फैसला हो चुका हो, निर्णय किया हुआ।

निरणेजक—देखो 'नरणेजक' (रू.भे.)

निरणं—देखो 'निरणय' (रू.भे.)

उ०—१ रे नीसांणी छंद रा, पढिया च्यार प्रकार। तिण लछण निरणं तिकौ, वरणं सुकवि विचार।—र.ज.प्र.

उ०—२ दाखं सो दस दोस रौ, निरणं निपट अनूप। वयण सगाई वरणवूं, रीति किती कविरूप।—र.रू.

उ०—३ निरखं ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणं लागा कहण। सगळं दोख विवरजित साहौ, हूं तौ जई हुऔ हरण।

—वेलि.

उ०—४ चंचळ चपळा सी चितवन चिरताळी। निरणं निगमागम नागम निरताळी। मादा मरजादा जादा मदमस्ती। वेली अलवेली छैली छदमस्ती।—ऊ.का.

निरणौ-वि० [सं० निरन्न] (स्त्री० निरणी) १ बुभुक्षित, भूखा।

उ०—१ बाबर बोखरिया ओढणियं आडं। डावर नयणां री टाबर वय डाडे। नवला नंगाती संगाती सणी। निरणी नव अंगा गंगा-जळ नैणी।—ऊ.का.

उ०—२ मरज्यौ मरज्यौ ए मिनड़ी थारोड़ौ पूत, म्हारोड़ौ बाटचौ तू ले गयी। राता री निरणी वीरा री बहनड़ी।—लो.गी.

उ०—३ च्यार महीना धूजी पांन-फूल खइया। च्यार महीना धूजी पवन ज भखिया। च्यार महीना धूजी निरणा रह्या। च्यार महीना धूजी जळ में रह्या।—लो.गी.

उ०—४ नारायण रौ नांम ज्यां, नह लीधौ निरणांह। वां जमवारौ बोळियौ, ज्यूं जगळ हिरणांह।—ह.र.

रू०भे०—नरणौ।

२ देखो 'निरणय' (रू.भे.)

उ०—१ साधौ भाई यो निरणा सब पारा, माया उदे अस्त ही माया, चेतन रह एक सारा।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ स्वांमीजी सूं चरचा करतां न्याय निरणौ बतायां पिण मांनं नहीं।—भि.द्र.

निरतंत-सं०स्त्री० [सं० नृतकी] १ अप्सरा (अ.मा.)

२ वेश्या।

३ देखो 'निरत' (रू.भे.)

उ०—थळ भांति गात निरतंत थाळि, भ्रम जात अतन तन रूप भाळि। जिण सक्ति परखि लजि तड़िति जात, व्रत गवन पवन मन ज्यों विख्यात।—रा.रू.

रू०भे०—निरतत, निरतति, नृतंत।

निरत-सं०पु० [सं० नृत्य] उछलने कूदने, हाथ पांव हिलाने आदि का व्यापार जो संगीत के ताल और गति के अनुसार होता है।

उ०—१ गणगोर नं सिणगार करावं छै। काजळ टीकी वा महदी लगावं छै। सहेल्यां का झूल में अहली-महलो फिरं छै। हर गणगोर आगं निरत करं छै।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ मधु आसोज मास रं मांही, निरत करत नवरत्ती। रास विलास पधारत रमवा, जगदबा जगजत्ती।—मे.म.

२ ६४ कलाओं में से एक।

३ ७२ कलाओं में से एक।

४ दृष्टि, निगाह। उ०—१ किण नं गुरुजी मैं पंथ चलाऊं, किण नं जोवण मेलूं रे लोय। सुरत नं चेला पंथ चलावौ, निरत नं जोवण मेलौ रे लोय।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ कंचन एक कांच में देख्या, है दीपक देह मांई। सुरत निरत की चढ़घा पावड़ी, सतगुरु सैन बताई।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ चित चेतन का किया चाबका, लिवरी लगांम लगांणा। मन पवन का घोड़ा कीजै, सुरत निरत चढ़ जाणा।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—४ नाभी निरत लगाय, सुखमण जोइयं। पांचू उलट समाय, ल हर जम खोइयं।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—५ रच्या रंग भांत भांत बहुता, खेल सब चेतन ते होता। निरत घर निगं करं थाता, सबौ रंग देख्या फेर जाता।

—स्री सुखरांमजी महाराज

वि० [सं० निरत] १ किसी कार्य में अनुरक्त, लगा हुआ, व्यस्त, मशगूल, लीन, तत्पर। उ०— रंभा जिम रूप संपन्न, पारवती जिम निःसीम सौभाग्य लावण्य। अरुंधती जिम निजपति, पद चरण निरत।—सभा.

२ आसक्त, अनुरक्त। उ०—साथ करं सिवदत्त रौ, धन चंद्रा सुरधांम। गुण सीता सत्वर गई, लै गळबांह ललांम। बंधुगढ़ जदुबंस फबं, हर राज बिनाफर। जमना तनया जास, सदन आणी वरि संभर। रुद्रदत्त जिण निरत, पुत्र जणिया कुळ-दीपक। सात जिकं रणसूर, प्रथम ईस्वर अवनीपक। भैरव तदग खयरब अभय, अभ्रवाज तिम बग्घउर। वळि अघ्नदेव सरखेल बुध, धारण सब कुळ धरमधर।—व.भा.

देखो 'निरति' (रू.भे.)

देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)

रू०भे०—नरत, निरती, निरतु, निरत्त, नृत्त, नृत, नृत्य, नृित, नृित्य।

मह०—नृतांण।

निरतक—देखो 'नरतक' (रू.भे.)

ज्यूं—भगवांन भूतनाथ निरतक री निरत देख राजी व्है गया।

निरतकर, निरतकार—वि० [सं० नृत्यकार] (स्त्री० निरतकारण, निरतकारणी) नृत्य करने वाला, नाचने वाला, नट।

उ०—१ कळहंस जांणगर मोर निरतकर, पवन ताळधर ताळपत्र। श्रारि तंतिसर भमर उपंगी, तीवट उघट चकोर तत्र।—वेलि.

उ०—२ सू मोर ज्यूं तंडव करै छै, निकुळी ज्यूं श्रग भांजै छै, श्रग ज्यूं उलहसै छै। भागा काळा मांकडां ज्यूं झांफां भरै छै। निरतकारण ज्यूं नाचै छै, नट ज्यूं उळटां खावै छै।—रा.सा.सं.

उ०—३ इण भांति री श्राखाड़ै रंभा पात्र निरतकारणी।
—रा.सा.सं.

रू०भे०—नृतकार, नृताकार, नृत्यकारी, नृितकार।

निरतकी—देखो 'नरतकी' (रू.भे.)

निरतणो, निरतबो—क्रि०श्र० [सं० नृती] नृत्य करना, नाचना।

उ०—चेत चेतन में चेतै सोई, नांम रूप मन सहित जो कोई। जैसे चुंबक लोह निरतावै, निरतै लोह चुंबक निरदावै।
—स्री सुखरांमजी महाराज

निरतणहार, हारौ (हारी), निरतणियौ—वि०।

निरतवाड़णो, निरतवाड़बो, निरतवाणो, निरतवाबो, निरतवावणो, निरतवावबो, निरताड़णो, निरताड़बो, निरताणो, निरताबो, निरतावणो, निरतावबो—प्रे०रू०।

निरतिश्रोड़ो, निरतियोड़ो, निरत्योड़ो—भू०का०कृ०।

निरतीजणो, निरतीजबो—भाव वा०।

नृत्तणो, नृतबो—रू०भे०।

निरतत, निरतनि—देखो 'निरतंत' (रू.भे.)

उ०—कुसमाकर श्रायो नवप्रिय मिळ मिळ। निरतत वाजै रतन रचै नूंपर झंक्रत।—रसीलेराज

निरतन—देखो 'नरतन' (रू.भे.)

उ०—मेड़त्यां कुळ मुरधरा मझ, श्रघपत्यां श्राधार। मगन मूरत मांहि निरतन, लई मीरां लार।—भगतमाळ

निरतनसाळ, निरतनसाळा—देखो 'नरतनसाळ, नरतनसाळा' (रू.भे.)

निरतप्रिय—स०पु० [सं० नृत्यप्रिय] १ शिव, महादेव।

२ स्वामी कार्तिकेय का एक श्रनुचर।

रू०भे०—नृत्यप्रिय।

निरतसाळ, निरतसाळा—सं०स्त्री० [सं० नृत्यशाला] नृत्य करने का स्थान, नाचघर।

रू०भे०—नृत्यसाळ, नृत्यसाळा, नृित्यसाळ, नृित्यसाळा।

निरताई—सं०स्त्री० [देशज] १ कायरता, नीचता, क्षुद्रता।

उ०—जिण कुळ री खोटो दिन व्है जद, निध जनमै निरताई नै। बाळापणो जवांनी बोई, बोवण चहत बुढ़ाई नै।—ऊ.का.

२ दरिद्रता, दारिद्र्य।

३ श्रनुरक्तता, लीन होने का भाव।

निरताड़णो, निरताड़बो—देखो 'निरताणो, निरताबो' (रू.भे.)

निरताड़णहार, हारौ (हारी), निरताड़णियौ—वि०।

निरताड़िश्रोड़ो, निरताड़ियोड़ो, निरताड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

निरताड़ीजणो, निरताड़ीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

निरतणो निरतबो—श्रक० रू०।

निरताड़ियोड़ो—देखो 'निरतायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निरताड़ियोड़ी)

निरताणो, निरताबो—क्रि०श्र०—१ लीन होना। उ०—कहै दास सगराम साच सांई नै भावै। देखो दिल निरताय जाट तेजा नै गावै।
—सगरांम

२ द्रव पदार्थ का बहना।

क्रि०स० ('निरतणो', क्रिया का प्रे०रू०) नृत्य कराना, नाच कराना।

निरताणहार, हारौ (हारी), निरताणियौ—वि०।

निरतवाड़णो निरतवाड़बो, निरतवाणो, निरतवाबो निरतवावणो, निरतवावबो—प्रे०रू०।

निरतायोड़ो—भू०का०कृ०।

निरताईजणो, निरताईजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

निरतणो, निरतबो—श्रक०रू०।

निरताड़णो, निरताड़बो, निरतावणो, निरतावबो—रू०भे०।

निरतायोड़ो—भू०का०कृ०—१ लीन हुवा हुश्रा।

२ (द्रव पदार्थ का) बहा हुश्रा।

३ नृत्य कराया हुश्रा, नचाया हुश्रा।

(स्त्री० निरतायोड़ी)

निरताळ—देखो 'निराताळ' (रू.भे.)

निरताळी—वि०स्त्री० [सं० नृत्य+श्रालुच्] नृत्य करने वाली, नाच करने वाली।

निरताळौ—वि०पु० [सं० नृत्य+श्रालुच्] (स्त्री० निरताळी) नृत्य करने वाला, नाचने वाला, नर्तक।

निरतावणो, निरतावबो—क्रि०श्र० [देशज] नाक बहना ?

उ०—सासा सणकावै नासा निरतावै। जीता मरिया जुग भिभरौ भररावै। पल पल पलकां सूं पड़ता परनाळा। मोटा मूंगां री होठां में माळा।—ऊ.का.

२ देखो 'निरताणो, निरताबो' (रू.भे.)

उ०—चेत चेतन में चेतै सोई, नांम रूप मन सहित जो कोई। जैसे चुंबक लोह निरतावै, निरतै लोह चुंबक निरदावै।
—स्री सुखरांमजी महाराज

निरतावणहार, हारौ (हारी), निरतावणियौ—वि०।

निरताबिओड़ौ, निरताबियोड़ौ, निरताव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निरतावीजणौ, निरतावीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
निरतणौ, निरतबौ—अक० रू०।

निरताबियोड़ौ-भू०का०कृ०—१
२ देखो 'निरतायोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० निरताबियोडी)

निरति-सं०स्त्री०—समाचार, खबर, सुध।
उ०—राजा कत्र जन पाटवइ, ढोलइ निरति न होइ। मालवणी मारइ तियउ, पुंगळ पंथ जिकोइ।—ढो.मा.
२ धैर्य, सान्त्वना।
३ खाली, रिक्त?
उ०—नितु नितु जोसी पूछीइ, नितु नितु सुकन सुभाव। नित नित निरति-विहूणडां आविइ वली वधाव।—मा.कां.प्र.
४ देखो 'निरत' (रू.भे.)
उ०—व्रम मूरति व्रजराज निरति खेलियौ निरंतर।—पी ग्रं.
५ देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)
उ०—निरति कूण को वाउ वाजै छै।—वेलि. टी.
रू०भे०—नृति।

निरतिकुण-देखो 'नैरित्यकोण' (रू.भे.)

निरतिचार-वि० [सं०] बिना अतिचार के, विशुद्ध। उ०—गुण सत्ताइस दीपता जी, पाळै है निरतिचार। भवि जीवां रा तारका जी, कर दियो खेवो पार।—जयवांणी
रू०भे०—निरइयार।

निरतियोड़ौ-भू०का०कृ०—नृत्य किया हुआ, नाचा हुआ।
(स्त्री० निरतियोड़ी)

निरती निरतु-वि० [सं० निरुक्त] १ स्पष्ट, निश्चित।
उ०—१ अह निरतिय कज्जळरेह नयणि मुहकमळि तबोळौ। नगोदर कंठलउ कंठि अनुहार विरोळौ। मरगदजादर कचुयउ फुडफुल्लह-माळा, करि कंकण मणि वलय चूड खळकावइ बाळा।
—प्राचीन फागु-संग्रह
उ०—२ स्त्री जिन सासनि गाहसिउं, लाभइ सुख अपार। अहे तप कुआो निरतु करैं, दया ति दस्तूरह जाणि।
—प्राचीन फागु-संग्रह
२ देखो 'निरत' (रू.भे.)
उ०—तुझ थी विस्वनइ घणु उपगार, तूं मोटउ गुण नु भंडार। भाग्य सोभाग्य करीनइ सार, तूं उत्तम निरतु सदाचार।
—नळ-दवदंती रास
रू०भे०—निरुतउ, निरुत्तउ, निरूतउ, निरूत्तउ, निरूत्तु।

निरतौ-वि०—१ कम, न्यून। उ०—लाभइ खारिक फोफळ द्राख, वळी नाळीयर लाभइ लाख। लाभइ सावू नइ कंटोळ, हाटि हाटि छइ निरतां तोल।—का.प्र.
२ हल्का, पोचा, कटु।
उ०—घर में मत खा फिरतौ घिरतौ, न कहे मरम बोलीजै निरतौ। ताऊं सूं मत तोड़ै तिरतौ, वडां रै काम म थाए विरतौ।
—ध.व.ग्रं.
४ नीच, पतित।

निरत्त—देखो 'निरत' (रू.भे.)
उ०—१ एक एक मुनिवर एहवा जी, सूत्र में कहियै निरत्त। संकल्प आथमियां पछै जी, उगियां पछै विरत्त।—जयवांणी
उ०—२ चक्रवति दिन पांचमैं, कियो दरबार सकारण। अदव थयो ऊमरां, पटा ऊधरां वधारण। वळै भाग सेवगा, लाग धारी समसत्तां। मागध वंदीजणां, सूत अदभूत निरत्तां।—रा.रू.

निरत्तारणौ, निरत्तारबौ-क्रि०स०—उद्धार करना, मोक्ष देना।
निरत्तारणहार, हारौ (हारी), निरत्तारणियौ—वि०।
निरत्तारिओड़ौ, निरत्तारियोड़ौ, निरत्तारयोड़ौ—भू०का०कृ०।
निरत्तारीजणौ, निरत्तारीजबौ—कर्म वा०।

निरत्तारियोड़ौ-भू०का०कृ०—उद्धार किया हुआ, मोक्ष दिया हुआ।
(स्त्री० निरत्तारियोडी)

निरत्याद-सं०पु० [सं० नृत्य] नृत्य, नाच। उ०—उमै रूप धारायणी साचेली जेहान आखै, तारायणी सिला-धू नाचेली निरत्याद। पारायणी प्रवाड़ां आचेली दछा दैण पातां, नारायणी रूप नमो काचेली अनाद।—नवलजी लाळस

निरथक—देखो 'निररथक' (रू भे.)
उ०—लगी गांव में लाय, तकै तोई डूंम तिवारी। साध सराहै सती निरथक व्है विधवा नारी। जावै मूरख जेळ, देखज्यो रह्यो न दोरौ। नकटी कटिया नाक, सास आवण कह सोरौ।—ऊ.का.

निरथौ-वि०—खराब, बुरी, नीच?
उ०—कोऊ ऊंट जो कढे तो डांग विन पैंड न सरकै। कोऊ दासी लै चलै तौ निपट निरथो को निरखै।—अरजुणजी वारहठ

निरदड-वि० [सं० निर्दण्ड] जिसे सब तरह की सजा दी जा सके, जिसे दण्ड दिया जा सके।
सं०पु०—शूद्र (जिसे सब प्रकार के दण्ड दिए जा सकें)।

निरदंद—देखो 'निरद्वंद' (रू.भे.)
उ०—१ यहु मन दाता होय दत करैं, यहु मन भूखा मांगै मरैं। आरभ करैं रहे निरदद, यहु मन मुक्ता यहु मन बंध।—ह.पु.वा.
उ०—२ निरससै निरदद, जोर नहि जेर न जरणा। नाद विंद नहि जीव, जनम नहि अवधि न मरणा।—ह.पु.वा.

निरदभ-वि० [सं०-निर्दम्भ] जिसे दंभ या अभिमान न हो, दंभहीन।

निरदय-वि० [सं० निर्दयी] दयाहीन, क्रूर, निष्ठुर।
उ०—१ ताजदार वैठो तखत, रज में लोटे रक। गिणै दुना नूं हेक गत, निरदय काळ निसंक।—बां.दा.
उ०—२ निरदय दीठा आंन भड़, कूकावै पर सैन। वाहे कंत दयाळ व्है, अरियां हाय सुणै न।—वी.स.

रू०भे०—निरदयी, निरदेई, निरद्दय ।

निरदयता-सं०स्त्री० [सं० निर्दयता] निर्दयी होने की क्रिया या भाव, निष्ठुरता । उ०—अमरस वेइतवार, निरदयता मन नासतिक । नर सम सार असार, पैलां घर वांछै पिसण ।—वां.दा.

निरदयी—देखो 'निरदय' (रू.भे.)

निरदळण-वि० [सं० निर्दलनम्] १ संहार करने वाला, मारने वाला, नाश करने वाला । उ०—उरध अबर उद्धरण, वेद ब्रहमा गाधा-ळण । दळ दांणव निरदळण अव्र रांमण चो गाळण । अम्मीखण जण करण, सबळ दैतां संघारण । नव्वनाथ निमधियण, त्रिविध लोकां ऊपावण । ससि सूर पवन पांणी सती, मुगति कीअ जांमण मरण । त्रैलोकनाथ 'जगियो' तवं, सरण राख असरण सरण ।

—ज.खि.

२ कष्ट देने वाला, दुःख देने वाला, पीड़ा पहुँचाने वाला ।

निरदळणौ, निरदळबौ-क्रि०स० [सं० निर्दलनम्] १ संहार करना, नाश करना, मारना । उ०—१ दळपति कोइ न दूजो वरदळि, निरदळिया मात लोक नर । करि ऊछजि विसकन्या कहियौ, राव तणै घरि लहीस वर ।—दूदो

उ०—२ ऊपर खांन तणौ दळ आया । अर निरदळता कमंध अछाया । ऊठी वाग दवाग अलल्लै । हेवै मार लियौ हरवल्लै ।

—रा.रू.

उ०—३ हरिणाकस निरदळियौ हाथे । गिळियौ गूद नमो अम-ग्यांन ।—पी.ग्रं.

उ०—४ घोडइ घाली द्रूपदि देवि साटै, मारइं कटकु मिळेवि । अरजुनि जांमुं दळु निरदळुं, राय तणुं तां सूकउ गळुं ।

—पं.पं.च.

२ कष्ट देना, पीड़ा पहुँचाना ।

निरदळणहार, हारौ (हारी), निरदळणियौ—वि० ।

निरदळाड़णौ, निरदळाड़बौ, निरदळाणौ, निरदळाबौ, निरदळावणौ, निरदळावबौ—प्रे०रू० ।

निरदळिओड़ौ, निरदळियोड़ौ, निरदळ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निरदळीजणौ, नीरदळीजबौ—कर्म वा० ।

निरदळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ, नाश किया हुआ ।

२ कष्ट दिया हुआ, पीड़ा पहुँचाया हुआ ।

(स्त्री० निरदळियोड़ी)

निरदाई, निरदायौ-वि० [सं० निर्+रा० दायौ] विना, बगैर, रहित ।

उ०—१ आतम ग्यांनी पुरुस जो, निरालंब निरदाई । नित निरमळ आकास ज्यूं, त्रिगुण लिपै न ताई ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ इच्छा रूपी ओमकार उपाया, सोई पुरुस सोई माया । माया मांय मांड सब मांडी, पारब्रह्म निरदाया ।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ उत्पति अरु तिथि लय वाहुते, वे निरदाया ए । गुप्त सूं गुप्त प्रगट सूं प्रगट द्रस्टा रहवाया ए ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—४ साधो भाई आतम अर्स अजाया, चेतन लियां चेत सब चेतै, आप रहत निरदाया ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—५ साधो भाई कर निरणय दरसाया, ग्यांन अग्यांन बताई माया, निज अनुभव निरदाया ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—६ नहिं ध्यां फुरणा नहीं अफुरणा, नहिं जीव नहिं माया । ईस्वर ब्रह्म कोऊ नहिं तामे, नहिं दाया निरदाया ।

—स्री सुखरांमजी महाराज

निरदावै-क्रि०वि० [सं० निर+अ० दावा] १ विना उज्र के, बिना ऐतराज के ।

उ०—१ अंधै को अंधा घर के कंधा, चल कर पार चहूंदा है । नगटा निरदावै जमपुर जावै, खरहर खाद खविंदा है ।—ऊ.का.

उ०—२ खट उरमी का जीत विकारा । सदा सुछंद संत जन प्यारा, रह नित ही निरदावै ।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ अळगा एकांयत नीयत निरदावै । धूणीं अवधूतां दूणीं धुक-वावै । पूरा पोमाहै सूरा सत सावै । पीता मरियोड़ा जीता पद पावै ।

—ऊ.का.

२ देखो 'निरदायौ' (रू.भे.)

निरदायौ-सं०पु० [सं० निर+अ० दावा] स्वत्व हटाने का लेख, सुलहनामा ।

वि०—अधिकारहीन, अनधिकार ।

निरदिस्ट-वि० [सं० निर्दिष्ट] १ जिसके सम्बन्ध में पहले ही कुछ बतलाया या निश्चय कर दिया गया हो, नीयत किया हुआ, बतलाया हुआ, ठहराया हुआ, निश्चित ।

ज्यूं—म्हारी गाडी निरदिष्ट टैम मातै रवांना व्हैगी ।

ज्यूं—दिन वदतां वदतां म्हे सैंग जणा निरदिस्ट जगै मातै आय ग्या ।

२ जिसका निर्देश हो चुका हो ।

निरदूख, निरदूखण, निरदूस निरदूसण—देखो 'निरदोस' (रू.भे.)

उ०—१ खट कास्टैं निरदूख खित, आहुत घिरत कपूर । दिव पंडित वेदी सद्रढ़, सोभत अगनि सनूर ।—रा.रू.

उ०—२ मुहादाई नैं मुहाजीवी ले, निरदूसण आहारी रे । निरजरा हेते करै तपस्या, फिर फिर न करै हारी रे ।—जयवांणी

निरदेई—देखो 'निरदय' (रू.भे.)

निरदेस-सं०पु० [सं० निर्देश] १ किसी के सम्बन्ध में संकेत करना, किसी पदार्थ को बतलाना ।

२ निश्चित करने या ठहराने की क्रिया या भाव ।

३ नाम, सज्ञा ।

४ उल्लेख, जिक्र ।

५ कथन ।

६ वर्णन ।
७ हुक्म, आज्ञा, आदेश (डिं.को.)
रू०भे०—निद्देस ।
निरदेसक-वि० [सं० निर्देशक] १ निर्देश या आदेश देने वाला । (डिं.को.)
२ सूचित करने वाला, संकेत करने वाला, उपाय, तरीका, रीति या मार्ग दिखलाने वाला, प्रदर्शक ।
निरदेह-वि० [सं० निर्+देह] बिना आकृति या देह का, निराकार ।
उ०—नमो निरव्रत्त नमो निरनेह । नमो निरदत्त नमो निरदेह । —ह.र.
रू०भे०—निरादेह ।
निरदोख—देखो 'निरदोस' (रू.भे.)
उ०—१ वसंत पंचमी करो विमाहौ । सुध निरदोख वेद विध साहौ । —सू.प्र.
उ०—२ नमो निरलेप नमो निरकार । नमो निरदोख नमो निरधार ।—ह.र.
निरदोखता—देखो 'निरदोसता' (रू.भे.)
निरदोखी—देखो 'निरदोसी' (रू.भे.)
निरदोखौ—देखो 'निरदोस' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—आस्रब संबर नै निरजरा, जांण्या छै बंध नै मोखौ रे । दांन दै चवदे प्रकार नो, सुध साधवां भणी निरदोखौ रे । —जयवांणी
निरदोस-वि० [सं० निर्दोष] जो किसी दोष से सम्बन्धित न हो, जिसने कोई अपराध न किया हो, वेकसूर ।
ज्यूं—इण गरीव आदमी रो कीं कसूर कोयनी औ तो बापड़ो बिलकुल निरदोस है ।
उ०—भूम वहंतो को जण भाळै, वडवाग जिम समंद विचाळै । कमंध खड़ा आगै दस कोसां, दाखै कथ निरदोसां दोसां । —रा.रू.
२ जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो, वे-ऐब, दोषरहित, निष्कलंक, वेदाग ।
उ०—१ नमो सच्चिदानंद भक्तवत्सल भयहरता, सास्वत असरण सरण करण कारण जग करता । निराकार निरलेप निगम निरदोस निरंजन, दीरघ दीनदयाळ देव दुख दाळद भंजन ।—ऊ.का.
रू०भे०—निरदूख, निरदूखण, निरदूस, निरदूसण, निरदोख, निरदोह ।
अल्पा०—निरदोखौ ।
निरदोसता-सं०स्त्री० [सं० निर्दोष+रा.प्र.ता] निर्दोष होने की क्रिया या भाव, शुद्धता ।
रू०भे०—निरदोखता ।
निरदोसी-सं०स्त्री० [सं० निर्दोषित्] जिसने कोई अपराध न किया हो, निरपराध, वेकसूर ।
रू०भे०—निरदोखण, निरदोखी, निरदोसण, निरदोही ।
निरदोसण—देखो १ 'निरदोस' (रू.भे.)
उ०—निरदोसण अंत भोगवी, जीतसी हो मोहमाया रो मांनु । —जयवांणी
२ देखो 'निरदोसी' (रू.भे.)
निरदोह—देखो 'निरदोस' (रू.भे.)
उ०—अलिप अछिप जहां तहां छिपा, छाया पड़ै न छोह । सकळ भवन पति सति सदा, निरामोह निरदोहा ।—ह.पु.वा.
निरदोही—देखो 'निरदोसी' (रू.भे.)
निरद्दय—देखो 'निरदय' (रू.भे.)
निरद्धाटणौ, निरद्धाटवौ—देखो 'निरघाटणौ, निरघाटवौ' (रू.भे.)
उ०—सीमाड़ा सवे वस कीधा, सवे गढ़ लीधा, गढवद्द सवि निरद्धाटिया, दुरग सवे आपणा कीधा, समुद्र लगि आपणी आंण फेरि ।—व.स.
निरद्धाटणहार, हारो (हारी), निरद्धाटणियो—वि० ।
निरद्धाटिओड़ो, निरद्धाटियोड़ो, निरद्धाट्योड़ो—भ०का०कृ० ।
निरद्धाटीजणौ, निरद्धाटीजवौ—कर्म वा० ।
निरद्धाट्योड़ो—देखो 'निरघाटियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निरद्धाटियोड़ी)
निरद्वंद, निरद्वंद्व-वि० [सं० निर्द्वंद्व] १ जो सुख दुःख, मान अपमान, राग द्वेष आदि द्वंद्वों से परे या रहित हो, जो हर्ष शोक से रहित हो ।
उ०—निरद्वंद नाथ, आस्रम अनाथ । वह स्रस्टीवार, प्रळयांत पार । —ऊ.का.
२ जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी न हो, जिसका कोई विरोध करने वाला न हो ।
३ बिना बाधा का, स्वच्छंद ।
४ विकाररहित ।
रू०भे०—निरदंद, निरधुंद ।
निरधण-सं०पु० [सं० निर+रा० धण] १ वह पुरुष जिसके पत्नी न हो, विधुर ।
उ०—नरति प्रसरि निरधण गिरि नीझर, घणी भजै घण पयोधर । झोलै वाइ किया तरु झखर, लवळी दहन कि लू लहर ।—वेलि.
२ देखो 'निरधणियो' (मह., रू.भे.)
३ देखो 'निरधन' (रू.भे.)
उ०—रुपैया तो भोतेरा ले लो, म्हांरां रो निरधण अंत न पार । तिलां तो भोतेरो ले लो, अगिया रो निरधण अंत न पार । —लो.गी.
रू०भे०—निरध्धण ।
निरधणियो—१ देखो 'नीधणी' (अल्पा., रू.भे.)

निरधारियोड़ो-भू०का०कृ०—निश्चित किया हुआ, निर्धारित किया हुआ (स्त्री० निरधारियोड़ी)

निरधारो—देखो 'निरधार' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—तीन दिनां सूं साक मिळै तोई धोको हिये न धारो। सूंक लेर पधरावै सीरो, नहीं नीको निरधारो।—सू.प्र.

निरधुंद—देखो 'निरद्वंद्व' (रू.भे.)

उ०—१ ब्रह्मानंद निरधुंद स्वच्छंदा, सत सरवग्य वेद संत कहंदा।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ धंद मिटिया जन निरधुंद पाया, आतम रांम अरागी। कह सुखरांम मिटी सब त्रिस्णा, अनुभव उगती जागी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

निरधूंम, निरधूम-सं०पु० [सं० निर्+धूम्र] १ धुआंरहित।

उ०—भरमल री दोनूं आख्यां रा पटल दूर हुवग्या, जिसा निरधूम दिया होय।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ किसी प्रकार की रुकावट के बिना, निःशंक।

उ०—धारूजळ भाट धुबै निरधूम, भिड़ै 'कुसळेस' समोभ्रम 'भूंम'।

—सू.प्र.

निरध्रण—देखो 'निरधण' (रू.भे)

उ०—उत्तार आज स वज्जियउ, सीय पड़ेसी पूर। दहिसी गात निरध्रणा, धण चंगो धर दूर।—ढो.मा.

निरध्रम्म—देखो 'निरधरम' (रू.भे.)

उ०—नमो निरध्रम्म नमो निराधार, नमो निरक्रम्म नमो निराकार। नमो निरनांम नमो निरनेह, नमो निरगांम नमो निरगेह।

—ह.र.

निरनउ—देखो 'निरणय' (रू.भे.)

उ०—अढार लिपिनइं विसय कुसळ चऊद विद्याविसाळ, अढ़ार व्याकरण निरनउ दिइ।—व.स.

निरपक्ख, निरपक्ष, निरपख-सं०पु० [सं० निर्पक्ष] १ जिसके किसी प्रकार का पक्ष न हो या जो किसी प्रकार का पक्ष न रखता हो, ईश्वर।

उ० —१ नमो निरव्यंग्य नमो निरवांण, नमो निर-पग्ग नमो निर-पाणि। नमो निरपक्ख नमो निरप्रेह, नमो निरदक्ख नमो निरदेह।

—ह.र.

उ०—२ चौरासी लाख भख दियण, निरपख निरवांणी।

—केसोदास गाडण

२ मातृ-पितृ पक्ष-रहित।

उ०— अद्रिस्टि अक्षिर अरूप, अथाह निरमोह सन्यारं। निरामूळ निरधार, निकुळ निरपख निजसारं।—ह.पु.वा.

३ निष्पक्ष।

उ०—अप मारग की आपदा, धुळि गांठि न खोलै। लोक लाज लालचि पडया, निरपख न्है बोलै।—ह.पु.वा.

४ वह व्यक्ति जिसका सहायक, मित्र आदि न हो।

उ०—निज संतां तारं धणनांमी, नहच्चो ज्यां नेंड़ो धणनांमी। निरपखां पखो धणनांमी, नाथ अनाथां चो धणनांमी।

—र.ज.प्र.

निरफळ—देखो 'निस्फळ' (रू.भे.)

उ०—१ भंडसुरी सदगति लहै रे, करणी निरफळ न जाय। सुक-देव प्रमुख सिद्ध हुवा रे, वेद ई वरता थाय रे।—जयवाणी

उ०—२ करता विस्वंभर कसरां काह कांई। नागरवेली दळ निरफळ फळ नाहीं। दाता घर दाळद भुगतै हठ भाया। मूंजी मिनखां नै सूंपै सठ माया।—ऊ.का.

रू०भे०—नरफळ, नूफळ।

निरबंद, निरबंध, निरबंधन-वि० [सं० निर्+बंध या बंधन] बंधन-रहित बंधनमुक्त। उ०—१ ग्यांन कथे अरु माया संग्रह, मन तो मैला भाई। ग्यांनी सोई निरबंद माया सूं, द्रस्य गहै नहिं काई।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ राजा भरथरी गोपीचंदा, माया तज रहता निरबंदा, ग्यांन फकीरी योई।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ ललत त्रिभंगी लाडले, मेघ वरण महाराज। ग्राह फंद निरबध कर, तुमें हमारी लाज।—गजउद्धार

उ०—४ सांच न सूझै जब लगैं, तब लग लोचन नांहि। दादू निरबध छाड कर, बंध्या द्वै पख मांहि।—दादूवांणी

उ०—५ कइक सती कइक यती, दोऊ बंद बंधाया। निरबंधन अलख अविनासी, जिन खोज्या सोइ पाया।

—स्री हरिरांमजी महाराज

निरबंस—देखो 'निरवंस' (रू.भे.)

उ०—किल मारवारि बस करहिं कोय। हम हंस-वंस निरबंस होय।

—ऊ.का.

निरबद-वि० [सं० निर्वद्य] दोषरहित, विशुद्ध। उ०—आय नैं उतरया कोस्टक वाग में रे, निरबद जायगा जोय।—जयवांणी

निरबरणन-सं०पु० [सं०] देखना क्रिया का भाव (डि.को.)

निरबळ-वि० [सं० निर्बल] बलहीन, कमजोर (डि.को.)

उ०—रुदन करै कळपै तिया, पिय कुं निरबळ देख। कित कजळी-वन उदधि कित, लिख्यो विधाता लेख।—गजउद्धार

रू०भे०—नबळ, निबळ, निवळ, नूबळ।

अल्पा०—निबळियो, निबळोड़ो, निवळोड़ो, निबळो, निवळो।

निरबळता-सं०स्त्री० [सं० निर्बल+रा.प्र.ता] कमजोरी, सुस्ती, शक्तिहीनता।

रू०भे०—निबळाई।

निरबहणो, निरबहबो—देखो 'निरवहणो, निरवहबो' (रू.भे.)

निरबहणहार, हारो (हारी), निरबहणियो—वि०।

निरबहिओड़ो, निरबहियोड़ो, निरबह्योड़ो—भू०का०कृ०।

निरवहीजणौ, निरवहीजबौ—कर्म वा० ।

निरवहियोड़ौ—देखो 'निरवहियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निरवहियोड़ी)

निरवांण, निरवांणी—सं०पु०—१ चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
२ तीर, शर (डि.नां.मा.)
३ पाताल (डि.नां.मा.)
उ०—चाचर मांगणहार नसाचर । चतुर प्रेत अवै निरवांण । सकति समळि सिद्धि ग्रीधणि । 'रतनै' मोकळिया आरांण ।—दूदौ
४ देखो 'निरवांण' (रू.भे.)
उ०—१ अवधू जोगी जुगते न्यारा, पद निरवांण निरंतर बैठा, चिंता करि चारा ।—ह.पु वा.
उ०—२ तत ले निरवांण क राज तियाग, गोपीचंद भरत्थरियं ।
—गु.रू.बं.
उ०—३ दादू पहली आप उपाइ कर, न्यारा पद निरवांण । ब्रह्मा विस्णु महेस मिळ, बांध्या सकळ बंधांण ।—दादूबांणी
उ०—४ निज घर परा पार निरबांन, थकत बेखरी गांना ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

निरवाचन—देखो 'निरवाचन' (रू.भे.)

निरवाह—देखो 'निरवाह' (रू.भे.)
उ०—१ अवर दवाळा अवर विध, नहीं मत्त निरबाह । ईसर बारठ अविखयो, असम चरण यण राह ।—र.ज.प्र.
उ०—२ द्रग देख दया उपदेस दिए, निरबाह बिसेसन सेस लियें ।
—ऊ.का.

निरवाहणौ, निरवाहबौ—देखो 'निरवाहणौ, निरवाहबौ' (रू.भे.)
निरबाहणहार, हारौ (हारी), निरवाहणियौ—वि० ।
निरवाहिग्रोड़ौ, निरवाहियोड़ौ, निरवाह्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निरबाहीजणौ निरवाहीजबौ—कर्म वा० ।

निरवाहियोड़ौ—देखो 'निरवाहियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निरबाहियोड़ी)

निरविकार—देखो 'निरविकार' (रू भे)
उ०—एक तूझ आदेस, जगत-पति तुझ जोगेस्वर । निरबिकार आदेस, नेति आदेस नरेसर ।—ह.र.

निरबीज—वि० [सं० निर्वीज] जिसका वंश चलाने वाला कोई न हो, निःसंतान । उ०—१ द्रुत मरुधन्वा लीजै दबाय । जब राजबीज निरवीज जाय ।—ऊ.का.
उ०—२ निरबीज करूं राकस निकर, मेटूं फिकर त्रिलोकमिण । घारूं बभीखण लंक घणी, तो हू दसरथ राव तण ।—र.रू.
उ०—३ मुंड चड महिसासुर मारे । सुंभ निसुंभ सकळ संहारे । जनमें रक्तबीज तन ज्यों ज्यों । तैं निरबीज किये हनि त्यों त्यों ।
—मे.म.
२ जिसमें बीज न हो, बीजरहित । उ०—चिरजीव जरा जननी न जनै । निरबीज धरा कबहू न बनै ।—ऊ.का.
३ जो कारण से रहित हो, जो कारण से परे हो ।
रू०भे०—निरवीज, निव्बीज ।
अल्पा०—निबीजो, नीबीजौ ।

निरबुद्धि, निरबुधी—वि० [सं० निर्बुद्धि] जिसे समझ न हो, बुद्धिहीन उ०—मेट मेछांण धींगांणा जेण हिंदवांण किया मारू । मोखांणा पुरांण के दिरांणा नवा मोज । निरबुधी रांणा जिसा सांसणां रा लिये नांणा । नाणा ले जोधांण धणी सांसणां सा नोज ।
—महाराजा मानसिंह री गीत

निरबोध—वि० [सं० निर्बोध] जिसे भले-बुरे का कुछ भी ज्ञान न हो, जिसे कुछ भी बोध न हो, अनजान, अबोध ।

निरबोह, निरवौह—वि० [सं० निर्+फा वू] गंधरहित, वासनारहित ।

निरब्भै—देखो 'निरभय' (रू.भे.)

निरव्रती—सं०पु० सं०] सुख (डि.को.)

निरभय—वि० [सं० निर्भय] जिसे किसी प्रकार का भय न हो, जिसे कोई डर न हो, निडर, बेखौफ । उ०—१ अखिलेस अनूपम एक अज, अजरामर महिमा अजय । नित निरविकार निरभय निपुण, नारायण करुणानिलय ।—ऊ.का.
उ०—२ वैरागवृद्धि, सुख बळ समृद्धि । निरभय निसांन, निरधन निधांन ।—ऊ.का.
पात विन महाप्रतापी, निरभय तेज उनंगी ।—ऊ.का.
रू०भे०—नरभै, निव्भय, निर्भै, निर्म्भै, निरव्भै, निरभै, निरम्भय, निरम्भै, नीभर, नीरभै, नृभै, निृभै ।

निरभयता—सं०स्त्री० [सं० निर्भयता] १ भयरहित होने का भाव । निडरता ।
२ भयरहित होने की अवस्था । उ०—कायरता सुणत न कथा, नित निरभयता मन्न । पवन गता तता पसंग, 'पत्ता' चढ़ण प्रसन्न ।
—जैतदान बारहठ

निरभर—वि० [सं० निर्भर] १ आश्रित, अवलम्बित ।
२ भरा हुआ, पूर्ण ।
३ मिला हुआ, युक्त ।
रू०भे०—नीभर ।

निरभागी—देखो 'निभागी' (रू.भे.)
उ०—हूं तौ धणी-ई बेटौ वणावण नै त्यार हूं, पण मैं निरभागण री बेटौ वणै कुण ?—वरसगांठ
(स्त्री० निरभागण)

निरभाड़णौ, निरभाड़बौ—देखो 'निभाणौ, निभाबौ' (रू.भे.)
निरभाड़णहार, हारौ (हारी), निरभाड़णियौ—वि० ।
निरभाड़िग्रोड़ौ, निरभाड़ियोड़ौ, निरभाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निरभाड़ीजणौ, निरभाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

निरभाड़ियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निरभाड़ियोड़ी)

निरभाणो, निरभाबो—देखो 'निभाणो, निभावो' (रू.भे.)
उ०—सांम के धरम की सरम सिंघ साही। ऐसी कौन करै जैसी कायथ निरभाई।—रा.रू.
निरभाणहार, हारो (हारी) निरभाणियो—वि०।
निरभायोड़ो—भू०का०कृ०।
निरभाईजणो, निरभाईजबो—कर्म वा०।

निरभायोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निरभायोड़ी)

निरभावणो, निरभावबो—देखो 'निभाणो, निभावो' (रू.भे.)
निरभावणहार, हारो (हारी), निरभावणियो—वि०।
निरभाविओड़ो, निरभावियोड़ो, निरभावयोड़ो—भू०का०कृ०।
निरभावीजणो, निरभावीजबो—कर्म वा०।

निरभावियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निरभावियोड़ी)

निरभीक-वि० [सं० निर्भीक] जिसे भय न हो, निडर, निर्भय।

निरभीकता-सं०स्त्री० [सं० निर्भीक+रा.प्र.ता] निडर होने की क्रिया या भाव, निडरता।

निरभीत-वि० [सं० निर्भीत] जो निडर हो, निर्भय।

निरभै, निरभ्भै, निरभ्भय—देखो 'निरभय' (रू.भे.)
उ०—१ सखी अमीणो साहिबो, निरभै काळो नाग। सिर राखै मिण सांमध्रम, रीझै सिंधूराग।—बां.दा.
उ०—२ जड़ चेतन कूं जोय, हंस निरभै थया। तन मन गया विलाय, ब्रह्म केवळ रया।—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—३ बुध व्याधिय आधि उपाधिय में, सुध लाधिय सुन्य समाधिय में। निरभै तन रोग वियोग नहीं, सुपनै मन संसय सोग नहीं।—ऊ.का.
उ०—४ निरभ्भै डड निरास अधारी, कंथा अजर अपारं। भिख्या अगम निरंतरि दीवी, आसण सुनि हमारं।—ह.पु.वा.
उ०—५ निरभ्भय कौन 'अभैमन' नार।—ह.र.
उ०—६ करणहार कुरबांण, अनंमां नांमणा। भारत वरस सदैव मलां लै भांमणां। राठौड़ां कुळ रीत अवंनी अजसै। वसुधा ज्यारै पांण निरभ्भै व्है वसै।—किसोरदांन बारहठ

निरभ्रम-वि० [सं० निभ्र्रम] जिसमें संदेह न हो, भ्रमरहित, शंकारहित, निश्चित, निःशंक।
क्रि०वि०—बिना भय के, बिना संकोच के, निधड़क, बेखटके, स्वच्छंदता से।
रू०भे०—निभरम, निभ्रम।
अल्पा०—निभरमो, निभ्रमो।

निरभ्रांत-वि० [सं० निभ्र्रांत] १ जिसको कोई शंका न हो।
२ जिसमें कोई संदेह न हो, भ्रमरहित, निश्चित।
रू०भे०—नि०भंत, निभ्रंत।

निरभ्रांतता-सं०स्त्री० [सं० निभ्रांति+रा.प्र.ता] भ्रमरहित होने का भाव, चित्त का स्थिर होना, शान्ति।
रू०भे०—निभरांताई।

निरमणो, निरमबो-क्रि०स० [सं० निर्मनम्] १ उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्म देना। उ०—१ ज्यूं राखै ज्यूं रहै, जहां निरमै तहीं जावै। हुकम सो ही सिर हुवै, जिको मीरां फुरमावै।—ह.र.
उ०—२ हूं तो हत्यां भांमणै, वडा समत्था वेह। ज्यां 'जेहा' जादव जिसो, नर निरमियो नरेह—बां.दा.
२ निर्माण करना, बनाना, रचना।—उ०—हेकौ काज न व्हे सकै, आवो संत असंत। मावड़िया खिण खिण मता, नवा नवा निरमंत।—बां.दा.
निरमणहार, हारो (हारी), निरमणियो—वि०।
निरमवाड़णो, निरमवाड़बो, निरमवाणो, निरमवाबो, निरमवावणो, निरमवावबो—प्रे०रू०।
निरमिओड़ो, निरमियोड़ो, निरम्योड़ो—भू०का०कृ०।
निरमीजणो, निरमीजबो—कर्म वा०।
निरमाणो, निरमाबो. नींमजणो, नींमजबो, नींमणो, नींमबो—रू०भे०

निरमद-वि० [सं० निर्मद.] बिना मद का, मद उतरा हुआ (हाथी)

निरमदा—देखो 'नरमदा' (रू.भे.)
उ०—महाराष्ट्र कांमाक्ष आभीर, कच पापांतिक निरमदा नीर। वोढ़उर अनइ भलूं स्रीमाळ, दक्षणदेसि जीपीआ भूपाळ।—नळ-दवदंती रास

निरमन-वि० [सं० निर्मन]—मनरहित।
उ०—निरमन सता हमारी केवळ, मनमाया नहिं बाजी। है सुखरांम बोध सोई बोधक, सुद्ध स्वरूप सदा जी।—स्री सुखरांमजी महाराज

निरमळ-वि० [सं० निर्मल] १ जिसमें मल न हो, मलरहित, साफ, स्वच्छ। उ०—१ मूक्यां सघळां सुरहां घोळ। जिमवानउ हिव हूउ निरोळ। आव्यां वास्यां निरमळ नीर। आव्यां कर लूहेवा चीर।—विद्याविलास पवाडउ
उ०—२ अगणित अबळावां छावां जुत आई। निरमळ नैणां जळ वळ वळ विलळाई। भारी नांणा विन दांणा विन भूमै। घर री रदनोरी सदनां बिन घूमै।—ऊ.का.
२ पवित्र। उ०—१ वांणी पवित्र करिस सीतावर, नित-प्रत कीत प्रकासै नरहर। नासा विसन करिस इम निरमळ, प्रभु घूंटे तो चरणां-परमळ।—ह.र.
उ०—२ पवित्र प्रयाग 'रतनसि' पोहकर। मन निरमळ गंगाजळ जेम। नर नादेत नरिंद नरेहण। निकळंक निघुट निपाप निगेम।—दूदो
३ पापरहित, निष्पाप, शुद्ध।

उ०—१ धरमी पंथि चालइं सवि वार । एक सागर करम दही करइं छार । सांमि दरिसण नउ फळ जोइ, पीह नउं समकित निरमळ होइ । —चिहुगति चउपई

उ०—२ जळ जेथे जगदीस, भाखै जग भागीरथी । सो व्है पुहमी सीस, तो जळ सूं निरमळ तुरत ।—बां.दा.

उ०—३ नाथ निरंजण वार न पारा, निराकार निरमळ ततसारा । ताहि भेद जांणै नहिं कोय, भेदी हरि सूं न्यारा नहिं होय ।

—ह.पु.वा.

उ०—४ सत की नाव सतगुरु खेवटिया, सतसंग सुगरा पाई । निरमळ संत समझ को मारग, हिळमिळ नाव चलाई ।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—५ धरती जैसी धीरज कहियै, समुद्र ज्यूं गंभीर । आरपार कोई थाह न आवै, यूं संतां मत धीर । निरमळ पोते रे, दूजा मळ दूर करी ।—स्री सुखरांमजी महाराज

४ दोषरहित, निर्दोष, निष्कलंक ।

उ०—१ अलावा इण रै सब सूं मोटी बात ही ठाकर री निरमळ चाल-चलण । इण रै वास्तै मोटी सो मा अर नैनी सो वैन ।

—रातवासौ

उ०—२ तुझ नांमै पांमै वांछित फळ, तुझ नांमै बहु बुद्धि जी । तुझ नांमै लहियै जस निरमळ, तुझ नांमै कुळ सुद्धि जी ।

—स्रीपाल

५ सफेद, श्वेत* ।

सं०पु०—१ आंख, नयन ।

२ देखो 'निरमळी' (रू.भे.)

रू०भे०—निम्मळ, निरम्मळ, नूम्मळ, नूमळ, नि्मळ, नि्म्मळ ।

अल्पा०—निमळौ, निम्मळौ, निरमळौ, नि्मळौ, नि्म्मळौ ।

निरमळा-सं०स्त्री० [सं० निर्मल+रा.प्र.आ] १ एक नदी का नाम ।

२ आँख, नेत्र ।

३ नानगशाही साधुओं की एक शाखा विशेष ।

वि०वि०—इस शाखा के प्रवर्त्तक रामदास नामक महात्मा थे ।

—मा.म.

रू०भे०—नूमळा, नि्मळा, नि्म्मळा ।

निरमळी-सं०स्त्री० [सं०निर्मली] १ बंगाल, मध्यभारत, दक्षिण भारत, बरमा आदि में पाया जाने वाला एक प्रकार का मझला सदाबहार वृक्ष जिसके फल के गूदे व बीजों का वैद्यक मे उपयोग होता है ।

(अमरत)

वि०स्त्री०—देखो 'निरमळी' (रू.भे.)

उ०—१ महि पुडि मंडळी सांमां साख री जी । भालिम भुजि भली स्रोवन समपणी जी । कर नवली कळी निजरि निरमळी जी ।

—ल.पि.

उ०—२ तठा उपरांति राजांन सिलांमति सरद रित रै समै री पूनिम री चंद्रमां सोळै कळां लियां संपूरण निरमळी रैण री उजळी चांदळी रै किरण करि नै हंस नूं हंसणी देखै नहीं नै हंसणी हंस देखै नही छै ।—रा.सा.सं.

रू०भे०—निरम्मळी, नूमळी ।

निरमळौ-सं०पु०—१ नानगशाही साधुओं को 'निरमळा' शाखा का व्यक्ति ।

२ देखो 'निरमळ' (रू.भे.)

उ०—१ हरि जैसा हरिजन जोय निरमळा, जिन संग फाग रमो री ब्रह्म भटी को दारू पीके, घूमर गुस्ट फुरो री ।

स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ जब रुखमणीजी री हरण हुओ छै । तब सगळा दोखं रहित निरमळौ साहौ थौ ।—वेलि टी.

उ०—३ तठा उपरांति राजांन सिलांमिति खट रित रा बखांण कीजै छै । प्रथम सरद रिति वखांणीजै छै । आसोज लागै छै । पितर पख पूजीजै छै । धरती री मैल कादम जळ पखाळ निरमळौ कियौ छै ।—रा.सा.सं.

उ०—४ माघ सुदी पूनम दिवस, चांद निरमळौ जोय । पसु वेचौ, कण संग्रहौ, काळ हळाहळ होय ।—वर्षा विज्ञान

उ०—५ तब मन निरमळौ रे, जब लागौ हरिनांव । भरमै तौ लागै नहीं, लागै तो भरमै कांय ।—ह.पु.वा.

(स्त्री० निरमळी)

निरमांण-सं०पु० [सं० निर्माण] १ बनाने का काम ।

२ बनावट, रचना ।

रू०भे०—निम्मांण, निम्मांन ।

निरमांस-सं०पु० [सं० निर्मांस] भोजन आदि के अभाव में अत्यधिक दुबला हो जाने वाला मनुष्य ।

ज्यू—उण भूरकी भाकरी माथै एक निरमांस तपसी तारै है ।

निरमाड़णौ, निरमाड़बौ—देखो 'निरमाणौ, निरमाबौ' (रू.भे.)

निरमाड़ियोड़ौ—देखो 'निरमियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निरमाड़ियोड़ी)

निरमाणौ, निरमाबौ-क्रि०स० [निरमणौ क्रिया का प्रे०रू०]

१ निर्माण करना, उत्पन्न कराना, रचाना ।

२ देखो 'निरमणौ, निरमबौ' (रू.भे.)

उ०—१ निरमोही निरमाय, इरघा जोवता जाय, सुकोमळ साध । राउ तणी परें गोचरी ए ।—जयवाणी

नींमजाड़णौ, नींमजाड़बौ, नींमजाणौ, नींमजाबौ, नींमजावणौ, नींमजावबौ—प्रे०रू० ।

निरमाया-वि० [सं० निर्माया] मायारहित ।

उ०—ग्यांन अग्यांन विग्यांन नांई, सुद्ध स्वरूप निजानंद मांई । है सुखरांम सोई निरमाया, अपणौ निस्चै कह दरसाया ।

—स्री सुखरांमजी महाराज

निरमायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ निर्माण कराया हुआ, उत्पन्न किया हुआ, रचा हुआ।
२ देखो 'निरमायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निरमायोड़ी)
निरमावणौ, निरमाववौ—देखो 'निरमाणौ, निरमाबौ' (रू.भे.)
निरमावियोड़ौ—देखो 'निरमायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निरमावियोड़ी)
निरमित-वि० [सं० निर्मित] बनाया हुआ, रचा हुआ।
निरमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ, जन्मा हुआ।
२ निर्मित किया हुआ, बनाया हुआ, रचा हुआ।
(स्त्री० निरमियोड़ी)
निरमुकत, निरमुगत-वि० [सं० निर्मुक्त] १ जिसके लिए किसी प्रकार का बंधन न हो।
२ जो छूट गया हो, जो मुक्त हो गया हो।
सं०पु०—ऐसा सर्प जिसने हाल ही में कैंचुली उतारी हो।
निरमुकती, निरमुगती-सं०स्त्री० [सं० निर्मुक्ति] १ मोक्ष।
२ मुक्ति, छुटकारा।
निर-मूळ-वि० [सं० निर्मूल] १ जिसका किसी प्रकार का कोई आधार न हो, बुनियाद न हो, वेजड़।
२ जिसमें जड़ न हो, बिना जड़ का।
३ जिसका मूल ही न रहा हो, जो सर्वथा नष्ट हो गया हो।
४ जड़ से उखाड़ा हुआ, जिसकी जड़ न रह गई हो।
रू०भे०—निरामूळ।
निरमूळण, निरमूळन-सं०पु० [सं० निर्मूलन] निर्मूल करना या होना, नाश, विनाश।
निर-मोक-सं०पु० [सं० निर्मोक] १ सांप की केंचुली।
उ०—धज फरकावै जीवतौ, जोड़ कोड़ धन रोक। नांखे मर उण ठौड़ पर, नाग हुवै निरमोक।—बां.दा.
२ देखो 'निरमोख' (रू.भे.)
निरमोक्ष, निरमोख-सं०पु० [स० निर्मोक्ष] पूर्ण मोक्ष।
रू०भे०—निरमोक
निरमोल-वि० [सं० निर्+मूल्य] जिसका मूल्य असीम हो, अमूल्य।
निरमोई, निरमोयौ—देखो 'निर-मोह' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ हर निरमोइया रे! कहां तुम्हारा देस। बिरहण डोलै बिलकती, कर कर छूटा केस।—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—२ थांरी तौ ओळूंड़ी घण नै आवती हो राज। हूं थांनै पूछां वात हंस हंस निरमोया भंवरजी रे कड़ियां रो कटारो ढीलो क्यों पड़्यौ राज।—लो.गी.
निरमोह-वि [सं० निर्मोह] जिसके मन में ममता या मोह न हो।
उ०—१ पदमासण आसण जोग पूर, क्रोध में हुतासण तप करूर। जोग में धुनी चड छोह जंग, उनमनी मुद्रा निरमोह अंग।—वि.सं.
उ०—२ निरमोह हुंदी निहचळ वासा, जगण की जटा सिर देखिवा तमासा।—ह.पु.वा.
रू०भे०—निरमोई, निरमोहि, निरमोही।
अल्पा०—निरमोयौ, निरमोहियौ।
निरमोहि—देखो 'निरमोह' (रू.भे.)
उ०—निरामूळ निरपख कहौ, कहौ निरक्षर नांव। निरमोहि निरदंद कहौ, वा अरचित की बली जांव।—ह.पु.वा.
निरमोहियौ—देखो 'निर-मोह' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—म्हे थांनै पूछां वात हंस हंस पूछां वात निरमोहिया भंवरजी रे कड़ियां रो कटारो ढीलो क्यों पड़्यौ हो राज।—लो.गी.
निरमोही—देखो 'निरमोह' (रू.भे.)
निरम्मळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.) (डि.नां.मा.)
उ०—१ सुख धांम नांम परखै सकळ, हित सुदांम विस्रांम हरि। नवकोट नाथ नवकोट दळ, किया निरम्मळ जात्र करि।
—रा.रू.
उ०—२ आसोज आवतां ही नभ कहतां आकास थैं बादळ दूरि हुआ। प्रथी के पंक कहतां कादौ दूरि हुऔ। जळ की गुडळता दूरि हुई। निरम्मळ हुऔ।—वेलि. टी.
निरम्मळी—देखो, निरमळी' (रू भे.)
उ०—बाहू चळी निरम्मळी, चख बींभळी सुरत्त। आजै करनळ अक्कळी, संवळी रूप सगत्त।—राव सेखो भाटी
निरय-सं०स्त्री० [सं० निरयः] नरक, दोजख (डि.को.)
निरयांण-सं०पु० [सं० निर्याण] १ आंख की पुतली।
२ यात्रा, रवानगी, प्रस्थान।
निरयात-स०पु० [सं० निर्यात] बेचने के लिए माल बाहर भेजने की क्रिया या भाव, निसार।
निरयुक्ति-सं०स्त्री० [सं० निर्युक्ति] १ वह ग्रंथ जो युक्ति सहित सूत्र का अर्थ बतावे (जैन)
२ व्याख्या, टीका।
उ०—स्वांमीजी री जोड़ां सुण नै घणौ राजी हुवौ। ए जोड़ां नहीं एह तो सूत्रां री निरयुक्तियां छै।—भि.द्र.
रू०भे०—निजुगति, निज्जुति, निरजुकति, निरजुगति।
निररथ-वि० [सं० निरर्थ] १ निष्फल, व्यर्थ।
२ अर्थहीन।
निररथक-वि० [सं० निरर्थक] १ बिना मतलब का, निष्प्रयोजन, व्यर्थ।
उ०—एक डकी नौबत एक री एक अंगरेजी राज री सुण नै सूरवीरां आपरी जात रौ नै कुळ रौ स्वभाव वीर पणौ भूला और वां सूरमां आळस में अर एस में सरीर निररथक वीतावणौ सुरू कीधौ।
—वी.स.टी.
२ जिससे कोई अर्थ न निकले, अर्थशून्य।
उ०—निहतारथ लै अरथ प्रगट नहिं, अनुचित अरथ न अरथ

अजोग। पूरण रण निररथक व्है पद, लै अस्लील समझ विध लोग।—बां.दा.

वि०वि०—काव्य में निरर्थक वाक्य का एक दोष माना जाता है।

३ जिससे कोई लाभ न हो, जिससे कोई कार्य-सिद्धि न हो सके।

४ न्याय में एक निग्रहस्थान।

निररबुद-सं०पु० [सं० निरर्बुद] एक नरक का नाम।

निररूप-वि० [सं० निरूप] जिसका कोई रूप न हो, रूपरहित, निराकार। उ०—नमो निरभूप नमो निरभेख, नमो निररूप नमो निररेख।—ह.र.

निरळंग, निरलंग-वि० [देशज] १ निर्लिप्त।

उ०—नमो अतुळीवळ तात अनग, नमो निरवांण नमो निरळंग। नमो पति सूरज कोटि प्रकास, नमो वनमाळी लीलविलास।

—ह.र.

२ कटा हुआ, अलग, पृथक।

उ०—१ खणंकत धार झणंकत खाग, रणंकत मुंड दुखंड कराग। भिड़े भुज 'चंप' हुरा अणभग, सबां निरलंग भुजां धड़ संग।

—रा.रू.

उ०—२ रुंड रकत भारिया, मुंड भारिया खडग्गां। किता अंग निरलंग, झडे भड़ पग्ग करग्गां। दंतकुळी अंगुळी, करी कोपरी कपाळा। बीच खेत वितथरी, फरी विहूरी किरमाळां।

—रा.रू.

सं०पु०—खण्ड, टूक।

उ०—१ हे असि तरवार रा धावण सुधारण वाळा री स्त्री, असि धावण री लुगाई थारै पीव रै हाथां री बळिहारी, वारणा लेऊं, इसी तरवार खुरसांण चढ़ाय तयार कर दीधी है सो रिण में दुसमणां ऊपरै झाटकता हाथ रै नांम भर झटको हचको नहीं आवै, जिण दुसमण माथै वहै सो निरलंग होतो निजर आवै।

—वी.स.टी.

उ०—२ अनै म्हारा पती री जिण माथै वहै वे निरलंग होय जावै, सो कोई हाथ व्है न बोय व्है।—वी.स.टी.

उ०—३ रोदां भांजि ऊजळा रूकां, वैर वाळि, उजवालि वट। पग निरलंग, निरलग अंग पड़ै, भुज निरलंग, निरलंग भ्रकुट।

—राठौड़ पदमसिंघ करणसिंघोत री गीत

रू०भे०—नरलंग।

निरलज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

निरलजता—देखो 'निरलज्जता' (रू.भे.)

निरलजो—देखो 'निरलज्ज' अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निरलजी)

निरलज्ज-वि० [सं० निर्लज्ज] जिसे लज्जा न आती हो, बेशर्म, बेहया

उ०—१ कथ म राखो कटक में, नर कायर निरलज्ज। काळा बळदां काढ़जे, काकळ जीपण कज्ज।—बां.दा.

उ०—२ निरमोही निरलज्ज सुण, काहे हुओ निकाज। माधव विरियां माहरी, कहा गमाई लाज।—गजउद्धार

रू०भे०—निरलज, निरलाज, निलज्ज, नीलज, नीलजु, नीलज्ज।

अल्पा०—निरलजो, निलजो, निलज्जो, नीलजो, नीलज्जो।

निरलज्जता-सं०स्त्री० [सं० निर्लज्जता] निर्लज्ज होने का भाव। बेशर्मी, बेहयाई।

उ०—सठता धूरतता सहित, छंद रचे मद छाय। निपट लियां निरलज्जता, कुकवी जिको कहाय।—बां.दा.

उ०—२ वांनर री निरलज्जता, उपल कठणता लीध। वायस तणी कुकंठ ले, कुकवि विधाता कीध।—बां.दा.

रू०भे०—निरलजता, निलजई, निलजता।

निरलाज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

उ०—जां दिनां फतैपुर कांमखांन्यां को राज। गादी पर अलपखान कांमी निरलाज।—शि.वं.

निरलिप्त-वि० [सं० निर्लिप्त] १ जो कोई सम्बन्ध न रखता हो, जो लिप्त न हो।

२ जो किसी विषय में आसक्त न हो, राग द्वेष आदि से मुक्त।

निरलेखण, निरलेखन-सं०पु० [सं० निर्लेखन] १ सुश्रुत के अनुसार मैल खुरचने का एक उपकरण विशेष।

२ किसी वस्तु पर जमी हुई मैल आदि खुरचने की क्रिया या भाव।

निरलेप-वि० [सं० निर्लेप] राग-द्वेषादि सांसारिक गुणों से निर्मुक्त, विषयों आदि से अलग रहने वाला, निर्लिप्त, अनासक्त।

उ०—१ कि कहिसु तासु जसु अहि थाको कहि, नारायण निरगुण निरलेप। कहि रुखमिणि प्रदुमन अनिरुध का, सह सहचरिए नाम संखेप।—वेलि.

उ०—ना कोई से प्यारा कहिये, नहि काहू के संगी। प्यांनी जग में यूं निरलेपा, जैसे गगन असंगी।—स्री सुखरांमजी महाराज

सं०पु०—ईश्वर (नां.मा.)

उ०—निरालंब निरलेप अनंत ईसर अविनासी। थावर जंगम थूळ सुछम जग निखिल निवासी।—ह.र.

निरलोइ, निरलोई-वि० [सं० निर्+लोभिन्] निर्लोभी, निस्वार्थी।

उ०—पांतरियां पहलोइ, जाय जुहारो जखडो। नरबीजा निरलोइ, आंख्यां तळ आवै नही।—जखड़ा-मुखड़ा भाटी री वात

निरलोभ, निरलोभी-वि० [सं० निर्लोभ+रा.प्र.ई] जिसे लोभ न हो, लालच न करने वाला।

उ०—१ राय तणी ते सेवा करइ, राति दिवस तीरइं संचरइ। राय तणइ मनि वसिउ अपार, निरलोभी नइ निरहंकार।

—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ इण रा कई कारण हा जिणमें सबसूं पैं'लो कारण हो ठाकरां री निरलोभी सुभाव।—रातवासो

रू०भे०—नरलोभ।

निरवंस-वि० [सं० निर्वंश] जिसका वंश नष्ट हो गया हो, जिसका वंश चलाने वाला कोई न हो। उ०—राजा किसनसिंघ उदैसिंघोत रै बेटा च्यार हुवा—सहसमल १ भारमल २ हरिसिंघ ३ जगमाल ४। भारमलजी री वंस रह्यौ। तीन निरवंस गया।—वां.दा.ख्यात

रू०भे०—निरवस।

निरवंसता-सं०स्त्री० [सं० निर्वंशता] निर्वंश होने का भाव।

निरवद्य-वि० [सं०] निर्दोष। उ०—निरवद्य एक उपाय छै, चउदे पूरव सार। जेह थी सहु सुख पामीये, नवपद स्री नवकार।

—स्रीपाळ

रू०भे०—निरवद।

निरवपण-सं०पु० [सं० निर्वपण] दान (ह.नां., अ.मा.)

निरवलंब-वि० [सं०] १ जिसका कोई सहायक न हो, निराश्रय।

२ अवलंबनहीन, आधाररहित।

निरवह-वि० [सं० निर्वहनम्] १ निभाने वाला, पूरा करने वाला।

उ०—लखधीर कुंअर सुलख्यणं, रज रीति काइम रख्यणं। वर वीर हेल हमीर, बडहथ वयण निरवहणं।— ल.पिं.

२ वहन करने वाला, धारण करने वाला।

उ०—कोसल्या सुख करण, नेतवंध दसरथ नंदणं। व्रत खअवट निरवहण, दुसट ताड़का निकंदण।—र.ज.प्र.

सं०पु०—१ निर्वाह, गुजारा।

२ समाप्ति।

३ निभाना या वहन करना क्रिया का भाव।

निरवहणो, निरवहबो-क्रि०स० [सं० निर्वहनम्] १ निभाना, पूरा करना, पालन करना।

उ०—१ ऊहड़ वागो आसुरां, 'भोज' अनै 'भगवांन'। पण निरवहियौ पाट छळ, भुज ग्रहियौ असमांन।—रा.रू.

उ०—२ चुरस चित व्रत नीत चारी, निरवहइ व्रत हेक नारी।

—र.ज.प्र.

उ०—३ निरवहइ व्रति रोजा निवाज। बंबळीवाळ के तवलबाज।

—रा.ज.सी.

क्रि०अ०—२ चलना, निभना।

उ०—निमिख पल वसंत रै विखै रात्रि अर दिन सरीखा निरवहै छै। एकै ये एक कहु' वात जणावै नही छै।—वेलि. टी.

निरवहणहार, हारौ (हारी), निरवहणियौ—वि०।

निरवहिग्रोड़ौ, निरवहियोड़ौ, निरवह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निरवहीजणो, निरवहीजबो—कर्म वा०।

निरवहणो, निरवहवो—रू०भे०।

निरवहियोड़ौ-भू०का०कृ०—निभाया हुआ, पूरा किया हुआ, पालन किया हुआ।

(स्त्री० निरवहियोड़ी)

निरवांण-सं०पु० [सं० निर्वाण] १ मुक्ति, मोक्ष।

उ०—१ पाया पद निरवांण, काळ नहिं लूट हो। हरिया होय हुसियार, पूगा गुरु येट हो।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ सिर संती जिणेसर, सेवत ही सुखखांण। इण भव लहै लीला, परभव पद निरवांण।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ अगन-सोर है मरण आहिव, नारद वेद भणै निरवांण। फिर फिर लियै अछर वर फेरा, अजमेरा परणौ आरांण।

—गोपाळदास गौड़ री वारता

२ शुद्धचेतन, परब्रह्म।

उ०—१ सब्द ही मुसलमांन कुरांणा, सब्द ही जैन वखांणा। सब्द सरव मतांतर कहिये, सब्द परे निरवांणा।

—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ निरालंब निरवांण निरंतर, सब प्रकासी वोई। सोई सुखरांम सुधातमा चेतन, मत बुध लखै न मोई।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०— विष्णु वोह दिन हुवा पोढ़िया, न जगै निरवांणो। चिंता नहीं लिगार मन, साहिब सुभियाणं।—गजउद्धार

३ न रह जाने का भाव, समाप्ति।

४ शून्य। उ०—सांख्य जोग निज ग्यांन कहीजै, सार असार पिछाणै। मिथ्या त्याग सत्त को संग्रह, औ विहंग राह निरवांणै।

—स्री हरिरांमजी महाराज

५ शान्ति। उ०—पुहपावती जइ तइं पुहुंता, कुंदण पुरू मेल्हांण। गूझ तणा गुण गोव्यंद वाचई, नयण भर्या निरवांण।

—रुकमणी मंगळ

६ प्रथम गुरु के ढगण के द्वितीय भेद का नाम (डिं.को.)

७ चौहान राजपूत वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

वि—१ बिना वाण का।

२ शून्यता को प्राप्त।

३ निश्चल।

४ स्वर्ग ले जाने वाला, स्वर्ग में प्रवेश कराने वाला, स्वर्ग्य।

उ०—गौ-डंडा कपटी-नरां, वेड गयां विरचंत। पुर-पंथां उत्तम-नरां, ले निरवांण चढ़ंत।—अज्ञात

५ मरा हुआ, मृत।

रू०भे०—नरवांण, नरवांण, निवांण, निरवांण, निरवांणी, निरवांणि, निरवांणी, निरवांणु, निरवांणू, निवांण, निव्वांण।

अल्पा०—निरवाणो।

निरवांणि-क्रि०वि०—१ निःसंदेह, अवश्य। उ०—तु तां पापी नु देह पडज्यो, जाज्यु एह ना प्रांण रे। एहवूं किहितां मरण तो पांम्यु, अधम व्याधि निरवांणि रे।—नळाख्यांन

२ देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

उ०—अरसीमेर विजेसी वळी, सांगउ सिखार सलूणउ मिळी। जेसल लखमण लूणउ जांणि, ए नीसत नाठा निरवांणि।

—कां.दे प्र.

निरवांणी—देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

उ०—१ वां तो नहीं निरवांणी वांणी, नहीं उरे नहीं पर रे। सो सुखरांम सदाई चेतन, अज अविनासी रह रे।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ आतम आप आप मांही पूरण, निसफंद है निरवांणी। चित्त सफंद वातै फुरिया, ज्यूं बांझ पुत्र प्रगटांणी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ सतगुरु मिळ्या सहज घर पाया, बिछड्या हंस मिळाया। उलटा सहज आप में मिळग्या, पद निरवांणी पाया।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—४ तूं जोगी जाहर अलख, निरगुण निरवांणी।
—केसोदास गाडण

निरवांणु—देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

उ०—सांभळी नेमि निरवांणु चारण ए सवहण सुणि वयणि।
—पं.पं.च.

निरवांणो—देखो 'निरवांण' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—संसार ना सुख असासता, एक सासता सुख निरवांणो रे। जो डर राखो परभव तणो, नव तत्व हिरदै आंणो रे।
—जयवांणी

निरवांनी—देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

उ०—१ नित निरवांनी थकत सब वानी, आपोई आप अनूप।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ निज स्वरूप मम अज अविनासी, निर उपाधी सुख कंदा रे। कहि सुखरांम निरवांनी वांनी, अपणा आप लखंदा रे।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ कहि सब में आ वांनी, चेतन अमित अनूप अनंता। सोई सुखरांम है ग्यांनी, निर धुंद निरवांनी सिधंता।
—स्री सुखरामजी महाराज

उ०—४ जियारांम गुरु साहब साचा, निरवांनी अरज चित लाई। जन सुखरांम साधु की संगत, सदा रहो सुखदाई।
—स्री सुखरांमजी महाराज

निरवाचक-सं०पु० [सं० निर्वाचक] निर्वाचन करने वाला।

निरवाचन-सं०पु० [सं० निर्वाचन] निर्वाचित करने का काम।
रू०भे०—निरवाचन

निरवात-वि० [सं० निर्वात] १ स्थिर रहने वाला, जो चंचल न हो।
२ जहां हवा का झोंका न लगे, जहां हवा न हो।

निरवासन-सं०पु० [सं० निर्वासन] १ दण्डस्वरूप गांव, शहर, देश आदि से बाहर निकाल देना, देश-निकाला।
२ निकालने की क्रिया या भाव।
३ विसर्जन, समाप्ति, भंग।
४ मार डालना, वध।

निरवाह-सं०पु० [सं० निर्वाह] १ गुजारा, पालन, निवाह।
२ पूरा होना, समाप्ति।
३ कही हुई या सोची हुई किसी बात के अनुसार बराबर आचरण, पालन।

उ०—१ एक हजार मुगळ सूर तैं सूरे, सहजादे की सनाह निरवाह के पूरे।—रा.रू.

उ०—३ केसरीसिंघ रांमचंदोत सांमव्रत सूरा। पातसाह के बूझे निरवाह किया पूरा।—रा.रू.

४ संबंध या परंपरा की रक्षा। उ०—आरठ केसरिसिंघ सूं, अक्खो 'सोनग' साह। खत्रि सपूताचार रो, थां हूंता निरवाह।
—रा.रू.

४ किसी परंपरा या क्रम का जारी रहना, किसी बात का चला चलना।
ज्यूं—कांम रो निरवाह, प्रेम रो निरवाह।
५ देखो 'निभाव' (रू.भे.)
रू०भे०—नरवाह, निरवाह, निवाह, निव्वाह।

निरवाहण-वि० [सं० निर्वाहनम्] निभाने वाला, निर्वाह करने वाला।

उ०—आपणंपा सयण तेडिया आह(व)ड़, लांजउ घणी निरवाहण लाज। वर ईसर जगंनाथ अणबर, प्रेम तणी ताइ बाधी पाज।
—महादेव पारवती री वेलि

निरवाहणो, निरवाहबो-क्रि०स० [सं०] १ निर्वाह करना, पालन करना, निभाना।

उ०—१ निरवाहै पण आपणो, जे चाहै जसवास। मांगण ज्यां हूंता मिळै, नंह जावही निरास।—बां.दा.

उ०—२ प्रथम दळ आरंभ पतसाहै, साह दरीखंभ बीड़ो साहै। वदिया वयण जिकै निरवाहै, गढ़ सिवियांण 'कलै' पड़ गाहै।
—प्रिथीराज राठौड़

२ उत्तरदायित्व लेना, वहन करना, झेलना, सहना।

उ०—१ ताहरां ओढ़ै कह्यो—तो थे बाहर पालो, म्हे घोड़ा निरवाहिस्यां, ताहरां हांसूं ऊभो रह्यो। ओढै रै साथ घोड़ा निरवाह्या।—कूंगरै बळोच री वात

उ०—२ महाराजा स्री रायसिंघजी, रांणी स्री जसवंतदेजी, कुंवर पदवी पाळता सुख राजभार निरवाहतां रांणी स्री जसवत दे जी रै पुत्र रत्न ऊपना।—द.वि.

निरवाहणहार, हारो (हारी), निरवाहणियो—वि०।
निरवाहिओड़ो, निरवाहियोड़ो, निरवाह्योड़ो—भू०का०कृ०।
निरवाहीजणो, निरवाहीजबो—कर्म वा०।
नरवाहणो, नरबाहबो, नरवाहणो, नरवाहबो, नरिबाहणो, नरिबाहबो
रू०भे०।

निरवाहियोड़ो-भू०का०कृ०—१ निर्वाह किया हुआ, पालन किया हुआ, निभाया हुआ।

२ उत्तरदायित्व लिया हुआ, वहन किया हुआ, झेला हुआ, सहन किया हुआ।

(स्त्री० निरवाहियोड़ी)

निरविकल्प-सं०पु० [सं० निर्विकल्प] १ वह अवस्था जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय दोनों एक हो जाते हैं; दोनों में कोई भेद नहीं रह जाता है (वेदांत)

२ बौद्ध शास्त्रों के अनुसार प्रमाणित माने जाने वाला ज्ञान जो न्याय के अनुसार इन्द्रियजन्य ज्ञान से बिल्कुल भिन्न होता है तथा अलौकिक व आलोचनात्मक होता है।

निरविकल्पसमाधि-सं०स्त्री० [सं० निर्विकल्पसमाधि] योग की सुषुप्ति अवस्था के समान एक समाधि जिसमें ज्ञानात्मक सच्चिदानंद ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई नहीं देता है तथा जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता आदि का कोई भेद नहीं रह जाता है।

निरविकार-वि० [सं० निर्विकार] जिसमें किसी प्रकार का विकार वा परिवर्तन न हो, विकाररहित।

उ०—१ एक दोय के मांय है, भेदा भेद विकार। निरविकार निरधुंद में, नहीं निराकार आकार।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ अखिलेस अनूपम एक अज, अजरामर महिमा अजय। नित निरविकार निरभय निपुण, नारायण करुणानिलय।
—ऊ.का.

रू०भे०—निरविकार, निव्विकार।

निरविघन, निरविघ्न-वि० [सं० निर्विघ्न] जिसमें कोई विघ्न न हो, विघ्नरहित, बाधारहित।

क्रि०वि०—बिना किसी प्रकार के विघ्न या बाधा के।

उ०—माता मोद मांन्यो पिता मांन्यो मोद पूरण, पुत्र जन्म निरविघ्न जन्म धरा जसधारा तें।—ऊ.का.

निरविचार-सं०पु० [सं० निर्विचार] बुद्धि को सर्व प्रकाशक और चित्त को निर्मल करने वाली एक प्रकार की सबसे उत्तम सबीज समाधि जो किसी सूक्ष्म आलंबन में तन्मय होने से प्राप्त होती है। इसमें उस आलंबन के केवल आकार का ही ध्यान रहता है, उसके नाम और संकेत का ज्ञान नहीं रहता है (योग दर्शन)।

वि०—जिसमें कोई विचार न हो, विचाररहित।

निरवितरकसमाधि-सं०स्त्री० [सं० निरवितर्कसमाधि] किसी स्थूल आलम्बन में तन्मय होने से प्राप्त होने वाली एक प्रकार की सबीज समाधि जिसमें आलंबन के केवल आकार का ही ज्ञान रहता है उसके नाम, संकेत आदि का कोई ज्ञान नहीं रहता है।
(योगदर्शन)

निरविधि-वि० [सं० निर्विधि] बिना विधि के, विधिरहित।

उ०—मतारूढ करम्म संबंध, निरविधि पुण्य प्रबंध।—व.स.

निरविवाद-वि० [सं० निर्विवाद] जिसमें किसी प्रकार का तर्क-वितर्क न हो, बिना विवाद का, बिना झगड़े का, विवादरहित।

क्रि वि०—बिना तर्क-वितर्क किए, बिना विवाद के।

ज्यूं—झगड़ो निरविवाद निवड़ग्यो।

निरविवेक-वि० [सं० निर्विवेक] जिसमें विवेक न हो, विवेकहीन।

निरविवेकता-सं०स्त्री० [सं० निर्विवेकता] निर्विवेक होने का भाव, नासमझी।

निरवीज—देखो 'निरबीज' (रू.भे.)

निरवृं-वि० [सं० निर्वृत] प्रसन्न, खुश। उ०—अगनाभिई महमहतीय पहुतीय गउखि कुमारि। नयणि निरवूं ते निरखिय हरिखिय नेमि सा नारि।—नेमिनाथ फागु

निरवेग-वि० [सं० निर्वेग] गति या वेगरहित, जिसमें वेग न हो।

निरवेद—देखो 'निव्वेद' (रू.भे.)

निरवेर-वि० [सं० निर्वैर] जिसमें द्वेष न हो, वैररहित।

निरव्रती—देखो 'निरव्रती' (रू.भे.)

निरसंक—देखो 'निसंक' (रू.भे.)

उ०—१ निरसंक असुर निहारियो, धनु-धारण धांनुस धारियो। भूथांण बांधे करण भारथ, रोस धर रघुवीर।—र.रू.

उ०—२ निज करम परम निरसंक व्है, बीदग धरम बजावणूं। हित हरख सवाया पूंण हुय, लूण न कदै लजावणूं।—ऊ.का.

निरसंध, निरसंधि-वि०—संधिरहित, संधिविहीन।

उ०—निरसंध नूर अपार है, तेज पुंज सब मांहि। दादू ज्योति अनंत है, आगो-पीछो नांहि।—दादूवांणी

रू०भे०—निरसिंध।

निरसंसै-वि० [सं. निर्+संशय] संशयरहित।

उ०—निरसंसै निरदंद जोर नहि जेर न जरणा। नाद बिंद नहि जीव, जनम नहि अवधि मरणा।—ह.पु.वा.

निरस-वि० [सं०] १ निम्न, हलका, छोटा।

उ०—मुरधर मायासरो, जिको थारो हूं जांणूं। तूझ वडेरां तणी, विगत कह कह वखांणूं। हाथां हळ हाकता, नार करती नेदांणी। निरस घरां सनमंध, कदै ठकुरात न जांणी।
—अरजुणजी बारहठ

२ जिसे यह संसार रसमय न लगे, जो रसिक न हो, विरक्त।

३ जिसमें स्वाद न हो, फीका, बदजायका।

४ रूखा-सूखा।

५ जिसमें सार न हो, असार, निस्तत्व।

६ जिसमें रस न हो, बिना रस का, रसविहीन।

रू०भे०—निरस्स, नीरस।

अल्पा०—निरसौ।

निरसण-सं०पु० [सं० निरसन] दूर करना, हटाना क्रिया।

उ०—सुरगारोहण पण निरसण नवसूतो। सूधो लहु सूतो सूतो बहु सूतो।—ऊ.का.

निरसहाय—देखो 'निसहाय' (रू.भे.)

निर्रसिंघ—देखो 'निरसंघ' (रू.भे.)
उ०—जन हरिदास हरि नां भजै, नारायण निर्रसिंघ। पढ़त पढ़त पढ़ि पढ़ि अपढ, अरथ करत भए अंघ।—ह.पु वा.

निर्रसिंह—देखो 'नरसिंघ' (रू.भे.)
उ०—नमो नमो रमता रांम, नारायण निर्रसिंह। सकळ निरंतरि नरहरि, निरवाण निरविग्रह।—ह.पु.वा.

निरसो—देखो 'निरस' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—एक बुरो अहिकार; भरम निरसो भाखीजे।—पी.ग्रं.

निरस्त-संपु० [सं०] १ समाप्त करना क्रिया का भाव, मिटाना, नाश। उ०—पाछै सूं वडाह भी उठै ही पूगो जठै आकास सरस्वती कहियो। अवंती रै अधीस विक्रम विभाकर थारो दुख निरस्त कीधो।—वं.भा.
२ बिगाड़ा हुआ, निराकृत।

निरस्स—देखो 'निरस' (रू.भे.)

निरस्साअ, निरस्साय-वि० [सं० निःस्वाद] जिसमें स्वाद न हो, स्वाद-रहित (जैन)

निरहार—देखो 'निराहार' (रू.भे.)
उ०—एक बांम अंगुस्ठ आधारै। नव दिन राति रहै निरहारै।
—सू.प्र.

निरात, निरांति—देखो 'नैरांत' (रू.भे.)
उ०—प्रभु न मुद्रा देखिनइ रे, मुझनइ थइ रे निरांति। हिव सेवा करिवा तणी रे, मनड़ा मइं छइ खांति।—वि.कु.

निराउघ—देखो 'निरायुध' (रू.भे.)
उ०—निराउघ कियो तदि सोनांनांमी, केस उतारि विरूप कियो। छिणियै जीवि जु जीवाछंडियो, हरि हरिणांखी पेखि हियो।
—वेलि.

निराकरण-संपु० [सं०] १ किसी दलील या युक्ति को काटने का काम, खण्डन।
क्रि०प्र०—करणो, होणो।
२ किसी बुराई को दूर करने का काम, निवारण, परिहार, शमन।
क्रि०प्र०—करणो, होणो।
३ दूर करने या हटाने का काम।
क्रि०प्र०—करणो, होणो।
४ रद्द करने या मिटाने की क्रिया या भाव।
क्रि०प्र०—करणो, होणो।
५ अलग करने या छांटने की क्रिया या भाव।
क्रि०प्र०—करणो।

निराकरणो, निराकरबो-क्रि०स० [सं० निराकृतम्] परित्याग करना, दूर करना, हटाना। उ०—रिसहि राज्यकळा धुरि आदरी। अवरि मूळ लगइ स निराकरी।—जयसेखर सूरि

निराकार-वि० [सं०] जिसके आकार की कोई भावना न हो, जिसका कोई आकार न हो। उ०—१ वे तो अगम अगोचर कहियै, खंड ब्रह्मंड पारा। दिस्ट-मुस्ट में आवत नाही, निराकार निरधारा।
—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—२ धरणी नीर तेज वायु नभ, सबे सता प्रकासी। निराकार आकार में पूरण, नहिं आवै नहिं जासी।
—स्री सुखरांमजी महाराज
संपु०—१ ब्रह्म ईश्वर। उ०—१ प्रथम जळजळाकार हुतो तिहा निरंजन निराकार वडपात माहि पोढ़िया हुता।—द.वि.
उ०—२ निराकार निरलेप निगम निरदोस निरंजन, दीरघ दीन-दयालु देव दुख-दाळद-भंजन।—ऊ.का.
२ ब्रह्मा।
३ आकाश, शून्य।
रू०भे०—नराकार, निरंकार, निरकार, निरकारि, निरीकार।
अल्पा०—निरकारो।

निरकारो—देखो 'निराकार' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—निराकारो कावै कहत, नहिं आवै तन नमो। निराधारो धारो जपत, जस गावै जन नमो।—ऊ.का.

निराक्रंद-वि० [सं०] १ जो सहायता या रक्षा न करे, जो फरियाद या पुकार न सुने।
२ जिसकी कोई रक्षा या सहायता न करे, जिसकी फरियाद या पुकार न सुनी जाय।
३ जहां कोई सहायता या रक्षा करने वाला न हो, जहां कोई फरियाद या पुकार सुनने वाला न हो।

निराखर-वि० [सं० निरक्षर] १ जिसे अक्षर-ज्ञान न हो, जिसे अक्षरों का बोध न हो, अपढ़।
२ जिसमें अक्षर न हो, बिना अक्षर का।
३ बिना अक्षर या शब्द का मौन।

निराट-वि० [देशज] १ बहुत।
उ०—१ वेह कळायां वाघरी, घड़ी भयंकर घाट। मूसळदंता मेंगळां, नित डर रहै निराट।—बां.दा.
उ०—२ धांन न भावै नींद न आवै, चिंता लगी निराटां। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, देख देख हिय फाटां।—मीरां
२ सूक्ष्मतम, अति सूक्ष्म। उ०—कहै दास सगरांम, कांम मांछर रो करड़ो। मोटो होय तो करै पापी, ओ पिरथी परड़ो। पिरथी रो पग्ड़ो करै, ऐड़ो देख्यो घाट। आछी कीवी रांमजी, नैनो कियो निराट॥ नैनो कियो निराट, तो ही कररावै वरड़ो। कहै दास-सगरांम, कांम माछर रो करड़ो।—सगरांमदास
३ केवल, मात्र, सिर्फ। उ०—सवळा संपट-पाट, करता नह राखै कसर। निवळां एक निराट, रांम तणो बळ 'राजिया।
—किरपारांम

४ जबरदस्त, महान्। उ०—नभ घरां घूमरां भड़ निराट। घूमरां उडै भिड़ भिड़ज घाट।—वि.सं.

क्रि०वि०—१ बिलकुल, निपट। उ०—१ मावड़िया अंग मोलिया, नाजुक अंग निराट। गुपत रहै ऊमर गमै, खाय न निज-बळ खाट।
—बां.दा.

उ०—२ कर जोड़ै भाळ कंवर, नटियौ साच निराट। साहै हठ तौ भी 'सतौ', पांण घरियौ पाट।—वं.भा.

उ०—३ ताहरां फेर रांमदांन कह्यौ, भाई, साणी कुंवर छै। मुजरौ करो। ताहरां निराट कन्है जाय ऊभा रह्या।
—पलक दरियाव री वात

रू०भे०—नराट, नराठ, निराठ।

निराठ—देखो 'निराट' (रू.भे.)

उ०—१ गोधूळक वेळा हुई। हीरू लिखमजी रौ पूजन करण वैठी। कयो—मा, मा! तूं मा हो'र पखपात कियां करण लागगी? कठैई सांमगरी रौ ठाट अर कठै-ई सांसौ निराठ? मा! आज किताक थारी साची पूजा करसी?—वरसगांठ

उ०—२ अमरसिंह गजसिंह रै वडौ कुंवर। सांचोर रा चहुवांणां रौ दोहितो। सो गजसिंहजी री रजा नहीं। अमरसिंह निराठ सारी वात में अव्वल वडौ देसोत, मांटीपणं रौ आंक।
—अमरसिंह राठौड़ रा वात

उ०—३ राव मालदेव निराठ टणका मोटा सिरदार हुवा, तद बादसाह राव रौ खिताब दियौ।—राजसिंह कूंपावत री वात

उ०—४ कुंवरजी घोड़ा दोय च्यार मोल लेवौ, निराठ घोड़ां विनां सरै नहीं।—सुंदरदास भाटी री वात

उ०—५ वडौ रीठ वाजियौ। सीधा मुंहडां आयकर मिळिया, फेर मोटा बोल बोलियोड़ा था सो निराठ नतीठा वाजिया।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

निराणंद—वि० [सं० निरानन्द] आनन्दरहित (जैन)

निरांतक—वि० [स०] १ भयरहित, निर्भय।

उ०—निरांतक निज अनिर सुभाऊं, नहिं जागत नहिं सूता। नहिं वे जीवत नहिं वे मरता, नहिं दीरघ नहिं लघुता।
—स्रो सुखरांमजी महाराज

२ मृत्युरहित। ३ बिना रोग का, नीरोग।

स०पु०—रावण का एक पुत्र।

निरात—देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)

निरातप—वि० [सं०] आतपरहित, शीतल, ठंडा।

उ०—ढाळ ढोलिया लोग, ठोड़ इण ठंडी छाया। उसणकाळ रौ भोग, गिणै ना गांवां जाया। पंचायतड़ी जोड़, जुड़ै से आथण तांई। नीम निरातप व्रिख, संतोखै ऊपर सांई।—दसदेव

निराताळ, निराताळां, निराताळा, निराताळी, निराताळौ—वि०

१ बहुत, अत्यन्त, अधिक। उ०—१ मरण गिणै तिल-मांन, हाथ जीव हाजर रहै। औघट घाट अताळ, निराताळ न्हाखै निडर।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ भयंकर। उ०—लपटां कराळ झाळ तोपां आसमांन लागो, दैव बोम जागी कीधां प्रळै-काळ दीठ। नाराजां उनागी ठाळ अभागी तराळ नेजा, राठोड़ां गनीमां वागी निराताळ रीठ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

क्रि०वि०—निर्भयता से, निधड़क होकर, वेखटके।

उ०—उडै पग हात किरका हुवै अंग रा, बहै रत जेम सांवण वहाळा। आप-आपौ वरी जोयनै आडियां, लड़ै रिण भलभला निराताळा।—र.रू.

रू०भे०—नताळ, नराताळ, नराताळां, नराताळी, नराताळौ, नराळ, *निताळौ, निरताळ।*

निरादर—सं०पु० [सं०] आदर न करने का भाव, आदर का अभाव, वेइज्जती, अपमान।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

निरादेह—वि० [सं० निरदेह] देहरहित, निराकार, अव्यक्त।

उ०—रस रोग भोग जोगी नहीं, निरादेह निरवास। वरण विवरजित कहि अकहि, उदर उवर नहिं सास।—ह.पु.वा.

निराधार—वि० [सं०] १ जो सहारे पर न हो या जिसे सहारा न हो, आश्रय व अवलंबरहित।

२ जो प्रमाणों द्वारा सत्य साबित न हो, झूठ, मिथ्या, वेबुनियाद, अयुक्त।

३ जो अन्न, जल आदि ग्रहण किया हुआ न हो, जो बिना अन्न आदि के हो।

४ जिसे जीविका आदि का सहारा न हो, जिसमें जीवन-निर्वाह सम्बन्धी आश्रय न हो।

५ मायिक विषयों के आश्रय से रहित। उ०—जब निराधार मन रह गया, आतम के आनंद। दादू पीवै रांमरस, भेटै परमानद।
—दादूवांणी

६ जो किसी आश्रय से परे हो, जिसे किसी आश्रय या आधार की आवश्यकता न हो (परब्रह्म, ईश्वर)।

उ०—१ निराधार निज भक्ति कर, निराधार निजसार। निराधार निज नांम ले, निराधार निराकार।—दादूवांणी

उ०—२ निराधार निज रांम रस, को साधू पीवणहार। निराधार निरमळ रहै, दादू ग्यान विचार।—दादूवाणी

रू०भे०—निरधार।

निरानंद—सं०पु० [सं०] १ आनन्द न होने का भाव, आनन्द का अभाव।

२ कष्ट, पीड़ा, दुःख।

वि०—१ जिसे आनन्द न हो, आनन्दरहित।

२ जहां आनन्द न हो।

निरापद-वि० [सं०] १ जहाँ किसी प्रकार का खतरा या डर न हो, जहाँ किसी तरह की विपत्ति या अनर्थ की आशंका न हो।

२ जिसे कोई आफत या भय न हो, जिसे कोई आपदा न हो, सुरक्षित।

३ जिससे अनर्थ या हानि की सम्भावना न हो, जिससे किसी तरह की विपत्ति आने की आशंका न हो।

निरापेक्षी, निरापेखी-वि० [सं० निर्+पक्ष] वह जो किसी का पक्ष न ले।

उ०—श्री सोभागचंद सेवग निरापेक्षी है। भिखणजी नें जांणे जिसा कहसी।—भि.द्र.

निराव-वि० [सं० उप० निः+फा० आब] आभारहित, कांतिहीन।

उ०—परा केतकी केवड़ा वात पावै, अनेकां जणां दूर सौरंभ आवै। लसै व्रिंद सानंद कुंदं गुलावं, निरक्खे हुवै इंद्रावाही निरावं।—रा.रू.

निरामय-वि० [सं०] जो रोगी न हो, नीरोग, तन्दुरुस्त।

उ०—अनांमय अव्यय अक्षय आथ। निरामय निरभय नाथ अनाथ।

—ऊ.का.

सं०पु०—१ ईश्वर। उ०—नमो नमो परब्रह्म परमगुरु नमस्कारं, आत्माभ्यास, परमात्मा, प्राणनाथ, परम पुरुस, निरंजन निराकार, निरामय, निरविकार, निराधार, अविनासी।—ह.पु.वा.

२ सूअर।

३ जंगली बकरा।

निरामिस-वि० [सं० निरामिष] १ जिसमें मांस न हो, मांसरहित।

२ जो मांसाहारी न हो, जो मांस न खाय।

३ धन-धान्य से रहित (जैन)

निरामूळ-सं०पु० [सं० निर्+मूल] १ वह जिसका कोई उत्पत्ति स्थान न हो, ईश्वर। उ०—अद्रिस्टि अखिर अरूप, अथाह निरमोह सत्यार। निरामूळ निरधार, निकुळ निरपख निजसारं।—ह पु.वा.

२ देखो 'निरमूळ' (रू.भे.)

निरामोह-वि०—मोहरहित।

उ०—अलिप अछिप जहां तहां छिपा, छाया पड़ै न छोह। सकळ भवन पति सति सदा, निरामोह निरदोह।—ह.पु.वा.

निरायुध-वि० [सं० निरायुध] १ अस्त्र-शस्त्रविहीन, बिना अस्त्र-शस्त्र का, निःशस्त्र, निरस्त्र।

रू०भे०--निराउध।

निरारंभ-वि० [सं०] आरम्भ से रहित (जैन)

निरार—देखो 'निराळ' (रू.भे.)

निरालंब-वि० [सं०] १ बिना आलम्ब या सहारे का, निराधार।

उ०—१ उत्पति थिति लय नहीं ज्या में, कारण कारज विलांणी। सत सुखरांम आतमारांमी, निरालंब निरवांणी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ निरालंब निरलेप, अनंत ईसर अविनासी। थावर जंगम थूळ, सुख्म जग निखिल निवासी।—ह.र.

उ०—३ नाथ निरालंब निराकार प्रांण हुंदा प्रांण।

—केसोदास गाडण

उ०—४ रहिस निरालंब एकलौ, तज काया मझ बास। साधी तैं दिन संखधर, सुरग तणौं पंथ सास।—ह.र.

२ बिना ठिकाने का, निराश्रय।

सं०पु०—पर-ब्रह्म।

रू०भे०— निरलंब।

निराळ, निराल-वि० [सं० निर+आहार] जिसने कुछ भी खाया या पीया न हो, निराहार, भूखा।

२ देखो 'निराळौ' (मह; रू.भे.)

उ०—१ अनंक न संक न धंक न धीस, अबास न वास न आस न ईस। निराळ न काळ त्रिकाळ-नरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह.र.

उ०—२ तुरियै तत्व अखंडी चेतन, सबही दिखावै ख्याल। ख्याल मांयै नहि ख्याल स्वरूपी, रहता आप निराळ।

—स्री सुखरांमजी महाराज

रू०भे०—नराळ, निरार।

निराळस-सं०पु० [सं० निरालस] जो आलसी न हो, जिसमें आलस्य न हो, चुस्त, फुरतीला, तत्पर।

उ०—आळस न राख्यौ अंग निराळस चाल्यौ नेक, काळस न लागी काया साळस सफाई तैं।—ऊ का.

निराळु, निरालु, निराळौ, निरालौ-वि० [सं० निरालय]

(स्त्री० निराळी, निराली) १ अनोखा, अपूर्व, अनुपम, भव्य।

उ०—निराळौ फबै फूटरौ झूंठ नांही। मनौ मेर रौ कूट वैकुंट मांही।—मे.म.

२ अजीब, अद्भुत, विलक्षण, विचित्र। उ०—१ अनंग न अंग उमंग इलोळ, हरी पद संगम गंग हिलोळ। निराळिय नीति उदंगळ नांय, मुनि किय मंगळ जंगळ मांय।—ऊ.का.

उ०—२ निरत सुरत पाया निवास, निजतंत निराळा।

—केसोदास गाडण

३ जिसकी जोड़ का दूसरा न हो, अद्वितीय, विशिष्ट।

उ०—रूठो दळां केवियां कैं, छूटौ सांकळां सूं सेर, उलक्कापात रौ तारौ, तूटौ आसमांण। जोसेल कंवारी घड़ां, छैल फेळ माथै छूटौ, खंडाळां निराळां एम, दूसरौ खूमांण।—बुधसिंह सिढ़ायच

४ अलग, पृथक, जुदा, तटस्थ। उ०—१ कोई आज पाछै आंट रार्खं वैर गावै। सो ही खांप दोनां सूं निराळी होय जावै।

—सि.वं.

उ०—२ सरणागत पाळौ हो लाल, अंतर दुख टाळौ हो। तूं तउ माया गाळौ हो लाल, रहै मोसूं निराळौ हो।—वि.कु.

५ जहाँ बस्ती या मनुष्य न हो, निर्जन, एकान्त।

उ०—निरालु एक ठांम जोई महिलि याहारि राय। सरप एणी विरि बोलियु: जु दया मन मांहां थाय।—नळाख्यांन

सं०पु०—बस्ती या मनुष्यों से रहित स्थान, एकान्त स्थान, निर्जन स्थान।

रू०भे०—नराळो, नीराळो।

मह०—निराळ, निराल।

निरावर-सं०पु० [सं०निर्+रव] शब्द (अ.मा.)

निरावलंब-वि० [सं०] विना अवलंब का, बिना सहारे का, निराधार।

निरास-वि० [सं० निराशः] १ जिसे आशा न हो, नाउम्मीद, आशाहीन। उ०—१ निरवाहै पण आपणो, जे चाहै जसवास। मांगण ज्यां हूंता मिळै, नंह जावही निरास।—बां दा.

उ०—२ सो ढूंढीक निरास थकी अपणै घर आई, इब खरी उदास रहै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ इतरी सुण सुमित्र निरास होय हालियो।
—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—निरासी।

२ देखो 'निरासा' (रू.भे.)

उ०—१ गति ग्यांन विग्यांन गुनागार बहै, सत्य ध्यांन विधांन सु सागर बहै। बसु आस निरास सुवास वसै, लख खास विनास उदास लसै।—ऊ.का.

उ०—२ निर्भै नद आस न आस निरास, वस्यो हरिराम अभैपद वास। दुरासद मारण त्रास दुकाळ, सुधा झड़ि बारह मास सुकाळ।
—ऊ.का.

रू०भे०—नीरास।

निरासा-सं०स्त्री० [सं० निराशा] आशा न होने का भाव, आशा का अभाव, नाउम्मेदी। उ०—वडी वडी आसा वही, हुई निरासा हेर। विखम दास के वेव तैं, गिरधो रसा गिरमेर।—ऊ.का.

रू०भे०—निरास।

निरासिस-वि० [सं० निराशिष] १ आशीर्वाद का अभाव, आशीर्वादशून्य।

२ तृष्णारहित, इच्छारहित।

निरासी-वि० [सं० निराशिन्] १ जो आशा न रखता हो, तृष्णारहित।

२ देखो 'निरास' (रू.भे.)

निरास्रय-वि० [सं० निराश्रय] १ विना आश्रय का, बिना सहारे का, आश्रयरहित।

२ जिसे कहीं ठिकाना न हो, निराधार।

३ जिसे मोह न हो, जिसे शरीर आदि पर ममता न हो, निर्लिप्त।

निरहपण-सं०पु० [?] १ निराशापन। उ०—पतसाह रहे गहपूरियो, सुर निराहपण संधियो। खित गई ठौड़ ठौड़ां खबर, बळ राठौड़ां बंधियो।—रा.रू.

निराहार-वि० [सं०] १ जिसने कुछ खाया न हो।

क्रि०प्र०—होणौ।

२ जो कुछ न खाय, जो बिना भोजन के हो, आहाररहित।

क्रि०प्र०—रैणौ।

३ जिसमें भोजन करने का निषेध हो, जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाता हो।

निरीकार- देखो 'निराकार' (रू.भे.)

निरीक्षक-सं०पु० [सं०] देख-रेख करने वाला, जांच करने वाला।

निरीक्षण, निरीक्षिण-सं०पु० [सं० निरीक्षण] १ देख-रेख, निगरानी।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

२ देखना, दर्शन।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

वि० [सं० नीरक्षण] रक्षा से रहित। उ०—रमइं रमापति राणिय आणिय आपणइ पासि, तीणि छळइं नवि छीपइ ए दीपइ ए ग्यानप्रकासि। तउ अवतरिउ रितुपति तपति सु मन्मथपूरि, जिम नारीय निरीक्षण दक्षिण मेल्हइ सूरि।——नेमिनाथ फागु

निरीखणो, निरीखबो—देखो 'निरखणो, निरखबो' (रू.भे.)

उ०—१ निरधार मूरति नयणे निरीख, समयसुंदर गुण गावइ हरीख।—स.कु.

निरीखियोड़ो—देखो 'निरखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निरीखियोड़ी)

निरीति-वि० [सं०] अति वृष्टि आदि से रहित।

निरीस-वि० [सं० निरीश] १ जो ईश्वर में विश्वास न करे, जिसकी समझ में ईश्वर न हो, नास्तिक अनीश्वरवादी।

२ विना स्वामी का, बिना मालिक का।

[सं० निरीष] ३ हल का हरिस (डिं.को.)

निरीस्वरवाद-सं०पु० [सं० निरीश्वरवाद] ईश्वर का अस्तित्व अस्वीकार करने का सिद्धान्त।

निरीस्वरवादी-सं०पु० [सं० निरीश्वरवादी] ईश्वर का अस्तित्व नहीं मानने वाला।

निरीह-वि० [सं०] १ जो सब बातों से किनारे रहे, उदासीन, विरक्त।

उ०—विसांम व्यूढ़, गोतीत गूढ़। निरगुण निरीह, आधार ईह।
—ऊ.का

२ जिसे किसी बात की चाह न हो।

३ जो किसी झगड़े आदि में न पड़े, तटस्थ।

४ शान्तिप्रिय।

५ जो किसी बात के लिए प्रयत्न न करे, चेष्टारहित।

अल्पा०—निरीहो।

निरीहा-सं०स्त्री० [सं०] १ चाह या इच्छा न होने का भाव, विरक्ति।

२ प्रयत्न न करने का भाव, चेष्ठा का अभाव ।

निरीहो—देखो 'निरीह' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—लेइ गहु किंपि जिणप्रभ सूरि, मुणिवरो अति निरीहो। स्रीमुखि सलहिउ पातसाहि, विविह परि मुणि सीहो ।

—ऐ.जै.का.सं.

निरुकत, निरुकती, निरुक्त–सं०स्त्री० [सं० निरुक्त, निरुक्तिः]
वेद के छः अंगों में से एक (डिं.को.)

निरुर्जसिह–सं०पु० [सं०] एक प्रकार की तपस्या, तपस्या विशेष (जैन)

वि०वि०—आठ उपवासों के बाद एक आचाम्ल से पारणा किया जाता है। यह व्रत कृष्ण पक्ष में ही होता है।

उ०—कनकावळि रत्नावळि मुक्तावळि सिंहविक्रीडित, महासिंह विक्रीडित, गुणरत्न संवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सरवतोभद्र यवमध्य चद्रायण वज्रमध्य चंद्रायण आचाम्लवरद्धमान अस्टकरम-सातन सरवांगसुंदर निरुर्जसिह परमभूसण सोभाग्यकल्पव्रिक्ष इंद्रिय-जय कसायजय योगसुद्धिप्रमुख तपो विसेस ।—व.स.

निरुतउ, निरुत्तउ—देखो 'निरतु' (रू.भे.)

उ०—१ देखिवि नेमि सु निरुतउ, विरतउ भव सुहावसि, कांन्हडि माड रमांडिउ, पाडिउ ग्रीनइ पासि ।—प्राचीन फागु संग्रह

उ०—२ नवलख कुळि घणसोहनंदणु सुप्रसिद्धउ, खेताहि तिय कुखि जाउ बहु गुणह समिद्धउ । बाळकाळि निज्जणवि मोह सजम सिरि रत्तउ, गोयम चरिय पयास करणु इणि काळि निरुत्तउ ।

—अभयतिक यती

निरुत्तर–वि० [सं०] १ जिसका कुछ उत्तर न हो ।

२ जो उत्तर न दे सके ।

क्रि०प्र०—करणो, होणो ।

निरुत्साह–वि० [सं०] जिसमें उत्साह न हो, उत्साहहीन ।

निरुद्ध–स०पु० [सं०] योग में पांच प्रकार की मनोवृत्तियों में से एक ।

वि०—अवरुद्ध, रुका हुआ, बंधा हुआ ।

निरुद्यम–वि० [सं०] जिसके पास कोई धंधा या काम करने को न हो, जिसके पास कोई उद्यम न हो वेकाम, उद्योगरहित ।

निरुद्यमता–सं०स्त्री० [सं०] उद्योगरहित होने की क्रिया या भाव, उद्यम का अभाव, वेकारी।

निरुद्यमी–वि० [सं०] जिसके पास कोई कार्य या धन्धा करने को न हो, जिसके पास कोई उद्योग न हो, निकम्मा, उद्योगरहित, वेकार ।

निरुद्योग–वि० [सं० निरुद्योगिन्] जो कुछ उद्योग न करता हो, जो उद्योग न करे, निकम्मा, वेकार ।

निरुद्योगी–वि० [सं० निरुद्यगिन्] जो कोई उद्यम न करे, जो कोई उद्यम न करता हो, वेकार, निकम्मा ।

निरुपक्रम–सं०पु० [सं०] पलायनरहित, ठप्प (?)

उ०—सिंहगुहां पइसी कवण घाइ निसंक, सरप खाधि घालिउ कवण घाइ निरवधान, प्रदीपन कि कवण निद्रा करइ, दुस्ट करि-स्कंध चडिउ कवण दिसि पखा राहइ, अंधकूप तडि बइठउ कवण ऊंघइ, काळकूट विसपांनि कवण निरुपक्रम अछइ, संसार महारण्य किम प्रमाद कीजइ ?—व.स.

निरुपद्रव–वि० [स०] १ जो उपद्रव या उत्पात करने वाला न हो, जो उत्पात या उपद्रव न करता हो ।

२ जिसमें किसी प्रकार का उपद्रव न हो, जिसमें कोई उत्पात न हो ।

निरुपद्रवता–सं०स्त्री० [सं० निरुपद्रव+रा.प्र.ता] उपद्रव या उत्पातरहित होने की क्रिया या भाव, उपद्रव या उत्पात का अभाव ।

निरुपद्रवी–वि० [सं० निरुपद्रविन्] उत्पात या उपद्रव न करने वाला, जो उपद्रव या उत्पात न करे, शांत ।

निरुपम–वि० [सं०] जिसके समान और न हो, जिसकी उपमा न हो, वेजोड़, उपमारहित । उ०—पूगळ नयरी मरुधर देस, निरुपम पिंगळ नांमि नरेस । मारुवाडी नवकोटो धणी, उत्तर सिंधु भूमि तसु-तणी ।—ढो.मा.

रू०भे०—निरूपम, निरूपमी, निरोपम, नीरोपम, नीरोपमी ।

निरुपवाद–वि० [सं०] त्रुटिरहित, अपवादरहित ।

उ०—सिरुया नही वावि अनेक सत गावि, उत्तगतोरण प्रासाद, त्रिसंध्य सांभळीइ तूरघनिनाद, साकटिक तणा संवाद, लोक तणा प्रवाद, सुविसाळ पथिकसाळ, निरुपवाद प्रासाद, नाना प्रकार सत्राकार ।—व.स.

निरुपाधि–सं०पु० [सं०] ब्रह्म ।

वि०—१ विना उपाधि का, उपाधिरहित, बाधारहित।

२ माया से दूर, मायारहित ।

निरुपाय–वि० [सं०] १ जिसके लिए कोई युक्ति न हो, जिसका कोई उपाय न हो ।

२ जो किसी प्रकार की युक्ति लगाने में असमर्थ हो, जो कुछ उपाय न कर सके, जिससे कोई उपाय न हो सके ।

निरुहवस्ति—देखो 'निरूहवस्ति' (रू.भे.)

निरूंखो–वि० (स्त्री० निरूंखी) जहाँ वृक्ष न हो ।

ज्यूं—आ जमी निरूंखी है ।

उ०—भाखर निरूंखो छै ।—बां.दा.ख्यात

निरूढ़लक्षणा–सं०स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसमें शब्द का गृहीत अर्थ रूढ़ हो गया हो ।

निरूतउ, निरूत्तऊ, निरूत्तु—देखो 'निरतु' (रू.भे.)

उ०—१ कांन हेठि करु करिउ जू सूतउ, तउ अम्हि कहीयइ करणु निरूत्तउ । इसीय वात मन भीतरि जांणी, गूझ न कहीउ कूंती रांणी ।—पं.पं.च.

उ०—२ भीमि कीचक तणा सवि मांन मोडी, देवी तणा बंधन सरव छोडी। तु दाघ देई भीम वली पहूतु, नरेंद्र सयारपणइ निरूत्त।—विराटपर्व

निरूप-वि० [सं०] जिसका कोई रूप न हो, निराकार।

उ०—१ निरालंब निरलेप, अचळ चरणां चित धारं। हरि निरगुण निरछेह, वार नहि लाभै पारं। अकळ अभेद अछेह, निरूप निरभै घर पाया। निराकार निरवांण, प्रांण मन तहां समाया।
—ह.पु.वा.

उ०—२ ऊंकार अपार रूप, नह पार प्रमांणं। तूंहीज रूप निरूप तूं, तूं गुण निगुण कहांणं।—गजउद्धार

उ०—३ उपज्या अग्यांन ज्यूं ई ग्यांना, ताते निसेध निरूप। गुणातीत विगत परे आतम, सरव विगत का भूप।
—स्री सुखरांमजी महाराज

सं०पु०—१ परब्रह्म, ईश्वर।

निरूपण-सं०पु० [सं०] १ विवेचनापूर्वक विचार, निर्णय।

उ०—१ निज आखै किव 'किसन' निरूपण, सुणो गीहा गुण दोस सुलछण। सात चतुरकळ अंत गुरु सज्ज, देह छठै थळ जगण तथा दुज।—र.ज.प्र.

उ०—२ किया निरूपण 'किसन' किव, गुण हर विध विध गीत। जड़ता दाघव कविजनां, जस राघव जगजीत।—र.ज.प्र.

२ दर्शन।

३ प्रकाश।

निरूपम, निरूपमी—देखो 'निरुपम' (रू.भे.)

उ०—१ नाव निरूपम परम सुख, जांणै विरला कोय। जन हरिदास ताकूं भजै, तब ही आनंद होय।—ह.पु.वा.

उ०—२ अनांमय अव्यय अक्षय आथ, निरामय निरभय नाथ-अनाथ। अनूप स्वरूप निरूप अलेख, निरूपम भूप न रूप न रेख।
—ऊ.का.

उ०—३ नितंबणी जंघ सु करभ निरूपम, रंभ खंभ विपरीत रुख। जुअळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणै वाखाणै विदुख।
—वेलि.

उ०—४ हुईय कांमिनि रूपि निरूपमी, रहित भीम तमी मुख वीसमी। बहुत भक्ष मनुक्ष करे करी, गयउ सो तडि कीचक सुंदरी।
—विराटपर्व

निरूपित-वि० [सं०] जिसकी विवेचना हो चुकी हो, जिसका निर्णय हो चुका हो, निरूपण किया हुआ।

उ०—भज रे मन रांम सियावर भूपत, अंग घणाघण सोभ अनूप। नीरज जात सुगाथ निरूपित, कोटिक कांम सकांम।
—र.ज.प्र.

निरूहवस्ति-सं०स्त्री० [सं० निरूहवस्ति] डाक्टरी एनिमा प्रणाली के समान वैद्यक में एक प्रकार की पिचकारी (वस्ति) जिससे एक विशेष प्रकार की नली द्वारा रोगी की गुदा में कुछ औषधियां पहुंचाई जाती हैं।

रू०भे०—निरुहवस्ति।

निरेखणौ, निरेखबौ-क्रि०स० [सं० निरीक्षण] निरीक्षण करना, देखना।

निरेखियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ निरीक्षण किया हुआ, देखा हुआ। (स्त्री० निरेखियोड़ी)

निरेजम-वि० [देशज] साहसहीन, नामर्द।

उ०—सत न्हाठोय नासत आयो सही। रजपूती निरेजम नांह रही। किम 'पाल' रसातळ डोर कटै। नरनाथ 'बूडा' पुळ एण नटै।
—पा.प्र.

निरेण—देखो 'नरेहण' (रू.भे)

निरेह-वि०—१ कृश ?

उ०—पोइण रा पांन तिसा कर पुणइ, नाळी जिम आंगळी निरेह। रूप अनूप विचाळइ रेखा, दिणियर जांहि ऊजळी देह।
—महादेव पारवती री वेलि.

२ देखो 'नरेहण' (रू.भे.)

निरेहण—देखो 'नरेहण' (रू भे.)

उ०—१ अवतार लखप्पती एवहौ, जस ग्राह 'जेहळ' जेहवौ। मनमोट निरेहण मंडळी, इळ मांहि खत्रीवट ऊजळी।—ल.पिं.

उ०—२ अलव घण सुयण मिणि खत्रीवट ऊजळी। मन-महण गुण-ग्रहण निरेहण मंडळी। दळ अकळ पासि निरमळ कमळ दौलती। पहसगह बिरिद बह खाटणौ लखपत्ती।—ल.पिं.

उ०—३ क्रीत खग निरेहण उनड कळा।—क कु.बो.

उ०—४ रुघनाथ निरेहण रेसण रांमण, डंबर मेलिय लंब दळं। मांडे महिरांणं पाजि पखांण, बांण धनंख सझे सबळं।—पिं.प्र.

निरेहणा-वि० [सं० निरेषण] कामनारहित, इच्छारहित।

उ०—आकुळी सुरहि नाद सांभळी, जीह नइं मनि हुई भडांवळी। तीणि गामि वसतइं लोक ना, नीर पूरवज लहइं निरेहणा।
—विराटपर्व

निरोग-सं०पु०—१ चद्रमा, चंद्र (ह.नां. ना.डिं.को.)

२ देखो 'नीरोग' (रू.भे.)

निरोगता—देखो 'नीरोगता' (रू.भे.)

उ०— १ सुक्र निरोगता री रोगियां नै अन्याय रा दुखियां नै पूरण ओसध देय तगड़ा करणा।—नी.प्र.

उ०—२ निरोगता री नास करै, निरख पराई नारी रे।—ऊ.का.

निरोगी—देखो 'नीरोगी' (रू.भे.)

उ०—१ देवी जरुखणी भरुखणी देव जोगी, देवी नृम्मळा भोज भोगी निरोगी। देवी मात जांनेसुरी ब्रह्म मेहा, देवी देव चांमुंड संख्याति देहा।—देवि.

निरोगौ—देखो 'नीरोग' (अल्पा., रू.भे.)

ज्यूं—निरोगौ अंग रौ है।

उ०—१ कब हुवो रंगो चंगो, पायो मोठो सादो रे। कबही ढील निरोगो पायो, कब वाला तणी असमाधो रे। जयवांणी
(स्त्री० निरोगी)

निरोध–सं०पु० [सं०] १ अवरोध, रुकावट, रोक, बंधन (उ.र.)
२ योग के अनुसार चित्त की समस्त वृत्तियों को रोकने का काम।
३ घेरने की क्रिया, घेरा।
४ नाश, ध्वंस।

निरोधणो, निरोधबो–क्रि०स० [सं० निरोधनम्] रोकना।
उ०—उल्टा खेल काय सब सोधै। सुन्न मडळ में पवन निरोधै।
—ह.पु.वा.

निरोधणहार, हारो (हारी), निरोधणियो—वि०।
निरोधवाड़णो, निरोधवाड़बो, निरोधवाणो, निरोधवाबो, निरोधवावणो, निरोधवावबो, निरोधाड़णो, निरोधाड़बो, निरोधाणो, निरोधाबो, निरोधावणो, निरोधावबो—प्रे०रू०।
निरोधिग्रोड़ो, निरोधियोड़ो, निरोध्योड़ो—भू०का०कृ०।
निरोधणो, निरोधबो—कर्म वा०।

निरोधन–सं०पु० [सं०] १ वैद्यक के पारे का छठा संस्कार।
२ अवरोध, रुकावट, रोक।

निरोधपरिणांम–स०पु० [सं० निरोधपरिणाम] योग के अनुसार व्युत्थान और निरोध के मध्य होने वाली चित्त-वृत्ति की एक अवस्था।

निरोधियोड़ो–भू०का०कृ०—रोका हुआ।
(स्त्री० निरोधियोड़ी)

निरोप—देखो 'निरोळ' (रू.भे.)
उ०—कुघरणि महा कुहाडि सदा धरइ आटोप, बइठी भरतार दिइ निरोप, डोइला हेठै किंकिउ धरइ, मुहि सांम्ही चीवर वरइ, रांधणां सीधणां नितु अणाहर करइं, सकळ दिवस सूअर जिम चरइ।
—व.स.

निरोपम—देखो 'निरुपम' (रू.भे.)
उ०—तसु घरि नदन च्यारि निरोपम, पहिलउ घुरि धनसार। बीजउ बंधव बहुगुण भरिउ, वुद्धिवत गुणसार। त्रीजउ मूरतिवतउ सागर, सागर जिम गंभीर। चउथउ बधव सुणि घनसागर, समरथ माहस धीर।—विद्याविलास पवाडउ

निरोळ, निरोल, निरोव–सं०पु० [प्रा० णिरोव] आज्ञा, आदेश।
उ०—मूवयां सघळां सुरहां घोळ। जिमवांनउ हिव हूउ निरोळ। धाव्या वास्या निरमळ नीर। आव्यां कर लूहेवा चीर।
—विद्याविलास पवाडउ

रू०भे०—निरोप।

निरोवर–सं०पु० [सं० नीरवर] समुद्र, सागर, जलधि (डि को.)
उ०—मुकरमं प्रोळि प्रोळि मैं मारग, मारग सुरग अघोरमई। पुरि हरिसेन एम पैसारघो, निरोवरि प्रवसंति नई।
—वेलि.

निरोस–वि० [सं० नि+रोष] जिसे रोष न आता हो, शांत।
उ०—सीतळ पातळ मंदगत, अलप अहार निरोस। ऐ तिरियां में पांच गुण, ऐ तुरियां में दोस।—अज्ञात
रू०भे०—निरोह।

निरोह–सं०पु० [सं० निरोधः, निरोधं] १ रोक, रुकावट।
उ०—अथ वरसा, आविउ आसाढ़, अंतरंग संबाढ़, काटईइ लोह, घांम तणउ निरोह, छासि खाटी।—व.स.
२ युद्धस्थल। उ०—'गजबंधी' नाहर गज्जे, दखणी गा कुंजर भज्जे। 'गजबधी' निरोहे पूगा, मुख बारह सूरज ऊगा।
—ग.रू.बं.
३ देखो 'निरोस' (रू.भे.)

निरोहर–सं०पु० [सं० नीर-धर] समुद्र, सागर।
उ०—विहां सूं हि हेकण लीधी वाथ। निरोहर मांय कियो जुध नाथ।—ह.र.

निरौ–वि० (स्त्री० निरी) १ बहुत, अधिक। उ०—सेठ ऊठ नै चाल्या गया, दिन निरौ-ई चढ़ग्यो।—रातवासो
[सं० निरालय] २ जिसके साथ और कुछ न हो, केवल मात्र।
३ विना मेल का, विशुद्ध, खालिस।
४ विल्कुल, एकदम, निपट, नितांत।

निर्लपका—देखो 'नलपिका' (रू.भे. अ.मा.)

निल—१ देखो 'निर्लै' (मह., रू.भे.)
उ०—नव नूर चढियो भड़ निलां। गढ लाज बांधी जिण गलां।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
२ देखो 'नीलो' (मह, रू.भे.)
उ०—बाबहिया निल-पंखिया, मगरि ज काळी रेह। मति पावस सुणि विरहणी, तलफि तलफि जिउ देह।—ढो.मा.

निलइ—१ देखो 'निर्लै' (रू.भे.)
उ०—निलइ तणी महिमा निरखंतां, राज कुंआर तणउ तप व्याध। मदन तणा सिहर चइ माथइ, बारइ तेज तपइ बांणाध।
—महादेव पारवती री वेलि.
२ देखो 'निलय' (रू.भे.)

निलउ—देखो 'निलय' (रू.भे.)
उ०—१ पुहवि पसिद्धउ सूरि सूरिस्वर, सम दम संयम सिरि तिलउ ए। इणि कलिकाळहि एह जो जुगपवर, जिणवइ सूरि महिमा निलउ ए।—साह रयण
उ०—२ पींपलिगच्छि गरुउ गुण निलउ ए, वीरदेवसूरिहिं पाटि ए, अचळ वधामणूं ए।—विद्याविलास पवाडउ
उ०—३ मुगति निलउ जांणि करि, मुनिवर कोड़ि अनंत। इण गिरि आवी समोसरघा, सिद्ध गया भगवंत।—स.कु.
उ०—४ अस्टापद जिम अरचियइ, भरत भराया बिंबोजी। ग्वालेरइ गरुयहि निलउ, बावन गज परलंबोजी।—स.कु.

उ०—५ स्री जिनभद्रसूरिसर भलउ, स्रो जिनचंद्र सकळगुण निलउ ।
—स.कु.

२ देखो 'निलै' (रू.भे.)

निलखणउ, निलखणौ–वि० [सं० निर्लक्षण:] लक्षणहीन, गुणहीन ।
(उ.र.)

निलखणौ, निलखबौ–क्रि०स० [सं० नि+लिख्] अंकित करना, लिखना ।

उ०—विहि अम्हारी वैरणी, पैला भव नी होय । सज्जन-सिउं सुख मांणीइ, निलवटि निलख्या जोय ।—मा.कां.प्र.

निलखणहार, हारो (हारी), निलखणियौ—वि० ।

निलखाड़णौ, निलखाड़बौ, निलखाणौ, निलखाबौ, निलखावणौ, निलखावबौ—प्रे०रू० ।

निलखिओड़ौ, निलखियोड़ौ, निलख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निलखीजणौ, निलखीजबौ—कर्म वा० ।

निलखियोड़ौ–भू०का०कृ०—अंकित किया हुआ, लिखा हुआ ।

(स्त्री० निलखियोड़ी)

निलज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

उ०—१ खीच रा डळा खावै खिसक, नींच तळा कुळ नाळ रा । नित मींच आंख वैठै निलज, भींच अमल भूपाळ रा ।—ऊ.का.

उ०—२ दे दे दरसण दौड़ निलज भागे ले नारी ।—ऊ.का.

निलजई, निलजता, निलजताई—देखो 'निरलज्जता' (रू.भे.)

उ०—नाच गाय कर निलजता, रच वप भूखण रास । मार निजारा मोहियौ, हंजो मुधरै हास ।—बां.दा.

निलजौ—देखो 'निरलज्ज' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ नर तेथ निमांणा निलजी नारी, अकबर गाहक वट अवट । चोहटै तिण जाय'र चीतोड़ो, वेचै किम रजपूत वट ।
—प्रिथीराज राठौड़

उ०—२ नहिं बोलां तौ नीच, जो बोलां निलजा जपै । वसणौ दोजक बीच, जग हसणौ बाकी 'जसा' ।—ऊ.का.

(स्त्री० निलजी)

निलज्ज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

उ०—१ हइ रे जीव निलज्ज तूं, निकस्यू जात न तोहि । प्रिय विछुड़त निकस्यउ नहीं, रह्यउ लजावण मोहि ।—ढो.मा.

उ०—२ क्रिपण बराटक पावियां, नाटक करै निलज्ज । सुण जाचक खाटक करै, सब दिन फाटक सज्ज ।—बां.दा.

निलज्जौ—देखो 'निरलज्ज' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० निलज्जी)

निलन—देखो 'नलिन' (रू.भे.) (ह. नां)

निलय–स०पु० [सं०] १ स्थान, जगह ।

२ घर, मकान (डि.को.)

उ०—जननी तुझ हस्त मस्तक जिह । त्रिदसालय सुख बसत निलय तिह ।—मे.म.

३ समूह, पुंज ।

४ देखो 'निलै' (रू.भे.)

रू०भे०—निलइ, निलउ, निलौ ।

निलवट, निलवटि, निलवट्ट—देखो 'निलै' (रू.भे.)

उ०—१ घडछइ धार बिट्टक हुवइ धड, खाग त्रजाग वाव रण खेत्र । गण आठै वाजिया विसमगति, निलवट सुर बांधियौ नेत्र ।
—महादेव पारवती री वेलि.

उ०—२ वांम अंगई व्रह्म ऊभा, हूआ अणवर इंद । दक्षणां दिसि ईस ऊभा, नाथ निलवट चंद ।—रुकमणी मंगळ

उ०—३ सोभागी महिमा निलो, निलवट पीवई नूर । नरनारी पाय कमळ नमइ हींडोळणा रे, प्रगटचौ पुण्य पडूर ।—स.कु.

उ०—४ नित नित कुमर वाधइ बहु लक्खणि, सुरतरु नउ जिम कद रे । नयणी अनोपम निलवट सोहइ, वदन पुनम नउ चंद रे ।
—धरमकीर्ति

उ०—५ निलवटि तिलक जटित मुगताफळ, अटुमि चंदि जेम तारावळि, आगळि थई सेवंति तु, जय जय ।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—६ निलवटि कस्तूरी-तिलक, म करिसि मुघि अयांण । सहिजि ससिहर लेखवी, करसि राहु विनांण ।—मा.कां.प्र.

उ०—७ भमहि चक्र कोदंड सम, मुकिउ मयण-सुभट्ट । इंदुकळा आठमि तणी, इम सोहइ निलवट्ट ।—मा.कां.प्र.

निलांबर–सं०पु० [सं० नीलांबर] बलराम (अ.मा) ।

निलांम—देखो 'लीलांम' (रू.भे.)

निलागर–सं०पु०—रंग विशेष का घोड़ा ।

वि०—जिकौ जुध वार 'भोजावत' जेम । उछट्टत वाज निलागर एम ।
—सू.प्र.

निलाड़, निलाड़ि, निलाट, निलाटि, निलाड, निलाडि—देखो 'ललाट'
(रू.भे.)

उ०—१ तिण समै विजैराव लांजो आवू रा पंवारां रै परणियौ, तरै सासू निलाड़ दही दियौ ।—नैणसी

उ०—२ हाजीखांन तेजसी नूं वाही सु टोप माथै लागी, नै कितरी हेक निलाड़ में लागी, दोय दांत पाड़िया ।
—राव मालदेरी वात

उ०—३ ससिपाळ के संगि जु राजा हुंता सु कुंदणपुर के निकट आया । तब निलाड़ी हाथ दे देखण लागा । कहै छै—दूरि तैं देखिजै छै ।—वेलि. टी.

उ०—४ म्रगनयणी, म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट । म्रगरिपु-कटि सुंदर वणी, मारू अइहइ घाट ।—ढो.मा.

उ०—५ पुंहरी रा छेह ढळकतां पासइ, लाज करै अंजळउ लीयउ । कोरज वळ पहरि रायकुंवरी, कुंकम तिलक निलाट कीयउ ।
—महादेव पारवती री वेलि.

उ०—६ आंगण-मांहि उघ्रसिउ, नयन चढियां निलाटि । परि परि

परघइ परिचरिउ, वलीउ वइठउ पाटि ।—मा.कां.प्र.

उ०—७ भीमळिया नैणां में अणियाळो काजळ सारियां । सोनै री आड निलाड रै ऊपर दीनां । कुरजां री टोळी, सहेल्यां री हबोळो । —पनां वीरमदे री वात

उ०—८ पग छापरो, कांन टापरो, आंखि उडि, निलाडि भूडि । —व.स.

उ०—९ मलिकइ लोही लखणा तणउं, लेई निलाडि कीउं अगै कहता निलाव वांदणउं ।—कां.दे.प्र.

निलाव-वि० [रा. निल+फा. आव] स्वच्छ, निर्मल । उ०—नदि नांम अगै कहता निलाव, सुरखाव होय उभ्फळ सताब ।—सू.प्र.

निलि—देखो 'नील' (रू.भे.)

निलीह-वि०—गुप्त (अ.मा.)

निलै-सं०पु० [सं० निटलं, निटिलं] १ ललाट, भाल ।

उ०—१ फरस पांणि फावेस उभै डसणेस अघक्कर । निलै अरध नखतेस मसत भणणेस मधुक्कर ।—सू.प्र.

उ०—२ दुरत निलै तसळै बळ दीधो । कमधज धनख टंकारव कीधो ।—सू.प्र.

उ०—३ निलै त्रिण रेख इसै अणुहारि ।—रा.ज.रासो

उ०—४ खांव दर सकळ हैं खांन राजा खड़ा, निलै नीची निजर भूप आनेक । वाळ बळ मूंछ वणिया तठै दाख बळ, अकळ अंवखास जंगळ सुपह एक ।—द.दा.

रू०भे०—नलवट, नलवटि, नलै, निलइ, निलवट ।

अल्पा०—निलवटि, निलावट, निलो ।

मह०—निल ।

२ देखो 'निलय' ।

निलोह, निलोही, निलोहो-वि०—विना शस्त्र प्रहार का, शस्त्र प्रहार से जख्मी हुए विना, अक्षत ।

उ०—१ निलोह थकियो परलै पासै जाय ऊभो खेरूं करै छै । —डाढ़ाळा सूर री वात

उ०—२ आदमी पचासां कांम आय गया । आदमी डेढ़ सो खोखर कांम आया । वाकी सघळा ही घोड़ा घणा घायल हुवा । निलोही तो कोई'क नहीं रहियो ।—सूरे खीवे कांधळोत री वात

उ०—३ तरै पातसाह नै अरज पोहचाई, वीरमदे बहुत जंग जुलम करै है । तद पातसाह कह्यो—वीरमदे मारै सो मारणै द्यो, पिण वीरमदे नैं लोह कोई मती करो । ढालां री ओट दे नैं जीवतो निलोहो पकड़ि हजूर ले आवो ।—वीरमदे सोनिगरा री वात

उ०—४ पुजोजै गज मोतियां, सखी भड़ां भुज आज । नाह निलोहो आंणियो, करै अगाऊ काज ।—वी.स.

निलो—१ देखो 'निलय' (रू.भे.)

उ०—१ सोभागी महिमा निलो, निलवट दीपइ नूर । नर नारी पाय कमळ नमइ हींडोळणा रे, प्रगट्यो पुण्य पडूर ।—स.कु.

उ०—२ सूरि सिरोमणि गुण निलो, गुरु गोयम अवतार हो । सद-गुरु तुं कळियुग सुरतरु समो, वांछित पूरण हार हो । —ऐ.जै.का.सं.

उ०—३ 'बाफणा' गोत्र कळा निलो रे, साह 'रूपसी' नो नंद । 'स्त्री जिन समुद्र' कहइ पूज्यजी रे, प्रतपी ज्यूं रवि चद । —ऐ.जै.का.सं.

२ देखो 'निलै' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—नवनूर चढ़ियो भड़ निलां, गढ़ लाज बांधी जिण गळां । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ देखो 'नीलो' (रू.भे.)

उ०—रोझा, निला, गंगाजळ, हंसला, नैण काजळ । अस सेराह अऊव, खेंग रोहला हावूव ।—ग.रू.वं.

निल्लाट—देखो 'ललाट' (रू.भे.)

उ०—निल्लाटै पट्टै तप्पै दिप्पै, मांण दूण मेमट्टै ।—ग.रू.वं.

निव—देखो 'नृप' (रू.भे.)

उ०—गिरि वेयट्ट तलि घयऊ पणमिउ नाभि मल्हारु । निव मणि चूडह राजु दिइ पहिलउ एउ उपकारू ।—पं.पं.च.

निवड़-वि० [सं० निविड] १ दृढ़, मजवूत ।

उ०—घण घण सात्रव घाय, नह फूटै पाहड़ निवड़ । जड़ कोमळ मिद जाय, राड़ पड़ै जद राजिया ।—किरपारांम

२ वहादुर, वीर, पराक्रमी । उ०—१ एक मांगळियो 'तेजसी' अन 'साहिवो' अवीह । सकळा निवड़ भड़ आठ सो, घावड़ ठाकुरसीह। —रा.रू.

उ०—२ भुजवळ सिंघ जिसा भाराथै । सो त्रण निवड़ भड़ थया साथै ।—रा.रू.

३ जवरदस्त । उ०—विचित्रांण निवड़ घड़ महण वेळ । मुरधरा नरां हुय निजरमेळ । वळ दाख दहूं दिस अस-वंध । किलवांण पेख वळिया कमंध ।—रा.रू.

४ अद्वितीय । उ०—मैं परणंती परखियो, सूरति पाक सनाह। घड़ि लड़सि गुड़िसी गयंद, नीठि पड़िसी नाह । नाह नीठि पड़िसी खेत मांभी निवड़ । गयंद पड़िसी गहर करड़ घड़ भड़ गहड़ । —हा.भा.

५ देखो 'निपट' (रू.भे.)

उ०— वैनांणी ढीलो घड़ै, मो कंथ तणो ननाह । बिकसै पोइण फूल जिम, पर दळ दीठां नाह । नाह विकसै घणो कमळ जिम भड़ निवड़ । भड़ घणा पाड़तो सोभियो महाभड़ ।—हा.भा.

६ देखो 'निवड' (रू.भे.)

७ देखो 'निविड' (रू.भे.)

निवड़णो, निवड़वो-क्रि०अ० [सं० निवर्तनं] फलीभूत होना, तैयार होना ।

ज्यूं—इण पेड रा आंवा चोखा (सकरा) निवड़िया है।

ज्यूं—म्हारै भाई रा वेटा सैंग सकरा निवड़िया है ।

२ देखो 'निपटणौ, निपटबौ' (रू.भे.)

उ०—१ मेड़तियां सूं वेढ़ हुई। राठौड़ प्रथीराज कांम आयौ। वेढ़ हारी वा राजा रांणा री तौ वात अठै हीज निवड़ी।—नैणसी

३ देखो 'नीमड़णौ, नीमड़बौ' (रू.भे.)

मुहा०—कांम निवड़णौ—समाप्त होना, प्राण छूट जाना, मर जाना।

निवड़णहार, हारौ (हारी), निवड़णियौ—वि०।

निवड़ाड़णौ, निवड़ाड़बौ, निवड़ाणौ, निवड़ावौ, निवड़ावणौ, निवड़ावबौ—प्रे०रू०।

निवड़िओड़ो, निवड़ियोड़ौ, निवड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निवड़ीजणौ, निवड़ीजबौ—भाव वा०।

नींमड़णौ, नींमड़बौ, नींवड़णौ, नींवड़बौ, नीमड़णौ, नीमड़बौ, नीमटणौ, नीमटबौ, नीमडणौ, नीमडबौ, नीवड़णौ, नीवड़बौ —रू०भे०

निवड़ियोड़ौ—देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवड़ियोड़ी)

निवछावळ, निवछावळि—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)

उ०—पाका दाड़िमां का बीज। जू छिटकि पड्या छै। एही वसंत पाठ बैठै नै निवछावळि कीया छै।—वेलि. टी.

निवड-वि० [सं० निबिड] १ प्रगाढ़, गहरा, घनिष्ट।

उ०—१ मुंह मांग्या वरसई मेह, लोके लोके निवड सनेह। सगळई जगि हुयउ सुगाळ, गुण गावइ बाळगोपाळ।—खीसार

उ०—२ बीज तणी चद्रलेखा जिम सरववंदनीय, चक्रवाकी जिम निवड प्रेम, वचनि करी कोकिला स्वरूप।—व.स.

२ मजबूत, दृढ़। उ०—१ एक वार दांनसाळा आगळि पेखिउ चोर एक दे। निवड बंधणे वांधिउ सवळु लेई जाइ छेक दे।

—नळ-दवदंती रास

उ०—२ अथ हस्तीवरणनं, आलांनस्तंभ मोडी, निवड लोह तणी सं खळा तोडी।—व.स.

३ भयंकर। उ०—आज संसार समुद्र निस्तरिउ, आजु दुक्ख। जळांजळि दीधी, निवड करम्म निगड ओडो।—व.स.

४ देखो 'निपट' (रू.भे.)

उ०—१ घुख ऊठिया विम्हे भड घुकिया, धारां मांहे घूमिया घड। रुध वाजा नीसांण वीर रस, नाचइ तत थेइ भड निवड।

—महादेव पारवती री वेलि.

उ०—२ प्राझी नवखडे प्रसिध, माझी अमणी-मांण। भालिम खाटण निवड भड, जालिम जोध जुआंण।—ल.पिं.

५ देखो 'निबिड' (रू.भे.)

निवणौ, निवबौ—देखो 'नमणौ, नमबौ' (रू.भे.)

उ०—१ पगां तुझ पुज करै प्रहलाद, निवै पग छांह वडा नरनाद। इसा पग तेज तणा अंबार, तिकै पग सेवै ईसर तार।—ह.र.

निवणहार, हारौ (हारी), निवणियौ—वि०।

निवाड़णौ, निवाड़बौ, निवाणौ, निवावौ, निवावणौ, निवावबौ —प्रे०रू०।

निविओड़ौ, निवियोड़ौ, निव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निवीजणौ, निवीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

निवतणौ, निवतबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)

उ०—निवत कटक नव लाख, जद हेकण जिमवाइया। सूरज ससिहर साख, विरद तुहाळा विरवड़ी।—अज्ञात

निवतणहार, हारौ (हारी), निवतणियौ—वि०।

निवताड़णौ, निवताड़बौ, निवताणौ, निवतावौ, निवतावणौ, निवतावबौ—प्रे०रू०।

निवतिओड़ौ, निवतियोड़ौ, निवत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निवतीजणौ, निवतीजबौ—कर्म वा०।

निवतरणौ, निवतरबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)

उ०—नव लाख निवतरै सहत नूर। नित दिवस वदै रंग रळी पूर।

—रांमदांन लाळस

निवतरणहार, हारौ (हारी), निवतरणियौ—वि०।

निवतराड़णौ, निवतराड़बौ, निवतराणौ, निवतरावौ, निवतरावणौ, निवतरावबौ—प्रे०रू०।

निवतरिओड़ौ, निवतरियोड़ौ, निवतर्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निवतरीजणौ, निवतरीजबौ—कर्म वा०।

निवतरियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवतरियोड़ी)

निवतरौ—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

ज्यूं—आज म्हारै जीमण रौ निवतरौ आयौ है सु म्हे घरै नीं जीमां।

२ देखो 'नेंत' (अल्पा०, रू.भे.)

निवतियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवतियोड़ी)

निवतेरौ-वि० [सं० नमनम्] ढलती उम्र का, हलका।

उ०—जुड़णण जोड़ण नांमाजोड़ौ। नारि नवी निवतेरौ नाह। धावै खांन हजन खाफरघड़। वीरति सिरजीयौ वीमाह।—दूदौ

निवतौ—१ देखो 'निमत्रण' (रू.भे)

उ०—१ सो हे धणी इसा सूरबीर धरां नै छेड़णा ठीक नहीं, क्यूंकि ऐड़ा घर नै जुद्ध रौ निवतौ देवणौ आपरा घर में जळ (पांणी) देणौ है।—वी.स टी.

उ०—२ ऐ विनां निवता रा पांहुंणा (सत्रु) ढळिया आय नै ऊतरिया छै। पण म्हारौ पती परुस जाणै है। (सस्त्र वाय जाणै है) सो भूखो जांणौ कोई नहीं जावैला।—वी.स.टी.

२ देखो 'नेंत' (अल्पा०, रू.भे.)

निवरत्ती-वि० [सं० निर्वतिन्] १ निर्लिप्त।

२ जो युद्ध में से भाग आया हो, जो पीछे की ओर हट आया हो।

निवरी-वि० [सं० निवृत्त] (स्त्री० निवरी) १ जिसने काम-काज निपटा दिया हो, जो छुट्टी पा गया हो, खाली।

२ छूटा हुआ।

३ जो दूर हट गया हो, जो अलग हो गया हो, विरक्त।

४ व्यर्थ, बेकार।

उ०—दादू निवरे नांम बिन, झूठा कथै गियांन। बैठे सिर खाली करै, पंडित वेद पुरांन।—दादूवांणी

निवळ—देखो 'निरबळ' (रू.भे.)

उ०—ननीयौ कहै हूं निवळ, नांम किए हो में न पढूं। छिप्पौ वरग रै छेह, देखि तोइ कहै मुझ दुपडूं।—घ.व.ग्रं.

निवळोड़ो, निवळो—देखो 'निरबळ' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० निवळोड़ी, निवळी)

निवसणौ, निवसबौ-क्रि०अ० [सं० निवसनम्] निवास करना, रहना।

उ०—१ तां वणि पेसइ मणिमइ भूयणु, तींछे निवसइ नारीरयणु सणि पहुतउ राउ घवळहरे।—पं.पं.च.

उ०—२ निवसइ लोक तिहां अति घणा, जिहं घरि रिद्धि तणा नहीं मणा। जांणे अभिनव कमळा गेह, भूमडळि अवतरिउं एह।

—विद्याविलास पवाडउ

निवसहार, हारौ (हारी), निवसणियौ—वि०।

निवसिओड़ो, निवसियोड़ो, निवस्योड़ो—भू०का०कृ०।

निवसीजणौ, निवसीजबौ—भाव वा०।

निवसथ-सं०पु० [सं० निवसथः] १ हद, सीमा।

२ गांव (डिं.को.)

निवसन-सं०पु० [सं० निवसनं] १ स्त्री का अधोवस्त्र (डिं.को.)

२ भीतर पहनने का वस्त्र।

३ डेरा, मकान, घर।

४ गांव।

निवसियोड़ो-भू०का०कृ०—निवास किया हुआ, रहा हुआ।

(स्त्री० निवसियोड़ी)

निवह-सं०पु० [सं० निवहः] १ समूह, यूथ।

२ सात पवनों में से एक पवन।

निवहणौ, निवहबौ—देखो 'निभणौ, निभबौ' (रू.भे.)

उ०—अंग न छूटै आगड़ी, सोहो सापुरसांह। धासड़ियां धळगी रहै, कुनरां कापुरसांह। आहर मारहियां जितै, निवहै साजै नाद। ओवण सहो महंत जग, सोहां इतै सवाद।—बां.दा.

निवहणहार, हारौ (हारी), निवहणियौ—वि०।

निवहाड़णौ, निवहाड़बौ, निवहाणौ, निवहाबौ, निवहावणौ, निवहावबौ—क्रि०स०।

निवहिओड़ो, निवहियोड़ो, निवह्योड़ो—भू०का०कृ०।

निवहीजणौ, निवहीजबौ—कर्म वा०।

निवहाड़णौ, निवहाड़बौ—देखो 'निभाणौ, निभाबौ' (रू.भे.)

निवहाड़ियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवहाड़ियोड़ी)

निवहाणौ, निवहाबौ—देखो 'निभाणौ, निभाबौ' (रू.भे.)

निवहायोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवहायोड़ी)

निवहावणौ, निवहावबौ—देखो 'निभाणौ, निभाबौ' (रू.भे.)

निवहावियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवहावियोड़ी)

निवहियोड़ो—देखो 'निभियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवहियोड़ी)

निवांण-सं०पु० [सं० निपान] १ सरोवर, जलाशय तालाब (अ.मा.)

उ०—१ रीता हुवै हजारहां, कळस भरीज भरीज। रीता हुवै निवांण नेह, इण द्रस्टांत पतीज।—बां.दा.

उ०—२ दळ अकबर तोपां दगै, सूकै नीर निवांण। गोळा लागै चीत गढ़, मैंगळ माछर जाण।—बां.दा.

उ०—३ बावेली ए भूरा भूरा बुरजा रे हेट, चमकै हजारी ढोला बीजळी। बावेली ए खिव खिव भरिया रे निवांण, जठै नै जंवाई धोवै धोतिया।—लो.गी.

उ०—४ कहियौ बंधव तेम नृप कीधौ। दुति निज नगर नगर रुचि दीधौ। बाग निवांण अवास बणाए। लार सहंस दस गांम लगाए।

—सू.प्र.

उ०—५ राजा ओड तेड़ाविया, खोदण काज निवांण। गूजर खंड सों आविया, करि पूरो परवांण।—जसमां ओडणी री वात

२ कूप, कूआ। उ०—अलक डोरि तिल चड़सवौ, निरमळ चिबुक निवांण। सींचै नित माळी समर, प्रेम बाग पहचांण।

—बां.दा.

३ गड्ढा. ४ नीची भूमि. ५ समुद्र, सागर।

उ०—ज्यूं राखै त्यूं रहै, जिहां निरमै त्यां जावै। हुकम सो ही सिर हुवै, जिको मीरां फुरमावै। कांम क्रोध मद लोभ, मोह पड़िया भ्रम बीजै। तूं ही मार जीवाड़, तूं ही दीजै तूं ही लीजै। ध्यावतां निजर तो सूं धरै, तो निवांण निसचै तिरै। राजाधिराज तोरी रजा, 'ईसर' चा सिर ऊपरै।—ह.र.

६ देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

वि०—नीचा। उ०—ज्यां का ऊंचा बैसणा, ज्यां का खेत निवांण। ज्यां का वैरी क्या करै, ज्यां का मीत दिवांण।—अज्ञात

रू०भे०—निमांण, निवांण, निवांणणौ, निवांणि, निव्वांण, नीवांण।

अल्पा०—नीवांणो।

निवांणणौ—देखो 'निवांण' (रू.भे.)

निवांणभर-सं०पु०—बादल, घन (नां.मा.)

निवांणियौ-वि० [सं० निवात] धारोष्ण (दूध)

निवांणू, निवांणौ-वि० [सं० निवात] १ गुनगुना, गरम, उष्ण ।
२ देखो 'निवांण' (रू.भे.)
उ०—१ देस निवांणू, सजळ जळ, मीठा बोला लोइ । मारू कांमणि दिखणिधर, हरि दीयइ तउ होइ ।—ढो.मा.
उ०—२ वरिखा रितु गई सरद रितु वळती, वाखांणी सु वयणा वयणि । नीखर घर जळ रहिउ निवांणे, निधुवनि लज्जा श्रो नयणि ।—वेलि.

निवा—देखो 'न्याव' (रू.भे.)

निवांन—देखो 'निवांण' (रू.भे.)

निवाश्र—देखो 'निपात' (रू.भे.) (जैन)

निवाई-वि०स्त्री० [सं० निवात] १ हवा के झोंकों से रहित, बिना वायु की । उ०—१ दीपमाळिका नीके जोय । निस्चय रात निवाई होय ।
—वर्षा विज्ञान
उ०—२ वीभर प्रति बोलै रात निवाई ।—अज्ञात
२ किंचित उष्ण, हल्की गरम, गुनगुनी ।
३ देखो 'न्याव' (अल्पा०, रू.भे.)
रू०भे०—नवाई ।

निवाड़णौ, निवाड़बौ—१ देखो 'नमाणौ, नमाबौ' (रू.भे.)
२ देखो 'निवाणौ, निवाबौ' (रू.भे.)
निवाड़णहार, हारौ (हारी), निवाड़णियौ—वि० ।
निवाड़िश्रोड़ौ, निवाड़ियोड़ौ, निवाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निवाड़ीजणौ, निवाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
निवणौ, निवबौ—अक०रू० ।

निवाड़्योड़ौ—१ देखो 'नमायोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'निवायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निवाड़ियोड़ी)

निवाज-वि० [फा० नवाज़] दया करने वाला, कृपा करने वाला ।
ज्यूं—गरीब-निवाज ।
सं०पु०—१ घोड़ा, अश्व ।
२ देखो 'नमाज' (रू.भे.)
उ०—१ संध्योपासन तजि बांग साज । निस दिवस वुजू रोजा निवाज । सांमरत्थ सिंह हम नहिं स्रिगाळ । गौ-मांस नाम पै देत गाळि ।—ऊ.का.
उ०—२ निरवहइ व्रत्ति रोजा निवाज, वंबळीवाळ के तवलबाज । जब्बा पलीत मूगुल्ल जूह, सारवक जाणि बोलइ समूह ।—रा.ज.सी.
अल्पा०—निवाजौ ।

निवाजण-वि० [फा० नवाज़+रा.प्र.ण] प्रसन्न होकर दान देने वाला, प्रसन्न होने वाला । (ह.नां.)
उ०—१ विलसण गज वाजि निवाजण खटग्रंन, काइम राज अजाद सकाज ।—ल.पिं.
उ०—२ साजण जुधां वीसभुज आसुर, दीन निवाजण अनुज सहोदर । बोलै साख त्रिकुट लिछमीवर, उमंग रीसवाळौ अवधेस्वर ।—र.ज.प्र.

निवाजणौ, निवाजबौ-क्रि०अ० [फा० नवाज+रा.प्र.णौ] १ खुश होना, प्रसन्न होना । उ०—१ निसचै मरद निवाजिया, नित तुरी खाकी ।
—केसोदास गाडण
उ०—२ ढढी गाया निसह भरि, राग मल्हार निवाज । च्यार पहर झड़ मंडियउ, घण गुहिरइ सुर गाज ।—ढो.मा.
२ तृप्तमान होना । उ०—१ नेस संतोसणां भूपत्यां निवाजै, खोसणां ऊपरै रहै खीजी । राठवड़ थाट 'दूदा' हरा राज में, बिराजै आज हिंगळाज बीजी ।—मे.म.
उ०—२ पत सहती पतनी सवै, दिनै वैकूंठां वास । पतिव्रत पाळ्यौ हरि भज्यौ, प्रभू निवाजै तास ।—गजउद्धार
क्रि०स०—कृपा करना, महरबानी करना ।
उ०—यूं विचार करै छै । तितरै नरौ पोकरण जाय पुहतौ । आगै प्रोहित जायनै प्रोळियै नूं साद कियौ । कह्यौ—'वेगो थारौ कटोरौ ल्यै ।' उतावळ सूं ऊठण लागो, त्यूं उतावळा साद किया । ताहरां प्रोळियौ ऊठियौ । नींदाळ थकै हौज खिड़की खोली । कह्यौ—'कटोरौ वौ उरहौ' ताहरां प्रोहित कह्यौ—'वाळ रे भाई ! थारौ कटोरौ । म्हारै मांस रे हाथ लगावै कुण ?' ताहरां प्रोळियौ बोलियौ—'राज ! निवाजिया म्हांनूं । जिसड़ै हाथ आधौ काढियौ, तिसड़ै नरै वरछी वाही सु पूठ मांहै जाती नीसरी । धरती ढह पड़ियौ ।—नैणसी
३ दया करना । उ०—१ हाथ सूंड बाहर रही, और सबै जळ मांय । कीजै दया दयाळ जू, वेग पधारौ आय । केते संत निवाजियै, कही न मो पै जाय । मोहि छुटावौ ग्राह सूं, वेगो करौ सहाय ।
—गजउद्धार
उ०- २ निरधार निवाजण मैं अघ भांजण, सेवग तार सधीर सो जी । दुख देवां दहण देत दपट्टण, वीर निको रघुवीर सो जी ।
—र.ज.प्र.
४ दान देना । उ०—वागो थाळ जनम चौ वेळा, मागो आदिन अमंगळ भेळा । वाजत्र ससुर वधावा वाजै, नरपत मंगण जणा निवाजै ।—रा.रू.
५ पुरस्कार देना ।
निवाजणहार, हारौ (हारी), निवाजणियौ—वि० ।
निवाजिश्रोड़ौ, निवाजियोड़ौ, निवाज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निवाजीजणौ, निवाजीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

निवाजस सं०स्त्री० [फा० निवाजिश] १ पारितोषिक, पुरस्कार, इनाम । उ०—१ केतां भड़ां निवाजस कीजै, दांन प्रसन मन पातां दीजै । अतरै दूत खबर ले आया, समाचार सह विवह सुणाया ।
—रा.रू.

उ०—२ तरै पातसाह री बोड़ो सगळै ही कटक मांहै फिरियो, 'जिकोई आ कबांण चाढै तिकै नूं म्हे वहोत निवाजस करां।' —नैणसी

२ कृपा, महरबानी, अनुग्रह।

उ०—१ म्हांनूं हजरत निवाजस कर विदा करै तो म्हे गढ़ ल्यां। —नैणसी

उ०—२ महाराज निवाजस उच्च मन्न। कविराव रीझ कहियो 'करन्न'। जप आसिस पद्धरि छंद जोड़। कायम्म राज नृप जुग करोड़।—वि.सं.

उ०—३ स्री महाराज आप कुळ सूरिज। धरपति तेरह साख कमंधज। कर ग्रहि मुझ निवाजस कीधो। दूजो राज नागपुर दीधो। —सू.प्र.

३ दान।

रू०भे०—निवाजिस।

निवाजियोड़ो-भू०का०कृ०—१ खुश हुवा हुआ, प्रसन्न हुवा हुआ।

२ तुष्टमान हुवा हुआ।

३ कृपा किया हुआ, महरबानी किया हुआ।

४ दया किया हुआ।

५ दान दिया हुआ।

६ पुरस्कार दिया हुआ।

(स्त्री० निवाजियोड़ी)

निवाजियो-सं०पु०—नमाज पढ़ने वाला, मुसलमान।

निवाजिस—देखो 'निवाजस' (रू.भे.)

निवाजो—देखो 'निवाज' (अल्पा०, रू.भे.)

निवाणो, निवाबो—देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)

निवाणहार, हारो (हारी), निवाणियो—वि०।

निवायोड़ो—भू०का०कृ०।

निवाईजणो, निवाईजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

निवात-सं०स्त्री०—मिश्री।

रू०भे०—नवात।

निवाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.)

उ०—फौज हजार ५०००० मदत में दीनी। निवाब जावदीनखां नूं सार्ग कियो फौज मुसायब।—द.दा.

निवाबजादो—देखो 'नव्वाबजादो' (रू.भे)

(स्त्री० निवाबजादी)

निवाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)

निवाय—देखो 'निपात' (रू.भे.) (जैन)

निवायोड़ो—देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवायोड़ी)

निवायो-वि० [सं० निर्वात] (स्त्री० निवाई] १ किञ्चित उष्ण, हल्का गरम, गुनगुना।

२ हवा के झोंकों से रहित, बिना वायु का।

उ०—अंधारै रो आदीत, अरस री अमरी, सरग री झांप, विरह रो समूह, रूप रो निधान, थाका हंस री टोळी, निवायै री होळी, घणै हाट नै चीरमां लपेटी थकी विराजमांन होइनै रही छै। —रा.सा.सं.

रू०भे०—नवायो, नियायो, निंवायो, नूनवायो, न्यायो।

निवार-सं०स्त्री० [देशज] १ एक प्रकार का अनाज।

[फा० नवार] २ पलंग आदि बुनने की मोटे सूत की बनी हुई तीन-चार अंगुल चौड़ी पट्टी।

उ०—लायो नटड़ो टूटसी खाट जी, कोई जद चित आयो पलंग निवार को। लायो नटड़ो फाटयो पुरांणो पूर जी, कोई जद चित आया सोड़'र गींदवा।—लो.गी.

रू०भे०—नवार, निंवार, नीवार।

निवारक-वि० [सं०] १ दूर करने वाला, मिटाने वाला।

२ रोकने वाला, रोधक।

निवारण-सं०पु० [सं०] १ दूर करने, हटाने या मिटाने की क्रिया।

उ०—१ सीत निवारण जीरण कंथा, ताकै थेगल लागी। गिर तरु मंढी मसांण चौड़ै, ऐसै रह अनुरागी। —स्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ राह भवन धन धन सुख राखै, दुनी कुबेर सरोतर दाखै। केत अस्टमै थांन सकारण, नितप्रत ततपर कस्ट निवारण। —रा.रू.

उ०—३ परम्म निवास निवारण पाप, जोगेसर भद्र अजप्पा जाप। दातार-मुकत्ति दिनंकर देव, सारूप सालोक सांमीप सांमेव। —ह.र.

२ रोकने या बंद करने की क्रिया। उ०—श्री वदन पीतता चित व्याकुळता, हियै धगधगी खेद हुइ। धरि चख लाज पगे नेउर धुनि, करे निवारण कंठ कुह वेलि।—वेलि.

३ छुटकारा, निवृत्ति।

रू०भे०—नवारण, निवारन।

निवारणो, निवारबो-क्रि०स० [सं० निवारणम्] १ त्यागना, छोड़ना।

उ०—१ वळ दुंधमार बयण बांणासुर, आयै दिन न कीध अवार। वडा वडा गा तोरण वांदै, नवल वना अहंकार निवार। —ओपो आढ़ो

उ०—२ घोड़ा हींस न भल्लिया, पिय नींदड़ी निवारि। बैरी आया पांवणा, दळथंभ तूझ दुवारि।—हा.झा.

उ०—३ पावस-मास प्रगट्टियउ, पगइ बिलंबइ गारि। धण की आही वीनती, पावस पंथ निवारि।—ढो.मा.

२ दूर करना। उ०—१ नाई होय करै अंग मरदन, चाकर होय निवारै चींत। विरद निहार मालसी वैठे, मूरत छिब पलटै मावीत। —भगतमाळ

उ०—२ जग में सयल समत्थ जळ, प्रगट निवारण पंक। पातक हरण समत्थ श्रो, सो गंगाजळ 'बंक'।—बां.दा.

३ नाश करना, मिटाना। उ०—१ भेळो तैं कीधो भलो, बळहर श्रो जळजाळ। धुन मधुरी पुहमी ध्रवै, दुसह निवार दुकाळ।

—बां.दा.

उ०—२ वंदूं चरण गुरुदेव के, निज बुध अनुसारे, गाऊं गुण जगपती, ततसार तुमारे। जनम जनम के करम, जे हुय खीण हमारे, संतां कौन सहाय तें, निज दुक्ख निवारे।—भगतमाळ

उ०—३ पगग ते जांणै पाछणां, पवन ते लाइ लूण। पडी पडी हुं तडफडुं पीडि निवारइ कुंण।—मा.कां.प्र.

उ०—४ को अपार धरि कमळि सेख विण भार-स धारै। सूर विगर संसार कमण अंधार निवारै।—रा.रू.

उ०—५ मेह अकाळै मावचै, रित काळ निवारै।

—केसोदास गाडण

४ छुटकारा दिलाना, बंधनमुक्त करना, छुड़ाना।

उ०—कळह रचै दसकंध, नवग्रह बंध निवारियो। हुवा धनुख गुण सबद व्है, गतमद जग मदगंध।—बां दा.

५ अलग करना, हटाना। उ०—अन तें मन निवारियां रे, मोहि एकै सेती काज। अनत गये दुख ऊपजे, मोहि एकहि सेति राज रे।

—दादूवांणी

६ रोकना। उ०—धरा रूप लंबी करां धूप धारै, नरां एक एको हजारां निवारै।—वं.भा.

७ प्रतिक्रमण करना, हद से बाहर होना, मर्यादा उल्लंघन करना। उ०—हरि चाहै सुज हुग्रं, लेख चाहै सुर-लोयी। भू-मडळ भोगवै, करम प्राचीन सकोयी। अटक हीण असपती, पाप छित श्रोसर वायो। रद करवा रज्जियां, दुरद जेहो मद श्रायो। साकियो राज रांणा सकळ, अकळ पांण छिलियो असुर। लहरीस जांण वारी लहै, गरज निवारी सीम गुर।—रा०रू०

निवारणहार, हारो (हारी), निवारणियो—वि०।

निवाराड़णो, निवाराड़बो, निवारणो, निवारबो, निवारावणो, निवारावबो—प्रे०रू०।

निवारिश्रोड़ो, निवारियोड़ो, निवारचोड़ो—भू०का०कृ०।

निवारीजणो, निवारीजबो—कर्म वा०।

नवारणो, नवारबो, नीवारणो नीवारबो—रू०भे०।

निवारन—देखो 'निवारण' (रू.भे.)

उ०—नित भूधर सोत निवारन कां, धिन जे गल गूदर धारन कां। करले घर लेर कमंडळ की, महिमा हरलै महिमंडळ की।

—ऊ.का.

निवारस-वि० [सं०नि+अ. वारिस] जो वारिश या हकदार न हो।

निवारियोड़ो-भू०का०कृ०—१ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।

२ दूर किया हुआ।

३ नाश किया हुआ, मिटाया हुआ।

४ छुटकारा दिलाया हुआ, बंधनमुक्त किया हुआ, छुड़ाया हुआ।

५ अलग किया हुआ, हटाया हुआ।

६ रोका हुआ।

७ मर्यादा उल्लंघन किया हुआ, अतिक्रमण किया हुआ, हद से बाहर हुवा हुआ।

(स्त्री० निवारियोड़ी)

निवाळ—देखो 'निवाळो' (मह., रू.भे.)

उ०—निवाळनि घप्पिय लेत डकार, किते सद तोपनि फट्टि पहार।

—ला.रा.

निवाळो-सं०पु० [फा० निवाला] १ एक बार में मुंह में डाला जाय उतना भोजन, ग्रास, कौर।

उ०—हुवै घत्त लोहित्त मैमत्त हाला, नसा रा किसा पार सूळां निवाळा। मधूमास श्रासोज में रास मंडे, तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडे।—मे.म.

२ वह भोज जो नगर के बाहर किसी बाग या उपवन में या अपने भवन में ही इष्ट मित्रों को आमन्त्रित कर किया गया हो।

उ०—तद 'गोपो' रिणमलोत विकूंपुर धणी हुतो, कपूत सो ठाकुर हुतो। सु 'हरा' रा हेरू लागा हुता। श्रो कठै के निवाळ खाण गयो हुतो, पछै 'हरे' 'गोवा' कना विकूंपुर लियो।—नैणसी

रू०भे०—नवाळो, न्याळो।

मह०—नवाळ, निवाळ।

निवावणो, निवावबो—१ देखो 'नमाणो, नमावो' (रू.भे.)

निवावणहार, हारो (हारी), निवावणियो—वि०।

निवाविश्रोड़ो, निवावियोड़ो, निवाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

निवावीजणो, निवावीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

निवणो, निवबो—अक० रू०।

निवावियोड़ो—१ देखो 'नमायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'निवायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवावियोड़ी)

निवास-सं०पु० [सं०] १ रहने की क्रिया या भाव।

उ०—१ उदैसिंघ लखधीर तण, रहियो रांणै पास। बीजा साजा राठवड़, राजा पास निवास।—रा.रू.

उ०—२ ग्यांन लहर जहां थैं उठै, वांणी का परकास। अनुभव जह थैं ऊपजै, सब्दै किया निवास।—दादूवांणी

२ रहने का स्थान। उ०—१ जिणरी संगति रै प्रभाव सूं स्वरग लोक री मारग मुद्रित कराय कुंभी पाक री निवास भाळियो।

—वं.भा.

३ घर, आवास (ह.नां, अ.मा.)

४ उतनी उष्णता या ताप जिससे शरीर को शीत का अनुभव न हो, किञ्चित उष्णता।

ज्यूं—ग्ररे टावर ! सियां तौ को मरै है नी ? तद टावर कही—ग्रजै तौ रजाई ग्रोढी हीज है थोड़ी देर सूं निवास ग्राही जणां ठा' पड़ही ।

५ ग्राश्रय, सहारा ।

ज्यूं—वेटा ! म्हारै बीजौ है कुंण ? म्हारै एक थारो ईज निवास है ।

उ०—कहणै लागिया—स्यांमी, थारै पगां रै कासूं हुवौ ? तद उण कही—बाबाजी बाळिया छै. महिना दोय मरतां नूं हुवा । जद इहा चाकरां कही—तूं गांव मांही हाल, तो नूं उठै राखस्यां, खाणै नूं देस्यां, पाटा बांधस्यां, थारी जापतो जे करस्यां । सुण कर भूधर कही—गांव मांही तो हूं कोई ग्राऊं नहीं, म्हारै झाड़ै री मुसकिल, बीजो तळाव पर पांणी रो निवास छै, कोई नीम उतार दे, कोई हळद तेल ग्रांण देवै, पाळ रै नीचै हूं झाड़ै फिर ग्राऊं । सो ग्रठै ही एक झोंपड़ी बांध देवौ तो पड़ियो रहूं, थांनूं ग्रसीस देऊं ।—सूरै खींवै कांधळोत री वात

[सं० नियऽऽस] ६ घड़े में रहने वाला जल (मि० कुंभ)

उ०—खीरपत नाथ प्रवत कपीठ निवास पय तोय ग्रवर तरतात, जाद निवास कवंध जप वसुधा घोख विख्यात ।—ग्र.मा.

७ ग्राराम, चैन ।

उ०—ग्रायो भाद्राजण 'ग्रभौ', पायो प्रजा निवास । मिळिया जोध महाबळी, चळचळिया मेवास ।—रा रू.

सं०स्त्री०—दक्षिण दिशा का एक नाम ।

रू०भे०—नवास, निवास, निहिवास, न्यायास ।

निवासणौ, निवासबौ–क्रि०ग्र० [सं० निवास] निवास करना, रहना ।

उ०—१ मुणं महतत मंद, पांचतत चाकर पासै । गंग नदी गोविंद, नांम निति चलण निवासै ।—पी.ग्रं.

निवासस्थांन-सं०पु० [सं०] १ वह स्थान जहां कोई रहता हो, रहने का स्थान, रहने की जगह ।

२ मकान, घर ।

निवासियो—देखो 'निवासी' (३) (ग्रल्पा०. रू भे.)

निवासी–वि० [सं० निवासिन्] १ रहने वाला, वास करने वाला, वासी । उ०—१ राजस्थांन में रमै, नितै मुरधरा निवासी । वगाळै सूं वेर, लियां ग्रासांम उदासी । न पंजाव सूं प्रेम, फोग दीनी फिटकारयां । ना विहार रै बाग, नहीं कसमीरी क्यारयां ।

—दसदेव

उ०—२ गणपत गिरा-निवासी सुरगण । मंगळ करण ग्रमंगळ मेटण । करो दया मो सीस दयाकर । ग्रापो सार चार गुण ग्रर कर ।—रा.रू.

३ दक्षिण दिशा का, दक्षिण दिशा संबंधी ।

२ जो सर्वत्र हो, व्यापक । उ०—वासुदेव परब्रह्म, परम ग्रातम परमेस्वर । ग्रखिल ईस ग्रणपार, जगत जीवण जोगेस्वर । निरालंब निरलेप, ग्रनंत 'ईसर' ग्रविनासी । थावर जंगम थूळ, सुछम जग निखिल निवासी ।—ह.र.

सं०पु०—दक्षिण दिशा में बोलने वाला पक्षी (तीतर)

उ०—१ झांझरकै निवासी बोलिया जद सारां रो मन प्रसन्न हुग्रा ।

—कूंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ पो पंचादो ग्रोर सांझ निवासी, सो नर यूं उदासी ।

—ग्रज्ञात

४ देखो 'निवियास' (रू.भे.)

निवाह–सं०पु० [सं० निर्वास (वासृ-शब्दे) प्रा० निहाव]

१ नगाड़े की ध्वनि, नगाड़े की ग्रावाज (डिं.को.)

२ देखो 'निभाव' (रू.भे.)

उ०—एम सुजायत खांन नूं, लिखियौ 'ग्रवरंगसाह' । झूठ सफीखां झालिया, सो क्यां हुवै निवाह ।—रा.रू.

३ देखो 'निरवाह' (रू.भे.)

उ०—वारहठ 'भीम' राजांन का सूरां की सनाह । स्रीमहाराज के कांम चाहै प्रतग्या के निवाह ।—रा.रू.

निवाहण, निवाहणौ–वि०—निवाहने वाला, कार्य साधने वाला, उत्तरदायित्व लेने वाला ।

उ०—ग्रायो तद राजा 'ग्रजो', मेलै दळ ग्रणमंघ । सार्थै भार निवाहणा, वीस हजार कमंध ।—रा.रू.

निवाहणौ, निवाहबौ—देखो 'निभाणौ, निभावौ' (रू.भे.)

उ०—१ ऐ च्यारूं 'ऊदा' हरा, विखौ निवाहण कज्ज । नेम धणी छळ झलियौ, ज्यां हरि प्रेम ग्रनज्ज ।—रा.रू.

उ०—२ रूपसिंह 'केहर' का केहर के कांटै, लड़ाई के पाए धन वधाई बांटै । 'उगरावत' ग्रासखांन ग्रासमांन साहै, उदैसिंघ चित्र-कियो सो निवाहै ।—रा.रू.

उ०—३ ग्यांन रो गोरख, सहदेव ज्यूं सारी वात समरथ, ग्ररजुण ज्यूं बांण, करण ज्यूं दांन-पांण, वत्तीस ग्राखड़ी रो निवाहणहार, वैरियां विभाड़णहार ।—रा.सा.सं.

उ०—४. करण ग्रखियात चढ़ियो भलां काळमी, निव हुण वयण मुज वांधिया नेत । पंवारां सदन वरमाळ सूं पूजियो, खळां किरमाळ सूं पूजियो खेत ।—बां.दा.

निवाहणहार, हारो (हारी), निवाहणियो—वि० ।

निवाहियोड़ो, निवाहियोड़ौ, निवाह्योड़ो—भू०का०कृ० ।

निवाहीजणो, निवाहीजबो—कर्म वा० ।

निवाहव–वि० [सं० निर्वास (सं० वासृ शब्दे प्रा० निवाह)] बजाने वाला, ग्रावाज करने वाला ।

उ०—नागलोक के नायक, नाग कन्या समेत सरभ ही ग्राय उभे उर दरसणूं हेत नोपतूं के निवाहव वखाजू के ततकार खटरागू के घीर ।—र.रू.

निवाहियोड़ो—देखो 'निभायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० निवाहियोड़ी)

निविड़—देखो 'निविड' (रू.भे.)

निविड़ता—देखो 'निविडता' (रू.भे.)

निविड-वि० [सं०] १ महान्, बड़ा। उ०—लाखीक स्रवण 'लाखौ', दातार निविड दाखौ। उदार कुंग्रर एहौ, जाडै जतमणा जेहौ।
—ल.पिं.

२ घना, घनघोर, गहरा।

३ देखो 'निपट' (रू.भे.)

४ देखो 'निवड़' (रू.भे.)

५ देखो 'निवड' (रू.भे.)

उ०—गरुई पोलि, निविड कमाड लोह भोगळ।—व.स.

रू०भे०—निविड़।

निविडिता-सं०स्त्री० [सं०] १ सघनता।

२ वंशी या इसी प्रकार के अन्य वाद्य के स्वर का गम्भीर होना जो उसके पांच गुणों में से एक माना जाता है।

रू०भे०—निविड़ता।

निविढणौ, निविढबौ-क्रि०स० [निर्बंधनम्] रचना, बनाना।

उ०—सनमुख साह निविढियौ, कीधौ नारद कांम। कळि लग्गी रहौड़ हद, मरसी के वरियांम।—गु.रू.ब.

निविढणहार, हारौ (हारी), निविढणियौ—वि०।

निविढिग्रोड़ौ, निविढियोड़ौ, निविढयोड़ौ—भू०का०कृ०।

निविढीजणौ, निविढीजबौ—कर्म वा०।

निविढियोड़ौ-भू०का०कृ०—रचा हुग्रा, बनाया हुग्रा।

(स्त्री० निविढियोड़ी)

निवियासिग्रौ—देखो 'निवियासियौ' (रू.भे.)

निवियासिमौं-वि० (स्त्री० निवियासिमीं) जिसका स्थान नवासी पर हो, नवासीवां।

निवियासी-वि० [सं० नवाशीति] अस्सी और नौ, ग्यारह कम सौ।

सं०स्त्री०—८६ की संख्या।

रू०भे०—नव्यासी नव्यासी, निवासी।

निवियोड़ौ—देखो 'नमियोड़ौ' (रू.भे.)

निविरइ-वि० [सं० निर्वृत] प्रसन्न, खुश।

उ०—सखी भणइ सांमिणि जिसउ, वाजउ वाजइ छंदि। नाचेवउं लोकह कहइ, निविरइ तिणि आणंदि।—विद्याविलास पवाडउ

निवेड़-स०स्त्री० [सं० निवर्तनम्] १ पूर्ण या समाप्त करने की क्रिया या भाव।

२ तय करने की क्रिया या भाव।

३ मुक्ति, छुटकारा, रिहाई।

४ निर्णय, फैसला।

निवेड़णौ, निवेड़बौ-क्रि०स० [सं० निवर्तनम्] १ फलीभूत करना, तैयार करना।

२ देखो 'निपटाणौ, निपटावौ' (रू.भे.)

उ०—१ लुगायां पौ'र रात लेर ऊठती, ग्राटौ पीसती, दोवण-बिलोवण रौ कांम करती ग्रर दिनुगां पैं'ली रैं'ली तौ वे चूला रौ कांम ई निवेड़ देती।—रातवासौ

उ०—२ तुरत वात मांनी तिणं रे, नाटिक परौ निवेड़। नाटकियौ नारि नं रे, ग्रायौ करिवा केड़ि।—ध.व.ग्रं.

ज्यूं—काल बोहरा कनै जाय'र घणा दिनां रौ लैणा रौ हिसाब करस्यां ग्रर जितरा निकळसी सैं निवेड़ देस्यां।

निवेड़णहार, हारौ (हारी), निवेड़णियौ—वि०।

निवेड़ाड़णौ, निवेड़ाड़बौ, निवेड़ाणौ, निवेड़ावौ, निवेड़ावणौ, निवेड़ावबौ, निवेड़ाड़णौ, निवेड़ाड़बौ, निवेड़ाधणौ, निवेड़ावबौ
—प्रे०रू०।

निवेड़िग्रोड़ौ, निवेड़ियोड़ौ, निवेड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निवेड़ीजणौ, निवेड़ीजबौ—कर्म वा०।

निवड़णौ, निवड़बौ—ग्रक० रू०।

नींमड़णौ, नींमड़बौ—रू०भे०।

निवेड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ फलीभूत किया हुग्रा, तैयार किया हुग्रा।

२ देखो 'निपटायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निवेड़ियोड़ी)

निवेड़ौ-सं०पु० [सं० निर्वतनम्] १ फैसला, निर्णय।

२ कार्य पूरा करने की क्रिया या भाव।

३ मुक्ति, छुटकारा।

४ तय करने की क्रिया या भाव।

क्रि०प्र०—करणौ।

रू०भे०—नवेड़ौ, नवेड़ौ, निपटारौ, निपटेरौ, निबटारौ, निबटेरौ, निवेहौ, निमटारौ, निमटेरौ, निमेड़ौ।

निवेदण—देखो 'निवेदन' (रू.भे.)

उ०—सउच न्हांण मुख साधि सब, राचै राज सराह। क्रम पैठौ संभ्‍या करण, दूदा कवर दुबाह। करि सभ्‍या जप ग्रादि क्रम, पूजि इस्ट गोपाळ। स्वकरां करि भोजन सदा, करी निवेदण काळ।
—वं.भा.

निवेदणौ, निवेदबौ-क्रि०स० [सं० निवेदनं] १ विनय करना, प्रार्थना करना। उ०—दूत वलिउ दारु घडा, दीधां दिसि जेह। कांमसेन कारण सहू, राय निवेदिउ तेह।—मा.कां.प्र.

२ नैवेद्य चढ़ाना।

३ नजर करना, ग्रर्पित करना।

४ सुनाना, कहना।

निवेदन-सं०पु० [सं०] १ विनय, प्रार्थना, विनती।

उ०—निवेदन चंद धजाबंध नांम, सुणूं सब 'इंद' सको सगरांम। लियां खग खप्पर 'गेंद' 'गुलाल', खळां घट घावक जाव पखाळ।
—मे.म.

२ प्रस्तुत करने या नजर करने की क्रिया या भाव।

उ०—२ एक दिन राजा रैं अरथ कोई तपस्वी महारसायण री निदांन एक अपूरब स्वादु फळ दीधौ। सो राजा नैं आपरा प्रांण री ओसध अनंग सेना जांणि अवरोध जाय रांणी रैं अरथ निवेदन कीधौ।—वं.भा.

३ चढ़ाने की क्रिया या भाव, अर्पण, भेंट।

४ समर्पण।

५ कहने या सुनाने की क्रिया या भाव।

रू०भे०—निवेदण।

निवेदित-वि० [सं०] १ प्रार्थना किया हुआ, विनती किया हुआ।

२ चढाया हुआ, अर्पित किया हुआ।

३ सुनाया हुआ, कहा हुआ।

४ समर्पण किया हुआ।

निवेदियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ विनय किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ।

२ नैवेद्य चढ़ाया हुआ।

३ नजर किया हुआ, अर्पित किया हुआ।

(स्त्री० निवेदियोड़ी)

निवेध—देखो 'नैवद्य' (रू.भे.)

निवेधौ—देखो 'नैवेद्य' (रू भे.)

निवेद्य—देखो 'नैवेद्य' (रू.भे.))

निवेधणौ, निवेधबौ-क्रि०स० [देशज] मारना, संहार करना।

उ०—'करण' निवेधी वेघड़, सोधी सांम छळांह। अस तोरे साम्हा किया, फोरे सेल-फळाह।—रा.रू.

निवेस-सं०पु० [सं० निवेशः] १ घर, मकान।

२ स्थान, जगह। उ०—१ जंवू दीपह काळ समांण, लख जोयण तेह नो परिमांण। 'दक्षिण' 'भरतइ' आरिज देस, 'मरुधरि' देस निवेस।—धर्मकीर्ति

उ०—२ सरस सकोमळ सुललित वांणी दीधु गुरु उपदेस। पच्छइ राजा गणधर पूछिआ पूरव भवह निवेस।—विद्याविलास पवाडउ

३ पड़ाव, छावनी, खेमा।

४ नगर, शहर। उ०—नव निधांन, १४ रत्न, सोळ सहस्र यक्ष, बत्तीस सहस्र मुकुटवरद्धन राय, ६४००० अतहपुर, ३२००० देस, सवालाख वारांगना, १४००० वेलाउल, ३२००० देस, २१००० निवेस ५६ अतरद्वीप, ६६ सहस्र द्रोणमुख, ६६ कोडि ग्राम, ६६ कोडि पदाति।—व.स.

५ निवास। उ०—लगाय गळैं जिण अंतर लाय, सह्या नहिं जाय हिवै सम वाय। विसंभर सव्व तुहांणी वेस, नहीं कुछ जेथ सो तेथ निवेस।—ह.र.

निवेसण—देखो 'निवेसन' (रू.भे.) (प्र.मा.)

उ०—वरदवान अरु कटक निवेसण। सकर भूप अपर तिय संघण।—वं.भा.

निवेसणौ, निवेसबौ-क्रि०स० [सं० निवेशनम्] रखना।

उ० छट्टिहिं विरह संतावण स्रांवण, सुदि अरिहंत, संगारइ सुर दांनव मांनव मांन वहंत। निपुण-निवेसइ अवडी केवडी आलउ खूंप, दीसइ मुकुट कटीरकि हीरकि नवनवउं रूप।

—नेमिनाथ फागु

निवेसणहार, हारौ (हारी), निवेसणियौ—वि०।

निवेसिओड़ौ, निवेसियोड़ौ, निवेस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निवेसीजणौ, निवेसीजबौ—कर्म वा०।

निवेसन-सं०पु० [स० निवेशनं] १ नगर, शहर (ह.नां.)

२ स्थान, जगह।

३ छावनी, पड़ाव, डेरा।

४ घर, मकान।

रू०भे०—निवेसण।

निवेसियोड़ौ-भू०का०कृ०—रखा हुआ।

(स्त्री० निवेसियोड़ी)

निवैं—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

उ०—जीवै के वरस असी धनजोड़ा, नर जीवै के वरस निवैं। चाळीसां मांहे जस छायौ, सुरियंद जायौ भलौ 'सिवैं'।

—ओपौ आढौ

निव्रिति, निव्रिती-सं०स्त्री० [सं० निवृत्ति] १ मोक्ष, मुक्ति।

उ०—अगम निगम का ढोल बजत है, सतसंग चौक सजो री। डंडियौ सवद जोड़ संतन सूं, नाच निव्रिती नचो री।

—स्री सुखरांमजी महाराज

२ प्रवृत्ति का उलटा, छुटकारा।

निव्वत्तण-सं०स्त्री० [सं० निर्वर्त्तन] तलवार, बरछी, भाला आदि की बनावट (जैन)

निव्वांण—१ देखो 'निरवांण' (रू.भे.)

२ देखो 'निवांण' (रू.भे.)

उ०—फटौ आभ कै जांणि सांमद्र फट्टं, प्रिथम्मी गिरां थूंब कीजै पहट्टं। वहै ऊपटां थट्ट राठौड़वाळा, नदी सोखिजै नीर निव्वांण नाळा।—वचनिका

निव्वांणगुणावह-वि० [सं० निर्वाणगुणावह] जो निर्वाण के गुणों को धारण करे [जैन]

निव्वांणमग्ग-सं०पु०यौ० [सं० निर्वाणमार्ग] मोक्ष मार्ग (जैन)

निव्वाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.)

निव्वाबजादौ—देखो 'नव्वाबजादौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निव्वाबजादी)

निव्वाबी—देखो 'नव्वाबी' (रू.भे.)

निव्वावार-वि० [सं० निर्व्यापार] व्यापाररहित (जैन)

निव्वाह—१ देखो 'निभाव' (रू.भे.) (जैन)

२ देखो 'निरवाह' (रू.भे.) (जैन)

३ देखो 'निवाह' (१) (रू.भे.) (जैन)

निव्विकार—देखो 'निरविकार' (रू.भे.)

निव्विज्जं-वि० [सं० निर्विद्य:] विद्यारहित (जैन)

निव्विण्णकांम-वि० [सं० निर्विण्णकाम] जो निवृत्त होने की कामना रखता हो (जैन)

निव्वितिगिच्छा-सं०स्त्री० [सं० निर्विचिकित्स्य] धर्मादि के फल में संदेहरहित होने का भाव (जैन)

निव्विसय-वि० [सं० निर्विषय] विषयरहित (जैन)

निव्वुयय-वि० [सं० निवृतहृदय] जिसका हृदय चिन्ता से रहित हो, चिन्तारहित हृदय वाला (जैन)

निव्वेगणीकहा-स०स्त्री० [सं० निर्वेगनीकथा] वह कथा जिसको सुन कर चित्तवृत्ति संसार से निवृत्ति धारण करे (जैन)

निव्वेय-सं०पु० [सं० निर्वेद] १ वैराग्य।

२ खेद, दुख।

३ अनुताप।

४ अपमान।

रू०भे०—निरवेद।

निसंक-वि० [सं० नि:शक] १ जिसे डर न हो, भयहीन, निर्भय, निडर। उ०—वैरी वैर न वीसरै, बिना हियै ही 'बंक'। राहु ग्रहै राकेस नूं, नभ सिर मात्र निसंक।—बां.दा.

उ०—२ ताजदार बैठो तखत, रज में लोटै रंक। गिणै दुनां नूं हेकगत, निरदय काळ निसंक।—बां.दा.

उ०—३ है जीवण मुसकिल हमैं, पिसणां रूंधो पंथ। सिर पर काळ न सूझवै, किण विध सूतो कंथ। किण विध सूतो कंथ, निसंक नेठाव सूं। ग्रथा वसाय'र वैर, रिसायळ राव सूं।

—सिववक्स पाल्हावत

उ०—४ सांई मन सहंठो करो, करहो जूझ निसंक। जीवण ग्रत तोसूं लग्यो, नहीं चाढसां कळंक।—गजउद्धार।

२ जिसे किसी प्रकार की हिचक या खटका न हो, बेहिचक बेखटक।

उ०—माता पिता कै आगै खेलतां, कांम रा जु विरांम छै, सु छिपाया चाहिजै। सु कांम रा विरांम कुण? जु एक तउ कुच प्रगट हुया, नेत्रां चंचळता हुई, नितंब भारी दीसै लागा। ए कांम का विरांम। पहिले बाळकपणै निसंक खेलती थी, अब इया वात री लाज कीधी चाहीजै।—वेलि. टी.

रू०भे०—नसंक, निरसक, निसंग, नैसक।

अल्पा०—नसको, निरसंको, निसंको, नैसंको।

निसंकोच-क्रि०वि० [सं० नि:संकोच] बिना संकोच के, बेधड़क।

ज्यूं—पैं'ली प्रजा रो कोई भी आदमी निसंकोच राजा कनै जाय सकतो हो।

निसंको—देखो 'निसंक' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० निसंकी)

निसंग-वि० [सं० नि:संग] १ निर्लिप्त।

२ जो मेल या लगाव न रखता हो, बिना मेल या लगाव का।

३ जिसमें अपने मतलब का कुछ अर्थ वा लगाव न हो।

४ देखो 'निखंग' (रू.भे.)

५ देखो 'निसंक' (रू.भे.)

निसगी—देखो 'निखंगी' (रू.भे.)

निसंडो-वि० [देशज] (स्त्री० निसंडी) जो कहने के उपरांत भी ध्यान न दे, धृष्ट, धीठ, निर्लज्ज।

रू०भे०—निसरडो, निहडो, नींडो, नेंडो, नेहडो, नेहढो।

मह०—निसड्ड।

निसंतत, निसंतति-वि० [सं० नि.संतति] बिना औलाद का, नि:संतान

उ०—रावळ मनोहरदास कल्यांणदासोत, वरस २२ राज कियो। निसंतत।—नैणसी

निसंतांन—देखो 'निस्संतान' (रू.भे.)

निसंदेह—देखो 'निस्सदेह' (रू.भे.)

निसबळ, निसंबळउ-वि० [सं० नि:शंबल:, नि:संबल] १ बिना भोजन का। उ०—१ जोउ मगि निसंबळा, पांचइ पंडव जति। राजु छंडाव्या वणि फिरइं, धिगु धिगु दूख सहंति।—पं.पं.च.

उ०—२ मरण सहू नइ सारखउ रे, कुण राजा कुण रांक। पणि जायइ जीव निसंबळउ रे, एहिज मोटउ बांक।—स.कु.

निसंभ-वि०—१ भयरहित।

उ०—बावन चंदन अंगई परिमळ धूरत तपई निसंभ। उर जेहवउ दीसइ उरवंसी, रूप विसेखइ रंभ।—रुकमणी मंगळ

२ देखो 'निसुंभ' (रू.भे.)

उ०—सिभ निसंभ संघारिया, महसासुर मारे। चंड मुंड सांचरिया, कै असुर अपारे।—गजउद्धार

निस-स०स्त्री० [सं० निश्] १ रात्रि, रात, रजनी (अ.मा.)

उ०—१ अहो-निस कागभुसंड आराध, पढ़ै तो नांम सदा प्रहळाद। जपै सुखदेव जिसा जोगेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह.र.

उ०—२ अथ ओमकार, अक्षर उचार। निस-दिवस नांम, रट रांम रांम।—ऊ.का.

२ हल्दी।

रू०भे०—नस।

निसकर-सं०पु० [सं० निश्+कर] चन्द्रमा, चांद (डिं.को.)

निसकरस-स०पु० [सं० नि+कृश=तनुकरणे] १ स्वर साधन की एक प्रणाली जिसमे प्रत्येक स्वर को दो दो बार अलापना पड़ता है।

[सं० नि+कृष=विलेखने] २ सार, तत्व, निष्कर्ष।

निसकाम—देखो 'निकांम' (रू.भे.)

निसकांमी -देखो 'निकांमी' (रू.भे.)

उ०—१ गौ ब्राह्मण की गरहा गरहित गोस्वांमी, करुणानिधांन करुणामय नित निसकांमी ।—ऊ.का.

उ०—२ गुरु सिस्य धरम अधरम न जा में, नहि कांमी निसकांमी। वंदण मुक्त दोउ जहां नाहीं, नहि कोई नांम अनांमी।

—श्री सुखरांमजी महाराज

निसकारण–वि० [सं० निष्कारण] बिना कारण, व्यर्थ ।

निसकारो–सं०पु० [सं० निस्+कार] नाक से निकलने वाला वह प्राण वायु जो शोक या दुख को सूचित करता है, निश्वास ।

उ०—१ भूखी की जीमैं सिसकारा भरती। नांखे निसकारा धीमैं पग धरती। मुखड़ो कुम्हळायो भोजन विन भारी। पय पय करतोड़ी पौढ़ी प्रिय प्यारी।—ऊ का.

उ०—२ चोधरी वोरै में पाछा मतीरा घालतो-घालतो निसकारो नांख'र बोलियो—आछो धरम डूबियो रे।—वरसगांठ

उ०—३ पांखां खोस गयो प्रभु प्यारो, नित नांखां निसकारो। नहि भांखां तोहि हुवै न न्यारो, आंखां सूं उणियारो।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—करणो, न्हांकणो।

निसकासित–वि० [सं० निष्कासित] निकाला हुआ (डिं.को.)

निसकुट–सं०पु० [सं० निष्कुटः] घर के समीप का बगीचा, छोटा बगीचा, वाटिका (डिं.को.)

निसगरुइ–सं०स्त्री० [सं० निसर्गरुचि] किसी प्रकार के धार्मिक उपदेश के श्रवण किए बिना ही उत्पन्न होने वाली धर्म के प्रति स्वाभाविक रुचि, श्रद्धा (जैन)

निसचय—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)

निसचर–सं०पु० [सं० निश्+चर] असुर, राक्षस (ह.नां., अ.मा.)

उ०—नमो नांम नीमवण, नमो नर सुर नीपावण। नमो पनंग-धर नमो, गयण थंभा विन थंभण। नमो वेद विस्तरण, नमो निसचर वोह नांमण। नमो सेस-सायंत, नमो हव कव्य हुतासण।

—ह.र.

रू०भे०—नसचर, निसहर।

निसचरण–सं०पु० [सं० निश्चरण] चन्द्रमा (ना.डिं.को)

निसचरप्रास–सं०पु० [सं० निशचरप्राश] प्रकाश, उजाला (अ.मा.)

निसचळ, निसचल–सं०पु०—१ निःसंदेह धारणा, अवश्य, निश्चय।

उ०—कप कही रचना सकळ अणकळ, चितभ्रम मिट जाय निसचळ। सपत तरु दे भेद इकसर, गरज तो गाहे।—र.रू.

२ निसाचर, राक्षस। उ०—मुख हूती तिय मंदोदरी, ध्रुव सुजण अतेवर धरी। अरु महल भवतळ विरळ उज्जळ, अनुग निसचळ अप्रत अत यळ।—र.रू.

३ देखो 'निस्चळ' (रू.भे.)

उ०—निखळ लोळावस गांम निज, कमधां कवि 'किसोर'। संवत गुणी तेहोत्तरै, तवियो जस नृप तोर। तवियो जस नृप तोर, प्रथीप 'प्रताप' रो। निसचळ रहसी नांम, जगत जस जाप रो।

—किसोरदांन बारहठ

निसचारी–सं०पु० [सं० निश्+चारिन्] राक्षस, असुर।

उ०—कदमां गयो भगत हितकारी, चवी विगत सगळी निसचारी। आपरै चरण री सरण हूं आवियो।—र.रू.

रू०भे०—नसचार, नसचारी।

निसचै, निसचौ—देखो 'निस्चय' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ जन सोच बिभंजण प्राचत पंजण, दांन अभैवर देण री जी। 'किसना' निसचै कर राच सियावर, जांण भरोसो जेण री जी।

—र.ज.प्र.

उ०—२ छुई सु ठीक धांधळां हूंता, जतरै निसचै थई जगूंता। आयो 'जगह' 'पतावत' आतुर, भुजपति तुरंत बुलायो भीतर।

—रा.रू.

उ०—३ ध्यावतां निजर तो सूं धरै, तो निवांण निसचै तिरै। राजाधिराज तोरो रजा, 'ईसर' आ सिर ऊपरै।—ह.र.

उ०—४ किम आप कमाण न जाय कितं। निसचै सिर भोगवणी नृपतं। कथ कूड़ उपावय साच करो। हित सूं दुमणापण द्वेग हरो।—पा.प्र.

उ०—५ सच्चा था पैहळाद साद, निसचै निसतारा।

—केसोदास गाडण

उ०—६ धरमी जे धरमै धरै, निसचो न तजै नेट। चंद्रवतंसक नां चल्यो, थिर दिवालगि थेट।—ध.व.ग्रं.

उ०—७ असुरांण आंण मिटसी इळा, सुरवध पांण वसंधरा। नव-कोट नाथ निसचो निजर, उर धारो हरि ऊपरा।—रा.रू.

निसठधा–सं०स्त्री० [देशज] म्लेच्छों की एक जाति (डिं.को.)

निसट्ठ—देखो 'निसंठो' (मह०, रू.भे.)

उ०—तो रांध्यो नहि खावस्यां, रे वासदड़े निसट्ठ। मो देखत तूं वाळिया, लाला दे ना हट्ठ।—प्रथ्वीराज राठौड़

निसणात–वि० [सं० निष्णात] १ प्रवीण, चतुर, निपुण, पारंगत

(डिं.को.)

२ पण्डित, विज्ञ।

निसणो, निसवो–क्रि०स० [सं० निशमनम्] श्रवण करना, सुनना।

उ०— सरसति सांमणि सगुरु पाय हीयडइ समरेवी। कर जोडी सासण देवि अंबिक पणमेवी। नळ-दवदंती तणु रास भावइ पभणेइ। एक मना थइ भवीय लोक विगतइ निसणेइ।

—नळ-दवदंती रास

निसतंस—देखो 'निसअंस' (रू.भे.) (ह नां.)

निसत–वि० [सं० नि+सत्य] जो सत्य न हो।

उ०—सोक अनै संताप, पिड आवै परसेवो। भय कपणि गति भंग, निसत निज लाज न सेवो।—ध.व.ग्रं.

निसतर—देखो 'नसतर' (रू.भे.)

निसतरणी–सं०पु० [सं० निस्तरणम्] उद्धार, मोक्ष। उ०—किम तरिस्यै भव हव कासूं करणो, निज निसतरणो थारो नांम। धणियां जेम

उबारौ धरणौ, निज निसतरणौ थारौ नाम ।--पी.ग्रं.

निसतरणौ, निसतरबौ—१ देखो 'नस्तरणौ, नस्तरबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निस्तरणौ, निस्तरबौ' (रू.भे.)

निसतरणहार, हारौ (हारी), निसतरणियौ—वि० ।

निसतरिग्रोड़ौ, निसतरियोड़ौ, निसतरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

निसतरीजणौ, निसतरीजबौ—भाव वा० ।

निसतरियोड़ौ—१ देखो 'नस्तरियोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निस्तरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निसतरियोड़ी)

निसंतांग्यौ—देखो 'निसंतान' (ग्रल्पा० रू.भे.)

उ०—सा धन कुरळइ मोर ज्युं । पांच पडोसण वैठी छइ ग्राय । ग्रो निसंतांग्यौ ज्यां करि गयौ । दिवसनइं रात नौ चितातां जाई ।
—वी.दे.

निसतार—देखो 'निस्तार' (रू.भे.)

निसतारण—देखो 'निस्तारण' (रू.भे.)

उ०—१ सेवक रिख मुनि भगत सन्यासी । ग्ररज करै हुय दीन उदासी । त्रिभवणनाथ जगत निसतारण । घरम वद कीजै धू धारण ।—रा.रू.

उ०—२ तूं भगवंत ग्रनंत गति, निसतारण नित भेव । संपति गति सुख सुमति, दायक लायक देव ।—पलक दरियाव री वात

निसतारणौ, निसतारबौ—देखो 'निस्तारणौ, निस्तारबौ' (रू.भे.)

उ०—१ एकोतर वंस उधारै रे, निज लोक उभै निसतारै । साराह जिकां जग सारै रे, ग्रवधेसर जीह उचारै ।—र.ज.प्र.

उ०—२ वांको एक न होवै वाळ । सुचतो नांम लियां निसतारै । कर पर गिरधारै किरपाळ ।—भगतमाळ

उ०—३ सच्चा था पैहळाद साध, निसचै निसतारा ।
—केसोदास गाडण

उ०—४ माधवदास चरण-रज महिमा, नौका कुटंब कीर निसतारै
—रा.रा.

उ०—५ संतो ! सो जोगी निसतारै, उलटी चाल सदा रस पीवै । उलटा भेद विचारै ।—ह.पु.वा.

निसतारणहार, हारौ (हारी), निसतारणियौ—वि० ।

निसतारिग्रोड़ौ, निसतारियोड़ौ, निसतारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

निसतारीजणौ, निसतारीजबौ—कर्म वा० ।

निसतरणौ, निसतरबौ—ग्रक० रू० ।

निसतारियोड़ौ—देखो 'निस्तारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निसतारियोड़ी)

निसतारौ—देखो 'निस्तार' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ घन वैठो भलां चढौ गिर-बदरी, घरा भेख के घारै । चित नह लग्यो रांम रै चरणां, नह जब लग निसतारौ ।—र.रू.

निसती—वि० [सं०=नि=नहीं+रा० सती=वीर] १ कायर, भीरु ।

उ०—वांसै साह हुयौ हक वागी, निसती तजि चलिया नेठाह । सुजसै कमळ कांघळै संभ्रम, स्यांम कहै रहि स्यांम सनाह ।
—रावत रतनसिंह चूंडावत सीसोदिया रौ गीत

२ जो सती या पतिव्रता न हो,

निसतेयस, निसतेस—देखो 'निसत्रंस' (रू.भे.) (ग्र.मा.)

निसत्रंस-सं०स्त्री० [सं० निस्त्रिंश] तलवार (ह.नां.)

रू०भे०—निसतेस, निसतेयस ।

निसत्व-वि० [सं० निःसत्व] जिसमें कुछ ग्रसलियत न हो, जिसमें कुछ तत्व या सार न हो, सारहीन, तत्वहीन ।

निसदिन, निसदीह, निसदीहा-क्रि०वि० [सं० निशदिन, निशदिवस] प्रति दिन, रात दिन, हर समय । उ०—१ भगत-जुगत भगवंत भज, धू-पत रसणा धार । चित हर हर निसदिन उचर, सह तज नांम संभार ।—ह.र.

उ०—२ जवण हेक जेण री, ग्रांख नाहर उणहारै । जगजाहर जोघार, लाख घांसाहर लारै । दळ ग्रागळ निसदीह, विजय त्रांमा-गळ वाजै । दहसत गालिब देस, ग्राग कहतां मंह दाजै ।—मे.म.

उ०—३ तवौ राघौ राघौ करम ग्रघ दाघौ तन तणा । महाराजा सीतावलभ कुळ मीता विण-मणा । यरां जैत जंगां ग्रडर यक-रंगा जग ग्रखै । सको गावौ जीहा ग्रवस निसदीहा ग्रज सखै ।—र.ज.प्र.

रू०भे०—निसादिन ।

निसद्द-सं०पु० [सं० निःशब्द] ध्वनि, रव, शोर, ग्रावाज, शब्द ।

उ०—पावस मास, विदेस प्रिय, घरि तरुणी कुळ सुघ्घ । सारंग सिखर निसद्द करि, मरइ स कोमळ मुघ्घ ।—ढो.मा.

निसध-सं०पु० [सं० निषधः] १ श्रीराम का प्रपौत्र ग्रोर कुश के पौत्र का नाम (सू.प्र.)

२ विंघ्याचल पर्वत के समीप के एक प्राचीन देश का नाम ।
(पौराणिक)

३ एक पर्वत का नाम ।

४ देखो 'निसाद' (रू.भे.)

वि०—कठिन ।

निसध-सं०स्त्री० [सं० निषधः] राजा नळ की राजधानी का नाम ।
(डिं.को.)

निसनाथ, निसनाथी-सं०पु० [सं० निश्+नाथ] चन्द्रमा, चांद ।

निसनायक-सं०पु० [सं० निश्+नायक] चन्द्रमा ।

उ०—निसनह निसनायक नभ नहिं नखताळौ । करदी पूनम नै ग्रमावस काळी ।—ऊ.का.

निसनेत, निसनेत्र-सं०पु० [सं० निश्+नेत्र] चंद्रमा, राकेश (ग्र.मा.)

उ०—करै चख नाहर राह'र केत । नेत-ग्रण भाळ डरै निसनेत । ग्रंवा इण ग्रादक ग्रोर ग्रनेक । हिचै रण हेकण हूं वढ़ि हेक ।
—मे.म.

निसनैण-सं०पु० [सं० निश्+नयन] चंद्रमा, चांद (ना.डिं.को.)

निसपत—देखो 'निसपति' (रू.भे.)

२ देखो 'वनिस्पत' (रू.भे.)

३ देखो 'रिस्वत' (रू.भे.)

निसपति-सं०पु० [सं० निश्+पति] १ चन्द्रमा, चांद।

रू०भे०—निसपत।

२ देखो 'वनिस्पत' (रू.भे.)

उ०—त्रिकुट अनैं हथणापुर तीजो, घड़ा खूह सण एकण घाय। इण निसपति असपति सूं अवडो, रिण काढियौ ज काढो राय।
—नैणसी

निसपतियौ—देखो 'रिस्वतियौ' (रू.भे.)

निसफद-वि० [सं० निस्+वध] सांसारिक उलझनों से रहित।

उ०—आतम आप आप मांही पूरण, निसफंद है निरवांणी। चित्त मफद वातं फुरिया, ज्यूं बांझ पुत्र प्रगटांणी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

निसफजर, निसफज्जर-सं०पु० [सं० निश्+अ० फ़ज्र] प्रतिदिन, निशदिन (हमेशा प्रातःकाल)

उ०—मद आण भाण ऊगै मिळै, फौज मिळै निसफज्जरां। जळ वेळ वधै सामुंद्र ज्यां, मेळ दळां कमधज्ज रां।—रा.रू.

निसफळ—देखो 'निस्फळ' (रू.भे.)

उ०—रुपियौ वो बहोत लगायो, सब निसफळ हुवो।
—सिंघासण बत्तीसी

निसबत—१ देखो 'निस्वत' (रू.भे.)

२ देखो 'रिस्वत' (रू.भे.)

निसबळ-वि० [सं० निस्+बल] निर्बल, कमजोर।

उ०—सगळे घसुरे भार संभाया। अघपत मुहड़ ठिकांणै आया। वाजी निसबळ सिताब पुळांणा। मेळावां वदन मुरझांणा।
—रा.रू.

निसमंडण-सं०पु० [सं० निश्+मंडन] चांद, चंद्रमा (ना.डि.को.)

निसमुख-सं०पु० [सं० निश्+मुख] सन्ध्या, सांझ (अ.मा.)

निसम्यणौ, निसम्यबौ-क्रि०स० [सं० निशमनम्] श्रवण करना, सुनना। उ०—तुमे एह वारता सा नहीं सम्य अमे कहीये ते तुम निसम्वे रे।—कवियण

निसरग-सं०पु० [सं० निसर्ग] १ स्वभाव, आदत, प्रकृति (अ.मा.)

२ आकृति, रूप।

३ सृष्टि ४ दान।

निसरड़ौ—देखो 'निसड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निसरड़ी)

निसरण-सं०पु० [सं० निःसरण] १ निकलने का मार्ग।

२ उपाय, तरकीब।

३ निकलने की क्रिया या भाव।

४ निर्वाण।

५ मरण, मृत्यु।

निसरणी-सं०स्त्री० [सं० निश्रेणी] १ शरीर की बनावट, ढांचा।

उ०—मटिया आंटाळी पोतियौ, कांटा छाप लट्ठा री धोतियौ अर जाळोर रै टुकड़ी री अंगरखी ठाकर री बारौ मास री पोसाक ही। राजपूती हाट अर लाबी निसरणी पर अै कपड़ा फावता जरुर हा, पण ठाकर रो चेहरौ बडो कड़ोपो हौ।—रातवासौ

२ देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)

उ०—......खे निसरणीह, सिसु गोखां पर चाढियौ। तकण कपाट तणीह, जड़ सांकळ कीन्ही जरू।—पा.प्र.

निसरणी-बंध-सं०पु०यौ० [सं० निश्रेणी+बंध] छप्पय छंद का एक भेद (र.ज.प्र.)

निसरणौ, निसरबौ—देखो 'नीसरणौ, नीसरबौ' (रू.भे.)

उ०—१ कही घर में घसता आदमी हैं तो पकड़ो मती नै निसरता हैं, पकड़ लीजो।—बंधी वुहारी री वात

उ०—२ पछै दिन पांच दस फेर गोळां री राड़ जाय जाय करै सो उहां मांहे बाहर निसरणे वाळो कोई नहीं।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

निसरणहार, हारौ (हारी), निसरणियौ—वि०।

निसरिओड़ौ, निसरियोड़ौ, निसरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

निसरीजणौ, निसरीजबौ—भाव वा०।

निसरनी—देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)

निसरम-वि० [सं० नि+ फा. शर्म] निर्लज्ज, बेशर्म।

अल्पा०—निसरमौ।

निसरमौ—देखो 'निसरम' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० निसरमी)

ज्यूं०—फेर रांड सांधी बोलै है, निसरमी।

निसरियोड़ौ—देखो 'नीसरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निसरियोड़ी)

निसल—देखो 'नसल' (रू.भे.)

निसलाक-वि० [सं० निःशलाक] निर्जन, एकांत, सुनसान।

निसवाद [सं० निः+वादः] रहित। उ०—निगुण नांम नह नांम निसवाद नाथूं। हुअै मुगति देतां सरिस तूझ हाथूं।—पी.ग्रं.

निसवादी-वि० [सं० नि+स्वादः] स्वादरहित, बिना स्वाद का।

उ०—घणो तोड़ एक एकोड़ घणो, गोविंद तु चुहुअै गमा। देखै सवाद दुख रो तूं निसवादी श्रीकमा।—पी.ग्रं.

[सं० निः+वाद+रा प्र.ई] वादरहित। उ०—सरब मूरति साधार, विसव मूरति निसवादी। आदि पुरख अविणास, आदि बाहिरौ अनादी।—पी.ग्रं.

निसवासर, निसवासुर-क्रि०वि० [सं० निश्+वासर] १ नित्य, सदा, हमेशा।

२ रात-दिन, हर समय।

निसहर-सं०पु० [सं० निश्+घर] १ मुसलमान।
२ देखो 'निसचर' (रू.भे.)
निसहाय-वि० [सं० निस्+सहाय] जिसको किसी की सहायता या किसी का आश्रय न हो, निस्सहाय।
रू०भे०—निरसहाय।
निसां-सं०पु० [फा० निशां] आदर, सम्मान।
उ०—बादसाह री क्रपा सूं उण अमीर री सब भांति निसां हुई।
—नी प्र.
क्रि०वि०—लिए, वास्ते।
उ०—सात बरस रै मांहीं अठारह लाख री फेर पड़ियो सो अठारह लाख री निसां करो।—राजसिंह कूंपावत री वारता
निसांखातर-सं०पु० [फा०निशां+अ० खातिर] तसल्लीस, खातिर।
निसांण-सं०पु० [फा०निशान] १ वह चिन्ह जो किसी पदार्थ से अंकित हो या और किसी प्रकार बना हो।
ज्यूं—गाबा माथै रंग रो निसांण।
२ अपढ़ व्यक्ति द्वारा किसी कागज आदि पर अपने हस्ताक्षर के स्थान पर बनाया हुआ चिन्ह।
३ किसी वस्तु को पहचानने का लक्षण, चिन्ह।
ज्यूं—राजा रै महल रो निसांण औ हिज है के औ इकथंभियो बणियोड़ो है।
४ वह चिन्ह जो शरीर पर किसी कारण से अथवा स्वाभाविक रूप से बना हुआ हो, दाग, धब्बा।
५ किसी प्राचीन या पहले की घटना अथवा पदार्थ का परिचय मिलने का चिन्ह या लक्षण।
६ किसी विशेष काम या पहचान के लिये नियत किया हुआ चिन्ह।
७ झंडा, ध्वजा, पताका।
उ०—१ फौज सारी भाज गई, निसांण रो हाथी, सवारी रो हाथी, नौबत नकारा रा हाथी सैं घेर लिया।—गोपाळदास गोड़ री वारता
उ०—२ दुरद लगा तळ-डांण, पमंग वड पांण रा। फीलां फरकि निसांण, 'मंगळ' मघवांण रा।—शिवबक्स पाल्हावत
[सं० निः स्वान] ८ नगारा
उ०—१ ढोलो चाल्यो हे सखी, बाज्या विरह निसांण। हाथे चूड़ी खिस पड़ी, ढीला हुआ संघांण।—ढो.मा.
उ०—२ अनहद घुरै निसांण, वाजा वाजै भैरवा। सुणै कोई संत सुजांण, पाई मन ठहरवा।—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—३ पावक में ले डारै मोहि, जरे सरीर न छाडूं तोहि। अब दादू ऐसी बन आई, मिळूं गोपाळ निसांन बजाई।—दादूवांणी
९ देखो—'निसांणो' (रू.भे.)।
रू०भे०—निसांणि, निसांन, नीसांण, नीसांणि, नीसांन।
निसांणची-सं०पु० [फा० निशान+रा.प्र.ची] १ दल, सेना आदि के आगे झंडा लेकर चलने वाला। २ लक्ष्य पर निशाना लगाने वाला।
रू०भे०—निसांनची, नीसांणची।
निसांण-देही-सं०स्त्री० [फा० निशान+देह+रा.प्र.ई] आसामी की पहचान करवाने का काम, आसामी का पता बतलाने का काम।
रू०भे०—निसांन-देही, नीसांणदेही।
निसांणबरदार-सं०पु० [फा० निशानबरदार] सेना, राजा आदि के आगे आगे झंडा लेकर चलने वाला, निशानची।
रू०भे०—निसांनबरदार।
निसांणि—१ देखो—'निसांण' (रू.भे.)
उ०—१ दुरवेस कन्हा गरहावि देस, नमि कोट विचो न रहिय नरेस। पतिसाह सेन दीठइ प्रमांणि, नीसरिय 'जइत' रुड़तइ निसांणि।
—रा.ज.सी.
उ०—२ पह भलइ लियउ नागउर प्रांणि, नवसहसघणी रुड़तइ निसांणि।—रा.ज.सी.
२ देखो—'निसांणी' (रू.भे.)
निसांणी-सं०स्त्री० [फा० निशानी] १ किसी का स्मरण दिलाने वाली अथवा स्मृति के उद्देश्य से रखी हुई वस्तु या पदार्थ, वह वस्तु जिससे किसी का स्मरण हो, स्मृति-चिन्ह, यादगार।
उ०—१ बादसाह कही एक निसांणी मया री आ छै।—नी.प्र.
उ०—२ जरदो पिवण न जोग, नासिका नरक निसांणी। मांन कळू मनवार, उत्तम सव रीत उडांणी।—ऊ.का.
ज्यूं—आ तरवार म्हारै वडेरां री निसांणी है।
ज्यूं—सुहागरात मनायां पैंली इज जुद्ध में वीर होतां होतां चूंडावत रांणी खनां सूं निसांणी मांगी तद रांणी आपरो सीस काट'र निसांणी रै रूप में हाजर कर दियो।
ज्यूं—म्हारै घर में पैंली घणी ई ओद वाळी गायां ही पण हमें आ एक टोगड़ी इज उणां री निसांणी है।
२ वह वस्तु या चिन्ह जिससे कोई वस्तु पहचानी जाय, पहचान, निशान।
उ०—१ सिकंदर पूछी बादसाह री मनगराई री निसांणी कांई छै।
—नी.प्र.
उ०—२ माता हे आ मुंदड़ी, प्रभु दीन्ही नेह निसांणी हे।
—गि.रां.
३ देखो 'नीसांणी' (रू.भे.)
रू०भे०—निसांणि, निसांनी।
निसांणो-सं०पु० [फा० निशाना] १ वह वस्तु, पदार्थ, स्थान या चिन्ह आदि जिसकी ओर ताक कर किसी अस्त्र या शस्त्र का वार किया जाय, लक्ष्य।
२ किसी लक्ष्य की ओर अस्त्र या शस्त्र को साध कर वार करने की क्रिया।
क्रि०प्र०—बांधणो, मारणो, लगाणो।
३ किसी को लक्ष्य करके कहा हुआ व्यंग्य या बात।

रू०भे०—निसांण, निसांन, निसांनो, नीसांण, नीसांणो, नीसांनो ।

निसांत-सं०पु० [सं० निशांत] १ पिछली रात, रात्रि का अंत, तड़का, प्रभात ।

वि०—जो शांत हो, बहुत शांत ।

निसांध-वि० [सं० निशांध] जिसे रात को दिखाई न देता हो ।

निसांन—१ देखो 'निसांण' (रू.भे.)

उ०—पावक में ले डारै मोहि, जरै सरीर न छाडूं तोहि । अब दादू ऐसी बन आई, मिळूं गोपाळ निसांन बजाई ।—दादूवांणी

२ देखो 'निसांणो' (रू.भे.)

निसांनची—देखो 'निसांणची' (रू.भे.)

निसांन-देही—देखो 'निसांण-देही' (रू.भे.)

निसांनन—देखो 'निसानन' (रू.भे.)

निसांनबरदार—देखो 'निसांणबरदार' (रू.भे.)

निसांनाथ—देखो 'निसा-नाथ' (रू.भे.)

निसांनी—देखो 'निसांणी' (रू.भे.)

निसांनो—देखो 'निसांणो' (रू.भे.)

निसांसो—१ देखो 'निस्वास' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पहलै सूं घड़लो घसै, वेरथां कूंडा भीड़ । वारो ठाली वाजतां, छोट निसांसा छोड़ ।—लू

२ देखो 'निसासो' (रू.भे.)

(स्त्री० निसांसी)

निसा-सं०स्त्री० [सं० निशा] १ रात्रि, रात (डि.को.)

उ०—१ उर नभ जितं न ऊगमै, श्री संतोस अदीत । नर तिसना किमना निसा, मिटै इतं नह मीत ।—बां.दा.

उ०—२ सरळ सचिक्कण स्यांम कच, मुकता मांग मझार । तरण तनुजा मधि तसी, धसी सुरसरी धार । धसी सुरसरी धार, सरळ कच संघणा । निसा गहूं नाखित्र सकै आभूखणां । मन चुरियो इण मांहि, क हेला दै कठी । अरध निसा इण ओट, अरध निसा है उठी ।—सिवबगस पाल्हावत

उ०—३ सात धरन तन तन मकै, वह भांत मढांणं । दरध केस विम्ब रूप गुज निसा समांण ।—गजउद्धार

२ हल्दी ।

वि०—काला, स्याम* (डि.को.)

निसाकर-सं०पु० [सं० निशाकर] १ चन्द्रमा, राकेश (अ.मा.)

२ शिव, महादेव ।

३ मुर्गा ४ कपूर ।

निसाचर-सं०पु० [सं० निशाचर] १ राक्षस, दानव ।

उ०—१ जिता धप धरगा उटै कट किरमरां, मधर धर लहै उतवंग घोनै मगा । माथे मर्च रिण निसाचर वनचरां, वीर कौतिक रचै प्राग वार्दागरां ।—र.रू.

उ०—२ विरद कर मारीच निसाचर, रघुवर सर सूं मारयो जी, नारायणजी परमेसरजी ।—गी.रां.

उ०—३ छळ भग्गा देखतां, चोर छळ जोर निसाचर । सुधम दांन सिनांन, ब्रहम जाय वधे स्त्रियावर ।—सू.प्र.

२ गीदड़, शृगाल ।

३ उल्लू ।

४ प्रेत, भूत ।

५ चोर ।

६ वह जो रात्रि में विचरण करता हो, रात्रि में चलने या घूमने वाला । उ०—पति अति आतुर त्रिया मुख पेखण, निसा तणौ मुख दीठ निठ । चंद्र किरणि कुलटा सु निसाचर द्रवडित अभिसारिका द्रिठ ।—वेलि.

रू०भे०—नसाचर ।

निसाचरपति-सं०पु० [सं० निशाचरपति] १ शिव, महादेव ।

२ रावण ।

निसाचरम-सं०पु० [सं० निशा+चर्म] घोर अंधकार (डि.को.)

निसाचरी-सं०स्त्री० [सं० निशाचरी] १ पिशाचिनी, राक्षसी ।

२ कुलटा ।

३ अभिसारिका नायिका ।

निसाचारी-सं०पु० [सं० निशाचारिन्] १ शिव, महादेव ।

२ राक्षस, पिशाच ।

निसाट-सं०पु० [सं० निशाट:] १ राक्षस, असुर, निशाचर ।

२ मुसलमान । उ०—१ दियँ खग झाट निसाट दुझाळ । हिचँ जुध 'नाथ' सुजाव 'हिंदाळ' । जुटै जुध 'नाहर' रौ 'जगसाह' । उडावत लोह कहै रवि वाह ।—सू.प्र.

उ०—२ पड़ झाट खगे द्रढ़ घाट पगे । जुध काट निसाट निराट जगे । बहु रुंड उठै मुख मुंड बकै । धड़ खड हुवै भड़ चंड धकै ।

—रा.रू.

३ उल्लू ।

रू०भे०—नीसाट ।

निसामण, निसामणि-सं०पु० [सं० निशामणि] चंद्रमा, चांद ।

उ०—यथा क्षीर मांहि गो क्षीर जळ मांहि गंगा नीर, पट्ट सूत्र मांहि हीर, वस्त्र मांहि चीर, अलंकार मांहि चूडामणि, ज्योतिष मांहि निसामणि ।—व.स.

निसातक-सं०पु० [सं० निशान्तक] दीपक (नां.मा.)

निसाद-सं०पु० [सं० निषाद] १ एक प्राचीन अनार्य जाति ।

२ मेहतर, भंगी, हरिजन (हि.को.)

३ मुसलमान । उ०—जसवंत विना जिहांन, पांन चल जांणै पवनै कना केतु साकप, यथा मन हिंदसथांनै । घटै क्रिया बांमणां, मिटै झालर परसादां । ईत प्रजा ऊपजै, निरस दुर नीत निसादां । इक राह चाह लागो असुर, निर सहाय प्राकार नव । 'अवरंग' अथी पर उलटियो, दग प्रगटयो जांण दव ।—रा.रू.

४ संगीत के सात स्वरों में अंतिम और सबसे ऊंचा स्वर ('नि')।

रू०भे०—निखद, निखाख, निखाद।

निसादियत-स०पु० [सं० निषादित] महावत के पैर हिलाने की क्रिया (डि.को.)

निसादिन—देखो 'निसदिन' (रू.भे.)

निसादी-सं०पु० [सं० निषादिन्] महावत, हाथीवान (डि.को.)

उ०—किते कुप्पि होदन मे कुद्दे । मरोरै निसादीन के कंठ मुद्दे ।
—व.भा.

निसाधीस-सं०पु० [सं० निशाधीश] निशापति, चन्द्रमा।

निसानन-सं०पु० [सं० निशा+आनन] सन्ध्या का समय, सायंकाल, सांझ।

रू०भे०—निसांनन।

निसानाथ-सं०पु० [सं० निशा+नाथ] राकेश, चन्द्रमा।

निसापत, निसापति-सं०पु० [सं० निशापति] १ चन्द्रमा, राकेश। २ कपूर।

रू०भे०—नसापत, नसापति।

निसापाळ-सं०पु०—१५ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में एक गुरु फिर एक नगण इस क्रम से उस चरण के तीन गुरु और तीन नगण तथा अंत मे एक रगण होता है (पि.प्र.)

निसापुस्ब, निसापुस्प-सं०पु० [सं० निशापुष्प] कुमुदिनी।

निसाफ—इन्साफ, न्याय।

उ०—साच झूठ इजहार सुण, नृप करै निसाफ। आंख देख नै ओळखै, पारख कमध 'प्रताप'।—चिमनदांन रतनू

निसाबळ-सं०पु० [सं० निशाबल] फलित ज्योतिष के अनुसार रात्रि के समय बलवती मानी जाने वाली राशि।

वि०वि०—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धन और मकर इन छ: राशियों को रात्रि के समय बलवती माना जाता है।

निसामणि, निसामणी-स०पु० [सं० निशामणि] १ चन्द्रमा, राकेश। २ कपूर।

निसामुख-सं०पु० [सं० निशामुख] संध्या का समय, सायंकाल, सांझ।

निसार-स०पु० [अ०] १ रुपए के चौथाई भाग के बराबर अथवा चार आने (२५ नए पैसे) के बराबर का एक सिक्का जो मुगलों के राज्य काल में प्रचलित था।

२ न्योछावर करने की क्रिया या भाव।

३ यवन। उ०—अंग्रेज, पुरतगीज, दिलदेज, फरासीस, फिरंगी, डोगमार, गुरजी, इस्काटलैंड, जरमनी, चिलवो, कुतब्री, उरैसी ऐ बारै टोपी निसारा री।—बां.दा.ख्यात

४ निकलना क्रिया या निकलने का स्थान।

वि०—१ न्योछावर किया हुआ।

२ देखो 'निस्सार' (रू.भे.)

निसारण-सं०पु० [सं० नि:सारण] १ वह द्वार या मार्ग जिससे कोई वस्तु निकल सके या निकाली जा सके।

२ निकालने की क्रिया या भाव।

निसारिप, निसारिपु-स०पु० [सं० निशारिपु] सूर्य (ह नां.)

निसारुक-सं०पु० [सं०] सात प्रकार के रूपक तालों में से एक (संगीत)

निसाळ, निसाळा—देखो 'नेसाळा' (रू.भे.)

उ०—१ ताकवां निसाळां खुलै भेटियां बिलंद ताळा, विलाला नरिंद्र इंद्र सारूप वाखांण। पांणां थारा 'अमरेस' नचीतो चीतोडपती खांडै थारै दुचितो छ:-खडो खुरसांण।
—अमरसिंह सीसोदिया रो गीत

उ०—२ कुमर वधै दिन दिन प्रतइ, सेठजी ह्रदय विमासै रे। पुत्र निसाळै मोकळूं, अध्यापक नै पासै रे।—लाधो साह

निसास, निसासउ—देखो 'निस्वास' (रू.भे.)

उ०—१ निसास तूं भल सरजियो, आधो दुक्ख सहंति। जो निसासउ सरजत नहिं, तो होयाइ मरंति।—अज्ञात

उ०—२ इण भांत कजियो हार झालो ठाकुरसिंह पाछो गयो। राजपूत दिलासा करता परचावता नीठ-नीठ जे जावै छै। ठाकुरसिंह भागै मन उदास थको निसास गेरतो जावै छै। रात घड़ी च्यार रै गयां, पाधरो आपरै डेरै आयो।
—डाढ़ाळा सूर री वात

उ०—३ अकबरियो हत आस, अवखास झांखै अधम। नांखै हियै निसास, पास न रांण प्रतापसी।—दुरसो आढ़ो

उ०—४ वालम थांरा विरह री, लागी लार बलाय। मन अभिलाखा भर रह्यो, जीव निसासां जाय।—अज्ञात

उ०—५ इसइ आरखइ मारुवी, सूती सेज विछाइ। साल्ह कुंवर सुपनइं मिळयउ, जागि निसासउ खाइ।—ढो.मा.

निसासणो, निसासबो-क्रि०अ० [सं० नि:श्वासनम्] निश्वास डालना, दु:खी होना, चिंतित या खिन्न होना। उ०—१ भख मुहगो झरतै भुअंतर, वनचर ऊसर थया वैरग। निसदिन अरज करै निसासै, सस आगळ ऊभो सारग।—रुघो मुहतो

उ०—२ निमंत्रीहार अयार निसासहि। द्रिहगसि ढोलां रवद दुवाह विसकन्या देखै वजवाया। मुणियउ मांड अनड़ मेवाड़।—दूदो

निसा-सरोज-सं०पु०यौ० [सं० निशा-सरोज] चन्द्र, चांद, चंद्रमा।

उ०—सदा प्रिया सु प्रीति रीति गीत सारनी नहीं। निसा-सरोज आंननी उरोज धारनी नही। क्रिसोदरीय कांमिनी विभा वयोधरी नही।—ऊ का.

निसासो-वि० (स्त्री० निसासी) १ दु:खी, खिन्न, चिंतित, बेचैन।

उ०—जीण म्हारी बाई ए इतरी निसासी ए बेनड़ मत हुवै, हरसो तो चालै थारै साथ।—लो.गी.

२ देखो 'निस्वास' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ ताहरां नरो बोलियो—'मा ! निसासो क्यूं मूंकियो।
—नैणसी

उ०—२ इतरै जनान रात घड़ी दोय तीन बीतियां निसासौ मेल, पूनम दवा सवान नूं सांटो मनाय ऊठिया।

—जलाल बूबना री बात

निसि-सं०स्त्री [सं० निशि] १ रात्रि, रजनी।

उ०—१ काळी काजळ सारसी, घटा मंडांणी आज। आजूणी निसि एकलां, जासी क्यूं जसराज।—जसराज

उ०—२ इम निसि सुकळ वाग नृप आए। विमळ चंद्रका साज वणाए।—सू.प्र.

उ०—३ छगा रूप छवि परस, सरव चख वदन सुरंगे। यौं लग्गे रस रूप, अथिर फिर कागद अग्गे। कै चकोर नभ ओर, सरद राका निसि सुंदर। हेत नेत्र हरसंत, रूप निरखत सुधाकर।

—रा.रू.

उ०—४ भजति सुग्रिह हेमंति सीत मैं, मिळि निसि तु न कोई वहै मगि। कोई कोमळ वसत्रं कोई कंबळि जण मारियौ रहति जगि।

—वेलि.

२ हल्दी।

निसिचर-सं०पु० [सं० निशि+चर] राक्षस, असुर।

रू०भे०—निसियर, निसियरु।

निसिचरराज-सं०पु०यौ० [सं० निशिचर+राज] १ राक्षस, असुर।

२ राजा बलि।

३ रावण।

४ विभीषण।

५ हिरण्यकश्यपु।

निसित-वि० [सं० निशित] तीक्ष्ण, तेज।

सं०पु०—लोहा।

निसिद्ध-वि० [सं० निषिद्ध] १ जिसके लिए मनाही हो, जिसका निषेध किया गया हो, जो न करने योग्य हो।

२ बुरा, खराब।

निसिनाथ-सं०पु० [सं० निशि+नाथ] १ चद्रमा, राकेश।

२ कपूर।

निसिनायक-सं०पु० [सं० निशि+नायक] रजनीपति, चंद्रमा।

निसिपति-सं०पु० [सं० निशि+पति] १ रजनीपति, चद्रमा, राकेश।

उ०—निसिपति नारी मोहनगारी, रोहणि नइ रंगराती। प्रभु चरणां परसी तजि हरणी, अद्भुत गुण करि माती।—वि.कु.

२ कपूर।

निसिपाळ-सं०पु० [सं० निशिपाल] चंद्रमा, मयंक।

निसियर, निसियरु—देखो 'निसिचर' (रू.भे.)

उ०—पवन त झिलगइ गिर त मेरु निसियरु तह सामणु, तइ त कमर नइ धम त धनु महता दंबाणगु। गढ़ त लंक विमहर त सेसु नह सुरद त दिवायर, पवन त इ्रमणि नइ त गग जळ वहूळ त सायर।—प्रभवनिर वनी

निसीअ-सं०पु० [सं० निषीद] बैठने की क्रिया या भाव (जैन)

निसिवांन,निसीवनि-सं०पु० [सं० निस्वन, निस्वानः] शब्द, आवाज (ह.नां.)

निसीत, निसीथ-सं०पु० [सं० निशीथ] १ रात्रि, रजनी, रात।

उ०—सुकाय सीत भीत मे निसीथ धूजती सहीं। निकाय हाय धाय में उपाय सूझती नहीं। निदाघ में निदाघदेह बाग आग में नहीं। नखानुराग त्याग व्है तडाग भाग में नहीं।—ऊ.का.

२ अर्द्ध रात्रि, आधी रात।

उ०—१ लखै एम निसीत लग, पेखै प्रेम-प्रगास। जगि रति मदन विलास ज्यों, हित चित परस हुलास।—रा.रू.

उ०—२ लग्गी हांम विलासं, विती अग्यात प्रात मध्यांनं। सायं-काळ निसीतं, रत भूप चूंप मदानयं।—रा.रू.

उ०—३ एक राति निसीथ रै समय एकला वड़ाह नूं पुर बारै जावतौ देखि विक्रम भी प्रछन्न पीठि लागौ थको एक नदी रै तीर स्मसांण देस गयौ।—वं.भा.

निसीथणी, निसीथिणी-सं०स्त्री० [सं० निशिथिनी] रात्रि, रजनी।

निसीनर-सं०पु० [सं० निशि+नर] राक्षस, असुर।

निसीनंत्र-सं०पु० [सं० निशि+नेत्र] चंद्रमा, चांद, मयङ्क।

निसीम-वि० [सं० निःसीम] १ जिसकी कोई सीमा न हो। सीमा-रहित, अपार, बेहद।

२ बहुत अधिक, बहुत बड़ा, अत्यन्त।

निसुंभ-सं०पु० [सं० निशुंभ] कश्यप ऋषि की स्त्री दनु के गर्भ से पैदा होने वाला एक प्रसिद्ध और शक्तिशाली असुर जिसने अपने भाई शुंभ के साथ इंद्रादि देवताओं को पराजित करके स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था। अंत में दुर्गा से युद्ध कर के मारा गया।

(पौराणिक)

रू०भे०—निसंभ, निसुंभ।

निसुंभमरदिनी-सं०स्त्री० [सं० निशुंभमर्दिनी] दुर्गा, देवी।

निसुणणौ, निसुणबौ-क्रि०स० [सं० नि+श्रु] श्रवण करना, सुनना।

उ०—१ माइ भणइ निसुणि वच्छ भोलिम घणी, तउं नवि जांणए तासु सार। रूपि न रीजए मोहि न भीजए, दोहिलो जालवीजइ अपार।—उपाध्याय मेरुनंदन गणि

उ०—२ पय ठवणुछव जुगवरह, करावितु बहु रंगि। ताम सुगुरु आइसु दियए, निसुणवि हरिसिउ अंग।—मुनिसारमूर्ति

उ०—३ निसुणि नारि विचारि ए पयसियइ, प्रीय तणी तहि करतिगि वयमियइ।—विराट पर्व

निसुणियोड़ौ-भू०का०कृ०—श्रवण किया हुआ, सुना हुआ।

(स्त्री० निसुणियोड़ी)

निसुर-वि० [सं० निः+स्वर] शब्दरहित, बिना आवाज के, मौन।

उ०—पीळांणी धरा ऊपधी पाकी, सरदि-कालि एहवी सिरी। कोकिल निसुर प्रस्वेद ओस कण, सुरति अंति मुख जिम सुत्री।

—वेलि

निसूरण-वि० [सं० निषूदन ?] विनाश करने वाला, विनाशक (जैन)

निसेजा, निसेज्ज-सं०स्त्री० [सं० निषद्या] १ किसी वस्तु के विकने का स्थान, हट (उ.र.)

२ खाट, चारपाई।

३ शय्या (जैन)

निसेणी—देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)

उ०—छटा अलौकिक छाय, ऊची लहरां ऊपड़ै। मुगत निसेणी माय, सुखदैणी असुरां सुरां।—बां.दा.

निसेध, निसेध-सं०पु० [सं० निषेध] १ न करने का आदेश, मनाही, वर्जन।

उ०—विधि निसेध करम नहिं क्रिया, वुद्धि उगत थकांणी। सत सुखरांम परम प्रकासी, आपकूं आप पिछांणी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

२ अवरोध, रुकावट, बाधा।

रू०भे०—निखेद, निखेध।

निसेधक-सं०पु० [सं० निषेधक] निषेध करने वाला, रोकने वाला, मना करने वाला, अवरोध करने वाला।

निसेधणौ, निसेधबौ-क्रि०स० [सं० निषेधनम्] १ निषेध करना, मना करना, रोकना (उ.र.)

२ खण्डन करना।

निसेधणहार, हारौ, (हारी), निसेधणियौ—वि०।

निसेधवाड़णौ, निसेधवाड़बौ, निसेधवाणौ, निसेधवाबौ, निसेधवावणौ, निसेधवावबौ, निसेधाड़णौ, निसेधाड़बौ, निसेधाणौ, निसेधाबौ, निसेधावणौ, निसेधावबौ—प्रे०रू०।

निसेधिम्रोड़ौ, निसेधियोड़ौ, निसेध्योड़ौ—भू०का०कृ०।

निसेधीजणौ, निसेधीजबौ—कर्म वा०।

निखेधणौ, निखेधबौ—रू०भे०।

निसेधियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ निषेध किया हुआ, मना किया हुआ, रोका हुआ।

२ खण्डन किया हुआ।

(स्त्री० निसेधियोड़ी)

निसेवित-वि० [सं० निषेवित] परिसेवित (जैन)

निसेस-सं०पु० [सं० निशीश] रजनीपति, चंद्रमा, मयङ्क।

निसैनी—देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)

उ०—दरसन परसन स्नांन जोई करै जप ध्यांन, नांव सुणै मुख ग्रांन गांन कर गाईयै। सातू विध मोख दैणी निसैनी सरगलोक ऐसी भागीरथी ताहि ध्यांन कर ध्याईयै।—गजउद्धार

निसोग-वि० [सं० निःशोक] १ दुःख, चिन्ता या शोक से मुक्त, शोक-रहित।

२ प्रसन्न, सुखी।

निसोच-वि० [सं० निःशोच] चिन्तारहित, निश्चित।

निसोत, निसोथ-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार की लता।

निस्कंटक-वि० [सं० निष्कंटक] झंझट या आपत्तिरहित, निर्विघ्न।

रू०भे०—निकंटक, निहकंट, निहकंटक।

निस्कंट-सं०पु० [सं० निष्कंठ] वरुण नाम का पेड़।

निस्कंप-वि० [सं० निष्कंप] कम्पनरहित, स्थिर।

रू०भे०—निहकप।

निस्कभ-सं०पु० [सं० निष्कभ] गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

निस्क-सं०पु० [सं० निष्कः] एक प्रकार की स्वर्ण-मुद्रा।

उ०—सो देखतां ही प्रतिहायन वांणवै लाख निस्क मुद्रा रो मुलक माळव अण रै समांन छोडि प्रामार वंस रै प्रभाकर जोग लियौ।

—वं.भा.

निस्कपट-वि० [सं० निष्कपट] छलरहित, कपटरहित, सीधा, सरल।

उ०—इकळास सूं निस्कपट अंदेसा विगर पक्ष विगर म्हारा थारा विगर गादी राज री वैठै।—नी.प्र.

रू०भे०—निकपट।

निस्कपटता-सं०स्त्री० [सं० निष्कपट+रा.प्र.ता] निष्कपट होने का भाव, सरलता।

निस्कपटी-वि० [सं० निष्कपटिन्] १ जो छली न हो, कपट नहीं करने वाला।

२ कपटरहित, सरल।

निस्करम, निस्करमी-वि० [सं० निष्कर्म्मन्] जो कामों में लिप्त न हो, अकर्मा।

रू०भे०—निकरम, निहकरम, निहकरमी।

अल्पा०—निकरमौ।

निस्करुण-वि० [सं०निः+करुण] जिसमें करुणा या दया न हो, निष्ठुर, बेरहम।

निस्कळंक-वि० [सं० निष्कलक] बिना किसी कलंक का, निर्दोष।

उ०—राठोड़ सूरौ खींवौ, कांघळ जी रा बेटा, मोहिलां रा दोहिता सो बड़ा सूर, धीर-वीर राजपूत, चोसठ-आखड़ी निवाहणहार, खाग त्याग पूरा काछ-वाच निस्कळंक, सरणाई-साधार, पर-भोम-पंचायण, पार की छटी जागै, इण भांत रा दातार जूंझार।

—सूरे खींवे कांधळोत री वात

रू०भे०—निकळंक, नीकळंक।

निस्कळंकतीरथ-सं०पु० [सं० निष्कलंकतीर्थं] एक तीर्थ (पौराणिक)

निस्कळ-वि० [सं० निष्कल] १ कलारहित।

२ पूरा, समूचा।

३ नपुंसक।

४ जिसका वीर्य नष्ट हो गया हो, वृद्ध।

सं०पु०—ब्रह्मा।

निस्कांम—देखो 'निकाम' (रू.भे)

निस्कांमी—देखो 'निकांमी' (रू.भे.)

उ०—१ मन चित मनसा पलक में, सांई दूर न होइ। निस्कांमी निरखै सदा, दादू जीवन सोइ।—दादूवांणी

उ०—२ निकट निरंजन लाग रहु, जब लग अलख अभेव। दादू पीवै रांम रस, निस्कांमी निज सेव।—दादूवांणी

निस्कारण-वि० [सं० निस्+कारण] १ अकारण, वेसबब।
२ वृथा, व्यर्थ।

निस्क्रमण-स०पु० [सं० निष्क्रमण] बाहर निकलने की क्रिया या भाव।

निस्क्रिय-वि० [सं० निष्क्रिय] जो निश्चेष्ठ हो, क्रिया या व्यापार-रहित, कर्मशून्य, निश्चेष्ठ।

निस्क्रियता-सं०स्त्री० [सं० निष्क्रिय+रा.प्र.ता] वह अवस्था या भाव जिसमें सक्रियता न हो, निश्चेष्ठता, कर्मशून्यता।

निस्क्लेस-वि० [सं० निष्क्लेश] कष्टों से छुटकारा पाया हुआ। क्लेशरहित।

निस्चंद्रअभ्रक-सं०पु० [सं० निश्चंद्रअभ्रक] नर-मूत्र, ग्वारपाठा, बकरी का दूध आदि वस्तुओं को मिला कर और सौ बार पुट देकर तैयार किया हुआ एक अभ्रक विशेष जो वीर्यवर्द्धक और ज्वरनाशक माना जाता है (वैद्यक)।

निस्चय-सं०पु० [सं० निश्चय] १ संशयरहित धारणा, सन्देहरहित ज्ञान, अवश्य। उ०—१ विना विचारियां कियौ कांम निस्चय दुखदायी होय।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ राक्षस एक महाबळी, महा दुस्ट सो आहि। पर-दुखनासी हे नृपति, निस्चय नासौ ताहि।—सिंघासण बत्तीसी

२ निर्णय, फैसला।

ज्यूं—हमेसां औ कांई रगड़ौ! आज इण बात री निस्चय हो जाणौ चाहिजै, म्हांसूं इब दुख नी देखीजै।

३ तय करने की क्रिया या भाव।

४ यकीन, विश्वास।

५ दृढ़ विचार, पक्का विचार, संकल्प।

ज्यूं—आगली गरमियां में कास्मीर री सैर करण री तो निस्चय है ईज।

रू०भे०—नहचै, नहच, नहचे, नहचेण, नहचै, निच्चय, निसचय, निसचे, निसचै, निसचौ, निहचै, निहचौ, नेहचै, नैहचै।

निस्चयांतर-भ्रांति-जथा-सं०स्त्री०—डिंगल में गीत (छंद) की वह रचना जिसमें संदेह अलंकार का संयोग हो (क.कु.बो.)

निस्चर-स०पु० [सं० निश्चर] एकादश मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

निस्चळ, निस्चल-वि० [सं० निश्चल] १ अविचल, दृढ़, अटल।

उ०—साधो निस्चळ पद सुखदाई। फिरता कूं थिरता कर राखौ, गरक ध्यांन के मांई।—स्री हरिरांमजी महाराज

२ अपने स्थान से नहीं हटने वाला, अचल।

उ०—च्यार मास निस्चळ रह्या, सरवर-तणै प्रसंगि। पिंगळ नळराइ भूपती, मिळिया मन में रंगि।—ढो.मा.

३ जो जरा भी न हिले-डुले, स्थिर।

उ०—१ दादू मन फकीर सदगुरु किया, कह समझाया ग्यांन। निस्चळ आसन बैस कर, अलक पुरुस का ध्यांन।—दादूवांणी

उ०—२ चर अचर चित, निस्चळ निचित। नहि आदि अंत, अग-हर अनंत।—ऊ.का.

उ०—३ प्रीति चंद्र कमोदिनी नइ, धरणी पावस जेम। तिम रुकमणी सूं नेह धरज्यो, नाथ निस्चळ प्रेम।
—रुकमणी मंगळ

४ शांत, अचपल।

सं०पु०—१ परब्रह्म। उ०—निस्चळ का निस्चळ रहै, चंचळ का चल जाय। दादू चचळ छाडि सब, निस्चळ सौं ल्यौ लाय।
—दादूवांणी

२ देखो 'निसचळ' (रू.भे.)

उ०—पूरण जोगी सोई अवधूता, आसण छोड न जाई। राज जोग मत निस्चळ कीवौ, सोळै कळा सदाई।
—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—नहचळ, निच्चळ, निश्चळ, निस्चिळ, निहिचळ, निहचळ।

अल्पा०—निचळौ।

निस्चळता-सं०स्त्री० [सं० निश्चल+रा.प्र. ता] स्थिरता, दृढ़ता, अचलता।

निस्चित-वि० [सं० निश्चित] जिसे चिंता न हो या जो चिंता न करे, चिंता रहित, बेफिक्र।

रू०भे०—नचंत, नचित, नचींत, नचीत, नच्यंत, नस्चित, निचंत, निचत, निर्चित, निचित, निचींत, निचीत, नीचंत, नीचित, नोचींत।

अल्पा०—नचितौ, नचींतड़ौ, नचीतेड़ौ, नचीतौ, निचतौ, निचतौ, निर्चितौ, निचींतौ, निचीतौ, निहचत।

निस्चितता-सं०स्त्री० [सं० निश्चित+रा.प्र. ता] निश्चित होने का भाव, बेफिक्री।

रू०भे०—नचीताई, निर्चिता, निर्चिताई, निर्चिती, निचिताई, निचीताई।

निस्चित-वि० [सं० निश्चित] १ तय किया हुआ, निर्णीत।

ज्यूं—टैम निस्चित करणौ, दिन निस्चित करणौ, कामकाज निस्चित करणौ।

२ पक्का, दृढ़।

ज्यूं—निस्चित बात कैणी।

निस्चिळ—देखो 'निस्चळ' (रू.भे)

उ०—अचेतनि केतउं चेईइ, बद्धमूळ प्रासाद केतउं खडहडइ, ठा[illegible] केतउ धडहडइ, कपटपर केतउं सोचइ, दुसीळ केतउ इंद्रिय[illegible] परहाथउ केतउं हालउ, निस्चिळ केतउ चालइ, सत्रसम[illegible] केतउं धाउ वंचइ, दुरबळ केतउ माचत, टूंटउ केतउं लांखइ[illegible] पुरुस केतउं झलइ?—व.स.

निस्टि-संज्ञ्री० [सं० निष्टि] असुरों की मां दिति का एक नाम जो कश्यप ऋषि की पत्नी और दक्ष प्रजापति की कन्या थी।
(पौराणिक)

निस्ठा-संज्ञ्री० [सं० निष्ठा] १ किसी बड़े, गुरु या धर्म्म आदि के लिए श्रद्धा की भावना, पूज्य बुद्धि, श्रद्धा-भक्ति।
२ ज्ञान की वह अंतिम अवस्था जिसमें आत्मा और ब्रह्म की एकता हो जाती है, सिद्धावस्था की चरम सीमा या स्थिति।
३ चित्त का स्थिर होना, मन की एकांत स्थिति।
४ अवस्था, स्थिति, ठहराव।
५ निश्चय, विश्वास।
६ निर्वाह।
७ इति, समाप्ति।
८ नाश।
सं०पु०—६ विष्णु जिनके लिए माना जाता है कि उनमें प्रलय के समय समस्त भूतों की स्थिति होगी।

निस्ठावांन-वि० [सं० विष्ठावान्] जिसमें श्रद्धा या निष्ठा हो।

निस्ठुर-वि० [सं० निष्ठुर] १ जिसमें दया न हो, कठोर दिल का, बेरहम, क्रूर।
२ कटु, अप्रिय। उ०—मूझ तणां गुण वाचंता जी, नयण न खांडइ धार। सामळ व्रण सासइ थया जी, निस्ठुर वयण विचार।
—रुकमणी मंगळ
३ सख्त, कठिन, कड़ा, कठोर।
रू०भे०—निठुर, नींठर, नीठर, नीठुर।

निस्ठुरता, निस्ठुराई-संज्ञ्री० [सं० निष्ठुर+रा.प्र. ता]
१ क्रूरता, बेरहमी, निर्दयता।
ज्यूं—अरे! बापड़ा माथै इती निस्ठुरता क्यूं करै है। थनै ई भगवांन रै घरै जवाब दैणौ पड़सी। जिण धन रै लारै दीवांनौ होय नै इतरी निस्ठुराई बरतै है वौ धन कीड़ी संचै तीतर खाय जियां व्है जासी।
२ निष्ठुर होने का भाव, सख्ती, कठोरता, कड़ाई।
ज्यूं—धीमा रो ठाकरां धीमा! इती निस्ठुरता सूं कांम करण वाळा रौ मन नी वधै, घोड़ी हूंस सूं दौड़िया करै।
रू०भे०—निठुरइ, निठुरता, निठुराई।

निस्तरण-सं०पु० [सं० निस्तरणम्] १ पार जाने की क्रिया या भाव।
२ उद्धार, छुटकारा, निस्तार।

निस्तरणौ, निस्तरबौ-क्रि०अ० [सं० निस्तरणम्] १ मुक्त होना, निस्तार पाना, छूटना।
२ पार होना। उ०—जो रे भाई रांम नहिं करते, नवका नांम खेवट हरि आपै, यौं विन क्यों निसतरते।—दादूवांणी
३ देखो 'नस्तरणौ, नस्तरबौ' (रू.भे.)
निस्तरणहार, हारौ (हारी), निस्तरणियौ—वि।
निस्तरिग्रोड़ौ, निस्तरियोड़ौ, निस्तरचोड़ौ—भू०का०कृ०।
निस्तरीजणौ, निस्तरीजबौ—भाव वा०।
निस्तारणौ, निस्तारबौ—सक०रू०।
निसतरणौ, निसतरबौ—रू०भे०।

निस्तरियउ [सं० निस्तीर्ण] उद्धार पाया हुआ, मुक्त। (उ.र.)

निस्तरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मुक्त हुवा हुआ, निस्तार पाया हुआ, छूटा हुआ।
२ पार हुवा हुआ।
३ देखो 'नस्तरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निस्तरियोड़ी)

निस्तार-सं०पु० [सं० निस्तारः] १ उद्धार, छुटकारा, मोक्ष।
उ०—१ केइ उपाय करी मेळण करूं, परिग्रह विविध प्रकार। विरति करूं पिण मन न रहे वळि, तौ किम हुवै भव पार निस्तार।
—ध.व.ग्रं.
उ०—२ तेड़ी राजा तेह नै ए, सखरौ दै सतकार। सीमती तूं मोटी सती ए, नांम थकी निस्तार।—ध.व.ग्रं.
२ पार होने का भाव।
रू०भे०—नसतार, नस्तार, निसतार।
अल्पा०—नसतारौ, नस्तारौ, निसतारौ, निस्तारौ।

निस्तारण-वि० [सं० निस्तारः] १ जिससे निस्तार हो, उद्धार करने वाला।
२ पार करने वाला।
सं०पु०—१ उद्धार करने का भाव, नस्तार।
२ पार करने की क्रिया या भाव।
रू०भे०—निसतारण।

निस्तारणौ, निस्तारबौ-क्रि०स० [सं० निस्तरणम्] १ उद्धार करना, मुक्त करना, छुड़ाना।
उ०—साठ हजार सग हालिया, तैं कर निस्तारे। मिनड़ी का नीवाह में, निरदाध निवारे।—भगतमाळ
२ पार करना।
निस्तारणहार, हारौ (हारी), निस्तारणियौ—वि०।
निस्तारिग्रोड़ौ, निस्तारियोड़ौ, निस्तारचोड़ौ—भू०का०कृ०।
निस्तारीजणौ, निस्तारीजबौ—कर्म वा०।
निस्तरणौ, निस्तरबौ—अक० रू०।
निसतारणौ, निसतारबौ—रू०भे०।

निस्तारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पार किया हुआ।
२ उद्धार किया हुआ, मुक्त किया हुआ, छुड़ाया हुआ।
(स्त्री० निस्तारियोड़ी)

निस्तारौ—देखो 'निस्तार' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ हाथी कीड़ी कांटै हेकण सौ तोलै, जग जांणै सारौ। रंकां रावां जोड़ै राखत, तै कीजै निवळां निस्तारौ। दीनां लंका जे

हाथां न फजै, दीधा, जग सारो जांणै। वेदां भेदां धाता वीठळ, वारंवार रटै वाखांणै।—र.ज.प्र.

उ०—२ पनरै करमादांन न परिहरया, आदरया पाप अठार। निस्तारो बीजुं थासैं नहीं, तुं हिव मुझ नै तार।—ध.व.ग्रं.

निस्तेज-वि० [सं० निस्तेजस्] जिसमें तेज न हो, तेजरहित, अप्रभ, मलिन।

निस्पक्ष-वि० [सं० निष्पक्ष] पक्षपातरहित।

रू०भे०—निरपख, निसपख।

निस्पक्षता-सं०स्त्री० [सं० निष्पक्षता] पक्षपात न करने का भाव।

रू०भे०—निस्पखता।

निस्पख—देखो 'निस्पक्ष' (रू.भे.)

निस्पखता—देखो 'निस्पक्षता' (रू.भे.)

निस्पत—१ देखो 'वनिस्पत' (रू.भे.)

२ देखो 'रिस्वत' (रू.भे.)

निस्पन्न-वि० [सं० निष्पन्न] १ पूर्ण, पूरा।

उ०—संवत सत्तर छेताळा वरखे, जन्म्यो ते पुत्र छहे हरखे रे। गुण निस्पन्न ते नांम निधांन, 'देवचद्र' अभिधांन रे।—कवियण

२ जो पूरा या समाप्त हो चुका हो, जिसकी निष्पत्ति हो चुकी हो।

रू०भे०—निपन, निपन्न।

निस्प्रभ-वि० [सं० निष्प्रभ] कांतिरहित, तेज-रहित, प्रभाशून्य।

निस्प्रयोजन-वि० [सं० निष्प्रयोजन] १ स्वार्थशून्य, बेमतलब, प्रयोजन-रहित।

२ निरर्थक, व्यर्थ।

३ बिना अर्थसिद्धि का, जिसमें अर्थसिद्धि न हो।

क्रि०वि०—बिना किसी अर्थ या मतलब के, व्यर्थ।

निस्प्रांण-वि० [सं० निष्प्राण] मरा हुआ, प्राणरहित, मुर्दा।

निस्प्रिय-वि० [सं० निस्पृह] जिसे लोभ या कामना न हो।

निस्प्रियता-सं०स्त्री० [सं० निस्पृहता] लालसा या लोभ न होने का भाव।

निस्फळ-वि० [सं० निष्फल] निरर्थक, व्यर्थ, फालतू, फलरहित।

उ०—१ सहु भूत प्रेत ग्रह व्है समा, सुपात्रे व्है धरमसी सही। देखिज्यो दांन दीधो थको, नेट कठै निस्फळ नहीं।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ सगुण गुण केते करै, निगुणा नांखै ढाहि। दादू साधू सब कहै, निगुणा निस्फळ जाहि।—दादूवांणी

रू०भे०—निफळ निरफळ, निसफळ।

निस्फीवटाई-सं०स्त्री० [अ. निष्फ=अर्द्ध+सं० वट=विभाजने] आधी उपज जागीरदार और आधी उपज आसामी द्वारा ली जाने वाली बँटाई।

निस्वत-सं०स्त्री० [अ०] १ अपेक्षा, तुलना, मुकाबिला।

रू०भे०—निसबत।

२ देखो 'रिस्वत' (रू.भे.)

निस्रेणका, निस्रेणिका, निस्रेणी-सं०स्त्री० [सं० निश्रेणिका, निश्रेणी]

१ सीढी, जीना (अ.मा.)

२ १३ और १० पर यति से २३ मात्रा का एक मात्रिक छन्द।

उ०—सझ तेरह धुर फेर दस, जांणो निस्रेणी। रिख नारी तरगी हरी, परसत पग रेणी।—र.ज.प्र.

३ खजूर का पेड़।

४ मुक्ति।

रू०भे०—नसैणी, निसरणी, निसरनी, निसेणी, नीरणी, नीसरणी।

निस्रेय-सं०पु० [सं० निश्रेय] कलंक, अपयश, बदनामी।

उ०—अनाळासी न आळासी न नाळसी निस्रेय को। सुस्वांमिभक्त स्वांमि को सदानुगांमि स्रेय को।—ऊ.का.

निस्रेयस-सं०पु० [सं० निःश्रेयस्] मोक्ष, कल्याण।

निस्वास-सं०पु० [सं० निःश्वास] १ प्राण वायु के नाक के बाहर निकलने का व्यापार।

क्रि०प्र०—करणी।

२ नाक या मुंह के बाहर निकलने वाला श्वास, उसास।

क्रि०प्र०—छोडणी, न्हांकणी।

३ शोक या चिंता के कारण मुंह या नाक द्वारा तेजी से छोड़ी जाने वाली श्वास।

उ०—उर निस्वास प्रमुक्के, भग्गो जास चीत सास्त्रंमं। यो चिंता उद्वेगो, लग्गी अग्ग वंस घासांणं।—रा.रू.

क्रि०प्र०—छोडणी, न्हांकणी।

वि०—मृतप्राय, बेदम।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

रू०भे०—निसांस, निसास, निसासउ, नीसास, नेसास।

अल्पा०—निसांसो, निसासो, नीसासो, नेसासो।

निस्वासन-सं०पु० [सं० निःस्वासन] चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन जिसमें दोनों पाँवों को सामने लम्बा करके एडियों को पृथ्वी पर रख कर पंज को ऊँचा रख कर दोनों पाँवों के अंगूठों को पास-पास रख के बैठना होता है।

निस्संक-वि [सं०निः+शंक] निर्भय, शंकारहित, निडर, बेधड़क।

उ०—नागणी लेती तोप रै अभिमुख धकावै जिण तरह काळेजा करां में लीधां प्राणां रो दुरभिक्ष पटकता चहुवांणा रा सामंत बीच हूवा। अर सस्त्रां रै संपात जीवां री यात्रा रै माथां रा व्यापार मडिया जुवा जुवा।—वं.भा.

उ०—२ झालो सिंहदेव तो प्रथम अणी मैं ही लोहछक होय प्राणां रा पोखण में लुभायो थको प्रमदा रो पांहुणो अपूठो खड़ियो। अर कठीरव कांन्ह चालुक्य राज रै विजय रो संकळप वधावतो निस्संक थको एक मूहूर्त्त लड़ियो।—वं.भा.

निस्संतान-वि० [सं० नि सन्तान] संतति-रहित, नाऔलाद।

रू०भे०—निसंतांन ।

निस्संदेह-क्रि०वि० [सं० निःसंदेह] बिना किसी संदेह के, बेशक ।

वि०—१ जिसमें कुछ सन्देह न हो।

ज्यूं—आ वात निस्सदेह सांची है कि क्षत्रांणी आपरौ सीस काट'र चूंडावत कनै सैनांणी निमत्त भेज्यौ ।

२ जिसे कुछ सन्देह न हो।

ज्यूं—औ आदमी निस्सदेह है ।

रू०भे०—निसंदेह ।

निस्सस-वि०—सन्देहरहित (जैन)

निस्सार-वि० [सं० निःसार] साररहित, तत्त्वहीन ।

रू०भे०—निसार ।

निस्सेस-सं०पु० [सं० निःश्रेयस] मोक्ष, कल्याण (जैन)

निस्सूत-सं०पु० [सं० निस्सूत] तलवार के ३२ हाथों में से एक ।

निस्स्वादु-वि० [सं०] बिना स्वाद का स्वादरहित ।

निस्स्वारथ-वि० [सं० निस्स्वार्थ] जिसमें खुद के स्वार्थ की भावना न हो, स्वार्थ से रहित ।

निहंग-वि० [सं० निःसंग] १ निर्लिप्त । उ०—नमो जप तप्प किता जोगिंद, राजा स्रीरांम नमौ राजंद । नमौ सब-व्यापक अग अनंग, नमौ निसबासर रैण निहंग ।—ह.र.

२ वस्त्रहीन, नग्न । उ०—मार मार वितथार वार ऊठियौ विकासै । खुरासांण खळभळै निहंग सा वच्चा नासै ।—नैणसी

३ [फा०] अकेला ।

उ०—नट कछनी करि निहंग, धरै अंगरखा वहादर । जमदाढ़क गज-वाग, कसै सहटी कर कम्मर । आडि पेच करि अडिग, पाघ पर घर हुम्मा पर । लाज विरज ताईत, जत्र मुहरा सिर ऊपर । इम सजै साज मुख करि अरण, जांणै सीह हकालिया । सुत वळ वंधाय कहि कुळ-कसब, चढ़ण महावत चालिया ।—सू.प्र.

सं०पु० [देशज] १ घोड़ा, बाजि (डि.को.)

उ०—आगळ फौज अघीस कूंत भळकावतौ । तुररौ सिर जरतार निहंग नचावतौ ।—किसोरदांन बारहठ

२ आकाश, आसमान (डि.को.)

उ०—१ जूटै इम 'पाबू' 'जीद' जंग। नाखत्र माळ तूटै निहंग। दळ नेत भड़ै जुध देव देत। पिड़ खेत लड़ै कन भूत प्रेत।—पा.प्र.

उ०—२ जटी ऊपड़ीक पव्वै चखा अराबां सावात जागै, संघां ऊवड़ीक पव्वै भूमंडा सामाज । मामलां घड़ीक वूठी सतारां गिरंद माथै, निहगां तड़ीक जेम तुहाळो नाराज ।

—रावत हमीरसिंह चूंडावत रौ गीत

उ०—३ पोह काज गऊ छळ भोम न पड़ियौ, अर धारा आवटियौ अंग । 'चांपौ' चच ग्रोधण चढ़ियौ, नासाचर लेगौ निहग ।

—राव चांपा रौ गीत

उ०—४ किसन सिर फूल विरखा करै, अमर तमासै आइया । निहंग घरि वीच मावै नहीं, सुरै विवांण संवाहिया ।

—पीरदांन लाळस

३ स्वर्ग । उ०— निहंग वखांणै अमर घर वखांणै सको नर, तूटियो 'अणखळौ' दुरंग तारां । साथ-घण आग झळ मांहि सांपड़ै, धणी रिण सांपड़ै खागधारां ।—दूदौ आसियौ

४ शिव, महादेव । उ०—पेचां मझि स्रोण वहै अणपार, जटा गंग जांणिक धार हजार । वघंवर जेम सिलै विकराळ, मंडै गळिमाळ जिका रुंडमाळ । नंदीगण जेम तुरंग निहंग, जोगारंभ आठ सझै रिण जंग । दळै खग 'सूर' तणौ विरदैत, जटाधर रूप कियां भड़ जैत ।—सू.प्र.

५ पक्षी, खग । ६ घड़ियाल, मगर ।

७ देखो 'नँग' (रू.भे.)

रू०भे०—नहंग, निहग, निंहग निहंगि ।

निहंगराज-सं०पु०यौ० [देशज] सूर्य ।

रू०भे०—नहगराज ।

निहंगसावझड़ौ-सं०पु०—डिंगल का एक छंद विशेष ।

निहंगि—देखो 'निहंग' (रू.भे.)

उ०—हिंदुवइ राइ देखाळि हत्य । सांकड़उ कियउ सुरितांण सत्य । आपणइ पांणि आपणइ अंगि । नवसहस धणी लागउ निहंगि ।

—रा.ज.सो.

निहंटौ-वि०—वीर, योद्धा ।

निहंस—देखो 'निहस' (रू.भे.)

उ०—१ हड़वड़ भड़ हैमरां, निहस वाजतां नगारै ।—गो.रू.

उ०—२ सहस तेर असवार, सीह सादूळ समोसर। वीस गयंद वेछाड़, निहस पावस गिर नीझर ।—सू.प्र.

निहंसणौ, निहंसबौ—देखो 'निहसणौ, निहसबौ' (रू.भे.)

उ०—१ निहसत नीसांण, हुवै वाज हींसांण । सझ काज घमसांण, अपांण भड़ ओघ ।—र.ज.प्र.

उ० -२ नित खग्गां खड़खड़ै, नित पळचरां ध्रवीजै । नित्त जोध निहंसति, नित्त गज दळां गाहीजै ।—गु.रू.बं.

निहमणहार, हारौ (हारी), निहंसणियौ—वि० ।

निहंसिओड़ौ निहसियोड़ौ, निहंस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निहसीजणौ निहसीजबौ—भाव वा० ।

निहंसियोड़ौ —देखो 'निहसियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निहसियोड़ी)

निहकंट, निहकटक—देखो 'निरकटक' (रू.भे.)

उ०—१ उवा निहकंट करै घर आपां । वे सथांन तो राजस थापां । अजुगति एह मतौ ऊथपियौ । जेठौ हूंता कणैठि जपियौ ।—सू प्र.

उ०—२ गढ़ ऊपरा वरस एक रह्या । तठा सूं कूंच चितोड़गढ आया । कुंभा रांणा नै निहकटक राज दीनौ ।

—राव रिणमल री वात

निहकंप—देखो 'निस्कंप' (रू.भे.)

उ०—नेम कंवार निहक्रम, हालीपांव होतव, निहकंप कबीर, मींडकीपाव परमोद, नांम देव नेठाव, धूंधळीमल घ्यांन, रहति रैदास, श्रौघड़नाथ श्रघट ।—ह.पु.वा.

निहकरम, निहकरमी—देखो 'निस्करम, निस्करमी' (रू.भे.)

उ०—रांम नांम गुरु सब्द से, रे मन पेल भरम । निहकरमी से मन मिळ्या, दादू काट करंम ।—दादूबांणी

निहकांम—देखो 'निकांम' (रू.भे.)

उ०—जन हरिदास गोविंद विमुख, करै न नर निहकांम । भूलि गया भांडी करी, परम सनेही रांम ।—ह.पु.वा.

निहकांमी—देखो 'निकामी' (रू.भे.)

उ०—निरालंब निरलेप, निडर निरभै निहकांमी । निरामूळ निस्करम, सुतो हरि श्रतरजांमी ।—ह.पु.वा.

निहकुंण, निहकुण-सं०पु० [सं० निक्वाण या निक्वण] शब्द ।

(ह.नां., श्र.मा.)

निहखरणौ, निहखरबौ-क्रि०स० [सं० निः+खेटनं] १ (खूब तेजी से) दौड़ाना, हांकना ।

उ०—लारोवरि श्रस चित्रांम कि लिखियां, निहखरता नरवरै नर । मांखण चोरी न हुवै माहव, महियारी न हुवै महर ।—वेलि.

क्रि०स० [सं० निः+स्त्रवण, प्रा० निस्सरणं श्रथवा निः+क्षरता] २ बाहर निकलना, निकलना ।

निहखरणहार, हारौ (हारी), निहखरणियौ—वि० ।

निहखरिश्रोड़ौ, निहखरियोड़ौ, निहखरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

निहखरीजणौ, निहखरीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

निहखरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (तेजी से) दौड़ाया हुश्रा, हांका हुश्रा ।

२ बाहर निकला हुश्रा, निकला हुश्रा ।

(स्त्री० निहखरियोड़ी)

निहघोख-सं०पु० [सं० निर्घोष] शब्द, घोष (श्र.मा.)

निहचंत—देखो 'निस्चिंत' (रू.भे.)

उ०—हव देखो श्रसपति गुभ्र हाथ । निहचंत करां सुख दिली राज ।—सू.प्र.

निहचळ, निहचल—देखो 'निस्चळ' (रू.भे.)

उ०—१ 'वंक' तेज कारण वर्णं, निहचळ तप निरदोस । ग्यांन मोक्ष कारण गिणौ, सुख कारण संतोस ।—वां.दा.

उ०—२ चित चचळ निहचळ भया, मन के पड़ै न राय । हरि निरगुण निरभै मतै, जहां तहां समि जाय ।—ह.पु.वा.

निहचै, निहचौ—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)

उ०—१ तीरथ वरत करै समि भाई, तंत मंत सीखै मन लाई । तुला बैसि कंचन दे काटा, निहचै विकै विडांणै हाटा ।—ह.पु.वा.

उ०—२ श्राटो-कूटो घी-घड़ौ, छूटां केसां नार । बिना तिलक बांमण मिलै, निहचै खूटो काळ ।—श्रज्ञात

उ०—३ किताईक वरसां मांहोमांह मतौ कियौ पंचायती कियां नूं श्रापांनूं घणा वरस हुवा सो हमैं निहचौ करौ ।—बां.दा.ख्यात

उ०—४ खितपति सुणै श्रधिक हरखांणौ । ठीक वात निहचौ ठहरांणौ ।—सू.प्र.

निहटणौ, निहटबौ—देखो 'निहट्टणौ, निहट्टबौ' (रू.भे.)

उ०—१ राठौड़ रणवट वद्धि जमदूत निहटा जुद्धि ।—गु.रू.बं.

उ०—२ जिहंगीर खुरम जुड़सी उभै, साखी चंद दुर्हिद सुर । जोगणी पीठ निहटा जवन, किर हथणापुर पंड-कुर ।—गु.रू.बं.

निहटियोड़ौ—देखो 'निहट्टियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निहटियोड़ी)

निहट्टणौ, निहट्टबौ-क्रि०स० [सं० निः+घट्टन] १ श्राक्रमण करना, हमला करना ।

उ०—पन्नंग पेखियौ, जांणि पंखराउ प्रघट्टौ । किरि दीठौ कुंजरां, सीह सादूळ निहट्टौ ।—गु.रू.बं.

२ टक्कर लेना, भिड़ना, युद्ध करना ।

उ०—१ सुरतांण तणा दळ सत्थै, खड़ि श्राया खिड़की मत्थै । 'गजबंध' कमघ निहट्टा, तब साहनिवाज पलट्टा ।—गु.रू.बं.

उ०—२ श्रसमांण उभै दळ ऊलट्टां, उदधि जांण उलट्टियां । पाधरै खेत पति साह वे, नेजा गाडि निहट्टियां ।—गु.रू.बं.

उ०—३ घसरस्सै घणूं घाट घांसारु घट्टा । फुणां फाट श्रहिराउ दरियाव फट्टा । दिलांवै सुरतांण उट्टाइ दुंदं । निहट्टा किरै रांमणां रामचंदं ।

—गु.रू.बं.

उ०—४ विचित्र खंड वप भड़ै, मुंड रडवड़ै धरत्तो । घडै रुंड वेहड़ां चड गह श्रड़ै दुसत्ती । तूंड पड़ै तेजियां, नृपति बळवंड निहट्टौ । प्रळै मंड कारणै, काळ परचड कि जुट्टौ ।—रा.रू.

क्रि०श्र०—लगना, लीन होना ।

निहट्टणहार, हारौ (हारी), निहट्टणियौ—वि० ।

निहट्टिश्रोड़ौ, निहट्टियोड़ौ, निहट्टयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

निहट्टीजणौ, निहट्टीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

निहटणौ, निहटबौ, नीहट्टणौ, नीहट्टबौ—रू०भे० ।

निहट्टियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ श्राक्रमण किया हुश्रा, हमला किया हुश्रा ।

२ टक्कर लिया हुश्रा, भिड़ा हुश्रा, युद्ध किया हुश्रा ।

३ लगा हुश्रा लीन हुवा हुश्रा ।

(स्त्री० निहट्टियोड़ी)

निहडौ—देखो 'निसंडौ' (रू.भे.)

निहणणौ, निहणबौ-क्रि०स० [सं० निहननं] १ मारना, संहार करना ।

उ०—पाछपीळि पापी करइ कूड़ दीघउ रतिवाउ । निहणीय पंच पंचाळ वाळ, श्रनु राखसि जाउ ।—पं.पं.च.

निहणियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मारा हुश्रा, संहार किया हुश्रा, हनन किया हुश्रा ।

(स्त्री० निहरिणयोड़ी)

निहतरणौ, निहतरबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)

उ०—हिव दिन दसमइ आवियइ ए, करइ दसूट्टण प्रेम। सगा सहि निहतरइ ए, असूचि उतारइ एम।—ऐ.जै.का.सं.

निहतरणहार, हारौ (हारी), निहतरणियौ—वि०।

निहतरिग्रोड़ौ, निहतरियोड़ौ, निहतरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

निहतरीजणौ, निहतरीजबौ—कर्म वा०।

निहतरियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निहतरियोडी)

निहतारथ-सं०पु० [सं० निहत थं] प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध दोनों शब्दों के प्रयोग से उत्पन्न होने वाला साहित्य का एक दोष।

उ०—निहतारथ लै अरथ प्रगट नहि, अनुचित अरथ न अरथ अजोग। पूरण रण निररथक व्है पद, लै अस्लील समझ विध लोग।—बा दा.

निहत्त-सं०पु० [सं० निघत्त] किसी वस्तु को स्थापित करने की क्रिया या भाव अथवा स्थापित वस्तु (जैन)

निहत्थौ, निहथ, निहथौ-वि० [सं० निः+हस्त] १ जिसके हाथ में कोई अस्त्र-शस्त्र न हो, अस्त्र-शस्त्रहीन।

उ०—वाजा अति वाजसी, भेर मादळ नै भूंगळ। काहळ संख अनेक, ताम धूजसी रसातळ। नीसांण रुडै कांपै निहथ, सहि जांणि गाजै सघण। बरघू दमांम करवाळि वह, घोड़े ढोल कंसाळ घण।—पी.ग्र.

२ खाली हाथ, निर्धन।

निहरवाळणौ, निहरवाळबौ-क्रि०स० [देशज] खड्डे में डाल कर दबा देना।

उ०—इवइ यउं कीजइ, वाहण वहण अरथ भडार। सभाळिजइ, जळइ सू जउहर जाळिजइ, नहीं त्यउ खाडइ निहरवाळिजइ, अवधू पुरखारथ कीजइ।—अ वचनिका

निहरवाळियोड़ौ-भू०का०कृ०—खड्डे मे डाल कर दबाया हुआ।

(स्त्री० निहरवाळियोड़ी)

निहलौ-वि० [देशज] (स्त्री० निहली) निष्फल, वेकार।

उ०—काचौ देह तणौ कमठांणौ, पड़ता नह लागै पलक। दुनियां तणी निहली दौलत, हटवाड़ा वाळी हलक।—बा.दा.

निहल्ल-वि० सं० नि+हल्लनम्] १ गति नहीं करने वाली।

उ०—सिंधु परइ सउ जोग्रणां, नीची खिवइ निहल्ल। उर भेदती सज्जणां, ऊचेडती सल्ल।—ढो.मा.

निहस-स०स्त्री० [देशज] १ प्रहार, चोट (डंके की)

उ०—१ आगमि सिसुपाळ मंडिजै ऊछव, नीसांणे पड़ती निहस। पटमंडप छाइजै कुंदणपुरि, कुंदण में बाभै,कळस।—वेलि.

उ०—२ आतस दगि झड मंडे अंगारां, निहस पड़ै रण तूर नगारां। घर अंबर रज धोम अधारै, जोगणि चंडी वीर जैकारै।—सू.प्र.

२ ध्वनि, घोष (वाद्यों का)

रू०भे०—निहंस, नीहस।

निहसणौ, निहसबौ-क्रि०अ० [देशज] १ (वाद्य आदि का) बजना, ध्वनि करना।

उ०—'सूराचंद' 'अजन' दळ साजै। वस घर करी निहसते वाजै। इतै चैत वद वीज अधारी। आवी सुर-भ्रम आणंदकारी।—रा.रू.

२ गरजना। उ०—१ निहसै बूठौ घण विणु नीलांणी, वसुधा थळि थळि जळ वसइ। प्रथम समागम वसत्र पदमणी, लीधै किरि ग्रहण लसइ।—वेलि.

उ०—२ रिण सूर तिकां मुख नूर रचै। मिळ दीठ दुहूं दळ रीठ मचै। मल दोय दुहूं दिस घाय मिळै। निहसै किर नाग दुवाघ निलै।—रा.रू.

३ भयानक आवाज करना।

उ०—लख लख नाव महिख घड़ लाधै। सोकोतर तिण पर नृत साधै। कटिया सीस अनेक जियां करि। निहसै हसै झाळ मुख नीसरि।—सू.प्र

४ हँसना।

५ जोश में आना, जोशीला होना। उ०—निहसि खेत वाजिया निताळा। विढै पूत जिम साहां वाळा। वडै पराक्रम 'आजम' वीतौ। जुध गरीठ हठ आलम जीतौ।—रा.रू.

६ बौछार होना, वरसना।

उ०—धुवि नास फड़ड़ रज धूसरड, रथ अछरां मग रोकिया। नाळां निहाव गोळां निहसि, झाळा दिसि असि झोकिया।—सू.प्र.

७ चमचमाना, चमकना।

उ०—दधि वीणि लियो जाइ वणतौ दीठौ, साखियात गुण मैं ससत। नासा अग्रि मुताहळ निहसति, भजति कि सुक मुख भागवत।—वेलि.

८ वीरगति को प्राप्त होना, मरना।

उ०—जिम रावळ 'दूदौ' 'जैसांणै,' निहसै 'चूंड' राव 'नागांण'। 'सातळ' 'सोम' मुग्रा 'सिवियांणै', कीनौ मरण जिसौ 'कलियांणै'।—प्रिथीराज राठौड़

क्रि०स०—९ सहार करना, मारकाट करना, मारना।

उ०—डूंगरोत 'मांनौ' पड़ै, रिण कायथ हरिराय। 'विसनौ' मुहतौ वाजियौ, दुयणां हाथ दिखाय। निहसै खळां 'नवल्ल' रौ, अग्गे दळां दुझाल। हिच पड़ियौ रज रज हुवै, सांदू 'सूरजमाल'।—रा.रू.

१० प्रहार करना।

उ०—गइवर-गळइ गळत्थियउ, जहं खचइ तहं जाइ। सीह गळत्थण जइ सहइ, तउ दह लक्खि विकाइ। तउ दह लक्खि विकाइ, मोल जांणवि मुहगे रा। कड़वा कारणि कथिन, कोपि खउंदाळिम केरा। वेढ़ कीध पड़ियार, निहसि कट्टारउ दुहुं करि। राइ न ग्रहउ नरसिंघ

गळइ, गळहथ जउं गइवरि ।—अ. वचनिका

११ युद्ध करना, जूझना ।

उ०—१ नाई समरि निडार, नागै खागै निहसिग्रौ । सार तणै भरि सोहिग्रौ, 'जीवौ' ही जिणि वार ।—वचनिका

उ०—२ निहसंति जोध नग्रीठि । रिण रूक वापरि रीठि । वेनिहस सेन निसंक । किरि राम रांमण लंक ।—गु रू बं.

निहसणहार, हारौ (हारी), निहसणियौ—वि० ।

निहसवाड़णौ, निहसवाड़बौ, निहसवाणौ, निहसवाबौ, निहसवावणौ, निहसवावबौ, निहसाड़णौ, निहसाड़बौ, निहसाणौ, निहसाबौ, निहसावणौ, निहसावबौ—प्रे०रू० ।

निहसिग्रोड़ौ, निहसियोड़ौ, निहस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

निहसीजणौ, निहसीजबौ—भाव वा० ।

नहसणौ, नहसबौ, निंहसणौ, निंहसबौ, निहंसणौ, निहंसबौ, निहस्सणौ, निहस्सबौ, नीहसणौ, नीहसबौ—रू०भे० ।

निहसियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (वाद्य ग्रादि) बजा हुग्रा, ध्वनि किया हुग्रा ।

२ गरजा हुग्रा ।

३ भयानक ग्रावाज किया हुग्रा ।

४ हँसा हुग्रा ।

५ जोश में ग्राया हुग्रा, जोशीला हुवा हुग्रा ।

६ बरसा हुग्रा ।

७ चमचमाया हुग्रा, चमका हुग्रा ।

८ वीर गति को प्राप्त हुवा हुग्रा, मरा हुग्रा ।

९ संहार किया हुग्रा, मारकाट किया हुग्रा, मारा हुग्रा ।

१० प्रहार किया हुग्रा ।

११ युद्ध किया हुग्रा, जूझा हुग्रा ।

(स्त्री० निहसियोड़ी)

निहस्सणौ, निहस्सबौ—देखो 'निहसणौ, निहसबौ' (रू.भे.)

उ०—१ श्री वरियांम निहस्सिया, दोय घड़ी इक जांम । 'ग्रजबौ' वीठळदास रौ, पड़ियौ खेत दुगांम ।—रा.रू.

उ०—२ नगारा निहस्सै, सनूरा तरस्सै । दुसेन्या दरस्सी, कड़ै कंठळी सी ।—रा.रू.

उ०—३ हिंदुग्रांण तुरकांण करण घमसांण कडक्कै । सम्भि कबांण गुण बांण दळां प्रारभ बळ दक्कै । भड़ भिड़ज्ज गज घज्ज घड़ा चतुरंग कसस्से । सिंघू सद्द रवद्द नद्द नीसांण निहस्सै ।—वचनिका

निहस्सियोड़ौ—देखो 'निहसियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० निहस्सियोड़ी)

निहांण—देखो 'निधांन' (रू.भे.) (जैन)

निहाइ, निहाइ, निहाई-सं०स्त्री० [सं० निघात] १ प्रहार ।

उ०—'धूघ' हर वरसतां घन्न घन्न । गुरिजां निहाइ वाजइ गिगन्न ।

—रा.ज.सी.

२ ध्वनि । उ०—१ पुड़ सातइ घूजिय पवंग पाइ, नागींद नाचि नोवति निहाइ ।—रा.ज.सी.

उ०—२ भाख सत्रां खटतीस भाखीजै । घरपुड़ घाय निहाइ धू्वै । भीरोहर कर भाट जूंबरिक । हुल हाथळ जिहि भगति हुवै ।

—दूदौ

३ शोरगुल, हल्ला । उ०—ग्रारक्त कुंभस्थळ, ग्रापणी छाया देखि, गुहिरा गाजइं, गोत्र नीमजइं, सैन्य छोघइं, ग्रलुग्रारी मांडइं, कठ पूरइं, गढ चूरइं, घाय रचइं, निहाइ माचइं, करदंत ताकइ ।

—व.स.

४ सोनारों ग्रौर लोहारों का वह उपकरण जिस पर वे धातु को रख कर हथौड़े से पीटते हैं ।

निहाउ, निहाऊ—देखो 'निहाव' (रू.भे.)

उ०—१ घणि वाजित्र घण घाउ, घमघमि ग्रपछर घूघरा । वागा वीरारस तणा, नाराजिग्रां निहाउ ।—वचनिका

उ०—२ निपट विन्है दळ ग्राया नैड़ा । नरां सुरां ग्रति ग्राया नैड़ा । नौबति सोर घड़ड़ि धुबि नैड़ा । नाळि निहाउ गाजिग्रा नैड़ा ।

—वचनिका

निहाज-सं०स्त्री० [सं० निह्नव: या निर्ह्लाद:] नगाड़े की ग्रावाज, ध्वनि (डिं.को.)

निहाद-सं०पु० [सं० निर्ह्लाद:] नाद, शब्द, ध्वनि (डिं.को.)

निहायत-वि० [ग्र०] ग्रत्यन्त, बहुत ।

ज्यूं—इण कांम नै ग्राज री ग्राज निपटाणौ निहायत जरूरी ।

ज्यूं—चीज निहायत बढ़िया है ।

सं०स्त्री०—सीमा, हद ।

निहार-सं०पु० [सं० निभालनं] देखने की क्रिया या भाव, ग्रवलोकन ।

उ०—नजरूं का निहार पंजूं का दाव । कदमूं का फुरत डोरघूं का घाव ।—सू.प्र.

रू०भे०—निहाळ, निहाल ।

निहारणौ, निहारबौ-क्रि०स० [सं० निभालनम्] १ दर्शन करना, ग्रवलोकन करना, निरखना, देखना ।

उ०—१ रांम सजीवण-मंत्र रट, बयणां रांम बिचार । स्रवणां हर गुण संभळे, नैणां रांम निहार ।—ह.र.

उ०—२ राज कुंवर बर सहज सलूणा, नगर निहारण ग्राया रे लो । बाळ, जुवा, वूढ़ा नर नारी, छवि निरखै छक छाया रे लो ।

—गी.रां.

उ०—३ धिन दीहाड़ौ धिन घड़ी, धिन वेळा धिन वास । नयणे सयण निहारिया, पूरी मन री ग्रास ।—ग्रज्ञात

उ०—४ चित्त चढ़ी म्हारै माधुरी मूरत, हिवड़ा ग्रणी गड़ी । कबरी ठाडी पंथ निहारां, ग्रपणं भवण खड़ी ।—मीरां

उ०—५ ग्रापरा पांम्हणा (दुसमण) तौ पंथ निहारै, झगड़ा री वाट जोवै ग्रनै रिण खेत मेंमांस रुधिर भरवण वाळी ग्रीधां गैण

आकास में निहारें उड रही है।—वी.स.टी.

मुहा०—वाट (पंथ, मारग,) निहारणी—प्रतीक्षा करना, इन्तजार करना।

२ ध्यान देना। उ०—पत तूं भूखो प्रीत को, चित्त देख विचारें। भीलण का फळ भोगतां, नह भूठ निहारें।—भगतमाळ

३ प्रतीत करना, महसूस करना, जानना।

उ०—१ सिव भ्रवन कन्या हूंत संभव, ग्रगनि जोति ग्रनोप ए। सुभ द्रिस्ट भूप निहारि प्रज सहि, ग्रघट किरि सुख ग्रोप ए।

—रा.रू.

उ०—रस भरत ग्रम्रत सरद राका, रैण वण जण कारणं। दिन सुखद राति विलास दायक, हित चकोर निहारणं।—रा.रू.

निहारणहार, हारो (हारी), निहारणियो—वि०।

निहारिग्रोड़ो, निहारियोड़ो, निहारचोड़ो—भू०का०कृ०।

निहारीजणो, निहारीजबो—कर्म वा०।

निहाळणो, निहाळबो, निहालणो, निहालबो, निहावणो, निहावबो, निहेरणो, निहेरबो, निहोरणो, निहोरबो, नीहाळणो, नीहाळबो, नीहालणो, नीहालबो—रू०भे०।

निहारियोड़ो-भू०का०कृ०—१ दर्शन किया हुग्रा, ग्रवलोकन किया हुग्रा, निरखा हुग्रा, देखा हुग्रा।

२ ध्यान दिया हुग्रा।

३ प्रतीत किया हुग्रा, महसूस किया हुग्रा, जाना हुग्रा।

(स्त्री० निहारियोड़ी)

निहारी-वि०—ग्रलग दूर, पृथक।

निहाळ, निहाल-वि० [फा० निहाल] १ जो सब प्रकार से सन्तुष्ट हो गया हो, पूर्ण काम। उ०—१ राजावां री रीज, सुखदाई सारा सुणी। खावद थारी खीज, जग निहाल करती 'जसा'।—ऊ.का.

उ०—२ सेंवज जिण वरस इण गांव में पाकतो मिनख निहाल व्है जावता।—रातवासो

उ०—३ लोहड़ें न माने डर लिगार। ग्रापड़ें पड़ें जुध केक वार। मन दिया ग्रावतां रीभ माल। नायता किता कीधा निहाल।

—वि.स.

मुहा०—१ निहाल करणो—मालामाल करना, सन्तुष्ट करना।

२ निहाल व्हैणो—मालामाल होना, पूर्ण सन्तुष्ट होना, किसी प्रकार की कमी वा ग्रभाव न रहना।

२ जो बहुत राजी हो गया हो, प्रसन्न, खुश।

उ०—१ मोर सिखर ऊंचा मिळें, नाचें हुग्रा निहाल। पिक ठहकें भरणा पड़ें, हरिए डूंगर हाल।—वा.दा.

उ०—२ हळहळियो महराव खां, ग्रायो घर 'ग्रजमाल'। जतरा मत ग्रसुरां जुग्रा, हिंदू हुवा निहाल।—रा.रू.

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

३ कृतकृत्य, कृतार्थ, सफल।

उ०—१ राजभोग ग्रारोगो गिरधर, सनमुख राखां थाळ। मीरां दासी सरणां ज्यासी, कीज्यो वेग निहाल।—मीरां

उ०—२ ए तो दसरथ जो रा लाल, भला मन भावणा हे। ए तो कर रह्या नयण निहाल, घणा रळियावणा हे।—गी.रां.

उ०—३ नांम महातम वरण कर, हमकूं किये निहाळ। सुणियो गुरु हरनाथ सूं, दादू दीनदयाळ।—भगतमाळ

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

४ देखो 'निहार' (रू.भे.)

रू०भे०—नीयाल, न्याल।

निहाळणो, निहाळबो, निहालणो, निहालबो-क्रि०स० [सं० निभालनम्]

१ खोजना, ढूंढ़ना।

उ०—१ ऊलवे सिर हुथ्थड़ा, चाहंदी रस लुब्ध। विरह-महाघण ऊमटचउ, थाह निहाळइ मुब्ध।—ढो.मा.

उ०—२ थाह निहाळइ, दिन गिणइ, मारू ग्रासा-लुब्ध। परदेसे घांघल घणा विखउ न जांणइ मुग्ध।—ढो.मा.

उ०—३ सखी री मिळि ग्ररज करत है ग्राली, कहा वात करत है काली। नवलो कोइ कुमर निहाळी, तुम परणावां ततकाळी हो लाल।—ध.व.ग्रं.

२ सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, कृतकृत्य करना।

३ देखो 'निहारणो, निहारबो' (रू.भे.)

उ०—१ उवकंबी सिर हुथ्थडा, चाहंती रस-लुब्ध। ऊंची चढ़ि चात्रंगि जिउं, मागि निहाळइ मुग्ध।—ढो.मा.

उ०—२ निज गउखे चढ़ि चढ़ि वाट निहाळइ, महूरत पिण ग्रायो तिल मात। तीजइ भवण वांधियउ तोरण, गिर मडप छायउ वडगात।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ वाक घणा फाटा रहै, नाहर डाच निहाळ। फिर काळी रा करग रो, कोयक खडग कराळ।—बां.दा.

उ०—४ दियां ग्रोळमो हुंस दियें, नीची निजर निहाळ। सूंस करै गाळां सहे, चुगल बडो चिरताळ।—बां.दा.

उ०—५ भरें मांग सिंदूर मारग भाळें, वहै सांमळो व्रज्ज सेरो विचाळें। वहै लार लेवार पिंडार वाळें, नवा नेह सूं देह गोपी निहाळें।—ना द.

उ०—६ निज गुण सांम्हो जोइज्यो रे, माहरा ग्रवगुण म निहाळ दे।—स्रीपाळ

उ०—७ ग्रनेकि परिछइ ते विनडंत दीण वयण जीव विलवंत। नरग तणां दुक्ख ग्रनी निहालि ते मेल्हइं करवत कपाळि।

—चिहुंगति चउपई

उ०—८ ग्रारोही ग्रत रोस ग्रकव्वर, ग्रगे सिलह तुरंगे पक्खर। एक हजार मुगळ मुख ग्रागें, भिड़तें काळ निहाळ न भागे।

—रा.रू.

उ०—९ कळिया दुब सागर जन काढें, विपत रोग ग्रत्र ग्रागर

बाढ़ै । नातौ दीनदयाळ निहाळै, पाळै रे संतां हरि पाळ ।
—र.ज.प्र.

निहाळणहार, हारौ (हारी), निहाळणियौ—वि० ।
निहाळिश्रोड़ौ, निहाळियोड़ौ, निहाळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
निहाळीजणौ, निहाळीजबौ—कर्म वा० ।
नीहाळणौ, नीहाळबौ, न्यहाळणौ, न्यहाळबौ, न्याळणौ, न्याळबौ
—रू०भे० ।

निहाळियोड़ौ, निहालियोड़ौ-भू०का०कृ०—खोजा हुआ, ढूंढ़ा हुआ ।
२ संतुष्ट किया हुआ, प्रसन्न किया हुआ, कृतार्थ किया हुआ ।
३ देखो 'निहारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निहाळियोड़ी, निहालियोड़ी)

निहाव-सं०पु० [सं० निघाति] १ ध्वनि, आवाज, निर्घोष, शब्द ।
उ०—१ छतीस राग छाजती, निहाव घाव नोबती । भजै विभास भैरवं, रळी कळी कळी रवं ।—रा.रू.
उ०—२ धुवि नास फड़ड़ रज धूसरड़, रथ अछरां मग रोकिया । नाळां निहाव गोळां निहसि, झाळां दिसि असि झोकिया ।
—सू.प्र.
२ प्रहार । उ०—१ छोडै भूप दास खळ छोडै । जजर निहाव वजर चै जोडै । छहुंवां सर चहुवैवळ छूटै । तीड अनेक जांणि दळ तूटै ।—सू.प्र.
उ०—२ 'गोयंद' वह दीधां गजर, अर घड़ा आघट्टी । साथी गोयंददास रां, अति रीस उपट्टी । 'किसन' घड़ा खग झाड़ि, करि धारां धोपट्टी । नाराजां वग्गौ निहाव, उस्सीस अघट्टी ।—सू.प्र.
३ लोहे का घन, बड़ा हथौड़ा ।
४ आकाश, आसमान । उ०—१ जमडाढां साचवै हकाळै बळां महा जोध, नीहसै बांणासां बाढ़ गाजियो निहाव । अधायो 'उमेद' रोळै गाढ़ थम रहै ऊभो, रोळै धाप हालियो गाढै मारू राव ।
—हरदांन भादो
उ०—२ दुयणां कोट संभावियौ, गोळां चोट निहाव । भोट पड़ंतै गोळियां, ओट न रक्खे राव ।—रा.रू.
रू०भे०—निहाउ, निहाऊ नीहाव ।

निहावणौ, निहावबौ-क्रि०अ० [सं० निभालनम्] १ शोभायमान होना, सुन्दर व आकर्षक प्रतीत होना । उ०—नूर सूर सम वदन निहावै । आपै मात रतन घन आवै । सहर गळी प्रत गळी सुहावै । गुळ वांटै त्रिय मंगळ गावै ।—रा.रू.
२ देखो 'निहारणौ, निहारबौ' (रू.भे.)
निहावणहार, हारौ (हारी), निहावणियौ—वि० ।
निहाविश्रोड़ौ, निहावियोड़ौ, निहाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निहावीजणौ, निहावीजबौ—भाव वा० ।

निहावियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ सुन्दर व आकर्षक प्रतीत हुवा हुआ, शोभायमान हुवा हुआ ।
२ देखो 'निहारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निहारियोड़ी)

निहिचळ, निहिचल—देखो 'निस्चळ' (रू.भे.)
उ०—१ मन निहिचळ निरभै सुख लागा, रहै सकळ ते न्यारा । गगा मूळ अमूळ अधर धर, तहां पंडित रह्या बिचारा ।
—ह.पु.वा.
उ०—२ आसा नदि अपूटि वहै, अम्रित झरै गगन रस रहै । नो सै नदी निवासी निहिचळ भई, आसा त्रिस्णा भूखी गई ।
—ह.पु वा.

निहिवास—देखो 'निवास' (रू.भे.)
उ०—सास आस निहिवास, वांणि नह खांण न वेदू ।—पी.ग्रं.

निहीं, निही—देखो 'नहीं' (रू.भे.)
उ०—१ रूप रेख निहीं रग, कहौ हव काहिज काई ।—पी.ग्रं.
उ०—२ क्रोध कळह कुछि निही, दांन अविगत दाखीजे ।—पी.ग्रं.

निहुतणौ, निहुतबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)
उ०—निहुत जिमावै वहु जणा रे, करै वीनती सराय । राजा री भगत ज देख नै रे, तापस बोल्यौ वाय रे ।—जयवांणी
निहुतणहार, हारौ (हारी), निहुतणियौ—वि० ।
निहुतिश्रोड़ौ, निहुतियोड़ौ, निहुत्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निहुतीजणौ, निहुतीजबौ—कर्म वा० ।

निहुतियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निहुतियोड़ी)

निहुरा—देखो 'नोरा' (रू.भे.)
उ०—सारो खोय सबाब, पडि फीटो पावां पड्यौ । निहुरा खाय नवाब, नारि छुडाई निठ्ठसैं ।—ला.रा.

निहेरणौ, निहेरबौ-क्रि०स० [सं० निभालनम्] १ खोजना, ढूंढ़ना ।
उ०—कर दोनों कटि ऊपरै, पुरुस फिरै चौफेर । औ आकार तिहु लोक नौ, काढ़यौ ग्रंथ निहेर ।—जयवांणी
२ देखो 'निहारणौ, निहारबौ' (रू.भे.)
निहेरणहार, हारौ (हारी), निहेरणियौ—वि० ।
निहेरिश्रोड़ौ, निहेरियोड़ौ, निहेर्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
निहेरीजणौ, निहेरीजबौ—कर्म वा० ।

निहेरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ खोजा हुआ, ढूंढ़ा हुआ ।
२ देखो 'निहारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निहेरियोड़ी)

निहोर—देखो 'नौ'रा' (मह.रू.भे.)
उ०—१ विन्नि विलसित अहिलौ नहीं, नहीं केह नौ जोर । पिण मुझ वयण म लोपसो, तुमने करूं निहोर ।—सीपाळ
उ०—२ स्वांमि कलपतरु सारिखो सखी, बीजा बावळ बोर । मनवछित दायक मिळ्यो सखी, न करूं अवर निहोर ।—ध.व ग्रं.
उ०—३ प्रियु प्रियु पपीयन रटत प्रगटत, पवन के झकझोर । इस मास सांवन दिल दिढावन, सजन मांनि निहोर ।—वि.कु.

निहोरड़ा—देखो 'नौ'रा' (अल्पा० रू.भे.)
उ०—हुं मांगूं हो हिव अविहड़ प्रेम, कि नित नित करू'य निहोरड़ा।
—स.कु.

निहोरणौ, निहोरबौ-क्रि०स० [सं० निधोरणं] १ मनौती करना, प्रार्थना करना। उ०—नरपत्ती दीठौ निजर, अस छोडिया सडोर। सेव तणां फळ पांमिया, देव निहोर निहोर।—रा.रू.
२ आग्रह करना, अनुरोध करना।
३ गरज करना, खुशामद करना।
४ देखो 'निहारणौ, निहारबौ' (रू.भे.)
उ०—उपजै कवता आपरो, इसी न उपजै ओर। भोत प्रमांणै चीत व्है, रीत 'प्रताप' निहोर।—जैतदांन बारहठ
निहोरणहार, हारौ (हारी), निहोरणियौ—वि०।
निहोरिओड़ौ, निहोरियोड़ौ, निहोर्योड़ौ—भू०का०कृ०।
निहोरीजणौ, निहोरीजबौ—कर्म वा०।

निहोरा—देखो 'नौ'रा' (रू.भे.)
उ०—१ वाघा म्हांनुं हींडण दे। दांत काढै, निहोरा करै।
—देवजी बगड़ावतां री वात
उ०—२ मैं करूं निहोरा तेरा, तूं मत कर मारुजी नैं दोरा रे खटमल सोवा दे।—लो.गी.

निहोरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मनौती किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ।
२ आग्रह किया हुआ, अनुरोध किया हुआ।
३ गरज किया हुआ, खुशामद किया हुआ।
४ देखो 'निहारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० निहोरियोड़ी)

नीं—१ देखो 'नी' (रू.भे.)
उ०—आगमिया काळ नीं अप्रतीत जांण नै पांचूं जण्यां नै साधे छोड दी।—भि.द्र.

नींखणौ, नींखबौ—देखो 'नांखणौ, नांखबौ' (रू.भे.)
उ०—तिहां नु रे थांभु तेह नींखीउ तेणइ ठाइ, कुतूहळ कीधु तेणइ बळवंतइ ए।—नळ-दवदंती रास

नींखियोड़ौ—देखो 'नाखियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींखियोड़ी)

नींगमणौ, नींगमबौ-क्रि०स० [सं० निर्गमयति] १ व्यतीत करना, गुजारना। उ०—१ एयुं सुखिहि दिहाडा नींगमइ।—स.कु.
उ०—२ उत्तर दिसि थी उल्लरइ, आभ धरणि इक साथ। नींठइ नही तु नींगमूं, निसि रोती निरनाथ।—मा.कां.प्र.
नींगमणहार, हारौ (हारी), नींगमणियौ—वि०।
नींगमिओड़ौ, नींगमियोड़ौ, नींगम्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नींगमीजणौ, नींगमीजबौ—कर्म वा०।

नींगमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ व्यतीत किया हुआ, गुजारा हुआ।
(स्त्री० नींगमियोड़ी)

नींगळणौ, नींगळबौ—देखो 'निगळणौ, निगळबौ' (रू.भे.)
नींगळणहार, हारौ (हारी), नींगळणियौ—वि०।
नींगळिओड़ौ, नींगळियोड़ौ, नींगळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
नींगळीजणौ, नींगळीजबौ—भाव वा०।

नींगळियोड़ौ—देखो 'निगळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींगळियोड़ी)

नींगा—देखो 'नैगी' (रू.भे.)

नींगाळणौ, नींगाळबौ—देखो 'निगाळणौ, निगाळबौ' (रू.भे.)
नींगाळणहार, हारौ (हारी), नींगाळणियौ—वि०।
नींगाळिओड़ौ, नींगाळियोड़ौ, नींगाळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
नींगाळीजणौ, नींगाळीजबौ—कर्म वा०।

नींगाळियोड़ौ—देखो 'निगाळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींगाळियोड़ी)

नींगाह—देखो 'नैगी' (रू.भे.)

नींछटणौ, नींछटबौ—देखो 'नीछटणौ, नीछटबौ' (रू.भे.)
उ०—आवइ नव नवा भड अणी ए, छोड कमांण नींछटइ बांण। देव करारा हाथ दाखवइ, असुरां घड चूकइ अवसांण।
—महादेव पारवती री वेलि
नींछटणहार, हारौ (हारी), नींछटणियौ—वि०।
नींछटिओड़ौ, नींछटियोड़ौ, नींछटयोड़ौ—भू०का०कृ०।
नींछटीजणौ, नींछटीजबौ—कर्म वा०।

नींछटियोड़ौ—देखो 'नीछटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींछटियोड़ी)

नींछारडी-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार की लता।
उ०—नेत्र निहाळी नीलूइ, नळिनी नागरवेलि। नही नवीनीं नींछारडी, नागफणी गुण-गेलि।—मा.कां.प्र.

नींजांमा—देखो 'नीजांमा' (रू.भे.)
उ०—नींजामा-विण नावडी, किणी-परि पांमइ पार? डगमगती नइ डग तरइ, मांहि माधव भार।—मा.कां.प्र.

नींझर—देखो 'निरझर' (रू.भे.)

नींठ—देखो 'नीठ' (रू.भे.)
उ०—मख ग्रेह पैठै करै भेख मल्लां। हमालां लखां आंणियो नींठ हल्लां।—सू.प्र.

नींठणौ, नींठबौ—देखो 'निठणौ, निठबौ' (रू.भे.)
उ०—उत्तर दिसि थी उल्लरइ, आभ धरणि इक साथ। नींठइ नहीं तु नींगमूं, निसि रोती निरनाथ।—मा.कां.प्र.
नींठणहार, हारौ (हारी), नींठणियौ—वि०।
नींठिओड़ौ, नींठियोड़ौ, नींठयोड़ौ—भू०का०कृ०।
नींठीजणौ, नींठीजबौ—भाव वा०।

नींठर—देखो 'निरठुर' (रू.भे.)
उ०—'रंड' कहीनइ रोळवी, रमतां पीऊ संघाति। निद्रा! तूं नींठर थई, मइं दूहवी तिणि राति।—मा.कां.प्र.

नींठियोड़ो—देखो 'नीठियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींठियोड़ी)

नींडो—देखो 'निसंडो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींडी)

नींत्रेडो-वि० अनुपयुक्त, बेकार ?
उ०—नारि नपुंसक-केरडी, नाळिकेर नी आंखि। यौवन माहरु देव ? तई, इम नींत्रेडी नांखि।—मा.कां.प्र.

नींद-सं०स्त्री० [सं० निद्रा] १ जामाता को गाया जाने वाला गीत।
२ देखो 'निद्रा' (रू.भे.)
उ०—२ अळगो ही उर में वसै, नींद न आवण देह। ससि वदनी रौ साहिबौ, कै दोयण असनेह।—बां.दा.
उ०—३ सूतां बाहर नींद सुख, सादूळौ वळवत। वन कांठै मारग वहै, पग पग हौल पड़ंत।—बां.दा.
मुहा०—१ नींद आणी—निद्रा के वशीभूत होना, निद्रित होना।
२ नींद उचटणी—नींद का दूर होना।
३ नींद उडणी—जग जाना, निद्रा दूर होना।
४ नींद खराब करणी—सोने में बाधा डालना, सोने में हर्ज करना।
५ नींद खराब होणी—नींद में बाधा पहुंचना, नींद का हर्ज होना।
६ नींद खुलणी—निद्रा का दूर होना, जग जाना, सो कर उठना।
७ नींद टूटणी—जग जाना, निद्रा का दूर होना, नींद छूटना।
८ नींद न पड़णी—नींद न आना, न सो सकना।
९ नींद में विघन पटकणी- नींद में बाधा डालना, नींद खराब करना।
१० नींद में विघन पड़णी—नींद में बाधा पहुचना, नींद खराब होना।
११ नींद रौ कुंभकरण—वह जिसे नींद बहुत आती हो, अत्यधिक सोने वाला।
१२ नींद रौ दुखियारो—हमेशा सोने के लिए इच्छुक रहने वाला, अधिक सोने वाला।
१३ नींद लेणी—निद्रा के वशीभूत होना, नींद लेना, सोना।
१४ नींद हरांम करणी—नींद न लेने देना, सोना छुड़ा देना।
१५ नींद हरांम होणी—नींद में बाधा पहुँचना, सोने का मौका न मिलना, सोना छूट जाना।

नींदक—देखो 'निंदक' (रू.भे.)
उ०—आतमध्यांनी आगरो, जारे बीकानेर। राग दोख गुजरात में, नींदक जेसळमेर।—अज्ञात

नींदड़ली, नींदड़ी—देखो 'निद्रा' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ नींदड़ली वैरण हुय रही, दरण सरीखो हो भूंडो नहीं कोय के। मूळ तो मिळे नारकी, गति माठी में कोई फेर न जोय।—जयवांणी
उ०—२ रात कतावै कातणी, लूम्यां री डोरी, दिन पीसावै ज्वार, वारी ए लूम्यां री डोरी। ढुळ-ढुळ आवै नींदड़ली लूम्यां री डोरी, सासू पचीणी देय, वारी ए लूम्यां री डोरी।—लो.गी.
उ०—३ सुहिणा आया फिर गया, मइ सर भरिया रोइ। आव सोहागण नींदड़ी, वळि प्रिय देखूं सोइ।—ढो.मा.
उ०—४ सातम दिन साची हुई, सात वरस री रैण। नैण न आवै नींदड़ी, साले घट में सैण।—अज्ञात
उ०—५ घोड़ां हींस न झल्लिया, पिय नींदड़ी निवारि। वैरी आया पांवणा, दळथंभ तूझ दुवारि।—हा.झा.

नींदणो, नींदबो—देखो 'निंदणो, निंदबो' (रू.भे.)
उ०—पछै मालवणी मारवाड़ नै नींदण लागी।—ढो.मा.
नींदणहार, हारो (हारी), नींदणियो—वि०।
नींदाड़णो, नींदाड़बो, नींदाणो, नींदाबो, नींदावणो नींदावबो —प्रे०रू०
नींदिग्रोड़ो, नींदियोड़ो, नींद्योड़ो—भू०का०कृ०।
नींदीजणो, नींदीजबो—भाव वा०।

नींदल-वि० [सं० निद्रा+आलुच्] १ अधिक नींद लेने वाला, आलसी, निकम्मा।
ज्यूं—श्रो तो वडो नींदल मिनख है।
२ देखो 'निद्रा' (मह., रू.भे.)

नींदव-वि० [सं० निन्द्] १ निंदा करने योग्य, निंदनीय।
उ०—इस नरां नींदवां बचायो जीव दुहुं ओरां, वारेगां वींदवां घोरां बचायो बीरांण। राटणी तवल्लां सोरां रचायो सवेरी राग, पाटणी हिंदवां गोरां मचायो पाठांण।—दुरगादत्त बारहठ
२ निंदा करने वाला।
अल्पा०—नींदवो।

नींदवणो, नींदवबो—१ देखो 'नींदाणो, नींदाबो' (रू.भे.)
२ देखो 'निंदणो, निंदबो' (रू.भे.)
उ०—१ घटै आव जस घन घटै, अकल हटै बळ अंग। नींदवियौ दांनां नरां, पातर तणो प्रसंग।—बां.दा.
उ०—२ 'किसन' तणो सांम्है क्रमै, चढतो बांकिम वींद। नींदवतै नवतै नरां, अणभंग रहै अनींद।—हा.झा.
नींदवणहार, हारो (हारी), नींदवणियो—वि०।
नींदविग्रोड़ो, नींदावियोड़ो, नींदव्योड़ो—भू०का०कृ०।
नींदवीजणो, नींदवीजबो—कर्म वा०।
निंदवणो, निंदवबो—रू०भे०।

नींदावियोड़ो—१ देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'निंदियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींदावियोड़ी)

नींदवो—देखो 'नींदव' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० नींदवी)

नींदाड़णो, नींदाड़बो—देखो 'नींदाणो, नींदाबो (रू.भे.)'
नींदाड़णहार, हारो (हारी), नींदाड़णियो—वि० ।
नींदाड़िओड़ो, नींदाड़ियोड़ो, नींदाड़्योड़ो ।—भू०का०कृ० ।
नींदाड़ीजणो, नींदाड़ीजबो ।—कर्म वा० ।
नींदणो, नींदबो—अक०रू० ।

नींदाड़ियोड़ो—देखो 'नींदायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींदाडियोड़ी)

नींदाणो, नींदाबो-क्रि०स० [सं० निद्रा] १ निद्रित करना, सुलाना ।
ज्यूं—पैं'ली टाबर नै नीदाय दूं पछै चालस्यां ।
[नींदणो क्रिया का प्रे०रू०] २ निंदा कराना, बुराई कराना ।
ज्यूं—चुगलखोर साव भूंठ ईज सती नार नै पंचां खना सूं नींदाय दी । [सं० नदि] ३ दीपक बुझाना ।
नींदाणहार, हारो (हारी), नींदाणियो—वि० ।
निंदवाड़णो, निंदवाड़बो, निंदवाणो, निंदवाबो, निंदवावणो, निंदवावबो, नींदवाड़णो, नींदवाड़बो, नींदवाणो, नींदवाबो, नींदवावणो, नींदवावबो—प्रे०रू० ।
नींदायोड़ो—भू०का०कृ० ।
नींदाईजणो, नींदाईजबो—कर्म वा० ।
निंदणो, निंदबो, नींदणो, नींदबो—अक० रू० ।
निंदवणो, निंदवबो, निंदाड़णो, निंदाड़बो, निंदाणो, निंदाबो, निंदावणो, निंदावबो, नींदवणो, नींदवबो, नींदाड़णो, नींदाड़बो, नींदावणो, नींदावबो—रू०भे० ।

नींदायोड़ो-भू०का०कृ०—१ निद्रित किया हुआ, सुलाया हुआ ।
२ निंदा कराया हुआ, बुराई कराया हुआ ।
३ (दीपक) बुझाया हुआ ।
(स्त्री० नींदायोड़ी)

नींदाळ-वि० [सं० निंदनं+आलुच्] १ जिसकी निंदा बहुत होती हो ।
रू०भे०—निंदाळ, नीदाळ ।
२ देखो 'निद्राळु' (मह., रू.भे.)
उ०—ताहरां प्रोळियो ऊठियो, नींदाळ थकै हीज खिड़की खोली ।
—नैणसी
३ देखो 'निंदाळु' (मह., रू.भे.)

नींदाळको, नींदाळवो—देखो 'निद्राळु' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ सूवर सूतो नींद में, भूंडण पहरा देत । ऊठो सूवर नींदाळका, फौज हिलोळा लेत ।—लो गी.
उ०—२ घणा नींदाळवां नींद वारो घणी । तूंग न छै भली हींस घोड़ां तणी ।—हा.भा.
(स्त्री० नींदाळकी, नीदाळवी)

नींदाळु—१ देखो 'निंदाळु' (रू.भे.)
२ देखो 'निद्रालु' (रू.भ.)
उ०— तरै कंवर वीरमदे आवा की तैयारी करी । सारत्ती कैई सारै । खवास दारू की सीसी भरै । नींदाळु वाघ जिम आळस मोड़ियां ऊठियो इण तरै ।—पनां वीरमदे री वात

नींदाळुद्ध-वि० [सं० निद्रा+आलुद्ध] घोर निद्रा में मग्न, निद्रित, सुप्त ।
उ०—काळो मंजीठी कियां, नइएं नींदाळुद्ध । अंबर लागो ऊठियो, विढ़वा वंस विसुद्ध ।—हा. भा.

नींदाळुव—देखो 'निदाळु' (रू.भे.)
२ देखो 'निद्राळु' (रू.भे.)

नींदाळू—१ देखो 'निंदाळु' (रू.भे.)
२ देखो 'निद्राळु' (रू.भे.)
उ०—म्हारै पतीव्रतापणा रो नेम है कै पती नै नहीं जगावणो सो आज नींदाळू नींद में सो म्हारा पीन (मोटा मोटा) कुच बाथ में भीड़ सूती है तिणां सूं अब छोडणो न्यारो करणो जगावूं तो म्हारो धरम जावै, नहीं जगावूं तो पती रो धरम जावै है । अब कांई करणो चाहीजै ।—वी.स.टी.

नींदाळो—१ देखो 'नींदाळु' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'निद्राळु' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—बावेली ए मैड़ियां मांहि ढोलियो ढळाव, घणां नै नींवाळो सिगरत पांवणो ।—लो.गी.
(स्त्री० नींदाळी)

नींदियोड़ो—देखो 'निंदियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीदियोड़ी)

नींदीजणो, नींदीजबो-भाव वा०—निद्रा के वशीभूत होना, निद्रित होना, नींद आना ।
नींदीजणहार, हारो (हारी), नींदीजणियो—वि० ।
नींदीजिओड़ो, नींदीजियोड़ो, नींदीज्योड़ो—भू०का०कृ० ।
निंदीजणो, निंदीजबो—रू०भे ।

नींदीजियोड़ो-भू०का०कृ०—निद्रा के वशीभूत हुवा हुआ, निद्रित, सुप्त ।
(स्त्री० नींदीजियोड़ी)

नींद्र—देखो 'निद्रा' (रू.भे)
उ०—हूं ऊपजतां ऊपनी, नारी जेह नरेंद्र । माधव-जातइ ते गई, भूख पिपासा नींद्र ।—मा.कां.प्र

नींद्रड़ी—देखो 'निद्रा' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ नीसति जांणी नींद्रड़ी, रहिती मूझ समान । वाई तुं ! वाधी गई, माधव सायइ कांन ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ नादइं आवइ नींद्रड़ी, वेदइ जागइ विप्र । भेद समस्या भाखीइ, ख्याति कहीज्जइ क्षिप्र ।—मा.कां.प्र.

नींद्रा—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)
उ०—नै आपनूं नींद्रा आवी ।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

नींवणो, नींपबो—देखो 'नीपणो, नीपबो' (रू.भे.)

नींपियोड़ो—देखो 'नीपियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नींपियोड़ी)

नींप—देखो 'निंप' (रू.भे.) (अ.मा.)

नींव—देखो 'नीम' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—१ फीजे नींव री घूट ज्यूं पीजे प्यालो काळकूट केम, मणां तोल तोलियां तुलीजे केम मेर। बीजो कलो पांतरै अमीरदोलो गेर वंठो, न जावै भळीयो ओढ़ो कलो रायांनेर।—बां.दा.

उ०—२ जहां अब फळ अच्छ तहां नींव फळ न पांमस। जहां चिणी पकवान, तहां कीकस रय मांनस।—नंणसी

नींवगोळ-सं०पु० [सं० नेम-गोल] जिसका आधा भाग गोल हो।

नींवड़ली-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नींवड़लो—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नींवड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नींवड़ो-स०पु०—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—कोई कहै जीविया कीकर तो हू कहूं हूं तो नींवड़ा री वळीहारी जाऊं सो इण नींव म्हांनै पाछो सुहाग दीधो है। घाव ऊपर नींव रो पाटो फायदो करै छै।—बी.स.टी.

नींवज-सं०स्त्री०—झालरा-पाटण रियासत में बहने वाली एक नदी का नाम जो परवन नदी की सहायक नदी है।

नींवू-सं०पु० [सं० निम्बूक] १ पृथ्वी के गरम प्रदेशों में पाया जाने वाला मध्यम आकार का एक पेड़ या झाड़ जिसके फल गोल या लम्बोतरा होता है और खाने के काम आता है।

वि०वि०—मीठा नींवू, संतरा, नारंगी, बिजौरा, चिकोतरा आदि वृक्ष भी इसी की जाति के माने जाते हैं। भारत में नींवू देव वृक्ष माना जाता है (अ.मा.)

२ इस वृक्ष का फल। उ०—अजरख जमीकद रताळू का बिसतार। अंबु नींवू अंगीर कैरू' का आचार।—सू.प्र.

३ एक लोक गीत का नाम।

रू०भे०—नीवू।

अल्पा०—नीवूड़ो, नीवूड़ो, नीवूडो।

नींवूड़ो—देखो 'नींवू' (अल्पा०, रू भे)

उ०—१ तीजो मास उतरियो ए जच्चा नींवूड़े मन जाय। चौथो मास उतरियो ए जच्चा लाडूड़े मन जाय।—लो गी.

उ०—२ प्यारी घण पै नींवूड़ा कुण वाया म्हारा राज।
—लो.गी.

नींवोळी—देखो 'निंवोळी' (रू.भे.)

उ०—परतख पाय पटतरो, बहनड़ सुण बोलीह। जीहा चाखी दाख ज्यां, न रुचै नींवोळीह।—र. हमीर

नींवो-सं०पु०—१ देखो 'निंवारक' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—'वल्लभ' कूप खिणायो वैड़ो, भरियो नीर भरावो भैंड़ो। 'नीवे' तळो निकाळयो नैड़ो। जिणरो आब नांम रै जैड़ो (ऊ.फा.)

२ देखो 'नीम' (अल्पा,, रू.भे.)

नींम—१ देखो 'नींव' (रू.भे.)

२ देखो 'नीम' (रू.भे.)

नींमड़णो, नींमड़बो—१ देखो 'निपटणो, निपटबो' (रू.भे.)

२ देखो 'निवड़णो, निवड़बो' (रू.भे.)

नींमड़ियोड़ो—१ देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'निवड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नींमड़ियोड़ी)

नींमजणो, नीमजबो—१ देखो 'निरमणो, निरमबो' (रू भे.)

उ०—जांणी सहि वहि जुडता जोडइ, घड नींमजइ ऊत्रगइ धार। आवध ग्रहियां हाथ आपरा, अंबर लागउ वडउ इयार।
—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'नीपजणो, नीपजबो' (रू.भे.)

नींमजणहार, हारो (हारी), नींमजणियो—वि०।

नींमजाड़णो, नींमजाड़बो, नींमजाणो, नींमजाबो, नींमजावणो, नींमजावबो—क्रि०स०।

नीमजिग्रोड़ो, नींमजियोड़ो, नींमज्योड़ो—भू०का०कृ०।

नींमजीजणो, नींमजीजबो—कर्म वा०।

नींमजाड़णो, नींमजाड़बो—१ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमाणो, निरमाबो' (रू.भे.)

नींमजाड़णहार, हारो (हारी), नींमजाड़णियो—वि०।

नींमजाड़िग्रोड़ो, नींमजाड़ियोड़ो, नींमजाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

नींमजाड़ीजणो, नींमजाड़ीजबो—कर्म वा०।

नींमजाड़ियोड़ो—१ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नींमजाड़ियोड़ी)

नींमजाणो, नींमजाबो—१ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमाणो, निरमाबो' (रू.भे.)

नींमजाणहार, हारो (हारी), नींमजाणियो—वि०।

नींमजायोड़ो—भू०का०कृ०।

नींमजाईजणो, नींमजाईजबो—कर्म वा०।

नींमजायोड़ो—१ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे)

२ देखो 'निरमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नींमजायोडी)

नींमजावणो, नींमजावबो—१ देखो 'निपजाणो, निपजाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमाणो, निरमाबो' (रू.भे.)

नींमजावणहार, हारो (हारी), नींमजावणियो—वि०।

नींमजाविग्रोड़ो, नींमजावियोड़ो, नींमजाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

नींमजावीजणो, नींमजावीजबो—कर्म वा०।

नींमजावियोड़ो—१ देखो 'निपजायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'निरमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नींमजावियोड़ी)

नींमजर—देखो 'नीमजर' (रू.भे.)

नींमजयोड़ो—१ देखो 'निरमियोडो' (रू भे.)
२ देखो 'निपजयोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींमजियोड़ी)

नींमणो, नींमबो—देखो 'निरमणी, निरमबो' (रू.भे.)
उ०—पूनिम पख मुणिंद सालिभद्र ए सूरिहिं नींमीउ ए। देवचंद्रउपरोधि पंडव ए रासु रसाउलु ए।—पं.पं.च.
नींमणहार, हारो, (हारी), नींमणियो—वि०।
नींमाड़णो, नींमाड़बो, नींमाणो, नींमाबो, नींमावणो, नींमाववो —क्रि०स०।
नींमिग्रोड़ो, नींमियोड़ो, नींम्योड़ो—भू०का०कृ०।
नीमोजणो, नींमीजबो—कर्म वा०।

नींमियोड़ो—देखो 'निरमियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींमियोड़ी)

नींमेड़णो, नींमेड़बो—१ देखो 'निवेड़णी, निवेड़वो' (रू भे.)
२ देखो 'निपटाणी, निपटावो' (रू.भे.)
नींमेड़णहार, हारो (हारी) नींमेड़णियो—वि०।
नींमेड़िग्रोड़ो, नींमेड़ियोड़ो, नींमेड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
नींमेड़ीजणो, नींमेड़ीजबो— कर्म वा०।
नींमड़णो, नींमड़बो—अक० रू०।

नींमेड़ियोड़ो—१ देखो 'निवेड़ियोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींमेड़ियोड़ी)

नींव-सं०स्त्री० [सं० नेमि, प्रा० नेइ] १ दीवार उठाने के लिए गहरी नाली के रूप में खुदा हुआ गड्ढा जिसके भीतर से दीवार की जोड़ाई आरम्भ होती है।
ज्यूं—अठै कोलेज वर्णला, नींवां खुदण लागगी है।
क्रि०प्र०—खुदणी, खोदणी, भरणी।
मुहा—१ नींव देणी—दीवार बनाने के लिए गहरी नाली खोद कर स्थान बनाना। दीवार की मूल जमाने के लिए भूमि खोदना। मकान बनाने का प्रारम्भ करना। आरम्भ करना। सामान तैयार करना। उपक्रम करना। आधार खड़ा करना।
२ नींव भरणी—पत्थर, कंकड़ आदि से दीवार उठाने के लिए गहरे किए हुए स्थान को पाटना।
२ वह मूल भित्ति जो दीवार के लिए गहरे किए हुए स्थान में ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि जोड़ कर या जमा कर ऊपर उठाई जाती है, दीवार का आधार व जड़।
उ०—कांतिघर सेठ एक नवो मंदिर वणावै सो पुस्य नक्षत्र रविवार नूं वैरी नींव लगाई।—सिंघासण बत्तीसी
मुहा०—१ नींव जमाणी, नींव डाळणी, नींव देणी—दीवार की जड़ जमाना, ईंट पत्थर आदि से नींव के गड्ढे को पाट कर दीवार के लिए आधार उठाना, स्थापित करना, स्थिर करना, आधार दृढ़ करना, गर्भ ठहराना, बुनियाद डालना, सूत्रपात करना, आरम्भ करना।
२ नींव पड़णी—मकान बनना आरम्भ होना, दीवार के लिए आधार बनाना, जड़ो खड़ी होना, आरम्भ होना, सूत्रपात होना, जमना।
नींव रो भाटो—मकान बनाने के आरम्भ में पहले-पहल नींव में रखा जाने वाला पत्थर, दृढ़ आधार।
४ नींव लगाणी—देखो 'नींव जमाणी, डाळणी, पड़णी'।
५ नींव लागणी—देखो 'नींव पड़णी'।
३ आधार, स्थिति।
४ जड़, मूल।
रू०भे०—नींम, नीम, नीवं, नीव।

नींवड़णो, नींवड़वो—१ देखो 'निपटणी, निपटवो' (रू.भे.)
उ०—पिड खीचिय साथ घणूं पडियूं। वढ़ 'पाल' पड़ै जुध नींवडियूं। विय सोतर वेध खळां वहियूं। रवि अ्रसिय 'पाल' कटै रहियूं।
—पा.प्र.
२ देखो 'निवड़णी, निवड़वो' (रू.भे.)
नींवड़णहार, हारो (हारी), नींवड़णियो—वि०।
नींवड़िग्रोड़ो, नींवड़ियोड़ो, नींवड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
नींवड़ीजणो, नींवड़ीजबो—भाव वा०।

नींवड़ियोड़ो—१ देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'निवड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नींवड़ियोड़ी)

नींवत—देखो 'नीयत' (रू.भे.)
उ०—कोई कंवै लोगां री नींवत खोटी हुयगी।
—वरसगांठ

नींवेड़णो, नींवेड़वो—१ देखो 'निपटाणी, निपटावो' (रू.भे.)
२ देखो 'निवेड़णी, निवेड़वो' (रू.भे.)
नींवेड़णहार, हारो (हारी), नींवेड़णियो—वि०।
नींवेड़िग्रोड़ो, नींवेड़ियोड़ो, नींवेड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
नींवेड़ीजणो नींवेड़ीजवो—कर्म वा०।

नींवेड़ीयोड़ो—१ देखो 'निपटायोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'निवेड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० निवेड़ियोड़ी)

नींसरणो, नींसरबो—देखो 'नीसरणी, नीसरवो' (रू.भे.)
उ०—१ उठै म्हांनूं कुंवरजी नींसरण नहीं दै।—द.वि.
उ०—२ रामदास रो मारग रूड़ो, उण रै नह आमड़िया। घर घर सूं नींसर नै धोडां, खाली ऊफड़ खड़िया।—ऊ.का.
नींसरणहार, हारो (हारी), नींसरणियो—वि०।

नींसरिग्रोड़ौ, नींसरियोड़ौ, नींसर्‌योड़ौ—भू०का०कृ० ।
नींसराजणौ, नींसरीजबौ—भाव वा० ।
नींसरियोड़ौ—देखो 'नीसरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नींसरियोड़ी)
नी-सं०पु०—१ प्रेम, स्नेह ।
२ नृप, राजा ।
स०स्त्री०—३ अनन्य भक्ति ।
४ दवा, ग्रौषधि (एका०)
वि०—१ अतिशय, बहुत ज्यादा ।
२ नीरोग, चंगा, अगद (एका०)
प्रत्यय०—सम्बन्ध या षष्ठी विभक्ति अथवा इस विभक्ति के चिन्ह 'ना' का स्त्री०, 'की' ।
उ०—१ रुक्मणी नइ परणवा चाल्यउ, कुमर कनकरथ नांम रे। रिसिदत्ता तापस नी पुत्री, दीठी ग्रति ग्रभिरांम रे ।—स.कु.
उ०—२ हूं सोनी नी मुंदड़ी सुपियारा हो, तूं हिव हीरौ होय, नेम सुपियारा हो ।—स.कु.
उ०—३ 'लखो' ग्रधौ धौ ग्रंधो, ग्रंधौ 'लखा' नी लोय। ग्रांख तणां फरुकड़ं, क्या जांणू क्या होय ।—ग्रज्ञात
ग्रव्य०—१ एक भारदर्शक वा अनुरोधसूचक अव्यय ।
ज्यूं—ग्रावै नी । बैठे नी । जीमै नी । जावै नी । लावै नी ।
२ देखो 'नहीं' (रू.भे.)
उ०—१ पीछे मा'राज कांम ग्राया तिणरी पातसाहजी सूं ग्रोरंगाबाद में मालम हुई। तठै वडो ग्रपसोस कियो ग्ररु फुरमायो कै वडा सचा निमकहलालिया था, ग्रब मेरी पातसाही में ऐसा जमामरद बाकी रया नी कोई, धरती मेरी रही, मुलक में भी चैन किया, पण 'पदमै' जिसा सचा सूरा होणं का फेर नहीं, दोवां हरांमखोरां कुं ग्रपणं हाथ सें मार डाला ।—द.दा.
उ०—२ चोटी चौथे मास, गूंथी गुणां सजाय नै। हेताळू री गांठ, जाभ्रै दुख में नी खुलै ।—ग्रज्ञात
३ देखो 'नि' (रू.भे.)
रू०भे०—नीं ।
नीग्र—देखो 'नीच' (रू.भे.) (जैन)
नीइ—देखो 'नीति' (रू.भे.)
उ०—नोइ तुमारी नमो जुग ग्रणलेखे जरिया ।—पी.ग्रं.
नीक-सं०स्त्री० [सं० नीका] १ खेतों की सिचाई के लिए पानी का बंधा या नहर (उ.र.)
२ देखो 'नीकौ' (मह., रू.भे.)
उ०—ठावै हम ठाकुर सकुळ ठीक, नौकरी चहत नजदीक नीक ।
—ऊ.का.
नीकउ-सं०पु० [स० निष्कः] १ स्वर्ण का कंठा या हार (उ.र.)
२ सोना, स्वर्ण, कनक (उ.र.)
३ सोने की तोल विशेष (उ.र.)
४ देखो 'नीकौ' (रू.भे.)
उ०—नव तत नव निघांन जिन पाए, ग्रागम गंगा कुरि। चवद विद्या गुण रतन संग करि, नीकउ नीलवट नूरि ।
—ऐ.जै.का.सं.
नीकळंक—देखो 'निकळंक' (रू.भे.)
उ०—जउ ए विरूउं ग्राचरइ, तउ पण बह्म पवित्र। परमेस्वर ए पूजीइ, ए नीकळंक चरित्र ।—मा.कां.प्र.
नीकळणौ, नीकळबौ—देखो 'निकळणौ, निकळबौ' (रू.भे.)
उ०—१ जदी रजपूताणी घणो ही रजपूत नै समजावै। पण या मांनै नहीं। जदी रजपूत तो उठा सूं नीकळ्यो जो घरै ग्रायो ।
—पंचमार री वात
उ०—२ मेळ थयौ सैंधै मुहै, रैंणा देतां रेस। ग्रर मिळिया दिन ऊजळै, क्या नीकळै 'महेस' ।—रा.रू.
उ०—३ ग्रस्व रथ गज चढी भूपति, नगर थी सहू नीकळया, कूंडिनपुर भणि सांचरि, पदाति बहु ग्रावी म्यल्या ।
—नळाख्यांन
उ०—४ किसा नगर रा नीकळया जी, स्वांमी! बसता कुण से ग्रांम। किण रा छो दीकरा जो, पिता रो कहो नांम ।
—जयवांणी
उ०—५ नगर वीच हो नीकळ्या, गया वीर जिणंद रै पास। वदणा करी कर जोड़े नै, कहै तारो भवजळ तास ।—जयवांणी
उ०—६ कितरायक दिन नीकळ्या, रुघनाथजी ने खबर हुइ जद जोधपुर चाल्या ।—भि.द्र.
नीकळणहार, हारो (हारी), नीकळणियो—वि० ।
नीकळिग्रोड़ो, निकळियोड़ो, नीकळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नीकळीजणौ, नीकळीजबौ—भाव वा० ।
नीकळियोड़ौ—देखो 'निकळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नीकळियोड़ी)
नीकाळ—देखो 'निकाळ' (रू.भे.)
नीकाह—देखो 'निका' (रू.भे.)
नीकां-क्रि०वि० [देशज] अच्छी तरह से, ठीक प्रकार से ।
उ०—सूरे कही—दीठी तो सही पण विसेस ख्यांत नहीं कीवी। खींवो कही—घोड़ी मैं नीकां दीठी। थे तो बातां रै घमकोळै मांही था, पण हूं दीठी थी ।—सूरे खींवे कांधळोत री वात
नीकौ-वि० [सं० निरक्त=साफ, स्वच्छ] (स्त्री० नीकी)
१ अच्छा, ठीक। उ०—१ नहीं जग माळा नीकी रे, जाळा नहीं काटै जो फी रे ।—ऊ.का.
उ०—२ फुरियो भादरवो घुरियो नह फीको। नीरद रज ग्रागै लागै नह नीको। तिसिया संगारा भू पर नर तिरसै। बिसिया ग्रंगारा ऊपर सूं वरसै ।—ऊ.का.

उ०—३ आली मोहि लागत व्रिंदावन नीको ।—मीरां

२ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया । उ०—१ विमळ कवेसर विलै साधु सुखदेव सरीखा । बालमीक जैदेव नांम नरहर कवि नीका ।
—पी.ग्रं.

उ०—२ नीको जण री नांम निज, पणिजै निकळंक पात्र । सहि छात्रा ऊपरि सरै, स्त्रिया कंत री छात्र ।—पी.ग्रं.

उ०—३ अइ ए आंबळियांह, गुणसागर गोढांण री । फूलां बहु फळियांह, नीका दांतण नीपजै ।—अज्ञात

३ सुन्दर, भला । उ०—१ ससीवयणी अगनयणी, नव सति सजि सिणगार । नवयौवन सोवन वन्न, अलि अपछर अवतार । सिर सिंघो फूली, बहुमूली राखडी सार । सीस फूलमणि टीकी नीको कंत अपार ।—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ बभूती की टीकी निज अलिक निकी नित वसै । कड़ा डोरी मूरती लवग परि पूरतो स्रुति लसै ।—मे.म.

उ०—३ रमाकंत ची बंक वेभ्रूंह रंजी । लखै कांम सूर सांम ची चाप लज्जी । त्रिहूं लोक चा ग्वाळ रै भाळ टीको । नरां भूप सोभा लखै रूप नीको ।—रा.रू.

४ सम्मानपूर्वक । उ०—सो अमरसिंहजी नूं बादसाह नीकी तरह राखै ।—राठौड़ राजसिंह री वारता

रू०भे०—नीकउ ।

मह०—नीक ।

नीखर-वि० [स० निक्षरण=छंटना] स्वच्छ, निर्मल, साफ ।

ज्यूं—नीखर पांणी, नीखर धांन ।

नीखरणौ, नाखरबौ—देखो 'निखरणौ, निखरबौ' (रू.भे.)

उ०—वरिखा रितु गई सरद रितु वळती, वाखांणि सु वयण वयणि । नीखर घर जळ रहित निवाणैं, निधुवनि लज्जा त्री नयणि ।—वेलि.

नीखरणहार, हारौ (हारी), नीखरणियौ—वि० ।

नीखरिओड़ौ, नीखरियोड़ौ, नीखरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

नीखरीजणौ, नीखरीजबौ—भाव वा० ।

नीखरियोड़ौ—देखो 'निखरियोड़ौ' (रू.भ.)

(स्त्री० नीखरियोड़ी)

नीखाखा-सं०पु० [देशज] केवट (अ.मा.)

नीगम—देखो 'निगम' (रू.भे.)

उ०—प्रिथु वेलि कि पचविध प्रसिध प्रणाळी, आगम नीगम कजि अखिळ । मुगति तणी नीसरणी मंडी, सरग लोक सोपांन इळ ।
—वेलि.

नीगमणौ, नीगमबौ-क्रि०स० [सं० निर्गमननम्] १ व्यतीत करना, बिताना । उ०—१ राव उडीसइ रहीयौ जाई । राजमती अजमेरां माहि । दस बरस ईम नीगम्या । बरस ईग्यारमउ पहतऊ आई ।
—बी.दे.

उ०—२ दीह दुहेलो जाइ, निसि नीसासै नीगमूं । दुखिया देखो दाइ, आवै तो आवै 'जसा' ।—जसराज

२ खोना, गमाना ।

उ०—सो धम्म रम्म जो गुण सहिय, दांनसीळ तव भाव मउ । भो भविय लोय तुम्हि वर करिय, नरभव आलि म नीगमउ ।
—अभयतिक यती

३ गमन करना, जाना । उ०—१ बीजुळियां पारोकियां, नीठ ज नीगमियांह । अजइ न सज्जन बाहुड़ै, वळि पाछी वळियांह ।
—ढो.मा.

उ०—२ जउ तूं ढोला नावियउ, मेहां नीगमतांह । किया करायइ सज्जणा, दाधा मांहि घणांह ।—ढो.मा.

४ प्रदान करना, देना ।

५ साबित होना, प्रमाणित होना, सिद्ध होना ।

नीगमणहार, हारौ (हारी), नीगमणियौ—वि० ।

नीगमिओड़ौ, नीगमियोड़ौ, नीगम्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

नीगमीजणौ, नीगमीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

निगमणौ, निगमबौ, नीगमणौ नीगमवौ—रू०भे० ।

नीगमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ व्यतीत किया हुआ, बिताया हुआ ।

२ खोया हुआ, गमाया हुआ ।

३ गमन किया हुआ, गया हुआ ।

४ प्रदान किया हुआ, दिया हुआ ।

५ साबित हुवा हुआ, प्रमाणित हुवा हुआ, सिद्ध हुवा हुआ ।

(स्त्री० नीगमियोड़ी)

नीगळणौ, नीगळबौ—देखो 'निगळणौ, निगळबौ' (रू.भे.)

उ०—तद मोजडी मछ रै हाथ आई । सु मछ नीगली । तद रांणी दीठौ एक मोजड़ी नही तौ हेके नूं कासू करूं ।—चौबोली

नीगळणहार, हारौ (हारी), नीगळणियौ—वि० ।

नीगळिओड़ौ, नीगळियोड़ौ, नीगळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

नीगळीजणौ, नीगळीजबौ—कर्म वा० ।

नीघरियौ-वि० [स० नि+गृह] जिसके घर न हो, बिना घर का ।

उ०—पर घर रीझण करहला, नीघरिया घर आव । बीजां अेक भवूकड़ा, बेलां एको साव ।—जलाल बूबना री वात

नीघात—देखो 'निघात' (रू.भे.)

उ०—साकुरां ऊपड़ी वागां हैकपै आलमां सारी, हणु मार लंक नै दिखाया भारी हाथ । वेढ़ीगारा रांगड़ा ऊं लगाई घणारां बातां, नगारां वागतां गाम लूटिया नीघात ।—विसनसिंह राठौड़ री गीत

नीड़-सं०पु० [सं० नीड] १ चिड़ियों का घोंसला ।

२ स्थान, जगह रहने का स्थान ।

उ०—'अजै' कंवर सूं आखियो, मिळतां साचैं मन्न । भीड़ न भाजै दूसरां, तो विण नीड़ जतन्न ।—रा.रू.

३ नदी के किनारे का प्रान्त या नगर ।

४ कुओं द्वारा सींचा जाने वाला भू-भाग ।

सं०स्त्री०—५ सरिता, नदी ।

वि०—१ स्तुति योग्य ।

२ देखो 'निकट' (रू.भे.)

उ०—'सुरजन' नृप रण मस्त सह, भोज कुमार क नीड़ । भामी घरधर भंजिया, नामी प्रति-भट नीड़ ।—व.भा.

नीड़ूं—देखो 'निकट' (रू.भे.)

उ०—१ अर रामपुरं आपरो सगपण हुवो जिण रा विवाहण में दमोरा फोजदार नूं नीड़ूं जाणि जिको ही आप नै अवलंब रो देणहार जाणियो ।—वं.भा.

उ०—२ भाट घणा दिन भाखता, कुळ भूला भूकंत । रहिया नीड़ूं वीर ही, जाणा विरद जपंत ।—वी.स.

नीड़ो—देखो 'निकट' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ छांणी धुपाइ नै कह्यौ म्हारा साथी नीकळिया, कह्यौ जो पैंही आइ । चनिया मसांण नीड़ो छै ।—पंच दंडी री वारता

(स्त्री० नीड़ी)

नीचग, नीगंध-सं०पु० [सं० नीचग] पानी, जल (ना.डि.को.)

नीचत—देखो 'निश्चित' (रू.भे.)

नीच-वि० [सं०] १ जिसका स्थान उत्तम और मध्यम के बाद पड़ता हो, निकृष्ट, बुरा, अधम (डि.को.)

२ धर्म, गुण, जाति या और किसी बात में घट कर या न्यून, तुच्छ, छोटा, अधम । उ०—मादि तूझ या कपना, जगजीवण सह जीव । ऊंच नीच पर अवतरण, दी पद दीन दईव ।—ह.र.

यौ०—ऊंच-नीच ।

सं०पु०—ओछा आदमी, क्षुद्र मनुष्य । उ०—१ कायर अधरम कुजस सूं, नाथ न डरपै नाह । डरपै परदळ देखियां, रण तज लागै राह ।
—बां.दा.

उ०—२ आप घरै पर और री, थपण इस्ट दे बीच । घा आछी न घरै घटै, न दियै पाछी नीच ।—बां.दा.

३ ज्योतिष शास्त्र में सम्बन्ध से किसी ग्रह के भ्रमण वृत्त का वह स्थान जो पृथ्वी से अधिक निकट हो ।

३ फलित ज्योतिष में किसी ग्रह के उच्च स्थान से सातवां स्थान ।

४ चोर नामक गंध द्रव्य ।

५ दशार्ण देश के एक पर्वत का नाम ।

६ शूद्रवर्ण (डि.को.)

७ देखो 'नीची' (मह, रू.भे.)

रू०भे०—नीच, नीचड़, नीच ।

नीचड़—१ देखो 'नीच' (रू.भे.)

२ देखो 'नीची' (रू.भे.)

नीचकमाई-सं०स्त्री० [सं० नीचः+राज० कमाई] १ बुरे कामों से पैदा किया हुआ धन ।

२ बुरा धन्धा, निंद्य व्यवसाय ।

नीचग-सं०पु० [सं०] १ अपने उच्च स्थान से सातवें स्थान पर पड़ने वाला ग्रह । (फलित ज्योतिष)

२ पानी, जल ।

वि०—१ पामर, ओछा ।

२ नीचे जाने वाला ।

नीचगामी-वि० [सं० नीचगामिन्] नीचे जाने वाला, ओछा ।

नीचगा-सं०स्त्री० [सं०] नदी, सरिता ।

नीचगिर, नीचगिरि-सं०पु० [सं० नीचगिरि] दशार्ण देश के एक पर्वत का नाम ।

उ०—लेण थमो विसरांम नीचगिर परबत माथै । घण पुहुपां रोमांच मिळंतां कदमां साथै । गंधै खोह, सुगंध विलासण कांमणियां रै । मद छक-जोवन पूर जतावै गण पुरखां रै ।—मेघ.

नीचग्रह-सं०पु० [सं० नीचगृह] वह स्थान जो किसी ग्रह के उच्च-स्थान से गिनती में सातवां हो ।

नीचता-सं०स्त्री० [सं० नीच+रा.प्र.ता] १ क्षुद्रता, तुच्छता, अधमता, खोटाई, कमीनापन ।

२ नीच होने का भाव ।

रू०भे०—नीचाई ।

नीचधूणियौ [सं० नीच+राज. धुणियौ] नीचे देखते हुए चलने वाला (अशुभ)

नीचरलौ, नीचलौ—देखो 'निचलौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीचरली, नीचली)

नीचांत-सं०स्त्री० [सं० नीच+रा.प्र. अंत] नीची भूमि, ढाल ।

नीचाई—देखो 'निचाई' (रू.भे.)

२ देखो 'नीचता' (रू.भे.)

नीचित, नीचींत—देखो 'निश्चित' (रू.भे.)

उ०—१ बार निहारूं पंथ बुहारूं, ज्यूं सुख पावै चित । मेरा मन की तुमही जांणौ, मेरौ ही जीव नीचित ।—मीरां

उ०—२ ताहरां पछीत खोदणौ बैठ नीचींत थको खोदै छै । खोदतै खोदतै घड़ी की जिसही में माथो मावै ।—चौबोली

नीचे, नीचै-क्रि०वि० [सं० नीचैः] १ नीचे की ओर, अधोभाग में ।

२ कम, घटकर, न्यून ।

३ अधीनता में, मातहती में ।

रू०भे०—नीय, नेचा ।

नीचोड़—देखो 'निचोड़' (रू.भे.)

उ०—ग्रह नर सुर कहु कवण ग्रोट, जैं दल सग जोड़ । चक्र-घत कर सुधा नीचोड़, मद वंका मोड़ ।—र.ज.प्र.

नीचोड़णौ, नीचोड़बौ—देखो 'निचोणौ, निचोबौ' (रू.भे.)

नीचोड़णहार, हारौ (हारी), नीचोड़णियौ—वि० ।

नीचोड़िओड़ौ, नीचोड़ियोड़ौ, नीचोड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

नीचोड़ीजणौ, नीचोड़ीजबौ—कर्म वा० ।

नीचोड़ियोड़ो—देखो 'निचोयोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीचोड़ियोड़ी)

नीचोणो, नीचोबो—देखो 'निचोणो, निचोबो' (रू.भे.)
नीचोणहार, हारो (हारी), नीचोणियो—वि०।
नीचोयोड़ो—भू०का०कृ०।
नीचोड़ीजणो, नीचोड़ीजबो—कर्म वा०।

नीचोयोड़ो—देखो 'निचोयोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीचोयोड़ी)

नीचोवणो, नीचोवबो—देखो 'निचोणो, निचोबो' (रू.भे.)
नीचोवणहार, हारो (हारी), नीचोवणियो—वि०।
नीचोविश्रोड़ो, नीचोवियोड़ो, नीचोव्योड़ो—भू०का०कृ०।
नीचोवीजणो, नीचोवीजबो—कर्म० वा०।

नीचोवियोड़ो—देखो 'निचोयोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीचोवियोड़ी)

नीचो-वि० [सं० नीच] (स्त्री० नीची) १ जो कुछ उतार या गहराई पर हो, जिसका तल आसपास के तलों की अपेक्षा गहराई पर हो, जिस तल से उसके आसपास के तल ऊपर हों, निम्न।
ज्यूं—थांरै खेत में ईज पांणी भेळो व्है, इण री कारण थांरो खेत बीजा खेतां सूं नीचो है।
यौ०—नीचो-ऊंचो।
२ जो साधारणतया दूसरों से ऊंचाई में कम हो, जो ऊपर की ओर दूसरों के या आसपास की वस्तुओं के बराबर गया हुआ न हो।
ज्यूं—हवेली सूं तो औ घर घणो नीचो है।
३ जो ऊपर की ओर पूरा उठा हुआ न हो, झुका हुआ, नत।
ज्यूं—नीचो माथो, नीची निजर।
ज्यूं—राजाजी देवलोक हुआ जद किलै माथै झंडो नीचो कर दियो हो।
४ जो ऊपर से जमीन की ओर अधिक दूर तक लटका हुआ हो।
ज्यूं—नीची धोती, नीचो कुड़तो।
५ जो उत्तम और मध्यम कोटि का न हो, निकृष्ट।
६ ओछा, छोटा, बुरा, क्षुद्र, तुच्छ। उ०—कांम थैं इसो नीचो कियो, चार पगां धग चाढियो।—ऊ.का.
७ जो कर्म गुण या जाति आदि में घट कर हो, न्यून।
उ०—१ ऊंचां नीचां में आगळ वह ईखै। भागळ भख-भूरां भेळा भड़ भीखै।—ऊ.का.
उ०—२ नीची न्यातां रा ऊंचा ऊधरिया, ऊंची जातां रा नीचा ऊतरिया।—ऊ.का.
उ०—३ नीची जात री ठणकी पण न्यारो, ऊंची जातां री उड़ग्यो उणियारो।—ऊ.का.
८ जो तीव्र न हो, जो चढ़ा हुआ न हो, जो जोर का न हो, मध्यम, धीमा।
ज्यूं—नीचो सुर, नीची आवाज।
क्रि०वि०—ऊंचे से नीचे की ओर, नीचे की तरफ।
उ०—१ नीचो जावै नीर ज्यूं, जग नव नहचै जांण। सकल पदारथ सार री, व्है खिण खिण में हांण।—बां.दा.
उ०—२ गहर आंखियां गीड़, झपक नीचो झड़ जावै। नाक न पूंछै नींच, मांय मांख्यां मर जावै।—ऊ.का.
उ०—३ नीचो नैणां सूं धोवां जळ धावै। ऊंचो ईखण री अभलेखो आवै। गाढ़ी गयणांगण रज ले गरणाटा। सांवण सूको गो देतो सरणाटा।—ऊ.का.
मुहा०—१ नीचो-ऊंचो करणो—धमकी, प्यार आदि से समझाना।
२ नीचो-ऊंचो होणो—किसी वस्तु की दर का बढ़ना या घटना, अवसरवादी होना।
३ नीचो जोवतो करणो—इज्जत में बट्टा लगाना, शर्मिंदा करना।
४ नीचो देखणो—शर्मिंदा होना।
५ नीचो देखाणो—शर्मिंदा करना, हराना, इज्जत में बट्टा लगाना।

नीछंटणो, नीछंटबो—देखो 'नीछटणो, नीछटबो' (रू.भे.)
उ०—कविळउ कलूळ कंदळ करेय, फारकां पूठि फिरणो फिरेय। नीछंटिया गोळा तंत्र नाळि, पावक्क जांणि पइठउ पलाळि।
—रा.ज.सी.
नीछंटणहार, हारो (हारी), नीछंटणियो—वि०।
नीछंटिओड़ो, नीछंटियोड़ो, नीछंटयोड़ो—भू०का०कृ०।
नीछंटीजणो, नीछंटीजबो—कर्म वा०।

नीछटियोड़ो—देखो 'नीछटियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीछंटियोड़ी)

नीछटणो, नीछटबो-क्रि०स०—१ फेंकना, छोड़ना।
उ०—१ नयण कटाछ बांण नीछटतो। कसि चिहुं दिस फेरती कटाह। ऊठ 'रयण' वर परणण आवी। घूमर कीयां मीर घड़ाह।
—दूदो
उ०—२ नयणां तणा बांण नीछटता, निमख निमख ताइ वाधइ नेह। रुत जांणती समउ जांणीयउ, सांईं सूं पहिलकउ सनेह।
—महादेव पारवती री वेलि
२ प्रहार करना। उ०—धमरोळ पड़ै सेलां धियाग। खागां कर नीछट वहै खाग।—सू.प्र.
नीछटणहार, हारो (हारी), नीछटणियो—वि०।
नीछटाड़णो, नीछटाड़बो, नीछटाणो, नीछटाबो, नीछटावणो, नीछटावबो—प्रे०रू०।
नीछटिओड़ो, नीछटियोड़ो, नीछटयोड़ो—भू०का०कृ०।
नीछटीजणो, नीछटीजबो—कर्म वा०।
निछंटणो, निछंटबो, निछटणो, निछटबो, [illegible] निछटबो,

नीछटणो, नींछटवो, नीछंटणो, नीछंटवो, नीछट्टणो, नीछट्टवो
—रू०भे० ।

नीछटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ फेंका हुआ, छोड़ा हुआ ।
२ प्रहार किया हुआ ।
(स्त्री० नीछटियोड़ी)

नीछट्टणो, नीछट्टवो—देखो 'नीछटणो, नीछटवो' (रू.भे.)
उ०—वाजिद वाज दळ जळा-बोळ । नीछट्ट खाग लूटी नारनोळ । धड़कियो आगरो दिली धाक । साहजांपुर कीधो खाक-साक ।
—वि.सं.

नीछट्टणहार, हारो (हारी), नीछट्टणियो—वि० ।
नीछट्टिओड़ो, नीछट्टियोड़ो, नीछट्टयोड़ो—भू०का०कृ० ।
नीछट्टीजणो, नीछट्टीजवो—कर्म वा० ।

नीछट्टियोड़ो—देखो 'नीछटियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीछट्टियोड़ी)

नीजण, नीजणि—देखो 'नीजन' (रू.भे)
उ०—१ आसाढ़ का दिनां को तपन कहतां सूरजि इसो अधिक ताप्यो छै । दुपहरा की वरीयां यै सो नीजण होय गयो छै जु कोई मनुस्य फिरै डोलै न छै ।—वेलि.टी.
उ०—२ इसो धूप ताप्यो छै । नीजणि कहतां कोई मनुस्य चलै न देखीयो । वैसी महा की अधराति जैसी नीजणि होय छै ।
—वेलि.टी.

नीजामा-सं०पु० [देशज] मल्लाह । उ०—१ समुद्र अगाधि मध्य गुहिर, गभीर असं प्राप्त तीर । तेह समुद्र नइ तीरि वावन्नउ वोहित्य नागरिउ आउलां सूत्रिया देसांतरोचित क्रयांणां भरियां कूयखंभो उभवीयउ नीजांमा सज्ज हुआ मेळा लोक भाडिआ ।—व.स.
उ०—२ नीजांमा नइं नायता, माछी मिळया गुआर । मीणा मोची मोकळां, मूकी गया दूआर ।—मा.का.प्र.
रू०भे०—नीजांमा ।

नीजुड़णो, नीजुड़वो—देखो 'निजोड़णो, निजोड़वो' (रू.भे)
उ०—ऊजड़ कड़ा जिरहां अळग्ग, खड़खड़ै जोध वाहै खड़ग्ग । खसरस पटै खांडै खड़ाक, नीजुड़ै नरां सिरि रहै नाक ।
—गु.रू.वं.

नीजुड़णहार, हारो (हारी), नीजुड़णियो—वि० ।
नीजुड़िओड़ो, नीजुड़ियोड़ो, नीजुड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
नीजुड़ीजणो, नीजुड़ीजवो—कर्म वा० ।

नीजुड़ियोड़ो—देखो 'निजोड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीजुड़ियोड़ी)

नीझणि, नीझणी-वि० [सं० निध्वंनि] ध्वनिरहित, चुप्प, शान्त ।
उ०—१ मन करि मधुकरि रुणझुणि, नीझणि रहण सुहाइ । मळयानिळ क्षण माहरी, वाहरी क्षण इकु वाइ ।—नेमिनाथ फागु

नीझर, नीझरण—देखो 'निरझरण' (रू.भे.)
उ०—१ धुरवा धरणी लग लोढ़ा ले धावै । जीमण जीमण नै मोडा जिम जावै । मोरां अनुमोदित लोरां लड़ लागी । नीझर नव-नीरद भमना भव भागी ।—ऊ.का.
उ०—२ नैरति निरखण गिरि नीझर, घणी भजै घण पयोधर । झोलै वाइ किया तरु झंखर, लवळी दहन कि लू लहर ।
—वेलि.
उ०—३ उठै झाड़ कंडीर पाहाड़ ऐंडा । वणै मंथरां हालणी पंथ वैंडा । खळक्कै सदा नीझरां नीर खोळां । छळै कुंड अल्लील सल्लील छोळां ।—मे.म.
उ०—४ आगळ रितुराय मंडियो अवसर, मंडप वन नीझरण म्रिदंग । पंचवांण नायक गायक पिक, वसुह रंग मेळगर विहंग ।
—वेलि.
उ०—५ देवी नीझरण नवे सो नदी नाळा, देवी तोय ते तवां रूप तुहाळा । देवी मथुरा माईया मोक्षदाता, देवी अवंती अजोध्या अघ हाता ।—देवि.
उ०—६ नदियां, नाळा, नीझरण, पावस चढ़ियां पूर । करहउ कादिम तिलकस्यइ, वंथी पूंगळ दूर ।—ढो.मा.
२ देखो 'नीझरणो' (अल्पा०, रू.भे.)
३ देखो 'निरझर, निरझरण' (रू.भे.)

नीझरणी—देखो 'निरझरणी' (रू.भे., अ मा.)

नीझरणो-सं०पु० [सं० निर्झरं या निर्झरः] १ आंसू, अश्रु ।
उ०—आठ नारी नै मायड़ी, बाप बांधव नै परिवारो रे । सहू आंख्या नीझरणा नाखता, पाछा आया घर मझारो रे ।
—जयवांणी
२ देखो 'निरझर, निरझरण' (अल्पा०, रू.भे)
उ०—१ निरमळ सरवर भरिया, नीझरणै झरै नीर । नयणां नीर तिये पिण, मांडचो जिण सुं सीर ।—ध व.ग्रं.
उ०—२ नगि नगि नीझरणां वहइ, मांहि जलूका मच्छ । कातरीया नइं काच्छिवा, आडा आवइं लक्ष ।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—नीझर, नीझरण ।

नीझरणो, नीझरबो-क्रि०अ० [सं० निर्झरं] टपकना, झरना, चूना ।
उ०—उभै मिसल अंबखास, पडै धड़हड़ अणपारां । राव जांणि नरसिंघ, हलै करि दयत विहारां । नख जमदढ़ नीझरै, रुधर मुख चख रातवर । काळरूप विकराळ, 'अमर' छिबतो भुज अंबर ।
—सू.प्र.

नीझरणहार, हारो (हारी), नीझरणियो—वि० ।
नीझरिओड़ो, नीझरियोड़ो, नीझरयोड़ो—भू०का०कृ० ।
नीझरीजणो, नीझरीजबो—भाव वा० ।

नीझरियोड़ो-भू०का०कृ०—टपका हुआ, झरा हुआ, चुआ हुआ ।
(स्त्री० नीझरियोड़ी)

नीझांमणो, नीझांमवो-क्रि०स०—पार पहुंचाना ।

उ०—'नाय सागर, नीझांमता, नीरखि परिणिति सांति। उत्तराध्यन आदे बहु, संभळावे सिद्धांत।—लाधो साह

नीझांमियोड़ो-भू०का०कृ०—पार पहुंचाया हुआ।
(स्त्री० नीझांमियोड़ी)

नीठ-क्रि०वि० [सं० निष्ठा] मुश्किल से, कठिनाई से।
उ०—१ वहै जातरी रातरी दीह वारा। घकै चाढ़वो मागरी खागधारा। उदै अद्र जो बारमो भांण ऊगै, पवै-अस्त सो पूगियां नीठ पूगै।—मे.म.
उ०—२ पूगो नीठ पिछांणियो, किसूं वुलायो काळ। कै पग मंडो ठाकुरां, कै छंडो करवाळ।—वी.स.
उ०—३ बीजुळियां पारोकियां, नीठ ज नीगमियांह। अजइ न सज्जन वाहुडे, वळि पाछी वळियांह। ढो.मा.
उ०—४ दुख भर इण परिचालतां, नीठ थयो परभात। कोढ़ी नी सबळ, आगळि एक दिखात।—स्रीपाळ
वि०—मुश्किल, कठिन। उ०—रही किती मिळ राजवण, सोनजुही मघ सोय। सोधि तिकां ल्यावै सखी, जुगत नीठ सी जोय। जुगति हूत निठ जोय, हेरि हुलसै हसै। लता लवंग री ललित, लहलही त्यौं लसै।—सिववगस पाल्हावत
रू०भे०—निट्ठ, निठ, निठि, नींठ, नीठां, नीठि, नीठी।

नीठणो, नीठबो—देखो 'निठणो, निठबो' (रू.भे.)
नीठणहार, हारो (हारी), नोठणियो—वि०।
नीठाड़णो, नीठाड़बो, नीठाणो, नीठाबो, नीठावणो, नीठावबो —क्रि०स०।
नीठिग्रोड़ो, नीठियोड़ो, नीठयोड़ो—भू०का०कृ०।
नीठीजणो, न ठीजबो—भाव वा०।

नीठर—देखो 'निस्ठुर' (रू.भे.)
उ०—१ बालपणइ लालीइ, जेतलइं यौवन भरि जाए, तेतलइं मावित्र सांह्मां थाइं, कित्य अकित्य न गुणइं, वडां तणा वचन निहणइं, मावित्र सांह्मां नीठर बोल भणइं।—व.स.
उ०—२ नीरगुण नोसत नीठर, इम मुक्ति नर को जाइ। प्रीत मांडी छेह दीधु, यौवन दोहेलउं थाइ।—नळ-दवदंती रास
उ०—३ नीठर नेमि गदाधरू, पाधर सीह विमोसि। परि अ सरीखीय माडइ ए, मांडइ ए पाडिसु पासि।—नेमिनाथ फागु

नीठां—देखो 'नीठ' (रू.भे.)
उ०—गहकै आरंगपुर सारंग सुर गावै। धांणिक दीठांई नीठां वणि आवै। झूलर झांखळ बिन खांखळ दिन ढक्यो। हींडै हींडण बिन हीडै हिय हक्यो।—ऊ.का.

नीठांनीठ, नीठांनीठि-क्रि०वि०—बड़ी मुश्किल से, बहुत कठिनाई से, ज्यों त्यों करके।
रू०भे०—नीठानीठ, नीठानीठि।

नीठाड़णो, नीठाड़बो—देखो 'निठाणो, निठाबो' (रू.भे.)
नीठाड़णहार, हारो (हारी), नीठाड़णियो—वि०।
नीठाड़िग्रोड़ो, नीठाड़ियोड़ो, नीठाड़योड़ो—भू०का०कृ०।
नीठाड़ीजणो, नीठाड़ीजबो—कर्म वा०।
नीठणो, नीठबो—अक० रू०।

नीठाड़ियोड़ो—देखो 'निठायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीठाड़ियोड़ी)

नीठाणो, नीठाबो—देखो 'निठाणो, निठाबो' (रू.भे.)
ज्यूं०—सीरो तौ घणोई दस मण को रांध्यो थो पिण मल्ला भाई टिकिया जु संग नीठाय दियो तद बीजो रांधणो पड़ियो।
नीठाणहार, हारो (हारी), नीठाणियो—वि०।
नीठायोड़ो—भू०का०कृ०।
नीठाईजणो, नीठाईजबो—कर्म वा०।
नीठणो, नीठबो—अक० रू०।

नीठानीठ, नीठानीठि—देखो 'नीठांनीठ' (रू.भे.)

नीठायोड़ो—देखो 'निठायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीठायोड़ी' (रू.भे.)

नीठावणो, नीठावबो—देखो 'निठाणो, निठाबो' (रू.भे.)
नीठावणहार, हारो (हारी), नीठावणियो—वि०।
नीठाविग्रोड़ो, नीठावियोड़ो, नीठाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
नीठावीजणो, नीठावीजबो—कर्म वा०।
नीठणो, नीठबो—अक० रू०।

नीठावियोड़ो—देखो 'निठायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीठावियोड़ी)

नीठि—देखो 'नीठ' (रू.भे.)
उ०—१ दिन जेहि रिणी रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा संकुडिणि। नीठि छुडै आकास पोस निसि, प्रोढ़ा करखणि पंगुरिणि। —वेलि.
उ०—२ नाह नीठि पड़िसी खेत मांझी निवड़। गयंद पड़िसी गहर करड़ घड़ भड़ गहड़।—हा.झा.
उ०—३ वारण हय भूखण वसण, 'सतै' करै वखसीस। 'भाऊ' पाछो भेजियो, नीठि हठां अवनीस।— वं.भा.

नीठियोड़ो—देखो 'निठियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीठियोड़ी)

नीठी—देखो 'नीठ' (रू.भे.)

नीठुर—देखो 'निस्ठुर' (रू.भे.) (ऊ.र.)

नीठोनीठ—देखो 'नीठांनीठ' (रू.भे.)

नीडज-सं०पु० [सं०] पक्षी (डि.को.)

नीत—१ देखो 'नेती-धोती' (रू.भे.)
उ०—असी च्यार सुधार आसण, धोत बसती नीत धारण। करो एता कठिण विधक्रम, न सम राघव नांम।—र.ज.प्र.
२ देखो 'नीति' (रू.भे.)

उ०—१ दोयण मारै दाव सूं, नीत बात निरधार। पेख हिरण चीतो प्रगट, मूंसे पेख मंजार।—बां.दा.

उ०—२ रीत परीक्षत राजियो, नीत निधांन नरेस। 'वखत' पाट ताळाविनंद, वड तप भूप वनेस।—सिववखस पाल्हावत

उ०—३ अडग तेज अणाथघ सरद ध्यांन स्तुति आसती, नीम वर कार कळ जोग जप नांम। थिर प्रभा नीर पय यंद वुघ नीत थट, मेर रवि समंद चंद भव अहम रांम।—र.ज.प्र.

उ०—४ वेस वधती सांम री, वाधै वुद्ध विसेख। रीत सवै नृप नीत री, उर धारी अवरेख।—रा.रू.

३ देखो 'नीयत' (रू.भे.)

उ०—१ देखो विगड़ो देह, डोळ बीगड़गो देखो। विगड़ गई सब वात, लारनो लें कुण लेखो। समा विगड़गी सँग, नीत बीगड़गी न्यारी। देस विगड़गी दसा, क्यारी सूं पीगी क्यारी।—ऊ.का.

उ०—२ सच्चां हुंदी नीत थी, पेखै सिरजणहार।—केसोदास गाडण

नीतचारी-वि० [सं० नीति+चारिन्] नीति के अनुसार आचरण करने वाला।

नीतरणो, नीतरबौ-क्रि०अ० [सं० निःस्तरण] द्रव पदार्थ में घुली हुई वस्तु का नीचे बैठ जाना, द्रव का स्वच्छ हो जाना।

उ०—निकंमी नीयत रा सरवर नीतरिया। वींठा बीजां रा तरवर वीयरिया। चतुरां क्यूं ऊंडी चिंता चांपां री। आछी ईसुर री मूंडी आपां री।—ऊ.का.

२ सारहीन होना, तत्वरहित होना।

नीतरणहार, हारौ (हारी), नीतरणियौ—वि०।

नीतराड़णौ, नीतराड़बौ, नीतराणौ, नीतराबौ, नीतरावणौ, नीतरावबौ—प्रे०रू०।

नीतारणौ, नीतारबौ—क्रि०स०।

नीतरिप्रोड़ौ, नीतरियोड़ौ, नीतर्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीतरीजणौ, नीतरीजबौ—भाव वा०।

नितरणौ, नितरबौ—रू०भे०।

नीतरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (द्रव पदार्थ) घुली हुई वस्तु के तल में बैठ जाने से जो अलग हुवा हुआ हो।

२ सारहीन हुवा हुआ, तत्वरहित हुवा हुआ।

(स्त्री० नीतरियोड़ी)

नीतवंत, नीतवांन—देखो 'नीतिवांन' (रू.भे.)

उ०—१ सेरसाह सांचो सोळवत आदिल, नेक, नीतवंत, खबरदार, अवनियो रैत रो पीहर, सिपाह रो मित्र, चाकरां ऊपर मिहरबांन, वडो पातसाह हुवो।—बां.दा.ख्यात

उ०—२ मुसट्टि तोप भूप के सुनच्छ साधते नहीं। विनीत नीतवांन जे अनीत वांधते नहीं।—ऊ.का.

नीतसास्त्र—देखो 'नीतिसास्त्र' (रू.भे.)

नीतार-सं०पु०—१ घुली हुई वस्तु के तल में बैठ जाने या जमा हो जाने से अलग हुआ साफ द्रव पदार्थ।

२ तल में बैठी हुई चीज।

३ सार, सारांश।

रू०भे०—नितार।

नीतारणौ, नीतारबौ-क्रि०स० [सं० निःस्तरण] १ द्रव को रखना या स्थिर करना जिससे उसमें घुली हुई वस्तु तल में बैठ जाय और द्रव स्वच्छ हो जाय, द्रव को स्थिर करके स्वच्छ करना।

२ ऊपर के स्वच्छ द्रव को धीरे-धीरे दूसरे पात्र में उँडेल कर लेना।

३ किसी घोल में स्वच्छ द्रव को अलग करना। द्रव को छान कर अलग करना।

नीतारणहार, हारौ, (हारी), नीतारणियौ—वि०।

नीतारिप्रोड़ौ, नीतारियोड़ौ, नीतार्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीतारीजणौ, नीतारीजबौ—कर्म वा०।

नीतरणौ, नीतरबौ—अक० रू०।

नितारणौ, नितारबौ—रू०भे०।

नीतारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ स्थिर करके स्वच्छ किया हुआ (द्रव)।

२ ऊपर के स्वच्छ द्रव को धीरे धीरे दूसरे पात्र में उँडेल कर लिया हुआ।

३ किसी घोल में से स्वच्छ द्रव को अलग किया हुआ, द्रव को छान कर अलग किया हुआ।

(स्त्री० नीतारियोड़ी)

नीति-सं०स्त्री० [सं०] १ दूसरे को बाधा पहुंचाए बिना अपने कल्याण और भलाई की चाल, वह रीति जिससे अपनी भलाई के साथ समाज की बुराई न हो।

२ लोक-मर्यादा के अनुसार व्यवहार, समाज के कल्याण के लिए उचित ठहराया हुआ आचार-व्यवहार, अच्छी चाल, सदाचार।

३ व्यवहार की रीति, आचार पद्धति।

ज्यूं—दुरनीति, सुनीति।

४ किसी कार्य की सिद्धि के लिए चली जाने वाली चाल, युक्ति, उपाय।

५ राज्यादि की प्राप्ति के लिए वा राज्य की रक्षार्थ चली जाने वाली चाल।

६ वह विद्या जिसके द्वारा राज्य की व्यवस्था की जाय। राज्य की रक्षा के लिए निर्धारित विधि।

रू०भे०—नीद, नीत, नीती।

नीतिग्य-वि० [सं० नीतिज्ञ] नीतिकुशल।

रू०भे०—नीतीग्य।

नीतिमांन-वि० [सं० नीतिमत्] नीति को मानने वाला, नीति के अनुसार चलने वाला, नीतिपरायण, सदाचारी।

नीतिवंत, नीतिवांन-वि०—१ नीति को जानने वाला, नीतिज्ञ, नीति-कुशल। उ०—१ नीतिवांन गुनवान समय सुजांन जांन, गुन के निधांन सूर सुरिध स्वदेस के। क्षत्रिय कुळ धरम्म में निपुन परम्म परमारथ, स्वारथ अथाह धुर धरम धरेस के।—ऊ.का.

२ नीतिपरायण, सदाचारी ।

रू०भे०—नीतवंत, नीतवांन, नीतिवांन, नीतीवंत ।

नीतिसास्त्र-सं०पु० [सं० नीतिशास्त्र] १ वह शास्त्र जिसमें मानव समाज के कल्याण वा हितार्थ देश, काल और पात्रानुसार प्रबन्ध, शासन, आचार, व्यवहार आदि का विधान हो ।

२ नीतिसम्बन्धी शास्त्र ।

रू०भे०—नीतसास्त्र, नीतीसासतर, नीतीसास्त्र ।

नीतो—देखो 'नीति' (रू.भे.)

उ०—१ वेद न सुणियो विमळ, खेद पाई तन खोयो। सांड हुय रह्यो सदा, रांड रांडहि कर रोयो । न्याय न जांण्यो नितुर, निलज जांणी नहि नीतो । निज नारी-व्रत नेम, रुगड आंणी नहि रीतो । परदार प्यार हुयगो प्रमत, बिन सींगां रा बैलिया । भोग रै मांय भंमतां भमर, गयो जनम सब गैलिया ।—ऊ.का.

उ०—२ ठाकर री नीतो ही कै याद आयां दं उण रो ई भलो अर नी दं उण रो ई भलो । इण सुभाव सूं ठाकर घणो नुकसांण में रैवतो ।—रातवासो

नीतीग्य—देखो 'नीतिग्य' (रू.भे.)

नीतीवत, नीतीवांन—देखो 'नीतिवांन' (रू.भे.)

नीतीसासतर, नीतीसास्त्र—देखो 'नीतिसास्त्र' (रू.भे.)

नीतोतायो, नीत्तायो, नीत्तोतायो—देखो 'नित्तोतायो' (रू.भे.)

उ०—तीजण्यां तो सारी ही आई, ज्यां में आ उदमादणि नीतोताई वाग में मैमंत हुइ फिरै छै, सहेल्यां रा झूल में कतूळ करै छै ।

—पनां वीरमदे री वात

(स्त्री०—नीतोताई, नीतोतायी, नीत्तताई, नीत्ततायी, नीत्तोताई, नीत्तोतायी)

नीद—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)

उ०—सुणीजै अलकार झंकार सूतां । हुवै नीद विक्षेप ताकीद हूंतां ।—मे.म.

नीदड़ली, नीदड़ी—देखो 'निद्रा' (अल्पा०, रू.भे.)

नीदाळ—१ देखो 'नींदाळ' (रू.भे.) (डिं.को.)

२ देखो 'निद्राळु' (मह, रू.भे.) (डिं.को.)

३ देखो 'निंदाळू' (मह., रू.भे.)

नीदाळु, नीदाळू—१ देखो 'निंदाळ' (रू.भे.) (डिं.को.)

२ देखो 'निद्राळु' (रू.भे.)

नीद्र, नीद्रइं—देखो 'निद्रा' (रू.भे.)

उ०—१ जिम निद्र भरि हुई सुखि सूता । तेम कौरव ति नीद्र विगूता ।—विराटपर्व

उ०—२ सखी नयण तव नीद्रइं घुळइ । मारू तणी आंखि नवि मिळइ ।—ढो.मा.

नीद्रलड़ी—देखो 'निद्रा' (अल्पा०, रू.भे)

उ०—गजेंद्र कुंभस्थळ सीस ढोळइ, कोई हींडोळ जिम सीस डोलइ । तुरंग मातंग ति नीद्र घोरइ: न पक्षीया नीद्रलडी वगोरइ ।

—विराटपर्व

नीघणि—देखो 'नीघणी' (रू.भे.)

उ०—दादू प्रांणी बंध्या पंच सौं, क्यों ही छूटै नांहि । निघणि आया मारियै, यहु जीव काया मांहि ।—दादूवांणी

नीघणिको, नीघणियो—देखो 'नीघणी' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० नीघणिकी)

नीघणी-वि०—विना मालिक का, स्वामीहीन ।

रू०भे०—नीघणि ।

अल्पा०—निरघणियो, नीघणिको, नीघणियो ।

नीधनो—देखो 'निरधन' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—दादू सब जग नीधना, धनवंता नहि कोइ । सो धनवंता जांणियै, जाकै रांम पदारथ होइ ।—दादूवांणी

(स्त्री० नीधनी)

नीघस-सं०स्त्री० [देशज] नगाड़े की ध्वनि, आवाज (डिं.को.)

रू०भे०—निघस, निध्रस, नीध्रस ।

नीघसणो, नीघसबो-क्रि०अ० [देशज] १ नगाड़े का बजना, ध्वनि करना । उ०—१ मन खट राग वधा लग मौजां । कटि मेखळ कसियो कुरबांण । आवै मीर घड़ा उपडंखी । नीघसतै नेवर नीसांण ।

—दूदो

उ०—२ होदा कसिया हाथियां, नीघसिया नीसांण । लारै रंभ रसिया लिया, ऊससिया अप्रमांण ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ सोभत सैं लूंट लूंट सरियारी । मिळ 'गोरंभ' महातम मांण । सिंघ' तणा ऊपर 'धमियांणै' । नीघसिया जस रा नीसांण ।

—द.दा.

उ०—४ कूंकतड़ी मेल्ही चिहुं कनारां, नीदसजइ आगळि नीसांण । ब्रह्मा विस्णु पधारउ वहिला, जोगेसर तेडिया जांण ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—५ पारेवइ धावतइ अति पाइ, नीघसइ घरा पुड़ तिणि निहाइ । पंचाइण चडियउ ऊभि पांण, मूगळी घड़ा आद्दिवा मांण ।

—रा.ज.सी.

नीघसणहार, हारो (हारी), नीघसणियो—वि० ।

नीघसवाड़णो, नीघसवाड़बो, नीघसवाणो, नीघसवाबो, नीघसवाणो, नीघसवावो, नीघसवावणो, नीघसवावबो, नीघसाड़णो, नीघसाड़बो, नीघसाणो, नीघसाबो, नीघसावणो, नीघसावबो—प्रे०रू० ।

नीघसिम्रोड़ो, नीघसियोड़ो, नीघस्योड़ो—भू०का०कृ० ।

नीघसीजणो, नीघसीजबो—भाव वा० ।

निघसणो, निघसबो, निध्रसणो, निध्रसबो, नीध्रसणो, नीध्रसबो

—रू०भे० ।

नीघसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ बजा हुआ, ध्वनि किया हुआ ।

(स्त्री० नीघसियोड़ी)

नीध्रस—देखो 'नीघस' (रू.भे.)

उ०—नाळां पड़ घमक ग्रं'बाळां नीध्रस, रांण 'जगौ' कमधज सिर रूठ। भार पहंत 'पदम' नह भागौ, 'दयारांम' खग वागौ दूठ।

—दयारांम ग्रासिया रौ गीत

नीध्रसणौ, नीध्रसबौ—देखो 'नीघसणौ, नीघसबौ' (रू.भे.)

उ०—ग्राभि थांभा सजे मारमल ग्रंगोभव, दिली छळ ग्रकळ भाराथ डोहै। नितुह नीसांण सुसवद तणा नीध्रसे, सीसि सकबंध निृप लखण सोहै।

—रूपसिंह मारमलोत राजावत रौ गीत

नीध्रसणहार, हारौ (हारी), नीध्रसणियौ—वि०।

नीध्रसिग्रोड़ौ, नीध्रसियोड़ौ, नीध्रस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीध्रसीजणौ, नीध्रसीजबौ—भाव वा०।

नीध्रसियोड़ौ—देखो 'नीघसियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीध्रसियोड़ी)

नीप-सं०पु०—देखो 'निप' (रू.भे.)

नीपक-सं०पु० [देशज] १ याचक (ह.नां.मा.)

२ कवि. ३ पण्डित।

नीपज-सं०स्त्री० [सं० निष्पदनम्] उत्पत्ति, पैदावार।

रू०भे०—निपज।

नीपजणौ, नीपजबौ-क्रि०ग्र० [सं० निष्पदनं] १ उत्पन्न होना, पैदा होना। उ०—१ ऊंची नीची सरवरिया री पाळ, जठै नै सोळमियो सोनो नीपजै।—लो.गी.

उ०—२ बात छै ग्रचिरज सारिखी जी, माहरै हियै न समाय। कह्यां में नफो नहीं नीपजै जी, बिन कह्यां रह्यो न जाय।

—जयवांणी

उ०—३ वैरागर हीरा हुए, कुळवंतियां सपूत। सीपै मोती नीपजै, सब ग्रम्मा रा सूत।—बां.दा.

उ०—४ जिणि रिति मोती नीपजइ, सीप समंदां मांहि। तिणि रिति ढोलउ ऊमह्यउ, इंम को मांणस जाहि।—ढो.मा.

उ०—५ घन वूठइ, घण नीपजइ, वूठा विण ये जाय। तिम करवूं तइं ? माधवा ! थाइ ग्रनीठी राइ(ति)।—मा.कां.प्र.

उ०—६ घणा सैंवज गोहूं सारी सींव काठा नीपजै छै। मण १ गोहूं वाया मण ६० मण गोहूं हुवै छै।—नैणसी

२ ग्रंकुरित होना, उगना, उपजना।

३ बढना, बड़ा होना।

४ घटित होना, सम्पन्न होना, होना।

उ०—तेहोउ ए देवु मुरारि राउ, दुरयोधनु ग्रावीउ ए। इछीय ए दीजइं दांन, बिंब प्रतीस्ठा नीपजं ए।—पं.पं.च.

५ परिपक्व होना, पकना।

६ तैयार होना, बनना।

नीपजणहार, हारौ (हारी), नीपजणियौ—वि०।

नीपजिग्रोड़ौ, नीपजियोड़ौ, नीपज्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपजीजणौ, नीपजीजबौ—भाव वा०।

निपजणौ, निपजबौ, नींमजणौ, नींमजबौ, नीपणौ, नीपबौ, नीपनणौ, नीपनबौ, नीमजणौ, नीमजबौ—रू०भे०।

नीपजाड़णौ, नीपजाड़बौ—देखो 'निपजाणौ, निपजाबौ' (रू.भे.)

नीपजाड़णहार, हारौ (हारी), नीपजाड़णियौ—वि०।

नीपजाड़िग्रोड़ौ, नीपजाड़ियोड़ौ, नीपजाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपजाड़ीजणौ, नीपजाड़ीजबौ—कर्म वा०।

नीपजणौ, नीपजबौ—ग्रक० रू०।

नीपजाड़ियोड़ौ—देखो 'निपजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपजाड़ियोड़ी)

नीपजाणौ, नीपजाबौ—देखो 'निपजाणौ, निपजाबौ' (रू.भे.)

उ०—घनै धीरज धार मन में, कियौ हरि सूं काज। बिनां वायां नीपजायौ, हुवौ वहतौ नाज।—भगतमाळ

नीपजाणहार, हारौ (हारी), नीपजाणियौ—वि०।

नीपजायोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपजाईजणौ, नीपजाईजबौ—कर्म वा०।

नीपजणौ, नीपजबौ—ग्रक० रू०।

नीपजायोड़ौ—देखो 'निपजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपजायोड़ी)

नीपजावणौ, नीपजाववौ—देखो 'निपजाणौ, निपजाबौ' (रू.भे.)

नीपजावणहार, हारौ (हारी), नीपजावणियौ—वि०।

नीपजाविग्रोड़ौ, नीपजावियोड़ौ, नीपजाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपजावीजणौ, नीपजावीजबौ—कर्म वा०।

नीपजणौ, नीपजबौ—ग्रक० रू०।

नीपजावियोड़ौ—देखो 'निपजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपजावियोड़ी)

नीपजियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उत्पन्न हुवा हुग्रा, पैदा हुवा हुग्रा।

२ ग्रंकुरित हुवा हुग्रा, उगा हुग्रा, उपजा हुग्रा।

३ बड़ा हुवा हुग्रा, बढ़ा हुग्रा।

४ घटित हुवा हुग्रा, सम्पन्न हुवा हुग्रा।

५ परिपक्व हुवा हुग्रा, पका हुग्रा।

६ तैयार हुवा हुग्रा, बना हुग्रा।

(स्त्री० नीपजियोड़ी)

नीपण-सं०पु० [सं० लिप, लेपनम्] १ ग्रांगन ग्रादि लीपने के लिए तैयार किया हुग्रा गोबर।

२ लीपने का काम।

उ०—नीपण धोळण मांडणै, जीवां रा करौ जतन्न। भव भमतां दुलहौ लह्यो, मांनव भव रतन्न।—जयवांणी

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

३ देखो 'निपुण, (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ अछेहां पै घाव सिधां सभाव पटैत अंगां, कछ अंवा भांण कुळां अरेहां सकांम। दौड़ बाड जीपणां लूण चै काज भंजै देहां, रेवंतां नीपणां सूरां रजै एहां रांम।—र.ज.प्र.

उ०—२ जस 'पातल' रौ जगत में, श्रौ भरियौ अणपार। नीपण निज पावै नहीं, पोथी लिखियां पार।—ऊ.का.

नीपणौ, नीपबौ—क्रि०स० [सं० लिप्, लेपनम्] १ किसी गीली वस्तु का गाढे घोल की पतली तह चढ़ाना, लीपना, पोतना।

ज्यूं—घर नीपणौ, आंगणौ नीपणौ।

२ देखो 'नीपजणौ, नीपजबौ' (रू.भे.)

उ०—१ बढ़ की सुभ वेळाह, नग 'पावू' सिघ नीपियौ।—पा.प्र.

नीपणहार, हारौ (हारी), नीपणियौ—वि०।

निपवाड़णौ, निपवाड़बौ, निपवाणौ, निपवावौ, निपवावणौ, निपवावबौ—प्रे०रू०।

नीपाड़णौ, नीपाड़बौ, नीपाणौ, नीपावौ, नीपावणौ, नीपावबौ—प्रे०रू०।

नीपिओड़ौ, नीपियोड़ौ, नीप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपीजणौ, नीपीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

नीपनणौ, नीपनबौ—देखो 'नीपजणौ, नीपजबौ' (रू.भे.)

उ०—१ घटि घटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण, ऊंच छिछ ऊछळै अति। पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रवाळी, सिरा हुंस नीसरै सति।—वेलि.

उ०—२ तुरक्की ताजी तुरंग, विलाती देसी विडंग। घूना चित्रांगिया घंग, खेड़ रा नीपना खैंग।—गु.रू.वं.

उ०—३ तांमस अहंकार तैं पांच महाभूत पांच सूक्ष्म भूत नीपना।—द.वि.

उ०—४ जाहरां परमात्मा माया दिसि देखयां तियां थी महतत्व नीपना। महतत्व थकी अहंकार नीपनौ।—द.वि.

उ०—५ ताहरां तेजल घोड़ौ नीसर नै घोड़ी नू लागौ तै री काळवी वछेरी नीपनी।—नैणसी

उ०—६ नरखंड रा नीपना, प्रबळ पिंड रा पाथ। आरण पग अणचल जिकै, भड जीपण भाराथ।—सिववक्स पाल्हावत

नीपनणहार, हारौ, (हारी), नीपनणियौ—वि०।

नीपनिओड़ौ, नीपनियोड़ौ, नीपन्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपनीजणौ, नीपनीजबौ—भाव वा०।

नीपनियोड़ौ—देखो 'नीपजियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपनियोड़ी)

नीपवण—वि०—उत्पन्न करने वाला।

नीपाड़णौ, नीपाड़बौ—१ देखो 'नीपाणौ, नीपावौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निपजाणौ, निपजावौ' (रू.भे.)

नीपाड़णहार, हारौ (हारी), नीपाड़णियौ—वि०।

नीपाड़िओड़ौ, नीपाड़ियोड़ौ, नीपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपाड़ीजणौ, नीपाड़ीजबौ—कर्म वा०।

नीपणौ, नीपबौ—अक० रू०।

नीपाड़ियोड़ौ—१ देखो 'नीपायोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निपजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपाड़ियोड़ी)

नीपाणौ, नीपाबौ—क्रि०स० ('नीपणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ लीपने का काम कराना।

उ०—केसर कूंकूं री गार घलावौ साहिब जिण सूं नीपावौ गुल सेरी रे। हां जी रे भायां प्यारी रा साहिब किण विलमाया रे।—लो.गी.

२ देखो 'निपजाणौ, निपजावौ' (रू.भे.)

उ०—१ मन पंगु थियौ सहु सेन मूरछित, तह नह रही संपेखतै। किरि नीपायौ तदि निकुटी ए, मठ पूतळी पाखांण त।—वेलि.

उ०—२ जिण दिन पवन पांणी नहीं। जिण दिन स्वांमी अभ न गभ। ये तौ जुग सूना गया। तदि तौ दीप नीपायौ हो आप।—वी.दे.

उ०—३ तव वींझू वांणी वदइ, सांभळि, नरपति देव! नीपाई निज कन्यका, स्वामी करे वा सेव।—मा.कां.प्र.

उ०—४ ॐ नमौ वीतरागाय। ऊपेलइ माळि, प्रसन्नइ काळि, वारू मंडप नीपाइउ, पोइणि नै पांनि छाइउ, कूंक ना छावड़ा मोती ना चउक, तेह माहि सारूआर घाट।—व.स.

नीपाणहार, हारौ (हारी), नीपाणियौ—वि०।

नीपायोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपाईजणौ, नीपाईजबौ—कर्म वा०।

नीपणौ, नीपबौ—अक० रू०।

नीपाड़णौ, नीपाड़बौ, नीपावणौ, नीपावबौ—रू०भे०।

नीपायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ लीपने का काम कराया हुआ।

२ देखो 'निपजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीपायोड़ी)

नीपावणौ, नीपावबौ—१ देखो 'निपजाणौ, निपजावौ' (रू.भे.)

उ०—नमौ नांम नीमवण नमौ नर सुर नीपावण। नमौ पनंग-धर नमौ गयण थंभां विन थंभण।—ह.र.

देखो 'नीपाणौ, नीपावौ' (रू.भे)

नीपावणहार, हारौ (हारी), नीपावणियौ—वि०।

नीपाविओड़ौ, नीपावियोड़ौ, नीपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीपावीजणौ, नीपावीजबौ—कर्म वा०।

नीपणौ, नीपबौ—अक० रू०।

नीपावियोड़ौ—१ देखो 'निपजायोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'नीपायोड़ौ'

(स्त्री० नीपावियो

नीपियोड़ो-भू०का०कृ०—१ लीपा हुआ, पोता हुआ ।
२ देखो 'नीपजियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीपियोड़ी)
नीपियो-पोतियो-वि०यौ०—लिपा-पुता ।
नीब—देखो 'नीम' (रू.भे.)
नीबड़—देखो 'नीम' (मह., रू.भे.)
नीबड़ली-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा., रू.भे.)
नीबड़लो देखो 'नीम' (अल्पा., रू.भे.)
नीबड़ियो—देखो 'नीम' (अल्पा., रू.भे.)
नीबड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा., रू.भे.)
नीबड़ो—देखो 'नीम' (अल्पा., रू भे.)
नीबांण-सं०स्त्री०—नींबू का वृक्ष ।
नीबात-सं०पु० [सं० नवनीत] १ मक्खन, नवनीत ।
उ०—जोगी ! थां कौन कहै हो बात । दुधइ खिहावऊं घणी हो नीबात । भैंस को दही यर गरड़ा को भात ।—वी.दे.
२ मिश्री ।
वि०—१ कमजोर, असक्त ।
२ कायर, डरपोक ।
नीबाब—देखो 'नव्वाब' (रू.भे.)
नीबी-सं०स्त्री० [सं० निर्विकृतिक] घी, दूध, दही, गुड़, तेल आदि विकृति पैदा करने वाले पदार्थों को त्याग करने का नाम (जैन)
उ०—आयंबिल नीबी, पुरिमड्ढ, करै द्रव्य अनुमांन । भिन्न-पिंडवाहए पांचमो, ए आग्या भगवांन ।—जयवांणी
नीबीजो—देखो 'निरबीज' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० नीबीजी)
नीबू—देखो 'नींबू' (रू भे.) (अ.मा.)
उ०—नीबूड़ै री जड़ गई पताळ, ओ थां पर वारी रे सैंयां । सोयां नै कोसां पर नीबू फैलियो ओ राज ।—लो.गी.
नीबूड़ो, नीबूडो—देखो 'नींबू' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—नीबूड़ै री गहरी गहरी छांय, ओ घण वारी रे हुंजा । कोई नै मत तोड़ो भवरजी री नीबूड़ो ओ राज ।—लो.गी.
नीबोळी—देखो 'निंबोळी' (रू.भे.)
नीभर—१ देखो 'निरभय' (रू.भे.)
उ०—जां निसि सूतिय देखउ, नीभर नींद्र मझारि । गोत्रज सुमिणइ आविया, बोलिया बोल विचारि ।
—प्राचीन फागु-संग्रह
२ देखो 'निरभर' (रू.भे.)
नीमंत-देखो—'निमित्त' (रू.भे.)
नीम-सं०पु० [सं० निम्ब] १ द्विदलांकुर से उत्पन्न होने वाला एक पेड़ जो पत्ती झाड़ता है । यह अपने कडुएपन के लिए प्रसिद्ध है और औषध में काम आता है । दूषित रक्त को शुद्ध करने का इसका गुण प्रसिद्ध है । इसकी लकड़ी इमारती होती है । इसका फल निंबोली कहलाता है । यह वृक्ष देववृक्षों के अन्तर्गत माना गया है । इसकी टहनियां दातुन करने के लिए अधिक तोड़ी जाती हैं । ऊंट, बकरी आदि पशु इसकी पत्तियां खाते हैं (हि.को.) ।
रू०भे०—नींब, नींम, नीब ।
अल्पा०—नींबड़ली, नींबड़लो, नींबड़ियो, नींबड़ो, नींबड़ो, नींबो, नीबड़ली, नीबड़लो, नीबड़ियो, नीबड़ी, नीबड़ो, नीमड़लो, नीमड़लो, नीमड़ियो, नीमड़ी, नीमड़ो ।
मह०—नींबड़, नीबड़, नीमड़ ।
सं०स्त्री०—२ गहराई ।
ज्यूं—वेरा में पांणी री नीम घणी है ।
३ तालाब के मध्यस्थान की गहराई एवं भूमि की कठोरता ।
वि० [फा०] आधा, अर्द्ध ।
४ देखो 'नींव' (रू.भे.)
उ०—आवै जो अकलीम, सात हेक सुरतांण रै । नहीं जिका दै नीम, ईछै लेवा आठमी ।—बां.दा.
५ देखो 'नियम' (रू.भे.)
उ०—मनसा वाचा करमणा ए नीम तेणीए करय । भाव भक्ति भामिनी भरत्ता भूपति तूं वरय ।—नळाख्यांन
नीमगिलोय-सं०स्त्री० [सं० निम्ब+फा० गिलोय] नीम के वृक्ष के सहारे फैलने वाली गिलोय नामक लता ।
नीमड़—देखो 'नीम' (मह०, रू.भे.)
नीमड़णो, नीमड़बो-क्रि०अ० [सं० निवर्तनम्] १ नष्ट होना, समाप्त होना । उ०—१ कूच विहांणै ऊगणै, अरि घर सोच अथाह । घास उजाड़ां नीमड़ै, पड़ै पहाड़ां राह ।—रा.रू.
उ०—२ जर जवहर घर जोरवां, लूंटांणी सम लाज । मेछां नीमड़ियो विभो, सुण चढियो महाराज ।—रा.रू.
२ मर्यादा छोड़ना ।
उ०—चढतां नृपति समा भड चढ़िया । जोपै रूप सनाहां जड़िया । खह रुकि गरद वधै असमान खड़िया । नीरध वध जाणि नीमड़िया ।
—रा.रू.
३ उत्तरदायित्व निभाना ।
उ०—'अजमाल' तणै वळ धार इम, नर दुकाल ध्रम नीमड़ै । भाजियौ खेत 'मुहकम' भिड़े, अै घायल हुय ऊपड़ै ।—रा.रू.
४ देखो 'निपटणो, निपटबो' (रू.भे.)
उ०—राखै संप जिका धन राखै, 'बांकौ' दाखै सांच विध । न्याय नीमड़ै जितै नीमड़ै, राज वधै ज्यां तणी रिध ।
—बां.दा.
५ देखो 'निवड़णो, निवड़बो' (रू.भे.)
नीमड़णहार, हारो (हारी), नीमड़णयो—वि० ।
नीमड़िओड़ो, नीमड़ियोड़ो, नीमड़योड़ो—भू०का०कृ० ।

नीमड़ीजणौ, नीमड़ीजबौ—कर्म वा०

नीवड़णौ, नीवड़बौ—रू०भे०।

नीमड़ली-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे)

उ०—१ गुड़ घी बंधावौ नीमड़ली री पाळ पन्ना मारू। दूध सिंचाग्रो हरियै रूंख नै जी म्हारा राज।—लो.गी.

उ०—२ चाल्या पन्ना मारू जोधांणं रै देस पन्ना मारू। जोधांणं री वाड़ी नीमड़ली झुक रही जी म्हारा राज।—लो.गी.

नीमड़लौ—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नीमड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ नष्ट हुवा हुग्रा, समाप्त हुवा हुग्रा।

२ मर्यादा छोड़ा हुग्रा।

३ उत्तरदायित्व निभाया हुग्रा।

४ देखो 'निवड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

५ देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमड़ियोड़ी' (रू.भे.)

नीमड़ियौ—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नींमड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.)

नीमड़ौ—देखो 'नीम' (अल्पा०, रू.भे.) (डि.को.)

नीमचमेली-सं०स्त्री०—चमेली के समान सफेद फूलों वाला एक वृक्ष विशेष।

नीमचा-सं०स्त्री० [फा०] एक प्रकार की तलवार।

नीमजणौ, नीमजबौ-क्रि०स० [सं० निष्पदनं] १ ठानना।

उ०—नह सादूळौ नीमजे, जुध जिण तिण सूं जाय। ग्रो वाहरुग्रां ग्राफळै, कुंजर हलकां काय।—वां.दा.

[सं० निमज्जनम्] २ घुसना, प्रविष्ट होना।

उ०—मदोन्मत्त, त्रिदंडवरित, त्रिपाटभरित, चारुरूप, ग्रारक्त-कुंभस्थळ, ग्रापणी छाया देखी गुहिरा गाजइं, गोत्र नीमजइं, सैन्य छांडइं, ग्रलुग्रारी मांडइं।—व.स.

३ देखो 'नीपजणौ, नीपजबौ' (रू.भे.)

नीमजणहार, हारौ (हारी), नीमजणियौ—वि०।

नीमजिग्रोड़ौ, नीमजियोड़ौ, नीमज्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमजीजणौ, नीमजीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

नीम-जमीर-सं०स्त्री० [स निम्ब+जमीर] एक प्रकार का वृक्ष।

उ०—सातवों तो वासो चंवरियां जी वसियौ, चंवरियां में बैठा लाडो-लाडली। वधज्यै ए लाडी, वड-पीपळ ज्यूं, फळज्यै नीम-जमीर ज्यूं, लाडली रो चोर वधज्यो, रायवर रो वागो-मोळियो।

—लो.गी.

नीमजर-सं०स्त्री० [सं० निम्ब+राज० जर=पुष्प] नीम के वृक्ष की वौर जो छोटे-छोटे सफेद फूलों वाली गुच्छों के रूप में होती है ग्रौर चैत्र व वैशाख मास में ग्राती है। तत्पश्चात् यह निबोलियों में परिवर्तित हो जाती है। रक्त-शुद्धि व शीतलता के लिए इसे घोट कर व छान कर पीते हैं।

रू०भे०—निमजर, निमझर, नींमजर।

नीमजियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ठाना हुग्रा।

२ घुसा हुग्रा, प्रविष्ट हुवा हुग्रा।

३ देखो 'नीपजियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमजियोड़ी)

नीमटणौ, नीमटबौ—देखो १ 'निवड़णौ, निवड़बौ' (रू.भे.)

उ०—लोहां, लाकड़ां, चामड़ां, पहलां किसा वखांण। बहू वछेरा डीकरा, नीमटियां निरवांण।—ग्रज्ञात

२ देखो 'निपटणौ, निपटबौ' (रू.भे.)

उ०—निसा फोज घटी ती नीमटतो, फिरतै नर नाखत्र ग्रणफेर। उरधर कियौ न 'जैत' ग्रंगोभ्रम, मन 'मूळरज' ज्यूं हीं घू मेर।

—नैणसी

नीमटणहार, हारौ (हारी), नीमटणियौ—वि०।

नीमटिग्रोड़ौ, नीमटियोड़ौ, नीमटचोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमटीजणौ, नीमटीजबौ—भाव वा०।

नीमटियोड़ौ—देखो 'निवड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमटियोड़ी)

नीमडणौ, नीमडबौ-१ देखो 'नीमड़णौ, नीमड़बौ (रू.भे.)

उ०—तीह संग्रमि सांचरतां वादित्र वाजिवा लागा, ग्राकासि डमरू डमडम्यां, काहली कंसाल तणै कोलाहलि करण्ण कमकम्या, झल्लरी झणत्कार हूग्रा, भेरी भांकारि भूंगल तणै भूभूग्राटि भूमि फाडी, नीमडयां नीसांण नै नादि नदी निरझर प्रतिनाद नीपना।

—व.स.

२ देखो 'निवड़णौ, निवड़बौ' (रू.भे.)

उ०—ते काव्य जे सभां बोलीइ, ते ग्राभरण जे हीरे जडीइ, ते सुवरण्ण जे कसवट्टइ नीमडइ, ते वैद्य जे व्याधि फेडइ, ते राजा जे राज्य पालइ।—व.स.

३ देखो 'निपटणौ, निपटबौ' (रू.भे.)

नीमडणहार, हारौ (हारी), नीमडणियौ—वि०।

नीमडिग्रोड़ौ, नीमडियोड़ौ, नीमडचोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमडीजणौ, नीमडीजबौ—भाव वा०।

नीमडियोड़ौ-१ देखो 'नीमड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'निवड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

३ देखो 'निपटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमडियोड़ी)

नीमडौ—देखो 'नीम' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

नीमण-वि० [सं० निर्मन] १ वह जो खोखला न हो, ठोस।

२ नीरोग।

३ ग्रच्छा, भला।

रू०भे०—निमण, निमन।

नीमणायत-वि० [देशज] मजबूत, दृढ़। उ०—एक ताछ हुरा भांति, नीमणायत भड़ निठ्ठर। तपसी सिध भड़ अड्ह, तियां घरि अंगां वगतर।—सू प्र.

नीमणौ, नीमवौ-क्रि०स०—१ संकल्प करना, विचार करना, निश्चय करना। उ०—१ सुत 'सांमंत' सुरतांण सवायो, उर पण मरण नीमियां आयो। मुहियड़ दळां 'जसावत' 'माधौ', 'लावँ' विघन जाणि घन लाधौ।—रा.रू.

उ०—२ गोगादे गजगाह, नर नाहर चित नीमियो। मंडै 'दलै' विमाह, भड़ उण समै भतीज रो।—गो.रू.

उ०—३ वळिवंत जोध 'बूढ़ण' हरो, सूर धीर साको करण। संकळपि प्राण जाळोर सूं, नीमें रहियो निज मरण।

—गु.रू.वं.

२ प्राप्त करना, पाना।

क्रि०अ०—३ जन्म लेना, उत्पन्न होना, जन्मना।

उ०—'कूंडळ' वीरमदे कमंध, पिरणी भटियांणी। नर 'गोगादे' नीमीयो, जग साख जपांणी।—वी.मा.

नीमणहार, हारौ (हारी), नीमणियौ—वि०।

नीमिओड़ौ, नीमियोड़ौ, नीमयोड़ौ—भू०का०कृ।

नीमीजणौ, नीमीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

नीमतणौ नीमतवौ-क्रि०स० [सं० निमित्तं] १ किसी वस्तु को दूसरे के निमित्त करना।

२ देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रवौ' (रू.भे.)

नीमतणहार, हारौ (हारी), नीमतणियौ—वि०।

नीमतिओड़ौ, नीमतियोड़ौ, नीमत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमतीजणौ, नीमतीजवौ—कर्म वा०।

नीमतियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (किसी वस्तु आदि को) किसी के निमित्त किया हुआ।

२ देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री० नीमतियोड़ी)

नीमवर-सं०पु० [फा०] कुश्ती का एक पेच।

नीमवण-वि० [सं० निर्मनम्] रचने वाला, रचयिता।

उ०—इळ रचण उमैं किय सिव सगत, अलख निरंजण आप हुव। नर-नाग-असुर-सुर नीमवण, अलख पुरुस आदेस तुव।—ह.र.

नीमवणौ, नीमववौ-क्रि०स० [सं० निर्मनम्] निर्माण करना, रचना करना, रचना, बनाना।

नीमवियोड़ौ-भू०का०कृ०—निर्माण किया हुआ, रचा हुआ, बनाया हुआ।

(स्त्री० नीमवियोड़ी)

नीमसारण्य—देखो 'नेमिसारण्य' (रू.भे.)

नीमाड़णौ, नीमाड़वौ—देखो 'नमाणौ, नमाबौ' (रू.भे.)

नीमाड़णहार, हारौ (हारी), नीमाड़णियौ—वि०।

नीमाड़िओड़ौ, नीमाड़ियोड़ौ, नीमाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमाड़ीजणौ, नीमाड़ीजवौ—कर्म वा०।

नीमाड़ियोड़ौ—देखो 'नमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमाड़ियोड़ी)

नीमाणौ, नीमावौ—देखो 'नमाणौ, नमाबौ' (रू.भे.)

नीमाणहार, हारौ (हारी), नीमाणियौ—वि०।

नीमायोड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमाईजणौ, नीमाईजवौ—कर्म वा०।

नीमायोड़ौ—देखो 'नमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमायोड़ी)

नीमावणौ, नीमाववौ—देखो 'नमाणौ, नमावौ' (रू.भे.)

नीमावणहार, हारौ (हारी), नीमावणियौ—वि०।

नीमाविओड़ौ, नीमावियोड़ौ, नीमाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नीमावीजणौ, नीमावीजवौ— कर्म वा०।

नीमावत-सं०पु०—१ निम्बकाचार्य का अनुयायी।

२ वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद।

३ रामावत साधुओं की एक शाखा।

४ उक्त शाखा या सम्प्रदाय का एक व्यक्ति।

रू०भे०—नीबावत।

नीमावियोड़ौ—देखो 'नमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नीमावियोड़ी)

नीमियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ संकल्प किया हुआ, विचार किया हुआ, निश्चय किया हुआ।

२ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ।

३ जन्म लिया हुआ, उत्पन्न हुवा हुआ, जन्मा हुआ।

(स्त्री० नीमियोड़ी)

नीमियौ-वि०—नियम लिया हुआ, व्रतधारी।

नीमोळी—देखो 'निमोळी' (रू.भे.)

उ०—नीमोळी रसदार, भार ईं मिसी चोखी। पोखै बाळक काय, भाय मन खाय अणोखी। ना संतोळा सेव, मेव मीठा ना पिसता। ना अंगूर विदांम, आंम किसमिस रो रसता।—दसदेव

नीमौ—देखो 'नमौ' (रू.भे.)

नीयता—देखो 'नियंता' (रू.भे.)

उ०—निरभय नीयता, यता नर नारी। करता वीसंभर, भरता सुख भारी।—ऊ.का.

नीय—१ देखो 'निज' (रू.भे.)

उ०—१ कन्हइि वोधीउ सूयण, लोकु सहु सोगु निवारीउ। पहूतुं सहूइ नीय नयरि, परियणि परिवारीय।—पं.पं.च.

उ०—२ कांमालय अट्ठमी तणी, सांभइं संहट भणेवि। राजकुंअरि नीय घरि गई, ऊलट अगि धरेवि।—विद्याविलास पवाडउ

२ देखो 'नीचं' (रू.भे.)

उ०—सपत दीप रिख सात, सातइ समदु। नवइ नीय ही, हाथ जोड़ै नरिंदु।—पी ग्रं.

३ देखो 'नीच' (रू.भे.) (जैन)

नीयत-सं०स्त्री० [अ०] १ आन्तरिक भावना, संज्ञा, उद्देश्य, लक्ष्य, संकल्प। उ०—१ अळगा एकांयत नीयत निरदावै। घूणी अव-घूतां दूणी धूकावै। पूरा पोमाहे सूरा सत सावै। पीता मरियोड़ा जीता पद पावै।—ऊ.का.

उ०—२ क्यों जे बादसाहां री नीयत माफिक असर होय छै।—नी.प्र.

मुहा०—१ नीयत खराब करणी—बुरा संकल्प करना, मन में विकार उत्पन्न करना, ठीक सोचे हुए या अच्छे व उचित संकल्प को दृढ़ न रख सकना।

(२) नीयत खराब होणी—अच्छे व उचित संकल्प पर दृढ़ न रहना, बुरा संकल्प होना, मन में विकार पैदा होना।

(३) नीयत डिगणी—देखो 'नीयत खराब होणी'।

(४) नीयत डिगाणी—देखो 'नीयत खराब करणी'।

(५) नीयत बदळणी—अनुचित और बुरी बात की ओर प्रवृत्त होना, बेईमानी सूझना, बुरा संकल्प वा बुरी इच्छा होना, बुरा विचार होना।

(६) नीयत बांधणी—मन में ठानना, इरादा करना, संकल्प करना।

(७) नीयत बिगड़णी—देखो 'नियत खराब होणी'।

(८) नीयत बिगाड़णी—देखो 'नीयत खराब करणी'।

(९) नीयत भरीजणी—संतुष्ट होना, इच्छा पूरी होना, जी भरना, मन तृप्त होना।

(१०) नीयत में फरक आणी—बुरी बात की ओर प्रवृत्त हो जाना, उचित व अच्छे संकल्प पर दृढ़ रहना।

(११) नीयत लागणी—प्रवृत्त करना, दृढ़ करना, उन्मुख करना।

(१२) नीयत लागणी—जी ललचाना, इच्छा लगना।

(१३) नीयत होणी—इच्छा होना, आकांक्षा होना।

यौ०—नीयत-बायरौ।

२ नीति। उ०—मत छत सार धार अप्रमांणै, जिकौ सकळ नीयत व्रत जांणै। सरम सांम ध्रम हूत सपग्गौ, अधरम हूंता रहै अळग्गौ।—रा.रू.

रू०भे०—नियत, नींवत, नीत, नेत।

नीयति—देखो 'नियति' (रू.भे.)

उ०—रवि नै उदय रात मिट जावै, खुटै तेल मुसाल बुझावै। यों नीयति व्रत वेद बतावै, तप तीखै नृप राज गमावै।—रा.रू.

नीयांणा—देखो 'नियाणा, नियांणु' (रू.भे.)

उ०—करोत लें नै देह त्यागी। तिको जाळोर कांनड़दे रै घरै वीरमदे कंवर हुवौ। तिण सूं पैला भव री नीयांणा सूं बेगम रौ नेह लागौ।—वीरमदे सोनिगरा री वात

नीयाळ—देखो 'निहाल' (रू.भे.)

नीरंग, नीरंगु—देखो 'निरंग' (रू.भे.)

उ०—मिळिया नेमि नारायण गायण गीत सुणेउ, वारवधू मदि माचती नाचती जोइं बेउ। बेउ खेलइ सरसी तलि सीतलि लाखा-रांमि, नीरंगु नेमि न भीजइ खीजइ नारी नांमि।—नेमिनाथ फागु

नीर-सं०पु० [सं० नीरम्] १ जल, पानी (डिं.को.)

उ०—१ ऊपरि पदपलव पुनरभव ओपति, निमळ कमळ दळ ऊपरि नीर। तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरि हंस सावक ससि-हर हीर।—वेलि

उ०—२ नदि दीह वधै सर नीर घटै निसि, गाढ धरा द्रव हेमगिरि। सुतरु छांह तदि दीघ जगत सिरि, सूर राह किय जगत सिरि।—वेलि

२ ओज। उ०—भोग्य चित भजै, ग्रीवणी गरज्जै। नीर धार निर्जे, सोहड़ै सलज्जै।—रा.रू.

३ शोभा, कांति, दीप्ति।

उ०—१ देवी नीर देख्यां अघं ओघ नासै। देवी आतमानंद हैवे हुलासै।—देवि.

उ०—२ लखधीर वडौ लखलूट, खिति खगिति आगि अखूट। निज-वंसि चडावण नीर, हद बेहद हेल हमीर।—ल.पि.

उ०—३ देस सुरगौ जळ सजळ, न दियौ दोस थळांह। घर-घर चंद-वदनियां, नीर चढ़ै कमळांह।—बां.दा.

४ गौरव, मान, प्रतिष्ठा।

उ०—१ नांमणै अनंमा नाद नवा कोटां चाढै नीर, आच अवा आज जिसौ 'ऊदा'-हरौ इंद। दाखणौ अदेखा देख दीपियौ हींदू दुकाळ, मारुवौ महीप दूजौ 'मालदे' मसंद।—जगमाल राठौड़ रौ गीत

उ०—२ 'उदयवत' आज दुनियांण सह ऊपरा, सार रौ तार लागौ सवां हीं। हंस राखै जिकां नीर अळगौ हुवै, नीर राखै जिकां हंस नांहीं।—महाराणा प्रताप रौ गीत

उ०—३ नह पंचां जाय लाकड़ी नांखै, घणा जोर सज बियां घरां। चाड़ी करै कचैड़ी चढ़िया, नीर ऊतरै तुरत नरां।—बां.दा.

५ आंसू, अश्रु।

वि०—१ श्वेत कृष्ण# (डिं.को.)

२ कृष्ण, काला (डिं.को.)

रू०भे०—नीरि, नीरु, नीरू।

अल्पा०—नीरौ।

नीरअ—देखो 'नीरज' (रू.भे.) (जैन)

नीरखणौ, नीरखबौ—देखो 'निरखणौ, निरखबौ' (रू.भे.)

उ०—जांघ जोड़ावौ नू नीरखियौ, रंग-भरि रयण नू माड़ीयौ खेल। देव सतावौ राजा तूं फिरइ, घीव वीसाही तु जीमौ छइ तेल।—वी.दे.

नीरखणहार, हारो (हारी), नीरखणियो—वि०।
नीरखिग्रोड़ो, नीरखियोड़ो, नीरख्योड़ो—भू०का०कृ०।
नीरखीजणो, नीरखीजबो—कर्म वा०।

नीरखियोड़ो—देखो 'निरखियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीरखियोड़ी)

नीरज, नीरज्ज-सं०पु० [सं० नीरज] १ कमल, पुंडरीक (अ.मा.)
उ०—१ नीरि निरक्षिय नीरज नीरज हावउं केमु। टालइ ए केलीहर, दीहर खल जिम खेमु।—नेमिनाथ फागु
उ०—२ आदि अगम अविकार, एक ईस्वर अविणासी। पछै प्रक्रति तत पंच, विविध सुर ईखज-वासी। ईंडो कनक अछेह, देह धरि हरि तिण द्वारे। रचे नाभ नीरज्ज, रज्ज अज प्रज गुण सारे। मन तेण थियो मारीच मुनि, उण थी कासिप ऊपनो। घर नूर प्रकासी प्रीत घर, सूर तेण घर संपनो।—रा.रू.
२ मोती।
वि० [सं० नीरज या निस्+रजस्] १ रजरहित, धूलिरहित।
उ०—नीरि निरक्षिय नीरज, नीरज हावउ केमु। टालइ ए केलीहर, दीहर खल जिम खेमु।—नेमिनाथ फागु
२ मलरहित 'कर्म' (जैन)
रू०भे०—नीरय, नीरय।

नीरण—देखो 'नीरणी' (मह०, रू.भे.)
उ०—किड़की कारायण कनफड़ियां कूटी। तिड़गी तारायण सों पुरसां तूटी। प्रतिदिन मोळा पड़ भिन भिन पद पूजै। धोळा नीरण विन जीरण जिम धूजै।—ऊ.का.

नीरणी-सं०स्त्री० [सं० नितरां-इरणं = नीरणं+रा०प्र०ई]
१ पशुओं को चराने के लिए घास आदि डालने की क्रिया या भाव। उ०—आठ वळदां की ए, मा मेरी नीरणी, आठ हाळचां की छाक, वावैजी नै कहियो ए, हाळी नै बेटी क्यूं दयी।
—लो.गी.
क्रि०प्र०—करणी।
२ पशुओं के चरने के लिए डाला जाने वाला घास आदि।
क्रि०प्र०—करणी।
३ देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)
४ देखो 'नखहरणी' (रू.भे.)
मह०—नीरण।

नीरणो, नीरबो-क्रि०स० [सं० नीरणं] पशुओं को चराने के लिए घास आदि डालना। उ०—१ बांधउं वड़ री छांहड़ी, नीरूं नागर वेळ। डांम संभाळूं करहला, चोपड़िसूं चंपेल।—ढो.मा.
उ०—२ करहा! नीरूं सोइ चर, वाट चलतउ पूर। द्राख विजउरा नीरती, सो धण रही स दूर।—ढो.मा.
उ०—३ चम्रण नीरूं वण चरै, वण नीरूं सण खाय। ए हूर टीलो करहलो, जित बरजूं तित जाय।—अज्ञात
उ०—४ भेद कहि लाजां मरां, थांनै आसी रीस। थांरै आंगण येलड़ी, थे नीरो हूं चरीस।—अज्ञात
उ०—५ जद घर पर जोवती, देख मन मांह डरंती। गायत्री संग्रहण, द्रस्ट नागोर घरंती। सुर तेतीसूं कोट, आंण नीरता चारो। नह खावत नह चरत, मनै करती हहकारो।
—महाराणा कुंभा रो छप्पय
नीरणहार, हारो, (हारी), नीरणियो—वि०।
नीरवाड़णो, नीरवाड़बो, नीरवाणो, नीरवाबो, नीरवावणो, नीरवावबो, नीराड़णो, नीराड़बो, नीराणो, नीराबो, नीरावणो, नीरावबो
—प्रे०रू०।
नीरिग्रोड़ो, नीरियोड़ो, नीरयोड़ो—भू०का०कृ०।
नीरीजणो, नीरीजबो—कर्म वा०।

नीरद-सं०पु० [सं०] १ बादल, घन (ह.नां., अ.मा., नां.मा.)
उ०—फुरियो भादरवो धुरियो नह फीको। नीरद रज आगै लागै नह नीको। तिसिया संगारा भू पर नर तिरसै। बिसिया अंगारा ऊपर सूं वरसै।—ऊ.का.
२ मोर, मयूर।
रू०भे०—नीरध, नीरोद।

नीरदनादानुळ-सं०पु० [सं० नीरदनादानुलासी] मयूर, मोर (नां.मां)।

नीरध—१ देखो 'नीरद' (रू.भे.)
२ देखो 'नीरधि' (रू.भे.)
उ०—वाधै फौज अकब्बर वाळी, नीरध जांण पलट्टै नाळी।
—रा.रू.

नीरधबंध-सं०पु०यौ० [सं० नीरद+वंध] समुद्र, सागर।
उ०—चढतां नृपति समा भइ चड़िया, जोपै रूप सनाहां जड़िया। खह रुकि गरद वधै अस खड़िया, नीरधबध जांणि नीमड़िया।
—रा.रू.

नीरधर-सं०पु० [सं०] बादल, मेघ।
उ०—१ दीन करण प्रतपाळ दासरथ, भारत खळदळ सवळ विभंजै। घनख धरण तन वरण नीरधर, रघुवर जनकसुता मन रंजै।—र.ज.प्र.
उ०—२ नीरधर साहसां मीर 'तखतेस' नंद। हीरकण साह तो 'पतो' नृप हेम।—किसोरदान बारहठ

नीरधारा-सं०स्त्री० [सं०] जलधारा, सरिता।

नीरधि-सं०पु० [सं०] समुद्र, सागर।
रू०भे०—नीरध।

नीरनिध, नीरनिधि-सं०पु० [सं० नीरनिधि] समुद्र, सागर।

नीरनिवास-सं०पु० [सं०] तालाब (अ.मा.)

नीरनेता-सं०पु० [सं०] वरुण (नां.मा.)

नीरपत, नीरपति-सं०पु० [सं० नीरपति] वरुण (अ.मा.)

नीर-बहणी-सं०स्त्री० [सं० नीर+वहः] नाव, नौका (डिं.को.)

नीरभव-सं०पु० [सं०] कमल । उ०—उरध लिलाड नीरभव आंखैं, नाक कीर छिब न्यारी । दंत भुजा वछ दौर धीर धर, उर तसबीर उतारी ।—ऊ.का.

नीरभै—देखो 'निरभय' (रू.भे.)

नीरय—देखो 'नीरज' (रू.भे.) (जैन)

नीरवाली-सं०स्त्री० [देशज] पुष्प विशष की वेल, निवारी । उ०—पाका पांन घउंटहुली, जाई सेवती, नीरवाली का फूल। सांझ समइ राय बोलसी । हूंसि हूसि बोल अंबला मूंघ ।—बी.दे.

नीरस—देखो 'निरस' (रू.भे.)

उ०—मेल्हि वात परही सवि बाई, स्त्री तणउं सवि हउं जांणू माई। नारि नीरस न सांणि न राचइ, पुण्यहीन पति पद्मनि वंचइ ।
—विराटपर्व

नीरसमीप-सं०पु० [सं०] वरुण ।

नीरस्त-सं०पु० [सं० निस्त्रिश=तलवार, खग] तीर, बांण (डिं.नां.मा.)

नीरांत—देखो 'नैरांत' (रू.भे.)

उ०—१ मुज अबळा नैं मोटी नीरांत थई रे, छांमलो घरेणु म्हारे सांचुं रे ।—मीरां

उ०—२ होळी-रा दिन हा । जोधपुर री फौज-रा सिपाही नीरात-सूं बैठा 'हा-हा-फी-फी' कर रया हा ।—वरसगांठ

नीरांतर-वि० [सं० निर्+अंतक] शांत, चुपचाप । उ०—हीलाकर हिरणंक ईला हुय आधा । लीला भगवत री लीला नहि लाधा । ढालां ढालांतर सांतर ढळियोड़ा । बैठा नीरांतर आंतर बळियोड़ा ।
—ऊ.का.

नीरांयत—देखो 'नैरांत' (रू.भे.)

नीराग-वि० [सं० निः राग] १ राग-द्वेषरहित, विरक्त, उदासीन । उ०—धिग धिग एह ससार नइ, आवियउ परम वइराग रे। किम प्रतिवध जिनवर करइ, ए अरिहत नीराग रे ।—स कु.

२ आनन्दरहित ।

सं०पु०—जिन भगवान (जैन)

नीरागी-वि० [सं० निः रागिन्] १ राग-द्वेषरहित, उदासीन, विरक्त। उ०—तुमे नीरागी निसप्रीही पणि म्हारइ तो तुमे जीवन प्रांण । समयसुंदर कहइ सिव पांमु तां सीम तउ करज्यो कल्यांण ।—स कु.

२ आनंदरहित ।

सं०पु०—जिन भगवान (जैन) ।

नीराजण, नीराजन, नीराजना-सं० स्त्री० [सं० नीरजन या नीराजना] आरती उतारने की क्रिया, दीप-दान, परछन ।

उ०—१ कर पुचकारै घण कहै, जांण घणी री जैत । नीराजण बाधावियो, हूं वळिहार कुमैत ।—वी.स.

उ०—२ नीराजन प्रमुख हो विधांन करि अरवुद रै अधीस दुरलभ प्रथ्वीराज नूं आपरै अंतहपुर आंणि वेद मंत्रां रा विधांनपूरवक अंगजा इच्छणी परिणाय दीधी ।—वं.भा.

क्रि०प्र०—उतारणी, करणी ।

नीराळौ—देखो 'निराळौ' (रू.भे.)

उ०—आज नीराळइ सीय पड्यो। च्यारि पहूर मांही नू मीली अंख । उछइ पांणी ज्युं माछळी, जिव जागुं तिव उठुछुं झंखि ।
—बी.दे.

नीरास-सं०पु०—१ निःश्वास ।

उ०—वूढ़ापे सुखणी हुंस्युं जी, होती मोटी रे आस। घर सूनौ करि जाय छै रे, माता मूकी नीरास ।—जयवांणी

२ देखो 'निरास' (रू.भे.)

उ०—व्रिक्ष्यादिक नइं सेवतां रे लो, पूगइ मन नी आस रे सनेही । तउ साहिब तुझ सारिखउ रे लो, किम राखइ नीरास रे सनेही ।
—वि.कु.

नीरासइ-सं०पु० [सं० नीराश्रय] तालाव, सरोवर ।

उ०—पति पवन प्रारथित त्री तत्र निपतित, सुरत अंत केहवी स्त्री । गजेंद्र क्रीडता सु विगलित गति, नीरासइ परि कमलिनी ।
—वेलि.

नीरि—देखो 'नीर' (रू.भे.)

उ०—१ भीमु भीडंतउ जमणतडे कूटइ कुरव-वीर । पाडइ द्रउडइ भेडवइ बांधीय बोलइ नीरि ।—पं.पं.च.

उ०—२ भीमि भिडिउ भद्रु पाडीयउ बांधीउ घालिउ नीरि । जागिउं त्रोडइ बंध वलि नवि दूमिइ सरीरि ।—पं.पं.च.

नीरियोड़ौ-भू०का०कृ०—चरने हेतु पशु के आगे घास आदि डाला हुआ ।

(स्त्री० नीरियोड़ी)

नीरु, नीरू—देखो 'नीर' (रू भे.)

उ०—१ सहू पराघुं निद्रा करीइ, पांणी कारणि वणि वणि फिरइ । भीमु जांम लेउ आवइ नीरु, पाछलि जोअइ साहस धीरु ।
—पं.पं.च.

उ०—२ 'ध्रुव वन सिधारचो, वचन मारचो ब्यांन धारचो एक ए। तजि पांन नीरू महा धीरू परा पीरू पेख ए। सब ब्रह्म मंजू उर समंजू सुरत रजू तांम ए। ऐसा गोविंदू क्रपासिंधू दीनबंधू रांम ए ।—करुणासागर

नीरोअर—देखो 'नीरोवर' (रू.भे.)

नीरोग-वि० [सं०] जिसे रोग न हो, तन्दुरुस्त, स्वस्थ ।

उ०—घट नीरोग सुभ घरणि, वळि नहीं रिण-भय वात । सुपुत्र सुराज कटुंब सुख, घरमसीह कहै सात ।—ध.व.ग्र.

रू०भे०—निरोग ।

अल्पा०—निरोगौ, नीरोगौ ।

नीरोगता-सं०स्त्री० [सं० नीरोग+रा०प्र०ता] स्वास्थ्य, आरोग्यता

उ०—रोगी रहै उण री ग्रोसध नूं पथ्य पांणी नूं प्रबंध होय तो कारण नीरोगता कुसळता नै वडै ही ग्रारांम नूं होय ।
—नी.प्र.

नीरोगी-वि० [सं० नीरोगिन्] बिना रोग का, नीरोग, स्वस्थ ।
उ०—इक नीरोगी ग्रंग वळै गुण वृद्धि वखांणी । वळि साचविजै विनय ग्रधिक गुण उत्तम ग्रांणी ।—ध.व.ग्रं.
रू०भे०—निरोगी ।

नीरोगो—देखो 'नीरोग' (ग्रल्पा०, रू.भे.)
(स्त्री० नीरोगी)

नीरोद—देखो 'नीरद' (रू.भे.)

नीरोपम, नीरोपमो—देखो 'निरुपम' (रू.भे.)
उ०—जनम हुवउ थारउ मारू कइ देस । राज कुंवरि ग्रति रूप ग्रसेस । रूप नीरोपमो मेदनी । ग्राछा कापड़ झीणइ लंक ।
—वी.दे.

नीरोवर, नीरोवरि-सं०पु० [सं० नीरं+वर=पति] १ समुद्र, सागर ।
उ०—मुकरमै प्रोळि प्रोळि मैं मारग, मारग सुरंग ग्रबीरमई । पुरि हरि सेन एम पैसारघो, नीरोवरि प्रवसंति नई ।—वेलि.
२ वरुण (ह.नां.)
[सं० नीरम्+वरम्] ३ जल, पानी । उ०—मदतळ डांणां मसत, झरै झरणां गिर नीझर । ग्रन धारा तजि ग्ररध, पियै तड़कां नीरोवर ।—सू.प्र.
रू०भे०—नरोवर, नीरोग्रर ।

नीरो-सं०पु० [देशज] १ भूसा, घास, चारा । उ०—१ ग्रोझाजी रै घरै घणा-ई डांगरा हा । कुण इण गाय री परवा करतो हो । दूध दियो जितै तो माथो मारियो, नीरो नांखियो । टळियां पछै दिनूंगै सूं डिचकारी दे'र घर सूं बारै टोर देवता ।—वरसगांठ
उ०—२ ग्रोसर मोसर मांय व्यावड़ां ग्राड़ी ग्रावै । चारै पारै मिला, करवलां मोज मणावै । कूतरड़ी रै भेळ, गिणीजै नीरो माड़ो । पण ! घिटाळै टळै, नरां ग्रपजस ग्रंवाड़ो ।—दसदेव
२ देखो 'नीर' (ग्रल्पा., रू.भे.)
उ०—१ भाग संजोगइ रे ग्रम्रत पीजियइ, तउ कुण' पीवइ नीरो रे । घावळ कांवळ धुंसइ को नहीं, जउ पांमीजइ चीरो रे ।
—स.कु.
उ०—२ ग्रासू ग्रासा सहू फळी, निरमळ सरवर रो नीरो जी । सहगुरु उपसम रस भरचा, सायर जेम गंभीरो जी ।—स.कु.

नीलक, नीलंग-सं०पु० [देशज] एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र विशेष ।
उ०—खुराकां ग्रवाकां ततमाल खावै । भली चीज प्रित्थी जिकै मन्न भावै । जरी वाफ नीलंग जांमा जड़ावै । वपै ग्रन्न ग्रन्नेक धारां वणावै ।—वचनिका

नीलंगु-सं०पु० [सं०] शरीर का एक कीड़ा विशेष (डिं.को.)

नीलंजणा-सं०पु० [सं०] १ इन्द्र की सेना के सात सेनापतियों में से एक ।
उ०—कटक, नाटघ गंधरव हय गज ग्रखभ रथ पदाति रूपक तणा स्वांमी नीलंजणा रिद्धंजत हरि एरावण मातलि दामिट्टी हरिणे-गमेसी सरवांगि सन्नाह पहिरि, द्रढ कसा बंधि, धनुसि गुण चढावी रह्या ।—व.स.
सं०स्त्री० [सं० नील+ग्रंजना] २ विद्युत, बिजली ।

नीलंठ, नीलठो-सं०पु० [देशज] जल, पानी (ना डिं.को.)

नीळंवर, नीलंबर—देखो 'नीलांबर' (रू.भे.) (ग्र.मा., नां.मा.)
उ०—१ फरर तुरां नीलंबरां ग्राभरण फूल में, बदन कुंनण तणी पढी वांनै । द्वारकादास घर जवांनी दवांनी, मारका तो जसा भीच मांनै ।—बद्रीदास खिड़ियो
उ०—२ ग्रंतर नीलंबर ग्रवल ग्राभरण, ग्रंगि ग्रंगि नग नग उदित । जांणे सदनि सदनि संजोई, मदन दीपमाळा मुदित ।—वेलि.

नीलंमणी—देखो 'नीलमणि' (रू.भे.)
उ०—देवी रगत नीलमणी सीत रंगं, देवी रूप ग्रंबार वीरूप ग्रंगं । देवी बाल जूवा विधं वेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसां भुजाळी ।
—देवि.

नील-सं०पु० [सं० नीलिका] १ एक पौधा जिससे नीला रंग निकाला जाता है (ग्रमरत)
उ०—चुगलां जीभ न चालही, पर-उपगार प्रसंग । नह नीपजही नील सूं, राजहंस रौ रंग ।—बां.दा.
[सं०] २ नीला रंग ।
३ लांछन, कलंक ।
४ राम की सेना का एक प्रसिद्ध बंदर ।
उ०—१ सुखेणां नळं नील सुग्रीव साथां । हणूं ग्रादि ग्राए मिळै जोड़ि हाथां ।—सू.प्र.
उ०—२ सत्र हणै बळ समराथ रा, रिण लड़ै भड़ रुघनाथ रा । तदि लखण ग्रंगद सुग्रीव हणवंत, नील नळ नरनाह ।—सू.प्र.
५ पवन (ह.नां., ग्र.मा.)
६ इलावर्त्त खंड का एक पर्वत ।
७ मंगल-घोष ।
८ एक प्रकार का घोड़ा । उ०—ग्ररब छइ जे घोड़ां, हंरमा हरी-ग्रड़ा नील नीलड़ा कालूंग्रा काजळा किहाड़ा कोसीरा ।—व.स.
९ एक नाग का नाम ।
१० नृत्य के १०८ करणों में से एक ।
११ दस हजार ग्ररब की संख्या ।
१२ एक प्रकार का सरकारी कर ।
१३ एक प्रकार का फंज ।
१४ महिष्मती के एक राजा का नाम (डिं.को.)
१५ विष, जहर ।
१६ एक यम का नाम ।
१७ ग्रार्या गीति या खंधांण (स्कन्धक) का भेद विशेष (पिं.प्र.)

१८ प्रत्येक चरण में पांच भगण और अंत में गुरु वर्ण से १६ वर्ण का वर्णिक वृत्त विशेष (पिं.प्र.)

सं०स्त्री०—१६ मकान पर वर्षा के पानी के कारण दिखाई देने वाली कालिमा या जमने वाली काली पपड़ी।

उ०—ठिकांणां री मकांन वड़ो लंबो-चौड़ो ग्रर बावा ग्रादम रै जमांना रौ बण्योड़ौ हो। बरसात में सालोसाल नील जम जम नै धवळा माळिया काळा भरंग पड़ग्या हा।—रातवासौ

क्रि०प्र०—ग्राणी, जमणी।

२० पानी के ऊपर जमने वाली काई।

२१ धोने के पश्चात सफेद कपड़ों पर चढाया जाने वाला हल्का ग्रासमानी रंग जिससे कपड़ों की सुंदरता बढ़ती है।

क्रि०प्र०—दैणी, लगाणी।

२२ नीलाई, नीलापन। उ०—छच्छ मास छाकियां, हुवा डाकियां हठीलां। प्रचंड नील जमि पीठ, निलै ग्रसळै जमि नीलां। सघण गाज जिम सुणै, गाज मद मसत गयंदां। सादूळो सिर पटकि, मरै संगार मयंदां।—सू.प्र.

२३ शरीर पर चोट के कारण पड़ने वाला नीले या काले रंग का दाग।

क्रि०प्र० —पड़णी।

२४ नव-निधियों में से एक (डिं.को.)

२५ इंद्र नील मणि, नीलम।

२६ काले रंग के स्तनों वाली गाय।

वि०—१ नीले रंग का, ग्रासमानी।

रू०भे०—निलि, लील।

नीलग्रंजनी-सं०पु० [देशज] एक ही रंग के संपूर्ण शरीर पर नीले धब्बों वाला घोड़ा विशेष जैसे पूरे शरीर का रंग सफेद हो या लाल हो ग्रौर उस पर नीले धब्बे हों (ग्रशुभ)

नीलउनेत्र, नीलउनेत्र-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)

रू०भे०—नीलनेत्र।

नीलकंठ-वि० [सं०] १ जिसका कंठ नीला हो।

सं०पु०—१ मोर, मयूर (डिं.को., ग्र.मा., ह.नां., नां.मा.)

२ शिव, महादेव (क.कु.बो.)

उ०—१ कंठ पोत कपोत कि कहूं नीलकंठ, वडगिरि काळिंद्री वळी। समै भागि किरि संख संख घर, एकणि ग्रहियौ ग्रंगुळी।—वेलि.

३ मूली (डिं.को.)

४ एक चिड़िया।

५ गोरा पक्षी।

नीलकंठी-सं०स्त्री० [सं०] १ हिमालय पर पाई जाने वाली एक छोटी चिड़िया।

२ शोभा के लिए बगीचे में लगाया जाने वाला एक पौधा।

नीलक-वि०—नीला, ग्रासमानी (डिं.को.)

सं०पु०—१ ग्रासमानी रंग, नीला रंग।

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष। उ०—१ जरदोज कसबी मुंगीपटण तपई ग्रतलस मुलमुल जांमावाडि लखारस वासतौ मछीपटण ताखौ साळू जरकसी दुमेणा कचीयौ तनसुख नीलक पटोली सुप चुंनडी ग्रटांयण मीसंजर तासतौ चोरसौ (व.स.)

उ०—२ कंचू नीलक को कीयौ, ऊपरि चीर उढ़ाइ। लिधौ लुंगी भाति को, सुंदर नै बहोत सुहाय।—व.स.

उ०—३ भर मौल नीलक भार, ग्रासावरीस उदार। दुल्लीच गिलम दुसाळ, थिरमा सफंम सुथा'ळ।—सू.प्र.

३ नीले रंग का घोड़ा (डिं.को.)

नीलकांत-सं०पु० [सं०] १ हिमालय के ग्रंचल में पाई जाने वाली एक चिड़िया।

२ एक मणि, नीलम।

नीलक्क—देखो 'नीलक' (रू.भे.)

उ०—जगमगै जोत कसमी ग्रनूप। नीलक्क मसंजर लाल सूप।
—गु.रू.बं.

नीलक्रौंच-सं०पु० [सं०] काला बगला।

नीलगर-सं०पु० [फा० नीलगर या सं० नीलकर] १ मुसलमानी धर्म के ग्रंतर्गत कपड़े रंगने का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष ग्रथवा इस जाति का व्यक्ति। उ०—धोबी सवणीगर न्यारा रे, नाई नीलगर पीनारा। सकलीगर गांछा नै घोसी रे, कल्लाल तरमां मोची।
—जयवांणी

२ देखो 'नीलगिरि' (रू.भे.)

नीलगाय-सं०स्त्री० [सं० नील+गौ] लगभग गाय के बराबर ग्रौर गाय से कुछ मिलता-जुलता नीलापन लिए हुए भूरे रंग का बड़ा हिरन।

नीलगिरि, नीलगिरी-सं०पु० [सं० नीलगिरि] दक्षिण देश का एक पर्वत।

रू०भे०—नीलगर।

नीलग्रीव-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव (डिं.को.)

नीलडो—देखो 'नीलो' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

उ०—ग्रभयचद दियौ राई पंख। सकत स्यंघ है दीयौ नीलडौ हंस।
—बी.दे.

नीलचर-सं०पु० [सं०] मछली। उ०—हर रूपा सुख हेम मंजरां कि मोदहर। नीलचरां वन नाथ गैमरां निवांण। माधव पायाळ मुखा कमळा ग्राधार मांण। रैणवां ग्रधार राव राठौड़ां रौ रांण।
—ग्रासौ बारहठ

नीळज नीलज—देखो 'निरलज्ज' (रू.भे.)

उ०—१ निवळ पुरख नइ नीळज नारि, किम तिहां दीजइ राजकुमारि। करते तउ कीधउ नातरउ, पाणि जांणै पडीयउ पांतरउ।
—ढो.मा.

उ०—२ लंपट तजि प्रौळीयौ, निगुण प्रभु नीलज नारी। चोकीदार ज चोर, जोरवर जोध जुग्रारी।—ध.व.ग्रं.

नीललेसा-सं०स्त्री० [सं० नील-लेश्या] आत्मा को शुभाशुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त करने वाले छः तत्वों में से द्वितीय श्रेणी का मलिन परिणाम वाला तत्व जिसका उद्भव नील पुद्गलों के संयोग से होता है (जैन)।

नीलवंत-सं०पु० [सं०] एक पर्वत का नाम (जैन)

नीलवट, नीलवड, नीलवडि-सं०पु०—१ वस्त्र विशेष (व.स.)
२ देखो 'निलै' (रू.भे.)

नीलवण, नीलवणि-सं०स्त्री० [देशज] हरी सब्जी।
उ०—१ चौथुं व्रत कोई आदरै कोई नीलवण परिहार। अगडो नीम केइ ऊचरै, केई स्रावक व्रत बार।—लाधौ साह
उ०—२ रात्रि भोजन परिहरइ, चिराहुंसा रे। कोई नीलवणि नवि खाय, लाल निरहुंसा रे।—प्राचीन फागु-संग्रह
रू०भे०—लीलवण

नीलवी—देखो 'नीलम' (रू.भे) (अ.मा.)
उ०—१ प्रघळ परोक्षा नीलवी, मुक्तफळ ता मांहि। लसत हसत से लसणिया, सोभा कही न जाय।—गजउद्धार
उ०—२ मिणी लाल मांणक माळ मोती चिंतामण। नवनीधी नीलवी केक कोसव फटकामिण। पीरोजा पुखराज पनां चूनी परवाळा। हीरा पारस हेम सात धातां सिखराळा।—क कु बो.

नीलव्रख-सं०पु० [सं० नीलवृषभ] १ विशेष प्रकार का सांड या बछड़ा।
२ मृत पुरुष के ग्यारहवें दिन के वृषोत्सर्ग रूप से छोड़ा जाने वाला बैल।

नीलांबर-सं०पु० [सं०] १ नीले रंग का कपड़ा, नीला वस्त्र।
उ०—सोहै नीलांबर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमांण। चपकमाळा हरत चित, जुत भमरावळि जांण।—बां.दा.
२ श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम, बलदेव।
३ शनिश्चर।
४ राक्षस।
वि०—नीले वस्त्र वाला।
रू०भे०—नीलंबर।

नीलांबरी-सं०स्त्री०—एक राग विशेष (मीरां)

नीलांबुज-स०पु० [सं०] नीलकमल।

नीलांम—देखो 'लीलांम' (रू.भे.)

नीलांमघर—देखो 'लीलांमघर' (रू.भे.)

नीलांमी—देखो 'लीलांमी' (रू.भे.)

नीला-सं०स्त्री० [सं०नील] कुबेर की नौ निधियों में से एक निधि(डिं.को.)

नीलाचळ, नीलाचल-सं०पु० [सं० नीलाचल] नीलगिरि पर्वत।

नीलाब्ज-सं०पु० [सं०] नीलकमल।

नीलावट—देखो 'निलै' (रू.भे.)
उ०—बंकै भौंह विसाळ भाळ नीलावट नूरांणी। नैंण विराजै चोळ रंग मुख अच्छा पांणी।—गजउद्धार

नीलावर-सं०पु०—रंग विशेष का घोड़ा।
उ०—दडावट राजथांन तेथ आया। नीलावर घोड़ै चढिया आया। आई नै घोड़ै चढिया आलोप हुवा।—देवजी बगड़ावतां री वात

नीलियोड़ौ-भू०का०कृ०—हरा-भरा हुवा हुआ, हरित हुवा हुआ।
(स्त्री० नीलियोड़ी)

नीलुहर-सं०पु०—वस्त्र विशेष
उ०—पीतांबर चादर रक्तांबर नेत्रांबर खासरी सालूर चौल हिरां नीलुहरां जरजरी मलबारी।—व.स.

नीलूइ-सं०पु० [सं०] शाक विशेष।
उ०—नेत्र निहाली नीलूइ, नलिनी नागरवेलि। नहीं नवी नीं नींछारडी, नागफणी गुण-गेलि।—मा.कां.प्र.

नीलोतरी, नीलोती-सं०स्त्री० [सं० देशज] हरी सब्जी।
उ०—१ गुजरमलजी बोल्या, चारित्र आतमा स्रावक में नहीं होवै तो नीलोतरी रा त्याग रो कांई कांम।—भि.द्र.
उ०—२ कोई कहै भगवांन नीलोती खावा नै वरणाई है। जद स्वांमीजी बोल्या—थारै लेखै नाहर आयां तूं क्यूं न्हासै।
—भि.द्र.
रू०भे०—लीलोतरी, लीलोती, लीलोत्री।

नीलोत्पळ-सं०पु० [सं० नीलोत्पल] नील कमल।

नीलोदवा-सं०पु० [सं० नीलोद्वाह] प्रथमाब्दिक (वर्ष) पर किया जाने वाला कर्म (श्रीमाली)

नीलो-वि० [सं० नीलिनं] (स्त्री० नीली) १ आसमानी रंग का, आकाश के रंग का।
२ गहरा हरा, हरा।
उ०—१ थळ मथ्थइ जळ बाहिरी, तूं कांइ नीली जाळ। कंइ तूं सींची सज्जणे, कंइ वूठउ अग्गाळि।—ढो.मा.
उ०—२ निय नांम सीत जाळै वण नीलां, जाळै नळणी थकी जळि। पातिग तिण द्वारिका न पैसै, मँजियै विणु मन तणीं मळि।
—वेलि.
उ०—३ ऊंडा वन सूकै अवस, नीलौ वन जळ जाय। चुगल तणां पगफेर सूं, बसती ऊजड़ जाय।—बां.दा.
उ०—४ क्षणु राता क्षणु पीअळा, क्षणु नीला क्षणु सेत। चोळी चरणा पालटइ, हैडउ पूछी हेत।—मा.कां.प्र.
३ तुरंत का, ताजा (घास आदि)।
उ०—म्हारै घरै बीस बकरा बंध्या है सो आप कहो तो नीलो चारो नीरूं अनै काचौ पांणी पाऊं।—भि.द्र.
४ आर्द्र, गीला। उ०—पहिलउं नीली सूकिय मूंकिय फलहलि तीह। देखीय मोदक मुरकीय फुरकीय जीमतां जीह।
—नेमिनाथ फागु
सं०पु०—१ रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—१ मन मांहे खडिवा को उछाह आयो। नीला नै तयारी कर हाजर मंगायो।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ ओहूं ऊछट जोम अलीलो। नेजायतां तणं विच नीलो।
—सू प्र.

२ घास। उ०—स्वांमीजी दिसां जातां एक······साथे थयो। तै नै नीलां ऊपर चालतो देखी स्वांमीजी बोल्या—इतं चोखं मारग नीलां ऊपर क्यूं हालो।—भि.द्र.

रू०भे०—निलो, लीलो।

नीलो-ग्रंजन—स०पु०यो०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष जिसके पार्श्व में नीला धब्बा हो (अशुभ)

नीलो-चंपो-सं०पु०यो०—१ मध्यम आकार का एक वृक्ष विशेष जिसके नीले फूल होते हैं।

२ इस वृक्ष का फूल।

नीलो-धै'र-सं०पु०—बिलकुल नीला, एकदम हरा।

नीलो-थूथो, नीलो-थोथो-सं०पु०यो० [सं० नीलतुत्य] तांबे का नीला क्षार या लवण, तांबे की उपधातु, तूतिया। (अमरत)

नीवं, नीव—देखो 'नींव' (रू.भे.)

उ०—दादू जिहिं घर निंदा साधु की, सो घर गये समूळ। तिनकी नीवं न पाइये, नांम न ठांव न धूळ।—दादूवांणी

नीवड़णो, नीवड़वो—क्रि०स० [सं० निवर्तनं] १ निवृत्ति प्राप्त करना, संसार छोड़ना, देह त्यागना।

उ०—रयणि भुजाबळ आफळ 'रतनो'। सारां चढि नीवड़ असमांण।
मरण मरण तणो लगि चिहुं जुग। भागो फेरो कविलै मांण।
—दूदो

२ देखो 'निपटणो, निपटवो' (रू.भे.)

उ०—१ ढीली वात म ढाहि, पुन्य री कारज पड़तां। ढीली वात म ढाहि, न्याय सूधो नीवड़तां। ढीली वात म ढाहि, वहस सूं पड़ियै बोलै। ढीली वात म ढाहि, ढमकिए बाहर ढोलै। सह करै पूछि आगै सुजस. ढीली तठै न ढाहिजै। आवियै दाव ओठभतां, कुळ धरमसीह कहाइजै।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ 'बीको' बाहर नावड़चो, भुंवर 'नकोदर' हाथ। हम तुम झगड़ो नीवड़चो, नरसिंघ जाटू साथ।—नैणसी

उ०—३ तरै आपरां नूं कह्यो 'सूजो मारो' तरै सिगळै कह्यो 'आ वात मत करो, सीरोही रो धणी सुरतांण हुय नीवड़ियो, थे राव रो काको मत मारो' पिण 'विजो' किण रो कह्यो मांनै ?
—नैणसी

३ देखो 'निवड़णो, निवड़वो' (रू.भे.)

उ०—तैं रै पेट री उठै घोड़ी सूबर आई थी सो जोगियां कन्है राजू खां रा आदमी मोल लाया था। रिपिया हजार ऊंट देय लाया था। घोड़ी इसी नीवड़ी सो मांणस का सूं तारीफ करै, घोड़ी री तारीफ सूरज करै।—सूरै खींवै कांधळोत री वात

४ देखो 'नीमड़णो, नीमड़वो' (रू.भे.)

उ०—१ 'रतन' पड़ै रिणि नीवड़ै, 'ओरंग' अड़ै अरस्सि। सूर सड़ै चढ़ि रत्थ सझि, नौबति तूरि निहस्सि।—वचनिका

उ०—२ इतरै स्त्री भगवंतजी श्रीलिछमीजी नै फुरमायो। लिछमीजी देखो पलक दरियाव रो तमासो नीवड़ै छै।
—पलक दरियाव री वात

उ०—३ मांगण २ एकठा मेल नै रायसिंघ नूं कढ़ाड़ियो' थे नै 'जसै' वेई वाद कियो छै। थे स्यांणा छो, 'जसो' मोटयार छै। थे नीमरसो घोळहर था कोस ४ अळगा नीमरजो'। आ वात जाइ आदमियां रायसिंघ नूं कही। तरै रायसिंघ कह्यो—आ वात तो नीवड़ी। घणा मांगणां सुणी।—नैणसी

उ०—४ तीन भटारी नीवड़ै, मुंहतो पड़ै 'सुजांण'। फोजदार वरियांम भड़, 'रांमो' पड़ रिण-ठांण।—रा.रू.

उ०—५ भर चोमासै पालै परै, जठै तिसाया जीव। स्यातां स्यातां नीवड़ै, वरसै जळ ज्यूं पीव।—नू

नीवड़णहार, हारो (हारी), नीवड़णियो—वि०।

नीवड़िग्रोड़ो, नीवड़ियोड़ो, नीवड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

नीवड़ीजणो, नीवड़ीजवो—भाव वा०।

नीवड़ियोड़ो—भू०का०कृ०—१ निवृत्ति प्राप्त किया हुआ, संसार छोड़ा हुआ, देह त्यागा हुआ।

२ देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)

३ देखो 'निवड़ियोड़ो' (रू.भे.)

४ देखो 'नीमड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीवड़ियोड़ी)

नीवडणो, नीवडवो—क्रि०अ० [सं० निवर्तनम्] १ पृथक होना, अलग होना। (उ.र.)

२ देखो 'निपटणो, निपटवो' (रू.भे.)

३ देखो 'नीमड़णो, नीमड़वो' (रू.भे.)

४ देखो 'निवड़णो, निवड़वो' (रू.भे.)

उ०—ते द्रव्य साचउ द्रव्य जे सुपात्रि वावि, ते काव्य जे सभाइ पढिइ ते आभरण जे हीरे घडिइ, ते सोनु जे कसवट नीवडइ, ते वैद्य जे व्याधि फेडइ।—व.स.

नीवडणहार, हारो (हारी), नीवडणियो—वि०।

नीवडिग्रोड़ो, नीवडियोड़ो, नीवड्योड़ो—भू०का०कृ०।

नीवडीजणो, नीवडीजवो—भाव वा०, कर्म वा०।

नीवडियोड़ो—भू०का०कृ०—१ पृथक हुवा हुआ, अलग हुवा हुआ।

२ देखो 'निपटियोड़ो' (रू.भे.)

३ देखो 'नीमडियोड़ो' (रू.भे.)

४ देखो 'निवड़ियोड़ो' (रू.भे.)

५ देखो 'नीवड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीवडियोड़ी)

नीवतणो, नीवतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)

उ०—तुटै भैंसां गजां टलां सु हलाई नीठ हलै तोपां, आई 'वगतेस' कुमी न लाई आपांण। वेहू भुजां माथै खग्रीवाट री तुलाई वाजी, आउवै नीवत नै फौजां बुलाई आथांण।

—आऊवा ठा. बखतावरसिंघ रो गीत

नीवतणहार, हारो (हारी), नीवतणियो—वि०।

नीवतिओड़ो, नीवतियोड़ो, नीवत्योड़ो—भू०का०कृ०।

नीवतीजणो, नीवतीजबो—कर्म वा०।

नीवतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीवतियोड़ी)

नीवांण—देखो 'निवांण' (रू.भे.)

उ०—जळ नदियां थळ ऊपड़ै, थळ नई नीवांण।

—केसोदास गाडण

नीवांणो—देखो 'निवांण' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—भल आयउ भाद्रवउ नीर भरयां नीवांणो जी। गुहिर गंभीर ध्वनि गाजता, सद्गुरु करिहि वखांणो जी।—स.कु.

नीवा—देखो 'न्याव' (रू.भे.)

नीवाई—वि०स्त्री—१ उष्ण, गर्म।

२ देखो 'न्याव' (अल्पा०, रू.भे.)

नीवार—देखो 'निवार' (रू.भे.)

उ०—रूमाल के से हैनांण पनां झांकी, दूसरा ढोलिया की नीवार चोवड़ी कर नै नीची नांखी।—पनां वीरमदे री वात

नीवारणो, नीवारबो—देखो 'निवारणो, निवारबो' (रू.भे.)

नीवारणहार, हारो (हारी), नीवारणियो—वि०।

नीवारिओड़ो, नीवारियोड़ो, नीवारयोड़ो—भू०का०कृ०।

नीवारीजणो, नीवारीजबो—कर्म वा०।

नीवारियोड़ो—देखो 'निवारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० नीवारियोड़ी)

नीवालूवो-वि०[देशज] निर्लज्ज, निगोडा। उ०—रहि रहि वेहनड़ी! बच न तू रोई। ले लोटीका जळ मुख धोई। फटी रे हिया! नीवालूवा, पाथरी घड़ियो कै औघट लोह।—बी.दे.

नीवाह—देखो 'न्याव' (रू.भे.)

उ०—नीवाह लगाया, झळ निकळाया, घोम सवाया घड़ड़ाया। 'सिरियादे' धाया, करो सहाया, मिनड़ो जाया, मझ आया।

—भगतमाळ

नीवि-सं०स्त्री० [सं०] १ स्त्रियों द्वारा कमर पर लपेटी हुई धोती की गांठ।

२ इजारबंद, नाड़ा।

रू०भे०—नीवी।

नीवी-सं०स्त्री० [देशज] १ खर्च करने के बाद बची हुई पूंजी।

२ स्थायी कोश का धन।

३ देखो 'नीवि' (रू.भे.) (डि.को)

रू०भे०—नीमी।

नीवेद—देखो 'नैवेद्य' (रू.भे.)

नीवेदन—देखो 'निवेदन' (रू.भे.)

नीव्रत, नीव्रति-सं०पु० [सं० नीवृत] देश (ह.नां., अ.मा.)

नीसंक—देखो 'निसंक' (रू.भे.)

उ०—ते सवि हरि सतकारिय धारिय जिम घूमंत। ताइं ओढिय कमलिनी रमळि नीसंक भ्रमंत।—नेमिनाथ फागु

नीसत-वि० [सं० निःसत्त्व] १ कायर, डरपोक।

उ०—१ 'अरसीमेर' 'विजैसी' वळी, 'सांगउ' सिलार सलूणउ मिळी। 'जैसल' 'लखमण' लूणउ जाणि, ए नीसत नाठा निरवांणि।

—का.दे.प्र.

उ०—२ सुहड कन्हलि अणीयालां आयुध सूर किरण झलकंति। देखी सुहड सयल रोमंच्या नीसत नासीजंति।

—विद्याविलास पवाडउ

२ शक्तिहीन, निर्बल। उ०—नीरगुण नीसत नीठर, इम मूकी नर को जाइ। प्रीत मांडी छेह दीधु, यौवन दोहेलउं थाइ।

—नळ दवदंती रास

नीसरणी—देखो 'निस्रेणी' (रू.भे.)(अ.मा., डि.को., उ.र.)

उ०—१ जळ निभ्रित खाइ तणउ दुरग प्रवेस नहीं, हाथीयां ढोउ नहीं, पाखरिया रहण नहीं, नीसरणी ठाउ नहीं, भेद संभव नहीं।

—व.स.

उ०—२ धिन मुरळी महाराज जिकां या वांणी वरणी। भोसागर की नाव मुगति की है नीसरणी।—सगरांमदास

उ०—३ प्रिथु वेलि कि पंचविध प्रसिध प्रणाळी, आगम नीगम कजि अखिल। मुगति तणी नीसरणी मंडी, सरगलोक सोपांन इळ।

—वेलि.

नीसरणो, नीसरबो—क्रि०अ० [सं० निः स्रि=निस्सरणम्] १ निगत होना, जाना (उ.र.)

उ०—सूअडउ ऊवाडइ पंजरइं एक दिवसि बाहिरि नीसरइ। ऊडी राजकुंअरि आवासि आवी वइठउ तेह नइ पासि।

—विद्याविलास पवाडउ

२ व्यतीत होना।

३ पलायन करना, भागना। उ०—१ 'जैमल'-हरा जांणता जिसड़ी, साच प्रचो पूरियो सही। वढ़ पड़ियो कागदां वचांणो, नीसरियो वाचियो नहीं।—बां.दा.

उ०—२ नाठो अगन नइ राव नीसरियउ, भड मिटिया छडे माराथ। जावा न दइ किसी दिस जावइ, वळवंत तरइ पसारो बाथ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ भाटी नै तुरक मिळ नै आया। ताहरां रिणमल नू कह्यो—'तूं नीसर। जे तूं जीवतो छै तो तूं म्हारो वैर लेईस।'

—नैणसी

४ गमन करना, चला जाना। उ०—ताहरां रिणधीर पागड़ो छाड आय नै 'सतै' रै टीको कियो। रिणमलजी नूं कह्यो—'जो पटो लेवो तो आवो। 'ताहरां' रिणमलजी पटो नाकार नीसरिया। रांणे मोकळ पाछै गया। रांणै मोकळ रिणमलजी रो ऊपर कियो।

—नैणसी

५ चलना, विचरना। उ०—तद जादव अणरागिय लागिय रहिया पागि। वींटिउ प्रभु परमेसरी नीसरी न सकइ मांगि।

—नेमिनाथ फागु

६ संचरित होना, गुजरना। उ०—पणघट पर पणहार, नीर कज नीसरी। स्रीफळ तणै प्रमांण, क सोभा सीस री।

—सिववगस पाल्हावत

७ पास से होकर निकलना, गुजरना। उ०—कंचन म्रिग रूप मरीच कियो, सीता मुख आगळ नीसरियो। हेरे सिय एम उमंग हियो, कंचू कज स्रीपत नूं कहियो।—र.रू.

८ बाहर निकलना, बाहर आना। उ०—जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ वनखड दाह। जिण रित मालवणी कहइ, कुंण परदेसां जाह।—ढो.मा.

९ प्रदत्त होना, मिलना। उ०—पातिसाह जी आछो रजपूत देखि चरको डील, रोब रो मरोड़ देख नै तीनहजारी रो मुनसब दीधो, ठोड़ बताई, सिरपाव, हाथी, घोड़ो, मोतियां री माळा, किलंगी, खंजर दे विदा कियो। जागीरी नीसरी। मोटै तोल में वदियो। पातिसाही मांहै नांमजादीक हुवो।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

१० पार होना। उ०—१ तुरातुर नीसरजा भवतीर, विखै विख वीसरजा वरवीर। हमैं गुरुवायक मां बुधहार, समैं निजनायक की सुध सार।—ऊ.का.

उ०—२ ताहरां पातिसाह जी पहिलो ही घोड़ो पांणी मांहै दियो, ताहरां पातिसाहजी तरि नीसरिया।—द.वि.

११ एक तरफ से घुस कर दूसरी ओर निकल जाना, छेद कर निकल जाना।

उ०—१ वह नीसरै सिलह घट वूडै, अहिवहो जांण परां लग ऊडै।

—सू.प्र.

उ०—२ इतरै पेमसिंह चांपावत वरछी री दीन्ही सो सक्तिसिंह रै परलै पासै नीसरी।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

१२ प्रयाण करना, प्रस्थान करना। उ०—महीपति सहूनि मोकळी, तेणि गांमि गांमि (क) कोतरी। सुणी स्वयंवर नीसरि, नरपति सेना परवरी।—नळाख्यांन

१३ आभासित होना।

उ०—घुडला रुधिर झकोळिया, ढीला हुआ सनाह। रावतिया मुख झांखणां, सही-क मिळियो नाह। नाह मिळियो सही विरंग रग नीसरै। झमंतां अथी सिर जेज नहं को करै। रीसियै 'जसै' भड़ रिमां घड़ रोळियां। झूहि अस असमरां रुधिर झकबोळियां।

—हा.झा.

१४ जन्म लेना, जन्मना।

उ०—ऊंधो मुख दस मास गरभ में, असुचि तणो पिंड बाधो रे। नीसरियो जब दुख बिसरियो, मूक दीनी मरजादो रे।

—जयवांणी

१५ उत्पन्न होना, पैदा होना। उ०—किमइ निगोदह जीव नीसरइ, ववहार रासि ते जाई नय वरइ। असंख सहर तणउ करइ संहार, जीव-जीव करइ आहार।—चिहुंगति चउपई

१६ (गुप्त या दबी हुई वस्तु का) प्रकट होना।

उ०—१ तिणि नयरि जैसिंग दे राउ, नवउ खणावइ तिहां तळाव। ते खणावतां लिपि नीसरी, ते न वचाइं कुणहि खरी।

—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ इण वात रै अनंतर ही एक समय चीतोड़ में कमठांणा रो कांम चालतो कोई धातु री एक मूरति च्यारि हाथ धारण कीधां भूतळ मांहि थी नीसरी।—वं.भा.

१७ अचानक प्रकट होना, एकदम आना, निकलना।

उ०—कतराक दीहाड़ा जातां दखण दसा समंदां तट आय नीसरिया।—कल्यांणसिंह वाढ़ेल री वात

१८ प्रकट होना। उ०—१ राजा तीं सूअर रै पाछै धाय गुफा में गया। सो पाताळ लोक जाय नीसरिया।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ तरै देवी नागही कह्यो—'थे सवार रा सूता ऊठो, तरै थांहरी पाघ मांहे सूं चावळ रंगिया नीसरै तो साच कर जांणीजै।' तरै सवारै चावळ नीसरिया।—नैणसी

१९ उद्भूत होना, झरना। उ०—जठै प्रतपियो प्रगट जो, हर अवतार हमीर। नीसरतो जूहा महीं, नित निरझर नद नीर।

—बां.दा.

२० लगी हुई, मिली हुई या पैवस्त वस्तु का अलग होना, ओत-प्रोत या व्याप्त वस्तु का अलग होना।

उ०—अमरांणे में मेहुड़ै रो पेड़, मेहुड़ा पीलीजै आछो मद नीसरै।

— लो.गी.

२१ देखो 'निकळणो, निकळबो' (रू.भे.)

नीसरणहार, हारो (हारी), नीसरणियो—वि०।

नीसरिओड़ो, नीसरियोड़ो, नीसरयोड़ो—भू०का०कृ०।

नीसरीजणो, नीसरीजबो—भाव वा०।

निसरणो, निसरबो, नींसरणो, नींसरबो—रू०भे०।

नीसरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ निर्गत हुवा हुआ, गया हुआ।

२ व्यतीत हुवा हुआ।

३ पलायन किया हुआ, भागा हुआ।

४ गमन किया हुआ, चला गया हुआ।

५ चला हुआ, विचरा हुआ।

६ संचरित हुवा हुआ, गुजरा हुआ।
७ पास से होकर निकला हुआ, गुजरा हुआ।
८ बाहर निकला हुआ, बाहर आया हुआ।
९ मिला हुआ, प्रदत्त।
१० पार हुवा हुआ।
११ एक तरफ से घुस कर दूसरी तरफ निकला हुआ, छेद कर निकला हुआ, आरपार हुवा हुआ।
१२ प्रयाण किया हुआ, प्रस्थान किया हुआ।
१३ आभासित हुवा हुआ।
१४ जन्म लिया हुआ, जन्मा हुआ।
१५ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ।
१६ (गुप्त या दबी हुई वस्तु का) प्रकट हुवा हुआ।
१७ अचानक प्रकट हुवा हुआ, एकदम आया हुआ, निकला हुआ।
१८ प्रकट हुवा हुआ।
१९ उद्भूत हुवा हुआ, झरा हुआ।
२० लगी हुई, मिली हुई या पैवस्त वस्तु का अलग हुवा हुआ, ओत-प्रोत या व्याप्त वस्तु का अलग हुवा हुआ।
२१ देखो 'निकळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीसरियोड़ी)

नीसांण—देखो 'निसांण' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—१ थट्टे सामंद्रां हाथियां पाळि थाई। उभै जन्म री जांणि जम्मात आई। घरां गूजरां देवतां क्रोध धीठां। दुवै घूमरां फील नीसांण दीठां।—सू.प्र.
उ०—२ दुसमणां री नौबत तौ पुड़ फूटोड़ै वजै छै अर नीसांण (धजाआं) रा डंड तूटोड़ा हे सो हे सखी ! म्हारा पती रै देख आपांण पुणचा में वधियो।—वी.स.टी.
उ—३ जोइ जळद पटळ दळ सांवळ ऊजळ, धुरै नीसांण सोर घण-घोर। प्रोळि प्रोळि तोरण परठीजै, मंडै किरि तडव गिरि मोर।
—वेलि.
उ०—४ रोस कसीय घुमंती रमती। चुंवती मदन महारस चोळ। हालै धड़ नीसांण हूवाए। रिण पाखर करि नेवर रोळ।—दूवो
उ०—५ सोझत सै लूंट लूंट सरियारी। मळ 'गोरंभ' माहातम मांण। 'सिध' तणा ऊपर सामयांणै। नीधसिया जस रा नीसांण।
—द दा.
उ०—६ दासी हवै न देर कर, उठ तुर उतबंग आंण। नीचो पड़ण निसांण रो, नाह मरण नीसांण।—रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'निसांणी' (रू.भे.)
उ०—मन को मूठि न मांडियै, माया के नीसांण। पीछे ही पछता-हुगे, दादू खूटे बांण।—दादूबांणी

नीसांणची—देखो 'निसांणची' (रू.भे.)

नीसांण-देही—देखो 'निसांण-देही' (रू.भे.)

नीसांणबरदार—देखो 'निसांणबरदार' (रू.भे.)

नीसांणि—देखो 'निसांण' (अल्पा०, रू.भे.)

नीसांणी-सं०स्त्री०—१ २३ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें १३ व १० पर यति होती है और अंत में गुरु होता है।
वि०वि०—पृथक पृथक लक्षणों से इसके १२ भेद माने गए हैं।
२ देखो 'निसांणी' (रू.भे.)

नीसांणो—देखो 'निसांणो' (रू.भे.)

नीसांन—देखो 'निसांण' (रू.भे.)

नीसाट—देखो 'निसाट' (रू.भे.)
उ०—सहलां ऊपर सार में, नीसाटां वग्गे। खेचर भूचर देव रिक्ख, पळचर उच्छरंगे।—द.दा.

नीसार-सं०पु०—धुआं, धूम्र।
उ०—१ सौरंभ म्रिघमद गंध, सार घणसार सनेवत। नित नवसार संकेत, अगर नीसार उखेवत।—रा.रू.
उ०—२ तारागढ़ छायो रहै, सोर तणै नीसार। आवू जांणक ओपियो, वांणक बद्दळ धार।—रा.रू.

नीसास—देखो 'निस्वास' (रू.भे.)
उ—१ सूती सेज करै वेखासं, मोडइ अंग मूंकइ नीसास।
—ढो.मा.
उ०—२ परजापति ! तूं परजळेसि, संकर सिउं कैलासि ? नारायण ! तुं नहीं खमइ, जउ मूंकसि नीसास।—मा कां.प्र.

नीसासौ—देखो निस्वास' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ महळां मुरधर री तरसै अन तांई। तीजै पौ'रां तक बीजै दिन तांई। नांखै नीसासा आसा अड़ियोड़ी। पांमर पुरसां रै पांनै पड़ियोड़ी।—ऊ का.
उ०—२ नीसासै क्षिति बाहरइ, असूअडै सींचाइ। पग पाछै डग आगलै, माधव मारगि जाइ।—मा.कां.प्र.

नीहचइ-क्रि०वि०—निश्चय ही। उ०—लाख चरित्र आगइं मइं कीया। चोळी खालि दीखाल्या छइ गात। तउ पती न उवाल हो। नीहंचइ सखी ! ओलिग जाईणहार।—बी.दे.

नीहट्टणो, नीहट्टबो—देखो 'निहट्टणो, निहट्टबो' (रू.भे.)
उ०—गूजरवै पोह ग्रहै सिघ समुहो नीहट्टै। देतो परदक्षणा आव दिल्ली अरहट्टै।—नैणसी

नीहट्टियोड़ो—देखो 'निहट्टियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीहट्टियोड़ी)

नीहस—देखो 'निहस' (रू.भे.)

नीहसणो, नीहसबो—देखो 'निहसणो, निहसबो' (रू.भे.)
उ०—जमाडाढां साचवै हकाळै वळा महा जोध, नीहसै वांणासां बाढ़ गाजियो निहाव। अधायो 'उमेद' रोळै गाढ़-थभ रहै ऊभो, रोळै धाप हालियो गाढ़ै मारू राव।—हरदांन भादो

नीहसणहार, हारो (हारी), नीहसणियो—वि० ।
नीहसिग्रोड़ो, नीहसियोड़ो, नीहस्योड़ो—भू०का०कृ० ।
नीहसीजणो, नीहसीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

नीहसियोड़ो—देखो 'निहसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीहसियोड़ी)

नीहार-सं०पु० [सं० नीहारः] १ ग्रंधकार, ग्रंधेरा (डि.को.)
२ कुहरा ।
३ हिम, बर्फ, पाला ।
४ स्वप्न, सपना ।
५ देखना क्रिया का भाव । उ०—जिसउ गुरु तिसउ ग्रभ्यास, जिसी दीख तिसी सीख, जिसउ ग्राहार तिसउ नीहार; जिसउं वावियइ तिसउं लणीयइं, जिसउं कमाईयइ तिसउं प्रामीयइ ।—व.स.

नीहारी-सं०पु० [सं० निर्हारि] नगर से बाहर किसी पर्वत ग्रादि की गुफा में किया जाने वाला ग्रनशन, मरण ।

नीहाळणो, नीहाळबो, नीहालणो, नीहालबो—१ देखो 'निहारणो, निहारबो' (रू.भे.)
उ०—चीतारंती सज्जणां, नीहाळंती मग्ग । घण ऋूंफाह्-बचाहि जिउं, लांबा हूया पग्ग ।—ढो.मा.
२ देखो 'निहाळणो, निहाळबो' (रू.भे.)
नीहाळणहार, हारो (हारी), नीहाळणियो—वि० ।
नीहाळिग्रोड़ो, नीहाळियोड़ो, नीहाळयोड़ो—भू०का०कृ० ।
नीहाळीजणो, नीहाळीजबो—कर्म वा० ।

नीहाळियोड़ो—१ देखो 'निहारियोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'निहाळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नीहाळियोड़ी)

नीहाव—देखो 'निहाव' (रू.भे.)
उ०—सुकवां दीध 'सरूपसी' पीळो भड़ज प्रभाव । ग्रदत कपोळां नाळां वजै नीहाव ।—चिमनजी ग्राढ़ो

नुं—देखो 'नूं' (रू.भे.)
उ०—गुरु नुं पाटियो मोहनगारो रे, सहू संघ नइ लागै छै प्यारो रे । गुरु उपदेस घइ मुख वारु रे, भवि जीव नइ भव निधि तारु रे ।—स.कु.

नुंह—देखो 'नख' (रू.भे.)

नु-सं०पु०—१ राजा जनक, विदेह ।
२ शरीर ।
३ वन, कानन ।
४ बाल ।
५ शक्ति, बल ।
६ ग्रशक्ति, कमजोरी (एका०)
७ देखो 'नहीं' (रू.भे.)
उ०—धूसरीनइ रे दान देवा नी मति घणी, वेहू योग रे सरिखा नु हइ घर-घणी । स्त्री नइ स्रद्धा रे तु पुरुस नइ स्रद्धा नु हइ, पुरुस नइ स्रद्धा रे तु नारी स्रद्धा नु हइ ।—नळ-दवदंती रास
८ देखो 'नूं' (रू.भे.)

नुई—देखो 'नवी' (रू.भे.)

नुकताचीणी—देखो 'नुकताचीनी' (रू.भे.)

नुकताचीन-वि० [फा०] दोष ढूंढ़ने वाला, छिद्रान्वेषी ।

नुकताचीनी-सं०स्त्री० [फा०] दोष निकालने का काम, छिद्रान्वेषण ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
रू०भे०—नुकताचीणी ।

नुकत, नुकता—देखो 'नुखत, नुखता' (रू.भे.).

नुकती-सं०स्त्री० [फा० नखुदी] बेसन से छोटी-छोटी बुंदियों के रूप में बनाया हुग्रा मिष्ठान्न ।
रू०भे०—नुखती ।

नुकतौ-सं०पु० [ग्र० नुकतः] १ वह सूक्ष्म, गूढ़ व बुद्धिमतापूर्ण बात जिसे हर एक ग्रादमी ग्रासानी से नहीं समझ सके ।
२ लगी हुई उक्ति, चोज भरी बात, चुटकला ।
३ दोष, त्रुटि, ऐब ।
४ बिन्दी, बिन्दु ।
५ विशेष समय या ग्रवसर जब धन खर्च करने की प्रथा है । (विवाह, मृत्यु-भोज ग्रादि ।) उ०—थोड़ी देर ग्रठीनै-बठीनै-री वातां हुयां रै बाद गोपाळ मीठास सूं पूछियो—'थांरै माथै कित्तोक करजो है ?' 'ग्रंदाजन कोई तीन सौ साढ़ी तीन सौ रौ ।' 'कंई मायरो-मोसेरो ग्रथवा नुकतौ काढ़ियो हो ?' 'नहीं, ग्रायै महीनै पचीस तीस टूटता रवै है । इण तरै साल भर में इत्ती रकम माथै हुयगी' ।—वरसगांठ

नुकरी-वि० [ग्र० नुकरः] १ चांदी के समान श्वेत रंग का (घोड़ा)
उ०—सुर-काज पिरोजीय केहरड़ा सज, चपहरी महुवा चकरी । सदळी भरड़ाज भसमीयै चीग्रस, नील पीळा गुरड़ा नुकरी ।
—किसनौ दधवाड़ियौ
२ श्वेत, सफेद ।
सं०स्त्री०—१ श्वेत रंग की घोड़ी ।
२ चांदी ।

नुकरौ-वि० [ग्र० नुकरः] (स्त्री० नुकरी) सफेद रंग का (घोड़ा)
उ०—कुमेत नीला समंदां मकड़ा सेली समंद भूवर बोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळा नुकरा केला महुवा धूमरा हरिया लीला गुलदार पंचकल्यांण पवण गुरड़ संजाब संदळी सीहा चकवा ग्रबलख सिराजी । फेर ही ग्रनेक रग रा घोड़ा तयार कीजै छै ।
—रा.सा.सं.
सं०पु०—१ रजत, चांदी ।
२ घोड़े का सफेद रंग ।
३ छोटा टुकड़ा, खण्ड, टूक । उ०—नुकरा नांन्हां निपट खरळ कर

पीवै खोटौ। पैलै भव री पाप महा ऊघड़ियौ मोटौ।

—ऊ.का.

नुकळ, नुकल-सं०पु० [अ० नुक्ल] १ वह वस्तु जो शराब या अफीम लेने के बाद मुंह के स्वाद को ठीक करने के लिए खाई जाती है, गजक (डिं.को.)

उ०—१ कंवर वीरमदे गैला का साथ्यां नै अमल हाथ सूं देवै छै। घणा मनमेळू छै। ज्यां की पण मनवारयां हुवै छै। ऊगा अमलां मैं मिसरी हर विदामां री नुकळां करै छै, हर घोड़ां तजवीजां वांदीजै छै।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ सोनै रूपै जड़ाव के तूंग ऐराक फूल सूं भरवाए। रस के पूर सूळूं की नुकल बांटि प्याला फिरवाए।—सू.प्र.

रू०भे०—नुकुल।

२ देखो 'नकुळ' (रू.भे.)

नुकळौ—देखो 'नकुळ' (अल्पा०, रू.भे.)

नुकस—देखो 'नुक्स' (रू.भे.)

नुकसांण, नुकसांन-सं०पु० [अ० नुकसान] १ हानि, घाटा।

उ०—१ ठाकर री नीती ही के याद आयां दै उण रौ भलौ अर नहीं दै उण रौ ई भलौ। इण सुभाव सूं ठाकर घणौ नुकसांण में रैवतौ।—रातवासौ

उ०—२ दारू परदार दोहूं, है तन धन री हांण। नर सांप्रत देखौ निजर, नफौ ग्रोर नुकसांण।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ, पहुचणौ, पहुंचाणौ।

२ ह्रास, कमी।

३ बिगाड़, खराबी, विकार।

४ खराबी, दोष।

नुकीलौ-वि० [फा० नोक] (स्त्री० नुकीली) १ जो छोर की ओर लगातार पतला होता गया हो, जिसमें नोंक निकली हुई हो, नोंकदार।

२ सुंदर ढब का, सजीला, तिरछा, बांका।

नुकुळ—१ देखो 'नकुळ' (रू.भे.)

२ देखो 'नुकुळ' (रू.भे.)

नुकुळौ—देखो 'नकुळ' (रू.भे.)

नुक्कड़-सं०पु० [फा० नोक] छोर, अंत, कोना।

नुक्स-सं०पु० [अ०] ऐब, दोस, खराबी, त्रुटि, कसर।

रू०भे०—नुकस।

नुखत, नुखता-सं०स्त्री० [अ० नुख्त:] ऊँट के नाक में फँसाए हुए लकड़ी के टुकड़े से जुड़ी हुई वह रस्सी जो दूसरी ओर से हांकने वाले के हाथ में रहती है। उ०—मजबूत थूंम डाचा मगर, जियां पूंछ करवत जिसा। झोखियां सिंधु नुखतां झटकि, अंध कंध राकस इसा।

—सू.प्र.

नुखती—देखो 'नुकती' (रू.भे.)

नुखतौ—देखो 'नुकतौ' (रू.भे.)

उ०—जद ए कह्या—भीखणजी ! थे वैरागी वाजौ नै इण मोहला में नुखतौ थयौ तिण रा घर सूं पकवांन लाया।—भि.द्र.

नुखत्त, नुखत्ता—देखो 'नुखत, नुखता' (रू.भे.)

उ०—निठानिट्ट वैसाड़ झाड़ै नुखत्तां। खरा भारिया भार पूतारि खित्ता। दिया भारिसा बोझ दावै विदावै। कमाळां तणी पीठ डेरा कसावै।—रा.रू.

नुगट—देखो 'निगोट' (रू.भे.)

नुगणौ—देखो 'निगुण' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० नुगणी)

नुगतौ—देखो 'नुकतौ' (रू.भे.)

उ०—१ नुगतौ बीतण रै बाद हिसाव-किताब हुग्रो। सतरै कळसी घांन सेठां नै भराय नै बाकी रा आठ सौ रुपियां रौ खातौ पाड़ नै चौधरी अंगूठौ चेप दियौ।—रातवासौ

उ०—२ कहै दास सगरांम हमै तूं हुग्रो पुगतौ। किया मोकळा कांम राख खाविंद रौ नुकतौ।—सगरांम

नुगरौ-वि० [सं० निगुरु] (स्त्री० नुगरी) १ जिसने गुरु से ज्ञान न लिया हो। उ०—१ मेरे परतीत तुमारी, वचनां किया निवरा। नुगरा नर री च्यारूं दिस फौजां, छाय रही चौफेरा। आप मेहर कर क्रिपा कीजै, प्रांण बचावौ मेरा। गुरां रा वचन राख सिख हिरदै, अंतर होय उजेरा।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ० —२ देव उदासी स्वरग में, कर कर मन में चित। जम हसता है नरक में, आयौ नुगरौ मित।—स्री हरिरांमजी महाराज

२ कृतघ्न। उ०—१ खीमरा खारौ देस, मीठा बोला मानवी। नुगरा किसा सनेह, जेठी रांणा बोल्या नहीं।

—जेठवा रा सोरठा

उ०—२ आच लियां उतमंग, आयस दीठौ आवतौ। रावत झरडा रंग, सत्रु नुगरौ साजियौ।—पा.प्र.

रू०भे०—निगरौ, निगुरौ, नुगुरौ।

नुगुण—देखो 'निगुण' (रू.भे.)

उ०—नुगुण मांनव नीच, सुगुणां रै मन संकवै। बुगलां रै मन बीच, भावै हंस न भेरिया।—महाराजा बळवंतसिंह, रतलाम

नुगुणौ—देखो 'निगुण' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० नुगुणी)

नुगुरौ—देखो 'नुगरौ' (रू.भे.)

उ०—तांणै तूटै तंत्र, स्राप दियौ जद सूं इनूं। मनै न कुळना मंत्र, 'बूढ़ौ' स्राप नुगुरौ विवध।—पा.प्र.

(स्त्री० नुगुरी)

नुचणौ, नुचबौ-क्रि०अ० [सं० लुंचन] १ झटके के साथ उखड़ना, एकदम खिंचना।

२ नाखून आदि से छिलना, खरोंचा जाना।

नुचणहार, हारो (हारी), नुचणियो—वि०।

नुचिश्रोड़ो, नुचियोड़ो, नुच्योड़ो—भू०का०कृ०।

नुचीजणो, नुचीजबो—भाव वा०।

नुचियोड़ो-भू०का०कृ०—१ झटके के साथ उखड़ा हुआ, एकदम खिंचा हुआ।

२ नाखून आदि से छिला हुआ, एकदम खरोंचा गया हुआ।

(स्त्री० नुचियोड़ी)

नुति, नुती-सं०स्त्री० [सं० नुतिः] १ स्तुति, वंदना (डिं.को.)

२ पूजा।

नुमाइस-सं०स्त्री० [फा० नुमाइश] १ नाना प्रकार की वस्तुओं का परिचय और कुतूहल के लिए एक स्थान पर दिखाया जाना, प्रदर्शनी।

२ दिखाने या प्रकट करने का भाव, दिखावा, दिखावट, प्रदर्शन।

३ सजधज, ठाटबाट, तड़क-भड़क।

नुमाइसगाह-सं०स्त्री० [फा० नुमाइश-गाह] वह स्थान जहां नाना प्रकार की विशिष्ट और अद्भुत वस्तुएं कुतूहल या प्रदर्शन हेतु रखी जायं।

नुमाइसी-वि० [फा०] १ जिसमें केवल ऊपरी तड़क-भड़क हो, जिसमें कुछ सार न हो, जो किसी काम का न हो, बिना प्रयोजन का।

२ जो केवल दिखावट के लिए हो, दिखौवा।

नुमु—देखो 'नवम' (रू.भे.)

उ०—माळी कंदोई कुंभार, गांछा मरदनीश्रा सूत्रधार। भड़साइत तबोळी जांणि, नुमु सोनार तूं हईइ श्रांणि।—नळ-दवदंती रास

नुल-सं०पु०—नेवला, नकुल (व.स.)

नुसखो-सं०पु० [अ० नुसखा] वैद्य या चिकित्सक द्वारा रोगी के लिए औषधि और सेवन विधि लिखा हुआ पत्र या चिट।

नुहालो, नुहेलो—१ देखो 'नवेलो' (रू.भे.)

२ देखो 'नवीन' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ नो लाख कटक नोघण तणां, चहै जिसी विधि सिध चड़ी। विरवड़ी हाट कुम्मेर श्रो, किनां नुहालो कूलड़ी।

—हिंगळाजदांन कवियो

उ०—२ ए मा, चंप बाग में हींडो घला दे, तीज नुहेली आई। ए मा, और सहेल्यां रै घर रो हींडो, म्हारै हींडो नाही।

—लो.गी.

(स्त्री० नुहाली, नुहेली)

नूं-प्रत्य०—१ कर्म और सम्प्रदान का विभक्ति प्रत्यय, को।

उ०—१ लीहर परहर अवर नूं, मत संभरै अयांण। तरु छंडै लागी लता, पत्थर चे गळ श्रांण।—ह.र.

उ०—२ भगत तुम्हारा सहि भला, भिळै अरिजण भीम। भगति दीयै जो भूधरा, तो तो नूं तसळीम।—पी.ग्रं.

उ०—३ राजा रांणी नूं कहइ, वात विचारउ जोइ। आज विखइ यां दीकरी, हांसउ हसिसी लोइ।—ढो.मा.

उ०—४ सुण नवकोटां सोवियां, असुरां कियो उछाह। खबर गई अजमेर नूं, सुणियो अवरंग साह।—रा.रू.

उ०—५ दे नंह सैंधा नूं दगो, अहै कुतो ही ग्यांन। देवै सैंधा नूं दगो, साह करै सनमांन।—बां.दा.

२ तृतीया या करण तथा पंचमी या अपादान का विभक्ति प्रत्यय, से।

उ०—एहिवी वारता रायि करि छि, एटलि आव्यु मुंनि। ब्रिहदस्व तां नाम तेहि नूं, हरख्यो भूपति मंनि।—नळाख्यांन

३ चतुर्थी या संप्रदान का विभक्ति प्रत्यय, लिए।

उ०—ताहरां कह्यो—'राज! पांणी मांहि किहांण नूं आऊं।

—सयणी री वात

४ देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—मुझ वैण त्रिया तुं गणो मत नुं, परणाउं अवै न महीपत नूं। कहजे रवि जैचंद रै कुळ रो, फिर लाऊं अ भूप अठै थळ रो।

—पा.प्र.

५ देखो 'नख' (रू.भे.)

रू०भे०—नुं, नु, नू।

नूंई—देखो 'नवी' (रू.भे.)

नूंजण—देखो 'नूंजणो' (मह०, रू.भे.)

नूंजणियो-वि०—१ दुहने के लिए गाय के पिछले पैरों को बांधने वाला।

२ देखो 'नूंजणो' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—नवजणियो, नांजणियो, नूजणियो, नैजणियो, नैनणियो, नौंजणियो, नोजणियो।

नूंजणी-सं०स्त्री०—देखो 'नूंजणो' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—नंद री धेन नै लेहतो नूंजणी। दोहतो वैसतो वीछलै दोहणी।

—रुखमणी हरण

नूंजणो-सं०पु० [सं० न्युब्जनः] १ गाय दुहते समय उसके पिछले पैरों को बांधने की रस्सी।

२ गाय दुहते समय उसके अगले पैर से बछड़े को बांधने की रस्सी।

रू०भे०—नवजणो, नांजणो, नूजणो, नैजणो, नैनणो, नौंजणो, नोजणो।

अल्पा०—नवजणियो, नवजणी, नांजणियो, नांजणी, नूंजणियो, नूंजणी, नूजणियो, नूजणी, नैजणियो, नैजणी, नैनणियो, नैनणी, नौंजणियो, नौंजणी, नोजणियो, नोजणी।

मह०—नवजण, नांजण, नूंजण, नूजण, नैजण, नैनण, नौंजण, नोजण।

नूंजणो, नूंजबो-क्रि०स० [सं० न्युब्जनम्] १ दुहने के लिए गाय के पिछले पैरों को रस्सी से बांधना।

२ गाय दुहते समय बछड़े को उसके अगले पैर से बांधना।

३ बांधना।

नूंजणहार, हारौ (हारी), नूंजणियौ—वि०।

नूंजवाड़णौ, नूंजवाड़बौ, नूंजवाणौ, नूंजवाबौ, नूंजवावणौ, नूंजवावबौ, नूंजाड़णौ, नूंजाड़बौ, नूंजाणौ, नूंजाबौ, नूंजावणौ, नूंजावबौ—प्रे०रू०।

नूंजिप्रोड़ौ, नूंजियोड़ौ, नूंजयोड़ौ—भू०का०कृ०।

नूंजीजणौ, नूंजीजबौ—कर्म वा०।

नवजणौ, नवजबौ, नाजणौ, नाजबौ, नूजणौ, नूजबौ, नैंजणौ, नैंजबौ, नैंनणौ, नैंनबौ, नौंजणौ, नौंजबौ, नोजणौ, नोजबौ—रू०भे०।

नूंत—देखो 'नैंत' (रू.भे.)

नूतणो—देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—मीड़ं पलटांगा भिड़ज, नीड़ं घण नाळ र। नाह! इसा घर नूतणा, आप घरां जळ दे'र।—वी.स.

नूंतणौ, नूंतबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)

उ०—१ कजाकणि डाकणि काढ़ि कळेज। जिमावत साकणि जूह अजेज। चुडावळि नूंतत भूत पिसाच। अछे रणताळ पखाळत आच।—मे.म.

उ०—सीप भर रोळी थाळी भर मोती, मेरा भतई नूंतण म्हे गई जी।—लो.गी.

नूंतणहार, हारौ (हारी), नूंतणियौ—वि०।

नूंतवाड़णौ, नूंतवाड़बौ, नूंतवाणौ, नूंतवावौ, नूंतवावणौ, नूंतवावणौ नूताड़णौ, नूंताड़बौ, नूताणौ, नूताबौ, नूंतावणौ, नूंतावबौ—प्रे०रू०।

नूंतिप्रोड़ौ, नूंतियोड़ौ, नूंत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नूंतीजणौ, नूंतीजबौ—कर्म वा०।

नूंतार—सं०पु०[सं० निमंत्रणम्] १ निमंत्रण देने वाला.

२ निमंत्रित व्यक्ति।

नूंतारौ—वि० [सं० निमन्त्रित] (स्त्री० नूंतारी) निमंत्रित।

नूंतियार—देखो 'निमन्त्रीहार' (रू.भे.)

नूंतियोड़ौ—देखो 'निमन्त्रियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नूंतियोड़ी)

नूंतौ—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—तुळा रूपा री पांच हुई जिणरी विगत—रूपा री तुळा १, राणा जी री राणी परमार जी कीवी। रूपा री तुळा १ ऊदावतजी टूंक तोडा री राजा रामसिंघ भीम री जिण री मा नूंतै आया उवां कीवी। रूपा री तुळा १ सोदै बारट केहरीसिंघ खीमराजोत कीवी। रूपा री तुळा १ पुरोहित गरीबदास रै बेटै किवी।

—बां.दा.ख्यात

२ देखो 'नैंत' (अल्पा०, रू.भे.)

नूंथर, नूंथोर—सं०स्त्री० [सं० नख+राज०थूर] नाखून में गड़ी फांस (शेखावाटी)

नूंद—सं०स्त्री०—१ हाथी के लिए भोजन सामग्री।

२ सामान।

३ भोज, गोठ।

अल्पा०—नूंदडली।

नूंदडली—देखो 'नूंद' (अल्पा०, रू.भे.)

नूंदणौ, नूंदबौ—क्रि०स० [देशज] स्मरणार्थ वही में लिखना, दर्ज करना।

२ अंकित करना।

३ नकल उतारना।

४ 'नूंद' की सामग्री तोलना।

नूंदणहार, हारौ (हारी), नूंदणियौ—वि०।

नूंदाड़णौ, नूंदाड़बौ, नूंदाणौ, नूंदाबौ, नूंदावणौ, नूंदावबौ—प्रे०रू०।

नूंदिप्रोड़ौ, नूंदियोड़ौ, नूंद्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नूंदीजणौ, नूंदीजबौ—कर्म वा०।

नूंदरी-वही—सं०स्त्री०यौ० [देशज] १ वह वही जिसमें खास-खास बातें दर्ज की जाती हों, अंकित करने की वही।

२ नकल रखी जाने वाली वही।

नूंदियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ स्मरणार्थ वही में लिखा हुआ, दर्ज किया हुआ।

२ अंकित किया हुआ।

३ नकल उतारा हुआ।

४ नूंद की सामग्री तोला हुआ।

(स्त्री० नूंदियोड़ी)

नूंन—१ देखो 'नूनी' (मह०, रू.भे.)

२ देखो 'न्यून' (रू.भे.)

नूंनकड़ौ, नूंनकी—देखो 'नूनी' (अल्पा०, रू.भे.)

नूंनता—देखो 'न्यूनता' (रू.भे.)

नूंनी—देखो 'नूनी' (रू.भे.)

नूंपुर—देखो 'नूपुर' (रू.भे.)

उ०—कडि मणि मेहल नूंपुर रूप रहावइं पाय। पहरणि सेत्र पटउलीय कूलीय पांन न माइ।—नेमिनाथ फागु

नूंर—देखो 'नूर' (रू.भे.)

उ०—खागां नयण खतंग मझ, काजळ सार करूर। चीतालंकी चतुर रै, वदन्न वरसै नूंर।—पनां वीरमदे री वात

नूंवौ—देखो 'नवौ' (रू.भे.)

उ०—'ए मा! पटाका नहीं तौ वै सरप वाळी टिकड़ियां-ई दिराय दै।' 'ना वेटी! नूंवै दिन घर में सरप रा सुगन कुण करै?'

—वरसगांठ

(स्त्री० नूंवी)

नूंहतणौ, नूंहतबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)

उ०—तथा दोय जणां रै घणा काळ री वैर हुंतो। पछै हेत कीधो। तिण नै नूंहती नै जीमावा घरै ले गयो।—भि.द्र.

नूंहतणहार, हारौ (हारी), नूंहतणियौ—वि०।

नूंहतिप्रोड़ौ, नूंहतियोड़ौ, नूंहत्योड़ौ—भू०का०कृ०

नूंहतीजणौ,, नूंहतीजबौ—कर्म वा० ।
नूंहत्योड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नूंहतियोड़ी)
नू-सं०पु०—१ स्त्रियों के पांव का आभूषण, नूपुर ।
२ कंठ ।
३ बाण, तीर, शर ।
४ नित्य ।
५ पति-पत्नी, दम्पति ।
६ स्त्री, नारी (एका०)
७ देखो 'नूं' (रू.भे.)
८ देखो 'नहीं' (रू.भे.)
उ०—आजि चलावै देव हइ । वचन हमारउ मांनौ नू मांन । कर जोड़ दुज वीनमैं । थे घरि चालो, नू लावो हो वार ।—बी.दे.
नूजण—देखो 'नूंजणौ' (मह०, रू.भे.)
नूजणियौ—१ देखो 'नूंजणियौ' (रू.भे.)
२ देखो 'नूंजणौ' (अल्पा., रू.भे.)
नूजणी-सं०स्त्री—देखो 'नूंजणौ' (अल्पा०, रू.भे.)
नूजणौ—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे.)
नूजणौ, नूजबौ—देखो 'नूंजणौ, नूंजबौ' (रू.भे.)
नूजणहार, हारौ (हारी), नूजणियौ—वि० ।
नूजिओड़ौ, नूजियोड़ौ, नूज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
नूजीजणौ, नूजीजबौ—कर्म वा० ।
नूत-सं०पु० [सं० चूत] १ आम्र, आम (अ.मा.)
उ०—असित, सकळ, चळ सुथिर, गुप्त, अंगिरात, अक्रमत । सुरभि व्योम, वन, अयन, नूत, पव्वय सुव्वंध, थित ।—र.ज.प्र.
२ देखो 'नैंत' (रू.भे.)
नूतणौ, नूतबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ (रू.भे.)
उ०—पातव रै नूतियो पधारै, बळ धारै भुज बिरद विसेस । कीधो ज तूं अभनमा 'कूंभा', सुकव बिरद गिरमेर सुरेस ।
—किसनौ आढौ
नूतणहार, हारौ (हारी), नूतणियौ—वि० ।
नूतिओड़ौ, नूतियोड़ौ, नूत्योड़ौ—भू०का०कृ० :
नूतीजणौ नूतीजबौ—कर्म वा० ।
नूतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नूतियोड़ी)
नूतन-वि० [सं०] १ नवीन, नया । उ०—आया रण कांम जिका उमराव । पाया तन नूतन प्रांण पसाव । जिकां धजराज पचीस जिवाय । जोई छवि स्रोण नदी तट जाय ।—मे.म.
२ ताजा, हाल का ।
३ अनोखा, विलक्षण, अपूर्व । उ०—वैराट विद्ध, सानन्द सिद्ध । घट बढ़न घाट, नूतन निराट ।—ऊ.का.
रू०भे०—नवतन, नौतन ।
नूतरणौ, नूतरबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)
उ०—कठड़े ओ भैरव कठड़े लागी इती वार, सगळा ओ भैरव सगळां ओ पैला नूतरिया ।—लो.गी.
नूतरणहार, हारौ (हारी), नूतरणियौ—वि० ।
नूतरिओड़ौ, नूतरियोड़ौ, नूतरचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
नूतरीजणौ, नूतरीजबौ—कर्म वा० ।
नूतरियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नूतरियोड़ी)
नूतारा-सं०स्त्री०—जाति विशेष । उ० गांछा छीपा परियटा सुइ ताई तेली मोची सतूआरा बंधारा चीतारा नूतारा कोळी पंचोळी ।
—व.स.
नूतारो-सं०स्त्री० (स्त्री० नूतारी) नूतारा जाति का व्यक्ति ।
नूतियार—देखो 'निमत्रीहार' (रू.भे.)
नूतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नूतियोड़ी)
नूतो—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)
२ देखो 'नैंत' (रू.भे.)
नून—१ देखो 'नूनी' (रू.भे.)
२ देखो 'न्यून' (रू.भे.)
उ०—१ अस्थि आप्यां दधीचि निज, मांस सिबि राजांन । ते थकी तूं नून नथी, चीतवी जुवो ग्यांन ।—नळाख्यांन
उ०—२ नून विसेस समांन भाव तिहुं, प्रकृति मांयं बंध्यो री । भेद अनंता तिरगुण माहीं, दुख सुख बहुत खंद्यो री ।
—स्वो सुखरांमजी महाराज
नूनकड़ी, नूनकी—देखो 'नूनी' (अल्पा०, रू.भे.)
नूनड़—देखो 'नूनी' (मह. रू.भे.)
नूनता, नूनताई--देखो 'न्यूनता' (रू.भे.)
नूनवायो—देखो 'निवायो' (रू.भे.)
नूनी-सं०स्त्री० [देशज] लिगेंद्रिय—विशेषतः बच्चों की ।
रू०भे०—नूंनी ।
अल्पा०—नूंनकड़ी, नूंनकी, नूनकड़ी, नूनकी ।
मह०—नूंन, नूंनड़, नून, नूनड़ ।
नूप-वि० [सं० अनूप] अद्भुत, अनोखा, अपूर्व, अनूप ।
उ०—१ रांम राजै रसा रूप रे, नेतबंधी वणै नूप रे । 'सीत' वाळौ पती साच रे, रे मना जेण हूं राच रे ।—र.ज.प्र.
उ०—२ जिण जोय रद छबि हुवै जाहर, कोट कांम कांम । सुत भूप दसरथ नूप सोभा, रूप रवि कुळ रांम ।—र.ज.प्र.
नूपर, नूपुर-सं०पु० [सं० नूपुर] १ स्त्रियों के पांवों में धारण करने का आभूषण । उ०—१ देहरि दंडकळस आंमल सारा सोना तणा जळकइ । जळदिरिणि कुळवधू तणै पगि नूपुर खळकइं ।
—व.स.

उ०—२ धुनि अदंग धुधकटस, धुकट धुधुकटस धुकट धुर। झणणणणणण जंत्र झणकि, प्रगट झिम झिम धुनि नूपुर।
—सू.प्र.

उ०—३ चरणे चांमीकर तणा चंदाणणि, सज नूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किया पहराइत, कमळ तणा मकरंद कजि।—वेलि.

२ एक प्रकार का बाजा (डि.को.)

३ प्रथम गुरु के गणगण के प्रथम भेद का नाम। (डि.को.)

रू०भे०—नेपुर।

नूर-सं०पु० [अ०] १ कांति, दीप्ति, श्री, शोभा, आभा।

उ०—१ नूर सूर सम वदन निहावै। आपै मात रतन घन आवै। सहर गळी प्रत गळी सुहावै। गुळ वांटै त्रिय मंगळ गावै।—रा.रू.

उ०—२ धरपति लखधीर हेल हमीर, बावन बीर दुबाह। निरमळ मुखि नूर परगह पूर, सांमत सूर सगाह।—ल.पिं.

उ०—३ हिंदवा पाट रा ओट 'जसराज' हर, दळां घण थाट रा मोड़ दरसै। आट रा दुयण खतवाट रा ईखतां, वदन खतवाट रा नूर वरसै।—आईदांन सोदो

मुहा०—नूर वरणो, नूर वरसणो—सौंदर्य टपकना, बहुत सुंदर लगना।

२ प्रकाश, रोशनी।

उ०—तुही भेख में सूर में नूर भासै। तुही मेह कादंबणी चन्द्रमासै। दिपै तू घटा में छटा द्योत द्वारा। धपै तू जटा में तटा गंगधारा।
—मे.म.

३ तेज। उ०—स्री रघुनाथ अनाथ नाथ सुज, वेढ सत्र दसमाथ विहंडण। जाहर मही जहूर सुजस जिण, महपत नूर सूरकुळ-मंडण।—र.ज.प्र.

४ शौर्य। उ०—जिम कायर थरहरै, तिम तिम फैल नूर। जिम-जिम बगतर ऊबड़ै, तिम तिम फूलै सूर।—वी.स.

५ जोश। उ०—'वखतो' 'मांन' विन्है रण वेळा, खगै सु भावत होळी खेळा। सूरां आपण नूर सवाई, 'मांन' तणो उर खळां घमाई।—रा.रू.

६ सच्चिदानंद, परब्रह्म, ईश्वर।

उ०—१ सतगुरु सवद वडा कुरसांणी, जिण तिण लख्या न जावै। जो लखसी कोई संत सूरमा, नूर में नूर समावै।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ दादू मन माळा तहं फेरिये, जहं प्रीतम वैठे पास। आगम गुरु थें गम भया, पाया नूर निवास।—दादूवांणी

७ सौंदर्य, सुन्दरता, लावण्य।

उ०—जणणी जण एहड़ा जणे, कै दाता कै सूर। नातर रहजै बाझड़ी, मती गमाजै नूर।—अज्ञात

८ रूप, स्वरूप, शक्ल।

उ०—१ क्रोधी कपटी पूर, भूंडो दीसै नूर। धरम रो द्वेसियो ए, मच्छर विसेसियो ए।—जयवांणी

उ०—२ तरै जोगी देरावर आयो। देवराज पहलां हीज जांणियो—'ओ कूंपा वाळो जोगी छै।' तरै निलाड़ पिण दीठी, मुंहडा रो नूर अटकळियो। देवराज आय सांम्है पगै लागो।—नैणसी

९ नेत्र की वह शक्ति जिससे दिखाई देता है।

उ०—आवो जी आवो जी म्हारा सुखड़ा रा सूर। आवो जी आवो जी म्हारा नयणां रा नूर।—मी.रां.

१० प्रतिबिंब, बिंब। उ०—१ पारब्रह्म का सब्द विचारो, पाप पुण्य सूं न्यारा। सब में नूर उसी का जोवो, तो भेटो किरतारा।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ मांनुस देह नूर नरहर को, निगे करै निरखैलो। रोम रोम में साहब सामळ, गुरु से गुरुगम लहेलो।
—स्री सुखरांमजी महाराज

११ कीर्ति, प्रतिष्ठा, सुयश। उ०—धरा जंगळ देस सुब्रम, अव-तरी इळ आय। चारणां ब्रण नूर चाढ़ण, 'मेह' घर महमाय।
—खुसाळ

रू०भे०—नूंर।

अल्पा—नूरो।

नूरतो—देखो 'नवरात्र' (रू.भे.)

उ०—प्रमदा ! ताहरुं प्रेम-जळ, ऊंडेरुं अवगाहासि। आसो-केरां नूरतां, नित नित ऊठी नाहासि।—मा.कां.प्र.

नूरियो—देखो 'नोरियो' (रू.भे.)

नूरवांणी, नूरांणी-सं०स्त्री [अ० नूरानी] १ प्रकाश, चमक, दमक।

उ०—वंकै भौह विसाळ भाळ, नीलावट नूरांणी। नैण विराजै चोळ रंग, मुख अच्छा पांणी।—गजउद्धार

२ रूप, सौंदर्य, लावण्यता।

३ मुख की आकृति, भाव।

उ०—करड़ा होय नै बोल्या—म्है तो चरचा करवा आया नै थे दिसां जावो छो। उणां री नूरांणी देखनै स्वांमीजी बोल्या—आज तो थे कजिया रै मतै आया दीसो छो।—भि.द्र.

नूरी-वि०—प्रकाशमान, उज्ज्वल। उ०—दादू नूरी दिल अरवाह का, तह देख्या करतारं। तह सेवक सेवा करै, अनंत कळा रवि सार।
—दादूवांणी

नूरो—१ देखो 'नूर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ सब में नूर निरतर देखो, अलख अखंडी नूरा। उलट-पुलट घट प्याला पीजो, होय भरम करम सब दूरा।
—स्री हरिरांमजी महाराज

२ देखो 'नोहरो' (रू.भे.)

उ०—हद वेहद वांणी नहिं, खांणी, सुंन असुंन नहीं धारा। जोत अजोत निरमळ नहिं नूरा, स्वप्रकास भरपूरा।
—स्री हरिरांमजी महाराज

नूवो—१ 'नवमो' (रू.भे.)

२ देखो 'नवो' (रू.भे.)

नूवौ—देखो 'नवौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नूवी)

नूह–सं०पु० [अ०] शामी या इबरानी मतों के अनुसार एक पैगम्बर।

नेंडौ—देखो 'निसंडौ' (रू.भे.)

ने–सं०पु०—१ कुत्ता, स्वान।
२ अयन।
३ नेत्र, चक्षु।
४ छड़ी (एका०)
५ देखो 'नं' (रू.भे.)

नें—देखो 'नेस' (४,५, रू.भे.)

नेअटौ–सं०पु० [देशज] १ जलाशय में उसकी क्षमता से अधिक जल आ जाने पर बाहर निकलने वाला जल।
२ वह स्थान जहां से जलाशय में अधिक आने वाला जल बाहिर निकलता हो।
३ देखो 'नेठौ' (रू.भे.)
रू०भे०—नेहटौ, नेहठौ।

नेअढौ—देखो 'निसंडौ' (रू.भे.)

नेअर—देखो 'नेवर' (रू.भे.)
उ०—करइ स्रंगार सार गळइ हार, चरणे नेअर ना झमकार। चित्रांलंकिइं ति कुच कठोर, पडंती रसीआं चित्त चकोर।
—प्राचीन फागु-संग्रह

नेउमौं–वि० [सं० नवति] (स्त्री० नेउमीं) जो नवासी के बाद पड़ता हो, नव्वेवां।

नेउर—देखो 'नेवर' (रू.भे.)
उ०—१ हंसा-गति तणी आतुर थ्या हरि सूं, वाघाऊआ जेही वहै। सूंधावास अनै नेउर सद, क्रमि आगै आगमन कहै।—वेलि.
उ०—२ गुण देखी राचइ स को, अवगुण राचइ न कोई रे। हार सको हियड़इ धरइ, नेउर पायतळि होय रे।—स.कु.
उ०—३ हार निगोदर बहिरखा, सखी नेउर रणझणकार कि।
—कां.दे.प्र.
उ०—४ खुरां नेउरां पाखरां नाद खुल्लै। तिकां वाह री इंद्र रै चाह तुल्लै।—वं.भा.

नेउरिया—देखो 'नौ'रा' (अल्पा०, रू.भे.)

नेउरियौ—देखो 'नौरियौ' (रू.भे.)

नेउरी—देखो 'नेवर' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ टोळै टोळै पडइ करांखि, नीर प्रवाह वहइ जिम आंखि। एक फाडइ पहिरण सूंथणी, पाए नेउरी भाजइ घणी।
—कां.दे.प्र.
उ०—२ नद्द करंती नेउरी, कटि मेखळि उरि हार। कंठि निगोदर पदिकडी, चंपकळी अतिसार।—मा.कां.प्र.

नेउल—देखो 'नकुल' (रू.भे.)
उ०—सिंघ हिरण हिळ-मिळ रहै हो, नेउल भेळा नाग। चित्रकूट रघुवर रमै हो, जिण रा मोटा भाग।—गी.रां.

नेऊ–वि० [सं० नवति] जो सौ से दस कम हो, जो योग में नवासी और एक हो, नव्वे।
सं०पु०—पचास और चालीस की संख्या के योग का अंक (९०)
रू०भे०—नवे, नव्वे, नवे, नवै, निऊ, निवे, निव्वे, निवैं, नेवैं।

नेऊंक–वि०—नव्वे के लगभग।
रू०भे०—नेवैंक।

नेऊमौं–वि० (स्त्री० नेऊमीं) नव्वे वां।
सं०पु०—नव्वे वां वर्ष।
रू०भे०—नेवौ।

नेऊर—देखो 'नेवर' (रू.भे.)

नेऊरी—देखो 'नेवर' (अल्पा०, रू.भे.)

नेक–वि० [फा०] १ सज्जन, शिष्ट।
उ०—१ वांका चौथा वरग में, अंतज आखर एक। उण नूं अळगो राखही, नर बुधवंता नेक।—बां.दा.
उ०—२ बदां कनै तो बद बसै, नेकां पासै नेक। मन रो सारीसा मिळै, आ लोकोक्ती एक।—ऊ.का.
२ अच्छा, उत्तम, भला।
उ०—'पतो' 'माल' गढ़ पुरस रा, वणिया भुज वरियांम। दांतूसळ गढ़ दुरदरा, नेक उबारण नांम।—बां.दा.
३ ईमानदार।
यौ०—नेकचलण, नेकचलनी, नेक-नांम, नेकनांमी, नेक-नीयत, नेक नीयती।

नेकचलण, नेकचलन–वि० यौ० [फा० नेक चलन] अच्छे चाल-चलन का, सदाचारी।
ज्यूं—वहो नेक चलण आदमी है।

नेकचलनी–सं०स्त्री०यौ० [फा० नेक+सं० चल्] भलमनसाहत, सदाचार

नेकनाम–वि०यौ० [फा० नेकनाम] जिसका नाम विख्यात हो, कीर्तिवान्, यशस्वी।

नेकनांमी–सं०स्त्री०यौ० [फा० नेकनामी] १ ईमानदारी।
ज्यूं—आपरौ कांम नेकनांमी सूं करै है।
मुहा०—नेकनांमी राखणी—ईमानदार होना, सच्चाई रखना।
२ सुयश, कीर्त्ति, नामवरी।

नेकनीयत–वि० [फा० नेक+अ० नीयत] जिसका आशय या उद्देश्य अच्छा हो, अच्छे विचार का, भलाई का विचार रखने वाला, उदाराशय।

नेकनीयती–सं०स्त्री०यौ० [फा० नेक+अ० नीयत+रा.प्र.ई] १ सच्चा और ईमानदार होने का भाव, ईमानदारी।
ज्यूं—नेकनीयती सूं रै'णो।
२ अच्छा संकल्प, भला विचार।

नेकर-सं०पु० [अं०] १ बड़ी व खुली मोरियों का कमर से घुटनों तक लंबा, पतलून के समान सीया जाने वाला एक प्रकार का वस्त्र जो प्रायः बालकों और पुरुषों द्वारा पहना जाता है।
सं०स्त्री०—२ हल के पीछे के भाग में निकले हुए हरीसा के छिद्र मे फसाई जाने वाली कीली जिससे हरीसा बाहर नहीं निकल सके।
रू०भे—निकर।
अल्पा०—नेकरियौ।

नेकरियौ—देखो 'नेकर' (अल्पा०, रू.भे.)

नेकाळ—देखो 'निकाळ' (रू.भे.)
उ०—विचार बुद्धि बळ पूरा राखता होय पैसांर नेकाळ लड़ाई रा जांणता होवे।—नी.प्र.

नेकाळौ—१ देखो 'निकाळ' (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'निकाळौ' (रू.भे.)

नेकी-सं०स्त्री० [फा०] १ सज्जनता, सौजन्य।
उ०—सत संतोख ग्यांन मोख, नेकी आदरणा।
—केसोदास गाडण
२ भलमनसाहत, भलाई, सद्व्यवहार।
उ०—१ सब चलैं वैकूंठ कूं जग नेकी लारा।
—केसोदास गाडण
उ०—२ बद सदी बदी नेकी निहार। देखेंगे दोजख बस्ति द्वार।
—ऊ.का.
३ ईमानदारी। उ०—क्रम क्रम तीरथ कीध, धन ध्रम नेकी धारणा। लेटे लाहौ लीध, मिनख जमारै मोतिया।
—रायसिंह सांदू

नकीबंध-वि० [फा. नेकी+संबंध] भला, उदार, सज्जन।

नेखम-वि० [देशज] १ दृढ़, स्थिर। उ०—हरि का सूदरसण 'मांन' का कुरु नाथ। प्रतंग्या के भीसम से नेखम भाराथ।—रा.रू.
२ स्थायी।
३ सीमा पर गाड़ा हुआ पत्थर जिससे सीमा का भान हो।

नेखवा-वि० [अ० नेक-ख्वाह] शुभचिंतक। उ०—चढै कुदरती हुकमती असलिजद्दा, चढै दौलती नेखवा हुकम वंदा।—गु.रू.बं.

नेग-सं०पु० [सं० णिजिर् शौच पोषणयोः] १ सम्बन्धियों, आश्रितों तथा कार्य वा कृत्य में योग देने वाले लोगों को विवाह आदि शुभ अवसरों पर कुछ दिए जाने का नियम, देने, पाने का हक या दस्तूर।
उ०—तूटै कमळ बहै वळ तेगां, नेगी त्रपत करण रिण नेगां। पहिलै घकै पांच सौ पड़िया, मुगळां प्रांण चकासे मुड़िया।—रा.रू.
मुहा०—नेग लागणौ—रीति के अनुसार कुछ देना, जरूरी होना, पुरस्कार देना, आवश्यक होना।
२ विवाह आदि शुभ अवसरों पर सम्बन्धियों, नौकरों, चाकरों तथा नाई बारी आदि काम करने वालों को उनकी प्रसन्नता के लिए दी जाने वाली वस्तु या धन, बंधा हुआ पुरस्कार, बख्शिश, इनाम। उ०—पौळ-प्रवाह करै पग पूजन, वडा अवास छौळ द्रव वेग। सिंधुर सात दोय दस सांसण, नागद्रहै दीधा इण नेग।
—बारूजी सौदो
यौ०—नेग-दापौ।
रू०भे०—नेवग।

नेगट-सं०पु० [देशज] 'तरवण' नामक पौधे के बीज जो दवाई के काम आते हैं।

नेगदार-सं०पु० [सं० नेग+फा० दार] नेग पाने वाला व्यक्ति।
उ०—मांणिकचंदजी की जांन उदैपुर आई छै। कलावत भगतण्यां गावै छै। नेगदार नेग पावै छै।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

नेगधर [सं०] सं०पु०—विवाहादि शुभ अवसरों पर रीति के अनुसार पुरस्कार या दस्तूरी लेने वाला व्यक्ति। उ०—रख पिता पाट 'घूहड़' सुराय। खाग रौ खाटियौ आप खाय। नृप 'रोहड़' हूंता मांग लीन। नेगधर कियौ मीसण नवीन।—पा.प्र.

नेगवीन—देखो 'नेंगवीन' (रू.भे.)

नेगायण-वि० [सं० नेग+रा.प्र. आयण] नेग लेने वाला, नेग लेने का अधिकारी।
उ०—प्रोयत सुण्यौ नह पौळ, नह हुतौ कोई नेगायण। आदू घरवट रीत, पीळा आखती डूमायण।—अरजुणजी बारहठ

नेगी-वि० [सं० नेग+रा.प्र.ई] १ नेग पाने वाला या नेग पाने का हकदार।
उ०—१ सु रावळ साथै महिपौ जैतुंग कोल्हा रौ बेटौ साथै हुतौ, तिण रै पइसा था, सु उणारा पइसा खरच तालीको करायौ और ही इणैं पईसौ टको सारां नेगियां-लागदारां नूं दियौ।
—नैणसी
उ०—२ तूटै कमळ वहै वळ तेगां, नेगी त्रपत करण रिण नेगां। पहिलै घकै पांच सौ पड़िया, मुगळां प्रांण चकासै मुड़िया।
—रा.रू.
२ देखो 'नेवगी' (रू.भे)
(स्त्री० नेगण)
३ देखो 'नैंगी' (रू.भे.)

नेड़ी—देखो 'नेहड़ी' (रू.भे.)
उ०—ताखी ताख तमांम पीनणी अर पुसळाई। नेड़ी येड़ी तणी जाळ वसतुवां वणाई।—दसदेव

नेचा—देखो 'नीचे' (रू.भे.)
उ०—आइ नै पछीतरां नेचा ऊभो रह्यो। माहै खीवो सूतो छै जागै छै।—चौबोली

नेचो—देखो 'नैचो' (रू.भे.)

नेज—देखो 'नेजो' (मह०, रू.भे.)
उ०—आलम आलम अविखयो, धज नेज फरक्की ।
—वी.मा.

नेजबंध, नेजबंधी-वि० [फा. नेज+सं. बंध] भाला रखने वाला, योद्धा ।
उ०—१ सूर तन तेज भळळाट पौरस सरस, खित सुछळ जेज न धरी अड़ीखंभ । नेजबंध बेहूं ओछाड़ कोटां नवां, थया मुह-मेज धरती तणा थंभ ।—पहाड़खां आढ़ौ
उ०—२ लकाळा वडाळा जोध लई बेहूं आभ लागा, आभाळा भूझाळा जोस रोस में अथाग । रोसाळा रढाळा वेहूं धोम झाळ रूप, नेजबंधी चाळागारा दुन्है काळा नाग ।
—चतुरोजी खिड़ियो

नेजबाज-सं०स्त्री० [फा० नेज+बाज] एक प्रकार की बंदूक ।
उ०—छूटै लगातां रजकां कळा कायां वेग सीहां छेदै, आघ पाव सीर गळै अघातां अचूक । कड़के निघातां हाक जेहड़ी कपीसी कीसो, वणै माधोसींग हाथां एहड़ी बंदूक पूर । छाती चाढ धार ओगाढ छछोहा पणै, अपार वारां ही ढोहे घटा ज्यूं अग्राज । प्रळैकाळ रूपी जुधां हजारां समोहे पैला, नंद 'अमरेस' भुजां सोहै नेजबाज ।
—माधोसिंह सीसोदिया रो गीत
वि० [फा० नेजा़ बाज] नेजा या भाला चलाने वाला बरछैत ।
उ०—कोम पीठ भोम भार घूमें घड़ा नाग काळां, वरै माळां लूंवे रथां रंभ चाळा वेस । बाजतां अंबाळां के करमाळां झाळां बीच, नेजबाजां नराताळां 'संभरी' नरेस ।—हुकमीचंद खिड़ियो

नेजम—देखो 'नेजो' (मह०, रू.भे.)
उ०—धसै जुध मांगळिया भड़ धूत । हुसै दळ मारण नेजम हूंत ।
—सू.प्र.

नेजरूप-सं०पु० [फा० नेज:+सं० रूप] बरछी (डि.नां.मा.)

नेजाइत—देखो 'नेजायत' (रू.भे.)
उ०—नेजां न संख नेजाइतां, न को संख पाईं दळां ।
—गु.रू.बं.

नेजादाऊदी, नेजादावदी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का पुष्प (अ.मा.)

नेजाबरदार-सं०पु० [फा० नेज:बरदार] १ राजा-महाराजाओं की ध्वजा, निशान आदि लकर चलने वाला ।
२ भाला लेकर चलने वाला ।

नेजायत-वि० [फा० नेज+रा०प्र० आयत] १ अपना खुद का झंडा रखने वाला, वीर, योद्धा । उ०—अखंग लपेटा वध गजकध तोड़ण अगड़, तेण धारक मगज साख तेरा । निहंग उतोळ भड़ राड़ि नेजायतां, सदा अड़पायतां धाड़ि 'सेरा' ।
—राठौड़ सेरसिंह मेड़तिया रो गीत
२ भालाधारी, वीर । उ०—ओरूं ऊछट जोम अलीलो । नेजायतां तणै विच नीलो ।—सू.प्र.
रू०भे०—नेजाइत ।

नेजाळ—१ देखो 'नेजाळो' (मह०, रू.भे., डि.को.)
उ०—पड़ियो नेजाळ विढै पाटरियै, भंगवट वाट न भ्रम भरिया । 'अजमल' तणै खड़ग रै ओलै, अधिपति मोठा ऊबरिया ।
—अजा राजधरोत झाला रो गीत
२ देखो 'नेजो' (मह०, रू.भे.)
उ०—बगतर सहित ऊछळइ वरंगा, धीव पड़इ नेजाळ धड़ । भाजइ भिगिट अरी चा भिडतां, धाय रमाडइ ति विध धड़ ।
—महादेव पारवती री वेलि.

नेजाळो-वि० [फा० नेज:+सं० आलुच्-प्रत्यय] १ भाला रखने वाला, वीर, योद्धा (डि.को.)
उ०—१ भ्रमां सूं धाड़ो करै, टोळा सै है तळाह । काफर जो आयो कदन, लारै नेजाळाह ।—पा.प्र.
उ०—२ वागां नेजाळां कजाक वीर वैताळां वाहां क वागा, माळा काज वागा ढाक डमरू महेस । हाथियां मदाळां काळां बाथियां जे संग हूंता, वांघ चाळां नराताळां वागो 'वगतेस' ।
—पहाड़ खां आढ़ो
२ (खुद का) झंडा रखने वाला, वीर, योद्धा ।
उ०—रोळा कराळा झाळा अताळा विछूटै वांण, तइ खेत्रपाळा मंडै वैताळा तमास । मदाळा दताळा काळ नेजाळा सुंडाळा माथै, वांघ चाळा 'कीता' वाळो आछटै वांणास ।
—राजा रायसिंह झाला रो गीत
मह०—नेजाळ ।
३ देखो 'नेजो' (अल्पा०, रू.भे.)

नेजो-सं०पु० [फा० नेज:] १ झंडा, पताका (डि.को.)
उ०—१ धरती म्हारी म्हे धणी, ढाहण नेजां ढल्ल । किमकर पड़सी ठाकुरां, ऊभा सीहां खल्ल ।—वी.स.टी.
उ०—२ पग पग नेजा पाड़िया, पग पग पाड़ी ढाल । बीवो पूछै खांन नूं, जग केता 'जगमाल' ।—वी.मा.
२ भाला (डि.को)
उ०—नेजा खासा तोग नवव्वति । पह दीधा मो विनां दिलीपति । सो ऊजाळा करूं कसि सारां । भिड़ज वधै ओरूं गज-मारां ।
—सू.प्र.
३ बरछा ।
४ देखो 'नोजा' (रू.भे)
अल्पा०—नेजाळो ।
मह०—नेज, नेजम, नेजाळ ।

नेट, नेटि, नेठ-सं०पु० [देशज] १ मर्म, भेद, थाह ।
उ०—राजा घरै आयो, सिणगार मंजरी क्षिप्रा माहे स्नान करि अग्नि-प्रवेस कियो, राजा विचार करियो इण वात रो नेट लेणो ।
—सिंघासण बत्तीसी
२ निश्चय । उ०—१ सुगुण सुग्यांनी स्वांमि नै जी, स्यूं कहियइ

समझाइ। पण प्रभु सूं विनती पखै जी, नेट ए कांम न थाइ।
—ध.व.ग्रं.

उ०—२ वैर वण वालीयै, राज तौ क्यूं रही। नेट सूरौ हणै, तो असुर आवै नहीं।—रुखमणी हरण

क्रि०वि०—१ अन्त में, आखिर में।

उ०—१ दादू सब ही वेद पुरांण पढ़ि, नेटि नांम निरधार। सब कुछ इनहीं मांहि है, क्या करियै विस्तार।—दादूवांणी

उ०—२ इसी बातां सुण देवीदास री बहू मन मां राखी। विचारियौ, आंख्यां देखी पछै कहीस। नेट गोली री बात छै। मांनणी न आवै।—पलक दरियाव री वात

उ०—३ अर कुंवरजी नूं इसा खुस किया जे रच रहिया। नेट दिन आडा पड़ता गया तीसूं वात विसारै पड़ती गई।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ बिल्कुल, निपट। उ०—१ तुंकारौ काढै तुरत, मुंह मुलाजो मेट। कुळ उत्तम जनम्या किसुं, नीच कहीजे नेट।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ सह भूत प्रेत ग्रह न्हे समा, सुपात्रे न्हे धरमसी सही। देखिज्यौ दांन दीधौ,थको, नेट कठै निरफळ नहीं।
—ध.व.ग्रं.

उ०—३ चातक! तुं तक चूकिउ, इंहां म आवी बोलि। मरडी नाखिसि मुंडडी, हुं छउं नेट निटोलि।—मा.कां.प्र.

३ नहीं तो। उ०—पाछा घिरियां पछे राव 'सेखै' 'वीकै' जी नूं कहायौ— जे थे कोट परे नै कोस पाच सात माडो नेट अठै थां सूं उपद्रव होयबा करसे।'—नापै सांखले री वारता

४ देखो 'नीठ' (रू.भे.)

उ०—नवाव पाछली कांनी डेरां में जाय पड़ियौ सो लूट लीन्हा नेट धण जीपै देख बखतसिंह जी वागा झाल अमरावा काढिया सो 'रेयां' आइया।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

नेठवणो, नेठवबो—क्रि०स० [सं० निष्ठा] १ प्रकट करना।

उ०—सिव तिण वार पनांग साहियइ, वंगाळी दाखवइ बळ। उण वेळा सिवरइ मुंह आगळ, दूजा कुण नेठवइ वळ।
—महादेव पारवती री वेलि

नेठवणहार, हारौ (हारी), नेठवणियौ—वि०।

नठविप्रोड़ौ, नेठवियोड़ौ, नेठव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नेठवीजणौ, नेठवीजबौ—कर्म वा०।

नेठवियोड़ो—भू०का०कृ०—प्रकट किया हुआ।
(स्त्री० नेठवियोड़ी)

नेठा, नेठाउ, नेठाव, नेठाह—सं०पु० [सं० निष्ठा] धीरज, संतोष, धैर्य।

उ०—१ वीधिउ मन रखि नवमइ नवमइ निज नेठाउ। देई दांन संवत्सर मत्सर मिल्हिय नाहुं।—नेमिनाथ फागु

उ०—२ किण विध सूतौ कंथ निसंक निठाध सूं। व्रथा विसायर बैर, रिसायळ राव सूं।—सिववक्स पाल्हावत

उ०—३ निहकंप कबीर, मींडकी पाव परमोद नामतेव नेठाव। धूंधळीमल ध्यांन, रहित रैदास औघड़नाथ अघट।—ह.पु वा.

उ०—४ असंख सेन आई सहू ग्रासिया एकठा, साथ विरळा सूहड़ चीत सूधै। 'चंद' गढ़ साहता निमौ अहंकार चित, राखता निमौ निठाव रूघे।—राव चंद्रसेण मालदेवोत राठौड़ री गीत

रू०भे०—नेठौ, नैठाव।

नेंठौ—सं०पु० [सं० नष्ट] १ समाप्त होने का भाव, समाप्ति, अन्त।

क्रि०प्र०—आंणणौ, आणौ।

२ छोर, शिरा।

रू०भे०—नेअटौ।

नेठौ—देखो 'नेठाव' (रू.भे.)

नेत—सं०पु०—१ भाला (डि.को.)

उ०—१ करण अखियात चढियौ भलां काळमी, निहावण वयण सुज वांधिया नेत। पंवारां सदन वरमाळ सूं पूजियौ खळां किरमाळ सूं पूजियौ खेत।
—वां.दा.

२ झंडा, ध्वज, पताका। उ०—विन्हैं साहि राजा बिन्हैं नेत वांधै। वणी फौज देखैं घणी सोह वाधै। जैजैकार जीहा हरीरांम जप्पै। असव्वार हूआ मुंछां पांणि अप्पैं।—वचनिका

३ मर्यादा। उ०—इम राज करे अजनंद अयोध्या, नेतवंधी निखतैत। जंगा जीत तपोबळ जालम, ओप वडै अखडैत।—र.रू.

यौ०—नेतवंध।

४ देखो 'नियति (रू.भे.)

५ देखो 'नीयत' (रू.भे)

६ देखो 'नेति' (रू.भे.)

७ देखो 'नेत्र (रू.भे.)

उ०—१ मारू देस उपन्नियां, तांह का दंत सुसेत। कूंझ-बचां गोरंगियां, खंजर जेहा नेत।—ढो.मा.

उ०—२ सिरोरूह कोसेय काळा सरीखा। तियौ आंक भू वांकड़ा नेत तीखा। झगै भाळ सिंदूर ज्यों ज्वाळ झाळा। मुद्राळी गळै हिड्ळै मुंडमाळा।—मे.म.

८ देखो नेतरौ' (मह., रू.भे.)

उ०—पातसाह अणथाह, कोप जळ थाह न कोई। रतन रूप सुर धरम, गिळण हटियौ अन्याई, इद्र जही आरंभ, कीध प्रारभ सकज्जां। सुर समाथ जिम हाथ, वाथ ओडी कमधज्जां। कर मेर अकब्बर साह नूं, सेस जोस नेते सरू। सुरतांण महण हीलोळियौ, दुरगदास आसंगरू।—रा.रू.

नेतहं—क्रि०वि०—निश्चय ही। उ०—साथि 'जसवंत' रै सांव बहु सम चड़ौ। गाविजै नेतड़ै रोहड़ै 'गांगड़ौ'।—हा.झा.

नेत्रत्रण—सं०पु० [सं० त्रि-नेत्र] शिव, महादेव।

उ०—करै चख नाहर राहर केत। नेत्रत्रण भाळ डरै निस-नेत। अंबाइण आदक और अनेक। हिचै रण हे [illegible] —मे.म.

नेतबंध, नेतबंधी-सं०पु० [राज० नेत=मर्यादा+सं० बंध] १ मर्यादा बांधने वाला, मर्यादा रखने वाला।

उ०—दीनां पाळगर धन सुतन दसरथ, सकज सूर समाथ। रिण खेत भंजण सकुळ रांवण, नेतबंध रघुनाथ।—र.ज.प्र.

२ अपना निजी झंडा रखने वाला, ध्वजाधारी, योद्धा, वीर।

उ०—१ असि धावक प्राविया, सस्त्र मांजिया सतावी। सांग चढ़िया सुक्र, फूल झड़िया हद फावी। दुजड़ वाण जमदाढ़, सेल दे वाढ़ संवारघा। अणियांधार उपेत, नेतबंध 'जैत' निहारघा।

—मे.म.

उ०—३ नेतबंध तोसूं नागद्रहा, 'जोधै' नहं झालियो जुध। हाथां तूझ समर 'हांमू' हर, कटारी भीत करियां कमुध।

—रावत चूंडा लाखावत सीसोदिया रो गीत

२ राजा, नृप।

रू०भे०—नेत्रबंध, नेत्रबंधण, नेत्रबंधी, नेत्र-बंध, नेतबंधा।

नेतर—देखो 'नेत्र' (रू.भे.)

उ०—१ ओदण महदालय ओढ़ण धण ओढ़ै। प्रमुदा आलय विण प्रमथालय पोढ़ै। फुर फुर कुरजांसी उरजा सुक फड़कै। तीखा नेतर री छेतर में तड़फै।—ऊ.का.

उ०—२ महेस्वरां रा नेतरी री वल उघड़ी। किनां प्रळैकाळ की झाळ आकास जाय अड़ि।—पनां वीरमदे री वात

२ देखो 'नेतरौ' (मह०, रू.भे.)

नेतरौ-सं०पु० [सं० नेत्रं] १ मथ दण्ड को घुमाने की रस्सी, मन्थन-रज्जु।

२ गाय दुहते समय उसके पिछले पैरों को बांधने की रस्सी।

रू०भे०—नेतौ, नेत्रौ।

मह०—नेत, नेतर।

नेता-सं०पु० [सं० नेतृ] १ अगुआ, नायक। उ०—लेतो कर कर लाड, दूसरां हसि हसि देतो। नेता हूज्यो नास, बणायो पूरो वेतो।

—ऊ.का.

२ स्वामी, प्रभु, निर्वाहक। उ०—निंदा नेता री भव भव में भूंडी विद्या वेता विण अवगत गत ऊंडी। वसुधा बीजांकुर विध विध विसतारै। न्याई सुर आसुर विध विध निसतारै।—ऊ.का.

३ देखो—'नित्य' (रू.भे.)

उ०—देवी भंजणी दैत सैना समेता, देवी नेतना तप्पना जया नेता। देवी काळिका कूबजा कांम कांमा, देवी रेणुका सम्मळा रांम रांमा।—देवि.

अल्पा०—नेतौ।

नेति-सं०स्त्री० [सं० नेति] १ अनंतता सूचित करने वाला एक वाक्य जिसका अर्थ है 'इति नहीं' अर्थात् 'अंत नहीं है', अपार। ईश्वर या ब्रह्म के लिए यह वाक्य प्रयुक्त होता है।

उ०—आदि अंत आदेस, मेक आदेस नरेसर। अलख तूझ आदेस, अगह आदेस अनंतर। एक तूझ आदेस, जगत-पति तूझ जोगेस्वर। निरविकार आदेस, नेति आदेस नरेसर। ॐ नमो आदिस आदेस नूं, कहै ईसर जंपै गुणी। आदेस अलख इक तूज तूं, नमो नाथ त्रिभुवनधणी।—ह.र.

२ देखो 'नेत' (रू.भे.)

उ०—कळहि सोह ज्यूं सीह कळोधर, निडर निहसियो बांधे नेति। खड़िया दळ देखे नह खड़ियो, खड़ियै दळि खड़ियो रिणखेति।

—नाहरखांन किसनदासोत रो गीत

नेती-सं०पु०—१ राजा, नृप (अ.मा.)

२ देखो 'नीति' (रू.भे.)

उ०—प्रकट सूं प्रकट गुप्त सूं गुप्ता, आतम अज अवांणी। हेती नेती वरण विखरै, अधिस्ठांन थित जांणी।

—श्री सुखरांमजी महाराज

नेतीधोती-सं०स्त्री०—कपड़े की एक लम्बी धज्जी को मुंह से निगल कर पेट की आंतें साफ करने की हठयोग की एक क्रिया।

नेतौ—१ देखो 'नेतरौ' (रू.भे.)

उ०—कर नेतौ फण रह कठण, दोयण दहि धण द्रढ़ढ़। त्रिलोधणौ रण नू विलो, कत चरबी ध्रत कढ्ढ़।—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'नेता' (अल्पा०, रू.भे.)

नेत्त, नेत्र, नेत्रउ-सं०पु० [सं० नेत्रं] १ आंख, चक्षु, लोचन (ह.नां.)

उ०—जसराज रा वचनां में मीणां रो इसो अधरम जाणि नेत्रां में जळ आंणि कुमार कहियो—चोहं चढ़ चाल्यां इसड़ा अनरथ रा करणहार अत्यज पुळियार होइ जीवता रहो जावै।—वं.भा.

२ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र विशेष (व.स.)

३ एक प्रकार की लता व उसका फल।

उ०—नेत्र निहाली नीलूइ, नलिनी नागरवेलि। नहीं नवीनों नींद्रारडी, नागफणी गुण-गेलि।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—नेत, नेतर।

४ देखो 'नेतरौ' (मह०, रू.भे.)

नेत्रज-सं०पु० [सं०] आंसू, अश्रु।

नेत्रजगदीस्वर-सं०पु० [सं० नेत्रजगदीश्वर] सूर्य जो कि परमेश्वर का नेत्र रूप है (डि.को.)

नेत्रजळ-सं०पु० [सं० नेत्रजल] आंसू, अश्रु।

नेत्रजूंण, नेत्रजोनी-सं०पु० [सं० नेत्रयोनि] १ इन्द्र।

वि०—गोतम के शाप से इन्द्र के शरीर पर सहस्र योनि चिन्ह बन गये थे जो बाद में नेत्र रूप में परिवर्तित हो गए।

२ चंद्रमा, चद्र। (नां.मा.)

वि०वि०—चंद्रमा अत्रि की आंख से उत्पन्न हुआ माना जाता है।

नेत्रपट्ट [सं०] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र विशेष। उ०—मेघा-डंबर नेत्रपट्ट घोत पट्ट राज पट्ट गज पट्ट गजवडि।—व.स.

नेत्रपालवणी-सं०स्त्री०—डिंगल का गीत छंद विशेष।

वि०वि०—देखो 'झड़लुपत'।

नेत्रबंध, नेत्रबंधण, नत्रबंधी—देखो 'नेतबंध' (रू.भे.) (र.ज.प्र.)

उ०—१ मारको अभंगनाथ राजवी मसंद 'लाखो'। नेत्रबंध नखत्रेत जादवां नरेस 'लाखो'।—ल.पि.

उ०—२ दूसरो खेंग दुवाह रूकहथो रिमां-राह नेत्रबंधी नर-नाह।
—ल.पि.

नेत्रबाळो-सं०पु० [सं० बाल] एक प्रकार की क्षुप जाति की वनौषधि जो सिंध (पश्चिमी पाकिस्तान) पश्चिमोत्तर प्रदेश पश्चिमी प्राय:-द्वीप लंका आदि देशों में बाहुल्यता से पाई जाती है। यह ओषधि के प्रयोग में लिया जाता है। (अमरत)

रू०भे०—नेत्रवाळो, नेत्रवाळो।

नेत्रभाव-सं०पु०यौ० [सं०] केवल नेत्रों की चेष्टा द्वारा संगीत या नृत्य में सुख दुख का बोध कराया जाने वाला भाव।

नत्रमंडळ-सं०पु०यौ० [सं० नेत्रमंडल] १ नेत्र का घेरा।

२ आँख का डेला।

नेत्रमळ-सं०पु०यौ० [सं० नेत्रमल] नेत्र का मैल, गिद्द।

नेत्रमूढ़-वि० [सं०] मिलित नेत्रों वाला, बन्द नेत्रों वाला।

उ०—इसड़ो वचन सुणि विरोध रो क्रोध विचारि विजयसूर री जोड़ायत कर में कटार झालि साहस ढबण रै काज रीढक रै समीप आपरी पीठ फाड़ि नेत्रमूढ़ मूरछित बाळक नु काढ़ि नणद रै हाथ दीधो।—वं.भा.

नेत्रवाळो—देखो 'नेत्रवाळो' (रू.भे.) (अमरत)

नेत्रो—देखो 'नेतरो' (रू.भे.)

उ०—आंण सुर असुर नाग नेत्रै नहि, राखियो जई मंदर रई। महण मथै मूं लोध महमण, तुम्हां किणै सीखव्या तई।
—वेलि.

नेदांण, नेदांणी—देखो 'निदांण' (रू.भे.)

उ०—हाथां हळ हाकता, नार करती नेदांणी। निरस घरां सनमंध, कदे ठकुरायत न जांणी।—अरजुणजी बारहठ

नेपत, नेपति, नेपती, नेपत्ति—देखो 'नेपै' (रू.भे.)

उ०—१ नित सूर गरजत नूर नेपत, पूर सुख पुर गांम ए। मन भ्रमत फिरि हरि सेव मिळतां, वर्णं जण विसरांम ए।—रा रू.

उ०—२ मिणि-अड नेपति भडां, खग्गवाहा खत्र-धोडां। खुरासांण सम सांण, तखत आदू राठौडां।—गु.रू.वं.

उ०—३ लीजियो नयरेण हीरा, सायर मझेण रतन नेपती। स्रोवण मेर सिखरे, सुहडा सिध खेत मंडोवर।—गु.रू.वं.

नेपथ्य-सं०पु० [सं०] १ नृत्य, अभिनय, नाटक आदि में परदे के पीछे का वह स्थान जहां पात्रों द्वारा वेश-भूषा आदि पहने जाते हैं।

२ नृत्य, अभिनय आदि होने का स्थान, रंगशाला, रंगभूमि।

नेपथ्यकरम-सं०पु० [सं० नेपथ्यकर्म] ७२ कलाओं में से एक।

नेपथ्य-योग-स०पु० [सं० नेपथ्य-योग] देश व समय के अनुकूल कपड़े, गहने आदि पहनना जो कि ६४ कलाओं में से एक हैं।

नेपुर—देखो 'नूपुर' (रू.भे.)

उ०—गढि गोळ गोफळ अलति पीनहि, जिहां रतन पायल रेख। नेपुरां नादइं रूणझुणइं, बहु विवधि प्रतिरव भेख।
—रुकमणी मंगळ

नेपै-सं०पु० [सं० निष्पदनम्] १ उपज, पैदावार।

उ०—भाद्रेच नांम नगर निवास करै जठै खड़ रो महा दुकाळ पड़ियो जांणि आपरी बसी रा लोकां सहित छकड़ा में भार घलाइ सकुटुंब सिरोही जाळोर गुजरात रै कांकड़ संधै त्रण नेपै देखि आइ रहिया।—वं भा.

२ उत्पत्ति-क्षेत्र।

३ प्रचुरता, वृद्धि। उ०—खाटी कुळ री खोवणां, नेपै घर घर नींद। रसा कंवारी रावतां, धरती को हीं वींद।—वी.स.

रू०भे०—नेपत, नेपति नेपती, नेपत्ति, नैपत्ति।

नेफावार, नेफेदार-वि० [फा०] जिसमें इजारबंद या नाड़ा पिरोने का स्थान हो (लहंगा या पायजामा)।

नेफो-सं०पु० [सं० नीविप अथवा फा०नेफः] लहगे या पायजामे के घेर में इजारबन्द पिरोए जाने का स्थान, वह स्थान जहाँ नाड़ा पिरोया जाता हो।

नेम-सं०पु० [सं० नियम] १ व्रत, उपवास (डि.को.)

२ प्रतिज्ञा, प्रण। उ०—१ नै रावळ दूदो पाट बैठो, सु दूदो पण वडो ओनाड़ हुवो नै रावळ मूळराज रांणो रतनसी जैसळमेर नेम घातियो, तद दूदै पण नेम घातियो थो तिका वात मूळराज रतनसी री वात मांहै लिखी छै।—नैणसी

उ०—२ तब कुंजर ऐसै कह्यो, सुणो पियारी बात। तजो नेह मो देह को, क्यूं न घरां कूं जात। कहै तिया गजराज कूं, हम सब लीनो नेम। तुम कूं ऐसे छांड कै, हम घर जावैं केम।
—गजउद्धार

उ०—३ सुत भ्रात कटे सक धीट वधे धक, बीस भुजांण विचारियो जी। निरबीजां वानर नेम गमुन्नर, घेख इसो मन धारियो जी।
—र.रू.

उ०—४ सो पति रै तो दुममणां सूं जुद्ध करणो ओ नेम है नै म्हारै पतीव्रतापणा रो नेम है कै पती नै नहीं जगावणो सो आज नींदाळू नींद में है सो म्हारा पीन (मोटा मोटा) कुच बाथ में भीड़ सूतो है।—वी.स.टी.

क्रि०प्र०—करणो, घातणो, दैणो, लैणो।

३ देखो 'नियम' (रू.भे.)

उ०—१ सुजळ गिनांन मंजन तन सारिस, ध्रम क्रम जप तप नेम बधारिस। चरण पवित्र करिस इम चत्रभुज, त्रिगुणनाथ नाचै आगळ तुझ।—ह.र.

उ०—२ किण रौ गुरुजी मैं नीर मंगाऊं, किण रा पुस्प चढाऊंजी लोय। प्रेम नेम रौ चेला नोर मंगावौ, उमंग रौ पुस्प चढावौ रे लोय।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ मून राखियां मिनख मरेला, धरती नेम तोड़णौ पड़सी। करणौ पड़सी न्याय छेड़लौ, माटी बनै बोलणौ पड़सी।

—चेतमांनखा

उ०—४ ताहरां देवीदास कह्यौ—म्हारै तौ स्रीठाकुरजी रौ दरसण करण रौ नेम थौ पण आज दरसण कीधा नहीं तीसूं दरसण करि जीमसूं।—पलक दरियाव री बात

क्रि०प्र०—तोड़णौ, पाळणौ, भांगणौ, राखणौ, होणौ।

यौ०—नित-नेम।

४ देखो 'निमित्त' (रू.भे.)

उ०—'चंद'-हर 'हरी' पौरस प्रचंड। 'अगजीत' नेम जूंमौ अखंड। रायमल जेम दळरांम रूक। असपति दळ भंजण पण अचूक।

—रा.रू.

५ देखो 'नेमिनाथ'।

उ०—१ सोळै सहस्र गोप्यां रौ स्वांमी। खांचै घणी भ्रांमी नै सांमी। 'नेम' री बांह नमावण कांमी। तो पिण 'नेम' री बांह न नांमी।—जयवांणी

उ०—२ 'नेम' तणी वांणी सुणी जी, मीठी दूधाधार। प्रतिबोध्या छऊं जणा जी, जांण्यौ अथिर संसार।—जयवांणी

नेमणायत, नेमणियायत-वि० [सं० नियम] दृढप्रतिज्ञ, दृढ निश्चय।

उ०—१ तद बादसाह नारनौळ रै फौजदार नूं लिखी सु फौज लय हिंसार रा फौजदार रै भेळौ हुवै। दस हजार फौज दिल्ली सूं मेल्ही। तद सारा भेळा हुवा सुणै, ठाकुरसी कबिला काढिया, आप नेमणायत हुइ टिकियौ।—ठाकुरसी जैतस्योत री वारता

उ०—२ नै रावळ प्रोळ रा किंवाड़ नांख नै दूदौ तिलोकसी गढ सूं लड़ण नूं ऊतरिया सु साथै दो रजपूत नेमणीयायत ऊतरिया, बीजो ही घणो साथ ऊतरियो।—नैणसी

नेमणौ, नेमबौ-क्रि०स० [सं० नियमनम् अथवा सं० नियमित=यम (ऊपर से) तारकादिदिित्वात् इतच्]

१ निश्चय करना, दृढ विचार करना।

क्रि०अ०—स्त्री के गर्भ रहना, स्त्री का गर्भवती होना।

नेमप्रात-सं०पु० [सं० नियमः+प्रातः] दानवीर राजा कर्ण।

(अ.मा.)

नेमा—देखो 'नियम' (रू.भे.)

उ०—नहीं नेमा प्रेमा यम नहि नेमा दमन में।—ऊ.का.

नेमि-सं०स्त्री० [सं० नेमिः] १ चक्र की परिधि, पहिए का घेरा।

२ भूमि, धरती (डि.को.)

३ देखो 'नेमिजन' (रू.भे.)

४ देखो 'नेमिनाथ' (रू.भे.)

उ०—१ करणी नेमि की, काहू और न कीनी जाय। तरुण वय परणी नहीं हो, राजिमती यदुराय।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ समुद्र विजय राजा कउ अंगज, सुर नर नांमइ सीस। समय सुंदर कहै नेमि जिणंद कउ, नांम जपूं निसदीस।—स.कु.

नेमिजन-सं०पु० [सं०] १ महाविदेह क्षेत्र में होने वाले २० विहरमानों में से १६वां विहरमान।

वि०वि० जन्मभूमि—वितशोका नगरी।

पिता—राजा वीरसेन।

माता—रानी सेनादेवी।

पत्नी—मोहनादेवी।

उ०—विहरमांन सोळमउ तुं नेमि नांम।—स.कु.

२ देखो 'नेमिनाथ' (रू.भे.) (स.कु.)

नेमिनाथ-सं०पु० [सं०] २२वें तीर्थङ्कर।

वि०वि०—जन्मभूमि—सौरिपुर नगर।

पिता—राजा समुद्रविजय।

माता—रानी शिवादेवी।

शरीर का वर्ण—नीलम जैसा, श्याम।

लक्षण-चिन्ह—शङ्ख।

उ०—सम्यक्त्व तउ स्रेणिक महाराज तणउं, रिधि परिहार सउ स्रीसांतिनाथ तणउं, अभयप्रदांन स्रीनेमिनाथ तणउं।

—व.स.

नेमी-सं०पु० [सं०] १ चन्द्रमा (डि.को.)

२ नियमपूर्वक स्नान-ध्यान, पाठ-पूजा, अर्चन आदि करने वाला।

३ नियमपूर्वक कार्य करने वाला, नियम का पालन करने वाला।

४ देखो 'नेमि' (रू.भे.)

नेमीसर—देखो 'नेमिनाथ'।

उ०—१ धन धन राजल साज ले दीक्षा नो तजि धांम। केवल लहि नै पहिली हिज पहुंती सिव ठांम। जोगीसर नेमीसर सिव सुख विलसै सार। स्री धरमसीह कहै ध्यांन धरयां सुख व्है स्रीकार।

—ध.व.ग्रं.

उ०—२ स्रीगिरनार नमुं नेमीसर, स्रीजिनवर जादव कुळ भांण। जिहां प्रभु त्रिण्ह कल्यांणक हूयउ, दीक्षा ग्यांन अनइ निरवांण।

—स.कु.

नेर—देखो 'नगर' (रू.भे.)

नेरउ—देखो 'निकट' (रू.भे.)

उ०—चद्रबाहु चरण कमळ, मधुकर मन मेरउ हो। अवर देव तिके वणराइ, नावइ कदि नेरउ हो।—स.कु.

नेरणौ—देखो 'नैरणौ' (रू.भे.)

नेरतियौ-वि०—नैऋत्य दिशा की ओर का।

सं०पु०—नैऋत्य दिशा की ओर बहने वाली पवन।

रू०भे०—नैरतियौ।

नेरू-सं०पु० [सं० नख+आलुच् प्रत्य०] १ वह मांसाहारी जानवर जो अपने नाखूनों से किसी पदार्थ को चीर या फाड़ सकता हो।
२ एक रोग विशेष, नहरुआ।
वि०वि०—देखो 'वाळो' (रू.भे.)
रू०भे०—नेहरू, नेहरो, नेंरू, नेरू, न्हारुओ।
नेरै—देखो 'नैरै' (रू.भे.)
नेलियौ—१ देखो 'नैरणो' (रू.भे.)
२ देखो 'नै'लो' (अल्पा०, रू.भे.)
ने'लो—देखो 'नै'लो' (अल्पा.रू.भे.)
नेलो—१ देखो 'नैरणो' (रू.भे.)
२ देखो 'नै'लो' (रू.भे.)
नेव-सं०पु० [देशज] १ ढलुवां छप्पर या मकान में दीवार पर से बाहर की ओर रहने वाला वह छज्जेनुमा भाग जहां से वर्षा का पानी गिरता है, अरवाती, ओलती। उ०—पहिलउं छांटणा तणउ सूसूआट, लोक तणउ कूकूआट, नेव त्रत्रडडइं, खोलड खडहडइं, वीज झळहळ परनाळ खळहळइं, पांणी तणी झुणइं, झुणइं।—व.स.
२ देखो 'न्याव' (रू.भे.)
३ देखो 'नैव' (रू.भे.)
नेवग—देखो 'नेग' (रू.भे.)
नेवगी-सं०पु० (स्त्री० नेवगण) नाई, हज्जाम (डि.को.)
२ देखो 'नेगी' (रू.भे.)
नेवड़-सं०पु० [देशज] आंख, लोचन, नयन। उ०—संइयां मोरी ए, वांकड़ली मूंछां रो जलालो म्हनै मेळ दै, अन हिवड़ा सूं लेवां लगाय। संइयां मोरी ए, पटियां पेचांळो जलालो म्हनै मेळ दै, अन नेवड़ां सूं लेवां समझाय।—लो.गी.
नेवड़ियौ—देखो 'नौड़ियौ' (रू.भे.)
नेछावर—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)
उ०—रतन करां नेवछावरां, ले आरत साजां हो। प्रीतम दिया सनेसड़ा, म्हारो घणो नेवजां हो।—मीरां
नेवज, नेवज्ज—देखो 'नैवेद' (रू.भे.)
उ०—१ कुळदेवी ग्रह पूज सकारण, विजन नव नेवज विसतारण।
—रा.रू.
उ०—२ भाखर माथै मंदिर छै, सेखाळा सूं खिरजां प्रगटियो छै, मीठो नेवज्ज चढै छै।—बां.दा.ख्यात
उ०—३ हव सुरपत तरपत हुवो, नरपत कियो नेवज्ज।
—पा.प्र.
नेवतणो, नेवतबो—देखो 'निमंत्रणो, निमंत्रबो' (रू.भे.)
नेवतणहार, हारो (हारी), नेवतणियो—वि०।
नेवतिओड़ो, नेवतियोड़ो, नेवत्योड़ो—भू०का०कृ०।
नेवतीजणो, नेवतीजबो—कर्म वा०।
नेवतियोड़ो—देखो 'निमंत्रियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० नेवतियोड़ी)
नेवर-सं०पु० [सं० नूपुर] १ स्त्रियों के पांवों में पहना जाने वाला एक आभूषण जो चूड़ी की तरह गोल होता है और भीतर से खोखला होता है।
उ०—१ सीस फूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली सोभा न्यारी। गळै गूजरी कर में कंकण, नेवर पहिरै भारी।—मीरां
उ०—२ सह रांचै जन सादियां, मत बहरो कर मांन। कीड़ी पग नेवर भणक, भणक सुणै भगवांन।—र.ज.प्र.
उ०—३ पछटत खग्ग राठौड़ पठांण। भयंकर कौतिग देखत भांण। रुणंझण नेवर हूवर रंभ। उठै हसि नारद होय अचंभ।
—सू.प्र.
२ घोड़े के आगे वाले पांव की जांघ और नली के मध्य के जोड़ पर पहनाया जाने वाला आभूषण विशेष जिससे घोड़े के चलने पर मधुर ध्वनि निकलती है। उ०—१ घर अंबर भ्रम धोम, घटा डंबर रज घुम्मट। हाक वीर हैहींस, झूल नेवर झणणाहट।—सू.प्र.
उ०—२ कीधा असि चाकरां, तुरत साकुरां तयारी। खुररां मांजी खेह, घजर तुररां सिर धारी। खणणाहट पाखरां, नाद झणणाहट नेवर। पट जेवर पहराय, किया सिणगार कलेवर।—मे.म.
उ०—३ सब साज सजायर, चोट पटासिर, नेवर पायर बाज नखी। गजगाह दुतंगर भीड़ खतंगर, ओप उजाळ'र चोव रखी।
—किसनो दधवाड़ियो
३ घोड़े के पांव से दूसरे पांव पर होने वाली रगड़ या घाव।
४ मनुष्यों के पांव की नली और तलुए के मध्य के जोड़ अर्थात गट्टे पर उस पांव के दोनों टखनों में से भीतर की ओर रहने वाले टखने की उभरी हुई हड्डी।
रू०भे०—नेअर, नेउर, नेवुर।
अल्पा०—नेउरी, नेवरी।
नेवरा-सं०स्त्री०—१ सात मात्राओं की ताल।
२ देखो 'नौ'रा' (रू.भे.)
नेवरिया—देखो 'नौरा' (अल्पा०, रू.भे.)
नेवरियो-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा जिसके अगले पैर चलते समय परस्पर टक्कर या रगड़ खाते हैं।
नेवरी—देखो 'नेवर' (अल्पा०, रू.भे.)
नेवळियौ, नेवळो, नेवलो—देखो 'नकुळ' (२) (अल्पा०, रू.भे.)
नेवारी-सं०स्त्री० [देशज] १ जूही या चमेली की जाति का एक पौधा।
नेवासियौ—देखो 'निवासी' (अल्पा. रू.भे.)
नेवासी—देखो 'निवासी' (रू.भे.)
उ०—कोई जांनवर बोल्यो नहीं, खूडियै रै उनवै में गयो जठै नेवासी बोनिया।—नापै सांखलै री वारता
नेवुर—देखो 'नेवर' (रू.भे.) (डि.को.)
नेवै—देखो 'नेऊ' (रू.भे.)

नवैं'क—देखो 'नेऊं'क' (रू.भे.)
नेवौ—देखो 'नेऊमौं' (रू.भे.)
नेव्हरा—देखो 'नौ'रा' (रू.भे.)
नेस-वि०—बना हुग्रा ।
उ०—उमरावां री साथ धरती हाथ लगाय नै मुजरा करि करि लै छै। निपट ग्रागराई नेस ग्रमल काळीनाग रै रंग, तिको देवगिरी प्याली मांहे घाल ग्रमल फेरीजै छै, तिको गाळियो पीवै छै ।
—राव रिणमल री वात
सं०पु० [सं० निवेश=प्रा० निएस - राज० नेस] १ निवास-स्थान, घर ।
उ०—१ केहरी तणा जमरांण मचतै कंदळि, दुग्रै कर जोड़ियां खड़ी दोहां । पुकारै जवांनी नेस दिस पधारौ, लाजि ग्राखै हमैं वाजि लोहां ।—लिखमीदास व्यास
२ चारणों का जागीर में प्राप्त गांव (डिं.को.)
उ०—नेस संतोसणां भूपत्यां निवाजै, खोसणां ऊपरै रहै खीजी । राठवड़ थाट 'दूदा'-हरा राज में, बिराजै ग्राज हिंगळाज बीजी ।
—मे.म.
३ नगर, शहर । उ०—१ पह परचाड़ां ग्रागळा, है राठौड़ हमेस । 'पतै' लिया पतसाह कज, निहस जरमनां नेस ।—किसोरदांन बारहठ
उ०—नेस वचाया कोळिया, पेस धरै नृप पाय । पाटण 'ग्रजन' पधारिया, ग्ररि पागडै लगाय ।—रा.रू.
४ जंगली जानवरों के नुकीले दांत ।
५ ऊंट के अगाड़ी के दांत ग्रौर दाढों के मध्य के दांत जो उसकी ग्रायु के सूचक माने जाते हैं तथा प्राय: इन्हीं दांतों से वह काटता है। उ०—नीहरथी भोक भागूंड भल्लेस। कहै छुंट चसळकतै नेस ।—सू.प्र.
रू०भे०—ने' ।
६ ग्रसुर, राक्षस ।
उ०—दायक खवर रांम सिय दोड़ा । तोयक काळ नेस सिर तोड़ा ।
—र.ज.प्र.
७ एक प्रकार का बहुत तेज शराब जो नौवीं वार उलटाने पर तैयार होता है ।
उ०—१ हरख जलालो चित हुवै, पीदां प्यालो नेस। पीव विलालो पिलंग परि, वालो लागै वेस ।—पनां वीरमदे री वात
उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति दारू री पांणीगी मंडियो छै, सो किण भांत रौ दारू उलटे री पलटे, पलटे री ग्रेराक, ग्रेराक़ री वैराक, वैराक री संदळी, संदळी री कंदळी, कंदळी री कहर, कहर री जहर, जहर री कटाव, कटाव री नेस, नेस री जेस, जेस री मोद, मोद री कमोद ।— रा.सा.सं.
८ देखो 'निसा' (रू.भे.)
उ०—दीरघ नेसां री छांणां तप देती। लांबा केसां री दांणां लप लेती । वेगी छेटी बिन भेटी भुज भारी। पातळ पेटी निज वेटी सम प्यारी ।—ऊ.का.
ग्रल्पा०—नेसड़ौ, नेसडो ।
नेसड़ू, नेसड़ौ, नेसडू, नेसडो—देखो 'नेस' (ग्रल्पा०, रू.भे.)
उ०—नाह नूं नेसडू जिहां हुई नवि घटइ प्राकार रे, गहिला नइ नवि घटइ सुभ ग्रसुभ विचार रे ।—नळदवदंती रास
नेसन-सं०स्त्री० [ग्रं० नेशन] जाति, वर्ण ।
उ०—ग्राइयो ग्रंगरेजां ग्रदभुत गतिवाळो, इंगळिस नेसन रा देसन उजवाळो ।—ऊ.का.
नेसला-सं०स्त्री० [देशज] ऊंट के चारजामे को 'चढ़ों' से बांधने की रस्सी (शेखावाटी)
नेसार, नेसारू—देखो 'नेसावर' (रू.भे.)
नेसाळ, नेसाळा-सं०स्त्री० [सं० लेखशाला] १ पाठशाला ।
उ०—१ पांच वरस नूंते थयूं ए, पिता मनि बिमासइ । पुत्र नेसाळइ मेल्हीइ ए, जिम विद्या ग्रभ्यासइ ।—नळदवदंती रास
उ०—२ फिरंति फिरंतइं नयरह मांहि दीठी तिणि नेसाळ। तिहिं ग्रावि पंडित पणमी नइ वइठउ ग्रति सुकमाळ ।
—विद्याविलास पवाडउ
२ देखो 'नेसाळौ' (मह०, रू.भे.)
रू०भे०—निसाळ, निसाळा, नेसाळो, लेहाळा ।
नेसाळियो-सं०पु० [सं० लेख+शाला+रा.प्र. इयो] १ विद्यार्थी ।
उ०—गाढी खांतिइं तेह भणंता ग्रक्षर एक न ग्रावइ । तेह रहइ तीणइं ग्रसमाधिइं भोजन मावि न भावइ नेसाळिया ते देखि मूरख मूरख पट्ट कहंति । तिम तिम ते मनि दूहवीइ ग्रंतराय फळ हूंति ।
—विद्याविलास पवाडउ
२ देखो 'नेसाळौ' (ग्रल्पा०, रू.भे.)
नेसाळौ-सं०पु० [राज० नेस+सं० ग्रालुच्] वह ऊंट जिसके चौभड़ के दांत पूरे ग्रा गए हों।
ग्रल्पा०—नेसाळियो, नेसावरियो ।
नेसावर-सं०पु० [देशज] वह ऊंट जिसके नेस (चौभड़) के दांत पूरे ग्रा गए हों ।
रू०भे०—नेसार, नेसारू ।
ग्रल्पा०—नेसावरियो ।
नेसावरियो—देखो 'नेसावर' (ग्रल्पा०, रू.भे.)
उ०—फोड करायां करै भरण नै पालो भारी, ऊंटां ढेरा ढोय छापवै वाड़ां सारी । मावट पोवट मध्य गुलम गण कूंपळ काढे, नेसावरिया डगा घणरा घुरडै वाढै ।—दसदेव
नेसास—देखो 'निस्वास' (रू.भे.)
उ०—वढियो सदा सिंघासण बणतां, रोस रीभ सिंधुरां सिरै । पड़िया खळ नेसास करै पग, कव चढिया ग्रासीस करै ।
—महारांणा सांगा दूसरा री गीत
नेसासौ—देखो 'निस्वास' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

उ०—फौज रा आदमी उण आदमी री आस उण रा वसण याद करै है तौ नेसासा न्हांखतां जीव जावै ।—वी.स.टी.

नेस्ती-सं०पु०—जाति विशेष ।

उ०—सोनी पारखी जवरीह गांधी दोसी नेस्ती कणसारा ।

—व.स.

नस्तावळ—देखो 'निछरावळ (रू.भे.)

नेह—देखो 'सनेह' (रू.भे.)

उ०—१ वार-वधू ही हरण वित, नेह जणावै नैण । यूं सिर लेवा ऊचरै, वैरी मीठा वैण ।—बां.दा.

उ०—२ मन मांणक गहणौ धर्‌यौ, मित तुमारे पास । नेह व्याज अति वाढ्यौ, नहिं छूटण की आस ।—अज्ञात

उ०—३ बळ नेह दिवलौ बळै, औ भरियौ अपकार । राख नेह बळतां रयी, विधु बदनी बळिहार ।—रेवतसिंह भाटी

उ०—४ आंत ओज भेळी असत, नैण नळी भख नेह । आमिख नर नांखै उदर, आंणै हरख अछेह ।—बाँ.दा.

नेहड़ली—देखो 'सनेह (अल्पा., रू.भे.)

उ०—फंदा मैं मोडां रै फसगो, रुळगो रेहड़ली । भेख धारतां कीधी भूंडी, कुबधां केहड़ली । मात पिता की छोडी मोवत, मोजां मेहड़ली । सात जात मोडां सूं सांधी, नाहक नेहड़ली । बणियौ नहीं आछौ कांम, बीर यूं ही बीती वेहड़ली ।—ऊ.का.

नेहड़ी-सं०स्त्री०—मथनिया (मथनी) के ठीक पास खड़ा वह काष्ठ या डंडा जिसको दही मथते समय मथानी के साथ बंधन से जोड़ते हैं जिससे मथानी नथनी के ठीक मध्य में सीधी रह सके ।

रू०भे०—नेंडी ।

नेहड़ौ—देखो 'सनेह' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—१ प्रभूजी थे कहां गया नेहड़ौ लगाय ।—मीरां

उ०—२ नेहड़ा जोड़ अछरां नयण, जुध हणमत पथ जेहड़ा । नव सहस तणा कर वहसि नर, उरस छिवै भड़ एहड़ा ।—सू.प्र.

नेहचै—देखो 'निस्चय' (रू.भे.)

उ०—वीकानेर भोज, वाढाळै सारां मुंह ओडवे सरीर । 'रूपा-हरे' राखियो रूड़ो, नेहचै इ ऊतरतौ नीर ।

—भोजराज रूपावत रो गीत

नेहचौ—देखो 'नैंचौ' (रू.भे.)

नेहटौ, नेहठौ—देखो 'नेग्रटौ' (रू.भे.)

नेहडौ, नेहढौ—देखो 'निसंडौ' (रू.भे.)

(स्त्री०—नेहडी, नेहढी)

नेहणौ—१ देखो 'नैरणौ' (रू.भे.)

२ देखो 'नैंणौ' (रू.भे.)

३ देखो 'नयन' (अल्पा०, रू.भे.)

नेहणौ, नेहबौ-क्रि०स० [सं० स्नेहनम्] स्नेह करना, प्रेम करना ।

उ०—गज रथ रमणि तुरंगम रंग महा भलउ तांम, जन परिजन परिपालन काल न पुजइं जांम । जोइन तउ संयम नी संयम नी जइ सीख, परिहरि नारि न नेहिय रे हियडा लइ दीख ।

—नेमिनाथ फागु

नेहणहार, हारौ (हारी), नेहणियौ—वि०

नेहियोड़ौ—भू०का०कृ०

नेहीजणौ, नेहीजबौ—कर्म वा० ।

नेहप्रिय, नेहप्रीय-सं०पु०यौ० [सं० स्नेहप्रिय] दीपक (नां.मा.)

नेहरु, नेहरौ—देखो 'नेरु' (रू.भे.)

नेहलउ, नेहलु, नेहलौ—देखो 'सनेह' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ हा हा ! वीर तइं स्युं करयुं जी रे जी, गौतम करत अनेक विलाप रे । जेतलउ कीजइ नेहलउ जी रे जी, जिवड़ा तेतलउ हुयइ पछताप रे ।—स.कु.

उ०—२ देवदंती नु नेहलु, जैसीउ रंग पतंग ।

—नळ दवदंती रास

उ०—३ ढांक्यौ न रहै किम ही नेहलौ । जो करै कोडि उपाय ।

—स्रीपाळ

नेहवाळ, नेहवाळौ-वि० [सं० स्नेह+आलुच्] संतान के प्रति पूर्ण स्नेहयुक्त, वत्सल (डिं.को.)

नेहवी-वि०स्त्री० [सं० स्नेह+रा.प्र. ई] प्रेयसी, प्रेमिका ।

उ०—उज्जळ दंता घोटड़ा, करहइ चढ़ियउ जाहि । तइं घर मुंध कि नेहवी, जे कारणि सी खाहि ।—ढो.मा.

नेहां-नेह, नेहानेह-सं०पु० [सं० स्नेहा] दीपक (अ.मा.)

नेहा—देखो स्नेह' (रू.भे.)

उ०—गायव अरच चींतव सुख गेहा, मत छोडै नेहा मत्त मंद ।

—र.ज.प्र.

नेहालंदी-वि०स्त्री० [सं० स्नेहानंदिनी] प्रेयसी, प्रेमिका ।

उ०—दिसि चाहंती सज्जणा, नेहालंदी मुंध । सा धण ऋंभि-बचाह ज्यउं, लंबी थई तुं कंध ।—ढो.मा.

नेहाळ, नेहाळू, नेहाळौ-वि० [सं० स्नेह+आलुच्] (स्त्री० नेहाळी) प्रेमी । उ०—नेहाळू नजरांह, जोइ कांमण पर हत्थ 'जसा' । विरही पारेवाह, तारा हूं तूटे पड़ै ।—जसराज

नेहियोड़ौ-भू०का०कृ०—स्नेह किया हुआ, प्रेम किया हुआ ।

(स्त्री० नेहियोड़ी)

नेही—देखो 'सनेही' (रू.भे.)

उ०—१ खूबी न रही काय, खतंगां खंजनां । नेही ह्वै मुनिराज, विसारी निरंजनां ।—बां.दा.

उ०—२ भमहां ऊपरि सोहलौ, परिठिउ जांणिक चंग । ढोला एही मारुवी, नव नेही नव रंग ।—ढो.मा.

नेहु—देखो 'सनेह' (रू.भे.)

उ०—लिपइ ताव निकंदनि, चंदनि चंदनि देहु । निज निज नाथ संभारिय, नारिय नवलउ नेहु ।—नेमिनाथ फागु

नेहो—१ देखो 'सनेह' (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'सनेही' (अल्पा०, रू.भे.)
नँ—देखो 'नै' (रू.भे.)
नैंग-सं०पु० [सं० न्यङ्ग] वह साधु या संन्यासी जिसने विवाह न किया हो।
रू०भे०—नहंग, निहंग।
नैंगी-सं०स्त्री० [सं० न्युब्ज] काष्ठ का बना उपकरण जिस पर घास रख कर गंडासा से काट कर महीन किया जाता है, अहुटन।
रू०भे०—नींगा, नींगाह।
नैंज-सं०पु० [देशज] प्रबंध। उ०—'आजम' दक्खण हूंत उलट्टौ, विकट धनुख सर जांण विछूट्टौ। उत्तर धरा सूं 'आलम' आयौ, सौंज नैंज दळ तेज सवायौ।—रा.रू.
नैंण—देखो 'नयन' (रू.भे.)
उ०—वार वधू ही हरण वित, नेह जणावै नैंण। यूं सिर लेवा ऊचरै, वैरी मीठा वैंण।—बां दा.
नैंणी—देखो 'नखहरणी' (रू.भे.)
नैंतणौ, नैंतवौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रवौ' (रू.भे.)
नैंतणहार, (हारौ, हारी) नैंतणियौ—वि०।
नैंतिओड़ौ, नैंतियोड़ौ, नैंत्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नैंतीजणौ, नैंतीजवौ—कर्म वा०।
नैंतियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नैंतियोड़ी)
नैंरांत—देखो 'नैरांत' (रू.भे.)
नैंसार—देखो निसार' (रू.भे.)
उ०—ए थया जाडा आदमी, गत कुटळ जींद अमीर। पैंसार सूं नैंसार मुसकल, वणै सी सुणै वीर।—पा.प्र.
नै-अव्यय [सं० कर्ण, प्रा० कण्णहि=कनइ=नइ=ने=नै] दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाला शब्द, एक संयोजक अव्यय।
उ०—१ तरै तोत करनै रावळ नै लाडक चड़भड़िया।—नैणसी
उ०—२ विजाजी! तूं नै थारो भाई वर्व वडा रजपूत छै।
—चौबोली
उ०—३ थे धरती दाबी छै सु थांहरी नै म्हां हेठै छै सु मांहरी छै, इण वात री सील कोल करो।—नैणसी
क्रि०वि०—ओर, तरफ।
ज्यूं—जठी नै, उठी नै, अठी नै।
प्रत्यय—१ कर्मकारक का विभक्ति, प्रत्यय, को।
उ०—१ गरढी गंधारीह, जिण नै पूछो जायनै। सो कहसी सारीह, ऋत अऋत री कैरवां।—रांमनाथ कवियो
उ०—२ रथ थंभि सारथी विप्र छंडी रथ, श्री पुर हरि बोलिया इम। आयौ कहि कहि नांम अम्हीणौ, जा सुख दे स्यांमा नै जिम।
—वेलि.
[सं० कृत्वा, मा० ऊण=नै ?] २ पूर्वकालिक क्रिया के साथ जुड़ने वाला प्रत्यय।
उ०—१ अठै रहतां करतां वरस १ हुवौ ताहरां गोह री बचो एक पाळियो। पाळि नै हार ही में सभाई।—चौबोली
उ०—२ बीजो तो धाड़ा घणाही करो छो छोटा मोटा। इतरो कहतां वेउ जणां ऊठि नै चळू करेनै बोलिया।—चौबोली
[सं० तुमुन्] ३ असमापिका अथवा उत्तर कालिक क्रिया के साथ जुड़ने वाला प्रत्यय।
ज्यूं—पढ़ण नै आयो हूं। खेलण नै आयो हूं।
रू०भे०—न, नइ, नउ, नऊं, ने, नें।
सं०स्त्री० [फा०] १ हुक्के की निगाली।
रू०भे०—नय।
२ देखो 'नदी' (रू.भे.)
नैउरियौ—देखो 'नौरियौ' (रू.भे.)
नैकाळ—देखो 'निकाळ' (रू.भे.)
उ०—खरच खजांनो साथ ले, राजा कनकरथ कूच कियो सो महिनै डेढ़ सूं पाटण पूगो। सहर रै नैकाळ बडो ताळाब हुतो।
—पलक दरियाव री वात
नैगवीन-सं०पु० [सं० नवगवीन या नवगव्य] मक्खन, नवनीत (अ.मा.)
रू०भे०—नेगवीन।
नैंड़ी-सं०स्त्री० [देशज] दही मथने की मथानी के सहारे का मथ दण्ड।
उ०—ताखी, ताव तमांम, पीनणी अर पुसळाई। नैंड़ी थंड़ी तणी, जाळ वसतुवां वणाई।—दसदेव
नैड़ै, नैड़ैरौ, नैडौ-वि० [सं० निकट, प्रा. निअड] (स्त्री० नैड़ी) निकट, पास, समीप।
उ०—१ यूं लड़ता झगड़ता दोनूं नवनाथ चौरासी सिद्धां रै नैड़ै गया। तद उहां इणां री वातां सुण इण रै पुरव जनम री वात जांण'र कही।—डाढ़ाळा सूर री वात
उ०—२ हाजर दीठां हजूरिया, नैड़ां नैड़ै रा।
—केसोदास गाडण
उ०—३ काळ ऊभो 'जसो' संकै नैड़ा करी। कुणि सती पयोहर मूछ लै केहरी।—हा.झा.
उ०—४ अर द्वारिका दूरि छै। सु राजि तहां विराजौ छौ। अर विवाह रउ दिन नैड़ो आयो। अर दुसमन आय नैड़ो बइठो।
—वेलि.टी.
उ०—५ दिन लगन सु नैड़ौ, दूरि द्वारिका, भो पहुचेस्यां किसी भति। सांझ सोचि कुंदणपुरि सूतो, जागियो परभाते जगति।
—वेलि.
उ०—६ अळगी ही नैड़ी की ऊखवते। देठाळो हुओ दळां दुंह। वागां ढेरवियां वाहरुए, मारकुए फेरिया मुंह।—वेलि.
रू०भे०—नइड़ो, नइडउ, नड्डो, नैरो।

नैचाबंद-वि० [फा०] हुक्के का नैचा बनाने वाला।
नैचौ-सं०पु० [फा० नेच:] हुक्के की निगाली।
नैं'चौ—देखो 'नहचौ' (रू.भे.)
नैछै-क्रि०वि० [सं० निश्चय] निशंक, निश्चित।
उ०—नैछै नींद लियां जा नैणां यां सुं कदै न डरणौ। जीणौ जग में गाजां-बाजां, ढोल घुरंतां मरणौ।—चेत मांनखा
नैछौ-सं०पु० [सं० निश्चय] निशंकता, निश्चय, तसल्ली।
उ०—रंभा रौ सरीर जांणै सांचा में ढळयोड़ौ हौ। सांवरियै सायद फुरसत में बैठ'र नैछा सूं घड़ियौ हौ।—रातवासौ
नैजण—देखो 'नूंजणौ' (मह०, रू.भे.)
नैजणियौ—१ देखो 'नूंजणियौ' (रू.भे.)
२ देखो 'नूंजणौ' (अल्पा०, रू.भे.)
नैजणी-सं०स्त्री—देखो 'नूंजणौ' (अल्पा०, रू.भे.)
नैजणौ—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे.)
नैजणौ, नैजबौ—देखो 'नूंजणौ, नूंजबौ' (रू.भे.)
नैजणहार, (हारौ) हारी, नैजणियौ—वि०।
नैजिग्रोड़ौ, नैजियोड़ौ, नैज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नैजीजणौ, नैजीजबौ—कर्म वा०।
नैजियोड़ौ—देखो 'नूंजियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नैजियोड़ी)
नैठाव—देखो 'नेठाव' (रू.भे.)
नैड—देखो 'नांड' (रू.भे.)
नैण—१ देखो 'नयन' (रू.भे.)
उ०—सिणगारी भूखण सिलह, अति छवि धारी आज। प्यारी किण ऊपर प्रगट, सजे सिकारी साज। सजै सिकारी साज, आज किण ऊपरै। मारण कारण अगाक रसिया रूप रै। चपळ चलाक चुटैत दियै दिल-दारकां। नैण भळक्का नेह भळक्का सार का।
—सिवबक्स पाल्हावत
२ दोकी संख्या* (डि.को)
नैणभर-सं०पु० [सं० नयन-क्षरणम्] १ ऊंट का एक नेत्र रोग जिससे ऊंट की आंख से निरन्तर पानी टपकता रहता है।
२ इस रोग से पीड़ित ऊंट।
नैणसुख-सं०पु०यौ० [सं० नयन+सुख] एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।
नैण-हजार-सं०पु०यौ० [सं० नयन+फा० हजार] इन्द्र (डि.को.)
नैणी—देखो 'नखहरणी' (रू.भे.)
नैण-सघण-सं०पु०यौ० [सं० नयन-सघन] मेघ, बादल।
(ना.डि.को.)
नैं'णौ-सं०पु० [देशज] घास-फूस, मूंग, मोठ, गवार आदि को उखेड़ कर या काट कर बनाया हुआ छोटा ढ़ेर।
रू०भे०—नेहणौ।

नैंत-सं०स्त्री० [सं० निमंत्रणं] १ विवाहादिक मांगलिक अवसरों पर कुटुम्बियों, सगे-सम्बन्धियों तथा इष्ट-मित्रों के यहां रुपया आदि देने की एक प्रथा या रस्म।
२ वह भेंट या धन जो मांगलिक अवसरों पर कुटुम्बियों, सगे-सम्बन्धियों द्वारा दिया जाता है।
रू०भे०—नूंत, नूत, न्यूंत।
अल्पा०—निमतरौ, निमतौ, निवतरौ, निवतौ, नूंतौ, नूतौ, नैंतौ, नेहतौ, नोतौ, नोहतौ।
यौ०—नैंत पांत।
नैंतणौ, नैंतबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रबौ' (रू.भे.)
नैंतणहार, हारौ (हारी), नैंतणियौ—वि०।
नैंतिग्रोड़ौ, नैंतियोड़ौ, नैंत्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नैंतीजणौ, नैंतीजबौ—कर्म वा०।
नैतबंध, नैंतबंधी—देखो 'नेतबंध' (रू.भे.)
उ०—पीठ घणौ फेरतां, अणी मुड़िया असुरांणां। मद 'विलंद' मूकियौ, मुगळ सैयद पट्ठांणां। नैंतबंध बांनैत, मेळ रणखेत महंतां। विना दिवाळी वंध, जीण खाली मेमंतां। वय सोच कंप सम्मर विरह, करै संकोच फकीर रौ। कारण अथाह वरणै क्रमण, उर दुख दाह अमीर रौ।—रा.रू.
नैंतरौ—देखो 'निमंत्रण' रू.भे.)
नैंतियार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)
उ०—नैंतियार जिणरौ नृपत, समाधांन सरसाय। विदा किया दसरथ वडौ, पह दे कुरब प्रसाय।—र.रू.
नैंतियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नैंतियोड़ी)
नैंतौ-सं०पु० [सं० निमंत्रणं] १ एक प्रकार का सरकारी कर जो मांगलिक अवसरों पर प्रजा से वसूल किया जाता था।
२ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)
नैन—१ देखो 'नैनम' (रू.भे.)
२ देखो 'नयन' (रू.भे.)
नैनकड़ौ, नैनकियौ—देखो 'नैनौ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ रात री ए नैनकड़ी वैन, उडै कूंकूं थाळ संभाळ।
—सांभ
उ०—२ जळ पीधौ जाडेह, पावासर रै पावटै। नैनकियै नाडेह, जीव न धापै जेठवा।—जेठवा
(स्त्री० नैनकड़ी, नैनकी)
नैनणौ—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे.)
नैनणौ, नैनबौ—देखो 'नूंजणौ, नूंजबौ' (रू.भे.)
नैनप, नैनम-सं०स्त्री० [सं० न्यंच्] जवानी को प्राप्त न होने की अवस्था, अवयस्कता, नाबालिगी।
क्रि०प्र०—पड़णौ, होणौ।

रू०भे०—नांन, नैंन ।

नैंनियौ—देखो 'नैंनौ' (अल्पा०, रू.भे.)
(स्त्री० नैंनकी)

नैंनौ-वि० [सं० न्यंच्] (स्त्री० नैंनी) १ जो आकार में कम या न्यून हो, जो बड़ाई या विस्तार में कम हो, जो डीलडौल में कम हो।
उ०—कहै दास सगरांम कांम माछर रौ करड़ौ, मोटौ होय तौ करै, पापी औ पिरथीपरड़ौ । पिरथी रौ परड़ौ करै, ऐड़ौ देख्यौ घाट । आछी कीवी रांमजी, नैंनौ कियौ निराट । नैंनौ कियौ निराट, तोई कररावै वरड़ौ । कहै 'दास सगरांम', कांम माछर रौ करड़ौ ।
—सगरांमदास

यौ०—नैंनौ-मोटौ ।

२ जो आयु में कम हो, जिसकी वय अल्प हो, जो छोटी आयु का हो । उ०—अलावा इण रै सब सूं मोटी वात ही ठाकर रौ निरमळ चाल-चलण । इण वास्तै मोटी सो मा अर नैंनी सो वहन ।
—रातवासौ

३ जो पद, प्रतिष्ठा, शक्ति, गुण, योग्यता, मानमर्यादा आदि में न्यून हो ।
ज्यूं—नैंना मिनखां रौ आदर कम होवै है ।

४ जो महत्व का न हो, जिसमें कुछ सार या गौरव न हो ।

५ ओछा, क्षुद्र, नीच । उ०—नैंना मिनख नजीक, उमरावां आदर नही । ठाकर जिण री ठीक, रण में पड़सी राजिया ।
—किरपारांम

सं०पु०—बच्चा ।
ज्यूं—औ किणरौ नैंनौ है ।

रू०भे०—नांनूं, नांनू, नांनौ, न्हांनूं, न्हांनू, न्हांनौ, नांन्हउ, नांन्हौ ।
अल्पा०—नांनकड़ौ, नांनकियौ, नांनड़ियौ, नांनड़ौ, नांनियौ, नांन्यौ, नांन्हकड़ियौ, नांन्हकड़ौ, नांन्हड़ियौ, नांन्हड़ौ, नैंनकड़ौ, नैंनकियौ, नैंनियौ, नैंन्यौ, न्हांनड़ियौ, न्हांनड़ौ ।

नैंन्यौ—देखो 'नैंनौ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—घरै आयां सूं चोधरण थोड़ी हिम्मत बंधाई, भगवान राजी-खुसी राखो थांनै अर म्हारा नैंन्या नै ।—रातवासौ

नैंन्हौ—देखो 'नैंनौ' (रू.भे.)
उ०—१ इतरै जांझरकै री वखत री ठाढ़ी पवन आई । तीं पवन रै साथ हरिया जवां री वोय आई । तद भूंडण ऊठ बैठी हुई और कही—हरिया जवां री खुसवू आवै छै । हालो जौ चरां । तद डाढाळै कही—जव सिरोही रै धणी रा छै । इयां जवां ऊपर कजियौ होसी । चील्हर नैंन्हा छै । मारिया जासी ।
—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ इण चख वरसै आग, जद नजर म्हांनूं जोवै । नैंन्हौ दाटक नाग, औ कमधां रै केड़ रौ ।—पा.प्र.

नैपत्ति—देखो 'नैपै' (रू.भे.)
उ०—खुरासांण नैपत्ति, असल ऐराकी चंचळ । पाखर मैं परचंड, पंख पाहाड़ अचग्गळ ।—गु.रू.वं.

नैमखार, नैमसार, नैमसारण्य—देखो 'नैमिसारण्य' (रू.भे.)
उ०—१ नैमखार मिस्र में सरव तीरथ आया । पुसकर, प्रयाग न आया । एक गुर, एक राजा तीरथां री जिगसूं ।—बां.दा.ख्यात
उ०—२ प्रथम दंडकारण्य सिंधु मारण्य वखांनो । जांबु सु पुस्कर जांन उत्पलावरत स मांनो । नैमसारण्य वसेख कुरुह जांगळय कहीजै । अरबुद हेमवत निमख जो वास लहीजै ।—गजउद्धार

नैमित्य-वि० [सं०] नियमपूर्वक । उ०—दिपै आवड़ा आद प्रासाद दूजा । पुजारा करै नित्य नैमित्य पूजा । चवै चंडिका चंडिका दीप चासै । पिसै ठीक वाल्हीक स्रीखंड पासै ।—मे.म.

नैमिस-सं०स्त्री० [सं० नैमिष] १ महाभारत के अनुसार यमुना के दक्षिण तट पर बसने वाली एक जाति ।
सं०पु०—२ नैमिपारण्य तीर्थ ।

नैमिसारण्य-सं०पु० [सं० नैमिषारण्य] एक प्राचीन वन जो हिन्दुओं का तीर्थस्थान माना जाता है ।
रू०भे०—खारणनैम, नीमखार, नीमसारण्य, नैमखार, नैमसार, नैमसारण्य ।

नैयण—देखो 'नयन' (रू.भे.)

नैयर—देखो 'नगर' (रू.भे.)

नैयौ—देखो 'नैरणौ' (रू.भे.)

नैरति—देखो 'नैरित्य' (रू.भे)
उ०—नैरंति प्रसरि निरधण गिरि नीझर, धणी भजै धण पयोधर । झोलै वाइ किया तरु झखर, लवली दहन कि लू लहर ।—वेलि.

नै'र-सं०स्त्री० [फा० नह्र] १ वह कृत्रिम जलधारा जो खेतों की सिंचाई, नावें चलाने, जलाशयों या झीलों को भरने अथवा दो बड़ी झीलों को परस्पर जोड़ने के उद्देश्य से बनाई जाती है ।
उ०—छेकड़ धोरी धाप जावै, छोड़ै लांमा खाळिया । सांच जांणै समदर खेलै, नै'र नदी अर नाळिया ।—दसदेव
रू०भे०—नहर ।

नैर—देखो 'नगर' (रू.भे., डि.को.)
उ०—१ तई नैर ओछाड़ियौ हेम तारां, हुवा भांण उद्दोत जांणै हजारां । सझै गायणी सोळ सिंगार साजा, वजावै छहै तीस आणंद वाजा ।—सू.प्र.
उ०—२ पहली प्रस्थांन प्राची में ही करि खटपुर रा धणी गौड़ गजमल्ल नूं गंजि पाटणि रा अधीस मोहिल मनोहरदास नूं मारि दो ही नैर आपरै वसीभूत किया ।—व.भा.

नैरणी—देखो 'नखहरणी' (रू.भे.)

नैरणौ-सं०पु० [देशज] बढ़ई का एक औजार ।
रू०भे०—नेरणौ, नेलियौ, नेलौ, नेहणौ, नैयौ, नैलियौ, नैलौ, नैहणौ ।

नैरत—देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)
उ०—तठां उपरांत करि नै राजांन सिलांमति इतरा मां ग्रीखम रित आई छै, सो किण भांत री वखांणीजै छै। नैरत दिसा री ऊनौ पवन वाजियौ छै, उन्हाळसी प्रगटियौ छै, जेठ मास लागौ छै।
—रा.सा.सं.

नैरतां-सं०स्त्री० [सं० नैर्ऋती] दक्षिण पश्चिम के मध्य की दिशा, दक्षिण व पश्चिम के बीच का कोण।
उ०—इंद अगन जम राखसां, नैरतां वाळां, वरुण पवन कुवेर ईस, आठूं दिगपाळां।—गजउद्धार

नैरतियौ—देखो 'नेरतियौ' (रू.भे.)

नैरांत-सं०स्त्री० [सं० निर्+अंतक] १ शांति, चैन।
२ चित्त की स्थिरता, धैर्य्य, धीरज, सब्र।
३ तृप्ति, सतोष।
४ क्षोभ, वेग आदि का अभाव।
५ स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती
रू०भे०—निरांत, निरांति, नीरांत, नीरांयत।

नैरावौ-सं०पु० [सं० नीराज] १ ब्राह्मण को भिक्षा के रूप में दिया जाने वाला अन्न।
२ पूजा, पूजन।
३ स्वागत, सम्मान।

नैरित-सं०पु० [सं० नैर्ऋत] १ दक्षिण पश्चिम कोण का स्वामी जो ज्योतिष के मत से राहु माना जाता है।
२ मूल नक्षत्र।
३ दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा का पुत्र, राक्षस।
वि०—१ दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा सम्वधी
२ देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)

नैरिती-सं०स्त्री० [सं० नैर्ऋती] १ दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।
२ देखो 'नैरित्य' (रू.भे.)

नैरित्य-सं०स्त्री० [सं० नैर्ऋत्य] दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।
वि०—१ दक्षिण और पश्चिम के मध्य का।
२ निर्ऋति देवता का। (पशु आदि)
रू०भे०—निरत, निरति, निरात, नेरति, नैरत, नैरिती।

नैरित्यकोण-सं०पु० [सं० नैर्ऋत्य कोण] दक्षिण और पश्चिम के मध्य का कोना, दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।

नै'री-वि० [फा० नह्] १ जिसमें नहर द्वारा सिंचाई होती हो (भूमि)
२ नहर का, नहर संबंधी।
रू०भे०—नहरी।

नैरू, नैरु—देखो 'नेरू' (रू.भे.)

नैरै-स०पु० [सं० निरहर] शव को श्मशान भूमि में ले जाने की क्रिया, शव ढोने की क्रिया।
रू०भे०—नेरै

नैरौ—१ देखो 'न्यारौ' (रू.भे.)
२ देखो 'नैड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नैरी)

नैलियौ—१ देखो 'नैरणौ' रू.भे.)
२ देखो 'नैलौ' (रू.भे.)

नैली—देखो 'नैलौ' (अल्पा०, रू.भे.)

नैलौ-सं०पु०—१ ताश के खेल में वह पत्ता जिस पर नौ बूंटियां या चिन्ह हों।
रू०भे०—नेलौ।
अल्पा०—नेलियौ, नेली, नैलियौ, नैली।
२ देखो 'नैरणौ' (रू.भे.)

नैव-क्रि०वि० [सं०] बिल्कुल नहीं, नहीं। उ०—ए गंधकारी मिसि रूप दासी, रही अछइ उत्तम नारि नासी। किमइ न जांणिउं फळ नैव खाजइ, अणजांणतु अंध उवाडि दाभइ।—विराटपर्व

नैवेद, नैवेद्य, नैवेद्ध, नैवेंध्य-सं०पु० [सं० नैवेद्य] १ देवता को अर्पित किया जाने वाला भोज्य पदार्थ, देव-भोग।
उ०—१ प्रतिदिन होत वेद विधि पूजन, घुरियत तत आनद्ध सिसर घन। धूप दीप नैवेद पुह्प फळ, कस्मीरज मलयज नागज कळ।
—मे.म.
उ०—२ देवी कहां द्वारामती कांचि कासी, देवी सातपुरी परम्मा निवासी। देवी रंग रंगे रमै आप रूपै, देवी व्रित नैवेद ले दीप धूपै।
—देवि.
उ०—३ नांना विधि ना सूखडां, नांना विधि नैवेद्य। नाना रति मांणीइ, भक्ति मांहि नहिं भेद।—मा.कां.प्र.
उ०—४ नैवेद्य पहली संकल्प सुणै पछै अबोट लोटा भर नै चौसठ विध्यारथी चौसठ जोगणी छै।—पंचदंडी री वारता
उ०—५ नांना प्रकार का नैवेद्य धरिया। तांवूळ करपूर सुवासित धरिया।—सिंघासण वत्तीसी
रू०भे०—निवेद्य, निवेध, निवेधी, नीवेद, नेवज, नेवज्ज।

नैसंक—देखो 'निसंक' (रू.भे.)
उ०—व्रिछ छै एही पुरस हुआ। गेलि छै सु अस्त्री हुई। सु गेलि नैसंक हुई। आप आपणा भरतार नै आलिंगण देण लागी।
—वेलि. टी.

नैसंकौ—देखो 'निसंक' (अल्पा०, रू.भे.)

नैस्टिक, नैस्ठिक-सं०पु० [सं० नैष्ठिक] उपनयन काल से लेकर मृत्यु-पर्यंत ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला।
उ०—नैस्ठिक ब्रह्मचारी निपुण, भयौ संन्यासी भूर। इकदम आरचा वरस को, दुख कीनौ सब दूर।—ऊ.का.
वि०वि०—याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार नैष्ठिक ब्रह्मचारी को

यावज्जीवन गुरु के पास या गुरु-आश्रम में ही रहना चाहिए ।

नेहचै—देखो 'निश्चय' (रू.भे.)

उ०—वीर पुरस री स्त्री कहै, हे माता ! हथळेवा में हाथ देतां ही मैं नेहचै (निश्चै) ही आ बात आछी तरह समझली कि रात दिन तरवार कनै रहणा सूं हाथ में तरवार री मूठ रा आंटण पड़ गया है ।—वी.स.टी.

नेहचौ—देखो 'नहचौ' (रू.भे.)

नेहडौ—१ भाटी वंश की नेहडा शाखा का व्यक्ति ।

उ०—नयडी मुझ मांत हमैं नेहडी । सुपियार रखैं किम तेल चढ़ी ।

—पा.प्र.

२ देखो 'निसंडौ (रू.भे.)

(स्त्री० नेहडी)

नेहणौ—देखो 'नेरणौ' (रू.भे.)

नेहतणौ, नेहतबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रवौ' (रू.भे.)

उ०—किण ही साहूकार आरौ कियौ । घणा गांम नेहत्या । लोक जीमता कांयक बारदांनौ घट गयौ ।—भि.द्र.

नेहतणहार, हारौ (हारी), नेहतणियौ—वि० ।

नेहतिओड़ौ, नेहतियोड़ौ, नेहत्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

नेहतीजणौ, नेहतीजबौ—कर्म वा० ।

नेहतियार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)

नेहतियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नेहतियोड़ी)

नेहतौ—१ देखो 'नैत' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—जद सांमीजी बोल्या कोई रै किरियावर थयां गांम में नेहता फेरै । जद कहै अमकड़िया रै नेहतौ खेमासाह रै घर रौ ।—भि.द्र.

नेहराई-सं०स्त्री० [देशज] १ विलम्ब, देरी ।

२ शैथिल्य । उ०—फेर स्वांमीजी द्रस्टांत दियौ । किणहि दातार साधु नै घ्रत बहिरायौ । साधु नेहराइ राखी । तिण घ्रत सूं अनेक कीड़ियां मूई तौ पाप साधु नै लागौ पिण दातार नै न लागौ ।

—भि.द्र.

३ धैर्य ।

नोंऊ—देखो 'नव' (रू.भे.)

नोंक-सं०स्त्री० [फा० नोक] १ उत्तरोत्तर पतली पड़ती गई हुई वस्तु का अंग, भाग, सूक्ष्म अग्रभाग ।

उ०—लखै सूळ सिंदूर री झोक लेतौ । सज्यौ मात स्रीहाथ त्रि-नोंक सेतौ ।—मे.म.

यौ०—नोंक-चोख, नोंक-झोंक ।

२ किसी वस्तु का एक ओर बढ़ा हुआ पतला अग्रभाग ।

३ चीप । उ०—होकौ हींडै हाथ लटकतौ खड़ियौ लारै । पड़ पड़ पादे पाद नोंक जिम पड़ी नगारै ।—ऊ.का.

रू०भे०—नोंख, नोक, नोख, नौक, नौख ।

नोंकचोख—देखो 'नोंखचोख' (रू.भे.)

नोंकदार-वि० [फा० नोकदार] १ नोंक वाला, जिसमें नोक हो ।

२ नुकीला, चुभने वाला, पैना ।

३ शानदार ।

नोंखचोख, नोंकझोंक-सं०स्त्री०यौ० [फा० नोक+राज० चोक या झोंक] बनाव-सिंगार, सजावट, ठाटबाट ।

उ०—हीरां मुगधा ग्यातजोवना कहावै छै, दिल बीच चंपचतराय भावै छै । अब नोंकचोख की वातां वणावै छै ।

—बगसीरांम प्रोहित री वात

रू०भे०—नोंकचोख ।

नोंरा—देखो 'नो'रा' (रू.भे.)

नो-सं०पु०—स्वामी कार्तिकेय ।

२ नमस्कार ।

३ निषेध (एका०)

वि०—१ प्रसिद्ध, विख्यात (एका०)

२ देखो 'नव' (रू.भे., डिं.को.)

अव्य०—१ संबंध या षष्ठी का चिह्न, का ।

उ०—जेह ना हुकम कथन नहीं लोपै, जिण नो ईज गयौ गाई रे । जिण घर नो तूं टुकड़ो खावै, सो घर नांखै ढाई रे । दुनिया में बहुत दगाई रे ।—जयवांणी

२ नहीं ।

उ०—देवी मारकंडे महा पाठ वांच्यौ । देवी लगौ तव पाय नो पार लाध्यौ ।—देवि.

नोऊं—देखो 'नव' (रू.भे.)

नोऊनिध, नोऊनिधि—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—परच्या पड़ै त्रिलोकी पूजै । करै ध्यांन ज्यां मिटै कळेस । परसै पाव नोऊंनिधि पावै । हरख वधै सुख लहै हमेस ।

—अज्ञात

नोक—देखो 'नोंक' (रू.भे.)

उ०—गोरी नैणां री काजळ लागै ए तीखी तीखी नोकां री । रसराज या नैणां रै कारण सांवरी सारी रैण जागै ए ।

—रसीलेराज

नोकारमंत्र—देखो 'नवकारमंत्र' (रू.भे.)

नोकारसी—देखो 'नवकारसी' (रू.भे.)

नोकीरवौ-सं०पु० [फा० नोक+सं० रदन=काटना, ईलो प्रत्यय] बढ़ई का एक औजार ।

नोखंगी-वि० [सं नवखांगी] अद्भुत, अनोखा, विलक्षण ।

नोख—१ देखो 'अनोखौ' (मह०, रू.भे.)

उ०—१ जगाजोत आदीत री जोत ओपै । उभै हीर चांमीर में संग ओपै । सिया देख दाखै प्रभू काज सारौ । त्रिगो नोख रूपी

ग्रहो काय मारो।—सू.प्र.

उ०—२ पहरण घण ओढ़ण पसमीना। नोख तोस घणमोल नवीनां।—सू.प्र.

२ देखो 'नोक' (रू.भे.)

नोखीलो–वि० [रा० अनोखा+रा०प्र०ईलो] (स्त्री० नोखीली) अद्भुत, सुंदर, अनोखा।

उ०—ढसै गढ टकर लगां पड़ ढोल। बाळपणै टीला बढवार। नोखीला भोख अस नीला। चटकीला भोख चढ़णार।—अज्ञात

रू०भे०—नोखीलो।

नोखो—देखो 'अनोखौ' (रू.भे.)

उ०—१ वळ अह्-पिगळ कवित री, वदी जात बावीस। तवूं नाम सारा तिकै, वळ नोखा वरणीस।—र.ज प्र.

उ०—२ खुदाबाद विरोळै गैणाग तोलै वीर खत्री। चाहि चक्र जती वातां चाढी भोम चाहि। दळां खाटणोत दोखी दाखी देस घणी दाद। 'मांडणोत' नोखी वातां राखी भोम माहि।

—हरनाथसिंह भांडणोत री गीत

(स्त्री० नोखी)

नोचणो, नोचबो–क्रि०स० [सं० लुंचन] किसी वस्तु में नख, पंजा या दांत धंसा कर उसका कुछ अंश खींच डालना, नख आदि से विदीर्ण करना, खरोंच डालना, खरोंचना।

उ०—जे तूं रोवतो रोवतो जाय गाहणी नूं खबर कर जे आज सिकार में जलाल ओर सेर रै आपस में कुस्ती हुई सो जलाल तो सेर नूं मारियो ओर सेर नोचियो तींसू जलाल मर गयो।

—जलाल वूबना री वात

नोचणहार, हारो (हारी), नोचणियो—वि०।

नोचिग्रोड़ो, नोचियोड़ो, नोच्योड़ो—भू०का०कृ०।

नोचीजणो, नोचीजबो—कर्म वा०।

नोचियोड़ो–भू०का०कृ०—नख आदि से विदीर्ण किया हुआ, खरोंचा हुआ।

(स्त्री० नोचियोड़ी)

नोछावर—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)

उ०—नोछावर भूप की तमांम सैं'र कीनी। आसागीर पूरणय नांम रीझ लीनी।—शि.वं.

नोजा–सं०पु० [प्र० लोज अथवा चिलगोजा] एक प्रकार का सूखा मेवा, चिलगोजा।

उ०—पिस्तां सूं ना प्रेम, कोड काजू री कोनी। नोजा लागै निकांम, किसमिसी भावै कोनी। खारक ना खुस करै, खुमांणी दाय न आवै। खारी वणी विदांम, दांम अखरोट लगावै। मारवाड़ मलांणी मगरै, खोखो चोखो मेवड़ो। सूको ससतो देवै सदा, मुरधर खेजड़ देवड़ो।

—दसदेव

नोट–सं०पु० [अं०] १ राज्य संस्था द्वारा रुपए के स्थान पर प्रचलित किया हुआ वह कागज जिस पर उतने ही रुपयों की संख्या अंकित होती है जितने का वह होता है, सरकारी हुंडी।

२ ध्यान रखने के लिए लिख लेने का काम।

क्रि०प्र०—करणो।

३ छोटा पत्र, लिखा हुआ परचा।

यौ०—नोट पेपर।

४ आशय या अर्थ प्रकट करने का लेख।

नोट-पेपर–सं०पु०यौ० [अं०] पत्र लिखने का कागज।

नोटबुक–सं०स्त्री०यौ० [अं०] वह पुस्तिका जिसमें जरूरी बातें स्मरणार्थ लिखी जाती हैं।

नोटिस–सं०पु० [अं०] १ सूचना।

२ इश्तिहार, विज्ञापन।

नोता–सं०पु० [पं० ज्ञातिः] सम्बन्धी, रिश्तेदार, नातेदार।

उ०—रूळै कंसरै राज परवेस पोता। तदा नंद रै नेह वळभद्र नोता।—ना.द.

नोतो—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

२ देखो 'नैत' (रू.भे.)

नोपत—देखो 'नौबत' (रू.भे.) (डि.को.)

नोवत, नोवति, नोवती—देखो 'नौबत' (रू.भे.)

उ०—नोवति पै अकबर; बादसाह आया। बावन वार डंका, बादिसाहां ले लगाया।—शि.वं.

नोम—देखो 'नवमी' (रू.भे.)

उ०—देवी सप्तमी अस्टमी नोम तूजा। देवी चोथ दोदस पूनम्म पूजा।—देवि.

नोमाळी–सं०स्त्री० [सं० नवमालिका] नवमालिका (उ.र.)

नोय—देखो 'नव' (रू.भे.)

नो'रा—देखो 'नौ'रा' (रू.भे., डि.को.)

उ०—वृतळावै जद वांम, वतळायां बोलो नहीं। कदियक पड़ियां कांम, नो'रा करसो नागजी।—अज्ञात

नो'रो—देखो 'नोहरो' (रू.भे.)

उ०—आईदांन साथै होय कोटड़ी आया। आय नै कोटड़ी में एक अलायदो नो'रो छै तिण में डेरो दिरायो।

—जैतसी उदावत री वात

नोहर–सं०पु० [सं० नख-घर] मांसाहारी पक्षी विशेष।

नोहरा—देखो 'नो'रा' (रू.भे.)

उ०—पूठै सू राजू खां आइयो, हाथ झाल कही—एक दोय दिन रह पछै चढ़ि जाज्यो, नहीं तो आज रात रह परभात रा चढ़ जाज्यो। मिजमांनी जीम जाज्यो। इण तरह मतां जावो। तद सूरो घणो ही जांणी जे राजूखां सरीखो सरदार इतरी आजीजी नोहरा करै छै तो टिकणो वाजिब छै।

—सूरे खींवे कांधळोत री वात

नोहली-सं०स्त्री० [सं० नव-फलिका] नवीन-निष्पत्ती, नवीन-फलिका (उ.र.)

नोहांनी-सं०पु० [देशज] १ एक मुस्लिम सम्प्रदाय विशेष।
२ इस सम्प्रदाय का व्यक्ति।

नौंजण—देखो 'नूंजणो' (मह., रू.भे.)

नौंजणियो—देखो 'नूंजणियो' (रू.भे.)

नौंजणी-सं०स्त्री०—देखो 'नूंजणी' (अल्पा०, रू.भे.)

नौंजणो—देखो 'नूंजणो' (रू.भे.)

नौंजणी, नौंजबौ—देखो 'नूंजणौ नूंजबौ' (रू.भे.)
नौंजणहार, (हारौ, हारी), नौंजणियौ—वि०।
नौंजिप्रोड़ौ, नौंजियोड़ौ, नौंज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
नौजीजणौ, नौंजीजबौ—कर्म वा०।

नौंजियोड़ौ—देखो 'नूंजियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० नौंजियोड़ी)

नोक—देखो 'नौंक' (रू.भे.)
उ०—सगमद बैंदी भाळ मक, जाय कही छवि जोन। निस परटम सनि रो नखित, भयो उदै ससि भोन। भयो उदै ससि भोन, वंक ब्रहुवां बणी। नयणां अंजन नोक, अणी सयणां अणी।
—सिवबक्स पाल्हावत

नोकर-सं०पु० [फा०] (स्त्री० नोकरांणी) १ वेतन आदि पर नियुक्त किया हुआ वह मनुष्य जो टहल या सेवा करे, घर का काम धन्धा करने वाला मनुष्य, खिदमतगार, चाकर, भृत्य।
२ वेतन पर नियुक्त किया हुआ कर्मचारी, वैतनिक कर्मचारी।
ज्यूं—पटवारी तो एक सरकारी नोकर है।
रू०भे०—नौकर।

नोकरसाही-सं०स्त्री० [फा० नोकरशाही] शासन की वह प्रणाली जिसमें राजसत्ता केवल उच्च राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है।

नोकरांणी-सं०स्त्री० [फा० नोकर+रा.प्र. आंणी] घर का काम-धंधा करने वाली स्त्री, दासी।

नोकरी-सं०स्त्री० [फा० नोकर+रा.प्र.ई] १ भृत्य का काम, खिदमत, टहल, सेवा।
२ वेतन लेकर किया जाने वाला कोई काम।
ज्यूं—टैम मार्थ पोंचणी पड़ै, धकै सरकारी नोकरी है।
क्रि०प्र०—करणी, कराणी, लगाणी, लागणी, होणी।

नोकरी-पेसौ-सं०पु० [फा० नोकर+रा.प्र. ई+पेशः] जिसकी जीविका नोकरी से चलती हो, जिसका काम नोकरी करना हो।

नोका-सं०स्त्री० [सं०] नाव, तरणि (डिं.को.)
रू०भे०—नवका।

नोकार, नोकारमंत्र—देखो 'नवकार' (रू.भे.)
उ०—नाभनंद आणंदनिध, भरत जन्म करतार। सिद्धाचळ दरसण सुगद, शादीश्वर नोकार।—ध.व.

नोकार—देखो 'नवकारसी' (रू.भे.)

नोकोट, नोकोटी—देखो 'नवकोटी' (रू.भे.)
उ०—मार राग मोहला चाणै किया वारें मुंह। हाथळां डाहला गळां माग रै ही कोट। मरौ मारा रै मोहला झालिया मुंह। मोहला पाल रै गळां हार ज्यूं नोकोट।—महाराजा मानसिंह री गीत

नोत—देखो 'वनोतो' (मह०, रू.भे.)
उ०—१ निज पोसाक सु केसरि नोता। रहहूर वदर छिवंद जोता।—सू.प्र.
उ०—२ कोट मेत घावार, वर्णे कांगुरा घटूंकड़। बसी धंधारळि वर्णी, जोत घण नोत लिये जड़।—सू.प्र.

नोतोतो- देखो 'नोतोतो' (रू.भे.)
(स्त्री० नोतोती' (रू.भे.)

नोतो—देखो 'वनोतो' (रू.भे.)
(स्त्री० नोती)

नोपरी, नोपह्नी-सं०स्त्री० [सं० नव+पट्ट+रा.प्र.ई] १ स्त्रियों की कलाई पर धारण करने का सोने या चांदी का एक आभूषण विशेष।
उ०—प्रवीण कंकिणो-स पोत, पञ्चराज नोपह्नी। हिमंकरं रत्न हस्त, भेद जाणि नोपह्नी।—सू.प्र.
रू०भे०—नवपरी, नापरी।
२ देखो 'नवपह्नी' (रू.भे.)

नोगुण—देखो 'नवगुण' (रू.भे.)
उ०—जिम नोगुण सबनो सगर, जिम हिरणांनी हार। इम गढ़वा वाधा गढां, 'जेहल' राजकुंवार।—पा.दा.

नोधण-वि० [सं० नवघन] मूसलाधार, अत्यधिक (वर्षा)
उ०—जिण समै गहरो घुरतो घुरतो गाजै है। पवन सीतळ मंद वाजै है। नोधण मेह री सघण धोळां धरताळां पड़तो जिकै अनो नीठ समै है।—र. हमीर

नोड़िया-सं०स्त्री० [देशज] भाटी वंश की एक शाखा जो बाद में मुसलमान हो गई।

नोड़ियो-सं०पु० [देशज] १ 'खींप', क्षुप या 'सिणियै' के ताजे तृणों को बट कर बनाई जाने वाली रस्सी।
रू०भे०—नवड़ियो, नाड़ियो, नेवड़ियो।
मह०—नड़।
२ भाटी वंश की नोड़िया शाखा का व्यक्ति।

नोछावर, नोछावरि, नोछाहर—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)
उ०—१ ऊपरि राई लूण उतारै। वळि नोछावर प्राण विचारै।
—रा.रू.
उ०—२ करि करि नोछावर द्रव्य केक। उछळंत हीर मोती अनेक।—सू.प्र.

नौज-अव्यय [सं० नवद्य, प्रा० नवज्ज] (मि० अ० नऊज)

१ ईश्वर न करे, ऐसा न हो।

उ०—नौज किणी सूं लागजो, नैणां हंदो नेह। धुकै न धूंग्री नीसरै, जळै सुरंगी देह।—ग्रज्ञात

२ नहीं।

उ०—१ ज्यां घर धवळ सनाथ तूं, व्है वे नौज ग्रनाथ। थळ ऊतरियौ तूझ बळ, गाडौ भरियौ ग्राथ।—बां.दा.

उ०—२ थूं विसवास राख मन थारै। सांमळियो जन नौज विसारै।—र.ज.प्र.

रू०भे०—नांज।

नौजण—देखो 'नूंजणौ' (मह., रू.भे.)

नौजणियौ—देखो 'नूंजणियौ' (रू.भे.)

नौजणी-सं०स्त्री—देखो 'नूंजणी' (ग्रल्पा., रू.भे.)

नौजणौ—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे.)

नौजणौ, नौजबौ—देखो 'नूंजणौ, नूंजबौ' (रू.भे.)

नौजवांन—देखो 'नवजवान' (रू.भे.)

नौतन—देखो 'नूतन' (रू.भे.)

उ०—जु धोया वसत्र स्नांन करि पहिरीया था सु ऊतारिया। नौतन वसत्र पहिरीया त्यांह को वरणन करिवा कवि कहै छै।

—वेलि.टी.

नौतौ—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—देस माळागिर भोज छइ राव। राजमती कौ रच्यौ हौ विवाह। जांन माहइ नौता फिरइ। चउथ व्रहसपतिवार ग्रादीत।

—बी.दे.

२ देखो 'नैत' (रू.भे.)

नौधा-भगति—देखो 'नवधा-भक्ति' (रू.भे.)

उ०—स्वांमीजी कौंण घटै तव कौंण प्रकासै, नौधा-भगति न भावै। सीतळ ठौर सदा रस पीवै, निरभै निज घरि ग्रावै।

—ह.पु.वा.

नौधारियौ-सं०पु० [सं० नवम्+धारा+रा.प्र. इयौ] स्वर्णकारों का एक ग्रौजार विशेष जिससे ग्राभूषणों पर नौ रेखाग्रों की खुदाई की जाती है।

नौनिध, नौनिधि—देखो 'नवनिधि' (रू.भे.)

उ०—हिरदै रांम रहै जा जन के, ताकौ उरा कौन कहै। ग्रठ सिधि नौनिधि ताकै ग्रागै, सन्मुख सदा रहै।—दादूवांणी

नौनीत—देखो 'नवनीत' (रू.भे.)

नौपत, नौबत-सं०स्त्री० [फा० नौबत] १ देव-मन्दिरों, राजप्रासादों तथा बड़े बड़े ग्रादमियों के यहां हमेशा या विशेष ग्रवसरों पर बजाया जाने वाला वाद्य जो वैभव, उत्सव, युद्ध या मंगल सूचक होता है। समय समय पर बजने वाला वाद्य जो प्राय: शहनाई ग्रादि के साथ बजाया जाता है।

उ०—१ म्हांरी ग्राद भुवांनी ये! नीर छिड़का दूं गंगा माय रो। जीग्रा मेरी माता ये! नौपत चढवाय म्हांरी ग्राद भुवांनी। जगमग जगवाद्यूं ये थारै देवरै।—लो.गी.

उ०—२ दुसमणां री नौबत तो पुड़ फूटोड़ो वजै छै ग्रर नीसांण (धजाग्रां) रा दंड तूटोड़ा है।—वी.स.टी.

उ०—३ मुख दरवाजै नौबत वाजै। सूरा खबर करैला रे।

—स्री हरिरांमजी महाराज

मुहा०—१ नौबत घुरणी—ऐश्वर्य या प्रताप की घोषणा होना। ग्रानन्द उत्सव होना।

२ नौबत घुराणी—दबदबा प्रकट करना। ग्रातंक दिखाना। प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा करना। ग्रानन्द-उत्सव करना। खुशी मनाना।

३ नौबत वजाणी—देखो 'नौबत घुराणी'।

४ नौबत वाजणी—देखो 'नौबत घुरणी'।

२ गति, हालत, दशा।

३ स्थिति में कोई परिवर्तन करने वाली बातों का घटना, उपस्थित दशा, संयोग।

क्रि०प्र०—ग्राणी, होणी।

रू०भे०—नववती, नववत्ती, नवव्वती, नोपत, नोबत, नोबति, नोबती, नौबति, नौबती, नौवत, नौवति।

ग्रल्पा०—नोबतड़ी, नौबतड़ी।

नौबतड़ी—देखो 'नौबत' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

उ०—मैंड़ी चढ ग्रर थाळ वजायौ, थाळ वजावत बोली यूं। च्यार कूंट चौफेरै वाला, नौबतड़ी घमकाए तूं।—लो.गी.

नौबतखांनौ-सं०पु० [फा०] बादशाह या राजा महाराजाग्रों के गढ या राजप्रासाद के मुख्य द्वार पर बना हुग्रा वह स्थान जहाँ पर नौबत बजाने हेतु रखी जाती है तथा यथा ग्रवसर बजाई जाती है।

उ०—महाराज बखतसिंहजी उणी सायत गढ ऊपर चढण नूं ग्रसवार हुइया ग्रोर कहियौ कांम सारो ग्रापरै साये सूं पेस चढियौ छै, ग्राप प्रभात सुवारां ही पधारजो। सो महाराज गजसिंहजी नौबतखांनौ वजायौ। प्रभात सुवारा ही सेवा पूजा कर सारी जिनस वस्तु साथ लेय महाराजा गजसिंहजी सवार हुइया।

—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

नौबति, नौबती-सं०पु० [फा० नौबत+रा.प्र. ई] १ नौबत बजाने वाला, नक्कारची।

२ कोतल घोड़ा, बिना सवार का सुसज्जित घोड़ा।

३ वह घोड़ा जिस पर स्वयं राजा सवार होता हो।

४ देखो 'नौबत' (रू.भे.)

उ०—१ निकट विन्हैदळ ग्राया नैड़ा, नरां सूरां ग्रति ग्राया नैड़ा। नौबति सोर धड़ड़ि धुवि नैड़ा, नाळि निहाउ गाजिया नैड़ा।

—वचनिका

उ०—२ सुरचार घंटारवं तार साजै। वणै नौबती सोभती रीत वाजै।

विराजे मुसाधाय, तंती वितंती। वदै आरती, राग वांणी वणंती।
—रा.रू.

नोमि, नोमी—देखो 'नवमी' (रू.भे.)
उ०—१ तिथि नोमि चैत्र महीनो तांम।—रामरासो
उ०—२ नोमी नवें सवारिए, अनइ न मोहै अंग।
—ह पु.वा.

नोरंग-सं०पु० [देशज] १ एक प्रकार का पुष्प विशेष।
उ०—तठा उपरांयत माळा फूलां री छाबां आंण हाजर कीजै छै। सू फूल कुण भांत रा छै? हजारा नोरग तुररो मेहंदी किलंगी सोन-जुही इसकपेचो सेरी कोयल मालती चांदणी मुसमल नरगस हुबास गुलअनार दाऊदी केवड़ो अोर ही अनेक भांत रा फूलां री माळा किलंगी छड़ी सेहरा गूंथिया छै।—रा.सा.सं.
२ देखो 'नवरंग' (रू.भे.)

नोरतो—देखो 'नवरात्र' (रू.भे.)

नो'रा-सं०पु० (बहु व०) [सं० निघोरण:] १ विनती, प्रार्थना।
२ आग्रह, अनुरोध।
क्रि०प्र०—करणा, खाणा।
उ०—छोडे लीक छाप माथै वडा री न धारी चाल, खोटी सला विचारी लगाई कुळां खोड़। नो'रा ले ले पीव सूं सांभरियां तणी कहै नारी, मेल आया सारी छत्रीपण री मरोड़।
—दलजी महडू
रू०भे०—नवरा, निहुरा, निहोरा, नेवरा, नेव्हरा, नो'रा, नोहरा, नोहरा, न्योरा, न्होरा।
अल्पा०—निहोरड़ा, नेउरिया, नेवरिया।
मह०—निहोर।

नोरियो-सं०पु० [देशज] नख, नाखून।
रू०भे०—नउरियो, नूरियो, नेउरियो, नेंउरियो।

नोरोज, नोरोजो—देखो 'नवरोजो' (रू.भे.)

नो'रो—देखो 'नोहरो' (रू.भे.)

नोळ-सं०पु० [देशज] एक प्रकार की लोहे की जंजीर जो चोरों से बचाने के लिए या जंगल में चरने के लिए छोड़ते समय ऊंट के अगले पैरों में जकड़ दी जाती है। इसके ताला भी लगाया जाता है।
रू०भे०—नांळ, न्योळ।
अल्पा०—नोळी।

नोलखी—देखो 'नवलखी' (रू.भे.)

नोलखो—देखो 'नवलखो' (रू.भे.)

नोलासी—देखो 'नवलासी' (रू.भे.)
उ०—यमुना के तीरे धेनु चरावै, हां लालाजी, हाथ लियै नोलासी।
—मीरां

नोळियो—देखो 'नकुळ' (२) (अल्पा०, रू.भे.)

नोळी-सं०स्त्री० [देशज] १ एक प्रकार का घास विशेष।
२ चमड़े या कपड़े की बनी हुई एक लम्बी थैली जिसमें रुपये आदि डाल कर कमर में लपेटी जाती है।
उ०—जद स्वामीजी चोरया किणही रै रुपिया री नोळी कड़ियां रै बांधी देखनै चोर मारै म्हाठो।—भि द्र.
३ योग-साधन की एक क्रिया. इसमें दोनों हाथों को घुटनों पर टिका कर नल को ऊपर की ओर उठा कर पेट को पानी की भंवरी के समान घुमाया जाता है। इस क्रिया से वायु रोग नष्ट होते हैं।
उ०—दोउ कंध नीचे कर, नळ सु उठाइए। वारि भंवर सम दक्षिण वाम घुमाइए। नोळी यही वातादिक रोग हटाय है। परिहां सुखद षट् में मुख्य कहाय है।—साधक-सुधा
४ अस्थि-पंजर, धड़।
उ०—साग नोळि में घटकावो नांमै, थाळक ओळी में सटकावो वांसै। माथै चोटी धर सालीणा माटै। इतनै सालीणो मरणो धर छाटै।—ऊ.का.
५ सांप-कंचुकी (शेखावाटी)।
सं०पु०—६ सांप, सर्प, नाग।
७ देखो 'नोळ' (अल्पा०, रू.भे.)

नोळयो—देखो 'नकुळ' (२) (अल्पा०, रू.भे.) (अमरत)

नोवत, नोवति—देखो 'नोबत' (रू.भे.)
उ०—'माल' चढै दळ मेलि, घुरै नोवति घण घुम्मर। इक लाख असी हजार, भिड़ज असवार भयंकर।—सू.प्र.

नोवों-वि० [सं० नवम्] जिसका स्थान क्रमशः आठ के बाद पड़े, जो क्रम में नो के स्थान पर हो।
२ नो की संख्या का (अंक)।

नोसर—देखो 'नवसर' (रू.भे.)
उ०—१ करणफूल नोसर सिर बेनी। कंकन बाजूबंध किंकनी नूंपुर। रसराज बिजळी प्रकास की मांनूं। उतरी है भू पर आकर।
—रसीलैराज
उ०—२ हांडै वळ घाल्यो, रे छैला नणदी रै। नोसर तोड़ गयो नोलख रो, दाग दे गयो चुंनड़ी रै।—रसीलैराज

नोसरहार—देखो 'नवसरहार' (रू.भे.)
उ०—१ सांप पिटारो राणाजी भेज्यो, द्यो मेड़तणी गळ डार। हंस हंस मीरां कंठ लगायो, यो तो म्हारै नोसरहार।—मीरां
उ०—२ थारा गुरुजी नै मुरधरां दोवड़ी। थारी 'गुरांणी' नै नोसर-हार।—लो गी.

नोसरी-वि० [सं० नय+सर:] नो लड़ का।
उ०—चमकै छै भूहां विच गोरियां ए जरी री तारो। 'रसराज' तिलक हीरां रो चमकै। हार चमकै छै नोसरी रो प्यारो।
—रसीलैराज

नोसादर-सं०पु० [फा० नोशादर, सं० नरसार] एक तीक्ष्ण क्षार या लवण (अमरत)

रू०भे०—नवसादर।

नौसेरवां-सं०पु० [फा० नौशेरवां] सासानी वंश का एक ईरानी बादशाह जो अपनी न्यायपरायणता के लिए प्रसिद्ध है। यह सन् ५३१ ई० में तख्त पर बैठा था। हज़रत मुहम्मद साहब इसी के समय में उत्पन्न हुए थे।

नौहतेस—देखो 'नवहत्थो' (मह०, रू.भे.)

उ०—अड़ खेत गनीमां झला रा रूपी आया खगे, विजुजळां दळां रा आछटै धकै वैर। थाट-पती दो-हतेस राखियो मळा रा थंभ, नौहतेस गळा रा हार जूं 'उदेतेर'।

—रावत भीमसिंह चूंडावत रो गीत

नौहतो—१ देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—तिण ऊपर स्वांमीजी दिस्टांत दियो—किणही चोकारा नौहता फेरया अनै जीमण वेळा एकीका नै मांहै आवा दे।

—भि.द्र.

२ देखो 'नैत' (रू.भे.)

३ देखो 'नवहत्थो' (रू.भे.)

उ०—१ हुंगांमा संपेखे हंस वारंगां मोहता हूरां, दोमजां दुरदां धड़ा डोहता दवांन। विजाई खूटिया सीह सांकळां सोहता वागा, जूटिया जटैल नागा नौहता जवांन।—महेसदास कूंपावत रो गीत

उ०—२ बांमी-बंध गादी जिण 'बगतो', नर नौहतो निसंक निहार। राजेसरां रहतो रखवाळो, भाळो अवस पड़ंतां भार।

—पहाड़खां आढ़ो

नौहत्थेस—देखो 'नवहत्थो' (मह०, रू.भे.)

नौहत्थी—देखो 'नवहत्थो' (रू.भे.)

उ०—१ मारू राव सोहता आगरै कियां दाभै मुंह, हाथळां ढाहता खळां खाग रै ही कोट। भरोसै भाग रै थोहता भाळियो भूरै, नौहत्था बाघ रै गळै हार ज्यूं नोकोट।

—महाराजा मांनसिंह रो गीत

उ०—नौहत्थी झोक झागूंड झल्लेस। कड़ं छंट चसळकते नेस।

—सू.प्र.

(स्त्री० नौहत्थी)

नौहथेस—देखो 'नवहत्थो' (मह० रू.भे.)

नौहथो, नौहथ्थो—१ देखो 'नवहत्थो' (रू.भे.)

उ०—१ निकाळण वक जरमन तणी नौहथो, ववर अणसंक पतसाह चे वेल। नृपत सुकळांण कोमंड सर नीछटण, उवह-पत लंदन ते रूप ऊझेल।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ आपड़ी ककपत्थां अठी, अठी सकत्थां अड़वड़ी। अपछरां चढ़ी रथ्था, अतै चंडथां नवहथ्थां चढ़ी।—मे.म.

नौहरो-सं०पु० [सं० नवगृह=नवघर] १ रहने के मुख्य भवन के पास अथवा कुछ दूर बना हुआ वह अहाता जो पक्की दीवारों से घिरा हुआ होता है। इसमें प्रायः खुला स्थान अधिक होता है और मकान कम बने हुए होते हैं।

२ किसी रानी, सामंत आदि बड़े आदमी के रहने के मकान के अतिरिक्त बना हुआ निजी मकान जहां उसके निजी कर्मचारी रहते हैं। इसमें मालिक के ठहरने की भी व्यवस्था होती है।

३ कच्ची दीवार या कांटों की बाड़ का घेरा हुआ वह अहाता जिसमें घास-फूस, चारा आदि रखा जाता है और मवेसी बांधे जाते हैं।

रू०भे०—नो'रो, नोहरो, नौ'रो, न्हौरो।

न्यग्रोध-सं०पु० [सं०] वट-वृक्ष।

रू०भे०—नग्रोध, निग्रोध।

न्यग्रोधादिगण-सं०पु०यौ० [सं०] वैद्यक में वृक्षों का एक वर्ग या समूह जिसमें निम्न वृक्ष माने जाते हैं—

वड़ पीपल, गुलर, अरलू, अमलतास, असन (विजयसार), आम, जामुन, कैथ, चिरौंजी, अर्जुन, धाय, महुआ, मुलहठी, लोध, वरना, नीम, पाखर, कदम, वेर, सलई, धामन, सावर, करंज, भिलावा आदि।

न्यच्छ-सं०पु० [सं०] अमृतसागर के अनुसार एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें शरीर पर काले या श्वेत चिन्ह हो जाते हैं।

न्यजर—देखो 'नजर' (रू.भे.)

उ०—फौज बराबरि न्यजर भर, अरि पाधरी आई।—मालो सांदू

न्याळणो, न्याळबो—देखो 'निहाळणो, निहाळबो' (रू.भे.)

उ०—एहवूं कही रा करि रुदन न्याळि नारी तणू वंदन। वळी नीसारि पाछु वळि आंणी दुख राजा टळवळी।—नळाख्यांन

न्याळणहार, हारो (हारी), न्याळणियो—वि०।

न्याळिओड़ो, न्याळियोड़ो न्याळयोड़ो—भू०का०कृ०।

न्याळीजणो, न्याळीजबो—कर्म वा०।

न्याळियोड़ो—देखो 'निहाळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० न्याळियोड़ी)

न्यांई—देखो 'नांई' (रू.भे)

उ०—ता पीछै पातसाहजी री तपस्या प्रथ्वी-चक्र पर सूरच की न्यांई फैलती भई।—द.दा.

न्यांणूं, न्यांणो—देखो 'नांणो' (रू.भे.)

उ०—अर घोड़ां वाळा नूं न्यांणूं सारो चुकाय सिरोपाव दे विदा किया। कहियो घोड़ा सताव ल्यावो।

—भाटी सुंदरदास वीकूंपुरी री वारता

न्याइ, न्याई—१ देखो 'नांई' (रू भे.)

उ०—तरु लता पल्लवित त्रिणे अंकुरित, नीलांणी नीलंबर न्याइ। प्रथमी नदिए हार पहरिया, पहिरे दादुर नूपुर पाइ।—वेलि.

२ देखो 'न्यायो' (रू.भे.)

उ०—१ मेड़तियो 'कुमळो' मुदै, घांधल गोयंदास। मेल्हे राजा मेडतै, जग न्याई विसवास।—रा.रू.

उ०—२ विलायत में वादसाह सुल्तांन हुसैन। दातार जूंझार, न्याई, समझणो पंडित।—नी.प्र.

न्यात—देखो 'न्याति' (रू.भे.)

उ०—१ न्यात मेतरा मिळ निपुण, पांमर सांसी परखिया। अम-लियां देख भारी अधम, होका धारी हरखिया।—ऊ.का.

उ०—२ जात न न्यात न माय बाप, निकुळा निराकारा।
—केसोदास गाडण

यौ०—न्यात-गंगा, न्यात-पांत।

न्यातगंगा-स०स्त्री०यौ०—न्याति या जाति-समूह।

उ०—देख रणछोड़ा। नांणो हाथ ने आय जावै पण टांणो नी आवै। म्हारो तो कैवणो है कै अबकै डोकरा रै लारै न्यातगंगा नै जिमाय दे।—रातवासो

न्यात-पांत—देखो 'न्याति पांति' (रू.भे.)

उ०—न्यात-पांत में म्हूं जठै कठैई जाऊं म्हनै माथो नीचो फरनै बैठणो पड़ै अर औ फगत इण कारण ईज।—रातवासो

न्यातरो—देखो 'नातो' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—सांवीणा जोडी सारीखी, वरदळ रउ न्यातरौ विचार। हसत लगन मेलियउ हथळेवउ, अवर करण लागा आचार।
—महादेव पारवती री वेलि

न्याति-सं०स्त्री० [सं० ज्ञाति, प्रा० णाती] हिन्दुओं में मनुष्य समाज का वह विभाग जो पहले पहल कर्म्मानुसार किया गया था पर पीछे से सम्भवतः जन्मानुसार हो गया, हिन्दुओं की वर्ण-व्यवस्था के पश्चात् आगे चल कर होने वाले किसी वर्ण का विशिष्ट विभाग, जाति।

उ०—१ नकटां री नहि न्याति, बिलग बोळां रो न वाड़ो। बूचां रो नहि वास, ज्यूं न गूंगां रो जाड़ो।—ऊ.का.

उ०—२ तेह नही पंडित सधूय, तेह तुम्हारी न्याति। कांमकंदळा केरडो, क्षिति-तळि मोटी ख्याति।—मा.कां.प्र.

यौ०—न्याति-पांति।

रू०भे०—नात, नियात, न्यात, न्याती।

न्याति-पांति-सं०स्त्री०यौ०—जाति (किसी जाति के सामूहिक रूप के लिए कहा जाने वाला शब्द।

उ०—परदेसी नवि ओळखै, न्यांतिपांति कुळसील। अणजांण्यो परणावतां, थास्यै तुम्ह ची हील।—ढोपाळ

रू०भे०—न्यात-पांत।

न्याती—१ देखो 'न्याति' (रू.भे.)

२ देखो 'नातो' (रू.भे.)

उ०—१ 'प्राग' के जे न्याती रोकै, नाग की सी नांई।
—रा.रू.

उ०—२ चन्द्र के न्याती, सूर के तेज।—रा.रू.

न्यातीलो—देखो 'नातो' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ वो नर करै तोसूं अरदास, म्हांनै मेलो न्यातीलां रै पास। हूं जाय नै कहूं खरो ए, मो जिम मती करो ए।—जयवांणी

उ०—२ ज्यूं साधपणो लेवै जरै न्यातीला रोवै ते तो आपरै स्वारथ पिण उणां री देखादेख दीक्षा लेण वाळो रोवा लाग जावै तो वात विपरीत।—भि.द्र.

न्याद-सं०पु० [सं०] भोजन (ह.नां.)

रू०भे०—नाद।

न्याय-सं०पु० [सं०] १ विवाद या व्यवहार में उचित अनुचित का निबटेरा, प्रमाणपूर्वक निश्चय, दो पक्षों के बीच निर्णय। किसी मुकदमे, मामले आदि में अधिकारी या अनधिकारी, दोषी या निर्दोष आदि का निर्धारण।

उ०—निरधनियां आथ समापण नहचै, दियण अन्यायां न्याय दुवाह। जोधांपती सकळ जीवां री, न्यारी न्यारी लियै निगाह।
—महादांन महडू

२ नियम के अनुकूल बात, नीति, इंसाफ, उचित बात।

उ०—ऊपाड़ै आवू जिती, पर निंदा री पोट। पिसण न्याय पग डग पड़ै, दुरासीस लग दोट।—बां.दा.

३ किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिए विचारों की उचित योजना को निरूपित करने वाला शास्त्र, प्रमाण, तर्क, दृष्टांत आदि युक्त वाक्य।

क्रि०वि०—१ निश्चय ही, अवश्य। उ०—१ आव अमोलक ऊजळां, समर गुणां ततसार। न्याय इसा नग नीपजै, माजी कूख मझार।—बां दा.

उ०—२ आवै अंनदातार नूं, भारथ खळां भळाय। पितरेसुर जिण रा पड़ै, नरक विचाळै न्याय।—बां.दा.

२ देखो 'नांई' (रू.भे.)

रू०भे०—नाय, नाव, नियाव, न्याव।

अल्पा०—न्यावटो।

न्यायकारी-वि० [सं०] इंसाफ करने वाला, न्यायकर्त्ता।

उ०—जिण लागां हुय जाय, न्यायकारी अन्याई। जिण लागां हुय जाय, भाई रो दुसमण भाई। जिण लागां हुय जाय, बुद्धि वाळो बेबुद्धो। जिण लागां हुय जाय, सुधि वाळो बेसुद्धो। पिंड रै आंण लागां पछै, पड़ै सीस पैंजार री। मेट रे मेट ! मोगा मरद, बुरी फेट बिभचार री।—ऊ.का.

न्यायछांणी-वि० [सं० न्याय+राज० छांणी] खूब छानबीन करके न्याय करने वाला।

उ०—जैपुर में रिकाटि साहब भादूर न्यायछांणी। सीकरि सापरा की जाळसाजी नैं पिछांणी।—शि.वं.

न्यायधांमी-वि० [सं० न्याय+धामी] न्यायकर्त्ता, न्यायाधीश।

उ०—जैपुर जा उकीलां में खुमांणसिंघ नांमी। बेलणसाव सीकरि मैं पधार्‌या न्यायधांमी।—शि.वं.

न्यायपथ-सं०पु० [सं०] उचित, रीति, न्यायसम्मत मार्ग।

न्यायपरता-स०स्त्री० [सं०] न्यायी होने का भाव, न्यायशीलता।

न्यायवट-सं०पु० [सं० न्याय+वर्त्मन्] न्यायमार्ग, न्यायपथ।
उ०—न्यायवटइ नरपति पलइ, सरखइ सीह-सीयाळ। कां वेटउ कां अवर को, कां वूढउ कां वाळ।—मा.कां.प्र.
न्यायव्रत, न्यायव्रित-सं०पु०यौ० [सं० न्यायव्रत] न्याय का व्रत, न्याय करने का दृढ़ संकल्प।
उ०—द्रढ मंत्री दिल्लेस पास 'अमरेस' भंडारी, रीत नीत ऊजळौ प्रीतधारी हितकारी। सुपनै ही साभाय न्यायव्रित चाय न चूकै, राजकाज चित राग माग अनि समळ प्रमूकै।—रा.रू.
न्यायव्रती-वि० [सं० न्याय+व्रतिन्] न्याय करने का व्रत निभाने वाला, न्यायशील।
न्यायसभा-सं०स्त्री० [सं०] वह सभा जहां विवादों का निर्णय हो।
न्यायाधीस-सं०पु० [सं० न्यायाधीश] किसी मुकदमे, विवाद या व्यवहार का निर्णय करने वाला अधिकारी, जज, न्यायकर्त्ता।
न्यायालय-सं०पु० [सं०] वह स्थान जहां विवादों का निर्णय हो अदालत।
न्यायास—देखो 'निवास' (रू.भे.)
उ०—उन्हाळै दै ईल, लील चौमास खुलावै। सीयाळै न्यायास, आखर्यां सुखी सुलावै।—दसदेव
न्यायी-सं०पु० [सं० न्यायिन्] उचित पक्ष ग्रहण करने वाला, नीति पर चलने वाला, न्यायसम्मत आचरण करने वाला।
रू०भे०—निआई, नियाई, न्याई।
न्यायौ—देखो 'निवायौ' (रू.भे.)
उ०—लादां लकड़ी जगै, नीकळै न्याई लपटां। खनै खरीदा खड़ा, वांनकी निरखै कपटां।—दसदेव
(स्त्री० न्याई)
न्यार-सं०पु० [देशज] १ घास, चारा।
२ देखो 'न्यारियौ' (मह०, रू.भे.)
न्यारिया-सं०स्त्री० [देशज] स्वर्णकारों का एक भेद विशेष जिसके व्यक्ति प्रायः स्थान स्थान पर राख छानते हैं। इनको धूल-धोया भी कहते हैं (मा.म.)
न्यारियौ-सं०पु०—१ स्वर्णकारों की भट्टी की तथा अन्य स्थान की राख या धूलि छान कर उससे धन प्राप्त कर जीवन व्यतीत करने वाली न्यारिया जाति का व्यक्ति।
२ देखो 'नाहर' (अल्पा., रू.भे.)
न्यारौ-वि० [सं० निर्निकट, प्रा० निनिअड, अप० निलियर]
(स्त्री० न्यारी) १ जो मिला या लगा न हो, जो पास न हो, अलग, जुदा।
उ०—१ 'अभौ' चालियौ आसुरां सीस अंसी, जळ निद्धि उच्छेदियां वंध जैसौ। तुरंगां वर्णे तेज अंगां अतारौ, नहीं जागियां सोर सूं जोर न्यारौ।—सू.प्र.
उ०—२ पाखां खोस गयौ प्रभु प्यारौ, नित नांखां निसकारौ। नहीं झांखां तोई हुवै न न्यारौ, आंखां सूं उणियारौ।—ऊ.का.
उ०—३ पछै मारि नै तोलियौ, घटचौ वध्यौ न लिगार। तिण कारण म्हैं जांणियौ, जीव काया नहीं न्यारा।—जयवांणी
२ अद्भुत, अनोखा, विचित्र, विलक्षण।
उ०—उरध लिलाड़ नीरभव आंखैं, नाक कीर छवि न्यारी। दंत भुजा वछ दीर धीर धर, उर तसवीर उतारी।—ऊ.का.
३ जो पास न हो, दूर। उ०—पापी पाप न कीजिए, न्यारा रहिए आप। करणी आपी आपरी, कुण वेटौ कुण वाप।—वां दा.
४ और ही, अन्य, भिन्न।
रू०भे०—नारौ, नियारौ, नैरौ, न्हारौ।
न्याल—देखो 'निहाल' (रू.भे.)
उ०—अतर रंग रेलियौ तेलियौ अहंसी। कवर अलवेलियौ न्याल कर दे।—जगौ खिड़ियौ
न्याळणौ, न्याळवौ—देखो 'निहाळवौ' (रू.भे.)
उ०—ढोलोजी वोलिया आया तौ नळवरगढ सूं ज्यास्यां पूंगळ, ताहरां गढवी बोल्यौ महाराज कंवार आपरी वाट न्याळै छा। वेगा पधारौ।—ढो मा.
न्याळणहार, हारौ (हारी), न्याळणियौ—वि०।
न्याळिओड़ौ, न्याळियोड़ौ, न्याळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
न्याळीजणौ, न्याळीजवौ—कर्म वा०।
न्यालस—देखो 'नालिस' (रू.भे.)
उ०—पीछै पातसाहजी रै आगै महाराज री न्यालस करी।
—द.दा.
न्याळौ—देखो 'नवाळौ' (रू.भे.)
उ०—ताहरां 'इंदी' अपुठी आई। ऊनाळौ ऊतरियौ। वरसाळौ ऊतरियौ। सीयाळौ आयौ। न्याळा हुवै छै। राव नूं न्याळा रौ वुलावौ आयौ।—नैणसी
न्याव-सं०पु० [सं० निर्वात] १ कुम्हार का मिट्टी के वर्तन अग्नि में पकाने का स्थान, आवा।
रू०भे०—नियाव, निवा, नीवा, नीवाह, नेव।
अल्पा०—निवाई, नीवाई, न्याही।
२ देखो 'न्याय' (रू.भे.)
उ०—न्याव किया नौसेरवां, सुविहांना सिरदार। आज करै माजी इसा, न्याव संदेह निवार।—वां.दा.
३ देखो 'नाव' (रू.भे.)
उ०—पीछै पातसाहजी रै लस्कर रा अटक आय डेरा हुवा तठै राजावां सारां मनसोभौ कियौ। जो किणी तरै साची खबर मंगावौ, कांई मचकूर है। तद औ साहवै री फकीर वडौ नेक है। अरु करणसींघजी रै सागै हौ सू इण कयौ 'हूं अस्तखांन नूं पूछ'र पकी खबर लाऊं छूं' तद करणसिंघजी वगेरै सारांई राजावां इणरी महमा करी। अरु मेलियौ। पछै इण अस्तखांन नूं पूछियौ कै मोर

बाहादर की क्या सला है ? तद अस्तखां जांणियौ हमारी जात का अेका बडा जबर है । सू किसू कूं कहेगा नहीं । अैसी जांण कयौ जो हजरत का एक दीन करण का विचार है। पीछै औ तुरत पाछौ आय करणसिंघजी सूं सारी हकीकत कही । पीछै राजा साराई भेळा हुवा वा सला करी जो निस्चे सारां नू मुसलमांन करसी। पण आंपां अटक पै'ला मत ऊतरौ । मुसलमांनां सारां ई नूं पैहला ऊतरण दो । पण अेक उपाय है, अबार मुसलमांन वद संतान बोहत जबर है, सू आंपां आ कहसां कै म्हे हिंदू हां सू थांसूं पैहला ऊतरसां तिण माथै अै वाद कर पै'ला ऊतरसी पीछै आंपां सारी बात करसां। पीछै ऊतरण री वखत हजारां न्यावां त्यारी हुई। तठै राजावां रा हलकारां न्यावां जाय ।

न्यावपत्याव-सं०पु०यौ० [सं० न्याय] १ न्याय, इंसाफ ।

२ न्याय करके निर्णय लिखने की तारीख ।

न्यास-सं०पु० [सं०] १ यथास्थान रखना, स्थापन ।

२ धरोहर, थाती ।

न्यास-स्वर-सं०पु० [सं०] किसी राग का समाप्त करने का स्वर।

न्याही-सं०स्त्री०—देखो 'न्याव' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—कुलड़, कटोरदांन, कचोळा, लोटा, ऊखळ, माटड़ी । सांह खंधेड़ दास प्रजापत, न्याही नगरां हाटड़ी ।—दसदेव

न्यूंजणउं—देखो 'नूंजणौ' (रू.भे., उ.र.)

न्यूत—देखो 'नेत' (रू.भे.)

न्यूतणौ, न्यूंतवौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रवौ' (रू.भे.)

उ०—परमळ प्रीति उमगि जळ उलटचा, गगन गरजि घन आया । दामणि उलटि आभ में बैठी, नौघण न्यूंति बुलाया ।

—ह.पु.वा.

न्यूंतणहार, हारौ (हारी), न्यूतणियौ—वि० ।

न्यूंतिओड़ौ, न्यूंतियोड़ौ, न्यूत्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

न्यूंतीजणौ, न्यूंतीजबौ—कर्म वा० ।

न्यूंतियार, न्यूंतिहार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)

न्यूंतियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० न्यूंतियोड़ी)

न्यूंतौ—देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

उ०—ये तो द्यो ना सूरजजी घर न्यूंतौ । थे तो द्यो ना महादेव घर न्यूंतौ ।—लो.गी.

न्यून-वि० [सं०] १ कम, थोड़ा ।

२ नीच, क्षुद्र ।

३ राजस्थानी छंद-शास्त्र के अनुसार 'वयणसगाई' का एक भेद ।

उ०—आकारादि खट वरण ये, जुग जुग अवर सुजांण । इधक ओर सम न्यून इम, चित्त तीनूं पहिचांण ।—र.रू.

रू०भे०—नूंन, नून ।

न्यूनजथा-सं०स्त्री० [सं० न्यून+यथा] डिंगल के गीतों की वह रचना जिसमें प्रथम द्वाले में जो वर्णन हो उससे अगले द्वाले में क्रमशः वर्णन न्यून हो ।

न्यूनता-सं०स्त्री० [सं० न्यून+रा.प्र. ता] १ कमी ।

२ क्षुद्रता, नीचता ।

३ बदनामी, अपयश ।

रू०भे०—नूंनता, नूनता, नूनताई ।

न्योळ—देखो 'नोळ' (रू.भे.) (शेखावाटी)

न्योळयौ—देखो 'नकुळ' (२) (अल्पा०, रू.भे.)

न्योछावर, न्योछावरि—देखो 'निछरावळ' (रू.भे.)

उ०—करि न्योछावरि नजर, होय भड़ हाजरी । ओपै तद उमराव, सभा सुरराज री ।—सिववक्स पाल्हावत

न्योतणौ, न्योतबौ—देखो 'निमंत्रणौ, निमंत्रवौ' (रू.भे.)

न्योतणहार, हारौ (हारी), न्योतणियौ—वि० ।

न्योतिओड़ौ, न्योतियोड़ौ, न्योत्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

न्योतीजणौ, न्योतीजबौ—कर्म वा० ।

न्योतियोड़ौ—देखो 'निमंत्रियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० न्योतियोड़ी)

न्योतिहार—देखो 'निमंत्रीहार' (रू.भे.)

उ०—जांन री पिण आवण री तयारी हुई। कितराहेक आप न्योतिहार तेड़िया तिकै आय भेळा हुवा ।—नैणसी

न्योतौ—देखो 'निमंत्रण' (रू.भे.)

न्यौं'रा—देखो 'नौ'रा' (रू.भे.)

नूंमळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)

उ०—नरेस रांम नूंमळा। उरां सभाव ऊजळा ।—र.ज.प्र.

नृकासुर—देखो 'नरकासुर' (रू.भे.)

उ०—गोवाळ सहेत राखी तैं गाय, महा दुख हूंत विछोड़ी माय। नृभे व्रज कीधी तैं नर-नार, मिलाई गाय नृकासुर मार ।—ह.र.

नृग—देखो 'नृप' (रू.भे.)

नृगुण—देखो 'निरगुण' (रू.भे.)

उ०—निराकारी कावै, कहत नहि आवै, तन नमो । निराधारी धारी, जपत जस गावै, जन नमो । नमो भेवा भेवा, सरण भव देवा, मुनि नमो । नमो गरवाहारी, नृगुण गुणधारी, गुनि नमो ।—ऊ.का.

नृग्ग—देखो 'नरग' (रू.भे.)

उ०—परम्मळ कम्मळ सद्रस पग्ग, निधांन परम्म निवारण नृग्ग। इसा पग तूझ तणा ऊदार, सेवंतां पाप टळै संसार ।—ह.र.

नृजांन-सं०पु० [सं० नृ+यान] मनुष्यों द्वारा उठा कर ले जाया जाने वाला यान, पालकी (वं.भा.)

नृतंग—देखो 'निरत' (रू.भे.)

उ०—नृतंग रित अंग करंग नादंग । रस तरंग बह तरंग रंग रंग ।

—सू.प्र.

नूतंत—देखो 'निरतंत' (रू.भे.)

उ०—ठाढी नूतंत आय मुनि वन थित। रति अरु साथि कांम वहुवे रति।—सू.प्र.

नृत—देखो 'निरत' (रू.भे.)

उ०—जंघा पवित्र करिस हूं जटधर, नृत करतो आगळ नाटेसर। इंद्रियां पवित्र करिस अप्रंप्रम, दमे गिनांन तूझ दयतां दम।—ह.र.

नृतकार—देखो 'निरतकर' (रू.भे.)

नृतांण—देखो 'निरत' (मह०, रू.भे.)

उ०—हिंदवांण तुरक्कांण हिचै। रिण-ढांण वीरांण नृतांण रचै।
—सू.प्र.

नृति—देखो 'निरति' (रू.भे.)

नृती-सं०स्त्री० [सं० नृत्य+रा.प्र ई] वेश्या, गनिका (अ.मा.)

नृत्त—देखो 'निरत' (रू.भे.)

उ०—संगीत नृत्त सोहती, मुनेस हंस मोहती। अनंग रंग आतुरी, प्रिया नचंत पातुरी।—सू.प्र.

नृत्तकार—देखो 'निरतकर' (रू.भे.)

उ०—अनेक पद्मणी अवास, रूप भोमि रच्चए। अनेक राग रंग ओप, नृत्तकार नच्चए।—सू.प्र.

नृत्तणौ, नृत्तबौ—देखो 'निरतणौ, निरतबौ' (रू.भे.)

नृत्तणहार, हारौ (हारी), नृत्तणियौ—वि०।

नृत्तिओड़ौ, नृत्तयोड़ौ, नृत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

नृत्तीजणौ, नृत्तीजबौ—भाव वा०।

नृत्तियोड़ौ—देखो 'निरतियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० नृत्तियोड़ी)

नृत्य—देखो 'निरत' (१, २, ३) (रू.भे.)

उ०—गुणी सुपंखरा गीत में, वरणण नृत्य वखांण। कहियौ धुर पिंगळ सुकव, जिको पाड़गति जांण।—र.ज.प्र.

नृत्यकारी—देखो 'निरतकर' (रू.भे.)

उ०—हस तो सब विधि को जांणणहार हुओ, मोर नृत्यकारी नाचै पवन ताळधारी हुओ।—वेलि. टी.

नृत्यकी—देखो 'नरतकी' (रू.भे.)

नृत्यप्रिय—देखो 'निरतप्रिय' (रू.भे.)

नृत्यसाळ, नृत्यसाळा—देखो 'निरतसाळ, निरतसाळा' (रू.भे.)

नृधोम-वि० [सं० निर्+धूम] धूआंरहित, धूम्ररहित।

उ०—धुवै रणताळ सझाळ नृधोम। हका धुनि वेद करै इम होम।
—सू.प्र.

नृप-सं०पु० [सं० नृप] राजा, नरेश।

उ०—१ रजंग नृप अंग सुरग चतुरंग। सीत संग करि खतंग सारंग।—सू.प्र.

रू०भे०—नरप, निव, निृप।

मह०—नृपेस।

नृपत—देखो 'नृपति' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—फरै तिकारां कांठला, कंठ नृपत कुंवरांह। वघनहियां ज्यां सिर वर्णं, कीरत जेण करांह।—बां.दा.

नृपता-सं०स्त्री० [सं० नृपता] राजा का गुण, राजत्व।

नृपति-सं०पु० [सं० नृपति] राजा, नरेस।

उ०—सुर करै हरख वरखै सुमन, अमर तरणि धिन उच्चरै। नर-भुवण हूंत सतियां नृपति, सुरपुर-मारग संचरै।—रा.रू.

२ कुबेर।

रू०भे०—नृपत, निृपत, निृपति।

नृपथांन-सं०पु० [सं० नृप+स्थान] राजधानी।

२ शहर, नगर (डि को.)

नृप-द्रोही-सं०पु०यौ० [सं० नृप+द्रोहिन्] राजाओं का शत्रु, परशुराम।

नृप-वास-सं०पु०यौ० [सं० नृप+वासः] १ नगर (अ.मा.)

२ राजधानी।

नृपाळ-सं०पु०यौ० [सं० नृ+पालनम्] प्रजा का पालन-पोषण करने वाला, राजा, नृप। उ०—भागीरथ संभ्रम भुवाळ। 'नाभंग' हुवौ 'स्रुत' सुत नृपाळ।—सू.प्र.

नृपेस—देखो 'नृप' (मह०, रू.भे.)

उ०—रटै नृपेस हो रिखेस आप एह उच्चरी।—सू.प्र.

नृफळ—देखो 'निस्फळ' (रू.भे.)

उ०—घणौ घड़ण घट घाट नृफळ नर नवौ निमाड़ै।—र.रू.

नृबळ—देखो 'निरबळ' (रू.भे.)

उ०—भुरसी निरधन नृबळ हजारां।
—महाराजा पदमसिंह रौ गीत

नृभै—देखो 'निरभय' (रू.भे.)

उ०—कीरतसिंघ 'कृपा' हरौ, सरणायां साधार। कर आदर सरणै लियौ, नृभै कियौ तिणवार।—रा.रू.

नृभै-मण-वि० [सं० निर्भय-मन] निर्भय मन वाला, निशंक, वीर।

उ०—हेकण हाथ धिनौ चित हेकण, मौज वरीसण नृभैमणा। सौ अधियाळ सुंडाळ सांवठा, तै पीधा 'कल्यांण' तणा।
—महाराजा रायसिंह रौ गीत

नृमळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)

उ०—१ मधिजळ नृमळ पियै हित मन्नै। अनि भोजन वहुवा अवन्नै।
—सू.प्र.

उ०—२ इळ सिर भांण 'विजा' हर ओपै, नाथ कृपा प्रभता नमळ। जळज गुणिंद हरख मय जाजा, खूटै रिख वळ छोड खळ।
—महाराजा मानसिंह रौ गीत

नृमळी—देखो 'निरमळी' (रू.भे.)

नभेध—देखो 'नरमेध' (रू.भे.)

नृम्मळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)

नृमळा—देखो 'निरमळा' (रू.भे.)

नूलेप—देखो 'निरलेप' (रू.भे.)
नूलोक—देखो 'नरलोक' (रू.भे.)
नूवांण—देखो 'निरवांण' (रू.भे.)
उ०—निरंजन नाथ परम्म नूवांण। किसन्न महरघण रूप कल्यांण।
—ह.र.
नूसंस—देखो 'नृसंस' (रू.भे.)
नृसिंह—देखो 'नरसिंह' (रू.भे.)
नृसिंहचतुरदसी—देखो 'नरसींगचवदस' (रू.भे.)
नूसींग—१ देखो 'नरसीघौ (मह०, रू.भे.)
उ०—रुघ जुग वेद नूसींग हैंसारव। काटकड़ी वाजै केवांण। लोड़ति घड़ा 'रतनसी' लाडो। जुधि हथळेवै जुड़ै जवांण।
—दूदो
२ देखो 'नरसींग (रू.भे.)
नृग, नृघ, नृघु-सं०पु० [सं० नृग] १ महाभारत के अनुसार एक महा-दानी राजा जिन्हें एक ब्राह्मण के असन्तुष्ट हो जाने के कारण गिरगिट की योनि मिल जाने के पश्चात् श्री कृष्ण ने इनका उद्धार किया।
उ०—उधारण नृघ अरिजण आस, पुरावण गोविंद टाळण प्रास। समापण वांभण नां रिध सिध, दमोदर दांन वडौ तैं दीध।—पी.ग्रं.
२ मनु के एक पुत्र का नाम।
रू०भे०—नृग।
नृत—देखो 'निरत' (रू.भे.)
उ०—ऊछळंत हाथ पाव, धाट सीस दाव धाव। मंड ईस रुंडमाळ, वीर नृत विक्कराळ।—सू.प्र.
नृतकार—देखो 'निरतकर' (रू.भे)
उ०—१ नृतकार ततकार थेईकार नाचै, नमै रमै 'लखपती' आगै वाटारंभ।—ल.पिं.
उ०—२ विसतार ग्यांन जैकार वाच। नृतकार करै तितकार नाच। हद रीझवार रिख गण हसंत। वणियौ अपार रण छिव वसंत।
—वि सं.
नृतसाळ—देखो 'निरतसाळ' (रू.भे.)
नृत्य—१ देखो 'निरत' (१, २, ३) (रू.भे.)
नृत्यकारी-वि० [सं० नृत्यकारिणी] नाचने वाली स्त्री, नर्त्तकी।
उ०—ब्रिहन्नडा द्रूपदि नृत्यकारी। ए उत्तरा नइ गुरु रूपि नारी।
—विराट पर्व
२ देखो 'निरतकर' (रू.भे.)
नृत्यसाळ—देखो 'निरतसाळ' (रू.भे.)
उ०—स्वतंत्र नृत्यसाळ में नितंबिनी नचै नहीं। सुहागिनी स्वराग राग रागनी रचै नहीं।—ऊ.का.
नृप—देखो 'नृप' (रू.भे.)
नृपत, नृपति—देखो 'नृपति' (रू.भे.)
उ०—१ आलिंगन देई नरनाह, दोधी वेस्या मनि उछाहि। अरध राज सिउं राजकुंआरि, परिणावी नृपतइं आचारि।
—विद्याविलास पवाडउ
उ०—२ घोळ मद घोख जस तणा वादित्र घुरै, जोध सांमंत में धाट जोपै। चमर ढळतै नृपति अभिनमो 'चोंडरज', अमर मेघाडव(र) सीसि ओपै।—अमरसिंह राठौड़ री गीत
नृपसेवन-सं०पु० [सं० नृप—सेवनं] ७२ कलाओं में से एक।—व.स.
नृब्बीज—देखो 'निरबीज' (रू.भे.)
उ०—हुई मोम नृब्बीज दाखै हुकम्मं। कंवारी रही कन्यका लेख क्रम्मं।—सू.प्र.
नृभै—देखो 'निरभय' (रू.भे.)
उ०—नाह महुंगा दियण झूंपड़ा नृभै-नर। जावसी कड़तलां केमि जरसी जहर।—हा.झा,
नृमळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)
उ०—१ ऊपरि पदपलव पुनरभव ओपति, नृमळ कमळ दळ ऊपरि नीर। तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरिहंस सावक ससिहर हीर।
—वेलि.
उ०—२ कर रत्ता मोती नृमळ, नयणे काजळ रेह। घण भूली गुंजाहळे, हसिकरि नांख्या तेह।—ढो.मा.
नृमळा—देखो 'निरमळा' (रू.भे.)
नृमळौ—देखो 'निरमळ' (अल्पा., रू.भे.)
नृम्मळ—देखो 'निरमळ' (रू.भे.)
उ०—चद्रप्रभा झळकै अहि चंचळ। मिळियौ बीच गंगाजळ नृम्मळ।
—सू.प्र.
नृम्मळा—देखो 'निरमळा' (रू.भे.)
नृम्मळौ—देखो 'निरमळ' (अल्पा., रू.भे.)
नृलक्ष्मी-सं०पु० [सं० नृलक्ष्मी] पुरुष की ७२ कलाओं में से एक।
—व.स.
नृसंस-वि० [सं० नृशंस] १ कष्ट देने वाला, निर्दय, क्रूर।
२ अत्याचारी, जालिम, अनिष्टकारी, अपकारी
रू०भे०—नूसंस।
नृसंसता-सं०स्त्री० [सं० नृशंसता] निर्दयता, क्रूरता।
नीजण, नीजन-वि० [स० निर्जन] सुनसान, एकाकी, निर्जन।
उ०—मिळि माह तणौ माहुटि सूं मसि व्रन, तपि आषाढ तणौ तपन। जन नीजन पणि अधिक जांणियौ, मध्यरात्रि प्रति मध्याहन।
—वेलि.
रू०भे०—नीजण, नीजणि।
न्हंखणो, न्हंखबो—देखो 'नांखणो, नांखबो' (रू.भे.)
उ०—जड़ियाळ खजर जमडड जडै, वांधि वेवे वडियाळ। सीरडियाळ रूप देखे रंभा, 'न्हंखै हीर लडियाळ।—पनां वीरमदे री वात
न्हलाड़णो, न्हलाड़बो—'न्हाड़णो, न्हाड़बो' (रू.भे.)
न्हलाड़णहार, हारो (हारी), न्हलाड़णियो—वि०।

न्हलाड़िओड़ौ, न्हलाड़ियोड़ौ, न्हलाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
न्हलाड़ीजणौ, न्हलाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
न्हलाड़ियोड़ौ—देखो 'न्हाड़ियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० न्हलाड़ियोड़ी)
न्हलाणौ, न्हलाबौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
न्हलाणहार, हारौ (हारी), न्हलाणियौ—वि० ।
न्हलायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
न्हलाईजणौ, न्हलाईजबौ—कर्म वा० ।
न्हलायोड़ौ—देखो 'न्हाड़ियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० न्हलाड़ियोड़ी)
न्हलावणौ, न्हलावबौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
न्हलावणहार, हारौ (हारी), न्हलावणियौ—वि० ।
न्हलाविओड़ौ, न्हलावियोड़ौ, न्हलाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
न्हलावीजणौ, न्हलावीजबौ—कर्म वा० ।
न्हलाव्योड़ौ—देखो 'न्हाड़ियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० न्हलावियोड़ी)
न्हवण—देखो 'सनांन' (रू.भे.)
उ०—१ संकेती नर ले गया जी, मुहता मंदिर वाडि । न्हवण वसन भोजन करयउ जी, वेसा स्यउ मन माडि ।—प्राचीन फागु-संग्रह
उ०—२ नवमे दिवस विसेस न्हवण पंचाम्रिते हो लाल ।—स्रोपाळ
न्हवरावणौ, न्हवरावबौ—देखो 'न्हाडणौ, न्हाड़वौ' (रू.भे.)
उ०—माता मुत नइले धवरावइ, वेटा वेटा कहिय वुलावइ । उन्हउ नीर लेइ न्हवरावइ, इम माता मनि आणद पावइ ।—स्रोसार
न्हवरावणहार, हारौ (हारी), न्हवरावणियौ—वि० ।
न्हवराविओड़ौ, न्हरावियोड़ौ, न्हवराव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
न्हवरावीजणौ, न्हवरावीजबौ—कर्म वा० ।
न्हवरावियोड़ौ—देखो 'न्हाड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हवरावियोड़ी)
न्हवाड़णौ, न्हवाड़बौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
न्हवाड़णहार, हारौ (हारी), न्हवाड़णियौ—वि० ।
न्हवाड़िओड़ौ, न्हवाड़ियोड़ौ, न्हवाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
न्हवाड़ीजणौ, न्हवाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
न्हवाड़ियोड़ौ—देखो 'न्हाड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हवाड़ियोड़ी)
न्हवाणौ, न्हवाबौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
न्हवाणहार, हारौ (हारी), न्हवाणियौ—वि० ।
न्हवायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
न्हवाईजणौ, न्हवाईजबौ—कर्म वा० ।
न्हवायोड़ौ—देखो 'न्हाड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हवायोड़ी)
न्हवावणौ, न्हवावबौ—देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)
न्हवावणहार, हारौ (हारी), न्हवावणियौ—वि० ।
न्हवाविओड़ौ, न्हवावियोड़ौ, न्हवाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
न्हवावीजणौ, न्हवावीजबौ—कर्म वा० ।
न्हवावियोड़ौ—देखो 'न्हाड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हवावियोड़ी)
न्हांकणौ, न्हांकबौ—देखो 'नांखणौ, नांखबौ' (रू.भे.)
उ०—घणी तरवारियां रा बाढ़ झड़ै छै । हा हू होय रही छै । डाढ़ाळौ घणां नूं तूंड सूं उलाळ-उलाळ न्हांकिया छै ।
—डाढ़ाळा सूर री वात
न्हांकणहार, हारौ (हारी), न्हांकणियौ—वि० ।
न्हांकिओड़ौ, न्हांकियोड़ौ, न्हांक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
न्हांकीजणौ, न्हांकीजबौ—कर्म वा० ।
न्हांकियोड़ौ—देखो 'नांखियोड़ौ' (रू.भे.)
न्हांखणौ, न्हांखबौ—देखो 'नांखणौ, नांखबौ' (रू.भे.)
उ०—इतरी वात धार रावत प्रतापसिंघ नूं कहायो । इसा दावां सूं तौ हूं मरस्यूं । ओ म्होकमसिंघजी कूं हांसी में जहर चाखै छै । ऐ तौ मोटा सिरदार छै । पण ठीकरी घड़ा नूं फोड़ न्हाखै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
न्हांखणहार, हारौ (हारी), न्हांखणियौ—वि० ।
न्हाखिओड़ौ, न्हाखियोड़ौ, न्हांख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
न्हांखीजणौ, न्हाखीजबौ—कर्म वा० ।
न्हांखियोड़ौ—देखो 'नांखियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हांखियोड़ी)
न्हांण—देखो 'सनांन' (रू.भे.)
उ०—१ जगदंबा कहियो, चाहै जिसौ कस्ट करौ, भावना सुद्ध न होय जरै उ कस्ट मातंगरा न्हांण जिम व्रथा फळ पावै ।
—वं.भा.
उ०—२ इम छत्रियां तणा वैत वेहुं आछा, भूंडइ कळू न कीच भरइ । कंवर सिनांन करै करमाळां, कंवरी झाळां न्हांण करइ ।
—अज्ञात
न्हांणी-सं०स्त्री० [सं० स्नान+रा.प्र.ई] स्नानघर, स्नानागार, हम्माम (डि.को.)
न्हांन—देखो 'सनांन' (रू.भे.)
उ०—रूड़ै तीरथ राज रै, नित जळ कीजै न्हांन । तो पिण न हुए पाक तन, मूल पुरीस मकांन ।—बां.दा.
न्हांनड़को, न्हांनड़ियो, न्हांनड़ो—१ देखो 'नैनो' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ साथपणो नहीं सहेल, जाया जांमण कहे रे जाया । तूं न्हांनड़ियो बाळ, परीसा किम सहै ।—जयवांणी
उ०—२ मोनै इस्ट नै कंत व्हालो हतौ, हूं देख नै पांमतो साता रे । पिण म्हारौ राख्यौ न रह्यौ न्हानड़ो, इण विध बोलै माता रे ।
—जयवांणी
२ देखो 'नांनो' (रू.भे.)
(स्त्री० न्हांनड़की, न्हांनड़ी)
न्हांनूं, न्हांनू, [illegible]नो' (रू.भे.)

२ देखो 'नांनो' (रू.भे.)

म्हाड़णो, म्हाड़बो-क्रि०स० [सं० स्नानम्] १ स्नान कराना।

२ दौड़ाना, भगाना।

म्हाड़णहार, हारो (हारी), म्हाड़णियो—वि०।

म्हाड़िम्रोड़ो, म्हाड़ियोड़ो, म्हाड़चोड़ो—भू०का०कृ०।

म्हाड़ीजणो, म्हाड़ीजबो—कर्म वा०।

नहलाड़णो, नहलाड़बो, नहलाणो, नहलावो, नहलावणो, नहलावबो, म्हलाड़णो, म्हलाड़बो, म्हलाणो, म्हलावो, म्हलावणो, म्हलावबो, म्हवाड़णो, म्हवाड़बो, म्हवाणो, म्हवावो, म्हवावणो, म्हवावबो, म्हाळणो, म्हाळबो—रू०भे०।

म्हाड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ स्नान कराया हुआ।

२ भगाया हुआ, दौड़ाया हुआ।

(स्त्री० म्हाड़ियोड़ी)

म्हाटणो, म्हाटबो—देखो 'म्हाठणो, म्हाठबो' (रू.भे.)

म्हाटणहार, हारो (हारी), म्हाटणियो—वि०।

म्हाटिम्रोड़ो, म्हाटियोड़ो, म्हाटचोड़ो—भू०का०कृ०।

म्हाटीजणो, म्हाटीजबो—भाव वा०।

म्हाटियोड़ो—देखो 'म्हाठियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० म्हाटियोड़ी)

म्हाठणो, म्हाठबो-क्रि०अ० [सं० नष्टम्=अदृश्य हो गया हो]

१ भगना, दौड़ना, दौड़ जाना।

उ०—तरै जळ पीधो। सुमत जीव में हुवो। तरै पूछियो—थांहरा ऐ लवेस कासू ऐड़ा? तरै कूंभै कह्यो—स्री दीवांण सूं थांरै मेरे पाट चूक हुवो नै अबै म्हारै वासै साथ फोज चढ़ी छै। म्हाठो आयो छूं।—राव रिणमल री वात

२ नष्ट होना, मिटना।

म्हाठणहार, हारो (हारी), म्हाठणियो—वि०।

म्हाठिम्रोड़ो, म्हाठियोड़ो, म्हाठचोड़ो—भू०का०कृ०।

म्हाठीजणो, म्हाठीजबो—भाव वा०।

नाटणो, नाटबो, नाठणो, नाठबो, म्हाटणो, म्हाटबो—रू०भे०।

म्हाठियोड़ो-भू०का०कृ०—१ भगा हुआ, दौड़ा हुआ।

२ नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुवा हुआ।

(स्त्री० म्हाठियोड़ी)

म्हाणो, म्हावो-क्रि०अ० [सं० स्नानम्] १ स्नान करना, नहाना।

उ०—पीठवइ वाटी नूं म्हारी, तिकण री मस्तक ले हालियो जांणि महा पतिव्रता आपरी भुवा सहगमण रै काज मांगियौ तो भी मस्तक पाछो दे'र न आयो। जौं सती रा स्राप हूं कलेवर में कोढ पाइ पुस्कर प्रयाग प्रमुख तीरथां में न्हाइ और भी औखधादिक अनेक उपाय करि थाको परंतु पाटव न पायो।—वं.भा.

२ भागना, दौड़ना।

म्हाणहार, हारो (हारी), म्हाणियो—वि०।

म्हायोड़ो—भू०का०कृ०।

म्हाईजणो, म्हाईजबो—भाव वा०।

नां'णो, नां'बो, नां'वणो, नां'वबो, म्हावणो, म्हावबो—रू०भे०।

म्हायोड़ो-भू०का०कृ०—१ स्नान किया हुआ, दौड़ा हुआ।

(स्त्री० म्हायोड़ी)

म्हार—देखो 'नाहर' (रू.भे.)

उ०—'डूंग' म्हार री कोटड़ियां, जुड़ी कचेड़ी आय। जाजम ऊपर जाजम विछ रही, खूब पड़ै रजवाड़।—डूंगजी जवारजी री पड़

(स्त्री० म्हारी)

म्हारियो—देखो 'नाहर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ म्हारी म्हारी छाळियां नै दूधो दही पाऊं। म्हारियो आवै तो सोटा री मचकाऊं।—लो.गी.

उ०—२ जे कोई सुणतो, घिरतो होवे रे। नांन्यां नै जाय खबर कर दें। मोड़ो वतळायो मोड़ो वतळायो। 'जोर' जी म्हारी को जायो रे! ओ सिंघणी को जायो रे! मोड़ो वतळायो।—लो.गी.

(स्त्री० म्हारी)

म्हारुम्रो—देखो 'नारू' (२) (अल्पा०, रू.भे.) (शेखावाटी)

म्हारो—१ देखो 'न्यारो' (रू.भे.)

उ०—साहिब के चोथो वरण, छोटो वेटो जांण। हाथ लगावै कांम रै, (तो) सारा करै वखांण। (तो) सारा करै वखांण, पिता नै लागै प्यारो। मोटो करै न कांम, कूट नै कर दै म्हारो।

—सगरांमदास

२ देखो 'ना'रो' (रू.भे.)

म्हाळणो, म्हाळबो—१ देखो 'नाळणो, नाळबो' (रू.भे.)

उ०—सात जंनम आगइं सांम्हळिया। तिणि कारणि मन मोहइ। आंसू ढाळइ चिहुं दिसी म्हाळइ, गोख चढि दळ जोवइ।

—रुकमणी मंगळ

२ देखो 'म्हाड़णो, म्हाड़बो' (रू.भे.)

म्हाळणहार, हारो (हारी), म्हाळणियो—वि०।

म्हाळिम्रोड़ो, म्हाळियोड़ो, म्हाळचोड़ो—भू०का०कृ०।

म्हाळीजणो, म्हाळीजबो—कर्म वा०।

म्हाळियोड़ो—१ देखो 'नाळियोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'म्हाड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० 'म्हाळियोड़ी)

म्हावण—देखो 'सनांन' (रू.भे.)

उ०—मांग्या खावां टूकड़ा, म्हे रटां रांम को नांम। आवूजी हूं आया उतर, म्हे गंगा म्हावण जावां।—डूंगजी जवारजी री पड़

म्हावणो, म्हावबो—१ देखो 'म्हाणो, म्हावो' (रू.भे.)

उ०—१ म्हावो क्यूं ना जी गोरी रा भरतार, म्हावो क्यूं ना जी वादीला भरतार।—लो.गी.

उ०—२ आंमी सांमी होद देवरिया, नित उठ म्हावण आवो जी।

हण ग्रावण रै कारणै देवर, प्यारा लागो जी ।—लो.गी.

२ देखो 'न्हाड़णौ, न्हाड़बौ' (रू.भे.)

न्हावणहार, हारौ (हारी), न्हावणियौ—वि० ।

न्हाविग्रोड़ौ, न्हावियोड़ौ, न्हाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

न्हावीजणौ, न्हावीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

न्हावियोड़ौ—देखो 'न्हायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० न्हावियोड़ी)·

न्हासणौ, न्हासबौ—देखो 'नासणौ, नासबौ' (रू.भे.)

उ०—१ कूद गयौ तूं द्वारका, दैतां ग्रागळ न्हास। सरम न ग्राई सांवळा, वळै कहै विसवास।—गजउद्धार

उ०—२ वेग परक्खी तेग भळक्की। तुरी फेर न्हासाण री तक्की।
—रा.रू.

न्हासणहार, हारौ (हारी), न्हासणियौ—वि० ।

न्हासिग्रोड़ौ, न्हासियोड़ौ, न्हास्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

न्हासीजणौ, न्हासीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

न्हासियोड़ौ—देखो 'नासियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० न्हासियोड़ी)

न्हौ—देखो 'नहीं' (रू.भे.)

उ०—इण रीत रै वासतै कहायौ। न्हौ तो उण नूं उण हीज वेळा रोस ग्रायौ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

न्हौरा—देखो 'नौ'रा' (रू.भे.)

उ०—जग में जीया तौ पाछा सुख पासां। वौ'रा वतळावै न्हौरा कर न्हासां।—ऊ.का.

न्हौरौ—देखो 'नौहरौ' (रू.भे.)